

॥ श्रीः ॥

विद्याभवन संस्कृत ग्रन्थमाला

३२

५७२६७

आदर्श-

हिन्दी-संस्कृत-कोशः

डॉ० रामसरूप 'रसिकेश'

शास्त्री, एम० ए०, एम० ओ० एल० (संस्कृत), एम० ए०

पी-एच० डी० (हिन्दी), विद्यावाचस्पति (धर्म०)

पूर्व-प्राध्यापक, डी० ए० वी० कालेज (लाहौर), हंसराज कालेज
(दिल्ली) तथा दिल्ली विश्वविद्यालय



चौरवम्बा विद्याभवन

वाराणसी २२१००१

चौखम्बा विद्याभवन

(भारतीय संस्कृति एवं साहित्य के प्रकाशक-विक्रेता)

चीक (बनारस स्टेट बैंक भवन के पीछे),

पोस्ट बाक्स नं० ६६

बाराणसी २२१००१

सर्वाधिकार सुरक्षित

द्वितीय संस्करण

१९७६

मूल्य ~~१०००~~ ०

अन्य प्राप्तिस्थान—

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन

(भारतीय संस्कृति एवं साहित्य के प्रकाशक-विक्रेता)

के० ३७/११७, गोपाल मन्दिर लेन

पोस्ट बाक्स नं० १२६

बाराणसी २२१००१

मुद्रक—

श्रीजी मुद्रणालय

बाराणसी

THE
VIDYABHAWAN SANSKRIT GRANTHAMALA
32



ĀDARSA-
HINDĪ-SANSKRIT-KOŚA

By

Dr. Ramsarupa 'Rasikesha'

*Shastri, M. A., M. O. L. (San.), M. A. Ph. D., (Hindi),
Vidyavachaspati (Dharmashastra)*

Ex-Professor

D. A. V. College (Lahore), Hansraja College (Delhi)
and Delhi University.



THE
CHOWKHAMBA VIDYABHAWAN
VARANASI

© CHOWKHAMBA VIDYABHAWAN
(*Oriental Booksellers & Publishers*)
CHOWK (Behind The Benares State Bank Building)
Post Box No. 69
VARANASI 221001

Second Edition

1979

Price Rs. ~~₹~~00

Also can be had of
CHAUKHAMBA SURABHARATI PRAKASHAN
(*Oriental Booksellers & Publishers*)
K. 37/117, Gopal Mandir Lane
Post Box No. 129
VARANASI 221001

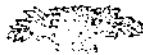
समर्पणम्

दिवङ्गतां जननीं

सीतां

प्रति

नमस्कृत्य वदामि त्वां यदि पुण्यं मया कृतम् ।
अन्यस्यामपि जात्यां मे त्वमेव जननी भव ॥



प्राक्कथन

प्रोफेसर विश्वचन्द्र शास्त्री

M. A., M. O. L., d' A. Kt. C. T.

आदरणीय संचालक, विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान

संस्कृत भाषा का विद्यालय, सर्वतोमुख साहित्य ही, निःसंदेह, वह सर्वोत्तम बपौती है, जो प्राचीन भारत से नवभारत को मिली है। संस्कृत-भाषा अतीव चिरंजीविनी है, वस्तुतः, अमिट और अमर है। सहस्रों वर्ष पूर्व के हमारे पुरखा इसी देवबाणी के द्वारा अपना सब वाग्व्यवहार चलाने थे। धीरे-धीरे फिर वह समय आया, जब शिक्षित जन ही इसका शुद्ध प्रयोग कर पाते थे और शेष-सर्व-साधारण लोग इसके अनेक विकृत रूपों का प्रयोग करने लगे थे। वही विकृत रूप, पोछे—पाली, प्राकृत तथा अपभ्रंश कहलाए और बोल-चाल एवं साहित्य-सृष्टि के समुन्नत माध्यम भी बने। परन्तु, उस समय भी, साधारण जनता भले ही शुद्ध संस्कृत न बोल सकती हो, वह, अवश्य, उसे समझ लेती थी। संस्कृत की वही अमिट छाष हमारी आधुनिक भारतीय भाषाओं पर भी पड़ी हुई है, जिसके कारण, हमारे आज के विभिन्न प्रादेशिक वाग्व्यवहार के अन्दर ४०-५० से लेकर ८०-९० प्रतिशत तक, मानो, स्वयं संस्कृत-भाषा ही बोली और लिखी जा रही है। शुद्ध संस्कृत के माध्यम से होने वाली साहित्य-सृष्टि तो कभी रुकी ही नहीं। प्राचीन तथा मध्यकालीन युगों की बात तो अलग रही, आज के युग में भी संस्कृत-भाषा के सभी प्रकार के साहित्य का सृष्टि बराबर चालू है। आशा प्रतीत होती है कि देश की स्वतन्त्रता के साक्षात् फलस्वरूप राष्ट्रीय चेतना इस ओर प्रतिदिन अधिकाधिक जागरूक होती जायेगी।

यह प्रसन्नता की बात है कि देश-भर में जहाँ-तहाँ अभियुक्त जन इस समय संस्कृताध्ययन के रङ्ग-ढङ्ग को सरलतर बनाने के प्रयत्न में लग रहे हैं। एतदर्थ कई प्रकार के अभिनव शिक्षण-क्रमों का आविष्कार तथा साधन-भूत सहायक साहित्य का निर्माण किया जा रहा है। प्रस्तुत 'आदर्श-हिन्दी-संस्कृत-कोश' उक्त सहायक साहित्य के ही अन्तर्गत एक उत्तम रचना है। इसके सुयोग्य लेखक ने इसे सब प्रकार से उपयोगी बनाने के लिए सफल प्रयास किया है।

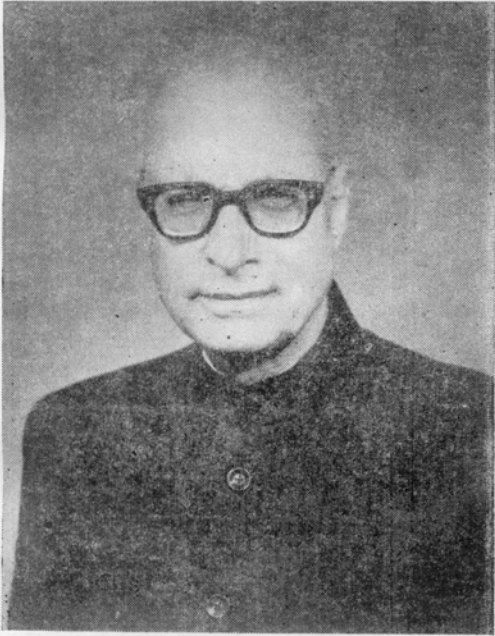
[४]

एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद करना सुकर नहीं होता । जब तक दोनों भाषाओं के प्रयोग-स्वारस्य का अच्छा बोध प्राप्त न किया हो, तब तक मक्खी पर मक्खी मारने के अतिरिक्त और कुछ सिद्ध नहीं किया जा सकता । एतदर्थ छात्रों को चाहिए कि दोनों भाषाओं के सत्साहित्य के सागर में स्वतन्त्र रूप से खुला अवगाहन करें । कोई भी व्याकरण या कोश का ग्रन्थ इस प्रधान साधन का स्थान नहीं ले सकता । परन्तु जन्म विस्तृत पठन के साथ-साथ, प्रतिदिन के कार्याभ्यास में प्रस्तुत कोश ऐसे सहायक ग्रन्थों का निश्चय ही अपना स्थान एवम् उपयोग है ।

इस कोश में जिम सुविपुल विशेषताओं का आधान करते हुए इसे गुणवत्तर बनाया गया है, इसकी 'प्रस्तावना' में उनका विवरण भली प्रकार से कर दिया गया है । छात्रों को चाहिए कि इसकी 'प्रस्तावना' के पाठ द्वारा उन विशेषताओं का परिज्ञान प्राप्त करते हुए इसका सदुपयोग करते रहें, जिससे उन्हें पूर्ण सफलता प्राप्त हो सके ।

साधु आश्रम, होशियारपुर }
१९-६-५७

—विश्वबन्धु



डॉ० राम सरूप 'रसिकेश'

प्रस्तावना

(द्वितीय संस्करण)

'आदर्श हिन्दी-संस्कृत कोश' की उपयोगिता व लोकप्रियता इसी से प्रमाणित है कि इसका प्रथम संस्करण शीघ्र ही समाप्त हो गया और इसकी माँग, शुक्ल-पक्ष के जाँद के समान, निरन्तर बढ़ती ही गई। संस्कृत-प्रेमियों, पुस्तक-विक्रेताओं, प्रकाशक व लेखक सभी की उत्कट इच्छा थी कि द्वितीय संस्करण यथाशीघ्र प्रकाशित हो, जिससे देव-वर्णी की अधिकाधिक उन्नति हो। परन्तु, इस संसार में परिस्थितियाँ कभी-कभार ऐसा प्रतिकूल रूप धारण कर लेती हैं कि उन पर विजय पाना दुःकर हो जाता है। यही कारण है कि संस्कृत-प्रेमियों को सुदीर्घकाल तक अप्रत्याशित प्रतीक्षा करनी पड़ी, जिसके लिए हम क्षमा-आर्षी हैं। अस्तु।

सर्वा भाषा-शास्त्री जानते हैं कि कोई भी जीवन्त भाषा वर्षों तक एक ही रूप में नहीं रहती। उसके शब्द-भंडार आदि में परिवर्तन होता ही रहता है। इसी नियमानुसार दो दशाब्दियों में हिन्दी-शब्द-भंडार का पर्याप्त विस्तार हुआ और परिणामतः हमने भी कोश का परिवर्द्धित संस्करण ही प्रकाशित करना समीचीन समझा। प्रथम संस्करण में कुछ अशुद्धियाँ भी रह गई थीं। उनका संशोधन भी अपना पवित्र कर्तव्य था। इस कार्य में हमें अपने मित्र प्रो० गोपालदत्त पाण्डेय, पूर्व-उपनिदेशक, शिक्षाविभाग, उत्तर प्रदेश, ने रतुत्य सहयोग दिया है, जिसके लिए हम उनके कृतज्ञ हैं। इतना ही नहीं, उन्होंने 'संस्कृत-कोशों का उद्भव और विकास' शीर्षक अनुसन्धानात्मक निबन्ध भी लिखा है, जिससे संस्कृत-प्रेमियों को इस विषय की रोचक व मूल्यवती जानकारी भी उपलब्ध होगी। कोश के सम्बन्ध में जिन विद्वत् विद्वानों ने स्वामूल्य सम्मतिपूर्ण प्रदान की हैं उनके प्रति हम हार्दिक आभार प्रकट करते हैं। साथ ही कृतज्ञ हैं चौखम्बा विद्याभवन के संचालक श्री वल्लभदास शुभ के जिन्होंने विषय परिस्थितियों में भी कोश को प्रस्तुत सुन्दर रूप में प्रकाशित किया है। हमें विश्वास है कि प्रस्तुत संस्करण पूर्ण की अपेक्षा अधिक उपयोगी सिद्ध होगा।

पाठकों से निवेदन है कि प्रथम संस्करण की प्रस्तावना को भी सावधानता से पढ़ने की कृपा करें, क्योंकि इसके बिना वे कोश से सयष्ट लाभ न उठा सकेंगे।

अन्त में, विद्वज्जनों व अध्यक्ष-वर्ग से सादर निवेदन है कि प्रस्तुत संस्करण की शुद्धियों की ओर हमारा ध्यान अवश्य आकर्षित करें ताकि कोश के अद्यामी संस्करण शुद्धतर रूप में प्रकाशित हो सकें। धन्यवाद।

डी-१४१
नया रान्जेंद्रनगर
नई दिल्ली—११००७०
वैशाखी—२०३६ वि०

विनीत,
रामसरूप

प्रस्तावना

(प्रथम संस्करण)

संस्कृत का अध्ययनाध्यापन करते समय और कभी हिन्दी-शब्दों के संस्कृत-पर्यायो की जिज्ञासा के समय अनेक बार हिन्दी-संस्कृत-कोश की आवश्यकता प्रतीत होती थी। बाजार में कोई भी ऐसा कोश प्राप्य न था जो स्कूलों, कॉलेजों, युस्कूलों, अधिकुलों आदि की उच्च कक्षाओं के विद्यार्थियों तथा संस्कृताध्ययन के इच्छुक प्रौढ़ सज्जनों और अध्यापकों को आवश्यकताएँ पूर्ण कर सके। यह देखकर दुःख भी होता था और आश्चर्य भी कि सात समुद्र पार से आई हुई अंग्रेजी भाषा के कुछ लाख शताओं के लिए तो अंग्रेजी-संस्कृत-कोश प्रकाशित हो चुके हैं परन्तु करोड़ों हिन्दी-प्रेमियों के पास ऐसा कोई कोश नहीं जिससे वे संस्कृताध्ययन में सहायता प्राप्त कर सकें। संस्कृतानुराग और उक्त अभाव की प्रबल प्रेरणा से मैं १९४३ ई. में कोश-संकलन में लग गया और लगभग चार वर्ष के परिश्रम से इस शूलकार्य को सम्पन्न कर पाया। देश का विभाजन न होता तो सम्भवतः यह कोश दस वर्ष पूर्व ही प्रकाशित हो जाता, परन्तु परिस्थितियों की प्रतिकूलता के कारण यह अब प्रकाशित हो रहा है—'दैवी विचित्रा गतिः'।

जिन दिनों मैं कोश का संकलन आरम्भ करने को था उन दिनों हिन्दी-उर्दू-हिन्दुस्तानी का प्रचलन जोर-शोर से छिड़ा हुआ था। प्रत्येक भाषा के प्रेमी स्वर-व पक्ष की पुष्टि के लिए अनेक युक्तायुक्त युक्तियाँ प्रस्तुत करते थे। तब मेरे संसुख प्रचन यह उठा कि मूल (अनुसू) शब्दों में विशुद्ध हिन्दी के ही शब्द रखे जाएँ या विदेशी शब्द भी। सोच-विचार के पश्चात् मैंने यही उचित समझा कि इसके मूल-शब्दों में फ़ारसी, अरबी, तुर्की, अंग्रेजी आदि विदेशी भाषाओं के भी प्रचलित शब्द अवश्य रखने चाहिए। उसी निश्चय का परिणाम यह है कि कोश के प्रायः प्रत्येक पृष्ठ पर पाँच-सात विदेशी शब्द, जो शताब्दियों के प्रयोग से स्वदेशी बन गये हैं, आपको मिल ही जाएँगे। इसका सुफल यह होगा कि हिन्दी के राष्ट्रभाषा बन जाने और परिणामतः प्रत्येक भारतीय के हिन्दी से परिचित हो जाने के कारण उन अन्वयमतावलम्बियों को भी संस्कृत सीखने में अधिक सुविधा हो जाएगी, जिनकी भाषाओं के प्रचलित शब्द इस कोश में संगृहीत कर लिये गये हैं। मूल शब्दों के चुनाव के समय दूसरी समस्त पारिभाषिक शब्दों की थी। प्रत्येक कला और विज्ञान से सम्बन्धित सहस्रों पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग प्रायः उन्हीं विषयों के विद्यार्थियों और अध्यापकों तक ही सीमित रहता है। प्रस्तुत कोश में उन सबका संकलन न सम्भव था, न वांछनीय। इसीलिए मैंने यौतिकी, रसायन, भूगोल, गणित, उद्योग, वैद्यक आदि के उन्हीं अत्यन्त प्रसिद्ध शब्दों को संगृहीत किया है जो जन-सामान्य या सामान्य शिक्षित जनों द्वारा प्रतिदिन प्रयुक्त होते हैं। कोश के मूल शब्दों की संख्या लगभग ३०००० है जिनमें ४००० के लगभग तथाकथित विदेशी शब्द, पारिभाषिक शब्द तथा सुहावने भी सम्मिलित हैं।

कई कोशों में समरूप विभिन्न शब्द एक ही शब्द के नीचे मुद्रित रहते हैं। प्रस्तुत कोश में ऐसा नहीं किया गया। कारण, जब स्त्रीत (आकर-भाषा) और व्युत्पत्ति पृथक्-पृथक् हों तो शब्दों के पर्याय में सन्देह नहीं रहता। ऐसी दशा में उन्हें, केवल रूपमाम्य के कारण, एक ही शब्द के अन्तर्गत रखना मुझे उचित नहीं जँचा। ऐसे समरूप शब्दों के ऊपर १, २, ३, ४ आदि के चिह्न लगा दिये गये हैं जिससे उनमें से किसी की ओर निर्देश करते समय कठिनता न हो; उदाहरणार्थ 'आम' और 'आवा' शब्द देखिये। इस कोश में प्रत्येक मूल शब्द को तो स्वतंत्र स्थान दिया गया है परन्तु उससे बने हुए समस्त शब्दों का मुहावरों की अधिकतर मूल शब्दों के नीचे ही

(७)

रखा गया है। जैसे, 'जाति' शब्द के नीचे—(= जाति) से खारिज करना, च्युत, पाँति-स्वभाव आदि शब्द दिये गये हैं। इसी प्रकार 'जास्ता दीवानी', 'जास्ता कौनदारी' आदि शब्द 'जास्ता' के नीचे और 'जलाने योग्य', 'जलाने वाला', 'जलाया हुआ' आदि संयुक्त शब्द 'जलाना' के नीचे मिलेंगे।

कोश में मूल शब्द वर्णमाला के क्रम से मुद्रित हैं परन्तु विसर्गान्त और अनुस्वार-युक्त शब्द, हिंदी-कोशों के समान, पहले रखे गये हैं। जैसे 'आः' और 'आंतरिक' शब्द 'आक' से पूर्व मिलेंगे।

मूल शब्दों के रूपों, पदपरिचय तथा व्युत्पत्ति के विषय में मेरा मुख्य आधार 'हिन्दी शब्द-सागर' रहा है। उसमें जहाँ सम्यह हुआ वहाँ मैंने श्रीरामशंकर शुक्ल 'रसाल' के 'भाषा शब्दकोश' और श्रीरामचन्द्र वर्मा के 'भामाणिक हिन्दी कोश' से भी सहायता ली है। जहाँ उपलब्ध व्युत्पत्तियों से संतोष नहीं हुआ, वहाँ, कहीं-कहीं, यथावधि अपनी ओर से भी व्युत्पत्तियाँ दी हैं। जहाँ किसी प्रकार भी संतुष्टि नहीं हुई, वहाँ प्रदत्तचिह्न (?) लगा दिया है, जिससे विद्वद्गण उन पर और विचार कर सकें। व्युत्पत्ति के कोष्ठक में संस्कृत शब्दों के आगे कहीं-कहीं > चिह्न लगाया है। इसका आशय यह है कि मूलशब्द, कोष्ठकान्तर्वर्ती संस्कृत-शब्द से उद्भूत तो हुआ है परन्तु उसका अर्थ भिन्न है। जैसे, 'तरुणः' संस्कृत के 'तरुण' से निकला है परन्तु अर्थ में भेद है। इसलिए व्युत्पत्तिकोष्ठक में 'तरुण' के आगे > चिह्न लगाया गया है। सब बात तो यह कि हिन्दी के अनेक शब्दों की व्युत्पत्तियाँ अभी तक चिम्बर्य हैं और व्युत्पत्तिशास्त्र-विशेषज्ञों के परिश्रम का बाट जोह रही हैं।

मूल शब्द, पदपरिचय तथा स्रोत या व्युत्पत्ति के अनन्तर मूल शब्दों के अनेक संस्कृत-पर्याय दिये गये हैं। प्रत्येक भाषा में शब्दों के एकाधिक और कभी-कभी तो दर्जनों अर्थ होते हैं। कोशकार को कृति के कलेवर और पाठकों के विशिष्ट वर्ग का ध्यान रखते हुए उनमें से कुछ एक ही का ग्रहण और शेष का परित्याग करना पड़ता है। उन अनेक अर्थों में से जो अर्थ परस्पर पर्याप्त पृथक् प्रतीत हुए, उनके साथ तो २, ३ आदि अंक लगा दिये गये हैं और जिनमें छाया-मात्र का वैशिष्ट्य दिखाई दिया है, उन्हें एक ही अंक में रहने दिया गया है। स्वतः स्पष्ट होने से एक वा अंक नहीं दिया गया। कहीं-कहीं स्थान की वचन के विचार से (२-४) इकट्ठा लिख दिया गया है। जैसे 'जालंधर' के पर्यायों में 'नगर-नृप-सुनि दैत्य-विशेषः'। आशय नगरविशेषः, नृपविशेषः आदि है। जातिवाचक शब्दों के साथ 'भेदः' और व्यक्तिवाचक के साथ 'विशेषः' का प्रयोग किया गया है।

संस्कृत के प्रत्येक संज्ञा-शब्द का लिंगनिर्देश आवश्यक था। इसलिए संस्कृत-पर्याय प्रत्येक प्रथमा-विभक्ति के एवमचन में दिये गये हैं। लिंग-ज्ञान के लिए निम्नांकित कुछ नियमों को ध्यान में रखना चाहिए—

१. विसर्गान्त अकारान्त शब्द (रामः, नरः, नरेशः आदि) पुल्लिंग हैं।
२. प्रभुः, रविः आदि शब्दों के आगे कोष्ठक में यदि स्त्री. या न. नहीं लिखा गया तो वे पुल्लिंग हैं।
३. स्वामिन्, राजन्, पितृ आदि जिन शब्दों के प्रथमा एकवचन के रूप स्वामी, राजा, पिता आदि बनते हैं, उनके प्रथमा एकवचन के रूप नहीं दिये गये, जिससे वे नदी, लता आदि के समान स्त्रीलिंग न समझें जायें।
४. विद्या, शाला, लता आदि सब अकारान्त शब्द, नदी, विदुषी, बुद्धिमती आदि सब ईकारान्त शब्द तथा वधूः, श्वश्रूः आदि उकारान्त शब्द स्त्रीलिंग हैं।
५. ज्ञानं (ज्ञानम्), फलं (फलम्) आदि अनुस्वारान्त या मकारान्त शब्द नपुंसकलिंग हैं।
६. यदि व्युत्पत्तिकोष्ठक में केवल (सं.) अर्थात् संस्कृत लिखा है तो समझ लेना चाहिए कि संस्कृत में भी उसका लिंग मूल हिन्दी-शब्द के समान है। यदि (सं. पुं. स्त्री. वा न.) लिखा

(८)

हो तो समझ लेना चाहिए कि मूल शब्द में उसका लिंग संस्कृत से निम्न है। उदाहरणार्थ, 'अवरोध' और 'अवरोधन' शब्द देखिये।

७. विशेषण शब्दों के संस्कृत-पर्याय प्रादिगदिक (विभक्तिरहित) रूप में दिये गये हैं और आवश्यकतानुसार विशिष्ट लिंग में प्रयुक्तव्य है। जैसे 'अनरुद्र', 'अनमोल' आदि।

८. अव्ययों, क्रिया-विशेषणों आदि के पर्याय प्रत्यय नानुसंस्कृतिक व एकवचन में होते हैं या अपने अपरिवर्तनशाली रूप में। इसलिए उनका लिंगनिर्देश नहीं किया गया।

९. मित्र, शत्रु, शत, सशस्त्र आदि उन सब शब्दों के साथ लिंग का निर्देश कर दिया गया है जिनके विषय में कोई विशिष्ट नियम लागू होता है या लिंगविषयक तनिक भी संदेह उत्पन्न होता है।

१०. जहाँ योजक-चिह्न (-) से युक्त अनेक शब्दों के अन्त में लिंगनिर्देश किया गया है वहाँ उन सभी शब्दों का वही एक लिंग समझना चाहिए। जैसे, 'अनुपपत्ति' शब्द के संस्कृत-पर्याय 'असंगतिः-अभिद्धिः-अप्राप्तिः (स्त्री.)' दिये हैं। इसका भाव यह है कि असंगति आदि तीनों शब्द स्त्रीलिंग हैं।

क्रियापदों के पर्याय-धातुओं के गण और पद तथा सेट् धादि का भी उल्लेख किया गया है। आरम्भ में तो भू, कृ और दो धातुओं के गणादि निर्दिष्ट किये गये हैं परन्तु इन धातुओं के अत्यन्त प्रसिद्ध होने के कारण तथा स्थान बदलने के उद्देश्य से आगे इनके गणादि निर्दिष्ट नहीं किये गये। चुरादि गण के अधिकतर धातु उभयपदी सेट् हैं, इसलिए उनका प्रायः गणादिनिर्देश ही किया गया है। जहाँ क्रियापद एकाधिक अर्थों का वाचक है, वहाँ उनके पर्यायों के साथ २, ३ आदि अंक लगा दिये गये हैं परन्तु नीचे हा उनके भाव-वाचक रूपों में पुनः अंक लगाना आवश्यक नहीं समझा। जहाँ किसी धातु से पूर्व अनेक उपसर्ग योजक-चिह्न से युक्त दिखाये गये हैं वहाँ उनमें से कोई एक उपसर्ग प्रत्यक करना असाध्य है। जहाँ एकाधिक उपसर्ग इकट्ठे किये गये हैं, वहाँ वे सभी धातु के पूर्व प्रयोज्य हैं। जैसे 'देखना' शब्द के नांवे अव-अ-दि-लोक लिखा है। इसका तात्पर्य यह है कि अवलोक, आलोक, विलोक तीनों ही देखने के अर्थ में प्रयुक्त हो सकते हैं।

कहीं-कहीं विवश होकर मुझे नव शब्दनिर्माण का साहसपेक्षा कार्य भी करना पड़ा है। परन्तु वह निया तभी गया है जब प्रचलित शब्दों से यथेष्ट सहाय नहीं हुआ। उदाहरणार्थ, 'जलूस' के लिए 'मेल', 'यात्रा' और 'श्रेयो' शब्द एक कोश में उपलब्ध थे परन्तु 'मेश' और 'श्रेयो' तो मुझे सर्वथा अनुपयुक्त लगे और 'यात्रा' शब्द भी प्रायः धर्म और तीर्थों से सम्बन्धित हो गया है। इसलिए मैंने इसके लिए 'संपचलनम्' शब्द प्रस्तुत किया है, क्योंकि सं = इकट्ठा प्र = आगे, चलनम् = चलना के वाचक होकर जलूस (Procession) का अर्थ व्यक्त कर देते हैं। 'यात्रा' प्रसिद्ध मित्राद का नाम है जो कदाचित् उत्तरी श्वेत्वा और दयानता के कारण रखा गया है। उसके लिये मैंने 'हैमा' शब्द निर्मित किया है जो 'वका' का टुकड़ियों के मगन ही लोकांतर ईकारान्त है। 'गुड्डा' या 'पतंग' के लिए अंग्रेजी-संस्कृत कोशों में 'पत्रवित्रः-ल', 'गिलाभास', 'उड्डनीनजीवनकम्' आदि कुछ शब्द मिलते हैं जिनके अर्थ कागज की चील, बोल-सा और उड्ड-स्त्रियौना हैं। जिन्होंने सर्वप्रथम इन शब्दों का निर्माण किया वे भी हमारे धन्यवाद के पात्र हैं, परन्तु मैं पतंग के लिए 'पतंगः' के ही प्रयोग का पक्षपाती हूँ। कारण, व्युत्पत्ति (पतन् गन्धर्वनि पतङ्गः) की दृष्टि से यह प्राचीन शब्द गुड्डा या पतंग के लिए भी उतना ही उपयुक्त है जितना 'पतंग' के अन्य प्राचीन अर्थों के लिए। कोशों में प्रायः 'पतंगः' के ये अर्थ प्राप्त होते हैं—पक्षी, मूयं, टिट्टी, पतंगा, भ्रमर, गेंद, चिमनारी, शैतान, पारः। इन सभी पदार्थ ऊर्ध्वगामी हैं। आदि में तो पतंग शब्द एक ही अर्थ के लिए निर्मित किया गया होगा। क्रमशः अन्य अर्थ भी भावसाम्य के कारण साथ जुड़ते गये होंगे। यदि अपने समय की आवश्यकता के अनुसार एक अर्थ मैंने भी जोड़ दिया तो क्या हानि? जहाँ प्रसंग आदि के बल से पतंग के पूर्वोक्त अनेक अर्थों में से कोई एक ले लिया जाता है, वहाँ वहाँ की गुड्डा के प्रसंग में 'पतंग' पतंग का वाचक बन जायगा। देववाणी के अधिकाधिक प्रसार के लिए इतना औदार्य तो स्वीकार्य ही है।

(९)

कोश के अन्त में भूत परिशिष्ट दिये गये हैं। प्रथम में संस्कृत सुभाषितों के हिन्दी-रूपान्तर, द्वितीय में हिन्दी लोकोक्तियों के संस्कृत-पर्याय, तृतीय में अंग्रेजी-संस्कृत शब्दावली, चतुर्थ में छन्द-परिचय, पंचम में संस्कृत-मातृव्यकार-परिचय, षष्ठ में मोक्षार्थना लौकिकन्याय और सप्तम में भौगोलिक परिचय है। इनकी उपयोगिता के विषय में कुछ कहने की आवश्यकता नहीं। इन पर किया हुआ श्लेषिक दृष्टिदान स्वयं ही इनकी उपयोगिता का समर्थन करेगा। केवल अंग्रेजी संस्कृत-शब्दावली के सम्बन्ध में कुछ शब्द अवश्य अपेक्षित हैं—जब से देश स्वतन्त्र हुआ है, संविधान, राजनीति, प्रशासन आदि विषयों के अंग्रेजी शब्दों के हिन्दी पर्याय बताने के लिए अनेक ग्रन्थ प्रकाशित हुए हैं—कुछ सरकारी की ओर से, कुछ संस्थाओं की ओर से और कुछ पुस्तकविक्रेताओं की ओर से। अनुवादक महानुभावों ने कुछ विशिष्ट सिद्धान्तों के अनुसार उन शब्दों के हिन्दी-अनुवाद प्रस्तुत किये हैं। इस प्रकार इस संकल्पकाल में जनता के समक्ष एक-एक अंग्रेजी-शब्द के लिए अनेक हिन्दी-पर्याय उपस्थित हो गये हैं। उक्त परिशिष्ट में मैंने यत्न किया है कि अनुदित शब्दों में से, उपयुक्ततम शब्द को संस्कृत में स्वीकृत कर लिया जाए, परन्तु जहाँ उनसे सन्तोष नहीं हुआ, वहाँ स्वनिर्मित शब्द देने में भी संकोच नहीं किया। ऐसे शब्दों के साथ मैंने (●) चिह्न लगा दिया है और उनकी सटीकता-निर्दोषता का दाखिल मुझे पर है। जैसे—Gazette के लिए 'गजनेत' और 'गजनेत', 'गजनेत' आदि शब्दों की रचना हुई है; मैंने इनमें से केवल 'गजनेत' को ग्रहण किया है। Provident Fund के लिए 'भविष्यनिधि', 'संभरणनिधि', 'संचितनिधि', 'संभतकोर' और 'निर्वाहनिधि' शब्द चल रहे हैं, मुझे उनमें से 'भविष्यनिधि' ही उपादेयतम प्रतीत हुआ है। Affiliation के लिए 'संबन्धीकरण' भी लिखा गया है और 'सम्बद्धन' भी। मुझे संस्कृत का 'सम्बन्धनम्' प्रियतम लगा और मैंने उसे ले लिया। District Board के लिए 'जिलामंडली', 'मंडलपरिषद्', 'जिलापालिका', 'जिलाबोर्ड', 'मंडलिक-समिति', 'मंडलपरिषद्' शब्द प्रयुक्त किये जा चुके हैं। परन्तु जब संविधान में 'बोर्ड' के लिए 'मंडली' और 'डिस्ट्रिक्ट' के लिए 'जिला' का वैकल्पिक रूप मंडल स्वीकृत किया है तो मुझे District Board के लिए संस्कृत में 'मंडल-मंडली' अर्थात् लेने में कोई अडचन नहीं हुई। इसी प्रकार 'टिकट' जैसे व्यापक और सर्वविधित शब्द के लिए कोई विकट शब्द बनाना मुझे अच्छा नहीं लगा और मैंने Booking office के लिए 'टिकटगृहम्' को ही उचित समझा। जो विदेशी शब्द हमारे देश के कोने-कोने में समझे जाते हैं और आकार-प्रकार की दृष्टि से भी संस्कृत में समा सकते हैं उन्हें अपनाते में संकोच न करना ही उचित प्रतीत होता है।

कहीं-कहीं पाठकों के सुलभार्थ सन्धि-नियमों की जानबूझ कर उपेक्षा की गई है और मुद्रण-सौकरार्थ अनुनासिक वर्णों (ङ, ञ, ण, ञ, ण) के स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग किया गया है।

इस कोश के संकल्प में अति-अति महानुभावों का कौतूहल-सौ-सौ कृतियों से सहायता की गई है, यह टीका-टीका बचन-मेरे लिए असम्भव है। यदि दर्शनार्थ देश-विभाजन न हुआ होता और पंजाब विश्वविद्यालय तथा की. ए. आर्. कालेज लाहौर पुस्तकालयों की पुस्तकें मेरे समक्ष होतीं तो मैं इन कार्य का यथाशक्त कर देता। फिर भी जिन ग्रंथों का मुझे निश्चयपूर्वक स्मरण है, उनका उल्लेख कोश के अंत में धंधसूची में कर दिया है। अस्तु, स्मृत वा चिस्मृत उन सभी पुस्तकों के लेखकों व सम्पादकों का मैं कृतज्ञ हूँ जिनकी सहायता से यह कार्य सम्पन्न हो सका है। मैं विशेषरानन्द बेदिक शोधसंस्थान, होशियारपुर, के संचालक, गुरुवर, आचार्य विश्वम्भुवी शास्त्री, एम. ए., एम. ओ. एल., ओ. डी. ए (फ़ॉ.) के टी. सी. टी. (इटलं), सदस्य संस्कृत आयोग, का हार्दिक आभारी हूँ, जिन्होंने इस कोश का प्रकाशन लिखकर मुझे उपकृत किया है। वस्तुतः उन्हीं के उत्साहमय जीवन से प्रेरणा पाकर मैं इस बृहत्कार्य को एकाकी करने में प्रवृत्त हुआ; अन्यथा मेरी अवस्था तो—

तित्तिपुंढुंस्तरं मोहादुडुपेनास्मि सागरम् । (रघुनश १२)

जगदी सी लौका से समुद्र पार करने के इच्छुक मूढजन की-सी ही थी।

(१०)

१९४७ की मई में जब साम्प्रदायिक दंगों के कारण डी. ए. वी. कालेज, लाहौर, पूर्व वर्षों की अपेक्षा कुछ शीघ्र ही बन्द हो गया तब कालेज के छात्रावास को अपने घर से अधिक सुरक्षित समझ मैं कोश की पांडुलिपि को एक वस्त्र में बन्द कर वहीं छोड़ बैजनाथ (पूर्वी पंजाब) चला आया । बाद में वहाँ जो लुट-मार हुई, उसके वृत्त सुन-सुनकर यही विचार आता था कि मेरा 'योश' भी लुट ही गया होगा । मैं इसकी खोज में, जान जोखिम में डालकर, सितम्बर १९४७ में लाहौर गया परन्तु कुछ पता न चला । दूसरी बार जब दिसम्बर १९४७ में फिर गया तो सौभाग्यवश यह सुरक्षित मिल गया । उन दिनों लाहौर का डी. ए. वी. कालेज और उसका छात्रावास शरणार्थी-कैम्प बना हुआ था । किसी शरणार्थी भाई ने वक्त की तो छोड़ा न था, परन्तु कोश को छेड़ा न था । कैम्प के स्वयंसेवकों ने इसे कोई काम की वस्तु समझ, संभाल रखा था । इस अवसर पर मैं उस अज्ञात शरणार्थी भाई को जिसने इसे ज्यों-का-त्यों रहने दिया और उन अपरिचित स्वयंसेवकों को जिन्होंने इसे कई मास तक संभाले रखा, हार्दिक धन्यवाद देना अपना पवित्र कर्तव्य समझता हूँ ।

कोश के प्रफु, मेरे मित्र श्री हरिवंशलाल शास्त्री यदि परिश्रमपूर्वक न देखते तो इस सूक्ष्म-बृहत्कार्य में बहुत छुटियाँ रह जातीं । दो परिशिष्टों के सम्पादन में मेरे मित्र प्रो० लाजपतराय पदम. ए. ने मेरा हाथ बँटाया है । इन दोनों सज्जनों के प्रति भी मैं कृतज्ञता प्रकट करता हूँ । अन्त में कोश के प्रकाशकों के प्रति भी अपना आभार प्रदर्शित करता हूँ जिन्होंने इसे सुन्दर रूप में ओढ़े ही समय में प्रकाशित कर दिया है ।

मनुष्य को अपनी तथा अपनी कृतियों की छुटियाँ स्वभावतः ही कम दिखाई देती हैं । इसी नियम के अनुसार मैं भी प्रस्तुत पुस्तक की न्यूनताओं और आन्तियों से अंशतः ही परिचित हूँ । अतः सब ज्ञाताज्ञात भूलों के लिए क्षमा-याचना करता हुआ मैं विद्वद्वन्द से निवेदन करता हूँ कि वे ज्युगकवि की निम्नांकित सूक्ति—

दोषाक्षिरस्य गृह्णन्तु गुणमस्या मनीषिणः ।

पांसूनपास्य मञ्जयां मकरन्दमित्रालयः ॥

के अनुसार मिलिन्दवत् अरविन्द के मकरन्द का पान और पराग का परिस्थाग कर मुझे मेरी छुटियों से परिचित करायें तथा ऐसे अमूल्य सुझाव भेजें जिनसे कोश का आगामी संस्करण अधिक निर्दोष और उपयोगी हो सके । प्रभु से प्रार्थना है कि उस देववाणी संस्कृत का भूतल पर अधिकाधिक प्रसार हो जिसकी साहित्य-सुधा का आनन्द आज भारतभूमि के भी इने-गिने ही लोग छे रहे हैं ।

डी-१४१,
शारदानिकेतन,
राजेन्द्र नगर, दिल्ली
दीपावली, सं० २०१४

बिनीत,
रामसरूप

बिद्वत्सम्मर्तिसार

M. ANANTHASAYANAM AYYANGAR

(**SPEAKER LOK SABHA**)

I went through a portion of the Hindi-Sanskrit Dictionary prepared by Prof. Ram Saroop, Prof. of Hindi and Sanskrit, Hans Raj College, Delhi. The pages have been taken at random from the middle of the book. Almost every word in Hindi in ordinary use and even those that are rarely used has been noticed in this book.

There are many Sanskrit-Hindi Dictionaries, but correspondingly there is practically no Hindi-Sanskrit Dictionary. Sanskrit is the mother of Hindi and all the northern Indian Languages. Any new expressions have to be coined from Sanskrit source. It is therefore necessary that any body who desires to have a proficiency in Hindi should have equally good knowledge of Sanskrit. All Hindi writers and those in regional languages have been great Sanskrit scholars. In fact they did not read regional language by itself at any time. After acquiring proficiency in Sanskrit they automatically and without any special attempt, and with little or no effort, became proficient in their own respective language.

I welcome such a book and I hope and trust that it will be found useful not only by scholars but also by laymen who ought to have a working knowledge of Sanskrit if they want to acquire a good knowledge of Hindi. A Dictionary of this type is worth having in every library.

Prof. VISHVA BANDHU, M. A., M. O. L.

(**Director, V. V. R. Institute, Hoshiarpur.**)

It has given me real satisfaction to find that he has taken pains in this behalf and succeeded in producing a handy work which should be of great help to those who may be learning the somewhat difficult art of translating modern Hindi originals into the ancient language of gods.

Dr. SURYA KANT SHASTRI, D. Litt., D. Phil.

(**Hindu University, Varanasi**)

In my opinion this dictionary will prove of great help to the students of Hindi and Sanskrit, since a dictionary of this type and size is not available in the market.

(१२)

Dr. N. N. GHOWDIURI, M. A., D. Litt.

(Reader in Sanskrit, University of Delhi.)

I have read with great interest a part of the manuscript copy of your Hindi-Sanskrit dictionary. A book of this type is urgently needed in these days. I congratulate you on this excellent work you have under-taken.

श्री एन. बी. गाडगिल, एम. पी.

श्री रामसरूप शास्त्री द्वारा सम्पादित 'हिन्दी-संस्कृत-कोश' के कुछ मुद्रित पृष्ठ पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ। मूल दृष्टि से उन पन्नों को देखकर इस बात से प्रसन्नता हुई कि प्रियवर शास्त्रीजी ने इतना सुन्दर, सुव्यवस्थित और उपयुक्त कार्य किया है कि इस कार्य से वे समाज के कण से उल्लेख ही नहीं हुए, वरन् उन्होंने समाज को उपकृत भी किया है।

लेखक महोदय को इस महत्त्वपूर्ण स्तुत्य कार्य के लिए बधाई देता हूँ।

केदारनाथ शर्मा, सारस्वत

सम्पादक—'संस्कृतरत्नाकर'

मंत्री, अखिलभारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन

श्रीरामसरूप शास्त्री एम. ए., एम. आर्. एल., विद्यावाचस्पति, प्रोफेसर, हंसराज कालेज, दिल्ली द्वारा सम्पादित हिन्दी-संस्कृत कोश का कुछ भाग देखने का अवसर मिला है। मैं जो कुछ देख सका उसके आधार पर कह सकता हूँ कि यह हम युग के अनुकूल और आवश्यक प्रयत्न है।

इस समय ऐसे प्रामाणिक कोश का अभाव जबकि देश का ध्यान संरक्षित की ओर आकृष्ट हो रहा हो, बहुत खटक रहा था। मुझे विश्वास है—इस अभाव को बहुत कुछ पूर्णतः इस कोश से ही सजेगी। सम्पादक महोदय का यह प्रयत्न सर्वथा स्तुत्य और श्रेष्ठ है। इसके अधिकाधिक प्रयोग और प्रचार की कामना करता हूँ।

महामहोपाध्याय श्री पं० परमेश्वरानन्द शास्त्री, विद्याभास्कर

(ओरिएण्टल कालेज, जालंधर; पूर्व प्रिंसिपल, सनातनधर्म संस्कृत कालेज, लाहौर)

प्रोफेसर श्रीरामसरूप शास्त्री, एम. ए., एम. आर्. एल., विद्यावाचस्पति विरचित 'हिन्दी-संस्कृत कोश' को देखकर मेरा हृदय अत्यन्त प्रसन्न हुआ। मूल हिन्दी-शब्दों के संस्कृत में पर्याय देने वाला कोश मेरी दृष्टि में यह पहला ही है। ऐसे कोश की बहुत समय से बड़ा भारी आवश्यकता समझी जा रही थी। संस्कृत के विद्वान् अपने छात्रों को अनुवाद की शिक्षा देते हुए बड़ी कठिनाई अनुभव करते थे और करते हैं। संस्कृत भाषा का व्यवहार में प्रचलन न होने के कारण हिन्दी शब्दों के संस्कृत पर्याय ढूँढ़ने में उन्हें बड़ी मुश्किल पड़ी है। इस मुश्किल को विद्यावाचस्पति श्रीरामसरूप शास्त्रीजी ने हिन्दी-संस्कृत कोश की रचना करके बहुत अंशों में हल कर दिया है। इस उपकार के लिए संस्कृत के अध्यापक और उनके शिष्य प्रोफेसर महोदय के अत्यन्त अनारी होंगे, ऐसी आशा है।

हिन्दी माध्यम के द्वारा संस्कृत शिक्षार्थियों के लिये तथा हिन्दी मार्ग में अग्रसर होने के लिये संस्कृत के विद्वानों के लिए भी—यह कोश अत्यन्त उपयोगी है। स्कूल कालेजों में, संस्कृत

(१३)

पाठशालाओं में संस्कृत पढ़ने वाले छात्रों के लिए हिन्दी से संस्कृत में अनुवाद करने में यह शोध अत्यन्त सहायक सिद्ध होगा—ऐसी सुझे पूर्ण आशा है ।

इस कोश में केवल हिन्दी की ही नहीं, अरिष्ट संस्कृत की भी श्राद्धि की है, अतः दोनों भाषाओं के प्रेमियों की ओर से विद्वान् ग्रन्थकार धन्यवाद के पात्र हैं ।

प्रो० इन्द्र विद्यावाचस्पति एम. पी.

(चन्द्रलोक, जवाहरनगर, दिल्ली)

हंसराज कालेज, दिल्ली के प्रो. रामसरूप एम. ए., एम. ओ. एल. ने अपने आदर्श हिन्दी-संस्कृत कोश का कुछ भाग सुझे दिव्याया है । कोश में हिन्दी के तीस हजार शब्दों के व्युत्पत्ति-सहित संस्कृत-पर्याय दिये गये हैं । अभी तक ऐसे कोश का अभाव था । प्रो. रामसरूपजी का यह प्रयत्न उस अभाव की पूर्ति कर देगा । इसमें सुन्दरेह नहीं कि इतनी शान्ध धारों से यह कोश अत्यन्त उपयोगी होगा ।

श्री० दा० सातवलेकर

(अध्यक्ष, स्वराध्याय मंडल, पारडी जि० सुरत)

आपका यह कोश संस्कृत सीढ़ने वालों के लिए तथा संस्कृत-शिक्षकों के लिए अत्यन्त उपयोगी होगा, इसमें सुन्दरेह नहीं है ।

पं० ब्रह्मदत्त जिजामु

(भोतीशाल, वाराणसी)

'यह ग्रन्थ संस्कृत के छात्रों तथा अध्यापकों के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होगा । हिन्दी से संस्कृत बनाने वालों को बहुत लाभ होगा । इस विषय पर आगे काम करने वालों को भी इससे बहुत सहायता मिलेगी । इससे इस विषय में उत्तरोत्तर उन्नति का मार्ग खुलेगा । इस दृष्टि से इस ग्रन्थ की तपादेयता और बहु जानी है ।'

प्रो० चारुदेव शास्त्री

एम. ए., एम. ओ. एल.

(पूर्व प्राध्यापक, डी. ए. वी. कालेज, लाहौर)

प्राध्यापकेन्द्र श्रीरामसरूपशास्त्रिणाः प्राणीतो हिन्दी-संस्कृतकोशो नया केपुचित्स्थलेष्वालोचितः । इदमग्र्यमः प्रगाथ इति प्रथम्यः । महान्तं शब्दमणिः संशुद्धितः । प्रतिहिन्दीशब्दमनेकं संस्कृत-मभिधानन्प्रयत्नम् । तत्रोपन्यासेऽपि प्रसिद्धमग्र्यं विशिष्टानुपूर्वीं समाश्रिता येनैतदुपयोक्तारः परपरतान्त्राब्दाः विहाय पूर्वपूर्वतन्नाम प्रयोष्यन्ते प्रसिद्धिं च नातिकमिष्यन्ति । सर्वस्मिन् भारते व्यवहारमवतीर्णाय हिन्दी-शिक्षः कोषोऽत्यन्तमपेक्षितोऽभूदिति स्थाने प्रयत्नं शास्त्रिवर्येण विदधरेतः ।

(१४)

वामुदेव द्विवेदी शास्त्री

(सार्वभौम संस्कृत प्रचार कार्यालय, वाराणसी)

प्रो० रामरूप शास्त्री द्वारा संकलित एवं सम्पादित “आदर्श हिन्दी-संस्कृत कोश” के द्वितीय संस्करण की देखकर हादिक प्रसन्नता हुई। हिन्दी-संस्कृत कोश के क्षेत्र में यही एक ऐसा कोश था जो आकार, शब्दसंख्या एवं उपयोगिता की दृष्टि से सर्वोत्तम था और इसीलिये इसका अभाव बहुत दिनों तक खटक रहा था। सैकड़ों जिज्ञासुओं को तो मैने ही इस कोश की सूचना दी होगी पर जब उन्हें यह माखूम हो जाना था कि यह कोश सम्प्रति उपलब्ध नहीं है तो वे हादिक दुःख प्रकट करते थे और च्वाहते थे कि यह कोश किसी प्रकार उन्हें उपलब्ध हो जाय। आज माननीय शास्त्रीजी ने इसका पुनः सम्पादन तथा चौखम्बा विद्याभवन ने इसका प्रकाशन कर जो असंख्य लोगों की आकांक्षाओं की पूर्ति की है इसके लिये वे दोनों हादिक धन्यवाद के पात्र हैं।

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि हिन्दी-संस्कृत कोश का सम्पादन संस्कृत-हिन्दी कोश के सम्पादन की अपेक्षा एक कठिन कार्य है। कारण कि आज की हिन्दी में अरबी, फारसी एवं अंग्रेजी के भी बहुत से शब्द प्रचलित हो गये हैं। इसके अतिरिक्त देशी तथा लोकभाषाओं के शब्दों की भी संख्या कुछ कम नहीं है। फारसी, भरवी तथा अंग्रेजी के पारिभाषिक शब्दों का एक विशाल भण्डार अलग ही है। इन शब्दों के पर्यायवाची शब्द पुरानी संस्कृत में नहीं मिलते अतः उनके लिये नये संस्कृत शब्दों का निर्माण करना पड़ता है जो साधारण विद्वान से संभव नहीं है।

यही स्थिति उन सभी शब्दकोशों में पाई जाती है जो अंग्रेजी, बँगला, मराठी, गुजराती, तमिल एवं तेलगू आदि भाषाओं से संस्कृत में लिखे गये हैं। मेरे कार्यालय में ऐसे अनेक कोश हैं। इन शब्दकोशों में भी पर्याय संख्या में नये संस्कृत शब्द बनाये गये हैं।

अब कठिनाई यह है कि विभिन्न कोशों में जो नये शब्द बनाये गये हैं उनमें एकरूपता नहीं है। लेखकों ने अपने अपने ज्ञान एवं रुचि के अनुरूप शब्दों का निर्माण किया है। किन्हीं-किन्हीं कोशों में उत्तर एवं दक्षिण भारत की प्रादेशिकता का भी प्रभाव परलक्षित होता है। ऐसी स्थिति में नवीन संस्कृत शब्दों से अन्य भाषाओं के तत्सव शब्दों के नन्द अर्थों का सहज बोध होना या कराना वक्ता एवं श्रोता दोनों के लिये असंभव या कठिन होता है। संस्कृत के आधुनिक लेखकों एवं वक्ताओं के लिये यह एक समस्या है जिसका समाधान होना पान आवश्यक है।

प्रस्तुत कोश में शास्त्रीजी ने उक्त कठिनाइयों के निवारण के लिये भा प्रयास प्रदान किया है जो उनकी भूमिका पढ़ने से अच्छे तरह विदित होता है। चांद कोई संस्था या शब्दनिर्माण-समिति विभिन्न कोशकारों द्वारा त्वरितमित संस्कृत शब्दों के अखिल भारतीय विद्वत्समज की दृष्टि से सर्वसामान्य और सर्वत्र समानरूप से प्रचलित करने की योजना बनाये तो उसकी सफलता में इस कोश से बड़ी सहायता मिल सकती है। परन्तु जब तक इस प्रकार की कोई योजना नहीं बनती, और जिसके बनने की संभावना भी कम ही दीखती है, तब तक इसी कोश की आदर्श कोश माना जा सकता है। इस दृष्टि से इसका “आदर्श हिन्दी-संस्कृत कोश” नाम में सर्वथा यथार्थ मानता हूँ।

संस्कृत का प्रत्येक विद्वान् एवं विद्यार्थी इस कोश की एक प्रति अपने पास रखकर और इसमें सहायता लेकर संस्कृत बोलने एवं लिखने में अबाधगति में अगे बढ़ सकता है, इसमें कोई सन्देह नहीं।

संकेत-सूची

(क) पदपरिचयसंबंधी संकेत

- अ०, अव्य. — अव्यय ।
 उप. — उपसर्ग ।
 क्रि. अ. — क्रिया, अकर्मक ।
 क्रि. प्रे. — क्रिया, प्रेरणार्थक ।
 क्रि. वि. — क्रिया, विशेषण ।
 क्रि. सं. — क्रिया, संयुक्त ।
 क्रि. स. — क्रिया, सकर्मक ।
 प्रत्य. — प्रत्यय ।
 मु. — मुहावरा ।
 वि. — विशेषण ।
 सं. पूं. — संज्ञा पुल्लिंग ।
 संबो. — संबोधन ।
 सं. स्त्री. — संज्ञा स्त्रीलिंग ।
 सर्व. — सर्वनाम ।

(ख) स्रोतसंबंधी संकेत

- (अं. = अँग्रेजी)
 (अ. = अरबी)
 (अद्. = अकरणात्मक)
 (अप. = अपभ्रंश)
 (अल्प. = अल्पार्थक)
 (गु. = गुजराती)
 (द्रा. = द्रामी)
 (ता. = तातरी)
 (तु. = तुर्की)
 (देश. = देशीय)
 (पं. = पंजाबी)
 (पा. = पालि)
 (पुर्त. = पुर्तगाली)
 (पु. हिं. = पुरानी हिंदी)
 (पूर्व. = निर्वचन पूर्वक)
 (प्रा. = प्राकृत)
 (फ्रा. = फ्रांसीसी)
 (भां. = भासीसी)
 (बं. = बंगाली)
 (यू. = यूनानी)

(ले. = लेटिन)

(सं. = संस्कृत)

(स्पं. = स्पेनिश)

(हिं. = हिंदी)

(सं. रि. = ब्रह्मचारिण इ.)

(ग) धातुसंबंधी संकेत

(अ. प. मे. = अदादि परस्मैपदी सेट्)

(क. भ. अ. = क्वादि आत्मनेपदी अनिट्)

(चु. उ. वे. = चुरादि उभयपदी वेट्)

(जु. - - = जुहोत्यादि - -)

(त. - - = तनादि - -)

(तु. - - = तुदादि - -)

(दि. - - = दिवादि - -)

(भ्वा. - - = भ्वादि - -)

(रु. - - = रुधादि - -)

(स्वा. - - = स्वादि - -)

(कर्तु. = कर्तृवाच्य)

(कर्म. = कर्मवाच्य)

(ना. धा. = नामधातु)

(प्रे. = प्रेरणार्थक रूप)

(भाव. = भाववाच्य)

(सत्. = सत्तन्त्र रूप)

(घ) शास्त्रीय संकेत

(ज्यो. = ज्योतिषशास्त्र)

(धर्म. = धर्मशास्त्र)

(न्या. = न्यायशास्त्र)

(भौ. = भौतिकशास्त्र)

(योग. = योगशास्त्र)

(र. भौ. = राजनीतिशास्त्र)

(वे. = वैदिकशास्त्र)

(व्या. = व्याकरणशास्त्र)

(संग. = संगतिशास्त्र)

(सां. = सांख्यशास्त्र)

(सा. = साहित्यशास्त्र)

(१६)

(ङ) सामान्य संकेत

- अ(ना)वर्षणम् = अवर्षणम्, अनावर्षणम् ।
 अप्रचरि(लि)त = अप्रचरित, अप्रचरित ।
 अनु, गमनं-करणं-संरणम् = अनुगमनं, अनुकरणं,
 अनुसंरणम् ।
 क्रोडः-र्द्ध-डा = क्रोडः, क्रोडं, क्रोडा ।
 स्पष्टो-निशर्वां कृ = स्पष्टीकृत, विशदीकृत ।
 वि-, लेपनं } विलेपनम्, लेपनम् ।
 वि-, लेपनं }
 रात्र- = समास का अन्तिम पद अपेक्षित है ।
 —परायण = समास का पूर्वपद अपेक्षित है ।
 इ. = इत्यादि ।
 उ. = उदाहरण ।
 एक. = एकैवचनम् ।
 द्वे. = द्वेषिण ।
 द्वि. = द्विपयत् ।
 ष. = षष्ठादयः ।
 बहु. = बहुवचनम् ।
 नि. = मिलानम् ।
 + = योगबिन्दु ।
 = = समानतासूचक ।
 * = स्वरचित शब्द ।

(च) सप्तम परिशिष्ट की संकेत-सूची

- (विंशति) अवदान ।
 (जेन्द) अवस्ता ।
 अश्वघोष (बुद्धचरित)
 उत्तर (काण्ड, रामायण)
 उदयगिरि (चन्द्र तथा रक्तचन्द्र के शिलालेख)
 काण्डिका (पुराण)
 किराण (जुनीन)
 कूर्म (पुराण)
 गरुड (पुराण)
 ज्ञानक (माता)
 त्रिकण्ड (शेष)
 दशकुमार (चरित)

- देवी (पुराण)
 देवीभा(गवत)
 पद्म (पुराण)
 पतिगिनि (अष्टाध्यायी)
 प्रवीथ (चन्द्रोदय)
 वदरी वसाल (यात्रा)
 बृहत्कथा)
 बृहत्सं(हिता)
 ब्रह्म (पुराण)
 ब्रह्मदे (वर्तपुराण)
 अभाण्ड (पुराण)
 भवभूमि (उत्तररामचरित)
 भविष्य (पुराण)
 भगवत (पुराण)
 मत्स्य (पुराण)
 ननुसं(हितः)
 ननु(गृति)
 महा(भारत)
 (चन्द्रका) महरीली (अभिलेख)
 मेघ(दूत)
 रघु(वंश)
 राजत(रं,िणी)
 रामा(यण)
 ललितविस्तर
 श्लिप (पुराण)
 वराह (पुराण)
 वभन (पुराण)
 विक्रमार्ण (देवचरित)
 विष्णु (पुराण)
 शत (बंधन)
 शिव (पुराण)
 स्कन्द (पुराण)
 स्वयम्भू (पुराण)
 हरिवंश (पुराण)
 (समुद्रगुप्त की) हरिषेण (प्रशस्ति)



संस्कृत-कोषग्रन्थों का उद्भव एवं विकास

संस्कृत-वाङ्मय की अन्य शाखाओं के समान 'कोषविद्या' का भी अपना विशेष महत्त्व है। वैदिक युग से लेकर अद्यावधि कोषग्रन्थों की रचना होते रहना ही इसका ज्वलन्त प्रमाण है। आरम्भ में कोषग्रन्थों का निर्माण विशेष उद्देश्य को अमिश्रित कर प्रारम्भ हुआ था। यह उद्देश्य भी व्यावहारिक था। इस कारण शब्दों के समाकलन की इस विधा में कोषकारों को सफलता मिलती चली आ रही है। जनसाधारण की शब्दज्ञानसम्बन्धी पिपासा को शान्त करने में कोषग्रन्थों ने तुमधुर स्रोतस्त्रिती के समान अपनी सार्थकता सिद्ध की है। कोषकारों ने 'शब्द' की इयत्ता निर्धारित करने के अनेक प्रयत्न किये किन्तु वे इसका अन्त न पासके। 'शब्द' 'वस्तुतः नित्य है। नित्य शब्द का अन्त कहाँ? 'शब्द' की व्यापकता का एक मात्र कारण उसके विस्तृत प्रयोग का होना है। इस सम्बन्ध में महाभाष्यकार पतञ्जलि ने इस ओर संकेत भी किया है कि शब्दों के प्रयोग का क्षेत्र बहुत विस्तृत है। सात द्वीपों से युक्त विशाल भूखण्ड में भारतीय वाङ्मय का विस्तार कुछ कम नहीं है। वेदों की ही कई शाखाएँ हैं। इनमें से यजुर्वेद की १०१ शाखाएँ हैं। सामवेद की एक हजार शाखाएँ हैं। ऋग्वेद के इक्कीस प्रकार हैं। अथर्ववेद ती शशाखाओं का है। इसके अतिरिक्त इतिहास, पुराण, वैद्यक इत्यादि सभी विषयों में शब्दों के प्रयोग का ही क्षेत्र है—

“महान् हि शब्दस्य प्रयोगविषयः। सप्तद्वीपा वसुमतो। त्रयो लोकाः। चत्वारो देवाः साङ्गाः सरहस्याः बहुधा विभिन्नाः। एकसप्तमध्वर्युशाखाः, सहस्रवर्मा सामवेदः, एकाविंशतिषा वाह्वृचर्य, नवघास्यवर्णो वेदः, वाको वाक्यम्, इतिहासः, पुराणम्, वैद्यकम्—इत्येतावान् शब्दस्य प्रयोगविषयः” (महाभाष्य पस्पशाह्निक)।

यह जानते हुए भी प्राचीन समय में शब्द की इयत्ता निर्धारित करने का प्रयत्न अवश्य किया गया होगा। इसी को पतञ्जलि ने इस अर्थवाद-गर्भित वाक्य के द्वारा यह सिद्ध कर दिखाया है कि शब्द का प्रतिपद-पाठ सम्भव नहीं है। तदनुसार उन्हेंने इस आख्यान की ओर ध्यान आकृष्ट किया कि 'वृहस्पति ने इन्द्र को देवों के एक हजार वर्ष तक प्रत्येक शब्द का उच्चारण कर शब्दशास्त्र पढ़ाया, फिर भी शब्द समाप्त नहीं हुए'। इस प्रसङ्ग में भाष्यकार ने दूसरा आख्यानक प्रस्तुत करते हुए यह बताया है कि जब वृहस्पति-सहस्र ख्यातनामा व्याख्याता, इन्द्र जैसा विश्व शिष्य, देवों के एक सहस्र वर्ष की अवधि अध्ययन-काल नियत किया गया तो भी शब्दों का अन्त ज्ञात नहीं हुआ। फिर आजकल की बात ही क्या? जो सब तरह निरोगी रहकर चिरायु होता है,

(१८)

अधिक से अधिक वह सौ वर्ष तक जीता है। इसके अतिरिक्त आगे निरूपण करते हुए उन्होंने कहा कि विद्या की सार्यकता चार प्रकार से होती है— (१) गुरुमुख से समझ लेते समय, (२) मनन के समय, (३) दूसरों को सिखाते समय और (४) व्यवहार करने में—“एवं हि श्रूयते। बृहस्पति-रिन्द्राय दिव्यं वर्षसहस्रं प्रतिपदोक्तानां शब्दानां शब्दपारायणं प्रोवाच, नाम्नं जगाम। बृहस्पतिश्च प्रवक्ता, इन्द्रश्च अध्येता, दिव्यं वर्षसहस्रमध्ययनकालः, न च अन्तं जगाम। किं पुनरद्यत्वे ? यः सर्वथा चिरं जीवति स वर्षशतं जीवति। चतुर्भिश्च प्रकारैर्विद्योषयुक्ता भवति आगमकालेन, स्वाध्यायकालेन, प्रथचन-कालेन, व्यवहारकालेनेति।” अतः प्रायोगिक शब्दों के समाकलन को व्यावहारिक दृष्टि से उपयोगी समझ कोषकारों ने उन्हें ग्रन्थों के रूप में प्रस्तुत कर संस्कृत बाह्यमय के इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ा है। इस प्रकार शब्दों के संग्रह करने में ‘कोष’ शब्द रूढ़ हो गया है।

वैदिक काल में कोष ‘निघण्टु’ के नाम से विख्यात रहे। ‘निघण्टु’ से अभिप्राय उन वैदिक शब्दों के संग्रह से है, जिनमें संज्ञाशब्दों के साथ क्रिया-पदों को भी एकत्र कर लिया गया था। निघण्टु का उद्देश्य वैदिक शब्दों के अर्थ समझने में सहायता पहुँचाना भी रहा है। इसके विपरीत लौकिक ‘कोषों’ में अधिकतर संज्ञाशब्दों का समाकलन हुआ है। नामसंग्रह के अनन्तर परिशिष्ट-रूप में अवयवों के अर्थ का संग्रह भी इन कोषग्रन्थों में उपलब्ध होता है। लौकिक कोष पद्यमय होने के कारण कविजनों के परिश्रम को कम करने में उपयोगी सिद्ध हुए हैं। फलतः कण्ठस्थ करने में सरलता होने के कारण इनका प्रचार होने में बड़ी सुविधा हुई है। अतः विद्यार्थियों को काव्यशिक्षा देने के साथ ही ‘कोष’ कण्ठस्थ कराने की परिपाटी रही है। अर्थ की दृष्टि से प्राचीन काल में कोषों का विभाजन दो प्रकार से किया गया था—(१) समानार्थक कोष तथा (२) नानार्थक कोष। लिङ्ग-निर्धारण करने की समस्या को कोषकारों ने बड़ी बुद्धिमत्ता से सुलझाया है। इसके लिये उन्होंने कई विधियाँ अपनाई हैं। कहीं-कहीं तो शब्दों के प्रथमान्त प्रयोग से उनका लिङ्ग-निर्देश किया है और कहीं ‘पुं’ ‘स्त्री’ ‘बलीब’ आदि लिङ्गद्वैतक शब्दों का प्रयोग कर इस विशिष्टता का परिचय दिया है। शब्दचयन के भी अनेक सिद्धान्त हैं। समानार्थक कोषों में विषयों के अनुसार शब्दों का संकलन कर पूरे कोषग्रन्थ को अनेक वर्णों में विभक्त कर दिया है। नानार्थ-कोषों में अन्तिम वर्णों के अनुसार शब्दों का संकलन कर कान्त, खान्त, गान्त आदि शब्दों का चयन किया गया है। कहीं आदिम वर्णों को भी महत्त्व दिया गया है। कहीं आदिम तथा अन्तिम दोनों वर्णों को दृष्टि में रखकर शब्द-चयन की प्रक्रिया सम्पन्न की गई है।

(१९)

निघण्टु—यह 'निघण्टु' ग्रन्थ यास्क से प्राचीन है, क्योंकि इसी के आधार पर यास्क ने 'निघन्तु' लिखा है। महाभारत से अनुसार प्रजापति कश्यप इस निघण्टु के रचयिता हैं। इसमें पाँच अध्याय हैं। आदि के तीन अध्यायों में 'पृथ्वी' आदि के दोषक समानार्थ शब्दों का संकलन है। इस प्रकरण को 'नैघण्टु-काण्ड' कहा जाता है। चतुर्थ अध्याय में अव्युत्पन्न तथा गूढार्थक शब्दों का चयन किया गया है। इसे 'नैघण्टु-काण्ड' की संज्ञा दी गई है। पाँचवें अध्याय (देवतकाण्ड) में भिन्न-भिन्न देवताओं के रूप तथा स्थान का विस्तृत निरूपण है। 'निघण्टु' के प्रमुख व्याख्याता देवराज यजुवा हैं। ये सायण से प्राचीन अवश्य हैं, क्योंकि सायण के ऋग्वेद-भाष्य में एक स्थान पर निघण्टुभाष्य के वचनों का उद्धरण मिलता है। देवराज ने अपने भाष्य में क्षीरस्वामी को अपने पूर्ववर्ती भाष्यकार के रूप में स्मरण किया है। क्षीरस्वामी 'अमरकोष' के सुप्रसिद्ध टीकाकार हैं। अतः देवराज यजुवा का समय १२ वीं तथा १३ वीं शताब्दी के मध्य प्रमाणित होता है।

वैदिक कोष—प्राचीन परिभाषी के अनुसार भास्कर राय ने वैदिक-कोष की रचना श्रौतिक कोषों के ढंग पर की है। इस कोष के संस्कृत शब्द तो वे ही हैं जो निघण्टु में हैं, किन्तु उन शब्दों का अर्थ 'अनृष्टुप् छन्द' द्वारा अभिव्यक्त किया गया है। इस कोष का रचना-काल १७७५ ई० है। भास्कर राय ने अपनी गुह्यवर्ती टीका में अनेक शब्दों पर नागेश की सप्तशती-टीका का खण्डन किया है। अतः ये नागेश के समकालीन अथवा उनसे कुछ ही समय के अनन्तर हुए होंगे।

पुरुषोत्तम देव ने अपने लौकिक-संस्कृत के पुराने कोषकारों का उल्लेख 'हारावली' कोष के अन्त में वाचस्पति, व्याडि तथा विक्रमादित्य का नाम लेकर किया है। तदनन्तर केशव ने काश्यप, व्याडि, वाचस्पति, भागुरि, अमर, मञ्जल, साहस्रान्त, महेश तथा हेमचन्द्र का नामोल्लेख किया है। इनके अतिरिक्त किसी हस्तलेख के आधार पर १८ प्रसिद्ध कोषों के विषय में परिज्ञान होता है। इस प्रकार अमर-कोष को केन्द्रबिन्दु मानकर संस्कृत वाङ्मय के कोषग्रन्थों को आचार्य पं० उल्लेख उपध्याय जी ने तीन कालों में विभक्त किया है— (१) अमरपूर्व-काल, (२) अमरकाल तथा (३) अमरोत्तर-काल।

अमर-पूर्व-कोषकार—अमर-पूर्व कोषकारों में व्याडि सर्वप्राचीन कोषकार हैं। व्याडि के कोषग्रन्थ का नाम 'उत्पलिनी' था। पुरुषोत्तम ने अपने हारावली कोष के अन्त में इसका उल्लेख किया है। इस कोष में समानार्थ शब्दों की प्रधानता थी। इन्होंने व्युत्पत्ति के द्वारा अर्थानुसन्धान की प्रक्रिया का दिग्दर्शन कराया है। जैसे 'निघण्टु' की व्याख्या इन्होंने इस तरह की है—“अर्थान् निघण्टुग्रन्थस्मात् निघण्टुः परिवर्तितः”। ये व्याडि कदाचित् पाणिनि के समकालीन सुप्रसिद्ध 'संग्रह' नामक ग्रन्थ के कर्ता ही हों।

(२०)

कात्य—इनके कोषग्रन्थ का नाम 'नाममाला' था। क्षीरस्वामी, हेमचन्द्र आदि ने इनका उल्लेख किया है। इनके कोष की विशेषता यह थी कि इन्होंने कहीं-कहीं अर्थ का वर्णनात्मक परिचय भी दिया है—“क्षुद्रच्छिद्रसमुपेतं चालनं तितउ पुमान्”। इनका निश्चित समय ज्ञात नहीं हो सका।

भागुरि—यह त्रिकाण्ड-कोष के रचयिता हैं। अमरसिंह ने 'त्रिकाण्ड' की प्रेरणा इन्हीं से प्राप्त की होगी। इन्होंने केवल समानार्थ शब्दों का ही उल्लेख किया है। व्याकरण के प्रसिद्ध ग्रन्थों में भागुरि के मत का अनेक स्थलों पर उल्लेख मिलता है। विशेषतः हलन्त वाच्, निष्, दिश् आदि शब्दों को आकारान्त बनाने में इनके नाम का उल्लेख मिलता है “वष्टि भागुरिररलोपमवाप्योरुपसर्गयोः। आपं चैव हलन्तानां यथा वाचा निशा दिशा”। सायण आदि वेदभाष्य-कर्ताओं ने इनके कोष-ग्रन्थ से पर्याप्त सहायता ली है।

रत्नमाला के अज्ञात-नामा लेखक का उल्लेख सर्वानन्द ने अपनी “अमरकोष” की टीका में किया है। तदनुसार इस कोष के परिच्छेदों का वर्गीकरण लिङ्ग के आधार पर था। इसमें समानार्थ-शब्दों का ध्येय था।

अमरदत्त—इन्होंने 'अमरमाला' नामक कोषग्रन्थ की रचना की। हलायधु ने अपने कोषग्रन्थ का उपजीव्य 'अमरमाला' को माना है। सर्वानन्द ने इस कोष से अनेक उद्धरण अपनी अमर-टीका में दिये हैं। इनका समय भी अनिश्चित ही है।

वाचस्पति—यह सुप्रसिद्ध 'शब्दार्णव' कोष के रचयिता थे। यह 'अनुष्टुप्-छन्द' में विरचित विशाल कोष था। इसकी विशेषता यह थी कि एक शब्द के विभिन्न रूपों का तथा वर्तनी का भी इसमें उल्लेख है। हेमचन्द्र ने इनके कोष से पर्याप्त सहायता ली है। इनका वास्तविक समय भी अज्ञात है।

धन्यन्तरि—यह वैद्यक-निघण्टु के रचयिता हैं। वैद्यक निघण्टुओं में यह कोष सब से प्राचीन है। क्षीरस्वामी ने अपनी अमर-टीका में यह उल्लेख किया है कि अमरसिंह के 'अमरकोष' के वनोषधि-वर्ग का उपजीव्य यही कोष रहा है। विक्रम के नवरत्नों में इनका भी उल्लेख है। उस दृष्टि से तो यह भी अधिक प्राचीन है।

महाक्षपणक—इनके नाम से दो कोष-ग्रन्थ हस्तग्रन्थों में उल्लिखित मिलते हैं। ये दोनों अनेकार्थ-ध्वनिमञ्जरी तथा अनेकार्थमञ्जरी नाम से प्रसिद्ध हैं। ये दोनों ग्रन्थ एक ही होंगे, क्योंकि अधिकतर टीकाकर्ताओं ने 'अनेकार्थमञ्जरी' नाम का ही उल्लेख किया है। 'रघुवंश' की टीका में वल्लभदेव ने 'अनेकार्थमञ्जरी' का अवतरण उद्धृत किया है। महाक्षपणक काश्मीरी थे। इनके समय का भी कोई निर्णय नहीं हो सका है। यदि यह भी विक्रम के नवरत्नों में से एक हों तो विक्रमादित्य अथवा चन्द्रगुप्त द्वितीय के राज्यकाल के आसपास इनकी स्थिति के विषय में अनुमान किया जा सकता है।

(२१)

अमरसिंह—सुप्रसिद्ध “नामलिङ्गानुशासन” कोष के रचयिता अमरसिंह की ख्याति कापकर्तु के रूप में सबसे अधिक है। इनके नाम से ही यह ग्रन्थ अमरकोष प्रसिद्ध हो गया। इनसे पूर्व प्राचीन कोषकारों ने दो प्रकार की शैलियाँ अपनायी थीं। कतिपय कोष केवल नामों का ही निर्वेश करते थे और कुछ कोष लिङ्गों के ही विवेचन को अपना मुख्य विषय मानते थे। अमरसिंह ने दोनों का समन्वय कर अपने कोष को सर्वाङ्गपूर्ण बनाया। तीन काण्डों में विभक्त कर इस ग्रन्थ को ‘त्रिकाण्ड’ संज्ञा भी दी गई। इसका उपविभाग ‘वर्गों’ के नाम से किया गया है। ‘अमरकोष’ पद्यबद्ध रचना है। ‘अनुष्टुप्’ छन्द के १५३३ श्लोकों में यह रचना सम्पूर्ण हुई है। ग्रन्थ का छोटा भाग नानार्थ के वर्णन में है। शेष भाग में समानार्थ शब्दों का निरूपण किया गया है। समानार्थ-भाग में एक विषय के वाचक नामों का एकत्र संकलन है। नानार्थ-खण्ड में अन्तिम वर्ण के अनुसार पदों का संग्रह है। अध्ययों का वर्णन एक स्वतन्त्र वर्ग में किया गया है तथा ग्रन्थ के अन्त में लिङ्गों के साधक-नियमों का उल्लेख किया गया है।

अमरसिंह के समय का निर्णय भी एक समस्या बना हुआ है। इतना तो अवश्य निश्चय है कि यह ग्रन्थ छठी शताब्दी से पहले ही रचा गया था। गुणरात द्वारा चीनी भाषा में इसका अनुवाद किया जाना उस समय की पश्चिम (अन्तिम) अवधि है। इसकी लोकप्रसिद्धि का सबसे अधिक प्रमाण यह है कि इस पर लगभग ४० टीकायें लिखी गई हैं। इनमें क्षीरस्वामी और रामाश्रम (मानुदीक्षित) द्वारा लिखित टीकायें बहुत उपयोगी सिद्ध हुई हैं। इन दोनों में से रामाश्रमी का पदव्युत्पत्ति-प्रदर्शन अधिक सूक्ष्म तथा परिनिष्ठित है। अमरसिंह बौद्ध थे। इनके समय की पूर्वसीमा २२५ ई० के आसपास निर्धारित की जाती है।

कोष ग्रन्थों में अमरकोष का प्रचलन अद्यावधि सर्वाधिक है। संस्कृत के विद्यार्थियों की वास्तव्यवस्था में ही इसे कण्ठस्थ कराया जाता रहा। यह परम्परा अब भी थोड़ी-बहुत दिखाई पड़ती है। सरल भाषा एवम् अनुष्टुप्-छन्द में विरचित होने के कारण इसे हृदयङ्गम करने में कठिनाई नहीं होती। अमरकोष के अतिरिक्त शब्द-ज्ञान का लघुभूत उपाय दूसरा कोई नहीं है। इस प्रकार अमरसिंह अपने पश्चाद्गती कोषकारों के प्रेरणा-स्रोत बन गए। इसी कारण उनकी सरणि को अधिक प्रशस्त बनाने में आगे के कोषकार तत्पर होते हुए दिखाई पड़ते हैं।

अमरसिंह के पश्चाद्गती कोषकार—बाद के कोषकार शब्दों के वैशिष्ट्य का निदर्शन कराने में बड़े सिद्धहस्त प्रतीत होते हैं। उनके प्रकरण सले ही सीमित हों किन्तु उनका क्षेत्र अधिक विस्तृत है। कतिपय कोषकारों ने केवल नानार्थ-कोषग्रन्थों की ही रचना स्वतन्त्र रूप में की है, किन्तु उन्होंने शब्दों की सूक्ष्म

(२२)

समीक्षा कर अपने पाण्डित्य तथा अर्थ-निर्णय करने की दमता का परिचय दिया है। इस दृष्टि से निम्नलिखित विद्वान् प्रसिद्ध कोषकारों के रूप में सर्वमान्य हैं।

शाश्वत—इनका समय भी छठी शताब्दी के आस-पास माना जाता है। इन्होंने स्वयम् अपने विषय में यह लिखा है कि मैंने तीन व्याकरणों को देखा तथा पाँच लिङ्गानुशासनों का अध्ययन किया। केवल इतना ही नहीं किन्तु शिष्ट-प्रयोगों के देखने में भी कोई कमी नहीं होने दी। इनका विरचित कोष अनेकार्थ-समुच्चय है। इस कोष में केवल अनेकार्थ शब्दों का विस्तृत चयन है। शब्दों के चयन में अमरकोष की अपेक्षा अधिक विस्तार तथा प्रीढता दृष्टिगोचर होती है। प्रकृत कोष के अन्तिम पद्य से यह संकेत मिलता है कि ग्रन्थकार ने कवि महाबल तथा बराह से भी इस सम्बन्ध में परामर्श किया था। अनेक विद्वानों के सहयोग से इस कोष की रचना होने के कारण इसमें व्यापकता होना स्वभाविक है।

धनञ्जय—शाश्वत के लगभग दो शताब्दी पश्चात् धनञ्जय ने 'नाममाला' कोष की रचना की। यह कोष व्यवहार में आने वाले लोकप्रचलित संस्कृत शब्दों का उपयोगी कोष है। इसे लघुकोष कहना ही उचित है। इसमें केवल २०० श्लोक हैं। विशेषता इस बात में है कि ग्रन्थकार ने शब्दों की रचना के सुन्दर उपाय बताये हैं। उदाहरणार्थ पृथ्वावाचक शब्दों में 'धर' लगा देने से पर्वतवाची शब्दों का जोड़ होता है (मही + धर, पृथ्वी + धर आदि)। इसी प्रकार मनुष्यवाची शब्दों में 'पति' शब्द जोड़ देने से राजा के नाम (नर + पति, नृ + पति) तथा वृक्षवाची शब्दों में 'चर' शब्द जोड़ने में बन्दर के समानार्थक शब्द बन जाते हैं (द्रुम + चर, वृक्ष + चर आदि)। इन कोष की यही विशेषता है कि शब्दों के चयन में लोकव्यवहार को विशेष महत्त्व दिया गया है। 'अनेकार्थनाममाला' इसका पूरक अङ्ग है। कोषकार के अतिरिक्त धनञ्जय कवि भी हैं। इनका 'द्विसन्धान' काव्य द्वयाश्रय-काव्यों में बड़ा प्रसिद्ध है। इस काव्य में शिल्प पद्यों के द्वारा रामायण और महाभारत के कथानकों का विशद वर्णन प्रस्तुत किया गया है। इनका समय आठवीं शताब्दी का उत्तरार्ध निश्चित-प्रायः है। इस विषय में श्रीसेन स्वामी द्वारा 'षट्खण्डागम' का ध्वज नामक टीका में 'अनेकार्थनाममाला' का उद्धृत एक श्लोक ही पर्याप्त प्रमाण माना जा

१. दृष्टश्लिष्टप्रयोगोऽहं दृष्टव्याकरग्रन्थयः।

अधीतोऽसदुपायः पाठ लिङ्गशास्त्रेषु पन्थसु ॥

—शाश्वतकोष—अमरम का ६ श्लोक

२. महाबलेन कविना बराहिन च धीमता।

सह सम्यक् परामृश्य निमित्तोऽयं प्रयत्नतः ॥

(२३)

सकता है। धवला टीका ८७३ विक्रमी संवत् (- ८१६ ई०) में लिखी गई थी। अतः धनञ्जय ७४०-७९० ई० के मध्य अवश्य रहें होंगे।

पुरुषोत्तमदेव—धनञ्जय के लगभग ४०० वर्षों के उपरान्त पुरुषोत्तमदेव ने तीन कोष-ग्रन्थों की रचना की। ये ग्रन्थ हैं—(१) त्रिकाण्ड-कोष, (२) हाराबली तथा (३) वर्णदेशना। इनमें से प्रथम तो 'अमरकोष' का पूरक ग्रन्थ है। इसका क्रम 'अमरकोष' के समान है। तदनुसार इसमें भी तीन काण्ड तथा पच्चीस वर्ण हैं। इसमें भी लोकव्यवहार में प्रयुक्त शब्दों के साथ ही 'अमरकोष' में अनुपलब्ध शब्दों का भी संग्रह किया गया है। हाराबली में अप्रचलित तथा असामान्य शब्दों का समाकलन किया गया है। २७० पद्यात्मक 'लघुकोष' होने पर भी यह दो भागों में विभक्त है—(क) समानार्थक तथा (ख) नानार्थक। समानार्थक भाग के तीन अंग हैं—पहले में पूरे श्लोक में समानार्थक शब्द हैं, दूसरे में अर्थ-श्लोक में तथा तीसरे में एक चरण में ही। नानार्थक खण्ड की भी यही सर्गण है। वर्तनी अर्थार् शब्दों की शुद्धता बतलाना वर्णदेशना का मुख्य श्रेय है। इस ग्रन्थ की उपादेयता इस कारण सुविदित है। स्वयं ग्रन्थकार ने यह उल्लेख किया है कि गोड-लिपि में मिश्रता होने के फलस्वरूप शब्दों के रूपों में भ्रान्ति होना सम्भव है। इसके निराकरण-हेतु 'वर्णदेशना' की उपयोगिता है। अमरनिह की भाँति पुरुषोत्तमदेव भी बौद्ध थे। इन्होंने सर्वप्रथम बुद्ध को 'मुनीन्द्र' रूप में नमन किया है। इस कार्य में यह अमरनिह से और आगे बढ़े। देवताओं के सम्बन्ध में इन्होंने बुद्ध के बाद बुद्ध के पुत्र राहुल का, अनुज देवदत्त का, मायादेवी का तथा प्रत्येक बुद्ध का क्रमशः उल्लेख किया है। यह वंगाल के शासक राजा लक्ष्मणसेन ११७०-१२०० के समकालिक थे। इन्हीं के आदेश से पुरुषोत्तम देव ने दाणिनि की अष्टाध्यायी पर 'भाषावृत्ति' नामक वृत्ति लिखी। अतः इनका समय बारहवीं शती का उत्तरार्ध मानना युक्तिसंगत है।

ह्लाद्युध—इनकी रचना अभिधान-रत्नमाला के नाम से प्रसिद्ध है। इन कोष में पाँच काण्ड हैं—स्वर्, भूमि, पाताल, सामान्य तथा अनकार्य। इनमें से प्रथम चार काण्डों में समानार्थक शब्दों का वर्णन है तथा अन्तिम काण्ड में नानार्थ एवं अव्ययों का। इन्होंने अमरसिंह की ही अपना आदर्श माना है। यह मान्यखेट के राजा कृष्णराज तृतीय ९५० ई० के समकालिक थे। अतः इनका समय दशम शती का उत्तरार्ध माना गया है।

यादवप्रकाश द्वारा विरचित वैजयन्ती कोष बड़ी महत्त्वपूर्ण रचना है। यह दो खण्डों में विभक्त है—समानार्थ तथा नानार्थ। समानार्थ-खण्ड में पाँच भाग हैं—स्वर्ग, अन्तरिक्ष, भूमि, पाताल तथा सामान्य। नानार्थ-खण्ड में तीन भाग हैं, जिनमें ग्रन्थकार द्वारा शब्दों का चयन अक्षरक्रम से किया गया है।

(२४)

वर्णक्रम से शब्दसंग्रह किया जाना इसकी नवीनता है। दूसरी विशेषता यह है कि इसमें वैदिक शब्दों का संकलन भी किया गया है। रामानुजाचार्य (१०५५-११३७ ई०) के यह गुरु थे। अतः इनका स्थितिकाल ११ वीं शती का उत्तरार्ध निश्चितप्राय है।

महेश्वर—इनका विश्वप्रकाश-कोष नानार्थ-शब्दों का संकलनात्मक ग्रन्थ है। इस कोष में शब्दों का चयन अन्तिम वर्ण के आधार पर किया गया है। रुग्भेद का निर्देश भी इसमें किया गया है। ग्रन्थास्त में अध्यायों का संकलन विद्यमान है। ग्रन्थकार ने स्वयम् अपना परिचय इस कोष के अन्त में दिया है। तदनुसार इस कोष की रचना सन् ११११ ई० में हुई थी। मल्लिनाथ ने इस कोष का उपयोग अपनी टीकाओं में विशेषतया किया है।

अजयपाल—यह बौद्धमत-वलम्बी थे। इनकी रचना नानार्थसंग्रह नाम से प्रसिद्ध है। इस कोष में १७३० शब्द हैं। इस कोष में भी वर्णक्रमानुसार शब्दों का चयन किया गया है। इनके मत का उल्लेख अमरकोष के टीकाकार सर्वानन्द की टीकासर्वस्व (११५९ ई०) में बहुधा किया है। इसके अतिरिक्त वर्धमान ने अपने व्याकरण ग्रन्थ 'गणरत्नमहोदधि' (रचना ११४० ई०) में इनका बहुशः उल्लेख किया है। फलतः यह बारहवीं शती से कुछ पहले हुए होंगे। इन्होंने 'ब' तथा 'व' में अन्तर नहीं माना है। इस कारण इनके बंगदेशीय होने का अनुमान किया जाता है।

मेदिनीकर—इनका ग्रन्थ 'मेदिनीकोष' के नाम से प्रसिद्ध है। यह भी नानार्थ-कोष है। मेदिनीकर ने शब्दों के चयन में दो प्रकार अपनाये हैं—कारादि वर्णक्रम तथा अन्तिम वर्णक्रम। मेदिनी ने विश्वप्रकाश को 'बहुदोष' बतला कर अपना महत्त्व सूचित किया है। मेदिनीकोष शब्दों की संख्या में तथा चयन की व्यवस्था में विश्वप्रकाश की अपेक्षा अधिक विशद एवं व्यवस्थित है। कविशेखराचार्य (लगभग १३०० ई०) के मैथिली भाषा में लिखित वर्णरत्नाकर ग्रन्थ में मेदिनीकर का उल्लेख होने से डा० गोडे ने इन्हें १२००-१२७५ ई० के मध्य माना है।

मल्ल—इन्होंने भी अन्तिम व्यञ्जनों के आधार पर अनेकार्थ-कोष की रचना की है। इसमें १००७ पद्य हैं। इसका विभाजन परिच्छेदों में नहीं किया गया है। इनका स्थितिकाल ११२८-११४९ के मध्य माना गया है। यह काश्मीर के राजा जयसिंह के राज्यकाल में विश्वमान थे। इस कोष में प्रायः काश्मीर के कवियों द्वारा प्रयुक्त शब्दों का चयन किया गया है।

हेमचन्द्र—कोषग्रन्थों के इतिहास में यह सर्वाग्रणी हैं। इन्होंने चार कोषग्रन्थ लिखे हैं—अभिधानचिन्तामणि (समानार्थकोष), अनेकार्थसंग्रह (नानार्थ-

(२५)

कोष), निघण्टुकोष (वंजक) तथा बेजोनाममाला (प्राकृतकोष) । इनमें से अभिधानचिन्तामणि को छह काण्डों में विभक्त किया गया है—देवाधिदेव, देव, मर्त्य, भूमि, नरक तथा सामान्य । यह कोश नानावृत्तों में निबद्ध १५४२ पद्यों में समाप्त हुआ है । इस पर स्वयं ग्रन्थकार ने ही टीका लिखी है । अनेकार्थसंग्रह भी छह काण्डों में विभक्त है । इसमें १८२९ श्लोक हैं । शब्दों का संग्रह दो प्रकार से है—अन्तिम अक्षरों द्वारा तथा आदिम अक्षरों द्वारा । इन्होंने व्यवहार में आने वाले संस्कृत शब्दों को यथावत् संगृहीत कर उनके प्रति निष्ठा व्यक्त की है । यह ग्रन्थ महाराष्ट्र के राजा सोमदेव के ग्रन्थ मानसोल्लास (रचना ११३० ई०) का समकालिक प्रतीत होता है । हेमचन्द्र का प्रभाव अवान्तरकालीन कोषकारों पर विशेष रूप से पड़ा है ।

केशव स्वामी—इनके द्वारा विरचित नानार्णव-संक्षेप नानार्थ शब्दों का सबसे बड़ा कोष है । इसमें लगभग ५८०० श्लोक हैं । अक्षरों की गणना के आधार पर यह कोष भी छह काण्डों में विभक्त है तथा प्रत्येक काण्ड लिङ्ग के अनुसार पाँच भागों में विभक्त है । इसमें वैदिक शब्दों का संकलन भी विद्यमान है । यह ग्रन्थ चोलवंशी नरेश राजराज चोल के आश्रय में रहकर लिखा गया है । इनका समय १२०० ई० के आस पास माना जाता है । इस ग्रन्थ के छह काण्डों में प्रति-काण्ड पाँच अध्याय है । काण्डों का विभाजन एकाक्षर से लेकर षडक्षर तक है । अध्यायों का विभाजन लिङ्ग के अनुसार किया गया है—स्त्रीलिङ्ग, पुलिङ्ग, नपुंसकलिङ्ग, वाच्यलिङ्ग तथा संकीर्णलिङ्ग । प्रत्येक अध्याय में शब्दों का चयन अक्षरक्रम से किया गया है । आधुनिक कोश-ग्रन्थों में यही क्रम स्वीकृत है ।

केशव—अद्याधि ज्ञात समानार्थ कोषों में केशव का कल्पद्रुकोष सबसे विशाल है । इसमें लगभग ४०० श्लोक हैं । इसके तीन स्कन्ध हैं—भूमि, भुवः तथा स्वर्ग । प्रत्येक स्कन्ध प्रकाण्डों में विभक्त है । ग्रन्थकार के अनुसार इसकी रचना १६६० में हुई । इस कोष के शब्दचयन में बड़ी विविधता है । अनेक ज्ञातव्य तथ्यों के संग्रह ने इसे विश्वकोष का रूप दिया है । इसमें समानार्थ शब्दों के साथ प्रयुक्त विषयों का विस्तृत वर्णन भी विद्यमान है ।

शाहजी—यह विश्वविख्यात छत्रपति शिवाजी के भतीजे थे । तंजीर के इतिहास के अनुसार शाहजी का राज्य-समय (१६८४-१७१२ ई०) विद्योन्नति के लिये प्रसिद्ध रहा है । इनकी समा में ४७ विद्वान् रहते थे । इनका विरचित शब्दरत्नसमन्वय-कोष शब्दचयन की दृष्टि से बड़ा महत्त्वपूर्ण है । इस कोष में प्रत्येक वर्ग के भीतर अक्षर-क्रम से शब्दों का विन्यास किया गया है । शब्दों का अवान्तर क्रम भी अकारादि क्रम के अनुसार विद्यमान है । यह विशेषता संस्कृत के बहुत कम कोषों में पाई जाती है । इन्होंने 'क्ष' को अलग वर्ण के रूप में

(२६)

स्वीकार किया हैं। उसमें आरम्भ होने वाले शब्दों को अन्त में रखा है। इस कोश में लगभग ३५०० श्लोक हैं। इस कोश का दूराता नाम राजकोश भी है।

हर्षकीर्ति—इन्होंने समानार्थक शब्दों के शारदीयामिधानमाला नामक कोश की रचना की। यह तीन काण्डों में विभक्त है तथा प्रत्येक काण्ड को भी वर्गों में विभक्त किया गया है। प्रथम काण्ड के तीन वर्ग हैं—देववर्ग, व्योमवर्ग तथा श्रवावर्ग। द्वितीय काण्ड चार वर्गों में विभक्त किया गया है—अङ्गवर्ग, संयोगादिवर्ग, संगीतवर्ग तथा पण्डितवर्ग। तृतीय काण्ड के पांच वर्ग हैं—ग्रह, राज, वैश्य, शूद्र तथा संकीर्ण। पूरे ग्रन्थ में केवल ४३५ श्लोक हैं। कोश के अतिरिक्त हर्षकीर्ति ने अनेक (शास्त्रीय विषयों पर) ग्रन्थों की रचना की। यह जैनधर्मावलम्बी थे। इनके गुरु चन्द्रकीर्ति रहे, जिन्होंने जहाँगीर (१७ वां शती) से विशेष सम्मान प्राप्त किया। इन्होंने एक दूसरे कोश को भी रचना की। उस कोश का नाम है—शब्दानेकार्थ्यं। इण्डिया आफिस लाइब्रेरी में इस पुस्तक का रचनाकाल वि० सं० १६६५ लिखा है। अतः इनका समय सत्रहवीं शती का आरम्भिक चरण मानना युक्तिसंगत प्रतीत होता है।

नवीन ढंग के कोष

विदेशी भाषाओं के सम्पर्क में आने पर कुछ विद्वानों ने विशिष्ट कोशों का संस्कृत में संकलन किया। इस पद्धति का सर्वप्रथम प्रयोग शब्दकल्पद्रुम नामक प्रख्यात कोष में किया गया। इस कोष को सुप्रसिद्ध मनीषी राजा राधाकान्तदेव ने मान्य पण्डितों की सहायता से अनेक खण्डों में १८२२ तथा १८५८ ई० के बीच प्रकाशित किया। इसमें शब्दों का चयन वर्णक्रम से है तथा पुराण, धर्मशास्त्र आदि प्रमाण-ग्रन्थों के उद्धरणों का समावेश होने से इसकी प्रामाणिकता बहुत बढ़ गई है। वस्तुतः यह संस्कृत का विश्वकोष है। इसमें वैदिक शब्दों का प्रायः अभाव है। शब्दों की व्युत्पत्ति देने से इस कोष की उपादेयता बढ़ गई है। प्रस्तुत कोष में रचना-क्रम से आये हुए शास्त्रोपयोगी शब्दों के प्रसङ्ग में प्रमाणों के अतिरिक्त उनकी प्रायोगिक उपयोगिता को भी बतलाया गया है। उन पदार्थों के लक्षण, स्वरूप तथा चित्रादि देकर कोष को सर्वोद्भूतपूर्ण बनाया है। इन सब विषयों का समावेश सात काण्डों में किया गया है। राजा राधाकान्तदेव ने कोष के आरम्भ में 'मुखबन्धन' (भूमिका) लिखते हुए प्रसङ्गवश यह सूचित किया है कि लौकिक कोशों का आदिम स्वरूप 'अभि-पुराण' में बणित कोष-प्रकरण है। इस प्रकरण का क्रम इस प्रकार है—स्वर्ग-पातालादिवर्ग, अध्ययवर्ग, नानार्थवर्ग, भूवर्ग, पुर-वर्ग, अग्नि-वर्ग, वनोपधिवर्ग, मिहादिवर्ग, मनुष्यवर्ग, ब्रह्मवर्ग, क्षत्रियवर्ग, वैश्यवर्ग तथा शूद्रवर्ग। इसके अतिरिक्त शेष-भाग में सामान्य नामलिङ्गों का वर्णन है। राधाकान्त देव के

(२७)

अनुसार अमरकोषकार ने अधिकतर अग्निपुराणोक्तक्रम ही अपनाया है। थोड़ा-बहुत परिवर्तन कर 'अमरकोष' की पूर्ति की है। जटाधर ने भी अमरकोष का अनुसरण किया है। शब्दकल्पद्रुम में २९ कोषों का उपयोग किया गया है।

शब्दकल्पद्रुम के ढंग पर आगे चलकर दो कोष और बनाये गये। इनमें प्रथम शब्दार्थचिन्तामणि तो उतना विशाल नहीं है। उसमें केवल चार भाग हैं। उसकी रचयिता सुखानन्दनाथ रहे। कोष की रचना १८६४-१८८५ तक हुई। दूसरा कोष वाचस्पत्यम् बड़ा विशाल है। सर्वप्रथम यह कलकत्ता से २० भागों में प्रकाशित हुआ (१८७३-१८८४ ई०)। इसके संकलनकर्ता तारानाथ तर्कवाचस्पति थे। इसमें वैदिक शब्दों का भी समावेश है, किन्तु उनकी व्युत्पत्ति अधिकतर कल्पनाप्रसूत है।

इसी समय राथ तथा बोथलिक नामक जर्मन विद्वानों द्वारा महान् संस्कृत कोष को प्रणयन हुआ, जिसमें वैदिक शब्दों का भी पूर्ण समावेश है। इसकी रचना भाषावैज्ञानिक रीति पर की गई है। जर्मन विद्वानों ने अनेक पण्डितों की सहायता से शब्दों के प्रयोगस्थलों का भी निर्देश किया है। इसके साथ ही शब्दों के अर्थविकास को अद्भुत करने का भी इलाध्य प्रयाप किया है। उस समय तक प्रकाशित तथा अप्रकाशित समस्त संस्कृत ग्रन्थों का विधिवत् अनुशीलन कर इस विशाल कोष की रचना की गई है। आचार्य बलदेव उपाध्याय के अनुसार डा० राथ ने वैदिक शब्दों का तथा डा० बोथलिक ने वैदिकेतर शब्दों का विवरण भाषाशास्त्रीय पद्धति पर प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है। डा० बोथलिक ने इसका एक संक्षिप्त संस्करण भी जर्मन भाषा में प्रकाशित किया था।

इसी क्रम में डा० मोनियर विलियम्स ने एक संस्कृत-अंग्रेजी कोष की रचना की। इनका परिश्रम इलाघनीय है। शब्दों के चयन तथा अर्थनिर्देश में बड़ा परिश्रम किया गया है। केवल कमी इस बात की है कि प्रयोगस्थलों का निर्देश नहीं किया गया है। इस कोष की रचना उपर्युक्त जर्मन कोषों के आधार पर हुई है। यह कोष समानार्थक शब्दों के सम्बन्ध में बड़ा प्रामाणिक माना जाता है। इसका दूसरा स्वरूप अंग्रेजी से संस्कृत में भी है।

इस प्रकार के कोषों की रचना में आगे चलकर भारतीय विद्वान् भी अग्रसर हुए, जिनमें वामन सदाशिव आष्टे का नाम विशेषतया उल्लेखनीय है। इन्होंने भी संस्कृत-अंग्रेजी तथा अंग्रेजी-संस्कृत कोषों की रचना की। यह कोष विद्वानों तथा छात्रों के लिये समान रूप से उपकारक है। इस कोष में वर्णक्रमानुसार शब्दों का चयन किया गया है। प्रयोगस्थलों के निर्देश में पुराण तथा काव्यादि के उद्धरणों का उपयोग किया गया है। शास्त्रीय परिभाषाओं, छन्दों, प्राचीन

(२८)

भौगोलिक एवं ऐतिहासिक स्थलों का विवेचन भी यथास्थान किया गया है। हाल में इसका नवीन संस्करण तीन खण्डों में पुणे से प्रकाशित हुआ है। इसके अतिरिक्त छात्रोपयोगी संस्कृत-हिन्दी लघु संस्करण भी प्रकाशित हुआ है। नवीन संस्करण में शब्दों के चयन में सम्पादकों ने वृद्धि की है।

शब्दपरायण की प्रक्रिया को अभिनव रूप देने वालों में महामहोपाध्याय पण्डित रामावतार शर्मा प्रमुख रहे हैं। उन्होंने एक विशाल कोष की रचना की। इस कोष का नाम है—वाङ्मयार्णव। शर्माजी (१८७७-१९२९ ई०) ने इस कोष का प्रारम्भ १९११ ई० में किया। जीवन भर वे इसमें परिवर्तन-परिवर्धन करते रहे। आचार्य बलदेव उपाध्यायजी के अनुसार यह कोष नामलिङ्गानुशासन की परम्परा का सार्वभौम ग्रन्थ है। यह नानार्थक कोष है। इसमें शब्दों का चयन वैज्ञानिक वर्णक्रमानुसार किया गया है^१। वैदिक तथा लौकिक दोनों प्रकार के शब्दों का इसमें समावेश है। इस कोष में प्रत्येक शब्द की व्युत्पत्ति के साथ उसके प्रयोगस्थलों का भी समुचित निर्देश किया गया है। इसमें २०,००० शब्द उपन्यस्त हैं। साथ ही इस कोष की रचना पद्यमयी है तथा ६७९६ अनुष्ठानों में समाप्त हुआ है। ग्रन्थ के आरम्भ में १६ पद्यों का उपक्रम है एवम् अन्त में ६ श्लोकों में समापन किया गया है। ग्रन्थकार के निधन के ३८ वर्षों के सुदीर्घ काल के पश्चात् सन् १९६७ ई० में ज्ञानमण्डल प्रकाशन द्वारा यह प्रकाशित किया गया है।

वर्तमान काल की कोष निर्माण प्रवृत्ति :

जर्मन-संस्कृत कोष के प्रकाशन के लगभग एक शतक के बाद नवीन वैदिक कोष की आवश्यकता प्रतीत होने पर होशियारपुरस्थ विश्वेश्वरानन्द वैदिक संस्थान से अनेक विद्वानों के सहयोग से एक बृहद् वैदिक कोष का प्रकाशन हुआ है। इस कोष ने वैदिक संहिताओं के सम्बन्ध में ऋचाओं के सन्दर्भ की समस्या हल कर दी है। यद्यपि इसे शब्दपरायण की दृष्टि से कोष के अन्तर्गत नहीं रखा जा सकता है तथापि इसमें वैदिक शब्दों की सूची विद्यमान होने से वैदिक मूल-शब्दों का परिचय सुलभ हो जाता है। इसके १६ खण्ड प्रकाशित हुए हैं। इसके

१. वर्णानुक्रमविन्यस्तलोकवैदोभयोद्धृतैः।

पचवर्द्धैः सपर्यायैर्नानार्थैर्दत्तो महान् ॥

निशेषशस्त्रयुर्वेदप्रभृतीनां पदशुद्धः।

सोपयुक्तोदाहृतिभिष्टिप्पणैः सभलकृतः ॥

सचित्रः प्रचुरावाप्यवैज्ञानिकपदोच्चयः।

परिशिष्टैश्च बहुभिः कोष एष परिष्कृतः ॥

(उपक्रम श्लोक ७,८,९)

(२६)

अतिरिक्त “संस्कृत का वृहत्तम कोष” प्रकाशन करने की योजना डेक्कन कालेज, पुणे के शोध-विभाग के निदेशक सुप्रसिद्ध विद्वान् डा० एस० एम० कात्रे ने भी प्रस्तुत की है। उनके साथ अनेक विज्ञ सहयोगी भी इस कार्य में संलग्न हैं। अब तक इस कोश के ३ खण्ड प्रकाशित हुए हैं। इसके समय भाग प्रकाशित होने पर कोश-साहित्य का क्षेत्र अधिक विस्तृत हो जायगा। इसकी विशेषता यह है कि शब्दों का अर्थ देने में भाषा-वैज्ञानिक पद्धति का आश्रय लिया जा रहा है तथा यह प्रयत्न किया जा रहा है कि अधिकाधिक प्रचलित शब्दों का विधिवत् समाकलन हो जाय।

शब्दराशि को समाकलित करने में विद्वानों की प्रवृत्ति आज भी देखी जाती है। इस प्रवृत्ति में शब्दों का प्रयोग एवं प्रचलन ही मुख्य कारण है। शब्दों के प्रचलन एवं प्रयोग होने में देश-काल की परिस्थिति मुख्य रूप से साधक होती है। अतः कोष-रचना की प्रक्रिया बराबर चलती रहती है। इसके फलस्वरूप बाराणसी से श्रीगोपालचन्द्र वेदान्तब्राह्मणी ने भी बृहत् संस्कृतकोष के प्रकाशन की योजना बनाई है। उसका एक खण्ड प्रकाशित हुआ है। इसके सम्पूर्ण प्रकाशित होने पर हिन्दी-जगत् को संस्कृत-वाङ्मय में अवगाहन करने के लिए अच्छा अवसर मिलेगा। वर्तमान समय के कोषकारों में सुप्रसिद्ध विद्वान् डा० सूर्यकान्त का योगदान भी प्रशंसनीय है। उन्होंने संस्कृत-हिन्दी-अंग्रेजी काश की रचना की है। इसके पूर्व चतुर्वेदी द्वारकाप्रसाद शर्मा का संस्कृतशब्दार्थकौस्तुभ (संस्कृत-हिन्दी) का अच्छा प्रचार हुआ है। इन्होंने कोष लिखकर अनेक विद्वानों को कोष-रचना करने के लिए प्रेरित किया है।

विविध कोश

(क) इस प्रसङ्ग में संस्कृत के समानान्तर पालि-प्रकृत कोशों पर भी विचार करना आवश्यक है। रचना-क्रम में पालि-कोश अधिकतर वैदिक-निघण्टुओं के समान परिलक्षित होते हैं। ये कोश श्लोकबद्ध नहीं हैं। पालिकोशों में सर्वप्रसिद्ध कोष महाव्युत्पत्तिकोश है, जो २८४ प्रकरणों में विभक्त है। इसमें लगभग ९०० शब्द संकलित हैं, जिनमें समानार्थक शब्दों के अतिरिक्त घातुरूप भी संगृहीत हैं। इसके अतिरिक्त पालिकोशों में मोग्गलान की अभिधानपदीपिका नामक कोश अत्यधिक लोकप्रिय है। यह बारहवीं शती की रचना है तथा अमरकोष की शैली में लिखा गया है।

प्राकृत कोशों में सबसे प्राचीन कोष पायिड-लक्ष्मिणाममाला है। इसके रचित्यत धनपाल हैं। इसे ग्रन्थकार ने ९७२ ई० में लिखा था। इसमें २७९ गथायें हैं। हेमचन्द्र ने इस कोष का उपयोग अपने देशी नाममाला में किया है।

(३०)

हेमचन्द्र का देशीनाममाला प्राकृत-कोश बड़ा सुन्दर तथा रोचक है। इसमें आठ अध्याय (वर्ग) हैं। इन अध्यायों में शब्दों का संग्रह आदिम अक्षर को अभिलक्षित कर किया गया है। पर्यायवाची शब्द के अन्तर उसी अक्षर से आरम्भ होने वाले तानार्थ शब्द भी रखे गए हैं। इस ग्रन्थ में तद्भव शब्दों की प्रधानता होने से प्राकृत शब्दों के ज्ञान में बड़ी सहायता मिलती है। इस कोष के अनुशीलन से उस युग (१२वीं शती) के रीति-रिवाजों का भी पता चलता है।

इस बीच दो प्राकृत कोशों का प्रकाशन बड़ा उपयोगी सिद्ध हुआ है। ये दो कोश हैं—(१) अभिधान-राजेन्द्र-कोश तथा (२) प्राकृत-शब्दमहार्णव। इनमें से प्रथम ग्रन्थ तो जैनधर्म का विश्वकोष ही है, जिसमें जैनधर्म, जैन-दर्शन तथा साहित्य के विषयों को अभिलक्षित कर प्राचीन ग्रन्थों के उद्धरणों के साथ बड़ा साङ्गोपाङ्ग विवेचन है। यह ग्रन्थ विशालकाय है, सात खण्डों में विभक्त है। इसकी पृष्ठ संख्या १०,००० है। प्राकृतशब्दमहार्णव इसकी अपेक्षा लघुकाय है। इसका आयाम लगभग १५०० पृष्ठों में सीमित है। यह नवीन शैली का कोश है। इसमें प्रयोगस्थलों का निर्देश बड़ी सुन्दरता के साथ किया गया है।

(ख) मुगलकाय में फारसी का प्राधान्य होने के कारण फारसी-संस्कृत कोषों की आवश्यकता प्रतीत हुई। इसके फलस्वरूप अकबर बादशाह के आदेश ने विहारी कुल्लणदास मिश्र ने पारसीकप्रकाश ग्रन्थ की रचना की। इस ग्रन्थ के दो भाग हैं—कोश तथा व्याकरण। २६९ अनुष्टुप्-श्लोकों में ग्यारह प्रकरणों का समावेश किया गया है। प्रकरणों का शीर्षक अधिकतर अमरकोष के समान है। इसमें फारसी शब्दों के संस्कृत पर्याय दिये गए हैं। इसी प्रकार का दूसरा ग्रन्थ वेदाङ्गराय द्वारा विरचित पारसी-प्रकाश (१६४७ ई०) है। इसमें फारसी तथा अरबी के शब्दों का संस्कृत में अर्थ दिया गया है। तीसरा ग्रन्थ पारसी-चिनोद भी इसी समय लिखा गया। इसके रचयिता व्रजभूषण थे। महाकवि क्षेमेन्द्र का लोकप्रकाश भी इस दृष्टि से उपयोगी है। इसमें भी फारसी के बहुत शब्दों का प्रयोग हुआ है। इस ग्रन्थ में शाहजहाँ का भी उल्लेख होने से यह विदित होता है कि इसमें कुछ अंश सत्रहवीं शती में जोड़ दिया गया हो।

विशिष्ट-कोष

संस्कृत चाङ्मय के विशिष्ट विषयों को अभिलक्षित कर भी विद्वानों ने अनेक कोष-ग्रन्थ बनाये। संगीत में संगीतराज नामक विशालकाय ग्रन्थ का एक भाग कोष के रूप में प्रख्यात है। उस अंश को नृत्यरत्नकोष कहा गया है। इसके लेखक महाराणा कुम्भकर्ण हैं। किसी अज्ञात लेखक ने वस्तुरत्नकोश की रचना भी की है। इसमें सामान्य विषयों की जानकारी दी गई है। यह ग्रन्थ दो भागों में

(३१)

व्यक्त है। प्रथम भाग सूत्रात्मक है तथा दूसरा सूत्रों तथा तत्सम्बन्धी विवरणों में युक्त है। यह ग्रन्थ सम्भवतः १०००-१४०० ई० के मध्य लिखा गया है।

इस प्रसङ्ग में वैद्यक-कोशों का उल्लेख करना अत्यावश्यक है। इन कोशों की भी निघण्टु संज्ञा है। इनमें प्रमुख है—“(क) धन्वन्तरिनिघण्टु। यह नव खण्डों में विभक्त है। क्षीरस्वामी के अनुसार यह अमरकोष से प्राचीन है। अवान्तर निघण्टुओं में (ख) माधवकर की रत्नमाला (नवीं शती) तथा हरिचरण सेन की (ग) पर्यायमुक्तावली ग्रन्थ मुविहित हैं। इन ग्रन्थों के अतिरिक्त (घ) हेमचन्द्र का निघण्टुशेष, (ङ) मदनपाल का मदनपालनिघण्टु (१३७४ ई०) (च) केशव का सिद्धमन्त्र (१२५० ई० के लगभग), (छ) केशवदेव का पञ्चापव्यवोधक निघण्टु एवं (ज) नरहरि का राजनिघण्टु भी वैद्यक निघण्टुओं में मान्य हैं। इन सबमें राजनिघण्टु सबसे बड़ा है। इसके लेखक नरहरि नामक वैद्य हैं (१३८० ई० के आसपास)। इन सबके अतिरिक्त नानार्थ-ओपधकोशों में (झ) शिवकोश (१६७७ ई०) बड़ा महत्त्वपूर्ण है। इसके रचयिता शिवदत्त मिश्र थे। ग्रन्थकार ने इसकी व्याख्या भी स्वयं लिखी है। यह नानार्थक ओपधि-कोष है। इसमें ऐसे ओपधि-वाचक शब्द संकलित किये गए हैं, जिनके अनेक अर्थ उपलब्ध होते हैं।

इन पृष्ठों में वर्णित कोशग्रन्थों के अतिरिक्त अनेक कोशग्रन्थ हस्तलिखित रूप में हैं तथा अनेक कोश केवल उद्धरणों के रूप में ही ज्ञात हैं। ऐसे कोशकारों में अजयपाल (धरणाकोश के कर्ता), रन्तिदेव, रभस, आदि अनेक विद्वान् प्रसिद्ध हैं।

अधिकतर कोशों में संज्ञाशब्दों का ही वाहुल्य है। कतिपय कोश क्रिया के अर्थ का निरूपण करने के लिए भी लिखे गए हैं। ऐसे क्रियाकोशों में दो कोश विख्यात हैं—भट्टमल्ल (१२ वीं शती) का आख्यातचन्द्रिका तथा हलायुध का कबिरहस्य। इस प्रकार के अन्य ग्रन्थों में ये भी प्रसिद्ध हैं—विद्यानन्द का क्रिया-कलाप, वीरपाण्ड्य की क्रियापदार्थदीपिका, रामचन्द्र का क्रियाकोश, गुणरत्नसुरि का क्रिया-रत्नसमुच्चय तथा दशबल का धातुरूप भेद। इन ग्रन्थों का उल्लेख 'आख्यातचन्द्रिका' की भूमिका में किया गया है। इसी प्रकार उणादि कोष भी रचा गया है। अब तो कोष-ग्रन्थों की व्यापकता इतनी बढ़ गई है कि ग्रन्थविशेष में प्रयुक्त शब्दों के सम्बन्ध में भी कोषग्रन्थों की रचना होने लगी है। कादम्बरी आदि प्रसिद्ध ग्रन्थों के कोष तैयार होने लगे हैं। इसके साथ ही प्रत्येक शास्त्र के पारिभाषिक-कोष एवं शास्त्रीय-कोशों की भी अब बाढ़-सी आ गई है। सार्वजनिक लोकोपयोगी विधि एवं व्यवहार-कोशों की भी रचना हो गई है। जीवन का कोई क्षेत्र ऐसा नहीं है जिसको अभिलक्षित कर कोष-रचना न हुई हो। रामायण-

(३२)

कोष, महाभारतकोष, पुराणकोष, व्याकरण, साहित्य, धर्मशास्त्र, मीमांसा, न्याय, योग, तन्त्र, सांख्य, वेदान्त, अर्थशास्त्र आदि सभी विषयों के कोष अब उपलब्ध हो चुके हैं। जो विषय अछूते रह गए हैं उन विषयों पर भी कोषग्रन्थों की रचना शीघ्र हो जायगी। उपनिषदों के आधार पर जैकब का उपनिषद् वाक्यकोष बहुत पहले ही बन चुका था (१८९१ ई०)।

कोषविद्या के इस संक्षिप्त विवरण से यह निष्कर्ष निकलता है कि संस्कृत तथा प्राकृत के विद्वानों ने अपनी शब्दनिधि को सुरक्षित रखने तथा प्रचलित करने के लिये कोषग्रन्थों की रचना कर जो प्रयास किये हैं वे सर्वथा श्लाघनीय हैं। विश्व में कोषग्रन्थों का इतना विस्तृत एवं प्राचीन परिचय घनीभाषा को छोड़ कर फिर संस्कृत में ही विद्यमान है। इस धरोहर को सुरक्षित रखना प्रत्येक संस्कृतज्ञ का पवित्र कर्तव्य है।

— .पोषालदत्त पाण्डेय.



॥ श्रीः ॥

आदर्श- हिन्दी-संस्कृत-कोशः

फदकना

अ

, देवनागरीवर्णमालायाः प्रथमः स्वरवर्णः,
अकारः ।

अ-, (= अच्), अव्य० (सं.) तत्सादृश्यमभावश्च
तदभ्यन्तं तदस्पता । अप्राशस्त्यं विरोधश्च
नञ्स्थाः षट् प्रकीर्तिताः । उदाहरणानि—
(सादृश्ये) अत्राक्षणः = नाक्षणसदृशः; (अभावे)
अमोजनम् = भोजनाभावः; (अन्वये) पटोऽ-
घटः = घटभिन्नः; (अव्यये) अनुदरी
कन्या = अपोदरी; (अप्राशस्त्ये) अधनं
चर्मधनम् = अप्राशस्त्यधनम्; (विरोधे) अथर्मः
परापकारः = धर्मविरोधी ।

अंक, सं. पुं. (सं.) चिह्नं अभिज्ञानं, लक्षणम्
२. संख्याचिह्नम् (१, २, ३ आदि) ३. लेखः
४. भाग्यम् ५. रूपकभागः ६. कोडम्
७. शरीरम् ।

—गणित, सं. पुं. (सं. न.) गणितभेदः, अङ्कविद्या ।

—गत, वि., गृहीत, निरुद्ध ।

—पाली, सं. स्त्री, परिचारिका ।

—शायिनी, सं. स्त्री., पत्नी, जाया ।

—देना, भरना वा छगाना, मु., आलिङ्ग
(धना, प. से.), आच्छि (दि, प. अ.) ।

अंकन, सं. पुं. (सं. न.) चिह्न-लक्षण, दानम्
२. लेखनम्, ३. गणनम् ।

अंकित, वि. (सं.) चिह्नित, आच्छित,
२. लिखित ।

अंकुर, सं. पुं. (सं.) अंकुरः, प्ररोहः, उद्भिद
(पुं.) ।

अंकुरित, वि. (सं.) स्फुटित, सांकुर, उद्भिन्न ।

अंकुश, सं. पुं. (सं.) वृष्टिः (स्त्री), अंकुषः ।

अँकोर, (अँकवार), सं. पुं. (सं. अंकः)

कोडः—डं-डा, उत्सर्गः २. उत्कोचः, उपा-
यनम् ।

अँखुष्ठा, सं. पुं, दे. 'अंकुर' ।

अंग, सं. पुं. (सं. न.) शरीरं, देहः, कायः,

२. अवयवः, प्रतीकः, अंगकं, अपघनः

३. अंशः, भागः ४. वेदांगशास्त्राणि [= शिक्षा,

कल्पः, व्याकरणं, निरुक्तं, ज्योतिषं, छन्दस्
(न.) ।

—अ, सं. पुं. (सं.) पुत्रः ।

—जा, सं. स्त्री. (सं.) पुत्री, तनया ।

—स्निघना, सं. पुं., आक्षेपकः (रोगभेदः) ।

—फदकना, सं. पुं., ताण्डव-नर्तन-रोगः
२. अंगस्फुरणं (शकुनभेदः) ।

—रखा, सं. पुं. (सं. अंगरक्षकः >) अंगरक्षणी ।
 —राग, सं. पुं. (सं.) मात्तरजनं, विलेपनम् ।
 अंगरेज, सं. पुं. (पुं. इंग्लेज) आंग्लदेशीयः ।
 अंगरेजी, सं. स्त्री. (हिं. अंगरेज) आंग्लभाषा ।
 अंगार (-रा,) सं. पुं. (सं.) अंगारः रं, दग्धकाष्ठखण्डं अलतं, जल्युक्तम्, निर्धूमाग्निः ।
 अंगिया, सं. स्त्री. (सं. अंगिका) कक्षुलिका, कंचुली, कंचूलम्, आंगिकः- कं, चेलिका, कु (कु) पांसः-सकः ।
 अंगी, वि. (सं.-गिन्) शरीरिन्, देखिन् २. अवयविन् ३. प्रधान, मुख्य ४. दे 'अंगिया' ।
 अंगीकार, सं. पुं. (सं.) अंगीकरणं, स्वीकारः, प्रतिग्रहः, प्रतिपत्तिः (स्त्री.) आदानम् ।
 —करना, कि. स., अंगी-स्वी-कृ (त. उ. अ.), धा-दा (जु. आ. अ.), प्रतिपद् (दि. अ. अ.) प्रति-इप् (तु. प. से.) ।
 अंगीकृत, वि. (सं.) स्वी-करी-उररी, कृत, आ-सं-उप, श्रुत, उपगत ।
 अंगीठी, सं. स्त्री. (हिं. अंगोठा) अंगार-धानिका-शकटी, हसनी, हसन्ती ।
 अंगीय, वि. (सं.) अंगदेशीय, २ शारीरिक, कायिक ।
 अंगुल, सं. पुं. (सं.) अष्टयवपरिमाणम् ।
 अंगुली, सं. स्त्री. (सं.) अंगुलिः (स्त्री.), अंगुरी-रिः (स्त्री.), करशाखा ।
 —काटना, मु., विरिमि (श्वा. भा. अ.) चकित (वि.) + भू ।
 —खटखाना, मु. अंगुली, मोटनं स्फोटनम् ।
 अंगुरताना, सं. पुं. (फ्रा.) अंगुलिप्राणम्, अङ्गुष्ठप्राणम् ।
 अंगुष्ठ, सं. पुं. (सं.) वृद्धाङ्गुलिः (स्त्री.) ।
 अंगूठा, सं. पुं. (सं. अंगुष्ठः) वृद्धाङ्गुलिः (स्त्री.) ।
 —चूमना, मु., चाडभिः तुष् (प्रै.), अधीन (वि.) + भू ।
 —दिखाना, मु., सावमानं प्रत्यादिशु (तु. प. अ.) ।
 अँगूठी, सं. स्त्री. (हिं. अँगूठा) अङ्गुरी (ली) यं, अङ्गुरी (ली) यकं, मुद्रा, कर्मिका ।
 अंगूर, सं. पुं. (फ्रा.), (बेल) द्राक्षा, स्वादी, मयुरसा, गोस्तनानी २. (फल) द्राक्षाफलम् आदि ।
 अंगूरी, वि. (फ्रा.) द्राक्षामय २ द्राक्षावर्ण ।
 अंगोष्ठा, (पुं. सं. हिं. अंग + पोछना) अंगप्रोच्छ-नम् ।

अंघ्रि सं. पुं. (सं.) चरणं, पादः २. वृश्मूलम् ३. छन्दश्चरणम् ।
 अंचल सं. पुं. दे. अंचल ।
 अंजन, सं. पुं. (सं. न.) कज्जलं, नेत्ररंजनम् ।
 अंजर-पंजर, सं. पुं. (सं. पंजरः-रम्) (पसली) पशुंका, पार्श्वकं, पार्श्वस्थि (न.) २. कंकालः-लम्, पंजरः-रम् ।
 अंजली, सं. स्त्री. (सं.) अंजलिः, कर-हरनः, सम्पुटः ।
 अंजस, वि. (सं.) सरल अवक्र २. निष्कपट निर्व्याज । (अजसी स्त्री०) ।
 अंजाम, सं. पु. (फ्रा.) परिणामः, फलम्, अन्तः, पाकः ।
 अंजित, वि. (सं.) सांजन, कल्पनकल्पित ।
 अंजीर, सं. पुं. (फ्रा.) (वृक्ष) अंजीरः, लवुम्बर-जातीयो वृक्षः २. (फल) अंजीरम् ।
 अंजुमन, सं. स्त्री. (फ्रा.) सभा, परिषद् (स्त्री.) ।
 अंसा, सं. पुं. (सं. अन्तध्यायः) अन्तध्यायदिवसः २. अवकाशः, क्षणः, कार्यनिवृत्तिः (स्त्री.) ।
 अंटिया, सं. स्त्री. (हिं. अंटी) गुच्छः, संघातः, लघुभारः ।
 अंटियाना, कि. स. (हिं. अंटी) छलेन आत्म-साए कृ । सं. पुं., छलेन अपहारः, घसनम् ।
 अंटी, सं. स्त्री. (सं. अघ्रिः >) ग्रन्थिः, शाटि-कायाः कटिलम् कुक्षनं मोटनं वा २. अंगुलीनां मध्यस्थमन्तरम् ।
 अंड, सं. पुं. (सं. पुं. न.) मुष्कः, वृषणः, शुक्र-ग्रन्थिः २. दे. 'अंडा' ३. विश्वम्, लोकः-मण्डलम् ४. वीर्यं, शुक्रम् ।
 —कोषा, सं, पुं. (सं.) दे. 'अंड' ।
 —कोषा चडना, सं. पुं., मुष्क-वृषण-कोशः, वृद्धिः (स्त्री.)-शोकः ।
 —ज, सं. पुं., खगसर्पमीनादयो जीवाः ।
 अंड-बंड, सं. पुं. (अनु०) प्रलापः, अनर्थकं वचनम् २. वि., व्यर्थं, अव्यवस्थित ।
 अंडा, सं. पुं. (सं. अण्डम्) जोषः-शः, द्विम्बः, पेशी-शिः (स्त्री.) ।
 —देहा, कि. स., अण्डानि प्र-न् (अ. आ. अ.) ।
 —सेना, कि. स., अण्डे-भ्यः प्रजोत्पत्तिं कृ ।
 अंडाकार, वि. (सं.) अण्डाकृति ।
 अंडी, सं. स्त्री. (सं. अण्डः) रुचकः, चित्रकः, मंडः २. परंढफलस्य बीजम् ३. बकभेदः ।

अंत, सं. पुं. (सं.) समाप्तिः (स्त्री.), परि-
अवसानं, विरामः २. अन्त्य-अन्तिम-पाश्चात्य-
भागः ३. सीमा, प्रान्तः ४. मृत्युः, नाशः ५.
परिणामः, कलम् ।

—काल, सं. पुं. (सं.) मृत्युसमयः ।

अंतर्ही, सं. स्त्री. (सं. अंत्रम्) पुरीतत् (न.) ।

अंतरंग, वि. (सं. अन्तर + अंग) अन्तर्गत,
अन्तःस्थ, आन्तर २. निकटवर्तिन् ।

३. हार्दिक । सं. पुं., परममित्रम्, अभिन्न
हृदयः सखि (पुं.) ।

अंतर, सं. पुं. (सं. न.) भेदः, विशेषः, पार्थक्यम्, २.

दूरता, अध्वन्, अन्दराल, विप्रकर्षः

३. मध्यवर्तिकालः ४. व्यवधानम् ५. हृदयम् ।
वि०, अपर, अन्य ।

अंतरण, सं. पुं. (सं. न.) अन्तरे-मध्ये-करण-
स्थापनम् २. व्यवधानम् ।

अंतरा, सं. पुं. (सं. अंतरम्) भेदः, विशेषः
२. अवकाशः, अनुपरिधिः (स्त्री.)

३. तृतीयकः (बारी का तुलार) ।

अंतरागार, सं. पुं. (सं. न.) गृह-गैह-अन्तर-
गर्भः ।

अंतरात्मा, सं. स्त्री. (सं. पुं.) आत्मन्, देहिन्,
शरीरिन् २. मानसं, चित्तं, मनस् (न.) ।

अंतराय, सं. पुं. (सं.) अंतरायः, विघ्नः, प्रत्यूहः,
व्याघातः ।

अंतराल, सं. पुं. (सं. न.) मध्यप्रदेशः,
अन्तर्तरं २. परिच्छिन्नस्थानम् ।

अंतरिन्द्रिय, सं. स्त्री. (सं. न.) मनस्-चेतस्
(न.), चित्तम् ।

अंतरिच्छ, सं. पुं. (सं. न.) छं, गगनं, आकाशः-
द्गं अंबरम् २. स्वर्गः ।

अंतरित, वि. (सं.) दे. 'अन्तर्गत' १ ।

अंतरीप, सं. पुं. (सं. पुं. न.) शूशिरस् (न.) ।

अंतरीय, सं. पुं. (सं. न.) अन्तरं-वसनं-
वस्त्रं-वासस् (न.) ।

अन्तर्गत, वि. (सं.) अन्तःस्थ, अन्तर्भूत, समा-
विष्ट, सम्मिलित २. हृदयस्थ, मानसिक ।

अंतर्दान, सं. पुं. (सं. न.) लोपः, अदर्शनं,
तिरोधानम् । वि. अदृश्य, गुप्त ।

अंतर्दामी, वि. (सं. मिन्) अन्तःकरणनियामक
२. मनोभावक । सं. पुं. परमेश्वरः २. आत्मन्

अंतर्द्वीय, वि. (हिं.) अन्ताराष्ट्रि (श्री) य ।

अंतिम, वि. (सं.) चरम, अन्त्य, पश्चिम, अवम ।

अंताकरण, सं. पुं. (सं. न.) अन्तरिन्द्रियं,
मनस् (न.), मानसं, चित्तम् ।

अंतःपुर, सं. पुं. (सं. न.) अवरोधः, अवरोध-
नम्, शुद्धान्तः ।

अंत्यज, सं. पुं. (सं.) शूद्रः, अन्त्यजन्मन्,
चतुर्वर्णः (रजकश्चर्मकारश्च नटो वरुड एव च ।

कैवर्तभेदभिल्लश्च सप्तैते अन्त्यजाः स्मृताः-यम-
वचनम्) ।

अंत्येष्टि, सं. स्त्री. (सं.) शवदाहः, प्रेतकर्मन्
(न.), अन्तिमसंस्कारः ।

अंत्रवृद्धि, सं. स्त्री. (सं.) अंत्रघ्नसः, नाभिवर्द्धनम् ।

अंदर, कि. वि. (फ्रा.) अन्तरे, मध्ये, गर्भे,
अन्धन्तरे (सब सप्तम्यन्त), अंतः (अव्य०) ।

अंदरसा, सं. पुं. (सं. इन्द्राशः) पिष्टिकः,
मिष्टान्नभेदः ।

अंदरूनी, वि. (फ्रा.) आन्तर, अन्तर्गत,
आन्धन्तर ।

अंदलीव, सं. उ. (अ.) बुल्लुलः, प्रियगीतः ।

अंदाज़, सं. पुं. (फ्रा.) विधिः, रीतिः (स्त्री.),
२. भावः ३. अनुमानम् ।

अंदाज़न, कि. वि. (फ्रा.) अनुमानेन ।

अंदाज़, सं. पुं. (फ्रा.) अनुमानं, ऊहा ।

अंधेक्षा, सं. पुं. (फ्रा.) चिन्ता, आशंका, वासः ।

अंध, वि. (सं.) नेत्र-नयन-लोचन-हीन-
रहित २. अज्ञानिन्, अधिवेकिन्, मूर्खं

३. प्रमादिन् ४. उन्मत्त ।

सं. पुं. (सं.) अन्धः, अन्धकः, अनयनः, क्लि-
चनः २. अन्धकारः, तमस् (न.) ।

—कार, सं. पुं. (सं.) तमस् (न.), तमिस्त्र-
ध्वान्तं, तिमिरम् ।

—कूप, सं. पुं. (सं.) शुष्ककूपः २. नरक-
विशेषः ।

—इ, सं. पुं., वात्या, प्रभंजनः, चण्ड-महा-अति,
बातः, प्रकंपनः ।

—तमस, सं. पुं. (सं. न.) अन्धतामिस्रः-श्र-
(छं, श्रं), अन्धतामसम् ।

—ता, सं. स्त्री. (सं.) अंधत्वं, दृष्टिहीनता
२. अज्ञानं, मोहः ।

—परंपरा, सं. स्त्री. (सं.) गतानुगतिकता,
निवेकशून्यानुसरणम् ।

अक्षविकास

[४]

अक्षरणीय

—विश्वास, सं. पुं. (सं.) निर्विवेक-तर्कशून्य, विश्वासः-प्रत्ययः-विश्रम्भः ।

अंधा, सं. पुं. (सं. अन्धः) अन्धनः, अनेकः, नेत्रहीनजीवः-वि०, विवेकः-विचारः, शून्य-रहित ।

—अंध, सं. स्त्री, धोराण्यकारः, अन्धन्तमस् (न.) (२) कुप्रबन्धः, अन्यायः । वि० विचार-न्यायः, शून्य-रहित । क्रि. वि., निदृशकं, अन्धवत्, रभसा, साहसेन, असमीक्ष्य ।

अंधेर, सं. पुं. (सं. अन्धकारः >) अन्यायः, उपद्रवः, अत्याचारः, कुण्यवरथा ।

—खाता, सं. पुं. अव्यवस्था, अन्यथाचारः, कुण्यवरथा ।

—करना, मु., अग्यार्यं आचर् (भ्वा. प. से.) ।

अंधेरा, सं. पुं. (सं. अन्धकारः) ध्वान्तं, तमिलं, तिमिरं, तमस् (न.); वि. निरालोकः, निष्प्रभ. तमोः-वृत्त-मय ।

धना-, अन्धतमसन् ।

योडा-, अवतमसम् ।

व्यापक-, सन्तमसम् ।

अंधेरे वर का उजाला, मु., एकलः सुतः, एकाकिपुत्रः ।

अंधेरी, सं. स्त्री. (हि. अंधेरा) प्रकल्पनः, वास्त्या, झन्झावातः २. कुण्ठा रात्री, निश्चन्द्रा रजनी ।

—कोटरी, सं. स्त्री., निरालोकः कोष्ठः, २. गर्भः ३. रहस्यम् ।

अंध्र, सं. पुं. (सं. बहू०) अन्धराज्यम् २. अन्धजनः ३. अंध-विशेषः ।

अंध, सं. पुं. (सं. आन्ध्रम्) आन्ध्र-रसालः, फलन् २. रसालः, आन्ध्रः (वृक्ष) ।

अंधक, सं. पुं. (सं. न.) नेत्रम्, नयनम् (सं. पुं.) पितृ, जनकः ।

अंधर, सं. पुं. (सं. न.) आकाशः-शं, गगनम् । २. वृक्षं, वसन्तम् । ३. मेघः, जलदः ४. सुगन्धिद्रव्यभेदः ।

अंधरीष सं. पुं. (सं.) अयोध्याया वैष्णवपुत्र-विशेषः २. विष्णुः ३. शिवः ।

अंधा, सं. स्त्री. (सं.) मातृ (स्त्री.), जननी २. पार्वती, दुर्गा ।

अंधार, सं. पुं. (प्रा.) निकरः, राशिः, संभारः ।

अंधारी, सं. स्त्री. (अ. अमारी) परिस्ती (स्त्री) मः, प्रवेशी, सज्जना, कल्पना ।

अंधालिका, सं. स्त्री. (सं.) मातृ (स्त्री.), जननी २. सत्रारां ३. विचित्रवीर्यपत्नी ।

अंधिका, सं. स्त्री. (सं.) मातृ (स्त्री.) २. पार्वती ३. विचित्रवीर्यजाया ।

अंधु, सं. पुं. (सं. न.) जलं, पानीयम् ।

—ज, सं. पुं. (सं. न.) कमलम् ।

—द, सं. पुं. (सं.) मेघः, जलदः ।

—धि, -निधि, -पति, -राशि, सं. पुं. (सं.) सागरः ।

अंभ, सं. पुं. [सं. अम्भस् (न.)] जलं, वारि (न.) ।

अंभोज, सं. पुं. (सं. न.) कमलम् ।

अंभोद, सं. पुं. (सं.) मेघः, अम्बुदः ।

अंभोधि, सं. पुं. (सं.) अंभो, निधिः, राशिः, समुद्रः ।

अंश, सं. पुं. (सं.) वि., भागः, खण्डः-द्वं, शकलः-लं, प्र., देशः, अवयवः, अङ्गम् २. वृत्तस्य षष्ठ्यधिकविंशततमो भागः ३. लघुभाण्डः ४. भास्विकः ५. रिक्थांशः ।

अक्ष-सं. पुं. (सं.) (= Degree of latitude) देशान्तरः, सं. पुं. (सं.) लंघांशः (= Degree of longitude)

अंशु, सं. पुं. (सं.) किरणः, रश्मिः ।

—माली, सं. पुं. (सं. -लिन्) अंशुगतः, नृपः ।

अकंटक, वि. (सं.) निष्कण्टकः, कण्टक-शून्यः, शून्य २. निर्विघ्नः, निरन्तराय ३. प्रदुर्लभम् ।

अकड्ड, सं. स्त्री. (सं. आ + कड् = गर्व करन्ता) गर्वः, दर्पः २. घृष्टता ३. आग्रहः ।

—बाज, वि. (हि + प्रा.) इष्ट, गर्वित २. घृष्ट ३. आमहिनम् ।

—बाजी, सं. स्त्री, अभिमानित्वं, घृष्टत्वम् ।

अकड्, सं. स्त्री. (सं. आ + कड् = कडा होना) प्रस (सा) रः, आतानः, आततिः (स्त्री.) २. इष्टता, अनम्यता ३. वक्रता ।

—बाई, सं. स्त्री., मातृपुत्रातः, आक्षेपः, उद्वेष्टनम् ।

अकड्ना, क्रि. अ. (सं. आकड्मम्) गर्वः, आकड् (दोनो भ्वा. प. से.) ।

अकड्ना, क्रि. अ. (सं. आकड्मन्) आकड् (भ्वा. प. से.), इली-वकी, भू ।

अकथ, वि. (सं. अकथ्य) अकथनीय, वर्णना-तीत, अनाख्येय ।

अकथक, सं. स्त्री. (अनु०) प्रलापः २. चिन्ता ३. चैतन्यम् । वि. चकित, अवाक् ।

अक्षरणीय, वि. (सं.) अप्रियेय, अकार्य ।

अक्षरं, सं. पुं. (सं. अक्षरं न.) कुकार्यम्
२. पापम् ।
अक्षरकर्म, वि. (सं.) कर्मरहित (क्रिया, धातु
आदि) ।
अक्षरसर, कि. वि. (अ.) प्रायः, प्रायशः, बहुशः,
सःनान्यतः (सव अर्थः) ।
अक्षसीर, सं. स्त्री. (अ.) रसायनं, ईदृशो
रसभेदो यो धातुं सुवर्गीकरोति २. सजीव-
नीपधम् । वि., अमोघ, सिद्धिकर ।
अक्षस्मात्, कि. वि. (सं.) सहसा, एकपदे,
अकाण्ड-ण्टे, अतकितं, दैवात्, हठात् (सव
अर्थः) ।
अकाज, सं. पुं. (सं. अकार्यम्) कार्यद्वानिः
(स्त्री.), विघ्नः, अन्तरायः २. कुकार्यम् ।
कि. वि., व्यर्थ, निष्प्रयोजनम् ।
अकाक्य, वि. (सं. अ + हिं. कायना) अखण्ड-
नीय, अप्रत्याख्येय, अबाध्य ।
अकाय, वि. (सं.) विदेह, अशरीरिन् ।
अकारण, वि. (सं.) निष्कारण, अहेतुक,
निर्निमित्त २. स्वयम्भू । कि. वि., निष्प्रयो-
जन्तं, निष्कारणम् ।
अकारथ, वि. (सं. अकार्यार्थं) निष्फल, मोघ ।
कि. वि., दूया, व्यर्थम् ।
अकारांत, वि. (सं.) अदन्त, अवर्णान्त ।
अकारादि, अवर्णां वि. (सं.) अवर्णं, -आरम्भ
उपक्रम ।
अकार्य, वि. (सं.) अकर्तव्य, अकरणीय २.
अनुचित । सं. पुं. (सं. न.) कु-निन्दित, -कार्य-
कर्मन् (न.) ।
अकाल, सं. पुं. (सं.) दुर्मिष्टं, दुष्कालः, नीवाकः,
आहाराभावः २. कुसमयः ।
—मृत्यु, सं. स्त्री. (सं. पुं.) असामयिको मृत्युः ।
अकालिक, वि. (सं.) अनवसर, अप्राप्तकाल,
असमयोचित ।
अकाली, सं. पुं. (सं. लिन्) शुरुनानकमतामु-
द्याधिभेदः ।
अकाली, दे० 'बोल' ।
अकिंचन, वि. (सं.) निर्धन, निःस्व, दरिद्र,
दुर्गत ।
अकिंचनता, सं. स्त्री. (सं.) दरिद्रयं, निर्धनता,
दीनता ।
अकिंचित्कर, वि. (सं.) अशक्त, असमर्थ,
अक्षम ।

अकिल, सं. स्त्री. दे. 'अकिल' ।
अकिलिष्य, वि. (सं.) निष्पाप, अनघ, निर्दोष ।
अकीदृत्, सं. स्त्री. (अ.) श्रद्धा, निष्ठा ।
—गंद, वि., श्रद्धालु, सनिष्ठ, निष्ठावत् ।
अकीदृः, सं. पुं. (अ.) विश्वासः, नतम् ।
अकीर्ति, सं. स्त्री. (सं.) अ-अप-यशस् (स.),
वाच्यता ।
अकुलाना, कि. अ. (सं. आकुल >) त्वर्
(भ्वा. आ. से.), आशु कृ २. आकुली भू,
उद्विज् (तु. आ. अ.) ।
अकृत, वि. (सं. अ + हिं. कृता) अमित,
अगणित ।
अकृतञ्च, वि. (सं.) कृतम (कृतमो स्त्री.),
अकृतवेदिन् ।
अकृत्रिम, वि. (सं.) नैसर्गिक, स्वाभाविक २.
यथार्थ, वास्तविक ३. हार्दिक ।
अकेला, वि. (सं. एकल) एकाकिन् (-नी स्त्री.),
असहाय २. अनुपम, अप्रतिम ।
अकेले, कि. वि. (हिं. अकेला) असहायमेव,
—मात्र ।
अकोतर सौ, वि. (सं. एकोत्तरशतम्) एकाधि-
कशतम् ।
अकखड्, वि. (सं. अक्षर >) उग्र, उदत,
उच्छृङ्खल २. कलह-कलि, प्रिय, सुगुस्स ३. वि-
र्भय ४. आशिष्ट ५. जड ६. स्पष्टवादिन् ।
—पन, सं. पुं., उग्रता; कलहप्रियता; निर्भयता;
असम्भयता; जाड्यम्; स्पष्टवादिता ।
अकटोवर, सं. पुं. (अं.) आंग्लवर्षस्य दशमो
मासः ।
अकृ, सं. स्त्री. (अ.) बुद्धिः - मतिः (स्त्री.),
प्रज्ञा ।
—मंद, वि., बुद्धिमत्, प्राज्ञ ।
—मंदी, सं. स्त्री., बुद्धिमत्ता, प्राज्ञता ।
अक्ष, सं. पुं. (सं.) देवनः, पाशकः (हिं-पाँसा)
२. अक्षरेखा ३. धृत-पाशक-क्रीडा ४. सद्राक्षः
५. व्यवहारः (हिं. मुकदमा) ६. आत्मन् ७.
इन्द्रियम् ८. नयनम् ।
—क्रीडा, सं. स्त्री. (सं.) धृत-पाशक-क्रीडा ।
—माला, सं. स्त्री. (सं.) जपमाला, अक्षवृक्षम् ।
अक्षत, वि. (सं.) अत्रण, अखण्डित, समग्र ।
सं. पुं. (सं. नित्य बहु.) देवपूजायै त्रीक्ष्यः
(बहु०) २. यवाः ।

अक्षतभोनि

[९]

अगला

—योनि, वि. स्त्री. (सं.) पुरुषसंसर्गरहिता (कन्या नारी वा), ब्रह्मचारिणी ।
 —वीर्य, वि. पुं. (सं.) श्रीसंसर्गरहितः (पुरुषः), ब्रह्मचारिन् ।
 अक्षम, वि. (सं.) असहिष्णु, क्षमाशून्य, अतिविक्षु २. अशक्त, असमर्थ ।
 अक्षमता, सं. स्त्री. (सं.) असहिष्णुता २. अशक्तत्वम् ।
 अक्षय, वि. (सं.) नित्य, अक्षय्य, अक्षय, अक्षर, अनश्वर २. कल्पान्तस्थायिन् ।
 अक्षय्य, वि. (सं.) दे. 'अक्षय' ।
 अक्षर, वि. (सं.) अच्युत, स्थिर, नित्य । सं. पुं., अकारादयो वर्णाः, ध्वनिचिह्नानि ।
 —आस, सं. पुं. (सं.) लेखः, लेख्यम् ।
 —हः, क्रि. वि. (सं.) प्रत्यक्षरं, सामरत्येन ।
 अक्षि, सं. स्त्री. (सं. न.) नेत्रं, नयनं, चक्षुस् (न.), लोचनम् ।
 —गोलक, सं. पुं. (सं.) अक्षिमण्डलम् ।
 —तारा, सं. स्त्री. (सं.) कौनिका, तारका ।
 —पटल, सं. पुं. (सं. न.) नेत्र-नयन-च्छदः (हिं. पलक) ।
 अक्षुण्ण, वि. (सं. अक्षुण्ण) अभङ्ग, समग्र, अक्षिप्त ।
 अक्षोनि, सं. स्त्री. (सं. अक्षोहिणी) संख्या-विशेषयुक्ता सेना, सम्पूर्णा चतुरगिणी सेना (=१०९३५० पैदल, ६५६१० घोड़े, २१८७० रथ, २१८७० गज) ।
 अक्षर, सं. पुं. (अ.) प्रति, छाया, प्रति, विबं-रूपन् ।
 अक्षरं, दे. 'अक्षर' ।
 अखंड, वि. (सं.) सम्पूर्ण, समग्र २. सतत, निरन्तर ३. निर्विघ्न, निर्विधि ।
 अखंडनीय, वि. (सं.) अभेद्य, अविभाज्य २. पुष्ट, वृद्ध ।
 अखंडित, वि. (सं.) दे. 'अखंड' ।
 अखंडित, सं. पुं. (हिं. अखाड़ा) महाः, बाहुयोधः ।
 अखवार, सं. पुं. (अ.) सगाचार-वृत्त-संवाद-पत्रम् ।
 —नवीस, सं. पुं. सम्पादकः, समाचार वृत्त, -लेखकः ।
 अखरना, क्रि. अ. (सं. अ + हिं खरा) अप्रीति कर्त् (प्रे.), अपरंज (प्रे.), न रुच् (म्या. व्या. से.) ।

अखराचट (-टी), सं. स्त्री. (सं. अक्षर >) वर्णमाला २. वर्णमालाकमानुसारी पद्यसमूहः ।
 अखरोट, सं. पुं. (सं. अक्षोटः), (वृक्ष) अक्षोटः २. (फल) अक्षोटम् ।
 अखलाक्र, सं. पुं. (अ.) चरित्रम्, सदाचारः । सभ्यता, शिष्टता ।
 अखाड़ा, सं. पुं. (सं. अक्षवाटः) महाभूमि-निबुद्धः (स्त्री.) २. साधुमण्डलम् ३. साधु-निवासः ४. गायकसमुदायः ५. रंगभूमिः, नृत्य-शाला ६. अंगनम्, अजिरम् ।
 अखाद्य, वि. (सं.) अभक्ष्य, अनश्नार्हं ।
 अखिल, वि. (सं.) समग्र, समस्त, निखिल ।
 अखिलारमा, सं. पुं. (सं-रामन्) परमात्मन्, विश्वाम्भन् ।
 अखलाह, अव्य. (अनु.) कर्हः ।
 अगद्वधत्ता, वि. (सं. अग्रोद्धत >) दीर्घ, आवत २. लंब, लघु ।
 अगद्वधगद, वि. (अनु.) अकम्, असङ्गत । सं. पुं., प्रलापः २. व्यर्थं कार्यम् ।
 अगणनीय, वि. (सं.) सामान्य, साधारण २. असंख्य, गणनातीत ।
 अगण्य, वि. (सं.) तुच्छ, प्रावृत्त २. असंख्येय, संख्यातीत ।
 अगतिक, वि. (सं.) अक्षरण, निराश्रय, अनाथ ।
 अगाद्, वि. (सं.) नीरोग, निरामय, स्वस्थ । सं. पुं. (सं.) औषधं, निषेधं, भेषज्यम् ।
 अगादंकर, सं. पुं. (सं.) वैद्यः, जीवदः ।
 अगम, वि. (सं. अगम्य) दुःर्म, गहन २. विकट, कठिन ३. दुर्लभ, दुष्प्राप ४. अज्ञेय, दुर्बोध ५. अगाध, गम्भीर ।
 अगम्य, वि. (सं.) दे. 'अगम' ।
 अगर्, सं. पुं. (सं. अगुरु न.) वंशिकं, राजार्हं, कृष्णम् । —वर्त्ता, सं. स्त्री. (सं. अगुरुवर्त्ता) ।
 अगर्, अव्य. (क्त.) यद्वि, जेत ।
 —चे, अव्य. (क्त.) यथापि, अपि ।
 अगल-वगल, क्रि. वि. (क्त.) इतरततः, उभयतः, उभयत्र ।
 अगला, वि. (सं. अग >) पूर्व, पारस्व्य २. पूर्ववतिर, प्रथम ३. प्राचीन, पुरातन ४. आगमिन् ५. अपर, द्वितीय । सं. पुं., प्रधानः, २. प्राज्ञः ३. पूर्वजः ।

अगवाह, सं. स्त्री. (सं. अग्र + गमन >) प्रत्युद्-
गमनं, प्रत्युद्गमनम् । सं. पुं., नेत्र, अग्रणीः
(पुं.) ।

अगवाहा, सं. पुं. (सं. अग्रवाहः >) गृहद्वारस्य
पुरोवाहिनी भूमिः (स्त्री.) २. गृहस्याग्रिमो
भागः ।

अगवाहनी, सं. स्त्री. दे. 'अगवाह' ।

अगस्त, सं. पु. (अं. आगस्ट) आंग्लवर्षस्या-
ष्टमो मासः ।

अगस्थ, सं. पुं. (सं.) ऋषिविशेषः २. नक्षत्र-
विशेषः ३. वृक्षभेदः ।

अग्रहन, सं. पुं. (सं. अग्रहायनः-गः) मार्गशीर्षः ।

अग्राक, सं. पुं. (सं. अग्र >) अग्रिमं, पूर्वदक्ष-
मूर्त्यांशः । वि. अग्रिम, अग्रथ ।

अग्राही, कि. वि. (सं. अग्र) पुरतः, पुरस्तात्
२. अनारातवेला, भाविस्यस्कालः । सं. स्त्री.,
अथस्याग्रिमा रज्जुः (स्त्री.) ।

अगिनबोट, सं. पुं. (सं. अग्नि + अं) अग्रिपोतः,
वाष्पीयनीः (स्त्री.) ।

अगुआ, सं. पुं. (सं. अग्र >) अग्रसरः, अग्रणीः
(पुं.) २. मुख्यः, नायकः, ३. पथप्रदर्शकः ४.
वियाहसन्पादकः ।

अगुण, वि. (सं.) निर्गुण, मूर्खः । सं. पुं., दोषः,
दूषणम् ।

—इ, वि. (सं.) अनभिष्ट, अपरीक्षक ।

अगुरु, वि. (सं.) सुबाध २. अशिष्ट । सं. पुं.
(सं.) लघु-ह्रस्व-वर्णः ३. दे. 'अगर' सं. पुं. ।

अगोचर, वि. (सं.) इन्द्रियातीत, अतीन्द्रिय,
अप्रकट, अव्यक्त, अप्रत्यक्ष ।

अग्रि, सं. स्त्री. (सं. पुं.) अनलः, पावकः ज्वलनः,
वह्निः, दहनः, हुताशनः, वैश्वानरः, कुशानुः,
हुतवहः, हव्यवाहनः, चित्रभानुः, विभावसुः,
शुकः, शुक्तिः ।

—कर्म, सं. पुं. (सं. न.) देवयज्ञः, अग्निहोत्रम् ।
२. शवदाहः, अन्त्येष्टिसंस्कारः, अशिक्षिया ।

—क्रीडा, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'आतशबाजी' ।

—ज्वाला, सं. स्त्री. (सं.) अग्नि-जिह्वा-शिखा,
अंजिस् (स्त्री., न.), कीलः-ला ।

—दाह, सं. पुं. (सं.) प्लोपः, तापः, ज्वलनं २.
शवदाहः ।

—परीक्षा, सं. स्त्री. (सं.) तप्तदिव्यम् २. अग्नी
सुवर्णादिपरीक्षणम् ।

—बाण, सं. पुं. (सं.) अनल-दहन, शरः सायकः ।

—विद्या, सं. स्त्री. (सं.) अग्निहोत्रविधिः ।

—शुद्धिः, सं. स्त्री. (सं.) अग्निना शोधनम्
२. दे. 'अग्निपरीक्षा' ।

—संस्कार, सं. पुं. (सं.) दाहकर्मन् (न.),
शवदाहः २. अग्निना शोधनम् ।

—सखा, सं. पुं. (सं.-खि) वायुः, पवनः ।

—सेवन, सं. पुं. (सं. न.) वह्निनिषेधणम् ।

—होत्र, सं. पुं. (सं. न.) यज्ञभेदः, होमः,
हवनम् ।

—होत्री, सं. पुं. (सं.-त्रिन्) आहिताग्निः,
याजकः, याज्ञिकः ।

अभ्यस्र, सं. पुं. (सं. न.) आग्नेयास्त्रम् ।

अभ्याधान, सं. पुं. (सं. न.) विधिपूर्वमग्नि-
स्थापनं २. अग्निहोत्रम् ।

अग्र, सं. पुं. (सं. न.) अग्रभागः, शिखरं,
प्रान्तः, मुखं, अग्निः (पुं., स्त्री.) । वि. अग्र-
सर, उत्तम, प्रधान ।

—अग्रथ, वि. (सं.) ज्येष्ठ, श्रेष्ठ, मान्य ।

—आग्नी, सं. पुं. (सं.-ग्निन्) पुरोगः, नायकः ।

—ज, सं. पुं. (सं.) अग्रजन्मन्, ज्यावान्
भ्रातृ (पुं.) ।

—णी, सं. पुं. (सं.-णीः, पुं.) नायकः, नेतृ,
पुरोगः ।

—भाग, सं. पुं. (सं.) पूर्व-पुरो-भागः-खण्डः ।

—यात्री, सं. पुं. (सं.-विन्) अग्रसरः,
पुरोगामिन् ।

—वर्ती, वि. (सं.-वर्तिन्) अग्रस्थ, पुरःस्थित ।

—सर, सं. पुं. (सं.) नायकः, अग्रणीः (पुं.),
नेतृ ।

—अग्रह, सं. पुं. (सं.) अग्रहणम्, त्यागः ।

—अग्रानीक, सं. पुं. (सं. न.) सेना-मुखं,
अग्रम् ।

—अग्राम्य, वि. (सं.)

अग्रामीण, नागरिक २. वन्य, अग्रह ।

अग्रानन, सं. पुं. (सं. न.) देवाविदेयो
भक्ष्याग्नांशः ।

अग्रानन, सं. पुं. (सं. न.) संमान—श्रेष्ठ—
आसनं स्थानम् ।

अग्रान्ना, वि. (सं.) त्याज्य, परिहार्य, हेय ।

अग्रिम, वि. (सं.) भाविन्, आगामिन् २.
प्रधान, अग्रथ ।

अघ

[८]

अजंसी

अघ, सं. पुं. (सं. न.) पापं, पातकं, दुरितम्, एनसु (न.) २. दुःखम् ३. व्यसनम् ।
 अघट्ट, वि. (सं. अ + घट्) अक्षय, असम्भव २. दुर्घट, दुष्कर ।
 अघट्ट, वि. (हि. घटना.) अक्षय, अक्षय्य, अव्यय ।
 अघटित, वि. (सं.) अभूत २. असम्भव ३. कठिन ४. अयोग्य ।
 अघमर्षण, वि. (सं.) अघ-पाप, हारिन्-नाशक । सं. पुं., ऋग्वेदस्य पापनाशकः सूक्तविशेषः ।
 अघारि, वि. (सं.) पापनाशक २. अघदैत्यस्य नाशकः कृष्णो विष्णुर्वा ।
 अघोर, वि. (सं.) सौम्य, शोभन, प्रियदर्शन ।
 —नाथ, सं. पुं. (सं.) शिवः, भूतनाथः ।
 —पथ, सं. पुं. (सं. -पथः) शैवानां सम्प्रदायविशेषः ।
 अघोरी, सं. पुं. (सं. अघोरः >) अघोरमत्तानुयायिन् २. सर्वभक्षकः ३. दुर्दर्शनः ।
 अघोष, वि. (सं.) तीरव, निरुशब्द २. अल्पध्वनिवृत्त ३. गोपहीन । सं. पुं., वर्णमालायाः 'क्', ख्, च्, छ्, ट्, ठ्, ड्, त्, थ्, प्, फ्, श्, ष्, स्' वर्णाः ।
 अचंभा, सं. पुं. (सं. असम्भव >) आश्चर्यं, विस्मयः २. चमत्कारः, कौतुकम् ३. अद्भुतवस्तु (न.) ।
 अचंभित, वि. (हि. अचम्भा) चकित, विस्मित ।
 अचकन, सं. पुं. (सं. कञ्जुकः) :
 अचक्षु, वि. (सं. क्षुम्) अंध २. निरिन्द्रिय ३. अतीन्द्रिय ।
 अचर, वि. (सं.) स्थावर, अचल ।
 अचरज, सं. पुं. (सं. आश्चर्यम्) विस्मयः, चमत्कारः ।
 अचल, वि. (सं.) निश्चल, स्थिर २. चिरस्थायिन्, नित्य । सं. पुं. (सं.) पर्वतः, गिरिः २. कोलः, शंकुः ३. सप्तसंख्या ४. ब्रह्मन् (न.) ५. शिवः ६. आत्मन् ।
 अचला, वि. (सं.) स्थिरा, गतिशून्या । सं. स्त्री (सं.) पृथिवी ।
 अचानक, कि. वि. (सं. अचानक >) अकस्मात्, सहसा, एकपदे, अकण्ठे । (सब अव्य.)

अचार, सं. पुं. (फ्रा.) सन्धितं, सन्धानं, तेमनं, निष्ठानम् ।
 अचितनीय, वि. (सं.) अतर्क्य, अचिन्त्य, अज्ञेय ।
 अचितित, वि. (सं.) अतर्कित, अविवारित, आकरिमक २. निश्चित ।
 अचित्य, वि. (सं.) अज्ञेय, अतर्क्य, कल्पनातीत २. अतुल ३. आशातीत ४. आकरिमक ।
 —आत्मा, सं. पुं. (सं. —त्मन् परमात्मन्, अतर्क्यस्वरूपः ।
 अचिकित्स्य, वि. (सं.) अनुपचार, असाध्य (रोगादि)
 अचित्ति, सं. स्त्री. (सं.) अज्ञानम्, अज्ञेयः ।
 अचिर, अव्य. (सं.) क्षीघ्र-सुपदि (अव्य.) २. वर्तमाने ३. किञ्चित् पूर्वम् । वि. शृणिक, नक्षर २. वर्तमान, —विषयक सम्बन्धिन ।
 अचीती, वि. (सं. अचिरितत) आकस्मिक २. अचिन्त्य ।
 अचूक, वि. (सं. अ + हि. चूकना) अमोघ, सफल । कि. वि., अवश्यं, ध्रुवम् ।
 अचेत, वि. (सं. —तम्) अचेतन, निष्प्राण, निर्जीव २. व्याकुल ३. अनवहित ४. मूढ ।
 अचेतन, वि. (सं.) विचेतन, जड, निष्प्राण, स्थावर २. निःसंज्ञ, मूर्च्छित । सं. पुं. जडद्वयम् ।
 अचैतन्य, वि. (सं.) अचेतन, स्थावर । सं. पुं. (सं. न.) निर्जीवता, निष्प्राणता ।
 अच्छा, वि. (सं. अच्छ = स्वच्छ >) उत्तम, भद्र, श्रेष्ठ २. निर्मल ।
 अच्छाई, सं. स्त्री. (हि. अच्छा) भद्रता, सौजन्यम् ।
 अच्छुस, वि. (सं.) निश्छिद्र २. पूर्ण, अखण्डित ।
 अच्छेद्य, वि. (सं.) अभेष, अलान्य, अधिनाशिन् ।
 अच्छुत, वि. (सं.) अपतित २. दृढ, नित्य ३. अमोघ ।
 अच्छुत-ता, वि. (सं. अलुम) अस्पृष्ट २. नव, पवित्र ।
 अच्छट, सं. पुं. (अं. एजेंट) प्रति-निधि-हस्तः ।
 अच्छसी, सं. स्त्री. (अं. एजंसी) प्रतिनिधि,—कार्यालय-निवासः ।

अज, वि. (सं.) स्वयम्भू ; जन्महीन । सं. पुं.
ब्रह्मन् (पुं.) २. विष्णुः ३. शिवः ४. कामदेवः
५. छागः ६. मेघः ।

अजगर, सं. पुं. शयुः, वाहसः ।

अजगरी, सं. स्त्री. (सं. अजगरः >) आलस्यम् ।

अजगह्वा, सं. पुं. (फ्रा.) दे. 'अजगर' ।

अजगन्धी, वि. (फ्रा.) आगन्तुक, विदेशीय,
अपरिचित ।

अजगन्धा, वि. (सं. जगन्) अज, स्वयम्भू,
प्रनादि ।

अजघ, वि. (अ.) अद्भुत, विचित्र, विलक्षण ।

अजगमत, सं. स्त्री. (अ.) प्रनापः, प्रभुत्वं,
महत्त्वम् ।

अजघ्य, वि. (सं.) अशुभ, अद्भ्य, अजेय ।

अजग, वि. (सं.) जराहीन, बाद्धैकरहित ।

अजगवाचन, सं. स्त्री. (सं. यवामिका) शूलहन्त्री ।

अजग, कि. वि. (सं. न.) सदा, अनवरतं,
नित्यम् ।

अजगहद्, कि. वि. (फ्रा.) अतोम, अत्यधिक ।

अजा, वि. स्त्री. (सं.) जन्महीना । सं. स्त्री.
छानो २. प्रकृतिः (स्त्री.) ।

अजात, वि. (सं.) असृष्ट, अनुत्पन्न, जन्महीन ।

—शत्रु, वि. (सं.) शत्रुहीन, सर्वमित्रम् । सं.
पुं. सुधिर्धरः २. शिवः ३. मगधराजविशेषः ।

अजान, वि. (सं. अज्ञान) मूर्ख, मन्द ३. अज्ञात,
अपरिचित । सं. पुं., अज्ञानिता, अज्ञता ।

अजात्र, सं. पुं. (अ.) दातना, पीडा ।

अजामिल, सं. पुं. (सं.) कश्चित् पापी ब्राह्मणो
यो मृत्युकाले नारायणनामकस्य निजसुतस्य
नामोद्योयं मुक्ति लेभे ।

अजाश्व, सं. पुं. (अ. 'अजब' का बहु०) अद्-
भूतवस्तूनि, विलक्षणा व्यापाराः ।

—घर, सं. पुं. अद्भुतालभ्यः, संग्रहालयः ।

अजित, वि. (सं.) अपराजित, रवतन्त्र । सं. पुं.,
विष्णुः २. शिवः ३. बुद्धः ।

—इन्द्रिय, वि. (सं.) इन्द्रियलोलुप, विषयासक्त ।

अजिन, सं. पुं. (सं. न.) मृग-चर्मन् (न.),
इतिः (पुं. स्त्री.), इतिः (स्त्री.) ।

अजिर, सं. पुं. (सं. न.) अंगन-णं, प्राङ्गण,
चत्वरः रम् ।

अजी, अन्य. (सं. अयि !) भोः, आर्य, अज
(संबो.) ।

अजीज्ञ, वि. (अ.) प्रिय, तान, वस्स ।

अजीत, वि. (सं. अजित) अजेय, अजघ्य,
अशुभ ।

अजीघ, वि. (अ.) अद्भुत, विलक्षण, विचित्र ।

अजीर्ण, सं. पुं. (सं. न.) अजीर्णः (स्त्री.),
मन्दाग्निः, अन्नविकारः, अपाकः २. आधि-
क्यम् । वि., नव, दूतन ।

अजीवन, वि. (सं.) आजीविका-उपजीविका
, -रहित-हीन सं. पुं. (सं. न.) मृत्युः ।

अजूबा, सं. पुं. (अ.) अद्भुतं वस्तु (न.),
विचित्रवास्ता ।

अजेय, वि. (सं.) दे. 'अजघ्य' ।

अजैकपाद, सं. पुं. (सं.) तद्विशेषः २.
विष्णुः ।

अजीव, वि. (सं.) जीवन-, हीन-विरहित
(इन-आर्गेनिक)

अज्ञ, वि. (सं.) मूर्ख, मूढ, अज्ञानिन् ।

अज्ञता, सं. स्त्री. (सं.) जाळ्यं, मीर्यं, मूढता ।

अज्ञात, वि. (सं.) अविदित, अमुद्ध, अपरिचित ।

—वास, सं. पुं. (सं.) गुप्तवासः ।

अज्ञान, सं. पुं. (सं. न.) अविद्या, जाळ्यं, मूर्खता ।

अज्ञानता, सं. स्त्री. (सं.) जडता, अविषयता ।

अज्ञानी, वि. (सं. -निन्) मूढ, मूर्ख, अविषय ।

अज्ञेय, वि. (सं.) अतर्क्य, बोधगम्य, ज्ञानातीत ।

अटंबर, सं. पुं. (सं. अटु + फ्रा. अंबर) राशिः
(पुं.), संभारः, निचयः ।

अटक, सं. स्त्री. (हि. अटकना) विप्रः, बाधः-धा
२. सङ्कोचः ३. सिन्धुनदी ४. नगरविशेषः
५. हानिः (स्त्री.) ।

अटुकना-कि. अ. (हि. अ + टिकना) १. प्र-
उद्ये-शम् (दि. प. से.), विरम् (स्वा. प. अ.)

निश्व (स्वा. आ. से.), रथा (स्वा. प. अ.),
निश्वल (वि.) + भू । २. पाशे पट (स्वा.
प. से.), जालनद्ध (वि.) + भू, निरत-

आसक्त (वि.) + भू ३. किद् (दि. प. से.),
अनुरब् (कर्म०), भावं-अभिलाषं + बन्ध्
(क्. प. अ.) ४. विवद् (स्वा. आ. से.),

विप्रलम् (स्वा. प. से.), वैरायते (ना. धा.) ।

अटकल, सं. स्त्री. (सं. अटु + कल >) अनुमानं,
वि-तर्कः, ऊहा, अनुमितिः (स्त्री.) ।

—पञ्च, सं. पुं. कपोलरूपता, अनुमानम् । वि.
कार्पणिक ।

—बाज, वि., अनुमात्र ।

अटकाना, कि. स. (हि. अटकना) अवस्था (प्र.), रुध् (रु. उ. अ.) २. पाशेन बन्ध् (क्. प. अ.) जाले धृ (जु.) ३. स्नेह-पाशैः बन्ध् ।

अटकाव, सं. पुं (हि. अटकना) विघ्नः, बाधः ।
२. विलम्बः ।

अटन, सं. पुं (सं. न.) भ्रमणं, चलनं, विचरणम् ।

अटपट, वि. (अनु०) कठिन, कुटिल, विकट
२. अटिल, गूढ ३. असम्बद्ध, असंगत
४. प्रस्थलव-विचलता (शत्रु) ।

अटपटाना, कि. अ. (हि. अटपट) आकुली भू, मुह (दि. प. से.) २. विकल्प-विलम्ब-व्याशङ्क (भ्वा. आ. से.) ।

अटपटी, सं. स्त्री. (हि. अटपट) रुभ्रमः, व्यामोहः. विकलाः, वितर्कः ।

अटम्बर, सं. पुं. (सं. आटम्बरः >) अर्धकारः, गर्वः ।

अटल, वि. (सं. अ + हि. टलना) अचल, स्थिर, नित्य, भुव, अवश्यंभाविन् ।

अटलस, सं. पुं (अं.) मानचित्र-देशालेख्य, ग्रन्थः ।

अटारी, सं. स्त्री. (सं. अटारी) अट्टः, अट्टः, अट्टालिका, शिरोगेहं, चन्द्रशाला, तलिनी ।
अटाला, सं. पुं. (सं. अटालः >) राशिः, निचयः २. परिच्छेदः, यात्रासामग्री ३. मासिक सौनिक-वसतिः (स्त्री.) ।

अट्ट, वि. (सं. अ + हि. ट्टना) अच्येय, अखण्डनीय २. अजेय, अजय्य ३. निरन्तर ४. अत्यधिक ।

अटेरन, सं. पुं. (सं. अति + ईरण >) सूत्रवलयनिर्माणार्थं लघुकाष्ठयन्त्रम्, आवापनम् ।

अटेरना, कि. स. (हि. अटेरन) आवापनेन पञ्चीः रत्नं (जु.) ।

अट्टहास, सं. पुं. (सं.) अति-प्र-उर्ध्वः, हासः ।

अट्टी, सं. स्त्री. (हि. अटेरना) पञ्ची ।

अट्टालिका, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'अटारी' ।

अट्टा, सं. पुं. (सं. अट्ट >) अष्ट-विहसुक्तं क्रीडापत्रम् ।

अट्टाईस, वि. (सं. अष्टाविंशतिः स्त्री.) ।

—वौं (-वीं), अष्टाविंशः (-शी), अष्टाविंशति-तमः (-मी) ।

अट्टानवे, वि. (सं. अष्ट (१) नवतिः स्त्री.) ।

—वौं, (वीं) वि., अष्ट (१) नवतिसमः (-मी), अष्ट (१) नवतः (-ती) ।

अट्टावन, वि. (सं. अष्ट (१) पञ्चाशत् स्त्री.) ।

—वौं, (-वीं), वि. अष्ट (१) पञ्चाशत्तमः (-मी), अष्ट (१) पञ्चाशः (-शी) ।

अट्टासी, वि. (सं. अष्टाशोत्तिः स्त्री.) ।

अट्टासिबौं (-वीं), अष्टाशोत्तिसमः (-मी), अष्टाशोतः (-ती) ।

अट्टकौसल, सं. पुं. (सं. अट्टन् + अं. कौसल) सभा, संसद्-परिषद् (स्त्री.), गोष्ठो-ष्ठिः (स्त्री.) २. मन्त्रगान्धम् ।

अट्टखेली, सं. स्त्री. (सं. अट्टकेलिः >) चपलता, चाञ्चल्यं, कलोलः । २. मरुगतिः (स्त्री.), मदीढतगमनम् ।

अट्टात्री, सं. स्त्री. (सं. अट्टन् + आणी >) अष्टाणी, अष्टागवीः ।

अट्टपहला, वि. (सं. अट्टन् + का. पहलः) अष्ट-कोण-पार्थ ।

अट्टपाव, सं. पुं. दे. 'कधम' ।

अट्टवोसा, वि. (सं. अट्टमास) अष्टमासिकः (शिशुः) २. सोमन्तोन्नयनसंस्कारः ।

अट्टवारी, सं. पुं. (हि. आठ + सं. वार) * अष्टवारः, अष्टाहः, दिनाष्टयम् । २. सप्ताहः, दिनसप्तकम् ।

अट्टहत्तर, वि. (सं. अष्ट (१) सप्ततिः स्त्री.) ।

—वौं (-वीं), वि., अष्ट (१) सप्ततिसमः (-मी), अष्ट (१) सप्ततः (-ती) ।

अट्टारह, वि. (सं. अष्टादश) :—वौं (-वीं) अष्टादशः (-शी) ।

अट्टगा, सं. पुं. (हि. अङ्गना + टाग) विघ्नः, हस्तक्षेपः, बाधः-धा ।

अट्टचन, सं. स्त्री. (हि. अङ्गना + चनना) विघ्नः, कठिनता, आपत्तिः (स्त्री.) ।

अट्टतालीस, वि. (सं. अष्ट (१) चत्वारिंशत् स्त्री.)

—वौं (-वीं) वि., अष्ट (१) चत्वारिंशत्तमः (-मी), अष्ट (१) चत्वारिंशः (-शी) ।

अट्टनीस, वि. (सं. अष्टात्रिंशत् स्त्री.) ।

—वौं (-वीं), वि., अष्टात्रिंशत्तमः (-मी), अष्टात्रिंशः (-शी) ।

अट्टना, कि. अ. (सं. अट्ट = रोचना >) दे. 'अट्टकना' २. आग्रहं न मुच्यं (तु. उ. अ.) निर्दन्धेन कश्च (जु.) ।

अक्षरंग, वि. (हि. अक्षरा + सं. वक्र) वक्र, विषम, नतोन्नत २. विकट, दुर्गम ३. विलक्षण ।
 अक्षकोकेट, सं. पुं. (अं. एट्कोकेट) पक्षसमर्थकः, दे. 'बकील' ।
 अक्षसठ, वि. (सं. अष्ट (१) षष्टिः स्त्री.) ।
 —वर्षी (-वीं), वि, अष्ट (१) षष्टितमः (-मी), अष्ट (१) षष्टिः (-ष्टी) ।
 अक्षाना, क्रि.सं., दे. 'अटकाना' ।
 अक्षिग, वि. (सं. अ + हि. क्षिगना) निश्चल, स्थिर, दृढ ।
 अक्षियल, वि. (हि. अक्षना) उड्डत, दुर्गम, दुविनीत २. अलस, तन्द्रालु ३. अविनेय, स्वरिन्, दुराग्रह ।
 अक्षी, सं. स्त्री. (हि. अक्षना) दुराग्रहः, दठः, निर्वन्धः, प्रतिनिवेशः ।
 अक्षीट, वि. (सं. अक्षुट) अक्षुश्य, लोचनामोचर २. गुह्य, अन्तर्हित ।
 अक्षोल, वि. (सं. अ + हि. क्षोलना) अचल, निष्कम्प, स्थिर ।
 अक्षोत्स-पक्षोत्स, सं. पुं. (हि. पक्षोत्स) सन्निधिः, उपकाण्डः, सामीप्यं, प्रतिवेशः ।
 अक्षोसी-पक्षोसी, सं. पुं. (हि. अक्षोत्स-पक्षोत्स) प्रति-वेशः वेदयः वेदिम् वासिन्, निकट-समीप-स्थः वासिन् ।
 अक्षु, सं. पुं. (सं. अक्षु >) निवेशस्थानं, लंगने २. आस्थाने (-नी) ३. संकेत-गृह-स्थलं, समगम-संकेत-स्थानम् ४. चतुष्काष्ठम् ।
 अक्षुम्, सं. पुं. (अं. पक्षुस) अभिमन्दनपत्रम् २. पत्रसंज्ञा, निवाससंकेतः ।
 अणि, सं. स्त्री. (सं.) अणी, धारा, अग्रं, कोटिः (स्त्री.), सीमा, प्रान्तः ।
 अणिमा, सं. स्त्री. (सं. अणिमन् पुं.) अणुता, सूक्ष्मता २. योगस्याष्टसिद्धिषु प्रथमा, यया योगिनोऽद्भुत्या भवन्ति ।
 अणिमादिक, सं. स्त्री. (सं.) योगस्याष्टसिद्धयः, (= अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्तिः, प्रकाश्यं, शक्तिवत्त्वम्, चशिवत्त्वम्) ।
 अणु, सं. पुं. (सं.) लघुः, लेशः, पृष्टिपरमाणु-मात्रः कणः, धूलकणः । वि., अतिसूक्ष्म, छुद्र ।
 —वीक्षण, सं. पुं. (सं. न.) सूक्ष्मदर्शकश्चन्द्रम् । २. छिद्रान्वेषणम् ।
 अतः, क्रि. वि. (सं.) अस्मात् कारणात्, अनेन कारणेन-हेतुना, इति हेतोः ।

अस एव, क्रि. वि. (सं.) अस्मादेव कारणात्, अनेनैव हेतुना ।
 अतर, सं. पुं. (अ. इत्र) निर्यासः, पुष्पसारः ।
 —दान, सं. पुं. (अ. + प्रा) पुष्पसारपात्रम् ।
 अतरस्यो, क्रि. वि. (सं. इतर + श् >) आगामी गतो वा तृतीयो दिवसः ।
 अतर्कित, वि. (सं.) अविचारित, आकस्मिक (-की स्त्री.), अचिन्तित ।
 अतर्क्य, वि. (सं.) अचिन्त्य, अचिन्तनीय, अविवेक्य, अनिर्वचनीय ।
 अतल, वि. (सं.) तलहीन, अतिगम्भीर । सं. पुं. (सं. न.) सप्तसु पातालेषु प्रथमम् ।
 —स्पर्शा, वि. अतिगम्भीर, अतलस्पृश ।
 अतलस्य, सं. स्त्री. (अ.) अतिविक्रमः कौशेय-पटभेदः ।
 अतलान्तक, सं. पुं. (अं. एतलान्तिक) अन्धमहा-सागरः, समुद्रविशेषः ।
 अता, सं. पुं. (प्रा.) दानं, त्यागः विसर्जनम् ।
 —करना, —करमाना, सु., दे० 'दिना' ।
 अति, वि. (सं. अत्य.) आत्यन्त, अत्यर्थ अधिक । सं. स्त्री., अधिक्यं, अतिशयः, सीमोल्लंघनम् ।
 अतिकथा, सं. स्त्री. (सं.) अतिरंजित, —कथा—
 —आख्यायिका—श्लेषः । २. निरर्थक-व्यर्थ, —माषणम् ।
 अतिकाल, सं. पुं. (सं.) विलम्बः, कालातिपातः ।
 अतिक्रमण, सं. पुं. (सं. न.) नियम-मन्योदासीमा-उल्लंघनं, अतिक्रमः ।
 अतिथि, सं. पुं. (सं.) अन्यागतः, प्राधुणः, प्राधुण (गि) काः, गृहागतः २. संन्यासिन् ।
 —पूजा, सं. स्त्री., आतिथ्यं, अतिथि-सत्कारः-सेवा-क्रिया ।
 —यज्ञ, सं. पुं. (सं.) अतिथिपूजा ।
 अतिरिक्त, क्रि. वि. (सं.) विना, ऋते, अतिरिच्य, विहाय (सब अर्थ.) । वि. (सं.) अर्वादिष्ट २. भिन्न, पृथक् ।
 अतिवेला, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'अतिकाल' ।
 अतिशय, वि. (सं.) बहु, अधिक ।
 अतिसार, सं. पुं. (सं.) प्रवाहिका ।
 अतीन्द्रिय, वि. (सं.) अमोचर, इन्द्रियतीत, अन्यक्त, परीक्ष ।
 अतीत, वि. (सं.) गत, व्यतीत २. विरक्त, निर्लेप ३. मृत, शिवंगत ।

अतीव

[१२]

अधमा

अतीव, वि. (सं. अव्य.) अधिक, बहु, प्रभूत ।
 अतुल्य, वि. (सं.) अतुल्य, अतुलित, अनुपम
 २. अमेय, अत्यधिक ।
 अन्तार, सं. पुं. (अ.) गन्धोपजीविन्, गान्धिकः,
 गन्ध-विक्रयिन्-वणिज् २. औषधविक्रेतु ३ भेष-
 जकारः ।
 अत्यन्त, वि. (सं.) अत्यर्थ, अमिन, अत्यधिक ।
 अत्याचार, सं. पुं. (सं.) तिष्ठुर-कूर-निर्दय-
 कर्मन् (न.) कार्यम् २. पापं, दुरितम् ३. पाप-
 ण्डः-ष्टे, आडम्बरः ।
 अत्याचारी, वि. (सं.-रिन्) पाप, दुराचरिन्
 २. तिष्ठुर, कूरकर्मन् ३. पापण्डिन्, धर्मोन्धन ।
 अत्युक्ति, सं. स्त्री. (सं.) वायुपथयः, सत्याति-
 क्रमः २. बल्लकारभेदः (सा.) ।
 अथ, अव्य. (सं.) मंगलसूचकशब्दः २. आरम्भः
 ३. अनन्तरम् —च, अव्य. (सं.) अन्यच्च,
 अपरं च, अपि च, किंच ।
 अथर्व, सं. पुं. (सं.) अथर्वन् चतुर्थवेदः ।
 अथर्वणि, सं. पुं. (सं.) अथर्ववेदज्ञः २. पुरोहितः ।
 अथवा, अव्य. (सं.) वा, किं वा, यद् वा ।
 अथाह, वि. (सं. अ + हि. भाङ) अगाध, अतल-
 स्पृश, अतिग (गं) भीर २. अत्यधिक, अतीव
 ३. गूढ, दुर्बोध ।
 अर्दस, वि. (सं.) दशन-दन्त-विहीन- रहित
 २. अजात-दन्त-दशन ।
 अर्द्ध, सं. पुं. (अ.) संख्या २. संख्यायाश्चिह्नं
 संकेतो वा ।
 अर्द्धना, वि. (ज.) तुच्छ, क्षुद्र २. साधारण,
 प्राकृत ।
 अर्द्ध, सं. पुं. (अ.) शिष्टान्तरः, शिष्टता, विनयः ।
 अर्द्धम्य, वि. (सं.) प्रचण्ड. अजेय, दुर्दम ।
 अर्द्धक, सं. पुं. (सं. आर्द्रकं) शृङ्गवेरम् ।
 अर्द्धल, सं. पुं. (अ.) न्यायः, धर्मः, नयः ।
 अर्द्धलवदल, सं. पुं. (अ.) परि-वर्तः-वर्तनं वृत्तिः
 (स्त्री.), विपर्ययः ।
 अर्द्धा, वि. (अ.) दत्त, शोषित । सं. स्त्री.,
 लीला, विभ्रमः २. प्रकारः, विधिः ।
 अर्द्धालत, सं. स्त्री. (अ.) न्यायालयः, अधि-
 करणं, व्यवहारमण्डपः, न्याय-धर्म-सभा ।
 अर्द्धालती, वि. (अ. अर्द्धालत) आधिकारिक,
 न्यायालयसम्बन्धिन ।
 अर्द्धालत, सं. स्त्री. (अ.) शत्रुता, वैरम् ।

अर्द्धदर्शी, वि. (सं.-शिन्) स्थूलबुद्धि, अज्ञ ।
 अर्द्धरथ, वि. (सं.) परोक्ष, अगोचर, अलक्ष्य ।
 अर्द्धष्ट, वि. (सं.) अन्तर्हित, लुप्त, अलक्षित ।
 —पूर्व, वि. अद्भुत, अभूतपूर्व, विलक्षण ।
 अर्द्धेह, वि. (सं.) अकाय, अशरीर ! सं. पुं.,
 कामदेवः, नदनः ।
 अर्द्धोप, वि. (सं.) निर्दोष, निष्पाप, निरपराध ।
 अर्द्धत, वि. (सं.) विचमय-आश्रयं, जनक, अपूर्व,
 अलौकिक ।
 अर्द्धालय, सं. पुं. (सं.) संग्रहालयः ।
 अर्द्धनीय, वि. (सं.) एकल, एकाकिन्, एक
 २. अनुपम, अतुल्य ३. प्रधान ।
 अर्द्धैत, वि. (सं.) दे. 'अर्द्धनीय' (१, २) ।
 —वाद, सं. (सं.) 'ब्रह्मैव सत्यं, अन्यत्
 सर्वं मिथ्या' इति सिद्धान्तः ।
 अर्द्धः, अव्य. (सं.) नाचैः, अपस्तात् (दोनो
 अव्य.) ।
 —पतन, सं. पुं. (सं. न.) नाचैः पतनं
 २. अवनतिः (स्त्री.) ३. दुर्दशा, दुर्गतिः (स्त्री.)
 ४. विनाशः, शयः ।
 अर्द्ध, वि. (सं. अर्द्धं) सामि- (समास में ही) ।
 —रुचरा, वि., अपरिपक, अपूर्ण २. अदक्ष,
 अकुशल ।
 —कपारी, सं. स्त्री., अर्द्धशिरोभेदना, अर्द्धा-
 भेदकः ।
 —खिला, वि., अर्द्धविकासित, सामिविकच ।
 —खुला, वि., अर्द्धविहृत, अर्द्धापावृत् २. अर्द्धो-
 न्मोलित ।
 —पर्ह, सं. स्त्री., अर्द्धपादः, पाशार्द्धम् ।
 —मरा ।
 —मुआ | मृत, प्राय-कल्प, अर्द्ध-सामि, मृत ।
 —सेरा सं. पुं., अर्द्धसेरः, सेरार्द्धम् ।
 अधन, वि. (सं.) निर्धन, दरिद्र ।
 अधनी, सं. स्त्री. (सं. अर्द्धाणी) अर्द्धाण्वी,
 अर्द्धाण-गवः ।
 अधन्य, वि. (सं.) मन्दभाग्य, गह्य ।
 अधम, वि. (सं.) नाच, निकृष्ट २. पापिन्, दुष्ट ।
 —अधम, वि. (सं.) पापिष्ठ, महानीच ।
 अधमर्ण, वि. (सं.) ऋग्निन्, धारक, ऋग्धरत् २.
 अधमार्ग, (सं. पुं. (सं. न.) पादः, पदः, पदम् ।
 अधमा सं. स्त्री. (सं.) नायिका भेदः २-३. कर्क-
 शा-अन्यजा, -नारी ।

अधमार्ह

[१३]

अध्यापन

अधमार्ह, सं. स्त्री. (सं. अधम >) नीचता, अधमता ।
 अधरै, सं. पुं. (सं.) अधस्तनः ओष्ठः (२)
 (ऊपर का) ओष्ठः, रदन-रदन-दन्त-दशन, च्छदः ।
 —अधर, सं. पुं. (सं.) अधस्तनः ओष्ठः ।
 —अध्व, सं. पुं. (सं. न.) रक्तौघः ।
 अधरै, सं. पुं. (सं. अ + हि. धरना) आकाश-
 शः अन्तरिक्षम् । वि. हेव = नीच ।
 अधर्म, सं. पुं. (सं.) पापं, पातकं, अन्यायः,
 कुकर्मन् (न.) ।
 अधर्मी, वि. (सं. -मिन्) पाप, पापिन्, पातकिन् ।
 अधार्मिक, वि. (सं.) दे. 'अधर्मी' ।
 अधिक, वि. (सं.) बहुः प्रभूत २. अतिरिक्त,
 शेष । —तर, कि. वि., प्रायः, प्रायशः, बहुशः ।
 —ता, सं. स्त्री. (सं.) बहुत्वं, आधिक्यं, बाहुल्यम् ।
 —मास, सं. पुं. (सं.) पुरुषोत्तम-मल-असंक्रान्त-
 मासः ।
 अधिकरण, सं. पुं. (सं. न.) आधागः, आश्रयः
 २. कारकविशेषः (व्या.) ३. प्रकरणं, शीर्षकम् ।
 अधिकांश, सं. पुं. (सं.) अधिकभारः । वि.
 बहु । कि. वि. प्रायः, बहुशः ।
 अधिकाधिक, वि. (सं.) अधिकतम, भूयिष्ठ ।
 अधिकार, सं. पु. (सं.) प्रदुष्ट्यं, स्वत्वं, २.
 स्वामित्वं, आधिपत्यम् २. क्षमता, योग्यता ४.
 प्रकरणं, शीर्षकम् ।
 अधिकारी, सं. पुं. (सं. -रिन्) प्रभुः, स्वामिन्
 २. स्वत्ववत् २. योग्य, क्षम । (स्त्री. अधिका-
 रिणी, सं.) ।
 अधिकृत, वि. (सं.) हस्तगत, उपलब्ध । सं.
 पुं., अध्यक्षः, अधिकारिन् ।
 अधिकृति, सं. स्त्री. (सं.) स्वत्वम्, अधिकारः ।
 अधिक्रमण, सं. पुं. (सं. न.) आरोहणम् २.
 आक्रमणम् ।
 अधिक्षिप्त, वि. (सं.) तिरस्कृत, अपमानित २.
 क्षिप्त ३. प्रेषित ।
 अधिस्थका, सं. स्त्री (सं.) पर्वतस्योर्ध्वा भूमिः
 (स्त्री.) ।
 अधिदेव, सं. पुं. (सं.) इष्ट-कुल-देवः ।
 अधिनायक, सं. पुं. (सं.) अधिकृतः, अधिका-
 रिन्, आधिकारिकः, कायविश्वकः २. प्रभुः,
 स्वामिन् ।

अधिप, सं. पुं. (सं.) स्वामिन् २. अविकारिन्
 ३. गृपः ।
 अधिपति, सं. पुं. (सं.) दे. 'अधिप' ।
 अधिवास, सं. पुं. (सं.) निवास, स्थलं-स्थानं
 २. परगृहं-धिको वासः ।
 अधिवेशन, सं. पुं. (सं. न.) संगः, संगमः,
 गोष्ठी, समागमः ।
 अधिष्ठाता, सं. पुं. (सं. -न्) अध्यक्षः, निर्वाहकः,
 प्रणेत्, व्यवस्थापकः, अवेशकः, प्रवर्तकः, चाल-
 कः, अधिकृतः ।
 अधीन, वि. (सं.) आश्रित, वशीभूत, आज्ञा-
 वर्तिन्, विवश, परवश ।
 अधीनता, सं. स्त्री. (सं.) परवशता, परतन्त्रता ।
 अधीर, वि. (सं.) धैर्यरहित, उद्विग्न, ध्याकुल,
 विह्वल २. चंचल ३. संतोषशून्य ।
 अधीश { सं. पुं. (सं.) स्वामिन् २. नायकः
 अधीश्वर { ३. गृपः ।
 अधूरा, वि. (हि. अध + पूरा) अपूर्ण, अर्द्ध,
 खण्डित, असमाप्त ।
 अधेङ्, वि. (हि. अध) गतयौवन, मध्यमवयस्क ।
 अधेला, सं. पुं. (हि. अध) अर्द्धपणः ।
 अधोगति, सं. स्त्री. (सं.) पतनं, अवपातः,
 विनिपातः । २. अयननिः (स्त्री.), क्षयः, लुप्तशः ।
 अध्यक्ष, सं. पुं. (सं.) स्वामिन्, प्रभुः २. नायकः,
 अधिकारिन् ३. अधिष्ठात ।
 अध्ययन, सं. पुं. (सं. न.) पठनं, पाठः,
 अधीतिः (स्त्री.), वाचनं, अध्यायः ।
 अध्ययनीय, वि. (सं.) अध्येतव्य, पठितव्य ।
 अध्यर्द्ध, वि. (सं.) सार्द्धक ।
 अध्यवसाय, सं. पुं. (सं. न.) निश्चयः २.
 प्रयत्नः ३. अध्यवसायः ।
 अध्यवसाय, सं. पुं. (सं.) सततोद्योगः, निर-
 न्तरपरिश्रमः २. उत्साहः ३. निश्चयः ।
 अध्यवसायी, वि. (सं. -विन्) उद्योगिन्
 उद्यमिन्, उत्साहिन्, उद्युक्त ।
 अध्यापक, सं. पुं. (सं.) शिक्षकः, गुरुः
 उपदेष्टु, शास्त्र । (स्त्री., अध्यापिका) ।
 अध्यापकी, सं. स्त्री. (सं. अध्यापकः >) शिक्षणं
 अध्यापनं, पाठनम्, अध्यापक-व्यवसायः ।
 अध्यापन, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'अध्यापकी'

अध्याय

{ १४ }

अनलस

अध्याय, सं. पुं. (सं.) पाठः, सर्गः, परिच्छेदः, ग्रन्थविभागः ।

अध्येतव्य, वि. (सं.) पठनीय, पठितव्य, अध्ययनार्ह, पाठ्य, अप्येय ।

अध्येता, सं. पुं. (सं. अध्येत्) पाठकः, शिक्षार्थिन् ।

अध्व, सं. पुं. (सं. ध्वन्) मार्गः, पथिन् ।

—ग, सं. पुं. (सं.) पान्थः, पथिकः, यात्रिकः ।

अध्वर, सं. पुं. (सं.) यज्ञः, यागः, मखः, सवः, कर्तुः ।

अध्वर्यु, सं. पुं. (सं.) ऋत्विग्भेदः, यज्ञे यजुर्वेद-मन्त्रवादी ब्राह्मणः ।

अनंग, वि. (सं.) अलाय, देहहीन । सं. पुं. कामः, मदनः ।

अनंत, वि. (सं.) अपार, अशेष, निरप्रधि २. सतत, अविरत, निरन्तर ३. नित्य, अनन्तर । सं. पुं., विष्णुः २. शेषनामः ३. आक.शः-शं ४. वाहुभूषणभेदः ।

अनंतर, क्रि. वि. (सं. न्-अव्य.) पश्चात्, ऊर्ध्व, परं (पंचमी के साथ, उ. ननः परं इ.) २. सततं । वि., अव्यवहित, सन्निरहित, आसन्न ।

अनसिन्त, वि. (सं. असागिन) अमंख्य, संख्याहीन, बहु ।

अनसिन्त, वि. (सं.) अनसिन्तहोत्रिन् २. अधार्मिक ३. अग्निमान्द्यग्रस्त ४. अविवाहित ।

अनघ, वि. (सं.) निष्पाप, निर्दोष २. शुद्ध, पवित्र । सं. पुं. (सं. न.) पुण्यं, सुकृतम् ।

अनघीता, वि. (सं. * हि. अन + सं. चिन्तित) अचिन्तित, अकल्पित २. अनिष्ट, अवांछित ।

अनजान, वि. (सं. अन् + हि. जानना) अज्ञ, अज्ञानिन्, मूर्ख २. अज्ञात, अशुद्ध ।

अनड्वान्, सं. पुं. (सं. अनडुह) वृषः, वृषभः, बलदः । (स्त्री० अनडुही, अनड्वारी = गौ)

अनदेखा, वि. (सं. अन् + हि. देखना) अदृष्ट, अनिश्चित ।

अनधिकार, सं. पुं. (सं.) अशक्तिः (स्त्री.), क्षत्तामर्थ्यम् ।

अनधिकारी, वि. (सं. -रिन्) अधिकार-प्रभुत्व-रहित, अशक्त । सं. पुं., अपात्रम् ।

अनध्याय, सं. पुं. (सं.) अवकाशदिनम् ।

अनध्यास, सं. पुं. (प्राज्ञोक्तिविन, नानस) क्षुभभेदः तत्कालं च ।

अनन्य, वि. (सं.) एकनिष्ठ २. अनुपम, अद्वितीय ।

—गति, वि. (सं.) एक, आश्रित-गतिक-निष्ठ ।

—चित्त, वि. (सं.) एकाग्र, एकाग्रचित्त, अनन्य-वृत्ति-मनस् ।

अनपठ, वि. (सं. अन् + हि. पठना) निरक्षर, अक्षर, विद्या-ज्ञान-शून्य, अशिक्षित ।

अनबन, सं. स्त्री. (सं. अन् + हि. बनना) विरोधः, वैपरीत्यं, विस्वादः, मतभेदः ।

अनभिज्ञ, वि. (सं.) अज्ञ, अवोध (अनभिज्ञा स्त्री.) ।

अनभिज्ञता, सं. स्त्री. (सं.) अज्ञता, मौल्यं, अपरिचयः ।

अनमना, वि. (सं. अन्यमनस्-प्रक. >) निवृत्त, न्दान, विषण्ण, उद्विग्न, अधसन्न २. हर्ष, रोगिन् ।

—पन, सं. पुं., क्षिप्रता, ग्लानता २. अन्य-मनस्कता ।

अनमिल, वि. (सं. अन् + हि. मिलना) अमंगल, असंबन्ध २. भिन्न, अलग्नः ।

अनसेल, वि. (सं. अन् + नेलः >) अरुन्ध २. विशुद्ध ।

अनमोल, वि. (सं. अन् + हि. मोल) अमूल्य, महार्घ, बहुमूल्य २. श्रेष्ठ, उत्तम ।

अनगोल, वि. (सं.) निरङ्कुश, उच्छृङ्खल, उदात्त २. विचार-विवेक-शून्य ३. निरन्तर ।

अनर्घ, वि. (सं.) दुष्प्रोय, बहुमूल्य २. सुख-क्रोय, अस्वमूल्य ।

अनर्घ्य, वि. (सं.) अपूज्य, अवन्थ २. बहुमूल्य ।

अनर्जित, वि. (सं.) अनुपार्जित, अश्रमेण प्राप्त २. अप्राप्त, अलब्ध ।

अनर्थ, सं. पुं. (सं.) विपरीत-अयुक्त, अर्थः २. कार्यहानिः (स्त्री.), विकारः, उपद्रवः, अनिष्टं, आपद् (स्त्री.) ३. अन्यायार्जितं धनम् ।

अनर्थक, वि. (सं.) निरर्थक, अर्थहीन २. मोघ, व्यर्थ ।

अनर्थ, वि. (सं.) अपात्र, अनधिकारिन्, अयोग्य ।

अनल, सं. पुं. (सं.) दे. 'अग्नि' ।

—चूर्ण, सं. पुं. (सं. न.) आग्नेयचूर्णम् (= वाहद) ।

अनलस, वि. (सं.) उद्यमिन्, उद्योगिन्, उद्युक्त ।

अनलहङ्ग

[१५]

अनियम

अनलहङ्ग, सं. पुं. (अ.) अहं शब्दास्मि ।
 अनल्प, वि. (सं.) बट्ट, अधिक ।
 अनलघाह, वि. (सं.) अगाध, अतलस्पर्श ।
 अनवद्य, वि. (सं.) अनिन्य, अवाच्य ।
 अनवधान, सं. पुं. (सं. न.) प्रमादः,
 चित्तविक्षेपः ।
 अनवरत, क्रि. वि. (सं. न.) निरन्तरं,
 सततं, सदा ।
 अनवस्था, सं. स्त्री. (सं.) अव्यवस्था २. व्याकु-
 लता ३. दोषभेदः (न्याय०) ।
 अनशन, सं. पुं. (सं. न.) उपवासः, अन्न-
 त्यागः, निराहारव्रतम् ।
 अनश्वर, वि. (सं.) नित्य, अविनाशिन ।
 अनसुनी, वि. स्त्री. (सं. अन् + हि. सुनना)
 अश्रुत, अनाकर्णित ।
 अनरित्य, सं. पुं. (सं. न.) अभावः, अविद्य-
 मानता ।
 अनहृद् नाद, सं. पुं. (सं. अनाहतनादः)
 पिहितकण्ठः योगिभिः श्रयमाणः शब्दभेदः
 (योग०)
 अनहोनी, सं. स्त्री. (सं. अन् + हि. होना)
 अलौकिकघटना, असम्भववार्ता ।
 अनारान, वि. (सं.) आगामिन्, भाविन् २.
 अनुपस्थित ३. अज्ञात ४. अज्ञ ५. अद्भुत ।
 अनाचार, सं. पुं. (सं.) यदाचारः, दुराचारः
 २. कुप्रथा, कुरीतिः (ली.) ।
 अनाचारी, वि. (सं. रिन्) दुराचारिन्, अष्ट ।
 अनाज, सं. पुं. (सं. अन्नाद्यम्) अन्नं, धान्यं,
 शस्यं, आहारः ।
 अनादी, वि. (सं. अनाद्यं > ?) मूलं, अन्न २.
 नैपुण्यहीन ।
 —पन, सं. पुं. मूर्खता २. नैपुण्याभावः ।
 अनात्म, वि. (सं.) दरिद्र, निर्धन, अथन ।
 अनातप, वि. (सं.) आतपरहित, छायायुत
 २ शीतल ।
 अनाथ, वि. (सं.) नाथ-प्रभु, हीन २. मातृ-
 पितृहीन ३. असहाय, निराश्रय ४. दीन,
 परवश ।
 अनाथालय, सं. पुं. (सं.) अनाथाश्रमः ।
 अनादर, सं. पुं. (सं.) अवज्ञा, तिरस्कारः,
 अवधीरणा, अव-अप, मानः, मानभङ्गः ।

अनादि, वि. (सं.) आदि-जन्म-आरम्भ, शून्य,
 (उ., ईश्वरः, जीवः, प्रकृतिश्च) ।
 अनादित्व, सं. पुं. (सं. नं.) अनादिता, आरम्भ-
 शून्यता, निरदरत्वम् ।
 अनादेश, वि. (सं.) अग्राह्य, अग्रणीय,
 अपरिग्राह्य ।
 अनाप-शमाप, सं. पुं. (सं. अनात > + अनु.)
 प्रलापः, निस्सार-निरर्थक, वचनम् ।
 अनामिका, सं. स्त्री. (सं.) उपकनिष्ठिका,
 अनामन् (पुं.) ।
 अनायास, क्रि. वि. (सं. न.) परिश्रमं विना,
 सहसा, अकस्मात् ।
 अनार, सं. पुं. (प्रा.) (वृक्ष) कुचफलः, कटकः,
 शुक्लवल्गुः, दाडि (लि) मः—मा, दाडिबः २.
 (फल) कुचफलं, रक्तबीजं, दाडि (लि) मन्
 ४. (आतशवज्जीका) अग्नि-कोटादाडिमन् ।
 —दाना, सं. पुं. (प्रा.) दाडिमबीजम् ।
 अनार्य, सं. पुं. (सं.) दुष्टः, खलुः, धुद्राशयः,
 अधमः, जघन्यः २. म्लेच्छः ।
 अनावश्यक, वि. (सं.) निष्प्रयोजन, अनपेक्षित
 २. असार, धुद्र, उपेक्षणीय ।
 अनावृष्टि, सं. स्त्री. (सं.) अ(ना) वर्षणं ।
 अवग्र (घा) इः, जलशोषः, वृष्टिविघातः ।
 अनाहृद्वाणी, सं. स्त्री. (सं. अनाहत- >)
 आकाश-देव-गगन-गिरा-वाणी ।
 अनाहार, सं. पुं. (सं.) भोजनत्यागः (२) भोजना-
 भावः । २. अनशनव्रतिन् ।
 अनाहृत, वि. (सं.) अनिमन्त्रित, अनाकारित ।
 अनित्य, वि. (सं.) नश्वर, विनाशिन ३. भंगुर,
 अस्थायिन्, २. मिथ्या, असत्य ।
 अनित्यता, सं. स्त्री. (सं.) नश्वरता, भङ्गुरता,
 अस्थिरता ।
 अनिमि(मे)ष, वि. (सं.) निनिमेष,
 स्थिरदृष्टि, निमेषरहित । क्रि. वि., निनिमेषं,
 स्थिरदृष्ट्या । सं. पुं. (सं.) देवः २. मत्स्यः ।
 अनियत, वि. (सं.) अनिश्चित, अनिर्दिष्ट,
 अनिर्धारित २. अस्थिर, अदृढ ३. अपरिमित
 ४. विशिष्ट ।
 अनियतात्मा, वि. (सं.) अजितेन्द्रिय,
 लोलचित्त ।
 अनियम, सं. पुं. (सं.) निबन्धाभावः, व्यतिक्रमः ।

अनियमित, वि. (सं.) व्यवस्थारहित, अन्य-
वस्थित, विधिविरुद्ध २. अनिश्चित, अनियत ।
अनियारा, वि., दे. 'दैन' ।
अनिरुद्ध, वि. (सं.) अरुद्ध २. निर्बाध ३.
स्वतंत्र ।
अनिर्विष्ट, वि. (सं.) अकृतनिर्देश, असंकेतित
२. अकथित, अनुक्त ३. अनादिष्ट, अनाज्ञापित ।
अनिर्वचनीय, वि. (सं.) अकथनीय, अवर्णनीय,
अनिर्वाच्य ।
अनिल, सं. पुं. (सं.) वायुः, पवनः, वातः ।
अनिवार्य, वि. (सं.) अवश्यं भाविन्, अपरि-
हार्य, भ्रुव, परमावश्यक ।
अनिश्चित, वि. (सं.) अनियत, अनिर्द्धारित,
अनिर्दिष्ट ।
अनिष्ट वि. (सं.) अनपेक्षित- अवाञ्छित,
अनभिलषित । सं. पुं. (सं. न.) अमंगलं,
अहितं, हानिः (स्त्री) ।
अनी, सं. स्त्री. (सं. अणो-णिः) पूर्व-अग्र-प्रान्तः
भागः ।
अनीक, सं. पुं. (सं. पुं. न.) सेना, सैन्यं
२. समूहः ३. युद्धम् ।
अनीकिनी, सं. स्त्री. (सं.) सेना, सैन्यं २.
पूर्णसेनायाः दशमो भागः ३. तल्लिनी,
कमलिनी ।
अनीति, सं. स्त्री. (सं.) अन्यायः, पक्षपातः
२. उपद्रवः, उत्पातः; ३. अत्याचारः ।
अनु, उपसर्ग (सं.) सामीप्यसादृश्यादिद्योतक
उपसर्गः ।
अनुकंपा, सं. स्त्री. (सं.) दया, कृपा, अनुग्रहः
२. सहानुभूतिः (स्त्री.), समवेदना ।
अनुकरण, सं. पुं. (सं. न.) अनुकारः, अनु-
कृतिः-अनुवृत्तिः (स्त्री.), अनुसरणं २. विह-
न्वनम् ।
अनुकरणीय, वि. (सं.) अनुकरणाहं, अनु-
सरणीय ।
अनुकूल, वि. (सं.) हितकर, उपकारक २.
सहाय ३. प्रसन्न ।
अनुकूलता, सं. स्त्री. (सं.) अनुग्रहः, कृपा
२. सहायता ३. प्रसादः ।
अनुकृत, वि. (सं.) अनुसृत २. विबन्धित ।

अनुकृति, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'अनुकरण' ।
अनुक्त, वि. (सं.) अकथित, अनुदित,
अभाषित ।
अनुक्रम, सं. पुं. (सं.) अन्वयः, आनुपूर्व्य,
परंपरा ।
अनुक्रमण, सं. पुं. (सं. न.) अनु-गमन-सरणं-
चलनम् ।
अनुक्रमणिका, सं. स्त्री. (सं.) अनु-क्रमः,
परंपरा, सूची-चिः (स्त्री.) २. ग्रन्थमेदः ।
अनुक्रोश, सं. पुं. (सं.) अनुकम्पा, दया ।
अनुक्षण, क्रि. वि. (सं. नं.) प्रतिक्षणं
२. सतस्म ।
अनुगमन, सं. पुं. (सं. सं.) अनु-सरणं- गतिः
(स्त्री.) २. अनुकरणं ३. सम्भोगः, सहवासः ।
अनुगामी, वि. (सं. मिन्) अनु-व्यापिन्-
वर्तिन् २. अनु-कर्तृ-कारिन् ३. आशापालक
४. सम्भोगिन् ।
अनुगृहीत, वि. (सं.) उपकृत २. कृतज्ञ ।
अनुग्रह, सं. पुं. (सं.) कृपा, दया, अनुकम्पा ।
अनुग्रहक, वि. (सं.) कृपालु, दयालु, सहा-
यक, उपकारक ।
अनुचर, सं. पु. (सं.) सेवकः, वि.ङ्करः, दासः
१. दयस्यः, सहारः ।
अनुचित, वि. (सं.) अयुक्त, अनर्ह, अयोग्य ।
अनुज, वि. (सं.) पश्चाद्गच्छ १. सं. पुं. (सं.)
कनोयान् भ्रातृ २. स्थलपञ्चम् । (अनुज
स्त्री.) ।
अनुजीवी, वि. (सं. -विन्) अधीन, आयत्त,
आश्रित । सं. पुं. सेवकः, दासः ।
अनुज्ञा, सं. स्त्री. (सं.) अनुमतिः (स्त्री.)
अनुमतन् १. आज्ञा, आदेशः ।
अनुताप, सं. पुं. (सं.) पश्चात्तापः, अनुशयः,
अनुशोकः २. तपनं-दाहः ३. खेदः, दुःखम् ।
अनुत्तर, वि. (सं.) निरुत्तर, प्रतिवचनरहित ।
अनुदात्त, वि. (सं.) लघु, तुच्छ २. स्वर-भेदः
(व्या.) ।
अनुदिन, क्रि. वि. (सं. न.) प्रतिदिनम् ।
अनुनय, सं. पुं. (सं.) विनयः, प्रार्थना,
आवेदनं, याचना, याचना २. प्रसादनं, आरा-
धनं, अनुरजनम् ।
अनुनाद, सं. पुं. (सं.) 'गूंज' ।

अनुनासिक

[१०]

अनुवादक

अनुनासिक, वि. (सं.) मुखनासिकाभ्यामुच्चारणाया वणाः (ङ, ञ, ण, न्, म् तथा अनुस्वार) ।

अनुनात, वि. (सं.) सान्निवत्, प्रसादित २. प्राणित, याञ्जित ।

अनुपद्, क्रि. वि. (सं. न.) अन्वयः, सघः, पश्चात्, अन्यवर्धितोत्तरकालम् ।

अनुपदिष्ट, वि. (सं.) अदिष्टित, उपदेश-शिष्य --- वंचित ।

अनुपपत्ति, सं. स्त्री. (सं.) समाधानाभावः, असंगतिः-असिद्धिः-अप्रसिद्धिः (स्त्री.) ।

अनुपपन्न, वि. (सं.) असिद्ध, असंपन्न ।

अनुपम, वि. (सं.) अप्रतिम, निरुपम, अल्ल, अनुपम्य, असदृश, अप्रतिरूप, अद्वितीय, अनुपमेय ।

अनुपयोगी, वि. (सं. गिन्) निष्पयोजन, निरर्थक, निर्गुण, व्यर्थ ।

अनुपयोगिता, सं. स्त्री. (सं.) निरर्थकता, व्यर्थता ।

अनुपस्थित, वि. (सं.) अविद्यमान, अवर्तमान, दूरस्थ, स्थानान्तरगत ।

अनुपस्थिति, स. स्त्री. (सं.) असन्निधिः, परोक्षता ।

अनुपात, सं. पुं. (सं.) सम्बन्धसाम्यं, आनुगुण्यं २. गणिते त्रैराशिकक्रिया ।

अनुपान, सं. पुं. (सं. न.) औषधेन सह सेव्यं वस्तु (न.) ।

अनुपास, सं. पुं. (सं.) वर्णसाम्यम्, शब्दालंकारभेदः (सा., उ. कोकिलकुलकलमूजितम् इ.) ।

अनुबंध, सं. पुं. (सं.) सम्बन्धः, सम्पर्कः २. आरम्भपरिणामौ ३. मित्रं, सहृद् ४. इत्यंशकावणाः (व्या.) ५. अनुसरणं ६. भाविगुणाशुभे ।

अनुभव, सं. पुं. (सं.) साक्षात् उपलब्धं ज्ञानम् २. परीक्षया प्राप्तो बोधः, परीक्षणम् ।

अनुभवा, वि. (सं. विन्) परिणतप्रज्ञ, बहुदक्षिण, सानुभव ।

अनुभाव, सं. पुं. (सं.) महत्त्वं, प्रभावः, महिम्न २. रोमाञ्चकटाक्षदिचेष्टाः (सा.) ।

अनुभावी, वि. (सं. विन्) अनुभाववत्, प्रभावप्राप्तिः (सं. पुं. प्रत्यक्षसाक्षिण २. कृतस्य निकटसम्बन्धिन् ।

अनुभूत, वि. (सं.) साक्षात्प्राप्त, परीक्षित ।

अनुभूति, सं. स्त्री. (सं.) अनुभवः, परिचानं, बोधः ।

अनुमति, सं. स्त्री. (सं.) अनुज्ञा, अनुमते २. आह्वा ३. चतुर्दशीयुक्ता पूणिमा ।

अनुमत्त, वि. (सं.) हर्षोन्मत्त, अत्यानन्दित ।

अनुमरण, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'सती होना' ।

अनुमाता, वि. (सं. — तु) तर्कयितृ, ऊहितृ ।

अनुमान, सं. पुं. (सं. न.) वि, तर्कः, ऊहः, अभ्यूहः, अभ्यूहनं, अनुमितिः (स्त्री.) ।

—करना, क्रि. स., ऊह (स्वा. आ. से.), अनुमा (लु. आ. अ., अ. प. अ.), तर्क (लु.), ऊनी (स्वा. प. अ.) अनुमानं कृ ।

—सिद्धः, वि. तर्क-अपौरुष-साधित-दृढीकृत ।

अनुमिति, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'अनुमान' ।

अनुमेय, वि. (सं.) तर्कणीय, अभ्यूहनीय, उन्नेय ।

अनुमोदन, सं. पुं. (सं. न.) समर्थनं, इष्टीकरणं, उपद्वलनं २. हर्षप्रकाशनं, मोदानुभवः ।

अनुयायी, वि. (सं. विन्) अनु, नामिन्-कारिन् ।

अनुरक्त, वि. (सं.) अनुरागिन्, बडानुराग, कृतप्रणय, आसक्तचित्त २. लीन, मग्न ।

अनुराग, सं. पुं. (सं.) रागः, प्रेमन् (पुं. न.), स्नेहः, प्रणयः, भावः, प्रीतिः-आसक्तिः (स्त्री.) ।

अनुरागी, वि. (सं. गिन्) दे. 'अनुरक्त' ।

अनुरूप, वि. (सं.) सदृश, समान, तुल्य २. योग्य, उपयुक्त, अनुकूल ।

अनुरूपता, सं. स्त्री. (सं.) सादृश्यं, सामान्यं २. अनुकूलता, उपयुक्तता ।

अनुरोध, सं. पुं. (सं.) आग्रहः, निर्बन्धः, अभिनिवेशः २. प्रेरणा ३. विद्मः ।

अनुलेपन, सं. पुं. (सं. न.) वि, लेपनं, अभ्यजनं, ममालम्भः, उद्वर्तनम् ।

अनुलोम, सं. पुं. (सं.) निम्नग-अवतरण, क्रमः, अवरोहः ।

—विवाह, सं. पुं. (सं.) उच्चवर्णपुरुषस्य हीनवर्णया स्त्रिया विवाहः ।

अनुवर्तन, सं. पुं. (सं. न.) अनु, नामने-करण-सरणम् ।

अनुवर्ती, वि. (सं. विन्) अनु, नामिन्-कारिन् सारिन् । (अनुवर्तिना स्त्री.) ।

अनुवाद, सं. पुं. (सं.) भाषान्तरम् २. पुनरुक्तिः (स्त्री.), पुनर्वचनम् ।

अनुवादक, सं. पुं. (सं.) भाषान्तरकारः ।

अनुवादिने

[१८]

अन्योन्याश्रय

अनुवादिन, वि. (सं.) साधान्तरित, अनूदित, सुनानुवाद ।
 अनुवृत्ति, सं. स्त्री. (सं.) उपजोविका, सेवामार्गः २. पूर्ववर्तिवाक्यांशस्य अर्थरपष्टतायै अग्रे योजनम् ।
 अनुशासक, वि. (सं.) अनुशासिन् नियन्तु, अनुशास्त्र, अनुशासितृ २. शिक्षक, उपदेशक ३. दंडक ।
 अनुशासन, सं. पुं. (सं. न.) आदेशः, आह्ला २. उपदेशः, शिक्षा ३. व्याख्यानं, विवरणम् ।
 अनुशासित, वि. (सं.) अनुशिष्ट, नियमित २. उपदिष्ट ३. दण्डित ।
 अनुशीलन, सं. पुं. (सं. न.) चिन्तनं, मननं, आलोचनं २. आवृत्तिः (स्त्री.), पुनरभ्यासः ।
 अनुशोक, सं. पुं. (सं.) अनु-ताप-शयः, पश्चात्तापः ।
 अनुपंग, सं. पुं. (सं.) सम्बन्धः, संसर्गः २. करुणा, दया ।
 अनुष्ठान, सं. पुं. (सं. न.) कार्यारम्भः २. सविधिसम्पादनं ३. फलविशेषाय देवताराधनं, पुरश्चरणम् ।
 अनुसन्धान, सं. पुं. (सं. न.) अन्वेषण-णा, निरूपणं, मार्गणम् २. प्रयासः, प्रयत्नः ।
 अनुसरण, सं. पुं. (सं. न.) अनुगमनं, सङ्गमनं २. अनुकरणं ३. अनुकूलाचरणम् ।
 अनुसार, कि. वि. (सं. न.) अनुकूलं, सङ्गमनं (सब अर्थे) ।
 अनुन्धान, सं. पुं. (सं.) सङ्गवेदाभ्येता, स्नातकः २. विद्यारसिकः ३. चरित्रवत् ।
 अनुस्वार, सं. पुं. (सं.) स्वरानन्तरमुच्चार्यमाणोऽनुनासिको वर्णविशेषः २. अनुनासिक विहं () ।
 अनुष्ठा, वि. (सं. अनुत्य) अपूर्व, विलक्षण, विशिष्ट २. सुन्दर, श्रेष्ठ ।
 —पन, सं. पुं., वैविध्यम्, वैलक्षण्यं ।
 अनूदित, वि. (सं.) पुनः कथित-वर्णित २. अनुवादिन, साधान्तरित ।
 अनुप, वि. (सं.) जल-प्राय-बहुल । सं. पुं., जलप्रायदेशः, जलबहुलः ।
 अनुप, वि. (सं. अनुपम) अतुल्य, अद्वितीय २. सुन्दर, स्वच्छ ।
 अनेक, वि. (सं.) एकाधिक, बहु, असंख्येय ।

अनोखा, वि. (सं. अनु + बोक्ष) १. अद्भुत, विलक्षण २. नूतन, नव ३. सुन्दर, स्वच्छ ।
 —पन, सं. पुं., विलक्षणता; नूतनता; सुन्दरता ।
 अन्न, सं. पुं. (सं. न.) मध्यपदार्थः २. दे. 'अनाज' ३. एकमन्नं, भक्षम् ।
 —जल, सं. पुं. (सं. न.) भोजनपानं २. जीविका, वृत्तिः (स्त्री.) ३. देव, देव-योग-वटना-गतिः (स्त्री.) ।
 —दाता, सं. पुं. (सं. न.) अन्नदः, मक्ष-दायकः २. पोषकः । (—दात्री स्त्री.) ।
 —पूर्णा, सं. स्त्री. (सं.) अन्नविभ्राजो देवी ।
 —प्राशन, सं. पुं. (सं. न.) शिशुनां संस्कारभेदः ।
 —प्रयकोश, सं. पुं. (सं.) स्थूलशरीरम् ।
 अन्ना, स. स्त्री. (सं. अन्ना) धात्री, उपमात् (स्त्री.), मातृका, अङ्गपाली ।
 अन्नाद्, सं. पुं. (सं.) अन्नमश्रुकः २. इधरः ३. विष्णुः ।
 अन्य, सं. (सं.) अपर, द्वितीय, अन्तर्भाव, पर, भिन्न ।
 —देशीय, वि. (सं.) पर-वि, देशीय ।
 —पुरुष, सं. पुं. (सं.) भिक्ष-पर-अपर, पुरुषः २. प्रथमपुरुषः (न्या.) ।
 —पुष्ट, सं. पुं. (सं.) पिकः, कौकिलः ।
 —मनस्क, वि. (सं.) चिन्तित, विषण्ण, विन्न ।
 अन्यतः, अव्य. (सं.) अन्यरमात् प्रजात् रथानात् वा ।
 अन्यत्र, अव्य. (सं.) अपरत्र, अन्यरिमन् स्थानं ।
 अन्यथा, अव्य. (सं.) इतरथा, २. विपरीतं, विरुद्धं ३. असत्यम् ।
 अन्यापदेश, सं. पुं. (सं.) दे. 'अन्योनि' ।
 अन्याय, सं. पुं. (सं.) अपर्णः, अनयः, अनयतिः (स्त्री.) ।
 अन्यायी, वि. (सं. थिन्) अन्यःप्रवृत्तिन्, अन्यथाचारिन्, कूर, पाप, धर्मोन्मुख ।
 अन्याय्य, वि. (सं.) न्याय-परमं-रहित-विपरीत-विरुद्ध ।
 अन्योक्ति, सं. स्त्री. (सं.) अन्यापदेशः, अलंकारभेदः (सा.) ।
 अन्योन्य, कि. वि. (सं. नं.) परस्परं, मियः, इतरतरं २. वि. परस्पर ।
 —आश्रय, सं. पुं. (सं.) अन्योऽन्यापेक्षा, परस्परामयः २. सापेक्षानम् ।

अन्वय, सं. पुं. (सं.) परस्परसम्बन्धः
 १. संयोगः, संसर्गः २. पद्यपदानां शब्दवाक्यव्यवस्थापनम् ४. अवकाशः, शून्यस्थानं ५. कार्यकारणसम्बन्धः ६. वंशः, कुलम् ।
 अन्वर्थ, वि. (सं.) अधोनुसारिन्, सार्थक ।
 अन्वित, वि. (सं.) युक्त, सहित, संगत ।
 अन्वीक्षण, सं. पुं. (सं. न.) ध्यायं, भावयं, विमर्शः २. दे. 'अनुसन्धान' ।
 अन्वेषण, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'अनुसन्धान' ।
 अन्वेषी, वि. (सं.-विभ्) अन्वेषक, अन्वेष्टृ (पुं.), गवेषक, अनुसन्धातृ ।
 अन्वेष्टव्य, वि. (सं.) अन्वेषणीय, अनुसन्धेय, विधेय ।
 अपंग, वि. (सं. अपांग) हीनांग, व्यंग, न्यूनग २. पङ्क्ति, अक्षर (हीनांगी, व्यंग्यः स्त्री.) ।
 अपङ्क्ति, वि. (सं.) अक्ष, मूर्ख, निरक्षर ।
 अप, उप. (सं.) वैपरीत्यविरोधविकारविधोगवर्जनादिद्योतक उपमार्गः ।
 अपकर्ता, वि. (सं.-र्तृ) अनिष्ट-हानि-अहित, कर्तृ-कर-कारक ।
 अपकर्ष, सं. पुं. (सं.) नीचैः कर्षणं, परतमं २. अपनतिः (स्त्री.), क्षयः ३. अपमानं, अनादरः ।
 अपकार, सं. पुं. (सं.) अमर्दं, अहितं, अनिष्ट-साधनं, हानिः-अपकृतिः (स्त्री.) ।
 अपकारक, वि. (सं.) अपकारिन्, हानिकारक ।
 अपकीर्ति, सं. स्त्री. (सं.) दुष्कीर्तिः, अपप्रशम् (न.), पाचयता, कलंकः, निन्दा ।
 अपकृष्ट, वि. (सं.) पतित, अष्ट २. अधम, निम्न ३. घृणित ।
 अपच, सं. पुं. (सं. >) अपाकाः, अजीर्ण, अजीर्णः (स्त्री.), मन्दाग्निः, अन्नविकारः ।
 अपघ्न, सं. पुं. (सं.) क्षति-हानिः (स्त्री.) २. व्ययः, नाशः ।
 अपह, वि. (सं. अपाह) निरक्षर, अशिक्षित, पठनलक्षनासमर्थ २. मूर्ख ।
 अपत्य, सं. पुं. (सं. न.) सन्तानः, सन्ततिः-प्रभृतिः (स्त्री.), प्रजा, प्रसवः, लोकम् ।
 अपथ, सं. पुं. (सं. पुं. न.) कु-विकट, मार्गः, कुपथः ।
 अपथ्य, वि. (सं.) कुपथ्य, रोपजनक, स्वास्थ्य-नाशक २. अहितकर ।

अपना, वि. (सं. आत्मनः) स्वीय, स्वकीय, स्वक, आत्मीय, निज, स्व, आत्मन् ।
 —पन, सं. पुं., आत्मीयता, समता २. आत्मनिर्माणः ।
 अपनाना, क्रि. स. (हिं. अपना) आत्मसात् कृ, स्वाधीन-स्वायत्त (वि.) + कृ २. स्वीकृ, अंगीकृ, प्रतिपद (दि. आ. अ.), अभ्युपगम् ३. ग्रह (कृ. प. सं.) ।
 अपभ्रंश, सं. पुं. (सं.) पतनं, अवनतिः (स्त्री.) २. विकारः ३. विकृतशब्दः ४. प्राकृतभाषाभेदः । वि. विकृत ।
 अपमान, सं. पुं. (सं.) अनादरः, अवमानः, अवहा, अवधीरण-णा, उपेक्षा, तिरस्कारः, परिभवः ।
 —करना, क्रि. स., अवयन् (दि. वा. अ.), उपेक्ष (भा. आ. से.), अवहा (कृ. उ. अ.), अवगण (जु.), तुच्छी-लघू-कृ ।
 अपमानित, वि. (सं.) अनादृत, अवमानित, अवहात, अवधीरित, अवगणित ।
 अपमानी, वि. (सं.-निन् >) तिरस्कर्तृ, अवज्ञातृ, अवगणयितृ ।
 अपमृत्यु, सं. पुं. (सं.) कुमृत्युः २. अकाल-असमय-मृत्युः ।
 अपयथा, सं. पुं. (सं.-शस् न.) दे. 'अपकीर्ति' ।
 अपरं च, अन्ध. (सं.) अन्यच्च २. पुनः, पुनरपि ।
 अपरंपार, वि. (सं. अपरपार >) अनन्त, असीम, अमित, निरवधि ।
 अपर, वि. सर्व. (सं.) प्रथम, अग्रिम २. अन्तिम, अन्त्य ३. अन्य, भिन्न ४. आत्मीय, स्वकीय ।
 —पक्ष, सं. पुं. (सं.) असित-कृष्ण-पक्षः २. प्रतिवादिन् ।
 अपरा, सं. स्त्री. (सं.) लौकिक-पदार्थ-विद्या २. पश्चिमदिशा । वि. अन्धा ।
 अपराधा, सं. पुं. (सं.) दोषः, वैरम् २. अरुचिः (स्त्री.) ३. असम्तोषः ।
 अपराजित, वि. (सं.) अजित, दे. 'अजोत' ।
 अपराजेय, वि. (सं.) अजेय, दे. 'अजय्य' ।
 अपराध, सं. पुं. (सं.) दोषः, प्रमादः, स्खलितं, छिद्रं, पापं, वाक्यम् ।

अपराध करना

[२०]

अपाहिज

—करना, क्रि. अ., विभ्रम् (भ्वा. दि. प. से), अपराध् (दि. स्वा. प. अ.), उत्पद्यं या (अ. प. अ.), स्खल्विक्वल्-व्यतिचर् (भ्वा. प. से.), प्रमद (दि. प. से. प्रमाद्यति) ।

—हीन, वि. (सं.) अनिर्, ऋष, अन्व, अनवय ।

अपराधी, वि. (सं. धिन्) सापराध, दोषिन्, दोषवत्, वाच्य, निन्द्य, सावधान (अपराधिनी स्त्री) अपराह् सं. पुं. (सं. अपराहः) पराहः, विकालः, दिनरथ तृतीयो यामः ।

अपरिमह, सं. पुं. (सं.) अस्वी अन्वी, कारः, दानार्यागः २. विरामः, संगत्यागः ।

अपरिचित, वि. (सं.) अज्ञात, पर, पारक्य, अन्यजनः २. परिचयरहित, अह ।

अपरिमित, वि. (सं.) असीम, अमित, अनन्त २. असंख्य, अगणित ।

अपरिमेय, वि. (सं.) अमेय, अपरिमाण, दुर्मेय, महत्, बहु ।

अपरिधर्तनीय, वि. (सं.) स्थिर, भ्रुव २. अपरिहार्य, अवश्यभाविन् ३. अविनिमेय ।

अपरिर्भासित, वि. (सं.) अविज्ञत, परिवर्तन-रहित ।

अपरीक्षित, वि. (सं.) अकृतपरीक्ष, अननुयुक्त, अप्रदिनत ।

अपरेशान, सं. पुं. (अं. अपरेशन्) शक, क्रिया-कर्मन् (न.) उपायः-उपचारः-चिकित्सा ।

अपर्याप्त, वि. (सं.) न्यून, अल्प, हीन, क्षीण ।

अपवर्ग, सं. पुं. (सं.) मोक्षः, वि. सुक्तिः (स्त्री) निस्तारः, निर्वाणं २. त्यागः, दानम् ।

अपवाद, सं. पुं. (सं.) विरोधः, प्रतिवादः २. निन्दा, अपकीर्तिः (स्त्री) ३. दोषः, पार्श्व ४. बाधकशालं, विशेषः ।

अपवादी, वि. (सं. धिन्) अपवादकः, निन्दकः २. बाधकः, विरोधिन् ।

अपवित्र, वि. (सं.) पाप, अधार्मिक, २. अशुद्ध, मलिन, दूषित, अशुचि ।

अपवित्रता, सं. स्त्री. (सं.) धर्महीनता, पाप-शीलता २. मलिनता, अशुचित्वा ।

अपव्यय, सं. पुं. (सं.) मुक्तहस्तव्यं, अति-बहु-अमित, अव्ययः, अयोत्सर्गः ।

अपव्ययी, सं. पुं. (सं. धिन्) मुक्तहस्त, उत्सर्गिन्, व्ययपरः ।

अपशकुन्, सं. पुं. (सं. पुं. न.) कु-अशुभ दुर, लक्षणं, अजन्यं, दुःखिहम् ।

अपशब्द, सं. पुं. (सं.) गाली, अपवादः २. अशुद्धपदं ३. निरर्थकशब्दः ४. अपान-अन्व-वानः-वायुः ।

अपसम्प, वि. (सं.) दक्षिण, सन्धेतर २. विप-रीत ३. दक्षिणसन्धेन यज्ञोपवीतधारणम् ।

अपस्मार, सं. पुं. (सं.) आमरं, अंगविकृतिः (स्त्री), भूतविक्रिया ३. 'मिरसी' ।

अपहरण, सं. पुं. (सं. न.) अपहारः, मोषणं, विलुण्ठनम् २. संगोपनं, लोचनम् ।

अपहृत, वि. (सं.) चोरितं, बलत नीतम् ।

अपहृति, सं. स्त्री. (सं.) अपहृत्यः, गोपनं, प्रच्छादनं, तिरोधानम् । २. व्याजः, कपटं, छलं, अपदेशः ।

अपांग, सं. पुं. (सं. पुं. न.) नेत्रकोणाः, नयनो-गान्तः २. कटाक्षः । वि. व्यङ्ग, अंगहीन ।

अपात्र, वि. (सं. न.) गुणहीन, अनर्ह, अयोग्य २. कुमाण्डं, कुपात्रम् ।

अपादान, सं. पुं. (सं. न.) पृथक्-अपा-करणम् २. पञ्चमं कारकम् (व्या.) ।

अपान, सं. पुं. (सं.) नासिकया बहिः श्लिष्य-माणो वायुः २. अन्व-गुदस्थ-वायुः ३. गुदं, मलद्वारम् । वि. दुःखनाशक (ईश्वर) ।

—वायु, सं. स्त्री. (सं. पुं.) दक्षिणेषु अन्य-तमः २. अन्व-गुदस्थ-वायुः ।

अपाप, सं. पुं. (सं. न.) पुण्यम् । वि. निष्पाप, धार्मिक ।

अपाय, सं. पुं. (सं.) प्रस्थानम् २. पार्थक्यम् ३. लोपः ४. नाशः ५. विपत्तिः (स्त्री) ६. हातिः (स्त्री) ।

अपार, वि. (सं.) असीम, अनन्त २. असंख्य, बहु ।

अपार्थिव, वि. (सं.) अमार्तिक, अमृन्मय २. अर्धम ३. दिव्य, अलौकिक ।

अपावन, वि. (सं.) अशुद्ध, अपवित्र, मलिन ।

अपावरण, सं. पुं. (सं. न.) अपावृत्तिः (स्त्री), उद्घाटनम् २. आ-प्रा-नमाच्छा-दनम् ३. परिवेष्टनम्, परिवारणम् ।

अपाहिज, वि. (सं. अपभञ्ज >) त्रिकलांग (-गी स्त्री.) विकर, बर्षंग, हीनाङ्ग ।

अपि, अव्य. (सं.) १. (= भी) च. अपि च, पुनश्च, अपरं च । २. (= ही) केवलं, एव, मात्र ।

—च, अन्यथा, पुनश्च ।

—तु, किन्तु, परन्तु २. प्रत्युत ।

अपील, सं. स्त्री. (अं. अप्पील) पुनर्विचार-प्रार्थना २. निवेदनं ३. प्रार्थनापत्रम् ।

अपीलांट, सं. पुं. (अं.) निवेदकः, विचारार्थं प्रार्थिन् ।

अपुत्र, वि. (सं.) निरपत्य, निस्सन्तान २. पुत्रहीन ।

अपूत, वि. (सं.) अपवित्र, अशुद्ध ।

अपूत, वि. (सं. अपुत्र दे.) । सं. पुं., कुपुत्रः ।

अपूप, सं. पुं. (सं.) पूषः, पिष्टकः ।

अपूर्ण, वि. (सं.) असमाप्त, सावशेष २. न्यून ।

अपूर्व, वि. (सं.) अभूत-अदृष्ट, पूर्व २. अद्भुतः, अलौकिक ३. अनुपम, श्रेष्ठ ।

अपुत्रता, सं. स्त्री. (सं.) क्लिप्तज्ञाना, लोकोत्तरता-अपेक्षा, सं. स्त्री. (सं.) आकाक्षा, इच्छा, अभिलाषाः २. आवश्यकता ३. तुलनया अपेक्षायाः (दोनो तुलनायन्त) ।

अपेक्षित, वि. (सं.) अप्रीष्ट, भावस्थक ।

अप्रचरि (छि) त, वि. (सं.) अप्रयुक्त, अव्यवहृत ।

अप्रतिपत्ति, सं. स्त्री. (सं.) दोषाभासार्थं २. निश्चयाभावः ।

अप्रतिपत्ति, वि. (सं.) अतपस्य, प्रतिमान-सृष्टि-शून्य २. निर्वृद्धि ३. अलस ४. लज्जावत्, सलज्ज ।

अप्रतिम, वि. (सं.) अनुल्य, अप्रतिरूप, दे. 'अतुल' ।

अप्रतिरथ, वि. (सं.) अनुपम-अतुल्य वीर २. अनुपम, अप्रतिम ।

अप्रतिष्ठ, वि. (सं.) कुर्यात्, अपमानिन २. अस्थिर, चंचल ।

अप्रतिष्ठा, सं. स्त्री (सं.) अपमानः, अवमानः, निरदकारः २. अशैर्ष्यं, नांस्वपन ।

अप्रत्यक्ष, वि. (सं.) परोक्ष, गुप्त, इन्द्रियातीत ।

अप्रयुक्त, वि. (सं.) अव्यवहृत, अप्रचरि(छि)त ।

अप्रसन्न, वि. (सं.) कुपित, क्रुद्ध २. अप्रीत, अतृष्ट ३. खिन्न, शोकाकुल ।

अप्रसन्नता, सं. स्त्री. (सं.) प्रीति प्रसन्न-अभावः २. रोषः ३. खेदः, विमनस्कता ।

अप्रसिद्ध, वि. (सं.) अविश्रुत, अविख्यात २. गुप्त ।

अप्रस्तुत, वि. (सं.) अनुपस्थित, अविद्यमान २. अप्रासंगिक ३. अनुद्यत ४. गौण ।

—प्रशंसा, सं. स्त्री. (सं.) अलंकारभेदः (स्त्री.) ।

अप्राप्त, वि. (सं.) अलम्ब, २. अनधिगत २. दुर्लभ ३. अप्रस्तुत ४. अनागत ।

अप्राप्त्य, वि. (सं.) अलम्ब्य, अनविगम्य, अप्राप्तन्य ।

अप्रामाणिक, वि. (सं.) अवैध, प्रमाणशून्य २. अविश्वसनीय ।

अप्रासंगिक, वि. (सं.) असम्बद्ध, अप्रस्तुत, प्रकरणसंगत ।

अप्रिय, वि. (सं.) अनिष्ट, अरुचिकर, अनभि-मत । सं. पुं., शत्रुः ।

अप्रैटिस, सं. पुं. (एप्पेटिस) अन्तेवासिन्, शिष्यः, शिष्यविधाधिन् ।

अप्रैल, सं. पुं. (अं. एप्रिल) आंग्लवर्षस्य चतुर्थमासः ।

—फूल, सं. पुं. चोपहास्यः, मधुमासमूर्त्तः ।

अप्सरा, सं. स्त्री. (सं.) अप्सरसः (स्त्री. बहु.), स्वर-स्वर्ग-वेद्या-नाकनर्तकीः ।

अफ़्यून्, सं. स्त्री. (फ्रा.) दे. 'अफ़ीम' ।

अफ़रना, कि. अ. (नं. स्फार = प्रचुर >) संपरि-तृप्त-तृष् (दि. प. अ.) २. स्फाय (शश. आ. से.), प्र-वृष्, चि (मा. वा. प्रची) यत् ३.) ३. दे. 'ऊवता' ।

अफ़रा, सं. पुं. (सं. स्फारः) उदर, स्फोतिः (स्त्री.)-उपचयः २. अजीर्णवातादिभिः उदर-वृद्धिः (स्त्री.) ।

अफ़रातफ़री, सं. स्त्री. (अ. अफ़रात तफ़रीत) संश्लोमः, अन्वयस्था २. संभ्रमः, आकुलत्वम् ।

अफ़रीका, सं. पुं. (अं. एफ़िका) कालदीपम् ।

अफ़ल, वि. (सं.) निष्फल, मोघ, व्यर्थ ।

अफ़वाह, सं. स्त्री. (फ्रा.) जन-प्रवादः, जन-श्रुतिः (स्त्री.), किंवदन्ती, लोक-वाद-वास्ता ।

अफ़सर, सं. पुं. (अं. ऑफ़िसर) दे. 'अधिकारी' ।

अफ़मरी, सं. स्त्री. (हि. अफ़सर) अफि-कारिता २. शासनं ।

अफ़साना, सं. पुं. (फ्रा) कथा, वास्तव्यायिका ।

अफ़सोस, सं. पुं. (फ्रा) दुःख, क्लेशः २. पश्चा-त्तापः, अनुशयः, अनुशोकः, खेदः ।

अफारा

[२२]

अभिचारक

अफारा, सं. पुं. (हि. अफरना) आप्मानम्
(उदररोगः) ।

अ(ए) फ़ीडेविट, सं. पुं. (अं.) शपथ-
पत्रम् ।

अफीम, सं. स्त्री. (यू. ओपियम, अं. ओपियम)
अहिकेनं, अफेनम् ।

अफीमी । सं. पुं (हि. अफीम) अफेन-अहि-
अफीमची । केन, मक्षकः-व्यसनिन् ।

अव, क्रि. वि. (सं. अथ, अव ?) अधुना,
इदानीं, सम्प्रति, साम्प्रतं, वर्तमाने ।

—का, वि, आधुनिक, साम्प्रतिक ।

अवज्जरवेटरी, सं. स्त्री. (अं. ऑबज्जवेटरी)
मानमन्दिरं, वेधशाला ।

अवतर, वि. (फ़ा.) निन्दित, गद्दी २. विकृत ।

अवतरी, सं. स्त्री. (फ़ा.) विकारः, विकृतिः (स्त्री.) ।

अबरक, (-ख) सं. पुं. (सं. अब्रकं) गिरिजा-
मलं, शुभ्रं, बहुपत्रम् ।

अबरी, सं. स्त्री. (फ़ा.) चिकणपत्रभेदः
२. पीतपाषाणभेदः ।

अबरू, सं. स्त्री. (फ़ा.) भ्रूः (स्त्री.), भ्रूला ।

अबला, सं. स्त्री. (सं.) नारी, रमणी ।

अबाध, वि. (सं.) निर्विघ्न, निर्बाध
२. असीम ।

अबाध्य, वि. (सं.) उच्छृङ्खल, उदाम २. अनि-
वार्यं, अप्रतिकार्यं, दुर्निवार ।

अबाबील, सं. स्त्री. (फ़ा.) कृष्णा, कृष्ण-
चटकभेदः ।

अबीर, सं. पुं. (अ.) दे. 'गुलाक' ।

अबुश, वि. (सं. अबुश) मूर्खं, अज्ञ, अबुध ।

अवे, अव्य, (सं. अयि ?) अरे, हे ।

अबोध, सं. पुं. (सं.) अज्ञानं, मौख्यम् । वि.,
मूर्खं, अज्ञ ।

अब्ज, सं. पुं. (सं. न.) कमलं, पद्मम्
२. जलजातः पदार्थः ३. शंखः ४. चन्द्रः
५. धन्वन्तरिः ६. कर्पूरः-रं ७. शतं कौटयः ।

अब्जा, सं. स्त्री. (सं.) लक्ष्मीः (स्त्री.), रमा ।

अब्द, सं. पुं. (सं.) वर्षः-र्षं, हासनः, वत्सरः
२. मेघः ३. कर्पूरः-रं ४. आकाशः-शम् ।

अब्धि, सं. पुं. (सं.) समुद्रः २. तहायः ३.
सर्पैत संख्या ।

अब्बा, सं. पुं. (फ़ा.) पितृ, जनकः ।

अब्र, सं. पुं. (फ़ान. सं. अब्रम्) मेघः, घनः ।

अब्राह्मण्यं सं. पुं. (सं. न.) अब्राह्मणोचितं कर्मन्
(न.) २. हिंसादिकर्मन् ।

अब्राह्मण, सं. पुं. (सं.) अधिपः, अभूसुरः,
ब्राह्मण-विप्र-इतरः । वि. ब्राह्मणरहित ।

अभंग, वि. (सं.) पूर्णं, सकल २. नित्य,
अनन्तर ३. अनन्तरं, निरन्तर ।

अभंगुर । वि. (सं.) दृढ, अल्प
अभंजन] २. अनन्तर ।

अभक्त, वि. (सं.) मक्ति-अज्ञा, हीन-रहित २.
अखण्ड, सम्पूर्ण ।

अभक्ष्य, वि. (सं.) अखाद्य, अभोज्य ।

अभद्र, वि. (सं.) अशुभ, अमांगलिक २. तुच्छ ।

अभय, वि. (सं.) निर्भय, अर्भात । सं. पुं.
(सं. न.), भय-त्रास, अभावः ।

—दान, सं. पुं. (सं. न.) रक्षा-त्राण, वचनं-
प्रतिष्ठा २. रक्षणं, शरणदानम् ।

—पद, सं. पुं. (सं. न.) नुक्तिः (स्त्री.) ।

अभर्तुका, सं. स्त्री. (सं.) विधवा, रंडा २.
कुमारी, कन्या ।

अभक्ष्य, वि. (सं.) अशुभ, अमांगलिक
२. कुदशनं, कुरूप ३. प्रमथितव्य ४. अद्भुत
५. अशिष्ट ।

अभागा, वि. (सं. अभाग) अ-मन्द-भाग्य,
प्रारम्भ-भाभ्य-हीन ।

अभागी, वि. (सं-गिन्) भाग्यहीन २. भाग-
हीन, अदायाद ।

अभाग्य, सं. पुं. (सं. न.) दुर्दैवं, मन्द-दौर्ः,
भाग्यम् ।

अभाजन, सं. पुं. (सं. न.) अपात्रं, कुपात्र, दुष्टः ।

अभाव, सं. पुं. (सं.) सत्ताऽभावः, अविक्रमानता ।

अभावनीय, वि. (सं.) अचिन्तनीय ।

अभि, उप. (सं.) सामोप्यदूरताऽऽभिमुख्य-
वौत्सादिद्योतक उपसर्गः ।

अभिक्रमण, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'आक्रमण' ।

अभिलषा, सं. स्त्री. (सं.) शोभा, श्रीः (स्त्री.)
२. यशस् (न.) कीर्तिः (स्त्री.) ।

अभिगमन, सं. पुं. (सं. न.) उपसर्पणं
२. मेथुनम् ।

अभिगामी, वि. (सं-मिन्) उपसर्पक
२. संभोगकर्तृ ।

अभिचार, सं. पुं. (सं.) मंत्रैर्मरिणोच्चाटनादिक्रियाः ।

अभिचारक, वि. (सं.) अभिचारिन् ।

अभिजन

[२३]

अभिलाषा

अभिजन, सं. पुं. (सं.) कुलं, वंशः, २. जन्म-
भूमिः (स्त्री.) ३. कुले वृद्धतमः पुरुषः ४.
ख्यानिः (स्त्री.) ।

अभिजात, वि. (सं.) कुलीन, सुकुलोत्पन्न २.
बुध, पटिन, ३. योग्य ४. मान्य ५. सुन्दर ।

अभिज्ञ, वि. (सं.) ज्ञातु, विश २. निपुण, कदल ।

अभिज्ञान, सं. पुं. (सं. न.) स्मृतिः (स्त्री.),
अनुबोधः २. लक्षणं, स्मारकचिह्नम् ।

अभिज्ञाप, सं. पुं. (सं.) अतिशय-अत्यधिक-
तापःद्वारा २. पीडा, वेदना ।

अभिधा, सं. स्त्री. (सं.) शब्दस्य वाच्यार्थ-
प्रकाशिका शक्तिः (स्त्री. सा.) ।

अभिधान, सं. पुं. (सं. न.) संज्ञा, नामन् (न.)
२. कथनं, ३. शब्दकोशः (-र्ष) षः
(वन) ।

अभिधायक, वि. (सं.) नामकारक २. वन्द्य
३. परिचायक ।

अभिधावन, सं. पुं. (सं. न.) आक्रमणम्,
अभिद्रवः ।

अभिधेय, वि. (सं.) वाच्य, प्रतिपाद्य । सं. पुं.
(सं. न.) नामन् (न.), संज्ञा ।

अभिध्यान, सं. पुं. (सं. न.) इच्छा, वांछा
२. कामः ३. चिन्तनम् ।

अभिनन्दन, सं. पुं. (सं. न.) प्रशंसा
२. आनन्दः ३. सन्तोषः ४. प्रोत्साहनं
५. प्रार्थना ।

—पत्र, सं. पुं. (सं. न.) प्रशंसा-प्रतिष्ठा, पत्रम् ।

अभिनन्दनीय, वि. (सं.) स्तुत्य, वन्दनीय ।

अभिनय, सं. पुं. (सं.) नाट्यं, अंगविशेषः
२. अवस्थानुकृतिः (स्त्री.) ३. नाटककीर्ति ।

—करना, क्रि. सं. नट्-निरूप (चु.), अभिनी
(भा. प. अ.), प्रयुज् (चु.) ।

अभिनव, वि. (सं.) नव, प्रस्यय ।

अभिनविष्ट, वि. (सं.) प्रविष्ट २. उपविष्ट
३. मय, लीन ।

अभिनवेश, सं. पुं. (सं.) प्रवेशः २. मनो-
योगः, उकाग्रचिन्तनम् ३. वृद्धसंबन्धः ४. मृत्यु-
भयङ्कशः ।

अभिनीत, वि. (सं.) उपनीत २. अलंकृत
३. कथित, नाटित ४. उन्नत ।

अभिनेता, सं. पुं. (सं.-नेत्) नटः, नर्तकः,
कुशाक्षरः, शैल्यः (अभिनेत्री, नटी, नर्तकी स्त्री.)

अभिनेय, वि. (सं.) नाटयितव्य, रूपणीय,
अदिनयाहं ।

अभिन्न, वि. (सं.) अविमक्त, संलग्न, संसृष्ट ।

अभिप्राय, सं. पुं. (सं.) आशयः, भावः-
अर्थः, तात्पर्यं, प्रयोजनम् ।

अभिप्रेत, वि. (सं.) इष्ट, अभिलषित ।

अभिभव, सं. पुं. (सं.) पराजयः २, अवहा,
तिरस्कारः ।

अभिभावक, वि. (सं.) अभिमाविन्, पराजेत्
तिरस्कृतं (२) वशिन् (३) संरक्षक ।

अभिभाषण, सं. पुं. (सं. न.) समापनि-
(लिखित) भाषणम् २. व्याख्यानम्
३. कथनम् ।

अभिभूत, वि. (सं.) पराजित, विजित
२. पीडित ३. वशीभूत ४. व्याकुल ।

अभिमंत्रण, सं. पुं. (सं. न.) मन्त्रैः पवित्री-
करणं-संस्करणम् २. आवाहनम् ।

अभिमत, वि. (सं.) इष्ट, मनोनीन, वाञ्छित
२. सम्मत । सं. पु., मतं, मतिः (स्त्री.)
२. विचारः ३. अभीष्टपदार्थः ।

अभिमन्यु, सं. पुं. (सं.) अर्जुनसुतः ।

अभिमान, सं. पुं. (सं.) अहंकारः, गर्वः,
मदः, दर्पः, उत्तेकः, अक्लेशः, मानः, अहंमानः ।

अभिमानो, वि. (सं.-निन्) गवित, दृप्त, मत्त,
उत्सिक्त, अहंकारिन्, मानिन्, अवलिप्त ।

अभिसुख, क्रि. वि. (सं.) अभि-सं-सुखं-सुखे,
पुरः, पुरतः, पुरस्तात्, समक्षं, अग्र ।

अभियुक्त, वि. (सं.) प्रत्यर्धिन्, प्रतिवादिन् ।

अभियोक्ता, वि. पुं. (सं.-क्तृ) अर्धिन्, वादिन्,
अभियोगिन् ।

अभियोग, सं. पुं. (सं.) व्यवहारः, कार्यं,
अक्षः २. आक्रमणं ३. उद्योगः ४. मनो-
योगः ।

अभिराम, वि. (सं.) आहादक, मनोहर,
सुन्दर, रम्य ।

अभिहृत्, सं. स्त्री. (सं.) रुचिः-प्रभृतिः (स्त्री.),
कामः, अभिलाषः, छन्दः, इच्छा ।

अभिरूप, वि. (सं.) मनोहर, रमणीय ।

अभिलषित, वि. (सं.) वाञ्छित, ईप्सित, इष्ट ।

अभिलाषा, सं. स्त्री. (सं.-षः) वाञ्छा, काङ्क्षा,
स्पृहा, ईहा ।

अभिलाषी

[२४]

अभ्युदय

अभिलाषी, वि. (सं.-विन्) इच्छु, ईप्सु, अभिलाष (पु) क, वाञ्छक ।

अभिवादन, सं. पुं. (सं. न.) प्रणामः, नमस्कारः २. स्तुतिः (स्त्री.) ।

अभिषेकक, वि. (सं.) प्रकाशक, मूचक, बोधक ।

अभिषेक, वि. (सं.) प्रकटित, दशित, स्पष्टीकृत ।

अभिषेक्ति, सं. स्त्री. (सं.) प्रकाशनं, आविष्कारः, साक्षात्कारः ।

अभिव्याप्ति, सं. स्त्री. (सं.) सर्वव्यापकता-व्यापिता २. समावेशः ।

अभिज्ञप्त, वि. (सं.) आकुष्ट, शापग्रस्त, अभिज्ञस्त २. मिथ्यादूषित ।

अभिज्ञस्ति, सं. स्त्री. (सं.) अभि- ज्ञापः, आकोशः २. विपत्तिः-आपत्तिः (स्त्री.) ।

अभिज्ञाप, सं. पुं. (सं.) शापः, आकोशः २. दोषारोपः, मिथ्याभियोगः ।

अभिज्ञापित, वि. (सं.) दे. 'अभिज्ञप्त' ।

अभिर्षंग, सं. पुं. (सं.) पराजयः २. निन्दा ३. मिथ्यापवादः ४. आलिंगनं ५. शपथः ६. दुःखम् ७. भूतवेशः ।

अभिपत्र, सं. पुं. (सं.), सोमस्य निष्पीडनम् २. सोमपानम् ३. यज्ञः ४. यज्ञखानम् ।

अभिविक्त, वि. (सं.) खल्लापित, प्रक्षालित २. सिंहासने उपवेशित ३. यथाविधि निवृत्त ।

अभियेक, सं. पुं. (सं.) अभियेवनं, प्रोक्षणं, आ-अव-सैकः २. मार्जनं ३. सिंहासने स्थापनं ४. यज्ञान्तरं शास्तये खानम् ।

अभिस्यंद, सं. पु. (सं) सवनः, क्षरणं, प्रवाहः २. नेत्ररोगभेदः ।

अभिसंधि, सं. स्त्री. (सं. पुं.) अभिसंधानं, प्रवार्णणा, वचन-ना २. कृचकं, षड्यंत्रम् ।

अभिसार, सं. पुं. (सं.) अभिसारणं, नायक-नायिकयोः निश्चितस्थाने गमनं २. आश्रयः, साहाय्यं ३. युद्धम् ।

अभिसारिका, सं. स्त्री. (सं.) अभिसारिणी ।

अभिसारी, सं. पुं. (सं.-विन्) अभिसारकः ।

अभिहित, वि. (सं.) उक्त, कथित, उच्यते ।

अभी, कि. वि. (हिं. अब + ही) साम्प्रतमेव, अद्युनैव, अनिराट् ।

अभीर, सं. पुं- (सं. आभीरः) गोपः गोपालः ।

अभीष्ट, वि. (सं.) वाञ्छित, अभिलषित २. अभिप्रेत ३. मनोनीत । सं. पुं., मनोरथः ।

अभूत, वि. (सं.) अव्यति २. वर्तमान ३. विलक्षण ।

—पूर्व, वि. (सं.) अधटितपूर्व ३. अपूर्व, अदभुत ।

अभेद, सं. पुं. (सं.) भेदाभावः, एकत्वं, अभि-प्रता २. समानता । वि., भेदरहितः समान ।

अभेद्य, वि. (सं.) अच्छेद्य, अखण्डनीय, अभेदनीय ।

अभोज्य, वि. (सं.) दे. अभक्ष्य ।

अभौतिक, वि. (सं.) अप्राकृतिक २. अगोचर ।

अभौम, वि. (सं.) अपाथिव, अभूमिज

अभ्यंग, सं. पुं. (सं.) लेपः, लेपनं २. तैल-मर्दनं, स्नेहनम् ।

अभ्यंजन, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'अभ्यंग' २. नेत्रयोः क्षत्रलानक्षेपः ३. अंगरागः ।

अभ्यंतर, सं. पुं. (सं. न.) मध्यं, मध्य-भागः-द्वैतः-गर्भः २. हृदयम् ।

अभ्यर्थना, सं. स्त्री. (सं.) प्रार्थना, याचना २. पत्न्युद्धनम् ।

अभ्यर्थनीय, वि. (सं.) दावितव्य २. पत्न्युद्ध-नीय ।

अभ्यर्दन, सं. पुं. (सं. न.) उत्पीडनम् दे. ।

अभ्यसित, अभ्यस्त, वि. (सं.) अभ्यस्यन्ति-निरव्य-अनुक्ति-आवरित, अगङ्कित-पानःपुन्येन-व्याव-हित-सेवित-कृत ।

अभ्यागत, वि. (सं.) उपरिगत । सं. पुं., अतिथिः ।

अभ्यास, सं. पुं. (सं.) अभ्यसने, आवृत्तिः (स्त्री.), अनुशीलनम् २. (= अटनः शीलं, नित्यव्यवहारः, वृत्तिः (स्त्री.)) ।

—करना, कि. स., अभ्यस् (टि. प. ने.), पुनःपुनः विधा (लु. ड. अ.)-कृतत्वं अनुष्ठानं भा. प. अ.), असकृत् सेव (भा. आ. सं.) ।

अभ्यासी, वि. (सं. सिन्) साधक, अभ्यास-आवृत्ति-कर-कारक ।

अभ्युत्थान, सं. पुं. (सं. न.) उत्थानम् २. पत्न्युद्धमः ३. समृद्धिः-उन्नतिः (स्त्री.) ४. आगमः, उदयः ।

अभ्युदय, सं. पुं. (सं.) सूर्यदीनःपुदयः २. प्रादुर्भावः ३. मनोरथसिद्धिः (स्त्री.) ४. शुभावसरः ५. उन्नतिः (स्त्री.) ।

अभ्युपगम

[२५]

अभिन्न

अभ्युपगम, सं. पुं. (सं.) ममीपगमने, प्राप्तिः (स्त्री.) २. स्त्री-अङ्गीकारः ।

अभ्र, सं. पुं. (सं. न.) मेघः, जलयः २. आकाशः शं ३. अभ्रवां ४. मृगर्गम् ।

अभ्रगल, वि. (सं.) अशुभ. अभद्र, अशिव । सं. पुं. (सं. न.) अशुभं. अभद्रं, दौर्भाग्यं. अनिष्टम् ।

अभ्रचूर, सं. पुं. (सं. आभ्रचूर्ण) आतक्षोदः ।

अभ्रन, सं. पुं. (अ.) शान्तिः (स्त्री.), उपद्रवमात्रः ।

—अमान, —चैन, सं. पुं., सुखशान्ति, मंगलं, मद्रम् ।

अमर, वि. (सं.) अमर्यं, नित्य । सं. पुं., देवः, देवता (स्त्री.) २. पारदः, रसः ३. अमरसिंहः (कोशकारः) ।

—अमल, सं. स्त्री., अमरवह्नी, आकाशवह्नी ।

अमरत्व, सं. पुं. (सं. न.) मुक्तिः (स्त्री.) २. देवत्वं ३. चिरजीवनम् ।

अमरस, सं. पुं. (सं. आभ्ररसः) रसलद्रवः २. आभ्र-पर्यटा-पट्टी (हिं. अमपापल) ।

अमरांगना, सं. स्त्री. (सं.) देवांगना, देवी, अमरा ।

अमरा, सं. स्त्री. (सं.) अमरावती, दे. ।

अमराई, सं. स्त्री. (सं. आभ्ररानी) आभ्र-चूर्ण-वाटिका ।

अमरावती, सं. स्त्री. (सं.) इन्द्रपुरी, स्वर्गः ।

अमरीका, सं. पुं. (अमेरिका) नहराद्रोपविशेषः ।

अमरुत (द्र), सं. पुं. (सं. अमृतं >) पेयकं, इडलीज, मौसलम् ।

अमरेश-श्वर, सं. पुं. (सं.) दे. 'इन्द्र' ।

अमर्य, सं. पुं. (सं.) क्रोधः, रोधः २. क्षमाज-मात्रः, असहिष्णुता ।

अमल, वि. (सं.) स्वच्छ, निर्मल २. निर्दोष । सं. पुं., (सं. न.) अभ्रकं, गिरिजामलम् ।

अमल, सं. पुं. (अ.) व्यवहारः, आचरणं, चरितन २. अधिकारः, शासनं ३. मद्रः, मादः, शौण्डला ४. शीलं, वृत्तिः (स्त्री.), स्वभावः ५. प्रभावः ६. समर्थः ।

—करना, क्रि. ल., व्यवहृ (भ्वा. प. अ.), आचर (भ्वा. प. से.), विधा (जु. उ. अ.), कृ ।

—में आना, क्रि. अ., वृत् (भ्वा. आ. से.), भू ।

—दारी, सं. स्त्री. (अ. + दार.) शासनं, राज्यम् ।

अमलतास, सं. पुं. (सं. अम्ल) वृक्षप्रकारः ।

अमलवेत, सं. पुं. [सं. अ (आ) अम्लवेतसः] वेतसाम्लः, वीर-राज-रस-भाम्लः ।

अमला, सं. स्त्री. (सं.) लक्ष्मीः (स्त्री.) २. सातलवृक्षः ।

अमला, सं. पुं. (अ.) कार्याध्यक्षः ।

—फैला, सं. पुं., न्यायालयकर्मचारिणः ।

अमली, वि. (अ.) व्यवहारविषयक २. कर्मण्य ३. मरुप, पानासक्त, मादकद्रव्यसेविन् ।

अमहर, सं. स्त्री. (सं. आभ्र >) शुष्काभ्रशल्कम् ।

अमा, सं. स्त्री. (सं.) अमावस्या २. गृहं ३. बहलोकः ।

अमात्य, सं. पुं. (सं.) सचिवः, मन्त्रिन् ।

अमान, सं. पुं. (अ.) रक्षा, व्राणं २. शरणं, आश्रयः ।

अमानत, सं. स्त्री. (अ.) स्यात्यं, निक्षेपः, न्यासः, उपनिधिः ।

—रखना, क्रि. ल., निधा (जु. उ. अ.), निक्षिप् (जु. प. अ.), न्यस् (दि. प. से.), आधी कृ ।

—दार, क्रि. न्यासधारिन्, निक्षेपघाटक ।

—दारी, सं. स्त्री., प्रत्ययः, विश्वासः ।

—में खयान्त, सं. स्त्री., स्यात्वावहरणं दुर्वि-नियोगः ।

अमानिता, सं. स्त्री. (सं.) अमानित्वम्, नम्रत्वं, नम्रता ।

अमानी, वि. (सं-जित्) नम्र, पिनीत, निर-भिमान ।

अमासुष, वि. (सं.) अपौरुषेय, अमानशीय, अनिमर्यं २. पाशव, पशुनातिक । सं. पुं., मनुष्येतरः जीवः २. राक्षसः ३. देवः । (अमानुषी = अपौरुषेयी स्त्री.) ।

अमारी, सं. स्त्री. (अ.) वरदकः ।

अमावट, सं. स्त्री. (हिं. आम >) दे. 'अमरस' ।

अमावस, सं. स्त्री. [सं. अमाव (।) स्या] अमावासी, कृष्णपक्षस्यान्तिमतिथिः (पुं. स्त्री.), दशः, सूर्येन्दुसमागमः ।

अमित, वि. (सं. अ + ई. मिटना) अनाद्य, अमाद्येय, दाघन (-ती स्त्री.) ।

अमित, वि. (सं.) असीम, अपरिमित २. अत्यधिक ।

अभिन्न, सं. पुं. (सं.) शत्रुः । वि. मित्रहीन ।

अमीन, सं. पुं. (अ.) अधिकरणस्य कर्मकारिभेदः ।
 अमीर, सं. पुं. (अ.) अधिकारिन् २. धनिकः
 ३. उदारः ।
 अमीरी, सं. स्त्री. (अ.) धनाढ्यता, समृद्धिः
 (स्त्री.) ।
 असुक, वि. (सं.) सङ्कतित, निदिष्ट ।
 अमूर्त, वि. (सं.) मूर्ति-प्रतिमा, रहित, निरकार,
 निरवयव ।
 अमूर्त्य, वि. (सं.) अनर्घ, अनर्घ्य, २. बहुमूर्त्य,
 महाव्यः ।
 अमृत, सं. पुं. (सं. न.) मुधा, पी (पे) य्ष,
 निर्जरं, समुद्रनवनीतकं २. जलं ३. घृतं ४.
 अन्नं ५. मोक्षः ६. दुग्धं ७. विषं ८. सुवर्णं ९.
 हृष्यपदार्थः १०. मधुरद्रव्यम् ।
 —कर, सं. पुं. (सं.) चन्द्रः ।
 —फल, सं. पुं. (सं. पुं. न.) पारावत-पटोल,
 वृक्ष-फलं ।
 —वान, सं. पुं., श्लष्णीकृतं मृदःपटं, चिकणः कुटः ।
 —सार, सं. पुं., नवनीतं, घृतम् ।
 अमृतत्व, सं. पुं. (सं. न.) मोक्षः, मुक्तिः (स्त्री.) ।
 अमृतांशु, सं. पुं. (सं.) शोतांशुः, चन्द्रः,
 सोमः ।
 अमृता, सं. स्त्री. (सं.) मधं, सुरा २. आमलकी
 ३. इरीतकी ४. तुलसी ।
 अमृत्यु, वि. (सं.) अमर, अमरण । स्त्री.
 अमरत्वम् । पु. विष्णुः ।
 अमोघ्य, वि. सं. अपवित्र, अयज्ञार्ह, निन्ध ।
 अमोय, वि. (सं.) असीम २. अक्षेय ।
 अमोघ, वि. (सं.) सफल, सार्थक, फलव्य ।
 अमोनिवा, सं. पुं. (अं.) तिक्तातिः (स्त्री.) ।
 अमोल, अमोलक, वि. (सं. अमूर्त्य दे०) ।
 अमौलिक, वि. (सं.) निर्मूल, कितव, मिथ्या ।
 अम्मा, सं. स्त्री. (सं. अम्मा) माता, जननी ।
 अम्माता, सं. पुं. (अ.) महोष्णीव-वम् ।
 अम्ल, सं. पुं. (सं.) रसभेदः । वि. अम्ल शुक्त ।
 अम्लता, सं. स्त्री. (सं.) अम्लत्व, शुक्तत्वम् ।
 अरहौरी, सं. स्त्री. (सं. अम्भस्) धर्मकण्टक-
 कम् ।
 अयन, सं. पुं. (सं. न.) गतिः (स्त्री.) २. सूर्य-
 चन्द्रयोर्गतिभेदः ३. ज्योतिःशास्त्रम् ३. सेना-
 गतिः ५. मार्गः ६. आश्रमः ७. स्थानं ८. गृहं ९.
 कालः १०. अंशः ११. यज्ञभेदः १२. अधस्तं (न.) ।

अयस, सं. पुं. (सं.-शस्त्रं) अपकीर्ति (स्त्री.) ।
 अयस, सं. पुं. (सं. अयस् न.) दे. 'लोहा' ।
 अयस्कान्त, सं. पुं. (सं.) कान्तायसं, कान्तं,
 कान्तलोहं ।
 अय्यो, वि. (अ.) प्रकट २. स्पष्ट ।
 अयान, वि. (दि. अयान) अङ्ग, मूर्ख ।
 अयाल, सं. पुं. स्त्री. (तु० याल) केश (स) रः,
 सटा ।
 अयाल, सं. पुं. (अ.) संततिः (स्त्री.) ।
 —वार, वि. गृह्णन्, गृह्यन् ।
 अयि, अव्य. (सं.) हे, अरे, भोः ।
 अयुक्त, वि. (सं.) अनुचित २. अभिश्रित, मित्र
 ३. युक्तिशून्य ।
 अयुग, वि. (सं.) विषम, अयुग्म ।
 अयुग्म, वि. (सं.) अयुग, विषम २. एकल,
 एकाकिनम् ।
 अयुत, वि. (सं. न.) सहस्रदशकम् ।
 अयोग, वि. (सं. अयोग्य) अनुचित, अनुक्त ।
 अयोग्य, वि. (सं.) अनर्ह, अनुपयुक्तः २.
 पारवशून्य ३. अशक्त ४. अपात्रम् ५. दे.
 'अयोग' ।
 अयोध्या, सं. स्त्री. (सं.) साकेतं, नगरादिशेषः ।
 अयोनि, वि. (सं.) अज, नित्य ।
 अयोनिज, वि. (सं.) अगर्भज २. स्वयम्भू
 ३. अदेह, अकाय ।
 अयौक्तिक, वि. (सं.) युक्तिविह्वल, अनुपपन्न,
 असंगत ।
 अयौगिक, वि. (सं.) अव्युत्पन्न, रूढ (व्या.) ।
 अरंढ, सं. पुं., दे. 'एरंढ' ।
 अर, सं. पुं. (सं. पुं. न.) चक्रार्ह २. कोणः
 ३. शैवालः ।
 अरक सं. पुं. (अ.) आसवः २. रसः
 ३. प्रस्वेदः ।
 —निकालना, कि. स. क्षु-स्यन्द (प्रे.), आ-
 अभि-सु (स्वा. उ. अ.) ।
 —अरक होना, मु., (प्र-) स्निद (दि.
 प. अ.) ।
 अरक्षित, वि. (सं.) अत्राण, अत्रात, अपात ।
 अरगजा, सं. पुं. (सं. अगर् + जा >) पीत-
 वणः सुगन्धिद्रव्यभेदः ।
 अरगनी, सं. स्त्री. (सं. आलश >) वसना-
 लम्बनी, बालालम्बनाय रञ्जुः (स्त्री.) वंशी वा ।

अरगल, सं. पुं. (सं. न.) अरगला, कपाटा-
दृष्टम्बकमुसलम् ।

अरगुवानी, सं. पुं. (फ्रा.) रक्तवर्णः, लोहित-
रंगः । वि. रक्त-लोहित, -वर्ण २. नीललोहित,
धूमवर्ण ।

अरघा, सं. पुं. (सं.) ताम्रमयोऽर्घपात्रभेदः
२. शिवलिङ्गाधारपात्रम् ।

अरणि, णी सं. स्त्री. (सं. पुं. स्त्री.) निर्मन्थ-
दाक (न.), अग्निमन्थनकाष्ठम् ।

अरण्य, सं. पुं. (सं. न.) वनं, जङ्गलम् ।

—गान, सं. पुं. (सं. न.) सामवेदस्य
गानविशेषः ।

—रोदन, सं. पुं. (सं. न.) अरण्यरुदितं,
व्यर्षकिलापः काननक्रन्दनम् २. व्यर्षवचनम् ।

अरति, सं. स्त्री. (सं. पुं. स्त्री.) कूर्पूरः, कफ
(फ्रा.) णिः (पुं. स्त्री.), २. मुष्टिः (पुं.
स्त्री.), मुष्टी ३. बाहुः ४. कर्पूरात् मध्यमाङ्गुली-
पर्यन्तं मानम् ।

अरथा, सं. स्त्री. (सं. रथः >) शवयानं, खाटः,
खाठी ।

अरदल, सं. पुं. (देशे) वृक्षभेदः ।

अरदल, सं. स्त्री. (अं. ऑर्दर) आज्ञा,
नियोगः ।

अरदली, सं. पुं. (अं. ऑर्दरली) परिचारकः,
किंकरः, प्रेष्यः ।

अरदास, सं. स्त्री. (फ्रा. अर्दादास्त) उपहारः,
प्रीतिदानं २. उपासना, आराधना, प्राथना ।

अरधंग, दे० 'अर्द्धंग' ।

अरधं (धर्) गी, सं. स्त्री. (सं. अर्द्धांगिनी)
पत्नी, भार्या, अर्द्धांगम् ।

अरना, सं. पुं. (सं. अरण्यं >) बन्धमहिषः,
बन्धसैरिभः ।

अरनी, सं. स्त्री., दे. 'अरणि' ।

अरव, सं. पुं. (सं. अर्जुदः-दं) शतकोटिसंख्या ।

अरव, सं. पुं. (सं. अर्वन्) घोटकः २. इन्द्रः ।

अरव, सं. पुं. (अ.) मरुदेशविशेषः, अरवदेशः
२. अरवदेशीयोऽथो जनो वा ।

अरवी, वि. (फ्रा.) अरवदेशीय । सं. पुं.
१—३. अरवदेशीयोऽथ उद्यो वासभेदो वा ।

सं. स्त्री., अरवदेशस्य माया ।

अरमान, सं. पुं. (तु.) लालसा, आकांक्षा ।

अरर, अव्य. (सं. अररे) आश्चर्यघृणादिसूचक-
शब्दः ।

अरराना, कि. अ. (अनु.) पुरुषं ध्वन्-ध्वन्
(भ्वा. प. से.) २, सहसा पत (भ्वा. प. से.)

अरचिव्, सं. पुं. (सं. न.) कमलं, पद्मम् ।

अरविदिनी, सं. स्त्री. (सं.) नलिनी, कमलिनी
२. कमलसमुद्भूः ३. पद्माकरः ।

अरवी, सं. स्त्री., दे. 'कवाल्' ।

अरस्य, वि. (सं.) नोरस, विरस २. असभ्य
३. अलस ४. निर्बल ५. अयोग्य ।

अरसा, सं. पुं. (अ.) समयः २. विलम्बः ।

अरहट, सं. पुं. (सं. अरघट्टः) अरघट्टकः ।

अरहर, सं. स्त्री. (सं. आदयी) तुषरी, तव,
रिका, वृत्तबीजा ।

अराजक, वि. (सं.) राजहीन, शासकरहित ।

अराजकता, सं. स्त्री. (सं.) राजहीनता ।

२. शासनाभावः ३. उपद्रवः, अशान्तिः
(स्त्री.) ।

अराति, सं. पुं. (सं.) शत्रुः २. कामक्रोधलोभ-
माहृष्यमात्सर्ष्याणि (न. वडु.) ३. ज्योति-
शास्त्रे कुण्डल्याः षष्ठं स्थानम् ।

अरारुट, सं. पुं. (सं. (अं. एरोरुट) अरारुटं,
कन्दभेदः २. अरारुटचूर्णम् ।

अरिदम, वि. (सं.) शत्रुघ्न, अभित्रघातिन्
२. विजयिन् ।

अरि, सं. पुं. (सं.) शत्रुः, वैरिन् ।

—मर्दन, वि. (सं.) रिपु-सूदनमदन, शत्रुघ्न ।

अरित्र, सं. पुं. (सं. न.) क्षि (क्षे) पत्नी-णिः
(स्त्री.), नौ नौका, दण्डः, केनिपातकः ।

अरिष्ट, सं. पुं. (सं. न.) क्लेशः २, विपद्
(स्त्री.) ३. दुर्भाग्यं ४. अपशकुनं ५. लशुनं

७. निम्बः ८. काकः ९. गुधः १०. फेनिलः
११. मधुभेदः १२. काषः १३. भूकम्पादय

उत्पाताः १४. मथितं १५. प्रसूतिमृद् । वि.
अनश्वर २. शुभ ३. अशुभ ।

अरिष्टक, सं. पुं. (सं.) फेनिलवृक्षः । (सं. न.)
फेनिलबीजम् (रीठा) ।

अरिहा, वि. (सं. इन्) रिपुदमन, रिपुंजयः
सं. पुं. शत्रुघ्नः ।

अरी, अव्य. (सं. अरे) अथि ।

अस्तुद्, वि. (सं.) मर्म-, भेदिन्-स्पृश २. दुःख-
दायक ३. कटुभाषिन् । (सं. पुं.) शत्रुः ।

अरुंधती

[२८]

अर्जुनी

अरुंधती, सं. स्त्री. (सं.) वसिष्ठपत्नी २. वसु-
पत्नी ३. नक्षत्रविशेषः ।

अरु, अव्य., दे. 'ओर' ।

अरुई, सं. स्त्री. दे. 'कचाल' ।

अरुचि, सं. स्त्री. (सं.) इच्छाभावः २. अग्नि-
मान्त्र ३. वृणा ।

—कर, वि. बीभत्स, शर्षा, उद्वेगकर ।

अरुचिर, वि. (सं.) अमिय, अरुचिकर, अरुच्य,
बीभत्स ।

अरुज, वि. (सं.) नौरोग, स्वस्थ ।

अरुण, वि. (सं.) रक्त, लोहित । सं. पुं. सूर्यः
२. सूर्यसारथिः ३. सन्धिप्रकाशः ४. प्रभातं
५. कुंकुमं ६. गुडः ।

—उदधि, सं. पुं. (सं.) समुद्रविशेषः ।

—उदयः, सं. पुं. (सं.) प्रभातं, दिनमुखम् ।

—उपल, सं. पुं. (सं.) पदरागः, शोणरत्नम् ।

—चूड, सं. पुं. (सं.) कुक्कुटः ।

अरुणा, सं. स्त्री. (सं.) मञ्जिष्ठा २. कदम्ब
३. रक्तवर्णा गाः ४. उषस् (स्त्री.) ।

अरुणाई, सं. स्त्री. (सं. अरुण) रक्तता, अरु-
णिमन् ।

अरुणावमज, सं. पुं. (सं.) शनिः, शनैश्वरः,
सं. वि. २. यमः ३. सुग्रीवः ४. कर्णः ५. जटायुः ।

अरुणिमः, सं. स्त्री. (सं. णिमन् पुं.) रक्तिमन्,
लोहितम् ।

अरुप, वि. (सं.) अमूर्त्त, निराकार ।

अरे, अव्य. (सं.) दे, अधि, अये, भोः २. अहं
(सप्त अव्य०) ।

अरोडा, सं. पुं. (सं. अरुड) पंचनदप्रान्तीय-
जातिविशेषः ।

अर्क, सं. पुं. (सं.) सूर्यः २. इन्द्रः ३. स्फटिकः
४. विष्णुः ५. मन्दारः ६. अघ्नः ७. रविदारः

८. उत्तराफाल्गुनीनक्षत्रम् ९. द्वादश इति
संख्या १०. पण्डितः । वि. (सं.) पूज्य,
अर्चनीय ।

—मंडल, सं. पुं. (सं. न.) सूर्यविंद-वम् ।

अर्क, सं. पुं. (अ.) दे. 'अरक' ।

अर्कज, सं. पुं. (सं.) सूर्यपुत्राः [१. यमः
२. शनैश्वरः ३. अश्विनौ (दि.) ४. सुग्रीवः
५. कर्णः]

अर्कजा, सं. स्त्री. (सं.) सूर्यपुत्री (यमुना
तापी च नद्यौ) ।

अर्कल, सं. पुं. (सं. न.) अर्गला, कपाटाव-
ष्टमकमुसलं २. कपाटः-टं ३. अवरोधः
४. कल्लोलः ५. सन्ध्या घनाः ।

अर्गला, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'अर्गल'
२. (चिटकनी) कीलः-लं ३. गजबन्धन-हस्ता
४. अवरोधः ।

अर्घ, सं. पुं. (सं.) पूजाविधिभेदः १. पूजा-
सामग्री ३. हस्तधावनाय जलं, तदानं वा
४. मूल्यं ५. उपहारः ६. सम्मानार्थं जलेन
सेकः ।

—देना, उदकादिदानेन दृप् (प्रे०), निधिन्
(तु. प. अ.)

—पात्र, सं. पुं. (सं. न.) शंखाकारं ताम्र-
पात्रम् ।

अर्घट, सं. पुं. दे. 'शाल' ।

अर्घा, सं. पुं. (सं. अर्घः) दे. 'अर्घपात्र' ।

अर्घ्य, वि. (सं.) पूज्य २. बहुमूल्य । सं. पुं.
(सं. न.) पूजाद्रव्यम् २. मधुभेदः ।

अर्चक, वि. (सं.) पूजक, उपासकः ।

अर्चा, सं. स्त्री. (सं.) पूजा २. प्रतिमा, मूर्त्तिः
(स्त्री.) ।

अर्चि, सं. स्त्री. (सं.) अर्चिम् (न., स्त्री.)
शिखा २. नेत्रम् (न.) ३. किरणः ।

अर्चित, वि. (सं.) पवित्र २. संगृह्यत ।

अर्चन, सं. पुं. (सं. न.) पूजा, अर्चा, अर्चना
२. मन्त्राः ।

अर्चनीय, वि. (सं.) पूजनीय २. मन्कार्य ।

अर्चिभान्, वि. (सं. मन्त्र) शासुर, कान्तिमत्
शिखा-ज्वाला-युत-अन्वित । सं. पुं. (सं.) अग्निः
२. सूर्यः ३. विष्णुः ।

अर्ज, सं. स्त्री. (अ.) प्रार्थना, याचना
२. विस्तारः, परिणाहः ।

—करना, कि. स. याच (श्वा. न. से.)
सविनयं निविद् (प्रे.) ।

अर्जन, सं. पुं. (सं. न.) उपार्जनं, संपत्तयः,
संग्रहः, उपादानम् ।

—करना, कि. स., उप-अर्ज (जु.) संग्रह
(क. प. से.)

अर्जित, वि. (सं.) उपाजित, संगृहीत,
संचित ।

अर्जुनी, सं. स्त्री. (अ.) प्रार्थना-निवेदन-
पत्रम् ।

अर्शी—दावा, सं. पुं. (अ.) अभियोग-भावा, पत्रम् ।

अर्जुन, सं. पुं. (सं.) धनंजयः, पार्थः, कपि-ध्वजः, गुढाकोशः, गण्डीविन् २. सद्स्वार्जुनः ३. वृद्धमेदः ४. मयूरः वि. इवेत २. स्वच्छ । अर्जुनी, सं. स्त्री. (सं.) शुक्ला गौः (स्त्री.) २. ऊषा ३. कुट्टनी

अर्णव, सं. पुं. (सं.) समुद्रः २. सूर्यः ३. अन्त-रिक्षं ४. चतुर इति संख्या ।

अर्तिका, सं. स्त्री. (सं.) अग्रजा, (अस्तिका) ज्येष्ठभगिनी ।

अर्ति, सं. स्त्री. (सं.) पीडा, व्यथा २. आपात्रम् ।

अर्थ, सं. पुं. (सं.) शब्दाशयः २. प्रयोजनं ३. कर्मन् (न.) ४. इन्द्रिविषयः ५. धनम् ।

—द्वेना, कि. स. अभिधा (जु. उ. अ.) सूत्रं (जु.), युष्ट (प्रे.) ।

—बताना, कि. स., व्याख्या (अ. प. अ.), विवृ (स्वा. उ. से.), व्याचक्षु (अ. आ. से.) अर्थ प्रकाश (प्रे.) ।

—कर, वि. (सं.) लाभप्रद, फलावह । (-करी स्त्री.) ।

—दृष्ट, सं. पुं. (सं.) धनदण्डः ।

—पति, सं. पुं. (सं.) कुवेरः २. नृपः ।

—पिशाच, वि. (सं.) कृपण, लोमिन् ।

—वाद, सं. पुं. (सं.) त्रिविधवाक्येषु अन्य-तमम् (न्या.) ।

—वेद, सं. पुं. (सं.) शिल्पशास्त्रम् ।

—शास्त्र, सं. पुं. (सं. न.) धनप्राप्तिरक्षावृ-द्ध्यानुपायदर्शकं शास्त्रम् ।

—सचिव, सं. पुं. (सं.) अर्थमन्त्रिन् ।

अर्थात्, अ० (सं.) अर्थ आशयः, द्वे 'यानी-ने' ।

अर्थान्तर, सं. पुं. (सं. न.) अन्य-भिन्न-द्वितीय, अर्थः ।

—न्यास, सं. पु. (सं.) अर्थांलकारभेदः (सा.) ।

अर्थापत्ति, सं. स्त्री. (सं.) प्रमाणभेदः (न्या.) २. अलंकारभेदः (सा.) ।

अर्थांलकार, सं. पुं. (सं.) अर्थचमत्कारयुक्तोऽ-लंकारः (सा.) ।

अर्थी, वि. (सं.-यिन्) इच्छु, इच्छुक, इच्छक, अभिलाषिन् २. कार्ययिन् । (अर्थिनी स्त्री.) सं. पुं., तादिन्, अभियोक्त २. सेवकः ३. धनिकः ।

अर्द्धन, सं. पुं. (सं. न.) पीडनं, हिंसा २. वाचनम् ।

अर्धित, वि. (सं.) पीडित २. हत ३. वाचित ४. गत ।

अर्द्ध, वि. (सं.) सामि—। सं. पुं., अर्द्धः—द्वै, अर्द्ध-भागः—अंशः ।

—चंद्र, सं. पुं. (सं.) अष्टम्य-अन्दः २. चन्द्रकः, मयूरपक्षस्थचन्द्रचिह्नं ३. नखक्षतं ४. चन्द्राबन्धः () ५. बहिष्काराय प्रीयातो यदणन् ६. विपुष्टभेदः ।

—भाग, सं. पु. (सं.) अर्द्धः—द्वै, अर्द्धांशः ।

—माराधी, सं. स्त्री. (सं.) प्राकृतमापामेदः (यद् कभी मथुरा से पटना तक बोली जाती थी) ।

—वृत्त, सं. पुं. (सं. न.) वृत्तार्द्ध, अर्द्धमंडलम् २. वृत्तपरिघेरर्द्धभागः ।

—समवृत्त, सं. पुं. (सं. न.) छन्दोभेदः ।

अर्द्धांग, सं. पुं (सं. न.) अर्द्ध-भागः—अंशः २. पक्ष-आधातः—वायुः ३. शिवः ।

अर्द्धांगिनी, सं. स्त्री. (सं.) पत्नी, भार्या ।

अर्द्धांगी, सं. पुं. (सं.-गिन्.) शिवः । वि., अर्द्धांगीरोगप्रस्त, पक्षवायुपीडित ।

अर्पण, सं. पुं. (सं. न.) उपहारणं, उपजनयनं, दानं २. उपायनं, उपहारः ३. स्थापनम् ।

—करना, कि. सं., उपहृ-उपनी (स्वा. प. अ.) उपस्था (प्रे.) ऋ (प्रे. अर्पयति) ।

अर्पित, वि. (सं.) दत्त, उद-वि, -सृष्ट ।

अर्बुद, सं. पुं. (सं. पुं. न-) दशकोटिसंख्या २. अरावलीपर्वतः ३. मेघः ४. मांसकोलरीगः ५. द्विमासिको गर्भः ।

अर्वा, वि. (अ०) चतुर ।

अर्भक, वि. (सं.) अर्य, लघु, २. मूर्ख ३. कृश । सं. पुं., बालकः, वृद्धः ।

अर्थ्य, सं. पुं. (सं.) स्वामिन् २. ईश्वरः ३. वैश्यः । वि. श्रेष्ठ । (अर्वा, अर्वांगी, अर्वा स्त्री.) ।

अर्थ्यमा, सं. पुं. (सं.-मन्) सूर्यः २. आदि-त्यविशेषः ३. विशिष्टाः पितरः (बहु०) ४. उत्तराफाष्मिनीनक्षत्रम् ।

- अर्वाक, अव्य. (सं.) पश्चात्, इदानींतने काले, नातिपिराव प्राक्, अचिरं २. समीपवे, निकट-टे ।
- अर्वाचीन, वि. (सं.) नूतन नातिपुराण, आधुनिक (—की स्त्री.), अभिसव ।
- अर्वा, सं. पुं. (सं. —राँस् न.) गुदकोलकः, शुदाकुटः ।
- अर्श, सं. पुं. (अ.) आकाशः-शं २ स्वर्गः ।
- अर्हत, सं. पुं. (सं.) जिनः २. बुद्धः ३. शिवः वि. मान्य ।
- अर्ह, वि. (सं.) पूज्य २. योग्य ।
- अर्हणीय, वि. (सं.) पूज्य, संमान्य, पूजनीय ।
- अर्हन्, वि (सं.) मान्य, अर्चनाय ।
- अर्हित, वि. (सं.) पूजित, संमानित ।
- अल, अव्य., दे. 'अलम्' ।
- अलंकार, सं. पुं. (सं.) आभरणं, मण्डनं, वि-भूषणं २. शब्दार्थयोश्चमस्कारविशेषः (सा०) ।
- अलंकृत, वि. (सं.) वि-भूयित, मण्डित, धृताभरण २. संस्कृत, परिष्कृत ।
- करना, क्रि. स., वि., भू (जु०), अलंकृ, परिष्कृ, संस्कृ, मण्ड (जु०), प्रसाध (प्रे०) ।
- अलंघनीय, वि. (सं.) अलंघ्य, दुरतिक्रम, दुस्तर ।
- अल, सं. पुं. (सं. न.) (= विच्छ्र का ढक) लुप्तं, अ(आ)लिङ्गशः, ट(द्रो)णः, कण्ठकः-शकुः । २. हरितालकं २. विषः, विषम् ।
- अलक, सं. पुं. (सं.) कुरलः, चूर्णकुन्तलः २. केशः, पाशः-कलापः ।
- अलकनरा, सं. पुं. दे 'कालटार' ।
- अलकनंदा, सं. स्त्री. (सं) नदीविशेषः ।
- अलकली, स्त. स्त्री. (अं.) विकारः ।
- अलका, सं. स्त्री. (सं.) कुवेरनगरी, यक्षपुरम् ।
- पति, सं. पुं. (सं.) कुवेरः ।
- अलकाबलि, सं. स्त्री. (सं.) केशकलापः ।
- अलकोहल, सं. पुं. (अं.) सुषवः ।
- अलक, अलकक, सं. पुं. (सं.) ला (रा) क्षा, जतु (न.), यावः, रक्ता, द्रुमामयः २. लाक्षाभिर्मितरत्नभेदः ।
- अलक्षित, वि. (सं.) अदृष्ट, अवीक्षित २. अदृश्य ३. अज्ञात ४. गुप्त ।
- अलक्ष्य, वि. (सं.) अदृश्य २. अतीन्द्रिय ।
- अलक्ष, वि. (सं. अलक्ष्य) दे. 'अलक्ष्य' ।
- धारी, सं. पुं. (सं. अलक्ष्यधारिन्) गोरक्ष-नाथानुयायिनः नाथकः (बहु०)
- जगाना, सु., भिक्षायाचनम् ।
- अलग, वि. (सं. अलग्न) पृथक् (अव्य.) वि., भिन्न, वियुक्त, विच्छिद्य, असंलग्न ।
- करना, क्रि. स., पृथक् कृ, विघट्-विक्रिप् (प्रे.), वियुज् (जु०) ।
- होना, क्रि. अ., पृथक् भू, वियुज् (भा० वा.) विक्रिप् (दि. २. अ.) ।
- अलगनी, सं. स्त्री. (सं. आलग्न >) वसना-लंबनी ।
- अलगोज्ञा, सं. पुं. (अ.) मुरली-वंश-वेणु-भेदः ।
- अलग्न, वि. (सं.) निलज्ज, भृष्ट, वियात ।
- अलपाका, सं. पुं. (स्पे० एलपाका) जन्तुभेदः २. तस्य ऊर्गा ३. तदूर्णानिमित्तः सूक्ष्म-वस्त्रभेदः ।
- अलफ, सं. पुं. (अ. अलिफ) अरबीवर्णमाला-याः प्रथमवर्णः ।
- अलवत्ता, अव्य. (अ.) निरसन्देहं, निरसंशयम् २. आग, सत्यम् ३. किन्तु, परन्तु ।
- अलवम, सं. पुं. (अं.) चित्रपञ्जिका ।
- अलवेल, वि. (सं. अलम्ब्य > ?) वेधा-भिमानिन्, ऐक. रूपगन्तः, दर्शनीयमानिन् २. अद्भुत ३. कामचारिन्, अनवहित ।
- अलवध, वि. (सं.) अत्राप्त, अनविगत, अद्वैतगत ।
- अलभ्य, वि. (सं.) अप्राप्य २. दुर्लभ ३. अमूल्य ।
- अलम, अव्य. (सं.) यथेष्टं, पर्याप्तं, प्रचुरम् ।
- अलम, सं. पुं. (अ.) शोकः, दुःखं २. ध्वजः ।
- अलमनक, सं. पुं. (अ.) पंचांगं, पञ्जिका ।
- अलमस्त, वि. (फा.) मत्त, क्षीव २. निश्चिन्त ।
- अलमारी, सं. स्त्री. (पुत्रे० अलमारियो) उत्थितपिटकः ।
- अलमास, सं. पुं. (फा) हीरकः, वज्र-जम् ।
- अललटप्पू, वि. (देश०) दैवाधानं, भाकरिमक ।

अलवान, सं. पुं. (अ.) और्णम्रावारः ।
 अलव्य, वि. (सं.) मन्द, मन्थर. आलस्य-
 शील ।
 अलव्यान-निः, सं. स्त्री. (सं. आलस्यन्)
 मान्द्यम्, तन्दिवा ।
 अलसान्तः, कि. अ. (हि. अलसान) शिथि-
 लयने । ना. धा.), शिथिली-शयी-मन्दी-म् ।
 अलसी, सं. स्त्री. (सं. अतसी) उमा, कुमा ।
 (बीज उमा-अतसी-बीजम् ।
 अलहद्दगी, सं. स्त्री. (अ०) पृथक्ता पार्थक्यम् ।
 अलहदा, वि. (अ.) अन्य, भिन्न, पृथक् ।
 अलात, सं. पुं. (सं. न.) अत्रारः २. ज्वलत्-
 काष्ठं, इलका ।
 —चक्र, सं. पुं. (सं. न.) उष्णपूर्णतजं चक्रम् ।
 अलान, सं. पुं. (सं. आलानं) गजदन्धनस्तम्भः
 २. हस्तिबन्धनशृङ्खला ३. बन्धनं, निगलः ।
 अलानिशा, अ० (अ०) प्रकटं, निर्गमं, नि-
 शंकम् ।
 अलाप, सं. पुं. दे. 'आलाप' ।
 अलापना, कि. सं. (सं. आलापनम्) आलप
 (भवा. प. से.), स्वरलयम् उत्पद्य (प्रे०) २. मे
 (भवा. प. अ. गायति) ।
 अलामन, सं. स्त्री. (अ.) लक्ष्मणं, चिह्नं, अभि-
 ज्ञानम् ।
 अलामं घडां, सं. स्त्री. (अं. पलामं + सं. घटी)
 पर्वधन-घटी-घटिका ।
 अलाव, सं. पुं. (सं. अलातं) अस्त्राशिः,
 अस्त्ररनिकरः ।
 अलाव, कि. वि. (अ.) विना, शून्य २. दे.
 'अतिरिक्त' ।
 अलिप्त, वि. (सं.) लिङ्गलक्षण-विह-रहित-
 होन । सं. पुं. ईश्वरः २. चिह्नमावः ।
 अलिज, सं. पुं. (सं.) (वडा घडां) अलवरः,
 मणिकः २. (जज्जर) कर्करौ, मलनिका,
 अलः (स्त्री.) ।
 अलिद, सं. पुं. (सं. अलान्द्रः) जनरः
 द्विरैकः ।
 अलिद, सं. पुं. (सं.) आलीन्द्रः प्रथ (वा) नः,
 प्रथ (वा) नः, २. शहिद्वारप्रकोष्ठः ।
 अलि, सं. पुं. (सं.) अमरः, शिलीमुखः २. विकः
 ३. काकः ४. वृश्चिकः ५. कुम्भुरः ६. दे.
 'अली' ।

अली, सं. स्त्री. (सं. आलिः) सखी, सहचरी
 २. श्रेणी, पंक्तिः (स्त्री.) ।
 अली, सं. पुं. (सं. अलि) षट्पदः, अमरः ।
 अलीक, वि. (सं.) असत्य, अनृत, वितथ ।
 अलील, वि. (अ.) रोषिन्, रुग्ण ।
 अल्लुमीनम्, सं. पुं. (अं. एल्लुमीनियम्) स्फु-
 बातु (न.) ।
 अल्लुचा, सं. पुं. (प्रा. आल्लुचः) अल्लुचम् ।
 अल्लेख, वि. (सं.) अक्षेय २. अगणित ।
 अल्लेख, वि. (सं. अल्लेख्य) अदृश्य ।
 अल्लेख्य, वि. (सं.) लेखानर्त ।
 अल्लोन-ना, वि. (सं. अल्लवण) लवणहीन २.
 नीरस. (अल्लोनी स्त्री.) ।
 अल्लोल-कल्लोल, सं. स्त्री. (सं. लोल-कल्लोलः)
 कीटा, लीला, खेला ।
 अल्लौकिक, वि. (सं.) लोकोत्तर, लोकशाश २.
 अपूर्व, अदनुत, ३. अति-मत्स्य-मानुष,
 अमानुषिक ।
 अल्लिमेतम्, सं. पुं. (अं.) अल्लिमेतम्,
 अल्लिम, उप-वासः-अभिसन्धिः (पुं.) ।
 अल्लुवायोलेट रे, सं. स्त्री. (अं.) अल्लिनाला-
 रूपरश्मिः ।
 अल्प, वि. (सं.) स्वल्प, स्तोक, दम्भ, न्यून,
 क्षुद्र-अल्प-लघु-परिमाण २. ह्रस्व, खर्व, वामन ।
 —आहार, सं. पुं. (सं.) मितभोजनम् ।
 —आहारी, वि. (सं. रिन्) मितभुज्,
 अन्वाशनः ।
 —आयु, वि. (सं. न्युत्) अचिर-जीवन-जीविन् ।
 सं. पुं. अजः, छागः ।
 —जीवी, वि. (सं. विन्) अचिरायुष्य ।
 —ज्ञ, वि. (सं.) स्तोकज्ञ, अल्पविद् २. मंद-
 बुद्धि ।
 —ज्ञता, सं. स्त्री. (सं.) स्तोकज्ञता २. अज्ञता ।
 —प्राण, सं. पुं. (सं.) अल्पप्राणीचार्वाक्याः (कुं,
 पु, क, न, ज, न, आदि ।)
 —बुद्धि, वि. (सं.) मूर्ख, मूढ, दुर्भ्रति, जड ।
 —वयस्क, वि. (सं.) अप्राप्त-व्यवहारः-वय-
 रकः, बालः ।
 अल्पता, सं. स्त्री. (सं.) न्यूनता-त्वं, अल्पत्वं
 २. लघुता-त्वं ।
 अल्पज्ञः, अव्य. (सं.) स्तोकज्ञः, अल्पार्थं
 २. ज्ञानैः ज्ञानैः, कमशः (सप्त अव्य.)

अल्ल, सं. पुं. (अ. आल) वंशनामन् (अ.),
उपगोत्रनामन् (दुम्बे, चौने आदि) ।

अल्लम-गल्लम, सं. पुं. (अनु.) प्रलापः,
दे. 'अंलबंल' ।

अल्लाह, सं. पुं. (अ.) ईश्वरः ।

—ओ अकबर, वाक्य (अ.) ईश्वरो हि महान् ।

अल्लह, वि. (सं. अल् = बहुत + लल् =
खेलना >) विलासिन, दिनोदित २. अनाय-
धान ३. अल्पवयस्क ४. उदत ५. अक्ष १. १०.
पुं. नवजातव्रतसः ।

—पन, सं. पु., विनोदिता ५. अनवधानता ३.
अल्पवयस्कता ४. उदतता ५. अक्षता ।

अवति—ती, अवन्तिका, सं. स्त्री. (सं.) उज्जयिनी
नगरी ।

अव, उप. (सं.) विश्वानादरन्वूनतानिम्नता-
व्याप्तिसूचक उपसर्गः ।

अवकलन, सं. पुं. (सं. न.) दर्शनं, ईक्षणं,
वीक्षणम् २. अवगमनं, ज्ञानम् ३. ग्रहणम् ।

अवकाश, सं. पुं. (सं.) स्थानं, स्थलं, प्र-
देशः २. गगनं ३. दूरता ४. अवसरः ५.
विश्रामः ।

अवकिरण, सं. पुं. (सं. न.) विकिरणं, विश्लेषणं,
प्रासनम् ।

अवकीर्ण, वि. (सं.) प्र-वि-अ-कीर्णं, प्र-वि-
अस्त, विक्षिप्त २. ध्वस्त, नाशित ३. सं-
चूर्णित ।

अवकीर्ण, वि. (सं. -णिन्) क्षतव्रत, नष्टधीर्यं ।

अवकुंचन, सं. पुं. (सं. न.) मोटनं, वकीकरणं,
व्यावर्तनं, आकुञ्चनम् ।

अवकुञ्चित, वि. (सं.) कातर, क्लीब, भीरु ।

अवकृष्ट, वि. (सं.) बहिष्कृत २. निगलित ३.
नीच । सं. पुं. दासः ।

अवकेही, वि. (सं. -शिन्) निष्कल २.
निरसन्तान ।

अवकथ, सं. पुं. (सं.) मूल्यं, बर्धः २. (किराया)
तार्दं, तारिकं, आतरः ४. करः ।

अवक्रोश, सं. पुं. (सं.) अक्रोशः, प्रापः,
गर्हा ।

अवगत, वि. (सं.) विदित, ज्ञात, बुद्ध, परिचित
२. निगत, पतित ।

अवगति, सं. स्त्री. (सं.) ज्ञानं, बोधः, अवगमनं
२. क्रुगतिः-निगतिः (स्त्री.) ।

अवगाह, वि. (सं.) निविड, गुप्त २. निमग्न,
प्रविष्ट ।

अवगाहन, सं. पुं. (सं. न.) जले प्रविश्य
स्नानं, निमज्जनं २. प्रवेशः ३. गगनं, विलो-
डनं ४. अनुसन्धानं ५. मननं, विचारणा ।

अवगांत, वि. (सं.) निरिद्ध, लाञ्छित । सं.
पुं. (सं. न.) निन्दा, अपवचनम् ।

अवगुंठन, सं. पुं. (सं. न.) आवरणं, व्यवधानं,
आच्छादनं, संवरणं २. (घृष्ट) आवरकः कम् ।

अवगुंफन, सं. पुं. (सं. सं.) सं-ग्रन्थनं, वि-
रचनं, तन्त्रीभित्तुणैर्वा बन्धनम् ।

अवगुण, सं. पुं. (सं.) दोषः, व्यवसनं २. अपराधः,
स्थलितम् ।

अवग्रह, सं. पु. (सं.) विघ्नः, प्रतिबन्धः २.
अनावृष्टिः (स्त्री.) ३. सेतु-बध्, बन्धः, वधः ४.
सन्धिविच्छेदः (व्या०) ५. श्रापः ।

अवघट, वि. (सं. अघ + घट् >) गिकट, दुर्गम ।

अवघर्षण, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'रमहना' तथा

'पीसना' ।

अवचन, सं. पुं. (सं. न.) निःशब्दता, तूष्णी-
भावः । २. निन्दा ।

अवचनीय, वि. (सं.) अकथनीय, अश्लो २.
अनिन्ध, अगद्वी ।

अवचय, सं. पुं. (सं.) उत्पादनं, उद्धरणं,
उल्लुपनम् ।

अवच्छिन्न, वि. (सं.) पृथक्कृत, विरलेवित २.
ससीम, ३. सविशेषण, विशिष्ट ।

अवच्छेद, सं. पुं. (सं.) भेदः, पृथग्भावः २.
इयत्ता ३. अवधारणं, निश्चयः ४. परिच्छेदः,
विभागः ।

अवच्छेदक, वि. (सं.) विभाजक, भेदक २.
इयत्ताकारक ३. अवधारक ४. निश्चायक । सं.
पुं., विशेषणम् ।

अवज्ञा, सं. स्त्री. (सं.) अव-अप, मानः, अनारः,
अवधीरणंभ्या २. आहोल्लंघनं ३. पराजयः ४.
अलंकारभेदः (सा.) ।

अवज्ञात, वि. (सं.) अवधीरित, अपमानित,
तिरस्कृत ।

अवर्तस, सं. पुं. (सं. पुं. न.) भूषणं, अलंकारः
२. शिरोभूषणं ३. कर्णभूषणं ४. मुकुटं ५.

श्रेष्ठजनः ६. माला, हारः ७. भातृव्यः ८.
पाणिग्राहकः ।

अवतरण, सं. पुं. (सं. न.) अवरोहणं, अयोगमनं २. पारयमनं ३. शरीरधारणं, जन्मग्रहणं ४. प्रतिलेखः, प्रतिलिपि-प्रतिकृतिः (स्त्री.), ५. प्रादुर्भावः ६. घट्टः, सोपानं ७. घट्टः ।

अवतरणी-णिका, सं. स्त्री. (सं.) ग्रन्थ-पुस्तकः, प्रस्तावना-भूमिका-उपोद्घातः २. रीतिः (स्त्री.) ।

अवतार, सं. पुं. (सं.) पुराणमतानुसारं देव-विशेषस्य जीवविशेषस्य वा शरीरधारणम् । (विष्णु जी के २४ अवतार—महा, वाराह, नारद, नरनारायण, कपिल, दत्तात्रेय, वृष, ऋषभ, पृथु, मत्स्य, कूर्म, धन्वन्तरि, माहिनी, नृसिंह, वामन, परशुराम, वेदव्यास, राम, बलराम, कृष्ण, बुद्ध, कल्कि, हंस, हयग्रीव) ।
—लेना, क्रि. अ., अवत (भ्वा. प. से.), अवरुह (भ्वा. प. अ.), शरीरं धृ (प्रे.) ।

अवतारण, सं. पुं. (सं. न.) नीचैर्नयनं २. अनुकरणं ३. उद्धरणम् ।

अवतारी, वि. (सं-रिन्) अवरोहिन्, अधो-गामिन् २. देवांशुधारिन्, अलौकिक ।

अवदात, वि. (सं.) श्वेत, शुभ २. शुद्ध ३. गौर ४. पीत ।

अवदान, सं. पुं. (सं. न.) सुकर्मन् (न.) २. दानं ३. पराक्रमः ४. शोभनं ६. उशीर-रम् ।

अवधारण, सं. पुं. (सं.) क्रकचेन छेदनं-पाटनम् २. विभाजनं ३. खदानम् ४. दे. 'कुशल' ।

अवदीर्ण, वि. (सं.) क्रकचेन पाटितं २. विभाजितं ३. सात ।

अवघ, वि. (सं.) अधम, पाप, २. निन्द्य, कुत्सित ।

अध, सं. पुं. (सं. अयोध्या >) कोश (स) लाः (बहु) २. अयोध्या ।

अध, वि. (सं. अध्वय) रक्ष्य, प्राणार्ह ।

अधान, सं. पुं. (सं. न.) मनोयोगः, अवक्षा, पतनता ।

अधार, सं. पुं. (सं.) निक्षयः, निश्चितता २. सीमा, अधिः (पुं.) ।

अधधारण, सं. पुं. (सं. न.) निर्धारणं, निक्षयः ।

अधधारित, वि. (सं.) निर्धारित, निश्चित ।

अधधार्य, वि. (सं.) निर्धारणीय, निश्चेतव्य ।

३ आ० हि०

अधधि, सं. स्त्री. (सं. पुं.) सीमा, परा-काष्ठा, पर्यन्तः २. निवर्त, -कालः-समयः ३. मृत्युकालः । अध्व. (सं.) यावत् (उ. अथा-वधि = अध यावत् = आज तक) ।

अधधी, वि. (हि. अधध) कोश (स) लसम्बन्धिन् २. कोश (श) लप्रान्तस्य मापः ।

अधधीरणा, सं. स्त्री. (सं.) दे, 'अधधा' ।

अधधीरित, वि. (सं.) अधधात, तिरस्कृत ।

अधधूत, सं. पुं. (सं.) सन्न्यासिन्, योगिन् साधुः । वि. (सं.) कपित २. विनष्ट ।

अधधेय, वि. (सं.) विचारणीय, ध्येय २. ध्येय ३. शातव्य ।

अधधत्त, वि. (सं.) नीच, निम्न, नत, नीचस्थ २. पतित ३. न्यून ।

अधधति, सं. स्त्री. (सं.) हासः, श्रयः, हानिः (स्त्री.) २. अधोगतिः (स्त्री) ३. नम्रता ।

अधनिनी, सं. स्त्री. (सं.) पृथिवी, भूमिः (स्त्री.) ।

—इन्द्र, ईहा, सं. पुं. (सं.) नृपः ।

—तल, सं. पुं. (सं. न.) भू, -पृष्ठं तलम् ।

—पति, पाल, सं. पुं. (सं.) भूपः ।

अधवोद्य, सं. पुं. (सं.) जागरणं २. ज्ञानम् ।

अधवृथ, सं. पुं. (सं.) बह्वशेषकर्मन् (न.) २. यज्ञान्तरस्नानम् ।

अधम, वि. (सं.) अधम, अन्तिम २. रक्षक, परित्रातृ २. नीच, निन्दित । सं. पुं. (सं.) पितृगणविशेषः २. मलमासः ।

अधमत, वि. (सं.) अधधीरित, तिरस्कृत ।

अधमति, सं. स्त्री. (सं.) अपमानः तिरस्कारः ।

अधमर्दन, सं. पुं. (सं. न.) पीडनं, अर्दनं, उपमर्दः ।

अधमर्ष, सं. पुं. (सं.) स्पर्शः २, सम्पर्कः ३. सन्धिविशेषः (सा०)

अधमर्ष, सं. पुं. (सं.) सम्- आलोचनं-ना २. सन्धिविशेषः (सा०) ३. आक्रमणम् ।

अधमर्षण, सं. पुं. (सं. न.) असहिष्णुता, दे, 'असह्यनशीलता' २. अपमार्जनं, विक्रोपणम् ।

अधमान, सं. पुं. (सं.) दे. 'अधमति' ।

अधमानना, सं. स्त्री. (सं.) अधधीरणे-णा, तिरस्कारः ।

अधधय, सं. पुं. (सं.) अंशः, भागः २. अंगं, गार्गं, शरीरैकदेशः ३. न्याये पक्ष दश वा

वाक्यांशः (= प्रतिष्ठा, हेतुः, सदाहरणं, उपनयनं, सिगमनं, जिज्ञासा, संशयः, शक्य-प्राप्तिः प्रयोजनं, संशय-व्युदासः) ।
 अव्ययबी, वि. (सं.-विन्) अङ्गिन्, सावयव
 ५. पूर्णं, समग्र । सं. पुं., सावयवः पदार्थः
 ३. देहः ।
 अव्यय, वि. (सं.) अन्य, अपर २, अधम, नीच ।
 अव्ययधक, वि. (सं. आराधक) पूजक ।
 अव्ययधन, सं. पुं. (सं. आराधनं) पूजा, अर्चा ।
 अव्ययद्व, वि. (सं.) उप-प्रति-रुद्ध, प्रतिद्वन्द्व,
 प्रतिवापित २. आच्छादित, गूढ ।
 अव्ययद्व, वि. (सं.) अवतीर्ण, अधोगत ।
 अव्ययैव, सं. पुं. (सं. अव-+रैव् >) वक्त-
 निर्यग-गतिः (स्त्री.) २. वक्तव्य तिर्यक् कर्तव्यम् ।
 --दार, वि., तिर्यक्कृत ।
 अव्ययैव, सं. पुं. (सं.) विघ्नः, व्याघातः
 २. अवरोधः ३. निरोधः ४. अनुरोधः
 ५. अन्तःपुरम् ।
 अव्ययैव, सं. पुं. (सं. न.) निवारणं
 २. अन्तःपुरम् ।
 अव्ययैव, सं. पुं. (सं. न.) उन्मूलनं,
 उत्पाटनम् ।
 अव्ययैव, सं. पुं. (सं.) अवतारः, पतनम्
 २. अवन्तिः (स्त्री.) अलंकारभेदः (सा.)
 स्वरावतारः (संगीत) ।
 अव्ययैव, सं. पुं. (सं. न.) अवतरणं, नीचै-
 र्गमनम् ।
 अव्ययैव, वि. (सं.) रंगरहित, वर्णविहीन
 २. कुवर्ण, कुरंग ३. वर्णधर्मशून्य । सं. पुं.,
 अष्टादशविधोऽकारः (व्या.) ।
 अव्ययैव, वि. (सं.) अवर्णनीय, अनिर्वाच्य,
 अकथनीय, वर्णनाविषय । सं. पुं., उपमानम् ।
 अव्ययैव, सं. पुं. (सं.) आश्रयः, शरणं, आधारः,
 अवलम्बः ।
 अव्ययैव, सं. पुं. (सं. न.) ३. 'अवलम्ब' ।
 २. धारणं, ग्रहणम् ।
 अव्ययैव, वि. (सं.) आश्रित, अपीन,
 आवृतः-विघ्न-तंत्र (समासान्त में) ।
 अव्ययैव, वि. (सं.-विन्) दे. 'अवलम्बित' २.
 आश्रयद (अवलम्बिनी=आश्रिता स्त्री.) ।
 अव्ययैव, वि. (सं.) श्वेत-सितः-रंग-वर्णः । सं.
 पुं. (सं.) श्वेत-रंग-वर्णः ।

अव्ययैव, वि. (सं.) गवित, दृप्त २. अक्त,
 दिग्ध ३. लीन ।
 अव्ययैव, सं. स्त्री. (सं. आवली-लिः स्त्री.) वक्ति,
 ततिः, राजी-जिः (सब स्त्री.) २. समूहः,
 राशिः ।
 अव्ययैव, वि. (सं.) आ-परि-सं-लीढ । २.
 भक्षित, भुक्त, जम्घ ।
 अव्ययैव, सं. पुं. (सं.) दर्पः, गर्वः २. वि-प्र-
 अनु-लेपः ।
 अव्ययैव, सं. पुं. (सं. न.) अभ्यंजनं, त्रिले-
 पनं २. उद्वर्तनं, गान्त्वानुलेपनी ३. अहंकारः
 ४. दूषणम् ।
 अव्ययैव, सं. पुं. (सं.) लेखः पदार्थः २. लेख-
 मोषणम् ।
 अव्ययैव, सं. पुं. (सं. न.) जिज्ञासोप रपट्टा
 क्तादनम् ।
 अव्ययैव, सं. पुं. (सं. न.) वि-बंधणं, दर्शनं,
 निरूपणं २. निरीक्षणं, अन्वेषणम् ।
 --करना, क्रि. सं. अव-वि-आ-लोक (भ्वा.
 आ. से. चु.) प्र-वि-अव-ईक्ष् (भ्वा. आ. से.) ।
 अव्ययैव, वि. (सं.) दर्शनीय, ईक्षणीय ।
 अव्ययैव, वि. (सं.) ईक्षित, दृष्ट, निरूपित ।
 अव्ययैव, वि. (सं.) वि-पर-वश, अशक्त ।
 अव्ययैव, वि. (सं.) अवशेष, उद्बृष्ट ।
 अव्ययैव, वि. (सं.) अवशिष्ट, उद्बृष्ट २. समाप्त ।
 सं. पुं. (सं.) अवशिष्टं, शेषभागः २. अन्तः,
 समाप्तिः (स्त्री.) ।
 अव्ययैव, वि. (सं.-विन्) अपरिहार्य,
 अनिवार्य ।
 अव्ययैव, क्रि. वि. (सं. अवश्यम्) नियतं, भ्रुवं,
 असंशयं, नूनं, नाम, खलु (सब अव्य.) ।
 अव्ययैव, वि. (सं.) उच्छृङ्खल, दुर्दमनीय,
 दुर्निग्रह, अविषेय, दुर्निवार । (अवश्यम् = दुर्द-
 मनीया स्त्री.) ।
 अव्ययैव, क्रि. वि., दे. 'अवश्य' ।
 अव्ययैव, सं. पुं. (सं.) तुषारः, प्राण्यं,
 हिमशकम् २. अभिमानः, गर्वः ।
 अव्ययैव, सं. पुं. (सं.) आश्रयः २. स्तम्भः
 ३. भृष्टता ।
 अव्ययैव, वि. (सं.) विषण्ण, म्लान, खिन्न,
 शोकाप्त २. विनाशोन्मुख २. अक्षय ।

अवसर

[३५]

अवितथ

अवसर, सं. पुं. (सं.) समयः, कालः २. अव-
काशः, क्षणः ३. देव, दैवगतिः (स्त्री.) ।
अवसर्जन, सं. पुं. (सं. न.) वि-उत्-सर्जनम्
उपशान्तं, त्यजनम् ।
अवसर्पण, सं. पुं. (सं. न.) अवीरद्वर्गं, अधो-
गमनम् ।
अवसाद्, सं. पुं. (सं.) नाशः, क्षयः २. विवादः
३. दैन्यं ४. श्रान्तिः (स्त्री.) ५. निर्बलता ।
अवसान, सं. पुं. (सं. न.) विरामः, याननि-
वृत्तिः (स्त्री.), निष्पन्नः २. समाप्तिः (स्त्री.),
शान्तः ३. मृत्युः ४. सीमा ५. सायंकालः ।
अवसाय, सं. पुं. (सं.) अन्तः समाप्तिः (स्त्री.)
२. अवशिष्टं ३. पूर्तिः (स्त्री.) ४. संकल्पः
५. निर्णयः ।
अवसित, वि. (सं.) समाप्त २. ऋद्ध ३. परि-
पक्व ४. निश्चिन ५. सम्बद्ध ।
अवसृष्ट, वि. (सं.) व्यक्त २. दत्त ३. निष्का-
सित ।
अवसेचन, सं. पुं. (सं. न.) प्रीक्षार्थं, अलेना-
प्लावनं २. प्र., स्वेदनं ३. जख्कादिभिः रक्त-
निष्कासनम् ।
अवस्कन्द, सं. पुं. (सं.) सैन्यावासः, शिविरम्
२. वनवासः, वरयावासासः ।
अवस्कर, सं. पुं. (सं.) विद्या, गुणः-धम् । २.
[गुणागम्, लिङ्गम्, योनिः (क्रमशः न. स्त्री.)
पुं.] ३. उच्छिष्टम्, निस्सारवस्तुसमूहः ।
अवस्था, सं. स्त्री. (सं.) दशा, गतिः (स्त्री.)
२. समयः ३. वदस्-आशुस् (न.) ४. स्थितिः
(स्त्री.) ।
अवस्थान्तर, सं. पुं. (सं. न.) अस्थावस्था,
दशापरिवर्तनम् ।
अवहित, वि. (सं.) सातवान, एकत्र, अनन्व-
वृत्ति ।
अवहित्था, सं. स्त्री. (सं.) आकारगुप्तिः (स्त्री.)
लज्जादिवशात् नातृव्येण इपरिः गोपने, भाव-
भेदः (स्त्री.) ।
अवहेलन, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'अवहेलना' ।
अवहेलना, सं. स्त्री. (सं.) अवज्ञा, अपमानः
२. आज्ञोरलंघनं ३. उपेक्षा ।
—करना, क्ति सं., निष्क, अव-अय, -मन् (प्रे.),
अवज्ञा (क. उ. अ.) २. आज्ञाम् अतिव्रान्
(भ्वा. प. से.) ३. उपेक्षा (भ्वा. आ. से.) ।

अवहेलित, वि. (सं.) तिरस्कृत, उपेक्षित ।
अवान्तर, वि. (सं.) अन्तर्गत, मध्यवर्तिन् ।
सं. पुं. (सं. न.) अन्तरं, अभ्यन्तरं, उदरं, गर्भः ।
—दिशा, सं. स्त्री. (सं.) विदिशा, मध्यमदिशा ।
—भेद, सं. पुं. (सं.) भागस्य भागः, अन्त-
र्गतभेदः ।
अवाक्, वि. (सं. अवाच्) भौमिन्, तूष्णीक,
निःशब्द २. स्तब्ध, चकित ।
—रहना,—होना, कि. अ., तूष्णी-श्लेषं,—आस्
(म. आ. से.), वाचं यम् (भ्वा. प. अ.) ।
अवाङ्मनसगोचर, वि. (सं. अवाङ्मनो-
गोचर) अवर्णनीय, अचिन्त्य (ईश्वर) ।
अवाङ्मुख, वि. (सं.) अधो-नत,—मुख ।
(—स्त्री. स्त्री.) २. कञ्जित ।
अवाची, सं. स्त्री. (सं.) दक्षिणा, दक्षिणदिशा ।
अवाच्य, वि. (सं.) विद्युद्, निर्दोष २. निम्ब,
गर्भं । सं. पुं. (सं. न.) गाली, दुर्वचनम् ।
अवान, वि. (सं.) निर्यात, वायु-पवन,—रहित ।
अवाप्त, वि. (सं.) प्राप्त, अभिगत, लब्ध ।
अवार, सं. पुं. (सं. पुं. न.) अवाक्,—तीर-
तटम् ।
—वार, सं. पुं. (सं.) सागरः, अश्विः ।
अवारणीय, वि. (सं.) अनिवार्य अपरिहार्यं,
अवश्यंभाविन् ।
अवि, सं. पुं. (सं.) नेपः, एहकः २. छागः ३.
सूर्यः ४. मन्दारः ५. पर्वतः ६. मूषिकः । सं.
स्त्री., मेघी, एहका, उरणौ ।
—पाल, सं. पुं. (सं.) नैपपालकः ।
अविकल, वि. (सं.) अक्षीण, अनपन्नित २.
समग्र, पूर्ण ३. निश्चल ।
अविकल्प, वि. (सं.) निश्चित २. असंदिग्ध ।
अविकारी, वि. (सं.—रिन्) निर्विकार २. अप-
रिणत ।
अविकृत, वि. (सं.) शुद्ध २. अपरिणत ।
अविगन, वि. (सं.) लज्जात २. अज्ञेय ३. विष-
मान ।
अविचल, वि. (सं.) भ्रूय, स्थिर ।
अविच्छिन्न, वि. (सं.) निरन्तर, अविरत,
सतत ।
अवितथ, वि. (सं.) सत्य, यथार्थ, तथ्य । सं.
पुं. (सं. न.) सत्यं, ऋतम् ।

अविद्यमान

[३६]

अब्जल

अविद्यमान, वि. (सं.) अनुपस्थित २. असत्
३. असत्य ।
अविद्या, वि. (सं.) निरक्षर, अज्ञ ।
अविद्या, सं. स्त्री. (सं.) अज्ञानं, अज्ञेयः २.
माया (वे.) ३. कर्मकाण्डे ४. प्रथमः भूलेख
(योग.) । -जन्म, वि. (सं.) मोहज.
अज्ञानजनित ।
अविनाशी, वि. (सं.) अनश्वर, अक्षय, अक्षर,
अम्य, चिरस्थायिन् २. नित्य, शाश्वत ।
अविनीत, वि. (सं.) बद्ध २. दुर्दान्त ३. धृष्ट ।
अविभाज्य, वि. (सं.) अनंशनीय, अवंटनीय ।
अवियुक्त, वि. (सं.) मंडुक्त, संश्लिष्ट ।
अविरत, वि. (सं.) सतत, विरामरहित २.
आसक्त, अनिष्ट । कि. वि. (सं. न.) सततं,
अनवरतम् ।
अविरल, वि. (सं.) संलग्न २. निविड, घन ।
अविराम, वि. (सं.) सतत, अनवरत २. अवि-
श्रान्त ।
अविवक्षित, वि. (सं.) अनभिप्रेत, अनुदिष्ट
२. वक्तुमनिष्ट, अनिष्टकथन ।
अविवाहित, वि. (सं.) अनूढ, कुमार, अकृत,
-प्राणिग्रह-उपशाम-उदाह, अपरिणीत ।
अविवेक, सं. पुं. (सं.) सदसदिवेचनराहित्यं,
विचाराभावः २. अज्ञानं ३. अन्यायः ४. मिथ्या-
ज्ञानम् (सां.) ।
अविवेकी, वि. (सं. -किन्) विवेकशून्य, अज्ञा-
निन्, अतत्त्वज्ञ २. विचारशून्य ३. मूर्खे ४.
अन्यायकारिन् ।
अविश्रान्त, वि. (सं.) विश्रान्तिशून्य २. सतत,
अविराम ।
अविश्वसनीय | वि. (सं.) विश्वासानर्ह,
अविश्वस्त |
प्रत्ययायोग्य ।
अविश्वास, सं. पुं. (सं.) अप्रत्ययः, विश्वा-
साभाव ।
अविश्वासी, वि. (सं. -सिन्) शंका-संशय-
शील-बुद्धि, आ-शंकिन् २. दे. 'अविश्वस्त' ।
अवेक्षण, सं. पुं. (सं. न.) दर्शनं, अवलोकनं
२. निरीक्षणं, परीक्षणम् ।
अवेक्षणीय, वि. (सं.) दर्शनीय २. निरीक्षि-
तव्य, परीक्षितव्य ।
अवेद्य, वि. (सं.) अज्ञेय २. अज्ञेय ।

अवेद्या, वि. स्त्री. (सं.) अवेदव्या, विवादानर्हा ।
अवैतनिक, वि. (सं.) निर्वैतन, भृशित्याग्निन्,
आश्रकृति ।
अवैदिक, वि. (सं.) वैदविरुद्ध, वेदाविहित ।
अव्यक्त, वि. (सं.) परीक्ष. अतीन्द्रिय, गोचर,
अज्ञात, अनिर्वचनीय । सं. पुं. (सं.) विष्णुः
२. शिवः ३. मदनः ४. प्रकृतिः (स्त्री.),
५. आत्मन् ६. परमेश्वरः ७. मायोपार्थिकं
महान् (न.) ।
अव्यपदेश्य, वि. (सं.) अव्ययनीय २. अनिर्वच्य
३. निर्वच्य (न्या०) ।
अव्यय, वि. (सं.) निर्विकार, अक्षय, नित्य,
व्ययशून्य । सं. पुं. (सं.) परब्रह्मन् (न.)
२. विष्णुः ३. शिवः । (सं. न.) सर्वविक्रि-
कृमिवन्नेषु एकरूपः शब्दः (३० सदा, अद्य
आदि, व्या०) ।
अव्ययीभाव, सं. पुं. (सं.) समासभेदः (३०
प्रतिदिनं व्या.) ।
अव्ययीक, वि. (सं.) सत्य, यथार्थ २. प्रिय
इत्थ ।
अव्ययस्था, सं. स्त्री. (सं.) अकमः कमभंगः,
व्यतिक्रम, व्यवस्तता, संक्षोभः २. अवधिः ३.
दुर्निर्वाहः, दुर्णयः ।
अव्ययस्थित, वि. (सं.) अकम, कमशून्य, २.
निर्मयदि ३. अनियतरूप ४. चंचल ।
—चित्त, वि. (सं.) चंचल, चित्त-मानस ।
अव्ययद्वार्य, वि. (सं.) व्यवहारार्थेभ्य, उप-
योगानर्ह २. पतित, पंक्तिच्युत ।
अव्ययहित, वि. (सं.) संलग्न, संसक्त, व्यव-
धानशून्य ।
अव्ययहृत, वि. (सं.) अप्रयुक्त, अप्रचरि-
(लि) त ।
अव्याकृत, वि. (सं.) अस्पष्ट, अविकसित सं-
पुं. (सं. न.) आदिमन्तरत्नम् ।
अव्याप्ति, सं. स्त्री. (सं.) अनभिख्यापनं, व्या-
प्यभावः २. लक्षणस्य दोषभेदः (न्या०) ।
अव्याहृत, वि. (सं.) व्याघातशून्य, अप्रति-
रुद्ध २. सत्य ।
अव्युपपन्न, वि. (सं.) जड, मन्दमति २. ध्या-
करणानभिज्ञ ३. व्युत्पत्तिरहित (शब्द) ।
अब्जल, वि. (अ.) प्रथम, आदिम २. उत्तम,
श्रेष्ठ । सं. पुं. प्रारम्भः, उप-प्र-प्र-, क्रमः ।

अशोक, वि. (सं.) निर्भय, निःशङ्क । कि. वि. (सं. न.) निःशोकम् ।

अशोकुन, सं. पुं. (सं. पुं. न.) अपशकुनः नं, अजन्यं, अव-अशुभ-दुर-लक्षणम् ।

अशोक, वि. (सं.) निर्बल, अबल, २. अक्षम ।

अशोक्य, वि. (सं.) असाध्य, अनिष्पाद्य, असम्भव ।

अशान, सं. पुं. (सं. न.) भोजनं, अन्नं, २. भक्षणं, खादनम् ।

अशरण, वि. (सं.) अनाथ, निराश्रय ।

अशरणी, सं. स्त्री. (फा.) स्वर्णमुद्रा २. पुष्प-भेदः ।

अशराफ, सं. पुं. (फा. शरीफ फा बहु०) सज्जनाः आर्याः महानुभावो (सब पुं. बहु०)

अशरीरी, वि. (सं.-रिन्) अकाय, अशरीर, अदेह २. अपाथिव । सं. पुं. देवः ।

अशांत, वि. (सं.) व्याकुल, व्यग्र, विह्वल, उद्विग्न, चपल, चंचल ।

अशांति, सं. स्त्री. (सं.) अशमः, उद्वेगः, व्याकुलता, शोभः, व्यग्रता, सन्तोषाभावः ।

अशास्त्रीय, वि. (सं.) शास्त्रविरुद्ध २. शास्त्र-बाह्य ।

अशिक्षित, वि. (सं.) अनक्षर, निरक्षर, अविद्य अज्ञ, अश्रुत्पन्न ।

अशिर, सं. पुं. (सं.) अग्निः २. सूर्यः ३. वायुः । (सं. न.) हीरा, कज्जःजम् ।

अशिर, वि. (सं.-रस्) शीघ्रं-मस्तकं, -रहित सं. पुं. कबन्धः, कण्ठः-दम् ।

अशिष्ट, वि. (सं.) असभ्य, अविनीत, अमद्र, अनायं ।

अशिष्टता, सं. स्त्री. (सं.) असभ्यता, घृष्टता दुःशीलता, विनयाभावः ।

अशुद्ध, वि. (सं.) अशुचि, अपवित्र २. अशो-पित, असंस्कृत ३. भ्रान्त, वितथ ।

अशुद्धता, सं. स्त्री. (सं.) अपवित्रता, अशु-चिता, २. मलिनता ३. नुटिः-भ्रामितः (स्त्री.) ।

अशुद्धि, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'अशुद्धता' ।

अशुभ, सं. पुं. (सं. न.) अगंगलं, अहितं, अशिवं २. पापं, अपराधः । वि. अमंगल, अमद्र, अशिव ।

—सूचक, वि. (सं.) उरपात-अनिष्ट, शसिन् ।

अशोच, वि. (सं.) निःशेष, सर्वं, समग्र, सकल,

संपूर्णं, २. अनन्त, असीम, अगणित, बहु, ३. समाप्त, अवसित ।

अशोक, वि. (सं.) दुःख-शोक, -रहित । सं. पुं. (सं.) विशोकः, रक्तपल्लवः (वृक्ष) २. पारदः

३. शोकाभावः ४. नृपविशेषः ।

—वाटिका, सं. स्त्री. (सं.) विशोकवाटः २. रावणस्य विशोकोद्यानम् ।

अशौच, सं. पुं. (सं. बं.) अमेघ्यता, अपवि-त्रता, अशुद्धता ।

अशक, सं. पुं. (फा.) अशु (न.), नेत्रजलम् ।

अशब्दा, सं. स्त्री. (सं.) अविधासः, अपरव्ययः, भक्ति निहा-अभावः ।

अश्रान्त, वि. (सं.) स्वल्प, अल्पान्त । कि. वि. (सं. न.) सततम् ।

अश्रु, सं. पुं. (सं. न.) अश्रु (न.) वाष्पं, नयनाश्रु (न.) ।

—पात, सं. पुं. (सं.) रुदितं, रोदनम् ।

—शुक्ल, वि. (सं.) सास्त्र. अश्रुलोचन, संशय्य ।

अश्रुत, वि. (सं.) अनिश्चान्त, अनाकर्णित २. अनुभवशून्य ।

—पूर्व, वि. (सं.) अनाकर्णितपूर्वं २. अद्भुत ।

अश्रौत, वि. (सं.) अवेदोक्त, अवेदिक ।

अश्लिष्ट, वि. (सं.) श्लेषरहित, प्रकार्यक २. असंयुक्त ३. असंगत ।

अश्लील, वि. (सं.) ब्रीडावह, ग्राम्य, कुत्सित, बीभत्स, अश्राव्य, अवाच्य ।

अश्लीलता, सं. स्त्री. (सं.) ग्राम्यता, अवा-च्यता ।

अश्व, सं. पुं. (सं.) तुरगः, घोटकः ।

—आरोहण, सं. पुं. (सं. न.) अश्वेन विहरणं, घोटकारोहणम् ।

—आरोही, वि. (सं.-हिन्) सादिन्, तुरगिन् ।

—गंधा, सं. स्त्री. (सं.) ह्य-वाजि, गन्धा ।

—तर, सं. पुं. (सं.) वेगसरः (खड्ग) । (-तरो = वेगसरो स्त्री.)

—पति, सं. पुं. (सं.) तुरगराजः २. सादिन् २. भरतमातुलः ३. नृपविशेषः ।

—पाल, सं. पुं. (सं.) घोटकरक्षकः ।

—सेध, सं. पुं. (सं.) वाजिधेयः, कपुधेयः ।

—शास्त्र, सं. स्त्री. (सं.) मन्दुरा, वाजिशाला ।

अश्वत्थ, सं. पुं. (सं.) चक्रवृक्षः पिप्पलः ।

अक्षरार्थमा, सं. पुं. (सं. मन्) द्रौणिः, द्रोणा-
यनः, कृपीक्षितः, द्रोणाचार्यपुत्रः ।

अश्वस्तन, वि. (सं.) अश्वस्तनिक अशतन
अशतनीय २. दरिद्र ।

अधिनी, सं. स्त्री. (सं.) घोडिकी, बडवा
२. प्रथमनक्षत्रं, दाक्षायणी ।

—कुमार, सं. पुं. (सं.—रौ दि०) अधिनीसुतौ-
वेचचिकित्सकौ, दस्त्री, स्ववैद्यौ ।

अषाढ, सं. पुं., दे. 'अषाढ' ।

अषाढी, सं. स्त्री. (सं. अषाढी) आषाढमासस्य
पूणिमा ।

अष्ट, वि. तथा सं. पुं. (सं. अष्टन्) दे. 'अठ'

—अंश, सं. पुं. (सं. न.) योगस्याष्टांगानि
(= यमः, नियमः, आसनं, प्राणायामः, प्रत्या-
हारः, धारणा, ध्यानं, समाधिः) २. आयुर्वे-
दस्य अष्टविभागः (शल्य ६०) ३. शरीर-
स्याष्टांगानि यैः प्रणामो विहितः (= जानुपाद-
हस्तनक्षःशरीरवचनदृष्टिबुद्धयः) ४. अष्टद्रव्य-
घटितपूजोपकरणभेदः । वि. (सं.) अष्टावयव
२. अष्ट-भुज-पाश्र्व ।

—अष्टाथी, सं. स्त्री. (सं.) पाणिनीयं
व्याकरणम् ।

—कौण, सं. पुं. (सं.) अष्टास्रं, अष्टकोणा-
कृतिः (स्त्री.) २. कुण्डलभेदः । वि. अष्टास्र,
अष्टास्रिय ।

—घातु, सं. स्त्री. (सं. पुं.) भात्वष्टकम्
(= सोना, चाँडी, ताँबा, रौंसा, जस्ता,
सीसा, लोहा, पारा) ।

—पद्मी, सं. स्त्री. (सं.) अष्टपदसमूहः
२. छन्दोभेदः ।

—पहर, सं. पुं. (सं.—प्रहराः) दिनरदाष्ट-
यामाः । क्रि. वि., अर्हानिशं दिवानिशम् ।

—भुजा, सं. स्त्री. (सं.) दुर्गा, विन्ध्याचल-
वासिनी देवी ।

—सूरि, सं. पुं. (सं.) शिवः २. शिवस्य
अष्टमूर्तयः (= पृथिवी, जलं, अग्निः, वायुः,
आकाशः, यजमानः, सूर्यः, चन्द्रः अथवा शर्वः,
मदः, रुद्रः, उग्रः, भीमः, पशुपतिः, ईशानः,
महादेवः) ।

—चर्गा, सं. पुं. (सं.) औषधविशेषाष्टकम्
(= ऋषभः, जीवकः, भेदः, महादेवः, कडिः,
पृदिः, काकोली, क्षीरकाकोली) ।

अष्टक, सं. पुं. (सं. न.) अष्टवस्तुसमुदायः
(३० हिंस्रष्टकं) २. अष्टपद्यात्मककाव्यम्
३. ऋग्वेदस्याष्टमो भागः ४. अष्टाध्यायी ।

अष्टमी, सं. स्त्री. (सं.) तिथिभेदः । वि. स्त्री.
(सं.) ।

अष्टादश, वि. तथा सं. पुं. (सं. शन्) उक्तः
संख्या तद्व्युत्पत्तौ (१८) च ।

असंख्य, वि. (सं.) असंख्येय, असंख्यात,
अगणित, संख्या-गणना, -अतीत, अगण्य ।

असंग, वि. (सं.) एकल, एकाकिन
२. निलिप्त ३. भिन्न ।

असंगत, वि. (सं.) पूर्वापरविरुद्ध, असम्बन्ध,
अप्रासंगिक २. अन्वय, अनुचित, अयुक्त ।

असंगति, सं. स्त्री. (सं.) अनन्वयः, सम्बन्धा-
भावः २. अनैचित्यम् ३. अलंकारभेद,
(सा०) ।

असंतुष्ट, वि. (सं.) संतोषरहित २. अतुष्ट
३. स्त्रिप्त ।

असंतोष, सं. पुं. (सं.) असंतुष्टिः (स्त्री.),
संतोषाभावः २. अतृप्तिः (स्त्री.) ३. खेदः,
भ्लानिः (स्त्री.) ।

असंबन्ध, वि. (सं.) सम्बन्धरहित, अनन्वित
२. स्वतन्त्र ३. असंगत, पूर्वापरसम्बन्धरहित ।

असंवाध, वि. (सं.) विरतीर्ण, अस्कीर्ण २.
शून्य, निर्जन ३. सावकाश ४. निर्वाध ।

असंभव, वि. (सं.) असाध्य, अदाय, अकर-
णीय । सं. पुं., अलंकारभेदः (सा०) ।

असंभावित, वि. (सं.) आकस्मिक, अतकित
असंभाव्य, वि. (सं.) अनवर्था, अविचार्य,
२. दुष्ट ।

असंभाव्य, वि. (सं.) अवश्य, अवाच्य
२. वातालापायोग्य (सं. न.) कुचचनम् ।

असंयत, वि. (सं.) अनगण्य, निर्मुक्त,
उच्छृङ्खल २. नियमरहित, अनियत ३. अक्रम ।

असंशय, वि. (सं.) निर्विकल, स्पन्देह-रहित
रहित २. मत्य । क्रि. वि. (सं. न.) निस्म-
न्देहम् ।

असंस्कृत, वि. (सं.) अदिष्ट, असंख्य, अवि-
नीत, अपरिष्कृत ।

असंगंध, सं. स्त्री. (सं. अशान्धा) ह्य-
तुरंग-गन्धा, बलदा, प्रियवारी, रसावती,
कुष्ठपातिनी ।

असती, सं. स्त्री. (सं.) कुलटा, पुंश्रुली ।
 असत्, वि. (सं.) मिथ्या (अव्य.), असत्य
 २. अविद्यमान, सत्ता-अस्तित्वत्व, हीन
 ३. अमद्, दुष्ट ।
 असत्य, वि. (सं.) अनृत, वितथ, अतथ्य,
 अयतार्थ, अलीक, मृषा- (मिथ्या-) ।
 —घादी, वि. (सं. -दिन्) मिथ्या-मृषा-अनृत-
 वादिन् भाषिन् ।
 असत्यता, सं. स्त्री. (सं.) अनृतत्वं, असत्यत्वं,
 वितथता ।
 असत्, सं. पुं. (सं. अज्ञान दे०) ।
 असबाह, सं. पुं. (अ.) परिच्छदः उपरकरः,
 बन्धुजान, यात्रासामग्री, वस्त्र-पात्र, सम्भारः ।
 असद्य, वि. (सं.) अशिष्ट, असंस्कृत, ग्रामीण
 २. असभासद्, असदस्य ।
 असभ्यता सं. स्त्री. (सं.) अशिष्टता, असंस्कृतिः
 (स्त्री.) ग्रामीणता ।
 असमंजस, सं. पुं. (सं. न.) सन्देहः, संशयः,
 द्वैधाभावः, निश्चयाभावः २. विघ्नः ३. (सं.
 पुं.) सगरपुत्रः । वि., असंगत, अनुपयुक्त ।
 —मं पदना, क्रि. अ., आशंक-विशंक-विष्कृप्
 (म्वा. आ. से.), संशी (अ. आ. से.),
 मनसा दोलायते (ना. पा.) ।
 असम, वि. (सं.) अतुल्य, असदृश, असदृक्ष
 २. अयुग्म, विषम ३. उन्नतानत, असमरेख ।
 (सं. पुं.) अलंकार-भेदः (सा०) ।
 असमत, सं. स्त्री. (अ.) सतीत्वम्, पातिव्रत्यम्
 —फरोश, वि. कुलटा, व्यभिचारिणी ।
 फरोशी, सं. स्त्री. व्यभिचारः, सतीत्व-विक्रयः ।
 असमय, सं. पुं. (सं.) अकालः, कुसमयः,
 विपरकालः । क्रि. वि. अकाले, अस्थाने, अय-
 थाकालन् । वि. अनवसर, अ (आ) कालिक,
 असमयोजित
 असमर्थ, वि. (सं.) बल-शक्ति-हीन, अशक्त,
 दुर्बल, २. अक्षम, अयोग्य ।
 असमर्थता, सं. स्त्री. (सं.) अशक्तता, अक्षमता ।
 असम्मत, वि. (सं.) विमत, विरुद्ध २. अस्वीकृत ।
 असम्मति, सं. स्त्री. (सं.) वैमत्यं, विमति
 (स्त्री.) मतभेदः, विरोधः ।
 असमान, वि. (सं.) द्विजातीय, अतुल्य ।
 असमाप्त, वि. (सं.) असंपन्न, अनवसित,
 अ ० ।

असमाहित, वि. (सं.) चलचित्त, लोलबुद्धि,
 अधीर ।
 असद, सं. पुं. (अ.) प्रभावः, प्रतापः, प्रतिष्ठा
 २. फलं, गुणः, परिणामः ।
 —करना, क्रि. सं., प्रभावं जन् (प्रे०), फलं
 उत्पद् (प्रे०) ।
 —होना, क्रि. अ., परिणामः जन् (दि. आ.
 से.) फलं निष्पद् (दि. आ. अ)
 असल, वि. (अ.) अकृतक, अकृत्रिम, निष्कपट
 २. उत्कृष्ट ३. शुद्ध, अभिश्रित । सं. पुं., मूलं,
 तत्वम् ४. मूल-धनं-द्रव्यम् ।
 असलह, सं. पुं. (अ० 'सिलाह' का बहु०)
 शशाकम् २. कवच-चम् ।
 असलियत, सं. स्त्री. (अ.) सत्यता, वास्त-
 विकता २. मूलं, तत्त्वं, सारः ।
 असली, वि. (अ.) दे. 'असल' वि० ।
 असह, वि. (सं. असह दे०) ।
 असहन, वि. (सं.) दे. 'असहनशील' ।
 —शील, वि. (सं.) अमर्षण, अक्षमिन्, अस-
 हिष्णु, असहन, अक्षम ।
 —शीलता, सं. स्त्री. (सं.) असहिष्णुता,
 क्षमा-मर्षण-तितिक्षा, अभावः ।
 असहनीय, वि. (सं.) दे. 'असह' ।
 असहयोग, सं. पुं. (सं.) असहकारिता,
 असाहाय्य, असहयोगः ।
 —आंदोलन, सं. पुं. (सं. न.) असहकारिता-
 व्यापारः ।
 असह्य, वि. (सं.) असहनीय, असोढ्य, सह-
 नायोग्य, दुःसह, दुर्विषद् ।
 असहाय, वि. (सं.) निराश्रय, निरावलम्ब,
 अगतिक, अशरण ।
 असहिष्णु, वि. (सं.) दे. 'असहनशील' ।
 असहिष्णुता, सं. स्त्री. (सं.) दे. असहन-
 शीलता ।
 असांप्रत, वि. सं. (सं.) अशीमन, अनुचित २.
 असांमयिक ३. वर्तमानासम्बद्ध ।
 असांप्रादायिक, वि. (सं.) अमतवादिन्, उदार
 २. परम्पराविरुद्ध ।
 असा, सं. पुं. (अ.) दण्डः, लज्जुद्धः, यष्टिः
 (पुं. स्त्री.) ।
 असाद, सं. पुं. (सं. आषाढः) वर्षरथ चतुर्मासः ।

असादी

[४०]

असोसियेशन

असादी, वि. (हि. असाद्) आषाढसम्बन्धिन् ।
 सं. स्त्री. आषाढोशे शस्यं २. आषाढपूर्णिमा ।
 असाधन, वि. (सं.) साधन-उपाय, -हीन-
 रहित, निरुपाय, निस्साधन ।
 असाधारण, वि. (सं.) विशेष, विलक्षण,
 अद्भुत (—णी स्त्री.) ।
 असाध्य, वि. (सं.) अशक्य, अनिष्पाय
 २. दुस्साध्य, दुष्कर ३. अचिकित्स्य, दुरुपचार,
 निरुपाय, अप्रतिकार्य ।
 असामयिक, वि. (सं.) अनवसर, असमयो-
 चित, अ(आ)कालिक (—की स्त्री.) अप्राप्त-
 काल, अस्थान ।
 असाभ्यर्ण्यं, सं. स्त्री. (सं. न.) दे. 'असमर्थता' ।
 असामी, सं. पुं. (अ. आसामी) जनः, पुरुषः
 २. कृषकः ३. प्रत्यर्थिन्, प्रतिवादिन्
 ४. अपराधिन्, दण्ड्यः ५. मित्रं सखि (पुं.) ।
 सं. स्त्री., परकीया २. वेद्या ३. दासवृत्तिः
 (स्त्री.) ४. रिक्तस्थानम् ।
 खारा—, सं. पुं., ऋणशोधकः ।
 डूवा—, सं., पुं., ऋणशोधाक्षमः ।
 मोटा—, सं. पुं., धनाढ्यः ।
 लीचद्—, सं. पुं. बद्धमुष्टिः, अदिरसः ।
 असार, वि. (सं.) निस्सार, फल्गु, निष्फल
 २. रिक्त ३. तुच्छ । सं. पुं., परण्डः २. अगारः ।
 असारता, सं. स्त्री. (सं.) निस्सारता, तत्त्व-
 राहित्यम् २. मिथ्यात्वं ३. तुच्छता ।
 असालत, सं. स्त्री. (अ) कुलीनता २. सत्यता ।
 असालतन्, क्रि. वि. (अ) स्वयं, स्वतः
 (दोनो अव्यय) ।
 असावधान, वि. (सं.) प्रमत्त, प्रमादिन्,
 मन्दादर, अनवधान, अनवहित ।
 असावधानता, सं. स्त्री. (सं.) प्रमादः, मनो-
 योगाभावः, अनवधानं, उपेक्षा ।
 असावधानी, सं. स्त्री. दे. 'असावधानता' ।
 असावरी, सं. स्त्री. (सं. अ (आ) शावरी)
 रायिणीभेदः ।
 असासा, सं. पुं. (अ.) सम्पत्तिः (स्त्री.),
 विभवः ।
 असि, सं. स्त्री. (सं. पुं.) खड्गः २. नदीविशेषः ।
 असिक, सं. पुं. (सं. न.) त्रिबुकाधरयो-
 र्मध्यभागः ।

असिकी, सं. स्त्री. (सं.) नदीविशेषः (चना)
 २. अन्तःपुरचारिणी अष्टदा दासी ।
 असित, वि. (सं.) कृष्ण, नील, श्याम,
 मेचक २. दुष्ट ३. वक्र ।
 असितांग, सं. पुं. (सं.) शिवः । वि., कृष्ण, =
 अंग-रूप-देह ।
 असिता, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'यमुना' ।
 असिद्ध, वि. (सं.) अनिष्पन्न २. अपक्व
 ३. अपूर्ण ४. निष्फल ५. अप्रमाणित ।
 असिद्धि, सं., स्त्री. (सं.) निष्फलता, विफलता
 २. अपुष्टता, अपक्वता ।
 असिस्टेंट, वि. (अं) सहायक, सहाय, उप- ।
 —एडिटर, सं. पुं., उपसम्पादकः ।
 असी, सं. स्त्री. (सं. अग्निः पुं. : असी) काशी-
 दक्षिणवर्तिनी नदी ।
 असीम, वि. (सं.) निस्सीम, निरवधि २. अमित
 ३. अपार ४. अगाध ।
 असील, वि. (अ. असल) दे. 'असल' ।
 असीर, सं. पुं. (अ.) ब्रह्मकः, कारागुप्तः ।
 असीरी, सं. स्त्री. (फा.) कारावासः, आसेधः,
 निरोधः ।
 असीस, सं. स्त्री. (सं. आशिमू स्त्री.) आशीर-
 वादः-वचनं, मंगलशुद्धः ।
 असु, सं. पुं. (सं.) प्राणाः असदः (दोनो
 बहुवचन) ।
 असुविधा, सं. स्त्री. (सं. >) कठिनता,
 सांकर्याभावः २. विघ्नः ।
 असुर, सं. पुं. (सं.) दैत्यः, राक्षसः २. रात्रिः,
 ३. दुर्जनः ४. वृथिवी ५. सूर्यः ६. नेघः ७. राहुः
 ८. उन्मादभेदः ।
 —अरि, सं. पुं. (सं.) विष्णुः २. देवता ।
 —गुरु, सं. पुं. (सं.) शुक्राचार्यः ।
 असूया, सं. स्त्री. (सं.) परगुणेषु दोषारोपः
 २. संचारिभावभेदः (सा.) ।
 असूर्यपर्याया, वि. स्त्री. (सं.) अवरोध-अन्तःपुर-
 वर्तिनी, अवगुण्ठनवती, अतिलज्जावती ।
 असूल, सं. पुं., दे. 'उसूल' २. दे. 'वमूल' ।
 असेसर, सं. पुं. (अं. एसेसर) सभ्यः,
 समासद् ।
 असोज, सं. पुं. (सं. अधसु > ज्) आश्विनमासः ।
 असोसियेशन, सं. स्त्री. (अं.) समा, समाजः ।

असौम्य

[४१]

अहंकारी

असौम्य, वि. (सं.) कुरूप, कुदृशं २. अप्रिय, अरुचिर ।
 असौष्टव, सं. पुं. (सं. न.) कुरूपता, सौन्दर्याभावः । वि. कुरूप, असुन्दर ।
 अस्त, वि. (सं.) गुप्त, तिरोहित, २. अदृष्ट, लुप्त ३. नष्ट, ध्वस्त । सं. पुं., तिरोधानं, लोपः, अदर्शनम् ।
 —गत, वि. (सं. अस्तंगत) लुप्त, अस्तमित, अदर्शनगत ।
 अस्तबल, सं. पुं. (अ.) मन्दुरा, अश्व-वाजिघोटक, -शाखा ।
 अस्तमन, सं. पुं. (सं. न.) अदर्शनं, तिरोधानं २. सूर्यादीनामस्तोऽस्तमयो वा ।
 —वेला, सायं, सायंकालः, दिनावसानं, प्रदोषः ।
 अस्तमित, वि. (सं.) अस्तंगत, अदृष्ट, तिरोहित २. नष्ट, मृत ।
 अस्तर, सं. पुं. (का.) अन्तराच्छादनं, मन्तःपटः ।
 —कारी, सं. स्त्री. (का.) क्षुधालेपः २. (पलस्तर) उपनाहः उपदेहः ।
 अस्त-व्यस्त, वि. (सं.) सं.-प्र-वि-आ, -क्षीणं, संकुल, अव्यवस्थित ।
 अस्ताचल, सं. पुं. (सं.) अस्त-पश्चिम, -गिरिः-पर्वतः ।
 अस्तित्व, सं. पुं. (सं. न.) भावः, सत्ता, विद्यमानता ।
 अस्तु, अव्य. (सं.) यद् भवि तद् भवतु २. वाचं, भवतु, मदम् (सभ अव्य.) ।
 अस्तेय, सं. पुं. (सं. न.) स्तेय-मोष-चौर्य-स्तेन्य, -न्यायः ।
 अस्त्र, सं. पुं. (सं. न.) प्रहरणं, आयुधं, क्षिपणीणिः (स्त्री.) २. शस्त्रम् ।
 —चिकित्सक, सं. पुं. (सं.) शल्यशास्त्रज्ञः, शस्त्रवेद्यः, शल्यसंभविदः ।
 —चिकित्सा, सं. स्त्री. (सं.) शल्यं, शस्त्रवेद्यकं, शल्यशास्त्रम् ।
 —विद्या, सं. स्त्री. (सं.) युद्धशास्त्रं, सांघातिकं, आयुध-रण-विद्या ।
 —वेद्य, सं. पुं. (सं.) धनुर्वेदः ।
 —शाला, सं. स्त्री. (सं.) अस्त्र-आयुध-आगारं, शस्त्रगृहम् ।
 अस्थि, सं. स्त्री. (सं. न.) कौकसं, कुल्यं, मेदोजम् ।

—पंजर, सं. पुं. (सं.) कंकालः, करकः, देशरिधिसमूहः ।
 अस्थिर, वि. (सं.) चपल, चंचल, तरल २. चलचित्त, लोलमति ।
 अस्थिरता, सं. स्त्री. (सं.) चाञ्चल्यं, तारक्यं, अस्थिर्यम् २. चलचित्तता, मनोलौघ्यम् ।
 अस्पताल, सं. पुं. (अं. हॉस्पिटल) आतुरालयः, चिकित्सालयः, रुग्णागारः आरोग्यशाला २. औषधालयः ।
 अस्पष्ट, वि. (सं.) अप्रकट, अस्पष्ट, अविशद २. दुर्बोध, संदिग्ध ।
 अस्पृश्य, वि. (सं.) स्पर्शायोग्य २. अस्पृश्य-जीव, अन्त्यज, ह्योनवर्णं, दुष्कुलीन ।
 अस्पृष्ट, वि. (सं.) निस्पृष्ट, लोभरहित, अलोलुपा ।
 अस्पृष्ट, वि. (सं.) अस्पष्ट, अग्यक्त, गुप्त, परोक्ष ।
 अस्त्राव, सं. पुं. दे. 'असत्राव' ।
 अस्मार्तं, वि. (सं.) स्मरणातीत २. अवैध, आर्यशास्त्रविरुद्ध ।
 अस्मिता, सं. स्त्री. (सं.) क्लेशभेदः (यो.) २. अहंकारः ।
 अस्त्र, सं. पुं. (सं.) कोणः २. केशः ।
 अस्त्रं, सं. पुं. (सं. न.) रक्तं, रुचिरं २. अश्रु (न.), नयनजलम् ।
 अस्त्र, दे. 'असल' ।
 अस्त्रस्थ, वि. (सं.) रुग्ण, व्याधित, रोगिन् २. व्यधित ।
 अस्त्राभाविक, वि. (सं.) अनैसर्गिक, निसर्ग-प्रकृति-सहकर्म-विरुद्ध २. कृत्रिम, कृतक ।
 अस्त्रास्थ्य, सं. पुं. (सं. न.) रोगः, व्याधिः, गदः, आमयः ।
 अस्सी, वि. (सं. अशीतिः स्त्री.) । सं. पुं. उक्ता संख्या, तद्बोधकावर्को (८०) च ।
 अहं, सर्वं (सं०) । सं. पुं. अहं-कारः-कृतिः (स्त्री.)-भावः-पूर्विका, आत्माभिमानः ।
 अहंकार सं. पुं. (सं.) गर्वः, दर्पः, मदः, मादः, आटोपः, मानः, उत्सेकः अहं-मानः-भावः-कृतिः (स्त्री.) २. अन्तःकरणस्य भेदविशेषः (वे.) २. महत्तरवजातो द्रव्यविशेषः (सां.) ४. अस्मिता ५. ममत्वम् ।
 अहंकारी, वि. (सं. -रिन्) इष्ट, गर्वित, अवलिप्त, उदत, मत्त, वस्तीकिन्, अभिमानिन् ।

अहंवाद, सं. पुं. (सं.) आत्मशावा, अहंका-
रोक्तिः (स्त्री.), विकल्पनम् ।

अह, सं. पुं. (सं., अहन् न.) दिनं, दिवसः
२. सूर्यः ३. विष्णुः ।

अहं, अव्य. (सं. अहह अव्य.) आश्चर्यलेखने-
शादिबोधकमव्ययम् ।

अहद्, सं. पुं. (अ.) प्रतिष्ठा, सं-प्रति, -श्रव-
५. संकल्पः ३. शासनकालः ।

—नामा, सं. पुं., प्रतिष्ठा-समय, पत्र-लेख्यम्
१. सन्धिपत्रम् ।

—शिकन, सं. पुं., प्रतिष्ठाकर्मविन, असत्यसन्ध ।

—शिकनी, सं. स्त्री., प्रतिष्ठाभंगः, असत्य-
सन्धरवम् ।

अहन्, सं. पुं. (सं. न.) दिनं, दिवसः ।

अह्निसि, अव्य. दे. 'अह्निसि' ।

अहवाच, सं. पुं. (अ., 'हवीव' का बहु०)

अह्म, वि. (अ.) महत्त्वपूर्ण, अत्यावश्यक ।

अह्मक, वि. (अ.) जड, मूढ, मूर्ख ।

अहमहमिका, सं. स्त्री. (सं.) अहमयिका,
प्रति-, स्वर्द्धा ।

अहममति, सं. स्त्री. (सं.) अहंकारः २. अविद्या ।

अहर, सं. पुं. (सं. आहर >) जलाशयः ।

अहरन, सं. स्त्री. (सं. आ + धरणं <) शर्मः,
शर्मा, शर्मिका, शृणा, शर्मिः (पुं. स्त्री.) ।

अहरहः, अव्य. (सं.) प्रति-अनु, -दिनं, प्रत्यहं,
दिने दिने ।

अहरा, सं. पुं. (सं. आहर >) गोमयपिंडराशिः
२. गोमयाभिः ३. पथिकाश्रमः ४. प्रपा ।

अहरी, सं. स्त्री. (हि. अहरा) प्रपा २, जला-
धारः ।

अहर्निश, कि. वि. (सं. शो) दिवानिशं, रात्रि-
दिवम् २. नित्यम् (सब अव्य.) ।

अहलकार, सं. पुं. (फ्रा.) राजा, -पुरुषः-भृत्यः
२. प्रतिनिधिः, प्रतिहस्तः ।

अहलमह, सं. पुं. (फ्रा.) अधिकरणलेखकः ।

अहल्या, वि. (सं.) कर्षणायोग्या (भूमिः) ।
सं. स्त्री. गौतमपत्नी ।

अहसान, सं. पुं. (अ.) उपकारः, हितं
२. कृपा ३. कृतज्ञता ।

—फरामोष, वि. (फ्रा.) कृतज्ञ (-ही स्त्री.),
अकृत, ह-वेदिन् ।

—फरामोशी, सं. स्त्री. (फ्रा.) कृतज्ञता,
उपकारविरमरणं, अकृतवेदिता ।

—संद, वि. (फ्रा.) कुतूहल, कृतवेदिन् ।

—संदी, सं. स्त्री. (फ्रा.) कृतज्ञता, उपकार-
ज्ञता ।

अहह, अव्य. (सं.) आश्चर्यलेखनेशोकादि-
सूचकमव्ययम् ।

अहाँ, अव्य. (अनु.) मा, नो, न ।

अहा, अव्य. (सं. अहह) हर्षप्रशंसादिस्वक-
मव्ययम् ।

अहाता, सं. पुं. (अ.) परिसरभूमिः (स्त्री.),
प्रागणं (-नं) २. प्राकारः, प्राचौरम् ।

अहार, सं. पुं., दे. 'आहार' ।

अहार्य, वि. (सं.) अचोरणीय, अमोषणीय ।
२. धनच्छलादिभिः अवश्य-अदम्य ।

अहाहा, अव्य. (सं. अहह) हर्षसूचकाव्ययम् ।

अहिंसक, वि. (सं.) अहिंस, अवातुक (-को
स्त्री.) २. अदुःखद ।

अहिंसा, सं. स्त्री. (सं.) हिंसा-अपकार-द्रोह-
वेर, -त्यागः ।

अहिंस, वि. (सं.) दे. 'अहिंसिक' ।

अहि, सं. पुं. (सं.) सर्पः २. वृत्रासुरः ३. भूमिः
(स्त्री.) ४. सूर्यः ५. राहुः ६. खलः ।

अहित, वि. (सं.) वैरिन्, द्रोहिन् २. हानिकर
(-री स्त्री.) । सं. पुं. (सं. न.) अमंगलं, अमद्रम् ।

अहिफेन, सं. पुं. (सं. पुं. न.) सर्पविषं,
सर्पमुखलाला २. (अफ्रीम) अफेनं, अहिफेनम् ।

अहिम, वि. (सं.) तप्त, उष्ण ।

—कर, सं. पुं. (सं.) सूर्यः ।

अहिवात, सं. पुं. (सं. अभिवाच > ?) सौभाग्यं,
सधवात्वं, सत्कृत्यत्वं, पतिमत्ता ।

अहिवातिन, -ती, (हि. अहिवात) सौभाग्य-
वती, सधवा, सधवृका ।

अहीर, सं. पुं. (सं. कामीरः) गोपः गोपालः,
गोपालकः गोसंख्यः, वलवः ।

अहीरिन, री, सं. स्त्री. (सं. आभीरी) गोपी,
गोपिका, दोहिनी, गोदोहिनी ।

अहीश, सं. पुं. (सं.) शेषनामः, सर्पराजः
२. शेषावताराः (लक्ष्मणवराहमादयः) ।

अहुत, सं. पुं. (सं.) जपः, श्लोक्यहः, वेदपाठः ।

अह, अव्य. (सं.) हे, अयि, भोः ।

अहेतुक

[४३]

औखें लगना

अहेतुक, वि. (सं.) अकारण, निष्कारण, निर्निमित्त, २. व्यर्थ, निष्फल ।

अहेर, सं. पुं. (सं. आखेटः) मृगया, मृगव्यम् २. वन्यजन्तवः, (बहु०) ।

अहेरिया, अहेरी, सं. पुं. (हि. अहेर) व्याधः, लुब्धकः मृगयुः आखेटकः ।

अहो, अ्य. (सं.) हे, अरे २. करुणासेदृष्टि-प्रदासाम्बुजमन्वयम् ।

अहोभाष्य, सं. पुं. (सं. न.) सौभाग्यं, पुण्योदयः, भाग्योपचयः ।

अहोर-बहोर, कि. वि. (हि. बहुरना) भूयो-भूयः, वारं वारं (दोनो अव्य०) ।

अहोरात्र, सं. पुं. (सं. पुं. न.) दिवानिहः, अहर्निहः, दिवारात्रं, नक्तंदिनम् (सब अन्य.) ।

आ

आ, देवनागरीवर्णमालाया द्वितीयः स्वरवर्णः, आकारः ।

आः, अन्य. (सं.) स्वीकृत्यनुकांकोपशोकस्मृत्यादिसूचकमन्वयम् ।

आँक, सं. पुं. (सं. अंकः) चिह्नं, अभिज्ञानम् २. संख्याचिह्नं, अंकः ३. वर्णः, अक्षरम् ४. सिद्धान्तः ५. अंशः, भागः, ६. वंश ७. उत्सवः, क्रोधन् ८. रेखा ९. मूल्यसंकेतः ।

आँकड़ा, सं. पुं. (हि. आँक) संख्याचिह्नम्, अंकः २. व्यावर्तनकीलः (पेंच) ।

आँकड़े, पुं. (हि. आँक) अंकाः ।

आँकना, कि. सं. (सं. अंकनम्) अंकं (जु.) (भ्वा. आ. से.), चिह्नयति-मुद्रयति (ना. धा.)

लांछ (भ्वा. प. से.), २. काह (भ्वा. आ. से.), तक् (जु.) ।

आँकुस, सं. पुं. दे. 'अंकुश' ।

आँख, सं. स्त्री. (सं. अक्षि न.) चक्षुस् (न.), वि.-लोकनं, नेत्रं, नयनं, ईक्षणं, दृश्-दृष्टिः (दोनो स्त्री.) २. नयनाधारं चिह्नम् ३. सूची-चिह्नम् ४. कृपा ५. विवेकः ६. निरीक्षणम् ।

—अंजनी, सं. स्त्री. (सं. अक्षि + अंजनम् >) पद्मपिटिका ।

—का गोला सं. पुं., अक्षिमालकम् ।

—का पर्दा, सं. पुं., अक्षिपटलम् ।

—मिचौली, सं. स्त्री., अक्षिनेत्रणी, बाल-कीटाभेदः ।

—लगी, सं. स्त्री., उपपत्नी, मुक्तिव्या ।

—आना, मु., नेत्रपाकः ।

—उठाकर न देखना, मु., भावगण-अवधीर (जु.) ।

—उठाना, मु., दृश् (भ्वा. प. अ.) २. अप-कर्तुं पप (भ्वा. आ. से.) ।

—का काजल सुराना, मु. चौथेपाठवम् ।

—का तारा, मु., तारकी, कर्नालिका २. स्नेह-माजनम् २. एकलः पुत्रः ।

—की मैल, सं. स्त्री., दूषिका, अक्षिमलम् ।

औखें चार करना, मु., परस्परबलोकनम् ।

—चुराना वा छिपाना, मु., निहो (वि. आ. अ.) २. परदृशनं परिहृ (भ्वा. प. अ.) ।

—झपकना, मु., निद्रावश (वि.) भू २. निमित्त (तु. प. से.), निमील (भ्वा. प. से.) ।

—ठठी करना, मु., दर्शनेन प्रसद् (भ्वा. प. अ.) ।

—हवहवाना, मु., सास्त्रनयन (वि.) भू ।

—दिखाना, मु., सरोपे वीक्ष (भ्वा. आ. से.) २. भी-त्रस् (प्रे.) ।

—नीची होना, मु., लस्ज् वप् (भ्वा. आ. से.) ।

—नीली पीली करना, मु., अत्यन्तं कुप् (दि. प. से.) ।

—पर पर्दा पड़ना, मु., विमुह (दि. प. से.) ।

—पर बैठाना, मु. अत्यन्तं संमद् (प्रे.) ।

—फटकना, मु., नेत्रं स्फुर् (तु. प. से.) ।

—फेर लेना, मु., व्यवमद् (दि. आ. से.) २. प्रतिकूल (वि.) जन् (हि. आ. स.) ।

—बंद करलेना, मु. च (तु. आ. अ.) ।

—बिछाना, मु., प्रैष्णा प्रविश (प्रे.) २. सस्नेहं प्रतीक्ष (भ्वा. आ. से.) ।

—भर आना, मु., सास्त्रनेत्र (वि.) जन् ।

—मटकाना, मु., सहायं वीक्ष (भ्वा. आ. से.) ।

—मारना, मु., निर्मेषण सूच् (जु.) ।

—मिच जाना, मु., च (तु. आ. अ.) २. दे. 'अपकना' ।

—मिलाना, मु., सहायं दृश् (भ्वा. प. अ.) ।

—मीचना, नेत्रं निमील (भ्वा. प. से.) ।

—में घर करना, मु., इदये वस् (भ्वा. प. अ.) ।

—में चरबी छाना, मु., दर्पान्ध (वि.) जन् (दि. आ. से.) ।

—में धूल झाँकना, मु., प्रतु (प्रे.) ।

—लगना, मु., स्वप् (अ. प. अ.) २. बड़भाक् (वि.) भू ।

ऑखें सँकना

[४४]

आक की बुद्धिया

- सँकना, मु., सौन्दर्यदर्शनेन प्रसद् (भ्वा. प. अ.) ।
- से गिरना, मु., अवयव-अवमन् (कर्म.) ।
- आंग, वि. (सं.) शारीरिक, दैहिक २. अंगिन्, अवयविन् ३. अंगदेशज ।
- आँगन, सं. पुं. (सं. अंगन-णम्) अजिरं, प्रांगणम् ।
- आंगिक, वि. (सं.) शारीरिक, दैहिक, कायिक (—की स्त्री.) सं. पुं., अभिनयभेदः ।
- आँच, सं. स्त्री. (सं. अचिस् स्त्री., न०) तापः, शङ्खः, उष्णता, ऊष्मः २. अग्नि, ज्वाला-शिखा-जिह्वा ३. अग्निः अनलः ४. हानिः (स्त्री.) ५. विपत्तिः (स्त्री.) ।
- आना वा खाना वा पहुँचना वा लगना, क्रि. अ., तप् (दि. आ. अ.), उष्णी भू ।
- देना, क्रि. स. तप् (प्रे.) ।
- न आने देना, मु., कष्टाद् वै (भ्वा. आ. अ.) ।
- आँचल, सं. पुं. (सं. अंचल-लम्) पटान्तः, वस्त्रप्रान्तः २. प्रान्तभागः ।
- देना, मु. स्तन्यं दा (जु. व. अ.) ।
- में बाँधना, मु., स्मरणार्थं पटप्रान्ते प्रथिवा-नम् २. नित्यं पात्रे स्थापनम् ।
- आँजन, सं. पुं., दे. 'अंजन' ।
- आँजनेय, सं. पुं. (सं.) हनुमत्, मारुतिः पवनपुत्रः ।
- आँट सं. स्त्री. (हिं. अंटी) करतले अंगुष्ठतर्ज-न्योर्मध्यस्थानम् २. पणः, ग्लहः (दाँव) ३. विरोधः ४. नीची, बंधनम् ५. पीटलिका ।
- सॉट, सं. स्त्री., सङ्कारिता २. संश्लेषः ३. कुमंत्रणा ।
- आँटी, सं. स्त्री. (आँटना) लंबतूपोदलिका २. सूत्र-पंजी-पंजिका ३. बालक्रीडोपयोगी काष्ठसं-दभेदः ४. शाटीग्रन्थिः (पुं.) ।
- आँठी, सं. स्त्री. (सं. अष्टिः स्त्री.) फल, बीज-यर्मः २. ग्रन्थिः ३. नवीडास्तनः ।
- आँड, वि. (सं.) अण्ड, -ज-उद्भव । सं. पुं. (सं.) हिरण्यगर्भः,
- आँत, सं. स्त्री. (सं. अन्त्रम्) पुरीतव (पु. न.) परितव (पुं. न.) ।
- उतरना, मु., अत्रसेन अत्रवृद्ध्या वा पीड् (कर्म.) ।
- छोटी, क्षुद्रान्त्रम् ।

- बकी, इहदन्त्रम् ।
- आँतर, वि. (सं.) आभ्यन्तर, अन्तर्गत, अंत-रंग ।
- आँतरिक, वि. (सं.) अन्तर्गत, अन्तःस्थ, अन्तर, आभ्यन्तर (—री स्त्री.), अन्तः (उ. अन्त-वेदना) २. मानसिक, दार्ढिक, आत्मिक ।
- आँदोलन, सं. पुं. (सं. न.) चेष्टा, प्रकृतिः (स्त्री) २. असकृत्कंपनम् ३. शोभः, विप्लवः, प्रकीर्णः ।
- आँधी, सं. स्त्री. (सं. अंधम् >) वायु, चंड मदा-अति-वातः, प्रमंजनः, प्रकंपनः ।
- आँध्र, सं. पुं. (सं. आन्ध्राः) दक्षिणापथे प्रान्त-विशेषः २. आन्ध्रवासिन् ।
- आँच-बाँय, सं. स्त्री. (अनु०) प्रलापः, जल्पितम् ।
- आँब, सं. स्त्री. (सं. आम >) श्लेष्मन् (पुं.) ।
- गिरना, क्रि. अ. आमातिसारेण पीड् (कर्म.) ।
- आँबल, सं. पुं. (सं. उखम्) कज्जल (पुं., न.), जरायु (न.) ।
- नाल, सं. स्त्री., नाभि, नल-नाडी ।
- आँबल्लाटा, सं. पुं. (हिं. आँबला + गाँठ) शुष्कामलकम् ।
- आँबला, सं. पुं. (सं. आमलकः-कम्-की) अमृता, शिवा, शान्ता, धात्री, धौकला ।
- आँबो सं. पुं. (सं. आपाकः) कुम्भकारपात्र-पाकस्थानम् ।
- आँशिक, वि. (सं.) आंगिक, भांगिक, स्थाण्डिक ।
- आँसू, सं. पुं. (सं. अश्रु न.) वाष्पः, अलं, नेत्र-नयन, -जल-वारि-उदकम् ।
- गिराना, क्रि. स., रुद् (अ. प. से.) ।
- पी जाना, मु., अश्रुणि अव-सं-नि. रुप् (रु. उ. अ.) ।
- पौछना, मु., आ-समा-अश् (प्रे.)
- आँहो, अ. (अनु.) न, नो, मा (सब अव्य.) ।
- आहूसकीम्, सं. स्त्री. (अं. हिम्, सत्तानो-शरः ।
- आहूँ, सं. स्त्री. (हिं. आना) मृत्पुः । क्रि. अ. आगता ।
- आहूँन, सं. पुं. (अ.) विधिः, विधानम्, नियमः २. संविधानम् ।
- आहूँना, सं. पुं. (फ्रा.) सुकुरः, दर्पणः ।
- आक, सं. पुं. (सं. अकः) मन्दारः, क्षीरदलः, तूलफलः, सूर्याहः, सदापुष्पः ।
- की बुद्धिया, मु., मन्दारपुष्पम् २. अतिबुद्धा नारी ।

आकर, सं. पुं. (सं.) ख(खा)निनिः (खी.)
उत्पत्तिस्थानम् २. निधिः, भाण्डागारम् ३.
प्रकारः, भेदः ।

—भाषा, सं. स्त्री. मूलप्राचीनभाषा (उ०)
हिन्दी की आकरभाषा संस्कृत, उर्दू की फ़ारसी ।
आकर्षक, वि. (सं.) आकर्षणकर २. मनोहर ।

आकर्षण, सं. पुं. (सं. न.) आकर्षः, आवर्ज-
नम्, अनुकर्षः, अनुकर्षः, अनुकर्षणम् ।

—करना, क्रि. स., आ-समा, कृप् (भ्वा. प.
आ), आवृञ् (चु.) २. विमुह् (प्रे०) ।

आकर्षित, वि. (सं.) कृताकर्षण २. प्रलोभित ।

आकलन, सं. पुं. (सं. न.) ग्रहणम् २. संचयः
३. गणनम् ४. अनुष्ठानम् ५. निरीक्षणम् ।

आकरिमक, वि. (सं.) अकाण्ड, अचिन्तितपूर्व,
इडाञ्जात ।

आकांक्षा, सं. स्त्री. (सं.) इच्छा, अभिलाषः,
स्पृहा, वाञ्छा २. अपेक्षा ३. अनुसंधानम् ४.
वाक्ये शब्दस्य शब्दान्तराश्रितत्वम् ।

आकांक्षी, वि. (सं-क्षिन्) इच्छुक, अभिला-
षिन्, ईर्ष्यु, मर्याद ।

आकार, सं. पुं. (सं.) आकृति-मूर्तिः (स्त्री.),
रूपम् २. कायपरिमाणम् ३. अवयवसंस्थानम्
४. चिह्नम् ५. चेष्टा ६. 'आ' इति वर्णः
७. आह्वानम् ।

—गुप्ति, सं. स्त्री. (सं.) अवहित्था ।

आकारण, सं. पुं. (सं. न.) आह्वानम्, आमं-
प्रणम् २. ई. 'चुनौती' ।

आकारवान् वि. (सं-वच्) साकार, मूर्तिमय
विग्रहिन् ।

आकालिक, वि. (सं.) असामयिक ।

आकालिकी, सं. स्त्री. (सं.) ई. 'विजली'

आकाश, सं. पुं. (सं. पुं. न.) गगनं, नभस्,
वियत्, व्योमम् (सब न.), अंबर, अन्तरिक्षं,
खं, नाकः, दिव्, द्यौ (दोनो स्त्री.), विहायस्
(पुं. न.), विहायसः, अअं, पुष्करं, अनन्तं,
विष्णुपदं, तारापथः ।

—कुसुम, सं. पुं. (सं. न.) खपुपं, शश-
विषाणं-शृङ्गम्, असंभवं वस्तु (न.) ।

—गंगा, सं. स्त्री. (सं.) मग्धाकिनो, स्वर्णदी ।

—चारी, वि. (सं-रिन्) लेपर, नभश्चर (-चरी
स्त्री.) । सं. पुं. सूर्योदयमहाः २. वायुः ३.
स्वगः ४. देवः ५. राक्षसः ।

—बेल, सं. स्त्री. (सं-री-वहो) अमरवहो,
खवहो, व्योमलतिका ।

—भाषित, सं. पुं. (सं. न.) गगनलपितम्,
नाख्ये भाषणभेदः ।

—वाणी, सं. स्त्री. (सं.) देववाणी, अशरीरिणी
वाक् (स्त्री.) ।

—वृत्ति, सं. स्त्री. (सं.) अनियतो धनागमः ।

—चूमना, मु., अभ्रंकिद् (अ० प. अ.), गगनं
चुम्ब् (भ्वा. प. से.) ।

—पाताल एक करना, मु., अत्यर्थं प्रयत् (भ्वा.
आ. से.) ।

—पाताळ का अन्तर, मु., महदन्तरं, महान्
भेदः ।

आकुञ्चन, सं. पुं. (सं. न.), संकोचनं, समा-
कर्षः, संकोचनं, प्रसूतरय संक्षेपणं, वक्रत्वसम्पा-
दनम् ।

आकुञ्चित, वि. (सं.) संकोचित २. वक्र ।

आकुल, वि. (सं.) व्याकुल, उद्विग्न, व्यग्र, क्षुब्ध,
अशांत, व्यस्त, विह्वल, कातर २. समाकीर्ण,
संकुल ।

आकुलता, सं. स्त्री. (सं.) उद्वेग, क्षोभः, अशा-
न्तिः (स्त्री.) ।

आकृति, सं. स्त्री. (सं.) अभिप्रायः, आशयः
२. उरसाहः ३. सदाचारः ।

आकृति, सं. स्त्री. (सं.) आकारः, रूपं, मूर्तिः
(स्त्री.) २. मुखं, आननम् ३. अवयवसंस्थानं,
शरीररचना ४. मुद्रा, चेष्टा ५. जातिः ।
(स्त्री. न्या.) ।

आकृष्ट, वि. (सं.) आकर्षित, कृताकर्षण ।

आक्रन्द, सं. पुं. (सं.) रोदनं, रुदितम्,
चीत्कारः २. युद्धबोधः ३. तुमुल्युद्धम् ।

आक्रमण, सं. पुं. (सं. न.) आक्रमः, अव-
स्कन्दः, अभिद्रवः, अभिप्रयाणं, आपातः २.
रोधनं, अव-उप-, रोधः ३. आक्षेपणं, निन्दनम् ।

आक्रान्त, वि. (सं.) अभिद्रुत, अभिप्रयात, २.
अभि-परा-वशी-, भूत ३. परिवेष्टित ४. व्याप्त,
आकीर्ण ।

आक्रामक, सं. पुं. (सं.) अभिवात्, अभिवा-
यिन्, आक्रमणकारिन् ।

आक्रीश, सं. पुं. (सं.) शापः, आक्षेपः, गाळी-
दानम् ।

आज्ञेय, सं. पुं. (सं.) अपवादः, दोषारोपः २. पातनं, प्राप्तनम् ३. कद्रक्तिः (स्त्री.) ४. अंगकंपय्यती वातरोगभेदः ।

आकमाइह, सं. पुं. (अं.) जारियन् ।

आक्मिजन, सं. पुं. (अं.) जारकं, ओपजनम् ।

आस्त्रंइह, सं. पुं. (सं.) इन्द्रः ।

—सूनु, सं. पुं. (सं.) अर्जुनः ।

आस्त्र, सं. पुं. (सं. अक्षताः) अस्त्रितौह्यः । वि., अस्त्रित ।

आस्त्र, सं. पुं. दे. अक्षर ।

आस्त्रि, वि. (अ.) अन्तिम अन्त्य २. समाप्त ।

सं. पुं. अन्तः, अवसानम् ३. परिणामः, फलम् ।

क्रि. वि., अन्ततः २. विवश (वि.) भूत्वा ३. अवश्यम् ४. कर्षचित् ।

—कार, क्रि. वि., अन्ते, अन्ततः ।

आखिरी, वि. (फ्रा.) अन्तिम, अन्त्य, चरम ।

आखेट, सं. पुं. (सं.) गृहया, दे. 'शिकार' ।

आखेटक, सं. पुं. (सं.) व्याधः, आखेटिन् ।

आख्या, सं. स्त्री. (सं.) नामन् (न.), संज्ञा २. यशम् (न.), कीर्तिः (स्त्री.) ३. विवरणं, व्याख्या ।

आख्यात, वि. (सं.) विख्यात, प्रसिद्ध २. कथित ३. तिष्ठन्तक्रिया ।

आख्यान, सं. पुं. (सं. न.) कथा, आख्यायिका २. वर्णनं, वृत्तान्तः ।

आख्यायिका, सं. स्त्री. (सं.) कथा, वृत्तान्तः, आख्यानम् २. आख्यानभेदः ।

आगमन्तुक, वि. (सं.) आयात्, आगन्त् २. अतिथि, अभ्यागत ।

आग, सं. स्त्री. (सं. अग्निः) अनलः, पावकः, दहनः, ज्वलनः, वह्निः, कृशानुः, कुतारनः, दुतवहः, उपवृषः, इव्यवाहनः, चित्रभानुः, शुक्रः, शुचिः २. तापः ३. कामाग्निः ४. वास्तव्यम् ५. ईर्ष्या । वि., अस्त्युष्ण १. क्रुद्ध ।

—का पुनला, पु., कौषिन् २. नपल ३. निपुण ।

—खाना अंगार हथाना, मु., दुष्कृतस्य फलं विषद् (स्त्री.), यो यत् वपति बीजं हि सोपि तस्मभते फलम् ।

—पानी (फूल) का बैर, मु., सहजं बैरम्, शाश्वतिको विरोधः ।

—बबूला (बगूला) होना, मु., नितरां दुष् (दि. प. से.) ।

—भड़काना, मु., वैरोदीपनं, क्रोधोदीपनम् ।

—लगाना, मु., ज्वलनम् २. कुप् ३. ईर्ष्य (न्वा. प. से.) ४. वस्तुनां बहुमूल्यता ।

—लगाना, मु., आवेशवर्धनम्, क्रोधोत्पादनम् २. नाशनम् ।

—लगा कर पानी को दीहना, मु., कलिमुत्पाद्य शान्तये प्रयत्नः ।

—लगाने पर कूर्छो खोदना, मु., संदीप्तो भवने कृपखननम् ।

—लगा कर तमाशा देखाना, मु., कलिमुत्पाद्य मनोविनोदनम् ।

—होना, मु., अत्यर्थं कृप् ।

पानी में आग लगाना, मु., अशक्यकरणं, खपुष्पत्रोटनम् । पेट की आग, मु., क्षुधा, दुभुक्षा ।

आगत, वि. (सं.) प्राप्त, उपस्थित २. अतिथि ।

—स्वागत, सं. पुं. (न.) अतिथयं, सत्कारः ।

आगम, सं. पुं. (सं.) आगमनं, प्राप्तिः (स्त्री.) २. भावि-आगामि, कालः ३. सागणं, दैवम् ४. संवमः, समारामः ५. आद्यः ६. प्रकृतिप्रत्ययानुषधाती अगमन्तुको वर्गः (न्वा.) ७. उत्पत्तिः (स्त्री.) ८. शब्दप्रमाणम् (यं.) ९. वेदः, शास्त्रम् १०. तन्त्रशास्त्रम् ११. नीतिशास्त्रम् ।

—जानी, वि. (सं. ज्ञानिन्) पूर्वनादिन्, अग्रनिरूपक, सिद्ध, आदे (घृ + ट् +) =ष्ट ।

आगमन, सं. पुं. (सं. न.) आगतिः (स्त्री.), आगमः २. भावः, लाभः ।

आगमापायी, वि. (सं. -यिन्) अनित्य, अशुभ, जन्ममरणशील ।

आगर, सं. पुं. (सं. आकरः) ख (खा) नी- निः (स्त्री.) २. समूहः ३. निधिः ४. लवणगर्तः ।

आगर, सं. पुं. (सं. अगल-ला) द्वाविष्कभः ।

आगर, सं. पुं. (सं. आगारम्) गृहं, सदनम् ।

आगर, वि. (सं. अग्रन) श्रेष्ठ, उत्तम २. दक्ष ।

आगस्ती, सं. स्त्री. (सं.) दक्षिणदिशा, दक्षिणा, यामी ।

आगा, सं. पुं. (सं. अग्रम्) अग्र-पुरो, -भागः २. उरस्, वक्षस् (दोनो न.) ३. मुखम् ४. मस्तकम् ५. जननेन्द्रियम् ६. कंचुकादी- नामग्रभागः ७. सेनाग्रम् ८. नौकाग्रभागः ९. गृहाग्रवति अंगनम् १०. अंचलः-लम् ११. अलायिकाळः १२. परिणामः ।

आगा पीछा

[४०]

आज

- पीछा, सं. पुं. (पुं. अग्र + पश्च >) संज्ञायः, विमर्शः २. परिणामः ३. अग्रपक्षभागी ।
- पीछा करना, मु., दोषायते (ना. व्या.) ।
- पीछा मोचना, मु., परिणामचिन्तनम् ।
- आशाङ्ग, सं. पुं. (फा.) आरम्भः, उपक्रमः, आदिः ।
- आगामी, वि. (सं.-मिन्) भाविन्, भविष्यत् ।
- आगार, सं. पुं. (सं. न.) अगारं, गृहं, गेहम् न्वानम् २. कोषः ।
- आमाह, वि. (फा.) हात्, नोदधु, अभिह ।
- आगे, क्रि. वि. (सं. अगे) अग्रतः, पुरतः, पुर-स्यात् (सब अव्य.) २. समर्थः, अभिसुखम्, सुखम्, समुखम् (सब अव्य.) ३. जीवनकाले, उपस्थिति ४. आगामिसमये ५. अनन्तरं, तदनु ६. पूर्व ७. कोडे ।
- आना, मु., प्रत्युदगम् (न्वा. प. अ.) ।
- निकलना, मु., अतिशो (अ. आ. से.) ।
- फैले, मु., आनुपूर्व्येण, अनुपूर्वशः २. प्रत्यक्षं परीक्षे च (वा) ३. पूर्व पश्चाद् वा ४. यथा-वकाशम् ५. अक्रमम् ।
- आग्नेय, वि. (सं.) अग्नि-मय-संबन्धिन् २. अग्निदेवताक ३. दाहक । सं. पुं. (सं. न.) सुवर्णं २. रुधिर ३. घूरं ४. दीपनीषधम् । सं. पुं. (सं. पुं.) फातिकेयः २. अगस्त्यः ३. देशविशेषः ४. अग्निपूजकः ५. माहणः ६. अग्निकोणः ७. ज्वालासुखः ।
- अग्र, सं. पुं. (सं. न.) अग्निवर्षकोऽख-भेदः ।
- आग्नेयी, सं. स्त्री (सं.) अग्नेः पत्नी २. अग्नि-दीपनीषधम् ३. दक्षिणपूर्वा दिशः ।
- आग्रह, सं. पुं. (सं.) अति-निर्वन्धः, अति-याचना-प्राथेता २. उत्पत्ता, पराधणता ३. बलं, आवंशः ।
- आग्रहायण, सं. पुं. (सं.) मार्गशीर्षमासः ।
- आग्रहायणी, सं. स्त्री (सं.) आग्रहायण-मार्गशीर्षः-शुक्रिमा ।
- आग्रही, वि. (सं.-हिन्) अग्नेय, निर्वन्धवत्, दुराग्रह, स्वैरिच् ।
- आघर्षण, सं. पुं. (सं. न.) आघर्षं, मर्दनं, संघर्षणं, चूर्णनम् ।
- आघात, सं. पुं. (सं.) प्रहारः, आक्रमणम् २. प्रसारणं, प्रक्षेपः ३. वधस्थानम् ।

- आघ्राण, सं. पुं. (सं. न.) गन्धग्रहणम् २. अतिशुक्तिः (स्त्री.), पूर्णकामता ।
- आचमन, सं. पुं. (सं. न.) उपस्पर्शः, आंक (वा) मः, जलपावनम् ।
- करना, क्रि. सं. आचम् (श्वा. प. से.) मा-चामति ।
- आचमनी, सं. स्त्री (सं. आचमनीय >) आचमनोपयोगी जमसभेदः ।
- आचरण, सं. पुं. (सं. न.) अनुष्ठानं २. आचारः, व्यवहारः ३. स्वरूपता ४. रथः ।
- आचरणीय, वि. (सं.) अनुष्ठानव्य २. कर्तव्य ।
- आचरित, वि. (सं.) कृत, विहित, अनुष्ठित ।
- आचार, सं. पुं. (सं.) व्यवहारः २. चरितं, चरित्रं, चरित्रं, वृत्तं, शीलम् ३. शौर्यं, शुक्तिः (स्त्री.) ४. स्नानम् ५. आचमनम् ।
- अष्ट, वि. (सं.) दुर्धृत्, चरित्रहीन, अनाचार ।
- विचार, सं. पुं. (सं.-री) चरित्रं मनोभावश्च २. चारित्र्यम्, दे. 'आचार' ।
- आचार्य, सं. पुं. (सं.) उपनेत्, गुरुः २. वेदा-ध्यापकः ३. यज्ञे कर्मापदेशकः ४. पुरोहितः ५. उपाध्यायः, अध्यापकः ६. ब्रह्मसूत्राणां चत्वारः प्रधानभाष्यकाराः सर्वश्रीशंकररामानुजमध्ववल्लभाचार्याः ६. वेदभाष्यद्वय ७. प्रकाण्डपण्डितः ।
- कुल, सं. पुं. (सं. न.) गुरुकुलम् ।
- आचार्या, सं. स्त्री (सं.) मंत्रोपदेष्टी, वेदभाष्य-कर्त्री, वेदाध्यापिका ।
- आचार्यानी, वि. स्त्री (सं.-नी) आचार्यपत्नी ।
- आचार्या, वि. स्त्री (सं.) आचार्यसंबन्धिनी ।
- आच्छन्न, वि. (सं.) आच्छादित, आवृत २. गुप्त, तिरोहित ।
- आच्छादक, वि. (सं.) आवरक, विधायक, वेष्टक ।
- आच्छादन, सं. पुं. (सं. न.) आवरणं, पुष्टं, वेष्टनं, अवसुंठनं, विधानं २. प्रच्छदपदः ३. आवरणक्रिया ।
- आच्छादित, वि. (सं.) आवृत, विहित, तिरोहित ।
- आच्छोदन, सं. पुं. (सं. न.) अंशुली-मोटनं-स्फोटनम् ।
- आज, क्रि. वि. (सं. अद्य अव्य.) वर्तमाने दिने २. अद्यत्वे, अस्मिन् काले । सं. पुं., वर्तमानो दिवसः २. संप्रति, साम्प्रतम् ।

—कल, क्रि. वि. (सं. अद्यकल्प्यम्) एतेषु दिनेषु
२. अद्यत्वे, अद्य एवो (कल्प्ये), वा ।
—कक, क्रि. वि. अद्य-यावत्-पर्यन्तम्, अधुना-
इदानीं-यावत्-पर्यन्तम् ।
—कल करना, मु., व्याक्षिप् (तु. उ. अ.) ।
—कल का सेहमान, मु., मरणासन्न, आसन्न-
निधन, मुमुर्षु ।
आजन्म, क्रि. वि. (सं.) यावज्जीवम् २. जन्मनः
प्रभृति ।
आज्ञमाहूश, सं. स्त्री. (फा.) परीक्षा, अनुयोगः
२. परीक्षायै प्रयोगः ।
आजा, सं. पुं. (सं. आर्यः >) वितामहः ।
आजाद्, वि. (फा.) दे. 'स्वतंत्र' ।
आजादी, सं. स्त्री. (फा.) दे. 'स्वतंत्रता' ।
आजानु, वि. (सं.) जानु-अधीवत्-पर्यन्तम् ।
—बाहु, वि. (सं.) जानुस्थ-बाहु २. दीर्घबाहु
३. नीर, शूर ।
आजीवन, क्रि. वि. (सं. न.) दे. 'आजन्म' ।
आजीविका, सं. स्त्री. (सं.) आजीवः, वृत्तिः
(स्त्री.), उप-जीविका ।
आज्ञा, सं. स्त्री. (सं.) आ-नि-देशः, शासनं,
नियोगः २. स्वीकृतिः-अनुमतिः (स्त्री.) ।
—देना, क्रि. सं., आ-नि-समा-दिश् (तु. उ. अ.), आह्वा (प्रे. आह्वापयति) ।
—मानना, क्रि. सं., आह्वा अनुवृत् (भ्वा. आ. से.)-पा, (प्रे. पालयति) ।
—कारी, वि. (सं-रिन्) आह्वा-वचन, अनु-
वृत्तिन्-प्राहिन्-सेविन्-पालक ।
—पत्र, सं. पुं. (सं. न.) निदेश-आदेश-पत्रम् ।
पालक, वि. (सं.) दे. 'आह्वाकारी' ।
—पालन, सं. पुं. (सं. न.) आह्वा-अनुवर्तनं-
कारिता ।
—भंग, सं. पुं. (सं.) आह्वातिक्रमः, आह्वाहं-
घनम् ।
आउथ, सं. पुं. (सं. न.) घृतम् ।
आटविक, सं. पुं. (सं.) अरण्य-वन्-वासिन्,
अरण्यकः २. मार्गः दर्शकः ।
आटा, सं. पुं. (सं. अट्टम् वा अट् >) गोधूम-
चूर्ण, अन्न, चूर्ण, क्षौद्रः, पिष्टान्न, गुडिकः ।
—शीला होना, (परीची में), म., दारिद्र्ये
कष्टान्तरापातः ।

आटे ढाल की फिक, मु., आजीविकाचिन्ता ।
आटे ढाल का भाव मालूम होना, मु.,
व्यवहारज्ञानम् ।
आटोकैट, सं. पुं. (सं.) निरंकुश-नृप-शासकः
२. स्वेच्छाचारि-स्वैरि, -मानवः ३. अतीमा-
धिकारसम्पन्नो जनः ।
आटोकैसी, सं. स्त्री. (सं.) निरंकुश नृप शास-
नम् २. निरंकुशता, स्वेच्छाचारिता ।
आटोप, सं. पुं. (सं.) आच्छादनम् २. आवे-
रः ३. दर्पः ४. उदरगुडगुडाशब्दः ।
आठ, वि. (सं. अष्टम्) । सं. पुं., उक्तः संख्या,
तद्व्योपकोशकः (<) च ।
—आठ अँसू रोना, मु., अश्रुधारापातनम् ।
आठो प्रहर, मु., अहर्निशं, दिवानिशम् (अन्व.)
आठवाँ, वि. (हिं. आठ) अष्टम (मी खा.) ।
आठहर, सं. पुं. (सं.) गंभीरशब्दः २. तूर्यरवः
३. गजगर्जनम् ४. कपटवेषः, दंभः, मिथ्यायो-
जनम् ५. आच्छादनम् ६. पटमंडपः ७. पटहः ।
आठ, सं. स्त्री. (सं. अल् = रोकना >) व्यवधानं,
तिरस्करिणी, प्रतिसीरा, अ (य) वनिका
२. आश्रयः, शरणम् ३. प्रतिबन्धः, विघ्नः
४. इष्टकालण्डः ५. स्थूणा, उपस्तम्भः ।
आढा, सं. पुं. (सं. आहो >) रेखायुतो वस्त्र-
भेदः २. (पीतस्य) रथूल-वृष्ट, काष्ठम् । वि.,
अनुप्रस्थ, दिग्गतसम, समस्थ २. तिर्यैच, जिह्व ।
आढे आना, मु., बाध् (भ्वा. आ. से.)
२. विपत्तौ साहाय्यं दा (जु. उ. अ.) ३. शिष्य
(अ. उ. अ.) ।
आढे हाथो लेना, मु., निभस् (सु.) ।
आड़, सं. पुं. (सं. आटकः-कर्म) चतुःप्रस्थ-
परिमाणम्, दोगचतुर्थशः ।
आड़त, सं. स्त्री. (हिं. आड़ना = जमानत
देना) परार्थविक्रयः २. परार्थविक्रयभृतिः
(स्त्री.) ।
आड़ती, सं. पुं. (हिं. आड़त) परार्थविक्रेतु ।
आह्य, वि. (सं.) सम्पन्न, धनिन् २. युक्त ।
आह्यक, सं. पुं. (सं.) अर्थ, प्राप्तः २. प्रतापः,
गौरवम् ३. रोगः, लवरा ४. मुरजभविनि ।
आह्यतायी, सं. पुं. (सं. यिन्) अश्रिदः २. गरदः,
विषदः ३. शस्त्रपाणिः ४. चनापहः ५. क्षेत्र-
दारिन् ५. दारापहारिन् । (-यिनी स्त्री.) ।

अक्षय, सं. पुं. (सं.) दिनशोक्तिस् (न.),
 सूर्यलोकः सायनः २. उषणता ३. उषणः ।
 आत्पत्र, सं. पुं. (सं. न.) छत्रं, आत्पत्रम्,
 चारणम् ।
 आत्पोदक, सं. पुं. (सं. न.) मरीचिका, मृग-
 बल-नृणा ।
 आत्पिण्ड, सं. स्त्री. (प्रा.) अग्निः ।
 —आजी, सं. स्त्री. (प्रा.) अग्निहीनकानि ।
 (न. बहु.), अग्निहीनः ।
 आत्पदक, सं. पुं. (प्रा.) लपट्टकः, मेदुरोगभेदः ।
 आत्पद्मी, वि. (प्रा.) आग्निहोत्र, आग्नेय, २. अग्निहोत्र
 ३. अग्निहोत्रकः ।
 —आशी, सं. पुं. अग्नि-काच-रफटिकः ।
 आत्पिण्डेय, वि. (सं.) अतिथि-सेवक-पूजकः ।
 आत्पिण्डेय, सं. पुं. (सं. न.) अतिथिसेवा २. अति-
 थ्यसेवस्तु (न.) ।
 आत्पिण्डेय, सं. पुं. (सं. न.) अतिशयत्वं,
 अधिक्यं, बहुत्वम् ।
 आत्पूर, वि. (सं.) आत्पूर, व्याकुल, व्यग्र,
 तद्विग्रह, अधीर २. उत्सुक, उत्सव्णित ३. दुःखित
 ४. रोगिन् ।
 आत्पूरता, सं. स्त्री. (सं.) व्याकुलता, व्यग्रता
 २. त्वरा, संक्रमः ।
 आत्पूरालय, सं. पुं. (सं.) चिकित्सालयः,
 दे० 'अस्पताल' ।
 आत्म, वि. (सं. आत्मन्) स्व, निज, स्वीय,
 स्वकीय ।
 —अभिमान, सं. पुं. (सं. न.) स्वप्रतिष्ठा,
 स्वगौरवम् ।
 —अवलम्बी, वि. (सं. विन्) आत्मविश्वासिन्,
 स्वाश्रित ।
 —उद्धार, सं. पुं. (सं.) मुक्तिः (स्त्री.), मोक्षः ।
 —उत्कृति, सं. स्त्री. (सं.) आत्मकल्याणम्
 २. स्वाभ्युदयः ।
 —घात, सं. पुं. (सं.) आत्म-स्वभेदः, इत्या-
 घातः-वधः, प्राण-जीवित्त, त्यागः-उत्सर्गः ।
 —घात करणा, कि. सं. आत्मघातं हन्
 (अ. प. ल.) ।
 —घाती, वि. (सं.) आत्म-घातक-घातिन्-
 नाशिन्-हन् ।
 —ज, सं. पुं. (सं.) पुत्रः २. कामदेवः
 ३. रुधिरम् ।

—ज्ञान, सं. पुं. (सं. न.) ईश-जीव, ज्ञानम्
 २. ब्रह्मसाक्षात्कारः ।
 —त्याग, सं. पुं. (सं.) परहिताय स्वार्थत्यागः ।
 —दर्शन, सं. पुं. (सं. न.) समाधिना
 जीवेश्वरदर्शनम् ।
 —निवेद्यन्, सं. पुं. (सं. न.) आत्मसमर्पणं,
 सर्वस्वार्पणम् २. स्वनिषेधे कथनम् ३. अक्तिभेदः ।
 —प्रकंसा, सं. स्त्री. (सं.) आत्मस्त्राणा,
 रक्तस्रुतिः, निजस्रुतिः (दोषो स्त्री.) ।
 —भू, वि. (सं.) निजशरीरज २. स्वभूम् ।
 सं. पुं. पुत्रः २. कामदेवः ३. ब्रह्मन् (पुं.)
 ४. विशुः ५. शिवः ।
 —विश्वास, सं. पुं. (सं.) स्व-निज-प्रत्यय-
 विश्रम्भः ।
 —विद्या, सं. स्त्री. (सं.) ब्रह्मविद्या, अध्यात्म-
 विद्या, आत्मज्ञानम् २. मोहनविद्या (= मैस-
 मरिजम्) ।
 —हत्या, सं. स्त्री. दे. 'आत्मघात' ।
 —आत्मक, वि. (सं.) अन्वित, रूप, युक्त, मय
 (उ. गद्यरमक = मय, रूप-मय) ।
 आत्मा, सं. स्त्री. (सं. आत्मन् पुं.) जीवः-
 चेतनः, जीवात्मन् २. चित्तम् ३. बुद्धिः (स्त्री.)
 ४. अहङ्कारः ५. मनस् (न.) ६. ब्रह्मन् (न.),
 परमात्मन् (पुं.) ७. देहः ८. धृतिः (स्त्री.)
 ९. स्वभावः, धर्मः १०. सूर्यः ११. अग्निः
 १२. वायुः ।
 आत्मिक, वि. (सं.) अध्यात्म- (समास में)
 आत्म-विषयक-सम्बन्धिन् २. स्वीय ३. मानसिक ।
 आत्मीय, वि. (सं.) स्वीय, स्वकीय । सं. पुं.,
 स्वजनः, बन्धुः, मित्रम् ।
 आत्मीयता, सं. स्त्री. (सं.) बन्धुत्व-सौहार्दम् ।
 आत्यन्तिक, वि. (सं.) अनन्त, असीम,
 अत्यधिक ।
 आत्रेय, वि. (सं.) अत्रिगोत्र, अत्रिसंबन्धिन् ।
 सं. पुं. अत्रिपुत्रः ।
 आत्रेयी, सं. स्त्री. (सं.) अत्रिपत्नी २. अत्रिपुत्री
 ३. अत्रिगोत्रजनसरो ४. रजस्वला नारी ।
 अधर्वणः, सं. पुं. (सं.) अथर्ववेदो ब्राह्मणः,
 पुरोहितः २. अथर्वपुत्रः ३. अथर्ववेदे विहितं
 कर्मन् (न.) ।
 आवृत्त, सं. स्त्री. (अ.) शीलं स्वभावः,
 प्रकृतिः (स्त्री.) २. अभ्यासः, नित्यप्रवृत्तिः (स्त्री.) ।

आदम, सं. पुं. (अ.) आदिमः, प्रजापतिः
(इस्लाम) २. मनुष्यः ।
आदमियत, सं. स्त्री. (अ.) मानवता, मनुष्यत्वं
२. सभ्यता, शिक्षता ।
आदमी, सं. पुं. (अ.) मनुष्यः, मनुष्यजातिः
(स्त्री.) २. दासः ।
—बनना, मु., सभ्यता शिक्ष (भ्वा. आ. से.) ।
क्री-कि. वि., प्रतिमनुष्यम्, प्रतिजनम् ।
आदर, सं. पुं. (सं.) संमानः, सत्कारः,
सत्किया, प्रतिष्ठा, बर्हणा, अर्चा ।
—करना, कि. सं., आद- (इ + ऋ) (तु. भा. ५.),
सत्क, पूज्-अर्च् (चु.), संमन, संभू (प्रे.) ।
—पाना, कि. अ., सष्ट-पुरस्, ऋ (कर्म.),
आद- (इ + ऋ) पूज्-सेव् (कर्म.) ।
—से, कि. वि., सादरं, सप्रश्रयम्, आदरेण ।
आदरणीय, वि. (सं.) मान्य, माननीय, पूज्य,
सत्कार्यं, पूजनीय ।
आदर्श, सं. पुं. (सं.) मुकुरः, दर्पणः, आत्मदर्शः
२. प्रतिरूपं, प्रतिमा, प्रतिमानम् ३. टीका,
भाष्यं, व्याख्या ४. अनुत्स्य, अनुपम ।
आदात, सं. स्त्री. (अ० 'आदत' का बहु०) दे.
'आदत' ।
आदाता, वि. (सं.-वृ) प्रह्वीवृ, ग्राहक, प्रापक ।
आदान, सं. पुं. (सं. न.) ग्रहणं, स्वीकारः,
स्वीकरणम् ।
—प्रदान, सं. पुं. (सं. न.) ग्रहणवितरणं,
दानादानं २. परस्परतितिक्षा, न्याय्यानरणम् ।
आदाष, सं. पुं. (प्रा. 'अदष' का बहु०) दे.
'अदष' ।
आदि, वि. (सं.) प्रथम, अग्रिम, आदिम, आद्य ।
सं. पुं., उपक्रमः, आरंभः २. मूलं, उत्पत्तिहेतुः ।
अव्य-प्रभृति, -आद्य (समासान्त में) ।
—कवि, सं. पुं. (सं.) वाल्मीकिः ।
—कारण, सं. पुं. (सं. न.) मूलकारणम्
(प्रकृतिः ईश्वरो वा)
—से अन्त तक, कि. वि., आद्यन्तम्, आदि-
जन्तं यावत् ।
आदिक, अव्य. (सं. वि.) -आदि, -आद्य,
-प्रभृति (सब समासान्त में) ।
आदित्य, सं. पुं. (सं.) अदितिपुत्रः २. देवः
३. सूर्यः ४. इन्द्रः ५. वामनः ६. वसुः ७. विश्वे-
देवाः ८. मन्दारवृक्षः ।

—वार, सं. पुं. (सं.) रवि-भानु, वार-वासरः
आविम, वि. (सं.) प्रथम, आद्य, आदि ।
—निवासी, सं. पुं., (सं.-सिन्) आदिवासिन् ।
आदिष्ट, वि. (सं.) आज्ञप्त, आज्ञापित, लब्धाद्य,
प्राप्तादेश ।
आधी, वि. (अ.) अभ्यस्त, अभ्यासिन् ।
आइत, वि. (सं.) सत्कृत, संमानित, पूजित ।
आदेश, वि. (सं.) ग्रहण्य, परि-प्रति,
—प्राक्ष ।
आदेश, सं. पुं. (सं.) आज्ञा, निदेशः, शासनं,
नियोगः, देशना २. उपदेशः ३. प्रणामः
४. प्रहफलम् ५. वर्णस्य वर्णान्तरोत्पत्तिः (स्त्री,
व्या.) ।
आदेशक, वि. (सं.) आज्ञापक, निदेशक,
नियोजक, शासक ।
आदेशी, वि. (सं.-शिन्) दे० 'आदेशक'
२. देवज्ञः, ज्योतिर्विद् ।
आद्यंत, कि. वि. (सं. न.) दे. 'आदि से अन्त
तक' ।
आद्य, वि. (सं.) प्रथम, आदिम, आदि
२. अग्रय, प्रधान ।
आद्या, सं. स्त्री. (सं.) दुर्गा २. प्रतिपदा ।
आद्योपांत, कि. वि., दे. 'आदि से अन्त तक' ।
आध, वि. (सं. अर्द्ध) सामि- (अव्य. उ.
सामिभुक्तं) ।
—आना, सं. पुं., अर्द्धाणः ।
आधा, वि. (सं. अर्द्ध) सामि । सं. पुं., अर्द्धः,
अर्द्धम्, अर्द्ध-भागः-अंशः ।
—आना, सं. पुं., अर्द्धाणः-णकः ।
—सीसी, सं. स्त्री., अर्द्धावभेदकः, मूर्यावसंतः,
अर्द्धशिरोवेदना ।
—तीत्तर आधा अटेर, मु. चित्रविचित्र
असंगत ।
आधान, सं. पुं. (सं. न.) स्थापनं २. न्यसनम् ।
आधार, सं. पुं. (सं.) आश्रयः, अवलंबनम्
२. आलवालम् ३. पात्रम् ४. गृह-भित्ति, मूलं,
वेदमभूः (स्त्री.) ५. आश्रयदायकः, पालकः ।
—आधेय संबंध, सं. पुं. (सं.) आश्रयाश्रयि-
संबंधः (व. घृतपात्रयोः) ।
—हीना, मु., स्तोका वृत्तिः (स्त्री.) भू ।
आधि, सं. स्त्री. (सं. पुं.) मानसी व्यथा, चिन्ता
२. बन्धकः, न्यासः, निक्षेपः ।

आधिकारिक, सं. पुं. (सं. न.) मूलकभावस्तु
(न.) २. कर्मचार्मिन् । वि., अधिकारयुक्त ।

आधिक्य, सं. पुं. (सं. न.) बाहुल्यं, प्रानुर्थं,
स्तिशयः ।

आधिद्विक, वि. (सं.) देवप्रेरित, देवताकृत
(उ. अतिदृष्टिः) ।

आधिपत्य, सं. पुं. (सं. न.) स्वामित्वं, प्रभुत्वं,
अधिकारः, शासनम् ।

आधिभौतिक, वि. (सं.) मनुष्यपदवादिप्रेरित
(उ. सर्पदंशदुःखम्) ।

आधीन, वि., दे. 'अधीन' ।

आधी रात, सं. स्त्री. (सं. अर्द्धरात्रः) मध्यरात्रः,
निशीथः, रात्रिमध्यम् ।

आधुनिक, वि. (सं.) नूतन, नवीन, अधुना-
सन, उदानासन, अर्वाचीन, सांप्रतिक ।

आधृत, वि. (सं.) आश्रित, अवलंबित ।

आधेय, सं. पुं. (सं. न.) आधारस्थं वस्तु (न.),
आश्रितः पदार्थः । वि., स्थापनीय, न्यसनीय ।

आधोरण, सं. पुं. (सं.) हस्तिपदाः, हारिकः ।

आध्मान वि. (सं.) उच्छ्वन, वातपूरित २. दृप्त,
गवित ३. दग्ध ४. ध्वनित ।

आध्यात्मिक, वि. (सं.) ब्रह्मजीवविषयक, देह-
वित्तजीवसंबन्धिन् (उ. ज्वरमोहशोकादयः) ।

आनन्द, सं. पुं. (सं.) आह्लादः, मुदा, आ-प्र,
-मोदः, संमदः, हर्षः, प्रमदः, शान्तिः (स्त्री.),
सुखम्, प्रसन्नता । वि., आनन्दित, प्रसन्न ।

—करना, कि. अ., नन्द् (श्वा. प. से.), मुद्
(श्वा. प. से.) ।

—देना, कि. स., आह्लाद्-नन्द-प्रमुद् (प्रे.) ।

—बधाई, सं. स्त्री., अभिनन्दनम् २. मंगलो-
त्सवः ।

—मंगल, सं. पुं. (सं. न.) आनन्दः, मोदः,
कुशलम् ।

आनन्धित, वि. (सं.) प्रसुद्धित, सानन्द,
सुखिन् ।

आन^१, सं. स्त्री. (सं. आशिः पुं., स्त्री.) सीमा,
भयोदा २. शपथः, समयः ३. विजयदीपगा
४. प्रतिष्ठा, सं-प्रति, -श्रवः ।

—रखना, मु., प्रतिष्ठा पा (प्रे. पालयति) ।

आन^२, सं. स्त्री. (फा.) छविः (स्त्री.),
सौन्दर्यम् २. अभि-; मानः ३. लज्जा,
संकोच ।

—दान, सं. स्त्री., वैभवं, शोभा, दावभावाः ।

—धान वाला, वि., सुवसन, सुप्रभ ।

आन^३, सं. स्त्री. (अ.) क्षणः, पलं, निमेषः ।

—की आन में, मु., सघः, हृष्टिति, आशु
(सब अव्यय) ।

आनक, सं. पुं. (सं.) पदङ्गः, भेरी, मृदङ्गः
२. स्तनयित्पुत्रैः ।

आनन, सं. पुं. (सं. न.) आस्यं, सुखं, वदनम् ।

आनन-फानन, कि. वि. (अ.) क्षणेन, क्षणात् ।

आनरेचल, वि. (अं.) मान्य ।

आनरेरी, वि. (अं.) अवैतनिक, आदरवृष्टि ।

—सैजिस्ट्रेट, सं. पुं. (अं.) अवैतनिको दण्डाध्यक्षः ।

आना^१, सं. पुं. (सं. आणकः) रूप्यकस्य षोड-
शोऽंशः २. कस्यचिद् वस्तुनः षोडशो भागः ।

आना^२, कि. अ. (सं. आगमनम्) आगम्
(श्वा. प. अ.) आया (अ. प. अ.) आत्रज्
(श्वा. प. से.) सं. पुं., आगानं, उपस्थानं,
आगमनम् ।

आर्द-गर्ह, (बात) वि., अतीता, विस्मृता
(वार्ता) ।

आप दिन, कि. वि., अन्वर्ह, प्रतिदिनम् ।

आ धमरुना, कि. अ., अकस्मात् आगम ।

आनाकानी, सं. स्त्री., अप-व्यप, -देशः छलेन
परिहरणम् २. अनवधानम् ३. कर्णे जपनम् ।

आनाकानी करना, कि. अ., अप-व्यप, -दिश
(तु. उ. अ.), छलेन परिहृ (श्वा. उ. अ.) ।

—जाना, सं. पुं., गतागतम् २. पुनर्जन्मन् (न.) ।

आनीत, वि. (सं.) आ-उपा-हृत, उपस्थापित,
उपनीत ।

आनुकूल्य, सं. पुं., (सं. न.) 'अनुकूलता' दे. ।

आनुपूर्वी, सं. स्त्री. (सं.) अनुक्रमः, आनुपूर्व्यं,
परंपरा ।

आनुमानिक, वि. (सं.) अनुमान-तर्क, -सिद्ध,
संभाव्य, काल्पनिक ।

आनुपंगिक, वि. (सं.) प्रासंगिक, गीण ।

आन्वीक्षिकी, सं. स्त्री. (सं.) तर्कविद्या, न्यायः
२. आत्मविद्या ।

आप, सर्व. (सं. आत्मन् >) स्वयं-स्वतः
(अन्व.), २. भवत् (भवती स्त्री.) ।

—बीती, सं. स्त्री. स्वानुभूत, प्रत्यक्षीकृत ।

आप, सं. पुं. (सं. आपः स्त्री. बहु.) पानीयं,
जलम् ।

आपगा, सं. स्त्री. (सं.) नदी, तटिनी ।
 आपत्काल, सं. पुं. (सं.) दुष्कालः दुस्समयः
 २. विपत्तिः (स्त्री.) ।
 आपत्ति, सं. स्त्री. (सं.) दुःखं, क्लेशः २. विपत्तिः,
 विपद्, आपद् (सब स्त्री.) ३. कुसमयः
 ४. दोषारोपणम् ५. बाक्षिपः, अपवादः ।
 आपद्, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'आपत्तिः' ।
 —प्रस्त, वि., आ-वि,-पञ्च, आर्त्तं, दुर्गतं ।
 —धर्म, सं. पुं. (सं.) विपन्नकर्तव्यं, कुसमय-
 धर्मः ।
 आपदा, सं. स्त्री., दे. 'आपत्तिः' ।
 आपन्न, वि. (सं.) आपद्प्रस्त २. प्राप्त ।
 आपस, सं. पुं. (हि. आप + से) सम्बन्धः ।
 आतुरवं, बन्धुत्वम् ।
 —का, वि., आत्मोदानां, बन्धुनाम् २. पर-
 स्परस्य, अन्योऽन्यस्य, मिथः (अन्य.), इतर-
 तरस्य ।
 —मं, क्रि. वि., परस्परं, अन्योन्यं, मिथः ।
 आपसी, वि. (हि. आपस) पारस्परिक ।
 आपा, सं. पुं. (हि. आप) आत्मत्वं, स्वसत्ता
 २. गर्वः ३. चैतन्यं, चैतना ।
 —घ्रापी, सं. स्त्री., स्वार्थपरता, स्वस्वहितचिन्ता
 २. संघर्षः, अहमहमिका, अहं-पूर्विका-प्रथमिका ।
 —पंथी, वि. कुमांगिन्, कुपथ्यामिन् ।
 आपे मे जाना, मु., चैतन्यलभः ।
 आपे मे न रहना, मु., क्रीपादिभिः बुद्धि-
 मतिः, नाशः ।
 आपात, सं. पुं. (सं.) पतनं, अवनतिः (स्त्री.)
 २. अकस्मात् उपागमः ३. आरम्भः ४. अन्तः ।
 आपाततः, क्रि. वि. (सं.) अकस्मात्, सहसा,
 अकण्ठे २. अन्ते, अन्ततः ।
 आपाती, वि. (सं-निद्) पतन-अवनरण-
 सम्मुख २. आक्रामक ३. भाविन् ।
 आपाद्, सं. पुं. (सं.) प्राप्तिः-अप्राप्तिः (स्त्री.)
 २. पुरस्कारः ३. परिश्रमिकम् । अव्य., आन-
 रणम्, पादपर्यन्तम् ।
 आपेक्षिक, वि. (सं.) संपेक्ष २. पराश्रित,
 परावलम्बिन् ।
 आप्त, वि. (सं.) अविगत, प्राप्त, लब्ध २. कुशल,
 दक्ष ३. साक्षात्कृतधर्मम्, भागिन्शुभः । सं.
 पुं., ऋषिः २. शब्दप्रमाणम् ।
 —काम, वि. (सं.) पूर्णकाम, वृत्त, संतुष्ट ।

आसि, सं. स्त्री. (सं.) लाभः, प्राप्तिः (स्त्री.)
 आप्णुत, वि. (सं.) स्नात, कृतस्नान २. सिक्त,
 उक्षिप्त, आर्द्र २. सं. पुं., स्नानदा, गृहिन् ।
 आफत, सं. स्त्री. (अ.) दे. 'आपत्तिः' (१-३) ।
 —का परकाळा, सं. पुं., लोकद्वन्द्वः, कुचेष्टकः
 २. क्षिप्रकारिन् ।
 आफस, सं. पुं. (अं.) कार्यालयः ।
 आष, सं. स्त्री. (फ्रा.) कान्तिः-दुस्तिः (स्त्री.)
 २. उरुधर्मः ३. शोभा, श्रोः (स्त्री.) । सं. पुं.,
 आपः (स्त्री. बहु.) जलम् ।
 —कारी, सं. स्त्री. (फ्रा.) मयनिष्कर्षाला,
 शूडा, संधानी २. मादकद्रव्यनिरोधको ज्ञान-
 विभाविशेषः ।
 —साव, सं. स्त्री. (फ्रा.) शोभा, विभूतिः (स्त्री.) ।
 —दाना, सं. पुं. (फ्रा.) आ-उप,-जीविका
 २. जलान्तं, अन्नजलम् ।
 —पाशी, सं. स्त्री. (फ्रा.) अल्पसेकः, प्लावनम् ।
 —शार, सं. पुं. (फ्रा.) निर्धरः, अल्पपातः ।
 आवेहयान, सं. पुं. (फ्रा.) अशुभं, दुष्टा ।
 आवोहया, सं. स्त्री. (फ्रा.) जलवायु (न.) ।
 आषद्, वि. (सं.) निगृहीत, नियंत्रित ।
 आवनूस, सं. पुं. (फ्रा.) कोविदारः, तुमपत्रकः ।
 —का कुन्दा, मु. अतिकृष्णो मनुष्यः ।
 आचाद्, वि. (फ्रा.) लोकाध्युषित, जनार्कोर्
 २. उर्वर, बहुशब्द ३. संपन्न ।
 आचादी, सं. स्त्री. (फ्रा.) जनार्कोर्स्थानम्
 २. जनसंख्या ३. शरयदा भूमिः (स्त्री.) ।
 आचाध, सं. पुं. (सं.) कर्तृ, वेदना २. क्षति-
 हानिः (स्त्री.) ।
 आची, वि. (फ्रा.) जलीय, जलमय २. जल-
 वर्ण, ईषशील ।
 आचिद्क, वि. (सं.) वापिद-मानवस्मरिक्त
 (स्त्री स्त्री.) ।
 आभरण, सं. पुं. (सं. न.) अलंकारः, मंडलं,
 मूषणम् २. पोषणं, संवर्द्धनम् ।
 आभा, सं. स्त्री. (सं.) कान्तिः-दीप्तिः (स्त्री.)
 २. प्रति, संवर्द्धकाया ।
 आभायक, सं. पुं. (सं.) लोकीकः (स्त्री.) ।
 आभार, सं. पुं. (सं.) उपकारः २. गार्हस्थ्य-
 भारः ३. भारः, भतः ।
 आभारी, वि. (सं-निद्) कृतज्ञ, कृतवेदिन् ।

आभास, सं. पुं. (सं.) प्रति-बिंब-कल्पना
२. संकेतः ३. मिथ्याज्ञानम् ।

आभिचारिक, वि. (सं.) ऐन्द्र-बालिक, मायात्मकः
साध्यामय, मायिक ।

आभीर, सं. पुं. (सं.) गोपः ।

आभूषण, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'आभरण' ।

आभ्यन्तर, वि. (सं.) अन्तःस्थ, आन्तर,
गर्भस्थ, प्रस्तरंत, आभ्यन्तरिक ।

आभ्युदयिक, वि. (सं.) प्रांगणिक, शंकर, शुभ ।

आभ्रवण, सं. पु. (सं. न.) आह्वानम्
२. तिसंभ्रवम् ।

आभ्रंजित, वि. (सं.) अस्कारित, आहृत
२. निर्भंजित ।

आभ्र, सं. पुं. (सं. आभ्रः-भ्रं) १. (वृक्ष)
आभ्रः, रत्नालः, भद्रवारः, कामशरः, वसस्तद्वृक्षः,
कोविलोत्सवः २. (वृक्ष) आभ्रं, अग्र-रत्नाल-
सङ्कार-कलम् ।

—के आम, गुठली के दाम, मु., उभयतो
लाभः ।

—खाने से काम या पेड़ गिनने से, मु.,
आज्ञेः प्रयोक्तृत्वं न तु नृआगमनया ।

आभ्र, वि. (सं.) अपक, दे. 'किञ्चा' ।

आभ्र, सं. पुं. (सं. न.) अत्रंश्लेषम् (पुं.)
२. अजीर्णरोगभेदः ।

—अतिसार, सं. पुं. (सं.) अतिमारभेदः,
संघसृगो ।

आभ्र, वि. (अ.) सामान्य, प्राकृत, अवर,
२. विख्यात, प्रसिद्ध ।

—फहम, वि. (अ.) सुबोध, सुविज्ञेय ।

आभ्रद, सं. स्त्री. (पृ.) आगमने २. आयः ।

आभ्रदनी, सं. स्त्री. (प्रा.) आयः, धनानामः ।

आभ्र (मा) नस्य, सं. पुं. (सं. न.) शोकः,
वेदः २. दुःखं, वेदना ।

आभ्रना रामना, सं. पुं. (हि. सामना)
समागमः ।

आभ्रने-आभ्रने, कि. वि. (हि. मामना) ।

परंपरस्य पुरता, अन्वेषणस्य सम्भ्रुतम् ।

आभ्रय, सं. पुं. (सं.) रोगः, व्याधिः ।

आभ्रयावी, वि. (सं.-विद्) रुग्ण, रोगिन् २.
अजीर्ण-अपचन, अरत ।

आभ्ररण, कि. वि. (सं. न.) मृष्टं चावत्,
निधनावधि, आभ्रयोः ।

आमलकी, सं. स्त्री. (सं.) लघु-क्षुद्र-आमलकः ।
आमला, सं. पुं. दे. 'अमला' ।

आमाशय, सं. पुं. (सं.) अन्नाशयः, जठरः-रम् ।

आमिष, सं. पुं. (सं. पुं. न.) मांसं २. ओषध-
पदार्थः ३. लोभः ४. उरकोचः ।

आमी, सं. स्त्री. (हि.-भाग) आत्रकम् ।

आमुख, सं. पुं. (सं. न.) रूपकप्रस्तावना ।

आमोद, सं. पुं. (सं.) अमन्दः, मनोविनोदः
२. पुनःपः ।

—प्रमोद, सं. पुं., अस्त्रादः, इष्यैः २. हास्य-
विनोदी, नम्रीलायः ।

आम्र, सं. पुं. (सं.) दे. 'आम' ।

आयंती-पायंती, सं. स्त्री. (अनु. + प्रा पाय-
तादा) स्वयंपायाः शीघ्रपादभागौ ।

आय, सं. स्त्री. (सं. पुं.) धन-अर्थ, आगमः-
लाभः ।

—अर्थ, सं. पुं. (सं. व्यर्थ) आगमोत्सर्गौ ।

—व्ययिक, सं. पुं. (सं. न.) व्याकल्पः
(= वज्र) ।

आयन्, वि. (सं.) निरतन्, विशाल ।

आयत्, सं. स्त्री. (अ.) ईजील-कुरान, वायम् ।

आयसु, सं. स्त्री. (सं. आदेशः) आशा ।

आया, कि. अ. (हि. आना) आगतः ।

—गया, सं. पुं., अतिथिः ।

आया, सं. स्त्री. (पुत्र.) धात्री, मातृका ।

आया, अल्प. (प्रा.) किम्, यत् ।

आयात, सं. पुं. (सं. न.) विदेशाक्षानयनम्
२. विदेशदानोतः पण्यसमूहः ।

आयास, सं. पुं. (सं.) प्रयत्नः २. श्रमः ।

आयासक, वि. (सं.) श्रम-जनक-उत्पादक ।
कष्ट-केश-प्रद ।

आयु, सं. स्त्री. (सं. आयुस् न.) वयस् (न.),
जीवितकालः, निरुपगः, विधीवितम् ।

आयुक्त, वि. (सं.) नियुक्त २. संयुक्त ।

आयुध, सं. पुं. (सं. न.) अस्त्रं, शस्त्रं, पहरणं,
इतिः (स्त्री.) ।

आयुधगार, सं. पुं. (सं. न.) शस्त्र-अस्त्र-
आगार-गृहम् ।

आयुर्वेद, सं. पुं. (सं.) वैद्यकं, वैद्यशास्त्रं,
यिद्विदसाशास्त्रम् ।

आयुष्मान्, वि. (सं.) (सं. मत) चीर-
दीर्घ-जीविन् । (आयुष्मती स्त्री.) ।

- आयुष्य, वि. (सं.) पथ्य । सं. पुं., वयस् (न.) ।
- आयोजन, सं. पुं. (सं. न.) द्रव्यासादनं, सामग्रीसंपादनम् २. नियुक्तिः (स्त्री.) ३. उद्योगः ४. सामग्री ।
- आयोहीन, सं. स्त्री. (अं.) जम्बुकी, नीलीनम् ।
- आरंभ, सं. पुं. (सं.) उपक्रमः, प्रारंभः, आदिः २. उत्पत्तिः (स्त्री.) ।
- करना, क्रि. स., आ-प्रारम्भ्, प्र-उप-क्रम् (सब्धा. आ. अ.) ।
- आरं, सं. पुं. (सं. न.) मुंड, लोहं आयसम् २. पिपलम् ३. तटः-दंडी इ। ४. कोणः ५. अरः, अरम् ।
- आरं, सं. स्त्री. (सं. अलम् = डंक) वृश्चिका-दीनां दंशः, दंशभेद्युः २. अंकुशः ३. कौलः ।
- आर, सं. स्त्री. (सं. आरा) चर्मप्रभेदिका ।
- आरं, सं. पुं. (हिं. अइ) आग्रहः, निर्बन्धः ।
- आरं सं. स्त्री. (अ.) संकोचः, लज्जा ।
- आरक्त, वि. (सं.) ईषद्रक्त २. लोहित ।
- आरण्य, वि. (सं.) वन्य, वनजात, वनसंबन्धिन् ।
- आरण्यक, वि. (सं.) दे. आरण्य । सं. पुं. (सं. न.) ग्रन्थभेदः ।
- आरती, सं. स्त्री. (सं. आरात्रिकम्) नीराजना-नम्, देवमूर्तिपरितो दीपनालनम् २. नीरा-जनापात्रम् ३. नीराजनास्तोत्रम् ।
- आरपार, सं. पुं. (सं. आरपारम् >) तटद्वयं-यी, पारवारं-री-रे । क्रि. वि., आरपारम्, अवारात् पारं यावत् ; आयन्तं, समग्रम् ।
- आरब्ध, वि. (सं.) उपक्रान्त, कृतारम्भ ।
- आरभटी, सं. स्त्री. (सं.) क्रोधाद्युग्रभावानां चेष्टा २. रूपके यमकबहुली वृत्तिभेदः ।
- आरसी, सं. स्त्री. (सं. आदर्शः) दर्शनः, मुकुरः २. दक्षिणहस्तांगुष्ठभूषणभेदः ।
- आरा, सं. पुं. (सं. आरा >) ककचः-वन् । करपत्रं, पत्रदारणः २. चर्मप्रभेदिका ३. अरः, अरम् ।
- कश, सं. पुं. (फ्रा.) काकचिकः, वारुदरणाः ।
- कशी, सं. स्त्री., कश्चनेन काष्ठत्रिपादनम् ।
- आराइश, सं. स्त्री. (फ्रा.) परिष्कृतिः (स्त्री.), अलंक्रिया, परिष्क्रिया, सज्जा ।
- आराधक, वि. (सं.) उपासक, पूजक ।
- आराधन, सं. पुं. (सं. न.) भक्ति (स्त्री.), सेवा, परिचर्या २. तर्पणं, तोषणं, प्रसादनम् ।
- आराधना, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'आराधन' ।
- करना, क्रि. स., पूज् (लु.), उपास् (अ. आ. से.), अभि-, अर्च् (भ्वा. प. से.), आराप् (प्रे.) ।
- आराधनीय, वि. (सं.) आराध्य, सेवनीय, पूजनीय, अर्चनीय ।
- आरामं, सं. पुं. (सं.) उपवनं, उद्यानं, पुष्प-वाटिका ।
- आरामाधिपति, सं. म. (सं.) उपवन-उद्यान-अधिकारिन्-आधिकारिकः ।
- आरामं, सं. पुं. (पा.) सुखम् २. विश्रामः ३. स्वास्थ्यम् ।
- करना, क्रि. अ., १. कार्याय निवृत् (भ्वा. आ. से.) २. विश्राम (दि. प. से.) ३. शी (अ. आ. से.) ।
- कुरसी, सं. स्त्री., विश्रामासम्पी ।
- तलव, वि., अलस, सुखेच्छुक ।
- आरास्ता, वि. (फ्रा.) अलंकृत, परिष्कृत, सज्ज ।
- आरी, सं. स्त्री. (हिं. आरा) लघुककचः, ककचकं, करपत्रकम् २. दंढाग्रलग्नां लोहबोला ३. आरा, चर्मप्रभेदिका ।
- आरुद, वि. (सं.) अमिषुद, अध्यासीन, कृता-रोग्ण २. दृढ, स्थिर ।
- होना, क्रि. अ., आ-अधि-, नह् (भ्वा. प. अ.), अध्यास् (अ. आ. से.) ।
- करना, क्रि. स., आ-अधि-, रुद् (प्रे. आरो-पयति) ।
- आरोग्य, वि. (सं. आरोग्यम् >) नीरोग, स्वस्थ । सं. पुं. (सं. न.) दे. 'अरोगता' ।
- आरोग्यता, सं. स्त्री. (सं. आरोग्यता) स्वास्थ्यं, नीरोगता, अनामयम् ।
- आरोप, सं. पुं. (सं.) आरोपणं, हस्त्यापनं, स्थिरीकरणम् २. स्थानान्तरे आरोपणं स्थापनं वा ३. अग्रः ४. वस्तुनि वस्त्वन्तरप्रमंकल्प-नम् ।
- आरोपना, क्रि. सं. (सं. आरोपणम्) (स्थानान्तरे) आरुद् (प्रे., आरोपयति) ; निविश् (प्रे.), संप्रति, यम् (प्रे.) ।
- आरोपित, वि. (सं.) स्थापित, निहित, निवेशित ।

आरोह

[५५]

आलिङ्गन करना

आरोह, सं. पुं. (सं.) उदगमः, उदयः, अधि-
रोहणम् २. आक्रमणम् ३. गजादिपृष्ठेऽधिरोहणम्
४. वस्त्रमयोनिप्राप्तिः (स्त्री.) ५. कारणात्
कार्यपादुर्भावः ६. विकासः ७. स्वरोत्कर्षः
८. नितम्बः ।

आरोहण, सं. पुं. (सं. न.) उदगमनं, अधि-
रोहणम् २. अंकुरप्ररोहणम् ३. सोपानं,
निःश्रेणी ।

आरोही, वि. (सं-इन्) आरोहक, उदगामी
२. उन्नतिशालः । सं. पुं., उत्कर्षोन्मुखः स्वरः
२. अरूढः, अस्वादिपृष्ठस्थः ।

आर्जव, सं. पुं. (सं. न.) ऋजुता, सरलता,
निष्कपटता २. स्रक्तरता ३. व्यवहारशुद्धिः
(स्त्री.) ।

आर्जुनि, सं. पुं. (सं.) अर्जुनपुत्रः अभिमन्युः ।

आर्त, सं. पुं. (अं.) कला, शिल्पं, २. कौशलं,
नैपुण्यम् ।

आर्तिकल, सं. पुं. (अं.) निबन्धः, लेखः
२. धारा, नियमः ।

आर्तिस्ट, सं. पुं. (अं.) कलाकारः, कलाविद्
२. चित्रकारः ।

आर्हर, सं. पुं. (अं.) आदेशः, भाषा २.
वस्तुनिर्माण-पदार्थप्रेषण, आदेशः ।

आर्दिनेस, सं. पुं. (अं.) अध्यादेशः २.
सुहास्यणि (न. बहु.) ।

आर्त्त, वि. (सं.) व्यथित, पीडित २. दुर्गत
३. रुग्ण ।

—नाद, सं. पुं., आर्त्तध्वनिः, आर्त्तस्वरः ।

आर्त्ति, सं. स्त्री. (सं.) पीडा, व्यथा २. आपद्-
विपद् (स्त्री.) ।

आर्थिक, वि. (सं.) धन-द्रव्य-वित्त-विषयक,
मौद्रिक ।

आर्द्र, वि. (सं.) क्लिन्न, उन्न, उक्त, सिक्त ।

आर्द्रता, सं. स्त्री. (सं.) क्लिन्नता, सरसता ।

आर्द्रा, सं. स्त्री. (सं.) पञ्चनक्षत्रम् २. आषा-
दारम्भः ३. आर्द्रकम् ।

आर्थ, वि. (सं.) श्रेष्ठ, भद्र २. मान्य, पूज्य
३. कुलीन. सरकुलज (आर्या स्त्री.) । सं. पुं.
(सं.) सज्जनः, कुलीनमाभवः २. पूज्यमनुभवः
३. स्वागिन् ४. क्षत्रियः ५. जातिविशेषः
६. आर्थजातीयः ७. धुरः ८. मित्रम् ।

—आवर्त्त सं. पुं. (सं.) विन्ध्यहिमाचलयोर्म-
ध्यदेशः २. भारतवर्षम् ।

—पुत्र, सं. पुं. (सं.) श्रेष्ठस्य पुत्रः २. पतिः ।

—समाज, सं. पुं. (सं.) मद्दिदयानन्द-
संस्थापितः समाजविशेषः ।

आर्था, सं. स्त्री. (सं.) पार्वती २. श्वशूः (स्त्री.)
३. पितामही ४. छन्दोभेदः ।

आर्ष, वि. (सं.) १-३. ऋषि, सर्वधन्-प्रणीत-
सेवित ४. वैदिक ।

—प्रयोग सं. पुं. (सं.) प्राचीनग्रंथानाम-
र्वाचीनव्याकरणविक्रडाः प्रयोगाः ।

आलंकरिक, वि. (सं.) अलंकारविषयक
२. अलंकारशुत ३. अलंकारविद् ।

आलंब, सं. पुं. (सं.) अवलंब, आश्रयः
२. गतिः (स्त्री.), शरणम् ।

आलंबन, सं. पुं. (सं. न.) अवलंबः, आश्रयः
२. रसोपपत्ती विभावभेदः (सा.) ३. कारणं,
साधनम् ।

आलन, सं. पुं. (?) लेपनाय कर्दममिश्रितं
तृणादिकम् २. शाकाविमिश्रितं तृणकादित्चूर्णम् ।

आलमारी, सं. स्त्री., दे. 'अलमारी' ।

आलय, सं. पुं. (सं.) गृहम् २. स्थानम् ।

आलवाल, सं. पुं. (सं. न.) आवालं, आवापः ।

आलस, सं. पुं., दे. 'आलस्य' ।

आलसी, वि. (हिं. आलस) अलस, तन्द्रिल,
तन्द्रालु, शीतक, तुंदपरिशृज, उद्योगविमुक्त ।

आलस्य, सं. पुं. (सं. न.) मान्यं, तन्द्रिका,
जाड्यं, कार्यद्वेषः ।

आला, सं. पुं. (सं. आलयः >) भित्तिस्तंभा-
द्विषु द्वीपकाद्यर्थे स्थानम् २. काष्ठफलकः ।

आला, वि. (अ.) उत्तम, श्रेष्ठ ।

आलान, सं. पुं. (सं. न.) गजबंधन, स्तम्भ-
रज्जुः (स्त्री.) २. बंधनं, रज्जुः ।

आलाप, सं. पुं. (सं.) संलापः, संभाषणं,
कथोपकथनं, वार्त्तालापः २. तानः, सप्तस्वर-
साधनम् (संगीत) ।

आलापना, क्रि. सं. (सं. आलापनं >) गै
(भ्वा. प. अ.) ।

आलिङ्गन, सं. पुं. (सं. न.) परि (री) रंभः,
परिबंधः, संश्लेषः, उपगृह्णं, श्लेषः ।

—करना, क्रि. सं., आलिङ्ग (भ्वा. प. से.),
आश्लिषु (दि. प. अ.), जग्मुहु (भ्वा. उ. से.),
उपगृह्णति ।

आलि, सं. स्त्री. (सं.) बयस्या, सखी, सहचरो २. पंक्तिः (स्त्री.) ३. सेतुः ४. रेखा ।
 आलि, सं. पुं. (सं.) वृथिकः २. अमः ।
 आलिखित, वि. (सं.) लिखित २. अंकित ३. चित्रित ।
 आलिप्त, वि. (सं.) प्र-वि-लिप्त, दिग्घ, अक्त ।
 आलिप्त, वि. (अ.) पंक्ति, विदग्, बहुधृत, बहुधीत ।
 आली, सं. स्त्री. (सं.) मस्यो, बयस्या २. पंक्तिः, ततिः (स्त्री.) ।
 आलू, सं. पुं. (सं. आलुः) सुकन्दं, गुन्नालुः, शुक्रकन्दः-न्दम् ।
 —आलूरा, सं. पुं. आलूकं, आलूकं, रक्तफलं-भलूकम् ।
 आलूचा, सं. पुं. (प्रा.) *आलूचः, वृक्षभेदः २. *आलूचम्, फलभेदः ।
 आलूख, सं. पुं. (सं.) लेखः, लेख्य, लिखितम् २. लिपी, लिपिः (स्त्री.) ।
 आलूष्य, सं. पुं. (सं. न.) चित्रं, प्रतिरूपं । वि. लेशार्हं ।
 आलूक, सं. पुं. (सं.) मा, आमा, प्रमा, प्रकाशः २. त्विष, दीप्तिः, कान्तिः (सख स्त्री.) ।
 आलूचक, वि. (सं.) समालोचक समीक्षक २. दर्शक ।
 आलूचन, सं. पुं. (सं. न.) गुणदोष-परीक्षण-निरूपण-परीक्षा, समू, आलोचना २. दर्शनम् ।
 आलूचना, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'आलोचन' ।
 आलूदन, सं. पुं. (सं. न.) मथनं, मयः २. प्रगाढविचारः ।
 आलूहित, वि. (सं.) मथित २. संक्षोभित ३. विचारित ।
 आलूहा, सं. पुं. (देश.) वीरचन्द्रम् (न.) २. महोदावामी प्राचीनो वीरविशेषः ३. विस्तृत-वर्णनम् ।
 आवभगत, सं. स्त्री. (हि. आना + सं. भक्तिः) सत्कारः, उपचारः, सेवा, पूजा ।
 आवरण, सं. पुं. (सं. न.) आच्छादनं, पुटं २. आच्छादनवस्त्रं, प्रच्छदपटः ३. निरस्करिणी, व्यवधानं ४. कोशः, कोषः, बेटनम् ५. चर्मन् (न.) फलकम् (हि. ढाल) ।
 —पत्र, सं. पुं. (सं. न.) मुखं, पृष्ठं-पत्रम् ।
 आवर्त्त, सं. पुं. (सं.) जलभ्रमः, भ्रमरकः

भ्रमिः (स्त्री.) २. अवृष्टजलो मेघः ३. राजा-वर्त्तः, रत्नभेदः ।
 आवर्त्तक, वि. (सं.) आ-परि-वर्त्तमान, वृर्णायमान ।
 आवर्त्तन, सं. पुं. (सं. न.) परि- भ्रामणं, व्या-परि-वर्त्तनम् २. विलोडनम् ३. पुनः पुन-र्भावनः, आवृत्तिः (सब स्त्री.) ।
 आवर्त्तनी, सं. स्त्री. (सं.) दुषा, २. उर्वी, मुषा ३. नमसः-सम् ।
 आवलित, वि. (सं.) इषद्वक, पक्षीभूत ।
 आवली, सं. स्त्री. (सं.) मावलिः, पंक्ति, ततिः (सब स्त्री.) ।
 आवश्य, सं. पुं. (सं. न.) आवश्यकता २-३. अनिवार्य, कार्य-फलम् ।
 आवश्यक, वि. (सं.) अवश्यकर्तव्य, शोषकार्यं, सुर्वर्ध २. अनिवार्यं ।
 आवश्यकता, सं. स्त्री. (सं.) आवश्यकत्वं, अपेक्षा ३. प्रयोजनम् ।
 आवश्यक्य, वि. दे. 'आवश्यक' ।
 आवा, सं. पुं. दे. 'आवा' ।
 आवागमन, सं. पुं. (हि. आना + सं. गमनम्) पुनरुत्पत्तिः (स्त्री.), पुनर्जन्मम् (न०), प्रत्यभावः, देशान्तरप्रार्थितः (स्त्री.) ।
 आवाज, सं. स्त्री. (प्रा.) शब्दः, नादः, स्वनः, ध्वनिः घोषः २. गानस्वरः ३. जम्बस्वरः ।
 —उठाना, मु., विपरीतं वद् (आ. प. सं.) ।
 —बैठना, मु., स्वरभंगः जम् (हि. आ. सं.) ।
 आवारा, वि. स्त्री. (प्रा.) परिभ्रमक, अन्वेषण २. अज्ञाननिवास ३. दुर्दृष्ट, जालम् ।
 आवास, सं. पुं. (सं.) गृहं, गेहं, मदनम् ।
 आवाहन, सं. पुं. (सं. न.) मंत्रैर्देवताह्वानम्, आमंत्रणम् २. निमंत्रणम् ।
 आविर्भाव, सं. पुं. (सं.) प्रकाशनं धाकत्वं, निवृत्तिः (स्त्री.) २. उत्पत्तिः (स्त्री.) ।
 आविर्भूत, वि. (सं.) प्रकटित, प्रकाशित २. उत्पन्न ।
 आविष्कर्ता, वि. (सं. कर्तृ) आविष्कारक, प्रकटयितृ, प्रकाशक, कल्पक ।
 आविष्कार, सं. पुं. (सं.) अज्ञानतन्वयप्रकाशनम् २. अपूर्वदृष्टनिर्माणम् ३. प्रकाशः, प्राकट्यम् ।
 आविष्कारक, वि. (सं.) दे. 'आविष्कर्ता' ।
 आविष्कृत, वि. (सं.) प्रकटित, प्रकाशित २. प्रथमं निर्मित-रचित ।

आविष्ट, वि. (सं.) भूतप्रेतादिपीडित
२. अभिभूत ।

आवृत, वि. (सं.) प्रसमा-आ, च्छादित,
संवृत, पिहित २. परिवृत, वलयित ।

आवृत्ति, सं. स्त्री. (सं.) अभ्यासः, क्रिया,
सातत्य-व्यवस्था २. अध्ययनम् ।

आवेग, सं. पुं. (सं.) आवेशः, निस्सौदयेयः,
उत्तेजनं, उद्वीगनम् २. स्वरा ३. संचारिभाव-
भेदः (सा.) ।

आवेजा, सं. पुं. (फ्रा.) प्रालम्बः, लोलकः ।

आवेदक, वि. (सं.) निवेदक, प्रार्थिन् ।
(सं. पुं.) अभिशोगिन्, वादिन् ।

आवेदन, सं. पुं. (सं. न.) इ. 'निवेदन' ।

आवेश, सं. पुं. (सं.) आवेगः, आवरता
२. व्याप्तिः (स्त्री.), संचारः ३. प्रवेशः
४. भूतवाधा ५. अपरमारोगः ।

आवेष्टन, सं. पुं. (सं. न.) गोपनं, निगूहनम्
२. अवगुंठनं, पिधानं, पुटः, कोशः ।

आवेष्टित, वि. (सं.) अवगुंठित, आवृत ।

आशंका, सं. स्त्री. (सं.) संदेहः, संशयः
२. अनिष्टभावना ३. भयं, वासः ।

आशंकित, वि. (सं.) नीत, व्रत ३. संदे-
हात्मक ।

आशंसा, सं. स्त्री. (सं.) अपेक्षा, आशा
२. इच्छा, वाञ्छा ३. कथनम्, चर्चा ।

आशंसित, वि. (सं.) अपेक्षित, आकाङ्क्षित,
इष्ट २. कथित, वणित ।

आशंसी, वि. (सं. सन्) आशंक्ष,
अपेक्षी, आकाङ्क्षक, प्रत्याक्षिन् ।

आशाना, वि. (फ्रा.) परिचिन, अभिज्ञ ।
सं. पुं. जारः, प्रणयिन् । सं. स्त्री. प्रेयसी, कान्ता ।

आशानार्ह, सं. स्त्री. (फ्रा.) मैत्री, सख्यम् ।
२. प्रणयः, अनुरागः ।

आशय, सं. पुं. (सं.) तात्पर्यं, अभिप्रायः,
अर्थः २. नामना ३. स्थानं, आधारः ४. गर्तः ।

आशा, सं. स्त्री. (सं.) आशंस, आकांक्षा,
अपेक्षा २. स्पृहा, वाञ्छा, मनोरथः ३. दिशा
४. दक्षप्रजापतेः पुत्री ५. रागभेदः ।

—करना, क्रि. अ., आशंस (भ्वा. आ. से.)
उच-प्रति अप, ईक्ष् (भ्वा. आ. से.), आशास्
(अ. आ. से.) ।

—अतीत, वि. (सं.) आशंसधिक ।

—वाक्, सं. पुं. (सं.) सदाशावत्सासिदान्तः ।

—वान्, वि. (सं.) साश, आशन्विन ।

आशिक, वि. (अ.) प्रणयिन्, अनुरागिन्,
आसक्त, अनुरक्त ।

आशिष, सं. स्त्री. (सं. आशिस्) दे. 'वाशीर्वाद' ।

आशीर्वाद, सं. पुं. (सं.) आशिस (स्त्री.) आशी-
र्दानं, हिताशंसनं, मंगलप्रार्थना, आशास्यं,
शुभव्यामना ।

—वेना, क्रि. स., आशिषं दा (जू. उ. अ.),
ति. प्रायः लोट् व आशीर्हि के रूपे से
(उ. पुत्रं भाद्रुहि आध्याः वा) ।

आशु, क्रि. वि. (सं.) शीघ्रं, द्रुतं, सरवरं
(सब अर्थ.) ।

—कचि, सं. पुं. (सं.) सयः काश्यकारः ।

—तोष, सं. पुं. (सं.) शिवः ।

आशुग, वि. (सं.) शीघ्र-द्रुत-तीव्र, गामिन् । सं.
पुं. (सं.) वायुः २. बाणः ।

आश्वर्य, सं. पुं. (सं. न.) विरमयः, कौतुकं,
चमत्कारः, चित्रं, अद्भुतम् ।

—करना, क्रि. अ., विस्मि (भ्वा. आ. व.) ।

—जनक, वि. (सं.) विस्मापक, अद्भुत, विचित्र ।

आश्रम, सं. पुं. (सं.) तपोवनं, मुनिवसतिः
(स्त्री.) २. मठः, विहारः ३. विश्रामशाला
४. मनुष्यायुषः चत्वारो विभागाः (ब्रह्मचर्य-
गृहस्थवानप्रस्थसंन्यासाश्रमाः) ।

आश्रय, सं. पुं. (सं.) अव-आ-लंबः आभारः
२. अवष्टम्भः, उपपन्नः ३. शरणं, गतिः (स्त्री.)
गृहं, सदनम् ।

—दाता, वि. (सं. वृ.) रक्षक, रक्षितु, प्रातृ ।

आश्रित, वि. (सं.) आश्रयप्राप्त, अवलंबित
२. अधीन, शरणागत । सं. पुं., लेवकः, दासः ।

आश्रासन, सं. पुं. (सं. न.) स्नानस्नानं, आशा-
प्रदानं, समाधासनं, प्रोत्साहनं, उत्तेजनम् ।

आश्रिन, सं. पुं. (सं.) आश्रयुजः शारदः, इवः ।

आषाढ, सं. पुं. (सं.) आषाढः, शुचिः ।

आस, सं. स्त्री. (सं. आशा) आशंसा २. लालसा
३. आश्रयः ४. दिशा ।

आसक्त, वि. (सं.) तत्पर, लीन, मग्न, प्रसित
२. अनुरक्त, वदराग, प्रार्थयिन् ।

आसक्ति, सं. स्त्री. (सं.) तत्परता, लीनता,
मग्नता २. अनुरागः, प्रेमन्, कामः ।

आसन, सं. पुं. (सं. न.) उपवेशनप्रकारः

२. स्थिति: (स्त्री.) ३. अर्थागयोगस्य तृतीयमंगम्
 ४. उपवेशनाधारः, पीठं ५. साधुवृत्तिः ६.
 नितम्नः ७. शत्रुदुर्मादीन्वरुष्य स्थितिः ।
 —डोलना, सु., चेतो विक्र (कर्म.) ।
 आसन्न, वि. (सं.) समीप, निकट, निकटस्थ ।
 —प्रसवा, वि. स्त्री. (सं.) निकटप्रसूतिः (स्त्री.) ।
 —भूत, सं. पुं., वर्तमानसंपृक्तो भूतकालः ।
 आस-वास, क्रि. वि. (अनु. आस + सं. पार्श्वः)
 परितः, अभितः (दोनों द्वितीया के साथ),
 समंततः, समंताद्, विश्वद्, सर्वतः (सब
 अव्य.) ।
 आसमान, सं. पुं. (फा., सं. अदमानः >)
 गगनं, दे. 'आकाश' २. स्वर्गः ।
 —के तारे तोड़ना, सु., असंभवानि कार्याणि कृ ।
 —को चूमना, | सु., गगनं चुम्न (भ्वा. प. से.),
 —से बातें करना | अर्धं कम् (भ्वा. प. से.) ।
 आसमानी, वि. (फा.) आकाशीय २. ईश्वरील ।
 आसरा, सं. पुं. (सं. आश्रयः) अवलंबः,
 आधारः २. भरणपोषणादा ३. आश्रयदः ४. शरणं,
 गतिः (स्त्री.) ५. प्रतीक्षा ६. आज्ञा ।
 —देना, क्रि. स., रक्ष (भ्वा. प. से.) ।
 —लेना, क्रि. अ., आश्रि (भ्वा. उ. से.),
 शरणं गम् ।
 आसव, सं. पुं. (सं.) मद्यभेदः २. सुरा, गदिरा
 ३. औषधप्रकारः ४. दे. 'अरक' ।
 आसा, सं. स्त्री., दे० 'आशा' ।
 आसा, सं. पुं. (अ. असा) सुवर्णदेहः, रजतपट्टिः
 (पुं. स्त्री.) ।
 आसाहृष, सं. स्त्री. (फा.) सुखं, सौख्यम् ।
 आसाह, सं. पुं. दे. 'आषाह' ।
 आसादन, सं. पुं. (सं. न.) प्राप्तिः—उपलब्धिः
 (स्त्री.) २. निधानम् ३. आक्रमणम् ४. पश्चा-
 दागम्य प्रापणम् ।
 आसादित, वि. (सं.) प्राप्त, लब्ध २. निहित,
 स्थापित ३. आक्रान्त ४. पश्चादागम्य गृहीत ।
 आसान, वि. (फा.) सुकर, सुगम, सुखसाध्य ।
 आसानी, सं. स्त्री. (फा.) सुकरता, सुगमता ।
 आसाम, सं. पुं. (सं. असम >) कामरूपाः,
 असमप्रान्तः, भारतस्य प्रान्तविशेषः ।
 आसामी, वि. (हि. आसाम) असमप्रदेश,
 विषयक-सम्बन्धिनं । सं. पुं., असम-कामरूप-
 वासिन्-भारतव्य । सं. स्त्री असमीया भाषा,
 असमी ।

आसावरी, सं. स्त्री. (सं. आशावरी) श्रीरागस्य
 रागिणीभेदः ।
 आसीन, वि. (सं.) निपठ्ण, उपविष्ट ।
 आसीस, सं. स्त्री., दे. 'आशीर्वाद' ।
 आसुर, वि. (सं.) राक्षस, पैशाच, असुरसं-
 धिनं । सं. पुं. (सं.) असुरः ।
 आसुरी, वि. स्त्री. (सं.) असुरसंबन्धिनो,
 राक्षसी, पैशाची ।
 —चिकित्सा, सं. स्त्री., शस्त्रचिकित्सा ।
 —माया, सं. स्त्री. पैशाचं छलम् ।
 —संपत्, सं. स्त्री. (सं. पुं.) पैशाची वृत्तिः (स्त्री.)
 आसोज, सं. पुं. (सं. आशयुजः) दे. 'आश्विन' ।
 आस्तरण, सं. पुं. (सं. न.) कृषः, गजदुष्टस्थं
 चित्रकंबलम् २. शय्या, कुशासनम् ।
 आस्तिक, वि. (सं.) ईशवेदपरलोकनिवासिन् ।
 २. ईश्वरसत्त्वादिन् ३. श्रद्धालु ।
 आस्तिकता, सं. स्त्री. (सं.) ईशवेदपरलोकेषु
 विश्वासः २. ईश्वरप्रत्ययः ।
 आस्तनी, सं. स्त्री. (फा.) पिप्पलः, कोशना-
 लिका, ओलादीनां बाहुभागः ।
 —का सौंप, सु. गूढशुद्धः, गुप्तवैरिन् ।
 आस्था, सं. स्त्री. (सं.) श्रद्धा, भक्तिः (स्त्री.),
 अहंणा, आदरः २. समा, आस्थानम् ३. आलं-
 बन, अपेक्षा ।
 आस्थान, सं. पुं. (सं. न.) उपवेशनस्थलं,
 समामंथपः २. समा ।
 आस्थित, वि. (सं.) ठपिन, कृतवास २. आश्रित
 ३. लब्ध ४. वेष्टित ।
 आस्पद, सं. पुं. (सं. न.) स्थानम् २. कार्यम्
 ३. प्रतिष्ठा ४. वंशः कुलम् ।
 आस्थ्य, सं. पुं. (सं. न.) वदनं, तुंडम्
 २. मुखमंडलं, मुखम् ।
 आस्वादन, सं. पुं. (सं. न.) स्वादनं, रसनम् ।
 आह, अव्य. (सं. अह्) कष्टं, हा, इन्त, आः,
 हा, अहो (सब अव्य.) ।
 आह, सं. स्त्री. (फा) निःश्वासः, उड्वासः,
 दीर्घश्वासः ।
 —भरना, क्रि. अ., दीर्घं उत्पन्नि-थसु (अ.
 प. से.) ।
 आहट, सं. स्त्री. (हि. आना + डट प्रत्य.)
 पादशब्दः, चरणनिक्षेपध्वनिः २. विद्यमानता-
 सूचकध्वनिः ।

आहत, वि. (सं.) क्षत, व्रणित, विद्ध, भिन्नदेह
२. गुण्यसंख्या ३. परस्परविरुद्ध (वाक्य)
४. सद्यःक्षालित ५. जीर्ण ६. कपित । सं. पुं.,
पठः ।
आहरण, सं. पुं. (सं. न.) आच्छेदनं, सङ्घा-
आकलनम् २. अपनयनम् ३. आनयनम्
४. ग्रहणम् ।
आहरण, सं. पुं. (सं. आहनम् >) शूर्पिः
(स्त्री), शूर्पा, शूर्पा ।
आहूँ, अव्य. (अनु.) मा, न, नो, नहि ।
आहा, अव्य. (सं. अहह) अहो, ही, आः ।
आहार, सं. पुं. (सं.) भक्षणं, भोजनं, भोजनं,
जग्धिः (स्त्री) २. स्वाद्य-भक्ष्यं, सामग्री ।
—विहार, सं. पुं. (-री) चर्या, वर्तनं, वृत्तं,
आचारभ्यवहारी ।
आहार्य, वि. (सं.) भक्ष्यं, खाद्य २. प्रहीतव्य
३. आहरणीय ४. वृत्रिम । सं. पुं., चतुर्थोऽ-
नुभावः (सा.) ।
अभिनय, सं. पुं. (सं.) कचनचेष्टारहितोऽ-
भिनयः (सा.) ।
आहिस्ता, कि. वि. (प्रा. तः) शनैः, मन्दम् ।
—आहिस्ता, कि. वि., शनैः शनैः, मन्दं मन्दम् ।

आहुति, सं. स्त्री. (सं.) हवनं, देवयज्ञः होमः,
होत्रम् २. हवनसामग्री ३. सामग्र्याः सकृत्
होतव्या मात्रा ।
—देना, कि. स., इ (जु. उ. अ.), यज् (स्वा.
उ. अ.) ।
आहू, सं. पुं. (फा.) मृगः, हरिणः ।
आहूत, वि. (सं.) आकारित, आ-नि, मंत्रित ।
आहूति, सं. स्त्री. (सं.) आकारणं, आमंत्रणम् ।
आह्निक, वि. (सं.) दैनिक, दैनंदिन, प्रात्यहिक ।
कि. वि. अहरहः, अनु-प्रति, दिनम् । सं. पुं.,
दिनस्य कार्यम् २. महाभाष्यलक्षणः ३. अध्या-
पकः ४. दैनिको भुक्तिः (स्त्री.) ।
आह्लाद, सं. पुं. (सं.) आनन्दः, हर्षः, मोदः ।
आह्लादक, वि. (सं.) आह्लादप्रद, हर्षजनक,
आनन्ददायक ।
आह्लादित, वि. (सं.) प्रसन्न, मुदित ।
आह्वान, सं. पुं. (सं. न.) आहूतिः (स्त्री.),
आकारणं, आमंत्रणम् २. आह्वानपत्रम्
(= सम्मन) ३. यज्ञे देवताकारणम् ।
—करना, कि. स., आहं (स्वा. उ. अ.)
आहु (प्रे.) २. देवता आवह् (प्रे.) ।

इ

इ, देवतागरीवर्गमालायाः तृतीयः स्वरः, इकारः ।
इक, सं. स्त्री. (अं.) मशी, मषी, मसी ।
इंगला, सं. स्त्री. (स्त्री-इटा) मानवशरीरे वाम-
पार्श्वस्था यक्रा नाली ।
इंगलिश, वि. (अं.) आंग्लदेशीय । सं. स्त्री.
आंग्लभाषा ।
इंगलिस्तान, सं. पुं. (अं. इंगलिश + फा. स्तान)
आंग्लदेशः ।
इंगित, सं. पुं. (सं. न.) इङ्ग, संकेतः आकारः,
दैहिकचेष्टा । वि. संकेतित ।
इंगुदी, सं. स्त्री. (सं.) तापसतरुः, शूलारिः ।
इञ्च, सं. पुं. (जं. अं. पुं. लः) २. अरथल्पं, रेखामात्रम् ।
इंजन, सं. पुं. (जं. अं. नि) यन्त्रम् २. वाष्प-
शक्तिकर्षकयन्त्रम् ।
इंजीनियर, सं. पुं. (अं. जीनियर) यन्त्रकारः,
यन्त्रकल-भिन्नः, वास्तुविद्याप्रशारकः ।
इंजेक्शन, सं. पुं. (जं.) सूनीभरणम् ।
इंजूस, सं. पुं. (सं.) (इंजूस) दारु २. प्रवेशः
३. आंग्लविद्यालयस्य नवमदशमकक्षे (दि.)

—परीक्षा, सं. स्त्री., प्रवेशिका परीक्षा ।
इंडुवा, सं. पुं. (सं. गेण्डुकः >) घटाद्याधार-
भूतं शीर्षस्थं वर्तुलवक्रम् ।
इंतजाम, सं. पुं. (अ.) संविधा, प्रबन्धः ।
इंदिरा, सं. स्त्री. (सं.) पद्मा, कमला
दे. 'लक्ष्मी' ।
इंदीवर, सं. पुं. (सं. न.) नील, कमल-उरप-
कम् २. कमलम् ।
इंदु, सं. पुं. (सं.) चन्द्रः २. कपूरः २. रम् ।
इंद्र, वि. (सं.) संपन्न २. श्रेष्ठ । सं. पुं., देव-
राजः, पाकशासनः, सुरेंद्रः, शक्रः, वज्रिन्,
सुरपतिः, शचीपतिः, आखंडलः, सहस्राक्षः,
साकनाथः वज्रपाणिः २. सूर्यः ३. विद्युत् (स्त्री.
४. मृगः ५. ज्वेष्ठानक्षत्रम् ६. चतुर्दशसंख्या
७. व्याकरणस्य आदिम अचार्यः ८. जीवः,
प्राणाः ।
—का अस्त्राद्धा, सं. पुं., इन्द्रसभा २. संगीतसभा ।
—जाल, सं. पुं. (सं. न.) मायाकर्मन् (न.),
कुडकम् ।

- जाली, वि. (सं.-लिन) मायाविन्, कुतुक-कारिन् ।
- जीत, सं. पुं. (सं.-जित्) जेयनादः ।
- जौ, सं. पुं. (सं.-यवः) कुटल-शक, नीजम् ।
- धनुष, सं. पुं. (सं.-धनुस् न.) इन्द्रचाप. सरधनुस् ।
- नील, सं. पुं. (सं.) नील-वपलः-मणिः (= नीलम) ।
- नीलक, सं. पुं. (सं.) मरकतं, अरमगर्भः, हरिमणिः (= जमुर्ब) ।
- प्रस्थ, सं. पुं. (सं. न.) युधिष्ठिरनिर्मापितं दिश्लोसमीपवर्ति नगरम् ।
- लोक, सं. पुं. (सं.) नाकः, स्वर्गः ।
- इंद्रा, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'इन्द्राणी' ।
- इंद्राणी, सं. स्त्री. (सं.) शची, ऐन्द्री, पीलोमो, माहेन्द्री, पुलोमजा २. स्थूलैला ३. सूक्ष्मैला ४. निर्गुण्डी ।
- इंद्रानुज, सं. पु. (सं.) विष्णुः ।
- इंद्रायन, सं. पुं. (सं. इन्द्राणी) सरमा, निर्गुण्डी, सिद्धवारः ।
- का फल, सु., वही रम्योऽन्तर्दुष्टः ।
- इंद्रायुध, सं. पुं. (सं. पुं. न.) इन्द्रचापः २. वज्र, एविः ।
- इंद्रिय, सं. स्त्री. (सं. न.) करणं, अक्षं, हृषीकं, ग्रदणं, विषयिन् (न.) २. जननेन्द्रियम् ३. वीर्यम् ४. 'पंच' इति संख्या ।
- अर्थ, सं. पु. (सं.) इन्द्रियविषयः (रूप-रसादि) ।
- जित्, वि. (सं.) जितेन्द्रिय, हृषीकेशः ।
- निग्रह, सं. पुं. (सं.) इन्द्रिय-दमनं-जयः, दमः ।
- वश, वि. (सं.) विषयिन्, विषयवशः ।
- इंधन, सं. पुं. (सं. न.) इध्मं. पधं, पधस् (न.) ।
- इं (इं) पाचर, सं. पुं. (अं.) साम्राज्यम्, आधिराज्यम् ।
- इंपीरिबलिङ्गम, सं. पुं. (अं.) साम्राज्यवादः २. सघाट्टासनम् ।
- इंपोर्ट, सं. पुं. (अं.) दे. 'आयात' ।
- इंसाफ, सं. पुं. (अ.) न्यायः, धर्मः २. निर्णयः विवेकः ।
- इन्स्टिट्यूट, सं. स्त्री. (अं.) संस्थानम् ।
- इन्स्टिट्यूशन, सं. स्त्री. (अं.) शिक्षालयः, विद्यालयः २. धर्मशाळा ३. रीतिः (स्त्री.)

- इन्स्ट्रुमेंट, सं. प्र. (अं.) उपकरणं, यन्त्रम् २. साधनम् ।
- इन्स्पेक्टर, सं. पुं. (अं.) निरीक्षकः, द्रष्टृ ।
- इक, वि., दे. एक ।
- इकट्टा, वि. (सं. एकत्रय) पकीकृत, समवेत, गणीभूत ।
- करना, कि. सं., एकत्र कृ; सं-नि, नि (न्व. उ. अ.) ।
- इकट्टे, कि. वि. (हिं. इकट्टा) पकीभूय, संगूय, मिलित्वा ।
- इकसार, कि. वि. (सं. एकसारः >) सतयं, निरन्तरम् ।
- इकतारा, सं. पुं. (सं. एकतारः) एक-तारः-तंत्रीकः वाद्यभेदः ।
- इकलीस, वि. (सं. एकविंशत् स्त्री. एक.) सं. पुं. उक्ता संख्या, तद्बोधकावकौ (३२) च ।
- इकरार, सं. पुं. (अ.) प्रतिज्ञा, संगरः. प्रति-सं; श्रयः २. अंगी-स्वी-कारः ।
- नामा, सं. पुं. (फा.) प्रतिज्ञा-समयः, पर्व-लेखयम् ।
- इकलौता, सं. पुं. (सं. एकल >) भगिनीभ्रातृ-हीनः, पित्रोः एकलः पुत्रः ।
- इकसट, वि. (सं. एकपष्टिः स्त्री. एक.), सं. पुं. उक्ता संख्या, तद्बोधकावकौ (६२) च ।
- इकसार, वि. (सं. एकसार >) समान, सदृश ।
- इकहत्तर, वि. (हिं. इक + सत्तर) एकसप्ततिः (स्त्री. एक.), सं. पुं. उक्ता संख्या तद्बोध-कावकौ (७१) च ।
- इकहरा, वि. (सं. एकस्तर) दे. 'एकहर' ।
- इकाई, सं. स्त्री. (हिं. इक) एका व्यक्तिः (स्त्री.) २. एकांकः ३. जैराशिकम् (= इकाई का कायदा) ।
- इकानवे, वि. (हिं. इक + नवे) एकन-वतिः (स्त्री. एक.), सं. पुं. उक्ता संख्या तद्बोधकावकौ (९६) च ।
- इकावन, वि. (सं. एकपंचाशत् स्त्री. एक.) सं. पुं. उक्ता संख्या तद्बोधकावकौ (५१) च ।
- इकासी, वि. (हिं. इक + अस्सी) एकाशीतिः (स्त्री. एक.) सं. पुं. उक्ता संख्या तद्बोधकाव-कौ (८६) च ।
- इकोत्तर, वि. (सं. एकोत्तर) एकाधिक ।
- इष्ठा, वि. (सं. एक) एकाकिन्, एकल ।

२. अतुल्य, असम । सं. पुं. वाहन-यान-प्रव-
हण-शेदः २. पकांकयुर्न क्रीडापत्रम् ३, एकाकी
योधः ।
- दुक्का, वि. विरल २. मार्गग्रह ३. शूयग्रह ।
- इक्षु, सं. पुं. (सं.) मधु-सुह, नृणः, महारसः,
रसालः, पयोधरः ।
- रस, सं. पुं. (सं.) मधुसुह, सारः-द्रवः-
निर्यासः ।
- सार, सं. पुं. (सं.) सुहः ।
- इक्ष्वाकु, सं. पुं. (सं.) वैवस्वतमनोः पुत्रः
सूर्यवंशीयः प्रथमनृपः ।
- नन्दन, सं. पुं. (सं.) श्रीरामचन्द्रः ।
- इक्षितधार, सं. पुं. (अ.) प्रभावः, अभि-
कारः २. अधिकारक्षेत्रम् ३. सामर्थ्यम्
४. स्वामित्वम् ।
- इक्ष्वा, सं. स्त्री. (सं.) रुहा, आकांक्षा, ईहा,
ताण्ड्या, अभिलाषः, मनोरथः, इष्टं, अमीष्टं,
ईप्सितं, कामता ।
- करना, कि. म. इप (तु. प. से.), अभि-
लप्, तांष्ट (टोनी भ्वा. प. से.) कम् (भ्वा.
आ. से., कामयते), स्पृष्ट (जु, चतुर्थी के
साथ), (सञ्चत रूपों से भी, उ. पढ़ने की
इच्छा करता है=पिपठिषति) ।
- अनुकूल, कि. वि. (सं. न.) यथाश्चि,
यथेच्छं, यथेष्टं, यथाकामम् ।
- भेदी, सं. पुं. (सं.—दिन्) यथेष्टिरेचक-
मौषधम् ।
- इच्छित, वि. (सं.) अभीष्ट. वाञ्छित, अभि-
लषित ।
- इच्छुक, वि. (सं.) इच्छुः, अभिलाषिन्, आकां-
क्षिन् । (वि. सञ्चत रूपों से भी, उ० पढ़ने का
इच्छुक=पिपठिषुः । तुमुत्तन्त रूप के बाद
'काम' वा 'मानस' लगाकर भी, उ० जाने का
इच्छुक=गन्तु, -कामः-मनाः) ।
- इजराय, सं. पुं. (अ.) प्रवालम् २. अनुष्ठानम् ।
- हिरारी, सं. पुं. (अ. + अं. हिकरी) रात्र-
शासंपादनम् ।
- इजलास, सं. पुं. (अ.) अधिवेदनम् २. न्याया-
लयः ।
- इजहार, सं. पुं. (अ.) प्रकाशनम् २. सःक्षयम् ।
- इजाजत, सं. स्त्री. (अ.) अनुमतिः (स्त्री.),
अनुज्ञा २. आज्ञा, आदेशः ।
- इजाफा, सं. पुं. (अ.) वृद्धिः (स्त्री.), दे. ।
- इजार, सं. स्त्री. (अ.) दे. 'पानामा' ।
- यंय, सं. पुं. (अ. + फा.) दे. 'नाहा'
- इजारा, सं. पुं. (अ.) पणः, समयः २. पट्टः,
पट्टीकिका ३. स्वत्वम् ।
- इजारे (र) द्वार, सं. पुं. (अ. + फा.) पणकर्तृ,
नियमकृत् ।
- इज्जत, सं. स्त्री. (अ.) संमानः, आदरः ।
- उतारना, सु., लघूभिः, कृ ।
- रखना, सु., अपमानात् रक्ष (भ्वा. प. से.) ।
- इज्या, सं. स्त्री. (सं.) यज्ञः, यागः, होमः २. पूजा,
अर्चा ।
- इटा (टै) निकम्, सं. पुं. (अ.) बकमुद्राक्ष-
राणि (न. बहु.)
- इटालियन, सं. पुं. (अं.) इटलीवासिन् २.
इटलीतः, आगतः बरुभेदः ३. इटलीभाषा । वि.
इटलीसम्बन्धिन् ।
- इठलाना, कि. अ. (हि. पैंठ) सगर्वं चेष्ट
(भ्वा. आ. से.) २. हावें इष्ट (प्र.) ३. पर-
क्लेशाय अशक्त आचर् (भ्वा. प. से.) ।
- इठलाहट, सं. स्त्री. (हि. इठलाना) काटोपः,
धर्मः २. हावभावः ।
- इहा, सं. स्त्री. (सं.) भूमिः (स्त्री.) २. गौः
(स्त्री.) ३. वागी ४. स्तुतिः (स्त्री.) ५-७ यज्ञ-
पात्रदेवता-आहुति-विशेषः ८. अन्नं, हविस् (न.)
९. नभोदेवता १०. दुर्गा ११. पार्वती १२. कश्यप-
पत्नी १३. वसुदेवपत्नी १४. बुधपत्नी
१५. स्वर्गः १६. नाडीभेदः ।
- इतना, वि. [सं. एतावत् वा हि. ईं (यह) +
तना (प्रत्य.)] एतावत्, एतन्मात्र, इयत् (स्त्री.,
एतावती, इयती) ।
- इतने में, कि. वि. एतावन्मध्ये, अत्रान्तरे २. अ-
श्मिन्नेव समये ।
- इतमीनान, सं. पुं. (अ.) तोषः सं. शान्तिः
(स्त्री.) ।
- इतमीनानी, वि. (अ.) विश्वसनीय, विश्वास्य ।
- इतर, सं. पुं. (अ. इत्र) दे. 'अतर' ।
- इतर, वि. (सं.) अन्य, अपर, पर २. नीच
३. सामान्य, साधारण ।
- इतर, कि. वि., परस्परः, अन्योन्यं, मिथः
(सब अन्य.) ।
- इतराश्रय, सं. पुं. (सं.) अन्योन्याश्रयः ।

- इतराना, कि. अ. (सं. उत्तरणं >) गव् (भ्वा. प. से.), प्रगल्भ् (भ्वा. भा. से.) ।
- इतवार, सं. पुं. (सं. आदित्यवारः) रवि आदित्य भानु-वारः-वासरः ।
- इति, अ०व्. (सं.) इति शब्दः इत्योम्, समासिमूयकपञ्चमम् । सं. स्त्री., अवसानं, अन्तः, समाप्तिः (स्त्री.) ।
- कर्तव्यता, सं. स्त्री. (सं.) कर्मानुष्ठानविधिः (पुं.) ।
- वृत्त, सं. पुं. (सं. न.) पुरावृत्तं, (पुरातनी) कथा ।
- श्री, सं. स्त्री. (सं.) अन्तः, समाप्तिः (स्त्री.)
- इतिहास, सं. पुं. (सं.) पुरावृत्तं, पूर्ववृत्तान्तः, पुराभूतम् ।
- इतफाक, सं. पुं. (अ.) संघटनं-ना, संघटनं-ना २. सौहार्म्यं, साम्प्रत्यम् ३. अवसरः, अवकाशः ।
- इत्थला, सं. स्त्री. (अ.) विज्ञानं, ख्यापनं, सूचना, बोधनम् ।
- इर्थ, कि. वि. (सं.) एवं, अनेन प्रकारेण ।
- इर्थभूत, वि. (सं.) ईदृश, एतादृश ।
- इत्यादि, अव्य. (सं.) आदि, प्रवृत्ति, आद्य (सब समासान्त में; उ. पिककाकादयः) ।
- इत्यादिक, वि (सं.) दे. 'इत्यादि' ।
- इत्र, सं. पुं. (अ.) दे. 'अतर' ।
- इधर, कि. वि. (सं. अत्र) इतः, एतत्स्थानं प्रति २. अत्र, इदं, अस्मिन् स्थाने ।
- उधर, कि. वि., इतस्ततः, अत्र-तत्र, अनियतस्थले २. उभयतः, उभयत्र ३. अभितः, परितः, (दोनों के साथ द्वितीया), सर्वतः, विश्वतः, समंततः, समन्तात् ।
- उधर की बात, मु., जन-प्रवादः-श्रुतिः (स्त्री.) ।
- की उधर लगाना, मु., कलहं उदी (प्रे.) ।
- की दुनिया उधर होना, मु., असंभव भवेत् चेत् ।
- इर्न, सर्व, (हिं. इस) एतद्, इदम् ।
- इर्नी, कि. वि., वर्तमाने, अद्यत्वे ।
- इर्न, सं. पुं. (सं.) सूर्यः २. स्वामिन् ।
- इनकमटवसे, सं. पुं. (अं.) आयकरः ।
- इनकलाब, सं. पुं. (अ.) इहपरिवर्तनं, परिवर्तः । २. राज्यविह्वलः, प्रजाक्षोभः ।
- इनकार, सं. पुं. (अ.) प्रत्याख्यानं, प्रति-नि-पेधः ।
- करना, कि. सं., प्रति-नि-विष् (भ्वा. प. वे.)
- इनकिशाफ, सं. पुं. (अ०) आविर्भावः, प्राकार्यं, प्राकट्यम् ।
- इनकिसार, सं. पुं. (अ०) विनयः, नम्रत्वं-ता ।
- इनफ्लुएन्जा, सं. पुं. (अं) शीतजनरः ।
- इनसान, सं. पुं. (अ.) मनुष्यः ।
- इससानिबत, सं. स्त्री. (अ.) मनुष्यत्वम् २. सज्जनता, शिष्टता ।
- इनहिस्सार, सं. पुं. (अ.) अवलंबः, अश्रयः ।
- इनाम, सं. पुं. (अ. इनआम) पुरस्कारः, पारितोषिकम् ।
- इनायत, सं. स्त्री. (अ.) कृपा २. उपकारः ।
- इने-गिने, वि. (अनु० इन+दि. गिनना) कतिचन, स्तोकाः २. अल्पसंख्याकाः ।
- इयारत, सं. स्त्री. (अ.) लेखः २. लेखशैली ।
- इमरती, सं. स्त्री. (सं० अमृतम् >) कंकणी, मिष्टान्नभेदः ।
- इमली, सं. स्त्री. (सं. अम्लिका) आम्लि (लो-का, चिना, तित्तिडि (डी) का २. अम्लिका-चिना-फलम् ।
- इमाम, सं. पुं. (अ.) पुरोहितः २. नेत् ।
- बादा, सं. पुं. (अ. + हिं.) सुहर्मपर्वानुष्ठा-नवादः ।
- इमारत, सं. स्त्री. (अ.) भवनं, गृहम् ।
- इम्टहान, सं. पुं. (अ.) परीक्षा ।
- इम्ला, सं. स्त्री. (अ.) श्रुतलेखः २. अक्षर-वर्ण-विन्यासः ।
- इयत्ता, सं. स्त्री. (सं.) सीमा, परिमाणम् ।
- इरादा, सं. पुं. (अ.) संकल्पः, निश्चयः ।
- इरावती, सं. स्त्री. (सं.) कश्यपमुता २. नदी-विशेषः (= रावी) ३. ओषधिभेदः (= पत्थर-वट) ।
- इर्द-गिर्द, कि. वि. (अनु० इर्द+फ्रा. गिर्द) परितः, अभितः, सर्वतः २. उभयतः, इतस्ततः ।
- इलज़ाम, सं. पुं. (अ.) अभियोगः, दोष, आरोपः ।
- इलहाम, सं. पुं. (अ.) देववाणी ।
- इला, सं. स्त्री. (सं.) पृथिवी २. पावंती ३. वाणी ४. बुद्धिमती नारी ५. गौः (स्त्री.) ।
- इलाका, सं. पुं. (अ.) प्रदेशः, भूभागः । २. संबंधः ।

इलाज, सं. पुं. (अ.) चिकित्सा, उपचारः
२. औषधं, औषधिः (स्त्री.) ३. युक्तिः
(स्त्री.) प्रवी (लि) कारः ।

इलायची, सं. स्त्री. (सं. एला) (उड़ी)
एला, चंदयाला, बहुला, त्रिदिवा २. (छोटी)
तुरितः- वृष्टिः (स्त्री.) नंदिनी ।

—इाना, सं. पुं., (हि + फा) एलाबीजम्
२. तृणबीजम् २. तदबीजयुक्तो मिष्टान्नभेदः ।
इलाही, वि. (अ.) दैव, ऐश्वरीय । सं. पुं.,
ईश्वरः ।

इन्म, सं. पुं. (अ.) विद्या, ज्ञानम् ।
इन्त, सं. स्त्री. (अ.) रागः २. वाषा ३. अप-
राधः ४. व्यसनम् ।

इव, अन्ध. (सं.) यथा, तुल्य, सदृश,
समान, चत् ।

इक्षारा, सं. पुं. (अ.) संकेतः, इंगितम्
२. संक्षिप्तकथनम् ३. गुप्तप्रेरण ।

इक्षक, सं. पुं. (अ.) अनुरागः, प्रणयः ।

इश्नहार, सं. पुं. (अ.) विज्ञापनं, विज्ञप्तिः
(स्त्री.) २. धीपथा, ख्यापनम् ।

इषु, सं. पुं. (स.) बाणः, सायकः ।

इषुधी, सं. पुं. (सं. -धिः) तूणीरः, तूणी ।

इष्ट, वि. (सं.) वाञ्छित, अभिलषित, आकांक्षित
२. अभिप्रेत ३. पूजित । सं. पुं., (सं. न.)
धर्मकृत्यं, अग्निहोत्रादिकर्माणि २. कुलदेवः
३. मित्रम् ४. अरिष्टः ५. इष्टका ।

—देव, सं. पुं. (सं.) कुलदेवता ।

—देवता, सं. स्त्री. (सं.) आराध्यदेवः ।

इष्टापूर्त, सं. पुं. (सं. न.) यत्कृतादिकर्मन् (न.) ।

ई, देवनागरीवर्णमालाराः चतुर्थः स्वरवर्णः,
ईकारः ।

ईगुर, सं. पुं. (सं. द्विगुलः-लम्) द्विगुलिः,
द्विगुल (पुं. न.), विन्दूरम् ।

ईट, सं. स्त्री. (सं. इष्टका) इष्टिका । (पक्की)
झरुका, पक्केष्टका, अष्टुष्टका २. इष्टकाकारो
धातुसंज्ञः ।

—से ईट धजाना, मु., ध्वंस्-उन्मूल-विनश-
निपत् (सब प्रे.) ।

—पत्थर, मु., न किमपि, न किञ्चित् ।
डेद वा डार्ड ईट की मस्जिद अलग बनाना,
मु., असामान्य आचर (भ्वा. १. से.) ।

ईष्टि, सं. स्त्री. (सं.) अभिषाषः २. यज्ञः
३. पञ्जलिपुत्रो व्याकरणनियमः ।

इस, सर्व. (सं. एषः) एतद्, इदम् ।

इसपंज, सं. पुं. (अं. स्पंज) गुणितरेपिण्डः
२. पराश्वपुष्टः ।

इसन्नगोल, सं. पुं. (प्रा. यज्ञगोल) शृङ्गण-
रिजग्ध, जीरकः ।

इसरार, सं. पुं. (अ.) आश्रयः, दे० ।

इसलाम, सं. पुं. (अ.) मोहम्मदीयधर्मः ।
२. ईश्वरेच्छा-स्वीकारः ।

इसलामी, मोहम्मदीयधर्मसम्बन्धिन् ।

इसे, सर्व. (हि. इस) १. (इसको) एमं
(पुं.), एतां (स्त्री.), एतद् (न.), इमं (पुं.),
इमां (स्त्री.), इदम् (न.) २. (इसके लिए)
एतस्मै (पुं. न.), एतरयै (स्त्री.) अस्मै
(पुं. न.), अरयै (स्त्री.) ।

इस्तर्री, सं. स्त्री. (सं. स्तरी >) स्तरणी,
रजकलोहः इयम् ।

इस्तिकबाल, सं. पुं. (अ.) प्रत्युद्गमनं, प्रत्यु-
द्वजनम् । स्वागतम्, सत्कारः ।

इस्तिगासा, अभियोगः, भाषापादः ।

इस्तीफा, सं. पुं. (अ. इस्तीफा) स्वागपत्रम् ।

इस्तेमाल, सं. पुं. (अ.) उपयोगः, व्यवहारः,
प्रयोगः ।

इह, कि. वि. (सं.) अत्र २. भूलोके । सं. पुं.,
भूलोकः ।

—छीला, सं. स्त्री. (सं.) जीवनम् ।

इहातह, सं. पुं. (अ.) वाटः-टी, प्राणनं, परि-
सरभूमिः (स्त्री.) ।

ईधन, सं. पुं., दे. 'ईधन' ।

ईशक, सं. पुं. (सं.) दर्शकः, वीक्षकः
२. निन्तकः ।

ईक्षण, सं. पुं. (सं. न.) अवलोकनं, दर्शनम्
२. नेत्रम् ३. विवेचनम् ।

ईशा, सं. स्त्री. (सं.) दर्शनं, वीक्षणम् । विवे-
चनं, पर्यालोचनम् ।

ईख, सं. स्त्री. दे. 'इख' ।

ईजा, सं. स्त्री. (अ.) कष्टं, क्लेशः ।

ईजाद, सं. स्त्री. दे. 'आविष्कार' ।

ईडि, सं. स्त्री. (सं. इष्टिः) सख्यं, सीद्दार्दम्
२. प्रयत्नः ।

इति

[६३]

उकड्डुं बैठना

ईति, सं. स्त्री. (सं.) कृपेः षट् उपद्रवाः (यथा-
अतिवृष्टिः, अनावृष्टिः, शूलमाः, सूषिकाः, खगाः,
शत्रोराक्रमणम्) २. विघ्नः ३. दुःखम् ।
ईयर, सं. पुं. (अं.) दक्षु (न.), आधूम् ।
ईद, सं. स्त्री. (अ.) श्वनोत्सवमेतः ।
—का चौद, सु., दिवापदीपः, दुर्लभदर्शनः ।
ईदना, क्रि. वि. (सं. न.) इत्थं अनेन प्रकारेण
वि., दे. 'ऐसा' ।
ईप्सा, सं. स्त्री. (सं.) प्रच्छा, अभिलाषः ।
ईप्सित, वि. (सं.) अभिलषित, इष्ट ।
ईमान, सं. पुं. (अं.) धर्मः २. सत्यम् । ३.
भारितक्यबुद्धिः (सं.) ४. शत्रु ।
—दाद, वि. (अ. + फ.) धार्मिक, न्यायवर्तिम्
२. निष्कपट ३. आस्तिक ४. विधिसनीय ।
ईरान, सं. पुं. (फा.) पारसीकः ।
ईरानी, वि. पारस (—सौ स्त्री.) । सं. स्त्री.,
पारसी, पारसीकभाषा । सं. पुं., पारसीकाः,
पारसीकनांसिनः (बहु.) ।
ईर्ष्या, सं. स्त्री. (सं.) मत्सरः, मात्सर्यं, परो-
त्कर्षासदिष्णुता, अमूया ।

ईर्ष्यालु, वि. (सं.) मत्सरिन्, अमूयकं,
इर्षियन्, परोत्कर्षासहन ।
ईश, सं. पुं. (सं.) पशुः, पतिः, स्वामिन्
२. परमेश्वरः ३. नृपः ४. शिवः ५. 'पकादश'
इति संख्या ।
ईशान, सं. पुं. (सं.) स्वामिन्, पशुः २. महा-
देव, ३. पूर्वोत्तरदिक्कोणः ।
ईश्वर, सं. पुं. (सं.) परमेश्वरः, परमात्मनः,
जगदीश्वरः, परमेशः २. स्वामिन्, ३. शिवः
वि., आत्मा ।
—प्रमिधान, सं. पु. (सं. न.) ईश्वरे अर्पणदिशयः,
स्वकर्मणामोभारविषयम् ।
ईश्वरीय, वि. (सं.) दिव्य, दैव, ईदृशसंबन्धिन्
ईषत्, अन्व. (सं.) अपर्ण, स्वोर्षं, न्यूनम् ।
ईसबरोल, सं. पुं., दे. 'इस्कोल' ।
ईसवी, वि. (फा.) ख्रिस्तपूर्वविषयम् ।
—सन्, सं. पुं. (फा + वा.) गिदलाब्दः ।
ईसा, सं. पुं. (अ.) ख्रिस्तः, जीसुः ।
ईसाई, वि. (फा.) ख्रिस्तानुयायिन् ।
ईहा, सं. स्त्री. (सं.) नेष्टा २. उद्योगः ३. अभि-
लाषः ४. लोभः (सि.) ।

उ

उ, देवनागरीवर्णमालायाः पंचमः स्वरवर्णः,
उकारः ।
उंकुण, सं. पुं. (सं.) मत्कुणः, तरुपकीटः
ओकणः ।
उंगली, सं. स्त्री. (सं. अंगुली), अंगुलः, अंगुरी,
करशाला (उंगलियो के कर्मशः नाम—अंगुष्ठः,
तर्जनी, मध्यमा, अनामिका, कनिष्ठा) ।
—का पटाक्षा, सं. पुं., अंगुलीगोठनं, मुसुदी ।
उंगलियो पर नचाना, सु., बंधेच्छं कृ (प्रे.) ।
—ठडाना, सु., निन्द (भ्वा. प. से.), अधिक्षिप्
(तु. प. अ.) २. मन्त्राधि अपकृ ।
कानी—, सं. स्त्री., कनिष्ठा ।
कानो मे उंगला देना, सु., औदासीन्येन पर-
बचनानि न श्रु (भ्वा. प. अ.) ।
वाँतो तले उंगली दबाना, सु., अस्थिर्ब विरिम
(भ्वा. आ. अ.), लक्षितचकित (वि.) म् ।
पानो उंगलियो धा में होना, सु., सर्वथा सम्य
(दि. प. से.) ।
उँचन, सं. स्त्री. (सं. उर्वचनम्) खट्यायाः
पादमागन्धा रज्जुः (स्त्री.) ।

उंचास, वि., दे. 'उनचास' ।
उँछ, सं. स्त्री. (सं. पुं.) उपात्तशर्याव श्रेणाव
शेषावचयनम्, उच्छेदनम् ।
—वृत्ति, सं. स्त्री. (सं.) उच्छेदन जीवननि-
र्वाहः । वि., उच्छेदी ।
उँजियारी, उँज्यारी, सं. स्त्री. (हि. उजारा)
चन्द्रिका, ज्योतिरता । वि. स्त्री., चन्द्रिक-
प्रकाश-युता ।
उँजेरा, उँजेला, सं. पुं., दे. 'उजाला' ।
उँवेलना, क्रि. स. (सं. अ + हि. डालना) ।
प्र., सु (प्रे.) निर्मल (प्रे.), प्रस्यं (प्रे.),
च्युत् (प्रे.) ।
उँदन, सं. पुं. (सं. न.) कर्करनं, पादोपरणम् ।
उँदुर, सं. पुं. (सं. उँदरः) मूष (१५) का
उँह, अन्व. (अनु.) घृणापेक्षाविषयवृत्तौदेहः
कर्मण्ययम्, चिक, न, नदि, आः, हा १००
उँच्छण, वि. (सं. उत + ऋण) अन्व. प्र. गदुल
उकड्डुं, सं. पुं. (सं. उकडुनीय) लघ्वेवहन
पर्यावरणविशेषः ।
—बैठना, क्रि. अ., अवनतसन्धि आम् (अ.
आ. से.) ।

उकताना

[६५]

उग्र

उकताना, क्रि. अ. (सं. उक्त् >) खिद्—
निदिद् (दि. आ. अ.) उद्विन् (तु. आ. अ.) ।

उकताया हुआ, वि. खिन्न, निर्विण्ण ।

उकसना, क्रि. अ. (सं. उक्त् >) सं-वि-
शुम् (दि. प. से.), उक्त्-सं-तप् (दि. आ.
अ.) २. उद्गम्, उग्रम् (भ्वा. प. अ.)
३. प्ररुद् (भ्वा. प. अ.) ४. विश्लिष् (दि.
प. अ.) । सं. पुं., संक्षीभः, संतापः, उद्गमः,
प्ररोहः, विश्लेषः ।

उकसाना, क्रि. स. (हिं. उकसना) उक्त्तिञ्,
उदीप्, प्रोत्सह, सं-वि-शुम्, प्रचुद् (सभ
प्रे.) २. उक्त्ता-उद्गम् (प्रे.) ३. अपस
(प्रे.) । सं. पुं., उत्तेजनं, उदीपनं, उत्थापनं,
अपसारणम् ।

उक्त्, वि. (सं.) कथित, उदित, भाषित, कथित,
व्याहृत, उदीरित ।

उक्ति, सं. स्त्री. (सं.) कथनं, वचनम् २. अद्भुत-
वाच्यम् ३. संप्रतिः (स्त्री.) ।

उक्थ सं. पुं. (सं. न.) सामवेदः २. स्तोत्रं
३. प्राणः ।

उक्त्ता, सं. पुं. (सं. उक्त्) वृषभः २. सूर्यः ।

उक्त्तना, क्रि. अ. (सं. उत्खननम्) उन्मूल्,
उत्खन्, समूलं उद्दह (सभ कर्म.) २. (इड-
स्थितेः) प्रथक् भू ३. संभेः चल् (भ्वा. प.
से.) वा वृद् (दि. प. से.) ४. स्वर-ताक-
ल्युत् (दि.) भू (संगीत) ५. अपस (भ्वा.
प. अ.), विद् (भ्वा. प. अ.) ६. सौवनं वृद्
सं. पुं., उन्मूलनं, उत्खननं; संश्लेषनं; स्वर-
ताक-भंगः अपसरणं, सौवनश्रोतनम् ।

दम्—, मु., स्वरभंगः २. प्राणनिष्कामम् ।

पैर—, मु., विद्वरणं, पलायनम् ।

उक्त्तवाना, क्रि. प्रे. (हिं. उक्त्तना) अन्वयेन
उन्मूल्—उत्पट्—उत्खन्—अपसह—अच्छिद्
(सभ प्रे.) ।

उक्त्तली, सं. स्त्री. (सं. उक्त्तलम्) उद्दूलम् ।

उक्त्ता, सं. स्त्री. (सं.) स्थाली. इ. 'विष' ।

उक्त्ता, सं. स्त्री. (हिं. उक्त्तना) उन्मूलनं,
उत्पादनं, उत्खननम् ।

उक्त्ताना, क्रि. स. (हिं. उक्त्तना) उन्मूल्-
उत्पट्—उत्खन्—अपसह—अच्छिद् (सभ प्रे.)
२. सन्धि चल् (प्रे.) ३. वि-परा, चि (भ्वा.

आ. अ.) ४. अपस (प्रे.) ५. विनश् (प्रे.)
गडे मुद्दे—मु. विस्मृतकलहान् पुनः उदीप् (प्रे.) ।

उगाना, क्रि. अ. (सं. उद्गमनम्) उद्गम्
(भ्वा. प. अ.), उदि (= उक्त् + इः अ. प.
अ.), उदय् (= उक्त् + अय्, भ्वा. आ. से.)
२. स्फुट् (तु. प. से.), उद्भिद् (कर्म.) प्ररुद्
(भ्वा. प. अ.) ३. उत्पद् (दि. आ. अ.),
जन् (दि. आ. से.) । सं. पुं. उद्गमः, उदयः,
उद्भेदः, प्ररोहः, प्र-, स्फुटनम्, उत्पत्तिः (स्त्री.) ।
उगा हुआ, वि., उद्गत, उदित; उद्भिन्न, प्ररुद्;
प्र-, स्फुटित, उत्पन्न ।

उगलना, क्रि. स. (सं. उद्गिरणम्) उद्गृ (तु.
प. से.), वन् (भ्वा. प. से.), भद् (चु.) ।
२. अन्यायप्राप्तधनं प्रतिदा (जु. उ. अ.)
३. गोपनीयं प्रकाश् (प्रे.) ४. बहिष्क (त.
उ. अ.) ।

उग्र—, मु., अस्तुदं वचनं वद् (भ्वा. प. से.)

उगलवाना, क्रि. प्रे. (हिं. उगलना) वम्-
उद्गृ (प्रे.) २. अपराधं स्वीकृ (प्रे.)
३. अन्यायधनं धनं प्रतिदा (प्रे. प्रतिदापयति) ।

उगाना, क्रि. स., (हिं. उगाना) प्ररुद् (प्रे.),
(अत्रादिकं) उत्पद् (प्रे.) ३. प्रहाराय
शस्त्रादिकं उग्रम् (प्रे.) ।

उगार, सं. पुं. (सं. उद्गार >) निपीहित-
निर्गलित-निर्गलित्, जलम् ।

उगाल, सं. पुं. (सं. उद्गारः) मुक्त्स्नाकः,
लाला २. कफः, श्लेष्मन् (पुं.) ३. जीर्ण-
वस्त्रम् ।

—दान, सं. पुं., प्रतिग्राहः, पतद्ग्रहः ।

उगालना, क्रि. स. (हिं. उगालना) उद्गृ (तु.
प. से.) २. रोमंवायन् (ना. धा.) ।

उगाहना, क्रि. स. (सं. उद्ग्रहणम् >)
(कर्म ऋणं वा) समाहृ (भ्वा. उ. अ.), संम्
(जु. उ. अ.), अव-वि-सं-ति, चि (स्वा.
उ. अ.) ।

उगाही, सं. स्त्री. (हिं. उगाहना) (धनस्य)
समाहारः, संभरणं, संग्रहणं, समुच्चयनम्
२. संम्तं धनम् ३. भूमिकरः ४. ऋणादिकस्य
अंशः संग्रहणम् ५. कुसीदं, बाह्येषुचिः
(स्त्री.) ।

उग्र, वि. (सं.) प्रचंड, तीव्र, प्रबल, धीर,
रौद्र । सं. पुं. (सं.) शिवः २. विष्णुः ३. सूर्यः ।

५ आ० हि०

उभय

[६६]

उद्युलना

उभयता, सं. स्त्री. (सं.) प्रचण्डता, भयंकरता, निर्दयता, उद्वेगता ।

उभयसेन, सं. पुं. (सं.) कंसजनकः ।

उभय, सं. स्त्री. (सं.) दुर्गा, महाकाली २. कर्कशा नारी ३. वन्या ४. छिकिर्षीपथम् ।

उद्युलना, कि. अ. (सं. उद्युलनम्) उद्युल (कर्म.) अवा-वि, नृ (कर्म.) २. नद्यो-वियस्त्री, नृ ३. प्रकाश (भ्या. आ. से.) ४. रहस्यं भिद् (कर्म.) ।

उद्युलना, कि. स. (हिं. उद्युलना) उद्युल (प्रे.) अवा-वि, नृ (स्वा. उ. से.) २. नद्यो-वियस्त्री, नृ ३. प्रकट् (प्रे.) ४. रहस्यं भिद् (प्रे.) ।

उद्युल, वि. (हिं. उद्युलना) विद्युल, नाम २. प्रत्यक्ष ३. प्रकाशित ।

उद्युलन, सं. पुं. (हिं. उद्युलना) आहारः, अवलंबः. पात्रादिकस्वाधारभूतः प्रस्तरसंज्ञः ।

उद्युलना, कि. अ. (सं. उद्युलनम् >) प्रपदेन उत्स्था (भ्वा. प. अ.), पादादौण कायं उन्नम् (प्रे.) २. उत्प्लु (भ्वा. आ. अ.) ।

उद्युलना, कि. स. (हिं. उद्युलना) उद्युलना के धातुओं के प्रेरणार्थक रूप ।

उद्युल, सं. पुं. (हिं. उद्युलना) वंचकः, प्रतारकः, धूर्तः २. ग्रथि, छेदक-चौरः ।

उद्युलना, कि. अ. (सं. उद्युलनम् >) विशिलन् (दि. प. अ.), विपद् (भ्वा. आ. से.), विपुज् (कर्म.) २. विरज् (कर्म.), उपेक्ष् (भ्वा. आ. से.) ।

उद्युलना, कि. स., दे. 'बोल्ना' ।

उद्युलना, कि. स. (सं. उद्युलनम् >) विशिलन्-विषद्-वि-उद् (प्रे.) ।

उद्युल, सं. पुं. (सं. उद्युलः >) विरक्तिः (स्त्री.), पराभवः, अदासोन्म्यं, अन्यथनस्वातः । वि., उदासीन, विरक्त ।

—होना, कि. अ. निर्विद्विषद् (दि. आ. अ.) ।

उद्युल, वि. (सं.) प्रयुग्, अत्युग् २. क्रुड, कुपित ३. अर्षार ।

उद्युल, वि. (सं.), युक्त, संगत, उपपन्न ।

उद्युल, वि. (सं.) उन्नत, उच्छ्रित, उत्प्लु, तुंग, उद्युल २. उत्तम, श्रेष्ठ ।

उद्युल, सं. पुं. (सं.) निचयः, निकरः २. चयनम् ३. अन्युदयः ।

उद्युलता, सं. स्त्री. (सं.) उद्युल (चट्ट) यः, आरोहः, उत्सेधः, तुङ्गता २. श्रेष्ठत्वं, मात्तवम् ।

उद्युलन, सं. पुं. (सं. न.) विरलेपणं, पृथक् करणम् २. उपादनं, उन्मूलनम् ३. तांत्रिका-मिचारभेदः ४. विरक्तिः (स्त्री.) ।

उद्युल, सं. पुं. (सं.) भाग्यं २. पुत्रीपन ।

उद्युलण, सं. पुं. (सं. न.) उदीरणं, भाषणम् २. भाषणविधिः ।

—करना, कि. स., उद्युल-उदीर् (गे. प. स्वाह (भ्वा. प. अ.), उद्युल-उदी (भ्वा. प. अ.) ।

उद्युलित, वि. (सं.) उदीरित, उदित, भाषित, स्थाहृत ।

उद्युलित, वि. (सं.) उत्तमाधन, उद्युलितकृष्ट, उत्तमाधर, उन्नताधनत ।

उद्युलित, वि. (सं.) मंगुलीन, संवित ।

उद्युलित, सं. पुं. (सं. श्रवस्) सनुप्रमंथनजः श्वेतशौकः २. पट, शेषद-, वधिरः ।

उद्युलित, सं. पुं. (सं. न.) उत्त-पननं-प्रवन्, बलानम् ।

उद्युलित, वि. (सं.) खण्डित, कुन २. उन्मूलित ३. नष्ट ।

उद्युलित, वि. (सं.) मुक्तावशिष्ट, जुष्ट २. व्यवहृतवर । सं. पुं. मुक्तावशिष्टवस्तु (न.), जुष्टं २. मधु (न.) ।

उद्युलित, सं. पुं. (अनु.) जलादिरोधजः कासभेदः ।

उद्युलित, वि. (सं.) निरंकुश, स्वेरिन्, उद्युल, उद्युल, अक्षिष्ट, अविनाश २. उत्सृज, विधि-क्रम-नियम-विरुद्ध ।

उद्युलित, सं. पुं. (सं.) उन्मूलनं, उपादनं, विरलेपणं, खण्डनम् २. नाशः, प्रसंगः ।

—करना, कि. स., उन्मूल-उत्पद-विरिल्य-नश् (प्रे.) ।

उद्युलित, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'उद्युल' ।

उद्युलित, सं. पुं. (सं.) आहरः, पानः २. श्वासः ३. शन्यपरिच्छेदः ।

उद्युलित, सं. पुं. (सं. उत्संगः) कौटम् २. ददयम् ।

उद्युलित-कूट, सं. स्त्री. (हिं. उद्युलना-कूटना) क्रीडा, खेल, विहारः, कूटनं, क्रीडाकूटनम् २. चांचल्यं, अर्षारता ।

उद्युलित, कि. अ. (सं. उद्युलनम्) उद्युल-वल् (भ्वा. उ. से.) उत्प्लु (भ्वा. आ. अ.), उत्पद (भ्वा. प. से.) २. अत्यन्तं प्रसद

(भ्वा. प. अ.) ३. तु (भ्वा. प. से.) । सं. पुं., उच्छलनं, उत्पतनं, उत्., प्लवनं, वलिनं, प्रवः, शंभः-पा ।

उच्छाल, सं. स्त्री. (सं. पुं.) दे. 'उच्छलना'
सं. पुं. । २. प्लवनावधिः प्लुतिसंभ्रमा
३. यमचक्र ।

उच्छालना, क्रि. स. (सं. उच्छालनम्) उच्छल्
(प्रे.), उक्षिप् (तु. प. अ.) २. प्रकट् (प्रे.) ।

उच्छाह, सं. पुं. (सं. उत्साहः) उत्सुकता,
न्ययता २. हर्षः, आनन्दः ३. उत्सवः
४. रथयात्रा ।

उज्ज्वना, क्रि. अ. (सं. अज्ज्वनम् >) विजय-
निर्जन (हि.) भू २. नि-अव-पत् (भ्वा. प.
से.), संस्-अंश (भ्वा. आ. से.) ३. क्षयं या
(अ. प. अ.) ।

उज्ज्व, वि. (सं. उज्ज्व >) जह, मूढ,
अज्ञ २. असम्भ, अशिष्ट ३. उद्वेह, निरंकुश ।

उज्ज्वक, सं. पुं. (तु.) जातिविशेषः २. मूर्खः ।

उज्ज्वत, सं. स्त्री. (अ.) भृतिः (स्त्री.),
वेत्तनम् २. कर्मण्या, निष्कथः ।

उज्ज्वल, सं. स्त्री. (अ.) शीघ्रता, त्वरा ।

उज्ज्वला, वि. (सं. उज्ज्वल) श्वेत, शुक्ल, शुभ्र,
धवल, सित, धौत, गौर २. रचच्छ, निर्मल ३.
दीप्त, दिव्य, प्रकाशमान ।

उज्ज्वार, वि. (सं. उज्ज्वारित >) प्रकाश-
मान २. प्रसिद्ध ।

उज्ज्वान, सं. पुं. (हि. उज्ज्वाना) जोग-शीर्ष-
स्थानम् २. निर्जन-विजन-स्थानम् ३. वनम्,
अरध्वम् । वि., जज्वर, जीर्ण २. शून्य, विजन
३. पद्मान्त, निभृत ।

उज्ज्वाना, क्रि. स. (हि. उज्ज्वाना) निर्जनी-
शून्या, कृ., अवसर (प्रे.) २. नि-अव-पत्
(प्रे.) विज, नरा (प्रे.), प्र-वि-ध्वंस् (पे.) :
उन्मूल-उत्पाद् (तु.) ।

उज्ज्वान्, वि. (हि. उज्ज्वाना) अतिव्यथित
२. मुक्ताहस्त ।

उज्ज्वाला, सं. पुं. (सं. उज्ज्वालः) प्रकाशः,
आलोकः, भूतिः-दीप्तिः (स्त्री.) । वि., उज्ज्वल,
प्रकाशमान ।

उज्ज्वाली, सं. स्त्री. (हि. उज्ज्वाला) चन्द्रिका,
न्योत्रना । वि. उज्ज्वला, दीप्ता ।

उज्जाल, सं. पुं. (हि. उज्जाला) आलोकः,
प्रकाशः ।

उज्ज्वारी, सं. स्त्री. (हि. उज्ज्वारा) चन्द्रिका
२. प्रकाशः ३. सती शारी ।

उज्ज्विनी, सं. स्त्री. (सं.) अश्विनी, विशाला,
मालदराजधानी ।

उज्ज्वल, वि. (सं.) देदीप्यमान, प्रदीप्त,
रुचिर, भासुर २. विशद, निर्मल ३. श्वेत,
सित ४. निष्कलेक, अवलुप्त ।

उज्ज्वलता, सं. स्त्री. (सं.) दीप्तिः-काप्तिः (स्त्री.)
२. रचच्छता ३. धवलता ४. निष्कलेकता ।

उज्ज्व, वि. (सं. उत्तुंग >) शुद्धपरिमाण (वल) ।

उज्ज, सं. पुं. (सं. पुं. म.) पण-शाला-कूटी,
कूटीरः ।

उज्जना, क्रि. अ. (सं. उत्थानम्) उत्था-समुत्था
(भ्वा. प. अ.) २. उदय् (भ्वा. आ. से.),

उद-इ (अ. प. अ.), ३. उच्छल् (भ्वा. उ.
से.) ४. जागृ (अ. प. से.) ५. उत्पद्
(दि. आ. अ.) ६. सहसा आरम्भ (भ्वा. आ.
अ.) ७. सज्जीभू, उदयत् (भ्वा. आ. से.)

८. परिस्फुट (वि.) भू ९. फेलायते (ना.
आ.) १०. निष्पद्-समाप् (कर्म.) ११. (रीति
आदि) विडुप् (दि. प. से.) १२. व्यष्-

श्चित्कृष् (कर्म.) १३. विक्री (कर्म.)
१४. भित्थादयः क्रमशः निर्मा (कर्म.)

१५. गोमहिषादीनां गर्भधारणेच्छा । सं. पुं.
उत्थानं, उदयः, उत्पातः, उद्गमः, ऊर्ध्वगमनं,

अधिरोहणं, उच्छलनं, जागरणं, सहसा आरंभः,
सिद्धता, सत्त्वता, स्फुटनं, उत्प्रेकः, समाप्तिः

(स्त्री.), पिधानं, विलोपः, व्ययः, विक्रयः,
भाट्येन नियोगः ।

उठाना, सं. स्त्री. (हि. उठाना) अन्वेन
उत्था-उद्गम-उत्थम् (पे.) ।

उठाना, सं. स्त्री. (हि. उठाना) अन्वेन
उत्था-उद्गम-उत्थम् (पे.) ।

उठाने-बैठने, क्रि. वि., प्रतिक्रिया, संबन्ध ।

उठाना-बैठाना, मु., आचारः, व्यवहारः,
शीलम् ।

उठवाना, क्रि. प्रे. (हि. उठाना) अन्वेन
उत्था-उद्गम-उत्थम् (पे.) ।

उठाना-प्रा., सं. पुं. (हि. उठाना-प्रा.
गौर >) वीरः, मोवकः २. मूर्खः, कितबः ।

उठान, सं. स्त्री. (सं. उत्थानम्) समुत्थानं,
उद्गमनम् २. वृद्धिः (स्त्री.) ३. आरम्भः
४. व्ययः ।

उठाना, क्रि. स. (हि. उठना) उठना के धातुओं के प्रेरणार्थक रूप वनाथै ।

उठाव, सं. पुं. (हि. उठाना) अर्थः २. उन्नतताः ।

उठौनी, सं. स्त्री. (हि. उठाना) उन्नयनं, उत्क्षेपणम् २. उस्थापनमूल्यम् ३. प्राग्दत्तं मूल्यम् ४. वणिग्भिः उद्धारः ५. देवपूजायै प्रथम्युक्तं धनम् ६. मृतस्यास्थिचदनरीतिः (स्त्री.) ६. मृत्योर्द्वितीये तृतीये वा दिने संबंधिपुरुषस्य उष्णीषपरिधापनरीतिः (स्त्री.) ।

उठकू, वि. (हि. उठना) गगनगामिन् २. चल ।

उठद, सं. पुं. (सं. ऋद्ध >) दे. 'उरद' ।

उठनखटोला, सं. पुं. (हि उठना + खटोला) विमानम्, वायुयानम् ।

उठनछू, वि. (हि. उठना) उन्नत, अद्भुत ।

उठना, क्रि. अ. (सं. उड्डयनम्) उड्, डी (भ्वा. तथा दि. आ. से.), उत्पत् (भ्वा. प. से.), खे विसृप् (भ्वा. प. अ.) २. स्रवरं गन् ३. तिरीभू, अन्तर्धा (कर्म.) ४. (स्रु-द्गादि) महाशब्देन विभिद् (कर्म.) ५. विप्र-सृप् (भ्वा. प. अ.) ६. प्रचल-प्रचर् (भ्वा. प. से.) ७. अभिमन् (दि. आ. अ.) ८. उन्-वि-सृज् (कर्म.) ९. मलिनो भू १०. वायौ श्वस्ततः स्फुर् (तु. प. से.) ११. सहसा विच्छिद्य् (कर्म.) १२. वञ् (जु.) १३. वल् (भ्वा. प. से.) । सं. पुं., दे. 'उड्डान' ।

उठतो खबर, सं. स्त्री. (हि + अ.) कियदती ।

उडाक, वि. (हि. उडाना) दे. 'उडकू' २. अतिव्यथिन्, अतिमुक्तहस्त ।

उडाका, वि. (हि. उडना) दे. 'उडकू' २. वायुयानचालकः ।

उडान, सं. स्त्री. (सं. उड्डयनम्) डयनं, उत्प-तनं, खे विसर्पणम् २. प्लुतिः (स्त्री.) ३. पला-यनम् ४. प्रकोष्ठः ।

उडाना, क्रि. स. (हि. उडना) 'उडना' के धातुओं के प्रे. रूप । २. उर् (जु.) ३. अपसृ (प्रे.) ४. अपव्यथ् (जु.) ५. तट् (जु.) ६. वाक्यलं कृ ७. ध्मा (भ्वा. प. अ.) ८. विलुम् (प्रे.) ।

उडिया, वि. (हि. उडौसा) उत्कलः २. उत्कल-पान्तवासिन् ३. उत्कलभाषा ।

उडौसा, सं. पुं. (सं. ओडूदेशः) उत्कलः, उत्कलप्रान्तः ।

उडुंघर, सं. पुं. (सं.) दे. 'गूलर' २. देहली, गृहावग्रहणी ३. द्वानः, नपुंसकः ४. कुष्ठरो-गभेदः ।

उडू, सं. पुं. (सं. स्त्री. न.) नक्षत्रं, तारका २. तारासमूहः, राशिः ३. पक्षिन् ४. नाविकः ५. जलम् ।

—गण, सं. पुं. (सं.) तारासमूहः ।

—पति,—राज, सं. पुं. (सं.) चन्द्रः, इन्दुः ।

उडूप, सं. पुं. (सं. उडुपः-पम्) ध्रुवः, तरणः, तारणः, तारकः २. नीका ३. चन्द्रः ।

उडेलना, क्रि. स. दे. 'उडेलना' ।

उडुयन, सं. पुं. (सं. न.) नभोगतिः (स्त्री.), दे. 'उड्डान' ।

उडुथिमान, वि. (सं.) उडुयनविशिष्ट, खे विसर्पत् (शतृ.) ।

उडुंग, वि. (सं. उडुंग) उच्छ्रित २. श्रेष्ठ ।

उतना, वि. (हि. उत >) तावत् (-तो स्त्री.) । क्रि. वि., तावत् (न.), तावन्मात्रम् ।

—भी, तावदपि, हावन्मात्रमपि ।

उतरन, सं. स्त्री. (सं. अवतरणं >) जीर्ण-अव-तारित, वरुम् ।

उतरना, क्रि. अ. (सं. अवतरणम्) अवतृ-अव-पत् (भ्वा. प. से.), अत्रोगम्-अवगम् (भ्वा. प. अ.) २. परिशि (कर्म०), हसृ (भ्वा. प. से.) ३. (नस आदि का) रधिः नल् (भ्वा. प. से.), विशंधा (कर्म०) ४. (रंग) विवर्णी भू, म्लं (भ्वा. प. अ.) ५. (क्रोधादि) शम् (दि. प. से.), स्वपगन् ६. (डेर करना) वसृ-रथा (भ्वा. प. अ.), ७. (तस्वीर) आलो-कलेख्यं अंक् (कर्म०) ८. सहसा विश्लिष् (दि. प. अ.) ९. (बल्गादि) उन्मुच्-अवतृ-अपनी (कर्म.) १०. जन् (दि. आ. से.), अवतारं घृ (प्रे.) ११. (पकना) पन् (कर्म.) ।

क्रि. स., (सं. उतरणम्) स-उत्, तृ; उत्, लंत् (भ्वा. आ. से.) । सं. पुं., अवतारः, अवतरणः; अधीगमनं; हासः; विगंधानं; विवर्णी-मावः; ग्लानिः (स्त्री.); उपशयः; आलोक-लेख्यांकनं; सहसा विश्लेयः; अपनयनं; देह-धारणं; पचनं, सं-उत्, तरणं उल्लंघनम् ।

उतरकर सु. हीन क्त ।

उतरा

[६९]

उत्तर

चित्त से—, मु. विस्मृ (कर्ग.) २. अप्रिय (वि.) भू ।

चेहरा—, मु. ग्लानमुख (वि.) भू !

उतरा, वि. (हि. उतरना) अवतीर्ण २. ग्लान ३. क्षिप्र ४. धृत्यक्त (वस्त्र) ।

उतरार्ह, सं. स्त्री. (हि. उतरना) अवतरणं, प्रयोगगन् २. उतरणम् ३. आतारः, तरण्यम् ४. अवसर्पिणी भूमिः (स्त्री.) ५. गिरि-नितम्बः ।

उतराना, क्रि. अ. (सं. उत्तरणम्) प्लु (भ्वा. आ. अ.), नृ (भ्वा. प. से.) २. कथ-तप-पन् (कर्म.) ३. निरन्तरं अनुगम ४. भास् (भ्वा. आ. से.) ५. अन्येन + अवत आदि कं प्रे. रूप ।

उतरायल, वि. (हि. उतारना) अवतारित, त्यक्त, जीर्ण (वस्त्रादि) ।

उतान, वि. (सं. उत्तान) ऊर्ध्वमुख (-स्त्री स्त्री), अवप्रक्षालयिन्, उत्तानशय ।

उतार, सं. पुं. (सं. अवतारः) अवतरणं, नीचै-र्गमनम् २. प्रावण्यं, अवसर्पिणी भूः (स्त्री.) ३. अवतरणोचितं स्थानम् ४. क्रमशः क्षयः ५. तीर्थम् ६. क्षीयमाणा वेला ७. निकृष्ट ८. शान्तिकरः उपहारः ९. प्रतिविधम् ।

—चढाव, सं. पुं., आरोहावरोहौ २. लाभालाभौ ३. पातोत्पातौ ४. अश्वेयम् ।

उतारत, सं. पुं. (हि. उतारना) दे. 'उतरायल' २. निकृष्ट-तुच्छ-त्याज्य, -वस्तु-पदार्थः ।

उतारना, क्रि. म. (हि. उतरना) 'उतरना' के धातुओं के प्रे. रूप ।

उतारा, सं. पुं. (सं. अवतारः) निवेशः, समा-वासः २. अव-सं-स्थितिः (स्त्री.) ३. उच्-लंबनं ४. अवतरण-निवेश, स्थानम् ५. प्रे-त-वाधानाशकः उपचारभेदः, तदर्थं वस्तुजातं वा ।

उतारु, वि. (हि. उतरना) सन्नद्ध, सज्ज, सिद्ध ।

उतावला, वि. (सं. उत्तर) आशुकारिन्, सत्वर, अचिल्विन्, २. अविमृश्यकारिन् ३. उत्सुक ।

उतावली, सं. स्त्री. (सं. उत्तरा) त्वरा, तूर्णः (स्त्री.), शीघ्रता, क्षिप्रता, वेगः २. व्यग्रता, चांचल्यम् । वि. स्त्री., सत्वरा, आशुकारिणी २. असमीक्ष्यकारिणी ३. उत्सुका ।

उतृण, वि., दे. 'उत्तृण' ।

उत्कंठा, सं. स्त्री. (सं.) उत्कलिका, लालसा, तीव्रभिलाषः २. संचारिभावभेदः (सा.) ।

उत्कंठित, वि. (सं.) उत्क, उन्मनस्, उत्सुक ।

उत्कंठिता, सं. स्त्री. (सं.) प्रियमिलनोत्सुक-नायिका ।

उत्कंधर, वि. (सं.) उत्कण्ठ, उद्ग्रोव ।

उत्कट, वि. (सं.) तीव्र, प्रचंड, उग्र, दुःसाह ।

उत्कर्ष, सं. पुं. (सं.) महिम्न (पुं.), महर्षे, २. श्रेष्ठता ३. समृद्धिः (स्त्री.) ४. व्याक्षेपः विलंबः, ५. आतिशयः ।

उत्कल, सं. पुं. (सं.) दे. 'उद्धीसा' २. व्याधः ।

उत्कीर्ण, वि. (सं.) उन्, लिखित २. छिन्न, विद्ध ३. पाषाणकाष्ठादिषु लिखित ।

उत्कृष्ट, वि. (सं.) प्रकृष्ट, प्रशस्त, उत्तम, श्रेष्ठ ।

उत्कृष्टता, सं. स्त्री. (सं.) महत्त्वं, श्रेष्ठता, प्रकर्षः ।

उत्कोच, सं. पुं. (सं.) दे. 'धूँस' ।

उत्तप्त, वि. (सं.) परि-प्र-सं-तप्त, अत्युष्णीकृत २. क्षुब्ध, दुःखित ३. क्रुद्ध ।

उत्तम, वि. (सं.) श्रेष्ठ, विशिष्ट, वरेण्य, प्रवर (टि. इती अर्थ में समासान्त में पुंगव, ऋषभ, व्याघ्र, सिंह, शार्ङ्ग, इन्द्र आदि; जैसे—नरों में उत्तम = नर-पुंगव-शार्ङ्गलः इ.) ।

उत्तमना, सं. स्त्री. (सं.) श्रेष्ठता, उत्कृष्टता, गुणान्निशयः, विशिष्टता ।

उत्तमर्ण, सं. पुं. (सं.) ऋणदः, ऋणदातृ ।

उत्तमा, वि. स्त्री. (सं.) भद्रा, साध्वी, श्रेष्ठा ।

सं. स्त्री. (सं.) १-२. नायिका-दूती-भेदः ।

उत्तमांग, सं. पुं. (सं. न.) शिरस (न.) दे. 'सिर' ।

उत्तमार्द्ध, -र्ध, सं. पुं. (सं. पुं. न.) उत्कृष्ट, -अर्द्धः—अर्द्धम् २. उत्तर, -अर्द्धः—अर्द्धम् ।

उत्तमोत्तम, वि. (सं.) सर्वोत्तम, महत्तम ।

उत्तर, सं. पुं. (सं. उत्तरा) उदीची, उत्तर, दिशा-आशा, कौबेरी ।

—अयनं, (= उत्तरायणम्) सं. पुं. (सं. न.) माघादिषण्मासात्मकः 'मूर्त्यस्योत्तरदिगमनकालः २. कर्कसंक्रान्तिः (स्त्री.) ।

—की ओर, क्रि. वि., उत्तराभिमुखं, उत्तरेण, उत्तरदिशि; उत्तरतः (षष्ठी के साथ), उत्तरं (पंचमी के साथ) ।

उत्तर

[७०]

उत्पादन

—की ओर मुखवाला, वि., उदङ्मुख (—खी खो.) ।
 —पश्चिम, सं. पुं., उत्तरपश्चिमा, वायवी (दिशा) ।
 —पश्चिमी, वि., वायव, वलुदिकस्थ ।
 —पूर्व, सं. पुं., उत्तरपूर्वा, पूर्वोत्तरा, प्रागुत्तरा, प्रागुत्तरी, येशानी ।
 —पूर्वी, वि. पूर्वोत्तर, प्रागुत्तर, प्रागुत्तरी, पूर्वोत्तरस्थ ।
 —संबंधी, वि. उदाध्य, उदाचोच, उत्तरस्थ ।
 उत्तर, सं. पुं. (सं. न.) प्रतिवचनं, प्रतिवाच्यं, प्रत्युक्तिः-प्रतिवाचु (खां.) २. प्रत्युत्तरम् ३. प्रति (ती) कारः ४. अक्षकारभेदः (सा.) ।
 —दायित्व, सं. पुं. (सं. न.) प्रतिपाध्यता, प्रष्टव्यता, भारः, अनुयीच्यता ।
 —दायी, वि. (सं. यिन्) प्रष्टव्य, अभियोज्य अनुयीच्य, प्रतिवाच्य, उत्तरदातृ ।
 उत्तर, वि. (सं. सर्व.) पर, अपर, अवर, अन्य २. अंगाम, घरम ३. उत्तरोक्त ४. गरी-यता, ज्यायसु ।
 —अधिकार, सं. पुं. (सं.) अंशित्वं, दायादत्वं, रिक्थहरत्वम् ।
 —अधिकारी, सं. पुं. (सं. रिन्) दायादः, रिक्थ-हरः-भागिन्, रिपिधन्, अंशहरः, अंशिन् । (खां. दायादः, अंशहरी) ।
 —अर्द्ध, सं. पुं. (सं. पुं. न.) अपर-पर अवर, अर्द्ध-अर्द्धम् ।
 —उत्तर, क्रि. वि. (सं. न.) अधिकाधिकं, २. अद्ये ३. अनुपूर्वशः, आनुपूर्व्येण ४. क्रमशः ५. निरन्तरम् ६. प्रतिदिनम् ।
 —पच, सं. पुं. (सं.) सिद्धान्तः, समाधिः ।
 —मीमांसा, सं. स्त्री. (सं.) वेदान्तदर्शनम् ।
 उत्तरण, सं. पुं. (सं. न.) संतरणम्, उल्लंघनम्, समुत्तरणम्, परायागम् ।
 उत्तरा, सं. स्त्री. (सं.) उत्तरा दिक् (स्त्री.), कौबेरी, उदीची, २. अभिमन्युपत्नी ।
 —खंड, सं. पुं. (सं. पुं. न.) हिमालयसमीप-वती भारतवर्षस्योत्तरभागः ।
 उत्तराभास, सं. पुं. (सं.) अस्त्योत्तरं, मिथ्या-प्रतिवचनम् । २. व्यञ्जः, मिषं, छलम् ।
 उत्तरीय, सं. पुं. (सं. न.) बृहत्तिका, संव्यानं,

प्रावा(व)रः । वि., उपरिस्थ, ऊर्ध्व, उपरितन २. दे. 'उत्तरसंबंधी' ।
 उत्तान, वि. (सं.) दे. 'उतान' २. गाभीरहित ३. ऊर्ध्वतल ।
 —पाद, सं. पुं. (सं.) भ्रुवपिचु ।
 उत्तीर्ण, वि. (सं.) पारंगत २. मुक्त ३. परी-क्षायां सफल ।
 उच्छ्वा, वि. (सं.) अस्तुच्च, अतीर्णतः, प्राग्, अस्तुच्छित ।
 उत्तेजक, वि. (सं.) उद्योग, प्रोत्साहक, प्र-दक, प्रेरक २. विकारोत्पादक ३. संक्षोभक ।
 उत्तेजन, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'उत्तेजना' ।
 उत्तेजना, सं. स्त्री. (सं.) प्रेरणा, प्रोत्साहः, उदीपनं २. संक्षोभणम् ३. मनोवेनात्पादनम् ।
 उत्तोलन, सं. पुं. (सं. न.) उत्थापनं, उत्कर्ष-णम् २. तोलनं, तुल्यता भारपोषणम् ।
 उत्थान, सं. पुं. (सं. न.) उद्वरणम्, उत्पत्तनम् २. गारम्भः ३. उन्नतिः (स्त्री.) ४. सैन्यम् ५. तुष्टम् ६. पौन्यम् ७. हयः ।
 उत्थापन, सं. पुं. (सं. न.) उत्तोलनं, उन्नयनम् २. विधूतनम्, वेहनम् ३. वि-प्र-बोधनम् ।
 उत्थित, वि. (सं.) कुलीस्थान, उदगत २. उत्पन्न ३. प्रोषत ४. वृद्धिम् ५. जागरित ।
 उत्पत्ति, सं. स्त्री. (सं.) उदगमः, उदभवः, जन्म (न.) २. संसार ३. आरम्भः ।
 उत्पन्न, वि. (सं.) जात, लभ्यः ।
 उत्पल, सं. पुं. (सं. न.) कमलम् २. नील-कमलं, सुपल्लवं, सुवलं, कुवेनं, रात्रिपुष्पं ३. अलजपुष्पमात्रम् ४. पुष्पम् ।
 उत्पलिनी, सं. स्त्री. (सं.) कमल-उत्पल-निकरः-समूहः २. कमलिनी ।
 उत्पादन, सं. पुं. (सं. न.) उन्मूलनम् ।
 उत्पाटित, वि. (सं.) उन्मूलित २. अपनीत ३. सिंहासनात् अवपातित ।
 उत्पात, सं. पुं. (सं.) अजन्यं, उदभवः, आपद् (स्त्री.) २. कौलाहलः, उग्रः ३. विध्वंसः ।
 उत्पाती, सं. पुं. (सं. तिन्) उत्पात-उपद्रव-संक्षोभ, करः-कारिन्, कुमेष्टवः, लोकदण्डकः ।
 उत्पादक, वि. (सं.) जनक, उत्पादयितृ ।
 उत्पादक, सं. पुं. (सं. न.) जननं, प्रसवः, प्रसूतिः (स्त्री.) ।

उत्पीडन, सं. पुं. (सं. न.) पीडनं, अर्द्धनं, प्रायनं, चिकारः ।
 उत्प्रेक्षा, सं. स्त्री. (सं.) आरोपः उदभावना २. अर्थालंकारभेदः (सा.) ३. अनवधानम् ।
 उत्फुल्ल, वि. (सं.) विकसित २. प्रसन्न ।
 उत्सव, सं. पुं. (सं.) प्रसवार्थं, दे. 'शरणा' ।
 उत्सव्य, सं. पुं. (सं.) अंकः, क्रोडम् २. नद्य-भागः ३. सानुः ४. सौधादीनामुपरिभागः ५. विरक्तः ।
 उत्सर्ग, सं. पुं. (सं.) परि- , त्यागः, विरार्जनम् २. दानं, वितरणम् ३. समाप्तिः (स्त्री.) ४. व्यापकनियमः ।
 उत्सर्जन, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'उत्सर्ग' ।
 उत्सव, सं. पुं. (सं.) गहः, शृणः, उद्वेगः, द्वात्र्य, पर्यन् (न.) ।
 उत्साह सं. पुं. (सं.) विद्यवेतिका, औत्सुक्यं, ध्ययनः २. उद्यमः, अन्वयसाधः ३. साहसं, वीर्यम् ।
 उत्साही, वि. (सं.) हन्) सोसाह, उत्सव्वन्त, अत्रसुख २. उद्यमिन्, अध्यवसायिन् ३. शह, वीर ।
 उत्सुक, वि. (सं.) उत्कंठ, सोत्कंठ, लालस, सोत्साह, विलंबासहित्णु ।
 उत्सुकता, सं. स्त्री. (सं.) औत्सुक्यं, क्लृप्तलं, व्यग्रता, लालसा, कौतुकम् ।
 उत्सृष्ट, वि. (सं.) त्यक्त, समुञ्जित ।
 उथल-पुथल, सं. स्त्री. (हि. उथलता) क्रम-भंगः, ध्वस्तिक्रमः, व्यस्तता, विपर्ययः, अन्य-वस्था । वि., क्रम-व्यवस्था, हीन, अव्यवस्थित, विपर्यस्त ।
 उथला, वि. (सं. उथल) गद्य, उत्तान, अत्य-गाध, जल-नीय ।
 उदंत, सं. पुं. (सं.) समाचारः, वृत्तान्तः, वार्ता २. सज्जनः ।
 उदक, सं. पुं. (सं. न.) जलं, पानीयम् ।
 —क्रिया, सं. स्त्री. (सं.) तिलांजलिः २. तर्प-णम् ।
 उदकान्त, सं. पुं. (सं.) नीरं, तटम् ।
 उदधि, सं. पुं. (सं.) समुद्रः, सागरः २. घटः ३. मेघः ।
 —सुत, सं. पुं. (सं.) नन्दः २. अमृतम् ३. शंसः ४. कनकम् ५. सागरजः (पदार्थः) ।

—सुता, सं. स्त्री. (सं.) लक्ष्मीः २. शुक्तिका ।
 उदय, सं. पुं. (सं.) ऊर्ध्वगमनं, उद्गमः, उदय-नम्, उदयानम् ।
 —होता, क्रि. अ., उदया-उद इ (अ. प. अ.), उद अय् (भ्वा. आ. से.), उदगम् ।
 —अचल, सं. पुं. (सं.) उदय, गिरिः अद्रिः, पूर्वे-पर्वतः-अचलः ।
 उदयास्त, सं. पुं. (सं. स्त्री) अस्तोदयौ, उद-यास्तनने । क्रि. वि. प्रातरारम्भं सायं यावत्, सर्वं दिनम् ।
 उदर, सं. पुं. (सं. न.) तुन्दं, कुक्षः, कुक्षिः, पिच्छः २. आमाशयः, पक्षाक्षिवाः, ३. मध्य-भागः देशः, अन्तरं, गर्भः ।
 —ज्वाला, सं. स्त्री. (सं.) जठर, अमलः-अग्निः २. कुवा, बुभुक्षा ।
 उदात्त, वि. (सं.) उच्चैरुच्चारित (स्वर) २. सद्यः, कृपालु ३. दातृ, उदार ४. श्रेष्ठ ५. विशुद्ध, स्पष्ट ६. समर्थ । सं. पुं. (सं.) वेदमंत्रोच्चारणे उच्चस्वरः २. अलंकारभेदः (सा.) ।
 उदार, वि. (सं.) दान, शील-शील, बहुप्रद, वदान्य, त्यागशील २. श्रेष्ठ ३. महादय ४. सरल ।
 उदारता, सं. स्त्री. (सं.) वदान्यता, त्यागिता, औदार्यं, त्यागः २. साहाय्यम् ३. सुशीलं, श्रुजुता ।
 उदास, वि. (सं.) विवृत्त, अवसन्न, म्लान, विषण्ण २. उदासीन, विरक्त ३. तटस्थ, निष्पक्ष ।
 —होना, क्रि. अ., विषद् (भ्वा. प. अ.), दुर्म-नायते (ना. धा.) ।
 उदासी, सं. स्त्री. (सं. उदास >) अवसादः, म्लानिः-म्लानिः (स्त्री.) श्लेधः, दीर्घनश्यम् २. विरागः, वैराग्यम् ३. निष्पक्षता, तटस्थता । सं. पुं., सन्यासिन, विरक्तः, साधुसंप्रदाय-भेदः ।
 उदासीन, वि. (सं.) विरक्त, निस्स्पृह, प्रपंच-रहित २. मध्यस्थ, तटस्थ, समभाव ३. रुक्ष-निस्सनेह ।
 उदासीनता, सं. स्त्री. (सं.) विरक्तिः (स्त्री.) २. तटस्थता ३. श्लेधः, अवसादः ।
 उदाहरण, सं. पुं. (सं. न.) निदर्शनं, दृष्टान्तः

उदाहृत

[७२]

उद्भट

उदाहृत, वि. (सं.) वर्णित, कथित २. दत्त-
दृष्टान्त ।
उदित, वि. (सं.) उद्गत, उत्थित, उदयित
२. प्रकट, स्पष्ट ३. उज्ज्वल, विशद ४. कथित,
उक्त ।
उदीक्षण, सं. पुं. (सं. न.) ऊर्ध्वावलोकनम् ;
२. वीक्षणम् ।
उदीची, सं. स्त्री. (सं.) उत्तरदिशा ।
उदीच्य, वि. (सं.) उत्तरदिगवासिन् २. दे.
उत्तरसंबन्धिन् ।
उदीप, सं. पुं. (सं.) संप्लवः, जलविप्लवः ।
उदीयमान, वि. (सं.) उद्गच्छत्, उग्रमत् ।
उदुंबर, सं. पुं. (सं.) क्षीरवृक्षः; सदाफलः,
जन्तुकलः, दे. 'गूलर' २. क्षीरवृक्षफलम् ३.
देहली ४. नर्पुसकः ५. कुष्ठभेदः ।
उद्गत, वि. (सं.) उदित, उरिथत २. प्रकट
३. व्याप्त ४ वान्त ५. लब्ध ।
उद्गम, सं. पुं. (सं.) उदयः, उत्थानं, उद्ग-
मनं, आविर्भावः, ऊर्ध्वगमनं २. उद्गमस्थानं,
प्रभव, चोनिः (स्त्री.) ।
उद्गाता, सं. पुं. (सं. नृ.) सामवेदगः, साम-
गायकः ३. सामवेदज्ञः ।
उद्गार, सं. पुं. (सं.) तरलपदार्थस्य सहसा
निस्सरणं, उद्गमनं, स्रावो वा । २. वमनं,
प्रच्छदिका ३. सवेगं निःसृतः तरलपदार्थः,
वान्मवस्तु (न.) ५. लाला, मुखस्रावः ६ उद्-
वमः, उत्क्षेपः, ७. आधिक्यम् ८. घोर-तुमुल-
शब्दः ९. अद्भुतभावानां उद्घटं प्रकाशनम्
१०. इत्थं प्रकाशिता भावाः ।
उद्गीथ, सं. पुं. (सं.) सामगावविशेषः
२. ओंकारः ३. सामवेदः ।
उद्घादन, सं. पुं. (सं. न.) अपा-धि-वरणम्,
अनुग्रहं, निरर्पणीकरणम् २. प्रकाशनं, प्रकटी-
करणम् ।
उद्घंड, वि. (सं.) उद्भट, दुःशील, अविनीत,
साहसिकं, तीक्ष्णकर्मन् २. कलहप्रिय ।
उद्दाम, वि. (सं.) बंध-बंधन-पाश-रहित २.
निरंकुश, अनर्गल, उच्छृंखल ३. स्वतंत्र ।
उद्दालक, सं. पुं. (सं.) ऋषिधिशेषः २. व्रत-
प्रकारः ।
उद्दिष्ट, वि. (सं.) निर्दिष्ट, संकेतित २. लक्ष्य,
अभिप्रेत ।

उद्दीपक, वि. (सं.) उत्तेजक, प्रेरक, संशोभक
२. दाहक, तापक, दीपन ।
उद्दीपन, सं. पुं. (सं. न.) उत्तेजनं, प्रोत्सा-
हनं, प्रकोपनं, प्रेरणम् २. उत्तेजकपदार्थः
३. विभावभेदः (सा.) ४. तापनं, दहनम् ।
उद्दीप्त, वि. (सं.) भास्वर, भास्वर २. प्रज्वलित ।
सं. पुं., पुग्गुलः, देवधूपः ।
उद्देश, सं. पुं. (सं.) इच्छा, अभिलाषः
२. आशयः, अभिप्रायः ३. कारणं, हेतुः
४. प्रतिज्ञा (न्या.) ।
उद्देश्य, वि. (सं.) लक्ष्य, काम्य, स्तुष्टनीय ।
सं. पुं. (सं. न.) प्रयोजनं, अभिप्रेतोऽर्थः २.
बहुद्दिश्य विधेयप्रवृत्तिः भवति, तत् (न्या.) ।
उद्भट, वि. (सं.) उग्र, चंड, दे. 'उर्द' ।
२. प्रगल्भ, विशिष्ट ।
उद्भरण, सं. पुं. (सं. न.) उत्थानं, उद्गमनम्
२. मुक्तिः (स्त्री.) ३. उन्नतिः (स्त्री.)
४. पाठस्यावृत्तिः (स्त्री.) ५. उद्भूतवाक्यम्
६. लम्बूलनम् ७. उत्थापनम् ८. वसनम् ।
उद्भव, सं. पुं. (सं.) दे. 'उत्भव' २. श्रीकृष्ण-
मित्रम् ।
उद्धार, सं. पुं. (सं.) निर्वाणं, मुक्तिः (स्त्री.)
२. दुःखनिवृत्तिः (स्त्री.) ३. उन्नतिः (स्त्री.)
४. ऋणमुक्तिः ५. दायस्यांशविशेषः (मनु.)
६. ऋणम् ७. सुद्वे संतितद्रव्यस्य राज्याशयः
पद्मोऽशः ८. सुहो ।
—करना, कि. स., उद्. ह (भ्वा. प. अ.),
मोक्ष् (नृ.), निरन् (प्रे.), उर्वा (भ्वा.
उ. अ.) ।
—होना, कि. अ., मुच् (वर्म.) ।
उद्भूत, वि. (सं.) अव्यतिरित, उपन्यस्त.
उपनीत, उदाहृत २. उर्जीत, उत्थापित
३. उद्योगी ।
—करना, कि. स. उपन्यस् (टि. प. से.)
उद्. ह (भ्वा. प. अ.) ।
उद्बुद्ध, वि. (सं.) विकसित, प्रफुल्ल
२. ज्ञानिन् ३. जागरित ।
उद्बोधन, सं. पुं. (सं. न.) ज्ञापनम्
२. प्रकाशनम् ३. उत्तेजनम् ४. जागरणम् ।
उद्भट, वि. (सं.) प्रबल, उग्र २. श्रेष्ठ
३. महात्मन् ।

उद्भव

[७३]

उद्भति

उद्भव, सं. पुं. (सं.) उत्पत्ति-सृष्टिः (स्त्री.)
जन्मन् (न.) २. वृद्धि-रफ़ीतिः (स्त्री.) ।

—स्थान, सं. पुं. (सं. न.) योनिः (स्त्री.),
प्रभवः ।

उद्भाव, सं. पुं. (सं.) उदभवः २. कल्पना
३. औदार्यम् ।

उद्भावना, सं. स्त्री. (सं.) उद्धाननं, कल्पनं,
कल्पितं, उद्भावितं, कल्पना २. उत्पत्तिः
(स्त्री.) ।

उद्भास, सं. पुं. (सं.) कान्ति-दीप्तिः (स्त्री.)
२. प्रकाशः, आलोकः ।

उद्भिज्ज, सं. पुं. (सं.) तरुगुल्मादिः, उद्भिद्
(पौन प्रकार के उद्भिज्ज-तरु, गुल्माः, लता,
वह्नी, वृणम्) ।

उद्भिद्, (सं. पुं.) अंकुरः, प्ररोहः २. ओषधि-
र्था (स्त्री.), वृक्षकः ३. जलप्रपातः, निर्झरः
४. जलयन्त्रम् ।

उद्भूत, वि. (सं.) जात, उत्पन्न ।

उद्भेदन, सं. पुं. (सं. न.) त्रोटनं, भंजनम्
२. उद्भिध निर्गमनम् ।

उद्यत, वि. (सं.) मज्ज, उद्युक्त, सिद्ध, उपकल्प, सन्नद्ध २. उत्थापित ।

उद्यम, सं. पुं. (सं.) उद्योगः, उत्साहः, अभ्य-
वसायः, प्रयत्नः, आयासः २. आ-उप-जीविका ।
—करना, क्रि. स., जेष्ट-प्रयत्न (भ्वा. आ. से.)
उद्यन् (भ्वा. प. अ.), व्यन् (दि. प. अ.) ।

उद्यमी, वि. (सं. गिन्) उद्योगिन्, उद्युक्त,
व्यवसायिन् ।

उद्यान, सं. पुं. (सं. न.) उपवनं, आरामः ।

उद्योग, सं. पुं. (सं.) दे. 'उद्यम' ।

उद्योगी, वि. (सं. गिन्) दे. 'उद्यमी' ।

उद्योत, सं. पुं. (सं. उद्योतः) आलोकः
२. शक्तिः (स्त्री.) ।

उद्वेक, सं. पुं. (सं.) वृद्धिः-उन्नतिः (स्त्री.)
२. आधिभयं, बहुत्वम् २. अलंकारभेदः (सा.) ।

उद्वाह, सं. पुं. (सं.) विवाहः ।

उद्भिप्र, वि. (सं.) आ-न्या, कुल, संभ्रांत,
अधीर, व्यस्त-विक्षिप्त, चित्त, व्यग्र, कातर ।

उद्भेग, सं. पुं. (सं.) उद्भिप्रता, न्याकुलता
२. मनाधिकः, आवेगः ३. विरहजं दुःखम् ।

उध्वना, क्रि. अ. (सं. उद्वरणम् >) स्फुट्

(तु. प. से.), भिद्-विद् (कर्म.) २. सोवनं
भिद् (कर्म.) ।

उधर, क्रि. वि. (सं. अमुत्र ?) तत्र, तत्स्थाने
२. तत्स्थानं प्रति ।

उधार, सं. पुं. (सं. उद्धारः) ऋणं, धनप्रयोगः
२. आविहितकालात् द्रव्यप्रयोगः ३. मुक्तिः
(स्त्री.) ।

—सुकाना, क्रि. स. ऋणं शुध् (प्रे.), आनृण्य
गम् ।

—लेना, क्रि. स., ऋणं कृ अथवा भृद् (क.
उ. से.) ।

उधेडना, क्रि. स., (हिं. उधेडना) स्तरं निहै
(भ्वा. उ. अ.) २. सोवनं भिद् (र. उ. अ.)
२. विकृ (तु. प. से.) ।

उधेड-डुन, सं. स्त्री. (हिं. उधेडना + डुनना)
धिन्ता, विमर्शः, उद्वापोहः २. उपायकल्पना ।
उन, सर्व. (हिं. उस) तद्-अदस् (सर्व.) ।

उनचास, वि. (सं. ऊनपञ्चाशत् स्त्री. एक.)
एकोनपञ्चाशत्-एकात्रपञ्चाशत्-नवचत्वारिंशत्
(स्त्री. एक.) । सं. पुं., उक्ता संख्या तद्वत्त्रो-
कावकौ (४९) च ।

उनतालीस, वि. (सं. ऊनचत्वारिंशत् स्त्री.
एक.) एकोनचत्वारिंशत्-नवचत्वारिंशत् (स्त्री.) ।
सं. पुं., उक्ता संख्या तद्वत्त्रोकावकौ (३९) च ।

उनतीस, वि. (सं. ऊनत्रिंशत् स्त्री. एक.)
एकोनत्रिंशत्-नवचत्वारिंशत् (स्त्री.) । सं. पुं.,
उक्ता संख्या तद्वत्त्रोकावकौ (२९) च ।

उनसठ, वि. (सं. ऊनपष्टिः स्त्री. एक.) एको-
नपष्टिः नवचत्वारिंशत् (स्त्री. एक.) । सं. पुं.,
उक्ता संख्या तद्वत्त्रोकावकौ (५९) च ।

उनहत्तर, वि. (सं. ऊनसप्ततिः स्त्री. एक.)
एकोन (एकात्र)-सप्ततिः-नवचत्वारिंशत् (स्त्री. एक.) ।
सं. पुं., उक्ता संख्या तद्वत्त्रोकावकौ (६९) च ।

उनासी, वि. दे. 'उत्रासी' ।

उनींदा, वि. (सं. उन्निद्र) निद्रा-, आकूल-वश-
अभिभूत ।

उन्न, वि. (सं.) आर्द्र, क्लिन्न, जलसिक्त
२. दयार्द्र, दयालु ।

उन्नत, वि. (सं.) उदगत, उच्चैर्गत, उच्च, तुंग
२. समृद्ध ३. श्रेष्ठ ।

उन्नति, सं. स्त्री. (सं.) उन्नतः, तुंगता
२. समृद्धिः (स्त्री.), अभ्युदयः ।

उच्चाय

[७४]

उपचार

उच्चाय, सं. पुं. (अ.) कोलं, कुपलं, सीवीरम् ।
उच्चायक, वि. (सं.) उन्नेदु, उत्कर्षक २. वद्धक,
अभ्युदयशापक ।

उच्चासी, वि. (सं.) उन्नाशीतिः (स्त्री. एक.)
एकोदाशीतिः नवत्सप्ततिः (स्त्री. एक.) । सं. पुं.
उत्तना संख्या, तदंकी (७९) च ।

उच्चिद्र, वि. (सं.) सिद्धारहित २. विकसित,
प्रफुल्ल ।

उच्चिस, वि. (सं.) उन्नदिशतिः (स्त्री. एक.)
एकोदशतिः, नवदशत् (बहु.) । सं. पुं.
उत्तना संख्या, तदंकी (१९) च ।

—विस्वे, सु., प्रायः, प्रायशः, प्रायेण (सप्त
अन्व.) ।

उन्मज्जक, वि. (सं.) जलाद् बहिरागन्तु ।

उन्मज्जन्, सं. पुं., (सं. न.) जलाद् बहिः
आगमनम् ।

उन्मत्त, वि. (सं.) उन्मादिन्, वातुल, विश्रित-
चित्त २. क्षीय, मद्योन्मत्त, मद्योद्धत ३. रंझा-
रहित, नष्टसंज्ञ, विचेतन ।

—प्रलप, सं. पुं., निरर्थकवचनानि (न. बहु.) ।

उन्मन, वि. (सं.) अन्यमनस् । अन्यमनस्क,
अन्यचित्त, अन्वधान ।

उन्मथूख, वि. (सं.) प्रकाशमान, भासुर,
भास्वर ।

उन्माद्, सं. पुं. (सं.) मतिभ्रंशः, चित्तविभ्रमः,
मानसरोग्भेदः २. संचारिभावभेदः (सा.) ।

उन्माद्वी, वि. (सं. दिन्) उन्मत्त, वातुल ।

उन्मार्ग, सं. पुं. (सं.) उत्त-का-कु-वि-पथः-
मार्गः ।

उन्मीलन, सं. पुं. (सं. न.) उन्मेषः, उन्मेषणं
२. विकसनं, विकासः ।

उन्मीलित, वि. (सं.) विवृत्त, उन्मिषित,
उद्धाटित २. विकसित, प्रफुल्ल ।

उन्मुख, वि. (सं.) उदङ्-ऊर्ध्वं, मुख २. उत्कं-
ठिन, उत्सुक ३. उद्यत ।

उन्मूलन, सं. पुं. (सं. न.) निर्मूलनं, उत्पाटनं,
उत्खननम् २. विध्वंसनं, विनाशनम् ।

उन्मूलित, वि. (सं.) उन्मूलनं, उत्पाटित
२. विनाशित ।

उन्मेष, सं. पुं. (सं.) उन्मीलनम् २. विकासः
३. अल्पप्रकाशः ।

उप, उप. (सं.) अनुगत्याधिकयन्ततासामी-
प्यःचाप्यादिबोधकः उपसर्गः ।

उपकंठ, सं. पुं. (सं. पुं. न.) सामीप्यम् । वि.,
निकट । क्रि. वि., निकटे ।

उपकरण, सं. पुं. (सं. न.) साधनं, सान्धी,
परिच्छदः, यंत्रं. साधकद्रव्यम् २. छत्रवामरा-
दीनि राजचिह्नानि ।

उपकार, सं. पुं. (सं.) हितं, दया, भूषा, परोप-
कारः, उपकृतिः (स्त्री.) २. लाभः ।

—करना, क्रि. स., उपकृ, अनुभवः (क. उ.
से.), हितं कृ ।

—मानना, क्रि. स., उपकृतं क्त् (भ्वा. प.
अ.) कृतं विद् (अ. प. से.) ।

उपकारी, वि. (सं. दिन्) उपकारक, उपकर्तृ,
परोपकारपर, परहितक्युक्त, जगन्निबन्धु, दान-
शील ।

उपकार्या, सं. स्त्री. (सं.) (राजकार्यः) पद-
मंडपः-गृहम् २. राज, भवने-प्रासादः ।

उपकुल्या, सं. स्त्री. (सं.) उप. सरणी प्रणाली,
२. परीक्षा, खाताम् ।

उपकूप, सं. पुं. (सं.) कूपकः. लसुकूपः,
उपखाताः ।

उपकृत, वि. (सं.) अनुगृहीत, कृतवेदिन् ।

उपक्रम, सं. पुं. (सं.) उपायदानपूर्वकार्यम्
२. प्रथमारम्भः ३. भूमिका ४. चिकित्सा ।

उपक्रमिका, सं. स्त्री. (सं.) भूमिका, प्रस्ता-
यना, वाङ्मुखम् २. विषयसूची ।

उपगत, वि. (सं.) उपस्थित, पुरःस्थित
२. विहित ३. स्वीकृत ।

उपग्रह, सं. पुं. (सं.) ग्रहणं, धरणं, निरोधः
२. कारा, नासः-निरोधः-प्रवेशः ३. कारागृह,
रुद्ध ४. लघुग्रहः ।

उपघात, सं. पुं. (सं.) विध्वंसाः, विनाशः
२. रोगः ३. इन्द्रियवैकल्यात् ४. पातकसमूहः
५. अपकारः ।

उपचय, सं. पुं. (सं.) वृद्धिः-उचतिः (स्त्री.)
२. भूचयः, संग्रहः ।

उपचर्या, सं. स्त्री. (सं.) सेवा २. चिकित्सा ।

उपचार, सं. पुं. (सं.) रोगप्रतिकारः,
चिकित्सा, उपचर्चा २. रोगपरिचर्या
३. प्रयोगः, विधानम् ४. धर्मानुष्ठानम् ।

उपचारक

[७५]

उपप्लव

५. धूपदीपादीनि पूजांगानि (न. व.) ६. चातु-
क्तिः (स्त्री.) ७. उपकोचः ।

उपचारक, वि. (सं.) चिकित्सक २. सेवक
३. निधायक ।

उपज, सं. पुं. (हि. उपज्जना) उत्पन्नं फलं
मत्स्यं वा २. उद्भवमा, नवकल्पना ३. कालिदा-
सार्हा ।

उपज्जना, वि. अ. (सं. उपजननम्) उपजन्
(वि. आ. से. १. उत्पत्ति (वि. आ. अ.),
प्रकृ (म्वा. ५. अ.) २. मनसि स्फुर (तु.
३. के.) ।

उपजाक, वि. (हि. उपज) उर्वर, शरणाग्र,
बहुफलप्रद ।

उपजाता, वि. स. (हि. उपज्जना) उपजन्-
उपव-प्रकृ (प्रे.) ।

उपजीवी, वि. (सं-विन्) पराश्रित, अनु-
तोषिन्, पराधीनवृत्ति-

उपनाप, सं. पुं. (सं.) रोगः व्याधिः २. स्वरा,
संज्ञमः ३. उच्चापः, उष्मन् (पुं.) ४. पीडा
५. द्वाभोर्यम् ।

उपन्यका, सं. स्त्री. (सं.) पर्वतनिकटभूमिः
(स्त्री.) अनलसम्प्रा यः (स्त्री.) ।

उपदेश, सं. पुं. (सं.) मद्दुरोगभेदः ।

उपदेशक, सं. पुं. (सं.) पथ-मार्ग, दृष्टक
२. शरणाग्रः ३. साक्षिन् ।

उपदर्शन, सं. पुं. (सं. न.) टीका, लिपणी-नी ।

उपदा, सं. स्त्री. (सं.) उपायनं, दे. 'सेट' ।

उपदिशा, सं. स्त्री. (सं.) उप-आज्ञा-काष्ठा-
ककुब् (सब स्त्री.) [टि. चार उपदिशाणं ये
हं-देशान्ती, आग्नेवी, वैश्वती, वायवी] ।

उपदिष्ट, वि. (सं.) शिक्षित, अध्यापित,
२. निर्देशित ३. शीक्षित ।

उपदेश, सं. पुं. (सं.) अनुज्ञासन्नं, बोधनं,
शिक्षा २. दीक्षा, गुरुमंत्रः ३. परमव्यवधानम् ।

—देना, वि. स. उपदिश (तु. प. अ.) अनु-
ज्ञाम् (अ. प. से.), शिक्ष-बुध्शा (प्रे.),
२. दीक्ष् (म्वा. आ. से.) ।

उपदेशक, सं. पुं. (सं.) उपदेश, धर्मप्रचारकः,
प्रवक्तु ।

उपद्रव, सं. पुं. (सं.) दे. 'उत्पात' (१-३)
४. रोगोद्भव-स्तराधिकारः ।

—करना, वि. स., उत्पातम् उक्था (प्रे.) ।

उपद्रवी, वि. (सं-विन्) दे. 'उत्पातो' ।

उपधा, सं. स्त्री. (सं.) कपटम् २. उपान्त्या-
क्षरम् ३. उपाधिः ।

उपधान, सं. पुं. (सं. न.) शिरोधानम्, उप-
वर्हः २. अवलंबनम् ।

उपनयन, सं. पुं. (सं. न.) बहोपवीतसंस्कारः
२. स्मृति नयनम् ३. शिष्यस्य गुरुनिकटे
नयनम् ।

उपनाम, सं. पुं. (सं-गन् न.) प्रचलित-अन्य-
उपाधि-नामम् (न.) २. उपाधिः, मानपदम्,
पदवी ।

उपनिधि, सं. स्त्री. (सं.) न्यासः, उपन्यस-
वस्तु (न.) ।

उपनिवेश, सं. पुं. (सं.) अधिनिवेशः, दासितः
प्रदेशः ।

उपनिषद्, सं. स्त्री. (सं.) ब्रह्मविद्यानिरूपकाः
ग्रंथाः २. (गुरोः) समीपे उपवेशनम् ।

उपनीत, वि. (सं-) कृतोपनयन २. आसन्न,
उपागत ।

उपनेता, सं. पुं. (सं-वृ) उपनयनसंस्कारकर्तु,
आचार्यः, गुरुः २. निकटे प्रापकः ।

उपन्यास, सं. पुं. (सं.) कल्पित- कथा, कथा-
प्रबन्धः, प्रबन्धकल्पना २. वाक्योपक्रमः
३. निक्षेपः, न्यासः ।

उपपत्ति, सं-पुं. (सं.) जारः, दे. 'यार' ।

उपपत्ति, सं. स्त्री. (सं.) हेतुना वस्तुस्थिति-
निश्चयः २. सिद्धिः (स्त्री.), प्रतिपादनम्
३. संगतिः (स्त्री.) ४. युक्तिः (स्त्री.), हेतुः ।

उपपत्नी, सं. स्त्री. (सं-) उप-भार्या-जाया-
कल्पम् ।

उपपद्, सं-पुं. (सं. न.) पूर्वोक्त-पूर्वोक्तस्य-
पद-शब्दः २. समासस्य पूर्वशब्दः ३. उपाधिः
(पुं.), पदवी ।

उपपन्न, वि. (सं.) प्राप्त, उपागत ३, शरणागत
४. लब्ध, अधिगत ५. युक्त ६. उपयुक्त ।

उपपादन, सं. पुं. (सं. न.) साधनं, प्रतिपादनं
व्युक्तिभिः समर्थनम् २. संपादनं, निष्पादनम् ।

उपपुराण, सं. पुं. (सं. न.) लघुपुराण (ये
अठारह हे) ।

उपप्लव, सं. पुं. (सं.) जल-विप्लवः-प्रलयः
२. उत्पातः ३. मूर्कपादिवटना ४. भयम्
५. विघ्नः ६. राहुः ७. झंझावातः ।

उपसुक्त

[७६]

उपवास

उपसुक्त, वि. (सं.) प्रयुक्त २. उच्छिष्ट ।
 उपभोग, सं. पुं. (सं.) सुख, आस्वादः, आस्वा-
 दनम् २. प्रयोगः, व्यवहारः ३. सुखसामग्री ।
 उपसंज्ञी, सं. पुं. (सं.-विन्) उपलेखनसचिवः
 २. उपामात्यः, अमात्यसहायः ।
 उपमा, सं. स्त्री. (सं.) सादृश्यं, साम्यम्
 २. अर्थलंकारभेदः (सा.) ।
 —वेना, कि. स. उपमा (जु. आ. अ.), समी
 कृ ।
 उपमाता, सं. स्त्री. (सं.-मातृ) धात्री. दे.
 'धाय' ।
 उपमान, सं. पुं. (सं. न.) सादृश्यज्ञानसाधनं,
 साम्यप्रतियोगिन्, अप्रस्तुतं, उपवर्ण्यम्
 २. प्रमाणभेदः ।
 उपमित, वि. (सं.) समी-सदृशी, कृत ।
 उपमिति, सं. स्त्री. (सं.) उपमा २. सादृश्य-
 ज्ञानेन ज्ञानम् ।
 उपमेय, वि. (सं.) वर्ण्यं, वर्णनीय, उपमातन्व्य,
 प्रस्तुत ।
 —उपमा, सं. स्त्री. (सं.) अर्थलंकारभेदः
 (सा.) ।
 उपयुक्त, वि. (सं.) उचित, उपपन्न, संगत,
 युक्त, योग्य, वधायोग्य, वधाई ।
 उपयुक्तता, सं. स्त्री. (सं.) औचित्यं, ओचित्यी,
 युक्तत्वं, योग्यता ।
 उपयोग, सं. पुं. (सं.) प्रयोगः, व्यवहारः
 २. लाभः, फलम् ३. प्रयोजनं, आवश्यकता
 ४. धोष्यता ।
 उपयोगिता, सं. स्त्री. (सं.) व्यवहार्यता,
 लाभकारिता, उपकारकता ।
 उपयोगी, वि. (सं.-गिन्) प्रयोजनीय, हित-
 साधन २. उपकारक, लाभदायक ३. अनुकूल ।
 उपरक्त, वि. (सं.) विपदग्रस्त, दुःखिन
 २. ग्रहणयुक्त, उपस्तुत (सूर्यादि) ३.
 विषयासक्त ।
 उपरत, वि. (सं.) विरक्त, उदासीन २. मृत ।
 उपरति, सं. स्त्री. (सं.) विरतिः (स्त्री.)
 वैराग्यं, औदासीन्यम् २. मृत्युः ।
 उपरना, सं. पुं. (हि. ऊपर) चेलं, चेलकः ।
 २. उत्तरीयं, आच्छादनम् ।
 उपरम, सं. पुं. (सं.) विरक्तिः (स्त्री.), वैरा-
 ग्यम् २. निवृत्तिः विश्रान्तः (स्त्री.) ३. मृत्युः ।

उपरोत, कि. वि. (सं. उपरि + अन्तः >) परं,
 ततः परं, तदनन्तरं, तदनु ।
 उपराग, सं. पुं. (सं.) मूर्ध्व-चन्द्र, महान्, ग्रह-
 पीठनं, २. आपत्तिः (स्त्री.) ३. वर्णः, रंगः
 ४. प्रतिच्छाया ५. विषयानुरागः ।
 उपराज, सं. पुं. (सं.) राजप्रतिनिधिः, उप-
 भूषः-रूपः ।
 उपराम, सं. पुं. (सं.) निवृत्तिः-विरतिः
 (स्त्री.), वैराग्यम् २. विश्रामः, कार्यानिवृत्तिः
 (स्त्री.) ३. मोक्षः ।
 उपरि, कि. वि. (सं.) दे. 'ऊपर' ।
 उपरूपक, सं. पुं. (सं. न.) श्लोकसदृकादयो
 रूपकभेदाः ।
 उपरोक्त, वि. (हि. ऊपर + सं. उक्त) दे.
 'उपर्युक्त' ।
 उपर्युक्त, वि. (सं.) प्रागुक्त, पूर्वोक्त, प्राक्-पूर्व-
 वृत्त-निर्दिष्ट ।
 उपल, सं. पुं. (सं.) पाषाणः, प्रतरः २. रत्नम्
 ३. मेघः ४. करका ५. बाहुका ६. सिता,
 शर्करा ।
 उपलक्षण, सं. पुं. (सं. न.) स्वस्यान्तर्य च
 बोधकः शब्दः २. संकेतः ३. शब्दशक्तिभेदः
 (सा.) ।
 उपलक्ष्य, सं. पुं. (सं. न.) संकेतः, चिह्नं,
 अभिधानम् २. वृत्तिः (स्त्री.) उददेश्यम् ।
 —मे, विचारेण, उद्देश्य, निमित्तीकृत्य ।
 उपलब्ध, वि. (सं.) अधिगता, प्राप्त, गृहीत
 २. ज्ञात ।
 उपलब्धि, सं. स्त्री. (सं.) प्राप्तिः (स्त्री.) अधि-
 गमः २. ज्ञानम् ।
 उपलब्ध, वि. (सं.) प्राप्त, प्राप्तव्य
 २. संमान्य, पूज्य ।
 उपला, सं. पुं. (सं. उपलः >) गोमरुं, गोमय-
 पिण्डम् ।
 उपलालिका, सं. स्त्री. (सं.) तृपा, पिपासा ।
 उपला, सं. पुं. (हि. ऊपर) उपरितनः
 गतरः, ऊर्ध्वभागः ।
 उपवन, सं. पुं. (सं. न.) आरामः २. लघु-
 वनम् ।
 उपवास, सं. पुं. (सं.) लपनं, अनाहारः उपो-
 षणं, आशुपर्णं, अनशनं, उपोषितम् ।
 —करना, कि. अ., उपवत् (भ्वा. प. अ.) ।

उपविष

[७७]

उपाध्यायानी

उपविष, सं. पुं. (सं. न.) चारं, गरः, फल-
विषम् ।
उपविष्ट, वि. (सं.) आसीन, कृतोपवेशन ।
उपवीत, सं. पुं. (सं. न.) यज्ञसूत्रं, यज्ञोपवीतं
२. उपनयनसंस्कारः ।
उपवेद, सं. पुं. (सं.) प्रधानवेदातिरिक्ताः
चत्वारः षोणवेदाः (- धनुर्वेद, आयुर्वेद, गंधर्व-
वेद, रथापत्यवेद) ।
उपवेशन, सं. पुं. (सं. न.) निषद्वनं, आसनं,
स्थितिः (स्त्री.) ।
उपशम, सं. पुं. (सं.) शमः, शान्तिः (स्त्री.)
२. गृष्णाश्वयः ३. इन्द्रियनिग्रहः ४. प्रतिकारः,
उपचारः ।
उपशमन, सं. पुं. (सं. न.) सान्त्वनं २. प्रति-
विधानम् ।
उपशिष्य, सं. पुं. (सं.) शिष्यरथ शिष्यः ।
उपसंपादक, सं. पुं. (सं.) संपादकसहायः,
सहायकसंपादकः ।
उपसंहार, सं. पुं. (सं.) परि, अवसानं, समाप्तिः
(स्त्री.) २. ग्रन्थादिकस्य अन्तिसं प्रकरणम्
३. सारांशः ४. शस्त्रादीनां वारणम् ।
उपसर्ग, सं. पुं. (सं.) क्रियायोगे प्रादयः
निपाताः (प्र, परा, अप, सम्, इ०) । २.
अपशब्दान् ३. आधिदैविकः उपासतः ।
उपसागर, सं. पुं. (सं.) लघुसमुद्रः २. शंकाः,
स्वानम् ।
उपस्थ, सं. पुं. (सं.) लिङ्गं, मेहुः २. भगः,
योनिः (स्त्री.) (३-४) अधो, मध्य, भागः
५. क्रोडम् ६. बद्धम् (न.) । वि. समीपोपविष्ट ।
उपस्थान, सं. पुं. (सं. न.) समीपगमनन
२. पूजायै उपगमनम् ३. उपाय पूजनम्
४. पूजार्थानम् ५. समाजः ।
उपस्थापक, वि. (सं.) उपनायक, उपनिधायक
२. स्मारक ।
उपस्थापन, सं. पुं. (सं. न.) समीपे-पुरतः-
उपनिधानम्, उपानयनम् २. उपस्थितिः
(स्त्री.) ३. परिचर्या ४. स्मारणम् ।
उपस्थित, वि. (सं.) निकटस्थ, उपसन्न, उपा-
गत, सन्निकृत ।
—करना, क्रि. स., पुरस्कृत, समर्क्षनी (भ्वा.
उ. अ.) ।

—होना, क्रि. भ., उपस्था (भ्वा. प. अ.),
प्रथिदा (तु. प. अ.) ।
उपस्थिति, सं. स्त्री. (सं.) संनिधानं, सन्निक-
र्यं, वर्तमानता, विद्यमानता ।
उपस्वेद, सं. पुं. (सं.) प्रस्वेदः, धर्म, उदक-जलम्
२. वाष्प, पम् ३. आर्द्रता, उन्नता ।
उपहन, वि. (सं.) नाशित, ध्वस्त २. दूषित
३. पीडित ४. अपवित्र ।
उपहार, सं. पुं. (सं.) उपायनं, उपदा ।
उपहास, सं. पुं. (सं.) परि (री) हासः,
प्रहसनं, नर्मन् (न.), मीढाकौतुकम् २. निन्दा,
आक्षेपः ।
—आस्पद, वि. (सं. न.) उपहास्य, उपहा-
साई २. निदनीय ।
उपांग, सं. पुं. (सं. न.) अवयवः, अंगभागः ।
२. अंगपूर्कं वस्तु (न.) । (वेद के चार उपांग-
पुराण, न्याय, शोभासा, धर्मशास्त्र) ।
उपांत, सं. पुं. (सं.) अन्तसमीपभागः २. प्रान्त-
भागः ३. लघुतटम् ।
उपांत्य, वि. (सं.) अन्त्यात् पूर्ववर्तिन् ।
उपाकर्म, सं. पुं. (सं. न.) संस्कारपूर्वको
वेदान्त्यनारम्भः ।
उपाख्यान, सं. पुं. (सं. न.) प्राचीनकथा,
आख्यानम् २. कथान्तर्गतकथा ३. वृत्तान्तः,
उदन्तः ।
उपादान, सं. पुं. (सं. न.) प्राप्तिः-उपलब्धिः
(स्त्री.) २. बोधः ३. प्रत्याहारः ४. समवायि-
कारणम् ।
उपादेय, वि. (सं.) ग्राह्य, ग्रहीतव्य, स्वीकार्यं
२. श्रेष्ठ, उत्तम ।
उपाधि, सं. स्त्री. (सं. पुं.) छलं, कपटम्
२. स्वधर्मरथान्यगततयावभासकं वस्तु (न.)
३. उपद्रवः ४. कर्तव्यचिन्ता ५. प्रतिष्ठासूचकं
पदम् ।
उपाध्याय, सं. पुं. (सं.) वेदवेदांगः-ध्यापकः
२. शिक्षकः, अध्यापकः ३. ब्राह्मणोपजातिः
(स्त्री.) ।
उपाध्याया, सं. स्त्री. (सं.) अध्यापिका, विद्यो-
पदेशिका ।
उपाध्यायानी, सं. स्त्री. (सं.) उपाध्याय-
शिक्षक-गुरु, पत्नी ।

उपाध्यायी

[७८]

उमंग

उपाध्यायी, सं. स्त्री. (सं.) अध्यापिका
२. उपाध्यायपत्नी ।

उपानत्, -नह्, सं. पुं. (सं. उपानह् स्त्री.)
पादत्रायम् २. पादुका ।

उपाय, सं. पुं. (सं.) साधनं, उपकरणं, करणं,
नामयोः युक्तिः (स्त्री.) २. शत्रुविजययुक्तिः
(= सभ्रम, दान, भेद, दंड) ।

उपायन, सं. पुं. (सं. न.) उपदा, उपहारः ।

उपार्जन, सं. पुं. (सं. न.) धनादिकत्याहरणम्,
अर्जनम्, लाभः ।

—करना, क्रि. स., उप-अर्ज् (जु.), उपादा
(जु. आ. अ.) ।

उपाजित, वि. (सं.) शृगृहीत, अजित ।

उपावर्तन, सं. पुं. (सं. न.) प्रत्या-वर्तनं-
व्रजनं-गमनम् २. उपा-नामनं-वासम्
३. ब्रामणम् ।

उपालभ, सं. पुं. (सं.) आ-अधि-क्षेपः, भर्त्सनं-
ना, गर्हा, परिवादः २. दुःखनिवेदनम् ।

उपासक, वि. पुं. (सं.) पूजक, सेवक, आरा-
धक, अर्चक ।

उपासना, सं. स्त्री. (सं.) समीपे उपवेशनम्
२. आराधना, अर्चा ।

—करना, क्रि. स., उपास् (अ. आ. से.),
पूज् (जु.) उपस्था (स्वा. आ. अ.) ।

उपास्य, वि. (सं.) उपासनीय, आराध्य, पूज्य,
भजनीय ।

उपेन्द्र, सं. पुं. (सं.) विष्णुः, वामनः, कृष्णः ।

उपेक्षणीय, वि. (सं.) उपेक्ष्य, त्याज्य ३. गर्हा,
घृणार्ह ।

उपेक्षा, सं. स्त्री. (सं.) औदासीन्यं, निःस्पृहता,
निःसंगता, विरक्तिः (स्त्री.) २. घृणा, गर्हा ।

उपेक्षित, वि. (सं.) अवगणित, अवधीरित,
भ्यक्त, निरंकुत ।

उपेक्ष्यन्त, सं. पुं. (सं.) भूमिका, प्रस्तवना ।

उफ्, अव्य. (अ.) हा, अहह, हंत, कष्टम् ।

—ओह, अव्य., अहो, ही ।

उफनना, क्रि. अ. (सं. उफ् + फन >) उफफ्
(स्वा. ४. से.), इध् त्पन् (कर्म.) २. फना-
यवे मंडायते (ना. था.) ३. उरितच् (कर्म.),
अंतः धुम् (दि. प. से.) ।

उफान, सं. पुं. (सं. उफ् + फन >) उल्लेकः,
फेत्तोद्गमः, उद्रेकः ।

उफकना, क्रि. अ. (अनु.) दे. 'फै करना' ।

उफकाई, सं. स्त्री. दे. 'फै' ।

उफदन, सं. पुं. (सं. उफ्दतनम्) अम्यंगः,
अभ्यंजनं, उत्सादनं, अन्-वि, लेपः, समालंभः ।

उफरना, क्रि. अ. (सं. उदवारणम् >) मुच्-
मोक्ष-उदृष्ट (कर्म.) २. अन्-परि-उत्, शिष्ट
(कर्म.) ।

उफलना, क्रि. अ. (सं. उददलनम् >) फना-
यते (ना. था.) कथ-तप् (कर्म.) २. वेगात्
निस्स्र (स्वा. प. अ.) ।

उफार, सं. पुं. (हि. उवरना) निस्तारः, मोक्षः,
त्रागं, रक्षा ।

उवारना, क्रि. स. (हि. उवरना) वि-निर्-
मुक् (प्र.) निस्तृ (प्रे.), रक्ष (भ्वा. प.
से.) ।

उवाल, सं. पुं. (हि. उवलना) दे. 'उफान'
२. उद्रेगः, आवेशः ।

—आना, क्रि. अ., दे. 'उफनना' ।

—विद्, सं. पुं., उदधुदाकिः ।

उवालना, क्रि. स. (हि. उवलना) उक्क्य
(स्वा. प. से.), था (अ. प. अ.) ।

उवासी, सं. स्त्री. (सं. उव् + आसः >) अम्यंगः,
जुम्मा ।

उभरना, क्रि. अ. (सं. उद्भरणम् >) वि
(स्वा. प. से.), स्फाय्-वृष् (स्वा. आ. से.)
आध्मा-विस्तृ (कर्म.) २. दे. 'उठना' ३. परि-
वह् (स्वा. उ. अ.) ४. गर्भ् (स्वा. प. से.)
५. उरपद् (दि. आ. अ.) ६. अदा-वि-वृ.
(धर्त्.) ७. समृष् (दि. प. से.) ८. अदगन्
९. गौवनं आप् (स्वा. उ. अ.) १०. वहिल्ल्व
(स्वा. आ. से.) ११. आर-गुक्त (वि.) २०.

उभरा, वि. (हि. उभरना) रघीतः, दूत
२. विगनभार ।

उभारना, क्रि. स. (हि. उभरना) उत्तेजनं,
उत्थपनम् २. उत्थापनम् ३. प्रोत्साहनं,
प्रेरणम् ।

उभार, सं. पुं. (हि. उभरना) उद्यता,
उद्ययः २. बुद्धिः उन्नतिः (स्त्री.) ३. शोकः,
क्षोभः ४. स्फूर्तिः (स्त्री.) पीनता ५. प्रलंबता ।

उमंग, सं. स्त्री. (हि. उमना) उल्लासः,
आनन्दः २. चित्ततरंगः, लहरी ३. आभिषयम्
४. उत्साहः, औत्सुक्यम् ।

उमगना

[७९]

उलटना

उमगना, कि. अ. (सं. उमंगनम् >) दे. 'उगरना', 'उगडना' २. उलसु (भ्वा. प. से.), प्रो (कर्म.) ।

उमडना, कि. अ. (सं. उमडनम् >) परिवह् (भ्वा. ल. अ.), प्रवृध् (भ्वा. आ. से.) २. वेमान् प्रवृध् (भ्वा. आ. से.) ३. जनसंवाध (वि.) भू ५. शुभ् (वि. प. से.) ।

—धुमडना, परिभ्रम्य तद् (कर्म.) ।

उमदा, वि. (अ.) उत्तम, श्रेष्ठ ।

उमर, सं. स्त्री. (अ. उग्र) क्यम् (न.), कल्पः कनस्था २. जीवितकालः, आयुस् (न.) ।

उमरा, सं. पुं. (अ०, 'अमीर' का बहु०) धनिकाः २. प्रतीमाः, नायकाः ३. सानन्ताः (स्त्री बहु०) ।

उमस, सं. स्त्री. (सं. उमन् पुं.) उभयः, निर्वा-
दता, वर्यः ।

उमा, सं. स्त्री. (सं.) पार्वती २. दुर्गा ३. कीर्तिः (स्त्री.) ४. कान्तिः (स्त्री.) ५. महाविद्या ।

उमाडना, कि. अ., दे. 'उमडना' ।

उमेठना, कि. स. (सं. उमेठनम् >) मुद्-मुद् (जु.), आकुञ् (प्रे.), पर्यावृत् (प्रे.), संपुटी-
पिंडी, कृ ।

उमेठवौ, वि. (हि. उमेठना) कुञ्चित, अराल ।

उम्मेद्, सं. स्त्री. (फ्रा.) आशा, आर्षसा २. प्रतीक्षा, उदीक्षा, ३. आश्रयः, अवलंबः ४. विश्वासः, विश्रमः ।

—चार, सं. पुं. (फ्रा.) अज्ञानिवत्, आज्ञावत् २. याचकः, पदान्वेषिन्, प्रत्याशिन् ।

—होना, मु., प्रसवः प्रतीक्ष (कर्म.) ।

उम्र, सं. स्त्री. (अ.) दे. 'उमर' ।

उर, सं. पुं. (सं. उरस न.) दृढयं, चित्तम्, मनस् (न.) २. क्रौडं, वक्षस् (न.), वक्षः-
स्थलम् ।

—खाना, मु., आलिम् (भ्वा. प. से.) २. दिचर् (प्रे.) ।

उरग, सं. पुं. (सं.) सर्पः ।

उरगारि, सं. पुं. (सं.) गरुडः ।

उरज, उरजात, सं. पुं., दे. 'उरोज' ।

उरद, सं. पुं. (सं. ऊरुद >) मापः, कुशविदः, मंसिलः, धान्यवीरः, वृषाङ्कुरः, बलाढ्यः, पितृ-
भोजनः ।

उरला, वि. (सं. अपर >) अपर, अयर २. पृष्ठरथ, पश्चिम ३. उत्तर, अपरोक्त ।

उरश्छुद्, सं. पुं. (सं.) उरकाणम्, वक्षस्-
णम् ।

उरसिज, सं. पुं. (सं.) स्तनः, उरोजः ।

उरसिल, वि. (सं.) विशाल-कपाडं, वक्षस्-
उरस् ।

उरु, वि. (सं.) आयत, विस्तीर्णं, विशाल,
विपुल ।

उरु, सं. पुं. (सं. ऊरुः) सन्धि (न.) ।

—क्रम, वि. (सं.) बलवत् २. द्रुतगति ।

सं. पुं., वामनावतारः २. सूर्यः ।

उरोज, सं. पुं. (सं.) कृचः, स्तनः ।

उरु, सं. स्त्री. (तु. ओरु) अरशीपारसीतुल्य-
भाषाशब्दैः मिश्रिता पारसीलिप्यां लिखिता
हिंदीभाषा, उरुः (स्त्री.) २. शिथिरहृष्टः ।

उरु, सं. पुं. (अ.) उदनामन् (न.),
उपाख्या ।

उर्वरा, सं. स्त्री. (सं.) बहुफलदा भूमिः (स्त्री.)
२. पृथिवी । वि. स्त्री., फलदा, शस्यप्रदा ।

उर्वी, सं. स्त्री. (सं.) पृथिवी, धरणी ।

उलक्षण, सं. स्त्री. (हिं. उलक्षना) विद्वांसः,
प्रतिबंधः, बाधा २. समस्या, चिन्ता-विवाद-
विषयः ।

उलक्षना, कि. अ. (सं. अवक्ष् >) संश्लिष्-
संग्रन्थ (कर्म.), जटेली भू २. सक्वन्ध संमिश्र
(कर्म.) ३. दे. 'लिपटना' ४. व्यापृत (वि.)
भू ५. स्निह् (वि. प. वे.) ६. त्रिबद् (भ्वा.
आ. से.), वैरायते-कलहायते (ना. धा.)
७. संकटे पद् (भ्वा. प. से.) ८. वकी-कुटिली,
भू ।

उलक्षाना, कि. स. (हिं. उलक्षना) संश्लिष्
(प्रे.), संग्रन्थ (जु.) २. व्यापृ-भ्रज्-विनियुक्त
(प्रे.) ३. वकीकृ ।

उलटना, कि. अ. (सं. उलुठनम् >) परि-
परा-वृत् (भ्वा. आ. से.), विपर्यम् व्यस्यत्
(कर्म.) अधोमुखी भू २. परि-भ्रम् (भ्वा.
दे. प. से.), पूर्ण (तु. प. से.) ३. दे.
'उमडना' ४. नंकारी-संकुली, भू ५. विपरीत-
विरुद्ध (वि.) भू ६. कुध् (दि. प. अ.) ७. मृ
(तु. आ. अ.), मूर्च्छ (भ्वा. प. से.) ८. पद्
(भ्वा. प. से.) । कि. स., परि-परा-वृत्

(प्रे.), अधोमुखी कृ २. निपत् (प्रे.) ३. क्षिप् (तु. प. अ.) ४. संकरी-संकुली, कृ ५. विपरीतं कृ ६. उत्तरप्रत्युत्तरं दा (जु. उ. अ.) ७. निःसंश मूर्च्छित (वि.) कृ. ८. दे. 'ऊढे-लना' ९. श्वसं-नश (प्रे.) ।

उलट-प (पु) लट, सं. स्त्री. (हिं. उलटना-पुलटना) विपर्यासः, व्यत्यासः, परिवर्तनम् २. व्यतिहारः, विनिमयः ३. क्रमभंगः, व्यतिक्रमः । वि., विपर्यस्त, अव्यवस्थित, अक्रम, भस्तव्यस्त ।

उलटफेर, सं. पुं., दे. 'उलट-पुलट' सं. स्त्री. ।

उलटा, वि. (हिं. उलटना) व्यत्यस्त, विपर्यस्त, अवरोत्तर, अधोमुख २. क्रमरहित, अव्यवस्थित ३. विरुद्ध, विपरीत ४. अनुचित, असंगत । क्रि. वि., व्यतिक्रमेण, विपर्ययेण, असंगतम् २. अनुचितं, अशुक्तम् ।

—झमाना, मु., विपरीतकालः, न्यायरहितः समयः ।

—तबा, मु., अति-कृष्ण-श्याम-नील ।

उलटी खोपड़ी का, मु., मूढ, अड ।

—गंगा बहाना, मु., श्मशाने साधु (स्वा. प. अ.) ।

—पट्टी पढ़ाना, मु., कृपये प्रवृत् (प्रे.) ।

—माला फेरना, मु., अमंगलं कम् (स्वा. आ. से.) ।

—सांस चलना, मु., मरणसत्र (वि.) अभु (दि. अ. से.) ।

—सीधी सुनाना, मु., निर्भ्रंसं (तु. आ. से.) ।

—पौव फिरना, मु., क्षतिति प्रतिनिवृत् (स्वा. आ. से.) ।

—छुरे से मूँड़ना, मु., अतिसंधाय स्वप्रयोजनं साधु (स्वा. प. अ.) ।

उलटाना, क्रि. स. (हिं. उलटना) दे. 'उलटना' क्रि. स. । २. प्रति ऋ (प्रे. प्रत्ययैवति) ३. अयन्था कृ ।

उलटापुलटा-टी, वि., दे. 'उलटपलट' ।

उलटी, सं. स्त्री. (हिं. उलटना) वमः, वमनं, वमिः (स्त्री.), छदिका ।

उलटे, क्रि. वि. (हिं. उलटना) विपरीततया, विपर्ययेण ।

उलथा, सं. पुं. (सं. उरस्थलन् >) नृदयभेदः २. विपर्यस्तप्लुतम् ।

उलफत, सं. स्त्री. (अ.) अनुरागः, प्रेमन् (न.) ।

उलार, वि. (हिं. ओलरना = लटना) वृष्ट-भागं भारवत् (शकटादि) ।

उलाहना, सं. पुं. (सं. उपालंभनम्) उपालंभः, दुःखनिवेदनम्, आ-अधि-क्षेपः, (तविलापा) विघ्नोपना ।

—देना, क्रि. स., उपालम् (स्वा. आ. अ.), निन्द (स्वा. प. से.) ।

उलीचना, क्रि. स. (सं. उल्लंघनम्) उल्लंघनं (स्वा. प. से.), हस्तादिभिः जलं बहिः क्षिप् (तु. उ. अ.) ।

उल्लक, सं. पुं. (सं.) धुकः, दे. 'उल्ल' २. इन्द्रः ३. कगादः ।

उल्लखल, सं. पुं. (सं. न.) उल्लखलम् २. गुग्गुलुः ।

उल्लाका, सं. स्त्री. (सं.) खोल्का, उत्पातः, पत-प्रक्षत्रं २. प्रकाशः ३. अग्निशिखा ४. अग्निः ५. दीपिका ६. प्र-दीपः, दीपकः ७. अग्नि-कण्ठः, अलातम् ।

—पात, सं. पुं. (सं.) तारा-तारकानक्षत्र-उडु, पातः-पतनम् ।

उल्ल्या, सं. पुं. (हिं. उलथना) अनुवादः, दे. ।

उल्लुमुक, सं. पुं. (सं.) ज्वलकाष्ठम्, उल्का ।

उल्लंघनः, सं. पुं. (सं. न.) व्यतिक्रमः, अति-क्रमः-क्रमणम्, भंगः, अतिपातः २. आक्षालंघनं, प्रतीपाचरणम् ३. उत्पलवः ।

उल्लंघित, वि. (सं.) दे० 'खडा' ।

उल्लास्य, सं. पुं. (सं.) हर्षः, आनन्दः २. प्रकाशः ३. अलंकारभेदः (सा.) ४. प्र-धर्परच्छेदः ।

उल्लिखित, वि. (सं.) उत्कीर्णः, पाषाणादिषु अभिलिखित २. चक्रेण कष्ट ३. लिखित ४. उप-रिलिखित, उपयुक्तं ५. चित्रित, आलिखित ।

उल्लू, सं. पुं. (सं. उल्लूकः) देवकः, काकारिः, कौशिकः, दिवान्धः, दिवासीतः, घृकः, तिशा-दनः २. मूर्त्तः ।

—का पट्टा, सं. पुं., जडः, बालिशः ।

—बनाना, मु., व्यासुर् (प्रे.) ।

—बोलना, मु., निर्जैती भू ।

उल्लेख, सं. पुं. (सं.) लेखः, लिखितम्, लेख्यम् २. वर्णनं, निरूपणम् ३. अलंकारभेदः (सा.) ।

उल्लेखनीय, वि. (सं.) लेखार्थे. उल्लेख
 २. वर्णनीय, निरूपणीय ३. अद्भुत ।
 उल्लव, सं. पुं. (सं. न.) अरायुः २. यर्माशयः ।
 उल्लव (रुय) ण, वि. (सं.) स्पष्ट. विशद
 २. प्रवल, दृढ़ ३. अधिक, अतिशय ।
 उल्लाना, सं. पुं. (सं. न.) शुक्राचायः ।
 उल्लव, सं. पुं. (अ.) वृक्षमेदः ।
 उल्लनीर, सं. पुं. (सं. रा.) गांधारदेशः
 २. गांधारवासिन् ३. शिबिजसकः ।
 उल्लीर, सं. पुं. (सं. पुं. न.) दोरणमूलं, अभयं,
 भल्लवं, मेघवम् ।
 उल्ला, सं. स्त्री. (सं.) उपस (स्त्री. न.), प्रभातं,
 अन्वयः, दिनमुसं, रात्रिद्वयः, ब्राह्मवेला ।
 २. अरुणोदयकालिमघ (पुं.) ३. वाणासुर-
 कन्धा, आनिमङ्गली ।
 उल्ल, सं. पुं. (सं.) कर्मेष्टकः, दे. 'कंठ' ।
 उल्ला, वि. (सं.) सं-उल्ल, तम २. उद्योगिन,
 सांयोग, परिश्रमिण, क्षिप्रकाररन्, दक्ष
 ३. उद्यमप्रवृत्ति ।
 सं. पुं., शीघ्रः २. नरव-विक्षेपः ३. पल्लवः ।
 —कटिबंध, सं. पुं. (सं.) भूमेः उल्लतमः
 मध्यप्रदेशः ।

उल्लता, सं. स्त्री. (सं.) सं-उल्ल-परि-तापः, तापः,
 उ (कं) भान् (पुं.), उल्लतवम् ।
 उल्लणीय, सं. पुं. (सं. पुं. न.) शिरोवेहनं
 २. मुकुटं, किरीटम् ।
 उल्लम, सं. पुं. (सं.) दे. 'उल्लता' २. आतपः,
 मृयांलोकः ३. शीघ्रः ।
 उल्लमा, सं. स्त्री. (सं. भ्यन् पुं.) दे. 'उल्लता'
 २. आतपः ३. क्रोधः ।
 उल्ल, सर्व. (हिं. वह) तद, अद्भुत ।
 उल्लस, सं. स्त्री. (सं. उच्छ्वासः) दीर्घंवासाः,
 उच्छ्वसितम् २. थासः, निश्वासः ३. (दुःखा-
 दिभूयकः) दीर्घनिश्वासः ।
 उल्लसार, सं. पुं. (सं. अवसारः) विस्तारः ।
 उल्लमूल, सं. पुं. (अ.) नियमः, सिद्धान्तः ।
 उल्लतरा, सं. पुं. (का. उल्लतरा) क्षुरः, नापि-
 ताक्षम् ।
 उल्लताद, सं. पुं. (का.) अध्यापकः, गुरुः ।
 वि., कपटिम् २. चतुर ।
 उल्लतादी, सं. स्त्री. (का.) अध्यापकत्वम्
 २. नैपुण्यम् ३. वचनं, विप्रलम्बः ।
 उल्लतानी, सं. स्त्री. (का.) अध्यापिका २. गुरु-
 पत्नी ३. गायविनी ।

ऊ

ऊ, वर्षगात्राद्याः षष्ठः स्वरवर्णः, उकारः ।
 ऊः, अव्य. (अनु.) आः, हा, कृष्टम् ।
 ऊँ, सं. स्त्री. (सं. अवाह्) तंत्रा, ईषत्-
 स्वप्-निद्रा ।
 ऊँचना, वि. अ. (हिं. ऊँच) ईषत् स्वप्-निद्रा
 (अ. प. अ.), स्वप् के सन्नत रूप (सुषुप्सति
 आदि) ।
 ऊँच, वि. (सं. उच्च) उन्निद्रत २. श्रेष्ठ
 ३. कुलीन ।
 —नीच, वि., कुलीनाकुलीन, उच्चावच । सं. पुं.
 हानिलागी, भद्राभद्रे (हिं.) ।
 ऊँचा, वि. (सं. उच्च) समः, उन्निद्रत, उदगत,
 प्रांशु, ऊर्ध्वः, तुंग, उदय, सोच्छ्रय २. श्रेष्ठ,
 मुख्य, अग्र्य, परम, महा, प्रधान, ३. प्रवल,
 तीव्र ।
 —सीचा, वि., विषय, असम, नतोन्नत । सं.
 पुं., हानिलागी २. भद्राभद्रे ।
 —बोल बोलना, मु., विकल्प (भ्वा. आ. से.) ।

—सुनना, मु., किंचिद् बधिरत्वम् ।
 ऊँचाई ऊँचान, सं. स्त्री. (हिं. ऊँचा) उच्छ्र
 (च्छा) यः, आरोहः, उत्सेधः, उदः, तुंगता,
 उन्नता, उदकर्वः, उन्नतिः (स्त्री.) २. महत्वं,
 गौरवम् ।
 ऊँचे, वि. वि. (हिं. ऊँचा) उच्चैः, उपरि, ऊधर्द,
 उच्चम् ।
 ऊँट, सं. पुं. (सं. उच्छ्रः) कर्मेष्टकः, महांगः,
 मयः, दीर्घगतिः, दाहेरकः, धूसरः, लंबोष्ठः,
 दीर्घजंघः, दीर्घः, महापृष्ठः, महाश्रोत्रः ।
 —कटा (टी) रा, सं. पुं. (सं. उच्छ्रकंठकः-
 कम्) उच्छ्रमिधः वदकितौ गुल्ममेदः, कंठालुः,
 उत्कंठकः ।
 ऊँटनी, सं. स्त्री. (हिं. ऊँट) उच्छ्री, लंबोष्ठी,
 महांगी ।
 ऊँहूँ, अव्य. (अनु.) न, नो, नो-नो, न कदापि ।
 ऊ, सं. पुं. (सं.) शिवः २. चन्द्रः ३. रश्मिः ।

अ०, अपि । सर्व० सं.; सा, तद्-तत् (न.) ।
 उख, पुं. (सं. इक्षुः) दे. 'गवा' ।
 उखल, सं. पुं. (सं. उखलन्) उदूखलम् ।
 उखड्, वि., दे. 'उखाड्' ।
 उखक-नाटक, सं. पुं. (सं. उखक + नाटक >)
 अनर्थक-निरर्थक, कार्यन् ।
 उखपटांग, वि. (अनु. अखपट + सं. अंग) असं-
 बद्ध, असंगत २. मोघ, निरर्थक ।
 —चात, सं. स्त्री., निरर्थकं वचनम् ।
 उख, वि. (सं.) सपत्नीय, परिणीत, दे०
 'विवाहित' ।
 —कंकट, वि. (सं.) सन्नद्ध, कवचधारिन् ।
 उख, वि. स्त्री. (सं.) परिणीता, उपयता,
 सभारुका, सपत्नी, सुवासिनी, पतिव्रती २. पर-
 योयानाधिकारिणी ।
 उखि, सं. स्त्री. (सं.) वहनम्, नयनम्
 २. विवाहः, परिणयः ।
 उख, वि. (सं. अपुत्र) निस्संतान, निरपत्य,
 निरन्वय २. मूढ, निर्दुष्टि ।
 सं. पुं., मूलैः २. पक्षीरहित ३. अपुत्रः
 ४. प्रेतभेदः ।
 उख, सं. पुं. (सं. उखः) दे. 'उखविद्या' ।
 उखविद्या, सं. पुं. (सं. उखविद्यालः) उखः,
 अल-मार्जार-विद्यालः ।
 उख, वि. (अ. उख अथवा क्रा. कवृद) नील-
 लोहित, धूम्र, धूमल, धूमवर्ण ।
 उखम, सं. पुं. (सं. उखमः >) उपद्रवः, उत्पातः
 कोलाहलः, तुमुल, कलहः ।
 —सञ्चाना, क्रि. सं., उपद्रवं उथा (प्रे.)
 उखमी, वि. (हिं. उखम) उत्पातिन्, उप-
 द्रविन्, दुष्ट ।
 उखो, सं. पुं. (सं. उखवः) श्रोत्रुण्डरय मित्र-
 विशेषः ।
 —का लेना न माधव का देना, मु., विरक्तता,
 उदासीनता, गतसंगता ।
 उख, सं. स्त्री. (सं. उखा) उखा, मेपादिरोनम्
 (न.) ।
 उख, वि. (सं.) न्यून, अल्प, क्षुद्र-अल्प-रतोक-
 सूक्ष्म-तर २. क्षुद्र, तुच्छ ।

ऊना, वि., दे. 'ऊन' ।
 ऊनी, वि. (हिं. ऊन) लोमज, मेपलोमज,
 ऊर्णाय (-यी स्त्री.), ओर्ण (-यी स्त्री.) ।
 ऊपर, क्रि. वि. (सं. उपरि अन्य.) ऊर्ध्व उप-
 रिष्टान्, सप्तमी विभक्ति से भी । २. अधिकम्
 अनिश्चितम् ३. वशिः, वहिर्भागि ४. तटे,
 तरे ५. प्रतिकूल, विरुद्धम् । सं. पुं., अर्थः
 श्यम् ।
 —नले, क्रि. वि., उपर्यधः ।
 —से, क्रि. वि. उपरिष्टान्, वाहनः ।
 ऊपरी, वि. (हिं. ऊपर) ऊर्ध्व, उत्तर, उप-
 रितन (-नी स्त्री.) २. बाह्य, वहिर्भागि ३. अनि-
 यत ४. आपातरागीय, साठ्यर ।
 —आमदनी, सं. स्त्री., वेतनानिश्चितः आयः ।
 उख-व्याखड्, वि. (अनु.) विषय, नतोन्नत ।
 उखना, क्रि. अ. (सं. उखेजन्) उखिन् (तु.
 आ. से.), निर्विद्य-सिद्ध (दि. आ. अ.) ।
 उभासीसी, सं. स्त्री. (हिं. ऊभना + सीस)
 आरा-प्राण, कुच्छृण्, उद्धमः, दुःश्वासः ।
 ऊमर, सं. पुं., दे. 'गूलर' ।
 ऊमस, सं. स्त्री., दे. 'उमस' ।
 ऊरु, सं. पुं. (सं.) सन्धि (न.), जानूपरि-
 भागः ।
 ऊर्ज, सं. पुं. (सं. ऊर्ज स्त्री.) बल, शक्तिः
 (स्त्री.) । २. रसः ३. भोजनं ४. जलम् ।
 ऊर्जस्वी, वि. (सं. स्विन्) ऊर्जस्वल, ऊर्जित,
 बलिन्, शक्तिमत् ।
 ऊर्ण, सं. पुं. (सं. न.) ऊर्णा, दे. 'ऊन' ।
 —नाभ, सं. पुं. (सं.) ऊर्णनाभिः, गर्भटकः,
 दे. 'मकटी' ।
 ऊर्णा, सं. स्त्री. (सं.) ऊर्णा, दे. 'ऊन' ।
 ऊर्ध्व, क्रि. वि. (सं. ऊर्ध्वम्) उपरि, उप-
 रिष्टान् ।
 —आरोहण, सं. पुं. (सं. न.) देहान्तः ।
 —गामी, वि. (सं. भिन्) उधात् २. मुक्त ।
 —मूल, सं. पुं. (सं.) संसारः ।
 —रेता, वि. (सं. तस्) ब्रह्मचारिन्, वीर्य-
 रक्षक ।
 सं. पुं., महादेवः २. भोगः ३. द्युमत् ।

—वास, सं. पुं. (सं.) उच्छ्वासः २. कृच्छ्रो-
च्छ्वासः ।

उमिं, सं. स्त्री. (सं. पुं. स्त्री.) तरंगः, कलोलः
२. वेदना ३. क्लमसंकोचरेखा ।

—माली, सं. पुं. (सं. स्त्री.) स्मृद्धः ।

उल्लजल्ल, वि. (देश.) अक्रम २. अत्र
३. असम्भ्र ।

उपर, सं. पुं. (सं. पुं. न.) अनुर्वर-क्षार-अदा-
स्यप्रद, भूमिः (स्त्री.), मरुत्थल्ल-ली । वि. मोघ,
निष्फल ।

उपा, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'उपा' ।

उष्म, सं. पुं. (सं.) उत्तापः, धर्मः २. वाष्पः
३. ग्रीष्मः । वि. उत्सा, उष्ण ।

—वर्ण, सं. पुं. (सं.) श्, प्, स्, ह् वर्णाः ।

उष्मा, सं. स्त्री. (सं. ऊष्मन् पुं.) दे. 'ऊष्म' ।

उसर, सं. पुं., दे. 'ऊपर' ।

उह, अव्य. (अनु.) (पीडा) आः, हा,
२. (आश्चर्य) अहह, अहो ।

उह, सं. पुं. (सं.) अनुमानं, वि., तर्कः २. शक्तिः
(स्त्री.), हेहः ।

—अपोह, सं. पुं. (सं. ह्रीं) तर्कवितर्कौ, विमर्शः,
विचारणा, पक्षप्रतिपक्षचिन्तनम् ।

ऋ

ऋ, देवनागरीवर्णमालायाः सप्तमः रवरवर्णः,
ऋकारः ।

ऋक्, सं. स्त्री. (सं. ऋन्) वेदमंत्रभेदः
२. ऋग्वेदः ।

ऋकृण, वि. (सं.) आहत, वि. क्षत ।

ऋवथ, सं. पुं. (सं. न.) धनम् २. स्वर्णम्
३. दायधनम् ४. दायभागः ।

ऋद्ध, सं. पुं. (सं.) भल्लकः २. नक्षत्रं ३. मेघा-
दिराशयः ।

—पति, सं. पुं. (सं.) चन्द्रः २. जांबवत् (पुं.) ।

ऋग्वेद, सं. पुं. (सं.) वेदविशेषः ।

ऋग्वेदी, वि. (सं. दिन्) ऋग्वेद, ऋपाठक ।

ऋचा, सं. स्त्री. (सं. ऋच् स्त्री.) छन्दोमयो
मंत्रः २. वेदमंत्रः ३. रत्नोत्तमम् ।

ऋजु, वि. (सं.) सरल, समरेख, प्रगुण, अंजस
२. सुकर, सुख, साध्य-संपाद्य ३. निर्व्याज,
निष्कपट ४. प्रसन्न, अनुकूल ।

ऋजुता, सं. स्त्री. (सं.) सरलता, समरेखता
२. सुकरतर्यं, सुभक्त्याध्यता ३. निष्कपटता ।

ऋण, सं. पुं. (सं. न.) पशुदंशनं, उद्धारः ।

—सुकाना, क्रि. स., ऋणं शृणु (प्रे.) ।

—लेना, क्रि. स., ऋणं क् अथवा ग्रह् (क्
उ. से.) ।

—ग्रस्त, वि. (सं.) ऋणित्, अधमर्ण, स्नातक,
धारक ।

—मुक्त, वि. (सं.) ऋण-उद्धार-पशुदंशनं,
विमुक्त ।

ऋणी, वि. (सं. दिन्) दे. 'ऋणग्रस्त' २. अनु-
गृहीत, उपकृत ।

ऋत, सं. पुं. (सं. न.) उन्मृत्तिः (स्त्री.)
२. मोक्षः ३. जलम् ४. कर्मफलम् ५. यज्ञः
६. सरयम् ।

वि., दीप्त २. पूजित ३. साथ ।

ऋतु, सं. स्त्री. (सं. पुं.) मासद्वयात्मकः प्रकृति-
परिवर्तनयुक्तः कालः (षड् ऋतवः-वसन्तः,
ग्रीष्मः, वर्षाः, शरद्, हेमन्तः, शिशिरः),
समयः २. आर्तव-पुष्प-रजः, बालः ।

—काल, सं. पुं. (सं.) रजोदशनं, मन्तरं गर्भ-
योग्यानि षोडशदिनानि ।

—गमन, सं. पुं. (सं. न.) ऋतुकाले
नैधुनम् ।

—चर्या, सं. स्त्री. (सं.) ऋत्वनुकूलं आहार-
विहारौ ।

—दान, सं. पुं. (सं. न.) गर्माधानम्,
भिषेकः ।

—मती, वि. स्त्री. (सं.) रजस्वला, पुष्पवती ।

—राज, सं. पुं. (सं.) वसन्तः ।

ऋत्विज, सं. पुं. (सं. ज्) पुरोहितः, याजकः ।

ऋद्ध, वि. (सं.) संपन्न, समृद्ध ।

ऋद्धि, सं. स्त्री. (सं.) समृद्धिः-वृद्धिः (स्त्री.) ।
२. प्राणप्रिया, ओषधिभेदः ।

—सिद्धि, सं. स्त्री. (सं.) समृद्धिसःफल्ये ।

ऋशु, सं. पुं. (सं.) देवः, अमरः २. गणदेव-
विशेषः ३. देवानुचरवर्गविशेषः ४. शिष्टिपम् ।

ऋषभ, सं. पुं. (सं.) वृषः, दे. 'वैल'
२. संगीति द्वितीयस्वरः ३. समासजिने श्रेष्ठता-
वाचकः (उ. नरपंथः) ।
—देव, सं. पुं. (सं.) विष्णोरवतारो नाभि-
राजपुत्रः २. प्रथमः तीर्थकरः (जैन.) ।

—ध्वज, सं. पुं. (सं.) शिखः ।
ऋषि, सं. पुं. (सं.) सत्यवचसम्, द्वापारुः,
मंत्रद्रष्टृ, मुनिः, तत्त्वविद्, सिद्धः, ब्रह्मणः ।
—ऋण, सं. पुं. (सं. न.) मुमुक्षुवरः (वि. यह
देशी के पठनपाठन से उत्तरगा है) ।

ए

ए, हिन्दीवर्णमालाया अष्टमः स्वरवर्णः, एकारः ।
एँच-पेंच, सं. पुं. (अनु. न. प्रा. पेंच) वक्तव्य,
कृद्विस्तारः ।
एँडी, सं. स्त्री, कौशिक-कौशिक-भेदः २. तस्य कीटः
३. कौशिकदम्भभेदः ।
एंपर, सं. पुं. (अं.) सभ्राज्, महाराजः, राजा-
धिराजः, अधिराजः ।
एंपावर, सं. पुं. (अं.) अ(आ) धिराज्यम्,
साम्राज्यम् ।
एंप्रेस, सं. स्त्री. (कं.) सम्राज्ञी, राजाधिराज-
महाराज-पत्नी, अधीश्वरी ।
एँबुलेंस, सं. स्त्री. (अं.) चरद्विधिसालकः
२. क्षण-संग-वाहन-शक्ति ।
एकंगा, कि. (सं. एकानि) एक, पक्षीय वैज्ञीय
२. असमभारः ।
एक, वि. (सं. सर्.) एका, एका, एकम्
२. अनुल्य, अनुपम ३. कश्चन, कश्चित्,
काचन, विचन ४. तुल्य, समान ।
सं. पुं., उक्ता संख्या, तदंशः (१) च ।
—करना, कि. स., संगम् (पे.) ।
—होना, कि. अ., संघट् (भ्वा. आ. से.) ।
—तरफा, वि., एक-पक्षीय देशीय ।
—बार, कि. वि., सङ्घट् २. एकदा ३. पूर्व,
पुरा, प्राक् ।
—बारगी, कि. वि., युगपत्, समम् ३. साक-
ल्येन ।
—मत, वि., एक-सम, चित्त २. सभर्मः ।
—मत होकर, कि. वि., साम्प्रत्येक एकम-
त्येन ।
—औख देखना, मु., समं दृष्टुं (भ्वा. प. अ.) ।
—एक, मु., सर्व, सकल २. पृथक्-पृथक्
३. क्रमशः ।
—एक करके, मु., आनुपूर्व्या, आनुपूर्व्येण ।

—और एक ग्यारह होना, मु., भिन्न कर्त्ति
वलय ।
—टक, मु., निर्निगेपम्, अतिभिषय ।
—तो, मु., प्रथमं तावत् ।
—दस, मु., निरन्तरम् २. इति, सपदि
३. सङ्घट्टे ४. सन्ध्या ।
—दूसरे को, मु., अन्योऽयं, परपरं, इतरत-
रम् । वि. शिष्यः (अर्थ.) परपर, इतरतः ।
—पेट के, मु., सोदर, सोदर, सोदरे ।
—बात, सं., सत्य प्रतिज्ञा २. यथावक्यनम् ।
—ता, मु., तुल्य, संदश, सम ।
—स्वर से कहना, मु., एकनाथेन क् (भ्वा.
प. से.) ।
केवल—, वि., अरुहान, आर्त्तनीच ।
कोट—, कश्चित्, काचित्, किञ्चित् ।
दो ने से—, वि., अभ्यन्तर, एकतर, अत्यन्तरा,
अन्वन्तरत् (न.) ।
बहुनों ने से—, अन्यतर, एकतर, एकता,
एकतन्त्र (न.) ।
एकचित्त, वि. (सं.) अवहित, स्थिरचित्त
२. अकिञ्चिद्दय ।
एकचित्तता, सं. स्त्री. (सं.) अवधानं, मनो-
योगः २. एकमर्थं, संगतिः (स्त्री.) ।
एकछत्र, वि. (सं.) एकदासनाधीन । कि. वि.
एवाधिपत्येन ।
एकड़, सं. पुं. (अं.) क्षेत्रफलमानभेदः, एकड़म्
(१ ई. बीवा=४८४० वर्गगज) ।
एकतरफा, वि. (प्रा.) एकतरफः) एकपक्षीय
२. सपक्षपात ३. एकपार्श्वसंबन्धम् ।
—डिगरी सं. स्त्री. (प्रा. + अं.) एकपक्षयनि-
देशः ।
एकता, सं. स्त्री. (सं.) संघटनं, ऐक्यम्,
संहतिः (स्त्री.), संगमः, समवायः २. सामर्थ्यं,
तुल्यता ।

एकतान

[८५]

एकावान

एकतान, वि. (सं.) एकाग्रचित्त, मग्न, लीन ।
 एकतारा, सं. पुं. (हि. एक + तार) एकतारः,
 वाद्यभेदः ।
 एकत्र, क्रि. वि. (सं.) एक, स्थले स्थाने ।
 —करना, क्रि. सं., संग्रह् (कृ. उ. से.) ।
 —होना, क्रि. अ., संमित् (भ्या. प. से.) ।
 एकत्रित, वि. (सं. एकत्र >) संघीभूत, संचित,
 संघूर्णित ।
 एकत्रय, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'एकता' ।
 एकदंत, सं. पुं. (सं.) गणेशः, लंबोदर ।
 एकदा, अन्व. (सं.) सकृत् (अन्व.) २. पूर्व,
 पुरा, प्राक् (सच अन्व.) ।
 एकदेशीय, वि. (सं.) एकदेश्य, एकस्थानीय ।
 एकनिष्ठ, वि. (सं.) एकोपासक ।
 एकरीग, वि. (सं.) समान, सर्वा २. शुद्धा-
 त्मन् ।
 एकरीस, वि. (सं.) तुल्य, सदृश २. अव्यय,
 अपरिणामिन्, परिवर्तनरहित ।
 एकरूप, वि. (सं.) स-सम-समान, रूप, तुल्य,
 समान ।
 एकवचन, सं. पुं. (सं. न.) एकवानकं वचनम्
 (व्या.) ।
 एकवाक्यता, सं. स्त्री. (सं.) सामर्थ्यं, एक-
 मत्वम् ।
 एकसर, अ., आग्रतम्, आपादनस्तकम् ।
 २. सहज (अन्व.) वि. एकाकिन्, असहाय ।
 एकहरा, वि. (सं. एकरतर) एकारतर, एक-
 फलयः, २. एक, सूत्र-गुण ३. तटु, सूक्ष्म ।
 —वदन, सं. पुं. कृतदेहः ।
 एकाकी, सं. पुं. (सं-किन्) रूपकभेदः
 २. एकाकिनुक्तं रूपकम् ।
 एकाग्र, वि. (सं.) एकाग्रवच, एकभाग
 २. विकल्पः । सं. पुं. अंगरथकः २. विभुः ३.
 दुग्धभद्रः ४. नन्दनः-नम् ५. शिरस् (न.) ।
 एकांगी, वि. (सं-यिन्) एकपञ्चमी २. दुर्दम ।
 एकांन, वि. (सं.) अत्यन्त २. एकाकिन्,
 पृथक्स्थित । सं. पुं. (सं.) विजनं, त्रिविक्रम् ।
 —वास, सं. पुं. (सं.) संसर्गाभावः ।
 —वासी, वि. (सं-सिन्) निर्जन-विजन-
 वासिन् ।
 एका, सं. पुं. (हि. एक) संहतिः (स्त्री.),
 ऐक्यम्, संघटनम् ।

एकाएक, क्रि. वि. (सं. एक + एक >) अक-
 स्मात्, एकपदे, सदृसा, अकीडे ।
 एकाकार, सं. पुं. (सं.) सारूप्यं, साम्यम् वि.,
 सरूप, सम, समान ।
 एकाकी, वि. (सं-किन्) एकल, दे. 'अकेलम्' ।
 एकाक्ष, वि. (सं.) काण, चन्द्रलोचन । सं.
 पुं., काकः २. शुक्राचार्यः ।
 एकाक्षर, वि. (सं.) एक-अक्षरिन्-वर्षा । सं. पुं.
 (सं. न.) ओंकारः ।
 एकाग्र, वि. (सं.) स्थिरबुद्धि, धीर २. अनन्य-
 मित्त, एकतान, एकाग्रवृत्ति ।
 —चित्त, वि., दे. 'एकाग्र' २ ।
 एकाग्रता, सं. स्त्री. (सं.) अनन्य-चित्तता-
 मनस्कता, एकतानता ।
 एकात्मता, सं. स्त्री. (सं.) एकत्वं, एकता,
 एकरूपता, ऐक्यं, भेदाभावः ।
 एकादशी, सं. स्त्री. (सं.) हरि, दिने-दिवसः-
 वासरः ।
 एकाधिक, वि. (सं.) बहु, बहुल, अनेक,
 बहुसंख्यक, भूरि ।
 एकाधिकार, सं. पुं. (सं.) एक-व्यापारः-
 व्यवसायः २. अनन्यसाधारणोऽधिकारः ।
 एकाधिपति, सं. पुं. (सं.) अधीश्वरः, अधि-
 राजः, सत्राज्, महाराजः ।
 एकाधिपत्य, सं. पुं. (सं. न.) एक-प्रभुरव-
 र्यामित्यम्, पूर्णप्रभुत्वम् ।
 एकार्थक, वि. (सं.) सम-समान-तुल्य-
 अर्थक । सं. पुं., पर्यायशब्दः ।
 एकावली, सं. स्त्री. (सं.) अलंकारभेदः (सा.)
 २. एकवृष्टिका, एकतारो हारः ।
 एक्रीकरण, सं. पुं. (सं. न.) एकतासाधनं,
 एकत्वसाधनम् ।
 एकीभाव, सं. पुं. (सं.) संघटनं, संयोगः,
 संश्लेषः ।
 एकीभूत, वि. (सं.) संयुक्त, मिश्रित, संहत ।
 एका, वि. (सं. एक >) एक-विषयक-संबन्धिन्
 २. एकाकिन्, एकल । सं. पुं. शूद्रभद्रः प्राणिन्
 २. एकदशुशास्त्रो द्विको वाहनभेदः ३. सैनिक-
 भेदः ४. एकचिह्नयुक्तं क्रीडापत्रम् ।
 एकावान, सं. पुं. (हि. एका) सारथिः, सूतः,
 हयंकरः ।

पृष्ठी, सं. स्त्री. (हि. पृष्ठा) एकवृषभवाह्यं शकटम्, वृषवहनम् ।
 पृष्ठाभिनन सं. पुं. (अं.) दे. 'परीक्षक' ।
 पृष्ठाभिननेशन, सं. पुं. (अं.) दे. 'परीक्षा' ।
 पृष्ठासरे, सं. स्त्री. (अं.) पृष्ठासरिणः ।
 पृष्ठाट, सं. पुं. (अं.) प्रतिनिधिः, प्रतिहस्तः ।
 २. दे. 'अद्विष्टा' इ. कारकः ।
 पृष्ठासी, सं. स्त्री. (अं.) परद्रव्यक्रयक्रयस्थानम् ।
 २. प्रातिनिध्यम् इ. कारकत्वम् ।
 पृष्ठा, सं. पुं. (अं.) अणुः ।
 —वम, सं. पुं., अणुवचम् ।
 पृष्ठाणी, सं. पुं. (अं.) परकार्यं, साधकः संपादकः, प्रति, पुरुषः-दरतः ।
 पृष्ठा, सं. स्त्री. [सं. पृष्ठा (ङ) कम्] पार्थिणः (पुं. स्त्री.) पाद, मूल-तलम्, गौहिरम् ।
 —लगाना, मु., घोटकालीन् पार्थिणना प्रसुद (प्रे.) २. उत्तम् (प्रे.) ३. वाष्प (स्वा. आ. से.) ।
 पृष्ठाकोट, सं. पुं. (अं.) दे. 'अद्विष्टो' तथा 'वकील' ।
 पृष्ठाट, सं. पुं. (अं.) संपादकः ।
 पृष्ठाटरी, सं. स्त्री. (अं. पृष्ठाटरी >) संपादकता ।
 पृष्ठा, सं. स्त्री. [सं. पृष्ठा (ङ) कं] दे. 'पृष्ठा' ।
 —रगदना, मु., सुदीर्घकालं कष्टं सद् (स्वा. आ. से.) २. चिररोगिणं पीडं (करी) ।
 —से चोटी तक, मु., आपादशीर्षम्, अद्यतन् ।
 पृष्ठावार, सं. पुं. (अं.) विश्वासः, प्रत्ययः ।

पृष्ठावार, सं. पुं. (अं.) आपत्तिः (स्त्री.), बाधः, विरोधः, आश्लेषः, प्रत्ययः ।
 पृष्ठा, सं. पुं. (सं.) चित्रकः, पञ्चांगुलः दीर्घ-पत्रकः, गन्धर्वहस्तकः ।
 पृष्ठा, सं. पुं. (तु.) राज-दूतः, संदेशदरः ।
 पृष्ठा, सं. स्त्री. (सं.) बाला, हिमा, चंद्रिका, बहुलंघा, ऐन्द्रा, द्राविदी ।
 पृष्ठा, सं. पुं. (अं.) घोषणा, विलम्बः (स्त्री.) ।
 पृष्ठाट, सं. पुं. (अं.) निर्वाचनसमूहः ।
 २. निर्वाचनक्षेत्रम् ।
 पृष्ठा, क्रि. वि. (सं.) इत्यं, अनया रीत्या ।
 २. अपि, च ।
 पृष्ठा, अर्थ. (सं.) दीर्घम्, मात्र २. अपि, च, अपि च ।
 पृष्ठा, सं. पुं. (प्रा.) प्रति (ती) कारः, प्रति-क्रिया-अपकारः ।
 २. क्षति, निःक्षतिः (स्त्री.)-पूरणम् इ. प्रतिनिधिः ।
 पृष्ठा, सं. पुं. (यू. इव. अशु = पूर्वदिशा >) पञ्चमहाद्वीपेषु अन्यतमः ।
 पृष्ठाई, वि. (अं. पृष्ठा >) पृष्ठा, संबन्धिः ।
 पृष्ठा, सं. स्त्री. (सं.) अर्काक्षा, रक्षा, वाष्ठा, इच्छः ।
 पृष्ठाविद्या, सं. स्त्री. (अं.) अपभ्रंशः, अवैद्या ।
 २. अस्वाहारः ।
 पृष्ठा, सं. पुं. (अं.) रुपा, उपवारः ।
 २. कृतज्ञता ।
 —मंद, वि., कृतज्ञ कृतवेदिन् ।

ऐ

ऐ, हिन्दीवर्णमालाया नवमः स्वरवर्णः, ऐकारः ।
 ऐ, अर्थ. (अनु.) कि. कथं, ननु २. अहो, अदुर्लभं, आश्चर्यम् ।
 ऐम्हो, वि. (अं. समास के आरंभ में) आंल. ।
 —इंडियन, सं. (अं.) आंग्लभारतीयः ।
 —वर्नाक्यूलर, वि. (अं.) आंग्ल (विशालय) स्वदेशीय ।
 ऐम्ह, सं. स्त्री. (हि. ऐम्हना) आ-समा-कर्षः-कर्षणम्, प्रसारः, आयामः, विततिः (स्त्री.) ।
 ऐम्हना, क्रि. स. (हि. ऐम्हना) कृष् (स्वा. प. अ.) २. वित्तं (प्रे.), वित्तम् (त. उ. से.) ३. अप-अव-कृष् ।
 ऐम्हनाताना, वि. (हि. ऐम्हना + तानना) वक्रदृष्टि, केकर, केदर, वलिर ।

ऐम्हनातानी, सं. स्त्री. (पूर्व.) उभयतः कर्षणं २. संपर्षः, रपर्षा, अङ्गमहिम्ना ।
 ऐम्ह, सं. स्त्री. (हि. ऐम्हना) गर्वः, दर्पः आरोपः २. सगर्ववतिः इ. द्वेषः, मांसश्रेयं ४. दे. 'ऐम्हना' ।
 ऐम्ह, सं. स्त्री. (पूर्व.) व्यापत्तं, व्यापक्यं, वक्रता २. नृपः, वस्त्रभंगः इ. आकर्षणम् ४. माशेषपातः, उच्छेदनम् ।
 ऐम्हना, क्रि. स. (सं. आवेष्टनम्) व्यापित-कृत (प्रे.) सुद-सुद (सु.) आ- (स्वा. प. से.) २. पीडयित्वा आदा (जु. आ. अ.) क्लेश निष्कृष् (स्वा. प. अ.) इ. छलेन आदा । क्रि. अ., आ-कृष् (कर्म.), स्व-कृष् (स्वा. आ. से.) २. प्रा-कृष्, तन् (कर्म.) ३. गर्व (स्वा.

प. से.) ४. प्रलय (भ्वा. प. से.) ५. दे. 'मरना'।

पेंद्र, वि. (हि. पेंटना) गवित, दृश ।

पेंद्र, सं. पुं. (हि. पेंद्र) दे. 'पेंद्र' (१) ।

२. आवर्तः, भ्रमः । वि., निर्गुण, अकिञ्चिक्कर ।

—दार, वि. (हि. + द्रा.) सर्ग, अहंमामिन् २. उज्ज्वल ।

—पेंद्रना, क्रि. भ. (हि. पेंटना) व्यावृत्त (भ्वा. आ. से.) अंगानि आतन (त. उ. से.) ३. गये (भ्वा. प. से.) । क्रि. स., दे. 'पेंटना' क्रि. सं. (१) ।

पेंद्राना, क्रि. भ. (पेंद्रना) अंगानि आतन (त. उ. से.) २. सर्ग चल् (भ्वा. प. से.) ।

पेंद्रव, वि. (सं.) चान्द्र, चान्द्रिक, चान्द्रगस, सौमिक । सं. पुं. चान्द्रमासः ।

पेंद्र, वि. (सं.) इन्द्र-इक, विषयक, पौरन्दर । सं. पुं., ऐन्द्रिः, इन्द्रपुत्रः ।

पेंद्रजातिक, सं. पुं. (सं.) गाथिन्, गाथिकः, कुटुकजीविन् ।

पेंद्रि, सं. पुं. (सं.) इन्द्रपुत्रो जयन्तः २. अर्जुनः ३. नाकिः ४. कावः ।

पेंद्रिय, वि. (सं.) ऐन्द्रियक, इन्द्रिय, विषयक, श्राद्ध-संबन्धिन् ।

पे, अन्य. (सं. अधि) भोः, हे, अरे ।

पेक, वि. (सं.) एक, विषयक-सम्बन्धिन् ।

—पत्य, सं. पुं. (सं. न.) एकतंत्रशासनम् २. पूर्ण, प्रभुत्वं स्वामित्वम् ।

—भाव्य, सं. पुं. (सं. न.) १-२. स्वभाव-उद्देश्य, ऐश्वर्यम् ।

—मत्य, सं. पुं. (सं. न.) मत्तैयम्, साम्भ-त्वम् ।

—राज्य, सं. पुं. (सं. न.) एकतंत्रशासनम् ।

पेकातिक, वि. (सं.) सिद्ध, सम्पन्न २. संपूर्ण ३. निर्दोष ४. अभयसम्बद्ध ।

पेकट, सं. पुं. (अं.) अधिनियमः २. रूपक-नाटक, अंशः ३. वृत्तिः (स्त्री.) ।

—करना, क्रि. स., अभि बी (भ्वा. प. अ.), नट् (नु.) ।

पेकटर, सं. पुं. (अं.) नर्तकः, नटः, शैल्यः, कुटीलयः, अभिनेतृ ।

पेकट्रेस, सं. स्त्री. (अं.) नटी, नर्तकी, अभिनेत्री ।

पेक्य, सं. पुं. (सं. न.) एकता, एकत्वम् २. दे. 'एका' ।

पेच्छिक, वि. (सं.) वैकल्पिक (-की स्त्री.), स्वेच्छातंत्र्य, रूचयोन, सविकल्प ।

पेडवोकेट, सं. पुं. (अं.) पक्षसमर्थकः, परार्थ-वक्तृ ।

पेतिहासिक, वि. (सं.) इतिहास, विषयक-संबन्धिन् २. इतिहासज्ञ, पुरावृत्तवेत्तृ ।

पेनिह्य, सं. पुं. (सं. न.) पारंपर्यपदेशः, प्रमाण-भेदः (न्या.) ।

पेन, सं. पुं., दे. 'अयन' ।

पेन, वि. (अ.) न्याय्य, उचित २. संपूर्ण ।

सं. स्त्री. नेत्रं, नयनम् ।

पेनक, सं. स्त्री. (अ. पेन >) उपनेत्रं-त्रे, नेत्रकाची ।

पेव, सं. पुं. (अ.) दोषः, विकारः, २. व्यसनं, अवगुणः ।

पेत्री, वि. (अ.) शोपिन्, व्यसनिन् २. कुनेष्टकः ।

पेयार, सं. पुं. (अ.) गायविन्, धूर्तः, छलिन ।

पेयारी, सं. स्त्री. (अ.) कपदित्वं, धूर्तता, माया-विता ।

पेयाश, वि. (अ.) भोगिन्, विलासिः २. कामुक, लपट ।

पेयाशी, सं. स्त्री. (अ.) विलासिता २. कामु-कता ।

पेरागौरा, सं. पुं. (अ. गेर + अनु. ऐर) परः, अदरिचितः २. तुच्छजनः ।

पेरावत, सं. पुं. (सं.) इन्द्रगजः चतुर्दंतः, सदादंतः, अभ्रनातंगः २. विद्युत्सुक्ती मेघः ३. इन्द्रचापः ।

पेरावती, सं. स्त्री. (सं.) पेरावतभार्या २. विद्युत् (स्त्री.) ३. पंचगदप्रान्ते नदीविशेषः (= रात्री) ।

पेश, सं. पुं. (अ.) विलासः, कुलं, भोगः २. कुरुसाधनम् ।

—ष आराम, सं. पुं., सुखभोगी, अमोद-प्रमोदी ।

पेश्वर्य, सं. पुं. (सं. न.) पन्नं, अर्थः, द्रव्यं, वित्तं, दिग्बन्ध, संपत्तिः (स्त्री.) २. अणमाद्यो

योगासद्वयः (स्त्री. बहु.) ३. प्रभुत्वं, आधि-पत्यम् ।

पेश्वर्यशाही

[८८]

ओढ़नी

पेश्वर्यशाही, वि. (सं. लिन्) ऐश्वर्यवत्, धनिक, धनाढ्य, सम्पन्न ।

ऐसा, वि. (सं. ईदृश) ऐबंविध, पतसुल्य, पतादृश । (स्त्री, ईदृशी, पतादृशी) ।

—चैसा, सु., तुच्छ, साधारण ।

ऐसे, क्रि. वि. (हिं. ऐसा) इत्थं. एवं, अनेन प्रकारेण ।

ऐहिक, वि. (सं.) सांसारिक, व्यावहारिक, लौकिक ।

ओ

ओ, हिंदीवर्णमालाया दशमः स्वरवर्णः, ओकारः ।

ओँ, अव्य. (सं.) आ, एवं, एवमेव, वाटम्, अथ किं, तथा, तथास्तु, अस्तु ।

ओँ, सं. पुं. (सं. अव्य.) प्रणयः, ओंकारः ।

ओंकार, सं. पुं. (सं.) ओम् इति शब्दः, प्रणयः ।

ओंठ, सं. पुं. (ओष्ठः) दंत-रदन-दशन-रद-छदः-पटः । (ऊपर का) ऊर्ध्वोष्ठः । (नीचे का) अधरः ।

—चबाना, सु., कूप (दि. प. से) ।

ओंढा, वि., ग(गं)भीर, अगाध । सं. पुं. गर्तः, गर्तम्, अवटः ।

ओ, अव्य. (अनु) मोः, अपि, हे, अरे २. च, अपि च ३. अहो, ही ४. स्मरणानुबंधादि-मूचकमव्ययम् ।

ओक, सं. पुं. (सं. ओकस् न.) गृहं, आलयः २. चरणं, आश्रयः ।

ओक, सं. स्त्री. (अनु.) वगनेच्छा, विवमिषा ।

ओकण, सं. पुं. (सं.) मत्तुणः दे. 'कटमल' ।

ओकना, क्रि. अ. (हिं. ओक) उच्चारणम् (भ्वा. प. से.) २. मदिषोव रेम् (भ्वा. वा. से.) ।

ओकाई, सं. स्त्री. (हिं. ओकना) वमनं २. वमनेच्छा ।

ओखल, सं. पुं., दे. 'ओखली' ।

ओखली, सं. स्त्री. (सं. उल्लखलम्) काष्ठनयं पाषाणमयं वा उट्ट (लृ.) खलम् ।

ओच, सं. पुं. (सं.) समूहः, राशिः २. प्रसवत्वं, सान्द्रता ३. प्रवाहः, धारा ।

ओछा, वि. (सं. तुच्छ) क्षुद्र, अधम, लज्जवेलसु, कापुः २. नाथ, अल्पजल ३. लघु, सुसह्य ४. अपयामिलव ।

—पन, सं. पुं., तुच्छता, क्षुद्रता, नीचता ।

ओज, सं. पुं. (सं. ओजस् न.) तेजस्, प्रतापः, मुखकान्तिः (स्त्री.) २. प्रकाशः ३. गुणभेदः (सा.) ४. देहस्थरसानां सारांशः ।

ओजस्विना, सं. स्त्री. (सं.) कान्तिः (स्त्री.) । तेजस् (न.) ।

ओजस्वी, वि. (सं-विद्य) तेजस्विन्, कान्ति-मत्, प्रभावशालिन्, शक्तिगत् ।

ओजोन, सं. पुं. (अं.) प्रजारकं, दाहनम्, वातिभेदः ।

ओहरी, सं. स्त्री. (सं. जठरम्) कुक्षिः, तुंद, फंठः २. अमाशयः, अन्नाशयः, जठरम् ।

ओइल, सं. पुं. (सं. अकन्धनम् >) आवरणं, आच्छादनम् । वि., अदृश्य, अन्तरित ।

ओइता, सं. पुं. (सं. उपाध्यायः >) ब्राह्मण-जातिभेदः २. भूतवाधाहरः, कुहकः ।

ओट, सं. स्त्री. (सं. उट्=वास फूस >) व्यवधानं, तिरस्कारिणी, प्रतिसारा, जवनिक्ता २. संशयः, आश्रयः ।

ओटना, क्रि. सं. (सं. आवर्तनम् >) यंत्रेण कार्यासंबीजानि पृथक् कृ २. पुनः पुनः वद (भ्वा. प. से.) ।

ओटनी, सं. स्त्री. (हिं. ओटना) कार्यास-बीजपृथक्करणयंत्रम्, भ्बेलनी ।

ओट, सं. पुं., दे. 'ओट' ।

ओड़, सं. पुं., गर्दभशकः, जातिभेदः ।

ओइा, सं. पुं. (?) करंडः, कंगोलः २. दुर्भिक्षं, अद्वाराभावः ।

ओइ, सं. पुं. (सं.) दे. 'उईसा' २. ओइ-उरकल-वासिन् ।

ओइना, क्रि. सं. (सं. आन-उट >) परिधा (ज. उ. अ.) प्रा-आ-वृ (स्वा. उ. से.) । सं. पुं., आवरणं, प्रावारः, वेष्टनं, पुटम्, २. उत्तरच्छदः, प्रच्छदः ।

ओइनी, सं. स्त्री. (हिं. ओइना) नारीणां उत्तर-वेष्टनं-प्रावारकः ।

—चदलना, सु., सखीत्वं भगिनीत्वं वा स्था (प्रे.) ।

ओढ़ाना

[८९]

औटाना

ओढ़ाना, कि. स. (हि. ओढ़ना) 'ओढ़ना'
के धातुओं के प्रे. रूप ।
ओत, वि. (सं.) सुभित, घातित ।
—ओत, वि. (सं.) सुभित, सुसंस्कृत, संसृष्ट,
पररपरं सुयथित । सं. पुं., नयनाणी (डि.),
तंत्रप्रणितंके (द्वि.) ।
ओथ, सं. स्त्री. (अं.) श्मथः, दिव्यं, समथः,
प्रत्ययः ।
—कमिशनर, सं. पुं. (अं.) शपथ-दिव्य-
आनुक्त ।
ओदन, सं. पुं. (सं. पुं. न.) भक्तं, अन्नं, पक-
त्रोहिः ।
ओदा, वि. (सं. उदन् >) उन्न, उत्त, आर्द्र ।
ओप, सं. स्त्री. (हि. ओपना) कान्ति-
दृतिः दीप्तिः (स्त्री.), सुपमा, सौन्दर्यम् ।
ओफ, अव्य. (अनु.) पीडाशोकः श्रयंखेदसूचक-
मध्ययम्, आः, हा, अहह, अहो ।
ओम्, सं. पुं. (सं. अव्य.) प्रणवः, ओंकारः,
ईशसंज्ञा २. ईश्वरः ।
ओर, सं. स्त्री. (सं. अवारं >) दिशा, दिशः
(स्त्री.), काष्ठा, आशा २. पक्षः, पार्श्वः । सं. पुं.,
अंतः, प्रांतः, तदम् २. आरंभः, आदिः ।
इस—, कि. वि., शतः, अरथां दिशि, अत्र ।
उस—, कि. वि., ततः, तत्र, तस्यां दिशायाम् ।
चारों—, कि. वि. सर्वतः, समंतात्, समंतातः,
अभितः, परितः ।
ओल, सं. पुं. (सं.) शूरपः, दे. 'जिर्गिन्द' ।
ओला, सं. पुं. (सं. उपलः) इन्द्रोपलः पयोधनः,

करका, धनकफः, वर्षशिला २. शर्करोपलः ।
वि., उपलशोतल ।
सिर मुहानि हा ओले पदे, मु., प्रथमे प्रासे
मक्षिकापातः ।
ओचरकोट, सं. पुं. (अं.) लंबकांशुधः ।
ओचरमियर, सं. पुं. (अं.) अधिदर्शकः ।
ओपधि-धी, सं. स्त्री. (सं.) हरितकं, शाकः-
कां, शिशुः २. अगदः, ओपधं, भेषजम्,
भेषज्यम् ।
—ईश, सं. पुं. (सं.) चद्रः, सोमः ।
ओष्ट, सं. पुं. (सं.) दे. 'ओठ' ।
ओष्ठथ, वि. (सं.) ओष्ठस्त्वधिन् २. ओष्ठो-
च्चार्यं (प, फ आदि वर्ण) ।
ओस, सं. स्त्री. (सं. अव्ययः) तुषारः,
प्रालेथं, हिम-रात्रि—रु, जलम्, नीहारः,
तुहिनम् ।
—पङ्गु जाना, मु., म्ले-म्ले-सर् (न्वा. प. अ.)
२. लङ् (तु. आ. से.) ।
ओसार, सं. पुं., वित्सारः, प्रसारः २. दे.
'ओसार' । वि. वित्तुत, विस्तीर्ण ।
ओसारा, सं. पुं., प्रय (वा) णः, आल्लिदः ।
ओह, अव्य. (अनु.) (आश्चर्यं) अहो, ही ।
(दुःख) अहह, हा. आः ।
ओहदा, सं. पुं. (अ.) पदं, पदवीं, अधिकारः ।
ओहदेदार, सं. पुं. (अ. + फा.) पदाधिकारिन्,
अधिकृतः ।
ओहो, अव्य. (अनु.) अहो, ही, रहो ।

औ

औ, हिन्दीवर्णमालाया एकादशः स्वरवर्णः
ओंकारः ।
औघ्रा, वि. (सं. अघोमुख) अवाल्लुख, अघो-
मुख, विपर्यय, दिलोम ।
औपी खोपड़ों का, मु., मूर्ख, लड़ ।
औस, सं. पुं. (अं.) (सधादतेलुम्भान्भयः)
नालविशेषः, औसम् ।
औ, अव्य. (हि. और) च । दे. 'और' ।
औकात सं. स्त्री. एक. (अ. एक का बहु.)
शक्तिः (स्त्री.), सामर्थ्यम् । सं. पुं., कालाः,
समयाः ।
औगुन, सं. पुं., दे. 'अवगुण' ।

औघड़, सं. पुं. (सं. अघोरः) अधोरमतानु-
वाथो पुरुषः २. असमीक्ष्यकारी मनुष्यः
३. अवशकुनः । वि., (सं. अव + हि. बहना)
वियेकहीन २. असंबद्ध ।
औचक, कि. वि., दे. 'अचानक' ।
औचियर, सं. पुं. (सं. न.) औचिती, उपलुक्तता,
नेवमिन्नयम्, सामंजस्यम् ।
औचार सं. पुं. (अ. बअ का बहु.) यंत्राणि,
उपकरणानि, साधनानि (सव न. बहु.) ।
औटाना, कि. अ., दे. 'उवलना' ।
औटाना, कि. स., 'उवलना' के धातुओं के
प्रे. रूप ।

औसुक्य

[९०]

कंगाली

औसुक्य, सं. पुं. (सं. न.) इत्सुकता, दे० ।
 औदरिक, वि. (सं.) उदर-अठर, विषयक
 २. अत्याहारिन्, बहुभुज्, वसगर ।
 औदार्य, सं. पुं. (सं. न.) उदारता, दे० ।
 औद्धत्य, सं. पुं. (सं. न.) उद्यतता, अशिष्टता,
 ग्राम्यता २. अनार्यता, धृष्टता ।
 औद्योगिक, वि. (सं.) उद्योग-व्यवसाय,
 संबंधिन् ।
 औद्वाहिक, वि. (सं.) वैवाहिक, उद्वाह-
 उपयम-परिगय, विषयक ।
 औना-पौना वि. (सं. ऊन-पादोन) न्यूना-
 धिक, ईशद्वन्द्व । वि. वि., न्यूनाधिकतया ।
 औने-पौने करना, मु., हान्या लभेन वा यथा
 कथंचिद् विक्रयणम् ।
 औपचारिक, वि. (सं.) लाक्षणिक, गौण,
 उपचारविषयक ।
 औपनिवेशिक, वि. (सं.) आधिनिवेशिक,
 उपनिवेश-अधिनिवेश, संबंधिन् ।
 —स्वराज्य, सं. पुं. (सं. न.) आधिनिवेशिकं
 स्वातंत्र्यम् ।
 औपन्यासिक, वि. (सं.) उपन्यास-कल्पित-
 कथा-संबंधिन् २. उपन्यासे वर्णनीय ३. अद्भुत,
 विलक्षण । सं. पुं. उपन्यास, कार-लेखकः ।
 औपपत्तिक, वि. (सं.) तर्क-सुक्ति, साध्य ।
 और, अव्य. (सं. अपर >) च, अपि च, अन्यच्च,
 एवंच, अपरं च । वि., अन्य, अपर, भिन्न
 २. अधिक, भूयस् ।

—का और, मु., निपरीत, विरुद्ध, असंगत ।
 औरत, सं. स्त्री. (अ.) नारी, रागा २. पत्नी,
 भार्या ।
 —की जात, सं. स्त्री., स्त्री-नारी, जातिः (स्त्री.) ।
 औरस, सं. पुं. (सं.) धर्मपत्नीनः पुत्रः ।
 औरव, सं. पुं. (सं. अव + देव >) वक्र-तिर्यग्-
 गतिः (स्त्री.) २. वस्त्रस्य तिर्यक्कर्तनम्
 २. जटिलरवे, संश्लिष्टता ३. छलं, कपटम् ।
 —दार, वि., कितव; वंचक ।
 औलाद, सं. स्त्री. (अ.) प्रजा, संतानः-प्रसूतिः
 (स्त्री.), संतानः, तोर्वा, अपत्यम् ।
 औलिया, सं. पुं. (अ. 'बलो' का बहु.) सिद्धाः,
 पुण्यजनः ।
 औवल, वि. (अ.) प्रथम, आदिम २. प्रमुख,
 प्रधान ३. सर्वोत्तम । सं. पुं. आरंभः, उपक्रमः ।
 औषध, सं. पुं. (सं. न.) भेषजं, औषदे, अगदः
 २. हरितकं, डाकः, औषधिः (स्त्री.) ।
 औषधालय, सं. पुं. (सं.) भेषजालयः,
 औषधशाला ।
 औसत, सं. पुं. (अ.) मध्यमा, मध्यदमागम् ।
 वि. मध्यम, सामान्य ।
 औसान, सं. पुं. (का.) चेतना, चैतन्यं, संज्ञा,
 बोधः ।
 —खता होना, मु., मतिभ्रमः, धैर्यंतापः,
 संभ्रमः ।

क

क, देवनागरीवर्णमालायाः प्रथमव्यंजलवर्णः,
 ककारः ।
 कंक, सं. पुं. (सं.) आमिषप्रियः, मूरः, शीर्ष-
 पादः, खामेदः ।
 कंकड़, सं. पुं., दे. 'कंकर' ।
 कंकण, सं. पुं. (सं. पुं. न.) कटकः-कं, बलयः-
 यं, आवापकः-कं, पारिहार्यः-र्यम् ।
 कंकणी, णीका, सं. स्त्री. (सं. किकणी)
 किकिणी, किकि (क) णीका २. क्षुद्रवृक्षा ।
 कंकत, सं. पुं. (सं. पुं. न.) कंकतिकर, कंकती ।
 कंकती, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'कंकत' तथा 'कंती' ।
 कंकर, सं. पुं. (सं. कंकरम्) उपलब्धः, शर्करा,
 अरमपुटिका, अधोलाः (बहु.) ।

कंकरीट, सं. स्त्री. (अं. कंतीट) लोणलेपः ।
 कंकरीला, वि. (हिं. कंकर) शर्करापृत्त,
 कंकरमय ।
 कंकाल, सं. पुं. (सं. पुं. न.) अस्थिपंजरः,
 कर्तकः ।
 कंगन, सं. पुं., दे. 'कंगण' ।
 कंगनी, सं. स्त्री. (सं. कंगनी) प्रियंदा, शीत-
 तंदुलः, कंगु-गुः (स्त्री.) ।
 कंगला, वि. (सं. कंगालः) दरिद्रः, अकिंचन,
 निर्धन, दीन ।
 कंगाल, वि., दे. 'कंगला' ।
 कंगाली, सं. स्त्री. (हिं. कंगाल) दरिद्रता,
 निर्धनता, दरिद्र्यम् ।

कँगूरा, सं. पुं. (प्रा. कँगूरः) शिखरं, शृङ्गम् ।
 कंघा, सं. पुं. (सं. कंकतः) कंकतम् ।
 कंघी, सं. स्त्री. सं. (सं. कंकती) कंकतिका,
 वैशमारकी, प्रसापनी ।
 कंचन, सं. पुं. (सं. कंचनम्) सुवर्णम्
 २. संपत्तिः (स्त्री.) ।
 कंचनी, सं. स्त्री. (हि. कंचन) वेदया, नार्त्की ।
 कंचुक, सं. पुं. (सं.) लंब, -निचोल-प्रावरकः
 २. अंगिका, कंचुलिका ३. कंचन-चम्
 ४. वस्त्रम् ५. दे. 'कंचली' ।
 कंचुकी, सं. पुं. (सं. कंचु) अन्तःपुरचारी
 बुद्धमाहापाः, सौविदताः, सौविदः २. द्वारपालः
 ३. सर्वः ४. दे. 'कंचली' । सं. स्त्री., अंगिका,
 कंचुलिका ।
 कंचैरा, सं. पुं. (हि. कंच) काच, कारः-धमकः ।
 कंज, सं. पुं. (सं.) द्रवण (पुं.) २. वेशः ।
 (सं. न.) कमलम् ३. अग्रतम् ।
 कंजई, वि. (हि. कंजा) धूम्र, धूमल ।
 कंजड़ (र), सं. पुं. (देश. वा कालिञ्जर)
 जातिविशेषः ।
 कंजन, सं. पुं. कामदेवः, मदनः २. लज्जभेदः ।
 कंजा, सं. पुं. (सं. करजः) कंठकिनीशृङ्गः
 २. तस्य बीजम् । वि., करंजवर्ष, धूमल २. धूम्र-
 भवन ।
 कंजूस, वि. (सं. कणः + हि. चूसना) कृपण,
 कदर्यं, अनुत्तरत, किपचान ।
 कंजूसी, सं. स्त्री. (हि. कंजूस) वःपेण्यं,
 कदर्यता, अनुत्तरतरत्वम् ।
 कंठक, सं. पुं. (सं. पुं. न.) शूल्यम् २. विष्टः
 ३. विप्रकरः ४. सुव्यघम् ५. शत्रुः ६. रोमाशः
 ७. कनकः-वस्त्र ।
 —अज्ञान, सं. पुं. (सं.) उष्टः, कदेलकः ।
 कंठकित, वि. (सं.) सर्वदेव, कंठकपूर्ण २. सवित्र
 ३. रोमाश्रित ।
 कंठिथा, सं. स्त्री. (सं. कंठी) कौकम्, शंकुः
 २. ग्रहणी, धरणी ३. भृशपेयः ।
 कंठीला, वि. (हि. कंठी) कंठीविज २. सविष्ट ।
 कंठ, सं. पुं. (सं.) गत्यं, गरा, निगरणः २. स्वरः
 ३. शुक्रादीनां कंठरेखा ४. दे. 'कंठा' ।
 —अग्र, वि. (सं.) दे. 'कंठरथ' ।
 —गत, वि. (सं.) निर्गमनोन्मुख (प्राण) ।

—माला, सं. स्त्री. (सं.) गण्डमाला, कंठरंग-
 भेदः ।
 कंठस्थ, वि. (सं.) कंठाग्र, कंठगत, मुखग्र,
 मुखस्थ ।
 कंठा, सं. पुं. (सं. कंठः >) कंठी, सुवर्णगुटिका-
 निमित्तः कंठालंकारः २. शुक्रादीनां गलरेखा ।
 कंठी, सं. स्त्री. (सं.) कंठः, गलः २. अश्वकंठ-
 रदिमः (पुं.) ३. लघुगुटिका-कंठी । ४. तुलसी-
 बीजमाला ।
 कंठ्य, वि. (सं.) कंठीचार्य २. कंठजात
 ३. कंठीपकारक ।
 कंठा, सं. पुं. (सं. कंठिनं >) दे. 'उपल' ।
 कंठी, सं. स्त्री. (हि. कंठा) लघुगोमयम्
 २. मत्स्यगुटिका ।
 कंठील, सं. स्त्री. (अ. कंठील) कर्मलादि-
 निमित्तो दोषकोपः ।
 कंठु, कंठु, सं. स्त्री. (सं.) कंठुतिः (स्त्री.),
 दे. 'खजली' ।
 कंठ, सं. पुं. (सं. कान्तः) प्रियः, कल्लभा,
 रमणः २. पतिः, भवः ३. इक्षरः ।
 कंथा, सं. स्त्री. (सं.) मिथुकर्षटः, दे. 'गुदही' ।
 कंथी, सं. पुं. (सं. कंथा >) मिथुकः, कंथा-
 धारिन् ।
 कंद, सं. पुं. (सं. पुं. न.) गोलमूलं, खाण-
 मूलम् २. लक्षुणम् ३. गेयः ४. शरणः ।
 कंद, सं. पुं. (प्रा.) सिताकंदः लंडयोदकः ।
 कंदर, सं. पुं. (सं. पुं. न.) गहरं, दुहा, दरी ।
 कंदरा, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'कंदर' ।
 कंदर्प, सं. पुं. (सं.) मदनः, कामदेवः ।
 कंदा, वि. (प्रा.) उत्कीर्णं, तष्ट ।
 कंदुक, सं. पुं. (सं.) गेन्दुः, गेण्डुः २. उपधानं,
 गण्डुः ३. पूगफलम् ।
 कंधा, सं. पुं. (सं. स्कन्धः) अंसः, भुजमूल,
 श्रोःशिखरं, कर्तस्वरम् ।
 कंधार, सं. पुं. (सं. गंधारः) नगर-प्रदेशः,
 विशेषः ।
 कंघ, सं. पुं. (सं.) दे. 'कंघकौपी' ।
 कंघकौपी, सं. स्त्री. (हि. कंधीना) प्र-कंधः,
 वेपथं, वेपथुः, एजत्, कायकंधः ।
 कंधनी, सं. स्त्री. (सं.) समवायः, समन्वयसायि-
 संघः २. सैन्यगुरुः ३. गणः ४. साहचर्यम् ।

कंपाउंडर

[१२]

कच्चा

कंपाउंडर, सं. पुं. (अं.) *संमिश्रकः, योगविद्, वैद्यसहायः ।

कंपाउंडरी, सं. स्त्री, संमिश्रकः, व्यवसायः-कर्मन् (न.) ।

कंपाना क्रि. स. (हि. कान्पना) कम्, वेप्, वेल्, स्पंद, एज् के फ्रे. रूप ।

कंपायमान, वि. (सं. कम्पमान) एजमान, कम्पन, कंप, स्पंदमान ।

कंपास, सं. पुं. (अं.) दिग्दर्शकयंत्रम् ।

कंपित, वि. (सं.) कम्पमान, कंपल २. भात, व्रत ।

कंपू, सं. पुं. (अं. कैप) द्विविरं, स्कन्धाधारः २. सेना ३. दे. 'सिमा' ।

कंबकृत, वि. (प्रा. कम्बकृत) भान्यहीन, दुर्देव ।

कंबल, सं. पुं. (सं.) रत्नकः, आविकः, ऊर्णाट्टः, औरधः, नीहारः ।

कंबु, सं. पुं. (सं.) दे. 'शंख' ।

कंस, सं. पुं. (सं.) कृष्णमातुलः । (सं. न.) कांस्यं, ताम्राक्षम् २. पानभाजनं, कंक्षम् ।

—ताल, सं. पुं. दे. 'झाँझ' ।

क, सं. पुं. (सं.) ब्रह्मन् (पुं.) २. सूर्यः ३. अग्निः ४. विष्णुः ५. यमः ६. वायुः ७. मरुतः ।

कई, वि. (सं. कति) कतिपय, एकाधिक, अनेक, बहु, प्रभृत ।

—बार, क्रि. वि., बहुधा, पुनः पुनः, मुहुर्मुहुः, भूयोभूयः, बहुवारम् ।

ककड़ी-री, सं. स्त्री. (सं. ककटी) लोमशा, स्थूला, तीयफला, गजदंतफला, चिभेंटी, मूवला ।

ककहरा, सं. पुं. [क + क—ह + रा (प्रा. य.)] प्राथमिकक्षणम् २. वर्णमाला ३. पूर्वकार्य-समूहः ।

ककुद्, सं. पुं. (सं. ककुद् स्त्री.) ककुद्-दं, अंसकृतः, गटुः, स्थगुः २. राजचिह्नम् (छत्रादि) ।

ककुभ, सं. पुं. (सं.) अजूनवृक्षः २. दे. 'दिशा' ।

कक, सं. पुं. (सं.) वाटुमूलम्, दे. 'कगल' २. दे. 'लौंग' ३. ककलः, दे. 'कहार' ४. लृगम् ५. शुष्क- , वनम् ६. भूमिः (स्त्री.) ७. भित्तिः (स्त्री.) ८. कोष्ठः ९. दोषः १०. दे. 'कछराली' ११. श्रेणी, कक्षा १२. दे. 'ओचल' ।

कक्षा, सं. स्त्री. (सं.) परिधिः, परिवेशः-पः २. ग्रहमार्गः ३. सान्ध्यम् ४. वर्गः, श्रेणी

५. दे. 'ओड़ी' ६. वाटुमूलम् ७. दे. 'कछराली'

८. गृह, भित्तिः (स्त्री.)—पक्षः ९. दे. 'लौंग' १०. इभितरज्जुः (स्त्री.) ।

कगर, सं. पुं. [सं. कं (= जल) + अग्र >] उन्मिच्छन्, तीरं-तटम् २. सीमा ३. प्राकार-श्रृंगम् ।

कगार, सं. पुं. (हि. कगर) उन्नतःप्रम् २. उन्मिच्छन्, कूलं-तीरम् ।

कच, सं. पुं. (सं.) देहाः, कुंतलाः, कचाः, शिरसिजाः, शिरोग्रहाः (सव वटु.) २. समूहः ।

कचकच, सं. स्त्री. (अनु.) प्रलापः २. वाग्बुद्धम् ।

कचनार, सं. पुं. (सं. कांचनालः) कौलिदारः, पाकारिः, स्वल्पशैलरः ।

कचपच, सं. पुं. (अनु.) संवाधः, संमर्दः २. दे. 'कचकच' ।

कचपचिया, कचपची, सं. स्त्री. (हि. कचाच) कृत्तिकाचक्षत्रम् २. सरतकलारा, भूषणभेदः ।

कचर कचर, सं. स्त्री. (अनु.) आमफलचर्षण-ध्वनिः २. दे० 'कचकच' ।

कचरा, सं. पुं. (हि. कच्चा) अपक, खर्जं-दशांगुलम् २. अपकचित्रबली ३. चर्मटः । दे. 'कृष्णकरकट' ।

कचहरी, सं. स्त्री. (हि. कचकच) धर्म-न्याय, -सभा, व्यवहारामंडपः, न्यायालयः, धर्म-, अधिकरणम् २. राजसभा ।

कचाई, सं. स्त्री. (हि. कचा) आमता, अपकता, २. पाटय-दाक्ष्य-अनुभव, हीनता ।

कचायेंध, सं. स्त्री. (हि. कचा + येंध) आम-अपक, -गन्धः ।

कचाल, सं. पुं. (हि. कचा + आल) अलुकी, वायुः (स्त्री.) कर्षी, तीक्ष्णकन्दः, अकर्मिः ।

कचीची, सं. स्त्री. (अनु. कच) हनुः (पुं. स्त्री.), हनुः (स्त्री.) ।

कचूर, सं. पुं. (हि. कचूरना) निष्पिष्ट-प्रदार्थः, नृणितश्शरु २. कचूसारः, मध्या ।

कचूर, सं. पुं. (सं. कचूरः) कुर्कभः, गंधमूलकः, कचूसारः, अटालः ।

कचौरी, सं. स्त्री. (हि. कचरी) मायगर्भ, सुनिष्ठिका, कर्चैरिका ।

कच्चा, वि. (सं. कचग) अपक, हरिततीरस (फलादि) २. अशुत, अज्ञान, असिद्ध (योजनादि) ३. अपरिणत, अपूर्णकाल, अप्राप्तकाल,

अपरिपुष्ट (आत्र आदि) ४. विकारिन्, वसिभर
५. निरस्तर, अद्रामाणिक (वान ३०) ५. प्रच-
लितमःकस्यःक्यु ६. संस्कार-रंशोधन, -अपे-
क्षिन् (वही ३.) ७. नियम-विधि, -विरुद्ध
(दस्तावेज ६.) ८. संकल्पित (घर आदि)
९. अत्युत्पन्न (निवास) १०. कुलित्विन, अतस्कुत
(अक्षर ६.) ।

—चिद्वा, सं. पुं. संशोधनापेक्षितगना २. सत्य-
वधाये, -वृत्तांतः ३. सुप्त-सोप्य, -वार्ता ४. गर्भ-
पक्षः ५. पापसंकल्पाः ।

—पका, वि., अर्ध-साभि, -पक-स्य-धाणः ।

—दञ्जा, सं. पुं., त्रिदशः (कृ.) २. गर्भः ।

—मात्, सं. पुं., सान्ध्या ।

कच्ची, वि. खं. (वि. कच्चा) 'कच्चा' के शब्दों
के लोकोपयोग के रूप, जैसे- प्रपक्व, अमृता ३. ।

—ट्ट, सं. खं., अघात, इष्टका ।

—उमर, सं. खं., अवयवकृता, अद्रातल्यवहारता
२. काल्यन् ३. शोधनम् ।

—रसोई, सं. खं., जलपकमन्त्रम् ।

—रुद्धक, सं. खं., गृहणयो मार्गः ।

—मिळाई, सं. खं., रघुलभृतिः (खं.) ।

कच्छ, सं. पुं. (सं. पुं. न.) अनुपः-पं, जल-
प्रायदेशः २. नद्यः सरसो वा प्रातिभागः
३. प्रदेशविशेषः ।

कच्छप, सं. पुं. (सं.) कूर्मः, दे. 'कछुआ'
२. अघातविशेषः ।

कच्छा, सं. पुं. (सं. कच्छः >) नौकाभेदः
२. दे. 'कछनी' ।

कच्छी, वि. (सं. कच्छ >) कच्छीय,
कच्छ-विषयक-सम्बन्धिन् । सं. पुं., कच्छ-
वासिन् २. कच्छाक्षवः ।

कच्छी, सं. खं., दे. 'कछनी' ।

कच्छू, सं. पुं., दे. 'कछुआ' ।

कछनी, सं. खं. (हि. काछना) जानुलंकि-
काटिवसनम् ।

कछरा(वा)ली, सं. खं. (सं. कक्षः >) कक्षा ।

कछार, सं. पुं. (सं. कच्छः) दे. 'कच्छ'
(१, २) ।

कछुआ, सं. पुं. (सं. कच्छपः) कमठः, कूर्मः,
चतुर्गतिः (पुं.), पंचगुहः, स्तूपपृष्ठः । (खं.
कमठी, बुली, कूर्मी, टुणी) ।

कछूटा, सं. पुं. (हि. काछ) लघुशक्ति
२. दे. 'कछनी' ।

कजारा, वि. (हि. कजरा) सांजन, अंजन-
युत, सकलक २. काल, श्याम ।

कजली, सं. खं. (सं. कजलं >) कालियन्,
काष्ठयंत्र, कलंकः २. पूर्वविशेषः ३. कृपाक्षी मूः
(खं.) ४. वर्षासु मैथो नीलभेदः ।

कजा, सं. खं. (अ.) सन्तुः, निधनम् ।

कजाक, सं. पुं. (तु. कजाक) दस्युः, लुंटाकः ।

कजाकी, सं. खं. (तु. कजाकी) लुंठनं, अपहरणम् ।

कजाबा, पुं. (फा) उष्णपरिणम् ।

कजिया, सं. पुं. (अ.) कलहः, विग्रहः ।

कजी, सं. खं. (फा.) वक्रता २. दोषः ।

कज्जल, सं. पुं. (सं. न.) अंजनं, नेत्ररंजनं,
लोककः २. यामुनं, सौंदर्यं, दे. 'सुरगा'
३. कालिमन् ।

कज्जाक, सं. पुं. (तु.) तुल्यकजातिभेदः ।
२. दस्युः, लुण्ठकः ।

कट, सं. पुं. (सं.) गजवंडः २. कपोलः ३. देव-
स्थूल, -नालः, धासभेदः ४. देवनालनिमित्त-

कटः, कालिजं, धास्तरणम् ५. उद्वीरकाशादि-
घाताः ६. शवः ७. शवयानं, खाटः ८.

८. रंगदानं ९. अक्षयतिभेदः १०. काष्ठफलक-
कम् ११. समयः, अवसरः १२. दे. 'ट्टी' ।

वि. वतु, भूयस् २. उत्कट, उग्र ।

कटक, सं. पुं. (सं. पुं. न.) शिवि (वि) रं,
निवेशः, सैन्यानिवासः २. सेना २. कंकण-गणम्

४. पर्वतमध्यभागः ५. पादकटकः ६. चक्रम्
७. नगरविशेषः ८. समूहः ।

कटकट, सं. खं. (अनु.) दंतवर्षणशब्दः, कट-
कटायितम् २. कलहः ।

कटकटाना, जि. स. (हि. कटकट) दंतान्
घृष्टं (भ्वा. प. से.) ।

कटना, जि. अ. (सं. कर्तनं) अवच्छिन्न-कृत-
त्वःत्रश्वं (कर्म.) २. भयं या (अ. प. अ.)

३. क्षम-वृत् (कर्म.) ४. लज्ज (तु. भा. से.)

ही (जु. प. अ.) ५. उपकथं (कर्म.) ६. शुद्धे
हन् (कर्म.) ७. इष्यं (भ्वा. प. से.) ८. मुहं
(दि. प. वे.) ९. घृष्टं (कर्म.) ।

कटनीस, सं. पुं. (देश.) दे. 'नीलकंठ' (पक्षी) ।

कटनी, सं. खं. (हि. कटना) विक्रयः
२. शस्यकर्तनम् ।

कटपीस

[९४]

कडकड

कटपीस, सं. पुं. (अं.) कृतपठः ।

कटरा, सं. पुं. (हिं. कटहरा) चतुष्कोणः
लघुद्वयः २. महिभ्याः वत्सः ।कटवाना, कि. प्रे. (काटना) के शत्रुओं के प्रे.
रूप ।कटसरैया, सं. स्त्री. (सं. कटसारिका) सैरेयः,
सैरेवकः, दवेतपुष्पः । (पौली) कुरंतकः,
पीतपुष्पकः । (नीली) नीलपुष्पा, आर्त्त-
गलः । (लाल) कुरवकः ।कटहरा, सं. पुं. (हिं. काठ + धर) काष्ठ-
गृहम् । २. बृहत्पंजरम् ।कटहल, सं. पुं. [सं. कटक (कि) फलः] (वृक्ष)
पनसः, फणसः, चंपालुः । २. (फल) पनसं,
फणसं इ. ।कटाई, सं. स्त्री. (हिं. काटना) कर्तनं, छेदनं,
लवनम् २. शस्य-लवनं-संग्रहः ३. लवन-
छेदनं, श्रुतिः (स्त्री.) ।कटाकट, सं. स्त्री. (हिं. अनु.) कलहः २. कट-
कटापितम् ।कटाकटी, सं. स्त्री. (हिं. काटना) हत्था,
वधः, युद्धम् २. वैरम् ३. कटकटशब्दः ।कटाक्ष, सं. पुं. (सं.) नयनविलासः, हावपूर्णा
दृष्टिः (स्त्री.) २. आक्षेपः, दोषप्रकाशनम् ।कटार-री, सं. स्त्री. (सं. कटारः) असि-
पुत्रिका, लुपाणिका ।कटारा, सं. पुं. (सं. कटारः) असिः, कृपाणः
२. दे. ऊँकटारा ।कटाव, सं. पुं. (हिं. काटना) कर्तनं, छेदनम्
२. नदीतटं ३. कर्तित्वा निमित्तं पुष्पपत्रम् ।

कटि, सं. स्त्री. (सं.) कटी ।

—बंध, सं. पुं. (सं.) भूबलयः, भूमेः पंचभागेषु
अभ्यंतमः २. दे. 'कनरबंध' ।—बद्ध वि. (सं.) सज्ज, सज्जद्ध, उद्यत, बद्ध-
परिकर, सिद्ध ।कटियाना, कि. अ. (हिं. कौश) कटकित-
पुलकित-रोमांचित (वि.) + भू ।कटीला, वि. (हिं. काटना) निश्चित, तीक्ष्णप्र
२. मोहक, प्रभावशालिन् ।कटु, वि. (सं.) कटुक २. तिक्त, तीक्ष्ण
३. अग्निव, अनिष्ट ।कटुता, सं. स्त्री. (सं.) कटुत्वं, कटुकता, काट-
वम् २. तिक्तता ३. अप्रियत्वम् ।

कटोरा, सं. पुं. (सं. स्त्री.) कटोरम् ।

कटोरी, सं. स्त्री. (हिं कटोरा) कटोरिका,
कनोलः ।कटौती, सं. स्त्री. (हिं. कटना) उद्धारः,
उद्धृतभागः ।कट्टर, वि. (हिं. काटना) धर्मान्ध, मतान्ध,
अन्धविश्वासिन् ।कट्टा, वि. (हिं. काठ) वज्रदेह, दुर्गम, मांसल,
वीर्यवत् । सं. पुं., हनुः ।कटघरा, सं. पुं. (सं. काष्ठगृहम्) काष्ठावेष्टनं,
काष्ठशलाकाश्रुतिः (स्त्री.) संकृबलयः २. बृह-
त्काष्ठपंजरः-रम् ।कठपुतली, सं. स्त्री. (सं. काष्ठपुतलिका) पुत्रिका,
पुतली, पांचालिका ३. सुद्वेगी बाला ।कठफोडवा, सं. पुं. (हिं. काठ + फोड़ना)
काष्ठकूटः, दार्वादाटः, शतच्छेदः, शतपत्रकः ।कटवाप, सं. पुं. (हिं. काठ + वाप) मातु-
द्वितीयः पतिः ।

कठला, सं. पुं. (सं. कंठः >) कंठभूषा ।

कठिका, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'खड़िया' ।

कठिन, वि. (सं.) दुष्कर, दुस्साध्य, कष्टसाध्य,
गहन २. घन, कौकस, कस्तुर ३. दुर्बोध,
दुर्ज्ञेय, दुरश्चयम् ।कठिनता, सं. स्त्री. (सं.) दुष्करता, दुस्साध्यता
२. घनता, कौकसता ३. दुर्बोधता, दुर्ज्ञेयत्वम् ।कठिनाई, सं. स्त्री. (सं. कठिन >) दे.
'कठिनता' ।कठोर, वि. (सं.) निर्दय, क्रूर, नृशंस, निर्वृण,
परुष २. घन, कौकस ३. कर्कर, कस्तुर ।कठोरता, सं. स्त्री. (सं.) निर्दयता, क्रूरता,
पारुष्यं, निर्वृणता, नृशंसत्वम् २. घनता,
कौकसता ।कठौना, सं. पुं. (सं. काष्ठवत् >) बृहत्काष्ठ-
भाजनं, बृहदारुपात्रम् ।कठौती, सं. स्त्री. (हिं. कठौना) लघुदारु-
भाजनं, दारुभाजनकम् ।कडक, सं. स्त्री. (अनु.) महा-शब्दः-रवः-
निनादः २. मेघगर्जनम्, धनध्वनिः, गर्जितम्
३. वज्र-निर्घोषः-निर्घातस्वनः ४. विरावः,
ध्वनिः ५. उद्देगजनको निनादः ।कडकड, सं. पुं. (अनु.) कडकडशब्दः, कड-
कडापितं २. भोग-स्फुटन-शब्दः ।

कङ्कडाना

[९५]

कत्तल

कङ्कडाना, कि. अ. (हि. कङ्कड) सशब्दं भञ्ज-भिद-इ (कर्म.), रफुट् (तु. प. से.) २. उचैः धवन् (भ्वा. प. से.) ३. दुट् (प्र.), चूर्त् (तु.) ।
 कङ्कडदहाट, सं. स्त्री. (हि. कङ्कड) कङ्क-कटात्कारः, गजितं, दे. 'कङ्कड' ।
 कङ्ककना, कि. अ. (हि. कङ्कक) कङ्ककडाशब्दं कृ, गम् (भ्वा. प. से.) २. महूरवेण भञ्ज (कर्म.) ३. रफुट् (तु. प. से.) ४. उचैः वद (भ्वा. प. से.) ।
 कङ्कका, सं. पुं. (हि. कङ्कक) विजय-युद्ध, -गीतम् २. सौदागिनी ३. गजितम् ।
 कङ्कखा, सं. पुं. (हि. कङ्कक) युद्धगीतम् ।
 कङ्कखंत, सं. पुं. (हि. कङ्कखा) युद्धगीत-गायकः, चारणः, वैतालिकः ।
 कङ्कखवा, वि. (सं. कङ्कर) दे. 'खितकबरा' । सं. पुं., कर्तुरकर्मैः ।
 कङ्कया, वि., दे. 'कङ्क' ।
 कङ्का, वि (सं. कङ्क >) घन, सान्द्र, कन्कलट, कोकल, इड, कर्कर, अमन्थ २. निष्पूर, निर्दय ३. दुर्बोध, दुर्ज्ञेय, कठिन ।
 कङ्का, सं. पुं. (सं. कटयः) वटकं, कंकणः-णं, २. केशूरः-रं, अंगदः-दम् ।
 कङ्काई, सं. स्त्री. (हि. कङ्का) इडता, कोक-सला २. निर्दयता ३. क्रिष्टता ।
 कङ्काका, सं. पुं. (अनु. कङ्काक) भंग-भञ्जन-भेदन-श्रोतन-शम्भः-सादः २. अमशनं, अना-हारः ।
 कङ्काके का-, मु., भीषण, घोर, तीव्र, चंड ।
 कङ्काहा, सं. पुं. (सं. कटाहः) तैलादिपाक-पात्रम् ।
 कङ्काही, सं. स्त्री. (हि. कटाह) कटाही ।
 कङ्की, सं. स्त्री. (हि. कङ्का) भृङ्गलः, मंधिः-अन्धः २. शीतचरणम् ३. दीर्घ-शृणा, -काष्ठ-दारु (न.) । वि. स्त्री., कठिना, कोकला ।
 कङ्का, वि., दे. 'कङ्क' ।
 —तैल, सं. पुं., संधपतैलम् ।
 कङ्काई, सं. स्त्री. (हि. कांडना) सूचीश्लेषम् २. सूचीश्लेषस्य भृतिः (स्त्री.) ३. दे. 'कङ्काही' ।
 कङ्की, सं. स्त्री. (हि. कङ्कना) कथिता, चणक-चूर्णनिमित्तव्यंजनभेदः ।

कण, सं. पुं. (सं.) लवः, लेशः, अणुः ।
 कणाद्, सं. पुं. (सं.) वैशेषिकदर्शनकारः श्रविः ।
 कतरन, सं. स्त्री. (हि. कतरना) शकलानि, कृतखंडानि (दोनों बट्ट.) ।
 कतरना, कि. स. (सं. कर्तनम्) कर्त्तिकया कृत (तु. प. से.) ।
 कतरनी, सं. स्त्री. (हि. कतरना) कर्तनी, कत्रिका, कर्त्तिका, कर्तरी ।
 कतर व्यौत, सं. स्त्री. (हि. कतरना + व्यौत) अक्-श्लेषः, अल्पीकरणम् २. परिवर्तः, विनि-मयः ३. वित्त, विमर्शः ४. अपहरणं, मोषः ५. युक्तिः (स्त्री.), उपयः ।
 कतरा, सं. पुं. (हि. कतरना) खंडः, अंशः, शकलः ।
 कतरा, सं. पुं. (अ.) कणः, विदुः, लवः, द्रष्टः ।
 कतराई, सं. स्त्री. (हि. कतरना) कर्तनं, -भृत्या-भृतिः (स्त्री.) २. कर्तनं, -कार्यं-कर्मन् (न.) ।
 कतराना, कि. प्रे., 'कतरना' के धातुओं के प्रे-रूप २. निभृतं-सलज्जं-सभयं अपवा (अ. प. अ.), नैपुण्येन परिहृ (भ्वा. उ. अ.) ।
 कतल, सं. पुं. (अ. करल) इत्या, शः ।
 कतला, सं. पुं. (अ. करल >) कृतम्, दे. 'फांक' ।
 कतलाम, सं. पुं. (अ. काले आम) व्यापकं, -नरसंहारः-लोकहृत्या ।
 कतवार, सं. पुं., दे. 'कृत्वा' ।
 कताई, सं. स्त्री. (हि. कातना) कर्तनम् २. कर्तनभृतिः (स्त्री.) ।
 कताना, कि. प्रे., 'कातना' के धातुओं के प्रे-रूप ।
 कतार, सं. स्त्री. (अ.) पंक्तिः-श्रेणिः (स्त्री.) २. निकरः, समूहः ।
 कतिपय, वि. (सं.) दे. 'कुछ' ।
 कतीरा, सं. पुं. (देश.) युद्धवृत्तिनिर्वासः ।
 कतीनी, सं. स्त्री. (हि. कातना) तान्त्रिकं, सूत्रतननम् २. तान्त्रिक-सूत्रतननं, -भृतिः (स्त्री.)-भृत्या । ३. कालक्षेपः, विलम्बनम्, दीर्घीकरणम् ।
 कत्तल, सं. पुं. (हि. कतरना) इष्टकाखंडः, पाषाणशकलः ।

कथक, सं. पुं. (सं. कथकः) संगीतव्यवसायिनी जातिः (स्त्री.) ।

कथा, सं. पुं. (सं. कथः >) खदिरः, खदिर-सारः, रंगः, रंगदः ।

कथक, सं. पुं. (सं.) कथावाचकः, कथोप-जीविन् ।

कथन, सं. पुं. (सं. न.) वचनं, उक्तिः (स्त्री.), निवेदनं, निर्देशः, उपन्यासः ।

कथनीय, वि. (सं.) वचनीय, वर्णनीय, वक्तव्य उच्चार्य, छपनीय ।

कथा, सं. स्त्री. (सं.) उप-; आख्यानं, आख्या-यिका, आख्यानकम् २. वृत्तान्तः, उद्गन्तः ३. धर्मोपदेशः ।

—वार्ता, सं. स्त्री. (सं.) धर्मोपदेशः, व्याख्यानं ।

—वस्तु, सं. स्त्री. (सं. न.) कथासारः, आख्या-नस्थ रूपरेखा ।

कथानक, सं. पुं. (सं. न.) कथा २. उपाख्या-नम्, लघुकथा ।

कथित, वि. (सं.) उक्त, भाषित, भाषित, उदाहरित ।

कथोपकथन, सं. पुं. (सं. न.) संभाषणं, संवादः, संभाषः, वार्तालापः ।

कदंब, सं. पुं. (सं.) भृङ्गवल्गुः, शिपयः, वृण-हारकः, नीपः, मदिराशयः २. समूहः ।

कद, सं. पुं. (अ.) आकारः, प्राप्तिता, देहोच्छता ।

कद्वन, सं. पुं. (सं. न.) वधः, हत्या २. छुरिका ।

कदम्ब, सं. पुं. (सं. न.) पुच्छाश्रम ।

कदम, सं. पुं. (अ.) पादः पदं, चरणः-र्णं, क्रमणं, अंगिः (पुं.) २. अल्पान्तरं पदम् ।

कद्वर, सं. स्त्री. (अ.) आदरः, संमानः २. गाथा, परिभाषणम् ।

—दान, वि. (अ. + दा.) गुणग्राहकः ।

कदर्य, वि. (सं.) कृपण, मितंपच ।

कदली, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'केला' ।

कदा, अव्य. (सं.) कस्मिन् काले ।

कदाचित्, अव्य. (सं.) स्यात्, संभवेत् २. कदापि ।

कदापि, अव्य. (सं.) कदाचित् २. एकदा, पुरा, प्राक् ।

कद्वह, सं. पुं. (प्रा. कद्व) लाडुः, अलाडुः (पुं. स्त्री.), लाडुका, तुम्बः, तुवी, तुनिका, पिड-महा, फला ।

—कश, सं. पुं., लाडुकम् ।

—दाना, सं. पुं., उदरकृमिभेदः ।

कन, सं. पुं. (सं. कणः) कणः, धृष्टाशः, कणिका, कगी, लेशः २. अन्नकारणका ३. जूष्टं, उच्छिष्टम् ५. भिक्षान्नम् ५. अन्नकणखण्डः ।

कनक, सं. पुं. (सं. न.) स्वर्ण, सुवर्ण, वाचनं, हाटकम् २. दे. 'धनूर' ३. दे. 'ट्यू' ।

कनक, सं. स्त्री. (सं. कणिका >) गोधूमः, प्रवटः, सुमनः, म्लेच्छभोज्यः २. गोधूमवर्णम् ।

कनकटा, वि. (सं. कर्ण + णि. कटना) किर-कर्ण २. कर्ण-हेतुक ।

कनकना, वि. (सं. कनकना >) बिदुर, भंगुर २. बोधन, बोधन ।

कनकौघा, सं. पुं., दे. 'पतंग' ।

कनकचूरा, सं. पुं. (सं. कर्णसन्धिः >) कर्णकीटी, शनपदा, कर्णजलदा, त्रिप्राणी ।

कनकवी, स्त्री. (हिं. काना + अलि) कटाश्रः अर्थादर्शनं. साक्षिरीक्षणम् २. नेत्रसंवेतः ।

कनक्येदन, सं. पुं. (सं. कर्ण-येदनम्) कर्णविध-संस्कारः ।

कनटोप, सं. पुं. (सं. कर्ण + हि. टोपी) कर्ण-द्वारम् ।

कनपटी, सं. स्त्री. (सं. कणपट्टः >) गंडः, गंड-स्थल-ली ।

कनपेडा, सं. पुं. (सं. कर्ण + हि. पेडा) पाषाणदर्भः ।

कनफटा, सं. पुं. (सं. कर्ण + हिं. फटना) गोरक्षनाथानुयायी साधुः २. विद्वधर्णी ।

कनफुंका, वि. (सं. कर्ण + हिं. फूंकना) दीक्षादायक २. दीक्षित । सं. पुं. आचार्यः २. शिष्यः ।

कनमनाना, क्रि. अ. (अन्.) त्रिदाशमंगलानि क्षिप् (नृ. प. अ.)-प्राप्त (दि. प. से.) २. शनैः विरोधं प्रकल्पति (ना. था.) ।

कनरसिया, सं. पुं. (सं. कर्णरसिकः) संगीत-अनुरागिन्-शुश्रूषुः ।

कनबौसा, सं. पुं., दौहित्रपुत्रः, पुत्रीपौत्रः ।

कनबोकेवान, सं. स्त्री. (अं.) दीक्षान्तमहोत्सवः, उपाधिवितरणोत्सवः २. समा ।

कनस्तर, सं. पुं. (अं. कैनस्तर) धातुमयः समुद्रकः ।

कनाई

[१७]

कपूर

कनाई, सं. स्त्री. (हि. कना) तनुसूक्ष्म-
शाखा-त्रितयः ।

कनागत, सं. पुं. (सं. कन्यागत >) पितृपक्षः,
आश्विनमासस्य कुम्भपक्षः २. श्राद्धम् ।

कनात, सं. स्त्री. (तु.) पटयंडपमित्तः (स्त्री.) ।

कनिचारी, सं. स्त्री. (सं. कर्णिकारः) परिव्याधः,
दुर्मौल्यः २. क्षीणकारपुष्पम् ।

कनिष्ठ, वि. (सं.) अल्पिष्ठ, लघुिष्ठ, यविष्ठ
२. निष्ठ, तुच्छ, क्षुद्र ।

कनिष्ठा, सं. स्त्री. (सं.) कनिष्ठिका, कनीनी,
दुर्बलांगुलिः (स्त्री.) २. यविष्ठा पत्नी ।

कनी, सं. स्त्री. (सं. कणी) हीरकटुलादीनां
सूक्ष्मलेशः-इन् २. हिन्दु, द्रव्यः ।

कनीनिका, सं. स्त्री. (सं.) तारा, वारका
२. कनिष्ठा ।

कनेटी, सं. स्त्री. (हि. कान + टैटना) कर्ण-
कर्पण-मोदनम् ।

कनेर, सं. पुं. (सं. कनेरः) करवीरः, उष्ण-
मारकः, वीरः, वृद्धः, प्रचंडः ।

कनीज, सं. पुं. (सं. कान्यकुब्जम्) कन्याकुब्जं,
गन्धिपुरं, कोटिका ।

कनीडा, वि. (हि. काना) कण, एकाक्ष
२. हीनता ३. अधमानिता ४. क्षुद्र ५. उपकृत ।

कना, सं. पुं. (सं. कर्णः >) उद्युतकोटनकरय
बंधकमुच्यम् २. अर्थ, कोटिः (स्त्री.) ।

कनी, सं. स्त्री. (हि. कना) उद्युतकोटनक-
पार्श्वे (हि. क.) २. अर्थ, कोटिः (स्त्री.)
३. शब्दिकादीनामंचलः ।

—काना, हु., दर्शनं परिहृ (भा. प. ख.) ।

कन्या, सं. स्त्री. (सं.) कन्यका, कुमारी, बाला,
बालिका, दारिका २. दुहितृ, पुत्री, सुता,
ननया, तनुजा, आत्मिका ३. राशिविशेषः ।

—रासी, वि. (सं. राशिः >) कन्याराशिज
२. सिर्वाल ३. दुष्ट ।

कन्याट, वि. (सं.) कन्या-नायक-पौढक-
सन्तापक ।

कन्सरवेडिव, वि. (अं.) प्राचीनतासमर्थक,
नवीनता-विरोधिन् ।

कन्हाई, कन्हाया, सं. पुं. (सं. कृष्णः) श्रीकृष्णः
२. सुंदरबालकः ३. प्रियपुरुषः ।

कर्प, सं. पुं. (सं.) बरुणः २. दैत्यजातिप्रकारः ।

कर्प, सं. पुं. (अं.) चयकः-कं, शरावः २. पुर-
स्कारचयकः-कम् ।

कपट, सं. पुं. (सं. न.) छलं, कौतवं, बंचना,
प्रतारणः, छद्मन् (न.), दंभः, पापंशः, व्याजः,
शास्त्रम् ।

कपटी, वि. (सं. दिन्) छलित्, पाथंदिन्,
शठ, कितब, दंभिन्, प्रतारक, बंचक ।

कपटछन, सं. पुं. (हि. कपटा + छानना)
पटपवनम् २. वसनपूतम् ।

कपडा, सं. पुं. (सं. कर्पटः) वसनं, वस्त्रं,
अंबरं, अंशुकं, पटः, वासस् (न.) २. परिधानं,
वेशः, -पः, नैपथ्यम् ।

—पहिनना, क्रि. स., वस्त्राणि परिधा (जु. उ.
अ.) -श्रु (जु.) -वस् (अ. आ. से.) ।

—ऊनी, लौनज-ऊर्णमय, -वस्त्रम् ।

—पुराना, कर्पटः, नीरं, जीर्णवस्त्रम् ।

—महीन वदिया, दुर्बलम् ।

—रेशमी, कोटीयं, कौशावरं, क्षीमं, कौशम् ।

—सूती, तुलावरं, फालं, कार्पासं, वाहरम् ।

कपर्द, सं. पुं. (सं.) शिवजटःजुटः २. वरटकः ।

कपर्दिका, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'कौटी' ।

कपाट, सं. पुं. (सं. पुं. न.) दे. 'किवाड' ।

कपाल, सं. पुं. (सं. पुं. न.) दे. 'खोपड़ी' ।

—क्रिया, सं. स्त्री. (सं.) ज्वलच्छवस्य वेणुना
कपालभेदनम् ।

कपाली, सं. पुं. (सं. कपालिन्) मौरवः,
उयापतिः ।

कपास, सं. स्त्री. (सं. कार्पासः) तूलः-लं, धरः,
पित्तुः, पित्तुलः । (पौदा) कर्पासवृक्षः,
कार्पासी, सूत्रपुष्पा, बदरी-रा पट्टः, छादनः ।

कपि, सं. पुं. (सं.) वानरः, मर्कटः २. गजः
३. सूर्यः ।

—ध्वजः, सं. पुं. (सं.) अर्जुनः ।

कपिल, सं. पुं. (सं.) मुनिविशेषः २. कश्चिः ।
वि., कपिश, पिंगल ३. श्वेत ।

कपिला, सं. स्त्री. (सं.) शुभ्र-विनेया, -गौः (स्त्री.)
कपिश, वि. (सं.) पाण्डुवर्णं, पिशंगं, पिंगलं,
कपिल ।

कपीश, सं. पुं. (सं.) सुग्रीवः (२) इन्तुमत् ।

कपू, सं. पुं. (सं. कुपुवः) कुतनयः, कुसुतुः ।

कपूर, सं. पुं. (सं. कर्पूरः-रम्) धनसारः,
सितागः, द्विगबालुका, चंद्रः, सोमः, सिताम्नः ।

७ भा० हि०

कपूरी

[९८]

कमनैत

कपूरी, वि. (सं. कर्पूर) घनसार-कर्पूर-वर्ण-
रंग ।

कपोत, सं. पुं. (सं.) दे. 'कवतर' ।

कपोल, सं. पुं. (सं.) दे. 'माल' ।

—करूपना, सं. स्त्री. (सं.) गिथ्या कथा,
कक्षित-वृत्तान्तः ।

कसान, सं. पुं. (अं. कैटिन) दलनायकः, अग्रगः
२. सैन्याधिपतिः, सेनानीः ३. नौकाधिपतिः,
पोताध्यक्षः ।

कफ, सं. पुं. (सं.) श्लेष्मन् (पुं.), खेटकः,
बलासः २. शि (सि) धार्मं, सिद्धान्त-नं ।
३. हृदयकंठादिस्थो धातुभेदः (वैद्यक) ।

कफ, सं. पुं. (फ्रा.) फेनः, डिडोरः २. लाला,
मुखस्त्रावः, द्राविका ।

कफ, सं. स्त्री. (अ.) कर-हस्त, तलः-तलम् ।

कफ, सं. पुं. (अं.) पिप्पलाग्र, अंशः-भागः ।

कफन, सं. पुं. (अ.) शवधसनं, मृतकवस्त्रं,
प्रेतपरिधानम् २. शव, -भाजनं-पेटकः ।

कफनी, सं. स्त्री. (अ. कफन >) शवघावा-
वस्त्रम् २. साधूनां घ्रीवावसनम् ।

कवंध, सं. पुं. (सं.) अनुपहं शरीरं, रुण्डः-टं,
श्चिन्नमस्तको देहः २. राहुः ३. मेघः
४. राक्षसविशेषः ।

कव, कि. वि. (सं. कदा) कस्मिन् काले ।

—तक, कि. वि., कियत्, -कारं-चिरं, कदा-
पर्यन्तम् ।

—से, कि. वि. कदारभ्य, कदाप्रभृति ।

कवड्डी, सं. स्त्री. (देश.) बालक्रीडामेदः ।

कवर, सं. स्त्री. (अ. कव) द्वेतावटः, शनगर्तः,
सनाधिः ।

कवर (रि) स्तान, सं. पुं. (फ्रा. कविरस्तान)
प्रेतभूमिः (स्त्री.), समाधिश्चेवम् ।

कवरा, वि. (सं. कर्पूर) चित्र, कलमाप, शार ।

कवाड, सं. पुं. (सं. कर्पटः >) अवस्कारः, तुच्छ-
वस्तुसमूहः २. व्यर्थकार्यम् ।

कवाडिया, कवाडी, सं. पुं. (हिं. कवाड)
अवस्कारविक्रयिन्, व्यर्थवस्तुवणिज् (पुं.) ।

कवाव, सं. पुं. (अ.) गृष्टमांसं, शूलिकं, शूल्य-
मांसम् ।

कवाधी, वि. (अ. कवाव >) मांसभक्षक
२. मांसविक्रेतु ।

कवाहत, सं. स्त्री. (अ.) अशुभं, कष्टं, विघ्नः,
अनिष्टम् ।

कवित-त्त, सं. पुं. (सं. कविता >) हिन्दी-
काव्यस्य छन्दोभेदः २. काव्यं, कविता ।

कबीला, सं. पुं. (अ.) पक्षी २. परिवारः
३. वंशः, गोत्रम् ।

कवूतर, सं. पुं. (फ्रा.) कपोतः, कलरवः,
पारावतः, छेपः, रत्नलोचनः ।

—खाना, सं. पुं., कपोतविलम् २. (छत्री)
कपोतपालिका, विटकः ।

कव्ज, सं. स्त्री. (अ.) मलावरोधः, विडग्रहः,
वदधोष्ठः ।

—कुशा, वि., वि-, रंचक, सारक । सं. पुं.,
रंचधं, नारकम् ।

कव्जा, सं. पुं. (अ.) स्वामित्वं, अधिकारः
२. नुष्टिः (स्त्री.), वारंगः ३. द्वारसंधिः ।

कभी, कि. वि. (हिं. कब + ही) कदाचित्,
कदापि, कस्मिंश्चित् काले, कश्चित् २. पुरा,
प्राग्, एकदा ।

—का, कि. वि., चिरात्, चिरम् ।

—न कभी, कि. वि., कदाचित्, अथ शो वा ।

कमंडल, सं. पुं. (सं. कमंडलुः) कर्कः,
करकः-कं, कुंडी ।

कमंद, सं. स्त्री. (फ्रा.) गुण-रञ्जु-पादाः-
बंधनम् २. गुण-रञ्जु-अधिरोगिणी-निश्रयणी ।

कम, वि. (फ्रा.) अल्प, दहर, दम्भ, स्तोत्र,
लघु, हस्य २. ऊन, ग्भून, अल्पतर, अल्पीयम्,
लघीयत्, शोदीयम् । कि. वि. अल्पं, स्तोत्रं,
ईषद्, किंचित्, मनाक् ।

—उन्न, वि., अल्पवयस्क, बाल ।

—कीमत, वि. अल्पमूल्य, सुखभोग ।

—खर्च, वि., अल्प-मित, -न्ययिन् २. कृपण ।

—जोर, वि., अल्प, -बल-शक्ति, दुर्बल ।

—वस्तु, वि., हत-गन्द्र, -भाभ्य, दुर्देवः ।

—खर्च बाला नशीन, मु., अल्पवयसेन गौरव-
लाभः ।

—सुनना, मु., उच्यतेः श्रु (भा. प. अ.) ।

कमची, सं. स्त्री. (तु.) कंचिका, वेणुशाखा,
कुंचिका २. नभ्यतनुयष्टिः (स्त्री.) ।

कमठ, सं. पुं. (सं.) भूमिः, कच्छपः ।

कमनीय, वि. (सं.) सुन्दर, मनोहर, रम्य ।

कमनैत, सं. पुं. (फ्रा. कमान >) पतुधारिन् ।

कमनैती, सं. स्त्री. (हि. कमनैत) धनुर्विद्या ।
 कमर, सं. स्त्री. (प्रा.) कटो-रिः (स्त्री.),
 कानोपदे, मध्यः मध्यं, मध्यांशं, बलप्रः-नं ।
 —कम, सं. पुं. पलाशनिर्घोसः ।
 —कंद, सं. पुं., मेखला, रक्षण ।
 —कसना वा क्रीधना, मु., परिकरं पंध
 (क. प. अ.) ।
 —कूटना, मु., हतोरसः (वि.) मू ।
 —क्रीधी करना, मु., विश्राम् (दि. प. से.),
 संबिद् (दु. प. अ.) ;
 कमरख, सं. पुं. (सं. कर्मरंगः) (धृष्ट)
 कर्मरारः, कर्मरारः, मुद्गरः । (फल) कर्म-
 रंगं इ. ।
 कमरा, सं. पुं. (सं. कैमरा) प्र., कौष्ठः, शाला,
 कक्षा २. छायाचित्रारोपकयंत्रं, आलोक्यलेख्य-
 चित्रम् ।
 अंदर का—, गर्भागारं, अन्तःकोष्ठः ।
 ऊपर का—, शिरोरूढं, चन्द्रशाला ।
 कमरी-हठी, सं. स्त्री. (सं. कंबलं >) लघु-
 कंबलं-रक्षणः-आधिकः, कंबलकम् ।
 कमशल, वि. (अं.) वाणिज, वाणिज्य, सम्भ-
 धिन्-विषयक, वाणिजिक ।
 कमल, सं. पुं. (सं. न.) अञ्जं, अंबुजं, अंबोजं,
 अरविंदं, कंजं, नलं, नालिनं, पंकजं, पंकेरुहं,
 पद्मं, शत-सदृशं, पत्रम्, सरसिजं सरोजं,
 सरोरुहं, सारसम् ।
 —का पौदा, सं. पुं., मृणालिनी, पद्मिनी,
 कमलिनी, नलिनी ।
 —गद्दा, सं. पुं., कमलाक्षः, पद्मीशम् ।
 —दंड, सं. पुं., कमलनाला ।
 —नयन, वि., पद्मक्ष. कंबाक्ष (—स्त्री स्त्री.) ।
 सं. पुं., विष्णुः २. रामः ३. कृष्णः ।
 —नाभ, सं. पुं., विष्णुः ।
 —नाल, सं. पुं., दे. 'कमलदंड' ।
 —नैनी, वि. स्त्री., कमलाक्षी, कंबजयनी ।
 —योनि, सं. पुं., यमन् (पुं.) ।
 कमला, सं. स्त्री. (सं.) पद्मा, लक्ष्मीः-श्रीः
 (स्त्री.), इन्दिरा, मा, रमा, हरिप्रिया
 २. धनम् ३. नारंगः ४. वरनारी ।
 —पति, सं. पुं., विष्णुः ।
 कमलासन, सं. पुं. (सं. न.) पद्मासनम्
 २. (सं. पुं.) ब्रह्मन् (पुं.) ।

कमलाकर, सं. पुं. (सं.) तथाकः, दे. 'शरोवर' ।
 कमलाकार, वि. (सं.) पद्म-जलज, आकार-
 सदृश रूप ।
 कमलाक्ष, वि. (सं.) पद्म, नयन-नेत्र ।
 कमलिनी, सं. स्त्री. (सं.) पद्माकरः, पद्मिनी,
 सकमलो जलाक्षयः २. लघुकमलम् ।
 कमाई, सं. स्त्री. (हि. कमाना) उपजीविका,
 वृत्तिः (स्त्री.) २. उपाज्वलं, अजितधनम् ।
 कमाऊ, वि. (हि. कमाना) उप-अर्जक,
 धनसंग्राहक २. उद्योगिन्, उद्योगिन् ।
 कमान, सं. स्त्री. (प्रा.) धनुस् (न.), शरा-
 सगम्, चापः ।
 कमानिया, सं. पुं. (प्रा. कमान >) धन्विन्
 (पुं.), धानुष्कः, धनुर्धरः ।
 कमाना, वि. स. (हि. काम) उप-अर्ज
 (जु. म्ना. प. से.), परिश्रमेण प्राप्त (स्वा.
 उ. अ.) २. (नमडा इ.) उपयोगार्थं विधा
 (जु. उ. अ.) ।
 कामानी, सं. स्त्री. (प्रा. कामान) स्थिति-
 स्थापकत्वाविशेषो यथावयवः ।
 कामाल, सं. पुं. (अ.) नैपुण्यं, दक्षताः २. विल-
 क्षणकृत्यम् । वि., श्रेष्ठ ।
 कामिशनर, सं. पुं. (अं.) आयुक्त ।
 कामिशनरी, सं. स्त्री. (अं. कामिशनर >)
 मंडलगणः ।
 कामी, सं. स्त्री. (प्रा. काम >) ऊनता, न्यूनता,
 अल्पता, अपूर्णता, अपर्याप्ता ।
 कामीज, सं. स्त्री. (अ. कामीज) जोडा, जोडका,
 उरोवस्त्रम् ।
 कामीना, वि. (प्रा.-नः) अथम. अथम, क्षुद्र,
 तुच्छ २. दुष्कूलोन, हीन, चर्ष-जाति ।
 कामीशन, सं. पुं. (अं.) परार्थं विक्रयः २. अ. योगः
 ३. उद्भूतभागः ।
 कश्युनिद्रम, सं. पुं. (अं.) साम्यवादः समष्टिवादः ।
 कश्युनिस्ट, सं. पुं. (अं.) साम्यवादिन्,
 समष्टिवादिन् ।
 कयाम, सं. पुं. (अ.) निवेशः अर्थस्थितिः (स्त्री.),
 विश्रामः २. निवेशस्थानम् ।
 कयामत, सं. स्त्री. (अ.) प्रलयः २. विपत्तिः (स्त्री.) ।
 करंज, सं. पुं. (सं.) पट्टबंधः, रीचनः ।
 करंड, सं. पुं. (सं.) मधुकोषः २. खड्गः ३. कारं
 उवः (पक्षी) ।

कर

[१००]

करवट

कर, सं. पुं. (सं.) हस्तः, शयः, पंचशाखाः, पाणिः २. शुंडः-डा, शुंडारः ३. किरपाः, अंशुः ४. राजस्व, शुल्कः-कं ।

करक, सं. स्त्री. (हिं. कडक) पीडा, वेदना २. मूत्रकृच्छ्रम् ३. क्षतांकः, क्षतचिह्नम् ।

करकट, सं. पुं. (हिं. कर + सं. कटः >) अव-
रकरः, अवकरः, अपस्करः, मलः, उच्छिष्टम् ।

करकरा, सं. पुं. (सं. करैरुः) सारमभेदः ।
२. दे. 'खुरदरा' ।

करका, सं. पुं. (सं. स्त्री.) दे. 'ओला' ।

करघा, सं. पुं., दे. 'कर्घा' ।

करछा, सं. पुं. (सं. कररक्षकः >) 'करछी' के
वाचक शब्दों के पूर्व 'बृहत्' लगाएँ ।

करछी, सं. स्त्री. (हिं. करछा) बंबी-बिः
(स्त्री.), खजि (जा) का, खजाजिका, दवी,
दधिक, तर्दुः-दूः (स्त्री.), पाणिका, दासहस्तकः ।

करज, सं. पुं. (सं.) १ नखः २. अंगुली
३. करजः ।

करट, सं. पुं. (सं.) काकः, वायसः २. गजगण्डः
३ नारिकः ४. निःशजीवमम् ।

करटक, सं. पुं. (सं.) वायसः, काकः २. चौथे-
विज्ञानप्रवर्तकः आचार्यशिक्षेयः ।

करटी, सं. पुं. (सं. टिन्) द्विपः, गजः,
हस्तिन् (पुं.) ।

करण, सं. पुं. (सं. न.) खंभ, उपस्करः, साध-
नम् २. करकभेदः (व्या.) ३. अस्त्रं, शस्त्रं
४. इन्द्रियम् ५. देहः ६. क्रिया, कार्यम्
७. स्थानम् ।

करणीय, वि. (सं.) कर्तव्य, अनुष्ठेय, निष्पाद्य,
विधेय, संपादनीय ।

करतय, सं. पुं. (सं. कर्तव्यम्) कर्मन् (न.),
कार्यं कृत्यम् २. कला, कौशलं, शिल्पम् ।

करतवी, वि. (हिं. करतव) कुशल, दक्ष,
युक्तिमद् २. कर्मट ३. ऐन्द्रजालिक ।

करताल, सं. पुं. (सं. पुं. न.) दे. 'हथेली' ।

करताल, सं. पुं. (सं. न.) वायभेदः, करताली
२. करतलध्वनिः (पुं.) ३. दे. 'झोझ' ।

करती, सं. स्त्री. (सं. कृत्तिः >) तुण्पूर्वकृत्रिम-
वस्तुः, वृगतर्कः ।

करतूत, सं. स्त्री. (सं. कर्तव्यम्) कृतयं, कर्मन्
(न.) २. गुणः, कला ३. कुकर्मन् ।

करद, वि. (सं.) कर-बलि-राजस्व-शुल्क-
द-प्रद-दायक-दातृ २. अग्नि, परवद्
३. शरणदायक ।

करधनी, सं. स्त्री. (सं. कश्चिधानी >) गेरुला,
रशना, चांचो, सारसनम् ।

करनफूल, सं. पुं. (सं. कर्णफुल्लम् >) कर्णिका,
तालपत्रं, लसंसः, कर्णावतंसः ।

करना, सं. पुं. (सं. कर्णः) सुदर्शनः, श्वेतपुष्को
वृक्षभेदः ।

करना, सं. पुं. (सं. करणः) बृहज्जंबीरभेदः,
पर्वतजंबीरः । (फल) पर्वतजंबीरम् ।

करना, वि. सं. (सं. करणम्) कृ (त. उ.
अ.), निष्पद्-निर्वर्द्ध-निर्वृत्-साध् (प्र.),
विधा (ज. उ. अ.), अनुष्ठा-प्रणी (स्वा. प.
अ.), आचर (स्वा. प. से.) ।

सं. पुं. तथा भाव, करणं, निष्पादनं, संपादनं,
निर्वर्तनं, साधनं, विधानं, अनुष्ठानं, आचरणम् ।

—योग्य, वि. निष्पाद्य, विधेय, संपाद्य, कार्यं,
कर्तव्य, आचरणीय ।

—वाला, सं. पुं. कर्तृ, कारक, विधातृ, संपादक,
निष्पादक, अनुष्ठातृ ।

किया हुआ, वि. कृत, अनुष्ठित, निष्पादित,
विहित ।

करनाटक, सं. पुं. (हिं. करनाटक) कर्णा-
द्विधातव्यतन्त्रः २. ऐन्द्रजालिक ।

करनी, सं. स्त्री. (हिं. करना) कृत्तिः (स्त्री.),
कर्मन् (न.), कार्यं, कृत्यम् २. अन्वयेष्टिक्रिया ।

करनैल, सं. पुं. (सं. कालोनल) लूह-गुल्म,
पति-अध्यक्षः ।

करभ, सं. पुं. (सं.) गणिक्यत् कनिष्ठपर्यन्तं
करस्य बद्धिर्भागः २. गजशावकः ३. उष्ट्रशावकः
४. कटी-टिः (स्त्री.) ।

करभोक, सं. पुं. (सं.) गजशावकः । वि.,
वाभोक (पुं.), वाभोक (स्त्री.) ।

करम, सं. पुं. (सं. कर्मन् न.) कार्यं, कष्ट
२. भाग्यं, दैवम् ।

करमकला, सं. पुं. (अ. कर्म + हिं. कला)
दे. 'बंद गोमं' ।

करमाही, सं. पुं. (सं-किन्) सूर्यः, भातुः
करवट, सं. स्त्री. (सं. करवर्तः) पार्श्वः, पक्षः,
भागः, पक्षः २. व्यामपादर्शनी दक्षिणपार्श्वतो
वा शयनम् ।

करवट

[१०१]

कर्णाट

करवट, सं. पुं. (सं. करपत्रन्) ककचः, पत्र-
दारकः ।

—लेना, सु., मोक्षदाभाय ककचिन दक्षीणच्छे-
दनम् ।

करवाल, सं. स्त्री. (सं. पुं.) खट्वाङ्, असिः ।

करश्मा, सं. पुं. (फ़ा.) चमाकारः, कौतूहलं,
अश्चर्य ।

करहाट-टक, सं. पुं. (सं.) कमलमूलम् २. कम-
लातरसो छत्रम् ३. मदनवृक्षः ।

कराना, कि. प्रे. (हि. करना) 'करना' के
धातुओं के प्रे. रूप ।

करामात, सं. स्त्री. (अ. 'करामत' का बहु.)
दे. करश्मा ।

करामाती, वि. (अ. करामत >) लोकोत्तर,
चमत्कारिन्, अद्भुत ।

करार, सं. पुं. (अ.) शान्तिः (स्त्री.), शयः
२. पैर्य, रथैर्यम् ।

करार, सं. पुं. (अ. इकरार) दे. 'प्रतिज्ञा' ।

करारा, सं. पुं. (सं. कराल >) नयाः उच्चं
पातुं वा तटम् २. उच्छ्रिततीरम् ३. क्षुद्र-
पर्वतः ।

करारा, वि. (सं. कराल) बुद्धि, वन, संवत्
२. क्रूर, दास्य ३. सुपक, सुभ्रष्ट ४. तीक्ष्ण,
उग्र ५. दृढांग, वक्रदेश ६. भंगुर, भिदुर ।

कराल, वि. (सं.) भीषण, भयंकर, घोर,
दारुण ।

कराला, सं. स्त्री. (सं.) भीषणाकारा दुर्गा ।

कराह, सं. स्त्री. (दे. कराहना) आसि-पीड़ा,
ध्वनिः (पुं.)-शब्दः-स्वरः ।

कराहन, सं. स्त्री. (अ.) पृष्ठा, जुरप्सा ।

कराहना, कि. अ. (हि. कराहा + आह) आर्त-
रव्यं हृ. दुःखेन शब्दं (बवा. प. से.) ।

करिणि, सं. स्त्री. (सं.) दृष्टिनी ।

करी, सं. पुं. (सं. करिन्) गजः, हृदितम् ।

करीना, सं. पुं. (अ.) सुव्यवस्था, पद्धतिः (स्त्री.),
सौष्ठवम् ।

करीब, कि. वि. (अ.) समीपे, निकटे २. प्रायः,
प्रायेण ।

करीर, सं. पुं. (सं.-रः) तीक्ष्णशंकेकः, क्रवरः,
गूढपत्रः, ककचः ।

करुण, वि. (सं.) दयाई, कृपालु २. दुःखजनक ।

सं. पुं. रसविशेषः (सा.) २. परमेश्वरः
३. करुणा, अनुकंपा ।

करुणा, सं. स्त्री. (सं.) अनुकंपा, दया, कृपा,
२. प्रियविद्योगजं दुःखम् ।

—निधान, वि. (सं.) करुणामय, दयामय,
कृपा-करुणा-दया, -निधिः-सागरः ।

करेणु, सं. पुं. स्त्री. (सं. पुं. स्त्री.) इस्विन्
२. इस्विनी ।

करेला, सं. पुं. (सं. कारवेलः) कंडूरः, कांड-
कटुकः, कटिहकः ।

करैत, सं. पुं. (हि. काला) मालधनः,
मातुलाहिः, कृष्णसर्पभेदः ।

करोड़, वि. (सं. कोटी-टिः स्त्री.) शतलक्ष ।
सं. पुं., उक्ता संख्या तदंकात् (१०००००००) ।

करौली, सं. स्त्री. (सं. करवाली) कुरी, कुरिका,
असिपुत्रिका ।

कर्क, सं. पुं. (सं.) कर्कटः, कुलीरः २. राशि-
विशेषः ३. अग्निः ४. मुकुरः ।

कर्कश, वि. (सं.) क्रोरोर, रुक्ष । २. तीव्र,
प्रचंड ३. संकटक ।

कर्कशा, वि. सं. (सं.) कलह-विवाद, -प्रिया
(नारी) ।

कर्वा, सं. पुं. (फ़ा. कारगाह = कार्यस्थान >)
तन्तुवाचालां गर्तः २. पटकाराणां वेमः-बाप-
दंडः-तंत्रबापः ३. पटनिर्माणगृहम् ।

कर्ज, सं. पुं. (अ.) दे. 'ऋण' ।

कर्ण, सं. पुं. (सं.) श्रवणः-गं, श्रवः, श्रोत्रं,
श्रवस् (न.) श्रुतिः (स्त्री.), शब्दग्रहः ।
२. अंगराजः, वासुसेनः, कान्तिनः ३. दे.
'पराचार' ।

—कट्ट, वि. (सं.) विस्वर, कर्कश, दुःश्राव्य ।

—धार, सं. पुं. (सं.) नाविकः, पोतवाहः
२. कर्णन्, मुख्यनाविकः ।

—परंपरा, सं. स्त्री. (सं.) श्रुतिपरंपरा ।

—पुट, सं. पुं. (सं. न.) श्रुतिमंडलम् ।

—पुर, सं. पुं. (सं. न.) चम्पानगरी (=भागलपुर) ।

—पूर, सं. पुं. (सं.) अवतंसः २. नीलोत्पलम् ।

—कूल, सं. पुं. (सं.-कूलम् >) कर्णिका,
उत्तमः, तालपत्रं, कर्णभूषणम् ।

—वेध, सं. पुं. (सं.) संस्कारभेदः ।

कर्णाट, सं. पुं. (सं.) दक्षिणभारते प्रान्तविशेषः ।

- कर्णाटी, सं. स्त्री. (सं.) रागिणीभेदः २. कर्णाट-
देशस्य भागा नारी वा ।
- कर्णिका, सं. स्त्री. (सं.) ताटकः, हंतपत्रं, कर्णा-
भूषणभेदः २. करमध्यांगुली ३. लेखनी ।
- कर्त्तन, सं. पुं. (सं. न.) (कर्त्तव्या) छेदनं,
लवनं, द्रव्यतनम् २. तन्तुसर्जनम् ।
- कर्त्तनी, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'कतरनी' ।
- कर्त्तरी, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'कतरनी' २. दे.
'छुरा' ।
- कर्त्तव्य, सं. पुं. (सं. न.) धर्मः, विषयं, अनुष्ठे-
यम् २. दे. 'करणीय' ।
- विमूढ, वि. (सं.) कर्त्तव्यसंभ्रान्त ।
- कर्त्ता, सं. पुं. (सं. कर्त्तुं) विधातु, स्रष्टु, अतुष्टातु
२. प्रभुः, ईश्वरः ।
- कर्त्तार, सं. पुं. (सं. कर्त्तारः >) परमेश्वरः,
विधातु, विश्वसृज ।
- कर्त्तृत्व, सं. पुं. (सं. न.) कारकत्वम् २. कर्त्तृधर्मः ।
- कर्दम, सं. पुं. (सं.) चिकित्सा, पंकः २. पापं
३. छाया ।
- कर्पट, सं. पुं. (सं. पुं. न.) चीरं, पटखण्डः,
पटखरं जीर्णवस्त्रम् ।
- कर्पूर, सं. पुं. (सं.) दे. 'कूप' ।
- कर्तुरे, सं. पुं. (सं. न.) स्वर्गन् २. धुस्तरवृक्षः
३. जलम् । (सं. पुं.) राक्षसः २. पापं
३. कर्चुरः । वि. नानावर्णं, चित्रं, कल्पाय,
शबल ।
- कर्म्म, सं. पुं. (सं. कर्मन् न.) कार्यं, कर्त्तव्यं,
क्रिया, कृतिः (स्त्री.), प्रवृत्तिः (स्त्री.) २. देवं,
भाग्यम् ३. द्वितीयं कारकम् (व्या.) ।
- कांड, सं. पुं. (सं. न.) धर्मकुर्यं, यज्ञादि
कार्यम् २. कर्मविधायकं शास्त्रम् ।
- कार, सं. पुं. (सं.) लोहकारः २. स्वर्णकारः
३. सेत्रकः ।
- चारी, सं. पुं. (सं.-रिन्) राज, -भूतयः-
पुरुषः, अधिकारिन् २. कार्यकर्तृ ।
- भोग, सं. पुं. (सं.) कर्मफलम् २. पूर्वकर्मणां
परिणामः ।
- योग, सं. पुं. (सं.) चित्तशुद्धिकरं वैदिक-
कर्मन् (न.) २. निष्कामकर्मणाऽऽत्मज्ञानम् ।
- रेख, सं. स्त्री. (सं.-रेखा) भाग्यांकाः
२. भाग्यं, दैवम् ।
- विपाक, सं. पुं. (सं.) पूर्वकर्मणां फलं, कर्म-
परिणामः ।
- शील, वि. (सं.) कर्मवत् २. उद्योगिन्,
उद्यमिन् ।
- संन्यास, सं. पुं. (सं.) कर्मत्यागः २. कर्म-
फलत्यागः ।
- हीन, वि. (सं.) मंद-हृत्, -भाग्य, दुर्दैव
२. शास्त्रोक्तकर्मणाम् अकर्तृ ।
- जागता, मु., भाग्य-पुण्य, -उदयः ।
- फूटना, मु. कर्मदुर्विपाकः, भाग्यदिवर्षयः ।
- कर्मठ, वि. (सं.) कर्मण्य, कर्मशील, उद्यमिन् ।
- कर्मण्य, वि. (सं.) दे. 'कर्मठ' ।
- कर्मधारय, सं. पुं. (सं.) समानाधिकरणः
तत्पुरुषसमासः ।
- कर्मिष्ठ, वि. (सं.) कार्यशुल २. क्रियावत् ।
- कर्मी, वि. (सं. कर्मिन्) कार्यकर्तृ २. फलेच्छया
कर्मसंपादक ।
- कर्मैन्द्रिय, सं. स्त्री. (सं. न.) क्रियासाधकं
कारणम् । (हाथ, पाँव आदि) ।
- कर्पक, सं. पुं. (सं.) कर्पणकरः २. क्षेत्रिन्,
क्षेत्राजीवः ।
- कर्पण, सं. पुं. (सं. न.) आकर्षणं, आकर्षणम्
२. भूमिदारणम् ३. कृषिः (स्त्री.) ।
- कर्पणी, दे. 'खिरनी'
- कर्षी, वि. (सं.) आ-, कर्षक-कारिन् । सं. पुं.,
हालिकः, हल-, वाहः, हकः, लांगण्डिन् (पुं.) ।
- कलंक, सं. पुं. (सं.) दोषः, दूषणं, छिद्रम्
२. लांडर्नं, अपवादः ३. लक्षणं, बिहम् ।
- कलंकित, वि. (सं.) दूषित, सिद्धित, आक्षिप्त,
लांछित ।
- कलंकी, वि. (सं.-किन्) दे. 'कलंकित' ।
- कलंकी, सं. पुं. (सं. कल्किः) त्रिणोऽंश-
भावतारः ।
- कलंडर, सं. पुं. (अं. केलेडर) पचांगं, तिथिपत्रम् ।
- कलंदर, सं. पुं. (अ.) यवनभिक्षुभेदः २. वान-
रादित्तन्तयेतु ।
- कल, सं. पुं. (सं.) मधुरास्फुटध्वनिः । वि.,
मनोज्ञ, अभिराम २. मधुर, कोमल ।
- कल, सं. स्त्री. (सं. कल्य >) स्वास्थ्यम्
२. सुखम् ३. संतोषः ।
- कल, सं. स्त्री. (सं. कला) उपायः, युक्तिः (स्त्री.)
२. यंत्रं, उपकरणम् ३. यंत्रावयवः ।

कल

[१०३]

कला

कल, क्रि. वि. (सं. कल्थम्) श्वः (अव्य.), आगामिदिनम् । २. आगामिकाले ३. हाः (अव्य.), गतदिनम् ।

—का, वि., श्वस्त्वन (-नी स्त्री.), श्वस्त्य (-त्या स्त्री.) २. श्वस्तन, श्वस्त्य ।

कलई, सं. स्त्री. (अ.) रंगं, वंगं, कस्तीरम् २. रंग-वंग, -लेपः ३. रवर्णादिधातुभिर्लेपः ४. दान्तिहरी लेपः ५. सुधालेपः ६. आडंबरः ।

—गर, सं. पुं. (का.) धातु-सुधा, -लेपकः ।

—खुलना, सु., गोप्यं रहस्यं वा आविर्भूम् ।

कलकंठ, वि. (सं.) प्रियंवद, सुस्वर, मधुरभाषिन् सं. पुं. कोकिलः २. कपोतः ३. हंसः ।

कलक, सं. पुं. (अ.) दुःखं, शोकः ।

कलकल, सं. पुं. (सं.) निर्वरादीनां शब्दः २. कोलाहलः ३. विवादः ।

कलमी, सं. स्त्री. (तु.) पक्षः, पिच्छम् २. चूडालं-कारमेदः ३. सुकुटस्थाः सुपक्षाः ४. भवन-शुभम् ।

कलत्र, सं. पुं. (सं. न.) पत्नी, भार्या ।

कलदार, सं. पुं. (हि. कल) यंत्ररचितं कल्पकम् २. यंत्रयुक्तम् ।

कलधौत, सं. पुं. (सं. न.) सुवर्णम् २. रजतम् ।

कलन, सं. पुं. (सं. न.) उत्पादनं, रचनं, जननम् २. ग्रहणम् ३. धारणं, परिधानम् ४. आचरणम् ५. संवेषः ६. प्रासः, कवलः ७. गणितक्रिया ८. वेतसः, वेत्रः ।

कल्प, सं. पुं. (सं. कल्पः >) मंडलः, मंडम् २. वेदा, -रागा-रंगः ३. दे. 'कल्प' ।

कल्पना, क्रि. अ. (सं. कल्पनम् >) शुच् (भ्वा. प. से.), पीड्-सिद्-तप्-डु-ह्रिष् (कर्म.) व्यथ्-उरकंठ् (भ्वा. आ. से.), दुर्म-नायते (ना. धा.) उत्सुक (वि.) + भू ।

कल्पाना, क्रि. प्रे., 'कल्पना' के धातुओं के प्रे. रूप ।

कल्प, सं. पुं. (सं. कल्पः >) गंडः, मंडम् ।

—लगाना, क्रि. सं., मंडेन लिप् (त्र. प. अ.) ।

कलबल, सं. पुं. (सं. कलःबलम्) उपायः, युक्तिः (स्त्री.) ।

कलबल, सं. पुं. (अनु.) कोलाहलः, कलकलः ।

कलघृत, सं. पुं. (फा. कालशुद्ध) आकार-साधनम् २. आधारः, उपद्रव्यम् ।

कलभ, सं. पुं. (सं.) गजशावकः, उष्ट्रावकः ।

कलम, सं. पुं. स्त्री. (सं. पुं.) लेखनी, अक्षर-तुलिका, वर्णिका, वर्णमातृ (स्त्री.) २. अन्यप्रा-रीपणाय कृत्वा शाखा ३. अन्यवृक्षे निवेशिता शाखा ४. गंडरीमाणि (न. बड्.) ५. तुलिका, वर्तिका ६. तक्षकसाधनम् ।

—दान, सं. पुं., कलम-लेखनी, -धानम् ।

—लगाना, गु., वृक्षान्तरे देहान्तरे वा निविश (प्रे.) ।

कलमलाना, क्रि. अ., दे० 'कुलबुलाना' ।

कलमा, सं. पुं. (अ.) यवनधर्ममूलमंत्रः २. वाक्यम् ३. शब्दः ।

—पढ़ना, सु., यवनी भू ।

कलमी, वि. (फा.) हस्त-लिखित २. वृक्षान्तरे आरोपित ३. स्फटिकरूपेण धनीभूत ।

—आम, सं. पुं. (पेड़) राजाभ्यः, नृपबलमः । (फल) राजाभ्यम् ।

—शोरा, सं. पुं., धनीकृतो यवद्वारः ।

कलमुहूर्त, वि. (सं. कालमुख >) कृष्ण, -वदन-आरय २. ललित, कलुषित ।

कलश्व, सं. पुं. (सं.) मधुरमंदध्वनिः, कल, -स्वन-रतम् । २. कपोतः ३. कोकिलः ।

कलल, सं. पुं. (सं. पुं. न.) भ्रूणः, गर्भः, पुत्रनः, गर्भशिशोः प्रथमावयवः । २. गर्भाशयः ।

कलवरिया, सं. स्त्री. (हि. कलवार) सुरालयः, मदिरालयः, गंजा ।

कलवार, सं. पुं. (सं. कल्पपालः) शौलिकः, सुराजीविन्, सुराकारः २. सुराधिकारी उप-जातिः (स्त्री.) ।

कलविक, सं. पुं. (सं.) गृहनीडः, चित्रगृहः, चटकः २. चिह्नम् ।

कलश, सं. पुं. (सं.) कलश-शो, कलसः-सी-सन्, घटाः, कुटाः, निपः २. शिखा, शृंगम् ।

कलसा, सं. पुं., दे. 'कलश' ।

कलहंस, सं. पुं. (सं.) राजहंसः, कादंबः, कलनादः, मरालः २. नृपौत्तमः ३. परमेश्वरः ।

कलह, सं. पुं. (सं.) कलिः, विवादः, द्वन्द्वं, वाग्युद्धम्, विसंवादः ।

—प्रिय, वि. (सं.) विवादप्रिय, कलहकारिन्, कलहिन् ।

कला, सं. स्त्री. (सं.) अंशः, भागः २. चन्द्रस्य षोडशांशः ३. सूर्यस्य द्वादशांशः ४. अग्नि-मंडलस्य दशमांशः ५. विशतकांशात्मकः समय-

विभागः ६. शिल्पं, शिल्पविद्या ७. कौशलं, निपुणता ८. शरीरस्य षोडशध्यात्मविभागः (= ५ ज्ञानेन्द्रियाँ, ६ कर्मेन्द्रिय, ५ प्राण, मन)
 ९. नृत्यभेदः १०. मात्रा (छन्दः) ११. विभूतिः (स्त्री.) १२. शोभा, प्रभा १३. कौशुकं, लीला १४. छल, कपटम् १५. मिष, व्याजः १६. युक्तिः (स्त्री.), उपायः १७. नटलीला-भेदः १८. यंत्रम् १९. प्रकृतिः (स्त्री. , जैन.), २०. वर्णवृत्तभेदः ।
 —कंद, सं. पुं. (फ्रा.) मिष्टान्नभेदः ।
 —कौशल, सं. पुं. (सं. न.) कला, शिल्पम् २. कलापाटवम् ।
 —निधि, सं. पुं. (सं.) कलाधरः, चन्द्रः ।
 —वाजी, सं. स्त्री. (सं. + फ्रा.) विपर्यस्त-प्लुतिः (स्त्री.) ।
 —वंत, सं. पुं. (सं. कलावत्) संगीतकुशलः, गायकः २. रञ्जुर्गतकः । वि., कलाकुशल ।
 कलाई, सं. स्त्री. (सं. कलाचो) कलाचिका, प्रकोष्ठः, मणिवंधः ।
 कलाप, सं. पुं. (सं.) समूहः, गणः, निकरः २. जनसंघः, लोकनिवहः ३. इपुषिः ४. चन्द्रः ५. कटिवंधः, मेखला ६. गुच्छः ७. मयूर-पिच्छम् ८. आभूषणम् ।
 कलापिनी, सं. स्त्री. (सं.) मयूरी २. रात्रिः (स्त्री.) ।
 कलापी, सं. पु. (सं.-पिन्) मयूरः, वहिन् २. कोकिलः । वि., तृणशुद्ध ।
 कलावधु, सं. पुं. (दु. कलावदून्) कौशेयतंतौ व्यावर्तितः सुवर्ण-रजत-तारः ।
 कलाम, सं. पुं. (अ.) वचनं, उक्तिः (स्त्री.) २. वार्तालापः ३. प्रतिज्ञा ४. आक्षेपः ।
 कलार-ल, सं. पुं., दे. 'कलेवर' ।
 कलारिन, सं. स्त्री. (हि. कलार) शौण्डिकी, मद्यविक्रेत्री ।
 कलावनी, वि. (सं.) कला-शिल्प, -आ-वेत्री, शिल्पिनी २. सुन्दरी ।
 कलिग, सं. पुं. (सं.-गाः) प्रान्तविशेषः (= उड़ीसा) २. हृदयव-कुटज-वृक्षः ३. दे. 'तरबूज' । वि. चतुर, धूर्त ।
 कलिगङ्गा, सं. पुं. रागभेदः ।
 कलिद, सं. पुं. (सं.) पर्वतविशेषः २. सूर्यः ।
 कलिङ्गा, सं. स्त्री. (सं.) यमुना, कालिंदी ।

कलि, सं. पुं. (सं.) चतुर्थ-तुरीय-अन्त्य-युगम् (यह ४३२००० वर्षों का होता है)
 २. कलहः, विवादः ३. युद्धम् ४. शूरः ५. क्लेशः ६. पापम् ७. शिवः ८. इपुषिः ।
 —कर्म, सं. पुं. (सं.-कर्मन् न.) संजामः ।
 —काल, सं. पुं. (सं.) कलियुगम् ।
 कलिका, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'कली' ।
 कलित, वि. (सं.) क्षात, विहित २. प्रसिद्ध ३. प्राप्त ४. शोभित ५. सुन्दर ।
 कलियाना, कि. अ. (सं. कली >) फुट् (तु. प. से.) विकस्-फुल् (स्वा. प. से.) ।
 कली, सं. स्त्री. (सं.) कलिका, कोरकः कं, मुकुलः-लं, कुटमलः, कोशः-पः २. विकोणो वक्रखंडः ३. धनपानयंत्रार्थाभावाः ।
 दिल की कली खिलना, मु., मुद् (स्वा. आ. से.) ।
 कली, सं. स्त्री. (अ. कलर) चूर्णकम् २. तप्तचूर्णम् ।
 क्लील, वि. (अ.) न्यून, स्तोक २. लघु, ह्रस्व ।
 कलुष, सं. पुं. (सं. न.) मलं, मालिन्यम् २. पापं, दोषः ३. क्रोधः ४. महिषः ।
 वि., मलिन, पंकिल २. निर्दित ३. पापिन् ।
 कलुषित, वि. (सं.) पंकिल, मलामस २. अप-वित्र, अमेध्य ३. आतुर ४. कृष्ण, काल ।
 कलुटा, वि. (हि. काला) काल, कृष्ण, दयम ।
 काला—, वि. अति-कृष्ण-काल ।
 कलेजा, सं. पुं. (सं. कालेयम्) यक्ष (न.), काललण्डं, कालकम् २. हृदयं, हृद् (न.), ३. उरसु, वक्षसु, कोष्ठं (सब न.) ४. साहसं, उत्साहः, धीर्यम् ।
 —कौपना, मु., भी (जु. प. अ.), उद्विज् (तु. आ. से.) सं-वि, -त्रम् (दि. प. से.) ।
 —चलनी होना, मु., हृदयं व्यप् (कर्म.) ।
 —टूक टूक होना, मु., हृदयं खुद् (तु. प. से.) ।
 —धाम कर रह जाना, मु., संतापं सं-वि, -यम् (स्वा. प. अ.) ।
 —धड़कना, मु., (भयादिभिः) हृदयं कम्प (स्वा. आ. से.) ।
 —फटना, मु., (शोकमात्सर्पादिभिः) हृदयं विद् (कर्म.) ।
 —से लगाना, मु., आलिग् (स्वा. प. से.) ।
 कलेवर, सं. पुं. (सं. न.) शरीरं, देहः ।

कलेवा

[१०५]

कविता

—बदलना, कि. अ., पुनः जन् (दि. आ. से.)

२. नववस्त्राणि परिधा (जु. उ. अ.) ।

कलेवा, सं. पुं. (सं. कल्यवर्तः) प्रातराशः,

प्रातर्भोजन, कल्यजन्धिः (स्त्री.), जलपानम् ।

कलोल, सं. स्त्री. (सं. कलोलः >) क्रीडा,

खेला, वेष्टिः (पुं. स्त्री.), लीला, विलासः ।

कलौजी, सं. स्त्री. (सं. कालावाजी) पशुका,

दिव्या, काला ।

कलक, सं. पुं. (सं. पुं. न.) घृततैलादिशेषः

२. दंसः ३. विष्टा ४. किट्टम् ५. पापम्

६. वस्तुनः नूर्णम् ७. अवलेहः ।

कलिक, सं. पुं. (सं.) विष्णोर्दशनावतारः ।

कल्प, सं. पुं. (सं.) धर्मकृत्यविधायको वेदांग-

भेदः २. ब्रह्मदिनम्, दैवसहस्रयुगम् (=

४३२०००००० वर्ष) ३. महाप्रलयः, सृष्टि-

संहारः ४. विधानं, कृत्यम् ५. प्रातःकालः

६. रोगनिवृत्तियुक्तिः (स्त्री.) ७. प्रकरणं,

विभागः ८. विकल्पः, पक्षः ९. संदेशः

१०. निश्चयः ११. उद्देशः । वि., तुल्य, सदृश ।

—कल्प, सं. पुं. (सं.) कल्प, कृष्ण-पादपः दुमः ।

कल्पना, सं. स्त्री. (सं.) उद्भाषना-नं, कल्पनं,

मनः कल्पना २. रचना, विधानम् ३. प्रसाधनं,

मंडनम् ४. तर्कः, ऊहा ५. अध्यारोपः ६. गज-

सज्जीकरणं ।

—करना, कि. अ, उत्प्रेक्ष-कश् (भ्या. आ.

से.), तर्क (जु.), गगसा कल्प (प्रे.),

सम् (प्रे.) ।

कल्पित, वि. (सं.) रचित, विहित ३. सुव्यव-

स्थित ३. बि-रां,-भाषित ४. उद्भाषित,

परस्ना, भावना, लष्ट, मानस, कार्पनिक

५. असत्य, निर्मूल ६. कुत्रिम, कृतक ।

कलमय, सं. पुं. (सं. न.) अर्घ, पापम् २. गलं

मालिन्चम् ।

कल्य, सं. पुं. (सं. न.) प्रयूपः, प्रभातम्

२. मधु (न.) ३. सुरा ४. श्वः (अन्य.),

आमासिदिनम् । वि., स्वस्थ, निरामय २. मूक-

वधिर ।

कल्या, सं. स्त्री. (सं.) मधुम्, सुरा २. कल्याण-

रवस्ति, वचनं-वचः (न.), अभिनन्दनम् ।

कल्याण, सं. पुं. (सं. न.) सुखं, मंगलं, हितं,

शिवं, कुशलं, क्षेमं, मद्रं, सुस्थितिः (स्त्री.)

२. सुवर्णम् ३. रागभेदः । वि. शिव, मंगल,

शंकर ।

—कारी, वि. (सं-रिन्) सुख-मंगल-हित,

कारक ।

कल्याणी, वि. स्त्री. (सं.) मंगलकारिणी,

सुन्दरी । सं. स्त्री. (सं.) गौः (स्त्री.)

२. माषणी ।

कल्याण, सं. पुं. (सं.) प्रातराशः, कल्यवर्तः,

जलपानम् ।

कल्ल, वि. (सं.) दधिर, अकर्ण ।

कल्लर, सं. पुं. (देश.) ऊपरः-रं, बंध्या

भूमिः (स्त्री.) ।

कल्लौच, वि. दुर्वृत्त, दुराचारिन् २. दरिद्र,

गिर्धन ।

कल्ला, सं. पुं. (सं. करीरः-रं >) प्ररोहः,

किसलयः, उन्निरु ।

कल्लोल, सं. पुं. (सं.) महातरंगः, उल्लोलः,

महोमिः २. द्वे. 'कलोल' ।

कल्लोलिनी, सं. स्त्री. (सं.) नदी, तरिनी ।

कवच, सं. पुं. (सं. पुं. न.) सत्राहः, कञ्जकः,

वर्मन् (न.), तनु, वारं-शार्ण-श्रम् २. भेरी,

हुंदुभिः ३. रक्षावरुण्डः ।

—पत्र, सं. पुं. (सं. न.) शूर्जपत्रम् ।

कवर, सं. पुं. (सं. पुं. स्त्री. न.) केशः, बंधः-

पाशः २. घासः, कवलः, पिण्डः ।

कचरी, सं. स्त्री. (सं.) केशविन्यासः, वेणी-णिः

(स्त्री.), धमिल्लः २. वनतुलसी ।

कवर्ग, सं. पुं. (सं.) ककारादिवर्णपंचकम् ।

कवल, सं. पुं. (सं.) घासः, पिण्डः-डम् ।

कवलगष्टा, सं. पुं. (सं.) कमलग्रंथिः >

कमलाक्षः, पद्मबीजम् ।

कवलित, वि. (सं.) भङ्गित, निर्गोणं, भुक्त

२. गृहीत, आदत्त ।

कवायद, सं. पुं. (अ. 'क्वायदा' का बहु.)

नियमः-विषयः (बहु.) २. व्यायामः ३. सेना-

व्यायामः ४. व्याकरणनियमः ।

कवि, सं. पुं. (सं.) काव्यकरः, सूरिः, सत्सारः

२. ऋषिः ३. सूर्यः ४. ब्रह्मन् (पुं.) ।

—राज, सं. पुं. (सं.) कवीन्द्रः, महाकविः

२. वैतालिकः ३. वैद्योपाधिः ।

कविता, सं. स्त्री. (सं.) काव्यं, काव्यप्रबन्धः,

कवित्त

[१०६]

कसरत

काव्यबंधः २. काव्यरचना, कविवंध, कविता-
कला ।
कवित्त, सं. पुं. (सं. कवित्वम् >) काव्यं,
कविता २. हिन्दोछन्दोभेदः ।
कविव, सं. पुं. (सं. न.) काव्यरचनाशक्तिः
(स्त्री.) २. काव्यगुणः ।
कर्वीदु, सं. पुं. (सं.) वाल्मीकिः, प्राचेतसः,
कविश्रेष्ठः ।
कर्वीद्र, वि. (सं.) कविश्रेष्ठः, श्रेष्ठकविः,
कविराजः ।
कश, सं. पुं., दे. 'कशा' ।
कशमकश, सं. स्त्री. (फ्रा) संवर्धः, प्रतिस्पर्धी
२. जनौघः ३. संशयः ।
कशा, सं. स्त्री. (सं.) कषा, प्रतोदः, प्रति-
ध्वाशः-पः ।
कशिशा, सं. स्त्री. (फ्रा) दे. 'आकार्ग' ।
कशीदा, सं. पुं. (फ्रा.) मूची, शिल्प-कर्मन्
(न.) ।
—कादना, क्रि. स., सूच्या पुष्पादिकं चिह्नं
(नु.) ।
कशती, सं. स्त्री. (फ्रा.) दे. 'नौका' ।
कश्मल, सं. पुं. (सं. न.) मोहः, मूर्च्छा
२. पापं, अघम् । वि. मलिन, आश्लि ।
कश्मीर, सं. पुं. (सं.) काश्मीरदेशः, शास्त्र-
शिल्पिन् ।
कष, सं. पुं. (सं.) कषपट्टिका, निकषः, निकष-
उपलः-पाषाणः २. शाणः-णी ३. परीक्षणं,
परीक्षा ।
कषण, सं. पुं. (सं. न.) निकषेण स्वर्णादिकस्य
परीक्षणम् ।
कषाय, वि. (सं.) तुवर, कुवर २. सुवास, सुगंधि
३. रंजित, रंगवत् ४. गैरिकवर्णं, रक्तदयाम् ।
सं. पुं. क्रोधः २. कायः ३. कुवरः, रसभेदः ।
कष्ट, सं. पुं. (सं. न.) दुःखं, हेराः, पीडा,
व्यथा २. आपद्, विपद्, आपत्तिः, विपत्तिः
(सव स्त्री.) ।
—साध्य, वि. (सं.) दुस्साध्य, दुष्कर, कष्ट ।
कस, सं. पुं. (सं. कषः) निकषः, कषपट्टिका
२. परीक्षणम् २. खड्गकुचनीयता ।
कस, सं. पुं. (हिं. कसना) बलं, शक्तिः (स्त्री.)
२. निग्रहः, निरोधः ३. विघ्नः ।

कस, सं. पुं. (फ्रा.) नरः, जनः, व्यक्तिः
(स्त्री.) ।
फ्री—, क्रि. वि., प्रतिपुरुषं, प्रतिजनम् ।
वे—, वि., असहाय, अनाथ ।
कसक, सं. स्त्री. (सं. कष = हिंसा >) वेदना,
पीडा, व्यथा २. चिर-द्वैरं-विरोधः ३. अभि-
लाषः ४. सहानुभूतिः (स्त्री.) ।
—निकालना, क्रि. स., चिरद्वैरं शुभ्रं (पे.) ।
कसकना, क्रि. अ. (हिं. कसक) व्यथं (भ्वा.
आ. से.), पीडं (कर्म.) ।
कसकुट, सं. पुं. दे. 'काँसा' ।
कसना, क्रि. स. (सं. कर्णम्) दृढीकृ, नियम्
(भ्वा. प. अ.), द्रव्यति (न. धा.) २. बंधं
(क. प. अ.) ३. पीडं (नु.) ४. परीक्षं
(भ्वा. आ. से.) ५. सञ्जीकृ ६. मूर्च्छं वृधं
(प्रे.) ।
क्रि. अ. दृढीभू, नियम् (कर्म) २. बंधं,
नियंत्रं (कर्म.) ३. पिंडीभू ।
सं. पुं., दृढीकरणं, निवमनम् २. बंधनम्
३. पीडनम् ४. परीक्षणम् ५. सञ्जीकरणम् ।
कसनी, सं. स्त्री. (हिं. कसना) दृढीकरण-
नियमन-रञ्जुः (स्त्री.) २. अंगिका ३. निकषः
४. परीक्षा ५. दे. 'ह्यौडी' ।
कसत्र, सं. पुं. (अ.) व्यदसायः, वृत्तिः (स्त्री.)
२. गणिकावृत्तिः (स्त्री.) ।
कसवी, सं. स्त्री. (अ. कसव >) वेद्या, गणिका
२. कुलटा, पुंश्रली ।
कसम, सं. स्त्री. (अ.) शपथः, प्रतिज्ञा, समयः ।
—खाना, क्रि. अ., शप् (भ्वा. दि. उ. अ.) ।
कसमसाना, क्रि. अ., (अनु०) दे. 'कुल-
बुलाना' ।
कसमसाहट, सं. स्त्री., जनेः सर्वणम् २. व्याकु-
लता ।
कसमि (मी) या, अ. (अ०) सशपथं, सस-
मयं, शपथपूर्वम् ।
कसर, सं. स्त्री. (अ.) न्यूनता, अल्पता
२. अभावः, हानिता ३. दोषः ४. वैरम्
५. हानिः (स्त्री.) ।
—निकालना, सु., क्षति पूरं (नु.), प्रतिफलं
दा (जु. उ. अ.) ।
कसरत, सं. स्त्री. (अ.) दाहुर्यं, प्रनुरता,
आधिक्यम् २. बहुतरभागः, अधिकसंख्याः ।

कसरत

[१०७]

कहा

—राय्, सं. स्त्री., बहुमतं, मताधिक्यम् ।
 कसरत्, सं. स्त्री. (अ.) व्यायामः, परिश्रमः
 २. अभ्यासः, आवृत्तिः (स्त्री.) ।
 कसरती, वि. (अ. कसरत >) व्यायामिन् ,
 वृत्तंग ।
 कसा, वि. (हि. कसना) गार, दृढ, सुसंघत
 १. दृढवद् ।
 कसाई, सं. पुं. (अ. कसः >) सौ (शौ) निकः
 २. मांसिकः, वातकः, विदक्षित् । वि., कूर,
 निर्दय ।
 कसाना, क्रि. अ. (हि. कौसा) कषाय-विकृत-
 स्वाद (वि.) भू ।
 कसाला, सं. पुं. (सं. कषः-पीडा >) दुःखं,
 कष्टम् २. आयासः, परि-श्रमः ।
 कसाव, सं. पुं. (सं. कषायः >) कषायता,
 रक्षता ।
 कसी, सं. स्त्री. (सं. कषपम् >) खनित्रं,
 टंग-नम् ।
 कसीदा, सं. पुं., दे. 'कशीदा' ।
 कसीस, सं. पुं. (सं. कासीसम्) शोधनं,
 शुभं, धातुशेखरम्, खचरम् ।
 कसूर, सं. पुं. (अ.) अपराधः, दोषः,
 स्थालतम् ।
 —वार, वि., अपराधिन, दोषिन ।
 कसेरा, सं. पुं. (हि. कौसा) कांस्यकारः,
 पीतलोहकारः ।
 कसेला, वि. (हि. कसा >) कषाय, तुष्य, कुवर ।
 कसेली, सं. स्त्री. (हि. कसेला) दे. 'सुपारी' ।
 वि. स्त्री. कषायो, रक्षा ।
 कसोरा, सं. पुं. (हि. कौसा) (कांस्य-) चपकः
 शरावः-भाजनं-पत्रम् । २. मृण्मय मांसिक-
 चपकः ।
 कसौटी, सं. स्त्री. (सं. कषपट्टी) नि., कषः,
 कषपाट्टिका, निकषोपलः २. परीक्षा, प्रमाणम् ।
 —पर कसना, सु., परीक्ष् (भ्वा. आ. से.) ।
 कस्टम, सं. पुं. (अं.) रीतिः (स्त्री.), व्यवहारः,
 अभ्यासः, नियमः ।
 कस्टमर, सं. पुं. (अं.) ग्राहकः, कैव (पुं.) ।
 कस्टमस, सं. पुं. (अं.) शुष्क-वं, करः,
 राजस्वम् ।
 कस्तूरी, सं. स्त्री. (सं.) कस्तूरिका, मृग-नाभिः-
 मद्यः, अंजना, वातामोदा, गंधधूलिः (स्त्री.) ।

—मृग, सं. पुं. (सं.) गंधमृगः ।
 कस्बा, सं. पुं. (अ. वः) वृहत्-महा-, ग्रामः,
 लघु-नगरं-पुरम् ।
 कडकहा सं. पुं. (अ. अनु.) अट्टहासः, उच्चै-
 हासः, अति-प्र-हासः ।
 कडहत, सं. पुं. (अ.) दुर्भिक्षं, नीवाकः, आहा-
 राभावः, अकालः ।
 कहना, क्रि. स. (सं. कथनम्) गद्-वद्-भग्
 (भ्वा. प. से.), कू (अ. उ.), वच् (अ. प.
 अ.) उच्चर्-उदीर् (प्रे.), उदा-व्या-ह (भ्वा.
 प. अ.) २. कथ् (जु.), शंस् (भ्वा. प. से.),
 आचक्ष् (अ. आ.), नि-आ, विद् (प्रे.), आ-
 स्या (अ. प. अ.), वर्ण-निरूप (जु.),
 अभिधा (जु. उ. अ.) ३. आज्ञा (प्रे. आधा-
 पवति) ४. शाब् (भ्वा. आ. से.) ५. प्रकाश्
 (प्रे.) ६. उपदिश् (तु. प. अ.) । सं. पुं.,
 वचनं, भाषणं, कथनं, व्याहरणं, उदीरणम्
 २. आज्ञा, आदेशः ३. उपदेशः, अनुज्ञासनम्
 ४. दे. 'कहावत' ।
 —द्योय, वि. गदनीय, वदनीय, कथनीय,
 भणितव्य, वक्तव्य ।
 —वाला, सं. पुं., वाचकः, वक्त्र, वादिन्,
 व्याहर्त्ता, अभिधातु ।
 —हुआ, वि., गदित, उदित, भणित, उक्त,
 कथित, उच्चारित, उदीरित ।
 कहने को, सु., नममात्रम् ।
 कहरे, सं. पुं. (अ.) विपत्तिः (स्त्री.) ।
 कहरवा, सं. पुं. (हिं. कहार) (१-२) ताल-
 गीत-नृत्य-भेदः ।
 कहरी, वि. (अ० कह >) कूर, निर्दय,
 अत्याचारिन् ।
 कहलाना, क्रि. प्रे., 'कहना' के धातुओं के
 प्रे. रूप ।
 कहवा, सं. पुं. (अ.) शुक्लभेदः २. तस्य बीजानि
 (बहु.) ३. तेषां पेषम् ।
 कहौं, क्रि. वि. (सं. कुह) क, कुव, कस्मिन्
 स्थाने ।
 —का, वि., कत्य, कुत्रत्य, किदेशीय ।
 —तक, क्रि. वि., कियद्दूर-रे, कियतंदेशेन,
 कियवेन्तम् ।
 कहा, सं. पुं. (हि. कहना) कथनं, वचनं,
 उक्तिः (स्त्री.), आज्ञा, उपदेशः ।

कहानी

[१०८]

कांति

कहानी, सं. स्त्री. (सं. कथानिका) कथा, आ-
उपा, ख्यानम्, आख्यायिका, वृत्तान्तः ।

कहार, सं. पुं. [सं. कं (= जल) + हारः]
कहारः, जल-उद, वाहः, इतिहारः ।

२. शिविका-नरयान, वाहः ३. पात्र, क्षालक-
भाजकः ।

कहावत, सं. स्त्री. (हि. कहना) आभाषकः,
लोकवादः, जनप्रवादः, जनोक्तिः-लोकोक्तिः
(स्त्री.) ।

कहासुनी, सं. स्त्री. (हि. कहना + सुनना)
कलहः, विवादः, नाशुद्धम् ।

कहीं, कि. वि. (हि. कहाँ) कापि, कचिच्,
कुत्रापि, कुत्रचिच्, यत्रकुत्रचिच् । २. न, न
कदापि ३. यदि, चेत् ४. अत्यन्तम् ।

—कहीं, कि. वि., कचिच् कचिच्, यत्र कुत्र-
चिच् ।

—न कहीं, कि. वि., अत्र अन्यत्र वा ।

कौह्यौ, वि. (अनु. कौच) धूर्त्त, कितवः ।

कौ कौ, सं. स्त्री. (अनु.) काका, शब्दः ध्वनिः,
२. काकरुतम् ।

कौशा, सं. स्त्री. (सं.) अभिलाषः, कामना ।

कौख, सं. स्त्री. (सं. कक्षः) कक्षा, बाहुमूलं,
मुजकोटरः-रं, दोर्मूलम् ।

कौखना, कि. अ., (अनु.) भारतवर्षमत्स्या-
गणविकाले आर्तनादं कृ ।

कौण्डी, सं. स्त्री., * गलः-हसनी-हसन्ती, अंगार-
धानिका प्रकारः ।

कांग्रेस, सं. स्त्री. (अं.) महासभा, प्रतिनिधि
सभा, समाजः ।

काँच, सं. स्त्री. (सं. कक्षः) कच्छः-च्छे, कच्छा,
टी-टिका २. सुदावर्तः, सुदचकम् ।

काँच, सं. पुं. (सं. काचः) रफटिकः ।

काँचन, सं. पुं. (सं. न.) स्वर्णम्, सुवर्णं,
कनकम् २. धनं, संपत्तिः (स्त्री.) । (सं. पुं.)
धुस्सूरः २. चंपकः ३. कोविदारः ४. काँच-
नालः ।

—मय, वि. सुवर्णमय, हैम (-मां स्त्री.) ।

काँची, सं. स्त्री. (सं.) रसना, मेखला
२. काँजिवरम् ।

काँजिव (वा) रम्, सं. पुं., (सं. काँची)
काँची, पुरी-नगरी ।

काँजी, सं. स्त्री. (सं.) गृहान्तः, रक्षोघ्नं, सुवी-
राम्लं, काँजि(जी)कम् ।

काँजी हौद, सं. पुं. (अं. काँजि हाउस) पशु-
शाला मुक्तिः (स्त्री.), गोशुद्धं, अक्षरोधः ।

काँटा, सं. पुं. (सं. कंटकः-कम्) तरु-द्वय-
नखः, शितामः, शल्यम् २. पृष्ठवेष्टा, केशेरका

३. नखः-सं, सखरः-रम् ४. लघु, तुला-धरः

५. शलः-लम् ६. मथुरकम्पादीनां नखः ।

७. तुला, जिह्वा-नूची ८. वडिशं, मत्स्यवेध-
नम् ९. मत्स्यारिथ (न.) १०. विहोदभेदः

११. शलं, शल्लम् १२. घटोमूची १३. कूप-
कंटकः १४. रोमांचः ।

—खटकना, मु. (खटयं) कटकगिब व्यध्
(दि. व. अ.)

—होना, मु., अतिक्रम (वि.) भू ।

काँटे बीना, मु., पीट् (न.) ।

काँटी में घसीटना, मु., मिथ्यास्तु (अ. प.
अ.) ।

रास्ते में काँटे बिखरना, मु., बिभ्रयति
(ना. धा.) ।

काँटी, सं. स्त्री. (हि. काँटा) धुद्रकंटकः
२. लघु-धुद्र, -धरणी-आकर्षणी ३. धुद्रतुला

४. धुद्रकीलः ५. कापांसमलन ।

काँड, सं. पुं. (सं. पुं. न.) अध्यायः, उन्मुखासः,
प्रकरणं, परिच्छेदः, स्वयं २. वि-, भागः,
खंडः-डम् ३. इण्डः, दृष्टिः (स्त्री.) ४. बाणः

५. इरुशुः ६. अवसरः ७. तुणादिरुच्छः

८. तरुस्कन्धः ९. समूहः १०. वंशः-पर्वम्
(न.) ११. शाळा १२. व्यापारः, घटनः

१३. नालम् ।

काँडी, सं. स्त्री. (सं. काँडः) दीर्घा, -रघूणा-
वाणम्, गृहरघूणा, तुला ।

काँत, सं. पुं. (सं.) पतिः, भर्तृ २. अयम्-
लोहः-कान्त, जुंघवाः ३. चन्द्रः ४. बलन्तः

५. श्रीकृष्णः । वि., मनोरम, शोभन ।

काँता, सं. स्त्री. (सं.) पत्नी, भार्या २. दक्षिता,
प्रिया ३. सर्वांगसुन्दरी भारी ।

काँतार, सं. पुं. (सं. पुं. न.) महाबन्धु, बृहद्-
गह्वरं, अरण्यानां २. वेणुः, वंशः ३. विलं,
छिद्रम् ।

काँति, सं. स्त्री. (सं.) द्युतिः-दीप्तिः-लविः
(स्त्री.), भा, अभिरूपा २. सौन्दर्यं, लावण्यम् ।

कांठव, सं. पुं. (सं. न.) कदादीभृष्ट-कन्दुमज्जित,
वस्तु (न.)-पर्यायः ।

कांठिशीक, वि. (सं.) भय-त्रास, पलायिग-
आहत-भावित

काँप, सं. स्त्री. (सं. कंषा) (१-२) गज-
चराह, -मृतः २. शंशकादादीनां शलाका
३. काँभृषणभेदः ।

काँपना, कि. अ. (सं. कम्पन्म्) कप्-स्यद्-वेप्
(भ्वा. आ. से.) रफुर (तु. प. से.) २. विचल-
नेल् (भ्वा. प. से.) ३. दे. 'डरना' ।

काँपोज, वि. (सं.) कम्पोजदेश-विषयक-सम्ब-
धिन् । सं. पुं. कम्पोजवासिन् । २. कम्पोजाश्वः ।

काँव-काँव, सं. स्त्री. (अनु.) डे. 'काँ-काँ'
२. प्रजलः, विप्रलापः ।

काँवर, सं. स्त्री. दे. 'वहँगी'

काँस, सं. पुं. (सं. कशः) अमरपुष्पकः, धन-
हासकः, काशा-शी २. कलहः ।

काँसा, सं. पुं. (सं. कांस्यम्) कांसं, कांसास्थि
(न.) ताप्राग्म्, दौर्भिक्ष-पीत, -लोद्ग, घोषन् ।

काँस्यकार, सं. पुं. (सं.) कंसकारः दे. 'कसेरा' ।
का, प्रत्य. (सं. प्रत्य. 'कः') षष्ठी वा समास
द्वारा । (उ० राम की पुरतक = रामस्य पुस्तकं,
रामपुरतकम्) ।

काई, सं. स्त्री. (सं. कावारम्) शैव (वा) लः,
शैव (वा) लः-लं, जलनीलो २. अयोग्यलम्
३. मलम् ।

काक, सं. पुं. (सं.) वायसः, ध्वंशः ।

—तालीय, वि. (सं.) अकस्मिक-यादृच्छिक
(-की स्त्री.), अतकित ।

—पक्ष, सं. पुं. (सं.) शिखंडः-लकः, अलकः,
चूर्णकुन्तलः केशकलापः ।

—पद्, सं. पुं. (सं. न.) हस्तदेवेषु लंबित-
वर्णोत्तकचिह्नम् (= अ) ।

—वृक्ष्या, सं. स्त्री. (सं.) एकापत्यजननीः
काक, सं. पुं. (अ. काक) पिधानं, कृपी-
छिद्रपिधानम् २. रोषनी, रत्नभनी ।

काकली, सं. स्त्री. (सं.) मूक्षममथुराकृष्टध्वनिः ।
काका, सं. पुं. (प्रा. काका = कदा भर्त्स >)
पितृव्यः, पितुः प्रातृ २. (पं.) बलः, शिशुः ।

काकी, सं. स्त्री. (प्रा. काका >) पितृव्या,
पितृव्यवस्ती २. (सं.) कान्यका, बालिका ।

काकु, सं. पुं. (सं.) मित्रकण्ठध्वनिः २. आक्षेपः,

न्यग्यवचनं. आ. अधि, -क्षेपः ३. अलङ्कारभेदः
(सा.) ४. जिह्वा ।

काकुस्थ, सं. पुं. (सं.) श्रीरामचन्द्रः ।

काकुल, सं. पुं. (प्रा.) काकपक्षः शिखंडकः ।

काग, सं. पुं. दे. 'काक' १, २.

कागज, सं. पुं. (अ.) कागदः-दं, पत्रं, कर्गलम् ।

—पत्र, सं. पुं. (अ. + सं.) लेख्यपत्राणि, पत्र-
काणि, लेख्यानि (सब बहु.) ।

—की नाव, मु. क्षणभंगुर, विनश्वर ।

कामाजी, वि. (अ. कागज >) कागद-पत्र-
मय. २. मूक्षमन्त्रम् ३. प्रतप्तु । सं. पुं., पत्रवि-
क्रयितृ २. श्रेतकपोतः ।

—घोड़े दौडाना, मु., पत्रैः त्यवह (भ्वा.
प. अ.) ।

काच, सं. पुं. (सं.) स्फटिकः २. नेत्ररोगभेदः
(सं. न.) काचलवणम् २. सिक्ककम् ।

काछ, सं. स्त्री. (सं. कशा >) कटी-जघन,-
वस्त्रम् ।

काछना, कि. सं. (सं. कक्षा >) धौताप्राम्तं वृष्टे
निविसु (प्रे.) ।

काछना, कि. स. (सं. कपणम्) फेनं अपनी
(भ्वा. उ. अ.) ।

काछनी, सं. स्त्री. (हि. काठना) ऊदकसनं,
सभिवचस्त्रम् ।

काछा, सं. पुं. दे. 'काछनी' ।

काछी, सं. पुं. (सं. कच्छः >) शाक, उपभक्त-
विकेसु २. जातिभेदः ।

काज, सं. पुं. (सं. कार्यम्) कृत्यं, कार्यं, कर्मन्
(न.), कृतिः (स्त्री.) २. वृत्तिः (स्त्री.),
आजीविका ३. उद्वेदयं, प्रथोजनम् ४. विवाहः ।

काज, सं. पुं. (अ. कायजा >) गण्डाधारः,
कुडुपाधारः (= कटन का छेद) ।

काजल, सं. पुं. (सं. काजलम्) लोचकः, दोष-
किट्टं, अंजनम् ।

—की कोठरी, मु., तिन्धस्थानम् ।

काजी, सं. पुं. (अ.) न्यायाधीशः, धर्माध्यक्षः
(इस्लाम) ।

काट, सं. स्त्री. (हि. काठना) छेदनं, कर्तनं,
लवनं, कुन्तनं, व्रश्चनम् २. कर्तनरीतिः (स्त्री.)
३. व्रणः, क्षतम् ४. खण्डः-टं, लवः ५. छलं,
कपटम् ।

—छोट, सं. स्त्री., संक्षेपणं २. शोधनम् ।

काठन, सं. पुं. (अं.) कार्पासः, तूलः-लम्
२. कार्पासं, तूलान्वरम्, बादरम् ।

काठना, क्रि. स. (सं. कर्तनम्) कृत् (तु. प. से.) लृ (क्. उ. से.), छिद् (रु. प. अ.), अश् (तु. प. वे.) २. तुद् (तु. प. अ.), वण् (तु.) ३. ऊन् (चु.), संश्लिप् (तु. प. अ.) ४. हन् (अ. प. अ.) व्यापय (प्रे.) ५. दे. 'कतरना' ६. संधि वृद् (प्रे.) ७. विफलीकृ ८. दंश् (भ्वा. प. अ.) ९. अस्पांशं उद्भृ (भ्वा. प. अ.) १०. अतिकम् (भ्वा. प. से.) ।

सं. पुं. तथा भाव, दे. 'काट' ।

—योग्य, वि., कर्तनीय, छेदनीय, छेत्तव्य, लवनीय ।

—वाला, सं. पुं. छेदकः, लावकः, कर्तनकरः । काटा हुआ, वि., कृत्, लन, वृत्त, छिन्न । काटने दौटना, मु. निर्जन (वि.) दृश् (कर्म.) । काटो तो खून नहीं, मु., स-; स्वप्न ।

काठ, सं. पुं. (सं. काष्ठम्) दाह (न.) २. इध्वां, इध्वन् ३. काष्ठनिगटः-लन् ४. दे. 'शहतीर' । वि. क्र. २. मूर्ख ।

—का उल्लू, सं. पुं. जद्धीः, मूढः, अज्ञः ।

—की हुरीदी, सं., आपातरमगीय वस्त्र ।

—मारना, मु., काष्ठनिगडेन बंध (क्. प. अ.) ।

काठवा, सं. पुं., दे. 'कठौता' ।

काठिन्य, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'कठिनता' ।

काठी, सं. स्त्री. (हिं. काठ) पर्याणं, पर्यवर्णं, पल्ययनम् २. शरीर, -रचना-संस्थानम् ३. असिकोषः ।

काठना, क्रि. स. (सं. कर्षणम्) निष्-आ, कृप् (भ्वा. प. अ.), निष्-सं, -पीद् (चु.), निर-उद्, -ह (भ्वा. प. अ.) २. मूच्या पुष्पादिकं सिव् (वि. प. से.) ३. काष्ठपाषाणादिषु पुष्पादिकं उल्लिख्-उत्कृ (वि. प. से.) ४. प्रथक् कृ, विभुज-विश्लिप् (प्रे.) ५. कश् (भ्वा. आ. से.) ।

काठा, सं. पुं. (हिं. काठना) कथः, कथायः, नियासः ।

कापोली, सं. स्त्री. (सं.) कुलटा, वृषिचारिणी, पुंन्दली २. अनुदा, अविवाहिता ।

कानना, क्रि. स. (सं. कर्तनम्) तन्तून् सृज् (तु. प. अ.), कृत् (न. प. से.) ।

सं. पुं. तथा भाव, कर्तनं, तन्तुनिर्माणम् ।

—योग्य, वि., कर्तनीय, कर्तनार्ह ।

—वाला, सं. पुं., कर्तकः, तन्तुकरः ।

काता हुआ, वि., प्रस्त ।

कानर, वि. (सं.) व्याकुल, विडल २. भीत, व्रत ३. भीरु ४. आर्त्त ।

कातरता, सं. स्त्री. (सं.) व्याकुलता, पैयाभावः २. भयं, वासः ३. भीरुता, कातर्यम् ४. अथसादः विषादः ।

कातिय, सं. पुं. (अ.) लेखकः २. अक्षरचंचुः ।

कातिल, सं. पुं. (अ.) पातकः, हन्तृ ।

कादम्ब, सं. पुं. (सं.) (१-३) कर्द्वं, -वृक्षः-पुष्प-फलम् ४. कलहभः ५. इशुः ६. वाणः ७. कर्द्वमल्लः ।

कादंबरी, सं. स्त्री. (सं.) कोविला २. मखिरा ३. सरस्वती ४. वाणरचितो गणकान्धविशेषः ।

कादंबिनी, सं. स्त्री. (सं.) मेवमाला, जल-दायली ।

कान, सं. पुं. (सं. कर्णः) श्रोत्रं, श्रवणं, श्रुतिः (स्त्री.), श्रावः, शब्दग्रहः ।

—में कहना, क्रि., स., कर्णं जप (भ्वा. प. से.) ।

—का परदा, सं. पुं., कर्णं, -पदहः-दुःशुभिः ।

—का ग्रहना, सं. पुं., कर्णस्त्रावः ।

—का मैल, सं. पुं., कर्णं, मलं-गूर्यं, पिंजूरः ।

—की शाय-शाय, सं. स्त्री., कर्णप्रपादः ।

—उमैठना, मु., दंडरूपेण कर्णं मुद् (चु.) ।

—का कच्चा, मु., विधासिन ।

—काटना, मु., अतिशी (अ. आ. से.), अति-रिच् (कर्म.) ।

—खदे होना, मु., निरिग (भ्वा. आ. अ.) ।

—खा जाना, मु., कोलाहलं कृ ।

—पकड़ना, मु., पश्चात्पान कर्णं सृश् (तु. प. अ.) ।

—पर जूँ न रँगना, मु., नितान्तं अनवहित (वि.) स्था (भ्वा. प. अ.) ।

—फूकना, मु., कलहं उदीप् (प्रे.) ।

—भरना, मु., वृष्टतो द्वेषं जन् (प्रे.) ।

—में उँगली दिवें रहना, मु., दे. 'कान पर जूँ न रँगना' ।

कानन, सं. पुं. (सं. न.) वनम् २. गृहम् ।

कानफरेंस, सं. स्त्री. (अं.) सम्मेलनम् ।
 कानस्टेबिल, सं. पुं. (अं.) रक्षित्, शान्ति-
 रक्षकः, रक्षापुरुषः ।
 काना, वि. पुं. (सं. काणः) एकाक्षः, चन्द्रक्षः ।
 कानाकानी, सं. स्त्री. (सं. कर्गः >) कर्णजपन्,
 उपांशुवादः २. वार्ता, जनप्रवादः ।
 कानाफूसी, सं. स्त्री. (सं. + अतु.) दे.
 'कानाकानी' ।
 कानि, सं. स्त्री. (देश.) लोकलज्जा, मर्यादा ।
 कानी, वि. स्त्री. (सं.) काणा, एकाक्षा, एकनेत्रा,
 काणयो, काणोरी ।
 —उंगाली, सं. स्त्री. कनिष्ठा, कनिष्ठिका, कनी-
 निका, दुर्बलाङ्गुली-लिः (स्त्री.) ।
 —कौडी, सु., दे. 'कौडी' के नीचे ।
 कानी हाउस, दे. 'कौजी हौद' ।
 कानीन, सं. पुं. (सं.) कन्यापुत्रः, कुमारी-
 तनयः ।
 कानून, सं. पुं. (अ.) अधिनियमः २. राज-
 नियमः, विधिः ३. आचारः, व्यवहारः ।
 —गो, सं. पुं. ग्रानगणप्रधयज्ञः ।
 —दौ, सं. पुं., व्यवहारनिपुणः, विधिज्ञः ।
 कानूनी, वि. (अ. कानून >) वैध, राजनियम-
 विषयक २. विधिज्ञ ३. धर्म्यं, शास्त्रविहित
 ४. कुतर्किन् ।
 कान्ह, सं. पुं. (सं. कृष्णः) श्रीकृष्णचन्द्रः
 २. पतिः ।
 कापालिक, सं. पुं. (सं.) शैवतांत्रिकसाधुः
 २. वर्षासंकरजातिभेदः ।
 कापुरुष, सं. पुं. (सं.) क-निच-कातर,-जनः ।
 काफिया, सं. पुं. (अ.) अस्त्यानुप्रासः ।
 —तंग करना, सु., अतीव संतप्त-उद्विज्-
 अर्द्ध (प्रे.) ।
 काफिर, सं. पुं. (अ.) अयबनः (इस्लाम.)
 २. नाशिकः, अनीधरवादिन् ३. कर ४. दुष्ट ।
 काफिला, सं. पुं. (अ.-लः) सार्थः, यात्रिक-
 समूहः ।
 काफी, वि. (अ.) पर्याप्त, अन्त्याधिक, समर्थ,
 उचित, अलम् (अन्य. चतुर्थी के साथ) ।
 काफी, सं. स्त्री. (अं.) दे. 'कहवा' ।
 काफूर, सं. पुं. (का.) कर्पूर-रं, धनसारः ।
 —होना, सु., तिरौ भू ।

काबिज्, वि. (अ.) अधिकारिन् : प्रभु
 २. मलाखरोषक, गरिष्ठ ।
 काबिल, वि. (अ.) योग्य, समर्थ ।
 काबू, सं. पुं. (तु.) अधिकारः, प्रभुत्वं, वशः ।
 —करना, क्रि. स., वश नी (भा. उ. अ.) ।
 काम, सं. पुं. (सं.) इच्छा, अभिलाषः, मनो-
 रथः, आकांक्षा २. शिवः ३. मदनः, काम-
 देवः ४. मैथुनेच्छा ५. इन्द्रियाणां विषयप्रवृत्तिः
 (स्त्री.) ६. चतुर्वर्गोऽन्यतमः ।
 —आतुर, वि. (सं.) कामार्त्त, अनंगतप्त,
 विधुर ।
 —केलि, सं. स्त्री. (सं. पुं. स्त्री.) कामक्रीडा,
 विहारः, विलासः ।
 —तरु, सं. पुं. (सं.) कल्पवृक्षः ।
 —देव, सं. पुं. (सं.) कामः, मदनः, स्मरः,
 कंदर्पः, अनंगः, मन्मथः, मनसिजः, मनोजः,
 कुसुमवाणः, पंचशरः, मारः, मीनकेतनः,
 मकरध्वजः, पुष्पधन्वन्, आत्मभूः ।
 —धेनु, सं. स्त्री. (सं.) कामदुघा, कामदा ।
 —रिपु, सं. पुं. (सं.) कामारिः, शिवः ।
 —रूप, सं. पुं. (सं.) प्रान्तविशेषः, असम-
 प्रान्तः । वि., स्वेच्छारूप २. सुरूप ।
 —शास्त्र, सं. पुं. (सं. न.) वात्स्यायनप्रणीतो
 ग्रंथविशेषः २. कामचिन्तनम् ।
 काम, सं. पुं. (सं. कर्मन् न.) कार्यं, कृत्यं,
 क्रिया २. व्यापारः, व्यवसायः ३. उद्यमः,
 उद्योगः ४. प्रयोजनम्, उद्देश्यम् ५. उपयोगः,
 व्यवहारः ।
 —आना, क्रि. अ., प्र-उप,-युज् (कर्म.),
 व्यवह-व्यापृ (कर्म.) । सु., बीरगतिं प्राप्
 (रवा. उ. अ.) ।
 —काज, सं. पुं., कार्यं, अर्थः, व्यवसायः ।
 —काजी, वि., उद्यमिन्, उद्योगिन् ।
 —चलाऊ, वि., उपयुक्त, उपयोगिन् ।
 —चोर, वि., अलस, कर्तव्यविमुख ।
 —तमाम करना, सु., सृ-निवृत्-नश-व्यापद्
 (प्रे.), हन् (अ. प. अ.) ।
 कामना, सं. स्त्री. (सं.) इच्छा, आकांक्षा ।
 कामयाव, वि. (का.) सफल, कृतकार्यं ।
 कामयावी, सं. स्त्री. (का.) सफलता, कृत-
 कार्यता ।
 कामरी, सं. स्त्री., दे. 'कवल' ।

कामला, सं. पुं. (सं. कामलः) पाण्डुः, पाण्डु-
रोगः ।

कामिनी, सं. स्त्री. (सं.) कुन्दरी, नारी २. सुरा
३. कामवदुला नारी ।

कामिल, वि. (प्रा.) सं.-पूर्वा २. दक्ष, योग्य ।

कामी, वि. (सं. कामिन) लंपट, कामासक्त,
कामांध, कामन, अभीक, कामातुर, कामुक
२. अनुरक्त, व्यासक्त, सखेह, सेवित् (समा-
सान्त्त में) ४. इच्छुक, हेष्टु, सस्पृह ।

सं. पुं., अभि (भी) का; क (का) मनः, कन्नः,
कामुकः २. चन्द्रः ३. कपोतः ४. चक्रवाकः
५. चटकः ।

कामुक, वि. (सं.) दे. 'कामी' वि., 'कानी'
सं. पुं. (६) ।

कामेडियन, सं. पुं. (अं.) हास्यरसाभिरेतु
(पुं.), वैहासिकः ।

कामेडी, सं. स्त्री. (अं.) सुखान्त-संयोगान्त,-
रूपक-नाटकम्, प्रहसनम्, भाषिका,
दुर्लेखिका ।

कामोद्, सं. पुं. (सं.) रागभेदः ।

कामोद्दीपक, वि. (सं.) वाजीकर, कामाधि-
दीपन ।

काम्य, वि. (सं.) स्पृहणीय, वाञ्छनीय २. सुन्दर,
मनोह्र ।

काम्या, सं. स्त्री. (सं.) इच्छा, कामना,
वाञ्छा ।

काय, सं. स्त्री. (सं. पुं.) शरीरं, देहः
२. समुदायः ।

कायदा, सं. पुं. (अ.) नियमः, व्यवस्था, रीतिः ।
(स्त्री.), शिष्टाचारः ।

कायम, वि. (अ.) निश्चल, स्थिर, नैश्चिह
२. स्थापित ३. निर्धारित ।

—सूत्राम, सं. पुं. (अ.) प्रतिनिधिः, प्रतिपुरुषः
२. उत्तराधिकारिन् । वि., स्वनापक ।

कायर, वि. दे. 'कार' ।

कायल, वि. (अ.) छिन्नसंशय, जातप्रत्यय ।

कायस्थ, सं. पुं. (सं.) परमेश्वरः २. जीवः
३. जातिभेदः । वि., शरीरस्थ ।

काया, सं. स्त्री. (सं. कायः पुं.) शरीरं, देहः,
विग्रहः, क्लेश्वरम् ।

—कल्प, सं. पुं. (सं.) पुनर्यौवनोत्पादनम्
२. पुनर्यौवनोत्पादनचिकित्सा ।

—पलट, सं. पुं., बृहत्परिवर्तनं, महापरिवर्तः
२. शरीररूपरेखापरिवर्तनम् ।

कायिक, वि. (सं.) शरीर (-री स्त्री.),
शारीरिक-दैदिक (-यी स्त्री.) ।

कार, सं. पुं. (सं.) कार्यं, क्रिया २. कर्तृ,
अनुष्ठातृ ३. अक्षरवाचकप्रत्ययः (उ. न=चकारः)
४. ध्वनिवाचकप्रत्ययः (उ. फूँकारः) ।

कार, सं. पुं. (प्रा.) कार्यं, व्यवसायः ।

—करना, कि. सं., नियोगं अनुस्था (भ्वा.
प. अ.) ।

—खाना, सं. पुं., शिल्प, -शास्त्र-गृह्यं, पण्य-
निर्माणस्थानम् ।

—घार, सं. पुं., व्यवसायः, व्यापारः ।

—रवाई, सं. स्त्री., क्रिया, कार्यम् २. गुप्त-
चेष्टा-क्रिया ।

—साज, वि., कुशल, वक्ष ।

कारक, वि. (सं.) कर्तृ, अनुष्ठातृ, विधातृ २.
क्रियया संबंधमूनकः शब्दरूपभेदः (उ. कर्तृ-
कारक इ. न्या.) ।

कारचोद, सं. पुं. (प्रा.) सूचीकर्माधीविम्
२. सूचीकर्माधारः ।

कारचोदी, वि. (प्रा.) सूचीकर्माधुक्त । (सं.
पुं.) सूचीकर्मान् (न.), शिल्पिन ।

कारट्टन, सं. पुं. (अं.) हास्यरसमालेख्यम्,
हास्यजनकं चित्रं, उपहासनिबन्धम् ।

कारण, सं. पुं. (सं. न.) हेतुः, निमित्तं, मूलं,
बीजं, बोधिः (स्त्री.), निदानम् २. साधनम्
३. कर्मन् (न.) ४. प्रमाणम् ५. विष्णुः
६. शिवः ७. पूज्यन्ते मन्त्रपानम् (ताविक) ।

कारतृक्ष, सं. पुं. (पुं. कारतृक्ष) गुलिः (स्त्री.),
गुलिका, आदयन्पूर्णनाडी-टिः (स्त्री.) ।

कारनिस्, सं. स्त्री. (अं.) भित्तिदन्तकः, कुल्हा-
शृंगम् ।

कारा, सं. स्त्री. (सं.) निरोधः, निरोधनम्,
बन्धनं, आसंघः, प्रग्रहः २. क्लेशः, पीडा ।

कारागार, सं. पुं. (सं. पुं. न.) कारः, बंधना-
लयः, बंदि-शाळा-गृह्यं, कारागृहं, चारः,
चारकः, सुप्तिस्थानम् ।

कारावास, सं. पुं. (सं.) दे. 'कारागार' ।

कारिदा, सं. पुं. (प्रा.) कारकः, परकार्य-
साधकः, प्रति-हस्तः-निधिः २. कर्मचारिन्,
राजपुरुषः, अधिकारिन् ।

कारी, सं. पुं. (सं. रिन्) कारकः, कर्तृ ।
 कारी, वि. (का.) वायक, प्राणहर ।
 कारीगर, सं. पुं. (का.) शिल्पिनः, कालः,
 शिल्पकालः । वि., शिल्पकालः ।
 कारीगरी, सं. स्त्री. (का.) कारता, शिल्प-
 कौशल, वस्तुता २. मनोहर-रचना ।
 कारुणिक, वि. (सं.) दे. 'कारुणामय' ।
 कारुण्य, सं. पुं. (अ.) मृतानाम्करय सिद्धय
 धनात्प्रकृपणः पितृश्वपुत्रः । वि., कृपणः,
 कदर्थः ।
 —कारुञ्जाना, सं. पुं., असौमधर्ज, अमित-
 संपद. (स्त्री.) ।
 कारुण्य, सं. पुं. (अ.) मृदुम् २. मृदुपात्रम् ।
 कारोवार, सं. पुं., दे. 'कारवार' ।
 कार्क, सं. पुं. (अं.) कृषी-, पिथानम् ।
 कार्कर्य, सं. पुं. (सं. न.) कर्कशता, कठोरता
 २. दुःखता, दुःखत्वम् ३. निर्दयता, क्रूरता ।
 कार्क, सं. पुं. (अं.) पत्रम् २. स्थूलकर्मलम् ।
 कार्तवीर्य, सं. पुं. (सं.) कृतवीर्यपुत्रः
 सक्षयाद्भुः, अर्जुनः ।
 कार्तस्वर, सं. पुं. (सं. न.) कनक, सुवर्णः,
 स्वर्ग, हिरण्यम् ।
 कार्तिक, सं. पुं. (सं.) बाहुलः, ऊर्जः, कौमुदः ।
 कार्तिकेय, सं. पुं. (सं.) स्कन्दः, कुमारः,
 शिखिब्राह्मणः, द्वादशलोचनः ।
 —प्रसू, सं. स्त्री. (सं.) पार्वती, पारिजा ।
 कार्चन, सं. पुं. (अं.) प्रांगारः, कार्चनम् ।
 कार्चनिक, वि. (अं.) प्रांगारिक, कार्चनिक ।
 —एस्त्रिड गैम, सं. स्त्री., कार्चनिकाम्लवात्रिः
 (स्त्री.) ।
 कार्मुक, सं. पुं. (सं. न.) चापः, दे. 'धनुष' ।
 कार्य, सं. पुं. (सं. न.) कर्मन् (न.) कृत्यं,
 क्रिया २. व्यवसानः ३. परिणामः ४. प्रयोजनम् ।
 —अध्यक्ष, सं. पुं. (सं.) अधिकारिन्
 २. कर्माधिकारः ।
 —कर्ता, सं. पुं. (सं.—र्तृ) कर्मकारिन्
 २. राजभूयः ।
 कार्वाह्य, सं. स्त्री., दे. 'काररवाह्य' ।
 काल, सं. पुं. (सं.) समयः, वेला, दिष्टः,
 अनेहसु (पुं.) २. नृत्युः ३. यमः, यमदूतः
 ४. अवसरः, प्रसंगः ५. दुर्मिच्छं, दुष्कालः

६. कृष्णसर्पः ७. शनैश्चरः ८. शिवः ९. लोहः
 १०. ऋतुः ।
 —कूट, सं. पुं. (सं. पुं. न.) घोरविषं, प्राणह-
 हरगरलम् ।
 —कोटरी, सं. स्त्री., कालकोष्ठः ।
 —क्षेप, सं. पुं. (सं.) समयतिपातः, व्याक्षेपः
 २. निर्वाहः ।
 —क्षक, सं. पुं. (सं. न.) समयपरिवर्तः
 २. भाग्यचक्रम् ३. अक्षमेदः ।
 —क्ष, सं. पुं., (सं.) कालविद, २. दैवज्ञः
 ३. क्लृप्तः ।
 —यापन, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'कालक्षेप' ।
 —रात्रि, सं. स्त्री. (सं.) भीमा वृष्णा च
 निशा २. प्रलयरात्रिः ३. मृत्युनिशा ४. दीपा-
 वलीनिशा ५. मनुष्यजीवने सप्तसप्ततिवर्ष-
 सप्तमाससप्तदिनानन्तरभवा रात्रिः ।
 —सर्प, सं. पुं. (सं.) महाविषः, अलगाईः,
 कृष्णसर्पविशेषः ।
 काला, वि. (सं. काल) कृष्ण, श्याम, अस्मित,
 नील २. अन्धकारमय, क्षिप्रिराशुत, ३. दूषित
 ४. घोर ५. भयंकर ।
 —आजार, सं. पुं., कालच्वरः ।
 —कल्ट्टा, वि. अतिकृष्ण ।
 —चौर, सं. पुं., सततचोरकरः २. अतिदुष्टपुरुषः ।
 —जीरा, सं. पुं., कृष्णजीरकः, काला, कृष्णा ।
 —नमक, सं. पुं., कृष्णलवणम्, सौवर्चलम् ।
 —नाग, सं. पुं., कृष्ण, नागः-सर्पः २. प्राणहरः
 शत्रुः ।
 —पानी, सं. पुं., द्वीपान्तरे निर्वासनम्
 २. अहमानादर्थो द्वीपविशेषः ।
 कालेकोसौ, कि. वि., अतिदूरं-रे ।
 —मुँह होना, सु., निद्रा-अधिक्षिप् (कर्मन्) ।
 कालातीत, वि. (सं.) अनवसर, असमयोपित ।
 कालापन, सं. पुं. (हिं. काला) कृष्णता,
 श्यामता, मेचकता ।
 कालिंदी, सं. स्त्री. (सं.) यमुना, कलिन्दतनया ।
 कालिक, वि. (सं.) सामयिक, कालविषयक
 २. समयोचित, प्राप्तकाल ३. अनुकाल,
 नियतकाल ।
 कालिका, सं. स्त्री. (सं.) दुर्गा, चण्डी
 २. मसी-षी ३. कनीनिका ४. श्यामघनवटा ।
 कालिख, सं. स्त्री. (सं. कालिका) कञ्जल,

कालिदास

[११४]

किंपुरुष

मपिः-सिः (स्त्री.) २. कलकः, लोछनं, दोषः ।
कालिदास, सं. पुं. (सं.) संस्कृतकविशिरोमणिः,
रघुकारः, विक्रमसभायाः समभरत्नम् ।

कालिमा, सं. स्त्री. (सं.) कालिमन् पुं.)
कृष्णिमन् (पुं.), कालता, स्वामता २. मसी
३. लोछनं, दोषः ४. अंधकारः ।

कालिय, सं. पुं. (सं.) यमुनावनिकृष्णसर्प-
विशेषः ।

—मर्दन, सं. पुं. (सं.) श्रीकृष्णः ।

काली, सं. स्त्री. (सं.) चण्डो, दुर्गा २. पार्वती,
गिरिजा ३. मसी । सं. पुं. दे. 'कालिय' ।
वि. स्त्री., कृष्णा, श्यामा ।

—खौंसी, सं. स्त्री., कालकासः ।

—घटा, सं. स्त्री., (सं.) कादंबिनी, श्याम-
घनश्रेणिः (स्त्री.) ।

—दह, सं. पुं. (सं. + हि.) यमुनायां जलाव-
र्त्तविशेषः ।

—मिर्च, सं. स्त्री. (सं. कालमिर् (री) अम्)
कृष्णं, ऊषणं, कालकं, वेलजम् ।

—कालीन, वि. (सं.) समय वेला-काल, सर्व-
धिन् २. सामयिक, प्रास्तविक । (हि. यह
शब्द समाप्तान्त में ही प्रयुक्त होता है) ।

कालाङ्ग, सं. स्त्री. (हि. काला) कृष्णता,
श्यामता २. मसी ३. कज्जलम् ।

कालपतिक, वि. (सं.) संकल्पक, मनःकल्पित,
उद्भावित, कृत्रिम, कृतक ।

काल्य, वि. (सं.) काल-समय-अवसर, उचित-
योग्य-अनुकूल, सामयिक । सं. पुं., प्रभातं,
विभाजं, प्रवृषः ।

काल्या, सं. स्त्री. (सं.) १-२. गर्भाधाताई
नारी-धेतुः (स्त्री.) ।

कावा, सं. पुं. (फ़ा.) वृत्ते अध्वरामणम्
२. मण्डलं, वृक्षम् ।

कावेरी, सं. स्त्री. (सं.) दक्षिणभारतस्य प्रसिद्ध-
नदी २. वेण्या ३. दरिद्रा, पीतिका ।

काल्य, सं. पुं. (सं. न.) कविता, कवि-
कृतिः (स्त्री.), सरसप्रबन्धः २. रसात्मकं
वाक्यम् ३. कविताग्रन्थः ।

काश, अव्य. (अ.) अपि नाम, प्रार्थने,
काम्ये ।

काश, सं. पुं. (सं. पुं. न.) काशः, अमर-
पुष्पकः, वनहासकः २. कासः, क्षवधुः ।

—धास, सं. पुं., दे. 'दमा' ।

काशिका, वि. (सं.) प्रकाशिका । सं. स्त्री. (सं.)
काशी २. अष्टाध्यायीवृत्तिः (स्त्री.) ।

काशी, सं. स्त्री. (सं.) शिशपुरी, वाराणसी,
तपःस्थली ।

—फल, सं. पुं. (सं. न.) कृमांडः-दकः, पात,
पुष्पा-फला ।

कारत, सं. स्त्री. (फ़ा.) कृपिः (स्त्री.), कर्द्वनं,
कृषिकर्मन (न.) ।

—कार, सं. पुं. (फ़ा.) कर्षकः, कृषाणः ।

काषाथ, वि. (सं.) गैरिक रक्तधातु, वर्णः । सं.
पुं., गैरिकरजितवस्त्रम् ।

काष्ठ, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'काठ' ।

—कीट, सं. पुं. (सं.) धुणः ।

काष्ठा, सं. स्त्री. (सं.) दिवा, दिशू (स्त्री.)
२. सीमा ३. शिखरः ४. चन्द्रकला
५. अष्टदशनिमेषात्मकः कालः ।

कास, सं. पुं. (सं.) क्षवधुः २. काशः, वनहासकः ।

कासनी, सं. स्त्री. (फ़ा.) पुण्यभेदः २. तस्य
पौत्रम् ३. नाल-श्याम-वर्णः ।

कासार, सं. पुं. (सं.) शरीररत, महाजलाशयः ।

कासीय, सं. पुं. (सं. न.) पातुसखरं, शोधनम् ।

कास्टिक, वि. (अं.) दाहक ।

—सोडा, सं. पुं. (अं.) दाहकविशारः ।

कास्मिक रे, सं. स्त्री. (अं.) सुशिरशिरः ।

काहिल, वि. (अं.) अल्प, भेद ।

किंकर, सं. पुं. (सं.) मूल्यः, मेखलः, प्रेथः,
चेदः २. कौतदासः ।

किंकर्तव्यविमूक, वि. (सं.) संश्रान्तमत्सु,
ध्याकुलचित्तं ।

किंकिणी, सं. स्त्री. (सं.) क्षुद्र, यंत्री-वदिका
२. कांची-निः (स्त्री.), रक्षणा ।

किंचिद्, वि. (सं.) स्ताक, अल्पः ।

किजहक, सं. पुं. (सं.) पद्म-कमल, केसरः
२. पद्मपरागः, अलज्जवत् (न.) ३. नागकेसरः ।

कित्तु, अव्य. (सं.) परन्तु, तु, पुनः २. अपि
तु, प्रत्युत, पुनः, परन्तु ।

किंनर, सं. पुं. (सं.) किंपुरुषः, तुरंगवदनः,
अश्वमुखः ।

किंपुरुष, सं. पुं. (सं.) किन्नरः २. दुष्कलीनः
३. वर्णसंकरः ।

किंवदंती

[११५]

किलकना

किंवदंती, सं. स्त्री. (सं.) जन-प्रवादःश्रुतिः
(स्त्री.), कर्णोपकणिका ।
किंवा, अव्य. (सं.) वा, अथवा, यद्वा, किमुत ।
किंशुक, सं. पुं. (सं.) पलाशम्, दे. 'शाक' ।
किं, कि, वि. (सं. किम्) कथं, केन प्रकारेण ।
कि, अव्य. (प्रा.) यद्वा, यथा, इति ।
किचकिच, सं. स्त्री. (अनु.) प्रत्यापन, प्रकल्प-
नम् २. कलहः ।
किचकिचाना, कि. अ. (अनु.) द्वैतैर्दत्तान्
निर्वाह् (नृ.) पृष्ट (भ्वा. प. से.) ।
किट्ट, सं. पुं. (सं. न.) धातुमूलम् २. तैलादीनां
मूलम् ३. कण्ठे, मूले, शेषम् ।
किटना, कि. (सं. कियत्) किपरिमाण, किमात्र
२. अधिक, बहु ।
किन्ने, वि. पुं. (सं. कति) किमन्वयःवाः ।
किन्व, सं. पुं. (सं.) पृथ्वारः, अक्षरेदिन्
२. वृक्षः ३. दृष्टः ।
किन्वाच, सं. स्त्री. (अ.) पुरनकं. ग्रन्थः
२. पत्रिका, पत्रिका ।
—का (किन्वाची) कीडा, सं. पुं. ग्रंथ-दुस्तक-
कीडाः । २. सरापट्टिम् ।
किन्वाचल, सं. स्त्री. (अ.) लेखाः, लेखनम् ।
मन्व त—, सं. स्त्री., पञ्चम्यःद्वारः ।
किन्वर, कि. वि. (सं. क्व) क. कस्मिन् स्थाने
२. को द्वितीयां प्रति, कन्वां द्विति ।
किन, सर्व. (किन्) का वद्- (सं. पुं.), काः
(स्त्री.), कानि (न.) ।
किनका, सं. पुं. (सं. कणिक.) कण्ठी, कणा,
क्षत्र, तंजुलःधातवम् ।
किनारा, सं. पुं. (प्रा.) तीरं, तटम् २. लानः,
प्रानः ३. वस्त्रप्रानः, अंचलः ४. पार्थिव, पक्षः
५. सीमा ६. अन्तः ।
—करना, मु. दूरे रवा (भ्वा. प. क.), परि-
त्यज् (भ्वा. प. अ.) ।
किन्वारी, सं. स्त्री. (प्रा. किन्वारा) रवर्ण-रजतः,
जालभरणम् ।
किन्वारे, कि. वि. (प्रा. किन्वारा) तीरे, तटे
२. सीमायाम् ३. पृथक्, दूरे ।
—किन्वारे, अनु. कूलं तटं-तीरम् २. सीमाम्
अनु ।
—लगाना, मु. समाप्-संपद. (प्र.) ।
किन्वर, सं. पुं. (सं.) किपुरुषः, देवयोनिभेदः ।

किन्वरी, सं. स्त्री. (सं.) किन्वरजातेनारी ।
किफायत, सं. स्त्री. (अ.) मितन्वयः, अमुक्त-
हरतत्त्वम् ।
किवला, सं. पुं. (अ.) प्रतीची २. मङ्गलनगरी
३. पूज्यजनः ४. पितृ ।
—नुमा, सं. पुं. (अ + का.) दिग्दर्शकयंत्रम्,
दिग्घटी, दिग्पट्टिका ।
किरकिरा, वि. (सं- कर्करम् >) शार्करिल,
सिक्कतिल ।
किरकिरी, सं. स्त्री. (सं. कर्करम् >) नेत्रपतितो
भ्रूयादिकणः २. भस्मरेणुः, अगुरंणुः ।
किरच, सं. स्त्री. (सं. कुतिः >) अजिह्वाखदगः,
अग्यस्वसंस्का क्षुरिका २. कःश्चत्वादीनां
तीक्ष्णार्थं शकलम् ।
किरण, सं. स्त्री. (सं. पुं.) रश्मिः, गरीचिः,
दीपिनिः, मयूलः, करः, अंशुः, अभीशुः ।
—माली, सं. पुं. (सं-किन्) मूर्धः ।
किरमिच, सं. पुं. (अ. कौन्वस) शार्कं, शणपदः,
स्थूलवस्त्रभेदः ।
किरांची, सं. स्त्री. (अ. कौरव) बहन्,
शकलः-दम् ।
किरात, सं. पुं. (सं.) अशिष्ट-असभ्य-जनः
२. वन्यजातिभेदः ।
—पति, सं. पु. (सं.) शिवः ।
किरावाञ्छुनीथ, सं. पुं. (सं. न.) भारविप्रगीर्णं
महावाञ्छम् ।
किराना, सं. पुं. (सं- कवणम् अथवा कौर्य >)
वापिस्थं, वणिक्कर्मन् (न.) २. मेषद्रव्याणि ।
किराया, सं. पुं. (अ.) बहनमूल्यं, नार्थं, ज्ञान-
(ता) रः २. नाटं, भाटकम् ३. पुनिः (स्त्री.),
भृत्या ।
—नामा, सं. पुं. नाटकवचनम् ।
किराये का ट्ट्ट्ट, सं. पुं., धैतनिकाः भवेतनो
दासेरः ।
किरायेदार, सं. पुं. (प्रा. -यादार) भाटकवासिन् ।
किरीट, सं. पुं. (सं.) दे. 'सुकुट' ।
किलक, सं. स्त्री. (हि. किलकना) दर्प-
ध्वनिःनादःस्वनः, किलकिला २. कलम-
नदः-नलः ।
किलकना, कि. अ. (सं. किलकिला >) किल-
किलारावं कृ, दर्पध्वनिं कृ ।

- किलकारना, कि. अ., दे. 'किलकना' ।
 किलकिलाना, कि. अ. (सं. किलकिला >)
 १. दे. 'किलकना' २. कोलाहल कृ ३. वाक्-
 कलहं कृ ।
 किलनी, सं. स्त्री. (हिं. कीड़ा) । कुम्भुर,
 बृकः पूका ।
 किला, सं. पुं. (अ.) दुर्ग, कोटः ।
 —दार, सं. पुं. दुर्गाध्यक्षः, कोटपालः ।
 —बंदी, सं. स्त्री. दुर्गासिर्माणम् २. व्यूहरचना ।
 किलकारी, सं. स्त्री. (हिं. किलकना) किल-
 किला, हर्षनादः २. कलकलः ३. चीत्कारः ।
 किलत, सं. स्त्री. (अ.) न्यूनता ।
 किल्ला, सं. पुं. (सं. कीला >) बृहत्-स्थूलः,
 कीला-संक्रुः २. बृहत्, बृहत्-स्थूला-शलाकाः ।
 किल्ली, सं. स्त्री. (हिं. किला) अर्गल, अर्गलाक्षः
 २. कोलः, कीलम् ३. बृहत्, स्थूणा ।
 किलिवष, सं. पुं. (सं. न.) शपम् २. अपराधः
 ३. रोगः ।
 कियाह, सं. पुं. (सं. कपाटः) कपाट-टी, अर-
 रम् २. द्वारः, द्वार (स्त्री.) ।
 —खटखटाना, कि. स., कपाटम् अभिहम्
 (अ. प. अ.) ।
 किशमिश, सं. स्त्री. (प्रा.) शुष्कः, द्रक्षि-
 गोस्तनी ।
 किशलय, सं. पुं. (सं. पुं. न.) किसलयः-वे,
 पल्लवः-वं, अंकुरः, प्ररोहः २. मञ्जरी ।
 किशोर, सं. पुं. (सं.) एकदशवर्षाधिकदशवर्ष-
 पर्यन्तवयस्को बालः २. बालकः ३. पुत्रः ।
 किशोरी, सं. स्त्री. (सं.) तरुणी, बाला,
 बालिका, बन्वा, युवती-तिः (स्त्री.) ।
 किशती, सं. स्त्री. (प्रा.) नीका २. दीर्घचतुर-
 सपात्रम् ३. भखा, कुट्टकोपः ।
 किस, सर्व. (सं. करय >) किम् के रूपों से ।
 —तरह, कि. वि. कर्ष, केन प्रकारेण, कया
 रीत्या ।
 किसलय, सं. पुं. दे. 'किशलय' ।
 किसान, सं. पुं. (सं. कृपाणः) कार्कः, कृषिकः,
 कृषीयकः, क्षेपिकः, श्वेतः-जोवः, क्षेत्रिन् ।
 किसानी, सं. स्त्री. (हिं. किसान) कृषिः (स्त्री.),
 कृषिकर्मन् (न.) ।
 किसी, सर्व. (हिं. किस) 'किम्' के रूपों के ।
 साथ चित्, चम द्रा अपि लगाकर । [उ०
 किसी ने = कश्चित्, कोऽपि, कश्चन (पुं.);
 कश्चित् (स्त्री.); किञ्चित् (न.) इ. ।]
 —तरह, कि. वि. येन केन प्रकारेण, कथंचित् ।
 किसे, सर्व. (हिं. किस) कः, का, किम्
 (द्वितीया); कर्म, कर्ष, कर्म (चतुर्थी) ।
 किस्त, सं. स्त्री. (अ.) देयभागः, कृपाशः,
 खण्डिकार ।
 —करना, कि. स., अंशंशतः कृष्णं परिशुम्
 (प्र.) ।
 —वार, कि. वि., अंशशः, अंशशालः ।
 किस्म, सं. स्त्री. (अ.) प्रकारः, वेदः, जातिः
 (स्त्री.) २. प्रकृति (स्त्री.), स्वभावः ।
 किस्मत, सं. स्त्री. (अ.) भाग्यं, भागधर्यं, दिष्टं,
 दैवम् २. प्राणः-भागः-खण्डः ।
 सुश- , वि., बन्ध, पुण्यवत् ।
 बट- , वि., अधन्य, दैवदत्तक ।
 —अज्ञमाना, सु., भाग्यं परीक्षा (स्वा. आ.
 ऐ.) ।
 किस्मा, सं. पुं. (अ.) कक्षा २. वृत्तान्तः
 ३. कलहः ।
 की, प्रत्य. ('का' वा स्त्री.) दे. 'का' ।
 कीक, सं. स्त्री. (अनु.) चीत्कारः, उत्क्रोशः ।
 कीकट, सं. पुं. (सं. कीकटाः) मगधप्रदेशः
 २. तत्रत्यानाथेजातिः (स्त्री.) वि०, निर्धन
 २. कृपण ।
 कीकर, सं. पुं. (सं. किंकिरानः) दीर्घकण्ठकः ।
 कीकस, सं. पुं. (सं. न.) अग्नि (न.),
 कृष्णम् २. कीटभेदः । वि., कृट, कटिभ ।
 —सुग, सं. पुं. (सं.) सुगः, पशुन् ।
 कीचक, सं. पुं. (सं.) सरभो बंधः, सन्निहो
 वेणुः । २. विराटराज्य-न्यायः ।
 कीचह, सं. पुं. (सं. निचकलः) पंकजः, जवाला-
 लः, अदकीलः, कर्तनः, शायः, निपटरः ।
 कीट, सं. पुं. (सं.) कीटकः, क्रमिः, किमिः,
 नीलगुः ।
 कीट, सं. स्त्री. (सं. किट्) वृत्तवैलादीनां
 मलम् ।
 कीड़ा, सं. पुं. (सं. कीटः) दे. 'कीट' ।
 २. सर्पशीलः, सरीसृपः ३. सर्पः, अहिः
 (पुं.) ४. रक्तपा, जलीका ।
 —लगना, कि. अ., कीटैः भक्ष् (कर्म.) ।

कीडी

[११७]

कुंडा

कीडी, सं. स्त्री. (हि. कीडा) छुद्रकीटः
२. विपीलेका ३. जलका ।

कीना, सं. पुं. (प्रा.) द्वेषः वैरः श्लोहः ।

कीप, सं. स्त्री. (अ. कीट) निनापः ।

कीमत, सं. स्त्री. (अ.) मूल्यं, अर्थः ।

कीमती, वि. (अ.) महार्थः बहुमूल्यः ।

कीमा, सं. पुं. (अ.) प्रसमांसम् ।

कीमिया, सं. स्त्री. (प्रा.) रसायनम्, रस-
विद्या शास्त्रं तंत्रम् ।

कीर, सं. पुं. (सं.) शुक्रः, दे. 'लोता' ।

कीर्तन, सं. पुं. (सं. न.) गुणकथनम् २. ईश-
गुणगानम् ।

कीर्ति, सं. स्त्री. (सं.) यशस् (न.), विख्यातिः-
विश्रुतिः (स्त्री.), अभिख्या, सनाख्या ।

—मान्, वि. (सं. न.) यशस्विन्, विश्रुत,
विख्यातः ।

कील, सं. स्त्री. (सं. पुं.) कीलकः, शंकुः, लोह-
कालः-शंकुः २. लवंगनामकं नासिकाभूषणम्
३. मुखस्फोटकः ।

कीलक, सं. पुं. (सं.) कीलः, कीला २. न.ग-
दातः, मारगष्टिः (स्त्री.) ३. महाकीलः, शूलः
४. रथानुः, स्थूणा ५. अन्यमंत्रप्रभावनाशको
मंत्रः ।

कीलना, कि. स. (सं. कीलनम्) कील् (नु.)
कीलैः ईप् (क्. प. अ.) २. अभिचारप्रभावं
नाश (प्र.) ३. (सर्पादिकं) वशीकृ ।

कीला, सं. पुं. (सं.) दे. 'कीला' ।

कीलाल, सं. पुं. (सं. न.) अमृतम् २. जलम्
३. रक्तम् ४. मद्य (न.) ।

कीलित, वि. (सं.) (कालैः) वद, इदीकृत,
पिनद्ध ।

कीली, सं. स्त्री. (सं. कीलः >) कर्षणी, -या-
वर्तनकीलः, नलयकीलकः २. कुचिका, लज्-
षाटकम् ३. विवर्तनकीलः ४. कीलः ५. अक्ष-
रेखा, अक्षः ।

कीश, सं. पुं. (सं.) कविः २. खगः ३. सूर्यः ।

कुंजर, सं. पुं. (सं. कुमारः) पुत्रः, गुरुः (पुं.)
२. बालकः ३. राजकुमारः ४. सुवरजः ।

कुंजारा, वि. पुं. (सं. कुनार) अकृतवेवाहः ।

[-री (स्त्री.) = अवरिणीता, अनूटा, कुमारी]

कुंड, सं. स्त्री. दे. 'कुमुदिनी' ।

कुंकुम, सं. पुं. (सं. न.) काश्मीरजं, दे. 'कैसर'
२. दे. 'रोली' ।

कुंचन, सं. पुं. (सं. न.) संकोचः, संकोचनम्,
संक्षेपणम् ।

कुंचिका, सं. स्त्री. (सं.) ताली, तालिका,
साधारणी ।

कुंचित, वि. (सं.) दे. 'आकुंचित' ।

कुंज, सं. पुं. (सं. पुं. न.) निकुंजः-जं, लता,
गृहं-मंढपः ।

—कुटीर, सं. स्त्री. (सं. पुं.) लतागृहं, पर्ण-
शाला, कुंजगृहम् ।

—विहारी, सं. पुं. (सं-रिन्) श्रीकृष्णः ।

कुंजडा, सं. पुं. (सं. कुंज >) हरितकविकेवृ-
जातिविशेषः २. शाकभिकयिन् ।

कुंजर, सं. पुं. (सं.) गजः, द्विपः २. केशः ।
(हि. समाप्तान्त में 'कुंजर' श्रेष्ठतातः चक है—
नरकुंजर = श्रेष्ठपुरुषः) ।

कुंजी, सं. स्त्री. (सं. कुंचिका) ताली, उदवा-
दकः-कं, अंकुटः, साधारणी । २. टीका,
व्याख्या ।

कुंड, वि. (सं.) कुंडित, धाराहीन, तीक्ष्णता-
रहित २. मूर्खः ।

कुंडित, वि. (सं.) कुंडीकृत, हततैक्ष्ण्य २. निष्प्र-
भीकृत ३. अनुपयोगिन् ।

कुंड, सं. पुं. (सं. कुण्डः-डं-डी) पत्थलः-लं,
अल्पसरस् (न.), वेष्टः, छुद्रजलाशयः २.
अग्नि-यज्ञ-हवन, -कुण्डम् ३. स्थाली ४. विशा-
लमुखमतिर्गभीरपात्रम् (हि. मटका) ५. सय-
वाया जारजपुत्रः ६. लोहद्विस्त्रम् ७. मानभेदः ।

कुंडल, सं. पुं. (सं. पुं. न.) कर्णश्रवण, वेष्टनं,
कर्णभूषणभेदः २. बलयः ३. परिवेशः-षः,
तेजोमंडलम् ४. आवेष्टनम्, व्यावर्तनम् ।

—करना वा मारना, कि. स., वतुंजी-पुटी, क,
व्यावृत्त-परिवेष्ट (प्र.) ।

कुंडलिया, सं. स्त्री. (सं. कुण्डलिका) मात्रिक-
कण्ठभेदः ।

कुंडली, सं. स्त्री. (सं.) मिष्टान्नभेदः (हि.
जलेबी) २. कुरलः, चूर्णकुण्डलः ३. जन्म-
पत्रं, पत्रिका ४. सर्पस्य वतुंलाकारस्थितिः (स्त्री.) ।

कुंडा, सं. पुं. (सं. कुण्डः) जायति भर्तृरि-
जारजः ।

कुंडा, सं. पुं. (सं. कुण्डलम् >) लोह, ग्रहणी-
धरणी २. अर्गलः-लं-ला-ली ।

कुंडा, सं. पुं. (सं. कुण्डः-डम्) विद्यालयसुख-
मतिगम्भीरपात्रम् (हि. मरका) ।

कुंडिन, सं. पुं. (सं. न.) विदमैराजधानी ।

कुंडी, सं. स्त्री. (सं.) कुण्डी, खलः ।

—कुंडा, सं. पुं., कुण्डीदण्ड-हो ।

कुंडी, सं. स्त्री. (हि. कुण्डा) द्वारखलला
२. अर्गलः-लं-ला-ली ३. कुण्डला, संधिः-प्रधि ।

कुंत, सं. पुं. (सं.) प्रासः, तोमरः ।

कुंतल, सं. पुं. (सं.) केदाः, शिरोरुहः ।

कुंतिभोज, सं. पुं. (सं.) भोजप्रदेशशासकः,
कृन्तवाः पाण्डुपितृ (पुं.) ।

कुंतो, सं. स्त्री. (सं.) पृथा, पाण्डुपत्नी, युधिष्ठिर-
जन्त्री ।

कुंद, सं. पुं. (सं. पुं. न.) सदापुष्पः, वन-
हासः २. कगलम् ।

कुंद, वि. (फ्रा.) कुण्ड, तीक्ष्णतारहित
२. मन्द, षड ।

—जहन, वि. (फ्रा.) मन्दमति, मूर्ख ।

कुंदन, सं. पुं. (सं. कुन्दः >) विशुद्धं सुवर्णम्
वि. भारवर २. पवित्र ३. नीरोग ।

कुंदा, सं. पुं. (फ्रा.) ब्रह्म-स्थूल, काष्ठम् २.
अन्यस्त्रस्व काष्ठमयोऽपरभागः ३. काष्ठनिगडः
४. मुष्टिः (स्त्री.), वारंगः ।

कुंदी, सं. स्त्री. (फ्रा. कुन्दा >) मुद्गरैर्दक्षता-
टनम् २. तःडनम् ।

कुंभ, सं. पुं. (सं.) धटः, धटी, कलशः-शां-
शम् २. गजकुम्भः, हरितशिरसः विण्णद्वयम्
३. कुम्भकप्रःभावामः ४. द्वादशवापिकः पर्व-
विशेषः ५. रःत्रिविधेषः (ज्यो.) ।

—कर्ण, सं. पुं. (सं.) रावणानुजः ।

—योनि, सं. पुं. (सं.) अगस्त्यो मुनिः ।

कुंभक, सं. पुं. (सं.) कुम्भः, प्राणायामे वायु-
स्तम्भनम् ।

कुंभी, सं. स्त्री. (सं.) क्षुद्र-लवुः, कुम्भः-घटः ।

—पाक, सं. पुं. (सं.) गरकविशेषः ।

कुंभी, सं. पुं. (सं. कुम्भम्) गजः २. नक्रः
३. विषकोटभेदः ।

कुंवर, सं. पुं., दे. 'कुंभर' ।

कु, अव्य. (सं.) पापकुत्साऽन्यत्त्वादिवोतक-
मन्ययम् (उ. कुकर्म = पापकर्म इ.) ।

कुर्भो, सं. पुं. (सं. कूपः) अंगुः, प्रहिः, अवटः,
खानः, अवतः, केवटः ।

—खोदना, भु., परान् दीड (ज्य.) ।

कुभार, सं. पुं. (सं. कुमारः >) आश्विनः,
२११. आश्विनः ।

कुड्यो, सं. स्त्री. (हि. कुर्वा) कूर्पा, कृपका,
खानकः, अशुकः ।

कुर्द, सं. स्त्री., दे. 'कुर्दिनी' ।

कुक्, सं. पुं. (अं.) पाचकः, सूदः, बलकः,
रन्धकः ।

कुक्की सं. स्त्री. (सं. कुक्की) नम्रकुडी
२. शरभम् ३. सूत्रपत्नी, तंतुचक्रः ।

कुकर, सं. पुं. (अं.) पचन-पाक. कर्मदेवः,
*कुकरम् ।

कुकर्म, सं. पुं. (सं. न.) क., कर्म-कृतं-कृतिः
(स्त्री.), दुरानारः, पापं, दुष्टता ।

कुकर्मी, वि. (सं. -मिन्) दुर्ज्ञेय, पापिन्, पाप,
दुरात्मन् ।

कुकरमुत्ता, सं. पुं. (सं. कुकरमृत् >) कुक्कवः ।

कुक्कट, सं. पुं. (सं.) ताम्रचक्रः, वरणाशुभः,
कालशः, उगकरः, शिखण्डिकः ।

कुक्क, सं. पुं. (सं.) अन्, दे. 'कुक्का' ।

कुक्कि, सं. स्त्री. (सं. पुं.) उदरं, जठरं, तुंदम्
२. गर्भाशयः, गर्मस्थानम् ३. पदार्थान्तर्भागः
४. गुहा ।

कुगति, सं. स्त्री. (सं.) दुर्दशा, दुःभागि (स्त्री.) ।

कुच, सं. पुं. (सं.) स्तनः, उरोजः २. चतुःक-
र्कं, स्तनयम् ।

कुचकुचाना, वि. सं. (अनु. कुचकुच) क्वथ्
(वि. प. अ.), टिट्टे ३ ।

कुचक्र, सं. पुं. (सं. न.) कुट्टकपद, उपायः,
उपवापः, कपट, संकल्पः-प्रयोगः ।

कुचक्री, वि. (सं. -क्रिन्) उपवापकः, कपट-
प्रद्वयधोक्कः ।

कुचलना, वि. सं. (अनु.) क्षुभ् (त. प. से.)
२. मृद (क. प. से.), विष् (क. प. अ.)

३. भूरि तत् (ज्य.) ४. पादनेत्र आहन्
(अ. प. अ.) ।

कुचला, सं. पुं. (सं. कक्षोरः) किराकः, विष-
सिद्धः, रम्यफलः, कुपीडः, कालकूटः ।

कुचाल, सं. पुं. (सं. कुन् + हि. चाल) दुराचारः,
कुचर्या, कदाचरणम् ।

कुचाली, वि. (हिं. कुचाल) दुराचारिन्, दुर्वृत्त ।
 कुचेष्टा, सं. स्त्री. (सं.) दुचेष्टा. हानिकरोक्तः ।
 कुचला, वि. (सं. कुचेल) मलिनवेष, कुनसन ।
 कुद्ध, वि. (सं. किञ्चित्) (मात्रा) अल्प, स्वल्प,
 स्तोक, ईषत्, २. (संख्या) कतिञ्चिन्, कति-
 पय, ३. किनापि, यत्किञ्चन, ४. 'किम्' के
 तीनों स्थितियों के रूपों के साथ चित्, चन,
 अधि लगाते हैं, ३. कश्चित्, कश्चित्, कानि-
 चित् इ. ।

—कर देना, सु. संघः वशीकृतः ।

कुज, सं. पुं. (सं.) मंगलग्रहः २. वृद्धः ।

कुजानि, सं. स्त्री. (सं.) हीमन्तो व-विकुष्ट, -जाति-
 वर्णः । सं. पुं. दुःकृत्यजनः, अत्यन्तः नीचः ।

कुट, सं. पुं. (सं. कुटम्) गदादं, कथिरेम् ।

कुट, सं. पुं. (सं.) दुर्ग, कोटः २. गृहम्
 ३. पर्यंतः ४. कलशः ।

कुटकी, सं. स्त्री. (सं. कुटकी) दंशः, मशकः,
 प्राधिकार, वनमाश्रिता ।

कुटनपन, सं. पुं. (सं. कुटनी >) दूतीवृत्तिः
 (स्त्री.) २. उपजापः, भेदवर्जनम् ।

कुटना, सं. पुं. (हिं. कुटनी) भगवत्पुत्रः,
 संचारकः, गुंटाशिल्प २. पिशुनः ।

कुटनी, सं. स्त्री. (सं. कुटनी) कुट्टनी, दूती,
 दूतिका, संचारिका, शंभली, रतताली ।

कुटिया, सं. स्त्री. (सं. कुटी) एतज्ज-जं, पर्ण-
 शालः, पर्णकुटीर-दिः (स्त्री.) कुटीरः ।

कुटिल, वि. (सं.) वक्र, जिह्व, अराल, मुग्ध,
 न्युक्त २. अथक, प्रतारक, कपटिन्, छलिन् ।

कुटिलता, सं. स्त्री. (सं.) कौटिल्यं, वक्रता,
 जिह्वता २. छलं, कपटं, प्रतारणा ।

कुटी, सं. स्त्री. (सं.) धुत्रगृहम्,
 कुटीर, सं. पुं. (सं.) दे. 'कुटिया' ।

कुटुम्ब, सं. पुं. (सं. पुं. म.) गृहजनः, पुत्र-
 कलत्रादयः, जातिः (स्त्री.), वान्धवः, संततिः
 (स्त्री.) २. कुलं, पंशः, जातिः (स्त्री.) ।

कुटुम्बी, सं. पुं. (सं.-विभ.) गृहस्थः, गृहपतिः,
 गेहिन २. जातिः (स्त्री.), वन्धुः, बांधवः ।

कुटुम्बिनी, सं. स्त्री. (सं.) गृहिणी, गेहिनी,
 आयां, सुतिनी, पुराणी ।

कुटुम्ब, सं. स्त्री. (सं. कु + हिं. ट्य) कृप्रवृत्तिः
 (स्त्री.), व्यसनं, दुःखः ।

कुट्टनी, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'कुटनी' ।

कुट्टी, सं. स्त्री. (हिं. काटना) यवसखण्डः
 २. बालकेषु मैत्रीविच्छेदः ।

कुठला, सं. पुं. (सं. कोष्ठः >) धृद्रधान्यकोष्ठः,
 मृन्मयं लघुधान्यागारम् ।

कुठार, सं. पुं. (सं.) परशुः, द्रुषणः, वृक्षादनी,
 वृक्षनेदिन्, परश्वः ।

कुठाराघात, सं. पुं. (सं.) परशुप्रहारः २. तांत्र-
 प्रहारः ।

कुठाली, सं. स्त्री. (सं. कु + स्थाली >) तैजसा-
 वर्तनी, सु (भू)प्राणी ।

कुठौर, सं. पुं. (सं. कु + हिं. ठौर) कुरधान्
 २. अनवसरः, असमयः ।

कुडकुडी, सं. स्त्री. (अनु.) दे. 'गुडगुडाना' ।
 तुडगुडाना, क्रि. अ., दे. 'कुडना' ।

कुडल, सं. पुं. (रत्नालपतया) अंग, न्यावर्तन-
 आकंचनम् ।

कुडुक, सं. स्त्री. (फा. जुरक) कुडुकीस्तम्
 २. अनंष्टदा कुडुकी । चि., न्ययं, निरर्थक ।

कुडौल, वि. (सं. कु + हिं. डौल) दुर्दर्शन,
 कादाकार, कुरूप ।

कुडंगा, वि. पुं. (सं. कु + हिं. ङ) अशिष्ट,
 असभ्य, दुःशील ।

कुडन, सं. स्त्री. (हिं. कुडना) मनस्तापः,
 चित्तान्धता ।

कुडना, क्रि. अ. (सं. कुड >) दुर्गमं यते (ना.
 पा.), धुम् (दि. प. से.), अन्तः परितप्
 (दि. आ. अ.) ।

कुडव, वि. (सं. कु + हिं. ट्व) कुरूप, दुर्द-
 र्शन २. अशिष्ट ३. कठिन ।

कुडाना, क्रि. स. (हिं. कुडना) संतप्त-उद्विग्
 (प्रे.) २. प्रकृष्ट-कृष्ट (प्रे.) ।

कुडरना, क्रि. सं. (सं. कर्तनम्) चर्चणं कृत
 (तु. प. से.), दम्नैः सण्ड् (तु.) ।

कुडर्क, सं. पुं. (सं.) हेत्वाभासः, मिथ्याहेतुः,
 विनोटा, प्रवक्ष्यः, विवादः ।

कुडर्की, वि. (सं.-किन्) वितण्डावादिन्,
 मिथ्याहेतुवादिन् २. वाचालः, वान्धुकः ।

कुडिया, सं. स्त्री. (हिं कुची) सरमा, कुकुरी,
 शुनी, सारमेयी, भधी ।

कुतुब, सं. पुं. (अ.) भवनः, भुवतारा ।

—नुमा, सं. पुं., दे. 'किवलानुमा' ।

कुतूहल, सं. पुं. (सं. न.) उत्कण्ठा, कौतूहलं, कुतूकं, कौतुकं, जिज्ञासा २. अपूर्व-दुर्लभ-अद्भुत-वस्तु (न.) ३. विनोदः ४. आश्चर्यम् ।
 कुत्ता, सं. पुं. (देश.) कुक्कुरः, श्वन्, शुनकः, कौलेयकः, भयकः, सारमेयः, भृगदर्शकः, भयणः, वक्रलांगूलः, वृकारिः, शयलः ।
 कुत्ते की हड(ल)क, सं. स्त्री. आलकं, जल-संत्रासः, अलकाभिभवः ।
 कुत्ती, सं. स्त्री. (हिं. कुत्ता) दे. 'कुतिया' ।
 कुत्सित, वि. (सं.) अधम, अवम, गर्हा, निन्दित ।
 कुदरत, सं. स्त्री. (अ.) प्रकृतिः (स्त्री.), माया, ईश्वरशक्तिः (स्त्री.) २. अधिकारः, प्रभुत्वम् ३. संसारः, जगत् (न.) ४. रचना ।
 कुदरती, वि. (अ.) नैसर्गिक, प्राकृतिक, मायामय २. स्वाभाविक, सहज ३. दिव्य, देव्य (स्त्री स्त्री.) ।
 कुदौव, सं. पुं. (सं. कु + हि. दौव) छलं, विश्वासघातः २. कुस्थितिः (स्त्री.) ३. कुस्थानम् ।
 कुदान^१, सं. पुं. (सं. न.) गर्हदानम् २. कुपा-त्राय दानम् ।
 कुदान^२, सं. स्त्री. (हिं. कूदना) कूदनं, ज्ञप-पा २. कूर्दगभूमिः (स्त्री.), ज्ञपान्तरालम् ।
 कुदाना, कि. सं. 'कूदना' के धातुओं के प्रे. रूप ।
 कुदाल, सं. पुं. (सं. कुदालः) कूदारः, अव-दारणः, स्तम्भन्तः, खनिजम् २. टंकः, पापा-णदारणः ।
 कुदिन, सं. पुं. (सं. न.) आपत्कालः, विपत्ति-समयः २. दुदिनम्, ऋतुधिपरीतं दिनम् ।
 कुदृष्टि, सं. स्त्री. (सं.) पापदृष्टिः (स्त्री.) २. अमंगलदृष्टिः ।
 कुधर, सं. पुं. (सं.) पर्वतः २. शेषनागः ।
 कुनकुना, वि. (सं. कटुष्ण) ईषदुष्ण, क्रोष्ण, कवोष्ण, मन्दोष्ण ।
 कुनवा, सं. पुं. दे. 'कुटुब्ब' ।
 कुनाम, सं. पुं. (सं-मन् न.) अप, ख्यातिः कीर्तिः (स्त्री.) ।
 कुपन्थ, सं. पुं. (सं. कुपन्थः) कापन्थः, कुमार्गः २. निषिद्धाचरणम् ३. दुस्सितसंप्रदायः ।
 कुपन्थी, वि. (हिं कुपन्थ) कपथिन्, कुमा-गिन्, कदाचारिन् ।

कुपथ, सं. पुं. (सं.) दे. 'कुपन्थ' ।
 —गामी, वि. (सं. सिन्) दे. 'कुपन्थी' ।
 कुपथ्य, सं. पुं. (सं. न.) रोगजनकी आहार-विहारौ ।
 कुपात्र, वि. (सं. न.) अधोगद, अनर्ह, निवृण, अनाधिकारिन् ।
 कुपित, वि. (सं.) क्रुद्ध, रुष्ट ।
 कुपुत्र, सं. पुं. (सं.) दे. 'कपूत' ।
 कुप्पा, सं. पुं. (सं. कुपुपः) कूपकः, कुतः (स्त्री.) चर्ममयं स्नेहपात्रम् ।
 —होना, मु. आप्याम्-स्फार् (श्वा. आ. से.) वीनीभू० ।
 कुप्पी, सं. स्त्री. (हिं. कुप्पा) चर्मद्वी. क्लृ-कुतुपः-कुदः (स्त्री.) ।
 कुफूर, सं. पुं. (अ. कृफ) ध्वनितरसंप्रदायः २. चवनमत्तविरोधिकाश्चयम् ।
 कुफल, सं. पुं. (अं.) तालः, शरयंत्रम् ।
 कुच, सं. पुं. (सं. कुचः >) ककुदा-दं, कुद् (स्त्री.) ।
 कुचडा, वि. (सं. कुचज) कुचक. न्युचज, एक-पृष्ठ, गडुल-र, गटु । सं. पुं. कुचजः इ. ।
 कुचडी, सं. स्त्री. (हिं. कुचदा) नवशीर्षा यष्टिः (स्त्री.) २. दे. 'कुच्चा' ।
 कुचानि, सं. स्त्री. दे. 'कुटव' ।
 कुचुद्धि, वि. (सं.) मूर्ख, मन्दमति । सं. स्त्री. मोक्षार्थ, मूढता ।
 कुचेर, सं. पुं. (सं. कुचेरः) धनकः, चक्षुराजः वैश्रवणः, राजराजः, इच्छावक्रुः, नरनादनः निधोश्चरः ।
 कुचेला, सं. स्त्री. (सं. कुचेला) कु-समयः कालः २. अनवसरः, अयोग्यकालः ।
 कुब्ज, वि. (सं.) दे. 'कुवडा' ।
 कुब्जा, सं. स्त्री. (सं.) कंसदासी २. नन्धरा-नाम्नी वैकेयीदासी । वि. कतपृष्ठा, कुब्जा ।
 कुभा, सं. स्त्री. (सं.) कातुलनदा २. भूमिच्छया ।
 कुमक, सं. स्त्री. (तु.) सैन्धव, महायज्ञा ।
 कुमकुम, सं. पुं. (सं. कुमकम्) कंसदा-रम्, काश्मीरजम् ।
 कुमुकुमा, सं. पुं. (तु-मः) लाक्षा-गोलः-वर्तुलः २. अलंकरणोपयुक्तः काचगोलः ३. संकीर्णमुख-कर्मल्लः-करकः ।

कुमाच, सं. पुं. (अ. कुमाश्) कौशेयवस्त्रभेदः ।

कुमार, सं. पुं. (सं.) बालः, बालकः २. पुत्रः

३. राजपुत्रः ४. युवराजः ५. कार्तिकेयः

६. अप्राप्तयौवनः ७. सनकादयः ऋषयः

७. भारतवर्ष-र्षम् । वि., दे. 'कुआरा' ।

कुमारवाज, सं. पुं. (अ. + प्रा.) अन्तकारः,
किन्तवः ।

कुमारी, सं. स्त्री. (सं.) बाला, बालिका, वन्या ।

२. पुत्री. ३. राजपुत्री ४. द्वादशवर्षा कन्या

५. महा, घृतकुमारी ६. सीता ७. पार्वती ।

वि. दे. 'कुआरी' ।

कुमार्ग, सं. पुं. (सं.) दे. 'कुपंथ' ।

कुमुद, सं. पुं. (सं. न.) कैरव, चन्द्रकान्तं,
कलहारं, शीतलकं, इन्दुकमलं, चन्द्रिकावृजं,
गन्धसोमं, दुबलयम् २. कर्पूरः-रं ३. रूप्यम् ।

—ब्रंशु, सं. पुं. (सं.) चन्द्रः २. कर्पूरः-रम् ।

कुमुदिनी, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'कुमुद'

२. कुमुदवत् सरसु (न.) ।

—पति, सं. पुं. (सं.) चन्द्रः ।

कुमेरु, सं. पुं. (सं.) दक्षिणवृक्षः ।

कुमोदिनी, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'कुमुदिनी' ।

कुम्भैन, सं. पुं. (तु.) पिण्ड, वर्णः-रंगः

२. पिशाचः ।

कुम्हवा, सं. पुं. (सं. कुम्हाङ्) दे. 'काशीफल' ।

कुम्हलना, कि. अ. (सं. कुम्हलनं) म्लै रलै

(भ्वा. प. अ.), विद्मः (कर्म.), विवर्णी भू ।

कुम्हार, सं. पुं. (सं. कुम्हाकारः) कुलालः, चक्रिणः ।

कुम्हारिन, सं. स्त्री. (ति. कुम्हार) कुलाली,

कुम्हारी, चक्रिणी ।

कुम्हर्ग, सं. पुं. (सं.) हरिणः, मृगः २. कृष्णसारः ।

कुम्हर्ग, वि. कुवर्ण, निम्बहर्ग ।

कुम्हरी, सं. स्त्री. (सं.) मृगा, हरिणी ।

कुम्हड, सं. पुं. (सं. कुम्हडम्) काचलवणम्

२. माणिक्यम् ।

कुरकुरा, वि. (अनु. कुरकुर) भंगुर, भिदुर ।

कुरचान, वि. (अ.) इष्ट, हुत, बलिभेष दत्त ।

कुरवानी, सं. स्त्री. (अ.) यवः, यागः २. बलिः,
उत्सर्गः, आलम्बः ३. समर्पणं, परिस्थागः ।

कुरसी, सं. स्त्री. (अ.) आसंठी, पीठं,
आसनम् २. ४. स्तम्भ-प्राकार-भवन-मूलम्

५. वंशपरंपरा ।

—नामा, सं. पुं. (अ + प्रा.) वंश, वृक्ष-
परंपरा ।

आराम —, सं. स्त्री. (प्रा. + अ.) विश्रानासंठी ।

कुरा, सं. पुं. (अ.) दे. 'पाँसा' ।

कुरान, सं. पुं. (अ.) धनधर्मपुस्तकम् ।

कुराह, सं. स्त्री. (सं. कु + प्रा. राह) दे. 'कुपंथ' ।

कुरीति, सं. स्त्री. (सं.) कप्रथा, कदाचारः,
कुम्हवहारः ।

कुरु, सं. पुं. (सं.) नृपविशेषः २. प्रान्तविशेषः

३. कुरुवंशजः ।

—चेत्र, सं. पुं. (सं. न.) महाभारताग्राम-

भूमिः (स्त्री.) ।

कुरूप, वि. (सं.) चिरूप, कदाकार, दुर्दर्शन ।

सं. पुं. (सं. न.) वैरुप्यं, कदाकारः ।

कुरूपता, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'कुरूप' सं. पुं. ।

कुरेद (ल) ना, कि. स. (सं. कर्तान् ?)

उद-वि, लिप् (तु. प. से.), तद् (भ्वा. प.

से.), सूर् (तु. प. से.), घृप् (भ्वा. प. से.)

स्वक्ष (भ्वा. प. वे.) उत्खन् (भ्वा. प. से.) ।

कुरुक, वि. (तु.) ऋणहेतोः अपहृत ।

—करना, कि. स.. ऋणहेतोः अपहृ (भ्वा.

उ. अ.) ।

—अमीन, सं. पुं. (तु. + प्रा.) ऋणादिहेतोः

द्रव्यापहृता, राजकर्मचारिणः ।

कुरुर्की, सं. स्त्री. (तु. कुरुक >) (राजाशया)

सम्पत्तिहरणम् ।

कुर्ता, सं. पुं. (तु.) चोलः, उरोवस्त्रम् ।

कुर्ता, सं. स्त्री. (तु, कर्ता >) आंगिकः कं,

कुर्यासक-कम् ।

कुर्रर, सं. पुं. (सं. क (कू) र्रः] जानु (न.)

चक्रिका २. कफोणिः (पुं. स्त्री.) कफणी ।

कुर्रानी, दे. 'कुर्रानी' ।

कुर्री, सं. स्त्री. (देश.) कोमलास्थि (न.) ।

कुर्रस, सं. पुं. (अ.), गुटिका, गुल्लिका, वटिका ।

कुर्रसी, दे. 'कुर्रसी' ।

कुर्रल, सं. पुं. (अ.) रत्नशीर्षो धूसरः खगभेदः ।

२. कुम्भकटः ३. दीर्घवो मनुष्यः ।

कुर्रजन, सं. पुं. (सं.) कुलजः, कुर्जनः, गंध-

मूलः २. तांबूली-नागलता-मूलम् ।

कुल, सं. पुं. (सं. न.) वंशः, अन्वयः, वंशचली-

लिः (स्त्री.) २, जातिः (स्त्री.) ३. समूहः

४. गृहम् ५. वामभागः ।

कुल

[१२२]

कुशल

—कलक, सं. पुं. (सं.) कुलंगारः, कुलवासलः ।
 —कानि, सं. स्त्री. (सं. + हि.) कुल, गौरव-
 मयादि ।
 —तारण, सं. पुं. (सं.) वंशोद्धारकः ।
 —पति, सं. पुं. (सं.) गृहस्वामिन् २. दश-
 सहस्रच्छत्राणां पीप्लोऽध्यापकश्च ३. विश्वविद्या-
 लयस्य उपप्रधानाधिकारिन् (अं. वाहस-
 चान्सलर) ।
 —वती, सं. स्त्री. (सं. कुलवती) कुलीना,
 सर्वज्ञा, आर्या ।
 कुल, वि. (अ.) एकल, समस्त, निश्चल ।
 कुलकलाना, कि. अ. (अनु.) कुलकुलध्वनि कु ।
 कूलो—, सु. अतीव शुभं (दि. द. अ.) ।
 कुलक्षण, सं. पुं. (सं. न.) अपद्रव्यमः, दुश्चिह्नं
 २. कदाचारः, गणाचरणम् । वि., दुराचारिन् ।
 कुलजा, सं. पुं. (फा. कलीया) सकिप्योऽपुः
 २. दे. 'पूजा' ।
 कुलटा, सं. स्त्री. (सं.) व्यभिचारिणी, पुंश्रुली,
 बंधकी, प्रथा, स्मैरिणी, निशाचरी, त्रवारण्डा ।
 कुलथ, सं. पुं. (सं. कुलथ) चक्षुष्या,
 लोचनहिता, दृक्प्रसादा ।
 कुलथी, सं. स्त्री. (सं. कुलथः) कालवृन्तः
 (शस्यभेदः) ।
 कुलफ, सं. पुं. (अ. कुल) दे. 'ताला' ।
 कुलफा, सं. पुं. (फा. सुर्कः) बृहद्वीणा, बोलिका,
 दाकभेदः । २. दे. 'कुलफा' ।
 कुलफी, सं. स्त्री. (हि. कुलफ) भ्रमपान-
 चंद्रस्य सुमनसाली २. हिमसन्तानोत्तिर्माण-
 पात्रम् ३. हिमसन्तानो, घनमधुरदुग्धम् ।
 कुलबुलाना, कि. अ. (अनु. कुलबुल)
 दुःखात् अंगानि आशुम् (म्या. प. अ.)
 २. अंगानि गर्भारं स्वम् (म्या. न. से.)
 ३. विनांप्र. त्वम् (म्या. प. अ.) ४. व्याकुल
 (वि.) भू. दे. 'कुलबुलाना' ।
 कुलबुलाहट, सं. स्त्री. (पूर्व.) दानैः संपूर्ण,
 कृमिसदृशं वेद्य ३. कंटकता, कष्टरता ।
 कुलहा, सं. पुं. (फा. कुलहा) हांकारं
 शिररकम् ।
 कुलही, सं. स्त्री. (हिं. कुलहा) शिशुशिर-
 स्कम्, दे. 'कनयोप' ।
 कुलौच, सं. स्त्री. (तु. कुलान) दे. 'छलौग' ।

कुलाबा, सं. पुं. (अ.) लोकपुत्रः २. वडिशो,
 मत्स्यवेधनम् ३. द्वारसंधिः (पुं.) ४. शकल्यं,
 अदुःसुः (स्त्री.) ५. अर्धकालम् ६. जलनार्ता,
 नाली ।
 कुलाल, सं. पुं. (सं.) कुम्भकारः २. वन-
 कुण्डः ३. उद्योगः ।
 कुलिक, सं. पुं. (सं.) कलाविद् (पुं.)
 २. द्विग्विन् ३. कुलीनः ४. कुलपतिः ।
 कुलिश, सं. पुं. (सं.) बर्जः अं, पविः
 २. विस्तृतं (स्त्री.) ३. कृष्टारः ।
 कुली, सं. पुं. (तु.) भारत-वाहन-भारिकः
 २. कर्माक (का) रः, अमर्शविन् ।
 कुलीन, वि. (सं.) महाकुल, अभिमान, आर्यं,
 सभ्य, मधुलज ।
 कुलीनता, सं. स्त्री. (सं.) अभिजात्यं आर्यता ।
 कुल्ल, सं. स्त्री. (सं. कुल्लोः) क्रीडा, विला,
 विहारः, खेलः (पुं. स्त्री.), विलासः, लीला ।
 कुल्या, सं. स्त्री. (सं.) क्षुद्रकुविनदी
 २. क्षुद्रनदी ३. पद्मप्रमोदी ४. कुलसी ।
 कुल्ला, सं. पुं. (सं. कल्लः) तनुः, तनुकः,
 सुदुर्कः ।
 कुलहड, सं. पुं. (सं. कुलहडः) वारका, क्षुद्र-
 वृत्पात्रम् ।
 कुलहाडा, सं. पुं. (सं. कृष्टारः, दे.)
 कुलिहया, सं. स्त्री. (हिं. कुलहडः) क्षुद्रवर्कः,
 अतिक्षुद्रवृत्पात्रम् ।
 कुवलथ, सं. पुं. (सं. न.) नील, कुमुद-वीर-
 दशिकानन्दम् २. नील, कमल-वृत्तलम् ३. भू-
 भण्डलम् ।
 कुवाच्य, वि. (सं.) अदलील, अशिष्ट, अवाच्य ।
 सं. पुं. (सं. न.) चाली, कथनं अपशब्दः ।
 कुवेपी, सं. स्त्री. (सं.) गान्धकारिणी
 २. कुयथितवेपी ।
 कुवेर, सं. पुं. (सं.) कुवेरः, दे. ।
 कुश, सं. पुं. (सं.) कुशः, वधः पवित्रम्
 २. जलम् ३. रामधुवः ४. कालः ।
 कुशन, सं. पुं. (अं.) उपधानं, उपवहं,
 उपवर्धनम् ।
 कुशल, वि. (सं.) दस, चतुर, प्रवीण, निपुण,
 विशारद, विचक्षण २. श्रेष्ठ, भद्र ।
 सं. पुं. (सं. न.) सुखं, क्षेमं, गंगलम्, भद्रं,
 शिवम् २. कुशमाहिम् ३. शिवः ।

—द्वेम, सं. पुं. (सं. न.) सुखं, श्रेयं । संयत्नम् ।
कुशलता, सं. स्त्री. (सं.) पादत्रयं, चातुर्व्यं,
निपुणता ।

कुशा, सं. स्त्री. (सं. पञ्चमः-शब्द) दक्षः, कुशः,
पवित्रं, याशिकः, दक्षगर्भः, दक्षिण (पूं. न.) ।

कुशाग्र, वि. (सं.) तीक्ष्ण, सूक्ष्म, तीव्र प्रखर ।

—कुट्टि, वि. (सं.) तीक्ष्णमति । सं. स्त्री,
तीव्र, मतिः (स्त्री.)

कुशादरी, सं. स्त्री. (प्रा.) विशालता
२. निरक्षरः, विस्मृतिः (स्त्री.) ।

कुशादा, सं. पुं. (प्रा.) निरक्षर २. अक्षरणा-
रहित ।

कुशासनं, सं. पुं. / सं. पुं. (अ.) आसनम्) कुक्-
विष्टः, दर्शितम् ।

कुशासनं, सं. पुं. / सं. पुं. (अ.) आसनम् : कुशा-
सनम्, कश्मिराज्य-नगरम् ।

कुशील, वि. (सं.) दार्ढ्यं, दृष्टं, दृग्भावः ।

कुशता, सं. पुं. (प्रा.) नतः) धान्धरम् (न.) ।

कुशती, सं. स्त्री. (प्रा.) निपुणं, गल्लबाहु-
युद्धम् ।

कुष्ठ, सं. पुं. (सं. न.) शिब्रं, श्वेदं, मंडलकं,
दधर्मन् (न.) २. दे. 'कुट्ट' ।

—नाशन, सं. पुं. (सं.) वाराहीकन्दः २. गौर-
सर्पः ३. क्षीरीश्लेष्मः ।

कुष्ठी, वि. (सं. पश्चिम) शिब्रिन् ।

कुष्माण्ड, सं. पुं. (सं.) दे. 'कुम्हण्ड' ।

कुसंग, सं. पुं. (सं.) दे. 'कुसंग' (स्त्री.) ।

कुसमयः, सं. पुं. (सं.) कुवालः, अशुभसमयः
२. अनवसरः, असमयः ३. विद्वत्कालः ।

कुसाइत, सं. स्त्री. (सं. कुसुमः) सायत)
अशुभमुहूर्तं, अनवसरः, कुसमयः ।

कुसीद, सं. पुं. (सं. न.) दानशुभ्यः, शृङ्गिः
(स्त्री.) ।

—जीवी, दे. 'सुदकीरी' ।

—पथ, दे. 'सुदकीरी' ।

कुसुम्भ, सं. पुं. (सं. न.) क्वरं, मन्त्रा-
रंजनम् २. दे. 'कुसुम्भ' ।

कुसुम्भा, सं. पुं. (सं. कुसुम्भम्) कुसुम्भ-
रानः २. अक्षिकनभं, निर्दिष्टं मादकद्रव्यम् ।

कुसुम, सं. पुं. (सं. न.) पुष्पं, प्रभुम्, सुम्,
सुम्, मणीवर्णं, सुमनसः (स्त्री.), यैवल बहु.)
२. लघुवाक्यमयं गद्यम् ३. स्त्रीरजस् (न.) ।

—पुर, सं. पुं. (सं. न.) पाटलिपुत्रम् ।

—चाण, सं. पुं. (सं.) कामदैवः ।

कुसुमांजलि, सं. स्त्री. (सं. पुं.) पुष्पांजलिः ।

कुसुमित, वि. (सं.) पुष्पित, उत्फुल्ल, कुलित ।

कुसूर, सं. पुं. (अ.) अपराधः, स्थलितम् ।

—वार, वि. अपराधिन्, द्रोधिन् ।

कुहक, सं. पुं. (सं. न.) माया, अभिचारः,
इन्द्रजालम् २. ऐन्द्रजालिकः ३. वंचकः ।

कुहकना, क्रि. अ. (अनु. कुह्) कुहूर्वं क,
कृञ् (भ्या. न. से.) ।

कुहनी, सं. स्त्री. (सं. कफोणिः पुं.) कफादिः
(पुं. स्त्री.) कफणी, कु (कृ) परः ।

कुहर, सं. पुं. (सं. न.) छिद्रं, विवरं, बिलं,
रन्ध्रम् ।

कुहरा, सं. पुं. (सं. कुहेरी) तुषारः, खवाण्यः,
धूमिका, कुहेरिका, कुशिका ।

कुहराम, सं. पुं. (अ. कुहर + आम) विलापः,
आकन्दनं, परिवेदनम् २. संकुलं, तुमुलम् ।

कुही, सं. स्त्री. (सं. कुषिः) द्येतः, खगान्तकः,
शशादनः, कपोतारिः ।

कुहुक, पुं., दे. कुह् (२) ।

कुहुकना, क्रि. अ., दे. 'कुहकना' ।

कुहु, सं. स्त्री. (सं.) अनावस्था २. कोकिल-
मयूरः-आलापः ।

कुँचा, सं. पुं. (सं. कुचम्) शोधनी, संमार्जनी,
वर्चकम् ।

कुँची, सं. स्त्री. (हि. कुँचा) लघु-शुद्ध-
शोधनी-कुचम् २. लोममयी मार्जनी
३. तूलिका, वणो-तुली-तूलिका ।

कुँज, सं. पुं. (सं. कुचः-चा) कुँचः-चा,
तूलिका, कालिका ।

कुँड, सं. पुं. (सं. कुंडम्) सेचनं-नी २. सीता,
हलंसा ३. 'खीद' ।

कुँडा, सं. पुं. (सं. कुंडम्), (जलार्थ) वृह-
न्मुखात्रम् २. द्रोणी-णि (स्त्री.) ३. कुसुम-
पात्रम् ।

कुँडी, सं. स्त्री. (हि. कुँडा) लघुपात्राणद्रोणी-णिः
(स्त्री.) २. पायाणचक्रः-कम् ।

कूक, सं. स्त्री. (अनु.) कोकिलकृतितम्
२. यैका, मयूरध्वनिः ३. दीर्घमयूरध्वनिः ।

कूकना, क्रि. अ. (हि. कूक) कृञ् (भ्या. प.
से.), कुहूर्वं क, केकां क ।

कूकर

[१२४]

कूच्छ

कूकर, सं. पुं. (सं. कूकरः दे.) ।
 कूच, सं. पुं. (तु.) प्रस्थानं, प्रयागं, अपक्रमः
 २. कटकप्रयागः ३. यात्रा ।
 —करना, कि. अ., प्रस्था (स्वा. आ. अ.) ।
 प्रथा (अ. प. अ.) ।
 कूचा, सं. पुं. (फ्रा. चः) वीथी, दे. 'गली' ।
 कूजन, सं. पुं. (सं. न.) वृजितं, बलरयः,
 रागध्वनिः, विरुतं, गुंजनम् ।
 कूजना, कि. अ. (सं. कूजनम्) कूज् (स्वा.
 प. से.), कु (अ. प. अ.), वि, -र (अ. प.
 से.) २. गुंज (स्वा. प. से.), हुं कु ।
 कूजा, सं. पुं. (फ्रा.) मनालीकः करकः ।
 —मिसरी, सं. स्त्री., अर्द्धबोलाकारा घनीकृता
 सिता ।
 कूजित, वि. (सं.) ध्वनित, रयनित, गुजित,
 शंङ्गत, कलरवपूर्णं ।
 कूट, सं. पुं. (सं. न.) छलं, कपटः-दं, माया,
 बहना, प्रतारणा २. असत्यं ३. भ्रमं. विषाणम्
 ४. उच्छिखरम् ५. राशिः ६. गृहार्थवार्ता,
 सनिद उपालम्भः ७. प्रहेलिका, गृहप्रश्नः
 ८. लोहमुद्गरः ९. हरिणजालम् १०. प्रच्छ-
 न्नवैरम् ११. नगरदारम् १२. भयभृगो
 वृषभः ।
 वि., असत्यवादिन् २. प्रवचक ३. कुत्रिम
 ४. श्रेष्ठ ५. निश्चल ।
 —नीति, सं. स्त्री. (सं.) दीत्यकर्मम् (न.)
 —युद्ध, सं. पुं. (सं. न.) कपटभ्रामः ।
 —योजना, सं. स्त्री. (सं.) कुचकम् ।
 —साक्षी, सं. पुं. (सं. -क्षिन्) मिथ्यासाक्षिन् ।
 कूट, सं. स्त्री. (हि. काटना वा कूटना) कर्तनं,
 हन्तनम् २. ताडनं, कुट्टनम् ।
 कूटक, सं. पुं. (सं. न.) छलं, कपटम्
 २. लसैषः, उत्तुंगना ३. फालः-लं, कुशिकम् ।
 कूटना, कि. सं. (सं. कुट्टनम्) कुट्ट-चूर्ण-
 खंड (चु.), पिप् (ह. प. अ.) २. प्रबलं
 तड् (चु.) ।
 सं. पुं. तथा भावः, कुट्टनं, चूर्णनं, खण्डनम्,
 पेषणम् २. ताडनं, प्रहणम् ।
 —योग्य, वि., कुट्टनीय, चूर्णयितव्य ।
 —बाला, सं. पुं. कुट्टकः, पेषकः, ताडयित्र ।
 कूटा हुआ, वि., कुट्टित, पिष्ट, ताडित ।

कूटस्थ, वि. (सं.) शिखरस्थ २. निश्चल
 ३. नित्य ४. गृह ।
 कूटान्न, सं. पुं. (सं.) कूट-कपट-अक्षः-
 देवनः-सरः ।
 कूटाख्यान, सं. पुं. (सं. न.) कूटार्थ-गृहार्थ-
 कथा-उपाख्यानम् ।
 कूटा, सं. पुं. (सं. कूटः = राशि >) अपक्रमः,
 उच्छिष्टं, मलं, निस्सारवस्तुसमूहः ।
 —करकट, सं. पुं., दे. 'कूटा' ।
 कूट, सं. स्त्री. (हि. 'कटना') प्लवः, उल,
 प्लुतिः (स्त्री.), प्लवसं, जंपा-पा, बलानं,
 उल्लवः ।
 —फौद, सं. स्त्री. कूर्दनप्लवनं, शंखवल्कितम् ।
 कूटना, कि. अ. (सं. कूर्दनम्) कूर्द (स्वा.
 आ. से.), उत्प्लु (भव. आ. अ.), वल्गु
 (स्वा. प. से.) २. प्रमुद (स्वा. आ. से.) ।
 सं. पुं., दे. 'कूट' ।
 —फौदना, कि. अ., इतस्ततः वल्गु । २. व्या-
 यान कृ ।
 कूप, सं. पुं. (सं.) दे. 'कूपी' २. छिद्रं, रक्षम् ।
 —मंहुक, सं. पुं. (सं.) लववहागानभिन्नः,
 अपकवुडिः, अल्पदक्षिन् । २. अंधुभेकः ।
 कूपन, सं. पुं. (अं.) पणिका, कूपनम् ।
 कूपी, सं. स्त्री. (सं.) कूपकः, खातकः २. दे.
 'कूपी' ३. नामिः (पुं. स्त्री.), नामी,
 तृदिका ।
 कूबड, सं. पुं. (सं. कूबरः >) कूटः-दम् ।
 कूर, वि. (सं. कूर) निर्दय, निर्गुण, गुह्यं
 २. मयंकर ३. दुष्ट ४. अलस ५. नूर्व
 ३. कुलक्षण ।
 कूर्म, सं. पुं. (सं.) कच्छपः, दे. 'कूटुआ'
 २. दिग्गोः कच्छपावतारः ३. पृथिवी ४-७.
 कृपि-प्रागनाडी-आसन, विशेषः ।
 कूल, सं. पुं. (सं. न.) तट-दीपं, तीरम्
 २. समीपं, निकटं ३. कुल्या ४. सरस् (न.) ।
 कूलहा, सं. पुं. (सं. कूलम् >) निर्ववारिध
 (न.) ।
 कूमांड, सं. पुं. (सं.) दे. 'कूम्हा' ।
 कूच्छ, सं. पुं. (सं. न.) दुःखं, कष्टम् २. पापम्
 ३. मूत्रकूच्छरोगः ४. व्रतभेदः । वि., दुष्कर,
 दुःसाध्य ।

कृत, वि. (सं.) विहित, अनुष्ठित, रचित, संपादित, निर्मित । सं. पुं. सत्ययुगम् २. अतुर इति संख्या ।

—कार्य, वि. (सं.) सफल, सिद्धार्थ ।

—कृत्य, आप्तकाम, सफलमनोरथ ।

—युग, सं. पुं. (सं. न.) सत्ययुगम् ।

—विद्य, वि. (सं.) विद्वत्, पंडित, बहुश्रुत ।

कृतक, वि. (सं.) कृत्रिम, अनैसर्गिक, अस्वाभाविक, २. अनित्य (न्यायः) ।

—पुत्र, सं. पुं. (सं.) दत्तकः, दत्तियः पुत्रः ।

कृतज्ञ, वि. (सं.) कृतज्ञतरहित, अकृतवेदिन् ।

कृतज्ञाना, सं. स्त्री. (सं.) अकृतवेदिना, उपकारविस्मरणम्, कृतज्ञताराहित्यम् ।

कृतज्ञ, वि. (सं.) उपकारज्ञ, कृतवेदि, कृतवेदिन् ।

कृतज्ञता, सं. स्त्री. (सं.) उपकारज्ञता, उपकारस्मरणं, कृतवेदित्वम् ।

कृतांक, वि. (सं.) सचिद्ध, निहित, अंकित, संक ।

कृताञ्जलि, वि. (सं.) वक्राञ्जलि, वक्रकर ।

कृतांत, सं. पुं. (सं.) मृत्युः २. वनः ३. पापम् ४. देवता ५. पूर्वजन्मकर्मफलम् ६. सिद्धान्तः ७. शनैश्चरवारः ।

कृतार्थ, वि. (सं.) पूर्णकाम, दे. 'कृतकार्य' २. संतुष्ट ३. निपुण ४. मुक्त ।

कृतास्त्र, वि. (सं.) सशस्त्र, सास्त्र, सत्रज्ञ २. कुरुविद्य, दाक्षिण्यम् ।

कृति, सं. स्त्री. (सं.) श्रेष्ठा, कविः २. कर्मन् (न.) कार्यम् ३. इन्द्रजालम्, माया ४. रचना, ग्रंथः ७. प्रहारः ८. क्षुतिः (स्त्री.) ।

कृती, वि. (सं.) कृतिन्, कुशल, दश्रः, पट्ट २. पुण्यात्मन्, सुभिन्नते ।

कृतोदक, वि. (सं.) ज्ञात, कृतलः, कृतभिषिक कृत्ति, सं. स्त्री. (सं.) मृगवर्धन (न.) २. त्वन् (स्त्री.) ३. भूक ४. दे. 'कृत्तिका' ।

—वासा, सं. पुं. (सं. वासम्) शिवः ।

कृत्तिका, सं. स्त्री. (सं.) बहुला, अग्निदेवा, नक्षत्रविशेषः ।

कृत्य, सं. पुं. (सं. न.) अनुष्ठेयं, कर्तव्यं, विधेयं धर्मः, आवश्यकं कार्यम् २. कर्मन् (न.) ।

कृत्रिम, वि. (सं.) कृतक, अनैसर्गिक ।

कृदन्त, सं. पुं. (सं.) कृदप्रत्ययान्तशब्दः (उ. पाचक, भोजित इ.) २. कृदप्रत्ययविषयकं न्याकरणप्रकरणम् ।

कृपण, वि. (सं.) कदर्य, दे. 'कंजूस' २. क्षुद्र ।

कृपणता, सं. स्त्री. (सं.) कदर्यता, दे. 'कंजूसी' ।

कृपया, वि. (सं.) सदयं, राक्षसं, सानुकर्षं, सानुकर्षम् ।

कृपा, सं. स्त्री. (सं.) करुणा, दया, अनुग्रहः, प्रसादः, उपकारः, अनुकंपा २. क्षमा, मर्षणम् ।

—निधान, सं. पुं. (सं. न.) दयानिधिः । वि. अत्यन्तकृपालु ।

—पात्र, सं. पुं. (सं. न.) प्रसादभाजनं, अनुग्राह्यः, दयाईः ।

—सिंधु, सं. पुं. (सं.) दयासागरः, अतिदयाळुः ।

कृपाण, सं. पुं. (सं.) क्षुद्रः अस्तिः २. दे. 'कटार' ३. दंडकवृत्तमेदः (छन्द.) ।

कृपालु, वि. (सं.) दयाळु, कारुणिक, कृपामय ।

कृपालुता, सं. स्त्री. (सं.) दयाळुता, कारुणिकता ।

कृमि, सं. पुं. (सं.) कीटः, नीलांगः, क्रिमिः (पुं.) २. लाक्षा ।

—कोश, सं. पुं. (सं.) पट्टकीट, कोष—गृह ।

—नाशक, वि. (सं.) कृमिघ्न, कृमिहर ।

कृमिक, सं. पुं. (सं.) कीटकः, लघु—कृमिः—क्रिमिः ।

कृमिज, सं. पुं. (सं. न.) अपुरु (न.), राजाई २. कौशेयं ३. दे. 'हिरमिळी' ।

कृमिजा, सं. स्त्री. (सं.) कीटजा, लाक्षा ।

कृमिल, वि. (सं.) कृमिकूल, चित-पूगी, कृमिमय ।

कृमिला, सं. स्त्री. (सं.) बहुप्रसूः (स्त्री.), बहुप्रजा ।

कृश, वि. (सं.) क्षीण, क्षाम, तन्वंग-कृशांग (-गी स्त्री.), प्र-तनु, दुर्बल २. अल्प, रतीक, क्षुद्र, सूक्ष्म, अपु, लघु ।

कृशता, सं. स्त्री. (सं.) क्षीणता, क्षानता, दुर्बलता २. अल्पता, सूक्ष्मता ।

कृशांगी, सं. स्त्री. (सं.) तन्वंगी, क्षीणांगी, तन्वी ।

कृशानु, सं. पुं. (सं.) अनलः, अग्नि (पुं.) २. चित्रकः ।

कृशोदरी

[१२६]

केदार

कृशोदरी, वि. स्त्री. (सं.) तनु-क्षाण, मध्या-
मध्या ।

कृषक, सं. पुं. (सं.) कृषीबला, कृषिकाः, कृषायाः ।
कृषि, सं. स्त्री. (सं.) कर्षणं, हलभृतिः (स्त्री.) ।

कृष्ण, सं. पुं. (सं.) वारुदेवः, केशवः, चक्र-
पाणिः (पुं.) अंकिनः (पुं.), जनार्दनः, पीता-
बरः, माधवः, मधुसूदनः, हृषीकेशः, गोपालः,
गोवर्धनधारिन् (पुं.), गोविन्दः, दामोदरः,
मुरारिः (पुं.), राधारमणः । २. कौकिलः
३. काकः ४. कृष्णपक्षः । वि., कालः, अस्तित्,
२. नीलः, मेचकः, इयाम ३. तिमिरः, तिम्रभ ।

—जटा, सं. स्त्री. (सं.) जटांमाला, सुगन्धित-
मूलभेदः ।

—जीरक, सं. पुं. (सं.) कृष्णा, काला,
बहुगन्धा ।

—द्वैपायन, सं. पुं. (सं.) वेदव्यासः, महा-
भारतकारः ।

—पत्र, सं. पुं. (सं.) असितपक्षः, प्रतिपदा-
धमारव्यन्तानि पंचदश दिनानि ।

—लवण, सं. पुं. (सं. न.) रुचवं, अन्नं,
सांघर्षलं ।

—लोह, सं. पुं. (सं. न.) अवस्कांतः, लुंबकः ।

—शार, —सारंग, —सार, सं. पुं. (सं.)
वृगभेदः ।

कृष्णता, सं. स्त्री. (सं.) कृष्णमन् (पुं.),
कालिमन् (पुं.), नीलत्वं, इयामत्यं ।

कृष्णा, सं. स्त्री. (सं.) द्रोपदी, पांचाली
२. कालीदेवी ३. दक्षिणदेशे नटांदिक्षेपः
४. कृष्णजीरकः ५. कृष्णद्राक्षा ६. नयनसारा ।

कृष्णाष्टमी, सं. स्त्री. (सं.) श्रीकृष्णजन्मदिवसः,
जन्माष्टमी, भद्रसासुरयकृष्णपञ्चाष्टमी तिथिः ।

कृष्णी, सं. स्त्री. (सं.) कृष्ण, रजनी, रात्रिः
(स्त्री.) ।

कृष्य, वि. (सं.) कर्षणीय, कृषिर्योग्य ।

केंचुआ, सं. पुं. (सं. किंचुलकः) मद्दिलता,
गंडूपदः, किंचिलिकः ।

केंचुल, सं. स्त्री. (सं. कंचुलः) निमोकः, अहि-
भुज्ज-सर्पः, नवच् (स्त्री.) ।

केंचुली, वि. (हि. केंचुल) कंचुलकः, सद्दश-तुल्य ।
सं. स्त्री. दे. 'केंचुल' ।

केंद्र, सं. पुं. (सं. न.) मध्यः-मध्यं, मध्यभागः
२. उदरं, गर्भः ३. मुख्य-प्रमुख, स्थानम् ।

केंद्री, वि. (सं. केन्द्रे >) मध्यम, मध्यस्थ,
मध्य, गता-वापीर्, मध्य, केन्द्रीय ।

—करण, सं. पुं. (सं. न.) मध्यवर्तिनं कृः,
एकतंत्रं कृ ।

केसर, सं. पुं. (अं.) कर्पूर-कर्मटिका, रोगः,
कर्मरकोटः ।

के, प्रत्य., (हि. का) दे. 'का' ।

केकडा, सं. पुं. (सं. कर्कः) कर्कटकाः, कुलीरः ।

केकय, सं. पुं. (सं.) १. बन्ध्यानकादमीरांत-
गतप्रदेशविशेषः २. दक्षरथशुभ्रः ।

केकयी, सं. स्त्री. (सं. केंकेयी) ।

केका, सं. स्त्री. (सं.) मधुरवाणी ।

केकी, सं. पुं. (सं. किन्) नयूरः, शिक्षिन् ।

केत, सं. पुं. (सं.) भवनं, गृहं २. स्थानं
३. ध्वजः, केतनं ४. बुद्धिः (स्त्री.) ५. भ्रुकम्प
६. संघा ७. अन्नम् ।

केतक, सं. पुं. (सं.) केतकीवृक्षः २. तपुषुपं ।

केतक, वि. (सं. कति + क्) दे. 'कितने',
'कितना', बहुत ।

केतकी, सं. स्त्री. (सं.) नूरीपुष्पः, केतकः,
ककचच्छरः, विफला, ककना, संघपुष्पा ।

केतन, सं. पुं. (सं. न.) भवनं, गृहम् २. स्थानं
३. चिह्नं ४. ध्वजः ५. निमंत्रणं, आह्वानम् ।

केतली, सं. स्त्री. (अं. केतल) उखा, रजाली,
लीहा, केंदभूः (स्त्री.) ।

केतित, वि. (सं.) अस्मिन्, आहत, आका-
रित २. अनादीर्णं, लोकान्नुपित ।

केतु, सं. पुं. (सं.) ग्रहविशेषः २. उल्का, उत्पातः
३. ज्ञानं ४. दामिः (स्त्री.) ५. ध्वजः ६. चिह्नम्
७. राश्रसविशेषस्य कर्षकः ।

—तारा, सं. पुं. (सं. स्त्री.) प्रमकेशः (पुं.),
उल्का ।

—मान्, वि. (सं. मत्) तेजस्विन् २. ज्वलिन्
३. उषः ।

—माल, सं. पुं. (सं. न.) जंतुद्वीपस्य नवखं-
टांतर्गतखटविशेषः ।

—रत्न, सं. पुं. (सं. न.) वैदूर्वमणिः (पुं.) ।

केथीटर, सं. पुं. (अं.) मूत्रशलाका ।

केलसियम, सं. पुं. (अं.) चूर्णितु (न.),
खटिकम् ।

केदार, सं. पुं. (सं.) वीदिक्षेपं २. हिमालये

तीर्थविशेषः ३. आलवालं ४. भैवरागपुत्रः
५. सुपुण्यः क्षेत्रभावाः ।

केन, सं. पुं. (सं. 'किं' का लुनीया षकवचन)
उपनिषदविशेषः ।

केमरा, सं. पुं. (अं.) छायाचित्रपेटिका ।

केमिस्ट्री, सं. स्त्री. (अं.) रसायनम् ।

केयूर, सं. पुं. (सं. पुं. न.) अंगदः-दं, कलयः-यं ।

केराना, सं. पुं. दे. 'किराना' ।

केराना, सं. पुं. (अं. क्रिश्चियन >) भारो-
पायः २. लेखकः, कायस्थः, लिपिकारः ।

केराया, सं. पुं. दे. 'किराया' ।

किराये की गाड़ी, सं. स्त्री. षण्द-साधारण-
वाहनं रथा ।

केला, सं. पुं. (सं. कदलः), (वृक्ष) कदली,
रमा, मोचा, काशीला, सऊःफला, मुच्छफला,
निःरसा, उल्म्यभा, मो (रो, लो) त्वकः,
वारणधलभा । (फल) कदलीफलं, मोचं इ. ।

केलि, सं. स्त्री. (सं.) क्रीडा, गेला २. रतिः
(स्त्री.), मैत्रुं ३. नर्मल (न.), परि (री)
हासः ४. शूलपी ।

—कला, सं. स्त्री. शास्त्राधीना २. रतिविज्ञानं ।

केलोरी, सं. स्त्री. (अं.) उपम् ।

केवट, सं. पुं. (सं. केयतः) नाविका, पोत-
वाहनः औद्युगिकः २. धोकरः, कैवती, जालिकः,
माल्याजीवः ।

केवटी, सं. स्त्री. (हिं. केवट) मिथश्चिह्नं,
वेदलमंकरः ।

केवहा, सं. पुं. (सं. केविका) केवी, कविका,
भुहारिः (पुं.), महागंधा, नृपवहभा २. केवी-
पुत्रं इ. ३. महागंधासवः ।

केवल, वि. (सं.) एक, अद्वितीय २. विशुद्ध
३. श्रेष्ठ । क्रि. वि. एक, केवलं, मात्र (समा-
सांत में) २. सामर्थ्येन, संपूर्णतया ।

केवलात्मा, सं. पुं. (सं. नमन्) परमेश्वरः, जग-
दीश्वरः २. शुद्धसत्त्वमनुष्यः, पूतारमन् ।

केवली, सं. पुं. (सं. लिम्) मांक्षाधिकारी साधुः
२. तीर्थकारः (जैन.) ।

केवौच, सं. स्त्री. (सं. कच्छु >), (लता)
कपिकच्छुः (खा.) स्व-आत्म-रक्षा, कंदूरा,
मकंदी २. (फली) कपिकच्छु, बीजकोशः-शिबी ।

केवाड़, सं. पुं., दे. 'किवाड़' ।

केश, सं. पुं. (सं.) बालः, कनः, कुन्तलः,
चिकरः, शिरोरुहः, शिरसिजः, मूर्च्छाः, वृत्तिनः

२. किरणः ३. वरुणः ४. विष्णुः ५. सूर्यः

६. विदवं (७-८) अश्व-सिंह-स्कंधवेशः ।

—कर्म सं. पुं., केशकर्मन् (न.), केशः-
विचःसः-प्रसाधनम् ।

—कलापः-पाश, सं. पुं. (सं.) प्रसाधितवेशः,
अलकः, कुरलः ।

—प्रसाधनी, सं. स्त्री.] कंकटिका, दे. 'कंची' ।
—मात्रक, सं. पुं.]

—विन्यास, सं. पुं. (सं.) दे. 'वेशकर्म' ।

केशक, वि. (सं.) देशकर्म-वेशविन्यास, कुशल,
वेशप्रसाधक ।

केशरी, सं. पुं. (सं.-रिन्) सिंहः, मृगेन्द्रः
२. घोटकः (३-४) पुत्राय-नागकेशरः-वृक्षः ।

केशकेशी, सं. स्त्री. [सं.-शान.] अन्योऽन्य-
वेशयक्षणपूर्वकप्रवृत्तं युद्धं ।

केशिनी, सं. स्त्री. (सं.) सुश्रेणी-शा, सुकची-
चा ।

केशी, सं. पुं. (सं. वेशिन्) सिंहः २. घोटकः
३. सुश्रेणीः (पुण्यः) ३. राक्षसविशेषः ।

केश, सं. पुं., दे. 'वेश' ।

केश, सं. पुं. (अं.) व्यवहारपदं, कार्यं
२. दुर्घटना ३. कोपः, पुटः ।

केशर, सं. पुं. (सं-पुं. न.) कादमीयं, कादनी-
रवं, कुंकुमं, अग्निशिखं, वरं, वाहि (ह्रीं) कं,
पीतनं, गोरं, रक्तं, लोहितचन्दनं, वर्ण्यं, संकीचं,
धोरं, घलं, धुस्लं, धोरम् २. नागकेशरवृक्षः
३. अश्व-सिंह-रकन्धवालाः ४. रवराः ।

केशराचल, सं. पुं. (सं.) मेरुः, सुमेरुः, हेमाद्रिः ।

केशरिया, वि. (सं. केशरं >) घनपीतं, कुंकु-
मवर्णं ।

—वाना, सं. पुं., कुंकुमवर्णं-घनपीतं-वेशः-
वेशः ।

केशरी, सं. पुं. (सं.-रिन्) दे. 'केशरी' ।

केशू, सं. पुं. (सं. किशुकः) पलाशः, रक्त-
पुष्पकः ।

केशा, सं. पुं. (सं. केशा >) गवूरः, दे. 'मेर' ।

केशरी, सं. पुं. (सं. केशरिन्) सिंहः २. अश्वः ।

कैची, सं. स्त्री. (तु.) दे. 'कतरनी' ।

—करना, सु. अद्यापि निरुद्ध (तु. प. से.)-
रु (कृ. उ. से.)-अवच्छिद्य (रु. प. अ.) ।

—सी जवान चलना, मु., शीघ्र-सत्वरं-वेगेन
 धृ (म्वा. प. से.)—भाप् (म्वा. आ. से.) ।
कैचुली, सं. स्त्री., दे. 'कैचुली' ।
कै, वि. (सं. कति) दे. 'कितने', 'कितनी' ।
 अथः, वा, अथवा, यदा २. अन्यतर ।
—दफा,—चार,—वेर, कतिद्वयः (अथः),
 कतिवारं ।
कैप, सं. पुं. (अ.) दे. 'कैपू' ।
कै, सं. स्त्री. (अं.) दांत, वमनोदगारः २. वमनं,
 वमः, वमिः (अ.), प्रच्छदिका, वमथुः (पुं.) ।
—आना, क्रि. अ., वगानेच्छया पीड् (कर्म.),
 विव्रमिपति (सन्तन्त्र.) ।
—करना, क्रि. स. उद्-वम् (म्वा. प. से.)
 छर्द् (तु.), उत्क्षिप् (तु. प. अ.), उद्गृ
 (तु. प. से.) ।
कैतव, सं. पुं. (सं. न.) छलं, कपटं, वंचनं
 २. कृतं ३. वैदूर्यमणिः (पुं.) ४. धुस्दूरः ।
 वि., छलिन्, कापटिक २. शठ, भूक्तं ३. अक्ष-
 देविन्, कितव, (-वी. स्त्री.) ।
कैथ—था, सं. पुं. (सं. कपित्थः) दधित्थः,
 मन्मथः, दधि-पुष्प-कुच-गन्ध-दन्त-फलः ।
कैद, सं. स्त्री. (अ.) वन्धनं, निग्रहः, निरोधः
 २. कारा, -निरोधः-वन्धनं-प्रवेशः-वासः, बंदी-
 करणं, प्रग्रहः, आसेधः ३. नियमः, समयः,
 प्रतिज्ञा, संकेतः ।
—करना, क्रि. स., कारागृहे निक्षिप् (तु. प.
 अ.)—व-भू(क्. प. अ.)—निरुक् (क. उ. अ.),
 वन्दीग्राहं ग्रह् (क. प. से.), बंदीह ।
—होना, क्रि. अ., कारायां निक्षिप् वन्द् निरुह्-
 वन्दीह (सव कर्म.) ।
—शाना, सं. पुं. (फ़ा.) कारा, कारागारः-रं,
 कारावासः, बन्दि-शाला-गृहं, कथनशलयः,
 चारः, चारकः, गुप्तस्थानं ।
—तनहाई, सं. स्त्री. (अ + फ़ा.) एकान्त-
 विजन-निम्न-आसेधः ।
—महज, सं. स्त्री. (अ.) सरल सुगम-प्रग्रह-
 आसेधः ।
—सकत, सं. स्त्री. (अ. + फ़ा.) विपन्न-दुःसह-
 आसेधः, इ. ।
कैदी, सं. पुं. (अ.) बंदी-दिः (स्त्री.), बन्दिन्
 (पुं.), कारागुप्तः, प्रहकः, प्रमहः, बद्धः ।
कैप, सं. पुं. (अं.) दे. 'दोपी' ।

कैपिटल, पुं. (अं.) चूल-धनं-द्रव्यम्, २. धन-
 पुंजः राशिः, पुजिः (स्त्री.) ३. राजधानी ।
कैपिटलिट, सं. पुं. (अं.) धनिदः, कोटीधरः,
 पुष्पिपतिः ।
कैचिनेट, सं. पुं. (अं.) मंत्रिसंढलम् २. कोष्ठकः
 ३. मंत्रणगृहम् ।
कैफियत, सं. स्त्री. (अ.) अवस्था. स्थितिः
 (स्त्री.), दशा २. वितरणं. वर्णनं ३. आशु-
 र्पादकषटना ।
कैरव, सं. पुं. (सं. न.) कुमुद २. सितोत्पलं,
 श्वेतकमलं (सं. पुं.) वितथः २. शत्रुः ।
कैरी, सं. स्त्री. (देश.) दे. 'अंबिया' ।
—आख, सं. स्त्री., कपिल-पयाल-नयन-नेत्रं ।
कैलास, सं. पुं. (सं.) पर्वतविशेषः, शिव-कुशर-
 निवासः ।
—नाथ, पति, सं. पुं. (सं.) शिवः ।
—वास, सं. पुं. (सं.) गृथुः ।
कैवर्त, सं. पुं. (सं.) दे. 'देवद' ।
कैवल्य, सं. पुं. (सं. न.) एकत्वं, असंसृष्टता
 २. अपवर्गः, मुक्तिः (स्त्री.) ३. उपनिषद्विशेषः ।
कैसर, सं. पुं. (लैप सीज़र) सम्राट्, राजाधि-
 राजः, अधिराजः, अधीश्वरः ।
कैसा, वि. (सं. कौटुश) कौटुह, विरूप,
 किंविध, किमाकार ।
कैसी, वि. स्त्री. (सं. कौटुशी) कौटुक्षी, विरुपा,
 किमाकारा, किंविधा ।
कैसे, क्रि. वि. (हिं. कैसा) कथं, येन प्रकारेण,
 कथा रोत्या ।
कौकण, सं. पुं. (सं.) दक्षिणदिशि प्रान्तविशेषः ।
कौपल, सं. स्त्री. (सं. कोमल) पल्लवः-वं,
 अंडुरः, प्ररोहः, किस (स.) लयः-वं, उद्भिद
 (पुं.), सद्भिदः ।
—निकलना या फूटना, क्रि. अ., प्ररुह (म्वा.
 प. अ.), रफुट् (तु. प. से.) लक्षिप् (कर्म.)
 फुल्-विकस् (म्वा. प. से.) ।
को, प्रत्य. (यह कर्म और मंत्रदान कारक का
 प्रत्यय है, इसका अनुवाद प्रायः द्वितीया और
 चतुर्थी के रूपों से होता है । (राम को कह =
 उ., राम अहि, बाह्य को दे = विधाय देहि) ।
कोआ, सं. पुं. (सं. कोशः-प.), (पट्टकौट-)
 कोशः-पः २. दे. 'कोया' । ३. पनसखंडः-हं
 ४. दे. 'मनुआ' (फल) ।

कोई, सं. (सं. कोऽपि) कथन, कश्चित् (पुं.), का-अपि-चन-चित् (स्त्री.) कि-अपि-चन-चित् (न.) ।

—कोई, वि. शोकाः, कतिपयाः, परिमिताः ।

—चीज्, सं. स्त्री. विमपि (वस्तु) ।

—दम सं, कि. वि. स्वयेव, तत्काले, इति, शक (सब अर्थ.) ।

—दम का मेहमान, सं. पुं, गुम्फुः आसन्न-मरण-सुख, मरणाभिसुख, मरणोन्मुख ।

—न कोई, एष या परो वा, यः कश्चिदपि, कश्चित् ।

—नहीं, न कोऽपि-कापि किंचिदपि इ. ।

कोकी, सं. पुं. (सं.) चक्रवाकः, इन्द्रवरः, रथानां, चक्रः २. चक्रकः ३. विष्णुः (पुं.) ४. ब्रह्मः ५. खजरीवृक्षः । [कोकी (स्त्री.), चक्रवाको, रथांगी इ.] ।

कोकै, सं. पुं. (अं.) न्यकारः ।

—शास्त्र, सं. पुं. (सं. न.) कोकपंडितरचितो रतिकिज्ञानग्रन्थः ।

साफ्टः, सं. पुं., सुदुर्न्यकारः ।

हाईः, सं. पुं. इष्टन्यकारः ।

कोकनद, सं. पुं. (सं. न.) रक्तोत्पलं २. रक्त-कुमुदम् ।

कोकनी, वि. (देश.) क्षुद्र, लघु ।

कोका, सं. पुं. (अं.) वृक्षभेदः ।

कोका, सं. पुं. राज. (तु.) धात्री-उपमात्, पुत्र-पुत्री, पाद्विःयो

—बेली, बेरी, सं. स्त्री. (सं. कोकनदं + हि. बेला) नीलकुसुमं ।

कोकाह, सं. पुं. (सं.) कर्षः, खेतघोटकः ।

कोकिल, सं. स्त्री. (सं. पुं.) विकः, पर, शून्य-पुष्टः, कालः, गन्धर्वः, मधुगायनः, कलकंठः, कुहूवरः, काकलीरवः, वसन्तदूतः, वनप्रियः, ताप्राक्षः । दे. 'कोकिला' ।

—बैनी, वि. स्त्री. (सं. + हि.) सुकंठी, मपुर-भाथिनी ।

कोकिला, सं. स्त्री. (सं.) मदनशलाका, पर-शून्यपुष्टः, वनप्रिया, कलकंठी, ताप्राक्षी, वसंत दूता ।

कोकिलावास, सं. पुं. (सं.) कोकिलोत्सवः, आश्रमः, रसालः ।

कोकी, सं. स्त्री. (सं.) चक्रवाकी, चकी, रथा-गनानी ।

कोकीन, सं. स्त्री. (अं. कोकेन) कोकापच-निमित्तमादकपदार्थः * कोकीनम् ।

कोको, सं. स्त्री. (अनु.) काकः, वायसः २. काव्यनिकमयहेतुः (पुं.) ।

कोर, सं. स्त्री. (सं. लक्ष्मिः) गर्भाशयः, गर्भ-कोशाशयः ।

—जली, चन्द्र, वि., वंध्या, सन्तानहीना ।

—की औच, सं. स्त्री., अपत्यलेपम् (पुं.), वारसत्यं, सन्ततिहेतुः ।

—मारी जाना, मु., च्युतगर्भा भू, गर्भः पद (भ्वा. प. से.) च्यु (भ्वा. आ. अ.) ।

—खुलना, मु. सन्तानः उपपद (वि. आ. अ.) ।

कोभना, कि. स., दे. 'कुभाना', 'धंसाना' ।

कोचकस, सं. पुं. (अं. कोचकोस) सूतासनं ।

कोचवान, सं. पुं. (अं. कोच >) सारथिः (पुं.), सूतः, वाहकः ।

कोजागर, सं. पुं. (सं.) आश्विनो-द्युन, पूर्णिमा, कौमुदी, शारदी, दरवपर्वन् (न.) ।

कोट, सं. पुं. (सं.) दुर्ग २. प्राचीरं ३. राज-प्रासादः ।

—वाल, सं. पुं., कोटपालः, दुर्गाध्यक्षः ।

कोट, सं. पुं. (अं.) प्रावारः-रकः, कञ्जुकः ।

कोटर, सं. पुं. (सं. पुं. न.) निष्कुहः, तर-दिवरं, प्रान्तरं २. कोटरावणं, रक्षार्थं कृत्रि-मणनं ।

कोटि, सं. स्त्री. (सं.) शतलक्षसंख्या, दे. 'करोट' २. धनुरर्थं ३. अस्त्रादेः कोणः ४. वर्गः, श्रेणी ।

कोटिक, वि. (सं. कोटिः स्त्री.) कोटी-टिः (स्त्री.) लक्षशतकं २. असंख्य, अगणित । सं. स्त्री., उक्ता संख्या तदकाथ ।

कोटिशा, कि. वि. (सं.) बहुधा, बहुधा २. अनेक-कोटिवारं । वि., बहुसंख्याक, अनेक ।

कोटीश्वर, सं. पुं. (सं.) कोट्यधीशः, अति-धनाढ्यः ।

कोठीरी-बी, सं. स्त्री. (हि. कोठा) लघु-क्षुद्र-कोष्ठः-शाला, अन्तःकोष्ठः, गर्भगारं ।

कोठा, सं. पुं. (सं. कोष्ठः) गृहं, सदनं, आ-नि-वासः, वेद्यान्-समन् (न.) २. प्र-कोष्ठः, शाला ३. पण्यगारं, पण्यारणं ४. धान्यागार, कुशलः

५. चन्द्रशाला, अट्टालिका ६. पटल, छदिस (स्त्री.) ७. उदरं ८. आमाशयः ९. अनामि (न. बहु.) १०. निभृतगारं ११. पत्रभागः १२. गर्भाशयः ।

—विगाडना, सु. अजीर्णरोगेण पीड (कर्म.) ।

कोठार, सं. पुं. (हिं. कोठा) दे. 'भंडार' ।

कोठारी, सं. पुं. (हिं. कोठा) दे. 'भंडारी' ।

कोठी, सं. स्त्री. (हिं. कोठा) भवनं, गृहं,

हर्म्य २. एकभूमिकं हर्म्य ३. पण्य-आगार-

आधानं ४. धान्यागारं ५. भंडारं, कोषः

६. वणिग्जनसमवायः ७. बृहदापणः, महती

विक्रयशाला ८. गर्भाशयः ९. मुलिकाक्षिपण्या-

माग्नेयचूर्णाधानं १०. मृण्मयं बृहद्भान्यात्रं

११. लोह्मयं ताम्रमयं वा बृहज्जलपात्रं ।

—वाल, सं. पुं., श्रेष्ठिन् (पुं.) वाणिज्यश्रेष्ठः ।

कोबना, कि. सं., दे. 'खोदना' ।

कोबा, सं. पुं. (सं. कवरं >) प्रतीकः, कषा-

शा, प्रतिष्कषः-शः, ताडनरज्जुः (स्त्री.) ।

—मारना, कि. सं., कक्षया प्रतोदेन वा प्रह (म्बा. प. अ.)—तद् जुद-दंडं (सब चु.)—

आहन (अ. प. अ.) ।

कोबी, सं. स्त्री. (अं. स्कोर) विंशतिः (स्त्री.),

विंशतिवस्तुसमुदायः ।

कोद, सं. पुं., दे. 'कुष्ट' ।

—में खाज निकलना, सु., रन्ध्रोपनिपातितोड-

नर्थाः, छिद्रेष्वनर्था बहुलीभवन्ति, गण्डे स्फोट-

कसंजननम् ।

कोडी, वि., दे. 'कुडी' ।

कोण, सं. पुं. (सं.) दे. 'कोना' ।

कोणि, वि. (सं.) वक्-आगुप्र-कर-इस्त ।

कोतल, सं. पुं. (फ्रा.) दर्शनीयपोटकः

२. राजाशः ।

कोतवाल, सं. पुं. (सं. कोटपालः) पुररक्षकः ।

कोतवाली, सं. स्त्री. (हिं. कोतवाल) कोट-

पाल-पुररक्षक. कार्यालयः ।

कोताह, वि. (फ्रा.) न्यून, अल्प, २. लघु,

छ्स्व ३. संकीर्ण, संकुचित ।

—हिम्मत, वि., अल्प, साहस-विक्रम ।

कोताही, सं. स्त्री. (फ्रा.) वृद्धिः (स्त्री.),

न्यूनता २. प्रमादः ।

कोथला, सं. पुं. (हिं. गूथल) बृहत्. पुटः-कोषः

प्रसेवः २. आमाशयः ।

—भरना, सु. उदरं पूरं (चु.) ।

कोदंड, सं. पुं. (सं. न.) धनुस् (न.) ।

(सं. पुं.) भूः (स्त्री.) २. देशविशेषः ।

कोदो-दो, सं. पुं. (सं. कोद्वयः) कोरद्वयः,

कुद्वयः, कुद्वालः ।

कोन, सं. पुं., दे. 'कोना' ।

कोना, सं. पुं. (सं. कोणः) अक्षः २. कोटि-

अग्निः पालिः (स्त्री.) ३. निभृतस्थानं ४.

चतुर्थभागः ।

—दार, वि., अस्त्रोपेत, कोणविशिष्ट, अग्निन् ।

—कचोना, सं. पुं., प्रत्यस्त्वं, सर्वे कोणाः ।

कोष, सं. पुं. (सं.) कोषः, रोषः ।

कोषन, वि. (सं.) समन्यु, सरोष, क्रोधिन् ।

कोपिनी, वि. स्त्री. (सं.) दे. 'क्रोधिनी' ।

कोपी, वि. पुं. (सं.-पिन्) दे. 'क्रोपी' ।

कोपीन, सं. पुं., दे. 'कोपीन' ।

कोमल, वि. (सं.) मृदु, मृदुक, स्निग्ध,

श्लक्ष्ण, मसृण, सुस्पर्श २. नृदुल, पेलव,

सुकुमार, सौम्य ३. अपरिपक्व, अप्रौढ

४. मनोहर, अभिरामा । (सं. पुं.) स्वरभेदः

(संगीत०) ।

कोमलता, सं. स्त्री. (सं.) नृदुता, किमृता, सुकु-

मारता, पेलवता, अपरिपक्वं, मनोहारिता इ.

कोयल, सं. स्त्री. दे. 'कोकिल' २. लताभेदः ।

कोयला, सं. पुं. (सं. कोकिलः) कोकिलः,

दग्धकाष्ठं, स्त्रारः ।

—लकडी का, सं. पुं. काष्ठ-कोकिलः-अक्षरः ।

—पत्थर का, सं. पुं., प्रस्तर-अश्म-कोकिलः ।

कोया, सं. पुं. (सं. कोणः >) अपांगः-गकः,

चक्षुःकोणः, भयनोपागतः ।

कोर, सं. स्त्री. (सं. कोणः) उपांगः, प्रांतः,

परिसरः, उपकंठः २. कोणः अन्नः ३. द्वेषः

४. दोषः, अवशुणः ५. अन्नादीनां धारा ।

६. पंक्तिः (स्त्री.), श्रेणी-गणः (स्त्री.) ।

—कसर, सं. स्त्री. (हिं. + फ्रा. कसर) वैकल्यं,

दोषः, छिद्रं, न्यूनता २. न्यूनताधिकता ।

कोरक, सं. पुं. (सं.) कलिका, दे. 'कली'

२. मृणालं ३. चारनामकंघट्टव्यम् ।

कोरा, वि. (सं. केवल) अग्निः, नय, नवीन,

नूतन, अव्यवहृत, अप्रयुक्त २. अपोत,

अक्षालित ३. अरंजित ४. अचिन्तित ५. अलि-

कोरि

[१३१]

कोस

खित ६. वंचित, रहित, विहीन ७. लिप्यलंक
८. मूर्ख ९. निर्धन १०. केवल ।

—जवाब, सं. पुं., एकान्त-अत्यन्त-निराकरण-
प्रत्यास्थानं-निषेधः ।

—चयना, मु०. अत्यन्त-नितान्त-मुच्-विमुच्
(कर्म.) ।

—रहना, मु. भग्नाश-अकृतार्थ-मनोदत्त (वि.)
स्था (स्वा. प. अ.) ।

—कोरा सुमाना, मु., रसष्टं वद् (भ्र. प. से.),
२. भस् (चु. आ. से.), आ-अधि, क्षिप
(तु. प. अ.) ।

कोरि, वि., दे. 'कोटि' ।

कोरी, सं. पुं. (सं. कोलः >) आर्य, पटकार-
कुविदः ।

कोर्ट, सं. पुं. (अं.) न्यायालयः, धर्माधिकरणम्
२. राज-नुप, सभा ३. न्यायासनम् ।

—आर्च् वाह्स, सं. पुं., बालकविधवादि-
संपत्तिप्रबन्धकः विभागः ।

—फीस, सं. स्त्री., न्यायशुल्कः-चक्रम् ।

—मार्शल, सैनिकन्यायालयः २. सैनिक-
न्यायेन दण्डनम् ।

—शिप, सं. स्त्री., विवाह, अनुनयः-याचना ।

कोल' सं. पुं. (सं.) शू (सू) करः, किरिः
(पुं.) २. उपगृहः, आलिंगनं ३. क्रोडं, अंकः
४. वन्यजातिविशेषः ५. कृष्णमरिचं ६. दे.
'तेल' ७. बद्रीफलभेदः ८. दक्षिणदिशि
देशविशेषः ।

कोल', सं. पुं. (अं.) अंगरः, कोकिलः ।

—गैस, सं. स्त्री. (सं.) अक्षरवातिः (स्त्री.) ।

—टार, सं. पुं. (सं.) कोलतारं, तारकोलम् ।
चार—, सं. पुं., काष्ठाहारः ।

स्टीम—, सं. पुं., वाष्पाहारः ।

कोलाहल, सं. पुं. (सं.) कलकलः, कालकोलः,
तुमुल, उल्काशः, गिहलः, विरावः ।

—मचाना, कि. सं., कोलाहल-कलकलं, ऊ,
आ-धि, कुश (स्वा. प. अ.) ।

कोली, सं. पुं. (सं. कोलः >) तंतुत्रायः,
पटकारः ।

कोक्कू, सं. पुं. (हिं. कुल्हाड़ी) १. चक्रं, तेलपे-
ष्णी, तिलपेषप्रयंत्रं २. श्शु-रसाल, पेषणी ।

—काट कर मुँगरी बनाना, मु., अल्पलाभाय
बहुदानि कृ ।

—का बैल, मु. परम, उच्चमिद-श्लोणिम् ।

—में पिरवा देना, मु. अत्यंत पीड (चु.) ।

कोविद्, सं. पुं. (सं.) विद्वत् (पुं.), पंडितः ।

कोश, सं. पुं. (सं. कोश-पः), अभिधानं,
शब्दसंग्रहः २. खण्डादिः वेधनं-पुटः-कोषः

कोशः ३. आवरणं, पुटं, पिधानं, आच्छादनं
४. अंडं, पेशी-शिशः (स्त्री.) ५. मंजुषः, संपुटः-
टकः ६. कलिका, मुकुलं ७. मद्यपान, पात्रं

चयकः ८. पुटः-टं, स्थूलः ९. संचितधनं
१०. समूहः ११. अंडकोषः १२. योनिः
(स्त्री.) १३. पट्टकीटगृहम् १४. आत्मनः

पंचावेष्टनानि (वेदांत) १५. आकरोत्थं अभिनयं
सुवर्णं रजतं वा १६. निधिः (पुं.), निधानं ।

—कार, सं. पुं. (सं.) अभिधान-शब्दसंग्रहः,
कारः-संपादकः २. पट्टकीटः ।

—पाल, सं. पुं. (सं.) कोशा (वा) ष्यधः,
कोशाधीशः ।

कोशाक, सं. पुं. (सं.) अण्डं, पेशी
२. अण्डकोषः ।

कोशल, सं. पुं. (सं.) देशविशेषः २. अयोध्या ।

कोशलिक, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'कौशलिक' ।

कोशागार, सं. पुं. (सं. पुं. न.) कोशगृहं,
मांडागारः-रं ।

कोशिका, सं. स्त्री. (सं.) चयकः, शरावः ।
२. कंसः, गल्वर्कः ।

कोशिश, सं. स्त्री. (फ्रा.) यरनः, उद्योगः,
परिश्रमः ।

कोष, सं. पुं. (सं.) दे. 'कोश' ।

—अध्यक्ष, सं. पुं. (सं.) दे. कोष-पालः-अधीशः ।

कोष्ठ, सं. पुं. (सं.) उदरमध्यं २. गर्भाशयादयः
आवरणविशिष्टा अवयवाः ३. गृहमध्यं

४. प्राकारः ५. धान्यागारः-रम् ६. परिवेष्टित-
स्थानम् ।

—बद्धता, सं. स्त्री. दे. 'कब्ज' ।

कोष्ठक, सं. पुं. (सं.) परिवेष्टकपदार्थः
(दीवार, रेखादि) २. सारणी, अनेकगृहयुतं

चक्रं, अंक-अक्षर, जालं ३. अर्द्धचंद्रद्वयं [उ. (),
[], { }] ४. सारणीवर्गः ।

कोस, सं. पुं. (सं. कोशः) सहस्रधनुस्
(न.), चतुःसहस्र (अष्टसहस्र) हस्तपरिमाणं,
द्विसहस्रदंडः, गन्धूतं, मौल-द्वयं-युग्मं ।

कोसों दूर

[१३२]

कौमारिक

कोसों दूर, क्रि. वि., अति-दूर-दूरे-दूरतः, सुदूरं ।

कोसों दूर रहना, गु., सुदूर-पृथक् स्था (भ्वा. प. अ.) ।

कोसना, क्रि. सू., (सं. कोशनं >) अःकुक्ष् (भ्वा. प. अ.), गर्ह् (भ्वा. आ. से.), अभिशंस् (भ्वा. प. से.), शप् (भ्वा. उ. अ.) ।

पानी पी पी कर कोसना, गु., अत्यन्तं आकुश ह. ।

कोह, सं. पुं. (फ्रा.) पर्वतः, गिरिः ।

—नूर, सं. पुं. (फ्रा + अ.) हीरकविशेषः ।

कोहनी, सं. स्त्री, दे 'कुहनी' ।

कोहरा, सं. पुं., दे. 'कुहरा' ।

कोहान, सं. पुं. (फ्रा.) उष्ण-कमेलक, ककुद्-ककुदम् ।

कोहिस्तान, सं. पुं. (फ्रा.) पर्वतीयप्रदेशः, शैली स्थली ।

कोहिस्तानी, वि. (फ्रा.) पर्वतीय, शैल (स्त्री स्त्री.), पर्वतमय (यी स्त्री.), जगप्राय, सपर्वत । सं. पुं., पर्वत-गिरि-अद्रि-वार्त्सन्, शैलाटः ।

कौष, सं. स्त्री. [सं. कच्छुः (स्त्री.) >] रोमवली, शूकशिबी, वृष्या, २. तरयाः बीजकोषः ।

कौषी, सं. स्त्री. (सं. कौषिका) वेणुशाखा, कुञ्चिका ।

कौष, सं. स्त्री. (हिं कौषना >) विद्युद्विलासः, तडिदद्युतिः, (स्त्री.) ज्वलारपुरणं ।

कौषना, क्रि. अ. (सं. कननं = चमकना + अंध >) विद्युत् (भ्वा. आ. से.) विद्युत् विलस् (भ्वा. प. से.), सहसा प्रकाश (भ्वा. आ. से.) स्फुर् (तु. प. से.) ।

कौषा, सं. पुं., दे. 'कौष' ।

कौसिल, सं. स्त्री. (अं.) सभा, संसद, सदस् (सब स्त्री.) ।

कौआ, सं. पुं. दे. 'कौषा' ।

कौच, सं. पुं. (अं.) स्यष्टिका, सन्दी, निपसा, पंचकः ।

कौटिल्य, सं. पुं. (सं.) चाणक्यः, चंद्रगुप्तमौर्यस्य महामन्त्रिन् । (सं. न.) वक्रता, कुटिलता २. दुष्टता, छलं, कपटम् ।

कौटुंबिक, वि. (सं.) कुटुंब-गृहजन-परिवार, संबंधिन्-विषयक, कौल, पारिवारिक, गृह्य ।

कौडा, सं. पुं. (सं. कपर्दकः) बराटः, बाल-क्रीडकः ।

कौडी, सं. स्त्री. (सं. कपर्दिका) बराटिका, काकिनी-णी । २. द्रव्यं, धनं ३. अक्षि-नयनः, गोलः—गोलं ४. मांसग्रंथिः (पुं.) ५. कृपाणाग्रं ६. अधीननुपतिभ्यो ग्राह्यः करः ७. उरोऽस्थि (न.) ।

(दो)—का,—काम था नहीं, सु. अल्पमूल्य, वृणप्राय, निरर्थक, असार ।

—भर, सु., अत्यल्प, किंचिद्, स्वल्प ।

—को मुहताज या संग होना, सु., अर्द्धि-नस्थं, अत्यंतदारिद्र्यं, मित्रान्तिनिर्भरता ।

—चुकाना, मु., श्रमणं निःश्रेयं परिशुध् (प्रे.)—अपाठ ।

—जोड़ना, गु., धनं संचि (भ्वा. प. अ.)—संग्रह् (क्. प. से.) ।

कानो या फूटो कौडी, सु. अल्पमूल्य, वित्तं-द्रव्यम् । कौटियों के गोल, सु., अल्पमूल्येन ।

कौतुक, सं. पुं. (सं. न.) कृ(कौ)तूहलं, कुतुकं, जिज्ञासा २. आश्चर्यं ३. विनोदः, नर्मन् (न.) ४. हर्षः ५. खेला, क्रीडा ।

कौतुकी, वि. (सं. कित्) सलील, सोहास, प्रौढाप्रिय, विनोदप्रिय, नर्मगर्भ ।

कौतूहल, सं. पुं., दे. 'कूतूहल' ।

कौम, सर्व. (सं. कौमु) 'कि' के तीनों लिंगों के रूप (कः, का, कि ह.) ।

—कौम, कः काः ३. । दो में से—कतरः, कतरा, कतरत् (पुं. सं. न.) बहुतां में से—कतमः, कतमा, कतमत् (पुं. स्त्री. न.) ।

कौप, वि. (सं.) कृप अवद, विषयक-सम्बन्धिन् ।

कौपीन, सं. पुं. (सं. न.) मलमलकः, धटी, पटिका; कच्छत्र, कच्छटिका, ५. रुद्रलिंगे, गुच्छांगानि ३. पापं ४. अवार्यम् ।

कौवेरी, सं. स्त्री. (सं.) उत्तरदिशा, उदीची ।

कौम, सं. स्त्री. (अ.) वलीः, जातिः (स्त्री.) २. कुलं, वंशः ३. देशः, राष्ट्रं, विषयः ।

कौमार, सं. पुं. (सं. न.) कुमारारवस्था (५ अथवा १६ वर्ष पर्यन्त), बालत्वम् ।

कौमारिक, वि. (सं.) कुमार-विषयक-सम्बन्धिन् । सं. पुं., कन्यानामेव जनकः ।

कौमारिकेय

[१३३]

क्रिकेट

कौमारिकेय, सं. पुं. (सं.) अनूढा-कुमारी-
कन्या-पुत्र-तनयः ।

कौमियत, सं. स्त्री. (अ.) राष्ट्रियता, जातीयता ।

कौमी, वि. (अ.) राष्ट्रिः श्री ष्य, देशीय,
जातीय ।

—हुकुमन, सं. स्त्री., राष्ट्रियशासनं, स्वराज्यं ।

कौमुदी, सं. स्त्री. (सं.) ज्योत्स्ना, दे. 'चौदनी' ।

कौर, सं. पुं. (सं. कवचः) आसः, गुल्फकः,
पिंडः ।

कौरव, सं. पुं. (सं.) कुहराजसंतानः ।

—पति, सं. पुं., दुर्बोधनः ।

कौल, वि. (सं.) दे. 'कुलीन' ।

कौल, सं. पुं., दे. 'कौर' ।

कौल, सं. पुं. (अ.) प्रतिष्ठा, समयः
२. उक्तिः (स्त्री.) ।

कौचा, सं. पुं. (सं. काकः) वायसः, ध्वांसः,
मौकुलिः (पुं.), एकाक्षः उल्कारिः (पुं.),
करटः, कुणः, द्रोणः २. अलिबिहा, शुद्धिका,
लंढिका ३. धूर्तः ४. बंधकः ।

—परी, सं. स्त्री., अतिक्रूरपिणी नारी ।

—उठाना, मु. बालशुद्धिकां उरस्था (प्रे.) ।

कौशल, सं. पुं. (सं. न.) चालुर्यं, दाक्ष्यं, नैपुण्यं
२. कुशलं, मंगलम् ।

कौशलिक, सं. पुं. (सं. न.) उत्कोचः, ढोकनं
लम्बा ।

कौशिक, सं. पुं. (सं.) इन्द्रः २. गाधिनृपः
३. विश्वामित्रः ४. कोषाध्यक्षः ५. कोशकारः
६. उल्फकः ७. नङ्गलः ८. कौशेयवस्त्रं ९. मन्त्रा
१०. उपपुराणविशेषः ।

कौशे(पे)य, वि. (सं.) कौश(प), कौशि(पि)क ।
सं. पुं. (सं. न.) क्षीरं, चीनांशुकं, पट्टः-ट्टं,
पट्टांशुकं, दुग्धं, चीनवाससं (न.) ।

कौस्तुभ, सं. पुं. (सं.) विष्णुवक्षःस्थो मणिः
(पुं.) ।

कया, सर्व. (सं. किम्) ।

वि., कियत्, २. अत्यधिक ३. कीदृश, विचित्र
४. अत्युत्तम ।

अव्य. किम् ।

—कहना है या—बात है, मु., साध, साधु-
साधु, सुशु, उत्तमं (सब अव्य.) ।

—खूब, उ., साधु, सुधु इ. ।

क्यारी, सं. स्त्री. (सं. केदारः) राजिका ।

क्यों, कि. वि. (सं. किन्) किं, केन हेतुना-
कारणतः, किन्निमित्तं, किमर्थं, कुतः, कस्मात्
२. कया रीत्या, कथम् ।

—कर, कथं, केन प्रकारेण २. किमर्थं, किम् ।

—कि,—यतः, यत्, यस्मात् ।

—नहीं, निःसंदेहं, निःसंशयं, अवश्यं, भ्रुवम् ।

कदन, सं. पुं. (सं. न.) रोदनं, रुदितं, अश्रु-
पातः २. परिदेवना-नं, आवि, क्रोशः ।

कलु, सं. पुं. (सं.) यज्ञः, चागः २. संकल्पः
३. अमिलाषः ४. विवेकः ५. इन्द्रियं ६. जीवः
७. विष्णुः ८. आपादः ९. श्रीकृष्णपुत्रः ।

क्रम, सं. पुं. (सं.) अनुक्रमः, आनुपूर्वी-व्यं,
पारंपर्यं, परंपरा, विन्यासः, व्यवस्था, संबि-
धानं, विरचनं २. प्रकार, विधिः (पुं.) रीतिः
(स्त्री.) ३. पादविन्यासः ४. काव्यालंकारभेदः ।

—करके या से, कि. वि., अनुक्रमं, यथाक्रमं,
अनुपूर्वशः-आनुपूर्व्येण २. शनैः शनैः, अल्पा-
ल्पशः, उत्तरोत्तरम् ।

क्रमण, सं. पुं. (सं.) पादः, चरणः २. अक्षः,
घोटः (सं. न.) गमनं, चलनम् २. उल्लंघनम्,
अतिक्रमणम् ।

क्रमशः कि. वि. (सं.) दे. 'क्रम क्रम करके' ।

कर्मांक, सं. पुं. (सं.) क्रम, संख्या-गणना ।

क्रमागत, वि. (सं.) क्रम-आनुपूर्व्येण, आगत-
प्राप्त २. आनुवंशिक, परंपरा-प्राप्त ।

क्रमानुसार, कि. वि. (सं.-रम्) क्रमशः,
यथाक्रमं, आनुपूर्व्येण, अनुपूर्वशः (सब अव्य.) ।

क्रमिक, वि. (सं.) क्रम-परम्परा, आगत-
आगत, अनुपूर्व, क्रमबद्ध, आनुक्रमिक (—की
स्त्री.) २. परम्परीयण, पैतृक (—की स्त्री.),
पितृय ।

क्रमुक, सं. पुं. (सं.) दे. 'सुपारी' ।

क्रय, सं. पुं. (सं.) दे. 'खरीद' ।

—विक्रय, सं. पुं., दे. 'खरीद-क्रयकृत' ।

क्रय्य, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'मांस' ।

क्रय्यादि, सं. पुं. (सं.) राससः, पिशाचः
२. सिंहः ३. श्येनः ४. मांसाक्षिन् (पुं.) ।

क्रान्ति सं. स्त्री. (सं.) महत्परिवर्तनं, परिवर्तनं,
२. चरणव्यसनं ३. सूर्यग्रमणमार्गः ४. राज-
द्रोहः-विरोधः, राक्षसविल्लवः, प्रजाक्षोभः ।

क्रिकेट, सं. पुं. (अं.) पट्टगेन्दुकम् ।

क्रिया, सं. स्त्री. (सं.) कर्मन् (न.), कार्यं, व्यापारः २. चेष्टा ३. आरम्भः ४. व्यापार-निर्देशकः शब्दः (व्या.) ५. नित्यकर्मन् (न.) ६. श्राद्धादिकर्मन् ७. चिकित्सा ।
 —कर्म, सं. पुं. (सं. न.) अन्वयेष्टि-गृत्तक-क्रिया-कर्मन् ।
 —विशेषण, सं. पुं. (सं. न.) क्रियाया भाव-कालरीत्यादिघोतकः शब्दः (व्या.) ।
 —हृन्दित्रय, सं. स्त्री. (सं. न.) दे. 'कर्मन्दित्रय' क्रिस्टल, सं. पुं. (अं.) स्फटम् ।
 क्रिस्ता(श्टा)न, सं. पुं. (अं. क्रिश्चियन्), खिस्तानुयायिन् ।
 क्रीडा, सं. स्त्री. (सं.) खेला, लीला, कूर्दनं, खेलनं, विहारः २. क्रीतुकं, विनोदः विलासः ।
 क्रीत, वि. (सं.) कृतकृत्य, मूर्ध्वेन लब्ध ।
 क्रीतक, सं. पुं. (सं.) क्रीतपुत्रः ।
 क्रुद्ध, वि. (सं.) दुःपित, रुष्ट, कोपिन्, सामर्थ्य, सकोप, सरोष, समन्वु, क्रोध-कोप, -युक्त ।
 क्रूर, वि. (सं.) निर्दय, कठोर, नृशंस, पाषाण-कठिन, हृदय, निर्धृण, क्रूरकर्मन्, निष्करण २. परपीडक ३. कठिन ४. तीक्ष्ण ५. उष्ण ६. नीच ७. घोर ।
 —कर्मा, वि. (सं. मन्) पौर, निर्दय, दाहण ।
 क्रूता, सं. स्त्री. (सं.) निर्दयता, कठोरता, नृशंसता इ. । २. रौद्रता, तीक्ष्णता ३. दुष्टता ।
 क्रोड, सं. पुं. (सं. न.) बाह्योर्ध्वं, युजांतरं, उपस्थः, उत्संगः, भोगः, अंकः २. उरस्-वक्षस् (न.), उत्सन् ।
 —पत्र, सं. पुं. (सं. न.) परिशिष्टं, अंकपत्रं, पूरकपत्रम् ।
 क्रोध, सं. पुं. (सं.) कोपः, रोषः, अमर्षः, मन्वुः (पुं.), प्रतिघ्नः, भीमः, कुषा, रुषा, रूप-क्रुध् (स्त्री.) दे. 'गुस्ता' ।
 —करना, क्रि. अ., क्रुध् (दि. प. अ.), क्रुप् (दि. प. से.) ।
 क्रोडित, वि. (सं.) दे. 'क्रुद्ध' ।
 क्रोधी, वि. (सं. -धिन्) कोपिन्, रोपिन्, अमर्षिन्, दे. 'क्रुद्ध' ।
 क्रोधा, सं. पुं. (सं.) दे. कोस' ।
 क्रौंच, सं. पुं. (सं.) कृच-न्त्रा, क्रौंचा, कृच (पुं.), कलिका, कालि(ली)काः ।
 क्रुध, सं. पुं. (अं.) यौष्ठीगृहम् ।

क्रुर्क, सं. पुं. (अं.) लिपि-पंजी, कारः, लेखकः, कायस्थः, वीर(ल)कः ।
 क्रांत, वि. (सं.) म्लान, खिन्न, परि, श्रांत, जातवेद, आयस्त ।
 —मना, वि. (सं. -नम्) दुर्गन्तक, विमनस्क, खिन्न ।
 क्रांति, सं. स्त्री. (सं.) श्रमः इमः, आयासः, श्रान्तिः (स्त्री.), रूढः अवसादः ।
 क्राक, सं. पुं. (अं.) कुड्य-भित्ति, -पथी ।
 —टावर, सं. पुं., पंटा, -आलयः-गृहम् ।
 क्रिष्ट, वि. (सं.) दुःखित, क्लेशित, आर्त, पीडित २. दुष्कार, कठिन, दुस्साध्य ।
 क्रीव, सं. पुं. (सं.) पं (शं) जः, संबुः, शंठः, नपुंसकः, पुरुवश्वहीन २. दे. 'कायर' ।
 क्रीवता, सं. स्त्री. (सं.) शं(पं)डता, नपुंसकता २. कातरता ।
 क्रुद्ध, सं. पुं. (सं.) अर्द्रता, रतेमः, तेमः । २. प्रवेदः ।
 क्रेश, सं. पुं. (सं.) दुःखं, कष्टं, पीडा, व्यथा, वेदना, चिता, आक्षयः, आदीनवः ।
 क्लेशित, वि. (सं.) दे. 'क्षिष्ट' (१) ।
 क्लेश्य, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'क्षीवता' ।
 क्लोम, सं. पुं. (सं. न.) कोमं, श्लोमन् (न.), तिलकं, पुष्पुंसं, दे. 'फेफडा' ।
 क्लोरीन, सं. स्त्री. (अं.) नीरजी, हरिदम् ।
 क्लोरोफार्म, सं. पुं. (अं.) मूर्च्छकम्, संज्ञालो-पकम् (औषधभेदः) ।
 क्लणित, वि. (सं.) ध्वनित, सरय, सद्भव । सं. पुं. (सं. न.) शब्दः, स्वनः ।
 कथित, वि. (सं.) आण, श्रुत, अपितः ।
 काथ, सं. पुं. (सं.) दे. 'काढा' ।
 धारंटाइन, सं. पुं. (अं.) निषिद्धसंसर्गगृहं, २. संसर्गप्रतिबन्धः, भगनागमननिषेधः ।
 कारा, वि. (सं. दुमार) दे. 'वृंवारा' ।
 कार्टर, सं. पुं. (अं.) (राज्यसंस्थादिनिमित्तं) गृहं, गेहं, सदनं, भवनम् । २. परदः, चतुर्थीशः ३. त्रिमासम्, वर्षपादः ।
 क्रीन्, सं. स्त्री. (अं.) राशी, राजपत्नी ।
 क्षंतव्य, वि. (सं.) क्षमार्हं, मर्षणीय, सोलव्य ।
 क्षण, सं. पुं. (सं.) अत्यल्पसमयः, सुहृत्तः, निमेषः, पलं, विशात्कालपरिमितकालः २. समयः ३. अवसरः ४. उत्सवः ।

क्षणिक

[१३५]

क्षीण

—प्रभा, सं. स्त्री., विद्युत् (स्त्री.), चंचल ।
 —संगुर, वि., विनाशर, क्षणिक, अस्थिर ।
 —भर, कि. वि., क्षणमात्रं, मुहूर्त-पल, मात्रम् ।
 क्षणिक, वि. (सं.) क्षणशायिन्, अनित्य,
 अस्थिर, विनाशर, निस्तार, अस्थायिन् ।
 क्षत, वि. (सं.) व्रणित, भिन्नदेह, लङ्घित,
 क्षतियुक्त, आक्षत ।
 सं. पुं. (सं. न.) व्रणः, क्षतिः (स्त्री.), अरुस्
 (न.), आघातः, ईर्ष्य २. स्फोटः, पिटकः ।
 —द्योति, वि. स्त्री. (सं.) संशुक्ता, कृतसद्भासा ।
 —विह्वल, वि. (सं.) अतीव व्रणित-विद्ध-आहत ।
 क्षति, सं. स्त्री. (सं.) क्षयः, नाशः २. अपचयः,
 हानिः (स्त्री.) ३. व्रणः, ईर्ष्यम् ।
 क्षत्र, सं. पुं. (सं. न.) बलं, शक्तिः (स्त्री.)
 २. राष्ट्र ३. धनं ४. शरीरं ५. जलं ६. तमर-
 वृक्षः । (सं. पुं.) क्षत्रियः ।
 —पति, सं. पुं., नृपः ।
 क्षत्राणी, सं. स्त्री. (सं. क्षत्रियाणी) (क्षत्रिय
 आनि की स्त्री) क्षत्रिया, क्षत्रिय(यि)का, क्षत्रि-
 याणी २. (क्षत्रिय की पत्नी) क्षत्रियाणी, क्षत्रियो ।
 क्षत्रिय, सं. पुं. (सं.) वर्णविशेषः २. राज्ञ्यः,
 बाहुजः, मूर्धाभिरिक्त, क्षयः ३. योषः, भटः,
 धोरः ।
 क्षत्री, सं. पुं. दे. 'क्षत्रिय' ।
 क्षणिक, सं. पुं. (सं.) दिगम्बरयतिः २. बौद्ध-
 भिक्षुः ३. कविविशेषः । ि., निर्लेज ।
 क्षपा, सं. स्त्री. (सं.) रात्रिः (स्त्री.), निशा,
 यामिनी ।
 —कर, -नाथ, सं. पुं. (सं.) चन्द्रः, सोमः ।
 क्षम, वि. (सं.) शक्त, समर्थ, उपयुक्त, योग्य ।
 क्षमता, सं. स्त्री. (सं.) योग्यता, सामर्थ्य,
 शक्तिः (स्त्री.) ।
 क्षमा, सं. स्त्री. (सं.) क्षान्तिः (स्त्री.), तितिक्षा,
 सहिष्णुता, मर्षणं, सहनशीलता २. पृथिवी
 ३. खदिरवृक्षः, ४. दक्षकन्या ५. दुर्गा ६. वेप्र-
 वती नदी ७. राधिकासखी ८. वर्णवृत्तभेदः ।
 —करना, कि. स., क्षम् (भ्वा. आ. वे; दि. प.
 वे.), सह् (भ्वा. आ. से.), मृष (दि. ज. से.) ।
 —शील, वि. (सं.) क्षमिन्, क्षमावत्, क्षमिन्,
 सहिष्णु, सहन, क्षम्युः, तिमिष्ठ, क्षमायुक्त ।
 क्षमावान्, वि. (सं. वच्.) दे. 'क्षमाशील' ।

क्षम्य, वि. (सं.) क्षम्य, क्षमार्हं, क्षमोचित,
 गर्भणीय, सोढव्य ।
 क्षय, सं. पुं. (सं.) अपचयः, हासः २. कल्पांतः
 प्रलयः ३. नाशः, प्रवर्धनः ४. गृहं ५. यक्ष्मः,
 यक्ष्मन् (पुं.), राजयक्ष्मन् (पुं.) ६. रोगः
 ७. अंतः, अवसानं, क्षयरोगः, शोषः, रोगराजः,
 गदाग्रणीः (पुं.), अतिरोगः, रोगाधीशः
 नृपामयः ।
 —कास, सं. पुं. (सं.) क्षयधुः, यक्ष्मकासः (पुं.) ।
 —मास, सं. पुं. (सं.) मल्लिखलः, मल-
 अधिक, मासः ।
 —रोग, सं. पुं., दे. 'क्षय' (५) ।
 —रोगी, सं. पुं. (सं-गिन्) क्षयिन्,
 यक्ष्मिन्, रोगराज-शोष, म्रस्तः ।
 क्षयी, वि. (सं-यिन्) अपचयिन्, हासिन्
 २. शोषिन्, यक्ष्मिन्, रोगराजपीडित ।
 —रोग, सं-पुं., दे. 'क्षय' (५) ।
 क्षर, वि. (सं.) नदवर, अनित्य ।
 क्षरण, सं. पुं. (सं. न.) शनैः शनैः-विद्युशः-
 विप्रवृत्तनेण गलनं-स्यदगं-स्त्रवणम् ।
 क्षांत, वि. (सं.) क्षमाशील, क्षमावत्, क्षमिन्
 २. सहिष्णु, सहनशील ।
 क्षान्ति, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'क्षमा' (१) ।
 क्षार, सं. पुं. (सं.) सज्जिका, विह्वलवर्णं २. लवणं
 ३. दे. 'शोरा' ४. दे. 'सुहागा' ५. भरस्मन्
 (न.) ।
 क्षिति, सं. स्त्री. (सं.) भूमिः (स्त्री.), पृथिवी
 २. क्षयः, हासः, नाशः ।
 —पाल, सं. पुं. (सं.) नृपः ।
 क्षितिज, सं. पुं. (सं. न.) दिक्-चक्र-तटं,
 दिगंतः, दिङ्मांडलं, अंबरांतः, अकाशकक्षा ।
 २. मंगलमहः, कुजः ३. वृक्षः ४. दे. 'केचुआ' ।
 क्षिप्त, वि. (सं.) त्वक्त, विरुष्ट, प्रारत २. विकीर्ण
 ३. अवज्ञात ४. पतित ५. वातरोगग्रस्त ।
 क्षिप्र, कि. वि. (सं. न.) द्रुतं, सपदि, द्राक्,
 दे. 'शीघ्र' ।
 वि., स्वरित, सत्वर, जवन, वेगवत्, शीघ्र ।
 —हस्त, वि. (सं.) शीघ्रकारिन्, आशुकर्तृ ।
 क्षीण, वि. (सं.) सूक्ष्म, प्र-जनु, इलक्षण
 २. कृशांग, कृश, क्षाम, क्षीण-शुष्क, मांस
 ३. नष्ट, ध्वस्त, क्षयंगत ।

लीणता, सं. स्त्री. (सं.) दुर्बलता, निःशक्तता
२. सूक्ष्मता, तनुता ३. कृशता, क्षामता
४. हासः, अपचयः, नाशः ।

लीर, सं. पुं. (सं. न.) दुग्धं, पयस् (न.)
२. जलं ३. पायसं-सः ।

—निधि, सं. पुं. (सं.) सागरः ।

—नीर, सं. पुं. आलिंगनं २. मिश्रणम् ।

—सागर, सं. पुं. (सं.) क्षीरसागरः (पुं.)
दुग्ध-सागरः-समुद्रः, क्षीरोदः ।

—सार, सं. पुं. (सं.) 'मपखन' ।

लीरज, सं. पुं. (सं.) चंद्रः २. शंखः ३. कमलं
४. वधि (न.) ।

लीरजा, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'लक्ष्मी' ।

लीरधि, सं. पुं. (सं.) सागरः, समुद्रः ।

लीरोद, सं. पुं. (सं.) दे. 'क्षीरसागर' ।

लीव, वि. (सं.) लज्जद, समद, नदोन्मत्त ।

लूण, वि. (सं.) प्रहृत, चूर्णीकृत, खंडशो भिन्न ।

लूद्र, वि. (सं.) अथम, निकृष्ट, नीच २. अल्प,
स्तोक ३. कृपण ४. कुटिल ५. दरिद्र ।

लूद्रता, सं. स्त्री. (सं.) तुच्छता, निकृष्टता
२. कुटिलता ३. दरिद्रता ।

लूधा, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'भूल' ।

लूधातुर

लूधात

लूधित

वि. (सं.) दे. 'भूखा' ।

लूप, सं. पुं. (सं.) क्षुपकः, क्षुद्रवृक्षः गुल्मः-म् ।

लूध, वि. (सं.) व्याकुल, विह्वल, आतुर,
उद्विग्न २. चंचल ३. भीत, प्रसन्न ४. क्रुद्ध ।

लूरी, सं. पुं. (सं.) नापितस्य लोमच्छेदकालं, क्षीरी,
क्षुरी, खुरः २. शफः-कः, गवादीनां पादाद्यम् ।

लूरी, सं. पुं. (सं.) नापितः, क्षौरिकः,
मुंडः, मुंडिन् ।

लूलक, वि. (सं.) रक्षय, स्तोक २. दुष्ट, दुर्बल
३. निर्धन, दरिद्र । सं. पुं., बालः, बालकः ।

लूत्र, सं. पुं. (सं. न.) केद (दा) रः, भूमिः
(स्त्री.), वप्रः-प्रं । २. समभूमिः ३. उत्पत्ति-
स्थानं, उद्भवः, उत्पन्नः ४. प्रवेशः ५. तीर्थस्थानं

६. राशिः (पुं., मेघादि) ७. पत्नी ८. शरीरं
९. अंतःकरणं १०. रेखावेष्टितं स्थानम् ।

—गणित, सं. पुं. (सं.) गणितशास्त्रनिदः ।

—फल, सं. पुं. (सं. न.) कर्णपरिमाणम् ।

लूत्रज, सं. पुं. (सं.) निदोमजपुत्रः (धर्मशास्त्र) ।

लूत्रज, सं. पुं. (सं.) जीवः २. इक्ष्वरः
३. उदाणः । वि., बाल, दक्ष, निदुग्ध ।

लूष, सं. पुं. (सं.) क्षेपणं, घोरणं, प्राच्यनं, विस-
र्जनं २. निन्दः ३. यापनं ४. दूरता ।

लूषक, वि. (सं.) क्षेप्यु, घ्रासक, घोरक २. मिश्रित
३. निन्दनीय । सं. पुं., नाविकः २. प्रक्षिप्त-
निवेशित, लेखः ।

लूषण, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'क्षेप' (१-३) ।

लूषणी, सं. स्त्री. (सं.) अस्त्रविशेषः २. नौका-
दंडः, क्षेपणिः (स्त्री.) ।

लूष, सं. पुं. (सं. पुं. न.) लक्ष्यरक्षणं
प्राप्तयज्ञा २. मंगलं, कुशलं ३. अभ्युदयः
४. आनंदः ५. मुक्तिः (स्त्री.) ।

लूणि, सं. स्त्री. (सं.) क्षोणी पृथिवी ।

—पति, —पाल, सं. पुं. (सं.) लूणः, भूपः ।

लूोद, सं. पुं. (सं.) चूर्णं, पिष्टं २. देपणं ३. जलं ।

लूोभ, सं. पुं. (सं.) अशानिः-वनिर्भूतिः (स्त्री.),
विचचंचलस्यं व्यग्रता, उद्वेगः, व्याकुलता २. भयं
३. शोकः ४. क्रोधः ।

लूोमित, वि. (सं.) दे. 'लूध' ।

लूोणी, सं. स्त्री. (सं.) क्षोणिः (स्त्री.), पृथिवी ।

लूोद्र, सं. पुं. (सं. न.) मधु (न.) २. जलं
३. क्षुद्रता । (सं. पुं.) चंपकवृक्षः ४. वर्ग-
संकरविशेषः ।

लूोम, सं. पुं. (सं. पुं. न.) अट्टः, अट्टालिका
(२-४) पट्ट-वृत्तसी-शण्ड-वस्त्रं ।

लूोर, सं. पुं. (सं. न.) ।

—कर्म, सं. पुं. (सं. मून् न.) दे. 'हजामत' ।

लूोरिक, सं. पुं. (सं.) दे. 'नार्द' ।

लूोसा, सं. पुं. (सं.) पृथिवी, अवनो ।

लूोवड, सं. पुं. (सं.) ध्वनिः, शब्दः २. विषं
३. कर्णरोगनिदः ।

ख

ख, वेवनागरीवर्णमालाया द्वितीयव्यंजनवर्णः,
स्वकारः ।

खं, सं. पुं. (सं. न.) शून्यस्थानं २. छिद्रं
३. आकाशं ४. इन्द्रियं ५. बिंदुः (पुं.), शून्यं
६. स्वर्गः ७. सुखं ८. नष्टान् (न.) ।

खंख, वि. (सं.) रिक्त, शून्य २. निर्जल, वन्य ।

खंखरा, वि., दे. 'खोखर' ।

खंखार, सं. पुं. दे. 'खखार' ।

खंगर, सं. पुं. (दे.) एकीभूयोर्द्विपक्षवेष्ट-
काययः । वि., अतिशुष्क ।

खंगालना

[१३७]

खचित

खंगालना, कि. सं., (सं. झालनं) ईषत् धाव् (भ्वा., चु. उ. से.)-प्रक्षल् (चु.) ।

खंज, सं. पुं. (सं.) खोरः, लोलः, खोटः, खोडः, विकल्पतिः २. पादरोगभेदः ।

खंजन, सं. पुं. (सं.) खंजरीटः, खंजलेलः, मुनिपुत्रकः, रत्ननिधिः (पुं.), गृहनीठः ।

खंजर, सं. पुं. (फ्रा.) दे. 'कटार' ।

खंजरी, सं. स्त्री. (सं. खंजरीट = एक ताल >) लघु, डमरु-विडिमाः ।

खंजरीट, सं. पुं. (सं.) दे. 'खंजन' ।

खंड, सं. पुं. (सं. खंडम्) दे. 'खौंड' ।

खंड, सं. पुं. (सं. पुं. न.) लवः, शकलः-लं, अंशः, विभागः वि. दलं, भिन्नं २. देशः ३. नवसंख्या ४. रत्नदोषभेदः ५. अध्यायः ६. पाक्यः, कृष्णलवणं ७. दिशा । वि., अल्प, लघु, अपूर्ण ।

—करना, कि. सं. खंडशः-लवशः छिद् (ह. प. अ.)-ख (क. उ. से.)-कृत् (तु. प. से.) ।

—काव्य, सं. पुं. (सं. न.) लघुप्रकथकाव्यम् ।

—प्रलय, सं. पुं. (सं.) प्रक्षालय एकदेशीय-आशिक, नाशः-विध्वंसः क्षयः ।

खंडन, सं. पुं. (सं. न.) भंजनं, वेदनं, छेदनं, कर्तनं, मोटनम् २. प्रत्याख्यानं, निराकरणं, निरसनम् ।

खंडनीय, वि. (सं.) भेत्तव्य, छेत्तव्य २. प्रत्या-द्वेष, निरसनीय ।

खंडर, सं. पुं. (सं. खंडः + हि. पर) ध्वंसाव-शेषः, जर्जर-जीर्ण-शीर्ण, गृह-नगरम् ।

खंडरिच, सं. पुं., दे. 'खंजन' ।

खंडशः, अ. (सं.) विभागशः, अंशशः, अद-यवशः (सव अल्प.) ।

खंडहर, सं. पुं., दे. 'खंडर' ।

खंडित, वि. (सं.) भग्न, वृष्टि, लन, छिन्न २. असमग्र, अपूर्ण ।

खंडक, सं. स्त्री. (अ.) परिक्षा, खेयं, राजधा-न्यादिवेष्टनखामं, २. वृहत्, अर्ध-गर्तः-अवटः ।

खंदा, वि. (फ्रा.) सहास, हासक । सं. पुं., हासः, हास्यम् ।

—पेशानी, वि. रमेरानन, हास्यमुखः ।

खंवा, खंभ, खंभा, सं. पुं. (सं. खंभः) उप-स्तंभः, अवष्टंभः, स्थापुः (पुं.), स्तूपा ।

ख, सं. पुं. (सं. न.) गर्तः-गर्तः, अवटः २. रिक्त-स्थानं ३. निर्गमः ४. बिलं, विवरं ५. इन्द्रियं ६. कृमिः ७. इषुप्रयः ८. शकटचक्रनाभि-च्छिद्रं ९. आकाशं १०. स्वर्गः ११. बिन्दुः (पुं.), शून्यं १२. ब्रह्मन् (न.) १३. शब्दः १४. वंणस्थ प्रागनाडी १५. सुखं १६. क्षेत्रं १७. पुरं । (सं. पुं.) सूर्यः ।

खवखा, सं. पुं. (अनु.) अट्टहासः, उच्चैर्हासः, प्र-अति-हासः ।

खवखा, सं. पुं. (हि. खवी का 'ख') पांचनदः क्षत्रियः २. अनुभवी पुरुषः ३. महागजः ।

खखार, सं. पुं. (अनु.) कफः, श्लेष्मन् (पुं.), संवातः, सौम्यधनुः (पुं.), धनः ।

खखारना, कि. अ. (अनु.) कर्क निःख (प्रे.)-लदगु (तु. प. से.), निष्ठिव् (भ्वा. दि. प. से.) ।

खखौडर, सं. पुं. (सं. खं + कोटरः >) तरुकोटर-स्थः स्थं खगनीडः-डं २. उल्लूक, निलयः-कुलायः ।

खग, सं. पुं. (सं.) पश्चिम (पुं.), अंडजः, नीडजः २. गंधर्वः ३. देवः ४. बाणः ५. ग्रहः ६. मेघः ७. सूर्यः ८. चंद्रः ९. वायुः (पुं.) ।

—पति, सं. पुं. (सं.) खगेशः, वैनतेयः, गरुडः, खगकेतुः (पुं.), खगराजः ।

खगोल, सं. पुं. (सं.) आकाश-गगन, नडलं, गगनाभोगः ।

—विद्या, सं. स्त्री. (सं.) ज्योतिःशास्त्रं, ज्योतिषं ।

खचखच, सं. स्त्री. (अनु.) पंके चलनध्वनिः (पुं.) ।

खचना, कि. अ. (सं. खचनं) खच-निवेश-प्रतिवप् (कर्म.) ३. अंकित-चित्रित (वि.) + भू ।

खचर, सं. पुं. (सं.) सूर्यः २. मेघः ३. ग्रहः ४. नक्षत्रं ५. वायुः ६. पश्चिन् (पुं.) ७. बाणः ८. राक्षसः । वि. नभश्चर, गगनचारिन् ।

खचरा, वि. (हिं खचर) वर्णसंकर, मिश्रज २. दुष्ट, खल ।

खचाखच, कि. वि. (अनु.) निविडं, गाढं, अविरलं, निरंतरं । वि. जनाकीर्ण, जनसंकुल ।

—भरना, कि. अ., सं-धा-कृ (कर्म.), परिपृ (कर्म.), संकुल-समाकुल (वि.) + भू ।

खचित, वि. (सं.) निवेशित, प्रस्तुप्त २. लिखित, चित्रित ।

खच्चर, सं. पुं. (देश.) वेगसरः, वेस (श) रः, अक्षतरः (स्त्री. अक्षतरी) ।

खज, सं. पुं. (सं.) खजकः, मंथनः, तकारः २. मंथनं, मंथः ३. सुद्धं, संग्रामः ४. कंठीविः (स्त्री.) ।

खजानची, सं. पुं. (फ्रा.) कोष-धन, अक्षयः-अधीशः, अर्थाधिकारिन् ।

खजाना, सं. पुं. (अ.) कोशः-षः, निधानं, निधिः (पुं.), द्रव्य, राशिः (पुं.)-संग्रहः २. वित्तं, द्रविणं ३. कोशागारं, भांडागारं, कोश (ष) गृहम् ।

खजिल, वि. (फ्रा.) लज्जित, वीर्यित, गणित ।

खजुली, सं. स्त्री. (सं. खजूः स्त्री.) दे. 'खुजली' ।

खजूर, सं. पु. स्त्री. (सं. खजूरः) (वृक्ष) खजूरी, दुग्धपर्षा, दुरारोहा, यवनेष्टा, हरिप्रिया २. (फल) खजूरं, खजूरीफलम् । ३. मिष्टान्न-भेदः, खजूरिका ।

खजूरी, वि. (हिं. खजूर) खजूरं, विषयक-संबंधिन्, खजूरं २. वेणीरूपेणप्रथित, व्यावर्तित ।

खटक, सं. स्त्री. (अनु.) भय, त्रासः २. चिंता ।

खटं वि. (सं. षट्) दे. 'खटः' ।

खट, सं. पुं. (अनु.) संवट्टजो ध्वनिः (पुं.), खटितिशब्दः, खटाखटशब्दः ।

—से, कि. वि., सपदि, शक्ति, क्षणल ।

खटकना, कि. अ. (अनु.) खटखटायते (ना. धा.), खटखटा-शब्दं कृ २. मुहुः मुहुः पीड (कर्म.)-उक्षीप् (दि. आ. से.) ३. अयुक्त-असंगीचीन-अनुचित (वि.) + प्रति-इ (कर्म.) ४. भी (जु. प. अ.), वस् (दि. प. से.) ५. वैरायते-कलहायते (ना. धा.), विरद् (भ्वा. आ. से.) ६. अनिष्टं-अपकारं आशङ्क (भ्वा. आ. से.) ।

खटका, सं. पुं. (हिं. खटकना) खटखटा, शब्दः-नादः-ध्वनिः २. भयं, त्रासः, आशंका ३. चिंता ४. कौलः-लं ५. अगलं, तीलकं ६. पादशब्दः ।

—लगाना, कि. अ., वस् (दि. प. से.), चिंतित-व्यग्र (वि.) + भू ।

खटकाना, कि. स., दे. 'खटखटाना' ।

खटकीबा, सं. पुं. (सं. खट्वाकीटः) दे. 'खटमल' ।

खटखट, सं. स्त्री. (अनु.) खटखटा, शब्दः-ध्वनिः (पुं.) नादः २. कलहः, विवादः ३. दे. 'खट्ट' ।

खटखटाना, कि. स. (अनु.) तीव्रं अभिहन् (अ. प. अ.)-तट् (चु.) प्रह् (भ्वा. प. अ.) खटखटाशब्दं कृ २. स्मृ (प्रे.) ।

खटगीर, सं. पुं., दे. 'खटमल' ।

खटछप्पर, सं. पुं., दे. 'मसहरी' ।

खटना, कि. स., दे. 'कमाना' ।

खटपट, सं. स्त्री. (अनु.) कलहः, विवादः २. खटखटाशब्दः, शब्द, वाग-निश्चितम् ।

खटबुना, सं. पुं. (हिं. खट + बुनना) खट्वा, वायः-वापः, मंच-पर्यकः, वायः-वापः ।

खटमल, सं. पुं. (सं. खट्वामलं >) उदंशः, मत्कुणः, ओकणः, ओकोदनी ।

खटमीठा, वि. (हिं. खट्टा + मीठा) अम्ल-मधुर, शुक्रभिष्ट ।

खटराग, सं. पुं. (सं. षट्वायाः) भेषदीपकादयः षट्वायाः २. कलहः ३. विस्वरता, विसंवादः ३. न्यर्थवस्तुजातम् ।

खटाई, सं. स्त्री. (हिं. खट्टा) अम्लता, शुक्तता २. अम्लः, द्रावकं ३. अम्ल-शुक्त, पदार्थः ।

—वढ़ना, सं. पुं., अम्लरोगः (अजीर्णभेदः) ।

—में पढ़ना, मु., चिरायते-मन्दायते (ना. धा.), व्याक्षिप् (कर्म.), अनिर्णीत (वि.) स्था (भ्वा. प. अ.) ।

खटाका, सं. पुं. (अनु.) खटकारः, खटिति शब्दः, नहा, शब्दः-रवः ।

खटखटा, सं. पुं. (अनु.) ३. 'खटखट' १. शिञ्जितं, कथितं । कि. वि., सखटखटाशब्दं २. अन्वतरं, सपदि ।

खटापटी, सं. स्त्री. दे. 'खटपट' १. ।

खटाव, सं. पुं. (देश.) नौकाबन्धनकोलः-लम् ।

खटाव, सं. पुं., दे. 'निवाह' ।

खटास, सं. पुं. (सं. खट्टासः-शः) गंधमाज्जिरः, वनेवसनः ।

खटास, सं. स्त्री. (हिं. खट्टा) अम्लता, शुक्तता ।

खटिक, सं. पुं., फलशकविकेनृजातिभेदः, खटिकः ।

खटिया, सं. स्त्री. (हिं. खट) लघु, खट्वा-पर्यकः-मंचः, खटिका, खट्वाका ।

खटीक

[१३९]

खत

खटीक, सं. पुं. (सं. खट्टिकः) सौनिकः, शौनिकः २. व्याधः, लम्बकः, जालिकः ३. दे. 'खटिक' ।

खटोलना, सं. पुं., दे. 'खटिया' ।

खटोला, सं. पुं. (हि. खाट) दे. 'खटिया' ।

खट्टा, वि. (सं. कट्ट >) अम्ल, शुक्त ।

सं. पुं., बीज-फल, -पूरः, दंतशयः, जम्भकः, जम्भकः छोलंगः ।

—चूक, वि., अति-अभ्यन्त, अम्ल-शुक्त ।

—मीठा, वि., दे. 'खटमीठा' ।

—सा, वि., शैषदम्ल, आशुक्त ।

जी—होना; मु., गतरूपह-निर्विण्ण-वितुण्ण (वि.) + भू ।

खट्टास, सं. स्त्री. (हि. खट्टा) दे. 'खटास' (२) ।

खट्ट, सं. पुं. (पं. खटना) धनाजैकः, विसीपार्जकः २. कर्म, करः-कारः ।

खट्टा, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'खाट' ।

खट्ट, सं. (सं. खातं) गर्तः-नाँ, अवटः. विलं, विवरं २. दरी, उपत्यका ।

खट्टकना, क्रि. अ. (अनु.) खट्टखट्टा शब्दं ह । दे. 'खट्टकना' ।

खट्टका, सं. पुं., दे. 'खट्टका' ।

खट्टकाना, क्रि. स. | दे. 'खट्टखट्टाना' ।

खट्टखट्टना, क्रि. स. |

खट्टखट्टाहट, सं. स्त्री. (हि. खट्टखट्ट) खट्टखट्टा, शब्दः-रथः-ध्वानः २. तुमुलरथः ३. कट्ट-कर्कश-रूप, -ध्वनिः (पुं.) ।

खट्टखट्टिया, सं. स्त्री. (हि. खट्टखट्ट) दे. 'पालकी' ।

खट्टग, सं. पुं. (सं. खट्टगः) असिः, दे. 'तलवार' ।

खट्टगी, वि. (सं. खट्टिगन्) आसिकः, खट्टग-धरः २. खट्टगमृगः, दे. 'गैडा' ।

खट्टखट्टाहट, सं. स्त्री. दे. 'गडनवाहट' ।

खट्टखट्टी, सं. स्त्री. दे. 'गडखट्टी' ।

खट्टमंडल, सं. पुं. दे. 'गडखट्टी' ।

खट्टसान, सं. पुं. दे. 'खरसान' ।

खट्टा, वि. (सं. खट्टक = खम्भा >) (दंडध्वज) स्थित, उद्विधत २. उच्छिद्यत, उन्नत, उत्तान, ऊर्ध्व, लम्बरूप, समर्थ, वर्तिन्-वेधिन् ३. स्थिर, अचल, स्वस्थ, निश्चल, निश्चेष्ट ४. उपस्थित, प्रस्तुत ५. सज्ज, संनद्ध, उच्चत

६. निर्मित, रचित ७. अपक, असिद्ध ८. अनु-ख्यात, अलून ९. समस्त, समग्र [खट्टी (स्त्री.) = स्थिता इ.] ।

—करना, क्रि. सं., 'खट्टा होना' के प्रे. रूप ।

—रहना, क्रि. अ., अचल-रुद्धगति (वि.) + रथा इ.) ।

—होना, क्रि. अ. (पद्धयां) रथा (भ्वा. प. अ.), उद्-स्था, २. विरन् (भ्वा. प. अ.), निवृत् (भ्वा. वा. से.), रतंभु (कर्म.), स्थिरी-निश्चली, भू ३. उपकृ, सहाय्यं कृ ४. उच्छिद्यत-उन्नत-उत्तान (वि.) + भू ५. निर्मा-विरच् (कर्म.) ६. निधा-निवेश् (कर्म.) । खट्टे-खट्टे, क्रि. वि., स्थित एव २. झटिति, सपदि, सप्तः (सब अभ्य.) ।

खट्टाखट्टी, सं. स्त्री. (अनु. खट्ट + हि. + पाँव) कोशी-पी, (काष्ठ-) पादुका ।

खट्टाका, सं. पुं. (अनु.) सबखट्टा, शब्दः-ध्वानः ।

खट्टिया, सं. स्त्री. (सं. खट्टिका) खट्टी, कठिनी दे. 'चाक' ।

खट्टी, सं. स्त्री. (सं. खट्टी) दे. 'खट्टिया' ।

खट्टग, सं. पुं. (सं.) दे. 'खट्टग' ।

खट्टगी, सं. पुं. तथा वि., (सं. खट्टिगन्) दे. 'खट्टगी' ।

खट्टु, खट्टुला, सं. पुं. (सं. खातं) दे. 'खट्ट' ।

खट्टी, सं. स्त्री. (सं. खात >) तन्त्रवापः-पं, वाय(प) दण्डः, वेगः, वेगम् (पुं. न.), वान-दण्डकः, वाणिः (स्त्री.) ।

खत, सं. पुं. (अ.) सुदेश, पत्रं, लेख्यं, लेखः २. हस्तलेखः, स्वहस्ताक्षरं ३. अक्षरसंस्थानं, लिखितं, लिपिः-विः (स्त्री.) ४. रेखा, लेखा, रेखा ५. मुखरोमन् (न.), दमष्ट (न.), दूर्ध्व ६. क्षौरं मुण्डनम् ।

—आना, क्रि. अ., प्रथमतः मुखरोमाणि उदभू ।

—खींचना, क्रि. स., रेखां आ-अभि-लिख् (तु. प. से.) ।

—बनाना, क्रि. स., मुंड (भ्वा. प. से.), जु.) क्षुरेण कृत् (तु. प. से.) -छिद् (रु. प. अ.) -त् (क्. उ. से.) ।

—किताबत, सं. स्त्री., (अ.) पत्र, व्यवहारः-विनिमयः ।

—शिकस्ता, सं. पुं. (अ. + फा.) यकलेखः ।

खतना

[१४०]

खप्पर(क)

- खतना, सं. पुं. (अ.) शिश्नत्वक्छेदः (इस्लाम) ।
 ध्रुतम, वि. (अ. खलम) समाप्त, पूर्ण ।
 —करना मु., मृ. (प्रे.), हृत् (अ. प. अ.) ।
 —होना, मु., मृ. (तु. आ. अ.) ।
 खतर, सं. पुं. (अ.) दे. भयं, वासः ।
 —नाक, वि. भयातक, भयङ्कर ।
 खतरा, सं. पुं. (अ.) भयं, भीतिः (स्त्री.),
 दे. 'भय' २. संशयः, संदेहः ।
 खतरानी, सं. स्त्री., दे. 'क्षत्राणी' ।
 खता, सं. स्त्री. (अ.) अपराधः, दोषः २. छलं
 वञ्चना ३. प्रमादः, रखलितम् ।
 —वार, वि. (अ. + प्रा.) अपराधिन्, दोषिन् ।
 खतियाना, कि. स. (हिं. खाता) आयव्यय-
 पञ्चिकायां यथास्थानं लिख् (तु. प. से.) ।
 खतियौनी, सं. स्त्री. (हिं. खतियाना) (वृहत्)
 आयव्ययपञ्चिका २. तत्र यथास्थानं लेखः
 ३. क्षेत्रपतिसूचीपत्रम् ।
 खत्ता, सं. पुं. (सं. खातं) अवटः, गर्तः
 २. धान्यागारः-रः ३. निधिः (पुं.) ४. राशिः
 (पुं.) ।
 खत्म, वि., दे. 'खतम' ।
 खत्री, सं. पुं. (सं. क्षत्रियः) पंचनदप्रति
 आर्थागामुपजातिविशेषः २. दे. 'क्षत्रिय' ।
 खद्वदाना, कि. अ. (अनु.) क्षुब्धदायते
 (ना. धा.) मन्दं कथ् (कर्म.) दे. 'खलना' ।
 खदशा, सं. पुं. (अ.) भयं, आशंका ।
 खदान, सं. स्त्री., दे. 'खान' ।
 खदिर, सं. पुं. (सं.) सारद्रुमः, कुष्ठारिः (पुं.),
 गायत्री, दंतवाहनं, बाल, तनयः-पथः, यज्ञांगः,
 सुशल्यः, वक्रकंटः । २. दे. 'कथा' ३. चन्द्रः
 ४. इन्द्रः ।
 खदेह, सं. स्त्री. (हिं. खेदना) अनुभावनं,
 खेटनं, आच्छेदनम् ।
 खदेह(र)ना, कि. स. (हिं. खेदना) नि-
 अप-सृ (प्रे.), बहिष्कृत, निष्कस्-निर्वृत् (प्रे.)
 २. अनुगम्, अनुधाप् (भ्या. प. से.), नृम्
 (जु. आ. से.) ।
 खहर, दे० 'खादी' ।
 खहोत, सं. पुं. (सं.) प्रमाकौटः, दे. 'जुगन्तू'
 २. मूर्धः
 खनक, सं. पुं. (सं.) उंदुरः (पुं.), मूष(पि)कः
 २. संधितस्करः ३. अवदारकः, खातकः
 ४. आकरः, ख(खा)निःनीरं (स्त्री.) ५. भूत-
 त्ववेत् (पुं.) । सं. स्त्री. (अनु.), कणितं,
 शिञ्जितम् ।
 खनकना, कि. अ. (अनु.) शिञ्ज् (अ. आ.
 से., जु.), कण् (भ्या. प. से.), गुणलगायते-
 लणलगायते (ना. धा.) ।
 खनकाना, कि. स., 'खनकना' के प्रे. रूप ।
 खनखनाना, कि. अ. तथा कि. ल., दे. 'खन-
 कना' तथा 'खनकाना' ।
 खनना, दे. 'खोदना' ।
 खनिज, वि. (सं.) धातुः (पुं.), आकरजः
 पदार्थः ।
 खनित्र, सं. पुं. (सं. न.) अवदारणम् ।
 खपची, सं. स्त्री., दे. 'खपाच' ।
 खपड़ा(रा), सं. पुं. (सं. खपरः) १. कर्परः
 २. मृत्पट्टिका ३. मिश्रापात्रम् ।
 खपड़ी(री), सं. स्त्री. (सं. खपरः) धान्यमर्जनाथं
 मृत्पात्रम् ।
 खपत, खपती, सं. स्त्री. (हिं. खपता) समा-
 वेशः, व्याप्तिः (स्त्री.) २. विक्रयः, पणनं
 ३. व्यवः, विनियोगः ।
 खपना, कि. अ. (सं. क्षपणं >) प्र-उप-युञ्
 (कर्म.), व्यवह-व्याप् (कर्म.) २. क्षि-परिहा
 (कर्म.), नश् (दि. प. से.) ३. क्षिप्त-संतप्-
 पीद् (कर्त्.)
 खपरै(वै)ल, सं. स्त्री. (हिं. खपड़ा) मृत्प-
 ट्टिकाभिः खपरैः वा आच्छादितं पटलं
 ३. तादृशपटलयुक्तं गुहम् ।
 खपाच, सं. स्त्री. (तु. कमनी) (काष्ठ-
 खंडः-हं, बंशस्य शकलः-लं, २. अतिवृद्धाः
 पुरुषः ।
 खपाना, कि. स. (हिं. खपना) प्र-उप-युञ्
 (र. आ. अ., जु.), उपयुज्य-उपयुञ्च निर-
 विशेषीकृत, व्यवह-व्याप् (प्रे.) २. वक्ष्य्-विनि-
 युञ् (सुं.) ३. वि, नश् (प्रे.) ४. संतप्-पीद्
 (प्रे.) ।
 खपुर, सं. पुं. (सं. न.) गगस्थो दैत्यनगर-
 विशेषः २. गगनस्था हरिश्चन्द्रनगरी ।
 खपुष्प, सं. पुं. (सं. न.) गगनकुहलं, असंभवं-
 असाध्यं वस्तु (न.), श्लश, विधानं-श्रृंगम् ।
 खप्पर(क), सं. पुं. (सं. खपरः) मृत्पात्रोदः

स्वफ़क्रान

[१४१]

खरब

२. कात्याः रुधिरदानपात्रं ३. शिक्षाभाजनं
४. कपालः-लम् ।
स्वफ़क्रान, सं. पुं. (अ.) हृत्कम्पनं २. (हिस्ती-
रिया) गर्भाज्ञयोग्यमदः, वातोन्मादः, हर्षानोहः ।
स्वफ़गी, सं. स्त्री. (अ.) प्रसाद-प्रोति, अभावः
२. कोपः, क्रोधः ।
स्वफ़ा, वि. (अ.) रुष्ट, कुपित, क्रुद्ध
२. विषयः ।
स्वफ़ीफ़, वि. (अ.) बल्प, न्यून २. लघु ३. क्षुद्र
४. लक्षितः ।
स्वफ़ीफ़ा, सं. स्त्री. (फ़ा.) लक्षु, न्यायालयः-
धर्माधिकरणम् २. कुलटा, व्यभिचारिणी ।
स्वबर, सं. स्त्री. (अ.) समाचारः, उदंतः,
वृत्तान्तः वृत्तं, वार्ता, प्रवृत्तिः (स्त्री.) २. प्रान्तं,
बोधः ३. संदेशः ४. संज्ञा, चैतन्यं ५. जनप्र-
वादः ।
—करना, देना या पहुँचाना, कि. सं., विज्ञा
(प्रे.), नि-आ-विद. (प्रे.), संदिश (तु. ५.
अ.), दुष्-अवगम (प्रे.) ।
—लगाना, कि. सं., दे. 'हूँहना' ।
—देने वाला, सं. पुं., विज्ञापकः, आवेदकः,
सूचकः ।
—ले जाने वाला, सं. पुं. इतः, वार्ता-संदेश,-
हरः ।
स्ववरगीरी, सं. स्त्री. (अ. + फ़ा.) अवेष्टा,
रक्षणं, चिन्ता २. सहायभक्तिः (स्त्री.),
सहायता ।
स्ववरदार, वि. (अ. + फ़ा.) दे. 'सावधान'
स्ववरदारी, सं. स्त्री. (अ. + फ़ा.) दे. 'साव-
धानता' ।
स्ववीस, सं. पुं. (अ.) भयंकरः, गलः ।
स्ववत, सं. पुं. (अ.) उन्मादः, चित्त, विप्लवः-
भ्रमः २. उत्सूत्रता, सामान्यविरोधः ।
स्ववती, वि. (अ.) उन्मादिन् २. उत्सूत्र,
लोकनाथ ।
स्ववा, वि. (पं., सं. स्वर्ध >) वाम, सव्य,
दक्षिणोत्तर २. वामहस्त, सव्यसचिन् ।
स्वम, सं. पुं. (फ़ा.) वक्रता, जिह्वता, आमुग्रता
कुटिलता ।
—दम, सं. पुं., शौर्यं, विक्रमः ।
—दार, वि., अनमित, आमुग्र, कुक्षित ।
स्वमसा, वि. (अ.) पंच, विषयक-सम्बन्धिन् ।

सं. पुं., पंचकम् २. पद्यभेदः ३. अंगुली-
पंचकम् ।
स्वमियाज्ञा, सं. पुं. (फ़ा.) प्रतिफलं २. दण्डः
३. कष्टम् ४. हासिः (स्त्री.) ।
स्वमीदा, वि. (फ़ा.) वक्र, जिह्व, अराल ।
स्वमीर, सं. पुं. (अ.) किण्वः, जगलः, मासरः,
भेदकः, पारोत्तरः, नमनहूः (पुं.) ।
—उदाना, कि. सं. किण्वेन संमिश्र (जु.) ।
सं. पुं. किण्वन्तं, किण्वीकरणं ।
स्वमीरा, वि. (अ.) किण्व-जगल, मिश्रित
२. घनमधुकाथः ३. तमासुभेदः ।
स्वयानत, सं. स्त्री. (अ.) सकपटाहरणं,
दुर्दिनयोगः २. चौर्यं, वंचना ।
—करना, कि. स. कपटेन आत्मसात् कृ अथवा
विनियुज् (र. आ. अ.) ।
स्वशाल, सं. पुं. दे. 'ख्याल' ।
स्वशाली, वि., दे. 'ख्याली' ।
स्वर, सं. पुं. (सं.) गर्दभः, रासभः २. अश-
तरः, वेसरः ३. वक्रः ४. काकः ५. रावणभ्रातृ
(पुं.) ६. वृत्तं, वासः ।
वि., कटोर, कन्धट, कीचस २. तीक्ष्ण ३. स्थूल
४. आंगल, अनांगलिक ५. निश्चित ६. प्रवण,
तिर्यच् ।
स्वर, सं. पुं. (फ़ा.) गर्दभः, रासभः ।
—दिमगा, वि., जड, अज, स्वरमति ।
स्वरस्वर, सं. स्त्री. (अन्.) वर्धरः, वर्धर, रवः-
सम्बः ।
—करना, कि. स., वर्धरायते (ना. था.),
वर्धरध्वनि कृ ।
स्वरस्वरा, वि. दे. 'खुरखुरा' ।
स्वरगोश, सं. पुं. (फ़ा.) शशः, शशकः, शूलिकः
सुदुरोमन् (पुं.), रोमकर्मणः ।
स्वरच, सं. पुं., दे. 'खर्च' ।
स्वरचना, कि. सं. (फ़ा. खर्च) व्यय (जु.),
उत्-वि, लज् (तु. प. अ.), विनियुज् (र.
आ. अ., जु.), क्षय-व्यर्थ, कृ ।
स्वरधा, सं. पुं. दे. 'खर्चा' ।
स्वरज, सं. पुं. दे. 'पडज' ।
स्वरब, वि. (सं. खर्चम्) सं. पुं., अर्बदशकम्
(१०००००००००००) २. अर्बदशकम्
(१००००००००००) ।

खरवृत्ता, सं. पुं. (सं. खर्वृत्) ददांगुलं, गद्दु-
भुजा-भुजं-रेखा-मुत्रा, वृत्तकर्षेती ।

खरमस्ती, सं. स्त्री. (फ्रा.) दुष्टता, कुभेष्टा ।

खरमास, सं. पुं., दे. 'खरवास' ।

खरल, सं. पुं. (सं. खल्लः) उद् (ल.) खल्लं,
भौषधमर्दनभाजनम् ।

—करना, क्रि. सं. चूर्ण (चु.), चूर्णीकृ, पिष्
(र. प. अ.), क्षुद् (र. उ. अ.) ।

खरवींस, सं. पुं. (सं. खरमासः >) पौषत्रेयी ।
(इनमें मांगलिक कार्यं ववित है) ।

खरसान, सं. स्त्री. (सं. खरशानः) शाण-
शाणी, भेदः ।

खरहरी, सं. पुं. (हिं. खर = तिनका + हरना)
अथमार्जनी ।

—करना, क्रि. स., अश्वं मृज् (अ. प. वे.) ।

खरहा, सं. पुं., दे. 'खरगोश' ।

खरही, सं. स्त्री. (हिं. खर = घास) (घासादेः)
राशिः (पुं.) २. घासभेदः ।

खरा, वि. (सं. खर = तीक्ष्ण) तिग्ग, तीक्ष्ण
२. अमिश्रित, अविच्छिन्न, स्वच्छ, विशुद्ध,
पवित्र, उत्तम ३. भंगुर, मिदुर ४. निष्कपट,
निद्रहल ५. स्पष्ट-व्यथार्थं, वादिन्-वचद् ६. गूरि,
बहु ६. कठिन, कौकस । खरी (स्त्री.),
विशुद्धा ६ ।

—खेल, सं. पुं. निष्कपटव्यवहारः, सरलाचरणं ।

—पन, सं. पुं. विशुद्धता, पवित्रता, उत्तमता,
कजुता, निष्कपटता ६ ।

खराई, सं. स्त्री. दे. 'खरापन' ।

खराद, सं. पुं. (अ. खरात् ते फ्रा. खराद्)
अगर्भं, कुटः दं, भ्रमः, भ्रमिः (स्त्री.), चक्रं,
यंत्रकम् ।

खरादना, क्रि. स. कुन्देन संस्कृ. ।

खरादी, सं. पुं. (फ्रा. खराद्) कुदिन्,
चक्रिन् ।

खराब, वि. (अ.) निकृष्ट, गह्रं, निष्ठ, हीन
२. दीन, दुर्गत ३. पतित, च्युत ४. दुष्ट,
पापिन् ।

—करना, क्रि. स. मल्लिनी-कलुषी-आविली, क्र
२. सरपथाय भ्रंश (प्रे.), कुमार्गे प्रवृत् (प्रे.) ।

खराबात, सं. पुं. (अ.) मदिरालयः
२. दूतगृहम् ३. वैश्यावीथी ।

खराबाती, सं. पुं. (अ.) गद्यपः २. दूतकारः,
कितवः ४. वैश्यावामिन् ।

खराबी, सं. स्त्री. (अ.) दोषः, अवरुणः
२. दुष्टता, नीचता ३. दुर्दशा, दुर्गतिः (स्त्री.) ।

खरारि(री), सं. पुं. (सं-रिः पुं.) रामचंद्रः
२. श्रीकृष्णः ३. विष्णुः ।

खराश, सं. स्त्री. (फ्रा.) दे. 'खरौच' ।

खरिया, सं. स्त्री., दे. 'खरिया' ।

खरिहान, सं. पुं. दे. 'खलियान' ।

खरी, सं. स्त्री. (सं.) गर्दभी, रासभी ।

खरीद, सं. स्त्री. (फ्रा.) कयः, मूल्येन ग्रहणं
२. क्रीतपदार्थः ।

—व फरोदत, सं. स्त्री. (फ्रा.) कयविक्रयौ
(द्वि.) ।

खरीदना, क्रि. स. (फ्रा. खरीदन) की (क्.
उ. अ.), मूल्येन अधिगम् अथवा लभ् (भ्वा.
आ. अ.) ।

खरीदार, सं. पुं. (फ्रा.) क्रयिकः, क्रेतु (पुं.),
ग्राहकः २. इच्छुकः, अभिलाषिन् (पुं.) ।

खरीदारी, सं. स्त्री. (फ्रा.) क्रयः, मूल्येनादानं ।

खरीफ, सं. स्त्री. (अ.) शारद-शारदीय-शर-
त्कालीनं शस्यं ।

खरौच, सं. स्त्री. (सं. खुर = खुरचना >)
वैषक्षतं, स्वप्नः ।

खरौचना, क्रि. स. (पूर्व.) खुर-खुर (तु. प.
से.) वि-अव-वृ (प्रे.), (नखेन) क्षप् (त.
उ. से.) अक् (लु.) लिप् (तु. प. से.) ।

खरोट, सं. स्त्री., दे. 'खरौच' ।

खरोटना, क्रि. स. दे. 'खरौचना' ।

खर्च, सं. पुं. (अ. खर्व) व्ययः, धन-रक्षण-
व्यय-उत्सर्गः, विनियोगः २. मूल्यं, अर्थः,
अर्हो ।

—करना, क्रि. स. दे. 'खरचना' ।

—होना, क्रि. अ., व्यय-निसृज्-विनियुज् (सव
कर्म.) क्षय-व्ययं या (अ. प. अ.) ।

खर्चना, क्रि. स. दे. 'खरचना' ।

खर्चा, सं. पुं. (अ. खर्व) दे. 'खर्च' २. अभि-
योग-कार्यं व्ययहारपद-व्ययः ।

खर्चीला, वि. (हिं खर्च) व्ययशील, अति-
व्ययिन्, अमितव्यय ।

खर्जूर, सं. पुं. (सं.) दे. 'खजूर' २. वृक्षिकः,
द्रोणः । (सं. न.) रजतं २. दे. 'हरताल' ।

खर्पर

[१४३]

खसकाना

खर्पर, सं. पुं. (सं.) दे. 'खप्पर' ।
 खर्व, सं. पुं. दे. 'खर व. दे. 'खर्व' ।
 खर्वृजा, सं. पुं. दे. 'खरवृजा' ।
 खर्शाटा, सं. पुं. (अनु.) घर्षरः ।
 —भरना, मरना या खेना, कि. अ., घर्ष-
 राशने, घर्षरशब्दं कृ, प्रगाडं स्वप् (अ. प. अ.) ।
 खल, वि. (सं.) कूर, नृशंस २. अधम,
 मोच ३. दुष्ट, दुर्वृत्त ४. पिशुन ५. निर्लेज
 ६. छलिन् ।
 सं. पुं., दुर्जनः २. सूर्यः ३. तमालवृक्षः
 ४. पृथिवी ५. स्थानं ६. उलू (दू) खलं
 ७-८. दे. 'खलियान' तथा 'तलछट' ।
 खलक, सं. पुं. (अ.) जीवाः-प्राणिनः (बहु.)
 २. जगत (न.), संसारः ।
 खलकृत, सं. स्त्री. (अ.) सृष्टिः (स्त्री.), संसारः
 २. जनौघः, जनसंमर्दः ।
 खलकी, सं. स्त्री. (हिं. खाल) खच् (स्त्री.),
 खचा, खचं, खचस् (न.), छदिस् (स्त्री.),
 संछादनी, असम्भरा २. (पशुओं की) चर्मन्
 (न.) ३. (गरे पशुओं की) अजिनं, दृतिः,
 कृत्तः (स्त्री.) ४. शिशनाग्रचर्मन् (न.) ।
 खलता, सं. स्त्री. (सं.) कुचेष्टा, दुष्टता,
 दुर्वृत्तता, खलत्वम् ।
 खलना, कि. अ. (सं. खर = तीक्ष्ण >) अनु-
 चित-अयुक्त-अयोग्य-अनुपपन्न (वि.) प्रतिभा
 (अ. प. अ.)-दृश (कर्म.) ।
 खलबल, सं. स्त्री. (अनु.) क्षीम; विफलः,
 अशक्तिः-अनिर्वृतिः (स्त्री.), प्रकोपः, कलहः,
 २. कोलाहलः, उक्तोशः ३. दे. 'कुलबुलाहट' ।
 खलबलना, कि. अ. (हिं. खलबल) बुदबुदायते
 (ना. धा.), दे. 'खलना' २. क्षुभ् (वि. प.
 से.), क्. प. से.), लुब्ध-विह्वल- (वि.) + भू
 ३. दे. 'कुलबुलाना' ।
 खलबली, सं. स्त्री., दे. 'खलबल' ।
 खलल, सं. पुं. (अ.) विघ्नः, अंतरायः, बाधा ।
 खलास, सं. पुं. (अ.) मोक्षः, मुक्तिः (स्त्री.),
 उदारः । वि., मुक्त, उद्धृत, निस्तोर्ण २. अन्-
 सित, समाप्त ।
 खलासी, सं. स्त्री. (अ.) उदारः, निस्तारः,
 मोक्षः । सं. पुं., पटमंडपरोपकः २. भारवाहः
 ३. पोतश्रथः ।

खलियान, सं. पुं. (सं. खल + स्थान)
 खलाधानं. खलः-खलं २. धान्यागारं, कुशलः
 ३. राशिः (पुं.) चयः ।
 खलियाना, कि. स. (हिं. खाल) निस्तव-
 चयति (ना. धा.) निस्तवचिक्र, चर्मन् (न.)
 अपनी-निहं (दीनों स्वा. उ. अ.) ।
 खलियाना, कि. स. (हिं. खाली) शुन्या-
 रिक्ती, -कृ, रिच् (रु. उ. अ.) ।
 खलिश, सं. स्त्री. (फ्रा.) वेदना, पीडा २. बैरं,
 द्वेषः ।
 खलिहान, सं. पुं., दे. 'खलियान' ।
 खली-ख्नी, सं. स्त्री. (सं. खली) तैलकिल्लं,
 तिलकल्लं, पिण्याकः, खलिः (पुं.) ।
 खलीज, सं. स्त्री. (अ.) दे. 'खादी' ।
 खलीफा, सं. पुं. (अ.) अध्यक्षः, अधिकारिन्
 २. यवननृपवंशविशेषः ३. वृद्धजनः ४. सूदः,
 पाचकः ५. सौषिकः सृषिकः ६. नापितः ।
 खलु, अन्य. (सं.) निश्चयनिषेधविज्ञासाऽनुन-
 यादिनोपक्रमव्यथम् ।
 खलेल, सं. पुं. (सं. खलितैलं) सुगन्धतैल-
 किट्टम् ।
 खलक, सं. स्त्री., दे. 'खलक' ।
 खल्ल-मल्ल, दे. 'गडबड्ड' ।
 खल्ल, सं. पुं. (सं.) दे. 'खरल' २. चर्मन् (न.)
 ३. गरीः ४. चातकः ५. दृतिः (स्त्री.) ।
 खल्लद, सं. पुं. (सं.) चर्मन् (न.) २. अजिनं
 जलभला ३. वृद्धः, जरठः, स्थविरः ।
 खल्ला, सं. पुं. (सं. खल्ल=चमडः >) जीर्णो-
 पानह् (स्त्री.), पुराणपादत्रम् ।
 खल्लि (ख्ली) ट, खल्लवाट, वि. (सं.) दे. 'गंजा' ।
 सं. पुं., दे. 'गंजापन' ।
 खवा, सं. पुं., दे. 'कंधा' ।
 खवैया, सं. पुं. (हिं. खाना) मञ्जकः,
 खादकः, भोजनृ (पुं.) ।
 खश, सं. पुं. दे., 'खस' ।
 खशाख (खशा) श, सं. पुं. दे. 'खसखस' ।
 खस, सं. स्त्री. (फ्रा. खस) शरीरः-रं, नरुदं,
 जलवासं, वीरगमूलं, सेव्यं, शीत सुगन्धि, मूलकं,
 वीरं, वीरभद्रं, हरिप्रियम् ।
 खसकना, कि. अ. (अनु.) दे. 'खिसकना' ।
 खसकाना, कि. स., दे. 'खिसकाना' ।

खसखस

[१४४]

खाट

खसखस, सं. स्त्री. (सं. खसखसः) खसतिलः, सूक्ष्म, तंतुलः-बीजः, सुबीजः ।

—खस, सं. पुं. (सं.) दे. 'अक्रीम' ।

खसखसा, वि. (अनु.) शुष्कचूर्णरूप, सिक-तिल, शर्करित ।

खसखास, सं. स्त्री, दे. 'खसखस' ।

खसम, सं. पुं. (अ.) पतिः (पुं.), भर्तृ (पुं.) २. स्वामिन् (पुं.), सेव्यः, नाथः ।

खसरा, सं. पुं. (अ.) क्षेपसूची, केदार-लेख्यम् ।

खसरा, सं. पुं. (फ्रा. खारिशा) रोमान्तिका, त्वग्रोगभेदः २. खर्जू-कंडूति, भेदः ।

खसलत, सं. स्त्री. (अ.) प्रकृतिः (स्त्री.), स्वभावः, २. दे. 'आदत' ।

खसारा, सं. पुं. (अ.) हानिः-क्षतिः (स्त्री.), दे. 'घाटा' ।

खसिया, वि. (अ. खस्ती) कुतश्चरण, छिन्न-मुष्क । सं. पुं., क्लीबः, पंडः २. अजः ।

खसोट, सं. स्त्री. (हिं. खसोटना) बलात्-अकस्मात्-सहसा ग्रहण-अपहरण-आच्छेदनं २. बलात् उत्पादन-उन्मूलनम् ।

खसोटना, कि. स. (सं. वृष्ट >) असम्यक्-उन्मूल-उत्पट् (चु.)-कृष् (भ्वा. प. अ.)

२. बलात्-सहसा अपहृ (भ्वा. उ. अ.)-आच्छिद्य् (रु. प. अ.)-ग्रह् (क. उ. से.) ।

खसोटी, सं. स्त्री., दे. 'खसोट' ।

खस्ता, वि. (फ्रा. खरतः) भिदुर, भंगुर, भिदे-लिम २. क्षत, अदित ।

—कचौड़ी, सं. स्त्री., भिदुर-स्निग्ध-सुषिष्टिका-शृङ्गुली ।

—विल, वि. भग्न, चित्त-वृद्धय ।

—हाल, वि., दुर्गत, दरिद्र, दुःखित ।

खससी, सं. पुं. (अ.) छिन्नमुष्कः अजः-छागः २. पंडः, क्लीबः । वि., कुतश्चरण, छिन्नमुष्क ।

—करना, कि. स., वृषणी छिद्य् (रु. प. अ.) उत्पट् (चु.) ।

खौं, सं. पुं. (तातारी, काड=सरदार) स्वामिन् (पुं.), अधीशः २. पठानजातेः उपाधिः (पुं.) ।

—साहय, —बहादुर, सं. पुं., उपाधिभेदौ ।

खांखर, वि. (सं. खं=छिद्र >) सच्छिद्र, सरंध २. रिक्त-शरय, गर्भ, अंतःशून्य ।

खांगड़-हा, वि. (सं. खड्गः >) शृंगिन्, विषादिन् २. सशस्त्र ३. सबल ४. उदण्ड ।

खाँचा, सं. पुं. (सं. काँचगम् >) महा, पेटकः-करंदः-कंडीलः २. वृद्ध, —जरः-पंजरम् ।

खांड, सं. स्त्री. (सं. खण्डम्) अशीथित-असंस्कृत, सिता-शर्करा ।

खांडव, सं. पुं. (सं. न.) कुरुक्षेत्रप्रदेशे वन-विशेषः ।

—ग्रस्थ, सं. पुं. (सं.) प्राचीननगरविशेषः ।

खाँदा, सं. पुं. (सं. खड्गः >) द्विधरः, खड्गः-असिः-निर्दिशः-कृपाणः ।

खांडा, सं. पुं. (सं. खंडः-खं) भानः, अंडः ।

खाँसना, कि. अ. (सं. कासनं) काश् (भ्वा. प. से.), हु (अ. प. से.) ।

खाँसी, सं. स्त्री. (सं. कासः) काशः, उत्कासः, क्षवधुः (पुं.) ।

खाई, सं. स्त्री. (सं. खानिः >) परिखा, खानं, खातकम् ।

खाऊ, वि. (हिं. खाना) अत्याहारिन्, बहु-भोजिन्, अघर, भस्मर ।

—उडाऊ, वि., मुक्तहरत, अर्थनाशिन् ।

खाऊ, सं. स्त्री. (फ्रा.) धूलिः (पुं. स्त्री.), धूली, पांडुः-सुः, रजस् (न.), रेणुः २. भस्मन (न.), भसितं, भूतिः (स्त्री.) ।

—रोब, सं. पुं., खलपूः (पुं.), भंमार्जकः ।

—सार, वि., नद्य, विनित ।

—सारी, सं. स्त्री., नम्रता, विनयः ।

खाका, सं. पुं. (फ्रा.) बाहरो (ले) खा, वाष्पा-कारः २. अपरिच्छतालेख्यं, पांडुलेख्यं ३. प्रति-रूपं, प्रतिमानं ४. संकलनं, संख्यानम् ।

—उडाना, सु., उप-अव. इस् (भ्वा. प. से.) ।

खाकी, वि. (फ्रा.) मातिक, मृण्मय २. धूलि-रजो-वर्ण-रंग ३. सं. स्त्री., जलहीन-अनासिक्त-भूमिः (स्त्री.) ।

खाज, सं. स्त्री. [सं. खर्जू (पुं.)] खर्जू (स्त्री.), कंडू-कंडूति (स्त्री.), खसः, पामा, विचर्चिका ।

—होना, कि. अ., कंडूति खसं अनुभू ।

कोड वी खाज, मु., खतै शारं, गंडे स्फोटकः ।

खाजा, सं. पुं. (सं. खाचं) भक्ष्य-भोज्य-खाद्य-वस्तु (न.)-पदार्थः २. भोजनं ३. मिष्टान्नभेदः ।

खाट, सं. स्त्री. (खाटः >) खट्वा, शयनम् ।

—खडोला, सं. पुं. गृह, उपस्कार-परिच्छदः, पारिणाशम् ।

खाकी, सं. स्त्री. (सं. खातं >) समुद्रः, वंशः, अलगतः-तम् ।

खात, सं. पुं. (सं. न.) खननं, अवदारणं २. परिखा, खातं, खातकं ३. गर्तः ४. कूपः ५. कासारः ६. पुरोपाद्रिगर्तः ।

खातमा, सं. प्र. (फ्रा.) समाप्तिः (स्त्री.) २. मृत्युः ।

खाता, सं. पुं. (अ. खात >) गणना-संख्यान-पत्रिका २. विषयः, विभागः ।

खाता, सं. पुं. (सं. खातं >) कशू (मू) लः, धान्यकोषः, कंडोलः ।

खातिर, सं. स्त्री. (अ.) संमानः, आदरः । क्रि. वि. कृते, अर्थे, हेतोः ।

—खाह, क्रि. वि. (अ. + फ्रा.) यथोचित, यथेच्छ. यथेष्टम् ।

—जमा, सं. स्त्री. (अ.) संदीपः, सांत्वनम् ।

—दारी, सं. स्त्री. (अ. + फ्रा.) आदरः, अतिथिमेधा ।

खाली, सं. पुं. (सं. खातं >) तक्षकः, स्वष्ट (पुं.) २. रथकारः, वर्षिकः ।

खालन, सं. स्त्री. (तु.) कुलीना. आर्या, कुलीयना ।

खादक, वि. (सं.) भक्षक, भोजक । सं. पुं. (सं.) अधमर्गाः, ऋणघरातः ।

खादन, सं. पुं. (सं.) दन्तः, दशनः, रदः । (सं. न.) भक्षणं, चर्वाणम् २. भोजनं, भक्ष्यम् ।

खाद, सं. स्त्री. (सं. खातं >) भूमिलेपः, सारः, पुरोपादि (न.) ।

खादर, सं. स्त्री. (सं. खानं >) आर्द्र-लज्ज-उत्तः, भूमिः, दे. 'कष्टार' । २. गोपचारः, झाडलः ।

खादित, वि. (सं.) भुक्त, भक्षित, जम् ।

खादिम, सं. पुं. (अ.) सेवकः, अनुचरः ।

खादिमा, सं. स्त्री. (सं.) सेविका, दासी. परिवारिका, प्रेम्णा ।

खादी, सं. स्त्री. (देश.) स्वदेशीयं घनवस्त्रं, हस्तनिर्मितवासस् (न.) ।

खाद्य, वि. (सं.) भक्ष्य, भोज्य, अदनीय । सं. पुं. (सं. न.) भोजनं, भक्ष्यपदार्थः ।

खान, सं. पुं. (हि. खाना) भक्षणं, भोजनं, २. खातं ३. भोजनविधिः (पुं.) ।

खान, सं. स्त्री. [सं. खानिः (स्त्री.)] आकरः, ख(खा)नी-निः (स्त्री.) २. उपपत्तिस्थानं ३. कोषः ।

खान, सं. पुं., दे. 'खौ' ।

खानक, सं. पुं. (सं.) खातकः, खनकः, खनित् (पुं.), आखनिकः २. सरुंगाकारः ३. गृह-कारकः-संवेशकः, पलगंडः, लेपकारः ।

खानकाह, सं. स्त्री. (अ.) यवनभिक्षुचिहारः ।

खानगी, वि. (फ्रा.) गृहा, कौटुम्बिक ।

खानदान, सं. पुं. (फ्रा.) वंशः, अन्धयः, कुलम् ।

खानदानी, वि. (फ्रा.) सत्कुल-उच्चवंश-संबन्धिन् २. धिन्व्य, पैतृक ।

खानपान, सं. पुं. (सं. न.) अन्नजलं, भक्ष्य-पेयं २. खादनपानं मुक्तिपीति (न.) ३. मुक्ति-पीतिविधिः (पुं.) ३. परस्परभोजनं, सन्धिः (स्त्री.) ।

खानसामां, सं. पुं. (फ्रा.) (यवनादीनां) पाचकः-सूदः-बलयः ।

खाना, क्रि. स. (सं. खादनं) खाद् (स्वा. प. से.), वस् (स्वा. प. अ.), भक्ष (तु.), अद् (अ. प. अ.), अद् (क. प. से.), लक्ष (अ. प. से.), भुज् (र. आ. अ.), अस्-रलम्-आस्वाद् (स्वा. आ. से.), अन्धवद् (स्वा. प. अ.), मृ (तु. प. से.) २. चर्वा-अर्ध-संतप् (प्रे.) ३. चर्वा (स्वा. प. से.) ४. नस् (प्रे.) ५. छलेन आत्मसात्कृ ६. उरकोच-उपायनं ग्रह (क. उ. से) ७. सद् (स्वा. आ. से.) ।

सं-पुं., खादनं, अस्वादनं, भक्षणं, अशनं इ. ।

खानि योग्य, वि., खाज, भक्ष्य, आस्वादनोय इ. ।

खानि वाला, सं. पुं., भक्षकः, खादकः, भोजित् (पुं.), अशन, भुज्, अद्, अद् (सब समा-सांत में, उ. शाकाशनः इ.) ।

खाया हुआ, वि., भक्षित, खादित, भुक्त, जम् इ. ।

खाता-पीया, मु., सुखिन्, समृद्ध, संपन्न ।

खाना-पीना, मु., खादनपानं, मुक्तिपीति (न.), खादताचामता ।

खाना पीना मजे उड़ाना, मु., खादतमोदता, अदनीतपिबता ।

खाया पिया निकालना, मु., तीव्र-परुषं तष्ट्
(चु.) प्रह (म्वा. प. अ.) अभिहन् (अ. प. अ.)।
खैंह की खाना, मु., पूर्णतया पराजि-परिभू
(कर्म.)।
खाना, सं. पुं. (फ्रा.) गृहं, सभन् (न.),
आलयः २. (मेज़ आदि का) संपुटः, निष्क-
र्षणी, चलसमुद्रकः ३. कोषः. पुटः-टं ४. कोष्ठकं,
सारणी-चक्र, विभागः।
—खाराब, वि. (फ्रा.) विनाशक, अतिष्टोत्पादक,
क्षयकर (-री खं.)।
—खंची, सं. खं. (फ्रा.) पारस्परिकविग्रहः,
गृह्युद्धम्।
—खलाशी, सं. खं. (फ्रा.) गृहान्-वेषणम्।
—खारी, सं. खी. (फ्रा.) गार्हस्थ्यम्।
—खुरी, सं. खी. (फ्रा. + हिं. पूरनाः) कौष्ठक-
पूरणम्।
—खदोश, वि. (फ्रा.) अस्थिर-अनियत-वास,
य(या) यावर। सं. पुं., अस्थानिन्,
निस्थविहारिन्।
—खुमारी, सं. खी. (फ्रा.) जनसंस्थानम्।
खानि, सं. खी. (सं.) दे. 'खान' २. प्रानुर्दे
३. राशिः (पुं.) ४. कोषः ५. प्रकारः
६. दिशा।
खानिक, सं. खं., दे. 'खान'।
खाबड़-खूबड़, वि. (अनु०) विषम, नवीनत।
खाम वि. (फ्रा.) अपह, आम २. अपुष्ट,
अट्ट ३. अनुभूतज्ञान्य।
खामखाह, कि. वि. (फ्रा. खाह-म-खाह)
बलात्, इटान् २. अवश्यं, भुवनम्।
खामो, सं. खी. (फ्रा.) आमता, अदकता
२. अनुभवहीनता ३. न्यूनता।
खामोश, वि. (फ्रा.) निःशब्द, नीरव।
खामोशी, सं. खी. (फ्रा.) नीरवता, मौनम्।
खार, सं. पुं. (सं. खारः) २. दे. 'धार'
२. दे. 'सजी' ३. दे. 'कलर' ४. धूलिः (खी.)
५. गुल्मभेदः।
खार, सं. पुं. (फ्रा.) दे. 'कॉटा' २. ईर्ष्या,
अत्या, द्वेषः।
—खार, वि., कंडकिन्, सक्कट।
—खाना, मु., ईर्ष्य-ईर्ष्य (म्वा. प. से.),
असूय (ना. धा.), स्पर्ध (म्वा. वा. से.)।

खारा, वि. पुं. (सं. खार) क्षार, विशिष्ट-युक्त
२. ईषलवण, ३. लवण, लवणगुणविशिष्ट
४. कडु, अरुचिकर (-री खं.)।
खारा, सं. पुं. (सं. खारकः) कण्डः, कंडोलः,
पेठकः २. प्रासादिवेषणजालं ३. विवाह-
संस्कारोपयुक्तसंभेदः।
खारि, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'खारी'।
खारिज, वि. (अ.) बहिष्कृत, अपास्त २. निरा-
कृत, प्रत्याह्वयत।
—करना, कि. स., बहिष्कृत, अपास् (दि. प.
से.) २. निराकृत, प्रत्याह्वय (अ. प. अ.)।
—होना, कि. अ., बहिष्कृत-अपाम् (कर्म.)
प्रतिक्षिप्-प्रत्याह्वय (कर्म.)।
खारिजा वि. (अ.) बाह्य, बाह्यीय, बहिष्कृत,
विदेशीय।
खारिश, खारिशत, सं. खं. (फ्रा.) दे.
'खुजली'।
खारी, सं. खं. (सं.) पोड्या-चतुर, द्रोग-
परिमाणम्।
खारी, सं. खं. + हिं. खारा + उपरजं,
ऊपरलवणं, खारलवणं वि. खं., दे. 'खारा'
ये खी. लन।
—पानी, सं. पुं., धार, गालीयं-बलम्।
खाल, सं. खं. (सं. खालः >) दे. 'खलडो'
(१-३) २. आवरण ३. शयः ४. मध्य-खं।
—उद्याना, मु., निर्देय-पदार्थ-चर्च-निःसृज-
(चु.)-प्रह (म्वा. प. अ.)।
—उघेचना या खीचना, जु. लवचं अपनी
(म्वा. प. अ.) अनिर्हं-निष्कृम् (म्वा. प. अ.),
निस्त्वचयति (ना. धा.)।
खाल, सं. खं. (सं. खालं) निम्नभूः (खं.)
२. शिखरशानं, अवयवतः ३. दे. 'खालो'
४. गाम्भीर्यम्।
खाल, सं. पुं. (अ.) विलः, विलका, तिल-
कालकः, जटुलः।
खालसा, वि. (अ. खालसा) एकाधिकृत,
एकाधिकृत २. राजकीय। सं. पुं., क्षिप्य-
(सिख) जातिविशेषः।
खाला, वि. (हिं. खाली) निम्न, अवनत,
अवच।
—ऊंचा, वि. उच्चावच, नवीनत, विषम।

शाला, सं. स्त्री. (अ.) मातृस्व (स्व)सु
(स्त्री.), मातृमहिनी ।

—जाह, वि. पुं., मातृवसीय, मातृवसेय
(स्त्री.-सीया,-सेयी) ।

—जी का घर, मु., सुकरं कर्मन् (न.) ।

शालिक, सं. पुं. (अ.) स्नातृ-विधातृ-सृष्टि-
कर्तृ (पुं.) ।

शालिस, वि. (अ.) दे. 'शरा' (२) ।

शाली, वि. (अ.) रिक्त, शून्य २. अनधिष्ठित
३. रहित, हीन ४. अव्यापृत, निष्क्रिय
५. अधिका, तदवृत्त ६. निष्फल, व्यर्थ । कि.
वि., केवलम् ।

—करना, कि. स., रिन् (क. प. अ.), परि-
रयन् (भ्वा. प. अ.), उत्तन् (तु. प. अ.) ।

—होना, कि. अ. रिन्-परित्यक्तस्त्वं (कर्म.) ।

—हाथ, मु., अकिंचन, देरिद्र २. निःशस्त्र ।

शालू, सं. पुं. (अ.) मातृवन्भवः ।

शाल्विद, सं. पुं. (प्रा.) पतिः, भार्गव २. स्वामिन्-
प्रभुः (पुं.) ।

—करना, मु., अपरं पतिं विद (तु. प. वे.)
वृ (स्वा. उ. से.), द्वितीयं विवाहं कृ ।

शाल्य, वि. (अ.) मा., विशेष, विशिष्ट, विलक्षण,
असाधारण २. रहस्य, संभरणीय, गोप्य ३.
स्वकीय, आत्मोय ४. प्रविष्ट ५. प्रधान, मुख्य ।

—कर, कि. वि., विशेषतः, विशेषेण ।

—व आम, सं. पुं., जनता, लोकः ।

शालां, वि. (अ. शाल) उत्तम, उत्कृष्ट २. स्वस्थ
३. मध्यमगोचर ४. सुन्दर ५. परिपूर्ण ।

शालां, सं. पुं. (अ.) नृपमोजनं, भूपाहारः
२. राज्ञो गजोश्चो वा । ३. श्रेयस्त्रयैः
४. परिकामेदः ।

शालि(सी)घन, सं. स्त्री. (अ.) प्रकृतिः (स्त्री.),
स्वभावाः २. गुणाः, पर्यः ।

शालसा, सं. पुं. (अ.) दे. 'शालिसवत' ।

शालिना, कि. अ. (सं. कर्मण >) आ-सं, कृप
(कर्म.), २. वृद्धी-नियम् (कर्म.) ३. वृद्-
धी (कर्म.) ४. (चिन्तादि) नर्ण-आलिख्
(कर्म.) ५. उत्-शृप् (दि. प. अ.), नि-आ-
पा (कर्म.) ६. सु (भ्वा. प. अ.), क्षर्
(स्वा. प. से.) ।

शालिना, कि. प्रे. } व. 'शालिना' के प्रे.
शालिना, कि. प्रे. } रूप ।

शालिना, सं. स्त्री.,
शालिना, सं. पुं.,
शालिना, सं. स्त्री. } १. आकर्षणं,
शालिना, सं. पुं., } २. आकर्षः,
शालिना, सं. स्त्री. } ३. वृद्धीकरणं,
४. नियमनं ५. घनता, सुसंज्ञाः (स्त्री.) आ-
ततिः (स्त्री.) ६. ।

शालिना, कि. अ., दे. 'शालिना' ।

शालिनी, सं. स्त्री. (सं. कृसरः) कृसरः,
मिश्रीदनः-नं, कृसरः, वैदलोदनः-नं, लेखरात्रं ।
२. मिश्रितद्रव्यं, प्रकीर्णकं विविधवस्तुमिश्रणम् ।

—करना, मु., एकीकृ, सं., मिश्र (तु.) ।

—होना, मु., संसृज-संपृच् (कर्म.), एकीभू ।

शालिना, कि. अ. (सं. शिद) दे. 'चिदना' ।

शालिना, शिद, सं. पुं. (अ.) देवदूत विशेषः
(इस्लाम), २. पथप्रदर्शकः, मार्गदर्शकः ।

शालिना, कि. स. तथा कि. अ., दे.
'चिदना' तथा 'चिदना' ।

शालिनी, सं. स्त्री. (प्रा) शिदिरः, दे. 'पतशब्द'
२. अवनतिकालः ।

शालिना, सं. पुं. (अ.) केश-बाल-मूर्धज-
लेपः रंगः रानः-वर्णः ।

—करना या लगाना, कि. स., केशान् रज्-
वन् (तु.) ।

शालिना, सं. स्त्री. (अ.) लज्जा, श्रमा, व्रीडा ।

शालिना, कि. अ. (सं. शिद) दे. 'चिदना' ।

शालिना, कि. स., दे. 'चिदना' ।

शालिनी, सं. स्त्री. (सं. खट(ड)फिका) । वाता-
यनं, लघुदारं, गन्धाहः । २. अररी, कपाट-
टम् ।

शालिना, सं. पुं. (अ.) उपाधिः (पुं.), मानपदम् ।

शालिना, सं. पुं. (अ.) प्रदेशः, भूभागः ।

शालिना, सं. स्त्री. (अ.) सेवा, परिचर्या ।

—गार, सं. पुं. (अ. + प्रा.) सेवकः, परिचारकः ।

—गारी, -गुजारी, सं. स्त्री. (अ. + प्रा.)
सेवा, परिचर्या ।

शालिना, सं. पुं., दे. 'शालि' ।

शालिना, वि. (सं.) दुःखित, पीडित २. सचित,
चितित ३. विपणन, शोकमग्न, ३. दीन, निरा-
श्रयः । ४. श्रान्त, बर्जित ।

शालिना, सं. स्त्री., दे. 'शालिना' ।

शालिनी, सं. स्त्री. (सं. क्षोरिणी) हैगी, हिमजा,
हिमदुग्धा (वृक्षभेदः) २ तत्फलम् ।

शालिना, सं. पुं. (अ.) दे. 'कर' (टैक्स) ।

खिल

[१४८]

खीज(झ)ना

खिल, सं. पुं. (सं. पुं. न.) ऊपर:-रं २.
रिक्त, स्थानं-स्थलम् ३. परिशिष्ट ४. शेषांशः
५. विष्णुः ६. प्रधान् (पुं.) ।

खिलजत, सं. स्त्री. (अ.) संमानवेशः-पः ।

खिलकत, सं. स्त्री., दे. 'खलकत' ।

खिलखिल, सं. स्त्री. (अनु०) हासः, हसितं
हसनम् ।

खिलखिलाना, क्रि. अ. (अनु.) उच्चैः सशब्दं
हस् (भ्वा. प. से.), अट्टहासं कृ ।

खिलना, क्रि. अ. (सं. खलनं अथवा किरणं ?)
विकस-प्रफुल्ल (भ्वा. प. से.), स्फुट् (तु.
प. से.), भिद् (कर्म.) २. प्रसृद् (भ्वा. प.
अ.) ३. शुम् (भ्वा. आ. से.) ४. पृथक् भू ।
सं. पुं., विकसनं, फुल्लनं, प्रस्फुटनं-इ० ।

खिला हुआ, वि., विकसित, उन्नित, प्रस्फुटित ।

खिलवत, सं. स्त्री. (अ.) निर्जन-विजन, स्थानम् ।

खिलवाड़, सं. पुं. (हिं. खेलना) खेला, लीला,
क्रीडा, मनोविनोदः, विहारः ।

खिलवाड़ी, वि., दे. 'खिलः' ।

खिलवाना, क्रि. प्रे., अन्वयेन + 'खाना' धातुओं
के प्रे. रूप ।

खिला, सं. स्त्री. (अ.) शूयकम् ।

खिलाई, सं. स्त्री. (हिं. खिलाना) अन्नदानं,
पोषणं २. भक्षणं, खादनम् ।

—पिलाई, सं. स्त्री., भुक्तपीतं, खादनपानं,
खानपानं २. अन्नदानदानं, पोषणं २. पोषणार्थः ।

खिलाई, सं. स्त्री. (हिं. खेलाना) अंकपाली,
शिशुपालिका ।

खिलाड़, खिलाड़ी, वि. (हिं. खेलना) क्रीडा-
खेला-खेला-पर-शील । सं. पुं., क्रीडकः,
खेलकः २. ऐन्द्रजालिकः, मायाविन् (पुं.)
३. धूर्तः ।

खिलाना, क्रि. प्रे. 'खेलना' के प्रे. रूप ।

खलाना, क्रि. प्रे., 'खाना' के प्रे. रूप ।

खिलाना, क्रि. प्रे., 'खिलना' के प्रे. रूप ।

खिलाफ, वि. (अ.) विरुद्ध, विपरीत ।

खलाफत, सं. स्त्री. (अ.) देवदूत-नृप, प्रति-
निधित्व-उत्तराधिकारिभवन ।

खिलौना, सं. पुं. (हिं. खेलना) क्रीडाद्रव्यं,
क्रीडनकं, क्रीडनीयकं २. क्षुद्रालंकारः ।

खिलब, वि. (सं.) परिशिष्टे वर्णित-लिखित ।

खिल्ली, सं. स्त्री. (हिं. खिलना) श्वेला, नर्मन्
(न), विनोदः ।

—बाज, वि., विनोदशील, नर्मोप्रेय ।

—बाजी, सं. स्त्री., विनोदशीलता, नर्मोप्रेयता ।

खिरत, सं. स्त्री., (फ़ा.) दे. 'ईट' ।

खिसकना, क्रि. अ. (अनु.) शनैः सप् (भ्वा.
प. अ.) चल् (भ्वा. प. से.) २. प्र-स्वल्
(भ्वा. प. से.) ३. सत्वरं अलक्षितं-निश्चृतं
अपया (अ. प. अ.) अपसृ (भ्वा. प. अ.)
गम् । सं. पुं., शनैः-न्युद्, संपर्णं, स्वलनं,
अलक्षितं गमनं-अपसरणं इ० ।

खिसकाना, क्रि. स., 'खिसकना' के प्रे० रूप ।

खिसलना, क्रि. अ., दे. 'फिसलना' ।

खिसलाव, सं. पुं., दे. 'फिसलाव' तथा

खिसलाहट, सं. स्त्री. 'फिसलाहट' ।

खिसारा, सं. पुं. (अ.) हानिः-क्षतिः (स्त्री.) ।

खिसिआ(या)ना, क्रि. अ. (हिं. खीस=

दौत) लज् (तु. आ. से.), वप् (भ्वा.
आ. वे.), व्रीह् (दि. प. से.) २. कुम् (दि.
प. अ.), कुप् (दि. प. से.) । वि., लजित,
हीण, हीत ।

खीच, सं. स्त्री. (हिं. खीचना) कर्षः, कर्षणम् ।

—तान, सं. स्त्री., प्रतिस्पर्डा, विजिगीषा
२. अर्थांतरकल्पना ।

खिसियाहट, सं. स्त्री., दे. 'खीस' ।

खीचना, क्रि. स. (सं. कर्षणं) आसं- कृप्

(भ्वा. प. अ.), बलाद् दिक्षाविशेषे प्रेर (प्रे.)-

नी (भ्वा. उ. अ.) प्रवृत् (प्रे.) ३. ह् (भ्वा.
उ. अ.) दे. 'खसीटना' ३. निष्कस (प्रे.),

बहिर-अप-नी । ४. उद्-अंच (भ्वा. उ. से.),

पञ्चुर्चन् । ५. शुभ् (प्रे.) ६. स्र-स्यंद (प्रे.)

७. वर्ण (तु.), आ-अभि-लज् (तु. प. से.) ८.

स्य (रु. उ. अ.) । सं. पुं., आकर्षणं, आकर्षणं,

नयनं, दूरणं, निष्कासनं, उद्वर्जनं, श्लेषणं,

प्रावणं, आलेखनं, रोषः ।

खीचने योग्य, वि., आ-कर्षणीय, नेय, हर्तव्य,
इ ।

खीचाखीची, }

खीचातान, } सं. स्त्री. दे. 'खीचातान' ।

खीचातानी, }

खीज, खीझ, सं. स्त्री. (हिं. खीजना) दे. 'चिद्'

खीज(झ)ना, क्रि. अ. (सं. खिद्) दे. 'चिदना' ।

स्त्रीमा, सं. पुं. (अ.) दे. 'स्रमा' ।
 स्त्रीर, सं. स्त्री. (सं. स्त्रीरं-रा >) पावसं, परमाक्षं, क्षीरिका २. दूधं, पयम् (न.), क्षीरं, स्तन्यम् ।
 —चटाई, सं. स्त्री. अक्षप्राशनसंस्कारः (धर्म.) ।
 स्त्रीरा, सं. पुं. (सं. स्त्रीरकः) (लता) पीतपुष्पा, वपुक्करी, वटु-कोष-मुद्गिल, फला, कंटकिलता । (फल) वपुषं, कंटकिलं, सशीतलं, सुधावात्मम् ।
 —ककड़ी, मु. तुच्छवस्तु (न.) ।
 स्त्रीरी, सं. स्त्री. (सं. स्त्रीरं-रं >) उपस्-उपस्-ओषम् (न.), आपीनम् ।
 स्त्रील, सं. स्त्री. (हिं. खिलना) धानाः (स्त्री., बहु.), लाजाः (पुं., स्त्री., बहु.) ।
 स्त्रीली, सं. स्त्री. (हिं खील) वीटी-टिः (स्त्री.), वीटिका, ताब्लम् ।
 स्त्रीस, सं. स्त्री. (हिं स्त्रीज) प्रीति-प्रसाद, अभावः २. क्रोधः, रोषः ३. लजा, श्रमा । ४. कुरिमर्तं, दुःहसः ।
 स्त्रीसा, सं. पुं. (फ्रा. कीसा) पुटः-टं, प्रसेवः, लघुसंपुटः २. गुप्तिः, बोधः-ज्ञ ।
 सुखस्व, सुख, वि. (सं. शुष्क >) रिक्तवस्तु, अकिञ्चन ।
 सुखडी, सं. स्त्री. (देश.) सूव-कर्णा, गण्डः-गण्डं (०) अमि-खड्ग, धेनुका-पुष्पिका ।
 सुगीर, सं. पुं. (फ्रा.) दे. 'जीन' ।
 सुच (सु) र, सं. स्त्री. (सं. दुचर >) दोषः, न्यूनता २. छिद्रान्वेपिता, पुरोभागि(ग) ता ।
 सुजलाना, कि. म. (सं. खर्जनं >) नखैः त्वनं घृष (म्वा. प. से.) । कि. अ., कण्डू-स्त्रसं-सर्जं अनुभू । कण्डूयति-ते (ना. धा.) ।
 सुजलाहट, सं. स्त्री. (हिं. सुजलाना) दे. 'सुजली' ।
 सुजली, सं. स्त्री. (हिं. सुजलाना) (झरसरी) कंडूः (पुं., स्त्री.), कंडूः-कंडूलिः (स्त्री.), कंडू-यनं, कण्डूया, खर्जः-जः (स्त्री.) २. (रोग) कच्छुः-च्छु (स्त्री.), पामा, पामम् (पुं.), विचयिका ।
 —उठना या चलना, कि. अ., दे. 'सुजलाना' (कि. अ.) ।
 सुजाना, कि. स., कि. अ., दे. 'सुजलाना' ।
 सुटका, सं. पुं., दे. 'खटका' ।
 सुटपन-ना, सं. पुं. (हिं. खोटा) दोषः, अवगुणः, क्षुद्रता, दुष्टता ।

सुटाई, सं. स्त्री., दे. 'सुटपन' ।
 सुट्टी, सं. स्त्री. (अनु.) दे. 'रिबडी' २. (पं. = बटन का मूराख) मंड-कुडुप, आधारः ।
 सुट्टी, सं. स्त्री., दे. 'सुरण्ड' ।
 सुबला, सं. पुं. (देश.) कुक्कुटालयः २. चट-कालयः ।
 सुट्टी, सुट्टी, सं. स्त्री. (सं. सुट्टे >) शौच-कूपगतः २ शौचकूपे पादाधानम् ।
 सुतबा, सं. पुं. (अ.) प्रशंसा, स्तुतिः (स्त्री.), प्रशस्तिः (स्त्री.) ।
 सुव, अन्व. (फ्रा.) स्वयं, स्वतः, स्वेच्छया (समास के आदि में 'स्व' तथा 'आत्मन्' भी प्रयुक्त होते हैं । उ. स्वार्थः, आत्महत्या) ।
 —कुशी, सं. स्त्री. (फ्रा.) आरम-स्व-निज, धातः-हत्या-वधः ।
 —गर्ज, वि. (फ्रा.) स्वार्थः-पर-पराथण ।
 —गर्जी, सं. स्त्री. (फ्रा.) स्वार्थः-परता-पराथ-णता ।
 —सुखतार, वि. (फ्रा.) स्वयं, स्वच्छन्द ।
 —सुखतारी, सं. स्त्री. (फ्रा.) स्वातंत्र्यं, स्वाधी-नता ।
 सुदना, कि. अ. (हिं. खोदना) खन्-उत्कृ-ता (कर्म.), अवद-भिद (कर्म.) ।
 सुदरा, सं. पुं. (सं. शुद्र >) शुद्र-साधारण, वस्तु (न.) । वि., दे. 'सुरदरा' ।
 सुदवाई, सं. स्त्री. (हिं. सुदवाना) अन्व-कृत, खननं-खातिः (स्त्री.) २. खनन, भृत्या-भृतिः (स्त्री.) ।
 सुदवाना, सुदाना, कि. प्रे., 'खोदना' के प्रे. रूप ।
 सुदा, सं. पुं. (फ्रा.) स्वयंभूः (पुं.), दे. 'ईश्वर' ।
 —न स्वास्ता, मु., ईशो न कुर्यात् ।
 —परस्त, वि., ईश्वरपूजक, आस्तिक ।
 —सुदा कर के, मु., येन केन प्रकारेण, अति-कथेन कृच्छ्रेण, यथाकथञ्चित् ।
 —की मार, मु., ईश्वर-द्वैव, प्रकोपः ।
 सुदाई, सं. स्त्री. (फ्रा.) ईश्वरत्वं २. सृष्टिः (स्त्री.) ।
 सुदाई, सं. स्त्री. (हिं. खोदना) खातिः (स्त्री.) २. खननकिया ३. खननभृतिः (स्त्री.) ।
 सुदाताळा, सं. पुं. (अ.) परमेश्वरः, परमेशः ।

खुदाबंद, सं. पुं. (फ़ा.) ईश्वरः २. स्वामिन् (पुं.)
२. भगवत्-श्रीमत् (पुं.), आर्यः, मिश्रः (सब
सम्मानसूचक शब्द) ।

खुदी, सं. स्त्री. (फ़ा.) अहन्भावः, अहङ्कारः
२. अभिमानः, दर्पः ।

खुदी, सं. स्त्री. (सं. क्षुद्र >) वैदलतण्डुला-
दीनां कणः ।

खुनक, वि. (फ़ा.) शीत, शीतल, हिम ।

खुनकी, सं. स्त्री. (फ़ा.) शैत्यम् ।

खुनखुना, सं. पुं. (अनु.) क्षणक्षणः, खणखणः,
कीटनकोपः ।

खुनस, सं. स्त्री. (सं. खिन्नभनस् >) कोपः,
क्रोधः ।

खुनरसाना, क्रि. अ., दे. 'क्रोध करना' ।

खुनसी, वि. (हि. खुनम) कोपन, क्रोधन,
रोषण ।

खुनाक, सं. पुं. दे. 'खिफ़ीरिया' ।

खुफ़िया, वि. (फ़ा.) गुह्य, गुप्त, निभृत ।

—**पुलिस**, सं. स्त्री. (फ़ा. + अं.) प्रच्छन्न-गुप्त-
गृह, रक्षिणः (बहु.), अपसर्पाः, चराः, स्पशाः ।

खुब(अ)ना, क्रि. अ. (अनु.) आ-प्र-विश (तु.
प. अ.), व्यध् (दि. प. अ.), छिद् (र. प.
अ.), छिद्रं-प्रवेशं कृ ।

खुमार, सं. पुं. (अ.) नमोद्भूतः, क्षीवता,
शौडता २. मन्द्रा, निद्रासुप्तं ३. निशाजागरजं
शैथिल्यम् ।

खुमारी, सं. स्त्री., दे. 'खुमार' ।

खुरंद, सं. पुं. (सं. खुर = खुरचना >) शुष्क-
त्रणत्वच् (स्त्री.), ईर्ष्याक्षी २. किलासं,
सिद्धम् ।

खुर, सं. पुं. (सं.) शफःफं, विषयः, निवृध्यः,
धुरः २. खट्वादीनां पादुकम् ।

—**दार**, वि., खुरिन्, शफिन् ।

खुरखुर, सं. स्त्री. (अनु.) खुरखुर-घरघर,
शब्दः-नादः ।

खुरखुरा, वि. (सं. खुर = खुरचना >), दुःस्वप्नं,
असम, विषम, श्लक्ष्णता-शून्य ।

खुरचन, सं. स्त्री. (हि. खुरचना) * खुरितं,
पयःपात्रखुरितं २. खुरितं, मिष्टान्न-कांदव, भेदः ।

खुरचना, क्रि. स. (सं. खुरणं) खुर-खुर (तु.
प. से.), उा-वि-लिख् (तु. प. से.) २. अण-
व्या-नृञ् (अ. प. वे.), विलुप् (प्रे.) ।

खुरचनी, सं. स्त्री. (हि. खुरचना) उहेखनी,
निर्मवणी २. काष्ठकुदालः, खनिचं ३. दुग्धपात्र-
खुरितम् ।

खुरजी, सं. स्त्री. (फ़ा.) दे. 'खैला' ।

खुरदरा, वि. नतोन्नतं २. असम, विषम, विण्ट-
कावृत्त, श्लक्ष्णता-खिन्नता-परि'कार, शून्य ।

खुरपा, सं. पुं. (सं. क्षुरप्रः) घासछेदनशकं,
लक्ष्-टंगः-टंगं-स्वामिचं २. चर्मकारोपकरणभेदः ।

खुरमा, सं. पुं. (फ़ा.) खजूरं, खजुरी पालम्
२. दे. 'खुहारा' ३. मिष्टान्नभेदः ।

खुरली, सं. स्त्री. (सं.) श्लक्षाभ्यास-
स्थलम् ।

खुरौट, वि., दे. 'खुराट' ।

खुराक, सं. स्त्री. (फ़ा.) भोजनं, भक्ष्यं, खाद्यं,
आहारः, भोजनं २. (औषध-) गात्रा, रागाः ।

खुराकी, वि. (फ़ा.) औदरिक, अदमर,
धमर । सं. स्त्री., (दैनिक-) भोजनव्य ।

खुराफान, सं. स्त्री. (अ.) अरलील-ग्राम्य-
अशिष्ट-वचनानि (बहु.) २. मान्य-दुर्वचनानि
(बहु.) ३. कलहः ।

खुरी, सं. स्त्री. (सं. खुरः) शफ-विन्द, चिह्नं
२. दे. 'खुरी' ।

—**करना**, तु., अतिक्षिप्रं चल (भ्वा. प. से.) ।

खुर्द, वि. (फ़ा.) लघु, अल्प, सूक्ष्म ।

—**दीन**, सं. स्त्री. (फ़ा.) सूक्ष्मदर्शकक्षेत्र,
अन्धीक्षणदंष्ट्रम् ।

—**खुर्द**, वि., (फ़ा.) नष्टभ्रष्ट २. समाप्त ।

खुराट, वि. (देश.) धूर्त, कुटिल, शठ २. वृद्ध
३. अनुभवित् ।

खुलना, क्रि. अ. (सं. खुल-तोडना >)
(दारादि) वि-अपा-वृ (कर्म.), निरगली भू,
असंबृत-उद्धाटित (वि.) + भू २. (कली आदि)
विकस-दल-फुल्ल (भ्वा. प. से.), भिद् (कर्म.)
३. (औंस) उन्मिष् (तु. प. से.), जमील्
(भ्वा. प. से.) ४. (हाथ) प्रस् (भ्वा. प.
अ.), वितन् (कर्म.) ५. (मुख) व्यादा
(कर्म.), विजम्भ् (भ्वा. आ. से.) ६. (रह-
स्यादि) प्रकटी-व्यती-आविर् + भू, प्रकाश्
(भ्वा. आ. से.) ७. प्रारम् प्रस्तु (कर्म.) ८.
उदग्रंथ् (कर्म.), शिथिलीय, उन्मुच् (कर्म.)
९. (भूमि आदि विद-भिद् (कर्म.) ।

खुलवाना

[१५१]

खूँदना

खुल खोलना, खु, व्यक्त प्रकाश-अनिर्मुक्त निर्भयं (किञ्चित् कार्य) कृ अथवा विषयासक्त (वि. न. भू.) ।

खुलवाना, कि. प्रे. 'खोलना' के प्रे. रूप ।

खुला, वि. (हि. गुलना) उदाय, उद्ग्रथित, उत्सृष्ट, मुक्त, वन्धनहीन २. शिथिल, प्रश्लथ, विमलिन ३. शिथिलसन्धि, विरल ४. स्पष्ट, प्रकट, व्यक्त ५. अनावृत्त, न्यायित, असंवृत ६. विस्तृत, विस्तीर्ण, विशाल । 'खुलना' के बाहुभों के लीत रूप ।

खुले आम कि. वि., प्रत्यक्ष, प्रकट
खुले स्वभावे प्रकाश, व्यक्त, निर्भय,
खुले मैदान निःशङ्क ।

खुलम खुल्ला

खुलना, कि. प्रे. 'खोलना' के प्रे. रूप ।

खुलामा, सं. पुं. (फ़ा.) सारांश, संक्षेप ।

खुश, वि. (फ़ा.) प्रसन्न, प्रसन्नित, प्रहृष्ट ।

—होना, वि. अ., आनन्द (भ्वा. प. से.), सुष्ट (भ्वा. आ. से.), हृष् (दि. प. से.), परि-सं-त्पूर् (कि. प. अ.), दे. 'प्रसन्न होना' ।

—किश्मन, वि. (फ़ा.) सीमाव्यवस्थित ।

—किश्मनी, सं. स्त्री. (फ़ा.) सीमावत्य ।

—खन, वि. (फ़ा.) लिपिश, सुलेखक ।

—खनी, सं. स्त्री. (फ़ा.) सुलेखन-कौशल-नैपुण्यविष्णु ।

—खवरी, सं. स्त्री. (फ़ा.) शुभ-सु. सनाचारः वार्ता-वृत्त-उद्घनः ।

—खवार, वि. (फ़ा.) खिर, सुन्द, आनन्दक ।

—खिल, वि. (फ़ा.) प्रसन्नमनस्, संतोषिन् ।

—नसीब, वि. (फ़ा.) सीमाव्यवत्, धन्य ।

—नसीबी, सं. स्त्री. (फ़ा.) सीमाव्यवत्ता ।

—नुमा, वि. (फ़ा.) सुदर्शन, मनोहर, सुन्दर ।

—बू, सं. स्त्री. (फ़ा.) दे. 'सुगंध', सुवासः ।

—बुदार, वि. (फ़ा.) सुगन्धित, सुगन्धि ।

—रंग, वि. (फ़ा.) सुरंग, सुवर्ण ।

—हाल, वि. (फ़ा.) समृद्ध, संपन्न ।

—हाली, सं. स्त्री. (फ़ा.) अभ्युदयः, समृद्धिः (स्त्री.) ।

खुशामद, सं. स्त्री. (फ़ा.) चाटु (पुं. न.), चाटुक्तिः (स्त्री.), अति-मिथ्या-स्तुतिः (स्त्री.), प्रशंसा, चाटुवादः ।

—करना, कि. स., मिथ्या-अतिमात्र-अतीव प्रशंस (भ्वा. प. से.)-रतु (अ. प. अ.)-नु (अ. प. से.), अभि-परि-सं-नु, चाटुक्तिभिः सात्व-उपलब्-उपहृष्ट (तु.), चाटुनि वद (भ्वा. प. से.) ।

खुशामदी, वि. (फ़ा. खुशामद) मिथ्या-प्रशंसक, चाटुकार, प्रशंसक, चाटुनादिन् (पुं.) ।

—टट्टू, सं. पुं., आवसुरोपिन्, चाटुपट्टः ।

खुशी, सं. स्त्री. (फ़ा.) हर्षः, प्रसन्नता, मोदः, आनन्द-प्रमोदः, आक्षादः, सन्तोषः, उदासः, चित्तप्रसादः, प्रीतिः-सुष्टिः (स्त्री.) ।

—मनाना, कि. अ. दे. 'खुश होना' ।

खुश्क, वि. (फ़ा.), सं. शुष्क,) शुष्क, अजल, निर्जल, वान, गोरस २. रुक्ष, स्नेहशून्य, अशिष्ट ३. खान, खान, विशीर्ष ।

—खाली, सं. स्त्री. (फ़ा.) अनाशुष्टिः (स्त्री.), २. दुर्मिक्षन् ।

खुश्का, सं. पुं. (फ़ा.) जलरहितः नन ।

खुश्की, सं. स्त्री. (फ़ा.) शुष्कता, निर्जलता, २. रुक्षता ३. स्थल ४. दे. 'पलथन' ।

खुसरफुमर, सं. स्त्री. (अनु.) दे. 'कानाफूसी' ।

खुसिया, सं. पुं. (अ.) सुष्कः, वषटः, शुष्क-द्रव्यिः ।

—खरदार, वि. चाटु-कार-वादिन् ।

खुसूसियत, सं. स्त्री. (अ.) विशेषता, विशिष्टता, विलक्षणता ।

खुँखार, वि. (फ़ा.) रक्त-रुधिर, प्रिय, जिवांसु, हिंस्र । २. भीषण ३. निर्दय ।

खूँट, सं. पुं. (सं. खँट-खँ) अंशः, भागः । २. अक्षः, कोणः ३. अन्तः ४. पाद्वर्कः ५. कर्णमूलम् ।

खूँटा, सं. पुं. (सं. क्षीयः) शंखः, कीलः कीलकः पुण्यलः २. नागदन्तः भाररश्मिः (स्त्री.) ३. काष्ठस्थूणा ।

खूँटी, सं. स्त्री. (हि. खूँटा) लघु-कीलः-कीलकः, २. नागदन्तः तकः ३. तनुरुह-लीम, मूलं ४. शस्यलवनातेतरं क्षेत्रस्थं कालमूलम् ।

खूँद, सं. स्त्री. (हि. खूँदना) अभादीनां सुरेण भूमिलेखनम् ।

खूँदना, कि. स. (खुण्ड=तोडना >) (अभा-दयः) सुरेण वृथिर्था आहन् (अ. प. अ.)-वृष्ट (भ्वा. प. से.)-लिख् (तु. प. से.) ।

खुद

[१५२]

खेल

खुद, खुदक, खुदर, सं. स्त्री. (सं. छुद >)
दे. 'कूडा' ।

खून, सं. पुं. (फ्रा.) कथिरं, रक्तं, लोहितं
शोणितं, असृज् (न.), अस्त्रं २. बधः, हत्या ।
—करना, कि. स., बधं-घातं-हत्यां कृ, हन् (अ.
प. अ.), मृ-भ्यापद् (प्रे.) २. प्रसादेन नश-
अवसद् (प्रे.) ।

—होना, कि. अ., द्वेषात् हन्-भार-भ्यापद्
(कर्म.) ।

—खराबा, सं. पुं. (फ्रा.) नृ-नर, बधः-हत्या,
रक्त-पातः-स्त्रावः ।

—खवार, वि. दे. 'खुंखार' ।

—थूकना, सं. पुं., रक्तघोवनम् ।

—औखों में उत्तर आना, मु., कोपारुणनयन
(वि.) + भू ।

—उबलना या खौलना, मु., अतीव क्रुप
(दि. प. से.) ।

—का प्यासा, मु., जिपांसु, बधोघत ।

सधार होना या खबना, मु., वधाय-हत्यायै
सञ्ज उषत (वि.) + भू ।

खूनी, सं. पुं. (फ्रा.) पातकः, हंतृ (पुं.) । वि.,
हतुकाम, वधैषिन्, जिषांसु ।

खूब, वि. (फ्रा.) अच्छ, भद्र, उत्तम, श्रेष्ठ ।
कि. वि., सम्यक्, साधु, शोभनम् ।

—रू, वि. (फ्रा.) सुमुख (सुमुखी स्त्री.) ।

—सूरत, वि. (फ्रा.) सुन्दर, सुल्प ।

—सूरती, सं. स्त्री. (फ्रा.) सुंदरता, सुल्पना ।

खूबी, सं. स्त्री. (फ्रा.) अलक्षता, उत्तमता
२. गुणः, विशेषः, विलक्षणता ।

खूसद, सं. पुं. (सं. कौशिक) दे. 'जल्ल'
२. जरठः, स्थविरः । वि., रसिकताशून्य, शुष्क-
हृदय २. जठ ३. कुदर्शन ।

खेचर, सं. पुं. (सं.) गगनविहारिन्, ज्योमगः
२. ग्रहः, नक्षत्रं ३. वायुः (पुं.) ४. देवः
५. विमानः नं ६. खगः ७. नेत्रः ८. भूतप्रेताः
९. राक्षसः १०. विद्याधरः ११. शिवः
१२-१३ दे. 'पारा' तथा 'कसीस' ।

खेचरात्र, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'खिलद्वी' ।

खेटक, सं. पुं. (सं.) मृगाया, आखेटः २. कर्पक-
ग्रामः ३. नक्षत्रं ४. बलदेवपदा ५. यष्टिः (स्त्री.)
६. डाल, फलकम् ।

खेटकी, सं. पुं., दे. 'शिकारी' ।

खेदा, सं. पुं. (सं. खेटः) लघुग्रामः, ग्रामटिका ।
—पति, सं. पुं. ग्रामणीः (पुं.) ।

खेदा, सं. पुं. (देश.) विविधाश्रमयोगः ।

खेत, सं. पुं. (सं. क्षेत्रं) केदारः, भूमिः (स्त्री.),
वप्राः-प्रे, बलजं, निष्कृतः, रत्जिका, पाटीरः
२. शस्यं, कृषिफलं ३. रण-युद्ध सनर, भूमिः
४. खड्ग, फल-पदं । ५. उत्पत्तिस्थानं
६. (पशुनां) जातिः (स्त्री.) ।

—आना या रहना, मु., वीरगति, आगः-स्वा.
उ. अ.), युद्धे हन् (कर्म.) ।

—छोबना, मु., युद्धात् पलाय (भ्वा. आ. से.)

खेतिहर, सं. पुं., दे. 'किसान' ।

खेती, सं. स्त्री. (हि. खेत) दे. 'कृषि' २. शस्यं,
कृषिफलम् ।

—बारी, सं. स्त्री., दे. 'कृषि' ।

खेद, सं. पुं. (सं.) अनुशोकः, अनुपातः, २. दुःखं,
शोकः, आधिः (पुं.), आ (अ) तिः (स्त्री.),
क्लेशः ३. क्लानिः-कृतिः-आतिः (स्त्री.) ।

—जनक, वि. (सं.) अनुशोकप्रद, दुःखदायक,
क्लेशकर, आतिजनक ।

खेदना, कि. सं. सं. (खेटः >) दे. 'खेदरना' ।

खेदा, सं. पुं. (हि. खेदना) गजादिबंधनं-रजरम् ।
२. दे. 'शिकार' ।

खेदित, वि. (सं.) खिन्न, अनुत्तस २. श्रांत, श्रान्त ।

खेना, कि. स., (सं. क्षेत्रण >) नौर्द्वेन संचल्-
प्रेर-प्रनुद-प्रमुद (प्रे.) । २. नौकां बह-गेर
(प्रे.) इ. ३. दे. 'विताना' ।

खेप, सं. स्त्री. (सं. क्षेत्रः >) सफुदाक्षो नारः
२. पोतरथं द्रव्यं ३. नौकादीनां सङ्घं यात्रा ।

खेपना, कि. स. (सं. क्षेत्रण) दे. 'विताना' ।

खेम, सं. पुं., दे. 'क्षेम' ।

खेमा, सं. पुं. (अ.) पद-चख-संढप-गृहं-
वेदमन् (न.), दुष्यं-दयम् ।

—गाबना, कि. स., द्रव्यं रच् (नृ.)-उप-
कल्प (प्रे.) ।

खेल, सं. पुं. (सं. खेला) क्रीडा, खेलिः (स्त्री.),
खलनं, लीला २. वृत्तं, उदंतः ३. सुकर-शुद्ध-
कार्यं ४. कामक्रीडा, संभोगः ५. आभिनयः,
नाटकं ६. कोटुकं, विचित्रकार्यं ७. (पशुओं
के लिए) जलद्रीणिः (स्त्री.)-णी ।

—समसना, मु., सुकरं मन् (दि. आ. अ.) ।

खेलना

[१५३]

खोखला

खेलना, क्रि. अ. (सं. खेलन्) खिल् विलस् ।
क्रीड् (स्वा. प. से.), विह्व (स्वा. प. अ.)

२. गंमोगं-रतिक्रिया कृ ३. विनर्चल् (स्वा. प. से.) ४. भूताविष्टः अंगानि चल् (प्रे.)
क्रि. स., नट्-रूप (न.), अभिनी (स्वा. प. अ.) । (जूआ आदि) दिव् (दि. प. से.),
रुक् (न. उ. से.) ।

खेलनी, सं. स्त्री. (सं.) चतुरंगक्रीडापरः
२. शारः, शारिः (पुं.) ।

खेलवाङ्, सं. पुं., दे. 'खिलवाङ्' ।

खेलवादी, क्रि. दे. 'खिलादी' ।

खेलवाना, क्रि. प्रे., 'खेलना' के प्रे. रूप ।

खेला, सं. स्त्री. (सं.) क्रीडा, लीला ।

खेलाङ्गी, क्रि. दे. 'खिलाङ्गी' ।

खेलाना, क्रि. प्रे., 'खेलना' के प्रे. रूप ।

खेलि, सं. स्त्री. (सं.) क्रीडा, लीला । सं. पुं.,
पद्मः २. ताराः ३. भुवः ४. शरः ५ गीतम् ।

खेवक, सं. पुं. }

खेवट, सं. पुं. } (हि. खेचा) दे. 'केवट' ।

खेवट, सं. पुं. (हि. ज्येत + वट प्रत्य.) क्षेत्र-
पतिलेखः ।

खेचना, क्रि. स., दे. 'खेना' ।

खेना, सं. पुं. (हि. खेना) तार्थ, तरपण्यं,
आतरः शारिकं २. नौकया मदीलघनं ३. वारः,
श्वसतः, पर्यायः ४. भाराकृता नौः (स्त्री.) ।

खेघैया, सं. पुं. (हि. खेचना) दे. 'केवट' ।

खेस, सं. पुं. (देश.) अन्तरः, आन्तरपटः ।

खेसारी, सं. स्त्री. (सं. कृशरः >) कलायमेदः ।

खेह (र), सं. स्त्री. (सं. क्षारः) रजस् (न.),
धूलिः (स्त्री.) २. भस्मम् (न.), भसितम् ।

खेचना, क्रि. स., दे. 'खेचना' ।

खेचवाना, क्रि. प्रे., 'खेचना' के प्रे. रूप ।

खेचाखेच-ची } सं. स्त्री., दे. 'खेचान' ।
खेचातान-नी }

खैर, सं. पुं. (सं. खदिरः) सारद्रुमः, यज्ञांगः
कुप्रारिः (पुं.), दंतधावनः २. (हि. कथा)
खादिरः, खदिरसारः ३. स्वभेदः ।

खैर, क्रि. वि. (अ.) अर्तु, एवं, साधु, भद्रं,
सुष्ठु (सब अर्थ.) २. का चिन्ता ।

सं. स्त्री., कुशलं, भंगलम् ।

—आफियत, सं. स्त्री. (अ.) कुशलक्षेमम् ।

—ख्वाह, वि. (अ. + फ़ा.) शुभचिन्तकं,
हितैषिन् ।

—ख्वाही, सं. स्त्री. (अ + फ़ा.) शुभचिन्तकता,
हितैषिता ।

खैरा, वि. (हि. खैर) खदिरवर्णं । सं. पुं.,
खादिरवर्णः कपोतो अथो वकी वा २. नल-
तल-मीनः ।

खैरात, सं. स्त्री. (अ.) दानं, त्यागः ।

खैराती, वि (अ.) धर्मार्थ, पुण्यार्थ २. वदान्य,
उदार ।

खैरियत, सं. स्त्री. (अ.) मंगलम्, कृशलम् ।

खों (खं) गाह, सं. पुं. (सं. खांगाहः तथा
खोंकाहः) एवेतपिगलाशः ।

खों खों, सं. स्त्री. (अनु.) कास-क्षयश्च, शब्दः ।

खोंच, सं. स्त्री. (सं. कुच=लकीर डालना >)
कीलादिभिः वस्त्र-विदर-विदल-रंभम् २. दे.
'खरोंच' ।

—आना या लगना, क्रि. अ., कीलादिभिः धृ
(कर्म. दीर्घेति) ।

खोंचना, क्रि. स., दे. 'खरोंचना' ।

खोंचा, सं. पुं. (सं. कुच=लोडना >) खग-
बन्धनवंशः २. दे. खोंच' ३. दे. 'खरोंच'
४. आघातः, प्रहारः ५. पूरणम् ।

—खोंची, सं. स्त्री., परस्परकलहः, मिथः-
प्रहारः ।

खोंची, सं. स्त्री. (सं. कृन् >) पूर्णं २. पदा-
र्थान्तरनिवेशितवस्तु (न.) ३. सुद्वरतुकचः ।

खोंटना, क्रि. स. (सं. खुड्=तोड़ना >)
अंगुलाभिः पत्रपुष्पं लुट् (प्रे.), उद्धृ-उत्कृप्
(स्वा. प. अ.) ।

खोंटा, वि., दे. 'खोंटा' ।

खोंडर, सं. पुं. (सं. कोटरः-रं) निष्कुहः ।

खोंडा, वि. (सं. खोंड) विकलांग, विकल,
खंज, पंगु २. दंतहीन ।

खोंटा, खोंथा, सं. पुं. दे. 'खोंसला' ।

खोंपा, सं. पुं. दे. 'खोंपा' ।

खोंसना, क्रि. स. (सं. कोशः >) पूर्णं, नि-
आ, वेदनं, निधानम् ।

खोंआ, सं. पुं., दे. 'खोंथा' ।

खोखला, वि. (हि. खुक्ख) शून्य-रिक्त-
गर्भ-उदर-मध्य ।

श्लोका

[१५४]

श्लोपदा, श्लोपरा

श्लोखा, सं. पुं. (हि. लृक्ख) धनापणादेशपत्रं ।

(सं.) बालः (श्लोखी (स्त्री.) = बालिका) ।

श्लोख, सं. स्त्री. (हिं. श्लोखना) अन्वेषण-गा,

अन्वेषण-गा, मार्गण-गा, अनुसंधानं, श्लोखः

२. चिह्नं, लक्षणं ३. चक्र-पाद, चिह्नम् ।

—करना, क्रि. स. दे. 'श्लोखना' ।

—खाज, सं. स्त्री., पृच्छा, अनुगोचः २. अनु-

संधानं, विचारः-वर्ण-रणा ३. अन्वेषणम् ।

श्लोखना, क्रि. स. (सं. लृक्-चुराना >)

अन्वेष (दि. प. से.), निरूप-मार्ग (जु.),

सुगं (जु. आ. से.), अनुसंधा (जु. उ. अ.)

विचि (स्वा. उ. अ.), अन्-निर्-ईक्ष

(स्वा. आ. से.) ।

श्लोखवाना, श्लोखाना, क्रि. प्रे. 'श्लोखना' के

प्रे. रूप ।

श्लोखा, सं. पुं. (प्रा. श्लवाजः) सौविदः, सौवि-

दल्यः, कंठिकन्, २. सेवकः ३. आर्यः,

महादयः, मिश्रः, नायकः ।

श्लोखाना, क्रि. अ., दे. 'श्लोना' (क्रि. अ.) ।

श्लोखी, श्लोखिया, सं. पुं. (हिं. श्लोखना)

अन्वेषकः, निरूपकः, निरीक्षक, अनुसंधायकः,

२. चरः, चारः, अपसर्पः ।

श्लोख, सं. स्त्री. (सं. श्लोद >) दोषः, वैकल्यं,

वैगुण्यं, दूषणं २. मिश्रणं, ३. मिश्रधातुः (पुं.),

कृष्वं, अपद्रव्यम् ।

—मिलाना, क्रि. स., अपद्रव्येण मिश्र (जु.) ।

श्लोखा, वि. (सं. श्लोद >) दूषित, सक्षीपः,

दोषिन्, विकल २. (अपद्रव्येण) मिश्रित, कूट,

कृत्रिम् ३. दुष्ट, खल ४. छलिन, अधार्मिक ।

श्लोखा खरी सुनाना, मु., निर्भर्त्सन्-तर्ज (जु.),

अविशिष्ट (तु. प. अ.), निद (स्वा. प. से.) ।

श्लोखाई, सं. स्त्री., दे. 'श्लोखपन' ।

श्लोखपन, सं. पुं. (हिं. श्लोखा) दूषता, क्षुद्रत्वं

२. छलं, कपटं ३. दोषः, वैगुण्यं ४. अप-

द्रव्यमिश्रणम् ।

श्लोख, वि. (सं.) विकलांग, अंगहीन, विकले-

न्द्रिय, दोगढ ।

श्लोख, सं. स्त्री. (हिं. श्लोद) देव-भूत-प्रेत-

कोपः २. रोगः ३. कुसुदूर्त-वैत ४. दोषः,

विकलता ५. चंदनकाष्ठखंडः इम् ।

श्लोखरा, सं. पुं., दे. 'कोटर' ।

श्लोखा, सं. पुं. दे. 'श्लोखी' ।

श्लोद, सं. पुं. (फा. श्लोद) श्लोकः, लोह-

धातुमय, शिरस्त्राण-शीर्षण्यं शिरस्कम् ।

श्लोद, सं. पुं. (हिं. श्लोदना) पृच्छा

२. निरीक्षणम् ।

—विनोद, सं. पुं., अतीव अनुयोगः-अवैभ्रण-

विचारणम् ।

—कर पृच्छना, मु., निभृते रत्तरय-गृहं प्रच्छ

(तु. प. अ.)-अनुयञ् (रु. आ. अ.) ।

श्लोदना, क्रि. स. (सं. लृक्-तोडना >) खन्

(स्वा. उ. से.), (भूमि) अवदू (प्रे.), भिद्

(रु. प. अ.) । २. उपद्र-उन्मूल (जु.)

३. लक्ष् (तु. प. से.), लक्ष-त्वक्ष (स्वा. प.

से.), सुद (जु.) ४. उन्मूल, निभिद्

(रु. प. अ.) ५. यष्ट्यादिभिः संज्ञापीड

(जु.) ६. सर्पि-उत्तिष्ठ (प्रे.) । सं. पुं., खनन,

खातिः (स्त्री.), अवदारणं, भेदनं, उत्पातनं,

उन्मूलनं, उत्तिकरणं, लक्षणं इ. ।

—शौर्य, वि., खननीय, वैद्य, अवदारयितव्य,

उत्पादनीय, उन्मूलयितव्य ।

—बाला, सं. पुं. खनकः-की स्त्री., अवदारकः,

उन्मूलकः उत्पादकः ।

श्लोदा हुआ, वि., खात, अवदीर्ण, उन्मूलित,

उत्पादित इ. ।

श्लोदनी, सं. स्त्री. (हिं. श्लोदना) लघु-

खनित्र-टांगः ।

कन—सं. स्त्री., अशोधनी, कणक-शुद्धनी ।

कन—, सं. स्त्री., रदनशोधनी, कृते-लजनी ।

श्लोदवाना, क्रि. प्रे., 'श्लोदना' के प्रे. रूप ।

श्लोदाई, सं. स्त्री., दे. 'श्लोदाई' ।

श्लोन्चा, सं. पु. (फा. श्लान्चः) मोडवाह-

भाजनं, क्षुद्रवस्तुविक्रेतुः पात्रम् ।

श्लोना, क्रि. स. (सं. क्षेपण >) हा (जु. प.

अ.), ख्य (स्वा. प. अ.) २. अपव्यय

(जु.) वृथा क्षै-हम् (प्रे.) । ३. विपक, नश

(प्रे.) ; क्रि. अ., मार्गान् ग्रंथ-ग्रंथं (स्वा.

आ. से.), संभ्रम् (दि. प. से.) २. नश

(दि. प. से.), च्य (स्वा. आ. अ.) ।

श्लोपदा, श्लोपरा, सं. पुं. (सं. खर्पदः) कपाल-

लं, करारः २. शीर्ष, शिरस् (न.) ३. उपकलं,

नारिवेदः-लः, कौशिलफलं ४. अपकल-नारि-

केर, वीज-गर्भः ५. शिक्षापात्रम् ।

श्लोषबी

[१५५]

खिष्टान

श्लोषबी, सं. स्त्री. (हि. श्लोषडा) दे. 'श्लोषडा' (१, २) ।

अंधी या औंधी-का, मु. जड, अज्ञ, मंदमति ।

—खाना या चाट जाना, मु., वाचालतया उद्विज्-मंतप्-अर्द्ध (प्रे.) ।

—गंजी करना, मु. आद्यधिकं तद् (प्रे.) ।

श्लोषा, सं. पुं. (सं. सपरः) चारिनेल-बीज-धर्मः १. तुणवश्लोषः २. मार्गाभिमुखो गृह-कोणः ४. अग्रप्रस्थः त्रिकोणः बेशयिन्यामः । ५. बेनी-कवरी-कच-रंधः, जटः-टकम ।

श्लोषा, सं. पुं. (सं. श्लोदः >) घनी-दधानी-सांद्रो-कृतं, दग्धं, किलादः २. इक्षु-शेषः-शेषं, हृत्तरसः इक्षुः ३. इष्टकालेयः ।

श्लोषा, वि. (हि. श्लोना) चष्ट, अष्ट, संश्रान्त ।

श्लोर, वि. (सं.) पशु, मंज, श्लेष्, श्लोड, श्लोः ।

श्लोरा, सं. पुं. (सं. श्लोकः वा फा. आक्शोरः) लपकः-कं, पात्रम् : दे. 'कटीरा' ।

श्लोरी, सं. स्त्री, दे. 'श्लोरा' ।

श्लोर्ल, सं. पुं. (सं. श्लोर्ल >) कोषः-दाः, बेटनं, श्वरर्षणं २. कौरत्वच (स्त्री.) ३. पुटः-दं ४. उषरीयं, श्लेष्म् ।

श्लोर्लक, सं. पुं. (सं. श्लोरकाणम् २. कपालः-लं ३. कमुक-पुन-त्वच् (स्त्री.) ४. वल्मीकः-कं ५. सर्पदिलम् ।

श्लोर्लना, कि. स., (सं. श्लृ = भेदन >) (डारदि) उशयत् (प्रे.), वि-अपा-वृ (म्या. उ. से.), निरगलीक । (ओम्बे) उन्मील, लम्भिष्-उन्फल् (प्रे.) । (मुख) व्यादा (ज. प. अ.), उन् वि. । जुम्भ (प्रे.), (रहस्यादि) आविष्-न्वस्ती-प्रकटी, कृ । २. शिथिलयति (ना. धा.), मोक्ष (लु.), उन्मुच् (प्र.) ३. विरतु-विरतु (प्रे.) ४. अपा वि-वृ, उच्छिद् (प्रे.) ५. निवस्त्रं कृ ६. न्याक, न्याख्या (अ. प. अ.) । सं. पुं., उद्घाटनं, विवरणं, उन्मीलनं, विकासः, स्फुटनं, विजृम्भणं, आविष्करणं, उन्मोचनं इ. ।

श्लोर्लने योग्य, वि., उद्घाटनीय, उन्मीलितव्य, उन्मोचनीय इ. ।

श्लोवा, सं. पुं., दे. 'श्लोवा' ।

श्लोशा, सं. पुं. (फा.) गुच्छः, गुत्तः, स्तबकः ।

श्लोसना, कि. स., दे. 'श्लोसना' ।

श्लोह, सं. स्त्री. (सं. गोहः) मंदरः-रा, गुह, गहरं, दरी २. विवरः-रं, विलं, कुहरम् ।

श्लो, सं. स्त्री. (सं. श्लृ >) गर्भः, अयतः, विलम् २. कुशलः, धान्यकोष्ठः ।

श्लोच्चा, सं. पुं. (सं. पट् + च) साक्षेपश्लिः गुणतत्त्विका ।

श्लोसदा, सं. पुं. (सं. सुमता >) जर्ण, उपातद् (स्त्री.)-पादत्रम् ।

श्लोफ, सं. पुं. (अ.) मयं, भीतिः (स्त्री.), वासः ।

—नाक, वि. (अ. + फा.) भगकर, भीतिजनक ।

श्लौर, सं. स्त्री. (सं. श्लूर-लकीर टालना >) अर्द्धचंद्राकारं नंदनादेशितलकं २. श्लोमस्तक-भूषणभेदः ।

श्लौरहा, वि. (हि. श्लौरा) (पशु) परमा-सिद्धा, पीठित, पामन ।

श्लौरा, (पशुश्लो का तुजली-रोग) सं. पुं. (सं. श्लौरं या फा. शालश्लौरः >) पामन-सिद्धन् (पुं.), दासा वि. दे. 'श्लौरहा' ।

श्लौर, सं. पुं. (देश.) वृषभ-गर्जना निनादः २. कलहः ।

श्लौरलना, कि. अ., दे. 'उबलना' २. बुद्धबुदायै-फेनायने (ना. धा.) ३. प्रकुम् (वि. प. से.), सं-वि-कुम् (स्वा. भा. से.) ।

श्लौरलाना, कि. प्रे., 'श्लौरलना' के प्रे. रूप ।

श्लौरहा, वि. (हि. श्लौरा) औदरिक, अद्वय, परमर, बुद्धभिक्षु ।

श्ल्यात, वि. (सं.) प्रसिद्ध, विशुण ।

श्ल्याति, सं. स्त्री. (सं.) प्रसिद्धिः-कीर्तिः (स्त्री.) ।

श्ल्यापन, सं. पुं. (सं. न.) प्रकाशनं, घोषणं, प्रचारणम् ।

श्ल्याल, सं. पुं. (अ.) विचारः-रणा. मनं, सं., मतिः (स्त्री.) २. सं-स्मृतिः (स्त्री.), स्मरणं, धारणा ३. अनुमानं, वि-तर्कः, अन्वृहः-ह्ननं ४. आदरः, संमानः ५. गीतिभेदः ।

—से-उतरना, मु., विस्मृ (कर्म.), स्मृतिपथात् प्रंशु (स्वा. भा. से.) ।

श्ल्याली, वि. (अ. श्ल्याल) काल्पनिक, कल्पित, कल्पनात्मक, अवास्तविक, वितथ ।

—श्ल्याल पशाना, मु., गगनकुसुमनि-ल-पु-श्याणि वा चि (स्वा. उ. अ.) ।

श्लिष्टान, सं. पुं. (हि. श्लिष्ट) दे. 'ईसाई' ।

स्त्रीष्ट, सं. पुं. (अं. क्राइरः) दे. 'ईसामसीह' ।

इवाजा, सं. पुं. (फ्रा.) स्वामिन्, प्रभुः
२. अध्यक्षः, नायकः ३. सीविदः-द्वयः ४. प्रेष्ठ-
यवनभिन्नुः (पुं.) ५. आर्यः, मित्रः ।

इवाच, सं. पुं. (फ्रा.) निद्रा २. स्वप्नः ।

इवार, वि. (फ्रा.) नष्ट, ध्वस्त, क्षीण २. अना-
द्यत, अपमानित ।

इवारी, सं. स्त्री. (फ्रा.) विध्वंसः, विनाशः
२. अनादरः, तिरस्कारः ।

इवाह, अव्य. (फ्रा.) वा., अथवा, आहोस्वित्
(संव अव्य.) ।

—म इवाह, कि. वि., मताग्रहण, मताभिमानेन
२. अवदवं, निर्विकल्पम् ।

इवाहिश, सं. स्त्री. (फ्रा.) अभिलाषः, आकांक्षा,
इच्छा ।

—मंद, वि. (फ्रा.) आकांक्षिन्, इच्छुक ।

—करना या रखना, कि. सं., इप् (तु. प. से.),
वच्छि-आकाक्ष-अभिलप् (भ्वा. प. से.) ।

ग

ग, देवनागरीवर्णमालायाः तृतीयवर्जजनवर्णः,
मकारः ।

गंगाशु सं. पुं. (सं. न.) जाह्नवी, गंगा, जल-
वारि (न.), २. बृष्टेः स्वच्छजलम् ।

गंगा, गंगा, सं. स्त्री. (सं. गंगा) जाह्नवी, त्रिप-
थगा, भागीरथी, मंदाकिनी, सुरसरित् (स्त्री.),
विष्णुपदी, सापगा, हरशेखरा ।

—जमनी, वि. (सं. गंगा + हिं. जमुना >)
मिश्रित, संकर, द्विवर्ण २. स्वर्णरजतामय ३. शुद्ध-
कृष्ण, सितसित ।

—जल, सं. पुं. (सं. न.) भागीरथीतौर्यं २. श्वेत-
सूक्ष्मवस्त्रभेदः ।

—जली, सं. स्त्री. (सं. गंगाजल >) गंगाजल-
पात्रम् ।

—जली उठाना, मु. गंगोदयेन शप् (भ्वा.
उ. अ.) ।

—पुत्र, सं. पुं. (सं.) जीष्मः, गंगेयः २. प्रेत-
वाही जातिविशेषः ३. तीर्थवासो विप्रभेदः ।

—सागर, सं. पुं. (सं.) गंगाशुखं २. कलशः,
उदकपात्रभेदः ३. तंगेषु तीर्थविशेषः ।

गंगाल, सं. पुं. (सं. गंगालयः >) बृहज्जलपात्रं ।

गंगोदक, सं. पुं. (सं. न.) गंगा-भागीरथी,
जल-तौर्यम् ।

गं, सं. पुं. (फ्रा., सं.) क्रोशः-घः २. राशिः
(पुं.) ३. निपथा, वाणिज्यस्थानं ४. समूहः ।

गंज, सं. पुं. (सं. गंजः=केश >) खालत्यं,
खल्यटता, विकेशता ।

गंजन, सं. पुं. (सं. न.) अवशा, तिरस्कारः
२. नाशः, ध्वंसः ३. पीडा, व्यथा ।

गंजा, वि. (सं. गंजः=केश >) खल्वद, विकेश
(-शी, स्त्री.), खलति, खलौट ।

गंजी, सं. स्त्री. (सं. गंजः), राशिः (पुं.),
निकरः, समूहः २. दे. 'शकरकंद' ३. दे.
'वनियायन' ।

गंजीफा, सं. पुं. (फ्रा.) पत्रसेलाभेदः ।
२. क्रीडापत्रचयः ।

गंजेरी, गंजल, वि. (हिं. गंजा) गंजापायिन्,
गंजापः ।

गंठकटा, सं. पुं. (हिं. गंठ + काटना) ग्रंथि-
भेदकः, चौरः ।

गंठजोडा, सं. पुं. (हिं. गंठ + जोड़ना) दे.
'गंठबंधन' ।

गंठबंधन, सं. पुं. (सं. ग्रंथिवंधनं) ग्रंथि-ग्रंथिका-
बंधनं-योजनं-संश्लेषणं । (वैवाहिकरौतभेदः) ।

गंठ, सं. पुं. (सं.) गल्लः, कपोलः २. इस्ति-
कपोलः, कटः, करटः ३. दे. 'कनपटी'
४. स्फोटकः, पिटकः ५. रेखा, चिह्नं ६. ग्रंथिः
(पुं.) ७. खड्गिन्, गंठयः ८. रक्षाकरंडः
९. गडुः (पुं.) ।

—माला, सं. स्त्री. (सं.) गल्लगंडः, कंठमाला,
गलरोगभेदः ।

—स्थल, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'कनपटी' ।

गंठक, सं. पुं. (सं.) कंठधार्यो रक्षाकरंडः
२. ग्रंथिः (पुं.) ३. स्फोटकरोगभेदः ४. खड्गिन्
(पुं.) ५. चिह्नं ६. देशविशेषः ।

गंठकी, सं. स्त्री. (सं.) नदीविशेषः
२. खड्गिनी, खड्गचुगी, गुंगमुखी ।

गंडा

[१५०]

गँवारू

गंडा, सं. पुं. (सं. गंडकः=गांठ) १. कंठधार्यो रक्षाकरंजः २. चतुष्कं, चतुष्टयं ३. कपर्दिका-पण, चतुष्टय ४. बलयः, चक्रं ५. ह्यकंठभूषणं ६. इक्षुः (पुं.) ।

—तावीज, सं. पुं., मंत्रयंत्रम् ।

—तावीज करना, कि. स., रक्षाकरंटैः भूतप्रेतान् निष्कम् (प्रे.) दूरी कृ ।

गँडा(डा)सा, सं. पुं. (हि. गेदी + सं. असिः >) यवस-घास, छेदनी २. लघु, परशुः (पुं.) परश्वधः ।

गँडूष, सं. पुं. (सं.) गंडूषा, जुलुकः, जुलुकः । २. शुंटाग्रं, शुंढाराग्रम् ।

गँडेरी, सं. स्त्री. (हि. गंडा) इक्षुः-खण्डकः कम् ।

गँदगी, सं. स्त्री. (फ्रा.) मलः-लं, अव (प) स्करः, कल्कं-ककः, किट्टं, कदमः २. मालिन्यं, कालुष्यं ३. अपचित्रता, अशुचिना ।

गँद्ला, वि., दे. 'गंदा' ।

गँदा, वि. (फ्रा.) मलिन, मलीमस, ममल, कलुष, आविल २. अशुद्ध, अपवित्र ३. कुत्सित, गर्बं, अधील ।

—करना, कि. स., कलुषयति मलिनयति (ना. या.), दुष्ट (प्रे. दूषयति), कलुषी-आविली, कृ । [गंदी (स्त्री.)=मलिना इ.]

गंदी शर्ते, अश्लील-ग्राम्य-अवाच्य-वचनानि ।

गँदा विरोजा, सं. पुं. (सं. गंध + दे. विरोजा) कुंदः-दुः, कुंदुरः-रुः, पालंकी, बहु-तीक्ष्ण, गंधः, शीतलः-सकः, सरल, द्रवः-निर्यासः ।

गँदुम, सं. पुं. (फा., सं. गोधूमः), सुमनः, म्लेच्छप्रोच्यः, प्रवटः ।

गँदुमी, वि. (फ्रा. गँदुम) गोधूम (समास में), गोधूम-सुमन, वर्णं, प्रवटमय ।

गंध, सं. स्त्री. (सं. पुं.) आपोदः, वासः २. प्राग्ग्राह्यः पृथिवीपुटः (पुं.) ३. तुंगंधः, सुवासः ।

—बिल्लाव, सं. पुं. (सं. गंधबिलालः) गंध-मालारिः, खट्वाणः ।

—राज, —सार, सं. पुं. (सं.) चंदनम् ।

गंधक, सं. स्त्री. (सं. पुं.) गंधि (ध) कः, गंधाहमन्, सौगंधिकः ।

—का तेबाब, सं. पुं., गन्धकाम्लः ।

गंधकी, वि. (सं. गंधकः >) गंधकः, गर्भ-युक्त २. ईषत्पीत ।

गंधन, सं. पुं. (सं. न.) गन्धप्रसारणम् २. व्रीहिभेदः ३. अर्घ्यवसायः ४. आदातः प्रहारः ५. दोषप्रदर्शनम् ६. समूचनम् ।

गंधर्व, सं. पुं. (सं.) स्वर्गायकः, दिव्यगायनः, गातुः (पुं.), देवभेदः २. गायकः । [वीं स्त्री.]

—नगर, सं. पुं. (सं. न.) खे स्थले वा ग्राम-नगरादीनां शिष्याभासः, गातु-गंधर्व-पुरं २. माया, प्रपंचः, इन्द्रजालम् ।

—विद्या, सं. स्त्री. (सं.) संगीतं, संगीत-वाद्य-विद्या-शास्त्रम् ।

—विवाह, सं. पुं. (सं.) विवाहभेदः (धर्म.) पित्रोरनुमतिं विना स्वेच्छातो विवाहः ।

गंधवती, सं. स्त्री. (सं.) पृथिवी, धरणी । २. व्यास जननी, सत्यवती ३. सुरा ४. जातीभेदः ।

गंधार, सं. पुं. (सं. गंधारः) भारतवर्षस्योत्तरस्यां दिशि देशविशेषः २. तृतीयस्वरः (संगीत.) ।

गंधी, सं. पुं. (सं. गंधिन् >) गंधिकः, गंध-विक्रयिन्-उपजीविन्-वणिज् २. ३. घास-कौट-भेदः ।

गंधारी, सं. स्त्री., दे. 'गंधारी' ।

गंधीर, वि. (सं.) ग (गं) गीरः, रकं, अगाध, निम्न २. गहन, तिबिड ३. दुर्बोध, निगूहार्थं ४. मंद्र, वन (शब्द) ५. शान्त, सौम्य ।

गंधीरता, सं. स्त्री. (सं.) गंधीर्षः, गीरवं; धीरता; निम्नता; गहनता; दुर्बोधता; सौम्यता इ. ।

गँवाक, वि. (हि. गँवाना) अपन्ययिन्, विश्लेषिन्, दे. 'जवाहू' ।

गँवाना, वि. स. (सं. गमनं >) अपन्यय् (जु.) वृषा श्ले डम् (प्रे.) २. हा (जु. प. अ.), स्थञ् (स्वा. प. अ.) ३. (समबं) या-अतिवह् (प्रे.) ।

गँवार, वि. (हि. गँव) ग्रामीण, ग्रामिक, ग्रामिन् (पुं.), ग्राम्य २. मूर्ख, जड ३. अनार्थ, असम्य ।

—पन, सं. पुं., ग्रामीणता, मूर्खता, अस-भ्यता इ. ।

गँवाक, वि. (हि. गँवार) ग्रामीय, असंस्कृत, प्राकृत २. अशिष्ट, असम्य ।

गंसीला

[१५८]

गटपट

गंसीला, वि. (हिं. गौंसी) ग्रंथिल, ग्रंथि-पर्व, मय
२. वेधक, छेदक ।

गक, सं. स्त्री., दे. 'गौ' ।

गगन, सं. पुं. (सं. न.) आकाशः-शब्दम् ।

—भेदी, वि. (सं. दिन्) आकाश-व्योम-
वेधक-वेधिन्-भेदिन् (शब्दादि) २. (भवनादि)
गगन-व्योम, स्पृश च्चिन्, अभ्रंलिह्, नभोलिह् ।

गगरी, सं. पुं. (सं. गर्गरीः=दधिभंजनपात्र >)
धातु, कुंभः-कलशः-घटः, गर्गरः ।

गगरी, सं. स्त्री. (सं. गर्गरीः=दधिभंजनपात्र >)
धातुगयल्लु, कलशः-घटः-कुंभः, गर्गरी ।

गच, सं. पुं. (अनु.) पंके चलनजः-शब्दः
२ खड्गादिवेधनोद्यः शब्दः ३. लेपः, सुधा,
४. गृहभूमिः-भूः (स्त्री.) ५. सुधाक्षिप्ततलं,
कुट्टिमः-मम् ।

—कारी, सं. स्त्री. (हिं गच + प्रा. कारी >)
सुधा-लेप-कार्य-कर्मन् (न.) ।

गचपच, वि. दे. 'गिचपिच' ।

गज्ज, सं. पुं. (प्रा.) आपातः, प्रहारः
२. इनिः-क्षरति (स्त्री.) ३. कष्टम्, क्लेशः ।

गज, सं. पुं. (सं.) हस्तिन्, कुंभिन्, करिन्,
कुपिन्, दंतिन्, रदिन्, शुंडिन् (सब पुं.),
दे. 'हाभी' ।

—आगन्, सं. पुं. (सं.) गजमुखः, गणेशः,
गजवदनः ।

—कुंभ, सं. पुं. (सं.) करिकुंभः, गजशिरःपिंडः ।

—गन्धि, सं. स्त्री. (सं.) गज-कुंजर, गमनं-गतिः ।

—गामिनी, वि. स्त्री. (सं.) इभ-वारण-
गामिनी-चारिणी (सुंदरी) ।

—दंत, सं. पुं. (सं.) हस्ति-करि, दंतः-रदः-
रदनः २. गणेशः ।

—दान, सं. पुं. (सं. न.) गजमदः २. धरि-
वितरणम् ।

—पति, सं. पुं. (सं.) करीन्द्रः (वृथनाथः,
वृथपः) ।

—पाट, सं. पुं. (सं.) हस्तिपः-धकः, आधोरण,
निपादिन् (पुं.), मह(मात्र)ः ।

—मोती, सं. पुं. (सं. गजमोतिकं) गजमुक्ता,
गजमणिः (पुं.) ।

—मुख, सं. पुं. (सं.) दे. 'गजानन' ।

—राज, सं. पुं. (सं.) दे. 'गजपति' ।

—वदन, सं. पुं. (सं.) दे. 'आनन' ।

—वान, सं. पुं. (सं. गजः >) दे. 'गजपाल' ।

—शाळा, सं. स्त्री. (सं.) द्विप-वृत्ति, शाळा-
गृहम् ।

गज, सं. पुं. (प्रा.) गजः (गाय) २, आन्नेय-
चूर्ण-प्रणोदनी यष्टिः (स्त्री.) ३. सारंगवादन-
यष्टिः, वादन-वाद्य-वादित्र, वण्डः ४. इगुभेदः ।

गजक, सं. स्त्री. (प्रा. कजक) व्यंजनं, उपस्तरः,
उप-अव-दंशः २. तिलशर्कराः (निटार्थ)
३. उपाहारः ४. प्रातराशः ।

गज्जट, सं. पुं. (सं.) राजपत्रम् ।

गजनी, सं. स्त्री. (सं. गंजः >) मृत्तिका-गृह, भेद ।

गज्जष, सं. पुं. (अ.) रोषः, क्रोधः २. विपद्-
विपत्तिः (स्त्री.) ३. अन्यायः, अत्याचारः
४. विलक्षणवृत्तितः ।

—करना, कि. स., अन्यायेन अपिष्टा (भ्वा.
प. अ.) शास् (अ. प. से.) २. विरमयंबन्(प्रे.) ।

—का, वि. अद्भुत, आश्चर्ये ।

—नाक, वि., रुष्ट, क्रुद्ध, कुपित ।

गजर, सं. पुं. (सं. गजी, हिं. गरज) चतुरष्ट-
दादशवादनसमयेधंयानादः २. प्रातः-प्रशानादः ।
सं. स्त्री., श्वेतरक्तगोधूमश्रृणम् ।

—दम, कि. वि., प्रातः, प्रभाते, महति प्रवृत्ते ।

—घजर, सं. पुं. (अनु.) अनुचितमिश्रणम् ।
२. खाद्याद्यर्थे, भक्ष्याभक्ष्यन् ।

गजरा, सं. पुं. (सं. गंजः=देर >) माला,
माल्यं, सज्ज (स्त्री.) २. वलयः, कटकः-कं,
करभूषणं ३. कौशेयवस्त्रभेदः ।

गजरी, सं. स्त्री. (हिं. गजरा) कलाची-मणि-
बन्ध, भूषणं-आभरणम् ।

गजरी, सं. स्त्री. (हिं. गजरे) लघु-सुद, गजरं-
गजरम् ।

गज्जल, सं. स्त्री. (प्रा.) गंजारकविता ।

गज्जी, सं. स्त्री. (प्रा.) स्कूलसौत्रवस्त्रभेदः ।

गजी, सं. स्त्री. (सं.) हस्तिनी, करिणी ।

गजेन्द्र, सं. पुं. (सं.) दे. 'गजपति' ।

गटकना, कि. स. (अनु. गट) खाद्
(भ्वा. प. से.) २. निगृ (त्र. प. से.),
ग्रम् (लु.) ३. अन्यायेन अपहृ (क्तः. प. अ.) ।

गटगट, सं. पुं. (अनु.) गटगटा, जन्धः-ध्वनिः
(पुं.), गटगटायितम् । कि. वि., सगटगटा-
शब्दम् ।

गटपट, सं. स्त्री. (अनु.) रतिः (स्त्री.), मैथुनं,
सहवासः २. पञ्चमेत्री । (वि.) मैथुनासक्त ।

गटरगू, सं. स्त्री. (अनु.) कपीत, शब्दः-कृत-
कृतिते, धृत्कारः ।

गट्ट, सं. पुं. (अनु.) निगरणध्वनिः (पुं.) ।

गट्टा, सं. पुं. (सं. ग्रंथ >) मणिबंधः-धनं, पाणि-
मूलं २. गुल्फः, श्रुंतः ३. जानु (पुं. न.), नल-
कोलः ४. रोधनी, अवष्टंभः ५. ग्रंथिः (पुं.),
ग्रन्थिका ६. संधिः (पुं.) पर्वत (न.), अस्थि-
संधिः (पुं.) ७. बीजे ८. मित्राभेदः ।

गट्टी, सं. स्त्री. (हिं. गट्टा) आवापनं, तंतुकोलः ।

गट्टर, सं. पुं. (हिं. गौठ) पीठलिका, भारः,
कूनः, संधानतः, युच्छः ।

गट्टा, सं. पुं. (हिं. गौठ) काष्ठादीनां भारः
२. दे. 'गट्टर' (३-४) पलांडु-लघुन, ग्रंथिः (पुं.) ।

गट्टी, सं. स्त्री. (हिं. गट्टा) दे. 'गट्टरी' ।

गट, सं. स्त्री. (हिं. गौठ, दे.) ।

—कटा, वि. पुं. दे. 'गैठकटा' ।

—जोडा, सं. पुं. दे. 'गैठबन्धन' ।

गठन, सं. स्त्री. (सं. ग्रंथनं) धटना, रचना,
विधानं, निर्माणम् ।

गठना, क्रि. अ. (सं. ग्रन्थनं) संयं-रुफ्
(कर्म.), सुगैः-तंतुभिः बंधं (कर्म.) २. सम्यक्
रक्ष्-निर्मा (कर्म.) ३. स्नेहातिशयो विद
(दि. आ. अ.) ४. पश्यन्ने संसृज् (कर्म.) ।

गटरा, सं. पुं. दे. 'गट्टर' ।

गट्टरी, सं. स्त्री. (हिं. गट्टरा) लघु, पीठलेका-
भारः-दूर्ध्वः २. संचितधनम् ।

—जोडा, सं. पुं. कुवणः, कदर्यः ।

गठवाना, } क्रि. प्रे. 'गौठना' क्रि. प्रे. रूपः ।
गठाना, }

गठाव, सं. पुं. (हिं. गठना) संवन्धः, संकटपः
२. दे. 'गठन' ।

गटित, वि. [सं. ग्रंथं ग्रंथित] गुणित, बद्ध
२. रचित, चिन्तित ।

गठिया, सं. स्त्री. (हिं. गौठ) दे. 'गठरी'
२. वात, रक्त-शोणित, ग्रन्थिव्यातः, दे. 'वातरोग' ।

—वात, —वाव, सं. स्त्री. (हिं. + सं. वातः
तथा वायुः) ग्रंथि, वातः-वायुः २. वातः, वायुः,
वातरोगः ।

गठीला, वि. (हिं. गौठ) ग्रन्थि-पर्व-संधि, —
मथ (मयो स्त्री.) ग्रन्थिल, पर्वत-ग्रन्थिमत्
(नी स्त्री.) ।

गठीला, वि. (हिं. गठना)-वज्र दृढ, देह-
—ग, मूलिमत् (नी स्त्री.) २. दृढ ३. सबल
ली (स्त्री.) = इलांगी, सबला इ.] ।

गठौतन्त्री, सं. स्त्री. (हिं. गठना) मैत्री,
सौहार्द २. कुमंत्रणा, उपजापः, कूटः-उम् ।

गढंत, सं. स्त्री. (हिं. गडना) अभिचाराय
निखात-निहित, वस्तु (न.), *निखातम् ।

गडकना, क्रि. अ. (अनु.) गडगढायते (ना. धा.),
गडगढा, शब्द-चार्द-रात्रं कृ ।

गडगज, सं. पुं. दे. 'गरगन' ।

गडगड, सं. स्त्री. (अनु.) गडितं, स्तनितं,
गडगडयितं २. कर्दनं, आन्वशब्दः, शूलशब्दः
३. धूपानयंत्रशब्दः ।

गडगडा, सं. पुं. (अनु.) धूपानयंत्रशब्दः,
*गडगडः ।

गडगडाना, क्रि. अ. (अनु.) गड्-गड्-रत्न
(भ्वा. प. से.), गडगडायते (ना. धा.)
२. नदस् (भ्वा. प. से.) ।

गडगडाहट, सं. स्त्री. (हिं. गडगडाना)
दे. 'गडगड' ।

गडगडदड, सं. पुं. (अनु. गड + हिं. गृथन >)
जीर्ण-शीर्ण-जर्जरित, दन्ध-पटः, चीरं, कपेटः ।
२. असारः, मलम् ।

गडना, क्रि. अ. (सं. गर्तः >) आ-प्र-विश
(तु. प. अ.), विश् (तु. प. से.), निर-
भिद (रु. प. अ.) २. (भूमौ) निधानिष्ठीप्
(कर्म.) ३. पीड् (कर्म.), व्यथ (भ्वा. आ.
से.) ४. नि, मश् (तु. प. अ.), अवनि-
सद (भ्वा. प. अ.) ।

गड जाना, मु., लड् (तु. आ. से.), त्रप्
(भ्वा. आ. वे.) ।

गडप, सं. स्त्री. (अनु.) निगरणं, द्रसनम् ।

गडपना, क्रि. स., (अनु. गडप >) सत्वरं
निगृ (तु. प. से.)-पा (भ्वा. प. अ.)
२. अयायेन आत्ममात्रं कृ ।

गडप्या, सं. पुं. (अनु.) इद्द, गर्तः-गर्त-
अवतः ।

गडबड, वि. (हिं. गड = गडना + बड = डैन्वा)
असम, विगन्, नतोन्नत २. अस्तव्यरत, अक्रमः
सं. पुं. अस्थवस्था, कमभंगः ३. विफलः,
गडोभः, मोलाहलः ३. रोगः, आमयः ।

—अध्याय, सं. पुं.) दे. 'गडबड' सं. पुं. ।

—छाला, सं. पुं. } दे. 'गडबड' सं. पुं. ।
गडबडाना, क्रि. अ. (हिं. गडबड) आकुली
सू, मुद् (दि. प. वे.), आत्था मन् (दि.

गडवकाहट

[१६०]

गणित

आ. अ.)। कि. स., वि.सं., भ्रम्-धुम् (प्रे.), मुह् (प्रे.), आकुली कृ।
गडवकाहट, **गडवकी**, सं. स्त्री., दे. 'गडवट'
 सं. पुं.।
गडवडिया, वि. (हि. गडवड्) मोहक, मोहन
 २. क्रम-व्यवस्था, भेजक-नाशिक, उपद्रविन्।
गडमड, वि. (अनु.) संकुल, संकीर्ण, व्यत्यस्त,
 अव्यवस्थित।
—करना, कि. स., संकरी-संकुली कृ, क्रमं भञ्ज
 (क. प. अ.)।
गडरिया, सं. पुं. (सं. गडुरिका >) अवि गडुर-
 नेष, पालः।
गडवा, सं. पुं. (सं. गडुकः) गडुः (पुं.),
 गडुकः, गडुडुकः २. पुष्पपात्रभेदः।
गडवाना, कि. प्रे., 'गडना' के प्रे. रूप।
गडहा, सं. पुं. (सं. गर्त-र्त) गर्ता, अवटः,
 बिलं, बिवरं, खातं, पतेरः।
गडाना, कि. स. 'गडना' के प्रे. रूप।
गडारी, सं. स्त्री. (अनु.) उच्छ्रायणचक्रं २. नडलं,
 वृत्तं, चक्रम् ३. गंडलाकार-मोल, रेखा।
गडि (रि) यार, वि. (हि. गडना) धृष्ट,
 दुर्दांत २. मंथर।
गडु, वि. (सं.) कुञ्ज, वक्रधृष्ट। सं. पुं. (सं.)
 ककुदः, ककुदम् २. गडुकः, जलपात्रभेदः
 ३. किञ्चुलुकः, गडुपटः।
गडुआ, सं. पुं. (सं. गडुकः) सनालीकं लघु-
 पानपात्रम्।
गडेरिया, सं. पुं., दे. 'गडरिया'।
गडु, सं. पुं. (सं. गणः) नि.सं., चयः, निकरः,
 स्तोमः, ओषः।
गडुवडु, **गडुमडु**, सं. पुं. (अनु.) संकरः,
 अक्रमः, क्रमभंगः। वि., विषयैस्त, व्यवहारत,
 भ्रमक्रमः।
गड्वा, सं. पुं. (सं. शकटः) शकट-टिका, वाहनं,
 प्रवहणम्।
गड्वा, वि. (अं. गाढ + व्याम) नीच, अधम,
 अव्ययः।
गड्डी, सं. स्त्री. (हि. गड्डी) (एक ही वस्तु का)
 संनि, चयः, संघातः २. राशिः, समूहः।
गड्हा, सं. पुं. दे. 'गड्हा'।
गडंत, वि. (हि. गडना) कृत्रिम, कल्पित
 २. दे. 'गठन'।

गन—, वि. कपोल-मनः, कल्पित, मानसोद्-
 भावित, काल्पनिक, कल्पनात्मक।
गद्, सं. पुं. (सं. गडः) परिखा, खातं, गर्तः-र्ता
 २. दुर्ग, कोटः।
—पति, सं. पुं. (सं.) दुर्गपालः।
गडन, सं. स्त्री. (हि. गडना) दे. 'गठन'।
गडना, कि. स. (सं. घटने) गड् (चु.), घट्ट-
 रच् (चु.), निर्मा (अ. प. अ., जु. आ अ.),
 कृष्-साध-संपद(प्रे.), २. तट (चु.) ३. मिथ्या
 कल्प (प्रे.), मनसा सृज् (तु. प. अ.)।
गडा, सं. पुं., दे. 'गड्हा'।
गडाई, सं. स्त्री. (हि. गडना) घटने, निर्माणं,
 रचनम् २. वटन-रचन, मूल्य-भूतिः (स्त्री.)-
 निर्देशः।
गडाना, कि. प्रे. 'गडना' के प्रे. रूप।
गड्डी, सं. स्त्री. (हि. गड्डी) लघु, दुर्ग-कोटः
 २. कोटाकारं दृढभवनम्।
गण, सं. पुं. (सं.) समूहः, वर्गः, समुदायः, वृंदम्
 २. श्रेणी, कोटिः (स्त्री.) ३. विदुःमात्मकः सेना-
 विभागः (= २७ हाथी, २७ रथ, ८१ घोड़े,
 १३५ पैदल) ४. परिचारकः परिजनः ५. पक्ष-
 पति-अनुयायि-वर्गः ६. सभा, समाजः
 ७. गणेशाभिष्टिताः शिवसेवकाः ८. मगण
 टगणादयः वर्गमावाप्तसमूहाः (सं.) ९-१०. धातु-
 शब्द-समूहः (व्या.) ११. नक्षत्रसमूहविशेषाः
 (ज्यो.)।
—अधिप—**नाथ**,—**नायक**,—**पति**, सं. पुं.
 दे. 'गणेश'।
—द्रव्य, सं. पुं. (सं. न) सर्वजगोनः धर्तार्यः
 २. द्रव्यसमूहः।
गणक, सं. पुं. (सं.) वैवक्रः, ज्योतिर्विद्
 २. गणितज्ञः।
गणकी, सं. स्त्री. (सं.) १. २. गणितज्ञ-वैवक्रः,
 पत्नी।
गणन, सं. पुं. (सं. न.) संस्थानं, गणना।
गणना, सं. स्त्री. (सं.) गणनं, संस्थानं २. गणका
 ३. अलंकारभेदः (सा.)।
—करना, कि. स., दे. 'गिनना'।
गणनीय, वि. (सं.) संख्येय, गण्य २. दे.
 'प्रसिद्ध'।
गणिका, सं. स्त्री. (सं.) वेद्या, योग्या, योग्यस्त्री।
गणित, सं. पुं. (सं. न.) गणित, शास्त्र-विद्या,
 गणना-मात्रा-संख्या-परिमाण, विद्या-शास्त्रम् २.

अंक, विद्या-गणितं शास्त्रम् । वि., संख्यात, संक-
लित ३. चिन्तित, निरूपित ।
—कार, सं. पुं. (सं.) गणितज्ञ २. ज्योतिर्विद (पुं.) ।
—विद्या, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'गणित' (१-२) ।
अंक—, सं. पुं. (सं. न.) अंक-विद्या-शास्त्रम् ।
बीज—, सं. पुं. (सं. न.) गणितविद्याभेदः ।
रेखा—, सं. पुं. (सं. न.) रेखागणना, भूज्या-
मितिः (स्त्री.) ।
गणेश, सं. पुं. (सं.) गज-आस्यः-सुखाः-वदनः-
आननः, लंबोदरः, गणाधिपः, विनायकः,
आस्तुतः, ज्ञानकर्णः, विघ्नेशः, परशुपाणिः (पुं.) ।
गोवर—, सं. पुं., जलः, मूढः ।
गण्य, वि. (सं.) संख्येय, गणनाई, गणनीय
२. प्रतिष्ठित, पूज्य, मान्य ।
—मान्य, वि. (सं.) दे. 'गण्य' ।
गत, वि. (सं.) अतीत, अतिव्रत, व्यतीत,
२. मृत ३. होम, रहित ४. लक्ष्य, प्राप्त ।
सं. स्त्री. (सं. गतिः स्त्री.) दशा, अवस्था
२. रूपं, आकृतिः (स्त्री.) ३. उपयोगः व्यवहारः
४. दुर्दशा, नाशः ५. नृप्यभेदः ६. प्रेतकिया ।
गतका, सं. पुं. (सं. गदा) चर्मावृत्तयष्टिः
(स्त्री.) २. क्रीडा-खेला, भेदः ।
गतांक, सं. पुं. (सं.) पत्रपत्रिकादीनाम् इतांक-
अतीतांकः अव्यवहितपूर्वांकः ।
गतात्, वि. (सं.) अन्ध, अनयन, अनेत्र ।
गतागत, सं. पुं. (सं. न.) गमनागमनम्
२. पुनर्जन्म (न.), जन्ममरणम् ।
गतानुगतिक, वि. (सं.) अन्धानुधायिन्,
अन्धविश्वासिन् ।
गति, सं. स्त्री. (सं.) गमनं, चलनं, ब्रजनं,
अयनं, यानं, सरणं २. स्फुरणं, कंधनं, रपदनं
३. चेष्टा, व्यापारः ४. दशा, अवस्था ५. प्रवेशः
६. प्रयत्नस्तीमा ७. अवलंबः ८. माया, लीला
९. शक्तिः (स्त्री.), विधिः (पुं.) १०. देशतर-
प्राप्तिः (स्त्री.) ११. मुक्तिः (स्त्री.) १२. ताल-
स्वरांनुसारसंग-चालनं (संगीत) १३. प्रेत-
कर्मन् ।
—बनाना, सु., निर्दयं तद् (तु.)-प्रह
(स्वा. प. अ.) ।
—होना, सु., प्र-उप-सुज् (कर्म.) २. निर्दयं
ताद् (कर्म.) ३. मुक्ति लभ् (स्वा. आ. अ.) ।
गता, सं. पुं. (देश.) संसृष्टपत्रं, गुरुपत्रम् ।

गद, सं. पुं. (सं.) रोगः, आमयः २. श्रीकृष्णा-
नुजः ३-४. वानर-असुर, विधेयः । (सं. न.)
विध-यः, गरलम् ।
गदका, सं. पुं., दे. 'गतका' ।
गदगद, वि. दे. 'गदद' ।
गदर, सं. पुं. (अ.) प्रजा-प्रकृति, कोपः-क्षोभः,
२. सैन्य-सेना, द्रोहः क्षोभः प्रकोपः ३. विप्लवः,
संप्लवः, संमर्दः ।
—करना वा मचाना कि. अ. (राशे) द्रुह
(दि. प. वे.), रावशसतं लघ् (स्वा. आ.
से.) इ. ।
गदला, वि. (प्रा. गंदा) संपक, सकार्दम,
समल, पंकिल, भलिन ।
—करना, कि. स., कलपयति-पंकिलयति-आविल-
यति (ना. धा.), मलिनी कृ ।
—पन, सं. पुं., मालिन्यं, पंकिलत्वं आविलता ।
गदहपचीसी, सं. स्त्री. (हि. गदहा + पचीस)
आषोढशात् आपंचविंशतेः आयुषो भागः ।
२. अनुभवहीनता, मांघं, मौख्यं ।
गदहा, सं. पुं. (सं. गर्दभः) रासभः, खरः,
बाल्यः, भारगः, धूसरः, ग्राम्याश्वः २. मूर्खः,
अज्ञः [गदहो (स्त्री.) = रासभो, खरो, गर्दभी] ।
—पन, सं. पुं., मौख्यं, जडता ।
गदा, सं. स्त्री. (सं.) लोहनयशश्चभेदः ।
—धर, सं. पुं. (सं.) कृष्णः २. विष्णुः । वि.,
गदाधारिन् ।
गदला, सं. पुं., दे. 'गहा' ।
गदद, वि. (सं.) प्रहृष्ट, आनंदपुष्कित, परम-
मुदित, सुप्रसन्न २. अस्पष्ट, असंबद्ध, अस्फुट
(अक्षरस्वरदि) ।
गदा, सं. पुं. (हि. गद् से अमु.) तूलसंस्तरः, तूला ।
गद्दी, सं. स्त्री. (हि. गद्दा) (तूल-) आसनं,
तूलिका २. पिचुलविष्टरः ३. उपधानं, उपबर्हः
४. पर्याणं, पल्यानं ५. सिंहासनं, नृपासनं
५. अधिकारपदं ६. ७. कर-चरगा, तालम् ।
—पर बैठाना, कि. अ., सिंहासनं आरुह् (स्वा.
प. अ.), राज्येऽभिपिच् (कर्म.) ।
—पर बैठाना, कि. स., अभिपिच् (तु. प. अ.),
सिंहासने उपविस्त् (प्र.)
—से उतारना, कि. स., सिंहासनात् च्यु-अव-
रुह्-भंश-अवपत् (प्र.) ।

- नशीन, वि. (हि + फा.) सिंहासन-आसीन-आरूढ २. उत्तराधिकारिन् ।
- नशीनी, सं. स्त्री., अभिषेकः, राज्याभिषेकः ।
- गघ, सं. पुं. (सं. न.) छन्दोहीनरचना, अपादः पदसन्तानः ।
- गघा, सं. पुं., दे. 'गदहा' ।
- गघी, } सं. स्त्री., दे. 'गदही, ('गदहा'
गघैया, } के नीचे) ।
- गनीम, सं. पुं. (अ.) शत्रुः, रिपुः २. द्रस्युः (पु.) लूठकः ।
- गनीमत, सं. स्त्री. (अ.) लोचं, लोचं, अप-हृतधनं २. अवरनलब्धं धनं ३. संतोषविषयः, धन्यत्वम् ।
- गन्ना, सं. पुं. (सं. कांड-दंड >) रसालः, इक्षु-कांड-दंडः, दे. 'ईख' ।
- गप, सं. स्त्री. (सं. कवचः अथवा अनु.) विव-दंती, लोक-अन-श्रुतिः (स्त्री.) प्रवादः-वार्ता २. जलः, प्रलापः ३. मिथ्या-असत्य-वृत्तान्त-वृत्त-समाचारः ४. विकथनं, सर्वोक्तिः (स्त्री.) ।
- मारता,—ह्रीकता, कि. अ., प्रलय-जल्प (भ्या. प. से.) ।
- हाप, सं. स्त्री., वृथा-कथा गंलापः ।
- गप, सं. पुं. (अनु.) निगरण-असन-ध्वनिः (पुं.) ।
- गपागप, कि. वि., सत्वरं, इतिवि, शीघ्रम् ।
- गपकता, कि. सं., दे. 'निगलता' ।
- गपञ्चौथ, सं. स्त्री. (हि. गपोडा + चौथा) वृथा-निरर्थक-संलापः-आलापः-संवादः २. दे. 'गडवडी' ।
- गपञ्चपञ्च, सं. स्त्री., दे. 'गपञ्चैथ' ।
- गपागप, अथ्य (अनु.) सत्वरं, शीघ्रं, आशु, इतिवि (स्य अथ्य.) ।
- गपोडा, सं. पुं. दे. 'गप' ।
- गप्प, सं. स्त्री., दे. 'गप' ।
- गप्पी, सं. पुं. (हि. गप) वायवृकः, जलन- (पा)कः २. मिथ्याभाषिन्, अनुनशादिन् (पुं.) ३. आत्मश्लथिन् (पुं.) ।
- गप्फा, सं. पुं. (अनु. गप >) बृहत्, कवल-प्रासः-पिंडः २. लाभः ।
- गफ, वि. (सं. ग्रप्स = गुच्छा अथवा गुफ = बुजता >), अद्विष्ट, घन, सौद्र, मृत ।
- गफूलत, सं. स्त्री. (अ.) अजवधानता, प्रमादः २. स्खलितं, अपराधः ।
- गयन, सं. पुं. (अ.) कपटन अःमसाकरण-अपहरण-उपयोगः ।
- करना, कि. सं., कपटन अःमसाःकृ ।
- गयरू, सं. पुं. (फा. गृवन) (गय-गुवकः, गुवर (पुं.), तरुणः २. पतिः (पुं.), वरः । वि., रामल, अमाय ।
- गभरिन, सं. पुं. । (सं.) किरणः, रश्मिः (पुं.) २. सूर्यः ३. बाहुः (पुं.) ४. हस्तः ।
- पाणि—मान्—हस्त, सं. पुं. (सं.) सूर्यः ।
- गभीर, वि. (सं.) दे. 'गम्भीर' ।
- गम, सं. पुं. (अ.) शोकः, विषादः, दुःखं २. चिन्तः, रणरणक-कम् ।
- शीन, वि. (अ. + फा.) निपण्ण, सन्निवृत्त ।
- खाना, सु., क्षम, (भ्या. अ. वे.), शम् (दि. प. वे., क्षाम्भति) ।
- गमकर्, वि. (सं.) गंत, यातृ, २. सूचक, बोधक ।
- गमक, सं. स्त्री. (अनु.) पटह-नील, नारदः २. सुगन्धः ।
- गमन, सं. पुं. (सं. न.) वानं, जवनं, चलनं, प्रस्थानं २. मैथुनम् ।
- आगमन, सं. पुं. (सं. न.) यातवानं, यानायानं, गतागतम् ।
- गमला, सं. पुं. (पुनं. गैमलो) प्रसूत-पुत्र-पार्श्व-भाजनं २. पुरीष, उच्चार, पात्रम् ।
- गभी, सं. स्त्री. (अ. गम) शोकः, विषादः २. मृत्युः ।
- गभ्य, वि. (सं.) प्राप्य, लभ्य २. यानव्य, अयनीय ३. साध्य, शक्य ४. सम्भोगार्ह ।
- गयन्द, सं. पुं. (सं. गयेन्द्रः) गज, पतिः (पुं.) राजः ।
- गय, सं. पुं. (सं. गजः) द्विरदः द्विपः, करिन्, कुम्भिन् ।
- गया, सं. स्त्री. (सं.) गन्धेषु यत्नरत्नपिपुरी, तीर्थविशेषः ।
- गया, वि. (सं. गज) यात, प्रथितम् ।
- गुजरा,—वीना, वि., नष्ट, मृत, २. निकृष्ट, नृगप्राय ।
- गर, सं. पुं. (सं.) विप्रं, उपविषं २. रोगः ।
- गरक, वि., दे. शर्क ।
- गरक्राब, वि., दे. 'गर्काव' ।

शरजी, सं. स्त्री., दे. 'शकी'।

शरगज, सं. पुं. (हिं. गज् + सं. गर्ज्) दुर्ग-
प्राचीरभ्यं । २. उद्वन्धनभयं. धातुसिद्धा ।

शरशरी, सं. पुं., दे. 'शरादी'।

शरज, सं. स्त्री. (सं. गर्ज्) गर्जनं ना, गजितं,
रतनितं, महा-शीर्ष-गम्भीर, शब्दः-नादः ।

शरज्ज, सं. स्त्री. (अ.) आशयः, प्रयोजनं, अर्थः,
स्वार्थः. २. आनन्दयकता ३. अभिलाषः ।
क्रि. वि., अंते, अन्ततः, अन्ततो गत्वा २. अस्तु,
एवं (अन्व.) ।

—मन्द, वि. (अ. + क्त) स्वार्थलिप्सा, स्वला-
भापेक्ष । २. इच्छुक, ईप्सु ।

—मन्दी, सं. स्त्री., स्वार्थलिप्सा, स्पृहा, अपेक्षा ।

शे—, वि. (फा + अ.) सिष्काम, निःस्पृह,
निःसंग ।

शरजना, क्रि. अ. (सं. गर्जनं), गज्, गर्ज्-
निरगूर्ज्-नद-नर्-गत-रस् (भ्वा. १. से.),
महा-शीर्ष-गम्भीर, नादं कृ ।
सं. पुं. दे. 'शरज' ।

शरजी, वि. (अ. शरज्) दे. 'शरज्जमन्द' ।

शर—सं. स्त्री. (फा + अ.) स्वार्थपरता, स्व-
हितनिष्ठा ।

शरण, सं. पुं. (सं. न.) निगरणं, निगलनम्,
ग्रसनं २. अस्तेपनं, प्रोक्षणं ३. विषम् ।

शरदन, दे. 'शर्दन' ।

शरद्विन्या, सं. पुं. (हिं. शरदन) शीवा-कण्ठ-
ग्रहणं-ग्रहः, भ्रूईचन्द्रः ।

शरदा, सं. पुं., दे. 'शर्दा' ।

शरदान, सं. पुं. (फा) शब्द-धातु-रूपसाधनं
(भ्वा.) ।

—करना, क्रि. सं. शब्दरूपाणि वद (भ्वा.
१. से.) ।

शरनाल, सं. स्त्री. (हिं. गर + सं. नाळः) उन्-
वदनी शीतनी ।

शरम, वि., (फा. गर्म, सं. घर्म) उष्ण, तप्त,
सं-उदः, आतपक्रान्त, सोष्ण । २. उग्र, प्रखंड,
कोधिन् ३. तीक्ष्ण, तीव्र ४. उत्साहिन्,
सोस्ताह ।

—करना, क्रि. सं., परि-प्र-सं-तप् (प्रे.), उद्-
दीप् (प्रे.), उष्गीकृ । मु., उत्तिज् (प्रे.) ।

—होना, क्रि. अ., उष्णीभू, तप् (भ्वा. १.
अ.; दि. आ. अ.) २. क्रुध् (दि. १. अ.) ।

—कपडा, सं. पुं., और्ध्व-ऊर्णामय-वस्त्रम् ।

—स्त्रवर, सं. स्त्री. अभिनव-शरानीतन-समा-
चारः ।

—मिज्ञाज, वि., संरंभिन्, कोधिन् ।

—सर्द, वि., कोष्ण, कयोष्ण, कडुष्ण ।

शरमागरम, वि. (हिं. गरम + गरम) अत्युष्ण,
सुगत, २. अभिनव, प्रत्यग्र ।

शरमाना, क्रि. अ. क्रि. स. (हिं. गरम)
दे. 'गरम होना' तथा 'गरम करना' ।

शरमी, सं. स्त्री. (फा., सं. घर्मः) सं-उष्-परि-
तापः, उष्णता, दाहः, उ (उ) भन् (पुं.),
उष्मः । २. उग्रता, चण्टता ३. कोपः
४. उत्साहः ५. शीघ्रः, शीघ्र-समय-कालः,
निदाघः ६. उपदेशः ।

—दाना, सं. पुं., दे. 'पितृ' (पं.) ।

शरल, सं. पुं. (सं. न.) गरः, दिवं २. सर्पविषं
३. तृणपूलकम् ।

शरौ, वि (फा.) भारिक. भारवत्, गुरु
२. बहुमूल्य, महाहै ।

शराङ्गी (री), सं. स्त्री. (अनु. शरर) दे. 'शरादी' ।

शरारा, सं. पुं. (अनु. अथवा अ. शरशरा)
चलः, च (चु) लुकः । २. तुल्यौषधम् ।

—करना, क्रि. स. जलेन कटं (गलं) धान्
(भ्वा. १. से.)-गृञ् (अ. १. वे.) ।

शरिमा, सं. स्त्री. (सं-मन् पुं.) गुरुत्वं, शार-
वत्सं २. महिमन् (पुं.), गौरवं, महत्त्वं
३. अहंकारः ४. आत्मह्लाषा ५. सिद्धिविधेयः
(योग.) ।

शरिष्ट, वि. (सं.) गुरुतम, भारवत्तम,
अतिभारध्व २. मलावरोषक, मलावष्टम्भक ।

शरी, सं. स्त्री. (सं = गुलिका >) नारिकेल
(रं), सारः गोलः ।

शरीब, वि. (अ.) अकिंचन, दरिद्र, निर्धन
२. चम्र, विनत ।

—खाना, सं. पुं. (अ. + फा.) कुटी, कुटीरः
२. दरिद्र-अनाथ-आलयः-गृहम् ।

—नि(ने)वाज } वि. (अ. + फा.) दीन, वैधु-

—परवर } दयालु-वत्सल-नाथ-पालक-
शोधक ।

गरीबी, सं. स्त्री. (अ. गरीव) दारिद्र्यं, निर्धनत्वं, अकिञ्चनता २. नम्रता ।

गरुड, सं. पुं. (सं.) वैजतेजः, खगेशः-श्वरः, सुपर्णः, विष्णुरथः, नागांतकः ।

—आसन, -केतु, -ध्वज, सं. पुं. (सं.) विष्णुः ।

—पुराण, सं. पुं. (सं. न.) पुराणविशेषः ।

गरुड, सं. पुं. (अ.) अभिमानः, दर्पः, गर्वः ।

गरेवान, सं. पुं. (फ्रा.) निषोल्लगलः ।

गरोह, सं. पुं. (फ्रा.) समुदायः, समूहः ।

गर्क, वि. (अ.) जलमग्न, सं-परि, -प्लुत, जले तिरोहित २. नष्ट, ध्वस्त ३. कार्ये व्याप्त-लीनमग्न ।

गर्काव, वि. (अ. + फ्रा. आव) जलमग्न, आ-सं-परि, -प्लुत २. अति-लीन-निरत-व्याप्त आसक्त ।

गर्की, सं. स्त्री. (अ.) संप्लवः, आप्लावः ।

२. निमज्जनं, जले तिरोधानं ३. दे. 'छंदोती' ।

गर्गी, सं. पुं. (सं.) ऋषि-विशेषः २. वृषभः ।

गर्गर, सं. पुं. (सं.) दे. 'गगरा' २. ३. वाद्य-मदत्य, -वेदः ।

गर्गरी, सं. स्त्री. (सं.) गंधनी, मंथनपात्रम् २. दे. 'गगरी' ।

गर्ज, सं. स्त्री., दे. 'गरज' ।

गर्ज, सं. स्त्री., दे. 'गरज' ।

गर्जन, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'गरज' ।

गर्त्त, सं. पुं. (सं.) दे. 'गृह्णा' २. दे. 'दरार' ३. जलाशयः ४. नदव्यतिशेषः ।

गर्द, सं. स्त्री. (फ्रा.) धूलि-लिः (स्त्री.), रेणुः, पांसुः, पांसुः, श्लोठः, रजस् (न.) ।

गर्दन, सं. स्त्री. (फ्रा.) श्रोत्रा, कंधरः-ना, शिरो-धरा, शिरोधिः, कविः (पुं.) २. पात्रकंठः ।

—की अकञ्चन, सं. स्त्री., ग्रीवावातः ।

—तोड खुत्वार, सं. पुं. शीर्षावरणप्रदाहः, मस्तिष्ककेशकञ्जरः ।

—हिलाना, कि. स., शिरः-मरतकं चल्-कंप (प्रे.) ।

—उठाना, सु., अभिटुह (दि. प. अ., द्वितीया के साथ), व्युत्था (स्वा. आ. अ.) दुह (चतुर्थी के साथ) ।

—उठाना या काटना, सु., शिरः-हृत् (तु. प. से.)-छिद् (रु. प. अ.) ।

—छुकाना, सु., वशं या-द् (दोनों अ. प. अ.) ।

—पर सवार होना, सु., दे. 'विवश करना' ।

—मरोड़ना, सु. गलहस्तयति (ना. पा.), गलनिष्पीडनेन व्यापद् (प्रे.) गलं निष्पीड् (तु.) ।

—मारना, सु., दे. 'उड़ाना या काटना' ।

—में हाथ देना या डालना, सु., अर्धच्छेदं दत्त्वा निष्कम् (प्रे.) ।

गर्दभ, सं. पुं. (सं.) दे. 'गर्दहा' (सं. न.) द्रवतःकुसुदम् ।

गर्दभी, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'गर्दही' ।

गर्दा, सं. पुं., दे. 'गर्द' ।

गर्दिश, सं. स्त्री. (फ्रा.) परिवर्तन-सैनं, धूर्णनं, परिभ्रमणं, चक्रं २. आपद्-विपद् (स्त्री.) ।

—करना, कि. अ. परिधृत् (स्वा. आ. से.), दे. 'धूमना' ।

गर्भ, सं. पुं. (सं.) भ्रूणः, पिंडः, कलनं-सं, उदररथशिषुः (पुं.) २. दे. 'गर्भाशय' ३. अभ्यन्तरं, अंतर्भागः ।

—गिरना, कि. अ., गर्भे स्तु (स्वा. प. अ.)-पत् (स्वा. प. से.) ।

—रहना या होना, कि. स., गर्भे धृ (तु.)-आधा (लु. उ. अ.), गर्भवती अंतर्धानी भू ।

—पात, -स्त्राव, सं. पुं. (सं.) गर्भ-भ्रूण, -स्रुचिः (स्त्री.)-पतनम् ।

—दास, सं. पुं. (सं.) दासी-नेटी-भुजिष्या, -पुत्रः ।

गर्भवती, सं. स्त्री. (सं.), गर्भिणी, सगर्भा, ससत्त्वा ।

गर्भस्थ, वि. (सं.) गर्भाशयस्थ, उदरस्थ ।

गर्भाक, सं. पुं. (सं.) अंकस्थाकः (सा.), दृश्यम् ।

गर्भागार, सं. पुं. (सं. न.) गर्भे-आशयः-कोषः २. प्रसूतिगृहम् ३. गर्भगृहम्, ४. शयनागारम् ।

गर्भाधान, सं. पुं. (सं. न.) संस्कारभेदः, निवेक-संस्कारः २. सेकः, निषेकः ३. गर्भारणम् ।

गर्भाशय, सं. पुं. (सं.) गर्भकोशः-घः, योनिः (पुं. स्त्री.) ।

गर्भिणी, सं. स्त्री. (सं.) गर्भवती, अम्भ्वती, सगर्भा, ससत्त्वा, धृत्-रुद्-गृहीत, गर्भा ।

गर्भित, वि. (सं.) सगर्भे, गर्भयुक्तं २. पूर्णं, पूरितं, व्याप्तं ।

गर्म, दे. 'गरम' ।

गर्माहट, सं. स्त्री., दे. 'गरमी' ।

गर्व, सं. पुं. (सं.) (उचित) अभिमानः
२. (अनुचित) अहंकारः, दर्पः, गदः, मादः,
आटोपः, अहं-मानः, ओङ्कर्यः, अवलेपः, उत्सेकः,
स्वयः ।

—करना, कि. अ. गर्व् (भ्वा. प. से.),
प्रगल्भ् (भ्वा. वा. से.), दृप् (दि. प. वे.) ।
२. अभिमन् (दि. आ. अ.) ।

गर्वित, वि. (सं.) (उचित) अभिमानिन्
२. (अनुचित) दृप्त, सदर्प, सुगर्व, अवलिप्त,
उत्सिक्त, उद्धत, उत्सेकिन्, साटोपः, साहंकारः ।

गर्वी, वि. (सं. गर्विन्) } दे.
गर्वीला, वि. (सं. गर्वः >) } 'गर्वित' ।

गर्हणीय, वि. (सं.) गर्ह्य, निच, अधम ।

गर्हा, सं. स्त्री. (सं.) निदा, गर्हण, आक्षेपः,
निर्भर्त्सना ।

गर्हित, वि. (सं.) निंदित, आक्षिप्त, उपालब्ध ।

गर्ह्य, वि. (सं.) दे. 'गर्हणीय' ।

गल, सं. सं. (सं.) कंठः, कृकः, निगरणः
२. दे. 'घ्रीवा' ३-४. मार्य-वासः, भेदः ।

—गंडः, सं. पुं. (सं.) कंठपिंड, श्वयशुः शोधः ।
२. गड्डः (पुं.) ।

—वांही, सं. स्त्री. (सं. गलः + हि. वांह)
आलिगनं, परिश्रमः, परिश्र्वंगः ।

—मालः, सं. स्त्री. (सं.) माला, माल्यं,
शेखरः, हारः, स्रज् (स्त्री.) ।

—गुंडी, सं. स्त्री. (सं.) गलशुद्धिका, घटिका,
गलरोगभेदः ।

गलतकिया, सं. पुं. (सं. गलः + का.) गल्लो-
पधानं, कपोलोपवहः ।

गलफडा, सं. पुं. (सं. गलः + हि. फटना)
जलजन्तूनां श्वासेन्द्रियम् ।

गलफूला, वि. (सं. गल + हि. फूलना)
स्थूलास्य, पीनवदन ।

गलमुच्छे, सं. स्त्री. [सं. गलदमश्रुणि (न.
बहु.)] मंडलोमानि (न. बहु.) ।

गलगल, सं. स्त्री. (देश.) ब्रह्मच, -वंदी(भी)-
लंबफलम् । २, ३. पक्षि-चूर्णलेप, भेदः ।

गलत, वि. (अ.) अशुद्ध, ज्ञात, सदोष,
वितथ । २. असत्य, अनृत, मिथ्या ।

—फहमी, सं. स्त्री. (अ. + का.) ज्ञमः,
ज्ञातिः (स्त्री.), मिथ्याबोधः ।

गलतंस, सं. पुं. (सं. गलितवंश) संतान-
अपत्यः, हीन-रहित, निरसंतान, निरपत्य ।

गलती, वि. (* का.) वि-आकुल, स्वप्न,
उद्विग्न ।

गलती, सं. स्त्री. (अ.) रखलितं, दीपः,
प्रमादः, अपराधः २. ज्ञमः, ज्ञातिः (स्त्री.),
व्याः, मोहः ।

—करना, कि. अ., अपराध् (दि. र्वा. प. अ.),
विभ्रम् (भ्वा. दि. प. से.) रखल् (भ्वा. प.
से.), प्रमद् (दि. प. से.) ।

गलतुलआम, सं. पुं. (अ.) अशुद्धोऽपि प्रचलितः
प्रयोगः (व्या.) ।

गलना, कि. अ. (सं. गलन्) वि-, दृ (भ्वा.
प. अ.), विली (क्. प. अ. ; दि. आ. अ.)

गल्-क्षर् (भ्वा. प. से.), द्रवी-आर्दी-भू ।
२. पच् (कर्म.), तिष् (दि. प. अ.)

३. पूतोभू, विगल्, ४. परिक्षि परिहा अपचि
(कर्म.) । सं. पुं., गलनं, विद्रवः-वर्णं, विलयनं,
क्षरणं; पचनं; परिक्षयः इ. ।

गलने योग्य, भलितव्य, विद्रवणीय, पचनीय इ. ।
गलने थाला, वि-द्राव्य, धिलेय, विलाप्य, द्रवाहं ।

गला हुआ, वि., वि-दृत, गलित, द्रवीभूत इ. ।
गलना, सं. पुं. (अ.) वि-जयः २. प्रावलयम्,
प्रमुत्तवम् ।

गला, सं. पुं. (सं. गलः) कंठः, कृकः, निगरणः
२. श्रोत्रा, कंधरा, शिरोधिः, कंधिः ।

—की सोजिश, सं. स्त्री. कण्ठः, प्रदाहः-शोधः ।
—काटना, मु., कंधरां कृत (तु. प. से.)
२. अतीव पीद् (चु.) ।

—घोंटना, मु., गलं निष्पीड् (चु.), गलहस्तयति
(ना. वा.) ।

दबाना, मु., कंठं निपीड्य अथवा श्वासं निरुध्य
मृ. (प्रे.) ।

—बैठना, मु., कंठः रुद्धः अथवा कर्कशः भू ।
गले पटना, मु. अपरिहार्यं (वि.) भू ।

गले लगाना, मु., आलिग् (भ्वा. प. से.),
आधिष् (दि. प. अ.), परिश्र्वञ् (भ्वा.
आ. अ.), उपगुह् (भ्वा. उ. वे.) ।

गलाज, वि. (हि. गलना) वि-द्राव्य,
विलाप्य ।

गलना

[१६६]

गहना

गलना, कि. स., 'गलना' के प्रे. रूप ।
 गलाव, सं. पुं. (हि. गलना) दे. 'गलना' ।
 गलावट, सं. पुं. (सं. पुं. २. द्रावकः, द्रावणः ।
 गलित, वि. (सं.) द्रवीभूत, वि. द्रुत, २. जीर्ण,
 शीर्ण ३. नष्ट, अष्ट, ४. परि, पक पुष्ट ५. पतित,
 च्युत ।
 —कुष्ठ, सं. पुं. (सं. न.) गलःकुष्ठम् ।
 —यौवना, सं. स्त्री. (सं.) स्त्रीणः शिवात, यौवना ।
 गली, सं. स्त्री. (सं. गलः >) वीगी शिः (स्त्री.),
 संकट-संबन्ध, पथः मार्गः ।
 —कूचा, सं. पुं. (हि. + क्रा.) संकीर्णनागः ।
 —गली मारे मारे फिरना, मु. ध्वर्यमितस्ततः
 परिभ्रम् (भ्वा. दि. प. से.) २. आजीविका-
 न्देषणाय सर्वत्र प्रवेष्टुं (भ्वा. प. से.) ३. सर्वत्र
 उपलभ् (कर्म.) ।
 गलीचा, सं. पुं. (फ्रा. गलीचा, तु. कालीन से)
 तीरुष्क, क्रयः-आस्तरणम् ।
 गलीज, वि. (अ.) मलिन, आविल २. अपवित्र ।
 गल्प, सं. स्त्री. (सं. कल्पः >) आख्यायिका,
 उपाख्यानं, उपकथा ।
 गल्ल, सं. पुं. (सं.) कपोलः, गंडः ।
 गल्ला, सं. पुं. (फ्रा.) ब्रजः, निवहः, यूथं, वृद्धं,
 पशुवम् । (वह शब्द पशुओं के लिए ही
 प्रयुक्त होता है) ।
 —बान, सं. पुं. (फ्रा.) अवि, मैथ, पालः,
 गोपालः ।
 गल्ला, सं. पुं. (अ.) अन्नं, धान्यं २. शरयम् ।
 —फरोशा, सं. पुं. (अ. + फ्रा.) अन्न-धान्य,
 विकेटु (पुं.) ।
 गवय, सं. पुं. (सं.) गवाहकः, बलभद्रः,
 महाशयः, वनगोः (पुं.) ।
 गवयी, सं. स्त्री. (सं.) वनधेनुः (स्त्री.)
 भिल्लगनी ।
 गवर्नमेंट, सं. स्त्री. (अं.) शासन-पद्धतिः
 (स्त्री.)-प्राणाली २. शासक-मण्डल-वर्गः ।
 गवर्नर, सं. पुं. (अं.) भोगपतिः (पुं.) प्रान्ता-
 ध्यक्षः, राज्यपालः २. शासकः, शासित् ।
 —जनरल, सं. पुं. (अं.) राष्ट्रध्यक्षः ।
 गवर्नरी, सं. स्त्री. (अं. गवर्नर >) प्रान्ताध्यक्षता,
 राज्यपालत्वम् । वि. राज्याध्यक्ष-प्रान्ताध्यक्ष-
 सम्बन्धिन् ।
 गवाच, सं. पुं. (सं.) वातायनं, जाल-लकम् ।

गवाना, कि. स., 'गाना' के प्रे. रूप ।
 गवारा, वि. (फ्रा.) अशुक्ल, अभीष्ट ।
 —करना, कि. स., सृष्टि (भ्वा. आ. से.) ।
 गवाह, सं. पुं. (फ्रा.) साक्षिन् (पुं.) ।
 चदमदोद—, सं. पुं. (फ्रा.) प्रत्यक्ष-साक्षिन्
 दर्शनः-दर्शित्, वेदयः । प्रत्यक्षिन् ।
 गवाही, सं. स्त्री. (फ्रा. गवाह) साक्ष्यं,
 प्रमाणं, प्रामाण्यं, निदर्शनम् ।
 —देना, कि. स., साक्षी भू, साक्ष्यं दा
 २. क्रियापादः (धर्म.) ।
 गवीश, सं. पुं. (सं.) घो, पातुः-स्वामिन् ।
 २. गोपः-पालः पालकः, आभीरः ३. वृषभः,
 धृषम् ।
 गवेषणा, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'सोज' ।
 गवैया, सं. पुं. (पू. हिं. गायना) गायकः,
 गायनः, गायु (पुं.), गायकः, गेषुः, गेयः ।
 गव्य, वि. (सं.) गोसंबन्धिन् (दुग्धगोमयादि) ।
 गव्यूति, सं. स्त्री. (सं.) कौशुल्युगलं, दिसहस्र-
 धनुस् (न.) ।
 गश, सं. पुं. (अ. शशी) मूच्छा, मोहः ।
 —आना, कि. अ., मूर्छुं (भ्वा. प. से.), मुह
 (दि. प. से.), प्र-वि-त्या- ।
 शशी, सं. स्त्री. (अ.) दे. 'शश' ।
 गस्त, सं. पुं. (फ्रा.) भ्रमणं, पर्यटनम् ।
 —लगाता, कि. अ., रक्षायै परिभ्रम् (भ्वा.
 दि. प. से.) ।
 गश्ती, वि. (फ्रा.) सर्वत्र-परिभ्रमण-शील ।
 सं. स्त्री., कुलटा, ध्वमिचरिणी, रैरिणी ।
 गहगहाना, कि. अ. (अस्तु. गहगह) प्रसव
 (भ्वा. प. अ.), प्रहृष्ट (दि. प. से.) २. दे.
 'लहलहाना' ।
 गहन, वि. (सं.) गं (ग) भीरु, अगाध, दे.
 'गहरा' २. दुर्गम, दुर्भेद्य ३. दुर्लभ, कठिन
 ४. घन, निवि (वि) ड । सं. पुं. (सं. न.)
 गंभीर्य २. दुर्गमस्थानं ३. वनं ४. गहरं
 ५. दुःखं ६. उल्लम् ।
 गहन, सं. पुं. (सं. ग्रहणं) आदानं २. उपरागः,
 ग्रहदीपनं ३. कलकः ४. विपत्तिः (स्त्री.)
 ५. न्यासः, बंधकः ।
 गहना, सं. पुं. (सं. ग्रहणं >) अलंकारः, वि-
 आः, भूषणं, आभरणं, मंडनम् २. न्यासः,
 निक्षेपः । कि. स., दे. 'पकड़ना' ।

गह्वरा

[१५७]

गाह्व

गह्वरा, वि. (सं. गभीर) गंभीर, निम्न, अगाध, अतलस्पर्श २. अत्यधिक, धोर (नीदादि) ३. दुष्ट. कठिन ४. गाढ, घन ।

—अरामी, सं. पुं. (हि + अ.) संपन्नः, धनिम (पुं.) ।

गह्वरे लोच, सं. पुं. (गह्व.) विचक्षणः, विदग्धः ।

गह्वराई, सं. स्त्री. (हि. गह्वरा) गंभीर, गह्वराव, सं. पुं. निघ्नत्व, अथाथता ।

गह्ववारा, सं. पुं. (का.) शिशु-ग्रेहा-दोला ।

गह्वर, सं. पुं. (सं. न.) गुहा, (अङ्गविम) विड, देवस्वतः (कृषिम) दरी, कंदर-रा २. नमःपूर्ण गृहस्थानं ३. छिद्रं, द्वारं ४. दुर्भेद्य-विषय-स्थानं ५. दुस्मानो, दुःखः ६. दन्त ७. दंभः ८. रोदनं ९. अनेकार्थं वाक्यं १०. जडत्वविषयः ११. जडः (सं.पुं.) लतागुहः, निकुंजः । वि. दुर्गम २. युष्म ।

गांग, वि. (सं.) गंगा; सम्बन्धित्व-विषयक । सं. पुं., भीष्मः २. वातिकेयः ३. सुवर्ण, हिरण्यम् ४. वत्सरः, शिवप्रियः ।

गांगेय, सं. पुं. (सं.) भीष्मः ।

गाँजा, गाँक्षा, सं. पुं. (सं. गंजा) मादिनी, मोदिनी, हर्षिणी ।

गाँठ, सं. स्त्री. (सं. ग्रंथिः पुं.) ग्रंथिका, बंध-धनं, गंडः २. संधिः (पुं.), पर्वत् (न.) । अरिश्च, संधिः-गंधिः ३. पीठलिका, भारः ४. आर्द्रक, संलः-लं ५. विघ्नः ६. भ्रांतिः (स्त्री) ७. दुर्भेद्यभूषणभेदः ।

—ग्योलना, कि. स. ग्रंथि-बंधं उन्मुच्य (प्रे.) गोक्ष (न.) उन्मुच्य (क. प. अ.) । (सु.) धन-कोप-भक्षिका शिथिलयति (ना. धा.) । देवं दूरी कृ ।

—वेना, यौक्तेना या लगाना, कि. सं., ग्रंथि दा अगना दंध (क. प. अ.) । (सु.) स्मृ (न्या. प. अ.) ।

—पक्षना, कि. अ., संघिल्प (दि. प. अ.), ग्रंथि (कर्म. ग्रन्थने) । (सु.) विद्वेषः उत्पद् (कर्म.) ।

—कट, सं. पुं., ग्रंथिछेदकः, चौरः ।

—गोभी, सं. स्त्री., दे. 'गोभी' के नीचे ।

—दार, वि. ग्रंथिल, ग्रंथि पर्व, मय (प्रथी स्त्री.) ।

—काटना, मु., ग्रंथि छिन्वा अपाह (भा. व. अ.) । ग्रंथि छिद् (र. प. अ.) ।

—का पूरा, मु., संपन्नः, धनाढ्यः ।

—जोड़ना, मु., वैवाहिक-औद्युक्तिक-ग्रंथि बंध (क. प. अ.) ।

—से, मु., स्वीय-स्वकीय-धनात् ।

गाँठना, कि. स. (सं. ग्रंथनं) ग्रंथ (क. प. से.), ग्रंथि बंध (क. प. अ.) दा २. संयुज् (र. उ. अ., सु.), संधा समाधा (जु. उ. अ.), संघिल्प (प्रे.) ३. संसिद् (दि. प. से.) ४. अनुकूल-यति (ना. धा.), स्वपक्षपातिनं विधा (जु. उ. अ.) ५. आत्मसात् कृ. वंशनी (भा. व. अ.) । गाँठीन, सं. पुं. (सं. पुं. न.) गाँठि (ह्रीं) व-लं, अर्जुनधनुस् (न.) ।

गाँठीची, सं. पुं. (सं. चिन् पुं.) अर्जुनः, गाँठीवधरः २. अर्जुनशूद्रः ।

गांधर्व, वि. (सं.) गंधर्व, विषयक-संबन्धित्-जातीय । सं. पुं., (सं. न.) गानं । (सं. पुं.) दे. 'गंधर्व' ।

—वेद, सं. पुं. (सं.) सामवेदस्वीपवेदः २. संगीतम् ।

गांधार, सं. पुं. (सं.) भारतवर्षस्वीत्तरदिशि देशविशेषः २. तृतीयस्वरः (संगीत) । (सं. न.) गंधरसः ।

गांधारि, सं. पुं. (सं.) दुर्योधनमातुलः शकुनिः, सौवलकः ।

गांधारी, सं. स्त्री. (सं.) दुर्योधनजननी ।

गांधारेय, सं. पुं. (सं.) दुर्योधनः, धृतराष्ट्र-ज्येष्ठपुत्रः ।

गांधी, सं. पुं. (सं. गांधिन्) गंधवर्णिज्, गंध, विक्र-यिन् उपजीविन्-वर्णिज्-आजीवः २. गुह्यप्रान्ते वैश्योपजातिविशेषः ३. महात्मा गांधिन् ।

गांधीर्य, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'गंभीरता' ।

गाँव, सं. पुं. (सं. ग्रामः) नि-सं, वसथः, हटादि-शब्दवसतिः (स्त्री.) ।

गांस, सं. स्त्री. (हि. गौसना) निबंधनं, बन्धनं, प्रतिरोधः २. द्वेषः मनोमालिन्यं ३. रहस्यं, गुप्तवार्ता ४. ग्रन्थः (पुं.) ५. इच्छार्थं ६. अवैक्षा, पर्ववैक्षणम् ।

गौसना, कि. स. (सं. ग्रन्थनं > ?) व्यध् (दि. प. अ.), निबंध (र. प. अ.) २. सं-नि-यम् (भा. प. अ.), दम्, (प्रे. दमयति) ३. वशीकृ ४. कतिशयेन-अत्यधिकं पूर (प्रे.) ।

गाह्व, सं. पुं. (अं.) पथ-मार्ग-अध्व, प्रदर्शक-

गाउन

[१६८]

गाफ़िल

प्रदादिन् (पुं.) उपदेशकः २. नायकः, नैतृ (पुं.)
३. निर्देशकग्रन्थः ।

गाउन, सं. पुं. (अं.) कञ्चुकः ।

गागर, सं. स्त्री. (सं. गर्गरः >) दे. 'गगरा' ।

गागरी, सं. स्त्री. (सं. गर्गरी >) दे. 'गगरी' ।

गाज, सं. स्त्री. (सं. गर्जः) दे. 'गरज' २. वज्र-
पातध्वनिः (पुं.), वज्रनिर्घोषः ३. वज्रः-अं,
अशनिः (पुं. स्त्री.), हादिनी ।

—मारा, वि., वजाहत, अशनिताडित ।

गाजर, सं. स्त्री. (सं. न.) गर्जरं, पीतकंदं,
पीतमूलकं, सुपीतं, सुमूलकम् ।

—मूली, सं. स्त्री., गाजरमूलकं, तुच्छवस्तु
(न.) ।

गाजी, सं. पुं. (अ.) धर्मवीरः (इस्लाम),
वीरः, योधः ।

गाङ्गना, कि. स. (हिं. गङ्ग - गङ्गा)
निखन् (भ्वा. प. से.), (श्शशाने=पृथिव्यां)
निधा (जु. उ. अ.), निगृह् (भ्वा. उ. वे.)
२. रुह् (प्रे. रोपयति) रथा (प्रे. स्थापयति)-
निविस् (प्रे.) ३. गुप् (भ्वा. प. वे. गोपा-
यति), तिरोषा-अन्तर्धा (जु. उ. अ.) ।

सं. पुं., निखननं, श्मशाने स्थापनं, रोपणं,
निवेशनं; गोपनम् ।

गाँव, सं. पुं. (अं.) ईदवरः, परमात्मन् २. देवः,
सुरः ।

गावर, सं. स्त्री. (सं. गडुरी) देवी, एडका ।

गाड़ी, सं. स्त्री. (सं. गाटे = रथ) शकटः-टं,
शकटिका, वानं, बाहनं, प्रवहणं, रथः २. वाष्प-
शकटी, लोहाध्वंगत्री ।

—जौतना, कि. स., शकटे अर्ध-वृषभं युज् (प्रे.) ।

—बान, सं. पुं. (हिं. गाड़ी) सारथिः (पुं.),
सूतः, चंष्ट (पुं.), शकटिकः ।

गाड़, वि. (सं.) अधिक, प्रचुर, बहु २. दृढ,
प्रबल ३. गम्भीर, अमाध ४. दुर्भेद, विकट ।

सं. पुं., (सं. न.) आपत्तिः (स्त्री.) ।

गाड़, वि. (सं. गाड़) कठिन, स्थूल, संघात-
वत्, सु-संहत २. घन ३. (मित्रादि) अभिज्ञ-
हृदय, दृढ ४. सनल ५. कठिन ।

सं. पुं., स्थूलदृढभेदः ।

गाड़े थी व.साई, सु., धोरपरिश्रमोपाजितं धनम् ।

गाड़े दिन, सु., दुर्दिनादि, कुसमयः ।

गाणपत्य, सं. पुं. (सं.) गाणपति-गणेश-पूजकः-

भक्तः २. गणेश-पूजा-भक्तिः (स्त्री.) ३. गणना-
यकत्वम् ।

गाणेश, सं. पुं. (सं.) गणेश-भक्तः-पूजकः ।

गाण, सं. पुं., दे. 'गाव' ।

गासंध्य, वि. (सं.) गेय, गानार्हं ।

गाता, सं. पुं. (सं. -तृ) गायकः, गायनः,
जेष्युः ।

गाती, सं. स्त्री. (सं. गावं >) गायीयं, गल-
वस्त्रभेदः ।

गात्र, सं. पुं. (सं. न.), तसुः-तृ (स्त्री.),
देहः, कायः, दे. 'शरीर' २. अंगं, अवयवः ।

गाथक, सं. पुं. (सं.) गायु (पुं.), गायकः
२. पुराणकथकः । (गायिका स्त्री.) ।

गाथा, सं. स्त्री. (सं.) स्तुतिः-नुतिः (स्त्री.)
२. श्लोकः, पद्यं २. पालिगमित्रितसंस्कृतमाथा
४. गीतं ५. कथा, वृत्तान्तः ६. पारसीकधर्म-
ग्रन्थभेदः ।

गाढ़, सं. स्त्री. (सं. गाधं >) दे. 'तलछट' ।

गाध, वि. (सं.) सुखोत्तरणीय, गांभीर्यरहित,
उत्तान २. न्यून, अल्प ।

सं. पुं. (सं. न.) स्थानं, २. गान्धीयशुभ्यो
जलप्रदेशः ३. लिप्सा, लोभः ४. धूलं ५. तलं,
अधोभागः ।

गान, सं. पुं. (सं. न.) गीतं, गीतिका, गेयं
२. सस्वर-पठनं-उच्चारणं, कौतनम् ।

—विद्या, सं. स्त्री. (सं.) संगीतं, संगीत-वाद्य-
शास्त्रं-विद्या ।

गाना, कि. अ. (सं. गानं) गै (भ्वा. प. अ.),
सस्वरं उच्चारं (प्रे.), सुमधुरं आलप् (भ्वा. प.
से.) २. (पक्षियों का) कूजं (भ्वा. प. से.)
३. वर्णं (जु.) ४. स्तु (अ. प. अ.), तु
(अ. प. से.) ।

सं. पुं., गीतं, गीतिः-निका (स्त्री.), गानं २.
सस्वर-आलपनं-उच्चारणम् ।

गानेवाला, सं. पुं., गेष्यः-तुः, गायकः, गायनः,
गातृ (पुं.) । (-वाली=गायिका, गात्री,
गायनी) ।

—वजाना, सं. पुं., गानवादनं, संगीतं, संगीत-
विद्या, शास्त्रम् ।

गाफ़िल, वि. (अ.) अनवधान, अनवहित,
प्रमादिन्, उपेक्षकः ।

गाम, सं. स्त्री. (सं. गर्भः) पशुगर्भः २. अदूरः, प्ररोहः ।

गाम्भा, सं. पुं. (सं. गर्भः >) किस(श)लयः-
र्थ, पल्लवः-न्व, प्ररोहः २. शयनम् ।

गाम्भिन, सं. स्त्री. (सं. गाम्भिणी) गर्भवती,
(देवत्व पशुओं के लिए) ।

गाम्भिनी, त्रि. स्त्री. (सं.) जलिन्री, गंत्री ।

गाम्भी, वि. (सं. गाम्भिन्) गंतु, यावत् ।

गाय, सं. स्त्री. (सं. गायः स्त्री.) घेनुः (स्त्री.),
माव् (स्त्री.), शृङ्गिणी, अण्वा-दोष्ठी, मद्रा,
अनहुही, अतहुवाही, कल्याणी, पावनी, गीरी,
सुरभिः (स्त्री.) २, सरल-शृङ्ग, मनुष्यः ।

गायक, सं. पुं. (सं.) दे. 'गाने वाला' ।

गायत्री, सं. स्त्री. (सं.) वैदिकश्रुतिभेदः २. वैदिक-
गंधविशेषः (तत्संवेतुर्वरण्यं भगो देवस्य धीमहि ।
धियो यो नः प्रचोदयात् । ऋग्. ३.६.२।१०),
सावित्री ३. पंजा ४. दुर्गा ।

गायन, सं. पुं. (सं.) दे. 'गानेवाला' २. गानं,
सन्दरालपनं २. गीतं, गीतिका ।

गायत्र, वि. (अ.) तुप्त, अन्तर-तिरो, हिन,
२. अदृष्ट, भाविन्, भविष्यत् ।

—करना, कि. स., चुर. (चु.), तिरो धा
(चु. उ. अ.) ।

—होना, कि. अ., तिरोभू, अदृश्य (वि.) + भू,
अन्तर-तिरो, धा (कर्म.) ।

गायिका, सं. स्त्री. (सं.) गायनी, गायी ।

गार, सं. पुं. (अ.) गृह्णा, भंडरा २. विवरम् ।

गारत, वि. (अ.) नष्ट, ध्वस्त ।

गारद, सं. स्त्री. (अं. गार्ह) रक्षक-रक्षि, कर्मा-
गणः २. अंगरक्षकः ३. रक्षा, सुप्तिः (स्त्री.) ।

गारना, कि. स., (सं. गालनं >) दे. 'निचोड़ना' ।

गारा, सं. पुं. (हिं. गारना) कर्दमः, पक्कः,
उत्त-उन्न-मृद (स्त्री.)-मृत्तिका, लेपः ।

गारुड, सं. पुं. (सं. न.) विपमंशः २. सुवर्ण
३. गरुडपुराणम् ।

गारुही, सं. पुं. (सं. -दिन्) विषवैद्यः, गारुडिकः
जांगुलिकः २. मोहिन् (पुं.), कुहकवारः
३. प्रतिप्रिषविक्रोत् (पुं.) ।

गार्गी, सं. स्त्री. (सं.) काचित् ब्रह्मवादिनी
विदुषी नारी (उपनिषद्.) ।

गार्ह, सं. पुं. (अं.) रक्षकः, रक्षिन् (पुं.)
२. वाष्पकटवाः रक्षकः ।

वाटी—, सं. पुं. (अं.) शरीर-अंग, रक्षकः ।

गार्डेन, सं. पु. (अं.) उद्यानं, आरामः ।

—पार्टी, सं. स्त्री. (अं.) उद्यान-आराम-भोजनः ।

गार्हपत्य, सं. पुं. (सं. न.) गृहपतिः, पदं-
प्रतिष्ठा ।

—अग्नि, सं. पुं. (सं.) यज्ञाग्निभेदः ।

गार्हमेध, सं. पुं. (सं.) पंचमहायज्ञाः (ब्रह्मयज्ञः,
देवयज्ञः, पितृयज्ञः, अतिथियज्ञः, भूतयज्ञः) ।

गार्हस्थ्य, सं. पुं. (सं. न.) गृहस्थाश्रमः २. गृह-
स्थवृत्त्यानि ३. पञ्चमहायज्ञाः ।

गाल, सं. पुं. (सं. गालः) कपोलः रंठः
२. मुखम् ।

—पर गाल चढ़ना, सु., पनीशू, आर्ये (भ्वा.
आ. से.) ।

—पिचकना, सु., रुद्धोभू, विदूक्षि (कर्म.) ।

—फुलाना, सु., कुप् (दि. प. से.), कुप्
(दि. प. अ.) ।

—खजाना या भारना, सु., आत्मानं दलाष्-
चिकरथ (भ्वा. आ. से.) ।

गालव, सं. पुं. (सं.) गलवमुनिपुत्रः (विद्वान्-
मित्रशिष्यविशेषः) २. लोभः, लोभः ३. पाणि-
निपूर्वकीं वैद्याकरणविशेषः ।

गाला, सं. पुं. (दि. गाल) धृतकर्पासविडं-
डः, २. हिमनूलम्, हिम-तुपार, पिण्डम्
३. चकोरिते सुष्टिमात्रमन्त्रम् ४. प्रासः,
कवलः ।

गालिबन, कि. वि. (अ.) संभवतः, प्रायः,
प्रायेण, प्रायशः, स्यात्, किल, नाम (सब
अव्य.) ।

गाली, सं. स्त्री. (सं. गालिः स्त्री.) आक्रोशः,
अपवादः, अपभाषणं, अधिक्षेपः, पदबोक्तिः
(स्त्री.) ।

—खाना, कि, अ., आ-अधि-क्षिप् (कर्म.), अप-
भाष-अभिज्ञप्-अपवद् (कर्म.) ।

—देना, कि. स., अधि-आ-क्षिप् (तु. प. अ.),
अभिज्ञप् (भ्वा. उ. अ.), अभिज्ञप्-अपवद्
(भ्वा. प. से.) ।

—गलौज, सं. स्त्री., परस्पर, अधिक्षेपः-अपभा-
षणं गालिदानम् ।

गालीचा, सं. पुं., दे. 'गलीचा' ।

गाव, सं. पुं. (गौः, पुं. स्त्री., फ्रा. गाव) दे.
'गाय' २. दे 'बैल' ।

—कुशी, सं. स्त्री. (क्रा.) गो, घातः वधः इत्या ।

—क्षप, सं. स्त्री. छलेन अपहारः उपयोगः, प्रसन्नम् ।

—क्षप करना, कि. सं., कपटेन आत्मसाध क ।

—ज्ञघान, सं. स्त्री. (क्रा.) गोजिज्ञा, अघः पुत्री, सरपत्री ।

—तक्रिया, सं. पुं. (क्रा.) महोपवहैः, बृहद्-पथनम् ।

—दी, सं. पुं. (क्रा. + सं. धीः >) जटा, मूलेः ।

—दुम, वि (प्रा.) गोपुच्छाकार, शुंढाकृत । मूत्र्याकार, शंकाकृति ।

गाहक, सं. पुं. (सं. ग्राहकः) क्रेतु, क्रयिन् २. गुणग्रहीतृ (पुं.), गुणधः ।

गाहक्री, सं. स्त्री. (हिं. गाहक) ग्राहकत्वं, क्रेतृत्वं २. गुणज्ञता ।

गाहन, सं. पुं. (सं. न.) वि-अव-गाहनम्, निमज्जनं, रसानं २. विलोटनम् ।

गाहना, कि. सं. (सं. गाहनं) अव-वि-गाह् (भ्वा. आ. से.), निमज्ज् (तु. प. अ.) २. मथ्, मथ् (भ्वा. प. से.), विलोड् (प्रे.) २. निस्तु-पीड्, पू (क्. उ. से.) २. पादाभ्यां पीड् (ट.)-मृद् (क्. प. से.) ४. दे. 'खोजना' ।

सं. पुं. (सं. न.) अव-वि-गाहनं, विलोटनं, मर्दनं, निरतुपीकरणंः अन्वेषणम् ।

गाहनी, सं. स्त्री. (हिं. गाहक) ग्राहकत्वं, क्रेतृत्वं २. गुणज्ञता ।

गाहनी, सं. स्त्री. (अं.) आंग्लदेशीया स्वर्गमुद्राः गिनी ।

गिरगिट, सं. पुं. (देश. अथवा सं. गल-यति > ?) सरटः-टुः, टुक (कु) लाहः, सं. प्रतिमूर्त्यः-र्यकः ।

—की तरह रंग बदलना, मु., सत्वरं स्व-सिद्धांतान् परिशुत् (प्रे.) ।

गिरजा, सं. पुं. (पुर्त. इग्रिजिया) ख्रिस्टवर्म-मंदिरम् ।

गिरना, कि. अ. (सं. गलनं) नि-अव-पत् (भ्वा. प. से.), रळ् गल् (भ्वा. प. से.), लंप् (भ्वा. आ. से.), ल्यु (भ्वा. आ. अ.) २. खि-डू (कर्म.), डेत् (भ्वा. प. से.) क्षयं लयं-इ-यं (अ. प. अ.) ३. आधेवारत् अपकृत् (कर्म.), अवश् (भ्वा. प. अ.), लधुम् । ४. दुखे इत् (कर्म.) ५. अकरनात् यदृच्छया धत् (भ्वा. आ. से.) अथवा आनां पत् ।

सं. पुं., पतनं, च्यवनं, गलनं, अदरीहणं, पट्, अंशः-च्युतिः (स्त्री.) ।

—बाला, वि., पतयात्, पतन-पात, उन्मुच, पालिन्, पातुक, पिपतिपु ।

गिरा हुआ, वि., पति, च्युत, खस्त, गलित । गिरते-पड़ते, मु., यथाकथंचित्, येन केन प्रकारेण ।

गिरप्रत, सं. स्त्री. (क्रा.) दे. 'पकड़' । गिरप्रतार, वि. (क्रा.) गृहीत, धृत, बद्ध, निरुद्ध ।

गिनती, सं. स्त्री. (हिं. गिनना) गणनं, संख्यानं

२. संख्या, गणना ३. अंकमाला ।

—के, ट., कविचित्, स्तोकाः ।

गिनना, कि. सं. (सं. गणनं) गण् संकल् (तु.), परि-संख्या (अ. प. अ.) २. नन् (दि. आं. अ.), गण् । सं. पुं., गणनं संख्यानं, संकलनम् ।

गिनने-योस्य, वि., गणनीय, संख्येय । गिनने वाया, वि., गणक, संख्यातृ ।

गिना हुआ, वि., गणित, संख्यात । दिन—, न्., यथाकथंचित् कालं या (पं. गण-यति) ।

गिनवाना, कि. प्रे., व. 'गिनना' के धातुओं

गिनाना, के प्रे. रूप ।

गिनी, सं. स्त्री. (अं.) आंग्लदेशीया स्वर्गमुद्राः गिनी ।

गिरगिट, सं. पुं. (देश. अथवा सं. गल-यति > ?) सरटः-टुः, टुक (कु) लाहः, सं. प्रतिमूर्त्यः-र्यकः ।

—की तरह रंग बदलना, मु., सत्वरं स्व-सिद्धांतान् परिशुत् (प्रे.) ।

गिरजा, सं. पुं. (पुर्त. इग्रिजिया) ख्रिस्टवर्म-मंदिरम् ।

गिरना, कि. अ. (सं. गलनं) नि-अव-पत् (भ्वा. प. से.), रळ् गल् (भ्वा. प. से.), लंप् (भ्वा. आ. से.), ल्यु (भ्वा. आ. अ.) २. खि-डू (कर्म.), डेत् (भ्वा. प. से.) क्षयं लयं-इ-यं (अ. प. अ.) ३. आधेवारत् अपकृत् (कर्म.), अवश् (भ्वा. प. अ.), लधुम् । ४. दुखे इत् (कर्म.) ५. अकरनात् यदृच्छया धत् (भ्वा. आ. से.) अथवा आनां पत् ।

सं. पुं., पतनं, च्यवनं, गलनं, अदरीहणं, पट्, अंशः-च्युतिः (स्त्री.) ।

—बाला, वि., पतयात्, पतन-पात, उन्मुच, पालिन्, पातुक, पिपतिपु ।

गिरा हुआ, वि., पति, च्युत, खस्त, गलित । गिरते-पड़ते, मु., यथाकथंचित्, येन केन प्रकारेण ।

गिरप्रत, सं. स्त्री. (क्रा.) दे. 'पकड़' । गिरप्रतार, वि. (क्रा.) गृहीत, धृत, बद्ध, निरुद्ध ।

गिरना, कि. अ. (सं. गलनं) नि-अव-पत् (भ्वा. प. से.), रळ् गल् (भ्वा. प. से.), लंप् (भ्वा. आ. से.), ल्यु (भ्वा. आ. अ.) २. खि-डू (कर्म.), डेत् (भ्वा. प. से.) क्षयं लयं-इ-यं (अ. प. अ.) ३. आधेवारत् अपकृत् (कर्म.), अवश् (भ्वा. प. अ.), लधुम् । ४. दुखे इत् (कर्म.) ५. अकरनात् यदृच्छया धत् (भ्वा. आ. से.) अथवा आनां पत् ।

सं. पुं., पतनं, च्यवनं, गलनं, अदरीहणं, पट्, अंशः-च्युतिः (स्त्री.) ।

—बाला, वि., पतयात्, पतन-पात, उन्मुच, पालिन्, पातुक, पिपतिपु ।

गिरा हुआ, वि., पति, च्युत, खस्त, गलित । गिरते-पड़ते, मु., यथाकथंचित्, येन केन प्रकारेण ।

गिरप्रत, सं. स्त्री. (क्रा.) दे. 'पकड़' । गिरप्रतार, वि. (क्रा.) गृहीत, धृत, बद्ध, निरुद्ध ।

- करना, कि. सं., निरुध् (ह. उ. अ.), आसिध् (श्वा. प. वे.), ग्रह् (कृ. प. से.) ।
- होना, कि. व. निग्रह् पृ बंध-निरुध् (कर्म) ।
- गिरफ्तारी, सं. स्त्री. (फ़ा.) आसिधः, बंधनं, निग्रहणं, धरणं, निरोधः ।
- गिरमिट, सं. पुं. (अं. एप्रीमेट) , दे. 'इकरार-नामा' ।
- गिरमिटिया, सं. पुं. (अं. एप्रीमेट) प्रतिष्ठा-वद्ध-अनुबद्ध, कर्मकरः अमकः ।
- गिरदाना, कि. प्रे. व. 'गिरना' के प्रे. रूप ।
- गिरवी, वि. (फ़ा.) आधी-न्यासी, युक्त, निश्चित, आहित ।
- रखना, कि. स., ग्यस (दि. प. वे.), निक्षिप् (तु. प. अ.), न्यासी-आधी-कृ ।
- दार, सं. पुं. (फ़ा.) आधि-न्यास बंधक, दाहिम् (पुं.)-आइकः ।
- रखने वाला, सं. पुं., निक्षेपन्, आधात् ।
- गिरह, सं. स्त्री. (फ़ा.) दे. 'गौठ' (१-३) २. दे. 'खेन' ३. दे. 'उलटवाजी' ४. गज़ाख्य-मानस्य पीटशांशः ।
- बौधना, कि. स., दे. 'गौठ देना' ।
- कट, सं. पुं., दे. 'गौठकट' ।
- दार, वि., दे. 'गौठदार' ।
- गिरा, सं. स्त्री. (सं.) वाक्यशक्तिः-गिर-वाच् (स्त्री.), वाणी २. सरस्वती, मारती, काम्देवी ३. अिता, रसना ४. वचनं, उक्तिः (स्त्री.) ।
- गिराना, कि. स., व. 'गिरना' के प्रे. रूप ।
- गिरानी, सं. स्त्री. (फ़ा.) महापर्वत, बहुभुज्यता २. दक्षिण, दुःखालः ३. गुरुत्वं, भारवत्त्वं ४. अजीर्णम् ।
- गिराघट, सं. स्त्री. (हि. गिरना) पतनं, व्यवनं-अवरोहणं, अवनतिः (स्त्री.) ।
- गिरि, सं. पुं. (सं.) पर्वतः, शीलः, अमलः, नगः २. परित्राजकोपाधिः (पुं.) ।
- धर, सं. पुं. (सं.)
- धारी, सं. पुं. (सं. धारिम्) } श्रीकृष्णचन्द्रः ।
- नन्दिनी, सं. स्त्री. (सं.) पार्वती, उमा ।
- नाथ, सं. पुं. (सं.) शिवः, शङ्करः ।
- राज, सं. पुं. (सं.) हिमालयः २. गोवर्धन-पर्वतः ।
- सुता, सं. स्त्री. (सं.) पार्वती ।
- गिरिजा, सं. स्त्री. (सं.) पार्वती, गौरी ।
- गिरिंद्र, सं. पुं. (सं.) महापर्वतः २. हिमालयः ३. शिवः ।
- गिरी, सं. स्त्री. (हि. गरी) अष्टिः (स्त्री.), अष्टौला, बीजं, गर्भः, फल-बीजं, गर्भः । (१-३) दे. 'गिरि' तथा 'गिरी' ।
- गिरीश, सं. पुं. (सं.) शिवः, महेशः २. हिमालयः ३. केशशः ४. महापर्वतः ।
- गिरी, वि. (फ़ा.) दे. 'गिरवी' ।
- गिर्द, अन्व. (फ़ा.) अभितः, परितः, सर्वतः, समन्ततः, समन्तात् (सब अन्व.) ।
- गिर्द—
- गिर्दागिर्द, अन्व. (फ़ा.) दे. 'गिर्द' ।
- गिर्दावर, सं. पुं. (फ़ा.) पर्यटकः, परिभ्रामकः ।
- गिल, सं. स्त्री. (फ़ा.) मृत्तिः (स्त्री.), मृत्तिका, मृदा, मृद् (स्त्री.) २. उत्त-उन्न, नृत्तः ।
- कार, सं. पुं., मृलेपकः, लेपकरः, सुधा-जोनिन् ।
- कारी, सं. स्त्री., मृलेपः ।
- गिलगिला, वि. (फ़ा. गिल = गारा) पंकिल, ध्यान ।
- गिलट, सं. पुं. (अं. गिलट) सुवर्णरंजनं, हेम-च्छदः २. गिलटाल्यो धातुविशेषः ।
- करना, कि. स., सुवर्णयति (ना. धा.), हेम-रसेन-द्रवेष लिप् (तु. प. अ.) ।
- गिलटी, सं. स्त्री. (सं. ग्रन्थिः पुं.) मांसं, पिंडः, अधिमांसं २. वि. स्फोटः टकः, शोथः, श्वयुधः, मणः-णं, मांसावृद्धम् ।
- गिलना, कि. स. (सं. गिरणं) दे. 'निगलना' ।
- गिलत्रिलाना, कि. स. (अनु.) अस्पष्टं-गह्व-वाना वद (श्वा. प. से.) ।
- गिलहरी, सं. स्त्री. (सं. गिरिः (स्त्री.) = मुहिया) कःष्ठ-विडालः-मार्जारः, चरमपुच्छः, वृश्यायिका ।
- गिला-झा, सं. पुं. (फ़ा.) दे. 'उपालम्भ' ।
- गिलाई, गिलाय, सं. स्त्री., दे. 'गिलहरी' ।
- गिलाफ, सं. पुं. (अ.) उपधान-उपवर्ह, कोषः-शः २. मूला-तुलिका, कोषः ३. कोषः, पुटः, आवेष्टनं ४. अतिकोषः ।
- गिलास, सं. पुं. (अं. ग्लास) कंसः, कुन्तलः, मल्लकः, पानपात्रम् । २. बदराकारं आङ्ग्ल-फलम् ।
- गिली-झी, सं. स्त्री., दे. 'गुल्ली' ।

गिलो, गिलोय

[१७२]

गुच्छ, गुच्छक

गिलो, गिलोय, सं. स्त्री. (फ्रा.) गुड्ड(ड)ची, अमृता, अमृत-सोम-बली-लता-वहरी, रसा-वर्ना ।

गिलोला, सं. पुं. (फ्रा. युलेला) गृह, चट्टिका-गुहिलिका ।

गिलौरी, सं. स्त्री. (देश.) दे. 'पान का बीड़ा' ।

गिल्टी, सं. स्त्री. दे. 'गिल्टी' ।

गिल्लह, सं. पुं. (सं. गलः >) गलगण्डः, गण्डुः ।

गीत, सं. पुं. (सं. न.) गीतिः (स्त्री.), गीतिका, गानं, गेयं २. यशस् (न.), महिमन् (पुं.) ।

—गाना, सु., प्रशंस (भवा. प. से.) स्तु (अ. प. अ.) ।

गीता, सं. स्त्री. (सं.) श्रीमद्भगवद्गीता २. ज्ञान-मयोपदेशः २. वृत्तान्तः ३. छन्दोभेदः ।

गीती, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'गीत' २. छन्दो-गीतिका, सं. स्त्री. (सं.) भेदः ।

गीदह, सं. पुं. (सं. गृध्रः=लालची अथवा फ्रा. गौदी=भोव) कोष्ठा, फेरः, शिवालुः, गोमातुः (पुं.), श्र (सु) मालः, जम्बु (वृ) कः, फेरवः, जगत्तकः, भूरिमायः, वंचा (ज) कः । वि., कातर, भीरु ।

—भवक्री, सं. स्त्री., विभीषिका ।

—बोलना, सु., अपशुक्रनः-नं गू २. निर्दोषीम् ।

गीदही, सं. स्त्री. (हि. गीदह) शिवा, श्रगाली, क्रोधी ।

गीध, सं. पुं., दे. 'गिद्ध' ।

गीला, वि. (फ्रा. गिल् = गारा) आर्द्र, उत्त, उन्न, डिन्न, स्तिमित, जलसिक्त । (गीली (स्त्री.) = आर्द्रा इ.) ।

—करना, कि. स., उंद् (रु. प. से.), क्रिद् (प्रे.), आर्द्रीकृ ।

—पन, सं. पुं. (हि. गीला) आर्द्रता, उन्नता ।

गुंघा, सं. पुं. (अ.) मुकुलः-लं, कोरकः-कं, कलिका २. विहारः, ३. संगीतम् ।

गुंज, सं. स्त्री. (सं. गुंजः) गुञ्जनं, गुञ्जितं, गुन्गुन्ध्वनिः (पुं.) शंकारः, कलरवः । 'आनन्दध्वनिः (पुं.) ३. दे. 'गुंजा' ४. दे. 'गुंज' ।

गुंजन, सं. पुं. (सं. न.), दे. 'गुंज' (१) ।

गुंजना, कि. अ. (सं. गुंजनं), गुंज्, मधुरं ध्वन्, अरपटं निस्वन् (स्रज भवा. प. से.) ।

गुंजरना, कि. अ., दे. 'गुंजना' २. दे. 'गरजना' ।

गुंजा, सं. स्त्री. (सं.) रक्तिका, रक्ता, वन्धा, २. गुंजाबीजं इ. ।

गुंजादृश, सं. स्त्री. (फ्रा.) अवकाशः, स्थानं, धारण-ग्रहण-शक्तिः (स्त्री.)-सामर्थ्यं २. लाभः ३. योग्यता ।

गुंजान, वि. (फ्रा.) घन, निविट, गढ ।

गुंजायमान, वि. (सं. गुञ् >) गुंजन्, मधुरं ध्वन् (शश्वतं) ।

गुंजार, सं. पुं. दे. 'गुंज' (१) ।

गुंजारना, कि. अ., दे. 'गुंजना' ।

गुंजह, वि. (सं. गुण्डकः = गैला >) दुर्भृत्, दुराचारिन् (पुं.), व्यसमिन्, लंपट २. रूप-भङ्गित, छेकः, वैषाभिमानिन् । (गुंडी स्त्री.) ।

—पन, सं. पुं., दुराचारः, स्वेरिता, लंपटता ।

गुंथना, कि. अ. (हि. गुंथना) ग्रन्थ-सङ्गम-नून्-गुं (गु) फ (कर्म) ।

गुंथाना, कि. प्रे., व. 'गुंथना' के प्रे. रूप ।

गुंथना, कि. अ. (सं. गुंथ = क्रीडा करना >) (हस्ताभ्यां) गृह-संघीह् (कर्म) २. दे. 'गुंथना' ।

गुंथाना, कि. प्रे., व. 'गुंथना' के प्रे. रूप ।

गुंथाई, गुंथावट, सं. स्त्री. (हि. गुंथना) १. करान्यां मर्दनं २. मर्दनवेतनं ३. ग्रंथनं ४. ग्रंथन-चुतिः (स्त्री.)-गृह्या ।

गुंफ, सं. पुं. (सं.) संकुलता, व्यतिकरः, संवरः २. गुच्छः-चलकः ३. इमष्ट (न.), ओष्ठलोमन् (न.) ४. कुर्वन् ।

गुंफन, सं. पुं. (सं. न.) संग्रंथनम्, संदर्भणम्, संसृत्रणम् ।

गुंफित, वि. (सं.) सं-परि-आ-दिल्ल, सं-आ-सक्त २. अथित, सुवित ३. उत, उन्न ।

गुंवज, सं. पुं. दे. 'गुंवद' ।

गुंवद, सं. पुं. (फ्रा.) गोल, पटलं छटिः (स्त्री.) ।

गुंथयां, सं. पुं. तथा स्त्री. (हि. गोहन-साय >) १. सहचरः, संगिन् (पुं.), सखि (पुं.) २. सहचरी, सखी ।

गुंमुल, सं. (सं.) गुंमुलः, कालनिर्यासः, देवधूपः, रूसगंधकः ।

गुंघी, सं. स्त्री. (अनु.) गुलीचंड-क्रीहायं नृविधरं, भ्रातिः (स्त्री.) ।

गुच्छ, गुच्छक, सं. पुं. (सं.) रत्नः, स्तवकः गुत्सः-सकः २. मयूरपुच्छं ३. दार्पिशद-वटिकहारः ।

गुच्छा

[१७३]

गुण

गुच्छा, सं. पुं. (सं. गुच्छः दे.) २. आभूषण-
भेदः ।
गुच्छेदार, वि. (हि + फा.) गुच्छिन्, ससुच्छ ।
गुच्छी, सं. स्त्री. (सं. गुच्छः >) अरिष्टः,
मांसान्वयः, गुच्छफलः २. व्यंजनोपयुक्तपुष्पभेदः,
*गुच्छी ।
गुञ्जर, सं. पुं. (फा.) उप-अभि-गमः, उपसर्पणं,
प्रवेशः २. निर्भागः, गतिः (स्त्री.) ३. निर्वाहः,
जीवनम् ।
—जाना, मु., दे. 'मरना' ।
गुञ्जरना, क्रि. अ. (फा. गुञ्जर) इया
(अ. प. अ.), गम् २. अति-व्यति, इ. कति-
कम् भ्वा. प. से.) ३. भू. घट (भ्वा. आ. से.)
४. गृ. त्. आ. अ.), प्रागान् लुच् (तु. उ. अ.) ।
गुजरात, सं. पुं. (सं. गुर्जरराष्ट्रं) भारत-
वर्षस्य प्रसिद्धदेशः, गुर्जराट्प्रान्तः ।
गुजराती, वि. (हि. गुजरात) गुर्जरराष्ट्रीय,
गुर्जरराष्ट्र-वासिन्-संबन्धिन् २. गुर्जरराष्ट्रीय-
भाषा ।
गुजरात, सं. पुं. (फा. गुञ्जर) निर्वाहः,
कालक्षेपः ।
गुजश्वा, वि. (फा.) व्यतीत, गत, अतिक्रान्त ।
गुञ्जारना, क्रि. सं. (हि. गुञ्जरना) गग-या
(घ.) ।
गुञ्जारा, सं. पुं. (फा.) निर्वाहः, कालक्षेपः
२. अर्थार्थं, प्राणधारणं ३. वृत्तिः-भूतिः (स्त्री.)
४. तार्थं, तरपण्यम् ।
गुञ्जारिण, सं. स्त्री. (फा.) निवेदनं, प्रार्थना ।
गुटकना, क्रि. अ. (अनु.) कपोतवत् कूञ्ज
(भ्वा. प. से.) २. दे. 'निगलना' ।
गुटका, सं. पुं. (सं. गुटिका >) लघु, ग्रंथ-
पुस्तकम् २. दे. 'गुटिका' ।
गुटरगुं, सं. स्त्री. (अनु.) कपोतकूजितं,
पारावतरुतम् ।
गुटिका, सं. स्त्री. (सं.) गुलिका, वटिका, वटिः
(स्त्री.) ।
गुट्ट, सं. पुं. (सं. गोटः >) समूहः, दलम् ।
गुट्टा, सं. पुं. (देश.) खड्गः, वामनः २. दे. 'गोटी' ।
गुट्टल, वि. (हि. गुटली) स्थूलापि, सुत-
वत् २. मंदमति, जह ३. अशीलाकारः ।
सं. पुं. ग्रंथिः (पुं.) २. मांसपिंड-वृत्तम् ।

गुटली, सं. स्त्री. (सं. गुटिका >) अष्टिः (स्त्री.),
अशीला, फलधीजम् ।
गुट्टवा, सं. पुं. (सं. गुट्टाञ्) ।
गुड, सं. पुं. (सं.) इलुसारः, रसजः, खड्गजः,
गुडगः, मोदकः, शिशुप्रियः, गुळः, स्वादुः ।
गुडगुड, सं. स्त्री. (अनु.) गुडगुड, शब्दः-ध्वनिः
(पु.) धूमपानयंत्रशब्दः ।
गुडगुडाना, क्रि. अ. (अनु.) गुडगुडायते
(ना. पा.) गुडगुड, ध्वनि-शब्दं कृ ।
गुडगुडी, सं. स्त्री. (हि. गुडगुडाना) लघु-
धूमपानयंत्रम् ।
गुडच, सं. स्त्री. (सं. गुट्टची) दे. 'गिलो' ।
गुडधनिया, गुडधानी, (सं. गुडधानाः स्त्री.
वह.) ।
गुडाकू-खू, सं. पुं. (सं. गुड + तमाखू >)
गुटतमाखूः ।
गुडाकेश, सं. पुं. (सं.) शिवः २. अर्जुनः ।
गुडिया, सं. स्त्री. (सं. गुडिका) पुत्तिका,
पुत्रिका, कुहंटी, पात्रालिका ।
गुडियों का खेल, मु., सुकरं कार्यम् ।
गुडच, सं. स्त्री., दे. 'गिलो' ।
गुडूची, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'गिलो' ।
गुडू, सं. पुं. (सं. गुडः) गुडकः पुत्रकः,
पुत्तलः ।
गुडू, सं. स्त्री. (गुडिका >) चिलासदृशं
पत्रकीटनकं, चिलाभासः २. दे. 'गुडिया' ।
गुण, सं. पुं. (सं.) धर्मः, स्वभावः, विशेषः
२. सर्वं, रजस् (न.), तमस् (न.), गुण-
त्रयी ३. रूपरसगंधरसश्चादियः द्रव्यधर्माः (वै.)
४. नातुर्यं, दक्षता ५. प्रभावः, फलं ६. शीलं,
सत्स्वभावः ७. लक्षणं, विशेषता ८. 'त्रि' इति
संख्या ९. संधिविग्रहयानासनसंश्रयईधोभावाः
(राजनीतिः) १०. प्रकृतिः (स्त्री.) (छान्दोग्य)
११. 'अ, ए, ओ-वर्णाः (व्या.) १२. सूर्ध,
रज्जुः (स्त्री.) १३. उषा, मौर्वी १४. माधु-
धौजःप्रसादाः (काव्य.) १५. आवृत्तिसूचकः
प्रत्ययः (उ. द्विगुणः इ.) ।
—कर, वि. (सं.) हितकर, उपयोगिन् (गुण-
करा स्त्री.) ।
—कारक, वि. (सं.) हित, उपकर्तृ (कारिका
स्त्री.) ।

गुणक

[१७४]

गुणाह

- कारी, वि. (सं. -रिन्) उपयुक्त, उपकारिन् (-कारिणी स्त्री.) ।
- खान, वि., (सं. -खानी) बहुगुण. उपेत-अभिनव-संपन्न ।
- गान, सं. पुं. (सं. न.) स्तुतिः स्तुतिः (स्त्री.) प्रशंसा ।
- गौरी, सं. स्त्री. (सं.) पतिव्रता, सती, एकपत्नी २. सधवा, ससर्तुका ।
- ग्राहक, वि. (सं.) गुणान्वेषिन्, गुणग्राहिन् २. दे. 'गुणज्ञ' ।
- दायक, वि. (सं.) दे. 'दुयकर' ।
- दोष, सं. पुं. (सं.) गुणावगुणौ-हानि-लाभी (द्वि.) ।
- निधान, वि. (सं.) गुण, राशिः निधिः
- सागर, वि. (सं.) (पुं.) ।
- हीन, वि. (सं.) अगुण, निर्गुण, सामान्य, साधारण ।
- गुणक, सं. पुं. (सं.) गुणकांकः ।
- गुणज्ञ, वि. (सं.) गुण-ग्राहिन्-ग्राहक, मर्मज्ञ ।
- गुणज्ञता, सं. स्त्री. (सं.) गुणग्राहकत्व, मर्मज्ञता ।
- गुणद, सं. पुं. (सं. न.) आघातः, हननं, अन्वयः २. गणनं, संख्यानम् ।
- गुणमय, वि. (सं.) दे. 'गुणी'
- गुणवंत, वि. (सं. -वंत) दे. 'गुणी'
- गुणवान, वि. (सं. -वंत) गुण-भर्या सती स्त्री ।
- गुणांक, सं. पुं. (सं.) गुण्यः गुणकांकः ।
- गुणा, सं. पुं. (सं. गुणः) (समासान्त में, उ. दो गुणान्विगुण ३.) दे. 'गुणन' ।
- करता, गुणयति (ना. घा.), आ-ति, इन् (अ. प. अ. अथवा प्रे. धातयति), पूर (चु.) ।
- गुणातीत, वि. (सं.) सर्वत्रिगुणप्रभावशून्य, निर्लिप्त, शुद्ध । सं. पुं., ईश्वरः ।
- गुणानुवाद, सं. पुं. (सं.) प्रशंसा, स्तुतिः (स्त्री.) ।
- गुणित, वि. (सं.) गुणीकृत, आहत, दूरित ।
- गुणी, वि. (सं. गुणिन्) गुणवन्, गुण-संपन्न-उपेत-आह्ला-सुख-निधि-सागर । २. दक्ष, कुशल ३. गुण्य-हीन-अरमन् ।
- गुणीभूत, वि. (सं.) मुख्यार्थरहित २. गौणी-भूत ।
- व्यंग्य, सं. पुं. (सं. न.) अप्रधानव्यंग्यार्थः काव्यभेदः ।

- गुणेश्वर, सं. पुं. (सं.) परमेश्वरः २. चित्रकूट-पर्यन्तः ।
- गुण्य, सं. पुं. (सं.) गुणकांकः, गुणांकः ।
- गुण्यमगुण्य, सं. पुं. (हि. गुण्यता) संश्लिष्टता, संकलना २. बाहु-बाहूवाहवि, युद्धं, द्वंद्वः ।
- गुण्यी, सं. स्त्री. (हि. गुण्यता) दे. 'उलजना' ।
- गुणना, क्रि. अ., (सं. गुण-परिवेष्टन अथवा ग्रंथ) (वेणीरूपेण—) ग्रंथ (कर्म.), वेणीकृ (कर्म.) २. गुण्य-संज्ञम् (कर्म.) सं-ग्रंथ (कर्म.) ३. बाहुबाहवि गुण (दि. आ. अ.) ।
- गुणवाना, क्रि. प्रे., व. 'गुणता' के प्रे. रूप ।
- गुण(शु)वी, वि. (हि. गुणना) (वेणी-रूपेण—) प्रायित-सुंषितः ।
- गुद, सं. स्त्री. (सं. न.) अपानं, पातुः (पुं.), उच्छ्रन् ।
- अंकुर, —कील, सं. पुं. (सं.) दे. 'दवातीर' ।
- ग्रह, सं. पुं. (सं.) दे. 'ब्रह्म' ।
- गुदगुदा, वि. (हि. गुदा) गांसल, वेदस्त्रिन् ३. गुद, सुखशर्मा, कोमल ।
- गुदगुदाना, क्रि. सं. (हि. गुदगुदः) कुत-कृतयति कंठयति (ना. घा.), यतिं अस्त्रि. प्रे., मनोविनाशाय क्षुम् (प्रे.) ।
- गुदगुदाहट, गुदगुदी, सं. स्त्री. (हि. गुद-गुदाना) कुतकृतं, कंठयति (स्त्री.) ।
- गुदडी, सं. स्त्री. (हि. गुदना) कंथा, स्वृतकरः, ३. जीर्ण-शीर्ष-वस्त्रम् ।
- सै लाल, गु., चीरे रमन् (गु.) ।
- का लाल, गु., चीररमन् (गु.) ।
- गुदा, सं. स्त्री. दे. 'गुद' ।
- गुदाज्ञ वि. (प्रा.) गुद, कीमल, सुखरपर्दी ।
- दिल, वि., हृदयद्रावक. मार्मिक, मर्म-स्पर्शित् ।
- गुनगुना, वि. (अनु.) कोष्ण, कदम्ब, ककोष्ण २. नासनादिन् ।
- गुनगुनाना, क्रि. अ. (अनु.) गुणगुनायते (ना. घा.) २. नासिकना दद् (अथा. व. प्रे.) ३. अस्फुटं गै (अथा. व. अ.) ४. असतोषाव परिदेव् (अनु. आ. सं.) ५. दे. 'गुक्ता' ।
- गुन(ना)हगार, वि. (प्रा.) प्रायित, पातकिन् २. अपराधिन्, दोषिन् ।
- गुना, सं. पुं., दे. 'गुणा' ।
- गुनाह, सं. पुं. (प्रा.) पार्व २. अपराधः ।

गुनिया

[१७५]

गुरु

गुनिया, सं. पुं. (सं. कोणः >) कौणिकं, साधनं, लक्षकोपकरणभेदः (१) ।
 गुपचुप, क्रि. वि. (सं. गुप्त + चुप >) निघ्नं, रुग्णं, रक्षितं, मौनं (सत्र अर्थ.) । सं. स्त्री. (१-३) मिष्टन्न-वालक्रीडा-क्रीडनक, भेदः ।
 गुप्त, वि. (सं.) गूढ, निवृत्त, निलोन, प्रकृत्य, अन्यथा, अप्रकट २. दुर्बोध ३. रक्षित ४. अदृश्य । सं. पुं., वैश्यापाथिः २. प्राचीन-राजवंशविशेषः ।
 —होना, क्रि. अ., अंतर्धर्म-निली (कर्म.) ।
 —चर, सं. पुं. (सं.) अपसर्पः, अ(च)रः, प्रणिधिः ।
 —दान, सं. पुं. (सं. न.) दानुनामनिर्देशं विना दानं ।
 गुप्ता, सं. स्त्री. (सं.) परकीयाभेदः २. उप-पत्नी-भार्या ३. वर्णभूषणोपाधिः (पुं.), गुप्तः ।
 गुप्ति, सं. स्त्री. (सं.) गूढनं, गोपनं, संवरणं, प्रच्छादनं २. रक्षणं ३. कारागारं ४. गुहा ५. गुमाः (योग.) ।
 गुप्ती, सं. स्त्री. (सं. गुप्त >) गुप्ताभिः (पुं.), खट्वभदष्टिः (स्त्री.), गुप्तिः (स्त्री.) ।
 गुफा, सं. स्त्री. (सं. गुहा) कंदरुः-रा, गह्वरं, दरी, विवरः रम् ।
 गुप्ततगू, सं. स्त्री. (फ्रा.) वार्तालापः, आकाशः, संलापः ।
 गुप्तरैला, सं. पुं. (हिं. गोबर) भोग्यलः, गोमयकीरः ।
 गुप्तर, सं. पुं. (अ.) मूलः (स्त्री.), ५. प्रकृत्य-वैरादिकम् ।
 गुप्तरा, सं. पुं. (हिं. कुप्ता) विमानं, सन्वोम, वानं २. विमानाकारं, अभिक्रीडनकम् ।
 गुप्त, वि. (फ्रा.) लुप्त, अष्ट, नष्ट, व्युत् २. गुप्त, छत्र ३. अविरथात् ।
 —करना, क्रि. म., विपुलविहा-परिहा (कर्म.), तृतीया के साथ) २. दे. 'छिपाना' ।
 —होना, क्रि. अ., नश (क्रि. प. के.), प्रभंश (भ्वा. अ. से; दि. प. से.) ।
 —नाम, वि. (फ्रा.) अप्रसिद्ध, अविदित ।
 —राह, वि. (फ्रा.) प्रथम नष्ट, पथ, विपथ-उन्मार्ग, गामिन्, पथप्रष्ट, अज्ञान ।
 —राही, सं. स्त्री. (फ्रा.) आम्निः (स्त्री.), भ्रमः २. कुमार्गः ।

गुमटी, सं. स्त्री. (फ्रा. गुंवर) (सोपानादीनां) उच्छदिः (स्त्री.) ।
 गुमवा, सं. पुं. (फ्रा. गुंवर) गंरः शोधः, शोफः ।
 गुमरी, सं. स्त्री. दे. 'धुमरी' ।
 गुमान, सं. पुं. (फ्रा.) अनुमानं २. दर्पः ।
 गुमानी, वि. (फ्रा.) दृष्ट, गवित, सदई ।
 गुमाशना, सं. पुं. (फ्रा.) प्रतिनिधिः (पुं.) प्रतिवस्तः-स्तकः, नियोगिन् (पुं.), नियुक्तः, प्रतिपुरुषः ।
 —गीरी, सं. स्त्री. (फ्रा.) नियोगि-प्रतिनिधि-पदं-कार्यं २. प्रतिनिध्यं, नियुक्तत्वम् ।
 गुम्मत, सं. पुं. (फ्रा. गुंवर दे.) ।
 गुर, सं. पुं. (सं. गुरुमन्त्रः >) मूलं, मूलमन्त्रः, सारः, संक्षिप्तविधिः (पुं.) ।
 गुरगा, सं. पुं. (सं. गुरुगः) शिष्यः २. सेवकः ३. गुप्त-चरः ।
 गुरगाबी, दे. 'गुराबी' ।
 गुरिया, सं. स्त्री. (सं. गुरिका) गुरी, गुरिका ।
 गुरु, सं. पुं. (सं.) बृहस्पतिः, वैदगुमः २. बृहस्पतिग्रहः ३. पुण्यनक्षत्र ४. मंत्रोपदेशकः ५. आचार्यः ६. अध्यापकः, शिक्षकः ७. पुरोहितः ८. त्रिमन्त्रिकवर्णः (छन्द.) ९. बल-विद्यादिषु स्वतोदधिकः ।
 वि., बृहत्, महत्, विशाल, विपुल, विस्तीर्ण, २. भारवत् ३. दुर्जर, दुष्पच, गरिष्ठ ४. पूज्य, मान्य ।
 —आई, सं. स्त्री. गुरुता, गुरुधर्मः २. गुरुकर्यं, मंत्रोपदेशः ३. धर्मता ।
 —कुल, सं. पुं. (सं. न.) आचार्यकुलं, विद्यालयः, शिक्षालयः ।
 —प्रंताल, सं. पुं., धर्म-वचक-शठ-चित्तक, राजः ।
 —जन, सं. पुं. (सं.) पूज्य बृह-जनः ।
 —द्विणा, सं. स्त्री. (सं.) आचार्योपायनम् ।
 —द्वारा, सं. पुं. (सं. गुरुद्वार >) शिष्यमत मंदिरं, लुक्द्वारम् ।
 —भाई, सं. पुं. (— न हिं. भाई) सतीर्थ्यः, गुरुगकः, सद्, पाठिन्-अध्ययिन् ।
 —मुख, वि. (सं. >) दीक्षित ।
 —मुखी, सं. स्त्री. लिपिविशेषः, गुरुमुखी ।
 —वार, सं. पुं. (सं.) गुरु-बृहस्पति-वारः-वासरः ।

गुरुच, सं. स्त्री., दे. 'गिलो' ।
 गुरुत्तर, वि. (सं.) महत्तर, आवश्यकतर
 २. भारवत्तर, गरीबत्तर ३. पूज्यतर ।
 गुरुता, सं. स्त्री. (सं.) । भारः,
 गुरुत्व, सं. पुं. (सं. न.) । तोलः, मानं २. महत्ता,
 गौरवं, गरिमन् (पुं.) ।
 —आकर्षण-सं. पुं. (सं. न.) भारवत्, आकृष्टि-
 पानुकत्वम् ।
 गुरुवाहन, सं. स्त्री. (सं. गुरु >) गुरु, आचार्यै-
 पत्नी, आचार्यानी, दुर्गा २. उपाध्यायानी,
 उपाध्यायी ३. उपदेशिका, अध्यापिका,
 शिक्षिका ।
 गुरू, सं. पुं., दे. 'गुरु' ।
 गुर्गा, सं. पुं. (सं. गुरुगः) शिष्यः, अनुगामिन्
 २. सेवकः, अनुगः ३. गुप्तचरः ।
 गुर्गावी, सं. स्त्री. (फ्रा.) पाहूः (स्त्री.),
 पावकाः ।
 गुर्ज, सं. पुं. (फ्रा.) गदा, शस्त्रभेदः ।
 गुर्जर, सं. पु. (सं.) गुर्जराष्ट्रं, गुर्जरप्रान्तः
 २. गुर्जरवासिन् ३. जातिविशेषः ।
 गुर्दा, सं. पुं. (फ्रा.) वृकः-का-कं, वृकः-का-कं
 गुल्मः, गुर्दाः, वृषयः । २. शौर्यं, साहसम् ।
 —का दर्द, सं. पुं. वृकशूलम् ।
 —की पथरी, सं. स्त्री. वृकासमरी ।
 गुर्गाना, क्रि. अ. (अनु.) गुर्गरायते (ना. धा.),
 गुर्वरध्वनि कृ २. गर्ज् (भ्वा. प. से.) ।
 गुविंणी, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'गमिणी' ।
 गुर्वी, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'गमिणी' २. गुरुपत्नी,
 आचार्यानी ३. गौरवयुक्ता ४. गायत्री ।
 गुल्, सं. पुं. (फ्रा.) ओङ्-जपा-जया-पुष्पं
 २. पुष्पं ३. दग्धवर्ती-तिः (स्त्री.) ४. शुक्लं,
 नेत्ररोगभेदः ५. तमलोद्दण्डः ।
 —अव्यास, सं. पुं., कृष्ण-कलिः (स्त्री.)-
 केलिः (स्त्री.) ।
 —कंद, सं. पुं. (फ्रा.) *फुल-जपा, खेदः ।
 —कारी, सं. स्त्री. (फ्रा.) फुल-चार्यै, कर्मन् ।
 —चुरा, सं. पुं., सिद्ध-आलवः-नाथः-ईश्वरः ।
 —दास्ता, सं. पुं. (फ्रा.) फुलगुत्सवः, कुसुम-
 पुष्प, गुच्छः-स्तवकः ।
 —दान, सं. पुं. (फ्रा.) फुल, धानं-धानी ।
 —दुपहरिया, सं. पुं., सूर्यमत्तकः, अर्कवलयः,
 माध्याह्निकः, वन्धुजीवकः ।

—परी, सं. स्त्री. सुपुष्पा, शंखोदरी, बर्हपुष्पा ।
 —उदन, सं. पुं. (फ्रा.) कौशेयवत्तभेदः ।
 —बूटा, सं. पुं., दे. 'गुलकारी' ।
 —मखमल, सं. पुं., स्थूलपुष्पा, झण्डकः ।
 —करना, सु., दे. 'बुझाना' ।
 —होना, सु., दे. 'बुझना' ।
 —खिलना, सु., अतकितं-अद्भुतं वट् (भ्वा.
 आ. से.) अथवा आ-सं-पर (भ्वा. प. से.)
 २. उपद्रवः उपद्र. (दि. आ. अ.) ।
 —खिलाना, सु., व. 'गुलखिलना' के प्रे. रूपः ।
 गुल, सं. पुं. (फ्रा.) कोलहलः, कलवल-
 ध्वनिः (पुं.) ।
 —गपाहा, सं. पुं., दे. 'गुल' ।
 गुलगुला, वि. (हि. गुदगुदा) कोमल,
 गृदुल ।
 गुलगुला, सं. पुं. (हि. गोल+गोल) गोल-
 गोलः मिष्टान्न-पकाङ्ग-भेदः २. गंतः, कर्णपट्टी ।
 गुलचला, सं. पुं. (हि. गोला+चलाना)
 दे. 'तोपची' ।
 गुलछुरा, सं. पुं. (फ्रा. गुल+अत्.) आसन्दः,
 मोदः, रं. विलासः, भोगः ।
 —(रं) उधाना, सु., खच्छन्दं रम्
 (भ्वा. आ. अ.) ।
 गुलज़ार, सं. पुं. (फ्रा.) उद्यानं, वाटिका ।
 वि., शोभन, अभिराम ।
 गुलझट-डी-डी, सं. स्त्री. (सं. गोल+झट =
 उलक्षणा) सूत्रसंदलेपः, *गोलझटम् : २. गली-
 किः (स्त्री.) ।
 गुलशन, सं. पुं. (फ्रा.) उद्यानं, वाटिका ।
 गुलाब, सं. पुं. (फ्रा.) चक्रवेत्तरा, लाक्षापुष्पा,
 तरुणी, शतपत्री, शृङ्गेष्टा, गन्धाल्या, जपा,
 जवा २. जपात्रलम् ।
 —जल, सं. पुं., जपा-जवा, जलम् ।
 —जामुन, सं. पुं., किलाट, जेतु (न.)-जात्रवं ।
 २. वृक्षभेदः । ३. तरुफलम् ।
 —दान, सं. स्त्री., *जपाधानी ।
 गुलाबी, वि. (फ्रा.) पाटल, जपावर्णं २. लघु,
 अत्यल्प ३. कौञ्जक, ओङ् । सं. स्त्री., (१-३)
 पानपात्र-स्वर्ण-गिष्टाङ्ग-भेदः । ४. जपासंज्ञः ।
 गुलाम, सं. पुं. (अ.) कीर्त, दासः २. सेवकः
 ३. दासाकारयुतं कीर्तापत्रं, दासः ।

गुलामी, सं. स्त्री. (अ. गुलाम) दासत्वं
२. सेवा ३. परतन्त्रता ।

गुलाल, सं. पुं. } (फ्रा. गुलालः) दे. 'अबीर' ।
गुलाली, वि. }

गुलिस्नौ, सं. पुं. (फ्रा.) उधानं, उपवनम् ।

गुलबंद, सं. पुं. (फ्रा.) गलबन्धः २. प्रवेद्य-यकम् ।

गुले(लै)ल, सं. स्त्री. (फ्रा. गिल्ल) वटिका-
क्षेपणी, गुलिकासः ।

गुलेला, सं. पुं. (फ्रा. गुलला) गुलिका, वटिका
२. दे. 'गुलेल' ।

गुल्फ, सं. पुं. (सं.) पुष्टिकः, कुंडः, कुंडकः,
नरगण्डभिः (पुं.) ।

गुल्म, सं. पुं. (सं.) अररसंगभेदः २. सेना-
विमानभेदः (= १ हाथी, १ रथ, २७ घोड़े,
४५ पैदल) ३. प्रीति ४. नाटी-भगनी-शोधः,
४. रत्नम्, धूपः, गुल्मः-नम् ।

गुल्मी वि. (सं-गिन्) गुल्मरोगपीडित ।

गुल्ला, सं. पुं. (सं. गीला > , दे. 'गुलेला' ।

गुल्लाझा, सं. पुं. (फ्रा. गुलेलालः) रत्नगुथ-
भेदः, लालाकुलम् ।

गुल्ली, सं. स्त्री. (सं. गुली >) फल, गर्भ-बोजं,
२. गुर्जावंदकीलायां लघुकाष्ठखण्डः, *गुली,
बोया ३. शाश्वतः ४. सारिकाक्षभेदः,
५. इच्छुखण्डः ६. अक्षः, पाशकः ।

गुसल, सं. पुं. दे. 'गुसल' ।

गुसाई, सं. पुं. दे. 'गोस्वामी' ।

गुस्ताव, वि. (फ्रा.) वृष्ट, वियात, अशिष्ट ।

गुस्तावी, सं. स्त्री. (फ्रा.) धाष्टरं, वैयात्यं,
अशिष्टता ।

—करना, कि. अ., धाष्टरं वृष्टं (प्रे.) अशिष्ट-
वत् व्यवह (भ्या. उ. अ.) ।

गुस्ल, सं. पुं. (अ.) स्नानं, अवगाहनम् ।

—करना, कि. अ., स्ना (अ. प. अ.) ।

—ज्ञाना, सं. पुं. (अ. + ज्ञा.) ज्ञानानाम्,
अवगाहनस्थानम् ।

गुस्सा, सं. पुं. (अ.) क्रोधः, रोषः, दे. 'क्रोध' ।

—जाना, करना चढ़ना या होना, कि. अ.,
कृ-कृप् (वि. उ. से.), कृत् (दि. प. अ.) ।

—उत्तरना, गु. क्रोधः शम् (दि. प. से.),
शाम्यति ।

गुस्सीला, गुस्सैल, वि. (अ. गुस्ता) कौपिनः
कौपिन, रोपण, अमर्षण ।

गुह^१, सं. पुं. (सं.) कार्तिकेयः २. अश्वः
३. गुहा ४. रामसुहृद् (पुं.) ५. हृदयम् ।

गुह^२, सं. पुं. (सं. गुहं) दे. 'गूह' ।

गुहौजनी, सं. स्त्री. (सं. गुह + अजनं >)
पद्म, पिटिका-चंचिका ।

गुहा, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'गुफा' ।

गुहार, सं. स्त्री. दे. 'गोहार' ।

गुहिन, सं. पुं. (सं. न.) वनं, काननम्,
अरण्यम् ।

गुह्य, वि. (सं.) गुप्त, अन्तर्हित २. गोपनीय,
संवरणीय ३. दुर्बोध, गूढ ।

सं. पुं. लक्षं २. कूर्मः ३. गुह्यांशं ४. विष्णुः
५. शिवः ।

गुह्यक, सं. पुं. (सं.) यक्षभेदः ।

—पति, सं. पुं. (सं.) कुबेरः ।

गूंगा, वि. (फ्रा. गुंग) नूकः, वाग्-रहित-हीनः,
अवान् ।

गूंगे का गुह, मु., अवपर्यवार्ता ।

गूँज, सं. स्त्री. (सं. गुंजः) दे. 'गुंज' (१) २. प्रति-
नादः-श्वनिः (पुं.)—शब्दः रवः-गर्जनं-छृतिः
(स्त्री.) ३. अनु-रस्ति-नादः ।

गूँजना, कि. अ. (सं. गुंजनं) दे. 'गुंजना'
२. प्रति-नद-ध्वन-स्वग-रस् (सब श्वा. प. से.)
३. अनु-नद-रस्, प्रतिशब्दं कृ इ. ।

गूँथना, कि. सं. (सं. यथसं) वेणीरूपेण ग्रंथं
(क. प. से.) वेणी कृ २. संभृत्, संदृभ्
(लु. उ. से.), गुंथि-प्र-दृभ् (ल. प. से.),
सूत् (लु.) ३. सिन् (दि. प. से.), (सूच्या)
संक्षिप (प्रे.) ।

गूँथना, कि. सं. (सं. गोथनं=कीला करना >)
(जलेन मिथयित्वा हस्ताभ्यां) मृद (क. प.
से.) गथया (प्रे.)-सम्पीड (लु.) २-३. दे.
'गूँथना' (१, २.) ।

गूंग(गु)ल, सं. पुं. दे. 'गुगुल' ।

गूँजर, सं. पुं. (सं. गुंजरः) गोपः, गोपालः,
अभीरः २. जामि-विशेषः ।

गूँजरी, सं. स्त्री. (सं. गुंजरी) गोपी, गोपपत्नी
२. नरशाभरभेदः ३. रामिणीविशेषः ।

गूह, वि. (सं.) दुर्बोध, कठिन २. गुप्त, प्रच्छन्न
३. गम्भीर, सारगर्भित ।

—पुरुष, सं. पुं. (सं.) दे. 'पुसकर'

- गूडना, सं. स्त्री. (सं.) दुर्बोधता, गम्भीरता, प्रच्छन्नता ।
 गूडोंग, सं. पुं. (सं.) कच्छपः, कनकः, कुमः ।
 गूडोंघि, सं. पुं. (सं.) अहिः, सर्पः, उरगः, पत्रगः ।
 गूध, सं. पुं. (सं. पुं. न.) दे. 'गूह' ।
 गूथना, कि. स., दे. 'गूथना' ।
 गूदक, सं. पुं. (हि. गूथना) कर्कशः, जीर्ण-वसनं २. अवरकरः, मलं ३. गूदा, त्रिलिका ।
 गूदकी, सं. स्त्री. (हि. गूद) (सिद्धकच) तूला २. पोष्टली-त्रिका ।
 गूदा, सं. पुं. (सं. गौर्दः) मस्तिष्कः, गौर्दः, मस्तकस्नेहः २. फलः, सारः-भस्त्रा-वसा ३. बीजः, सारः-गर्भः ४. सारभागः ।
 गूथना, कि. स. दे. 'गूथना' ।
 गूण, सं. स्त्री. (सं. गुणः) जीर्णः-मलः (स्त्री.) ।
 गूणडा, सं. पुं. (सं. गुणः-ना) विस्फोटः, पिचकः २. शोथः, शोकः ।
 गूमकी सं. स्त्री. (हि. गूमडा) पिचिका, सुद्र-वणः, रक्तवटी ।
 गूलर, सं. पुं. उद्वन्तरः, शशांगः, जंतुफलः, हेमदुग्धकः, पुष्पशूयः ।
 —का कीडा, सु. कृपमंडकः अनुभवहीनः ।
 —का फूल, सु., दुर्लभवस्तु (न.) ।
 गूह, सं. पुं. (सं. गूथः) पुरीषः, मलः, उचारः, विद्या, अप(व)स्करः, विप (स्त्री.) ।
 गूध, सं. पुं. (सं.) दे. 'गिह' ।
 गूह, सं. पुं. (सं. न.) गूहाः (पुं. बहु.), गेह-हः, वेधमन्-मधमन् (न.), निकेतः-गर्भः, सदनं, गहनं, अ(अ)गारः, मंदिरं, निलयः, शालयः, शाला, सं-आ-ति-अधि-वासः, आवसथः, उदवसिष्ठः, निकालयः २. परिवारः, कुटुम्बः, गूहाः ।
 —पति, सं. पुं. (सं.) गूहिन्, गेहिन्, कुटुम्बिन २. कुलकुरः ३. अग्निः ।
 —पत्नी, सं. स्त्री. (सं.) शालिनी, गूहिणी, गेहिनी, कुटुम्बिनी ।
 —शुद्ध, सं. पुं. (सं. न.) जनप्रकीर्णः, प्रकृति-क्षोभः, २. कौटुम्बिकवल्हः ।
 —लक्ष्मी, सं. स्त्री. (सं.) सुगूहिणी, सुशील-गूहपत्नी ।

- गूहस्थ, सं. पुं. (सं.) गूहमेधिन्, ज्येष्ठा-श्रमिन्, दे. 'गूहपति' ।
 —आश्रम, सं. पुं. (सं.) वैवाहिकजीवनं २. द्वितीयाश्रमः ।
 गूहस्थी, सं. स्त्री. (सं. गूहस्थः) गूहस्थ-आश्रमः-कर्तव्यानि (न. बहु.) २. गूहस्थवस्था ३. कुटुम्बः, परिवारः ४. गूह, उन्-कारः-सामग्री ५. गूहकार्य-व्यवस्था ।
 गूहिणी, सं. स्त्री. (सं.) शालिनी, दे. 'गूह-पत्नी' ।
 गूही, सं. पुं. (सं. गूहिन्) गूहस्थः, दे. 'गूहपति' ।
 गेडली, सं. स्त्री. (सं. कुटली) मंडलं, शिवेयनं, व्यावर्तकम् ।
 —मारना, कि. स., संजला-पुटी-वर्तली, वृ. व्यापार (प्र.) ।
 गेहुरी, सं. स्त्री. दे. 'गेहुरी' ।
 गेहू, सं. पुं. (सं. गेहूकः) कंदुकः, गेहू (गेहू) का, गोचकः, गोला-क्या-कं २. गेहूकं, कंदुकं, गोला-कम् ।
 —बझा, सं. पुं. गेहूगण्ट, पट्टे-मकार, आण्डलीयकीवापिदः ।
 गेहुआ, सं. पुं. (सं. गेहूकः) (गोला-) उपवर्हः-उपधानम् ।
 गेहा, सं. पुं. (सं. गेहूकः) वृद्धः, कंदुकः, गोलाकः २. पुष्पभेदः ।
 गेरना, कि. स., दे. 'गिराना' तथा 'गेहना' ।
 गेरु, सं. स्त्री. (सं. गेरेयकं) गेरिकं, एक गिरि-धातुः (पुं.) ३. रक्तोष्णं, गिरिवं, गिरि-लोहितः, गृष्टिका, धनाटकम् ।
 गेहुआ, वि. (हि. गेरु) गेहेकवर्जित २. गिरिवध ।
 गेह, सं. पुं. (सं. पुं. न.) दे. 'गूह' ।
 गेहुँजन, सं. पुं. (हि. गेहू) गोधूमकः, फणभेदः ।
 गेहुँ, सं. पुं. (सं. गोधूमः) सुमनम् (पुं.), बहुदुग्धः, चयनः, स्केलमौन्यः, स्तिनाशि-विकः, निस्तुषः, क्षीरिन्, अपूर्णः, रसालः २. नागरंगः ।
 गेहुँआ, वि. (हि. गेहू) गोधूम-वर्ण-रंग, २. गोधूममय, गोधूम(समास में) २. वस-भेदः ।

गंडा, सं. पुं. (सं. गंडः) गंडकः, ऋद्धिगन्, वज्रचर्मन् (पुं.), तुंग-कोटी, मुसः, वार्धी- (श्री) शसः, खड्गधृगः ।

गैंत-ती, सं. स्त्री. (देश.) दे. 'कुदाल' ।

गैंज, सं. पुं. (अ.) अति, क्रोध-क्रोध, रोषः ।

गैंव, सं. पुं. (अ.) परोक्ष-तिरोहित, पदार्थः । वि., सुप्त, तिरोहित ।

—गैं, वि., परोक्षविद्, सर्वज्ञ ।

गैंवर, सं. पुं. (सं. गजवरः) गजोत्तमः, गजेन्द्रः, करीन्द्रः ।

गैंवी, वि. (अ. गैव) सुप्त, प्रच्छन्न, अवगत ।

गैंया, सं. स्त्री. दे. 'गाय' ।

गैंर, वि. (अ.) अन्य, इतर, पर, अपर २. भिन्न, व्यतिरिक्त । सं. पुं. आगंतुकः, अन्त्यागतः ।

—आत्माद्, वि., निर्जंत, प्रसतिशस्य ।

—मनक्रुद्धा, वि., मित्र, स्वावर, अचरल ।

—मामूठी, वि., विशिष्ट, आसाधारण, विशेषः ।

—मुनासिद्ध,—नाजिष, वि., अनुचित, अयोग्य ।

—मुमकिन, वि., असंभव, अशक्य ।

—शक्य, सं. पुं. परतः, अनाःमीयः ।

—हाजिर, वि., अनुपरिचित, अविद्यमान ।

—हाजिरी, वि., अनुपस्थितिः. (स्त्री.) अविद्यमानता ।

गैंरत, सं. स्त्री. (अ.) लज्जा, वषा ।

गैंरिक, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'रिह' ।

गैंरीयन, सं. स्त्री. (अ.) अन्वयता, परता, इतरता, अपरता ।

गैंल, सं. स्त्री. दे. 'गली' ।

गैंलन, सं. पुं. (अ.) गैलनम्, द्रवद्रव्यपरिमाण-भेदः, अर्द्ध प्रस्थः ।

गैंस, सं. स्त्री. (अ.) वाणिः (स्त्री.), वाणः ।

गैंडा, सं. पुं. (सं. गोष्ठं) वनः, अवरोधः, शाला २. ग्रामः ३. पिच्छीर्गमार्गः ४. अजिरम् ।

गैंद, सं. पुं. (सं. पुं.) , अथवा हिं. गूदा) निर्यासः ।

—दानो, सं. स्त्री. निर्यासधानी ।

गैंदीला, वि. (हिं. गैंद) निर्यास, नय-तुल्य, सद्, स्वप्न ।

गो, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'गाय' २. किरणः ३. इन्द्रियं ४. वाच् (स्त्री.) ५. सरस्वती ६. नेत्रं ७. विद्युत् (स्त्री.) ८. पृथ्वी ९. दिशा १०. जननी

११. जिह्वा । सं. पुं. (सं.) वृषभः २. नंदीगणः

३. धोतकाः ८. सूर्यः ५. चंद्रः ६. बाणः ७. मायकः

८. आकाशः-शं ९. रवर्गः १०. जलं ११. लोमन् (न.) १२. शब्द १३. नवार्कः ।

—कर्ण, सं. पुं. (सं.) धेनुश्रवणं २. शैवतीर्ध-विशेषः । ३. अशतरः ४. सर्पभेदः ५. किष्कु-वितस्तिः (पुं. स्त्री.) (हिं. वित्तः) ५. मृग-भेदः । वि., लंबकर्ण ।

—कुल, सं. पुं. (सं. न.) गोसमुदायः २. गोष्ठं ३. ग्रामविशेषः ।

—ग्रास, सं. पुं. (सं.) गो-कवलयः- (लं)-पिठः ।

—घात, सं. पुं. (सं.) गो-हत्या-वधः-मारणम् ।

—घातक, सं. पुं. (सं.) गोघातिन्, गोधनः ।

—चर, वि. (सं.) इन्द्रियग्राह्य, इन्द्रियगम्य । सं. पुं., रूपादिविषयाः २. शादलं, वृणावृत्त-गृभिः (स्त्री.) ३. प्रांतः, देशः ।

—चरी, सं. स्त्री. (सं. गोचर >) मिक्षादृतिः (स्त्री.) ।

—ज्तीत, वि., अगोचर, अतीन्द्रिय, इन्द्रियातीत, इन्द्रियागोचर ।

—दान, सं. पुं. (सं. न.) धेनु-गो-विसर्जन-त्यागः ।

—धू(ली)लि, सं. स्त्री. (सं.) संख्या-सायं-कालः-समयः-वेला ।

—धेनु, सं. स्त्री. (सं.) दुग्धवती गोः (स्त्री.) ।

—पाल, सं. पुं. (सं.) गोपः, गोपालकः । २. श्रीकृष्णः ।

—मय, सं. पुं. (सं. न.) गो-मं-पुरीष-विष्टाः

—मुस, सं. पुं. (सं. न.) धेनुपदसं २. शंभेदः । ३. दे. 'नरासिद्ध' ४. गोदुग्धी, जपमालाकोपः । ५. चौरकृतं कुक्ष्यंद्रम् ।

—मूत्र सं. पुं. (सं. न.) गो-जल-प्रस्रावः-प्रवः-निर्घंदः ।

—मेद,—मेदक, सं. पुं. (सं.) राहुरसं, पुष्परामः, पीनक्षगन् (पुं.) ।

—सेध, सं. पुं. (सं.) वृक्षभेदः ।

—रस, सं. पुं. (सं.) दुग्धं २. दधि (न.) ३. तर्कं ४. इन्द्रियलुब्धम् ।

—रोचन, सं. पुं. (सं. चना) शुभा, शोभा, शोभना, रोचनी, शिवा, भंगला, पीता, रोचना ।

—लोक, सं. पुं. (सं.) श्रीकृष्णस्य नित्यधामन्
(न.) ।
—वर्द्धन, सं. पुं. (सं.) ब्रजभूमौ पर्वतविशेषः ।
—वर्द्धनधर, सं. पुं. (सं.) गोवर्द्धनधारिन्
श्रीकृष्णः ।
—विद, सं. पुं. (सं.) श्रीकृष्णः ।
—शाला, सं. स्त्री. (सं.) गोष्ठं, गोमृहं, ब्रजः ।
—साई, सं. पुं., दे. 'गोस्वामी' ।
—स्वामी, सं. पुं. (सं. -सिन्) गोपतिः २. प्रभुः ।
—हत्या, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'गोघात' ।
गो^२, गो कि, अन्व. (प्रा) अदि, यद्यपि ।
गोका, सं. स्त्री. (सं.) लघु, गौः-धेतुः
(दोनो स्त्री.) २. वनधेतुः (स्त्री.), गिलापती ।
गोखरु, सं. पुं. (सं. गोक्षुरः) त्रिकटः-टकः,
गोकटः-टकः (क्षुपविशेषः) २. तस्य वाटकः-कं
३. वाटक-बलयः-प्रकारः ।
गोचना, गोचनी, सं. पुं. सं. स्त्री. (हि. गोहूँ +
चनः) गोधूमचणः-णम्, गोचणः-णं-श्री
गोज, सं. पुं. (प्रा.) अपानवायुः, पदः ।
गोजर, सं. पुं. दे. 'कतखजुरा' ।
गोजरा, सं. पुं. (हि. गोहूँ + जव) गोधूमयवाः ।
गोद्रा, सं. पुं. (सं. गुह्यकः) १. पकात्रभेदः ।
२. बंश-काष्ठ-कीलः ३. दे. 'जेव' ४. पासभेदः ।
गोट, सं. स्त्री. (गोष्ठ > ?) वस्तयः-दशाः
(स्त्री. बहु.), वसनप्रान्तः ।
गोट, सं. स्त्री. (सं. गुटिका) शारः, शारिः
(पुं.), खेलनी ।
गोटा, सं. पुं. (हि. गोट) सुवर्ण-रजत, जाला-
भरणं-वस्त्राभरणम् ।
गोटी, सं. स्त्री. (गुटिका) पाषाणखंडः-
हं, शर्करा २. दे. 'गोट' ३. मसूरी-रिका,
शीतलारोगः ।
गोठ, सं. स्त्री. (सं. गोष्ठं) गोशाला २. पर्वटम्,
भ्रमणं ३. श्राद्धभेदः ।
गोहना, कि. स. दे. 'खोदना' ।
गोबा, सं. पुं. दे. 'बुदना' ।
गोपी, सं. स्त्री. (सं.) शाण, कोपः-पुटः, म्यू-
(रत्नो)तः, प्रसेवः २. द्रोणीपरिनाथम् ।
गोत, सं. पुं. (सं. गोत्रं) दे. 'गोत्र' २. वपः,
समूहः ।
गोता, सं. पुं. (अ.) निमज्जनं, अवगाहः ।

—देना, कि. स., व. 'गोता मारना' के प्रे.
रूप ।
—मारना, कि. अ. धि-अव-गाह (श्वा. वा.
वे.) निमज्ज (तु. प. अ.) ।
—खोर, सं. पुं. (अ. + प्रा.) अवगाहकः,
निमज्ज (पुं.) ।
गोत्र, सं. पुं. (सं. न.) कुलं, वंशः, अन्वयः
२. समूहः ३. संपत्तिः (स्त्री.) ४. वन्धुः
५. जातिविभागः ।
—भिद्, सं. पुं. (सं.) इन्द्रः, देवराजः ।
गोदंत, सं. पुं. (सं. न.) हरिदालम् ।
गोद, सं. स्त्री. (सं. कोटं) अंकः, उक्त्यः ।
—लेना, पु., पुत्रीकः, (पुत्रत्वेन) परिग्रह-
(क्. प. से.) :
गोदना, कि. म. (हि. खोदना) सूत्रा स्वचं
रंज (प्रे.), स्वस्मन्तुदिव्य पत्रंस्त्रां निविशु (प्रे.)
२. गोवीर्यं निविशु (प्रे.) ३. सूत्रयज्ञेन व्यधु
(दि. प. अ.) ४. असकृत् प्रणुद्-प्रवृत्त (प्रे.) ।
सं. पुं., स्वनि सूनीलातम् कृष्णचिह्नम् ।
गोदनी, सं. स्त्री. (हि. गोदन) वेधनी,
सूचिः-ची (स्त्री.) ।
गोदाम, सं. पुं. (अं. गोडाउन) पय्य-अगारं-
आधानं, भाण्डागारम् ।
गोदावरी, सं. स्त्री. (सं.) गोदा, गौतमी ।
गोदी, सं. स्त्री., दे. 'गोद' ।
गोधा, सं. स्त्री. (सं.) तला, तलं, ज्याघातवारणा
२. गोधिका, निहाका ।
गोधुम, गोधूम, सं. पुं. (सं.) ३. 'गोहूँ'
२. नागरंगः ।
गोन, सं. स्त्री., दे. 'गोपी' ।
गोनिया, सं. पुं., दे. 'गुनिया' ।
गोप, सं. पुं. (सं.) आभीरः, गोपालः, २. नृपः
३. उपकारकः ।
गोपन, सं. पुं. (सं. न.) गूहनं, गोहनं, प्रच्छा-
दनं, संवरणम् ।
गोपनीय, वि. (स.) गूह्यं, संवरणीयं, रहस्य,
गोप्य ।
गोपिका, सं. स्त्री. (सं.) दे. गोपी ।
गोपी, सं. स्त्री. (सं.) गोपिका, गोपपत्नी,
आभीरी, गोपालिका ।
गोफन-ना, सं. पुं. (सं. गोफण) स्नानः,
सिद्धि(दे)तालः ।

गोबर, सं. पुं. (सं. गोमयं) दे. 'गोमय' ।

—गणे(ने)श, वि., कृदन्त, कुरुप । सं. पुं.,
दूर्यं, अहः ।

गोबरी, सं. स्त्री. (हि. गोबर) गोमयलेपः ।

—करना, कि. स., गोमयेन लिप् (तु. प. अ.) ।

गोबरैला, सं. पु. (हि. गोबर) दे.
गोबरौदा, 'दुदरैला' ।

गोभी, सं. स्त्री. (सं. गोभी - पासविशेष >)
गोभी ।

गांठ—, ग्रंथिगांभी ।

पाद—, } सुकूलपत्र, गोभी ।
बंद—, }

फूल—, मध्यपुष्पा, वृहद्दला, फूलगोभी ।

गोया, कि. वि. (फ्रा.) दय, यथा, मन्ये
(दि. आ. अ.) ।

गोरखधंधा, सं. पुं. (हि. गोरख + धंधा)
गहन-जटिल, न्यून २. कूटं, प्रहेलिका ३.
अज्ञाननिर्गमः प्रदेशः ।

गोरखा, सं. पुं. (सं. गोरक्षकः) नयपालदेशे
प्रांतविशेषः २. तत्प्रान्तवासिन् ।

गोरखाली, सं. स्त्री. (सं. हि. गोरखा)
नयपालदेशस्थ जातिविशेषः, गोरक्षाली २.
गोरक्षालीजातर्भाषा, गोरक्षाली ।

गौरा, वि. (सं. गौर) शुद्ध, श्वेत, सित,
विशुद्ध । सं. पुं., गौरः, शुद्धः, श्वेतः, सितः,
२. शुशोषणियासिन्, गौरः ।

गौराई, सं. स्त्री. (हि. गौरा) गौरता, शुद्धता,
श्वेतता, सितता ।

गोरिझा, सं. पुं. (अफ्रो.) वानरभेदः,
वनमानुषप्रकारः ।

गोरी, सं. स्त्री. (सं. गौरी) गौरा, शुद्धा, श्वेता,
सुरुषिणी, सुन्दरी ।

गोलंदाज, सं. पुं. (फ्रा.) शतवनीचालकः,
गोलक्षेपकः ।

गोल, वि. (सं.) वतुल, निरतल, वृत्त, वृत्त-मंडल-
चक्र-वलय-आकार-आकृति-रूपः २. अस्पष्ट,
संदिग्ध, अनिश्चित । सं. पुं., घटः २. मूर्त्तिः ।

—गण्पा, सं. पुं. (+ अनु. नप) गोलनगपः ।

—मटोल, वि., पीनग्रामन, खर्वस्थूल ।

—मिचं, सं. स्त्री. [सं. गोलमरि(री)चं]
नरिचं, कोल, कोलकम् ।

—माल, सु., अस्तव्यस्तता, क्रमभंगः ।

—माल करना, मु., छलेन आत्मसात् कृ
२. व्यवस्थां नश (प्रे.) ।

गोल, सं. पुं. (अ.) गणः, समुदायः ।

गोलक, सं. पुं. (सं.) पिटक-संयुक्त-गज्जा-
प्रकारः-केदः २. निष्कर्षणी (हि. रराज)
३. पर्वतं चूने जारगपुत्रः ४. कंदुकः ५. महामृ-
त्पात्रं ६. कर्नातिका ७. नेत्रगोलः ८. निधिः,
राशिः ९. टंकपेटिका ।

गोला, सं. पुं. (सं. गोलः) गोलाळं, वतुलः २.
२. चक्रं, मंडलं, वृत्तं ३. अग्न्यखं, गोलः,
वंशः-वं ४. गारिकेलः-रः ५. वायुगोलः, उदर-
रोगभेदः ६. धान्य-दृष्टः-विपणी ७. पशुवृद्धं
८. सेतुबंधः ९. धान्यकुंभः ।

—भारना, कि. स. गौलै-बंधैः ध्वंस (प्रे.)-
चूर्णं (चु.) ।

गोलाई, सं. स्त्री. (सं. गोल >) वृत्तता, वतुलता,
गोलत्वं, मंडलत्वम् ।

गोलाकार, वि. (सं.) दे. 'गोल' ।

गोलाई, सं. पुं. (सं. ग.) अर्द्धगोलः ।

गोली, सं. स्त्री. (हि. गोला) लघुगोलः,
गोलकः २. सीसकगुलिका ३. टुटिका, वटिका,
गुलिका ४. काच-मर्मरीपल-गुलिका ।

—भारना, कि. स., गुलिकाक्षेपण इव (अ.
प. अ.)-क्षण (त. उ. से.) ।

गोल्ड, सं. पुं. (अं.) सुवर्ग, स्वर्ण, कनकम् ।
गोल्डन, वि. (अं.) दे. 'सुनहला' ।

गोविंद, सं. पुं. (सं.) श्रीकृष्णः ।

गोशा, सं. पुं. (फ्रा.) कोशः २. दिशा ३. रङ्ग-
स्थानं, विविक्तम् ।

गोशत, सं. पुं. (फ्रा.) मांसं, आभिषम् ।

—खोर, सं. पुं., मांस-आमिव, भक्षिन् आदः-
भक्षकः ।

गोष्ट, सं. पुं. (सं. पुं. न.) गो-स्थानं-शाला-
गृहं, व्रजः २. वृद्धं, समूहः ३. विमर्शः, मंत्रणा ।

गोष्ठी, सं. स्त्री. (सं.) गोष्ठिः-समितिः (स्त्री.),
सभा, समाजः, २. वार्तालापः ३. विमर्शः ।

गोस्तना-नी, (सं.) द्राक्षा, मृद्रीका ।

गोह, सं. स्त्री. (सं. गोषा) गोधिका, निहाका
२. (गोह का वच्चा) गौपारः, गौधरः, गौधेवः ।

गोहरा, सं. पुं. (सं. गोहल >) दे. 'उपला' ।
गोहूँ, सं. पुं., दे. 'गहूँ' ।

गोघुर, सं. पुं. दे. 'गोखरु' ।

शौ, सं. स्त्री. (सं. समः >) प्रयोजनं, अर्थः, कार्यं २. अवसरः, कार्यकालः, अवकाशः ।
 शौ, सं. स्त्री., दे. 'गाव' तथा 'गो' ।
 शौगा, सं. पुं. (अ.) शोलाहलः २. जनश्रुतिः (स्त्री.) ।
 शौह, सं. पुं. (सं.) बंगप्रान्तरस्य भागविशेषः २. ३. माहाण-कावस्थ, -भेदः ४. शौहवासिन् ।
 शौण, वि. (सं.) अग्रधान, द्वितीय, अवर २. सहायक । (शौगी स्त्री.) ।
 शौतम, सं. पुं. (सं.) ऋषिदिशेषः २. बुद्धः ।
 शौतमी, सं. स्त्री. (सं.) अहल्या २. दुर्गाचार्य-पत्नी ३. गोदावारी ४. दुर्गा ।
 शौनहार, सं. स्त्री. (हिं. शौन) नचोडासहगामिनी ।
 शौनहारी, सं. स्त्री. (हिं. गाना) गायी, गायनी, गायिका, गायकी ।
 शौना, सं. पुं. (सं. समनं >) दिशामनं, कथाः पतिगृहे गमनम् ।
 शौर, वि. (सं.) दे. 'मोरा' (वि.) । सं. पुं. १. २. रक्त-पीत, रंगः ३. चंद्रः ४. सुवर्ण ५. कुंकुमम् ।
 शौर, सं. पुं. (अ.) विचारः, चिंतनं, ध्यानम् ।
 —करता, कि. स., विचार (प्रे.), चित् (चु.)
 शौरव, सं. पुं. (सं. न.) महत्त्वं, महिमम् (पुं.) २. गुरुता, मरुवरत्नं ३. आदरः, सम्मानः ४. अभ्युत्थानम् ।
 शौरवान्वित, वि. (सं.) शौरवित, सशौरव, सम्मानित, आदृत ।
 शौरांग, सं. पुं. (सं.) विष्णुः २. कृष्णः ३. चैतन्यदेवः । वि. सित, श्वेत, शुक्ल २. पुरोनीय ।
 —महाप्रभु, सं. पुं. (सं.) चैतन्यदेवः ।
 शौरी, सं. स्त्री. (सं.) पार्वती, शौरा, गिरिजा २. ३. शूद्रा (नारी अथवा गौ) ।
 —शंकर, सं. पुं. (सं.) शिवः २. हिमालयस्य उच्चतमं शिखरम् ।
 शौहर, सं. पुं. (का.) दे. 'मोती' ।
 श्याम, सं. पुं., दे. 'ज्ञान' ।
 श्यारह, वि. (सं. एकादशम्) । सं. पुं., उक्ता संख्या तदर्थौ (११) च ।
 श्यारहवा, वि., एकादशः (पुं.), एकादशं (न.) (-त्री (स्त्री.) = एकादशी) ।

श्रंथ, सं. पुं. (सं.) पुस्तकं, शास्त्रं २. ग्रंथं ३ धनम् ।
 —शुंथन, सं. पुं. (सं. न.) क्षिप्रत्वरितं, पठनं-अध्ययनं, शीघ्रपाठः ।
 —संधि, सं. स्त्री. (सं. पुं.) अध्ययः, परिच्छेदः ।
 —साहय, सं. पुं., शिष्यगत्यर्थप्रथमः ।
 —कार, सं. पुं. (सं.) पुस्तक-लेखकः-संभाषकः-कर्म-पतेव ।
 श्रंधन, सं. पुं. (सं. न.) श्रंधनं, शुक्तं, २. प्रणयनं, निर्वपणम् ।
 श्रंधि, सं. स्त्री. (सं. पुं.) दे. 'शौठ' ।
 —शंधन, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'शौठ जोड़ना'
 श्रंधित, वि. (सं.) श्रंधित, शु(शुं) कित २. श्रंधितम्, श्रंधिल ।
 श्रसन, सं. पुं. (सं. न.) मश्रुणं, निगलनं, २. ग्रहणं, धरणं ३. सूयदिः ग्रहणं, उपरागः ।
 श्रसना, कि. स. (सं. श्रसनं) (हस्तेन) धृ (भ्वा. उ. अ., चु.) श्रस्-अवल्लं (भ्वा. आ. से.) श्रह् (क्. प. से.) ।
 श्रसित, } वि. (सं. श्रस्त) धृत, गृहीत, उपात्त
 श्रस्त, } २. पीडित ३. शक्ति, निर्गोर्ण ।
 श्रह, सं. पुं. (सं.) नक्षत्रभेदः ।
 श्रहण, सं. पुं. (सं. न.) उपरागः, ग्रहः, घासः, ग्रहपीडनं २. आदानं, अंकीकरणम् ।
 श्राफ, सं. पुं. (शं.) विन्दुरेखाविश्रम् ।
 श्राम, सं. पुं. (सं.) दे. 'श्राव' ।
 श्रामीण, सं. पुं. (सं.) श्रामिकः, श्रामिन्, श्रामवासिन् ।
 श्रामोक्च, सं. पुं. (शं.) श्रामिकेयनवाद्यम् ।
 श्राम्य, वि. (सं.) श्रामीण, श्रामिक, श्रागीय २. असम्भ, अश्रिष्ट ।
 श्रास, सं. पुं. (सं.) कवलः, पिंडः ।
 श्राह, सं. पुं. (सं.) अनहारः, जलहस्तिन् ।
 श्राहक, सं. पुं. (सं.) केश (पुं.), कथिश्, कथिकः ।
 श्राष्, वि. (सं.) उपादेय, स्वीकार्यं, २. श्रेय ।
 श्राषा, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'श्राद' ।
 श्राम्य, सं. पुं. (सं.) श्राम, सम्भय-कालः, निदायः, उष्णः-पक्वः, सपः, तापनः, उष्णः, उप-गमः-आगमः-कालः ।
 श्रीस सं. पुं. (शं.) यवनदेशः ।

प्रेटविट्टेन

[१८३]

घटाव

प्रेटविट्टेन, सं. पुं. (अं.) आंग्लद्वीपसमूहः ।
 प्रेविटी, सं. स्त्री. (अं.) भ्वाकृष्टिः (स्त्री.) ।
 स्पेसिफिक—, आधेक्षिकभारः ।
 प्रेविटेशन, सं. पुं. (अं.) नुस्त्राकर्मणम् ।
 प्रेजुप्ट, सं. पुं. (अं.) रनातकः ।
 प्रेडिक्शन, सं. पुं. (अं.) सर्वराजनम् ।
 प्रेलिन, सं. स्त्री. (सं.) विपत्तः, अवसादः,

प्रेलिनः (स्त्री.) खेदः ।
 प्रेडिक्शन सं. पुं. (अं.) द्राक्षीजम् ।
 प्रेलीव, सं. पुं. (अं.) गोलम् ।
 प्रेवाल-प्रवाला, सं. पुं. (सं. गोपालः) गोपः,
 आभीरः ।
 प्रेवालिन, सं. स्त्री. (हि. प्रवाला) गोपी,
 गोपिका, आभीरी ।

घ

घ, देवनागरीवर्णमालायाश्चतुर्थो अक्षरवर्णः,
 घकारः ।

घंगोलना, घंधोरना, घंधोलना, कि. भ.,
 (हि. घना + धोलना) निली (प्रे. विलाप-
 यतिने), बिट्ट (प्रे.) २. आधिली कतुषी, कु ।
 घंड, सं. पुं. (सं. घडः) कुम्भः ।
 घंट, घंटा, सं. पुं. (सं. घण्टा) कांस्यनिर्मित-
 वाद्यवेदः २. घंटा, शब्दः ३. होरा,
 नाडिका, अहोरात्रस्य चतुर्विंशतितमो भागः
 ४. मद्राघटी ।

—घर, सं. पुं., घंटाघरः, घंटागृहम् ।
 घंटिका, सं. स्त्री. (सं.) क्षुद्रघंटा २. क्रिकि(क)णी ।
 घंटी, सं. स्त्री. (हि. घंटा) वर्षरा, वर्षरिका,
 क्षुद्रघंटा, घंटिका, २. घंटिकाशब्दः ३. क्रिकिणी-
 णीका ४. नूपुरं ५. कृतायं, सारयन्त्रम्
 ६. अलिजिह्वा, लम्बिका ।

घंठु, सं. पुं. (सं.) तापः, दाहः, २. प्रकाशः,
 आलोकः, ३. गजघंटा ।

घघरा, सं. पुं. (अनु.) गृहचंचंदातकः कम् ।
 घघर, सं. स्त्री. (हि. घघरा) चलनी, कुट्ट-
 चंदातकःकं, वर्षरी ।

घघावच, सं. स्त्री. (अनु.) घघवच, शब्द-
 ध्वनिः (पुं.) । वि., रघूट, पीन ।

घट, सं. पुं. (सं.) कुम्भः, कलशः २. (सं. स्त्री),
 पुटघोषः, घटी, कलशी, कुट्ट-टं, ेनपः
 २. शरीरं ३. हृदयम् ।

घट, सं. स्त्री. (हि. घटना) न्यूनता, अल्पता ।
 —अट, सं. स्त्री., न्यूनताधिक्यता ।

घटक, सं. पुं. (सं.) मध्यस्थः, माध्यमिकः,
 मध्यवर्तिम् २. कुलान्वयः २. योजकः ४. घटः
 ५. परिविवाहसाधकः ।

घटका, सं. पुं. (अनु.) मरणोन्मुखस्य कुच्छ-
 श्वासः-भसित-श्वासप्रवासात् ।

घटती, सं. स्त्री. (हि. घटना) न्यूनता,
 अवनतिः (स्त्री.), क्षीणता २. अमादरः,
 मानहानिः (स्त्री.) ।

घटन, सं. पुं. (सं. न.) उपस्थितिः (स्त्री.),
 उदागमः २. रचनं, निर्माणम् ।

घटना, कि. अ. (सं. घटनं) घट-वृत्त (स्वा.
 आ. से.), उपरथा (स्वा. उ. अ.), समापत्
 (दि. आ. अ.), उपपत् (स्वा. प. अ.)
 २. गुञ् (कर्म.), उपपत् (दि. आ. अ.) ।
 सं. स्त्री. (सं.) प्रसंगाः, वृत्तं, वृत्तान्तः, व्यति-
 करः । ३. दुर्घटनम् ।

घटना, कि. अ. (हि. कटना) परिष्क-अपचि
 (कर्म.), हन् (स्वा. प. से.), न्यूनी-अल्पी, भू ।

घटनाघली, सं. स्त्री. (सं.) सत्तावली, घटना-
 समूहः ।

घटवद्, सं. स्त्री. (हि. घटना + वटना)
 न्यूनताधिक्यते, अपचयोपचयौ, हानिदानी (स्व
 दि.) । वि. न्यूनाधिक, हीनातिरिक्त ।

घटवार-ल, सं. पुं. (हि. घटवाला) तत्पण्य-
 तार्थः, प्राहिन् २. नाविकः, औद्युगिकः, पट्ट-
 जौविन् ।

घटा, सं. स्त्री. (सं. >) कादंविनी, मेघमाला,
 घटपट्टी २. समूहः, वृन्दम् ।

घटाटोप, सं. पुं. (सं. >) दे. 'घटा' (१)
 २. क्षिविकाच्छादनं ३. शकटावरणम् ।

घटाना, कि. स., (हि. घटना) न्यूनी-अल्पी-
 क, उन् (चु.), हस् (प्रे.), लघूक, अपचि
 (स्वा. उ. अ.) २. विद्युज्-विद्युज्-व्यवकल्
 (चु.) ३. गर्वं ह् (स्वा. प. अ.), अपकृष्
 (स्वा. प. अ.) ।

घटाव, सं. पुं. (हि. घटना) न्यूनता, अल्पता,
 हीनता ३. अवनतिः (स्त्री.), अपचयः ।

- घटवाना, कि. प्रे. (हिं. घटना) व. 'घटना' के प्रे. रूप ।
- घटिका, सं. स्त्री. (सं.) शुद्ध-लघु, कुम्भ-घटः ।
२. कालमानयंत्रं, यामनाली, घटी इ. चतुर्वि-
द्यतिकलात्मकः कालः, सुहृत्तद्वैम् ।
- घटित, वि. (सं.) निमित्त, रचित, संवादित ।
- घटिया, वि. (हिं. घटना) अवर, अधर नि-
अय, कृष्ट, लघु २. सुलभ, अल्पमूल्य ।
- घटी, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'घटिका' १ इ ।
- घटत, सं. स्त्री. दे. 'गठन' ।
- घटना, कि. स. दे. 'गढ़ना' ।
- घड़ा, सं. पुं. (सं. घटः) दे. 'घट' (१) ।
- घड़ाई, सं. स्त्री. दे. 'घड़ाई' ।
- घड़ाना, कि. प्रे. दे. 'गढ़ाना' ।
- घड़िया, (सं. घटिका) वैजमानवर्तनी, मू-
(मु) पापी २. मधुकोशः, कर्ण्डः ३. गर्भा-
शयः ४. मृच्छावकः ।
- घड़ियाल, सं. पुं., दे. 'गंदा' (१) ।
- घड़ियाल, सं. पुं., दे. 'ग्राह' ।
- घड़ी, सं. स्त्री. (सं. घटी) घटिकायामनाली,
कालमानयंत्रं २. दे. 'घटिका' (३) इ. दे.
'घटिका' (१) ४. समयः ।
- घड़ी, कि. वि. सुदुर्लभः, पुनः पुनः, असकृत्
(सत्र अर्थ.) ।
- दिआ, सं. पुं. (हिं. घड़ी + दिआ) अघटी-
दीपः, चतक-रीतिविशेषः ।
- भर, कि. वि., सुहृत्, क्षणं, क्षण-सुहृत्, मात्रम् ।
- साज, सं. पुं. (हिं. + सा.) घटी-घटिका-
कारः ।
- घटिया, सं. पुं. (सं. घातः >) दे. 'घातो' ।
- घन, सं. पुं. (सं.) मेघः, जलदः, पयोदः
२. लोहमुद्गरः, अयोधनः, ३. दे. 'घंटा' (१)
४. सजातीयान्तरयस्य पूरणं (गणित, उ.
२ × २ × २ = ८ घन) ५. समूहः ६. क्षरीरम् ।
वि. सान्द्र, निविड २. कठिन, संहत, स्थूल,
३. अधिक, प्रचुर ।
- गरज, सं. स्त्री. (- + हिं) गजितं, स्तनितं
२. शतध्वनी-सौष, भेदः ।
- घोर, वि. (सं.) अति-सान्द्र-निविड
२. भीषण, भयावह । सं. पुं. भीषण, रवः-ध्वनिः
२. स्तनितं, गजितम् ।

- घोर घटा, सं. स्त्री. (सं.) अविरलजलदावली,
नीरन्धकादम्बिनी ।
- चक्कर, सं. पुं. (सं. घनवक्त्रं >) चंचल-
अस्थिर, सतिः-दृष्टिः २. मूर्खः ३. परिभ्रमिन्,
यथेच्छ-विहारिन् ४. दृक्छं, संकटम् ।
- नाद, सं. पुं. (सं.) दे. 'घनगरज' ।
- फल, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'घन' (४) ।
- मूल, सं. पुं. (सं. न.) पूरितमजातीयान्-
त्रयरथावाङ्कः, वनपदं (उ. आठ का वन-
मूल दो) ।
- श्याम, वि. (सं.) जलदनील, मेघमेचक ।
सं. पुं., श्रीकृष्णः ।
- सार, सं. पुं. (सं.) कर्पूरं २. परदः ।
- घनता, सं. स्त्री. (सं.) सांद्रता, निविडता ।
- घनत्व, सं. पुं. (सं. न.) स्थूलता, संद्रतिः (स्त्री.)
२. पदाधर्य आयामविरतारस्थूलत्वानि (बहु.) ।
- घना, वि. (सं. घन) सांद्र, निविड, संहत,
नीरन्ध २. नाद, निकटवर्तिन् ३. अत्यधिक,
अतिशय ।
- घनाक्षरी, सं. स्त्री. (सं.) दंडकवृत्तं, कवित्तास्थं
छंदः (छंद.) ।
- घनिष्ठ, वि. (सं.) अत्यंत-अति, सांद्र-
निविड-वन २. प्रगाढ, अतिनिकटस्थ ३. अत्य-
धिक, अतिशय ।
- घनेरा, वि. (हिं. घना) अत्यधिक, अतिशय
(बहु.) घनेरे = असंख्य, अनेक ।
- घनोदय, सं. पुं. (सं.) मेघागमः, वर्षा-
कालारम्भः ।
- घनोपल, दे. 'जोला' ।
- घपला, सं. पुं. (अनु.) छलं, कपटं २. (संख्यानि)
रत्नलितं, भ्रांतिः (स्त्री.) ३. क्रमभंगः ४. संकुलं,
प्र-सं, कौर्णवम् ।
- घबरा (दा) ना, कि. अ. तथा कि. स. दे.
'भयवदाना' ।
- घबराहट, सं. स्त्री. (हिं. घबरा) व्या-
आ-कुलता, अशांतिः (स्त्री.), उद्वेगः
२. व्यामोहः, किंकर्तव्यमूढता, चित्तविक्षेपः
३. स्वरा, तूणिः (स्त्री.), तरस् (स.) संभ्रमः ।
- घमंड, सं. पुं. (सं. गर्वः ?) अहंकारः, गर्वः,
दर्यः, आटोपः, मदाः, अवलेपः ।
- करना, कि. अ., गर्व (भ्वा. प. से.), प्रगल्भ
(भ्वा. आ. से.), दृप् (दि. प. वे.) ।

घमंडी

[१८५]

घाई

घमंडी, वि. (हि. घमंड) अवलम्ब, वृद्ध, गवित, अहंमानिन्, अहंकारिन्, उरिसक्त ।

घमघमाना, कि. अ. (अनु.) घमघमाचते (ना. धा.), गोमीरं रवन् (भ्वा. प. से.) ।
कि. स. (मुष्टिभिः) तद् (जु०) ।

घमम, सं. स्त्री. } (सं. घमः >) दे. 'घमस' ।
घमसा, सं. पुं. }

घममान, सं. पुं. (अनु.) चौर-दाखण-भौर, युद्धं संग्रामः-रणः समरः ।

घमाका, सं. पुं. (अनु. धम) घमिति, शब्द-ध्वनिः (प्र.), प्रहारजः शब्दः ।

घमाघम, सं. पुं. (अनु.) घमघमन्ध्वनिः (पुं.), घमघमायित्तं, घमघमाशब्दः २. लोहमुद्गर-घम, शब्दः ३. आहंवरः, श्रीः (ली.), शोभा ।

घमासान, सं. पुं. दे. 'धमासान' ।

घर, सं. पुं. (सं. गृहं) दे. 'गृह' २. जन्म, भूतिः (स्त्री.)-स्थानं २. कुलं, वंशः ४. कार्यालयः ५. कोषः, आगारं ६. कोपः, आवेष्टनं ७. मूलं, कारणं ८. गृहपरिच्छदः ९. छिद्रं, विलयः ।

—आवाद् करना, मु., वि-उद्-वह् (भ्वा. उ. अ.), परिणी (भ्वा. प. अ.) ।

—करता, मु., वस् (भ्वा. प. अ.) २. रिधरीभू ।

—का आदमी, मु., विश्वसनीयमनुष्यः २. संबंधिन् ।

—का न घाट का, मु., निर्गुण, निरर्थक, कुरिसत, अथम २. अस्थिरवास ।

—कूक तमाशा देखना, मु. अःमोदप्रमोदेयु स्वधनं अपन्यत् (जु.) ।

—फोड़ना, मु., गृहकलहं जन् (प्रे.) ।

—बसाना, मु., दे. 'आवाद् करना' ।

—बारी, मु., गृहस्थः, गृहिन् ।

—में ढालना, मु., उपपत्तीत्वेन परिग्रह (ह. उ. से.) ।

—में पड़ना, मु., उपपत्ती भू ।

—घाला, मु., पतिः २. गृहिन् ।

—वाली, मु., पत्नी २. गृहिणी ।

—सिर पर उठाना, मु., कोलाहलं कृ ।

—का—, मु., उच्च-सं-कुलं, सदयशः ।

वड़ी—, मु., सगृह-संपन्न श्रेष्ठ-कुलं २. कारा-गारम् ।

घरट्ट, सं. पुं. (सं.) घरट्टकः २. पेशणी-चक्री ।

घरणी, नी, सं. स्त्री. (सं. गृहिणी) गृहपत्नी, भार्या, कलत्रम् ।

घरफोरी, सं. स्त्री. (हि. वर+फोड़ना) गृहभेदिनी, वंशविनाशिनी ।

घराट, सं. पुं., दे. 'घरट्ट' ।

घराती, सं. पुं. (हि. घर) 'वराती' का अनुकरण (विवाहे) नृप-कन्या-पत्नीयः-सम्बन्धिन् ।

घराना, सं. पुं. (हि. घर) वंशः, कुलं, अन्ययः ।

घरेल, वि. (हि. घर) गृह, गृह-निमित्त-संबन्धिन् २. नैज, आत्मीय २. दे. 'घालतू' ।

घर्घर, (सं. पुं.) गद्गद-घर्घर, शब्दः स्वनः ।

घर्घराना, कि. अ. (सं. घर्घरः >) घर्घरवं क्त, गद्गदं तद् (भ्वा. प. से.), घर्घरायते (ना. धा.) ।

घर्घराहट, सं. स्त्री. (हि. घर्घराना) दे. 'घर्घर' ।

घर्म सं. पुं. (सं.) सूर्य, वात-आलोकः २. उष्णता, दाहः, तापः ३. शीघ्रः ४. प्रत्वेदः । वि., तप्त, उष्ण ।

घर्घटा, सं. पुं. (अनु.) घर्घर, घर्घरवः ।

घर्षण, सं. पुं. (सं. न.), अभ्यंजनं, संवाहनं २. संपृष्टः, समाघातः ।

घसना, कि. अ. तथा कि. स., दे. 'घिसना' ।

घसियारा, सं. पुं. (सं. घासः >) वास-हार-रिन्, घासविक्रेतु (पुं.) २. घास-गुण, छेदकः-लायकः । (रिन् (स्त्री.) = वासहार-रिणी इ.) ।

घसीट, सं. स्त्री. (हि. वसीटना) शीघ्र-द्रुत-स्वरित, ले (लि) स्वनं ३. द्रुत-शीघ्र-स्वरित-लेख-लेख्यं २. (भूमौ) कर्षणम् ।

घसीटना, कि. स. (सं. घृष्ट) भा-वि-कृष् (भ्वा. प. अ.) बलात् ह (भ्वा. उ. अ.) २. शीघ्र-सरवरं-किस्र (तु. प. से.) ६. बलात् समाविष्ट (प्रे.) ।

घस्सा, सं. पुं., दे. 'घिस्ता' ।

घहर(रा)ना, कि. अ. (अनु.) दे. 'गरजना' ।

घाई, सं. स्त्री. (सं. गमस्तिः >) अंगुली-संधिः, गमस्तिर्वाणः २. कांडशाखासंधिः ।

घाई, सं. स्त्री. (हि. घाव) आघातः, प्रहारः २. छल, कपटम् ।

वाङ्मय, वि. (हिं. स्राज् + अनु) औदरिक, वस्मर, गृध्नु २. गूढचित्त, गुप्तभाव ।

वाघ, वाघ, वि. (एक प्रसिद्ध अनुभवी पुरुष था) बहुदशैन्-अत्यनुभविन् (नी स्त्री.), बहु-दृशन् (दरी स्त्री.) २. मायाविन्, कापटिक (नी स्त्री.) । सं. पुं., जरठः, वृद्धः ।

वाघरा, सं. पुं., (सं. वघरः) १. सरयूनदी २. दे. 'वघरा' ।

वाट, सं. पुं. (सं. वाटः) वट्टः, वट्टी, तरः, तर-तरण, स्थानं २. तीर्थ, अन्तारः ४. पर्वतः ५. दिशा ६. विधिः (पुं.) प्रकार ७. भस्मिधारा ।

—**वाट का पानी पीना**, मु. आधीदिकार्थे इत-स्ततः अम् (स्था. प. से.) ६. अनुभवति-शयं प्राप् (स्था. प. अ.) ।

—**मारना**, मु., प्रतिविद्धभांडानि आ, नी ह (स्था. उ. अ.) ।

वाटा, सं. पुं. (हिं. वटना) हानिः-क्षतिः (स्त्री.), क्षयः, अपचयः, अत्ययः ।

—**उठाना या पड़ना**, मु., विद्युन्-विहा-परिहा (कर्म.) ।

—**भरना**, क्षति समा-प्रतिसमा-घा (जु. उ. अ.), हानि सं-दि-परि-शुभ् (प्रे.) ।

वाटिया, सं. पुं. (हिं. वाट) गंगापुत्रः, तीर्थ-पुरोहितः ।

घाटी, सं. स्त्री. (हिं. घाट) संकट-संशयः, पथ-मार्गः २. दरी, द्रोणी, उपत्यका ।

घात, सं. पुं. (सं.) आ-अभि-गिरि-वातः, प्रहारः २. वधः, हत्या ३. अहितं, असंगलं ४. युद्धफलं (गणित) । सं. स्त्री., हयोगः, सदवसरः, सुबेला २. निश्चिन्तास्थितिः (स्त्री.) ३. धूलं कूटोपायः ।

—**में बैठना**, मु., (वधाय लुंठनाय वा) मार्गे निश्चिन्तं प्रतीक्ष् (स्था. आ. से.), पथि अव-स्कंद् (स्था. प. अ.) ।

घातक, सं. पुं. (सं.) वधकारिन्, मारकः, मारयित्-इत् (पुं.) २. शत्रुः, शरिः, ३. वधकः, दंडपाशिकः । वि., प्राणहर, अंतकर ।

घातिनी, सं. स्त्री. (सं.) हंत्री, घातिका, मारयित्री ।

घाती, सं. पुं. (सं. घातिन्) दे. 'वातक' ।

घाती, वि. (हिं. घात) विश्वासघातिन्, अत्यसंभ २. मायाविन् ।

घातुक, वि. (सं.) नाशक, हिंसक, मारक । (घातुकी स्त्री.) ।

घात्य, वि. (सं.) हननीय, हन्य, मारणीय, वधाई ।

घान, सं. पुं. (सं. घनः) ।

घानी, सं. स्त्री. (स्थालीचक्र-व-दिपु-सङ्क्षे-पणीया मात्रा ।

घाम, सं. पुं. (सं. घर्मः) नूर्य, आनपः-आलोकः २. सूर्य-नापः-दाहः ।

घामह, वि. (हिं. घाम) मूर्ख, अज्ञ, मूढ़, २. अलस, कर्मविमुख ३. धर्म-आतप, पीड़ित (पशु) ।

घायल, वि. (सं. वातः >) क्षत, वणित, विद्ध, भिन्नदेह, आहत, प्रहृत ।

—**करना**, कि. सं., भण् (लु०), आ-अभि-हन् (अ. प. अ.), क्षण् (त. उ. से.), तुद् (तु. उ. अ.) ।

—**होना**, कि. अ., व. उपयुक्त घातुओं के कर्म-रूप ।

घार, सं. पुं. (सं.) आलेकः प्रोक्षणम्, कण-विकरणम् ।

घाल, सं. पुं. (सं. वारः >) *वारः, आहकच्य मूल्यं विना दत्तं वस्तु (न.) ।

घालक, सं. पुं. (हिं. घालना) घातकः, मारकः २. नाशकः, खंतकः ।

घाव, सं. पुं. (सं. घातः) क्षत-तिः (स्त्री.), व्रणः, आघातः, प्रहारः, ईर्म, अगम् (न.) ।

—**करना**, कि. सं., दे. 'घायल करना' ।

—**खाना**, कि. अ., दे. 'घायल होना' ।

—**भरना**, कि. अ., व्रणः हृद् (स्था. प. अ.) ।

घास, सं. स्त्री. (सं. पुं.) य(ज)वसः, यव (वा-) सं, शादः, लृणम् ।

—**पात**, सं. पुं. (सं. घासपत्रं) वृणपत्रं २. दे. 'वृद्धा-कारकट' ।

—**पूस**, सं. पुं., पलालः-ले २. दे. 'वृद्धा-कारकट' ।

—**काटना या खोदना**, मु., व्यर्थं शुद्ध तुच्छ-कार्यं कृ ।

घिग्घी, सं. स्त्री. (अनु.) हिका, हिधमा २. गद्गदवच् (स्त्री.), रसलब्धवाचयं, स्वरभंगः ।

—**बंध जाना**, कि. अ., (भयशोकदिग्घिः) दिक् (स्था. उ. से.), समद्वारं वद (स्था. प. से.) ।

घिघियाना, कि. अ. (हिं. घिग्घी) कर्ण

विचयिष्य

[१८७]

सुटभा

प्राथं (सु. आ. से.), सशायं निविद् (प्रे.),
दे. 'गिड़गिड़ाना' ।

विचयिष्य, सं. स्त्री. (सं. घृष्टपिष्ट अकवा
अनु०) स्थानसंकीर्णता, अवकाशव्यत्यम् ।
वि०, संकुल, वैशद्यव्यत्य, असपष्ट ।

घिन, सं. स्त्री. (सं. घृणा दे.) ।

घिनाता, कि. अ. दे. 'घृणा करणा' ।

घिनावना, **घिनौना**, वि. (हिं. घिन)
धृगाई, गहित, गहणीय, बीभत्स, अह्निकर,
कुत्सित, उद्दिगन्तः (-री स्त्री.) ।

घिया, सं. पुं. दे. 'कददू' ।

—कसा, सं. पुं. दे. 'कददूकसा' ।

—तोरी, सं. स्त्री. महःकोशातकी, हस्तिघोषा
महाकला, घोषकः, हरितपर्णा ।

घिरना, कि. अ. (सं. अहगं >) परि, वृक्षिष्
गन्-वेष्ट्-सु (कर्म.) २. वक्ष्य मिल् (टु. प.
से.), संनिपत् (भ्वा. प. से.) ।

घिरनी, सं. स्त्री. (सं. घूर्णिः) १. घूर्णिः (स्त्री.),
घूर्णनं, आ-आ)मरं २. परिभ्रमणं, परिवर्तः
३. रज्जुव्यावर्तनचक्रं ४. दे. 'गडारी' ।

घिसघिन, सं. स्त्री. (हिं. घिसना) गांघं,
दीर्घसूत्रता, कार्यजडता, कालक्षेपः ।

घिसना, कि. अ. (सं. घर्षणं) जर्जरीन्, जू (हिं.
प. से.), (संघर्षणेन) अपांचे-क्षि (कर्म.), संघृष्ट
(भ्वा. प. से.), संघट् (भ्वा. आ. से.) ।
कि. सं. घृ (प्रे.), सूद (श. प. से. वा घं)
अभि-अञ् (न. प. वे.), लिप् (तु. प. अ.) ।
सं. पुं. घर्षणं, घर्दनं, अन्वजनम् ।

घिसवाना, **घिसाना**, कि. प्रे. व. 'घिसना'
(कि. स.) के प्रे. रूप ।

घिसाई, सं. स्त्री. (हिं. घिसना) घर्षणं,
मर्दनं २. वर्षण-मर्दनं, भ्रूया-भ्रूतिः (स्त्री.) ।

घिसाव, सं. पुं. (हिं. घिसना) संघर्षः, पर-
रपर-धर्षण-मर्दनं, समर्दनं,
घिसावट, सं. स्त्री. संघट्टः ।

घिससा, सं. पुं. (हिं. घिसना) घर्षः, संघट्टः,
समर्दनः २. प्रसारणं, प्रचोदना ३. बालकोडा-
भेदः ।

घी, सं. पुं. (सं. घृणः) आज्यं, आजं, आगुस्-
सपिस् (न.), पवित्रं, अमृतं, अभिघारः,
होम्यं, तैजसं, नवनीतकम् ।

—के चिराग या द्विये जलना, सु., सफलमनो-
रथ-पूर्णकाम-फलकृत्य, (वि.) + भू ।

—**खिचकी** होना, सु., प्रगाठ-वनिष्ठ, मैत्री-
अनुरागः भू ।

पौचौ डंगलिषौ धी मे होना, सु., उत्सवः
वृत् (भ्वा. आ. से.), सर्वथा सतृक् (दि.)
अस् (अ. प.) ।

धीकुवारी, सं. पुं. (सं. घृतकुमारी) कुमारी,
तरुणी, गृह-कन्या-कन्यका, अजरा, अमरा ।

धुँदधौ, सं. स्त्री. (देश.) दे. 'कचाल' ।

धुँव(ग)ची, सं. स्त्री. (सं. गुंजा) गुञ्जिका,
रक्षिका, रक्ता, कृष्णला, काक, विचित्रा-ज्या-
तिल्ला २. गुआ-रक्ता, बीजं इ. ।

धुँवनी, सं. स्त्री. (अनु.) भञ्जितार्द्रचयकादि ।

धुँवरारे-ले, वि., दे. 'धुँवरबाले' ।

धुँवरू, सं. पुं. (अनु. घृण) धर्वरा-रिवा,
धुद, बंटा-धटिका, धुद्रिका, बंकाणी, णीका,
किकिशी २. मंजीर-रं, पुनूर-रः । ३. मरणा-
सत्रस्य कंठे धर्वरशब्दः ।

धुँडी, सं. स्त्री. (सं. अग्निः पुं.) १. दे. 'गांठ' ।
२. बखनय, गंडः-कुटुपः ।

धुग्धी, सं. स्त्री. (देश.) दे. 'पंडुक' २. त्रिकोण-
रूपेण व्याप्यतितः कंबलः ।

धुधू, **धुधुआ**, सं. पुं. (सं. धूकः) दे. 'उल्लू' ।

धुधुआना, कि. अ. (अनु.) धृष्ट-शब्दं कृ ।
उल्लकन्त वृकवत् रु (अ. प. से.) कुश् (भ्वा.
प. अ.) ।

धुटकना, कि. ल. (अनु.) अव्ययः प
(भ्वा. प. अ.) २. दे. 'चिगलना' ।

धुटना, सं. पुं. (सं. धुटा=टखना >) जानु
(ग.) ; ऊरु, पर्वन् (न.) संधिः (पुं.), अष्टौवत्
(पुं. न.), चक्रिका ।

धुटना, कि. अ. (हिं. धूटना) कंठः-भासः
रुष् (कर्म.) ।

धुटना, कि. अ. (हिं. धोटना) चूर्ण-पिच
(कर्म.) २. सम्यक् पच् (कर्म.) ३. शष्णी भू
४. सम्यं जन् (दि. आ. से.) ५. स्निग्धालःपे
व्याप्त (तु. आ. अ.) ६. केशाः मूलतः मुंड-
धुर (कर्म.) ७. अभ्यस् (कर्म.) ।

धुटा हुआ, सु. भूर्त्, दक्ष, विचक्षण ।

धुटखा, सं. पुं. (सं. धुटा >) धुटानाहः,
पादायामः ।

घुटाई, सं. स्त्री. (हि. घोटना) चूर्णनं, पेषणं, मर्दनं २. दक्षणीकरणं ३. चूर्णन-श्लक्षणीकरण-भृत्या ४. क्षौरं, मुंडनं ५. आवर्तनं, अभ्यासः ।

घुट्टी, सं. स्त्री., दे. 'घुँटी' ।

घुष, सं. पुं. (सं. घोषः) घोटकः ।

—चढ़ा, सं. पुं., दे. 'घुड़सवार' ।

—चढ़ी, सं. स्त्री., अथाःरुडा (नारी) २. अथा-रोहणं, वैवाहिकरीतिभेदः ३. शतश्रीभेदः ।

—दौष, सं. स्त्री., अथःओटक, चर्या-धावनं २. जवाश-जवन, धावनं, शतभेदः ३. चर्याभूमिः (स्त्री.) ।

—बहल, सं. पुं., घोटक, रथःस्थवनः ।

—सवार, सं. पुं., सादिन्, तुरगिन् । हथ-तुरग अथ, आरुडः रथः ।

—सवारी, सं. स्त्री., अथारोहण, कौशलं विद्या ।

—साल, सं. स्त्री. (सं. घोटशाल) मंदुरा, वाजि-अथ, शाला ।

घुड़कना, कि. स. (सं. घुर्) भर्त्सू (जु. अ. से.), वाचा दंड् (जु.), अव-अधि-क्षिप् (तु. उ. अ.) ।

घुड़की, सं. स्त्री. (हि. घुड़कना) अधिअव-क्षेपः, वाग्दण्डः, भर्त्सनं ना ।

घुणाक्षर, सं. पुं. (सं.) घुणलिपिः (स्त्री.), घुणवल्मीकादिभिः पत्रकाद्यादिषु कृता रेखा ।

घुन, सं. पुं. (सं. घुणः) काष्ठ, वैषकः-कोटः-लेखकः ।

—लगाना, कि. अ., घुर्णः अद् (कर्म.) ।

घुनघुना, सं. पुं. (अनु.) दे. 'घुनघुना' ।

घुना, कि. (अनु. घुनघुनाना) गूणीक, गूड-संहत-भाव (घुबी स्त्री.) ।

घुप, वि. (सं. कृपः) निविडः-सूचोभेयः (अपकारः) ।

घुमङ्गना, कि. अ. (हि. घूम + सं. अटनं >) मेधा आकाशं आछद् (जु.) ।

घुमरी, सं. स्त्री. (हि. घूमना) अ(धा) मर्, भ्रमिःभूमिः (स्त्री.) ।

घुमाना, कि. स. (हि. घूमना) व. 'घूमना' के प्रे. रूप ।

घुमाव, सं. पुं. (हि. (घूमना) परि-भ्रमः, घूर्णः (स्त्री.), व्या-परि-आ-वर्तः ।

घुरघुराना, कि. अ. (अनु.) घुरघुरारते (ना. धा.), घूर् (तु. प. से.) ।

घुलना, कि. अ. (सं. घूर्णनं >) वि-प्र-, स्त्री (दि. अ. अ.), दबीभू, खर-गल् (भ्रम. प. से.), धिद्र (भ्वा. प. अ.) २. घूर्णभू, दुर्गभ- (वि.) भू, विगल् ३. कृश-क्षीणमांस- (वि.) भू, अंगैः परिहा (कर्म.) । सं. पुं., विलयनं, द्रवीभावः, घूर्णभवनं, क्षयः ४. ।

घुलने योग्य, वि., विलेय, क्षरण-विलयन-शील, विद्रव्य ।

घुलवाना, कि. प्र. } व. 'घुलना' के प्रे. रूप ।

घुलाना, कि. स. } दे. 'घुलना' सं. पुं. ।

घुलाव, सं. पुं. } दे. 'घुलना' सं. पुं. ।

घुलावट, सं. स्त्री. } दे. 'घुलना' सं. पुं. ।

घुषित, घुष्ट, वि. (सं.) प्रकाशित, प्रकटीकृत, आ-उद-धि, क्षीपित, प्रख्यापित ।

घुसणना, कि. अ., दे. 'घुसना' ।

घुसना, कि. अ. (सं. कोपनं या पर्यणं > ?) (बलत्) आ-प्र-, विश् (तु. उ. अ.), (अंतः) पदं कृ अथवा निधा (जु. उ. अ.), आगम् २. निर्, भिद् (क. प. अ.), वध् (दि. प. अ.) । सं. पुं., प्रवेशः, आगमनं, निर्भेदनं ६. ।

घुसाना, } कि. स., व. 'घुसना' के प्रे. रूप ।

घुसिङ्गना, } कि. स., व. 'घुसना' के प्रे. रूप ।

घुँघट, सं. पुं. (सं. घुंघटं >) अवगुंघटन-टिका, मुखारक-कन् ।

—काड़ना, या मारना, कि. स., अवगुंघट (जु.), मुखमानच्छद् (जु.) ।

—वाली, सं. स्त्री., अवगुंघटनवती ।

घुँघर, सं. पुं. (हि. घुमरना) अलकः, कुरलः, चूर्णकुंतलः ।

—वाले, वि. आकुंन्तित, भिङ्गी-वकी-भूत, कुंतलाकीर्ण, कुरलिन् (प्रायः बेशी के लिए) ।

घुँट, सं. पुं. (अनु. घुट घुट) गंधुषमात्रं पथं, लडः, चं(चु)लुकः ।

—लेना या पीना, कि. स., आचम् (भ्वा. प. से.), उपसृष् (तु, प. अ.), अनाशः-इषत् पा (भ्वा. प. अ.) ।

घुँटना, कि. स., दे. 'घुँट लेना' ।

घुँटी, सं. स्त्री. (हि. घुँट) शिशुपेषनं, बालीपथम् ।

घुँस, सं. स्त्री., दे. 'घुँस' ।

घुँसमघुँसा, सं. पुं. (हि. घुँसा) मुष्टीमुष्टि (अव्य.), मुष्टियुद्धं, बाह्वाह्वि (अव्य.) ।

घूसा, सं. पुं. (हि. विस्सा) मुष्टिः (पुं. स्त्री.),
मुठी, बडमुष्टिः २. मुष्टि, घातः-प्रहारः ।
—लगाना वा मारना, कि. स., मुष्टिना प्रह
(श्वा. उ. अ.)-तड् (नु.) ।
घूआ, सं. पुं. (देश.) काशशरकाष्ठ्यादीनां
उष्णम् २. कर्दमस्थकीदभेदः ३. खट्वाच्छिद्रम् ।
घूक, सं. पुं. (सं.) दे. 'उल्ल' । (घूकी स्त्री.)
घूध, सं. पुं., दे. 'खीद' ।
घूधू, सं. पुं. (सं. घूकः) दे. 'उल्ल' २. जडः,
मंदमतिः ।
घूम, सं. स्त्री., दे. 'धुमाव' ।
घुमना, कि. अ. (सं. घूर्णनं) परि, अम्-अट
(श्वा. प. से.), सं-वि-चर (श्वा. प. से.)
२. वि-धा-आ-परि-चर (श्वा. आ. से.),
चक्रवत् अन्, वि-परि-चूर्ण (तु. प. से.)
३. नि-प्रतिनि-प्रत्या-वृत्, पुनर्त्, या-इ
(अ. प. अ.) । सं. पुं., परि, अमर्ण-अटनं,
परिवर्तनं, घूर्णनं, प्रतिनिवर्तनं, चक्र, आवर्त-
गतिः (स्त्री.) ।
घूमने वाला, वि., पर्यटन-जमण, शील, चक्रा-
वतिन्, चक्रगतिः, परिवर्तित्, परिअमिन् ।
घूमघूमोला, वि. (हिं. घूम घूम) दे.
'घूमनेवाला' ।
घूरना, कि. स. (सं. घूर्णनं >) कटाक्षेण-सिच्यं-
साचि-वक्ष् (श्वा. आ. से.) इश् (श्वा. प. अ.)
२. सकोप-निमित्तैर्घ अवलोक (श्वा. आ.
से.; नु.) ।
घूरावारी, सं. स्त्री. (हिं. घूरना) कटाक्षः,
कटाक्ष, अवेषणं, दर्शनन्, अपांग, वीक्षणम्-
अवलोकनम् ।
घूस, सं. स्त्री. (हिं. घुसना या घूस) उक्कोचः,
उपायनम् ।
—खोर, सं. पुं. (हिं. + फ्रा.) उक्कोचघाहिन् ।
घृणा, सं. स्त्री. (सं.) अरुचिः, क्रुत्सा, गर्हा,
जुहुम्सा, वि-द्वेषः, निर्वेदः ।
घृणित, वि. (सं.) अरुचिकर-उद्वेगकर (—करी
स्त्री.) २. कुत्सितः, गर्ह, बोझम् ।
घृत, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'धी' ।
घेरना, कि. स. (ग्रहणं >) परिवेष्ट (श्वा.
आ. से., प्रे.), परिवृ (श्वा. उ. से.; प्रे.),
परि-इ (अ. प. अ.) २. अव-उप, रूप (रु.
उ. अ.) । सं. पुं., परिवेष्टनं, परिवारणं, उप-
रोधः इ. ।

घेरने वाला, सं. पुं., परिवेष्टकः, उपरोधकः ।
घेरा, सं. पुं. (हिं. घेरना) परिधिः (पुं.),
परि, वेप-वेष्ट-गाहः, मण्डलं २. प्राचीरं,
प्राकारः, वेष्टनं, वरणः ३. परिवृत्तरथानं
४. मण्डलं ५. अव उप, रोधः ।
—डालना, मु., परिवेष्ट (प्रे. , दे.)
'घेरना' (२) ।
घेवर, सं. पुं. (सं. घृतवरः) घृतपूरः, घातिकः ।
घेया, सं. स्त्री. (हिं. घी) स्तननिर्गत-दुग्धवारा
२. प्रत्यङ्ग-दुग्धनवनीतम् ।
घोंघा, सं. पुं. (देश.) शंखु (वृ. कः), कोव-
कवच, रथः, कौटभेदः २. श्रुक्तिः (स्त्री.) ।
वि., जड, स्थूलबुद्धि ।
घोंटना, कि. स., दे. 'घोटना' ।
घोंपना, कि. स. (अनु. घुप) प्र-नि-विश
(प्रे.), निभिद-व्यध् (प्रे.) ।
घोंसला, सं. पुं. (सं. कुशालयः अथवा हिं.
घुसना) कुलायः, नौडः-उं, क्षयालयः,
पक्षिगृहम् ।
घोख(क)ना, कि. स. (सं. घोषणं >) यंठस्थ-
(वि.) कृ, स्मृतिपथं नी (श्वा. उ. अ.),
अन्धस् (दि. उ. से.) ।
घोट, घोटक, सं. पुं. (सं.) दे. 'घोड़ा' ।
घोटना, कि. स. (सं. घोटनं >) क्षुद्र-धिष्
(रु. प. अ.), चूर्णः-खण्ड (नु.), सृष्ट (कृ.
प. से.) २. मुंष्ट (नु.), क्षुर् (तु. प. से.)
३. घर्षणेन शक्षणीकृ ४. गल्लस्तयति (ना.
धा.), गलं निष्पीड्य न्यापद् (प्रे.), कंठं
निष्पीड् (नु.) ५. दे. 'घोखना' ।
सं. पुं. घेषणं, मर्दनं, मुण्डनं, शक्षणीकरणं इ. ।
२. मुस (श) लः-लं, (घेषण-) नंडः ।
घोटनी, सं. स्त्री. (हिं. घोटना) मर्दनी,
मुसलकन् ।
घोटवाना, कि. प्रे., व. 'घोटना' के प्रे. रूप ।
घोटा, सं. पुं. (हिं. घोटना) मार्जकः, घर्षकः
२. मार्जितवर्ध ३. वर्षणं ४. मुसलः, ढंडः
५. घेषणं व. क्षीरं, केशवपनम् ।
घोटाला, सं. पुं. (देश.) दे. 'गुब्बड़' सं. पुं. ।
घोबसाल, सं. पुं. (सं. घोडशाल) दे.
'घुड' के नोचे 'घुडसाल' ।
घोड़ा, सं. पुं. (सं. घोडः) घोटकः, तुरगः, तुरंगः-
गमः, अथः, वाहः, हयः, वजिन्, अर्धन् (पुं.),

घोड़िया

[१९०]

चंचलता

सैषवः, सप्तिः (पुं.), गन्धर्वः, जवनः । २.
चतुरंग-शारःशारिः (पुं.) ३. अग्रयस्त्रयोदशः ।
—गाड़ी, सं. स्त्री., अश्व-हय, रथःशकटः ।
घोटे वैच कर सोना, मु., गाठं निद्रा-स्वप् (अ.
प. अ.)-शी (अ. आ, से,)-संविश (तु.
प. अ.) ।
घोड़िया, सं. स्त्री. (हिं. घोड़ा) घोटकः, अश्वकः,
लघु-अश्वः-घोटः २. भागदन्तः, न्तकः ।
घोड़ी, सं. स्त्री. (सं. गोटी) अथा, बलवा,
तुरगी, बाजिनी वामिनी, घोटिका २. ब्रह्मवा-
रोहणं, वैवाहिकरीतिभेदः ३. विवाहगीतिका ।
—चढ़ना, मु., बरी बड़वामारुख बधुगृहं गम् ।
—टप्पा, सं. पुं., बाल्लेलाभेदः, घोटीलेंदनम् ।
घोणा, सं. स्त्री. (सं.) नासा, नासिका, गन्ध-
वहा । २. शकर-अश्व-प्रखंबमुखं-लाम्बाश्चम् ।
३. शिका-शुभ, आवहः बाल्लनरुभेदः ।
घोणी, सं. पुं. (सं. गिम्) शकरः, बराहः,
रोनयः ।
घोर, वि. (सं.) भयंकर, शीघ्र, भीम २. दुर्गन्,
गहन, निविड ३. परुष, कर्कश, ४. पाह, दुह
५. निकुट, अथम ६. अत्यन्त, अत्यधिक ।

—निद्रा, सं. स्त्री. (सं.) मादनिद्रा, सुनिद्रा ।
घोलघुमाव, सं. पुं., दे. 'टाळमटोल' ।
घोलना, कि. सं. (हिं. घुलना) विद्-विली-
गल् (प्रे.) ।
घोलमेल, सं. पुं. (हिं. घुलना + सं. मेलः >)
मिश्रणं, संसर्गं, सम्पर्कः ।
घोष, सं. पुं. (सं.) शब्दः, नादः, रवः, स्वनः,
ध्वनिः (पुं.) २. गजितं, स्तनितं ३. आभीर-
वसतिः (स्त्री.) ४. आभीरः, गोपः ५. घोष्ठं,
गोशाला ६. तटः-टंटी ७. बाह्यप्रगल्भेदः
(व्या.) ।
घोषणा, सं. स्त्री. (सं.) प्रख्यापनं, ज्ञापनं,
प्रकाशनं २. घोषः-पणं, उत्कीर्णं ३. नादः,
ध्वनिः, शब्दः ।
—पत्र, सं. पुं. (सं. न.) विप्रिः (स्त्री.),
सूचनापत्रम् ।
घोसी, सं. पुं. (सं. घोषः >) यवत, गोपः-
आभीरः ।
घ्राण, सं. पुं. (सं. न.) नासिका, नासा, नसा
२. आघ्राणं, गन्धग्रहणं ३. आघ्राणशक्तिः (स्त्री.) ।
—हुन्द्रिय, सं. स्त्री. (सं. न.) दे, 'घ्राण' (२-३)

ङ

ङ, देवनागरीवर्णमालायाः षष्ठो व्यञ्जनवर्णः

लकारः ।

च

च, देवनागरीवर्णमालायाः षष्ठो व्यञ्जनवर्णः,
चकारः ।
चक्रमण, सं. पुं. (सं. न.) चक्रमः-मा, परि, भ्रमण-
अटनम्, विहरणम्, विचरणम् । शनैः शनैः
मन्दगत्या वागन्तम् ।
चंग, सं. स्त्री. (प्रा.) छिट्टिगप्रकारः, चंचं
२. नखः-खं, नखरः-रं ३. गंजीका-कीटायां
रंगभेदः ।
चंग, सं. स्त्री. (सं. चः-चौद + गम् >) दे.
'चुड़ी' (३) ।
—पर चढ़ाना, मु., अनुकूलयति (ना. धा.)
२. अभिमानिनं विधा (तु. उ. अ.) ।
चंगा, वि. (सं. चंग) सुस्थ, स्वस्थ, नीरोग,
निरामय २. शोभन, सुन्दर ३. निर्मल, शुद्ध ।
—करना, कि. सं., व्याधेः भुच् (प्रे.), शम्
(प्रे. शमयति) ।

भला, वि., कुशलित्वं, नीरव-म् २. भद्र, अच्छ ।
चंगुल, सं. पुं. (हिं. चौ - चार + अंगुल)
नखः-खं, नखरः-रं, २. चरणं, भ्रमणं, दस्तग्रहः ।
चंगेर-री, सं. स्त्री. (सं. चंगेरिका) स्थालाकारः
करण्डः २. पुलकण्डोलः, पुष्पकरंडः
३. भाजनं, आहारः ४. चर्मपुटः, छिनिः (पुं.)
५. हिंदोलः, दोल ।
चंगोली, सं. स्त्री., दे. 'चंगोरी' ।
चंचरीक, सं. पुं. (सं.) अमरः, पट्टः-दः ।
चंचल, वि. (सं.) चल, चलचल, चपल, तरल,
लोल, पां पा) निप्लव, लडल, २. न्दा-पर्व-
समा, कुल, अशान्त, अनिर्वृत ३. अधीर, अस्थिर,
चलच्चित, लोलतुडि ४. विनोदिन्, लीलापर ।
सं. पुं., वायुः २. कामुकः ।
चंचलता, सं. स्त्री. (सं.) चापत्यं, चांचल्यं,

लौक्यं, चतुलता, तरलता २. कुचेष्टा-हितं, सुकौशल्यं, कौशलपरता ।

चंचला, सं. स्त्री. (सं.) लक्ष्मीः (स्त्री.), इन्दिरा २. विद्युत् (स्त्री.), सौदामिनी । वि., स्त्री., अशांता, चल्चिकता ।

चंचलाहटः सं. स्त्री., दे. 'चंचला' ।

चंचु, सं. स्त्री. (सं.) चञ्चुका, चञ्चुः (स्त्री.), त्रोटो ।

चंत्, वि. (सं. चण्ट >) चतुर, दक्ष २. धूर्त, मायाविन् ।

चंड, वि. (सं.) क्रूर, रौद्र (-द्री स्त्री.), दारुण, भैरव, (-वी स्त्री.), भीषण, उग्र २. कोपिन् क्रोधिन्, संरभिन्, भ्रमाभिन् ३. पुरुष, प्रखर, चोत्र, तीक्ष्ण, घोर ४. बलव्रत, दुर्दमनीय ५. कठिन, कठोर ।

—चर, सं. पुं. (सं.) मूर्खः, चण्डांशुः ।

—कौशिक, सं. पुं. (सं.) (१३) मुनि-नाटक-सर्प-विशेषः ।

चंडता, सं. स्त्री. (सं.) उग्रता, भीषणता, क्रूरता २. तीक्ष्णता, प्रखरता, तीव्रता ।

चंडा, सं. स्त्री. (सं.) कदाची, चंडी, दुर्गा, २. नायिकाभेदः ३. शतपुष्पा, मधुरा । वि. स्त्री. (सं.) निष्ठुरा, कर्कशा, उधा, कठोरा ।

चंडाल, सं. पुं. (सं.) चांडालः, मातंगः, दिवाकीर्तिः (पुं.) निषादः, श्वपचः (पुं.), पुहसः-शा-पः । वि. क्रूर-गाय, कर्मन् २. दुःकुलीन, हीन, जाति-वर्णः ।

—चौकड़ी, सं. स्त्री., चंडालचतुष्कं दुष्ट-चतुष्टयम् ।

चंडालिन, चंडालिनी, चंडाली, सं. स्त्री. (सं. चंडाली) चांडाली, मातंगी, निषादी २. पार्विनी, दुष्टा ।

चंडिका, सं. स्त्री. (सं.) दुर्गा २. विशादहीला नारी ३. गायत्रीदेवी ।

चंडी, चंडा, सं. स्त्री. (सं.) पार्वती २. क्रोधिनी नारी ३. कलहप्रिया कामिनी ।

चंडू, सं. पुं. (सं. चंडः तीक्ष्ण >) अहिक्ल-निमित्तमादकद्रव्यभेदः, चंडूः (पुं.) ।

—खाना, सं. पुं. (हिं + प्रा.) चंडू-गृह-शाला ।

—बाज्र, सं. पुं. (हिं + प्रा.) चंडूपः, चंडू, पायिन्-सेविन् ।

चंडूल, सं. पुं. (देश.) भ(भा)रद्वाजः, मारयः, श्याघ्राटः ।

चंद्र, सं. पुं. (सं. चंद्रः) दे. 'चंद्र' । २. हिंदीकविशेषः ।

—मुखी, सं. स्त्री. (सं. चंद्रमुखी) शशिवदनी, चंद्रानवा ।

चंद्र, वि. (प्रा.) दे. 'कुष्ठ' ।

चंद्रन, सं. पुं. (सं. पुं. न.) मलयजः, कीखंडः, गंधसारः, सुगंधं, सर्पावाप्तं, शीतलं, गंधाल्यं, शीतगंधः । २. चंद्रनकाष्ठं ३. चंद्रनलेपः ।

—लाल, रत्न-कु, चंद्रनं, रंजनं पत्रांगम् ।

—सफेद, तैलपर्णिकं, श्वेतचंद्रनम् ।

चंद्रला, वि. पुं. (हिं. चांद्र = खोपड़ी) खन्धाटः, विशेषः (-शी स्त्री.) ।

चंद्रवा, सं. पुं. (हिं. चंद्र) उलोचः, वितानं, आच्छादनं, पिधानम् ।

चंद्रवा, सं. पुं. (सं. चंद्रकः) बर्हिनेत्रं, मेघकः २. वर्तुलबलखंडः ३. मत्स्यभेदः ।

चंद्रा, सं. पुं. (प्रा. चंद्र) वनसहायता, आधिकसाहाय्यं २. धनभागः, अर्थशः । २. स्वांशः, उच्चारः ।

—करना, क्रि. स., अर्थशं लेग्रह (कृ. प. से.) ।

—देना, स्वस्वांशं दा (ज. उ. अ.) ।

चैंदिया, सं. स्त्री. (हिं. चांद) शीर्ष-शिरो-मस्तक, अर्धं, मुहं २. कपालः-लं, शिरीऽस्थि (न.) ३. (अंश -) रोटिका ।

चंद्रि, सं. पुं. (सं.) चंद्रः सुधांशुः २. गजः द्विप ३. कर्पूरः-रं, वनसारः ।

चंद्र, सं. पुं. (सं.) सोमः, शशंकः, शशिन्, विद्युः, रजनी-निशा-शर्वरी-क्षया, कटः-नाथः-पतिः, मृगांकः, कालनिधिः (पुं.), स्त्रीः (पुं.), हिम-शोत-शुभ्र-सुधा, अंशुः-दीवितिः (पुं.), इंदुः (पुं.), चंद्रनम् (पुं.), शशधरः । २. जलं ३. सुवर्णं ४. कर्पूरं ५. 'एक' इति संख्या ६. चंद्रकः, बर्हिनेत्रम् ।

वि., आकाशक, आनंदप्रद २. सुंदर ।

—आनन, वि. (सं.) दे. 'चंद्रमुख' ।

—कला, सं. स्त्री. (सं.) चंद्र-रेखा-लेखा ।

—काल, सं. पुं. (सं.) चंद्र-मणिः (पुं.)-रत्न-उपलः ।

—किरण, सं. पुं. (सं.) चंद्रपादः, शशिकरः ।

—ग्रहण, सं. पुं. (सं. न.), विधु-इन्दु-चंद्र, ग्रहणं-ग्रहः-ग्रासः-उपरासः ।
 —प्रभा, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'चंद्रिका' ।
 —बिंदु, सं. पुं. (सं.) अनुनासिकचिह्नम् (°) ।
 —भागा, पुं. स्त्री. (सं.) चंद्रभागी, चंद्रिका, पंचनदप्रांते नदीविशेषः ।
 —मुख, वि. (सं.) चंद्रानन, विधु-शशि-वदन । (मुखी स्त्री.) = चंद्रमुख, चंद्र-शशि-विधु-वदना-उदनी-आनना-आननी ।
 —रे(ले)खा, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'चंद्रकला' ।
 —वंश, सं. पुं. (सं.) सोमकुलम् ।
 —शाला, सं. स्त्री. शिरोगृहं, वडभी ।
 —शेखर, सं. पुं. (सं.) चंद्र, मौलिः (पुं.)-भूषणः-धरः, शिवः ।
 —हार, सं. पुं. (सं.) वर्तलस्वर्णखंडहारः ।
 चंद्रक, सं. पुं. (सं.) १. 'चंद्र' २. चंद्रिका, कौमुदी ३. कर्पूरः-रं ४. बहनेत्रं, चंद्रिका ५. नखः-खम् ।
 चंद्रमा, सं. पुं. [सं. चंद्रमम् (पुं.)] दे. 'चंद्र' ।
 चंद्रहास, सं. पुं. (सं.) असिः, खड्गः २. रावणखड्गः ।
 चंद्रावप, सं. पुं. (सं.) चन्द्रिका, ज्योतिरना, कौमुदी २. दे. 'चंद्रवा' ।
 चंद्रिका, सं. स्त्री. (सं.) ज्योतिष्वा, शशि-चंद्र, प्रभा-कातिः (स्त्री.) कौमुदी, चंद्र-आलोकः-प्रकाशः २. चंद्रकः, बहनेत्रं (३-४) स्थूल-सूक्ष्म-पला ।
 —उत्सव, सं. पुं. (सं.) शरदपूर्णिमात्सवः ।
 चंद्रोदय, सं. पुं. (सं.) चंद्र-सोम, उदयः-उदयः-उदयमनम् ।
 चंपई, वि. (हि. चंपा) चंपक-पीत, वर्ण-रंश ।
 चंपक, सं. पुं. (सं.) (पीवा) चंपियः, दीप-स्वर्ण-स्थिर-पीत, पुष्पः-पुष्पकः, शीतलः, सुभगः, चंद्रमोहिर् वनदीपः । (फूल) हेमपुष्पं, चंरकं इ. । (सं. न.) कदलीफलभेदः ।
 चंपा, सं. पुं. (सं. 'चंपक' दे.) ।
 —कली, सं. स्त्री. (सं.) चंपककलिका, चंपक कोरकः २. कंठाभरणभेदः, चंपककली ।
 चंपत, वि. (सं. चंप) तिरो-अंतर, द्वित, लभ, गृहं अपसृत ।
 चंपू, सं. पुं. (सं. स्त्री.) गणपचनयं काव्यम् ।
 चंपेली, सं. स्त्री. (सं.) 'चमेली' ।

चंमच, सं. पुं. (सं.) दे. 'चमचा' ।
 चंवर, सं. पुं. (सं. चमरं) चानरम् ।
 चक्र, सं. पुं. (सं. चक्रं) वृहत्क्षेत्रं, महाभुखंडः-ट २. ग्रामटिका, लघुप्रागः ३. रथांगं, मंडलं, चक्रं ४. पट्टः, पट्टोलिका, भूमिकरग्रहणव्यवस्थापकः पत्रभेदः ।
 चकई, सं. स्त्री. (सं.) 'चकनी' ।
 चकई, सं. स्त्री. (हि. चक) *चक्रको, कौटुकभेदः । वि., गोल, बर्तुल ।
 चक्रचौध, सं. स्त्री. (सं.) 'चक्रचौध' ।
 चक्रचौधना, क्रि. अ., दे. 'चुंधियाना' ।
 चकईदर, सं. स्त्री. (सं.) 'छईदर' ।
 चकनी, सं. स्त्री. (सं. चकनी >) बल-चर्म, खंडः-खंड-शकलः-शकलम् ।
 चादल मे-लगाना मु., असंभवं साधु (स्वा. प. अ.) ।
 चकता, सं. पुं. (सं. चकवर्तः >) त्र्यक्षिककः-कं, चर्म, लालन-चिह्नं । २. इतक्षतम् ।
 —भरना या मारना, मु., दंश (भवा. प. अ.) ।
 चकनाचूर, वि. (हि. चिकना + सं. चूर्णः-नी <) सुचूर्णित, शकली-चूर्णी, कुत-भूत, सूक्ष्मखंडशः कुत २. भूरिवांच, अति-क्रांत-आयत ।
 —करना, क्रि. स., चूर्ण (चु.), खंडशः भंज (रु. प. अ.)-बुद्ध (चु. आ. से.) ।
 —होना, क्रि. अ., अगुशः बुद्ध-चूर्ण-भंज (कर्म.) ।
 चकपक, वि. (सं. चक् >) चकित, विस्मित २. संभ्रान्त, व्यामूढ ।
 चकपकाना, क्रि. अ. (हि. चकपक) दे. 'चौकना' ।
 चकप्र(सा)क, सं. पुं. (तु.) अग्रियावन् (पुं.), पावकप्रतरः ।
 चकसा, सं. पुं. (सं.) 'धोखा' ।
 चकराना, क्रि. अ., (सं. चक्र >) (शीर्ष) अम् (भवा. दि. प. से.), घूर्ण (भवा. आ. से.), तु. प. से.) २. व्यासृष्ट (दि. प. वे.), अजुली गू ३. चकित (वि.) + भूः क्रि. स., चकित (वि.) + कृ ।
 चकरानी, सं. स्त्री. (प्रा. चाकर) लेखिका, परिचारिका ।
 चकरी, सं. स्त्री. (सं. चक्री) पेथी, पेथण, वयं-चक्रं २. चक्री-पट्ट-पट्ट ३. दे. 'चकई' ।
 चकला, सं. पुं. (सं. चक्र >) चक्रकः

चकलाना

[१९३]

चखना

वेद्यावीथी, गणिकाहट्टः ३. दे. 'जिला'। वि., विस्तोर्ण, परिणाह्वन् ।

चकलाना, कि. सं. प्रह-विस्तृ (प्रे०), प्रथ् (जु.) ।

चकली, सं. स्त्री. (हिं. चकला) चकी. दे. 'गराड़ी' २. चकी, चकिका, गोलपट्टिका, वर्षणी ।

चकलस, सं. स्त्री. (अनु० चक) कलहः, विवादः २. परिहासः, विनोदः, कौतुकम् ।

चकवा, सं. पुं. (सं. चक्रवाकः) कोकः, चकः, रथांग-आडय-नामकः, द्रंदवारिन्, कामिन्, कामुकः ।

चकवी, सं. स्त्री. (हिं. चकवा) चक्रवाकी, कोको, चकी, रथांगनाम्नी इ. ।

चकाचक, सं. स्त्री. (अनु.) दे. 'घचापच' वि., (सं. चक् = वृत्तिः) सम्यक् सिक्त, परिपूर्ण । कि. वि., भुङ्, भृरिः प्रचुरं (सव अव्य.) ।

चकाचौध, सं. स्त्री. (सं. चक् = चमकना, ची = चारों तरफ, अंध >) चाकचम्येन नेत्रतेजःप्रतिघातः, अतिशयदीप्त्वा दृष्टेरस्यैर्यम् ।

चक्रिन, वि. (सं.) विरिमत, आश्चर्यान्वित, विस्मयाकुल, साक्षर्ये, विस्मय-उपहत-अन्वित । २. संभ्रांत, व्यामूढ, व्याकुल, ३. सशक, व्रत ।

चक्रोटना, कि. स., (हिं. चिकोटी) अकुल्य-घ्नण पीड् (जु.) ।

चक्रोतरात्रा, सं. पुं. (सं. चक्र >) (वृक्ष) मधुकर्दटी, मातुलुङ्गः, सुगंधा, सदाफलः, महाजंभीरः । (फल) मधुकर्दिकं, मातुलुङ्गम् इ. ।

चक्रोद, सं. पुं. (सं.) कौमुदीजीवसः, चंद्रिकापायिन् ।

चक्रोरी, सं. स्त्री. (सं.) चंद्रिकापायिनी ।

चक्रर, सं. पुं. (सं. चक्र) रथांगं, मंडलं २. गोलः-लं वृत्तं बलयः-यं ३. वात-अ-वर्त्तः-भ्रमः, वात्या ४. जल-आवर्त्तः, जलगुह्यः । ५. उभयसंभवः, विकल्पः ६. संभ्रमः, व्यामोहः ७. कृच्छ्रं, संकटं ८. कौटिल्यं, वक्रत्वं ९. पर्यटनं, वि-आ-वर्त्तः १०. अग्निः-धूमिः (स्त्री.), आभरम् ।

—खाना, मु., परिभ्रम् (भ्वा. दि. प. से.), घूर्णं (जु. प. से.) ।

—मारना, मु., विचर-पर्यट (भ्वा. प. से.) ।

—में आना, मु., कुच्छ्रे पठ (भ्वा. प. से.), संकटे भस्ज (तु. प. अ.) ।

—में झालना, मु., कृच्छ्रे संकटे, पठ-मस्ज (प्रे.) ।

चक्का, सं. पुं. (सं. चक्र) दे. 'चकर' (१, २) । ३. बृहद्दत्तल्लवंतः ४. इष्टक-प्रतर, राशिः (पुं.) ।

चक्की, सं. स्त्री. (सं. चकी) यन्त्रपेषणी, दे. 'चकी' (१-२) ३. जानुफलकम् ।

—पीसना, कि. स., चक्या पिष् (रु. प. अ.) छुष् (रु. उ. अ.) चूर्णं (जु.) । मु., पोर-अस्थिकं परिभ्रम् (दि. प. से.)-चघम् (भ्वा. प. अ.) ।

चक्कू, सं. पुं. दे. 'चाकू' ।

चक्र, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'चकर' (१-४) ।

५. तैलपेषणी ६. कुलाल-कुम्भकार, चक्र-पट्टः ७. अक्षभेदः ८. गणः, समूहः ।

—धर, सं. पुं. (सं.) }
—धारी सं. पुं. (सं. रिन्) } विष्णुः, चक्रमृत् ।
—पाणि, सं. पुं. (सं.) }

—वर्ती,—सं. पुं. (सं. तिन्) राजाधिराजः, मंडलेश्वरः, सम्राज् (पुं.), अधि, राजः-ईश्वरः ।

—वाक, सं. पुं. (सं.) दे. 'चकवा' ।

—वृद्धि, सं. स्त्री. (सं.) चक्रवाद्दृष्टम् ।

—व्यूह, सं. सं. (सं.) मंडलाकारः सैन्य-संनिवेशः ।

—हस्त, सं. पुं. (सं.) विष्णुः ।

चक्रांक सं. पुं. (सं.) (भुजादिषु) चक्र-चिह्न-लक्षणम्-अभिधानम् ।

चक्रांकित, वि. (सं.) चक्रचिह्नयुक्त, सचक्र-चिह्न । सं. पुं. वैष्णवसम्प्रदायभेदः ।

चक्राकार, सं. पुं. (सं.) गोल, मंडलाकृति ।

चक्री, सं. पुं. (सं. क्रिन्) चक्र-धर-धारिन् २. विष्णुः ३. कुलालः ४. गुप्तचरः ५. तैलिकः, तैलिन् ६. सरः ७. चक्रवाकः ८. चक्रवर्तिन् ।

चष्ट, सं. पुं. [सं. चक्षुस् (न.)] नेत्रं, नयनम् ।

चखना, कि. स. (सं. चघर्ण) आ-स्वाद् (भ्वा. आ. से.), चप् (भ्वा. उ. से.), रस् (जु.), रसं परीक्ष् (भ्वा. आ. से.), रसनया रष्ट् (तु. प. अ.) । सं. पुं. आस्वादनं, चघर्णं, रसनं, ईषदशनम् ।

चखाना, कि. प्रे., व. 'चखना' के प्रे. रूप ।
 चगलना, कि. स. (अनु. चग) अथवा चर्चण
 + गिरुण >) क्षुणं विना भक्ष् (चु.) ।
 चचा, सं. पुं. दे. 'चाचा' ।
 चची, सं. स्त्री., दे. 'चाची' ।
 चचेरा, वि. (हिं. चचा) पितृव्यसंबन्धिन् ।
 —भाई, सं. पुं., पितृव्यपुत्रः, पितृव्यजः ।
 चचेरी बहिन, सं. स्त्री., पितृव्यपुत्री, पितृव्यजा ।
 चचोइना, कि. स. (अनु.) दंतैः निपीड्य
 आ, चूष् (भ्वा. प. से.), बलवत् स्तम्भं वे
 (भ्वा. प. अ.) ।
 चट, कि. वि. (सं. क्षटिति) क्षणेन, क्षण-
 चटपट, " } निमेष, मात्रेण, सपदि, द्राक्,
 चटसे " } अंजसा, क्षणात्-सधः, -एवं,
 तत्क्षणयोगेन ।
 —करना, सु., अक्षेपं निगल् (भ्वा. प. से.)
 २. परद्रव्यमात्मसात् कृ ।
 —पट करना, कि. अ., त्वर् (भ्वा. प. से.),
 आशु कृ ।
 चटक, सं. स्त्री. (सं. चट्टल >) शोभा, श्री-
 कांतिः-पुतिः-दीप्तिः (स्त्री.) ।
 —मटक, सं. स्त्री., प्रसाधनं, अलंकरणं, मंडनं
 २. हावमात्राः, विलसितं, विलासः ।
 चटक(ख)ना, कि. अ. (अनु. चट) स्फुट्
 (हु. प. से.), दृ-भञ्ज-भिद् (कर्म.),
 वि-दल् (भ्वा. प. से.) । सं. पुं., चपेटः-टिका ।
 चटकनी, सं. स्त्री. (अनु. चट) क्रीलः-लं,
 अगलं, तीलकम् ।
 चटकाना, कि. स. (हिं चटकना) व.
 'चटकना' के प्रे. रूप २. अंगुलीः स्फुट् (प्रे.) ।
 जूतियां—' सु., म्बर्थं दारिद्र्येण वा भ्रम्
 (भ्वा. हि. प. से.) ।
 चटकारा वि. दे. 'चटकोला' २. चपल, चंचल ।
 चटक्रीला, नि. (हिं चटक) भासुर, उज्ज्वल,
 प्रभावश्च २. चित्र, नानावर्ण ३. दे. 'चटपटा' ।
 चटनी, सं. स्त्री. (हिं. चाटना) अबलेहः,
 उप-अव-दंशः, व्यंजनं, उपस्करः ।
 चटपटा, वि. (हिं. चाट) स्वादु, सुरस,
 सरस, लच्य, रुचिकर २. तीक्ष्ण, तिक्त ।
 चट(टा)पटी, सं. स्त्री. (हिं. चटपट) त्वरा,
 तूष्णिः (स्त्री.), शीघ्रता, क्षिप्रता । २. उत्सुकता
 आकुक्षता ।

चटरजी, सं. पुं. (वं.) चट्टोपाध्यायः, वंगप्र-
 तीयब्राह्मणभेदः ।
 चटवाना, कि. प्रे., व. 'चाटना' के प्रे. रूप ।
 चटवाल, चटसार-ल, सं. स्त्री., (हिं. चट्टा =
 चेता + सं. शाल) पाठशाला, विद्यालयः ।
 चटाई, सं. स्त्री. (सं. कटः ?) किलिजकः,
 किलिजं, कृणवूली, पादपाशी, आस्तरः ।
 चटाक, चटाका-खा, सं. पुं. (अनु.) विरावः,
 सशब्द-भंगः-स्फोटनं, परुषस्वनः, चटाक-
 शब्दः-ध्वनिः (पुं.) ।
 चटाचट, सं. स्त्री. (अनु.) चटपटा, शब्दः-
 नादः, चटचटायितं, चटचटाव, -कारः-श्रुतिः
 (स्त्री.)-कृतम् ।
 चटाना, कि. प्रे., व. 'चाटना' के प्रे. रूप ।
 चट्टल, वि. (सं.) चंचल, चपल, लोल
 २. सुंदर ।
 चटोर-रा, वि. (हिं. चाटना) अमर, धरमर,
 अत्याहारिन्, बहुभोजिन् २. स्वादरस, प्रिय-
 लोलुप, जिह्वालोल ।
 चटोरपन, सं. पुं. (हिं. चटोर) धरमरता,
 औदारिकता २. स्वादलोलुपता, जिह्वालोलुप्यम् ।
 चट्टा, सं. पुं. (सं. चेटः >) छात्रः, शिष्यः ।
 —बट्टा, सं. पुं. (हिं. चट्ट + बट्टा) क्रील-
 नकसमूहः ।
 एक ही धैली के चट्टे बट्टे, सु. समरवभावाः-
 तुल्यशीलाः मानवाः ।
 चट्टान, सं. स्त्री. (हिं चट्टा = चकसा)
 शिलोच्चयः, स्थूलशिलाः, शैलः, महाप्रस्तरः ।
 चट्टी, सं. स्त्री. (अनु. चटचट) पादत्रं,
 पादुका, पादूः (स्त्री.) ।
 चट्टी, सं. स्त्री. (हिं. चाँटा) हानिः-क्षतिः
 (स्त्री.) २. दंबः, अपकारशुद्धिः-क्षतिनिष्कृतिः
 (स्त्री.) ।
 चट्टू, सं. पुं. (हिं. अनु. चट) पाषाणमयं
 बृहद्दुर्लभं खलम् ।
 चट्टा, सं. पुं. (देश.) नंधामूलं, ऊरुसंधिः
 (पुं.); विदूषकः । वि. मंदबुद्धि, भूखं ।
 चट्टना, कि. अ. (सं. उचलनं) उदि-उभा
 (अ. प. अ.), उपरि-उद्, यम्, अधि-आ-इह्
 (भ्वा. प. अ.), अधिकम् (भ्वा. प. से.,
 भ्वा. भा. अ.) २. उधा (भ्वा. प. अ.),
 समुत्था (भ्वा. आ. अ.) ३. सं., ऋभ् (हिं.

प. से.), उप-प्र-ची (कर्म.) ४. आक्रम, अभिद्रु-अवस्कंद (भ्वा. प. अ.) ५. उत्पत् (भ्वा. प. से.), उट्टी (भ्वा. वा. से.) ६. उपहारी-उपायनी, कृ (कर्म.), उपह-निवप्- (कर्म.) ७. प्रवृत् (भ्वा. आ. से.) । सं-पुं- उदयनं, उद्ग्रामनं, अभिरोहणं; उस्थानं, आक्रमणं, उट्टहयनं इ. ।

चदने शोभ्य, वि. उदितेभ्य, आरोहणीय; आक्रमणीय ।

चदने वाला, सं. पुं. उदेत्-अभिरोह-अभिद्रावक ।

चदा हुआ, वि., उदित, उद्गत, अधिरूढ, आक्रांत ।

चडवाना, कि. प्रे., व. 'चदना' के प्रे. रूप ।

चडाई, सं. स्त्री. (हि. चदना) उद्ग्रामनं, आरोहणं २. उद्ग्रमः, उदयः ३. आरोहः ४. आक्रमः, अवस्कंदः ।

चडाउतरी, सं. स्त्री. (हि. चदना + उतारना) असकृत् आरोहणावरोहण-णे ।

चडाउपरी, सं. स्त्री. (हि. चदना + उपर) प्रतिरूपडा, अहपूर्विका ।

चदा-चदी, सं. स्त्री. (हि. चदना) दे. 'चदा-उपरी' ।

चदाना, कि. स., व. 'चदना' के प्रे. रूप ।

चदाव, सं. पुं. (हि. चदना) आरोहः, उद्ग्रमः, उस्थानं २. वृद्धिः (स्त्री.), उपचयः ।

—उतार, सं. पुं. आरोहावरोही, उद्ग्रमाव-गमौ ।

चदाषा, सं. पुं. (हि. चदाना) उपहारः, उपायनं, उत्सर्गः, बलिः (पुं.) २. दे. 'बदावा' ।

चदैत, सं. पुं. (हि. चदना) आ-अधि-रोहिन्-रोहक-रोहृ ।

चदैता, सं. पुं. (हि. चदना) ह्य-अश-आरोह-आरोहिन्, सादिन्, तुरगिन् ।

चणक, सं. पुं. (सं.) दे. 'चना' ।

चतुःशाख, सं. पुं. (सं. न.) शरीरं, देहः, कायः, तनुःभूः (स्त्री.)

चतुरंग, सं. पुं. (सं. न.) अक्षक्रीडामेदः २. चत्वारि सेनांगानि (इस्त्वश्वरथपदात्तय) इति ३. चतुरंगिणी सेना । वि., अंगचतुष्टयवत् ।

चतुरंगिणी, सं. स्त्री. (सं.) इस्त्वश्वरथपदात्ति-रूपिणी सेना । वि. स्त्री., अंगचतुष्टयवती ।

चतुर, वि. (सं.) निपुण, दक्ष, प्रवीण, कुशल, विचक्षण, विशारद २. धीमत्, बुद्धिमत्, प्रज्ञ, प्राज्ञ ३. कापटिक-छाथिक [-की (स्त्री.)]. कितव, धूर्त ।

चतुरता, सं. स्त्री. (सं.) नैपुण्यं, दक्ष्यं, कौशलं, प्रावीण्यं २. बुद्धिमत्त्वं, प्राज्ञता ३. कैतवं, कापट्यं इ० ।

चतुराई, सं. स्त्री., दे. 'चतुरता' ।

चतुरानन, सं. पुं. (सं.) चतुर्मुखः, ब्रह्मन् (पुं.) ।

चतुर्थ, वि. (सं.) तुर्थ, तुरीय ।

चतुर्थी, वि. स्त्री. (सं.) तुर्या, तुरीया २. पक्षस्य तुरीया तिथिः इ. दे. 'चौथा' ।

चतुर्दिक्, सं. पुं., दे. 'चतुर्दिश' ।

चतुर्दिश, सं. पुं. (सं. न.) दिक्-चतुष्टयम्, चतुर्दिक्समूहः । कि. वि., चतुर्दिक्षु, सर्वतः, समंततः, विश्वतः, समंतात्, सर्वत्र (सब अन्व.) ।

चतुर्भुज, वि. (सं.) चतुर्बाहु, चतुर्हस्त २. चतुष्कोण, चतुरस्र । सं. पुं. (सं.) विष्णुः २. चतुष्कोणः, चतुरश्रः-स्रः इ. चतुर्भुजं, वर्गः, सम, चतुर्भुजः-चतुरस्रः ।

चतुर्मुख, सं. पुं. (सं.) दे. 'चतुरानन' । कि. वि., सर्वतः, परितः, समंतात् (सब अन्व.) ।

चतुर्युग, सं. पुं. (सं. न.) युग, चतुष्कं-चतुष्टयम् ।

चतुर्युगी, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'चतुर्युग' ।

चतुर्वर्ग, सं. पुं. (सं.) धर्मार्थकाममोक्षाः ।

चतुर्वर्ण, सं. पुं. (सं.) ब्राह्मणक्षत्रियवैश्यशूद्राः, चातुर्वर्ण्यं, वर्णः, चतुष्टयं-चतुष्कम् ।

चतुष्कोण, वि. (सं.) चतुरस्र, चतुरश्र, चतुर्भुज २. सम, चतुर्भुज-चतुरश्र । सं. पुं. (सम-) चतुर्भुजः-चतुरश्रः ।

चतुष्टय, सं. पुं. (सं. न.) चतुःसंख्या, चतुष्कं, चतुर्वस्तुसमूहः, चतुष्कम् ।

चतुष्पथ, सं. पुं. (सं. पुं. न.) दे. 'चौराहा' ।

चतुष्पद, सं. पुं. तथा वि. (सं.) दे. 'चौपाया' ।

चहर, सं. स्त्री. (क्रा. चाहर) क्षवनास्तरणं शय्याच्छादनं, प्रच्छदः, पटः-वस्त्रं, प्रच्छदः उच्छरच्छदः २. (धातकी) फलकः-कं, पत्रम् ।

चना, सं. पुं. (सं. चणः) हृदि-मंथः-मंथकः-मंथजः, सुगंधः, बालमोक्ष्यः, वाग्मिष्यः, कंचुकिन्, कृष्णचंचुकः ।

नाको चने चववाना, पु., अत्यंत सं-परि-तप्त (दे.) ।

लोहे का चना, पु., दुष्करं कर्मन् (न.) ।

चनाव, सं. स्त्री. (सं. चन्द्रभागा) चान्द्र चन्द्र-
भागा-भागी ।

चपकन, सं. पुं. (हि. चिपकना) कंचुक-
उत्तरीय, भेदः ।

चपकना, दे. 'चिपकना' ।

चपकलश, सं. स्त्री. (तु.) खड्ग-असि-रूपान्,
युद्धम् २. कलहः, उपद्रवः ।

चपटा, वि., दे. 'चिपटा' ।

चपडचपड, सं. स्त्री. (अनु.) चपडचपड-
ध्वनिः (पुं.) ।

चपडा, सं. पुं. (हि. चपटा) अलक्तः-ककः,
रा(ला)क्षा २. लाक्षा-अलक्त, पत्रं ३. रक्तकीट-
भेदः ।

चपट, सं. पुं. (सं. चपटः) चपेट-टिका, चपट-
करतल, आघातः प्रहारः २. क्षतिः-हानिः (स्त्री.) ।

चपनी, सं. स्त्री. (सं. चपनं = दवाना >) पुटः-
टं-टी, छदः, छदनं, पिधानं २. शरावः,
वर्षमानकः ३. जानुफलकम् ।

चपरास, सं. स्त्री. (प्रा. चप = बायीं + रास्त =
दायाँ) • प्रेभ्यः-पङ्कः-पङ्कः ।

चपरासी, सं. पुं. (हि. चपरास) प्रेभ्यः,
भृशः, नियोज्यः, किंकरः, चोलकिन् ।

चपल, वि. (सं.) दे. 'चंचल' (१-४) ५. क्षणिक,
अचिरस्थायिन् ६. शीघ्र-आशु-कारिन्, अवि-
लंबिन् ७. शीघ्र, तूर्ण, क्षिप्र, द्रुत ८. मायाविन्,
सनाय ९. चतुर, अवसरज्ञ १०. धृष्ट, निर्लज्ज ।

चपलता, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'चंचलता'
(१-२) ३. धृष्टता, धाष्टर्यं, वैयात्यम् ।

चपला, सं. स्त्री. (सं.) लक्ष्मीः (स्त्री.), कमला
२. विद्युद (स्त्री.), चंचला ३. जिह्वा ४. पुँश्चली,
कुलटा । वि. स्त्री., चंचला २. शीघ्रकारिणी ।

चपली, सं. स्त्री. (हि० चपटी) पत्रदा, पत्रघ्नी ।

चपाती, सं. स्त्री. (सं. चर्पाटी) पोली, पोलिका,
रोटी(ट)का ।

चपेट, सं. स्त्री. (सं. चपेटः) दे. 'चपट'
(१-२) ३. आघातः, प्रहारः ।

चप्पन, सं. पुं. दे. 'चपनी' (१) ।

चप्पल, सं. पुं. (हि. चपटा) पादुः (स्त्री.),
पादुका, कौशी-बी ।

चप्पा, सं. पुं. (सं. चतुष्पाद- >) चतुर्थांशः
तुर्ग-तुरीय, भागः, २. अंगुलीचतुष्टयपरिमाणं
३. किंभुः (पुं. स्त्री.), कित्तिः (पुं.)
४. कव्वाशः ।

चप्पी, सं. स्त्री. (सं. चप् = दवाना >) सं-
वाहः-वाहनं-वाहना, चरणसेवा ।

चप्पू, सं. पुं. (हि. चाँपना) नौका-नौ-
दंडः, क्षेपणी-भिः (स्त्री.) ।

—मारना, कि. स., क्षेपण्या चल-वह (प्रे.) ।

चवाना, कि. प्रे. व. 'चवाना' के प्रे. रूप ।

चवाना, कि. सं. (सं. चर्वणं) चर्वं (स्वा. प.
से.), संदंश (स्वा. प. अ.), दंनैः निष्पिष
(रु. प. अ.) । सं. पुं., चर्वणं, दंनैः निष्पेवर्णं,
संदंशनम् ।

चवा चवा कर बात करना, मु., संदं तस्वरं च
वद् (स्वा. प. से.) ।

चवे को चवाना, मु., पिष्टपेवर्णं, चवितचर्वणम् ।

चवूतरा, सं. पुं. (सं. चर्वरम् >) वेदिः
(स्त्री.)-दिका, वितदिः (स्त्री.)-दी-दिका, उन्नत-
स्थली २. दे. 'कोतवाली' ।

चबेना, सं. पुं. (हि. चवाना), भृष्ट-भ्रष्ट-
अन्न-धान्यं, चर्वणम् ।

चबेनी, सं. स्त्री. (हि० चबेना) भृष्टान्नोप-
हारः २. जल्पानसामग्री ।

चभक, सं. पुं. (अनु.) निमज्जन-ध्वनिः-
शब्दः ।

चमक, सं. स्त्री. (हि. चमकना) कांतिः-
दीप्तिः-शुतिः-रुचिः (स्त्री.), आभा, प्रभा
२. आलोकः, प्रकाशः ३. कटि-श्रोणी, पीडा ।

—दमक, सं. स्त्री., अतिशय, शोभा-श्रीः-कांतिः-
दीप्तिः-शुतिः-विभूतिः (स्त्री.) ।

—दार, वि. उज्ज्वल, भासुर, भास्वर, अति-
महा, तैजस-शोभन-दीप्तिमत्-प्रभ ।

चमकना, कि. अ. (सं. चमत्करणं) प्रकाशि-
विद्युत्-भाम्-शुभ्-भाजू-भाशु-भ्लाद्य (स्वा. भा.
से.), प्र., भा (अ. प. अ.), चकाम् (अ. प.
से.), दीप् (दि. आ. से.), विलम् (स्वा.
प. से.) २. समृद्धि-वृद्धि या (अ. प. अ.),
सं., कृध् (दि. तथा स्वा. प. से.) ३. अक-
स्मात् कन्-स्पर्द्ध (स्वा. भा. से.), संजस्त-
भयचकित (वि.) श् ।

सं. पुं., प्रकाशनं, विद्योतनं, विलसनं, समृद्धिः
(स्त्री.), प्र-उप-, चयः, सहसा स्पर्दनं-कंपनम् ।

चमकाना, कि. प्रे. व. 'चमकना' के प्रे. रूप ।

चमकारा, सं. पुं. (हि. चमक) कांतिः-दीप्तिः-

श्रुतिः (स्त्री.) २. चाकचक्रयं, तीव्र, आलोकः-
प्रकाशः ।

चमकी, सं. स्त्री. (हिं. चमक) आपातरमणीयं
वस्तु (न.) ।

चमकीला, वि. (हिं. चमक) दे. 'चमकदार' ।

चमक्री, सं. स्त्री. (हिं. चमकना) कुलटा,
पुंश्वली २. कलह-कलि-कारी-कारिणी-प्रिया ।

चमचिह्नी, सं. स्त्री.

चमरा(गी)दक्ष, सं. पुं.

चमराद्विही, सं. स्त्री.

(सं. चर्मचटी)

चर्मचट(टि)का,

चतु(त्)का, जपु,

नी, चर्मपत्रा, अ-

जिनपत्रिका, चा-

र्मिः (स्त्री.) ।

चमचम, सं. स्त्री. (देश.) चमचमाख्यः मिष्टा-
न्नभेदः । वि., दे. 'चमकदार' ।

चमचमाना, कि. अ., दे. 'चमकना' (१) ।

चमचमाहट, सं. स्त्री., दे. 'चमक' (१-२) ।

चमाच, सं. पुं. (सं. चमसःसं) कंवा-विः

(स्त्री.), खजः, खजाका । (लकड़ी का) दाह-

हस्तकः, तर्दुः-तर्दुः (स्त्री.) ।

—भर, कि. वि., चमस, मात्र-परिमाणम् ।

चमचिह्नक, वि. (हिं. चाम + चिह्नी) अत्या-
ग्रहिन्, प्रतिनिविष्ट, अत्याग्रहशील ।

चमका, सं. पुं. (सं. चर्मन् (न.)) त्वच-रोमभूमिः

(स्त्री.); त्वच-चा, अस्यु, धरा-वरा, छली-छी ।

(श्रुत प्राणी का) अजिनं, कृत्ति-द्वितिः (स्त्री.) ।

—उपेक्षना, कि. स., निस्त्वचोक्त, त्वचं-चर्म
अपनी-निर्हं (भ्वा. प. अ.) ।

चमका, सं. स्त्री. (हिं. चमका) दे. 'चमका' ।

चमकार, सं. पुं. (सं.) विरमयः, आश्चर्यं,
अद्भुतं, चमकृतिः (स्त्री.) २. अलौकिक-अति-

मानुष-लौकीचर-चर्मन् (न.) ।

चमकारक, वि. (सं.) आश्चर्य-विरमय, जनक-

उत्पादक, अतिमानुष (-वी स्त्री.), दिव्य,

विलक्षण, अद्भुत, आश्चर्यं, चमकारिन् ।

चमकृत, वि. (सं.) आश्चर्य-विरमय, अन्वित-

आपन्न-उपहृत, विरमित ।

चमन, सं. पुं. (फ्रा.) कुसुमाकरः, पुष्प-वनं-
वाटः-वाटिका ।

चमर, सं. पुं. (सं.) चमरगौः (पुं.) धेनुगः,
बालपिप्रियः, बन्धः, व्यजनिन् २. च(चा)मरम् ।

चमरस, सं. पुं. (सं. चर्मरसः >) चर्मपादुका-
जनितं चरणध्वजं, *चर्मरसः ।

चमरी, सं. स्त्री. (सं.) चमरगवी, गिरिप्रिया,
दीर्घवाला २. च(चा)मरं ३. मजरी ।

चमरौट, सं. पुं. (हिं. चमार) शक्ये चर्म-
कारभागः ।

चमस, सं. पुं. (सं. पुं. न.) दे. 'चमचा' ।

चमार, सं. पुं. (सं. चर्मकारः) चर्मकृतं,
चर्मरुः (पुं.) २. पादू-पादुका, कृत्-कारः ३.

पादुकासंधावु (पुं.) । [चमारी-रिन (स्त्री.)

= चर्मकारी ३.]

चमेली, सं. स्त्री. [सं. चम्पकवेह्लिः (स्त्री.)]

(पौधा) मनोहरा, मनोहा, जाती, मालती,

सुकुमारा, सुरभि-द्वय, गंधा २. (फूल) जाती-

मालती, पुष्पम् ।

चमोटा, सं. पुं. (हिं. चाम) क्षुरतेजनी,

चमोटी, सं. स्त्री. चर्मपट्टी ।

चय, सं. पुं. (सं.) समूहः, गणः, राशिः (पुं.)

२. श्रुतिकाचयः, क्षुद्रपर्वतः ३. दुर्ग ४. प्राकारः,
वप्रः-प्रं ५. वेदी-विका ६. चरण-पाद, पीठः-पीठं

७. गृह-भित्ति-मूर्त्त, पोटाः ।

चयन, सं. पुं. (सं. न.) संग्रहणं, समाहरणं,
राशी-एकन, करणम् ।

चर, सं. पुं. (सं.) चारः, स्पशः, प्राणिभिः

(पुं.) गूढपुरुषः २. मंगलयज्ञः, कुजः

३. खजमः ४. कपर्दकः ।

वि. अस्थिर, जंगम, चल २. प्राणिन्, चेतन,

सजीव ।

—अचर, वि., चलाचल, अलजंगम, स्थावरजंगम

२. अचचेतन, सजीवनिर्जीव, सप्राणनिष्प्राण ।

चर, सं. पुं. (अनु.) ब्रह्मादिविदरणध्वनिः

(पुं.) चरतिशब्दः ।

चरक, सं. पुं. (सं.) मुनिविशेषः २. तत्कृत-

वैद्यकग्रन्थः ३. दे. 'चर' (१) । ४. अध्वगाः,
यात्रिन् ५. भिक्षुकः ।

चरकटा, सं. पुं. (हिं. चारा + काटना)

यवस-घास, कर्तकः-छेदकः । २. क्षुद्रः, नीचः,
जालमः ।

चरका, सं. पुं. (फ्रा. चरकः) ईषत्कृतं, क्षुद्र-
व्रणः-व्रणं २. हानिः (स्त्री.) ३. छलम् ।

चरखा, सं. पुं. (फ्रा. चर्ख) तांतवचकं,
चर्कं २. आवापनम् ।

चरणी

[१९८]

चरित्र

—कातना, कि. सं., तंतून् कृत (ह. प. से)
सृज् (तु. प. अ.), तांतवचकं चल्-भ्रम् (प्रे.) ।
चरणी, सं. स्त्री. (हि. चरणा) लघुचकं,
चकी, चकिका ३-४. दे. 'गटारी' तथा 'वेलन' ।
चरचर, सं. (स्त्री.) चरचराशब्दः,
चरचरायितं २. व्यर्थ-जनार्थक, आलापः,
प्रजल्पः-पनम् ।
चरचराहट, सं. स्त्री., दे. 'चरचर' ।
चरट, दे. 'खंजन' ।
चरण, सं. पुं. (सं. पुं. न.) पादः, पदः-दं,
पद-पाद (पुं.), वि-क्रमः, क्रमणः, चलनः,
अग्निः (पुं.) । २. चरणः, पदं (छन्द.)
३. चतुर्थीशः ४. गमनं, चलनं ५. आचारः
६. (तुण-) भक्षणं ७. अनुष्ठानं ८. विहरण-
स्थलं ९. सूर्यादेः किरणः १०. क्रमः ।
—चिह्न, सं. पुं. (सं. न.) पाद-पद, मुद्रा-
चिह्नं-लक्षणम् ।
—दासी, सं. स्त्री. (सं.) भार्या, पत्नी २. उपा-
नङ् (स्त्री.), पादुका ।
—सेवा, सं. स्त्री. (सं.) परि-उप, चर्या, शुश्रूषा ।
—सूना, मु., पादयोः पत् (भ्वा. प. से.)-
चरणौ स्पृश् (तु. प. अ.) ।
चरणाभृत, सं. पुं. (सं. न.) चरणोदकं, पादो-
दकम् ।
—लेना, मु., चरणाभृतं आचम् [भ्वा. प. से.,
आच(च)मिति] ।
चरना, कि. सं. (सं. चरणं) यवसं-वृणं खाद
(भ्वा. प. से.)=भक्ष् (तु.)-भुञ् (ह.
आ. अ.), चर् (भ्वा. प. से.) । २. पर्यट्-
भ्रम् (भ्वा. प. से.) ।
चरनी, सं. स्त्री. (हि. चरना) दे. 'नाँद' (२)
२. गो, चरः-प्रचारः ।
चरपट, सं. पुं. दे. 'चपट' ।
चरपरा, वि. (अनु.) तिक, उष्ण, तीव्र, तीक्ष्ण ।
चरवी, सं. स्त्री. (क्वा.) मांस, सारः-रनेहः,
वपा, वशा-सा, भेदस् (न.) ।
—की झिझी, सं. स्त्री., (१-२) गर्भ-अंत्र-
आवेष्टनम् ।
—चवना, मु., दे. 'मोटा हौना' ।

—छाना, मु., मर्दांश-अग्निगवित (वि.) भू ।
चरम, वि. (सं.) अन्तिम, अन्त्य, पश्चिम,
अवम ।
—काल, सं. पुं. (सं.) निधन-मृत्यु, समयः-
कालः ।
—सीमा, सं. स्त्री. (सं.) परिनिष्ठा, परमा-
वधिः (पुं.) ।
चरवाई, सं. स्त्री. (हि. चरवाना) पशुचारण-
भृत्या-वैतनं २. पशुचारणं, गोपालनम् ।
चरवाना, कि. प्रे., व. 'चरना' के प्रे. रूप ।
चरवाहा, सं. पुं. (हि. चरना) पशु-गो-
चारकः-पालकः-पालः-रक्षकः ।
चरस, सं. पुं. (सं. चर्मन् >) १. चर्म, त्रीणो-
सेचनी २. चर्ममयः महा, पुटः-कोषः ३. गंजा-
निर्यासः, मादकद्रव्यभेदः ।
चरसा, सं. पुं. (हि. चरस) गोमहिषादेः चर्मन्
(न.), २-३. दे. 'चरस' (१-२) ।
चरसी, सं. पुं. (हि. चरस) चरसः पः-
पायिन् २. चर्म-सेचकः सेक्तृ (पुं.) ।
चराई, सं. स्त्री. (हि. चरना) चरणं, यवस-
तृण, भक्षणं २-३. दे. 'चरवाई' (१-२) ।
चराण, दे. 'चिराण' ।
चरागान, सं. पुं. (क्वा.) दीपोत्सवः ।
चरागाह, सं. स्त्री. (क्वा.) गोप्रच(चा)रः, यव-
सक्षेत्रं, शादलं, तृणावृतभूमिः (स्त्री.) ।
चराचर, वि. (सं.) दे. 'चर' के नीचे ।
चराना, कि. प्रे. (हि. चरना) व. 'चरना'
के प्रे. रूप २. मुह-वंत् (प्रे.), प्र-वि-लुभ् (प्रे.) ।
चरिदा, सं. पुं. (क्वा.) तृणभक्षक-यवसादः, पशुः ।
चरित, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'चरित्र' ।
चरितार्थ, वि. (सं.) कृतार्थ, कृतकृत्य, पूर्ण-
मनोरथ, सफल २. उचित, योग्य, अनुरूप ।
चरित्र, सं. पुं. (सं. न.) आचारः, आचरणं,
चरितं, वृत्तं, वृत्तिः (स्त्री.) चारित्र्यं, शीलं,
सौजन्यं २. स्वभावः, प्रकृतिः (स्त्री.)
३. कायं, कर्मन् (न.), चेष्टितं ४. जीवनः,
चरितं-चरित्रं, जीवनं ।
—नायक, सं. पुं. (सं.) प्रधानपुरुषः, चरित-
नायकः ।

चरित्रवान्

[१९९]

चलाऊ

चरित्रवान्, वि. (सं., वत्) सदाचारः, रिन्, आचारवत् ।

चरी, सं. स्त्री. (हिं. चरना) घासः, यवसः, सं., जवसः-सं, तुणादिकम् ।

चर्च, सं. पुं. (अं.) दे. 'गिरजा' २. संप्रदायः ।

चर्चरी, सं. स्त्री. (सं.) गीति-भेदः २. ह्रीलि-कोरसवः ३. करतलध्वनिः (पुं.) ४. आमोद-प्रमोदाः ५. वाद्यभेदः ।

चर्चा, सं. स्त्री. (सं.) चर्चे, अभिधानं, आस्थानं, कथनं, कीर्तनं, निर्देशः, वर्णनं २. वार्ता, आलापः, सं., भाषणं-कथा, कथाप्रसंगः ३. किंबदन्ती, जनप्रवादः, ४. लेपनं, अभ्यंजनम् ।

—करना, कि. स., संभाष (स्वा. अ. से.), संवद् (भ्वा. प. से.)

चर्चित, वि. (सं.) अभ्यक्त, लिप्त २. विचारित ।

चर्म, सं. पुं. (सं. चर्मन्) दे. 'चमदा' ।

—कार, सं. पुं. (सं.) दे. 'चमार' ।

—दंड पुं. पुं. (सं.) दे. 'चाबुक' ।

चर्मी, वि. (सं. चर्मिन्) चर्म-मय-निर्मित-संस्थिन्, चर्मण्य । सं. पुं. चर्मधारि-फलकसूद्-योधः ।

चर्य, वि. (सं.) गमनीय, गन्तव्य (स्थानादि) २. आचरणीय, करणीय ।

चर्या, सं. स्त्री. (सं.) कृत्यानुष्ठानं, कर्तव्यपालनं २. चलनं, गमनं, ३. आचारः, आचरणं ४. सेवा ५. आजीविका, वृत्तिः (स्त्री.) ।

चराना, कि. अ. (अनु.) चरचरायते (ना. धा.) चरचरशब्द कृ २. तप् (कर्म.), व्यध् (भ्वा. आ. से.) ३. अत्यन्तं अभिलष् (भ्वा. उ. से.) ।

चर्वण, सं. पुं. (सं. न.) संदंशनं, दंतैः निष्पे-षणं २. चर्वणपदार्थः ३. दे. 'चर्वेना' ।

चर्वणा, सं. स्त्री. (सं.) चर्वणं, दन्तैः निष्पेषणं, संदंशनम् २. रसास्वादनं, रसानुभूतिः (स्त्री.) ३. चर्वण, दन्तः-रदः ।

चर्चित, वि. (सं.) दंतनिषिद्ध, संदष्ट ।

चर्व्य, वि. (सं.) चर्वणीय, दन्तैः निष्पेषणीय । सं. पुं. (सं. न.) भृष्ट-अन्न-धान्यम् ।

चर्स, सं. पुं., दे. 'चरस' ।

चल, वि. (सं.) चर, चरिष्णु, जंगम, गमन-शील २. चंचल, अस्थिर, अधीर । सं. पुं., शिवः २. विष्णुः ३. पारदः, रसः ।

—चलाय, सं. पुं., यात्रा, प्रस्थानं, २. महा-प्रस्थानं, मृत्युः (पुं.) ।

—चित्त, वि. (सं.) लोल-अस्थिर-चंचल-मति-बुद्धि-चित्त ।

—विचल, वि. (सं.) अव्यवस्थित, अकम ।

चलता, वि. (हिं. चलना) चलत्-गच्छत्-चरत् (शत्रंत), गतिमत् २. प्रचलित, सर्व-संमत ३. समर्थ, शक्तिमत् ४. व्यवहारकुशल, कार्यपटु । [चलती (स्त्री.) = चलंती, प्रच-लित इ.] ।

चलती, सं. स्त्री. (हिं. चलना) प्रभावः, अधिकारः ।

चलन, सं. पुं. (सं. चलनं) गतिः (स्त्री.), गमनं, यानं, प्रस्थानं २. रीतिः (स्त्री.), क्रमः, अनुसारः ३. व्यवहारः, उपयोगः, प्रचारः ।

—सार, वि. चिर-स्थायिन्, दीर्घ-चिर, काल-स्थायिन् २. प्रचलित (रि) त्त ।

चलना, कि. अ. (सं. चलनं) चल-चर्-ञञ् (भ्वा. प. से.), या-इ (अ. प. अ.), गम्, २. सक्रिय-सचेष्ट-सगतिक (वि.) भू, स्फुर् (तु. प. से.), कंप् (भ्वा. आ. से.) ३. स-सृप् (भ्वा. प. अ.) ४. (पठ-र्या-पादाभ्यां) चल-चर्-गम्-या, परि-ऋम् (भ्वा. प. से., भ्वा. आ. अ.) ५. प्र-वह् (भ्वा. उ. अ.), प्र-सृ (भ्वा. प. अ.) ६. वा (अ. प. अ.) ७. प्रवृत् (भ्वा. आ. से.), स्था (भ्वा. प. अ.) ८. उपयुज्-व्यवहृ (कर्म.) ९. कलहायते (ना. धा.), विवद् (भ्वा. आ. से.) १०. सफलीभू, कृतार्थ-कृतकृत्य (वि.) भू । सं. पुं., चलनं, चरणं,

गमनं, प्रस्थानं, स्फुरणं; वहनं इ. ।

चलने वाला, सं. पुं., चलित्-गंतु-यात् (पुं.) इ. ।

चल पड़ना, मु., प्र-स्था (भ्वा. आ. अ.), चल्-या ।

चल बसना, मु., चृ (तु. आ. अ.), पंचत्वं या । चले चलना, मु. चल्-गम् ।

चलनी, सं. स्त्री., दे. 'छलनी' ।

चलधाना, कि. प्रे., व. 'चलना' के प्रे. रूप ।

चला, सं. स्त्री. (सं.) पृथिवी २. दामिनी ३. लक्ष्मीः (स्त्री.) ।

चलाऊ, वि. (हिं. चलना) दीर्घ-चिर, कालस्थायिन्, दृढ, स्थिर ।

चलाचल

[२००]

चौदनी

चलाचल, वि. (सं.) चपल, चंचल, लोल
२. जहचेतन ३. स्थावरजंगम ।
चलाचली, सं. स्त्री. (हि. चलना) प्रस्थान-
प्रयाण-स्वरा-संभ्रमः २. प्रस्थानं, प्रयाणं, अप-
यानं-यमः ३. प्रस्थान, कालः-समयः ४. प्रया-
णोपकल्पनम् ।
च(चा)लान, सं. स्त्री. पुं. (हि. चलना)
प्रचलनं, प्रस्थानं, प्रयाणं, अप-यानं-नामः-
गमनं २. प्रचालनं, प्रस्थापनं, प्रेषणं-णा, प्रया-
पणं-नं ३. अभियोजनं, अभिव्युज्य अधिकरणे
प्रेषणम् ।
चलाना, क्रि. स. न. 'चलना' के प्रे. रूप ।
२. (सोली आदि) लोह, नीलान्-गुलिकाः-प्रक्षिप्-
विसृज् (तु. प. अ.) ३. प्रारम्भ् (भ्वा. आ.
अ.), प्रवृत् (प्रे.) ।
चलायमान, वि. (हि. चलना) चलत्-
गच्छत्-सर्पत् (शत्रुत) २. चंचल, अस्थिर ।
चलाव, सं. पुं. (हि. चलना) प्रस्थानं, प्रयाणं
२. यात्रा ३. रीतिः (स्त्री.), क्रमः ।
चलित, वि. (सं.) दे. 'चलायमान' (२-२)
३. प्रचलित ।
चवघ्नी, सं. स्त्री. [हि. चौ (= चार) + आना]
चतुराणी, रुच्यः ।
चवर्ग, सं. पुं. (सं.) चकाराद्यः पंचवर्णाः ।
चवाई, सं. पुं. (हि. चौ + वारै = इवा)
निदकः, अप-परि-वाहकः २. पिशुनः, कर्णे-
जपः ।
चवालीस, वि. (सं. चतुश्चत्वारिंशत्) । सं. पुं.
उक्ता संख्या, तदङ्कौ (४४) च ।
चवालिसवा, वि. (हि. चवालीस) चतुश्च-
त्वारिंशत्तमः (मो-मम्) ।
चरम, सं. स्त्री. (फ्रा.) देवं, नयनम् ।
—**दीह**, वि. (फ्रा.) दृष्ट, अवलोकित, प्रत्यक्ष ।
—**दीव शवाह**, सं. पुं. (फ्रा.) प्रत्यक्ष, साक्षिन्-
दक्षिन्-प्रत्यक्षिन्-देश्यः ।
चरमा, सं. पुं. (फ्रा.) दे. 'दिनक' २. उत्सवः,
निर्धारः, प्रसन्नवर्ण, स्रोतस् (न.) ३. कुक्षुद्रः-
नदी-सरित् (स्त्री.) ।
चषक, सं. पुं. (सं. पुं. न.) मद्यपानपात्रम्,
अनुत्तर्पणं, सरकः, गल्वर्कः २. मधु (न.) ।
चषण, सं. पुं. (सं. न.) मक्षणं, खादनम्
२. हचनं, मारणम् ।

चसक, सं. स्त्री. (देश.) दे. 'कसक' ।
चसकना, क्रि. अ. दे. 'कसकना' ।
चसका, सं. पुं. (सं. चषकः >) आ-स्वादः,
रसः, प्रवृत्तिः (स्त्री.) अभि-रुचिः (स्त्री.) ।
डुरा—व्यसनम् ।
चसर्षी, वि. (फ्रा.) लग्न, संश्लिष्ट ।
चहक, सं. स्त्री. (हि. चहकना) कृजनें,
कृजितं, कलरवः, चुंकारः, खग, विकृत-विरावः ।
चहकना, क्रि. अ. (अनु.) कृज् (भ्वा. प.
से.), विह् (अ. प. से.) ।
चहचहा, सं. पुं. दे. 'चहक' ।
चहचहाना, क्रि. अ. (अनु.) दे. 'चहकना' ।
चहचहाहट, सं. स्त्री. दे. 'चहक' ।
चहचहा, सं. पुं. (फ्रा. चाह = कूप + हि.
वचा) कुपकः, जल-कुंड-आशयः ।
चहल, सं. स्त्री. (अनु. चहचह) आनन्दोत्सवः ।
चहलकदमी, सं. स्त्री. (हि. चहल + फा.
कदम) विचरणं, विहारः, परि-क्रमणं-भ्रमणं-
भटनम् ।
चहल-पहल, सं. स्त्री. (अनु.) आनन्दः,
उत्सवः, उल्लासः, प्र-मोदः हर्षः ।
चहारदीवारी, सं. स्त्री. दे. 'चारदीवारी' ।
चौई, वि. (देश. चई = डाकु जाति) अपह-
रणशील, चौबैवृत्ति । धूसै, छलिन् ।
चौचक्य, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'चंचलता' ।
चौटा, सं. पुं. (अनु. चट) दे. 'चपत' ।
चौडाल, सं. पुं. (सं.) दे. 'चंडाल' ।
चौडाली, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'चंडाली' ।
चौद, सं. पुं. (सं. चंद्रः) दे. 'चंद्र' २. चन्द्र-
कलाकारः आभूषणभेदः, *चन्द्रः ३. मासः
४. रुच्यं-सं, शरव्यं । सं. स्त्री. शिरोऽग्रं,
कपालशिखरं २. शिरोऽस्थि (न.),
कपालः-रुम् ।
—**मारी**, सं. पुं. लक्ष्यवेधः, शरव्यनिर्भेदः ।
चौदना, सं. पुं. (हि. चौद) आलोकः, प्रकाशः
२. दे. 'चंद्रिका' ।
—**पाख**, सं. पुं. पूर्व-शुक्र-शुद्ध-सित-पक्षः ।
चौदनी, सं. पुं. (हि. चौदना) दे.
'चंद्रिका' २. श्वेत-सित-प्रच्छदः । ३. शुद्धो-
लोचः ४. तगरालयं पुष्पम् ।
—**चौक**, सं. पुं. (हि. + सं. चतुष्कं) मुख्य-
मार्गः, प्रधानदृष्टः, २. दिल्लीनगरस्य प्रधान-
दृष्टः, * चंद्रिकाचतुष्कम् ।

—रात, सं. स्त्री., ज्योतिष्मती, ज्योत्स्नी ।
चौदी, सं. स्त्री., (हिं. चौद) रजत, रूप्यं, दुवर्णं, श्वेतं, कलधौतम् । २. धनं, वित्तं ३. आर्थिकलाभः ४. दे. 'चौद', (सं. स्त्री.) ।
 —का, वि, राज-रौप्य [-ती, प्यो (स्त्री.)], रजत-रूप्य, निर्मित-रचित, रजत ।
 —सा, वि., रूप्योपम, रजतवर्ण, अतिश्वल ।
 —का जूता, मु., दे. 'वूँस' ।
चौद्र, वि. (सं.) चौद्रमस [-सो(स्त्री.)] ऐंद्रव [-वी (स्त्री.)] चंद्र, सोम- ।
 —मास, सं. पुं. (सं.) चंद्र-सोम-विषु, मासः ।
 —वरसर, सं. पुं. (सं.) सौम्य-चान्द्रिक-चान्द्र-भर, वर्ष-अब्द-हायनः ।
चौद्रमस, वि. (सं.) चान्द्र, चान्द्रिक, सौम्य, सौमिक (स्त्री. चाद्री, चान्द्रिकी, सौम्या, सौमिकी) ।
चौद्रायण, सं. पुं. (सं. न.) व्रतभेदः, इंदुवतम् ।
चौप, सं. स्त्री. (हिं. चैपना) नि-, पीडनं, निर्बंधः, अतिमारः २. प्रेरणा, प्रचोदना ३. लोहनाडी-अभ्यस्य, तालकं ४. चरण-पाद, शब्दः ।
चौपना, क्रि. स. दे. 'दवाना' ।
चौप-चायँ चौपै-चौपै, सं. स्त्री. (अनु.) प्रलापः, प्रलपितं, प्रजल्पः-वित्तं, बाल, आलापः भाषणम् ।
चाक, सं. पुं. (फ्रा.) विदरः, रंघं, भेदः ।
 —करना, क्रि. स., विदृ (प्रे.), छिद्र (क. प. अ.) ।
चाक, सं. पुं. (अं.) खटी, खटिका, कठिनो ।
चाक, वि. (तु.) सबल, स्वस्थ, दृढतनु ।
 —चौबंद, वि., दृष्टपृष्ठ, पुष्टांग [-गी (स्त्री.)] २. अतंद्र, क्षिप्रकारिन्, लघु ।
चाक सं. पुं. (सं. चक्रं) कुलाल-कुम्भकार-चक्रि, चक्रं २. रथांगं, मंडलं ३. दे. 'गह्वारी' ४. पदचक्रं, पंथणीपाषाणः ५. शाणः-शो ।
चाकचक, वि. (तु. चाक) शृष्ट, सुरक्षित, दुर्गम ।
चाकचक्य, सं. स्त्री. (सं. न.) आभा, प्रभा, पुतिः-कान्तिः (स्त्री.) २. सौन्दर्यं, शोभा ।
चाकना, क्रि. सं. (हिं. चाक) रेखाभिः परिवृ-परिवेष्ट (प्रे.)
चाकर, सं. पुं. (फ्रा.) किकरः, दासः, सेवकः ।

चाकरानी, सं. स्त्री. (फ्रा. चाकर) दासी, सेविका ।
चाकरी, सं. स्त्री. (फ्रा. चाकर) सेना, परिचर्या ।
चाकसू, सं. पुं. (सं. चक्षुष्या) कुलाली, (भरण्य-) कुलथिका, लोचनहिता, दृक्-प्रसादा । २. चक्षुष्यावीजम् ।
चाकी, सं. स्त्री. (हिं. चाक) दे. 'चको' ।
चाकू, सं. पुं. (फ्रा.) लुरिका, कृपाणिका, असि-पुत्रिका, धेनुका, शस्त्री, शस्त्रिका ।
चाकृष, वि. (सं.) नेत्र, संबंधिन्-विषयक, २. चक्षुर्-नेत्र, प्राण्य ।
चाचर, सं. पुं. (सं. चचरी) चर्चरिका, **चाचरि**, सं. स्त्री. राग-गीति, भेदः २. होलि-कोत्सवः ३. आमोदप्रमोदाः ४. उपद्रवः, क्षोभः, कलहः ।
चाचा, सं. पुं. (सं. तातः >) पितृव्यः, पितृ-सौदरः २. (छोटा) सुल्लतातः ।
चाची, सं. स्त्री. (हिं. चाचा) पितृव्या, पितृव्यपत्नी ।
चाट, सं. स्त्री. (हिं. चाटना) स्वादलोलुपता, रसलालसा २. दे. 'चसका' ३. लालसा, उत्कटामिलापः ४. दे. 'आदत' ५. अव-उप-वृंशः, वृंजनम् ।
 —लेना, दे. 'चाटना' ।
चाटना, क्रि. स. (अनु. चटपट) अव-वा-परि-सं-, लिह् (अ. उ. अ.) २. ग्रस-ग्लस् (भ्वा. आ. से.) ।
चाटी, सं. स्त्री. (देश.) मंथनी, गार्गी, दधि-मंथनपात्रम् ।
चाडू, सं. पुं. (सं. पुं. न.) चाडूकिः (स्त्री.), चाडुवादः, प्रिय-मधुर, वचनं, मिथ्या, प्रशंसा-संस्तारः-स्त्ववः-स्तुतिः (स्त्री.), उपलालनम् ।
 —कार, सं. पुं. (सं.) मिथ्याप्रशंसकः, चाडु-वादिन् ।
 —कारी, सं. स्त्री. (सं. चाडुकारः >) चाडु-वादिस्वं, सांस्ववादिस्वं, दे. 'चाडु' ।
चाणक्य, सं. पुं. (सं.) कौटिल्यः, विश्वगुप्तः, द्रोमिणः, अंशुलः, चंद्रगुप्तमौर्यस्यासात्यः, चणकात्मजः ।
चातक, सं. पुं. (सं.) मेघजीवनः, तोककः, स्तोककः, सा(शा)रंगः ।

- चातकानन्दन, सं. पुं. (सं.) मेघः, जलदः, वारिदः २. प्रावृष् (स्त्री.), मेघागमः, वर्षाकालः ।
- चातुरी, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'चतुरता' ।
- चातुर्य, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'चतुरता' ।
- चादर, सं. स्त्री. (फ्रा.) दे. 'चदर' ।
- चाप, सं. पुं. (सं.) धनुष् (न.), इश्वसः २. अर्द्धवृक्षम् (गणित) ।
- चाप, सं. स्त्री. दे. 'चाप' (१, ४) ।
- चापद्, सं. स्त्री. (सं. चपटः >) कठिन-कीकसः-भूमिः (स्त्री.) । वि., समतल, सपाट ।
- चापना, क्रि. स., दे. 'दवाना' ।
- चापल्ल, सं. पुं. (फ्रा.) दे. 'चाडुकार' ।
- चापल्लुखी, सं. स्त्री. (फ्रा.) दे. 'चाडुकारी' ।
- चाबना, क्रि. स., दे. 'चराना' ।
- चाबी-भी, सं. स्त्री. (हिं. चाप = दबाव) साधारणी, कुचिका, तालिका, ताली, कुचिका, अंकुटः, लडाटकः ।
- देना, क्रि. स., कुचिकां आ-परि-वृत् (प्रे.), कुच-कुच (भ्वा. प. से.) ।
- चावुक, सं. पुं. (फा.) अथताडनी, कशा-पा, प्रतिभक्षः-वः, प्रतोटः ।
- मारना, क्रि. स., कशया तड्-चुदः-दंड् (चु.) ।
- सवार, सं. पुं., वानिविनेतु (पुं.), अध-शिषकः ।
- चाम, सं. पुं. [सं. चर्मन् (न.)] दे. 'चमडा' ।
- चामर, सं. पुं. (सं. पुं. न.) चमरं, चामरारी ।
- चामीकर, सं. पुं. (सं. न.) छुवणं २. धुस्तूरः ।
- चाय, सं. स्त्री. (चीनी, चा), चा, चविका ।
- पानी, पुं. स्त्री., जलपानं, च्चापानं, अल्प-स्तोक-आहारः; कल्पवर्षः ।
- चार, वि. (सं. चतुर) [सदा बहु. ; चत्वारः (पुं.); चतस्रः (स्त्री.); चत्वारि (न.)] । २. अनेक, बहु दे. कतिपय । सं. पुं., उक्ता संख्या तदबोधको अंकः (४) च ।
- का समूह, चतुष्टयं-थी, चतुष्कम् ।
- कीना, वि. चतुष्कोण, चतुरस्र-त्र ।
- खाना, वि. चित्र, वर्णित । सं. पुं., वर्णित-निमित्त, वस्त्रम् ।
- गुला, वि., चतुर्गुण-गित ।
- चीवारी, सं. स्त्री., वप्रः-प्रं, वरणः, प्राकारः ।
- प्रकर से, क्रि. वि., चतुर्था, प्रकार-चतुष्टयेन ।
- दार, क्रि. वि., चतुः (अव्य), चतुर्वारम् ।
- ऑख, मु. समागमः, संमिलनम् ।
- आदमी, मु., जनः-नाः, लोकः-काः ।
- दिन की आँदनी, मु. क्षणिकसुखम्, नश्वर-नन्दः ।
- चारज, सं. पुं. (अं. चार्ज) कार्यभारः, उत्तर-दायित्वं, २. रक्षणं, अवेक्षा ।
- चारजामा, सं. पुं. (फ्रा.) दे. 'जीन' ।
- चारण, सं. पुं. (सं.) नं (वं) दिच्, मागधः, वैतालिकः, स्तुतिपाठकः, संरतावकः ।
- चारपाई, सं. स्त्री. (सं. चतुष्पाद् >) सट्वा, मंचिका, पर्यकिका ।
- पर पदना, मु., व्याधित-रोगग्रस्त (वि.) भू ।
- चारवाक, सं. पुं. (सं. चार्वाकः) अनौश्वर-वादी आचार्यविशेषः ।
- चारा, सं. पुं. (हिं. चरना) दे. 'चरी' ।
- चारा, सं. पुं. (फ्रा.) उपचारः, उपायः, प्रति- (ती) कारः ।
- जोई, सं. स्त्री. (फ्रा.) अभियोगः, व्यवहारः ।
- जोई करना, क्रि. स., राजकुले निविद (प्रे.), अभियुज् (रु. आ. अ.; तु.) ।
- चारित्र, सं. पुं. (सं. न.) चारित्र्यम्, चरित्रम्, वृत्तं, चरितम्, दे. 'चरित्र' ।
- चारु, वि. (सं.) सुंदर, मनो-हर-रम, रुचिकर ।
- चारों तरफ, क्रि. वि., चतुर्दिशं, समंतात्, समंततः, परितः, सर्वत्र ।
- चाल, सं. स्त्री. (सं. चालः >) गमनं, चलनं, स्पन्दनं, स्फुरणं, सरणं, २. प्र-गतिः (स्त्री.), चारः, गमनप्रकारः ३. आचारः, व्यवहारः ४. उपायः, युक्तिः (स्त्री.) ५. छलं, कपटं ६. विधिः (पुं.), प्रकारः ७. रीतिः (स्त्री.), संप्रदायः ८. पर्यायः, वारः, परिवृत्तः (स्त्री.) ।
- चलन, सं. पुं., चरित्रं, आचरणं, वृत्तं, आचारः ।
- डाल, सं. स्त्री., आचारः, चरितम् ।
- दाज्ञ, वि. (हिं. + फ्रा.) मायाविन्, काप-टिक ।
- बाज़ी, सं. स्त्री., कपटं, माया, बंचनं-ना ।
- चलना, मु., वंच् (तु.), व्यासुद्ध् (प्रे.) ।
- में आना, मु., वंच्-व्यासुद्ध्-विप्रलम् (कर्म.) ।
- चालना, क्रि. स., दे. 'छानना' ।

शालनी, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'छलनी' ।
 शाला, सं. पुं. (सं. शालः >) प्रस्थानं, गमनं
 २. यात्रासुहृत् नवोदायाः प्रथमवारं पतिगृहे
 ततः पितृगृहे वा गमनम् ।
 शालाक, वि. (का.) भूतं, मायिकं २. निपुण,
 दक्ष ।
 शालाकी, सं. स्त्री. (का.) भूतता, कापट्यं
 २. नैपुण्यं, चातुर्यम् ।
 शालान, सं. पुं. दे., 'चलान' ।
 शालीस, वि. (सं. चत्वारिंशत्) । सं. पुं.,
 उक्ता संख्या, तद्बोधकावकौ (४०) च ।
 शालीसर्वा, वि. (हि. शालीस) चत्वारिंश
 [स्त्री. (स्त्री.)] चत्वारिंशत्संज्ञा [स्त्री. (स्त्री.)] ।
 शालीसा, सं. पुं. (हि. शालीस) चत्वारिं-
 शत्पदार्थसमूहः २. चत्वारिंशत् दिवसाः
 वर्षाणि वा ३. चत्वारिंशत्पद्यात्मकग्रन्थः ।
 चाव, सं. पुं. (हि. चाह) अभिलाषः, लालसा,
 उत्कटेच्छा २. अनुरागः, प्रेमन् (पुं. न.)
 ३. अभिरुचिः (स्त्री.) ४. उत्साहः ५. लालनम् ।
 —चोचला, सं. पुं., उप. लालनं, परिश्वंगः ।
 —निकालना, मु., अभिलाषं-इच्छां पूर्. (चु.)-
 निवृत् (प्रे.)
 चावही, सं. स्त्री. दे. 'पद्माव' ।
 चावल, सं. पुं. (सं. तंडुलः) धान्यास्थि (न.),
 धान्य-शालि, सारः दे. 'धान', 'भात' २.
 गुजायाः अष्टमभागमितः तोलः ।
 —का धोवन, सं. पुं., तण्डुलोदकम्, तण्डु-
 लोदकम् ।
 चासनी, सं. स्त्री. (का.) गुड-सिता-शर्करा-
 रसः २. दे. 'चसका' ।
 चाह, सं. स्त्री. (सं. इच्छा) दे. 'चाव' (१-२) ।
 ३. आदरः, प्रतिष्ठा ४. आवश्यकता, प्रयो-
 जनम् ।
 चाहता, वि. (हि. चाह) दयित, प्रिय, कांत ।
 चाहना, कि. स. (हि. चाह) अभिलष (स्वा.
 दि. प. से.), इप् (तु. प. से.), इच्छम्
 (स्वा. आ. से.), कामयते, (सन्नतं यद्
 'काम' से भी अनुवाद करते हैं; उ. वह जाना
 चाहता है = स गंतुकामः अथवा जिगमिषति)
 २. रिद्धि (दि. प. वे.), अनुरंजु (कर्म.),
 अनुरागवत्-मोहित (वि.) भू ३. प्र-यत्
 (स्वा. आ. से.) ४. दे. 'हृदना' ।

सं. स्त्री., अभिलाषः, इच्छा; अनुरागः, स्नेहः;
 आवश्यकता इ. ।
 चाहनेयोग्य, वि., अभिलषितव्य, एषणीय;
 दयित, प्रिय इ. ।
 चाहनेशाला, वि., इच्छु-च्छुक, अभिलाषिन् ;
 अनुरागिन्, स्नेहिन् ।
 चाहिए, अव्य. (हि. चाहना) उचितं,
 उपयुक्तं, न्याय्यं । (-तव्य, अनौय, एतत् आदि
 से भी इसका अनुवाद करते हैं; उ. करना
 चाहिए=कर्तव्यं करणीयं, कार्य इ.) ।
 चाही, वि. (का. चाह) कूप, सिक-संबधिन् ।
 चाहे, अव्य. (हि. चाहना) यथाकामं, यथा-
 भिलाषं, स्वैरं, स्वच्छंदं २. वा, अथवा, यदा ।
 चिउँटा, सं. पुं. (हि. चिमटना) पिपीलिका,
 पीलकः ।
 चिउँटी, सं. स्त्री. (हि. चिउँटा) (पुं.) पिपीलः,
 पीलकः, पिपीलिकः । [पिपीली, पिपीलका
 (स्त्री.)] ।
 —की चाल, मु., मंद-मंथर-गतिः (स्त्री.) ।
 —के पर निकलना, मु., आसन्नमृत्यु, निधनो-
 न्मुख ।
 चिघाव, सं. स्त्री. (सं. चीत्कारः) वृहितं
 २. महानादः, तुमुलध्वनिः (पुं.) ।
 चिघावना, कि. अ. (हि. चिघाव) इह
 (स्वा. प. से.) २. उच्चैः नद् (स्वा. प. से.) ।
 चिघा, सं. स्त्री. (सं.) अलिका, तित्तिडि(डी)-
 का २. अलिका-चिघा, फलम् ३. रक्ता, गुंजा ।
 चिन्तक, वि. (सं.) विचारक, विवेचक, ध्यातु ।
 सं. पुं. (सं.) तत्त्वज्ञः, दार्शनिकः ।
 चिन्तन, सं. पुं. (सं. न.) चिन्तना, ध्यानं,
 स्मरणं २. विचारणं, विवेचनम् ।
 चिन्तनीय, वि. (हि.) चिन्ताप्रद, उद्देगकर
 (स्त्री स्त्री.), २. ध्येय, भावनीय ३. विचार्य,
 विवेचनीय ।
 चिन्ता, सं. स्त्री. (सं.) उद्देगः, औत्सुक्यं,
 व्यग्रता, रणरणकः, आकुलता, उत्कलिका,
 मनस्तापः २. आ-ध्यानं-चिन्तनम् ।
 —आतुर, वि. (सं.) संचित, चिन्तित, चिन्ता-
 मग्न, उद्विग्न, व्याकुल ।
 —जनक, वि., चिन्ता-आकुलता, प्रद-उद्गावक ।
 —मणि, सं. पुं. (सं.) स्पर्शमणिः ।

चिञ्चित

[२०४]

चिञ्ची

चिञ्चित, वि. (सं.) दे. 'चिञ्चितानुर' २. विचारित, ध्यात ।
 चिञ्चि, वि. (सं.) दे. 'चिञ्चिनीय' (२-३)
 चिञ्ची, सं. स्त्री. (देश.) खंडः, लवः ।
 चिञ्चिपञ्जी, सं. पुं. (अं.) अक्रोकामद्वादीपस्य वनमानुषभेदः ।
 चिञ्चिक, सं. स्त्री. (तु. चिक) तिरस्करिणी, प्रतिसीरा, व्यवथा, व्यवधानं, आवरणं, मांसिकः, विदासिष्ठ, शो (सो) निकः ।
 चिञ्चिक, सं. पुं. (अं. चोक) देशदेशः ।
 चिञ्चिक, सं. स्त्री. (अनु.) आकस्मिकी कटिव्यथा ।
 चिञ्चिकन, सं. पुं. (प्रा.) कामिकवल्गुभेदः, चिञ्चिकणम् ।
 चिञ्चिकना, वि. (सं. चिकण) तैलमय (-यो स्त्री.), तैलाक, तैल, युक्त-वत् २. स्निग्ध, मसृण, रूक्षण ३. परिष्कृत, संस्कृत ४. पिच्छिल, मेदुर ५. सम, सपाट । [चिञ्चिकनी (स्त्री.) चिञ्चिकणा इ.] ।
 —घडा, सं. पुं., निर्लेज-अपत्रप, सतुष्यः ।
 —मिष्ट्री, सं. स्त्री., मृत्तिका, मृद (स्त्री.) ।
 —चुपची कर्ते करना, मु., चाटुवाट्टैः वंच् (चु.)-प्रतृ (प्रे.) ।
 चिञ्चिकनाई, सं. स्त्री. (हि. चिकना) चिञ्चिकता, स्निग्धता, रूक्षता २. समता, सपाटता ३. घृतादयः स्निग्धपदार्थाः ।
 चिञ्चिकनापन, सं. पुं. } (हि. चिकना) दे.
 चिञ्चिकनाहट सं. स्त्री. } चिञ्चिकनाई (१-२) ।
 चिञ्चिकसक, सं. पुं. (सं.) वैद्यः, चक्रः, रोग-हृत्-हारिन् (पुं.), अगदंकारः, मिषञ् (पुं.) ।
 चिञ्चिकसा, सं. स्त्री. (सं.) औषध-उपचारः, उपक्रमः, रोगप्रतीकारः २. वैद्यकं ३. औषधं, भेषजम् ।
 चिञ्चिकरसालय, सं. पुं. (सं.) आहुरालयः ।
 चिञ्चिकुटी, सं. स्त्री., दे. 'चुटकी' ।
 चिञ्चिकुर, सं. पुं. (सं.) केशः, मूर्धजः, शिरसिजः २. पर्वतः ३. काष्ठमार्जारः, दे. 'गिलहरी' ।
 चिञ्चिकण, वि. (सं.) इ. 'चिकना' ।
 चिञ्चिकुरी, सं. स्त्री. (सं. चिकुरः >), 'गिलहरी' ।
 चिञ्चिकी, सं. स्त्री. (देश.) पशुयुक्ता, कीटभेदः ।
 चिञ्चिकिदा, सं. स्त्री. (सं. चिञ्चितः) अहिफला, दीर्घफला, सुदीर्घः, गृहकूलकः ।

चिञ्चि, सं. स्त्री. (सं. चिञ्चि >) पत्रखंडः-दं २. वल्गुशकलः-लम् ।
 —नचीस, सं. पुं. (हि. + प्रा.) लेखकः, कावस्थः, लिपिकरः ।
 चिञ्चिकना, कि. अ. (अनु.) स्फुट् (तु. प. सु.)-भञ्ज-भिद् (कर्म.) २. सचिञ्चितगुह्यं ज्वल् (भवा. प. से.) ३. दे. 'खीञ्चन' ।
 चिञ्चिकाना, कि. स., व. 'चिञ्चिकना' के प्रे. रूप ।
 चिञ्चिदा, वि. (सं. चिञ्चित) श्वेत, शुद्ध, धवल २. दे. 'रूपया' ।
 चिञ्चिदा, सं. पुं. (हि. चिञ्चि) आयन्वय-देवा-देव, पञ्जिः (खं.)-पञ्जि-पञ्जिका, दे. 'वही-खाता' २. व्यवसूची ३. सूची ४. लाभालाभ-दानिलाभ-पत्रम् ।
 कथा—, सं. पुं., युष्म-युष्म-वृत्तांतः ।
 चिञ्चिटी, सं. स्त्री. (हि. चिञ्चि), (संदेश-) पत्रं, लेखः-रुच्यं २. लिखितः पत्रखंडः ३. प्रमाणापत्रं ४-५ आज्ञा-निर्माण-पत्रम् ।
 —पत्री, सं. स्त्री., पत्रव्यहारः, पत्र-विनिमयः-संवादः ।
 —रसौं, सं. पुं. (हि. + प्रा.) पत्रवाहकः, लेखहारः-रकः ।
 चिञ्चि, सं. स्त्री., दे. 'चिञ्चि' ।
 चिञ्चिचिदा, वि. (हि. चिञ्चिचिदाना) शीघ्र-कोपिन्, सुलभकोप, कोपन, कोपन ।
 चिञ्चिचिदाना, कि. अ. (अनु.) ईषत् कुप्-रूप (दि. प. से.)-कुप् (दि. प. अ.), संतप्त-कुप् (कर्म.) ।
 चिञ्चिचिदाहट, सं. स्त्री. (हि. चिञ्चिचिदाना) सुलभकोपता, दुर्नैनायितं, कोपनता ।
 चिञ्चिचा, सं. पुं. (सं. चिञ्चितः) चिञ्चिचः, पृथुकः, चिञ्चि (पु.)-टः-टकः ।
 चिञ्चिचा, सं. पुं. (सं. चटकः) कलविकः-नाः, गृहनीडः, चित्रपृष्ठः, कामुकः ।
 चिञ्चिद्या, सं. स्त्री. (हि. चिञ्चि) पक्षिन्, खगः, २. क्रीडापत्ररंगभेदः ३. दे. 'चिञ्ची' ।
 —घर, सं. पुं., जन्तुवागारं, प्राणिशाला २. पक्षिशाला, पंजरम् ।
 चिञ्चिदी, सं. स्त्री. (हि. चिञ्चि) चट्टिका, चटकका, कलविकी-गी २-३. दे. 'चिञ्चिद्या' (१-२) ।
 —का बच्चा, सं. पुं., चाटकरः ।

- की बच्ची, सं. स्त्री., नटका ।
 —मार, सं. पुं., जालिकः, शाकनिकः, लुब्धकः, पक्षिप्राइकः ।
 चिद, सं. स्त्री. (हिं. चिदचिदाना) धृणा, अहचिः (स्त्री.), जुगुप्सा, विदेषः ।
 चिदना, क्रि. अ., दे. 'चिदचिदाना' ।
 चिदाना, क्रि. स., व. 'चिदचिदाना' के प्रे. रूप ।
 चित, सं. पुं. (सं. चित्तं) सामसम् ।
 —चोर, सं. पुं., मनोहरः, निशाकर्षकः २. प्रियः, दयितः, कातः ।
 —देना या लगाना, मु., अवहित (वि.) मू., अवधा (जु. उ. अ.) ।
 —से उतरना, मु., विस्मृ (कर्म), दे. 'भूलना' ।
 चित, वि. (सं. चित >) उत्पान, उत्पान-अवपृष्ठ, शय-शायिन् ।
 —करना, मु., (शब्द मलयुद्धे) अवपृष्ठशायिन् कृ; विजि (स्वा. आ. अ.) ।
 —होना, मु., मूर्च्छ (स्वा. प. से.) ।
 चित, वि. (सं. >) उत्पान, अध्वोस्यशयित ।
 चितकबरा, वि. (सं. चित + कर्तुर >) चित्र, कर्तुर, चित्रविचित्र, कर्तुरित, चित्रित, शबल, चित्रांग (गी स्त्री.) ।
 चितला, वि. दे. 'चितकबरा' ।
 चितवन, सं. स्त्री. (हिं. चेतना) इक्षु नयन-दृष्टि, पातः, आलोकितं, वीक्षितं, २. कटाक्षः, अपांगदृष्टिः (स्त्री.), नयनोपांत-सात्रि, विलो-कितम् ।
 चिता, सं. स्त्री. (सं. चित्या, चितोतिः (स्त्री.), चित्यं, चैस्थं, चिताचूडकं, काष्ठमठी ।
 —भूमि, सं. स्त्री. (सं.) इमशानं, पित्रु-वनं काननम् ।
 —साधन, सं. पुं. (सं. न.) इमशाने मंत्रानुष्ठानम् ।
 चिताना, क्रि. स. (हिं. चेतना) (पूर्व-प्राक्) प्रबुध् (प्रे.) अनुज्ञास् (अ. प. से.), उप-दिश् (तु. प. अ.) २. अनु, स्मृ (प्रे.), उद्-अनु-बुध् (प्रे.) ।
 चितावती, सं. स्त्री., दे. 'चेतावती' ।
 चितेरा, सं. पुं. [सं. चित्रक(का)रः] चित्रकः, रङ्गजीवकः, रंजकः, संस्कारः, चित्र, लेखकः-कृत् (पुं.), आलेखकः, तैलिकः ।

- चितेरी-रिन, सं. स्त्री. (हिं. चितेरा) चित्र-करी-लेखिका, तैलिकी २. चित्रकारपत्नी ।
 चित्त, सं. पुं. (सं. न.) अंतःकरणं, चेतम्-मनस्-हृद् (न.), हृदयं, मानसं २. धीः-बुद्धिः-मति (स्त्री.), प्रज्ञा, श्रेमुषी ३. अवधानं, मनोयोगः, अवस्था ४. स्मृतिः (स्त्री.), धारणा ।
 —उद्रेक, सं. पुं. (सं.) गर्वः, दर्पः, मदः, अहं-कारः, अहंमानः ।
 —विशेष, सं. पुं. (सं.) मनश्चान्स्थं, मनःक्षोभः ।
 —विभ्रम, सं. पुं. (सं.) चित्तव्यामोहः, मनोभ्रान्तिः (स्त्री.) २. उन्मादः ।
 —वृत्ति, सं. स्त्री. (सं.) मनो-गतिः-वृत्तिः (स्त्री.), चित्तावस्था ।
 —करना, मु., अभिलप् (स्वा. प. से.), इष् (तु. प. से.) ।
 चित्ति, सं. स्त्री. (सं.) बुद्धिः (स्त्री.), प्रज्ञा २. चिन्तनम् ३. ख्यातिः (स्त्री.) ४. कर्मन् (न.) ५. भक्तिः (स्त्री.) ६. प्रयोजनम् ।
 चित्ती, सं. स्त्री. (सं. चित्रं <) विदुः (पुं.), अंकः, चिह्नं २. चित्रा, चित्रसर्पः ३. क्षत-चिह्न-अंकः ।
 —दार, वि. (हिं. + फ्रा.) विदुचिहित, चित्र ।
 चित्र, सं. पुं. (सं. न.) प्रति-कृतिः (स्त्री.)-छंदकं-च्छाया-रूपं, आलेख्यं, प्रतिमा । वि., कर्तुर, शबल, विविधवर्ण ।
 —कला, सं. स्त्री. दे. 'चित्रकारी' ।
 —कार, सं. पुं. (सं.) दे. 'चितेरा' ।
 —कारी, सं. स्त्री. (सं. चित्रकार <) चित्र-कला-क्रिया-कर्मन् (न.)-विद्या २. आ-चित्र-लेखनम् ।
 —मय, वि. (सं.) सचित्र, चित्रबहुल, चित्राकित ।
 —वत्, वि. (सं.) चित्र-आलेख्य, तुव्य-सग-सदृश २. निश्चल, रतन्ध, स्थिर ।
 —विचित्र, वि. (सं.) शबल, कर्तुर, बहुरंग ।
 —शाला, सं. स्त्री. (सं.) आलेख्य, शाला-भवनम् ।
 चित्रक, सं. पुं. (सं.) चित्र-कायः, व्याघ्रः, मृगतकः, छुद्रशार्ङ्गलः, उपव्याघ्रः, २. दे. 'चितेरा' ।
 चित्रकूट, सं. पुं. (सं.) पर्वतविशेषः ।

चित्रगुप्त

[२०६]

चिरायता

चित्रगुप्त, सं. पुं. (सं.) यमलेखकः ।
 चित्रा, सं. स्त्री. (सं.) चतुर्दशनाक्षत्रं । वि.,
 कर्तुर, शबल ।
 चित्राङ्गा, सं. पुं. (हिं. चीयना) चीरं,
 चीवरं, कर्पटः, नक्तकः ।
 चिन्नक, सं. स्त्री. (हिं. चिन्नगी) सदाहा पीडा
 २. मूत्रनाड्याः पीडा ।
 चिन्नगारी, सं. स्त्री. (सं. चूर्ण + अंगारः >)
 क्षुद्रांगारः-रं २. अग्नि-उबलन, कण-कणिका,
 वि-स्फुल्लिगः-नंगा ।
 चिन्नगी, सं. स्त्री. (हिं. चिन्नगारी) दे. 'चिन्न-
 गारी' चपलबालः ।
 चिन्नाई, सं. स्त्री. (हिं. चिन्ना) इष्टका-
 नयनं । २-२. भित्ति-गृह्, -निर्माणम् ।
 चिन्मय, वि. (सं.) ज्ञानमय । सं. पुं. परमे-
 श्वरः ।
 चिन्ह, सं. पुं. दे. 'चिह्न' ।
 चिन्हित, वि., दे. 'चिहित' ।
 चिपकना, कि. अ. (अनु. चिपचिप) संदिलष
 (दि. प. अ.), संलग् (भ्वा. प. से.)
 अनु-आ-सं-संज् (कर्म.) ।
 चिपकाना, कि. स., व. 'चिपकना' के प्रे. रूप ।
 चिपचिप, सं. स्त्री. (अनु.) चिपचिपशब्दः ।
 चिपचिपा, वि. (अनु.) श्यान, सांद्र, संलग्-
 शील ।
 चिपचिपाना, कि. अ. (अनु. चिपचिप)
 संलग्शील-सांद्र(वि.)भू २. दे. 'चिपकना' ।
 चिपचिपाहट, सं. स्त्री. (हिं. चिपचिपाना)
 संलग्शीलता, श्यानता, सांद्रता ।
 चिपटना, कि. अ. (सं. चिपिट) दे. 'चिप-
 कना' २. आलिम् (भ्वा. प. से.), परि-
 स्वञ् (भ्वा. आ. अ.) ।
 चिपटा, वि. (सं. चिपिट <) अभुष, समरेख,
 सम, समस्थ, सपाट ।
 चिपटाना, कि. स., व. 'चिपटना' के प्रे. रूप ।
 चिबुक, सं. पुं. (सं. चिबु(कु)क) दे. 'ठोड़ी' ।
 चिमटना, कि. अ. (हिं. चिपटना) दे. 'चिप-
 टना' (१-२) ।
 चिमटा, सं. पुं. (हिं. चिमटना) संदंश-
 शकः, कंक, मुख-वदनम् ।
 चिमटाना, कि. स., व. 'चिपटना' के प्रे. रूप ।

चिमटी, सं. स्त्री. (हिं. चिमटा) संदंशिका,
 लघु-कंकमुखः-सम् ।
 चिमडा, वि., दे. 'लचीला' ।
 चिमनी, सं. स्त्री. (अं.) धूम, नाली-रंधं
 २. अग्निकुण्डं, तुली-तिलः (स्त्री.) ।
 चिरंजीव, वि. (सं.) दीर्घ-चिर-जीविन्-
 आयुस् २. दीर्घायुः मव ।
 चिरंतन, वि. (सं.) चिरत्न [-त्नी (स्त्री.)],
 पुरातन [-नी (स्त्री.)], प्राचीन, प्राक्तन
 [-नो (स्त्री.)] ।
 चिर, वि. (सं.) दीर्घ-चिर-कालिक-कालीन
 २. चिरकाल-दीर्घकाल-स्थायिन् ३. दे. 'चिरं-
 तन' ।
 —काल, सं. पुं. (सं.) दीर्घतमयः, महान्
 कालः ।
 —कालिक, —कालीन, वि. (सं.) दे.
 'चिरंतन' । (रोग) अविसर्गिन्, कालिक,
 दीर्घस्थायिन् ।
 —जीवी, वि. (सं. विन्) दे. 'चिरंजीव' ।
 —स्थायी, वि. (सं. विन्) दीर्घकाल, ध्रुव,
 स्थिर, अशोभनाशिन् ।
 चिरकना, कि. अ. (अनु०) अल्प-स्तोकं इदं
 (भ्वा. आ. अ.) २. असङ्गत अल्पमलं उत्पन्नुं
 (तु. प. अ.) ।
 चिरकुट, (सं. नीरम्) दे. 'चिपडा' ।
 चिरचिरा, वि., दे. 'चिह्नचिह्ना' ।
 चिरक, वि. (सं.) पुराण, पुरातन, प्रतन,
 प्रल ।
 चिरना, कि. अ. (सं. चीर्ण >) स्फुट (तु.
 प. से.), विदू-विभिद्-मंज् (कर्म.) ।
 चिरवाई, सं. स्त्री. (हिं. चिरवाना) विदलनं,
 विदारणं, विपाटनं, २. विदारण, वेतनं-ग्रह्या ।
 चिरवाना, कि. प्रे., व. 'चीरना' के प्रे. रूप ।
 चिराइता, सं. पुं., दे. 'चिरायता' ।
 चिराई, सं. स्त्री. (हिं. चिराना) दे. 'चिरवाई' ।
 चिरापा, सं. पुं. (प्रा. चराप) दीपः, दीपकः ।
 —दान, सं. पुं., दीप, आभारः-वृक्षः ।
 चिराना, कि. प्रे., व. 'चीरना' के प्रे. रूप ।
 चिराईच, सं. स्त्री. (सं. चर्मगंधः) चर्मवस्त्रादि-
 उबलनगंधः, दुर्-पूति, गंधः ।
 चिरायता, सं. पुं. (सं. चिरतिकः) भूनिव,
 दुः, तिजकः, किरातकः ।

चिरायु

[२००]

चीर

चिरायु, वि. (सं. चिरायुत्) दे. 'चिरजीव' (१) ।

चिरौजी, सं. स्त्री. (सं. चारबीज >) (वृक्ष) चारः, चारकः, खरस्कंधः, बहुवल्कलः, प्रियालः २. तस्य फलं ३. तद्वीजगर्भः ।

चिलक, सं. स्त्री., दे. १. 'चमक' २. 'टीस' ।

चिलकना, कि. आ., दे. 'चमकना' २. दे. 'टीस मारना' ।

चिलगोत्रा, सं. पुं. (फा.) जलगोजकं, निकोचकं, चालफलं, संकोचम् ।

चिलम, सं. स्त्री. (फा.) धूमपानचषकः ।

चिलमची, सं. स्त्री. (फा.) हस्तधावनी, करक्षालनी ।

चिलमन, सं. स्त्री. (फा.) दे. 'चिक' (१) ।

चिल्लपो, सं. स्त्री. (हिं. चिल्लाना + अनु.) कोलाहलः, उत्क्रोशः, वि. राधः, कलकलः ।

चिल्ला, सं. पुं. (फा.) चत्वारिंशदिवसात्मकः कालः २. चत्वारिंशदिनव्रतम् ।

चिल्ला, सं. पु. (देश.) ज्या, मौवी, प्रत्यंचा, धनुर्धुणः ।

—चडाना, कि. स., चापं अधिल्यं कृ, धनुषि मौवी आहृ (प्रे. आरोपयति) ।

चिल्लाना, कि. अ. (अनु. चिलचिल) कलकल-कोलाहलं कृ, वि., ह (अ. प. से.), उत्क्रुश (भ्वा. प. से.) २. चीत्कारं कृ, उच्चैः आक्रु (भ्वा. वा. से.) ३. दे. 'रोना' ।

चिल्लाहट, सं. स्त्री. (हिं. चिल्लाना) दे. 'चिल्लपो' ।

चिल्लिका, सं. स्त्री. (सं.) चिल्ली, हिल्ली, शूकरी २. शाकराजः, रानशाकः ३. विद्युत्तद्वि (स्त्री.) ।

चिल्ल, सं. पुं. (सं. न.) लक्षणं, लाञ्छनं, लिंगं, अभिज्ञानं, अंकः ।

चिल्लित, वि. (सं.) अंकित, स, निङ्-लक्षणलाञ्छन ।

चीटा, सं. पुं., दे. 'चिउटा' ।

चीटी, सं. स्त्री., दे. 'चिउटी' ।

चीकट, सं. स्त्री. (हिं. कीचट) तैलमलं, दे. 'तलछट' । वि., तैलमय [-यो (स्त्री.)] ।

चीख, सं. स्त्री. (सं. चीत्कारः) उत्क्रोशः, आक्रुदितं, उच्चक्रुशं, रवः-रावः ।

चीखना, कि. स. (सं. चषणं) दे. 'चखना' ।

चीखना, कि. अ. (सं. ची. करणं) दे. 'चिखाना' । (२) उच्चैः बद्लप (भ्वा. प. से.) ।

चीङ्ग, सं. स्त्री. (फा.) वस्तु (न.), द्रव्यं, पदार्थः ।

—वस्तु, सं. स्त्री. (फा. + सं.) वस्तुजातं, सामग्री २. शुद्धोपस्करः २. आभूषणादिकम् ।

चीङ्ग, सं. पुं. (सं. चीङ्गा) दाहनांघ्रा, मङ्गल्या, भूतमारी, गन्धद्रव्यभेदः २. चीरपणः शालः, सर्जः, दीर्घशालः (वृक्ष) ।

चीतल, वि., (सं. चित्रल) दे. 'चित्तकवरा' । सं. पुं., चित्रमृगः २. चित्रसर्पः, अजगरभेदः ।

चीता, सं. पुं. (सं. चित्रकः) दे. 'चित्रक' ।

चीता, वि. (हिं. चेतना) विचारित, चिंतित ।

चीत्कार, सं. पुं. (सं.) दे. 'चीख' २. दे. 'चिल्लपो' ।

चीथडा, सं. पुं., दे. 'चिथडा' ।

चीथना, कि. स. (सं. चोर्ण >) दे. 'फाडना' तथा 'पीसना' ।

चीन, सं. पुं. (सं.) देशविशेषः २. अंकुशभेदः ३. मृगभेदः ।

चीनी, वि. (सं. चीनः) चीन, वासिन्संबन्धिन्, चैन । सं. स्त्री., सिता, शुक्ला ।

चीपड, सं. पुं. (अनु. चिप) दूषी-पिः (स्त्री.), दूषिका, पिचोडकं, पिज(जे)टः, नेत्रमलम् ।

चीक, सं. पुं. (अं.) पुरोगम, प्रधानपुरुषः, नायकः, अध्यक्षः । वि., प्रधान, मुख्य, वृद्ध, विशिष्ट ।

—एडितर, सं. पुं. (अं) मुख्य-प्रधान, सम्पादकः ।

—कमिशनर, सं. पुं. (अं) मुख्ययुक्तः ।

—कोर्ट, सं. पुं. (अं) मुख्यन्यायालयः ।

—जज, सं. पुं. (अं) मुख्यन्यायाधीशः ।

—जस्टिस, सं. पुं. (अं) मुख्यन्यायाधिपतिः ।

चीमड, वि. (हिं. चमडा) दे. 'लचीला' ।

चीर, सं. पुं. (सं. न.) जीर्णकृत् (लंठः-लं, कर्पटः, नक्तकः, चीवरं २. वसनं, वस्त्रं ३. वृक्षत्वच् (स्त्री.) ४. मुनि, भिक्षु-वस्त्रम् ।

चीर, सं. पुं. (हिं. चीरना) दीर्घ, छेदः-भेदः-स्फोटः-भिदा ।

—फाड, सं. स्त्री., अंगच्छेदः, व्यवच्छेदः ।

चीरना, कि. स. (सं. चीर्ण) क्रकचेन छिद्
(क. प. अ.)-दृ (क. प. से., प्रे.)-पद् (जु)
२. विश्व (क. प. से.), खंड (जु), मिद्
(क. प. अ.) । सं. पुं., विदारणं, छेदनं,
भेदनं, स्फोटनम् ।

चीरने वाला, सं. पुं., विदारकः, छेदकः इ. ।
चीरा हुआ, वि., विदारित, छेदित, भेदित,
चीर्ण, विदीर्ण ।

—फाड़ना, सं. पुं., अंगच्छेदनं, व्यवच्छेदनम् ।
चीरा, सं. पुं. (हि. चीरना) शक, उप-
चारः-उपायः-कर्मन् (न.)-क्रिया २. व्रणः-गम् ।
—देना, कि. स., श्लेष्म उपचर् (भ्वा. प.
से.)-साप् (प्रे.) ।

चीरा, सं. पुं. (सं. चीर >) निश्रोणीषः-धं,
चीरम् ।

चीर्ण, वि. (सं.) विदारित, छेदित, दीर्ण
२. अनुष्ठित-कृत, सम्पादित ।

—पर्ण, सं. पुं. (सं.) खजूराः, दुरारोहा,
यवनेष्टा २. निम्बः, अरिष्टः, तिक्तकः ।

चील, सं. स्त्री. (सं. चिलः) चिल्ला, आतापिन्,
शत्रुनिः (पुं.), कंठनीडकः, चिरंमण,
सत्काण्डः ।

—का मृत, सु., दुर्लभ-अप्राप्य-वस्तु (न.) ।

चीवर, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'चीर' (१, २. ४) ।

चीस, सं. स्त्री., दे. 'टीस' ।

चुंगल, सं. पुं. दे. 'चंगुल' ।

चुंगी, सं. स्त्री. (हि. चुंगल) नगरः-करः-
शुल्कः-कं २. किञ्चिन्मात्रं-अल्पपरिमाणं वस्तु
(न.) ।

—खाना, सं. पुं., शुल्कशाला ।

चुंचुना, सं. पुं., दे. 'चुनचुना' ।

चुंधला, सं. पुं. (हि. चुँधलना) निनेषकः,
निमीलकः ।

चुंधलाना, कि. अ. (हि. चौ=चार + सं. अंध >)
चाक्रचक्रेण अस्पष्ट-मंद-बंध दृश् (भ्वा. प.
अ.),-ईक्ष् (भ्वा. आ. से.), नेत्रतेजः प्रतिहन्
(कर्म.) ।

चुंधा, वि. (हि. चौ + सं. अंध >) ईषदंध, मंद-
दृष्टि २. चिह्न, पिह ३. दे. 'चुंधला' ४. क्षुद्र-
नयन ।

चुंधियाना, कि. अ., दे. 'चुंधलाना' ।

चुंबक, सं. पुं. (सं.) निसकः, चुंबित्-निसित्
[-ओ (स्त्री.)] २. कायुकः, लंपटः ३. धूर्तः
४. चुंबक-प्रस्तरः-मणिः (पुं.), लोह, कांतः-
चुम्बकः, अयस्कांतः, अयोमणिः ।

चुंबन, सं. पुं. (सं. न.) चुम्बः-वा २. निसनं,
अभरणम् ।

चुंबा, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'चुम्बन' ।

चुंबित, वि. (सं.) निसित, ओष्ठस्पृष्ट २. लालित
३. स्पृष्ट ।

चुंबी, वि. (सं. चुंबित्) चुम्बक, निसक
२. स्पृशक, स्पृशित् ! (प्रायः समासंत नैः,
उ. गगनचुम्बी इ.) ।

चुकंदर, सं. पुं. (फ़ा.) कन्दभेदः ।

चुकता, वि. (हि. चुकना) समाप्त, निःशेष ।

चुकती, सं. स्त्री. (हि. चुकना) समाप्तिः-अव-
सितिः (स्त्री.) ।

चुकना, कि. अ. (सं. च्युत् + ऊ >) पूर-समाप्
अवसो (कर्म. अवसीयते), अंत-समाप्ति गम्,
निष्-सं-पद् (दि. आ. अ.) । २. दे. 'चूकना' ।

चुकाना, कि. स. (हि. चुकना) ऋणं दा-
शुध् (प्रे.) २. (विवादं) प्र-शम् (प्रे., शम-
यति), सं-समा-धा (जु. उ. अ.) ३. सं-
निष्-पद् (प्रे.), संपूर् (जु), अवसो (प्रे.,
अवसाययति) ।

चुकौता, सं. पुं. (हि. चुकना) ऋण-परि-
शोधः-शुद्धिः (स्त्री.) २. सं-समा-धानं,
३. निर्धारणं-णा, निश्चयः ।

चुक, सं. पुं. (सं. न.) तितडीकं, वृश्चाम्लं,
महाम्लं, चुककं २. दे. 'कांजी' ३. अम्लता ।

चुगाना, कि. स. (सं. चयनं) चंच्वा आद्रा
(जु. वा. अ.)-ग्रह (क. प. से.)-भक्ष् (जु.)
२. चंच्वा ग्रह (भ्वा. प. अ.)-अभिहन् (अ.
प. अ.) । सं. पुं., चंच्वा आदानं-ग्रहणं-
तुडेन प्रहरणम् ।

चुगलखोर, सं. पुं. (फ़ा.) पिशुनः, पृष्ठमांसादः,
परोक्षे निदकः-परिवादपरः, कर्णजपः ।

चुगलखोरी, सं. स्त्री. (फ़ा.) चुगलखोर) पैशुन्यं,
पिशुनता, परोक्ष-निद्रा-परिवादः, उपजापः ।

चुगली, सं. स्त्री. (फ़ा.) दे. 'चुगलखोरी' ।

करना या खाना, कि. स., परोक्षे-पृष्ठतः
निदं अथवा अल्प-परि-वद् (दोनो भ्वा. प.
से.)-अवि-भा-सिप् (तु. प. अ.) ।

सुगवाना

[२०९]

सुप

सुगवाना, कि. प्रे., व. 'सुगना' के प्रे. रूप ।
 सुगा, सुग्गा, सं. पुं. (हि. सुगना) खग-
 पक्षि, मक्ष्य-खाद्यम् ।
 सुगाई, सं. स्त्री. (हि. सुगाना) चञ्चा
 आदापन-शाम्राहः २. तस्य भृत्या वेतनं वा ।
 सुगाना, कि. सं., व. 'सुगना' के प्रे. रूप ।
 पक्षिम्यः अन्नकणान् विकृ (तु. प. से.) ।
 सुगाना, कि. अ., दे. 'टपकना' ।
 सुटकला, सं. पुं. दे. 'सुटकला' ।
 सुटकी, सं. स्त्री. (अनु. सुट सुट) छोटिका,
 मु(कु)सुटी २. अंगुलीपीढनं २. चरणांगुलीयकम् ।
 —सुजाना, तु., छोटिका कृ अथवा दा ।
 —सुजाते, मु., आशु, द्राक्, सपदि, सषः
 (सब अन्व.) ।
 —भर, मु., अरयत्पं, किचिन्मात्रम् ।
 —भरना, मु., छोटिकया पीढ (जु.) ।
 सुटकियो मे उजाना, मु., सुकर-साधारण-
 परिहासमिव मन् (दि. आ. अ.) ।
 —लेना, मु., अव-उप-हस् (भ्वा. प. से.) ।
 सुटकुला, सं. पुं. (हि. सुटकी) नमनं (न.),
 परिहास-नमनं, वाक्य-उक्तिः (स्त्री.)-आलापः-
 भाषण २. अमोघ-विशिष्ट, योग-कल्पः ।
 सुटिया, सं. स्त्री., दे. 'बोटी' ।
 सुटीला, } वि. (हि. बोट) आहत, वणित,
 सुटीला, } क्षत ।
 सुबिहारा, सं. पुं. (हि. चूडी) चूडाहारः,
 बलयविकल्पिन् २. चूडा-कंकण, कारः ।
 सुबैल. सं. स्त्री. (सं. चूडा >) पिशाची-चिका,
 बाकिनी, दाकिनी, भूतभार्या, प्रेतपत्नी,
 २. कुरुपिणी, जरती, स्थविरा ३. चंडी,
 क्षोपनी, कुरा (नारी) ।
 सुनसुना, सं. पुं. । (हि. सुनसुनाना) विट्-
 सुनसुनी, सं. स्त्री. । उदर, कुमिः, सुदकीटकः ।
 सुनसुनाना, कि. अ. (अनु.) तीक्ष्णग्रथां
 अनुभू, न्यथ (भ्वा. आ. से.), तप (कर्म.) ।
 सुनट-त्त, } सं. स्त्री. (सं. चूण >) वरु, भंगः-पुटः-
 सुनन, } भंगी-पिः (स्त्री.), ऊमिः (स्त्री.) ।
 सुनना, कि. स. (सं. चुण तथा चि) (फूलादि)
 चुण (तु. प. से.), चि (रवा. उ. अ.), आदा
 (जु. आ. अ.), उद्वृ-समाह (भ्वा. प.
 अ.), छिद् (रु. प. अ.) २. पृथक् कृ, उद्वृह

(क. प. से.) उद्वृह । ३. वृ. (स्वा. उ. से.),
 नियुञ् (रु. आ. अ.; जु.), निरूप (जु.),
 निघृ ४. यथाक्रमं रच् (जु.)-स्था (जु. स्थाप-
 यन्ति) ५. अलंकृ, मंड (जु.) ६. (दीवारादि)
 निर्मा (जु. आ. अ.; प्रे. निर्मापयति),
 विरच् (जु.) । सं. पुं., चयनं, उद्वरणं; पृथक्-
 करणं, वरणं, यथास्थानं स्थापनं; अलंकरणं;
 निर्माणं ३. । दे. 'सुनाह' ।
 सुनने योग्य, वि., वेय, समाहार्य; उद्वराह्य; वर-
 णीय; स्थाप्य; अलंकार्य; निर्मेय ३. ।
 सुनने वाला, सं. पुं., चेत, समाहर्तृ, वरितृ,
 पृथक्कर्तृ ३. (सब पुं.) ।
 सुना हुआ, वि., चित, समाहृत; वृत; रचित
 २. श्रेष्ठ, उत्तम ।
 सुनरी, सं. स्त्री. (सं. चूण >) चित्र-शकल-
 कर्तुर, वस्त्रम् ।
 सुनखौं, वि. (हि. सुनना) वृतः, अभीष्ट चित
 २. उत्तम, श्रेष्ठ ।
 सुनवाना, सुनाना, कि. प्रे., व. 'सुनना' के
 प्रे. रूप ।
 सुनाई, सं. स्त्री. (हि. सुनना) दे. 'सुनना'
 सं. पुं. २. कुल्य-मिप्ति, निर्माणं ३. चयन,
 वेतन-भृत्या ।
 सुनाब, सं. पुं. (हि. सुनना) चितिः-समाहतिः
 (स्त्री.), उद्वराहः, उदारः (२) वृतिः-पृथक्-
 कृतिः (स्त्री.), निर्धारणम् ।
 सुनावट, सं. स्त्री., दे. 'सुनट' ।
 सुनिदा, वि. (फ्रा. सुनीदा) दे. 'सुनवौ' ।
 सुनीटी, सं. स्त्री. (हि. चूना) चूर्णपुटः ।
 सुनीती, सं. स्त्री. (हि. सुनना) समर-
 आह्वानं, अभिग्रहः २. उद्योजनं, उद्दीपनं,
 उत्थापनम् ।
 सुनट-त्त-न, सं. स्त्री., दे. 'सुनट' ।
 सुनी, सं. स्त्री. (सं. चूर्ण >) क्षुद्रं, माणिक्यं-
 पद्मरागः २. रत्न, खंडः-लवः, रत्नकं ३. अन्न-
 कणः-कणिका ४. काष्ठचूर्णम् ।
 सुनी, सं. स्त्री., दे. 'सुनरी' ।
 सुप, वि. (सं. चुप्-निःशब्द गमन >)
 भवाक्, निःशब्द, नीरव, मौनिन्, तुष्णीक,
 अनालापिन् । सं. स्त्री., नीरवता, दे. 'सुप्पी'
 २. निस्तम्भता ।

—करना या होना, कि. अ., वाचं यम् (भ्वा. प. अ.)-निरुप् (रु. उ. अ.), मौनं आकल् (चु.)-भञ् (भ्वा. उ. अ.) ।

—रहना, कि. अ., मौनं-तूष्णीं-जोषं आस् (अ. आ. से.)-स्था (भ्वा. प. अ.) ।

—चाप, कि. वि., जोषं, तूष्णीं, निशब्दं, मौनं २. गुप्तं, गुह्यं, निभृतं, प्रच्छन्नम् ।

शुपका, वि. (हि. चुप) दे. 'चुप' (वि.) ।

शुपके से, कि. वि., दे. 'शुपचाप' ।

शुपकी, सं. स्त्री. (हि. चुप) दे. 'शुप्पी' ।

शुपहना, कि. स. (अनु. चिपचिप) अञ् (रु. प. से.), उप-, दिह् (ज. प. अ.).

लिप् (तु. प. अ.), अनु-आ-वि २. दोषं गुह् (भ्वा. उ. से.)-प्रच्छद् (चु.) ३. दे. 'खुशामद करना' । सं. पुं., अंजनं, उपदेहनं, लेपनम् इ. ।

शुपहा, वि. (हि. चुपहना) (घृतादिभिः) उपलिप्त, अभ्यक्त, दिग्भ ।

शुप्पा, वि. (हि. चुप) वाचंयम, अरूपमित, भाषिन, वाग्यत ।

शुप्पी, सं. स्त्री. (हि. चुप) निःशब्दता, नीरवता, मौनं, तूष्णींभावः २. निःस्तव्यता, निश्चलता, निश्चेष्टता ।

शुभकी, सं. स्त्री. दे. 'दुबकी' ।

शुभना, कि. अ. (अनु.) संलग् (भ्वा. प. से.), संञ् (कर्म.), अनु-आ-सं.; सलक्ष्मी-संसक्तीभू, व्यभ-निभिद् (कर्म.) ।

शुभना, शुभोना, कि. स. (हि. चुमना) न्यष् (दि. प. अ.), निभिद् (रु. प. अ.), तुद् (तु. प. अ.), नि-प्र-विशू (प्र.) । सं. पुं., वेध-धनं, छेदः-दनं, निर्भेदः-दनम् ।

शुभनेवाला, सं. पुं., वेधकः, छेदकः, निर्भेदकः इ. ।

शुभकार, सं. स्त्री. (हि. चुमना + सं. कारः >) चुचुस्कारः, चुंबनध्वनिः (पुं.) ।

शुभकारना, कि. स. (हि. चुमकार) सनु-चुस्कारं उपल्ल-उपच्छद् (चु.) ।

शुरशुरा, वि. दे. 'शुरसुरा' ।

शुर(रु)ट, सं. पुं., दे. 'सिगार' ।

शुरसुर, सं. पुं. (अनु.) शुरसुरशब्दः ।

शुरसुरा, वि. (हि. शुरसुर) भंगुर, भिदुर, भिदेलिम ।

शुरवाना, कि. प्रे., (२-२) व. 'शुराना' तथा 'पकाना' के प्रे. रूप ।

शुराना, कि. स. (सं. चोरणं) शूर-स्तेन (चु.), अपह् (भ्वा. प. अ.), मुप् (कृ. प. से.)

२. गूह् (भ्वा. उ. से.), प्रच्छद् (चु.) । सं. पुं., चोरण, मोषणं, अपहरणं; गूहनं, प्रच्छदनं, दे. 'चोरी' ।

शुराने योग्य, वि., चोरयितव्य, मोषणीय ।

शुराने बाला, सं. पुं., दे. 'चोर' ।

चिच्च शुराना, मु., मनो ह् (भ्वा. प. अ.), वि-परि-मुह् (प्रे.) ।

शुरि, शुरी, सं. स्त्री. (सं.) कृपकः, खातकः, लघु, कृप-अवटः ।

शुल, सं. स्त्री., दे. 'लुजली' ।

शुलबुल, सं. स्त्री. (अनु.) दे. 'चंचलता' ।

शुलबुला, वि. (पूर्व.) दे. 'चंचल' तथा 'नटखट' ।

शुलबुलाना, कि. अ. (पूर्व.) चपल-चञ्चल (वि.) भू ।

शुलबुलपान, सं. पुं. } दे. 'चंचलता' ।

शुलबुलाहट, सं. स्त्री. }

शुलाना, कि. स., व. 'टपकना' के प्रे. रूप ।

शुलाव, सं. पुं., अमांस-निर्मास, आदनः-नम् ।

शुल्ली, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'चूल्हा' २. चित्ता ।

शुल्ल, सं. पुं. (सं. जुलुकः) जुलुकः, अंजलिः (पुं.), चलुकः, गंडूषः-पा ।

—भर, वि. जुलुक-जुलुक, मात्र, अंजलि-गंडूष-मात्र (जलादि) ।

—भर पानी में डूब मरना, मु., अस्थितं लज्जु (तु. आ. से.)-त्रप् (भ्वा. आ. वे.) ।

शुवाना, कि. स., व. 'टपकना' के प्रे. रूप ।

शुसकी, सं. स्त्री. (हि. चूसना) गंडूषः, जुलुकः, जुलुकः २. ईषत्-शनैःशनैः, पानं ३. तमाशुभुमकार्यः ।

शुसनी, सं. स्त्री., दे. 'चूसनी' ।

शुसवाना, कि. प्रे. } व. 'चूसना' के प्रे. रूप ।

शुसाना, कि. प्रे. }

शुस्त, वि. (क्रा.) उद्यगिन्, उद्योगिन्, क्षिप्रकारिन्, स्फूर्तिमय २. जागरुक, दक्ष ३. आलस्य-शैथिल्य-शून्य, दृसंहत ३. इडांग, सकल ।

—चालाक, वि., दक्षानलस, चतुरातरन् ।

शुस्ता, सं. पुं. (क्रा.) अजमेपशावकानां आमा-शयः २. मलाशयः ३. दे. 'सिलवट' ।

जुस्ती, सं. स्त्री. (फ्रा. जुस्त) क्षिप्रकारिता, स्फूर्ति (स्त्री.), उद्यमः, धनोद्योगः १. शैथिल्याभावः, सुसंहतिः (स्त्री.) २. दृढता, सबलता ।
 जुहजुहाना, कि. अ. (अनु.) दे. 'जुहजुहाना' २. रंगवत् दीप (दि. आ. से.)-प्रकाश (भ्वा. आ. से.) ।
 जुहजुही, सं. स्त्री. (अनु.) कुलजुही, *जुहजुही, कृष्णचटकाभेदः, फुल्लशिपिनी ।
 जुहल, सं. स्त्री. (अनु. जुहजुह >) हास्यं, परिहासः, विनोदः, कौतुकं, प्रमोदः, विलासः, मनोरंजनम् ।
 जुहिया, सं. स्त्री. (हिं. जुहा) गरिका, बालमूषिका, छुदः, मूषकः-आलुः (पुं.) २. दे. 'जूही' ।
 जुहुटना, कि. अ., तथा वि. दे. 'चिपकना' तथा 'चिपचिपा' ।
 जूँ, सं. पुं. (अनु.) जुंकारः, जुंझतिः (स्त्री.) ।
 —जाँ, सं. पुं. दे. 'जूँचरा' ।
 —करना, मु., किमपि वद् (भ्वा. प. से.) २. विरुद्धं वद् अथवा प्रतिवद् ।
 जूँकी, अव्य. (फ्रा.) यत्, यतः, यस्मात्, हि ।
 जूँगी, सं. स्त्री., दे. 'जुंगी' ।
 जूँचरा, सं. पुं. (फ्रा.) प्रतिवादः. प्रत्याख्यानं, विरोधः २. आपत्तिः (स्त्री.), अपवादः ३. व्याजः, सिपम् ।
 जूँजूँ, सं. स्त्री., (अनु.) जुंकारः, जुंझतिः (स्त्री.), जाटकेरशब्दः २. कलरवः, विरतं ३. जूँ-जूँ-शब्दः ४. कीदृचकभेदः ।
 जूक, सं. स्त्री. (हिं. चुकना) अपराधः, स्वल्पितं, दोषः, प्रमादः २. मार्गभ्रंशः, व्यतिक्रमः ।
 जूक, सं. पुं. (सं. चुकः) अम्लः २. अम्ल-द्रव्यभेदः ३. चुककं, चुकिका, अम्लशाकभेदः । वि. अम्लम्, अतिशुक्त ।
 जूकना, कि. अ. (सं. चुत कृ >) अपराध (दि., स्व. प. अ.), स्वल्प (भ्वा. प. से.), प्रमाद (दि. प. से., प्रमाद्यति) २. लक्ष्याव-सत्पवाद् भ्रंश (भ्वा. आ. से.)-भ्रंश (वि. प. से.) ३. सद्वचसरं या (प्रे. यापयति)-अतिवद् (प्रे.) ।
 जूका, सं. पुं., दे. 'जूक' (३) ।
 जूची, सं. स्त्री. (सं. चुचुकं) चुचुकं, चुचुकं,

जुचायं, जुचाननं, स्तनवृत्तं २. स्तनः, जुचः, पयोधरः ।
 —पीना, मु.. स्तन-स्तन्यं वा (भ्वा. प. से.) ।
 जूझा, सं. पुं. (फ्रा.) कुक्कुटशावः-वकः । वि., अल्पवयस्क ।
 जूझांत, सं. पुं. (सं.) चरमः, सीमा-अवधिः (पुं.) अ., अत्यधिकं, अत्यन्तं वि., परम, गाढ, उकट ।
 जूबा, सं. स्त्री. (सं.) शिखा, जु (जू)टिका, केशपाशी २. मयूरशिखा ३. शिखरं, अर्ध ४. कूप, ५. खूटाकरणसंस्कारः । सं. पुं. (सं. स्त्री.) बलयः-यं, कंकणं २. बलयावली, चूडावली ।
 —करण, सं. पुं. (सं. न.) चूडाकर्म-मुंडन-संस्कारः ।
 —मणि, सं. पुं. (सं.) शिरोरत्नं, शीर्षकुलम् । २. प्रधानः, अग्रगण्यः ३. गुंजा ।
 जूबी, सं. स्त्री. (सं. जूडा) बलयः-यं, कर्-भूषणं, कौशुकम् ।
 —दार, वि., (हिं. + फ्रा.) पुदीकृत, बलीयुत, संतुचित ।
 जूबियां पहनना, मु., खीवत् आचर् (भ्वा. प. से.) ।
 जूत, सं. पुं. (सं.) रसालः, धान्नः, कोकिलो-त्सवः २. (सं. न.) अपानः-नं, गुदं, व्युत्ति-बुलिः (स्त्री.) । (हिं.) योनिः (स्त्री.) भगं, नारीशुभम् ।
 जूत, सं. पुं. (सं. जूत >) नितंबः, कटि(टी)-प्रोथः, सिकच्-चा (स्त्री.), पूलः, पूलकः, स्थिकः ।
 जूत, सं. पुं. (सं. जूनी) दे. 'जाटा' तथा 'जूना' ।
 जूतररी, सं. स्त्री., दे. 'जुतररी' ।
 जूना, सं. पुं. (सं. जूर्णः-णी) जूर्णकम् ।
 जूने का पानी, सं. पुं. जूर्णकजलं, जूर्णादिकम् ।
 —दानी, सं. स्त्री., जूर्णाधानी, जूर्णपुटकः ।
 अनजुझा—, अशान्त-जूर्णकम् ।
 बुझा—, शान्त-जूर्णकम् ।
 जूने की भट्टी, सं. स्त्री., जूर्णं, आपाकः-पाकपुटी ।
 जूना, कि. अ. (सं. ज्वनं) दे. 'टपकना' । वि., सच्छिद्र, स्फुटित, सरंभ्र ।
 जूनी, सं. स्त्री. (सं. जूर्णिका) धान्य-भक्त-कणः-णी-शिका २. रत्न-मणि, कणः-कणिका ।
 जूमना, कि स. (सं. जुंबनं) (मुख) जुंब (भ्वा. प. से.), निस्व (अ. वा. से.) २. भौजा-

म्यां स्पृश् (तु. प. अ.) ३. (ओठ) अथर-
अथरसं पा (स्वा. प. अ.) ४. (सिर) शिरः
आ-उपाःसमाघ्रा (स्वा. प. अ.) । सं. पुं.,
चुवनं, चिसनं, अथरपानं, शीर्षाघ्राणम् ।
चुभने योग्य, वि., चुबनीय, निसितव्य ।
चुभने बाला, सं. पुं., चुंबकः, चुंबिन्, निसकः,
निसितृ (पुं.) ।
चूमा इक्षा, वि. दे. 'चुम्बित ।
—घाटना, मु., उप-लल् (चु.) जुम् ।
चूमा, सं. पुं., चुंबनं, चुंबः-वा ।
—चाटी, सं. स्त्री., विलासः, विहारः, क्रीडा ।
चूर, सं. पुं. (सं. चूर्णः-र्ण) क्षोदः, पिष्टं, रजस्
(न.), कणाः-कणिकाः-अणवः-लवाः (बहु.) ।
वि., मद्यः, लीनः-परायण, अग्निनि-नि-विष्ट
२. मत्त, क्षीब, मदनमत्त ३. श्रांत, खिन्न,
क्षंत ।
—चूर, वि., चूर्णित, पिष्ट, क्षुण्ण ।
चूरन, सं. पुं. (सं. चूर्णः-र्ण) दे. 'चूर्ण' २. चूर्ण,
अशिवर्द्धक-पाचक-चूर्णम् ।
चूरमा, सं. पुं. (सं. चूर्णः-र्ण) मिष्टान्नभेदः,
मिष्टचूर्णः ।
चूरा, सं. पुं. (सं. चूर्णः-र्ण) क्षोदः, पिष्टं । दे.
'चूर' (सं. पुं.) ।
—करना, क्रि. सं., चूर्णं (तु.), चूर्णीक, पिप्
क्षुद् (र. प. अ.) ।
चूर्ण, सं. पुं. (सं. पुं. न.) क्षोदः, पिष्टं २. दे.
'चूरन' ३. रजस् (न.), धूलिः (स्त्री.) ।
—कुंतल, सं. पुं. (सं.) अलकः, कुरलः ।
चूर्णक, सं. पुं. (सं.) चूर्णपिष्टान्नम् २. सक्तुकः,
चूर्णयवचूर्णम् । (सं. न.) सुगन्धि-सुगन्धित-
चूर्णम् २. कट्टवर्णरहितम् अल्पसमासयुक्तं
गद्यम् ।
—चूर्णन सं. पुं. (सं. न.) पेषणं, मर्दनं,
खंडनम् ।
चूर्णित, वि. (सं.) पिष्ट, क्षुण्ण, चूर्णीभूत ।
चूर्ल, सं. पुं. (सं. चूर्लः) केशः, शिखा ।
चूर्ल, सं. स्त्री. (देश.) विवर्तनकौलः २. काष्ठान्नम् ।
चूर्लं डीली होना, मु., अत्यंत क्लम-आयस्-
(स्वा. दि. प. से.)-खिद् (दि. आ. अ.)-
श्रम् (दि. प. से.) ।

[सं. चुल्ली-हिः (स्त्री.)]
चूल्हा, सं. पुं. { अंति(दि)का, अधिश्रवणी,
चूल्ही, सं. स्त्री. { उद्धानं, उष्मानं, अदमंतं,
अश्मंतकः-कम् ।
चूसना, क्रि. सं. (सं. चूषणं) आ-, चूष (स्वा.
प. से.), पा (स्वा. प. अ.) २. उच्छुव् (प्रे.),
आ-नी-पा (स्वा. प. अ.) । सं. पुं., चोषणं,
चोषः, उच्छोषणम् ।
चूसने योग्य, वि., चूष्य, चोष्य, उच्छोष्य ।
चूसनी, सं. स्त्री. (हि चूसना) चोषणी,
क्रीडनकभेदः २. चूनुकवती काचकूपी २. चोष-
णयष्टिः (स्त्री.) ।
चूहका, सं. पुं., दे. 'भंगी' ।
चूहकी, सं. स्त्री., दे. 'भंगन' ।
चूहा, सं. पुं. (अनु. चू) आसुः-वद(द्रु)रुः
(पुं.), खनकः, विलेशयः, मूष (वि, वी)कः,
मूषः, मूषिकारः ।
—वन्ती, सं. स्त्री., कंकणभेदः, *मूषदंती ।
—दान, —दानी, सं. पुं., सं. स्त्री., मूर्पाजर्द,
मूषकपंजरः-रम् ।
—मार, सं. पुं., मूषमारः ५. श्येनः, खगांतकः ।
चूही, सं. स्त्री. (हि. चूहा) मूषा, मूषिका ।
२. दे. 'चुहिया' ।
चेंचला, सं. पुं. (अनु. चेंचें) पक्षिशावः-नकः ।
चेंचें, सं. स्त्री., दे. (अनु.) चुंकारः, चुंकृतिः
(स्त्री.) २. प्र-जल्पः-जल्पितम् ।
चेंचर, सं. पुं. (अं.) कोष्ठः, कक्षा, शाला
२. सभागृहम् २. परिषद (स्त्री.) ।
चेयर, सं. स्त्री. (अं.) दे. 'कुसी' ।
—सेन-भैन, सं. पुं. (अं.) प्रधानः, सभा-
पतिः-अध्यक्षः ।
चेक, सं. पुं. (अं.) देयादेशः २. दे. 'चारखाना' ।
चेचक, सं. स्त्री. (फा.) मसूरी-रिका, बसंतरोगः,
शीतला-ली ।
चेट, सं. पुं. (सं.) दासः, सेवकः २. पतिः, मर्तृ ।
२. भंडः-विदूषकः ।
चेटक, सं. सं. (सं.) चेटः, दासः २. जारः,
उपपतिः ३. इन्द्रजालं, माया २. संदेशहरः,
दूतः ५. दे. 'चसका' ।
चेटी, सं. स्त्री. (सं.) दासी, सेविका, परिचारिका ।
चेत, सं. पुं. [सं. चेतम् (न.)] चेतना, चैतन्यं,
संज्ञानेदनं २. ज्ञानं, बोधः ३. अवधानं, साव-
धानता ४. स्मरणं, स्मृतिः (स्त्री.) ५. चित्तम् ।

चेतन, सं. पुं. (सं.) आत्मन् (पुं.), जीवः
२. मनुष्यः ३. प्राणिन्, जीवधारिन् ४. परमेश्वरः ५. मनस् (न.), चित्तम् । वि., चेतनावत्, चेतोमत्, प्राण-धारिन्-भूत्, जीविन्, सजीव ।
चेतनता, सं. स्त्री. (सं.) सजीवता, चेतोमत्ता, दे. 'चेतना' ।

चेतना, सं. स्त्री. (सं.) संज्ञा, चैतन्यं २. ज्ञानं, बोधः ३. स्मृतिः (स्त्री.) ४. मनोवृत्तिः (स्त्री.) ।
क्रि. अ., संज्ञा-चेतनां लभ् (स्वा. आ. अ.)
आ-प्रति-पद् (दि. आ. अ.), प्रकृति-आपद्, प्रकृतित्व्य (वि.) भू २. सावधान-अवहित (वि.) भू ।

चेतावनी, सं. स्त्री. (हिं चेतना) प्राक्-पूर्व-, सूचना-प्रतिबोधः-उपदेशः ।

चेप, सं. पुं. (अनु. चिपचिप) निर्यासः, रसः २. श्यान-सांद्र-वस्तु (न.) ३. दूष्यं, पूयः-यं, पूयरकं, कुणपम् ।

—दार, वि. (हिं + क्रा.) निर्यासमय [-यी (स्त्री.)] २. श्यान, सांद्र ३. सपूय ।

चेला, सं. पुं. (सं. चेटकः >) शिष्यः, अन्ते-वास्तिन्, छात्रः, विद्यार्थिन् २. अनुयायिन् ।

—सूचना, सु., उपनी (स्वा. प. अ.), दीक्षा (स्वा. आ. से.) दीक्षां वा (जु. व. अ.) ।

चेलिन, चेली, सं. स्त्री. (हिं. चेला) शिष्या, अन्तेवासिनी, छात्रा, विद्यार्थिनी २. अनुयायिनी ।

चेष्टा, सं. स्त्री. (सं.) कायिक-भ्यापारः, चेष्टितं, हस्तादिचालनं, इगितं, अंगविक्षेपः २. उद्योगः, प्रयत्नः ३. कार्यं, कर्मन् (न.) ४. परिश्रमः ।

चेस, सं. पुं. (अं.) दे. 'शतरंज' ।

चेहरा, सं. पुं. (फ्रा.) आननं, मुखं, वदनं २. पुरो-अग्र-भागः ३. कपट-छद्म-मुख-वदनम् ।

—मोहरा, सं. पुं., आकारः, आकृतिः (स्त्री.), रूपम् ।

—उत्तरना, सु., मुख-वदन-मलानिः (स्त्री.)-भ्लानता-कान्तिक्षयः-विवर्णता ।

—बिभाङ्गना, सु., अत्यधिकं तद् (जु.)-प्रदं (स्वा. प. अ.) ।

—(रे) पर हवाहुर्यो उङ्गना, सु. भयादिभिः वैवर्ण्य-विवर्णता ।

चैक, सं. पुं., दे. 'चैक' ।

चेत, सं. पुं. (सं. चैत्रः) चैत्र (चि) क्रः, चैत्रिः (पुं.), चैथिन्, मधुः (पुं.) २. चैत्रशस्यम् ।
चेतम्य, सं. पुं. (सं. न.) आत्मन् (पुं.), जीवात्मन् २. ज्ञानं, बोधः ३. परमेश्वरः ४. प्रकृतिः (स्त्री.) । वि., चेतनावत्, सजीव ५. सावधान, अवहित ।

चेर्य, सं. पु. (सं. न.) गृहं, मवनं, सघन् (न.) २. मंदिरं ३. यज्ञशाला । (सं. पुं.)
दुखः २. बुद्धमूर्तिः (स्त्री.) ३. अश्वत्थवृक्षः ४. बौद्धमिक्षुः (पुं.) ५. भिक्षुविहारः ।

चैत्र, सं. पुं. (सं.) दे. 'चेत' २. बौद्धमिक्षुकः ३. यज्ञभूमिः (स्त्री.) ४. मंदिरम् । वि., चित्रा, संवैथिन्-विषयकः ।

चेन, सं. पुं. (सं. शयनं >) सुखं, सौख्यं, सुस्थता, आनन्दः, मोदः, विश्रामः, निर्वृत्तिः (स्त्री.) ।

—उङ्गाना या करना, सु., सानंदं-सुखं जीव (स्वा. प. से.), सुद् (स्वा. आ. से.), नन्द (स्वा. प. से.) ।

—पङ्गना, सु., सुखं-निर्वृतिं लभ् (स्वा. आ. अ.) ।

चौच, सं. स्त्री. [सं. चंचु-चुः (स्त्री.)] श्रोटी-टिः (स्त्री.), कुंठं, चंचुका, सपाटिका । २. मुखम् ।

चौचला, सं. पुं., दे. 'चौचला' ।

चोआ, सं. पुं. (हिं. चुआना) गंधः, गंधिकं, गंधद्रव्यम् ।
चोकर, सं. पुं. (हिं. चून = आटा + करारै = छिलका) कटंगरः, तुषः, धान्यत्वच् (स्त्री.), तुसम् ।

चोस्त्रा, वि. (सं. चोक्ष) शुद्ध, केवल, पवित्र २. शुचि-शुद्धात्मन् ३. तीक्ष्ण, निश्चित ४. दे. 'भरता' ५. उत्कृष्ट, उत्तम ।

चोगा, सं. पुं. (हिं. जुगना) खगखाबंधं, पक्षिमह्यं, विहग्राशनम् ।

चोगाह, सं. पुं. (तु.) कंचुकः, प्रावारः-रकः ।

चोबला, सं. पुं. (हिं. चौच) विभ्रमः, विलासः, ललितामिनयः, लोला, हावः ।

चोज, सं. पुं. (हिं. चौच) सुभाषितं, वैदग्ध्यं, नर्मालापः २. हास्यं, परिहासः ।

घोट, सं. स्त्री. (सं. जुट = काटना >) अभि-आ-निर्-धातः, प्रहारः, आहतिः (स्त्री.), ताडनं पातः । २. वणः-णं, क्षतं ३. शनिः-क्षतिः

- (स्त्री.) ४. वेदना, मनोव्यथा ५. विभ्रम-विभास, धातु-भंगः ६. संन्ययो विवादः ।
 —करना, क्रि. सं., प्रहृ (भ्वा. प. अ.), क्षि (स्वा. प. अ.), हुद् (तु. प. अ.) आहन् (अ. प. अ.) ।
 —खाना, क्रि. अ., आहन्-प्रहृ-तुद् (कर्म.) ।
 —पर बोट, मु., सतताघाताः, प्रहारपरंपरा, २. कष्ट-विषय-परंपरा ।
 बोटा, सं. पुं. (हिं. बोआ) मत्स्यदीरसः ।
 बोटी, सं. स्त्री. (सं. चूटा) जु(ज्.)टिका, शिखा, शिखंडः-ढकः २. शिखरं, शृंगं, सानु (पुं. न.), अग्रं शिखा, मूर्धनं (पुं.) ३. शिखंडः, शैखरः ४. वेणीबंधनसूत्रं ५. वेणी, रञ्जुः (स्त्री.) ।
 —का, मु., अग्रय, अग्रगण्य, उत्तम, श्रेष्ठ ।
 बोटीदार, वि. (हिं. + फ्रा.) शिखावद, सानुमत् २. सूच्याकार, शंकाकृति ।
 बोटा, सं. पुं., दे. 'चोर' ।
 बोट, सं. स्त्री. (फ्रा.) पटम्बप, स्थायुः-स्थूणा २. यष्टिः (स्त्री.), दंडः ।
 —चीनी, सं. स्त्री., काष्ठौषधभेदः ।
 —दार, सं. पुं. (फ्रा.) वेत्र-दंड-यष्टि-परः-पाणिः (पुं.)-इस्तः २. दौवारिकः, दंडपाशुलः ३. रक्षा-दंड-पुरुषः ।
 बोया, सं. पुं., दे. 'बोया' ।
 बोर, सं. पुं. (सं.) चौरः, कुंभीर(ल)कः, कुंभीलः, ऐकारागिकः, तस्करः, दस्तुः, प(पा)-ट्चरः, परास्किदिः (पुं.), मोषकः, स्तेनः ।
 —खिचकी, सं. स्त्री., पक्षदार, पक्षकम् ।
 —चकार, सं. पुं., दे. 'चोर' ।
 बरवाड़ा, सं. पुं., प्रच्छन्न-अंतर-गुप्त-गुह, द्वारम् ।
 —सीरी, सं. स्त्री., उप-प्रच्छन्न-गुह, सोपानम् ।
 बोरटा, सं. पुं., दे. 'चोर' (चोरटी, स्त्री.) ।
 बोरी, सं. स्त्री. (हिं. चोर), मोषणं, अपहरणं २. चौर्यं, चो(चो)रिका, चोरणं, स्तेयं स्तेन्यं, मोषः ।
 —करना, क्रि. सं., दे. 'चुराना' ।
 —का भाल, सं. पुं., चोरित-अपहृत-लुठित-द्रव्यम् ।
 —चोरी, क्रि. वि., अप्रकाशं, निश्चलं, रहस्य (सप्त अर्थ.) ।

- यारी, सं. स्त्री., निहितकर्मन् (न.), पापम् ।
 —से, क्रि. वि., अस्क्षिप्तं, प्रच्छन्नम् ।
 बोल, सं. पुं. (सं.) दक्षिणपथे प्रांतविशेषः, बोलाः २. तत्रत्यः जनः ३. ४. दे. 'बोला', 'बोली' ५. कवनं ६. वल्कलम् ।
 बोला, सं. पुं. (सं. बोलाः) लंब-कुर्पासकं-युतकं २. दे. 'बोली' ३. कंचुकः, प्रावारः-रकः ४. तांबूलकरकः ५. शरीरम् ।
 —छोचना, मु., तनुं स्वज् (भ्वा. प. अ.) ।
 —बदलना, मु., देशांतरं प्राप् (स्वा. उ. अ.), प्रेत्य भू ।
 बोली, सं. स्त्री. (सं.) बोलकः, बोडः-ढी, कं(कु)नुली-लिका, कंचुकः, कुर्पासकः-कम् । २. दे. 'बोला' (२) ।
 —दामन का साथ, मु., प्रवादः, सख्यं-सौहार्द-मित्रता-प्रणयः ।
 बोषण, सं. पुं. (सं. न.) चूषणं, चूषा, बोषः २. स्तन-स्तन्य-क्षीर, पानम् ।
 बोष्य, वि. (सं.) चूषणीय, चूष्य ।
 बौक, सं. स्त्री. (हिं. बौ + सं. कंप्), (आभरिमक-) कंप्-पनं, साध्वसोत्कंप् ; सहसा स्फुरणम् ।
 —उठना या पकना, क्रि. अ., सहसा कंप्-स्पद् (भ्वा. आ. से.)-स्फुर् (तु. प. से.) ।
 बौकना, क्रि. अ. (हिं. बौक) दे. 'बौक उठना' २. सहसा अवबुध् (दि. आ. अ.)-जागृ (अ. प. से.) ३. वि-स्मि (भ्वा. आ. अ.)-आश्चर्यचकित (वि.) भू ।
 बौकाना, क्रि. सं., व. 'बौकना' के प्रे. रूप ।
 बौतरा, सं. पुं., दे. 'चपूतरा' ।
 बौतीस, वि. (सं. चतुस्त्रिंशत्) सं. पुं., उक्ता-संख्या, तद्बोधकांकी (३४) च ।
 बौती(ति)सवाँ, वि., (हिं. बौतीस) चतुस्त्रिंशत्तमः-मी-मं, चतुस्त्रिंशः-शी-शम् ।
 चौध, सं. स्त्री., दे. 'चकाचौध' ।
 चौधीयाना, क्रि. अ., दे. 'चुंधीयाना' ।
 चौर, सं. पुं. (सं. चामरं) चमरम् ।
 चोरी, सं. स्त्री. (हिं. चोर) अवचूळकः-कं रोमशुष्कः २. दे. 'चमरी' ।
 बौंसठ, वि. (सं. चतुःषष्टिः स्त्री.) सं. पुं., उक्ता संख्या, तद्बोधकांकी (६४) च ।
 बौंसठवाँ, वि. (हिं. बौंसठ) चतुःषष्टितमः-मी-मं, चतुषष्टः-ष्टी-ष्टं (पुं. स्त्री. न.) ।

चौ—, वि. (सं. चतुर्) केवल समास के
आदि में ।

—कोना—कोर, वि., दे. 'चारकोना' ।

—खँटे, सं. पुं., चतुर्दिशं, दिक्चतुष्टयं-यी
२. भूमंडलं, पृथिवी । कि. वि., दे. 'चारों
तरफ' ।

—खँटा, वि., दे. 'चारकोना' ।

—गिर्दे, कि. वि., दे. 'चारों तरफ' ।

—गुना, वि., चतुर्गुणः-णा-णं, चतुर्गुणितः-ता-
तम् ।

—पत्तं, वि., चतुष्टयं, चतुर्, -आवृत्त-भावितम् ।

—पहल, वि., चतुर्भुज, चतुष्पादत्वं, चतुर्बाहु ।

—पहिया, वि., चतुश्चक्र । सं. स्त्री., चतुश्चक्रं
वाहनम् ।

—मासा, सं. पुं., चतुर्मासं, वर्षाः (स्त्री. बहु.),
प्रावृष्ट (स्त्री.) ।

—मुस्ता, वि., चतुर्मुख, चतुरानन । सं. पुं.,
मस्तम् (पुं.) ।

—राहा सं. पुं., चतुष्पथः-थं, चतुष्कम् ।

—हदी, सं. स्त्री., सीमान्चतुष्टयं-यी ।

चौक, सं. पुं. (सं. चतुष्कं) प्रवणः, चतुष्पथः-थं,
शृंगाटकं, संस्थानं । २. मुख्य-प्रधान, आशयः-
निगमः-दृष्टः ३. अजिदं, अंगनं-गं, चत्वरः-रं
४. चतुरस्रवेदिः (स्त्री.) ५. प्रोवर्तिदंतचतुष्टयम् ।

चौकड़ी, सं. स्त्री. (हिं. चौ = चार + सं. कला
= अंग >) धनुर्तन्त्रिः (स्त्री.), बलानम् ।
२. नरचतुष्टयं-यी ३. चतुरस्रं वाहनम् ।

—भरना, कि. अ., वस्त्रं (भ्वा. प. से.),
घट्टु (भ्वा. आ. अ.) ।

चंडाल—, सं. स्त्री., चंडाल-दुष्ट, चतुष्टयी, धूर्तः,
मंडलं मंडली ।

चूलना, मु., किंकर्तव्यविमूढ (वि.), जन्
(दि. आ. से.), आकूली भू ।

चौकडा, वि. (हिं. चौ=चार + सं. कर्णः >)
अवहित, सावधान, जागरूक, प्रमादशून्य ।

—रहना, कि. अ., अवहित-जागरूक (वि.)
स्था (भ्वा. प. अ.) ।

चौकस, वि. (हिं. चौ=चार + कस = कसा
हुआ >) दे. 'चौकना' २. उद्यमिन्, उद्योगिन्
३. यथार्थ, यथानर्थ ।

—रहना, कि. अ., सावधान-अप्रमत्त (वि.)
स्था (भ्वा. प. अ.) ।

चौकसी, सं. स्त्री. (हिं. चौकस) जागरूकता,
सावधानता, दक्षता ।

चौका, सं. पुं. (सं. चतुष्कं) चतुष्टयं, वस्तु-
चतुष्टयी २. पाक, शाला-गृहं, महानसं,
रसवती ३. भोजन, शाला-गृहं-भारं ४.
अग्रयं दंतचतुष्टयं ५. अंगनं-गं ६. चतुरस्रशिला
७. शीर्षकुल्लं (गहना) ।

चौकी, सं. स्त्री. (सं. चतुष्की >) आसनं,
चरण-पाद, पीठः-पीठं, चतुष्की २. दे. 'कुसी'
३. निवेशस्थानं, दे. 'पदाव' ४. इविस् (न.)
५. रक्षिनिवासः, प्रहरिशाला ६. ग्रैवेयकं,
कंठाभूषणभेदः ७ जागरूकत्वं, सावधानता ।

—देना, कि. अ., आसंथां उपविशं (प्रे.)
२. रक्षं (भ्वा. प. से.) ।

—दार, सं. पुं. (हिं. + फ्रा.) गृह-पः-पालः,
प्रहरिन्, रक्षकः २. वैतालिकः, वैबोधिकः ।

—दारी, सं. स्त्री., रक्षा, युक्तिः (स्त्री.),
अवेक्षणं, प्रहरित्वं २. रक्षा-प्रहरित्वं, वेतनं-
शुल्कम् ।

चौखट, सं. स्त्री. (हिं. चौ=चार + काठ >),
चकपाटलवनं, चतुष्काष्ठं २. देहली-लिः (स्त्री.),
दारापिडी, गृह्णावग्रहणी ३. दारम् ।

चौखटा, सं. पुं. (हिं. चौखट) चतुष्काष्ठकः,
चित्र-दर्पण, परिवेष्टनं-बलनम् ।

चौगान, सं. पुं. (फ्रा.) एतन्नामकः खेलाभेदः
२. साविदण-कडीडाक्षेत्रम् ।

चौबा, वि. (हिं. चौ + पाट) उरु, परिणाह-
नत् [-ती (स्त्री.)], पृथु, विशाल, विस्तृत,
वितत, विस्तीर्णं ।

—करना, कि. स., प्र-वि., तन् (त. उ. से.),
प्रच (प्रे.), विस्तृ (क्. उ. से. था प्रे.),
प्रथ (जु.) ।

चौबाई, चौबान, सं. स्त्री. (हिं. चौबा)
तयंका-स्थं, विस्तारः, विशालता, पृथुता, पार्थक्यं,
परिणाहः, विस्तीर्णता ।

चौतरा, सं. पुं., दे. 'चतुतरा' ।

चौताला, वि., (हिं. चौ + सं. तालः >) चतु-
स्ताल । सं. पुं., शालिकागीतिः (स्त्री.)
२. चतुस्तालः ।

चौथ, सं. स्त्री. (सं. चतुर्थी) शुद्धा चतुर्थी
२. कृष्णा चतुर्थी ३. चतुर्थीशः ४. करभेदः ।

चौघा

[२१६]

चौळा

चौघा, वि. (सं. चतुर्थ) तुर्य, तुरीय । सं. पुं., चतुर्थकः, मृतकरीतिभेदः ।

चौघाई, सं. स्त्री. (हिं. चौघा) चतुर्थ-तुर्य-तुरीयां, अंशः-भागः, पादः, तुर्य, तुरीयं, चतुर्थम् ।

चौघिया, (हिं. चौघ) चतुर्थकन्वरः २. चतुर्थी-शाधिकारिन् ।

चौथी, वि. स्त्री. (सं. चतुर्थी) तुर्या, तुरीया । सं. स्त्री., वैवाहिकरं. तिमेदः, चतुर्थी ।

चौथे, कि. वि. (हिं. चौथा) चतुर्थस्थाने ।

चौवस, सं. स्त्री. (सं. चतुर्दशी) १. २. शुक्ल-कृष्ण, चतुर्दशी ।

चौदह, वि. (सं. चतुर्दशम्) स. पुं., उक्ता संख्या, तद्बोधकाको (१४) च ।

चौदहवाँ, वि. (हिं. चौदह) चतुर्दशः-शी शम् ।

चौधराई, सं. स्त्री. (हिं. चौधरी) मुख्यत्वं, नेतृत्वं प्रधानत्वम् ।

चौधसनी, सं. स्त्री. (हिं. चौधरी) मुख्या, प्रधाना, नेत्री ।

चौधरी, सं. पुं. (सं. चतुर्धरीणः > अथवा सं. चतुरः=तक्रिया + धारिन् >) अग्रणीः (पुं.), नायकः, पुरोगः, धुरीणः ।

चौपई, सं. स्त्री. (सं. चतुष्पदी) छन्दोभेदः ।

चौपट, वि. (हिं. चौ = चाअ + पट=किवाड़ा) अरक्षित, आवरण-आच्छादन, हीन, प्रकट, अपावृत ।

चौपट, वि. (हिं. चौ = चार + सं. पाटः चौड़ाई) नष्ट, वि-ध्वस्त, क्षाण, उच्छिन्न, नाशित ।

—करना, कि. स., उच्छिद् (रु. प. अ.), विध्वंस-नाश् (प्रे.), उत्सद् (प्रे.) ।

चौपट, सं. स्त्री. (सं. चतुष्पटः-टं >) चतुष्पटं, अक्षकीटोभेदः २. तस्य पटः अक्षाः च ।

चौपाई, सं. स्त्री. (सं. चतुष्पादी >) छन्दोभेदः ।

चौपाङ्ग, सं. पुं., दे. 'चौपाल' ।

चौपाया, सं. पुं. (सं. चतुष्पादः) चतुष्पादः, चतुष्पाद (पुं.) २. पशुः (पुं.) ।

चौपाल-ल, सं. पुं. (हिं. चौपाल-रा) गोष्ठी-सभा, गृहं, आस्थानेनी ।

चौबन्धा, सं. पुं., दे. 'चहबन्धा' ।

चौघा, सं. पुं. (सं. चतुर्वेदः) ब्राह्मणजाति-भेदः २. मथुरावासी पुरोहितः ।

चौशाइन, सं. स्त्री. (हिं. चौघा) चतुर्वेद-भार्या-पत्नी ।

चौबारा, सं. पुं. (हिं. चौ + बार = दार) अट्टः, अष्टालः, चंद्रशाला, शिरोगृहं, चूला । २. दे. 'चौपार' ।

चौबारा, कि. वि. (हिं. चौ + बार = दार) चतुर्वारम् ।

चौबीस, वि. [सं. चतुर्विंशतिः (नित्य स्त्री.)] सं. पुं., उक्ता संख्या तदंकी (२४) च ।

चौबीसवाँ, वि. (हिं. चौबीस) चतुर्विंशति-तमः-मी-मं, चतुर्विंश-शी-शम् ।

चौबे, सं. पुं.-दे. 'चौबा' ।

चौबोला, सं. पुं. (हिं. चौ + बोल) मात्रिक-छन्दोभेदः ।

चौभङ्ग, सं. पुं., (हिं. चौ-दाङ्ग) चर्वण-दन्तः, दंष्ट्रा, दादा ।

चौसंजिला, वि. (हिं. चौ-झा. मंजिल) चतुर्भूमिक ।

चौमुहानी, सं. स्त्री., दे. 'चौक' (१) ।

चौर, सं. पुं. (सं.) दे. 'चोर' ।

चौरस, वि. (हिं. चौ + (एक) रस-तुल्य) सम, समस्थ, समरेख, सपाट २. चतुर्भुज, वर्गाकार ।

चौरा, सं. पुं., दे. 'चवतरा' ।

चौरानवे, वि. [सं. चतुर्नवतिः (नित्य स्त्री.)] सं. पुं., उक्ता संख्या तदंकी (९४) च ।

चौरासी, वि. [सं. चतुरशीतिः (नित्य स्त्री.)] सं. पुं., उक्ता संख्या, तदंकी (८४) च । सं. स्त्री., चतुरशीतिलक्षयोनयः (बहु.) ।

चौरैठा, सं. पुं. इ (हिं. चावल + पीठा) पिष्ट-चूर्णित, संतुल्यः धान्याशयि (न.) ।

चौर्य, सं. पुं. (सं. न.) रक्षेयं, स्तैन्यं, चोरिका, चोरणम् ।

—रत, सं. पुं. (सं. न.) गुप्त, मैथुनं रतिः (स्त्री.) ।

चौलकर्म, सं. पुं. (सं. मन् न.) चौदं, चौलं, मुण्डन-चूडाकरण, संस्कारः ।

चौलङ्ग, वि. (हिं. चौ + लङ्) चतुःसूत्र, चतुर्भुज (हार इ.) ।

चौला, सं. पुं., दे. 'लोबिया' ।

चौला(रा)ई, सं. स्त्री., तंडुलीयः, सु-पथ्य, शाकः, बहुवीर्यः, मेघनादः ।

चौवन

[२१७]

छाया

चौवन, वि. [सं. चतुः(च)शत (नित्य स्त्री.)] ।
सं. पुं., उक्ता संख्या, तदंको (५४) च ।
चौसठ, वि. [सं. चतुःषष्टिः (नित्य स्त्री.)] ।
सं. पुं., उक्ता संख्या, तदंको (६४) च ।
चौसर, सं. पुं. (सं. चतुस्सारिः) दे. 'चौपड़' ।
चौहट्टा, सं. पुं. (हिं. चौ + सं. इट्टः) दे.
'चौक' (१-२) ।
चौहत्तर, वि. [सं. चतुःसप्ततिः (नित्य स्त्री.)] ।
सं. पुं., उक्ता संख्या, तदंको (७४) च ।

चौहरा, वि. (हिं. चौ) चतुर्गुण-गित २. चतु-
ष्टुट, चतुरावृत्त, चतुरावर्तित ।
च्यवन, सं. पुं. (सं.) ऋषिविशेषः । (सं. न.)
क्षरणं, क्षवणम् ।
—प्राश, सं. पुं. (सं.) अवलेहभेदः (आयुर्वेद) ।
च्युत, वि. (सं.) झूत, क्षरित २. पतित, भ्रष्ट
३. विमुक्त, पराङ्मुख ४. पदभ्रष्ट, अधिकारभ्रष्ट ।
च्युति, सं. स्त्री. (सं.) पतनं, स्थलनं २. अधि-
कारभ्रंशः, पदहानिः (स्त्री.) ३. दोषः,
स्थलितम् ।

छ

छ, देवनागरीवर्णमालावाः सप्तमो व्यंजनवर्णः,
चकारः ।
छंगा, छंगुरा, वि. (हिं. छ + अंगुरी) षट्-
गुल, षट्गुरि ।
छँगुलिया, छँगुली, सं. स्त्री., दे. 'छिगुनी' ।
छंटना, कि. अ. (हिं. छॉटना) ष-उद्ग्रह-चि-
उदग्रह (कर्म.), २. चट्-छिद् (कर्म.)
३. अप-इ (अ. प. अ.), पृथग् भू ४. क्षि-विशृ
(कर्म.), कृशी भू ।
छंटा हुआ, मु., भूत्तं, चतुर, दक्ष, निपुण ।
छॉटवाना, कि. प्रे., व. 'छॉटना' के प्रे. रूप ।
छॉटाई, सं. स्त्री. (हिं. छॉटना) वरणं,
उदग्रहणं, चयनं २. अवच्छेदः, निकृन्तनं
३. पृथक्करणं ४. अवच्छेदन-पृथक्करण, वेतन-
भृतिः (स्त्री.) ।
छन्द, सं. पुं. [सं. छन्दस् (न.)] वृत्तं २. वेदः,
श्रुतिः (स्त्री.) ३. छन्दःशास्त्रं ४. अभिलाषः,
कामना ५. स्वच्छन्दता, स्वैरिता ६. कपटं,
उलं ७. सुक्तिः (स्त्री.), उपायः ८. अभिप्रायः
९. पथं, दलोकः ।
—शास्त्र, सं. पुं., छन्दःशास्त्रं, वृत्तविज्ञानम् ।

छ, छः, वि. [सं. षट् (त्रि.)] । सं. पुं., उक्ता
संख्या, तदंको (६) च ।
छाई, सं. स्त्री., दे. 'क्षयी' ।
छाड़ा, सं. पुं. (सं. शकटः) प्रवहणं, यानं,
वाहनं, शकटिका २. वृषभवाहनं, बलीवर्दशकटं,
गन्धो ।
छाकना, कि. अ. (सं. चकनं) चक् (भ्वा. उ.
से.), तुष् (दि. प. अ.), परि-सं-तृप् (दि. प.

अ.) २. क्षीव् (भ्वा. दि. प. से.), मद्
(दि. प. से., माद्यति) ।
छकना, कि. अ. (सं. चक्रं >) विस्मि (भ्वा.
आ. अ.), चकित-विस्मित (वि.) भू २. बन्च-
प्रतार (कर्म.) ।
छकाछक, वि. (हिं. छकना) तृप्त, सुष्ट २. परि-
पूर्ण ३. क्षीव, मत् ।
छकाचा, कि. स., व. 'छकना' (१, २.) के
प्रे. रूप ।
छका, सं. पुं. (सं. षट्कं) विदुषट्कयुतं कीटा-
पत्रं २. षड्वस्तुसमूहः ३-४. अक्ष-कपर्द-
भेदः ५. धूतं, अक्षकीटा, देवनं ६. संज्ञा,
वैतन्यम् ।
—पंजा, मु., कूटोपायाः, कपटप्रवन्धाः ।
—पंजा करना, मु. प्रतृ (प्रे.), बन्च (चु.) ।
छक्के छटना, मु., भैर्यं मुच् (तु. उ. अ.),
अधीर-भग्नोस्ताह (वि.) भू ।
छगाड़ा, सं. पुं. (सं. छागलः) अजः, शुभः ।
छगान, सं. पुं. (सं. छाट >) शिशुः, स्तनधयः ।
—मगान, सं. पुं. (बहु.) स्तनन्धयाः, शिशवः
(दोनों बहु.) ।
छगानी, सं. स्त्री., दे. 'छिगुनी' ।
छछुन्दर, सं. स्त्री. (सं. छुछुन्दरः) गंध-
सुली, दिवायिका, दीर्घतुंडी २. अश्रिकोहनक-
भेदः ।
छजना, कि. अ., दे. 'फवना' ।
छजा, सं. पुं. (हिं. छाजज) नीमं, पटलप्रांतः
पटं, पालं, नीमं, बलीकः-कं २. प्रमीवः, वरंढः,
वितर्दी-दिः (स्त्री.) ।

छटपदाना

[२१०]

छपना

छटपदाना, कि. अ. (अनु.) दे. 'तद्वद्वाना'
२. अनिर्वृत-अशत-व्याकुल (वि.) भू ३. अरयंतं
अभिलष् (भ्वा. व. से.) ।
छटपटी, सं. स्त्री. (हिं. छटपटाना) अधी-
रता, आकुलता २. लालसा, तीव्रकोटा ।
छट्टोक, सं. स्त्री. (सं. षट्ठक) सेटक-सेर,
बोडशाशः ।
छटा, सं. स्त्री. (सं.) कतिः-श्रीतिः-धृतिः (स्त्री.),
प्रभा २. चारुता, शोभा, सौन्दर्य, रूप
३. दामिनी, विसृत् (स्त्री.) ।
छटा, वि., दे. 'छटा' ।
छटा, वि. (सं. षष्ठः-षष्ठी-छन्) ।
छटी, सं. स्त्री. (सं. षष्ठी) जन्मतः षष्ठे दिवसे
षष्ठीदेशोपना ।
—का दूध याद दिलाना, मु., अनुशास्
(अ. प. से.), दंड (जु.) ।
छड, सं. स्त्री. पुं. (सं. शरः >) (१-२) धातु-
काष्ठ, दंडः २. लंब, यष्टिः (स्त्री.) लघुः ।
छडा, सं. पुं. (हिं. छड़) पादभूषणमेदः ।
छडा, वि. (हिं. छड़ना) एक, एकाकिन् ,
असहाय, अद्वितीय, एकल ।
छडिया, सं. पुं. (हिं. छड़ी) द्वारपालः,
दौवारिकः ।
छडी, सं. स्त्री. (हिं. छड़) यष्टिः (स्त्री.),
दण्डः २. वेध, वेत्रयष्टिः ।
छल, सं. स्त्री. (सं. छत्रं >) छदिसु (न.),
छदिः (स्त्री.), पटल २. अंतःपटलं, अंतदद्या-
वनं, पटलं ३. वितानं, उहोचः ।
छत्तरी, सं. स्त्री. (सं. छत्रं) शतशलाका,
भातपत्रं, आतपवारणं, छायाभिन्नं, पटोटजं
२. मंडपः-पं ३. कपोतानां वेपुल्लजम् ।
छत्तीसा, वि. (हिं. छत्तीस) धूर्त, मायिक,
मायिन् , छलिन् , कापटिक ।
छत्तीसी वि. स्त्री. (हिं. छत्तीसा) छलिनी,
मायिन् , कापटिकी, २. कुलटा, पुंश्चली ।
छत्ता, सं. पुं. (सं. छत्रं) करंडः, मधुकोशः,
चवालः, छत्रकः २. गणः, समूहः ३. छत्रं,
भातपत्रम् ।
छत्तीस, वि. [सं. षट्त्रिंशत् (निरथ स्त्री.)]
सं. पुं. उक्ता संख्या, तदर्थी (३६) च ।
छत्तीसवाँ, वि. (हिं. छत्तीस) षट्त्रिंशत्तमः-
मी-मं, षट्त्रिंशः-शी-शम् ।

छत्र, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'छतरी' २. राजच्छत्रं
३. बृहच्छत्रं ४. (सुमी) छत्रकः-कम् ।
—छाँह, सं. स्त्री., छत्रच्छाया, शरणं, आश्रयः ।
—घारी,—पति, सं. पुं., नृपः, भूपः ।
छत्री, सं. पुं., दे. 'क्षत्रिय', २. दे. 'छतरी' ।
छदाम, सं. पुं. (हिं. छ + दाम) पणवतुर्वं,
दे. 'दमदी' ।
छध, सं. पुं. [सं. छधन् (न.)] छलं, कपटं
२. गोपनं, गूहनं ३. व्याजः, मिथम् ।
छन, सं. पुं. (अनु.) छणिति, शब्दः-ध्वनिः
(पुं.), सौरकारः २. कणितं, शिञ्जितम् ।
छन, सं. पुं., दे. 'छण' ।
छनक, सं. स्त्री. (अनु.) छणछण-छणछण-
शब्दः-निन्दः, छणछणायितं, छणछणायितं,
दे. 'छन्' (१-२) ।
छनकना, कि. अ. (अनु. छनछन) छण-
छणायते-छणछणायते (ना. धा.), छणछण-
शब्दं कृ, कण् (भ्वा. प. से.), शिञ् (अ.
आ. से.) २. सौरकारं कृ ।
छनकमनक, सं. स्त्री. (अनु.) शिञ्जितं, रणितं
२. दे. 'साजबाज' ।
छनकाना, कि. स., व. 'छनकना' के प्रे. रूप ।
छनछनाना, कि. अ. स., दे. 'छनकना',
'छनकाना' ।
छनना, कि. अ. (सं. शरणं) तितलना शुध्
(दि. प. अ.), निर्गल-क्षर् (भ्वा. प. से.)
२. क्षतविक्षत (वि.) भू ।
छनवाना, छनाना, कि. प्रे., व. 'छानना' के
प्रे. रूप ।
छनाक-का, सं. पुं. (अनु.) दे. 'छनक' ।
छन्न, वि. (सं.) आ-प्र-समा, छन्न, आ-प्र-सं-
वृत, निर्गूढ, पिहित २. लुप्त, तिरोहित, अदृष्ट ।
छप, सं. स्त्री. (अनु.) आस्फालनं, ध्वनिः (पुं.)-
शब्दः २. आस्फालनं, विक्षेपः ।
छपका, सं. पुं. (अनु.) जल, आस्फालः-विक्षेपः
२. पिटकपिधानम् ।
छपछपाना, कि. अ. (अनु.) छपछपयते
(ना. धा.), छपछपशब्दं कृ २. ईष्यन्
(भ्वा. प. से.) ।
छपना, कि. अ. (हिं. चपना = दबना)
अक्-लाछ् (कर्म.), मुद्राकित-चिह्नित (वि.)
भू २. मुद् (कर्म.), मुद्राक्षरैः अक् (कर्म.) ।

छपरख(खा)ट

[२१९]

छुलिया

छपरख(खा)ट, सं. स्त्री. (हि. छपर + खाट)
 *मशहरोखट्वा ।
 छपवामा, कि. प्रे., ष. 'छापना' के प्रे. रूप ।
 छपाई, सं. स्त्री. (हि. छापना) (मुद्राक्षरैः)
 अंकनं, मुद्रणं २. अंकन-मुद्रण, प्रकारः ।
 छपाका, सं. पुं. (अनु.) जलरफालनशब्दः
 २. तीयास्कालः ।
 छप्पन, वि. [सं. षट्पंचाशत् (नित्य स्त्री.)]
 सं. पुं., उक्ता संख्या, तर्दकी (५६) च ।
 छप्पय, सं. पुं. (सं. षट्पदः) द्विधा छन्दोभेदः ।
 छप्पर, सं. पुं. (हि. छोपना) तृण, छदिः
 (स्त्री.) पटलं २. उटजः-अं, कुटीरः ।
 —खट, सं. स्त्री., दे. 'छपरखाट' ।
 —छाना या ढालना, कि. स., वृणादिभिः
 आ- छव् (जु.) ।
 छबदा, स्त्री सं. पुं. स्त्री. (देश.) दे. 'थेकरा-री' ।
 छब-धि, सं. स्त्री., दे. 'छवि' ।
 छबीला, वि. (हि. छब) सुंदर [-री (स्त्री.)]
 शोभन [-नी (स्त्री.)], रूपवत्-कात्तितम्
 [-नी (स्त्री.)] ।
 छबीस, वि. [सं. षड्विंशतिः (नित्य स्त्री.)] ।
 सं. पुं., उक्ता संख्या, तर्दकौ (२६) च ।
 छबीसखी, वि. (हि. छबीस) षड्विंशति-
 तमः-नी-मम्, षड्विंशः-शी-शम् ।
 छमंड, सं. पुं. (सं.) मातृपितृ-जनक,-हीनः
 बालकः, अनाथः ।
 छमक, सं. स्त्री. (अनु.) दे. 'टसक' ।
 छमकना, कि. अ., (अनु० छम) दे. छम-
 छमाना ।
 छमछम, सं. स्त्री. (अनु.) धारासार-धारासंपात,
 शब्दः २. छमछम, रणितं-निनदः, छमछमा-
 यितं, छणत्कारः, झणत्कारः । कि. वि., सछण-
 (सं.) कारम् ।
 छमछमाना, कि. अ. (अनु.) छमछमायते
 (ना. धा.), छमछमनिनदं कृ २. दे. 'चमचमाना' ।
 छमा, दे. 'क्षमा' ।
 छमाछम, सं. स्त्री. (अनु.) दे. 'छमछम' ।
 छरकना, कि. अ. (अनु. छर) सछरछरशब्दं
 विशिष्ट-विकृ (कर्म.), छरछरायते (ना. धा.) ।
 छरना, कि. अ. (सं. छरणं) दे. 'टपकना' ।
 छरहरा, वि. (हि. छड़) कृश, तनु, कृशांग
 [-नी (स्त्री.)] २. उषमिन्, उषोगिन् ।

छर्वन, सं. पुं. (सं. न.) प्र., छदि(दी) का,
 वमः-मि. (स्त्री.), वमनं, वमथुः (पुं.), वांतिः
 (स्त्री.), उद्धारः, उत्कासिका ।
 छरी, सं. पुं. (अनु. छर) लोह-सीसक-
 गुलिका २. दे. 'कंकड़ी' ३. वेगक्षिप्तः जलकण-
 समूहः ।
 छल, सं. पुं. (सं. पुं. न.) कूटं, कपटं, कैतवं,
 छबन् (न.), प्रतारणा, प्र-वचनाना, अतिसंधानं
 २. व्याजः, मिथं ३. चतुर्दशः-पदाधैर(न्या.) ।
 —बल, सं. पुं., कूट, उपायः-कल्पना-प्रबंधः ।
 —कपट, सं. पुं., दे. 'छल' (१-२) ।
 —छिद्र, सं. पुं., दे. छल (१) ।
 छलक, सं. स्त्री. (हि. छलकना) परिवाहः,
 उपरिधावः ।
 छलकना, कि. अ. (अनु. छल) उपरि कु-
 परिवाह् (भ्वा. प. अ.), छसिन् (कर्म.),
 प्रवृष् (भ्वा. आ. से.), स्फीत-वृद्ध, नल (वि.)
 भू ।
 छलकाना, कि. स., द. 'छलकना' के प्रे. रूपः ।
 छलछलाना, कि. अ. (अनु.) छलछलायते,
 (ना. धा.), सछलछलशब्दं कृ (भ्वा.
 प. अ.) ।
 छलना, कि. स. (सं. छलनं) छलयति (ना. धा.),
 अति-अभि-संधा (जु. उ. अ.), प्रनु-मृद् (प्रे.),
 वन् (जु.) । सं. स्त्री., दे. 'छल' १. ।
 छलनी, सं. स्त्री. (स्त्री. चालनी) तितउः ।
 —करना, मु.: अनेकवृत्ति-निर्मिद (रु. प. अ.)-
 व्यध् (दि. प. अ.) ।
 छलौगा, सं. स्त्री. (हि. उछल + सं. अंगं) प्लवः,
 प्लवनं, प्लुतं-तिः (स्त्री.), झंपः-झंपा, बलितम् ।
 ऊँची—, सं. स्त्री., उल, प्लवः-प्लुतिः (स्त्री-
 पतनं ३. ।
 लंबी—, सं. स्त्री., प्र., प्लवः-प्लुतिः ३. ।
 —मारना, कि. स., (ऊँची) उःपत् (भ्वा. प. स.),
 उःप्लु (भ्वा. आ. अ.) । आगे (आगे) बलम् (भ्वा.
 प. से.), प्लु । (नोचे) अवप्लु ।
 छलाषा, सं. पुं. (सं. छलं >) मिथ्या, अचलः-
 अग्निः (पुं.)-दीप्तिः (स्त्री.), दीप्याभासः
 २. मायाहृदयं, इंद्रजालम् ।
 छलित, वि. (सं.) विप्रलब्धः, वंचित,
 प्रतारितः ।
 छुलिया, वि. दे. 'छलो' ।

छल्ली, वि. (सं. छलिन्) कपटिन्, मायिन्, कापटिक, प्रवारक, छाथिक, शठ, धूर्त, कितव, वंचक । सं. पुं. शठः धूर्त, इ. ।
 छल्ला, सं. पुं. (सं. छल्ली-लता >) अंगुली- (री) यंत्रकं, कर्मिका, मुद्रा ।
 छल्लि, सं. स्त्री. दे. 'छल्ली' १-३ ।
 छल्ली, सं. स्त्री. (सं.) लता, वल्ली २. वल्कः, कं, त्वन् (स्त्री.) ३. संतानः ४. पुष्पभेदः ।
 छल्लेदार, वि. (हिं. छला + प्रा. दार) सबलय, सचक २. गोल-वर्तुल, निहवत् ।
 छवाई, सं. स्त्री. (हिं. छाना) आ-समा-प्र-परि-सं-अव-छादनं, आ-समा-नि-सं-वरणम् । आच्छादन-संवरण, भूत्या-भूतिः (स्त्री.) ।
 छवि, सं. स्त्री. (सं.) सौदर्यं, शोभा, लावण्यं, रूपं, चारुता २. कांतिः (स्त्री.), प्रभा ।
 छौं, सं. स्त्री. दे. 'छाह' ।
 छौंगुर, सं. पुं. दे. 'छगा' ।
 छौंट, सं. स्त्री. (हिं. छोटना) अवच्छेदनं, निकृंतनं २. विदलानि-शकलानि-शकलानि (बहु.) ३. शेषः-धं, निस्सारद्रव्यम् ।
 छौंटन, सं. स्त्री. (हिं. छौंटना) अवशिष्टं, उच्छिष्टं, शेषः-धं । २. विदलानि-शकलानि (बहु.) ।
 छौंटना, कि. स. (सं. छेदनं) अग्राणि अवशिष्ट (ह. प. अ.) निकृत् (तु. प. से.) छ (क. उ. से.) २. वृ. (स्वा. उ. से. ; तु.) उदग्रह (क. प. से.), विशिष्य (प्रे.) ३. विमज् (भ्वा. उ. अ.), पृथक् कृ. ४. शुष् (प्रे.), निर्मली कृ. ।
 छाँदस, वि. (सं.) वैदिक, श्रौत, २. वेदश, वेदाधायिन् ३. पद्यमय छन्दोबद्ध स पुं. (सं.) वेदश, -ब्राह्मणः-विप्रः ।
 छाँदोग्य, सं. पुं. (सं. न.) सामवेदब्राह्मणम् (ग्रंथविशेषः) २. छांदोग्योपनिषद् (स्त्री.) ।
 छाँष, सं. स्त्री. (सं. छाया) प्रकाश-छाँह आतप, अभावः, श्यामा, भावानुगा २. प्रति, छाया-बिंब-भूतिः (स्त्री.) रूप २. निरातपस्थानं ४. आश्रयः, शरणम् ।
 —गौर, सं. पुं. (हिं + प्रा.) राज, छत्र २. दर्पणः, मुकुरः ।
 छाक, सं. स्त्री. (हिं. छकना) लुष्टिः-लुप्तिः-ह्छापूर्तिः (स्त्री.) २. प्रातराशः, कल्पवर्तः ३. माध्यंदिनं भोजनं ४. क्षीयता ।

छाग, सं. पुं. (सं.) अजः, छागलः ।
 छागल, सं. पुं. (सं.) दे. 'छाग' । सं. स्त्री. अला, भलका, भलिः (स्त्री.) ।
 छागी, सं. स्त्री. (सं.) अजा, दे. 'बकरी' ।
 छाङ्ग, सं. स्त्री. (सं. छच्छिका) सारहोनं प्रचुर-जलं तक्रम् २. घृत-नवनीत, शेषः ।
 छाज, पुं. पुं. (सं. छादः >) प्रस्फोटनं, दूर्ध-पं, सूर्धः-पंम् ।
 छाजन, सं. पुं. (सं. छादनं) वस्त्रं, वसनम्, आच्छादनं २. दे. 'छप्पर' ।
 —भोजन, सं. सं., भोजनवस्त्रं, अशनवसनं ।
 छाता, सं. पुं. (सं. छवं) हृदय, छत्र-आतपधम् ।
 छाती, सं. स्त्री. (सं. छादिन् >) उरसू-वक्षस् (न.), उरसू-वक्षस्, स्थलं, वस्त्रम् । २. हृदयं, मनस् (न.) ३. वीर्यं, शौर्यम् ।
 —कषी करना, मु., पैर्य दृश् (प्रे.), विक्रमं प्रकार् (प्रे.) ।
 —जलना, मु., अम्लपित्तेन पीड् (कर्म.) २. ईर्ष्या दद् (कर्म.) ।
 —टंड़ी होना, मु., संतुष् (दि. प. अ.), सुखं स्था (भ्वा. प. अ.) ।
 —निकाल कर चलना, मु., साटोपं-सगर्वं चल् (भ्वा. प. से.) ।
 —पर पत्थर रखना, मु.-सह्-क्षम् (भ्वा. आ. से.) ।
 —पर मूंग दलना, मु., प्रत्यक्षं अपहृ ।
 —पर साँप लोटना, मु.-मात्सर्येण दद् (कर्म.) ।
 —पीटना, मु., परिदेव् (भ्वा. आ. से.), अनु- शुच (भ्वा. प. से.) ।
 —फटना, मु., चित्तं विदृ (कर्म.), हृदयं भिद् (कर्म.) ।
 —से लगाना, मु., आलिग् (भ्वा. प. से.), आरिल् (दि. प. अ.), उपगृह् (भ्वा. उ. से. ; उपगृह्ति-ते) ।
 छात्र, सं. पुं. (सं.) अध्येतृ (पुं.), अधीयानः, विद्याधिन् २. शिष्यः, अंतर्वासिन् ।
 —वृत्ति, सं. स्त्री. (सं.) शिष्यवृत्तिः (स्त्री.) ।
 छात्रक, सं. पुं. (सं.) छात्रः, विद्याधिन् । (सं. न.) २. मधु (न.) ; माक्षिकं, सारधम् ।
 छात्रालय, सं. पुं. (सं.) छात्रावासः, विद्याधि-निवासः ।

छादक

[२२१]

छिच(छ)क

छादक, वि. (सं.) आच्छादक, आवरक, पिधायक ।

छादन, सं. पुं. (सं. न.) आच्छादनं, आवरणं पुटं, वेहनं २. तिरस्करिणी, व्यवधानं ३. वसनानि-वस्त्राणि (बहु.) ।

छादित, वि. (सं.) आच्छादित, आवृत, आवेष्टित ।

छादिनी, सं. स्त्री. (सं.) त्वच्-रोमभूमिः (स्त्री.), स्वप्नं, त्वचा, छली-ह्री ।

छादिक, वि. (सं.) कपटिन, छलिन, मायिन । सं. पुं. (सं.) धूर्तः, वचकः, प्रतारकः ।

छान, सं. स्त्री. (सं. छादनं >) छादं, वृणः, पटलं-दधिः (स्त्री.) २. दे. 'छानस' ।

छानना, कि. स. (सं. क्षारणं) तितउना-वस्त्रेण निर्गल्-विशुभ् (प्रे.) २. (रसादि) निष्कृष् (भ्वा. प. अ.), निपीड् (जु.) ३. विडुशः-लवशः-सूक्ष्म-गल् (प्रे.) ४. दे. 'खोजना' । सं. पुं., तितउना निर्गालनं, विशोधनं, विदुशः-क्षारणं; अन्वेषणं इ. ।

छाननीन, सं. स्त्री. (हि. छानना + नीनना) सूक्ष्म-सम्पत्, अनुसंधानं-अन्वेषणं २. नैपुण्येन निरूपणं-परीक्षणं-पर्यालोचनम् ।

छानवे, वि. [सं. षण्वतिः (नित्य स्त्री.)] । सं. पुं., उक्ता संख्या, तदंकी (९६) च ।

छानस, सं. स्त्री. (हि. छानना) कढंगरः, तुपः, सुषं-सम् ।

छाना, कि. स. (सं. छादनं) आच्छद् (जु.), आह् (स्वा. उ. से.), आह् (क्. उ. से.) २. वृणादिभिः आच्छद् (जु.), वृणद्वि निर्मा (जु. आ. अ.) ।

छा आना, कि. अ., वितन्-विस्तृ-विस्तृ (कर्म.), प्र-वि, स-खप् (दोनो भ्वा. प. अ.) २. छायाया आवृ (स्वा. उ. से.) ।

छा लेना, कि. स., दे. 'छाना' १.; २. तिमिरेण आच्छद् (जु.), तिमिराच्छन्नं कृ ।

छाप, सं. स्त्री. (हि. छापना) अंकः, चिह्नं, म्वासः, मुद्रा २. मुद्रा, मुद्रिका, मुद्रिकार्यं ३. अंगुली (री) यकं, अमिका ।

—लगाना, कि. सं., अंक (जु.), लांछ (भ्वा. प. से.), चिह्नयति-द्वयति (ना. धा.) ।

छापना, कि. स. (सं. चपनं >) मुद्रयति (ना. धा.), मुद्राक्षरैः अंक (जु.), दे. 'छाप लगाना' । सं. पुं., मुद्रणं, मुद्राक्षरैः अंकनम् ।

छापने योग्य, वि., मुद्रयितव्य, मुद्राक्षरैः अंकनीय ।

छापनेवाला, सं. पुं., मुद्रकः, मुद्रयित्-मुद्रण-कृत (पुं.) ।

छापा हुआ, वि., मुद्रित, मुद्रकित, मुद्राक्षरांकित ।

छापा, सं. पुं. (हि. छापना) दे. 'छाप' (१-२) ३. सौप्तिकं, सौप्तिकाक्रमः ४. मुद्रण-यंत्रम् ।

—भारना, कि. स., नक्तं अक्कंद (भ्वा. प. अ.), रात्री सहसा अभियुज् (स. आ. अ.) ।

—लगाना, कि. स., दे. 'छाप लगाना' ।

—खाना, सं. पुं. (हि + का.) मुद्रणालयः ।

—विद्या, सं. स्त्री., मुद्रण-कला-विद्या ।

छाया, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'छाँह' (१-४) । प्रति, लेखः-लिपिः (स्त्री.) ६. प्रतिकृतिः (स्त्री.) अनुकरणं, सट्टशवस्तु (न.) ७. कांतिः-श्रुतिः (स्त्री.) ८. तिमिरं, तमस् (न.) ९. भूत-प्रेत-प्रभावः ।

—पथ, सं. पुं. (सं.) आकाश-स्वर-वियद्-गंगा, सुर, धुनी-नदी २. आकाशः-शब् ।

छार, सं. पुं., दे. 'हार' ।

छाल, सं. स्त्री. (सं. छालः-लं), वृहत्त्वन् (स्त्री.), वल्कं, वल्कलः-लं २. शक्लं, त्वच् (स्त्री.) ।

—उतारना, कि. स., त्वचयति (ना. धा.), निरत्त्वयी कृ, त्वचं अपनी (भ्वा. प. अ.) ।

छाला, सं. पुं. (सं. छालः-कं >) त्वक्स्फोटः, शोकः, पिटिका २. रक्त-स्फोटः-गंडः २. चर्मन् (न.), अजिनम् ।

छालिया, सं. पुं. (हि. छाला) पूगं, ताबूळं २. पूग, शकलः-लंबः ।

छावनी, सं. स्त्री. (हि. छाना) स्कन्धाकारः, शिविरं, सैन्यावासः, निवेशः, सेना-वासः-स्थानं २. दे. 'छप्पर' ।

छिगुली, सं. स्त्री., दे. 'छिगुनी' ।

छि, अव्य. (अनु.) धिक्, धिर धिक् ।

छिगुनी, सं. स्त्री. (सं. छुद्र + अंगुली) कनिष्ठा-धिका, कनीनिका, दुर्बलांगुली-लिः (स्त्री.) ।

छिच(छ)क, सं. स्त्री., व्यर्थमासहण्डः

छिद्यला

[२१२]

छिद्यानवे

छिद्यला, वि. (हि. छुछा) आल्प-गाध, जल, गा(गां)भीर्यश्चत्य, वधान, गाध ।

छिद्यलाई, सं. स्त्री (हि. छिद्यला) गाधता, गंभीरताऽभावः ।

छिद्यली, सं. स्त्री (हि. छिद्यला) घटशकलतारणं, बालकीडामेदः ।

छिद्योरा, वि. (हि. छिद्यला) क्षुद्र, अवम, अधम, तुच्छ, यांभीर्यश्चत्य ।

छिद्योर(श)पन, सं. पुं. (हि. छिद्योरा) क्षुद्रता, गंभीरताऽभावः, अधमता, तुच्छता ।

छिटकना, कि. अ. (सं. क्षिप्त >) अवा-आ-प्र-विकृ (कर्म.), विक्षिप् (कर्म.), प्र-सु (स्वा. प. अ.) २. प्रकाश-विसृत (स्वा. आ.से.) ।

चौदनी का—सं. पुं. कौमुदीप्रसारः, ज्योत्स्नाविस्तारः ।

छिटकाना, कि. स., व. 'छिटकना' के सकर्मक रूप ।

छिटकना, कि. स. (हि. छिटकना) २. अवा-आ-नि, तिच् (तु. प. अ.), अभि-प्र-सं-उक्ष् (स्वा. प. से.), विन्दून्-कणान् विक्षिप् (तु. प. अ.)-विकृ (तु. प. से.) ।

छिटकवाना, छिटकाना, व. 'छिटकना' के प्रे. रूप ।

छिटकाव, सं. पुं. (हि. छिटकना) अवा-आ-सेकः, प्रोक्षणम् ।

छिटना, कि. अ. (हि. छेडना) आ-प्र-रम् (कर्म.), उप-प्र-कम् (कर्म.) ।

छितरना, कि. अ., दे. 'खितरना' ।

छिचि, सं. स्त्री (सं.) छेदनं, लवनं, कृन्तनं, व्रश्चनम् ।

छिवना, कि. अ., व. 'छेदना' के कर्म. रूप ।

छिवरा, वि. (सं. छिद्रं >) विरल, सच्छिद्रपेलव, तनु २. जीर्णं, शीर्णं ।

छिदाना, कि. प्रे. व. 'छेदना' के प्रे. रूप ।

छिद्रं, सं. स्त्री (सं.) कुठारः, परशुः । २. वज्र-जं, कृत्तिशं, पविः ।

छिद्र, सं. पुं. (सं. न.) विवरं, सुविरं, रंधं, विलं २. दोषः, वैकल्प्यं, न्यूनता ।

छिद्रान्वेषण, सं. पुं. (सं. न.) पुरोभागित्त्वं, दोषग्रहित्त्वं, निदकत्वम् ।

छिद्रान्वेषी, वि. (सं. चिन्) पुरोभागिन्, दोषैकदृश (पुं.), दोषग्रहिन्, निदक ।

छिद्रित, वि. (सं.) सच्छिद्र, सरंध, सविवर, २. विद्र ।

छिद्र, सं. पुं. दे. 'क्षण' ।

छिद्रना, कि. अ., व. 'छीसना' के कर्म. रूप ।

छिद्ररा, वि. पुं., (हि. छिद्ररा) न्यभिचारिन्, परदारनामिन् ।

छिद्ररी, वि. स्त्री (सं. छिद्र + नारी >) कुलटा, न्यभिचारिणी ।

छिद्रवाना, छिद्राना, कि. प्रे. व. 'छानना' के प्रे. रूप ।

छिनाल, सं. स्त्री, दे. 'कुलटा' ।

छिन्न, वि. (सं.) कृत्तं, लून, बात, दिन, धात, छिन्न, वृषण ।

—भिन्न, वि. (सं.) अवा-आ-प्र-वि, कौर्णं, निरस्त २. लून, कृत्त, खंडित ३. ३. अस्त-व्यस्त ।

छिपकली, छिपकी, सं. स्त्री (हि. चिपकना) गृहगोषा-पिका, ज्येष्ठा-ष्टी, मुषली, गृदालिका, कुलवमत्स्यः २. तन्वी (नारी) ३. कर्णभूषणभेदः ।

छिपटी, सं. स्त्री (सं. चिपिट >) तट, खंड-शकलम् ।

छि(सु)पना, कि. अ., [सं. क्षिप् = (परदा आदि) डालना] तिरोभू, अंतर-इ (अ, प. अ.) ली (वि. आ. अ.), अंतर-तिरो, धा (कर्म.) अदृश्य-प्रच्छन्न-अपवारित (वि.) भू ।

छिपा, वि. (हि. छिपना) अंतरित, तिरो-हित-भूत ।

छिपा रुस्तम, वि. पुं., अज्ञात-अप्रसिद्ध-अविख्यात-गुणिन् ।

छिपे-छिपे, कि. वि. गुहं, गुप्त, निभृतं, प्रच्छन्नम् ।

छिपाना, कि. स., हि. (छिपना) अंतर-तिरो, धा (जु. उ. अ.), अपवृ (प्रे.), सुद्ध (स्वा. उ. से.), प्रच्छद् (प्रे.) ।

सं. पुं., अंतर्धानं, तिरोधानं, गू गो ङ्ङनं, योपनं, संवरणम् ।

छिपाव, सं. पुं. (हि. छिपाना) दे. 'छिपाना' सं. पुं. ।

छिद्यानवे, वि. तथा सं. पुं., दे. 'छानवे' ।

छियालिस, वि. [सं. षट्चत्वारिंशत् (नित्य स्त्री.)] । सं. पुं., उक्ता संख्या, तदंकी (४६) च ।

छियासठ, वि. [सं. षट्पष्टिः (नित्य स्त्री.)] । सं. पुं. उक्ता संख्या, तदंकी (३६) च ।

छियासी, वि. [सं. षडशीतिः (नित्य स्त्री.)] । सं. पुं., उक्ता संख्या, तदंकी (८६) च ।

छिलका, सं. पुं. (सं. शल्कं) (फलदि का) त्वच् (स्त्री.) २. बल्कः-स्कं, बल्कलः-लं ३. तुपः, धुपः, वुसम् ।

—उत्तारना, कि. स., दे. 'छाल उत्तारना' ।

छिलना, कि. अ., व. 'छीलना' के कर्म. रूप ।

छिलवाना, छिलाना, कि. प्र., व. 'छीलना' के प्रे. रूप ।

छिहत्तर, वि. [सं. षट्सप्ततिः (नित्य स्त्री.)] । सं. पुं., उक्ता संख्या, तदंकी (७६) च ।

छीक, सं. स्त्री. (सं. छिक्का) क्षुतं-ता, क्षवः, क्षवथुः (पुं.), क्षुत-तिः (स्त्री.) ।

छीकना, कि. अ. (हि. छीक) क्षु (अ. प. से.), क्षुतं-क्षवं-छिकां कृ ।

छीट, सं. स्त्री. (सं. क्षित >) (अलदिका) कणः-णिका, बिटुः (पुं.), शीकरः, पृषतः २. बरुभेदः, चित्रवस्त्रम् ।

छीटा, सं. पुं. (हि. छीट) दे. 'छीट' २. शीकरवर्षः, पृषतपातः २. जल-आस्फालः-विक्षेपः ४. अंकः, लांछनं ५. लब्धाक्षेपः ।

—देना या मारना, कि. स., पृषतैः-शीकरैः-विल्य् (प्रे.)-आर्द्रयति (ना. धा.) ।

छी, अव्य., दे. 'छि' ।

—छी करना, सु., युप् (पंचमी के साथ सन्नंत रूप, जुयुपसते), कुरम् (जु. आ. से), गह् (जु. उ. से.) ।

छीका, सं. पुं. (सं. क्षियया) दिक्थम् ।

छीछालेवर, सं. स्त्री. (अनु. छी छी) दुर्दशा, दुर्गतिः (स्त्री.) ।

छीज, सं. स्त्री. (सं. क्षयः) अपचयः, ङासः ।

छीजना, कि. अ. (सं. क्षयणम्) क्षि-विश्व् (कर्म.), हस् (भ्वा. प. से.) ।

छीट, सं. स्त्री. दे. 'छीट' ।

छीनना, कि. स., (सं. छिन >) आच्छिद्य् (क्. प. अ.), ह्यदिति कृष् (भ्वा. प. अ.),

आक्षिप्य ग्रह् (क्. प. से.)-ह (भ्वा. प. अ.) आच्छिद्य-बलात् अपहृ-ग्रह् ।

छीपी, सं. पुं. (हि. छापना) वसनमुद्रकः-वस्त्रचित्रकः ।

छीर, सं. पुं. दे. 'क्षीर' ।

छीलना, कि. स. (हि. छाल) दे. 'छाल उत्तारना' २. तनू कृ, त्वङ्-तक्ष् (भ्वा. प. से.)

३. अप-भ्या-यृञ् (अ. प. वे.; जु.) विलुप् (प्रे.)

छुआछुत, सं. स्त्री. (हि. छुना) अस्यय-स्पर्शः, अनुचितसंस्पर्गः २. स्थूय्यास्थूयविचारः ।

छुईसुई, सं. स्त्री. दे. 'लज्जावंती' ।

छुछुंवर, सं. पुं. दे. 'छुंवर' ।

छुटकारा, (हि. छुटना) (दुःखादि से) मोक्षः, मुक्तिः (स्त्री.), मोचनं २. वर्जयं, रहितत्वं ३. निश्चितता, निर्वृतिः (स्त्री.) ।

—पाना, कि. अ., वि-निर-मुच् (कर्म.), मोक्ष-उद्ध-विसृज् (कर्म.) ।

छुटी, सं. स्त्री. (हि. छुटना) दे. 'छुटकारा' २. अवकाशः, क्षणः, कार्यनिवृत्तिः (स्त्री.)

३. अनध्यायः, अनध्यायदिवसः, विश्रामदिवसः ४. विश्रामः, कालः-समयः ।

छुडवाना, छुडाना, कि. प्रे., व. 'छोडना' के प्रे. रूप ।

छुड, वि., दे. 'छुड' ।

छुधा, सं. स्त्री., दे. 'लुधा' ।

छुपना, छुपाना, कर्मशः कि. अ. तथा कि. स., दे. 'छिपना' तथा 'छिपाना' ।

छुरा, सं. पुं. (सं. क्षुरः) कृपाणः, चङ्छुरी-रिका ।

छुरी, सं. स्त्री. (सं.) क्षुरी, छुरिका, कृपाणी-णिका, अस्ति, येनुका-पुत्रिका ।

—मारना, कि. स., छुरिकया न्यष् (दि. प. अ.), कूर् (तु. प. से.), क्षण् (त. प. से.) ।

छुवा(ला)ना, कि. प्रे., व. 'छुना' के प्रे. रूप ।

छुहारा, सं. पुं. (सं. क्षुध् + हारः >) खर्जूर-भेदः, छोहारा २. पिंडखर्जूरफलं, गोस्तनाकार-पिंड, खर्जूरी, खर्जूरी ।

छू, सं. स्त्री. (अनु.) मंत्रपाठानंतरं-छूत्कारः-फूत्कारः ।

—तर होना, सु., ह्यदिति तिरोभू ।

छ्वा, वि. (सं. लुच्छ) निःसार, असार
२. रिक्त शून्य, शून्यवर्ग ३. निर्धन ।

छूट, सं. स्त्री. (हि. छूटना) दे. 'छुटकारा'
(१, २) ३. अवकाशः, क्षणः ४. ऋणमोक्षः
५. स्वातंत्र्यं स्वच्छंदता ६. प्रमादः, स्वलितम् ।
छूटना, कि. अ. (सं. छोटनं = काटना >)
वि., मुच् (कर्म.), प्रै-रश् (कर्म.), दे. 'छुट-
कारा पाना' २. (पदात्) च्यु (स्वा. आ.
अ.)-अपास् (कर्म.) ३. विलुब् (कर्म.),
विशिप् (दि. प. अ.) : ४. प्रचल् (स्वा. प.
से.), प्रस्था (स्वा. आ. अ.) ५. (प्रमादात्)
न अनुष्ठा-विधा (कर्म.) ।

शरीर—, सु., दे. 'भरना' ।

छूत, सं. स्त्री. (हि. छूना) सं-स्पर्शः, संसर्गः,
संपर्कः २. अस्तुश्य-स्पर्शः-संसर्गः ३. मालिन्यं,
दूषणं, अशीचम् ।

—का शेष, सं. पुं., संस्पर्शज-सांसात्मिक-संका-
मकः-रोगः ।

छूना, कि. स. (छोपनं) छुप्-स्थ-पराशुश्
(तु. प. अ.), इस्तेन आलम् (स्वा. आ. अ.) ।
सं. सं., संपर्कः, संसर्गः, सं-स्पर्शः, स्पृष्टिः
(स्त्री.), परामर्शः, आलम्बनम् ।

छूने योग्य, वि., स्पृश्य, छोपनीय, परामर्शी ।
छूनेवाला सं. पुं., सं., स्पर्शकः, स्पृष्ट-स्पृष्टं (पुं.) ।
छुआ हुआ, वि., स्पृष्ट, संस्पृष्ट, आलम्ब, छुस,
परामृष्ट ।

आकाश—, सु., गगनं नुब् (स्वा. प. से.) नभः
स्पृश्, अस्तुच्च (वि.) शृत् (स्वा. आ. से.) ।

छेक, छेकाव, सं. पुं., दे. 'जृप्ती' ।

छेकना, कि. स. (सं. छो = काटना >) निरुध्
(रु. उ. अ.), निवार (जु.) २. आच्छद्
(जु.), व्याप् (स्वा. उ. अ.) ३. निःस्व
(वि.) कृ, सर्वस्वं दंष्ट (जु.)-आच्छिद्
(रु. प. अ.) ४. परिष् (प्रे.), परि, वेष्ट (प्रे.) ।
५. अव-वि-लुप् (प्रे.), निर-अस् (दि. प. से.) ।

छेक, सं. पुं. (सं. छेकः >) विवरं, विवरं, छिद्रं
२. छेदः, भेदः ३. वि, भागः ।

—अनुप्रास, सं. पुं. (सं. अनुप्रासालंकारभेदः,
वर्णानां सङ्घट्टावृत्तिः (स्त्री.) (उ० पावनः
पवनः)

छेष, सं. स्त्री. (हि. छेड़ना) कोषोदीपनं,
प्रकोपनं २. परिहासः व्यंग्योक्तिः (स्त्री.)

३. लीला, विलासः, हावः ४. कलहः, कलिः
(पुं.) ।

—छाव, सं. स्त्री., दे. 'छेड़' (१, ४) ।

छेषना, कि. स. (हि. छेड़ना) कुप्-कुधु-रुष्
(प्रे.) २. दे. 'छूना' ३. आ-प्र-रम् (स्वा.
आ. अ.), उप-प्र-रम् (स्वा. आ. अ.) ४. अद्-
आयस् (प्रे.), उपरुष् (रु. उ. अ.) ५. अव-
परि-रुष् (स्वा. प. से.) ६. कलहं कृ । सं.
पुं., 'छेव' ।

छेसा, वि. (सं-न्तृ) छेदकः, लावकः, छेदकरः-
छिद् । सं. पुं., वनच्छिद्, काष्ठच्छिद् ।

छेष, सं. पुं., दे. 'क्षेत्र' ।

छेद, सं. पुं. (सं.) छिद्रं, विलं, विवरं, रंध्रं,
सुशि (पि प्रं), कुहरं, रोकं, निर्व्यथनं, वपा,
सुधिः (स्त्री.) २. वि-नाशः, वि-ध्वंसः
३. दोषः, न्यूनता ४. वि-भाजकः (गणित) ।

छेदक, वि. (सं.) वेधक, भेदक, छेत्, भेत्,
वेधिन् २. नाशक, ध्वंसकर ३. विभाजक ।
सं. पुं., वेधनी ।

छेदन, सं. पुं. (सं. न.) वेधः, वेधनं छिद्रकरणं
२. वि-नाशनं-ध्वंसनं, वि-नाशः ३. कर्तनं,
भेदनं, लवनम् ।

छेदना, कि. स. (सं. छेदनं >) व्यध् (दि. प.
अ.), छिद्रं विधा (जु. उ. अ.)-कृ, छिद्रयति
(ना. धा.), निर्भिद् (रु. प. अ.), उन्-
समुत्-कृ (तु. प. से.) । सं. पुं., दे. 'छेदन' ।

छेदने योग्य, वि., छेत्तव्य, छेदनीय, वेध्य ।

छेदनेवाला, दे. 'छेदक' ।

छेदा हुआ, वि., छिद्रित, छिन्न, विद्ध, निर्भिन्न ।

छेदा, सं. पुं. (हि. छेड़ना) घुणः काष्ठकीटः
२. छिद्रं, रन्ध्रम् ३. घुणः अन्नच्छेदः ।

छेदी, वि. (सं-रिन्) दे. 'छेदक' ।

छेना, सं. पुं. (सं. छेदनं >) मिष्टान्नभेदः-
*छिन्ना ।

छेनी, सं. स्त्री. (सं. छेदनी) तक्षणी, टंकः,
प्रक्षतः २. शिलाभेदः ।

छेम, सं. पुं., दे. 'क्षेम' ।

छेरी, सं. स्त्री., दे. 'बकरी' ।

छेव, सं. पुं. (सं. छेदः) आपातः, प्रहारः
२. व्रणः-णं ३. आगामिविपद् (स्त्री.) ४. काष्ठ-
खंडः ।

छैल-ला

[२२५]

जंगली

छैल-ला, सं. पुं. (सं. छविः >) तुभंगमन्यः, छेकः, रूपगर्भितः, सुवेशमानिन्, वेपामि-
मानिन् ।

—चिकनिया, सं. पुं., दे. 'छैल' ।

छोकरा-डा, सं. पुं. (सं. शाकः >) कुमार-
रकः, दारकः, बालः-लकः, मणवः-वकः ।

छोकरापन, सं. पुं. (हिं. छोकरा) वाक्यं,
कौमारं २. बचलता, मौल्यम् ।

छोकरी-डी, सं. स्त्री. (हिं. छोकरा) कुमारी-रिका,
बाला-लिका, कन्या, दारिका, भागविका ।

छोटा, वि. (सं. क्षुद्र) अणु, तनु, लघु, महत्व-
गौरव, रक्षित २. अल्प-क्षुद्र, तनु-शरीर ३. अनु-
जन्मन्, कनीयम्, यवीयस् ४. अवरपद-
माज्, अवर ।

—वडा, वि., विविध, बहुविध २. अघावच,
लघुगुरु, अणुमहत् ३. कनिष्ठज्येष्ठ ।

छोटार्ह, सं. स्त्री. (हिं. छोटा) अगुता, लघुता,
लाघवं, अणिमन्-लघिमन् (पुं.), २. क्षुद्रता,
नीचता ।

छोटापन, सं. पुं., दे. 'छोटार्ह' ।

छोड़ना, कि. स. (सं. छोरणं) उद-वि, सज्-
निर्मुञ्च (तु. प. अ.), उञ्च् (तु. प. से.), त्यज्
(भ्वा. प. अ.), हा (जु. प. अ.), परिहृ
(भ्वा. प. अ.), रह्-दर्ज (जु.) २. क्षम्-
सह् (भ्वा. आ. से.), क्षम्-मृष् (दि. प.
से.), क्षम्पयति (तिज् (सन्नत = तितक्षते)
३. क्षिप् (तु. प. अ.), अम् (दि. प. से.)

४. प्रमादात् न कु अथवा अनु-स्था (भ्वा. प.
अ.) ५. मोक्ष्-मुच् (प्रे.) । सं. पुं., वि-उद-
सर्जनं, त्यजनं, उञ्जनं, परिहरणं, उत्सर्गः
त्यागः, परिहारः ६. ।

छोड़ने योग्य, वि., त्याज्य, उत्सृष्ट्य, परिहार्य ।
छोड़नेवाला, सं. पुं., विहृष्ट-त्यक्त-परिहर्तृ
(पुं.) ।

छोड़ा हुआ, वि., उद-वि-सृष्ट, त्यक्त ६. ।

छो(छु)ड़ाना, छोड़वाना, कि. प्रे., व. 'छोड़ना'
के प्रे. रूप ।

छोत, सं. स्त्री., दे. 'लूत' ।

छोप, सं. पुं., दे. 'लेप' ।

छोभ, सं. पुं., दे. 'क्षोभ' ।

छोर, सं. पुं. (हिं. ओर का अनु.) उपांतः,
प्रांतः, पर्यंतः, समंतः, परिसरः, सीमन् (पुं.),
सोमा २. तटः-टी-टम् ।

छोलदारी, सं. स्त्री. (देश.) क्षुद्रपटवासः, लघु-
दूर्यभ्यं, पटगृहकम् ।

छोला, सं. पुं. (हिं. छोलना = छोलना) हरित-
चणः-चणकः ।

छोह, सं. पुं. (सं. क्षोभः >) स्नेहः, प्रेमन्
(पुं.), २. दया, कृपा ।

छोक, छोकिन, सं. स्त्री. (अनु.) दे. 'क्वार' ।

छोड़ना, कि. स., दे. 'बधारना' ।

छौना, सं. पुं. (सं. शावः) शावः, शाकः,
दिभः, पोतः, अर्भकः ।

छौर, सं. पुं., दे. 'क्षौर' ।

ज

ज, देवनगरीवर्णमालाया अष्टमो व्यंजनवर्णः,
जकारः ।

जंकशन, सं. पुं. (अं.) संयोजनं, लोहपश-
संगनः ।

जंग, सं. स्त्री. (फा.) युद्धं, संग्रामः ।

जंग, सं. पुं. (फा.) अयोमलः-लं, अयोरसः,
मंडूरं, विष्टं, सिंहाणम् ।

—लगाना, कि. अ., सफिद्ध-समंडूर (वि.)

शू । मण्डूरेण दुष् (दि. प. अ.) ।

जंगम, वि. (सं.) चर, चल, चरिष्णु, चलन-
गमनः, शील २. चेतन, प्राणिन्, सजीव ।

जंगल, सं. पुं. (सं. न.) अटवी-विः (स्त्री.),
अरण्यं, काननं, वनं, विपिनं, कांतारः-रं,
गहनं २. मरुस्थलं, मरुः (पुं.) ।

जंगला, सं. पुं. (पुर्त. जंगिला) काष्ठ-लोह-
शलाकावृत्तिः (स्त्री.), काष्ठ-लोह-मोवोत्तिः
(पुं.), काष्ठ-अथो, जालं २. गनाक्ष-जालम् ।

जंगली, वि. (सं. जंगलं) आरण्यक, अरण्यज,
वन्य, वनोद्भव, जांगल- [स्त्री (स्त्री.)], अरण्य-
वन-२. क्रूर, हिंस्र ३. असभ्य, अशिष्ट,
दुःशील । सं. पुं., वनवासिन्, वनेचरः, वनौकस्
(पुं.), आटविकः, आरण्यकः ।

जंगार-ल, सं. पुं. (फा. र) ताग्र, किट्ट-मल्ल ।
जंभी, वि. (फा.) सांघामिक-सामरिक [-की
(स्त्री)] युद्ध-रण, संवंधिन् २. क्षात्र (-त्री स्त्री.),
आयुधिक (-की स्त्री.) ।

—जहाज, सं. पुं., रणपोतः ।

—शुवार, सं. पुं., समरस्वरः ।

जंघा, सं. स्त्री. (सं.) प्रसूता, दक्षिका, टंका-कं
२. कर्हः (पुं.), सविध (न.)

जंघाल, वि. (सं.) शीघ्र-द्रुत, गामिन्-यायिन्-
चालक । सं. पुं. (सं.) दूतः, सन्देशवाहकः
२. मृगः ।

जंघिल, वि. (सं.) प्रजविन्, प्रधावक, द्रुत-
गामिन् ।

जंघना, कि. अ. (हिं जॉचना) निरीक्ष-परीक्ष
(कर्म.) २. दृश् (कर्म.) ३. उचित (वि.)
प्रति-इ (कर्म.) ।

जंघवैया, सं. पुं. (हिं. जॉचना) दे. 'आडिटर' ।

जंजाल, सं. पुं. (सं. जगत् + जाल >) कुच्छं,
कष्टं, संकटं, दुःखं, बाधा-धः २. व्यामोहः,
चित्तविक्षेपः, संभ्रमः ३. आवर्तः, जलगुल्मः
४. बृहज्जालम् ।

जंजाली, वि. (हिं जंजाल) उपद्रविन्,
कलहप्रिय ।

जंजीर, सं. स्त्री. (फा.) शृङ्खला-लं, निगडः,
पाशः, बन्धनं २. अर्धलः-लं-ला-ली ।

जंतर, सं. पुं., दे. 'यंत्र' ।

जंतु, सं. पुं. (सं.) प्राणिन्, जीवः, जन्त्युः, भूतं
२. पशुः, चरिः, मोकः ।

जंत्र, सं. पुं., दे. 'यंत्र' ।

जंत्री, सं. स्त्री. (हिं. जंत्र) *यन्त्री, *तारकर्षणी
२. पंचांगं, तिथिपत्रम् ।

जंद, सं. पुं. (फा. जंद; सं. छंदस् >) पारसी-
कानां धर्मग्रंथविशेषः २. तरय भाषा ।

जंभीर, जंभीरी नीबू, सं. पुं. (सं. जम्बीरः) जम्भः,
जमलः, जंभीरः, दंत-कर्षकः-हर्षकः-हर्षणः ।

जंबू, सं. पुं. (सं. स्त्री.) (वृक्ष) जंबू-बुः(स्त्री.) ।
(फल) जंबू (वृ.)-फलं, जंबूवम् ।

जंबुक, सं. पुं. (सं.) शृगालः, दे. 'गोदद'
२. नीचः, अपसदः, जालमः ।

जंबुद्वीप, सं. पुं. (सं.) भूमेः सप्तद्वीपेष्वन्यतमः ।
जंबू सं. स्त्री. (सं.) दे. 'जंबू' २. काश्मीरदेशे
नगरविशेषः ।

जंभ, सं. पुं. (सं.) हनुः (पुं. स्त्री.) २. राक्षस-
विशेषः ३. दे. 'जंभाई' ।

जंभारि, सं. पुं. (सं.) इन्द्रः, सुरपतिः २. इन्द्र-
वज्रः-जं, ३. अग्निः ।

जंभाई, सं. स्त्री. (हिं. जंभाना) जंभा, जंभका,
जृम्भणं, जम्भिका, जृम्भः-भा, जृम्भितं,
हाफिका ।

जंभाना, कि. अ. (सं. जंभनं) ज (जं) भ्
(भ्वा. आ. से.), वि-जृम्भ् (भ्वा. आ. से.) ।

जई, सं. स्त्री. (हिं. जौ) यवसदृसदृशोऽन्नभेदः,
*यवी २. यवाकुरः ।

जईफ, वि. (अ.) दे. 'बूदा' ।

जईफ्री, सं. स्त्री. (अ.) दे. 'शुदापा' ।

जक, सं. स्त्री. (फा.) पराजयः २. हानिः (स्त्री.)
३. लज्जा ।

जकबना, कि. स., (सं. युक्त + करणं >)
गाढं-दृढं-बंधं (कृ. प. अ.), दृढयति (ना.
धा.), दृढीकृ ।

जकात, सं. स्त्री. (अ.) दानं, त्याग, २. करः,
शुल्कः-कन् ।

जखीरा, सं. पुं. (अ.) कोपः, निधिः, भांडारं
२. संग्रहः, संचयः, संभारः ३. वृक्षसंवर्धन-
स्थानम् ।

जकूम, सं. पुं. (फा.) दे. 'घाव' ।

—ताज्जा या हरा होना, मु., अतीतं कष्टं पुनः
आवृत् (भ्वा. आ. से.)-रम् (कर्म.) ।

जकूमी, वि., दे. 'घायल' ।

जग^१, सं. पुं. [सं. जगत् (न.)] जगती,
संसारः २. लोकाः, जनाः ।

जग^२, सं. पुं., (सं. यज्ञः) यागः, मखः, क्रतुः ।

जगण, सं. पुं. (सं.) छन्दःशास्त्रे गणभेदः,
गुल्मध्वजः गणः (३० मण्डलैः) ।

जगत, सं. पुं. [सं. जगत् (न.)] भुवनं,
ब्रह्मांडं, चराचरं, विश्वं, जगती, संसारः, सृष्टिः
(स्त्री.), त्रिविष्टपं, लोकः २. वायुः (पुं.)
३. शिवः ।

जगती, पुं. स्त्री. (सं.) ब्रह्मांडं, विश्वं २. पृथिवी
२. वैदिकछंदोभेदः ।

—तल, सं. पुं. (सं. न.) भूतलं, पृथिवी ।

जगदंबा-धिका, सं. स्त्री. (सं.) दुर्गा, उमा,
पार्वती ।

जगदाधार, सं. पुं. (सं.) ईश्वरः २. पवनः ।

जगदीश, सं. पुं. (सं.) परमेश्वर; जगन्नाथ; जगत्पति: (पुं.) २. विष्णु: ।
 जगदीश्वर, सं. पुं. (सं.) दे. 'जगदीश' (१) ।
 जगद्गुरु, सं. पुं. (सं.) ईश्वर: २. शिव: ३. नारद: ४. सुपुत्र्यपुरुष: ५. उपाधिभेद: ।
 जगद्दीप, सं. पुं. (सं.) परमेश्वर; परमात्मन् २. नृत्यं; रवि: ।
 जगना, कि. अ. (हिं. जागना) दे. 'जागना' २. अवहित-सावधान (वि.) भू ३. सवेगं उदभू ४. दे. 'चमकना' ।
 जगन्नाथ, सं. पुं. (सं.) जगदीश: २. विष्णु: ३. पुत्रो विष्णुमूर्ति: (स्त्री.) ४. पुरीनामकं तीर्थम् ।
 जगन्महागा, वि. (अनु.) प्रकाशित २. दीप्ति-मत् ।
 जगन्माना, कि. अ. (अनु.) दे. 'चमकना' (१) ।
 जगन्महाहट, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'चमक' (१-२) ।
 जगद्, सं. स्त्री. (का. जायगाद्) स्वान्तं, स्थलं, प्रदेश: २. अथकाश: प्रसर:; अंतरं ३. अवसर:; समय: ४. पदं; पदवी-वि: (स्त्री.) ।
 जगाना, कि. स. र. 'जागना' के प्रे. रूप ।
 जघन, सं. पुं. (सं. न.) स्त्रीकट्या: पुरोधाग: २. निर्वच: ।
 —कूपक, सं. पुं. (सं.) कुकुंदर:; ककुंदरम् ।
 जघन्य, वि. (सं.) अन्त्य, अन्तिम, चरम २. पक्षं, त्याज्य ३. अक्षुद्र, निकृष्ट, अधम ।
 जघन्य, कि. अ., दे. 'जघना' ।
 जघ्ना, सं. स्त्री. (का.) प्रसूता-तिका, जाता-पत्या, प्रजाता ।
 —खाना, सं. पुं. (का.) अरिष्टं, सूति-सूतिका, गृहम् ।
 जजमान, सं. पुं., दे. 'जजमन्' ।
 जज्ज, सं. पुं. (अं.) न्यायाधीश:; धर्म-न्याय, अध्यक्षा: अ (आ) धिकारणिक:; धर्माधिकारिन्, निर्णेतृ २. परीक्षक:; विवेकिभू: ।
 जजिया, सं. पुं. (अ.) कर-राजस्व-भेद: (इस्लाम) ।
 जज्जीरा, सं. पुं. (अ.) दे. 'द्वीप' ।
 जटा, सं. स्त्री. (सं.) शटा-टं, जटी-टि: (स्त्री.), जट्ट:; जट्टकं २. जटामांसी, जटिला, लोमशा, जटाला (सुगंधितद्रव्यम्) ।

—जट, सं. पुं. (सं.) जटामूह: २. शिवजटा ।
 —धारी, वि. (सं-रिन्) जटाधर, सजट । २. शिव: ३. गुल्मभेद: ।
 —मांसी, सं. स्त्री., दे. 'जटा' (२) ।
 जटायु, सं. पुं. (सं.) दशरथसख्य:; जटायुस् (पुं.) ।
 जटाल, वि. (सं.) जटा, धर-धारिन् ।
 जटित, वि. (सं.) अनुविद्ध, खचित, प्रत्युत्, प्रणिहित ।
 जटिल, वि. (सं.) जटालक, जटिक, जटाधर, जटिन् २. अस्पष्टार्थ, दुर्बोध, गहन, गूढ, कठिन, क्लिष्ट ३. क्रूर, हिंस्र । (सं. पुं.) सिंघ: २. अज:; छाग: ३. शिव: ४. अक्षारिन् ५. परिव्राजक: ।
 जटिलता, सं. स्त्री. (सं.) दुर्बोधता, गहनता, गूढता, कठिनता ।
 जटी, वि. (सं-टिन्) दे. 'जटिल १' । सं. पुं., शिव: २. पुत्र: ।
 जट्ट, सं. पुं. (सं. पुं. न.) उदरं, कुक्षि: (पुं.), तुंडं २. अन्न-भ्राम-पक्व-आशय:; कोष्ठ:; पिचंड: २. उदररोगभेद: ३. शरीरम् । वि., शूद्र २. कठिन ।
 —जमि, सं. पुं. (सं.) जटराल: ।
 —आमय, सं. पुं. (सं.) जलोदररोग: २. अती (ति) साररोग: ।
 जङ्, वि. (सं.) अ-वि-चेतन, निर्जीव, प्राण-हीन, निष्प्राण २. स्तब्ध, निश्चेष्ट, इतेन्द्रिय २. मंदबुद्धि, मूर्ख ३. हिमग्रस्त ४. शीतल ५. मूक ६. बधिर ७. अलभिह, अबोध ८. मूढ, मोहग्रस्त । सं-पुं. (सं. न.) जलं २. सीस-कम् ।
 जङ्, सं. स्त्री. (सं. जटा) मूलं, अग्नि: (पुं.), लुप्त:; अन्न: २. आधार:; उपरंभ:। मूलं ३. कारणं, हेतु: (पुं.) ।
 —उखाङ्गना, उत्पट्-उन्मूल (चु.), उरखन् । (भ्वा. प. से.), व्यपहृद् (प्रे.) समूलं उद-हृ (भ्वा. प. अ.) उच्छिद्य् (रु. प. अ.) ।
 —जमना, कि. अ., इटमूल-जडमूल (वि.) भू, मूलं बंध् (क्. प. अ.) ।
 जङ्गता, सं. स्त्री. (सं.) अचेतनता, निर्जीवता, जङ्घ, सं. पुं. (सं. न.) निष्प्राणता २. मूर्खता,

अज्ञता ३. अचलता, स्तम्भता, ४. हिमप्रस्तता, शीतलता ।

जडना, कि. स. (सं. जटनं) जट् (प्रे.), अनुव्यथ् (दि. प. अ.), उत्खच् (चु.), प्रणिधा (जु. उ. अ.), प्रतिबंध् (क्. प. अ.) २. आ-दि-धा, अवरुह्-निविश् (प्रे.) ३. प्रहृ (भ्वा. प. अ.), आहृन् (अ. प. अ.) ३. परोक्षे आ-अधि-क्षिप् (तु. प. अ.) । सं. पुं., जटनं, उत्खचनं; अवरुषणं; प्रहरणं इ. ।

जडने योग्य, वि. जाटयितव्य, उत्खचनीय इ. । जडनेवाला, सं. पुं., रत्न, अनुबोधकः, मणिः, प्रणिधायकः, जाटयितु ।

जडवाना, जडाना, कि. प्रे., व. 'जडना' के प्रे. रूप ।

जडाई, सं. स्त्री. (हिं. जडना) जटन, वेतनं-श्रुतिः (स्त्री.) २. दे. 'जडना' सं. पुं. ।

जडाऊ, वि. (हिं. जडना) रत्न, खचित-अदित-अनुविद्ध ।

जडावर, सं. पुं. (हिं. जाड़ा) उष्ण-ऊर्णामय-ओषणं, वस्त्राणि-वासंसि (न. बहु.) ।

जडिमा, सं. स्त्री. (सं. मन् पुं.) दे. 'जडता' ।

जडिया, सं. पुं. (हिं. जडना) २. रत्न-मणि, कारः १. रत्न, जाटकः खचकः । दे. 'जडने वाला' ।

जडी, सं. स्त्री. (हिं. जड़ >) ओषधी-ओषधः, मूलं, काष्ठौषधम् ।

—डूडी, सं. स्त्री., ओषधी-धिः (स्त्री.), रोगहरं हरितकं, आरण्यौषधम् ।

जटन, सं. पुं., दे. 'यटन' ।

जटलाना, जटाना, कि. स. (सं. ज्ञात >) वि-, शा (प्रे. ज्ञापयति), वृष्-अवगम् (प्रे.) २. (पूर्वं) अनु-प्र-वृष् (प्रे.), उपदिशु (तु. प. अ.) ।

जटी, सं. पुं. (सं. यतिन्) यतिः, जितेन्द्रियः, संन्यासिन् ।

जटु, सं. पुं. (सं. न.) जलुकं-का, रा(ला)सा ।

जस्था, सं. पुं. (सं. यूथं) गणः, संवः, समूहः ।

जथु, सं. पुं. (सं. न.) जलुकं, मीवास्थि (न.) ।

जदीद, वि. (अ.) नव, नवीन ।

जन, सं. पुं. (सं.) मानवः, मनुष्यः २. लोकाः, जनाः ३. प्रजाः ४. सेवकः ५. समूहः ६. अवनं ७. ८. लोक-व्यावृत्ति, विशेषः ।

जनक, सं. पुं. (सं.) जन्मदः, जनयितु, उत्पादकः २. पितृ-जनितुः (पुं.), तातः, बांजित्, वपुः (पुं.) ३. मिथिलाराजवंशोपाधिः (पुं.) ४. सीरष्वजो जनकः ।

—पुर, सं. पुं. (सं. न.) मिथिलाया राज-धानी ।

—नंदिनी, सं. स्त्री. (सं.) सीमा, वैदेही ।

जनता, सं. स्त्री. (सं.) जनः-नाः, लोकः-काः, प्रजा-जाः, प्रकृतयः (बहु.) ।

—वाद, सं. पुं. (सं.) किवदंतौ, जनः, प्रवादः ।

—वासा, सं. पुं. (सं. -सः) नरयात्रानृहन् ।

—श्रुति, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'जनवाद' ।

—संस्था, सं. स्त्री. (सं.) मनुष्य-प्रजा-लोक-संस्था ।

जनना, कि. स. (सं. जननं) प्रसू (अ. आ. से.), उत्पाद (प्रे.), जन् (प्रे. जनयति) ।

जननी, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'माता' २. उत्पादिका ।

जननेन्द्रिय, सं. स्त्री. (सं. न.) किमं, मेहं २. योनिः (स्त्री.), भगः ।

जनपद, सं. पुं. (सं.) देशः २. लोकाः ।

जनम, सं. पुं., दे. 'जन्म' ।

जनमना, कि. अ., दे. 'जन्म लेना' ।

जनयिता, वि. (सं. तु) जन्मद, उत्पादक । सं. पुं. (सं.) तातः, पितृ, बांजित्, जनकः ।

जनयित्री, सं. स्त्री. (सं.) जननी, मातृ (स्त्री.), दे. 'माता' ।

जनरत्न, सं. पुं. (अं.) सेनानायकः । वि., सामान्य, साधारण ।

जनवरी, सं. स्त्री. (अं. जेनुअरी) पौषमाघं, आंग्लवर्षस्य प्रथममासः ।

जनांतिक, अव्य. (सं. कम्) रंगयत्ने अभिनेतु-रन्यस्य कणे कथनम् (मा०), अवधार्य (अव्य.) ।

जनाई, सं. स्त्री. (हिं. जानाना) साधिका, दे. 'दाई' २. गर्भगोचनश्रुतिः । स्त्री. ।

जनाज्ञा, सं. पुं. (अ.) दे. 'अधी' २. शवः ।

जनाज्जाना, सं. पुं. (फ्रा.) अंतःपुरं, अवरुषः ।

जानाना, कि. स. (हिं. जानाना) दे. 'जटलाना' ।

जानाना, कि. प्रे. (हिं. जानना) व. 'जनना' के प्रे. रूप ।

ज्ञानाना, वि. (फ्रा.) खौण, स्त्रीजातीय । सं. पुं., अंतःपुरं २. नारी ३. पत्नी ।

ज्ञानानी, वि. स्त्री. (फ्रा.) खौणी, स्त्रीसदृशी । सं. स्त्री., नारी २. पत्नी ।

जनाव, सं. पुं. (अ.) महाशयः, महोदयः, श्रीमत् (पुं.) ।

—आल्ली, सं. पुं. (अ.) मान्यवर, महाशय-महोदयः ।

—मन, सं. पुं. (अ + फ्रा.) शियमहाशयः ।

जनिद, वि. (सं.) उत्पादित २. जात, उत्पन्न ।

जनिना, सं. पुं. (सं. जनित्) जनयित्, जनकः, पितृ (पुं.) ।

जनित्री, सं. स्त्री. (सं.) जनयित्री, जननी ।

जनी^१नि, सं. स्त्री. (सं.) नारी २. मातृ (स्त्री.) ३. पुत्रवत् (स्त्री.) ४. जननम् ।

जनी^२, सं. स्त्री. (सं. जनः) दासी, सेविका २. पुत्री । वि. स्त्री., जनिता, उत्पादिता ।

जनेउ, सं. पुं., दे. 'यलोपवीत' ।

जनेन, सं. स्त्री. (सं. जनः) वरदाना ।

जन्म, सं. पुं. (सं. जन्मन् (न.)) उद्-संभवः, जनिः (स्त्री.), जनी, जनिता, उत्पत्तिः-प्रसूतिः (स्त्री.), जनूः-नुः (स्त्री.) । २. जीवनम् ।

—अंतर, सं. पुं. (सं. न.) अन्य-अपर-पुनर्-जन्मन् (न.) ।

—अंध, वि. (सं.) जात्यंध, जनुषंध ।

—अष्टमी, सं. स्त्री. (सं.) श्रीकृष्णजन्मदिवसः, भाद्रपदमासस्य कृष्णाष्टमी तिथिः (स्त्री.) ।

—दाता, सं. पुं. (सं-दातृ) पितृ (पुं.) २. देवतः ।

—दिन, सं. पुं. (सं. न.) जन्म-जनि-जनु-दिवसः ।

—पत्र, सं. पुं. (सं. न.) जन्म-पत्रिका-योगपत्रम् ।

—पत्री, सं. स्त्री. (सं.) जन्म-पत्रिका-योगपत्रम् ।

—भूमि, सं. स्त्री. (सं.) जन्मदेशः, स्व-देशः-राष्ट्र-विषयः ।

—रोगी, वि. (सं. गिन्) सदारोगिन् ।

—स्थान, सं. पुं. (सं. न.) जन्म-जनि-भूमिः (स्त्री.) ।

जन्मी, सं. पु. (सं. मिन्) प्राणिन्, जीवः ।

जन्मी, वि. (सं. जन्मन् >) सहज, स्वभावज, स्वाभाविक-नैसर्गिक [की (स्त्री.)] ।

जन्मेजय, सं. पुं. (सं. जनमेजयः) विश्वः २. ३. तृप-नाग, विशेषः ।

जन्मोत्सव, सं. पुं. (सं.) जनि-जनु-पर्वन् (न.)-क्षणः ।

जन्म्य, सं. पुं. (सं.) पितृ (पुं.), जनकः २. वरपक्षीयः ३. साधारणो जनः ४. फिक्-दंती । (सं. न.) जन्मन् (न.) २. उत्पन्न-वस्तु (न.) ३. देहः ४. हृद्दः ५. युद्धं ६. निंदा ७. राष्ट्रं ८. जातिः (स्त्री.) ९. लोकाः, प्रजाः । वि., जात, उद्भूत, उत्पन्न २. जन-विषयक, लौकिक ३. देशीय, राष्ट्रीय, जातीय ४. जनविषयमाण ।

जन्या, सं. स्त्री. (सं.) जननीसखी २. वधुसखी ३. आनन्दः, मोदः ४. प्रीतिः (स्त्री.), स्नेहः ।

जप, सं. पुं. (सं.) मुहुर्मुहुर्मन्त्रोच्चारणम् ।

—तप, सं. पुं. [सं. जपतपस् (न.)] धर्मक्रिया, उपासन-ना, संभ्यावदनम् ।

जपना, कि. स. (सं. जपत्) जप (स्वा. प. से.), जापं कृ, मुहुर्मुहुर्मंत्रं उच्चर (प्रे.) ।

जपनी, सं. स्त्री. (हिं. जपना) जपमाला, •जपनी २. •जपनीकोषः, गोमुखी ।

जपी, सं. पुं. (सं. जपिन्) जापकः, जपितृ (पुं.) ।

—तपी, सं. पुं. (सं. जपतपस् >) उपासकः, भक्तः, पूजकः ।

जफ्रा, सं. स्त्री. (फ्रा.) दे. 'अस्थानार' ।

—कश, वि. (फ्रा.) सहिष्णु, सहनशील २. परिश्रमिन् ।

जह, कि. वि. (सं. यावत् >) यदा, यस्मिन् काले ।

—कमी, यदाकदाचित्, यदापि ।

—किं, यदा, यावत् ।

—जब, यदा यदा ।

—तक, —तलक, यावत्, यदापर्यन्तम् ।

—तक "तब तक, यावत् " तावत् ।

—तब, यदा तदा, काले काले, कदापि, कदाचित् ।

—देखो तब, सदा, सर्वदा ।

—से, यदा प्रश्रुति, यस्मात् कालात् ।

—होता है तब, प्रायः, प्रायशः, प्रायेण ।

जब(भ)दा, सं. पुं. (सं. जंभः) हनुः (पुं. स्त्री.), हनुः (स्त्री.) ।

निचला—, कुंजः, चिवुः (पुं.), पीचम् ।
 जुबर्, वि. (फ्रा.) बकिन्, शक्तिमत् २. दृढ ।
 —दस्त, वि. (फ्रा.) दे. 'जबर' ।
 —दस्ती, सं. स्त्री. (फ्रा.) अत्याचारः,
 अन्यायः । कि. वि., बलात्, दृष्टात्, प्रसभं,
 प्रसङ्ग ।
 —दस्ती करना, कि. स., पीड (चु.), अद्
 (प्रे.), बाध् (भ्वा. आ. से.) ।
 जुबरन्, कि. वि. (अ. जबरन्) दे. 'जबरदस्ती'
 कि. वि. ।
 जुबह, सं. पुं. (अ.) हिंसा, हत्या, घातः ।
 —करना, कि. स., विशस् (भ्वा. प. से.), बन्
 (अ. प. अ.), व्यापद् (प्रे.) ।
 जुबान, सं. स्त्री. (फ्रा.) जिह्वा, रसज्ञा, रसना
 २. शब्दः, वाक्चं ३. प्रतिज्ञा ४. भाषा ।
 —दुराज्ञ, वि., जल्प (पा) कः, वावदूकः ।
 —दुराज्ञी, सं. स्त्री., जल्पकता, वावदूकता ।
 —बंदी, सं. स्त्री., मौनं, वाग्यमः २. भाषण-
 निरोधः ३. जिहास्तम्भः (रोगभेदः) ।
 —का भीठा, मु., मधुरभाषिन्, मधुजिह्व ।
 —को मुँह में रखना, मु., जोषं-तूष्णीं स्था
 (भ्वा. प. अ.), मौनं भज् (भ्वा. उ. अ.) ।
 —वेना या हारना, मु., दे. 'प्रतिष्ठा करना' ।
 —पकड़ना, मु. भाषणात् निवृत्त (प्रे.)-नि-
 विनि-वृ (प्रे.) ।
 —बंद करना, मु., मौनं लभ् (प्रे.), लंभयति)
 २. निरुत्तरी कृ ।
 —बंद होना, वक्तुं न पार् (चु.), तूष्णीं
 स्था ।
 जुबानी, वि. (फ्रा. जुबान) शब्द [-न्दी
 (स्त्री.)], शाब्दिकः [-की (स्त्री.)], वाचिक-
 वाचनिक-मौखिक [-की (स्त्री.)] । कि. वि.,
 स्मृत्या-वाचा (वृ. एक.), शब्दतः, अकि-
 स्तितम् ।
 —पड़ना, कि. स., स्मृत्या पठ् (भ्वा. प.
 से.) उच्चर् (प्रे.) ।
 —जमा खर्च, मु., प्र-जल्पः-पत्तं, निरर्थक-
 वचनानि (बहु.) ।
 जुबून, वि. (फ्रा.) निकृष्ट, गर्हा, निन्हा
 २. अवल, निर्बल ।
 जुस्त, सं. पुं. (अ.) निग्रहः, निरोधः, संयमः
 २. दंडरूपेण अपहर्णं ३. राजसात्करणम् ।

—करना, कि. स., राजसात् कृ. दंडरूपेण
 अपहृ (भ्वा. प. अ.) ।
 —होना, कि. अ., राजसात् भू, दंडरूपेण
 अपहृ (कर्म.) ।
 जुब्ती, सं. स्त्री. (अ. लुप्त) सर्वस्व-अप-
 हारः-दंडः, दे. 'जुब्त' (२) ।
 जुब्, सं. पुं. (अ.) क्रौर्यं, नैर्घुर्यं, अत्याचारः ।
 —करना, कि. स., अर्द् (प्रे.), पीड् (चु.) ।
 जुबन, जमिया, कि. वि., दे. 'जबरन्' ।
 जुब्नी, वि. (अ.) बलात् कारित, अनिर्धार्य ।
 जम, सं. पुं., दे. 'यम' ।
 जमघट, सं. पुं. (हि. जमना + घट्) जनैःघः,
 जनसंमर्दः, संकुल, लोकसंघः ।
 जम-जम, अव्य. (सं. जन्मन >) सदा,
 सर्वदा, नित्यम् ।
 जम-जम, सं. पुं. (अ.) कावासमीपस्थः पुर-
 विशेषः ।
 जमना, कि. अ. [सं. जन्मन (न.) >] प्रवृ
 (भ्वा. प. अ.), उर्द्ध्व (कर्म.) २. जन्
 (दि. आ. से.), उत्पद् (दि. आ. अ.) ।
 जमना, कि. अ. (सं. यमनं-जकड़ना >)
 घनी-पिष्टी-शीती-भू, संहृन् (कर्म.), द्यौ
 (भ्वा. आ. अ.) २. संमिल् (तु. प. से.),
 समागम् (भ्वा. प. अ.) ३. अनुपक्त-ससक्त-
 (वि.) भू, संलग् (भ्वा. प. से.)
 ४. स्थरभू, निवासं स्थिराकृ ५. प्रतिष्ठित-वद्-
 मूल (वि.) भू ६. उपपद्-वृज् (कर्म.), सुसंगत
 वि.) भू ७. निर्वधेन वद् (भ्वा. प. से.) । सं-
 पुं., घनी-शीती-पिष्टी-भावः, सम्भेलनं; संस-
 क्तिः (स्त्री.); स्थिरीभावः ६. ।
 जमना, सं. स्त्री. (सं. यमुना) कालिन्दी ।
 जमराज, सं. पुं., दे. 'यमराज' ।
 जमा, वि. (अ.) संगृहीत, संस्थित, समहृत
 २. निक्षिप्त, न्यस्त, निहित । सं. स्त्री., मूलं,
 मूल, द्रव्य-धनं २. धनं, संपद् (स्त्री.)
 ३. भूमि-करः ४. योगः, पिटः, संकलः-लनं
 (गाणो) ४. बहुवचनं (व्या.) ।
 —करना, कि. स., संचि (स्था. उ. अ.),
 संग्रह् (कृ. प. से.) २. निधा (जु. उ. अ.),
 निक्षप् (तु. प. अ.) ३. दे. 'जोड़ना' (२) ।
 —होना, कि. अ., संचि-संग्रह् (कर्म.) २. निधा-
 निक्षिप्-न्यस् (कर्म.) ।
 —खर्च, सं. पुं. (फ्रा.) आयव्ययौ २. आय-
 व्ययस्त्रयः ।

—जथा, सं. स्त्री., संचित, धन-द्रव्यम् ।
 —जमाई, सं. पुं. [सं. जामातृ (पुं.)] दुहितृ-
 पुत्री, पतिः ।
 जमात, सं. स्त्री. (अ. जमाभत) कक्षा, श्रेणी
 २. जनौघः, जनसंमर्दः ३. गणः, संघः ।
 जमादार, सं. पु. (फ्रा.) नायकः, रक्षिमुख्यः ।
 जमानत, सं. स्त्री. (अ.) (द्रव्य) भाषिः
 (पुं.), निक्षेपः, न्यासः, प्रातिभाष्यं । (पुरुष)
 प्रतिभूः (पुं.), बंधकः, लग्नकः ।
 —वेना, क्रि. सं., निक्षेप-लग्नकं वा भवना
 दत्त्वा मुञ्च (प्रे.) ।
 —नामा, सं. पु. (अ. + फ्रा.) प्रातिभाष्यपत्रम् ।
 जमापती, वि (अ. जमानत >) निक्षेपाईः,
 प्रातिभाष्याईः २. प्रतिभूः (पुं.) लग्नकः,
 बन्धकः ।
 जमाना, सं. पु. (फ्रा.-नः) समयः, कालः
 २. चिरकालः, सुदीर्घसमयः ३. जगत (न.) ।
 —साज्ञ, वि. (फ्रा.) कालानुवर्तिन्, समयानु-
 रोधिन् ।
 —साज्ञी, सं. स्त्री. (फ्रा.) कालानुवर्तनं,
 स्वार्थपरता ।
 जमाना, क्रि. सं., व. 'जमना' के प्रे रूप ।
 जमाल, सं. पुं. (अं.) सौन्दर्यं, सुषमा, मनो-
 शता, कावण्यम् ।
 जमालगोटा, सं. पु. (सं. जयपालः + गोटा >)
 (वृक्ष) जयपालः, सारकः, रचकः २. (बीज)
 जयपाल-कुंभो-घंटा-शोधनी, बीजं, बीजरेचनम् ।
 जमाव, सं. पुं. (हि. जमना) जनौघः, जनसं-
 मर्दः २. दे. 'जमना' सं. पुं. ।
 जमींदार, सं. पुं. (फ्रा) क्षेत्रपतिः (पुं.),
 भूस्वामिन् ।
 जमींदारी, सं. स्त्री. (फ्रा.) भूमिः (स्त्री.),
 भूमिरिकथं, क्षेत्रं २. क्षेत्रपतित्वं, भूस्वामित्वम् ।
 जमींदोज, वि. (फ्रा.) आंतभौम (-मी स्त्री.),
 भूगर्भवित्, सूगूढ ।
 जमीन, सं. स्त्री. (फ्रा.) भूमिः (स्त्री.),
 पृथिवी-ध्वी २. भू-पृथ्वी, तलं ३. वक्ष्यप्रादेः
 तलं २. क्षेत्रं, भूविषयम् ।
 —आसमान एक करना, मु., अत्यधिकं
 परिश्रम् (दि. प. से.) ।
 —आसमान का कर्क, मु. महदंतरं, महद्वै-
 षम्यं. स्वभूभेदः ।

—आसमान के कुलाबे मिलाना, मु., अत्यु-
 क्त्या वर्ण (जु.)-प्रतिपद (प्रे.) ।
 जमुना, सं. स्त्री., दे. 'यमुना' ।
 जमीमा, सं. पुं. (अ.) अतिरिक्त-क्रोड, पत्रम् ।
 जमुर्द, सं. पुं. (फ्रा.) दे. 'पका' ।
 जमैयत, सं. स्त्री. (अ.) जन, समुदायः-समूहः
 २. परिषद (स्त्री.), समा ।
 जयंत, सं. पुं. (सं.) ब्रह्मपुत्रः २. कार्तिकेयः ।
 वि. [सं. जयत् (शत्रुं)] विजयिन्, जैत्र
 (-त्री सं.), जिभ्यु, जैत्, जित्वर [-री स्त्री.])
 २. दे. 'बहुरूपिया' ।
 जयंती, सं. स्त्री. (सं.) केतनं, केतुः (पुं.),
 ध्वजः २. दुर्गा ३. जन्मोत्सवः ४. स्थापना-
 दिवसोत्सवः ।
 जय, सं. स्त्री. (सं. पुं.) वि., जयः, वि-जितिः
 (स्त्री.) ।
 जय(जय जय)कार, सं. पुं. (सं.) जय-
 ध्वनिः (पुं.) नादः-स्वनः-शब्दः ।
 जयजयकार करना, क्रि. सं. जयध्वनिं कृ.,
 जयजयेति नद् (भ्वा. प. से.) ।
 —पत्र, सं. पुं. (सं. न.) विजय-पत्र-लेखः
 २. अधिकरणिकस्य मुदितनिर्णयपत्रम् (धर्म.) ।
 —माल, सं. स्त्री. (सं-ला) जय-विजय, माला-
 सज् (स्त्री.)-माल्यम् ।
 —स्तंभ, सं. पुं. (सं.) विजयस्थूणा ।
 जयमा(वा)न, जयवंत, जयी, वि., दे.
 'जयंत' वि. ।
 जर, सं. पुं. (फ्रा.) सुवर्णं, कांचनं, २. धनं,
 वित्तम् ।
 —खरीद, वि. (फ्रा.) वित्तक्रीत ।
 —खेज, वि. (फ्रा.) उर्वर, शस्यद, फलप्रद ।
 —खेज्जी, सं. स्त्री. (फ्रा.) उर्वरता, फलप्रदता ।
 —दार, वि. (फ्रा.) धनिक, धनश्लव ।
 —दोज, सं. पुं. (फ्रा.) कामिकवखकृत् (पुं.),
 सूचीकर्मोपजीविन् ।
 —दोज्जी, सं. स्त्री. (फ्रा.) शिव्यः-सूचीकर्मन् (न.) ।
 जरनैल, सं. पुं. (अं.) दैनिक, वृत्तपत्र-समाचार-
 पत्रम् २. पत्रिका ३. आयन्वय-पंजी-पंजि (स्त्री.) ।
 जननलिज्ज, सं. पुं. (अं.) पत्रकारिता, पत्रकार-
 ध्यवसायः ।
 जरनलिस्ट, सं. पुं. (अं.) पत्रकारः ।
 जरनैल, सं. पुं., दे. 'जनरल' सं. पुं. ।

जर्ब, सं. स्त्री. (अ.) आघातः, प्रहारः, २. व्रणः ३. अभ्यासः, आघातः, गुणनं, हननं ४. अंकः, मुद्राचिह्नम् ।
 —देना, कि. स., गुणयति (ना. धा.); आ-
 नि-इन् (अ. प. अ., या प्रे, घातयति),
 पुर् (जु.) । मु., प्रह् (श्वा. प. अ.) तद् (जु.) ।
 जर्जर, सं. पुं. (अ.) क्षतिः-हानिः (स्त्री.)
 २. प्रहारः ३. आपत्तिः (स्त्री.) ।
 जरस, सं. पुं. (अ.) धंटा, घनम् ।
 जरा, वि. (अ. जरः) अल्प, न्यून । कि. वि.,
 किञ्चित्, ईषद् ।
 जरा, सं. स्त्री. (सं.) दे. वार्द्धक्यम् ।
 —ग्रस्त, जीर्ण, वि. (सं.) वृद्ध, जरठ ।
 जरावत, सं. स्त्री. (अ.) कृषिः (स्त्री.) कर्षणं,
 हलमृतिः (स्त्री.) ।
 —वेशा, वि., कर्षक, कृषिजीविन्, श्रेत्रिक ।
 जरासुर, वि. (सं.) वृद्ध, जरठ, रथविर,
 पलित, जीर्ण ।
 जरासु, सं. पुं. (सं.) उरुः, कलरुः, २. गर्भाशयः ।
 जरासुज, वि. (सं.) गर्भाशयजातः (मनुष्य,
 गौ आदि) ।
 जरासंघ, सं. पुं. (सं.) चंद्रवंशीयनृपविशेषः,
 कंसश्चरुः ।
 जरिया, सं. पुं. (अ.) दे. 'साधन' ।
 जरी, सं. स्त्री. (फ्रा.) ताशाख्यं वस्त्रं २. सौवर्णं
 कामिकवस्त्रम् ।
 जरीक वि. (अ.) विनोद-परिहास, शौक, प्रिय ।
 जरीब, सं. स्त्री. (फ्रा.) पंचपंचाशदगजात्मकः
 क्षेत्रमानभेदः, जरीबं २. यष्टिः (स्त्री.) ।
 —कडा, सं. पुं. (फ्रा.) भू-क्षेत्र, मापकः ।
 —कडी, सं. स्त्री. भू-क्षेत्र, मापनम् ।
 जरूर, कि. वि. (अ.) अवश्य, अपरिहार्यतया,
 निश्चयेन, निःसंदेहं, निःसंशयम् ।
 जरूरत, सं. स्त्री. (अ.) आवश्यकता, प्रयो-
 जनम् ।
 जरूरी, वि. (फ्रा.) अपेक्षित, आकाङ्क्षित
 २. आवश्यक [-की (स्त्री.)], अपरिहार्य,
 अनिवार्य, अवश्यकरणीय ।
 जर्क वर्क, वि. (फ्रा.) उज्ज्वल, भासुर, भास-
 मान ।
 जर्जर, जर्जरित, वि. (सं.) जीर्ण, शीर्ण,
 सच्छिद्र २. भ्रान्त, खंडित ३. वृद्ध ।

जर्द, वि. (फ्रा.) पीत, दे. 'पीला' ।
 जर्दी, सं. स्त्री. (फ्रा.) पीतिमन् (पुं.) दे.
 'पीलाइं' २. अंडपीतिमन् (पुं.) ।
 जर्म, सं. पुं. (अं.) जीवाणुः, रोगकीटाणुः ।
 जर्मा, सं. पुं. (अ.) अणुः, परमाणुः २. द्युगुं,
 त्र्यगुं ३. कणः-गो-मिका, लघुः ।
 जर्माह, सं. पुं. (अ.) शक्यचिकित्सकः,
 शक्यवैद्यः ।
 जर्माही, सं. स्त्री. (अ.) शक्य-शास्त्र-चिकित्सा ।
 जलंधर, सं. पुं., दे. 'जलोदर' ।
 जल, सं. पुं. (सं. त.) पानीयं, आपः (स्त्री.,
 नित्य बहु.) । पशु-अंभस-अंबु-वारि (न.),
 मलिलं, अमृतं, जीवनं, तदर्थं, तोयं, चीरं,
 वनरसः ।
 —कूपी, सं. स्त्री. (सं.) कूपगर्तः, पुष्करिणी ।
 —क्रीडा, सं. स्त्री. (सं.) कर-पात्र, पत्रिका,
 न्यायशुद्धी, जलविहारः ।
 —चर, वि. (सं.) वारिचर, जलचारिन् ।
 —जंतु, सं. पुं. (सं.) यादव् (न.), जलजीवः ।
 —जात, सं. पुं. (सं. न.) कमलं, पद्मम् ।
 —तरंग, सं. पुं. (सं.) वायुभेदः २, लहरी ।
 —घर, सं. पुं. (सं.) मेघः, जलदः २. समुद्रः ।
 —घारा, सं. स्त्री. (सं.) वारिप्रवाहः ।
 —पत्नी, सं. पुं. (सं. क्षिन्) जलशुद्धनः ।
 —पान, सं. पुं. (सं. न.) उपाहारः, लघु-
 भोजनम् ।
 —प्रपात, सं. पुं. (सं.) निर्झरः ।
 —प्लावन, सं. पुं., (सं. न.) जलोपप्लवः,
 तोयविप्लवः ।
 —माजरी, सं. पुं. (सं.) उदरः, जलनकुलः,
 जलविटालः ।
 —यान, सं. पुं. (सं. त.) नौका, पोतः,
 वाष्पपोतः ।
 —शायी, सं. पुं. (सं. यिन्) बरुणः ।
 —सेना, सं. स्त्री. (सं.) नौ-समुद्र, सेना-सैन्यम् ।
 जलज, सं. पुं. (सं. न.) कमलं, वारिजम् ।
 जलज्जला, सं. पुं. (फ्रा.) मूकम्पः, मूचालः ।
 जलडमरूमध्य, सं. पुं. (सं. न.) सागुद्रधुनी ।
 जजद्, सं. पुं. (सं.) मेघः, वारिदः ।
 जलधि, सं. पुं. (सं.) अग्निः (पुं.), सागरः ।
 जलन, सं. स्त्री. (सं. उवलनं) तापः, दाहः,
 २. पाकः (चिकित्सा, उ. नेत्रपाकः), ३. ईर्ष्या-

जलना

[२३३]

जवान

र्था, सापत्न्य, माःसर्व ४. गात्रदाहः (रोग-भेदः) ।

जलना, कि. अ. (सं. ज्वलनं) ज्वल् (भ्वा. प. से.) तप-दह् (कर्म.) दीप् (दि. आ. से.)
२. अनुपति (ना. घा.) ईर्ष्य (भ्वा. प. से.)
परोक्षर्षे न सद् (भ्वा. आ. से.) मृष् (दि. प. से. ; चु.) । सं. पुं., तापः, ज्वलनं, दहनं, दाहः, प्लोषः इ. ।

जले पर नोन छिदकना, मु. क्षते धारं क्षिप् (तृ. प. अ.) ।

जलरुह, सं. पुं. (सं. न.) जलरुह् (पुं.), कमलन् ।

जलवा, सं. पुं. (फ्रा.) शीः (स्त्री.), प्रभा, शोभा ।

जलम्बा, सं. पुं. (अ.) उत्सवः, महोत्सवः, संमेलनं, बृहदधिकेशनं २. संगीतोत्सवः २. संभोजनम् ।

जलोजलि, सं. स्त्री. (सं. पुं.) अंजलि-करपुट-मात्रं जलम् २, तपणम्, प्रेततर्पणजलम् ।

जन्याकर, सं. पुं. (सं.) समुद्रः, सागरः २. जल-नीच, राशिः ३. कूपः ४. निर्जरः, उत्सः ।

जलाखु, सं. पुं. (सं.) दे. 'ऊदबिलाव' ।

जलातर्क, सं. पुं. (सं.) अलकाभिभवः, आलकं, जलत्रासाख्यो रोगः (हि. इलक) ।

जलात्मय, सं. पुं. (सं.) शरद्वृक्षतुः, वर्षा-वसानः, मेघान्तः ।

जलाना, कि. स. (हि. जलनः) उप (भ्वा. प. से.), ज्वल् (प्रे. ज्वलयति), तप् (भ्वा. प. अ., प्रे.) । दह् (भ्वा. प. अ.), दीप् (प्रे.), मृष् (भ्वा. प. से.) २. ईर्ष्या-असूया-मात्सर्यं जन् (प्रे.), इ. पीड् (प्रे.), तुद (तु. प. अ.) । सं. पुं., दहनं, तापनं, प्लोषणं, दीपनं इ. ।

जल्पने योग्य, वि., ज्वलयितव्य, दग्धव्य, दीप-नीच, तपनीच ।

जलानेवाला, सं. पुं., तापकः, दाहकः इ. ।

जलाया दुधा, दग्ध, ज्वलित, क्षोपित ।

जला मुना, वि., कुपित, कुद्, कः-दुः-शील, दुःप्रकृति ।

जलाद्, वि. (सं.) क्षिप्र, उत्त, उन्न ।

जलादतन, वि. (अ.) निर्वासित, त्रिवासित ।

जलादतनी, सं. स्त्री. (अ.) निर्-वि-वत्सनम् ।

जलाशय, सं. पुं. (सं.) जल-नीच, आधारः, तहागः-गं, बापी ।

जलील, वि. (अ.) नीच, क्षुद्र, जघन्य । (२) अपमानित, तिरस्कृत ।

—करना, कि. स., अपकृष् (भ्वा. प. अ.), लघूकृ ।

जलस, सं. पुं. (अ.) उत्सव-यात्रा, संस्र-चलनम् ।

जलेवी, सं. स्त्री. (देश.) कुण्डली, मिश्राभेदः ।

जलोका, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'जौक' ।

जलोद्, सं. पुं. (सं. न.) जठरामयः ।

जलद, कि. वि. (अ.) अचिरात्, अचिरेण, झटिति, प्राक्, अबिलंबं, आशु, शीघ्रं २. जवेन, वेगेन, सस्वरम् ।

—बाह्, वि. (अ. + फ्रा.) अविमृश्य-असमीक्ष्य-क्षिप्र-कारिन्, साहसिन् ।

—बाह्नी, सं. स्त्री., अविमृश्य-असमीक्ष्य-कारिता-कारित्वं, साहसम् ।

जल्दी, सं. स्त्री. (अ.) शीघ्रता, त्वरा, क्षिप्रता ।

—करना, कि. अ., त्वर (भ्वा. आ. से.), आशु-शीघ्रं त्वरितं कृ अथवा चल् (भ्वा. प. से.) ।

जल्प, सं. पुं. (सं.) कथनं, वदनं २. प्रजल्पः, प्र-जल्पितं, वृथा, आलापः-कथा, व्यर्थवार्ता ३. वादभेदः (न्या०) ।

जल्पक, वि. (सं.) जल्पाकः, बाचाटः, बाचालः, वावदूकः ।

जल्पाद, सं. पुं. (अ.) शातकः, दंडपाशिकः, मातंगः, वधाधिकृतः । वि., कूर, निर्दय ।

जल्सा, सं. पुं., दे. 'जलसा' ।

जव, सं. पुं. (सं.) वेगः, त्वरा रंहम् (न.) ।

जवन, सं. पुं., दे. 'यवन' ।

जवनिका, सं. स्त्री., दे. 'यवनिका' ।

जवोमर्द, वि. (फ्रा.) वीर, शूर, पराक्रमिन् ।

जवोमर्दी, सं. स्त्री. (फ्रा.) वीरता, शूरता ।

जवाहार, सं. पुं. (सं. यवहारः) दवाहः, यवनालजः ।

जवान, वि. (फ्रा.) युवन्, तरुण, अभिनव-वयस्क, कुमार २. वीर, शूर । सं. पुं., पुरुषः, मनुष्यः सैनिकः ३. वीरः ।

जवानी, सं. स्त्री. (फ्रा.) कौमारं, तालुण्यं, यौवनं, अभिनव-पूर्व-प्रथम-वयस् (न.) ।
 जवाब, सं. पुं. (अ.) उत्तरं, प्रति-वचनं-वाच (स्त्री.), प्रत्युक्तिः (स्त्री.), प्रत्युत्तरं २. प्रति-क्रिया, प्रतीकारः, ३. कारभ्रंशादेश, ४. पद-च्युतिः (स्त्री.), अधिकारभ्रंशः ।
 —दावा, सं. पुं. (अ.) उत्तरम्, उत्तर-पक्ष-पादः ।
 —देह, वि. (अ. + फ्रा.) उत्तर-दाव-दायिन्, अनुयोज्य, प्रष्टव्य ।
 —देही, सं. स्त्री. (अ. + फ्रा.) उत्तरादायित्वं, प्रष्टव्यता, मारः ।
 —सवाल, सं. पुं. प्रश्नोत्तराणि (बहु.), वाद-विवादौ (द्वि.) ।
 —देना, मु., पदात् अवसद्-च्यु (दे.) । कि. स., दे. 'उत्तर देना' ।
 —मिलना, मु., अधिकारात् च्यु (ध्वा. आ. अ.), पदभ्रष्ट (वि.) भू ।
 जवाबी, वि. (अ.) उत्तरापेक्षिन् ।
 —कार्ड, सं. पुं., उत्तरापेक्षि-उत्तरणीय-पत्रम् ।
 —तार, सं. पुं., उत्तरापेक्षी तडिस्सदेशः ।
 जवार, सं. पुं., दे. 'जवार' ।
 जवारा, सं. पुं. (हिं. जव) यव-अंकुरः-प्ररोहः ।
 जवाल, सं. पुं. (अ.) क्षयः, ढासः २. विपद् (स्त्री.) ।
 जवास-सा, सं. पुं. (सं. यवासः) यासः, दुःस्पर्शः, रोदनी, दुरालभा ।
 जवाह(हि)र, सं. पुं. (अ.) रत्नं, मणिः ।
 जवाह(हि)रात, सं. पुं. (अ., बहु.) रत्नानि-मणयः (बहु.) ।
 जवान, सं. पुं. (फ्रा.) धार्मिकोत्सवः २. उत्सवः, क्षणः ३. आनन्दः, हर्षः ४. संवीतोत्सवः ।
 जसामत, सं. स्त्री. (अ.) स्थूलता, पीनता, पीवरता ।
 जसीम, वि. (अ.) पीन, पीवर, स्थूल ।
 जस्टिस, सं. पुं. (अं.) उच्चन्यायालयस्य धर्म-अधिकारिन्-अध्यक्षः, २. न्यायः, दंडयोगः ।
 जस्त, जस्ता, सं. पुं. (सं. यशदं) कुषातु (न.) ।
 जहन्नुम, सं. पुं. (अ.) नरकः, निरयः २. तीव्रपीडास्थानम् ।
 जहमत, सं. स्त्री. (अ.) कष्टं, अपाद् (स्त्री.), २. न्यामोहः, चित्तविक्षेपः ।

जहर, सं. पुं. (फ्रा. जह) मरलं, विषः-षम् । वि., घातक, प्राणहर २. अतिदानिकर [-री (स्त्री.)] ।
 जहरदार, वि. (फ्रा.) विपाक्त, मरलदिग्ध ।
 जहरवाद, सं. पुं. (फ्रा.) विसर्पः ।
 जहरमोहरा, सं. पुं. (फ्रा. जहरमोहरा) विषमः प्रस्तरभेदः ।
 जहरीला, वि. (फ्रा. जहर) दे. 'जहरदार' ।
 जहाँ, कि. वि. (सं. यत्) यस्मिन् देशो-स्थाने ।
 —कर्ही, कि. वि., यत्रकुत्र-चित्-अपि, यत्र यत्र ।
 —का तहाँ, कि. वि., तत्रैव, पूर्वस्मिन्नेव स्थले ।
 —तक, कि. वि., यावत् ।
 —तहाँ, कि. वि., इतस्ततः, अत्र तत्र २. सर्वत्र ।
 —से, कि. वि., यतः, यस्मात् स्थानात् ।
 जहाँ, सं. पुं. (फ्रा.) जगत, संसारः ।
 —दीद, —दीदा, वि. (फ्रा.) अनुभविन् ।
 —पनाह, सं. पुं. (फ्रा.) जगदक्षकः, प्रभुः २. प्रभुचरणः, देवपादाः ।
 जहाज, सं. पुं. (अ.) तरांशु (पुं.) वृक्षौका, पोतः-थः, होडः ।
 जहाज़ी, वि. (अ. जहाज) । सं. पुं., नाविकः, नौ-पोत-वाहः, समुद्रगः ।
 —हाक्, सं. पुं., सागरतरकरः, समुद्रदस्युः (पुं.) ।
 —वेच्चा, सं. पुं. (रण-) पोतगणः ।
 जहान, सं. पुं. (फ्रा.) जगत् (न.), सृष्टिः (स्त्री.) ।
 जहालत, सं. स्त्री. (अ.) अज्ञानम्, मूर्खता ।
 जहीन, वि. (अ.) कुशामबुद्धि २. मेधाविन् ।
 जहूर, सं. पुं. (अ.) आधिर्भावः, प्रकाशः ।
 जहेज़, सं. पुं. (अ.) युतकं, यौनकं, वाहिनिकं, शोधनम् ।
 जह्, सं. पुं. (सं.) नृपविशेषः, सुहोत्रपुत्रः ।
 —कन्या—तनया, सं. स्त्री. (सं.) गंगा ।
 जांगल्-ली, वि. (सं. जांगल) आरण्यक, वन्य, २. अश्लिष्ट, क्रूर ।
 जौध, सं. स्त्री. (सं. जंधा) ऊरु (पुं.), सन्धि (न.) ।
 जौधिया, सं. पुं. (हिं. जौध) *जाधिकः, *ऊरुच्छदः दे. 'काछा' ।

जौंच, सं. स्त्री. (हिं. जौचना) परीक्षणं-क्षा, विचारणं-या २. अनुसंधानं, भवेषणा ।
 जौंचना, क्रि. स. (सं. याचनं >) परीक्ष् (भ्वा. आ. से.), विभृश् (तु. प. अ.), आ-पर्या लोच् (जु.), अनुसंधा (जु. उ. अ.), निरूप् (जु.), विचर् (प्रे.) ।
 जांबूनद, सं. पुं. (सं. न.) सुवर्णं, काञ्चनं, हिरण्यम् ।
 जा, सं. स्त्री. (का.) स्थानं, प्रदेशः । वि., उचिन, योग्य, संगत ।
 —बजा, क्रि. वि., सर्वत्र ।
 —बेजा, वि., उचितानुचित, तथ्यान्वय ।
 जाई, सं. स्त्री. (सं. जा = जाता) पुत्री, इदित् (स्त्री.) ।
 जाग, सं. पुं. (सं. यज्ञः) मरुतः, क्रतुः ।
 जाग, सं. स्त्री. (हिं. जागना) जागरणं, प्ररात्रि-जगरः ।
 जागना, क्रि. अ. (सं. जागरणं) जागृ (अ. प. से.), प्र-वि-तुप् (दि. आ. अ.) सं. पुं., दे. 'जागरण' ।
 जागनेवाला, सं. पुं., जागरकः, जागरित् (पुं.) । अवहितः, जागरूकः ।
 जागरण, सं. पुं. (सं. न.) प्र-जागरः, प्र-बोध-धनं, निद्रा-स्वाप्, अभावः २. अवधानं दक्षता ।
 जागरित, वि. (सं.) उचिद्र, विनिद्र, प्रबुद्ध । २. जागरूक, सावधान । सं. पुं., (सं. न.) दे. 'जागरण' ।
 जागरूक, वि. (सं.) जागरित्, जागरक, जागरिन २. अवहित, दक्ष, सावधान ।
 जागति, सं. स्त्री. (सं.) जागर्था, जाग्रिया, निद्रा-भावः, प्रसेधः २. दक्षता ।
 जागीर, सं. स्त्री. (का.) अग्रहारः २. भूसंपद (स्त्री.) ।
 —दाग, सं. पुं. (का.) अग्रहारिन् २. भूस्वामिन ।
 जाग्रत, वि. (सं. जाग्रत) दे. 'जागरूक' ।
 जाग्रति, जागृति, सं. स्त्री., दे. 'जागति' ।
 जाजूसर, सं. पुं. (का. जा + अ.) दे. 'पाखाना' ।
 जाजिम, सं. स्त्री. (तु. जाजम) चित्रितास्तरणं, तलाच्छादनम् ।

जाज्वल्यमान, वि. (सं.) प्रबलत्, दक्षमान २. तेजस्विन्, कांतिमत् ।
 जाठ, सं. पुं. (सं. जठः) अग्र्येषु जातिविशेषः २. जडः, मूढः ३. ग्रामीणः, ग्रामीयः, ग्रामिन् ।
 जाठ, सं. पुं. [सं. यष्टिः (स्त्री.)] तैल-इष्टु-पेषणीयष्टिः ।
 जाठर, वि. (सं.) जठर-रुदर, सम्बन्धिन्-विष-यक, औदर, जठर, ज-स्थित-चंतिन् । सं. पुं., जठराग्निः २, बालः ।
 —जग्नि, सं. पुं. (सं.) जठरानलः, जठराग्निः ।
 जाड़ा, सं. पुं. (सं. जाड्यं) शीतता, शीतलता, शैत्यं २. शिशिरः, शीतकालः, हिमभागः, शीतर्तुः (पुं.) ।
 जाड्य, सं. पुं. (सं. न.) जडता, मूर्खता, मूढता २. मंदता, मंथरता ।
 जात, वि. (सं.) उत्पन्न, प्रसूत, संभूत २. प्रकट, व्यक्त ३. अच्छ, प्रक्षस्त ४. नव-जात ।
 जात, सं. स्त्री., दे. 'जाति' ।
 जात, सं. स्त्री. (अ.) प्रकृतिः (स्त्री.), स्वभावः २. देवः ३. व्यक्तिः (स्त्री.) ।
 जातक, सं. पुं. (सं.) वत्सः, बालः २. शिशुः नवजातः (पुं.) ३. भिक्षुः (पुं.), याचकः ४. बुद्धस्य पूर्वजन्मकथाः (स्त्री. बहु.) ।
 जातकर्म, सं. पुं. (सं-सं-न.) जातक्रिया, संस्कारभेदः (धर्म.) ।
 जातपौत, सं. स्त्री., दे. 'जातिपौति' ।
 जाता, सं. स्त्री. (सं.) बाला, कन्या, कुमारी २. पुत्री, सुता, तनुजा ।
 जाति, सं. स्त्री. (सं.) वर्णः २. कुलं, वंशः ३. वंशावली, गोत्रं ४. भेदः, प्रकारः ५. वर्णः, श्रेणी ६. ७. समाजः, जनसमूहः ८. सामान्यं ९. जातिफलं १०. मालती ।
 —से खारिज करना, क्रि. स., जाते-समाजात्-बहिष्क या च्यु-अंशु (प्रे.) ।
 —च्युत, वि. (सं.) जातिहीन, अपाक्त्य, बहिष्कृत ।
 —पौति, सं. स्त्री., जाल्युपजातो (स्त्री. द्वि.) ।
 —स्वभाव, सं. पुं. (सं.) सहज-प्रकृतिः (स्त्री.)-स्वभावः ।

जाती, वि. (अ. ज्ञात) वैयक्तिक २. स्वीय, नैज ।

जाती, सं. स्त्री. (सं.) सुरभिर्गंधा, सुरधिया, चेतकी, मालती ।

—पत्रो, सं. स्त्री. (सं.) जातिकोपी, मालती-पत्रिका ।

—फल, सं. पुं. (सं. न.) जाति(ती)कोशः शं-पः-पम् ।

—रस, सं. पुं. (सं. न.) बोलः ।

जातीय, वि. (सं.) जातिनव, जातिसंबन्धिन् २. राष्ट्रीय, देशीय ३. सामाजिक ।

जातीयता, सं. स्त्री. (सं.) जाति, प्रेमन् (पुं.)-अनुरागः २. राष्ट्रीयता ३. सामाजिकता ।

जातुधान, सं. पुं. (सं.) निशाचारः, राक्षसः ।

जादू, सं. पुं. (फ्रा.) अभिचारः, इन्द्रजालं, कर्मणं, कुस्तिः (स्त्री.) कुहकः-कं, माया, मोहः, मंत्रयोगः ।

—करना, क्रि. स., अभिचर् (प्रे.), मंत्रैः वशीकृ वा मुह् (प्रे.), मायां कृ ।

जादूगार, सं. पुं. (सा.) कौस्तिकः सौमिकः, ऐं (इं) दजालिकः, कुहकाजोविन्, मायाकारः ।

जादूगारी, सं. स्त्री. (फ्रा.) ऐन्द्रजालिकता, दे. 'जादू' ।

जान, सं. स्त्री. (सं. ज्ञानं) बोधः, उपलब्धिः (स्त्री.), विचारः २. अनुमानं, ऊहः, तर्कः ।

—कार, वि., ज्ञातु, ज्ञानिन्, वेत्तुः-ज्ञ, अभिज्ञ (समासंत में) २. दक्ष, कुशल ।

—कारो, सं. स्त्री., परिचय, अभिज्ञता २. नैपुण्यं, दाक्ष्यम् ।

—सूझ कर, क्रि. वि., कामतः, ज्ञान-बुद्धि-विचार, पूर्वकम् ।

—पहिचान, सं. स्त्री., परिचयः परिचितिः (स्त्री.) ।

जान, सं. स्त्री. (फ्रा.) प्राणः, जीवः-वनं, श्वासः २. बटं, सामर्थ्यं ३. नारः, उत्तनांशः ४. प्रियः, प्रिया ।

—जोखोँ, सं. स्त्री., प्राण, संकटं-संशयः-व्ययम् ।

—दार, वि. (फ्रा.) प्राणिन्, सप्राण ।

—क्रिशानी, सं. स्त्री. (फ्रा.) परमोद्योगः, योराश्रित्यः ।

—किसी पर देना, मु., अव्यंतं रिनह् (दि. प. से. ; सहमी के योग में) ।

—खाना, मु., दु (स्वा. प. अ.), बाष् (भ्वा. आ. से.) ।

—छुहाना, मु., अदत्-अपत्प् (भ्वा. प. अ.) ।

—में जान आना, मु., आ-समा-श्वस् (अ. प. से.), सुस्थ-निर्वृत् (वि.) भू ।

जानकी, सं. स्त्री. (सं.) सीता, वैदेही, जनकतनया ।

जानना, क्रि. स. (सं. ज्ञानं) ज्ञा (कृ. उ. अ.), ज्य-इ (अ. प. से.) अनगम्, बुष् (भ्वा. उ. से.), विद् (अ. प. से.) २. मन् (दि. आ. अ.), ऊह् (भ्वा. आ. से.), दिनक् (जु.) । सं. पुं., दे. 'ज्ञान' ।

जानने योग्य, वि., दे. 'ज्ञान्य' ।

जाननेवाला, सं. पुं., दे. 'ज्ञाना' ।

जानपद, सं. पुं. (सं.) ग्रामवासिन्, ग्रामिन, ग्रामीणः, ग्राम्यजनः २. जनपदप्राप्तकरः वि. जनपदग्राम, सम्बन्धिन् ।

जानवर, सं. पुं. (फ्रा.) जीवः, प्राणिन्, चरः, चेतनः २. पशुः, जंतुः (पुं.) । वि., जड, मूर्ख ।

जानचीन, सं. पुं. (फ्रा.) उत्तराधिकारिन् ।

जाना, क्रि. अ. (सं. यानं) या-इ (अ. प. अ.), गम् (भ्वा. प. अ.), चर्-चल्-अल् (भ्वा. प. से.) पद (दि. आ. अ.), ऋ (भ्वा. ज्ञ. प. अ.) २. प्रस्था (भ्वा. अ. अ.), प्रया, प्रचल्, निर्गम् । सं. पुं., गमनं, यानं, व्रजनं, प्रस्थानं, प्रचलनं ३. :

जाने योग्य, वि., गंतव्य, यातव्य ।

जानेवाला, सं. पुं., गंतु-यातु, चलित् (पुं.) ३. ।

गया हुआ, दि., गत, यान, हत, चलित इ. ।

जाने देना, मु., दे. 'क्षमा करना' ।

जानी, वि. (फ्रा. जान) प्राणसंबन्धिन् । सं. स्त्री., प्रिया, दयिता ।

—झोस्त, सं. पुं., अभिज्ञदृश्यः सहद् (पुं.) ।

—दुश्मन, सं. पुं., अनकरः-प्राणहरः शत्रुः (पुं.) ।

जानु, सं. पुं. (सं. न.) ऊतपर्वन् (न.), अधीवत् (पुं. न.), जातुसंधिः (पुं.), चकिका ।

जाने अनजाने, क्रि. वि. (हिं. जानना) ज्ञानतोऽज्ञानतो वा, कामतोऽकामतो वा, बुद्धि-पूर्वमबुद्धिपूर्वं वा ।

ज्ञानो, अव्य., दे. 'मानो' ।
 जाप, सं. पुं. (सं.) दे. 'जप' ।
 जापक, सं. पुं. (सं.) दे. 'जपो' ।
 जाक्रत, सं. स्त्री. (अ. जियाक्रत) सह-सं-
 भोजनम् ।
 जाक्रान, सं. पुं. (अ.) दे. 'केसर' ।
 जाक्रानी, वि. (अ.) दे. 'केसरिया' ।
 जाँब, सं. पुं. (अं.) कर्मन् (न.), कार्यम्
 २. वैतनिक-कार्यम्-कर्मम् ।
 जावना, सं. पुं. (अ.) नियमः, व्यवस्था, विधिः
 (पुं.) ।
 —दीवानी, सं. पुं., व्यवहारसंहिता ।
 —कौजदारी, सं. पुं., दण्डसंहिता ।
 बेजावना, वि. नियम-विधि, विरुद्ध, अदेष ।
 बेजावनगी, सं. स्त्री., अनिमयः, उत्सृजता ।
 जाम्, सं. पुं. (सं. यामः) दे. 'पहर' ।
 जाम, सं. पुं. (फ्रा.) जपक-कम् ।
 जामदग्ध्य, सं. पुं. (सं.) जमदग्निपुत्रः परशु-
 रामः ।
 जामन, सं. पुं. (हि. जमाना) द्र (दा) सं,
 त्र (द्र) संस्यम् ।
 जामन, सं. पुं. दे. 'जासुन' ।
 जामा, सं. पुं. (फ्रा.) बसनं, बखं २. कंचुकः,
 प्रावारकः ।
 जामे से बाहर होना, मु., अत्यंत क्रुध् (दि.
 प. अ.) ।
 जामे में फूला न समाना, मु., भृशं हृष् (दि.
 प. से.) ।
 जामाता, सं. पुं. दे. 'जमाद' ।
 जामिन, सं. पुं. (अ.) प्रतिभूः (पुं.), बंधकः,
 रुचकः ।
 जामिनी, सं. स्त्री., दे. 'जमानत' (द्रव्य) ।
 जामिनी, सं. स्त्री., (सं. वागिनी) दे. रःत्री-
 त्रिः (स्त्री.), निशा ।
 जामुन, सं. पुं. (सं. जन्मुः) (वृक्ष) जम्बु-
 बुः (स्त्री.) । (फल) जम्बु (न.), जम्बु-
 जम्बुः (स्त्री.), जंबुफलं, जाम्बवम् ।
 जायक्रा, सं. पुं. (अ.) आ-स्वादः, रसः ।
 जायकेदार, वि. (अ. + फ्रा.) स्वादु, सरस,
 रसवत् ।
 जायज, वि. (अ.) उचित, युक्त, संगत ।

जायदाद, सं. स्त्री. (फ्रा.) रिक्तं, दापः, भूमि-
 संपत्तिः (स्त्री.) ।
 जायफल, सं. पुं. [सं. जाति (ती) फलं]
 जाति-कोष-सारं-शस्यं, कौश (व) म्, पपुदम् ।
 जाया, सं. स्त्री. (सं.) परती, भार्या, पाणि-
 गृहीती ।
 —पती, सं. पुं. (सं.) दम्पती-जम्पती,
 (पुं. दि.) ।
 जाया, सं. पुं. (सं. जातः) पुत्रः, सुतः । वि.,
 उत्पन्न, जात ।
 जाया, वि. (फ्रा.) जष्ट, निरर्थक ।
 जार, सं. पुं. (सं.) जपपतिः, परदारलंपटः ।
 —ज, सं. पुं. (सं.) जपपतिसंतानः ।
 जारिणी, सं. स्त्री. (सं.) कुलटाः पुंश्चली,
 जहन्नचपला ।
 जारी, वि. (अ.) प्रवहत्, प्रवाहित २. वर्त-
 मान, प्रचलत्, प्रचलित ।
 जालंजर, सं. पुं. (सं.) (१-४) नार-नृप-
 मुनि-दैव्य-विशेषः ।
 जाल, सं. पुं. (सं. न.) जालकं, पाशः,
 आनायः, वायुरा २. समूहः, निकरः ३. छता-
 कृतिका, जालम् ।
 जाल, सं. पुं. (अ. जअल) छलं, कपटं,
 माया ।
 —साज, सं. पुं. (अ. + फ्रा.) धूर्तः, शठः,
 मायिकः ।
 —साजी, सं. स्त्री., धूर्तता, कापट्यं, शास्त्रम् ।
 जालो, सं. पुं. (सं. जालं) छता-कृतिका, जालं
 २. जालदुष्टिः (स्त्री.) नेत्ररोगभेदः ३. वासा-
 दिवन्धनार्थं जालम् ।
 जालिक, सं. पुं. (सं.) धीवरः केवर्तः २. ऐन्द्र-
 जालिकः, कुहपकारः ३. उर्ग-संतु, नाभः ।
 जालिम, वि. (अ.) घोर, क्रूरकर्मन्, आत-
 तायिन्, पापिष्ठ ।
 जालिया, दे. 'जालसाज़' ।
 जाली, सं. स्त्री. (सं. जालं >) छिद्रप्रायं
 वक्षं, जालिका २. काष्ठादिपट्टेषु छिद्रसमूहः
 ३. मूत्रकर्मभेदः जालिकाकर्मन् ।
 जाली, वि. (अ. जअल) कुत्रिम, कृतक ।
 जाव, सं. पुं. (सं. यवदीपः-पं) द्रोपविशेषः ।

जावित्री, सं. स्त्री. [सं. जाति (ती) पत्री]
सौमनसायनी, जातिकोषी मालती-सुमनः-
पत्रिका ।

जाविद्या, सं. पुं. (अ.) हिनुजः, कोणः अस्त्रः ।
जासूस, सं. पुं. (फ्रा.) चर्चारः, स्पशः,
अपसर्पः, गूढपुरुषः, भोगर, प्रणिधिः ।

जासूसी, सं. स्त्री. (फ्रा. जासूस) स्पशता,
चर्चारकर्मन् (न.), प्राणिष्यन् ।

जाहिर, वि. (अ.) प्रकट, प्ररक्ष्य २. विदित ।

जाहिरा, अव्य (अ.) बाह्यतः, बहिरंगतः,
आपाततः, प्रत्यक्षतः (सब अव्य.) ।

जाहिरी, वि. (हिं. जाहिर) बाह्य, बहिःस्थ,
बाहीक, बहिर, भव-भूत-वतिन् ।

जाहिल, वि. (अ.) मूर्ख, अज्ञानिन् २. निर-
क्षर, अविद्य ।

जाहिली, सं. स्त्री., मूर्खता, अज्ञता २. निरक्ष-
दरता, विद्याहीनता ।

जाह्वी, सं. स्त्री. (सं.) जहु, कन्या-तनया,
मागीरथी, गङ्गा ।

जिंदगी, सं. स्त्री. (फ्रा.) जीवनं २. आयुस
(न.) ।

—के दिन पूरे करना, मु., जीवनं वा (प्रे.)
२. मरणासन्न (वि.) इष्ट (भा. आ. से.) ।

जिंदा, वि. (फ्रा.) जीवित, समाप्त, सजीव ।

—दिल, वि., हास्यप्रिय, विनोदशील ।

—दिल्ली सं. स्त्री., विनोदशीलता, हास्यप्रियता ।

जिस, सं. स्त्री. (फ्रा.) प्रकारः, भेदः २. द्रव्यं,
वस्तु (न.), सामग्री, उपकरणजातं ४. अन्नम् ।

जिंक, सं. पुं. (अ.) वर्णनं, चर्चा ।

जिगर, सं. पुं. (फ्रा.) यकृत (न.) कालकं,
कालखंडं, कालेयं २. चित्तं, मानसम् ।

जिगरा, सं. पुं. (फ्रा. जिगर) साहसं,
पौरुषं, शौर्यम् ।

जिज्ञासा, सं. स्त्री. (सं.) ज्ञानेच्छा, कौतूहलं,
पिप्रच्छिषा, अनुयोगः, पृच्छा, निरूपणा ।

जिज्ञासु, वि. (सं.) ज्ञानेच्छुः, कौतूहलिन्,
पिप्रच्छिषु ।

जिज्ञानी, सं. स्त्री. (हिं. जेठ) ज्येष्ठस्य जाया,
ज्येष्ठयातु (स्त्री.) ।

जित, वि. (सं.) पराजित, पराभूत, विजित ।

जितना, वि. (हिं. जिस) यावत् (ती स्त्री.),
यावन्मात्र, यावत्परिमाणं । क्रि. वि., यावत् ।

जिताना, क्रि. प्रे., व. 'जीतना' के प्रे. रूप ।

जितेन्द्रिय, वि. (सं.) हृषिकेश, वशिन्,
दान्त, शान्त, इन्द्रियजित् ।

जिह, सं. स्त्री. (अ.) इटः, आमहः ।

जिही, वि. (फ्रा.) इटिन्, आमहिन् ।

जिधर, क्रि. वि. (सं. यध) यस्मिन् स्थाने ।

जिन, सं. पुं. (सं.) विष्णुः २. सूर्यः ३. बुद्धः
४. जैनतीर्थंकरः ।

जिन, सं. पुं. (अ.) भूतः, प्रेतः ।

जिन, सर्व- (हिं. जिम) यद् ।

जिमाना, क्रि. प्रे. (हिं. जीमना) दे.
'खिलाना' ।

जिम्मा, सं. पुं. (अ.) भारः, उत्तरदायित्वम् ।

—दार | वि., उत्तरदायिन्, प्रष्टव्य, अनु-
—वार | योज्य ।

—वारी, सं. स्त्री., उत्तरदायित्वं २. संरक्षणम् ।

जिया, सं. स्त्री. (अ.) मृषालोकः, प्रभा
२. रत्नकान्तिः (स्त्री.) ।

जिधान, सं. पुं. (फ्रा.) हानिः (स्त्री.),
अर्थनाशः ।

जियाकृत, सं. स्त्री. (अ.) आतिथ्यं, अतिथि-
सेवा २. निमंत्रणं, भोजनोत्सवः ।

जियारत, सं. स्त्री. (अ.) सायुदेवमर्यादितदर्श-
नम् ।

जिरगा, सं. पुं. (फ्रा.) वृन्दं, समूहः २. समाजः,
सभा ।

जिरद्यान, सं. पुं. (अ.) धातु-दौर्वैक्य-स्त्रावः,
शुक्लक्षणम् ।

जिरह, सं. पुं. (अ.) जुरह) प्रतिपृच्छा ।

—करना, क्रि. स., प्रतिपृच्छ (तु. प. अ.) ।

जिरह, सं. स्त्री. (फ्रा.) कवचः-जं, तनुवाणं,
वर्मन् (न.), सत्राहः ।

जिला, सं. पुं. (अ.) मण्डलं, चक्रम् ।

जिलाना, क्रि. प्रे., व. 'जीना' के प्रे. रूप ।

जिह्व, सं. स्त्री. (अ.) स्वस्व (स्त्री.), चर्मन्
(न.) २. आवरणं, वेष्टनं २. वृथक् स्थूत

पुस्तक, खंडः भागः ४. पुस्तकसंख्या ।

—बाँधना, क्रि. स., पुस्तकं आवृ (स्वा. उ. से.),
आवरणेन युज् (प्रे.) ।

—बंद } सं. पुं., पुस्तकावरकः, अग्रवन्धकः ।
—साज़् }

जिह्वत, सं. स्त्री. (अ.) अपमानः, अवज्ञा, तिरस्कारः, अन्यायः २. दुर्गतिः (स्त्री.), दुर्दशा ।

जिस, सर्व. (सं. यः >) यत् ।

जिरम, सं. पुं. (प्रा.) शरीरं, देहः ।

जिह्वन, सं. पुं. (अ.) बुद्धिः-मतिः (स्त्री.) ।

जिहाद, सं. पुं. (अ.) धर्मयुद्धम् ।

जिह्वा, सं. स्त्री. (सं.) रसना, रसज्ञा, दे. 'जीभ' ।

जी, सं. पुं. (सं. जीवः >) त्रिसं, मानसं, चेतस्-मनस् (न.) २. साहसं, पौरुषं ३. संकल्पः, विचारः ।

—आना (किसी पर), अनुरागं बन्धु (क. प. अ.), किद् (दि. प. से.), सप्तमी के साथ ।

—करना, मु., इष् (तु. प. से) ।

—का बुझार निकलना, मु. रोदनजल्पना-दिभिः मनोवेगाः शम् (दि. प. से.) ।

—खट्टा होना, मु., निर्विद् (दि. आ. अ., तृतीया के साथ), विरक्त (बि.) भू ।

—खोल कर, मु., निस्संकोचं २. यथेच्छम् ।

—चुराना, मु., परिह (भ्वा. प. अ., द्वितीया के योग में) ।

—छोटा करना, मु., विपद् (भ्वा. प. अ.) २. औदार्यं हा (जु. प. अ.) ।

—बहलना, मु., मनोविचोदः जन् (दि. आ. से.) ।

—बिराडना, मु., वम् (सन्वन्तः, विवमिषति), वमनेच्छा जन् ।

—भरना, मु., टुप् (दि. प. अ.) ।

—भर कर, मु., यथेच्छं, यथाकामम् ।

—मचलाना या—मतलाना, मु., दे. 'जी बिगडना' ।

—में आना, मु., वाच्छ (भ्वा. प. से.) ।

—लगाना, मु., दे. 'जी आना' ।

जीजा, सं. पुं. (हिं. जीजी) भगिनीपतिः, आतुक्तः ।

जीजी, सं. स्त्री. (अनु.) जीजी (ज्वायसी) भगिनी, स्वसृ (स्त्री.) ।

जीत, सं. स्त्री. (सं. जितम्) जयः, विजयः २. लाभः ३. साफल्यं, कृतकार्यता ।

—हार, सं. स्त्री. (अनु.) जयपराजयौ ।

जीतना, कि. स. (हिं. जीत) जि (भ्वा. प. अ.), वि-परा जि (भ्वा. आ. अ.), अभि-परा-भू १. वशीकृ, दम् (प्रे.) ३. स्वावृत्ती-आत्मसाद कृ । सं. पुं. दे. 'जीत' सं. स्त्री. ।

—योग्य, वि., वि-, ज्ञेय, जेतव्य, जयनीय-, अभि-परा-भवनीय; दमनीय; वशीकार्यं इ. ।

—वाला, सं. पुं., वि-, जेतु, अभिभाक्त्विन्, अभि-भाक् (तु) कृ ।

जीता, वि. (हिं. जीना) जीवित, सजीव, जीवोपेत, सप्राण ।

जीतौ, मु., यावच्चजीव्यं, जीवनपर्यन्तं, जीवनावधि (न.) ।

जीन, सं. पुं. (प्रा.) पश्ययन्, पर्याणम् ।

जीनत, सं. स्त्री. (प्रा.) शोभा, छविः (स्त्री.), आसा ।

जीना, कि. अ. (सं. जीवन्) जीव् (भ्वा. प. से.), प्र-भन् (अ. प. से.), भस् (अ. प. से.) । सं. पुं. जीवन्, प्राणधारणम् ।

जीना, सं. पुं. (प्रा.) सोपानं, आरोहणं, अधिरोहि (इ) णी ।

जीभ, सं. स्त्री. (सं. जिह्वा) रसा, लोला, रसला, सुधास्रवा, रसिका, रसांका, रसना ।

—चाटना, मु., गृष् (दि. प. से.), अमिलष् (भ्वा. प. से.), लुम् (दि. प. से.) ।

जीभी, सं. स्त्री. (हिं. जीम) जिह्वा-रसना-, मार्जनी-शोधनी २. जिह्वा-रसना-, मार्जनं-शोधनम् ३. लज्जु-जिह्वा-रसा-रसला ४. कल-माग्रम्, लेखनीचंचुः (स्त्री.) ५. पशुरोगभेदः ।

जीमना, कि. स. (सं. जेमनं) अद् (अ. प. अ.), साद् (भ्वा. प. से.) ।

जीमूत, सं. पुं. (सं.) मेघः, वारिवाहः, अर्ज २. पर्वतः, नद्यः ।

—वाहन, सं. पुं. (सं.) इन्द्रः, वज्रिन् (पुं.) ।

जीरा, सं. पुं. (सं. जीरः) दीपकः, दीप्यः, जीरकः, जरणः ।

जीर्ण, नि. (सं.) शीर्णं, गलित २. परिपक्व, परिणमित ।

जीर्णा, वि. (सं.) वृद्धा, स्थविरा, पलिता, पलिक्री ।

जीर्णोद्धार, सं. पुं. (सं.) नवीकरणं, संधानं, वृद्धारः ।

जीवन्त

[२४०]

जुलमत

जीवन्त, वि. (सं. जीवत्) सप्राण, जीवित, सजीव, जीवोपेत ।

जीव, सं. पुं. (सं.) । जीवन्, आत्मन् (पुं.), शरीरिन्, देहिन् ।

—दान, सं. पुं. (सं. न.) प्राणदानं, जीवन-रक्षणम् ।

—दण्ड, सं. पुं. (सं.) प्राणदण्डः, मृत्युदण्डः । २. वधः, मारणं, हननम् ।

जीवक, सं. पुं. (सं.) प्राणिन्, जीवधारिन् । २. सेवकः, दासः । ३. अ(आ)क्षिप्तुषिकः, कालग्राहिन् । ४. कुसीदः-दकः, बाहुषिकः, कुसीदिन् ।

जीवन, सं. पुं. (सं. न.) प्राणधारणं, चैतन्यं, सप्राणता ।

—चरित, सं. पुं. (सं. न.) जीवन, चर्वा-वृत्तान्तः-चरित्रम् ।

जीवन वृत्त, वृत्तान्त, सं. पुं. (सं.) दे. 'जीवन चरित' ।

जीवनवृत्ति, सं. स्त्री. (सं.) भाजीविका, व्यवसायः, उपजीविका, जीवनोपायः, जीवन-साधनम् ।

जीवात्मा, सं. पुं. (सं-त्मन्) दे. 'जीव' ।

जीविका, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'जीवनवृत्ति' ।

जीवित, वि. (सं.) दे. 'जीता' ।

जुआ, सं. पुं. (सं. वृत्तं) पणः, पणनं-देवनं-ना, वृत्त-अक्ष, कीटा ।

—खेलना, कि. अ., दिव् (दि. प. से.) (अक्षैः) ऋट् (स्वा. प. से.) ।

जुआरी, सं. पुं. (हिं. जुआ) वृत्तकारः, कितवः, अक्षदेविन्, देविच् ।

जुआम, सं. पुं. (अ.) प्रतिश्यायः, श्लेष्म-स्त्रायः ।

जुग, सं. पुं. (सं. युगं) कालमानभेदः २. युगलं, द्वन्द्वम् ।

जुगन्, सं. पुं. (हिं. जुगजुगाना) खद्योतः, व्योति-रिक्लणः, दृष्टिबन्धुः प्रभाकीटः, उप-सूर्यकः, तमोमणिः ।

जुगल, सं. पुं. (सं. युगलं) दे. 'युगलं' वा 'जुग' (२) ।

जुगालना, कि. अ. (सं. उद्विलनम् >) रोमन्धं कृ, रोमन्धायते (ना. धा.) ।

जुगाली, सं. स्त्री. (हिं. जुगालना) रोमन्धः, पुनश्चर्वणम् ।

जुगुप्सा, सं. स्त्री. (सं.) बीभत्सः, घृणा, गर्हा, अरुचिः (स्त्री.) ।

जुडना, जुडना, कि. अ. (सं. युक्त) सं-युज (कर्म.) ; संदिलप् (दि. प. अ.) ; संमिल् (तु. प. से.) ।

जुडाना, जुडाना, कि. प्रे., व. 'जुडना' के प्रे. रूप ।

जुतना, कि. अ. (सं. युक्त >) युगं-योक्त्रं वह् (स्वा. उ. अ.) ।

जुदा, वि. (फ्रा.) पृथक्, भिन्न ।

—करना, कि. स. वियुज (रुध् उ. अ.) पृथक्-कृ ।

—होना, कि. अ., पृथग्भू, निदिलप् (दि. प. अ.) ।

जुदाई, सं. स्त्री. (फ्रा.) वियोगः, पार्थक्यम् ।

जुद्ध, सं. पुं. (सं. युद्धं) संघामः ।

जुमा, सं. पुं. (अ.) शुक्र-मृग्य-वारः-वासरः ।

जुरअत, सं. स्त्री. (फ्रा.) साहसिक्यं, साहसं, उत्साहः ।

जुरमाना, सं. पुं. (फ्रा.) दमः, अश्वदण्डः ।

जुमं, सं. पुं. (अ.) अपराधः, दोषः ।

जुर्माना, सं. पुं. (फ्रा.) दे. 'जुरमाना' ।

—करना, कि. अ., दण्ड् (चु. द्विकर्मक) ।

—देना, कि. स., दण्डं-दमं वह् (स्वा. उ. अ.) ।

—मुआफ करना, कि. स., दण्डं-दमं क्षम् (स्वा. आ. से.) ।

जुलाव, सं. पुं. (अ. जुलाव) रेचनं, विरंचनं उदरशोधनं २. रेचकः-कं, विरंचकः-कम् ।

—देना, कि. स., विरिच् (प्रे.) ।

—लेना, कि. अ. (उदरं) विरिच् (रु. प. अ.) ।

जुलाहा, सं. पुं. (फ्रा. जौलाह) तन्तुवायः, वयः, कुम्भन्दः, तंत्रवापः, पटकारः ।

जुल्लस, सं. पुं. (अ.) दे. 'जल्लस' ।

जुल्लफ, सं. स्त्री. (फ्रा.) कुटिल-चूर्ण-कुन्तलः, अलकः २. द्विफालबद्धाः चिकुराः ।

जुलमत, सं. पुं. (अ.) अन्वचारः, क्रूर-वीरः, कर्मन् (न.) ।

जुलमत, सं. स्त्री. (अ.), अन्वकारः, तिमिरं, तमस् (न.) २. तिमिरं-अन्वकारः, कालिमन् (पुं.)-कृष्णमन् (पुं.)-श्यामता ।

जुबमी, वि. (अ. जुबम >) पापिष्ठ, आतता-
यिन्, अत्याचारिन्, क्रूर ।

जुवा, सं. पुं. (हि. जुआ) दे. 'जुआ' ।

जुवारी, वि. (हि. जुवारी) दे० 'जुवारी' ।

जुष्ट, वि. (सं.) भुक्तशिष्ट, उच्छिष्ट २. प्रिय,
इष्ट, प्रीत, प्रेष्ठ ३. युक्त, अम्बित, युत
४. सेवित ।

जुस्तजू, सं. स्त्री. (फ़ा.) अन्वेषणा, गवेषणा,
मार्गणा ।

जुही, सं. स्त्री. (सं. यूही) (सफ़ेद) यूथिका,
बालयुष्मी, वासन्ती, (पीली) पीत-सुवर्ण,
यूही, हेमयूथिका, कनकप्रभा, हेमपुष्पिका ।

जू, सं. स्त्री. (सं. यूका) केशशः, केशकोटः,
स्वेदसंभवा, यूकःका, षट्पदः-दी ।

जूआ, सं. पुं. (सं. युगं-गाः) योक्त्रं, धुवीं, प्रासंगः,
ईशान्तद्वेषनं, धुर (स्त्री.) ।

जूआ, सं. पुं., दे. 'जुआ' ।

जूठ-जूठन, सं. स्त्री. (हि. जूठा) भुक्तशेषः,
उच्छिष्टं, अवशिष्टम् ।

जूठा, वि. (सं. जुष्ट) उच्छिष्ट, भुक्तशेष ।

जूड़ा, सं. पुं. (सं. जूटः) जूटकं, केशवन्धः,
जयाम्बुधः ।

जूत-जूता, सं. पुं. (सं. युक्त >) पादत्राणं,
उपानम् (स्त्री.) ।

—मारना, मु., पादत्राणेन तड (जु.)
२. तिरस्कृत ।

—खाना, मु., तिरस्कारं लभ् (भ्वा. आ. अ.) ।

जूती, सं. स्त्री., दे. 'जूता' ।

जूथ, सं. पुं., दे. 'यूथ' ।

जूनिबर, वि. (ई.) अबर, अधर, अवरपदमाजू ।

जूही, सं. स्त्री., दे. 'जुही' ।

जूभा, सं. स्त्री. (सं. जूभः, जूम्भण, जूम्भिका,
जूभा, जूभका ।

जूठ, सं. पुं., दे. 'जूष्ठ' ।

जूठा, सं. पुं. (सं. जूष्ठः) प्रथमजः, अग्रजः ।

जूठानी, सं. स्त्री., दे. 'जुठानी' ।

जूच, सं. पुं. (फ़ा.) (बोलकजुकादीना) कोशः-पः ।

—कतरा, सं. पुं., चिह्नानः, ग्रंथिच्छेदकः ।

जूर, सं. स्त्री. (सं. जूरायुः) उरुवं, कललः ।

जूल, सं. पुं. (अं.) कारा, गृह-आगारं, बन्दि-
गृह-शाला ।

—जाना, सं. पुं. (अ. फ़ा.) दे. 'जैल' ।

जूषर, सं. पुं. (फ़ा.) वि-आ-, भूषणं, आभरणं,
अलंकारः, अलंकरणम् ।

जूहन, सं. पुं. (अ.) दे. 'जुहन' ।

जून, सं. पुं. (सं.) जैनमतावलम्बिन् २. जैन-
मत्त-सम्प्रदायः ।

जूनी, सं. पुं. (सं. जैन) दे. 'जैन' (१) ।

जूसा, वि. (सं. यादृश) यादृश(श), यत्प्रकारक
[जैसी (स्त्री.) = यादृशी] ।

—का तैसा, मु., पूर्ववत्, यथापूर्वम् ।

—बाहिण्, मु., यथोचितं, यथाहं, यथायोग्यम् ।

जू, सर्व. (सं. यः) यः (पुं.) या (स्त्री.),
यत् (न.) ।

—कूछ्, यत्किञ्चित् ।

—कोई, यः कश्चित्-कश्चन कोऽपि ।

जूक, जूक, सं. स्त्री. (सं. जलौका) जलुका,
रक्त, पा-पायिनी, जलका, जलज्वरुका ।

जूसो, सं. स्त्री., संकटं, विपद् (स्त्री.) ।

जूग, सं. पुं. (सं. योगक्षेम ?) दे. 'योग' ।

जूगिया, वि. (हि. जोगी) परिव्राजक,
योगिसम्बन्धिन्, २. गैरिकरागयुक्त, गैरिकाक,
गैरिक्वणं ।

जूगी, सं. पुं. (सं. योगिन्) दे. 'योगी' ।

जूगिन, सं. स्त्री., दे. 'योगिनी' ।

जूजन, सं. पुं. (सं. योजनं) दे. 'योजन' ।

जूड़, सं. पुं. (सं. जोडः) बन्धनं, मेलनं
२. योगः, संकलः, परिसंख्या, पिठः । ३. अंग-
सन्धिः, अंगग्रन्थिः ।

जूड़ना, कि. स. (सं. जोड़नं) एकत्र कृ,
संमिल् (प्रे.) जुड् (भ्वा. तु. प. से.) युञ्
(रुध. उ. अ.), संदिल् (प्रे.) २. संकल्
(जु.), परिसंख्या (अ. प. अ.) ।

जूड़ा, सं. पुं. (हि. जोड़ना) युगलं, युग्मं
२. द्वन्द्वं, मिथुनं ३. उपानदयुगलं ४. वेष्टः-शः ।

जूड़ी, सं. स्त्री. (हि. जोड़ा) दे. 'जोड़ा' (१-२) ।

जूत, सं. स्त्री. [सं. ज्योतिस् (न.)] प्रकाशः,
धामा, द्युतिः ।

जूत, सं. स्त्री. (हि. जोतना) चर्मपट्टः,
वस्त्रा, वधी ।

जूतना, कि. स. (सं. युक्त >) योक्त्रयति
(ना. धा.), युञ् (जु.) २. कृष् (भ्वा. प. अ.),
इल् (भ्वा. प. से.) ।

जूतिष, सं. पुं., दे. 'ज्योतिष' ।

जोतिषी

[२४२]

ज्वाला

जोतिषी, सं. पुं., दे. 'ज्योतिषी' ।

जोधा, सं. पु. (सं. योद्धु) बोधः, भटः ।

जोक्र, सं. पु. (अ.) दुर्बलता, निर्बलता ।

जोवन, सं. पु. (सं. शौवनं) तारुण्यम् ।

जोम, सं. पु. (अ.) गर्वः, दुर्पः, अहंमानः, अहंकारः ।

जोर, सं. पुं. (फ्रा.) बलं, शक्तिः २. वशः, अधिकारः ३. वृद्धिः-समृद्धिः (स्त्री.)

४. वेगः, आवेशः ५. आश्रयः ६. परिश्रमः ७. व्यायामः ।

जोराबर, वि. (फ्रा.) बलिष्ठ, शक्तिशालिन् ।

जोरदार, वि. (फ्रा.) प्रबल, बलवत् २. अकाट्य, अखण्ड्य ।

जोराजोरी, अव्य. (फ्रा. जोर >) बलात्, इटात्, प्रसभं, प्रसन्न (सब अव्य०) ।

जोरु, सं. स्त्री. (हिं. जोड़ा) भावी, पत्नी, गेहिनी ।

जोलाहा, सं. पुं., दे. 'जुलाहा' ।

जोश, सं. पुं. (फ्रा.) उत्तेजन-ना, उत्साहः, व्यग्रता, चण्डता, मनोवेगः, आवेशः ।

—द्वेना, क्रि. स, प्रोत्सह (प्रे.), उत्तिज (प्रे.) २. पच् (भ्वा. प. अ.), कश् (भ्वा. प. से.) ।

जोशांदा, सं. पुं. (फ्रा.) काथः, कपाथः, निर्योसः ।

जोशीला, वि., व्यग्र, उग्र, उत्साहिन्, उत्साहवत्, प्रचण्ड ।

जोहड़, सं. पुं. (देश.) जलाशयः, ङदः, पस्वलन् ।

जौ, सं. पुं. (सं. यवः) प्रवेष्टः, दीर्घ-सित, शुकः, अश्वप्रियः, महासुसः ।

जौहर, सं. पुं. (अ.) रत्नं, मणिः (पुं., कमी स्त्री.) २. सारः, तत्त्वम् ।

जौहरी, सं. पुं. (फ्रा.) मणिकारः, रत्नकारः २. रत्नपरीक्षकः ।

ज्ञातव्य, वि. (सं.) ज्ञेय, अवगन्तव्य, बोद्धव्य ।

ज्ञाता, वि. (सं. शालु) वेत्, ज्ञानिन्, बोद्धु ।

ज्ञाति, सं. पुं. (सं.) सगोत्रः, कन्युः, वान्धवः, स्वः, स्वजनः, सङ्गुल्यः, अंशकः, दायादः ।

ज्ञान, सं. पुं. (सं. न.) बोधः, प्रतीतिः (स्त्री.) ।

ज्या, सं. स्त्री. (सं.) गौर्वा, शिञ्जनी, गुणः ।

ज्यादती, सं. स्त्री. (फ्रा.) आधिक्यं, प्राचुर्यं, अधिकता २, अत्याचारः ।

ज्यादा, वि. (फ्रा.) अधिक, महत्, बृह ।

—तर, वि. बहुसंख्याक, अधिकतर, भूयस् ।

ज्येष्ठ, सं. पुं. (सं.) अग्रजः, प्रथमजः २. मर्तुः ज्यायान् भ्रातृ ३. ज्येष्ठः (मासः) । वि., बृह २. श्रेष्ठ ।

ज्यौ, क्रि. वि. (सं. यः + इव यथा,) येन प्रकारेण ।

—का ल्यौ, सु., यथापूर्वम् ।

—स्थौ, सु., यथा तथा ।

ज्योति, सं. स्त्री. [सं. ज्योतिस् (न.)] प्रकाशः, प्रभा, क्षुतिः (स्त्री.) ।

ज्योतिष, सं. पुं. (सं. न.) ज्योतिर्विधा, ज्योतिःशास्त्रं, नक्षत्रविधा ।

ज्योतिषी, सं. पुं. (सं. ज्योतिषिन्) दैवज्ञः, ज्योतिषिद्, ज्योतिषिकः ।

ज्योत्स्ना, सं. स्त्री. (सं.) चन्द्रिका, कौमुदी ।

ज्वर, सं. पुं. (सं.) ज्वरिः, ज्वरा. ज्वरिः (स्त्री.), महागदः, तापकः ।

थोटी थोटी देर बाद होनेवाला—, स्वल्पविरामज्वरः ।

दोरेवाला—, पौनःपुनिकज्वरः ।

प्रतिदिन होनेवाला—, अन्त्येष्वर्ज्वरः ।

रुक रुककर होनेवाला—, सविरामज्वरः ।

सड़ा—, रक्तदुष्टिः (स्त्री.) ।

हर तीसरे दिन होनेवाला—, तृतीयकज्वरः ।

हर चौथे दिन होनेवाला—, चतुर्थकज्वरः ।

ज्वलंत, वि. (सं. ज्वलत्) उदीप्त, प्रकाशित ।

ज्वलन, सं. पुं. (सं. न.) दाहः, तापः २, अग्निः ३. ज्वाला ।

ज्वार^१, सं. स्त्री. (सं. याननालः) अन्नविशेषः, वृषातण्डुलः, क्षेत्रेभ्यः ।ज्वार^२, सं. पुं. (देश.) वेलावृद्धिः (स्त्री.) ।

—भाटा, सं. पुं., वेलाया वृद्धिस्थयी (हिं.) ।

ज्वाला, सं. स्त्री. (सं.) शिक्षा, अग्निः (न.) ।

—मुस्वी, सं. पुं. (सं.) अग्निपर्वतः ।

श

श, देवनागरीवर्णमालाया नवमोऽव्यञ्जनवर्णः,
शकारः ।

शं, शंकार, सं. पुं. स्त्री. (अनु.) शणत्कारः,
शणत्तण्ध्वनिः, शिजितम् ।

शंखाङ्, सं. पुं. (हिं. 'शाङ्' का अनु.) कंट-
गुह्यः-गं, कंटस्त्वम् ।

शंशट, सं. स्त्री. (अनु.) कृच्छ्रम्, आयासः,
स्तेदाः, वैषम्यम् ।

शंशताना, कि. अ. (अनु.) शणत्तणायते (ना.
पा.), शणत्तणध्वनि उत्पद्य (प्रे.) ।

शंशतानाष्ट, सं. स्त्री. (अनु.) दे. 'शंकार' ।

शंशतः, सं. स्त्री. (सं.) शंशतः, सवृष्टिको वातः ।

शंशोदना, कि. स. (सं. शंशानम्) क्षुम् (प्र.),
सरभसं कंप् (प्रे.) ।

शंड, सं. पुं. (हिं. शंडा) शिशोः अमुंडिताः
केशाः, सहज-जन्मज, केशाः-कचाः (पुं. बहु.) ।

शंडा, सं. पुं. (हिं. शण्डी) ध्वजः, केतुः,
केतनम् ।

—वरदार, सं. पुं. पताकिन्, ध्वजिन्, वैजय-
न्तिकः, भवजपताका-धारिन्-वाहिन् ।

—गाङ्गना, सु., स्वायत्ती-आत्मसाध कृ. अभि-
परा, भू ।

शंडी, सं. स्त्री. (सं. जयन्ती) वैजयन्ती, पताका,
दे. 'शंडा' ।

शंडूला, वि. (हिं. शंड) अमुंडित, अनुस-अकृत
अच्छिन्न, केश-मूर्द्धन ।

शंप, सं. पुं. सं. शंपा, प्लुतन्तिः (स्त्री.)
२. अध्यालभूषणम् ।

शक, सं. स्त्री. (अनु.) आवेशः, अभिनिवेशः,
आग्रहः, निर्वैष्यः २. प्रलापः, असंबद्धमाषणं,
प्रज्वयः ।

—मारना, कि. स., प्रलप्-प्रजल्प (भ्वा. प. से.),
निर्विवेकं भाष् (भ्वा. आ. से.) ।

शकक, सं. स्त्री. (अनु.) दे. 'शक' ।

शकना, कि. अ., प्रलप्-प्रजल्प (भ्वा. प. से.),
विवद् (भ्वा. आ. से.) ।

शक्की, सं. पुं. (हिं. शक) वावदूकः, प्र-
जल्पकः, वाचालः २. दृढाप्रदिन् ।

शक्ख, सं. स्त्री. (अनु.) दे. 'शक' ।

शकशना, कि. अ. (हिं. शकक) विवद्
(भ्वा. आ. से.), विप्रलप् (भ्वा. प. से.),
कलहं कृ, कलहायते (ना. पा.) ।

शकवा, सं. पुं. (हिं. शकदना) वापदूकं,
कलिः, कलहः, विवादः ।

शकवालुन्द, वि. (हिं. शकवा) विवादिन्,
कलहप्रिय ।

शट, कि. वि. (सं. शटिति) तत्क्षणं, अनुपर्वं,
शीघ्रम् ।

—पट, कि. वि., तत्कालमेव, सत्वरम् ।

शटकना, कि. स. (हिं. शट) (सहसा)
वेष्-कंप् (प्रे.) २. छलेन बलेन वा अपहृ
(भ्वा. प. अ.) ।

शटका, सं. पुं. (हिं. शटकना) हस्तादिकेन
प्रचालनं-प्रेरणं-प्रणोदनं, ईषत्-आघातः-प्रहारः
२. सहसा वधः-हननम् ।

शक्, सं. स्त्री. (हिं. शकना) दे. 'शकी' ।

शकशकाना, कि. स. (अनु.) दे. 'शंशोदना' ।

शकना, कि. अ. (सं. शरणम् >) पट-शर्
(भ्वा. प. से.), शू (कर्म.) २. भाव-निगिञ्
(कर्म.) ।

शकप, सं. स्त्री. (अनु.) कलहः २. क्रोधः
३. आवेशः ।

शकथेरी, सं. स्त्री. (हिं. शक + वेरी), (फल)
वन्यवदरम् (वृक्ष) भूवदरी, वन्यवदरः,
श्वराहारः ।

शकी, सं. स्त्री. (हिं. शकना) सतत-शरणं-
पतनं २. सततवृष्टिः (स्त्री.) ।

शकवाना, कि. स. (शकना) शुष्-वृञ्
(प्रे.) २. अपवद् (प्रे.) ५. 'शकना' के
(प्रे.) रूप ।

शकवाना, कि. स. (शकना) दे. 'शकवाना' ।

शपक, सं. स्त्री. (हिं. शपकना) नेत्रनिमीलनं,
पद्मसंकोचः, निमेषः, तन्द्रा, बंधविद्रा २. पलं,
क्षण-णम् ।

शपकना, कि. स. (अनु. शप्) निमील (भ्वा.
प. से.) नेत्रं संकुञ् (भ्वा. प. से.), निमिष्
(लु. प. से.) । कि. अ., निमील, निमिष्

२. अक्षयं निद्रा (अ. प. अ.)-स्वप् (अ. प. अ.) ।
 शपकाना, कि. स., दे. 'शपकना' कि. स. ।
 शपट, सं. स्त्री. (हि. शपटना) आच्छेदः
 आकस्मिकग्रहणं २. सङ्साकमणं, आकस्मिकः
 प्रहारः ।
 शपटना, कि. स. अ. (सं. शपः >) आच्छिद्य
 (र. प. अ.), सहसा आ-कृष् (भ्वा. प. अ.)
 २. आकन् (दि. प. से.) ।
 शपट्टा, सं. पुं. } दे. 'शपट' ।
 शपेट, सं. स्त्री. }
 शबरा, वि. (अनु.) सयनकेश, लोमश,
 दीर्घलोमन् ।
 शबरीला, नि., दे. 'शबरा' ।
 शमक, सं. स्त्री. (हि. चमक) धुतिः (स्त्री.),
 आभा, कान्तिः (स्त्री.) ।
 शमस्रम्, } सं. स्त्री. (अनु.) धारासारः,
 शमास्रम् } धारापातः, शंखा २. शपनकारः, शण्डशण्डशब्दः ।
 शमेला, सं. पुं. (अनु. श्राव) दे. 'शंशट' ।
 शरना, कि. अ. (सं. शरणं >) क्षर् (भ्वा. प.
 से.), क्षु (भ्वा. प. अ.), प्रपत् (भ्वा. प. से.) ।
 सं. पुं., प्रपातः, स्त्रोतस् (न.), निर्हारः,
 उत्सः ।
 शरोखा, सं. पुं. (अनु. शरशर + हि. गोखा)
 गवाक्षः, वातायनम् ।
 शलक, सं. स्त्री. (सं. शलिका) आभा, धुतिः
 (स्त्री.), प्रकाशः २. प्रतिबिम्बः-वं, प्रतिच्छाया,
 प्रतिफलम् ।
 शलकना, कि. अ. (हि. शलक) प्रकाश-विद्युत्
 (भ्वा. आ. से.) २. प्रतिफलं (भ्वा. प. से.)
 संक्रान्त-प्रतिबिम्बित-प्रतिफलित (वि.) भू,
 प्रतिभा (अ. प. अ.) ।
 शलकाना, कि. स., व. 'शलकाना' के प्रे. रूप ।
 शलशलाना, कि. अ., दे. 'चमकना' कि. स.,
 दे. 'चमकाना' ।
 शलशलाहट, सं. स्त्री., दे. 'चमक' ।
 शलना, कि. स. (हि. शलशल) वीज्
 (जु.), व्यञ्जनं वृण् (प्रे.) ।
 शलमलाना, कि. अ. (अनु. शलमल) सकर्म्यं
 प्रकाश (भ्वा. आ. से.) ।
 शलवाना, कि. प्रे., व. 'शलना' के प्रे. रूप ।

शलकाना, कि. अ. (हि. शल = कोष) प्रकुप्
 (दि. प. से.), कुप् (दि. प. अ.) । कि. स.,
 व. उक्त भातुओं के प्रे. रूप ।
 शष, सं. पुं. (सं.) मत्स्यः, मीनः ।
 —केतु, सं. पुं. (सं.) कामः, मारः, रति-
 पतिः, मनोजः ।
 शई, सं. स्त्री. (सं. छाया) प्रतिबिम्बः-वं,
 प्रति-च्छाया-फलं-रूपं २. अंधकारः २. छलम् ।
 शांकना, कि. अ. (सं. क्षय अथवा अक्षय्य)
 जालमार्गेण दृश् (भ्वा. प. अ.) २. निगूढं
 निरूपं (जु.) ।
 शांकी, सं. स्त्री. (हि. शांकना) ईषद् अभि-
 व्यक्तिः (स्त्री.) २. ईक्षणं, निरूपणं ३. दृश्यं
 ४. गवाक्षः ।
 शांश, सं. स्त्री. (अनु. शनश्यन्) इत्सर्क,
 झङ्गरी, कांस्यकरतालकम् ।
 शौशन, सं. स्त्री. (अनु.) नृपुत्रः-रम् ।
 शौशरी, सं. स्त्री., दे. 'शौश' तथा 'शौशल' ।
 शांवा, सं. पुं. (सं. शामकम्) दग्धेष्टका
 २. कोषः ३. कुचेष्टा ।
 शांसा, सं. पुं. (सं. अश्वः-सः >) छलं, कपटं,
 प्रतारणा ।
 —देना, शांसना, कि. स., वंच् (जु.), प्रहृ
 (प्रे.), छलयति (ना. पा.) ।
 शाङ्, सं. पुं. (सं. श्रावः) पिपुलः, श्रावः,
 क्षुपभेदः ।
 शाग, सं. पुं. (हि. गाज) फेनः, हिंशीरः,
 अम्बुकफः, मंडः-डम् ।
 शाङ्, सं. पुं. (सं. शाटः >) कंटशुल्मः-सं,
 कंटस्तम्बः । (झाड़ी स्त्री.) ।
 —श्राङ्, सं. पुं., गोक्षुरः, शुष्कशुल्मः ।
 श्राङ्, सं. पुं., शुल्मगहनं, निशिलस्तम्बः ।
 —श्राङ्, सं. स्त्री., मार्जनं, शोधनम् ।
 —फानूस, सं. पुं., काचदीपिका ।
 —फूँक, सं. स्त्री. यंत्रयंत्रम्, यंत्रयोगः ।
 शाङ्ग, सं. पुं. (हि. शङ्गना) मत्तकः,
 मार्जनपटः ।
 शाङ्गना, कि. स. (हि. शङ्गना) रेगुं अपमृज्
 (अ. प. वे.), निर्मूलीकृ ।
 —श्राङ्गना, कि. स., श्राङ् (भ्वा. प. से.) ।
 शाङ्ग, सं. पुं. (हि. श्राङ्गना) वस्त्र-वसनः,
 अन्वेषण-निरीक्षा २. गृह्य-धं, मलं, पुरीषम् ।

साहू

[२४५]

सूख

साहू, सं. स्त्री. (हि. दादना) संमार्जनी,
शोधनी ।

—देना, कि. स. (सं. मृज् (अ. प. वे.), मृज् (घं.) ।

सामा, सं. पुं. (सं. ज्ञामकं) दम्पेष्टका ।

सालर, सं. स्त्री. (सं. जलरी) दशाः
(स्त्री. बहु.), वस्तयः (स्त्री. पुं. बहु.), वस्त्रप्रान्तः ।

—दार, वि., अलरीयुक्त, प्रान्तोपेत ।

शिक्षक, सं. स्त्री. (हि. शिक्षकना) आशंका,
विकल्पः, सन्देहः ।

शिक्षकना, कि. अ. (अनु.) आशंका-विकल्प
(स्था. प. से.), दोलायते-चिरायते (ना. धा.),
संज्ञा (अ. धा. से.) ।

शिक्षक, सं. स्त्री. (हि. शिक्षकना) मत्संनं,
आक्रोशः, अधिक्षेपः ।

शिक्षकना, कि. स. (अनु.) आकुशू (स्था.
प. अ.), अधिक्षिप् (तु. प. अ.), निर्भस्
(चु. आ. से.) ।

शिक्षकी, सं. स्त्री. (हि. शिक्षकना) दे.
'शिक्षक' ।

शिलमिल, सं. स्त्री. (अनु.) प्रकम्पमानः
प्रकाशः ।

शिली, सं. स्त्री. (सं.) चिली, झिरी, झिरिका,
झिलिका, मृहारी ।

शिली, सं. स्त्री. (सं. चैलं >) मूक्षम-स्वच् (स्त्री.)-
चर्मन् (न.) २. जरायुः, उल्बम् ।

शीकना, शीखना, कि. अ. (हि. खीजना)
अनुशुच् (स्था. प. से.), अनुतप् (दि. आ. अ.),
पश्चातापं कृ । सं. पुं., पश्चातापः, विप्रतीसारः,
अनुतापः, अनुशयः ।

शीगुर, सं. पुं. (अनु. शी-शी) दे. 'शिली' (१) ।

शीना, वि. (सं. शीर्णं >) सूक्ष्म, विरल, तनु ।

शील, सं. स्त्री. (सं. क्षीरं >) सरोवरः, जला-
शयः, सरसी, सरस् (न.) ।

शीवर, सं. पुं. (सं. शीवरः) नाविकः, औडुषिकः
२. कैवर्तः, मत्स्याजीवः ।

शुंशलाना, कि. अ. (अनु.) कुप् (दि. प. से.),
कुष् (दि. प. अ.) ।

शुंसलाहट, सं. स्त्री. (हि. शुंशलाना) कोपः,
क्रोधः, रोषः, अमर्षः ।

शुंष्ट, सं. पुं. (सं.) अस्कन्धवृक्षः, अप्रकाण्डतकः ।

शुंक, सं. पुं. (सं. शुण्टः >) समुदायः, समूहः,
गणः, इन्दः, कदम्बकम् ।

शुकना, कि. अ. (सं. युज् >) अवः, नम्
(स्था. प. अ.), नप्रीभू २. वकीभू ।

शुकाना, कि. स. (हि. शुकना) नम् (प्रे.),
वकी कृ ।

शुकवाना, कि. प्रे. (हि. शुकना) दे. 'शुकाना' ।

शुकाव, सं. पुं. (हि. शुकना) प्रवणता, नतिः
(स्त्री.) २. वकता ३. प्रवृत्तिः (स्त्री.) ।

शुकावट, सं. स्त्री. (हि. शुकना) दे. 'शुकाव' ।

शुटपुटा, सं. पुं. (अनु. शुटपुट) संधिकालः,
अहोरात्रसंयोगसमयः, संध्या ।

शुठलाना, कि. स. (हि. शुठ) मिथ्या-
शुठलाना, वादिश्वं प्रमाणयति (ना. धा.),
शुठाना, निराकृ, प्रत्याख्या (अ. प. अ.) ।

शुठई, सं. स्त्री. (हि. शुठ) असत्यता, अनृतत्वं,
अलीकता, मिथ्यात्वम् ।

शुनशुन, सं. स्त्री. (अनु.) छणत्कारः, क्षणत्कारः,
क्षणक्षणध्वनिः (पुं.) ।

शुनशुना, सं. पुं. (अनु.) शुणशुणकः ।

शुनशुनी, सं. स्त्री. (अनु.) शुणशुणी, अंगेषु
जाह्वानुभूतिः (स्त्री.) ।

शुमका, सं. पुं. (हि. शुमना) ताकपत्रम् ।

शुरमट, सं. पुं. (सं. शुंष्टः >) समुदायः,
शुरशुट, समूहः २. सत्सन्, गुणमः ।

शुरी, (हि. शुरना) वली-कि. (स्त्री.), चर्मसंकोचः
२. पुटः, भंगः ।

शुलसना, कि. अ. (सं. ज्वलनं) ईषत् दह्-
प्लुष् (कर्म.) ।

शुलसाना, कि. स. (हि. शुलना) ईषत् दह् (स्था. प. अ.),
प्लुष् (स्था. प. से.) ।

शुलाना, कि. स. (हि. शुलना) प्रैल् (प्रे.)
इतस्ततः चल् (प्रे.) ।

शुट, सं. पुं. (सं. अयुक्तं) असत्यं, अनृतं,
अलीकं, मिथ्यावचनं, असत्यभाषणं । वि.,
शुठ, मिथ्या-शुठ- (समासके आदिने) असत्यं,
अतथ्यं, वितथं ।

शुटा, वि. (हि. शुट-ठ) मिथ्या असत्यं,
शुटा, असत्यवादिन्-मिथ्याभाषिन् ।

शुम, सं. स्त्री. (हि. शुमना) तन्त्रा, आलस्यं
२. आन्दोलनं, प्रेक्षणम् ।

शुमना, कि. अ. (सं. श्रेयः) अथवा 'शुम्ना'
(अनु.) इतस्ततः चल् (स्था. प. से.) ।

शुल, सं. स्त्री. (हि. शुलना) कुपः-शं-धा,
प्रवेणी-शिः (स्त्री.), परिस्तोभः, सन्नना ।

झलना

[२४६]

टकोर

झलना, कि. अ. (सं. दोलने)दोलायते(ना.धा.),
प्रेख् (भ्वा. प. से.) ।

झला, सं. पुं. (सं. दोला-लः-लिका) प्रेखा,
हिदोलः, भान्दोलः ।

झेलना, कि. स. (सं. झ्वेलन >) सह् (भ्वा.
भा. से.), मृप् (दि. उ. से.) ।

झौकना, कि. स. (हि. झुकना) अग्नी क्षिप्
(तु. उ. अ.) २. प्रेर (चु.) प्रणुद् (प्रे.) ।

झौक देना, कि. स., दे. 'झौकना' (२) ।

झौका, सं. पुं. (हि. झौकना,) वायुवेगः,
पवनप्रहारः; वातशुभ्रः ।

झोपका, सं. पुं. (हि. छोपना ?) उटजः-जं,
कुटीरः-रं. कुटी, कुटीरकः; पर्णशाला ।

झोल, सं. पुं. (हि. झूलना) शैथिल्यं, संकोचः
२. संवरणं, व्यवधानं ३. रक्षणं, लेपनम् ।

—फेरना, लिप् (तु. उ. अ.), रंज् (प्रे.) ।

झोला, सं. पुं. (हि. झूलना) पुटः-रं, प्रसेवः.
कोषः (झोली खी. = लघुपुटः इ.) ।

ञ

ञ, देवनागरीवर्णमालाया दशमो व्यञ्जनवर्णः,

ञकारः ।

ट

ट, देवनागरीवर्णमालाया एकादशो व्यञ्जनवर्णः,
टकारः ।

टंक, सं. पुं. (सं.) श्रावहारणः, पाषाणभेदनः
२. ब्रह्मचरः, तक्षणी ३. परशुः, कुठारः

४. स्रङ्गः ५. चतुर्मासकारमकः चतुर्विंशतिरक्ति-
कात्मको वा तोलभेदः ६. क्रोधः ७. अभिमानः

८. जंवा ९. खनिर्ध्रं १०. क्रोधः, निधिः
११. मुद्रा, नाणकम् ।

टँकना, कि. अ. (सं. टंकरणं) व. 'टौकना' के
कर्म. के रूप ।

टँकवाई, सं. स्त्री. (हि. टँकवाना) १-३.
टँकन-सौवन-लेखन, भृत्वा-भृतिः (स्त्री.) ।

टँकवाना, कि. प्रे., व. 'टौकना' के प्रे. रूप ।

टँका, सं. स्त्री. (सं.) जंवा, प्रसूता ।

टँकाई, सं. स्त्री. (हि. टौकना) दे. 'टँकवाई' ।

टँकाना, कि. प्रे., दे. 'टँकवाना' ।

टँकार, सं. स्त्री. (सं. पुं.) ज्या-मौर्वी-धोषः-
शब्दः, सिञ्जिनीक्षितं २. टणत्कारः, रणितिः
३. ह्यण-क्षण, रणितं-निन्दः ।

टँकारना, कि. स. (सं. टँकारः >) ज्यां पुप्
(चु.), मौर्वी आस्फल् (प्रे.) टँकारयति
(ना. धा.) ।

टँकी, सं. स्त्री. (अं. टैक) तोयाधारः, वापिका
२. द्रोणी-णिः (स्त्री.) ।

टँग, सं. पुं. (सं. पुं. न.) श्रावहारणः, पाषाण-
भेदनः २. परशुः ३. चतुर्मासात्मकः तोलभेदः
४. दे. 'टांग' ।

टँगना, कि. अ., दे. 'लटकना' ।

टँटा, सं. पुं. (अनु. टन टन) उपद्रवः, कलहः
२. प्रपंचः, आलंबरः ।

टक, सं. स्त्री. (सं. टंक् = बौधना >) अनिमेष-
बद्ध-स्थिर-दृष्टिः (स्त्री.) ।

—बौधना, मु., अनिमि(मे)पनयन (वि.) इस्
(भ्वा. प. अ.) ।

—लुगाना, मु. प्रतीक्ष् (भ्वा. आ. से.) ।

टकटकी, सं. स्त्री., दे. 'टक' ।

—बौधना, मु., बद्ध-स्थिर-दृष्ट्या अवलोक
(चु.) ।

टकराना, कि. अ. (हि. टकर) संघट् (भ्वा.
आ. से.), अभि-आ-प्रति-इन् (अ. प. अ.),

अभि-सं-पृत् (भ्वा. प. से.) कि. स., उक्त
धातुओं के प्रे. रूप ।

टकसाल, सं. स्त्री. (सं. टंकशाला), मुद्रांकण-
शाला ।

टकसाली-लिया, सं. पुं. (हि. टकसाल) टंक-
अध्यक्षः-पतिः (पुं.), नैतिकः । वि., टंक-
शालासंबन्धिन् २. शुद्ध, निर्दोष ३. सर्वसम्मत
४. प्रामाणिक, परीक्षित ।

टका, सं. पुं. (सं. टंकः >) अर्द्धाणी, पणयुगलं
२. रूप्य-प्यकं, काविकः, टंकः ३. धनम् ।

—सा जधाव देना, मु., जटिति नि-प्रति-षिष्
(भ्वा. प. से.)-प्रत्याख्या (अ. प. अ.) ।

—सा मुँह लेकर रह जाना, मु., त्रप् (भ्वा.
आ. से.), लज् (तु. आ. से.) ।

टकोर, सं. स्त्री. (सं. टकारः) दे. 'टकार' (२),
२. आघातः, प्रहारः ३. पट्टप्रहारः ४. दुंदुभि-

पटह, ध्वनिः (पुं.) ५. प्र., स्वेदनं, (उष्ण-जलादिना) सेकः ।

टकोरना, कि. स. (हि. टकोर) मेरीं आहन् (अ. प. अ.) २. प्रह (भ्वा. प. अ.) ३. (उष्णजलादिभिः) सिच् (तु. प. अ.), लिप् (तु. प. अ.), प्र., स्वित् (प्रे.) ।

टक्कर, सं. स्त्री. (अनु. टक) संघट्टः, संमर्दः, समा-प्रति, पातः २. विग्रहः, संघामः, संप्रहारः ३. हानिः (स्त्री.) ४. मस्तक-शीर्ष, आघातः ।

—का, सु., सम, समान, तुल्य ।

—खाना, गु., दे. 'टकराना' कि. अ. ।

—मारना, सु., ब. 'टकराना' के प्रे. रूप २. विहृत् (क. उ. अ.) ३. यत् (भ्वा. आ. से.) ।

टक्कना, सं. पुं. (सं. टक = टांग >) गुल्फः, सुटिकः, घुटो, तुण्डः, सुटकः ।

टटोल, सं. स्त्री. (हि. टटोलना) स्पर्शः, सम्पर्कः, परामर्शः, स्पर्शको बोधः ।

टटोलना, कि. स. (सं. टक् + तोलनं >) स्पर्शनं परोक्ष (भ्वा. आ. से.) निरूप् (चु.), स्पृश-परामृश (तु. प. अ.) २. अंधकारे अन्विष (द्वि. प. से.) निरूप्-परामृश ।

टट्टी, सं. स्त्री. (सं. स्थाप्यो ?) (वंशवृणादि-रचित) कपा (वा) टः-टंटी, २. प्रतिसीरा, तिरस्करिणी ३. सूक्ष्ममिधि (स्त्री.) ४. शौच-कूपं, मलालयः ५. मल, उच्चारः ।

—जाना, सु., पुरीषोत्सर्गाय गम् ।

—की आक्ष (या. ओट) से शिकार खेलना, सु., प्रच्छन्नं प्रह (भ्वा. प. अ.), निमृतं पाप-माचर् (भ्वा. प. से.) ।

टट्ट, सं. पुं. (अनु.) क्षुद्रघोटकः अशशावकः ।

टन, सं. पुं. (अनु.) घंटाध्वनिः (पुं.), टण-त्कारः, टणिति ।

—टन, सं. पुं., टणटण, निनदः-रणितं, टणटण-त्कारः कृतिः (स्त्री.) ।

टन, सं. पुं. (अं.) अष्टाविंशतिमणकल्पः, तोल-भेदः, *टनम् ।

टनकना, कि. अ. (अनु.) टणटणायते (ना. धा.), टण्टकारं कृ २. घर्षेण शिरःपीड् (कर्म.) ।

टनटनाना, कि. स. (अनु.) घंटां नट्-वद् (प्रे.) । कि. अ., दे. 'टनकना' ।

टनाटन, सं. स्त्री. (अनु.) निरन्तरः टणटण-त्कारः ।

टप, सं. पुं. (हि. तोपना = टांकना) प्रवहणा-दीनाम् आच्छादनं-आवरणं-छत्रम् ।

टप, सं. पुं. (अं. टप) द्रोणी-णिः (स्त्री.) ।

टप, सं. स्त्री. (अनु.) विदुपातध्वनिः (पुं.), टप् इति शब्दः ।

—से, सु. श्रुति, आशु, शीघ्रम् ।

टपक, सं. स्त्री., दे. 'टपकाव' ।

टपकना, कि. अ. (अनु. टप) कणशः-विदु-कनेण क्षर्-गल् (भ्वा. प. से.)-ञ् (भ्वा. प. अ.)-स्यन्द् (भ्वा. आ. से.) २. (फलादि) श्रुति नि-अव-पत् (भ्वा. प. से.) ३. परिस्नु, क्षर् ४. दे. 'टीसना' ।

टपका, सं. पुं. (हि. टपकना) स्वयं पवितं पक्कफलम् ।

—टपकी, सं. स्त्री., शीकर, वर्षः-पातः २. सतत-फलपातः ।

टपकाना, कि. स., ब. 'टपकना' के प्रे. रूप ।

टपकाघ, सं. पुं. (हि. टपकना), (कणशः) क्षरणं-गलनं-स्यन्दनं-ज्ञावः ।

टपना, कि. अ., दे. 'कूटना' ।

टपाटप, कि. वि. (अनु.) सततं, निरंतरं, अदिरतम् ।

टप्पा, सं. पुं. (अनु.) प्लवः, प्लवनं, प्लुतं-तिः (स्त्री.), झंपः-पा २. गीतिकाभेदः ।

—खाना, कि. अ., जत्पत् (भ्वा. प. से.), उरप्लु (भ्वा. आ. अ.) ।

टप, सं. पुं. (अं.) दे. 'टप' ।

टपकर, सं. पुं., दे. 'कुटुम्ब' ।

टमकी, सं. स्त्री. (अनु. टमक) किडिमः, लघुपट्टः ।

टमटम, सं. स्त्री. (अं. टम) अश्वयानभेदः, *टमटमम् ।

टमाटर, सं. पुं. (अं. टमैटो) आंग्लीय-रक्त, शृन्ताकम् ।

टर, सं. स्त्री. (अनु.) टरशब्दः, अप्रिय-कर्कश-कर्णकट्ट-शब्दः २. मेकरवः ३. दपौक्तिः (स्त्री.)

४. दुराग्रहः, प्रतीपता ५. तुच्छवचनम् ।

—टर, सं. स्त्री., बृथालापः, प्र., जल्पः-पितं २. मेकरवम् ।

—टर करवा, कि. अ., दे. 'टरटराना' ।

टरकना, कि. अ., दे. 'टरुना' तथा 'टरटराना'।

टरकाना, कि. सं., दे. 'टारुना'।

टरटराना, कि. अ. (अनु. टरटर) प्रलप-
प्रवचन (भ्वा. प. से.) २. अविनयेन मू (अ. उ. से.) टरटरायते (ना. धा.)।

टर्रा, वि. (अनु. टरटर) वाचदूक, वाचाल इ.
२. धृष्ट, निज्जीव।

टर्राना, कि. अ. (अनु. टर) सामिमानं
वद् (भ्वा. प. से.) धाह्वेनेन मू (अ. उ. से.),
कट्ट वद्।

टरुना, कि. अ. (सं. टरुनं >) विचल् (भ्वा.
प. से.), अपसु (भ्वा. प. अ.) २. स्थाना-
न्तरं या (अ. प. अ.) प्रत्या (भ्वा. आ.
अ.) ३. वि-लश् (दि. प. वे.), लुप् (दि.
प. अ.) ४. व्याहृिप् (कर्म.), विछंभ (भ्वा.
आ. से.) ५. अन्वधा भू ६. (समयः) व्यति-
इ (अ. प. अ.), गम्।

टस, सं. स्त्री. (अनु.) गुरुद्वयसरणशब्दः,
टस् इति शब्दः।

—से मस न होना, मु., ईषदपि न विचल्।

टसक, सं. स्त्री. (हिं. टसकना) दे. 'टीस'।

टसकना, कि. अ. (हिं. टस) अप-गम्-सु
(भ्वा. प. अ.), अपया (अ. प. अ.) २. दे.
'टीसना'।

टसकाना, कि. सं., व. 'टसकना' के प्रे. रूप।

टसर, सं. पुं. (सं. तसरः >) क्षीमभेदः,
०२सरम्।

टसर-भसर, सं. पुं. (हिं. टस + मस) विलंबः,
व्याखेपः।

टसुणा, सं. पुं. (हिं. षेसुणा) मिथ्याबु (न.),
वितथबाष्पः।

टहना, सं. पुं. (सं. तनुः >) विटपः, शाखा।

टहनी, सं. स्त्री. (हिं. टहना) तनु-सूक्ष्म,
विटपः-शाखा।

टहल, सं. स्त्री. दे. 'सेवा'।

टहलना, कि. अ. (सं. तह + चलनं ?) परि-
अट-अम् (भ्वा. प. से.), विड्ड (भ्वा. प. अ.),
इतस्तवः कर् (भ्वा. प. से.), परिक्रम्
(भ्वा. प. से; भ्वा. आ. अ.)।

टहलनी, सं. स्त्री., दे. 'नौकरानी'।

टहलाना, कि. सं., व. 'टहलना' के प्रे. रूप।

टहलुआ-वा, } सं. पुं., दे. 'नौकर'।
टहलु,

टहलुई, सं. स्त्री., दे. 'नौकरानी'।

टौक, सं. स्त्री. (सं. टंकः) चतुर्माषकात्मकः
तोलभेदः २. अर्धगणना, मूलस्वरूपगणम्।

टौक, सं. स्त्री. (हिं. टौकना) लेखः, लिखनं,
लिपिः (स्त्री.) २. दे. 'निब'।

टौकना, कि. सं. (सं. टंकनं) टैक् (भ्वा. प.
से; जु.), कौलादिभिः संधा (जु. उ. अ.)-
संयुज् (व. उ. अ.) २. सिव् (दि. प. से.),
वे (भ्वा. उ. अ.) ३. पादुकाः संधा ४. संछिप्
(प्रे.) संयुज् ५. वंजिकादिषु लिख (तु. प. से.)
६. शिलादीनि दंतुरयति (ना. धा.)।

टौका, सं. पुं. (हिं. टौकना) संधायक-संयो-
जक-कौलः-शंकुः २. सी(से)वन, अंश-
भागः ३. सी(से)वनं, स्युतिः (स्त्री.)
४. पट-वक्त्र, खंडः ५. टंकन, संधायक, धातुः
६. व्रणसेवनम्।

टौकी, सं. स्त्री. (सं. टंकः) तक्षणी, प्रथमः
२. सर्वजादिषु कृतं छिद्रं ३. दे. 'टौका'।

टौंग, सं. स्त्री. (सं. टंगा) टंकः-कं-का, जंघा,
प्रस्ता, पादः।

—अज्ञाना, मु., परकायाणि चंच (तु. प. से.
जु. भा. से.)-निरूप (जु.)।

—तले से निकलना, मु., स्वपराजयं स्वीकृ।

—पसार कर सोना, मु., निःशंक-निर्भवं स्वप्
(अ. प. अ.)-शे (अ. आ. से.) २. मानन्दं
जीवनं या (प्रे.)।

टौंगना, कि. सं., दे. 'लटकाना'।

टौंगा, सं. पुं. (हिं. टेंगा) अशवाहनभेदः।

टौंगी, सं. स्त्री., दे. 'कुल्हाड़ी'।

टौच, सं. स्त्री. (हिं. टौकी) कार्यदायक, उत्ति,
(स्त्री.)-कथनम्।

टौचना, कि. सं., दे. 'टौकना'।

टौंड, सं. स्त्री. [सं. स्थाणुः (पुं.) >] मंचः
२. दे. 'परछत्ती'।

टौयटौय, सं. स्त्री. (अनु.) कर्कश कट्ट, शब्दः-
ध्वनिः (पुं.) २. प्रलापः, प्र-जल्पः।

—फिस, मु., निष्फलः आसंवरः, स्वर्थः
प्रयासः।

टाहप, सं. पुं. (अं.) मुदाखरं २. टंकनचक्रम्।

टाहकस बुखार, सं. पुं. (अं + अ.) मोहज्वरः, भूकाज्वरः ।

टाट, सं. पुं. (सं. तंतुः >) शाणः, पटः, बर्षः, शाणं, वराशिः-सिः (पुं.) ।

टाप, सं. स्त्री. (अनु.) अश्वः, सुरः, सुरः-शफः-शफः २. अधपादशब्दः ।

टापना, कि. अ. (हिं. टाप) सुरेण अभिहन (अ. प. अ.)-विलिख् (तु. प. से.) २. अभीर-व्यग्र (वि.) भू ३. व्यर्थ परिभ्रम् (स्वा. प. से.) ४. दे. 'दूवना' ।

टापू, सं. पुं., दे. 'दीप' ।

टारना, कि. स., दे. 'टारना' ।

टारपीडो, सं. पुं. (अं.) अन्तर्जलाशिलाका, अक्षभेदः, नारपीडुः ।

टार्ध, सं. स्त्री. (अं.) विद्युत्सिद्धिनी ।

टाल, सं. स्त्री. (सं. मटालः >) चयः, राशिः (पुं.), उत्करः, चितिः (स्त्री.) २. (काष्ठादीनां) बृहद्, आपणः-विपणिः (स्त्री.) ।

टाल, सं. स्त्री. (हिं. टालना) अप-व्यप, देशः, छलेन परिहरणं, निहनः ।

—टाल, सं. स्त्री., अप-नि-हवः, अप-व्यप, देशः, बिलंबः, व्याक्षेपः ।

—करना, कि. अ., अतिषट् (प्रे.), बिलंब (तु. प. अ.) व्याक्षिप् (तु. प. अ.) ।

टालना, कि. स. (हिं. टालना) वक्रोक्तया-शाब्देन परिहृ (भ्वा. प. अ.), अप-व्यप, दिश् (तु. प. अ.), अप-नि-हृ (अ. वा. अ.) २. व. 'टालना' (१-६) के प्रे. रूप ।

टायर, सं. पुं. (अं.) (चक्र—) बलयः-यम् ।

टिचर, सं. पुं. (अं. टिकचर) कषायः, निर्यासः, फाटः ।

टिंडा, सं. पुं. (सं. टिडिशः) रोमशफलः, तिडिशः, किडिशः ।

टिकट, सं. पुं. (अं.) अनुच्चा-निर्देश-प्रवेश-पत्रकम् ।

टिकटिकी, सं. स्त्री., दे. 'टकटकी' ।

टिकटिकी, सं. स्त्री., दे. 'टिकटो' ।

टिकटी, सं. स्त्री. (हिं. तीन + काठ) त्रिकाठी, २. त्रिपाठी ।

टिकना, कि. अ. (सं. स्थित + क >) वस्-रथा (भ्वा. प. अ.), वृत् (भ्वा. भा. से.)

२. विरम् (भ्वा. प. अ.), लवस्था (भ्वा. भा. अ.) ।

टिकली, सं. स्त्री. (हिं. टीका) धातुतारा, चक्रकम् ।

टिकस, सं. पुं. (अं. टैक्स) करः, राजरवं, शुल्कः-कं, बलिः (पुं.) ।

टिकस, सं. पुं., दे. 'टिकट' ।

टिकाऊ, वि. (हिं. टिकना) चिरः, स्थायिन्, दृढ, भुव, स्थिर, अक्षय ।

टिकाना, कि. स., व. टिकना' के प्रे. रूप ।

टिकाव, सं. पुं. (हिं. टिकना) स्थिरता, चिरस्थायिता २. स्थितिः (स्त्री.), विरामः ३. दे. 'पट्टाव' ।

टिकिया, सं. स्त्री. (सं. बटिका) चक्रिका, बटो, २. अपूपः, पूपः, पिष्टकः ।

टिकुली, सं. स्त्री., दे. 'टिकली' ।

टिकैत, सं. पुं. (हिं. टीका) दे. 'युवराज' ।

टिकक, सं. पुं. (हिं. टिकिया) स्थूल-वृहत्, पूपः ।

टिका, सं. पुं. (देश.) दे. 'टीका' ।

टिकी, सं. स्त्री., दे. 'टिकिया' ।

टिघलना, कि. अ., दे. 'पिघलना' ।

टिघन, वि. (अं. मटेन्शन) सज्ज, सत्रक, उद्युक्त २. सिद्ध, उपकृत, आयोजित ।

टिटकारना, कि. स. (अनु.) (अथादीन्) सदिकटिकशब्द प्रोत्साह-प्रणुद (प्रे.) ।

टिटिह, हा, हुरा, सं. पुं. (सं. टिट्टिमः) टिट्टिमकः, टीटिमकः, टिटिमः ।

टिटिहरी, सं. स्त्री. (हिं. टिटिहरा) टिटि(ट्टि)-भी, टिट्टिमकी ।

टिट्टा, सं. पुं. (सं. टिट्टिमः >) शर(ल)मः, पतंगः ।

टिट्टी, सं. स्त्री. (हिं. टिट्टा) शिरिः (पुं.), शर(ल)मः ।

—दल, मु., विपुलपूर्व, असंख्यसमूहः ।

टिपटिप, सं. स्त्री. (अनु.) विदुपातध्वनिः (पुं.), टिपटिपशब्दः ।

टिप्यणी-नी, सं. स्त्री. (सं.) टीका, भाष्यं, श्रुतिः (स्त्री.), व्याख्या ।

टिप्यस, सं. स्त्री. (देश.) उपायः, युक्तिः (स्त्री.) ।

टिब्बा, सं. पुं., दे. 'टीला' ।

टिमटिमाना

[२५०]

दूटना

टिमटिमाना, कि. अ. (सं. तिमू=ढंढा होना >) स्फुर (तु. प. से.) तरल-मंद-सकपं दीप (दि. आ. से.) घुस-प्रकाश (स्वा. आ. से.) प्रभा (अ. प. अ.) २. आसन्नचतु (वि.) श्व (स्वा. आ. से.) ।

टिमटिमाहट, सं. स्त्री. (हिं. टिमटिमाना) तरल-प्रभा-व्योतिम् (न.), स्फुरण-रितम् । टीका, सं. पुं. (सं. तिलकः-कं) चित्रकं, विश्लेषक-कं, पुण्ड्र-डूकः, तमालपत्रं २. तिलकं, औद्वाहिकरीतिविशेषः ३. अन्तः-स्नायन-प्रवेशनं ४. (रोगनिवारणाय) रोगद्रव्यनिवेशनं ५. गव्यद्रव्यसंक्रामणं ६. प्रधानः, मुख्यः, ७. युवराजः ८. राजत्व-चिह्न-लक्षणं ९. राज्य-अभिषेकः १०. बिंदुः (पुं.), लाञ्छनं, चिह्नम् ११. ललाटिका, मस्तकभूषणभेदः ।

—करना, कि. स., (रोगनिवारणार्थं) रोगद्रव्यं निविशः-संक्रम् (प्रे.) २. गव्यद्रव्यं निविशः-संक्रम् (प्रे.) ।

—करनेवाला, सं. पुं., गव्य-रोग-द्रव्य-निवेशकः ।

—भेजना, कि. स., औद्वाहिकोपहारान् प्रेष (प्रे.) ।

—लगाना, कि. स., तिलकं कृ अथवा विधा (जु. उ. अ.) ।

टीका, सं. स्त्री. (सं.) व्याख्या, वृत्तिः (स्त्री.), भाष्यं, टिप्पणी-नी ।

—कार, सं. पुं. (सं.) टीका-भाष्य-व्याख्या-वृत्तिः-कारः-कृत् (पुं.) ।

टीन, सं. पुं. (अं. टिन) रंगं, वंगं, कस्तूरं, त्रपु (न.) रंगलिप्तं लौहतनुफलकम् ।

टीप, सं. स्त्री. (हिं. टीपना), (इस्तेन) आपी-डनं २. शनैः प्रहरणं ३. इष्टकासंधिपु सुधापूर्ति-रेखाः ४. (समय-) लेखः-पत्रं ५. जन्म-पत्रं-पत्रिका ।

—करना, कि. स., इष्टकादिसंधिपु सुधां पूर (जु.) ।

—टाप, सं. स्त्री., आडंबरः वैभवं २. संस्कारः, परिष्कारः, भूषा, अलंकरणम् ।

—टाप करना, कि. स., अलं-परिष्, कृ, मंड (जु.) ।

टीपना, कि. स. (सं. टेपनं = फेंकना) आपीह (जु.), संकोच (स्वा. प. से.) २. लिख (तु.

प. से.) ३. शनैः प्रह (स्वा. प. अ.) ४. उच्चैः गै (स्वा. प. अ.) ।

टीम, सं. स्त्री. (अं.) क्रीडकसंबः २. गणः, वर्गः ।

टीमटाम, सं. स्त्री. (देश.) दे. 'टीपटाप' ।

टीरा, सं. पुं. (सं. टेराः) टेरेकः, बैकरः, वेदरः, टगरः, बलिरः ।

टीला, सं. पुं. (सं. अट्टीला >) उन्नतभूभागः २. क्षुद्रपर्वतः ३. सृष्टिकालयः, वसमीकः-कम् ।

टीस, सं. स्त्री. (अनु.) विषय-स्फुरद, व्यथा-वेदना-थातना ।

टीसना, कि. अ., (हिं. टीस) सुहृमुंडुः व्यथ (स्वा. आ. से.), सस्यदं पीड् (कर्म.) ।

टुंच, वि., दे. 'टुच्चा' ।

टुंड, सं. पुं. (सं. तुंडं >) छिन्नो हस्तः २. छिन्न-शास्त्रः तरुः, स्थाणु (पुं. न.), ध्रुवः, शंक्रुः (पुं.) ।

टुंडा, वि. (हिं. टुंड) अहस्त, छिन्नहस्त २. शाखाहीन ३. एकश्रंग ।

टुंडी, सं. स्त्री. [सं. तुंडिः (स्त्री.)], नाभिः (स्त्री.) ।

टुक, कि. वि. (सं. स्तोको) क्षणं, कंचित्कालम् । वि., किंचित्, अल्प, क्षुद्र ।

टुकडा, सं. पुं. (हिं. टुक) खंडः-दं, शकलः-लं, लवः, वि-भागः, अंशः, वि-दलं २. ग्रासः, कवलः, पिंडः ।

टुकड़े करना, कि. स., भंज् (रु. प. अ.), खंड् (चु.), शकली कृ २. विच्छिद्-विभिद् (रु. प. अ.), विभज् (स्वा. उ. अ.) ।

टुकड़े-टुकड़े करना, मु., चूर्णं (चु.), खंडशः भंज्, मृद् (कृ. प. से.) ।

टुकड़े मॉगना, मु., भिक्ष् (स्वा. आ. से.), मिक्षां वाच् (स्वा. आ. से.) ।

टुकड़ी, सं. स्त्री. (हिं. टुकड़ा) दे. 'टुकड़ा' (१) २. समूहः, गणः ३. सैन्यदलं, गुल्मः-मम् ।

टुच्चा, वि. (सं. तुच्छ) क्षुद्र, नीच, हीनजाति । टुटपुजिया, वि. (हिं. टूटी + पूजी) परि-

शौण, निर्बल, अल्प-धन-मूढ, दरिद्र ।

टूंडी, सं. स्त्री., दे. 'टुंडी' ।

टूक-का, सं. पुं., दे. 'टुकड़ा' ।

टूटना, कि. अ. (सं. टूट्) दू-भंज्-भिद् (कर्म.), टूट् (दि. तथा तु. प. से.), दल् (स्वा. प. से.), स्फुट् (तु. प. से.)

२. विरम् (म्वा. प. अ.), विच्छिद्र (कर्म.), निवृत्त (म्वा. आ. से.) ३. विद्युत् (कर्म.), पृथक् भू ४. निर्वैली-भू ५. वरिद्र (वि.) जन् (दि. आ. मे.) ६. आक्रम (म्वा. प. से.), अमिद्र (म्वा. प. अ.) । सं. पुं., भंगनं, भंगः; विरामः, विच्छेदः, निवृत्तिः (स्त्री.) ।
- दूटनेवाला, सं. पुं., भिदुर, संगुर, सुभंग ।
दूटा, वि., भग, दीर्घ, वृद्धित, स्फुटित; विच्छिद्र, निवृत्त इ ।
- फूटा, वि., शकली-खंडशः, कृत, संहित, विदीर्ण ।
- दूर्नामेट, सं. स्त्री. (अं.) पुरस्कारनिवृत्ता कीटा-खेला, क्रीडाप्रतियोगिता ।
- दूल, सं. पुं. (अं.) उपकरणं, साधनम् ।
- टेंट-टी, सं. स्त्री. (देश.) शाटीपुटः-टं, शाटिका-व्यावृत्तिः (स्त्री.) २. दे. 'करील' (कृश तथा फल) ।
- टेंटुआ, सं. पुं. (देश.) श्वासनालिका, कंठः, गलः ।
- टेंट, सं. स्त्री. (अनु.) शुकशब्दः, कीररावः, टेंट इति ध्वनिः (पुं.) २. प्रलापः, व्यर्थ-वचनम् ।
- करना, निर्विवेकं भाव् (म्वा. आ. से.), जल्प (म्वा. प. से.) ।
- टेंप्रेचर, सं. पुं. (अं.) तापः, ऊष्मन् (पुं.) ।
- टेक, सं. स्त्री. (हिं. टिकना) स्थूणा, उपरतंभः, उत्तंभः, अवष्टंभः, उपग्रः २. आश्रयः, अवलंबः ३. वेदो ४. आग्रहः, अभिनिवेशः ५. शुद्रपर्वतः ६. प्रतिष्ठा ७. स्थायिन् (संगीतः) ८. अभ्यासः, नित्यव्यवहारः ।
- टेकन, सं. पुं., दे. 'टेक' १. २. ।
- टेकना, कि. स. (हिं. टेक) अव-आ-लंब् (म्वा. आ. से.), अवष्टम् (क्. प. से.), धृ (म्वा. प. अ; चु.) ।
- माथा—, कि. स., प्रणम् (म्वा. प. अ.), पादयोः पथ (म्वा. प. से.), बंद (म्वा. आ. से.) ।
- टेकी, वि. (हिं. टेक) सख्यसन्ध, इदप्रतिष्ठ २. आग्रहिन्, अभिनिवेशिन् ।
- टेटेनस, सं. पुं. (अं.) धनुर्वीतः, प्रतानः (भयंकररोगः) ।
- टेवा, वि. (सं. तिरस् >) अराल, कुटिल, जिहा, वक्र, आ-न (ना) मित, आशुभ, न्युञ्ज,
- आकुञ्चित, विषम, तिर्थेन् २. कठिन, दुष्कर ३. उद्धत, अशिष्ट, दुःशील ।
- करना, कि. स., आवृत् (तु.), वक्रो-कुटिली-कृ, अव-आ-नम् [प्रे. ना ना प्रयति], आ-वि-भुज् (तु. प. से.) ।
- मेडा, वि., वक्र, कदाकार, कुटिल ।
- होना, तु., कुद्ध-रुष्ट (वि.) भू ।
- टेदापन, सं. पुं. (हिं. टेदा) कुटिलता, निहता, वकता, अरालता इ ।
- टेदी, वि. स्त्री. (हिं. टेदा) वक्रा, कुटिला, जिह्वा इ ।
- खीर, तु., दुष्करं कार्यम् ।
- चितवन, तु., कटाक्षः, साचिबिलोकितां, अपांगदृष्टिः (स्त्री.) ।
- टेदे, कि. वि. (हिं. टेदा) तिरः, तिर्थेक्, वक्रं साचि (सब अन्व.) ।
- टेना, कि. स. (देश.), दे. 'सान देना' २. दे. 'मूँछ पर ताव देना' ।
- टेनिस, सं. सं. (अं.) कंदुकक्रीडाभेदः ।
- टेब(त्रु)ल, सं. पुं. (अं.) पादफलकः-कम् ।
- क्याय, सं. पुं. (अं.) पादफलक-वसनं, आच्छादनम् ।
- टेर, सं. स्त्री. (सं. तारः) तारध्वनिः, उच्च-स्वरः २. आह्वानं, संबोधनं, आह्वानशब्दः ।
- टेरना, कि. स. (हिं. टेर) उच्चैः नै (म्वा. प. अ.) २. आकु (प्रे.), आले (म्वा. प. अ.) ।
- टेराकोटा, सं. पुं. (अं.) पकमृन्मूर्तिः (स्त्री.), तप्तमृत्प्रतिमा २. पक-तप्त, मृत्तिका-मृद् (स्त्री.) ।
- टेलीग्राम, सं. पुं. (अं.) तद्वित-विद्युत-संदेशः ।
- टेलीपैथी, सं. स्त्री. (अं.) अन्वविषयज्ञानम्, भाव-विचार, संकामितः (स्त्री.) ।
- टेलीप्रिटर, सं. पुं. (अं.) • दूरमुद्रकम् ।
- टेलीफोटोग्राफी, सं. स्त्री. (अं.) • दूरच्छाया-चित्रणम् ।
- टेलीफोन, पुं. पुं. (अं.) दूर, भाषं-ध्वनम् ।
- टेलीविज़न, सं. पुं. (अं.) • दूरदर्शनम् ।
- टेलीस्कोप, सं. पुं. (अं.) दे. 'दूरबीन' ।
- टेब, सं. स्त्री. (हिं. टेक) दे. 'आदत' ।
- टेवा, सं. पुं. (सं. टिप्पनं >) जन्मपत्रिका ।

देसू, सं. पुं. (हि. केसू) किञ्चुकः, पलाशः, रक्तपुष्पकः, यक्षिपः २. किञ्चुककुसुमम् ।
 देस्टट्यूब, सं. स्त्री. (अं.) परीक्षणनालिका ।
 टौटी, सं. स्त्री. (सं. तुंडं >) नाली, नालिका ।
 टोक, सं. स्त्री. (हि. 'रोक' का अनु.) अंतराय-उपरोध-विघ्न, वचन-वाक्यं २. कुदृष्टिः (स्त्री.)
 ३. कुदृष्टिप्रभावः ।
 —टाक या टोका टाकी, सं. स्त्री., निषेध-पृच्छा-व्याघात, वचनानि (न. बहु.) ।
 टोकना, कि. स. (हि. टोक), नि-विनि, इ (प्रे.), अव-नि-प्रति, रुध् (क्. प. अ.), (प्रत्यैः) बाध् (स्वा. आ. से.)-निषिध् (भ्वा. प. से.) ।
 टोकनेवाला, सं. पुं., विघ्नकरः, निवारकः, प्रतिबंधकः ।
 टोकरा, सं. पुं. (?) कंबोलः, करंडः ।
 टोकरी, सं. स्त्री. (हि. टोकरा) करंडी, कंबोलकः ।
 टोटका, सं. पुं. (सं. त्रोटकः >) गारुडं, मंत्रः २. रक्षाकरंडः ।
 टोटल, सं. पुं. (अं.) योगः, पिंडः, संकलः, परिसंख्या ।
 टोटा, सं. पुं. (हि. टूटना) हानिः-क्षतिः (स्त्री.) २. अभाकः, न्यूनता ३. खंडः-दं, शकल-लम् ।

टोढी, सं. स्त्री. (सं. त्रोटकी) राशिणीभेदः ।
 टोढी, सं. पुं. (अं.) श्वृत्तिः, चाटपटुः, प्रजा-स्वदेश-शत्रु-द्रोहिन ।
 टोना, सं. पुं. (सं. तंत्र) अभिचारः-मंत्रः, अभिचारः; कुहकं, वशकिया, मोहः, योगः २. गीतिभेदः ।
 टोनेबाज़, सं. पुं., कुहकः, अभिचारिन्, कौसुतिकः ।
 टोप, सं. पुं. (हि. तोपना = ढाँकना) *टोपं, आंग्लीय-गुरंड, शिरस्कं २. शिरस्त्राणं ।
 ३. कोशः-षः, वेष्टनम् ।
 टोपी, सं. स्त्री. (हि. टोप) शीर्षण्यं, शिरस्कं *टोपी ।
 टोला, सं. पुं. (सं. प्रतीलिका) नगर-पुर-दिसागः २. बर्माः, गणः ।
 टोली, सं. स्त्री. (हि. टोला) गणः, संघः, बर्मा, समूहः ।
 टोह, सं. स्त्री., दे. 'खोल' ।
 टोहना, कि. स., दे. 'खोचना' तथा 'टोलना' ।
 टूंक, सं. पुं. (अं.) लौह-आयस-पिटक-पेटिका-समुद्रगकः ।
 ट्राम, सं. स्त्री. (अं.) विद्युच्छकटिका, दामास्त्र्यं यानम् ।
 ट्रेडमार्क, सं. पुं. (अं.) पण्यमुद्रा ।
 ट्रेन, सं. स्त्री. (अं.) वाष्पशकटी ।

ठ

ठ, देवनागरीर्षणमालाया द्वादशो अर्धजनवर्णः, टकारः ।
 ठंठ, वि., दे. 'टूँठ' ।
 ठंढ-ढ, सं. स्त्री. (हि. ठंढा) शीतं, शीतता, शैत्यं, हिमं, हिमता, शीतलता ।
 ठंढ(ठ)क, सं. स्त्री. (हि. ठंढा) दे. 'ठंढ' २. श्रुतिः (स्त्री.), संतोषः ३. उपद्रव-रोग-श्रुतिः (स्त्री.) ।
 ठंढा, वि. (सं. स्तम्भ) शीत, शीतल, उष्णता-रहित, आर्द्र, हिम, शिशिर २. भीर, प्रज्ञात ३. वृत्त, संतुष्ट ४. मृत, विवंगत ५. निर्वाण, निर्वापित ।
 —करना, कि. स., आर्द्र-शीती, कः, आर्द्रयति (ना. भा.), तारं ङ् (भ्वा. प. अ.) । मु.,

तुष्-प्रसद्-प्रशम् (प्रे.), सांत्वं (जु.) २. निर्वा (प्रे. निर्वापयति) ।
 —होना, कि. अ., शीती-शीतली-भू, शीतला-यते (ना. भा.) । मु., दे. 'मरना' ।
 ठंढी सांस, सं. स्त्री., दीर्घ, श्वासः-निधासः, नि(निः)श्वासः, उच्छ्वासः ।
 —पङ्कना, मु., ढप-प्र-शम् (दि. प. से.), हस् (भ्वा. प. से.), कि (कर्म.) ।
 कलेना—होना, मु., वैर-निर्यातन-साधन-शुद्धिः (स्त्री.) जन् (दि. आ. से.) २. प्रसद् (भ्वा. प. अ.) ।
 ठंढा (ङा) ई, सं. स्त्री. (हि. ठंढा) शीतपेयं, तापहरपानं २. संगापेयम् ।

ठंढे-ठंढे

[२५३]

ठस

ठंढे-ठंढे, अन्य० (हिं. ठंढा) प्रातः सायं वा, आतपामावे २. समुत्सर्ग, सानन्दम् ३. शान्तं, समौनम् (दोनो अन्य०) ।

ठक, सं. स्त्री. (अनु.) अभिघात-पात-प्रहार, शब्दः, ठक् इति ध्वनिः (पुं.) ।

—ठक, सं. स्त्री. (अनु.) ठकठकायिते, ठक-ठकध्वनिः २. कलहः, कलिः । वि., स्तब्ध, चकित, निक्षेष्ट ।

ठकठकाना, कि. स. (अनु.) ठकठकायते (ना. धा.), मंटे अभि आ-इन् (अ. प. अ.) अथवा प्रह (भ्वा. प. अ.) २. लड्डु प्रह या तद् (जु.) ।

ठकठकिया, वि. (अनु. ठकठक) विवादिन्, कलह, कलि-प्रिय ।

ठकुरसुहाती, सं. स्त्री. (हिं. ठाकुर + सुहाना) दे. 'सुहाम्ब' ।

ठाकुराह(य)न, सं. स्त्री. (हिं. ठाकुर) ठक्कुरी, ठक्कुरमार्या (२) नापित्ता, क्षुरिणी २. स्वा-मिनी, ईश्वरी ।

ठकुराई, सं. स्त्री. (हिं. ठाकुर) प्रभुत्वं, आधि-पर्य, स्वामित्वं २. अधिकारः, शासनं ३. महस्वम् ।

ठ्ठकुरायते, सं. स्त्री. (हिं. ठाकुर) दे. 'ठ्ठकुराई' ।

ठग, सं. पुं. (सं. स्थगः) कितवः, दाधिकः, धूर्तः, प्रतारकः, बंचकः ।

—बाज़ी, सं. स्त्री. कौतवं, कपटं, दंभः, प्रतारणं, स्थगत्वं अति-अभि-संधानं, बंचनम् ।

ठगाना, कि. स. (सं. स्थगनं) अति-अभि-संधा (जु. उ. अ.), प्रतृ-मुह् (प्रे.), वञ्-शठ् (जु.), विप्रलम् (भ्वा. आ. अ.) । सं. पुं., दे. 'ठगबाज़ी' ।

ठग(गि)नी, सं. स्त्री. (हिं. ठग) बंचिका, प्रतारिका, दाधिकी, कपटिनी ।

ठगी, सं. स्त्री., दे. 'ठगबाज़ी' ।

ठगाना, कि. प्रे., व. 'ठगना' के प्रे. रूप ।

ठट, सं. पुं., दे. 'ठट' ।

ठट(ठ)री, सं. स्त्री. (हिं. टाट) शययानं, खाट-टी २. कंकालः, अरिधर्षज्वरः ३. पास-पलाल, जालं ४. कृशमनुष्यः ।

ठट्टा, सं. पुं. (पुं. अट्टहासः या अनु.) हास्यं, परि(री)हासः, ह्येला-लिका प्रहसनं, नर्मन्

(न.), नर्म-विनोद-परिहास, आलापः-उक्तिः (स्त्री.) वचनं २. उपहासः ।

—करना, कि. स., परिहस् (भ्वा. प. सं.), विनोदवचनं उदीर् (प्रे.) २. अव-उप-वि-हस्, उपहासास्पदी कृ, अवक्षा (क. उ. अ.) ।

ठट्टेबाज़, सं. पुं. (हिं. + बा.) विनोदशीलः, हास्यप्रियः, वैहासिकः, मंडः ।

ठट्टेबाज़ी, सं. स्त्री. विनोद-कारिता-शीलता, वैहासिकता ।

ठट, सं. पुं. (सं. स्थित >) समूहः, समुदायः, जन-संमर्दः-ओषः ।

ठटेरा-री, सं. पुं. (अनु. ठन ठन) कांस्य-ताम्र-कारः ।

ठटेरिन, सं. स्त्री. (हिं. ठटेरा) कांस्य-ताम्र-कारी ।

ठटोल, सं. पुं. (हिं. ठट्ठा) दे. 'ठट्टेबाज़' ।

ठटोली, सं. स्त्री. (हिं. ठटोल) दे. 'ठट्टेबाजी' ।

ठनक, सं. स्त्री. (हिं. ठनकना) ठणिति, ठण-त्कारः, शिजा, कणनं, क्षणत्कारः, मूर्दनादीनां ध्वनिः (पुं.) २. दे. 'ठीस' ।

ठनकना, कि. अ. (अनु. ठन ठन) कण् (भ्वा. प. सं.), शिञ् (अ. आ. से.) । ठणठणायते (ना. धा.), ठणिति कृ ।

ठनकाना, कि. स., व. 'ठनकना' के प्रे. रूप ।

ठनठन, सं. स्त्री. (अनु.) दे. 'ठनक' ।

—गोपाल, सं. पुं., दरिद्रः, निर्धनः २. निस्सारं वस्तु ।

ठनना, कि. अ., (हिं. ठानना) निषी-निश्चि-अध्यवसो (कर्म.) ।

ठनाका, सं. पुं., दे. 'ठनक' ।

ठनाठन, कि. वि. (अनु. ठनठन) सठणत्कारं, सक्षणत्कारम् ।

ठप्पा, सं. पुं. (सं. स्थापनं) मुद्रा, मुद्रायंत्रं, २. आकर-संस्कार, साधनं ३. अंकः, चिह्नं, मुद्रा, न्यासः ।

—लगाना, कि. स., मुद्रयति-चिह्नयति (ना. धा.), अक् (जु०), लाछ् (भ्वा. प. से.) ।

ठरना, कि. अ., दे. 'ठिठरना' ।

ठरी, सं. पुं. (देव.) निकृष्टसुरा २. स्थूलमूर्धं ३. अर्द्धपक्षेष्टका ।

ठस, वि. (सं. स्थास्तु >) धन, दृढसंधि, सुदृढ, कठिन, स्थूल, सुसंज्ञत २. दे. 'धफ' इ. शुह,

भारवत् ४. अलस, मथर ५. (सिका.) कूट-
कपट-कृत्रिम- (समासारम नै) ६. धनसञ्चय
७. कुरग ८. अस्वाग्रहिन् ९. ठसिति
शब्दः, वस्तुभंगध्वनिः (पुं.) ।

ठसक, सं. स्त्री. (हिं. ठस) श्वातः, मानः,
विभ्रमः २. दर्पः, गर्वः ।

ठसका, सं. पुं. (अनु. ठस) शुष्क-अकफ,
कासः श्वेतधुः २. आघातः, संमर्दः ३. पाशः,
वागुरा ।

ठसनी, सं. स्त्री. (हिं. ठस) अयोधनः,
मुद्गरः ।

ठसाठस, वि. (हिं. ठस) परि-संपूर्ण, आ-सं-
कीर्ण, आकुल, संकुल, समाकुल ।

ठसता, सं. पुं. (देश.) अङ्कारः, दर्पः २. हाथ-
भावाः ३. आढंबरः ।

ठहरना, क्रि. अ. (सं. स्थिर) रथा (भ्वा. प.
अ.), अवस्था (भ्वा. आ. अ.), निश्चल-
दृढगति-स्थिर-स्तब्ध (वि.) भू २. वस्
(भ्वा. प. अ.) ३. निविश् (तु. प. अ.),
प्रयाणभंगं कृ ४. विश्रन् (दि. प. से.),
विरम् (भ्वा. प. अ.) ५. निश्चि-निगी
(कर्म.) ६. प्रनोश्च (भ्वा. आ. से.) ।
सं. पुं अव-स्थितिः (स्त्री.)-रथानं, निश्चलता,
स्तब्धता, वासः; विश्रामः ३. ।

ठहरनेवाला, सं. पुं., अव-स्थातृ (पुं.) ।

ठहराना, क्रि. स., व. 'ठहरना' के प्रे. रूप ।

ठहराव, सं. पुं. (हिं. ठहरना) अव-स्थितिः
(स्त्री.), निवेशः २. निधारणं, निश्चयः ।

ठहरीनी, सं. स्त्री. (हिं. ठहराना) विवाहे
युतकादिनिश्चयः ।

ठहाका, सं. पुं. (अनु.) सशब्द-स्फोटन-भंगः
२. अति-प्र-अट्ट-उच्चैर्, हासः ।

ठौव, सं. पुं. (सं. स्थानं) स्थलं, प्रदेशः
२. निवासः, वसतिः (स्त्री.) ।

ठौसना, क्रि. स., दे. 'ठौसना' ।

ठाकुर, सं. पुं. (सं. ठकुरः) परमेश्वरः, जगदीशः
२. पूज्यः, मान्यः (मानवः) ३. नायकः,
अधिष्ठातृ (पुं.) ४. ग्रामेशः, भूस्वामिन्
५. श्चत्रियोपाधिः (पुं.) ६. प्रभुः, स्वामिन्
७. नापितः ८. देवः, देवता ९. देवप्रतिमा ।

—हारा, सं. पुं. } देव-मंदिर-स्थान-आलयः,
—बाड़ी, सं. स्त्री. } मंदिरम् ।

ठाकुरी, सं. स्त्री., दे. 'ठकुराई' ।

ठाट, सं. पुं. (सं. रथात्) तुगा-पटल-श्रदिः
(स्त्री.) २. दे. 'ढौंठा' ३. अलंक्रिया, वेशः
४. आढंबरः, शोभा, वैभवं ५. सुखं, मोदः
६. रीतिः (स्त्री.), शैली ७. आयोजनं
समारंभः ८. सामग्री, परिच्छदः ९. युक्तिः
(स्त्री.), उपायः १०. आधिक्यं, प्राचुर्यं
११. समूहः, वृन्दम् ।

—बाट, सं. पुं., आढंबरः, श्रीः (स्त्री.), शोभा,
ऐश्वर्यं, वैभवं, प्रतापः ।

—बदलना, मु., आकारं-मानं परिवृत् (प्रे.) ।

ठाठ, सं. पुं., दे. 'ठाट' ।

ठाडा, वि. (सं. रथात्) उच्छ्रित, उन्नत, रूपदं,
दृढवत् उद्विगत, उत्तान २. जात, उदयत्र
३. समस्त, समग्र, अपिष्ट ।

ठानना, क्रि. स. (सं. अनुष्ठानं) अध्यव-न्यव-
सां (दि. प. अ., अध्यवस्यति), निश्चि (स्वा.
उ. अ.), संकल्प (प्रे.), निर्णी (भ्वा. प.
अ.) २. साम्रटं प्रारम्भ (भ्वा. अ. अ.),
अध्यवसायेन अनुस्था (भ्वा. प. अ.) ।

ठार, सं. पुं. (सं.) हिमं, तुहिनं, तुवारः
२. अतिशानं, शैत्यातिशयः ।

ठाला, सं. पुं. (हिं. निठला) कार्य-जोविका-
व्यवसाय-अभावः ।

ठाली, वि., दे. 'निठला' ।

ठिगाना, वि. (हिं. हेठ + अंग) खर्व, हस्व,
वामन, हस्वकाय ।

ठिकाना, सं. पुं. (हिं. ठिकान) स्थल-ली,
स्थानं, प्रदेशः, भू-भूमिः (स्त्री.) २. आ-
नि, वासः, आ-नि, लयः ३. आश्रय-निर्वाह-
स्थानं ४. याथार्थ्यं, प्रामाण्यं ५. आयोजनं,
संविधा, प्रबन्धः ६. अंतः, सीमा ७. नानधाम-
परिचयः ८. निर्दिष्ट-गतव्य-स्थानम् ।

ठिकाने लगाना, मु., हन्-दिस् (कर्म.) २. समाप्
(कर्म.) ।

ठिकाने लगाना, मु., हन् (अ. उ. अ.), हिस्
(४. प. से.) २. निर्दिष्टस्थानं नीं (भ्वा. प.
अ.) ३. सन्धक् उपलुञ्ज (रु. उ. अ.)
४. कार्य समाप् (स्वा. उ. अ.) ५. सफलौ कृ ।

ठिठकाना, क्रि. अ. (सं. स्थित + करणं >)
अकस्मात्-अकांटे विरम् (भ्वा. प. अ.)-रुष्
(कर्म.) स्तम्भ-निश्चेष्ट-रुद्धगति (वि.) भू ।

ठिठ(ट्ट)रना

[२५५]

टैका

ठिठ(ट्ट)रना, कि. अ. (सं. ठारः >) शीती-जडी-भू, स्तंभ (कर्म.) २. शीतेन कंप् (स्वा. आ. से.) ।

ठि (ट्ट)नक. सं. स्त्री. (अनु.) गदगदः, फु- (फू)त्कारः ।

ठि(ट्ट)नकना, कि. अ. (अनु.) समदगदं कंदं (स्वा. प. से.)-रुदं (अ. प. से.), शिशुवन् रुदं ।

ठिरना, कि. अ., दे. 'ठिठरना' ।

ठीक, वि. (हि. ठिकाना) अवितथ, मध्य, मत्स्य, यथार्थ २. उचित, न्याय्य, धर्म्य, समंजस ३. शुद्ध, निर्भ्रंत, निर्दोष ४. सुस्थ, अविकृत ५. रथाई, यथायोग्य, अनुरूप ६. नम्र, विनीत ७. अन्यूनधिक, निमिष्ट ८. नियत, ९. पूर्ण, समाप्त । कि. वि., यथावत्, याथावर्थ, सम्यक्, साधु, तत्त्वतः, पूर्णतया ।

—आना, कि. अ., उपपद-नुज्-रिष् (कर्म.), सुरिष्ण्ट-सुसंगत (वि.) भू २. तुल्य-अनुरूप (वि.) भू ।

—करना, कि. स., निर्दोषी-कृ, परि-वि-सं-शुभ् (प्रे.) २. सुरिष्ण्टं सुसंगतं कृं ।

—ठाक, वि., सिद्ध, सज्ज, उपरिथत, उपकल्प ।

—ठीक, कि. वि., दे. 'ठाक' कि. वि. ।

ठीकरा, सं. पुं. (हि. ठुकरा) घट-शकलं-खंडं, भिन्नमृत्पात्रं, क(खो)पैरः, २. शिक्षा, भाजन-पात्रं ३. जीर्णपात्रम् ।

ठीकरी, सं. स्त्री. (हि. ठीकरा) क्षुद्रघटखंडं २. तुच्छ-निरर्थक-वस्तु (न.) ।

ठीका, सं. पुं. (हि. ठीक) अभ्युपगमः, नियमः, पणः, समयः, संविद (स्त्री.) २. पट्टोलिका ।

—देना, कि. स., पण-संविदं कृ, प्रतिपद (दोनो प्रे.) ।

—लेना, कि. स., पण-संविदं-समयं कृ, प्रतिपद (दि. आ. अ.), संविदं (अ. आ. से.) ।

ठीकेदार, सं. पुं. पणकर्तृ, कृतसमयः, नियम-कृत् (पुं.) ।

ठीठी, सं. स्त्री. (अनु.) हारयध्वनिः (पुं.), अट्टहासः ।

ठीहा, सं. पुं. (सं. स्थितः >) भूनिष्ठातकाष्ठ-खंडः-रुम् २. उच्छ्वानम् ३. वेदिका-वेदिः (स्त्री.) ४. आसनम् ५. सोमा ।

ठुंठ, सं. पुं., दे. 'ठूँठ' ।

ठुकना, कि. अ. (अनु. ठुक ठुक) आहन्-ताड-प्रह (कर्म) २. अयोधनेन-विवनेन आहन्-ताड (कर्म.) ३. परा-भू-जि (कर्म.)

ठुकराना, कि. स. (हि. ठोकर) पादेन प्रह (स्वा. प. अ.)-तड् (चु.)-आहन् (अ. प. अ.) २. प्रायाख्या (अ. प. अ.), अवमन् (दि. आ. अ.) विकृत् ।

ठुकवाना, कि. प्रे., व. 'ठीकना' के. प्रे. रूप ।

ठुड़ी, सं. स्त्री., दे. 'ठोड़ी' ।

ठुनकाना, कि. स. (अनु.) धंगुल्या हस्तेन वा मन्दं-मन्दं आहन् (अ. प. अ.) ।

ठुन ठुन, सं. स्त्री. (अनु.) ठुणठुणकारः, ठुणठुणयितं, शतुपात्रकथितं २. शिशुकंदन-ध्वनिः (पुं.), ठुणठुणशब्दः ।

ठुमक, सं. स्त्री. (अनु.) खेल-विलास, गतिः (स्त्री.) ।

—ठुमक, कि. वि., खेल विलास, नृत्या, सखेलं सविलासं (शिशु-चलनम्) ।

ठुमकना, कि. अ., (हि. ठुमक) सखेलं-सविलासं चल् (स्वा. प. से.) ।

ठुमका, वि. (हि. ठुमक) वामन, खर्च, हस्त ।

ठुमरी, सं. स्त्री. (देश.) गीतकं-तिका ।

ठुसकना, कि. अ. (अनु.) दे. 'ठिनकना' ।

ठुसना, कि. अ. (ठूसना) अत्यंत पूर (कर्म.), २. बलाद् निविश (तु. प. अ.) ।

ठुसधाना, ठुसाना, कि. प्रे., व. 'ठूसना' के. प्रे. रूप ।

ठूंगा, सं. स्त्री. । (सं. तुंठं) चंचुःचुः [दोनो ठूंगा, सं. पुं. । (स्त्री.)] २. चंचुप्रहारः ।

—भारना, कि. स., चंचला प्रह (स्वा. प. अ.) । सु., न्यून तुल् (चु.) ।

ठूँठ, सं. पुं. (सं. स्थाणुः) शुभकृशः, पत्र-विटप-हीनतरुः (पुं.) २. छिन्नो हस्तः, निकृष्टः करः ।

ठूँठा, वि. (हि. ठूँठ) अपत्र, अशास्त्र, शुष्क (वृक्ष) २. छिन्नहस्त, निकृष्टकर ।

ठूँ(ठूँ)सना, कि. स. (दि. टस) अत्यधिकं पूर (चु.), शूशं पृ (प्रे.) २. बलाद् नि-प्र-विश (प्रे.) ३. अदिमात्रं जाड (स्वा. प. से.) ।

ठूँगना, वि., दे. 'ठिंगना' ।

ठूँगा, सं. पुं. (हि. अंगूठा) अंगुष्ठः २. दंडः, यष्टिः (स्त्री.), लघुः ३. मेरुम् ।

ठैका, सं. पुं., दे. 'ठीका' ।

ठेका

[२५६]

उंङ

ठेका, सं. पुं. (हि. ठेक) अव-भा, लंबः-
लबनं, अवष्टंभः, सपन्नः २. निवेशस्थानं,
विश्रामस्थानं ३. पट्टवादनप्रकारभेदः ४. कौवा-
लीनामकरतालभेदः ५. स्खलनं ६. वाममृदंगः
७. दे. 'ठीका' ।

ठेठ, वि. (दे.) विशुद्ध, मिश्रणरहित, स्वच्छ
२. केवल, मात्र (समासांत में) ।

ठेलना, कि. स., दे. 'थकेलना' ।

ठेला, सं. पु. (हि. ठेलना) दे. 'थेका' ।
२. जनौषः, जनसंमर्दः ३. इस्त, शकटः शकटम् ।
ठेस, सं. स्त्री. (हि. ठस), प्रहारः, आ-अभि-
घातः, ताडनं, पातः, आहतिः (स्त्री.) ।

ठेसना, कि. स. दे. 'दूसना' ।

ठोकना, कि. स. (अनु. ठक-ठक) अयोधनेन-
मुद्गारेण तद् (जु.)-प्रह (भ्वा. प. अ.)
२. बलेन-ताडनेन प्रविशु (प्रे.) ३. अभि-
आ-दन् (अ. प. अ.), तड् (जु.), प्रह ।
४. अभियुज् (रु. आ. अ.) राजकुले निविद्
(प्रे.) ५. इस्तेन लघुप्रह-आहन्, करेण स्पृशु
परामृशु (तु. प. अ.) ।

ठोक बजाकर, मु., निपुणं परीक्ष्य, सम्यक्
पर्यालोच्य-निरूप्य ।

ठोग, सं. स्त्री. (सं. तुंडम्) चंचुः-जुः (स्त्री.)
२. चंचु-प्रहारः ३. अंगुलीप्रहारः ।

ठोसना, कि. स. (सं. तुंटे >) तुंटेन, चंचुपुटेन
अभिहन् (अ. प. अ.)-प्रह (भ्वा. प. अ.),
चंचुप्रहारं कृ ।

ठोगा, सं. पुं. (हि. ठोग) पत्रः, पुटः-पुटिका-
कोषः ।

ठोसना, कि. स., दे. 'दूसना' ।

ठोकना, कि. स., दे. 'ठोकना' ।

ठोकर, सं. स्त्री. (हि. ठोकना) स्खलनं, भ्र-
लितं, आघातः, आहतिः (स्त्री.) २. पाद-
लघा, आघातः, प्रहारः ३. कट्वनुसयः ।

—खाना, कि. अ., प्रः, खल् (भ्वा. प. से.),
पदं विषयी-भू । सु., हानि-क्षति-कष्टं सद्
(भ्वा. आ. से.) ३. वंच-प्रतार (कर्म.)
४. जीविकार्थमितस्ततः भ्रम् (भ्वा. प. से.) ।

—मारना, कि. स., लज्जया-पादेन प्रह (भ्वा.
प. अ.)-आहन् (अ. प. अ.)-तड् (जु.),
पादप्रहारं कृ ।

—लगाना, कि. अ., दे. 'टोकर खाना' ।

ठोकी-दी, सं. स्त्री. (सं. तुंटे >) चिबुकं, हनुः
(पुं. स्त्री.) ।

ठोर, सं. पुं. (देश.) पकात्रभेदः, ठोरं ।
२. चंचुः, चू (स्त्री.) ।

ठोला सं. पुं. (देश.) खगाहारशरावः
२. अंगुलिः-संधिः-प्रथिः-पर्वन् (न.) ।

—मारना, कि. स., अंगुलिपर्वणा प्रह (भ्वा.
प. अ.) ।

—रखना, मु., दन् (अ. प. अ.), घृ-
(प्रे.) ।

ठोस, वि. (हि. ठस) सान्द्र, सुः, संघत, काठिन,
संघातवद्, घन २. पूर्णगर्भ, छिद्ररहित, सगर्भं ।

ठोसाई, सं. स्त्री. (हि. ठोस) घनता, काठिन्यं,
निश्छिद्रता ।

ठौर, सं. सं. (हि. ठौव) स्थानं, स्थली, प्रदेशः
२. अवसरः, सुयोगः, योग्यकालः ।

कुठीर, मु., दुःखद-अनिष्ट, स्थाने-स्थले ।

ठिकाना, सं. पुं., वासस्थानं, आ-नि-वासः ।

टु

ट, देवतागरीवर्णमालायत्नयोदशो व्यञ्जनवर्णः,
टकारः ।

टंक, सं. पुं. (सं. दंशः) कंटकः, दंशबंधुः
(स्त्री.), शंकुः (पुं.), (विच्छु का) अलं
२. दंशमणः-यं ३. दे. 'निभ' ।

—मारना, कि. स., दंश् (भ्वा. प. अ.)
२. मर्माणि भिद् (रु. प. अ.) ।

—वाला, वि. सदर्श, दंशिन्-दंशक ।

टंका, सं. पुं. (सं. दंका) यशःपट्टः, विजय-
महलः, दुम्बुभिः, विंदिमः ।

—बजाना, मु., प्रः, शास् (अ. प. से.),
तन् (जु.) ।

—बजाना, मु., विद्वृत-विख्यात (वि.) भू ।
डंके डी चोट कहना, मु., प्रकाशं उदधुध् (जु.) ।

डंगर, सं. पुं. (सं. कडंग(क)रीयः) पशुः,
मृगः, चतुष्पदः, चतुष्पाद् (पुं.) ।

डंठल, सं. पुं. (सं. दंठः) कांडः, डं, नालः-ली-
लं २. इतं, प्रसव-बंधनम् ।

डंङ, सं. पुं. (सं. दण्डः) लघुदण्डः, यष्टिः (स्त्री.)
२. बाहु (पुं.), भुजः-जा ३. अर्थ-धन-दंडः

दंडवत्

[३५७]

दण्डव्याना

४. नियहः, शासनं ५. हानिः क्षतिः (स्त्री.)

६. व्यायामप्रकारः, साष्टाङ्ग-दंड, व्यायामः ।

—देना, कि. स., दंड (जु.)-शास् (अ. प. से., दोनों द्विकर्मक), दम् (प्रे. दमयति), नियह (क. प. से.) ।

—पेलना, कि. अ., (दंडवत्) व्यायान् (भ्वा. प. अ.)-व्यायामं कृ ।

—भरना, कि. अ., अर्थदंडं परि-शुभ् (प्रे.) ।

—लेना, कि. स., अर्थदंडं दा (प्रे. दापयति) ।

—पेल, सं. पुं. मलः, मलदोदधृ (पुं.), व्यायामिन्, दृढांगः, बलदेहः ।

दंडवत्, सं. स्त्री. दे. 'दंडवत्' ।

दंडा, सं. पुं. (सं. दंडः) काष्ठं, काष्ठखंडः, लघुदः, यष्टिः (स्त्री.) ; वैजं, वेप्रयष्टिः ।

२. प्राचीरं, प्राकारः, वरणः ।

दंडिया, सं. पुं. (हि. दंड) करोदग्राहकः, शुक्कसंग्राहकः ।

दंडी, सं. स्त्री. (हि. दंड) सूक्ष्म-तनु-दंड-यष्टिः (स्त्री) २. तुलायष्टी ३. मुष्टिः (स्त्री.), वारंगः ४. कांडः, जालः-लं ५. पर्वतीय-वाहनभेदः । सं. पुं. दंडधारिन्, सन्यासिन् ।

पग—, सं. स्त्री., चरण-पादः, पथः, पद्धतिः (स्त्री.), पद्या, पदवी ।

दंडीत, सं. पुं. स्त्री., दे. 'दंडवत्' ।

दण्डरना, कि. अ. (अनु.) हंमारवं कृ, रेभ् (भ्वा. आ. से.), नि-नद् (भ्वा. प. से.) ।

दकराना, कि. अ., दे. 'दकरना' ।

दकार, सं. पुं. (सं. दकारः) उद्गिरणं, उद्गमः, उद्गमनं २. गर्जनं, गजितं, निगादः ।

—लेना, कि. अ., दे. 'दकारना' ।

—जाना या—बटना, मु., छलेन आत्मसात् कृ, प्रस् (भ्वा. आ. से.) ।

दकारना, कि. अ. (हि. दकार) उद्गृ (तु. प. से.), उद्गृ (भ्वा. प. से.) २. दे. 'दकारना' २. दे. 'दकार जाना' ।

दकैत, सं. पुं., दे. 'दाकृ' ।

दकैती, सं. स्त्री., दे. 'दाका' ।

दकौत-तिया, सं. पुं. (देश.) मिथ्यामौहूर्तिकः, व्योतिविदाभासः २. जातिविशेषः ।

दग, सं. पुं. (हि. दौकना) दीर्घ-, विक्रमः, पादन्यासः ।

—भरना, कि. अ., विक्रम् (भ्वा. प. से., भ्वा. आ. अ.) दीर्घपादान् विन्यस् (दि. प. से.)-निक्षिप् (तु. प. अ.) ।

दगमग, वि. (हि. दग + मग) प्रस्खलन्, विचलन् कंपमान, वेपमान । अव्य०, सकम्पम्, सवेपथु ।

दगमगाना, कि. अ. (हि. दग + मग) प्र-, कंप-वेप् (भ्वा. आ. से.) वेहृ (भ्वा. प. से.)

२. प्रस्खल-विचल (भ्वा. प. से.) ३. विशक्-विकल्प (भ्वा. आ. से.), चित्तं दोलायते (ना. धा.) ।

दगमगाहट, सं. स्त्री. (हि. दगमगाना) प्रकंपः, वेपथुः २. प्रस्खलनं, विचलनं ३. चिक्षोभः, चित्तवैकल्यं, धृतिनाशः ।

दगर, सं. स्त्री. (हि. दग) दे. 'मार्ग' ।

दटना, कि. अ. (हि. टाटा) दृढ-स्थिर-निश्चलं स्था (भ्वा. प. अ.), अवस्था (भ्वा. आ. अ.), वृत् (भ्वा. आ. से.) ।

दटा, सं. पुं. (हि. टाटना) कुपीछिद्-, विधानं, अवष्टमः, रोधः ।

—लगाना, कि. स., रोपेन-अवष्टम्भेन अपि-पि, चा (जु. उ. अ.)-सं-आ-वृ (स्वा. उ. से.) ।

ददियल, वि. (हि. डादी) दूचधर, संभकृचं, समक्षल, सक्षम् ।

दपट, सं. स्त्री. (सं. दपः) निर्भर्त्सना, गग्दंडः ।

दपटना, कि. स. (हि. दपट) तर्जं (भ्वा. प. से.; जु. आ. से.), वाचा दंड (जु.), निर्भर्त्सं (जु. आ. से.) ।

दपोरसंख, सं. पुं. (अनु. दपोर-बडा + सं. संखः) आत्मस्वाधिनः, विकल्पनशीलः २. बालबुद्धिः (पुं.) ।

दफ, दफला, सं. पुं. (अ. दफ.) टिटिमभेदः *दफम् ।

दफली, सं. स्त्री. (हि. दफला) लघु-, बिडिमा-दफम् ।

दफली, सं. पुं. (हि. दफला) दफ-डिटिम-वादकः ।

दण्डव्याना, कि. अ. (अनु.) सास्र-सवाप्य-सज्जनयन-सास्र (वि.) भू ।

दण्डवाई आँसो से, कि. वि., सास्रं, सास्र, सवाप्यं, पर्यक्षु ।

डबोना

[२५८]

डाक

डबोना, कि. स., दे. 'डुबोना'

डबवा, सं. पुं. (सं. डिवः >) संपुटः, संपुटकः, करंडकः, समुद्रगकः । २. (रेलगाड़ी का) शकटः-टम् ।

डमरू, सं. पुं. (सं. रुः) क्षीणमध्यो गुटिका-द्वययुक्तो बाधभेदः ।

—मध्य, सं. पुं. (सं. न.) विशालभ्रूमागद्वय-योजकः संबाधमूखंडः ।

जलडमरूमध्य, सं. पुं. (सं. न.) सामुद्रधुनी ।

डर, सं. पुं. (सं. दरः-रं) सं. त्रासः, भीःभीतिः (स्त्री.), भयं, साधरसं २. शंका, विता ।

डरना, कि. अ. (हिं. डर) भी (जु. प. अ.), वि-सं-प्रस् (भ्वा. दि. प. से.), उद्दिञ् (जु. प. अ.), भयार्त्त-प्रस्त (वि.) भू २. आ-वि-, शक् (भ्वा. आ. से.) ।

डरपोक, वि. (हिं. डरना + पोकना) भीत, भोह, सभय, ससाधरस २. साशंक, शंकित ।

डराना, कि. स., व. 'डरना' के प्रे. रूप ।

डरावना, वि. (हिं. डर) भीम, भीषण, भयंकर ।

डल, सं. स्त्री. (सं. तल्लः) तटाकः-कं (ना, गं), सरोवरः ।

डलना, कि. अ. (हिं. डालना) न्यम्-निक्षिप् (कर्म. २. नि-, सिच् (कर्म.); लु (भ्वा. प. अ.) ।

डलवाना, कि. प्रे., व. 'डालना' के प्रे. रूप ।

डला, सं. पुं. (सं. दल्लः-लं) खंडः-डं, स्थूल-अंशः-भागः २. पिंडः-डं, घनः, गंडः, गुल्मः ।

डला, सं. पुं. [सं. डल(ड)कं] दे. 'टोकरा' ।

डलिवा, सं. स्त्री. (हिं. डला) दे. 'टोकरा' ।

डली, सं. स्त्री. (हिं. डला) पिंडकः-कं, क्षुद्रगंडः २. शकलः-लं, खंडः-डं ३. दे. 'सुपारी' ।

डसन, सं. पुं. (सं. दंशनम्) दंशः २. दंश-दंशन, रीतिः (स्त्री.) ।

डसना, कि. स. (सं. दंशनं) दंश् (भ्वा. प. अ.), कौटकेन व्यष् (दि. प. अ.) २. मर्माणि मिद् (क. प. अ.) ।

डसनेवाला, सं. पुं., दंशकः २. अहंलुब्धः, समसृशु ।

डहडहा, वि. (अनु.) हरित, रसवत्, सरस, विकसित, विकच २. अभिनव, प्रत्यय २. प्रसन्न, आनंदित ।

डहडहाना, कि. अ. (हिं. डहडह) प्रकुल्ल-

विकम् (भ्वा. प. से.), हरिती भू २. सम्-ऋष् (दि. प. से.) सं-वि-वृष् (भ्वा. आ. से.) ३. मुद (भ्वा. आ. से.) ।

डौकना, कि. स., दे. 'लौवना' कि. अ., दे. 'कौ करना'

डौग, सं. स्त्री. (सं. दंडकः) लगुडः-रः लः, स्थूल-वृहद्, दंडः ।

डौंट, सं. स्त्री. (सं. दांतिः >) तर्जनं, तर्जितं, शिरः-, मर्मनंना, वाग्दंडः ।

—दपट, सं. स्त्री. ध्रुनंगेन तर्जनं, आक्रोशः, विभीषिका, मयदर्शनं, अपकारगिरि (स्त्री.) ।

डौटना, कि. स. (हिं. डौट) शिरः, भस् (जु. आ. से.), मयं दृश् (प्रे.), भी (प्रे.), तर्ज (भ्वा. से.; जु. आ. से.) ।

डौटने योग्य, वि., तर्जनीय, निर्भर्त्सनीय-वाग्दंडार्ह ।

डौटनेवाला, सं. पुं., तर्जकः, निर्भर्त्सकः ।

डौड़, सं. पुं. (सं. दंडः) यष्टिः (स्त्री.), लगुडः २. क्षेपणी, नौदंडः ३. पृष्ठबंधः, कक्षेकका ४. धन अर्थ, दंडः निग्रहः, शासनं, दंडः ६. सम-सरल, रेखा ७. सीमा ।

डौड़ना, कि. स. (सं. दंडनं) अर्थ-धनं दंड (जु.) ।

डौड़ा, सं. पुं. (हिं. डौड़) दे. 'मैद' ।

डौड़ी, सं. स्त्री. (हिं. डौड़) दे. 'डंडी' (१-४) ।

डौडौडोल, वि. (हिं. डोलना) अस्थिर, चंचल, तरल, लोल, कम्पमान । (मनुष्य) अस्थिरबुद्धि, चलचिध, चंचलमानस ।

डौस, सं. पुं. (सं. दंशः) दंशकः, अरण्य-गो-वन, मक्षिका, पांशुरः, छुट्टिका ।

डौस, सं. पुं. (अं.) नृत्यम्, दे. 'नाच' ।

डाहन, सं. स्त्री., (सं. डाकिनी) दे. 'डा-किन' ।

डाहानामाइट, सं. पुं. (अं.) विध्वंसकम्, • विस्फोटकम् ।

डाक, सं. स्त्री. (हिं. डौकना=फौदना) । प्रेष्य, पत्राणि-पत्रिकाः (बहु.) २. पत्रवाहन, व्यवस्था-संस्था ।

—खाना, सं. पुं. (हिं. + फा.) (प्रेष्य) पत्र-स्थानं-गृहं-कार्यालयः ।

—गाड़ी, सं. स्त्री., पत्रकटी ।

—घर, सं. पुं., दे. 'डाकखाना' ।
 —धैराला, सं. पुं. (हि. + अं.) विश्राम-
 विश्रान्ति, गृहम् ।
 —महसूल, सं. पुं. (हि. + अ.) पत्रवाहन-
 —व्यय, सं. पुं. (हि. + सं.) शुल्कम् ।
 डाका, सं. पुं. (हि. डाकना) प्रसङ्ग चौर्यम्,
 लुटिः (स्त्री.)-टी, लुंठनम् ।
 —जनी, सं. स्त्री. (हि. + फा.) दे. 'डाका' ।
 —डालना, या मारना, क्रि. स., लुंठ-लुंठ
 (म्वा. प. से., जु.), प्रसङ्ग अपहृ (म्वा.
 प. अ.) ।
 —पद्मना, क्रि. अ., लुंठकैः अवस्त्रद-आक्रम्
 (कर्म.) ।
 डाकिन,नी, सं. स्त्री. (सं. नी) कुइकिनी,
 अभिचरिणी, योगिनी, मायाविनी, कालीगण-
 भेदः । २. स्थविरा, वृद्धा ३. कुरूपानारी ।
 डाकिधा, सं. पुं. (हि. डाक) पत्रवाहकः ।
 डाकू, सं. पुं. (हि. डाकना=दूदना) दस्त्यु,
 महासाहसिकः, लुंठकः, लुंटा(ठा)कः,
 माचलः, प्रसङ्गचौरः, बिलासः ।
 डाट, सं. स्त्री. (सं. दाति >) तोरण-णं २. दे-
 'डटा' ३. दे. 'डॉट' ।
 —लगाना, क्रि. स., वृत्तखंडाकृत्या-तोरण-
 रूपेण निर्माणं (जु. आ. अ.) ।
 डाटना, क्रि. स. (हि. डाट) अत्यन्तं
 पूरं (जु.) २. अत्यधिकं मक्ष् (जु.)
 ३. सावलेषं बलादिकं परिधा (जु. उ. अ.)
 ४. दे. 'डॉटना' ।
 डाद, सं. स्त्री. (सं. दादा) चर्वणश्रंतः, जंमः,
 दंश ।
 दादी, सं. स्त्री. दे. 'दादी' ।
 दाब, सं. स्त्री., दे. 'दाभ' ।
 दाबर, सं. पुं. (सं. दभ्रः=सागर >) अनूप-
 कच्छ, भूः (स्त्री.) देशः २. पत्तलः-लं ३.
 आविलजलं ४. दे. 'चिलमवी' ।
 डाम, सं. पुं. (दर्मः) कुशः-शं २. आच-
 मंजरी ३. अपकनारिकेलः २ः ।
 डामर, वि. (सं.) भीषण, भयावह २. उपद्र-
 विन्, कलि-कलह, -प्रिय ३. स्वरूप, अनु रूप,
 सदृश । सं. पुं. (सं.) उपद्रवः, कलहः २.
 उल्लासः, प्रमोदः ।
 डामल, सं. पुं. (अ० दायमुल हन्स) यावज्जी-

विकः कारावासः, आमरणान्तिक-रोधः-निरोधः-
 आसेवः-प्रग्रहः ।

डायन, सं. स्त्री. (दे. डाकिनी) ।
 डायनाभो, सं. पुं. (अं.) विद्युज्जनकं लघुयंत्रम् ।
 डायरी, सं. स्त्री. (अं. डैनदिनी डैनिकी ।
 डायरेक्ट स्पीच, सं. स्त्री. (अं.) प्रत्यक्षवर्णनम् ।
 डायकी, सं. स्त्री. (अं.) दे० 'दुराज' ।
 डायल, सं. पुं. (अं.) घटीमुखं २. सूर्यघटी ।
 डायस, सं. पुं. (अं.) उच्चासनं, मंचः ।
 डार, सं. स्त्री. [सं. दाह (न.)] विटपः, शाखा,
 २. पंक्तिः-ततिः (स्त्री.), मेणी ।
 डाल, सं. स्त्री. [सं. दाह (न.)] विटपः, शाखा
 २. अस्ति, धारा-पत्रं-फलम् ।
 डालना, क्रि. स. (सं. तलनं) प्र., अस् (वि. प.
 से.), प्र., छिप् (जु. प. अ.), पत् (प्रे.)
 २. प्र., सु (प्रे.), नि, सिच् (जु. प. अ.)
 ३. परिधा (जु. उ. अ.), वस् (अ. आ.
 अ.), ध (जु.) ४. नि.प-विश् (प्रे.), निधा
 (जु. उ. अ.) ५. विस्मृपरित्यज् (म्वा. प.
 अ.) ६. मिष् (जु.), संमिल् (प्रे.) ७. उप-
 पत्नीत्वेन अवहृ (क. उ. अ.) ।
 डालर, सं. पुं. (अं.) रौप्यमुद्राभेदः, डालरम् ।
 डाली, सं. स्त्री. (हि. डाल) शाखा, विटपः ।
 डाली, सं. स्त्री. (हि. डाला) दे. 'डोकरी'
 २. उपहारः, उपायनम् ।
 डाह, सं. पुं. (सं. दाहः) श्वा, अभि-
 असूया, मत्सरः, मात्सर्यं, परोत्कर्षद्वेष,
 २. द्वेषः, द्रोहः ।
 डिगल, वि. (सं. डिगर) दुष्ट, दुर्वृत्त २. धुद्र,
 नीच । सं. स्त्री, राजस्थानस्य भाषाविशेषः ।
 डिडिम, सं. पुं. (सं.) लघु-पटहः-तुंडुभिः (पुं.) ।
 डिभ, सं. पुं. (सं.) डिबः, शिशुः, पृथुकः,
 कलमः, पोतः-तकः, शोबः-यकः, अर्भकः,
 अपत्यं, पृथुकः २. मूर्त्तः-जडः ।
 डिक्टेटर, सं. पुं. (अं.) एक-अधिपतिः—
 सर्वाधिकारसम्पन्न-शासकः—शासितृ ।
 डिक्टेशन, सं. स्त्री. (अं.) दे. 'इम्ला' ।
 डिक्शनरी, सं. स्त्री. (अं.) (शब्द-) कोशः-पः,
 अभिधानम् ।
 डिगना, क्रि. अ. (हि. डग) अप-सु-गम्
 (म्वा. प. अ.), प्र-वि-सृप् (म्वा. प. अ.)
 २. विचल् (म्वा. प. से.), पराङ्मुखी-विमुखी

डिगरी

[२६०]

देरा

भू, अति-व्यति-ह (अ. प. अ.), अति-व्यमि-
चर् (भ्वा. प. से.) इ. डे. 'गिरना' ।

डिगरी, सं. स्त्री. [अं. उपाधिः (पुं.)], उपपदं
२. अंशः, कला, मात्रा, समक्रीणस्य जवतो
(हेठ भागः ।

डिगरी, सं. स्त्री. (अं. डिक्री) स्वत्वप्रापकः,
आधिकारिकनिर्णयः, राजाज्ञा, व्यवस्था ।

—देना, कि. स., स्वत्वप्रापणमकं निर्णयं कृ,
व्यवस्था (प्रे.) ।

डिद्योना, सं. पुं. (हिं. डीठ) कुट्टिनिवारकं
कञ्जलतिलकम् ।

डिपटी, सं. पुं. (अ. डिपुटि) प्रति, निधिः-
पुरुषः-हस्तः-हस्तकः, नियोगिन्, नियुक्तः ।

—कमिशनर, सं. पुं. (अ.) उपायुक्तः ।

डिपार्टमेन्ट, सं. पुं. (अ.) विभागः, शाखा ।

डिपो, सं. पुं. (अ.) भांडागारं, आलयः, शाला ।

डिप्लोमा, सं. पुं. (अ.) प्रमाणपत्रं, अधिकारपत्रम् ।

डिफथीरिया, सं. पुं. (अ.) रोहिणी ।

डिबिया, सं. स्त्री. (हिं. डिब्वा) कोपकः, संपुटकः ।

डिब्बा, सं. पुं., दे. 'डब्बा' ।

डिस्मिस, वि. (अ.) अधिकारच्युत, अष्टाधिकार ।

—करना, कि. स., अधिकारात्-पदात् च्यु-अंश-
अवरुह (प्रे.) ।

डिसिनफेक्टेंट, वि. (अ.) रोगानुनाशक ।

डिरिटक्लेशन, सं. पुं. (अ.) आसवनम् ।

डींग, सं. स्त्री. (सं. डीनं <) आत्मश्लाघा, स्व-
प्रशंसा, विक्रयनम् ।

—मरना या हूँकना, आत्मानं दलाष्-विक्रय
(भ्वा. आ. से) ।

डींगिया, वि. (हिं. डींग) आत्मश्लाधिन्,
विक्रयनशील, पिंडीशूर ।

डीठ, सं. स्त्री., दे. 'डुटि' ।

डील, सं. पुं. (देश.) (देह-) प्र-परि, मार्गं,
आकारः, आकृतिः (स्त्री.), कायमानम् ।

—डौल, सं. पुं., मृतिः (स्त्री.), संरथानं,
आकारमानम् ।

डुगडुगी, सं. स्त्री. (अनु.) डिडिमः, लघुपट्टः ।

—पीटना, मु., (सडिडिमनादं) उद-वि-मुष्
(जु.), प्रख्या प्रख्यापयति ।

डुगगी, सं. स्त्री., दे. 'डुगडुगी' ।

डुघकी, सं. स्त्री. (हिं. डूबना) अवगाहः,
आप्लवः, निमज्जयुः (पुं.) ।

—लगाना, कि. अ., बाह्-अवगाह (भ्वा. आ.
से.), आप्लु (भ्वा. आ. अ.), निमस्ज्
(तु. प. अ.) ।

डुबाना, कि. स., व. 'डूबना' के प्रे. रूप ।

डुबावा, सं. पुं. (हिं. डूबना) अगाधता, गांभीर्यम् ।

डुबोना, कि. स., व. 'डूबना' के प्रे. रूप ।

डुलाना, कि. स., व. 'डोलना' के प्रे. रूप ।

डूँगर, सं. पुं., (सं. तुंग >) पर्वतकः, क्षुद्रपर्वतः
२. उच्चभूः (स्त्री.) मूख्यः ।

डूँगरी, सं. स्त्री. (हिं. डूँगर) अतिक्षुद्रपर्वतः
२. क्षुद्रमूख्यः ।

डूँडा, वि. (देश०) एक-शृंग-विषाण-कृणिक ।
सं. पुं. एक-शृंग-एकविषाण-शृषः-शृषमः ।

डूबना, कि. अ., (हिं. डूबना का विपर्ययः
अथवा अनु. डूब-डूब) निमज्ज (तु. प. अ.),

निमज्जनेन नृ (तु. आ. अ.)-न्यापद (दि.
आ. अ.) २. अस्तं इ-या (अ. प. अ.),

अस्ताचलं अस्तशिखरं अवलं (भ्वा. आ. से),
प्राप् (स्वा. प. अ.) इ. नष्ट ध्वस्त-निर्मूल (वि.)

भू, नश (दि. प. वे.), ध्वस् (भ्वा. आ. से.),
परिक्षि (कर्म.), प्र-वि-ली (दि. अ. अ.) ४. निध्वे

(भ्वा. प. अ.), सततं आलोच-चिचि (जु.),
चिंताकुल (वि.) भू ५. निमज्ज-निरत-आसक्त-

व्याप्त (वि.) भू । सं. पुं., निमज्जनं, आड्रावः,
प्लावनं, निमज्जनेन मरणं, अस्तः, अस्तमनः

नाशः, ध्वंसः, सततचितनं, कार्यासक्तिः (स्त्री.)

डूँडा, सं. पुं. (अं.) योमिक्षालनम् ।

डूँगू बुखार, सं. पुं. (अं. + अ.) दण्डक-अस्त्रि-
मंजन-ववरः ।

डेद, वि. (सं. अध्यदं) सादकं ।

—ईट की मसजिद जुदी बनाना, मु. (दर्पा-
दितः) कार्यमसंभूयैव कृ ।

डेपुडेमान, सं. पुं. (अ.) प्रतिनिधिदरः, शिष्ट-
मंडलं, नियुक्तजनाः ।

देरा, सं. पुं. (हिं. टहरना) पट-वस्त्र-गृह-
कुटी-मंडपः-वेश्मन् (न.), दूर्यर्थ इयं २, गृहं,

आलयः, आश्रयः इ. विश्रामः, अस्थिरवासः
४. शिविरं, निवेशः ।

—डालना, सु., सै-सं निविश् (तु. प. अ.)
समावम् (भ्वा. प. अ.) ।

डेकरा, सं. पुं. (यू. अ.) नदीमुखपुलिनः-नम् ।

डेलिगेट, सं. पुं. (अ.) नियोगिन्, प्रतिनिधिः (पुं.) ।

डेवडा, वि. (हि. डेढ) अर्धडेगुण । सं. पुं.
अर्धद्रुणनसूची ।

डेवडी, सं. स्त्री., दे. 'डोही' ।

डेसिमल, सं. पुं. (अ.) दशमलवः २.
दशसंलयक ।

डेस्क, सं. पुं. (अ.) लेखन-पीठिका-फलकम् ।

डोंगा, सं. पुं. (सं. द्रोणं <) वेडा, वारिरयः-
नौः (स्त्री.), तरो ।

डोरी, सं. स्त्री. (सं. द्रोणी) उडुपः, नौका,
वेडी, वेडा, तारिका ।

डोही-डी, सं. स्त्री., दे. 'डोही' ।

डोही, सं. स्त्री. (सं. तुंढं) बीजकोषः, पुटः-टम् ।

डोबा, सं. पुं. (हि. डूबना) निमज्जथुः (पुं.),
निमज्जनं, अवगाहः-इत्तं, आप्लवः ।

—देना, क्रि. स., (रंगे) नि-, मिरज (प्रे.
सज्जयति), अवगाह् (प्रे.) २. किल्व (प्रे.),
आर्द्रौ कु ।

डोम, सं. पुं. (सं.) डौबः, असृश्यजातिभेदः
१. दे. 'मीरासी' ।

डोर, सं. स्त्री. (सं. पुं. न.) शुक्वं-त्वं, शुक्वा-
स्वी, वराटः-टकः, रज्जुः (स्त्री.), गुणः, वटः-
टंटी ।

डोरा, सं. पुं. (सं. डोरः-र्) डोरकः-कं, सूत्रं,
संतुः (पुं.), गुणः २. रेखा-पा, लेखा ३. अस्ति,
धारा ४. चमसभेदः ५. स्नेहसूत्र, प्रेमबंधन
६. कज्जलरेखा ७. नृत्ये ग्रीवागतिभेदः ।

—डालना, सु. अनुरंज्-मुह् (प्रे.) ।

डोरिया सं. पुं. (हि. डोरा) *डोरीयः, सरेखो-
ऽशुकभेदः ।

डोरी, सं. स्त्री., दे. 'डोर' ।

डोल, सं. पुं. (सं. दोलः <) *दोलं, लौहसैचनम् ।
वि., अरिथर, कोल ।

डोलची, सं. स्त्री. (हि. डोल) *दोलकं,
लघुसैचनी ।

डोलना, क्रि. अ. (सं. दोलनं) स-सृप् (भ्वा.
प. अ.), चल् (भ्वा. प. से.) २. अन्-पर्यटं
(भ्वा. प. से.) ३. अप-इया (अ. प. अ.)
४. (चित्तं) विचल्, चंचलं भू ५. दोलावते

(ना. घा.), प्रेख् (भ्वा. प. से.) । सं. पुं.,
दोलनं, प्रेक्षणं ३. ।

डोलनेवाला, सं. पुं., सर्पणशीलः पर्यटकः,
अपयान् (पुं.), चलचित्तः, प्रेखकः ।

डोला, सं. पुं. (सं. दोला) इयनं, दोलिना,
शिनिका ।

—देना, सु., नृपादिभ्यः स्वकन्वामुपह् (भ्वा.
प. अ.)

डोली, सं. स्त्री. (हि. डोला) दे. 'डोला' ।

डौंड़ी-ढी, सं. स्त्री. (सं. डिट्टिमः) पटव्;
दुंदुभिः २. (सडिट्टिमनावं) घोषः-वणा
३. स्थापनं, उत्कीर्तनम् ।

—देना या पीटना, क्रि. स., दे. 'डुगडुगी
पीटना' ।

डौल, सं. पुं. (हि. डोल) आकारः, संस्थानं,
आकृतिः (स्त्री.), रूपं २. प्रकारः, विधा
(समासांत मे) ३. युक्तिः (स्त्री.), उपायः
४. लक्षणं, चिह्नम् ।

डाल, सं. पुं., उपायः, युक्तिः (स्त्री.) ।

—दार, वि., सुन्दर, रम्य २. पुष्ट, स्वस्थ ।

ड्यूटी, सं. स्त्री. (अं.) कर्तव्यं, कार्यं, कृत्यम्,
न्याय्य-स्व, कर्मन्-कार्यम् ।

ड्योडा, वि. तथा सं. पुं., दे. 'डेवडा' ।

ड्योदी, सं. स्त्री. (सं. देहली) गृहावग्रहण,
दार, पिंडी-पिठिका २. उपशाला, दारांगणं,
दारकोष्ठः ।

—दार, } सं. पुं., दीवारिकः, दारपालः ।
—वान, }

डूाडू, सं. स्त्री. (अं.) *रेखाचित्रणम् ।

—रूम, दर्शन उपवेशन, कोष्ठः-शाला-काक्षः, चि-
त्रशाला ।

डूाडूवर, सं. पुं. (अं.) दाहकः, चालकः ।

डूापूर, सं. पुं. (अं.) बिन्दुपातकम् ।

डूाफूट, सं. पुं. (अ.) प्रारूपम् २. धनार्पणा-
देशः, डूाफूटम् ।

—डेबल, सं. पुं. (अं.) शृंगारफलकम् ।

डूाफूट्समेन, सं. पुं. (अं.) आलेख्य-चित्र-
कतः-कोटः-कुव ।

डूाम, सं. पुं. (अं.) डूामगानं, माधवथात्म-
कस्तोलभेदः ।

डूामा, सं. पुं. (अं.) रूपकं, नाटकम् ।

ज्ञाभर, सं. पुं. (अं.) चल, क्रीडः-संपुटः ।
 झुस, सं. स्त्री. (अं.) वेशः-षः, परियानम् ।
 झूसिंग, सं. स्त्री. लेपः, उप, नादः- देहः । अं.
 २. शंभारः, मण्डनम् ।

झूल, सं. स्त्री. (अं.) व्यायामः, अस्त्रशस्त्र-
 शिक्षा-अभ्यासः ।
 —मास्टर, सं. पुं. (अं.) व्यायाम, दस्त्र-
 शिक्षकः ।

ढ

ढ, देवनागरीवर्णमालायाश्चतुर्दशो व्यञ्जनवर्णः,
 टकारः ।

ढंग, सं. पुं. (सं. तंग् = गति > ?) शैली, रीतिः-
 पद्धतिः (स्त्री.) प्रणाली २. प्रकारः, जातिः
 (स्त्री.), भेदः, विधा (समासात् में) ३.
 रचना, घटनं, निर्माणं ४. युक्तिः (स्त्री.),
 उपायः ५. व्यवहारः, आचरणं ६. न्याजः,
 मित्रं ७. लक्षणं, विहं ८. रिभतिः (स्त्री.),
 दशा ।

ढंगी, वि. (हिं. ढंग) चतुर, विदग्ध, धूर्त ।

ढंढोरा, सं. पुं. (अनु. ढंढं) दे. 'ढौंढी' ।

ढंढोरिया, सं. पुं. (हिं. ढंढोरा) उद्-घोषकः,
 प्रख्यापकः ।

ढई, सं. स्त्री. (हिं. दहना) दे. 'धरना' सं. पुं. ।

ढकना, सं. पुं., दे. 'ढकन' । क्रि. स., दे.
 'ढौकना' । क्रि. अ., आच्छाद-जातु-पिधा
 (कर्म.) ।

ढकनी, सं. स्त्री., दे. 'ढकन' ।

ढकवाना, क्रि. प्रे., व. 'ढौकना' के प्रे. रूप ।

ढकेल, सं. पुं. दे. 'धकेल' ।

ढकेलना, क्रि. स., दे. 'धकेलना' ।

ढकोसलम, सं. पुं. (हिं. ढंग + सं. कौशलम्)
 दंभः, मादंवरः, पापंढः-छं, कापट्यं, छात्रिकता ।

ढकन, सं. पुं. (सं. ढक = छिपना)
 पिधानं, पुटः-टंटी, छदः, छदनं, आवरणम् ।

ढचर, सं. पुं. (हिं. ढौचा) परिच्छदः, उप-
 कृणसामग्री २. आधारः, उपदंभः ३. कलहः,
 विवादः ४. व्यवसायः, कृतिः (स्त्री.) ५. आ-
 लम्बरः ६. जरठः ।

ढप, सं. पुं., दे. 'ढफ' ।

ढपना, सं. पुं. (हिं. ढौपना) दे. 'ढकन' ।
 क्रि. अ., दे. 'ढकना' क्रि. अ. ।

ढच, सं. पुं., दे. 'ढङ्ग' ।

ढमढम, सं. पुं. (अनु.) षट्-भेरी, नादः,
 ढमढमध्वनिः (पुं.), ढमढमायितम् ।

ढरका, सं. पुं. [हिं. ढर(ल)कना] चि(च)लता,

पिलता, नेत्रस्त्रावः, अभिरस्यं(स्थं) द. २. पशुना-
 मौषधपाननलः ।

ढरकी, सं. स्त्री. [हिं. ढर(ल)कना] त(त्र)सरः,
 महिकः ।

ढर्रा, सं. पुं. (हिं. ढरना) मर्गः, पथिन्
 २. शैली, पद्धतिः (स्त्री.) ३. उपायः, युक्तिः
 (स्त्री.) ४. आचारः, आचरणम् ।

ढलकना, क्रि. अ. (हिं. ढाल) प्र-परि, सु
 (स्वा. प. अ.), पत् (स्वा. प. से.) प्रस्यं-
 श्च्युद् (स्वा. आ. से.) २. 'ढुढकना' ।
 सं. पुं., स्र(स्रा) पः, श्च्योतः, भवपातः ।

ढलका, सं. पुं., दे. 'ढरका' (१) ।

ढलकाना, क्रि. स., व. 'ढलकना' के प्रे. रूप ।

ढलना, क्रि. अ. (हिं. ढाल) विलाप्य संघा-
 षट्-रच-ल्लप् (कर्म.) २. दे. 'ढलकना' ।

३. व्यति-अति, इ (अ. प. अ.), च्यतिक्कम्
 (स्वा. प. से.) ४. दे. 'ढुढकना' ५. प्री
 (दि. आ. अ.), अनुकूली भू ५. अरतं गम् ।
 सौंचे में ढला, सु., अति, सुन्दर सुभग-
 शोभन ।

ढलमल, वि., दे. 'ढौला' ।

ढलणी, वि. (हिं. ढालना) विलाप्य घटित-
 रचित-ल्लप् २. अवसपिन, प्रवण ।

ढलवाना, क्रि. प्रे., व. 'ढालना' के प्रे. रूप ।

ढलाई, सं. स्त्री. (हिं. ढालना) विलाप्य घटनं-
 रचनं-कल्पनं २. द्रावण-विलापन, मृतिः (स्त्री.)

ढहना, क्रि. अ. (सं. ध्वंसनं) ध्वंस-अवर्त्तस्
 (स्वा. आ. से.), अवपत् (स्वा. प. से.)
 २. वि-जम् (दि. प. वे.) ।

ढहवाना, क्रि. प्रे., व. 'ढहाना' के प्रे. रूप ।

ढहाना, क्रि. स. (सं. ध्वंसनं) अवसंम-ध्वंस-
 अवपत्-उन्मूल-उत्पट्-उच्छिद्य् उत्सर् (प्रे.)

२. विनश् (प्रे.) । सं. पुं., प्र-वि-ध्वंसः,
 उत्पाटनं, उन्मूलनं, उत्पादनं इ. ।

ढहाने योग्य, वि., विध्वंसनीय, उन्मूल-
 यितव्य इ. ।

ढहानेवाला, सं. पुं., विष्णुसकः, उत्पाटकः ।
 ढौकना, कि. स. (सं. ढक = छिपाना) आ-
 प्र-समा-च्छद् (जु.), आ-प्र-सं-न्व (स्वा. उ.
 से.), स्वव-पि, षा (जु. उ. अ.), अव-गुंठ्
 (जु.), निगुह (भा. उ. से.), निगूहति-ते)
 २. आ-सृ (स्वा. उ. अ.) स्त (क्. उ. से.) ।
 सं. पुं., आ-प्र-समा-च्छादनं, आ-सं-वरणं,
 पिधानं, अवगुंठनं, वेष्टनं; आस्तरणं इ. ।
 ढौकनेवाला, सं. पुं., आच्छादकः, आवरकः,
 पिधायकः ।
 ढौका हुआ, वि., आच्छादित, आवृत,
 पिहित इ. ।
 ढौचा, सं. पुं. (सं. स्थाता >) आकारः, आधारः,
 उपष्टंभः, संस्थानं, प्रारम्भिक, रूप-आधारः ।
 ढौपना, कि. स., दे. 'ढौकना' ।
 ढाई, वि. (सं. अर्द्धद्वितीय >) सार्द्धि ।
 ढाक, सं. पुं. (सं. आधाटकः) पलाशः, किंशुकः,
 पर्णः, यक्षिणः, रक्तपुष्पकः, वातहरः, सञ्चि-
 द्रः ।
 —के तीन पात, सु., सदादरिद्रता, निरन्तर-
 निधनता ।
 ढाढ़, सं. स्त्री. (अनु.) चोत्कारः, आकन्दः,
 उत्क्रोशः २. मजितं, गर्जनं-ना, महा-गंभीर-
 नादः ।
 —भारना, सु., सचीकारं-सार्कदं रुद् (अ.
 प. से.) ।
 ढाढस, सं. पुं. (सं. दृढ >) धीरता, धैर्यं, चित्त-
 स्थैर्यं, शान्तिः (स्त्री.) २. सन्-आश्वासनं,
 सार्वभन्ना ३. साहसं, चित्तदाह्यम् ।
 —देना या ढौधाना, सु., आ-समा-धत् (प्रे.)
 शां (सां) भव् (जु.), वितुद् (पे.) २. प्रीत्सद्
 (प्रे.) ।
 ढाना, कि. स., दे. 'ढहाना' ।
 ढान्ना, सं. पुं. (देश.) भोजन-गृहं-शाला
 २. दे. 'परष्टी' । ३. कुडुद्, कंडोलः-करंठः
 ३. आलम्, पाशः ।
 ढारस, सं. पुं., दे. 'ढाढस' ।
 ढाल^१, सं. स्त्री. (सं. न.) चर्मन् (नं.), फलकः-
 कं, फलम् ।
 ढाल^२, सं. स्त्री. (सं. धारः >) क्रमशः निम्नता,
 प्रावर्धं, प्रवणता-त्वं २. निम्नं, प्रवणं, प्रवण-
 अवसधि, भूमिः (स्त्री.) ३. पर्वतः, उत्संगः,

कटकः-कं, नितंबः ४. प्रकारः, विधिः (पुं.),
 गतिः (स्त्री.) ।
 ढालना, कि. म. (हिं. ढाल) विलाप्य रच्-
 षट् षष्प (प्रे.) निर्माणं (जु. आ. अ.)
 २. (मष्) पा (भा. प. अ.) ३. दे-
 'ढेडलना' ।
 ढालवौ, वि. (हिं. ढाल) दे. 'ढालवौ' (१-२) ।
 ढालिया, सं. पुं. (हिं. ढालना) पात्रकारः २.
 सुवर्णकारः ।
 ढाली, सं. पुं. (सं. लिन्) ढाल-चर्म-फलकः, धा-
 रिन् २. सैनिकः, योधः ।
 ढासना, सं. पुं. (सं. धा=धारण + आसनं >)
 पृष्ठासनं (पृष्ठ-) अवष्टंभः-अवलम्बनं-आधारः
 २. उपधानं, उपबर्हः ।
 ढिडोरा, सं. पुं. (अनु. ढम + सं. ढोलः >) दे.
 'ढौडी' (१-२) ।
 ढिग, कि. वि. (सं. दिग् >) समीप्ये ।
 सं. स्त्री., सामीप्यं, नैकदयं २. अंतः, प्रातः ।
 ढिडाई, सं. स्त्री. (हिं. ढीठ) धार्ष्ट्यं, प्रत्या-
 ल्भं, वैयार्थं, अधिनयः, अशिष्टता, धृष्टता ।
 ढिबरी^१, सं. स्त्री. (हिं. ढिब्बी) मृत्सैलदोषः-पिका ।
 ढिबरी^२, सं. स्त्री. (हिं. ढपना) भ्रूलयकील-
 करोधनी ।
 ढिमका, सर्व. (हिं. अमका का अनु.) अमुक ।
 ढिलढिला, वि. (सं. शिथिल) क्रोमल, खिम्ब-
 मेदुर, अकठिन ।
 ढिड्डा, वि. (हिं. ढीला) मंद, मंथर, अलस ।
 ढीठ, वि. (सं. धृष्ट) अशिष्ट, प्रयत्न, वियात,
 कु-दुःशील, विनयविहीन ।
 ढील, सं. स्त्री. (हिं. ढीला) काल-अतिपातः-
 क्षेपः-यापनं-हरणं, विलम्बः, व्याक्षेपः २. आलस्यं,
 मंथरता ३. शिथिलता, शैथिल्यं, इलथता ।
 —करना, कि. अ., कालं क्षिप् (जु. प. अ.),
 विलम्बं (स्वा. आ. से.) ।
 —वेना, सु., यथेष्टमाचरितुं अनुमन् (दि. आ.
 अ.) अनुज्ञा (क्. उ. अ.) २. शिथिली कृ,
 इलथ् (जु.) ।
 ढीला, वि. (सं. शिथिल) प्र-इलथ, विगलित,
 स्रस्त, अदृढ, असंसक्त, २. अलस, तंदिल,
 तंद्राडु, मंद, मंथर ३. काल-अतिपातिन्-
 क्षेपकः ।
 ढीलपन, सं. पुं., दे. 'ढील' ।

ढीह

[२३४]

तंग

ढीह, सं. पुं., दे. 'ढीडा' ।
 ढुँडवाना, कि. प्रे., व. 'ढूँडना' के प्रे. रूप ।
 ढुँडि, पुं. (सं.) गणेशः, गणपतिः ।
 ढुँडी, सं. स्त्री., (सं. तुंडी) १. तुंडःदिः (स्त्री.), नाभिः (पुं. स्त्री.) २. बाहुः, मुत्रः-जी ।
 ढुलना, कि. अ. (देश.) प्रविश् (तु. प. अ.) २. सहसा अभिद्रु (भ्वा. प. अ.) आक्रम् (भ्वा. प. से.; भ्वा. आ. अ.) ।
 ढुलकना, कि. अ., दे. 'ढुलकना' ।
 ढुलकाना, कि. स., दे. 'ढुलकाना' ।
 ढुलना, कि. अ., दे. 'ढुलकना' २. दे. 'ढुलकना' १. प्री (हि. आ. अ.) अनुमद् (क्. प. से.), दय्-अनुकंप (भ्वा. आ. से.) ।
 ढुलवाह्, ढुलाह्, सं. स्त्री. (हिं. ढुलवाना) वाहनं, नयनं, हरणं, भरणं २. वाहनवेतनं, प्रापणनिर्वेशः ।
 ढुलवाना, कि. प्रे., व. 'ढोना' तथा 'ढुलना' के प्रे. रूप ।
 ढुलाना, कि. प्रे., व. 'ढुलना' तथा 'ढोना' के प्रे. रूप ।
 ढूँड, सं. स्त्री. (हिं. ढूँडना) दे. 'खोज' ।
 ढूँडना, कि. क. (सं. ढुँडनं) दे. 'खोजना' ।
 ढूँह-ढूँहा, सं. पुं. (सं. स्तूपः) राशिः (पु.). चयः २. वामखरः, क्षुद्रपर्वतः ।
 ढूँकळी, सं. स्त्री. (हिं. ढूँक) जलकषणयंत्रं २. धान्यकुट्टनी ३. वक्तुंडयंत्रं (अर्कं उतारने का यंत्र) ४. दे. 'कलावाजी' ।
 ढेर, सं. पुं. (हिं. भरना >) राशिः (पुं.), निकरः, चितिः (स्त्री.), नि-सं, चयः, स्तोमः, पुंजः, संभारः । वि., प्रचुर. प्रभूत, बहुल, भूरि, विपुल, पर्याप्त ।

ण

ण, देवनागरीवर्णमालायाः पंचरशो न्यंजनवर्णः,

त

त, देवनागरीवर्णमालायाः षोडशो न्यंजनवर्णः, तकारः ।
 तंक, सं. पुं. (सं.) भयं, भौतिः (स्त्री.), आसः २. कष्टमय-ह्लेशमय, जीवनम् ३. विद्योगदुःखम् ४. टंकः, तश्रणी ।
 तंग, वि. (फ्रा.) इड, शैथिल्यशून्य, संसक्त,

—लगाना, कि. स., राशी कृ, संवि (स्वा. उ. अ.) ।
 —करना, मु., ज्वापदृष्ट (प्रे.) ।
 ठेरी, सं. स्त्री. (हिं. ठेर) क्षुद्रराशिः (पुं.), दे. 'ठेर' ।
 ठेला, सं. पुं. (हिं. डला) लोगः, मृद., खंडः-पिंडः, लोटः-ष्टं, दरिणिः (पुं. स्त्री.) लोट्टुः, २. पिटः, खंडः-टं ३. धान्यभेदः ।
 ठैया, सं. पुं. (हिं. डाई) साङ्गैदिसेरकारमक-तोलः २. साङ्गैदिगुणनसूची ।
 ठोंग, सं. पुं. (हिं. ढंग) आडंबरः, डंगः, पापंडः-डं, कपटं, छद्मन् (न.), बंचना, प्रतारणा ।
 ठोंगी-गिया, वि. (हिं. डोंग) दांभिक, बंचक, प्रतारक, कापटिक, छात्रिक, पापंडिन् ।
 ठोटा, सं. पुं. (हिं. टोटी) पुत्रः २. बालकः ।
 ठोटा, सं. स्त्री. (सं. दुहितृ) पुत्री २. बालिका ।
 ठोना, कि. स. (सं. बोट वा ऊट, विपर्यय से डोव) बह्-नी (भ्वा. उ. अ.), (उत्थाप्य) ह (भ्वा. उ. अ.) । सं. पुं., वहनं, नयनं, हरणम् ।
 ठोनेवाला, सं. पुं., भार-,वाहकः-हारः ।
 ठोर, सं. पुं., दे. 'पशु' ।
 ठोल, सं. पुं. (सं.) आनकः, पटह्-हं, ढहा २. कर्णतुंडुभिः (पुं.) ।
 ठोलक-की, सं. स्त्री. (सं. डोलकं) भेरी-रिः (स्त्री.), तुंडुभिः (पुं.) ।
 ठोलकिया, सं. पुं. (सं. डोलकं >) डोलक-वादकः, पटहताशकः ।
 ठौंचा, सं. पुं. (सं. अर्द्ध + हिं. चार) साङ्गैचतु-गुणनसूची ।

णकारः ।

सुसंहत, याड २. अदित, उद्विग्न, संतप्त, पीडित, विकल ३. विस्तारविरहित, संबाध, संकट, संकु- (को) चित, संकीर्ण । सं. पुं., कक्ष्या, नधी, वरत्रा ।

—दस्त, वि. (फ्रा.) निर्वेत, दरिद्र ।

—दस्ती, सं. स्त्री. (क्रा.) अकिंचनता, दारिद्र्यम् ।

—दिल, वि. (क्रा.) कदर्य, कृपण, मितंपन्न ।

—आमा, या होना, मु., खिद (दि. क. आ. अ.), संतप् (कर्म.) ।

—करना, मु., खिद-व्यथ-संतप् (प्रे.) ।

हाथ तंग होना, मु., दरिद्रा (अ. प. से.), निर्धन (वि.) भू ।

तंगी, सं. स्त्री. (क्रा.) संकोचः, संकीर्णता, विस्तारभावः, संशयता २. दृढता, संवतिः-सुसंस्तितः (स्त्री.), मादता ३. क्लेशः, दुःखं ४. निर्धनता, दरिद्रता ५. म्यूनता ।

संडुल, सं. पुं. (सं.) दे. 'चावल' ।

तंति, सं. स्त्री. (सं.) रज्जुः (स्त्री.), गुणः, बटी, रक्षणा २. 'पंक्तिः (स्त्री.), श्रेणी-पिः (स्त्री.) ।

—पाल, सं. पुं., गोरक्षकः (२) अज्ञातवासे सहदेवस्य संज्ञा (महा०) ।

तंतु, सं. पुं. (सं.) सूत्र, तंत्र, गुणः २, संतानः ।

—वाय, सं. पुं., दे. 'जुलाहा' ।

तंत्र, सं. पुं. (सं. न.) तंतुः (पुं.), सूत्रं २. तंतु, वायः-वापः, कुविदः, पटकारः ३. पट-निर्माणपरिच्छदः ४. संपत्तिः (स्त्री.) ५. अधीनता, पराश्रयः ६. शासनं, शासनपद्धतिः (स्त्री.) ७. कारणं ८. कार्यं ९. परिवारः १०. सेना ११. गारुडं, मंत्रं १२. औषधं १३. राज्यं १४. शास्त्रभेदः ।

तंत्री, सं. स्त्री. (सं.) तंतिः (स्त्री.), वीणादीनां गुणः २. गुणः, रज्जुः (स्त्री.) ३. वीणा, सतंत्रिकं वाद्यं ४. देहशिरा । सं. पुं. (सं. तंतिन्) वीणावादकः २. गायकः ३. सैनिकः ।

तंतुस्त, वि. (क्रा.) स्वस्थ, नीरोग ।

तंतुस्ती, सं. स्त्री. (क्रा.) स्वास्थ्यं, नीरोगता ।

तंदूर, सं. पुं. (क्रा. तनूर) आपाकः, उरवा, कंडुः (पुं. स्त्री.) ।

तंदेही, सं. स्त्री. (क्रा. तंदिही) परिश्रमः, प्रयत्नः ।

तंद्रा, सं. स्त्री. (सं.) निद्रा, आलस्यं, निद्रा-लुता, शयालता, तंद्रालुता ।

संद्रालु, वि. (सं.) तंद्रिल, निद्रालु, निद्रा-पर-वश, सुपुच्छ, शयालु ।

संबाहू, सं. पुं., दे. 'तमाहू' ।

तंबीह, सं. स्त्री. (अ.) शिक्षा, अनुशासनं, उपदेशः ।

तंबू, सं. पुं. (हि. तनना) पट, कुटी-मंडपः-गृह, दूर्य-प्यं, कैपिका, मलनः, स्थूलम् ।

शाही—, सं. पुं., उपकार्यो ।

तंबूर, सं. पुं. (क्रा.) पटवः, पणवः, सुरजः ।

तंबूरा, सं. पुं. (सं. तुंबर) *तानपूरकः, वीणाभेदः ।

तंबूल, सं. पुं. (सं. तांबूल >) *तांबूलं, *वर-शुल्कः-कं (पंजाद) २. *वरयात्रिव्यवः *तांबूलं (बुदेलखंड) ।

तंबोली, सं. पुं. (हि. तंबोल) तांबूलिकः, तांबूलविक्रेतु (पुं.) ।

तअजमुष, सं. पुं. (अ.) आश्चर्यं, विस्मयः ।

तअमसुल, सं. पुं. (अ.) वैद्यं, शांतिः (स्त्री.) ।

तअकलुकः, सं. पुं. (अ.) भूमिः (स्त्री.), क्षेत्रं २. प्रदेशः, प्रांतभागः, मंडलम् ।

—दार, सं. पुं., भू-क्षेत्र-स्वामिन्, क्षेत्रपतिः ।

तअकलुक, सं. पुं. (अ.) संबंधः, संसर्गः ।

तअरसुब, सं. पुं. (अ.) धार्मिक-जातीय-पक्षपातः ।

तई, प्रत्य. (प्रा. हुंत्तो) प्रति, अर्थम् ।

(इसका अनुवाद प्रायः दितीया या चतुर्थी के रूपों से करते हैं) ।

तक, अन्व. (सं. अंत + हि. क) यावत्, पर्यन्तं-आ- (समास में या पंचमीयुक्त) । आमरणं, आमरणात्, मरणं यावत्, मरणपर्यन्तम् इ. ।

तकड़ा, वि. (हि. तन + कड़ा) बलवत्, सबल, पुष्ट [तकड़ी (स्त्री.)-बलवती, सबला] ।

तकड़ी, सं. स्त्री. (देश.) तुला, मापनः, धटः, तौलम् ।

सक्रदीर, सं. स्त्री. (अ.) भाग्यं, दैवम् ।

तकरार सं. स्त्री. (अ.) कलहः, विवादः ।

तकररीर, सं. स्त्री. (अ.) भाषणं, व्याख्यानम् ।

तलका, सं. पुं. [सं. तलुः (पुं. स्त्री.)] तर्कुटं, कार्पासनासिका ।

तकली, सं. स्त्री. (हि. तकला) तर्कुटी. क्षुद्रतर्कुः (पुं. स्त्री.) २. आवापनं, तंतुकीलः ।

तकलीफ, सं. स्त्री. (अ.) कष्टं, प्लेशः, आपद् (स्त्री.) ।

तकल्लुक, सं. पुं. (अ.) शिक्षाचारः, नैयमित्ता ।

—करना, शिष्टवत् आचर् (स्वा. प. से.), शिक्षाचारं दृश् (प्र.) ।

वेतकल्लुफ, वि., सरल, ऋजू ।
 तक्रवीयत, सं. स्त्री. (अ०) पुष्टिः शक्तिः
 (स्त्री.) बलन् । २. सान्त्वनेना, आश्वासः,
 आश्वासनम् ।
 तक्रसीम, सं. स्त्री. (अ.) अंशानं, विभागः,
 विभागपरिकल्पनं २. बंटनं, संप्रविभागः ।
 —करना, कि. स., मज्-विभज् (म्वा. उ. अ.)
 २. बंट्-भ्यश् (चु.) ।
 तक्रसीर, सं. स्त्री. (अ.) अपराधः, दोषः ।
 तक्राजा, सं. पुं. (अ.) (ऋणशोधनार्थं)
 अनुरोधः, प्रेरणा ।
 —करना, ऋणशोधनार्थं सनिर्बंधं प्रार्थं (चु.
 आ. से.) २. अनुकृप् (क. प. अ.) ।
 तक्रावी, सं. स्त्री. (अ.) कृषकेभ्यो बीजाद्यर्थं
 दत्तमृगम् ।
 तक्रिया, सं. पुं. (फ्रा.) उपधानं, उपबहः
 २. आश्रयः, अवलंबः ३. चवनमिक्षुककुटी ।
 —कलाम्, सं. पुं. (फ्रा + अ.) *वागाश्रयः,
 *सहजवाक्यम् ।
 तक्रुआ, सं. पुं, दे. 'तकला' ।
 तक्र, सं. पुं. (सं. न.) पादांशुसंयुतं दधि (न.),
 मथितम् ।
 तक्रक, सं. पुं. (सं. न.) त्वक्षणं, तनुकरणं,
 काष्ठस्य समोकरणं २. वरिकरणं, उत्कीर्यं
 मूर्तिनिर्माणम् ।
 तक्षण, सं. पुं. (सं.) पातालस्थो नागविदेष्टः
 २. सर्पः, अहिः (पुं.) ।
 तखमीना, सं. पुं. (अ.) अनुमानं २. मूल्य-
 निरूपणम् ।
 तख्त, सं. पुं. (फ्रा.) नृपालनं, सिंहासनं ;
 भद्रासनं २. फलकः-कं, मंचः ।
 —नफीन, वि. (फ्रा.) सिंहासन-आसीन-आरूढ् ।
 —पोश, सं. पुं. (फ्रा.) मंचाच्छादनं, फलक-
 प्रच्छदः २. फलकः-कं, मंचः ३. दे. 'चौकी' ।
 तख्ता, सं. पुं. (फ्रा.) काष्ठ-दारु-फलकः-
 फलकं २. पट्टः-टं ३. पीटं, मंचः ४. शव-
 फलकं-यानं ५. दे. 'क्यारी' ।
 तखती, सं. स्त्री. (फ्रा. तख्ता) छुद्रफलकं,
 पीटिकः २. (काष्ठ-) पट्टी-पट्टिका ।
 तखाडा, वि., दे. 'तकड़ा' ।
 तखण, सं. पुं. (सं.) छन्दः शाले गणभेदः,
 अन्तलधुर्गणः । (उ० तूफान, तैतीस)

तखर, सं. पुं. (सं. न.) वक्रं, कुटिलं, जिह्वं,
 दीपनम् ।
 तखाक्, सं. पुं. (सं. तडागः-गम् >) सुधाकर्द-
 मादिमिश्रणार्थं कुंडम्, तडागः ।
 तखादा, सं. पुं., दे. 'तक्राजा' ।
 तख, सं. पुं. (सं. त्वर्थं) बहुगंधं, मुखशोधनं,
 उत्कटं, मधवस्को, सिंहलम् ।
 तखकिरा, सं. पुं. (अ.) वर्णनं, चर्चा २. जीव-
 नचरितम् ।
 तखर(रु)बा, सं. पुं. (अ.) संपरीक्षा, प्रयोगः,
 परीक्षा-क्षणं, २. अनुभवः, परीक्षालम्प-अनुभव-
 ज्ञानित-ज्ञानं, बुद्धिपरिभाकः ।
 —कार, सं. पुं. (फ्रा.) अनुभविन, बहुदशिन ।
 —करना, कि. स., अनुभू २. परीक्ष् (म्वा.
 आ. से.), प्रयुज् (चु.) ।
 तखवीज, सं. स्त्री. (अ.) मत्तं, मत्तिः (स्त्री.),
 तर्कः २. निर्णयः ३. उपायः, युक्तिः (स्त्री.) ।
 तख, सं. पुं. (सं. तटः-टं) तटी-टा, कुलं, तीरं,
 रोषम् (न.) । कि. वि., समीप-पे ।
 तखस्थ, वि (सं.) तीरस्थ, कूलस्थ २. निष्प-
 क्षपात, उदासीन, उभयसामान्य, सम-
 भाव-दृष्टिः ।
 तख्, सं. पुं. (सं. तटः >) पद्मः, दलः-लम् ।
 तख्, सं. पुं. (अनु.) प्रहारजः शब्दः, तडकारः ।
 तखकना, कि. अ. (अनु. तड्) वि-, दल् (म्वा.
 प. से.), स्फुट् (तु. प. से.) दृ-भञ्ज-भिद्
 (कर्म.) २. क्रुप् (दि. प. अ.) ।
 तखका, सं. पुं. (हि. तडकना) प्रभातं, विभातं,
 उपस् (स्त्री. न.), प्रत्यूषः, अहर्मुखम् ।
 तखके, कि. वि., प्रत्यूषे, प्रसाते ।
 तख्प, सं. स्त्री. (हिं. तडपना) कंषः, स्पंदः,
 स्फुरितं २. संक्षोभः, नपल्लवः, आकुलत्वम् ।
 तखपना, कि. आ (अनु.) छुम् (दि., क्.
 प. से., म्वा. आ. से.) आकुली-छुब्धो-विह्वली
 भू २. अत्यधिकं अभिलक्ष् (म्वा. उ. से.) ।
 तखपाना, कि. स., उद्भिन् (प्रे.) प्र-वि सं-
 छुम् (प्रे.), आकुली क् ।
 तख्चनाफ, } कि. अ., दे. 'तडपना' ।
 तखफना, }
 तखाक-का, सं. पुं. (अनु.) ताडनध्वनिः (पुं.)
 २. शोटन-भंग, शब्दः-विरावः ।
 तडाक, सं. पुं. (सं. पुं. न.) दे. 'तालाक' ।

तद्गतद्, कि. वि. (अनु.) सतद्वतद्वशब्दम् ।
तद्वित्, सं. स्त्री. (सं.) विद्युत् (स्त्री.) चपला,
चंचला, शंषा ।

—पति, सं. पुं. (सं.) नेषः, नीरवः ।

तद्गी, सं. स्त्री. (अनु०) चपेटः, चपेटिका,
चपेट-करतल, प्रहारः ।

तत्ति, सं. स्त्री. (सं.) पंक्तिः-श्रेणी (स्त्री.),
२. समूहः ३. विस्तारः ।

तत्तैया, सं. स्त्री. (सं. तप्त >) बरटः-टा-टी,
रुश्चिका, गंधोली, बरलः, बरोलः, विपः,
शुकः-शुंगी ।

तत्काल, कि. वि. (सं.-लं.) तत्क्षणात्, अचि-
रादेव, सद्य एव, आशु, द्रुक्, क्षयित्, तत्काले ।

तत्कालीन, वि. (सं.) तात्कालिक [-की
(स्त्री.)], तदानींतिन [-नी (स्त्री.)] ।

तत्क्षण, कि. वि. (सं. तत्क्षणं) दे. 'तत्काल' ।

तत्त्वं, सं. पुं. (सं. न.) तत्त्वं, याथार्थ्यं,
सत्त्वं, सत्यता, वास्तविकता २. पंचभूतानि
३. मूलकारणं ४. सारः, सारः-अंशः-वस्तु (न.)
५. अक्षन् (न.) ।

—अवधान, सं. पुं. (सं. न.) निरीक्षणं
अवेषणम् ।

—ज्ञान, सं. पुं. (सं. न.) परमार्थ-अज्ञानम् ।

—ज्ञानी, सं. पुं. (सं. निन्) । तत्त्वज्ञः २.

—दर्शी, सं. पुं. (सं. शिन्) । दार्शनिकः ।

—धादी, सं. पुं. (सं. दिन्) तत्त्ववचनं (पुं.)
२. यथार्थ-स्पष्ट-वादिम् ।

वित्, सं. पुं. (सं. विद्) दे. 'तत्त्वज्ञानी' ।

—विद्या, सं. स्त्री. (सं.) दर्शनशास्त्रम् ।

—वेत्ता, सं. पुं. (सं. वेत्) दे. 'तत्त्वज्ञानी' ।

तत्पर, वि. (सं.) आसक्त, निरत, व्याधृत,
समाहित, अभिनि-नि, विष्ट, व्यग्र २. एकाग्र,
सुप्तमाहित, सावधान ३. संनद्ध, सज्ज, सज्जी-
भूत, उपन्यस्त ।

तत्परता, सं. स्त्री. (सं.) अभिनिवेशः, आसक्तिः
(स्त्री.), मनोयोगः, एकाग्रता, एकनिष्ठता,
अनन्यचित्तता ।

तत्पुरुष, सं. पुं. (सं.) परमेश्वरः २. समा-
सभेदः (व्या.) ।

तत्र, अव्य. (सं.) तस्मिन् स्थले-स्थाने ।

तथा, अव्य. (सं.) च, (द्रष्टव्य समास से भी ;

उ. गम तथा इयाम = रामश्यामौ इ.) २.
तद्दृश, तत्सम, तत्सुख्य ।

तथापि, अव्य. (सं.) तदपि, तथापि, एवं
सत्यपि ।

तथास्तु, अव्य. (सं.) एवं अस्तु भवतु ।

तस्य, सं. पुं. (सं. न.) यथार्थता, सत्यं,
सत्यता ।

तदन्तर] कि. वि. (सं. तदनंतरं) तदनु,
तदनंतरं] तत्पश्चात्, ततः, अथ, अनन्तरम् ।

तदनु रूप, वि. (सं.) तदनुदृश, तत्सुख्य,
तदाकार ।

तदनुसार, वि. (सं.) तदनुकूल, तदनु रूप ।

तद्वीर, सं. स्त्री. (अ.) साधनं, उपायः-युक्तिः
(स्त्री.) ।

तदा, कि. वि. (सं.) तस्मिन् काले-समये ।

तदाकार, वि. (सं.) तद्रूप २. तन्मय ।

तदीय, सर्व. (सं.) तत्संबन्धिन्, तस्य ।

तद्दुपरांत, कि. वि., दे. 'तदनंतर' ।

तद्वित्त, सं. पुं. (सं.) प्रत्ययभेदः (व्या.)
२. तद्वित्तशब्दः ।

तद्रूप, वि. (सं.) स्पष्टश-क्ष [शी-शी (स्त्री.)],
तदाकार ।

तद्भूत्, अव्य. (सं.) तत्सदृशं, तत्सुख्यम् ।

तन, सं. पुं. [फा. गि., सं. तनुः (स्त्री.)]

देहः, शरीरं, वपुस् (न.), भाग्नम् ।

—मन, सं. पुं., तनुमनसी देहदेहिनी (द्वि.) ।

—मन मारना, मु., कामान् अव-नि-सं-रुध्
(रु. उ. अ.)

—मन से, मु., सावधानं, अनन्यवृत्त्या-सर्वा-
त्मना एकाग्रचित्तेन (रु. एक) ।

तनखाद्, सं. स्त्री. (फा.) दे. 'वेतन' ।

तनना, कि. अ. (सं. तननं >) प्र-वि-तन्

(कर्म.), प्र-लं (भ्वा. आ. से.), प्रन्
(भ्वा. प. अ.), विस्त् (कर्म.) २. उच्छ्रित-
उत्तान-उन्नत (वि.) स्था (भ्वा. प. अ.)

३. कृष् (दि. प. से; तु.) ।

तनय, सं. पुं. (सं.) पुत्रः, सूनुः (पुं.),
आत्मजः ।

तनया, सं. स्त्री. (सं.) पुत्री, दुहितृ (स्त्री.),
आत्मजा ।

तनहा, वि. (फा.) एकल, एकाकिन्, अस-
हाय । कि. वि., एव, केवलम् ।

तनहाई

[२६८]

तब

तनहाई, सं. स्त्री. (फा.) विजनगर, विविकता
२. विजनं, विविकं ३. एकाकिता, असाहायता ।

तनाजा, सं. पुं. (अ.) कलहः, कलिः (पुं.)
२. वैमनस्यं, शशुता ।

तनिक, वि. (सं. तनुक) अक्षर, स्तोक, अणु ।
क्रि. वि., किञ्चित्, स्तोकं, बंधत्, मनाक्
(सब अन्य.) ।

तनी, सं. स्त्री. (हिं. तानना) बंधः, बंधनं,
बंधनी ।

तनु, सं. स्त्री. (सं.) तनुः (स्त्री.), देहः,
कायः, वपुस् (न.) २. त्वच् (स्त्री.) ३. नारो ।
वि., कृश, दुर्बल, क्षोणकाय २. अल्प, दभ्र
३. कोमल, फेलेव ४. सुंदर, उत्कृष्ट ।

—कूप, सं. पुं. (सं.) रो (लो) म, कुनः रंध्रम् ।

—धारी, वि. (सं. रिन्) देहिन्, शरीरिन्,
प्राप्तिन् ।

तनुज, सं. पुं. (सं.) पुत्रः, आत्मजः, सुतः ।

तनुजा, सं. स्त्री. (सं.) पुत्री, आत्मजा, तनया ।

तनु, सं. पुं. (सं. स्त्री.) देहः, कायः ।

—उद्भव, सं. पुं. (सं.) पुत्रः, तनुजः ।

—उद्भवा, सं. स्त्री. (सं.) पुत्री, तनुजा ।

तनूर, दे. 'तंदूर' ।

तन्मनस्क, वि. (सं.) तल्लोचन, तन्मय ।

तन्मात्रा, सं. स्त्री. (सं. तन्म्) सूक्ष्ममूलतस्वम्
(उ. शब्दः, स्वर्णः, रूपः, रसः, गंधः) ।

तन्मय, वि. (सं.) निः, मग्न, दत्तचित्त, अव-
हित, आसक्त, लीन, निरत, पर, परायण ।

तन्वी, सं. स्त्री. (सं.) तन्वीणी, कोमलांगी,
कृशांगी ।

तप, सं. पुं. [सं. तपस् (न.)] तपस्या,
तपः, मतादानं, नियमस्थितिः (स्त्री.), परि-
व्रथा, व्रतचर्या ।

—करना, क्रि. अ., तपस्वति (ना. भा.), तपः
तप् (दि. आ. आ.) या आचर (भ्वा. प. से.) ।

तप, सं. पुं. (सं.) तापः, दाहः, उष्मः,
ऊष्मन् (पुं.) २. श्रोत्रः ३. उवरः ।

तपक, सं. स्त्री. (हिं. तपकना) आकस्मिक,
प्रकंपा-स्फुरण-आकर्षः ।

तपकना, क्रि. अ. (हिं. तपकना) स्फुर (तु.
प. अ.), अकस्मात् कंप-स्फुट (भ्वा. आ. से.) ।

तपन, सं. पुं. (सं. न.) तापः, उष्मन् (पुं.),

दाहः, तपः २. सूर्यः ३. सूर्यकांतरत्नं
४. श्रोत्रः ।

तपना, क्रि. अ. (सं. तपनं) तप् (भ्वा. प.
अ.), दीप् (दि. आ. से.), उष्णी भू
२. संतपन्निष्पीड् (कर्म.), व्यथ् (भ्वा.
आ. से.) ।

तपश्चर्या, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'तप' ।

तपस्वती, सं. स्त्री. (सं.) तापसी, तपोधना
२. प्रतिव्रता ३. दीना ।

तपस्वी, सं. पुं. (सं. तपिन्) तापसः, तपोधनः,
पारि (र) काशिन्, पारिकाशकः, यतिः (पुं.)
२. दीनः, दरिद्रः ।

तपाक, सं. पुं. (फा.) आवेशः, आवेगः,
२. शीघ्रता ।

तपाना, क्रि. स., व. 'तपना' के दे. रूप ।

तपी, सं. पुं. (हिं. तप) दे. 'तपस्वी' ।

तपेदिक, सं. पुं. (फा. तप + अ. दिक्)
क्षयरोगः, राज्यक्षमन् (पुं.) ।

तपोधन, सं. पुं. (सं.) तपो, निष्ठः, निधिः, राशिः
(पुं.), तपस्विन् ।

तपोबल, सं. पुं. (सं. न.) तपस्याशक्तिः (स्त्री.) ।

तपोभूमि, सं. स्त्री. (सं.) तपस्वाराधानम् ।

तपोवन, सं. पुं. (सं. न.) तपस्वाराध्यम् ।

तप्त, वि. (सं.) उष्ण, तापित, दे. 'गरम'
२. दुःखित, पीडित, क्लेशित ।

तफरीक, सं. स्त्री. (अ.) व्यवकलनं, विवर्जनं,
उद्धारः ।

—करना क्रि. स., व्यवकल्प-विवृज्जल्न् (जु.),
उद्धृ (भ्वा. प. अ.) ।

तफरीह, सं. स्त्री. (अ.) प्रसन्नता, मोदः २.
विनोदः, परिहासः ३. भ्रमणम् ।

तफरील, सं. स्त्री. (अ.) विवरणं, विस्तारः
२. विस्तृतवर्णनं ३. टीका, व्याख्या ४. सूची ।

तब, क्रि. वि. (सं. तदा) तदानीं, तस्मिन्
काले २. ततः, तत्पश्चात्, तदनु, तदनन्तरं,
ततः परं ३. अतः, अनेन कारणेन, इति हेतुः ।

—तक, क्रि. वि., तावत्, तावद्, काल-पर्यन्तम्
—भी, क्रि. वि., तदापि २. तथापि, तदपि, एवं
सत्यपि ।

—से, क्रि. वि., ततः तदा, प्रभृति-आरभ्य ।

—ही, क्रि. वि., तदैव, तत्कालं, तत्क्षणं, द्राक् ।

तब्दील

[२६९]

तमोगुण

तब्दील, वि. (अ.) परिवर्तित, अन्यथाकृत ।
—करना, कि. स., परिवृत् (प्रे.) ।

तब्दीली, सं. स्त्री. (अ.) परिवर्तः, तमं,
परिवृत्तिः (स्त्री.), विपर्ययः २. विकारः,
विकृतिः (स्त्री.) ।

तबलची, सं. पुं. (अ. तबलः) * तबलकवादकः ।
तबला, सं. पुं. (अ. तबलः) * तबलकी (द्वि.),
वाद्यमेदः ।

तबक्षी(त्री)र, सं. पुं. (सं. तबक्षीरं) यववं,
यवकोद्भवं, पयःक्षीरं, शोधूमजं २. वंशरोचना,
स्वकक्षीरा-रो, वंशी, वैणवी ।

तबाह, वि. (फ्रा.) ध्वस्त, नष्ट, जसन्न ।

तबाही, सं. स्त्री. (फ्रा.) प्रवि, ध्वंसः, वि, नाशः ।

तबि(बी)अतः सं. स्त्री. (अ.) चित्तं, मानसं,
चेतस्-मन्स् (न.) अन्तःकरणं, हृदयं, स्वान्तं
२. प्रकृतिः (स्त्री.), स्वभावः ।

—आना, मु. सिद् (दि. प. से.), अनुरज
(कर्म.) ।

—बियाबना, मु., रुग्ण (वि.) भूः विवमिषति
(सन्नत) ।

तबीव, सं. पुं. (अ.) वैद्यः, चिकित्सकः, भिषज् (पुं.) ।

तबेला, सं. पुं. (अ.) मंदुरा, अश्वबाजि, शाला ।

तभी, कि. वि. (हिं. तब + बी) तत्क्षणं, तरकालं,
तदेव २. तेनैव कारणेन, इति हेतोः ।

—से, कि. वि., तदारभ्य, ततः प्रभृति ।

तमंचा, सं. पुं. (फ्रा.) दे. 'मिस्तौक' ।

तम, सं. पुं. [सं. तमस् (न.)] अन्धकारः,
तिमिरं, ध्वान्तं, तमिस्र-स्रा २. प्रकृतैस्तृतीयो
गुणः (साख्य) ३. क्रोधः ४. अज्ञानं, अविद्या
५. कालिमन् (पुं.), इयामता ६. मोहः
७. पापं ८. नरकः कम् ।

तमज, स्त्री. (अ.) इच्छा २. लोभः ।

तमक, सं. स्त्री. (हिं. तमकना) आवेशः,
उद्वेगः २. क्षिप्रता, दवरा ३. क्रोधः, क्रोपः ४.
द्वेषः, अभिमानः ५. (कोपादिभ्यः) अरुणा-
ननता ।

तमकना, कि. अ. (अनु.) (कोपादिभ्यः) अरुणानन-
लोहितवदन (वि.) भू २. अत्यन्तं कुप् (दि.
प. से.) ।

तमग, सं. पुं. (तु.) पदक, कीर्ति-प्रतिष्ठा, मुद्रा ।

तमधर, पुं. (सं. तमीचरः) राक्षसः, निशा-
चरः, पिशाचः २. ललकः, धूकः, कौशिकः ।

तमसुरः, चूर-चोर, सं. पुं. (सं. तामसूकः)
कुट्टः, कालशः, चरणासुधः ।

तमतमाना, कि. अ. (सं. तामं >) (कोपाल-
पादिभ्यो मुत्) अरुणी-रक्ती भू, अरुणानन-
लोहितमुक (वि.) जन् (दि. आ. से.) ।

तमतमाहृद, सं. स्त्री. (हिं. तमतमाना)
(कोपादिजा) अरुणवदनता, लोहिताननता ।

तमन्ना, सं. स्त्री. (फ्रा.) अभिलाषः, आकांक्षा ।

तमस, सं. पुं. दे. 'तम' ।

तमस्सुक, सं. पुं. (अ.) ऋणपत्रं, समयलेखः,
आधिकरणिकपत्रम् ।

तमा, सं. स्त्री. (अ. तमज) लोभः, विज्ञेहा ।

तमाकूखू, सं. पुं. (पुर्न. टबैको) ताम्रकूटः,
तमाखूः, वज्रभृंगी, कृमिघ्नी, धूमपत्रिका, क्षार-
पत्रा, सुरती ।

—पीना, कि. स., धूमं पा (स्वा. प. अ.),
धूमपानं कृ ।

तमाषा, सं. पुं. (फ्रा.) दे. 'चपत' ।

तमाम, वि. (अ.) समस्त, समग्र, सम्पूर्णं २.
समाप्त, अवसित ।

काम तमाम करना, मु., व्यापद्-म् (प्रे.) ।

तमाल, सं. पुं. (सं.) कालस्कन्धः, काल-नील-
तालः, महाबलः ।

तमाशबीन, सं. पुं. (अ. तमाशः + फ्रा बीन)
दर्शकः, प्रेक्षकः २. मार्श-समीप-स्थः ३. सामा-
जिकः, पारिषदः ४. वेदयामामिन् ।

तमाशाबीनी, सं. स्त्री. (अ. + फ्रा.) वैश्या-
गामिस्त्वम् ।

तमाशा, सं. पुं. (अ.) नाटकं २. रूपकं,
कौतुकं, चमत्कारः, इत्यं ३. अद्भुत-विलक्षण-
व्यापारः ।

—करना, कि. स., नट्-निरूप-प्रयुज् (जु.),
अभिनो (स्वा. प. अ.) ।

—करनेवाला, सं. पुं., नटः, अभिनेतृ (पुं.) ।

—गाह, सं. स्त्री., रंग-शाला-भूमिः (स्त्री.),
नाटकगृहम् ।

तमाशाई, दे. 'तमाशबीन' ।

तमीज, सं. स्त्री. (अ.) विवेकः, परिच्छेदः,
विवेचनशक्तिः (स्त्री.) २. ज्ञानं, बोधः
३. सभ्यता, शिक्षाचारः, विनयः ।

तमोगुण, सं. पुं. (सं.) प्रकृतैस्तृतीयः (अथमः)
गुणः ।

तमोगुणी

[२७०]

तरसना

तमोगुणी, वि. (सं. गिन्) अधमवृत्तिक, तमो-
गुणप्रधान ।

तमोही, सं. पुं. दे. 'तमोली' ।

तय, वि. (अ.) समाप्त, अवसित २. निश्चित,
नियत ३. निर्णयन ।

तरंग, सं. स्त्री. (सं. पुं.) मंगः, भंगो-गिः (स्त्री.)
श्रीचो-चिः (स्त्री.), ऊर्मो-मिः (स्त्री.), लहरी-
रिः (स्त्री.) कलोलः, जललता, उल्कलिका
२. स्वरलहरी, ३. गानसलहरी, चित्ततरंगः,
छन्दः, छन्दस् (न.) ।

तरंगित, वि. (सं.) कलोलमय [यो (स्त्री.)],
नतोन्नत-भंगिमय [तो (स्त्री.)] ।

तरंगी, वि. सं.—गिन्) सभंग, कर्मिमय,
कलोलवय २. स्वर, स्वरिन्, कामचारिन्,
स्वच्छन्द ।

तर, वि. (प्रा.) आर्द्र, क्लिन्न २. शीतल ३.
हरित, तरस ४. दिनग्ध, चिह्नण ५. समृद्ध,
धनाढ्य ।

तरकश, सं. पुं. (प्रा.) श्पुधिः (पुं.), निधंगः,
तूणीद-रम् ।

तरकारी, सं. स्त्री. (प्रा. तरः=शाक) शाक-कं,
शिमुः (पुं.), हरितकं २. पकशाकः-कं, व्यञ्जनं
३. मांसम् (पञ्चाङ्ग) ।

तरकी, सं. स्त्री. [सं. तादं(टं)कः] कर्ण-दर्पण-
सुकुरः, कर्णिका, कर्णभूषणभेदः ।

तरकीब, सं. स्त्री. (अ.) युक्तिः (स्त्री.),
उपायः, प्रयोगः २. रचनाप्रणाली, निर्माण-
विधिः (पुं.) ।

तरङ्गी, सं. स्त्री. (अ.) उन्नतिः-वृद्धिः (स्त्री.) ।
तरखान, सं. पुं. (सं. तक्षन्) वर्द्धकिनः-किन्
तक्षकः, त्वष्ट, छादः ।

तरशीघ, सं. स्त्री. (अ.) प्रेरणा, उत्तेजना,
प्रोत्साहनम् ।

—देना, कि. स., प्रेर-प्रोत्सद् उत्तिज् प्रवृत् (प्रे.) ।

तरजीह, स्त्री. (अ.) अधिमानः, अधिक-रुचिः
(स्त्री.)-अनुरागः-मानं, वृत्तिः (स्त्री.) वरता ।

तरजुमा, सं. पुं. (अ.) दे. 'अनुवाद' ।

तरजुमान, सं. पुं. (अ.) अनुवादकः, भाषा-
न्तरकारः ।

तरण, सं. पुं. (सं. न.) पारगमनं, प्लवचपूर्वक-
देशान्तरगमनं, सन्तरणम् ।

तरणि, सं. स्त्री. (सं.) तरणी, नौका । सं. पुं.,
सूर्यः २. किरणः ।

—तनुजा, सं. स्त्री. (सं.) यमुजा ।

तरणी, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'नाव' ।

तरतीथ, सं. स्त्री. (अ.) अनु-क्रमः, दिग्गमः,
व्यवस्था, यथास्थानं स्थितिः (स्त्री.) ।

—वार, कि. वि., यथाक्रमं, क्रमशः, क्रमेण ।

तरदीद, सं. स्त्री. (अ.) प्रत्याख्यानं, खण्डनं,
निरासः, निराकरणम् ।

तरना, कि. स. (सं. तरणे) दे. 'तैरना' (२.),
भोक्ष-मुक्ति-निःश्रेयसं अधिगम् ।

तरक, सं. स्त्री. (अ.) दिग् (स्त्री.), दिशा,
आज्ञा, काष्ठा, ककुभ्-धरिण (स्त्री.) २. पार्श्व-
दर्थ, पक्षः । कि. वि., अभि, प्रति, अभिमुखं,
उद्दिश्य, दिशि, दिशायाम् ।

—दार, सं. पुं., पक्षपातिन्, पक्ष्यः, पक्षीयः,
पार्श्वं (शिव) कः ।

—दारी, सं. स्त्री., पक्ष-पातः-अवलम्बनं-ग्रहणम् ।

—दारी करना, कि. स., पक्षं अवलम्ब (स्वा.
आ. से.)-ग्रह (क्. प. से.) ।

दोनो—कि. वि., उभयतः, उभयत्र ।

सव—या चारो—, कि., वि., समन्तात्,
समन्ततः, चतुर्दिक्षु, सर्वत्र, विश्वतः, परितः,
अभितः ।

तरफैन, सं. पुं. (अ.) उभौ पक्षौ, अर्धप्रत्ययिनौ ।

तरबुज, सं. पुं. (सं. तरबुजं । मि. प्रा. तर्बुजं)
कालिं, गोडुबंधं, सेट्ट, (न.), मांसफलम् ।

तरमीम, सं. स्त्री. (अ.) संशोधनं, विशुद्धिः
(स्त्री.) ।

तरल, वि. (सं.) चंचल, कम्प, कंपन २.
अनित्य, क्षणिक ३. द्रव, प्रवाहिन् ४. भासुर,
भास्वर ।

तरला, सं. स्त्री. (सं.) यवागूः, आगा, अधिका
२. सुरा ३. मधुमक्षिका ।

तरवन, सं. पुं., दे. 'तरकी' २. दे. 'कण्डूल' ।

तरवर, सं. पुं. (सं. तरवरः) महावृक्षः २.
पादपः ।

तरस, सं. पुं. (सं. त्रसः >) हृषा, अनुकम्पा,
करुणा ।

—खाना, कि. स., द्यू (स्वा. आ. से. ; पक्षी के
साथ), अनुकम्प (स्वा. आ. से.), दर्थां कृ
(सप्तमी के साथ) ।

तरसना, कि. अ. (सं. तर्षणं) तृष् (दि. प.

से, अत्यन्तं अमिलम् (भ्वा. दि. प. से.)-
र्यूष् (चु., चतुर्थी के साथ)-कांक्ष-वांष् (दोनों
भ्वा. प. से.), लब्ध् आकुलीभू ।

तरसाना, कि. स., व. 'तरसाना' के प्रे. रूप ।
तरसौ, कि. वि. (सं. तृतीय + द्वम्) तृतीयो
गत आगामी वा विवसः; इतररवः (अव्य.) ।
तरह, सं. स्त्री. (अ.) जातिः (स्त्री.), प्रकारः,
भेदः, विधा (समासांत में) २. रचनाप्रकारः,
घटनं इ. शैली, रीतिः (स्त्री.) प्रणाली ४.
वृत्तिः (स्त्री.), उपायः ५. वत्-इव तुल्य, उपम ।
अच्छो—, कि. वि., सम्यक्, साधु, सुदु (सब
व्य.), सु-समासादि में ।

इत—, कि. वि., इत्थं. एवं, अनया रीत्या ।

उस—, कि. वि., तथा, तथा रीत्या ।

किस—, कि. वि., कथं, केन प्रकारेण ।

जिस—, कि. वि., यथा, येन प्रकारेण ।

हुरी—, कि. वि., कु-दुर, असम्यक् इ. ।

इर—, कि. वि.- सर्वथा, सर्वप्रकारेण ।

—वेना, सु. उपेक्ष-श्चम् (भ्वा. आ. से.) ।

तराई, सं. स्त्री. (सं. तलं >) उपत्यका, पर्व-
तासन्नभूः (स्त्री.) ।

तराङ्ग, सं. पुं. स्त्री. (फा.) तुला, मापनः,
धटः, तुलायंत्रं, तौलम् ।

—की रस्सी, सं. स्त्री., शिन्ध्या ।

तराबोर, वि. (फ्रा. तर + हि. बोरना) अति-
सिक्त-शिल्ल ।

तरावट, सं. स्त्री. (फ्रा. तर) आर्द्रता,
शिल्लता २. शीतलता ३. कलातिहरः पदार्थः
४. स्निग्धभोजनम् ।

तराशाना, कि. स. (फा.) दे. 'काटना',
'कहरना' ।

तरी, सं. स्त्री. (सं.) तरिः (स्त्री.), नौका ।

तरी, सं. स्त्री. (फ्रा.) आर्द्रता, शिल्लता
२. शीतलता इ. उपत्यका ४. कच्छ-च्छम् ।

तरीका, सं. पुं. (अ.) रीतिः (स्त्री.), प्रकारः,
शैली २. आचारः, व्यवहारः, अनुसारः
इ. उपायः, वृत्तिः (स्त्री.) ।

तरु, सं. पुं. (सं.) पादपः, टुपः, दे. 'बृक्ष' ।

तरुण, वि. तथा सं. पुं. (सं.) युवकः, दे.
'जवान' ।

तरुणाई, सं. स्त्री. (सं. तरुण >) यौवनम्,
दे. 'भवानी' ।

तरुणी, वि. स्त्री. तथा सं. स्त्री. (सं.) युवतिः
(स्त्री.) दे. 'युवती' ।

तरेरना, कि. स., (सं. तिर्यक् + हि. हेरना)
निर्यक्-वक्र-साक्षि (सब अव्य०) ह्यु (भ्वा.
प. अ.) २. तर्जनवर्जनार्थं वक्रं ईक्षु (भ्वा.
आ. से.)

नरोई, सं. स्त्री., दे. 'तुरई' ।

तरौना, सं. पुं., दे. 'तरकी' २. दे. 'कर्णफूल'
तर्क, सं. पुं. (सं.) हेतुः (पुं.), युक्ति-
उपपत्तिः (स्त्री.) २. आन्वीक्षिका, न्यायः,
छद्वापोहः इ. विदग्धोक्तिः (स्त्री.) ४. व्यंग्यम् ।

—वितर्क, सं. पुं. (सं.) वाशविवादः, वाद-
प्रतिवादः, हेतुवादः २. संशयः, संदेहः,
विकल्पः, आ परि-वि-शंका ।

—विद्या, सं. स्त्री. (सं.) तर्क-न्याय-शास्त्र-
विद्या, तर्कः, न्यायः ।

तर्क, सं. पुं. (अ.) त्यागः, विसर्जनम् ।

तर्कश, सं. पुं., दे. 'तरकश' ।

तर्ज, सं. स्त्री. (अ.) रीतिः (स्त्री.), शैली,
प्रकारः २. रचनाप्रकारः, घटनम् ।

तर्जन, सं. पुं. (सं. न.) तर्जना, भयपदर्शनं,
भर्त्सनम्, दे. 'हाँटहपट' ।

तर्जना, कि. स. (सं. तर्जनं) दे. 'हाँटना' ।

तर्जनी, सं. स्त्री. (सं.) प्रदेशिनी, अंगुष्ठ-
समीपांगुली ।

सर्पण, सं. पुं. (सं. न.) वृत्तिः (स्त्री.),
प्राणनं, संतापणं २. पित्राविन्द्यो जलदानं
(धर्म.) ।

सल, सं. पुं. (सं. पुं. न.) मूलं, अधोभागः,
२. बुध्नः, उपष्टम्भः ३. पाद-चरण, तलं
४. करतलः-लं, प्रहस्तः । ४. चपेटः, चपेटः
नरक-पाताल, विशेषः ।

तलक, अव्य., दे. 'तक' ।

तलप, वि. (फ्रा.) कट्ट, कट्टक २. अप्रिय,
अनिष्ट ।

तलछट, सं. स्त्री. (सं. तलं + हि. छटना)
तलमलं, किल्लं, किट्टं, खलं, मलः-लं, शेषः-धं,
उच्छिष्टं, अव-सं, करः, असारः ।

सलना, कि. सं. (सं. तलनं), (घृततैलादिषु)
भ्रज् (तु. उ. अ. भृजति, चु. भर्जयति)-
पच् (भ्वा. प. अ.)-भृज् (भ्वा. आ. से.,
भर्जते), तल् (भ्वा. प. से., पाकराजेत्वर) ।

तलफना

[२७२]

तसलीम

सं. पुं., (घृतादिपु) भर्जन-पचनम् ।

तला हुआ, वि., भ्रष्ट, मजिठ, घृतपक इ. ।

तलफना, कि. अ., दे. 'तदपना' ।

तलफनी, सं. स्त्री. (फ़ा.) ध्वंसः, विनाशः २. क्षतिः-हानिः (स्त्री.) ।

तलफ़फ़ुज, सं. पुं. (अ.) उच्चारणम्, याषण-विधिः (पुं.) ।

तलब, सं. स्त्री. (अ.) वेतनं, धृतिः (स्त्री.)

२. आकारणं, आह्वानं इ. लिप्ता ।

तलबगार, वि. (फ़ा.) इच्छुक २. प्रार्थिव् ।

तलबाना, सं. पुं. (फ़ा.) *आकारण-आह्वान-शुल्कः-कं २. साक्ष्यशुल्कः-कम् ।

तलबी, सं. स्त्री. (अ.) आकारण-या, आह्वानम् ।

तलवा, सं. पुं. (पुं. तलः-लं) खण-पादः, तलम् ।

—घाटना,

—तले हाथ रखना, सु, दे. 'खुशामद करना'

—सहलाना,

—तलवार, सं. स्त्री. [सं. तरवारिः (पुं.)]

खड्गः, अस्त्रिः निखिः, चंद्रहासः, कौशिकः, करवा(पाशः), कृपाण-णी, ऋ (रि) द्वि. (पुं.), श्रीगर्भः, विजयः, दुरासदः, धर्मपालः ।

—स्त्रीषना, कि. स., असि कोशात् उद्ध-निकृष् (म्वा. प. अ.) ।

—चलाना, कि. स., खड्गं चल् (प्रे.), असिना ग्रह् (म्वा. प. अ.) ।

—चलानेवाला, सं. पुं., आसिकः, खड्गधरः, खट्गिन् ।

तला, सं. पुं. (सं. तलः-लं) अधोभागः, बुध्नः २. उपानसलम् ।

तलाक, सं. पुं. (अ.) विवाह-दांपत्य-उच्छेदः-चिराकरणं, त्यागः ।

तलाशा, सं. स्त्री. (तु.) अन्वेषणं, मार्गणम् ।

तलाशी, सं. स्त्री. (फ़ा.) देह-गेह-परिच्छेदः, अन्वेषणा-निरिक्षा ।

—लेना, कि. स., देह-गेह-परिच्छेदं कन्विष् (दि. प. से.)-निरूप् (चु.)-निरिक्ष् (म्वा. आ. से.) ।

तली, सं. स्त्री., दे. 'तल' तथा 'तला' ।

तलुआ, सं. पुं., दे. 'तलवा' ।

तले, कि. वि. (सं. तलं >) अधः, अधस्तात्, नीचैः (सब अन्य.) ।

—ऊपर या ऊपर तले, कि. वि., अन्योन्यस्व

अधः, अधस्तात्, उपरि, उपरिष्ठात् वा २. अक्रमं, विपर्यस्तं, संकीर्णं, अयवस्थितम् ।

तलैया, सं. स्त्री. (हिं. ताल) सुद-लघुः, तडगा-कासारः-सरस् (न.),

तद्व्य, सं. पुं. (सं. पुं. न.) आस्तरः, आस्तरणम् *विस्तरः २. पत्नी, भावा ।

—कीट, सं. पुं. (सं.) ओकणः, मत्स्यः, उर्दशः ।

—ज, सं. पुं. (सं.) नियोगः, पुत्रः-सुतः, क्षेत्रजः ।

तल्ला, सं. पुं. (सं. तलः-लम्) उपानसलम् । २. दे. 'मंजिल' ।

तलवर्ग, सं. पुं. (सं.) तकारादिवर्णपंचकम् ।

तवा, सं. पुं. (हिं. तवना) तपकम् ।

तवाजा, सं. स्त्री. (अ.) सत्-कारः-कृतिः (स्त्री.)-क्रिया, अतिथिः, सेवा-सत्कारः, आतिथ्यं २. निमंत्रणम् ।

तवारीख, सं. स्त्री. (अ., तारीख का बहु.) दे. 'इतिहास' ।

तवी, सं. स्त्री. (हिं. तवा) ऋचो(जी)षम् ।

तवाखीस, सं. स्त्री. (अ.) रोग-निर्णयः-निदानम् ।

तवारीक, सं. स्त्री. (अ.) महत्त्वं, गुरुत्वं, प्रतिष्ठा ।

—रखना, मु. उपविष् (तु. प. अ.), विराज् (म्वा. आ. से.)

—लाना, मु., आगम्, आया (अ. प. अ.) ।

—ले जाना, मु., प्रस्था (म्वा. आ. अ.), प्रया (उक्त दोनों मुहावरों में आदरार्थे बहुवचन का प्रयोग करना चाहिए । घ. आप तयारीक रखिए = उपविशन्तु श्रीमंतः इ.) ।

तहतरी, सं. स्त्री. (फ़ा.) शराविका, *स्थालकम् ।

तसकीन, सं. स्त्री. (अ.) आ-समा, श्वासः-श्वासनं, धैर्यम् ।

तसदीक, सं. स्त्री. (अ.) सत्यापनं, सत्याकारः ।

—करना, कि. स., सत्यापयति (ना. धा.), प्रमाणी कृ ।

तसबीह, सं. स्त्री. (अ.) जपमाला, माला ।

तसमा, सं. पुं. (फ़ा.) चर्म, पट्टः-बंधः, बन्धी, नधी २. उपानसबंधः ।

तसला, सं. पुं. (फ़ा. तत्त) ऋचोकम् ।

तसलीम, सं. स्त्री. (अ.) नमस्ते, नमस्कारः, प्रामाणः २. अम्युपगमः, अंगी-स्वी. कारः ।

तसल्ली, सं. स्त्री. (अ.) सात्वता, अथासन
२. आति: (स्त्री.), धैर्यम् ।
तसवीर, सं. स्त्री. (अ.) चित्रं, आकल्प्यम् ।
तस्कर, सं. पुं. (सं.) नीतः २. दम्पुः ।
तस्म, सं. पुं. (सं. विशुक्तः) पञ्चाङ्गुलमन्त्रम् ।
तह, सं. स्त्री. (का.) तलं, अपस्मलं, अधोभागः,
मूलं २. बुध्नः, उपर्यधः ३. तलं, पृष्ठं, पृष्ठभागः
४. स्तरः ५. व्यावृत्तिः (स्त्री.), व्यावर्तनं,
पुटः-दं, भंगः ६. तस्वं, सारः ।
—करना, क्रि. स. पुटयति (ना. धा.),
व्यावृत् (प्रे.), गुणी-पुटो कृ ।
—तक पहुँचना, मु., तस्वं अकर्म, रहस्यं
विद् (अ. प. से.) ।
तहक्रीकान्त, सं. स्त्री. (अ. तहक्रीक का बहु.)
अनुसंधानं, अन्वेषणं, गवेषणाः ।
तहखाना, सं. पुं. (फा.) भूमिगृहं, तल्लगृहं,
गुप्तिः (स्त्री.), आंतर्भूमिकोष्ठः ।
तहज़ीब, सं. स्त्री. (अ.) सम्यता, शिष्टाचारः ।
तहमत, सं. स्त्री. (फा. तहबंद) *पुटबंधः,
*धौतिका ।
तहरीर, सं. स्त्री. (अ.) लेखः, लिखितं
२. लेखशीली ३. नि-प्र-बंधः ४. प्रमाणपत्रम् ।
तहलका, सं. पुं. (अ.) दे. 'खलकाशी' ।
तहस-तहस, वि. (देश.) वि. नष्ट-प्रवि-ध्वस्त ।
तहसील, सं. स्त्री. (अ.) करोग्राहः, राज-
स्वसंग्रहः, समाहरणं २. राक्षसं, आयः
आगमः, उदयः ३. उपमंडलं ४. उपमंडल-
श्वरकार्यालयः ।
—दार, सं. पुं., उपमंडलेशः-श्वरः ।
—दारी, सं. स्त्री. उपमंडलेश्वर, कार्य-पदम् ।
नायब तहसीलदार, सं. पुं. (फा. + अ. + फा.)
उपमंडलेश्वरसहायकः ।
तहाँ, क्रि. वि. (सं. तहः) तत्र, तस्मिन्
स्थाने, तस्थाने ।
ताँगा, सं. पुं., दे. 'तंगा' ।
ताँड्य, सं. पुं. (सं. न.) पुरुषनृत्यं २. उद्धत-
नृत्यं ३. शिवनृत्यं ४. नृगभेदः ।
ताँत, सं. स्त्री. (सं. नंतुः) आंत्र-मुत्र-गुणः
२. मौर्वी, प्रत्यय्या, धनुर्गुणः ३. नत्रं, गुणः
४. वीणातंत्र-त्री ।
ताँता, सं. पुं. [सं. तति: (स्त्री.)] पक्तिः
(स्त्री.), श्रेणी-णि: (स्त्री.) ।

ताँती, सं. स्त्री. (हिं ताँता) आवली-लि: (स्त्री.);
पक्ति: (स्त्री.) २. संसति: (स्त्री.) ।
ताँती, सं. पुं. (हि. ताँत) तंतुबंधः-पः,
पटकारः ।
ताँत्रिक, सं. पुं. (सं.) तंत्रशास्त्रविद् (पुं.),
२. मोहिन्, दुहककारः । वि. तंत्रसंबन्धिन् ।
ताँबा, सं. पुं. (सं. ताग्रं) ताग्रकं, म्लेच्छमुखं,
रत्नि-लोह-मिश्रं, सुनिषित्तलं, लोहितान्वयम् ।
ताँबूल, सं. पुं. (सं. न.) पर्णं, नागवल्लीदलं,
दे. 'पान' २. पर्णवीटी-टिका-दि: (स्त्री.) ३.
पुगं, पुगकलम् ।
ताँही, सं. स्त्री. (हिं. ताया) ज्येष्ठपितृव्या ।
ताँही, सं. स्त्री., दे. 'तवी' ।
ताँइ, सं. स्त्री. (अ.) समर्थनं, अनुमोदनं,
पुष्टि: (स्त्री.), दृढी-करण-कारः, उपोद्बलनम् ।
ताऊ, सं. पुं., दे. 'ताथा' ।
बडिया के ताऊ, मु., बलीवर्दः २. भूर्खः ।
ताऊन, सं. पुं. (अ.) दे. 'प्लेग' ।
ताऊस, सं. पुं. (अ.) मयूरः शिखंडिन् २.
मयूरकारो वाचभेदः ।
तस्त ताऊस, सं. पुं., मयूरासनं २. शाहजहा-
नस्य मयूरसिंहासनम् ।
ताकी, सं. पुं. (अ.) कुट्टयविवरं, भित्तिगतः-
तै, आलयः २. कुट्टय-कलकः-कं ३. असम-
विषम-संख्या-अंकः । वि. अनुपम, अद्वितीयः
निपुणः ।
—जुस्त, सं. पुं. (अ. + फा.) समविषमकोटा,
चतुर्भेदः ।
—पर रखना, मु., परित्यज् (भ्वा. प. अ.),
उज्ज (तु. प. से.) ।
ताकै, सं. स्त्री. (हिं. ताकना) अवलोकनं,
ईक्षणं, दर्शनम् २. अनिमिषदृष्टि: (स्त्री.)
३. अवसरप्रतीक्षा ४. अन्वेषणम् ।
—झाँक, सं. स्त्री., असकुदबलोकनं २. निभृतं
वीक्षणं ३. निरीक्षणं ४. अन्वेषणम् ।
ताकत, सं. स्त्री. (अ.) बलं, शक्ति: (स्त्री.) ।
—वर, वि. (अ. + फा.) बलवत्, शक्तिमतः ।
ताकना, क्रि. स. (सं. तकीण) अनिमिषे
वं इत्थं (भ्वा. प. अ.) अवलोक (लृ.) २.
निभृतं (शिद्देण) ईक्ष (भ्वा. आ. से.) २.
अव-निर, ईक्ष् ४. हेतुं निभृतं स्था (भ्वा.
प. अ.) ।

ताकि, अव्य. (फा.) तथा... यथा, यथा ।
 ताकीद, सं. स्त्री. (अ.) प्रबलानुरोधः, वृद्धा-
 देशः, पुनः स्मारणम् ।
 —करना, क्रि. स., मानुरोधं आदिश् (तु. प. अ.), पुनः-दृढं स्यु (प्रे.) ।
 ताग-गा, सं. पुं. (सं. ताकव >) वंतुः (पुं.),
 डोरः, गुणः, शुल्बम् ।
 तागही, सं. स्त्री., दे. 'करधनी' ।
 ताज, सं. पुं. (अ.) राज-म (मु) कुटं,
 किरोटः-यम् ।
 —पोशी, सं. स्त्री. (अ. + फा.) राज्याभिषेकः,
 मुकुटपरिधापनम् ।
 ताजगी, सं. स्त्री. (फा.) हरितत्वं २. प्रफुल्लता
 ३. नवीनता ।
 ताजा, वि. (फा.) हरित, सरस, २. नव,
 नूतन, प्रत्यग्र ३. श्रान्तिशून्य, सञ्ज ।
 मोटा—, वि., वृद्धांग, बलिष्ठ, सबल ।
 ताज्जियाना, सं. पुं. (फा.) अश्वताडनी, कशा-
 वा, प्रतोदः ।
 ताज़ी, सं. पुं. (फा.) *अरवाक्षः २. मृगया-
 कुक्कुरः, विश्वकदुः (पुं.) । वि., अरवदेशीय ।
 ताज़ीम, सं. स्त्री. (अ.) सत्कारः संमानना ।
 ताज़ीर, सं. स्त्री. (अ.) दंडः, अर्धदंडः, निग्रहः ।
 ताज़ीरस्ते-हिंदू, सं. स्त्री., भारतीयदण्डसंहिता ।
 ताज्जुव, सं. पुं., (अ. तअज्जुव) आश्रयः,
 विस्मायः ।
 ताड, सं. पुं. (सं. तालः) दीर्घस्कन्धः, ध्वज-
 द्रुमः, तरुराजः, महोन्नतः, लेख्यपत्रः २.
 ताडनं, प्रहारः ३. महा-रवः-ध्वनिः (पुं.) ।
 ताडका, सं. स्त्री. (सं.) राक्षसीविशेषः, सुके-
 तुकन्या ।
 ताडव, सं. पुं. (सं. न.) प्रहरणं, आहननं,
 आघातः, प्रहारः २. तर्जनं ३. दण्डः, शासनं
 ४. गुणनम् ।
 ताडना, क्रि. स. (सं. ताडनं) तड् (चु.),
 अभिहन् (अ. प. अ.), आहन् (अ. प. अ.),
 तुद (तु. उ. अ.), प्रह् (भ्वा. प. अ.),
 २. दंड (चु.), शास् (अ. प. से.) ३. तर्ज-
 निर्भसं (चु. आ. से.) । सं. स्त्री., दे.
 'ताडन' (१-३) ।
 ताडने योग्य, वि., ताडनीय, आहन्तव्य, दंड्य,
 तर्जनीय इ. ।

ताडनेवाला, सं. स्त्री., ताडकः, दंडयित्तुः तर्जकः ।
 ताडा दुआ, वि., ताडित, अभिहत, दंडित, तर्जित ।
 ताडना, क्रि. स. (सं. तर्कणं) तर्क् (चु.),
 अनु-भा (लु. आ. अ.), अह् (भ्वा. आ. से.) ।
 ताडी, सं. स्त्री. (सं. ताली) तालकी, ताल-
 रसः-आसवः-मद्यं, तारिका ।
 तात, सं. पुं. (सं.) शित् (पुं.), जनकः २.
 पूज्यः, गुरुः (पुं.) ३. (प्रायः छोटों के लिए
 संबोधन में) बत्स, पिय, अंग ।
 तातार, सं. पुं. (फा.) दे. 'तूरान' ।
 तातील, सं. स्त्री. (अ.) अक्काशः, अनध्याय-
 विश्राम, दिवसः ।
 तात्कालिक, वि. (सं.) तत्कालभव २. सम-
 कालीन, यौगपदिक ।
 तात्त्विक, वि. (सं.) वास्तविक, गुणार्थ,
 परमार्थ ।
 तात्पर्य, सं. पुं. (सं. न.) अर्थः, आशयः
 अभिप्रायः, भावः २. तत्परता, तत्परायणता ।
 तादात्म्य, सं. पुं. (सं. न.) अभेदः, अभिज्ञता,
 सायुज्यम्, तद्रूपता ।
 तादाद्, सं. स्त्री. (अ. तअदाद्) संख्या, गणना ।
 तादृश, वि. (सं.) तादृक्ष, तद्, सदृश-तुल्य-
 समान, तथाविध ।
 तान, सं. स्त्री. (सं.) गानांगविशेषः, आलापः,
 लयवितारः २. विस्तृतिः-ततिः (स्त्री.),
 विस्तारः ।
 —पूरा, सं. पुं. (सं. तुंवरं) *तानपूरः, वीणाभेदः ।
 तानना, क्रि. स. (सं. तननं) प्र-वि-तन् (त.
 उ. से.), आवम् (भ्वा. प. अ.) *दीर्घ कृ.
 विस्तृ-विस्तृ (प्रे.) लब्-प्रसृ (प्रे.) ।
 तानकर, मु., बलेन, पूर्णशक्त्या ।
 तानकर सोना, मु., निश्चिन्त स्वप (अ. प. अ.) ।
 ताना, सं. पुं. (हिं. तानमा) तान्त्वम्, अन्वा-
 नाहर्तव्यः (पुं. बहु.) ।
 —बाना, अन्वनाहर्तव्यकंतवः (पुं. बहु.),
 तान्तवौतु (पुं. द्वि.) ।
 ताना, सं. पुं. (अ.) न्यग्य-वक्र-लेक-भंगि-
 वन्धन-वाध-उक्तिः (स्त्री.), कटाक्षश्लेषः ।
 ताना, क्रि. स. (सं. तापनं) दे. 'तपाना' ।
 —मारना, क्रि. स., भयान्वाच्यंभेन आक्षिप्य
 (तु. प. अ.), वक्रोक्तया-कटाक्षेण जन्यस
 (दि. प. से.)-व्याह (भ्वा. प. अ.) ।

तानाशाह

[२७५]

तारपीन

तानाशाह, सं. पुं. (हि+का.) एक-अधिपति-शासकः, अधिनायकः ।

तानाशाही, सं. स्त्री. अधिनायकत्वम्, ऐकाधिपत्यम् ।

ताप, सं. पुं. (सं.) उ(ऊ)ष्णम् (पुं.), उष्णता, उष्मः, उद्-परि-सं-तापः, दाहः २, ऊवरः ३. दुःखं, कष्टं ४. वेदना, मानसक्लेशः ।

—तिल्ली, सं. स्त्री., प्लीहाभिवृद्धिः (स्त्री.), प्लीहोदरम् ।

तापना, कि. अ. (सं. तापनं) पावकं-सूर्यातपं आ-नि-सेव् (भ्वा. आ. से.) । कि. स., दे. 'तपाना' ।

तापमान, सं. पुं. (सं. न.) ऊष्ममानम् ।

—र्यत्र, सं. पुं. (सं. न.) १-२. ताप-ज्वरः, मापकम् ।

तापस्, सं. पुं. (सं.) दे. 'तपस्वी' ।

ताब, सं. स्त्री. (फा. । मि. सं. तापः) कष्मः, उष्णता २. वीसिः (स्त्री.), आभा ३. सामर्थ्यं, साहसम् ।

ताबइत्रोक्, कि. वि. (अनु.) अनवरतं, अविश्रान्तं, सततं, अनवच्छिन्नम् ।

ताबूत, सं. पुं. (अ.) शव-वेदकः-संपुटः ।

ताबे, वि. (अ.) अधीन, वशवतिम् ।

ताबेदार, वि. (अ.+फा.) आज्ञा-पालकः-कारिन् ।

तामजान, सं. पुं. (हि. धामनः+सं. यानं) शिविकाभेदः ।

तामरस, सं. पुं. (सं. न.) रकोत्पलं, क्रीकनयं, २. सुवर्णं ३. ताम्रम् ।

तामस, वि. (सं.) तमोगुणिन्, तमोगुणयुक्त २. काल, कृष्ण ३. अज्ञ ४. दुष्ट । सं. पुं., तर्पः २. उलूकः ३. क्रोधः ४. अंधकारः ।

तामसिक, वि. दे. 'तामस' वि. ।

तामिल, सं. स्त्री. (देश.) द्रविडजातिभेदः २. भाषाविशेषः ।

तामिख, सं. पुं. (सं.) तरकविशेषः २. कृष्ण-पक्षः ३. क्रोधः ४. द्वेषः ।

तामील, सं. स्त्री. (अ.) अज्ञापालनं २. निष्पत्तिः-सिद्धिः (स्त्री.) ।

ताम्र, सं. पुं. (सं. न.) ताम्रकं, मुनिपित्तलम् ।

—कार, सं. पुं. (सं.) ताम्र-कुट्टः-उपनीविन् ।

—चूड, सं. पुं. (सं.) कुक्कुटः ।

—पत्र, सं. पुं. (सं. न.) ताम्रपट्टः-कुं २. ताम्रफलकः-कम् ।

ताया, सं. पुं. (सं. तातः>) ज्येष्ठः-तातः, ज्येष्ठ-पितृव्यः, पितृग्रजः ।

तार, सं. पुं. (सं. न.) रूपं, रजतं २. तारः, धातु-तंतुः- (पु.)-यत्रं ३. तद्वि-विद्युत्, संदेशः-वाता ४. सूत्रं, युगः, तंतुः (पुं.)

५. सततक्रमः, परंपरा ६. नक्षत्रं, तारा, ग्रहः ७. सप्तकमेदः (संगीत) । वि., उच्च, महत् (ध्वनिं आदि) २. भासुर ३. निर्मल, स्वच्छ ।

—देना, कि. स., विद्युत्संदेशं प्रेष् (प्रे.)-प्रहि (स्वा. प. अ.) ।

—कश, सं. पुं. (हि+का.) तारकर्षः-धकः ।

—घर, सं. पुं., तारगृहम् ।

—तार, वि., जीर्णं, विदीर्णं ।

—बर्की, सं. स्त्री., तद्वि-विद्युत्, तारः ।

—तार करना, मु., (वस्त्रादिकं) तन्तुशः विष्ट (प्रे.)-खंड् (चु.) ।

—टुटना, मु., क्रमः-परम्परा जुट् (दि. प. से.) ।

—बाधना, मु., निरन्तरं विधा(जु.उ.अ.)-कृ ।

तारक, सं. पुं. (सं.) तारः-रं-रा, अं., नक्षत्रं २. नेत्रं ३. कनीनिका, नयनतारा ४. मोचकः, मुक्तिदः ५. कर्णधारः ।

तारका, सं. स्त्री. (सं.) नक्षत्रं, उडुः २. कनीनिका, विविनी ३. बालिपत्नी ।

तारकेश्वर, सं. पुं. (सं.) शिवः, महेशः ।

तारकोल, सं. पुं. (अं. कोलशर दे.)

तारण, सं. पुं. (सं. न.) पारनयनं, उत्तारणं, संतारणं २. मोचनं, उद्धारणं, निस्तारणम् । सं. पुं., तारकः उद्धारकः, भवभवमोचकः २. विष्णुः ।

तारतम्य, सं. पुं. (सं. न.) न्यूनधिकता, उत्कर्षापकर्षौ २. अन्तरं, भेदः ।

तारना, कि. स. (हि तरना) पारं नी (भ्वा. प. अ.), उद्-सं-त् (प्रे.) उद्-लंश् (प्रे.)

२. मोक्षं (चु.), निस्तृ (प्रे.), उद्-हृ-श् (भ्वा. प. अ.), (पपिभ्यः, भवभयात्) मुन् (प्रे.) ।

तारनेत्राला, सं. पुं., मोक्षकः, मोचकः, निस्तारकः, उद्धारकः, मुक्तिदः ।

तारपीन, सं. पुं. (अं. टारपैटाइनं) सरल-नीरपर्णं, तैलं, सरलं, रजः-रसः-स्यन्दः, शीतलः, श्री, वासः-वैद्यः ।

तारक्य, सं. पुं. (सं. न.) तरलत्वं, तरलता, द्रवत्वं, प्रवहिता २. कामुकता, लपटता, कामान्धता ।

तारा, सं. पुं. (सं. स्त्री.) तारः, तारिका, उडुः (पुं.), नक्षत्रं, ऋक्षं, भं, ज्योतिष् (न.) २. कनीकिका, त्रिजिनी ३. भाग्यं, नियतिः (स्त्री.) । सं. स्त्री., बालिपत्नी २. बृहस्पति-भार्या ।

—टूटना, कि. अ., नक्षत्र-उल्का पत् (स्त्री. प. से.) ।

—अधिप, सं. पुं. (सं.) नंदः २. बालिः (पुं.) ।

—मंडल, सं. पुं. (सं. न.) उडु-भ-नक्षत्र-गणः ।

—होना, मु., नभः बुब् (स्त्री. प. से.), गगनं सृष्ट (तु. प. अ.) ।

तारीक, वि. (फा.) शाल, कृष्ण २. सतिमिर, निष्प्रभ ।

तारीकी, सं. स्त्री. (फा.) कृष्णता २. अधिकारः, तिमिरम् ।

तारीख, सं. स्त्री. (फा.) तिथिः (पुं. स्त्री.), दिवसः २. नियततिथिः ।

तारीक, सं. स्त्री. (अ.) लक्ष्मण, परिभाषा २. स्तुति-स्तुतिः (स्त्री.) ३. वर्णनं ४. गुणः, विशिष्टता ।

तारक्य, सं. पुं. (सं. न.) धीवनं, कौमार्यम् ।

तारेण, सं. पुं. (सं.) विभुः, सुधांशुः, चन्द्रः ।

तार्किक, सं. पुं. (सं.) तर्कशास्त्रविद् (पुं.) २. तत्त्वज्ञः, दार्शनिकः ।

तार्क्य, सं. पुं. (सं.) गरुड, वैनंभयः, विष्णु-रथः २. अरुणः ३. अश्वः ४. सर्पः ५. शशाः ।

तारु, सं. पुं. (सं. तल्लः) दे. 'तालक' । २. करतलः, हं, प्रहरणः ३. ताली, करतलध्वनिः (पुं.), करतल-लकं ४. संगीते काल-क्रिया-मानं ५. मत्स्यदे. करतलेन बाहुबंधयोरस्फालनं ६. दे. 'झाँझ' ।

तारु, सं. पुं. (सं.) तृणराजः, मधुरसः, आसवदुः (पुं.) ।

—से बेताल होना, मु., विताल (वि.) भू ।

तालमखाना, सं. पुं. (हिं. ताल + मखन) कोकिलध्वः, कामध्वः, काण्डध्वः, इधुरः ।

तालक्य, वि. (सं.) काकुद-ताल-संबधिन् ।

—वर्ण, सं. पुं. (सं.) तालूचार्यवर्णाः । (इ. इ. चवर्ग, य, श) ।

ताला, सं. पुं. (सं. तालकं) तालः, तार-द्वारः, यंत्रम् ।

—लगाना, कि. स., तालकेन निरुध (क. उ. अ.) पिथा (जु. उ. अ.) मंध (क. प. अ.) ।

तालाब, सं. पुं. (हिं. ताल + फा. आब.) तडा (टा) गः-नं, कासारः, स्रस् (न.), पुष्करिणी ।

तालिका, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'ताली' २. सूची-निः (स्त्री.), अनुक्रमणी-गणिका, नामावली-लिः (स्त्री.) ।

तालित्र, सं. पुं. (अ.) अन्वेषकः, अनुसंधातु (पुं.) २. इच्छुकः, अभिलाषिन् ।

—इस्म, सं. पुं. (अ.) विषाधिन्, छात्रः ।

ताली, सं. स्त्री. (सं.) तालिका, कुंविका, कृविका, अंकुटः, उष्घाटनी, साधारणी ।

ताली, सं. स्त्री. (सं. तालिका) करतल-लकं, करतल-शब्दः-ध्वनिः (पुं.) ।

—बजाना, कि. स., करतल बद् (प्रे.)-दा, करतलध्वनि जन् (प्रे.) ।

तालोम, सं. स्त्री. (अ.) शिक्षा, विद्या ।

तालीशपत्र, सं. पुं. (सं. न.) तालीश, नीलं, धात्रीपत्रम् ।

तालु, सं. पुं. [सं. ताल (न.)] काकुरं, तालकम् ।

—मूल, सं. पुं. (सं. तालमूलम्) काकुदमूलम् २. गल्लप्रस्थिः ।

तालुक, सं. पुं. (अ. तथन्तुक) सम्बन्धः, भंसगः ।

ताद, सं. पुं. (सं. तातः) दासः, उ (अ.) भनः-भन (पुं.), उष्णः-णं २. अन्तर्गणः, आवेष्टः ३. स्वरा ४. व्यावर्तनं, सौजनं, आकृष्यनम् ।

तावान, सं. पुं. (फा.) दण्डः, धर्म-यन्त्र-दण्डः, निष्कृतिः (स्त्री.), निस्तारः ।

—देना, कि. स., निष्कृति दाः, निम्न (प्रे.) ।

तावीज, सं. पुं. (अ. तवीज) थंजं, कवचः, शूराः २. यंत्र-पुटः ।

ताश, सं. पुं. (अ. तस) कौटिल्यशानि (न. बहु.), क्रीडापत्रवली २. पय, क्रीडा-खेला ३. दे. 'जरफ्त' ।

तासीर, सं. स्त्री. (अ.) गुणः, प्रभवः ।

तास्सुब, सं. पुं. (अ. तस्सुत्र) धार्मिक-
जातीय-पक्षपातः, २. पक्षपातः ३. मतान्वयता ।
साहम, अव्य. (फ्र.) दे. 'तवापि' ।
तिकोन, सं. पुं. (त्रिकोणः) त्रिभुजः, व्यसम् ।
तिकोना-निया, वि. (हि. तिकोन) त्रिकोण,
व्यस्र, त्रिकोण त्रिभुज-आकार ।
तिक, सं. पुं. (मं.) रमभेदः । वि., तिक,
रसरवड, तीष्ण, तीम ।
तिख्वैट, सं. स्त्री. (हि. तीन + ख्वैट) दे. 'तिकोन' ।
—नाप, सं. स्त्री., त्रिकोणमितिः (स्त्री.) ।
तिख्वैटा, वि., दे. 'तिकोना' ।
तिगुना, वि. (सं. त्रिगुण) त्रिगुणित, त्रिरावृत्त,
त्रिगुणीकृत ।
—करना, कि. स., त्रिगुणीकृत, त्रिः आयुत(प्रे.) ।
तिजारत, सं. स्त्री. (अ.) वाणिज्यं, क्रयवि-
क्रयो (द्वि.) ।
तिजारी, सं. स्त्री. (सं. त्रि + ज्वरः) तृतीयक-
ज्वरः ।
तितरबितर, वि. (हि. तिधर + अनु.)
आ-प्र-वि-कोणं, विक्षिप्त २. अव्यवस्थित,
क्रमशून्य, अस्तव्यस्त ।
तितरली, सं. स्त्री. (हि. तीतर अथवा सं. तिज)
विभ्रपक्षगः, *तिरिरीः ।
तितिक्षा, सं. स्त्री. (सं.) सद्विष्णुता, सहनं
२. क्षमं, क्षांतिः (स्त्री.) ।
तितिक्षु, वि. (सं.) सहनशील, सद्विष्णु
२. क्षांतं, क्षमाशील ।
तिथि, सं. स्त्री. (सं. पुं. स्त्री.) मितिः (स्त्री.),
मास-पक्ष-दिन-दिवसः, चांद्रदिवसः ।
तिनकना, कि. अ., दे. 'चिह्नचिहना' ।
तिनका, सं. पुं. (सं. तृणं), नालः-कं, पलः,
पलः-कं, त्रिपं, खटं, खेट्टं, हरितं, ताडवं,
अजुनम् ।
—दोतों में दूबाना या लेना, मु., दे. 'गिह-
गिहाना' ।
तिनके का सहारा, मु., देवत साहाय्यम् ।
तिनके को पहाड़ समझना, मु., तिले ताल-
पश्यति ।
तिपाई, सं. स्त्री. (सं. त्रिपादिका) त्रिपादिका,
त्रिपदम् ।
तिबारा, कि. वि. (सं. त्रिबारं) त्रिः (अव्य.) ।
तिव्व, स्त्री. (अ.) चिकित्साविज्ञानम्, २. यवन-
चिकित्साशास्त्रम् ।

तिव्वत, सं. पुं. (सं. त्रिवि (पि) षष्ठं >)
त्रिविष्टपम् ।
तिव्वती, वि. त्रैविष्टप, त्रिविष्टप, सम्बन्धि-
विषयक । सं. पुं., त्रिविष्टपीयः, त्रिविष्टप-
वासिन-वास्तव्यः । सं. स्त्री. त्रिविष्टपभाषा,
*त्रिविष्टपी ।
तिमंजिला, वि. (सं. त्रि + अ. मंजिल)
त्रिभूमिक ।
तिमिर, सं. पुं. (सं. न.) अंधकारः, तमसू (न.) ।
तिरछा, वि. (सं. तिरिच्छ्) अवसर्पित, प्रवण,
तिरश्चीन, वक्र, कुटिल, २. त्रैपानिमानिम् ।
—देखना, कि. अ., त्रिपक्ष-वक्रं बोधू
(भ्रा. आ. से.) ।
तिरछी चितवन या नजर, मु., त्रिपक्ष-वक्रः-
दृष्टिः (स्त्री.) २. कटाक्ष-अपांग-नयनोपांत-
बोधुण-बोधितं, कटाक्षः, भ्रुविलासः ।
तिरछापन, सं. पुं. (हि. तिरछा) प्रवणता,
तिरश्चीनता, वक्रता, कुटिलता ।
तिरछे, कि. वि. (हि. तिरछा) तिरः, साच्चि,
जिह्वां (सब अन्य.) ।
तिरपन, वि. [सं. त्रिपंवाश्वत (नित्य स्त्री.)] ।
सं. पुं., उक्ता संख्या, तदंकौ (५३) च ।
तिरपाई, सं. स्त्री. (सं. त्रिपादिका) त्रिपादिका,
त्रिपदम् ।
तिरपाल, सं. पुं. (अं. टारपालिन) त्रिदुल्लिखपटः ।
तिरसठ, वि. [सं. त्रिषष्टिः (नित्य स्त्री.)] ।
सं. पुं., उक्ता संख्या, तदंकौ (६३) च ।
तिरस्कार, सं. पुं. (सं.) अनारदः, अपमानः,
निकृतिः (स्त्री.), न्यक्कारः, अवज्ञा, अवमा-
नना, तिरस्क्रिया, मनभंगः २. भर्त्सना, तर्जनं
३. सापमानं त्यागः ।
तिरस्कृत, वि. (सं.) न्यक्कृत, अनादृत, अप-
अव-मत-मानित, अवज्ञात इ. २. सापमानं
त्यक्त इ. आच्छादित ।
तिरहुत, सं. पुं. (सं. तीरभुक्तिः >) मिथिला-
प्रदेशः ।
तिरहुतिया, वि. (हि. तिरहुत) मैथिल,
मिथिला-सम्बन्धिन् । सं. पुं., मैथिलः, मिथिला-
वासिन् । सं. स्त्री., मिथिलाभाषा, मैथिली ।
तिरानवे, वि. [सं. त्रिणवतिः (नित्य स्त्री.)] ।
त्रयोणवतिः । सं. पुं., उक्ता संख्या, तदंकौ
(२३) च ।

तिरासी

[२७८]

तीन

तिरासी, वि. [सं. व्यशीतिः (नित्य स्त्री.)] ।
 सं. पुं., उक्ता संख्या, तदंकी (८३) च ।
तिराहा, सं. पुं. (सं. वि + फा. राह) त्रिपथम् ।
तिरिया, सं. स्त्री. (सं. स्त्री) नारी, रामा ।
 —**चरित्तर**, सं. पुं. (सं. स्त्रीचरित्रं) रामार-
 हस्यं, बामावैदग्ध्यं, नारीचरितम् ।
तिरोधान, सं. पुं. (सं. न.) अदर्शनं, अंतर्धानं,
 गोपनं, गूहनं, संवरणम् ।
तिरोभाव, सं. पुं. (सं.) दे. 'तिरोधान' ।
तिरोभूत, वि. (सं.) अदृष्ट, अंतर्हित, छुप्त ।
तिरोहित, वि. (सं.) गूढ, मिलीन, भाच्छादित,
 संवृत, निमृत, गुप्त ।
तिर्यची, सं. स्त्री. (सं.) तिरश्ची, पशु-खग-
 योषा-भंगन-वभूः (स्त्री.) ।
तिर्यक्, अन्व. (सं.) वक्रं, कुटिलं, तिरस्,
 विह्वलं, असरलम् (सब अन्व.) ।
तिर्यंगाना, सं. पुं. (सं. तैलंगः) प्रदेशविशेषः ।
तिर्यंगी, वि. (सं. तिर्यंगाना >) तैलंग-
 देशीय ।
तिल, सं. पुं. (सं.) पवित्रः पितृतर्पणः,
 पूत-होम-भान्यं, पापघ्नः, स्नेहफलः । २. ति-
 लकः, कालकः, जड (डू), लः, पिप्लुः (पुं.) ।
 ३. क्षणः-णं, पलं ४. तारा-रत्नं, कनीनिका ।
 —**का तेल**, सं. पुं., तिल-तैल-रसः-स्नेहः ।
 —**किट्ट**, सं. पुं. (सं. न.) तिल-खली-चूर्णम् ।
 —**कुट्ट**, सं. स्त्री., तिलकुट्टम् ।
 —**चटा**, सं. पुं., रक्तवर्णकीटभेदः ।
 —**मुग्धा**, सं. पुं., तिलमुक्तम् ।
 —**पपवी-शकरी**, सं. स्त्री., तिलपट्टी, *तिल-
 शकरी । तिल की ओट पहाड़, मु., * विन्दौ
 सिन्धुः, *तिले गिरिः ।
 तिल का ताड़ करना, मु., तिले तालं पश्यति ।
 तिल-तिल, मु., अल्पल्प, किंचित्किंचित् ।
 तिल धरने श्री जगह न होना, मु., *भानाभावः ।
 तिलभर, मु., ईषदिव, किंचिदिव ।
तिलक, सं. पुं. (सं. पुं. न.) दे. 'टीका'
 (१. २. ६. ८. ९. ११.) ।
 —**लगाना**, क्रि. स., दे. 'टीका' लगाना ।
तिलका, सं. पुं. } (सं. त्रि + हि. लड) त्रिस्रो
तिलकी, सं. स्त्री. } हारः ।
तिलवा, सं. पुं. (सं. तिल >) *तिलमोदकः ।

तिलहन, (हिं तेल + भान्य) सं. पुं. तेल-
 स्नेह, चीज-बीजक-रोहिः ।
तिला, सं. पुं. (फा. । मि. सं. तैल) मर्दनीषथं
 २. लिंगलेपः ।
तिलाक, सं. पुं., दे. 'तलाक' ।
तिलि (ल) स्म, सं. पुं. (यू. टेलिस्मा) दे.
 'हृद्रजाल' ।
तिल्ली, सं. स्त्री. (सं. तिल्लं >) प्लीहम् (पुं),
 प्लीहा, गुल्मः २ दे. 'तिल' १. ।
 ताप—, सं. स्त्री, दे. 'ताप' के नीचे ।
तिवारी, सं. पुं. (सं. त्रिपाठी), दे. 'त्रिवेदी' ।
तिस, सर्व., दे., 'उस' ।
तिहचर, वि. [सं. त्रिसप्ततिः (नित्य स्त्री.)] ।
 सं. पुं., उक्ता संख्या, तदंकी (७३) च ।
तिहरा, वि. दे. 'तिहरा' ।
तिहराना, क्रि. स. (हिं. तिहरा) त्रिः कृ,
 तृतीयं धारं विधा (जु. उ. अ.) ।
तिहवार, सं. पुं. (सं. तिथिवारः) । पर्वन् (न.),
 उत्सवः, उद्घर्षः, उद्भवः, क्षणः, महः ।
तिहाई, सं. स्त्री. (सं. त्रिभाग >) तृतीय-अंशः-
 भागः ।
तिहारा, सर्व., दे. 'तुम्हारा' ।
तीक्ष्ण, वि. (सं.) नि-शात-शित, तीव्र, प्र-
 खर, सूक्ष्म, तीक्ष्ण-शित-भार २. (बुद्धि)
 कुशाल, सूक्ष्म-शीघ्र-ग्राहिन्, सूक्ष्म, तीव्र ३.
 उग्र, प्रचंड ४. दे. 'चरपरा' ५. (शब्द) कर्ण-
 कट्ट, अप्रिय ६. उद्यमिन्, अर्तद, क्षिप्रकर्मन्
 ७. असह्य, दुःसह ।
तीक्ष्णता, सं. स्त्री. (सं.) तीव्रता, प्रसरता,
 प्रचंडता च ।
तीखा, वि., दे. 'तीक्ष्ण' ।
तीखुर, सं. पुं., दे. 'तवाशीर' ।
तीज, सं. स्त्री. (सं. तृतीया) कृष्णा शुक्ला वा
 तृतीया तिथिः (स्त्री.) २. श्रावण-भाद्र-शुक्ल-
 तृतीया ।
तीत-ता, वि. (सं. तिक) दे. 'तिक' २. कट्ट ।
तीतर, सं. पुं. (सं. तित्तरः) तिति (ति) रिः
 (पुं.), तैतिरः, याजुषोदरः ।
तीन, वि. [सं. त्रीणि (न. बहु.)] त्रयः
 (पुं.), तिस्रः (स्त्री.), त्रीणि (न.) । सं.
 पुं., उक्ता संख्या, तदंकी (३) च ।

—तेरह करना, मु., विद्रु (प्रे.), अवा-आ-प्र-वि, कृ (तु. प. से.) ।

—पाँच करना, मु., कलहायते (ना. धा.), विवद् (भ्वा. आ. से.) ।

न तीन में न तेरह में, मु., सामान्य, साधारण ।

तीमार, सं. पुं. (फा.) सेवा, परिचर्या ।

—दार, सं. पुं., रोगि-रुग्ण,--सेवकः--परि-चारकः ।

—दारी, सं. स्त्री., रोगि-रुग्ण, परिचर्या-सेवा ।

तीर्य, सं. स्त्री., दे. 'खी' ।

तीर्य, सं. पुं. (सं. न.) तटः-टंटी ।

तीर्य, सं. पुं. (फा.) धाणः, शरः, श्पुः (पुं.), सत्यकः ।

—कश, सं. पुं. (फा.) श्पुधिः (पुं.), दे. 'तरकश' ।

—चलाना या मारना, क्रि. स., श्पुं प्र, मुन्-क्षिप् (तु. प. म.) ।

तीर्यदाज्ञ, सं. पुं. [- + अंदाञ् (फा.)] श्पु-धनुर्, धरः, धनिन् (पुं.), धातुष्कः ।

तीर्यदाजी, सं. स्त्री., धनुर्, विद्या-वेदः, शराभ्यासः ।

तीर्य, सं. पुं. (सं. तीर्य) पुष्य-पवित्र, स्थानं २. भट्टः ३. भट्टसोपानपथः, अवतारः ४. उपा-ध्यायः, गुरुः (पुं.) ५. ब्राह्मणः ६. परिक्राज-कोपाधिः (पुं.) ७. तारकः, मोक्षकः ८. ईश्वरः ९. जननीजनकौ १०. अतिथिः (पुं.) ।

—यात्रा, सं. स्त्री. (सं.) तीर्थयात्रनम् ।

—रज, सं. पुं. (सं.) प्रयागः ।

तीर्थिक, सं. पुं. (सं.) तीर्थपुरोहितः २. तीर्थिकरः ३. तीर्थयात्रिन् ।

तीला, सं. पुं. (फा. तीर) दे. 'तिनका' ।

तीली, सं. स्त्री. (हि. तीला) लघुतुणम् २. धात्रादेः वृद्धस्फुटारः ।

तीव्र, वि. (सं.) अत्यधिक, अत्यंत, अविशय २. दे. 'तीक्ष्ण' (१) । ३. सुतम, अत्युष्ण ४. असाम, अमित ५. कट्ट ६. दुःसह ७. प्रचंड ८. तिस्र ९. वेगवत्, शीघ्र १०. तार, उच्च (स्वर) ।

तीव्रता, सं. स्त्री. (सं.) अत्यधिकता, बाहुल्यं, अत्युष्णता, असह्यता, प्रचंडता, तिक्तता इ. ।

तीस, वि. [सं. विशज् (नित्य स्त्री.)] सं. पुं., उच्च संख्या, तदकौ (१०) च ।

—मार खॉ, मु., बीरायणीः (पुं.), शरशिरो-मणिः (पुं.) (व्यग्य) ।

तीसों दिन, मु., सदा, सर्वदा ।

तीसरा, वि. पुं. (हि. तीन) तृतीयः [-या (स्त्री.)] । सं. पुं., मध्यस्थः, तटस्थः ।

—पहर, सं. पुं., तृतीयप्रहरः अपराह्नः, पराह्नः, त्रिकालः ।

तीसरे, क्रि. वि. (हि. तीसरा) तृतीयस्थाने, तृतीयं, तृतीयतः (अव्य.) ।

तीसवाँ, वि. (हि. तीस) त्रिंशत्तमः-सं-मी, त्रिंशः-शं-शी (पुं. न. स्त्री.) ।

तुंग, वि. (सं.) दे. 'ऊँचा' २. चंड, उग्र ।

तुंड, सं. पुं. (सं. न.) मुखं, आस्यं, वदनं २. चञ्चूः-न्चुः (स्त्री.) ।

तुंडि, सं. स्त्री. (सं. पुं.) दे. 'तुंड' (१-२) । (सं. स्त्री.) नामिः ।

तुंद, सं. पुं. (सं. न.) उदरं, तुन्दि (न.), तुन्दिः (स्त्री.) ।

तुंका, सं. पुं. (सं.) अलातुः (पुं. स्त्री.) वः (स्त्री.) २. अलातु (न.), अलातुपात्रम् ।

तुंबिया, सं. स्त्री. (सं. तुंबिका >) क्षुद्रालातु (न.), क्षुद्रालातुपात्रम् ।

तुंबी, सं. स्त्री. (सं.) तुंबिः (स्त्री.) अलातुः (पुं. स्त्री.) २. दे. 'तुंबा' (२) ।

तुभर, सं. पुं. (सं. तुवरी) आढकी, दे. 'अरहर' ।

तुक, सं. स्त्री. (हि. टुक) अत्यानुप्रासः, भक्षरमंत्रौ २. पषांशः ३. पादतवर्णाः ।

बेतुकी, वि., असंबद्ध, असंगत ।

—जोड़ना, मु., कुकवितां कृ अधवा रच् (तु.) ।

तुलम, सं. पुं. (अ.) दे. 'बीज' ।

तुच्छ, वि. (सं.) नीच, हीन, अधम, क्षुद्र, दीन, निरुष्ट २. अमार, लघ्वर्थक, अनर्थक ।

तुडधाना, तुडाना, क्रि. प्रे., व. 'तोड़ना' के प्रे. रूप ।

तुतला (रा) ना, क्रि. अ. (अनु.) अस्वध-शिशुवत् भाष् (स्वा. आ. से.) ।

तुपक, सं. स्त्री. (तु. तीप) *शतभिन्का २. नालाक्षम् ।

तुफंग, सं. स्त्री. (तु. तीप) दाधव्यं नालाक्षम् ।

तुम, सर्व. (सं. त्वम्) त्वं (एक.), यूयं (बहु.) ('तुम को' आदि के लिए 'तुम्हड़' की द्वितीया आदि के रूप बनेंगे) ।

तुम्ही

[२८०]

तूणीर

तुम्ही, सं. स्त्री. (सं. तुम्ही >) शुभकवर्तुलालानुः
(पुं. स्त्री.) २. दे. 'तुम्ही' (२)।
तुम्हाई, सं. स्त्री. (हि. तुम्हाना) वापसादि-
प्रसाधनभूतिः (स्त्री.)।
तुम्हाना, कि. प्रे., व. 'तुम्हाना' के प्रे. रूप।
तुम्हुल, वि. (सं.) धोररव-कलकल-कोलाहलः,
मय-पूर्ण युत। सं. पुं. (सं. पुं. न.) मीपण-
घोर, -बुद्ध-संयागः २. कोलाहलः, कलकलः।
तुम्हारा, सर्व. (हि. तुम) बुध्माक-तव (त्रिलिंग)
बुध्मदीय, त्वदीय, तावक, बौध्माक-कीण।
तुम्ही, सर्व० (हि. तुम + ही) त्वमेव, तुवामेव,
य्यमेव।
तुम्हें, सर्व. (हि. तुम) (कर्म) त्वाम् त्वं;
यवम्, वाम्; बुध्मान्, वः (संप्रदान) तुम्हें,
ते, तुवाम्यां, वां; बुध्मभ्यम्, वः।
तुम्हें, तुम्हें, सं. पुं. (सं. भं.) अश्वः, घोटकः।
तुम्हें, कि. वि. (सं.) श्रुतिवि, आशु, सशः,
सपदि, तत्क्षणं-गे।
तुम्हें, सं. स्त्री. (सं. तूर >) शृदंगी, राजः,
कोशातकी, जालिनी, कृतवेषना, सु-पीत-पुष्पा,
राजिप्रकला (शिया तुम्हें, देखो 'नेतुआ')।
तुम्हें, सं. पुं. (सं. तुम्हें) तुम्हेंकः २. यवनः
३. सैनिकः ४-५. टकी-तुम्हेंस्तान, वासिन्।
तुम्हें, वि. (हि. तुम्हें) तुम्हेंकदेशीय
२. तुम्हेंभाषा।
तुम्हें, सं. पुं. (सं.) अश्वः, वासिन् (पुं.)।
तुम्हें, कि. वि., दे. 'तुम्हें'।
तुम्हें, तुम्हें, सं. स्त्री. (सं. तूर) तूर्यः-यै,
काहलः-ला, श्रंगवाद्यम्।
तुम्हें, वि. (सं.) तूर्य, चतुर्थं।
—अवस्था, सं. स्त्री. (सं.) निःश्रेयसं, मुक्तिः
(स्त्री.)।
तुम्हें, सं. पुं. (सं.) दे. 'तुम्हें'।
तूर्य, वि., दे. 'तुम्हें'।
तूर्य, सं. पुं. (अ.) उष्णोप, अलम्बः-शेखरः
२. चूड़ा, मीलिः (पुं.), शिखा, शेखरः
३. अलकः, चूर्णकुंतलः, भ्रमरकः, कुतलः
४. वि., विनिश्च, अद्युत।
तूर्य, वि. (क्रा.) दे. 'खट्वा'।
तुम्हें, सं. स्त्री. (सं.) उपमा, समता, साम्यं,
सादृश्यं २. तारतम्यं, न्यूनधिकता।
तुम्हें, कि. अ. (हि. तीलना) तुम्हें-तुम्हें

(कर्म, तोल्यते, तुम्हेंते), तुम्हें मा (कर्म,
मीयते)।
किसी वाम पर तुम्हें हुआ, मु., कार्यविशेषं कर्तुं
उद्यतः-कृतनिश्चयः-विहितसंकल्पः।
तुम्हेंनामक, वि. (सं.) तुम्हेंनायुक्त, अन्धा-
पेक्षक, अन्धसापेक्ष, सापेक्ष, साम्यबैषम्य, सूत्र्यः-
दर्शक।
तुम्हेंना, कि. प्रे., व. 'तीलना' के प्रे. रूप।
तुम्हेंनी, सं. स्त्री. (सं.) सुभगा, पावनी, भूतप्ती,
विष्णुवत्सभा, वृन्दा, पुण्या, वैष्णवी।
—दुल, सं. पुं. (सं. न.) वृंदापत्रम्।
—दास, सं. पुं. (सं.) भक्तविशेषः, रामचरित-
मानसादिरथयिष्ठ (पुं.)।
तुम्हें, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'तुम्हें' २. तुम्हेंना,
सादृश्यं ३. राशिविशेषः (ज्यो.)।
—दान, सं. पुं. (सं. न.) देहभारसम-
सुदण्डिदानम्। वि., तोलित, तुम्हेंत।
तुम्हें, वि. (सं.) स-सम-तोल-भार-परिमाण
२. सम, समान, सदृश, सदृश।
तुम्हेंता, सं. स्त्री. (सं.) सम-तोलतः-परिमाणता
२. सादृश्यं, साम्यं, समत्वम्।
तुम्हें, सं. पुं. (सं.) तुम्हें, तुम्हें-सं, कडंगरः,
धान्यत्वम् (स्त्री.)।
तुम्हेंना, सं. पुं. (सं.) कुकूलः, तुम्हेंगिनः (पुं.)।
तुम्हेंना, सं. पुं. (सं.) तुम्हेंदं, हिमं, प्रालेयं,
म(मि)हिकः, अवश्यायः, मीदारः। वि.,
हिम, तुम्हेंना, तुम्हेंना-हिम, वद।
तुम्हें, वि. (सं.) वृत्त, तपित, पूर्णकाम २. प्रसन्न,
मुदित।
तुम्हें, सं. स्त्री. (सं.) तुम्हेंतः, तृप्तिः (स्त्री.),
सतोपः २. हृषः, प्रसन्नता।
तुम्हेंमत, सं. स्त्री., दे. 'तीहमत'।
तुम्हेंमि, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'तुम्हें' २. वदिका,
कौमुदी ३. शीललता, हिमता।
तुम्हें, सं. पु., दे. 'तुम्हें'।
तुम्हें, सं. स्त्री., दे. 'तुम्हें'।
तुम्हें, सं. पुं. (सं. त्वं)।
—तुम्हें, —तुम्हें य-तुम्हें-तुम्हें करना, मु.,
अदिष्टभाषायां बालहायते (ना. धा.)।
तुम्हें-गि, सं. पुं. (सं.) }
तुम्हें, सं. स्त्री. (सं.) } दे. 'तुम्हें'।
तुम्हें, सं. पुं. (सं. पुं. न.) }

तूत, सं. पुं. (फ़.) नि. सं. तूदः) अन्न, कण्ठ-
दारु (न.), सुसुषु, सुसुषुषु ।
तूतिया, सं. पुं. दे. 'नीलायोध' ।
तूती, सं. स्त्री. (फ़.) शुक्रभेदः २. कनेरी-
चटका ३. चटकाभेदः ४. मुखबाधो वाणभेदः,
दे. 'तुरही' ।
—तूलना, मु., प्र-भू, अधिष्ठा (स्वा. प. अ.) ।
नकारखाने में-श्री आवाज, मु., अरण्यरहितम् ।
तूदा, सं. पुं. (फ़.) नयः, राशिः (पुं.)
२. सीमाचिह्नम् ।
तून, सं. पुं. (सं. तुन्नः) नदीवृक्षः, तुमि-
(पी) फः ।
तूफान, सं. पुं. (अ.) झंझावातः, अति-चंड-
महा-वातः, वस्था, प्रसन्नता, प्रकांपनः
२. तीव्र-जल-ओषधः-वृद्धिः (स्त्री.)-उपप्लवः-
विप्लवः-प्रलयः, संप्लवः ३. उपद्रवः, संज्ञाभाः,
विप्लवः ४. आपद-आपत्तिः (स्त्री.) ५. दे.
'तोहमत' ।
— उठाना वा मचाना, मु., तुमुलं कु, संशोभं
उत्पद् (प्रे.) ।
तूफानी, वि. (फ़.) उपद्रवित्, कलहोत्पादक
२. उग्र, प्रचंड ३. भिक्षुज, अभ्यभूषक ।
तूमही, सं. स्त्री. (हि. तूवा) दे. 'तुवी'
२. तुम्बोनिमित्त आहितुष्टिकानां वाणभेदः ।
तूमना, क्रि. स. (सं. स्तोनः >) ऊर्णा-तूलं
संयुज् (अ. प. वे., तु.) शृष (स्वा. प. से.)-
विरिष् (प्रे.) ।
तूरान, सं. पुं. (फ़.) तातार-तूरान, -देशः ।
तूरानी, वि. (फ़.) तातार-तूरान, -देशीय-
सम्बन्धित् । सं. पुं., तातार-तूरान-वासिन्
(पुं.) ।
तूली, सं. पुं. (सं. पुं. न.) दे. 'तूडे' २. दे.
'तूत' ।
तूल, सं. पुं. (अ.) दे. 'तूबाई' ।
तूलिका, सं. स्त्री. (सं.) इ (ई) धीक, तुकिः
(स्त्री.), तूली, ईधिका ।
तूली, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'तूलिका' २. नीली
३. वतिः (स्त्री.) ।
तूष्, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'तिनका' ।
तूषवत्, वि. (सं.) तूष्, तुल्य-सम, तुच्छ,
छुद्र २. अयाह्य, त्याज्य ।
तूसीस, वि. (सं.) दे. 'तूसरा' ।

तूस, वि. (सं.) तुष्ट, पूर्णकाम २. प्रहृष्ट,
प्रसुहित ।
तूसि, सं. स्त्री. (सं.) संनैषः, सौहित्यं, नपेणं,
प्रीणनम् २. आनन्दः, इषः ।
तूषा, सं. स्त्री. (सं.) पिपासा, तूष्ठा, उदन्या
२. लोभः ३. इच्छा ।
तूषित, वि. (सं.) पिपासित, तपेनः सतुष्ट
२. इच्छुक ३. तुष्य ।
तूष्ठा, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'तूष्ठा' (२-३) ।
तूँ, प्रत्य. [सं. तसु (प्रत्य.)] दे. 'तूँ' ।
तैतालीस, वि. [सं. त्रि-वत्स-रिशत् (त्रि-वत्स स्त्री.)]
अथ-वत्वारिशत् । सं. पुं., उक्ता संख्या, तदकी
(४३) च ।
तैतालीसवाँ, वि. (हि. तैतालीस) त्रि-
(त्रयश्)-वत्वारिशत्तमः-मी-मं, त्रि (त्रयश्)-
वत्वारिशः-शी-शं (पुं. स्त्री. न.) ।
तैतीस, वि. (त्रयस्त्रिंशत् (त्रि-वत्स स्त्री.)]
सं. पुं., उक्ता संख्या, तदकी (३३) च ।
तैतीसवाँ, वि. (हि. तैतीस) त्रयस्त्रिंशत्तमः-
मी-मं, त्रयस्त्रिंशः-शी-शं (पुं. स्त्री. न.) ।
तैतुआ, सं. पुं. (देश.) निवक-त्रिवक-न्याय-
भेदः ।
तैदू, सं. पुं. (सं. तैदुकः) कालकोषः, तैदुलः
२. तैदुलं, तैदुलफलम् ।
ते, सर्व. { सं. पुं. तद् का वट्. } दे. 'ते' ।
तेईस, वि. [सं. त्रयोविंशतिः (त्रि-वत्स स्त्री.)]
सं. पुं., उक्ता संख्या, तदकी (२३) च ।
तेईसवाँ, वि. (हि. तेईस) त्रयोविंशति-तमः-
मी-मं, त्रयोविंशः-शी-शं (पुं. स्त्री. न.) ।
तेरा, सं. स्त्री. (फ़.) दे. 'तलवार' ।
तेज, सं. पुं. [सं. तेजस् (न.)] कांतिः-शीतिः
(स्त्री.), आभा, प्रभा २. पराक्रमः, वीर्यं, बलं
३. प्रतापः, अनुभवः, अभिरुचा ४. तापः,
ऊष्मन् (पुं.) ५. उपना, प्रचंडता ६. अग्निः
(पुं.) ।
तेज्ञ, वि. (फ़.) दे. 'तीक्ष्ण' (१) २. आशु,
शीघ्रगामिन्, ज्वन, महावेग ३. क्षिप्र, कर्मन्-
कारिन् ४. दे. 'वरपरा' ५. उग्र, प्रचंड
६. महाहैर्ष्यं, बहु-महा-मूल्य ७. दुःशा-
प्रबुद्धि ८. अतिचंचल ९. (विचारि) धीर,
घातक ।

तेजपत्र

[२८२]

तोजना

तेजपत्र, सं. पुं. (सं. न.) पत्रं, पत्रकं, गंध-
जातम् ।

तेजपात, सं. पुं., दे. 'तेजपत्र' ।

तेजबल, सं. पुं. (सं. तेजोवती) तेजनी,
तेजनती ।

तेजस्वी, वि. (सं. विभ्) तेजोवत्, तेजस्वत्,
ओजस्विन्, वयस्विन्, सुप्रभ, कांतिमत् २.
प्रतापित्, प्रतापवन् ३. वीर्यवत्, बलवत् ।

तेजाव, सं. पुं. (क्.) अम्लः, द्रावकम् ।

तेज्जी, सं. स्त्री. (क्.), निशितस्त्वं, तीक्ष्णभारता,
प्रखरता २. उग्रता, चंडता ३. शोभता, त्वरा
४. महार्थत्वं, बहुमूल्यत्वं ३. ।

तेजा, वि., दे. 'उतना' ।

तेरस, सं. स्त्री. (सं. त्रयोदशी) शुक्लकृष्ण-
पक्षयोः त्रयोदशी तिथिः (स्त्री.) ।

तेरह, वि. (सं. त्रयोदश) । सं. पुं., उक्त-
संख्या, तदकी (१३) च ।

तेरहवाँ, वि. (हिं. तेरह) त्रयोदशः शी-रं
(पुं. स्त्री. न.) ।

तेरा, सर्व. (सं. तब) तावक, [-की (स्त्री.)],
तावकी-; स्वत्क, स्वदीय, स्वत्- ।

तेल, सं. पुं. (सं. तैलं) स्नेहः, अक्षुण्णं, अभ्य-
ञ्जनम् ।

—मलना या लगाना, क्रि. स., तैलेन अंज-
(रु. प. से.)-दिह् (अ. उ. अ.)-लिप् (तु.
प. अ.) ।

—निकालना, क्रि. स., स्नेहं निष्कृप् (भ्वा.
प. अ.) ।

—घदाना, मु., विवाहात्प. वरवधोः तैला-
भ्यञ्जनम् ।

जलती पर—डालना, मु., कलहं वृष्ट (प्रे.) ।

तेलगू, सं. स्त्री. (सं. तैलंग >) तैलंगप्रान्त-
आन्ध्रप्रान्त, भाषा, तैलगूः (स्त्री.) ।

तेलहन, सं. स्त्री., दे. 'तिलहन' ।

तेलिन, सं. स्त्री. (हिं. तेली) तैलिनी, तैलिकी,
तैल-करी-कारिणी, आक्रित्री ।

तेलिया, वि. (हिं. तैल) तैल-निर्गूण-कृष्ण-
भासुर । सं. पुं., कृष्ण-रंगः-रंगाः-वर्णः ।
२. कृष्णाश्वः ३. बल्बनाभः, गरलः (विषभेदः) ।

तेली, सं. पुं. (सं. तैलिन्) तैलकारः तैलिकः,
चाक्रिकः, धूसरः ।

तेवर, सं. पुं. (हिं. तेह=कोप) सकोप-सत्रोप-
दृष्टिः (स्त्री.) २. अः (स्त्री.), अलता ।

—बदलना, मु., भ्रुभंगं कृ, अकृष्टि बन्ध् (क्.
प. अ.)-रच् (जु.) ।

तेवरी-की, सं. स्त्री., 'त्वोरी' ।

तेव(त्वो)हार, सं. पुं., दे. 'सिंहवार' ।

तेहरा, वि. (हिं. तीन) त्रि-गुण-गुणित,
विरावृत्त, त्रिरावर्तित ।

तैयार, वि. (फा.) (मनुष्य) उद्यत, उद्युक्त,
सज्ज, सिद्ध, संनद्ध २. (वस्तु) सज्जी, कृत-
भूत, आयोजित, उपस्थित, उज-बलुप्त-कल्पित,
सज्ज, सिद्ध ३. पीन, दृष्टपुष्ट ।

—करना, क्रि. स., सज्जीकृ, सज्जह् (प्रे.),
उप-परि-क्लृप् (प्रे.), उपस्था (प्रे.) ।

—होना, वि. अ., सज्जीभू, सज्जट (दि. उ.
अ.) उद्यत-नाशद (वि.) भू ।

तैचारी, सं. स्त्री. (फा. तैयार) सज्जता,
सज्ज्यता, उद्यतता २. सिद्धिः-उपस्थितिः (स्त्री.)
३. आडम्बरः, धीः, शोभा ।

तैरना, क्रि. स. (सं. तरनं) पारं गम् (भ्वा.
प. अ.), सं., तू (भ्वा. प. से.), द्वितीया के
साथ । क्रि. अ., तू, प्लु (भ्वा. आ. अ.) ।

तैराक, सं. पुं. (हिं. तैरना) तारकः, तरिच,
तरण-प्लवन-कृत् (पुं.) ।

तैराकी, सं. पुं. (हिं. तैराक) तरः, तरणं,
प्लवः, प्लवनम् ।

तैल, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'तैल' ।

तैश, सं. पुं. (अ.) वीषः, क्रोधः ।

तैसा, वि. (सं. ताडश) दे. 'वैसा' ।

तौद, सं. स्त्री. (सं. तुदं) पिचिण्डः, लम्बोदरम् ।

—निकलना, सं. पुं., तुन्दप्रसारः, तुन्दिकता,
तुन्दिलता ।

तौद(दं)ल, वि. (हिं. तौद) तुदिक, तुदित,
तुदिम, तुदिल, तुदिन्, पिचिण्डिल, लम्बोदर ।

तौदी, सं. स्त्री. [सं. तुण्डिः (स्त्री.)] तुन्दः-
दी, दे. 'नाभि' ।

तो, तौ, अव्य. (सं. तद् >) तस्यां दशायां-
स्थितौ (सप्तमी), ताँहि, तदा, तदानीम् ।

—भी, अव्य., दे. 'तथापि' ।

तोड़ना, क्रि. स. (सं. श्रोतनं) वृट् (प्रे.), खट्
(जु.), भञ् (रु. प. अ.) २. भिद्-हिद् (रु.
प. अ.), दृ-शृ (क्. प. से.) ३. अव-सं, नि
(स्वा. उ. अ.), आश (जु. आ. अ.), ग्रह्
(क्. प. से.) ४. नश-ध्वंस (प्रे.) ५. स्वपसं
ग्रह् (प्रे.). स्वपक्षपातिनं विधा (जु. उ. अ.)

६. नाणकानि परिभृत् (प्रे.) *बुद् (प्रे.) ।
सं. पुं., त्रोटनं, भंजनं, भेदनं, अव-सं-नयनं,
नाशः, ध्वंसः इ. ।

तोड़नेवाला, सं. पुं., त्रोटकः, भञ्जकः, भेदकः,
अवनायकः, नाशकः इ. ।

टूटा हुआ, बि., नुदित, भग्न, भिन्न, ध्वस्त इ. ।

तोड़ा, सं. पुं. (हिं. तोड़ना) नाणक-मुद्रा,
कोशः-कोपः २. धन-कोषः-प्रन्धिः (पुं.)
३. सुवर्ण-रत्न, अन्वुः-अन्वुः (दीर्घो स्त्री.)
४. तटः-दंडो ५. हानिः (स्त्री.), अपचरः
६. रञ्जु, स्रण्डः-डम् ।

तोतलाना, कि. अ., दे. 'तुतलाना' ।

तोता, सं. पुं. (फा.) कीटा, शुक्रः, वकः, तुण्डः-
चंचुः (पुं.), किकिरातः । (स्त्री., कीरी,
शुकी इ.) ।

—चश्म, सं. पुं. (फा.) विश्वासघातकः, अप-
त्ययिन्, अविश्वासिन् ।

—चश्मी, सं. स्त्री. (फा.) अविश्वासः,
अप्रत्ययः ।

तोते की सी आँख फेरना, मु., नितांत उभेक्ष्
(भ्वा. आ. से)-उदाश् (अ. आ. से.) ।

हाथों के तोते उड़ जाना, मु., अत्याकुली-गड़ी
भू, सं-व्या-मुह् (दि. प. ने.) ।

तोप, सं. स्त्री. (तु.) शतघ्नी, अग्न्यस्त्रं,
*तोपम् ।

—खाना, सं. स्त्री. (तु. + फा.) शतघ्नीशाला
२. अग्न्यस्त्र-शतघ्नी-समूहः ।

तोपची, सं. पुं. (तु. तोप) दे. 'गोलदाज' ।

तोबड़ा, सं. पुं. [फा. तो (तु) बरा] *अश्वास-
मन्त्रः ।

तोबा, सं. स्त्री. (अ. तौबः) धापानः-इसिप्रतिज्ञा,
पश्चात्तोषः ।

तोम, सं. पुं. (सं. स्तोमः) चयः, निकरः,
पुंजः, संभारः ।

तोमर, सं. पुं. (सं. पुं. न.) भल्लसदृशं
प्राचीनास्त्रम् २-३. द्वादशमात्रा-नववर्णं,-
वृत्तम् (न.)-वृत्तम् ४. राजपुत्रवंशविशेषः ।

तोय, सं. पुं. (सं. न.) जलं, पानीयम् ।

—कर्म, सं. पुं. (सं.-मंत्रं न.) तर्पणम् दे० ।

—क्रीडा, सं. स्त्री. (सं.) जलक्रीडा ।

—द, सं. पुं. (सं.) जलदः, नीरदः, अंबोदः ।

—धि, निधि, सं. पुं. (सं.) जलधिः, कारिधिः,
समुद्रः ।

तोरई, सं. स्त्री., दे. 'तुरई' ।

तोरण, सं. पुं. (सं. पुं. न.) वहिर्द्वारं २.
वंदनमाला ३. प्रीवा ।

तोल, सं. पुं. (सं.) भारः, गुरुत्वं २. भार-
मानं, माडः, मानं, परिमाणं ३. तोलनं, भार-
मानं, मस्तिः (स्त्री.) ।

तोलन, सं. पुं. (सं. न.) तुलया भार-मानं-
मापनं २. उत्पापनम् ।

तोलना, कि. स. (सं. तोलनं) तुल् (चु.),
तूल् (भ्वा. प. से.), तुलायां धृ (चु.) ।
सं. पुं., दे. 'तोल' ।

तोलनेवाला, सं. पुं., तोलकः, भारमातृ(पुं.) ।

तोलवाना, कि. प्रे., व. 'तोलना' के प्रे. रूप ।

तोला, सं. पुं. (सं. तोलः-लं) तोलकः-कं, गण्ण,
वतिरक्तिपरिमाणं, कोलं, वटकं, कर्पांडम् ।

तोशाक, सं. स्त्री. (तु.) तुला, तुलिका ।

तोष, सं. पुं. (सं.) दृष्टिः-तुष्टिः (स्त्री.), संतोषः
२. प्रसन्नता, आनन्दः ।

तोहफ़ा, सं. पुं. (अ.) उपहारः, उपायनं, उपादा,
उपमाह्वनं । वि., उत्कृष्ट, उत्तम ।

तोहमत, सं. स्त्री. (अ.) मिथ्याभियोगः, मृषः-
दोषारोपः ।

—खाना, कि. स. मिथ्या दुष् (प्रे. दूषयति),
मृषा अभियुज् (रु. आ. अ.; चु.) ।

तौर, सं. पुं. (अ.) आचारः, व्यवहारः २. दशा,
अवस्था ३. प्रकारः-विधा (समासंत में) ।

—तरीका, सं. पुं. (अ.) शिष्टाचारः २.
आनन्दगम् ।

तौल, सं. पुं., दे. 'तोल' ।

तौलना, कि. स., दे. 'तोलना' ।

तौलिया, सं. पुं. (अ. टावेल) मार्जनवस्त्रं,
वरकम् ।

तौहीन, सं. स्त्री. (अ.) अपमानः, निरादरः,
अवमानना, अवज्ञा ।

त्यक्त, वि. (सं.) विसृष्ट, उच्छिन्न, अपास्त ।

त्याग, सं. पुं. (सं.) उत्सर्गः, भोग्यं, अपास्तनं,
उच्छिन्नं, हानं २. विरक्तिः (स्त्री.), वैराग्यं,
संन्यासः ३. दे. 'तलक' ।

—पत्र, सं. पुं. (सं. न.) उत्सर्गलेखः ।

त्यागना, कि. स. (सं. त्यागः) त्यज् (भ्वा.)

त्यागने योग्य

[२८४]

दुष्टि

प. अ.), उत्सृज् (तु. प. अ.), उज्ज् (तु. प. से.), रह्-वर्ज् (चु.), दे. 'ओडनः' ।
 सं. पुं., दे. 'त्याग' ।
 त्यागने योग्य, वि., त्याज्य, त्यक्तव्य, हेय, परिहार्य, उत्सृष्टव्य ।
 त्यागनेवाळा, सं. पुं., त्यक्त, उत्सृष्ट (पुं.), उज्जकः ।
 त्यागा हुआ, वि., दे. 'त्यक्त' ।
 त्यागी, सं. पुं. (सं. गिन्) त्यक्तसंगः, संन्यः-सिन्, विरक्तः, वैराग्यवत् ।
 त्याज्य, वि. (सं.) दे. 'त्यागने योग्य' ।
 त्यो, क्रि. वि. (सं. तद् + एव >) तथा, एवं, तद्वत्, एवंविधम् ।
 ज्यो—, क्रि. वि., यथा... तथा ।
 —ही, क्रि. वि., तत्क्षण-णे ।
 त्योरी, सं. स्त्री. (सं. त्रिकूटः >) जोषदृष्टिः (स्त्री.), कोषवीक्षितं २. नयन-दृष्टि-वृक्-पातः ।
 त्यो(त्यौ)हार, सं. पुं., दे. 'तिहवार' ।
 त्यो(त्यौ)हारी, सं. स्त्री. (हि. त्योहार) पावण-उपायनं-दानम् ।
 असरेणु, सं. पुं. (सं.) ध्वंसिन्, द्रवणुकत्रया-त्मकरेणुः (पुं.) २. त्रिशत्परमाणुपरिमाणम् ।
 असित, त्रस्त, वि. (सं. त्रस्त) भीत, सम्य, भयार्त, ससाध्वस, भयाविष्ट ।
 त्राण, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'रक्षा' ।
 त्राव, वि. (सं.) द्रवण, संघ, योषापित, पात, भवित, रक्षित ।
 त्रातव्य, वि. (सं.) त्राणाहं, रक्षणीय, पातव्य ।
 त्राता, सं. पुं. [सं. तृ (पुं.)] दे. 'रक्षक' ।
 त्रास, सं. पुं. (सं.) भयं, भीतिः (स्त्री.) २. कष्टम् ।
 त्रासक, सं. पुं. (सं.) भयंकरः, भयावहः, भयानकः, भयजनकः, व्रतयित् ।
 त्रासित, वि. (सं.) भीति, तर्जित, ससाध्वस, दरित, भयातुर ।
 त्राहि, अर्थ. (सं. लोट्) पारिह, रक्ष, शरणं देहि ।
 —त्राहि करना, मु., रक्षार्थं असकृत प्रार्थं (चु. आ. से.) ।
 त्रिक, सं. पुं. (सं. न.) त्रितयं, त्रयं-यी ।
 त्रिकाल, सं. पुं. (सं. न.) कालत्रयं-यी, भूत-

वर्तमानभविष्यत्कालाः २. बेलामयं-यी (प्रातः, मध्याह्नः, सायं) । अन्य., वि. (अव्य.), त्रिवारम् ।
 —ज्, वि. (सं.) त्रिकाल-वेत्तु-विद, सर्वज्ञ ।
 सं. पुं., ईश्वरः २. बुद्धः ।
 —दर्शी, सं. पुं. (सं. शिन्) ईश्वरः २. कविः (पुं.) ।
 त्रिकुटा, सं. पुं. [सं. त्रिकट्ट (न.)] 'युष्मद्, ज्योषद्, कट्ट, त्रयं-त्रिकं, मिश्रितशुद्धीमरो-पपिप्लव्यः (स्त्री. बहु.) ।
 त्रिगुण, सं. पुं. (सं. न.) गुण, त्रयं-त्रिकं, मूलरचस्तमांसि (न. बहु.) ।
 त्रितय, सं. पुं. (सं. न.) त्रिकं, त्रयं-यी २. धर्माधिकारः (पुं. बहु.) ।
 त्रिदोष, सं. पुं. (सं. न.) वातपित्तकफरूपं दोषत्रयम् ।
 त्रिपथगा, सं. स्त्री. (सं) गंगा, भागीरथी ।
 त्रिपाठी, सं. पुं. (सं. ठिन्) दे. 'त्रिवेदी' ।
 त्रिपुंड्र, सं. पुं. (सं. न.) भद्रादिकृतं कफ-लभ्यतियोगेखात्रयं, त्रिपुंड्रकम् ।
 त्रिपुर, सं. पुं. (सं. न.) मयदानवनिर्मितं पुरत्रयं २. लोकत्रयी, त्रिलोकी ३, वाणाशुटः ४. चंद्रैरीनगरम् ।
 —अरि, सं. पुं. (सं.) त्रिपुरांतकः, शिवः ।
 त्रिफला, सं. पुं. (सं. स्त्री.) फल-त्रिकं-त्रयं, मिलितहरीतकीविभीतकामलकीफलाभिः (न. बहु.) ।
 त्रिभुज, सं. पुं. (सं.) दे. 'त्रिकोन' ।
 त्रिभुवन, सं. पुं. (सं. न.) त्रिलोकी, लोकत्रयम् । स्वर्गः पृथिवी पातालं च ।
 त्रिमूर्ति, सं. पुं. (सं.) भद्राकिष्णशिवनामक-मातत्रयवत् (पुं.) ।
 त्रियामा, सं. स्त्री. (सं.) रात्री-त्रिः (स्त्री.) ।
 त्रिलोक, सं. पुं. (सं. न.), त्रिलोकी, लोक-त्रयी, दे. 'त्रिभुवन' ।
 त्रियेणी, सं. स्त्री. (सं.) प्रयागे गंगायमुना-मरुवतीनां संगमः ।
 त्रिवेदी, सं. पुं. (सं. त्रिवेदिन्) त्रिविधः, त्रिवेदः, त्रैविचः २. ब्राह्मणजातिभेदः ।
 त्रिशूल, सं. पुं. (सं. न.) त्रिशिखं, शूलं, त्रिशैवेकम् ।
 त्रिपदुम्, सं. स्त्री. (सं.) छंदोभेदः ।
 त्रुष्टि, सं. स्त्री. (सं.) दुष्टी, न्यूनता, अपूर्णता,

वैकल्प्यं २. स्वल्पिनं, प्रातिः (स्त्री.) ३. संदेहः, संशयः ।

त्रेता, सं. पुं. (सं.) त्रेता-द्वितीय-युगम् ।

त्वचा, सं. स्त्री. (सं.) त्वच् (स्त्री.), चान् (न.), चर्दस् (स्त्री.), चंदादनी, अन्धरः

२. वल्कः-कं, वल्कलः-लं, ३. स्वगिन्द्रियं ४. (त्रापि की) कंतुकाः, मिमोकाः ।

त्वरा, सं. स्त्री. (सं.) शीघ्रता, दे. 'मन्दी' ।

त्वरित, वि. (सं.) शीघ्र, दे. 'तेज' ।

थ

थ, देवनागरीवर्णमालायाः सप्तदशो ज्वंजनवर्णः, धकारः ।

थंब-भ, सं. पुं., दे. 'स्तम्भ' ।

थई, सं. स्त्री. (सं. स्थानं) स्थलं २. राशिः (पुं.), नयः ।

थकना, क्रि. अ. (स्वम् >) परिः, श्रम् (दि. प. से.), क्लम् (भ्वा. दि. प. से.) अथम् (भ्वा. दि. प. से.) २. निर्विद् (हि. आ. अ.) ।

थकान, सं. स्त्री. (हि. थकना) आयासः, क्लमः, खेदः, श्रमः, क्लान्तिः (स्त्री.), शैथिल्यम् ।

थकाना, क्रि. स., व. 'थकना' के प्रे. रूप ।

थकामाँदा, वि., परिः, श्रांतः, क्लान्तः, खिन्न, म्लान ।

थकावट, सं. स्त्री., दे. 'थकान' ।

थकित, वि., दे. 'थकामाँदा' ।

थहा, सं. पुं. (सं. स्थलं) वेदिका, वितर्दी-दिः (स्त्री.) २. आपणिकासनं, पण्जाजीव-पीठः-ठम् ।

थन, सं. पुं. (सं. स्तनः) कुचः, पयोधरः ।

थनेली, सं. स्त्री. (हि. थन) स्तन-कुच-गण्डः-पिच्छः ।

थपकना, क्रि. म. (अनु. थपथप) करतलेन परामृश-स्पृश (तु. प. अ.), रनेहेन आह्व (अ. प. अ.)-लुचु प्रह (भ्वा. प. अ.)-तद् (तु.) ।

थपक्री, सं. स्त्री. (हि. थपकना) करतल-परामर्शः, मृदु-लघु-प्रेम-आवातः-प्रहारः-चपेटः ।

थपड़ी, सं. स्त्री. (अनु.) दे० 'ताली' ।

थपेडा, सं. पुं. (अनु. थप) तरंग-कल्लोल-ऊर्मि-वीची-संपट्टः-संमर्दः-अभिघातः २. दे. 'थपड' ।

थपड, सं. पुं. (अनु. थप) चपेटः-दिका, तल-चपेट-आवातः-प्रहारः ।

—मारना, क्रि. सं., चपेटं दो, चपेटिकृत्वा तद् (तु.)-प्रह (भ्वा. प. अ.)-आह्वे (अ. प. अ.) ।

थम, सं. पुं., दे. 'स्तम्भ' ।

थमना, क्रि. अ. (सं. स्तम्भं) विभ्र (भ्वा. प. अ.), उप-प्र-शम् (दि. प. से.), रुद्धगति (वि.) भू २. विश्रम्, (दि. प. से.), निवृत् (भ्वा. आ. से.) । सं. पुं., उप-प्र-शमः, विरामः, विरतिः (स्त्री.) २. निवृत्तिः-विश्रांतिः (स्त्री.), विच्छेदः ।

थरथराना, क्रि. अ. (अनु.) (भयेन) कम्प-वेप् (भ्वा. आ. रो.) २. स्फुर (तु. प. से.), स्पर्द (भ्वा. आ. से.) ।

थरथराहट, } सं. स्त्री. (हि. थरथराना)

थरथरी, } वेपनं, वेपथुः (पुं.), प्र-कंपः-कंपनं २. स्फुरणं, स्पर्दनम् ।

थरामोटर, सं. पुं. (अं.) दे. 'तापमानयंत्र' ।

थराना, क्रि. अ. (अनु.) दे. 'थरथराना' ।

थल, सं. पुं., दे. 'स्थल' ।

थलथलाना, क्रि. अ. (अनु. थल-थल >) अभीष्टं बिचल् (भ्वा. प. से.), थलथलायते (ना. धा.) ।

थवई, सं. पुं. (सं. स्थपतिः) पलंगः, सुधा-जीविन्, लेपकः, गृह-कारकः-संवेशकः ।

थाहरायडग्लेड, सं. पुं. (अं.) चुल्लिकाघन्विः ।

थाक, सं. पुं. (सं. स्था >) ग्रामसीमा २. राशिः (पुं.), चयः ।

थाती, सं. स्त्री. (सं. स्थान >) दे. 'अमानत' २. दे. 'पूजी' ।

थान, सं. पुं. (सं. स्थानं) स्थलं, प्रदेशः २. आलयः, गृहं ३. देवालयः, मंदिरं ४. पशु-शाला-स्थानं ५. (पटादीनां) *भावर्तः ।

थानक, सं. पुं. (सं. स्थानकम्) स्थानं, स्थलम् २. नगरम् ३. फेनः ४. आलवालयम् ।

थाना, सं. पुं. (सं. स्थानं >) गुल्मः, रक्षः-रक्षि-स्थानम् ।

थानेदार, सं. पुं. (हि + फा.) रक्षास्थाना-ध्यक्षः, *गुल्मनिरीक्षकः, रक्षकोपदर्शकः ।

थाप, सं. स्त्री. (सं. स्थापनं >) मृदंगादेरायातो ध्वनिः (पुं.) वा. २. जपेटःटिका ३. अंकः, चिह्नं ४. प्रतिष्ठा, संमानः ५. शपथः ६. लघु-मृदु, प्रहारः आघातः ७. स्थितिः (स्त्री.) ।
 थापना, कि. स. (सं. स्थापनं) स्था (प्रे. स्थापयति), आ-नि-धा (जु. उ. अ.), न्यस् (दि. प. से.), अवरुह्-निविश (प्रे.), कृ। सं. स्त्री., स्थापन-ना, आ-नि-धानं, योचना, रोपणं, २. मूर्त्यादीनां स्थापना-प्रतिष्ठापना ।
 थापा, सं. पुं. (हिं. थापना) करांकः, पंचांगुली-चिह्नम् ।
 थापी, सं. स्त्री. (हिं थापना) १-२. मृत्तिका-कुट्टिम, ताडनमुद्गरः ३. दे. 'थपको' ।
 थाम, सं. स्त्री. (हिं. थामना) आ-अव-लम्बनम्, धारणं, उप-सं, स्तम्भनम् २. आधारः, आलम्बः, अवष्टम्भः, आश्रयः ।
 थामना, कि. स. (सं. स्तम्भनं) अव-उत्-उप-सं-स्तम्भ (क. प. से. या प्रे.), अवलंब-आलंबं दा, अव-आ-लंब (स्वा. आ. से.) २. अव-स्था (प्रे.), वि-स्तम्भ, रुध् (र. उ. अ.), विरम् (प्रे.) ३. साहाय्यं दा ४. निरुध् ।
 थाल, सं. पुं. (सं. स्थालं) धातुमयमाजनभेदः ।
 थाला, सं. पुं. (हिं. थाल) आ (अ) ल्वाले, आवालं, आवापः ।
 थाली, सं. स्त्री. (हिं. थाल) स्थालकं, लघु-स्थालम् ।
 थाह, सं. स्त्री. (सं. स्था >) (नयादीनां) तल-अधोभागः २. गार्ध ३. गांभीर्यानुमानं ४. अंतः, सीमा ।
 —लेना, कि. स. (तल-बंधं) परीक्ष् (स्वा. आ. से.) निरूप् (जु.) मा (जु. आ. अ.) ।
 थिएटर, सं. पुं. (अं.) नाट्य-रंग-नाटक, शाला-गृह-मन्दिर-भूमिः (स्त्री.) ।
 थिगली, सं. स्त्री. (हिं. टिकली) पट-खंडः-शकलः ।
 बादल में—लमाना, मु., अर्ममवं त्रिकीर्णनि (सम्नत) ।
 थियोसोक्री, सं. स्त्री. (अं.) ब्रह्मविद्या २. सम्प्रदायविशेषः ।
 थिर, वि., दे. 'स्थिर' ।
 थिरकना, कि. अ. (अनु. थिर) नृत्ये चरणी निरन्तरं कप-वैप् (स्वा. आ. से.) ।

थिरता, सं. स्त्री., दे. 'स्थिरता' ।
 थुड़ी, सं. स्त्री. (अनु.) थिक्, शान्तम्, अवशा-कुत्सा-गहां-अवहेला-शब्दः ।
 —थुड़ी करना, मु०, अव-शा (क्या. प. से.), दे. 'थिक्करना' ।
 —थुड़ी होना, मु० व० 'थिक्करना' के कर्म० के रूपः ।
 थुधनी, सं. स्त्री., दे. 'थूधनी' ।
 थूक, सं. स्त्री. (हिं. थूकना) मुद्रधावः, लाला, छीवनं, नि-स्र-घृतम् ।
 —की गिलटी, सं. स्त्री., लालामयिः (पुं.) ।
 —कर चाटना, मु., प्रतिष्ठां मञ्ज (र. प. अ.), वचनं व्यतिक्रम् (स्वा. प. से.) ।
 थूकना, कि. स. (अनु. थू) नि-स्रिक् (स्वा. दि. प. से, छीवति, छीव्यति), लालां निःस्र (प्रे.), सं. पुं., नि-स्रिक्-वनं, निष्ठयतिः (स्त्री.) ।
 थूयनी, सं. स्त्री. (देश. थूयन) प्रलंबमुखं, लंवास्यम् ।
 थूनी, सं. स्त्री. (सं. स्थूणा) स्थाणु (पुं.), स्तम्भः, अवष्टम्भः ।
 थूहर, सं. पुं. (सं. स्थूणा >) नेत्रारिः (पुं.), निस्त्रिशापविका, स्तुही-हिः (स्त्री.), वज्रिन्, बज्र-द्गु-द्रुमः-कण्टकः, सिंहतुण्डः, सीहुण्डः ।
 थैचा, सं. पुं. (देश.) दे. 'नमीना' ।
 थैला, सं. पुं. (सं. स्थलम् >) प्रसेवः, सूतः-नः, पुटः-नं, स्योतः-नः, शौतकटः ।
 थैली, सं. स्त्री. (हिं. थैला) प्रसेवकः, सू(स्यो)-तकः, पुटकः ।
 थोक, सं. पुं. (सं. स्तवकः) राशिः (पुं.), चयः २. संवः, गणः ।
 —क्रिरोश-दार, सं. पुं. (हिं. + का.) चय-स्तूप, विक्रयिन् ।
 थोड़ा, वि. (सं. स्तोक) न्यून, अल्प, स्वल्प, अणुक-अल्प-सुद्र-लघु, परिमाण-मात्र, ईषन् ।
 —करना, कि. स., लघयति (ना. धा.), अल्पो-न्यूनी कृ, हस (प्रे.) ।
 —होना, कि. अ., अल्पो-न्यूनी-लप् भू. क्षि-अपचि (कर्म.) । कि. वि., स्तोकं, मनस्क, ईषत्, यत्-किंचित् ।
 —थोड़ा, कि. वि., अल्पशः, अल्प-ल्प, स्तोकशः ।
 —बहुत, वि., न्यूनाधिक ।
 —सा, कि. वि., दे. 'थोड़ा' कि. वि. ।

थोड़े से

[२८७]

दक्षिण

थोड़े से, वि., धर्तित्व, कतिपयाः, ऋकाः ।
 थोथा, वि. (देशः) रिक्त-शून्य, नार्थ-मध्य-उदर,
 सुषिर २. कुठित, अभिशित ३. निःसार, निर्मुक्त
 ४. निरर्थक, निष्प्रयोजन ।

द

द, देवनागरीवर्णमाल्याया अष्टादशो व्यंजनवर्णः,
 दकारः ।

दंग, वि. (फा.) चकित, विस्मित, स्तब्ध ।
 दंगाई, वि. (हिं. दंगा) उपद्रविन्, कलहप्रिय
 २. उग्र, प्रचंड ।

दंगल, सं. पुं. (फा.) मल्ल-बाहु-हस्ताहस्ति-
 युद्धं, मल्लक्रीडा २. मल्ल, भूः-भूमिः (दोनों स्त्री.)
 ३. जनौषः, लोकसमूहः ।

दंगा, सं. पुं. (फा. दंगल) कलहः, उपद्रवः
 २. कलकलः, कोलाहलः ।

दंड, सं. पुं. (सं.) दे. 'डंड' ।

दंडधर, सं. पुं. (सं.) यमराजः, दंडपाणिः
 २. नृपः, शासकः ३. परिव्राजकः, सम्न्यासिन् ।
 दंडनीय, वि. (सं.) दंडय, दंडयितव्य,
 दमनीय ।

दंडवत्, सं. पुं. स्त्री. (सं. अन्य.) साष्टांग-
 प्रणामः-नमस्कारः ।

दंडी, सं. पुं. (सं. डिन्) दंडधरः परिव्राजकः
 २. यमः ३. नृपः ४. दौवारिकः ५. दंडधारी
 मनुष्यः ६. संस्कृतकविविशेषः ।

दंत, सं. पुं. (सं.) दशनः, रदः, रदनः,
 दे. 'दंत' ।

—कथा, सं. स्त्री. (सं.) लोक-पारंपरीय, कथा,
 पारंपर्य, लोक-जन, श्रुतिः (स्त्री.) ।

—कलद, सं. पुं. (सं.) औषः, रदनच्छदः ।

—घावन, सं. पुं. (सं. न.) दंत, काष्ठ-मार्जनम् ।
 दंती, सं. स्त्री. (सं.) परंडपत्रिका, रेचनी,
 विशोधनी ।

दंती, सं. पुं. (सं. तिन) गजः, द्विपः ।

दंतुला, वि. (सं. दंतुल) दंतुर, दंतुरित,
 उन्नतदंत ।

दंतोष्ठ्य, वि. (सं.) दन्तौष्ठेः नार्यवर्णः
 (उ, व्) ।

दंष्ट्य, वि. (सं.) रदनविषयक २. दंतोष्ठ्य
 (तवर्गादि) ।

दंष्टनाना, क्रि. अ. (अनु.) दनदनायते (ना. धा.),
 रम् (च्वा. आ. अ.), नंद (च्वा. प. से.) ।

द्योपना, क्रि. स. (सं. रथापनं) अनु-प्र-वि-लिप्
 (तु. प. अ.), दिह् (अ. उ. अ.) २. राशी-
 पिंडी कृ, समाक्षिप् (तु. प. अ.) ३. दुष्
 (प्रे.), दोषं अरूह (प्रे. आरोपवर्त) क्षिप् ।

दंदान, सं. पुं. (फा.) दन्तः, दशनः, रदनः ।

—साज्ञ, सं. पुं., दन्तकारः, उन्तचिकित्सकः ।

दंदाना, सं. पुं. (फा.) दंतः, जेदः ।

दंदानेदार, वि. (फा.) दंतुर, दंतुरित,
 अनुककच ।

दंपती-ति, सं. पुं. (सं. दंपती पुं. द्वि.) जं-
 जाया-मार्त्या, पती (पुं. द्वि.) ।

दंभ, सं. पुं. (सं.) कपटः-दं, कापट्यं, आर्य-
 रूपता, लिंगवृत्तिः (स्त्री.), आडंबरः, वक्रवतं,
 धर्मापधा, दांभिकता, द्वाभिकता २. अभि-
 मानः, दर्पः ।

दंभी, वि. (सं. भिन्) कपटिन्, कापटिक-
 द्वाभिक-दांभिक [-को (स्त्री.)], कपटः, छद्म-
 २. अभिमानिन्, साडंबर ।

दंभोलि, सं. पुं. (सं.) इन्द्रवज्रः-जम् २.
 हीरः-रम् ।

दंश, सं. पुं. (सं.) दे. 'डंश' २. दे.
 'डंका' (१-२) ३. दंतः, रदनः ।

दंष्ट्र, सं. पुं. (सं. दैव) ईश्वरः २. अदृष्टं, भाग्यम् ।
 —मारा, वि., मंद-हत, भाग्य ।

दंकीकृ, सं. पुं. (अ.) युक्तिः (स्त्री.), उपायः ।
 कोर्य—वाणी म रचना, मु., सर्वोपायान्-समस्त
 युक्तीः प्रयुज् (र. आ. अ., चु.) ।

दक्षिजन, सं. पुं., दे. 'दक्षिण' ।

दक्ष, वि. (सं.) कुशल, निपुण, चतुर, प्रवीण,
 विदग्ध, विशेषज्ञ । सं. पुं., महापुत्रः, शिव-
 शत्रुरः, सतीपितृ ।

दक्षता, सं. स्त्री. (सं.) कौशलं, नैपुण्यं, चातुर्यं,
 प्रावीण्यं, वैदग्ध्यं, पटवम् ।

दक्षिण, वि. (सं.) अपसव्य, सव्येतर, वामेतर
 २. दक्ष, निपुण । सं. पुं., दक्षिण-भाषा-
 दिशा-दिश (स्त्री.), दक्षिणा, बैत्रस्वती, यामी,
 अवाची २. दक्षिणापथः, दक्षिणः-र्ण ३. दक्षिण-
 पार्श्वः-र्ध्व ४. नाथकमेदः ।

—पूर्व, सं. पुं., आपनेयी, दक्षिणपूर्व । वि.,
 आपनेय, दक्षिणपूर्व ।

दक्षिणा

[२८८]

द्वाना

—पश्चिम, सं. पुं., नैर्ऋती, दक्षिणपश्चिम।
वि., नैर्ऋत, दक्षिणपश्चिम।
दक्षिणा, सं. स्त्री. (सं.) यज्ञादिविधिदानं,
पौरोहित्यशुल्क-कं २. दानं, त्यागाः, उत्सर्गः।
दक्षिणापन, सं. पुं. (सं. न.) भानोर्दक्षिणा
गतिः (स्त्री.)।
—सूर्य, सं. पुं. (सं.) मकरसंक्रांतिः (स्त्री.)।
दक्षिणी, वि. (सं. दक्षिण >) द (दा) क्षिण,
दक्षिणात्य, अवाचीन, अवाच्य, याम्य,
आगस्त्य।
दक्षल, सं. पुं. (अ.) अधिकारः, स्वामित्वं २.
हस्तक्षेपः, परकार्यचर्चा २. प्रवेशः, उपगमः।
—देना, कि. स., परकार्याणि निरूप (चु.)-
चर्च (चु. आ. से.), परकर्मसु व्याप्त (तु.
अ. अ.), मध्ये पत् (भ्वा. प. से.)।
द्वाना, कि. अ., व. 'द्वाना' के कर्म. के रूप।
दशा, सं. स्त्री. (अ.) छलं, कपटं, वंचनं,
प्रसारणा २. विश्वासघातः।
—करना या देना, कि. स., प्रवृत्तप्रभु-भंग-
मुद् (प्रे.), बन् (चु.)।
—द्वार, द्वाज, वि. (अ. + फा.) कितवः,
प्रतारकः, वंचकः, शठः, विश्वासघातिन्,
छद्मिन्, कापटिक।
—बाज्री, सं. स्त्री. (फा.) वंचकता, वैतवं
२. विश्वासघातकता।
दग्ध, वि. (सं.) ज्वलित, भस्मीभूत, मरुमसाग्
कृत २. दुःखित, व्यथित।
दृडियल, वि., दे. 'दडियल'।
दत्तवन, दत्तौन, सं. स्त्री., दे. 'दातुन'।
दत्त, वि. (सं.) विमृष्ट, विश्राणित, अपित।
दत्तक, सं. पुं. (सं.) कृतकः पुत्रः, दत्तिमः
सुतः, दत्तकपुत्रः।
दत्तचित्त, वि. (सं.) अवहित, समहित,
अभिनिविष्ट, एकाग्र, अनन्यवृत्ति।
ददिहाल, सं. पुं. (हिं. दादा + सं. आलयः)
पितामहालयः २. पितामह-कुल-वंशः।
दद्दु, सं. पुं. (सं.) दद्रुः-दूः, दद्रुः, दद्रुगणः,
मंडलकुष्ठम्।
दधि, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'दही'।
—जात, सं. पुं. (सं.) बद्रः, सोमः।
दधीधि, सं. पुं. (सं.) मुनिविशेषः।
द्वद्वाना, कि. अ. (अनु.) दे. 'द्वद्वाना'।

द्वानादल, कि. वि. (अनु.) सद्वद्वानशब्दं
२. अनुकर्मण, यथाकारम्।
दनुव, सं. पुं. (सं.) असुरः, राक्षसः।
दक्रनी, सं. स्त्री. (अ. दक्षनी) दे. 'गता'।
दक्रन, सं. पुं. (अ.) निखननं २. दमशाने
स्थापनम्।
—करना, कि. अ., इमशाने-प्रेतगुमी निश्च
(जु. उ. अ.)-गथा (प्रे.)-निक्षिन् (तु. प.
अ.) २. निखद् (भ्वा. प. से.), निगुद्
(भ्वा. उ. से.)।
दक्रा, सं. स्त्री. (अ. दक्रभः) दे. 'वार'
२. विधान-, धारा। वि., अपसारित, दूरीकृत,
निष्कामित, वि-चालित।
द्वफत्र, सं. पुं. (फा.) कार्यालयः २. बृहत्पत्रं
३. सवितरवृत्तांतः।
द्वफत्री, सं. पुं. (फा.) पत्रगंधोजकः २. दे.
'जिल्दसाज'। वि., कार्यालयसंबंधिन्।
द्वबंग, वि. (हिं. द्वाना) प्रभाव, वृत्-शक्तिम्,
अनुभाववत्, प्रतापिन्, प्रबल।
द्वकना, कि. अ. (हिं. द्वाना) (भयेन)
गुप्त-गृह (कर्म.), गुप्त-निलीन (वि.) भू,
निली (वि. आ. अ.) २. पतावस्त्रंदनार्थं
निभूतं स्था (भ्वा. प. अ.) ३. देहं नम
(प्रे.), नम्रीभू।
द्वकाना, कि. स. व. 'द्वकना' के प्रे. रूप
२. दे. 'द्वटिना'।
द्वद्ववा, सं. पुं. (अ.) आतंकः, प्रतपः,
अनुभावः, प्रभावः, तेजस् (न.), प्रीतिः
(स्त्री.)।
द्वथना, कि. अ. (सं. दधनं >) [अ (भा) रे अ]
अध-अ-नम् (भ्वा. प. अ.) अधवा नम्रा-
वकी, भू २. संकुम्भ-सिंह-मंड (कर्म.) ३.
पीठ-विलश (कर्म.) ४. निवृत्त-निगुह (कर्म.)
५. प्रच्छन्न-गुप्त-निलीन (वि.) भू ६. वधं
द-या (अ. प. अ.), वकीभू ७. साकभ-निधिष्-
संभूद् (कर्म.) ८. भी (जु. प. अ.), त्रम
(हि. प. से.)।
दधे पांव (चलना), मु., अपादशब्दं मोरवं-
तिभूतं चल् (भ्वा. प. से.)।
द्वाना, कि. स., व. 'द्वाना' के प्रे. रूप।
दवा लेना, मु., अन्यायेन ग्रह (श. प. से.)
आत्मसात्क।

दवाव

[२५६]

दर

दवाव, सं. पुं. (हिं. दवाना) अविभारः, निर्वैधः, पाण्डनं २. अनुभावः, प्रतापः ।

दवैल, वि. (हिं. दवना) कानर, भीह, सस्ता-ध्वस्, वस्त्र ।

दवोचना, क्रि. स. (हिं. दवाना) वलेन-सहसा अग्निद्र (भ्वा. प. अ.), आकम् (भ्वा. प. से.), अ. अ. मह (क. प. से.)-ध्रु (नु.) । सं. पुं., महमा ग्रहण-परम-आक्रमणं इ. ।

दवौनी, सं. स्त्री. (हिं. दवाना) *पवदमनी २. कांठवन्धराणांमुक्तरणभेदः ।

द्वभ्र, वि. (सं.) स्वल्प, रणिक २. सूक्ष्म, कृश । सं. पुं., गमुद्रः ।

द्वम, सं. पुं. (सं.) आत्मसंयमाः, इन्द्रिय, अयः-निग्रहः, दौर्गन्धिः (स्त्री.), दग्धः-धुः (पुं.), २. दंडः, शान्तिः, निग्रहः ३. गृहं ४. कर्ममः ।

द्वम, सं. पुं. (सं.), प्रगि, श्वासाः, उच्छ्वासः, उच्छ्वसितं २. अनवः-प्रणवाः (पुं. बहु.), जावनं, जीवितं ३. फुत्कारः, फुल्लतं, धूमकर्मः ४. पल्लः, क्षयाः, तनि (से.) पः ५. व्यक्तित्वं ६. अभिमानः, दर्पः ७. छलं, कपटं ८. वाप्येण पाचनम् ।

—**दिलासा**, सं. पुं., मोवाशा, सात्वन्, आशासनम् ।

—**द्वद्वम**, क्रि. वि. अनु-भवि, क्षण-पल-निदिध, क्षणे क्षणे, पले पले ।

—**चद्वना**, मु., कष्टेन-सत्वरं ध्वस् (अ. प. से.) कृच्छ्रेण-शीवे निःश्वस् ।

—**निकलना**, मु., दे. 'मरना' ।

—**भर में**, मु., क्षणेन, क्षण-निमेष-मात्रेण, झटिति, सद्य इव ।

—**में द्वम आना**, मु., घेतना-संज्ञा लभ् (भ्वा. आ. अ.) ।

—**रुगाना**, मु., समाम्बु-भूर्म पा (भ्वा. प. अ.) ।

—**रुना**, मु., विश्रम् (दि. प. से.), उद्योगन् विरम् (भ्वा. प. अ.) ।

—**साधना**, मु., प्रणान् रुध् (रु. प. अ.) ।

—**नाक में आना**, अत्यन्तं तप-किलश-धीट (कर्म.) निध् (दि. आ. अ.) ।

द्वमक, सं. स्त्री. (हिं. चमक का अनु.) दे. 'चमक' ।

द्वमकता, क्रि. अ., दे. 'चमकता' ।

१६

द्वमकल, सं. स्त्री. (हिं. द्वम + कल) *धामस्यंत्रम् २. अग्निचक्रं (फायर इजन्) ३. जलोत्थोजन-यंत्रम् ।

द्वमकला, सं. पुं. (हिं. द्वमकल) *अधामेयन्ती ।

द्वमडी, सं. स्त्री. (सं. द्वमम >) काकिनी-णी, काकिणिका, घोषी, पण, दादः-प्रथमभागः ।

द्वमदमा, सं. पुं. (क.) सिद्धि-प्रसेवगुप्तिः (स्त्री.) (हिं. मोरचा) ।

द्वमन, सं. पुं. (सं. न.) अभिभवः, वि. जयः निरोधनं, नियमनं, वशा-स्वायत्ती, करणं, (२-३) दे. 'द्वम' (१-२) ।

द्वमनीय, वि. (सं.) वद्वयः-द्वय-द्वयम्, निःप्रहृषीयः-व्याचनं, संवगनीयः-व्याचनम् ।

द्वमयन्ती, सं. स्त्री. (सं.) भैमी, वेदनी, न ययन्ती ।

द्वमा, सं. पुं. (का.) श्वभरोमः, कृच्छ्रोच्छ्वासः, तमकः, तनकश्वासाः ।

द्वमाद्वम, क्रि. वि. (अनु०) सवम-द्वमशब्दन् २. निश्चरं, सततम् ।

द्वमामा, सं. पुं. (का.) दे. 'नकारा' ।

द्वमित, वि. (सं०) संवमितः-तान्तम्, निश्चितः-तान्तम्, शासितः-तान्तम्, निरुद्ध-ज्ञानम् ।

द्वया, सं. स्त्री. (सं.) अनुकंपा, अनुग्रहः, कृपा, प्रसादः, करुणा, हितेच्छा ।

—**निधान** } वि., परमदयालु, परमकृपालु,

—**निधि** } परमकारणिकः सं. पुं., ईश्वरः ।

—**मय**

—**पात्र**, वि. (सं. न.) दयनीय, अनुकम्प्य, करुणाहं ।

द्वयानतदार, वि. (अ. दयानत + का. दार) शुचि, सरल, कज्जु, शुद्धात्मन्, निष्कपट, अर्बुशुधि ।

द्वयानतदारी, सं. स्त्री. (अ. + का) शुचिता, अर्धशीलं, आजैवं, मृत्यता, निष्कपटता ।

द्वयालु, वि. (सं.) दयितु, दयाशील, दयार्द्र, कृपालु, कारुणिक, अनुकम्प्य, सद्य, दयावत् ।

द्वयालुता, सं. स्त्री. (सं.) कृपालुता, दया-शीलता, दे. 'दया' ।

द्वरी, सं. स्त्री. पुं., दे. 'जिला' ।

द्वर, सं. पुं. (का.) द्वारं, द्वारं (स्त्री.), प्रति- (ती) हारः ।

दरकना

[२६०]

दर्जी

—बदर, कि. वि., गृह्यद् गृहं, द्वारे द्वारे, अनुद्वारम् ।
 —बदर किरना, मु०, दारिद्र्येण परिभ्रम (भ्वा. प. से.) ।
 दरकना, कि. अ. (सं. दरः >) भञ्-विट्-विभिट् (कर्म.), स्फुट् (तु. प. से.), विदल् (भ्वा. प. से.) ।
 दरकाना, कि. स., ब. 'दरकना' के प्रे. रूप ।
 दरकार, वि. (फा.) अपेक्षित, आकांक्षित, आवश्यक ।
 दरकितार, कि. वि., (फा.) दूरे आस्ताम्, पृथक् तिष्ठतु, का कथा ।
 दरस्त, सं. पुं. (फा.) वृक्षः, तसुः ।
 दरस्वास्त, सं. स्त्री. (फा.) निवेदनं २. निवेदनपत्रम् ।
 दरगाह, सं. स्त्री. (फा.) देहली २. न्यायालयः ३. (स्मृतस्य) समाधिः (पुं.) ४. मन्दिरं, देवालयः ।
 दरज, सं. स्त्री., दे. 'दरार' ।
 दरद, सं. पुं., दे. 'दर्द' ।
 दरदरा, वि. (सं. दरणं >) अर्द्धचूर्णित, सामिपिष्ट ।
 दरबा, सं. पुं. (फा. दर) विटंकः, कपोत-पालिका २. कपोतविलम् ।
 दरवान, सं. पुं. (फा. । मि. सं., दारवान) दारपालः, दौवारिकः ।
 दरवानी, सं. स्त्री. (फा.) दौवारिकता, दारस्थता ।
 दरवार, सं. पुं. (फा.) राज-सभा-कुलं, आस्थान-नी २. अधिकरणं, न्याय-धर्म-सभा, व्यवहार-नटपः ।
 दरबारी, सं. पुं. (फा.) राजसभासद् (पुं.), सभ्यः, सभिकः, राजवल्लभः, आस्थानचरः ।
 दरमियान, स. पुं. तथा कि. वि., दे. 'मध्य' ।
 दरमियानी, वि. (फा.) दे. 'मध्यम्' ।
 दर्याफ्त, वि., दे. 'दरियाफ्त' ।
 दरवाजा, सं. पुं. (फा.) दे. 'दर' २. दे. 'किवाड' ।
 दरवेश, सं. पुं. (फा.) साधुः (पुं.), सम्न्यासिनः, भिक्षुः (पुं.) ।
 दरस, सं. पुं. (सं. दर्शः) दर्शनं, वीक्षणं २. सं-आगमः-मिलनं ३. सौन्दर्यम् ।
 दरौती, सं. स्त्री. (सं. दारं) लवित्रं, शस्य-कर्तनी, खटगीकन ।

दराज, सं. स्त्री. (अं. डारर) चलसंपुटः, निष्कर्षणी ।
 दराज, वि. (फा.) दीर्घ, लम्ब ।
 दरार, सं. स्त्री. (सं. दरः-रं) जेदः, भेदः, स्फोटः, निदा, भंगः ।
 दरिदा, सं. पुं. (फा.) दवापदः, हिम-पातुज-पिशिताश, पशुः (पुं.)-जीवः ।
 दरिद्र-द्वी, वि. (सं. दरिद्र) अधन, निर्धन, अकिञ्चन, निःश्व, अर्ध-धन-द्वय-विभव-हीन, नीन, दुर्गत ।
 दरिद्रता, सं. स्त्री. (सं.) दारिद्र्यं, निर्धनता, अकिञ्चनता, दुर्गतिः (स्त्री.) इ. ।
 दरिया, सं. पुं. (फा.) नदी, सरित् (स्त्री.) २. सागरः ।
 —दिल, वि. (फा.) उदार, दानशाल, वरान्य २. महानुभाव, उदारचेतसु ।
 दरियाई घोड़ा, सं. पुं. (फा. + हि.) करिया-दस (न.), नदीघोटः-व्यवः ।
 दरियाफ्त, वि. (फा.) ज्ञान, विदित सं. स्त्री., आविष्कारः ।
 दरी, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'युका' ।
 दरी, सं. स्त्री. (सं. स्तरः >) कुशः-ध, आस्तरणं, परिस्तीमः ।
 दरीचा, सं. पुं. (फा.) वातायनं २. द्वारकम् ।
 दरीबा, सं. पुं., (फा.) ताम्बूलापणः, ताम्बूल-पर्णहृष्टः, २. हृष्टः, विपणी-णिः (स्त्री.) ।
 दरीरा, सं. पुं. (फा.) अरुचिः (स्त्री.), निमुग्धता ।
 दर्ज, वि. (फा.) लिखित, लेख्ये निवेशित ।
 —करना, कि. स., लिङ् (तु. प. से.), लेख्ये निवेशि (प्रे.) ।
 दर्जन, सं. पुं. (अं. डजन) दानशकं, दानश-समूहः ।
 दर्जा, सं. पुं. (अ.) श्रेणी-णिः (स्त्री.), वर्गः, छात्रगणः २. कोटिः (स्त्री.), काष्ठा ३. पदं, पदवी-विः (स्त्री.) ४. क्रमः, परम्परा ५. भूमिः (स्त्री.) (मकान की भूमि) । कि. वि.,-पुणः, वारं-गुणितम् ।
 —ब दर्जा, कि. वि., क्रमशः, क्रमेण, शनैः शनैः ।
 दर्ज़िन, सं. स्त्री. (फा. दर्जा) तुलवायी, (स्त्री) पित्री, सूचिकर्मापजीविनी ।
 दर्ज़ी, सं. पुं. (फा.) तुलवायः, सू (स्त्री) चिकः, वस्त्रसेवकः, सूचिकर्मापजीविन ।

दुर्द, सं. पुं. (का.) पीडा, व्यथा, दुःखं, वेदना, अ (अ) तिः (स्त्री.) यातनं, क्लेशः, कष्टं, कुचूर् २. करुणा, दया, सहायुभूतिः (स्त्री.) ३. हर्षनिनाश, दुःखम् ।

—गुर्द, सं. पुं. (का.) वृक (का) वेदना, गुर्द-शूलः-लम् ।

—नाक, वि. (का.) दुःखद, कष्टप्रद, क्लेश-कर [-री (स्त्री.)], संतापक ।

—सर, सं. पुं. (का.) शीर्षं, शूल-पीडा (व्यथा, शिरोवेदना) ।

दुर्दमंद, वि. (का.) पीडित, व्यथित, दुःखित २. दयालु, दयावत् ।

दुर्दशी, सं. स्त्री. (देश.) गृध्रशी (ऊग्ररोगभेदः) ।

दुर्दी, वि (का. दुर्द) दे. 'दुर्दमंद' ।

दुर्प, सं. पुं. (सं.) अभिमानः, मानः, स्मयः, चित्तोन्नतिः (स्त्री.), गर्वः, अहङ्कारः, अवलम्बः, २. उद्वेगः, उद्वेगता ।

दुर्षक, सं. पुं. (सं.) वृत्तः, अहंकारिन्, गर्वितः, अवस्थितः, उद्वेगः ।

दुर्षण, सं. पुं. (सं. पुं. न.) मुकुरः, आदर्शः, आत्मदर्शः, कर्कः, कर्षणः, दर्शनम् ।

दुर्षित, वि. (सं.) गर्वितः-मानः, वृत्त-मानः, अवस्थितः-नात्मन् ।

दुर्म, सं. पुं. (सं.) कुशभेदः २. कुशः ३. उल-पत्रणं, काशः ।

दुर्ग, सं. पुं. (का.) संकट-संशय-पथ-मार्गः, दुर्गम-नरः, गिरिदारम् ।

दुर्शक, सं. पुं. (सं.) द्रष्टृ (पुं.), प्रेक्षकः, वीक्षकः, दाक्षिन् २. (सभा आदि के) प्रार्थनः, परिषदः, सामाजिकः ३. प्रकाशकः, प्रदर्शकः ।

दुर्शन, सं. पुं. (सं. न.) वि-आ-अ-लोकनं, वि-ईक्षणं, नाशकारकं, चाक्षुषज्ञानं, निर्वर्षणं, विभाजनं २. सं. मिलनं, समागमः, संघातः (स्त्री.) ३. तस्व-विद्या-शास्त्र-ज्ञानं ४. नेत्रं ५. दुर्षणः ।

दुर्शनीय, वि. (सं.) अव-आ-वि-लोकनीय, ईक्षणीय, निभालनीय २. मनोहर, अभिराम ।

दुर्शनी हुंटी, सं. स्त्री., सप्तःशोधं धनार्पण-देशपत्रम् ।

दुल, सं. पुं. (सं. पुं. न.) सेना, सैन्यं २. मंत्रः, गणः, समूहः ३. पर्व, पलाशं, पर्ण, छदः, छदं ४. अर्द्धखण्डः ५. चर्म, गण्डली ।

—पति, सं. पुं. (सं.) सेना, नीः (पुं.)-नायकः, अभूपतिः (पुं.) २. अग्रणीः (पुं.), अध्यक्षः, प्रमुखः, नायकः ।

दुलकना, कि. अ., दे. 'दरकना' २. दे. 'दराना' ।

दुलदल, सं. स्त्री. (सं. दलादलं) कर्दमः, पंकः-कं, ज्वालः-लं २. अनूपः, कच्छ, भू-भूमिः (स्त्री.), कच्छः ।

दुलदली, वि. (हि. दलदल) पंकदूषित, पंकिल, संवर्द्धम, कर्दममय [-नी (स्त्री.)] २. आनूप, [-पी (स्त्री.)], जल-आढ्य-पूर्ण-मय ।

दुलन, सं. पुं. (सं. न.) पेषणं, खंडनं, चूर्णनं, निःशेषः, मर्दनं २. वि-, नाशः-ध्वंसः, संहारः ।

दुलना, कि. स. (सं. दलनं) स्थूलस्थूलं पिष्-धुद् (र. प. अ.)-धुद् (ऋ. प. से.)-चूर्ण-

खण्ड (नु.), निर्दल (भा. प. से.) २. संगीड (चु.), पादतलेन धुद् ३. (पेषण्यादिभिः),

द्विधा खण्ड (चु.)-शकलीकृ ४. नश्वं-स (मे.) । सं. पुं. दे. 'दलन' ।

दुलनेवाला, सं. पुं., स्थूल-पेषकः-मर्दकः-चूर्णकः ।

दुलबादल, सं. पुं. (सं. दलं + हि. बादल)

नेपमाला, कार्द्विनी, घनपटली २. महती चमूः (स्त्री.) ३. बृहत्पटमंडपः ।

दुलवाना, कि. प्रे., व. 'दलना' के प्रे. रूप ।

दुलहन, सं. पुं. (हि. दाल) दाली-द्विदल-बैदल, मूलानं-उपयुक्तानम् ।

दुलहरा, सं. पुं. (हि. दाल) दाली-बैदल-विकेव-विकथिन्-विक्रायकः ।

दुलादली, सं. स्त्री. (सं. दलः-लं >) दल-गण-संघ-नगं, स्वर्द्ध-विकिगीया-प्रतियोगिता ।

दुलाल, सं. पुं. (अ.) परार्थे क्रयविक्रययो-जकः, क्रयविक्रयसहायकः, मध्यस्थः ।

दुलाली, सं. स्त्री. (अ. दलाल) क्रयविक्रय-सहायकत्वं २. क्रयविक्रयसहायकत्ववेतनम् ।

दुलित, वि. (सं.) खंडित, चूर्णित, मर्दित, शकलीकृत २. अवन (ना) मित, अवनपीडित ३. अस्पृश्य, अंत्यज ४. नाशित, ध्वंसित ।

सं. पुं., अस्पृश्यः, नीचः, अंत्यजः, *हरिजनः ।

—उद्धार, सं. पुं. (सं.) अस्पृश्य-अन्त्यज-हरि-जन, उन्नतिः (स्त्री.)-उन्नयनं-उद्धारः ।

—वर्ग, सं. पुं. (सं.) अस्पृश्य-अन्त्यज-नीच, वर्गः-समुदायः ।

दक्षिणा, सं. पुं. (हि. दक्षिणा) *दक्षितकः,
दक्षित खंडिन-मदित-अन्नम् ।

दक्षीण, सं. स्त्री. (अ.) दक्षीः, युक्तिः (स्त्री.),
हेतुः (पुं.) २. वादः, वाद-संवादः-ववादः,
शास्त्रार्थः ।

दक्ष, सं. पुं. (सं.) दे. 'दक्षानल' ।

दक्षा, सं. स्त्री. (का.) ओषधिः (स्त्री.),
ओषधं, भेषजं २. उपचारः, चिकित्सा ३. प्रति-
(ती)कारः, प्रतिविधानम् ।

—द्वाना, सं. पुं. (का.) औषधालयः, भेष-
जालयः ।

—द्वारु, सं. स्त्री. (का. + सं.) उपक्रमः,
उपचारः, चिकित्सा ।

द्वानिन, सं. स्त्री. } सं. पुं., दे. 'दक्षानल' ।
द्वानल, सं. पुं. }

द्वानत, सं. स्त्री. (अ. दावत) मसी, कृमि-
धानी-धान-पाप-भाजनं, मोला, नंदः-नंदः-
अंधुकः ।

द्वामी बंदोवस्त, सं. पुं. (का.) भूतिकरस्य
स्थायिप्रबंधः ।

दश, वि. दे. 'दस' ।

—आनन, —आस्य, —कंठ, —कंधर,

—द्रीव, —मुख, सं. पुं. (सं.) रावणः ।

दशान, सं. पुं. (सं. पुं. न.) दे. 'दश' ।

दशम, वि. (सं.) दे. 'दसर्वा' ।

दशमलव, सं. पुं. (सं.) दशमविन्दुः (जीज-
गणित) ।

दशमी, सं. स्त्री. (सं.) चांद्रमासस्य शुक्ल-
कृष्णा वा दशमी तिथिः (पुं., स्त्री.) २. मरणा-
वस्था ३. विमुक्तावस्था ।

दशमूल, सं. पुं. (सं. न.) पावनभेदः (वैद्यक) ।

दशार्थ, सं. पुं. (सं.) अवधेशो मृपविशेषः,
श्रीर-मन्त्रस्य पित्त ।

दशहरा, सं. पुं. (सं. स्त्री.) तृंगा, भागीरथी
२. संगंधा अवतरणतिथिः, ज्येष्ठशुक्लदशमी
३. उक्तविधौ गंगावतरणोत्सवः ४. विजया-
दशमी, रावणवधतिथिः (पुं., स्त्री.), अधिन-
शुक्लदशमी ।

दशांश, सं. पुं. (सं. दशांशः >) दशम-अंशः-
भागः ।

दशा, सं. स्त्री. (सं.) अवस्था, स्थितिः-वृत्तिः-
गतिः (स्त्री.), भावः ।

दस, वि. (सं. दशन्) । सं. पुं., उक्ता संख्या,
तदको (१०) च ।

—गुण, वि., दश-गुण-गुणित ।

—प्रकार से, कि. वि., दशधा (अव्य.) ।

—चार, कि. वि., दशकृत्यः (अव्य.) ।

दसर्वा, वि. (सं. दशमः-मी-मन्) ।

दस्तांदात्री, सं. स्त्री. (का.) हस्तशेषः, पर-
कार्य-दर्शी ।

दस्त, सं. पुं. (का.) अति(ती)सारः, द्रवमलं
२. हस्तः, करः ।

आव-लहू वाले—, सं. पुं., आमर्त्तविमारः ।

आव-वाले—, सं. पुं., आमर्त्तमारः ।

लहूव ले—, सं. पुं., रक्तातिमारः ।

—कार, सं. पुं. (का.) शिल्पिन्, शिल्पकारः ।

—कारी, सं. स्त्री. (का.) शिल्पि, शिल्पविद्या,
हस्त-शिल्प-कर्मन् (न.)-क्रिया ।

—पूत, सं. पुं. (का.) नाम-हस्त-अक्षरम् ।

—पूत करना, कि. सं., स्वनामन् (न.)
लिम् (तु. प. से.), हस्ताक्षरं कृ ।

—बस्ता, कि. वि. (का.) साजलि, अजलि
बदध्वा ।

दस्तक, सं. स्त्री. (का.) द्वार-आघातः-नाड्यः-
प्रहारः ।

दस्तरखान, सं. पुं. (का.) मञ्जकवस्त्रं, फल-
कपटः ।

दस्ता, सं. पुं. (का. दस्तः) मुष्टिः (स्त्री.),
वारंगः । (खट्वा या) मरुः-त्सुः (पुं.)

२. मृगालः-कं ३. पत्रवर्तुविशतिः (स्त्री.)

४. सैनिकसंघकः ५. दे. 'गुलदस्ता' ।

दस्ताना, सं. पुं. (का.) *हस्तत्राणः, कर्त्तव्यः ।

दस्तावर, वि. (का.) वि-रेयक-रेवन,
शोधन, सारक ।

दशाधिज्ञ, सं. स्त्री. (का.) व्यवहार-समय-
पत्र-उत्सवः ।

दस्ती, वि. (का. दस्त) हस्त्य, जर, हस्त-
२. वारंगकः, लघुमुष्टिः (स्त्री.) ।

दस्तूर, सं. पुं. (का.) प्रथा, रीतिः (स्त्री.)
२. नियमः, विधिः (पुं.) ।

दस्तूरी, सं. स्त्री., (का. दस्तूर >) (वणि-
गिर्भनिजदासेभ्यो देयं) प्रथाशुक्लम् ।

दस्यु, सं. पुं. (सं.) धीरः, लुंढकः, २. अजायः,
म्लच्छः ।

दह, सं. पुं. (सं. रुदः) *सरिदत्तः २. कुंड
३. जलाघतः ।

दहक, सं. स्त्री. दे. 'धधक' ।

दहकना, कि. अ. (सं. दह्) दे. 'धधकना' ।

दहकान, सं. पुं. (फा.) कृपाणः, कृप (पि)-
कः, कृपावलः । वि., अज्ञ, मूढ, अशिष्ट ।

दहकाना, कि. स. (हि. दहकना) दे.
'धधकाना' ।

दहन, सं. पुं. (सं. न.) उक्लनं, दाहः, प्लोपः
२. (सं. पुं.) यजिनः (पुं.) ।

दहलना, कि. अ. (सं. दर=डर) भयेन कप-
नेप् (स्वा. आ. मे.), वि, डम् (स्वा. दि.
प. से.) ।

दहलाना, कि. प्रे., व. 'दहलना' के प्रे. रूप ।

दहलीज, सं. स्त्री. (फा.) देहली, गुलाब-
ग्रहणी ।

दहवान, सं. स्त्री. (फा.) वामः, आतंकः,
भीतिः (स्त्री.) ।

दहसेरी, सं. स्त्री. (सं. दशसेरी) दशसेत्री ।

दहाई, सं. स्त्री. (फा. दह) दशत्वं २. दशकं,
दशतिः (स्त्री.) ३. अंकगणनायां द्वितीयस्थानं
४. दशमांशः ।

दहाड़, सं. स्त्री. (अनु.) गर्जितं, गर्जनना,
महत्-शीर्ष-गंभीर, नादः-शब्दः २. अवि-
बोधः आत्तनादः ।

दहाड़ना, कि. अ. (हि. दहाड़) गर्व-रस-ज-
वद् (स्वा. प. मे.) २. आ-उत्-वि-व्या-
कुश् (स्वा. प. अ.), सचीकारं रुद
(अ. प. से.) ।

दहाना, सं. पुं. (फा.) विस्तीर्णमुखं २. द्वारं
३. भवामुखं ४. नदीमुखम् ।

दहिना, वि. (सं. दक्षिण) अपसव्य, वामेतर,
सन्व्येतर २. तृष्ट, कृपालु ।

दहिने, कि. वि. (हि. दहिना) दक्षिणेन,
दक्षिणतः, दक्षिणा-भात-ग्राहि ।

दही, सं. पुं. [सं. दधि (न.)] क्षीरजं,
वितलं, मंगल्यं, पथस्यं, द्रव्यः-सं, धीपनम् ।

दहेज, सं. पुं. (अ. जहेज) युक्तं, यौतुः,
भीषनं, शुक्तं, वाहनिकम् ।

दाँ, सं. पुं. (सं.-दा) बारं, कुलः (दीनों
अव्य.) । (फा.) वि., (समासान्त में)-उ,
(हिमावदाँ=गणितज्ञः इ.) ।

दाँपू-बाँपू, कि. वि. (सं. दक्षिण+वाम) >
दक्षिणतो वामतश्च, दक्षिणवामपार्श्वयोः, इत-
स्ततः, अत्र तत्र ।

दाँत, सं. पुं. (सं. दंतः) दशनः, रदनः,
खादनः, रदः, द्विनः, स्वरः (पुं.), दशः ।

(शामने के आठ=दशक-कर्मनक, दन्ताः, स्पंथ
के बार=दशक-दन्तक, दन्ताः, उनसे पिछले
आठ=अध्यायवर्णकदन्ताः पिछले बारह=चर्च-
कदन्ताः) ।

—उगना, कि. अ., दन्ताः उद्गाम् (स्वा. प.
अ.)-उद्गिद् (अगो) । सं. पुं., दन्तीदगामः ।

—किचकिचाना, } कि. अ., (क्रोधेन)दंतीदतान्

—किचकिचाना, } धृप् (स्वा. प. से.)-निधिष्

—जवाना, } (ह. प. अ.)-विषट् (प्रे.) ।

—पोसना, } सं. पुं., दंत, उपर्ण-निर्घोषः ।

—का दई, सं. पुं., दंत, पीडा-शूलम् ।

—का पेस्ट, सं. पुं., *दंत-लेपः ।

—का सुरण, सं. पुं., दंत-कुर्वकः, कम् ।

—का संजन, सं. पुं., निष्कृकणम्, दंतमा-
जर्तं, ररशोदः ।

—खोदनी, सं. स्त्री., दंतोल्लेखनी, दंतशोधनी ।

—खानेवाला, सं. पुं., दंत, वीचः-पिचिस्तकः ।

—सट्टे करना या तोड़ना, मु., विपरान्जि
(स्वा. आ. अ.), अभि-पराम् (स्वा. प. से.) ।

—तले उँगली दवाना, मु., अत्यर्थं विरिभ
(स्वा. आ. अ.), विरिभ-चकित (वि.) भू ।

—निकालना, मु., हम् (स्वा. प. से.)
२. स्वायोम्पतां प्रकाश (प्रे.) ।

—खना, लगाना या होना, मु., अत्यंत
अभि-उप-वाञ्छ (स्वा. प. से.) ।

दाँता, सं. पुं. (हि. दाँत) दे. 'ददान्त' ।

—किचकिच, } सं. स्त्री., कलहः, वायुञ्जं

—किलकिल, } २. दे. 'गालीगलीज' ।

दाँती, सं. स्त्री., दे. 'दरती' ।

दाँपन्थ, वि. (सं.) परिपन्थी-त्रास-रति-विषयक,
त्रैव शिक, जापत्य । सं. पुं. (सं. न.) दाम्पत्य-
संबंधः-अवधारः, नापत्यम् ।

दाँधिक, वि. (सं.) दे. 'दंभी' ।

दाहू-जा, सं. पुं., दे. 'दहेव' ।

दाहू, वि. स्त्री., दे. 'दहिनी' ।

दाहू, सं. स्त्री. (सं. धावी; क. दायः) मातृका,

दाड

[२६४]

दाना

उपमातृ (स्त्री), अंकपाली २. साविका, प्रसवकारिणी ।
 —गौरी, सं. स्त्री., गर्भमोचनविद्या, प्रसव-भूति, कार्य-कर्मन् (न.) ।
 —से पेट छिपाना, सु., रहस्यविदो रहस्यं गुह्यं (भ्वा. उ. वे.) ।
 दाड, सं. पुं., (सं. देवः >) अग्रजः, ज्येष्ठप्रातृ २. बल, देवः-नामः, धीकृष्णाग्रजः ।
 दाक्षायण, सं. पुं. (सं.) दक्षप्रजापतिकृतयज्ञः २. सुवर्णम् ३. आभूषणम् । वि. दक्षगोत्रीयः ।
 दाक्षायणी, सं. स्त्री. (सं.) अधिम्यदिनक्षत्रम् २. सती ३. दुर्गा ४. अर्द्धतिः (स्त्री.) ५. दक्षगोत्रकन्या ।
 —पति, सं. पुं. (सं.) शिवः २. चन्द्रः ।
 दाक्षिणात्य, सं. पुं. (सं.) दक्षिणप्रदेश, निवाः सिन्धु-वासिभ्यः २. नारिकेलः, अप-कीशिक, फलम् । वि. दक्षिण-सम्बन्धिन्-प्रदेशीयः ।
 दाक्ष, सं. स्त्री. (सं. दाक्षा) गौरवानी, स्वाही, शूद्रिका, रमला, गुच्छफला २. शुभदाक्षा ३. दे. 'मुनका' ।
 दाक्षिण्य, वि. (का.) प्रविष्ट, निविष्ट २. संमिलित, समाविष्ट ३. न्यरन, निश्चिन्त ।
 —स्नानि, सं. पुं. (का.) स्वत्व-स्वामित्व, परिवर्तः ।
 —द्वयतर, वि. (का.) लेशामरि निक्षिप्त ।
 दाक्षिणा, सं. पुं. (का.) प्रवेश-दानम् ।
 दास, सं. पुं. (का.) अंकः, 'निह' २. कलंकः, लाडल, दीपः ३. तप्तलोहमुद्रांकः ४. शिष्टः (पुं.), तिलकः-कम् ।
 —दार, वि. (का.) अंकित, चिह्नित २. सतिलक, बिंदुमय, कर्पूर ३. दूषित, कलंकित ।
 —लगाना, क्रि. अ., कलंकित-दूषित-लालित- (वि.) भू २. तप्तलोहमुद्रांकित (वि.) भू ।
 —लगाना, क्रि. स., दुष् (प्रे.), कलंकयति (ना. धा.) २. (तप्तलोहमुद्रया) अंकयति-विह्वयति (ना. धा.) ।
 दागाना, क्रि. स. (का. दाग) दे. 'दाग लगाना' २. लोहादिगोलान् प्रक्षिप् (उ. प. अ.)-प्राप् (दि. प. से.) ।
 दागी, वि. (का. दाग) दे. 'दागदार' ।
 दाघ, सं. पुं. (सं.) तापः, दाहः, उन्मत्त (दु.) ।
 दाहिभ, सं. पुं. (सं.) दे. 'अनार' ।

दाही, सं. स्त्री. (सं. दादा) दादा, जंभः, नयंपदंतः ।
 दाही, सं. स्त्री. (अनु.) रजितं, गर्जन-ना २. शीत्कारः ।
 दाही, सं. स्त्री. (दाहिका) कुर्वन्-नी, दमश्च (न.), व्यञ्जनं, कोटः ।
 —जार, सं. पुं., दग्ध, कूर्च-दमश्च (गालीभेदः) ।
 —बनवाना वा मुहाना, क्रि. प्रे., कूर्चं मुह्यं (चु.)-अवप (प्रे.) ।
 दाता, सं. पुं. (सं. दातृ) दानकर्तृ (पुं.) वदान्यः, दानशीलः, दानः (पुं.), मुचिरः । [दात्री (स्त्री.) = दानकर्त्री] ।
 दातृ(त्तौ)न, सं. स्त्री. (हि. दात) दंत, काष्ठ-भावनम् ।
 दाद, सं. स्त्री., दे. 'ददु' ।
 दाद, सं. स्त्री. (का.) न्यायः, न्यायता ।
 —देना, क्रि. स., गुणानुगुणान् विविध् प्रदान् (न्वा. प. से.) ।
 दादा, सं. पुं. (सं. दातः >) पितामहः, पितृ-जनकः २. अग्रजः ।
 दादी, सं. स्त्री. (हि. दादा) पितामही, पितृ-जननी ।
 दादुर, सं. पुं. (सं. ददुरः) मंडूकः, भेकः ।
 दान, सं. पुं. (सं. न.) त्यागः, उत्-वि, म देनं-सगं, विश्राणनं, वितरणं, गिज्ञादानं २. प्रदानं ददनं, दत्तिः (स्त्री.), आत्मदानं ३. गजमदः ।
 —करना वा देना, क्रि. ग., सत्कार्येषु-पुण्यायै वित्तं वित्तन् (तु. प. अ.)-अवध (चु., भ्वा. उ. से.) ।
 —धर्म, सं. पुं. (सं.) भिक्षा-दानं, (पुण्यायै) त्यागः ।
 —पत्रं, सं. पुं. (सं. न.) दानलेखः ।
 —पात्र, सं. पुं. (सं. न.) दान-भावजन-भञ्जूषा २. दानग्रहणाधिकारिन् ।
 —पुण्य, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'दानधर्म' ।
 —शील, वि. (सं.) उदार, त्यागिन्, वदान्य, त्यागशील, दानशील ।
 दानव, सं. पुं. (सं.) राक्षसः, रक्षम् (न.) ।
 —इन्द्र, सं. (पुं.) बलिः ।
 दानवी, वि. (सं.) दानवीर्य, दानव-उचित-सम्बन्धिन् । सं. स्त्री. (सं.) दानव, पत्नी-भार्या ।
 दाना, सं. पुं. (का. दानह) अन्तकयाः-शिका

२. अन्नं, भान्यं ३. गुलिका ४. पिष्टिका, रक्तवटी, स्फोटकः ।

—पानी, सं. पुं. (फ़ा. + हि.) अन्नजलं, जलाशय, मध्यपेयम् ।

—पानी उठना, मु., न्यवसाय-आजीविका-समाप्तिः (स्त्री.)-अवसानम् ।

—(ने) दाने को तरसना, मु., क्षुधया उभुक्षयः (तु. आ. अ.) ।

दाना^२, वि. (फ़ा.) प्राज्ञ, बुद्धिमत् ।

दानाई, सं. स्त्री. (फ़ा.) बुद्धिमत्ता, विद्वत्ता ।

दानी, वि. (सं.-निर्द्) दे. 'दानशील' तथा 'दाना' ।

दानेदार, वि., कण-कणिका-मय [-यी (स्त्री.)] ।

दाब, सं. स्त्री., दे. 'दबाव' ।

दाबना, कि. स., दे. 'दबाना' ।

दाम^१, सं. पुं. (सं. दामन् न. स्त्री.) रज्जुः (स्त्री.), गुणः, संदानं २. माला, हारः ३. समूहः ४. संसारः ।

दाम^२, सं. पुं. (फ़ा. । मि. सं. 'दाम^१') पाशः, जालं, वायुरा ।

दाम^३, सं. पुं. (हिं. दमड़ी) पणचतुर्विंशभागः २. मूल्यं, अर्थः, वस्त्रं ३. धनं ४. दाननीतिः (स्त्री., राजनीति) ।

दामन, सं. पुं. (फ़ा.) बोलदीनी निम्नभागः, वस्त्रांचलः, वस्त्रांताः २. उपत्यका ।

—पकड़ना, मु., शरणं प्रपद (दि. आ. अ.), आ-उपा-सं, अि (भ्वा. उ. से.) ।

—कैलाना, मु., यान् (भ्वा. उ. से.) ।

दामाद्, सं. पुं. (फ़ा.) जामात् (पुं.), पुत्री-पतिः (पुं.), कन्यावेदिन्, दुहितृपथः ।

दामिनी, सं. स्त्री. (सं.) तट्टि-विभुत् (स्त्री.), चञ्चला ।

दामोदर, सं. पुं. (सं.) श्रीकृष्णचन्द्रः २. विष्णुः ।

दाय, सं. पुं. (सं.) पैतृकं, पैतृक-रिक्तं-धनं, गोत्रधनं २. यौतुकादिदेयधनम् ।

—भाग, सं. पुं. (सं.) दाय-रिक्थ-विभागः-बंटनं-भ्यशनम् ।

दायक, सं. पुं. (सं.) दे. 'दाता' [दायिका (स्त्री.)] ।

दायजा, सं. पुं. (सं. दायः >) दे. 'दहेज' ।

दायर, वि. (फ़ा.) चलत् (श्रन्त), वर्तमान ।

दावा—करना, किं. स., अभियुज् (रु. आ. अ. ;

हु.), राजकुले निविद् (प्रे.), अभियोगं प्रवृत् (प्रे.) ।

दायरा, सं. पुं. (अ.) चक्रं, मंडलं, वृत्तम् ।

दाय्यौ, वि. (सं. दक्षिण) दे. 'दहिना' ।

दायित्व, सं. पुं. (सं. न.) उत्तरदायित्वं २. दायत्वम् ।

दाय्यौ, कि. वि. (हि. दायाँ) दे. 'दहिने' ।

दार, सं. स्त्री. [सं. दाराः (नित्य पुं. बहु.)] कलत्रं, पत्नी, भार्या ।

—कर्म, सं. पुं. [सं.-मंत्र (न.)] विवाहः, परिणयग्रहणम् ।

दारक, सं. पुं. (सं.) शिशुः (पुं.), बालः, बालकः २. पुत्रः, तनयः ।

दार(ल)चीनी, सं. स्त्री. (सं. दारु + चीन = देशविशेष >) दे. 'तज' ।

दारा, सं. स्त्री., दे. 'दार' ।

दारिद्र-द्र-द्रैय, सं. पुं. (सं. दारिद्र्यं) निर्ध-नता, अकिंचनता, दरिद्रता ।

दारु, सं. पुं. (सं. न., कहीं-कहीं पुं.) काष्ठं २. देवदारु (पुं. न.) ।

दारुण, वि. (सं.) घोर, विभय, विकट, दुःसह, कठोर, २. भोग्य, मयद्गुर ।

दारुहलदी, सं. स्त्री. (सं. दारुहरिद्रा) दावी, पीता, पीनिका ।

दारु, सं. स्त्री. (फ़ा.) औषधं, भेषजं २. मर्ब, सुरा ३. दे. 'दारु' ।

—दरपन, } सं. स्त्री., चिकित्सा, उपचारः ।

—दवा, }

दारोगा, सं. पुं. (फ़ा.) अध्वक्षः, अधिष्ठात् (पुं.) निरीक्षकः २. दे. 'थानेदार' ।

दार्शनिक, सं. पुं. (सं.) तत्त्व-विद्-वेत्तृ-ज्ञः (सच पुं.), दर्शनशास्त्रपण्डितः ।

दाल, सं. स्त्री. (सं. दालः = कोदों >) दाली, द्विदला-कं, वैदलः, शिवा-बिका, हरेणुः (पुं.), हरेणुकः, प्रमां-शिन्नी, धान्यम् ।

—दुलिया, मु., रुद्रभोजनम् ।

—न गलना, मु., असमर्थ-अशक्त (वि.) स्था (भ्वा. व. अ.) ।

—में काला, मु., सदिग्धवार्ता २. कुरहस्थं ३. कुलक्षणम् ।

—रोटी, सं. स्त्री., सामान्यहारः ।

दालचीनी, सं. स्त्री., दे. 'तज' ।

दालन, सं. पुं. (सं. दलना >) दन्तारोगमेघः, दन्तक्षयः ।

दालमोठ, सं. स्त्री. (हि. दाल + मोठ) रसैह-भोजितदाली, सलवणः ।

दालान, सं. पुं. (फा.) दे. 'बग मदः' ।

दालिम, सं. पुं. (सं. दालि (हि) मः + मा) (वृक्ष) कुपफलः, शुक्रवृक्षमः । (फल) कुपफलं, रक्तबीजं, दालि (हि) मम् ।

दावै, सं. पुं. (सं. प्रत्य. दा >, उ. पक्षः) पर्यायः, परिवृत्तिः (स्त्री), वारः २. अवसरः, बेला, कार्यकालः, प्रसंगः ३. उदायः, वृत्तिः (स्त्री) ४. छलं, कपटं ५. मल्लयुद्धकृतवृत्तिः (स्त्री) ६. निमृतावस्थितिः (स्त्री) ।

—पर लगाना, मु., पण् (भ्वा. आ. रे., षष्ठी के साथ; उ. 'रूप्यकस्य पगते') ।

—लगाना, मु., अवसरः लभं (कर्म.) ।

दाव, सं. पुं. (सं.) वनं २. दावानलः ३. अग्निः (पुं.) ४. दाहः, तापः ।

दावत, सं. स्त्री. (अ.) भोजनं, निमंत्रणं २. विशिष्टभोजनम् ।

दावा, सं. पुं. (अ.) स्वत्वप्रतिपादनं, स्व-मित्रप्रकाशनं २. स्वत्वं, अधिकारः ३. अभि-योग-भाषा, पत्रं ४. अभियोगः, पूज्यक्षः, भाषा, भाषापादः ५. प्रतापः, प्रभुत्वं ६. द्रोहिः (स्त्री) ७. प्रतिज्ञा, पक्षः, पूर्वपक्षः ।

पूर्वपक्षः स्मृतः पादो, द्विपदशोत्तरः स्मृतः । क्रियापदस्तथा चाल्यः सन्त्यो निर्णयः स्मृतः ॥

—करना, कि. स., अगियुञ् (रु. आ. उ., चु.) दे. 'दावत' के नीचे २. स्वत्वं प्रतिपद्य. (प्र.) ।

—छारिज करना, कि. स., अभियोगं अपाय (हि. प. से.) निराकृ ।

—गौर, सं. पुं. (अ. + फा.) अभियोगः ।

—दार, सं. पुं. (पुं.), अग्निः, तापिनः, अभियोगिन्, नृपकः, कार्यविह २. स्वत्वप्रतिपादकः, स्वामित्वप्रकाशकः ।

दावानल, सं. पुं. (सं.) दा(द) वानिः (पुं.), वनवह्निः (पुं.), दा(दा) वः ।

दास, सं. पुं. (सं.) किरातः, भृत्यः, मुनिध्वः, दासिधः, दासिः, दे. 'नीकर' ।

दासता, सं. स्त्री. (सं.) दासत्वं, दास-भाषा-वृत्तिः (स्त्री.) ।

दासानुदास, सं. पुं. (सं.) अविनाशः किरातः, मुच्छरीवकः ।

दासी, सं. स्त्री. (सं.) मेढी, मुनिध्या, दे. 'नीकरानी' ।

दासेय, सं. पुं. (सं.), दासीपुत्रः २. दासः । दास्तान, सं. स्त्री. (फा.) कथा २. पृथान्तः ३. वणानम् ।

दास्य, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'दासता' ।

दाह, सं. पुं. (सं.) दाहिनं, ज्वालनं, भस्मीकरणं २. शवदाहः, शब्देष्टि-मृतक-संस्कारः-क्रिया ३. तापः, प्लेयः, शोकः, सन्तापः ४. ईर्ष्या ।

—कर्म, सं. पुं. [सं. मन् (न.)] दे. 'दाह' (२) ।

दाहक, वि. (सं.) तापक, दीपक, प्लेयक ।

दाहना, कि. नं., दे. 'ज्वालना' ।

दाहिना, वि., दे. 'दक्षिणा' ।

दाहिने, कि. वि., दे. 'दक्षिणे' ।

दिक्, सं. स्त्री. [सं. दिक् (स्त्री.)] दिशा ।

—पाल, सं. पुं. (सं.) आशापाळा, इन्द्रादयो यदा देवाः ।

दिक्, सं. पुं. (अ.) क्षयरामः । वि., ध्वनिः, संज्ञापित २. अस्वस्य, कर्म ।

—करना, कि. स., तपु-स्थ (प्र.), पीड (चु.), दाष् (भ्वा. आ. से.) ।

अंती या—, सं. पुं., अन्वक्षयः ।

दिकृत, सं. स्त्री. (अ.) काठिन्यं, वाद्यं, कथम् ।

दिखलाना, कि. स., व. 'देखना' के प्र. रूप ।

दिखलावा, सं. पुं., दे. 'दिखावा' ।

दिखाई, सं. स्त्री. (हि. दिखान) प्रदर्शनं, व्यञ्जनं, निर्देशनं, प्रकाशनं, प्रकटी-न्यस्तो-वारणं २. प्रदर्शन-अभि-मूल्याम् । (हि. देखना) अव-आनि, लोकनं, वि., देशनां, विमालनं २. अवलोकन-शुद्ध-वाग् ।

—देना, कि. अ., लक्ष्-दृश् (कर्म.), प्रवक्तु (भ्वा. आ. से.), प्रतिभा (अ. प. अ.)

दिखाना, कि. प्रे., व. 'देखना' के प्रे. रूप ।

दिखावट, सं. स्त्री. (हि. दिखान) दे. 'दिखाई' में 'प्रदर्शन' इ. २. आश्चर्यः, वाद्य-वाग्-श्रीः (स्त्री.) ।

दिखावटी, वि. (हि. दिखानट) दृष्टिहारिन्, सुभाषालोक, कृतक, कृत्रिम, अनुपयोगिन्, साधर ।

दिखावा

[२६७]

दिया

दिखावा, सं. पुं. (हि. दिखावा) अपठवः, दंगः, आपातरसंगीयता, वाद्यशोभा ।

दिशांत, सं. पुं. (सं.) दिशांतः, दिक्सीमा २. क्षितिर्व, दिक्पट्ट-चक्र-माण्डलं ३. नतस्रो दश वा दिशः ।

दिशांतर, सं. पुं. (सं. न.) अन्याः दिशा २. दिग्मध्यं, दिक्द्वयः ३. आकाशः-शः, अन्तरिक्षं ४. विदेशः ।

दिशांतर, सं. स्त्री. (सं. पुं.) जैनसंप्रदायविशेषः २. शिवः । वि., जगन्, अवसन ।

दिशांत, सं. पुं. (सं.) दिग्मक्षितिच् २. ऐरा-वत-दधीयुष्ट दिग्गङ्गा गङ्गाः ।

दिग्दर्शनं चंद्र, सं. पुं. (सं. न.) दिग्दर्शनरूपक-चन्द्रम्, दिग्दर्शनम् ।

दिग्दर्शनं, सं. पुं. (सं. न.) सामान्य-साधारण-परिचय-ज्ञानम् २. दिग्दर्शनं, दिशातिदेशः ३. दिग्दर्शनचन्द्रम् ।

दिग्दर्शनं, सं. स्त्री. (सं. पुं.) विषया सुद्वेष्ट वा जगज्जन्मः ।

दिग्दर्शनं, सं. पुं. (हि. दाठ) *कुट्टिदिग्दर्शनः (कञ्जलक्षितः) ।

दिति, सं. स्त्री. (सं.) कश्यपपत्नी, दैत्यजननी ।

दिन, सं. पुं. (सं. न.) अहन् (न.) दिवसः, वायुः, वायुः पक्षः, अंशकं, दिव् (स्त्री.), घृ (न.) २. समयः, कालः ।

—चंद्रना या निकलना, क्रि. अ., रजनी प्रभं (अ. न. अ.), अरुणः-सूर्यः उदर-इ (अ. प. अ.), प्रभात-विभात-चक्रणोरयः जन् (दि. आ. सं.) ।

—इलना, क्रि. अ., दिने-दिवसः परिणम अधवा आ-अव-नन् (स्वा. प. अ.), अपराहः वृत् (स्वा. आ. से.) ।

—हूबना, क्रि. अ., सूर्यः-दिवसः अस्तं-गम् (स्वा. प. अ.)-अद-रं (स्वा. आ. से.) ।

—कर,

—नाथ,

—पति,

—मणि,

—राज,

सं. पुं. (सं.) दिनेशः, दे. 'वर्द्ध' ।

—चढ़े, क्रि. वि., उदिते सूर्ये, प्रातः (अव्य.) ।

—चढ़यो, सं. स्त्री. (सं.) आदिकं २. गित्य-कर्मन् (न.) ।

—हले, क्रि. वि., (अ.) पराडे, दिवसस्य वृतीयगामे ।

—दिन, क्रि. वि., दिने दिने, अनु-प्रति-दिने-दिवसम् ।

—दुहाड़े, क्रि. वि., दिन-काले-समये एव, दिवैव ।

—बदिन, क्रि. वि., अस्वहं, प्रत्यहं, प्रतिदिनम् ।

—सर, क्रि. वि., सर्वं दिनम् ।

—सें, क्रि. वि., दिवा, दिवसे ।

—रात, क्रि. वि., अहानशः, दिवानिशं, अदीराजं, रात्रि-नक्तं-दिवम् ।

आगले—, क्रि. वि., परेशुः, परस्मिन् दिने ।

दूसरे—, क्रि. वि., अन्येषुः, पराहि ।

पहले या पिछले—, क्रि. वि., पूर्वेषुः, पूर्वस्मिन् दिने ।

—काटना, मु., वधाकथंचितः-कृच्छ्रेण जीवनं वा (प्रे. यापयति) ।

—दुना रात चौगुना होना, मु., अहनिशं सशुच् (दि. प. सं.)-प्र-उप-रयि (कर्म.) ।

—फिरना, मु., गार्थं उद-इ (अ. प. अ.) ।

दिनेश, सं. पुं. (सं.) सूर्यः, मानुः (पुं.) ।

दिनोधी, सं. स्त्री. (सं. दिनांधः >) दिनांधता, दिवांधता, नेत्ररोगभेदः ।

दिमाग, सं. पुं. (अ.) मस्तकस्नेहः, मस्तिष्कं, मस्तु, छेगः-छेदकः—(गं, गकं), गोर्दं २. मति-धीः-बुद्धिः (स्त्री.) २. र्वः, अभिमानः ।

—चट, सं. पुं., वाचाळः, वाचाटः, बहुभाषिन् ।

—द्वार, वि. (अ. + का.) धीमत्, बुद्धिमत् २. दृप्त, अभिमानिन् ।

—आस्मान पर होना या चढ़ना, मु., अति-शयेन दृप्त-अचलिम् (वि.) वृत् (स्वा. आ. से.) ।

—में खलल होना, मु., भ्रिषिष-वालुल-ध्रात-चित्तं (वि.) विः (दि. आ. अ.) ।

—सातवें आस्मान पर होना, मु., अलि-दृप्त-रचित्त-गविन् भू ।

दिमागो, वि. (अ.) मानसिक, बौद्धिक, मस्तिष्कसंबन्धिन् २-३. दे. 'दिमागदार' (१-२) ।

दिया, सं. पुं. (सं. दीपः) दीपकः, प्रदीपः, स्नेहाद्यः, कञ्जलध्वजः, गृहनाभिः (पुं.) दीपा-स्थः, दीप-स्थकः, गयनोत्सवः ।

—सलाहू, सं. स्त्री., दीपशलाका ।

दिये का काजल, सं. पुं., दीप-कञ्जल-किट्ट-ध्वजः ।

दिये की ज्वाला, सं. स्त्री., दीप-कालिका-शिक्षा ।

दिव्यानतदार

[२६८]

दिशा

- दिये की वत्ती, सं. स्त्री., दीप-वत्तैः (स्त्री) - खोरी-कूपी, विद्यादिका ।
- दिव्यानतदार**, वि., दे., 'दिव्यानतदार' ।
- दिल**, सं. पुं. (फा.) हृदय, हृद (न.), अग्र-मांसं, बुद्धि, बुद्ध्याग्रमांसं । २. मनस्-चेतस् (न.), मानसं, चित्तं, अंतःकरणं, हृदयं, स्वानं, आत्मन्-अंतरात्मन् (पुं.) ३. साहसं, शौर्यं ४. प्रवृत्तिः (स्त्री.), इच्छा ।
- गीर, वि. (फा.) शिक, वि-गण, दुःखित ।
- चस्प, वि. (फा.) रोचक, रूचकर, मनोहर ।
- चरपी, सं. स्त्री. (फा.) रुमिः (स्त्री.) २. मनोरंजनम् ।
- चोर, वि. (फा + हि.) कायस्थानिन, *कर्मचौरः ।
- जमई, सं. स्त्री. (फा + अ. जमअः) संगीतः, निर्भयत्वं, शंकाभावः ।
- दरिया, वि., दे. 'दरिया दिल' ।
- दार, सं. पुं. (फा.) दयितः, चल्करः, प्रियः प्रेम-स्नेह-प्रीति, भाजनम् ।
- पसंद, वि. (फा.) चित्ताकर्षक, रचिकर, इष्ट ।
- बर, सं. पुं. (फा.) दे. 'दिलदार' २. वण-भेदः (दि. दिल के बहुत से मुहाबिरे 'कलेजा' और 'जी' के नीचे मिलेंगे, कुछ यहाँ दिये जाते हैं) ।
- रुबा, (सं. पुं. (फा.) दे. 'दिलदार' ।)
- का कमल (या कली) शिवलना, मु., आनंद (स्वा. प. से.), प्रसद (स्वा. प. अ.), मुद (स्वा. आ. से.) ।
- तोड़ना, मु., उल्लाहं भंज् (रु. प. अ.)-रुग अ. प. अ.), साहसं धैर्यं ध्वंसं (प्रे.). अव-वि-सद (प्रे.) ।
- में रखना^३, मु., गोप्य-रहस्यं गुह् (स्वा. उ. से.)-छद (चु.) ।
- रखना^३, मु., श्री (क्. प. अ.), च्. प्रीणयति), तुष्-प्रसद-अनुरंज् (प्रे.) ।
- ही दिल में, मु., तूणीं, निःशब्दं, मौनं, जोषम् ।
- दिलवाना**, दिलावा, कि. प्रे., व. 'देना' के प्रे. रूप ।
- दिलावर**, वि. (फा.) शूर, वीर २. साहसिग ।
- दिलावरी**, सं. स्त्री. (फा.) शौर्यं, वीरता, पराक्रमः, विक्रमः ।
- दिलासा**, सं. पुं. (फा. दिल) धैर्यं, आत्मता, श्रान्तम् ।
- दिली**, वि. (फा. दिल) हादिक, मानसिक २. अभिप्रहृदय, हृदयंगम ।
- दिलेर**, वि. (फा.) दे. 'दिलावर' ।
- दिलेरी**, सं. स्त्री. (फा.) शौर्यं, वीरता, गदम् ।
- दिल्लगी**, सं. स्त्री. (फा. दिल + हि. लगना) परि (रो) हासः, हास्यं, नर्माकापः, परिहृ-सोक्तिः (स्त्री.) ।
- बाज्र, सं. पुं., विनोद-परिह.स.श्रीलः, वैहसिकः ।
- दिल्ली**, सं. स्त्री. (हि. दिल्ली) इन्द्रप्रस्थं, भारत राजधानी, दिल्ली ।
- वाल, वि., इन्द्रप्रस्थ-दिल्ली, वसिन्-सम्बन्धिन् ।
- दिवंगत**, वि. (सं.) प्रेत, मृत, स्वर्गत, स्वर्गत, स्वर्गीय ।
- दिवर**, सं. पुं. (सं.) दे. 'दिन' ।
- दिवांध**, वि. (सं.) दिनाथ । सं. पुं., उक्कः २. दिनापता ।
- दिवाकर**, सं. पुं. (सं.) दे. 'दिनकर' ।
- दिवाला**, सं. पुं. (हि. दीया + बालना) कण-शोधनासामर्थ्यं, कणदानाक्षमता ।
- निक्कलना, कि. अ., परिशि (कर्म.), कण-शोधनाक्षमत्वं ख्या (प्रे.) ।
- दिवालिया**, वि. (हि. दिवाल) कणशोधना-सामर्थ्यं, कणदानाक्षम, क्षीणसर्वस्व, शक्तिशून्य ।
- दिवाली**, सं. स्त्री., दे. 'दीवाली' ।
- दिव्य**, वि. (सं.) दैव (-नी स्त्री.), अमानुष (-नी स्त्री.), ऐश्वर (-नी स्त्री.), अपरिधेय (-नी स्त्री.), अलौकिक (-नी स्त्री.), स्वर्गीय २. भस्वर, प्रकाशमान ३. अति, स्वच्छ-सुंदर-मनोहर ।
- चक्षु, सं. पुं. | सं. श्वस् (न.) | अपौरुषेय-अलौकिक, दृष्टिः (स्त्री.) २. गंधः ३. उपनेत्रम् ।
- ज्ञान, सं. पुं. (सं. न.) अतिमनुष-अपौरु-धेय, गानुपातिग, ज्ञानम् ।
- दिशा**, सं. स्त्री. (सं.) आशा, क्राष्टा, कर्तु-हरित-दिश (स्त्री.), कदुभा ।
- शूल, सं. पुं. (सं. न.) दिग्विधायमाने निषिद्धवारः (पुं.) ।

दिसावर

[२६६]

दीपद

—जाना या फिरना, सू., पुरीपमुस्त्रुष्टं वा (अ. प. अ.) मलोत्सर्गवि गन् ।
दिसावर, सं. पुं. (सं. देशपर) वि-पर-देशः, देशान्तरम् ।
दिसावरी, वि. (हिं. दिसावर) वैदेशिक, वि-पर-देशीय, दे. 'विदेशी' ।
दिहात, सं. स्त्री. दे. 'दिवात' ।
दीक्षक, सं. पुं. (सं.) नवोपदेशकः, गुरुः (पुं.), आचार्यः ।
दीक्षंत, सं. पुं. (सं.) अवभृथयज्ञः ।
दीक्षा, सं. स्त्री. (सं.) गुरुमुखात् यथाविधि मंत्रग्रहणं २. मंत्रनं, पूजनं ३. प्रथम-उपदेश-शिक्षा, उपनयनं, विद्याप्रवेशः ।
दीक्षित, वि. (सं.) उपनीत, यथाविधि उपदिष्ट, संस्कारानंतरं प्रवेशित ।
दीखना, कि. अ., दे. 'दिखाई देना' ।
दीठ, सं. स्त्री. (सं. दृष्टिः, दे.) ।
दीदा, सं. पुं. (फा.) दृष्टिः (स्त्री.) २. अव-लोकनं ३. नेत्रं ४. धृष्टता ।
—दानिस्ता, कि. वि., शःन-तुङ्गि-गति-पूर्वकं, कानतः (अन्तः) ।
दीदार, सं. पुं. (फा.) दर्शनं, साक्षात्कारः ।
दीदी, सं. स्त्री. (हिं. दादा) अग्रजा, ज्येष्ठनी, भगिनी ।
दीधिति, सं. स्त्री. (सं. पुं.) किरणः, मयूकः, अंशुः, मरीचिः ।
दीन, वि. (सं.) दरिद्र, निधन २. खिन्न, विषण्ण ३. अधि-नम-विनीत ४. संतप्त, दुःखित ।
—दयाल, वि. (सं. लु.) दरिद्रवत्सलः । सं. पुं., ईश्वरः ।
—बंडु, वि. (सं.) दरिद्रमित्रं, दीनानुगमिन् । सं. पुं., परमेश्वरः ।
—दीन, सं. पुं. (अ.) धर्मः ।
दार, वि. (अ. + फा.) धार्मिक, पुण्यात्मनः ।
—दुनिया, सं. पुं. (अ.) लोकपरलोकौ (दि.) ।
दीनता, सं. स्त्री. (सं.) दरिद्रता, निधनता, अकिञ्चनता २. आर्त्तन, कातरता ३. संदः, विषादः ४. अदि-नमस्त्व-विनयः ।
दीनानाथ, सं. पुं. (सं. दीन + नाथ) दीन-दयालः—वत्सलः—बन्धुः, परमेश्वरः ।
दीनार, सं. पु. (सं.) स्वर्णमुद्रा २. स्वर्णामूषणं ३. तिष्ठ, तोलः—आरः ।

दीप, सं. पुं. (सं.) दीपकः, दे. 'दिया' ।
—माला, सं. स्त्री. (सं.) दीप-मालाः (स्त्री.)—आली-आबली-उत्सवः-मालिका २. दीपपतिः (स्त्री) ।
—शिखा, सं. स्त्री. (सं.) दीप-कल्पिका-ज्वालः ।
दीपक, सं. पुं. (सं.) प्र-दीपः, दे. 'दिया' २-४. अर्धालंकार-राम-ताल-भेदः ५. अग्नि-क्रोडनकभेदः । वि., प्रकाशक, दीपिकार २. पात्रक, अग्निवहक ३. उत्तेजक ।
दीपन, सं. पुं. (सं. न.) प्रकाशनं, ज्वालनं २. अठराग्निवहकं, क्षुपोत्पादनं ३. उत्तेजनं-ना, अत्रिगजननम् ।
दीपावलि-स्त्री, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'दीपमाला' ।
दीप्त, वि. (सं.) प्रकाशित, प्रकाशमान २. प्र-ज्वलिता, प्रज्वलन् (शब्द) ।
दीप्ति, सं. स्त्री. (सं.) आलोकः, प्रकाशः २. आभा, पद्म, श्रुतिः (स्त्री.) ३. कान्तिः (स्त्री.), शोभा ।
दीपक, सं. स्त्री. (फा.) उप-दीक-देहिनी ।
—लगाना, कि. अ., उपदेहिनीभिः भक्ष-निष्कुप (कर्न.) ।
दीया, दे. 'दिया' ।
दीर्घ, वि. (सं.) लंब, आचन, आयामवत् ।
—काल, सं. पुं. (सं.) गुप्तकाल समयः ।
—जघ, सं. पुं. (सं.) उष्ट्रः २. बकः । वि., लंबटंग ।
—जीवी, वि. (सं-जिन्) दीर्घ-चिर-आयु-आयुस्-आयुष्-जीविन्, आयुष्मत् ।
—दृशिता, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'दूरदृशिता' ।
—दृशी, वि. (सं-शिन्) दे., 'दूरदर्शी' ।
—निद्रा, सं. स्त्री. (सं.) लंबस्वापः २. मृत्युः (पुं.) ।
—मूत्री, वि. (सं-जिन्) दीर्घस्त्व, निरक्रिय, विलज्जिन् ।
दीर्घायु, सं. स्त्री. (सं. न.) निर-दीर्घ-जीवनं-आयुन् (न.) । वि., दे. 'दीर्घजीवी' ।
दीर्घायुध, सं. पुं. (सं. न.) मल्लः—लम्, कुन्तः, प्रासः २. शकरः, बराहः, कोलः ३. शकवः, त्रैदारः । वि. दीर्घ-लम्ब-बृहद-अरु-आयुध ।
दीपद, सं. स्त्री. (हिं. दीवा) दीप-दीपक-ध्वज-वृक्ष-आधारः, शिखातरुः ।

दीवान

[३००]

दुभार

दीवान, सं. पुं. (अ.) राजकुल, आरक्षक-नी,
राजकुलं २. अमात्यः, सचिवः ३. कवितालस्रहः ।

—आम, सं. पुं. (अ.) *सामान्यास्थानम् ।

—स्वास, सं. पुं. (अ.) *विशेषास्थानम् ।

दीवाना, वि. (फ्रा.) उन्मादिन्, विक्षित, दे.
'पामल' ।

दीवार, सं. स्त्री. (फ्रा.) कुड्बन्, निर्मितः (स्त्री.) ।

—गौर, सं. स्त्री. (फ्रा.) मिस्रिदीपः २. मिस्रि-
स्त्री दीपधारः ।

दीवाली, सं. स्त्री. (सं. दीपाली) दे. 'दीपवाली' ।

दुंदुभ, सं. पुं.] सं. पुं. दे. 'नकाशा' ।

दुंदुभि, सं. स्त्री.]

दुंवा, सं. पुं. (फ्रा. दुंवालः) मोक्षपुत्रो
मेघः-मेघः ।

दुःख, सं. पुं. (सं. न.) कष्टं, क्लेशः, पीडा,
बाधा, व्यथ, अ (आ) शिः (स्त्री.), कष्टं,
वेदना, परि-सं, तापः २. अपवृत्-विषय (स्त्री.),
संकटं ३. रोगः, व्यथिः (पुं.) ।

—उठाना या पाना, क्रि. अ., दुःखद्वि
(ना. धा.), दुखं सह् (स्वा. आ. से.)-
अनुभू-उपमुञ् (रु. आ. अ.)-प्राप् (स्वा.
उ. अ.) ।

—देना या पहुँचाना, क्रि. स., दुःखद्वि
(ना. धा.), तप्-व्यथ-भृत् (प्रे.), पीट
(चु.), क्लिश् (कृ. प. से.) ।

—दाई, वि. (सं. दायिन्) दुःख-कष्ट-म्लेश-
कर-न्दानु-दायक-प्रद-वनक-उत्पादक ।

—मथ, वि. (सं.) क्लेशमय, दुःखपूर्णं ।

—हर्सा, वि. (सं. नृ.) दुःख-क्लेश-कष्ट-नाशक-
निवारक-हरिन् ।

दुःखित, वि. (सं.) क्लेशित, पीडित, व्यथित,
दुःखभाज्, दून्, तापित, सं-परि-ताप, दुःख-
आर्त्त, क्लृप्तगत, संव्यथ, दुःखिन् ।

दुःखिनी, वि. स्त्री. (सं.) विपत्ता, पीडिता,
व्यथिता, सं-परि-ताता, आर्त्ता ।

दुःखी, वि. (सं. खिन) दे. 'दुःखित' (दुःखिनी
स्त्री.) ।

दुःशासन, वि. (सं.) उच्छृम्भ, उदाम, दुःखिदम् ।
सं. पुं., शून्राष्ट्रस्य पुत्रविशेषः २. दुःशासनम् ।

दुःशील, वि. (सं.) दुःस्वभाव, कुशील,
कुस्वभाव, दुःश्रद्धित, दुर्वृत्तं २. शूद्र, लज्जन् ।

दुःश्रव, वि. (सं.) कर्ण-श्रुति-शुद्ध । सं. पुं.,
दुःश्रवत्-श्रुति-दुत्त-श्रोत्रः (सा०) ।

दुःसंग, सं. पुं. (सं.) कुलसंग, कुन्दम्, संगतिः
(स्त्री.) ।

दुःसाध्य, वि. (सं.) कठिन, दुःकर, कष्टसाध्य
२. असध्य, दुःस्वप्न, अशमनीय, अचि-
त्य, निश्चयः ।

दुआ, सं. स्त्री. (अ.) प्रार्थना २. आशीर्वादः ।

दुआवा, सं. पुं. (फ्रा.) दे. 'दोआवा' ।

दुकड़ा, सं. पुं. (सं. द्विकं) द्वयं, द्विच, दुर्गं,
सुपर्ण, २. दे. 'दुआवा' ।

दुकान, सं. स्त्री. (फ्रा.) पथ-कान्ता-अपारं,
आपणा, विपणिः (स्त्री.), निपत्ता, *नदी ।

—द्वार, सं. पुं. (फ्रा.) आपणिकः, पन्था-द्वारः,
विपणिः, कनयिक-विकार, नषिञ् (पुं.) ।

—बड़ाना, सं. पुं., पावशास्त्र (अ) विधा
(जु. उ. अ.) ।

दुखड़ा, सं. पुं. (सं. दुःखं) दुःखवृत्तान्तः,
कष्टकथा २. कष्ट, विपत् (स्त्री.) ।

दुखना, क्रि. अ. (सं. दुःखं >) पंड-क्लिश्-
त् (कर्म.)-व्यथ् (स्वा. आ. से.) ।

दुखाना, क्रि. स. (हिं. दुखना) पीड-अर्त्
(चु.), व्यथ् (प्रे.), दु (स्वा. प. अ.),
क्लिश् (कृ. प. से.), उप-परि-सं, तप् (प्रे.) ।

दुखिया-याग, वि. (सं. दुःखं >) दे. 'दुःखित' ।

दुगना, वि. (सं. द्विगुण) द्विगुणित ।

दुग्ध, सं. पुं. (सं. न.) क्षीरं, पाम् (न.) ।

—केन, सं. पुं. (सं.) क्षीरविटि (डी भः),
शार्करः ।

दुचित्त, वि. (सं. द्विचित्त) दोषयमान,
संशयान्, संदेहिन्, संशय, दुद्धि-मति ।

दुचित्ती, सं. स्त्री. (हिं. द्विचिता) दोषवृत्तिः
(स्त्री.), द्वैधीभावः, निश्चयभावः, संशयः ।

दुत्, अप्त. (अनु.) अपसर-अनेहि (लोट्) ।

—कार, सं. स्त्री. (अनु. + सं. कारः) विकारः,
विरकारः, क्लेशना, वाग्दंडः २. अपसारणम् ।

दुत्कारना, क्रि. स. (हिं. दत्कार) धिक्-तिरस्
कृ, निर, भस्त् (चु. भा. से.) २. तापमानं
निमु-अप-त् (प्रे.) ।

दुत्तरका, वि. (फ्रा. दो + अ. तरफ) द्वि (द्वै)-
पक्ष, द्वि (द्वै) पार्श्वं, द्वि-पक्ष-पक्षीय ।

दुभार, वि. (हिं. द्वेष) क्षीरिणी, सुधवनी,
पवस्वनी, पीनोष्णी (गौ ३.) ।

दुधारा

[३०१]

दुर्जनता

दुधारा, वि. (सं. द्विधार) उभयतः तीक्ष्ण-
निधित । सं. पुं., खड्गभेदः, *द्विधारः ।

दुनिया, सं. स्त्री. (अ-या) अगत (न.),
संसारः २. लोकः, जनता ३. अगतप्रपन्नः ।

—दार, सं. पुं. (अ.+फा.) गृहस्थाः, गृहिन,
संसारिन्, २. व्यवहार-दुःखलः-पट्टः ।

—दारी, नं. स्त्री. (अ.+फा.) ऐहिकतास्त्रं,
प्रपं ॥ गुराणाः, संसारसन्धिः (स्त्री.) २. लोक-
आचारः-मार्गः, रुचिः (स्त्री.) ३. व्यवहार-
कौशलम् ।

दुनियावी, वि. (अ.) लौकिक, सांसारिक,
ऐहिक ।

दुपट्टा, सं. पुं. (हि. दो+सं-पट्टः) द्विपट्टः,
द्विपटा २. जपपीपः-पत्रम् ।

दुपहर, सं. स्त्री., दे. 'दोपहर' ।

दुपहरिया, सं. स्त्री. (हि. दुपहर) बंधु (धू-
कः, रक्तकः, बंधुवाचकः २. दे. 'दोपहर' ।

दुव(वि)धा, सं. स्त्री. (सं. द्विविधा) संशयः,
संदेहः २. निर्णय-निश्चय-अभावः ३. संकोचः
४. आशंका, विविधित्वा ।

दुवला, वि. (सं. दुर्वल दे.) ।

दुवलापन, सं. पुं., दे. 'दुर्वलता' ।

दुबारा, क्रि. वि., दे. 'दोबारा' ।

दुवे, सं. पुं. (सं. द्विवेदिन) द्विवेदः, ब्राह्मणभेदः ।

दुभाषिया, सं. पुं. (सं. द्विभाषिन्) भाषा-
यज्ञः, द्विभाषाविद्यु (पुं.) २. व्याख्यात,
अधरोपधकः ।

दुमंजिला, वि. (फा.) द्वि-भूम-भूमिक-
(प्रासादः इ.) ।

दुम, सं. स्त्री. (फा.) पुच्छः-च्छः, लांगु (रा-
लं, लुमं २. अनुयायिन, अनुगः ३. अनिग-
भागः ।

—दार, वि. (फा.) सपुच्छ, लांगुलिन ।

—दार सिनारा, सं. पुं., उल्का, भूमकेतुः (पुं.),
उत्पानः, केतुः (पुं.) । वि., सपुच्छ, लांगुलिन ।

—दुष्कार भागना, मु., कापुरुषधनु-सकातर्य
पलाय (भ्वा. आ. से.)-विद् (भ्वा. ए. अ.)-
अपधान् (भ्वा. ए. से.), कांदिशीक (वि.) भू ।

दुमन, वि. (सं. दुर्मन्स्) विद्य, विषण्ण,
म्लान, अवयवम् ।

दुरंगा, वि., दे. दो के 'नीचे' ।

दुरंत, वि. (सं.) दुष्परिणाम, कुफल, दुःफल,

दुस्वप्नान २. दुर्गम, दुस्तिक्रम ३. प्रनंद, उग्र
४. दुर्जय, दुर्जयः ।

दुर, अन्ध. (हि. दूर) अपसर-अपेहि (लोट्) ।
—दुर करना, मु., गन्धककारं अपस् (प्रे.) ।

दुराग्रह, सं. पुं. (सं.) दे. 'दुष्ट' ।

दुराग्रही, वि. (सं. हिन्) दे. 'दुष्टी' ।

दुराचरण, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'दुराचार' ।

दुराचार, सं. पुं. (सं.) कद, आचारः-आचरणं,
दूर, वृत्त-व्यवहारः-आचरणं, दुस्, चरितं-
नेष्टिन-व-रिच्यं-शालं, अन-यत्वम् ।

दुराचारी, वि. (सं-रिन्) दुष्ट, दुरात्मन्,
पापान्मन्, पापकर्म्मन्, दुष्टत, दुश्चरिन्, अधा-
त्मिक, पाप, सध, द्यष्ट, लंपट, विषयासक्त ।

दुराज, सं. पुं. (सं. द्विराज्यं) दिशासनं,
द्विराजकता ।

दुरात्मा, वि. (सं-त्मन्) दुष्ट, पापान्मन्,
दे. 'दुराचारी' ।

दुरुस्त, वि. (फा.) दे. 'ठीक' ।

दुरूह, वि. (सं.) दुर्वोध, दुर्ज्ञेय, गूढार्थं, गहन,
किष्ट ।

दुर्गंध, सं. पुं. (सं.) पूतिः (स्त्री.), पूनिगंधः,
कु-दुर्-वसः ।

—युक्त, वि. (सं.) दुर्-गुणि-गंधि, दुर्-कुत्सित-
पूति, गंध ।

दुर्ग, सं. पुं. (सं. न.) कोटः-दिः (स्त्री.), दे.
'किला' । वि. दे. 'दुर्गम' (१) ।

अगन्ध, गहन, विषमरस, दुर्ग २. दुर्वोध
३. विक्रम ।

—अधिपति, सं. पुं. (सं.) दुर्ग, पति-पालः-ईशः-
अध्यक्षः ।

दुर्गति, सं. स्त्री. (सं.) दुर्दशा, दुस्वस्था,
२. नरक-वसः-गोपाः ।

दुर्गम, वि. (सं.) दुःप्राप, दुरासद, दुरारोह ।

दुर्गा, सं. स्त्री. (सं.) रुद्राणी, चंडी, दे. 'पार्वती' ।

दुर्गुण, सं. पुं. (सं.) अवधुणः, दोषः, व्यसनं,
दुर्लक्षणं, कुलक्षणम् ।

दुर्घट, वि. (सं.) दुश्चर, दुस्साध्य ।

दुर्घटना, सं. स्त्री. (सं.) अशुभ-अमंगल, घटना-
अपानः-नामापतिः (स्त्री.) २. विषद-आपद (स्त्री.) ।

दुर्जन, सं. पुं. (सं.) खलः, पापः, शठः, व.
'दुराचारी' के पर्यायों के पुं रूप ।

दुर्जनता, सं. स्त्री. (सं.) दुष्टता, खलता, शरता ।

दुर्जय

[३०२]

दुष्काल

दुर्जय, वि. (सं.) अशुभ्य, अत्रय, अदम्य, दुरासद, अदुर्-जय ।

दुर्जय, वि. (सं.) दे. 'दुर्लभ' ।

दुर्दमनीय, वि. (सं.) दुर्दम्य, दुर्दान्त, अवश्य, दे. 'दुर्जय' ।

दुर्दशा, सं. स्त्री. (सं.) दुर्तिः (स्त्री.), दुरवस्था ।

दुर्दिन, सं. पुं. (सं. न.) मो. चन्द्रो दिवसः २. कु-विषय, कालः, कष्टमयः समयः ।

दुर्द्वय, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'दुर्भाव' ।

दुर्धर्ष, वि. (सं.) दे. 'दुर्जय' २. उग्र, प्रबल ।

दुर्नाति, सं. स्त्री. (सं.) कुनातिः (स्त्री.), अभ्यायः, अनाचारः ।

दुर्बल, वि. (सं.) अबल, निर्बल, अशक्त, क्षीण-अल्प-बल-शक्ति, निम्न, तीक्ष्णत्व २. कष्ट, क्षाम, क्षीण, अमांस, ज्ञात, ज्ञात ।

दुर्बलता, सं. स्त्री. (सं.) निर्बलता, अशक्तता, अबलता २. कृशता, क्षामता ।

दुर्बुद्धि, सं. स्त्री. (सं.) कुमतिः-मंदधीः (स्त्री.) । वि., अज्ञ, मूर्ख, मंदमति ।

दुर्बोध, वि. (सं.) दे. 'दुर्लभ' ।

दुर्भोग्य, सं. पुं. (सं. न.) दुर्द्वय, दौर्भ्य, भाग्यं, दुर्जातं, दुर्गतिः (स्त्री.), दैव, दुर्विपाकः-विपर्ययः-विपर्याप्तः ।

दुर्भोग्या, सं. स्त्री. (सं.) दुर्भाव्य, दुष्ट-बुद्धि-भावः, अवस्था, द्रोहः, द्वेषः, दीर्घत्वम् ।

दुर्भिक्ष, सं. पुं. (सं. न.) अकालः, दुष्कालः, अदशनं, प्रयागः, आहाराभावः, नीकःकः ।

दुर्भय, सं. पुं. (सं. पुं. + मुट् = कृत्वा) *भूकृत्, *दुर्भयम् ।

दुर्भति, सं. स्त्री. तथा वि. (सं.) दे. 'दुर्बुद्धि' ।

दुर्मुख, वि. (सं.) कडुभाषिन् २. कृदशनं, कुरूप ।

दुर्धौध, वि. (सं.) अजय, अत्रय, अशुभ्य, अदम्य ।

दुर्धौधन, सं. पुं. (सं.) धृतराष्ट्रस्य ज्येष्ठपुत्रः ।

दुर्धौधि, वि. (सं.) हीन-नीच, -नाति-वर्ण-कुल ।

दुर्ध, सं. पुं. (अ०), दे० 'मोती' ।

दुर्लभ्य, वि. (सं.) दुस्तरः, दुःस्वार्थ, दुर्लभ-नीच, दुर्लभम् ।

दुर्लभ, वि. (सं.) अप्राप्य, दुर्प्राप, विरल, दुर्लभम् २. अत्युत्तम, अत्युत्कृष्ट ।

दुर्बचन, सं. पुं. (सं.) दे. 'नाली' ।

दुर्विनीत, वि. (सं.) अविनय, अविनीत, उद्धत, धृष्ट, अशिष्ट, अमन्य, विघात ।

दुर्विपाक, सं. पुं. (सं.) कृपरिणामः, कुफलम् ।

दुर्वृत्त, वि. (सं.) दे. 'दुराचारी' ।

दुर्व्यवस्था, सं. स्त्री. (सं.) कुव्यवस्था, कुनीतिः (स्त्री.), दुर्गन्धः, कृप्रणयनं, कृप्रबंधः, दुर्निर्वाहः ।

दुर्व्यवहार, सं. पुं. (सं.) दुर्वृत्तिः (स्त्री.), असद्व्यवहारः, अप-कारः-क्रिया, कुवेष्टितं, कुचरितम् ।

दुर्व्यसन, सं. पुं. (सं. न.) दुर्गुणः, दोषः, *कदाचित् (स्त्री.) ।

दुर्व्यसनी, वि. (सं. -निन) दुर्गुण, दोषिन, दुराचारीन्, पाप ।

दुलकी, सं. स्त्री. (हि. दलकनः) धौ (धौ)-रितं-तकम् ।

---चलना, कि. अ., धोरितेन गम् ।

दुलती, सं. स्त्री. (हि. दो + सं. क्ता >) (पशुनां) क्लृप्ता-क्लृप्ता-दिपाद, अधातः-प्रहारः-क्षेपः ।

---मारना, कि. स., लताभ्यां प्रहृ (भ्वा. प. अ.) आह्न (अ. प. अ.) ।

दुलह (हि.) न, सं. स्त्री. (हि. दुलहा) नव-वधुः (स्त्री.), वधुटी, नवोढा, नवपरिणीता ।

दुलहा, सं. पुं., दे. 'दुलहा' ।

दुलाई, सं. स्त्री. (हि. गुलाई) दे. 'रवाई' ।

दुलार, सं. पुं. (हि. दुलारना) उप-लातनं, सुवनं, आलिंगनम् ।

दुलारना, कि. स. (सं. दुलांला >) उप-ल (लृ.), आलिंग् (भ्वा. प. ऐ.), स्नेहेन परामृश (तु. प. अ.) ।

दुलारित-त्र, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'दुराचार' । वि., दे. 'दुराचारी' ।

दुलारा, वि. (हि. दुलार) दे. 'लाटला' ।

दुशाला, सं. पुं. (फा.) दिशालः ।

दुदमन, सं. पुं. (फा.) शत्रुः, अरिः (पुं.) ।

दुदमनी, सं. स्त्री. (फा.) शत्रुता, वैरम् ।

दुष्कर, वि. (सं.) दुस्साध्य, कठिन, विकट, कष्टसाध्य ।

दुष्कर्म, सं. पुं. [सं. मन् (न.)] कृ, कार्य-कृत्यं, पाप, अधर्मः, दुःकृतिः (स्त्री.) ।

दुष्काल, सं. पुं. (सं.) कु-कालः-समयः २. दे. 'दुर्भिक्ष' ।

दुष्कूल, सं. पुं. (सं. न.) नीच-हीन-कु, कुल-वंश : ।
 दुष्कृत, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'दुष्कर्मक' ।
 दुष्ट, वि. (सं.) खल, शत्रु, पाप, दुर्नाम, अनाद, नीच, दुष्टत, दे. 'दुराचारी' ।
 दुष्टता, सं. स्त्री. (सं.) दौर्जन्य, दौरात्म्य, कुपेष्टा, पाप, दुर्जन्य, दे. 'दुराचार' ।
 दुष्प्रकृति, सं. स्त्री. (सं.) दुस्स्वभावः, दुश्शीलम् । वि., कुशील, दुष्स्वभाव ।
 दुष्प्राण्य, वि. (सं.) दे. 'दुर्जन' ।
 दुर्धन, सं. पुं. (सं.) दुष्प्रवृत्तियन्त्रप्रविरोधः, शकंतेत्यापतिः ।
 दुस्तर, वि. (सं.) दुर्बल, असह्य, असहनीय, दुष्तर, विकट ।
 दुस्सह, वि. (सं.) दुर्बल, असह्य, असहनीय ।
 दुस्साध्य, वि. (सं.) दे. 'दुःसाध्य' ।
 दुहना, कि. म. (सं.) दोहनं दे. 'दोहना' ।
 दुहरा, वि., दे. 'दोहरा' ।
 दुहाई, सं. स्त्री. (हिं. दुहना) दोहन, भृतिः (स्त्री)-भृत्या ।
 दुहाई, सं. स्त्री. (सं. हि + आह्वयः >) दे. 'दौही' २. आत्मवर्णार्थं आह्वान-आकारण-संबोधनं ३. शपथः ।
 —देना, मु., स्वरक्षार्थं आ-हो (भ्वा. प. अ.)-आ-कृ (प्रे.) ।
 दुहाना, कि. प्रे., व. 'दोहना' के प्र. रूप ।
 दुहिता, सं. स्त्री. [सं. दुहितृ (स्त्री.)] दे. 'पुत्री' ।
 दुकान, सं. स्त्री., दे. 'दुकान' ।
 दूज, सं. स्त्री. (सं. द्वितीया) शुक्लः कृष्ण वा द्वितीया तिथिः (स्त्री.) ।
 —का चाँद, मु., दिवाप्रदीप, दुर्लभदर्शन ।
 दून, सं. पुं. (सं.) वार्ता-संदेश, करः, सन्निह-कथकः, राज, दूतः-प्रतिनिधिः २. प्रणिधिः, च (चा) रः, गृहपूतः ।
 दूती, सं. स्त्री. (सं.) संचारिका, दूति (ती) का, शंमली, कुट्ट (ट्टि) नौ, सारिका २. वार्ता-संदेश, हरी ।
 दूध, सं. पुं. (सं. दुग्धं) क्षीरं, पयस (न.), स्तन्यं, ऊधर्म्यं, ऊधर्म्यं, बालजीवनं २. वृक्ष-क्षीरं-रसः ३. (गौ का) गौ, दुग्ध-रसः, मलयम् ।

—का पानी, सं. पुं., आमिक्षानस्तु (न.), मोरटः ।
 —की झाग, सं. स्त्री., दुग्धकेनः, शार्करः, शार्करकः ।
 —पिलाई, सं. स्त्री., दे. 'दाई' ।
 —पूत, सं. पुं., संप्रसूताती-धनसंनानौ (द्वि.) ।
 —बहन, सं. स्त्री., *स्तन्या, धात्रीपुत्री, धात्रेयी, रतनधनी ।
 —माई, सं. पुं., *स्तन्याः, धात्रीपुत्रः, धात्रेयः ।
 —मुँहा, वि. पुं., स्तनधयः, शिशुः । स्तन-क्षीर, पयिन्त्याः [—मुँही (स्त्री.)] ।
 —उगलना वा डालना, मु., (शिशुः) दुग्धं उदग् (सु. प. से.)-उद्-वम् (भ्वा. प. से.) ।
 —का दूध, पानी का पानी, मु., न्यायः, नयः, धर्मः ।
 —की भक्खी की तरह निकाल फेंकना, मु., दुग्धमक्षिकपत्त निस्स (प्रे.), अविमृश्यैव निष्कम् (प्रे.) ।
 —के दाँत न टूटना, मु., शैशवे वर्तमान ।
 —छुडाना वा बढाना, मु., स्तन्यं हा (प्रे.), हापरति-क्यञ् (प्रे.) ।
 दूधों नहाना पुतों फलना, मु., धनसंतानैः बर्ध् (भ्वा. आ. से.) ।
 —पिलाना, मु., रतन-रतन्यं पाथे- (प्रे.), पाय-यति, धात्रयति) दा ।
 —फटना, मु., (अन्वयियोगेन) दुग्धं विक्र (कर्म.) प्रथवा नीरक्षीरं वि-दिलप् (दि. प. अ.) ।
 दूधिया, वि. (हिं. दूध) शुक्ल, श्वेत, दुग्धवर्ण ।
 —पत्थर, सं. पुं. (सं.) *दौग्धप्रस्तरः, इवेत-प्रस्तरभेदः ।
 दूना, वि. (सं. द्विगुण) द्विगुणित ।
 दूब, सं. स्त्री. (सं. दूर्वा) भार्गवी, हरिता, अर्जता ।
 दूबदू, कि. वि., (हिं. दो या फा. रूबरू) सुखासुखि (अव्य.), संमुखम् ।
 दूबे, सं. पुं., दे. 'दुबे' ।
 दूभर, वि. (सं. दूभर >) कठिन, दुस्साध्य ।
 दूरदेश, वि. (फा.) दे. 'दूरदेशी' ।
 दूरदेशी, सं. स्त्री. (फा.) 'दूरदेशिता' ।
 दूर, कि. वि. (सं. दूरं) दूरे, आराध (अव्य.),

वि., दूरतः । वि., दूर, दूरस्थ, विपकृष्ट, अंतर-
वर्तिन्, दूरीयस् ।
—**दराज**, वि. (फा.) सु-अति-दूर-दूरस्थ ।
—**दर्शांक**, वि. (सं.) दे. 'दूरदर्शी' ।
—**दर्शन**, सं. पुं. (सं.) पण्डितः, धोमत्,
बुद्धिमत्, प्राज्ञः २. गृभः, बन्धुमुठः ३. दूरवी-
क्षणं, दूर-दर्शक-यन्त्रम् ।
—**दर्शिता**, सं. स्त्री. (सं.) दूर-दर्शकः, दृष्टिः (स्त्री.)-
दर्शित्वं, बुद्धिमत्ता, अग्रनिर्गमनं, दूरदर्शनम् ।
—**दर्शी**, वि. (सं.) दूर-दर्शकः, बुद्धिमत् ।
—**दृष्टि**, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'दूरदर्शिता' ।
—**बीन**, सं. स्त्री. (फा.) दूरवीक्षणं, दूरदर्श-
कयन्त्रम् ।
—**वर्ती**, वि. (सं.) दे. 'दूर' वि. ।
—**बासी**, वि. (सं.) दूरदेशीय २. विदे-
शीय ।
—**बीक्षण**, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'दूरबीन' ।
—**स्थ**, वि. (सं.) दे. 'दूर' वि. ।
—**करना**, मु., दूरी-पृथक् २. पदात्-अधिका-
रात् अवर्ह-ञ्चु-भ्रंश् (प्रे.) ।
—**भागना** वा **रहना**, मु., दूरे-पृथक् स्था (भ्वा.
प. अ.), संगति परिहृ (भ्वा. प. अ.) ।
—**हो**, अन्य. अपेहि-अपगच्छ (लोट्) ।
—**होना**, मु., दूरी-पृथक् भू २. नष्ट (दि. प. वे.) ।
दूरी, सं. स्त्री. (सं. दूरं >) दूरतः-त्वं, विप्रकर्षः,
दूरं २. (स्थान) अंतरं, अंतरालं, अध्वन्
(पुं.) भूमिः (स्त्री.) ।
दूर्वा, सं. स्त्री., दे. 'दृव' ।
दूर्वा, सं. पुं. (सं. दुर्लभः >) वरः, परिणेतु,
पाणिग्रहकः, परिग्रहीतु (पुं.) ।
—**दूर्वहत**, सं. पुं., वधूवरी (द्वि.) ।
दूर्यक, सं. पुं. (सं.) अपवादकः, परिव्राजकः,
अभियोगिन्, अभियोजितु, दोषाग्रेयकः २. दृष्टः,
दुर्वृत्तः । वि. दोष-पाप, -जनक २. अपराधिन्,
दोषिन् ३. निन्द्य, कुत्सित ।
दूर्यक, सं. पुं. (सं. न.) दोषः, अवगुणः, दुर्वृ-
त्तनं (सं. पुं.) रावणप्रातृविशेषः ।
दूर्यक, वि. (सं.) सदोष, दोषिन्, कलंकवत्
२. (मिथ्या) निद्रित-कलंकित-अभियुक्त ।
दूर्यक, वि. (हि. दो) द्वितीय [-या (स्त्री.)]
२. अन्य, पर, अपरा, अपरिचित ।

दूररे दिन, क्रि. वि., पराहे, परेषुः-अन्वेषुः
(अन्व.) ।
दूररी मी, सं. स्त्री., विमान् (स्त्री.) ।
दृक्, दृग, सं. स्त्री. (सं. दृश) दे. 'आस्त' २.
दृष्टिः (स्त्री.) ।
दृग्विपः, सं. पुं. (सं.) विपात्क-नेत्रः-नयनः,
सर्पमेदः ।
दृग्बुद्ध, सं. पुं. (सं. न.), क्षितिपि, दिग्गन्तः ।
दृढ, वि. (सं.) प्रगाह, शैथिल्यशून्य २. कर्तार,
मौकम्, पक्ववत् ३. मज्ज, बलवत् ४. स्थायिन्,
स्थिर ५. शुभ. अविचल ६. आग्रहिर, सर्पिवध ।
—**प्रतिज्ञ**, वि. (सं.) प्रतिज्ञापालक, स्थिरप्रतिज्ञ,
सत्य-संध-अभिसंध-संगर ।
—**सुष्टि**, वि. (सं.) कृपण, मित्रपनः ।
दृढता, सं. स्त्री. (सं.) प्रगाहता, शैथिल्याभावः
२. स्वैर्य, अनललनं, स्थिरता ३. आग्रहः
निर्वधः ।
दृढांग, वि. (सं.) बलवत्, शक्तिवत्, दृढदेह,
दृढपुष्ट । [-गी (स्त्री.) =शक्तिमती] ।
दृश्य, वि. (सं.) दृग्गोचर, नेत्र-दृष्टि-निपथ-
ग्राह्य २. दर्शनीय, अवलोकनीय, सुंदर । सं.
पुं. (सं. न.) दृष्टि-गोचरः-पथः-विषयः
२. रूपकं, नाटकं ३. दे. 'समाशा' ।
दृश्यमान, वि. (सं.) ईक्ष्यमाण, अवलोक्यमान ।
दृष्ट, वि. (सं.) वि-भवः, लोभित, वि., ईक्षित,
निरूपित, लक्षित २. वात्, प्रकट ।
दृष्टांत, सं. पुं. (सं.) उदाहरणं, निदर्शनं २.
अर्थालङ्कारमेदः ।
दृष्टि, सं. स्त्री. (सं.) दृक्शक्तिः (स्त्री.), नेत्र-
नयन-ज्योतिष् (न.) २. दृक्पातः, अवलो-
कनं ३. अशा ४. विचारः ५. आशयः, अभि-
प्रायः ।
—**कूट**, सं. पुं. (सं. दृष्टकूटं) प्रदेलिका
२. गृहार्थकविता ।
देखना, क्रि. सं. (सं. दृश) दृश्
(भ्वा. प. अ.) वि-प्र., ईक्ष् (भ्वा. आ.
से.), अव-आ-वि-लोक (भ्वा. आ. से., नृ.),
आलोच (भ्वा. आ. से., नृ.), निरूप-
निर्बण्लक्ष् (नृ.), मल् (नृ. आ. से.),
२. अव-निर-परि-दृश् ३. अभिव्य (दि. प. से.),
४. रक्ष् (भ्वा. प. से.), रक्षां कृ ५. विचर
(प्रे.) ६. अनुभू ७. पठ् (भ्वा. प. से.)

देखते देखते

[३०६]

देव

८. मशुष (प्रे.) । सं. पुं., दर्शनं, विलोकनं, बोधनं, निरूपणं इ. ।
 —भालना, मु., निरीक्षणं, परीक्षणं, निभालनं, निर्वाणनम् ।
 —सुनना, मु., बोधनं, वेदनं, परि-वि-ज्ञानम् ।
 देखते देखते, मु., समक्षे २. सपरि, इदिति ।
 देखने में, मु., आपाततः, बाह्यतः, प्रत्यक्षतः २. आकृत्या, आकारेण ।
 देखने योग्य, वि., दे० 'दर्शनीय' ।
 देखनेवाला, सं. पु., दर्शक, द्रष्टृ (पुं.), वीक्षक, निरूपक इ. ।
 देखभाल, देखाभाली, सं. स्त्री. (हि. देखना + भालना) कार्यदर्शनं, अवेषणं, निरीक्षणं, पर्यवेक्षणं २. दर्शनं, साक्षात्कारः ।
 देखरेख, सं. स्त्री. (हि. देखना + सं. प्रेषण >) दे. 'देखभाल' (१) ।
 देखादेखी, सं. स्त्री. (हि. देखना) दर्शनं, विलोकनम् । क्रि. वि., अनुकृत्या, अनुसृत्या, गतानुगतिकतया (सब गृहीया एकवचन) ।
 देखा हुआ, वि., दृष्ट, निरूपित, निर्वाणित, निभालित ।
 देग, सं. स्त्री. (फा.) पिठरः-रं, बृहत्क्याली ।
 देगचा, सं. पुं. (फा.) स्थाली, पिठरकः-कम् ।
 देगची, सं. स्त्री. (फा. देगचा) उरबा, पिठरी, लघुस्थाली ।
 देवीध्वसान, वि. (सं.) अत्यंत-सततं भाभ-मान-भ्राजमान-द्योतमान, अति-तेजस्विन्-भासुर ।
 देन, सं. स्त्री. (हि. देना.) दानं, वितरणं २. प्रीति-दानं, उपहारः, उपायनं, प्रदत्तवस्तु(न.) ।
 —दार, सं. पुं. (हि. + फा.) दे. 'ऋणी'
 —लेन, सं. पुं., कुसीदं, कौसीधं, वृद्धिजीवनं २. दानादान-ने (हि.) ।
 देना, क्रि. सं. (सं. दानं) दा (जु. उ. अ.), दा (भ्वा. प. अ., यच्छति), उ-वि-सृज (तु. प. अ.) विश्रण (लु.), दद (भ्वा. आ. से.) ऋ (प्रे., अर्पयति) २. (यप्पङ्ग आदि) प्रद (भ्वा. प. अ.), आह्व (अ. प. अ.) इ. (क्रिवाड आदि) (अ) पि-या (जु. उ. अ.) । सं. पुं., अर्पणं, प्रतिपादनं, विश्र-णनं, ददनं, उ-वि-मर्जनं, दे. 'दान' (१-२) ।

२०

देने योग्य, वि., देव, दानीय, दातव्य, विश्राण-नीय, अर्पणीय, दानार्ह ।
 देनेवाला, सं. पुं., दातृ (पुं.), त्यागित्, द-प्रद-दायक-दायिन् (उ. सुख-द-दायक-इ.) २. दे. 'दाता' ।
 दिया हुआ, वि., दत्त, अपित, विसृष्ट, विश्राणित ।
 दे मारना, मु., दे. 'पटकना' ।
 देय, वि. (सं.) दे. 'देने योग्य' ।
 देर, सं. स्त्री. (फा.) विलम्बः, अतिकालः, काल, -अतिपातः-क्षेपः-यापनं-व्याक्षिपः २. समयः, कालः ।
 —करना या लगाना, क्रि. अ., विलम्ब (भ्वा. आ. से.), कालं अतिपात (प्रे.)-व्याक्षिप् (तु. प. अ.) ।
 —तक, क्रि. वि., चिराय, चिरं यावत्, चिर-कालान्तम् ।
 —से, क्रि. वि., चिरात्, चिरेण, विलम्बेन, विलम्बात्, चिर, कालेन-कालात् ।
 —होना, क्रि. अ., विलंब-व्याक्षिप् (कर्म.) वेला अतिक्रम (भ्वा. प. से.), विलंबो जन् (दि. आ. से.) ।
 देरी, सं. स्त्री., दे. 'देर' (१-२) ।
 देव, सं. पुं. (फा.) दैत्यः, दानवः, राक्षसः ।
 देव, सं. पुं. (सं.) देवता, दैवतं, अमरः, अमर्त्यः, सुरः, अस्वप्नः, दिविषद-दिवीकस् (पु.) निर्जरः, विबुधः, वृन्दारकः, सुमनस् (पुं.) २. ईश्वरः ३. मिश्रः, आर्यः, पूज्यपुरुषः ४. मेघः ५. ज्ञानेन्द्रियं ६. ब्राह्मणः ।
 —गिरि, सं. पुं. (सं.) रैवतकपर्वतः २. नगर-विशेषः ।
 —दाह, सं. पुं. (सं. पुं. न.) दे. 'दियार' ।
 —दासी, सं. स्त्री. (सं.) वेश्या, वेशवनिता २. मंदिर-देव-नर्तकी ।
 —देव, सं. पुं. (सं.) ईश्वरः २. इन्द्रः ।
 —नागरी, सं. स्त्री. (सं.) लिपिविशेषः ('अ' से 'ह' तक अक्षर) ।
 —पूजा, सं. स्त्री. (सं.) प्रतिमापूजनं २. ईश्वर-ार्चनम् ।
 —भूमि, सं. स्त्री. (सं.) स्वर्गः, नाकः ।
 —मंदिर, सं. पुं. (सं. न.) देव-गृह-भवन-स्थान-आलयः ।

देवकी

[३०६]

देष

- लोक, सं. पुं. (सं.) स्वर्गः ।
 —वाणी, सं. स्त्री. (सं.) देवभाषा, संस्कृतम् ।
 देवकी, सं. स्त्री. (सं.) श्रीकृष्णचन्द्रजननी,
 देवकात्मजा ।
 —नन्दन, सं. पुं. (सं.) श्रीकृष्णः ।
 देवता, सं. पुं. (सं. स्त्री.) दे. 'देव' (१-३, ५, ६) ।
 देवत्व, सं. पुं. (सं.) सुरत्व, अमरत्व ।
 देवन, सं. पुं. (सं.) अक्षः, मासः, श्रावः,
 पाशकः । (सं. न.) कान्तिः दीप्तिः (स्त्री.)
 २. अक्ष-सूत, कीटा ३. मीठा, विनोदः ४.
 प्रमोदवाटिका ।
 देवना, सं. स्त्री. (सं.) सूतम् २. मीठा ३.
 शोकः ।
 देवर, सं. पुं. (सं.) देवृ (पुं.), देवलः, देवरः,
 देवानः, सुराणावः, पर्युरनुजः २. पतिभ्रतृ
 (पुं. छोटा या बड़ा) ।
 देवरानी, सं. स्त्री. (सं. देवरः >) यत् (स्त्री.),
 देवरपत्नी, जा ।
 देवल, सं. पुं. (सं.) देवाजीवः, देवपूजा-
 जंविन २. नारदः ३. स्मृतिकारमुनिविशेषः ।
 हि., देवालयः, मन्दिरम् ।
 देवांगना, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'अमरांगना' ।
 देवालय, सं. पुं. (सं.) स्वर्गः २. मन्दिरम् ।
 देवी, सं. स्त्री. (सं.) देवपत्नी, सुरांगना
 २. दुर्गा, पार्वती ३. ब्राह्मणी ४. पतिव्रता
 ५. पट्ट, महिषी-राक्षी ।
 देश, सं. पुं. (सं.) जनपदः, विषयः, भूभागः,
 नीचत, उपवर्तनं, प्रदेशः २. राष्ट्रं ३. स्थानं,
 स्थलं ४. रागमोदः ।
 —निकाला, सं. पुं. (स्वदेशात्) प्रनिर-वि.
 वासन-वासः, प्रवाजनम् ।
 —भाषा, सं. स्त्री. (सं.) उप-प्राकृत-प्रादेशिक-
 भाषा ।
 देशांतर, सं. पुं. (सं. न.) अन्य-वि-भर, देशः
 २. लम्बांशः, देशांतरं (तुल्यवत्) ।
 देशाचार, सं. पुं. (सं.) देश-धर्म-व्यवहार-
 रीतिः (स्त्री.) ।
 देशादन, सं. पुं. (सं. न.) भू-वादा-भ्रमण-
 पर्यटनम् ।
 देशी, सं. स्त्री. (सं. देशीय) देश्य, देशिक,
 स्वदेश, व-उत्पन्न ।

- देस, देसी, सं. पुं. तथा वि., दे. 'देश' तथा
 'देशी' ।
 देसावर, सं. पुं. दे. 'दिसावर' ।
 देह, सं. पुं. (सं.) कायः, दे. 'शरीर' २. अव-
 यवः, अंगं ३. जीवनम् ।
 —पात, सं. पुं. (सं.) मृत्युः (पुं.) ।
 देहरा, सं. पुं. (सं. देवः + हि. पर) देवालयः,
 मन्दिरम् ।
 देहली, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'दहली' २. इन्द्र-
 प्रस्थं, देहली, दिल्ली ।
 देहवत, देहवान्, वि. (सं. देहवत्) दे. 'देही' ।
 देहांत, सं. पुं. (सं.) मृत्युः (पुं.), निधनं,
 मरणम् ।
 देहात, सं. पुं. (फा.) दे. 'ग्राम' ।
 देहाती, वि. (फा. देहात) दे. 'ग्रामीण' ।
 देही, वि. (सं. देहिन्) प्राणिन्, देहवत्,
 शरीरिन्, तनु-धारिन्-मृत । सं. पुं., (सं.)
 जीवः, आत्मन् (पुं.), जीवः, प्रत्यगात्मन् (पुं.) ।
 दैन्य, सं. पुं. (सं.) राक्षसः, दानवः, निशाचरः ।
 —गुरु, सं. पुं. (सं.) शुक्राचार्यः ।
 —पति, सं. पुं. (सं.) हिरण्यकरिषुः ।
 —माता, सं. पुं. (सं-न्तु) दितिः (स्त्री.) ।
 दैत्यारि, सं. पुं. (सं.) विश्वः २. देवः ।
 दैनिक, वि. (सं.) प्रात्यहिक-आह्निक [-की
 (स्त्री.)], दैन्यदिन [-नी (स्त्री.)]
 २. दैत्यक-नैत्यक [-की (स्त्री.)] । सं. पुं.,
 दे. 'दैनिक' ।
 दैनिकी, सं. स्त्री. (सं.) दिन, वेतन-भृतिः
 (स्त्री.) ।
 दैव, सं. पुं. (सं. न.) माय्यं, अदृष्टं, नियतिः
 (स्त्री.), भाग्येयं, भवितव्यता, निर्धं, प्रकृत,
 विधिः (पुं.), प्राक्त्वं २. ईश्वरः ३. आकाश-
 क्षम । वि. दिव्य, सौर, अमानुष, अवीरुष,
 ऐश्वर, अलौकिक (स्त्री.), दे. 'देवी' ।
 —गति, सं. स्त्री. (सं.) दैवपटना, भाग्यनक्तं
 २. दे. 'देव' (१) ।
 —दुर्विपाक, सं. पुं. (सं.) दैवदोषः, दोगां-
 र्वोदयः ।
 —योग, सं. पुं. (सं.) यदृच्छ, दैव-गतिः
 (स्त्री.)-श्रुता ।
 —वश, क्रि. वि. (सं-शं) दैवात्, दैववशात्,
 दैवयोगात्, अकस्मात्, यदृच्छया ।

द्वैती, वि. स्त्री. (सं.) अकस्मिका, यादृच्छिका, अनीकिकी, अनासुषी, नशरी, अपाथिवी
 द्वैष्टिक, वि. (सं.) शारीरिक-कायिक-वैश्विक-
 [-की (स्त्री.)] ।
 दो, वि. (सं. द्वि.) दो (पुं.), दो (स्त्री. , न.),
 द्वय, द्वितयं, युग्म (उ. दो मास=मासद्वय इ.) ।
 —अक्षी, सं. स्त्री., दृष्याणी ।
 —अर्थी, वि., द्वयर्थं, द्वयर्थक, शिष्ट २. संदिग्ध ।
 —आब, सं. पुं. (फा.) *द्वयापर ।
 —गला, सं. पुं. (फा.) संकरजः, मिश्रजः,
 विजातः, सांघिकः, वर्णसंकरः ।
 —चंद्र, वि. (फा.) द्वियुग, द्वियुगित ।
 —चित्ता, वि., दे. 'द्विचित्ता' ।
 —तल्ला, वि., दे. 'द्वमंजिला' ।
 —तारा, सं. स्त्री., *द्वितारः, वाद्यभेदः ।
 —धारा, वि., दे. 'द्वधारा' ।
 —ताली, वि., द्विताली (दुग्गुटी आदि) ।
 —पहर, सं. स्त्री., मध्याह्नः, मध्याह्नकाण्डः,
 मध्य (श्व.) दिनं, उदितं ।
 —पर्ता, वि., द्विरावृत्त, द्विरावृत्तित, द्विरुण,
 द्वियुगित ।
 —पहर का, वि., मध्याह्निक [-की (स्त्री.)]
 मध्यदिनं [-नी (स्त्री.)] ।
 —पहर पहिले, कि. वि., अर्वाह् मध्याह्नात्
 (अ. म. = A. M.) प्राहे, पूर्वार्हे ।
 —पहर उले, कि. वि., पश्चान्मध्याह्नात् (प. म. = P. M.), अपराह्णे, विकाले ।
 —राया, वि., द्विप(पा)दः, द्विपाद(पुं.)(मनुष्य) ।
 —बारा, कि. वि. (फा.) द्विः, द्विवारं, पुनः
 (सब अन्य.) ।
 —भाषिया, सं. पुं., दे. 'द्वभाषिया' ।
 —महाला, संज्ञिता, वि., दे. 'द्वमंजिला' ।
 —मानी, वि., दे. 'द्वीप्रथी' ।
 —मुंहा, वि., द्विमुभ, द्विवदन, २. छल्लि,
 र्वाभक । सं. पुं., द्विमुभः मयः, संपभेदः ।
 —रंगा, वि., द्विरंग, द्विवर्ण २. दार्भिक ।
 —रंगी, सं. स्त्री., द्वयभः, द्वैधं, प्रतारणा ।
 —राहा, सं. पुं., द्विपथं, चारुपथः ।
 —लडा, सं. पुं., *द्विसत्रकः ।
 —माला, वि., द्विवापिक द्वैवापिक (बी स्त्री.)
 द्विवर्षीण, द्विवर्ष ।
 —सूती, सं. स्त्री., *द्विसूती ।

—सेरी, सं. स्त्री., द्विसेटी, द्विसेरी ।
 —इत्थद, सं. पुं., करयुग्मत्वान्तः, द्विहस्तप्रहारः ।
 —द्वथा, कि. वि., कर्माभ्यांहरतद्वयेन (तु.) ।
 —एक, -धर, मु., कनिषय, यति, विच-वन ।
 —करना, मु., द्विपादितगणी कृ, समांशद्वयेन
 वि-मन् (भ्वा. प. अ.) ।
 —कौडो की चीज, मु., तुच्छधुप्र-अल्पमूल्य-
 पदार्थः ।
 —वडो, मु., कजित्, काल-समयं, अल्पसमयं
 यावत् ।
 दोज्ञप्त, सं. पुं. (फा.) न(न)रेकः, निषयः ।
 दोज्ञत्री, वि. (फा.) नारकिद, नारकीय,
 नागकिद-नागक [-की (स्त्री.)] ।
 दोना, सं. पुं. (सं. द्वीप >) *द्वीपः, पत्र-पर्ण-
 पुटः-पुटकः ।
 दोनी, वि. (कि. दो) उभी (पुं.), उमे (स्त्री.
 न.), उनय (प्रथः एक. या बहु. में;
 कभी द्विवचन में भी), द्वी अपि (पुं.), द्वे
 अपि (स्त्री. न.) ।
 दोला, सं. स्त्री. (सं.) दोली, हिदोला, प्रेंख-
 खंखा ।
 —यंत्र, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'दोल' २. बक-
 संधान-यन्त्रम् ।
 —युद्ध, सं. पुं. (सं. न.) सन्दिग्ध-परिणामं
 युद्धम् ।
 दोलायमान, वि. (सं.) इनरन्तः विचलत्
 (शत्रव) , प्रेंखत् (शत्रन्त) ।
 दोष, सं. पुं. (सं.) न्यूनता, विकलता, छिद्रं,
 विकारः २. पापं, पातकं ३. लांछनं, कलंकः,
 अभियोगः ४. अपराधः, दोषः ५. रमदोषादयः
 काव्यदोषाः (सा.) ६. प्रदोषः, रजनीमुखम् ।
 —लगाना, कि. सं. दुष् (प्रे.), दुष्पति,)
 अभियुज (रु. जा. अ., नु.), कलंकवृत्ति
 (ना. धा.), दोष क्षिप (तु. प. अ.) -अलह
 (प्रे., आरोपयति), तिद् (भ्वा. प. से.) ।
 —कर, वि. (सं.) अनिष्ट-अहित-नाति, कर-
 कारित्-कार ।
 —ग्राही, वि. (सं. -हिच्) दुष्ट, खल, दुर्वन ।
 —धन, सं. पुं. (सं. न.) वानपित्तकफ-ताशक-
 गौपथम् ।
 —ज्ञ, वि. (सं.) प्राज्ञ, विद्वत् ।
 —त्रय, सं. पुं. (सं. न.) वानपित्तकफ-दोषाः,
 दोष-त्रिक-त्रयी ।

दोषी

[३०८]

दोहित्री

—दृष्टि, वि. (सं.) दोषैकदृष्ट, निद्रया, पुरो-
भागिन्, छिद्रान्वेषिन् ।

दोषी, वि. (सं. दोषिन्) सद्योष, दोषवत्,
अपराधिन्, प्रमादिन् २. पाप, पापिन् ३. अभि-
युक्त, दंडय, कृतापराध ४. व्यमनिन्, कुमार्ग-
गामिन् ।

दोस्त, सं. पुं. (फा.) सखि (पुं.), दे. 'मित्र' ।

दोस्ताना, सं. पुं. } (फा.) सखित्वं, दे.

दोस्ती, सं. स्त्री. } 'मित्रता' ।

दोहता, सं. पुं., दे. 'दोहित्र' ।

दोहती, सं. स्त्री., दे. 'दोहित्री' ।

दोहद, सं. पुं. (सं. पुं. न.) गमिष्यभिलाषः,
लालसा, श्रद्धा, दोहदं, दोहदम् ।

—घती, सं. स्त्री., लालसावती गमिणी, श्रद्धालुः
(स्त्री.) ।

दोहन, सं. पुं. (सं. न.) स्तन्य-ऊधस्थ-ऊधस्थ-
निःस्रावणं, निष्कर्षणं-निस्सारणं २. दे. 'दोहनी' ।

दोहना, क्रि. स. (सं. दोहनं) दुह (अ. प. अ.,
द्विकर्मक), स्तन्यं निस्सृ-क्षु (प्रे.) । सं. पुं.,
दे. 'दोहन' ।

दोहनी, सं. स्त्री. (सं.) दोहन-दुग्ध-पात्रं,
दोहनं, दोहः, पारी, लेपनम् ।

दोहने योग्य, वि. दोग्ध्य, दोद्य ।

दोहनेवाला, सं. पुं., दोष्ट (पुं.), दोहक ।

दोहर, सं. स्त्री. (हिं. दो) *द्विस्वरी ।

दोहरा, वि. पुं. (हिं. दो) द्विरावृत्तं, द्विरावृत्त
२. द्विगुण, द्विगुणित ।

—करना, क्रि. स., द्विपुत्री कृ.दिः व्यावृत् (प्रे.),
द्विपुटयति (ना. धा.) २. द्विगुणी कृ, द्विगुण-
यति (ना. धा.) ।

दोहराना, क्रि. स. (हिं. दोहरा) पुनः-द्विः
कथं (जु.)-गद-वद् (भ्वा. प. से.)-न्वाह
(भ्वा. प. अ.) २. मुहुः-द्विः कृ या अनुगथा
(भ्वा. प. अ.)-आ-पर (भ्वा. प. से.),

अभ्यस् (दि. प. से.) ३. पुनः-द्विः ईक्ष
(भ्वा. आ. से.)-विन् (प्रे.), मंशुष् (प्रे.) ।

दोहराव, सं. पुं. (हिं. दोहराना) पुनरीक्षणं,
संशोधनं २. पुनरुक्तिः (स्त्री.), पौनरुक्त्यं,
पुनर, -वचनं-वाचः ।

दोहराव, सं. पुं. (हिं. दो) द्विदीछन्-दोभेदः ।

दोह, सं. स्त्री. (हिं. दोहना) धावनं-पलायनं,
प्रवणं, विप्रवः, द्रुतं, गमनं-गतिः (स्त्री.),
२. आक्रमणं (२-५) गति-उद्योग-शुद्धिः, भीमा ।

—धूप, सं. स्त्री., धोर-कठोर-प्रयासः-परिश्रमः-
उद्योगः-उद्यमः ।

—धूप करना, मु., अत्यंत आयस-परिश्रम
(दि. प. से.)-प्र-यत् (भ्वा. आ. से.) ।

दोहना, क्रि. अ. (सं. धोरणं) धोर (भ्वा. प.
से.), दु (भ्वा. प. अ.), धाव (भ्वा. प. से.),
दुर्त-सवेगं-शीघ्रं गम् २. सततं-अत्यधिकं प्रयत्
(भ्वा. आ. से.)-परि-श्रन् (दि. प. से.) ३. सहसा
प्र-वृत् (भ्वा. आ. से.) ४. पलाय (भ्वा. आ.
से.) । सं. पुं., दे. 'दोह' ।

दोहनेवाला, सं. पुं., धावकः, धोरकः, शीघ्र-
गामिन् ।

दोहाना, क्रि. स., व. 'दोहना' के प्रे. रूप ।

दोह दोरा, सं. पुं. (अ+हिं) आधिपत्यं, शासनं,
प्रभुत्वं, स्वामित्वं, ईश्वर्यं, वशः-शाम् ।

दोरा, सं. पुं. (अ. दौर) पर्यटनं, परिभ्रमणं
२. इतन्ततः अटनं-भ्रमणं-गमनं ३. अधिका-
रिणी निरीक्षणार्थं भ्रमणं ४. रोमादिः आवृत्तिः-
आवर्तनं-सामयिकक्रमणम् ।

—करना, क्रि. अ., परिभ्रम-पर्यट (भ्वा. प. से.),
स्वमंडलं निरीक्षितुं परिभ्रम् ।

—सुपुंद करना, मु., अभियोगं दंडाधिकारणिक-
पादकं प्रेप् (प्रे.) ।

दोराग्य, सं. पुं. (सं. न.) दृष्टता, खलत्वम् ।

दोर्जन्य, सं. पुं. (सं. न.) दुर्जनता, दुष्टता ।

दोर्बल्य, सं. पुं. (सं. न.) दुर्बलता, क्षामता ।

दोर्भाग्य, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'दुर्भाग्य' ।

दोर्लत, सं. स्त्री. (अ.) धनं, संपद (स्त्री.) ।

—खाना, सं. पुं. (अ.+फा.) गृहं, आ-
नि, वासः ।

—संद, वि. (अ.+फा.) धनिक, संपन्न ।

—संदी, सं. स्त्री. (अ.+फा.) धनाकृता,
समृद्धिः (स्त्री.) ।

दोचारिक, सं. पुं. (सं.) दे. 'द्वारपाल' ।

दोषकूल, वि. (सं.) दोष नीन-शुद्धं, कूल-
वर्ण-जातीय ।

दोष्य, सं. पुं. (सं. न.) दृष्टता, गलता,
दुर्जनता ।

दोष्यति, सं. पुं. (सं.) दुष्कृतपुत्री भरतः ।

दोहित्र, सं. पुं. (सं.) दुहित्र, पुत्र-जनयः ।

दोहित्री, सं. स्त्री. (सं.) दुहित्र-पुत्री-जनया ।

शु, सं. पुं. (सं. न.) दिनं २. आकाशः शं
३. स्वर्गः । सं. पुं., अग्निः ।

—लोक, सं. पुं. (सं.) स्वर्गः ।

शुक्ति, सं. स्त्री. (सं.) कांतिः-श्रीतिः (स्त्री.),
आभा, प्रभा ३. लावण्यं, सौन्दर्यं, शोभा,
लविः (स्त्री.) ३. किरणः, रश्मिः (पुं.) ।

शुक्तिमन्त, वि. (सं. मन्) कांतिमन्, श्रीमन्,
भास्वर, भास्वरः ।

शूत, सं. पुं. (सं. पुं. न.) अक्षवती, कैतवं, पणः ।

—कर, सं. पुं. (सं.) कितवः, धूर्तः, दुरंतः,
अक्षदेविन्, शूतकरः ।

—कार, सं. पुं. (सं.) नभि (भी) कः २. दे.
'शूतकर' ।

शौतक, वि. (सं.) प्रकाशक, शौतकार, उद्भा-
सक २. शोषक, लघोपक ।

श्रव, सं. पुं. (सं.) द्रवणं, श्वणं, क्षरणं, गलनं,
वहनं, अभि-नि, स्थं (स्थं) दनं २. स्व (स्वा)
वः, प्रवाहः, प्रवहः, धारः-रा ३. धावनं,
पलायनं ४. वेगः, जवः ५. आसवः ६. रसः
७. परिहासः ८. द्रवत्वं ९. द्रव-द्रव्य-पदार्थः ।
वि., तरल, द्रव, प्रवाहिन, २. आर्द्र, विलम्ब,
उन्न, ३. विलीन, विद्रुत, द्रवीकृत ।

श्रवीभूत, वि. (सं.) दयादिभिः आर्द्राभूत-
अभिष्यदित, दधान, कृपाल । २. विलीन,
विद्रुत ।

श्रवव, सं. पुं. (सं. न.) द्रवता, द्रवभावः,
प्रवाहधर्मः, रसता, तरलत्वम् ।

श्रव्य, सं. पुं. (सं. न.) पदार्थः, वस्तु (न.)
२. भूत्यादयो नव पदार्थाः ३. उपहानकारणं,
सामग्री ४. धनं, वित्तम् ।

—संचय, सं. पुं. (सं.) धनसंग्रहः ।

श्रव्यार्जन, सं. पुं. (सं.) धनोपार्जनं, वित्तार्जनम् ।

श्राक्षा, सं. स्त्री. (सं.) रसाला, प्रियाला,
गुच्छफला, दे. 'दाख' ।

श्रुत, वि. (सं.) विलीन, विद्रुत, श्रवी-कृत-
भूत, अवधारणं २. शीघ्र, सिप्र, स्वरित, सत्वर
३. पलायित । क्रि. वि., आशु, क्षरिति ।

—गामी, वि. (सं. मित्) आशुग, शीघ्रग-
मिन्, द्रुतगति ।

श्रुम, सं. पुं. (सं.) पादपः, तरुः (पुं.), वृक्षः ।

श्रोण, सं. पुं. (सं. पुं. न.) प्रा-नीनपरिमाण-
भेदः (४ सेर, १६ सेर या ३२ सेर) धनः,

कलशः, उन्मानं, अर्गणः, उल्लवणः । सं. पुं.
द्रोणाचार्यः २. काष्ककलशः ३. द्रुमगयो रथः
४. काकोलः, कृष्ण-द्रोण-वृक्ष-काकः ५. दे.
'दोना' ६. नौका ।

श्रोह, सं. पुं. (सं.) अहित-अनिष्ट-नितनं
वैरं, वि., द्वेषः, अग्निकीपां, त्रिषांसा, लज-
नवः, अहित-अनर्थ, इच्छा ।

श्रोही, वि. (सं. श्रोहिन्) अहित-अनिष्ट-अनर्थ-
वितक-निकीर्षक, मत्सरिन्, अभ्युद्यवः ।

श्रुद, सं. पुं. (सं. न.) मिथुनम् ।

श्रुद, श्रुद्व, सं. पुं. (सं. श्रुद्वं) द्रव्यं, दितव्यं, युगलं,
युग्मं, युगं, यमकं, युतकं २. मिथुनं, जाया-
पती, श्रुपती ३. परस्परविरोधिपदार्थौ (उ.
श्रोत-उष्ण, सुख-दुःख इ.) ४. रहस्यं ५. कलहः,
उपद्रवः ६. श्रुदयुक्तं ७. संशयः ८. संभ्रमः,
ममोहः ९. कष्टं । सं. पुं., समासभेदः (स्त्री.) ।

—चारी, सं. पुं. (सं. शारिन्) दे. 'चकवा' ।

—युद्ध, सं. पुं. (सं. न.) मल्ल-द्वयोर्-
युद्धम् ।

श्रुदशी, सं. स्त्री. (सं.) शुक्ला कृष्णा वा
द्वादशी तिथिः (स्त्री.) ।

श्रुदपर, सं. पुं. (सं. पुं. न.) तृतीययुगं
(८६४००० वर्ष) २. संदेहः ।

श्रुदर, सं. पुं. (सं. न.) द्वार (स्त्री.) प्रति-
(ती) हासः २. उपायः, साधनम् ।

—चार, सं. पुं. (सं. शारचारः) वधुशुद्धारे
करणीया विशिष्टरीतिः (स्त्री.) ।

—पाल, सं. पुं. (सं.) द्वारः-रथः, द्वारस्थः,
द्वारिकः, द्वारारिकः, प्रति(ती) द्वारः- (ती स्त्री.) ।

श्रुदर(रि) का, सं. स्त्री. (सं.) द्वारार(र) जनी,
तीर्थविशेषः ।

श्रुदारा, अव्य. (सं.) द्वारेण, साधनेन, कारणेन,
हेतुना । (हि. प्रायः इस्का अनुवाद तृतीया
से करते है) ।

श्रुद्वि, वि. (सं.) दे. 'दो' ।

—ककार, सं. पुं. (सं.) काशः, वायसः
२. कोकः, वक्रः ।

—गुण, वि. (सं.) द्विगुणित ।

—पद, वि. (सं.) द्विपाद, द्विचरण ।

श्रुद्विज, वि. (सं.) द्विजात, द्विरूपज, द्विजन्मन् ।
सं. पुं., ब्राह्मणश्रुविधवैद्याः २. खगः, अंडजः
३. दंतः ४. ब्राह्मणः ५. नंदः ।

—दास, सं. पुं. (सं.) शशः, दे० ।
 —पति, सं. पुं. (सं.) भास्वणः २. गरुडः
 ३. चन्द्रः ।
 —शिया, सं. स्त्री. (सं.) सोमलता ।
 —बंधु, सं. पुं. (सं.) कर्महोत्री द्विजः ।
 —राज, सं. पुं. (सं.) ब्राह्मणः २. चंद्रः ।
 द्वितीय, वि. (सं.) द्वितीयः-यं-या (पुं. न.
 स्त्री.) २. गौण, अवर ।
 द्वितीया, सं. स्त्री. (सं.) शुक्ला कृष्णा वा
 द्वितीयाः त्रिविधः (स्त्री.) ।
 द्विधा, अव्य. (सं.) प्रकारद्वयेन, द्विप्रकारं
 २. द्विभागशः (अक्ष.), द्विसंख्योः (सप्तमी) ।
 द्विविध, वि. (सं.) द्विप्रकारक । कि. वि. दे.
 'द्विधा' ।
 द्वीप, सं. पुं. (सं. पुं. न.) अल्पेष्टितभूमिः
 (स्त्री.) ।

द्वेष, सं. पुं. (सं.) वैरं, शत्रुता, सापत्न्यं,
 विनीयः, द्रोहाद्यः ।
 द्वेषी, वि. (सं. पुं.) विरोधित्, वैरिन,
 अहित, विपक्ष । सं. पुं., अरिः, शत्रुः, रिपुः,
 द्वेषुः ।
 द्वैत, सं. पुं. (सं. न.) द्वित्वं, द्विधा, द्वैतं, द्वेषं
 २. द्वैतवादः (दर्शन.) ३. भेदभावः ।
 —वाद्, सं. पुं. (सं.) जीवमत्सृष्टधत्ववाद्ः
 २. देहदेशिपुत्रकल्पसिद्धिः ।
 —वादी, सं. पुं. (सं. निर.) द्वैतिन् ।
 द्वैधः-आय, सं. पुं. (सं.) संतापः, निश्चय-
 भावः २. दंभः ३. उपत्यविशेषः (गणनीयः) ।
 द्वैधायन, सं. पुं. (सं.) श्रौतवेद्ययातः ।
 द्वैधायुक, सं. पुं. (सं.) परमाणुद्वयात्मकं
 अयम् ।

घ

घ, देवनागरीवर्णमालाया यकोनविंशो व्यंजनवर्णः,
 धकारः ।
 घंघला, सं. पुं. (हिं. घंघा) दंभः, कपटं, माया ।
 घंध्रा, सं. पुं. (सं. धनधान्यं >) आर्जीवः,
 आ-उप, जीविका, जोवसाधनं, वृत्तिः (स्त्री.)
 २. उद्यमः, व्यवसायः ।
 काम—, सं. पुं., दे. 'घंधा' ।
 गोरख—, सं. पुं., गोहकर-प्रातिजनक-
 व्यापारः ।
 घँसना, कि. अ. (सं. दंशनं >) आ-प्र, विश्
 (तु. प. अ.) निविश् (तु. आ. अ.), निरः,
 भिद् (रु. प. अ.), व्यध् (दि. प. अ.),
 दे. 'गहना' ।
 घँसाना, कि. स., व. 'घँसना' के प्रे. रूप ।
 घँसाव, सं. पुं. (हिं. घँसना) नि-प्र, वेदा-
 वेदनं, वेधः-धनम् ।
 घक^१, सं. स्त्री. (अनु.) हृदय-हृत्, कंठः,
 स्पर्शः-स्फुरणं २. हृदयपत्राब्जः ।
 घक^२, सं. स्त्री. (देश.) हृदयलिप्ता, लघुभूवा ।
 घकघकाना, कि. अ. (अनु.) दे. 'घडकना' ।
 घकेलना, कि. स. (हिं. घका) (करादिभिः)
 प्रणुद्-प्रेर-प्रचाल-प्रसृ (प्रे.) पचुद् (चु.) ।
 घकेलू, सं. पुं. (हिं. घकेलना) प्रणोदकः,
 प्रचोदकः, प्रेरकः, प्रचालकः, अप-प्र, सारकः ।

घकमघका, सं. पुं. (हिं. घक^१) अन्योन्य-पर-
 स्पर्श-संमर्दः, समादानः-गोपधर्मं, अभिगंघातः ।
 घका, सं. पुं. (अनु. घक् अथवा सं. घक=नाश
 करणा >) अपमारणं-घ, प्रचालनं-ना,
 प्रेरणा, प्रलोदना, संघर्षः, अपघनः, संमर्दः
 २. गंघातः, क्लेशः ३. आपद्-विपद् (स्त्री.) ।
 —जाना, कि. अ., अपमार-प्रेर-प्रचाल-प्रलोद
 (कर्म.) ।
 —जेना, कि. स. दे. 'घकलना' ।
 —लगाना, म., विपदा अभि-उप-घ्न (कर्म.) ।
 घचका, सं. पुं. (अनु.) लघु, अघरः-आघातः,
 दे. 'घका' ।
 घजः, सं. स्त्री. (सं. घजः >) अलंक्रिया,
 सजा, भूषा २. आकारः, आकृतिः (स्त्री.),
 अविः (स्त्री.) ३. हावभावी (दि.) ४. वर्तनं,
 शीलम् ।
 घजरीला, वि. (हिं. घज) दे. 'सजीला' ।
 घजी, सं. स्त्री. (सं. घजी) पट-वस्त्र-संखः-पट्टी
 २. पट्टकरं, चौरम् ।
 —भजिथो उडाना, मु. विद् (प्रे.), संख
 (नु.) २. निर्दय-निष्ठुरं-तीक्ष्णं घज (अ. प. अ.),
 हन (अ. प. अ.) ।
 घडंग, वि. (हिं. घडन-यंग) नयन, दे. 'जंग' ।

धइ

[३११]

धनी

धइ, सं. पुं. (सं. धः >) कबंधः, अपमूर्ध-
कलवरः, अशुभशरीरं २. आकटिधोवं शरीरम् ।

धइककन, सं. स्त्री. (अनु. धइ) हृदय-हृदयः-
सांद्रनं-सुख-नपनं २. हृत्पदध्वनिः (पुं.)
३. आंका, भयम् ।

—बोधइक, क्रि. वि., निःशकं, निर्भयं, निस्सं-
कोचम् ।

धइकना, क्रि. अ. (हि. धइक) कप-नेप्-स्वदं.
(भ्वा. आ. से.), स्फुर (तु. प. से.) ।

धइका, सं. पुं., दे. 'धइकन' ।

धइकाना, क्रि. स., व. 'धइकना' के प्रे. रूप ।

धइधइ, सं. स्त्री. (अनु.) धइधइत, यान-
कृतिः-कृतं । क्रि. वि., सधइधइशब्दं
२. निःसंकोचम् ।

—जलना, क्रि. अ., अस्तुमं-प्रनंदं ज्वल
(भ्वा. प. से.)-दह (कर्त्त.)-दीप (दि. आ. से.) ।

धइधइना, क्रि. अ. (अनु. धइधइ) धइधइ-
दते (ना. धा.) धइधइशब्दं जन् (प्रे.) ।

धइलला, सं. पुं. (अनु. धइ) धइधइत्कारः
२. जनसंघर्षः ।

धइललेदार, वि. (धनु. + फा.) निर्भय,
निःभयोच ।

धइल्ले से, मु., निर्भयं, निस्संकोचम् ।

धइवाइ, सं. पुं. (हि. धइ) तोलकः, *धइवरः ।

धइवा, सं. पुं. (सं. धः) तुला २. तोलः, भारः
३. पक्षः, दलम् ।

धइवाका, सं. पुं. (अनु०) धइवा, इति शब्दः-
लः-ध्वनिः (पुं.) गुरुद्रव्यपतनध्वनिः ।

धइधइ, क्रि. वि. (अनु. धइ) सततं, निरंतरं,
अविच्छिन्नं, अनवच्छिन्नं २. निरंतरं सधइ-
धइशब्दं ।

धइम से, सं. पुं. (अनु.) सशब्दम् ।

धइी, सं. स्त्री. (सं. धः >) धइी, चतुः-
सेरी-सेटवी, पंच, सेरी-सेटवी ।

धइवेदी, सं. स्त्री. (हि. फा.) देवबंधः, पशु-
पातः-ग्रहणं-अवलंबनम् ।

धत, सं. स्त्री., दे. 'लत' ।

धतकारना, क्रि. स. (अनु. धत) दे. 'दूतकारना' ।

धता, सं. पुं. (अनु. धत) निस्सारित, अपगत ।

—बनाना, मु., क्लेशेन अप-निम्-सु (प्रे.),
संघानं परिहृ (भ्वा. प. अ.) ।

धतुरिया, सं. पुं. (हि. धतूरा) धतूर-मोहनः-
प्रयोजको बंधकः ।

धतू (तू) रा, सं. पुं. (सं. धतूरः) धुस्तूरः,
शिवप्रियः, मोहनः, कनकः ।

धधक, सं. स्त्री. (अनु.] ज्वाला, झलका,
आधेम् (न.) ।

धधकना, क्रि. अ., (हि. धधक) उत्-प्र-सं-
शीप (दि. आ. अ.) उत्-प्र-ज्वल् (भ्वा. प.
से.), प्रचंडं दह (कर्त्त.) ।

धधकाना, क्रि. स., व. 'धधकना' के प्रे. रूपः

धनं, सं. पुं. (सं.) अर्जुनः २. अग्निः ।

धन, सं. पुं. (सं. न.) वित्तं, द्रव्यं चरि)कम्,
वसु (न.), अर्थः, हिरण्यं, द्रविणं, विभवः,
श्रीः-लक्ष्मीः (स्त्री.), भोग्यं, सम्पद-सम्पत्तिः
(स्त्री.) वाचनं, रै (पुं.), राः, राधो, रायः)
२. गोधनं ३. प्रेमपात्रं ४. योगविहं (+, गणित)
५. मूलद्रव्यम् ।

—कुबेर, सं. पुं. (सं.) लक्षपतिः (पुं.),
कोनीशः, सुसमृद्धजनः ।

—धान्य, सं. पुं. (सं. न.) धनधान्ये, अर्थांत्र-त्रे ।

—पत्ति, सं. पुं. (सं.) कुबेरः, दे. ।

—हीन, वि. (सं.) दरिद्र, अकिंचन ।

धनक, सं. पुं. (सं.) धनया, धनैपणा ।

धनद, वि. (सं.) दानशील, वदान्य । सं. पुं.
(सं.), कुबेरः ।

धनाढ्य, वि. (सं.) अर्थ-धन-वित्त-द्रव्य-वत् ।
धनिन्, धनिक, सन्धु-महा-धन, वित्त-विभव-
धन-शास्त्रिन्, संपन्न, समृद्ध, श्रीमत्,
लक्ष्मीश, धनेश्वर ।

धनार्जन, सं. पुं. (सं. न.) वित्तोपाजनं, धन-
संग्रहः ।

धनिक, वि. (सं.) दे. 'धनाढ्य' ।

धनिया, सं. पुं. (सं. धनिका) धन्या, वित्तुर्भावः,
सुगंधि (न.) कुस्तुम्बरी ।

धनिष्ठा, सं. स्त्री. (सं.) अविष्ठा, नक्षत्रविशेषः ।

धनी, वि. (सं. निन्) दे. 'धनाढ्य' २. दक्ष,
कुशल । सं. पुं., स्वामिन्, अधिपतिः २. पतिः
(पुं.) धनाढ्यः ।

—मानी, वि. (सं. धनिमानिन्) धनमान-
वत्-युक्त ।

वात का—, वि., प्रतिज्ञापक, स्थिर-दृढ़-
प्रतिज्ञ, सत्य-संगर-संध-वत् ।

धनु, सं. पुं. (सं.) दे. 'धनुष' ।
 धनुआ, सं. पुं. [सं. धन्व (वेद में)] दे.
 'धनुष' २. दे. 'धुनकी' ।
 धनुक, सं. पुं. (सं. धनुस् न.) धनुः, धनूः
 (स्त्री.), धनु (न.) इन्द्र, -नापः-आयुषं-
 धनुस् (न.) ।
 धनुकी, सं. स्त्री., दे. 'धुनकी' ।
 धनुधारी, सं. पुं. (सं. रिन्) धनुर्धरः, धन्विन्,
 इषुधरः, धानुष्कः, निधमिन्, धनुर्मृत्युधनुष्मत्
 (पुं.), तृणिन् ।
 धनुर्विद्या, सं. स्त्री. (सं.) शराभ्यासः, इषु-
 क्षितिः (स्त्री.) ।
 धनुर्वेद, सं. पुं. (सं.) धनुर्विद्यानिरूपकशास्त्रम् ।
 धनुष, सं. पुं. [सं. धनुस् (न.)] चापःपं.
 श्वासः, आसः, कामुकं, कीदण्डं, शरसं,
 शारंगः, धनूः (स्त्री.) ।
 धनेश-श्वर, सं. पुं. (सं.) धनपतिः २. कुबेरः
 ३. खगभेदः ।
 धनैषणा, सं. स्त्री. (सं.) वित्तैषणा, धनाया ।
 धनैषी, वि. (सं.-धिन्) धनेच्छुक, वित्ता-
 शिन् (पुं.)
 धन्या, सं. पुं., दे. 'धरना' सं. पुं. ६ ।
 धन्य, वि. (सं.) सौ, भाग्यवत्, पुण्य, वत्-
 मान्, सु, कृतिन्, सु, भग-भाग्य, महाभाग २.
 श्लाघ्य, स्तुत्य । क्रि. वि., साधु, सुधु, सम्यक् ।
 —वाद, सं. पुं. (सं.) कृतज्ञता, दर्शन-प्रकाशनं,
 उपकारप्रशंसा २. साधुवादः, प्रशंसान्वचनानि
 (बहु.), श्लाघा ।
 धन्वन्तरि, सं. पुं. (सं.) सुरचिकित्सकः,
 सुश्रुतकारः ।
 धन्वा, सं. पुं. (सं. धन्वन्) धनुस् (न.),
 चापः २. मरुः ३. स्थलम् ।
 धन्वी, सं. पुं. (सं. धिन्) दे. 'धनुधारी' ।
 धप्पा, सं. पुं. (अनु. धप) चपेटः-टिका
 २. क्षतिः-हानिः (स्त्री.) ।
 धदवा, सं. पुं. (देश.) दे. 'दाग' ।
 धम, सं. स्त्री. (अनु.) पवनशब्दः, धमिति
 ध्वनिः (पुं.) ।
 —से, क्रि. वि. धमितिशब्देन सह २. अकस्मात् ।
 धमक, सं. स्त्री. (अनु.) अवपतन-आघात,-
 शब्दः, धमिति ध्वनिः (पुं.) २. पादः-यास-
 शब्दः ३. आघातः, प्रहारः ४. कम्पः ।

धमकना, क्रि. अ. (हि. धमक) धमिति शब्देन
 सह पठ (भ्वा.प.से.) २. व्यथ (भ्वा.आ.से.) ।
 आ—, सु., अकस्मात् सहसा आया (अ.
 प. अ.) ।
 धमकाना, क्रि. स. (हि. धमकना) भी (प्रे.
 भाषयति, भाषयते, भीषयते), वस् (प्रे.)
 २. निर., मत्स् (जु. आ. से.), तर्ज (भ्वा.
 प. से., जु. आ. से.) ।
 धमकी, सं. स्त्री. (हि. धमक) विभीषिका,
 भयदर्शनं २. तर्जना, मत्सना, अपकारनिर्
 (स्त्री.) ।
 —से आना, सु., विभीषिकाप्रभावेण कार्यं कृ ।
 धमधमाना, क्रि. अ. (अनु.) धमधमायते
 (ना. ध.), धमधमशब्दं अन् (प्रे.) ।
 धमनी, सं. स्त्री. (सं.) धमनिः (स्त्री.), रक्त-
 वाहिनी नाडी ।
 धमाका, सं. पुं. (अनु.) भुञ्जुत्वादिशब्दः,
 महाशब्दः, धमिति ध्वनिः (पुं.) २. पतन-
 कर्दन, शब्दः ।
 धमाचौकडी, सं. स्त्री. (अनु. धम+हि. चौकडी)
 कलकलः, कोलाहलः, तुमुलः, डमरः,
 शंभोमः, विप्लवः ।
 धमाधम, क्रि. वि. (अनु. धम) सधमधम-
 शब्दम् ।
 सं. स्त्री., धमधमध्वनिः (पुं.) २. आघात-
 प्रतिध्वनिः, उपप्लवः, उत्प्लवः ।
 धर, वि. (सं.) धारक, धारिन्, धर्तुं, ग्रहीतुं ।
 (प्रायः समासोत्तमं, उ. चक्रधर इ.) ।
 धरणिणी, सं. स्त्री. (सं.) धरा, भूमिः (स्त्री.)
 दे. 'पृथिवी' ।
 —धर, सं. पुं. (सं.) पर्वतः २. कच्छपः ३.
 शेषनागः ४. विष्णुः (पुं.) ५. शिवः ।
 —सुता, सं. स्त्री. (सं.) सीता, जानकी ।
 धरनी, सं. स्त्री. (सं. धरिणी) दे. 'धरणि' ।
 धरना, क्रि. स. (सं. धरणं) आनि-धा (जु.
 उ. अ.), स्वा (प्रे.), न्यस् (दि. प. से.),
 नि-क्षिप् (तु.प.अ.), आ-रुह (प्रे. आरोपयति),
 धृ (जु.) २. ग्रह् (क. प. से.), (हस्तेन)
 अनलम्बु (भ्वा. आ. से.)-धृ ३. परिधा (जु.
 उ. अ.), वस् (अ. आ. से.) । सं. पुं.,
 धरणं, आनि, आनि-न्यसनं २. ग्रहणं ३. परि-
 धानं ४. माग्रहं उपवेशः स्थानं वा ।

—देना, मु., (उद्देश्यसिद्धये) साग्रहं ग्थ
(भ्वा. प. अ.) ।

धरवाना, कि. प्रे., इ. 'धरना' के प्रे. रूप ।

धरहरा, सं. पुं. (हि. धुर+धर) ससोपानं
गृहशिखरं २. अंतःसोपानः स्तम्भः ।

धरा, सं. स्त्री. (सं.) भूः-भूमिः (स्त्री.) ।

—तल, सं. पुं. (सं. न.) भूतलं, पृथिवीतलं
२. भूमिः (स्त्री.) ।

—धर, सं. पुं. (सं.) दे. 'धरणीधर' ।

धराज, वि. (हि. धरना) महार्थ, बहुमूल्य २.
विशिष्ट, उत्कृष्ट ।

धरात्मज, सं. पुं. (सं.) मंगलग्रहः २.
नरकासुरः ।

धराधिप, सं. पुं. (सं.) धरा, अधिपतिः-अधीशः,
नृपः ।

धरामर, सं. पुं. (सं.) विप्रः, ब्राह्मणः, भूसुरः ।

धरित्री, सं. स्त्री. (सं.) पृथिवी, दे. ।

धरोद्धार, सं. स्त्री. (हि. धरना) निक्षेपः, न्यासः,
दे. 'अमानत' ।

धर्ता, सं. पुं. (सं. धर्तृ) धारकः, धारयितृ २.
महकः ।

धर्म, सं. पुं. (सं.) अभ्युदयनिःश्रेयससाधको
गुणकर्मसमूहः (अहिंसा, सत्य, अग्निहोत्रादि)
२. ईश्वर, निष्ठा-सेवा-भक्तिः (स्त्री.), आस्तिक्य-
बुद्धिः (स्त्री.) ३. पुण्यं, परोपकारः ४. सदा-
चारः, साधुता, सुकृतं, सत्यमेव (न.) ५. नयः,
न्यायः, नीतिः (स्त्री.), न्यायिता, कर्जुता
६. पक्षपातराहित्यं, समदर्शित्वं ७. श्रद्धा,
भक्तिः, निष्ठा ८. मते, सम्प्रदायः, पवित्र (पुं.)
९. शास्त्रविहित, कर्तव्य-कृत्यं १०. आचारः,
व्यवहारः ११. रीतिः-रूढ़िः (स्त्री.) १२.
प्रकृतिः (स्त्री.), स्वभावः, नित्यगुणः १३.
विधिः (पुं.), व्यवस्था, राजाज्ञा, कार्याकार्य-
नियमः ।

—अध्यक्ष, सं. पुं. (सं.) प्राड्विवाकः, अक्ष-
दर्शकः, धर्माधिकारिणः, न्यायाधीशः, धर्माधि-
कारिणः ।

—अनुसार, कि. वि. (सं. रं) यथाधर्म, धर्मो-
क्तरीत्या, धर्मपूर्वकम् ।

—अर्थ, कि. वि. (सं. र्थ) धर्मार्थ, पुण्याय ।

—अवतार, सं. पुं. (सं.) धर्ममूर्तिः (पुं.),
अनिधर्मात्मन् (पुं.), धर्मिष्ठः, पुण्यात्मन् (पुं.) ।

—आत्मा, वि. (सं. त्मन्) धार्मिक, धर्मशील,
धर्मान्, पुण्यात्मन्, धर्म-पर-परायण ।

—उपदेश, सं. पुं. (सं.) धर्म, शिक्षा-अनु-
शासनम् ।

—उपदेशक, सं. पुं. (सं.) धर्म, शिक्षकः-
अनुशासकः ।

—कर्म, सं. पुं [सं. मन् (न.)] शास्त्रोक्तं
कृत्यम् ।

—क्षेत्र, सं. पुं. (सं. न.) वृक्षेत्रं २. भारतवर्षम् ।

—ध्वजी, सं. पुं. (सं. जिन्) धर्मध्वजः, पाषण्डः,
लिंगवक, वृत्तिः (पुं.), स्त्री.), वक-वैडाल, -
व्रतः, आर्य-रूप-लिंगिन्, दृष्टधार्मिकः,
मिथ्याचारः ।

—करना, कि. स., धर्मं चर (भ्वा. प. से.),
पुण्यं कृ ।

—निष्ठा, वि. (सं.) धार्मिक, धर्म, पर-परायण ।

—पत्नी, सं. स्त्री. (सं.) यथाशास्त्रं विवाहिता
नारी २. भार्या, नारी, दाराः (पुं. बहु.),
कलत्रम् ।

—पुत्र, सं. पुं. (सं.) युधिष्ठिरः २. धर्मतः
कृतः पुत्रः ३. नरनारायणमुनी (कि.) ।

—भ्रष्ट करना, कि. स., धर्मं भ्रंशं नश् (प्रे.)-
हन् (अ. प. अ.) २. सतीत्वं ह (भ्वा. प. अ.) ।

—राज, सं. पुं. (सं.) धर्मात्मा नृपः २. युधि-
ष्ठिरः ३. यमः ४. जिनः ।

—शाला, सं. स्त्री. (सं.) *यःत्रिकगृहं, *तीर्थ-
सेविनिवासः ३. गुरुद्वारं, शिष्यसंप्रदाय-
देवालयः ।

—शास्त्र, सं. पुं. (सं. न.) धर्मसंहिता,
स्मृतिः (स्त्री.) ।

—शील, वि. (सं.) धार्मिक, धर्मात्मन् ।

—समा, सं. स्त्री. (सं.) व्यवहारमण्डपः,
न्यायसभा ।

धर्मिष्ठ, वि. (सं.) दे. 'धर्मावतार' ।

धर्मी, वि. (सं. मिन) पुण्यात्मन् २. मतानु-
यायिणः ।

धव, सं. पुं. (सं.) पतिः, भर्तृ २. पुरुषः, नरः
३. पिशाचवृक्षः ।

धवल, वि. (सं.) श्वेत, शुक्ल २. भासुर ३.
सुन्दर ।

ध्वला, सं. स्त्री. (सं.) १-२. श्वेत-शुक्ल-
गौर, नारी-गौः (स्त्री.) । वि. स्त्री. (सं.)

शुक्ला, गौरी, सिता । वि. पुं. (हि.) श्वेत,
गौर, शुक्ल । सं. पुं., गौर-श्वेत, वृषः-वृषभः ।

धंसकना, } कि. अ., दे. 'धंसना' ।
धंसना, }

धस्सर, सं. स्त्री., दे. 'धकारलेटिना' ।

धौधल, सं. स्त्री. (देश. धौधना) क्षोभः ।
विषलवः, उपद्रवः २. कपटं, माना ३. स्वरा,
सम्प्रमः ।

धौधली, वि. (हि. धौधल) उपद्रविन्, उत्पा-
तिन्, कुदेषाप्रिय २. भागिन्, कपटिन् ।
सं. स्त्री., दे. 'धौधल' ।

धौय धौय, सं. स्त्री. (अनु.) शतधनी, शतध-
ध्वनिः (पुं.) २. प्रज्वलनध्वनिः ।

धाक, सं. स्त्री. (सं. धक्का >) प्रभवः, आतंकः,
प्रतापः, शासनं २. स्वातिः-प्रसिद्धिः (स्त्री.) ।

—धैधना, सु. आतंक-प्रतापः प्रसू (भ्वा. प.
अ.) २. प्रख्यात (वि.) मू ।

धागा, सं. पुं. (हि. तागा) मूत्रं, गुणः, तन्तुः (पुं.) ।

धाड़, सं. स्त्री. (सं. धाटी >) लंठनम्, लुंठिः
(स्त्री.), लुंठकाक्रानणम् २. विलापः, क्रन्दनं,
रोदनम् ३. दलः, गणः ।

—मारना, सु., उच्चैः रुद (भ्र. प. से.),
आक्रन्द, (भ्वा. प. से.) ।

धाड़स, सं. पुं., दे. 'धाड़स' ।

धात, सं. स्त्री., दे. 'धातु' ।

धाता, सं. पुं. (सं. धातृ) ब्रह्मन्, चतुर्भुजः,
स्रष्टृ (पुं.), २. विष्णुः (पुं.) ३. शिवः ।
वि., पालक २. रक्षक ३. धाक ।

धातु, सं. स्त्री. (सं. पुं.) अक्षमतिकारः (गौरि-
कादि) २. स्वनिजभेदः (सुवर्णादि) ३.
शरीरधारक-पदार्थाः (रसरक्तमांसदि) ४.
शुक्रं, वीर्यम् । सं. पुं. (सं.) भूतं, तत्त्वं
(पृथिव्यादि) २. शब्दमूलं (भू, कृ, आदि)
३. आत्मन् ४. परमात्मन् (पुं.) ।

धात्री, सं. स्त्री. (सं.) अंकापाली, लिका, उपमातृ-
मातृका, धात्रियां, प्रतिपालिका २. जननी ३.
पृथिवी ।

—विद्या, सं. स्त्री. (सं.) शिशुपालनविद्या
२. सूक्तिकर्मम् (न.) गर्भमोचनविद्या ।

धान, सं. पुं. (सं. धान्यं) त्राहिः-शालिः-सतम्ब-
करिः (पुं.) २. (पीदा) कल्मः, नीवारः ।

धाना, सं. स्त्री. [सं. धानाः (स्त्री. बहु.)]

भृष्टयवाः २. भृष्टतण्डुलाः, न्यजाः (पुं. बहु.)
३. दे. 'धनिया' ।

धानी, वि. (हि. धान) वैषदहरितवर्ण ।

धानी, सं. स्त्री. (सं. धानाः >) भृष्ट-यवाः-
गोधूमः-तण्डुलाः २. त्राहिभेदः ।

धान्य, सं. पुं. (सं. न.) अन्नं, अर्थं, भोःर्थं.
भोगार्थं, जीवसाधनं २. त्राहिः-शालिः-सतम्ब-
करिः (पुं.) ३. चतुर्भिः परिमाणं ४. धन्याकं,
वित्तुन्नवान ।

—उत्तम, सं. पुं. (सं.) तण्डुलः ।

—राज, सं. पुं. (सं.) बबः ।

धाभट्टे, सं. पुं. (हि. धाय + नाट) धनियः,
धात्रीपुत्रः ।

धाम, सं. पुं. (सं. धामन् (न.)) मूर्धं,
गोष्ठं, अ(आ)गारं २. शरीरं ३. स्थानं ४. प्राथ-
देव-स्थानम् ।

धाय-नी, सं. स्त्री. (सं. धात्री, दे.) ।

धारै, सं. पुं. (सं.) देववान् वर्षः, धारा-
आसराः-संपातः २. गणं ३. प्रदेशः ।

धार, सं. स्त्री. (सं. धारा) प्रवाहः, प्रेयः,
मंदाकः, खीतस् (न.), प्रस्तावः, रयः, वेला,
वेगः २. उत्सवः, विह्वारः ३. अक्षि, घोटि,
पाली-लिङ्गः, अर्धांगिः (सद् स्त्री.), अग्रम् ।
४. दिशा-शु (स्त्री.) ५. रेखा-पथ ।

—दार, वि. (हि. + फा.) तीक्ष्ण, निश्चित,
क्षितधारः ।

—मारना, सु, मूत्र (नृ.), सिंह (भ्वा. प. अ.) ।

धारक, सं. पुं. (सं.) धारयितृ, धर्तृ २. भागिन्,
अधमर्णः ।

धारण, सं. पुं. (सं. न.) धरणं, ग्रहः-हर्गं,
अवलंबः-वनं, करेण ग्रहणं-धरणं २. परिधानं
वसनं ३. स्वो-अंगि,करणं ४. प्राणम्, पोषणं,
भरणम् ।

—करना, कि. अ., दे. 'धारना' ।

धारणक, सं. पुं. (सं.) भागिन्, अधमर्णः ।

धारणा, सं. स्त्री. (सं.) स्मृतिः-स्मरणशक्तिः
(स्त्री.) २. धारणशक्तिः, मेधा, धारणावती
धीः (स्त्री.), ग्रहणसामर्थ्यं ३. धारणं, ग्रहणं
४. निश्चयः, निर्णयः, दृढसंकल्पः ५. बुद्धिः
(स्त्री.) ५. मयादा, स्थितिः (स्त्री.) ६. योगांग-
विशेषः, ध्येये विरक्त्य स्थिरवचनं ७. मतिः
(स्त्री.), मतम् ।

धारना, कि. म. (सं. धारणं) धृ (भ्वा. उ. अ. चु.), ग्रह (कृ. प. से.), अष्टा (जु. आ. अ.), अथर्व (भ्वा. आ. से.) २. परिधा (जु. उ. अ.), वम् (अ. आ. से.), धृ (चु.) ४. अव-उ-उप-सं-संभ (वा. व. सं.) अथर्व-आलंभं वा ।

धारा, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'धार' सं. स्त्री. (१-५) । ६. परिच्छेदः, विभागः, अधिकरणम् ।

—यंत्र, सं. पुं. (सं. ज.) दे. 'कुहावा' ।

धारी सं. स्त्री. (सं. धारा) रेखा, लेखा, रेषा ।

—दार, वि. (हि. + क्त.) रे(ति)वाकित, सरेव ।

—धारी, वि. (हि. + क्त.) धारः, धारकः (ज. दंडधरः इ.) -परिणी (स्त्री.) ।

धार्मिक, वि. (सं.) दे. 'धर्मात्मा' ।

धावन, सं. पुं. (सं. न.) धोरणं, द्रुतगमनं २. शोधनं, मार्जनं ३. शोधनसाधनम् ।

धावा, सं. पुं. (सं. धावनं) आक्रमणं, अभिद्रवः, अत्रकंदः, आपातः, उपप्लवः ।

—करना वा भारना वा बोलना, कि. म., आक्रम (भ्वा. टि. प. से.), अभिट्टु (भ्वा. प. अ.), अवर्कंद (भ्वा. प. अ.) ।

घाह, सं. स्त्री. (अनु.) दे. 'घाद्' ।

धिक, अष्ट. (सं. धिक्) (प्रायः द्वितीयं परन्तु कर्मा यदा के साकं निदा २. निमेषेना ।

धिकार, सं. पुं. (सं.) न्यक्-निन्नी-कारः, तिरस्कारः, मत्संता, गर्हा, निद्रा, परि(री)वादः, अधिक्षेपः ।

धिकारना, कि. म. (सं. धिकरणं) तिरस् धिक्-कृ. अप-परि-वम् (भ्वा. प. से.), (तानं) निद्र (भ्वा. प. से.), अधि-अ-क्षिप् (जु. प. अ.) ।

धिग्दंड, सं. पुं. (सं.) दे. 'धिकार' ।

धिपणा, सं. स्त्री. (सं.) त्रिभिः, धाः (टानं स्त्री.) प्रज्ञा २. स्तुति-नुतिः (स्त्री.) ३. वपुः ४. धृषिकी ५. दे. 'ध्याली' ।

धींगा, सं. पुं. (सं. धिगरः) दृष्टः स्वकः शठः, पापः ।

धींगी, सं. स्त्री. शठता, शाठ्यं, दौष्ट्यं, उपद्रवः ३. वादात्कारः, अन्वाहः ।

—मुशती, सं. स्त्री. कुपेष्टा, उपद्रवः, खलना २. बाहू-बाह्वनि-मुष्टीमुष्टि (अथ.)

धीं, सं. स्त्री. (सं. दुहितृ) पुत्री ।

धी, सं. स्त्री. (सं.) बुद्धिः-मतिः (स्त्री.), प्रज्ञा ।

धीमा, वि. (सं. मध्यम) मंथर, मंद, गति-गामिन, २. लघु, तीव्रता-उग्रता-भण्डता, शून्य ।

—पड़ना, कि. अ., म्भूनी धू, हस् (भ्वा. प. से.), क्षि (कर्म.), उप-प्र-शम् (दि. प. से.) ।

धीमान्, वि. (सं. मत्) बुद्धिमत्, प्राज्ञ [धीमती (स्त्री.)=बुद्धिमती] ।

धीमे धीमे, कि. वि., मंद मंद, शनैः शनैः २. अप्रबं, अवीर ३. मृदु, यथासुखम् ।

धीर, वि. (सं.) धृतिमत्, शांत, धैर्यान्वित, सहन-श्रमा-शील, सहिष्णु, क्षमिन् २. नम्र, विनीत ३. गं(ग)वीर, चापल्यशून्य ।

धीरज, सं. पुं. (सं. धैर्यं) } दे. 'धैर्य' ।

धीरता, सं. पुं. (सं.) }
धीवर, सं. पुं. (सं.) कैवर्तः, आलोकः, मत्स्य-भाजीवः-उपजीविन, मार्त्स्यकः, दाशः-सः, [धीवरी (स्त्री.)=कैवर्ती] ।

धुंध, सं. स्त्री. (सं. धूमांधं) धूमदृष्टिः (स्त्री.) २. कुञ्जटिका, धूमिका, कुण्डिका ।

धुंधका, सं. पुं. (हि. धुध) धूम-अग्निवाह, चिद्ध-विवरम् ।

धुंधला, वि. (हि. धुंध) अस्पष्ट, अव्यक्त, मंद-शुति-प्रभ, दुरालोक २. धूज, ईषत्कृष्ण, धूमवर्ण ।

—पन, सं. पुं. अस्पष्टता, दुरालोकता, अव्यक्तता, मंदप्रभता ।

धुआँ, सं. पुं. (सं. धूमः) अग्नि-मरुद्, बाहः, श्वतमालः, शिश्निकजः, तरी ।

—कदा, सं. पुं. (हि. + क्त.) अग्निपोतः ।

—धार, वि. धूमय, सधूम २. धूज, धूमवर्ण ३. धोर, प्रबंट । कि. वि., सबेगं, अत्यधिकं, प्रबलम् ।

धुआँसा, सं. पुं. (हि. धुआँ) कञ्जल, मत्ती-सिः (स्त्री.) ।

धुकधुकी, म. स्त्री. (अनु. धुकधुक) हृदयं, हृद (न.), अग्रमांतं २. हृत्, कंठः-रूपदः २. वासः, भयं ४. उरोभूषणभेदः ।

धुन, सं. स्त्री. (हि. धूनना) अभिनिवेशः, दृढग्रहः, आसक्तिः-अनिवार्यप्रवृत्तिः (स्त्री.)

उत्कटेच्छा, लालसा २. चिन्ता, विचारः
३. कामचारः, लहरी ।

धुन, सं. स्त्री. [सं. ध्वनिः (पुं.)] स्वरः,
गानप्रकारः २. रागभेदः ।

धुनकना, कि. सं., दे. 'धुनना' ।

धुनकी, सं. स्त्री. [धनुस् (न.) >] पिञ्जने-
नी, विहननं, नृलक्ष्मोदनकामुर्कं, धुनकरी ।

धुनना, कि. स. (हि. धुनकी) (पिञ्जनेन)
तूलं शुष् (प्रे.) धु (स्वा. उ. अ.) २. मूर्च्छा
तड् (नृ.) ३. असकृत कप् (नृ.) ४. सत-
तं कृ ।

धुनि^१, सं. स्त्री. (सं.) नदी, धुनी ।

धुनि^२, सं. स्त्री. [सं. ध्वनिः (पुं.)] शब्दः,
रवः ।

धुनिषा, सं. पुं. (हि. धुनना >) पित्राशोषकः,
*पिञ्जकः, *तूलधावकः ।

धुरंधर, वि. (सं.) पूर्वदं, धुर्यं २. भारवाह
३. श्रेष्ठ, प्रधान, प्रकाश, सुलभ ।

धुर, सं. पुं. [सं. धुर (स्त्री.)] अक्षः, ध्रुवः
२. भारः ३. आरंभः ४. युगः-अं (ज्ञा) ।
अव्य., संपूर्णतया, अशेषतया, साफल्येन ।

धुरपद, सं. पुं. (सं. ध्रुवपदं) गीतभेदः ।

धुरा, सं. पुं. [सं. धुर (स्त्री.)] अक्षः, ध्रुवः ।

धुरी, सं. स्त्री. (हि. धुरा) अक्षकः, ध्रुवकः ।

धुलवाना, कि. प्रे., ब. 'धोना' के प्रे. रूप ।

धुलाई, सं. स्त्री. (हि. धुलाना) धावनं, प्र-
क्षालनं २. धावनं, प्रक्षालनं, भृतिः (स्त्री.)

धुवाँ, सं. पुं, दे. 'धुआँ' ।

धुवाँरा, सं. पुं. (हि. धुवाँ) पटल-उद्वि-
धूमच्छिद्रम् ।

धुस-स्स, सं. पुं. (सं. ध्वंसः >) मृत्तिका-
चयः, मृदराशिः (पुं.), क्षुद्रपर्वतः; २. शप्रः,
चयः ।

धुस्सा, सं. पुं. (सं. दिशाटः >) प्रविष्यं-
णिः (स्त्री.) ।

धुआँ, सं. पुं, दे. 'धुआँ' ।

धूत^१, वि. (सं. धूर्तं) वंचक, कपटित्, छलित्,
पाषंड-डित् ।

धूत^२, वि. (सं.) चालित, कपित २. त्यक्त,
उत्सृष्ट, भर्त्सित, धिक्कृत ।

धूता, सं. स्त्री. (सं.) पत्नी, भार्या ।

धूनी, सं. स्त्री. (सं. धूमः >) धूपः, सुगंधि-
धूमः २. मिथुनकानलः, तपोवह्निः (पुं.) ।

—देना, मु., धूप (नृ.), धूपं घा (प्रे. घापयति) ।

—रमाना या लगाना, मु., परिव्रज् (स्वा. प.
से.), भिक्षुको मू २. तपः तप् (दि. आ.
अ.), तपस्यति (ना. धा.) ३. तपोवह्नि
ज्वल् (प्रे.) ।

धूप^१, सं. स्त्री. (सं. धूप=चमकना >) आतपः,
सूर्यः, आलोकः-प्रकाशः ।

—छाँह, सं. स्त्री., * धूपच्छाया, द्विवर्णो
वस्त्रभेदः ।

—दिखाना, मु., आतपं प्रश (प्रे.) ।

—सेकना, मु., आतपं सेव् (स्वा. आ. से.) ।

धूप, सं. पुं. स्त्री. (सं. पुं.) धावनः, धावनः,
तुरुष्कः पिंडकः, सिद्धः, नृणः, मेरुकः, २. गंध-
विशानिका, धूपः, धूपधूमः ३. धूपवर्तिः (स्त्री.) ।

—दान, सं. पुं., } धूपधानं-नी, धूपपानम् ।

—दानी, सं. स्त्री., }

धूस^१, सं. पुं. (सं.) सतमालः, शिखिध्वजः, दे.
'धुआँ' २. बा (ब.) ध्वः-ध्वम् ।

—केतु, सं. पुं. (सं.) उल्का, खोल्का
२. अग्निः (पुं.) ।

—पान, सं. पुं. (सं. न.) तमासुधूमपानम् ।

—पोत, सं. पुं. (सं.) अग्नि-वाष्प-पीतः ।

धूम^१, सं. स्त्री. (सं. धूमः >) ख्यातिः-प्रसिद्धिः
(स्त्री.) २. कोलाहलः, कलकलः ३. समारोहः
आडंबरः, शोभा ४. उपद्रवः, क्षोभः, विप्लवः ।

—धाम, सं. स्त्री., आडंबरः, शोभा, श्रीः
(स्त्री.) गृहदायोजनं, वैभवम् ।

धूमर, धूमला, धूमिल, वि. (सं. धूमल)
धूम, धूमवर्णं, कृष्णलोहित ।

धूर-रि, सं. स्त्री., दे. 'धूल' ।

धूर्त, वि. (सं.) वंचक, भाषित्, कपटित्,
कापटिक, विप्रलभक, वंचनशील, प्रतारक ।
सं. पुं., चतुक्का (पुं.) अक्षशैविन्, कितवः
२. वंचकः, प्रतारकः, इ. ।

धूर्तता, सं. स्त्री. (सं.) वंचकता, भाषा,
प्रतारणा, कपटं, वैभवम् ।

धूल, सं. स्त्री. [सं. धूलिः (पुं. स्त्री.)] धूली,
रजस् (न.), पांशुः-शुः (पुं.), रेणुः, भ्रिनि-
कणः, महीद्रवः, वात-नमः, केतुः (पुं.), चूर्णं,
शोदः २. तुच्छवस्तु (न.) ।

—साधना, क्रि. सं., धूलि-लीं धु (स्वा. उ. अ.)।
 —उड़ना, मु., (स्थान की) ध्वस् (भ्वा. आ. से.) धूलीसात् भू। (मनुष्य को) निद-
 अधिक्षिप्-न्प् (कर्म.)।
 —उड़ाना, मु., दुष् (प्रे. दृश्यति) अधिक्षिप्
 (ज. प. अ.) २. उपहम् (भ्वा. प. से.)।
 —चाटना, मु., पादयोः पतित्वा याच् (भ्वा. आ. से.)-अन्धर्ध (जु. आ. से.)।
 —छानना, मु., मोघं भ्रम् (भ्वा. प. से.)।
 —में मिलना, मु., धूलीसात् भू, नश् (दि. प. वे.)।
 —समझना, मु., गुण-तुणाय मन् (दि. आ. अ.) अवगण (जु.)।
 धूलि, सं. स्त्री. (सं. पुं. स्त्री.) दे. 'धूल'।
 धूसर, वि. (सं.) आर्द्रक, पांडु, पांशु-धूलि-
 वर्ण २. पांशु (शु) ल, धूलिधूसर, रेणु-
 दूषित-रुक्ष।
 धूसरित, वि. (सं.) दे. 'धूसर'।
 धूहा, सं. पुं. (दि. दूह) खगविनीधिका।
 धूत, वि. (सं.) धारित, अवलंबित, २. अयत्त,
 गृहीत ३. स्थिरीकृत, निश्चित।
 धूतराष्ट्र, सं. पुं. (सं.) दुर्योधनजनकः, नृप-
 विशेषः।
 धूति, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'धैर्य'।
 धृष्ट, वि. (सं.) निर्लज्ज, विवात, प्रगल्भ, दे. 'हीठा'।
 धृष्टना, सं. स्त्री. (सं.) प्रागल्भ्यं, वैवात्यं,
 दे. 'हिठादं'।
 धेनु, सं. स्त्री. (सं.) नवम् (प्रम्)निका (गौः)
 २. गौः (स्त्री.), दे.।
 धेला, सं. पुं. दे. 'अधेला'।
 धेली, सं. स्त्री., दे. 'अधेली'।
 धैर्य, सं. पुं. (सं. न.) धीरत्वं, धीरता, धृतिः
 (स्त्री.), मनःस्थैर्यं, सखं, द्रदिमन (पुं.),
 दृढता, क्षोभराहित्यम्।
 धैवत, सं. पुं. (सं.) पद्मः स्वरः (भंगितो)।
 धोखा-का, सं. पुं. (गं. धूक-) दलं, कपटं,
 धूकणा, प्रतापण, वंयना, २. मोहः, भ्रमः,
 आर्तः (स्त्री.) असत-मिथ्या, प्रनीतिः (स्त्री.)
 ३. भावा, इंद्रजालं, विकल्पः ४. अज्ञानं, अवोधः
 ५. लंशयः, मंदेहः ६. प्रमत्तः, कुटिः (स्त्री.)।
 —खाना, मु., बन्धु-विप्रलम्-अभिसंधा-प्रतार
 (सं.)।

—देना, मु., प्रतु (प्रे.) बन्धु-दल (जु.),
 अति-अभिसंधा (जु. उ. अ.), मुद्- (प्रे.)।
 —धोखे की टट्टी, मु., मोहजनक-मायामय-
 वस्तु (न.)।
 धोखेबाज़, वि., (हि. + का) कापटिक, धाकिक,
 मायावित्।
 धोखेबाज़ी, सं. स्त्री. (हि. धोखेबाज़) कापटि-
 कता, कपटं, धाकिकता।
 धोती, सं. स्त्री. (सं. धीत >) शाटिका,
 धोतावनं, धोता।
 —हीली होना, मु., भवान् पलाय् (भ्वा. आ. से.)।
 धोना, क्रि. सं. (सं. धावनं) धाव् (भ्वा. प. से.), प्र. क्षल् (जु.), निर्-निज् (जु. उ. अ.),
 प्रगृम् (अ. प. वे.) २. दूरी कृ, अपसृ (प्रे.)।
 सं. पुं., धावनं, प्र-क्षालनं, निर्णोकः, मार्जनम्।
 धोने योग्य, वि., धावनीय, प्र-क्षालयितव्य,
 निर्णोक्य।
 धोनेवाला, सं. पुं., धावकः, प्र-क्षालकः,
 क्षारकः।
 धोबिन, सं. स्त्री. (हि. धोबो) रजकी-का
 २. रजकपत्नी, धावकभार्या।
 धोबी, सं. पुं. (हि. धोना) धावकः, रजकः,
 निर्णोकः, क्षारकः, रजोहरः।
 —घाट, सं. पुं. धावकघट्टः।
 —का कुत्ता, मु. अकिन्धितकरः, गुण-वार-हीनः
 (अनः)।
 —का छेला, मु., परपदायं-परवस्तु, दृप्त-
 गविन।
 धोया हुआ, वि. धीत, धावित, मार्जित,
 प्रक्षालित, निर्णिक, इ.।
 धोवन, सं. स्त्री. (हि. धोना) धावनं, प्र-क्षालनं
 २. धावनावशिष्टं जलम्।
 धौकना, क्रि. सं. (सं. ध्वा >) भक्त्वा ध्वा
 (भ्वा. प. अ., धमति), दृत्वा बद्धि-प्रज्वल (प्रे.)।
 धौकनी, सं. स्त्री. (हि. धौकना) भस्त्रा,
 भस्त्रां, भस्त्रिका, दृतिः (स्त्री.) नभं, प्रसेविका-
 प्रसेवकः।
 धौंस, सं. स्त्री. (सं. ध्वंस >) तर्जना, विभी-
 धिका, भयद्रशनं २. प्रभुत्वं, अधिकारः ३. डलं,
 कपटम्।
 —पट्टी, सं. स्त्री. मिथ्वाऽऽज्ञा, मिथ्वा सात्वना।

- धौसा, सं. पुं. (अनु.) दे. 'दंका' ।
 धौसिया, सं. पुं. (हिं धौसा) विद्रिय-रुका,
 वादकः-साहकः ।
 धौसिया, सं. पुं. (हिं धौसा) जयदर्शक,
 विनोपक २. बंचकः, कपटिन ।
 धौत, वि. (सं.) दे. 'धौया हुआ' २. स्नान
 ३. स्नान ।
 धौति-ती, सं. स्त्री. (सं.) योगिकक्रियाभेदः ।
 धौरान्हा, वि. (सं. धवत्) इवेत, शुनल,
 स्तिन । सं. पुं. धवलः, कथभवतः ।
 धौरैय, वि. (सं.) मार, वादक-वादिन् । सं.
 पुं. (सं.) सकटवाहकवृत्तः २. अथः ३. मृत्युः,
 नाथकः ।
 धौल, सं. स्त्री. (अनु.) अपेक्षा-टिका, करतला-
 घातः २. क्षति-हानिः (स्त्री.) ।
 —धूपना, सं. पुं., मुष्टीमुष्टि-वाहकहवि (न.) ।
 ध्यान, सं. पुं. (सं. न.) ऐकाग्र्यं, समाधिः
 (पुं.), अन्तर्धानं, चित्तसंश्लेषं २. स्मृतिः (स्त्री.),
 धारणा ३. धीः-बुद्धिः (स्त्री.) ४. अवधानं,
 मनोशोभाः ५. चित्तं, मनस (न.) ६. चिता,
 मननं ७. साधना, मतिः (स्त्री.) ८. मानसं
 प्रत्यक्षम् ।
 —आना, मु., स्मृ (स्वा. प. अ.), अनुचित
 (न.) ।
 —दिलाना, मु., अनुस्मृ (प्रे.) ।
 —देना, मु., अवधा (जु. उ. अ.), मनः
 युत् (न.) ।
 —ढटाना, मु., वित्त-ध्यानं अपहृत् (स्वा.
 प. अ.) ।
 —में न लाना, मु., अवगम्य-अवधीर (न.) ।
 —में मग्न होना या डूबना, मु., विचार-ध्यान-
 मग्न (वि.) स्थः (स्वा. प. अ.) ।

- रखना, मु., न विस्मृ (स्वा. प. अ.) मनसि कृ ।
 —लगाना, मु., निश्चय (स्वा. प. अ.), समाधा
 (जु. उ. अ.), विभिर (न.) ।
 —से उत्तरना, मु., विस्मृ (कर्म.) ।
 ध्यानस्थ, वि. (सं.) ध्याननिवृत्तमर्थ-वार-
 मग्न-स्थित ।
 ध्यानी, वि. (सं. निसृ) ध्याननिवृत्त-शील-
 पत्राधन-पर, विचारक ।
 ध्येय, वि. (सं.) ध्येयव्य, चित्तगीय । सं. पुं.
 (सं. न.) लक्ष्यं, लक्षं, उद्देशः-इत्यम् ।
 ध्रुपद्, सं. पुं. दे. 'ध्रुपद' ।
 ध्रुव, वि. (सं.) अगल, अविचल, निश्चल,
 स्थिर २. नित्य, निर्विकार, अव्यय ३. निश्चित,
 नियत, अमंदिश्व । सं. पुं. (सं.) ध्रुवतारा,
 नक्षत्रमिः (पुं.), उच्चानपट्टाः, ज्योतीर्यः ।
 ध्वंस, सं. पुं. (सं.) प्र-वि, ध्वंसः, वि-नाशः,
 अवसप्तः-उन्नेदः, क्षयः, निपातः, संहारः ।
 ध्वजा, सं. स्त्री. (सं. ध्वजः) पताका, वैजयंती,
 केतुः (पुं.) वेदानस ।
 ध्वजी, सं. पुं. (सं. ध्वज) पताकिन, ध्वज-
 वाहक-धारिन् ।
 ध्वनि, सं. स्त्री. (सं. पुं.) निः, नादः, शब्दः,
 र(रा)जः, स्वरः, शोषः, ध्वानः, निम्नः, स्व(स्वा)
 नः, निहादः २. शब्दरफोटः ३. व्यंग्यार्थ-
 प्रधानं काव्यं ४. गूढार्थः, गुहाशयः ।
 ध्वनित, वि. (सं.) स्वनित, क्वाणित, नदित,
 शब्दित, रमित २. अंग्था सूचित, बोधित,
 उपलक्षित, व्यञ्जित, विवक्षित ३. वादित ।
 ध्वस्त, वि. (सं.) प्र-वि, ध्वस्त, वि-नष्ट, अव-
 सन्न, उच्छिन्न, क्षीण, निपातित, खण्डित, भग्न
 २. परजित ।
 ध्वंश, सं. पुं. (सं.) काकः ।
 ध्वान्त, सं. पुं. (सं.) शब्दः, दे. 'ध्वनि' ।

न

- न, देवनागरीवर्णमात्राया विशो व्यञ्जनवर्णः,
 नकारः ।
 नंग, सं. पुं. (हिं नंगा), नग्ननाम्बं, विगन्ध-
 रतास्त्रं २. गन्धार्हं, गुणम् ।
 —धडङ्ग, वि. } दे. 'नंगा' (१) ।
 —मुनंगा, वि. }
 नंगा, वि. (सं. नग्न) अनिर्-वि, वस्त्र-वसन-

- वातस्य, विष्, अम्बर-वाताः २. अनाहुत्, अ-
 वगण-आम्बरान्न-रहित ३. निम्न, निम्नः ।
 —करना, वि. य., नग्नो विवस्त्रो-निर्वस्वो कृ ।
 —बुचा या बूचा, वि., दग्ध, अविद्यतः ।
 —मादुराडा, वि. (क.) दिग्बर, दिग्बग्न ।
 —सुचा, वि., दुष्ट, स्व, दुर्वृत् ।
 नंगे पाँव, वि., नग्नपाद, पादहीन ।

नंवे सिर, वि., नग्नशिरस्क, निरुणीष ।
 नन्द, सं. पुं. (सं.) आनन्दः, मोदः २. पुत्रः
 ३. श्रीकृष्णस्य धर्मतातः-प्रतिपालकः ४. मराथे-
 शरविशेषः ।
 —किशोर, कुमार, नन्दन, सं. पुं. (सं.) श्री-
 कृष्णः, वासुदेवः ।
 नन्द, सं. स्त्री., दे. 'नन्द' ।
 नन्दक, वि. (सं.) हर्ष, प्रद-जनक, आनन्द-
 दायक । सं. पुं., श्रीकृष्णकृष्णः ।
 नन्दन, सं. पुं. (सं. न.) 'इदवनम्' । सं. पुं.,
 पुत्रः २. मेघः । वि., हर्षक, मोदक ।
 —वत्, सं. पुं. (सं. न.) शकौद्यानम् ।
 नन्दना, सं. स्त्री. (सं.) पत्नी, तनया ।
 नन्दनी, सं. स्त्री., दे. 'नन्दिनी' ।
 नन्दि, सं. पुं. (सं.) आनन्दः, हर्षः २. शिव-
 दैवशक्तिः, वृषभः, नन्दिकेश्वरः ।
 नन्दिकेश्वर, सं. पुं. (सं.) नन्दिकेशः, शिव-
 वृषः २. शिवः ३. उपपुराणविशेषः ।
 नन्दिनी, सं. स्त्री. (सं.) पत्नी, दुहितृ (स्त्री.),
 तनया २. ननाइ-ननइ (स्त्री.) ३. पत्नी, भार्या
 ४. दुर्गा ।
 नन्दी, सं. पुं. (सं. नन्दिन्) शिवगणभेदः
 २. शिवद्वारपालः वृषभः ।
 —इश्वर, सं. पुं. (सं.) शिवः ।
 नन्दोद्दे, नन्दोत्सी, सं. पुं. (हि. नन्द) ननाइ-
 पतिः, कौतूहलः ।
 नन्दर, सं. पुं. (अं.) संख्या, गणना, अंकः
 २. निह, व्यसन ३. पर्यायः, परिवृत्तिः (स्त्री.),
 चारः ।
 —द्वार, सं. पुं. (अं. + का.) भूकरोद्वाहकः ।
 —वार, क्रि. वि. (अं. + का.) यथाक्रमं,
 क्रमशः, पूर्वकशः (सब अव्य.) पर्यायेण-
 क्रमेण (तु.) ।
 नन्दरिंग मेशीन, सं. स्त्री. (अं.) अंकनयत्रम् ।
 नन्धरी, वि. (अं. नन्धर) अंकित, अंकयुत, भांक
 २. विल्याप्त, निश्चुन ।
 —सेर, सं. पुं., आंगडी, मोटकंगेरः ।
 न, अव्य. (सं.) न, नहि, नो २. (मत) मा,
 मा मा, अन् (नृतीया अथवा क्त्वा (या ल्यप्)
 के योग में) ।
 —न, मा मैवं, मा तावत् ।
 न...न, न च...नवा, न...न वा, न च...न
 च, न...न (च. स रामो गयो न वा कृष्णः) ।

नक, सं. स्त्री., (सं. नक्का) नासा, नासिका ।
 —कटा, वि., छिद्र-नास-नसिक २. विल्य,
 विद्य, अ-विगत, नासिक ३. निर्लज्ज, अपव्रथ ।
 —कटी, सं. स्त्री., नासाज्जैदः २. अवमानना,
 मानहानिः (स्त्री.) ।
 —विस्नी, सं. स्त्री., भूमौ नासिकावर्षणं
 २. देव्यातिशयः ।
 —चडा, वि., वृषकृति, कु-दुः-शील ।
 —छिक्नी, सं. स्त्री., छिक्नी, छिकिका, उग्रा,
 निक्ता ।
 —फूल, सं. पुं., लवंगं, प्रण-भूषणभेदः ।
 —चेयर, सं. पुं., नाथकः ।
 नकद, सं. पुं. (अ.) टंकः-कं, नाथकं, मुद्रा,
 मुद्राधनम् । वि., प्रस्तुत (धनादि) ।
 नकद्वी, सं. स्त्री., दे. नकद' सं. पुं. ।
 नकपुड्डी, सं. स्त्री., दे. 'नधना' ।
 नकन्न, सं. स्त्री. (अ.) दे. 'भैध' ।
 नकल, सं. स्त्री. (अ.) अनु-प्रति, लिपिः (स्त्री.)-
 लेखः २. अनुकृतिः-अनुवृत्तिः (स्त्री.) ३. अनु-
 करणं-सरणं ३. सोपहामं अनुकरणं-विदंबनम् ।
 —करना, क्रि. स., अनु-प्रति, लिपि कृ या लिख्
 (तु. प. से.) २. अनुकृ ३. विदंब (चु.) ।
 —नवीस, सं. पुं. (अ. + का.) अनु-प्रति, लेखकः,
 प्रतिलिपिक (का.) रः ।
 नकली, वि. (अ.) कृतक, कृत्रिम २. कापटिक,
 छात्रिक, कपट, कृत्, छत्र ।
 नकसीर, सं. स्त्री. (हि. नक + सं. क्षीर = जल)
 नासारकलावः ।
 —फूटना, क्रि. अ., नासाया रक्तं क्षु (स्वा.
 प. अ.) ।
 नकलाब, सं. स्त्री. पुं. (अ.) वर्णकः, बाणिका
 २. अवमुठनं, आवरकः-कम् ।
 —शोश, वि., वर्णिकाच्छादितः, अवमुठनवत् ।
 नकार, सं. पुं. (सं.) निषेधकवाक्यं २. प्रत्या-
 ख्यानं, नि-प्रति, पेशः ३. 'न' इत्यक्षरम् ।
 नकारना, क्रि. अ. (सं. नकारः >) प्रति-नि-
 गिध (स्वा. प. वे.) ।
 नकीब, सं. पुं. (अ०) चारणः, वन्दिन् ।
 नकुल, सं. पुं. (सं.) मण्डिरः, बधुः २. पांडु-
 राजस्य चतुर्थपुत्रः ३. पुत्रः ।
 नकेल, सं. स्त्री. (हि. नाक) नासिकारज्जुः
 (स्त्री.) ।

नकारखाना

[३२०]

तन्मता

नकारखाना, सं. पुं. (फा.) डिडिमालयः, दुंदुभिग्रहम् ।

—नकारखाने में सूती की आवाज़, मु., अरण्यरुदितम् ।

नकारची, सं. पुं. (फा.) दुंदुभिवादकः, पट्ट-ताडकः ।

नकारा, सं. पुं. (फा.) आनकः, डिडिमः, दुंदुभिः (पुं.), पट्टः, भैरो ।

नकाराल, सं. पुं. (अ.) अनुकारिन्, विलम्बनकरः, विडम्बकाः २. भट्टः, विद्वपकः, वैहासिकाः ३. नटः, कुशीलवः, रंगाजीवः ।

नकाराश, सं. पुं. (अ.) उत्कारकः ।

नकाराशी, सं. स्त्री. (अ.) उत्किरणम् ।

नक़ी, सं. स्त्री. (सं. नका) अक्षे क्रीडापत्रे वा एकविन्दुचिह्नम् ।

—दुआ, सं. पुं., अक्षक्रीडाभेदः ।

—मूठ, सं. स्त्री., धूतभेदः ।

नक्कू, वि. (हिं. नाक) कुख्यातिमत्, कुप्रसिद्ध, दुर्नामम् ।

नक्तंचर, सं. पुं. (सं.) राक्षसः, निशाचरः २. उलूकः, धूकः ३. चौरः, स्तेनः ।

नक्तंदिन, अव्य. (सं. नक्तंदिनम्) नक्तंदिवं, अहोरात्रं, अहर्निशम् । दिवारात्रम् (सब अव्य.)

नक्त, सं. पुं. (सं. न.) रात्री-त्रिः (स्त्री.), निशा ।

नक्त, सं. पुं. (सं.) दे. 'भगरमच्छम्' ।

नक्श, सं. पुं. (अ.) आलेख्यं, चित्रं, प्रतिकृतिः (स्त्री.) २. मुद्रा, अंकः, चिह्नं ३. लक्षणं, आकृतिः (स्त्री.) ।

—करना, क्रि. स., अंक-मुद्राचिह्नं (ल.) २. निविश (प्रे.), न्यस्त (दि. प. से.) ।

नक्शा, सं. पुं. (अ.) मान-प्रदेश-चित्रं, देश-लेख्यं २. आदेशः, प्रति, मान-रूपं ३. रूप-रेखालेख्यम् ।

नक्षत्र, सं. पुं. (सं. न.) तारा, नारका, उदुः (पुं.) २. राशिः (पुं.), राशिनक्षत्रं ३. मगणः, तारामूहः ।

—नाथ, —गति, —राज, सं. पुं. (सं.) चंद्रः ।

नख, सं. पुं. (सं. पुं. न.) दे. 'नाखुन' ।

—शिख, सं. पुं. (सं. न.) सर्वाणि अंगानि. सर्वावयवाः, गणः (सब बहु.) २. सर्वा-गवर्णनम् ।

—शिख से, मु., आपादशीर्षं, पूर्णनया, साम-स्थेन ।

नखरा, सं. पुं. (फा.) विभ्रमः, विलासः, लीला हावः, २. चापल्यं ३. न्याजः, कपटम् ।

नखरेबाज़, वि., (फा.) सविभ्रम, लीला (स्त्री. लीलावती, विलासिनी) ।

नखरेबाज़ी, सं. स्त्री. (फा.) ललिताभिन-लीला ।

—करना या बचारना, क्रि. स., विलम् (भा. प. से.), ललिताभिनयं कृ २. कपट-न्याजं कृ ।

नखी, सं. पुं. (सं. नखिन्) सिंहः २. विभ्रकाः वि., सनख, नखवत् ।

नग, सं. पुं. (सं.) पर्वतः, गिरिः (पुं.) २. वृक्षः ३. 'सप्तन्' इति संख्या ४. सर्पः ५. मृगः । वि., अचल, स्थिर ।

—पति, सं. पुं. (सं.) शिवः २. हिमालयः ।

नगर, सं. पुं., (फा. नगीनह) दे. 'नगीना' २. संख्या ।

नगण, सं. पुं. (सं.) निलयुगणः, छन्दःशास्त्रे गणभेदः (७० नमन, जलन ३०) ।

नगण्य, वि. (सं. अगण्य) क्षुद्र, तुच्छ, साधारण, सामान्य ।

नगद्, सं. पुं., दे. 'नकट' ।

नगानी, सं. स्त्री. (सं. नगिनका) नगना, निर्वन्धा, विवन्धा २. अपुत्र्या, रजोरहिता कन्या ३. निर्लज्जा, स्त्रीरिणी ।

नगामा, सं. पुं. (अ.) सु-मधुर-स्वरः-स्वनः २. गीतं, गीतिका ३. रागः ।

नगर, सं. पुं. (सं. न.) पुर (स्त्री.), पुरं, पुरी, नगरी, पत्तनं, पट्टनं-नी, पट्टं, निगमः ।

—कीर्तन, सं. पुं. (सं. न.) यात्रासंगानम् ।

—नारी, सं. स्त्री. (सं.) नगरनायिका, वेश्या ।

—घासी, सं. पुं. (सं. सिन्) पीरः, पीर, जस-लोकः ।

नगरी, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'नगर' ।

नगाड़ा, —रा, सं. पुं. दे. 'नकारा' ।

नगीना, सं. पुं. (फा.) रत्नं, मणिः (पुं.) २. देशियवस्त्रभेदः ।

नग्न, वि. (सं.) दे. 'नंगा' ।

नग्नता, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'नग' ।

नक्षत्राना, नक्षाना, कि. प्रे., व. 'नाचना' के प्रे. रूप ।

नक्षत्रदीक, वि. (फा.) सन्निहित, समीप, निकट ।

नक्षत्रदीकी, सं. स्त्री. (फा.) साविध्य, समीप्य ।

नक्षत्रम, सं. स्त्री. (अ. नक्षत्र) कविता, पद्य, श्रुतम् (न.) ।

नक्षत्र, सं. स्त्री. (अ.) दृश्, दृक्शक्तिः, दृष्टिः (सद स्त्री.) २. दयादृष्टिः (स्त्री.) परि-अवेक्षणं, अवेशा ३. निरीक्षणं ४. दे. 'नक्षत्राना' ५. कु-दृश्, दृष्टिः ।

—अक्षत्र, वि. (अ. + फा.) अवधीरित, निराकृत, उपेक्षित ।

—आना वा पक्षना, कि. अ., दृश्-ईक्ष-अवलोक (कर्म.) ।

—आलना, कि. स., दृश् (भ्वा. प. अ.), ईक्ष (भ्वा. श. से.) ।

—अक्ष, वि. (अ. + फा.) निरुद्ध ।

—अक्षी, सं. स्त्री. (अ. + फा.) (निश्चितस्थाने) निरोधः ।

—आज्ञ, सं. पुं. (अ. + फा.) कटाक्षवीक्षकः, श्रुतिलासकः, *पापदृष्टिः ।

—आनी, सं. स्त्री. (अ.) पुनरीक्षणं, संशोधनम् ।

—आना, मु., कुदृष्टया पीड (कर्म.) ।

—से गिरना, मु., अप-अव-अन् (प्रे.), कलंकयति (ना. धा.) ।

नक्षत्राना, सं. पुं. (अ.) उपहारः, उपायनम् ।

नक्षत्रा, सं. पुं. (अ.) कफः, श्लेष्मन् (पुं.) २. अभिभ्यन्दः, प्रतिशयायः, नासास्त्रावः ।

नक्षत्राक्त, सं. स्त्री. (फा.) लालित्यं, सुकुमारता, कोमलता ।

नक्षत्रात्, सं. स्त्री. (अ.) मुक्तिः (स्त्री.), अपवर्गः ।

नक्षत्रार, सं. पुं. (अ.) दृश्यं, दृग्गोचरस्थानं २. दृष्टिः (स्त्री.) ३. कटाक्षः ।

नक्षत्रार, सं. स्त्री. (अ.) उदाहरणं, दृष्टान्तः ।

नक्षत्रम्, सं. पुं. (अ.) ज्योतिषं, नक्षत्रविद्या ।

नक्षत्रमी, सं. पुं. (अ.) ज्योतिषिकः, ज्योतिषविद् (पुं.) ।

नक्षत्र, पुं. (अ.) राज-नृप-शासकः, भूनिः (स्त्री.) ।

नक्ष, सं. पुं. (सं.) शैलपः, जायान्निवः, भरतः, अभिनेतृ, भरतपुत्रकः, रंग-जीवः-अवतारकः, सर्ववेदिनः, मन्दः, नम्रः २. रज्जुनर्तकः ३. व्यायामिन् ४. जातिविशेषः ।

—चर, सं. पुं. (सं.) श्रीकृष्णः ।

नक्षत्र, वि. (सं. नक्षत्रः + अनु. खट) चपल, चञ्चल, कुपेष्टक २. धूर्तः, मायाविन् ।

नक्षत्रटी, सं. स्त्री. (हि. नक्षत्र) चपलता २. धूर्तता ।

नक्षत्री, सं. स्त्री., दे. 'नक्षत्री' ।

नक्षत्री, सं. स्त्री. (सं.) दैत्यविकी, अभिनेत्री, सर्ववेदिनी २. नर्तकी ३. नक्षत्रपत्नी ४. वेश्या ५. नक्षत्रातेनारी ।

नक्षत्रीजा, सं. पुं. (अ.) परिणामः, फलं २. अर्थः, पाकः ।

नक्षत्री, सं. स्त्री. (हि. नाथना) नहनं, संग्रहणं २. नहनक्षत्रं ३. लेख्यश्रेणी ।

नक्ष, सं. स्त्री. (सं. नाथः = नाक की रस्ती) नाथः, नामाबलयः ।

नक्षना, सं. पुं. (सं. नस्तः = नाक) । नामानासिका, छिद्र-रंभ-विवरं २. नासापुटः-पुटम् ।

क्रि. अ., व्यध्-छिद्य (कर्म.) २. संग्रह-संग्रह (कर्म.) ।

—चवाना वा फुलाना, मु., क्रुध (दि.प.अ.) ।

नक्षनी, सं. स्त्री. (हि. नक्ष) *नाथकः ।

नक्ष, सं. पुं. (सं.) उच्चः, भिद्यः, सरस्वत् (पुं.) ।

—राज, सं. पुं. (सं.) समुद्रः ।

नक्षारद, वि. (फा.) अनुपस्थित, लुप्त, अदृष्ट ।

नक्षीश, सं. पुं. (सं.) समुद्रः, अन्धः (पुं.) ।

नक्षिया, सं. स्त्री. (सं. नक्षिका) क्षुद्र-सरित्-नदी ।

नक्षी, सं. स्त्री. (सं.) तटिनी, तरंगिणी, शैबलिनी, स्रोतस्विनी, वाहिनी, सरित् (स्त्री.) ह (धा) रिनी, धुनी, निम्नगा, आ (अ) पगा, सिधुः (पुं.), रोधो, स्रोतस्वती, कुलवती, स्वती ।

—कोत्, सं. पुं. (सं.) सागरः, जलधिः (पुं.) ।

—तीर, सं. पुं. (सं. न.) सरित्-नदी, कूल-तटम् ।

नक्षीम, सं. पुं. (सं.) समुद्रः, सागरः २. वरुणः ।

नक्षीश, सं. पुं. (सं.) अन्धः-जलधिः (पुं.) ।

नक्ष, वि. (सं.) बद्ध, योजित, संरक्षित ।

नक्षमी, सं. स्त्री. (सं.) चर्म, रज्जुः (स्त्री.)-कक्ष्या ।

नक्षना, कि. अ. (सं. नक्ष) नि-बन्ध (कर्म.), संयुज् (कर्म.) २. दे. 'जुतना' ३. प्रारम्भ (कर्म.) ।

ननद, ननद-दी, सं. स्त्री. [सं. ननद (स्त्री.)] ।

ननाइ (स्त्री.), ननुभगिनी, नदिनी, नंदा,
पतिवधु (स्त्री.) ।

ननिहाल, सं. पुं. (हिं. नानी + सं. आलयः)
मातामहालयः, मातृकुलम् ।

नन्हा, वि. (सं. न्वञ्च्) अनिलघु, शुद्ध,
अल्पशुद्ध, तनु, प्रतनु । सं. पुं., शिशुः, स्तन-
धयः ।

ननुंसक, सं. पुं. (सं.) क्लीबः, तृतीय-प्रकृतिः
(पुं.), षट्; पोन्दः, शं (षं) डः-डः (सं.
न.), क्लीबलिङ्ग (स्था.) । वि., भीरु, कातर ।

ननुंसकता, सं. स्त्री. (सं.) क्लीबता, पंडता,
दंडता २. भीरुता, कातरता ।

नरुरत, सं. स्त्री. (अ.) दे. 'शृणा' ।

नफा, सं. पुं. (अ.) लाभः, आयः, उदयः,
फलं, वृद्धिः (स्त्री.) ।

नफ्रीस, वि. (अ.) उत्कृष्ट, उत्तम, विशिष्ट
२. नाश, शोभन, सुंदर ३. उज्ज्वल, विमल ।

नवी, सं. पुं. (अ.) लिङ्गः, ईशदत्तः, भाविकथकाः
नवेडता, कि. स., (सं. निवृत्त >) दे.
'निपटता' ।

नवेडा, सं. पुं. (हिं. नवेडना) न्यायः, निर्णयः ।

नवज्ञ, सं. स्त्री. (अ.) नाडी-डिः (स्त्री.) ।

—**देखना**, वि. सं., नाटि-श्रीपरीक्ष (स्था. आ. से.) ।

नभ, सं. पुं. [सं. नभस् (न.)] दे. 'आकाश' ।

—**चर**, सं. पुं. (सं. नभश्चरः) खगः, खेचरः ।

नभः, अन्व. (सं.) प्रणतिः (स्त्री.), प्रणामः,
अभिवादन-दत्तं, नमस्कारः, नमस्क्रिया ।

नभ, वि. (फा.) आर्द्र, उन्न ।

नभक, सं. पुं. (फा.) लवणं २. लावण्यं,
विशिष्ट-हीन्दर्थं ३. पिंडः । (नभक के भेद,
दे. 'नैन') ।

—**खार**, सं. पुं. (फा.) पराश्रितः, परास्यत्तः,
सेवकः ।

—**दान**, सं. पुं. (फा.) लवणधान्ती ।

—**का तेजाव**, सं. पुं., उदनीरिका-मलः, लवणाम्लः ।

—**हराम**, वि. (फा. + अ.) कृतज्ञताशून्य,
अद्वयवेदिन्, कृतज्ञ, (ननी स्त्री.) ।

—**हरामी**, सं. स्त्री., अकुञ्जता, कृतज्ञता ।

—**हलाल**, वि. (फा. + अ.) अनुरक्त, मत्त,
सालुरग ।

—**हलाली**, सं. स्त्री., भक्ति-अतुरक्तिः (स्त्री.)
कृतज्ञता ।

—**खाना**, सु., परापिंडं भुज् (र. आ. अ.),
पराश्रयं सेव् (स्था. आ. से.) ।

—**मिर्च लगाना**, सु., अत्युक्त्या वर्णं (तु.) ।
कटे पर—लगाना अथवा दाव पर—छिड़कता,
सु. क्षते शरं क्षिप् (तु. प. अ.) ।

नमकीन, वि. (फा.) लवण, लवण-आर, युक्त-
नय-गुणविशिष्ट-शरीरक २. लवणित, सलवण,
लवणसंयुक्त ३. अभिरान, गनीज । सं. पुं.,
लवणयवत्रं (मनोका आदि) ।

नमदा, सं. पुं. (फा.) नमनम् ।

नमन, सं. पुं. (सं. न.) नमस्कारः, प्रणतिः
(स्त्री.) २. अवगमनं, गतिः (स्त्री.) ।

नमनीय, वि. (सं.) पूज्य, वन्दनीय ।

नमस्कार, सं. पुं. (सं.) दे. 'नमः' ।

नमस्ते, वाक्य, (सं.) नमामस्तुभ्यं, नमामि
त्वाम् । सं. स्त्री., प्रणामः, प्रणतिः (स्त्री.),
नमस्कारः ।

नमाज़, सं. स्त्री. (फा.) ईश-प्रार्थना-वन्दना
(इस्लाम) ।

नमित, वि. (सं.) आभुग्न्, नमित, प्रवण, प्रह ।

नमी, सं. स्त्री. (फा.) धर्तृता, मिलनता ।

नमूदार, वि. (फा.) उदित, प्रकट, दृग्गोचर ।

नमूना, सं. पुं. (फा.) आदर्शः, प्रतिमा, प्रति-
रूपं २. उपमायां, प्रतिमानम् ।

नम्र, वि. (सं.) निरु, अभिमान-अहंकार,
विनत, विनीत, विनयित, विनयशील, अभि-
मान-गर्व-रूपं, गदित-भूत-शूनं, नम्रचेतसु २.
नत, प्रवण ।

नम्रता, सं. स्त्री. (सं.) प्रश्रयः-वर्णं, विनयः,
विनयिता, निरभिमानता, सौम्यता ।

नय, सं. पुं. (सं.) नायः, नीतिः (स्त्री.) ।

—**नायर**, वि. (सं.) नय-नीति, निपुण-कोविद-
विश्व-विशारद शीघ्र ।

नयन, सं. पुं. (सं. न.) नेत्रं, दे. 'श्रील' २.
अपनयनं, अपवहत्तम् ।

—**गोचर**, वि. (सं.) दृग्गोचर, दृष्टिगोचर ।

—**चलद**, सं. पुं. (सं.) नेत्र-नयन-चलदः-
पटः ।

—**जल**, सं. पुं. (न.) नयन-चारि (न.)-
सलिल-जलम् ।

नया, वि. (सं. तव) अज्ञान-इशानीतन
[-नी (स्त्री.)], अधुनिक [-की (स्त्री.)],

अर्थात् नर २. अभिन्नव, नवीन, नूतन, प्रत्यम्
३. अर्थात् अष्ट, पूर्व, अनभ्यस्त, अपरिचित ।

—पन, सं. पुं. (सं.) नवीनता, नूतनता, अपूर्वता ।

नये सिरे से, कि. वि., पुनः, पुनरपि, अभि-
नयम् ।

नर, सं. पुं. (सं.) पु (पू) रूपः, नृ-पुंस् (पुं.),
१. नवीनः, मनुष्यः, ननुपः, मानवः, मर्त्यः ।

वि., पंचमीय, नरः, पुं. पुरुष-**(इ.)**, पुंस्वात्मः ।

—देव, सं. पुं. (सं.) नृपः २. ब्राह्मणः ।

—नाथ, सं. पुं. (सं.) नरपतिः, भूपः

—नारायण, सं. पुं. [सं. गौ (वि.)] ऋषि-
विशेषः ।

—पिशाच, सं. पुं. (सं.) महद्दुष्टः, महाद्रुहः ।

—भक्षी, सं. पुं. (सं.) राक्षसः, पिशाचः ।

—लोक, सं. पुं. (सं.) पृथिवी, मर्त्यलोकः ।

—मिथ, सं. पुं. दे. 'भूमिह' ।

—मिह, सं. पुं. (सं.) दे. 'भूमिह' ।

नरक, सं. पुं. (सं. पुं. न.) दुर्गतिः (स्त्री.),
नारकः, निरकः २. अनिमलितस्थानं ३. दुःख-
पूर्वस्थानम् ।

—कुंड, सं. पुं. (सं. न.) निरक-नरक, कृप-
कुण्डम् ।

नरकट, सं. पुं. (सं. नलः) धमनः, नडः,
नालः, कीचकः, कृशिरंधः ।

नरक(कु)ल, नरकम्, सं. पुं., दे. 'नरकट' ।

नरकण(स, ह)री, सं. पुं., दे. 'नृसिंह' ।

नरखडी, सं. स्त्री. (दिव.) कंडा, गलः २. प्राण-

नरखरा, सं. पुं. शक-मार्गः नालिका ।

नरगिर, सं. पुं. (सं.) पुष्पभेदः, *नरगिरम् ।

नरद, सं. स्त्री. (का नर्द) शक्तिः (पुं.),
शक्तिः, शक्तिप्रकाशः ।

नरमो, सं. स्त्री., दे. 'नर्मो' ।

नरमिथा, सं. पुं. (सं. नर (=वृद्ध + वृद्ध >)
वाचभेदः, रुमं शकः, कादृक-व्यत्यम् ।

नरमो, कि. वि., दे. 'अनरमो' ।

नराच, सं. पुं. (सं. नाराचः) ब्रह्मः, शरः ।

नराधम, सं. पुं. (सं.) खलः, पापः, पापिष्ठः,
नीचः ।

नराधिप, सं. पुं. (सं.) नृपः, भूपः ।

नरेन्द्र, नरेश, नरेश्वर, सं. पुं. (सं.) नृपः,
नृपतिः, राजन् (पुं.) ।

नरैक, सं. पुं. (सं.) लयात्मन्; नृत्य-कर-

कारिम् २. दे. 'नट' (१) ३. बंशिन, बैतालिकः
४. दे. 'नरकट' ।

नरैकी, सं. स्त्री. (सं.) लयपत्री, नृत्त-करी-
कारिणी, लसिका २. दे. 'नटी' (१) ।

नरैन, सं. पुं. (सं. न.) नृत्यम् । (पुरुषो
का-) वाण्डवा-नम् । (स्त्रियो का-) लास्यम् ।

नरैदा, सं. स्त्री. (सं. नर्मदा) रेवा, मेकल-
कन्या, गोमसुता ।

नरै, सं. पुं. [सं. नर्मन् (न.)] परि(री)-
हाराः, विनोदः ।

नरै, वि. (का.) (न्वभाव) कोमल, सुदुल,
सुकुमार, सौम्य, २. (परार्थ) मसृण, स्तम्भ,
इत्यक्षण, सुखस्पर्श, ३. (ध्वनि) मधुर, मंजुल ।

नरैना, कि. अ. (का. नर्म) मू २. दयात्री
भू, प्र. शम् (हि. प. से.) । कि. स., मू ३
२. दयात्री कृ, प्र. शम् (प्र. शमयति) ।

नरै, सं. स्त्री. (का. नर्म) कोमलता, सुदृवा,
सौम्यता २. मसृणता, इत्यक्षणता ।

नरै, सं. पुं. (सं.) नृवशिष्यः, दमयन्ती-
पतिः (पुं.) ।

नरै, सं. पुं. (सं.) दे. 'नरकट' ।

नरै, सं. पुं. (सं. न.) पद्मं, कमलम् ।

नरै, सं. पुं. (सं. नायः) नाडी-श्री, नाडिः-
दिः (स्त्री.) प्रणालः-श्री ।

नरै का नर, सं. पुं. प्रगल्भिका, नारपिः
(स्त्री.), ललनाली ।

नरै, सं. पुं. (हि. नल) मू, मार्गः-नाली ।

नरै, सं. पुं. (सं. न.) कमल, सरोजम् ।

नरैनी, सं. स्त्री. (सं.) अंबुजं, कमलं २. पद्म-
समूहः ३. पद्मकरः, पुष्करिणी ४. (लता)
कनकिनी, पथिनी, मृणालिनी ५. नदी ।

नरै, सं. स्त्री. (हि. नल) सूक्ष्म-क्षुद्र-नाली-
गती, दे. 'नल' (१) २. दे. 'नरखरा' ३. अ-
स्थम्बनाली-श्री ४. अनुज्वालिष (न.)
५. नृत्रयेष्टनं, वररः ।

नरै, सं. स्त्री. (हि. नल) सूक्ष्म-क्षुद्र-नाली-
गती, दे. 'नल' (१) २. दे. 'नरखरा' ३. अ-
स्थम्बनाली-श्री ४. अनुज्वालिष (न.)
५. नृत्रयेष्टनं, वररः ।

नरै, वि. (सं.) नवीन, नूतन, दे. 'नया' ।

—युवक, सं. पुं., नव-युवक (पुं.), वररः,
कुमारः, किशोरः ।

—यौवना, सं. स्त्री. (सं.) नवयुवतिः (स्त्री.)-
ती, नवयुनी, तरुणी, वलनी, कुंडली ।

—वधू, सं. स्त्री. (सं.) नवोदा, वधुः (स्त्री.),
नवपाणिग्रहणा, नववरिका ।

नव^३, वि. तथा सं. पुं. (सं. नवम्) दे. 'नी' ।

—ग्रह, सं. पुं. [सं.हा: (बहु.)] सूर्यादयः नव ग्रहाः ।

—द्वार, वि. (सं.) नवद्वारयुक्तं २. नवच्छिद्रं (शरीरम्) ।

—निधि, सं. स्त्री. (सं. पुं.) नवरत्नयुतः कुबेरकोषः ।

—रत्न, सं. पुं. (सं. न.) नवप्रकारमगयः (मोती, माणिक्य आदि) २. विक्रमाद्रित्यस्य राजसभायाः कालिदासप्रदयो नव पंडिताः ३. नवविधरत्नयुतः शारः केयूरं वा ।

—रात्र, सं. पुं. (सं. न.) आश्विनशुक्लप्रतिपदादिनवमीपर्यंतकर्तव्यदुर्गाव्रतविशेषः ।

—सत साजना, सु., षोडशशृंगारैः अलंकृत ।

नवक, सं. पुं. (सं. न.) नववरसुसमूहः ।

नवधा, अव्य. (सं.) नवप्रकारैः, नव-खण्डेषु ।

—भक्ति, सं. स्त्री. (सं.) नवप्रकारा भक्तिः (श्रवणं, कीर्तनं, स्मरणं, पादसेवनं, अर्चनं, वन्दनं, हास्यं, हस्यं, आत्मनिवेदनम्) ।

नवनी, नवनीत, सं. स्त्री., सं. पुं., (सं.) दे. 'मक्खन' ।

नवम, वि. (सं.) नवमः-संमी (पुं. न. स्त्री.) ।

नवमी, सं. स्त्री. (सं.) चांद्रमासस्य कृष्णा शुक्ला वा नवमी तिथिः (स्त्री.) ।

नवल, वि. (सं.) नवीन, नव्य, नूतन २. सुंदर ३. युवन् (पुं.) ४. उज्वल, स्वच्छ ।

नवला, सं. स्त्री. (सं.) तरुणी, युवती-तिः (स्त्री.) ।

नवाँ, वि., दे. 'नोवाँ' ।

नवाना, कि. स., दे. 'खुवाना' ।

नवाञ्ज, सं. पुं. (सं. न.) नूतनार्ज २. श्राद्धभेदः ३. सद्यःपक्वमन्नम् ।

नवाब, सं. पुं. (अ. नवाब) राजप्रतिनिधिः (पुं.) २. उपनिषेदः ३. प्रांताध्यक्षः । वि., अतिव्ययिन्, अधनाशिन २. आङ्गणक, शासक ।

—जादा, सं. पुं. (का.) राजप्रतिनिधिप्राणाध्यक्ष, पुत्रः २. विलासिन्, सुखपरायणः ।

नवाबी, सं. स्त्री. (अ. नवाब) राज-प्रतिनिधित्व-प्रतिनिधि २. अधिकारः, शासनं, स्वार्थं ३. सुखोपभोगः, विलासित्वम् ।

नवासा, सं. पुं. (का.) दीहित्रः, पुत्री-पुहितः, पुत्रः । नवामी (स्त्री. = दीहित्री) ।

नवासी, वि. [सं. नवाशीतिः (नित्य स्त्री.)] । सं. पुं., उक्ता संख्या, तदर्थी (८९) न :

नवीन, वि. (सं.) दे. 'नया' ।

नवीनता, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'नयापन' ।

नव्य, वि. (सं.) दे. 'नया' ।

नव्य, वि. [सं. नवतिः (नित्य स्त्री.)] सं. पुं., उक्ता संख्या, तदर्थी (९०) न ।

नया, सं. पुं. (का.) क्षीयता, मत्तता, मदनः, नादः, शौडिता २. मादकद्रव्यं ३. धनविचारिणी अवलेपः-गर्वः-दर्पः ।

—उतरना, सु., मदी व्यपगम् ।

—उतारना, सु., दर्प इ (भ्वा. प. अ.), अभिनतं चूर्णं (चु.) ।

—घोर, सं. पुं. (का.) नवपः, नद्युपः, पान-रतः-शीरः ।

—चदना, सु. मद् (भ्वा. धा. से.) क्षीय-नक्त (वि.) भू ।

—पानी, सं. पुं., मादकद्रव्यम् ।

नशाला, वि. (का. नशा) नादक, उन्मादक, मदीतपादक २. मदमत्त ।

नशोज्ञ, सं. पुं. (का.) दे. 'नशाखोर' ।

नश्वर, सं. पुं. (का.) वैद्ययुक्तिका ।

—रुगाना, सु., छुरिकया स्फोटकं लिङ् (क. प. अ.), शस्त्रेण उपन्द् (भ्वा. प. से.) ।

नश्वर, वि. (सं.) क्षयिन्, क्षयिषु, भंगुर, अनित्य, अस्थिर, वि., अस्थिर ।

नश्वरता, सं. स्त्री. (सं.) क्षय-नाश, शीलता, अनित्यता, अस्थिरता, मद्युपता ।

नष्ट, वि. (सं.) अदृष्ट, क्षय, द्युत, जष्ट २. ध्वस्त, क्षीण, प्रवि, शून्य, उच्छिन्न, उत्सव ।

नस, सं. स्त्री. (सं. स्तना) स्तन्युः (स्त्री.) वस्त्रमा २. धमनी, नाडी ।

नसर, सं. स्त्री. (अ.) गर्भ, अर्द्धहीनप्रबंधः ।

नसल, सं. स्त्री. (अ.) बंगः, कुर्व, जतिः (स्त्री.) ।

नसघार, सं. स्त्री. दे. 'नार' ।

नसा, सं. स्त्री. (सं.) नसिका, प्रतीक्षितम् ।

नसीब-बा, सं. पुं. (अ.) दे. 'नारब' ।

—जगता, सु., पृथ्वं उपन्द् (अ. प. अ.) ।

नसीहत, सं. स्त्री. (अ.) उपदेशः, शिक्षा ।

—देना, कि. स., उपदिष्ट (तु. प. अ.), अनुशाम् (अ. प. से.), २. निभस्तं (चु. आ. से.) ।

नस्य, सं. पुं. (सं. न.) नस्तं, लक्षणं २. न स्विचं, नानार्थविधम् ।

नस्या

[३२५]

नांक

नस्या, सं. स्त्री. (सं.) नास- नासिका, नका
२. नासिकाग्रजुः (स्त्री.) ।

नहहू, सं. पुं. (सं. नस्यशीर >) वैवाहिकरीति-
भेदः ।

नहर, सं. स्त्री. (का.) कुल्या, प्रणाली, म(ह)-
रणो, भ्रूणिः (स्त्री.) ।

नहरनी, नहनी, सं. स्त्री. (सं. नस्यहरणी)
नस्य-निकृन्तनी-शरणी ।

नहला, सं. पुं. (हि. नौ) न्वाक्युतं क्रीडा-
पथम् ।

नहलाइ, सं. स्त्री. (हि. नहलाना) स्नापनं,
स्नानं, प्रधावनं २. स्नापन-श्राद्ध-प्रधावन-
भूतिः (स्त्री.) भूत्याप-रिश्रमिकम् ।

नहलाना, कि. म., व. 'नहलाना' के प्रे. रूप ।

नहाना, कि. म. सं. स्नानं) न (अ. प. अ.)
अक-वि-नाह् (स्वा. अ. से.) द्वितीया के
योग में) ; मन्त्र (अ. प. अ.) ; नमो के योग
में) ; शुद्ध (स्वा. प. से.) ; शुच (हि. उ. से.) ।

सं. पुं. दे. 'स्नान' ।

नहाने योग्य, वि. स्नानाग, अर्वाहनोय ।

नहानेवाल्, सं. पुं., स्नान, स्वगाहक

नहाया हुआ, वि., स्नान. अभिषिक्त, कृत्स्नान ।

नहार, वि. (का.) निराहार, अहृतप्रातराश ।

—सुँइ, सु., भक्तिदरं, निराहारम् ।

नहारी, सं. स्त्री. (का. नहार) प्रातराशः, कल्प-
वर्तः २. अश्वानां सुदृच्युगम् ।

नहीं, अन्य. (सं. नहि) न, ना, मा, दे. 'न' ।

—तो, अन्य., अन्वया, एतरथा २. एतद्विना,
न(नां)वेत् ३. व., अथवा ।

नहुष, सं. पुं. (सं.) सोमवंशीयमृषविदोषः
२. वैदिकांपविदोषः ३. नामविदोषः ४. कुशिक-
वंशीयो विप्रमृषः ।

नहूसत, सं. स्त्री. (अ.) अशुभं, अमंगलं
२. दैन्यं, खिन्नता ।

नाँद, सं. स्त्री. (सं. नंदिक-का >) मृद-
मृत्तिका, शोणी-शोणिः (स्त्री.) ।

नांदी, सं. स्त्री. (सं.) मंगलाचरणं, नादकारं
देवदि नार्शानाशोवाडः २. अश्वुदयः स्मृद्धिः
(स्त्री.) ३. आनंदः ।

ना, अन्य. (सं. का.) न, नो, ना ।

—इत्तिक्राकी, सं. स्त्री. (का.) विरोधः,
विलंबाद्, वैमेल्यम् ।

—उम्मेद्, वि. (का.) निराश, भग्नाश ।

—उम्मेद्दी, सं. स्त्री. (का.) निराशा, आशा-
ऽभावः ।

—काबिल, वि. (का. + अ.) अयोग्य, असमर्थ ।

—कारा, वि. (का.) निष्प्रयोजन, अनुपयो-
गिन्, निरर्थक ।

—खुश, वि. (का.) मित्र, विषण्ण ।

—गन्वार, वि. (का.) अमह २. अप्रिय ।

—चाँज़, वि. (का.) तुच्छ, क्षुद्र । सं. स्त्री.,
निरर्थकवस्तु ।

—जायज़, वि. (का.) अनुचित, निवमविरुद्ध ।

—तजबाकार, वि. (का.) अनुभवहीन, अप-
रिगतबुद्धि ।

—पसंद, वि. (का.) अप्रिय, अरुचिकर ।

—पाक, वि. (का.) अशुद्ध, अपवित्र २. मलिन ।

—वाल्शि, वि. (का.) अप्राप्तव्यस्क, अप्राप्त-
व्यवहार ।

—साकूल, वि. (का. + अ.) निबोध, निर्विवेक
२. असंगत, अनुचित ।

—मालूम, वि. (का. + अ.) अज्ञात, अविदित ।

—मुनांसब, वि. (का.) अनुचित, अयुक्त ।

—मुमकिन, वि. (का. + अ.) असंभव, अशक्य ।

—मुवाकिक, वि. (का. + अ.) अपथ्य, अहि-
नकर ।

—याब, वि. (का.) अप्राप्त्य, दुःप्राप, दुर्लभ ।

—लायक, (का. + अ.) अयोग्य, मूर्ख ।

—वाकिक, वि. (का. + अ.) अनभिज्ञ,
अपरिचित ।

—शायस्ता, वि. (का.) अलभ्य, अशिष्ट ।

—समझ, वि. (सं. + हि.) निबुद्धि, मूर्ख,
अबोध ।

—समझी, सं. स्त्री. (हि. नासमझ) अज्ञता,
मूर्खता ।

—साज़, वि. (का.) अस्वस्थ, रोग्य ।

नाइहोजन, सं. स्त्री. (अं.) भूयतिः (स्त्री.),
नभजनम् ।

नाई, (सं. न्यायः) सद्देश, समान, तुल्य ।

नाई, } सं. पुं. (सं. नापितः) धुरित्,
नाउत्, } भुङ्क्ति, धुरमदित्, अंतावसा-
यित्, दिवाकोतिः (पुं.), शौरिकः चंडिलः,
नखकुट्टः, मुंडः ।

नाक', सं. स्त्री. (सं. नका) नासा, नासिका,
घ्राणं, योगा, गंधवहा, सिधिणी, नस्या, नासि-
द्वयं, गंधनालो २. (नाक का मल) शिषाण-

णकं, शिषणी, मिहानं ३. प्रधाननुरूप्य-
वस्तु (न.) ४. प्रतिष्ठा, मानः ।
—कटी, सं. स्त्री. मानहानिः (स्त्री.), प्रति-
ष्ठानाशः ।
—का बाल, सं. पुं., प्रियः प्रतिभाजनं,
साहचरः ।
—क्रीं फिली, सं. स्त्री., नासापिटिका ।
—की रसोली, सं. स्त्री. नासाबुंदःभवः ।
—घिसनी, सं. स्त्री., कार्पण्यं, दैन्येन वायनम् ।
—बहना, कि. अ., नासा बद् (भ्वा. उ. अ.)
अथवा प्र-स्तु (भ्वा. प. अ.) ।
—सिनकना, कि. स., नासां शुष् (प्रे.) या
निर्मली कृ ।
—कटना, सु., अपमत्-अवशा (कर्म.),
अनादृत (वि.) भू ।
—घिसना या राडना, सु., पादयोः इतित्वा
अभि-प्र-अर्थ (तु.), दैन्येन वाच्य (रत्ना. उ. से.) ।
—चदाना, सु., श्लोषं घृणां वा प्रकटयति
(ना. धा.) ।
—पर सक्वी न बेटने देना, सु., दोषलेप्रमपि
न राह (भ्वा. आ. से.) २. विमल-स्वच्छ-
(वि.) स्था (भ्वा. प. अ.) ।
—बोलना, सु., नाम् (भ्वा. आ. से.) धर्-
रायते (ना. धा.), धर्धरवै कृ ।
—मौ चदाना या सिकोडना, सु., अरुचि-
अप्रीति वा प्रकटी कृ ।
—मैं दम करना, सु., अत्यर्थं विलश् (क्. प.
से.) वाच् (भ्वा. आ. से.) ।
—रखना, सु., संभालं रक्ष (भ्वा. प. से.),
अपमानात् वै (भ्वा. धा. अ.) ।
—सिकोडना, सु., अरुचि घृणां वा दृश् (प्रे.) ।
नाको चने चबवाना, सु., अर्द-स्वध (प्रे.),
परि-सं-नप् (प्रे.) ।
नाको, सं. पुं. (सं.) स्वर्गः २. आकाशः-जन् ।
नाकड़ा, सं. पुं. (हि. नाक) नासनाकः
२. दीर्घनासिका ।
नाका, सं. पुं. (हि. नाकना = दीर्घना)
स्थानतः, मार्गविधिः (पुं.) २. वीथी, मार्गः
३. नगरादीनां प्रवेदाङ्गम् ४. नगरपाल-पुर-
रक्षक, स्थानं ५. सञ्चालिद्वयम् ।
—बंदी, सं. स्त्री., (पुररक्षकैः) मार्गावरोधः-
वीथीप्रतिबंधः ।
नाका, सं. पुं. (सं. नक्रः) कुंभीरः ।

नाकिम, वि. (अ.) सद्योप-दिकक ।
नाकेश, सं. पुं. (सं.) इन्द्रः, देवराजः ।
नाम्बुदा, सं. पुं. (का.) पात-नीका, अथवाः,
कर्मभारः ।
नाम्बुना, सं. पुं. (का.) अमो-र्मम-नेत्रोद्यमेदः ।
नाम्बून, सं. पुं. (का. नाम्बुन) नामो-र्म, नम्यः-
र्म, का-वा-अप्रका-अंकरीः कटक-रुहः, पुनरु-
भवः-नवः ।
नाम्बुना, सं. पुं. (का.) दे. 'मोतियादिद' ।
२. अथवेवेपु रत्तरेलाः (र्म.) ३. नृ-
कोशपटः ।
नागा, सं. पुं. (सं.) सर्पः, पशुगः ५. राजः,
इतिग ३. निर्दयः, क्रूरनासिक ४. देवभेदः
५. नागदेशः ३. पुत्राणां ।
—कम(श)र, सं. पुं. (सं.) सगणितकन्द,
नागीथः, प्रकृतः-कणि,कोला(अशः) ।
—पंचमरी, सं. स्त्री. (सं.) आत्मशुद्धिरपंचनी,
पर्वभेदः ।
—फनी, सं. स्त्री. (सं.) नागफणिका, रुद्रवारी,
दुर्धारा, दुःप्रवेद्या, तीक्ष्णकण्ठक ।
—फौस, सं. स्त्री. (सं.) नागप्रायः अक्यासुधः
२. साईदेवावर्तन-त्मकः प्रायभेदः ३. देवत-
प्रकारः ।
—चेल, सं. स्त्री. (सं.) नागवर्ती, तांबूरी, तांबूळ-
वर्ती, नागवत्, पूर्वा ।
नागर, वि. (सं.) दक्षिण, चतुर, विदग्ध,
मध्य २. पौर, नागरिक । सं. पुं., नगर-पौर-
अन्तः, पौरः, नागरिकः ।
नागरक, सं. पुं. (सं.) शिल्पितः, शिल्पकारः
२. नगर-प्रवक्त्रकः ३. वीरः । वि., दे.
'नागर' ।
नागरमोथा, सं. पुं. (सं.) नागरदुग्धा, नागकां,
चूड़ाला, कच्छरुहा, नादेवो ।
नागरिक, वि. तथा सं. पुं., दे० 'नागर' (२-२) ।
नागरिकता, सं. स्त्री. (सं.) नागरता, पौरता
२. दक्षिण्यं, विदग्धता, मध्यता ।
नागरी, सं. स्त्री. (सं.) पुर-नगर-वासिणी
२. चतुरा, प्रवीणा (नागी) ३. देवत-पत्नी-
विधिः (स्त्री.) ।
नागाहानी, वि. स्त्री. (का.) आकस्मिकी ।
यादृच्छिकी ।
नागा, सं. पुं. (सं.) नम्यः (नम्यः-विशुः) ।

नाडा, सं. पुं. (अ.) अनुपस्थितिः (स्त्री.), अहंनिधिः (पुं.), कार्यदरपराभंगः, अंबकाशः ।
 नागिन, स्त्री, सं. स्त्री. (सं. नागी) सर्पिणी, उरगी, मुत्रगी, मुत्रदमी ।
 नागेश(स)र, सं. पुं. दे. 'नागेश्वर' ।
 नागेश(स)री, वि. (हि. नागेश(ः)र) पीत, दे. 'पोला' ।
 नागोद, सं. पुं. (सं. नागोदरम्) उरस्-वक्षसु-त्राणं, आयुर्मा, उरइन्द्रः ।
 नागोदिका, स. स्त्री. (सं.) कर-हस्त-पाणि-त्राणम् ।
 नाच, सं. पुं. [सं. नृत्तं, रूतिः (स्त्री.)] नृत्तं, नृत्तं, २. श्रौतम्) श्यामः, लाश्व-स्वकं ३. (उद्धतं) वाद्यं ४. नटनं, नाट्यं, नाट्यम् ।
 —घर, सं. पुं., नृत्त-शाला-स्थानम् ।
 —महल, सं. पुं., आभोग-प्रमोदाः, उल्लासः, विनादः, श्रौतिकम् ।
 —नचाना, सु., अर्द्ध-क्षुद्र (प्रै.), दु (स्वा. प. अ.) ।
 नाचना, क्रि. प्र. (सं. नर्तनं) नृत्तं (हि. प. से.) नट (भ्वा. प. से.), नृत्तं क। सं. पुं., दे. 'नाच' ।
 नाचनेवाला, सं. पुं., दे. 'नर्तक' ।
 नाचू, सं. पुं. (फा.) दे. 'नचाना' ।
 —अदा, —नचरा, सं. पुं., हावभाषी, विभ्रमः, विलसः ।
 —चदर, सं. पुं., चाडुदानः, मिथ्याप्रशंसकः ।
 नाचुनी, सं. स्त्री. (फा.) सुन्दरी, वामा ।
 नाजिर, सं. पुं. (अ.) निर्भीकः २. आसेपष्ट (पुं.) ग्राहकः ।
 नाजुक, वि. (फा.) कोमल, सुकुमार, चूडुल २. प्रतनु, सूक्ष्म ३. मंजुर, मिदुर ४. मर्धर, भयावह ।
 —बदन, वि. (फा.) कोमलानन-वंग (गी, तन्वी स्त्री.) ।
 —मिजाज, वि. (फा. + अ.) कोमलप्रकृति, सुसुन्दरत्वम् ।
 नाटक, सं. पुं. (सं. न.) दृश्यकार्यं, अभिनय-ग्रंथः, महारूपकं २. अभिनयः, नाट्यम् ।
 —कार, सं. पुं. (सं.) नाटक-रूपक-कारः-प्रणेव (पुं.) ।

—शाला, सं. स्त्री. (सं.) रंगशाला ।
 नाटकीय, वि. (सं.) नाटक-विषयक-संबन्धिन् ।
 नाटना, क्रि. अ., दे. 'इनकार करना' ।
 नाटा, वि. (सं. नट >) उद्ये, वामन, हस्त, हस्तकाय ।
 नाटय, सं. पुं. (सं. न.) नौरोबलं, कृष्णीत-वाचं २. अभिनयः ३. धिरन्दनं, अनुकारः ।
 —शाला, सं. स्त्री. (सं.) रंग-नाट्य, नैरि-शाला ।
 नाडा, सं. पुं. (सं. नाटः >) नौरो-विः (स्त्री.), कटीबन्ध-बंधः, नटा ।
 नाडी, सं. स्त्री. [सं. नाडी-नाडः (स्त्री.)] दे. 'नवव' २. नाट्य-लेखी-लिखा, प्रणालः-ली ३. भगन, रक्तवादिनी ४. शिरसिभरा, रक्त-वादिनी ५. (रक्त-वी प्रति मूत्रम नाडी Capillary) कैथिकनाडी ६. चालकनाडी (Motor nerve) ७. संवेदनिकनाडी (Sensorv nerve)
 —चलना, क्रि. अ., नाडी-रुद्र (तु. प. से.) स्पंद (भ्वा. आ. से.) ।
 —मडल, सं. पुं. (सं. न.) नाडी-वाच, संख्य नाम ।
 —डटना, सु., दे. 'मरना' तथा 'मृष्टत डाना' ।
 नाणक, सं. पुं. (सं. न.) टंक-नै, मुद्रा ।
 नाता, सं. पुं. (सं. नातिः >) संशयः, संभुल, समोत्रता, सजातिता, सपिडता ।
 नातिन, सं. स्त्री. (हि. नाती) दौहित्री २. पीत्री ।
 नाती, सं. पुं. [सं. नपु (पुं.)] दौहित्रः २. पीत्रः ।
 नाते, क्रि. वि. (हि. नातः) संबन्धेन (प्र.) ।
 —दार, सं. पुं., शाकि-कथु-वाधव-गणः-वर्ग-जनः ।
 —दारी, सं. स्त्री., दे. 'नात' ।
 नाथ, सं. पुं. (सं.) अधिपतिः (पुं.), प्रभुः, स्वामिन् २. पतिः, भर्ता ३. नाथ्यं, पशुनात्ता-रज्जुः (स्त्री.) ४. योगिन-मुपाधिभेदः ५. अ- (आ) हितुडिका, व्याख्यादित् ।
 नाथना, क्रि. सं. (सं. नाथन्) नाथ् (भ्वा. प. से.), वशी क, अभिम् (भ्वा. प. से.) २. नासां व्याप् (हि. प. अ.), नासां शिष्टं क ।
 नाद, सं. पुं. (सं.) शब्दः, श्रुतिः (पुं.), स्वः २. गीतं, गीतिका ३. गर्जनं, गाननं ४. प्रयत्न-भेदः (व्या.) ५. अर्द्धचन्द्रः, अर्द्धदुः (पुं.) (व्या.)

नादान

[३२८]

नारंगी

—विद्या, सं. स्त्री. (सं.) संगीतशास्त्रम् ।
 नादान, वि. (फा.) अरु, मूर्ख, जड़ ।
 नादानी, सं. स्त्री. (फा.) अज्ञानं, मौख्यं,
 'नाडयम्' ।
 नादित, वि. (सं.) वादित, ध्मात्, क्वणित,
 ध्वनित ।
 नादिम, वि. (अ.) लज्जित, हीन ।
 नादिर, वि. (फा.) अद्वेषुः, विचित्र ।
 नादिरशाही, सं. स्त्री. (फा. नादिरशाह)
 निष्ठुरशासनं, नृशोभना, क्रूरकृत्यम् । वि.,
 घोर, नृशंस ।
 नाधना, क्रि. स. (सं. नद्धवद्ध >) योक्त्र-
 यति (ना. धा.), युञ् (यु.) २. आरम्भ
 (स्वा. आ. अ.) ।
 नान, सं. स्त्री. (फा.) स्थूलरोटिका ।
 नानखताई, सं. स्त्री. (फा.) निष्ठात्रभेदः,
 *नानखतायी ।
 नानबाई, सं. पुं. (फा. नानबा) आपूविकः,
 कांदविकः ।
 नाना, सं. पुं. (देश.) मत्स्यमहः, मातुः वित्
 (पुं.), जननीजनकः ।
 नाना, वि. (सं.) विविध, बहुविध २. अनेक,
 बहु ।
 —भोति, वि. अनेकप्रकारक, नानाजातीय ।
 —रूप, वि. (सं.) अनेक-बहु-रूप ।
 —वर्ण, वि. (सं.) अनेक-बहु-वर्ण-रंग ।
 —विध, क्रि. वि. (सं. धं) अनेकधा, बहुधा ।
 नानार्थ, वि. (सं.) अनेकार्थक, बहुर्थ २.
 अनेकव-बहुव, उपयुक्त ।
 नानिहाल, सं. पुं. दे. 'ननिहाल' ।
 नानी, सं. स्त्री. (देश.) मातामही, मातुः
 मातृ (स्त्री.), जननीजननी ।
 —मर जाना, क्त., हतोत्साह-गतसाहस (वि.)
 भू. ।
 नाप, सं. स्त्री. (सं. मापनं) प्र-परि-मापन-मितिः
 (स्त्री.), मापनं २. नापदण्डः, मापनसंयन्त्रं,
 मानम् ।
 —तोळ, सं. स्त्री., मापन-तोळन-ने (न. टि.) ।
 नापना, क्रि. स. (सं. मापनं) मा (दि. आ.
 अ., जु. आ. अ., अ. प. अ.), मानं निरूप
 (यु.), दे. 'नापना' ।
 नापित, सं. पुं. (सं.) दे. 'नाई' ।

नाफ़ा, सं. पुं. (फा.) कस्तूरी-मृगमद, कोश-
 कोषः ।
 नाभि, सं. स्त्री. (सं. पुं. स्त्री.) नाभी, तुन्द-
 रूपी, उदरावर्तः, तुन्द-दीदिः (स्त्री.), तुंदिका
 २. चक्रमध्यं ३. कस्तूरी ।
 नाम, सं. पुं. [सं. नामम् (न.)] अभिधा,
 अभिधानं, अभिधेयं, आह्वा, आह्वयः, आख्या,
 मंज्ञा २. यशस् (न.), स्वयतिः (स्त्री.) ।
 —रखना या धरना, क्रि. स., नाम-मंज्ञा कृ,
 अभिधा (जु. उ. अ.) ।
 —करण, सं. पुं. (सं. न.) संस्कारभेदः
 (शर्म.) २. नामदानम् ।
 —कमाना, —करना, —पाना य—होना,
 मु., विख्यात-विश्रुत-नहायशस्कः (वि.) भू ।
 —दुवोना, मु., यशः मल्लिनी कृ. स्वयति नद्
 (प्रे.), कीर्ति कल्कयति (ना. धा.) ।
 —पर घञ्चा लगाना, मु., दे. 'नाम दुवोना' ।
 नामक, वि. (सं.) नामधारिन्, शक्य, संज्ञक ।
 नामई, वि. (फा.) नामसक २. भीम ।
 नामी, वि. (सं. नामन् >)-नामक, नामधेय
 २. विख्यात, विश्रुत ।
 —गिरामी, वि. (फा., मि. सं. नामग्रामिन्)
 यशस्विन-प्रसिद्ध ।
 नायक, सं. पुं. (सं.) नेतृ-अग्रणीः (पुं.),
 मुख्याः प्रमुखः २. स्वामिन्, प्रभुः, अधिपतिः
 ३. नरक्यायः, जननायकः ४. कथागुरुरूपः
 (सा०) ५. संगीतकुशलः ६. सेनापतिः ।
 नायका, सं. स्त्री. (सं. नायिका) दे.
 'नायिका' २. वेदशास्त्रज्ञी ३. कृती, कुट्टिनी,
 शंभली ।
 नाय(इ)न, सं. स्त्री. (हि. नाई) नापिती,
 क्षुरिणी, मुण्डनी, क्षौरिकी ।
 नायब, सं. पुं. (अ.) प्रति-निधिः (पुं.)-
 हस्तक-पुरुषः २. सहाय-व्यकः, सहाकारिन्,
 उप- (उ. उपमन्त्रिन्) ।
 —तहसीलदार, सं. पुं., उपमण्डलेशः-धरः ।
 नायिका, सं. स्त्री. (सं.) शृंगारमालम्बन-
 भूता नारी २. सुन्दरी. रूपिणी ३. कान्ता,
 दयिता ।
 नारंगी, सं. स्त्री. (सं. नारंगः) (वृक्ष) नाग-
 रंगः, नारंग्यः, नारंगः, देवावतः, स्वर्गान्धः,
 (फलं) नारंगं, नारंगकं, नारंगफलम् ३. वि.,

नार-रि

[३२६]

नासूर

पिच्छिल, कौमुभ [-भी (स्त्री.)], पीत-
लोहित ।

नार-रि, सं. स्त्री., दे. 'नारी' तथा 'नाल' ।

नारकी, वि. (सं.किच) नारकिक, नारकीय,
पापिन ।

नारद, सं. पुं. (सं.) देवपितृविशेषः ।

नारमल, वि.(अं.) सामान्य, साधारण, चथाई ।

नारा, सं. पुं., दे. 'नाडा' ।

नाराज्ञ, वि. (फा.) अपसन्न, रुष्ट ।

—होना, कि. अ., कुप् (दि. प. से.), रुष्ट
(वि.) भू ।

नारायण, सं.पुं. (सं.) विष्णुः, चक्रित, ईश्वरः ।

नारायणी, सं. स्त्री. (सं.) लक्ष्मीः २. दुर्गा
३. तुष्टयन्मुखोः पत्नी ३. दुर्वाधनय दत्ता
कृष्णनेना ।

नारियल, सं. पुं. (सं.) नारिकेलः-स्त्री (वृक्ष)
सदान्तः-वृहत्कोष, फलः, गुणः, उक्तः, मंगल्यः,
(फल) अफलं, बौशिकफलं, नारिकेलः-लः ।

नारियली, सं. स्त्री. (हि. नारियल) नारिकेल
२. अफलनारिकेल, रमः ३. नारिकेलतारः ।

नारी, सं. स्त्री. (सं.) स्त्री, गीमंतिनी, दो(त्रो)-
या, यो(त्रो)पितृ (स्त्री.), अबला, वामा,
वसिष्ठ, महिषा, गामा, प्रिया, जनी-तिः (स्त्री.),
सुभ्रू-वदुः (स्त्री.), यो(त्रो)पिता ।

—दूषण, सं. पुं., (सं. न.) सुरापानदुर्वन-
संमोदयः स्त्रीदोषाः ।

—रत्न, सं. पुं., (सं. न.) श्रेष्ठ-उत्तम-रूपगुण-
शाल्यनी, नारी ।

नाली, सं. स्त्री. (सं. नालं) नाला-ली-किका,
कमलादीनां वृक्षः २. दे. 'नल' ३. अग्न्यह-
नदी-ली x. मृत्रवेष्टनं, त्रसरः ५. दे. 'अबिल-
नाल' ।

नाल^३, सं. पुं. (अ.) सुरत्रं, सुरत्रणं २. लोह-
बलयः-यम् ।

—बंद, सं. पुं. (अ. + फा.) सुरत्र-बंधकः-
योक्तकः ।

—बंधी, सं. स्त्री. (अ. + फा.) सुरत्रबंधनम् ।

—खगाना, कि. स., सुरत्रं वंध् (क्. प. अ.),
सुरत्रेण सनाथी कृ ।

नालकी, सं. स्त्री. (सं. नालः) शिविकामेदः,
*नालकी ।

नाला, सं. पुं. (सं. नालः) अल्प-कु-क्षुद्र, नदी-
सरित (स्त्री.) २. दे. 'नाडा' ।

नालिना, सं. स्त्री. (फा.) अभियोगः, भाषा,
भाषाधरः ।

—करना या दासना, कि. स., अभियुक्त
(रु. आ. अ.; यु.), राजकुले निविष्ट (त्रे.) ।

नाली, सं. स्त्री. (सं.) नालः, नालिः (स्त्री.),
प्रणालः स्त्री, जलमार्गः, परि(री)वाहः २. नाडी,
धमनी, शिरः ३. शाल-देनाली-डी ।

नाव, सं. स्त्री. [सं. नौः (स्त्री.)] तरणी-निः
(स्त्री.), तरौ-रिः (स्त्री.), तरिका, तरंडः ।
(टोटी) नौका, उडुपं, कोलः, प्लवः ।

—चलाना, कि. स., नौकां प्रै-वह-चल् (प्रे.) ।

नावक, सं. पुं. (फा.) क्षुद्रवाणभेदः २. मधु-
मक्षिद्रादंशः ।

नाविक, सं. पुं. (सं.) औडुषिकः, नौ-तरणी-
वाहः २. कर्णधारः, मुख्यनाविकः ।

नाश, सं. पुं. (सं.) प्रणाशः, विनाशः, प्र-वि-
ध्वंसः, उच्छेदः, क्षयः, संहरः ३. अदर्शनं,
लोपः, तिरोधनं ३. मृत्युः (पुं.) ।

—करना, कि. स., प्र-वि, नश-ध्वंस् (प्रे.)
उत्-अव, मद् (प्रे.), क्षे-बिलुप् (प्रे.), उच्छिद्य
(२. प. अ.) २. दे. 'नारना' ।

—होना, कि. अ., प्र-वि, नश् (दि. प. वे.),
प्र-वि, ध्वंस् (म्. आ. से.), प्र-वि-ली
(दि. अ. अ.), क्षयं इत्या (अ. प. अ.) ।

नाशक, सं. पुं. (सं.) प्र-वि, ध्वंसकः, क्षयकारः
[-री (स्त्री.)], उच्छेदकः, संहारकः २. धातुकः,
अंधकारः [-री (स्त्री.)], नाशकारिण ।

नाशपाती, सं. स्त्री. (तु.) अमृत-रुचि, फलं,
अमृताहमः ।

नाशवान्, वि. (सं. न्वत्) क्षयिन, क्षयिण्,
क्षय-नाश-शील, वि, नश्वर [-री (स्त्री.)]
अनित्य, अध्व ।

नाशी, वि. (सं-शिन) दे. 'नाशक' २. दे.
'नाशवान्' ।

नाशता, सं. पुं. (फा.) कलयवर्तः, प्रानराशः,
उप-लघु, आहारः, जलयानम् ।

नास, सं. स्त्री. (सं. नस्यं) क्षुत्करी, नामाचूर्णम् ।

—दान, सं. पुं, नस्यदान-नी ।

नासपाल, सं. पुं. (फा.) अपक्वदाडिमत्वन्
(स्त्री.) २. अपक्वदाडिमम् ।

नासा, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'नाक'^(१) तथा 'नधनः' ।

नासिका, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'नाक'^(१-२) ।

नासूर, सं. पुं. (अ.) नाडीव्रणः-णम् ।

नास्तिक

[३३०]

निकलना

नास्तिक, सं. पुं. (सं.) अनोश्वरादिन्, (नरी-
श्वरः, ईश्वराविश्वोसिन् ।

नास्तिकता, सं. स्त्री. (सं.) अनोश्वरवादः,
ईश्वराविश्वासः, नास्तिकत्वम् ।

नाह, सं. पुं., दे. 'नाथ' ।

नाहक, क्रि. वि. (क्त्वा.) वृथा, व्यर्थ, मुधा,
निरर्थकं, निष्फलम् ।

नाहर-(रु), सं. पुं. (सं. नहरिः >) सिंहः
२. व्याघ्रः ।

निन्दक, सं. पुं. (सं.) अभिशापकः, अभ्युत्पन्नकः,
अप-परि-वादकः, आक्षेपकः, पिशुनः ।

निन्दनीय, वि. (सं.) निन्द, उपास्य, गर्हणीय,
वाच्य, गर्ह्य २. जमद, अशुभ, कुस्मितः ।

निन्दा, सं. स्त्री. (सं.) अप-परि-वादः, प्र-
आधि-क्षेपः, अव-अप-उद-क्रोधः, कुत्सा, गद्दी,
गहणे, कुत्सनं, भस्मनं-नः ।

—करना, क्रि. स., निन्द (भ्वा. प. से.), गह
(लु. भ्वा. आ. से.) अधि-आ-क्षिप (तु. प. घ.),
अप-परि-वद (भ्वा. प. से.), आकुश (भ्वा.
प. अ.), निर्भत्स (लु. आ. से.) ।

—होना, क्रि. अ., उक्त धातुओं के कर्म. रूप ।

निन्दासा, वि. (हि. नीद) निशाल, वंशिल,
निशालस ।

निन्दित, वि. (सं.) अधि-आ-क्षिप्त, गहित,
आकुष्ट, निर्भस्मित, २. कुस्मित, गहित ।

निघ, वि. (सं.) दे. 'नियन्तीय' ।

निघ, सं. पुं. (सं.) अग्रिष्ठः, सर्वत्रोभ्रदः, निक्तयः,
शीतः ।

निघकौरी, सं. स्त्री. (सं. निघः >) दे. 'निघौरी' ।

निघ्, सं. पुं. (सं. निघु(व)की (वृक्ष) अल्क-
ज्वीरः, दूषणवातः, रोकनः, शोथगः, अंतु-
मारिन्, निघ्ः (स्त्री.) । (फल) अंशूनि,
ज्वीरफलं इ. ।

निघोक, वि. (सं.) अघात, निर्भय, अघात,
निघात २. निःसंकोच, निःसंदेह । क्रि. वि.,
निर्भयं, निःसंकोचम् ।

निघाव, वि. (सं.) नीरव, विराव, मूक, मौनिक ।

निघेष, वि. (सं.) अक्षेप, अखिल, समघ,
समस्त २. समाप्त, अवसित, संपूर्ण ।

निघ्रेथस, सं. पुं. (सं. न.) अपवर्णः, मुक्तिः
(स्त्री.), मोक्षः, २. कल्याणं, मंगलम् ।

निघ्यास, सं. पुं. (सं.) बहिर्मुखश्वासः, पवनः,

अपानः, पानः २. उच्छ्वासाः, उच्छ्वसितं,
दीर्घं (निः) श्वासः इ. ।

निःसंकोच, क्रि. वि. (सं. न.) निःसंकोचं,
निःसंशयं, निःसंशकं २. निर्भयं, निःकामम् ।

निःसंग, वि. (सं.) असंग, गत-वीज-संग
२. नास्ति ३. निःस्वार्थः ।

निःसंतान, वि. (सं.) अतपत्य, निरपत्य,
निःस्वयं, निर्वेश, अपुत्रः (स्त्री. स्वयं-
अशिक्षी, अतपत्या) ।

निःसंदेह, क्रि. वि. (सं. ह.) निःसंशकं, निःसं-
शयं, असंशयं, शंका-संदेह-रहितम् । वि., निःसं-
कल्प, निःसंशय, असंशय, निःसंशक ।

निःसंशय, वि. तथा क्रि. वि., दे. 'निःसंदेह' ।

निःसहार, वि. (सं.) नीरस, विरस, निःसत्त्व
२. तुच्छ, क्षुद्र इ. श्याम, गन्धहीन ।

निःसंभ, वि. (सं.) अन्त, अमित, अपरिमित,
निरवधि ।

निःसृत, वि. (सं.) निरन्त, नियंत्र, निष्काम-
निरस्य ।

निःसृष्ट, वि. (सं.) निष्काम, अकाम, निरिच्छ
२. गिलेभ, सतृष्ट ।

निःस्वार्थ, वि. (सं.) स्वार्थ-स्वहित-स्वयान-
हीन विमुक्त, परोपकारिन् ।

निःसामत्, सं. स्त्री. (अ. निःसामत्) अलभ्य-
दुर्लभ, वरतु (न.) २. स्वादुवस्तु इ. धनम् ।

निकट, वि. (सं.) आश्रय, संगत, सन्निकृष्ट,
सन्निकृष्ट, दे. 'समीप' ।

—वर्ती, वि. (सं. तीर्थ) निकटस्थ, वर्तनस्थः ।

निकटता, सं. स्त्री. (सं.) 'समीप' दे. ।

निकम्मा, वि. (सं. निष्कामत्) वृत्तहीन,
निःसापर २. अलस, आलस्यहीन, निरस्यम्
इ. निरर्थक, सोप, अनुपयोगिन् ।

निकर, सं. पुं. (सं.) नगः, समूहः २. राशिः
(पुं.) इ. निधिः (पुं.) ।

निकलंक, वि. (सं. निःकलंक) निःशेष,
निष्पाप, अनय, शोष-शोष, रदिग, क्षुद्र, पवित्र

निकलंकी, सं. पुं. (सं. कलिक) विष्णीः
दशमावतारः । वि. (हि. निकलंक दे०) ।

निकल, सं. स्त्री. (सं.) धातुभेदः, *निकलम् ।

निकलना, क्रि. अ. (हि. निकलनाः) निर्गम,
निर्गम तथा अप-ए (दोनो अ. प. अ.), निःसृ
(भ्वा. प. अ.), निष्कम् (भ्वा. प. से.),

पृथक् भू २. अतिकम्, उत्-सं, तृ (भ्वा. प.
से.), अति-इ, उत्-लघ् (भ्वा. आ. से.)

निकलनेवाला

[३३१]

निगम

३. सफली-उत्तीर्णी भू. ४. गम्, या, व्रज्
(भ्वा. प. से.) ५. उद्-इ, उदगम्, उदय्
(भ्वा. आ. से.) ६. जन् (दि. आ. से.)
प्रदुम्भ, उपद (दि. आ. अ.) ७. लिप्-
संपद, सिष् (दि. प. अ.) ८. (सवाल
आदि) उत्तरं लभ-प्राप् (कर्म.) ९. प्रबुद्ध
(भ्वा. आ. से.) प्र-बुद्धन् (भ्वा. प. से.)
१०. विननम्, मुच (कर्म.) ११. आविष्कृ
(कर्म.) १२. न्यायिन प्रमाणिन (वि.) गू,
सिष् १३. अप-सु-नप् (भ्वा. प. अ.),
पलय (भ्वा. आ. से.) १४. आप्, लम्
(कर्म.) १५. (समयादि) व्यति-इ, अतिकम्
गम् । सं. पुं., दे. 'निकाल' ।

निकलनेवाला, सं. पुं., निर्गमि निर्वाण इ. ।
निकलवाना, कि. प्रे., व. 'निकलन' के प्रे. रूप ।
निकप, सं. पुं. (सं.) दे. 'कर्मोटी' ।
निकपा, सं. स्त्री. (सं.) रावणादिप्राक्षसानां
मान् (स्त्री.) अय्य०, लसोप-पे, अनिक-पे,
दे० 'सोपी' ।
निकपोपल, सं. पुं. (सं.) दे. 'अर्तोटी' १ ।
निकाई, सं. स्त्री. (सं. निक = स्वच्छ >)
भद्रता, प्रशस्तता २. सुदरता, मनोमत्ता ।
निकाम, वि. (सं.) पयोप, अलं (चतुर्थी के
साध) आवृद्धयकारणरूप । २. अभीष्ट, यथेष्ट
३. विपुल, बहु० ४. इच्छुक, अभिलषिन्,
आकांक्षिन् ।
अय्य० अत्यन्तम्, अत्यधिकं, बहु, भृशं, भूरि
(रूप अय्य०) ।
निकाय, सं. पुं. (सं.) नया, नयः २. चया,
राशिः (पुं.) ३. गृहं, सङ्घ (न.)
४. ईश्वरः ।
निकाल, सं. पुं. (हि. निकलन) दे. 'निकाम' ।
निकालना, कि. प्र. (सं. निष्कालन) व.
'निकलन' के प्रे. रूप ।
निकाळा, सं. पुं. (हि. निष्कालना) निर्-वि-
वासनं, अपभारणं, निष्कासनं, प्रशान्तम् ।
निकास, सं. पुं. (सं. निष्कासः) अप-निर्-
गमः, अप-निष्-प्रनः-प्रगमः, २. निष्कासनं,
निष्कालनं ३. दारं, दार (स्त्री.) ४. श्रेवं,
समभूमिः (स्त्री.) ५. उदरकः, प्रभवः ३. रक्षो-
पायः ७. आयोपायः ८. आयः, अर्थलभः ।
निकासी, सं. स्त्री. (हि. निकाल) प्रस्थानं,

निर्गमः २. आयः अर्थलभः ३. विकल्पः
विनिधेयः, निर्गमशुल्कः-कम् ।
निकाह, सं. पुं. (अ. विवाह-इत्यलम्.) ।
निकुंज, सं. पुं. (सं. पुं. न.) कुंजः-जं, कला-
मंडपाः, पर्णशालाः ।
निकृति, सं. स्त्री. (सं.) तिरस्कारः, अपमानः
२. इच्छन्, नीचता ।
निकृष्ट, वि. (सं.) अधम, अवर, अपकृष्ट, क्षुद्र,
गर्हं, निच, नीच, होत, जन्य ।
निकृष्टता, सं. स्त्री. (सं.) अधनता, क्षुद्रता,
हीनता, गर्हाता, कथन्यता, नीचता इ. ।
निकंत, सं. पुं. (सं.) निकंताकः, निकंतानं, गुरदं,
स्थानं, स्थलम् ।
निक्षिप्त, वि. (सं.) प्र-, अस्त-क्षिप्त, भव-नि-
पातित २. तप्त, विमृष्ट ३. अधिकृत, स्वस्त ।
निक्षेप, सं. पुं. (सं.) निष्-क्षेपः-क्षेपणं,
प्राननं, प्रेरणं, विपथनं २. त्यागः, विसर्गः,
उन्-वि-सर्गः, विसर्जनं ३. आधि-उपनिधिः
(पुं.), स्वासः ।
निखंग, सं. पुं., दे. 'तरकशा' ।
निखट्ट, वि. (हि. नि = नक्षो + छटना =
कमाना) उद्यम-उद्योग-व्यवसाय, विमुख, अलस ।
निखरना, कि. प्र. (सं. निखरणं >) निर्मली-
स्वच्छी भू, शुष् (दि. प. अ.) प्र-सं-सृज्
(कर्म.) २. कुंदरात्र (वि.) जन् (दि. आ. से.) ।
निखरवाना, निखराना, कि. प्रे., व. 'निखरना'
के प्रे. रूप ।
निखरी, सं. स्त्री. (हि. निखरना) पर्व-सूतपर्व-
भोजनम् ।
निखर्व, सं. पुं. (सं. निखर्व-वै) दशसर्वसंख्या
दशसहस्रशतद्वयो वा, तर्की । वि., प्रामन,
हृष्यकाय ।
निखार, सं. पुं. (हि. निखरना) निर्मलता,
स्वच्छता २. अक्षरः ।
निखारना, कि. प्र., व. 'निखरना' के प्रे. रूपः ।
निखिल, वि. (सं.) अत्यिक, समस्त, संपूर्ण ।
निखोट, वि. (हि. नि + खोट) निर्दोष, शुद्ध ।
निगंदना, कि. प्र. (प्रा. निगंदः = सीवन)
गूलां सिक् (दि. प. से.) ।
निगड, सं. स्त्री. (सं. पुं. न.) अंदकः, अंधुः ।
२. शूलकः-लाक्षं, बंधनम् ।
निगम, सं. पुं. (सं.) वेदः, श्रुतिः (स्त्री.)

निगमन

[३३२]

निडर

२. मार्गः ३. आपणः, विपणी-णिः (स्त्री)
 ४. मेला, मेलकः ५. बाणिज्यम् ।
निगमन, सं. पुं. (सं. न.) प्रत्यात्मनः (न्या.) ।
निगमन, सं. पुं. (सं. न.) भक्षणं, खादनं
 २. कंठः, गलः ।
निगरानी, सं. स्त्री. (फा.) निरोक्षणं, पर्यवेक्षणम् ।
निगलना, क्रि. स. (सं. निगलन्) निगल्
 (भ्वा. प. से.) निगू (लृ. प. से.), ग्रस्
 (भ्वा. आ. से.) २. दे. 'खाना' ।
निगाह, सं. स्त्री., दे. 'निगाह' ।
 —**बात**, सं. पुं. (फा.) रक्षकः, परित्राता ।
 —**बानी**, सं. स्त्री., स्त्र्या, ज्ञानम् ।
निगाली, सं. स्त्री. (देश. निगाल = रांस का
 प्रकार) भूमिपानयंत्रनाली ।
निगाह, सं. स्त्री. (फा.) दृष्टिः (स्त्री.) इक्-
 शक्तिः (स्त्री.) २. दर्शनं, वीक्षणं, विलोकनं
 ३. कृपा-दया-दृष्टिः ४. विचारः, भक्तिः (स्त्री.)
 ५. विवेकः ।
 —**लङ्गाना**, पुं., कटाक्षेय अवलोक (लु.) बांध
 (भ्वा. आ. से.) ।
निगूढ, वि. (सं.) गिलीन, प्रच्छन्न, निभूत ।
निगाड़ा, वि. (हि. निगुरा) दुष्ट, खल,
 २. अधम, नीच ३. मंद-हृत्, भाग्य, दुर्दैव ।
 —**नाठा**, सं. पुं., वंधुहीन, निर्बाध, अक्रियहितः ।
निग्रह, सं. पुं. (सं.) अक्र-नि-रोधः, नियंत्रण-
 णा, बाधा, प्रति-बंध-रोधः २. दमः, दमनं
 ३. दंडः ४. पीडनं, संतापनं ५. निग्रहणं, बंधनं
 ६. भलयं-ना ।
 —**स्यान**, सं. पुं. (सं. न.) वादे पराजयस्थानं
 (न्या.) ।
निग्राह, सं. पुं. (सं.) शापः २. दंडः ।
निर्बद्ध, सं. पुं. (सं.) वैदिककोषविशेषः
 २. शब्दसंग्रहः ।
निर्घर्ष, सं. पुं. (सं.) दे. 'घिसाव' २. घेपणं,
 चूर्णनं, मर्दनम् ।
निघात, सं. पुं. (सं.) प्रहारः, आघातः
 २. अनुदात्तस्वरः (व्या०) ।
निघाती, वि. (सं.-तिन्) प्रहर्तृ, आहर्तृ,
 पहारक, आघातक २. घातक, मारक, प्राणहर ।
निचय, सं. पुं. (सं.) समूहः, रशिः, गणः,
 निकरः २. निश्चयः ३. संचयः, संग्रहः ।
निचला, वि. (हि. नीचे) अर्वाच्, अधःस्थ,
 अधरः, अधस्तन, नीचस्थ, अधः- (उ. अधोदेशः) ।

निचला, वि. (सं. निक्षल) अचल, स्थिर
 २. शान्त, गम्भीर ।
निचाई, सं. स्त्री. (हि. नीचा) अपकारः,
 हीनता, निम्नता २. अधमत, नीचता, गर्हता
 ३. तिम्न-देशः-भूमिः (स्त्री.) ।
निचान, सं. स्त्री. (हि. नीचा) अवसपि-प्रवणः-
 भूमिः (स्त्री.), २. प्रावण्यं, क्रमशः निम्नता ।
निश्चित, वि., दे. 'निश्चित' ।
निचुड़ना, क्रि. अ. (सं. निच्यवनं) च्यु
 (भ्वा. आ. अ.), च्युत् (भ्वा. प. से.), क्षर्-
 निर्गल् (भ्वा. प. से.), ख (भ्वा. प. अ.),
 २. निष्-सं-पीड (कर्म.), निष्कृप-उद्वह
 (कर्म.) ३. दुर्वेलोभ ।
निचोड़, सं. पुं. (हि. निचोड़ना) मूलं, मूलवस्तु
 (न.), निवासः, सारः २. तात्पर्यं, निष्कर्षः,
 भावः, निर्गलित-निष्कृष्ट-चिह्नित-अर्थः ।
निचोड़ना, क्रि. स. (हि. निचुड़ना) निष्-
 पीड (लु.), उद-निर्-ह (भ्वा. प. अ.),
 निष्कृत् (भ्वा. प. अ.), निर्गल् (प्रे.)
 २. सर्वस्वं ह, निर्वनी कृ. सं. पुं., निष्-
 पीडनं, निष्कर्षणं, निर्गालनं, भवस्वहरणम् ।
निछावर, सं. पुं. (सं. न्यासावर्तः वि. अ.
 निसार >) (पीडक-देवनात्मनाथं) अर्पणं,
 उपनयनं, उपहरणं, उत्सर्जनं २. उत्सर्गः, धानं,
 बलिः (पुं.), उपायनम् ।
 —**करना**, पुं., उत्सृज् (लृ. प. अ.), त्यज्
 (भ्वा. प. अ.) ।
 —**होना**, पुं., कर्मवित् प्राप्तान् त्यज् ।
निज, वि. (सं.) आत्मैव, स्वाय, स्वकीय,
 स्वकः, आत्मन, त्व २. व्याप्तगत, वैयक्तिक
 ३. मुख्य, प्रधान ।
 —**का या निजी**, वि., दे. 'निज' २. ।
निडला-खलू, वि. (हि. नि + टहल = काम)
 क्षीण-निर्-वृत्ति, वृत्तिहीन, निर्बाधार
 २. अलस, कार्यविमुख । सं. पुं., वातरायणः ।
निठाला, सं. पुं. (हि. नि + टहल) अवकाशः,
 निर्बाधारता ।
निडुर, वि., दे. 'निष्टुर' ।
निडुराई, सं. स्त्री. (हि. निडुर) दे. 'निष्टुरता' ।
निडर, वि. (सं. निर्दर) अमय, अभीन,
 निर्भीक, विदर २. साहसिक, माहसिन् ३. धृष्ट ।
 —**पन-पना**, सं. पुं., निर्भयता, निर्माकता इ. ।

निदाळ

[३३३]

निपात

निदाळ, वि. (हिं. नि+डाल = निरा हुआ)
 श्रांत, क्लान्त, शिथिल, अशक्त २. अलस,
 निरुत्साह ।
 नितंथ, सं. पुं. (सं.) दे. 'चूतङ्' २. स्कंधः
 ३. तटः-टम् ।
 नितंथिनी, सं. स्त्री. (सं.) सुनितंथानी नारी
 २. सुन्दरी ।
 नित, क्रि. वि. दे. 'नित्य' क्रि. वि. ।
 —नित, क्रि. वि. दे. 'नित्य' क्रि. वि. (१) ।
 नितरां, अन्व. (सं.) पूर्णतया, सामर्थ्येन,
 २. अनिशयेन, अत्यंत ३. रुदा ४. निश्चयेन ।
 नितान्त, वि. (सं.) अत्यधिक, सातिशय,
 निरन्तरशय, अत्यंत । क्रि. वि., सर्वथा, पूर्णतया,
 अत्यंतम् ।
 नित्य, वि. (सं.) शश्वत् [नी (स्त्री.)] अन-
 क्षर, अदिन-दिन, ध्रुव, मत्त, अनाद्य-
 नन्त, अमर २. आह्निक-मास्यह्निक [स्त्री
 (स्त्री.)] । क्रि. वि., अनु-प्रति-दिनं, दिने
 दिने प्रवृत्तं, अन्वृत्तं २. तदा, सर्वदा,
 ३. सततं, अविच्छिन्नम् ।
 —कर्म, सं. पुं. [सं. भांत् (न.)] प्रात्यह्निक-
 दैनंदिन-कार्यं, आह्निकं, नित्य-क्रिया-कृत्यम् ।
 —प्रति, क्रि. वि., दे. 'नित्य' क्रि. वि. (१) ।
 नित्यता, सं. स्त्री. (सं.) नित्यत्वं, अमरता,
 ध्रुवता, शाश्वतता ।
 नित्यानित्य, वि. (सं.) ध्रुवाध्रुव, शाश्वत-
 शाश्वत ।
 निथरना, क्रि. भ. (सं. नि+स्थिर >) स्वैर्येण
 निर्मलीभू (जलादि) । सं. पुं., निकण्ठसं,
 *निपटनम् ।
 निथार, सं. पुं. (हिं. निथरना) निर्मलजलं
 २. जलधः-स्थितं जलम् ।
 निथारना, क्रि. स. (हिं. निथरना) स्वैर्येण
 निर्मली कृ अथवा शुभ्र (भ्रं.) ।
 निदर्शक, वि. (सं.) प्र-दर्शक, दर्शयितु
 २. कथक, कथिक, अख्यापक, धापक ।
 निदर्शन, सं. पुं. (सं. न.) उदाहरणं, दृष्टानः
 २. प्रदर्शनं, प्रकटीकरणम् ।
 निदर्शना, सं. स्त्री. (सं.) काव्यालंकारभेदः ।
 निदाघ, सं. पुं. (सं.) शोथः, शीघ्र, कालः-
 समय-शत्रुः (पुं.) २. आतपः, सर्षलीकः
 ३. दाहः, तापः ।

निदान, सं. पुं. (सं. न.) रोगनिर्णयः, रोग-
 हेतुः (पुं.) २. आदि-मूल-कारणं ३. कारणं
 ४. अंतः, अवसानं ५. शुद्धिः (स्त्री.) ।
 क्रि. वि., अंततः, अन्ते, अंततो गत्वा, चरमतः ।
 वि. निकृष्ट, अधम ।
 निदारुण, वि. (सं.) कठोर, घोर, दुःसह,
 असह्य ३. निर्दय, निष्करुण ।
 निदिध्यासन, सं. पुं. (सं. न.) निदिध्यासः,
 सतत-निरन्तर-अनवरत-चिन्तन-स्मरण-ध्यानम् ।
 निदेश, वि. (सं.) आज्ञा, आदेशः २. कथनं
 ३. सामीप्यम् ४. पात्रम् ।
 निद्रा, सं. स्त्री. (सं.) स्वप्नः, स्वपनं, स्वापः,
 सुषिः (स्त्री.) शयनं, संवेशः ।
 —भंग, सं. पुं. (सं.) जागरणम् ।
 —वृक्ष, सं. पुं. (सं.) अन्धकारः ।
 निद्रायमान, वि. (सं. निद्रायमाण) शयान,
 निद्राय, निद्रित, शयित ।
 निद्रालु, वि. (सं.) तंद्रालु, निद्रालील, दयालु ।
 निद्रित, वि. (सं.) शयित, सुप्त, निद्रायम् ।
 निद्रहक, वि. (हिं. नि+हृक्) निःसंकोच,
 निर्भय, निःशंका । क्रि. वि., निर्भयं, निःसंकोचं,
 निःशंकां, विश्वम्भम् ।
 निघन, सं. पुं. (सं. पुं. न.) मृत्युः २. दासः ।
 निघन, वि. (सं.) दे. 'निघं' ।
 निधान, सं. पुं. (सं. न.) आधारः, आश्रयः,
 २. निधिः, कोषः ३. स्थापनम् ।
 निधि, सं. पुं. (सं.) कोषः-धाः, द्रव्य-राशिः
 (पुं.) संग्रहः-संचयः, निधानं, शे(से)वधिः
 (पुं.) २. आधारः, आश्रयः ।
 निनाद्, सं. पुं. (सं.) ध्वनिः, रवः, शब्दः ।
 निनानच, वि. [सं. न्वनचतिः (नित्य स्त्री.)]
 एकानशतम् । सं. पुं., उक्त संख्या, तदर्को
 (९९) च ।
 —के फेर में पढ़ना, सु. विलोपाजंनपर (वि.)
 भू, सवत्सरा धनं संवि, (स्वा. उ. अ.) ।
 निपट, वि. (देश.) अत्यंत, अत्याधिक, नितांत ।
 निपटना, क्रि. अ., दे. 'निपटना' ।
 निपटाना, क्रि. स., दे. 'निपटना' ।
 निपटा(ट्ट)रा, सं. पुं., दे. 'निपटारा' ।
 निपटावा, सं. पुं., दे. 'निपटाव' ।
 निपात, सं. पुं. (सं.) अन्व-नि-पतनं २. प्र-
 ध्वंसः ३. मृत्युः (पुं.) निघनं ४. व्यकरण-
 लक्षणासुपन्नं पदम् (व्या.) ।

निपातन, सं. पुं. (सं. न.) अवपाननं, अव-
भञ्जनं, अवकृन्तनं २. वि.नाशनं-अंशेन,
हननं, मारणम् ।

निपान, सं. पुं. (सं.) सदानाःनां, जल-तीय-
आधारः-आशयः २. आहावः, तिपानकं
३. दोहनपात्रं दे., 'दोहनी' ४. आचमनं, पानं,
पीनः (स्त्री.) ।

निर्पीडन, सं. पुं. (सं. न.) अर्द्धनं, संतापनं,
नि-अप-विप्र-करणं २. नर्दनं, कलनं ३. निर्ह-
रणं, निष्कर्षणं, निर्पीडनम् । ।

निपुण, वि. (सं.) प्रवीण. तिप्याप्त, कुशल,
अतुर, दक्ष, विद्व, कृतिन्, विनक्षण, विरम्भ,
प्रौढ, कुशलित् ।

निपुणता, सं. स्त्री. (सं.) प्रावीण्यं, वैदग्ध्यं,
दाढ्यं, कुशलता, दक्षता इ. ।

निपूता, वि. (सं. निपुत्र) अपुत्र, पुत्रहीन
२. दे. 'निःसंतान' ।

निष्काक, सं. पुं. (अ.) द्रोहः, वैरं २. विश्लेदः,
विभेदः, विपदनम् ।

निर्वंध, सं. पुं. (सं.) बंधनं, नियमनं, दृढी-
करणं २. प्रस्तावः, लेखः, प्रबन्धः ।

निव्व, सं. स्त्री. (अं.) लेखनीचतुः (स्त्री.),
कलनाश्रम् ।

निव्वटना, क्रि. अ. (सं. निवत्तनं) निवृत्त-
लब्धावकाशा-कृतकार्यं (वि.) सू. निवृत् (भ्वा.
आ. सं.) २. समाप् (कर्म.), निपत्संपद
(दि. आ. अ.) ३. तिषी (कर्म.), व्यवसो
(कर्म. व्यवसोपत्ते) ।

निव्वटाना, क्रि. क. व. 'निव्वटना' के प्रे. रूप ।

निव्वटाव, निव्वटारा, सं. पुं. (हि. निव्वटना)
अवकाशः, कार्यनिवृत्तिः (स्त्री.), आः, विश्रामः
२. समाप्तिः, निष्ठासिः (स्त्री.) ३. निव्वयः-
कल्पहन्ताः ।

निव्वडना, क्रि. अ. दे. 'निव्वटना' ।

निव्वद, वि. (सं.) पिनड, कृ. निर्दयित २.
विरुद्ध, अंशकित ३. सं. संश्रय-मपित ४.
निवेशित, स्वयित ५. संवद्धः ।

निव्वरना, क्रि. अ. (हि. निव्वटना) दे. 'निव्व-
टना' (१-३) २. विच्छिद्य- विवृत् (धर्म.),
व्यव-इ (अ. प. अ.) ३. विश्लिप् (दि. प.
अ.) ४. वि-मुच् (कर्म.), वैरश् (कर्म.) ।

निव्वल, वि., दे. 'निव्वल' ।

निव्वहना, क्रि. अ., (निर्वहणम्) दे. 'निव्वना' ।

निव्वह, सं. पुं. (सं. निव्वहः) जीवनयापनं,
कालक्षेपः, निर्वहणं २. धारणं, रक्षणं ३. त्राणी-
पादः, रक्षानाथनं ४. निर्वृत्तिः-समाप्तिः (स्त्री.) ।

निव्वहना, क्रि. म. (सं. निव्वहणं) निव्वह्
(भ्वा. उ. अ.; प्रे.) रत्न (भ्वा. म. से.),
प्रवृत् (प्रे.), न विच्छिद्य (क. प. अ.)

२. (वचनं) प्रतिज्ञा निव्वह्-शुभ (प्रे.)-या
(प्र. पालयति)-अप्रवृत् (च.) ३. निव्वह-
नियम-साध (प्रे.), समाप् (भ्वा. उ. अ.)

४. निर्वतनं कृ या विधा (जु. उ. अ.) ।
सं. पुं., दे. 'निव्वह' ।

निव्वहनेवाला, सं. पुं., निव्वहणः, संपादकः,
साधकः, पूरयितृ (पुं.) ।

निव्विद, वि. (सं.) घन, समृद्ध २. कठिन ।

निव्वेइ(र)ना, क्रि. सं. (हि. निव्वेइ(र)ना)
समाप् (भ्वा. उ. अ.), व्यवसो (प्रे. अवसाय-
वति), साधसंपद (प्रे.) २. विवृत्-निव्वृत्
(तु. प. अ.; प्रे.), मोक्ष (तु.) ३. विश्लिप्-
(प्रे.) पृथक् कृ, विवृत् (क. प. अ.) ४. निर्णी
(भ्वा. प. अ.), अतम्या (प्रे.), अवनिर्-
शु (तु.) ।

निव्वेइ-रा, सं. पुं. (हि. निव्वेइता) मुक्तिः
(स्त्री.), मोचनं, मोक्षणं २. रक्षा, त्राणं, उदारः
३. अरणं, धृतिः (स्त्री.) ४. विश्लेषः, पृथक्
कृतिः (स्त्री.) ४. निष्णयः, व्यवस्था ।

निव्वेइ-स्त्री, सं. स्त्री. (अं. निव्वः) निव्व-अरिष्ट-
फल-वीजम् ।

निव्व, वि. (सं.) तुल्य, समान । (सं. पुं. न.)
व्यताः, सिधं २. प्रभां, त्रामा ।

निव्वता, क्रि. अ. दे. (निव्वटना) (निव्वह-कर्म.
निव्वहते), निव्वहो भू २. निव्व-संपद (दि.
आ. अ.) समाप् (कर्म.) ३. निर्वतनं कृ-
विधा (कर्म.) ।

निव्वता, क्रि. अ. दे. (निव्वटना) (निव्वह-कर्म.
निव्वहते), निव्वहो भू २. निव्व-संपद (दि.
आ. अ.) समाप् (कर्म.) ३. निर्वतनं कृ-
विधा (कर्म.) ।

निव्वगा, वि., (निव्वग्य) अभाय, मन्द-
भाय, भाय-प्राग्बन्ध-हन्त ।

निव्वाना, क्रि. म., दे. 'निव्वहना' ।

निव्वाव, सं. पुं., दे. 'निव्वह' ।

निव्वृत्, वि. (सं.) १. संपद, विविप, व्या-
पित २. सुप्त, अन्तहित ३. शन्ती-मुक्त ४.
नञ्ज ५. अवल ६. पूर्ण ७. निर्जनं, सू-व ८.
नोरव, निःशब्द ९. मन्द १०. पिहित ११.
धीर ।

निमंत्रण, सं. पुं. (सं. न.) अभ्यर्चन-ना, आमंत्रण, आवाहन, आह्वान २. भोजनार्थ अभ्यर्चनम् ।

—**देना**, कि. ल., अग्नि-आ-नि-मंत्र् (नु. आ. दे.), अभ्यर्च (नु. आ. ले.), आ-मना-हे (भ्वा. प. अ.) अह्ना-भावह (प्रे.) ।

—**पत्र**, सं. पुं. (सं. न.) अभ्यर्चन-आमंत्रण-पत्रम् ।

निमंत्रित, वि. (सं.) आमंत्रित, आहूत ।

निमक्त, सं. पुं., दे. 'नमक' ।

निमित्त, सं. पुं. (सं. न.) कारणं, हेतुः (पुं.) २. निहं, लक्षणं ३. लकुनम् । कि. वि., उरिश्च, अमिलक्ष्य ।

निमिष, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'निमेष' ।

निर्मालन, सं. पुं. (सं. न.) पद्ममन्दोच्चनं, निमेषः ।

निर्मोहित, वि. (सं.) मुदित, निहित, संवृत ।

निमेष, सं. पुं. (सं.) निमिषः, पद्मसंकोचः, २. क्षणः, पलम् ।

निमोनिया, सं. पुं. (सं.) फुफ्फुसप्रदाहः, शसनरुज्वरः ।

निम्न, वि. (सं.) ग(र्ग)वीर, गहन २. नत, नीच, अथःस्थ ।

—**लक्षित**, वि. (सं.) अधो-निम्नित-वर्णित ।

निर्घटा, सं. पुं. (सं. निर्घृत्) व्यवस्थापकः, न्याय-विधि-प्रवर्तकः-२. विधापकः, कार्य-निर्वाहकः ३. शासकः, आम्बित् (पुं.) ४. अश-दिशकः, ५. अश्वजः, अधिष्ठात्, ईशः ६. सारथिः (पुं.) ।

नियंत्रण, सं. (सं. न.) नियन्त्रः, निरोधः प्रतिबंधः ।

नियंत्रित, वि. (सं.) नियमित, नियन्त्रवद्ध, प्रतिबद्ध, निरुद्ध ।

नियन्त्र, वि. (सं.) नियन्त्र, प्रतिबद्ध, वांच, वशी-कृत २. निश्चित, स्थिरीकृत, पूर्वनिर्णीत, ३. प्रतिष्ठापित, नियोजित, निरुक्त ।

नियति, सं. स्त्री. (सं.) भाग्यं, देवं, भविष्य-व्यथा ।

नियतेन्द्रिय, वि. (सं.) कितेन्द्रिय, संयमित् ।

नियम, सं. पुं. (सं.) विधिः (पुं.), व्यवस्था, भूवं, स्थितिः-पद्धतिः (स्त्री.), मर्यादा, आ-नि-देशः, नियोगः २. प्रतिबंधः, नियंत्रणं ३. गतिः

(स्त्री.), परंपरा ४. प्रतिज्ञा, दृढभक्तव्यः ५. दे. 'शर्त' ।

—**धर्म**, सं. पुं. (सं-र्मा) सदाचारः, सदा-वृत्तम् ।

—**बद्ध**, वि. (सं.) नियमाधीन, नियमित्, नियमित, नियंत्रित, सनियम् ।

नियमन, सं. पुं. (सं. न.) वशीकरणं, अनु-शासनं, नियन्त्रणम् २. दगनं, नियन्त्रः, नियन्त्रणम् ।

नियमित, वि. (सं.) दे. 'नियमबद्ध' ।

नियम्य, वि. (सं.) वशीकार्यं, अनु-शास-नीय, नियन्त्रणीय २. द्रवनीय, नियन्त्रणीय ।

नियोज, सं. पुं. (का.) इच्छा २. प्रार्थना ३. दशनम्, माक्षाकारः ।

—**सद्**, वि. इच्छुक २. प्रार्थित्, ३. वदनाधीन्-दिशु ।

—**हासिल** करना, मु., दर्शनं कृ, परिचयं प्राप् (स्वा. उ. अ.) ।

नियामक, सं. पुं. (सं.) व्यवस्थापकः, विधा-पकः, प्रतिबंधकः २. निरोधकः, प्रतिबंधकः ३. नाधिकः ।

नियामत, सं. स्त्री., दे. 'विआमत' ।

नियुक्त, वि. (सं.) अत्युक्त, नियोजित, व्यास-रित २. निश्चित, नियत, स्थिरीकृत ।

नियुक्ति, सं. स्त्री. (सं.) नियोजनं, नियोगः, व्यवहारणं, स्थापनम् ।

नियुत, सं. पुं. (सं. न.) लक्षं, लक्षदशकं वा ।

नियोग, सं. पुं. (सं.) नियोजनं, नियुक्तिः (स्त्री.), वधापारणं २. प्रेरणम्-वा ३. अवधारणं, निश्चयः ४. देवरादिभिः अपुत्रावां पुत्रीत्पादनं (धर्म.) ५. प्राज्ञा ।

नियोजन, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'नियुक्ति' २. प्रेरणम्-वा ।

नियोजित, वि. (सं.) दे. 'नियुक्त' (?) ।

निश्चल, वि. (सं.) स्वैर, स्वैरगति, स्वैरित, कर्मा-वृत्ति-भाजित् ।

निश्चल, वि. (सं.) पूर, विशुद्ध, पवित्र, निर्लेप । २. अकलबद्ध । सं. पुं., ईश्वरः २. शिवः ।

निरंतर, वि. (सं.) अविरत, अविरत, स- (सं.) तन, अनंतर, अत्यवहितः कि. वि., सदा, सततं निरंतरं, सित्यं-अनवरतं, अविश्रान्तम् ।

निरक्षर, वि. (सं.) अनक्षर, अज्ञ, अविज्ञित, मूर्ख

निरखना

[३३६]

निर्देश

निरखना, वि. स. (सं. निरीक्षण)दे. 'दिखना' ।
 निरपराध, वि. (सं.) अनिरुद्ध, अपराध, अनवध,
 दोषहीन, अनाप, निष्पाप ।
 निरपेक्ष, वि. (सं.) निरीह, अकाम, नि-
 विगत, स्पृह, विरक्त, तटस्थ ।
 निरर्थक, वि. (सं.) अर्थशून्य, अनर्थक २.
 निष्-अ-वि-फल, मोघ, बन्ध, अनुपयुक्त ।
 निरस, वि. (सं.) दे. 'नोरस' ।
 निरस्य, वि. (सं.) अशस्य, निरायुष्य ।
 निरहंकार, वि. (सं.) निरभिमान, नम्र,
 विनीत ।
 निरा, वि. (सं. निरालय) विशुद्ध, मिश्रण-
 रहित, असंसृष्ट २. भेदल, पत्र, मात्र
 ३. अत्यंत, अत्यधिक ।
 निराकार, वि. (सं.) अदेह, अकाय, अशरीर,
 अमूर्त, अरूप । सं. पुं., ईश्वरः २. अकाराः-शम् ।
 निरादर, सं. पुं. (सं.) अनादरः, अवज्ञा,
 अव-अप-मानः, अवधीर्यग्या, निरकारः,
 प्रतिभवः ।
 निराधार, वि. (सं.) निरवलंब, निराश्रय
 २. अयुक्त, मिथ्या ३. निराहार ।
 निरामिष, वि. (सं.) निर्मांस. मांसरहित
 २. शाकाहारिन् ।
 निरायुध, वि. (सं.) दे. 'निरुद्ध' ।
 निराला, वि. (सं. निरालय) अदभुत,
 विचित्र, विलक्षण, विशिष्ट २. अनुपम, अतुल्य,
 अपूर्व ३. वि-निर-जन । सं. पुं., निभूतस्थानम् ।
 निराश, वि. (सं.) भ्रमश, इतश, त्यक्ताश,
 आशाहीन, निरपेक्ष ।
 निराशा, सं. स्त्री. (सं.) नैराश्र्यं, निराशता,
 आशाहीनता ।
 निराश्रय, वि. (सं.) अनाश्रय, अशरण, अस्त-
 हाय, आश्रयहीन ।
 निराहार, वि. (सं.) निरन्न, अनाहार, उन्ने-
 पित, कृतोपवास ।
 निरीक्षण, सं. पुं. (सं. न.) दर्शनं, वीक्षणं,
 अवलोकनं २. अवेषणं, निरूपणं, कार्यदर्शनम् ।
 निरीक्षित, वि. (सं.) दृष्ट, आलोकित २.
 अवेषित, निरूपित ।
 निरुक्त, सं. पुं. (सं. न.) वेदंगविशेषः २.
 यास्कमुनिप्रणेतो ग्रंथविशेषः ।
 निरुक्ति, सं. स्त्री. (सं.) निर्वचनं, व्युत्पत्ति-
 दाशिनी व्याख्या ।

निरुत्तर, वि. (सं.) अनुत्तर, धृढ-मूढ, मुख ।
 निरुपम, वि. (सं.) अनुपम, अतुल्य, अस-
 दृश [-शी (स्त्री.)], दे. 'अनुपम' ।
 निरूपण, सं. पुं. (सं. न.) अ-निर-धारणं,
 निर्णयः-यनं, निश्चयः २. अवलोकनं ३. निद-
 शनम् ।
 निरूपित, वि. (सं.) व्याख्यात, विवेचित
 सम्यक्-वर्णित २. निर्धारित, निर्गत ३. अ-
 लोकित, ईक्षित ।
 निरूप्य, वि. (सं.) व्याख्यानव्य, विवेचनीय,
 वर्णनीय २. निर्धारणीय, निर्णय्य ३. अ-
 लोप्य, ईक्षणीय, अन्वेषणीय ।
 निरूहण, सं. पुं. (सं. न.) वर्ण. विवेचनं.
 विचारणम् २. निर्धारणं, निर्णयनम् ।
 निरोग-गी, वि., दे. 'नोरोग' ।
 निरोध, सं. पुं. (सं.) अवरोधः, प्रतिबन्धः
 २. नाशः ।
 निरोधक, वि. (सं.) निवारक, प्रतिबन्धक,
 प्रतिरोधक, बाधक ।
 निरु, सं. पुं. (का.) अर्धः, मूल्यम् ।
 —नामा, सं. पुं. (का.) अर्धे-भरे, मूल्यपत्रम् ।
 निर्गत, वि. (सं.) निघात, प्रक्षित, निष्काल ।
 निर्गम, सं. पुं. (सं.) बहिर्गमनं, प्रस्थानं २.
 द्वारं, निर्गमनमार्गः ।
 निर्गुडी, सं. स्त्री. (सं.) शेष-लालिका, मिथुवारः ।
 निर्गुण, वि. (सं.) विगुणातीत २. मूलं, गुणहीनः ।
 सं. पुं., परमेश्वरः ।
 निर्जन, वि. (सं.) विजन, एकान्त, विविक ।
 निर्जर, वि. (सं.) जराहीन । सं. पुं., देवतः ।
 निर्जल, वि. (सं.) जलशून्य, शुष्क ।
 निर्जीव, वि. (सं.) अचेतन, अज, प्राणहीन ।
 निर्णय, सं. पुं. (सं.) आचरणं, निर्णयपादः,
 व्यवस्था, वंटाशा २. निश्चयः, परिच्छेदः,
 विवेकः, अ-निर-धारण-धारणः ।
 निर्णयित, वि. (सं.) निश्चित, अ-निर-धारित ।
 निर्दय-यी, वि. (सं.) निर्दयं निरूप, निष्कल्प,
 क्रूर, निष्ठुर, निष्ठुण, नृशंस, कर्शन ।
 निर्दिष्ट, वि. (सं.) उक्त, कथित, वर्णित २.
 निश्चित, निवत, संकेतित ३. आदिष्ट ।
 निर्देश, सं. पुं. (सं.) वर्णनं, कथनं, विद्यपत्नं,
 संकेतः २. निश्चयः, निर्णयः ३. आज्ञा, आदेशः
 ४. नानन् (न.), संज्ञा ।

निर्दोष, वि. (सं.) दे. 'निरपराध' ।
 निर्दोष, वि. (सं. निर्दोष) शत्रु-प्रतिद्वन्द्वि, रहित
 २. ईश्वरान, विरक्त ३. स्वैर, स्वैरगति ।
 निर्धन, वि. (सं.) अकिंचन, दरिद्र, अवन,
 निःस्व, अर्थ-द्रव्य-धन-विस्त, हीन, दुर्गत, दीन ।
 निर्धनता, सं. स्त्री. (सं.) दरिद्र्य, अकिंचनता,
 दुर्गतिः (स्त्री.), दीनता ।
 निर्धार, सं. पुं. (सं.) निश्चयः, परिच्छेदः,
 निर्धारण, सं. पुं. (सं. न.) विवेकः, अवधारणा
 निश्चित, वि. (सं.) निश्चित, कृतनिश्चय,
 परिच्छिन्न ।
 निर्निमेष, वि. (सं.) अनिमिष, पक्षपातरहित ।
 क्रि. वि., अनिमि(ष)पं, निर्निमेष(मि)पम् ।
 निर्बन्ध, सं. पुं. (सं.) आग्रहः, अभिनिवेशः
 २. विघ्नः, अन्तर्भावः ।
 निर्बल, वि. (सं.) अवल, अशक्त, दुर्बल,
 तिष्ठेभ्यः, निर्बल्य, अल्प-श्रीण, बल-शक्ति,
 निःसत्त्व ।
 निर्बलता, सं. स्त्री. (सं.) बल-शक्ति-शून्यता,
 बल-शक्ति-सन्ध, अयः-नाशः-हानिः (स्त्री.) ।
 निर्बुद्धि, वि. (सं.) मूर्ख, जड ।
 निर्बोध, वि. (सं.) अज्ञान, अबोध ।
 निर्भय, वि. (सं.) अभय, अभीत, अकुतोभय,
 निर्भीक, निःशंक २. प्रगल्भ, साहसिन् ।
 निर्भयता, सं. स्त्री. (सं.) निर्भीकता, असयं,
 अभीतिः (स्त्री.), निःशंकता २. प्रगल्भ्यं,
 साहसम् ।
 निर्भीक, वि. (सं.) दे. 'निर्भय' ।
 निर्भीकता, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'निर्भयता' ।
 निर्मम, वि. (सं.) विरक्त, वैराग्यवत् २. निः-
 स्वार्थ, निरिच्छ ३. उदरहीन, तटरथ ।
 निर्मल, वि. (सं.) अमल, विमल, स्वच्छ,
 शुद्ध २. अपाष, पवित्र ३. निष्कलंक, निर्दोष ।
 निर्मलता, सं. स्त्री. (सं.) विमलता, स्वच्छता
 २. पवित्रता ३. निष्कलंकता इ. ।
 निर्मला, सं. स्त्री. (सं. निर्मल) अंडप्रसादः,
 कृतकः, तिकन्निभः २. कतकदीनं ३. दे.
 'रीश' ।
 निर्माण, सं. पुं. (सं. न.) निर्मितिः (स्त्री.),
 रचनं-ना, विघ्नः, मर्जनं, घटनं, कल्पनं,
 साधनं, संपादनं, सृष्टिः (स्त्री.) ।
 निर्माता, सं. पुं. [सं. नृ] रचयितृ-सृष्टृ(पुं.) ।

निर्माल्य, सं. पुं. (सं. न.) देवोच्छिष्टद्रव्यं,
 देवापितवस्तु (न.) ।
 निर्मित, वि. (सं.) रचित, घटित, कल्पित,
 सृष्ट ।
 निर्मूल, वि. (सं.) अमूलक, निर्मूलक, निरा-
 धर २. उन्मूलित, उत्पटित ।
 निर्मोको, वि. (सं. निर्मोह) निर्मम, समत्व-
 शून्य, रुक्ष २. निर्दय, वाषाणहृदय ।
 निर्मल, वि. (सं.) अप-निस्, जप, निर, श्रीड-
 लोक, यथा-लज्जा, हीन, घृष्ट, विद्यात ।
 निर्लोभ, वि. (सं.) परि-सं, तुष्ट, वृष्ट, निःस्पृह,
 वितुष्ण, अलोडुप, अगृधु ।
 निर्वाण, सं. पुं. (सं. न.) मोक्षः, मुक्तिः
 (स्त्री.), अपवर्गः ।
 निर्वाण, वि. (सं.) अपवन, निर्वाण्य, वातवेग-
 शून्य (प्रदेशादि) ।
 निर्वाह, सं. पुं. (सं.) दे. 'निवाह' ।
 निर्विकार, वि. (सं.) विकृति-विकार-परिवर्तन-
 रहित, अविकारिन्, अपरिवर्तिन ।
 निर्विघ्न, वि. (सं.) निरंतराय, निव्याघात,
 विघ्नरहित । क्रि. वि., निर्विघ्नं, शांत्या (नृ.)
 निरुपश्रवम् ।
 निर्विचेक, वि. (सं.) निर्बुद्धि, अविचेकिन् ।
 निर्वीर्य, वि. (सं.) निस्तेजस्-निःशक्त, निर्बल ।
 निवार, सं. स्त्री. (फा. नवार) पर्यकपट्टिका,
 अनिवारम् ।
 निवारक, वि. (सं.) रोकक २. अपसारक,
 नाशक ।
 निवारण, सं. पुं. (सं.) निःरोधः-रोधनं
 २. अपसारणं, दूरीकरणं ३. निवृत्तिः (स्त्री.) ।
 निवाला, सं. पुं. (फा.) दे. 'ग्रास' ।
 निवास, सं. पुं. (सं.) वसतिः-स्थितिः (स्त्री.)
 २. गृहं, निकेतनं आ(अ)गारं, आवासस्थः,
 आ-नि, लयः २. वायु-गृहं-स्थानम् ।
 —करना, क्रि. अ., अधि-आ-नि-प्रति-वस्
 (स्वा. प. अ.) ।
 निवासी, सं. पुं. (सं. सिन्) वागकृत् (पुं.),
 वासिन्, स्थ, वसिन् ।
 निवृत्त, वि. (सं.) वि-मुक्त, विरत, रुग्णत्व-
 काश, कृतकार्यं २. विरक्त, पृथग्भूत ।
 निवृत्ति, सं. स्त्री. (सं.) उपरमः, प्रवृत्तभावः,
 अप-उप-वि-रतिः (स्त्री.), मुक्तिः (स्त्री.) ।

निषेदन

[३३८]

निष्काम

निषेदन, सं. पुं. (सं. न.) आवेदनं, प्रार्थनं-ना, अभ्यर्थना, याज्ञ, याचना, विज्ञापना, विज्ञप्तिः (स्त्री.) ।

—करना, क्रि. स., आ-नि-विद् (प्रे.)- विज्ञा (प्रे., विज्ञापयति) अभि-प्र-अर्थ (चु. आ. से.), याच् (भ्वा. उ. से.) ।

—पत्र, सं. पुं. (सं. न.) आवेदन-प्रार्थना-पत्रम् ।

निशंक, वि. दे. 'निःशंक' ।

निशांश, वि. (सं.) राश्यांश, दोषांश ।

निशा, सं. स्त्री. (सं.) राशिः (स्त्री.), शर्वरी ।

—कर, —नाथ, —पति, सं. पुं. (सं.) चन्द्रः, सोमः ।

निशाचर, सं. पुं. (सं.) राक्षसः, रक्षस् (न.), पिशाचः २. चौरः, लुटकः ३. नक्तचरः । (उल्ल. प्रादि) ।

निशात, वि. (सं.) निशितः-तानं, तेजित, शित, क्षुण्ण २. परिकृतः-तानं, उज्ज्वलित ।

निशाद, सं. पुं. (सं.) निशादतः, नक्तभोजिन २. राक्षसः, पिशाचः ३. दूकः ।

निशादि, सं. पुं. (सं.) नात्यश, (अव्य.) सन्ध्या ।

निशान, सं. पुं. (फा.) अभिज्ञानं, चिह्नं, अंकः, लक्षणं, लाटनं, सिमां, व्यञ्जकं-नं २. प्रमाणं, साधनं ३. निगाः, क्षत-अंकः-चिह्नं ४. लक्षणं, सूत्र्यं ५. अधिकार-प्रतिष्ठा-चिह्नं ६. ध्वजः, वैवर्धतः-ती ।

—करना या लगाना, क्रि. स., अंक (चु.), विहयति, मुद्रयति (ना. धा.) ।

—द्वार, वि. (फा.) निहित, अकित २. ध्वज-वाहकः ।

—खर्दार, सं. पुं. (फा.) वैजयन्तिकः, पताकिन २. अग्नेसरः, पुरोगः ।

नाम—, चिह्नं, लक्षणं २. अस्तित्वलेशः ।

निशानचा, सं. पुं. (फा. निशान) दे. 'निशानखर्दार' २. लक्ष्यवेधकः ।

निशाना, सं. पुं. (फा.) लक्ष्यं-श्री, शरव्यम् ।

—बोधना, मु., लक्षांशयी कृ., सधा (जु. उ. अ.) ।

—सारना या लगाना, कृ., लक्ष्यं प्रति क्षिप् (तु. प. अ.)-अम् (दि. प. से.) ।

निशानी, सं. स्त्री. (फा.) दे. 'निशान'

२. सं-हाभिज्ञानं स्तुति-भारक-दानं २. अभि-ज्ञानं, स्मारकम् ।

निशातमान, सं. पुं. (सं. न.) निशा-अति-क्रमः-अत्यशः, प्रगतः (अव्य.) ।

निशीश, सं. पुं. (सं.) अक्ष-मध्य-राजः, रात्रि-निशा-मध्यं २. राशिः (स्त्री.) ।

निश्रय, सं. पुं. (सं.) निश्रयता, स्थितित्वं, प्रवृत्तं २. विश्वासः, विश्रम्भः ३. निगयः ४. दुष्ट-संज्ञकः, अव्यवसायः ।

निश्रल, वि. (सं.) अश्रल, अश्रिचल, धीर, दुष्ट, धृतिनन् २. शिवा, शिवात्तव्य, निद्रिष्ट ।

निश्रित, वि. (सं.) वीत-मुक्त-निश्च, शान्त, चित्ता-रणरणक-रहित ।

निश्रित, वि. (सं.) भवेत्-संशय-शून्य, अ-विस्, संशय, निशय, दुष्ट २. निर्वीत, स्थि-रित ।

निश्रवाय, सं. पुं. (सं.) दे. 'निःश्रवा' ।

निषध, सं. पुं. (सं. निषधः कृ.) विध्याच-ल्यः देशविशेषः २. 'अनाऊ' प्रदेशः ३. निष-धवास्ति ।

—पति, सं. पुं. (सं.) नलः ।

निषाद्, सं. पुं. (सं. पुं.) अनार्य-जातिविशेषः २. चांडालः, हीनः ३. सप्तमस्वरः (संगीत) ।

निषिद्ध, वि. (सं.) प्रतिषिद्ध, प्रत्यादिष्ट, निवारित २. दृष्टि, न्या, निन्हा ।

निषूदन, वि. (सं.) नारक, मारयित्, हन्तु, प्राणहर, अन्तकर, धानक ।

निषेक, सं. पुं. (सं.) अक-अ-संका-सेवनं, अभि-वर्षण-उक्षणम् २. सम्भोजनं ३. सम्भोजन-संस्कारः ४. धावन-जलं ५. भगिनजलं ६. वीर्यांशुद्धिः (स्त्री.) ।

निषेचन, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'निषेक' १ ।

निषेध, सं. पुं. (सं.) प्रतिषेधः, निरोधः, निवारणम्, निषिद्धिः (स्त्री.) ।

निषेधक, वि. (सं.) प्रतिषेधक, निवारक, प्रतिषेद्ध, बाधक, निरोधक ।

निष्कंटक, वि. (सं.) निवृत्त-निर्वाध, निर्गतराज २. निःशय्य, अकंटकित ।

निष्कपट, वि. (सं.) कजु, सरल, अनाध, निष्कल, विशुद्ध ।

निष्काम, वि. (सं.) निरिच्छ, निरीह, निःसूह ।

निष्कारण, वि. (सं.) अकारण, निर्निमित्त ।
क्रि. वि. अकारणं, अहेतुकम् ।
निष्कारण, सं. पुं. (सं.) बहिर्गमनं, निर्गमनं
२. संस्कारभेदः (धर्म.) ।
निष्ठा, सं. स्त्री. (सं.) प्रत्ययः, विश्रान्तः, विश्रामः
२. भक्तिः (स्त्री.) ; श्रद्धा ।
निष्ठुर, वि. (सं.) क्रूर, क्रूरकर्मन्, निर्दय,
निष्पुण, निष्कर्मण, नृशंस, कठोरहृदय ।
निष्ठुरता, सं. स्त्री. (सं.) क्रूरता, निर्दयता,
नृशंसता ।
निष्पत्ति, सं. स्त्री. (सं.) अंतः, सनातिः (स्त्री.)
२. परिष्ठाकाः, सिद्धिः (स्त्री.) ।
निष्पन्न, वि. (सं.) समाप्त, अवसित २. सिद्ध,
परिगत, संपन्न ।
निष्पादन, सं. पुं. (सं. न.) साधनं, निर्वर्तनं,
विधानं २. समापनं, संपूरणम् ।
निष्पाप, वि. (सं.) अपात, अनाप, अवलम्ब,
अकिञ्चिप, परंपरित्त, पुण्यकर्मन् ।
निष्प्रयोजन, वि. (सं.) निस्स्वाधे, निष्काम
२. अकारण, निष्कारण ३. अनर्थक, व्यर्थ । क्रि.
वि. अर्थ, सुधा ।
निष्फल, वि. (सं.) निरर्थक, अनुपयोगिन,
मोघ, विफल, निष्प्रयोजन, वृथा, सुधा ।
निसन्न, सं. स्त्री. (अ.) संदेहः, अनुसंगः
२. वादानं, वाक्प्रदानं ३. तुलना, सादृश्यम् ।
क्रि. वि. अपेक्षया तुलनया-श्रीपम्बेन(तृतीया) ।
निसर्ग, सं. पुं. (सं.) स्वभावः, प्रकृतिः (स्त्री.) ।
निसार, सं. पुं. (अ.) दे. 'निष्सार' ।
निस्तब्ध, वि. (सं.) उड़ी-निश्चिन्दी, भूत,
अवसन्न, उडतुल्य, निश्चेष्ट २. अनालापिन,
मौनिक, तूष्णीक ।
निस्तब्धता, सं. स्त्री. (सं.) निश्चिन्ता,
निःस्पृहा, उडता, निश्चेष्टता २. नीरवता,
मौनम् ।
निस्तार, सं. पुं. (सं.) अपवर्गः, मुक्तिः (स्त्री.)
२. उद्धारः, प्राणम् ।
निस्तारा, सं. पुं. (सं. निस्तारः) निर्णयः,
निर्धारणं २. दे. 'निस्तार' ।
निस्तेज, वि. (सं. निस्तेजम्) प्रदम, निष्प्रस,
मक्ति, तेजायन्त २. निःस्पृह, निर्बन्धि,
निरुत्साह ।
निस्पन्द, वि. (सं.) निर्णय, अवाप, अचल,
रिधर, गतिशून्य, निस्पन्द, निःस्पन्द ।

निस्पृह, वि., दे. 'निःस्पृह' ।
निस्फ, वि. (अ.) दे. 'आपा' ।
निस्संकोच, वि. (सं.) दे. 'निःसंकोच' ।
निस्संतान, वि. (सं.) दे. 'निःसंतान' ।
निस्संदेह, वि. (सं.) दे. 'निःसंदेह' ।
निस्सार, वि. (सं.) दे. 'निःसार' ।
निस्सीम, वि. (सं.) दे. 'निःसीम' ।
निस्स्यार्थ, वि. (सं.) दे. 'निःस्यार्थ' ।
निहंग, वि. (सं. निःसंग) एकल, एकाकिन,
२. मङ्गलारिन् ३. नरन ४. निर्लज्ज ।
निहत्था, वि. (सं. निर्हस्त >) निरस्त्र, निःशस्त्र,
निग्राह्य, अस्त्र-शस्त्र-हीन २. निर्धन ।
निहाई, सं. स्त्री. (सं. निधाति >) शर्मः-मी,
स्थूणा ।
निहायत, वि. (अ.) अत्यंत, अत्यधिक ।
निहारना, क्रि. सं. (सं. निभाळनं) दे.
'देखना' ।
निहाळ, वि. (को.) संतुष्ट, पूर्णकाम, प्रसन्न ।
—करना, क्रि. सं., प्रसन्न-आनन्द-रूप (प्रे.) ।
निहित, वि. (सं.) स्थापित, न्यस्त, निश्चित ।
निहोरा, सं. पुं. (सं. मनोहरः >) अनुग्रहः,
कृप, उपकारः २. कृतज्ञता, कृतवेदिता
३. प्रथनं-ना, निवेदनं ४. आश्रयः, आधारः ।
क्रि. वि., द्वारा-कारणेन (अव्य.) ।
—मानना, क्रि. अ., उपकारं स्मृ (स्वा. प.
अ.) कृतं ज्ञा (क्. ड. अं.) ।
नींद, सं. स्त्री. (सं. निद्रा) स्वपनं, संवेशः, दे.
'निद्रा' ।
—आना, क्रि. अ. स्वप् (सन्नंत, ड., सुषु-
प्ति) निद्रया पराभू (कर्म.) ।
—उचाट होना, क्रि. अ., वि-भग्न-निद्रा
(वि.) भू ।
—न आना, सं. पुं., निद्रा-लोप-नाशः ।
—भर सोना, मु., थयेष्टं स्वप् (अ. प. अ.) ।
नींदू, वि. (हिं. नींद) दे. 'निद्राळ' ।
नींदू, सं. पुं., दे. 'निंदू' ।
नीक-का, वि. (सं. निक >) अचल, सुन्दर,
उत्तम, भद्र, उत्कृष्ट ।
नीच, वि. (सं.) अधम, अवर, अप-नि-कृष्ट,
शुद्र, गबल, गर्ब, अध-र्थ, तुच्छ, पापम् ।
सं. पुं., अपमदः, जालमः, दुर्वृत्तः, पृथक्जनः,
२. हाँन-जातिः-वर्णः-कुलः, अन्धजातीयः,
नीच-कुलजः-वंशप्रभूतः ।

नीचता

[३४०]

नीलाधोधा

—**ऊँच**, गु., भद्राभद्रे (न.) २. सुभाषवसुभौ, ३. दानिलामौ ४. सुल्लुखे (न.) ५. संवाद-विषदौ (स्त्री.) ६. उल्लापिकर्षी ।

नीचता, सं. स्त्री. (सं.) अधमता, क्षुद्रता, तुच्छता, पामरता, २. अन्वयजता, हीनकुलता ।

नीचा, वि. (सं. नीच) अधःस्थ, अधस्तन- (-नी स्त्री.), नच, निम्न, नीचस्थ, अर्वाच २. दे. 'नीच' ।

—**ऊँचा**, वि., नदीतल, विषम, असम, २. दे. 'नीच-ऊँच' ।

—**दिखाना**, गु., पराजि (स्वा. आ. अ.), परामू २. ही (प्रे. हेपयति), लघू क. ग्रांठ (प्रे.) ।

नीचाई, सं. स्त्री. (हिं. नीचा) नीचता, निम्नता, अधःस्थता ।

नीचे, क्रि. वि. [सं. नीचैः (अव्य.)] अधः, अधोभागे, अधस्तात्, तले २. अधीनतायां, वशे ३. न्यून, अवर ।

—**ऊपर**, क्रि. वि., अन्योन्यस्योपरि, इतरिन-स्योर्ध्वम् । २. अस्तव्यस्तं, संकीर्णताया ।

नीच, सं. पुं. (सं. पुं. न.) दे. 'घोमला' ।

नीति, सं. स्त्री. (सं.) उपायः, वृक्तिः-नीतिः (स्त्री.), प्रयोगः २. राज-राज्यशासन, नीतिः-नयः-नायः-मार्गः, नय-नीति, क्रमः-मार्गः ३. सदाचारः, सदाशुचिचारः, सु-सच, चरितं ४. नीति, विद्या-शास्त्रम् ।

नीतिज्ञ, वि. (सं.) नयज्ञ, नीतिज्ञा-ज्ञः ।

नीतिमान्, वि. (सं. मद्) नयपर, सदाश-रिन् [-मती (स्त्री.)] ।

नीप, सं. पुं. (सं.) कर्षकः, विषयः, परिग-म्यः ।

नीव्, सं. पुं. (सं. निवृत्तं) दे. 'निव्' ।

—**निचोड़**, वि., अल्पदायिन बहुप्रार्थिन, अल्प-दातु बहुप्रदोष्ट, अल्पद बहुप्रदक ।

नीम, सं. पुं., दे. 'निम्' ।

नीम, वि. (का. मि. सं. नेम) दे. 'आध' ।

—**हकीम**, सं. पं. वैद्यमानिन, वैद्यमन्त्र्यः, मिथ्या-कु-उद्य-नि-कित्तयकः ।

—**हकीम इतरे जान**, गु., वैद्यमान्यात् प्राय-संबन्धः, प्र-मवैद्यः संबन्धवहः ।

नीयत, सं. स्त्री. (स्त्री.) आशयः, उद्देशः, भावः, इच्छा, लक्ष्यम् ।

—**बदल जाना**, तु. भासं प्रति प्रवृत्त (स्वा. आ. सं.), बर्से चञ (स्वा. प. अ.) ।

नेक—, वि., सदाशय, सुमंजसः ।

बद—, वि., दुःसाशय, कुमंजसः ।

नीर, सं. पुं. (सं. न.) तापं, दे. 'जल' ।

नीरज, सं. पुं. (सं. न.) पत्रं, दे. 'कमल' ।

नीरद, सं. पुं. (सं.) जलदः, दे. 'मेघ' ।

नीरस, वि. (सं.) अरस, विरस, अ-वि-श्व, शूक्त २. अस्वाद, रसहीन, अर्ध-स्फुर ।

नीरोग, वि. (सं.) लुप्य, कल्प, वाचं, दे. 'परयथ' ।

नीरोगता, सं. स्त्री. (सं.) आरोग्यं, दे. 'स्वास्थ्य' ।

नील, सं. पुं. (सं. नीलं) (पौधा) काला, नीलो, नीलनी, रंजनी, २. (द्रव्य) नीलं, नील-वर्णः ३. प्रसारकं, नीलविद्, नीला ४. लांछनं ५. वानरविशेषः ६. अन्ध-नीलमणिः, नीलोपलः (पुं.) ७. संज्ञाविशेषः (२३ हतार अरब अथवा सौ अरब) । वि., दे. 'नीला' ।

—**कंठ**, सं. पुं. (सं.) भागः, किर्लोड(दी)विः (पु.) २. शिवः ३. मयूरः ।

—**कमल**, सं. पुं. (सं. न.) नील-पद्मम्-अकल-रत्न(नीर)परं, इन्दीवर्णः ।

—**का टीका**, तु., कालिका, अथवास्तु (न.) ।

—**गाय**, सं. क्त., दे. 'गक' ।

नीलम, सं. पुं. (का. सं. नीलमनिः (पुं.) नीला, नील-पत्रम्, नील-कंठ, नीला ।

नीलाचर, सं. पुं. (सं. न.) नीलादीर्घवस्त्रं २. तालीश-वस्त्रम् । सं. पुं., मयूरद्वयः २. राजसः ।

नीलाकर, सं. पुं. (का. वि. सं. नीलेत्पलं) कुमुदं, किरणं २. इन्दी(वि)वर्णं, नील-प्रचंचकमलयम् ।

नीला, वि. (सं. नीलं) रत्नम्, मेघम्, शालग्रामं ।

—**रंग**, सं. पुं. नीला, नीलवर्णः, नीलिमम् (पुं.) ।

—**पीला होना**, सं. कृष (वि. न. अ.) कृष् (वि. प. सं.) ।

नीलाई, सं. स्त्री. (हिं. नीला) नीलत्वं, नीलिमम् (पुं.) ।

नीलाधोधा, सं. पुं. (हिं. नीला-धुम्, तुल्य) हेमधारं, तुल्यं, नीलासनं, ताजगर्भं, मयूर-शीवत्रं, नीलं, त्रिभुवनं, मयूरकम् ।

नीलाम

[३४१]

नेत

नीलाम, सं. पुं. (पुं.) नीलम । कर्णनीलामय-
विशेषः ।

नीलै, सं. स्त्री. (सं.) नेभा । श्व. सं. पुं. ।
नीलमणिः-मूर्ध्निप्रसिद्धा, नीलः, केशवधुः
(का.) ।

—डालना, सं. कृतना, वि. सं. वस्तु निभा
(दु. भा. अ.) श्व. सं. प्रे. श्वयश्वि ।
दु., प्राणतः श्व. भा. प्र. प्रयुक्तः प्रे.) ।

नुकता, सं. पुं. (अ. नुकतम्) विद्वः (पू.)
(मील-) अकर्मिणां २. शत्रुः, स्व. विद्वः ।

नुकता, सं. पुं. (अ. नुकतम्) शत्रुः,
समन्त (न.) २. नदीशक्तिः (स्त्री.), नुसार्थ-
वचनं, स्वयं ३. शीघ्रः, बुद्धिः (स्त्री.) ।

—नी, वि. (का.) शिष्ट-शेष-अन्वेषितः,
शेषिकद्वयं (पुं.), पुरोगमिन् १

—चीर्ना, सं. स्त्री. (का.) शीघ्रदर्शनं, शिष्टा-
न्वेषणं, पुरोगमिन्त्वम् ।

नुकसान, सं. पुं. (अ.) श्व. (स्त्री.), दे.
'हानि' ।

नुकीला, वि. (हि. नोक) नाम, नौध्याम्,
नि. शित, अधीमत् (-नी (स्त्री.)) ।

नुकड, सं. पुं. (हि. नोक) अंतः, सीमा, अंतः
२. वानः, श्व. ३. दे. 'नोक' ।

नुक्य, सं. पुं. (अ.) शीघ्रः, बुद्धिः (स्त्री.),
न्यूनता ।

नुमाइश, सं. स्त्री. (का.) प्रदर्शन-नी २.
आदर्शः, श्व. (का.) ३. अतिकरणं, प्रका-
शनम् ।

नुमाइशी, वि. (का. नुमाइश) अपात-मणीव,
आदर्शः, नुमतायेत्यः ।

नुमता, सं. पुं. (अ.) वानः, कणः ।

नूतन, वि. (सं.) दे. 'नय' ।

नून, सं. पुं. दे. 'नय' ।

नूपुर, सं. पुं. (सं. न.) पद्म-पत्रक-वर्णनं,
संशयः, हंसकः ।

नूर, सं. पुं. (अ.) शकानाः, श्वयिन् (न.)
२. शक्तिः (स्त्री.), सोमा

—चश्म, सं. पुं. शिष्यपुत्रः ।

—चश्मा, सं. स्त्री. शिष्यपुत्री ।

नृ, सं. पुं. (सं.) नरः, मनुष्यः, मनुजः,
मानुषः ।

—केशरी, सं. पुं. (सं. रिन्) नरसिंह-सिंहः,
अवतारः २. वीरः, शूरः ।

—धन, वि. (न.) मनुष्य-मनुज-यातक-
नारथः ।

—देव, सं. पुं. (सं.) विप्रः, नाथः २. नृपः,
भृशः ।

—द्वि, सं. पुं. (सं.) नर-भू, नाथः ।

—दृश, सं. पुं. (सं.) भूदः, श्व. ।

—सिंह, सं. पुं. (सं.) नर-भू, सिंहः-केशरिन्-
द्वयः, विष्णोश्चतुर्थावतारः ।

नृत्य, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'नाच' ।

—शाला, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'नाचय' ।

नृपः, नृपति, सं. पुं. (सं.) भूदः, दे. 'राजा' ।

नृशंस, वि. (न.) दे. 'तिष्ठ' ।

नृशंसता, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'तिष्ठता' ।

नृसिंह, सं. पुं. (सं.) नरसिंहः, विष्णोश्चतुर्था-
वतारः २. श्रेष्ठजनः, नरधर्मः ।

नेक, वि. (का.) भद्र, अच्छ, उत्तम, सुः, सयः,
२. शिष्ट, मौख्य, सभ्य ।

—चलन, वि. (का. + हि.) सदाचारिन्,
सद्वृत्तः ।

—चलनी, सं. स्त्री., सदाचारः, सौबन्धम् ।

—नाम, वि. (का.) यशस्विन्, कीर्तिमत् ।

—नामा, वि., सुवशस् (न.), कीर्तिः (स्त्री.) ।

—नीयत, वि. (का. + अ.) धर्मवर्तिन्,
सदाशयः ।

—नीयती, सं. स्त्री., निष्कापट्यं, सदाशयः ।

—श्रुत, वि. (का.) भक्त्यन्तः, सौभाग्य-
शक्ति २. सत्त्वभाव, सुशीलः ।

नेकी, सं. स्त्री. (का.) भद्रता, सद्व्यवहारः
२. सत्त्वजनः, सौमन्यं ३. हितं, उपकारः ।

—बन्दी, सं. स्त्री. (का.) उपकारापकारी,
हिनाहिते २. पुण्यापुण्ये ।

नेग, सं. पुं. (सं. नैयतिक >) *सांस्कारिक-
उपकारः-पुरस्कारः, नैयतिकं दानम् ।

नेगिष्टिव, वि. (अ.) कृणात्मक (विशुद्धादि) ।

नेगो जोगी, सं. पुं., सांस्कारिकपुरस्काराधिका-
रिणः (पू. वङ्ग.) ।

नेजा, सं. पुं. (का.) कुंतः, प्राप्तः, शक्तिः
(स्त्री.) ।

—शरदार, सं. पुं. (का.) शैतिकः, प्रासिकः,
शस्त्रीकाः, कुंतधरः ।

नेता, सं. पुं. (सं. नेत्) सञ्चारकः, नायकः,
मार्ग-उपदेशकः-दर्शकः, अग्र-पुरो-गः, अग्र-

पुरः, सारः, मुख्यः २. प्रभुः, स्वामिन् ३. निर्वाहकः, प्रवर्तकः [नेत्री (स्त्री.)] ।

नेती, सं. स्त्री. (सं. नेत्रं) मंथनरज्जुः (स्त्री.), मंथशुणः ।

—घोती, सं. स्त्री., दीर्घपट्टिकया अन्नशोधनं (हठयोग) ।

नेत्र, सं. पुं. (सं. न.) नयनं, चक्षुस् (न.), दे. 'त्रोत्र' २. दे. 'नेती' ३. वस्त्रशालाका ।

—रंजन, सं. पुं. (सं. न.) कञ्जलम् ।

नेत्र्य, वि. (सं.) नयन-नेत्र-विषयक-संबन्धिन २. नयन नेत्र-हितकर ।

नेदिष्ठ, वि. (सं.) निकटतम २. अधिकतम ३. निष्पण ।

नेनुआ-वा, सं. पुं. (?) घोषः-पकः, आइतनी, देवदासी, ऐभी, महाफला ।

नेपचर, सं. पुं. (अं.) नेपचूनः, ग्रहविशेषः ।

नेपथ्य, सं. पुं. (सं. न.) देशः-पथः, परिधानं, वस्त्रं, आभरणं, अलंकारः २. (रंगशालायां) वेष्टनार्थं, अलंकारकोष्ठः ३. रंग-भूमिः (स्त्री.)-शाला ।

नेपाल, सं. पुं. (सं.) भारतोत्तरवर्ति देश-विशेषः । (सं. न.) दे. 'तावा' ।

—जा, सं. स्त्री. (सं.) नेपालजाता, दे. मैतसिल ।

नेब्यूला, सं. पुं. (अं.) नीहारिका ।

नेमि, सं. स्त्री. (सं.) नेमी, प्रधिः-चक्रपरिधिः (ब्र.) २. कूर्पातिकसमस्थलं ३. दृष्यममीपि रज्जुधारणार्थं त्रिद्वारुबन्धं, त्रिका ।

नेवत्ता, सं. पुं., दे. 'निमंत्रण' ।

नेवर, सं. पुं. (सं. नूपुरं) दे. 'नूपुर' २. अश-पादक्षतम् ।

नेवला, सं. पुं. (सं. नकुलः) पिगलः, सूत्री-वदनः, लोहिताननः, अंगूपः, कशः ।

नेवार, सं. पुं., दे. 'निवार' ।

नेस्त, वि. (फा.) नष्ट, लुप्त ।

—नाबूद्, वि. (फा.) नष्टग्रह, उच्छिन्न ।

नेस्ती, सं. स्त्री. (फा.) अनस्तित्वं, अभावः २. आलस्यं ३. नाशः ।

नेह, सं. पुं. (सं. स्नेहः) प्रेमन् (पुं.), प्रीतिः (स्त्री.) २. दूतं, तैलम् ।

नैतिक, वि. (सं.) नीति-विषयक-शास्त्रीय ।

नैत्य, वि. (सं.) नैत्यक-नैत्यक[त्री (स्त्री.)], नित्य-संबन्धिन-करणोप ।

नैन-ना, सं. पुं. (सं. नयनं) दे. 'त्रोत्र' ।

नैयुष्य, सं. पुं. (सं. न.) कौशलं, दार्ढ्यं, पादवम् ।

नैमित्तिक, वि. (सं.) निमित्त-न-य-वत्पत्र, अनैतियक ।

नैया, सं. स्त्री., दे. 'नाव' ।

नैयाथिक, सं. पुं. (सं.) न्याय-तर्क-व्याख्यानः, न्यायविद् (पुं.), तार्किकः ।

नैराश्य, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'निराशा' ।

नैर्ऋत, सं. स्त्री. (सं. नैर्ऋती) नैर्ऋतकण्ठः, अवाची-प्रतीच्योमेध्या दिक् (स्त्री.) ।

नैवेश, सं. पुं. (सं. न.) देव-बलिः (पुं.)-भोजनं, भोजः ।

नैसर्गिक, वि. (सं.) प्राकृतिक-सांख्यिक, स्वाभाविक-सांख्यिक (स्त्री (स्त्री.)), प्रकृति-स्वभाव-निष्ठ ।

नैहर, सं. पुं., दे. 'मायका' ।

नोक्, सं. स्त्री. (फा.) अर्थ, प्रयत्नः, अर्थः (पुं. स्त्री.), प्रांतः, मुखं, शिखरं, शंभुः (स्त्री.) २. उदग्र-बहिर्बलि, कोणः-अलाः ।

—त्रोक्, सं. स्त्री., नर्म-आलस्यः-भाषितं. परि- (री) हासः, व्यंग्यम् ।

—द्वार, वि., दे. 'नुकीला' ।

नोकीला, वि., दे. 'नुकीला' ।

नोच, सं. स्त्री. (हि. नोचना) लुचः, लुचनं २. अकस्मिक आच्छेदः, लुटनं ३. परिती याचनम् ।

नोचना, क्रि. म. (सं. लुचनं) लुच् (भा. प. से.), उत्पत् (चु.), आच्छिद् (क. प. अ.) २. वि-दु-दा (ब्र. प. ने.) ३. अपनी-निह-व्ययह (स्त्री. उ. अ.) ४. अश-वि-दु (प्र.), निचिद् (क. प. अ.), लुच् (तु. प. से.) ।

नोट, सं. पुं. (अं.) स्मृत्यै-द्वारा-लेखन-लेखनं, २. स्मरणं, स्मरण-निहं, अमिच्छां ३. पत्रं, पत्रिका ४. दिप्यतां-गी, टीका ५. धनपत्रकं, नाणकपत्रम् ।

—करना, क्रि. म., लिन् (तु. प. से.), अक (चु.) ।

—**बुक**, सं. स्त्री. (अं.) अभिज्ञानसंविधिः (स्त्री.) ।

नोटिस, सं. पुं. (अं.) विज्ञापना, व्यापना, सूचना, विज्ञप्तिः (स्त्री.) २. विज्ञापनं, सूचनापत्रम् ।

—**देना**, क्रि. स., विशा-प्रख्या (प्रे.) चूर्ण (चु.) ।

नोन, सं. पुं., (सं. लवणम्) ।

कैंचिया—, काचं, काचलवणं, काचसीवर्चलम् ।

काला—, कुण्डलवणं, सौवर्चलं, शूलनाशनं, हृष्यगन्धम् ।

खारी—, ऊपरजं, शीपरकं, सार्वैगुणं, मेलकलवणम् ।

मन्वर (कटीला)—, खण्ड-काल-विद्, लवणं, विडम् ।

मसूद्री—, सागरजं, सामुद्रिकं, लवणाब्धिजं, विकृष्ट-द्रौणी, लवणम् ।

साम्बर—, शाकम्भरीयं, रौनं, रौमकं, साम्बरं, सम्बरोद्भवम् ।

सैधा—, सैन्धवं, सिन्धु-उत्थं-उपल-जं-लवणं लवणोत्तमम् ।

नोना, सं. पुं. (सं. लवणम्) १. सीताफलं, गन्धगात्रं २. लवणमृत्तिका २. यवधारभेदः । वि., क्षार-लवणं, युक्तमय २. लवणयुक्तं, सुदिर ३. उत्कृष्टम् ।

नौ, वि. (सं. नवम्) । सं. पुं. उक्ता संख्या, तदकः (९) च ।

—**खंड**, सं. पुं., भूमेर्नव भागाः ।

—**गुना**, वि., नव-गुण-गुणितम् ।

—**दो ग्यारह होना**, सु., सत्वरं पलायु (भ्वा. आ. से.), प्रत्या (भ्वा. आ. अ.) ।

—**रत्न**, सं. पुं., दे. नवरत्नम् ।

नौ, वि. (का.; सं. नव) दे. 'नया' ।

—**आबाद**, वि., (का.) अधि, वासिन्-निवेशिन् ।

—**आबादी**, सं. स्त्री. (का.) नव, अधिनिवेश-वासितप्रदेशः ।

नौकर, सं. पुं. (का.) सेवकः, भृत्यः, दासः, किकरः, प्रेथ्यः, अनु-उप, जीविन्, परि, जनान्चारकः, अनु-परि, चरः, श्रेष्ठः, तिथोज्यः, बुद्धिभ्यः, वैतनिकः, भृत्यकः ।

—**चाकर**, सं. पुं., परिजनः, दासवर्गः ।

—**शाही**, सं. स्त्री., भृत्य, राज्य-शासनम् ।

नौकराना, सं. पुं. (का. नौकर) दे. 'दस्तूरी' २. सेवक-दास, पुरस्कारः-वैतनम् ।

नौकरानी, सं. स्त्री. (का. नौकर) सेविका, परिचारिका, दासी, श्रेष्ठी, प्रेथ्य, मुक्तिव्या, सेरं (रि) श्रेणी ।

नौकरी, सं. स्त्री. (का. नौकर) सेवा, दास्यं, प्रेथ्य-भृत्य, भावः ।

—**पेशा**, सं. पुं. (का.) सेवाजाविद्, वैतनिकः, दे. 'नौकर' ।

नौका, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'नाव' ।

नौकावर, सं. स्त्री., दे. 'निचावर' ।

नौज, अव्य० (अ. नऊज) ज्ञानं पदम्, मैवं भूयात् । मैवं भवतु ।

नौजवान, सं. पुं., (का.) दे. 'नवयुवक' ।

नौजवानी, सं. स्त्री. (का.) नौवर्धनं, ताक्ष्यं, कौमारं-रकं, नव-पूर्व-प्रथा, धयस् (त.) ।

नौता, सं. पुं., दे. 'निमंत्रण' ।

नौवङ्गिया, सं. पुं. (सं. नव + ङि. दङ्गा) नवोदयः, नवोत्थानम् ।

नौवत, सं. स्त्री. (का.) पर्यायः, वारः २. दशा, गतिः (स्त्री.) ३. वैभवादिशुचकं वाप्यम् ।

—**बजना**, सु., मंगलोत्सवः प्रवृत्तं (भ्वा. आ. से.) ।

नौमी, सं. स्त्री., दे. 'नवमी' ।

नौलखाखा, वि. (हि. नौ + खाल) नवलक्षार्थं, महार्थं, महामूल्यम् ।

नौसादर, सं. पुं. (का. नौशादर) नरत्तारः, अमृत-वज्र-शरं, शूलिकालवणम् ।

नौसिख-स्त्रिया, सं. पुं. (सं. नवशिक्षितः) अनभ्यस्तः, शैक्षः, नव, शिक्ष्यः-च्छात्रः ।

न्यक्कार, सं. पुं. (सं.) अभिभवः, पराजयः, न्यक्करणम् २. तिरस्कारः ।

न्यग्रोध, सं. पुं. (सं.) वटः, जटालः, अकरोद्भिन्, वृक्षनाथः, रक्तफलः ।

न्याय, सं. पुं. (सं.) पक्षपाताभावः, सम-दाशित्वं, साम्यं, सर्वसमता, धर्मः, न्याय्यता, न्यायिता, साधुता २. अपराधानुरूप-योग्य-न्याय्य, दंडः ३. आन्वीक्षिकी, तर्कः, तर्क-न्याय-विद्या-शास्त्रं, युक्तिवादः ।

—**करना**, क्रि. स., निर्णय (भ्वा. प. अ.), अव-संप्रष्ट (चु.), परिच्छिद् (ह. प. अ.), व्यवसो (दि. प. अ.) २. व्यवहारं दृष्ट (भ्वा. प. अ.) अवेष (भ्वा. आ. से.), कार्यं निर्णयं ।

न्यायाधीश

[३४४]

पंचमी

—कर्ता, सं. पुं. [सं. नृ (पुं.)] दे. 'न्यायाधीश' ।
 —सभा, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'न्यायालय' ।
 न्यायाधीश, सं. पुं. (सं.) न्याय-धर्म, अध्यात्म, अधिकाधिक, निर्णेतु-व्यवहारदृष्ट (पुं.) प्राड्वियकः, धर्माधिकरणिकः, इड, नायक-धरः ।
 न्यायालय, सं. पुं. (सं.) धर्म-न्याय, सभा, व्यवहारमंडपः, अधिकरणम् ।
 न्यायी, वि. (सं. -यित्) न्यय, पर-परावग-शील, न्यायवर्तिन् ।
 न्याय्य, वि. (सं.) उचित, धर्म्यं, युक्त, योग्य, तथ्य ।
 न्यारा, वि. (सं. निर + आरत् >) दूरस्थ, दूरवांतेन् २. विश्लिष्ट, पृथक् स्थित ३. अन्य, अपर, भिन्न ४. विलक्षण, विचित्र [न्यारी (स्त्री.)] ।
 न्यारिया, सं. पुं. (हि. न्यार) टावकः, बंधुलः ।

न्यारे, क्रि. वि. (हि. न्यारा) दूर, दूरे, आरात् २. पृथक्, विदिल्ल ।
 न्यास, सं. पुं. (सं.) निधानं, स्थापनं, न्यसनं, निक्षेपणं २. उपनिधिः (पुं.), निक्षेपः ३. अपणं, त्यागः ।
 न्यूल्लयस, सं. पुं. (अं.) नासिकणः ।
 न्यून, वि. (सं.) अल्पतर, अल्पीयस्, क्षोदी-यस्, लगीयस्, ऊन २. अवर, अधर ३. क्षुद्र, नीच ।
 न्यूनता, सं. स्त्री. (सं.) ऊनता, अल्पता, अपूर्णता, पर्याप्तताभावः २. हीनता, अभावः ।
 न्योछावर, सं. स्त्री., दे. 'निछावर' ।
 न्योतहरी, सं. पुं. (हि. न्योता) निमंत्रितजनः ।
 न्योता, सं. पुं., दे. 'निमंत्रण' ।
 न्योला, सं. पुं., दे. 'नेवला' ।
 न्योली, सं. स्त्री. (सं. नली) हठयोगक्रियाभेदः ।

प

प, देवनागरीवर्णमालाया एकविंशो व्यंजनवर्णः, प्रकारः ।
 पंक, सं. पुं. (सं. पुं. न.) कर्दमः, चिकिलः, दे. 'कोचड' ।
 पंकज, सं. पुं. (सं. न.) प्रभं, सरोज, दे. 'कमल' ।
 पंकजासन, सं. पुं. (सं.) चतुर्मुखः, ब्रह्मण (पुं.) ।
 पंकिल, वि. (सं.) सपंक, सकर्दम, सचिकिल ।
 पंक्ति, सं. स्त्री. (सं.) रेखा-या, लंखा २. ततिः, राजी-जिः श्रेणी-णिः, आवली-लिः (सब स्त्री.) ।
 —च्युत, वि. (सं.) प्रातिच्युत ।
 —दूषक, वि. (सं.) हीन, नीच, कुजति ।
 —पाचन, सं. पुं. (सं.) विषवरः, बाह्यश्लेष्मः, द्विजोत्तमः ।
 पंख, सं. पुं. (सं. पक्षः) वाजः, गरुड, पत्रं, पत्रं, छदः, हनूरुहम् ।
 पंखड़ी, सं. स्त्री. [सं. पक्ष्म (न.)] पुष्पदलम् ।
 पंखा, सं. पुं. (हि. पंख) व्यजनं, बीजनं, तालवृत्तम् ।
 —झलना, क्रि. ग., बीज (चु.) ।
 कपड़े का—, आलवर्तः ।
 चमड़े का—, श्वित्रम् ।
 पंखी, सं. स्त्री. (हि. पंखा) व्यजनकं-बीजनकम् ।
 पंखी, सं. पुं., दे. 'पक्षी' ।

पंगत-ति, सं. स्त्री. (सं. पक्तिः) दे. 'पक्ति' (१-२) २. सम्य, समाजः ।
 पंगु, वि. (सं.) श्रोण, खंज, खोल-ट ।
 पंच, वि. (सं. पंचन्) । सं. पुं., उक्ता संख्या, तदंशः (५) च २. लोकः, जनता ३. निर्णेतुसभा, मध्यस्थाः ।
 —तश्च, सं. पुं., (सं. न.) पंचभूतम् (पृथिवी-जलानलामिलाकाशानि) ।
 —तद, सं. पुं. (सं.) पंचतरीयुतः प्रांतविशेषः, *पञ्जापः ।
 —नाम्ना, सं. पुं. (सं. + कं) *पंचनिर्घणपत्रम् ।
 —प्राण, सं. पुं. (सं. प्राणाः) प्राणपंचकम् (प्राणः, अपानः, समानः, व्यानः, उदानः) ।
 —भूत, सं. पुं. (सं. न.) पंचतत्त्वं, पंच-तत्त्वानि-भूतानि ।
 —महायज्ञ, सं. पुं. (सं. यज्ञाः) ब्रह्म-देव-पितृ-वल्ग्वैश्वदेव-न्यशाः ।
 —रत्न, सं. पुं. (सं. न.) कनकहीरकनील-मणिपञ्चरत्नमौक्तिकः-नीति पंचरत्नानि ।
 पंचक, सं. पुं. (सं. न.) पंचवस्तुमुमुदायः ।
 पंचरत्न, सं. पुं. (सं. न.) मरणं, निधनं, मृत्युः, पंचता ।
 पंचम, वि. (सं. पंचमः-मीनं) २. सुंदर ३. दक्ष । सं. पुं., पंचमस्वरः (संगीत) ।
 पंचमी, सं. स्त्री. (सं.) शुक्ला कृष्णा वा पंचमी

निदिः (स्त्री.) २. विभक्तिविशेषः (व्या.)
 ३. द्रौपदी ।
 पंचांग, सं. पुं. (सं. न.) वारतिथितद्वययोग-
 करणात्मकपञ्चिका, पञ्चिक ।
 पंचायत, सं. स्त्री. (सं. न.) तापस्याभेदः, पंचायतवा ।
 पंचानन, वि. (सं.) पंच-मन्य-आस्य । सं. पुं.,
 क्रि. २. मिहः ३. मिह्यगणिः ।
 पंचाननी, सं. स्त्री. (सं.) दुर्गा २. सिंही ।
 पंचायत, सं. स्त्री. (सं. पंचायतनं >) *पंच-
 सभा-समितिः (स्त्री.) २. ग्रामसभा ।
 —नामा, सं. पुं. (हि. + का.) पंचसभानिर्ग-
 यपत्रम् ।
 पंचायती, वि. (हि. पंचायत) पंचसभा-
 संबन्धिन् २. सामान्य, सार्वजनिक ।
 पंचाली, सं. स्त्री. (सं.) पुत्तली, वक्रादिनिमित्त-
 त-पुञ्जिका २. द्रौपदी, पंचाली ।
 पंचो, सं. पुं., दे. 'पञ्चो' ।
 पंजर, सं. पुं. (सं.) कंकालः, देहास्थिमूलः
 २. देहः, शरीरं ३. दे. 'पंजरता' ।
 पंजा, सं. पुं. (का.) पंचकं २. करचरणानां
 पंचामुलीसमूहोऽभ्रनागो वा ३. (व्याघ्रादीनां)
 पादः ।
 —पंजे में, मु., अविधारे, बन्धे ।
 पंजाबी, वि. (पा.) पंचनद [नदी (स्त्री.)],
 सं. पुं., पंचनदवासिन् ।
 पंजारा, सं. पुं. (सं. पंजिकारः) तंतुकारः,
 कर्मकः २. दे. 'धुनिया' ।
 पंजीरी, सं. स्त्री. (का. पंजा) गोधूममिश्र चूर्ण,
 मिष्टान्नभेदः ।
 पंड़वा, सं. पुं., (?) नदिपी-पयस्विनी, श्यावः-
 शायकः ।
 पंड़ा, सं. स्त्री. (सं. पंडित >) तीर्थपुरोहितः ।
 पंड़ाहन, सं. स्त्री. (हि. पंड़ा) तीर्थपुरोहित-
 भत्या-पत्नी ।
 पंड़ाल, सं. पुं., (तमिल पंडल) दे. 'मंडप' ।
 पंडित, सं. पुं. (सं.) बुधः, कोविदः, प्रज्ञः,
 विद्वन् (पुं.) २. ब्राह्मणः । वि., ज्ञानिन्,
 बुद्धिमत् २. चतुर, दक्ष ३. संस्कृतज्ञ ।
 पंडिता, सं. स्त्री. (सं.) विदुषी, बुद्धिनती नारी ।
 पंडिताई, सं. स्त्री., दे. 'पांडित्य' ।
 पंडिताऊ, वि. (हि. पंडित) पंडित-ब्राह्मण-
 तुल्य-सदृश ।

पंडितानी, सं. स्त्री. (हि. पंडित) पण्डित-
 कोविद, पत्नी-नया २. ब्राह्मणी, द्वितीयना ।
 पंडुक, सं. पुं. (सं. पांडु >) करोतुजातीयः
 खगभेदः, पांडुकः, *भूकरः ।
 पंध, सं. पुं. (सं. पथिन्) नर्याः, कर्मन् (न.)
 २. सम्प्रदायः, मतं, धर्ममार्गः ३. रीतिः
 (स्त्री.) ।
 पंधी, सं. पुं. (हि. पंध) पथिकाः, दानिन्
 २. सांप्रदायिकः, मतबलबिन् ।
 पैंचाड़ा, सं. पुं. (सं. प्रवादः) आख्यानं, बृहत्-
 विन्दुत, कथा, अरुणिकारं वृत्तम् ।
 पंसारी, सं. पुं. (सं. पण्यशालिन >) औषधा-
 दिक्रयिन्, *पण्यशालिन् ।
 पंसेरी, सं. स्त्री. (सं. पंच + सेर >) पंचमेरी,
 पंचनेटकी ।
 पकड़, सं. स्त्री. (सं. प्रकृष्ट >) चहः, हणः,
 धः(परणं), ग्रमन्, आकलनं २. मज्ज-बाहु, युद्धं
 ३. शोचान्वेषणं, अक्षेपः, अपत्तिः (स्त्री.) ।
 —धकड़, सं. स्त्री., निरोधसेधौ, ग्रहणधरणे
 (दोनो दि.) ।
 पकड़ना, क्रि. क. (सं. प्रकृष्ट >) दह् (क.)
 प. से.), घृ (भ्वा. प. अ., चु.), आदा
 (जु. आ. अ.), अकल्व् (भ्वा. आ. से.),
 परामृश् (तु. प. अ.) २. निरुध् (क. उ.
 अ.), आभिध् (भ्वा. प. से.), बंध् (क. प.
 अ.) ३. आसद् (प्रे.), लब् (भ्वा. आ. से.,
 चु.), पश्चाद् आगत्य अतिक्रम् (भ्वा. प. से.),
 पश्चाद् आसिन् (तु. प. से.) ४. निवृ-स्तंन
 (प्रे.), स्थिरार्क ५. अन्विष (दि. प. से.),
 अनुसंधा (जु. उ. अ.) ६. ग्रस् (भ्वा.
 आ. से.), आक्रम् (भ्वा. प. से.) । सं. पुं.,
 दे. 'पकड़' ।
 पकड़नेवाला, सं. पुं., ग्रहीन्-धत्-भारयित्
 (पुं.) ; निरोधकः, आसेकः ३. ।
 पकड़वाना, पकड़ना, क्रि. प्रे., व. 'पकड़ना'
 के. प्रे. रूप ।
 पकड़ा हुआ, वि., गृहीत, धृत, निरुद्ध, ग्रस्त ।
 पकना, क्रि. अ. (सं. पक्व >) पक्व-श्रा-त्री
 (कर्म.), सिध् (दि. प. अ.) २. पाकं दब्
 (भ्वा. प. से.), पाकोन्मुह (वि.) भू ।
 (केशः) धवली-शुकली भू ।

पकवाहै

[३४६]

पगना

पकवाहै, सं. स्त्री. (हिं. पकवाना) पाचन-
मूल्य-भूतिः (स्त्री.) ।

पक्वान, सं. पुं. (सं. पक्वान, दे.) ।

पकाहै, स. स्त्री., दे. 'पकवाहै' २. पाचन, पाकः,
दे. 'पाक' ।

पकाना, कि. स. (हिं. पकना) पक् (भ्वा.
प. अ.), श्री (क्त. उ. अ.), आ (अ. प.
अ. ; चु. अपयति), (अत्रं) संस्कृत अधवा
सिध् (प्रे. सपयति) ।

पकाने योग्य, वि., पचनीय, श्राव्य, श्रेय्य ।

पकानेवाला, सं. पुं., पाचकः, गृहः, बलवः ।

पकाया हुआ, वि. पचन, पचिन, पाचित,
संस्कृत, श्राण ।

पकाय, सं. पुं. (हिं. पकना) पचनं, पाकः
२. (वगादीनां) सपुष्यं, परिः, पाकः ।

पका हुआ, वि., पक्व, सिद्ध, श्राण, गृत ।

पका(कौ)ड़ा, सं. पुं. (हिं. पकौड़ी) पक्व-
पौडः ।

पका(कौ)ड़ी, सं. स्त्री. (सं. पक्ववटी) पक्व-
वटिका ।

पक्का, वि. (सं. पक्व) सु-परि-पक्व, परिगत,
पक्वतामापन्न २. प्रौढ, सिद्ध, परि-सं-पूर्णं
४. संस्कृत, संशोधित ४. पक्व, श्राण, गृत
५. अनुभवित, बहुदर्शित ६. दक्ष, निपुण
७. दृढ, स्थिर ८. निश्चित, ध्रुव ९. प्रामाणिक,
प्रमाणसिद्ध ।

पक्क, वि. (सं.) दे. 'पक्का' (१, ३, ४) ।

पक्काज, सं. पुं. (सं. न.) संस्कृत-सिद्ध-श्रुत-
अन्नम् ।

पक्काशय, सं. पुं. (सं.) नाभ्यधोभागः, लक्ष-
चारमिको भागः ।

पक्ष, सं. पुं. (सं.) पार्श्वः-श्वं, पक्ष-पार्श्वः-भागः,
दुष्टिः (पुं.) २. दे. 'पक्ष' ३. दलं, गणः, संघः
४. अर्द्धमासः, मासार्द्धं ५. सहायकः, रुद्रि
(पुं.) ६. गृहं ७. मतं, विचारः ।

उत्तर—, सं. पुं. (सं.) सिद्धान्तः, कुतन्तः,
समाधिः (पुं.) ।

पूर्व—, सं. पुं. (सं.) शास्त्रीयप्रश्नः, सिद्धान्त-
विरुद्धयोक्तिः (स्त्री.), नीरर्थं, देख्यं, क्लृप्तिका ।

पक्षक, सं. पुं. (सं.) एतन्-चौर-द्वार-द्वार
(स्त्री.) २. पादर्वः-श्वं, पक्षभागः ३. सहायकः,
सहायकः ।

पक्षति, सं. स्त्री. (सं.) पक्ष-वाज-मूल्यः,
शुक्ला प्रथमतिथिः (स्त्री.), मनिपदा, प्रति-
पदी ।

पक्षपात, सं. पुं. (सं.) पक्षपातिनः, असम-
दुष्टिः-दुष्टिः (स्त्री.), असमता ।

पक्षपाती, सं. पुं. (सं.) पक्षः, पक्षधरः,
पक्ष-बल्यं-विन, सपक्षः, पक्षिकः ।

पक्षांत, स. पुं. (सं.) अमाकरया २. पूणिमा ।
पक्षाघात, सं. पुं. (सं.) पक्षपातः, आड-धं-
स्वभः, सतः ।

पक्षिणी, सं. स्त्री. (सं.) पक्षिणी, पक्षिणी,
गन्तवती. वाजिनो, नीदजा, लीडोज्ञा ।

पक्षां, सं. पुं. (सं. पक्षिन्) दिहना, विहंग-
गमः, लपः, शकुंतः-तिः (पुं.), शकुन्तः-निः
(पुं.), द्विवः, पविन्, पत्रिन, अंडजः,
वाजिन, वि. (पुं.), पत्रिः (पुं.), गस्तमय
(पुं.), पतनः, पतनः-गमः २. पक्षः, पक्ष-
पातिन् ।

पक्ष, सं. पुं. (सं. पक्षः) कलहः, विवादः
२. दोषः, दुष्टिः (स्त्री.) ३. विद्वः, प्रतिबंधः ।

पक्षवारा-ड़ा, सं. पुं. (सं. पक्षः + वारः >)
कृष्णः शुक्लो वा पक्षः २. अर्द्धमासः, मासार्द्धं ।

पखारना, कि. स. (सं. पक्षालनं) दे. 'धोना' ।

पखावज, सं. स्त्री. (सं. पक्षवाचं >) गृह-ग-
भेदः, *पक्षवाचम् ।

पखेरू, सं. पुं. (सं. पक्षालः (पुं.)) दे. 'पक्षी' ।

पखौरा-ड़ा, सं. पुं. (सं. पक्षः >) असास्थि
(न.), सुवस्त्रसंघः (पुं.) ।

पग, सं. पुं. (सं. पदकं) पादः, पदं, चरणः-पदं
२. पदं, क्रमः ३. पादग्यासः, चरणगतः ।

—इंडी, सं. स्त्री., पथा, चरणवीथिः (स्त्री.),
पथिकमार्गः, एकपटी ।

पगड़ी, सं. स्त्री. (सं. पदकः) उष्णीषः-पं,
शिरोवेष्टनं, वेष्टनं, वेष्टकं, चेलालकः ।

—बांधना, कि. सं., उष्णीषं परिधा (चु. उ.
अ.) धंध (क्. प. अ.) ।

—उछालना, चु., लवू कू, अप-अव-मद् (प्रे.) ।

—उतारना, मु., दे. 'पगड़ी उछालना'
२. लुं-ह (भ्वा. प. से.), धनं अपह
(भ्वा. उ. अ.) ।

—बदलना, मु., सीहार्दी रथा (प्रे. स्थापयति) ।

पगना, कि. अ. (सं. पाक >) रमेन मधु-

क्वथेन वा भिच् (कर्म.)-विलद् (द्वि. प. वे.), २. अनुरञ्ज् (कर्म.), स्निद् (द्वि. प. से.) ।

पगला, वि. पुं., दे. 'पगल' (पगली स्त्री.) ।

पगहा, सं. पुं. (सं. प्रग्रहः) पशुश्रीवाःपञ्जुः (स्त्री.), संदानम् ।

पगुराना, कि. अ., दे. 'जुगाली करना' ।

पघा, सं. पुं., दे. 'पगहा' ।

पघना, कि. अ. (सं. पयनं) पच् (कर्म.), परिष्णम् (म्वा. प. अ.), जू (द्वि. प. से.) ।
२. झल्लेन स्वकीयं कृत्वा उप-विनि-युञ्ज् (कर्म.) ।

पचपच, सं. स्त्री. (अनु.) पचपचध्वनिः (पुं.), कर्मसंज्ञाशब्दः २. पकःकं, कठिनः ।

पचपन, वि. सं. पंचपंचाशत् (नित्य स्त्री.) ।
सं. पुं., उक्ता संख्या, तदंकी (५५) च ।

पचपनवौ, वि. (हि. पचपन) पंचपंचाशत्तमः-मी-मं, पंचपंचाशः-शी-शं (पुं. स्त्री. न.) ।

पचमेल्, वि. (सं. पंचमेल् >) मिथित, व्या-मं, मिश्र ।

पंचरंगा, वि. (सं. पंचरंगं) पंचवर्णं २. नाना-अनेक-वहु-वर्ण-रंग ।

पचलडा, सं. पुं. (सं. पंच+हि.लड्) पंच-

पचलही, सं. स्त्री. [मृशिका, पंचतरो द्वारः ।

पचहत्तर, वि. [सं. पंचसप्ततिः (नित्य स्त्री.)] ।
सं. पुं., उक्ता संख्या, तदंकी (७५) च ।

पचहत्तरवौ, वि. (हि. पचहत्तर) पंचसप्तति-
तमः-मी-मं, पंचसप्ततः-ती-तं (पुं. स्त्री. न.) ।

पचाना, कि. स्त्री. (हि. पचना) दे. 'पकाना'
२. पच् (म्वा. प. अ.), जू (प्रे.), परिष्णम् (प्रे.) ३. परउत्थं जलेन आत्मसात् कृ ४. अनिपरिष्णमः शरीरं हि (प्रे. श्लाक्यनि) ।

पचाव, सं. पुं. (हि. पचना) वि-परि-, पाकः,
पक्तिः (स्त्री.), पचनं, परोष्णमः ।

पचास, वि. [सं. पंचाशत् (नित्य स्त्री.)] ।
सं. पुं., उक्ता संख्या, तदंकी (५०) च ।

पचासवौ, वि. (हि. पचास) पंचाशत्तमः-मी-
मं, पंचाशः-शी-शं (पुं. स्त्री. न.) ।

पचासा, सं. पुं. (हि. पचास) पंचाशिका ।

पचासी, वि. [सं. पंचाशीतिः (नित्य स्त्री.)] ।
सं. पुं., उक्ता संख्या, तदंकी (८५) च ।

पचासीवौ, वि. (हि. पचासी) पंचाशीतितमः-
मी-मं, पंचाशीतः-ती-तं (पुं. स्त्री. न.) ।

पचीस, वि. [सं. पंचविंशतिः (नित्य स्त्री.)] ।
उक्ता संख्या, तदंकी (२५) च ।

पचीसवौ, वि. (हि. पचीस) पंचविंशतितमः-
मी-मं, पंचविंशः-शी-शं (पुं. स्त्री. न.) ।

पचीसी, सं. स्त्री. (हि. पचीस) पंचविंशतिका
२. मानवशुषः प्रथम-पंचविंशतिवर्षाणि ३. कप-
दकंक्रोडादिदः ।

पचोतरा, सं. पुं. (सं. पंचोत्तरः >) पंचोत्तर-
रथः करः, विशाभागात्मकः पाथकरः ।

पच्चर, सं. स्त्री. (सं. अथवा अनु. पच् >) रंध-
पूरकः-कं काष्ठखंडः-ष्टं २. शंकुः (पुं.), कीलः ।
—**लगाहाना**, कि. त., काष्ठखंडेन रंधं पूर (जु.) ।

—**सारना**, मु., मोदीनिष्फली कृ ।

पचानवे, वि. [सं. पंचनवतिः (नित्य स्त्री.)] ।
सं. पुं., उक्ता संख्या, तदंकी (९५) च ।

पचौ, सं. स्त्री. (सं. वा अनु. पच् >) समतल-
तया निवेशः-प्रतिवापः-खचितिः (स्त्री.) ।

—**कारी**, सं. स्त्री. (हि. + का.) समतलतया
निवेशनं-प्रतिवापनं-खचनं-प्रतिभाणम् ।

पच्छिम, सं. पुं., दे. 'पश्चिम' ।

पच्छिमी, वि., दे. 'पश्चिमी' ।

पछड़ना, कि. अ., दे. 'पिछड़ना' ।

पछताना, कि. अ. (हि. पछतवा) पश्चात्तार्पं
कृ, अनुज्ञप् (द्वि. आ. अ.), अनुशी (अ.
आ. से.) ।

पछतानेवाला, सं. पुं. अनुज्ञापित्, अनुश-
यित्, पश्चात्तापित् ।

पछतवा, सं. पुं. (सं. पश्चात्तापः) अनुशयः,
अनुतापः, अनुशोकः, खेरः ।

पछत्तर, वि., सं. पुं., दे. 'पचहत्तर' ।

पछवौ, वि. (सं. पश्चिम) पश्चिमः-मा-मं,
प्रत्यङ्-ती-शो-त्यक्, प्रतीत्यः-व्या-व्यं, पश्चात्यः-
त्वा-त्वाच् । सं. स्त्री., पश्चिम-प्रतीत्य, पचनः-
वायुः ।

पछाह, सं. पुं. (सं. पश्चात् >) पश्चिमस्थो देशः,
पश्चिमप्रदेशः ।

पछाड, सं. स्त्री. (हि. पाछा), मूच्छोविपातः,
निःसंभपतनम् ।

—**खाना**, कि. अ., मूच्छया अवपत् (म्वा.
प. से.) ।

पछाड़ना, कि. स. (हिं. पछाड़) अर्ध-निपत् (प्रे.) २. (शत्रु) पराजि (भ्वा. आ. अ.) ।
पछाड़ी, सं. स्त्री. दे. 'पिछाड़ी' ।

पञ्जना, सं. पुं. (का.) इष्टकापकः ।

पट, सं. पुं. (सं.) वस्त्रं, वस्त्रं, सुश्रेष्ठकं २. निरस्करिणी, व्यवधानं, प्रतिस्तीरा ३. शिख्रपटः ४. धातुमय, पत्रं-पट्टः-पट्टिकाः ।

—खोलना, कि. स., निरस्करिणी अपस्-विचलं । (प्रे.) ।

—मंडप—वास, सं. पुं. (सं.) दे. 'मंडू' ।

पट, कि. वि. (चट का अनु.) झटिति, सपदि ।

पट (अनु.) पतन-ताडन, ध्वनिः (पुं.), पटिति ।

पट, सं. पुं. (देश.) ऊरुः (पुं.) । वि., अधो-मुखा, अपरोत्तर, श्वचमूर्द्धशय ।

पट, सं. पुं. (सं. पट्टः) कपा(ता)टः-टीटं शरं, दार (स्त्री.) ।

—खोलना—बंद करना, कि. स., दे. 'द्वार' ।

पटकना, कि. स. (अनु. पटक) उत्थाप्य भूमौ रमसा नि-अव-पद (प्रे.) २. बाहुयुद्धे प्रति-द्विदिनं जि (भ्वा. प. अ.) ।

पटकनी, सं. स्त्री. (हिं. पटकना) रमसा अप-नि-अव-पातः-पतनम् ।

—देना, कि. स., दे. 'पटकना' ।

पट(ट्ट)का, सं. पुं. (सं. पट्टकः) परिकरः, कटि-बंधनी-चलयम् ।

—बाँधना, मु., परिकरं बंध् (क्. प. अ.), उद्यत-सन्नद्ध (वि.) भू ।

पटकार, सं. पुं. (सं.) चौरः, स्तेनः । न., जोगबंधम् ।

पटङ्गारा, सं. पुं. (सं. पट्ट-ट्टं) काष्ठ-शरः, फलकः-फलकं २. काष्ठ-दार, पीठम् ।

—कर देना, मु., निर्बलो-निःस्वां कु २. अव-उत्-सद् (प्रे.), उच्चिद्ध (क्. प. अ.) ।

पटङ्गीरी, सं. स्त्री. (हिं. पटङ्गारा) पट्टक-अं २. पट्टिका ३. पद्य, चरणवाधिः (स्त्री.), नाद-चरण-पत्रः ।

पटना, सं. पुं. (सं. पट्टनं) कुसुमपुरं, पुष्प-पुरं, पाटलिपुत्रम् ।

पटना, कि. अ. (हिं. पट = भूमि की सतह के बराबर) आ-समा-छाद् (कर्म.), आ-संवृ (कर्म.) २. व्याप्-अ-रु (कर्म.) ३. पृ-प

(कर्म.), आ-प्र-मं-पूर (कर्म.) ४. सिक् (कर्म.) ५. संमत् (दि. आ. अ.), एकविंसी म् ३. कणात् मुत् (कर्म.) ।

पटपट, सं. स्त्री. (अनु.) पटपटाशब्दः, पटपट-ध्वनिः (पुं.) । कि. वि., सपटपटशब्दम् ।

पटरानी, सं. स्त्री. (सं. पट्टरानी) पट्ट, देवी-महिषी, राज्ञः, महिषी ।

पटल, सं. पुं. (सं. ल.) छदिस् (न.), छदिः (स्त्री.) २. आवरणं, आच्छादनं ३. निरस्करिणी, व्यवधानं ४. आ-स्तरः, फलकः-क ५. वृष्टेरावर्णकं ६. समूहः, पटली ७. अध्यायः, परिच्छेदः ८. नयः, राशिः (पुं.) ९. परि-च्छदः १०. तिलकः-अं ११. दे. 'मोतियाविंद' ।

पटवा, सं. पुं. (सं. पट्ट-नि.) बाह्यः *पट्टबाह्यः, *पट्टहारः ।

पटवाना, कि. प्रे., व. 'पटना' के प्रे. रूप ।

पटवारगरी, सं. स्त्री. (हिं. पटवारी + का. गरी) ग्रामभूलेखकत्वं २. ग्रामभूलेखपटम् ।

पटवारी, सं. पुं. (सं. पट्ट + हिं. वार) *ग्राम-भूलेखकः ।

पटसन, सं. पुं. (सं. पट्टः + शणं >) शणं, अतसी, मनुषी ।

पटह, सं. पुं. (सं.) देडुभिः (पुं.), बेरी, पणवः ।

पटहार, सं. पुं. दे. 'पटका' ।

पटा, सं. पुं. (सं. पट्टः) काष्ठ, पट्ट-पीठं २. मिथ्यावदतः ३. लघुदः, बंदः ।

पटाई, सं. स्त्री. (हिं. पटनः) पटकेन आच्छा-दनम् २. पटलाच्छादनभूतिः (स्त्री.) ।

पटाक, सं. स्त्री. (अनु.) तारध्वनिः (पुं.), महा-शब्द-नादः ।

पटाका-खा, सं. पुं. (अनु. पटक) अग्निक्वीट-नकमेरुः, *पटशकः ।

पटाक्षेप, सं. पुं. (सं.) द्यवनिवा-व्यवनिवा-पद-अपटो-निपातः-अवपातः ।

पटाना, कि. स., व. 'पटना' के प्रे. रूप ।

पटापट, कि. वि. (अनु. पट) सपटपटशब्दम् । सं. स्त्री., पटपटाशब्दः ।

पट्ट, वि. (सं.) कुशल, दक्ष, निपुण, प्रवीण, निष्णात, विशारद, विदग्ध ।

पट्टता, सं. स्त्री. (सं.) कौशल-स्य, दक्षता,

पट्टेबाज

[३४६]

पड़ना

नेपथ्य-पं., प्रावीण्यं, वैद्यक्षण्यं, पटुत्वं, वैद-
 श्वम् ।
 पट्टेबाज, सं. पुं. (हि. + का.) खडगाभ्यामिन्,
 मिथ्यास्त्रियोषः ।
 पट्टेल, सं. पुं. (हि. पट्टा) ग्रामणीः (पुं.),
 ग्रामाध्यक्षः २. दक्षिणभारतवर्षे उपाधिभेदः ।
 पटोर-ल, सं. पुं. (सं. पटोलः) लता-नाज-
 अमृत(ता)-कटु-नाग, फलः, कुम्भारिः (पुं.),
 कासमर्दनः ।
 पट्ट, सं. पुं. (सं. पुं. न.) पीठ-ठी, उप-आसनं
 २. पट्टिका ३. धातुमय-पत्र-पट्टिका ४. चर्मन्
 (न.) फलकः-कं ५. देवणपाषाणः, शिला
 ६. उष्णीषः-पं ७. ऋग-, बन्धन-आवेष्टनं ८.
 उत्तरीयं ९. नगरं १०. चतुष्पथः-यं, शृंगाटकं
 ११. राज-मिहासनं १२. कौशेयं १३. शर्ण
 १४. दे. 'पट्टा' ।
 पट्टन, सं. पुं. (सं. न.) पत्तनं, पुरं, नगरं
 २. महानगरम् ।
 पट्टा, सं. पुं. (सं. पट्टः) पट्टोलिका, आविहित-
 कालार भूभ्यधिकारत्नं २. (कुम्भपुर-दीनां)
 ग्रंथं. घोषापटः ३. केश-पाशः-कलापः ४. पीठं
 ५. चर्ममय-कटिबंधनी-परिकरः ६. दे. 'चप-
 रःस' ७. खड्गभेदः ८. अधिकारपत्रम् ।
 पट्टे पर दाने, कि. स., आविहितभयान्
 निरूपितमूल्यात्वात् वा अथवा विस्तृतं (तु.
 प. अ.) ।
 पट्टी, सं. स्त्री. (सं. पट्टिका) काष्ठ-पट्टिका
 २. पाठः, प्रपाठकः, ३. शिक्षा, उपदेशः
 ४. बन्धनात्मकोपदेशः, ५. (वस्त्रादिकस्य)
 दीर्घ-सूत्र-दाकलं ६. ऋग-, बन्धन-आवेष्टनं ७.
 *जन्धावेष्टनी ८. श्रीगणपदभेदः, पट्टी ९. पक्ति-
 ततिः (स्त्री.) १०. प्रमाथिताः केशाः ११.
 रिकथभागः १२. खटवायाः पान्थं-काष्ठ-दंडः
 १३. मिष्टान्नभेदः ।
 —ब्राँधना, कि. स., पट्टिकां दंधं (क्. प. अ.)
 ऋणं आच्छदं (चु.) ।
 —द्वार, सं. पुं. (हि. + क.) अंशिनं, भग-
 माहिन् ।
 —द्वारी, सं. स्त्री. (हि. + का.) अंशित्वं,
 भागदाहित्वम् ।
 पट्टी २, सं. स्त्री. (सं.) अथकश्रीबंधनस्त्रजुः (स्त्री.),
 कक्ष्या, नद-श्री २. लडाटभूषा ३. यन्त्रकम् ।

पट्ट, सं. पुं. (हि. पट्टी) श्रीगणपदभेदः,
 नौशारः ।
 पट्टा, सं. पुं. (सं. पुष्टः) तरुणः, युवकः,
 युवन्, कुमारकः २. शायः, पीठः, डिन्नः
 ३. मल्लः, शालुयोधः-भिन् ४. शीर्षस्थूलपत्रं
 ५. स्वसा, रनायुः (स्त्री.), पेशी ।
 पठक, सं. पुं. (सं.) पाठकः, वाचकः ।
 पठन, सं. पुं. (सं. न.) अध्ययनं, पाठः,
 अधीतिः (स्त्री.), वाचनं २. श्रावणं, उच्चारणम् ।
 —पाठन, सं. पुं. (सं. न.) अध्ययनाध्या-
 यन-ने (हि.) ।
 पठनीय, वि. (सं.) पठितव्यं, अज्ञेयव्यं,
 पाठ्यं, वाचनीयं, पठन-अध्ययन-अर्हं ।
 पठान, सं. पुं. (पश्चो. पुरुताता) दयमजाति-
 भेदः, *पञ्चनूनः *पठानः ।
 पठानी, सं. स्त्री. (हि. पठान) पञ्चनी,
 पठानी २. पठानत्वं, पञ्चनूनत्वम् ।
 पठार, सं. पुं. (सं. प्रस्तारः >) अधित्यका,
 २. प्रस्तारः ।
 पठावनी, सं. स्त्री. (सं. प्रस्थापनम्) प्रेषणं,
 प्रदितिः (जी.) २. प्रस्थापनभक्तिः । (स्त्री.) ।
 पठित, (वि. सं.) अधीतं, वाचितं २. श्रावितं
 ३. साक्षरं, विश्वावाद, विद्वम् ।
 पडलती (-त्री), सं. स्त्री. दे. 'परलती' ।
 पडताल, सं. स्त्री. (सं. परिमोहनं >) अनु-
 संधानं, अन्वेषणं २. अन्वीक्षणं, विमर्शः,
 निरूपणम् ।
 —करना, कि. स., अनुसंधा (जु. उ. अ.),
 अन्विष् (दि. प. से.) २. विमृश् (तु. प.
 अ.), निरूप् (चु.), अनु-परि-ईक्ष् (भ्वा.
 आ. से.) ।
 पडतालना, कि. स., दे. 'पडताल करना' ।
 पडती, सं. स्त्री. (हि. पडना) अकृष्ट-अहल्य-
 भूमिः (स्त्री.) ।
 पडदादा, सं. पुं. (सं. प्र+तातः >) प्रपिता-
 महः ।
 पडदादी, सं. स्त्री. (हि. पडदादा) प्रपिता-
 मही ।
 पडना, कि. अ. (सं. पतनं) अवन्ति, पद्
 (भ्वा. प. से.), प्रश-मृत्स् (भ्वा. आ. से.),
 चु (भ्वा. आ. अ.) २. घट-भूट (भ्वा. आ.
 से.) : आ-सं-पद्, प्रसंज (कर्म.) संबृद्, सं-

समा-पद् (दि. आ. अ.) ३. संविद् (तु. प. अ.), विश्वम् (दि. प. से.); स्त्री (अ. आ. से.), स्वप् (अ. प. अ.) ४. रुग्ण (वि.) घृत्, रोगेण अभिन् (कर्म.) ५. प्रविद् (तु. प. अ.) ।

क्या पढ़ी है, सु., कोऽर्थः, किं प्रयोजनम् ।

पढ़नाना, सं. पुं. (सं. प्र. + दे. नाना) प्रमाता-महः ।

पढ़नानी, सं. स्त्री. (हिं. पढ़ना) प्रमाता-महो ।

पढ़ (रे) वा, सं. स्त्री., दे. 'प्रतिपदा' ।

पढ़वाल, सं. पुं., दे. 'परवाल' ।

पढ़ाव, सं. पुं. (हिं. पढ़ना) प्रयाणभंगः, निवेशः, अवस्थितिः (स्त्री.) २. निवेश-विधाम, स्थानम् ।

पढ़ोस, सं. पुं. (सं. प्रतिवासः या प्रतिवेशः) निकट-समीप-संनिहित, देशः; संनिधिः (पुं.), २. सांनिध्यं, प्रातिवेश्यम् ।

पढ़ोसी, सं. पुं. (हिं. पढ़ोस) प्रतिवेशः शयः-स्थान, प्रतिवासिन्, प्रातिवेशिकः, [पढ़ो-सिन् (स्त्री.)=प्रति, वैशिनी-वासिनी इ.] ।

पढ़ना, क्रि. स. (सं. पठनं) पठ् (भ्वा. प. से.), अधि-इ (अ. आ. अ.), (अपने आप पढ़ना) अनुवच् (प्रे.) २. वच् (प्रे.), उच्चर् (प्रे.) २. अभ्यस् (दि. प. से.), आबृत् (प्रे.) । सं. पुं. तथा भाव, पाठः, पठनं, अध्ययनं, बालनं, उच्चारणं, अभ्यसनं, अभ्यासः, आवर्तनं, आवणम् ।

—लिखना, सं. पुं., पाठलेखी-पठनलेखने, विधाम्नासः, शिक्षा ।

पढ़नेयोम्य, वि., दे. 'पठनीय' ।

पढ़नेवाला, सं. पुं., अध्येत्-पठित् (पुं.) बालकः, पाठकः, अधीयानः [अध्वेत्री, पठित्री, पाठिका (स्त्री.)] ।

पढ़ा हुआ, वि., दे. 'पठित' ।

पढ़वाना, क्रि. प्रे., व. 'पढ़ना' के प्रे. रूप ।

पढ़ा, वि. (सं. पठित, दे.) ।

—लिखा, वि., विद्म्, उपात्तविष, साक्षर, शिक्षित, व्युत्पन्न ।

पढ़ाई, सं. स्त्री. (हिं. पढ़ना) दे. 'पढ़ना' सं. पुं. । २. अध्यापनं, पाठनं, शिक्षणं ३. अध्या-

पन, शैली-रीतिः (स्त्री.) ४. अध्ययन-अध्यापनं, गुरुकं-वेतनम् ।

पढ़ाना, क्रि. स. (हिं. पढ़ना) पठ्-शिक्ष् (प्रे.), अधि-इ (प्रे. अध्यापयति), शास् (अ. प. से.), उपदिश् (तु. प. अ.) । सं. पुं. तथा भाव, अध्यापनं, उपदेशः, शिक्षा-क्षणं, पाठनम् ।

पढ़ानेवाला, सं. पुं., अध्यापकः, शिक्षकः, गुरुः, उपदेष्टृ-शास्त्रु (पुं.) ।

पण, सं. पुं. (सं.) घृत्, देवनं, दुरोद्धरं, कैतवं २. गृहः (शर्त) ३. मूल्यं, निवेशः ४. गुरुकः-लब्धं, प्रतिफलं ५. धनं, रिकथं ६. पणितल्यं, विक्रीयवस्तु (न.) ७. व्यवसायः, व्यवहारः ८. स्तुतिः (स्त्री.) ९. मुष्टिमानं १०. (पैसा) ताम्रमुद्राभेदः, पणमुद्रा ।

पतंग, सं. पुं. (सं. >) पत्राश्लः-श्ल, चिह्न-भासं, *पतंगः २. मूर्त्तः ३. खगः ४. बालभः ।

—उड़ाना, क्रि. स., पत्रचिह्न-पतंगं उड्ढी (प्रे. उद्घाययति) ।

—बाज़, सं. पुं., पतंगोड्डायकः ।

—बाज़ी, सं. स्त्री., पतंगक्रीडा ।

पतंगा, सं. पुं. (सं. पतंगः) शलभः २. स्फुलिंगाः, अग्निकणः ।

पतंजलि, सं. पुं. (सं.) योगदर्शनकारकवि-विशेषः २. महानाथकाशी मुनिविशेषः ।

पतं, सं. पुं. (सं. पतिः) भर्तृ, पवः २. प्रभुः, स्वामिन् ।

पतं, सं. स्त्री. (सं. प्रत्ययः >) प्रतिष्ठा, गौरवं, मानः, यशस् (न.), कीर्तिः (स्त्री.) ।

—उतारना या लेना, सु., अप-अव-मन् (प्रे.), दुष् (प्रे. दूयति) ।

—रखना, क्रि. स., गौरवं रक्ष् (भ्वा. प. से.) ।

पतसङ्क, सं. स्त्री. (सं. पत्रं + हिं. शङ्कना) शिशिरः, शिशिरतुं (पुं.) (माषफाल्युत्त-मःसौ) २. अवनतिकालः, संकटनयः समयः ।

पतत्प्रकर्ष, सं. पुं. (सं.) काव्यदोषभेदः (स०) ।

पतत्र, सं. पुं. (सं. न.) पक्षः, वातः, छद्ः २. धानं, बहनं, युग्मं, वज्रः ।

पतत्रि, सं. पुं. (सं.) पक्षिन्, पत्रिन्, पतत्रिन्, खगः, विहगः ।

पतन, सं. पुं. (सं. न.) अव-नि-अधः, पातः,

च्यवनं, च्युतिः (स्त्री.), ध्वंसः, अंशः, २. अयकर्मः, अवनतिः (स्त्री.) ३. विन शः, गुरुः (पुं.) ४. बहिष्कारः, अपांशयत्वम् ।
 —शील, वि. (सं.) धातुक, पदवाहु ।
 पतला, वि. (सं. पात्रट) प्र-भनु, सुभ, २. कृश, क्षाम, क्षीण ३. जलबहुल, प्रवाहिन ४. विरल, मनस्वरहित ।
 —करना, कि. स., वि., द्रु-ली (प्रे.), विरल-यति (ना. धा.), तनु कृ, तक्ष् (स्वा. प. से; भ्वा. प. वे.); कृशी कृ ।
 —होना, कि. अ., क्षि-अपचि (कर्म.), तनुविरली भू; कृशी भू; द्रवी भू, विली (कर्म.) :
 पतलापन, सं. पुं. (हि. पतला) तनुता, तनुत्वं, सूक्ष्मत्वं २. कार्य, क्षीणता ३. जल-बहुलत्वं ४. वैरल्यम् ।
 पतलून, सं. स्त्री. (अं. पैटयून) *पतलून, आंगलपादायाम् ।
 पतचार-ल, सं. स्त्री. (सं. पात्रपालः) कर्णः, केनिपातः-सकः ।
 पत्ता, सं. पुं. (सं. प्रस्थयः >) (पत्रादि का) वाहन्यामन् (भ.), पत्रसंज्ञा २. (धरादि का) नामधातुसंकेतः, गृहपरिचयः, निशेकसंकेतः ३. बोधः, शानं ४. रहस्यं, गुह्यं ५. चिह्नं, लक्षणम् ।
 पताका, सं. स्त्री. (सं.) वै-जयती-तिका, ध्वजः, केतनं, केतुः (पुं.) कदली-लिका ।
 पति, सं. पुं. (सं.) धवः, हृदय-जीवित-ईशः, प्राणनाथः, वरः, परिणेतृ-भर्तृ-पाणिग्रहिवृ (पुं.), प्रियः, कांतः, स्वामिन्, गृहिन, रमणः । २. प्रभुः (पुं.), अधिपतिः (पुं.) ।
 —व्रत, सं. पुं. (सं. न.) पति-भक्तिः (स्त्री.)-निष्ठा, पातिव्रत्यम् ।
 —व्रता, वि. स्त्री. (सं.) सध्वी, सचरित्रा, सती ।
 पतित, वि. (सं.) गलित, अव-नि-अधः, पतित, च्युत, ध्वस्त, सस्त २. धर्म-आचार-भ्रष्ट ३. पापिन, पातकिन् ४. जातेः-समाजाद् च्युत-बहिष्कृत ५. अधम, नीच ।
 —पावन, वि. (सं.) पाप-पतित-पावक-शोधक-उद्धारक, अयतनाशक, पापमोचक ।
 पतीला, सं. पुं. (हि. पतीली) स्थाली, दे. 'देगनी' ।

पतीली, सं. स्त्री. (सं. पातिर्ली >) उखा, दे. 'देगची' ।
 पते की बात, सं. स्त्री., गुरुवार्ता, गुप्तवृत्तम् ।
 पतोखा, सं. पुं. (हि. पत्ता) दे. 'दीना' ।
 पतोहू, सं. स्त्री., दे. 'पुत्रयधू' ।
 पत्तन, सं. पुं. (सं.) पुरं, नगरं; महती पुरी ।
 पत्तल, सं. स्त्री. (सं. पत्रं >) पत्रं, *पत्रस्थाली-लिका २. पत्रस्थं भोजनम् ।
 जिस पत्तल में खाना उसी पत्तल में छेद करना, मु., उपकारकमेव तु (स्वा. प. अ)-दाध् (भ्वा. आ. से.), उपकारकरत्यैवापकारः ।
 पत्ता, सं. पुं. (सं. पत्रं) दे. 'पत्रं' २. कोठा-पत्रम् ।
 पत्नी, सं. स्त्री. (हि. पत्ता) पत्रकं, पर्णकं २. अंशः, भागः ३. पुष्पदलम् ।
 —दार, सं. पुं. (हि + का.) अंश-भाग, ग्राहिन-हारिन्, हरः २. पत्रमय ।
 पत्थर, सं. पुं. (सं. प्रत्तरः) शिला, अश्म-न्यावन (पुं.), पाषाणः, उपलः, इश(व)द् (स्त्री.), सूत्रमलः (पुं.), काचकः, पारदीटः २. वर्षाशिला, इन्द्रोपलः ३. रत्नं ४. न किञ्चिदपि । वि., क्रूर, निर्दय २. गुरु, भारवत् ३. कीकस, बृह ।
 —चटा, सं. पुं., (१-३) वान-सर्प-मीन, भेदः ४. कृपणः, मिलपचः ।
 —फोड़, सं. पुं. दे. 'फुरदुर' ।
 —की लकीर, मु., अक्षय्य, अक्षर, नित्य, शाश्वत, निश्चित ।
 छाती पर—रखना, मु., प्रतीकारक्षमत्वया सह (स्वा. आ. से.), निरुपायतया सृष्ट (दि. उ. से.) ।
 —पड़ना, मु., नश् (दि. प. वे.) ध्वंस (भ्वा. आ. से.) ।
 —पसीजना, मु. सृष्ट-दयः-द्रोभू ।
 —होना, मु., निश्चल (वि.) स्था (भ्वा. प. अ.) २. निर्दय-निघृण (वि.) जन् (दि. आ. से.) ।
 पत्नी, सं. स्त्री. (सं.) जाया, भर्ता, दाराः (नित्य पुं. चतु.) स-सह-धर्मिणी, गृहिणी, अर्द्धाभिन्दी, सहचरी, जती, वधूः (स्त्री.), परिग्रहः, शत्रु, कलत्रं, ऊडा ।
 —शाला, सं. स्त्री. (सं.) पत्नी, क्रीड-गृहम् ।

पत्र, सं. पुं. (सं. न.) पर्ण, छदनं, पलाशं, दलः लं, छदः २. (पुस्तकादीनां) पत्रं, पर्णं, पृष्ठं ३. समाचार-वृत्तः, पत्रं ४. संदेशः, पत्रं, लेखः-स्य ५. लेखपत्रं ६. (धातुवादिः पट्टः-ट्टं, फलकः-कम्) ।

—**कार**, सं. पुं. (सं.) वृत्तपत्र-लेखकः-संपादकः ।

—**वाहक**, सं. पुं. (सं.) लेखहारः, संदेशहारः ।

—**व्यवहार**, सं. पुं. (सं.) पत्रविनिमयः, लेखव्यवहारः ।

पत्रांजन, सं. पुं. (सं. न.) मशी-मी-सी, मशिः, पिः-सिः (सव (स्त्री.)) ।

पत्रा, सं. पुं. (सं. पत्रं >) पत्रांगं, पत्रिका २. पृष्ठं, पर्णं, पत्रम् ।

पत्राचार, सं. पुं. (सं.), पत्र-व्यवहारः-विनिमयः ।

पत्रावलि, सं. स्त्री. (सं.) पर्ण-दल-छद-श्रेणी-राजी-आवली २. पत्रभंगः ।

पत्रिका, सं. स्त्री. (सं.) संदेश-पत्रं २. साम-यिक-पुस्तक-बंधः ३. समाचार-वृत्त-पत्रं ४. लघुलेखः ।

पत्री, सं. स्त्री. (सं.) लिपिपत्रिका, लघुलेखः २. संदेश-पत्रम् ।

जन्म—, सं. स्त्री. (सं.) जन्मपत्रिका ।

पथ, सं. पुं. (सं.) पथिन् (पुं.), मार्गः, अश्वन् (पुं.), वत्सन् (न.), पदवी-विः (स्त्री.), २. रीतिः (स्त्री.), विपानम् ।

—**गामी**, सं. पुं., दे. 'पथिक' ।

—**(प्र)दर्शक**, सं. पुं. (सं.) मार्ग-दर्शक-उप-देशकः, नेतृ, नायकः ।

पथरी, सं. स्त्री. (हि. पत्थर) प्रस्तर-कटोर-रिका २. अदनरी, अदमीरः-रं ३. अधीलः (स्त्री. बडु.), पापानशकलाः (पुं. बडु.) ४. दे. 'चकमक' ५. पल्लिचठरः-रं ६. जामरः, ज्ञाणी ।

पथरीला, वि. (हि. पत्थर) प्रस्तर-उपल, मंकुल-आर्कांग-बहुल ।

पथिक, सं. पुं. (सं.) अश्वगः, अश्वनीनः, अश्वन्थः, पान्थः, पथिलः, वात्रि(तु)कः, यातुः-यंतुः (पुं.), पथकः ।

पथ्य, सं. पुं. (सं. न.) उपयुक्ताहारः । २. मंगलम् । वि., रसाश्वकर, आरोग्य-वह ।

पद, सं. पुं. (सं. न.) पदः, चरणः, अंग्रः

(पुं.) २. पाद-पद, विद्धं-मुद्रा ३. पदं, पद-पाद, न्यास-विशेषः, वि-क्रयः, ४. स्थानं, स्थितिः (स्त्री.), पदवी ५. वृत्तिः (स्त्री.), व्यवसायः ६. पथं, छन्दस् (न.), ७. पद्यपदः, छंदश्चरणः ७. उपाधिः (पुं.), मानपदं ८. सुसिद्धन्तं प्रातिपदिकं, सार्वभक्तिकः शब्दः (व्या.) ९. भक्तिनीतिः (स्त्री.) १०. निःश्रे-यसं, मुक्तिः (स्त्री.) ।

—**चर**, सं. पुं. (सं.) पदगः, पदातिकः-तिः (पुं.) ।

—**च्छेद**, सं. पुं. (सं.) संधिसनासयुक्तवाक्य-स्य पदानां विधानः (व्या.) ।

—**च्युत**, वि. (सं.) ऋष्याधिकार, अधि-कारच्युत ।

—**दलित**, वि. (सं.) पाद-पद-आकांक्ष-मांदित २. अपकपित, अवपीडित ।

पदक, सं. पुं. (सं. न.) कीर्ति-प्रतिष्ठा, मुद्रा ।

पदवी, सं. स्त्री. (सं.) पदं, वृत्तिः-स्थितिः, (स्त्री.) स्थानं २. उपाधिः (पुं.), उपमान-पदं, कीर्तिविद्धं ३. मार्गः ४. रीतिः (स्त्री.) ।

पदाति, सं. पुं. (सं.) प(पा)दातिकः, पदिकः, पक्तिः (पुं.) प(पा)दगः, प(पा)दाद (पुं.), पादातः ।

पदाना, कि. स., व. 'पादना' के प्रे. रूप ।

पदार्थ, सं. पुं. (सं.) मूलं, द्रव्यं, वस्तु (न.), अर्थः २. अर्थार्थः ३. धर्मार्थकः-प्रमोक्षाः ४. द्रव्याद्युक्तमार्थः प्रमेयविषयाः (दर्शन.) ।

—**विज्ञान**, सं. पुं. (सं. न.) विज्ञानं, भौतिक-शास्त्रम् ।

पदार्पण, सं. पुं. (सं. न.) उग्यार्पणं, पादन्य-सनं, शुभागमनम् ।

पदावली, सं. स्त्री. (सं.) शब्दश्रेणी २. गीत-बंधः ।

पद्धति, सं. स्त्री. (सं.) मार्गः, पथः, पथिन् २. पक्तिः-वतिः (स्त्री.) ३. रीतिः (स्त्री.), परिपाटी-ट्टिः (स्त्री.) ४. प्रकारः, विधा ५. संस्कारविधिदर्शको ग्रन्थः ।

पद्धिरी, सं. स्त्री. (सं. पद्धिका) मात्रिकसम-भेदः (सा०) प्रतिचरण १६ मात्रा, अन्तं में जगण, उ० नभ रैन सदन तममय विलास । पद अटकत कटक दंभजाल ।

पद्म, सं. पुं. (सं. न.) सरोजं, पुंडरीकं, दे.

पपीहा

[३२४]

परचाना

पपीहा, सं. पुं. (देश.) चातकः, मेघजीवनः, सारंगः, स्तोत्रकः ।

पपीता, सं. पुं. (देश.) स्थूलैरण्डः, महापञ्चा-कुलः २. पीपीकरः, क्रीडनकमेदः ।

पपीहा, सं. पुं. (अनु.) दे. 'चातक' ।

पपैया, सं. पुं. (अनु.) चातकः २. पीपीकरः, क्रीडनकमेदः ३. आश्रवृक्षकः ।

पपोटा, सं. पुं. (सं. प्रपटः >) दे. 'पलक' ।

पब्लिक, सं. स्त्री. (अं.) लौकाः, जनता, जनाः । वि., सार्व., जनिक-जनीन-लौकिक ।

—**प्रासिक्यूटर**, सं. पुं. (अं.) राजकीय-प्राभियोगी ।

—**वर्क्स डिपार्टमेंट**, सं. पुं. (अं.) लोक-निर्माणविभागः ।

पब्लिशर, सं. पुं. (अं.) पुरतक-ग्रंथ-प्रकाशकः । दे. 'प्रकाशक' ।

पय, सं. पुं. [सं. पयस् (न.)] दुग्धं, क्षीरं २. जलं ३. अन्नम् ।

पयश्चित्री, सं. स्त्री. (सं.) क्षीरिणी, दोन्धी, दुग्धदा, दुधा ।

पयाल, सं. पुं. (सं. पयालः-लं) निष्कलकांडः, निदशस्यो धान्यनालः ।

पयोज, सं. पुं. (सं. न.) सरोजं, पद्मं, दे. 'कमल' ।

पयोद्, सं. पुं. (सं.) मेघः, दे. 'बादल' ।

पयोधर, सं. पुं. (सं.) कुम्भः, स्त्रीरतनः २. ऊयस् (न.), आपीर्ज ३. मेघः ।

पयोधि, } सं. पुं. (सं.) सागरः, समुद्रः ।

परंच, अव्य. (सं. परं + च) अपरं न, अपि च, अथ च २. तथापि, किंतु, परंतु ।

परंतप, वि. (सं.) अरिमर्दन, रिपुसदन ।

परंतु, अव्य. (सं. परं + तु) किंतु, परं, तथापि ।

परंपरा, सं. स्त्री. (सं.) अनु-क्रमः, आनुपूर्वी-रूपं, पूर्वापरक्रमः २. संतानः, संततिः (स्त्री.) ३. परिपटी-तिः (स्त्री.), प्रथा ।

—**गत**, वि. (सं.) परंपरीण, सांप्रदायिक-पौराणिक [-की (स्त्री.)], क्रम-आगत-प्राप्त ।

परं, वि. (सं.) अपर, अन्य, इतर, स्वातिरिक्त, आत्मभिन्न २. परकीय, अन्यदीय, अन्य-, पर- (समासार्थं मे), अन्यस्य, परस्य ३. इर,

दूर-स्थ-वर्तिन, विप्रकृष्ट ४. अपर, उत्तर, उत्तरकालीन, पाश्चात् ५. अतिरिक्त, भिन्न ६. उत्तम, श्रेष्ठ ७. लीन-मग्न-परायण । (उ. स्वार्थपर=स्वार्थमग्न) । सं. पुं. (सं.) शत्रुः-अरिः (पुं.) ।

परं, अव्य. (सं. परं) तदनु, ततः, तत्पश्चात् २. परंतु, किंतु, तथापि ।

परं, प्रत्य. (सं. उपरि) प्रायः सप्तमी विभक्ति से (उ. कुर्त्सी पर=आसंयाम्), अधि, उपरिष्ठात् ।

परं, सं. पुं. (फ्रा.) पक्षः, गरुड (पुं.) वाजः ।

—**द्वार**, वि., सपक्ष, वाजिन्, पक्षिन्, गरुडमत ।

—**कट जाना**, मु., अक्षम-असमर्थ (वि.) भू ।

—**न मारना**, मु., गंतुं न शक् (स्वा. प. अ.) ।

—**निकलना**, मु., इर् (दि. प. अ.), गर्व (स्वा. प. से.), प्रगल्भ (स्वा. आ. से.) ।

परकार, सं. पुं. (फ्रा.) ।

परकीय, वि. (सं.) दे. 'परं' (२) ।

परकीया, सं. स्त्री. (सं.) नायिकाभेदः, पर-पुरुषानुरागिणी ।

परकोटा, सं. पुं. (सं. परिकूटं >) प्राकारः, वप्रः-प्रं, तालः, वरणः ।

परख, सं. स्त्री. (सं. परीक्षा) विमर्शः, यक्ष्म-निरुपणं परीक्षणं-दर्शनं २. विवेकः, विचारणा, परिच्छेदः ।

परखना, क्रि. स. (सं. परीक्षणं) परीक्ष् (स्वा. आ. से.) विशृष् (तु. प. अ.) २. विविच् (रु. उ. अ.), विवृ-विच् (जु. उ. अ.), परिच्छिद् (रु. प. अ.) सं. पुं. दे. 'परख' ।

परखनेवाला, सं. पुं., दे. 'परीक्षक' ।

परखा हुआ, वि., दे. 'परीक्षित' ।

परगना, सं. पुं. (फ्रा.) उपमंडलविभागः, ग्रामसमूहः, *परिगणः ।

परगहनी, सं. स्त्री. (सं. प्रग्रहणी >) सुरण-कारणां नालाकार उपकरणभेदः, *प्रग्रहणी ।

परचना, क्रि. अ. (सं. परिचयनं) परिचि (स्वा. उ. अ.), सुपरिचित (वि.) भू, रूढ-वद्, सत्य-सौहृद (वि.) भू ।

परचा, सं. पुं. (फ्रा.) (परीक्षायाः) प्रश्न-पत्रं २. संदेश-पत्रं ३. पत्रखंडः-डम् ।

परचाना, क्रि. स., व. 'परचना' के प्रे. रूप ।

परचून

[३२४]

परमार्थ

परचून, सं. पुं. (सं. पर=अन्य + चूर्ण=आटा >) प्रकीर्ण-विविध, पण्यं, *परचूर्णम् ।
 परचूनिद्या, सं. पुं. (हि. परचून) स्तौकशः-अल्पशः विकथित-विकेत्, खंडजगिन् (पुं.) :
 परछत्ती, सं. स्त्री. (सं. प्र+हि. छत) *प्र-छदिः (स्त्री.)-प्रदिस (न.)-पटलं २. तृण-पटलं-छदिः ।
 परछन, सं. स्त्री. (सं. परि + चर्चनं) (वधुःसंबन्धिनीभिः वरस्य) पर्यर्चनं-पर्यर्चो ।
 परछाई, सं. स्त्री. (सं. प्रतिच्छाया) छाया, छाया-वृत्तिः (स्त्री.) २. प्रनिविष्टः वं, प्रति-रूपं-कलं-मूर्तिः (स्त्री.) ।
 परजौट, सं. पुं. (हि. परजा) *गृहभूमिकरः ।
 परतंत्र, वि. (सं.) पराधीन, पराधत्त, पराश्रित, परवश, परचलविन, परनिधन ।
 परतंत्रता, सं. स्त्री. (सं.) पराधीनता, पराश्रयः, परावलंबनं, परवशता इ. ।
 परत, सं. स्त्री. (सं. पत्रं >) अथवा स्तरः, तलं २. पुटः, भंगः, बलिः (स्त्री.) इ. दे. 'पपड़ी'(२) ।
 परतल, सं. पुं. (सं. पटतलं >) *अश्व-गोष्ठी-प्रसेवा-भारः ।
 —का टट्ट, सं. पुं. पृष्ठ-यः, स्तौरिन् ।
 परतला, सं. पुं. (सं. परि + तन्) खड्ग-कृपाण, पट्टिका ।
 परती, सं. स्त्री., दे. 'पड़ती' ।
 परदा, सं. पुं. (का.) अंपटी, तिरस्करिणी, कांठपट-रक्तः, ज(य)वनिका, प्रतिसा- (सी)रा २. न्यक्वानं ३. अवगुंठनं-टिका ४. (नारीणां) एकांतवासः, परपुरुषादर्शनं ५. स्तरः, तलं ६. व्यक्थायककुटुम्बं ७. पटलं, आवरकं ८. आवरणं, आच्छादनं ९. वाद्यानां स्वरोद्देशमस्थानम् ।
 —उडाना या खोलना, सु., २स्वयं-गुहं प्रकट-यति (ना. धा.)-प्रकटश् (प्रे.) ।
 —करना या रखना, सु., अवगुंठं (जु.), अंतःपुरे वस् (भ्वा. प. अ.) ।
 —नशीन, वि. (का.) अवगुंठनवती, अंतः-पुरवासिनी ।
 परदादा, सं. पुं., दे. 'पड़दादा' ।
 परदेश, सं. पुं. (सं. परदेशः) विदेशः ।
 परदेशी, सं. पुं. (सं. परदेशीयः) विदेशीयः, पारदेशिकः, वैदेशिकः । वि., अन्य-पर, देशीयं ।

परनाना, सं. पुं., दे. 'पड़नाना' ।
 परनाला, सं. पुं. (सं.) प्रणालः ।
 परनाली, सं. स्त्री. (सं. प्रणाली) परि(री)-वाहः, सरणिः (स्त्री.), निर्गमः जलनिस्सरण-मार्गः, जलौच्छ्वासः ।
 पर(वृ)पोता, सं. पुं. (सं. प्रपौत्रः) पुत्रपौत्रः, पौत्रपुत्रः ।
 पर(वृ)पोती, सं. स्त्री. (सं. प्रपौत्री) पुत्रपौत्री, पौत्रपुत्री ।
 परब्रह्म, सं. पुं. (सं. न.) परमेश्वरः, निर्गुणो जगदीश्वरः ।
 परभूत, सं. स्त्री. (सं. पुं.) कौंकिलः, पिकः ।
 परम, वि. (सं.) उत्तम, श्रेष्ठ २. आदिम, प्रथम इ. प्रधान, मुख्य इ. अत्यधिक अत्यंत ।
 —गति, सं. स्त्री. (सं.) } मोक्षः, मुक्तिः
 —धाम, सं. पुं. (सं. मन(न.)) } (स्त्री.),
 —पद, सं. पुं. (सं. न.) } अपवर्गः,
 निःश्रेयसम् ।
 —ज्ञान, सं. पुं. (सं. न.) ब्रह्मज्ञानम् ।
 —तत्त्व, सं. पुं. (सं. न.) मूलसत्ता २. ईश्वरः ।
 —पिता, सं. पुं. [सं. नृ (पुं.)] } परमेश्वरः
 —पुरुष, सं. पुं. (सं.) } सच्चिदानं-
 नंदो जग-
 —ब्रह्म, सं. पुं. [सं. अन्न (न.)] } दीश्वरः ।
 —हंस, सं. पुं. (सं.) संन्यासिभेदः २. ईश्वरः ।
 परमानंद, वि. (अं.) स्थिर, स्थायिन् ।
 परमाक्षर, सं. पुं. (सं. न.) ओङ्कारः, प्रगवः ।
 परमाणु, सं. पुं. (सं.) भूजलानलानिलानां मूलभूतमो लवः ।
 —बाद, सं. पुं. (सं.) परमाणुभ्यो जगद्वचना इति न्यायवैशेषिकसिद्धांतः ।
 परमात्मा, सं. पुं. (सं. एतन्) परमेश्वरः, परब्रह्मन् (न.) जगदीश्वरः, वि., धातु (पुं.)-श्रोम (अव्य.) सच्चिदानंदः ।
 परमानंद, सं. पुं. (सं.) अत्यंतसुखं २. ब्रह्मः सायुज्यसुखं इ. आनंदस्वरूपं ब्रह्मन् (न.) ।
 परमास, सं. पुं. (सं. न.) पायसः सं, श्रीरिका ।
 परमायु, सं. पुं. [सं. युस् (न.)] अधिका-धिक-युस् (न.), जीवनसीमा (यह मनुष्यो की १२० वर्ष दे) ।
 परमार्थ, सं. पुं. (सं.) उत्कृष्टवस्तु (न.) २. यथार्थतत्त्वं इ. मोक्षः ४. सुखम् ।

परमार्थी

[३२६]

पराजय

परमार्थी, वि. (सं. धिन्) तत्त्वज्ञानाभिलाषिन् ।
 २. सुमुख, मोक्षेच्छुक ।
 परमेस्वर, सं. पुं. (सं.) दे. 'परमात्मा'
 २. विष्णुः ३. शिवः ।
 परला, वि. (सं. पर) पर, परस्थ, परवतिन्,
 २. अनंतर, निरंतराल ३. दूर, दूर, स्थ वतिन् ।
 परलोक, सं. पुं. (सं.) लोकांतरं २. देहांतर-
 प्राप्तिः (स्त्री), प्रेत्यभावः, पुनर्जन्मन् (न.) ।
 —गमन, सं. पुं. (सं. न.) मृत्युः (पुं.) निधनम् ।
 —वासी, वि. (सं. सिन्) मृत, विपन्न,
 दिवंगत, स्वग्नि ।
 —सिधारना, सु., दिवं-स्वर्ग-पंचस्व गम् ।
 परवरदिगार, सं. पुं. (फा.) पालकः २. ईश्वरः ।
 परवरिज्ञ, सं. स्त्री. (फा.) पालनं, पोषणं,
 भरणम् ।
 —करना, क्रि. स., परि-प्रति, वा (प्रे. पाल-
 यति), संवृष्ट-परिपुष् (प्रे.) ।
 परवल, सं. पुं. (सं. पटोलः) दे. 'पटोर' ।
 परवश-दश, वि. (सं.) दे. 'परतंत्र' ।
 परवशता, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'परतंत्रता' ।
 परवा^१, सं. स्त्री. (फा.) आशंका, चिन्ता,
 व्यग्रता, उद्वेगः २. आश्रयः, अवलंबः ।
 परवा^२, सं. स्त्री. (सं. 'प्रतिपदा' दे०)
 परवाङ्ग, सं. स्त्री. (फा.) उल्लयनं, उत्पत्तनं,
 खे विसर्पणम् २. गर्वः, अवलेपः ।
 परवानगी, सं. स्त्री. (फा.) अनुमतिः (स्त्री),
 अनुज्ञा ।
 परवाना, सं. पुं. (फा.) आश-आगमन-अनुज्ञा-
 पत्रं २. पतंगः, शालभः, दीपशङ्कुः (पुं.) ।
 —राहदारी, सं. पुं., दे. 'पासपोट' ।
 परवाल, सं. पुं. (सं. पर+वालः >) पक्ष-
 प्रकोपः ।
 परशु, सं. पुं. (सं.) परशुः (पुं.) परश्वधः,
 परश्वधः, कुडारः ।
 —राम, सं. पुं. (सं.) मार्गवः, जामदग्न्यः,
 पशुरामः ।
 परसा, सं. पुं., दे. 'परशु' ।
 परसाल, सं. पुं. (सं. पर+फा. साल)
 (पिछला) गतवर्षे परसाल (अव्य.) २. (आगामी)
 उत्तर-पर-आगामि-वर्षम् । क्रि. वि, परस,
 गतवर्षे २. आगामि, वत्सरे-वर्षे ।

परसो, क्रि. वि. [सं. परश्वः (अव्य.)] धः-
 परदिनं २. ह्यः-पूर्वदिनम् ।
 परस्पर, क्रि. वि. (सं. परस्परं) अन्योन्यं,
 इतरेतरं, मिथः (सव अव्य.) ।
 —का, वि., परस्परस्थ-अन्योन्यस्थ-इतरेतरस्थ
 (केवल एकवचन में), परस्परः, अन्योन्यः,
 इतरेतरः, मिथः ।
 परहित, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'परोपकार' ।
 परहेज, सं. पुं. (फा.) कुपथस्थागः, पथ-
 सेवनं, मितः, अशनं-पानं, आहारः-पानाशन-
 गिबनः २. संयमः, जितेन्द्रियता, दीप-दुर्गुण-
 त्यागः ।
 —करना, क्रि. स., कुपथं त्यज् (भ्वा. प.
 अ.), २. शोषान् परि-वि-वज् (चु.) ।
 —गार, सं. पुं. (फा.) कुपथस्थागिन्, संय-
 ताहारः २. संयमिन्, जितेन्द्रियः ।
 —गारी, सं. स्त्री. (फा.) दे. 'परहेज' (१-२) ।
 पराँडा, सं. पुं. (हि. पलटना ?) *परम-वृत्त-
 गर्भः, रोटिका, परोटः ।
 परांत, सं. पुं. (सं.) मृत्युः, निधनम् ।
 —काल, सं. पुं. (सं.) मृत्युनमयः २. सुमुख्यां
 देवत्यागकालः ।
 परा^१, सं. स्त्री. (सं.) ब्रह्म-उपनिषद्, विद्या ।
 वि. स्त्री. (सं.) परवतिनी, दूरस्था २. श्रेष्ठा ।
 परा^२, सं. पुं. (फा. पर+पंख ?) पंक्तिः-ततिः
 (स्त्री.) ।
 पराकाष्ठ, सं. स्त्री. (सं.) अतिमिः-परा-
 कोटिः (स्त्री.), चरमस्तीमा, परमाधिः (पुं.),
 अत्यंतता ।
 पराक्रम, सं. पुं. (सं.) वीर्यं, शौर्यं, विक्रमः,
 वीर्यं, ओजस्-सहस्र-तरस (न.), रणीत्याहः ।
 पराक्रमी, वि. (सं. मिन्) वीर, शूर, विक्र-
 मिव, विक्रांत, वीर्य-विक्रम, शालिन, साहसिक
 [स्त्री (स्त्री.)], तेजस्विन् [स्त्री (स्त्री.)] ।
 पराग, सं. पुं. (सं.) पुष्प-कुसुम, भूलिः (स्त्री.)-
 रजसु (न.)-रेणुः (पुं.) २. रजसु, भूलिः
 ३. स्नानीयसुगन्धिचूर्णं ४. चंदनं ५. कपूर-
 रजसु ।
 पराङ्मुख, वि. (सं.) विमुख, परानीन २.
 प्रतिकूल, विपरीत, विरक्त [पराङ्मुखी
 (स्त्री.)] ।
 पराजय, सं. पुं. (भं.) पराभवः, हारी-रिः
 (स्त्री.) भंगः ।

पराजित

[३६७]

परिच्छेद

पराजित, वि. (सं.) हारित, पराभूत, विर-
वि., जित ।

पराजित, सं. स्त्री. (सं. पावं-) पारीजा ।

पराधीन, वि. (सं.) दे. 'परतंत्र' ।

पराधीनता, सं. स्त्री. (सं.) 'परतंत्रता' ।

पराभव, सं. पुं. (सं.) दे. 'पराजय' २. तिर-
स्कारः, भान्दवाप्तिः (स्त्री.) ३. विनाशः ।

पराभूत, वि. (सं.) दे. 'पराजित' २. तिरस्कृत
३. ध्वस्त, नष्ट ।

परामर्श, सं. पुं. (सं.) विवेचनं, विचारणा,
वितर्कः, मंत्रणा, २. उपदेशः अनुशासनम् ।

परायण, वि. (सं.) लग्न, भग्न, प्रवृत्त, पर,
निरत (प्रायः समासतः मै, उ. धर्मपरायण=
धर्मपर इ.) ।

पराय्या, वि. पुं. (सं. पर) दे. 'पर' (२) ।

परार, सं. पुं. [सं. परारि (अन्व.)] पूर्वतर-
वत्सरः, गतवृत्तीयवर्षः-वर्षम् ।

पराई, सं. पुं. (सं. न.) शंखः-खं, अष्टादशांक-
वती संख्या (१००००००००००००००००००) ।

परावर, वि. (सं.) पूर्वापर २. निकट्तर ३.
सर्वात्म, सर्वश्रेष्ठ ।

परावर्त, सं. पुं. (सं.) (निर्णयादिकस्य) परा-
प्रत्या-वृत्तिः (स्त्री.) वर्तनम् ।

—उपग्रहार्, सं. पुं. (सं.) अभियोगस्य निर्ण-
यस्य वा पुनर्विचारः ।

परावर्तन, सं. पुं. (सं. न.) प्रतिनि-नि-पर-
प्रत्या-वृत्तिः (स्त्री.) वर्तनं, अप-कर्मण-सरणं-
दानम् ।

पराशर, सं. पुं. (सं.) व्यासपितृ ।

पराश्रय, सं. पुं. (सं.) अन्य-पर, संश्रयः-अव-
लम्बः-अवलम्बनं २. दे. 'परतंत्रता' ।

पराश्रित, वि. (सं.) अन्य-पर, संश्रित-अव-
लम्बित २. दे. 'परतंत्र' ।

परास्तु, वि. (सं.) प्रेतः-नातं, मृतः-तातनं,
प्रेतः-नातं, निजत्वः-जातं, प्रणीतः-तातम् ।

परास्त, वि. (सं.) दे. 'पराश्रित' ।

परास्त, सं. पुं. (सं.) अपरास्तः, विकालः ।

परिदा, सं. पुं. (का.) पक्षिण, पञ्चिन, पतञ्चिन,
खगः ।

परिकर, सं. पुं. (सं.) परिजनः, अनुचरवर्गः
२. कटिबंधः, भ्रगाङ्गिकाबांधः ३. कुटुम्बं
४. समूहः ५. अर्थात्कारभेदः (सा.) ।

परिकल्पित, वि. (सं.) रचित, आविष्कृत २.
कल्पित, उद्भावित ३. निश्चित ।

परिक्रमा, सं. स्त्री. (सं. मः) प्रदक्षिणः-णा-णं,
(पूजार्थं) परिभ्रमणम् ।

—करता, कि. स., परिकम् (भ्वा. प. से. ;
भ्वा. आ. अ.), (पूजार्थं) परि-अम् (भ्वा.
प. से.) प्रदक्षिणां कृ ।

परिखा, सं. स्त्री. (सं.) स्वातं, खेयम् ।

परिख्यात, वि. (सं.) विख्यात, विश्रुत ।

परिगणन, सं. पुं. (सं. न.) संख्यानं, सम्यक्
गणनम् ।

परिगृहीत, वि. (सं.) स्वीकृत, उररीकृत २.
प्राप्त, लब्ध २. अंतर्भूत, समाविष्ट ।

परिग्रह, सं. पुं. (सं.) आदानं, ग्रहणं, प्रति-
ग्रहः २. लब्धिः-प्राप्तिः (स्त्री.) ३. धनादि-
संग्रहः ४. स्वी-अंगी-कार ५. विवाहः ६. पत्नी
७. परिजनः, परिवारः ८. परिवेष्टनम् ।

परिग्र, सं. पुं. (सं.) परिघातनः लोहमुखल्लुङ्गः
२. परि-घातः-हननं ३. अर्गलः-कं-लः-ली
४. मुद्गरः ५. शूलः ६. कलसः ७. भवनं
प्रतिबंधः, बाधा ।

परिचय, सं. पुं. (सं.) परिः, ज्ञानं, अभिज्ञता,
बोधः २. प्रमाणं, उपपत्तिः (स्त्री.) ३. अभ्यासः ।

परिचर, सं. पुं. (सं.) अनुचरः, सेवकः, दे.
'परिचारक' ।

परिचर्या, सं. स्त्री. (सं.) सेवा, शुश्रूषा-वणा,
उपस्थान, उपचारः, उपासनम् ।

परिचायक, सं. पुं. (सं.) परिचयदायकः,
परि-अभि-ज्ञापकः २. सूचकः, बोधकः, बोधकः,
निर्देशकः, ज्ञापकः । परिचायिका (स्त्री.) ।

परिचारक, सं. पुं. (सं.) सेवकः, किंकरः,
दासः, मृत्युः, प्रेष्यः, भुजिष्यः, नियोज्यः ।

परिचालन, सं. पुं. (सं. न.) (कार्यं)
निर्वाहः, संचालनं २. प्रचोदना, प्रेरणं-णा,
प्रोत्साहनम् ।

परिचिन्त, वि. (सं.) अभि-परि-ज्ञात, परिचय-
विशिष्ट २. ज्ञात, बुद्ध, विदित ।

परिच्छद, सं. पुं. (सं.) परिधानं, देशः-पः,
वसनं २. आच्छादनं ३. राजविद्यानि (न.
बहु.) ४. राजसेवकवर्गः ५. परिजनः, परि-
वारः, कुलं ६. उपस्कारः, संभारः, सामग्री ।

परिच्छेद, सं. पुं. (सं.) अध्यायः, प्रकरणं,

परिजन

[३२८]

परिवर्तन

उज्जासः, उच्छ्वासः २. विभंजनं, खंडनं
३. सीमा, इयत्ता ४. विवेकः ५. निर्णयः
६. विभागः, विभाजनम् ।
परिजन, सं. पुं. (सं.) परिवारः, कुटुंबं, कुलं
२. दास-अनुचर-वर्गः, परिवारः ।
परिणत, वि. (सं.) विकृत, रूपांतर-विकारं
प्राप्त, सविकार २. पक्व ३. जीर्णं, जठराग्नौ
पक्व ४. पुष्ट, प्रौढ ।
परिणय, सं. पुं. (सं.) विवाहः, दारपरिग्रहः ।
परिणाम, सं. पुं. (सं.) फलं २. अंतः, पाकः,
उदकः ३. विकारः, विक्रिया, रूपांतर-अवस्थां-
तर-प्राप्तिः (स्त्री.), दशापरिवर्तनम् ।
परिताप, सं. पुं. (सं.) दुःखं, क्लेशः, व्यथा
२. संतापः, शोभः २. अनु-पश्चात्, तापः ।
परितोष, सं. पुं. (सं.) कृतिः (स्त्री.), संतोषः
२. हर्षः, मोदः ।
परित्याग, सं. पुं. (सं.) सर्वथा त्यागः-वर्जनं-
उत्सर्गः २. निष्कासनं, बहिष्करणम् ।
परित्राण, सं. पुं. (सं. न.) रक्षा, रक्षणं, पालनं
२. हस्तधारणं, मारणोपकरणं निवारणम् ।
परिधान, सं. पुं. (सं. न.) वसनं, वस्त्रं, वास्तु
(न.), परिच्छेदः, नेपथ्यं, वेशः-यः २. वस्त्रैः
आवेष्टनं-आच्छादनं, वस्त्रधारणम् ।
परिधि, सं. स्त्री. (सं. पुं.) परिभाहः, परिवेशः,
मंडलं २. सूर्य-चंद्र-शमी-पर्यटलं, ३. प्राचीरं,
वृत्तिः (स्त्री.) ४. नियतमार्गः ।
परिधेय, वि. (सं.) धार्यं, दसनीय, धारणीय,
परिधातव्य ।
परिनिर्वाण, सं. पुं. (सं. न.) नुक्तिः-परि-
निवृत्तिः (स्त्री.), मोक्षः ।
परिनिष्ठा, सं. स्त्री. (सं.) चरमसोमः, परमा-
वधिः (पुं.), पराकाष्ठा, पारः-रम् ।
परिनिष्ठित, वि. (सं.) पारंगत, मृत्तिपुण,
मुदक्ष, विज्ञ ।
परिपक्व, वि. (सं.) सम्यक्, सिद्ध-संस्कृत-पक्व
२. (जठरे) सुष्ठु-जीर्ण-पक्व-परिणत ३. प्रौढ,
सुविकसित, पुष्ट ४. अनुभवित, बहुदर्शित
५. कुशल, प्रवीण ।
परिपक्वता, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'परिपाक' ।
परिपाक, सं. पुं. (सं.) (जठरे) पक्वत्वं, पान्नं
परणामः २. प्रौढता, पूर्णता ३. अनुभवः,

बहुदर्शिता ४. नैपुण्यं, प्रावीण्यं ५. परिणामः,
फलं ६. कर्म, विपाकः-फलम् ।
परिपाटी, सं. स्त्री. (सं.) अनु, क्रमः, परिपाटिः
(स्त्री.), परंपरा, आनुपूर्वा-न्वै २. स्त्री,
प्रणाली, विधिः (पुं.) ३. रीतिः-पद्धतिः (स्त्री.),
संप्रदायः ।
परिपालन, सं. पुं. (सं. न.) रक्षणं, पालनं
२. रक्षा, धाम्पम् ।
परिपूर्ण, वि. (सं.) व्याप्त, संभूत, संपूर्णं, पूरित,
निर्भर २. अनित्यं, संतपित, २. अवसित,
सुगाप्त ।
परिभ्र(भा)व, सं. पुं. (सं.) तिरस्कारः, अप-
भव-मानः, अनादरः ।
परिभाषा, सं. स्त्री. (सं.) लक्षणं, निर्वचनं,
निर्देशः, परिच्छेदः, प्रबन्धिः, सम्यक्ज्ञः २. अर्थ-
संक्षेपनिर्वाहार्थं संकेत-संज्ञा-विशेषः ३. परि-
ष्कृतभाषणं ४. निंदा ।
परिभूत, वि. (सं.) पराङ्मः २. तिरस्कृत ।
परिभ्रमण, सं. पुं. (सं. न.) पर्यटनं, विचरणं
२. घूर्णनं-ना ३. दे. 'परिधि' ।
परिमल, सं. पुं. (सं.) आमोदः, शीतलं,
सुवासः, सुगंधः २. मैथुनम् ।
परिमाण, सं. पुं. (सं. न.) मानं, प्रमाणं,
प्र-परि-मितिः (स्त्री.) २. मात्रा, भरः
३. विस्तारः, इयत्ता ४. परिधिः (पुं.) ।
परिमाज्जन, सं. पुं. (सं. न.) परिभाजनं, परि-
शोधनं, परिष्करणम् ।
परिमाजित, वि. (सं.) परि-शोधित-भावित,
परिष्कृत, परिशोधित ।
परिमित, वि. (सं.) परिच्छिन्न, सावधिक,
समीप, समयोद्द-दित, २. अल्प, न्यून ।
परिरंभ, सं. पुं. (सं.) उपगृहनं, परि-
परिरंभण, सं. पुं. (सं. न.) ध्वंगः, आलिंगनम् ।
परिवर्त, सं. पुं. (सं.) वि-आ-वर्तनं आकृतिः
(स्त्री.), पूर्णं २. विनिमयः, परिवृत्तिः (स्त्री.) ।
परिवर्तन, सं. पुं. (सं. न.) विकारः, विकृतिः
(स्त्री.), विक्रिया, रूपांतरं, दशांतरं २. विनि-
मयः, परिदानं, नैमेयः, व्यति(ती)हारः,
परावर्तः, विमयः, वैमयः ३. आवर्तनं, घूर्णनं
४. काल-युग-समाप्तिः (स्त्री.) ।
-करणम्, क्रि. ल., परिवृत्त (प्र.), परिवर्तनं-

परिवर्तित

[३२६]

परिहार

अन्यथा कृ २. प्रतिदा (जु. उ. अ.) विनि-
निमे (भ्वा. आ. अ.) ।

—होना, कि. अ., परिवृत् (भ्वा. आ. से.),
विकृ (कर्म.), विपर्यस (दि. प. से.) २. व्यतिह
-प्रतिदा-विनिमे (कर्म.) ।

परिवर्तित, वि. (सं.) विकृत, रूपांतरित,
दर्शनं प्राप्त २. विनिमित्त, व्यतिहृत, विनि-
मयेन प्राप्त ।

परिवर्द्धन, सं. पुं. (सं. न.) परिवृद्धिः (स्त्री.),
वृद्धणं, स्फीतिः (स्त्री.) ।

परिवर्द्धित, वि. (सं.) विस्तृत, विस्तीर्ण, प्र-
वि-नत, उपचित २. विशालीकृत, वृद्धि नीत,
अप-स्थित ।

परिवा, सं. स्त्री., दे. 'प्रतिपदा' ।

परिवाद, सं. पुं. (सं.) निदा, अपवादः,
दोषकथनं २. नीपावादनवलयः (मित्रराज) ।

परिवादक, सं. पुं. (सं.) निदकः, अपवादकः,
दोषकथकः २. अभियोजक (पुं) अधिन,
वादिन ३. नीपावादकः ।

परिवार, सं. पुं. (सं. >) कुटुंबं, पुत्रकलत्रा-
दीनि, गृहजनः, परिवार(री)वारः ।

—नियोजन, सं. पुं. (सं. न.) परिवार-
कुटुम्ब, नियन्त्रण-निरोधः, सन्तति-सन्तान-
निरोधः ।

परिवाह, सं. पुं. (सं.) जलोच्छ्वासः तोयाप्लावः ।

परिवृत्, वि. (सं.) परिवेष्टित, परिगत,
परिक्षिप्त २. आच्छादित, आवृत ।

परिवृत्त, वि. (सं.) 'परिवर्तित' (२) २. परिवे-
ष्टित, परिगत ३. समाप्त ।

परिवेषण, सं. पुं. (सं. न.) भोजनपात्रे भोजन-
निधानं २. परिधिः (पुं.), वेष्टनं ३. परि-
वेशः-पः ।

परिवेष्टनं, सं. पुं. (सं. न.) संवलनं, परिक्षेपणं,
परिवारणं २. आच्छादनं, आवरणं, पुटं,
वेष्टनं, क. श. ञः ३. परिधिः (पुं.) ।

परिवेष्टया, सं. स्त्री. (सं.) सन्ध्यासः, वैराग्यं,
यतुर्धर्मनः २. परिभ्रमणम् ।

परिव्राजक, सं. पुं. (सं.) } भिक्षुः,
परिव्राट्, सं. पुं. (सं. न.) } दे. 'सन्धासी' ।

परिविष्ट, सं. पुं. (सं. न.) परिविशेष, पूरणं,
उत्तरखंडः, शेषग्रंथः, खिलम् । वि., अव-विष्ट-
शेष, उद्धृत ।

परिशीलन, सं. पुं. (सं. न.) गंभीर-समनन-
अध्ययन-पठनं २. स्पर्शनम् ।

परिशीलित, वि. (सं.) सम्यक्-सुधु, अधीत-
पठित ।

परिशुद्ध, वि. (सं.) पूर्णं, शुद्ध-अमल-निर्दोष-
पूत २. कारा-कारावास-मुक्त ।

परिशुद्धि, सं. स्त्री. (सं.) पूर्ण-शुद्धिः (स्त्री.)
पवित्रता-निर्दोषता २. कारागार-मुक्तिः (स्त्री.) ।

परिशेष, सं. पुं., (सं.) अंतः, समाप्तिः (स्त्री.),
दे. 'परिशिष्ट' सं. पुं. तथा वि. ।

परिशोधन, सं. पुं. (सं. न.) परिमार्जनं,
परिभावनं, २. ऋण-शोधनं-शुद्धिः (स्त्री.) ।

परिश्रम, सं. पुं. (सं.) आम-यासः, श्रमः,
उद्यमः, उद्योगः, प्र-यत्नः २. क्लमः, क्लान्तिः-
श्रान्तिः-ग्लानिः (स्त्री.), खेदः ।

—करना, कि. अ., आयस्-परिश्रम (दि. प.
से.), उद्यम (भ्वा. प. अ.), व्यव-सो
(दि. प. अ.) ।

परिश्रमी, वि. (सं-मिन्) उद्यमिन्, उद्योगिन्,
उद्यम-उद्योग-परिश्रम, शील, आयसिन् ।

परिश्रान्त, वि. (सं.) क्लान्त, ग्लान, खिन्न,
आयस्त ।

परिषद्-न्, सं. स्त्री. (सं. षद्) सभा, समाजः,
समितिः (स्त्री.) २. जनसमूहः ।

परिषद्, सं. पुं. (सं.) सदस्य, सभासद् (पुं.)
२. राज-क्लमः-सभासद् ।

परिष्कार, सं. पुं. (सं.) शौचं, शुद्धिः (स्त्री.),
शुचिता, संस्कारः २. निमलत्वं, स्वच्छता
३. आभूषणं, अलंकारः ३. मंडनं, प्रसाधनम् ।

परिष्कृत, वि. (सं.) माजित, धावित, धौत
२. मंडित, प्रसाधित, अलंकृत ३. संस्कृत,
शोधित ।

परिसंख्या, सं. स्त्री. (सं.) संख्या, गणना
२. अर्थालंकारभेदः (सा.) ।

परिस्तान, सं. पुं. (फा.) अप्सरोलोकः
२. सुंदरीस्थानम् ।

परिहरण, सं. पुं. (सं. न.) बलात् छद्म-
अपहरणं २. परि-स्थापः, उत्सर्गः ३. दोषादीनां
निवारणं, निराकरणम् ।

परिहार, सं. पुं. (सं.) (दोषादेः) निवारणं,
निराकरणं २. उपचारः, उपायः ३. त्यागः,
परिवर्जनं ४. गोप्रवरः, प्रवारभूमिः (स्त्री.)

५. युद्धानिर्त धनं, विजितद्रव्यं ६. (करादेः)
मोचनं, वर्जनं ७. प्रत्याख्यानं, खडनं ८. अवशा,
अपमानः ९. उपेक्षा ।

परिहार्यं, वि. (सं.) परिजर्जनीय, प्रोज्ज्वलनीय,
हेय, त्यक्तव्य ।

परि(री)हास, सं. पुं. (सं.) नर्मन् (न.),
नर्मोत्साहः, प्रहसनं, हास्यं, विनोद, उक्तिः-
(स्त्री.) भाषणम् ।

परी, सं. स्त्री. (का.) अप्सरस् (स्त्री.),
योमिनी, यक्षिणी, विद्यापरी २. सुंदरी ।

—**ज्ञाद्**, वि. (का.) अतिसुंदर, परमशोभन ।

परीक्षक, सं. पुं. (सं.) प्राद्विकः, अनुयोजित-
परीक्षित् (पुं.) २. विचारकः निरूपकः
३. समालोचकः, समीक्षकः ।

परीक्षा, सं. स्त्री. (सं.) परीक्षणं, प्रदत्तः,
अनुयोगः २. समालोचना, समीक्षा,
३. निरीक्षा, अवस्था, आलोकनं, निरूपणं
४. दिव्यं ५. प्रयोगः, अनुभवः ।

परीक्षित, वि. (सं.) नृपविशेषः, अभिमन्यु-
पुत्रः २. प्रदिनित, अनुयुक्त, कृतपरीक्ष ३. समा-
लोचित, समीक्षित ४. अनुभूत, प्रयुक्त ।

परुष, वि. (सं.) क्रूर, निर्दय, निर्दृष्ट,
२. अप्रिय, कष्ट ।

परं, कि. वि. (सं. परं) दूरं, दूरे, दूरतः, २.
पृथक्, बहिस् ३. तदनु, ततः, तदनन्तरं ४.
उपरि, उच्चैः (सब अव्य.) ।

—**परं करवा**, मु. परिहृ (भ्वा. प. अ.), अप-
हृञ् (जु.), न संगम् (भ्वा. आ. अ.) ।

परेवा, सं. पुं. (सं. पारावतः) दे. 'कवृत्' ।

परेशान, वि. (का.) उद्विग्न, व्यग्र, व्याकुल ।

परेशानी, सं. स्त्री. (का.) उद्विग्नता, व्याकुलता ।

परोक्ष, वि. (सं.) अदृश्य, अलक्ष्य, अचाक्षुष
२. गुप्त, गूढ । सं. पुं. (सं. न.) अनुपस्थितिः
(स्त्री.), अविद्यमानता ।

परोपकार, सं. पुं. (सं.) परोपकर्तृतेः (स्त्री.)
परहितं, लोकसाहाय्यं, उदारता ।

—**करवा**, कि. स., परोपकारं कृ., परहितं
संपद् (प्रे.) परसाहाय्यं विधा (जु. व. अ.),
उपकृ ।

परोसना, कि. स. (सं. परिवेषणं) भक्ष्याणि
पात्रे स्था (प्रे. स्थापयति), परिवेष (प्रे.) ।
सं. पुं., परि(री)वेषःपणम् ।

परोसनेवाला, सं. पुं., परिवेषकः, परिवेष
(पुं.) ।

परोसा हुआ, वि., परिवेषित, पात्रे निहित ।

पर्वा, सं. पुं., दे. 'परवा' ।

पर्जन्य, सं. पुं. (सं.) बलदः, दे. 'मेघ' ।

पर्ष, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'पर्ष' (श्) २.
तांबूलो-नागलता, दलं, तांबूलम् ।

—**लता**, सं. स्त्री. (सं.) पत्रपावती, न'गलता ।

—**शाला**, सं. स्त्री. (सं.) पर्णकृती, उद्वेगःपणम् ।

पर्णाद्, सं. पुं. (सं.), पत्रपण, अशन-आहारः-
मूलकः (त्रिभिन्) २. कृषिविशेषः ।

पर्णाशन, सं. पुं. (सं.) दे. 'पर्णाद्' ।

पर्णाहार, सं. पुं. (सं.) दे. 'पर्णाद्' ।

पर्णी, सं. पुं. (सं. पणिन्) वृष्टः, तरुः, पादपः,
विटपःपिन ।

पर्व, सं. स्त्री., दे., 'परत' ।

पर्दा, सं. पुं., दे. 'परश' ।

पर्यंक, सं. पुं. (सं.) पर्यंकः, अवगमियका,
पर्यस्तना, परिकरः ।

पर्यटन, सं. पुं. (सं. व.) दे. 'भ्रमण' ।

पर्यंत, अव्य. (सं. पर्यन्तं) यावत्, आ., पर्यंतं
(उ.), मृत्युपर्यंतं, मृत्युं यावत्, आ. मृत्याः,
मरणपर्यंतम् ।

पर्याप्त, वि. (सं.) प्रभूत, प्रचुर, पूर्ण, वषष्ठ,
उपयुक्त, अलं (चतुर्थी कं साथ । २. समर्थ,
शक्त ।

पर्याय, सं. पुं. (सं.) तुल्यार्थ-समायं, शब्दः
२. क्रमः, परंपरा, आनुपूर्व्य-वी ३. अर्थालंकार-
भेदः ४. अवसरः, उचितसमयः ।

—**वाची**, वि. (सं. विच) पथापकायक, सम-
समान तुल्य, अर्थक ।

पर्व, सं. पुं. | सं. पर्वन् (न.) | उत्सवः,
उद्भवः, उद्वेगः, धनः, मन्त्रः २. पर्वपर्याय
(चतुर्विंशती, अष्टमी, अमावास्या, पूर्णिमा,
शुक्लपक्षः) ३. ग्रंथपरिच्छेदः, वाटः टं,
४. संधिः (पुं.), ग्रंथिः (पुं.) ५. खंडः-
टं, भागः ।

पर्वत, सं. पुं. (सं.) अद्रिः गिरिः (पुं.), शैलः,
धरणीकौलकः, सानुमत-हमाभूत-शिखरिन्
(पुं.), अचलः, भूधरः, अगः, नगः, कु-
धरः-अवनी-मही-भरणी, धः धरः, भूक्षिति,
भूत् (पुं.) २. चयः, राशिः (पुं.) ।

—**नदिनी**, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'पावती' ।

पर्वतीय

[३६१]

पल्लेखन

—राज, सं. पुं. (सं.) दे. 'शिमालय' ।
 —वासी, सं. पुं. (सं. -सिन्) गिरि-शील-वासिन्,
 पार्वतः [-ती (स्त्री.)], पार्वतीयः [-थी (स्त्री.)] ।
 वि., पार्वत, पार्वतीय इ. ।
 पर्वतीय, वि. (सं.) सपर्वत, नगप्राय, शैल-
 अद्रि-माय [-मथी (स्त्री.)] ।
 पलंग, सं. पुं., दे. 'पर्यंक' ।
 —पोश, सं. पुं. (हि + का.) पर्यंक-प्रच्छदः ।
 पल, सं. पुं. (सं.) विविधका, पत्रिकायाः पष्टि-
 तमो भागः, पष्टिविपल्यस्त्रकः कालः (=२४
 सेकंड) २. क्षणः, मुहूर्तः, निमि (मे) षः ।
 —भर में या—मारते, मु., क्षणेन, क्षणात्,
 निमेष-पल, मात्रेण ।
 पलक, सं. स्त्री. (सं. पलं) दे. 'पल' २. नेत्र-
 नयन, लङ्घः ।
 —मारना, कि. अ., निर्मील (भ्वा. प. से.),
 निमिष् (तु. प. से.) २. चक्षुषा संकेतं दा ।
 —मारते या अपकते, मु., दे. 'पल भर में' ।
 पलटन, सं. स्त्री. (अं. प्लैटून), मैनिकानां
 द्विशती, सैन्य-दल-गणः ।
 पलटना, कि. अ. (सं. प्रलोठनं) नि-प्रतिनि-
 प्रत्य, -वृत् (भ्वा. आ. से.) प्रत्या-गन्
 (भ्वा. प. अ.)-या (अ. प. अ.) २. पर्यस्
 (कर्म.), अधोमुखी-अधरोचरीभू, परिवृत् ।
 ३. (दशा) परिवृत्, अवस्थानं जन् (दि.
 आ. से.) ४. परि-परा, वृत् । कि. स., व.
 'पलटना' के प्रे. रूप । सं. पुं., नि-प्रत्या-
 वर्तनं; वि., पर्यागः परिवर्तनम् ।
 पलटा, सं. पुं. (हि. पलटना) नि-प्रत्या, वृत्तिः
 (स्त्री.), दे. 'पलटना' सं. पुं. २. प्रतिफलं,
 कर्मविपाकः ३. स्वरपरावृत्तिः (संगीत) ४.
 उत्पातः, उत्पलवः ५. व्यतिहारः, विनिमयः
 ६. *परिवर्तकः, (भावनमेदः) ७. दे. 'बदला' ।
 पलटाना, वि. स., दे. 'लौटाना' ।
 पलटा हुआ, वि., प्रतिनिवृत्त, विपर्यस्त परि-
 वृत्त, परावृत्त ।
 पलट्टा, सं. पुं. (सं. पटलं >) तुलां, पटलं-
 फलकम् ।
 पलथी, सं. स्त्री. (सं. पर्यस्त्रं >) स्वस्तिका-
 सनम् ।
 —मारना, कि. अ., स्वस्तिकासनेन उपविश
 (तु. प. अ.) ।

पलना, कि. अ. (सं. पालनं >) पाल-पोष-
 संभू (कर्म.) २. परि-, पुष् (कर्म.) प्याय
 (भ्वा. आ. से.), पुष्ट-पीन (वि.) भू ।
 पलवाना, कि. प्रे., व. 'पालना' के प्रे. रूप ।
 पलस्तर, सं. पुं. (अं. प्लास्टर) *पलस्तरः,
 लेपः, सुधा २. उपनाहः, प्रलेपपट्टिका ।
 —करना, कि. स., सुधया लिप् (तु. प. अ.)
 २. उपनाह (दि. प. अ.) ।
 —हीला होना या बिगाड़ना, मु., अत्यंत
 क्लेश-पीड-खिद (कर्म.) ।
 पलंडु, सं. पुं. (सं.) दे. 'ध्याज' ।
 पलाद्, सं. पुं. (सं.) पलादनः, पलाशः,
 राक्षसः । वि., मांस, भक्षक-आहारिन् ।
 पलान, सं. पुं. (सं. पश्ययनं) पर्याणं, पर्य-
 यणं, दे. 'जीन' ।
 पलान्न, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'पुलाव' ।
 पलायक, सं. पुं. (सं.) वि-प्र-, पलायिन्,
 युद्ध-विमुखः, पराङ्मुख-स्व-गिन् ।
 पलायन, सं. पुं. (सं. न.) वि-, द्रवः, उद्-
 सं-प्र-नि-, द्रावः, चक्रमः, श्रगालिका, अप-
 क्रमः-यानम् ।
 पलायमान, वि. (सं.) प्र-वि-द्रवन्, अप-
 धावत्-क्रामत्, परायत् (सब दावतं) ।
 पलाश, सं. पुं. (सं.) किशुकः, राक्षिकः,
 त्रिपर्णः, ब्रह्मवृक्षकः, पूतद्रुः (पुं.), (सं. न.)
 पत्रं, पर्याम् ।
 पलाशी, सं. पुं. (सं. -शिन्) वृक्षः, तरुः २.
 क्षीरवृक्षः (गूलर, पीपल, बरगद, महुआ इ०)
 ३. राक्षसः । वि. सपत्र, पत्रवत् २. मांस-
 भक्षक ।
 पलित, वि. (सं.) वृद्ध, दे. 'बूढा' २. पक्व,
 धवल, श्वेत, सित, (केश) । सं. पुं. (सं.
 न.) केशपाकः ।
 पली, सं. स्त्री. (सं. पलिषः >) *स्नेहनिष्का-
 सनी, पल्लिका ।
 पलीता, सं. पुं. (फा.) भूतवद्राविका वर्तिका-
 वर्तिः (स्त्री.) २. दहनवर्तिः । वि. कौपाकुल,
 मंत्रव्य २. शीघ्रगामिन् ।
 पलीत्र, वि. (फा.) मलिन, मलीमस, अपवित्र
 २. नीच, खल ।
 पल्लेखन, सं. पुं. (सं. परिस्तरण >) (गोधू-
 मादीनां) शुष्कचूर्णं, *रोटिकापरिस्तरणम् ।
 —निकालना, कि. स., परुषं तद् (तु.) ।

पलौठा, वि. (हि. पहला) *प्रथमज (पलौठी=प्रथमजा)।

पल्लव, सं. पुं. (सं. पुं. न.) किस(श)लयः-यं, प्रवालं, नवपत्रं, किस(श)लं २. प्र. शाखा, विटपः ३. नवपत्रस्तवकः।

पल्लवित, वि. (सं.) सपल्लव, सकिसलय २. तत, विस्तृत ३. रोमांचित।

पल्ला, क्रि. वि. (सं. परं वा पारे >) दूरं, दूरे, दूरतः। सं. स्त्री., दूरता, विप्रकर्षः।

पल्ला-पल्लू, सं. पुं. (सं. पटाञ्जलः) वसनांतः, बल-अंचलः २. पार्श्व, अधिकारे ३. दिशा।

—**सुधाना**, सु., आत्मानं उद्ग्रह (स्वा. प. अ.)-मुञ् (प्रे.); अनिष्टं त्यज् (स्वा. प. अ.)-अपास् (दि. प. से.)।

—**पसारना**, सु., वान् (स्वा. आ. से.)।

पल्ले पद्मना, मु., लभ्-अधिगम् (कर्म.)।

पल्ला^३, सं. पुं., दे. 'पलडा'।

पल्ली, सं. स्त्री. (सं.) ग्रामकः, ग्रामटिका २. ग्रामः ३. कुटी ४. गृहगोपिका।

पवन, सं. पुं. (सं.) अनिलः, वातः, दे. 'वासु'।

—**घर्षी**, सं. स्त्री., वायुपेयणी, *पवनघर्षी।

—**चक्र**, सं. पुं. (सं. न.) वातावर्तः, चक्रवातः।

—**पुत्र**, सं. पुं. (सं.) हनुमत् २. भीमसेनः।

पवनाशन, सं. पुं. (सं.) पवनाशः, सर्पः।

पवि, सं. पुं. (सं.) व्रजः-जं, कुलिशं, अशनिः, (पुं. स्त्री.)।

पवित्र, वि. (सं.) वि., शुद्ध-शुचि, स्वच्छ, विशद, निर्मल २. पुण्य, निष्पाप, अनप, अकल्मष।

पवित्रता, सं. स्त्री. (सं.) शुचिता, शीघ्रं, वि-शुद्धिः (स्त्री.), शुद्धता २. स्वच्छता, वैशर्ष, निर्मलता ३. पुण्यता, निष्पापता।

पवित्रात्मा, वि. [सं-स्मन् (पुं.)] विमल-शुद्ध-आत्मन् (पुं.), शुद्ध-मति-हृदय।

पवित्री, सं. स्त्री. (सं. पवित्रं) पवित्रकं, कुशागुलीयकम्।

पशम, सं. स्त्री. (फा. पशम) उत्तमोर्णा, भूषा २. उपस्थलौमन् (न.) ३. अतितृच्छवस्तु (न.)।

पशमीना, सं. पुं. (फा. पशमीनह्) दे. 'पशम' २. उत्तमोर्णा, वस्त्र-पटः।

पशु, सं. पुं. (सं.) लोमलांगूलवस्त्रोवः (सिंह-व्याघ्रगोमहिषादयः), शंतुः (पुं.), सुराकः-का, भृगः २. प्राणिन्, जीवमात्रम्।

—**पति**, सं. पुं. (सं.) शिवः २. पशुप्रभुः।

—**पाल**, सं. पुं. (सं.) पशु-गो, रक्षकः-पालकः।

—**राज**, सं. पुं. (सं.) मृगेन्द्रः, सिंहः।

पशुता, सं. स्त्री. (सं.) पशुत्वं, पशु-भाव-धर्मः २. मौख्यं, औद्धत्यं, जाट्यम्।

पशुत्व, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'पशुता'।

पश्चात्, अव्य. (सं.) ततः, तदनन्तरं, तत्पश्चात्, तदनु, ततः-परं-ऊर्ध्वम्।

पश्चात्ताप, सं. पुं. (सं.) अनु-तापः-शयः-शोकः, पाप-दुष्कृत-खेदः, विप्रतीकारः।

—**करना**, क्रि. अ., दे. 'पडताना'।

पश्चिम, सं. पुं. (सं. पश्चिमा) प्रतीची, वारुणी, पश्चिम-दिशा-आशा। वि., पश्चात् उत्पन्न, २. अत्य, अतिम्।

पश्चिमा, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'पश्चिम'।

पश्चिमी, वि. (सं. पश्चिमा >) प्रतीच्य, पाश्चात्य, पश्चिमाशःसंबन्धित्।

पश्चिमोत्तर, सं. पुं. (सं. पश्चिमोत्तरा) उत्तर-पश्चिमा, वायवी। वि., वायव, वायुदिकरथ।

पश्तो, सं. स्त्री. (देश.) पश्चिमोत्तरसीमाप्रांतस्थ भाषाविशेषः।

पश्यती, सं. स्त्री. (सं.) वेदया, गणिका, क्षुद्रा, रूपाजीवा २. वाणीभेदः, वायुसंयोगात् नाभिजः शब्दः।

पसंद, सं. स्त्री. (फा.) अभि-रुचिः (स्त्री.), मनोबंधः। वि., मनोनीत, रुचिकर, सं-अभि-मत, प्रिय।

—**करना**, रुन् (स्वा. आ. से. चतुर्थो के साथ) अभि-प्रति-नंद् (स्वा. प. से.) अनुमुद् (स्वा. आ. से.) २. दे. 'जुनना'।

पसंदीदा, वि. (फा.) अभीष्ट, वृत्, रुचिकर, रोचक, उत्तम।

पस, सं. पुं. (अं.), पूयः-यं, क्षतजं, मलजं, कुणपम्।

पस, अव्य. (फा.) तदनु, तत्पश्चात्, तदनन्तरम्।

—**(सो) पेश**, पुं. निधं, ध्याजः, दलम्।

पसरना, क्रि. अ. (सं. प्रसरणं) प्रस (स्वा. प. अ.) प्र-वि-तन् (कर्म.) २. विस्तृ (कर्म.) वृध् (स्वा. आ. से.) ३. करपरणात् प्रसार्य से (अ. आ. से.)।

पसली, सं. स्त्री. (सं. पशुका) पशुस्थि (न.), पार्श्वकम्।

—का रोग, सं. पुं., शसनकः ।
 हड्डी—तोड़ना, मु., भ्रंशं तट् (चु.) ।
 पसाना, कि. स. (सं. प्रलावणं), मंडं प्रस् (प्रे.) २. अतिरिक्तजलाश्र अवपत् (प्रे.) ।
 पसार—रा, सं. पुं.; दे. 'पसार' ।
 पसारना, कि. स. (सं. प्रसारणं) व. 'पसरना' के प्रे. रूप । दे. 'फैलानः' ।
 पसाव, सं. पुं. (सं. प्रस्त्रावः >) प्रस्त्रवः, मंडः-डं, दे. 'मांड' ।
 पसीजना, कि. अ. (सं प्रस्वेदनं) (शनैः) क्षर्-गल् (भ्वा. प. से.) मृ (भ्वा. प. अ.) प्रस्तु (अ. प. से.) २. दयार्द्र-करुणार्द्र (वि.) भू, अनुकंप-दय (भ्वा. आ. सं.) ।
 पसीना, सं. पुं. (हिं. पसीजना >) प्र, स्वेदः, धर्मः, धर्म-स्वेद, उदक-जल-विद् (पुं.) श्रम-वारि (न.) ।
 —आना, कि. अ., प्र, रिबद् (दि. प. अ.) स्वेदः स्तु-भित्तु (भ्वा. प. अ.) ।
 पसोपेश, सं. पुं. (फा.) विचिकित्सा, वितर्कः, संशयः आ-परि-वि, शंका २. परिणामः, हानिनाभौ ।
 —करना, कि. अ., दोलायते (ना. घा.), विलंब-विदलुप् (भ्वा. आ. से.) ।
 पस्त, वि. (का.) पराजित, विजित २. परि-श्रांत, क्लान्त ।
 —कृद्, वि. (फा.) वःमन, खर्ब ।
 —हिम्मत, वि. (फा.) भीरु, कातर ।
 पहचान, सं. स्त्री. (सं. परिचयनं या प्रत्य-भिज्ञानं) प्रति, अभिज्ञा-अभिज्ञानं, २. विवेकः, विचारण-ना, परिच्छेदः ३. लक्षणं, चिह्नं ४. परिचयः, परि, ज्ञानम् ।
 पहचानना, कि. स. (हिं. पहचान) प्रति, अभिज्ञा (क. उ. अ.) अनुस्मृ (भ्वा. प. अ.) परिच्छिद्य (रु. प. अ.), संविद् (अ. प. से.) २. विच् (जु. उ. अ.), विशिष् (रु. प. अ.), परिच्छिद् ३. अव-गन् ना (क्. उ. अ.), बुध् (भ्वा. प. से.), विद् (अ. प. से.) । सं. पुं., दे. 'पहचान' ।
 पहचाननेवाला, सं. पुं., प्रति, अभिज्ञा (पुं.), परिच्छेदकः; विवेकिनः श्राव, वीद् (पुं.) ।
 पहचाना हुआ, वि., विदित, परिच्छिन्नः; प्रति, अभिज्ञात, बुद्ध, विदित ।

पह(हि)नना, कि. स. (सं. परिधानं) परिधा (जु. उ. अ.), वस् (अ. आ. से.), धृ (भ्वा. प. अ., चु.), मृ (जु. उ. अ.) ।
 सं. पुं., परिधानं, ध(धा)रणं, भरणं, वसनम् ।
 पहनने योग्य, वि., परियेय, वार्य, वसनीय ।
 पहननेवाला, सं. पुं., परि, धात् (पुं.) धायकः, धर्तृ-धारयितृ (पुं.) ।
 पहनवाना, कि. प्रे. } व. 'पहनना'
 पहनाना, कि. स. } के प्रे. रूप ।
 पहनावा, सं. पुं. (हिं. पहनना) वेशः-वः, परिधानं, वस्त्राणि-वसनानि (न. बहु.), नेपथ्यं, परिच्छिद्ः ।
 पहना हुआ, वि., परिहित, धृत, धारित, वसित ३ ।
 पहर, सं. पुं. (सं. प्रहरः) यामः, होरात्रय-यी २. कालः, युगं, समयः ।
 पहरना, कि. स., दे. 'पहनना' ।
 पहरा, सं. पुं. (हिं. पहर) रक्षा, रक्षणं, जागरणं, निरूपणं, अवेक्षण-श्रा, गोपनं, गुप्तिः (स्त्री.) २. रक्षकः, रक्षित्, रक्षापुरुषः, रक्षि-वर्गः, प्रहरित्, वैवोधिकं ३. रक्षणकालः, प्रहरः ४. प्रहरि, श्रमण-पर्यटनं ५. प्रहरिपरिवर्तनं ६. प्रहरिवोधः ।
 —देना, कि. अ., रक्षायै जागृ (अ. प. से.) परि, श्रम-अद् (भ्वा. प. से.) ।
 पहरेंदार, सं. पुं. (हिं. + फा.) दे. 'पहरा'(२) ।
 पहरावनी, सं. स्त्री. (हिं. पहरना) २. *परिधा-पनी, *परितोषवेषः ।
 पहरौ, पहरूना, पहरू, सं. पुं. दे. 'पहरा'(२) ।
 पहल, सं. स्त्री. (हिं. पहल) उपक्रमः, प्र-आरम्भः २. अति-आ-क्रमः, प्रथमापकारः ।
 पहलवान, सं. पुं. (फा.) मल्लः, बाहु, बौध-योदधृ (पुं.)-योधिन् २. दृढांगः, वज्रदेहः ।
 पहलवानी, सं. स्त्री. (फा.) मल्ल-बाहु, बुद्धम् ।
 पह(हि)ला, वि. (सं. प्रथम) दे. 'प्रथम' ।
 पहलू, सं. पुं. (फा.) पक्षः, पार्श्वः-र्ध (सब अधो में) २. पक्ष-पार्श्व-भागः, कक्षाधोभागः ३. विचार्यविषयस्य अंग-भाग, विशेषः ४. गूढाशयः ५. व्यंग्यार्थः ।
 —बचाना, मु., संघट्टं परिहृ (भ्वा. प. अ.) ।
 —में बैठना, मु., अतिसमीप-पे उपविश (जु. प. अ.)-निषद् (भ्वा. प. अ.) ।

पहले, अव्य. (हिं. पहला) पूर्वं, प्रथमं, आदौ, प्राक्, आरम्भे २. पूर्व, पुरा, पूर्व-प्राचीन, काले ।

—**पहल**, अव्य., सर्वप्रथमं, प्रथमकरे, आदौ ।

पहाड़, सं. पुं. (सं. पाषाणः >) दे. 'पर्वत' (१-२) ३. दुस्साध्य दुष्कर, कथम् ।

पहाड़ा, सं. पुं. (सं. पस्तारः >) जुगनपुत्री ।

पहाड़िया, वि. (हिं. पहाड़) दे. 'पर्वतवासी' ।

पहाड़ी, सं. स्त्री. (हिं. पहाड़) पर्वतकः, लघु-गिरिः (पुं.) २. बल्मीकः कं, वामलूरः ।

पहिया, सं. पुं. (सं. परिधिः) चक्रं, रथांगम् ।

पहिलीठा, वि., दे. 'पलीठा' ।

पहुँच, सं. स्त्री. (सं. प्रभूत >) उपसर्पणं, अभि-उप-गमः, प्रवेशः २. गतिस्तीमा ३. प्राप्तिः (स्त्री.), प्राप्तिमूचना, अभिज्ञता(स्तीमा)- परि-चयः ४. आगमनं, उपस्थितिः (स्त्री.) ।

पहुँचना, क्रि. अ. (हिं. पहुँच) आ-गम-सद् (स्वा. प. अ.) समा-सद् प्र-सं-आप् (स्वा. प. अ.), प्रपद् (दि. आ. अ.) २. विस्तृ (कर्म.) ३. प्रविश (तु. प. अ.) ४. लभ्-प्राप् (कर्म.) । सं. स्त्री., दे. 'पहुँच' ।

पहुँचनेवाला, सं. पुं., आगत-उपरस्थान् (पुं.); लब्धप्रवेशः, सहायकः ।

पहुँचा, सं. पुं., दे. 'कलाइ' ।

पहुँचाना, क्रि. स., व. 'पहुँचना' के प्रे. रूप ।

पहुँचा हुआ, वि., आगत, उपस्थित, प्राप्त, प्रपन्न, प्रविष्ट, लब्ध, अधिगत, सिद्ध ।

पहुँची, सं. स्त्री. (हिं. पहुँचा) अत्तापकः, गणि-बन्धन-टकः ।

पहुनाई, सं. स्त्री. (हिं. पाहुना) प्राप्नुण-अतिथि-सेवा-सत्कारः । २. अतिथित्वं, प्राप्नुणता ।

पहेली, सं. स्त्री. [सं. प्रहेली-लिः (स्त्री.)] प्रहेलिका, प्रश्नदृती, प्रबहो-लिः (स्त्री.)-लिका २. समस्या, गूढार्थव्यापारः ।

पहवी, सं. स्त्री. (सं. पल्वः >) पारसीक-देशस्य प्राचीन भाषा, पहवी ।

पाँच, वि. (सं. पंचन) । सं. पुं., उक्ता संख्या तदकः (५) च ।

—**भौतिक**, वि. (सं.) पंचभूतनिमित्त (शरी-रादि) ।

पाँचों उँगलियाँ धी में होना, मु., सर्वथा प्र-उप-चि (कर्म.) समृध् (दि. प. से.) ।

पाँचवाँ, वि. (हिं. पाँच) पंचमः-मं-मी (पुं. न. स्त्री.) ।

पाँचाल, सं. पुं. (सं.) पंचालः । वि. पंचाल-देशोद्भवः ।

पाँचाली, सं. स्त्री. (सं.) शाल-मंजी-जिका, पुत्रिका, पंचालिका २. रीतिविशेषः (सा.) ३. शीपशी, कृष्णा, याजसेनी ।

पांडव, सं. पुं. (सं.) पांडुनन्दनः, पंच पांडवाः ।

पांडित्य, सं. पुं. (सं. न.) बुद्धि-धी-मस्द्, व्युत्पत्तिः (स्त्री.), विद्वत्ता, विद्वत्त्वं, ज्ञानं, प्राज्ञता ।

पांडु, सं. पुं. (सं.) नृचविशेषः २. सितपीत-वर्णः, हरिणः, पांडु(डु)रः ३. रक्तपीतवर्णः ४. श्वेतवर्णः ५. दे. 'पांडुरोग' ।

—**रोग**, सं. पुं. (सं.) कामलः-ला, पांडुः (पुं.) ।

पांडुर, वि. (सं.) सितपीतवर्ण, पांडु २. पीत ३. शुक्ल । सं. न. (सं.) श्वित्ररोगः । सं. पुं. (सं.) दे. 'पांडुरोग' ।

पांडुलिपि, सं. स्त्री. (सं.) पांडुलेखा, *शोध-नीयलेखः ।

पांडे, सं. पुं. (सं. पंडितः) द्विज-

पांडेय, कावस्थ-भेदः ३. प्राज्ञः, विद्वत् (पुं.) ४. शिक्षकः, अध्यापकः ५. पंचकः, छद्मः ।

पाँत, **पाँति**, सं. स्त्री., दे. 'पंक्ति' ।

पांथ, सं. पुं. (सं.) पथिकः, यात्रिन् २. प्रका-सिन् ३. निबोधिन् ४. भानुः ।

—**निवास**, सं. पुं. (सं.) पांथशाला, यात्रिक-गृहम्, धर्मशाला ।

पाँच, सं. पुं. (सं. पादः) पद्, चरणः-णं, अंघ्रिः (पुं.) २. जंघा ३. मूलं, आधारः, उपष्टम्भः ४. धैर्यं, स्थैर्यम् ।

—**का अंगूठा**, सं. पुं., पादांगुष्ठः ।

—**का सोना**, सं. पुं., पादहर्षः (रोग) ।

—**की अंगुली**, सं. स्त्री., पादांगुली-लिः (स्त्री.) ।

—**अज्ञाना**, मु., दे. 'टांग अज्ञाना' ।

—**उखड़ना**, मु., परा-जि (कर्म.), पलाय (स्वा. आ. से.) ।

—**डठाना**, मु., निष्क्रम (स्वा. प. से.) २. मत्वरं चल् (स्वा. प. से.) ।

—**जमाना**, मु., निदचल-इदं स्था (स्वा. प. अ.) ।

—तले की मिट्टी निकल जाना, मु., जड़ी-निषेदी-भू., विस्मयेन उपहन (कर्म.) ।
 —पड़ना, मु., चरणयोः अवगत (भ्वा. प. से.), अतिनम्रतया यान् (भ्वा. आ. से.) ।
 —पसारना, मु., प्रवृत्ते प्रसू (प्रे.) मुखं स्वप् (अ. प. अ.) २. दे. 'सरना' ।
 —पाँच, मु., पादचारी भूत्वा, पद्म यामेव चलन् (शर्जत) ।
 —पूजना, मु., चरणौ त्वन् (भ्वा. प. से.)—सेव् (भ्वा. आ. से.) ।
 —फटना, मु., पादौ शक्तिन स्फुट् (त. प. से.) ।
 —फूँक-फूँक कर रखना, मु., सावधानं प्रवृत्त (भ्वा. आ. से.) कार्येषु ।
 —फैला कर सोना, मु., निर्विचलितं स्वप् (अ. प. अ.) ।
 —भारी होना, मु., गर्भ आधा (जु. उ. अ.)—धृ (चु.) ।
 दबे—जाना, मु., निभूतं आया (अ. प. अ.) ।
 धरती पर—न रखना, मु., नितरां दृप् (दि. प. अ.), गव् (भ्वा. प. से.) ।
 पाँचवा, सं. पुं. (हि. पाँव) पादचारास्तरणम् ।
 पाँवड़ी, सं. स्त्री. (हि. पाँव) दे. 'खड़ाऊँ' तथा 'जूता' ।
 —पाँश (स) न, वि. (सं.) दूषक, कलंकजनक ।
 पाँशु, सं. स्त्री. (सं. पुं.) पांशुः (पुं.), धूलीलिः (स्त्री.), रजस् (न.) ।
 पाँशुल, वि. (सं.) रेणु, दूषित-रूक्ष, मृलिधूसर ।
 पाँसा, सं. पुं. (सं. पाशकः) अश्वः, देवनः, शारः, शारः ।
 —उलटना, मु., अत्नो विपरीतफलो जन् (दि. आ. से.) ।
 पा, सं. पुं. (का.) पादः, पदं, चरणः-णम् ।
 —पंदाज, सं. पुं. पद-पाद-अर्षणं-पौलनम् ।
 पाहोरिया, सं. पुं. (अं.) दम्तपुत्रम् ।
 पाई, सं. स्त्री. (सं. पादः >) पादिका २. चतुर्थांशसूचिका ऊर्ध्वरेखा (उ. अ=सवाचार) ३. आकारमात्रा (१) ४. पूर्णविराम-चिह्नम् (१) ।
 पाउंड, सं. पुं. (अं.) निष्कः, दीनारः २. *पौण्डं, अर्द्धसेरामको देशीय आंगलोलभेदः ।

पाउंडर, सं. पुं. (अं.) पिष्टं, क्षोदः, चूर्णं २. पटवासकः, पिष्टानकः, पिष्टापः ।
 पाक, सं. पुं. (सं.) पचनं, पचनं, शक्तिः (स्त्री.), अधिश्रयणं, पचा, रन्धनं (स्नात प्रकार का पाक—
 भर्जनं तलनं स्वेदः पचनं कचधनं तथा ।
 तांदूरं पुट्याकदच पाकः समविधो मतः ॥)
 २. पक्व-सिद्ध-अन्नं ३. परिणतिः (स्त्री.) ४. औषधभेदः ५. जठरे आहारपचनं ६. दैत्य-विशेषः ।
 —शाला, सं. स्त्री. (सं.) महानसः-सम् ।
 —शासन, सं. पुं. (सं.) दे. 'इन्द्र' ।
 पाक, वि. (का.) पवित्र, वि., शुद्ध २, निष्पाप, निष्कल्मष ३, समाप्त ।
 —दामन, वि. (का.) पतिव्रता, सती ।
 —साक, वि. (का + अ.) स्वच्छ, निर्मल ।
 पाकेट, सं. पुं. (अं.) दे. 'जेब' ।
 पाकिक, वि. (सं.) अर्द्धमासिक, मासादिक २. पक्षपातिन् ।
 पाखंड, सं. पुं. (सं. पाखंडः-इं) दम्भः, दांभिकता, झषिकता, आर्यरूपता, कपटधर्मः, कुटक-लिय, वृत्तिः (स्त्री.), कपटस्थान् ।
 पाखंडी, वि. (सं. पाखंडिन्) पाखंड-इक, दांभिक, दांभिक, कपटिन्, कापटिक, आर्य, रूप-लिंगिन्, छद्म-कपट, वैशिन् ।
 पाख, सं. पुं. (सं. पक्षः) दे. 'पखवारा' ।
 पाखर, सं. स्त्री. (सं. प्रखरः) प्रखरः, अथ-गजः-सन्नाहः ।
 पाखा (खा) न, सं. पुं. (सं. पाषाणः) प्रस्तरः, शिला, अश्मन्, द्रावन् (पुं.) ।
 पाखाना, सं. पुं. (का.) शौच, कूपः-स्थानं २. उखारः, गूथः-अं, मलः-अं, पुरीषं, विष् (स्त्री.) विष्ठा, शकृदा (न.), शमलम् ।
 —निकलना, मु., नितरां भी (जु. प. अ.), व्रम् (दि. प. से.) ।
 पाखाने जाना, मु., शौचकूपं या (अ. प. अ.) पुरीषं उरुहृत् (तु. प. अ.) ।
 पाग, सं. स्त्री. (ई एण) दे. 'पगदी' ।
 पागे, सं. पुं. (सं. पाकः >) मधु-शर्करा,—क्वाथः २. मधुक्वाथपक्वफलमौषधं वा ।
 पागना, कि. स. (सं. पाकः >) सुव-सिता-रसे निमज्ज (प्रे.) ।
 पागल, सं. पुं. (देश.) उन्मत्तः, वातुलः,

विश्वितः, उन्मादिन्, भ्रातः, चित्तः-मतिः २.
जडः, मूर्खः ।

—**पुजाना**, सं. पुं. (हि. + फा.) वातुलालयः,
उन्मात्तागारम् ।

—**पन**, सं. पुं. उन्मादः, वातुलता, मतिभ्रंशः
२. मीर्यातिषयः ।

पागुर, सं. पुं., दे. 'जुगाली' ।

पाचक, सं. पुं. (सं. न.) दीपनं, पाचनं
जारणं, अग्निवर्द्धनं (चूर्णादि) २. रूपकारः,
पाककर्तृ (पुं.) सूदः, बलवः ३. अनलः ।

पाचन, सं. पुं. (सं.) अग्निः (पुं.), जठर-
अनलः-अग्निः २. दे. 'पाचक' ३. दे. 'पाक' ।
वि., पाचक, अग्निवर्द्धक ।

—**पाक्ति**, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'पाचन' (१) ।

पाछ, सं. पुं. (हि. पाछना) *रोगनिवारकद्रव्य-
निवेशः २. *ईषच्छेदः, *क्षुद्रक्षतम् ।

पाछना, क्रि. स. [हि. पछा (पानी + छाल)]
रोगनिवारकद्रव्यं निविश (प्रे.) २. (तरु-
मनुजादीनां) त्वचं रूषत् छिद्र (रु. प. अ.) ।

पाजामा, सं. पुं. (फा.) पादायापः ।

पाजिटिव, वि. (अं.) धन त्यक्त (विद्युत्) ।

पाजी, वि. (सं. पाज्य) दुष्ट, दुर्बल, खल, नीच,
अधम, तुच्छ ।

—**पन**, सं. पुं. (हि.) नीचता, अधमता,
दुष्टता इ. ।

पाजेव, सं. स्त्री. (फा.) नूपुरः-रं, तुलाकोटी-
टि. (स्त्री.), मंजीरः-रं, हंसकः, पाद-अङ्गदं-
कटकः-भूषणम् ।

पाटेबर, सं. पुं. (सं. पट्टावरं) पट्टाशुकं,
कौशिकं, क्षीमं, पट्टः-शुभ्र ।

पाट, सं. पुं. (सं. पट्टः-ट्टं) कृमिजं, कौशेयं,
कीटमृत्रं २. विस्तारः, पृथ्वता, विशालता ३.
काष्ठफलकं ४. शिला, पट्टिका ५. ध. वक-
फलकं-शिला ६. सिंहासनं ७. पेषणीपाषाणः ।

राज, सं. पुं., राज्वा २. राजसिंहासनम् ।

पाटक, सं. पुं. (सं.) भेटकः, छेदकः, विदारकः
२-३. ग्राम-भागः-अर्द्धम् ४. वाद्यभेदः ५. कूलं,
तीरम्, दण्डम् ६. तीर्थसंपानततिः (स्त्री.) ।

पाटन, सं. स्त्री. (हि. पाटना) पटलं, मृदिः
(स्त्री.) छदिह् (न.) २. (निम्नस्थलस्य)
सपाटी-समरेखी, करणं ३. प्र-संपूरणम् ।

पाटना, क्रि. स. (हि. पाट) (गार्तादीन्)
जा-प्र-संपूर् (तु.) २. निम्नभूमिं समी-सपाटी-

कृ ३. पटलेन आच्छद् (तु.) ४. नृप् (प्रे.)
५. सिन् (तु. प. अ.) ।

पाटल, सं. पुं. (सं.) श्वेतरक्त-वर्णः-रक्तः ।

पाटला, सं. स्त्री. (सं.) स्थिरगंधा, ब्रमोपा,
तत्रपुष्पी (हि.) पादर का पेड़ ।

पाटलिपुत्र, सं. पुं. (सं. न.) कुसुम-पुष्प-पूरं,
पाटलिपुत्रकम् (नगरम्) ।

पाटलिमा, सं. स्त्री. (सं. मित्र पुं.) पीतरक्त-
वर्णः-रंगः ।

पाटव, सं. पुं. (सं. न.) दाह्यं, कौशलं, चातुर्यं
२. तादर्यं ३. आरोग्यम् ।

पाटा, सं. पुं. (सं. पट्टः) धातुकारजक-शिला-
काष्ठफलकं-पट्टम् ।

पाटी, सं. स्त्री. (सं. स्त्री.) अनुक्रमः, परिपटी
२. श्रेणी, पक्तिः (स्त्री.) ३. बलाशुषः ।

पाटी, सं. स्त्री. (हि. पाट) पट्टिका, दे.
'तरुनी' २. पाठः ३. सीमंतः ४. सट्वाथाः
पार्श्वभूदः ५. कटः ६. शिला ।

पाठ, सं. पुं. (सं.) पठनं, अध्ययनं, वाचनं
२. पठितव्य-अध्येतव्य-विषयः ३. आह्निकः
स्वाध्यायः ४. पाल्छेदः, अध्यायः ५. वाक्य-
शब्द-क्रमः ।

—**शाळा**, सं. स्त्री. (सं.) विद्या-आलयः-मंदिरम् ।

पाठक, सं. पुं. (सं.) अध्येतु, पठितु, वाचकः
२. अध्यापकः, शिक्षकः, गुरुः (पुं.)
३. ब्राह्मणभेदः ।

पाठन, सं. पुं. (सं. न.) अध्ययनं, शिक्षणं,
उपदेशः ।

पाठिका, सं. स्त्री. (सं.) अध्येत्री, पठित्री,
वाचिका २. अन्वयापिका, शिक्षिका ३. पाठ,
अंशपाठिका लताभेदः ।

पाठी, सं. पुं. (सं. डिन) पाठकः, अध्येतु
(पुं.) (प्रायः अन् मं; उ. वेदपाठी इ.) ।

पाठीन, सं. पुं. (सं.) पुराण-अत्रा-वाचकः
धातकः २. मत्स्यभेदः ३. अध्ययनशीलः ।

पाठ्य, वि. (सं.) पठनीय, अध्येतव्य, वाच-
नार्हं २. पाठयितव्य, अध्यापनीय ।

—**क्रम**, सं. पुं. (सं.) पाठ्यपुस्तकावली,
परीक्षार्थवावली ।

—**पुस्तक**, सं. पुं. (सं. न.) नियत-निर्दिष्ट-
ग्रंथः ।

पाइ, सं. पुं. (हि. पाट) शाटी-धीता, प्रान्तः-

अंचलः २. मंचः. मंचकः ३. कृपणलादनम् ४. उद्धन्धनपट्टः ५. कृदयकोणपट्टः ६. **पाणि**, सं. पुं. (सं.) करः, हस्तः ।
 —**ग्रहण**, सं. पुं. (सं. न.) उद्ग्रहः, दे. 'विवाह' ।
 —**ग्राहक**, सं. पुं. (सं.) भर्तृ (पुं.), दे. 'पति' ।
पाणिनि, सं. पुं. (सं.) अष्टाध्यायीप्रणेता नैयाकरणविशेषः ।
पात^१, सं. पुं. (सं. पत्रं) दे. 'पत्ता' ।
पात^२, सं. पुं. (सं.) अयःनि, पतनं, खंसनं, च्युतिः (स्त्री.) २. पातनं, ३. वि. नःशः ध्वंसः ४. मुत्तुः (पुं.), अधोनयनम् ।
पातक, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'पाप' ।
पातकी, (सं. किन्) दे. 'पापी' ।
पाताल, सं. पुं. (सं.) अधो, भुवनस्त्रीकः, नागलोकः २. विवरं, बिलं ३. भुवनविशेषः ।
पातिव्रत, सं. पुं. (सं. न.) पातिव्रत्यं सतीव्रतम् ।
पातुर, सं. स्त्री. (सं. पातली >) दे. 'वेद्यः' ।
पात्र, सं. पुं. (सं. न.) भाजनं, अमंत्रं, भांडं, कोशः शी, कोनः पी, कोपि (डि) का, पात्री २. नटः, अभिनेतृ (पुं.) ३. तीरद्वयंतरं (हिं. पाट) ४. राजमंथिन ५. सुवादोनि यशोपकरणनि ६. *नाटकस्य कथापूरुषः (नायकादि) ७. सत्पात्रं, गुणास्पदम् । वि., योग्य, उचित, अर्हं ।
पात्रता, सं. स्त्री. (सं.) विद्य उपस्थायारयुक्तता, पात्रत्वं, यौभ्यता, अर्हता, गुणः ।
पाथ^१, सं. पुं. (सं. पाथं) पाथम् (न.), जलम् ।
पाथ^२, सं. पुं. (सं. पथः) मार्गः, अध्वन (पुं.) ।
पाथना, कि. न. (हिं. थापना) गोमयानि रत्न (चु.) निर्मा (जु. आ. अ.) २. तट (चु.) ।
पाथेय, सं. पुं. (सं. न.) सं(शी)बलं पथि उपभोक्तव्यं द्रव्यम् ।
पाथोधि, सं. पुं. (सं.) सगरः ।
पाद^१, सं. पुं. (सं.) पदं, चरणः-णं, पद् (पुं.), अङ्घ्रि-अङ्घ्रिः (पुं.) २. मंत्रश्लोकादीनां चरणः ३. चतुर्थभागः ४. त्रयभागः ५. गिरिवृक्षादीनां मूलम् ।
 —**टीका**, सं. स्त्री. (सं.) पृष्ठतल-पाद, टिप्पणी ।
 —**त्राण**, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'पादुका' ।
 —**पीठ**, सं. पुं. (सं. न.) पदासनम् ।

—**ग्रहार**, सं. पुं. (सं.) चरणाघातः, दे. 'ठोकर' ।
पाद^२, सं. पुं. (सं. पदः) अपान-अधो, वायुः (पुं.) ।
 —**मारना**, कि. अ., दे. 'पादना' ।
पादना, कि. अ. (सं. पददंनं) पददं (भ्वा. आ. से.), अपानवायु उत्सृज् (तु. प. अ.) ।
पादप, सं. पुं. (सं.) तरुः, दे. 'वृक्ष' ।
पादरी, सं. पुं. (पुं. पैर्रे) ख्रिस्तमत, पुरोहितः उपदेशकः ।
पादविक, सं. पुं. (सं.) पथिकाः, पाथः, यात्रिन् ।
पादांगुली, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'पॉन' के पादांगुष्ठ, सं. पुं. (सं.) नीचे ।
पादांत, सं. पुं. (सं.) पाद-पद-चरण, अग्र-अग्रभागः २. पद्म-चरणायसानम् (सा०) ।
पादुका, सं. स्त्री. (सं.) पादुः (स्त्री.), पाद-त्रं-त्राणं, पादरक्षिका, कौपी । २. दे. 'जूता' तथा 'बूट' ।
पाद्य, सं. पुं. (सं. न.) पादप्रक्षालनजलम् ।
पाधा, सं. पुं. (सं. उपध्यायः) गुरुः (पुं.), आचार्यः, शिक्षकः २. पंडितः, विद्वत् (पुं.) ।
पान^१, सं. पुं. (सं. न.) पीतिः (स्त्री.), आन्व-मनं, भयनं, द्रवद्रव्यस्य गलाधःकरणं २. मद्य-सुरा, यनं ३. पेयद्रव्यं ४. मर्षं ५. जलम् ।
 —**करना**, कि. त., दे. 'पीना' ।
 —**पात्र**, सं. पुं. (सं. न.) पानं, चक्कः, सरकः, पानभाजम् ।
पान^२, सं. पुं. (सं. पणं) तांबूली, तांबूलवल्ली, नाग, लता-वल्ली २. तांबूलं, पणं, नागवल्ली-दलं ३. क्रीडाः पत्ररंगभेदः ४. पत्रं, किसलयः ।
 —**गोष्ठी**, सं. स्त्री. (सं.) आपानं, मद्यपानं, चक्रं-सभा ।
 —**दान**, सं. पुं. (हिं + क) *परमेशानं, तांबूल-करकः ।
पानक, सं. पुं. (सं. न.) *नधुराम्लपेयम् ।
पाना, कि. स. (सं. प्रापणं) प्रा., आप् (स्वा. उ. अ.), लभ् (भ्वा. आ. अ.), विद् (तु. उ. दे.), समः-सद् (प्रे.) आ-पनि-पद् (दि. आ. अ.) अधिगम्, आदा (जु. आ. अ.), गद् (कृ. प. से.), २. (सुखादि) अनुभू, भुज् (ह. आ. अ.) ३. भुष् (भ्वा. उ. से.), विद् (अ. प. से.) ४. तुल्य-सदृश (वि.) भू

५. खाद् (भ्वा. प. से.) ६. सक् (भ्वा. आ. से.) । सं. पुं., प्रःपथं, लब्धिः (स्त्री.), अधि-
गमनं, आदानं, अनुभवः, बोधः, युक्तिः इ. ।
पानेवाला, सं. पुं., प्रापवाः, अधिगंतु-आडात्-
महीत् (पुं.) इ. ।
पाने बोध, वि., प्राप्य, लभ्य, आदेय, ग्राह्य इ.
पाया हुआ, वि., प्राप्त, अधिपत्ता, लभ्य,
शुद्ध इ. ।
पानिप, सं. पुं. (हि. पानी) द्युतिः-कांतिः
(स्त्री.) २. दे. 'पानी' ।
पानी, सं. पुं. (सं. पानीयं) वारि-अंभस्
(न.), दे. 'जल' २. कांतिः-द्युतिः (स्त्री.)
३. प्रतिष्ठा, संमानः ४. वृष्टिः (स्त्री.) ५. पीरुपं,
वीर्यं ७. वातवर्पादिस'मधी, *जलवायु (न.)
७. रसः ८. शीतलवस्तु (न.) ९. समयः,
अवसरः १०. परिस्थितिः (स्त्री.) ।
—**दार**, वि. (हि. + फा.) कातिमत्, भासुर
२. मान्य ३. आत्माभिमःनिन् ।
—**देवा**, सं. पुं., तर्पकः, पिंडदः २. पुत्रः
३. स्ववंशीयः ।
—**फल**, सं. पुं., दे. 'सिमाहा' ।
—**से डरना**, सं. पुं., आलोकं, जल, आतंकः-
संवासः ।
—**कर देना**, मु., क्रोध अपनी (भ्वा. प. अ.)
शम् (प्रे., शमयति) ।
—**का बुलबुला**, मु., क्षणभंगुर, असार, नश्वर ।
—**की तरह बहाना**, मु., अपव्यय (चु.),
अमितं न्यय, मुधा क्षी (प्रे., क्षययति) ।
—**के मोल**, मु., स्वल्पमूल्येन, अल्पपार्थेण ।
—**देना**, मु., (पितृन्) उदकेन वृष् (प्रे.)
२. उदकां पव (प्रे.)-निषिच् (तु. प. अ.) ।
—**पचना**, मु., वृष् (भ्वा. प. से.) ।
—**पानी होना**, मु., अतीव लज्जलस्ज (तु.
आ. से.) ।
—**पी-पी कर कोसना**, मु. नितरां आकुश-शष्
(भ्वा. प. अ.)-अभिशंस (भ्वा. प. से.) ।
—**भरना**, मु., (तुलनायां) तुच्छ (वि.)
प्रतीयते ।
—**मैं आग लगाना**, मु., शांतं कल्हं पुनः
उज्जीव् (प्रे.)-नवीकृ ।
—**लगाना**, मु., प्रतिकूलजलवायुनाऽस्वस्थ
(वि.) भू ।

—**सा पतला**, मु., जलरूप, जलबहुल, जल-
विरल ।
अद्रक का—, सं. पुं., आर्द्रकचक्रम् ।
खारा—, सं. पुं., क्षारजलम् ।
पानीय, वि. (सं.) पेय, पातल्य । सं. पुं. (सं.
(न.) दे. 'जल' ।
पाप, सं. पुं. (सं. न.) अधर्मः, पापम् (पुं.)
पापकं, किल्बिषं, कल्मषं, वृंजनं, अधं, अरुम्,
एतस् (न.), दुरितं, दुःकृतं, पातकं, शल्यं
२. अपराधः, दोषः ३. कथः ४. पापवृद्धिः
(स्त्री.) ५. अनिष्टं, अहितम् ।
—**कटना**, वि. अ., पापेभ्यः मुन् (कर्म.),
पापं नश् (दि. प. वे.) ।
—**करना**, वि. स., पापं कृ अथवा आचर
(भ्वा. प. से.) २. अपराध (दि. भ्वा. प. अ.) ।
—**नाशी**, वि. (सं-शिव्) पापघ्न, अचनाशक,
पापहर ।
—**बुद्धि**, वि. (सं.) पाप-कुन्दुर, मति-बुद्धि ।
—**रोग**, सं. पुं. (सं.) रजितरोगः (प्रमेह दि.) ।
—**लोक**, सं. पुं. (सं.) दे. 'नरक' ।
पापक, वि. (सं.) दुर्जन, दुष्ट, पापिन् ।
सं. पुं., दुर्जनः, पापः, पातकित् २. कुकर्तृ,
पापम् ।
पापक, सं. पुं. (सं. पपंटः) माषयोनिः, शिवो-
पूपः, वेदलपिष्टकः । वि., तनु २. शुष्क ।
—**बेलना**, मु., शीरं परिश्रम (दि. प. से.)
२. दुःखं जीव् (भ्वा. प. से.) ।
पापड़ा, सं. पुं. (सं. पपंटः) अरकः, बरकः,
प्रगंधः, सुगन्धः २. दे. 'पित्तपापड़ा' ।
—**चार**, सं. पुं. (सं. पपंटः) *कदलीधारः ।
पापर, सं. पुं. (अं.) दग्धिः, अकिञ्जनः, निर्धनः ।
पापाचार, सं. पुं. (सं.) दुराचारः, दुर्दृष्टम् ।
पापात्मा, वि. (सं. स्वन्) दे. 'पापी' ।
पापिन-नी, वि. स्त्री. (सं.) पातकिनी, दुष्टा,
दुराचारिणी, पाप-करो-कारिणी, एतस्विनी
२. अपराधिनी, दोषिणी ।
पापिष्ट, वि. (सं.) पाप(पि. तम, दुष्टतम) पापिष्टा
(स्त्री.) = पापतमा, दुष्टतमा] ।
पापी, वि. (सं. पिन) पातकित्, पाप, पाप-
कर, कु-पाप-दुष्-दुष्ट-कर्मन्, एतस्विन्, किल्बि-
पित्, पाप-निरत-बुद्धि-मति, पापकृत-पापा-
रतन् २. अपराधिन्, दोषिन् ।

पापोश

[३६६]

पारावत

पापोश, सं. स्त्री. (फ़ा.) दे. 'जूता' ।
 पाबंद, वि. (फ़ा.) निः, बद्ध, परतन्त्र, निरुद्ध,
 संयत, नियंत्रित ।
 पाबंदी, सं. स्त्री. (फ़ा.) बंधः, दंडनं, नियं-
 त्रणं-गा २. चित्रशता, वाध्यता ।
 पाम, सं. पुं. (भं. पामन्) पामा, विचर्चिका,
 खजूः—कङ्कतिः (स्त्री.) ।
 —घ्न, सं. पुं., (सं.) पामारिः, गन्धकः,
 सौगन्धिकः ।
 पामन, वि. (सं.) पाम-पामा-खजूः, पीडित-ग्रस्त ।
 पामर, वि. (सं.) दुष्ट, खल, दुर्वृत्त २. नीच,
 अधम ३. मूर्ख, जट ।
 पामाल, वि. (फ़ा.) पदाःंत, पददलित,
 पादलुण्ण, अव-सं-भ्रंशित २. वि-ध्वस्त-नष्ट ।
 पार्थैचा, सं. पुं. (फ़ा.) *पादायामर्जघा ।
 पार्थैता, सं. पुं. (हिं. पार्थै) खट्वायाः *पद्मानं,
 *पदतानः ।
 पार्थैती, सं. स्त्री., दे. 'पार्थैता' ।
 पार्थैदाज्ञ, सं. पुं. (फ़ा.) *पादघर्षणम् ।
 पाय, सं. पुं. (सं. पादः) दे. 'पाँव' ।
 पायझाना, सं. पुं., दे. 'पाञ्जाना' ।
 पायजामा, सं. पुं. दे. 'पाजामा' ।
 पायजेव, सं. स्त्री., दे. 'पाजेव' ।
 पायद्दार, वि. (फ़ा.) निरः, स्थायिन्, दृढ ।
 पायदाही, सं. स्त्री. (फ़ा.) चिरस्थायिता, दृढता ।
 पायमाल, वि. (फ़ा.) दे. 'पामाल' ।
 पायल, सं. स्त्री. (हिं. पाय) दे. 'पाजेव'
 २. बंशनिःश्रेणी ३. शीघ्रगामिनी हरित्तनी ।
 पायस, सं. पुं. (सं. पुं. न.) परमान्नं, दे.
 'खीर' २. श्रीवासः, दे. 'तारपीन' ।
 पाया, सं. पुं. (सं. पादः) (पर्वकादीनां)
 पादः, जंघा, टंगा, २. स्तंभः, रथूणा, स्वाणुः
 (पुं.) ३. पदं, पदवी-विः (स्त्री.), स्थितिः
 (स्त्री.) ४. सोपातः, भयः-मार्गः, परम्परा ।
 पायु, सं. पुं. (सं.) दे. 'गुदा' ।
 पारगत, वि. (सं.) पारग, परतीर-पार-गत,
 २. प्रौढर्षदित, अधीतिन्, सुविद्वस्, शास्त्र-
 मर्मज्ञ ।
 पार, सं. पुं. (सं. पुं. न.) पर-तीर-तटं
 २. अन्यतरं तटं ३. पर-अग्निमुख, पार्श्वः-विज्ञा
 ४. अंतः, पर्वतः, सीमा ५. तलं, अधोभागः ।
 अव्य., पादे, दूरे, अग्रे, परतः ।

—करना, क्रि. स., सं-उच्च, तु (भ्वा. प. से.),
 उच्च-लब्ध् (भ्वा. आ. से.; चु.), अति-र
 (अ. प. अ.), अतिक्रम् (भ्वा. प. से.) ।
 २. समाप् (स्वा. उ. अ.) संपूर (चु.),
 निर्बृत् (प्रे.) दे. 'बीधना' ।
 —दुर्शक, वि. (सं.) स्वच्छ, किरण-प्रकाश-
 भेष ।
 —दुर्शी, वि. (सं. -शिन्) दूरदेशिन्, भविष्य-
 देशिन् ।
 —पाना, मु., सम्यक् शुब् (भ्वा. प. से.),
 आर्षंतं वा (अ. प. अ.) अथवा संपूर (चु.) ।
 आर—, सं. पुं. पारापारं, पारावारम् । क्रि. वि.,
 अवारपारम् ।
 वार—, सं. पुं., दे. 'वारपार' ।
 पारखी, सं. पुं. (हिं. परख) परीक्षकः, युष्ण-
 दोषविद् (पुं.) ।
 पारग, पारगत, वि. (सं.) दे. 'पारंगत' ।
 पारण, सं. पुं. (सं. न.) पारणा, उपवासान-
 त्तरं प्राथमिकभोजनं २. तर्पणं ३. समाप्तिः
 (स्त्री.) ।
 पारतंच्य, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'परतंत्रता' ।
 पारद्, सं. पुं. (सं.) दे. 'पारा' ।
 पारदेशिक-श्री, वि., दे. 'परदेशी' ।
 पारधी, सं. पुं., दे. 'शिकारी' ।
 पारलौकिक, वि. (सं.) आधुमिक, परलोक-
 संबन्धिन्-विषयक, अपार्थिव ।
 पारस, सं. पुं. (सं. स्पर्शः) स्पर्शं, मणिः-
 उपलः २. अतिलाभदः पदार्थः ।
 पारसाल, सं. पुं. (सं. + पार + फ़ा. साल) गत-
 बर्षं, परतु (अव्य.) । क्रि. वि., गतान्धे, परतु ।
 पारसी, वि. (फ़ा.) पारसवासिन् २. भारतस्थाः
 पारसीकाः ३. 'फ़ारसी' ।
 पारसीक, सं. पुं. (सं.) पारसदेशः, पारसिकः
 २. पारसवासिन् ३. पारसघोटकः, बानासुजः ।
 पारस्परिक, वि. (सं.) दे. 'परस्पर का' ।
 पारा, सं. पुं. (सं. पारः) महा-दिव्य-रसः,
 रस, राजः-नाथः-उत्तमः-इन्द्रः, चपलः, पारदः,
 शिववीजं, सिद्धधातुः ।
 पारायण, सं. पुं. (सं. न.) समापनं, समाप्तिः
 (स्त्री.) २. आश्रन्तपाठः ।
 पारावत, सं. पुं. (सं.) कपोतः, २. कपिः
 ३. पर्वतः ।

पारावार, सं. पुं. (सं.) समुद्रः । (सं. न.) तटद्वयं २. सीमा, पर्यंतः, अवधिः ।

पारिजात, सं. पुं. (सं.) सुर-देव-कल्प-तरु-वृक्षः, मंदारः ।

पारिजातक, सं. पुं. (सं.) देवतरुषु अन्यतमः २. हरशृंगारः ३. कावनालः, कोविदारः ४. पारिभद्रः, देववृक्षविशेषः ।

पारितोषिक, सं. पुं. (सं. न.) सिद्धिपालं, जयलाभः, दे. 'इनाम' ।

पारिपंथिक, सं. पुं. (सं.) परिवंथिन्, लुंठ- (टा, ठा) कः, मार्गांतस्करः ।

पारिभाषिक, वि. (सं.) सांकेतिक, परिभाषा-संकेत-संबन्धिन् ।

पारिषद, सं. पुं. (सं.) नभासद (पुं.), सभ्य, पारिषद्य २. गणः, अनुचरवर्गः ।

पारी, सं. स्त्री., दे. 'बार' ।

पार्थक्य, सं. पुं. (सं. न.) पृथक्ता, भिन्नता २. वियोगः, विरहः, विश्लेषः ।

पार्थिव, वि. (सं.) मृण्मय (-यो स्त्री.), मात्तिक (-को स्त्री.) २. औम, पृथिवीसंबन्धिन् ३. लौकिक, मेहिक (-को स्त्री.) । सं. पुं., नृपः २. कुजः ।

पार्लियामेंट, सं. स्त्री. (अं.) व्यवस्थापिका सभा ।

पार्वती, सं. स्त्री. (सं.) उमा, अदिजा, अदिका, गौरी, नंदा, भवानी, महादेवी, शिवा, रुद्राणी, सती, सिद्धाहिनी, हिमाद्रिलयया, हैमवती ।

—नंदन, सं. पुं. (सं.) कांतिकेयः ।

पादर्व, सं. पुं. (सं. पुं. न.) कक्षाधोभागः, पार्श्व-पक्षः, भागः, कुक्षिः २. पक्षः, पार्श्वः-र्ध्वं, समीप-निकट-स्थानं ३. पार्श्वस्थि (न.), पार्थक्यम् ।

—वर्ती, सं. पुं. (सं. तिप्) समीपस्थ-निकटस्थ-जनः ।

—शूल, सं. पुं. (सं. पुं. न.) शूलरोगभेदः ।

पाल^१, सं. पुं. (सं.) पालकः, पोषकः २. पद्मसहः, दे. 'पीकदान' ।

पाल^२, सं. पुं. (हिं. पालना) फलपाकाय पलालास्तरणम् ।

पाल^३, सं. पुं. (सं. पटः वा पाटः >) नौ,* वातपटः २. पट, मलयः-गृहं ३. शक्याच्छादनम् ।

पाल^४, सं. स्त्री. [सं. पालिः (स्त्री.)] सेतुः, धरणः, वप्रबंधः २. उच्च-तीर-कुलं, दे. 'फगार' ।

पालक^१, सं. पुं. (सं.) पोषकः, रक्षकः, पालन-

कर्तृ-पालयितु २. अधः, पालः-रक्षः ३. दत्तक-पुत्रः ४. नित्रकवृक्षः ।

पालक^२, सं. पुं. (सं. पालकः) पालकी, सु-स्निग्ध-पत्रा, मधुरा, क्षुरपत्रिका, ग्रामीणा ।

पालकी, सं. स्त्री. (सं. पत्यकः >) शिरस्का, डयनं, शिविका, *पल्लकी, रथगर्भकः, याव्य-यानम् ।

—गाढी, सं. स्त्री., *पल्लकी शकटी ।

पालनू, वि. (सं. पालित्) गृह-वर्धित-पोषित, गृह, पैक, गृह-धाम- ।

पालथी, सं. स्त्री., दे. 'पलथी' ।

पालन, सं. पुं. (सं. न.) भरणं, पोषणं, सं-वर्धनं, अन्नवसनै रक्षणं २. निर्वाहः, अनुकूल-चरणं, अनुवर्धनं, साधनं, पूरणम् ।

पालना, क्रि. ल. (सं. पालनं) परि, पा (प्रे. पालयति), परि, पुष् (भ्वा. कृ. प. से. तथा प्रे.), संवृष् (प्रे.), सं, भृ (भ्वा. जु. प. अ.) २. (पशुविहगाम्) विनी (भ्वा. प. अ.), दम् (प्रे.), गृहे पुष्-संवृष् (प्रे.) ३. अनुकूलं आचर (भ्वा. प. से.), निर्बृह (प्रे.) संपूर-साध (प्रे.) । सं. पुं., दे. 'पालन' २. (शिशु-) प्रेक्षः-शोका ।

पालने योग्य, वि., परि, पालनीय-पोषणीय, भरणाय, विनेय, निर्वाहा, इ. ।

—त्राला, सं. पुं., दे. 'पालक^१(१)' २. विनेतृ, गृहे पोषकः ३. निर्वाहकः, साधकः ।

पाला^१, सं. पुं. (सं. प्रालेयं) तुषारः, नोहारः, कुञ्जटिका, मिहिका, तुहिनं, २. धनजलं, जल-धनः, तुषारसंवातः हिमं ३. शीतं, दैत्यं, हिमः ।

—मार जाना, मु., नोहारेण नश् (दि. प. वे.), तुषारेण ध्वंस (भ्वा. आ. से.) ।

पाला^२, सं. पुं. (हिं. पला) व्यवहारवसरः-संबन्धः ।

—पडना, मु., व्यवहारः-संबन्धः-कार्यं जन् (दि. आ. ने.) ।

पाले पडना, मु., वशीभू, अधीन (वि.) जन् ।

पाला^३, सं. पुं. (सं. पट्टः >) प्रधानस्थानं, मुख्यकार्यालयः २. विभाजकरेखा ३. क्षेत्रसीमा ४. अन्वर्थं वृहत्पात्रं ५. महायुद्धभूमिः (स्त्री.), व्याधामशाला ।

पालागन, सं. स्त्री. (हिं. पाय + लगना) चरणबुधनं, पादप्रणतिः (स्त्री.), प्रयासः, बंदना, नमस्कारः ।

पाला हुआ, वि., परि, पालित, पोषित, सं-
भूत, गृहे संवाधेत, संपूरित, रक्षित, इ. ।
पालित, वि. (सं.) दे. 'पाला हुआ' ।
पालिश, सं. स्त्री. (अं.) प्रनाजैव, *कातिकरी ।
पालिसी, सं. स्त्री. (अं.) नीतिः (स्त्री.), नवः
२. राजनीतिः-शासनरीतिः (स्त्री.) ३. उपायः,
शुक्तिः (स्त्री.) ४. आयतिरक्षणसमयलेखः,
संभाव्यहानिरक्षण-पत्रम्, आस्थासिका ।
—होलडर, सं., पुं. अथासिकाधारकः ।
पाली^१, सं. स्त्री. (सं. पालिः=पक्तिः) भारत-
वर्षस्य प्राचीनभाषाविशेषः (प्रायः बौद्ध धर्म-
ग्रंथ इती में हैं) ।
पाली^२, वि. (सं. लिन) पालक, पोषक २. रक्षक ।
पाली^३, सं. स्त्री. (सं. पल्लिः=स्थान) कुक्कुट-
शुद्धभूमिः (स्त्री.) ।
पावै, सं. पुं., दे. 'पाव' ।
पाव, सं. पुं. (सं. पादः) चतुर्थ, अंश-भागः,
तुर्व, तुरीयं २. (चार गिरह) गजतुर्व, हस्ताई
३. सेर, पादः, षट्कचतुष्कम् ।
पावक, सं. पुं. (सं.) अनलः, अग्निः २. तपः
३. सूर्यः । वि., पावन, शोधक, मार्जक ।
पावन, वि. (सं.) शुद्ध, पूत, पवित्र, शुभ्र
२. दे. 'पावक' । वि. [पावनी (स्त्री.)] ।
पावस, सं. स्त्री. (सं. प्राष्प) दे. 'बरसात'
(मौसिम) ।
पावा, सं. पुं., दे. 'पाशा' (१) ।
पाशा, सं. पुं. (सं.) शस्त्रभेदः, बंधन, २. जाल,
मृगबंधनी, पातिली, वासुरा ३. 'पाशा' ।
पाशात्त्य, वि. (सं.) पश्चिमदेशज, प्रतीच्य
२. उत्तर, उत्तरगामिन् ३. पश्चिम, चरम,
अपर, अवर ।
पाखंड, सं. पुं., दे. 'पाखंड' ।
पाखंडी, वि., दे. 'पाखंडी' ।
पापाष्प, सं. पुं. (सं.) दे. 'पत्थर' ।
पासंग, सं. पुं. (का.) प्रतिबोलकं, तुलापूरकम् ।
पासै, सं. पुं. (सं. पार्श्वः-श्रं) पट्टः, दिशा
२. अधिकारः, आधिपत्यं (अव्य.), निकटे,
समीपं, अंतिक-के, आरात, उपकंडं, निकषा,
समया, सविधे (सव अव्य.) ।
—पड़ोस, सं. पुं., समीप-सन्निकित, नेशः, प्रति-
वेशः २. प्रतिवेशः-प्रतिवासिनः (पुं. बहु.) ।
आस—, कि. वि., इतस्ततः, अभितः, परितः
२. दे. 'लगाम' ।

पास, सं. पुं. (अं.) *अनुज्ञापत्रम् ।
वि., उत्तीर्ण, सफल, सफलीभूत २. स्वीकृत,
उररीकृत ।
—पोटै, सं. पुं. (अं.) पार-निष्क्रम, पत्रम् ।
—बुक, सं. स्त्री. (अं.) धनागारपुरस्कम् ।
पासा, सं. पुं. (सं. पाशकः) दे. 'पासा' २. दे.
'धौसर' ।
—फैकना, मु., भास्यं परीक्ष (भ्वा. आ. से.)
२. अक्षैः दिव् (दि. प. से.) ।
पाहुना, सं. पुं. (सं. प्राधुणः) प्राधुण(भि)कः,
प्राधुणिकः, अतिथिः २. जामातु, दे. 'दामाद' ।
पाहुनी, सं. स्त्री. (लि. पाहुना) प्राधुणिका-की,
प्राधुणिकी २. आतिथ्य, अतिथि-सत्कारः ।
पिंग, वि. (सं.) आ-इषत्, पीत २. कपिल,
पिंगल, पिशांग ३. आ-इषत्, पिंगल-कपिल ।
पिंगल, सं. पुं. (सं.) छंदःसूत्रकारो मुनि-
विशेषः २. (पिंगलरचितं) छंदःशास्त्रं ३. कपिः
४. उल्लूकः ५. अग्निः । वि., दे. 'पिंग' ।
—शास्त्र, सं. पुं. (सं. न.) छन्दो-विशा-
विज्ञानम् ।
पिंगला, सं. स्त्री. (सं.) शरीर-नाडीभेदः ।
पिंगी, सं. स्त्री. (सं.) शमी, शिवा, भद्रा २.
२. मूषा, मूषिका ३. क्षुद्र-सूपकः-असुः ।
पिंजड़ा-ना, सं. पुं. (सं. पिंजरं) पंजरः-रं, वि.
(वी) नंसः ।
पिंजर, सं. पुं. (सं. न.) वायास्थिवृद्धं, कंकालः,
अस्थिपंजरः-रं २. स्वर्णं ३. दे. 'पिंजड़ा'
वि., ईषत् पीत २. सुवर्णम् ३. कपिल, पिंगल ।
पिंड, सं. पुं. (सं. पुं. न.) गोलः-लं, बर्तुलद्रव्यं
२. लोष्ठः-ठं, मूल-खंडः पिंडः, द्रव्यखंडः-डं,
गंडः, धनः ३. चयः, राशिः, ४. निवापः,
श्रद्धोपयोगिभक्तादिगोलः ५. आहारः ६.
शरीरं, देहः ।
—खजूर, सं. स्त्री. (सं. पिंडखजूरः) राजजंबूः
(स्त्री.), स्थूलपिण्डा, पिंडखजूरी, दीप्या,
फलपुष्पा, हयमक्षा ।
—दान, सं. पुं. (सं. न.) पिंडनिर्वापः ।
—छोड़ना, मु., न वाप् (भ्वा. आ. से.) ।
पिंडकी, सं. स्त्री. (सं. पिंडी) लघापिंडः,
पिंडिका, पिंडिः (स्त्री.), पिनिडिका ।
पिंडा, सं. पुं. (सं. पिंडः-डं) दे. 'पिण्ड' (१,
२, ४, ६) ।
—पानी देना, मु., पिण्डभ्यः पिंडोदकं दा ।

पिंडालू, सं. पुं. (पिंडालः) रोमाळः, रोम-पिंड, कंदः, रोमशः ।
पिंडिका, सं. स्त्री. (सं.) क्षुद्रपिंडः-डं २. लोष्ठकं ३. दे. 'पिंडली' ४. चक्रनाभिः (स्त्री.) ५. प्रति-मावेदिका ।
पिंडित, वि. (सं.) पिंडी-वनी, भूत २. गणित ३. गुणित ।
पिंडी, सं. स्त्री. (सं.) दे. पिंडिका (१, ३, ४) । २. अलावूः (स्त्री.) ३. पिंडखलूरः ४. बलि-वेदी ५. सूत्रगोलः-रुम् ।
पिउ, वि. (सं. प्रिय.) वल्लभ, कांत, दयित । सं. पुं., पतिः, भर्तृ ।
पिक, सं. पुं. (सं.) कोकिलः, दे. 'कोयल' ।
—पिंधु, सं. पुं. (सं.) पिक, रागा-वल्लभः, आश्रवृक्षः ।
—पैनी, सं. स्त्री., कोकिलकंठा-ठी, सु-मधु, कंठा-ठी ।
पिकानन्द, सं. पुं. (सं.) पिकवान्धवः, वसन्तः, ऋतुराजः ।
पिघलना, क्रि. अ. (सं. प्रदरणम् >) गल-क्षर (भ्वा. प. से.), वि. दु (भ्वा. प. अ.), द्रवीभू, वि. ली (दि. आ. अ.) २. करुणादी-दयादीभू, करुणया दु, दय (भ्वा. आ. से.) । सं. पुं. क्षरणं, गलनं, विलयनं, द्रवणं २. दयादी-भावः, दयनं, अनुकम्पनम् ।
पिघलनेवाला, वि. वि-लेय, द्रवणीय, गलनाहं ।
पिघलाना, क्रि. सं., व. 'पिघलना' (१-२) के प्रे. रूप । सं. पुं., वि. द्रावणं-लावनं, द्रवीकरणम् ।
पिघलानेवाला, सं. पुं., विद्रावकः, विलयनकृत् ।
पिघला हुआ, वि., वि-लीन, वि-द्रुत, गलित ।
पिघलाया हुआ, वि., वि-द्रावित-लापित, क्षारित, गलित ।
पिघालबिंदु, सं. पुं. (हि. + सं.) द्रावाक्षः, द्रवण, अडक-बिंदुः ।
पिचं (चिं) ड, सं. पुं. (सं. पुं. न.) उदरं, जठरं, फंडः ।
पिचकना, क्रि. अ., व. 'पिचकाना' के कर्म. के रूप ।
पिचकाना, क्रि. स. (अनु. पिच) आ-ति-सं-पीड (चु.), संभ्रद (क. प. से.), आ-सं-कुच (भ्वा. प. से.) । सं. पुं., संपीडनं, संमर्दनं, संकोचनम् ।

पिचकानेवाला, सं. पुं., संपीडकः, संमर्दकः ३. ।
पिचकाया हुआ, वि., संपीडित, संकोचित ३. ।
पिचकारी, सं. स्त्री. (अनु. पिच >) रेचन-यन्त्रं, शृङ्गं, शृङ्गकं, वस्ति (पुं. स्त्री.) ।
—छोड़ना या मारना, सु., शृङ्गेय क्षिप् (तु. प. अ.), तरलद्रव्यं सवेगं प्राप् (दि. प. से.) ।
पिचपिचा, (हि. पिचपिचाना) उन्न, विलम्ब, स्थान, सांद्र ।
पिचपिचाना, क्रि. अ. (अनु. पिचपिच >) पिचपिचावते (ना. धा.), शनैः क्षर (भ्वा. प. से.), प्र-स्तु (अ. प. से.) ।
पिचुका, सं. पुं., दे. 'पिचकारी' २. दे. 'गोल-गण्या' ।
पिच्छ, सं. पुं. (सं. न.) पुच्छ, पक्षः-वाजः २. मयूरपुच्छं, बर्डे-ई, शिखंडः, कलापः ३. शरपक्षः, पुंछः-खड्ग ४. पक्षः, वाजः ५. शिखा, शोखरम् ।
पिच्छल, वि. (सं.) विकणः-गा-णम्, मेदरः-रारम्, इलक्षणः-क्षणा-क्षणम् ।
पिच्छना, क्रि. अ. (हि. पिच्छादी) मंदं चल- (भ्वा. प. से.), मंदावते-विरायति (ना. धा.), पश्चात् वृत् (भ्वा. आ. से.) ।
पिच्छनेवाला, सं. पुं., मंदः, मंथरः मंद-गामिन् ।
पिच्छला, पिच्छलगू, सं. पुं. (हि. पीछे + लगना) अनुयायिन्, अनुगामिन्, अनुवर्तिन्, शिष्यः २. सेवकः ३. अश्रितः ।
पिच्छला, वि. (हि. पीछा) पृष्ठस्थ, पश्चिम, पृष्ठ व, पश्च-पश्चात्, २. उत्तर, उत्तरकालीन, अपर, पर, पश्चात्स्थ ३. अन्य, अन्तिम, उत्तर ४. गत, अतीत, पुराण ।
पिच्छवाड़ा, सं. पुं. } (हि. पीछा) गृहस्थ
पिच्छवाड़ी, सं. स्त्री } पृष्ठं, पृष्ठभागः २. पृष्ठ-पश्चात्, भागः ३. गृहपृष्ठवर्तिभूमिः (स्त्री.) ।
पिच्छाड़ी, सं. स्त्री. (हि. पीछा) पृष्ठं, पृष्ठ-पश्चात्-भागः-देशः २. (अश्वादीनां) पृष्ठपादरज्जुः (स्त्री.) ।
पिटना, क्रि. अ. (हि. पीटना) ताड-आहन (कर्म.) ।
पिटवाना, क्रि. प्रे., व. 'पीटना' के प्रे. रूप ।
पिटाई, सं. स्त्री. (हि. पीटना) ताडनं, प्रहरणं, आहननं २. ताडनमृतिः (स्त्री.) ।

पिटारा

[३७३]

पिनाक

पिटारा, सं. पुं. (सं. पिटः) पेटः, कर्बुदः, कडोलः ।
 पिटारी, सं. स्त्री. (हिं. पिटारा) पिटकाःकं, पेट(टा)कः, पेडा, मंजूपा, पेडि(डि)का, तरीःरिः (स्त्री) ।
 पिटू, सं. पुं. (हिं. पीठ) अनुगामिन, अनु-यायिन २. सहायः, साहाय्यकारिन् ।
 पित, सं. स्त्री. (सं. पित्तं >) धर्मचर्चिका, धर्मकंदकः ।
 पितपापदा, सं. पुं. (सं. पर्यटः) अरकः, बरकः, सुः, तिक्तः, चरकः, शीतः, प्रमंथः ।
 पितर, सं. पुं. (सं. 'पितृ'का बहु.) पिंड-स्वधा-श्राद्ध, भुंजःभाजः, पिंडाशः (सब बहु.) ।
 पितराहं, सं. स्त्री. (हिं. पीतल) पित्तल-नाम, किट्ट-मल-स्वादः, दे. 'कसाव' ।
 पिता, सं. पुं. (सं. पितृ) तातः, जनकः, बन्धु, प्रसवितृ, जनयितृ, जनित्र, जन्मदः, बीजिन ।
 —मह, सं. पुं. (सं.) दे. 'दादा' ।
 —मही, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'दादी' ।
 पितृ, सं. पुं. (सं.) दे. 'पिता' २. दिवंगताः पूर्वपुरुषाः २. देवविशेषाः ।
 —श्रण, सं. पुं. (सं. न.) जायमानस्य ऋण-भेदः (अपना पुत्र उत्पन्न होने पर मनुष्य पितृ-श्रण से मुक्त होता है । धर्म.) ।
 —कर्म, सं. पुं. [सं. मीन (न.)] श्राद्धतर्पण-ादिक्रिया ।
 —गृह, सं. पुं. (सं. न.) इमशानं २. दे. 'मायका' ।
 —तर्पण, सं. पुं. (सं. न.) नि-निर्, चापः, निवपनं, निर्वपणं २. दे. 'तिल' ।
 —तिथि, सं. स्त्री. (सं. पुं. स्त्री.) अमाव- (वा) स्या ।
 —तीर्थ, सं. पुं. (सं. न.) गया २. वाराण-स्यादितीर्थस्थानानि ३. तर्जन्यगुष्ठयोर्मध्यम् ।
 —पक्ष, सं. पुं. (सं.) आश्विनकृष्णपक्षः २. पितृसंबन्धिनः (बहु.) ।
 —यज्ञ, सं. पुं. (सं.) पितृतर्पणम् ।
 —लोक, सं. पुं. (सं.) पितृमुवनम् ।
 पितृक, वि. (सं.) दे. 'पैतृक' ।
 पितृव्य, सं. पुं. (सं.) दे. 'चाचा' ।
 पित्त, सं. पुं. (सं. न.) मायुः, पलज्वलः, तिक्तधातुः ।

—ज्व, वि. (सं.) पित्त-मायु, हर-नाशक ।
 —ज्वर, सं. पुं. (सं.) पैचिक-मायुज, ज्वरः ।
 —की थैली, सं. स्त्री., पित्तकीवः (gall-bladder) ।
 —पथरी, सं. स्त्री., पितामरो ।
 —पापदा, सं. पुं., दे. 'पितपापदा' ।
 —प्रकृति, वि. (सं.) मायुप्रकृति २. क्रोधिन् ।
 —प्रकोप, सं. पुं. (सं.) पित्त-मायु, प्रकोपः-आधिक्य-विकारः ।
 —हर, वि. (सं.) दे. 'पित्तन' ।
 पित्तल, सं. पुं. (सं. न.) आरकूटः, टं, भारः, सुद-सुवर्ण, रौती-तिः (स्त्री.), पीतलकं, पीतकं, पिंगललोहम् ।
 —का, वि. : पित्तल-पीतक, मय (—यी स्त्री.) ।
 पिता, सं. पुं. (सं. पित्तं >) दे. 'पिताराय' २. साहसं, वीर्यं, शौर्यं २. कोपः, क्रोधः ।
 —खौलना, सु., अत्यंत क्रुध (दि. प. अ.) ।
 —सिकालना, सु., नितरां परिश्रमं (प्रे.) ।
 —पानी करना, सु., सुतरां परिश्रमं (दि. प. से.) ।
 —भारना, सु., क्रोधं जि-नियम (भ्वा.प.अ.) ।
 पित्ताशय, सं. पुं. (सं.) पित्त-मायु, कोषः ।
 पित्ती, सं. स्त्री. (सं. पित्तं >) शीतपित्तम्, पित्तविकारजः त्वग्रोगमेदः, २. दे. 'पित' ।
 पिश्व, वि. (सं.) दे. 'पैतृक' । सं. पुं., (सं.) अग्रजः २. माधमासः ३. मघानक्षत्रम् ४. मधु (न.) ५. माघः, मांसलः ।
 पिश्या, सं. स्त्री. (सं.) अमावस्या २. पूणिमा ।
 पिटबी, सं. स्त्री., दे. 'पिटो' ।
 पिहा, सं. पुं. } (अनु. पिट)
 पिही, सं. स्त्री. } चटकभेदः २. तुच्छ, जीवः-पदार्थः ।
 पिधान, सं. पुं. (सं. न.) आच्छादनं, आवरणं, कोपः २. छदः, छदनं, पुटः-टंटी ३. अंसि-कोपः ।
 पिवायक, वि. (सं.) आ-प्र-च्छादक, आवरक ।
 पिन, सं. स्त्री. (अं.) *धातुकटकःकं, अन्ध-सूत्री ।
 पिनकना, कि. अ. (अनु.) (अहिफेनमद्रेन) इंपत् निद्रा-स्वप् (अ. प. अ.) ।
 पिनाक, सं. पुं. (सं. पुं. न.) (शिवस्य) चापः, धनुस् (न.) २. विशूलम् ।

पिनाकी, सं. पुं. (सं. किन्) शिवः, महादेवः ।

पिन्ना, सं. पुं. (सं. पिन्डः-डं) तैलकिट्ट-पिण्याकः, पिन्डः-डं २. सूत्र, गोलः-पिन्डः ।

पिन्नी, सं. स्त्री. (सं. पिन्डी) पिटिका, पिन्डिः (स्त्री.) कांदव, मिष्टान्न-भेदः २. दे. 'पिठली' ।

पिपरमिट्ट, सं. पुं. (अं.) पुदीनजातीयः क्षुपः, *पिपरमिट्टः २. *पिपरमिट्टम् ।

पिपरामूल, सं. पुं. (सं. पिप्पलीमूलं) कोलकट्ट, मूलं, ग्रथिक, सर्व-पड-कट्ट, अथि (न.) ।

पिपली, सं. स्त्री. (सं. पिप्पली) पिप्पलिः (स्त्री.) श्याम, कृष्णा, मागधी, ल(क)पणा, कोला, दंतफला ।

पिपासा, सं. स्त्री. (सं.) लृप्ता, दे. 'प्यास' ।

पिपासित, वि. (सं.) लृपित, दे. 'प्यासा' ।

पिपासु, वि. (सं.) लृपित, दे. 'प्यासा' ।

पिपीलक, सं. पुं. (सं.) पिपीलः, पिपीलिकः, पीलकः, दे. 'पीठा' ।

पिपीलिका, सं. स्त्री. (सं.) पिपी(वि)ली, हीरा, दे. 'पीठी' ।

पिप्पल, सं. पुं. (सं.) अश्वत्थः, दे. 'पीपल' ।

पिप्पलाद, सं. पुं. (सं.) कविविशेषः ।

पिप्पली, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'पिपली' ।

—मूल, सं. पुं., दे. 'पिपरामूल' ।

पिप्य, पिप्या, वि. (सं. प्रिय) वल्लभ, दांत, दयित । सं. पुं., प्रति; भर्तृ ।

पिप्यानो, सं. पुं. (अं.) आंगलदाशभेदः, *प्रियध्वानः ।

पिपिच, सं. पुं. (देश.) दे. 'नश्तरि' ।

पिरोना, कि. स. (सं. प्रोत >) सूत्र (जु.), गु(गु)क (तु. प. से.), सं-ग्रथ (कृ. प. से.), सं.-दभ (जु. भ्वा., तु. प. से.) । सं. पुं., सूत्रणं, गुं-फनं, ग्रंथनं, संदभंणम् ।

पिरोने योग्य, वि., सूत्रयितव्य, गुंफनीय इ. ।

पिरोनेवाला, सं. पुं., गुंफकी; ग्रंथका; सूत्रयितृ इ. ।

पिरोया हुआ, वि., सूत्रित, गुंफित, ग्रंथ(य)यित, संदभ्य इ. ।

पिल, सं. स्त्री. (अं.) गुटिका, गुलिका, वटिका ।

पिलना, कि. अ. (सं. पेलनं >) सहसा प्रविष् (तु. प. अ.) २. सर्वेण अभिद्रु (स्वा. प. अ.)-अपत्त (भ्वा. प. से.) ३. सोत्साहं प्रवृत् (भ्वा. आ. से.), अर्थात्

परिश्रम (दि. प. से.) ४. निष्पीड्-निष्कृष् (कर्म.) ।

पिलपिला, वि. (अनु. पिलपिल) शिथिल, अतिपक्व, अतिमृदु ।

पिलाना, कि. प्रे. (हिं. पीना) पा (प्रे. पाय-यति), घे (प्रे., धापयति), चम् (प्रे., चान-यति), २. स्तन्य-स्तनं पाथे (प्रे.) ।

पिल्ला, सं. पुं. (तामिल) श्-श्रावकः-शिशुः ।

पिशांग, वि. (सं.) कपिल, निंगल ।

पिशाच, सं. पुं. (सं.) भूतः, प्रेतः, राक्षसः, वेतालः, अहुरः, दानवः, दैत्यः, निशाचरः ।

पिशाचनी, सं. स्त्री. (सं. पिशानो) पिशाचिका, निशाचरी, राक्षसी ।

पिशुन, सं. पुं. (सं.) द्विजिह्वः, सूचकः, कर्गजपः २. परोक्षनिदरः, परिवारदरः ३. दुर्जनः, खलः, नीचः, गह्वरः ।

पिशुनता, सं. स्त्री. (सं.) पैशुन्यं, पिशुनत्वं, द्विजिह्वः २. परोक्ष-निदा-परि(री)वादः ३. दुर्जनता ।

पिष्ट, वि. (सं.) चूर्णित, चूर्णांकृत, क्षुण्ण । सं. पुं., दे. 'पीठी' ।

—पेषण, सं. पुं. (सं. न.) चूर्णितचूर्णनं, क्षुण्णक्षोदनं २. पुनरुक्तिः (स्त्री.), पौनरुक्त्यं, पुनर्, वचन-वादः ।

पिसनहारी, सं. स्त्री. (हिं. पीसना) *पेषण-कारी ।

पिसना, कि. अ., व. 'पिसना' के कर्म. के रूप ।

पिसाई, सं. स्त्री. (हिं. पीसना) पेषणं, चूर्णनं, विदलनं, क्षोदनं २. पेषण-चूर्णनं, भृतिः (स्त्री.)-भृत्या ३. घोरपरिश्रमः ।

पिसान, सं. पुं. (हिं. पिसा + सं. अन्नम्) दे. 'आटा' ।

पिसा(सवा)ना, कि. प्रे., व. 'पीसना' के प्रे. रूप ।

पिसौनी, सं. स्त्री., पेषणं, चूर्णनम् २. अन्न-चूर्णन-व्यवसायः ३. अतिपरिश्रमः ।

पिस्ता, सं. पुं. (फा.) मुकुलकम् ।

पिस्तौल, सं. पुं. (अं. पिस्टल) गुलिकाश्च, लघ्वन्वयसूत्रम् ।

पिस्सू, सं. पुं. (फा. पश्शहू = मच्छर) *कुटकी, देहिका, कुटः ।

पिहित, वि. (सं.) विरोहित, युक्त २. अर्थालंकारभेदः (सा.) ।

पीजना, क्रि. स. (सं. पिजनं=धुनकी >) *पिञ् (प्रे. पिजयति) दे. 'धुनना' ।

पी, सं. पुं. (सं. प्रियः) कान्तः, दयितः, वल्लभः, २. पतिः, भर्तृ, प्राणेश्वरः ।

पीक, सं. स्त्री. (अनु. पिच्) पण्डित्युतं, तांबूलमाला ।

—**धान**, सं. पुं. (हि. + का.) पतदग्रहः, प्रतिग्रहः, *वालःधानं, निष्ठीवनपात्रम् ।

पीच, सं. स्त्री. (सं. पिच्छा) पिच्छलः-लं-ला, भक्तमंडः-ईं, दे. 'मोड' ।

पीछा, सं. पुं. (सं. पश्चात् >) पृष्ठं, पृष्ठ-पश्च-पश्चाद्-भागः देशः २. अनु. गमनं-सरणं-श्रवणं ३. अन्वेषणम् ।

—**करना**, मु., अनु. श्या (अ. प. अ.) अनु. गभ-सु (भ्वा. प. अ.), अनु. धाद्-व्रज् (भ्वा. प. से.) २. साग्रहं प्रार्थं (चु. आ. से.) ।

—**छुड़ाना**, मु., परिहृ (भ्वा. प. अ.), वि. परि-वृद् (चु.), आत्मानं रक्ष् (भ्वा. प. से.)-त्रै (भ्वा. आ. अ.) ।

—**छोड़ना**, मु., न बाध् (भ्वा. आ. से.) व्यथ्-संतप् (प्रे.) ।

पीछे, क्रि. वि. (हि. पीछा) अनु (द्वितीया के साथ), पृष्ठतः, पश्चात्, पश्चाद्-पृष्ठ-भागे-देशे २. अनंतरं, ऊर्ध्वं, परं, पश्चात् (सब अन्य.) ३. अनुपस्थितौ, अभावे, परोक्षक्षे ४. निपनानंतरं ५. हेतौ; कारणत्, निमित्तात् ६. अर्थ, अर्थे, कृते (पृष्ठी के साथ) ७. अंततः, अंते, परिणामे ।

—**आना**, मु., विलंबेन या कालमतिक्रम्य आया (अ. प. अ.) ।

—**छूटना** या **रहना**, मु., अतिक्रम-अतिलंब् (कर्म.) मंदं चल् (भ्वा. प. से.) मंदाव्यते (ना. धा.) ।

—**चलना**, मु., अनु. श्या (अ. प. अ.), अनु. ब्रज् (भ्वा. प. से.)-सु (भ्वा. प. अ.)-कृ ।

—**पढ़ना**, मु., साग्रहं प्रार्थं (चु. आ. से.) २. सततं बाध् (भ्वा. आ. से.)-अर्द-व्यथ् (प्रे.) ।

—**लगाना**, मु., इष्टसिद्धये सततं अनुगम, २. रोगादिभिः निरंतरं पीड् (कर्म.) ।

पीटना, क्रि. स. (सं. पीडनं >) अभि-उप-प्र-हन् (अ. प. अ.), आहन् (अ. उ. अ.),

प्रह् (भ्वा. प. अ., सप्तमी के साथ) २. तद् (चु.), तुद् (तु. प. अ.), प्रह्, आहन्, अर्द-पीड् (चु.) ३. दंद् (चु.), निग्रह् (क्. प. से.) । सं. पुं., आहतिः (स्त्री.), आघातः, प्रहारः, ताडनं, प्रहरणं, पीडनं, दंडनं, निग्रहः; मृत्यु-शोकः, आपद्-विपद् (स्त्री.) ।

पीटने योग्य, वि., आहन्नीय, प्रहरणीय, ताडनीय, दंडयितव्य ।

पीटने वाला, सं. पुं., आ-अभि-हंतृ, प्रहर्तृ, ताडयितृ, पीडकः, दंडयितृ ।

पीटा हुआ, वि., आहत, प्रहत, ताडित, दंडित इ. ।

पीठ, सं. स्त्री. (सं. पृष्ठं) पश्चिमार्गं, तनु-चरमं २. पश्चाद्-पृष्ठ-भागः-देशः ।

—**चारपाई से लगाना**, मु., नितरां क्षि (भ्वा. प. अ.)-कृशी भू ।

—**ठोकना**, मु., उत्तिज्-प्रोत्सद् (प्रे.) ।

—**दिखाना** या **देना**, मु., पलाय् (भ्वा. आ. से.) अपधाव् (भ्वा. प. से.) २. परित्यज् (भ्वा. प. अ.) ।

—**पर हाथ फेरना**, मु., दे. 'पीठ ठोकना' २. पृष्ठं परामृश् (तु. प. अ.) ।

—**पीछे**, मु., अनुपस्थितौ, परोक्षक्षे ।

—**पीछे कहना**, मु. परोक्षे निद् (भ्वा. प. से.) ।

—**फेरना**, मु., प्रस्था (भ्वा. आ. अ.) २. प्राङ्मुखी भू (इ-ए) दे. 'पीठ दिखाना' ।

—**लगाना**, मु., मल्लयुद्धे उत्तानी निपत् (भ्वा. प. से.) २. सर्वथा पराजि (कर्म.) ।

—**लगाना**, मु., मल्लयुद्धे उत्तानं निपत् (प्रे.) ३. सर्वथा विजि (भ्वा. आ. अ.) ।

पीठ, सं. पुं. (सं. न.) (काष्ठपाषाणधात्वा-दिनिर्मितं) भासनं, पीठी २. (व्रत्तिनां) कुशासनं, विष्टरः ३. प्रतिमाधारः ४. अधिष्ठानं, आवासः ५. सिंहासनं ६. वेदी-दिका ७. प्रदेशः, प्रांतः ।

पीठक, सं. पुं. दे. 'पीठ' १. २. शिविकाभेदः ।

पीठा, सं. पुं. (सं. पिष्ट >) भोज्यभेदः । पिष्टः ।

पीठिका, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'पीठ' (१) । २. (स्तंभादीनां) आधारः, पादः ३. ग्रंथभागः ।

पीठी, सं. स्त्री. (सं. पिष्टिका), पिष्टाद्-दाली-लिः (स्त्री.), पिष्टद्विदलः ।

पीडक

[३७६]

पीसना

पीडक, सं. पुं. (सं.) दुःख, दुःदायकः दायिन्, क्लेशकरः, पीडावहः ।

पीडन, सं. पुं. (सं. न.) अर्दनं, वाधनं, उप-भर्दनं, क्लेशनं २. दे. 'दवाना' ।

पीडा, सं. स्त्री. (सं.) वेदना, व्यथा, दुःखं, रुज् (स्त्री.), रुजा, अ(अ)तिः (स्त्री.), क्लेशः, बाधः-धा, यातना, कष्टं, कुच्छ्रं, परि-सं, तापः ।

—कर, वि. (सं.) दुःख-कष्ट-व्यथा, कर-भावह-प्रद इ. [—करी (स्त्री.) = दुःखदा] ।

मानसिक—, सं. स्त्री. (सं.) आधिः, मनोव्यथा, चित्तोद्वेगः ।

शारीरिक—, सं. स्त्री. (सं.) व्याधिः, रोगः ।

पीडित, वि. (सं.) दुःखित, व्यथित, क्लेशित, सव्यथ, सरुज, कुच्छ्रगत ।

पीडा, सं. पुं. (सं. पीठ) दे. 'पीठ' (१) ।

पीडी, सं. स्त्री. (सं. पीठी) पीठकः कं (काष्ठा-दिनिमित्तं) उपासना, धुद्रासनम् ।

पीडी^२, सं. स्त्री. (सं. पीठी) वंशपरम्परायां विद्वृपितामहपुत्रपौत्रादीनां पूर्वोपरस्त्वानं, *संत-तिक्रमः ।

पीत, वि. (सं.) हरिद्राम, दे. 'पीला' ।

पीतल, सं. पुं. दे. 'पित्तल' ।

पीतांबर, सं. पुं. (सं. न.) हरिद्राभवरत्नं २. श्रीकृष्णचंद्रः । वि., पीतवस्त्रधारिन् ।

पीद्वी, सं. स्त्री., दे. 'विदी' ।

पीन, वि. (सं.) पीवर, स्थूल, पुष्ट, मांसल ।

पीनक, सं. स्त्री. (हि. पिनकना) अफेनलंघा, अहिफेननिद्रा ।

पीनता, सं. स्त्री. (सं.) पीवरता, स्थूलता, पुष्टता ।

पीनस^१, सं. पुं. (सं.) अपीनसः, नासिका-मयः, ब्राणशक्तिराहित्यम् ।

पीनस^२, सं. स्त्री. (फा. फीनस) दे. 'पालकी' ।

पीना, क्रि. स. (सं. पानं) पा-धे (भ्वा. प. अ.), चम् (भ्वा. प. से.), पानं कृ २. सह (भ्वा. आ. से.) ३. (क्रोधादीन्) नि-सं-चम् (भ्वा. प. अ.), प्र, शम् (प्रे.) ४. मभं पा, सुरापानं कृ ५. उतः, शुष् (प्रे.) ६. धूमं पा, धूमपानं कृ । सं. पुं., धवः, पानं, आचमनं, पीतिः (स्त्री.) ।

पीने बोध, वि. पेय, पानीय, चमनीय, धेय ।

पीनेवाला, सं. पुं.-ध्वयः पायिन्, पालृ २. पान-, आसक्तः-रतः-शीलः, मद्यपः ।

पीया हुआ, वि., पीत, पीत, चांत ।

पीनोध्नी, सं. स्त्री. (सं.) पीवरस्तनी गौः ।

पीप-न्व, सं. स्त्री. (सं. पूयः-यं) क्षतजं, मलजं, प्रसितं, पूयनं, कुणपम् ।

—पडना, क्रि. अ., पूष (भ्वा. आ. से.) ।

पीपल^१, सं. पुं. (सं. पिपलः) अश्वत्थः, क्षौर-शुनि-बोधि-द्रुमः, चल, दलः-पत्रः, कुञ्ज राशनः ।

पीपल^२, सं. स्त्री., दे. 'पिपला' ।

पीपलामूल, सं. पुं., दे. 'पिपरामूल' ।

पीपा, सं. पुं. (देश.) *नरहपःश्वम् ।

पीपु, सं. पुं. (सं.) काकः, वायसः २. सूर्यः ३. अग्निः (पुं.) ४. उलूकः ५. समयः ६. सुवर्गम् ।

पीपूष, सं. पुं. (सं. पुं. न.) सुधा, अमृतं २. (नवप्रसूतायाः गौः) दुग्धम् ।

—मर्षा, वि. (सं.-पिन्) सुधास्वदिन, सुमधुर ।

पीर^१, सं. स्त्री. (सं. पीडा) दे. 'पीडा' २. सहा-नुभूतिः (स्त्री.) ३. प्रसन्नपीडा ।

पीर^२, वि. (फा.) बृद्ध, जरठ २. धूर्तं । सं. पुं., धर्मगुरुः, सिद्धः (सुसलमान) ।

पीरी, सं. स्त्री. (फा.) जरा, वार्धकं-वयम् ।

पील, सं. पुं. (फा.) गजः, द्विपः ।

—पाँव, सं. पुं. (फा. + हि.) श्लीपदं, शिला-पदम् ।

पीला, वि. (सं. पीत) पीतल, हरिद्राभ, सुवर्ण-कुंकुम-वर्णं २. निस्तेजस्क, काँतिहीन । (पीली (स्त्री.) = पीता, हरिद्राभा) ।

—डुब्लार, सं. पुं., पीतज्वरः ।

—पडना या होना, मु., पांडुच्छाय (वि.) भू., गतश्रीक-नीरक्त (वि.) जन् (दि. आ. से.) ।

पीलिया, सं. पुं. (हि. पीला) दे. 'पांडुरोग' ।

पीलू, सं. पुं. (सं. पीलः) गुडफलः, शीतसहः, विरेचनः, श्यामः, करभवल्लभः २. क्रमिः, कीटः ३. रागभेदः ।

पीव, सं. पुं., दे० 'पी' । सं. स्त्री., दे० 'पीप' ।

पीवर, वि. (सं.) दे. 'पीन' ।

पीसना, क्रि. स. (सं. पेषणं) पिष-धुद् (र. प. अ.), चूर्णं (जु.), चूर्णां कृ, मृद (क्र. प. से.) २. सजलं पिष् इ. ३. विकटं

पीसने योग्य

[३७७]

पुट

परिश्रम (दि. प. से.) । सं. पुं., पेपणं, चूर्णनं, मर्दनं, खंडनं २. पेपणीयपदार्थः ।

पीसने योग्य, वि., पेपणीय, चूर्णयितव्य इ. ।

पीसने वाला, सं. पुं. पेपकः, चूर्णयितृ, मर्दकः ।

पीसा हुआ, वि., पिष्ट, चूर्णित, मर्दित ।

—पीसना, मु., सतत घोरं च परिश्रमः ।

पीहर, सं. पुं. (सं. पितृगृहं >) नारीणां पितृ-वेदमन् (न.) ।

पुंगव, सं. पुं. (सं.) वृषः, वृषभः । वि., श्रेष्ठ, उत्तम (उ. नरपुंगवः=मानवोत्तमः) ।

पुंज, सं. पुं. (सं.) उत्कारः, राशिः, चयः ।

पुंड, सं. पुं. (सं.) पुंड्रः, दे. 'तिलक' ।

पुंडरीक, सं. पुं. (सं. न.) शुक्लपत्रं, शतपत्रं, महापत्रं, मित, अंबुज-अंबोजं २. कमलं ३. सिंहः ४. व्याघ्रः ५. तिलकः ६. श्वेतच्छत्रं ७. शंकरा ८. तीर्थविशेषः ९. कुष्ठभेदः ।

पुंडरीकाक्ष, सं. पुं. (सं.) विष्णुः । वि., कमल-नयन (नयनीना, स्त्री.) ।

पुंड्र, सं. पुं. (सं.) दे. 'पुंड्रक' (१) २. दे. 'पुंडरीक' (१) ३. दे. 'पुंड' ।

पुंड्रक, सं. पुं. (सं.) रसालः-ली, इक्षु-वादी-योनिः (स्त्री.), रसदालिका, करकशास्त्रिः, इक्षुभेदः । २. माधवी कृता ३. तिलकः ४. तिलकवृक्षः ।

पुंलिंग, सं. पुं. (सं. न.) पुरुषचिह्नं २. शिवनः ३. (प्रायः) पुरुषवाचकशब्दः (व्या.) ।

पुंश्री, सं. स्त्री. (सं.) कुलटा, व्यभिचारिणी, त्रपारंढा, स्वैरिणी ।

पुंसवन, सं. पुं. (सं. व.) संस्कारभेदः (धर्म.) ।

पुंस्त्व, सं. पुं. (सं. न.) पीरुयं, पुरुषत्वं, मैथुनसामर्थ्यं २. शुक्रं, वीर्यं ३. तेजस्, ओजस् (न.) ।

पुआ, सं. पुं. (सं. पूवः) अपुवः, पिष्टकः ।

पुआल, सं. पुं., दे. 'पयाल' ।

पुकार, सं. स्त्री. (हिं. पुकारनः) आह्वयनं, आह्वानं, आहावः, अहू(हु)तिः (स्त्री.), आका- (क) रण-णा, संबोधन २. परिद्वेषनं, दुःख-निवेदनं ३. प्रबलप्रार्थना, उच्चस्वरेण वाचना ४. चीत्कारः, उत्क्रोशः ।

पुकारना, क्रि. सं. (सं. प्लुतकरणं >) आ-ह्वे (स्त्वा. प. अ.), आह्वंसंबुध् (प्रे.) २. उच्चैः कम् (चु.), उद्बुध् (प्रे.) ३. तार-

स्वरेण यान् (स्त्वा. आ. से.)-मार्थं (चु. आ. से.) ४. रक्षार्थं आ-वि-कृश् (स्त्वा. प. अ.)

५. (प्रतिकारार्थं) परिद्वेष् (स्त्वा. आ. से., चु.), दुःखं निविद् (चु.) ६. नाम कृ, अभिधा (जु. उ. अ.) । सं. पुं., दे. 'पुकार' ।

पुकारने योग्य, वि., आह्वेय, आकार्य, संबोधनीय ।

पुकारने वाला, सं. पुं., आह्वायकः, आकारकः इ. ।

पुकारा हुआ, वि., आहूत, आकारित इ. ।

पुक्कश, पुक्कस, सं. पुं. (सं.) निषादात् शूद्रायां जातो मनुष्यः, वर्णसंकरभेदः । वि. अधम, नीच (-शी, स्त्री स्त्री.) ।

पुखराज, सं. पुं. (सं. पुष्पराजः) पुष्पराजः, पीतः, पीत-रुद्रिकः-मणिः-अश्मन् (पुं.), मंजुमणिः ।

पुफ्फता, वि. (का. -तद्) सवल, प्रबल २. वृद्ध, कठिन ३. स्वयिन् ४. पक्वैकानिमित्त ५. अभिज्ञ ६. अनुभविन् ७. निश्चित ।

पुचकार-री, सं. स्त्री. (हिं. पुचकारना) पुन, कारः-करण-कृतिः (स्त्री.) ।

पुचकारना, क्रि. सं. (अनु. पुच) पुचपुचायते (ना. धा.), पुनिति शब्द क ।

पुचारना, क्रि. सं., दे. 'पेतना' ।

पुच्छ, सं. स्त्री. (सं. पुं. न.) दे. 'पूछ' ।

पुच्छल, वि. (सं. पुच्छं >) पुच्छिन, सपुच्छ, लांगूलिन, लांगूलवत् ।

—तारा, सं. पुं., धूम्रः, केतुः, उल्का, उत्पातः ।

पुच्छला, सं. पुं. (हिं. पूछ) दीर्घपुच्छः-च्छ, लंब-लांगूलं २. चाटुकारः, मिथ्याशंसकः ३. परिहायसंगिन ।

पुजना, क्रि. अ. (हिं. पूजना) पूज्-अभ्यर्च् (कर्म.) ।

पुजवाना, पुजाना, क्रि. प्रे., व. 'पूजना' के प्रे. रूप ।

पुजापा, सं. पुं. (सं. पूजापत्रं) पूजा-प्रसेवः-पुटः २. पूजासामग्री, देव-उपास्यन-उपहारः, नैवेद्यम् ।

पुजारी, सं. पुं. (सं. पूजाकारिन्) प्रतिमा, पूजकः, देवलः-लकः २. भक्तः, उपासकः ।

पुट, सं. पुं. (अनु.) शीकरासिकः २. आ-ह्वेय, रंजनं ३. आ-ह्वेय, मिश्रण-संपर्कः ।

पुट^२, सं. पुं. (सं. पुं. न.) आच्छादनं, आवरणं, कोपः, विधानं, वेष्टनं २. पर्णपुटः-टं., पत्र-द्रोणं ३. द्रोणाकारपदार्थः (उ., अंजलिपुटं) ४. औषधपाकाय पात्रभेदः ।

—पाक, सं. पुं. (सं.) पुटस्थौषधपचनं (वैषक) ।

पुटकी, सं. स्त्री. (सं. पुटकी>) दे. 'पोटली' ।

पुटित, वि. (सं.) चूर्णित, पिष्ट २. विदारित, खेदित ३. संकुचित, आकुंचित ।

पुट्टा, सं. पुं. (सं. पुट्टं>) नितम्बः, जघनं, कटिप्रोथः, २. अश्वीदीनां नितम्बः ३. ग्रंथः-वरकपृष्ठम् ।

पुट्टी, सं. स्त्री. (हि. पुट्टा>) शकटनेमि-भागः ।

पुडा, सं. पुं. (सं. पुटः-टं) पत्रकोशः २. दे. 'पुडी' ।

पुडिया, सं. स्त्री. (सं. पुडिका) पत्र-पुडिका-२. औषधपुडिका ।

पुडी, सं. स्त्री. (सं. पुटी>) दे. 'पुडिया' २. पटहचर्मन् (न.) ।

पुण्य, सं. पुं. (सं. न.) शुभादृष्टं, सुकृतं, धर्म-सु-भद्र-कृत्यं, धर्मः, वृषः, श्रेयस् (न.) । वि., शुभ, मंगल, पवित्र, भद्र, शास्त्र-धर्म, विहित ।

—भूमि, सं. स्त्री. (सं.) भारतं, भ(भा)रतवर्षं, आर्षावर्तः ।

—लोक, सं. पुं. (सं.) स्वर्गः, नावः, सुर-लोकः ।

—वान्, वि. (सं.-वत्) } दे. 'पुण्यात्मा' ।

—शील, वि. (सं.) } दे. 'पुण्यात्मा' ।

—श्लोक, वि. (सं.) सच्चरित्र, आर्यवृत्त ।

—स्थान, सं. पुं. (सं. न.) पवित्रस्थलं २. तीर्थस्थानम् ।

पुण्यात्मा, वि. (सं.-त्मन्) पुण्यवत्, पुण्य-शील, धर्मशील, धार्मिक, धर्मात्मन् ।

पुण्योदय, सं. पुं. (सं.) रौभाभ्योदयः, पूर्व-सुकृतफलम् ।

पुतला, सं. पुं. (सं. पुत्तलकः) दे. 'पुतली'(१) (सृष्टिकावलादिनिर्मिता) प्रतिभूर्तिः-प्रति-कृतिः (स्त्री.) ।

अकल का—, वि., चतुर, दक्ष ।
स्राक का—, सं. पुं., मानवः, मनुष्यशरीरम् ।

पुतली, सं. स्त्री. (सं. पुत्तली) पुत्रिका, पुत्त-

लिका, कुस्ती, पांचाली-लिका, शालमञ्जिका २. कनीनिका, तारा, तारका ३. तन्वी, कृशापी ४. वक्ष्यंत्रं ५. भेकाकारमश्वखुरमांसम् ।

—का तमाशा, सं. पुं., पुत्तली, कौटुक-नृत्यम् ।

—घर, सं. पुं., वक्ष्यंत्रालयः ।

—फिरना, मु., कनीनिके स्तम्भं (कनीं, मृत्पु-त्रिह) २. दृप् (दि. प. अ.) ।

पुताई, सं. स्त्री. (हि. पोतना) लेपः, लेपनं २. लेपन-भूतिः (स्त्री.)-भृत्या ३. लुधालेपः ।

पुतारा, सं. पुं., (हि. पोतना) उपदेहनं, प्रले-पनम् २. लेपन-उपदे. न., पटः-वस्त्रम् ।

पुत्तलिका, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'पुतली' (२) ।

पुत्तिका, सं. स्त्री. (सं.) पतंगिका, मधुमक्षिका-निशेधः । २. दे. 'दीमक' ।

पुत्र, सं. पुं. (सं.) पुत्रः, आत्मजः, तनयः, सुतः, सुदुः, तनु(न्)जः, पुंसंतानः, दायादः, नंदनः, अ.स्मजन्मन् (पुं.), अंगजः, कुमारः, दारकः ।

—कंवा, सं. स्त्री., (सं.) लक्ष्मणावन्दा, पुत्रदः-ओपधिभेदः ।

—घ्नी, सं. स्त्री., गर्भनाशकबोनिरोगभेदः ।

—वती, वि. स्त्री. (सं.) सपुत्रा, सुतवती ।

—वधू, सं. स्त्री. (सं.) रतुषा, वधूः (स्त्री.), जनी, पुत्रपत्नी ।

पुत्रिका, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'पुत्री' २. दे. 'पुतली' ३. कनीनिका, तारा ।

पुत्री, सं. स्त्री. (सं.) कन्या, आत्मजा, दुहितृ (स्त्री.), तनुजा, सुता, तनया, स्वजा, नंदिनी ।

पुत्रेष्टि, सं. स्त्री. (सं.) पुत्रनिमित्तक-यज्ञभेदः ।

पुदीना, सं. पुं. (फा. पोदीनह) पुदीनः, व्यञ्जनः, सुगन्धिपत्रः, वातहरिन्, अजीर्णहरः, रुचिभ्यः ।

पुनः, अव्य. (सं. पुनर्) भूयः (अव्य.) ।

—पुनः, अव्य. (सं.) भूयोभूयः, बारंबारं, रेण, अनेकवारं, मुहुः, असकृत्, पौनःपुन्येन ।

पुनरावृत्ति, सं. स्त्री. (सं.) पुनः पाठः, पुन-रन्वयनं २. आवृत्तिः-प्रत्यावृत्तिः (स्त्री.) ३. पुनः, विधानं-संपादनं-करणं ४. पुनरीक्षणं, संशोधनम् ।

पुनरुक्ति, सं. स्त्री. (सं.) पौनस्वत्यं, पुन-र्वचनम् ।

पुनर्जन्म, सं. पुं. [सं.-जन्मन् (न.)] पुन-

पुनर्भू

[३७६]

पुरुषार्थी

भैवः पुनरुत्पत्तिः (स्त्री.), प्रेत्यभावः, देहा-
त्प्रसक्तिः (स्त्री.) ।
पुनर्भू, सं. स्त्री. (सं.) द्विरूढा, दिधिषूः
(स्त्री.) ।
पुनर्वसू, सं. पुं. (सं. द्वि.) वामकौ, आदिस्त्री
(द्वि.) ।
पुनीत, वि. (नं.) पूत, पवित्र, शुद्ध, निर्दोष ।
पुण्य, सं. पुं., दे. 'पुण्य' ।
पुमान्, सं. पुं. (सं. पुंस्) नरः, पु (पू)
रूपः, नृ (पुं.) ।
पुरंदर, सं. पुं. (सं.) दे. 'इंद्र' २. नगरनंजकः
३. नीरः ।
पुरंध्री, सं. स्त्री. (सं.) पुरंधिः (स्त्री.),
कुंडविनी २. नारी ।
पुरः, अव्य. (सं. पुरम्) अग्ने, अग्रतः, संमुखे,
पुरतः, पुरस्तात्, समर्थं (सब अव्य. यथी के
साथ) २. पूर्व, प्राक्, अर्वाक् (सब अव्य.
पंचमो के साथ) ३. प्राक्तं दिशि ।
पुर, सं. पुं. (सं. न.) नगरं-री, पुर (स्त्री.)
पुरी, पत्तनं, स्थानीयं २. शरीरं ३. दुर्गं ।
४. गृहं ५. लोकः, भुवनम् ।
—द्वार, सं. पुं. (सं. न.) नगरं, द्वारम् ।
—वासी, सं. पुं. (सं. सिच्) पौरः, नागरिकः,
पुरनगर (-जनः) ।
अंतः—, सं. पुं. (सं. न.) अवरोधः, शुद्धांतः ।
पुरखा, सं. पुं. (सं. पुंसः >) पूर्वजाः, पूर्व-
पुरुषाः, पितरः, वंशजकः (प्रायः बहु. में) ।
पुरजा, सं. पुं. (फा.) (पञ्चमोऽदीनाम्) खंडः-
डं, शकलः-लं २. अवयवः, अंगम् ।
चलता—, मु., चलुर ३. उद्योगिन् ।
पुरवा, सं. पुं. (सं. पुर >) लघुग्रामः, ग्रामटिका ।
पुरवा, सं. पुं. (सं. पूर्ववतः) प्राचीपवनः ।
पुरश्चरण, सं. पुं. (सं. न.) पुरस्किया, पूर्वा-
नुष्ठानम् ।
पुरस्कार, सं. पुं. (सं.) पारितोषिकः, उपाधनं,
प्रतिफलं २. अद्भरः, संमानः, पूजा ।
पुरस्कृत, वि. (सं.) आदृत, संमानित २.
प्राप्तोपादनं, लब्धपरितोषिक ।
पुरा, अव्य. (सं.) पूर्व-प्राचीन-पुरातन, काले ।
वि., अतीत, प्राचीन (उ. पुरावृत्त) ।
पुरा, सं. पुं. (सं. पुर >) ग्रामः ।
—कल्प, सं. पुं. (सं.) पूर्वकल्पः २. प्राचीन-
कालः ।

पुराण, वि. (सं.) प्राचीन, पुरातन । सं. पुं.
(सं. न.) प्राचीन-कथा-आख्यायानं २. हिंदू-
नामद्वयदश आख्यायनग्रन्थाः (महाविष्णुशिव-
पुराणादि) ।
पुरातन, वि. (सं.) पुराण, प्रतन, प्रतन,
चिरंतन, चिरत्न, प्राचीनः (पुरातनी स्त्री.) ।
पुराणा, वि. (सं. पुराण) दे. 'पुरातन' २. जीर्ण,
शीर्ण, ३. अनुभविन्, सानुभवः ।
—खुराड, मु., वृद्ध, जट २. अस्वनुभविन् ।
पुरी, सं. स्त्री. (सं.) भगरी, नृपावासः,
दे. 'पुर' ।
पुरीष, सं. पुं. (सं. न.) विष्टा, दे. 'पाखाना ।
२. जलन् ।
पुरु, सं. पुं. (सं.) नृपविशेषः, यथातेः कनिष्ठ-
पुत्रः । वि., प्रचुर, बहु ।
पुरुष, सं. पुं. (सं.) मनुजः, मानुषः, दे.
'मनुष्य' २. नरः, नृ, पुंस् ३. परमेश्वरः ।
४. आत्मन् ५. पूर्वजः, पूर्वपुरुषः, ६. पतिः
७. क्रियामव्वंनानादीनां रूपभेदः (व्या.)
८. शरीरम् ।
—कार, सं. पुं. (सं.) उद्योगः, पुरुषार्थः ।
—घनी, सं. स्त्री. (सं.) पतिव्यातिनी नारी ।
—धर्म, सं. पुं. (सं.) मनुष्यमात्रस्य धर्मः ।
—धीरेयक, सं. पुं. (सं.) नरर्षभः नरपुंगवः ।
—पुर, सं. पुं. (सं. न.) गांधारदेशराजधानी
(वर्तमान विशाखर) ।
—मेध, सं. पुं. (सं.) यज्ञभेदः, नरमेधः ।
—वार, सं. पुं. (सं.) रवि-मंगल-वृहस्पति-
शनि-वार-वासरः ।
—सूक्त, सं. पुं. (सं. न.) ऋग्वेदस्य यजुर्वेदस्य
च सूक्तविशेषः (यह 'सहस्रशीर्षा' से आरंभ
होता है) ।
मह—, सं. पुं. (सं.) महाजनः, नरकुलरः,
महात्मन् २. दुष्टः, दुरात्मन् ।
पुरुषत्व, सं. पुं. (सं. न.) पौरुषं, नीरुषं,
साहसं २. पुंस्त्वं, नरत्वम् ।
पुरुषार्थ, सं. पुं. (सं.) उद्यमः, प्रयत्नः, उद्योगः,
परिश्रमः, पौरुषं, पराक्रमः, पुरुषकारः
२. पुरुष-प्रयोजन-लक्ष्यं (धर्मार्थकाममोक्षाः)
३. शक्तिः (स्त्री.), बलम् ।
पुरुषार्थी, वि. (सं. -धिन्) उद्यमिन्, उद्योगिन्,
परिश्रमिन्, उद्योग-उद्यम-परिश्रम-शील-पर
२. समर्थ, बलवत् ।

पुल्लोत्तम

[३८०]

पुष्प

पुल्लोत्तम, सं. पुं. (सं.) पुरुषर्षभः, नरकुंजरः, मनुजश्रेष्ठः २. विष्णुः ३. श्रीकृष्णः ।

पुरोहित, सं. पुं. (सं.) पुरोधस् (पुं.), सौवस्तिकः, धर्मकर्मधिकारविन्, याज्ञिकः, याजकः, ऋत्विज् ।

पुरोहिताई, सं. स्त्री. (सं. पुरोहितः >) पौरोहित्यं, पुरोहितकर्मन् (न.) २. पुरोहित-वृत्तिष्णा ।

पुरोहितानी, सं. स्त्री. (सं. पुरोहितः >) पुरोहित-पत्नी-भार्या ।

पुल, सं. पुं. (फ्रा.) सेतुः, वारणः, संवरः ।

—**बांधना**, सेतुं बंध् (क्. प. अ.), निर्मा (जु. आ. अ.) ।

पुलक, सं. पुं. (सं.) रोमांचः, रोच, उद्वेगमः. हर्ष-विकारः-उद्भेदः, त्वक्पुष्पं, त्वगंकुरः २. रत्नभेदः ।

पुलकावली, सं. स्त्री. (सं.) पुलकावलिः (स्त्री.), हर्षोत्फुल्लरोमाणि (न. बहु.) ।

पुलकित, वि. (सं.) रोमांचित, रोमांकित, पुलकिन्, जातपुलक, सपुलक, कंटकित २. प्रहृष्ट, प्रसन्न ।

—**करना**, क्रि. स., रोमांचयति (ना. भा.), रोमाणि उद्-हृष् (प्रे.) ।

—**होना**, क्रि. अ., रोमाणि उद्गतम् (म्वा. प. अ.) हृष् (दि. प. से.) ।

पुलपुला, वि. (अनु.) दे. 'पिलपिला' ।

पुलाव, सं. पुं. (फ्रा.) मांसीदनं, मत्सामिगन्, पलावम् ।

पुल्लिंद, सं. पुं. (सं.) कंडालभेदः, प्राचीन-जातिविशेषः ।

पुल्लिंदा, सं. पुं. (हि. पूला) कूर्चः, भार, पोद्दली ।

पुल्लिन, सं. पुं. (सं. पुं. न.) तोयोस्थिततटः-टंडी २. कूलं, तीरं, तटं, ३. सैकतं, सिकता-मयं तटम् ।

पुल्लिस, सं. स्त्री. (अं.) नगररक्षकाः, पुरपालाः, रक्षापुरगाः (बहु.), रक्षिगणाः ।

—**इन्स्पेक्टर**, सं. पुं. (अं.) रक्षक-रक्षि-निरोक्षकः ।

—**मैन**, सं. पुं. (अं.) रक्षकः, दंडधरः, रक्षक-रक्षा-रक्षि-पुरुषः, नगरपालः, राजपुरुषः ।

—**सब-इन्स्पेक्टर**, सं. पुं. (अं.) रक्षकोप-निरोक्षकः, दे. 'धानेदार' ।

—**सुपरिण्टेंडेंट**, सं. पुं. (अं.) रक्षकाध्यक्षः ।

पुवाल, सं. स्त्री. दे. 'पवाल' ।

पुस्त, सं. स्त्री. (फ्रा.) दे. 'पीठ' २. दे. 'पीडी' २ ।

—**दर पुस्त**, क्रि. वि., 'वंशपरंपरा' ।

पुस्तैनी, वि. (फ्रा. पुस्त >) कुलक्रम-वंश-परंपरा-आगत-प्राप्त, परंपरीय, परंपरीय ।

पुत्कर, सं. पुं. (सं. न.) कमलं, पत्रं २. जलं ३. तडागः-नां ४. गजकुंडाद्यं ५. तीर्थविशेषः ।

पुत्करिणी, सं. स्त्री. (सं.) कासरः-रं, तटः-कः कं, सरसी, सरोवरः ।

पुत्कल, वि. (सं.) अधिक, बहु, प्रचुर, प्रसृत, बहुल, विपुल २. पयोप, पूर्ण ।

पुष्ट, वि. (सं.) पालित, सं., वर्धित, पोषित, मृत २. बलिष्ठ, पीन, पीवर ३. बल, प्रद-वर्धक ४. दृढ ।

पुष्टई, सं. स्त्री. (सं. पुष्ट >) पुष्टिकरं भक्ष्य-मीषधं वा, रमायनम् ।

पुष्टता, सं. स्त्री. (सं.) पीनता, पीवरता, दृढांगता ।

पुष्टि, सं. स्त्री. (सं.) भरणं, पोषणं, सं-वर्धनं २. बलिष्ठता, दृढांगता, पीवरता ३. दृढता ४. समर्थनं, अनुमोदनं, दृढीकरणं, उपो-द्वहनम् ।

—**कारक**, वि. (सं.) पुष्टि-कर-दायक, बल-वर्धक-वर्धक ।

पुष्प, सं. पुं. (सं. न.) कुसुमं, प्रसन्नं, मणी-चकं, सुनं, यत्नं, सुमनः, प्रसवः, सुमनस् (स्त्री. न., केवल बहुवचन में) २. आर्तवं, ऋतुस्त्रावः, रजःस्त्रावः ३. नेत्ररोगभेदः (हि. फूला) ४. कुबेरविमानम् ।

—**करंड**, —**डक**, सं. पुं. (सं.) उज्जयिन्याः प्राचीनशिवालयान् २. कुसुमकंडोलः ।

—**काल**, सं. पुं. (सं.) वसन्तः, ऋतुराजः । २. नारीणां आर्तव-रजः-समयः ।

—**कीट**, सं. पुं. (सं.) अमरः, षट्पदः २. कुसुमकीटः ।

—**ज**, सं. पुं. (सं.) मकरन्दः, आम्रम्, पुष्परसः ।

—**ध्वज**, —**बाण**, —**हार**, —**पुर**, सं. पुं. (सं.) पुष्पधन्वम् (पुं.) मदनः, दे. कामदेव ।

—**पुर**, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'पटना' ।

पुष्पक

[३२१]

पूतबा

—रस, सं. पुं. (सं.) पुष्पासर्व, भ्रामरं, मकरंदः ।

—राज, सं. पुं. (सं.) दे. 'पुलराज' ।

—रेणु, सं. पुं. (सं.) परागः, पुष्पधूलिः (स्त्री.) ।

—वाटिका, सं. स्त्री. (सं.) पुष्प-कुसुम-वाटी-उद्यानम् ।

—वृष्टि, सं. स्त्री. (सं.) पुष्प-कुसुम-आसारः-वृष्टिः ।

पुष्पक, सं. स्त्री. (सं. पुं. न.) कुबेरविमानं २. पुष्पं ३. नक्षुरीगभेदः ४. पितलभस्मन् (न.) ।

पुष्पित, वि. (सं.) कुलुनित, कुसुम-पुष्प-विशिष्ट-युक्त ।

पुष्पोद्यान, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'पुष्पवाटिका' ('पुष्प' के नीचे) ।

पुष्प्य, सं. पुं. (सं.) सिध्यः, तिथ्यः, (अष्टग-नक्षत्रं) २. पीषसासः ।

पुस्तक, सं. पुं. (सं. पुं. न.) ग्रंथः, पुस्तंती ।

पुस्तकालय, सं. पुं. (सं.) ग्रंथ-आलयः-भण्डार-शालः ।

पूँछ, सं. स्त्री. (सं. पुच्छः-च्छं) लांगु(गु)लं, ह्रमः, (वालोंवाली पूँछ) बालधिः, बालहस्तः २. पृष्ठ-पश्चाद्-भागः ३. दे. 'पिछलगा' ।

पूँजी, सं. स्त्री. (सं. पुंजः >) मूल-द्रव्य-धनं, मूलं २. संनितसंपत्तिः (स्त्री.) धन-पुंजः-राशः ।

—पत्ति, सं. पुं. (सं.) द्रव्यवत्, धनिकः, कोटीश्वरः, धनाढ्यः ।

पूआ, सं. पुं. (सं. पूवः) अपूपः, पिष्टकः ।

पूरा, सं. पुं. (सं.) गु(गु)वाकः, क्रमुः, क्रमुकः २. समुदायः, समूहः ३. (सं. न.) क्रमुक-गु(गु) वाकः, फलम् ।

—फल, पूगीफल, सं. पुं. (सं. पूगफलं) पूर्ण, निष्का-कषण-कषा, उद्रेगम् ।

पूछ, सं. स्त्री. (हिं. पूछना) पृच्छा, प्रच्छनः, अनुयोगः, प्रश्नः, जिज्ञासा २. आदरः, संमानः, प्रतिष्ठा ३. आवश्यकता, प्रयोजनं ४. अन्वेषण-या, गवेषण-या ।

—गाछ, } सं. स्त्री., दे. 'पूछ'(१) ।
—ताछ, }
—पाछ, }

पूछना, कि. स. (सं. पू(प्र)च्छनं) प्रच्छ (तु. प. अ.), प्रश्नयति (ना. धा.), अनुयुज् (रु. आ. अ.) २. आहू (तु. आ. अ.)

संमन् (प्रे.) । सं. पुं., प्रच्छन-ना, पृच्छा, अनुयोगः, जिज्ञासा ।

पूछने योग्य, वि., प्रष्टव्य, जिज्ञासितव्य, अनु-योज्यम् ।

पूछनेवाला, सं. पुं. प्रष्ट, अनुयोज्य, जिज्ञासुः ।

पूछा हुआ, वि., पृष्ट, अनुयुक्त, जिज्ञासित इ. । वात न—, सु., न आहू (तु. आ. अ.) न संमन् (प्रे.) ।

पूजक, सं. पुं. (सं.) पूजयितृ, अर्चकः, उपा-सकः, आराधकः, भक्तः ।

पूजन, सं. पुं. (सं. न.) पूजा, अभि-, अर्चन-ना, अर्चा, आराधन-ना, सपर्या, उपासन-ना २. संमाननं, सत्करणं ३. वंदन-ना ।

पूजना, कि. स. (सं. पूजनं) पूज् (चु.), अभि-, अर्च् (भ्वा. प. से., चु.), उपास् (अ. आ. से.), आराध् (स्वा. प. अ.), यज् (भ्वा. उ. अ.) २. संमन् (प्रे.), आहू (तु. आ. अ.) ३. वंद (भ्वा. आ. से.), नमस्यति (ना. धा.) ४. उत्कीर्णं दा । सं. पुं., दे. 'पूजन' ।

पूजनीय, वि. (सं.) दे. 'पूज्य' ।

पूजा, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'पूजन' ।

पूजाहं, वि. (सं.) दे. 'पूज्य' ।

पूजने योग्य, वि., दे. 'पूज्य' ।

पूजनेवाला, सं. पुं., दे. 'पूजक' ।

पूजा हुआ, वि., दे. 'पूजित' ।

पूजित, वि. (सं.) अभि-, अर्चित, आरापित, उपासित २. संमानित, आहूत, सत्कृत ३. वंदित, नमस्कृत ।

पूज्य, वि. (सं.) पूजनीय, पूजयितव्य, पूजाहं, अभि-, अर्चनीय, आराधनीय, भजनीय २. आदरणीय, माननीय, सत्कार्य, वंदनीय ।

—पाद, वि. (सं.) परम-अत्यंत-पूजनीय-आराध्य ।

—पूजा, सं. स्त्री. (सं.) सत्कार्यसत्कारः, अर्चनीय पूजनीय-वन्दना-समादरः ।

पूदा, सं. पुं. (सं. पूवः) अपूपः, पिष्टकः ।

पूड़ी, सं. स्त्री.. दे. 'पूरी' ।

पूत, वि. (सं.) दे. 'पवित्र' ।

पूत, सं. पुं., दे. 'पुत्र' ।

पूतबा, सं. पुं. (हिं. पूत) शिशु-वालक-आस्तर-विस्तरः ।

—(डों) का अमीर, मु. परंपरागत-क्रमः
गत-परंपरीण, अतिकः अनाह्यः ।

पूरना, सं. स्त्री. (सं.) राक्षसीविशेषः २. बाल-
रोगभेदः ।

पूरति, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'पवित्रता' ।

पूनी, सं. स्त्री. (सं. पू >) पित्रिका, तुल,
नालिका-वर्तिका ।

पूप, सं. पुं. (सं.) अपूपः, पिष्टकः ।

पूर, सं. पुं. (सं.) जल-विप्लवः-बृंहणं २. व्रण-
संशुद्धिः (स्त्री.) ।

पूरक, वि. (सं.) पूरयित्, पूरणकर्तृ २. खैलिक,
परिशिष्टात्मक । सं. पुं., श्रीजपूरः, मातुलुंगः,
सुफलः २. गुणकर्ताः (गणित) ३. प्राणा-
यामभेदः ।

पूरण, सं. पुं. (सं. न.) भरणं, निचयनं,
सकुलीकरणं, व्यापनं २. निर्वर्तनं, निष्पादनं,
समापनं, संपादनं ३. अंकगुणनम् । वि.,
पूरक, पूरयित् ।

पूरना, कि. स. (सं. पूरणं) पूर (जु.) वृ-भू
(जु. उ. अ.) २. आच्छद् (जु.) ३. संपद-
साध् (प्रे.) ४. धमा (भ्वा. प. अ.), (वायुना)
पूर (ङ.) ५. दे. 'वटना' ।

पूरब, सं. पुं., दे. 'पूर्व' ।

पूरबी, वि., दे. 'पूर्वी' ।

पूरा, वि. (सं. पूरा) पूरित, व्याप्त, संकीर्ण, आ-
स-समा, कुल, आविष्ट, निश्चित, संभृत २.
समग्र, समस्त, सकल, ३. अविकल, निर्दोष
४. यथेष्ट, पर्याप्त ५. संपन्न, संपादित, कृत ।

—करना, कि. स., समाप् (स्वा. उ. अ.)
निर्वृत् (प्रे.), निःशिप् (प्रे.), अंतं गम्
(प्रे.), संपूर (जु.) ।

—होना, कि. अ., समाप् (कर्म), अंतं गम्
(भ्वा. प. अ.), निःशेषी भू, संपद् (दि.
आ. अ.) ।

—उत्तरना, मु., यथोचितं वृत्त (भ्वा. आ. से.)
२. सफलौ भू ।

—होना, मु., स्वर्ण-दिबं गम्, वृ (तु. आ. अ.) ।
पूरित, वि. (सं.) दे. 'पूरा' (१) २. लम्, तुष्ट
३. गुणित, आ-नि-हृत ।

पूरी, सं. स्त्री. (सं.) पू(पो)लिका, पूषिका ।

खस्ता—, शष्कली ।

पूर्ण, वि. (सं.) दे. 'पूरा' (१-५) ।

—काम, वि. (सं.) आप्तकाम, सफलमनोरथ
२. निष्काम, अकाम, निरिच्छ ।

—चंद्र, सं. पुं. (सं.) पूर्णेंद्रुः ।

—विराम, सं. पुं. (सं.) वाक्यपूर्णताचिह्नम् ।

पूर्णतया, } कि. वि. (सं.) अशेषतः, सर्वथा,
पूर्णतः, } साकल्येन, सामग्र्येण, समस्त्येन,
निरवशेषम् ।

पूर्णता, सं. स्त्री. (सं.) समग्रता, सकल्यं
२. सिद्धिः, समाप्तिः (स्त्री.) ३. अविकलता,
निर्दोषतः ४. पूरितत्वं, संभृतता ।

पूर्णसासी, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'पूर्णाना' ।

पूर्णद्विति, सं. स्त्री. (सं.) वामानाद्वितिः (स्त्री.)
२. अनुप्रानावसानकृत्यम् ।

पूर्णिमा, सं. स्त्री. (सं.) पूर्णमा, पूर्णमासी,
राका, पित्र्या, चांद्री, सिता, इंदुमती, ज्योतिस्नी ।

पूर्त्, सं. पुं. (सं. न.) पालनं २. वापी-कूप-
तटाकादिनिर्माणम् ।

पूरति, सं. स्त्री. (सं.) (आरभ्यस्य) समाप्तिः-
निर्वृत्तिः-सिद्धिः-निष्पत्तिः (स्त्री.) २. पूर्णता,
समग्रता ३. पूरणं ४. गुणनं ५. अपेक्षितद्रव्यो-
परथापनम् ।

पूर्व, सं. पुं. (सं. पूर्वा) प्राची, पूर्व, दिशा-दिश
(स्त्री.)-आशा, ऐंद्री २. पूर्वदेशः, पीरस्त्य-अन-
पदः । वि., अग्रम, पूर्वम, अग्र-पूर्व, नामित्-
वर्तित् २. पुराण, प्राचीन ३. दे. 'विच्छला'
कि. वि., प्राक्, अर्वाक् (दोनों अर्थ.) ।

—काय, सं. पुं. (सं.) (पश्चान्) देहाग्रभागः
२. (नराणां) देहोर्ध्वभागः ।

—काल, सं. पुं. (सं.) प्राक्-पूर्व-प्राचीन,
समयः-कालः-जैला ।

—कालिक, वि. (सं.) पुराण, प्राचीन, प्राक्-

—कालीन, वि. (सं.) कालीन, पुरातन, प्राक्तन ।

—कृत, वि. (सं.) प्राग्विहित २. पूर्वजन्मकृत ।

—जन्म, सं. पुं. [सं. जन्मम् (न.)] प्राजन्तिः
(स्त्री.) ।

—दिशा, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'पूर्व' सं. पुं. (१) ।

—पक्ष, सं. पुं. (सं.) शास्त्रीय-प्रयत्नः-शंका,
चोषं, देश्यं, फकिका २. कृष्णपक्षः ३. दे.
'पूर्ववादः' ।

—पक्षी, सं. पुं. (सं. क्षिम्) वादिन्, सिद्धांत-
विरोधिन् ।

—मीमांसा, सं. स्त्री. (सं.) जैमिनिमुनिप्रणीत-
दर्शनग्रन्थविशेषः ।

—वत्, कि. वि. (सं.) यथापूर्वं, पूर्वसदृशम् ।

—वर्ती, वि. (सं.तिन्) प्रपञ्चतिन्, पूर्व-अग्र-
गामिन् ।

—वाद्, सं. पुं. (सं.) भाषा, भाषापाठः, पूर्व-
पक्षः, प्रतिष्ठा, अभियोगः, दे 'नालिश' ।

—वादी, सं. पुं. (सं.-दिच्) अभियोजक,
अधिन्, वादिन्, शिरोवर्तिन्, दे. 'मुद्दे' ।

पूर्वज, सं. पुं. (सं) पूर्वपुरुषाः, पितरः (बहु.)
२. अग्रजः, ज्यायान् आत् । वि., प्राशुत्यत्र ।

पूर्वतः, अव्य. (सं.) प्रथमं, प्रथमतः २. पुरतः,
अग्रतः (सत्र अव्य.) ।

पूर्वतन्, वि. (सं.) पुरातन, प्राचीन, प्रतन,
प्रतन ।

पूर्वापर, वि. (सं.) अग्रिमपश्चिम, पूर्वपश्चतिन् ।
सं. पुं. प्राचीनप्रतीच्या (दि.) २. हानिलभौ
(दि.) ।

पूर्वाभिमुख, (वि. सं.) प्राङ्मुख (स्त्री स्त्री.) ।

पूर्वाह्, सं. पुं. (सं.) िधा. विभक्तदिवसस्य
प्रथमभागः, प्राहः, प्रातरहः ।

पूर्वी, वि. (सं. पूर्वीय) प्राच्य, पौरस्थ्य, पूर्व-
देशीय, पूर्वदिक्स्थ, प्राच् [-न्नी (स्त्री.)] ।
सं. स्त्री, पूर्वीयभाषाविशेषः २. रागिगोमेदः ।

पूर्वीय, वि. (सं.) दे. 'पूर्वी' वि. ।

पूला, सं. पुं. (सं. पूलः) पूलकः ।

पूच, पूस, सं. पुं., दे. 'पीप' ।

पृथक्, वि. (सं.) भिन्न, व्यविरक्त, विश्लिष्ट,
विभक्त, असंलग्न । अव्य, विना, अदो, अंत-
रेण (सत्र अव्य.) ।

—पृथक्, अव्य., वि, वि.भिन्नम् ।

पृथक्का, सं. स्त्री. (सं.) पृथक्त्वं, पृथग्भावः,
पार्थक्यं, भिन्नता, विश्लेषः, विभेदः ।

पृथा, सं. स्त्री. (सं.) कुन्ती, पण्डुपत्नी,
सुषिष्ठिरादिजननी ।

—तन्मय, सं. पुं. (सं.) सुषिष्ठिरः, भीमः,
अर्जुनः, (प्रायः अर्जुनः, पार्थः) ।

—पति, सं. पुं. (सं.) पण्डुनृपः, कुन्तीपतिः ।

पृथिवी, सं. स्त्री. (सं.) पृथ्वी, पृथिविः (स्त्री.),
क्षितिः-भू-भूमिः (स्त्री.), धरः, धरित्री, क्षोणी,
क्रमुषा, वसुगती, वसुधरा, अवनी-तिः (स्त्री.),
मेदिनी, धरणी-णिः (स्त्री.), मही-हिः (स्त्री.),
अचलकोला, अचला, स्थिरा, इवा ।

—तल, सं. पुं. (सं. त.) भू-धरणी, तलं २.
संतरः ।

—नथ्य, सं. पुं. (सं.) भू, -पतिः-पालः ।

पृथु, वि. (सं.) विस्तीर्ण, विस्तृत, विशाल,
२. बहु, प्रभूत ३. विशिष्ट ।

—कीर्ति, वि. (सं.) अतियशस्विन् । सं.
स्त्री., वसुदेवभगिनी ।

—दर्शी, वि., (सं.) दूरदर्शिन्, प्राज्ञ ।

—लोचन, वि., विशाल, नेत्र-नयन ।

—शेखर, सं. पुं., (सं.) गिरिः, पर्वतः ।

—स्कंध, सं. पुं. (सं.) शकरः, बोलः ।

पृष्ट, वि. (सं.) अतुयुक्त, प्रदिनत, जिज्ञासित ।

पृष्ट, सं. पुं. (सं. त.) दे. 'पीठ' (१-२) ।

२. पुस्तक, पत्र-पत्रो ३. पुस्तकपृष्ठम् ।

—पीपक, सं. पुं. (सं.) महायः-यकः, उपकर्तुः ।

पेंग, सं. स्त्री. (सं. प्रेंखा >) दोलनं, प्रेंखणं,
शैलामतिः (स्त्री.) ।

—चढ़ाना या बढ़ाना, सु., सर्वेण प्रेंख् (प्रें.),
उच्चैः प्रेंखोलयति (ना. धा.) ।

पेंदा, सं. पुं. (सं. पिंड-डं >) तलं, अधोभागः,
बुध्नः ।

पेंसिल, सं. स्त्री. (अं.) अङ्गुली, स्वयंलेखनी,
वर्णिका, वर्गमातृ (स्त्री.) ।

पेष, सं. पुं. (फा.) व्यावर्तनं, भोटनं, आ-कुंचनं
२. विचनः, विघातः-प्रत्यूहः ३. धूर्तता, शाल्यं
४. उष्णीष-व्यावर्तनं ५. संज्ञं ६. यंत्राययवः
७. वलयकलवः ८. पतंगसूत्रसंग्रहणं ९. (मल्ल-
युद्धादीनां) कपटोपायः, युक्तिः (स्त्री.)
१०. उष्णीष-देरलकारः ११. दे. 'पेन्डिश' ।

—कश, सं. पुं. (फा.) *वलयकीलकर्मः २.
*पिधानकर्मः ।

—खाना, क्रि. अ., मंडली-वतुली भू ।

—डालना, क्रि. स., पतंगसूत्राणि मिथः संश्लिष्
(प्रे.) ।

—ताव, सं. पुं. (फा.) अंतः-कोपः-क्रोधः ।

—द्वार, वि. (फा.) आकुंचित, व्यावर्तित
२. गहन, कठिन, दुर्बोध ३. संश्लिष्ट, संग्रहित ।

—पड़ना, क्रि. अ., पतंगसूत्राणि परस्परं संश्लिष्
(दि. प. ध.) ।

—त्रान, सं. पुं. (फा.) बृहद्भूमपानयन्त्रं
२. धूमपानयन्त्रस्य बृहत्त्राली ।

पेषक, सं. स्त्री. (फा.) सूत्र-तन्तु, गोलः-गोलम् ।

पेचिश, सं. स्त्री. (फ्रा.) प्रवाहिका, आमरक्तम्
२. उदरवेदनामेदः ।

पेचीवरी, सं. स्त्री. (फ्रा.) कीटिल्यं, वक्रत्वं
२. दुर्बोधता, क्लिष्टत्वं, गहनत्वम् ।

पेचीदा, वि. (फ्रा.) }
पेचीला, वि. (फ्रा. पेन) } दे. 'पेचदार' ।

पेज, सं. पुं (अं.) पुस्तक, पृष्ठम् ।

पेट, सं. पुं, (सं. पेटः >) उदरः, जठरः-रं,
कुक्षिः, फंडः, मलुकः २. गर्भः ३. आमाशयः
४. अन्तःकरणं ५. अवकाशः ६. विस्तारः
७. जीवनं, प्राणधारणम् ।

—काटना, मु., धनसंचयाय अल्पं खाद् (भ्वा. प. से.) ।

—का घंघा, मु., जीवनोपायः, आजीविका-
साधनम् ।

—का पर्दा, मु., अंशवरणम् ।

—का हलका, मु., सुदप्रकृति, सुल्ल, प्राकृत ।

—की भाग, मु., क्षुधा, बुभुक्षा ।

—की आग बुझाना, —मु., क्षुधां निवृत्त (प्रे.) ।

—गिरना, मु., गर्भः पत (भ्वा. प. से.)-स्तु
(भ्वा. प. अ.) ।

—गुदगुडाना या बोलना, मु., कर्दनं जन्
(दि. आ. से.) कर्दं (भ्वा. प. से.) ।

—दिखाना, मु., निजदारिद्र्यं प्रकटयति (ना.
धा.) ।

—पालना, मु., कृच्छ्रेण जीव् (भ्वा. प. से.),
यथाकथञ्चित् उदरं पू (जु. प. से.) ।

—पीठ एक होना, मु. अर्थात् क्षि (भ्वा. प.
अ.), कृशीम् ।

—फटना, मु., अधीर (वि.) भू, धैर्यं मुन्
(तु. प. अ.) ।

—फूलना, मु., हस्तान्निशयेन उदरं स्थाप्य (भ्वा.
आ. से.) स्वि (भ्वा. प. से.) ।

—भर, मु., उदरपूर्तिं यावत् २. वधेष्टम् ।

—भरना, मु., सं-परि-तुष् (दि. प. अ.),
परि-तुष् (दि. प. अ.) २. उदरं पूरं (कर्म.) ।

—सैं चूहे कूटना या दौटना, मु., नितरां क्षुभ्
(दि. प. अ.), अत्यन्तं अशनावृत्ति (ना. धा.) ।

—रहना, } मु. गर्भं धृ (जु.), अन्तर्वन्ती
—से होना, } भू ।

—वाली, मु., गर्भिणी, गर्भवती, अन्तर्वन्ती ।

—से पाँव निकालना, मु. सञ्जनः कुमार्गे
प्रवृत् (भ्वा. आ. से.) ।

पेटा, सं. पुं. (हि. पेट) मध्यं, मध्यभागः २.
विस्तृतविवरणं ३. दे. 'पिट'रा' ४. सीमा
५. परिधिः ६. सरित्प्रवाहमार्गः ७. नदी विस्तारः
८. पथत्रं ९. *पतंगमूत्रशिशिलभागः ।

पेटी, सं. स्त्री. (सं.) पेटिका, लघु-पेटः पेट-
पेटा, मञ्जूषा, समुद्रगकः २. नापितकोशः-षः ।

पेटी, सं. स्त्री. (हि. पेट) कटि-युत्रं-बंधः,
मेखला, कांथी २. सुल्लुकटिगत्रम् ।

पेटीकोट, सं. पुं. (अं.) चौटी, पट्टासः ।

पेटू, वि. (हि. पेट) औदरिकं, उदरं-कुक्षि-
भरि, भ्रमर, घस्मर ।

पेटेट, वि. (अं.) विशिष्टाधिक ररक्षिता नवरचना ।

पेटून, सं. पुं. (अं.) संरक्षकः दे. ।

पेट्रोल, सं. पुं. (अं.) *प्रस्तरतैलम् ।

पेटा, सं. पुं. (देश.) (मक्रेद) पीतपुष्पं,
कुम्भांडं, पीतपुष्पं, पुष्प-वृहत्, फलं (पीला
पेटा-दे. 'कुम्हाडा') ।

पेह, सं. पुं. (सं. पिटः >) दे. 'वृक्ष' ।

पेहा, सं. पुं. (सं. पिटः) किलार्चपिटः-डं २.
आर्द्रचूर्णपिटः ।

पेही, सं. स्त्री. (हि. पेह) तरु, स्फन्धः-प्रवांडः
२. कवन्धः ३. नागवल्लीफलमेदः ४. सकल्लनी
नीलीक्षुपः ।

पेहू, सं. पुं. (हि. पेट) वरितः (पुं. स्त्री.)
२. गर्भाशयः ।

पेह्वी, सं. स्त्री., दे. 'पिही' ।

पेन्वान, सं. स्त्री. (अं.) वार्द्धक्य-पूर्वसेवा-
वृत्तिः (स्त्री.) ।

पेन्शनर, सं. पुं. (अं.) पूर्वसेवावृत्तिभोजिन् ।

पेन्सिल, सं. स्त्री. (अं.) दे. 'पेंसिल' ।

पेपर, सं. पुं. (अं.) पत्रं, दे. 'कागस' २. लेखः,
लेख्यपत्रं ३. वृत्त-समाचार-पत्रम् ।

पेय, वि. (सं.) पानीय, पानार्हं, घेय । सं. पुं.,
पानीयपदार्थः २. जलं ३. दुग्धम् ।

पेयूस, सं. पुं. (सं. पे(पी)यूषः-धं) सप्तत्रय-
मृतायाः गोः शीरं २. अमृतं ३. अभिन्नवधृतम् ।

पेरना, क्रि. स. (सं. पीडनं) (रमतीछादिकं)
निष्पीड (जु.), निष्कृष् (भ्वा. प. अ.)
२. नितरां पीड (जु.)-अर्द्ध (भ्वा. प. से.) ।

पेलना, क्रि. स. (सं. पीडनं) सप्तसा निविष्

(प्रे.) बलात् अंताः प्रविशु (प्रे.) २. (हस्ता-
दिकेन) प्रवि-बल (प्रे.), प्रणुद, प्रवृत् (प्रे.)
३. उपेक्ष (भ्वा. आ. से.) अवगण (चु.)
४. त्यज् (भ्वा. प. अ.), प्राप् (दि. प.
से.) ५. तलं प्रयुज् (रु. आ. अ.) ६-७.
दे. परना (१-२) ।

पेलवाना, कि. प्रे., व. 'पेलना' कं प्रे. रूप ।

पेला, सं. पुं. (हिं. पेलना) कलहः, व. ग्युद्धं
२. अपराधः, रोगः ३. आक्रमणं ४. (बलात्)
अपसारणं-संचलनम् ।

पेशा, कि. वि. (क्.) भग्ने, पुरतः, पुरतः,
संमुखं (सब अव्य.) ।

—**आना**, मु., स्ववह (भ्वा. प. अ.), आचर्
(भ्वा. प. से.) २. षट्-वृत् (भ्वा. आ. से.) ।

—**करना**, मु., पुरतः स्था (प्रे. स्थापयति)
वृश् (प्रे.) २. उपहृ (भ्वा. प. अ.), क
(प्रे. अर्पयति) ।

—**चलना** वा **जाना**, मु., प्रभुत्वं वृत् ।

—**होना**, मु., उपस्था (भ्वा. आ. अ.), पुरतः
स्था (भ्वा. प. अ.) ।

पेशगी, सं. स्त्री. (का.) प्राग्दत्तमूल्यं, *अग्रार्थः ।

पेश (प, स) ला, वि. (सं.) सुकुमार,
सुदृ, सुदृल २. तनु, शीघ्र ३. सुन्दर, मनोह
४. विश, दक्ष ५. झलित्, मायित् ।

पेशवा, सं. पुं. (का.) नेतृ, नायकः, अग्रणीः
२. पुरोहितः ३. महाराष्ट्रमाल्योपाधिः ।

पेशवाई, सं. स्त्री. (क्.) प्रत्युद्गमनं, दे.
अगवानो २. नेतृत्वम् ।

पेशा, सं. पुं. (का.) व्यवसायः, उपजीविका,
वृत्तिः (स्त्री.) ।

—**कमाना** वा **करना**, मु., वैश्यावृत्त्या
निवाहं वृत् ।

पेशानी, सं. स्त्री. (का.) मस्तकं २. भाग्यं
३. अग्रभागः ।

—**पर बल आना** वा **पडना**, मु., कुष् (दि. प.
अ.), कुष्-रूप (दि. प. से.) ।

पेशाव, सं. पुं. (का., सि० सं. प्रस्तावः) मूत्रम् ।

—**की अधिकता**, सं. स्त्री., मूत्र-महः-
आधिक्यम् ।

—**खाना**, सं. पुं. (का.) मूत्रालयः, मेहनशाला,
प्रलावागारम् ।

—**जल कर आना**, सं. पुं., मूत्रकृच्छ्रम् ।

—**स्कना**, सं. पुं., मूत्र-रोधः-स्तम्भः ।

पेशावर, सं. पुं. (का.) व्यवसायिक,
उपजीवित् ।

पेशावर, सं. पुं. (का. पेश + आवर >)
पुरुषपुरम् ।

पेशी, सं. स्त्री. (का.) व्यवहारदर्शनं, विचारः
२. उप-पुटः, स्थानं-स्थितिः (स्त्री.), *पुरोभावः ।

पेशी, सं. स्त्री. (सं.) (देहस्था) भ्रंस, पिडी-
ग्रन्थिः (पुं.) २. वज्रं ३. अंठः-हं ४. असि-
कोशः-पः ५. गर्भाबंधनचर्ममयकोषः ।

पेशीनगोड़े, सं. स्त्री. (का.) भविष्यद्वाहः,
अनागतकथनम् ।

पेषण, सं. पुं. (सं. त.) चूर्णनं, मर्दनं, खंडनम् ।

पेषणी, सं. स्त्री. (सं.) पेषणशिला, पेषणः
(स्त्री.), पट्टः, गृहाशनम् (पुं.) ।

पैजन-नी, सं. स्त्री. (हिं. पायै + अनु. झन >)
पटांगदं, नूपुरः-रं, मंजीरः-नम् ।

पैठ, सं. स्त्री. (सं. पठ्यस्थानं) दे. 'वाजर'
२. दे. 'शुकान' ।

पैड, सं. पुं. (सं. पादद्वः >) पादन्यासः,
अरणपातः, क्रमणं २. पदं, क्रमः ३. मार्गः ।

पैडा, सं. पुं. (हिं. पैड) मार्गः, पथः, पथित्
२. मंदुरा, वाजिशाला ३. रीतिः (स्त्री.),
प्रणाली ।

पैताना, सं. पुं. (हिं. पायै) खट्वायः
पदधानं, *पदतानः ।

पैतालीस, वि. [सं. पंचविंशत् (नित्य स्त्री.)] ।
सं. पुं., उक्ता संख्या, तदंशौ (३५) च ।

पैतीस, वि. [सं. पंचविंशत् (नित्य स्त्री.)] ।
सं. पुं., उक्ता संख्या, तदंशौ (३५) च ।

पैरुट, वि. [सं. पंचपष्टिः (नित्य स्त्री.)] ।
सं. पुं., उक्ता संख्या, तदंशौ (६५) च ।

पै, अव्य. (सं. परं) परंतु, किंतु, परं २. अन-
तरं, तदनु ३. निश्चयेन, अवश्यम् ।

जो—, यदि ।

तो—, तदा ।

पै, अव्य. (हिं. पास वा सं. प्रति) समीपं-दे,
निकटं-टे २. प्रति, दिशि ।

पै, प्रत्य. (सं. उपरि) अधि, प्रायः सप्तमी
विभक्ति से २. द्वारा, प्रायःतृतीया विभक्ति से ।
पैकेट, सं. पुं. (अं.) लडकूचं २. पत्रकोशः ।
पैगावर, सं. पुं. (का.) ईशदत्तः, धर्मप्रवर्धकः ।
पैगाम, सं. पुं. (का.) संदेशः, वार्ता ।
पैठ, सं. स्त्री. (सं. प्रविष्ट) प्रवेशः, प्रविष्टिः
(स्त्री.) २. गतिः प्र सिः (स्त्री.), गतागतम् ।
पैड, सं. पुं. (अं.) पत्राली ।
पैडी, सं. स्त्री. (हि. पैर) दे. 'सीडी' ।
पैतरा, सं. पुं. (सं. पदांतर) बुद्धे पादन्यास-
प्रकारः ।
—बदलना, मु., पादन्यासं परिवृत् (प्रे.) ।
पैतृक, वि. (सं.) पितृ, संबंधित्-विषयक, पित्र्य,
पैत्र [पैतृकी, पैत्री, (स्त्री.)] ।
पैत्त, वि. (सं.) पैतिक, पितृप्रकोपज, पित्त-
जनित-उत्पन्नम् ।
पैत्तल, वि. (सं.) पीतलक-पीतक-पित्तल-
मय-निर्मित-सम्बन्धिन् ।
पैत्र, वि. (सं.) दे० 'पैतृक' ।
पैदल, कि. वि. (सं. पादः >) पादचारी भूत्वा,
पदभ्यामेव, यानं विना । वि., पाद-चारिन्-
गामिन् । सं. पुं., पदिकः, पादगः, पदगामिन्,
पदातः-तिः, पदार्थिकः, पदगः, पत्तिः, पदधः
२. पत्तयः, पदातयः, पदांतिकाः (सब. वडु.) ।
पैदा, वि. (का.) जात, उत्पन्न २. प्रकटित,
आविर्भूत ३. अर्जित, प्राप्त ।
पैदाइश, सं. स्त्री. (का.) उत्पात्तिः (स्त्री.),
जन्मन (न.) ।
पैदाइशी, वि. (का.) महज, औत्पत्तिक
२. स्वाभाविक, प्राकृतिक, नैसर्गिक ।
पैदावार, सं. स्त्री. (का.) कृषिपालं, शस्यं
२. आयः, अर्थान्गमः ।
पैना, वि. (सं. पैन् >) तीक्ष्ण, निशि(श)त,
तेजित, क्षुण्ण । सं. पुं., कृपण, तीक्ष्णैणकन् ।
पैमाइश, सं. स्त्री. (का.) मानं, प्र-परि-माणं,
मपनम् ।
—करना, कि. स., दे. 'शपना' ।
पैमाना, सं. पुं. (का.) मानं, मान, दंड-युजं
३., प्र-परि-माणम् ।
पैर, सं. पुं., दे. 'पाँव' ।
—गाड़ी, सं. स्त्री., द्विचक्रो-किका, पादयानम् ।
पैरना, कि. अ. (सं. प्लवनं) दे. 'तैरना' ।

पैरवी, सं. स्त्री. (का.) अनु-गमन-निरणं,
२. आश्रयपालनं ३. पशु-मंडन-समर्पणं ४.
उद्यमः, प्रयत्नः ।
पैरा, पैराघ्राफ, सं. पुं. (अं.) (प्रस्ताव-दिकल्प)
खंडः, भागः, अनु-परि-च्छेदः ।
पैराक, सं. पुं., दे. 'तैराक' ।
पैराव, सं. पुं., दे. 'डुवाव' ।
पैराशूट, सं. पुं. (अं.) *डयन-उच्चं, *परिच्युतम् ।
पैरोकार, सं. पुं. (का.) बैरवीकार) अनु-
यायिन्-गामिन् २. पक्षसमर्थकः, सहायकः ।
पैरोल, सं. पुं. (अं.) प्रतिज्ञा, संगरः ।
—पर, वि., प्रतिज्ञा-संगर-बद्ध ।
पैवंद, सं. पुं. (का.) पदखंडः-डं, द्रवित-
शकलः-रुं २. वृक्षांतरनिवेशित, प्ररोहः-श्याला,
दे. 'कलम' ।
—रुमाना, कि. स., वृक्षांतरे निवेश (प्रे.)
२. पदखंडैः सिन् (दि. प. से.)-संवा
(जु. उ. अ.) ।
पैवंदी, वि. (का.) दे. 'कलमी' ।
पैशाचिक, वि. (सं.) पैशान्, आसुर, भौत
२. घोर, वीर्यम, क्रूर, निर्दय ।
पैशाची, सं. स्त्री. (सं.) प्राकृतभाषाविशेषः ।
पैशुन्य, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'पिशुनता' ।
पैसा, सं. पुं. (सं. पणांशः >) पणः, पणकः
२. धनं, वित्तम् ।
पैसेवाला, मु., धनिक, धनाढ्य २. पणार्थी ।
पैंगा, सं. पुं. (सं. पुटकः >) कीटकपर्वन्
(न.), अन्तःशून्यवेणुनाली । वि., शून्यगर्भ,
शून्योदर २. जड, अज्ञ ।
पैंगी, सं. स्त्री. (हि. पैंगा) दे. 'बांसुरी' ।
पैंगना, कि. स. (सं. प्रौढनं) प्रौढ (भ्वा.
प. से.), मृत् (अ. प. से. ; जु.), निर्घृथ
शुष् (प्रे.), निर्घृथ (भ्वा. प. से.) । सं. पुं.,
प्रौढनं, मार्जनं, निर्घृथनम् ।
पैंगने योग्य, वि., प्रौढनीय, निर्घृथ्य,
शोधनीय ।
—वाला, सं. पुं., प्रौढकः, मार्जकः ।
पैंगल हुआ, वि., प्रौढित, निर्घृथ्य, शोधित ।
पैंगर-रा, सं. पुं. (सं. पुटकः) दे. 'ताजव' ।
पोट, सं. स्त्री. (सं. पीटः >) पीटली-लिका
२. राशिः ।
पोटला, सं. पुं. (हि. पीटली) कूर्चः-चं, मारः ।

पोटली, सं. स्त्री. (सं. पोडली) पोडुलिका, लड्डु, कूर्च-भारः ।
पोटा, सं. पुं. (सं. पुटः >) उदरं, जठरं, उदराशयः २. साहसं, शौर्यं ३. सामर्थ्यं ४. अंगुण्यग्रं ५. अंगुलीपर्वन् (न.) ।
पोटाशियम, सं. पुं. (अं.) दहातु (न.), पोटाशम् ।
पोत, सं. पुं. (सं.) पोथः, पोहित्वं, प्रवहणं, होटः महानोका २. शावः-वकः, अर्मकः, योनकः, पशुकः, डिभः ३. वस्त्रं ४. दश-वर्षी गत्रः ।
पोतना-रा, सं. पुं. (हिं. पोतना) *पोतनः (सिधुमल-) *प्रोलनः ।
पोतना, क्रि. स. (सं. पोतन >) (सुधा-सृत्तिकादिभिः) लिप् (तु. प. अ.) २. अंत्र (रु. प. सं.) दिह् (अ. उ. अ.) । सं. पुं., लेपन्वस्त्रम् ।
पोता, सं. पुं. (सं. पौत्रः) पुत्रपुत्रः, नष्ट । पर—, सं. पुं. (सं. प्रपौत्रः) पुत्रपौत्रः, पौत्रपुत्रः ।
पोता, सं. पुं. (हिं. पोतन) लेपनवस्त्रं २. लेपनकूर्वी-विद्या ३. (लेपनाय) आर्द्र-सृत्तिका ।
—फेरना, सु., सर्वस्वं डंठ् (लु.) २. गुधा-सृत्तिकादिभिः लिप् (तु. प. अ.) ।
पोताई, सं. स्त्री. दे. 'पुताई' ।
पोती, सं. स्त्री. (सं. पौत्री) पुत्रपुत्री, नञ्ची । पर—, सं. स्त्री. (सं. प्रपौत्री) पुत्रपौत्री, पौत्रपुत्री ।
पोत्या, सं. स्त्री. (सं.) पोतसमूहः, नीक्षा-पंक्तिः (स्त्री.) ।
पोथा, सं. पुं. (सं. पुस्तकः) वृद्धन-पुस्तक-ग्रंथः ।
पोथी, सं. स्त्री. (सं. पुस्तो) पुस्तकं, ग्रंथः ।
पोथीना, सं. पुं., दे. 'पुथीना' ।
पोना, क्रि. स., (हिं. पूथा + ना) उन्नयुर्गेन रोथिकां रन् (लु.) २. रोथिकां पन् (भ्वा. प. अ.) ३. दे. 'पिरोना' ।
पोप, सं. पुं. (अं.) रोमीयधर्म-अध्यक्ष-अधिपतिः ।
—लीला, सं. स्त्री. (अं. + सं.) धर्माट्टक-रविस्तरः ।
पोपला, वि. (हिं. पुलपुला) दंत-दशन-नदन-विहीन-रहित ।
पोर, सं. स्त्री. [सं. पर्वन् (न.)] अंगुली-ग्रंथिः-संधिः-पर्वन् २. अंगुलीग्रंथोः-मध्यभागः, पर्वन् ३. वंशे-वशादिग्रंथोर्मध्यभागः, पर्वन् ।

—पोर में, क्रि. वि., पर्वणि पर्वणि, सर्वपर्वसु ।
पोरी, सं. स्त्री. (हिं. पोर) दे. 'पोर' (३) ।
पोल, सं. पुं. (हिं. पोला) अवकाशः, शून्य-स्थानं २. सारहीनता, निस्सारता, शून्यगर्भता, निर्गुणता, अनर्घता ।
—खुलना, सु., पापं प्रकटीभू, दोषः विवृ(कर्म.) ।
पोला, वि. (सं. पोलः >) अंतःशून्य, रिक्त-शून्य-मध्य-गर्भ-उदर २. निस्सार, तत्त्वहीन ३. दे. 'पुलपुला' [पोली (स्त्री.)] ।
पोलिटिकल, वि. (अं.) राजनीतिक, राज-शासन-विषयक ।
—पुजंट, सं. पुं. (अं.) राजनीतिक-प्रतिनिधिः ।
पोलो, सं. पुं. (अं.) दे. 'नौगान' ।
पोशाक, सं. स्त्री. (फ्रा. पोश) वेशः-कः, परिधानं, वस्त्राणि (बहु.) ।
पोशीदा, वि. (फ्रा.) गुम, प्रच्छन्न ।
पोषक, वि. (सं.) पालकः, पालयितृ, पोष-यितृ, संबर्द्धक, पोषु २. सहायक ।
पोषण, सं. पुं. (सं. न.) पालनं, भरणं, संबर्द्धनं २. पुष्टिः (स्त्री.) ३. साहाय्यम् ।
पोषित, वि. (सं.) पालित, संबर्द्धित ।
पोष्य, वि. (सं.) पालनीय, संबर्द्धनीय ।
—पुत्र, सं. पुं. (सं.) दत्तकः ।
पोसना, क्रि. स. (सं. पोपयं) दे. 'पालना' (१-२) ।
पोस्ट, सं. स्त्री. (अं.) पदं, अधिकारः २. पत्र-वाहन-संस्था ३. दे. 'डाक' ।
—आफिस, सं. पुं. (अं.) पत्रालयः ।
—कार्ड, सं. पुं. (अं.) पत्रम् ।
—मास्टम, सं. पुं. (अं.) शवपरीक्षणम् ।
—मास्टर, सं. पुं. (अं.) पत्रालयाध्यक्षः ।
—मैन, सं. पुं. (अं.) पत्रवाहकः ।
पोस्टेज, सं. स्त्री. (अं.) पत्रशुल्कम् ।
पोस्त, सं. पुं. (फ्रा.) खसनि-खसखस-फलं २. खसखस-शकः ३. त्वन् (स्त्री.) ४. बलकल-कं, बलकः-कम् ।
पोस्ती, सं. पुं. (फ्रा.) खसखस-फलसेविन् २. अलसः, मंथरः ।
पोस्तीन, सं. पुं. (फ्रा.) *त्रर्मकंचुकः ।
पौचा, सं. पुं. (हिं. पांच) सार्द्ध-पंचगुणनसूची ।
पौंड, सं. पुं. (अं.) निष्कः, स्वर्णमुद्रा(१) अर्द्धसेर-देशीय-आंगुलतोलः ।

पीडा, सं. पुं. (सं. पीडः) पीडकः ।
इक्षुभेदः ।

पौ,^१ सं. स्त्री. (सं. पदः >) किरणः, रश्मिः,
ज्योतिस् (न.) अहर्मुखं, उपा ।

—फटना, मु., वि-प्र., भातं जन् (दि. अ. से.)
अरुणः उत् ६ (अ. प. अ.) ।

पौ,^२ सं. स्त्री. (सं. पद >) अक्षपातभेदः ।

—बारह होना, मु., जि (स्वा. उ. अ.),
२. भाग्यं उत्-३ (अ. प. अ.) ।

पौडर, सं. पुं. (अं.) क्षीरः चूर्णं २. पटवासक्रः,
पिष्टातः ।

पौवना, कि. अ., दे. 'लेटना' ।

पौत्र, सं. पुं. (सं.) दे. 'पोत' ।

पौत्री, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'पोती' ।

पौद, सं. स्त्री. (सं. पोतः >) बालवृक्षः, वृक्षकः,
२. स्थानांतरे आरोपणीयः उद्भिज्जः ३. संतानः,
वंशः ।

पौदा, पौधा, सं. पुं. (सं. पोतः >) क्षुद्रपादपः,
वृक्षकः, उद्भिज्जः, बालतरुः २. क्षुपः, गुल्मः ।

पौन,^१ वि. (सं. पादोन) अचतुर्थं, त्रितुर्थं,
त्रिपात्र [पौनी (स्त्री.)] ।

पौन,^२ सं. पुं. स्त्री. दे. 'पवन' ।

पौना, सं. पुं. (सं. पादोन) पादोनगुणनसूत्री ।
त्रि, दे. 'पौन' ।

पौने, वि. (सं. पादोन) दे. 'पौन' ।

—सोलह आने, मु., प्रायः साकल्यैत-तामस्येन-
सामग्रयेण ।

पौर, वि. (सं.) नगरिक, पुर-नगर, संघ-
धिन्-जात ।

—कन्या, सं. स्त्री. (सं.) पीठनागर-पुर-
नगर, कन्वा-कुमारी २. नगरी, पौरावन्ता ।

—जन, सं. पुं. (सं.) पौरयुक्तः, नगरः,
नगरिकः, पौरः, पुरः, पुर-नगर, वासिन् ।

—मुख्य, सं. पुं. (सं.) पीठध्वजः, महर्षीणः ।

—> ख्य, सं. पुं. (सं. न.) महत्कारिकता ।

पौराणिक, वि. (सं.) पुराणसंबन्धिन २. पुराण-
वेत्त-पाठक २. प्राचीन ३. अलौकिक ।

पौरिका, सं. पुं. (हि. पौरि) द्वारपालः, द्वारस्थः ।

पौरी-रे-स्त्री, सं. स्त्री. (सं. प्रतीत्ये >) (नगर-
दुर्गादीनां) द्वारं २. दे. 'डबोई' ।

पौरुष, सं. पुं. (सं. न.) पुरुषत्वं, पुंसत्वं २. पुरु-
षार्थः, उद्यमः, उद्योगः २. साहसम्, पराक्रमः ।

वि., पुरुषसंबन्धिन, मानुष, मानव ।

पौरुषेय, वि. (सं.) पौरुष, मानवीय, मानव-
नमुष्य, रचित ।

पौर्णमासी, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'पूणिमा' ।

पौवा, सं. पुं. (सं. पद्यः) (सं.) पद्यः
२. पदमानपात्रम् ।

पौष, सं. पुं. (सं.) विश्वः, तैषः, पौषिकः,
हैमनाः, सहस्यः ।

पौष्टिक, वि. (सं.) पुष्टि, फल-कारक, बलवीर्य-
वर्द्धकः ।

पौसर-ला, पौसाळा, सं. स्त्री. (सं. पद्यः-शब्दाः)
प्रपा, दे. 'सवील' ।

प्याऊ, सं. पुं. (सं. प्रपा) पयःशब्दा,
दे. 'सवील' ।

प्याऊ, सं. पुं. (फा.) पलायुः, सुखदूषणः,
उष्णः, शूद्रभिवः, कुम्भिनः, देवनः, बहुपत्रः,
रोचनः, मुष्णप्रकः ।

प्याजी, वि. (फा. प्याजः) पलायुवृत्तं ।

प्यादा, सं. पुं. (फा.) पादनाः, पदगः, पतिः,
पदातिः २. दूतः, संदेशद्वारः ३. आरिभेदः ।

प्यार, सं. पुं. (हि. प्यारा) प्रीतिः (स्त्री.),
प्रेमन् (पुं. न.), स्नेहः, अनु, शान्तिः, भावः,
प्रयत्नः, अभिनिवेशः २. लालनं, चुम्बनं,
आलिंगनं इ. ।

—करना, कि. म., भावं-प्रतुरागं वेष् (कू-
प. अ.), कम् (स्वा. आ. से.), सिनह (दि.
प. से.), सप्तमी के साथ ३. लट् (यु.),
आणि (स्वा. प. से.), परिनि (स्वा.
आ. अ.), चुल् (स्वा. प. से.) ।

प्यारा, वि. (सं. पिय) दन्ति, वक्त्र, कोट,
प्रेमपाद २. हृद्य, रम्य, नर्तक, कर्तक,
कव्य (प्यारी (स्त्री.)-प्रिया, बल्लभ, दयिता
२. नर्तकरी, हया इ.) ।

प्याला, सं. पुं. (फा.) बर्तकः, जगवः ।

प्याली, सं. स्त्री. (फा.) शयनस्थान, लघु-उपकः ।

प्यास, सं. स्त्री. (सं. 'पिपासा') वृष् (स्त्री.) ।
वृष्णः, वृषा, वर्षः, उदन्त्या, दुष्टिका २. यक्ष्मा,
प्रवर्द्धना ।

—बुझाना, मु., वृष्णं शब्. (सं.) अपनी
(स्वा. प. अ.) ।

—लभाना, मु., उदन्त्यति (ना. घा.); पिपासति
(सञ्जत), वृष् (दि. प. से.) ।

प्यासा, वि. (हि. प्यास) पिपासु, वृषात्तं,
तृषित, तर्षुल, तर्षित ।

प्रकंप, सं. पुं. (सं.) वेपथुः, रात्रथुः, दे. 'कंपकी' ।

प्रकट, वि. (सं.) स्पष्ट, व्यक्त, स्फुट, उल्लङ्घन-उद्दिष्ट २. आविर्भूत, वृष्ट ।

—करना, क्रि. सं., प्रकटयति (ना. धा.), प्रकटी कृ, प्रकाश (प्रे.)

—होना, क्रि. अ., आविर्-प्रकटी, भू, प्रकाश (म्हा. अ. सं.)

प्रकटित, वि. (सं.) प्रहृष्ट-आविर्-प्रकटी, भूत, २. आविष्कृत, कृत ।

प्रकरण, सं. पुं. (सं. न.) पौर्वापर्य, पूर्वापर-संबन्धः, प्रसंगः २. अध्यायः, परिच्छेदः ३. दृश्यकाव्यभेदः ।

प्रकर्ष, सं. पुं. (सं.) उल्कापः, श्रेष्ठत्वं, उत्तमता २. आधिक्यं, प्रानुत्थानम् ।

प्रकांड, सं. पुं. (सं. पुं. न.) स्कंधः, दंडः, कांड २. छाया ३. दृशः वि., सुमहत्, सुविस्मृत, सुविशाल ।

प्रकार, सं. पुं. (सं.) भेदः, वर्णः, जातिः (स्त्री.) २. नीतिः (स्त्री.), मातृणां, विधिः ३. साष्टद्वयम् ।

प्रकाश, सं. पुं. (सं.) अलीकः, उज्वला, आना, आभासः, ज्युतिः-द्युतिः-दीप्तिः-त्विष्-भस्म (सव स्त्री.), भास्व-ज्यामिस-तैजस् (न.), आ-शान्तः, प्रभः २. आतपः, सूर्याशोकः, धर्मः ३. अभिव्यक्तिः (स्त्री.), आविर्भावः ४. प्रसिद्धिः (स्त्री.) ५. अध्यायः ।

प्रकाशक, सं. पुं. (सं.) शौक्यः, दीप्तिकरः, उद्भासकः २. लोपापकः, प्रकाशयितृ ।

प्रकाशन, सं. पुं. (सं. न.) प्रकटी-आविष्, -करणं २. प्रव्यपणं, प्रचारणं (पुस्तकादि का) ।

प्रकाशमान, वि. (सं.) भासमान, शोतमान, भासुर २. प्रसिद्ध, विधत् ।

प्रकाशित, वि. (सं.) दे. 'प्रकाशमान' २. उद्भासित, आलीकित ३. प्रचारित, प्रख्यापित, प्रसृत ।

प्रकाश्य, वि. (सं.) प्रकाशनीय, प्रस्थापनीय, प्रचारणीय ।

प्रकीर्ण, वि. (सं.) अ-वि-कीर्णं, व्यस्त, विक्षिप्त, विरहित ।

प्रकीर्णक, वि. (सं.) दे. 'प्रकीर्ण' । सं. पुं. (सं. पुं. न.) चमरं, चानरम् । सं. पुं. (सं.) शोडः, अधः । सं. पुं. (सं. न.) नाना-विविध-वदुविध-वस्तुसंग्रहः २. प्रकरणं, अध्यायः ३. विविधविषयकाव्यायः ।

प्रकृपित, वि. (सं.) अति-कुपित-क्रुद्ध-संस्थ ।

प्रकृत, वि. (सं.) वास्तविक-तात्त्विक [स्त्री (स्त्री.)] तथ्य, अद्वितीय, यथार्थ २. सविशेषं कृत-रचित-विरहित ।

प्रकृति, सं. स्त्री. (सं.) स्वभावः, वृत्तिः (स्त्री.), शीलं, स्वरूपं, धर्मः, गुणः २. दे. 'तासीर' ३. प्रधानं, माया, जगतः उत्पादानकारणं, पृथ्व्यादि-परमाणवः (बहु.) ।

—ज, वि. (सं.) सहज, स्वामाविक, सह-जात, नैसर्गिक ।

—मंडल, सं. पुं. (सं. न.) राष्ट्रं, राज्यं, देशः ।

—सिद्ध, वि. (सं.) सहज, स्वामाविक, नैसर्गिक, औत्पत्तिक ।

—स्थ, वि. (सं.) स्वस्थ, शान्त, विकार-शोभ-रहित ।

प्रकोप, सं. पुं. (सं.) अत्यंत-क्रोध-क्रोध-संक्रमः-प्रमत्तः २. (रोगादीनां) प्रसारः, आधिक्यं ३. देहधातुविकारः ।

प्रकोष्ठ, सं. पुं. (सं.) कफाणेरधोमणिबन्ध-पर्यन्तो हस्तभागः २. वहिर्द्वारपार्श्वस्थः कोष्ठः ३. विशालोपनम् ।

प्रक्षालन, सं. पुं. (सं. न.) धावनं, मार्जनम् ।

प्रक्षालित, वि. (सं.) धौतं, माजित, जलशोधित ।

प्रक्षिप्त, वि. (सं.) प्राप्त, अपास्त, निरस्त २. कालान्तरे मिश्रित योजित ।

प्रक्षेप, सं. पुं. (सं.) प्राप्तं, निरसनं, प्रक्षेपणं, अधासनं २. विधरणं ३. पश्चात् मिश्रणम् ।

प्रखर, वि. (सं.) उग्र, प्र-, चंड, प्रबल, तीव्र २. निदि(शा)त, तीक्ष्ण, दे. 'नेज' ।

प्रख्यात, वि. (सं.) दे. 'प्रसिद्ध' ।

प्रख्याति, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'प्रसिद्धि' ।

प्रगट, वि., दे. 'प्रकट' ।

प्रगल्भ, वि. (सं.) नतुर, दक्ष, कुशल, प्रवीण २. प्रत्युत्पन्नमति, प्रतिभाशालिन् ३. उत्साहिन्, साहसिन् ४. निर्भय, अभय ५. वाचक, प्रजल्पक ६. सम्भार, प्रौढ ७. प्रधान, मुख्य ८. धृष्ट, निर्लज्ज, अपयश ९. उद्धत, विनय-शून्य १०. अभिमानिन्, इम्र ११. पुष्ट १२. समर्थ, शक्त ।

प्रगल्भता, सं. स्त्री. (सं.) दक्ष्यं, कीशल्यं, प्रवीण्यं २. प्रतिभा ३. निर्भयता ४. उत्साहः ५. वाक्कृत्यं, प्रत्युत्पन्नमत्तित्वं ६. गाम्भीर्यं ७. प्रधानता ८. धाष्टर्यं, निर्लज्जता ९. औद्धत्यं,

वैयात्यं १०. अभिमानः ११. पुष्टत्वं १२. प्रज-
ल्पः, बावदूकता १३. सामर्थ्यम् ।

प्रगाढ, वि. (सं.) अत्यन्त, अत्यधिक, प्रभूत,
प्रचुर २. अतिग(मं)भीर, अतिगहन ३. कौशल,
कठिन, घन ।

प्रग्रह, सं. पुं. (सं.) ग्रहणं, धारणं २. अक्षा-
दीनां रहसिः ३. किरणः ४. (तुला-) यज्ञं
५. बाहुः ६. इन्द्रिवनिग्रहः ।

प्रचंड, वि. (सं.) तीव्र, उग्र, वीर, प्र-खर,
२. प्रबल, बलवान्, ३. भीषण, भयंकर ४.
कठिन, कठोर ५. असत्य, दुस्सह ६. बृहत्,
महत् ७. पुष्ट, पीन ८. प्रतप्त ९. प्रतःपिम् ।

प्रचंडता, सं. स्त्री. (सं.) उग्रता, तीव्रता,
प्रखरता, २. भीषणता, भयंकरता ।

प्रचलन, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'प्रचार' ।

प्रचलित, वि. (सं.) प्रचरित, संचारित,
प्रसिद्ध, लोकसिद्ध, वर्तमान, विद्यमान ।

प्रचार, सं. पुं. (सं.) प्रचलनं, प्रसारः. सप्तत्रोप-
योगः, निरन्तरव्यवहारः ।

—करना, कि. स., प्रचर-प्रचल-प्रच (प्रे.) ।

प्रचारक, वि. (सं.) प्रसारक, प्रचालक, विस्ता-
रक । [प्रचारिका (स्त्री.)] ।

प्रचुर, वि. (सं.) विपुल, बहुल, अधिक, प्रभूत,
प्राज्य, बहु, भूविड, भूरि ।

प्रचुरता, सं. स्त्री. (सं.) बाहुल्यं, आधिक्यं,
वैपुल्यं, भूविडत्वम् ।

प्रच्छन्न, वि. (सं.) गुप्त, गूढ, अदृष्ट, तिरो-
भूत २. आच्छादित, आविष्टित ।

प्रजा, सं. स्त्री. (सं.) संतानः, संततिः (स्त्री.)
२. प्रकृतयःशासितजनाः-राज्यनिवासिनः (सब
बहु.) ।

—तंत्र, सं. पुं. (सं. न.) जनतंत्रशासनं, प्रजा-
सत्ताकं राज्यं, अनताप्रमुखम् ।

—नाथ, सं. पुं. (सं.) नृपः २. ब्रह्मन्
३. मनुः ४. दक्षः ।

—पति, सं. पुं. (सं.) सृष्टि-जगद्, कर्तृ-रच-
यितृ-स्रष्टृ, २. ब्रह्मन् ३. मनुः ४. नृपः ५. सूर्यः
६. अर्जुनः ७. पितृ ८. दृष्टपतिः ।

प्रजावती, सं. स्त्री. (सं.) आनुजाया, दे.
'भावज' २. अग्रजपदनी ३. गर्भवती ४. संता-
नवती ।

प्रज्ञ, सं. पुं. (सं.) प्राज्ञः, बुद्धिमत्, विद्वत्,
पंडितः ।

प्रज्ञा, सं. स्त्री. (सं.) बुद्धिः (स्त्री.), ज्ञानं
२. सरस्वती ३. यकायता ।

—चक्षु, सं. पुं. (सं-क्षुस्) शृतराष्ट्रः २. अंधः
(व्यंग्य) ३. बुद्धिनिग्रम ४. प्राज्ञः ।

—पारमिता, सं. स्त्री. (सं.) पूर्णज्ञानं, सर्व-
ज्ञता (बौद्ध०) ।

—त्राद, सं. पुं. (सं.) पांडित्य-विद्वत्ता-पूर्णिकः
(स्त्री.) ।

—हीन, वि. (सं.) मूर्खं, मूढं, जड, अज्ञ ।

प्रज्वलित, वि. (सं.) दीदीप्यमान, दंदहमान,
जाज्वलयमान, प्रदीप्त, २. तुस्पष्ट, स्वच्छ ।

प्रण^१, सं. पुं. (सं. पणः >) व्रतं, दृढसंकल्पः,
प्रतिज्ञा, शपथः, वाचा ।

—करता, मशयर्थं प्रतिज्ञा (कृ. आ. अ.),
प्रतिश्रु (त्वा. प. अ.) ।

प्रण^२, वि. (सं.) पुराण, प्राचीन ।

प्रणत, वि. (सं.) प्रहोभूत, २. बंदनान् ३. नम्र
४. निर्धन ।

प्रणति, सं. स्त्री. (सं.) प्रणामः, प्रणिपातः,
नमस्कारः, नमस्क्रियः, बंदता २. नम्रता
३. निवेदनम् ।

प्रणय, सं. पुं. (सं.) दे. 'प्यार' २. सस्नेह-
प्रार्थनम् ।

प्रणयन, सं. पुं. (सं.) लेखनं, रचनं, निर्माणं,
विधानं, कारणम् ।

प्रणयिनी, सं. स्त्री. (सं.) प्रिया, वल्लभा, दक्षिण
२. पत्नी, भार्या ।

प्रणयी, सं. पुं. (सं. यिन्) रमणः, वल्लभः
कांतः-दयितः २. पतिः, भर्तृ ।

प्रणव, सं. पुं. (सं.) अकारः २. परमेश्वरः ।

प्रणाम, सं. पुं. (सं.) दे. 'प्रणति' (चतुर्विधः
अष्टांगः, पंचांगः, अभिवादनं, करधिरः
संयोगः) ।

—करता, कि. स., ननरद्ध, प्रणम् (स्वा. प.
अ.), अभिवद् (चु. आ. से.), बंद (स्वा.
आ. से.) ।

प्रणाली, सं. स्त्री. (सं.) जलाशयः, परि-
वाहः, सरणिः (स्त्री.) २. प्रधा, परिणाम्य,
परंपरा, रीतिः (स्त्री.) ३. युक्तिः-पद्धतिः (स्त्री.) ।

प्रणिधान, सं. पुं. (सं. न.) समधिमेदः
२. मक्ति-वेदीयः ३. कर्मफलत्यागः, ४. चित्तंका-
ग्रथम् ५. प्रार्थना ६. व्यवहानः ।

प्रणिधि, सं. पुं. (सं.) दे. 'गुप्तचर' ।

प्रणिगत

[३११]

प्रतिपत्ति

प्रणिपात, सं. पुं. (सं.) दे. 'प्रणति' ।
प्रणीत, वि. (सं.) लिखित, रचित, निर्मित, कृत, विहित २. संस्कृत, संशोधित ३. आनीत ४. प्रेषित ।
प्रणेता, सं. पुं. (सं. प्रणेतृ) लेखकः, रचयितृ, कर्तृ, निर्मातृ ।
प्रतप्त, वि. (सं.) तापित, अत्युष्णी, कृत-भूत ।
प्रताप, सं. पुं. (सं.) तेजस्-ओजस् (न.), अनुभावः, अभिल्या, गौरव, ऐश्वर्य, महिम्न (पुं.) २. वीर्य, दौर्ब्य, शीघ्र ३. तापः, उष्णता, घमः ।
प्रतापी, वि. (सं. पिन्) प्रतापवद्, तेजस्विन्, ओजस्विन्, अनुभाववत् २. वीर, शूर ।
प्रतारणा, सं. स्त्री. (सं.) वचन-ना, कपटं, प्रतारणं २. धूर्तता, कैतवम् ।
प्रति, सं. स्त्री. (सं. प्रति >) प्रति-अनु-, लिपिः (स्त्री.), प्रतिलेखः । (उपसर्ग) समर्थ, सम्मुख तुलनायां २. प्रति (द्वितीया के साथ, समीचीन व्यक्ति से भी, उ., भगवान् के प्रति श्रद्धा = भगवन्तं प्रति अथवा भगवति श्रद्धा) ३. दिशि (समीचीनी) ।
प्रति(ती)कार, सं. पुं. (सं.) प्रतिकृतिः (स्त्री.), प्रतिक्रिया, निर्घातन, शमनोपायः २. चिकित्सा, उपचारः ।
प्रतिकूल, वि. (सं.) विपरीत, विरुद्ध, प्रतीप, विषम ।
प्रतिकूलता, सं. स्त्री. (सं.) वैपरीत्यं, विरोधः ।
प्रतिकृति, सं. स्त्री. (सं.) प्रतिकृतिः (स्त्री.), प्रतिमा २. चित्रं, आलेख्यं ३. छाया, प्रतिबिम्ब ४. प्रतिक्रिया, प्रति(ती)कारः ।
प्रतिक्रिया, सं. स्त्री. (सं.) प्रति(ती)कारः, प्रतिकृतिः (स्त्री.) २. प्रतिघातः, प्रत्याघातः ३. निवारण-शमन-उपायः ।
प्रतिक्षण, कि. वि. (सं. क्षणं) अनुक्षणं, क्षणे क्षणे, प्रति-अनु-, पलन् ।
प्रतिग्रह, सं. पुं. (सं.) स्वो-अंगो-, नकारः, आदानं, ग्रहणं २. विवाहः, पाणिग्रहणम् ।
प्रतिघात, सं. पुं. (सं.) प्रतिप्रहारः, प्रत्याघातः, प्रतिहतिः (स्त्री.) ३. विघ्नः, बाधा ।
प्रतिच्छाया, सं. स्त्री. (सं.) प्रतिबिम्बं, छाया, प्रतिफलं, प्रतिरूपं २. चित्रं ३. मूर्तिः (स्त्री.) ।
प्रतिज्ञा, सं. स्त्री. (सं.) प्रतिश्रवः, संगरः,

समयः, संविद्-आगूः (स्त्री.), वचनं, वाचा शपथः, दृढसंकल्पः २. साध्यनिर्देशः (न्या.) ।
—करना, कि. सं., आ-प्रति-सं-क्षु (भ्वा. प. अ.), प्रतिज्ञा (कृ. आ. अ.) । कि. अ., प्रतिज्ञां कृ, वचनं दा ।
—तोड़ना, कि. सं., प्रतिज्ञां भङ् (श. २. अ.), उल्लंघ् (तु.), विरंबद् (भ्वा. प. से.) ।
—पालना, कि. सं. वचनं पा (प्रे. पालयति) शुभ् (प्रे.) ।
—पत्र, सं. पुं. (सं. न.) समय-प्रतिज्ञा, पत्र-लेख्यम् ।
—पालन, सं. पुं. (सं. न.) प्रतिज्ञानिर्वाहः, संगरशोधनम् ।
—संग, सं. पुं. (सं.) वचनव्यतिक्रमः, प्रीडो-ल्लयनं, विसंवादः ।
—विघाहित, वि. (सं.) वाग्दत्तः-त्ता-त्तन, प्रदत्तः-त्ता-त्तम्, प्रप्तः-त्ता-त्तम् ।
प्रतिज्ञात, वि. (सं.) प्रतिश्रुन्, संश्रुन्, आश्रुन् । सं. पुं. (सं. न.) प्रतिज्ञा, दृढसंकल्पः ।
प्रतिदंड, वि. (सं.) दुःशालः-लालं, धृष्टः-धृष्टा-धृष्टम्, आशालंघिन्, अचनुर्वतिन् ।
प्रतिदानं, सं. पुं. (सं. न.) प्रत्यर्पणं २. विनिमयः ।
प्रतिदिन, कि. वि. (सं. दिनं) अनु-, दिनं-दिवसं, प्रत्यहं अन्वहं, दिने दिने ।
प्रतिद्वंद्विता, सं. स्त्री. (सं.) शत्रुता, वैरं, विरोधः २. प्रतिस्पर्धा, प्रत्याघात ।
प्रतिद्वंद्वी, सं. पुं. (सं. द्विन्) अरिः, शत्रुः, विरोधिन् २. प्रत्यधिन्, प्रतिस्पर्धिन् ।
प्रतिध्वनि, सं. स्त्री. (सं. पुं.) प्रति-, ध्वनि-नादः-शब्दः-श्रुतिः (स्त्री.) ।
—उठना या होना, कि. अ., प्रति-, ध्वन्-न्द् (भ्वा. प. से.) ।
प्रतिनिधि, सं. पुं. (सं.) प्रतिपुरुषः, प्रतिहस्तः-स्तकः २. प्रथमा, प्रतिमूर्तिः (स्त्री.) ।
प्रतिपक्षी, सं. पुं. (सं. द्विन्) विपक्षिन्, प्रति-वादिन् २. विरोधिन्, प्रतिद्वंद्विन् ३. शत्रुः, वैरिन् ।
प्रतिपत्ति, सं. स्त्री. (सं.) प्राप्तिः-उपलब्धिः (स्त्री.) अधिनामनं २. हानं ३. अनुमानं ४. दानं, अर्पणं ५. निरूपणं, प्रतिपादनं ६. प्रवृत्तिः (स्त्री.) ७. निश्चयः ८. परिणामः ९. गौरवं १०. प्रतिष्ठा, सत्कारः ११. स्वीकृतिः (स्त्री.) १२. सप्रमाणं प्रदर्शनम् ।

प्रतिपदा

[३६२]

प्रतिस्पर्द्धा

प्रतिपदा, सं. स्त्री. (सं.) प्रतिपद (स्त्री.)
पक्षिनिः (स्त्री.), शुक्ला प्रथमतिथिः (स्त्री.),
प्रतिपदा :
प्रतिपन्न, वि. (सं.) ज्ञान, अबबुद्ध, अधिगत
२. स्वी-अंगी-कृत ३. निर्धारित, निश्चित
४. शरणागत ५. संमानित ६. प्राप्त ७. प्रवृद्ध ।
प्रतिपादक, वि. (सं.) दानु, दायक, २. निरूपक,
व्याख्यातृ ३. उद्गायक ४. निष्पादक ।
प्रतिपादन, सं. पुं. (सं. न.) निरूपणं, सप्र-
माणं कथनं-साधनं-स्थापनं २. सम्यग् ज्ञानं-
अवबोधनं ३. दानं, अर्पणम् ।
प्रतिपादित, वि. (सं.) सम्यग् अथबोधित-
जापित २. निर्धारित, निश्चित ३. दत्त ।
प्रतिपाद्य, वि. (सं.) निरूपणीय, अवबोधनीय
२. देय ।
प्रतिपालन, सं. पुं. (सं. न.) पालनं, पोषणं,
संवर्द्धनं २. रक्षणं, वरणं ३. निरु-वाहः-वदयम् ।
प्रतिफल, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'प्रतिच्छाया' (१)
२. परिणामः, फलं ३. प्रत्युपकारः ४. प्रत्युप-
कारः, निष्कृतिः (स्त्री.) ।
प्रतिबंध, सं. पुं. (सं.) विघ्नः, बाधा, अस्तरायः
२. प्रतिरोधः, व्याघ्रतः ३. दे. 'प्रबंध' ।
प्रतिबंध, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'प्रतिच्छाया' ।
प्रतिबंधित, वि. (सं.) प्रतिफलित, प्रतिरूपित ।
प्रतिभा, सं. स्त्री. (सं.) नवनवोन्मेषदालिनी
प्रज्ञा, चमत्कारिणी बुद्धिः (स्त्री.), मतिप्रकर्षः
२. बुद्धिः-मतिः-धीः (स्त्री.) ३. वैदग्ध्यं, बुद्धि-
चातुर्यं ४. दीप्तिः (स्त्री.) ।
प्रतिभाशाली, वि. (सं.) प्रतिभावत्,
प्रतिभाश्वित, सप्रतिभा २. धीमत्, बुद्धिमत् ।
प्रतिभू, सं. पुं. (सं.) लनकः, दे. 'जामिन' ।
प्रतिभा, सं. स्त्री. (सं.) अनुकृतिः-मूर्तिः (स्त्री.),
चित्रं, प्रति-कृतिः (स्त्री.)-मानं-रूपं-च्छन्दकं
२. प्रति-बिंबं-च्छाया ३. माडः, मात्रं, लो-
भाय-मानं ४. अलंकारभेदः (सं.) ।
प्रतिबोधिता, सं. स्त्री. (सं.) प्रतिद्वंद्विता,
प्रतिस्पर्द्धा, अहमहमिका, विजिगीषा २. विरोधः,
शत्रुता ।
प्रतिबोधी, सं. पुं. (सं.) प्रतिद्वंद्विभू,
प्रतिस्पर्द्धिन, विजिगीषुः २. शत्रुः, वैरिन्
३. महायकः ३. अंशिन, अंशभाज् ।
प्रतिरूप, सं. पुं. (सं. न.) मूर्तिः (स्त्री.),
प्रतिमा २. चित्रं, आलेख्यं ३. प्रतिनिधिः ।

प्रतिरोध, सं. पुं. (सं.) विरोधः, प्रातिकूल्यं,
वैपरीत्यं २. बाधः-धा, व्याघातः, प्रतिबंधः ।
प्रतिलिपि, सं. स्त्री. (सं.) अनुलिपिः (स्त्री.),
प्रतिलेखः ।
प्रतिलोम, वि. (सं.) प्रतिकूल, विपरीत,
विरुद्ध २. तुच्छ, नीच ३. विलोम, विपर्यस्त,
व्यत्यस्त ।
प्रतिलोमज, सं. पुं. (सं.) वर्णसंकरः २. उत्तम-
वर्णायां नार्यां अधमवर्णात् पुरुषात् जातः ।
प्रतिवचन, सं. पुं. (सं. न.) उत्तरं, प्रतिवचन
(न.) २. प्रतिध्वनिः ।
प्रतिवत्सर, अन्व. (सं.) प्रति-अनु, वर्ष-वत्सर-
अब्दं, वर्ष-वर्षे, वत्सरे-वत्सरे ।
प्रतिवचिता, सं. स्त्री. (सं.) सप्तती, सभार्या,
स्मानपत्निका ।
प्रतिवस्तु, सं. स्त्री. (सं.) सदृश-स्मान-तुल्य-
वस्तु (न.), पदार्थः २. प्रतिदत्तपदार्थः ३.
उपमानम् ।
प्रतिवस्तुपमा, सं. स्त्री. (सं.) अर्थालंकारभेदः ।
प्रतिवाद, सं. पुं. (सं.) प्रत्याख्यानं, निरा-
करणं, निरासः, दे. 'खंडन' २. विवादः ३.
उत्तरम् ।
प्रतिवादी, सं. पुं. (सं.) प्रतिवदिन् प्रत्याधिन्, अभि-
युक्तः २. विपक्षिन्, प्रतिपक्षिन्, प्रत्याख्यातृ ।
प्रतिवासी, सं. पुं. (सं.) दे. 'पडोसी' ।
प्रतिवेशी, सं. पुं. (सं.) दे. 'पडोसी' ।
प्रतिशोध, सं. पुं. (सं.) निवातनं, प्रति-
अपकारः-द्रोहः ।
प्रतिश्याय, सं. पुं. (सं.) दे. 'जुकाम' २. जिन-
सरोजः ।
प्रतिषिद्ध, वि. (सं.) दे. 'निषिद्ध' ।
प्रतिषेध, सं. पुं. (सं.) दे. 'निषेध' २. खंडनं,
निरतनं ३. अर्थालंकारभेदः (सं.) ।
प्रतिष्ठा, सं. स्त्री. (सं.) संस्कारः, अहंगा, सं-
मानः, आदरः, गौरवं २. यशम् (न.),
कीर्तिः-विख्यातिः-प्रसिद्धिः (स्त्री.) ३. स्थापनं-
ना, गिधानम् ।
प्रतिष्ठित, वि. (सं.) सत्कृत, सं-मानित,
अभ्यर्चित २. विश्रुत, प्रसिद्ध, विख्यात २. स्था-
पित, प्रतिष्ठापित ।
प्रतिस्पर्द्धा, सं. स्त्री. (सं.) प्रत्यर्थता, प्रति-
द्वंद्विता, विजिगीषा, अहमहमिका २. कलहः ।

प्रतिस्पर्द्धी

[३३३]

प्रथम

प्रतिस्पर्द्धी, सं. पुं. (सं.दिन्) प्रत्ययिन्, प्रति
द्वन्द्विन्, त्रिविनीपुः ।

प्रतिहत, वि. (सं.) अय-प्रति, रुद्ध, प्रतिवाधित
१. पराजित, परावर्तित ३. अपास्त, क्षिप्त ४.
पतित ५. निराश ६. पराजित, परास्त ।

प्रति(ती)हार, सं. पुं. (सं.) द्वार (स्त्री.),
द्वारं २. द्वारपालः, द्वारस्थः ।

प्रति(सी)हारी, सं. पुं. (सं.रिच्) द्वारपालः,
द्वारस्थः, द्वारारिकः । सं. स्त्री. (सं.) द्वार-
पालिका ।

प्रतिहिंसा, सं. स्त्री. (सं.) प्रत्ययकारः, प्रत्यय-
क्रिया, प्रतिद्वेषः, प्रति-निर्यातनम् ।

प्रतीक, सं. पुं. (सं. न.) प्रतिगा, मूलतः १.
मुखं, आननं ३. अर्थं, अक्षभागः ४. इलोकादिः
प्रथमशब्दः ५. अर्थं, अवयवः ६. निह, लक्षणं
७. आकारः, भावं ८. प्रतिरूपं, स्थान-पञ्च-
नस्तु (न.) ।

प्रतीकार, सं. पुं. (सं.) दे. 'प्रतिकार' ।

प्रतीक्षा, सं. स्त्री. (सं.) प्रतीक्षणं, उद्गीक्षा,
प्रत्यक्षा, अपेक्षा ।

—करता, कि. अ., अप-उद्-प्रति-रिह् (भ्वा.
आ. से.), अनु-प्रति-या (प्रे. पाठयति) ।

प्रतीची, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'पश्चिम' ।

प्रवीत, वि. (सं.) जात, विदित, अवगत, बुद्ध
२. प्रसिद्ध ३. प्रसन्न ।

—होना, कि. अ., शा-अवगम्-बुध्-प्रती (=प्रति-
इ) (सव कर्म.) ।

प्रतीति, सं. स्त्री. (सं.) ज्ञानं, बोधः, अवगमः
२. ख्यातिः (स्त्री.) ३. विश्वासः ४. आनन्दः
५. आदरः ।

प्रतीप, वि. (सं.) विरुद्ध, विपरीत, प्रतिकूल ।

प्रतीहार, सं. पुं. (सं.) दे. 'प्रतिहार' ।

प्रत्यंचा, सं. स्त्री. (सं.) मौक्तिकं, शिबिनी, ज्वर,
धनुर्गुणः ।

प्रत्यक्ष, वि. (सं.) इन्द्रिय, दृग्गोचर, पुरःस्थित
२. इन्द्रियवशात्, इन्द्रियगोचर, (इन्द्रियक ३.
भूतद, स्पष्ट सं. पुं. (सं. न.) प्रमाणभेदः
(न्याय.), अनुभवभेदः । कि. वि., नयनयोः
पूरतः २. स्पष्टं, व्यक्तम् ।

—दर्शी, सं. पुं. (सं.दिन्) (प्रत्यक्ष-)
साक्षिन् (

—प्रमाण, सं. पुं. (सं. न.) प्रमाणभेदः
(न्या.) ।

प्रत्यय, सं. पुं. (सं.) विधत्तः, विधत्तः
२. शब्दादिपभागः, प्रकृत्युत्तरं जादमानः
आगमः (सुप्-निच्-आदि, न्या.) ३. प्रमाणं,
साधनं ४. ज्ञानं ५. विचारः ६. व्याख्या
७. कारणं ८. आवश्यकता ९. प्रसिद्धिः
(स्त्री.) १०. निहं ११. निर्णयः १२. सम्मतिः
(स्त्री.) १३. सहायकः १४. स्वादः ।

प्रत्याख्यान, सं. पुं. (सं. न.) निराकरणं,
निरसनं, खंडनम् ।

प्रत्याशा, सं. स्त्री. (सं.) आशा, आशंसा,
आकांक्षा २. उद्गीक्षा, प्रतीक्षा, अपेक्षा ।

प्रत्याग्नी, वि. (सं.दिन्) परीक्षयिन् २.
पदान्वेषिन् ३. आशावान्, अशान्वित ।

प्रत्याहार, सं. पुं. (सं.) प्रत्याहरणं, उपादानं,
इन्द्रियनिग्रहः २. अल्पेन बहूनां प्रदणं
(उ. अच=सव स्वरवर्णं, न्या.) (

प्रत्युक्ति, सं. स्त्री. (सं.) उत्तरं, प्रतिवचनम् २.

प्रत्युत्, अर्थ. (सं.) दे. 'वक्ति' ।

प्रत्युत्तर, सं. पुं. (सं. न.) उत्तरस्योत्तरं,
उत्तरप्रतिवचनम् ।

प्रत्युत्थान, सं. पुं. (सं. न.) स्वागतार्थम्
उत्थान-अभ्युत्थानम् २. शत्रुसाम्मुख्यार्थम्
उत्थितिः (स्त्री.) ३. कार्यविशेषाय सज्जी भू,
सज्ज (दि. उ. अ.) ।

प्रत्युत्पन्न, वि. (सं.) पुनरुत्पन्न २. स्वत्वसरे
उत्पन्न ।

—मति, वि. (सं.) तत्काली, कुशास्मीय-
मति, सूक्ष्मदर्शिन २. प्रतिभावित । सं. स्त्री.
(सं.) तत्कालीः (स्त्री.), कुशाप्रवृद्धिः
(स्त्री.) २. प्रतिभः ।

प्रत्युद्गमन, सं. पुं. (सं. न.) प्रत्युत्थानं,
प्रत्युद्गमः ।

प्रत्युपकार, सं. पुं. (सं.) प्रति, उपेकृतिः
(स्त्री.) साहाय्यम् ।

प्रत्येक, वि. (सं.) एकैक, सर्वं, सकल ।

प्रथम, सं. पुं. (सं. न.) विस्तारः, वितति-
स्वक्तिः (स्त्री.) २. यथाः प्रसक्तं-प्रसारणम् ३.
क्षेपणम् ४. प्रदर्शनम् ।

प्रथम, वि. (सं.) आद्य, आदिम, अग्रिम २.
श्रेष्ठ, उत्तम ३. प्रथम, मुख्य । कि. वि. (सं.
सं.) अग्ने, आदौ, पूर्वे, प्रथमतः ।

—कृत्य, सं. पुं. (सं.) सर्वोत्तम-उपायः-
युक्तिः (स्त्री.) २. मुख्यनियमः ।

—पुरुष, सं. पुं. (सं.) अन्यपुरुषः (व्या०) ।
 —यथ, सं. पुं. (सं. यस् न.) यौवनं, तारुण्यम्,
 नववयसं (न.) ।
 प्रथमा, सं. स्त्री. (सं.) विभक्तिविदोषः (व्या.)
 २. मदिरा ।
 प्रथा, सं. स्त्री. (सं.) रीतिः-रूढिः (स्त्री.),
 अनुसारः, आचारः, व्यवहारः २. दे. 'प्रसिद्धि' ।
 प्रथित, वि. (सं.) दे. 'प्रसिद्ध' ।
 प्रदक्षिणा, सं. स्त्री. (सं.) प्रदक्षिणः-णं,
 परिक्रमः ।
 प्रदत्त, वि. (सं.) अर्पित, विश्राणित, उन्-वि-
 सृष्ट, संक्रामित ।
 प्रदर, सं. पुं. (सं.) नारीरोगभेदः, असुग्दरः
 (द्वौ भेदौ-श्वेतप्रदरः, रक्तप्रदरः) ।
 प्रदर्शक, सं. पुं. (सं.) प्र-दर्शयितृ, दर्शनकार-
 यितृ २. दर्शकः, दृष्ट, प्रेक्षकः ३. पुरुः ।
 प्रदर्शन, सं. पुं. (सं. न.) प्रकटनं, प्रकाशनं,
 व्यंजनं, विजृम्भणं, प्रकटी-आविष्-करणं २. दे.
 'नुमादश' ।
 प्रदर्शनी, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'नुमादश' ।
 प्रदर्शित, वि. (सं.) प्रकटीकृत, प्रकटित,
 प्रकाशित ।
 प्रदान, सं. पुं. (सं. न.) दानं, विश्राणनं,
 अपर्णं, संक्रामणं २. विवाहः ।
 प्रदिशा, सं. स्त्री. (सं.) प्रदिश-विदिश
 (स्त्री.) विदिशा, दिक्कोणः ।
 प्रदीप, सं. पुं. (सं.) दीपः, कञ्जलध्वजः,
 नयनोत्सवः दीपस्थः २. प्रकाशः ।
 प्रदीपन, सं. पुं. (सं. न.) उद्-सं-दीपनं,
 प्रज्वलनं २. प्र-स्रोतनं, प्रकाशनं, ३. उत्तेजनं,
 प्रोत्साहनम् ।
 प्रदीप्त, वि. (सं.) प्रज्वलित, उद्-सं-दीप्त,
 समिद्ध २. प्रकाशित, प्रकाशमान ३. उज्ज्वल,
 भासुर ।
 प्रदेश, सं. पुं. (सं.) चक्रं, मंडलं, प्रांतः,
 देशविभागः, भूभागः २. स्वानं, स्वर्गं ३. अर्गं,
 अवयवः ।
 प्रदीप, सं. पुं. (सं.) संध्यासमयः, संध्या,
 सायंकालः, दिनवसानं, रजनीमुखं २. संध्या-
 चकारः ।
 प्रधान, वि. (सं.) मुख्य, श्रेष्ठ, अग्र्य, आदिम,
 परम, उत्तम, प्रमुख, विशिष्ट । सं. पुं.,

नेतृ, नायकः, गुणेशः, अग्रणीः २. मन्दिन,
 सच्चिवः ३. प्रकृतिः (स्त्री.), जगतः उपादान-
 कारणं, प्रधानं ४. सभा-पतिः-अध्यक्षः
 ५. ईश्वरः ।
 —मंत्री, सं. पुं. (सं. त्रिन्) महामन्दिन,
 प्रधान-अमात्यः-सचिवः ।
 प्रधानता, सं. स्त्री. (सं.) उत्तमता, श्रेष्ठता,
 मुख्यता २. नेतृत्वं, नायकत्वं ३. अध्यक्षता,
 समापतित्वं ४. मंत्रियत्वं, मंत्रित्वम् ।
 प्रध्वंस, सं. पुं. (सं.) वि-नाशः, प्रणाशः-
 विध्वंसः, उन्ध्वेदः-संहारः ।
 प्रपंच, सं. पुं. (सं.) लष्टिः (स्त्री.), मंसारः,
 जगज्जालं २. विस्तारः, विस्तारः, ३. छलं,
 आलंबनः, कपटं ४. दे. 'बलेका' ।
 प्रपंची, वि. (सं. चिन्) कापटिक, मायाविन्,
 छलिन २. चतुर, धूर्त ३. कलहप्रियः ।
 प्रपन्न, वि. (सं.) प्राप्त, आगत २. शरणगतः ।
 प्रपात, सं. पुं. (सं.) दे. 'शरणा' २. अतट,
 भृगुः, निरवलंबः पर्वतादिपार्श्वः ३. अव-गतः-
 पतनम् ।
 प्रपितामह, सं. पुं. (सं.) दे. 'पडदादा' ।
 प्रपितामही, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'पडदादी' ।
 प्रपोत्र, सं. पुं. (सं.) दे. 'परपोता' ।
 प्रपोत्री, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'परपोती' ।
 प्रफुल्ल, वि. (सं.) विकसित, स्फुटित, उद-सं-
 फुल्ल, प्रबुद्ध, भिन्न, विकच २. कुसुमित-
 पुष्पित ३. उन्मीलित, उन्मिधित (नेत्र)
 ४. स्मित, आनंदित ।
 —नयन, वि. (सं.) विकचनेत्र [-वा, वी
 (स्त्री.)] ।
 —चदन, वि. (सं.) स्मितानन, प्रसन्नमुख
 [-नी (स्त्री.) = स्मितानना-नी, प्रसन्नसुखा
 स्त्री.] ।
 प्रफुल्लित, वि. (सं.) दे. 'प्रफुल्ल' ।
 प्रबंध, सं. पुं. (सं.) सविधा, उपायः, आयो-
 जनं, प्रयोगः, युक्तिः (स्त्री.) २. अवस्था-क्षणं,
 निर्वाहः-वृणं, प्रवर्तनं, अधिष्ठानं, व्यवस्थापनं,
 चालनं, व्यवस्था ३. निबंधः, लेखः, प्रस्तावः
 ४. महाकाव्यं, संग्रहितकविता ।
 —कृता, सं. पुं. (सं. न्) प्रबंधकः, आदा-
 नकः, व्यवस्थापकः, निर्वाहकः, चालकः,
 अध्यक्षः, अधिष्ठान, अवलोकः ।

प्रबंधक

[३६५]

प्रसिति

—कल्पना, सं. स्त्री. (सं.) स्तोकसत्या कल्पनावहुला कथा ।
 —कारिणी, सं. स्त्री. (सं.) प्रबन्ध-व्यवस्था-कर्त्री समितिः (स्त्री.) ।
 —काव्य, सं. पुं. (सं. न.) कनकबद्धकाव्यम्, श्रव्यकाव्यभेदः (सा०) ।
 प्रबंधक, सं. पुं. (सं.) दे. 'प्रबंधकर्ता' ।
 प्रबल, वि. (सं.) बलवत्, मज्जल, बलिन, शक्तिवत्, ऊर्जस्विन्, प्रभविष्णु २. उग्र, घोर, तीव्र, प्र-चंड ।
 प्रबुद्ध, वि. (सं.) जागरित, उन्निद्र, जाग्रत (शत्रंत) २. विकसित ३. शान्ति ।
 प्रबोध, सं. पुं. (सं.) जागरण, प्रबोधनं, निद्रा-भंगः-स्वागः २. यथार्थ-पूर्ण-ज्ञानं ३. सात्वत-ना ४. विकासः ५. पूर्वसिद्धिर्जनं ६. चेतनालाभः, मूर्च्छाभंगः ।
 प्रबोधन, सं. पुं. (सं. न.) (निद्रातः) उत्थानं, निद्राभंगनं २. जागरणं ३. उद्बोधः, उपदेशः, ज्ञानं ४. सात्वतम् ।
 प्रभञ्जन, सं. पुं. (सं.) वायुः, पवनः २. वात्या, कंसावातः, प्रकंपनः । (सं. न.) उत्पाटनं, उन्मूलनं, वि-नाशनम् ।
 प्रभव, सं. पुं. (सं.) जन्महेतुः (पुं.) उत्पत्तिकारणं २. उत्पत्तिस्थानं, आकरः ३. सृष्टिः (स्त्री.) ४. (नयादीनां) उद्गमः, उद्भवः, मूलम् ।
 प्रभा, सं. स्त्री. (सं.) दीप्तिः-शुक्तिः-कांतिः-रुचिः-शोभिः (स्त्री.), आभा, विभा, प्रकाशः, त्विषा ।
 —कीट, सं. पुं. (सं.) खलोतः, दे. 'जुगनु' ।
 प्रभाकर, सं. पुं. (सं.) दिवाकरः, दे. 'सूर्य' ।
 प्रभात, सं. पुं. (सं. न.) विभातं, प्रातःकालः, उषा, उष, उपः, ऊषः, अहर्मुखं, क(का)ल्पं, व्युष्टं, प्रत्यु(त्पू)षः-पं, अरुणादयः, विद्वानः-नं, उपम् (स्त्री.) ।
 प्रभात, सं. पुं. (सं.) सामर्थ्यं, शक्तिः (स्त्री.), बलं २. माहात्म्यं, महत्त्वं ३. वशाः-र्शः, प्राबल्यं ४. परिणामः, फलम् ।
 प्रभु, सं. पुं. (सं.) जगद्गोशः, परमेश्वरः २. स्वामिन्, भर्तृ ३. अधिपतिः, नायकः ३. श्रेष्ठजन्मोपाधिः ।
 —भक्त, वि. (सं.) स्वानिभक्त, कर्तव्यपर, सत्सेवक २. प्रभूपासक, भगवद्भक्त ।
 प्रभुता, सं. स्त्री. (सं.) महत्त्वं, माहात्म्यं

२. शासकता, अधिकारित्वं ३. वैभवं ४. स्वामित्वं, प्रभुत्वम् ।
 प्रभूत्, वि. (सं.) दे. 'प्रचुर' २. उत्पन्न, उद्भूत, उद्भूत ।
 प्रभृति, कि. वि. (सं.) तदारभ्य, ततोऽनन्तरं, आदि-इत्यादि । सं. स्त्री., आरंभः ।
 प्रभेद्, सं. पुं. (सं.) प्रकारः, वर्गः, जातिः (स्त्री.) २. अंतरं, भेदः, भिदा ।
 प्रमत्त, वि. (सं.) उन्मत्त, मदोन्मत्त, मत्त, क्षीव २. उन्मत्त, बाहुल, उन्मादिन् ।
 प्रमथन, सं. पुं. (सं. न.) विलोडनं २. क्लेशनं ३. हननम् ।
 प्रमद, सं. पुं. (सं.) आनन्दः, हर्षः २. क्षीयता । वि., क्षीव ।
 प्रमदा, सं. स्त्री. (सं.) सुंदरी, उग्रमयीपितृ (स्त्री.) ।
 प्रमा, सं. स्त्री. (सं.) यथार्थज्ञानं, शुद्धबोधः २. दे. 'माप' ।
 प्रमाण, सं. पुं. (सं. न.) निदर्शनं, साधनं, उपपत्तिः (स्त्री.) मुख्यहेतुः २. साध्यं, प्रामाण्यं ३. सत्यता ४. इयत्ता, निर्दिष्टपरिमाणं ५. शालम् । वि., सत्य, सिद्ध २. मान्य, स्वीकार्य ।
 —पत्र, सं. पुं. (सं. न.) आगम-निर्णय-निदर्शनं, पत्रम् ।
 प्रमाणित, वि. (सं.) साधित, उपपादित, स्थापित, प्रमाणी-सत्या-कृत, सत्यापित ।
 प्रमाता, सं. पुं. (सं. वृ.) प्रमाणीः-शातृ-बोधुः ।
 प्रमातामह, सं. पुं. (सं.) मातामहपितृ ।
 प्रमातामही, सं. स्त्री. (सं.) प्रमातामहपत्नी ।
 प्रमाद, सं. पुं. (सं.) अनवधान-नता, उपेक्षा, सावधानताऽभावः २. भ्रांतिः-भ्रुष्टिः (स्त्री.), भ्रमः ।
 —करना, जि. अ., प्रमद (दि. प. से.), प्रमादं कृ ।
 प्रमादिका, सं. स्त्री. (सं.) क्षतयोनिवन्धा २. प्रमादिनी नारी ।
 प्रमादी, वि. (सं. -दिन्) अनवधान, प्रमत्त, अनवहित ।
 प्रमापण, सं. पुं. (सं. न.) बधः, हत्या, हननम् ।
 प्रमित, वि. (सं.) (यथार्थं) ज्ञात, अवगत २. परिमित, स्तोक ३. प्रमाणित ।
 प्रसिति, सं. स्त्री. (सं.) प्रमा, प्रमाणीः प्राप्यं सत्यज्ञानम् २. मानं, परिमाणम् ।

प्रमुञ्ज

[३६६]

प्रयत्नित

प्रमुख, वि. (सं.) प्रधान, श्रेष्ठ, मुख्य २. प्रथम, अग्रिम ३. प्रतिष्ठित, मान्य ।

प्रसूदित, वि. (सं.) प्रहृष्ट, प्रसन्न, आनंदित ।

प्रसोह, सं. पुं. (सं.) मेहः, मूत्रदोषः, बहुमूत्रता ।

प्रसोद, सं. पुं. (सं.) हर्षः, आनंदः, प्रसन्नता २. सुखम् ।

प्रयत्न, सं. पुं. (सं.) उद्यमः, अध्यवसायः, आयासः, चेष्टा, चेष्टितं २. जीवव्यापारः(न्या.) ।

—शील, वि. (सं.) प्रयत्नवत्, सयत्न, उद्यमिन्, अध्यवसायिन्, रुचेष्ट ।

प्रयाग, सं. पुं. (सं.) तीर्थविशेषः २. महायज्ञः ।

प्रयाण, सं. पुं. (सं. न.) प्रस्थानं, गमनं, बन्ध, यात्रा २. युद्धयात्रा ।

—काल, सं. पुं. (सं.) गणनकालः २. मृत्युसमयः ।

प्रयात्न, सं. पुं. (सं.) उद्योगः, प्रयत्नः, परिश्रमः ।

प्रयुक्त, वि. (सं.) व्यवहृत, व्यापृत, उपयुक्त, सेवित, उपयुक्त ।

प्रयोग, सं. पुं. (सं.) उपयोगः, उपयोगः, सेवनं, व्यवहारः २. अनुष्ठानं, साधनं ३. प्रक्रिया, विधानं ४. तांत्रिकोपचारः ५. अभिनयः ६. कुसीदाय ऋग्दानम् ।

—करना, उप-प्रयुज् (र. आ. अ.), व्याप् (प्रे.), सेव् (भवा. आ. से.), उपयुज् (र. आ. अ.) ।

प्रयोजक, सं. पुं. (सं.) अनुष्ठातृ, उपयोजक २. प्रेरकः ३. व्यवस्थापकः ।

प्रयोजन, सं. पुं. (सं. न.) अर्थः, कार्यं २. उद्देश्यं, अभिप्रायः, आशयः ।

प्रलयकर, वि. (सं.) प्रलय-विनाश-संहार-कर-कारिन् ।

प्रलय, सं. पुं. (सं.) कल्पान्तः, प्रतिसंश्रयः, ब्रह्माण्डनाशः, विलयः, संक्षयः ।

प्रलाप, सं. पुं. (सं.) निरर्थकवचनानि (बहु.), प्र., चल्प-चल्पनम् ।

प्रलोभन, सं. पुं. (सं. न.) विद्योभनं, लोभन प्रवर्तनं २. प्रलोभकपदार्थः, विकारहेतुः ।

प्रवचन, सं. स्त्री. (सं.) धूर्तता, कौतवं, छलम् ।

प्रवचन, सं. पुं. (सं. न.) व्याख्यानं, विचरणं, प्रकाशनं, स्पष्टीकरणं २. व्याख्या ३. वेदोक्तम् ।

प्रवर, वि. (सं.) श्रेष्ठ, प्रधान, मुख्य (सं. न.) गोश्रम । (सं. पुं.) संततिः (स्त्री.) २. गोत्र-प्रवर्तकमुनिव्यावर्तको मुनिगणः ।

प्रवर्तक, सं. पुं. (सं.) आरम्भकः, संस्थापकः, प्रवर्तितृ २. संस्थापकः, निर्वाहकः ३. प्रेरकः, निधीकरणः ४. उत्तेजकः ५. आविष्कारकः ।

प्रवर्तन, सं. पुं. (सं. न.) कार्यापक्रमणं, २. आर्य-संवाक्य-निबंधनं ३. प्रचारणं ४. उत्तेजनम् ।

प्रवाद, सं. पुं. (सं.) जनश्रुतिः (स्त्री.), किंवदंती, लोक-वाद-वार्ता २. अपवादः, मिथ्याकलंशः ।

प्रवाल, सं. पुं. (सं. पुं. न.) विद्रुमः २. किण्व- (सं)लथः ३. वीणादण्डः ।

प्रवास, सं. पुं. (सं.) विदेशवासः २. विदेशः । प्रवासी, वि. (सं. गिन्) प्रेषित, विदेशस्थ, विदेशवासी ।

प्रवाह, सं. न. (सं.) स्रवणं, स्रवणं, स्रुतिः (स्त्री.), स्रावः २. (जल-) धारा, वेगः, शोणः, लोचम् (न.) ३. कार्यसिर्वाहः ४. व्यवहारः ५. प्रवृत्तिः (स्त्री.) ६. क्रमः, सप्तगतिः (स्त्री.) ।

प्रविष्ट, वि. (सं.) कृतप्रवेश, अन्तर्गत ।

प्रवीण, वि. (सं.) निपुण, कुशल, दक्ष, पटु, चतुर, निष्पत्त, (वक्त्र २. वीणावादनकुशल ।

प्रवीणता, सं. स्त्री. (सं.) नैपुण्यं, दक्ष्यं, कौशल्यं, पाटवं, चातुर्यम् ।

प्रवृत्त, वि. (सं.) रत, मग्न, पर, नरायण २. उद्यत ३. नियुक्त ।

—करना, क्रि. स., प्रवृत् (प्रे.), नि-उद्-युज् (पु.) प्रवृणी कृ, प्रेर (प्रे.) ।

—होना, क्रि. अ., प्रवृत् (भवा. आ. से.), रत मग्न-तत्पर (वि.) भू ।

प्रवृत्ति, सं. स्त्री. (सं.) रुचिः (स्त्री.), छंदः, अभिलाषः, भावः २. घृतांतः ३. कार्यनिवाहः ४. विपद्यसंगः ५. उत्पत्तिः (स्त्री.) ।

प्रवेश, सं. पुं. (सं.) अन्तर्-विगाहन-गमनं २. गतिः (स्त्री.), उपगमः ३. बोधः, ज्ञानं, परिचयः ।

—पत्र, सं. पुं. (सं. न.) प्रविष्ट, पत्र-पत्रकम् ।

—शुल्क, सं. पुं. (सं.) प्रविष्टि-शुल्कः-करम् । प्रवेदिका, सं. स्त्री. (सं.) परीक्षाभेदः २. प्रवेष्टी ।

प्रव्रजित, वि. (सं.) हन्यामिन्, चतुर्थांशमिन्, परिव्राजक ।

प्रमथ्या

[३६७]

प्रमृति

प्रमथ्या, सं. स्त्री. (सं.) *समथ्यासः, वैराग्यद, चतुर्थोऽर्थः ।

प्रमथ्यक, सं. पुं. (सं.) स्तोत्र, स्वयंकारः, नाथकः, इच्छाकारः २. लाडुकारः ।

प्रमथ्यनीय, वि. (सं.) प्रमथ्य, इच्छा, स्तुत्य, तुभ्य. प्रमथ्याह ।

प्रमथ्या, सं. स्त्री. (सं.) इच्छा, स्तुतिः-स्तुतिः-तुः (स्त्री.), स्तवः, कर्तव्यं, ईडा ।

—करना, क्रि. स., प्रमथ् (भ्वा. व. से.), इच्छा (त्वा. आ. से.), तु (अ. प. से.), स्तु (अ. प. अ.); इड (अ. आ. से.) ।

—होना, क्रि. अ., प्रमथ् स्तु-स्तु इच्छा (कर्म.) ।

प्रमथ्यसित, वि. (सं.) दे. 'प्रमथ्य' ।

प्रमथ्यमन, सं. पुं. (सं. न.) श्मनं, शान्तिः (स्त्री.) २. नाशनं ३. मार्गं ४. वशीकरणम् ।

प्रमथ्यस्त, वि. (सं.) गुण. नृत्त, स्तुत, इच्छावित, प्रमथ्यिन २. दे. 'प्रमथ्यनीय' ३. उत्तम. श्रेष्ठ ।

—पाठ, सं. पुं. (सं.) दर्शनाचार्यविशेषः ।

प्रमथ्यस्ति, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'प्रमथ्या' २. पत्रारंभे प्रमथ्यावाक्यं ३. राजा कीर्तिकेवः ४. प्राचीन-ग्रन्थानां लेखकादिपरिदायकानि आर्चन-जाख्यानि ।

प्रमथ्यस्य, वि. (सं.) दे. 'प्रमथ्यनीय' २. उत्तम ।

प्रमथ्यात्, वि. (सं.) स्थिर, क्षोभहीन, निश्चल, स्थिति, निश्चय २. शांतचित्त, क्षोभ, उद्वेग-शून्य ।

प्रमथ्यात्वा, सं. स्त्री. (सं.) लघु-ननु, श्रवा, प्रशासिका ।

प्रमथ्यन्, सं. पुं. (सं.) पृच्छा, अनुयोगः, २. विकल्प विचार-जमासः, विषयः ।

—उत्तर, सं. पुं. (सं. न.) अनुयोगप्रतिश्चर-ने (क्रि.), संबन्धः ।

—करना, व. पृच्छना, क्रि. स., प्रमथं पच्छ (तु. प. अ.), प्रमथयति (ना. धा.), अनुश्रुत् (ह. आ. अ.) ।

प्रमथ्यास, सं. पुं. (सं.) उच्छ्वासः २. उच्छ्व-सनम् ।

प्रमथ्यव्य, वि. (सं.) प्रमथ्याह २. पृच्छाविषयः ।

प्रमथ्या, सं. पुं. (सं.) विषयानुक्रमः, प्रकरणं, अर्थसंगतिः (स्त्री.) २. मैथुनं ३. संबन्धः, संगतिः (स्त्री.) ४. अनुसक्तिः (स्त्री.) ५. वार्ता, विषयः ६. स्रवसरः ७. विस्तारः ।

प्रसक्त, वि. (सं.) संलग्न, मंत्रिल्ल २. आसक्त ३. प्रस्तावित ।

प्रसन्न, वि. (सं.) सं-तुष्ट, प्र-दृष्ट, सानंद, आनंदित, प्र-मुदित, प्रफुल्ल २. निर्मल ।

—करना, क्रि. स., आनंद-आह्लाद-तुष्ट-प्रसद-प्रमुद-प्रदृष्ट (प्रे.) ।

—होना, क्रि. अ., प्रसद (भ्वा. प. अ.), आह्लाद-प्रमुद (भ्वा. आ. से.), प्र-दृष्ट (दि. प. से.) ।

प्रसन्नता, सं. स्त्री. (सं.) आनंदः, आह्लादः, प्र-दृष्टः, सं-तोषः, प्र-तोषः, उल्लासः २. अनुमदः ३. स्वच्छता ।

प्रसव, सं. पुं. (सं.) जननं, प्रमृतिः (स्त्री.), गर्भनीचनं २. जन्मान् (न.), उत्पत्तिः (स्त्री.) ३. संतानः ४. फलं ५. कुसुमम् ।

प्रसविनी, वि. (स्त्री.) उत्पादयित्री, जनयित्री, प्रसवित्री ।

प्रसाद, सं. पुं. (सं.) कृपा, दया, अनुग्रहः २. प्रसन्नता ३. स्वच्छता ४. कान्ययुगविशेषः (स्त्री.) ५. देवाद्यवशिष्टपदार्थः, शेषः ६. भोजनं ७. नैवेद्यं, वायनं-नक्षत्रम् ।

प्रसादी, सं. स्त्री. (सं. प्रसादः >) देवापितृ-पदार्थः २. नैवेद्यं ३. गुरुजनदत्तवस्तु (न.) ।

प्रसाधन, सं. पुं. (सं. न.) वैशः-पः २. भूषणं, मंडनं, शृंगारः ३. दिप-सं-पादनं, करणम् ।

प्रसाधित, वि. (सं.) परिष्-संस्-कृत २. सु-सम्पादित ।

प्रसार, सं. पुं. (सं.) प्रसरः, विस्तारः, वितानः (स्त्री.) ।

प्रसिद्ध, वि. (सं.) प्र-वि-ख्यात, वशस्विद, कान्तिमय, लोकविश्रुत, वशीकर, सुशोभ, लक्ष्यकान्त ।

प्रसिद्धि, सं. स्त्री. (सं.) ख्यातिः-शीघ्रिः-विक्षुतिः (स्त्री.), यशस् (न.), इच्छा, विज्ञानः ।

प्रसू, सं. स्त्री. (सं.) जननी, नाट (स्त्री.) । वि., प्रसवित्री, जनयित्री ।

प्रसूता, सं. स्त्री. (सं.) जन्तवस्था, प्रजाता, प्रसूतिका ।

—का बुलार, सं. पुं., सूतिकाञ्जरः ।

प्रसूति, सं. स्त्री. (सं.) प्रसवः, जननं २. उद्-भवः ३. उत्पत्तिस्थानं ४. संततिः (स्त्री.) ५. प्रसूता ।

प्रसून

१ ३६८]

प्राण

प्रसून, सं. पुं. (सं. न.) कुसुमं, पुष्पं २. कलम् ।
वि., जात, उत्पन्न ।
—वर्ष, सं. पुं. (सं.) पुष्यवृष्टिः (स्त्री.) ।
—त्राण, सं. पुं. (सं.) पुष्प-शर-बाणः,
कामः, मदनः ।
प्रसूत, वि. (सं.) प्रगत, प्रचलित २. विस्तृत,
विस्तीर्ण ३. लंब, दीर्घ, आयत ४. व्यस्त,
संलग्न ५. सुशील, विनम्र ६. मत्त, घात ७.
स्फूर्तिमत् ।
प्रसूता, सं. स्त्री. (सं.) जंवा, टिकिका ।
प्रसेक, सं. पुं. (सं.) आ-अक, सेक-सेचनम्,
अभिवर्षणं, अभ्युक्षणं, प्रोक्षणम् क्षरणं, गलनं,
स्ववणम् ३. वमनं, वयः, वयिः (स्त्री.) ४.
दांबिका, कटोरिका-अप्रमाणः ।
प्रस्तर, सं. पुं. (सं.) शिला, पाषाणः,
दे. 'पत्थर' ।
प्रस्ताव, सं. पुं. (सं.) अवसरः, उचितकालः
२. प्रसंगः, विषयः ३. प्रकरणं ४. उपक्षेपः,
उपन्यासः ५. प्र-नि-बंधः, लेखः ६. दे.
'प्रस्तावना' ।
प्रस्तावना, सं. स्त्री. (सं.) भूमिका, उपोद्घातः,
प्राक्कथनं, आमुखं, अवतरणिका २. आरम्भः,
उपक्रमः ।
प्रस्तुत, वि. (सं.) तु(नू)त, इलाघित ।
२. उक्त, कथित ३. प्रासंगिक, प्रसंगप्राप्त
४. उपस्थित, प्रतिपन्न ५. उद्यत, सज्ज
६. निष्पन्न, संपादित ।
प्रस्थान, सं. पुं. (सं. न.) प्रयाणं, अपक्रमः,
गमनं, यात्रा २. विजिगीषुसेनायाः प्रयाणम् ।
प्रस्वेद, सं. पुं. (सं.) दे. 'पसीना' ।
प्रहर, सं. पुं. (सं.) यामः, दे. 'पहर' ।
प्रहरी, वि. (सं. रिन्) दे. 'पहरा' सं. पुं. २ ।
प्रहसन, सं. पुं. (सं. न.) रूपक-नाटक-भेदः,
२. परिहसनः, विनोदः ३. अव-उप-हासः ।
प्रहार, सं. पुं. (सं.) आघातः, ताटः,
निघातः, हथः ।
—करना, क्रि. सं. आहन् (अ. प. अ.),
प्रह् (भ्वा. प. अ.), तट् (चु.), प्रहारं कृ ।
प्रहृष्ट, वि. (सं.) प्रमुदिता, सुप्रसन्न, अत्यानन्दित ।
प्रहेलिका, सं. स्त्री. (सं.) प्रहनद्वी, दे. 'पहेली' ।
प्राण, सं. पुं. (सं. न.) अजिरं, अंगनं, चत्वरम् ।
प्राङ्गल, वि. (सं.) सरल, ऋजु, २. सत्य,
यथार्थ ३. सम, समतल ।

प्रांत, सं. पुं. (सं.) देशभागः, राष्ट्रविभागः
२. मूलंडः, प्रदेशः ३. सीमा, समनः ४. अग्रं,
कोटिः (स्त्री.) ५. दिश् (स्त्री.) ।
प्रांतीय, वि. (सं.) प्रांतिक, प्रांत-संबन्धि-
विषयक ।
प्राइवेट, वि. (अं.) स्वकीय, आत्मीय
२. विशिष्ट, असार्वजनिक ३. गुप्त, संवरणीय ।
—सेक्रेटरी, सं. पुं. (अं.) *रवकीयसचिवः ।
प्राकार, सं. पुं. (सं.) वप्रः-प्रं, शा(स)ला,
वरणः ।
प्राकृत, वि. (सं.) प्रकृतिप्र, प्राकृतिक
२. स्वाभाविक, नैसर्गिक ३. साधारण ४. लौ-
किक ५. तुच्छ, नीच ६. भौतिक । सं. स्त्री.
(सं. न.) व्यवहारभाषा २. प्राचीन-
भाषाविशेषः ।
प्राकृतिक, वि. (सं.) दे. 'प्राकृत' ।
प्राची, सं. स्त्री. (सं.) पूर्वदिशा, पूर्वदिश्
(स्त्री.) २. पूजकपूज्ययोः पुरोवर्तिदिशा ।
प्राचीन, वि. (सं.) पुराण, प्राकृतन, पुरातन,
पूर्व, प्राककालीन २. पूर्वदेशीय, प्राच्य,
पौरस्त्य, पूर्वदिक्स्थ, प्राच् ।
प्राचीनता, सं. स्त्री. (सं.) पुराणता, पुरात-
नता ३. ।
प्राचीर, सं. पुं. (सं. न.) प्रांतयो वृत्तिः
(स्त्री.) प्रावरः, प्रावृत्तिः (स्त्री.), दे. 'प्रकार' ।
प्राचुर्य, सं. पुं. (सं. न.) 'प्रचुरता' ।
प्राच्य, वि. (सं.) दे. 'प्राचीन' (२-२) ।
प्राङ्ग, वि. तथा सं. पुं. (सं.) पंडित(ः),
विश(ः), धीमत्, बुद्धिमत्, विद्वत् ।
प्राङ्गी, सं. स्त्री. तथा वि. (सं.) पंडिता, बुद्धि-
मती, विदुषी (नारी) ।
प्राण, सं. पुं. (सं. प्राणः बहु.) अमृतः (बहु.)
हृन्मारुतः २. धासः, उच्छ्वासः, शक्तिः
३. पवनः, अमिलः ४. बलं, शक्तिः (स्त्री.)
५. जीवनं, चैतन्यं ६. आत्मन् ७. प्रियो
मनुष्यः पदार्थो वा ।
—त्याग, सं. पुं. (सं.) मृत्युः, निधनं २. आत्म-
हत्या-घातः ।
—वंड, सं. पुं. (सं.) देह-मृत्यु-वंडः, उत्तम-
सहसम् ।
—धारण, सं. पुं. (सं. न.) जीवनं, प्राणनं,
देहधारणम् ।

प्राणांत

[३३६]

प्रारंभिक

- नाथ, सं. पुं. (सं.) प्राणपतिः, प्राणेश्वरः, पतिः, भर्तृ २. दयितः, बल्लभः ।
- प्रतिष्ठा, सं. स्त्री. (सं.) देवप्रतिमायां प्राण-स्थापनविधिः ।
- प्रिय, वि. (सं.) प्रियतम, अत्यंतप्रिय । सं. पुं., भर्तृ, पतिः ।
- हर, वि. (सं.) प्राणहारिन्, मारक, घातक ।
- उड़ जाना, मु., अत्यंत वस् (दि. प. से.) भी (जु. प. अ.), भयविह्वल(वि.)भू ।
- गले तक आना, मु., आसन्नमृत्यु (वि.) भू, कंठगतप्राण (वि.) जन् (दि. आ. से.) ।
- त्यागना, देना या निकालना, मु., प्राणान् त्यज् (भ्वा. प. अ.) दे. 'मरना' ।
- लेना, मु., हन् (अ. प. अ.), मृ-व्यापद (प्रे.) सि (रु. प. से. लु.) ।
- प्राणांत, सं. पुं. (सं.) निधन, मरणम् ।
- प्राणांतक, वि. (सं.) प्राण-हर-हारिन्, धानक, मारक ।
- प्राणांत्यय, सं. पुं. (सं.) मृत्युः, निधनम् २. प्राणान्त-देहान्त-समयः-कालः ३. प्राण-अन्त-संशयः-संकटम् ।
- प्राणाधार, सं. पुं. (सं.) पतिः, भर्तृ । वि. जीवनाश्रय, अतिप्रिय ।
- प्राणाध्याम, सं. पुं. (सं.) योगांगभेदः-पुंशः-प्रथमसन्निधिरोधः ।
- प्राणाहुति, सं. स्त्री. (सं.) जीवन्तस्पर्शः, आत्मबलिः, भोजनारम्भे पंचप्राणेष्वो मक्षणम् ।
- प्राणी, वि. (सं. गिन) सप्राण, प्राणधरिन्, संजीव, जीवन् (शब्दतः) । सं. पुं. जीवः, जन्तुः २. ननुष्यः ३. व्यक्ति (स्त्री.) ।
- प्राणेश-धर, सं. पुं. (सं.) दे. 'प्राण' के नीचे 'प्रत्ययाध' ।
- प्राणोपहार, सं. पुं. (सं.) आहारः, भोजनं, लापनं, नक्षयम् ।
- प्रातः, अन्व. } (सं.) दे. 'प्रभात' ।
- प्रातःकाल, सं. पुं. } (सं.) दे. 'प्रभात' ।
- प्रातःस्मरणीय, वि. (सं.) पुण्य, श्लोक-शाल-चरित, महत्समं, पुण्यात्मन् ।
- प्रातः, कि. वि. (सं. प्रातर् अन्व.) प्रातःकाले, प्रभातसमये ।
- नाथ, सं. पुं. (सं.) सूर्यः, भानुः ।
- भोजन, सं. पुं., दे. 'कलेषा' ।

- प्राथमिक, वि. (सं.) आद्य, आदिम्, प्रारंभिक २. पूर्व, प्रावेशिक, प्रास्ताविक ३. मौल, मौलिक ।
- प्रातुभूत, सं. पुं. (सं.) आविर्भूतः, प्राकट्यं, प्राकाश्यं, व्यक्तता २. उत्पत्तिः (स्त्री.), जन्मन् (न.) ।
- प्रातुभूत, वि. (सं.) आविर्भूत, प्रकटित, प्रकटीभूत, व्यक्त २. जात, उत्पन्न ।
- प्राधान्य, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'प्रधानता' ।
- प्राप्त, वि. (सं.) लब्ध, अधिगत, आसादित, प्रतिपन्न, चित्त, विज्ञ ।
- करना, कि. स., प्र-आप् (स्वा. प. अ.), अधिगन्, लम् (भ्वा. आ. अ.) आसद् (प्रे.), निद् (टु. उ. वे.) ।
- होना, कि. अ. थाप्-लम्-अभिगम् (कर्म.) ।
- प्राप्ति, सं. स्त्री. (सं.) लाभः, प्रतिपत्तिः-उप-लब्धिः (स्त्री.) अधिगमः, प्रापणं २. गतिः (स्त्री.) ३. अर्जनं ४. आयः, अर्थागमः ।
- प्राप्य, वि. (सं.) लब्ध, अधिगतश्च, प्राप्तव्य २. समाप्तादनीय, गम्य ।
- प्रामाणिक, वि. (सं.) सप्रमाण, प्रमाणसिद्ध, २. विश्वसनीय, विश्वस्य ३. सत्य, तथ्य ४. शास्त्रसिद्ध ५. हेतुक, युक्तियुक्त ।
- प्रामाण्य, सं. पुं. (सं. न.) प्रमाणता-त्वं २. प्रतिष्ठा ।
- प्रायः, कि. वि. (सं.) प्रायशः बहुशः-धा, प्रायेण, तुहुसुहुः, भूयोभूयः, अनेकशः, अभीक्षणं २. कल्प-भूषिष्ठ-प्राय, (उ. दे. 'प्राय' की टि.), उप- (उ. उपविशः छ. वा.) ।
- प्राय, सं. पुं. (सं.) प्रस्थानं, प्रयागं २. मरणं ३. मरणार्थमदशनं, दे. 'थरना' ।
- द्वीप, सं. पुं., द्वीपकल्पः-पन् । (दि. जय 'प्राय' सनासांत में है। तब १. तुल्य, बहुश (उ. अमृतप्राय वचन = अमृत, तुल्य-सदृश वचन) २. अविष्ट, कल्प (उ. मृतप्रायो मनुष्यः, मृत-कल्पः-भूषिष्ठः मानवः) ।
- प्रायश्चित्त, सं. पुं. (सं. न.) पाप-निष्कर्तः-विशुद्धिः (दोनो स्त्री.), अय-नाशनं-शालनं-माजनं, पापनाश-कृतवन् ।
- प्रारंभ, सं. पुं. (सं.) उपक्रमः २. आदिः ।
- प्रारंभिक, वि. (सं.) औपक्रमिक, आरंभिक २. आद्य, आदिम् ३. प्राथमिक, प्रावेशिक ।

प्रारब्ध

[४००]

प्रेय

प्रारब्ध, सं. स्त्री. (सं. न.) भाग्यं, देवं, अदृष्टं, प्राक्तनं, निवृत्तिः (स्त्री.) । वि., कृता-रंभ, उपजात ।

प्रार्थना, सं. स्त्री. (सं.) याचना, याचना, अभि-दास्तिः (स्त्री.), आ-नि, वेदनं, अभि., अधना ।

—**करना**, कि. स. अभि-प्र., अर्थ (चु. आ. से.), याच् (भ्वा. उ. से.), सुविनयं आ-नि-विद् (प्रे.) ।

—**पत्र**, सं. पुं. (सं.) आवेदनपत्रम् ।

प्रार्थनीय, वि. (सं.) याचनीय, अभ्यर्थनीय ।

प्रार्थित, वि. (सं.) याचितं, अभि. धितं, निवेदित ।

प्रार्थी, सं. पुं. (सं. धित्) प्रार्थयिषु, बन्धक-निवेदकः ।

प्रारब्ध, सं. स्त्री., दे. 'प्रारब्ध' सं. स्त्री. ।

प्रासंगिक, वि. (सं.) प्रसंग-आगत-प्राह-उचित, अनुरूप, प्रस्तुत, प्रास्तविक [स्त्री (स्त्री.) = प्रास्तविकी] ।

प्रासाद, सं. पुं. (सं.) राज-गृह, गृह-भवन-भवनं, हर्ष्यं, सौभाग्यम् ।

प्रियम्, सं. पुं. (अं.) विपाश्वाक्यः ।

प्रिय, वि. (सं.) दे. 'प्यार' २. मनोहर, अभिराम । सं. पुं., पतिः २. कांतः, दयितः ३. जामातृ ४. हितम् ।

—**तम**, वि. (सं.) प्रेष्ट, प्रणम्य । सं. पुं., पतिः, भर्तृ । २. बल्लभः, कांतः ।

—**तमा**, वि. (सं.) प्रेष्ठा, प्राणप्रिया । सं. स्त्री., पत्नी २. कांत ।

—**दर्शन**, वि. (सं.) सु-शुभ-दर्शनं, जलुष्य, सुरूप, शोभन, सुंदर ।

—**भाषी**, वि. (सं. धित्) मधुरभाषित, प्रिय-वादि-वचन ।

—**वर**, वि. (सं.) प्रेष्ट, प्रियतमः ।

प्रिया, सं. स्त्री. (सं.) भारी, रमणी २. पत्नी, भार्या ३. प्रियसा, प्रेमवती, कांत ।

प्रीतम, सं. पुं., दे. 'प्रियतम' ।

प्रीत, सं. स्त्री. [सं. प्रीतिः (स्त्री.)] दे.

प्रीति, सं. स्त्री. [सं. प्रीतिः (स्त्री.)] दे. 'प्यार' २. वृत्तिः (स्त्री.) ३. आनंदः, हर्षः ।

—**पूर्वक**, कि. वि. (सं. कं) प्रेम्णा, स्नेहेन ।

—**भोज**, सं. पुं. (सं. भोगः) प्रीतिभोजनं, भोजनोत्सवः ।

प्रेक्षक, सं. पुं. (सं.) दर्शकः, शृष्टृ २. (नाट-कादि में) शर्पकः, सामाजिकः ।

प्रेक्षण, सं. पुं. (सं. न.) नेत्रं २. आनन्दनं, दर्शनम् ।

प्रेत, सं. पुं. (सं.) नरकस्थप्राणि २. भूत-भेदः, वेतालः ३. मृतमानवः, शवः ।

—**कर्म**, सं. पुं. [सं. कर्मन् (न.)] प्रेत-कार्य-क्रिया-कृत्यं, आमृत्योः रुपिडीकरणपर्यंतः क्रियाकलापः ।

—**गृह**, सं. पुं. (सं. न.) प्रेतभूमिः (स्त्री.) इमशानम् ।

—**दाह**, सं. पुं. (सं.) अत्येष्टि-मृतक-संस्कारः ।

—**पक्ष**, सं. पुं. (सं.) पितृपक्षः, गौण-प्राथमिक-कृष्णपक्षः ।

—**पति**, सं. पुं. (सं.) यमराजः ।

प्रेतनी, सं. स्त्री. (सं. प्रेतः) पिशाची-चिता, प्रेतपत्नी ।

प्रेम, सं. पुं. [सं. प्रेमन् (पुं. न.)] स्नेहः, अनु-रागः, प्रणयः, दे. 'प्यार' २. कामः, शृङ्गारः, रतिः (स्त्री.) ३. ईश्वरभक्तिः (स्त्री.) ।

—**कहानी**, सं. स्त्री. प्रेमकथा, शृंगारकथादिका ।

—**पात्र**, सं. पुं. (सं. न.) स्नेहभाजनं (मानव वा पदार्थ) ।

—**पादा**, सं. पुं. (सं.) स्नेह-अनुराग-प्रेम-बन्धन-रञ्जुः (स्त्री.) शृंखला-जालम् ।

—**पुष्पलता**, सं. स्त्री. (सं.) पत्नी, भार्या, कलत्रम् ।

—**चारि**, सं. पुं. (सं. न.) प्रेमाश्रु (न.) स्नेहात्मम् ।

प्रेमालाप, सं. पुं. (सं.) स्नेहसंभाषणं ३. शृंगार-संवादः ।

प्रेमाश्रु, सं. पुं. (सं. न.) प्रेम-जल-भक्ति-अनुरागवाचकम् ।

प्रेमिक, सं. पुं. दे. 'प्रेमा' ।

प्रेमिका, सं. स्त्री., दे. 'प्रेमनी' ।

प्रेमी, सं. पुं. (सं. धित्) प्रणयिन, अनुरा-गिन, स्नेहिन, अनुराग-प्रणय-वद २. कामिन, कामुकः, रमणः, बल्लभः । वि., प्रिय-असक्त-निरत, सेवी (उ., संगीत का प्रेमी = संगीत-प्रिय-आसक्त इ.) ।

प्रेय, वि. (सं. प्रेयस्) प्रियतर, अतिप्रिय

प्रयत्नी

[४०१]

फंकी

२. लौकिक-मानव-रिक्त, सुख-नि-भोगाः ३. अल-
कारभेदः (सं०) ।
प्रेयसी, सं. स्त्री. (सं.) प्रेमवती, प्रेमिणी,
 प्रिया, प्रलम्बा, कांता, दयिता ।
प्रेस्क, सं. पुं. (सं.) प्रचोदयितृ, प्रवर्धयितृ,
 प्रोत्साहकः, उत्तेजकः ।
प्रेषणा, सं. स्त्री. (सं.) प्र-नोदनं, प्रो-सादनं-
 ना, उत्तेजनं-ना, प्रवर्धनं २. दे. 'षका' ।
 —**करता**, क्रि. सं., उचित्-प्रवृत्त-प्रेर-प्रसुद-
 प्रोत्साह (प्रे.) ।
प्रेरित, वि. (सं.) प्रचोदित, प्रोत्साहित, उते-
 जित, प्रकलित ।
प्रेस, सं. पुं. (अं.) संपीडनार्थं २. मृदणार्थं
 ३. मद्रप्रायःशब्दः ।
प्रेसिडेंट, सं. पुं. (अं.) यथा, पतिः-अध्यक्षः,
 प्रधानः ।
प्रोग्राम, सं. पुं. (अं.) कार्यक्रमः २. कार्य-
 कल्पवृक्षः ।
प्रोडोन, सं. पुं. (अं.) प्रोभूतिनं, भोजनतरक-
 भेदः ।
प्रोत, वि. सं. । अचित. निहित २. स्मृत,
 प्रथित, संभित ।
प्रोन्माहन, सं. पुं. (सं. न.) शैथं-उत्साह, वर्द्धनं,
 उत्तेजनं, आशामनम् ।
प्रोन्साहित, वि. (सं.) उत्तेजित, आशामित,
 वृद्धि-प्रोत्साह, प्रेरित ।
प्रोथ, वि. (सं.) विश्रुत, प्रत्ययाव २. प्रवक्षित,
 प्रवैत ३. स्थापित, स्थिराकृत (सं. पुं. न.)
 १-२. प्रथ, न-सा-नासा-प्रथम् ३. सूकर-
 लोकाप्रथम् ।
प्रोदक, वि. (सं.) उत्त, उन्न, आर्द्र २. चिर्जल,
 निर्मलजल, शुभ्र ।
प्रोनोट, सं. पुं. (अं.) कवन्तिस्तारप्रविज्ञानेभ्यः,
 कणपत्रम् ।
प्रोपगेंडा, सं. पुं. (सं.) प्रचारः, प्रचारकार्यम् ।
प्रोप्रिडैटर, सं. पुं. (अं.) स्वाभिन्, प्रभुः, इतः ।
प्रोफेसर, सं. पुं. (अं.) (महा-विद्यालयस्य विष-
 विद्यालयस्य वा) उपाध्यायः ।

प्रोपित, वि. (सं.) विदेशस्थ, प्रवासित् ।
 —**पत्तिका**, सं. स्त्री. (सं.) प्रोषितभर्तृका,
 नायिकाभेदः ।
प्रौढ, वि. (सं.) प्रवृद्ध, पथित, प्रोपचित २.
 न-परि-पूर्ण, मंपन्न, सिद्ध ३. परिपत, परिपक्व
 ४. पुष्ट, दृढ ५. निपुण, चतुर ।
प्रौढ़ता, सं. स्त्री. (सं.) प्रौढ़त्वं, प्रवृद्धिः (स्त्री.)
 २. परिपूर्णाता ३. परिपक्वता ४. पुष्टिः (स्त्री.)
 ५. निपुणता ।
प्रौढ़ा, सं. स्त्री. (सं.) चिरिटी, श्यामा, सुवयः,
 दृष्टरजः (स्त्री. एक.) (३० से ५५ वर्षं तक
 की नारी) २. नायिकाभेदः । वि., पुष्टा, परि-
 पक्वा, दृढा ।
प्लग, सं. पुं. (अं.) निगम् ।
प्लवग, सं. पुं. (सं.) कविः, वानरः २. हरिणः
 ३. मन्दूकः ।
प्लवन, सं. पुं. (सं. न.) कूर्दनं २. तरणम् ।
प्लाटिनम, सं. पुं. (अं.) महातु ।
प्लावन, सं. पुं. (सं. न.) महाप्रवाहः, अल्प-
 प्रलयः-वृद्धर्ष-विप्लवः ।
प्लावित, वि. (सं.) जलमग्नः ।
प्लास्टर, सं. पुं. (अं.) दे. 'पलस्तर' ।
 —**आव पेसिम**, सं. पुं., दरुधा-चूर्णम्, पेसि-
 प्रलेपः ।
प्लोहा, सं. स्त्री. (सं.) प्ली(प्लि)हम् (पुं.),
 शुक्लः, प्लिहा ।
प्लुन, सं. पुं. (सं.) त्रिमासवर्गः । वि., अंपगति-
 युन २. प्लावित ३. मिल ४. त्रिमास ।
प्लुरिमी, सं. स्त्री. (अं.) कुम्फुसवेष्टनवाकः,
 कुम्फुसवेष्टनप्रदाहः ।
प्लेग, सं. पुं. (अं.) महा-मारी, मारिका
 २. मूषिकरीतः अग्निरोहिणी ।
प्लेट, सं. स्त्री. (अं.) दे. 'तारतरी' २. (धात्वा-
 दिवस्य) पट्टः-टं, फलकः-कम् ।
 —**कार्म**, सं. पुं. (अं.) वेदी, वैदिकः, मन्त्रः,
 पौरिका ।

फ

फ, देवनागरी-वर्णमालायाः ढाविंशदितमो व्यंज-
 नवर्णः, फकारः ।

फंका, सं. पुं. (हि. फंका) मुष्टिः (पुं. स्त्री.),

२६

अंतलिः (पुं.), मुष्टि-अंतलिः, मार्गं अन्नादिकं
 २. खंडः-खं, शकलः-लम् ।

फंकी, सं. स्त्री. (हि. फंका) चूर्णं, चूर्णीपत्रम् ।

फं

[४०२]

फटकारने योग्य

फं, सं. पुं. (सं. वंशः) वंशतः ३. दे. 'फंश' ३. छलं, कपटं ४. रहस्यं, गुह्यवाचां ५. दुःखम् ।

फंदा, सं. पुं. (सं. वंशः) पाशः, बन्धनं, बाधुरा, पातिली, मृगबंधनी २. जालं ३. दुःखं, अहम् ।

—**लंगाना**, सु., छल् (लु.), विप्रलम् (भव. आ. अ.) बन्ध-प्रदं (प्रे.) २. जालं निक्षिप् (तु. प. अ.)-निधा (जु. उ. अ.) ।

फंदे में पड़ना, सु., पाशे बंध-ग्रह् (कर्म.), वशी भू, २. विप्रलम्-प्रतार (कर्म.) ।

फंसना, कि. अ. (हि. फांसना) संशय-संश्लिप्त-संबंध (कर्म.), आकुली-संकीर्ण-भू, संशक्त-संलग्न-संश्लिष्ट (वि.) भू २. जाले पाशे वा धृ-बंध (कर्म.), जालबद्ध (वि.) भू ।

फंसावना, कि. प्रे., व. 'फंसाना' कं प्रे. रूप ।

फंसावना, कि. स. (हि. फंसना) संश्लिप्त (प्रे.), संशय (क्. प. से.), आकुली-संलग्न-संकीर्ण-कु २. पाशेन बंध (क्. प. अ.) जाले धृ (तु.), पाशे पत (प्रे.) ।

फंसाव, सं. पुं. (हि. फंसना) संश्लिष्टता,

फंसावट, सं. स्त्री. (हि. फंसना) संश्लिष्टता, व्यतिकरः, संकरः ।

फक, वि. (अ. फक) इवे. शुक्य, स्वच्छ २. विवर्ण, मंदप्रभ ।

रंग—होना या पड़ जाना, सु., पांडुव्याय-विवर्ण (वि.) भू, मंद-म्लान-मलिन-प्रभ (वि.)

जन् (दि. आ. से.) २. आकुली भू, मुह् (दि. प. से.) ।

फकत, वि. (अ.) अलं, पथात् २. फकति ३. कि. वि., केवलम् ।

फकीर, सं. पुं. (अ.) भिक्षुः, निक्षेपः २. स'भुः, सन्त्यागिन् ३. निधनः ।

फकीरनी, सं. स्त्री. (अ. फकीर) भिक्षुकी, भिक्षोपजीविनी, भिक्षाचरी २. परित्र-विधा, सन्त्यासिनी, वैदग्धिनी ।

फकीरी, सं. स्त्री. (अ. फकीर) भिक्षुवती, वाचकता २. सन्त्यासः ३. वैदग्धिः ।

फकड़, वि. (अ. फकीर) निधिन २. निधन, ३. निश्चिन्तदृष्टि । सं. पुं., भाषा, अदलील-वचनम्, अदलील-ग्राम्य-अवाच्य-वचनं २. मिथ्यावचनम् ।

—**बाज**, सं. पुं., अवाच्यवाचकः अदलील-भाषिन् २. मिथ्याभाषिन् ।

—**बाज**, सं. स्त्री., अदलील-भाषिणी, अदलील-वाचकता ।

फकिद्या, सं. स्त्री. (सं.) कतलिया-वर्धितुमन्था-यितः पूर्वसहः २. छलं, कपटम्, दंभः ।

फखर, सं. पुं. (जा. फख्) गर्वः, अभिमानः ।

फगुआ, सं. पुं. (हि. फाटुन) होलिकोत्सवः २. होलिकयोगानि (न. बहु.) ।

फज्जीलत, सं. स्त्री. (अ.), गौरवं, महता ।

—**की पगड़ी**, सु., विद्वत्ताप्रमाणक, वैदुष्य-ष्णीपम् ।

फज्जीहत, सं. स्त्री. (अ.) दुर्गतिः (स्त्री.) दुर्दशा, २. कलहः ।

फज्जूल, वि. (अ.) निरर्थक, व्यर्थ ।

—**खर्च**, वि. (अ. + का) मुक्तहस्त, अप-व्यर्थ-व्यायिन् ।

—**खर्ची**, सं. स्त्री., अति-अप-अभित-व्ययः, मुक्तहस्तता ।

फज्जूल, सं. पुं. (अ.) कृपा, अनुग्रहः ।

फट, सं. स्त्री. (अनु.) कटिति शब्द-ध्वनि ।

—**फट**, सं. स्त्री., फट-फट-शब्दः २. प्रतल्पः ।

—**से**, कि. वि., इटिति, सपदि ।

फटक, सं. पुं. दे. 'स्फटिक' ।

फटके, कि. वि. (अनु.) कर्त्तव्य, इटिति ।

फटकन, सं. स्त्री. (हि. फटकन) दुर्धनं, तुषः, असारद्रव्यम् ।

फटकना, कि. स., (अनु. फट) प्रस्फुट (प्रे.), प्रस्फोटनेन-शोषणं विशुभ् (प्रे.) २. दे. 'पीजना' ३. दे. 'फटकाना' । ४. रेणुं अपसृज् (अ. प. से.), निर्धूली कु ५. शिप् (हि. प. अ.), अनु (दि. प. से.) । कि. अ., वा (अ. प. अ.),

गन् २. दूरी-ग्रहण-भू ३. 'नङ्कडाना' ४. अम् (वि. प. से.) ।

फटकरी, सं. स्त्री., दे. 'किटकरी' ।

फटकार, सं. स्त्री. (अनु. फट + सं. कार)

निर्गत्योता, वाग्दंडः, उदात्तः, निर्ग, आक्रोशः, गर्हा ।

फटकारना, कि. स. (पूर्व.) शिष्यायां आहत्य आहत्य वस्त्राणि प्रक्षल् (लु.) २. दूरी-ग्रहणः, कु ३. निर्भर्त्स-नर्त् (लु. आ. से.) वाचा दंड (लु.), निद (स्वा. प. से.) ४. सफट-शब्दं प्रक्षल् (प्रे.) ।

फटकारने योग्य, वि., निर्भर्त्सनीय, तर्जनीय ।

फटकारने वाला, सं. पुं., निर्भर्त्सकः, तर्जकः ।
फटकी, सं. स्त्री. (हि. फटक >) शाकुनिक-
पंजर-रत्नम् ।

फटना, कि. अ. (हिं. फटना) विट्-विभिट्-
विट् (कर्म.) २. स्फुट (तु. प. से.), दल
(भ्वा. प. से.) ३. खंडशी भिद् (कर्म.)
शकली भू ४. अप-वि कृ (तु. प. से.) इतस्ततः
विट् (भ्वा. प. अ.) ५. अत्यंत व्यथ् (भ्वा.
आ. से.) ६. अम्ली भू ।

फट पड़ना, मु. सहसा आपत् (भ्वा. प. से.)-
उपस्था (भ्वा. आ. अ.) ।

छाती—, (शोभातिशयेन) हृदयं विदू-द्विधा
भिद् (कर्म.) ।

फटफटाना, कि. स. (अनु. फटफट) प्र-
जल्प (भ्वा. प. से.) अपार्थक्यं वद् (भ्वा. प. से.)
२. दे. 'फडफडाना' ३. प्रयत्न-परिश्रम
(दि. प. से.) ४. फटफटायते (ना. धा.),
फटफटाशब्द कृ ५. आजीविकायै भृशं चेष्ट
(भ्वा. आ. से.) ।

फटा, वि. (हिं. फटना) विदीर्ण, विशीर्ण
२. स्फुटित, विद्वलित ३. शकलीभूत । सं. पुं.,
छिद्रं, क्षेत्रः, भेदः ।

—बूध, सं. पुं., अम्लीभूतं क्षौरम् ।

—पुराना, सं. पुं., चीरं, चीवरं, कर्पटः ।

फटे में पाँव देना, मु. अव्यापारेषु व्यापारं कृ,
परकार्येषु व्यापृ (तु. आ. अ.) ।

फटिक, सं. पुं. दे. 'स्फटिक' ।

फट्टा, सं. पुं. (हिं. फटना >) विदीर्णविगुदंडः ।

फड़, सं. स्त्री. (सं. पणः) ग्लहः २. घृत-
शाला-सभा ३. क्रयविक्रयस्थानं ४. पंक्तिः
(स्त्री.), समूहः ।

—बाज़, सं. पुं. (हिं. + फा.) सभिकः, सूत-
धारकः २. वाद्यालः, वाद्यदूलः ।

फड़क, सं. स्त्री. (अनु.) प्र-नादः, स्फुरणं,
कांठः २. पङ्क-चालनं-आस्फालनम् ।

—उठना, मु., प्रसद (दि. प. अ.) ।

—जाना, मु., अनुसृज् (कर्म.), लिह् (दि. प. से.) ।

फड़कना, कि. अ. (पूर्व.) स्फुर (तु. प. से.),
क्षेप-क्षेप-स्पन्द (भ्वा. आ. से.) २. क्षुम्
(दि. प. से.), आकुली भू २. पक्षाः विचल
(भ्वा. प. से.), विधू (कर्म.) ।

फड़काना, कि. स., व. 'फड़कना' के प्रे. रूप ।

फड़फड़ाना, कि. स. (अनु. फड़फड़ >) फट-
फटयने (ना. धा.), फटफटाशब्दं जन् (प्रे.)

२. पक्षी विधू (स्वा. उ. से.; कृ. उ. से.,
भ्वा. उ. से., तु.). आस्फल्-विचल (प्रे.),
दे. 'फड़फड़ाना' । कि. अ., क्षुम् (दि. प. से.),
आकुली भू २. उत्सुकः वृत् (भ्वा. आ. से.) ।

फड़फड़ाहट, सं. स्त्री. (हिं. फड़फड़ाना)
पक्ष-आस्फालनं-विधुवनं-विचालनं २. स्फुरणं,
रपंदनं, विक्रमः ३. आकुलता, चित्त-वेगः-अमः,
सं-क्षोभः ४. प्रयासः, अति-प्र-यत्नः, चेष्टितम् ।

फड़वाना, } कि. प्रे., व. 'फड़ना' के प्रे. रूप ।

फड़ाना, } कि. प्रे., व. 'फड़ना' के प्रे. रूप ।

फड़िया, सं. पुं. (हिं. फड़) घृतकारकः,
सभिकः २. दे. 'परचूनिया' ।

फण, सं. पुं. (सं.) फणा, फणं, कटः, टा-टी,
स्फटः-टा, भोगः, स्फुटः-टा, दबी-दविः (स्त्री.) ।

—कर, सं. पुं. (सं.) सर्पः, बहिः ।

—घर, सं. पुं. (सं.) नानाः, सर्पः २. शिवः ।

—मणि, सं. स्त्री. (सं. पुं.) सर्पमणिः-रत्नम् ।

फणा, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'फण' ।

फणी, सं. पुं. (सं. गिद्) फणधरः, फणकरः,
दे. 'सर्प' ।

फणीन्द्र, } सं. पुं. (सं.) अनंतः, शेषः,

फणीश, } भुजनेशः, सर्पराजः ।

फतवा, सं. पुं. (अ.) व्यवस्था, निर्णयः
(इस्लाम) ।

फतह, सं. स्त्री. (अ.) विजयः २. साफल्यम् ।

—मंद, —याब, (अ. + फा.) विजयिन्,
विजेतृ ।

फतिगा, सं. पुं. (सं. पतंगः) शलभः, पतंगमः ।

फतूर, सं. पुं. (अ.) दोषः, विकारः, २. हानिः
(स्त्री.) ३. विघ्नः ४. उपद्रवः ।

फन, सं. पुं., दे. 'फण' ।

फन, सं. पुं. (का.) दुग्ः, वैशिष्ट्यं २. विद्या,
ज्ञानं ३. कलाकौशलं, शिल्पं ४. व्याजः,
उद्यम (न.) ।

फना, सं. स्त्री. (अ.) प्रलयः, वि-नाशः,
प्र-ध्वंसः ।

फनी, सं. पुं., दे. 'फनी' ।

फफोला, सं. पुं. (सं. प्रस्कोटः) लक्-स्कोटः,
शोफः । दे. 'छाला' ।

दिल के फफोले फोफना, मु., वैर-साधन-

फव

[४०४]

फरेली

शोभन-निधानं कृ (ना. धा.), प्रतिष्ठित
(र. प. से.), शोभं प्रकटयति (ना. धा.),
फव, सं. स्त्री, दे. 'फवन' ।

फवती, सं. स्त्री. (हि. फवन) श्वेता-लिका,
नर्मण (स.), नर्मोक्तिः (स्त्री.), अश्विनवनं
२. शमशोभितवृत्तिः (स्त्री.) ।

—उद्धाना, मु., अव-उप, उस् (स्वा. प. से.),
वक्राक्षया आक्षिप (तु. प. अ.) ।

—कवना, मु., महान्तं उगलम् (स्वा. आ.
अ.), महान्तं अश्विनवनं प्रयुज् (र. आ. अ.) ।

फवन, सं. स्त्री. (हि. फवना) शोभा, हविः
(स्त्री.), शोभयति २. मंडनं, प्रसन्नं, परिष्कारः ।

फवना, कि. अ., (सं. प्रभवन् >) शुभं (स्वा.
आ. से.), युद् (कर्म.) उपपद् (दि. आ.
पा.), उचित-उपपन्न-अनुरूप-युक्त-सदृश (वि.)
फव (स्वा. आ. से.) ।

फवनेशाला, वि., शोभन, उन्नित, युक्त, अनु-
त्प, सदृश ।

फवोला, वि. (हि. फव) शोभन, सुन्दर,
२. उन्नित, अनुत्प ।

फरक, फरकन, सं. स्त्री, दे. 'फरक' ।

फरक, सं. पुं, दे. 'फरक' ।

फरकना, कि. अ., दे. 'फरकना' ।

फरकन्द, सं. पुं. (फ.) पुत्रः, तनुजः ।

फरकी, सं. पुं, दे. 'फरकी' ।

फरद, सं. स्त्री, दे. 'फरद' ।

फरफद्, सं. पुं. (अनु. फर+हि. फदा)
भया, कपटं, उल्लं, छद्मन्, (न.), व्याजः
२. भावः हावः ।

फरफा, सं. पुं. (अनु.) पक्ष-रफुरण-आस्फा-
लनम् । कि. धि., लवणं, शोभं, द्रुं २.
अप्रतिहतम् ।

फरफराना, कि. अ., कि. अ., दे. 'फरफराना' ।

फरमा, सं. पुं. (अं. फेन) घटना, रचना
२. दे. 'कालयूत' ३. आकारसाधनम् ।

फरमा, सं. पुं. (अं. फर्म) सहज-सुदृगार्ह
पूर्णपत्रम् ।

फरमान, सं. पुं. (फा.) राजकीय आज्ञात्रं,
अनुशासनपत्रं २. आज्ञा, आदेशः ।

फरमाना, कि. स. (फ.) आशा (प्रे.),
अदिश् (तु. प. अ.) शास् (अ. प. से.)
२. कथं (चु.) ।

फरमाद, सं. स्त्री. (फा.) दुःखनिवेदनं
२. प्रार्थना, अश्वर्धना ३. अभियोगः ।

फरमादी, सं. पुं. (फा.) दुःखनिवेदकः
२. अभियोक्तृ २. प्राथिनः ।

फरलांग, सं. पुं. (अं.) कोशस्थ जाडशो भागः,
अश्वमानमेदः ।

फरलो, सं. स्त्री. (अं.) साधवेदनी दोषाव-
काशः, अवकाशमेदः ।

फरवरी, सं. स्त्री. (अं. फेब्रुवरी) अंगुलसं-
स्तरस्य द्वितीयो मासः ।

फरसा, सं. पुं. (सं. परशुः) दे. 'कुन्ददुः' ।

फरहंग, सं. पुं. (फा.) कोशः-पः, अभिधानं,
शब्दसंग्रहः २. टीका, कुनिका, व्याख्यः ।

फरहत, सं. स्त्री. (अं.) नोदः, हर्षः, प्रसवना ।

फरहरा, सं. पुं. (हि. फहराना) पताका,
केतुः ।

फरख, वि. (फा.) आयत, विस्तृत, विशाल ।

—दिल, वि. (फा.) विशालदृश्य, उदार ।

फरागल, सं. स्त्री. (अ.) व्यवसाय-विश्रामः,
उद्योगविश्रांतिः (स्त्री.), अवकाशः ।
२. निश्चिन्ता ३. मलत्यागः ।

फरामोश, वि. (फा.) विस्मृत ।

फरामोशी, सं. स्त्री. (फा.), विस्मृतिः
(स्त्री.), विस्मरणम् २. स्वप्नं, स्वल्पितम् ।

फरार, वि. (अ.) (दृढभयात्) पलायित,
अपक्रांत ।

फरिस्ता, सं. पुं. (फा., गि. सं. प्रेषितः)
दिन्य-शंश, द्रुतः २. देवता ।

फरीक, सं. पुं. (अ.) प्रतिद्वन्द्विन्, विपश्चिन्
२. वादिन्, अधिन्, प्रतिवादिन्, प्रत्यधिन्
३. पक्षः; प्रतिपक्षः ४. पक्ष्यः, सपक्षः
५. श्रेणी, वर्गः ।

—सानी, (सं. पुं. अ.) प्रतिवादिन् ।

फरीकैन, सं. पुं. (अ.) (व्यवहारे) पक्ष-
प्रतिपक्षौ, वादिप्रतिवादिनौ, अभियोग्य-
भियुक्तौ ।

फरुहा, सं. पुं, दे. 'फावहा' ।

फरेंद-दा, सं. पुं. (सं. फलेन्द्रः) राज-महा-
जंजुः, नंदः ।

फरेब, सं. पुं. (फा.) छलं, कपटं, प्रतारणा ।

फरेली, वि. (फा.) छलिन, कापटिक,
प्रतारक ।

फलोक्त, सं. स्त्री. (फा.) विक्रयः-दणम् ।
फलक, सं. पुं. (अ.) पृथक्तास्त्वं, भिन्नत्वं, इतरत्वं २. अंतरं, भेदः, विक्षेपः ३. दूरतन्त्र्यं, अंतरं ४. न्यूनता, विकल्पता ।
फलक, सं. पुं. (अ.) धार्मिककृत्यं (इस्लाम) २. कर्तव्यकर्मन् (न.) ३. कल्पना ४. उभरदायित्वम् ।
फलक, कि. अ., वलुक् (प्रे.), उपप्रेक्ष (भ्वा. आ. से.) ; (प्रमाणं विना) सिद्धं नन् (दि. आ. अ.) ।
फलक, सं. पुं. (फा.) फलित, कल्पनिक, २. सत्ताहीन, वितथ ।
फलक, सं. स्त्री. (अ.) युज्ये-विः (स्त्री.) नानावली-लिः (स्त्री.), अनुक्रमणिका २. पृथक्स्थितः पत्रवल्गादिसंबन्धः २. प्रच्छदपट-स्थोर्ध्वपटः । वि., अनुपम, अतुल्य ।
फलाद्, सं. स्त्री., दे. 'फरवाद्' ।
फलाद्, सं. पुं. (अनु.) त्वरा, वेगः २. दे. 'खरवाद्' ।
फलक, सं. पुं. (अ.) कुशप्रसारकः २. शिकरः ।
फलक, सं. पुं. (अ.) कुट्टिमः-मं., शिलास्तरः २. गृहभूमिः (स्त्री.) आस्तरणं, कुशः-या, नमत्, परिस्त्रोमः ।
फल, सं. पुं. (सं. न.) शरयं, प्रसवः, उपवनं २. लाभः, प्राप्तिः (स्त्री.) ३. परिणामः, ४. गुणः, प्रसवः ५. कर्मभोगः ६. प्रतिफलं, प्रतीकारः ७. धारा, पत्रं, फलं (खड्गादिकास्य) ८. फालः, कुशां, कृषकः ९. फलकाः-वां १०. दालं, फरं, चर्मन् (न.) ११. उद्देश्यसिद्धिः (स्त्री.) १२. गुण्यः (गतिः) १३. गणित-क्रियापरिणामः (उ. योग-गुणन-फलं) १४. क्षेत्रफलं १५. ग्रहयोगपरिणामः (ज्यो.) १६. प्रयोजनं, अर्थः १७. वृद्धिः (स्त्री.), दे. 'सूद्' ।
—आना, या लगाना, कि. अ., फल् (भ्वा. प. से.), सफलीभू, फलवन् जन् (दि. आ. से.), फलित (वि.) भू ।
—दार, वि. (सं. + फा.) फलवत्, फलदायक, फलद, फलप्रद, फलित, फलन्, सफल २. अमोघ, अवधय ।
—पाक, सं. पुं. (सं.) करमर्हकः २. जल-मलकं ३. फलपरिणतिः (स्त्री.) ।

—पाना, कि. स., (स्वकर्मणाम्) फलं भुञ् (रु. आ. अ.)-लम् (भ्वा. आ. अ.) प्रा (स्वा. प. अ.) ।
—प्राप्ति, सं. स्त्री. (सं.) कृतकार्यता, मनो-रथसिद्धिः (स्त्री.) ।
—भोग, सं. पुं. (सं.) उदकानुभवः, परि-णामोपभोगः ।
—राज, सं. पुं. (सं.) दे. 'तरबूज' २. दे. 'खरबूज' ।
फलक, सं. पुं. (सं. पुं. न.) (काष्ठादिकारय) पट्टः-यं २. शिल्प ३. दालं, चर्मन् (न.) ४. रजकपट्टं ५. आस्तरणं ६. पत्रं-पुष्टं ७. हस्त-तलं ८. फलं ९. पीठं, पीठिका ।
फलक, सं. पुं. (अ.) आकाशः-शं, गगनं २. स्वगः ।
फलतः, अल्प. (सं.) परिणामतः, अतः, इति हेतोः, अस्मात्-व.र.रणाद् ।
फलद, वि. (सं.) फल, दायक-प्रद-जनक ।
फलना, कि. अ. (सं. फलन्) दे. 'फल आना' ('फल' के नीचे) २. फलं भवद् (भ्वा. प. अ.), लाभं जन् (प्रे.) ।
—फूलना, मु., लक्ष्णं (दि. प. से.), संवृष् (भ्वा. आ. से.), उत्कर्षं या (अ. प. अ.) ।
फलसक्ती, सं. पुं. (अ.) दर्शनशास्त्रं, तर्क-विद्याशास्त्रम् ।
फलसक्ता, सं. पुं. (अ.) दार्शनिकः, लक्ष्णः, दर्शनशास्त्रज्ञः ।
फलां, वि. (फा.) अमुक ।
—फलां, वि. अमुकभुक्, विशिष्ट, निर्दिष्ट ।
फलांग, सं. स्त्री., दे. 'कुदान' ।
फलांगना, कि. अ. (सं. प्रलंघनम्) दे. 'कूदना' ।
फलाकांक्षी, वि. (सं. धिन्) फलेच्छुक, फला-भिलाषिन् ।
फलाना, वि., दे. 'फलां' ।
फलार्थी, वि. (सं. धिन्) फलेच्छुक, फलाभि-लाषिन् २. परिणामोत्सुक ।
फलाहार, सं. पुं. (सं.) फलभक्षणं, फलैर्निर्वा-हणम् ।
फलाहारी, वि. (सं. रिन्) फलभक्षक ।
फलित, वि. (सं.) फलवत्, फलन्, प्राप्तफल २. संपन्न, पूर्ण ।

—ज्योतिष, सं. पुं. (सं. न.) दैवशक्तिया ।
 फली, सं. स्त्री. (हिं. फल) बीजपुटं, बीजकोषः ।
 फलोत्ता, सं. पुं. (अ. फलीलह्) वृत्तिज्ञा, वृत्तिः
 (स्त्री.) २. नालीकाखवतिः, फली ।
 फलीभूत, वि. (सं. >) सफल, फलप्रद ।
 फलोद्भव, सं. पुं. (सं.) फलोत्पत्तिः (स्त्री.)
 २. लाभः ३. हर्षः ४. स्वर्गः ।
 फसल, सं. स्त्री. (अ. फसल्) शस्यं, धान्यं,
 अन्नम् २. ऋतुः ३. कालः ।
 फसाद्, सं. पुं. (अ.) संशोभः, विफलः
 २. फलह्यः, उपद्रवः २. विकारः, विक्रिया ।
 फसादी, वि. (फ.) विद्रोहिन्, विफलकारिन्
 २. उपद्रविन्, कलहप्रय ।
 फसाना, सं. पुं. (फा.) अरुणविका, लघु-
 कथा ।
 फसाहत, सं. स्त्री. (अ.) भाषा-सौष्टवं-
 परिष्कृतिः (स्त्री.) ।
 फसील, सं. स्त्री. (अ.) प्राकारः, वरणः, वनः,
 वप्रम् ।
 फहरना, कि. अ. (सं. प्रसरणम्) प्रस् (भ्वा.
 प. अ.), उदडी (भ्वा. आ. से.) ।
 फहराना, कि. स., 'फहराना' के धातुओं के
 प्रेरणाार्थक रूप ।
 फॉक, सं. स्त्री. (सं. फलकम् >) लण्ड-डः,
 शुफल-लः २. छुरिका ३. रेखा ।
 फाकना, कि. स. (हिं. फांकी) हस्तगलेन मुखे
 निक्षिप् (तु. प. अ.) । सं. पुं., चूर्णस्य मुखे
 निक्षेपणम् ।
 फाँदना, कि. अ. (सं. फगन् >) कुर्द् (भ्वा.
 आ. से.) उल्ल (भ्वा. आ. अ.) २. उल्लम्
 (भ्वा. आ. से.) । सं. पुं., उल्लवनं, कुर्दनं,
 उल्लघनम् ।
 फॉस, सं. स्त्री. (सं. पाशः) बंधनम्, वे.
 'फंदा' ।
 फॉसना, कि. स. (हिं. फॉस) पाशयति
 (ना. धा.) २. बन्धयति (प्रे.) ।
 फॉसी, सं. स्त्री. (हिं. फॉस) उद्बन्धनम्
 २. मृत्युदण्डः २. पाशः, बंधनम् ।
 —देना, कि. स., उद्बन्ध हन (अ. प. अ.) ।
 फाडल, सं. स्त्री. (अं.) पत्रसंग्रहः २. पंक्तिः
 (स्त्री.) ३. मृगं, गुणः ।
 फाका, सं. पुं. (अ. फाकल्) उपवासः, उपोषितं,
 लघनम् ।

फाग, सं. पुं. (हिं. फागुन) होलिकोत्सवः
 २. रक्तचूर्णनेदः ३. होलिकागोतनम् ।
 फागुन, सं. पुं. (सं. फाल्गुनः दे.) ।
 फाटक, सं. पुं. (सं. कपाटः) अंगनद्वारं, वृहद्-
 द्वारम् २. लौहद्वारम् ३. दे. 'कॉनी हौट' ।
 फाडना, कि. स. (सं. रफ डनम्) ब्रश् (तु.
 प. से.), गिड-डिड (रु. प. अ.), विडू
 (प्रि.) २. सण्ड (चु.), नन्व (रु. प. अ.) ।
 सं. पुं., प्रथमं, भयनं, छेदनं, विचारणं, विनाशनं
 २. खंडनं, भंगनम् ।
 फानुस, सं. पुं. (फा.) *दीप-कोषः-पुटः ।
 फायदा, सं. पुं. (अ. फाडदह्) लाभः, धना-
 गनः, आयः २. प्रयोजनसिद्धिः-ईप्सिनप्राप्तिः
 (स्त्री.) ३. सुफलं, सुपरिणामः ४. नीरोगता ।
 —मंड, वि., लाभदायक, उपकारक ।
 फारखती, सं. स्त्री. (अ. फारिग + खती)
 दायित्वत्यागः २. दायित्वत्यागपत्रम् ।
 फारम, सं. पुं. (अं. फार्म) प्रपत्रम् ।
 फारमूला, सं. पुं. (अं.) सूत्रम् ।
 फारस, सं. पुं. (फ.) पारसि(सी)कः ।
 फारसी, सं. स्त्री. (फा.) पारसी ।
 —दाँ, वि. पारसीविद्, पारसीपंडित ।
 फारिग, वि. (फा.) लब्धावकाश, निर्वातित-
 व्यापारः, निवृत्त ।
 —होना, मु., कार्यमुक्त, लब्धावकाश भू २.
 शौचाय गम् ।
 फारेन, वि. (अं.) विदेशीय, परदेशीय, वै-
 पार-देशिक ।
 —आफिस, सं. पुं. (अं.) विदेश-परराष्ट्र-
 कार्यालयः ।
 —सेक्रेटरी, सं. पुं., विदेश-परराष्ट्र-सचिवः ।
 फारेनर, सं. पुं. (अं.) विदेशीयः, परदेशीयः,
 वैदेशिकः, पारदेशिकः ।
 फारेनहाइट, सं. पुं., जर्मनवैशानिकविशेषः ।
 —थर्मामीटर, सं. पुं. (अं.) फारेनहाइट-
 तापमापकम् ।
 फारेस्ट, सं. पुं. (अं.) वनं, जंगलम् ।
 —डिपार्टमेंट, सं. पुं. (अं.) वन-जंगल-
 विभागः ।
 फाल, सं. स्त्री. (सं. पुं. न.) कुशिलं, कृषिका,
 हलोपकरणम् ।
 फाल्गु, वि. (हिं. फाल्गु-डुकड़ा) उपयुक्ताव-

क्रालसा

[४०३]

कुर्वकना

शिष्ट, अतिरिक्त २. अनुपयोगिन्, निरर्थक
३. अयमंगव ।
क्रालसा, सं. पुं. (फ्रा.) गिरिपील (न.),
नीलमंडल, पगवतस्, परुषरुन् ।
कालिज, सं. पुं. (अ.) पक्ष्यान्तः, गात्रमात्रः ।
काल्पुन, सं. पुं. (सं.) काल्पुनः, तपस्यः,
बन्तारनाकः, काल्पुनिकः २. अर्जुनः ३.
अर्जुनवृक्षः ।
फावदा, सं. पुं. (सं. फालः >) आवातः नं,
दोनाः ।
फासफोरस, सं. पुं. (अं.) स्फुरं, स्फुरकं,
भस्वरम् ।
फासलः, सं. पुं. (अ. फासलह्) अन्तरं, दूरतः,
विप्रकर्षः ।
फाहा, सं. पुं. (सं. हाहम् >) स्नेहाक, दूल्-
खडः, पटखडः ।
फिकधाना, क्रि. प्रे. 'फैकना' के प्रे. रूप ।
फिकर, सं. स्त्री. (अ. फिकः) विन्ना, दुःखं,
खेदः २. ध्यानं, विचारः ३. उपायविन्ता ।
फिट, अन्व. (अनु.) धिक्, धिग्धिक् ।
—फार, सं. स्त्री. (अनु. फिद + सं. कारः)
धिकारः, धिक्किया २. अभिदापः, अभि-
शपनम् ।
फिट, वि. (अं.) यथाहं, उपपन्न । सं. पुं.,
मूच्छां, भ्रनिः (स्त्री.) ।
फिट्करी, सं. स्त्री. (सं. स्फटिकी) स्फटी,
शेता, शुभा, फाटकी, तुवरी, स्फटिका ।
फिटन, सं. स्त्री. (अं.) चतुश्चक्रोऽध्यानमेदः ।
फिरंग, सं. पुं. (अं. फांक >) युरोप-गौरांग,
देशः २. विदेशः ३. उपरंशरोगः ।
फिरंगी, सं. पुं. (हि. फिरंग) फिरंग-युरोप-
वास्तव्यः वासिन्, गौरांगः ।
फिर, क्रि. वि. (हि. फिरना) पुनर्, भूयस्,
दिः (दोनो अन्य.) २. अनन्तरं, ततः, तत्प-
श्चात् ३. अधिगन्तम् ।
—फिर, क्रि. वि., पुनः पुनः, वारं वारं,
असङ्गत, उभयोर्भयः ।
फिरका, सं. पुं. (अ.) जानिः (स्त्री.),
सम्प्रदायः ।
फिरना, क्रि. अ. (हि. फेरना) हतस्ततः अद्-
विचर-भ्रम (भ्वा. प. से.) २. बाधुं, सेव्
(भ्वा. आ. से.) ३. प्रत्यागम्, निवृत्त (भ्वा.

आ. से.) । सं. पुं., भ्रमणं, विचरणं ४. वायु-
सेवनम् ३. प्रत्यागमनं, निवर्तनम् ।
फिरनी, सं. स्त्री. (फा. फीरोनी) पायसमेदः ।
फिराना, क्रि. स. (हि. फिरना) हतस्ततः प्रेर्
(प्रे.) २. प्रत्यावृत्त (प्रे.) ३. चक्रवत् भ्रम
(प्रे.) ।
फिल्टर, सं. पुं. (अं.) पावम् ।
—फेपर, सं. पुं. (अं.) पावपत्रम् ।
फिल्टरेशन, सं. पुं. (अं.) पावपत्रम् ।
फिसलन, सं. स्त्री. (हि. फिसलना) निपत्या,
विक्रणस्थानं, विथिल्लपथः ।
फिमलना, क्रि. अ. (सं. प्रस्वलनम्) (पिच्छि-
लभूमौ) प्रस्वल (भ्वा. प. से.) । सं. पुं.,
प्रस्वलनम् ।
फोका, वि. (सं. अपक्व > ?) निस्त्वाद, नीरस
२. धूमिल, मलिन, ३. निश्रम ४. व्यर्थं,
निष्फल ।
फ्रीता, सं. पुं. (पुर्त.) पट्टिका ३. बंधन-
सूत्रम् ।
फ्रीरोजा, सं. पुं. (फ्रा.) वैदूर्यं, हरिशीलरत्नम् ।
फ्रीरोजी, वि. (फ्रा.) हरिशील ।
फोस, सं. स्त्री. (अं. बहु.) शुष्कः-कम्, दक्षिणा ।
फूंकना, क्रि. अ. (हि. फूंकना) दह्, भस्म-
सात् भू ।
फूंकनी, सं. स्त्री. (हि. फूंकना) भमनी २.
भक्षा ।
फूंकार, सं. पुं. (अनु. फू. + सं. कारः) फूल्काट
२. सर्पनिःश्रासः ३. सक्रोधं निःश्वसनम् ।
फूंकारना, क्रि. अ. (हि. फूंकार) फूल्क, सर्पवद
श्वस् (अ. प. से.) ।
फूंसी, सं. स्त्री. (सं. फनसिका >) पिटि(ट)का,
वरंडः, वरंडकः ।
फूट, सं. पुं. (अं.) गजतृतीयांशः, चरणमानम् ।
२. चरणम्, पादः ।
फूटकर, वि. (सं. स्फुट >) अयुग्म, विषम
२. पृथक् स्थित, संबन्धरहित ३. विविध, बहु-
प्रकार ४. अलयाल्प, स्तोकस्तोक ।
फूटनोट, सं. पुं. (अं.) पादशिष्पणी ।
फूटपाथ, सं. पुं. (अं.) पदपथः ।
फूटबाल, सं. पुं. (अं.) पदकन्दुकः २. पद-
कन्दुक-क्रीडा ।
फूवकना, क्रि. अ. (अनु.) उज्ज्वल गृह

(भ्वा. प. अ.) २. नृत् (दि. प. से.) ।
 सं. पुं. जलवननं, नर्तनम् ।
कुनगी, सं. स्त्री. (सं. स्फुटनम्) शाखा-विटप-
 अग्रपत्राः-अग्रकुंराः (बहु०) ।
कुफुस, सं. पुं. (सं.) दे. 'केफवा' ।
कुफकार, सं. पुं. (अनु.) दे. 'कुंकार' ।
कुफेरा, वि., (हिं. फूफा) पितृष्वसेय, पि (पि)
 पृष्वन्तीय ।
क्रूरकत, सं. स्त्री. (अ.) वियोगः, विरहः ।
कुरती, सं. स्त्री. (सं. स्फुतिः) शीघ्रता,
 क्षिप्रकारिता ।
कुरतीला, वि. (हिं. कुरती) शीघ्र-क्षिप्र-
 कारिन्, स्फूर्तिमत् ।
कुरता, क्रि. अ. (सं. स्फुर्) प्रातुर्भू, प्रकटीभू
 २. कर्षणेष् (भ्वा. आ. से.) ३. प्रकाश
 (भ्वा. आ. से.) ४. कुरकुरायते (ना. धा.) ।
कुररुत, सं. स्त्री. (अ.) अवकाशः, रिक्तसमयः
 २. अवसरः, समयः ।
कुलका, सं. पुं. (हिं. फूलना) लघु-तनु-
 सैटिका २. विस्फोटः, पिटिका ।
कुलसकी, सं. स्त्री. (हिं. फूल + खडना)
 कुलधारिणी २. कलहकारिणी वार्ता ।
कुलवादी, सं. स्त्री. (सं. कुलवादी) पुष्प-
 कुसुम-वादी-वाटिका, उषानम् २. वरपात्रायाः
 कर्गल-निर्मिता कुलवादी ३. पुत्रकलत्रादयः ।
कुलाना, क्रि. स., न. 'फूलना' के प्रे. रूप ।
कुलेल, सं. पुं. (हिं. फूल + तेल) सुगन्धितैलम् ।
कुल्ल, वि. (सं.) विकसित, स्फुटित, उच्चिद्र ।
कुसकुला, वि. (अनु. कुस) शिथिल, श्लथ
 २. मंथुर, भिदुर ३. अशक्त, दुर्बल ।
कुसलाना, क्रि. स. (हिं. किसलाना) प्रतृ-बन्ध
 (प्रे.), विप्रलम् (भ्वा. आ. अ.) ।
कुहार, सं. स्त्री. (सं. फूलकारः) शीकरवर्षः,
 मन्दबृष्टिः (स्त्री.) ।
कुहारा, सं. पुं. (हिं. कुहार) जल-धारा-
 यन्त्रम् २. जलोत्क्षेपः ।
कूक, सं. स्त्री. (अनु. कू) फूलकारः, ध्यानम्
 २. मुखमासतः, श्वासः ।
 —**मारना**, क्रि. स., फूलक, ध्मा (भ्वा. प. अ.) ।
कूकना, क्रि. स. (हिं. कूक) दह् (भ्वा.
 प. अ.), भस्मसाय कृ २. फूलक ।
कूकनी, सं. स्त्री., दे. 'कूकनी' ।

कूँस, सं. स्त्री. (घास से अनु.) पलालः-कं,
 पलः २. शुष्क, नृण-वासः ।
कूट, सं. स्त्री. (हिं. फूटना) चित्रा, मरुजा,
 चिभिता, पथ्या २. विश्लेषः ३. विरोधः,
 मतभेदः ।
 —**डालना**, क्रि. स., विरोधं जन (प्रे.) ।
फूटना, क्रि. अ. (सं. स्फुटनम्) भिद्-छिद्-
 विद् (कर्म.) स्फुट् (तु. प. से.) २. विकस-
 फुल्ल (भ्वा. प. से.) ।
फूकार, सं. पुं. (सं.) दे. 'कुंकार' ।
फूफा, सं. पुं. (देश.) पितृष्वल्, पतिः-श्वः ।
फूफी, सं. स्त्री. (हिं. फूफा) पितृष्वल् ।
फूल, सं. पुं. (सं. फूलम्) कुसुमं, प्रसन्नं, पुष्पम् ।
 —**दान**, सं. पुं., कुसुमभाजनं, फूलधानम् ।
 —**दार**, वि., पुष्पित, सुपुष्प ।
फूलना, क्रि. अ. (हिं. फूल) फूलक-विकस
 (भ्वा. प. से.) २ प्रमुद् (भ्वा. आ. से.) ।
 सं. पुं., विकामः, प्रस्फुटनं २. प्रमोदः, अह्लादः ।
फूला, सं. पुं. } (हिं. फूल) शुक्लं, पुष्पम्,
फूली, सं. स्त्री. } पुष्पकं, नेत्ररोगभेदः ।
फूस, सं. पुं., दे. 'कूँस' ।
फूहड, वि. (अनु.) जड, मूढ, मन्दमति २.
 कदाकार, कुरूप, कुदर्शन ।
फूँकना, क्रि. स. (सं. क्षेपणम्) क्षिप-मुच्
 (तु. प. अ.), प्र-अस् (दि. प. से.) २.
 प्रमादेन पठ (प्रे.) ३. सावमानं त्यज् (भ्वा.
 प. अ.) ४. अगव्यच् (जु.) । सं. पुं., क्षेपणं,
 प्रासनं, पातनं, अपव्ययः ।
फूँकने योग्य, वि., क्षेपणीय, त्यक्तव्य ।
 —**वाला**, सं. पुं., क्षेपकः, प्रासकः ।
फूँका हुआ, वि., क्षिप्त, प्रात्, त्यक्त ।
फूँटना, क्रि. स. (सं. पिष्ट) मथ् (कृ. प. से.),
 मथ्-खज् (भ्वा. प. से.) २. क्रीडापत्राणि
 मिश्र (जु.) ।
फूँटा, सं. पुं. (हिं. पेटा वा पेटो) परिकरः,
 कटि-बंधः-पटः २. लघ्व्यीरंधः ।
फेन, सं. पुं. (सं.) जलहासः, अश्विकफः,
 मण्डः-ब्, शिण्डीरः, अंशुकफः ।
फेनिल, वि. (सं.) फेन-युक्त-आवृत्त, फेनल ।
फेनी, सं. स्त्री. (सं. फेनिका) पवनात्रभेदः ।
केफवा, सं. पुं. (सं. कुफुसः-सम्) तिलकं,
 श्लोमं, श्लोमन् (न.), कुफुस-सः, रक्तफेनजः ।

केकयी

[४०६]

बंद

केकयी, सं. स्त्री. दे. 'पयङ्गो' ।
 केर, सं. पुं. (हिं. फेरना) आगमनं, परिवर्तनम्
 २. आगतिः (स्त्री.), अमः ३. पुनर् (अन्य.) ।
 केरना, कि. स. (सं. प्रेरणम्) धूर्ण-परिभ्रम्
 (प्रे.) २. प्रतिदान-प्रत्यु (प्रे.) ३. प्रतिया-
 प्रतिनिवृत् (प्रे.) सं. पुं. धूर्णनं, परिभ्रामणं,
 प्रतिदानं, प्रत्यर्पणम्, प्रतियापनं, प्रतिनि-
 वर्तनम् ।
 केरफार, सं. पुं. (हिं. फेरना) परिवर्तनं, विप-
 वासः, विपर्ययः २. व्याजः, कपटम् ।
 केरा, सं. पुं. (पूर्व.) प्रत्यावर्तनं, प्रत्यागमनं
 २. भ्रमणम्, परिक्रमणम् ३. दिरागमनम् ।
 केरी, सं. स्त्री. (पूर्व.) परिक्रमा, प्रदक्षिणा
 २. दे. 'केर' ३. दे. 'केर' ।
 —वाला, सं. पुं., भाण्डवाहः, वैवधिकः ।
 केर, वि. (अं.) विकट, मोघयत्न, अनुत्तीर्ण ।
 केकटरी, सं. स्त्री. (अं.) शिल्पशाला ।
 कैलना, कि. अ. (सं. प्रसरणम्) वितन-विस्तृ
 (कर्म.) २. व्याप् (स्वा. प. अ.) ३. आप्यै
 (भ्वा. आ. अ.) पीनी भू ४. प्रख्यात (वि.)
 जन् (द्वि. भा. से.) ५. आग्रहं कृ । सं. पुं.,
 विस्तारः, विततिः-व्याप्तिः (स्त्री.) ।
 कैला हुआ, वि. विस्तृत, वितत, व्याप्त,
 आप्यायित, पीन, प्रख्यात, प्रसिद्ध ।
 कैलसूक्त, सं. पुं. (अ. किलनकऽ) बुधः,
 प्राज्ञः २. शक्ति, कपटिन । ३. अपव्यदिन् ।
 कैलसूक्ती, सं. स्त्री. (अ.) बुद्धिमत्ता, प्राज्ञता
 २. छलं, कपटम् ३. अपव्ययः, मुक्तहस्तता ।
 कैलाना, कि. स., न. 'कैलना' के प्रे. रूप ।

कैलाव, सं. पुं. (हिं. फेलना) विस्तारः, प्रसारः
 २. विततिः-व्याप्तिः (स्त्री.) ।
 कैवान, सं. पुं. (अं.) रीतिः, प्रथा २. शैली,
 विधिः, वैशमूषा ।
 कैसला, सं. पुं. (अ. लह्) निर्णयः, संप्रधारणम् ।
 फोक, सं. पुं. (हिं. फूकना) मलः-लं, उच्छिष्टं,
 शेषं, अवकरः ।
 फोकट, वि. (हिं. फोक) निस्तार, तस्फहीन ।
 फोकस, सं. पुं. (अं.) रश्मिकेन्द्रम् ।
 फोटो, सं. पुं. (अं.) छायाचित्रं, आलोकालेख्यम् ।
 —का केमरा, सं. पुं., छायाचित्रपेटिका ।
 —ग्राफर, सं. पुं. (अं.) छायाचित्रकः ।
 —ग्राफी, सं. स्त्री. (अं.) छायाचित्रणम् ।
 फोहना, कि. स. (सं. स्फोटनम्) स्फुट-विट्ट-
 खण्ड (प्रे.) । सं. पुं., विदारणं, स्फोटनं,
 खण्डनम् ।
 फोडा, सं. पुं. (सं. स्फोटः), पिटकः, गण्डः,
 विद्रधिः ।
 फौज, सं. स्त्री. (अ.) सेना, बलं, सैन्यम् ।
 —दार, सं. पुं., (फा.) सेनापतिः, सेनानां ।
 —दारी, सं. स्त्री. (फा.) दण्डाधिकरणम्
 २. कलहः, कलिः ।
 फ्रांजी, वि. (फ्रा.) सैनिक, योध । सं. पुं.,
 सैनिकः, योधः ।
 फ्राँरन, कि. वि. (अ.) सपरि, सयः शक्ति,
 अचिरात् (सब अव्य.) ।
 फ्राँलाद्, सं. पुं. (फ्रा. पीलाद्) वक्रासं-
 सारलोहं, शस्त्रकम् ।

ब

ब, देवनागरीवर्णमालायाः त्रयोविंशो ध्वज-
 वर्णः, बकारः ।
 बंग, सं. पुं. (सं. वंगाः बहु.) भारतस्य प्राञ्ज-
 विशेषः ।
 बँगला, वि. (हिं. बंगाल) वांग, बंगदेशीय ।
 सं. स्त्री., बंगभाषा ।
 बँगला, सं. पुं. (अं. बँगली) एकभूमि-भवनम् ।
 बंगाल, सं. पुं. (सं. वंगाः बहु.) बंगप्रान्तः ।
 बंगाली, वि. (हिं. बंगाल) बंगभिय, बंगदेशीय ।
 सं. पुं., बंगवासिन् ।
 बंजर, वि. (हिं. बन + कजड) ऊपर, ऊषध,

अशस्यप्रद । सं. पुं. ऊपरः-रम्, अनुर्वरा भूः
 (स्त्री.) ३. मरुस्थलम् ।
 बंजारा, सं. पुं. (सं. वगिज्) धान्य-वणिज्-
 व्यवसायिन् ।
 बँटना, कि. अ. (सं. बंटनम्) विभज्-बन्द् (कर्म.) ।
 बँटवाना, कि. प्रे., 'बँटना' के धातुओं के प्रे.
 रूप ।
 बंडल, सं. पुं. (अ.) पोडुलिका, गुच्छः, पोडुली,
 संघातः, भारः, कुर्चः ।
 बँडी, सं. स्त्री. (हिं. बंद) कु(कू)र्पास्कः-कम् ।
 बँद, सं. पुं. (फ्रा.) बन्धः, बंधनम् २. अवरोधः,

- उपरोधः ३, विघ्नः । वि., संयत, नियमित
२. अवरुद्ध, अन्तरित ३. पिहित, संघृतमुख
४. विरत, स्तब्ध ।
- करना, क्रि. स. (अग्लेन) पिधा (जु. उ. अ.) रुष् (रु. उ. अ.), क्रीडयति (ना. धा.) २. निवृ (प्रे.) प्रतिषिध् (भ्वा. प. से.) ३. विरम्-विश्रम् (प्रे.), स्तम् (क्. प. से.) ४. (रन्धादिकं) पूर (जु.) ।
- बन्धुगी, सं. स्त्री. (का.) प्रणमः २. सेवा ३. ईश्वरोपासना ।
- बन्धनवार, सं. पुं. (सं. बन्धनमाला) द्वारस्था पुष्पपत्रमाला, बन्धनमालिका ।
- बन्धना, सं. स्त्री. (सं. बन्धना) प्रणामः, नमस्कारः, बन्धनम् । क्रि. स., प्रणम (भ्वा. प. अ.), बन्ध (भ्वा. आ. से.), नमस्कृ ।
- बन्धर, सं. पुं. (सं. बानरः) रापिः, मकटः, शालामृगः, बलीमुखः । (स्त्री. बलीमुखी, मकटी) ।
- खत, सं. पुं. (सं. बानरक्षतम्) कपि-मकट-त्रणः-क्षतम् ।
- घुडको, सं. स्त्री., निस्तार-निष्ठाण-विभीषिका-भयप्रदर्शनम् ।
- का घाव, सु., स्थायि-स्थिर-त्रणः-क्षतम् ।
- बन्धरगाह, सं. पुं. (का.) पीताशयः २. पीताशयपुरम् ।
- बन्धा, सं. पुं. (का.) मानवः, मनुष्यः २. सेवकः, भृत्यः ।
- निवाज, वि., दीनदयालु, दीनवत्सल ।
- परवर, वि., अनाथनाथ, दीनबन्धु ।
- बन्दिश, सं. स्त्री. (का.) बन्धनं, अवरोधः ।
- बन्दी, सं. पुं. (सं. दिव्) भट्टः, चारणः, बन्दिन् २. कारागुप्त, रुद्ध, बन्दिन् ।
- खाना, सं. पुं., कारागृहं, दुर्गिः (स्त्री.), कारा ।
- बन्धूक, सं. स्त्री. (अ.) नालारत्रं, गुलिकास्त्रं, अग्न्यस्त्रम् ।
- बन्धूकची, सं. पुं. (का.) नालारुसैनिकः ।
- बन्धोबस्त, सं. पुं. (का.) अवेश्मणं, संविधा २. भूकरविभागः ।
- बन्धक, सं. पुं. (सं.) न्यासः, निक्षेपः, आधिः ।
- बन्धन, सं. पुं. (सं. न.) प्रतिबन्धः, अन्तरावः २. बन्धनं, ग्रन्थिः ३. रज्जुः (स्त्री.), मृङ्गलाकारा, बन्दिन्गृहम् ।

- बन्धना, क्रि. अ., अवरोध-बन्धु (कर्म.) ।
- बन्धघाना, क्रि. प्रे., 'बन्धना' के धातुओं के प्रे. रूप ।
- बन्धु, सं. पुं. (सं.) बान्धवः, शानिः, सजानोय. सगोत्र ।
- बन्धुक, सं. पुं. (सं.) रक्तकः, बन्धुकः, पुष्पमयः ।
- बन्धुता, सं. स्त्री. (सं.) बन्धुत्वं, सगोत्रता, सजानोयता २. मैत्री, मित्रता ।
- बन्धेज, सं. पुं. (हि. बन्धना) अवरोधोदायः २. प्रतिबन्धः ३. नियतकाले देयमादेयं वा द्रव्यम् ।
- बन्ध्या, सं. स्त्री. (सं.) बन्ध्या, प्रसवशून्यनारी २. वृद्धा, अपत्यरहिताः यीः (स्त्री.) ।
- बन्ध, नौ. स्त्री. (अनु.) रणसिंह-नादः, ध्वंज २. युद्धप्रवृत्तिः ३. अग्निगोलकाक्रमम् ।
- बन्धा, सं. पुं. (अ. संबहु) जलनालीकालिकाः ।
- बन्धकाट, सं. पुं. (मलाया बन्धु + अं. काट) बन्ध-शकटम् ।
- बन्धी, सं. स्त्री. (सं. बन्धीकाः-कर्म) सप्तविलं २. बन्धीकूटं, कूलकः, खोलकः, बामलूरः ।
- बन्धरी, सं. स्त्री. (सं. बन्धी) मुरली, वेणुः, बन्धः, नालिका ।
- बन्धुगी, सं. स्त्री. दे. 'बन्धुगी' ।
- बन्ध, सं. पुं. (सं. बन्धः) कर्णः २. असुरविरोधः ३. कुवेरः ।
- बन्धना, क्रि. स. (अनु. बन्ध) जल्प-प्रल्प (भ्वा. प. से.), अवार्य्यं वद (भ्वा. प. से.) ।
- सं. पुं. प्रजल्पनं, उन्मत्तः, प्रलापः ।
- बन्धर, सं. पुं. (सं. बन्धरः) स्तुभः, छ(छा)भाः, अजः, शुभः, छगलकः (बन्धी=अज्ञा, सुव-भक्षा, गलस्तनी) ।
- बन्धवाद्, सं. स्त्री. (अनु. बन्धु + सं. वाद्) प्रलापः, प्रजल्पः । क्रि. अ., दे. 'बन्धना' ।
- बन्धवादी, वि. (हि. बन्धवाद्) जल्पकः, प्रलापिन्, बान्धुः ।
- बन्धायन, सं. पुं. (हि. बन्धुका + नीग) श्रेका, विपमुष्टिकः, महानिवः, कामुकः ।
- बन्धुचा, सं. पुं. (सं. विकुञ्च) कूर्चः-चूर्चः, पीठलिका २. गुच्छः, संघातः ।
- बन्धुल, सं. पुं. (सं.) बकुलः, सुरभिः, सिंह-कैसरः २. शिवः ।

बकी, वि., दे. 'बकवादी' ।
 बक्स, सं. पुं. (अं. बॉक्स) पेटिका, मंजूषा, संपुटः, समुद्रकः, पिटकाःकम् ।
 बखिया, सं. पुं. (फ्रा.) इदम्क्षम, सीवनं-स्थितिः (स्त्री.) ।
 बख्शी, कि. वि. (फ्रा.) सम्यक, साधु, सुष्ठु (सब अन्य.) ।
 बखेड़ा, सं. पुं. (हिं. बिखेरना) विपत्तिः, संकटम् २. विवादः ३. कठिनता ।
 बखेड़िया, वि. (हिं. बखेड़ा) विवाद-कलिकलह, प्रिय, विवादिन् ।
 बखेरना, कि. स., दे. 'बिखराना' ।
 बख्त, सं. पुं. (फ्रा.) भाग्यं, दैवं, अदृष्टम् २. सौभाग्यम् ।
 बख्तावर, वि. (फ्रा.) भाग्यशालिन्, सुभाग, महाभाग ।
 बख्शाना, कि. स. (फ्रा. बख्श) दत् (भ्वा. आ. प्रे.), विश्रण् (चु.), उत्सृज् (तु. प. अं.) ।
 बख्शिश, सं. स्त्री. (फ्रा.) दानम् २. दत्त-वस्तु (नं.) ३. पुरस्कारः ३. क्षमा, अनुग्रहः ।
 बख्श, सं. स्त्री. (फ्रा.) कक्षा, वाहुकोटरः, दोमूलम् ।
 बख्शाला, सं. पुं. (सं. बकः) कङ्कः, दीर्घजंघः, तापसः, दीर्घकः, तीर्थसेविन्, मीनघातिन्, शुक्लवायसः ।
 बख्शावत, सं. स्त्री. (अं.) राजद्रोहः, विप्लवः, उपप्लवः ।
 —का झंडा बुलंद करना, मु., राजद्रोह-राज-विरोधं कृ ।
 बख्शीचा, सं. पुं. (फ्रा. बागचह्) वाटःची, वाटिका, उपवनम् ।
 बख्शीशा, सं. पुं. (देश.) मधुगोसः, इ. 'नाशपात्री' ।
 बख्शाला, सं. पुं. (हिं. बाज्ज-गोला) चक्रवातः, वातावर्तः, वातभ्रमः, धूलिचक्रं, वात्या ।
 बख्श, अश्व. (अं.) दिना, अन्तरा, अन्तरेण, विहाय, वर्जयित्वा, कृते ।
 बख्शी, सं. स्त्री. (अं. बोगी) चतुश्चक्रं सपटलम-स्थानम् ।
 बख्शारना, कि. स. (सं. अवधारणम्) अवधृ (भ्वा. प. व्र., चु., जु. प. अ., स्वा. उ. अ.), व्यंजनं तस्युतादिकेन सिच् (तु. प. अ.) ।

बखेला, सं. पुं. (हिं. बाघ) व्याघ्रः, भृगान्तकः ।
 बख्त, सं. स्त्री. (हिं. बचना) लाभः, प्राप्तिः (स्त्री.) २. संचयः, संग्रहः ३. संवित-रक्षितः, अवशिष्ट-धनम् ।
 बचना, कि. अ. (सं. बचनम् >) रक्ष्-निर्मुञ्च (कर्म.) २. अवशिष् (कर्म.) ।
 बचपन, सं. पुं. (हिं. बच्चा) बाल्यं, कौमार्यं, बालत्वम् ।
 बचाना, कि. स. (हिं. बचना) परित्रै (भ्वा. आ. अ.), रक्ष्-गुप् (भ्वा. प. से.) २. अवशिष् (प्रे.), संचि (स्वा. उ. अ.) ।
 बचाव, सं. पुं. (पूर्व.) रक्षा, वाणं, उदरः, गोपनं, कृतिः (स्त्री.) ।
 बख्शीश, सं. स्त्री. (फ्रा.-शिश) दानम् २. पारितोषिकम् ।
 बख्शा, सं. पुं. (फ्रा.-बह्) वस्सः, बालः, बालकः, शिशुः २. शावः, शावकः ३. अश्वनिन् ।
 —दानी, सं. स्त्री., गर्भाशयः, गर्भकोषः ।
 बख्शी, सं. स्त्री. (फ्रा.) वत्सा, बाला, बालिका ।
 बख्श्या, सं. पुं. (सं. वत्सः) गोवत्सः, गोशावकः, तर्षकः ।
 बख्श्या, सं. पुं. (हिं. बख्श्या) बालाश्वः, अध-शावकः ।
 बख्श, सं. पुं. (अं.) आयव्ययिकम्, व्याकल्पः ।
 बख्शना, कि. अ. (सं. वदन् >) क्वण-क्वन् (भ्वा. प. से.), वाद् (कर्म.) ।
 बख्शंग, वि. (सं. वज्रांग) वृद्धावयव, अशनि-कठोर ।
 —बख्शी, सं. पुं., हनुमत् ।
 बख्शाना, कि. प्रे., ब. 'बजाना' के प्रे. रूप ।
 बजा, वि. (फ्रा.) युक्त, उचित । कि. वि., सत्यम्, ओम् ।
 बजाज, सं. पुं. (अं. बज्जाज) वल्लविकेवृ ।
 बजाजा, सं. पुं. (फ्रा.) वल्लहट्टः ।
 बजाजी, सं. स्त्री. (फ्रा.) वल्लविकयः २. वल्ल-निचयः ।
 बजाना, कि. स. (हिं. बजना) वाद् (चु.), क्वण-क्वन् (प्रे.) । सं. पुं., वादनम् ।
 बजानेवाला, सं. पुं., वादकः, वादयितु ।
 बजाय, अव्य. (फ्रा.) स्थाने, प्रातिनिध्ये ।
 बज्ज, सं. पुं. (सं. वज्ज) ऐन्द्रास्त्रं, अशनिः, पविः ।
 बट, सं. पुं. (सं. बटः) जटिलः, न्यग्रोधः ।

बटखरा, सं. पुं. (सं. बटकः >) दे. 'बाट' ।
 बटन, सं. पुं. (अं.) कुडुपः, गण्डः ।
 बटना, कि. स. (सं. वर्तनम् >) व्यावृत्त (प्रे.),
 तन्तुन धूर्ण-भ्रम (प्रे.) सं. पुं., व्यावर्तनं,
 तन्तु-धूर्णन-भ्रामणम् ।
 बटमार, सं. पुं. (हि. बाट + मारना) पारि-
 पन्थिकः, लुण्ठकः, प्रतिरोधकः ।
 बटलोई, सं. स्त्री. (हि. बटला) दे. 'देगची' ।
 बटवारा, सं. पुं. (हि. बोटना) भूमिभागः,
 भूमिव्यंशानम् २. धनविभागः, दायभागः ।
 बटा, सं. पुं. (हि. बेटना) भिन्न, अपूर्णाकारः,
 राशिभागः, प्रभागः ।
 बटुआ, सं. पुं. (सं. बटुल >) मुद्रा-नाणकः,
 कोषः ।
 बटेर, सं. स्त्री. (सं. वर्तका) वर्तकः, वर्तकी,
 वर्तिका ।
 बटेरन, सं. स्त्री. (हि. बटेरना) अवस्करः,
 निस्सारवस्तुसमूहः, उच्छिष्टम् ।
 बटेरना, कि. स. (सं. बटुल >) संवि
 (स्वा. उ. अ.), संग्रह (क्. उ. से.) ।
 बटोही, सं. पुं. (हि. बाट) पन्थः, पथिकः ।
 बट्ठा, सं. पुं. (सं. वात्ता >) टोषः, कलकः ।
 —खाता, सं. पुं., अप्राप्यधनलेखः ।
 बट्ठा, सं. पुं. (सं. बटकः) पेषणप षणः,
 कुट्टनप्रस्तरः २. प्रस्तरादीनां वर्तुलखण्डः ।
 बट्ठा, सं. पुं. (सं. बटः) दे. 'बट' ।
 बट्ठा, वि. (हि. 'बड़ा' से, समास के आरम्भ
 में ही) दे. 'बड़ा' ।
 बट्ठपन, सं. पुं. (हि. बड़ा) श्रेष्ठता, महत्ता,
 गौरवम् २. वयस्कता, प्रौढ़ता ।
 बट्ठबड, सं. स्त्री. (अनु.) प्र-जल्पः, व्यर्थवचनम् ।
 बट्ठबडाना, कि. अ. (अनु. बट्ठबड) प्र-जल्प
 (स्वा. प. से.) २. अक्षतोषेण नीनीः बड
 (स्वा. प. से.) ।
 बट्ठबोला, वि. (हि. बड़ा + बोल) विकल्पक,
 विकल्पनशील ।
 बट्ठभागी, वि. (हि. बड़ा + भाग) महाभाग्य,
 सुभाग, भाग्यशालिन ।
 बट्ठजं, सं. स्त्री. (सं. बडवा) घोडी, तुरंगी
 २. बडवाग्नि ।
 बट्ठवानल, सं. पुं. (सं. बडवानलः) बडवाग्निः,
 बडवामुखः ।
 बडा, (सं. बृध् >) आवत, विस्तृत,

विशाल २. महत्, गुरु ३. बयोवृद्ध, अधिक-
 वयस्क ४. उत्तम, श्रेष्ठ ५. अधिक, अतिशयिन ।
 सं. पुं., धनाढ्यः २. महापुरुषः ।
 बडाई, सं. स्त्री. (हि. बड़ा) मानः, गौरवम् ।
 नहत्ता, प्रतिष्ठा २. वृद्धता, गुरुत्वम् ।
 बडी, सं. स्त्री. (सं. बटी) बटिका, वैदल-
 शिनी, बटिका ।
 बडई, सं. पुं. (सं. बडकिः) तक्षकः, तक्षन्,
 बडकिन्, त्वष्टृ, छादः ।
 बडती, सं. स्त्री. (हि. बडना) उन्नतिः-वृद्धिः
 (स्त्री.), उपचयः, उत्कर्षः ।
 बडना, कि. अ. (सं. बडनम्) बृध् (स्वा.
 आ. से.), उपचि (कर्म.), वृद्धि प्राप् (स्वा.
 उ. अ.), एप्स्फाप्-आप्याप् (स्वा. आ. से),
 बृह् (स्वा. तु. प. से.) । सं. पुं., दे. 'बडती' ।
 बडा हुआ, वि., उन्नत, वृद्ध, उपचित, स्फीत,
 पीन, आप्यान ।
 बडाना, कि. स., व. 'बडना' के धातुओं के
 प्रे. रूप ।
 बडिया, वि. (हि. बडना) महर्ष, बहुमूल्य
 २. उत्कृष्ट, गुणवत् ।
 बणिक्, सं. पुं. (सं. वणिक्) षण्माजीवः, दे.
 'बनिया' ।
 बतकही, सं. स्त्री. (हि. बात + कहना) वार्ता-
 लापः २. विवादः ।
 बतख, सं. स्त्री. (अ. बत) बरटः, कादंबः,
 'हंसजातीय-खगमेदः' ।
 बतलाना, कि. स. (हि. बात कथ-वर्ण (चु.),
 आख्या (अ. प. अ.), आचक्ष् (अ. आ.),
 निविद् (प्रे.) २. बुध-ज्ञा (प्रे.) ३. निर्दिष्ट
 (तु. प. अ.), प्रवृत्त (प्रे.) । सं. पुं., कथनं,
 वर्णनं, निवेदनं, श्रावणं, बोधनं, ज्ञापनं, निर्देशः,
 प्रदर्शनम् ।
 बतलाने योग्य, वि., कथनीय, वर्णनीय, आख्येय ।
 —बाला, सं. पुं. आख्यात, कथकः, वर्णयित्
 २. बोधकः, ज्ञापकः ३. निर्देशकः, प्रदर्शकः ।
 बतलाया हुआ, वि., कथित, वर्णित, श्रावित,
 बोधित, ज्ञापित ३. निर्दिष्ट, प्रदर्शित ।
 बताना, कि. स., दे. 'बतलाना' ।
 बताना, सं. पुं. (हि. बतान) फूल सिताबुदबुदः
 बतानाशः ।
 बत्ती, सं. स्त्री. (सं. बत्तिः) बत्ती, वार्तिका
 तैलिनी, झिल्ली २. दीपः ।

बन्तीस, वि. [सं. द्वाविंशत् (नित्य स्त्री.)]
 सं. पुं., उक्ता संख्या तद्वन्ती (३२) च ।
 —बॉ, वि., द्वाविंशत्तमः-नीमं, द्वाविंशत्-
 शीशम् ।
 बन्तीसी, सं. स्त्री. (हि. बन्तीस) द्वाविंशत्पर्याय-
 समूहः १. मानवदन्तसमूहः, दशनावलिः
 (स्त्री.) ।
 बन्धुआ, सं. पुं. (सं. बन्धुका) शाहराजः,
 राजशाहः, शाहश्रेष्ठः ।
 बद्ध, वि. (का.) दुष्ट, राप, हल, मोच ।
 —क्रिस्मत, वि., मन्दभास्य ।
 —चलन, वि., दुर्बल, कुचरित ।
 —जबान, वि., कटुभाषित, दुर्भाषिन् ।
 —ज्ञात, वि., नीच, धुद, निरुद्ध ।
 —जमीन, वि., अशिष्ट, असन्ध, ग्राम्य ।
 —नीयन, वि., बन्धक, दुराशयः ।
 —परहेज, वि., कुपथ्यमेविन् ।
 —परहेजी, सं. स्त्री., कुपथ्यम् ।
 —बू, सं. स्त्री., दर्गन्था, दे. ।
 —मादा, वि., दुर्बल, दुर्भरिन् ।
 —शकल, वि., कुरूप, दुर्दर्शन ।
 —हजामी, सं. स्त्री., अजीर्ण, अग्निमान्ध,
 अपाक ।
 बदन, सं. पुं. (का.) शरीरं, देहः, कायः ।
 —दूटना, सु., अंगसंधिषु-अवयवसंधिषु वेदना-
 नुभवः (ज्वरपूर्वरूपम्) ।
 —में आम लगाना, सु., अत्यन्तं कुप (हि. प.
 से.) कुप (हि. प. अ.) । १. अतीव हस्तत
 (वि.) मू ।
 —साँचे में ढला होना, सु., लक्षण-सौन्दर्य,
 अतिशयः-अतिशय्यम् ।
 —सूख कर काँटा हों जाना, सु., अत्यर्थ
 कुश-क्षीण-शुष्कांग (वि.) भू ।
 बदर्, सं. पुं. (सं.) बदर्, बदरिका, बदरं,
 बदरीफलम् ।
 बदलना, क्रि. अ. (अ. बदल) स्थानान्तर-
 रूपान्तर-अवस्थान्तरं गन्, अन्यथा भू, विकृ
 (कर्म.), परिवृत्त (भ्वा. आ. से.), विपर्यय
 (दि. प. से.) । क्रि. स., परिवृत्त (प्रे.),
 अन्यथा कृ, विकृ, विपर्यय (प्रे.), विनिमे
 (भ्वा. आ. अ.) । सं. पुं., अवस्थान्तर-
 रूपान्तर-अवस्थान्तर, प्राप्तिः (स्त्री.), परिवर्तनं,

विनिमयः, विक्रिया, विपर्यासः, परिवृत्तिः,
 (स्त्री.), विपरिणामः ।
 बदला, सं. पुं. (हि. बदलना) विनिमयः,
 आदानप्रदानम् २. प्रतिशोधः, प्रति(ती)कारः
 ३. परिणामः, फलम् ।
 बदलाना, क्रि. स., दे. 'बदलना' क्रि. स. ।
 बदलो, सं. स्त्री. (हि. बदलना) परिवृत्तिः
 (स्त्री.), परिवर्तनम् ।
 बदाबदी, सं. स्त्री. (सं. वद. >) वैरं, द्वेषः,
 विरोधः २. प्रतिस्पर्धा ।
 बद्दौलत, क्रि. वि. (का.) कृपा, अनुग्रहण
 २. कारणेन, साधनेन, द्वारा ।
 बद्ध, वि. (सं.) नियमित, बन्दी, कृत-भूत,
 संवत ।
 —कोष्ठ, सं. पुं. (सं.) मलावरोधः, विदग्धः ।
 बधाई, सं. स्त्री. (सं. बर्धनं >) बधापनं, वृद्धि
 बचनं, अभिनन्दनम् ।
 —देना, क्रि. स., बधापनं दा (लु. उ. अ.) ।
 बधिवा, सं. पुं. (हि. बध=मारना) नपुंसकः
 पशुः, पण्डीकृतः चतुष्पादः ।
 बधिर, वि. (सं.) अकर्ण, एह, श्रोत्रविकल ।
 बधुटी, सं. स्त्री. (सं. बधुटी), दे. 'बधु' ।
 बन, सं. पुं. (सं. वनम्) अरण्यं, काननं,
 कांठारः ।
 —चर, सं. पुं., अरण्यवासिन्, आठविकः ।
 —बास, सं. पुं., वनवासः, अरण्यवासः ।
 बनजारा, सं. पुं. (हि. वनज) द्रव्यवसाविन्,
 वाणिज्यजीविन् २. वणिज्, दे. 'बनिया' ।
 बनना, क्रि. अ. (सं. वर्णनं >) निर्मा-रच-
 विधा-अनुष्ठा (कर्म.) ।
 बना हुआ, वि. निर्मित, रचित, विहित, कृत,
 सृष्ट, संपन्न, निष्पन्न ।
 बनमानुस, सं. पुं. (सं. वनमानुषः) वानर-
 भेदः २. असभ्यमानवः ।
 बनवाड़े, सं. स्त्री. (हि. वनवाना) निर्माण-
 भृतिः (स्त्री.)-शुल्काः ।
 बनवाना, क्रि. प्रे., व. 'बनाना' के प्रे. रूप ।
 बनात, सं. स्त्री. (हि. वाना) उत्तमौर्णभेदः ।
 बनाना, क्रि. सं. (हि. बनना) निर्मा (अ.
 प. अ., लु. आ. अ.), रच् (लु.), कृ,
 क्लृप्-वट् (प्रे.) २. जन्-उत्पद् (प्रे.)
 ३. संपद-स्थाप् (प्रे.), अनुष्ठा (भ्वा. प. अ.),

शब्दाने योग्य

[४१४]

बरसना

विधा: (जु. उ. अ.) ४. अव-उप-पत् (भ्वा. प. से.) । सं. पुं., रचनं, करणं, निर्माणं, कल्पनं, जननं, उत्पादनं, संपादनं, अनुष्ठानम् ।

बनाने योग्य, वि., निर्मातव्य, रचनीय, करणीय, विधेय, अनुष्ठेय, जनयितव्य ।

—बाला, सं. पुं., निर्मातृ, रचयितृ, विधायकः, जनयितृ, उत्पादकः, अनुष्ठाय ।

बनाया हुआ, वि., निर्मित, रचित, कल्पित, बिहित, जनित, उत्पादित, अनुष्ठित, संपादित ।

बनारसी, वि. (हि. बनारस) काशीरथ, वाराणसेय ।

बनाव, सं. पु. (हि. बनाना) निर्माणं, रचना २. शृंगारः, अलंकरणम् ।

बनावट, सं. स्त्री. (हि. बनाना) रचन-ना, रचनाकौशलं, घटना २. आडंबरः ३. कृत्रिमता ।

बनावटी, वि., (हि. बनावट) कृत्रिम, कृतक, अनैसागिक ।

बनिया, सं. पुं. (सं. वणिज्) नेगमः, सारथवाहः, क्रयविक्रयिकः, पण्याजीवः २. आपणिकः, विपणिन् ।

बनिरखत, अव्य. (फा.) अपेक्षया, तुलनायाम् २. उद्दिश्य, अधिकृत्य ।

बबर, सं. पुं. (फा.) केसरिन्, हरिः, सिंहः ।

बबूल, सं. पुं. (सं. बभ्रुः) कण्डालः, तीक्ष्ण-कटकः, स्वर्णदुष्पः, सुरमकटकः, कफान्तकः ।

बब, सं. पुं. (अ. बाब) अग्निगोलकास्त्रम् ।

बब्या, सं. पुं. (सं. बयनम् >) वयः, खगभेदः ।

बब्यान, सं. पुं. (फा.) वर्णनं, कथनम् २. वृत्तान्तः, उद्दन्तः ।

बबयाना, सं. पुं. (अ. बै) दे. 'पेशगी' ।

बब्यार, सं. स्त्री. (सं. बायुः) पवनः, वातः ।

बब्यालीस, वि. [सं. द्वि(द्व)चत्वारिंशद (नित्य स्त्री.)] । सं. पुं., उक्ता संख्या, तर्दकौ (४२) च ।

—बाँ, वि., द्वि(द्व)चत्वारिंशत्तमः-मी-मम्, द्वि(द्व)चत्वारिंशः-शी-शम् ।

बबासी, वि. [सं. द्रव्यतीतिः (नित्य स्त्री.)] सं. पुं., उक्ता संख्या, तर्दकौ (८२) च ।

बरकत, सं. स्त्री. (अ.) सम्पत्तिः-समृद्धिः-निभूतिः (स्त्री.) ।

बरपत्रास्त, वि., (फा.) विसृष्ट, विसृजित २. पदच्युत, अष्टाधिकार ।

—करना, कि. स., विसृज् (तु. प. अ.) २. पदाव च्यु (प्रे.) ।

बरगद, सं. पुं., दे. 'बट' ।

बरछा, सं. पुं. (सं. ब्रश्म्) कुन्तः, प्रासः, शक्तिः (स्त्री.) ।

बरजोर, वि. (सं. बलं + फा. जोर) बलवत्, शक्तिशालिन् । कि. वि., बलाघ, हठाव ।

बरतन, सं. पुं. (सं. वर्तनं >) पात्रं, भाजनं, भाण्डम् ।

बरतना, कि. अ. (सं. वर्तनम्) व्यवहृ (भ्वा. प. अ.), आचर् (भ्वा. प. से.) । कि. स., उपयुज् (प्रे.), व्याप्त (प्रे.) ।

बरतामा, कि. स. (सं. वितरणम्) वितृ (भ्वा. प. से.), विभज् (भ्वा. उ. अ.) । सं. पुं., विभाजनं, वितरणम् ।

बरताव, सं. पुं. (हि. वर्तना) व्यवहारः, आचरणं, वृत्तिः (स्त्री.) ।

बरदार, वि. (फा.) बोदू, धारयितृ ।

बरदास्त, सं. स्त्री. (फा.) सहनं, मर्षणं, सहिष्णुता ।

—करना, कि. अ., सह् (भ्वा. आ. से.) ।

बरफ, सं. स्त्री. (फा. बर्फ) हिमं, घनबारी (न.) ।

बरफ़ी, सं. स्त्री. (हि. बरफ) *हिमी, पाचस-मिष्टान्नभेदः, मिष्टान्नभेदः ।

बरबस, कि. वि. (सं. बलं + बसः >) हठाव, बलाघ २. मुधा, अर्थम् (चारों अव्य.) :

बरबाद, वि. (फा.) नष्ट, ध्वस्त ।

बरसा, सं. पुं. (देश.) वैषनी, नक्षत्रोप-करणभेदः ।

बरसा, सं. पुं. (सं.) ब्रह्मदेशः ।

बरसी, सं. पुं. (हि. बरसा) ब्रह्मदेशवास्निन् । सं. स्त्री., ब्रह्मदेशमया ।

बरबा, सं. पुं. (देश.) एकोनविंशतिमाश्रात्मकः छन्दोभेदः, ध्रुव-कुरंग-छन्दस् (न.) ।

बरस, सं. पुं. (सं. वर्ष) वत्सरः, संवत्सरः, अम्दः ।

—गाँठ, सं. स्त्री., वर्षप्रणयिः, जन्म-दिन-दिवसः ।

बरसना, कि. अ. (सं. वर्षणं) वृप् (भ्वा. प. से.) । सं. पुं., वृष्टिः (स्त्री.), वर्ष-वर्षम् ।

बरसात, वि. (हि. बरसना) वर्षा: (स्त्री. बहु.), मेषागमः, प्रावृष् (स्त्री.), वर्षाकालः ।
 बरसाती, सं. स्त्री. (हि. बरसात) वर्षा, वृष्टिदारिणी ।
 बरसी, सं. स्त्री. (हि. बरस) वार्षिकं श्राद्धं, वार्षिकी मृत्युदिवसः ।
 बरांडा, सं. पुं. (अं. बेराण्डह्) प्रष(धा)णः, अलिदः, पिण्डकः ।
 बरांडी, सं. स्त्री. (अं.) सुरासारः, *संजीवनी सुरा ।
 बरात, सं. स्त्री. (सं. बरयात्रा) विवाहयात्रा, २. प्रमोदः ।
 बराती, सं. पुं. (हि. बरात) बरयात्रिकः ।
 बराबर, वि. (फ्रा. बर) सम, समान, तुल्य ।
 बराबरी, सं. स्त्री. (हि. बराबर) समानता, साम्यम् ।
 बरामद, वि. (फ्रा.) बहिरागत २. लब्ध ।
 बरामदा, सं. पुं. (फ्रा.) दे. 'बरांडा' ।
 बरी, वि. (फ्रा.) मुक्त, विमोक्त ।
 बरोडा, सं. पुं. (सं. दारन् >) देहली-लिः (स्त्री.) ।
 बर(री)नी, सं. स्त्री. (सं. वरणं >) पक्ष्मन्, वल्यु (दीनों न.) ।
 बराच, सं. पुं., दे. 'बराताव' ।
 बरक, सं. स्त्री., दे. 'बरक' ।
 बबर, वि. (सं.) नृशंस, निर्दय २. असभ्य, अशिष्ट ।
 बलंद, वि. (फ्रा.) उच्च, तुंग ।
 बल, सं. पुं. (सं. न.) सामर्थ्यं, शक्तिः (स्त्री.) २. पराक्रमः, शौर्यम् ३. सेना ४. बलदेवः ।
 बल्लाम, सं. स्त्री. (अ.) इलेभ्यन्, कफः, खेटकः, बलासः ।
 बल्लावा, सं. पुं. (फ्रा.) संश्लोभः, संमर्दः २. राजाभिद्रोहः, प्रजाश्लोभः ।
 बल्लवान्, वि. (सं. बल्ल) बलिन, बलशालिन, महाबल, वीर ।
 बल्लवान्, वि. (सं.) निर्बल, दुर्बल, अवल, अशक्त ।
 बला, सं. स्त्री. (अ.) आपत्तिः-विपत्तिः (स्त्री.) २. दुःखं, कष्टम् ३. प्रेतवाधा ४. रोगः ।
 बलात्, क्रि. वि. (सं.) इडाव, सरभसम् ।
 बलात्कार, सं. पुं. (सं.) साहसं, प्रमाथः २. इष्टभोगः, प्रसङ्गमननं, धर्षणम्, दूषणम् ।

बले, सं. स्त्री. (सं. पुं.) राज-स्व-करः-शुल्कः २. उपहारः, उपायनम् ३. पूजा, सामग्री-उपकरणं ४. बलिवेशदेवयज्ञः ५. देवभोज्यम् ६. भक्ष्यं, अन्नम् ७. नैवेद्यम् ८. देवतायै हस्तः पशुः ९. हत्यं, आहुतिः (स्त्री.) ।
 —चदाना, सु., देवतार्थं हन् (अ. प. अ.) ।
 —जाना, सु., दे. 'बलिहारी जाना' ।
 बलिदान, सं. पुं. (सं. न.) उत्सर्गः, परित्यागः, विनियोगः, समर्पणम् ।
 बलिष्ठ, वि. (सं.) बलवत्तम, शक्तिमत्तम् । सं. पुं., उभ्रः ।
 बलिहारी, सं. स्त्री. (सं. बलिहारः >) आत्मोत्सर्गः, आत्मसमर्पणं, आत्मनिवेदनम् ।
 —जाना, सु., आत्मानं समर्पं (प्रे.)-उत्सृज् (तु. प. अ.) ।
 बली, वि. (सं. लिय) सबल, बलवत्, बल-शक्ति-शालिन, महाबल, वीर ।
 बलिक, अव्य. (फ्रा.) प्रयुत, अपि तु, अपि ।
 बल्लम, सं. पुं. (सं. बलं=शाला >) दष्टिः (स्त्री.), दंडः, लघुदः २. सुवर्ण-रजत-दंडः ३. कुन्तः, प्रासः ।
 बल्लमटेर, सं. पुं. (अं. बाल्लियर) स्वयंसेवकः ।
 बल्ला, सं. पुं. (सं. बलं=शाला >) लघुदः, २. स्मूलदंडः ३. नौकादंडः ४. कन्दुकनीडापट्टः ।
 बबल्लर, सं. पुं. (सं. बाबुमंडलं >) चक्रवातः, वातावर्तः, वातभ्रमः २. वाद्या, हंशावातः ।
 बबासीर, सं. स्त्री. (अ.) अर्शस् (न.), गुदाकुरः, गुदकीलकः, दुर्नामकम् । (खूनी) रक्षाशैस् (बादी) वात-शुष्क-अर्शस् (न.) ।
 बसंत, सं. पुं., (सं.) वसन्तः दे. ।
 —पञ्चमी, सं. स्त्री., श्रीपंचमी, माघशुक्ल-पंचमी ।
 बस, अव्य., वि. (फ्रा.) अलं, पर्याप्तं २. वसः, अधिकारः ३. केवलम् ।
 बसना, क्रि. अ. (सं. बसनं >) नि-अधि-प्रति-वस् (भ्वा. प. अ.), स्वा (भ्वा. प. अ.) २. अधिवस्, अधिष्ठा । सं. पुं. अधि-प्रति-नि-वासः-वसनं-वसतिः (स्त्री.) ।
 बसने घोष्य, वि., वासोचित ।
 —वाला, सं. पुं., अधि-नि-वासिन ।
 बसा हुआ, वि., अध्युषित, अधिष्ठित ।
 मन मैं—, सु., सदा सृष्टि (कर्म.) ।

बसना

[४१६]

बहु

बसना^२, कि. अ. (हि. बास=बंध) सुगंधित (वि.) भू।
 बसर, सं. पुं. (फा.) निर्वाहः, कालयापनम्।
 बसाना, कि. स. (हि. बसना) अधिवसु-निवसु (प्रे.)।
 बमूला, सं. पुं. (सं. वसतिः पुं. स्त्री.) तक्षणी।
 बसेरा, सं. पुं. (हि. बसना) आवासः, निवासः २. वासः, वसतिः (स्त्री.)।
 बस्ता, सं. पुं. (फा. नह्) पोद्दलिका, कूर्चः।
 बस्ती, सं. स्त्री. (सं. वसतिः) निवासः २. ग्रामः, ग्रामटिका।
 बडैगी, सं. स्त्री. (सं. विहंगिका) वेणुशिक्ष्या, स्कंधवाहनी।
 —का छीका, सं. पुं., विहंगिकाशिक्ष्या।
 बहकना, कि. अ. (हि. बहना) अतिसंधा, (कर्म.), बन् (कर्म.) २. पथभ्रष्ट (वि.) भू ३. लक्ष्यभ्रष्ट (वि.) भू ४. मद् (दि.प.से.)।
 बहकाना, कि. स. (हि.) 'बहकना' के प्रे. रूप बनाएँ।
 बहकर, वि. [सं. द्विसप्ततिः (नित्य स्त्री.)] सं. पुं., उक्ता संख्या, तर्कौ (७२) च।
 —वाँ, वि., द्विसप्ततितमः-मी-मं, द्विसप्ततः-ती-तम्।
 बहन, सं. स्त्री. (सं. भगिनी) दे. 'बहिन'।
 बहना, कि. अ. (सं. बहनम्) बह् (भ्वा. उ. अ.), क्षर (भ्वा. प. से.), सृन्तु (भ्वा. प. अ.)। सं. पुं., बहनं, क्षरणं, सरणं, स्रावः, लुतिः (स्त्री.)।
 बहनावा, सं. पुं. (हि. बहन) स्वसत्त्वं, भगिनीत्वम्।
 बहनोई, सं. पुं. (हि. बहन) आहुतः, नशिकः, स्वसृपतिः, भगिनीभर्तुं।
 बहनौता, सं. पुं., दे. 'भाँजा'।
 बहरा, वि. पुं. (सं. बधिरः) पङ्कः, अकर्णः, अश्रोत्रः।
 बहलना, कि. अ. (हि. बहलाना) चित्त-विनोदः जन् (दि. आ. से.)।
 बहलाना, कि. स. (फा. बहाल) चित्तं रंज-विनुद-नन्द (प्रे.)।
 बहलाव, सं. पुं. (हि. बहलना) विनोदः, मनोरंजनम्।
 बहली, सं. स्त्री. (सं. बहल=बैल) रथ-सदृशी वृषशकटी।

बहस, सं. स्त्री. (अ.) वादः, वादप्रतिवादः, ऊहापीहः, प्रश्नोत्तरम्।
 —करना, कि. अ., वादप्रतिवादं कृ, विवद् (भ्वा. आ. से.)।
 बहादुर, वि. (फा.) शूर, वीर, बलिष्ठ, पराक्रमिन्।
 बहादुरी, सं. स्त्री. (फा.) वीरता, शूरता, पराक्रमः।
 बहाना^१, कि. स., व. 'बहना' के प्रे. रूप।
 बहाना^२, सं. पुं. (फा. नह्) मिषं, व्याजः, छलम्।
 —करना, कि. अ., व्यपदिश (तु. प. अ.)।
 बहार, सं. स्त्री. (फा.) शोभा, श्रीः (स्त्री.), दर्शनीयतः २. मधुमासः, वसन्तर्तुः ३. मनो-विनोदः।
 बहाल, वि. (फा.) पूर्ववत् स्थित, पदारूढ २. स्वस्थ, ३. प्रसन्न।
 बहाव, सं. पुं. (हि. बहना) प्रवाहः, स्रावः २. धारः, मन्दाकः, स्रोतम् (न.)।
 बहिन, सं. स्त्री. (सं. भगिनी) स्नेहरा, स्नेहोदरा, स्वसृ, जामिः (स्त्री.)।
 छोटी—, अनुजा; बड़ी—, अग्रजा, अर्तिका।
 बहिरंग, वि. (सं.) बाह्य, बहिर्भव, बहिः-स्थित।
 बहिस्त, सं. पुं. (फा. निहिस्त) स्वर्गः, नाकः। २. सुखावासः।
 बहिष्कार, सं. पुं. (सं.) अपसरणं २. निष्कासनम्, विवासनम्।
 बहिष्कृत, वि. (सं.) अपसरित २. विवासित, निष्कासित।
 बही, सं. स्त्री. (हि. बैधी?) आयव्यय-पंजी-जिः (स्त्री.)।
 बहु, वि. (सं.) अधिक, अनेक २. प्रचुर, बहुल।
 —क्षीरा, सं. स्त्री. (सं.) बहुल-प्रचुर, दुग्धा-स्तन्या गौः (स्त्री.)।
 —गंधा, सं. स्त्री. (सं.) १. यूथी, यूथिका, हेमयूथिका, कनकप्रभा। २. धूपक, कलिका-कोरकः ३. कृष्णजीरकः।
 —गुण, वि. (सं.) प्रचुर सत् २. प्रचुर-विशेष।
 —जल्प, वि. (सं.) वाचाल, मुखर, जल्प- (पा) क।

बहुकर, सं. स्त्री. (सं. बहुकरी) समाजनी,
शोधनी । वि., परिश्रमिन् ।
बहुत, वि. (सं. बहुतर) अस्त्रेण २. यथेष्ट,
पर्याप्त ३. प्रचुर, विपुल, भूरि ।
बहुतायत, सं. स्त्री. (हि. बहुत) अतिसायः,
आधिक्यम् २. पर्याप्तता ।
बहुधा, क्रि. वि. (सं.) प्रायः, प्रायशः (दोनों
अव्य.) २. बहुप्रकारैः ।
बहुभाषी, वि. (सं.-विन्) वाक्वाल ।
बहुमूल्य, वि. (सं.) महार्थं, दुष्क्रेय ।
बहुसंज्ञा, वि. (सं.-ग) चित्रविचित्र, अनेकवर्ण
२. बहुवैश ३. चलचित्र ।
बहुसंज्ञाया, वि. (सं. बहुसंज्ञा) वैशान्तिविन्,
बहुसंज्ञक ।
बहु, सं. स्त्री. (सं. बहुः) बहुटी, नवीदा,
नववधुः ।
बहुधा, सं. पुं. (सं. विभोक्तकः) कलिद्रुमः,
भूतवासः ।
बोका, वि. पुं. (सं. बंकः) तिर्यञ्च, वक्र,
कुटिल, २. सुन्दर, मनोहर ३. वैशमानिन्,
रूपगान्ति ।
बोका, सं. स्त्री. (फा.) प्रातः कुक्कुटनादः
२. बवनपुरोहितस्य पूजासमेयसचकोमहानादः ।
बोका, सं. स्त्री. (सं. बोधा दे.) ।
बोटना, क्रि. स. (बटनम्) विभञ्ज (भ्वा.
उ. अ.), अंशुन्दे (चु.), परिकल्प (प्रे.),
वधाभासं विवृ (भ्वा. प. से.) । सं. पुं.,
अंशानं, बटनं, परिकल्पनं, विभाजनं, वितरणम् ।
बोटनं चोम्भ, वि., अंशनाथ, बटनीय, विभाज्य ।
—वाला, सं. पुं., विभाजकः, अंशयितृ ।
बोटा हुआ, वि., विभक्त, विभाजित, वंशित ।
बोटी, सं. स्त्री. (फा. बंदा) दासी, सेविका,
परिवारिका ।
बोध, सं. पुं. (हि. बोधिना) बंधः, कैतुः ।
बोधना, क्रि. स. (सं. बोधनम्) बंध् (कृ.
प. अ.), संनि, यम् (भ्वा. प. अ.), पिनद्ध
(दि. प. अ.), बंध् (कृ. प. से.); भ्वा. आ.
से., चु.) । सं. पुं., बंधनम्, संनि, यमनं,
पिनाहः, अर्धबंधनम् ।
बोधा हुआ, वि., बद्ध, नियत, संयत, पिनद्ध,
मथित ।

बोधव, सं. पुं. (सं.) अंशकः, दायादः,
सगोत्रः, सकुल्यः, शातिः ।
बोधव्य, सं. पुं. (सं. न.) सगोत्रता, रक्त-
सन्तन्धः, बन्धुता, बन्धुत्वम् ।
बोधी, बोधी, सं. स्त्री. (सं. वल्मीकः) >
वल्मीक-नामहर वस्त्री, कुट्ट-शैलः । २. सर्प-
अहि, विवर-विलम् ।
बोस, सं. पुं. (सं. वंशः) वेणुदंडः, तुण्डवजः,
वेणुः, कीचकः, त्वक्सारः, सृत्युपुष्पः ।
—पर चढ़ना, मु., अपकीर्ति-उच्छूर्ति-वाच्यताम्
लभ् (भ्वा. आ. अ.) ।
—पर, चढ़ाना, मु., कुख्याति-अपकीर्ति कृ ।
—बाराबर, मु., अति, दीर्घ-आयत-लंब ।
—(सौं) उच्छलना, मु., अत्यर्थं मुद् (भ्वा.
आ. से.) ।
बौह, सं. स्त्री. (सं. बाहुः पुं.) भुजः-जा ।
बाहुस्विकल, सं. स्त्री. (अं-साहकल) द्विच-
क्रिका, पादयानम् ।
बाहुँ, सं. स्त्री. (सं. बाहुः) वान, दोषः-रोगः ।
बाहुँ, सं. स्त्री. (हि. नाबा) कुलदधूनामादर-
सूचकः शब्दः, देवी २. वैश्या ।
बाहुँस, वि. (सं. द्वाविंशतिः नित्य स्त्री.) ।
सं. पुं., उक्ता संख्या, तदकौ (२२) च ।
—बाँ, वि., द्वाविंशतितमः-मी-मं, द्वाविंशः-
शी-शम् ।
बाहुँ, क्रि. वि. (हि. बायाँ) वामतः, वाम-
सव्य, पार्श्व ।
बाकी, वि. (अ.) अवशिष्ट, उद्धृत्त । सं. पुं.,
अव, शेषः ।
बाग, सं. पुं. (अ.) उपवनं, उद्यानम्, आरामः ।
बाग, सं. स्त्री. (सं. बल्गा) अभीष्टुः, प्रग्रहः,
रश्मिः ।
बागडोर, सं. स्त्री. (सं. बल्गा+डोरः) दे.
'बाग' २. प्रसुत्वं, अधिकारः ।
बागवान, सं. पुं. (फा.) मालिकारः, मालिकः,
उद्यानपालः ।
बागी, वि. (अ.) विद्रोहिन्, राजद्रोहिन् ।
बागीचा, सं. पुं. (फा. बागचह) कुसुमोद्यानं,
पुष्प-वाटिका ।
बाघ, सं. पुं. (सं. व्याघ्रः) चुल्लकः, भेलः,
चन्द्रकिन्, हिसारः, व्याडः, मृगान्तकः ।

बाज्ञ^१, सं. पुं. (अ.) श्येनः, कपोतारिः, शशादनः ।

बाज्ञ^२, वि. (का.) रहित, हीन ।

—आना, कि. अ., त्यज्-परिहृ (भ्वा. प. अ.) ।

—रखना, कि. स., नि-प्रति-पिध् (भ्वा. प. से.) ।

बाज्ञ^३, प्रत्य. (क.)-प्रिय, शील, सेविन् (उ. नशेवःञ = मघसेविन्) ।

बाज्ञ^४, वि. (अ.) केनित्, काश्चित्, कानिचित् ।

बाजरा, सं. पुं. (सं. वजरी) वज्रकः ।

बाजा, सं. पुं. (सं. बाधम्) वादित्रं, वादनयंत्रम् ।

बाजावदा, कि. वि. (क.)-नह् (नियमानुसारं,

वधाविधि (न.) । वि., वैध, नियमानुकूल ।

बाजार, सं. पुं. (का.) आपणः, निषधा, हट्टः,

विपणोणिः (स्त्री.), पण्यवीथिका, निगमः, पणिः (स्त्री.) ।

बाजारी, वि. (का.) आपणिक २. साधारण ३. अशिष्ट ।

बाज़ी, सं. स्त्री. (का.) क्रीडा, खेला २. पणः, बलहः ।

—गर, सं. पुं., रज्जुनतकः ।

बाज़ू, सं. पुं. (का.) बाहुः, दे. 'बाँह' ।

—बाँद, सं. पुं. (का.) कैयूरः-रं, अंगदः-दम् ।

बाट^१, सं. पुं. (सं. वाटः-टम्) मार्गः, पथिन्, अध्वन्, वर्तमान् (न.) ।

—जोहना, कि. स., प्रतीक्ष् (भ्वा. आ. से.) ।

बाट^२, सं. पुं. (सं. वटकः) भारमानं, माडः, मात्रम् ।

बाटी^१, सं. स्त्री. (सं. वटी) वटिका, गुलिका २. अंगारपक्वरोटिका ।

बाटी^२, सं. स्त्री. (सं. वतुल) पारी, पात्रभेदः ।

बाढ़, सं. स्त्री., दे. 'बाढ़' ।

बाढ़व, सं. पुं., दे. 'बड़वानल' ।

बाढ़ा, सं. पुं. (सं. वाटः-टं) अंगन-जं, प्रांगणं, अजिरं, चत्वरः-रम् २. गोष्ठः, ब्रजः ।

बाड़ी, सं. स्त्री. (सं. वटी) दे. 'बाड़ा' (१) । २. पुष्पः, वाटिका ३. पुरभागः ।

बाड़ीगाड़ी, सं. पुं. (अं.) अंगरक्षकः, तनुपः ।

बाद, सं. स्त्री. (हि. बढ़ना) आप्लावः, संश्लवः, तोयविप्लवः २. आधिक्यं, वृद्धिः (स्त्री.) ।

बाण, सं. पुं. (सं.) श्शुः, शरः, विशिखः, आशुगाः, सायकः, मार्गणः, रोपणः, पत्रिन्, चित्रपुंसः ।

बाणिक्य, सं. पुं. (सं. न.) क्रयविक्रयौ, वणिक्यमन्त्रं (न.) ।

बात, सं. स्त्री. (सं. वार्ता) वचनं, कथनं,

उक्तिः (स्त्री.), वाक्यं, भाषितम् २. वर्षान्तम्

३. किंवदन्ती, प्रवादः ४. वृत्तान्तः ५. संदेशः

६. वार्तिकसः, वार्तालापः ७. मित्रं, व्याजः

८. प्रतिज्ञा, संग्रहः ९. विश्वासः, प्रत्ययः

१०. प्रतिष्ठा ११. उपदेशः १२. रहस्यम्

१३. स्तुत्यविषयः १४. गूढ-अर्थः-आशयः

१५. उत्कर्षः, गुणः १६. तात्पर्यं, अभिप्रायः

१७. इच्छा १८. आचरणम् ।

—का बतंगढ़ बनाना, मु., अत्युक्त्या वण् (जु.), षण् पर्वतीकृ ।

—की बात में, मु., झटिति, सपदि ।

—न पूछना, मु., अवगण्-अवधीर (जु.) ।

—बनना, मु., कार्यं सिध् (दि. प. अ.) ।

—बिगड़ना, मु., कार्यं विकलीभू ।

बातचीत, सं. स्त्री. (हि. बात+सं. चितन) संवादः, संभाषणं, वार्तालापः, आलापः ।

बातनी, वि. (हि. बात) बहुभाषिन्, वाचालः, वाचाटः, जलकः, बावदुकः, बलाकः ।

बाथ, सं. पुं. (अं.) दे. 'स्नान' ।

—रूम, सं. पुं. (अं.) दे. 'स्नानगृह' ।

बाथू, सं. पुं. दे० 'बथुआ' ।

बाद^१, अव्य. (अ.) पश्चात्, अनन्तरम् ।

—अज्ञां, अव्य., अतोऽनन्तरम् ।

बाद^२, सं. पुं. (का.) वायुः (२) अश्वः ।

—(दे) सिञ्जां, सं. स्त्री., शिशिरानिलः ।

—(दे) बहारी, सं. स्त्री., वसन्तानिलः ।

बादबान, सं. पुं. (का.) वातवसनम् ।

बादल, सं. पुं. (सं. वारिदः) घनः, जलदः, नीमूतः, वारिवाहः, मेघः, अश्वः, कंधरः, अश्वं, जलपयो, मुच्, धाराधरः, धूमवीनिः, नभोगजः, बलाहकः, वातरथः, स्तनयित्नुः, ध्योमधूमः ।

बादशाह, सं. पुं. (का.) नृपः, भूपतिः ।

बादशाही, सं. स्त्री. (क.) राज्यम्, शासनाधिकारः २. शासनम् ३. स्वच्छाचारः ।

बादाय, सं. पुं. (का.) (कृष्) वातादः, वातामः, नेत्रोपमफलः । (फल) वातादः, वातामं, नेत्रोपमफलम् ।

बादासी, वि. (क.) बादान) वातादवर्णः, वातामीय ।

बादी

[४१६]

बालू

बादी, वि. (फ़ा.) वायव्य, पवनविषयक
२. वातीय, वातविकारविषयक ३. वातविकार-
रोतादक । सं. स्त्री., वात, विकारः-दोषः ।
बाधक, वि. (सं.) प्रतिबन्धक, विघ्नकारिन् ।
बाधा, सं. स्त्री. (सं.) विघ्नः, अन्तरायः,
प्रत्युहः, व्याघातः, प्रतिबन्धः-२. वातना, वेदना ।
—डालना, क्रि. सं., प्रतिबन्ध् (क. प. अ.),
प्रतिरुध् (स्वा. उ. अ.) ।
बानर, सं. पुं. (सं. वानरः) दे. 'बंदर' ।
बानचे, वि. (सं. वानवतिः निरय स्त्री.) ।
सं. पुं. उक्ता संख्या, तदंकी (१२) च ।
बाना, सं. पुं. (हि. वाना) वेशः-पः,
वेशविन्यासः २. रीतिः (स्त्री.), प्रथा ।
बाना, सं. पुं. (सं. वयनम्) तिर्यक्तन्तवः
(पुं. बहु.) ।
बानी, सं. पुं. (अ.) संस्थापकः, पवनकः ।
बाप, सं. पुं. (सं. बापः) पित्र, जनकः ।
—दादा, सं. पुं. पूर्वजाः, पूर्वपुरुषाः ।
बाबा, अव्य. (अ.) अर्थ, अर्थ, हेतोः निमित्तेन ।
बाबा, सं. पुं. (तु.) पित्र २. पितामहः
३. मातामहः ४. वृद्धः ५. साधूनां संबोधनम् ।
बाबू, सं. पुं. (हि. बाबा) महाशयः, महानु-
भावः । वि., श्रीयुत, श्री ।
बायकट, सं. पुं. (अं.) संबधत्यागः, बहि-
ष्करणम् ।
बायबिडंग, सं. पुं. (सं. विडंगः-गम) वेष्टः-ल्ल,
अमोघा, कृमिघ्नः ।
बायलर, सं. पुं. (अं.) बाष्पित्रम् ।
बाबाँ, वि. (सं. वाम) सव्य, वामक, दक्षिणे-
तर, प्रतिलोम २. प्रतिकूल, विरुद्ध ।
बारंबार, क्रि. वि. (सं. बारं बारम्) पुनः-
पुनः, पौनःपुन्येन २. सततं, अनवरतम् ।
बार, सं. स्त्री. (सं. वारः) क्रमः, पर्यायः ।
—बार, क्रि. वि., दे. 'बारंबार' ।
बारदाना, सं. पुं. (फ़ा.) पण्यभाण्डं २. सैन्य-
भक्ष्यम् ।
बारबरदार, सं. पुं. (फ़ा.) भारदाहः, भारिकः,
वाहकः ।
बारह, वि. (सं. द्वादशन्) । सं. पुं. उक्ता
संख्या, तदंकी (१२) च ।
—बाँ, वि., द्वादशः-शी-शम् ।
—दूरी, सं. स्त्री., * द्वादशदूरा ।
—सिंगा, सं. पुं., द्वादशशृंगः, वृगभेदः ।

बारिश्, सं. स्त्री. (फ़ा.) वृष्टिः (स्त्री.)
२. प्रावृष् (स्त्री.) ।
बारी, सं. स्त्री., दे. 'वार' ।
—का खुखार, सं. पुं., *बरज्वरः, तृतीयकः,
तृतीयकज्वरः ।
बारीक, वि. (फ़ा.) सूक्ष्म, तनु ।
बारीकी, सं. स्त्री. (फ़ा.) सूक्ष्मता, तनुता
विशिष्टता ।
बारूद, सं. स्त्री. (तु.त) आग्नेय-अग्नि, चूर्णे,
स्फोटकचूर्णम् ।
—पाना, सं. पुं., स्फोटक-अग्निचूर्णे, आगार-
गृहम् ।
बारोठा, सं. पुं. (सं. कारम्) द्वार (स्त्री.),
प्रतिहारः २. द्वारः, पूजा-पूजनम्, वैवाहिकरीति-
विशेषः ।
बार्लर, सं. पुं. (अं.) (देश का) सीमा,
सामन्तं, समन्तः, पर्यन्तम् । २. (वस्तु का)
अन्तः, प्रान्तः, अन्तं, उपान्तम्, सीमा,
पर्यन्तम् ।
बार्लर, वि. (सं.) बर्बरदेशज ।
बार्लर, सं. पुं. (अं.) नापितः, क्षौरिकः ।
बाल, सं. पुं. (सं.) बालकः, शिशुः २. रो(लो)-
मन् (न.), शरीरं-कुंरं, तनुरुहः-इम् ३. शिर-
सिजः, शिरोरुहः-हं, केशः, कचः, कुन्तलः ।
बालक, सं. पुं. (सं.) पुत्रः, द्युतः २. बालः,
शिशुः, माणवः-बकः, किशोरः-रकः, मुष्टिधयः,
बहुः, बहुकः २. अज्ञानिन्, निर्बुद्धिः ।
बालटी, सं. स्त्री. (अं. बकोट) उदंचनं, सिरा ।
बालतोड़, सं. पुं. (सं. बालः-+हिं. तोड़ना)
* बालचोटः ।
बालम्, सं. पुं. (सं. बल्लभः) पतिः, भर्तृ
२. दयितः, प्रियः ।
बाला, सं. स्त्री. (सं.) प्रमदा, कामिनी
२. युवतिः (स्त्री.) ३. कन्या ४. पुत्री ।
बालिका, सं. स्त्री. (सं.) कुमारी, बाला,
कन्या २. पुत्री, तनया, तनुजा ३. कन्यका,
कुमारिका ।
बालिग, वि. (अ.) प्रौढ, व्यवहारशर, वयस्क ।
बालिस्त, सं. पुं. (फ़ा.) वितस्तिः (पुं.) ।
बाली, सं. स्त्री. (सं. बालीका) कर्णालंकारभेदः ।
बालुका, सं. स्त्री. (सं.) सिकता, शीतला,
महा-, सूक्ष्मा ।
बालू, सं. पुं. (सं.) बालुका दे. ।

—बाही, सं. स्त्री., मधुमण्डः ।
 बाल्य, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'बन्धन' ।
 बाबजूद, कि. वि. (फ्रा.) एवं सत्यपि, शक्ति स्थितेऽपि ।
 बाधन, वि. [सं. प्रापंचाशत (नित्य स्त्री.)] । सं. पुं., उक्ता संख्या, तदर्थः (५२) च ।
 —बाँ, वि., द्वि (द्वा) पंचाशत्तमः, मी-मम् ।
 बाबरची, सं. पुं. (फ्रा.) सूत्रः, पाचकः ।
 बाबला, वि. (सं. वातुल) विक्षिप्त, उन्मत्त २. मूर्ख ।
 बाबली, सं. स्त्री. (सं. वापी) वापिका, सोपानरूपः ।
 बाशिदा, सं. पुं. (फ्रा.) नि, वासिन्, वास्तव्यः ।
 बास, सं. स्त्री. (सं. वासः) सुगन्धः, सुवातः, परिमलः, सौरभं २. दुर्गन्धः, पूतिगन्धः ।
 बासठ, वि. [सं. द्विषष्टिः (नित्य स्त्री.)] । सं. पुं. उक्ता संख्या, तदर्थः (६२) च ।
 —बाँ, वि., द्वि (द्वा) पञ्चदशमः-मी-मं, द्वि (द्वा) षष्ठः-ष्टी-ष्टम् ।
 बासन, सं. पुं. (सं. वासनम्) दे. 'वसन' ।
 बासमती, सं. पुं. (सं. वासमती) वास-वद्रीहिः ।
 बासी, वि. (सं. वासिन्) निवासिन्, वास्तव्य २. शुष्क, म्लान, परुषित, व्युष्ट ।
 बाहर, कि. वि. (सं. बाहस्) बाह्यतः, बहिर्भवनम् ।
 बाहरी, वि. (हिं. बाहर) बाह्य, बहिःस्थ, बहिर्भव, बहिर्वर्तिन्, ब्रह्मिन् ।
 बाहु, सं. स्त्री. (सं. पुं.) दे. 'बाँह' ।
 बाहुत्प, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'बहुतायत' ।
 बिंदी, सं. स्त्री. (सं. विन्दुः) शून्यं, धम् २. अंकः, चिह्नम् ३. तिलकः-कं, चित्रकम् ।
 बिंदु, सं. पुं. (सं.) वणः, लवः, पृथक् २. दे. 'बिंदी' १-२. ३. भ्रमध्यम् ।
 बिंब, सं. पुं. (सं. पुं. न.) प्रतिच्छाया, प्रति-विबं-कृतिः (स्त्री.) २. भूर्ध्व-चन्द्र-मण्डल ३. विवफलम् ।
 बिकना, कि. अ. (सं. विक्रयणं) विक्री (कर्म.) ।
 बिकवाना, कि. प्रे. (हिं. बिकना) विक्री (प्रे., विक्रापयति) ।
 बिकाड, वि. (हिं. बिकना) विक्रेय, पण्य, विक्रयणीय ।

बिक्री, सं. स्त्री. (सं. विक्री) पणनं, विक्रयः, विक्रयणम् ।
 बिखरना, कि. अ. (सं. विकिरणम्) विप्रकृ (कर्म.) २. प्रसृ (भ्वा. प. अ.) ।
 बिखरा(खेर)ना, कि. स. (सं. विकिरणम्) अव-वि-कृ (तु. प. से.), आ-स्तृ (क्त. प. से.), विशिष् (तु. प. अ.) । सं. पुं. भाव, अव-वि-किरणं, विक्षिपः, आस्तरणम् ।
 बिगडना, कि. अ. (सं. विकरणम्) विकृ (कर्म.), दुष् (दि. प. अ.), क्षि (कर्म.), दुर्दशां प्राप् (स्वा. प. अ.) २. उन्मार्गं गम्, सुपथभ्रष्ट (वि.) भू ३. कुप (दि. प. से.) ४. दुर्दान्त (वि.) जद (दि. आ. से.) ।
 बिगडा हुआ, वि., विकृत, दूषित, क्षीन, २. दुर्ललित ३. दुर्दान्त ।
 बिगाडना, कि. स. (हिं. बिगडना) दुष् (प्रे.) आविलयति-मठिनदनि-कलुषयति (ना. धा.) २. सन्मार्गात् भ्रष्ट (प्रे.) ३. अत्यन्तं लल् (चु.) ।
 बिगुल, सं. पुं. (अं.) शाहलः-लं-लः ।
 बिचकाना, कि. अ. (अनु.) मुखं विरूप (तु.) आननं बक्रोक् ।
 बिचला, वि. (हिं. बीच) मध्यम, मध्यवर्तिन् ।
 बिचवई, सं. पुं. (हिं. बीच) प्रमाणपुरुषः, निर्णेतु, मध्यस्थ, मध्य-वर्तिन्-स्थाविन्, सन्धायक । सं. स्त्री., मध्यस्थता, माध्यस्थ्यम्, निर्णायकत्वम् ।
 बिच्छू, सं. पुं. (सं. वृश्चिकः) आदिः, आलिन्, द्रुणः ।
 बिच्छु(छु)डना, कि. अ. (सं. विच्छुट्) विलुज्-विरह् (कर्म.), विषट् (भ्वा. आ. से.), विशिल्ष् (दि. प. अ.), पृथक् भू । सं. पुं. दे. 'बिछोड' ।
 बिछाना, कि. स. (सं. विस्तरणम्) आवि-स्तृ (क्त. उ. से.), आ-वि-न्म् (व. उ. से.), प्रसृ (प्रे.) । सं. पुं., आवि-स्तारः, प्रसारः, प्रसारणम् ।
 बिछावन, सं. पुं., दे. 'बिछौना' ।
 बिछिया, सं. स्त्री. (हिं. बिच्छू) पदांगुली-भूषणम् ।
 बिछुआ (-वा), सं. पुं. (हिं. बिच्छू) दे. 'बिछिया' २. कटारभेदः ।

विज्ञोऽः

[४२३]

बीबी

विज्ञोदा, सं. पुं. (हि. विज्ञुडना) विरहः, वियोगः, विरलपः ।

विज्ञोना, सं. पुं. (हि. विज्ञानः) आस्तर-रणम्, शय्यावकरणम् ।

विजली, सं. स्त्री. (सं. विज्ज्) तर्जनी (स्त्री), लौकमिनो, शंशः, क्षणप्रभा, चपट, नन्द्या ।

विज्ज्, सं. पुं. (देश.) विज्ञापकरो वन्य-जम्बुः ।

विडाल, सं. पुं. (सं. विडालः) मार्जारः, ओतुः, आसुमुज् ।

विडाना, क्रि. स. (सं. व्यथयनम्) कालं आनयद्-शान्तम् (स्व प्रे.) ।

विनती, सं. स्त्री. (सं. विनतिः) प्राथना, निवेदनं, अभ्यर्थना, याचना ।

—करना, क्रि. अ., अभ्यर्थ-प्राथ् (बु. आ. ने.), दाय् (भ्वा. आ. ने.) ।

विना, अव्य. (सं. विना) अन्तरं, अन्तरेण, ऋते, वर्जयित्वा; विहाय (सब अव्य.) ।

विनौला, सं. पुं. (देश.) शार्पण-मूला-बीजम् ।

विरद्, सं. पुं. (सं. विरदः-दग्) यशो-वीरि, गीतम् ।

विल, सं. पुं. (सं. विलम्) विवरं, छिद्रम्, रन्ध्रं, कुहरं, छिपिदं, खञ्जं, रोफणम् ।

विल, सं. पुं. (अं.) प्राप्यकम् २. विधेयकम् ।

विलकुल, क्रि. वि. (अ.) सर्वथा, पूर्णतया, कस्त्वैत ।

विलखना, क्रि. अ. (सं. विलक्ष्) विलप् (भ्वा. प. से.), करुणं उच्चैर्वा रुद (अ. प. से.) ।

विलटी, सं. स्त्री. (अं. विलेट) प्रहितवस्तु, पत्रम् ।

विलविलाना, क्रि. अ. (अनु. विलविल) रुद् (अ. प. से.) २. क्षुब् (द्वि. प. से.) ३. (कीटादि) विसृप् (भ्वा. प. अ.) ।

विल्ला, अव्य. (अ.) विना, ऋते ।

विलोना, क्रि. स. (सं. विलोडनम्) विलुङ् (प्रे.), मन्थ् (भ्वा. प. से.), खञ् (भ्वा. प. से.) । सं. पुं., मन्थनं, विलोडनं, खननम् ।

विल्ला, सं. पुं. (सं. विडालः) मार्जारः, ओतुः, वृषदंश-शकः, मण्डलिन्, आसुमुज्, गान्त्र-संकोचिन् । (विल्ली=विडाली, मार्जारी) ।

विल्लौर, सं. पुं. (फ्रा. विल्लूर) स्फटिकः, सिनोपलः, सितमणिः, स्फटिकाश्मद् ।

विल्लोरी, वि. (हि. विल्ली) स्फटिक, स्फटिकमय २. स्फटिकवृक्ष ।

विसात, सं. स्त्री. (अ.) सामर्थ्यं, शक्तिः (स्त्री) २. विभवः, वित्तम् ३. चतुरंगक्रीडापटः ।

विसाती, सं. पुं. (अ.) वैवधिः, भाण्डवाहः, क्षुद्रयणिष् ।

विस्तर, सं. पुं. (फ्रा., वि. सं. विस्तरः) अस्तर-रणं, *विस्तरः ।

—बंद, सं. पुं., *विस्तरवन्धः ।

विस्वा, सं. पुं. (हि. वीतवा) विशतितमोऽशः ।

वीधना, क्रि. स. (सं. वेधनम्) विष् (तु. प. से.), व्यध् (दि. प. अ.), छिद्रयति (ना. धा.) ।

वीघा, सं. पुं. (सं. विघहः) २०२५ गजतमको भूमानभेदः ।

वीच, सं. पुं. (सं. विच्) मध्यः, मध्यं, मध्यभागः, गर्भः २. अन्तरं, भेदः । क्रि. वि., अन्तरे, अन्तः, मध्ये, अभ्यंतरे ।

बीज, सं. पुं. (सं. न.) बीजकम्, रोहिः, इरुः । २. वीथी, रेतम् (न.) ३. मूलं, आदिः ४. कारणं, हेतुः ५. अव्यक्तसंज्ञाचकं चिह्नम् ।

बीजक, सं. पुं. (सं. न.) पण्यसूची २. सूची-निः (स्त्री) ३. कबीरग्रंथसंग्रहः ।

बीजना, क्रि. स., दे. 'बीना' ।

बीट-ठ, सं. स्त्री. (सं. विष्) लण-विष्ण-मल-पुरोध-अवस्करः-उच्चारः ।

बीडा, सं. पुं. (सं. बीटी) बीटिः (स्त्री), बीटिका २. कार्यः, भारः ।

—उठाना, मु., उत्तरदायित्वं स्वीकृ, धुरं वह (भ्वा. उ. अ.) ।

बीही, सं. स्त्री. (सं. बीटी) बीटिका २. पत्रवेष्टितमसुवर्तनीतिः (स्त्री), बीटी ३. लज्जु-कुचः-पोटलिका ४. दे. 'मिस्ती' ।

बीतना, क्रि. अ. (सं. व्यतीत) (कालः) व्यती (अ. प. अ.), अतिवद् (भ्वा. अ. प.), या (अ. प. अ.) ।

बीती, सं. स्त्री. (हि. बीतना) अतीत-व्यतीत-वाता-घटनी २. वृत्तान्तः, उदन्तः ।

बीन, सं. स्त्री. (सं. बीणा) तंत्री, बल्लकी ।

बीबी, सं. स्त्री. (फ्रा.) धर्मपत्नी २. कुलवधुः (स्त्री) ३. कुमारी ४. भगिनी ।

बीभत्स, वि. (सं.) घृणावह, कृत्स्ित २. क्रूर
३. प्रापिन् ४. भयःवह ।

बीभत्सा, सं. स्त्री. (सं.) जुगुप्सा, घृणा ।

बीभ', सं. पुं. (अं.) दे. 'शहोर' ।

बीभ', (फ़ा.) भयम्, संबटम् ।

बीभा, सं. पुं. (फ़ा. बीभ=भय >) संभाव्य-
हानेः रक्षणम् २. संभाव्यहानिपूटकं शुल्कम् ।

बीभार, वि. (फ़ा.) रोगिन्, रुग्ण ।

बीभारी, सं. स्त्री. (फ़ा.) रोगः, व्याधिः ।

बीभ, वि. [सं. विशतिः (नित्य स्त्री.)] ।

सं. पुं., उक्ता संख्या, तदंको (२०) च ।

—बी, वि., विशतितमः-मी-मं, विशः-शी-क्षम् ।

बीहृद्, वि. (सं. विकट) निविड, दुर्गम
२. विषम, नतोन्नत ।

बुंदा, सं. पुं. (सं. बिन्दुः >) कर्णाभरणभेदः,
लोलकम् ।

बुक्या, सं. पुं. (तु. नः) पोट्टी-लिका,
कूर्चः-र्वम्, भारः ।

बुक्री, सं. स्त्री. (हिं. बूकना=पीसना)
चूर्ण, क्षोदः ।

बुज्जार, सं. पुं. (अ.) ज्वरः, तापः ।

—पुराणा, सं. पुं., जीर्णज्वरः ।

बुझदिल, वि. (फ़ा.) भौरु, वस्तु, कातर,
निस्साहस ।

बुजुर्ग, वि. (फ़ा.) वृद्ध, स्थविर । सं. पुं.,
पूर्वजः, वंशकरः, गुरुः ।

बुझना, क्रि. अ. (देश.) शम् (दि. प. से.),
निर्वापित (वि.) भू २. शीती भू ३. उत्साही
नश् (दि. प. वे.) ।

बुझाना, क्रि. स. (हिं. बुझना) निर्वा (प्रे.),
ज्वालां शम् (प्रे.) २. शीती कृ. ३. उत्साहं
नश् (प्रे.) । सं. पुं., निर्वायः-अग्निशमनम् ।

बुझारत, सं. स्त्री. (हिं. बुझना) प्रहेलिका,
कूटप्ररनः ।

बुडबुडाना, क्रि. अ. (अनु.) जल्प (भ्वा.
प. से.) ।

बुड्ढा, वि. पुं. (सं. बृहः) दे. 'बृह' ।

बुढापा, सं. पुं. (हिं. बुडा) वार्द्धकं-दयं, जरा,
ज्यानिः (स्त्री.), स्थाविरम् ।

बुध, सं. पुं. (फ़ा.) मूर्तिः, प्रतिष्ठातिः (स्त्री.),
प्रतिमा ।

—परस्त, वि., मूर्ति-प्रतिमा, पूजक ।

बुडबुद्, सं. पुं., दे. 'बुलबुला' । (सं. बुडबुदाः)
सं. पुं. (अनु.), फेनः, जलविकारः (बर्तुला-
कारः), अम्बुस्फोटः । २. गर्भस्थावयवविशेषः ।

बुद्ध, वि. (सं.) ज्ञानवत, ज्ञानम् २. बुद्धदेवः,
सुगतः, सर्वार्थसिद्धः, मुनीन्द्रः ।

बुद्धि, सं. स्त्री. (सं.) धीः-नतिः (स्त्री.),
पण्डा, प्रज्ञा, ननीय-षिका, धिपणः, बुधः, मेधा ।

—मान्, वि. (सं. नत्) धीमत्, प्राज्ञ, बुध,
मनीषिन्, पंडित, मेधाविन्, विचक्षण,
विदग्ध, विवेकिन्, धतुर ।

बुध, सं. पुं. (सं.) बुधवासरः २. चन्द्रसुतः,
चतुर्थग्रहः ३. ज्ञानिन्, पंडितः ४. देवः ।

बुनना, क्रि. स. (सं. वयनम्) वे-वप्
(भ्वा. उ. अ.) । सं. पुं. भाव, वपनं,
वयनं, वस्त्रनिर्माणम् ।

बुनने योग्य, वि., वयनाहं, वपनीय, वातव्य ।

—बाला, सं. पुं., तन्तुबाणः, तंत्रवापः, कुर्विदः,
पटकारः ।

बुना हुआ, वि., उप्त, उत ।

बुनियाद्, सं. स्त्री. (फ़ा.) वास्तुः, वास्तु (न.),
गृहमूलं, पोटः, भित्तिमूलम् २. यथाथता ।

बुरका, सं. पुं. (अ.) आवरकम् ।

बुरा, वि. (सं. विरुप >) दूषित, दुष्ट, निकृष्ट,
मंद, २. दुर्गुण, अशुभ ३. गहर्ष, कृत्स्ित
४. खल, दुर्वृत्त ।

बुराई, सं. स्त्री. (हिं. बुरा) दुष्टता, नीचता,
निकृष्टता, दुर्वृत्तं, खलत्वम् ।

बुरादा, सं. पुं. (फ़ा.) काष्ठचूर्ण, दाहक्षोदः ।

बुरदा, सं. पुं. (अं. ब्रश) आचरण्यो, लोममयी
मार्जनी २. तूलिका, वतिका ।

बुर्ज, सं. पुं. (अ.) प्राचीर, शिखरं-शृङ्गम् ।

बुलबुल, सं. स्त्री. (फ़ा.) प्रियगीतः, बुलबुलः,
खगभेदः ।

बुलबुला, सं. पुं. (सं. बुडबुदः >) जल-
विकारः, फेनः दे. बुडबुदा ।

बुलाना, क्रि. स. (देश.) आकृ (प्रे.),
आहं (भ्वा. प. अ.), आ-नि-मंत्र (बु. आ.
से.), शब्द (तु.) । सं. पुं. भाव, आकरणं,
आह्वानं, आ-नि-मंत्र-म् ।

बुलावा, सं. पुं. (हिं. बुलाना) दे. 'बुलाना'
सं. पुं. ।

बुलेटिन, सं. स्त्री. (अं.) रोगिवृत्तपत्रिका,
२. राजकीय-आधिकारिक, विशतिः (स्त्री.) ।

बुध, बुस, सं. पुं. (सं. बुधम्) बुसन, बुषः-
सः २ शुष्कगो-मर्म-मल-पुरीषंविद्या ।
बुहारना, कि. स. (सं. बहुकारी >) संभृज्
(अ. प. वे.), शुभ् (प्रे०) ।
बुहारी, सं. स्त्री. (हि. बुहारना) शोधनी,
दे. 'बहुकर' ।
बूँद, सं. स्त्री. (सं. विदुः) कणः, लवः, पृषतः,
पृषत् (न.), विपृष् (स्त्री.); द्रव्यः ।
बूँदा-बूँदी, सं. स्त्री. (हि. बूँद + अनु.) मन्द-
वृष्टिः (स्त्री.) शीकरवर्षः ।
बूँदी, सं. स्त्री. (हि. बूँद) बिन्दवः (पुं. बहु.),
मिष्टान्नभेदः २. वृष्टिजलबिन्दुः ।
बू, सं. स्त्री. (फ्रा.) गंधः, वासः २. दुर्गन्धः ।
—बुबना वा फलना, मु., कुख्यात-अपख्यात
(वि.) भू ।
बूबा, सं. स्त्री. (देश.) पितृवृषस (स्त्री.),
पितृमगिनी २. अग्रजा ।
बूबध, सं. पं. (अं. बुधर) शौ(सौ)निकः,
भासिकः, लट्टिकः, कौटिकः ।
—बूबाना, सं. पुं., सूना, शूना ।
बूभ, सं. स्त्री. (सं. बुद्धिः) बोधः, ज्ञानं, विवेकः
२. प्रहेलिका ।
बूभना, कि. अ. (हि. बूभ) शा (क.उ.अ.),
बुध् (भ्वा. उ. से.) २. प्रच्छ् (तु. प. अ.) ।
बूढ, सं. पुं. (अं.) उपानह (स्त्री.), पक्ष्मी ।
बूढा, सं. पुं. (सं. विद्यः) वृक्षकः, बालवृक्षः,
लता, ओषधिः (स्त्री.) २. वंशः, वंशपरंपरा ।
बूढी, सं. स्त्री. (हि. बूढा) ओषधिः (स्त्री.),
काष्ठौषधम् २. मंगा ३. बरुस्था पत्रपुष्परचना ।
बूबना, कि. अ., दे. 'डूबना' ।
बूडा, सं. पुं. (सं. वृद्धः) जरठः, स्थविरः,
पलितः, अरितः । वि., जरठण, जरित-न, जीन,
जीणं, बयस्क, प्रवयस्, वृद्ध, स्थविर, पलित ।
—हूना, कि. अ., जू (हि. क्रू. प. से.), ज्या
(क्रू. प. अ.), परिणम (भ्वा. प. अ.), वृद्ध
(वि.) भू ।
—पन, सं. पुं., जरा, परिणतिः-ज्यानिः-जीणिः
(स्त्री.), वार्धकवयं, वृद्धवयः ।
बूदी, सं. स्त्री. (हि. बूडा) वृद्धा, जरती,
स्थविरा, पलिता, पलिकनी । वि., व. 'बूडा'
वि. के. स्त्री. रूप ।
बूता, सं. पुं. (सं. वितं >) बलं, शक्तिः (स्त्री.) ।
बूरा, सं. पुं. (हि. भूरा) शर्करा २. सुपिष्टा,

शुभा ३. चूर्णं, श्रोदः ४. काष्ठचूर्णम् ।
बूहव, वि. (सं.) विशाल, महत् २. दृढ,
बलवत् ३. पर्याप्त ४. उच्च (स्वरदि.) ।
बूहस्पति, सं. पुं. (सं.) देवताविशेषः, सुरपुरुः,
गुरुः, वाचस्पतिः, वगोशः (दू. त.) २. सौर-
मंडलस्य पंचमो ग्रहः ।
—वार, सं. पुं. (सं.) गुरुः, वारः-वानरः ।
बूँच, सं. स्त्री. (अं.) (काष्ठादिनिमित्तं) *लंबा-
सकं, २. धर्म-व्यवहार, आसनं ३. आधिकर-
णिकाः-धर्माध्यक्षः (पुं. बहु.) ।
बूँत, सं. पुं. (सं. वेजः) वेतसः, वानीरः-वंजुदः,
नीरमियः, अन्नपुष्पः । २. वेज-वेतस्-वृद्धः-
वृष्टिः (स्त्री.) ।
बूँदी, सं. स्त्री. (सं. विदुः) वर्तुलविहं २.
तिलकः-कं ३. शून्यं, खन ।
बू,^१ अव्य. (सं. हे) ओरे, दे, अधि ।
बू,^२ अव्य. (फ्रा. (नि. सं. वि.) अन्, अन्, वि,
निर्, रहित, अविज, व्यतिरिक्त, वंचित ।
—अकल, वि. (फ्रा. + अ.) निरुद्धि, मूर्ख ।
—अकली, सं. स्त्री., निर्बुद्धिता, मौख्यम् ।
—अदब, वि. (फ्रा. + अ.) अविनीत, पृष्ट ।
—अदबी, सं. स्त्री., पृष्टता, वैयात्यम् ।
—आबरू, वि. (फ्रा.) निराकृत-अवधीरित,
समानरहित ।
—आबरूई, सं. स्त्री., अवधीरणा, अवका,
अपमानः ।
—इतिहा, सं. पुं. (फ्रा. + अ.) अनंत, असीम ।
—इन्साक, वि. (फ्रा. + अ.) अन्यः-चिन,
अधाम्बु ।
—इन्साफ़ी, सं. स्त्री., अन्यायः, अधर्मः ।
—इज्जत, वि. (फ्रा. + अ.) दे. 'बेआबरू' ।
—इज्जती, सं. स्त्री., दे. 'बेआबरूई' ।
—इल्म, वि. (फ्रा. + अ.) अविद्य, निरक्षर ।
—ईमान, वि. (फ्रा. + अ.) कुटिल, जिह्म,
धर्मन्याय-विमुख, कपटिन्, वंचक, शठ ।
—ईसानी, सं. स्त्री., कुटिलता, वंचना, अधर्म ।
—औलाद, वि. (फ्रा. + अ.) निरपत्य,
निस्संतान ।
—कदर, वि. (फ्रा.) दे. 'बेआबरू' ।
—कद्री, सं. स्त्री. (फ्रा.) दे. 'बेआबरूई' ।
—करार, वि. (फ्रा.) अशांत, विकल, व्याकुल ।
—करारी, सं. स्त्री. (फ्रा.) अशांतिः (स्त्री.),
व्याकुलता ।

- कल, वि., आकुल, व्याकुल, अशान्त ।
 —कली, सं. स्त्री., आभ्यन्त-कुलता, अशान्तिः (स्त्री.), क्षुब्धता ।
 —कल, वि. (फा.) निरसहाय २. दरिद्र ३. अनाथ, मातृविपरीत ।
 —कली, सं. स्त्री., दैन्यम्, विवशता, दीनता ।
 —कानूनी, वि., अवैध, विधि-नियम-विरुद्ध-विपरीत ।
 —काबू, वि. (फा. + अ.) संयमशून्य, विवश १. अदम्य, अवश्य ।
 —काम, वि. (फा. + हिं.) वृत्तिहीन, व्यवसाय-शून्य २. व्यर्थ, निरर्थक ।
 —कायदा, वि. (फा. + अ.) नियमविरुद्ध, अवैध, अनियमित ।
 —कार, वि. (फा.) दे. 'वैकाम' (१-२) । कि. वि., व्यर्थ, निष्प्रयोजनम् ।
 —कारी, सं. स्त्री., नियोगाभावः, वृत्तिराहित्यम् ।
 —कुसूर, वि. (फा. + अ.) निरपराध, निर्दोष ।
 —खटके, कि. वि. (फा. + हिं.) निःसंकोचं, निःशंकां, निर्भयम् ।
 —खबर, वि. (फा.) अज्ञ, अपरिचित २. मूर्च्छित, निःसंज्ञ ।
 —खबरी, सं. स्त्री., अज्ञता, प्रमादः २. मूर्च्छां, मोहः, संश्लोषः ।
 —खौफ, वि. (फा.) निर्भय, वासहीन ।
 —खारजू, वि. (फा. + अ.) निरपेक्ष, निश्चित ।
 —गुनाह, वि. (फा.) निष्पाप २. निरपराध ।
 —चैन, वि. (फा.) विकल, अशान्त २. विनिद्र ।
 —चेनी, सं. स्त्री., व्याकुलता २. विनिद्रता ।
 —छंद, सं. पुं. (हिं. + सं. छंदस्) अत्यान्-प्रासहीनं छन्दस् (न.), अमिताक्षरं वृत्तम् ।
 —ज्जवान, वि. (फा.) अवाच्य, मूक २. दीन ।
 —ज्ञा, वि. (फा.) अनुचित, असंगत २. कुरित, गर्हा ।
 —ज्ञान, वि. (फा.) निष्प्राण, मृत २. निर्बल, अशक्त ।
 —ज्ञाब्ता, वि. (फा. + अ.) अवैध, अनैयमिक ।
 —जोड़, वि. (फा. + हिं.) अनुपम २. अखंड ।
 —ठिकाने, वि. (फा. + हिं.) स्थान, च्युत-भ्रष्ट, २. निरर्थक ३. असंगत ।
 —डौल, वि. (फा. + हिं.) कुरूप, कदाकार ।
 —डंगा, वि. (फा. + हिं.) अनाचारित्, दुर्घृत २. कुरूप ३. भ्रान्त, कुव्यवस्थित ।

- दब, वि. (फा. + हिं.) कदाचार, कुदाल, २. कुदशनं, कुरूप ।
 —तकल्लुक, वि. (फा. + अ.) उपचारोपेक्षक, निगडंबर २. शत्रु, सरल ।
 —तकल्लुकी, सं. स्त्री., उपचारोपेक्ष, आडंबर-हीनता २. अखंडं, सरलता ।
 —तमीज़, वि. (फा. अ.) अशिष्ट, असभ्य, उद्धृत, वियत ।
 —तरह, कि. वि. (फा. + अ.) अनुचिनं, अस्थाने, अमम्यक २. असाधारण-विलक्षण-रूपेण । वि., अत्यधिक ।
 —तरीका, वि. (फा. + अ.) अनुचित, अनैय-मिक । कि. वि., अनुचितम् ।
 —तहाशा, कि. वि. (फा. + अ.) अति, अवेन-वेगेन-शीघ्रतया २. ससंभ्रमं ३. अविचार्य, अविशुद्धम् ।
 —ताब, वि. (फा.) दुर्बल २. विकल ।
 —ताबी, सं. स्त्री. (फा.) निर्बलता २. व्याकुलता ।
 —तार, वि. (फा. + सं.) वितार, तंतुहीन ।
 —तार का तार, सं. पुं., *वितारतारः, वितारो विधत्संदेशः ।
 —तुका, वि. (फा. + हिं.) विषमस्वर, सामं-जस्यहीन २. दे. 'वेठव' ।
 —दुखल, वि. (फा.) निष्कानित, निरस्त, अपास्त, अधिकारभ्रष्ट ।
 —दुखलो, सं. स्त्री. (फा.) निष्कासनं, अपासनं अधिकारभ्रष्टः ।
 —दम, वि. (फा.) मृत, निष्प्राण २. मृतप्राय, मरणसन्न ।
 —दर्द, वि. (फा.) निर्दय, निष्करण ।
 —दारा, वि. (फा.) निष्कलक, शुद्धाचार २. निर्दोष, निरपराध ३. स्वच्छ ।
 —धड़क, कि. वि. (फा. + हिं.) निःसंकोचं २. निर्भयं ३. अविशुद्धम् । वि., निःसंकोच, निर्भय, अविशुद्धकारिन् ।
 —नज़ीर, वि. (फा. + अ.) अनुपम, अद्वितीय ।
 —नसीब, वि. (फा. + अ.) मंद-ज्ञा, भाग्य ।
 —परदा, वि. (फा.) अनमृत, निरवरण २. नग्न ।
 —परवाह, वि. (फा.) निश्चित, वीतचित्तः २. स्वेच्छाचारित् ३. उदार ।

- परवाही, सं. स्त्री., निश्चितता २. स्वेच्छा-
चारः ३. औदार्यम् ।
—पीर, वि. (फा. + हिं.) निर्दय, अकरुण
२. सहानुभूतिशून्य ।
—फायदा, वि. (फा.) निष्फल, निरर्थक ।
क्रि. वि., मोघं, निष्फलम् ।
फिक्क, वि. (फा.) दे. 'वेपरवाह' ।
—फिक्की, सं. स्त्री., दे. 'वेपरवाही' ।
—बय, वि. (सं. विवश) अशक्त, अवश,
निराधिकार २. परवश, पराधीन ।
—बसी, सं. स्त्री. (हिं.) विवशता, अवशता,
२. परवशता ।
—बहारा, वि., भाग्यहीन २. विद्याहीन ।
—बाक, वि. निर्भय, धृष्ट ।
—बाक, वि. (फा.) निस्तारित, शोधित ।
—बुनियाद, वि. (फा.) निर्मूल, निराधार ।
—भाच, वि. (फा. + हिं.) असंख्यात,
अगणित ।
—भाव की पड़ना, मु., भृशं ताड (यर्म.) ।
—मजा, वि. (फा.) नीरस, विरस, निस्स्वाद ।
—मतलब, अ०, निःप्रयोजनम्, व्यर्थम् ।
—सानी, वि. (फा. + अ.) निरर्थक ।
—सुरखान, वि. (फा.) निःसंकोच, अविनीत,
अदक्षिण, कुशील ।
—मेल, वि. असंगत, विषम ।
—मौक़ा, वि. (फा.) असामयिक, अस-
मयोजित ।
—रहम, वि. (फा. + अ.) निष्ठुर, निर्दय ।
—रहसी, वि. निर्दयता, निष्ठुरता ।
—रोक, } क्रि. वि. (फा. + हिं.) निष्प्रति-
—रोक-डोक, } बंधं, निर्विन्तं, निर्व्याघातम् ।
—रोज़गार, वि. (फा.) दे. 'बेकार' ।
—रोज़गारी, सं. स्त्री., दे. 'बेकारी' ।
—रीनक, वि. (फा.) शोभहीन, निःश्रीक
२. निश्चम, कांतिहीन ।
—लाग, वि. (फा. + हिं.) निःसंग, निर्मोह
२. निष्कपट, निर्व्याज ।
—बक्रा, वि. (फा. + अ.) विश्वास, चान्द्र-
घनिम्, भक्तिहीन २. दुःशील ३. कृतघ्न ।
—बक्राई, सं. स्त्री. (फा.) विश्वासघातः
२. दुःशीलता ३. कृतघ्नता ।
—शऊर, वि. (फा. + अ.) दे. 'बेतमीर' ।

- शक, क्रि. वि. (फा. + अ.) अवश्यं,
निःसंदेहम् ।
—शरम, वि. (फा. शर्म) निर्लज्ज, अपत्रप ।
—शरसी, सं. स्त्री., निर्लज्जता, निर्धीरता ।
—शुमार, वि. (फा.) अगणित, असंख्य ।
—सया, वि. (फा. + अ. यम) अर्थीर २.
असंगत ।
—सबरी, सं. स्त्री., धैर्यरूपः २. संतोषाभावः ।
—सरी मामान, वि. (फा.) निष्परिच्छद,
दरिद्र, अकिञ्चन ।
—सुबं, वि. (फा. + हिं.) मूकैत, नष्टमंड,
निस्संत २. अज्ञ, जड ।
—सुखी, सं. स्त्री., मूर्च्छा २. जडता ।
—सुर, —सुरा, वि. (सं. विश्वर) विश्वस्वर
२. दुःश्राव्य, कटुस्वर ३. दे. 'बेनीका' ।
—स्वाद, वि. (सं. विश्वाद) दे. 'बेमजा' ।
—रूद, वि. (फा.) असीम, निस्सीम, अपरि-
मित २. अत्यधिक ।
—हया, वि. (फा.) दे. 'बेशरम' ।
—हयाई, सं. स्त्री., दे. 'बेशरमी' ।
—हाल, वि. (फा. + अ.) विकल २. दुर्गत ।
—हाली, सं. स्त्री., विकलता २. दुर्गतिः (स्त्री.)
दारिद्र्यम् ।
—हिसाब, क्रि. वि. (फा. + अ.) अत्यधिकं,
अपरिमितम् । क्रि., अत्यंत, अगणनीय ।
—होश, वि. (फा.) दे. 'बेसुध' ।
—होशी, सं. स्त्री., दे. 'बेसुधी' ।
बेकल, वि. (सं. विकल) अशांत, बिहल,
दे. 'ब्याकुल' ।
बेकली, सं. स्त्री. (हिं. बेकल) अर्शांतः
अनिवृत्तिः (स्त्री.) दे. 'ब्याकुलता' ।
बेकिंग पाउडर, सं. पुं. (अं.) भर्जनशुद्धः ।
बेकटीरिया, सं. पुं. (अं.) कीटाणुः (पुं-
पदु) ।
बेगम, सं. स्त्री. (तु.) राणी, राजपत्नी
२. राशीचित्रांकितक्रीडापत्रभेदः ।
बेगाना, वि. (फा.) अस्वीय, अस्वकीय,
अनर्हमीय, पर, अन्य २. अपरिचित, अज्ञात ।
बेगार, सं. स्त्री. (फा.) विधिः आजू-
आजूर (स्त्री.) ।
—टालना, मु., अमनोयोगेन कृ; येन केन
प्रकारेण विधा (जु. उ. अ.) ।

बेगारी

[४२६]

बेसर

बेगारी, सं. पुं. (का.) अनिष्टोद्योगकारिन्, आजुर-आजुः (स्त्री.) ।

बेचना, क्रि. स. (सं. विक्रयगम्) विक्री (क. आ. अ.), मूल्येन दा (जु. उ. अ.), विपण (भ्वा. आ. से.) । सं. पुं., विक्रयः-यणं, मूल्येन दानं, विपणः-गणनम् ।

बेचने योग्य, वि., विब्रेय, विपणनीय, पण्य ।

बेचने वाला, सं. पुं., विक्रेतृ, विक्रयिन्, विक्रयिकः, विपणिन्, विपणिन् ।

बेचा हुआ, वि., विक्रीत, मूल्येन दत्त, विपणित ।

बेचारा, वि. (का.) दीन, निरबलम्ब ।

बेटा, सं. पुं. (सं. वटः >) पुत्रः, आत्मजः, सुतः ।

—बेटी, सं. स्त्री., सन्तानः, संततिः (स्त्री.) ।

—(टे) वाला, सं. पुं., वर, जनकः-पितृ ।

—गाइ लेना, मु., पुत्री कृ, पुत्रत्वेन परिग्रह (क. प. से.), दे. 'गोद' के लीने ।

बेटो, सं. स्त्री. (हि. बेटा) पुत्री, तनया, तनुजा, आत्मजा, इहितृ (स्त्री.) ।

—वाला, सं. पुं. कन्य-वधू-जनकः-पितृ ।

—व्यवहार, सं. पुं., विवाहसम्बन्धः ।

बेड़ा, सं. पुं. (सं. वेडा) तरणः, तरंडकः, भेलः २. वृहन्नौका ३. नौकागणः, पोतबस्ती, (युद्ध-) नौनिकः ।

—हूबना, मु., विपदा नश (रि. प. वे.) ।

—पार करना, मु., संकटात् त्रै (भ्वा. अ. अ.), विपदां ह (भ्वा. प. अ.), ।

—पार होना, गु., कष्टात् मुच (कर्म.) ।

बेड़ी, सं. स्त्री. (सं. बलयः >) निनाडः-ई, शृंखला-रुन् ।

—हालना, क्रि. स., निगडयति (ना. धा.) ; शृंखलैः-निगडैः बध् (कृ. प. अ.), निगडितं कृ ।

बेड़ी, २ सं. स्त्री. (हि. बेडा) तरणकः, भेलकः-कां २. नौका, इहृपग ।

बेत, सं. पुं. दे. 'बैत' ।

बेताली, सं. पुं., दे. 'बैताल' ।

बेताल, सं. पुं., दे. 'बैतालिक' ।

बेदाना, सं. पुं. (का.) दाडिमभेदः २. दिवींज-द्राक्षा । वि., निवींज, तिरङ्गोल, अडिङ्गान ।

बेधना, क्रि. स., दे. 'बीधना' ।

बेधिया, सं. पुं., दे. 'बीधनेवाला' ।

बेन, सं. स्त्री. (सं. वेणुः) मुरली २. वंशः ।

बेनी, सं. स्त्री., दे. 'वेणी' ।

बेनु, सं. पुं. (सं. वेणुः) वंशः, सृणध्वजः । २. मुरली ।

बेर, सं. पुं. (सं. बदरी) (वृक्ष) कर्कषुः (स्त्री.), फर्कन्धुः, बदरिका, कोलं, योटा, (बदरः, बालेष्टः) २. (फल) बदरं, बदरीं फलम् इ. ।

बेर', सं. स्त्री. (सं. वारः) दे. 'वार' ।

बेर', सं. स्त्री. (सं. वेला >) दे. 'दिर' ।

बेरियम, सं. पु. (अं.) अर्थात्तु (न.) ।

बेरी, सं. स्त्री. (सं. बदरी) दे. 'बेर' (वृक्ष) ।

बेला, सं. [सं. वि(वि)ल्वः] (वृक्ष) माल्यः, महा-श्री-सदा-सत्य, फलः, शिवधूमः, पत्रभेजः, गंगल्यः । (फल) विन्व, गच्छः-फलम् इ. ।

—रत्न, सं. पुं. (सं. न.) विल्व माल्यः-पत्रम् ।

बेला, सं. स्त्री. (सं. बली) लता, बली, व्रतती-तिः (स्त्री.) डल्पः, शुक्तिनी, प्रतामिनी २. वंशः, संततिः (स्त्री.) ।

—बूटा, सं. पुं., सूची-कर्मन्-दालनं, वक्रचित्रितं-पुष्पपत्रम् ।

बेलचा, सं. पुं. (का.) खनिजं, अवधारणम् ।

बेलदार, सं. पुं. (का.) भस्वनकः, धंग्यालकः ।

बेलन, सं. पुं. (सं. बेलनं >) *बेलनम् ।

बेलना, सं. पुं. (सं. बेलनं) बेलनी । क्रि. स., बेल-बेल (प्रे.), (बिल्व-चूर्ण-शिष्टं) रोटिका-रूपेण 'परिणम्' (प्रे.) ।

बेला, सं. पुं. (सं. मविका) मली, पट्ट-प्रियः, वन-द्रिका, अतिगंधा ।

बेला, सं. पुं., दे. 'बेला' ।

बेवकूक, वि. (फा.) मूल्यं, मूढ, जड़, निर्बुद्धिः ।

बेवकूफी, सं. स्त्री. (फा.) मूल्यता, मूढता इ. ।

बेवा, सं. स्त्री. (फा.) दे. 'विधवा' ।

बेवाकीमत-ती, वि. (फा. + अ.) बहुमूल्य, महाव्यं ।

बेवा, सं. स्त्री. (फा.) अधिकता, आधिक्यं २. वृद्धिः (स्त्री.) ३. लाभः ।

बेसन, सं. पुं. (देश.) चणचूर्णं, चणकशुद्धः ।

बेसनी, वि. (हि. बेसन) बेसन-चणचूर्णं-नय-मिश्रितम् ।

बेसर, सं. पुं. (सं. देसरः) बेसरः, बेगसरः, अशतरः ।

बेसर, सं. पुं., दे. 'नत्य' ।

बेहूदगी

[४२७]

बंसाखी

बेहूदगी, सं. स्त्री. (का.) अशिष्टता, असभ्यता ।
 बेहूदा, वि. (फा.) अशिष्ट, असभ्य
 २. अशिष्टतापूर्ण ।
 —पन, सं. पुं., दे. 'बेहूदगी' ।
 बंगन, सं. पुं. (सं. वंगनः) (पौधा) मांस-
 वृत्तानीय, फल, वार्ताकी, वृत्ताकी, वंगः
 २. (तरकारी) वृत्ताकं, वंगफलम् ।
 बंग(ज)नी, वि. (हि. बंगन) नील, लोहित-
 अरुण ।
 बै, सं. स्त्री. (अ.) विक्रयः, विक्रयणं,
 मूल्येन दानम् ।
 बैकुण्ठ, सं. पुं. (सं. वैकुण्ठः) स्वर्गः, नाकः ।
 बैजंती, बैजयंती, सं. स्त्री., दे. 'वैजयंती' ।
 बैज, सं. पुं. (अं.) चिह्नं, लक्षणं, लक्ष्मन् (न.)
 २. दे. 'चपराम' ।
 बटरी, सं. स्त्री. (अं.) विसृष्टं २. *विमृष्टी-
 पिका, दे. 'टार्च' ३. दे. 'तोपखाना' ।
 बैठक, सं. स्त्री. (हि. बैठना) *उपवेश-
 कोष्ठक, दर्शनगृह, सभाजनकोष्ठः २. आसनं,
 पीठं ३. अधिवेशनं ४. उपवेशः-शनं ५. उत्तर-
 नोपवेशनात्मको व्यायामभेदः ६. संगः ।
 बैठकी, सं. स्त्री. (हि. बैठक) व्यायामभेदः,
 *उपवेशकी २. आसनं, पीठम् ३. पादफलक-
 प्रदीपः ।
 बैठना, क्रि. अ. (सं. विष्ट) उपविष्ट
 (तु. प. अ.), निषद् (भ्वा. प. अ.), अस्
 (अ. आ. से.) २. खञ्-अनुव्यथ् (कर्म.)
 ३. अभ्यस्त (वि.) भू ४. अधः-अधवा तलं
 गम् ५. नि-मरुद् (तु. प. अ.) ६. संकुञ्
 (तु. भ्वा. प. से.), मूल्येन ग्रह (कर्म.),
 ङी. (कर्म) ७. लक्ष्यं स्वप् (दि. प. अ.),
 सिष् (दि. प. अ.) ८. आ-अधि-रुद् (भ्वा.
 प. अ.) ९. आ-रोप (कर्म.), निष् (कर्म.),
 प्रति-स्थाप (कर्म.) १०. वृद्धं वम (भ्वा. प.
 अ.) ११. (केनचित् सह) पत्नीस्त्वेन संवम्
 १२. वृत्तिक्षीण, (वि.) वृत् (भ्वा. आ. से.)
 १३. दक्षिणं भू, परिष्ठा (कर्म.) १४. अप-
 सृग्म (भ्वा. प. अ.) । सं. पुं., उपवेश-
 शनं, निषदनं, आमिन्, आमनं, निषन्तिः (स्त्री.) ।
 बैठने योग्य, वि., उपवेशनीय, निषदनीय,
 आस्तित्व्य ।
 बैठनेवाला, सं. पुं., उपवेशकः, उपवेष्ट, उपवे-
 शिन, असक, निषदिन् ।

बैठा हुआ, वि., उपविष्ट, निषण्ण, आसीन ।
 बैठते-उठते, क्रि. वि., सदा, प्रतिक्षणम् ।
 बैठे बैठे, } क्रि. वि., निष्करणं अदेतुकं
 बैठे बैठे, } २. अकांटे, अतर्कितम् ।
 बैठवाना, क्रि. प्रे., व. 'बैठना' के प्रे. रूप ।
 बैठाना, } क्रि. म., व. 'बैठना' के प्रे. रूप ।
 बैठालना, }
 बैस, सं. स्त्री. (अ.) पर्व, श्लोकः ।
 —बाजी, सं. स्त्री., पथपाठप्रतियोगिता २.
 अन्वयाक्षरी ।
 बैतरनी, सं. स्त्री., दे. 'वैतरणी' ।
 बैताल, सं. पुं., दे. 'बैताल' ।
 बैन, सं. पुं. (सं. तन्नं*) शब्दः २. वार्ता
 ३. *परिवेदनपद्यम् (पंजाब) ।
 बना, सं. पुं. (सं. वायनं) वायनकं, सांस्का-
 रिकमिष्टानम् ।
 बैनामा, सं. पुं. (अ. बै+फा. नामङ्) *
 विक्रयपत्रम् ।
 बैरंग, वि. (अं. *बैरंग) शुल्कापेक्षित,
 *निस्ताव ।
 —छौटना, मु., विफल-अकृतकार्यं (वि.) प्रत्या-
 वृत्त (भ्वा. आ. से.) ।
 बैर, सं. पुं., दे. 'वैर' ।
 बैरक, सं. पुं. (तु.) सैनिक, ध्वजः-केतुः २.
 सैनिक, आवास-आगारः ।
 बैरगा, सं. पुं., दे. 'वैरग्य' ।
 बैरगी, सं. पुं., दे. 'वैरगी' ।
 बैरी, सं. पुं., दे. 'वैरी' ।
 बैरोमीटर, सं. पुं. (अं.) वायुभारमापकम् ।
 बैल, सं. पुं. [सं. व(बालीवद्) बलदः, वृषः,
 वृषभः, उश्मन्-अनटुह्-वृषन्-ककुदमत (पुं.),
 पुंगवः, शाकरः, सौरमेयः २. अटः, मूढः ।
 —गाड़ी, सं. स्त्री., बन्दशकटी, वृषभव(वा.)हनम् ।
 उक्के का—, सं. पुं., शाकटः, पुरंधरः, पुरीणः,
 धीरेयः, प्रासंग्यः ।
 बूडा—, सं. पुं., जरदगवः ।
 हल खींचनेवाला—, सं. पुं., सैरिकः, हालिकः ।
 बेलुन, सं. पुं. (अं.) दे. 'शुब्बारा' ।
 बैशाख, सं. पुं., दे. 'वैशाख' ।
 बंसाखी, सं. स्त्री. (सं. वैशाखी) आर्याणां
 पर्वविशेषः ।
 बैसाखी, सं. स्त्री. (सं. वैशाखः) *वैशाखी,
 कुक्षियष्टिः (स्त्री.) ।

बोझ, सं. पुं. (सं. बोड्ध्वं ?) भारः, भरः, बोविधः, पर्वाहारः २. गुरुत्वं, नीलः, भारः ३. दुष्करकार्यं ४. कार्यपितृ ५. कार्यभारः ६. उत्तरदायित्वम् ।

बोझ(ञ्जि)ल, वि. (हिं. बोझ) गुरु, भारवत्, भारिञ्ज, भारिन्, दुर्वह ।

बोडा, सं. पुं. (सं. वृत्तं >) छिन्नशूलकाष्ठखंडः २, खंडः-ई, शकलः-लम् ।

बोटी, सं. स्त्री. (हिं. बोटा) मांसखंडकः कम् ।

—बोटी काटना, मु., शरीरं खंडयः कृतं (तु. प. से.)-शकली कृ, देहं स्वीकृतः खंडं (चु.) ।

बोथल, सं. स्त्री. (अं. बोथल) कानकूपी ।

बोदा, वि. (सं. अबोध) दूर-मंद-जद-मति-धी-बुद्धि, नृत्नं २. अलस, नथर ३. निबंध, अशक्त ४. शाथिल, इत्यम् ।

बोध, सं. पुं. (सं.) उपलब्धिः प्रतिपत्तिः (स्त्री.), ज्ञानं २. धैर्यं, आश्वासनम् ।

—गन्ध, वि. (सं.) बोध, बुद्धिमन्थ, सुबोध, सुगम् ।

बोधक, सं. पुं. (सं.) अध्यापकः, शिक्षकः । वि., शापक, व्यसक ।

बोधन, सं. पुं. (सं. न.) अध्यापनं, शिक्षणं २. शापनं, सूचनं ३. उद्घापनं, निश्रान्जनं ४. उदीपनं, प्रज्वलनम् ।

बोधनीय, वि. (सं.) विद्यापनीय २. निद्रायाः उध्यापनीय ।

बोधि, सं. स्त्री. (सं. पुं.) समाधिभेदः, पूर्ण-ज्ञान-प्रकाशः-उपलब्धिः (स्त्री.) २. कुक्कुटः ।

—द्रुम, सं. पुं. (सं.) बोधि, नरु-वृक्षः, पावन, पिप्लवः-चलदलः-कुंभराशनः ।

—सच्च, सं. पुं. (सं.) बुद्धलौन्मुखो महात्मन् ।

बोना, कि. स. (सं. वपनं) आनि-वृत् (भ्वा. उ. अ.), (वीभानि) विकृ (तु. प. से.)-आरूह (प्रे.) । सं. पुं., उक्तिः (स्त्री.), वपनं, वारः, वपः, वीज, विकिरण-भारोपणम् ।

बोने योग्य, वि., वपनीय, वपव्य, वाप्य ।

बोने वाला, सं. पुं., वपः, वापकः, वप्ट, वापिम् ।

बोया हुआ, वि., उप्त, भूमौ विकीर्ण (बीज) ।

बोरा, सं. पुं. (सं. पुरं = दोना >) स्यूतः, स्यातः, प्रसेवः ।

बोरिक एसिड, सं. पुं. (अं.) टडुणान्लः ।

बोरिया, सं. स्त्री. (हिं. बोरा) कटा, किलि-बलः २. आस्तरः-गर्भ, क्लिष्टरः ३. दे. 'बोरी' ।

—(अथवा बोरिया बधना) उठाना, मु., गमन-परवान-उद्यत् (वि.) भू ।

बोरी, सं. स्त्री. (हिं. बोरा) स्थूतकाः, स्थोतकः, प्रसेवकः ।

बोल, सं. पुं. (हिं. बोलना) वाणी, गिर-वान्-उक्तिः-वाहतिः (स्त्री.), वचस् (न.), शब्दः, वाक्यं, वचनं २. व्यंग्य-व्याज-छेक-उक्तिः (स्त्री.), दे. 'बोली' ३. प्रतिज्ञा ४. वाथानां नियत-वृत्तिः ५. गीर्वाणः ।

—चाल, सं. स्त्री., लीहई, सद्भावः, आ-सं, लपः ।

—चाल की भाषा, सं. स्त्री., तांलापिक-व्याज-हारिका-भाषा ।

—बाला होना, मु., वाक्यं आद (कर्म.) २. भाष्यं उद्ग (अ. प. अ.) ३. यशो वृष् (भ्वा. आ. सं.) ।

बोलना, कि. अ. (सं. वृ) आरूप-गद्-गण् (भ्वा. प. से.), बू (अ. उ. अ.), वृत् (आ. प. अ.) २. किलकिलावृत्ति-ने (नो. धा.), कुज् (भ्वा. प. से.) ३. कथं (चु.) ४. नै (भ्वा. प. अ.) । सं. पुं., आलपनं, निगदनं, भाषणं, वचनं, गदनं कथनं, कृजनम् ।

बोलने योग्य, वि., आलपनीय, वचनीय, नैय ।

बोलने वाला, सं. पुं., वापकः, वक्तु, निगदिन्, कथकः, व्याख्यातु, गाथकः ।

बोला हुआ, वि., उक्त, गरित, कथित, नीत ।

बोली, सं. स्त्री. (हिं. बोलना) गिर-वान् (स्त्री.) गिरा, उदीरणा, वाणी २. वचन-उक्तिः (स्त्री.), वाक्यं, शब्दः ३. विक्रय-घोषणा ४. भाषा, वार्ता गिरा ५. उप-प्राकृत-प्रादेशिक-भाषा ६. वक्र-व्यंग्य-व्याज-छेक-मंगि-उक्तिः (स्त्री.)-भाषितं, कूटक्षेपः ।

—डोली, सं. स्त्री., दे. 'बोली' (दे.) ।

—डोली मारना, मु., भंग्या आनिष् (तु. प. अ.) वक्रोक्त्या अधिक्षिप्, व्याजोक्त्या सूत्र (चु.) ।

बोवा(आ)ना, कि. प्रे., व. 'बोना' के प्रे. रूप ।

बोहनी, सं. स्त्री. (सं. बोधनं >) प्रथमविक्रयः ।

बौखलाना, कि. अ. (सं. वायुखलनं >) ईपत् उन्मद् (वि. प. से.)-वातुलीभू ।

बौद्धाङ्क-र, सं. स्त्री. (सं. व.युधरगं >) ज्ञज्ञा, ज्ञज्ञा, अनिलः-वातः-मरुत (पुं.) २. आसारः, धारासंपातः ३. *सतत्वसंपातः ४. व्यंग्योक्तिः (स्त्री.), दे. 'बौली' (६) ।
 बौद्ध, सं. पुं. (सं.) गौतमबुद्धःतुवाथिन् । वि., बुद्ध, संशयिन्-प्रचारित ।
 —धर्म, सं. पुं. (सं.) बुद्धप्रवर्तितधर्मः, बुद्धमनम् ।
 बौना, सं. पुं. (सं. वामनः) खर्वः, ह्रस्वः, खड्गः, स्रष्टारकः, न्यञ्च् । वि., खर्व, ह्रस्व ।
 बौरा, वि. (सं. वातुल) विक्रिस, उन्मत्त । ३. अथ, मूर्ख ।
 बौली, सं. स्त्री. (देश.) विक्र, सखःप्रसताया गोर्द्धभम् ।
 व्याज, सं. पुं. दे. 'सूत्र' ।
 व्याध, सं. पुं., दे. 'व्याध' ।
 व्याना, कि. म. (सं. वीजं >) जन्-उत्पद् (प्र.), प्रम् (अ. आ. से.) ।
 व्यालू, सं. पुं. (सं. वैकालिक >) सांध्य भोजन, *नकाशः । *वैकालिकम् ।
 व्याह, सं. पुं. (सं. विवाहः) उद्वाहः, परिणयः, उपयमः, पाणि, ग्रहः-ग्राहः-ग्रहणं, दारः, परिग्रहः-अधिगमः ।
 व्याहता, वि. स्त्री. (सं. विवाहिता) ऊढा, परिणीता । सं. पुं., पतिः, मर्तु ।
 व्याहना, कि. स. (सं. विवहनं) (पत्नीग्रहणं) उद्-वि-वह् (भ्वा. प. अ.), परिणी (भ्वा. प. अ.), उपयम् (भ्वा. आ. अ.), परि-प्रति-ग्रह् (क्त. प. से.) २. (पति-ग्रहणं) पतिं विद् (तु. उ. वे.)-लभ् (भ्वा. आ. अ.)-अधिगम् (भ्वा. प. अ.), वृ (स्वा. उ. से.), भर्त्वा संयुज् (कर्म.) ३. उद्वाहं कृ (प्रे.), पाणि ग्रह् (प्रे.), विवहने-संयुज् (जे.), पाणि-ग्रहणं संपद् (प्रे.) । सं. पुं., दे. 'व्याह' सं. पुं. ।
 व्याहने योग्य, वि., उद्-वि-वह्-योग्योऽन्य, परिणय, विवाहयोग्य ।
 व्याहने वाला, सं. पुं., वि-उद्-योद्, परिणेतु, परिणायकः, पाणि-ग्राहः-ग्राहकः-ग्रहीतु ।
 व्याहा हुआ, वि. पुं., विवाहित, सपत्नीक, सभार्य, कृतदार, स्त्रीमत्, कुर्डाबन्, ऊढ, परिणीत । (वि. स्त्री.) सभर्तृन्ना, पतिवन्ती, सधवा, सुवासिनी, परिणीता, ऊढा ।

व्योत, सं. स्त्री. (सं. व्यवस्था) वृत्तं, वृत्तांतः २. कार्य, विधिः-प्रगल्भी-शील्य ३. युक्तिः (स्त्री.), उपायः ४. आश्रयनं, उपकल्पनं ५. अवसरः ६. व्यवस्था, प्रबंधः ७. सीवनाय वलकरीतम् ।
 व्योतना, कि. स., दे. 'कतरना' ।
 व्योपार-री, सं. पुं., दे. 'व्यापार-री' ।
 व्योरा, सं. पुं. (सं. विवरणम्) विस्तृत, वर्णनं-वृत्तान्तः २. उदन्तः, वृत्तान्तः ३. अन्तरम्, भेदः ।
 —(रे) वार, अ०, सं., विरतं-विस्तारम् । विस्तारपूर्वकम् ।
 व्योहार, सं. पुं., दे. 'व्यवहार' ।
 ब्रज, सं. पुं., दे. 'ब्रज' ।
 ब्रत, सं. पुं., दे. 'ब्रत' ।
 ब्रह्म, सं. पुं. [सं. ब्रह्म (न.)] परमः-त्मन्, परमेश्वरः, सच्चिदानन्दः, जगत्कारु २. आत्मन्, देहिन् ३. ब्राह्मणः (प्रायः समासार्थं भे. उ. ब्रह्महत्या) ४. चतुर्मुख, विधिः, पचासनः ५. वेदः ६. ब्रह्मांडं, सुवतकोषः ।
 —चर्य, सं. पुं. (सं. न.) आश्रमभेदः, प्रथमाश्रमः २. वीर्यरक्षा, अष्टांगमैथुनप्रतिषेधः, यमभेदः (योग.), ऊर्ध्वरेतस्त्वम् ।
 —चारिणी, सं. स्त्री. (सं.) ब्रह्मचर्यधारिणी, २. प्रथमाश्रमिणी २. अनुद्धा, कुमारी ।
 —चारी, सं. पुं. (सं. रिन्) ब्रतिन्, लिङ्गिन्-लिङ्गस्थः, ब्रह्मचर्यधारिन् वर्णिन् २. प्रथमाश्रमिन्, अविवाहितः ।
 —ज्ञान, सं. पुं. (सं. न.) परमेश्वरबोधः ।
 —ज्ञानी, सं. पुं. (सं. निन्) ब्रह्मवेत्ता २. अहै-तन्नदिन् ।
 —दिन, सं. पुं. (सं. न.) परमेश्वरदिवसः, सुख्यवधिः (= १०० क्षतुर्बुगी) ।
 —देश, सं. पुं. (सं.) अर्धावर्गस्य भागविशेषः (कुक्षेत्रं च मत्स्यःश्च पंचालः शूरसेनकाः । एष ब्रह्मविदेशो वै ब्रह्मवर्षादिनन्तरः-मनु० २।१९)
 —पुराण, सं. पुं. (सं. न.) पुराणविशेषः ।
 —बुधु, सं. पुं. (सं.) पतितो विप्रः ।
 —भोज, सं. पुं. (सं. न्यं) ब्रह्मणभोजनम् ।
 —मूर्हत, सं. पुं. (सं. पुं. न.) सूर्योदयात् विचतुरस्रटीपूर्ववर्तिमालः, ब्रह्मराजः ।
 —यज्ञ, सं. पुं. (सं.) ब्रह्मसत्तं, सविधि वेदाध्ययनाध्यापनम् ।

- रंभ्र, सं. पु. (सं. न.) ब्रह्म, रंभ्र-द्वारम् ।
 —रात्रि, सं. स्त्री. (सं.) ब्रह्मणी निशा, प्रलय-
 बधिः (= १०० चतुष्टयी) ।
 —वर्षस, सं. पु. (सं. न.) तपःस्वाध्यायजं
 तेजस् (न.) ।
 —वचस्वी, वि. (सं. संस्वर) ब्रह्मवचसविशिष्ट ।
 —वादिनी, सं. स्त्री. (सं.) गायत्री । वि.,
 वेदोपदेशी ।
 —वादी, वि. (सं. दिव) वेदोपदेशकः ।
 —विद्व, वि. (सं.) ब्रह्मवेत् २. वेदार्थज्ञः ।
 —विद्या, सं. स्त्री. (सं.) उपनिषद्-परा, विद्या ।
 —वेसा, सं. पु. (सं. संतृ) ब्रह्मज्ञः ।
 —वैवर्त्त, सं. पु. (सं. न.) पुराणविशेषः ।
 —समाज, सं. पु. (सं.) श्रीराममोहनराज-
 प्रवर्तितः संप्रदायविशेषः ।
 —सूत्र, सं. पु. (सं. न.) दे. 'यशोपवीत'
 २. शारीरिकसूत्रम् ।
 —इत्या, सं. स्त्री. (सं.) विप्रवधः ।
 —इत्यारा, सं. पु. (सं. न. हि.) विप्रवतः-
 ब्राह्मणपत्न्यकः ।
 ब्रह्मत्व, सं. पु. (सं. न.) परमेश्वर, त्वन्ता
 २. ब्राह्मणत्वम् ।
 ब्रह्मर्षि, सं. पु. (सं.) ब्रह्मिष्ठोदयो मंत्रद्रष्टारः
 ऋषयः २. ब्राह्मणः ऋषिः ।
 ब्रह्मा, सं. पु. (सं. क्षभ पुं.) चतुर्भुजः, अष्ट-
 कर्णः, अजः, कः, कंजः, कमल-पद्म-अम्बु-
 योनिः, विधातृ, नाभिजः, पद्मासनः, पर-
 मेष्ठिन्, पितामहः, विधिः, विरिचः-चिः-चनः,
 विश्वसृज, सर्वतोमुख, स्रष्टृ, स्वयंभूः, हंस-
 वाहनः, हिरण्यगर्भः (स्रष्टृ पुं.) ।
 ब्रह्मांड, सं. पु. (सं. न.) भुवनकोषः, विश्व-
 गोलकः, विश्व, जगत (न.), जगती, त्रिभुवनम् ।
 ब्रह्माक्षर, सं. पु. (सं. न.) ओम् इत्यक्षरम्,
 प्रणवः, ओङ्कारः ।
 ब्रह्माणी, सं. स्त्री. (सं.) ब्रह्मणः पत्नी, शतरूपा,
 सावित्री, सरस्वती, गायत्री ।

- ब्रह्मानंद, सं. पु. (सं.) ब्रह्मदर्शनाह्लादः ।
 ब्रह्माभ्यास, सं. पु. (सं.) वेद-अभ्यसनं-
 स्वाध्यायः ।
 ब्रह्मावर्त्त, सं. पु. (सं.) तपोवटः, सरस्वती-
 वृषदन्तधीर्मध्यवर्तिदेशः ।
 ब्रह्मासन, सं. पु. (सं. न.) योग-ध्यान-
 आसनम् ।
 ब्रह्मास्त्र, सं. पु. (सं. न.) ब्रह्मास्त्ररूपमन्त्रं
 २. अर्धोष्णवेदः ।
 ब्राह्मण, सं. पु. (सं.) आर्याणामुत्तमो वर्णः
 २. विप्रः, ज्येष्ठवर्णः, अग्र-जन्मन्-वर्णकः ।
 भूदेवः, द्वि-जन्मन्-जातिः, वक्त्रवर्णः, द्विजः,
 गुरुः, द्विजोत्तमः, षट्कर्मद, ब्रह्मण (स्रष्टृ पुं.) ।
 ब्राह्मणव, सं. पु. (सं. न.) द्विजत्वं, विप्रत्वं,
 शःक्षण्यम् इ. ।
 ब्राह्मणी, सं. स्त्री. (सं.) ब्राह्मणपत्नी २. ज्येष्ठ-
 वर्णा, द्विजोत्तमा ३. बुद्धिः (स्त्री.) ।
 ब्राह्ममुहूर्त्त, सं. पु. (सं. पुं. न.) अरुणोदय-
 कालस्य प्रथमदंडहयम् ।
 ब्राह्मी, सं. स्त्री. (सं.) दुर्गा २. भारतवर्षस्य
 प्राचीनलिपिविशेषः ३. (ब्रह्मी) शोमवर्त्तरी,
 सुरसा, परमेष्ठिनी, ब्रह्मकन्यका, शारदा,
 सरस्वती ।

- ब्रिटिश, वि. (अं.) आंग्ल ।
 ब्रुश, सं. पु. (अं.) आधर्षणी, लोममयी शोधनी-
 मार्जनी २. कृत्रिका-ची, तुलिका, बर्तिका ।
 ब्रूरी, सं. स्त्री. (अं. ब्रूरी) यवासवनी ।
 ब्रूकाइट्स, सं. पु. (अं.) आसनालीमुत्रप्रदाहः ।
 ब्रूक, सं. पु. (अं.) अचित्रफलकः-कां २. चतु-
 रक्षी भूखंडः ३. गृहवर्गः ।
 ब्रूचिंगा पौडर, सं. पु. (अं.) द्रवतनक्षौदः,
 रंगनाशकचूर्णम् ।
 ब्रूडर, सं. पु. (अं.) भूत्राशयः, वस्तिः (पुं.
 स्त्री.) २. पित्ताशयः ३. (पादकन्दुकारय)
 अन्तःकोषः ।

भ

- भ, देवनागरीवर्णमालायाम्बुविशो व्यंजनवर्णः,
 अकारः ।
 भंग, सं. स्त्री., दे. 'भाग' ।
 भंग, सं. पु. (सं.) भंजनं, भेदनं २. विनाशः,
 विध्वंसः ३. अतिक्रमणं, उल्लंघनं ४. तरंगः,

- कल्लोलः ५. पराजयः ६. खंडः-ई ७. बाधा,
 विघ्नः ८. वक्रता, विह्वलता ९. दे. 'लकवा' ।
 भंग, वि. (हि. भांग) भंगप, भंगापाविन् ।
 भंगरा, सं. पु. (सं. भंगराजः) केश्यः, केशरंजनः,
 कुन्तलवर्द्धनः, पितृद्विधः, भृंगः, केशराजः ।

भैगा^१, सं. पुं. (हि. भंग) शाणपदः, वरादिः-सिः ।
 भंगराज, सं. पुं. (सं. नृहराजः) विकारकरः खगभेदः २. दे. 'भंगरा'^२ ।
 भंगिन, सं. स्त्री. (हि. भंगी) खलपूः (श्री.), सम्पात्रिका ।
 भंगिमा, सं. स्त्री. (सं. भन् पुं.) वक्रता, कुटिलता, भ्रष्टता, अरालता ।
 भंगी,^३ सं. पुं. (सं. भक्तः >) खलपूः (पुं.), भलहाटकः, संगार्जकः २. कुट्टजातिभेदः ।
 भंगी,^४ वि. (हि. भंग) दे. 'भंगह' ।
 भंगी,^५ सं. स्त्री. (भं) भेदः, विच्छेदः २. कुटिलता, वक्रता ३. अंगनिवेशः, विन्यासः ४. कञ्जोलः, लहरो ५. व्याजः ६. प्रतिकृतिः (स्त्री.) ।
 भंगी,^६ वि. (सं. भिन्) भिदुर, भंगुर, सुभंग, संजनशील २. भंजक, भंजन, खंडक, खंडन ।
 भंगुर, वि. (सं.) भिदुर, सुभंग २. नथर, अधुव २. कुटिल, वक्र ।
 भंजक, वि. (सं.) खंडक, खंडन, श्राटक २. उल्लंघक, अतिक्रमणकारिन् ।
 भंजन, सं. पुं. (सं. न.) खंडनं, चोटनं, भेदनं, शकलीकरणं २. अतिक्रमः-मर्गं, उल्लंघनं, भंगः, व्याघ्रननं ३. वि. ध्वंसनं ४. भंगः, ध्वंसः ५. नाशनं, लोपनम् । वि., दे. 'भंजक' (१-२) ।
 भंजना, क्रि. अ. (सं. भंजनं) दे. 'टूटना' ।
 भंटा, सं. पुं. (सं. वृताकः) दे. 'भंगन' ।
 भंड, सं. पुं. (सं.) दे. 'भांड' ।
 भंडा, सं. पुं., दे. 'भांडा' ।
 भंडार, सं. पुं. (सं. भांडारं) कोशः-घः, निधिः, शोधः, निधानं २. धान्य-कोशः, अ(आ)गारः-रं ३. पाकशाला. ४. उदरं, वठरं ५. भांडा-गारः-रं ६. 'दे' 'भंडारा' ।
 भंडारा, सं. पुं. (हि. भंडार) दे. 'भंडार' (१-५) २. समूहः, राशिः ३. साधूनां भोजनोत्सवः ।
 भंडारी, सं. (हि. भंडार) कोषकः, अ(आ)-गारकः-कं २. कोशः-घः ।
 भंडारी, सं. पुं. (भांडारिन्) कोशा(पा)ध्वक्षः, धनाध्यक्षः २. भांडागारिकः, भांडारिकः ३. भूदः, पाचकः ।
 भंभीरी, सं. स्त्री. (अनु.) रक्तवर्णः पतंगभेदः, भंभीरी २. दे. 'तीतरी' ।

भैवर, सं. पुं. (सं. भ्रमरकः) जल-आवर्तः-गुल्मः, अग्निः (स्त्री.), आवर्तः, अवपूर्णः, कुलकुंडकः, तानूरः २. दे. 'भ्रमर' ३. गर्तः-नै, अवटः ।
 भैवरा, सं. पुं., दे. 'भ्रमर' ।
 भैवरी,^१ सं. स्त्री. (हि. भैवर) दे. 'भैवर' (२), शरीरांगस्थं रोम-वर्तुलं-मंडलम् ।
 भैवरी,^२ सं. स्त्री. (हि. भैवरना, सं. भ्रमण >) दे. 'भाँवर' २. वैवधिकता, गांडवाहकता ३. (प्रजारथायै अधिकारिणां) पर्यटन-परिभ्रमणम् ।
 भइथा, सं. पुं. (हि. भाँ, दे.) ।
 भक, सं. स्त्री. (अनु.) ज्वाला-शलाका-ध्वनिः (पुं.) ।
 भक्त, वि. (सं.) धार्मिक, धर्मात्मन्, पुण्य-धन-सौल, पुण्यत्वन् । सं. पुं., पूजकः, उपासकः, नेवकः २. अनुयायिन्, अनुगामिन् ३. पक्षपातिन्, सहायकः ।
 भक्ताई, सं. स्त्री., दे. 'भक्ति' ।
 भक्ति, सं. स्त्री. (सं.) ईश्वर-सेवा-पूजा-अर्चा-उपासना-परायणता २. नियमः, धार्मिकता, धर्मक्रिया, तपस् (न.) ३. शक्ता, निष्ठा ४. परायणता, निरतिः (स्त्री.), अनुरागः, अभिनिवेशः ।
 भक्ष, सं. पुं. (सं.) भोजनम् २. सक्षम् ।
 —कार, सं. पुं. (सं.) खाडिकः २. पाचकः ।
 भक्षक, वि. (सं.) खादक, अन्नर, भोक्तृ, धर्मर, भोजिन् [भक्षिका (स्त्री.) = खादिका, भोजिनी, भोजनी] ।
 भक्षण, सं. पुं. (सं. न.) अशनं, आस्वादनं, खादनं, भोजनं, अभ्यवहरणं २. आहारः ।
 भक्षित, वि. (सं.) भुक्त, खादित, अशित ।
 भक्षो, वि. (सं. क्षिन्) दे. 'भक्षक' ।
 भक्षय, वि. (सं.) खाद्य, भोज्य, अभ्यवहार्य । सं. पुं. (सं. न.) भोजनं, आहारः, खाद्यवस्तु (न.), अन्नम् ।
 भगंदूर, सं. पुं. (सं.) अपानदेशे व्रणरोगभेदः ।
 भग, सं. पुं. (सं.) सूर्यः २. ऐश्वर्यं, धनं ३. सौभद्रा-भारथं ४. चंद्रः ५. योनिः (स्त्री.) ६. सुदं ७. पूर्वाफाल्गुनीनक्षत्रं ८. धर्मः ९. कतिः (स्त्री.) १०. मोक्षः ११. माहात्म्यं १२. यत्नः ।

भगण, सं. पुं. (सं.) नक्षत्रसमूहः २. गणभेदः ।
(शु.; छंदःशास्त्र) ।

भगत, सं. पुं. तथा. वि., दे. 'भक्त' ।

भगतानी, सं. स्त्री. (हिं. भगत) भक्त, भार्या-
पत्नी २. ईश्वर, उपासिका-पूजेका-संविधा,
धर्मशीला ३. अनुगामिनी ।

भगती, सं. स्त्री., दे. 'भक्ति' ।

भगदर, सं. स्त्री. (हिं. भग + द + ड) पलायनं,
अप, क्रमण-दानं, विद्रावः ।

—भङ्गना या भचना, क्रि. अ., पलाय् (भ्वा.
आ. से.), वि-प्र-द्रु (भ्वा. प. अ.), अपधाव्
(भ्वा. प. से.) ।

भगवत, सं. पुं. (सं. भगवन्तः >) ईश्वरः,
भगवत् (पुं.) ।

भगवती, सं. स्त्री. (सं.) देवी २. गौरी
३. सरस्वती ४. गंगा ५. दुर्गा ।

—भगवत्, वि. (सं.) श्रीमत्, लक्ष्मीवत्,
ऐश्वर्यशालिन् २. पूज्य, मान्य, अर्चनीय ।
सं. पुं. (सं.) परमेश्वरः, जगदीश्वरः ३. विष्णुः
४. शिवः ५. विनः ६. बुद्धः ।

—गीता, सं. स्त्री. (सं.) श्रीकृष्णार्जुनसंवादा-
त्मको विख्यातो धर्मग्रंथविशेषः ।

—पदी, सं. स्त्री. (सं.) गंगा, देवतटी ।

भगवत-वा, सं. पुं., दे. 'गेह' । वि., दे. 'गेह' ।

भगवानन्द, वि. (सं. भगवत्) दे. 'भगवत्'
वि. तथा सं. पुं. ।

भगाना, क्रि. स., ब. 'भगना' के प्रे. रूप ।

भगिनी, सं. स्त्री. (सं.) सोदरा, दे. 'बहन' ।

भगोरथ, सं. पुं. (सं.) अयोध्यःपतिविशेषः ।
वि., सुमहत्, विपुल, अत्यधिक ।

भगोडा, वि. (हिं. भगना) रणविमुख,
युद्ध-त्यागिन् २. अपधावित, प्रपलक्षित
३. भीरु, यातर ।

भगत, वि. (सं.) खंडित, बुद्धित, ध्वस्त २. भिन्न,
वि-दीर्ण ३. पराजित, पराभूत ।

भगनावशेष, सं. पुं. (सं.) ध्वंसावशेषः,
दे. 'खंडहर' ।

भजन, सं. पुं. (सं. न.) पूजा, अर्चा, सेवा,
सपथ्यो २. जपः, संततस्मरणं ३. भक्ति-
गीत-तिका ।

—करना, क्रि. स., दे. 'भजना' ।

भजना, क्रि. स. (सं. भजनं) भज् (भ्वा.
उ. अ.), पूज्-सभाज् (चु.), उपास् (अ.

आ. से.), आराप् (चु.), दमस्वति (ता.
धा.), संव् (भ्वा. आ. से.) २. जप
(भ्वा. प. से.), निरंतरं स्मृ (भ्वा. प. अ.)
३. आ-श्रि (भ्वा. उ. से.) । क्रि. अ.,
दे. 'भगना' । सं. पुं., दे. 'भजन' (१-२) ।

भजनानन्द, सं. पुं. (सं.) भक्ति, आनन्दः-रक्तः-
आह्लादः । वि. संक्षिपरायण ।

भजनानंदी, वि. (सं-दिव्) भक्तवानन्द-
मग्न-स्थित-वरायण ।

भजनीक, सं. पुं. (सं. भजनं >) गायकः, गायु-
गातुः, गेयः ।

भजनीय, वि. (सं.) पूज्य, लम्मान्य, संव्य ।

भजने योग्य, वि., भजनीय, उपास्य, संव्य,
अपार्ह, आश्रयणीय ।

भजने वाला, सं. पुं. भक्तः, उपासकः
आराधकः ।

भट, सं. पुं. (सं.) बोधः, बोद्धृ (सौ. क्तः
आयुधिकः) २. वीरः, शूरः ३. वर्णसंकरभेदः ।

भटकटाई, भटकटैया, सं. स्त्री. (सं. भटः +
कटकः >) दुःस्पर्शा, दुःप्रधापिणी, बहुकांटा,
विषफला ।

भटकना, क्रि. अ. (सं. भ्रान्तक >) मोषं पथंटे-
परिभ्रम् (भ्वा. प. से.) २. पथभ्रष्ट (वि.)-
इतस्ततः या (अ. प. अ.), विपथंगम् ३. भ्रम,
मुद् (दि. प. से.) । सं. पुं., व्यर्थपर्यटनं, पथ-
भ्रमः, उन्मार्ग-गमनं, भ्रमः, माया, मोहः ।

भटकाना, क्रि. स., ब. 'भटवता' के प्रे. रूप ।

भटका हुआ, वि., उन्मार्ग-विपथ-गामिन्, पथ-
भ्रष्ट, भ्रंत, मूढ ।

भट्ट, सं. स्त्री., (सं. वधूः >) (सम्बोधन में हा'
(हे) सखि ! (हे) आलि ! (हे) वयस्ये .

भट्टी, सं. पुं. (सं. भट्टः) जातिविशेषः २. स्तुति-
पाठकः, दे. 'भट' ।

भट्ट, सं. पुं., दे. 'भट' ।

भट्टा, सं. पुं. (सं. भ्राष्ट्रः >) आपाकः, कंडुः
(पुं. स्त्री.), पाकपुटी ।

भट्टी, सं. स्त्री. (हिं. भट्टा) वदमंत, उद्दानं,
अतिका, अंदिका, अधिश्रयणी, अग्निकुंड
२. संवानी, अभिषवशाला ३. रजककटाहः ।

भट्टियारा, सं. पुं. (हिं. भट्टा) पांथागार-
अध्यक्षःपतिः २. भृष्टकारः, भाष्ट्रमिथः, गर्भत-
कारः-कर्तृ ।

भठियारिन-री

[४३३]

भय

भठियारिन-री, सं. स्त्री. (हि. भठियारा) पांथा-
गाराध्वक्षा २. भजन-कारी-करी, भृष्टकारी ।
भडक, सं. स्त्री. (अनु.) औज्ज्वल्यं, प्रभा,
भास् (स्त्री.), अति-बाह्य-कातिः-दीप्तिः (दोनों
स्त्री.)-शोभा ।
—दार, वि. (हि. + फा.) भासुर, भासमान,
उज्ज्वल, दीप्तिमत् ।
भडकाना, क्रि. अ. (हि. भडक) उत्-प्र-ज्वल्
(भ्वा. प. से.), उत्-प्र-सं दीप् (दि. आ. से.)
२. सप्तध्वंस अपस् (भ्वा. प. अ.)-परावृत्
(भ्वा. आ. से.), सहसा कम् (भ्वा. आ. से.)
३. क्रुध् (दि. प. अ.) ।
भडकाना, क्रि. स. व., 'भडकना' के प्रे. रूप
२. उत्तिञ्ज उदाप- (प्रे.) ।
भडकीला, वि. (हि. भडक) दे. 'भडकदार' ।
भडभडिया, वि. (अनु. भडभड्) वाचाङ्,
वाचाट, वाचदूक, जल्पक, बहुभाषिन् ।
भडभूजा, सं. पुं. (हि. भाड भूजना)
दे. 'भठियारा' (२) ।
भडभूजी, -जिन, सं. स्त्री. (हि. भडभूजा)
दे. 'भठियारिन' (२) ।
भडुआ, सं. पुं. (हि. भाँड) भगाजीविन्,
वेर्याचार्यः, कुंडाशिन, विटः ।
भडुर, सं. पुं. (सं. भद्र >) क्षुद्रनाक्षणभेदः ।
भणित, वि. (सं.) उक्त, कथित, व्याहृत ।
भतीजा, सं. पुं. (सं. भ्रातृजः) भ्रातृव्यः, भ्रात्री-
(प्रे)यः, भ्रातुःपुत्रः ।
भतीजी, सं. स्त्री. (हि. भतीजा) भ्रातृजा,
भ्रातृव्या. भ्रात्रीया, भ्रातुःपुत्री, भ्रात्रीयी ।
भत्ता, सं. पुं. (सं. भक्त >) भक्त, मार्गव्ययः,
यात्रावृत्तिः (स्त्री.), यात्रिकम् ।
भदभद, वि. (अनु.) अतिस्थूल २. कुदरान्त ।
भद्दा, वि. (अनु. भद) कदाकार, कुदर्शन,
कुरूप, विषमांग २. नैपुण्य-दाक्ष्य-शून्य
३. अश्लील, अवाच्य ।
भद्र, वि. (सं.) सन्ध, शिष्ट, सुशिक्षित,
श्रेष्ठ, गुणिन, प्रशस्त, साधु, सुवृत्त, सुशील
२. मंगल, कल्याण, शुभ ३. उचित, उपयुक्त ।
सं. पुं. (सं. न.) कल्याणं, क्षेमं, मंगलं,
कुशलं, हितं २. चंदनं ३. गजजातिभेदः
४. सुवर्णं ५. सृष्टिः (स्त्री.) ।

भद्र, सं. पुं. (सं. भद्राकरणं) केशकूर्चमश्रु-
मुंडनं, मुंडनम् ।
भद्रता, सं. स्त्री. (सं.) शिष्टता, सभ्यता,
सज्जनता, सुशीलता ।
भद्रासन, सं. पुं. (सं. न.) नृपासन, सिंहा-
सनं २. योगासनभेदः ।
भद्रिका, सं. स्त्री. (सं.) भद्रा तिथिः (द्वितीया,
सप्तमी, द्वादशी) २. वृत्तभेदः ।
भनक, सं. स्त्री. (सं. भण् >) मंद-अस्पष्ट-
ध्वनिः २. जनप्रवाहः, किंवदन्ती ।
भनभनाना, क्रि. अ. (अनु.) भणभणावति
(ना. भा.), गुंज् (भ्वा. प. से.) झंकारं कृ ।
भनभनाहट, सं. स्त्री. (हि. भनभनाना)
भणभणाधितं, भणभणध्वनिः, गुंजनं, गुंजितं,
झंकारः ।
भव(भ)का, सं. पुं. (हि. भाप) नक-
संधान-यंत्रम् ।
भभक, सं. स्त्री. (अनु. भक) ज्वालोत्थानं,
कीलोद्गतिः (सं. स्त्री.) २. दे. 'उज्ज्वल' ।
—मारना, क्रि. अ., गज् (भ्वा. प. से.) ।
भभकना, क्रि. अ. (हि. भभक) प्रज्वल्
(भ्वा. प. से.), उदीप् (दि. आ. से.)
२. तापानिर्वायेन स्फुट् (तु. प. से.)-भंज्
(कर्म.) ३. दे. 'उदलना' ।
भभकी, सं. स्त्री. (हि. भभक) विभीषिका,
तर्जनी, भर्त्सना, भयदर्शनम् ।
—देवा, क्रि. स., निर्-भर्त्स्, तर्ज् (दोनों
नु. आ. से.) ।
गौदङ्—, मु., कपटविभीषिका, मिथ्या तर्जनी ।
भभभड्, सं. पुं., दे. 'भीडभाड' ।
भभूका, सं. पुं. (हि. भभक) ज्वाला, शिखा,
अविन् (न.) ।
भभूत, सं. स्त्री. [सं. विभूतिः (स्त्री.)]
गोमयभस्मन् (न.) २. वैभवं ।
—लगाना, क्रि. स., विभूत्या विग्रहं लिप्
(तु. उ. अ.) । सं. पुं. भस्मयुंठनम् ।
भयंकर, वि. (सं.) प्रास-भीति-भय-जनक-द-भ्रद-
आवह, भीम, भीषण, भयानक, रौद्र, भैरव ।
भयंकरता, सं. स्त्री. (सं.) भीमता, भीषणता,
भयानकता इ. ।
भय, सं. पुं. (सं. न.) भीः-भीतिः (स्त्री.),

साध्वसं, सं-त्रासः, दूरः-भं, भिया २. आतंकः
३. आशंका ।

—कारक, —प्रद, वि., दे. 'भयंकर' ।

—खाना या खगना, कि. अ., भो (जु. प. अ.), वि-सं-त्रस (भ्वा. दि. प. से.), दे. 'दरना' ।

—भीत, वि. (सं.) भीत, भयार्त, ससाध्वस, प्रस, समय, सदर ।

—हीन, वि. (सं.) निर्भय, अभय, निर्भीक, अकुजोभय. दे. 'निर्भय' ।

भयातुर, वि. (सं.) दे. 'भयभीत' ।

भयानक, वि. (सं.) दे. 'भयंकर' ।

भयावना, वि. (सं. भयं >) दे. 'भयंकर' ।

भयावह, वि. (सं.) दे. 'भयंकर' ।

भर, वि. (हि. भरना) समस्त, सम्पूर्ण, समग्र, यावत् (नी स्त्री.) तावत् (नी स्त्री.) ।

कि. वि., यावत् (द्वितीया के साथ), आ- (वंचनी के साथ-मात्र-मित-परिमित-परिमाण ।

आनु—, कि. वि., यावज्जीव, आमृत्योः ।

क्रोश—, कि. वि., क्रोशं यावत्, क्रोशमात्रम् ।

वैश—, वि., वैश-मात्र-मित-परिमाण ।

शक्ति—, कि. वि., यथाशक्ति (न.), याव-
च्छक्यं, यावच्छक्ति (अव्य.) ।

सेर—, वि., सेर-सेटक, मात्र-परिमित ।

भरण, सं. पुं. (सं. न.) पालनं, पोषणं,
संवर्धनं, रक्षणं, समालंबनम् ।

भरणी, सं. स्त्री. (सं.) नक्षत्रविशेषः, यमदेवता
२. घोषकलता । वि. स्त्री. (सं.) पालयित्री,
पोषिका ।

भरत, सं. पुं. (सं.) कैकेयोपुत्रः, रामानुजः
२. शाकुंतलयः, दौर्ध्यातिः, सर्वदमनः ३. ऋष-
भदेवपुत्रः ४. नाट्यशास्त्रलेखको मुनिविशेषः
५. नटः ।

—खंड, सं. पुं. (सं. न.) भारतं, भारतवर्षः-
पै २. भारततर्गतकुमारिकाखंडम् ।

भरता, सं. पुं. (देश.) *भूताकभृत्कम् ।

भरता, भरतार, सं. पुं. [सं. भर्तारः (बहु.)]
भर्तृ, पतिः, भवः २. स्वामिन, प्रभुः ।

भरती, सं. स्त्री. (हि. भरना) सैन्यप्रवेशः
२. प्रवेशः ३. भरगं, पूर्णं, पूर्तिः (स्त्री.) ।

—करना, कि. स., सैन्ये प्रवेशं कृ (प्रे.) ।

—डालना, कि. स., गर्तं पूर (चु.) ।

—होना, कि. अ., सेनायां प्रविश (तु.प.अ.) ।

भरना, कि. स. (सं. भर्त्वा) भृ (स्वा. उ. अ.),
भृ (जु. उ. अ.), पू. (जु. प. अ.), पृ (जु.
प. से.), पूर (चु.), व्याप् (स्वा. प. अ.)

२. प्रसु-पत् (प्रे.) ३. ऋणादिकं शुभू-निस्तृ
(प्रे.) ४. पृष्ट (भ्वा. आ. से.) ५. उत्तिञ्-
प्रकृप (प्रे.) ६. लिप् (तु. उ. अ.) । कि.

अ., भृ-पृ-व्याप्-पूर (कर्म.) २. अंतः कुप
(दि. प. से.) ३. ऋणादिकं शुभू (दि. प.
अ.) ४. पुष् (कर्म.) । सं. पुं., भरणं, पूर्णं,
व्यापनं, पूर्तिः-भृतिः (स्त्री.) २. कर्णं
३. उत्कोचः ।

भरनी, सं. स्त्री. (हि. भरना) महलिकः, त्र(त)-
सरः, सूत्रवेष्टः-ष्टनं २. तिर्यक्तंतवः (पुं. बहु.) ।

भरनी, सं. स्त्री., दे. 'भरणी' ।

भरने घोष्य, वि., भर्तव्य, भरणीय, पूरणीय,
पूरयितव्य २. शोषनीय (ऋणादि.) ।

—बाला, सं. पुं., पूरकः, भर्तृ, पूरयितृ
२. ऋणादिशोषकः ।

भरा हुआ, वि., सं-भृत, पूर्ण, पूरित, आ-सं-
कीर्ण, व्याप्त, निवृत्त, संकुल, आविष्ट ।

भरपूर, वि. (हि. भरना + पूरा) सं-परि-
पूर्ण-पूरित-भृत-संकीर्ण-व्याप्त, निवृत्त । कि. वि.,
पूर्येति, अघोषेण २. मन्थक्, साधु ।

भरभराना, कि. अ. (अनु.) आङ्गल (वि.) भू ।

भरम, सं. पुं. (सं. भ्रमः) भ्रान्तिः, मिथ्या-
मतिः (दोनो स्त्री.), माया, आभासः, अविद्या
२. भेदः, रहस्यम् ३. प्रतिष्ठा, प्रत्ययः ।

भरमार, सं. स्त्री. (हि. भरना + मार) बहुलता,
प्रचुरता, विप्लता, भूषिष्ठता ।

भरराना, कि. अ. (अनु०) सहसा पत् (भ्वा.
प. से.) ९. वृत् (दि. तथा तु. प. से.) ।

भरवाना, कि. प्रे., ब. 'भरना' के रे. रूप ।

भरसक, कि. वि. [हि. भर + सक (= शक्ति)]
यथा-शक्ति-बल-सामर्थ्यं, पूर्ण-शक्त्या-व्ययेन ।

भरा, वि. (हि. भरना) पूर्ण, पूरित, (सं.)
भृत्, निवृत्त, आविष्ट ।

—(री) जवानी, पूर्ण, नीत्रनं-तारुण्यम् ।

—(री) थाली में लूत मारना, तु., लाभ-
प्रदजीविकां परित्यज् (भ्वा. प. अ.) ।

—पूरा, वि. (हि. भरना + पूरः) संपन्न,
समृद्ध २. परि-सं-पूर्ण ।

भराई, सं. स्त्री. (हि. भरना) दे. 'भरना'
सं. पुं. २. भरणं-पूर्णं, भृतिः (स्त्री.)-वैतनम् ।

भराना, कि. प्रे., व. 'भरना' के प्रे. रूप ।
 भरी, सं. स्त्री. (हिं. भर) दशमापौ ।
 भरोसा, सं. पुं. (हिं. भरा + सं. विश्वासः >)
 विश्वासः, प्रत्ययः २. आश्रयः, अवलंबः-वनं,
 आधारः ३. आशा ।
 —करना, कि. अ., अ-अव-लम्ब् (भ्वा.आ.से.)
 २. विश्वास् (अ. प. से.) ३. आशां वंभ् (क्.
 प. अ.) ।
 भर्ता, } सं. पुं. (सं. भर्त्) दे. 'भरता' ।
 भर्तार, }
 भर्ता, सं. पुं., दे. 'भरता' ।
 भर्ता, सं. स्त्री., दे. 'भरती' ।
 भरत्सना, सं. स्त्री. (सं.) तर्जना, निर्भर्त्सना,
 अभिलेपः, निद्रा, गर्हा, वाग्दंडः, उपालम्भः ।
 —करना, कि. स., निर्भर्त्सु-तर्ज् (जु. आ.
 से.), गर्ह् (स्वा. आ. से.), निद्र् (भ्वा.
 प. से.) ।
 भलमनसत, } सं. स्त्री. (हिं. मला + मानुस)
 भलमनसाहत, } भद्रता, सज्जनता, आर्यत्वं,
 भलमनसी, } महानुभावता ।
 भला, वि. (सं. भद्र) शुभ, वर, शोभन,
 उत्तम, श्रेष्ठ, गुणवत्, निर्दोष, साधु, प्रशस्त,
 प्रशस्य, वर, सु., सव- २. उत्कृष्ट, विशिष्ट ।
 सं. पुं. (सं. न.) कल्याणं, कुशलं, मंगलं,
 हितं ३. लाभः, प्राप्तिः (स्त्री.) । अन्व., भवतु,
 अस्तु, तावत् ।
 —करना, मु., उपकृ, साहाय्यं दा (जु.उ.अ.) ।
 —चंगा, वि., नोरीग, स्वस्थ, निरामय ।
 —चुरा, सं. पुं., दुर्-अश्लील, वचनं २. हानि-
 लाभी ।
 —मानुस, सं. पुं., गदः, आर्यः, सज्जनः ।
 भले ही, स., कामं, (लोट्, विधिलिङ् से भी
 अनुवाद किया जाता है) ।
 भलाई, सं. स्त्री. (हिं. भला) सज्जनता,
 साधुता, आर्यता २. उपकारः, उपकृतिः (स्त्री.),
 परहितम् ।
 भद्र, सं. पुं. (सं.) संसारः, जगद् (न.),
 २. जग्मन् (न.), उत्पत्तिः (स्त्री.) ३. पुन-
 र्जन्मदुःखं ४. सत्ता ५. शिवः ६. मेघः ।
 —बंधन, सं. पुं. (सं. न.) जगज्जालम् ।
 —भंजन, सं. पुं. (सं.) ईश्वरः, मुक्तिदः ।
 —भय, सं. पुं. (सं. न.) पुनर्जन्मत्रासः ।

—सोचन, वि. (सं.) मोक्षद ।
 —सागर, सं. पुं. (सं.) संसारपारावारः ।
 भवदीय, सर्व. (सं.) भावत्क, युष्मदीय,
 स्वदीय, तावत्क-यौष्माक [—की (स्त्री.)],
 यौष्माकीण ।
 भवन, सं. पुं. (सं. न.) अ(आ)गारः-रं, वेदमन्-
 सान् (न.), सदनं, निकेतनं, मंदिरं, गृहं,
 गेहं २. प्रासादः, नृपमंदिरम् ।
 भवानी, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'पार्वती' ।
 भवितव्य, वि. (सं.) अवश्यं भाविन्, भवनीय ।
 भवितव्यता, सं. स्त्री. (सं.) नियतिः (स्त्री.),
 भाग्यं, भाग्येयं, दैवम् ।
 भविष्यु, वि. (सं.) भविष्य, भविष्यत्, आगामि-
 मिन्, भूषु ।
 भविष्य, वि. (सं.) आगामिन्, अनागत,
 उत्तर, भविष्यत्, श्वस्तन [—ती (स्त्री.)] ।
 सं. पुं. (सं. न.), भविष्यत्-आगामि-भावि-
 उत्तर-अनागत, कालः-सम्यः, अनागतं, श्वस्तनं,
 प्रगेतनं, भाविन्-आगामिन् (न.), आयतिः
 (स्त्री.), उदकः ।
 भविष्यत्, वि. तथा सं. पुं., दे. 'भविष्य' ।
 भविष्य(द्)वक्त्रा, सं. पुं. (सं. नक्त्) भविष्यद्-
 वादिन्, दैवज्ञः ।
 भविष्य(द्)वाणी, सं. स्त्री. (सं.) भावि-
 कथनं-सूचनं, भविष्यद्वादः ।
 भव्य, वि. (सं.) सश्रीक, शोभान्वित, दिव्य,
 सुप्रभ, शोभन २. शुभ, मंगल ३. सत्त्व, यथार्थ
 ४. शोभ्य ५. भाविन्द् ६. श्रेष्ठ ७. प्रसन्न
 ८. महत्, गुरु ।
 भव्यता, सं. स्त्री. (सं.) दिव्यता, शोभा, श्रीः
 (स्त्री.), सुंदरता ३. ।
 भक्क, सं. पुं. (सं.) कुक्कुरः, सारमेयः ।
 भर्त्सिङ्, सं. स्त्री. (देश.) शृगालः-लं, शालकं
 (दिसदंठः ?), विसं, जालीकः २. करहाटः,
 कर्कटः, शिफाकंदः ।
 भर्त्सुङ्, सं. पुं., दे. 'हाभी' ।
 भसुर, सं. पुं. (हिं. ससुर का अनु.) ज्येष्ठः,
 भर्तुरप्रजः ।
 भरम, सं. पुं. [सं. भरमन् (न.)] भर्त्सितं,
 वि., भूतिः (स्त्री.) ।
 —करना, कि. स., भरम(स्मी)क, भरमसाव
 कृ २. दे. 'जलाना' ।

—लेपन, सं. पुं. (सं. न.) भस्म, गुंठन-उदधूलनम् ।

—होना, क्रि. अ., भस्मीभू, भस्मसातम् २. दे. 'जलना' ।

भस्मक, सं. पुं. (सं. न.) भस्मकोटः, उदररोग-भेदः २. क्षुधातिशयः ३. सुवर्ण ४. विडम्बः ।

भस्मीभूत, वि. (सं.) भसितीभूत, सर्वथा दग्ध ।

भहराना, क्रि. अ. (अनु.) बुट् (दि. प. से.) २. सहसा पत (भ्वा. प. से.) ३. स्वल् (भ्वा. प. से.) ।

भांग, सं. स्त्री. (सं. भंगा) गजा, मारिनी, वि-जया, मातुलानी ।

—खा या पी जाना, मु., उन्नात्त इव भाष् (भ्वा. आ. से.) ।

भांजा, सं. पुं. (हिं. बहिन) भागिनेयः, स्वस्त्रि(स्त्री-स्त्रे) यः ।

भांजी, सं. स्त्री. (हिं. भांजा) भागिनेयी, स्वस्त्रि(स्त्री)या, स्वस्त्रेयी ।

भांजी, सं. स्त्री. (हिं. भांजना) *भांजिका, भंजक-नाषक, उक्तिः (स्त्री.) ।

—भारना, मु., बाध् (भ्वा. आ. से.) प्रति-बन्ध् (क्. प. अ.), प्रतिरुध् (स्वा. उ. अ.) ।

भाँटा, सं. पुं., दे. 'बैंगन' ।

भाँव, सं. पुं. (सं. भंडः) चाडपडः, विनोद-परिहास, कारिन्, वैदासिकः, परिहासयित् । (राजा का भाँव) विदूषकः, नर्मसन्धिः २. अनुकारिन्, विडम्बनकृत ३. वि., अपवध, निर्लज्ज ।

भांवा, सं. पुं. (सं. भांडं) (बृहत्-) पात्रं, भाजनं २. सामग्री, साधनानि (न. बहु.) ।

—फूटना, मु., रहस्यं भिद् (कर्म.) प्रकटीभू ।

—फोड़ना, मु., रहस्यं प्रकाश् (प्रे.) भिद् (र. प. अ.) ।

भांडागार, सं. पुं. (सं. पुं. न.) } दे. 'भंडार' ।

भांडार, सं. पुं. (सं. भाडारं) }

भाँति, सं. स्त्री. (सं. भेदः) प्रकारः, जतिः (स्त्री.), रूप-विधा (उ., बहुविध) २. रीतिः (स्त्री.), शैली, विधिः ।

—भाँति के., मु., विविध, बहु-अनेक-नाना, निध-रूप-प्रकार ।

भाँपना, क्रि. स. (सं. भाँ) ऊद् (भ्वा. आ. से.) अनुमा (जु. आ. अ.) ।

भाँचर-री, सं. स्त्री. (सं. भ्रमणं >) वैवाहिक-प्रदक्षिणा-परिक्रमः २. परि-भ्रमण-अटनं-क्रमणम् ।

—फिरना या लेना, क्रि. अ., प्रदक्षिणीकृ, परिभ्रग-परिक्रन् (भ्वा. प. से.) ।

भाई, सं. पुं. (सं. भ्रातृ) (सगा) सहोदरः, सोदरः, सोदर्यः, समानोदर्यः, सगर्भः, सहजः २. सगोत्रः, सजातीयः, सवर्णः, सकुल्यः, सर्वशीघ्रः, सनाधिः ३. (संबोधन में) सखे, मित्र, वयस्य, भ्रातः ।

चचेरा—, पितृव्य, नः-पुत्रः ।

छोटा—, अनुजः, कनीयान् भ्रातृ ।

फुकेरा—, पैतृव्यसेयः, पि(पै)तृव्यस्त्रीयः ।

बड़ा—, अग्रजः, ज्यायान् भ्रातृ ।

ममेरा—, मातुल, जः-पुत्रः, मातुलेयः ।

मौतेरा—, मातृव्यसेयः, मातृव्यस्त्रीयः ।

सौतेला—, वैमात्रः, वैमात्रेयः ।

—चारा, सं. पुं., भ्रातृत्वं, भ्रातृभावः, सौभ्रात्रं २. मित्रत्वं ३. स्वर्णत्वं, सगोत्रत्वम् ।

—इज, सं. स्त्री., वनद्वितीया, कार्तिकशुक्ला द्वितीया, पूर्वविशेषः ।

—बंध, सं. पुं., ज्ञातयः, स्वजनाः, भ्रातरः, बंधवः, बांधवाः, सजातीयाः, सगोत्राः, सुहृदः (सप्त बहु.) ।

—बंधी, सं. स्त्री., दे. 'भाई-भार' ।

—बिरादरी, सं. स्त्री., दे. 'भाईबंध' ।

भाखा, सं. स्त्री. (सं. भाषा) दे. 'भाषा' २. हिन्दीभाषा ।

भाग, सं. पुं. (सं.) अंशः, विभागः, खंडः २. पार्श्वः-शर्व ३. भाग्यं, भागधेयं ४. मन्तकं, ललाटं ५. सीमायं ६. प्रातःकालः ७. वैभवं ८. गणितक्रियाभेदः (= तकसीम) ।

—करना, क्रि. स., दे. 'बाटना' ।

—फल, सं. पुं. (सं. न.) फलं, लब्धिः (स्त्री.) भाज्यं

भाजकाः ४) १६ (४ फलं

१६

×

—भरोसा, सं. पुं., भाग्याश्रयः, दैवपरता ।

—जगना, मु., भाग्यं उद्-इ (त्र. प. अ.) ।

भागड़, सं. स्त्री. (हिं. भाटना) सामूहिक-सामुदायिक, -पलायनं-अपमानं-अपधावनं, विश्रवः ।

भागना, क्रि. अ. (सं. भाञ्) पलाय् (भ्वा. आ. से.), अपधात् (भ्वा. प. से.), विप्र-ट् (भ्वा. प. अ.), अप, स-सप् (भ्वा. प. अ.) २. वृञ् (लु.), परिहृ (भ्वा. प. अ.) । सं. पुं., पलायनं, अपधावनं, अप, शानं-श्रवण-स्रणं, परिहरणम् ।

भाग-दौङ्, सं. स्त्री., दे. 'भगदङ्' ।

तिर परैर रःखकर भागना, मु., महाजवेन पलाय् या अपधात् ।

भागनेवाळा, सं. पुं., दे. 'भगोडा' ।

भागवत, सं. पुं. (सं. न.) श्रीमद्भागवतं, महापुराणविशेषः २. देवीभागवतपुराणं ३. भगवद्भक्तः । वि., ऐश्वर, वैश्वव ।

भागार्थी, वि. (सं. धिन्) भाग-अंश-खंड-इच्छुक-कामिन्-अर्थिन् ।

भागार्ह, वि. (सं.) अंशिन्, अंशभागिन्, भाग, शरिन्-भागिन् २. विनाज्य, अंशनीय, चंटीय ।

भागिनेय, सं. पुं. (सं.) दे. 'भांजा' ।

भागी, सं. पुं. (सं. भागिन्) अंशिन्, अंश-भाग, शरिन्-हारिन् २. दायादः, दायिकः, रिक्थिन्, अंशकः ।

भागीरथ, वि. (सं.) भगीरथ, सम्बन्धिन्-विषयक-सदृश ।

भागीरथी, सं. स्त्री. (सं.) गंगा, जाह्नवी २. गंगाया वंगवलिशाखाविशेषः ।

भाग्र, सं. पुं. (सं. न.) भागभेद्यं, विष्टं, अदृष्टं, देवं, नियतिः (स्त्री.) विधिः, भवितव्यता, विपाकः, प्राकृतनम् ।

—**उदय**, सं. पुं. (सं.) पुण्योदयः, दैवानुकूलता ।

—**चक्र**, सं. पुं. (सं. न.) दैवगतिः (स्त्री.), भाग्यक्रमः ।

—**वशा**,—**वशात्**, क्रि. वि. लौभाग्र्येन, सुदवेन, विष्टया, दैवात् ।

—**वान्**, वि. (सं. वद्) भाग्यशालिन्, महा-भाग, मुभग, धन्य, सौभाग्य-पुण्य, वत् मुकृतिव, श्रीमत् ।

—**हीन**, वि. (सं.) हन-दुर्-मंद, भाग्य-भाग, दुर्दैव, दैवशक्त ।

भाजक, वि. (सं.) विभागकल्पक, विभेदक, विच्छेदक, विभाजयित् २. हरः, हारः, हारकः (गणित) दे. 'भागफल' में ।

भाजन, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'पात्र' ।

भाजित, वि. (सं.) विभक्त, विभाजित् २. पृथक्कृत, विश्लेषित ।

भाजी, सं. स्त्री. (सं.) व्यञ्जनं, उपसेवनं, अन्नोपस्करः २. शाकः, हरितकः, शिषुः ३. दे. 'मांठ' ।

भाज्य, वि. (सं.) भागार्ह, भाजनीय । सं. पुं. (सं. न.) भागाहीनः (गणित) दे. 'भागफल' में ।

भाट, सं. पुं. (सं. भट्टः) वर्णसंकरजातिविशेषः । २. चारणः, वंदिन्, वैतालिकः, मातधः, स्तुति-पाठकः, मधुकः ३. चाट्टकारः ४. राजदूतः ।

भटा, सं. पुं. (हि. भाठना) वेला, परिवर्तः-अपचयः, क्षीयमाण-अपचीयमान, वेला ।

ज्वार—, सं. पुं. वेलोपनयापचयौ (पुं. द्वि.) ।

भाडू, सं. पुं. (सं. आध्-धू) अंबरीष, भर्जनापाकः ।

—**झोकेना**, मु., छुद्रकार्यं कृ २. कालं व्यर्थः या (प्रे. यापयति) ।

—**में झोकेना वा डालना**, मु., नश् (प्रे.), श्री (प्रे. क्षपयति) २. त्यज् (स्वा. प. अ.), उपेक्ष् (भ्वा. आ. से.) ।

—**में पड़े**, मु., नश्यतु, नरमसाप भवतु ।

भाडा, सं. पुं. (सं. भाटकः-कं) भाटं, भाटिः (स्त्री.) ।

—**भाडे का टट्टू**, मु., अस्थिर, अस्थायिन् २. स्वार्थपर, अर्थपर ३. अल्पमूल्य, गुण-सार, हीन ।

भात, सं. पुं. (सं. भक्तं) ओदनः-न्नं, अन्नं, अंधस् (न.) कूरं, मिस्सा, दोदिविः २. वर-वभृषिभोर्भक्तभोजनात्मको वैवाहिकरीतिभेदः ।

भाथा, सं. पुं. (सं. भला) दे. 'तरकश' ।

भानों, सं. पुं. (सं. भाद्रः) भाद्रपदः, नभस्यः, प्रीष्ठपदः ।

भाद्र, **भाद्रपद**, सं. पुं. (सं.) दे. 'भानों' ।

भाद्रपदी, सं. स्त्री. (सं.) भाद्री, भाद्र-भाद्र-पद-पूणिमा ।

भान, सं. पुं. (सं.) प्रकाशः, ज्योतिस् (न.) २. ज्ञानं ३. आभासः, प्रतीतिः (स्त्री.) ।

भानजा, सं. पुं., दे. 'भांजा' ।

भानजी, सं. स्त्री. दे. 'भांजी' ।

भानमती, सं. स्त्री. (सं. भानुमती) ऐन्द्र-जालिकी, माथिनी ।

भावाः

[४३८]

भावना

- का पिटारा, सं. पुं., विषमवस्तुसंग्रहः ।
 भावा, कि. अ., दे. 'पसन्द आना' ।
 भावु, सं. पुं. (सं.) रविः, सूर्यः २. किरणः ।
 भावुजा, सं. स्त्री. (सं.) यमुना, कालिन्दी,
 भावुवनया, भावुवृता ।
 भाष, सं. स्त्री. (सं. वा(वा)भ्यः-पञ्च ।
 —निकलना, कि. अ., वा(वा)भ्यायते (ना. धा.),
 वाभं लक्षिप् (तु. प. अ.)-उद्धृ (तु. प. से.) ।
 —देना, कि. स., बाष्पेण स्वित् (प्रे.) या पञ्च
 (भा. प. अ.) ।
 —बनना या बनाना, उद्वाष्पणं, वाष्पी-
 भवनं-करणम् ।
 भाभी, सं. स्त्री. (सं. भ्रातृभार्या) अग्रजपत्नी
 २. भ्रातृ-जाया-पत्नी, प्रजावती ३. जननी ।
 मामा, सं. स्त्री. (सं.) पत्नी, भार्या २. नारी
 ३. कृदा स्त्री ।
 मामिनी, सं. स्त्री. (सं.) कोषना स्त्री २. नारी ।
 भार, सं. पुं. (सं.) दे. 'बोज्ज' ।
 —बाह, सं. पुं. (सं.) भारिन्, भारिकः,
 भार-हरः-दारः, बाह(हि)कः ।
 —उठाना, मु., प्रष्टव्यता अंगीकृ ।
 —उत्तरना, मु., उत्तरदायित्वं वा (जु. प. अ.) ।
 भारत, सं. पुं. (सं. न.) भारतवर्षः-र्ष,
 भ(भा)रतखंडं २. महाभारतग्रन्थः ।
 भारती, सं. स्त्री. (सं.) गिर-वाच (स्त्री.),
 वाणी २. सरस्वती, शारदा ३. वृत्तिभेदः (सा.) ।
 भारतीय, वि. (सं.) भारत-देशीय-वर्षीय ।
 सं. पुं., भारतवासिन् ।
 भारी, वि. (सं. रिन्) भारिक, गुरु, दुर्बल,
 भारवत् २. कराल, भीषण ३. महत्, वृद्ध,
 विशाल ४. अत्यन्त, अत्यधिक ५. असह्य,
 दुर्भर, दुर्धर ६. प्रबल ७. शून्य, स्फीत ८. शक्ति,
 ग(गं)भीर ।
 —पन, सं. पुं., भारवत्त्वं, गुरुत्वं, गरिष्ठता ।
 —भरकम्, वि., अति-बहु, भारवत् ।
 पैर भारी होना, मु., गर्भं धृ (चु.) ।
 भार्या, सं. स्त्री. (सं.) दाराः (पुं. बहु.),
 दे. 'पत्नी' ।
 भाल, सं. पुं. (सं. न.) ललाटं, अलिकं, गोपिः
 (पुं. स्त्री.), निर्यटिलं, मूर्धन् (पुं.), मस्तं,
 मस्त(स्ति)कं, मस्तकः ।
 —चंद्र, —नेत्र, —लोचन, सं. पुं. (सं.) शिवः ।

- भाला, सं. पुं. (सं. भङ्गः-ल्लं) दे. 'बरछा' ।
 —बरदार, सं. पुं. (हि. + का.) दे. 'बरछेत' ।
 भालू, सं. पुं. (सं. भालूकः) भल्ल(ल्लू)कः,
 ऋक्षः, भङ्गः, दुर्घोषः, दीर्घकेशः, दुश्चरः,
 भालुकः, भालूकः ।
 भाव, सं. पुं. (सं.) अस्तित्वं, सत्ता, विद्य-
 मानता २. मानस-मनो-विकारः-वृत्तिः (स्त्री.),
 विचारः ३. अभिप्रायः, आशयः ४. मुखाकृतिः
 (स्त्री.) ५. जन्मद (न.) आत्मन् (पुं.)
 ७. पदार्थः ८. विद्वस् (पुं.) ९. जंतुः
 १०. कृत्यं, विसृतिः (स्त्री.) । ११. सं-विषयः,
 भोगः १२. प्रेमन् (पुं. न.), अनुरागः
 १३. संसारः १४. कल्पना १५. स्वभावः
 १६. गूढेच्छा १७. शैली-रीतिः (स्त्री.)
 १८. दशा १९. भावना २०. विश्वासः
 २१. प्रतिष्ठा २२. वस्तु-गुणः-धर्मः २३. उद्देश्यं
 २४. मूल्यं, अर्थः, वरनः, अवकथः, अर्थ-मूल्य-
 प्रमाणं २५. श्रद्धा, भक्तिः (स्त्री.) २६. स्वाधि-
 व्यभिचारितास्विकभावाः (काव्य.), नायि-
 कादिमानसविकाराः २७. हावः, दे. 'नसरा' ।
 —ताव, सं. पुं., मूल्यं, अर्थः ।
 —शाचक, सं. स्त्री. (सं. वासिका) संशामेदः
 (व्या., उ. श्रेष्ठता) ।
 —वाच्य, सं. पुं. (सं. न.) वाच्यभेदः (व्या.,
 उ. हस्यते) ।
 —उत्तरना या गिरना, मु., अर्थः अपत्रि
 (कर्म.), मूल्यं हम् (भा. प. से.), मंदायने
 (ना. धा.) ।
 —चढ़ना या बढ़ना, मु., जर्तं वृध् (स्वा.
 आ. से.), अवकथः उपत्रि (कर्म.) ।
 भावक, वि. (सं.) उत्पादक, स्रष्टृ २. कल्याण-
 कारक ३. उत्प्रेक्षक ४. काश्चरमिक ।
 भावज, सं. स्त्री. (सं. भ्रातृजाया) दे. 'भाभो'
 (२.) ।
 भावता, वि. (हि. भावना = अच्छा लगना)
 पिय, रुचिकर, रोचक । सं. पुं., कठमः, प्रिय-
 तमः, प्रेमपात्रम् ।
 भावन, वि. (सं.) उत्पादक, प्रकाशक । सं.
 पुं. (सं.) निमित्ताकारणम् २. सृष्टिकर्तृ ३.
 शिवः । (सं. न.) उत्पादनम् २. चिन्तनम्
 ३. कल्पना ४. भक्तिभावना ।
 भावना, सं. स्त्री. (सं.) ध्यानं, चिन्ता, विमर्शः,

भावनीय

[४३३]

भिदना

विचरः २. कामना, वासना, इच्छा ३. स्मृत्यनुभवजश्चित्तनस्कारभेदः ४. सामान्य-विचारः कल्पना ५. दे. 'पुष्ट' (वैधक) । वि., शोभन, प्रिय, रोचक । कि. अ., दे. 'पसंद आना' ।

भावनीय, वि. (सं.) चिन्तनीय, कल्पनीय ।

भावाभाव, सं. पुं. [सं.-वी (द्वि.)] अस्तित्वानस्तित्वे (न.) २. उत्पत्तिविनाशो ३. जन्म-मृत्यु (सब द्वि.) ।

भावार्थ, सं. पुं. (सं.) तात्पर्यार्थः, आशयः, तात्पर्य, भावः २. भावप्रधानटीका ।

भावित, वि. (सं.) विचारित, चिन्तित ।

भावी, वि. (सं.-विन्) दे. 'भविष्य' (वि.) । सं. स्त्री., दे. 'भविष्य' सं. पुं. २. दे. 'भवितव्यता' ।

भावुक, वि. (सं.) रतिक, सरस, रसभूषिष्ठ, भावप्रधान २. चितक, विचारक ।

भाव्य, वि. (सं.) भवितव्य, अवश्यभाविवन् ।

भाषण, सं. पुं. (सं. न.) कथनं, वचनं, उक्तिः (स्त्री.) २. व्याख्यानं, प्रवचनं, उपदेशः ।

भाषांतर, सं. पुं. (सं. न.) अनुवादः ।

—कार, सं. पुं. (सं.) अनुवादकः ।

भाषा, सं. स्त्री. (सं.) वाणी, वाच-गिरि (स्त्री.), भारती, गिरा, उदीरणा २. हिन्दीभाषा ३. वचन (न.), वचनं, वचनं, उक्तिः (स्त्री.), व्याहारः, निगदः, शब्दः, भाषितं, आलापः ४. सरस्वती ५. अभियोगपत्रं (अर्जीदावा) ।

भाषित, वि. (सं.) कथित, उक्त, उद्घोषित । सं. पुं. (सं. न.) कथनं, वातालापः ।

भाषी, सं. पुं. (सं.-विन्), वादिन्, वक्तृ ।

भाष्य, सं. पुं. (सं. न.) टीका, व्याख्या, वृत्तिः (स्त्री.) विवक्ष्यम् ।

—कार, सं. पुं. (सं.) टीका-भाष्य-व्याख्या-कारः-ह्यर (पुं.) २. महाभाष्यकारः, पत्रजलिः, गोनर्दीयः ।

भास, सं. पुं. (सं.) संस्कृतभाषायाः महाव्यवि-विशेषः २. जाति-दीप्तिः (स्त्री.) ३. कल्पना ४. गौष्ट-छम् ५. कुवकुटः ६. गृध्रः ७. पक्षिन् ।

भासन, कि. अ. (सं. भासनं) भास-प्रकाश (भ्वा. आ. से.), २. प्रति ३ (कर्म.) ३. दृश (कर्म.) ।

भासुर, वि. (सं.) दे. 'भास्वर' ।

भास्कर, सं. पुं. (सं.) सूर्यः २. अग्निः, (सं. न.) शु वर्षी ३. ज्योतिषग्रन्थकारो भास्कराचार्यः ।

भास्वर, वि. (सं.) धृति-क्रान्ति-दीप्ति-मत, उज्ज्वल, भासुर, देदीप्यमान, भ्रजमान ।

भिंडी, सं. स्त्री. (सं. भिंडा) भिंडः, भिंडकः, सुशाकः, करपर्णः, घृतबीजः, चतुःपुष्टः ।

भिक्षा, सं. स्त्री. (सं.) याचना, याचना, अर्थना, २. भिक्षाटनं ३. भक्ष्यं, दानम् ।

—पात्र, सं. पुं. (सं. न.) भिक्षादान-पात्र-माजनम् ।

भिक्षु, सं. पुं. (सं.) परिव्राज, परिव्राजकः, व्रजकः, (बौद्ध-) सन्त्यासिन्, मस्करिन्, प(पा)-राशरिन् २. दे. 'भिखारी' ।

भिक्षुक, सं. पुं., (सं.) दे. 'भिखारी' ।

भिक्षुसंगा, सं. पुं. दे. 'भिखारी' ।

भिक्षारिन्, सं. स्त्री. (हि. भिखारी) भिक्षुके, भिक्षाकी, भिक्षाचरी ।

भिखारी, सं. पुं. (हि. भीख) भिक्षुः, भिक्षुकः, भिक्षाकः, भिक्षानरः, भिक्षाशिन्, मार्गणः, याचकः, याचनकः, वनीयकः, अधिन् ।

भिगोना, कि. स. (हि. भीगना) किलद् (प्रे.), उद् (रु. प. से.), आर्दीक ।

भिजवाना, कि. प्रे., व. 'भेजना' के प्रे. रूप ।

भिटनी, सं. स्त्री. (देश.) स्तनाग्रं, चूचुकम् ।

भिद्, सं. स्त्री. (हि. बरें ?) दरट-टान्डी, इटा-चिका, गंधोली, गृहकारिका ।

भिदना, कि. अ. (अनु. मद् ?) संघट्ट (भ्वा. आ. सं.) संघट्ट-संघट्ट (कर्म.) उप-इ-या (अ. प. अ.), संमिल् (तु. प. से.) ३. कलहायते (ना. था.), बुध् (दि. आ. अ.) ।

भिडाना, कि. स., व. 'भिदना' के प्रे. रूप ।

भितल्ला, सं. पुं. (हि. भीतर + लल) दे. 'अस्तर' । वि. आन्तर, आभ्यन्तर, दे. 'भीतरी' ।

भितल्ली, सं. स्त्री., (हि. भितल्ला) वेवण्याः अर्थात् पाषाणः ।

भित्त, सं. पुं. (सं. न.) भागः, अंशः २. खण्ड-ई, शकलः-लम् ३. दे. 'भित्ति' ।

भित्ति, सं. स्त्री. (सं.) कुड्यं, कुड्यं, कुड्यकं, भित्तिका २. भित्ति-गृह, मूलर ३. चित्राधारः ४. छेदः, भेदः ५. खण्डः, शकलः ६. भवन-वस्तु (न.) ६. कटः, किलंबं, तुणपूली ७. दोषः ८. अवसरः ।

भिदना, कि. अ. (सं. भिद्) विध्व-व्यध् (कर्म.), टिडित (वि.) भू २. आह्व-व्रण (कर्म.) ।

भिनकना, } कि.अ. (अनु. भिनभिन)भिण-
भिनभिनाना, } भिणापते(ना. धा.), भिणभिण-
रणितं-निनदं जन् (प्रे.) ।

भिनभिनाहट, सं. स्त्री. (हि. भिनभिनाना)
भिणभिणापितं, भिणभिण-रणितं-निनदः,
झंकारः, गुञ्जनम् ।

भिन्न, वि. (सं.) असंबद्ध, अलग्न, पृथग्भूत,
विदिलष्ट २. अन्य, इतर, अपर । सं. पुं. (सं.
न.) अपूर्णाकः, राशि-भागः ।

—भिन्न, वि., अनेक, विभिन्न २. वि-नाना, विध ।

भिन्नता, सं. स्त्री. (सं.) भिन्नत्वं, पृथक्त्वं,
भेदः, अंतरम् ।

भिलावाँ, सं. पुं. (सं. भल्लातकः) भल्लातः,
शोधह्व (पुं.), वीर-तरुः-वृक्षः, कृमिघ्नः,
भूतनाशनः, स्फोटवीजकः, व्रणकृत् (पुं.) ।

भी, अव्य. (सं. अपि) ज, अपि च २. अवश्यं
३. अधिकम् ।

भीख, सं. स्त्री. (सं. भिक्षा) दे. 'भिक्षा' (१-३) ।

—भांगाना, कि. स., भिक्ष (भ्वा. आ. से.),
भिक्षां याच् (भ्वा. आ. से.) ।

भीग(ज)ना, कि. अ. (सं. अभ्यंजनं >)
निल्ली-आर्द्रा भू, उँद् (कर्म. उद्यते), किलद्
(दि. प. वे.) ।

भीगी बिल्ली होना, मु., भयात् गूणो रथा
(भ्वा. प. अ.) ।

भीड़, सं. स्त्री. (हि. भिड़ना) जन-समुदायः-
संमर्दः-भोषः-समूहः २. आपद्-विपद् (स्त्री.) ।

—भड़का, सं. पुं. } समहान जनसंमर्दः

—भाड़, सं. स्त्री. } इ. ।

भीत^१, वि. (सं.) भयार्त, दस्त, सभय ।

ओके की प्रीत ज्यों बालू की भीत, मु.,
* धुद्रमख्यं हि नथरम् ।

भीत^२, सं. स्त्री., दे. 'भिसि' ।

भीतर, कि. वि. (सं. अभ्यंतरे) अंतः, गर्भे,
अंतरे, दे. 'अंदर' । सं. पुं., हृदयं, मानसं,
अंतःकरणं २. अंतःपुरं, अवरोधः ।

भीतरी, वि. (हि. भीतर) आंतर-आभ्यंतर
[-री (स्त्री.)], अन्तर, अंतरस्थ, अंतर्भव
२. गुप्त, गूढ, प्रच्छन्न ।

भीति, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'भय' ।

भीम, सं. पुं. (सं.) दुषिष्ठिरामुजः, भीमसेनः,

वृकोदरः । वि., दे. भयंकर २. सुमहत्, अति-
विशाल ।

—के हाथी, मु., अप्रत्यागाभि-अप्रत्यावति-
पदार्थः ।

भीरु, वि. (सं.) कातर, वस्तु, भयशील,
भारु(ल)क ।

भीरुता, सं. स्त्री. (भं.) कातर्वं, कापुरुषत्वं,
कलीकता, वस्तुता ।

भील, सं. पुं. (सं. भिल्लः) म्लेच्छजातिविशेषः ।

भीलना, सं. स्त्री. (हि. भील) भिल्ली,
भिल्लनारी ।

भीषण, वि. (सं.) दे. 'भयंकर' ।

भीषणता, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'भयंकरता' ।

भीष्म, सं. पुं. (सं.) गांभेयः, देवव्रतः, शांतनु-
पुत्रः २. शिवः । वि., दे. 'भयंकर' ।

भुक्खड, वि. (हि. भूख) वृक्षित, लुधार्त
२. औदरिक, बहुभोजिन्, अघर, वस्मर,
अत्याहारिन् ३. दरिद्र, दीन ।

भुक्त, (सं.) भक्षित, जग्ध २. उपभुक्त,
व्यवहृत ।

—शेष, वि. (सं.) उच्छिष्ट, जुष्ट ।

भुक्ति, सं. स्त्री. (सं.) भोजनं, आहारः, जर्ज
२. विषयोपभोगः, लौकिकसुखम् ।

भुक्खमरा, वि. (हि. भूख-मरना) दे. 'भुक्खड'
(२, ३) ।

भुगतना, कि. स. (सं. भुक्त >) उप-भुज्
(रु. आ. अ.), अनुभू, प्राप (स्वा. प. अ.)

२. भुम्-सद् (भ्वा. आ. से.), भृप् (दि.
प. सं., सु.) ३. (ऋणादिकं) शुभ (दि.
प. अ.), अपाहू (कर्म.) । कि. अ, समाप

(कर्म.), पूर (कर्म.), निवृत्त (भ्वा. आ.
से.) अवसो (कर्म.) ।

भुगतान, सं. पुं. (हि. भुगतान) निवृत्तिः-
समाप्तिः-सिद्धिः-पूतिः (स्त्री.) २. (ऋणादि-
करणे) निस्तारः, परिशुद्धिः, अपनयनम् ।

भुगताना, कि. प्रे. व. 'भुगतता' कि. स. के
प्रे. रूप ।

भुगा, वि., मूर्ख, जड, अह, निर्वृद्धि ।

भुग्न, वि. (सं.) अराल, जिह्वा, वक्र, न्युञ्ज,
आ-न(ना)मित ।

भुक्च, भुक्चड, वि. (सं. भूत + हि. चडना)
जड, अह, मूर्ख, जडमति ।

भुजंग, } सं. पुं. (सं.) दे. 'सर्प' ।
 भुजंगम }
 भुजंगी-गिनी, सं. स्त्री., दे. 'सर्पिणी' ।
 भुज, सं. पुं. (सं.) भुजा, बाहुः, दोर्दंडः
 २. (ज्योतिषी में) भुजः, बाहुः, पार्श्वः ।
 —दंड, सं. पुं. (सं.) दोर्-बाहु, दंडः ।
 —पाश, सं. पुं. (सं.) आलिंगन, परिवर्गः ।
 —बंद, सं. पुं., अंगद, केयूर, बाहुबलयः ।
 —मूल, सं. पुं. (सं. न.) कक्षा, दोर्मूलं, खडिकः ।
 भुजना, सं. पुं. (हि. भूजना) *मृष्टाक्षम् ।
 भुजा, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'भुज' ।
 भुजिया, सं. स्त्री. (हि. भूजना) *भोजिता,
 मृष्टशुष्क, श्याकः-सिन्धुः । सं. पुं. क्वथितधान्य
 २. क्वथितधान्यतंडुलः ।
 भुष्टा, सं. पुं. (सं. भृष्ट >) मकायकणिशम ।
 भुतना, सं. पुं. दे. 'भूत' (७-९) ।
 भुनगा, सं. पुं. (अनु.) (१-२) कीट-
 पतंग, भेदः ।
 भुनना, कि. अ., व. 'भूजना' के कर्म. रूप
 २. व. 'भुजना' के कर्म. रूप ।
 भुनभुनाना, कि. अ. (अनु.) भुणभुणायते
 (ना. धा.) अन्यत्तं वच् (अ. प. अ.) ।
 भुनवाना, कि. प्रे., व. 'भूजना' के प्रे. रूप. ।
 २. व. 'भुनाना' के प्रे. रूप ।
 भुनाई, सं. स्त्री. (हि. भूजना) भजनं,
 भूतिः-भातिः (दोनों रूप.) ।
 भुनाई, सं. स्त्री. (हि. भुनाना) नाणकवि-
 निनयभातिः-भूतिः (दोनों स्त्री.) ।
 भुनाना, कि. प्रे. व. 'भूजना' के प्रे. रूप ।
 भुनाना, कि. स. (सं. भजनं) अल्पनाप-
 केभ्यः वृहत्नाणकानि प्रतिश (जु. उ. अ.),
 नाणकानि*भंज*वृट् (प्रे.) नाणकानि विनि-
 मे (भ्वा. आ. अ.) ।
 भुक्त, सं. पुं. (अनु. भुज >) *चूर्ण, क्षोदः ।
 —निकालना, मु., निर्दयं तट् (जु.) २. नक्ष-
 प्चंस् (प्रे.) ।
 भुरता, सं. पुं. (अनु. भुज >) दे. 'भरता'
 २. चूर्णित-विकृत, पदार्थः ।
 —करना, मु., आपाठ्य चूर्ण (जु.)-पिप्
 (र. प. अ.) ।
 भुरभुरा, वि. (अनु.) भिदुर, भंगुर, सुमग
 २. बालकानिभ ।

भुलकड, वि. (हि. भूजना) विस्मरणशील,
 मंद-अल्प, स्मृति २. प्रमादित, प्रमत्त ।
 भुलाना, कि. प्रे., व. 'भूजना' के प्रे. रूप ।
 भुलावा, सं. पुं. (हि. भुजना) प्र-वंचना,
 प्रतारणा, जलम् ।
 —दना, कि. स., प्रतु (प्रे.), वच् (अ.) ।
 भुवः, अन्य. (सं.) अकारः-शं, अंतर्दि-
 लोकः, द्वितीयलोकः २. द्वितीयमहावशा-
 द्वितिः (स्त्री.) ।
 भुवन, सं. पुं. (सं. न.) जगत् (न.), जगती,
 सृष्टिः (स्त्री.), संसारः २. जलं ३. जनः,
 लोकः ४. चतुर्दश-भुवनानि (न. बहु.)-
 लोकाः ।
 वि—, सं. पुं. (सं. न.) विलोको, लोकत्रयम् ।
 भुशुंढि, सं. पुं. (सं.) काकभुशुंढिः । (सं.
 स्त्री.) भुशुंढी, अल्पभेदः ।
 भुस, सं. पुं., दे. 'भूसा' ।
 भुसी, सं. स्त्री., दे. 'भूसी' ।
 भूकना, कि. अ. (अनु.) दे. 'भूकना' (१-२) ।
 भूचाल, (सं. भूचालः) मही, भू-कंप-प्रकंप-
 चलनं, इनायितम् ।
 भूजना, कि. स., दे. 'भूजना' (१-२) ।
 भूडोल, सं. पुं. दे. 'भूचाल' ।
 भू, सं. स्त्री. (सं.) धरणी, धरा, दे. 'पृथिवी'
 २. स्थानं, स्थलम् ।
 —कंप, सं. पुं. (सं.) दे. 'भूचाल' ।
 —चाल, } दे. 'भूचाल' ।
 —डोल, }
 —तल, सं. पुं. (सं. न.) धरातलं
 २. पृथिवी ।
 भूख, सं. स्त्री. (सं. दुभुक्षा) क्षुधा, क्षुध (स्त्री.),
 जिप्रस्ता, अदनाया, अदनायितं २. आवश्यक-
 कता ३. अभिलाषः ।
 —का अभाव, सं. पुं., अरुचिः (स्त्री.),
 भक्त, उपचातः-द्वेषः ।
 —प्यास, सं. स्त्री., क्षुधापिपासे, क्षुत्प्रे ।
 भूखी मरना, मु., आहाराभावात् वृ (तु. आ.
 अ.)-अभसत् (भ्वा. प. अ.)-नश्
 (दि. प. वे.) ।
 —लगाना, कि. अ., क्षुब् (दि. प. अ.,
 चतुर्थी के साथ), भुज (सत्रंत, वसुक्षति-ने)
 क्षुधया अर्द-पीड (कर्म.) ।

भूखा, वि. (हिं. भूख) क्षुधा, आविष्ट-
आतुर-आर्त्त-अन्वित-पीडित, क्षुधित, निपस्त,
उमुक्ष, अन्नाधिक, अन्नान्धित २. इच्छुक
३. दरिद्र ।

—नंगा, वि., दीन, दरिद्र, निर्धन, अकिंचन ।

—प्यासा, वि., क्षुत्पिपासित, छुत्प्राप्त ।

भूखे प्यासे, मु., *निरक्षपानं, अन्नपानं
विना ।

भूगर्भ, सं. पुं. (सं.) धरा, अंतरं-अभ्यंतरं-गर्भः ।

—गृह, सं. पुं. (सं. न.) भू-गोहं-गृहम् ।

—शास्त्र, सं. पुं. (सं. न.) भूतत्त्व, शास्त्रं-विद्या-
विज्ञानम् ।

—शास्त्रवेत्ता, सं. पुं. (सं. नृ.) भूतत्त्वज्ञः,
भूगर्भशास्त्रज्ञः ।

भूगोल, सं. पुं. (सं.) भूमंडलं, भुवनकोषः
२. भूगोलः, विद्या-शास्त्रं, भूगृहविद्या ।

—वेत्ता, सं. पुं. (सं. नृ.) भूगोलशास्त्रज्ञः ।

भूचक्र, सं. पुं. (सं. न.) पृथ्वीपरिधिः
२. विद्युवद्रेखा ३. अद्यनवृत्तं ४. क्रांतिवृत्तम् ।

भूचर, सं. पुं. (सं.) स्थलचरः २. शिवः ।

भूत, सं. पुं. (सं. न.) पृथ्व्यप्ते-जोवाय्याकाश-
पंचकं २. जडचेतनपदार्थः, चराचरवस्तु (न.)
३. प्राणिन्, जीवः ४. भूत-अतीत, कालः ५.
शवः ६. क्रियारूपभेदः (भ्वा.) ७. रद्रानु-
चराः, पिशाचाः ८. मृतस्य आत्मन् (पुं.)
९. पिशाचः, प्रेतः, रक्षन् (न.), राक्षसः ।
वि. (सं.) गत, वि. अतीत, २. युक्त ३. सहस्र
४. परिणत (सब प्रायः समाप्तं मे) ।

—उत्तराना, क्रि. स., भूतान् निकृत् (प्रे.)-
अपनुद् (तु. प. अ.)-अपत् (प्रे.) ।

—काल, सं. पुं. (सं.) पूर्वभूत-अतीत, कालः-
समयः ।

—नाथ, } सं. पुं. (सं.) शिवः ।

—भावन, } सं. पुं. (सं.) शिवः ।

—पूर्व, वि. (सं.) प्राक्तन, पूर्वतरा, पौर्विक ।

—संचार, सं. पुं. (सं.) भूतावेशः ।

—चढ़ना या सवार होना, मु., अतिनिर्विधेन
अवस्था (भ्वा. आ. अ.) २. अत्यर्थं कुप्
(दि. प. से.) ।

भूतत्वविद्या, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'भूगर्भविद्या' ।

भूतात्मा, सं. पुं. (सं. नमन्) जीवात्मन्,

देहिन् २. शरीरं ३. परमेश्वरः ४. विष्णुः
५. शिवः ।

भूतानुकम्पा, सं. स्त्री. (सं.) जीव-भूत-प्राणि-
दया कृपा-अनुकम्पा ।

भूताविष्ट, वि. (सं.) पिशाच-भूत, घस्त-
पीडित-भाकांत ।

भूतावेश, सं. पुं. (सं.) भूत, संचारः-क्रांतिः
(स्त्री.), पिशाचावेशः ।

भूति(त)नी, सं. स्त्री. (हिं. भूत) शाकिनी,
डाकिनी, राक्षसी, पिशाची-रक्षिका ।

भूदेव, सं. पुं. (सं.) ब्राह्मणः, भूसुरः ।

भूधर, सं. पुं. (सं.) गिरिः, पर्वतः ।

भूनना, क्रि. स. (सं. मञ्जं) भृञ् (भ्वा.
आ. से.), भ्रञ् (तु. उ. अ.), ईपतापेन
प्लुप् (भ्वा. प. से.)-शुप् (प्रे.) ।

भूप, सं. पुं. (सं.) भूपतिः, भूपालः, नृपः,
राजन् (पुं.) ।

भूपति, } सं. पुं. (सं.) नृपः, दे. 'राजा' ।

भूपाल, } सं. पुं. (सं.) नृपः, दे. 'राजा' ।

भूमल, सं. स्त्री. (सं. भूः+हिं. बलता)
उष्ण, भसितं-भस्मन् (न.)-बालुका ।

भूमंडल, सं. पुं. (सं. न.) पृथिवी, धरा,
धरित्री ।

भूमिका, सं. स्त्री. (सं.) प्रस्तावना, उपोद्घातः,
अवतरणिका, आमुखं, मुखबंधः २. वेशांतर-
परिग्रहः ।

भूमि, सं. स्त्री. (सं.) धरा, धरित्री, दे.
'पृथिवी' ।

—ज, वि. (सं.) भूमिजात ।

—जा, सं. स्त्री. (सं.) जानकी, सीता ।

—पुत्र, सं. पुं. (सं.) मंगलग्रहः, भूमनः ।

—सुता, सं. स्त्री. (सं.) मीना, वैदेही ।

भूय, अन्व. (सं. भूयस्) पुनः, पुनरपि ।

भूरा, वि. (सं. बभ्रु) पृथिव्युद्, वर्णरंग
२. कनिल-रा, पिग, पिगल । सं. पुं., १-२
बभ्रु-पिगल, वर्णः-रंगः ३. शर्वरा, मिना ।

भूरि, वि. (सं.) अधिक, बृह, प्रचुर २. महत्,
गुरु ।

भूल, सं. स्त्री. (हिं. भूलना) विस्मरणं, विस्मृतिः
(स्त्री.) २. दोषः अपराधः ३. अशुद्धिः
(स्त्री.), रत्नलितं, रत्नलनं २. मोहः, भ्रमः ।

भूलना

[४४३]

भेङ्गिया

—चूक, सं. स्त्री., प्रमादः, अपराधः, त्रुटिः (स्त्री.), स्खलितम् ।
 —भूलैयाँ, सं. स्त्री., सुगहनस्थानं, भ्रातृचक्रं २. संशय-संदेह, आस्पदम् ।
 भूलना, क्रि. स. (प्रा. भुल्लइ) विरगु (भ्वा. प. अ.) २. स्खल् (भ्वा. प. से.), प्रमद् (दि. प. से.) ३. त्यज् (भ्वा. प. अ.), हा (जु. प. अ.) । क्रि. अ., विस्मृ (कर्म.) २. भ्रंश-नश (दि. प. से.), श्यु (भ्वा. आ. अ.) ३. गवित-प्रवलिप्त (वि.) भू. ४. कम् (भ्वा. आ. से.), सिन्द् (दि. प. से.), सामी के साथ) । सं. पुं., विस्मरणं, विस्मृतिः (स्त्री.) २. प्रमादः, स्खलितं ३. भ्रंशः, नाशः ।
 भूलने योग्य, वि., विस्मृतव्य, विस्मरणीय ।
 भूलनेवाला, सं. पुं., दे. 'मुलकइ' ।
 भूला-भटका, वि., पथ-मार्ग, अष्ट ।
 भूला हुआ, वि., विस्मृत, स्मृतिपथात् अपेत ।
 भूलोक, सं. पुं. (सं.) मर्त्यलोकः, भूमिः (स्त्री.) ।
 भूशास्त्री, वि. (सं. यिन्) पराशास्त्रि, मृत, २. भूमिशास्त्र ३. भूमौ पतित ।
 भूपण, सं. पुं. (सं. न.) आभरणं, अलंकारः, आ-वि-भूषणं, दे. 'गहना' ।
 भूषणीय, वि. (सं.) भूष्य, अलंकार्य, गंडनीय ।
 भूषा, सं. स्त्री. (सं.) अलंक्रिया, परिष्कार-क्रिया, प्रसाधनं, नेपथ्यम् ।
 भूषित, वि. (सं.) अलंकृत, परिष्कृत, प्रसाधित, भण्डित ।
 भूसा, सं. पुं. (सं. दुसं >) पल्लः-लं, ववसं, धान्यतृणं, पलः ।
 भूसी, सं. स्त्री. (हि. भूसा) दे. 'भूसा' २. तुषं, दुसं, तुषः-नीः, कंडंगरः, धान्यत्वन् (स्त्री.) ।
 भूसुर, सं. पुं. (सं.) विप्रः, वाह्यागः ।
 भृंग, सं. पुं. (सं.) क्रमरः, पट्टपदः २. कीटभेदः ।
 —राज, सं. पुं. (सं.) पक्षिभेदः २. केशरंजनः, कंदकः, कुंतलवर्द्धनः, छुपभेदः ।
 भृकुटी, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'भृंह' ।
 भृगु, सं. पुं. (सं.) मुनिविशेषः २. परशुरामः ।
 —नाथ, सं. पुं. (सं.) परशुरामः, भृगुरामः ।
 भृत, वि. (सं.) पूरित, पूर्ण, निश्चित २. पालित, पोषित ।

भृतक, सं. पुं. (सं.) वैतनिकः, कर्मकरः ।
 भृतकाध्यापक, सं. पुं. (सं.) सवेतनः शिष्यकः ।
 भृति, सं. स्त्री. (सं.) वेतनं, भृत्या २. कर्मण्या, तुलिका, भरण्यं, भर्मण्या ३. मूल्यं ४. पूर्णं, भरणं ५. पालनं ६. वैतनिकता ।
 भृत्य, सं. पुं. (सं.) सेवकः, दे. 'नौकर' ।
 भृत्या, सं. स्त्री. (सं.) सेविका, दासी २. दे. 'भृति' ।
 भृश, क्रि. वि. (सं. भृशं) अत्यंत, अत्यधिकम् ।
 भेंगा, वि. (देश.) केकर, केदर, टेर, डगर, बलिर ।
 —पन, सं. पुं., तिर्यग्दृष्टिः (स्त्री.), डेरता इ. ।
 भेंड, सं. स्त्री. (सं. भिड् >) सं(समा)गमः, संमिलनं, साक्षात्कारः २. उपहारः, उपायनं, प्राभृत-तकं, प्रवेशनम् ।
 —करना, क्रि. स., संमिल् (तु. प. से.), अमि-सं-मुलीभू, सं-इ (अ. प. अ.) २. उत्सृज् (तु. प. अ.), उपहृ (भ्वा. प. अ.), उपलौक (प्रे.), ऋ (प्रे. अर्पवति) ।
 भेक, सं. पुं. (सं.) दे. 'भेडक' ।
 भेख, सं. पुं. दे. 'वेप' ।
 भेजना, क्रि. स. (सं. वजनं >) सं-प्रेष (प्रे.), प्र-हि (स्वा. प. अ.), प्रस्था (प्रे.), विसृज् (तु. प. अ.), सं-प्रेर् (प्रे.) । सं. पुं., सं-प्रेषणं-प्रेरणं, विसर्जनं, प्रस्थापनं, प्रहिक्तिः (स्त्री.) ।
 भेजने योग्य, वि., प्रेषयितव्य, प्रस्थाप्य, प्रहयणीय ।
 भेजनेवाला, सं. पुं., प्रेषकः, प्रहेतु ।
 भेजा हुआ, वि., प्रेषित, विसृष्ट, प्रहित ।
 भे(भि)जवाना, क्रि. प्रे., व. 'भेजना' के प्रे. रूप ।
 भेजा, सं. पुं. (देश.) दे. 'मगज' ।
 भेड़, सं. स्त्री. (सं. भेडकः >) भेड़ी, एडका, अकिला, उरगी, उरा, कुररी, आलकिनी, अविः (स्त्री.), रुजा (पुं.), दे. 'भेड़ा' २. मूडः, मूडधीः, कजुः ।
 भेड़ना, क्रि. स., दे. 'बंद कराना' ।
 भेड़ा, सं. पुं. (सं. भेडः) अविः, उरणः, उरभ्रः, ऊषासुः, एडकः, मेहुः, दुडः, रो(लो)मशः, मेहुः, भेडकः ।
 भेङ्गिया, सं. पुं. (हि. भेङ्ग) वृकः, कोकः, ईहामृगः ।
 —असान, सं. पुं., अंध, अनुकरण-अनुसरण-अनुवर्तनम् ।

भेदी

[४४४]

भोजपत्र

भेदी, सं. स्त्री., दे. 'भेद' ।
 भेद, सं. पुं. (सं.) छेदः, दे. 'भेदन' २. शत्रु-
 वदीकरणीयायभेदः, उपजापः ३. रहस्यं,
 गूढादायः ४. अन्तरं, विशेषः ५. प्रकारः, जातिः
 (स्त्री.) ।
 —खोलना, क्रि. स., रहस्यं विवृ (स्वा.उ.से.) ।
 —पाना, क्रि. स., गुह्यं मुध् (स्वा. प. से.) ।
 —बुद्धि, सं. स्त्री. (सं.) विश्लेषः, विश्लेष्यः,
 विव्याभावः ।
 —भाव, सं. पुं. (सं.) अन्तरं, विशेषः ।
 —लेना, क्रि. स., गोप्यं ज्ञा (सन्नतं, जिज्ञासते) ।
 भेदक, वि. (सं.) भेत्, छेत् २. रेचक ।
 भेदन, सं. पुं. (सं. न.) विदारणं, छेदनं,
 वेधनं, व्यधः-धनं, त्रीटनम् । वि., भेदक
 २. रेचक ।
 भेदिधा, सं. पुं. (सं. भेदः >) दे. 'जासस'
 भेदी, सं. पुं. (सं.) २. रहस्यविद् (पुं.) ।
 भेदी, वि. (सं. भेदिन्) छेदक, विदारक ।
 भेद्य, वि. (सं.) छेद्य, विदारणीय ।
 —रोग, सं. पुं. (सं.) शस्यभिकित्त्वो रोगः ।
 भेरी, सं. स्त्री. (सं.) भेरिः (स्त्री.), डुडुभिः,
 हिंडिमः, पटहः, ढका ।
 भेली, सं. स्त्री. (देश.) गुडपिंडः-डम् ।
 भेष, सं. पुं., दे. 'वेध' ।
 भेषज, सं. पुं. (सं. न.) औषधं, आहारः,
 भेषज्यम् ।
 भेष, सं. पुं., दे. 'वेध' ।
 भैस, सं. स्त्री. (सं. महिषी) मंदगमना, महा-
 क्षीरा, पयस्विनी, कलुषा ।
 भैसा, सं. पुं. (सं. महिषः) अश्वारिः, कलुषः,
 कासरः, कृष्णशृंगः, रागादस्वरः, अरः(रं)नः,
 धमरथः, लुलापः (श.), वीरस्कंधः, सैरिभः,
 हरदः ।
 भैया, सं. पुं., दे. 'भाई' ।
 भैरव, सं. पुं. (सं.) शंकरः, शिवः २. शिवगण-
 भेदः ३. रागभेदः । वि., भीम, भीषण,
 भयङ्कर ।
 भैरवी, सं. स्त्री. (सं.) चामुंडा, देवीविशेषः
 २. रागिणीभेदः ।
 भैरौ, सं. पुं., दे. 'भैरव' ।
 भौकना, क्रि. स. (अनु. भक) सहसा शस्त्रा-
 दिकं निविश (प्रे.), व्यध् (त्रि. प. अ.)
 २. अकस्मात् आहन् (अ. प. अ.) ।

भौंडा, वि., दे. 'भडा' ।
 भौव, वि. दे., 'दुवधू' ।
 भौपा, सं. पुं. (अनु. भौ) दे. 'भौपू' २.
 मुखः, अशः ।
 भौपू, सं. पुं. (अनु. भौ) काहलः-लं-ला, मुख-
 नाद्यभेदः ।
 भो, अ० (सं.) हे, अरे, अयि ।
 भोक्तव्य, वि. (सं.) दे० 'भोग्य' ।
 भोक्ता, वि. (सं. भोक्तु) खादक, भक्षक
 २. विलासिन्, विपयिन् ३. प्र-उप-योक्तृ ।
 सं. पुं., पतिः ।
 भोग्य, सं. पुं. (सं.) सुख-दुःखादीनामनुभवः-
 २. सुखं ३. दुःखं ४. रतिः (स्त्री.), संभोगः
 ५. सर्पकणः-गंगा ६. सर्पः ७. धनं ८. गृहं
 ९. भक्षणं १०. शरीरं ११. परिमाणं १२.
 विपाकः, कर्मफलं १३. भुक्तिः (स्त्री.) (कृष्णा)
 १४. नैवेद्यं १५. भाटकाः-कम् ।
 —लगाना, क्रि. स., देवाय नैवेद्यं क (प्रे.
 अर्पयति) २. भक्ष् (जु.) ।
 —विलास, सं. पुं. (सं.) आमोदप्रमोदाः (पुं.
 बहु.), सुखं, धर्मः ।
 भोगना, क्रि. सं. (सं. भोगः >) दे. 'भुगता'
 (१-२) ।
 भोगी, वि. (सं-गिन्) भोग-विषय-आसक्त-
 लंपट, विलासिन् २. भक्षक ।
 भोग्य, वि. (सं.) उपयोक्तव्य, उपयोनिन्
 २. भोगार्थं, उपभोक्तव्य ३. भक्ष्य । सं. पुं.
 (सं. न.) धनं २. धान्यम् ।
 भोज, सं. पुं. (सं.) धार'नगरस्य नृपविशेषः ।
 भोज, सं. पुं. (सं. भोजनं) नश्यं, आहारः
 २. सह-सं.,-भोजनं, सन्धिः (स्त्री.) ।
 भोजन, सं. पुं. (सं. न.) भक्षणं, खादनं,
 अशनं, आस्वादनं २. खाद्यं, भोज्यं, भक्ष्यम् ।
 —करना, क्रि. स., मुष् (र. आ. अ.),
 भक्ष् (जु.) ।
 —भट्ट, सं. पुं. (सं. भोजनभट्टः) अत्याहारिन्,
 अशरः, धस्तरः ।
 —शाळा, सं. स्त्री. (सं.) भोजन-आलयः-
 आगारः(रं) २. पाकशाळा, महानसः-सम् ।
 भोजनाच्छादन, सं. पुं. (सं. न.) अन्नवस्त्रं,
 अशनवसनम् ।
 भोजपत्र, सं. पुं. (सं.) भुजंशुक्षः, नडुलवल्कलः,
 छत्रपत्रः, छुदु-बहु, त्वच् (पुं.) ।

भोज्यं, वि. (सं.) भक्ष्य, खाद्य, अभ्यवहार्य ।
 सं. पुं., भक्ष्यपदार्थः ।
 भोर, सं. पुं. (सं. विभावरी >) उषा, उपस्
 (स्त्री.) विप्र-भारतं, विहानः-नम् ।
 भोला, वि. (हि. भूलना) सरल, ऋजु, निष्क-
 पट, निश्छल २. मूर्ख, जड ।
 —नाथ, सं. पुं. (हि. + सं.) शिवः ।
 —पत्र, सं. पुं., अर्जवं, सरलता, निर्व्याजता
 २. मौख्यं, अज्ञता ।
 —माला, वि., निष्कपट, सरल, ऋजु ।
 भौ, सं. स्त्री., दे. 'भौह' ।
 भौकना, कि. अ. (अनु. भौ भौ) पुक्त्
 (भ्वा. प. से., चु.), अष् (भ्वा. प. से.)
 २. प्र-जल्प (भ्वा. प. से.) । सं. पुं., वृकनं,
 भयणं २. जल्पः-पनम् ।
 भौतुवा, (हि. भौना=भूमना) तैलिक-तैलकार,
 वृषः-वृषभः । २. कीटभेदः ३. हस्तरोगभेदः ।
 भौर, सं. पुं. (सं. भ्रमरः) दे. 'भ्रमर' २. जला-
 नृत्तः, भ्रमिः (स्त्री.) ।
 भौरा, सं. पुं. (सं. भ्रमरः) दे. 'भ्रमर'
 २. भ्रमरकः-कं, कीडनकभेदः ३. भू, मोह-
 गृहम् ।
 भौरा, सं. स्त्री. (सं. भ्रमरी) पट्पदी, मधुकरी
 २. वोटभादिशरीरस्थं रोम, चक्र-मंडल-वर्तुलं
 ३. वैवाहिक-परिक्रमः-पदक्षिणा ४. आवर्तः,
 जलगुह्यः ।
 भौह, सं. स्त्री. [सं. भ्रः (स्त्री.)] बिलिका,
 झूलना, नयनोद्धर्षवर्ति रोगराजी ।
 —चहाना या तानना, सु., कुप् (दि. प. से.),
 क्रुष् (दि. प. अ.) २. भृ (भ्रू) कुटी बंध
 (क्र. प. अ.)-रच् (चु.) ।
 भौगोलिक, वि. (सं.) भूगोल-विषयक-सम्ब-
 न्धित् ।
 भौचक, भौचका, वि. (सं. भयचकित >)
 विस्मयापन्न, विस्मित, सखाध्वंस, भयाभिभूत,
 स्तमित ।
 भौजई, भौजी, सं. स्त्री. (सं. भ्राजः-या)
 दे. 'भःभी' (२) ।
 भौत, वि. (सं.) भौतिक, भूतनिमित्त २. पैदा-
 निक ३. भूताविष्ट । (सं. पुं.) भूतपूजकः
 २. भूतयज्ञः ।
 भौतिक, वि. (सं.) भूतात्मक, भूतमय, आधि-

पांशु, भौतिक २. पार्थिव ३. शारीरिक, दैहिक,
 दैह्य ।
 भौम, वि. (सं.) पार्थिव, भौमिक २. भूमिज ।
 सं. पुं., मंगलग्रहः, कुजः ।
 —वार, सं. पुं. (सं.) मंगलवारः ।
 भौमिक, वि., दे. 'भौम' वि. । सं. पुं., क्षेत्र-
 पतिः-स्वामिन ।
 भौमी, सं. स्त्री. (सं.) जानकी, सीता, वैदेही ।
 भ्रंश, सं. पुं. (सं.) अधः-अव, पतन-पातः
 २. वि-नाशः = ध्वंसः ३. पलायनम् ।
 भ्रंशित, वि. (सं.) अधःपातित २. वंचित ।
 भ्रम, सं. पुं. (सं.) भ्रांतिः (स्त्री.), माया,
 मिथ्या, मतिः (स्त्री.) ज्ञानं, आभासः, अविद्या
 २. संशयः, संदेहः ३. मूर्च्छाभेदः ४. मूर्च्छा
 ५. कुलालचक्रं ६. भ्रमणं ७. भ्रमद्वस्तु (न.) ।
 भ्रमण, सं. पुं. (सं. न.) पर्यटनं, विचरणं,
 परिभ्रमणं २. गतागतं ३. यात्रा ।
 —करना, कि. अ., पर्यट-विचर् (भ्वा. प. से.),
 परिक्रम् (भ्वा. वि. प. से.) ।
 भ्रमात्मक, वि. (सं.) भ्रमोत्पादक २. संदिग्ध ।
 भ्रमर, सं. पुं. (सं.) षट्पदः, द्विर्रेफः, मधु-
 करः-पर-लिङ् (पुं.), अलिः, अलिन, भृङ्गः,
 शिथीमुखः, पुष्पधयः, चंचरीकः २. कामुकः ।
 भ्रमरी, सं. स्त्री. (सं.) षट्पदी, मधुकरी,
 शिथीमुखी २. जलकालता, पुत्रदात्री ३. पार्वती
 ४. मृगीरोगः, भ्रामरम् ।
 भ्रमी, वि. (सं. -मिन्) भ्रांत, भ्रमविशिष्ट,
 मिथ्याज्ञानिन २. चकित, विस्मित ३. शंका-
 शील, साशंक ।
 भ्रष्ट, वि. (सं.) अधः-अव, पतित, अव-गलित-
 स्तस्त, व्युत् २. विकृत, दूषित, सदोष ३. दुर्वृत्त,
 दुराचार-रिन् ।
 —करना, कि. स., भ्रंश-दुष्-आधृष् (प्रे.)
 न्यु (प्रे.) २. सतीत्वं नशू (प्रे.) ३. मलिनी-
 कलुपी-कृ ।
 —होना, कि. अ., भ्रश् (दि. प. से.), भ्रंश
 (भ्वा. आ. से.) २. दुष् (दि. प. अ.),
 विकारं आपद् (दि. आ. अ.) ३. मलिनी-
 कलुपी-भू ४. क्षीणवृत्त (वि.) भू ।
 भ्रष्टा, सं. स्त्री. (सं.) कुलटा, पुंथली ।
 भ्रांत, वि. (सं.) भ्रांति-भ्रम-विशिष्ट
 २. व्याकुल, विह्वल ३. उन्मत्त ४. पथभ्रष्ट
 ५. आयातित, चक्रवर्त्त वालिन ।

भ्रांति, सं. स्त्री. (सं.) ध्रमः, मोक्षः, आभाराः,
निश्चयाज्ञानं, मतिभ्रमः, नाया २. संदेहः, संशयः
३. स्वलिप्तं, प्रमादः, द्रुष्टिः (स्त्री.) ४. भ्रमणं
५. मंडलाकारगतिः (स्त्री.) ६. अलंकारभेदः ।
भ्राता, सं. पुं. (सं. भ्रातृ) सोदरः, दे. 'भाई' ।
भ्रातृभाव, सं. पुं. (सं.) भ्रातृत्वं, दे. 'भाईचारा' ।
भ्रात्रीय, वि. (सं.) भ्रातृक, भ्रात्रेय ।
भ्रुकुटी-टी, सं. स्त्री. (सं.) भ्रुकुटी-टिः, भ्रुकुटी-

टिः (स्व स्त्री.), भ्रू, विशेषः-भंगः-बंध-संकोचः
२. दे. 'भौंह' ।

भ्रू, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'भौंह' ।

—भंग, सं. पुं. (सं.) दे. 'भ्रुकुटि' (१) ।

भ्रूण, सं. पुं. (सं.) गर्भः, गर्भस्थशिशुः ।

—हत्या, सं. स्त्री. (सं.) गर्भ, पातनं-भ्रातृपणं,
गर्भस्थशिशुघातः ।

म

म, देवनागरीवर्णमालायाः पंचविंशो ज्वंजनवर्णः,
मकारः ।

मंगता, सं. पुं. (हि. मांगना) दे. 'मिखारी' ।

मंगल, } सं. स्त्री. (हि. मांगना) वाग्दानं,
मंगनी, } विवाहप्रतिष्ठा । २. याच्या, याजनं-ना ।

मंगल, सं. पुं. (सं. न.) कल्याणं, कुशलं, भद्रं,
हितं, क्षेमं, प्रव्यं, प्र-शस्तं, अरिष्टं, शिवं, भद्रं
३. अभीष्टसिद्धिः (स्त्री.) ३. ग्रहविशेषः, कुजः,
शुक्रः, अंगारकः, महीसुतः, वक्रः, लोहितांगः,
आवनेयः ४. मंगलवारः । वि., (सं.) शुभ,
शिव, भद्र, मंगल्य, शिवं-शुभं-कर, मांगलिक ।

—काम, वि. (सं.) शुभ-हित-मंगल, चिन्तक-
इच्छुक-कामिन् ।

—कामना, सं. स्त्री. (सं.) हितचिन्तनम्,
शुभ-इच्छा-कामना ।

—कारक, वि. (सं.) कल्याण-मंगल, कारिन्-
प्रद, दे. 'मंगल' वि. ।

—क्षौम, सं. पुं. (सं. न.) उत्पन्नोचित-
कौशेयवस्त्रम् ।

—गान, सं. पुं. (न.) मांगल्य-शुभ, गीतं-
गीतिः (स्त्री.)-गानम् ।

—वार, सं. पुं. (सं.) मंगल-शुभ, वासरः ।

—सूत्र, सं. पुं. (न.) हरिश्चरित्रवैवाहिक-
सूत्रम् ।

मंगलाचरण, सं. पुं. (सं. न.) ग्रंथाधारम्भे
कल्याणप्रार्थना ।

मंगलाचार, सं. पुं. (सं.) मांगलिक, संस्कारः-
कृत्यं २. आशीर्वादः ३. स्तवः ।

मंगलामुखी, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'वेश्या' ।

मंगली, वि. (सं. मंगलः) अमांगलिक, कन्या-
वरः (फलित ज्योतिष) ।

मंगवाना, कि. प्रे., व. 'मांगना' के प्रे. रूप ।

मंगोतर, वि. (हि. मंगनी) वाग्दत्त ।

मंच, मंचक, सं. पुं. (सं.) खट्वा २. पीठिका
३. उच्चासनं, इन्द्रकोशः-वः-पकः, वेदिका,
५. रंगः, रंग-भूमिः (स्त्री.)-पीठं ६. मंच-
मंडपः ।

मंजन, सं. पुं. (सं. न.) दंतधावन-दंत्य-चूर्णं
२. (पेस्ट) *दंतपिष्टं, दंतोदेषः ।

मंजना, कि. अ., व. 'मांजना' के कर्म. के रूप ।

मंजवाना, कि. प्रे., व. 'मांजना' के प्रे. रूप ।

मंजरी, सं. स्त्री. (सं.) मंजरिः-वज्ररी-रिः (स्व
स्त्री.), मंजी-लिः (स्त्री.) मंजरं, वज्ररं, वलिः
(स्त्री.) २. पञ्चवः, किंसलयः ३. लता ४. मुक्ता ।

मंजिल, सं. स्त्री. (अं.) दे. 'पञ्चव' २. कोष्ठः,
भूमिः (उ. बोमजिला = द्विभूमिकं गृहं)
३. शतव्य-निर्दिष्ट-स्थानम् ।

मंजीर, रा, सं. पुं. (सं. पुं. न.) नूपुरः-रं
२. झल्लरीभेदः ।

मंजु, } वि. (सं.) सुंदर, मनोहर, मनोह,
मंजुल, } मनोरम, चार, रम्य, हनिर, रुच्य,
हृष ।

मंजू र, वि. (अ.) दे. 'स्वीकृत' ।

मंजू री, सं. स्त्री. (अ. मंजू र) स्वीकृतिः (स्त्री.) ।

मंजूषा, सं. स्त्री. (सं.) पिटकः, दे. 'पिटारी' ।

मंजुला, वि. पुं., दे. 'मंजुला' ।

मंज्ज, सं. पुं. 'मंज्ज' ।

मंज्जार, कि. वि., दे. 'मंज्जदार' ।

मंड, सं. पुं. (सं.) दे. 'मंड' ।

मंडन, सं. पुं. (सं. न.) अलंकरणं, परिष्करणं,
भूषणं, प्रसाधनं २. दृढी-पुष्पी-करणं, समर्थनं,
सत्प्रधानं, प्रसाध्यसाधनम् ।

मंडप, सं. पुं. (सं. पुं. न.) वितानः-नं,
उल्लोचः, चंद्र, उदयः-आसनः २. जनाश्रयः,

मँडराना

[४४७]

मंदी

विश्व-मगृहं ३. (संस्कारविशेषः) शाळा,
आच्छादनं २. देवालयोर्ध्वभागः ।
मँडराना, कि. अ., दे. 'मँडलाना' ।
मँडल, सं. पुं. (सं. न.) वृत्तं, वर्तुलं, चक्रं,
बलयः-यं २. गोलः-खं ३. परिवेशः-पः-परिधिः,
उपसर्गकं ४. क्रिन्निर्णं, दिक्-चक्रं-तटं, दिग्गतः
५. इन्द्रशराजकं ६. समाजः, समुदायः
७. स्थूलभेदः ८. चक्रं, दे. 'पहिया' ९. ऋग्वेद-
पच्छेदः १०. गोलचिह्नं ११. ग्रह, कक्षा-मार्गः
१२. भूप्रदेशः ।
मँडलाकार, वि. (सं.) गोल, वर्तुल, चक्राकार,
वृत्त ।
मँडलाना, कि. अ. (सं. मँडलं >) चक्राकारं
उद्-टी (भ्वा. दि. आ. से.) अथवा खे चर्
(भ्वा. प. से.) २. परि, अम्, अट् क्रम (भ्वा.
प. से.) । सं. पुं., अक्रवत् उद्धरणः, परि-
क्रमण-अप्रणम् ।
मँडली, सं. स्त्री. (सं.) समाजः, सभा, समि-
तिः (स्त्री.), गोष्ठी २. संघः, समुदायः ३. दूर्वा
४. गुह्यनी ।
मँडली, सं. पुं. (सं. लिम्) सर्पः २. सर्पभेदः
३. मूर्धः ४. विटालः ५. मँडलाधिपः ६. वटः,
न्यग्रोधः ।
मँडवा, सं. पुं. (सं. मँडपः, दे.) ।
मँडा, सं. स्त्री. (सं.) घुरा, मयं २. दे. 'आंबला' ।
मँडित, वि. (सं.) भूषित, अलंकृत, परिष्कृत ।
मँडी, सं. स्त्री. (सं. मँडपः >) महाहृद्दः,
पण्याजिरं, बृहद्-आपणः-विपणी ।
मँडूक, सं. पुं. (सं.) दे. 'मेढक' ।
मँडूर, सं. पुं. (सं. पुं. न.) लौहमलं,
शिवाणं, सिहानं-णम् ।
मँडव्य, सं. पुं. (सं.) विचारः, मतम् । वि.,
स्वीकार्यं, विश्वसनीयं, अभ्युपगंतव्यं २. मन-
नीयं, माव्यं ।
मँड्र, सं. पुं. (सं.) वेदनाकथं २. वेदानां
संहिताभागः ३. मंत्रणा, परामर्शः, विचारणा
४. गोप्यं, रहस्यं, गुह्यं ५. अभिचारमंत्रः(तंत्रं) ।
यं व—, सं. पुं., दे. 'जादू टोना' ।
—कार, सं. पुं. (सं.) मंत्र, रचयितृ-कर्तृ-द्रष्टृ ।
—गृह, सं. पुं. (सं. न.) मंत्रणाभवनम् ।
—विद्या, सं. स्त्री., तंत्रं, तंत्रविद्या ।
मँड्रणा, सं. स्त्री. (सं.) परामर्शः, विचारणा,
संमतिः (स्त्री.) २. उपदेशः, अनुशासनम् ।

मँड्रित्व, सं. पुं. (सं. न.) साचि-यं, मंत्रिता,
अमात्यत्वं, मंत्रि-सचिव, कार्य-पदम् ।
मँड्रो, सं. पुं. (सं. मंत्रिन्) अमात्यः, सचिवः,
धी, सचिवः-सखः, सान्वायिकः, राज-
अमात्यः-सचिवः ।
प्रधान—, सं. पुं. (सं. मंत्रिन्) मुख्य-महा-
मंत्रिन्, प्रधानामात्यः, महामात्रः ।
मँड्रन, सं. पुं. (सं. न.) मयनं, विलोडनं,
२. अनुसंधानं, अवगाहनं, निरूपणं
३. दे. 'मथनी' ।
मँड्र, वि. (सं.) मँद्र, अलस २. जड, मंदमति
३. स्थूल, भारवत् ४. अधम । सं. पुं. (सं.)
दे. 'मथनी' २. ज्वरभेदः ।
मँद्र, वि. (सं.) अलस, तंद्रालु, कार्यविमुख,
उद्योगशून्य २. मँड्र ३. शिथिल ४. मूर्ख
५. दुष्ट ।
—बुद्धि, मति, वि. (सं.) मूढ, मूर्ख, जड
बालिश ।
—भाग्य, वि. (सं.) हतभाग्य, दुर्दैव । सं. पुं.
(सं. न.) दुर्दैवं-भाग्यम् ।
—मँद्र, कि. वि. (सं. दं.) शनैः-शनकैः (अव्य.)
मंदगत्या, सौम्यतया, गाम्भीर्येण ।
मँद्रता, सं. स्त्री. (सं.) आलस्यं २. मँड्रता
३. क्षीणता ।
मँद्र, सं. पुं. (सं.) मँड्रशैलः, पर्वतविशेषः
२. स्वर्गः ३. मुकुरः । वि., मँद्र, मँड्र ।
मँद्रा, वि., दे. 'हीना' ।
मँद्रा, वि. (सं. मँद्र) मँड्र, बहल २. शिथिल
३. अल्प, अर्ध-मूल्य, सुलभ ४. निकृष्ट, हीन
५. विकृत, अष्ट ।
मँद्राकिनी, सं. स्त्री. (सं.) स्वर्ग-वियद, गांगा,
स्वर्गदी, सुरतीर्थिका ।
मँद्राक्रान्ता, सं. स्त्री. (सं.) वर्णवृत्तभेदः ।
मँद्राग्नि, सं. स्त्री. (सं. पुं.) अजीर्णं, अपचनं
अपाकः, अभिमांसम् ।
मँद्रा, सं. पुं. (सं.) स्वर्गवृक्षविशेषः २. अर्क-
वृक्षः ३. मँद्रपर्वतः ४. गजः ५. स्वर्गः ६. दे.
'धत्तरा' ।
मँद्रि, सं. पुं. (सं. न.), देवताधत्तं, देव-गृहं-
भवनं-निकेतनं-आलयः २. गृहं, गेहं, सभ्य-
वेदनम् (न.) ३. धानि, वासः, वासस्थानम् ।
मँद्री, सं. स्त्री. (सं. मँद्र >) अल्पार्थता, पथमु-
लभता, मूल्यापकर्षः ।

मंद्र

[४४८]

मल्ल

मंद्र, सं. पुं. (सं.) गंभीरध्वनिः (पुं.) (संगीत)
 २. शृङ्गकः । वि., मनोहर २. प्रसन्न ३. गंभीर
 ४. मंद्र. गंभीर (शब्दादि) ।
 मंशा, सं. स्त्री. (अ.) दे. 'मंसा' ।
 मंसव, सं. पुं. (अ.) पदं, पदवी, स्थानं
 २. कर्तव्यं ३. अधिकारः ।
 मंसा, सं. स्त्री. (अ. मंशा) इच्छा, कामना
 २. संकल्पः ३. आशयः ।
 मंस्र, वि. (अ.) विभ्रत, अपवृष्ट, निररत,
 निवर्तित, गडित ।
 मंस्रि, सं. स्त्री. (अ. मंस्रि) विलोपः,
 निरासः, निवर्तनं, खंडनम् ।
 मंस्र, सं. पुं. (का.) संकल्पः, विचारः
 २. युक्तिः (स्त्री.), उपायः ।
 —मंस्रि, मु., निश्चि (स्वा. उ. अ.),
 संकल्प (प्रे.) २. उपायं चिन्त (जु.) ।
 मंश, सं. स्त्री. (अं. मे) अंगलवर्षस्य पंचमो
 मासः, वैशाखज्येष्ठम् ।
 मकई, सं. स्त्री. (सं. मकायः) कटिरः ।
 मकड़ा, सं. पुं. (सं. मकटकः >) बृहत्कृता ।
 मकड़ी, सं. स्त्री. (हिं. मकड़ा) क्षुता, तंतुः,
 वायु-नाभः, ऊर्णनाभः, मकटः-टकः, जालिकाः,
 कोषकारः, अष्टापदः ।
 —का जाला, सं. पुं., मकटकजालम् ।
 मकतब, सं. पुं. (अ.) पाठशाला ।
 मकतबा, सं. पुं. (अ.) पुस्तकालयः २.
 ग्रंथविपणिः (स्त्री.) ।
 मकदूर, सं. पुं. (अ.) सामर्थ्यं, शक्तिः
 (स्त्री.) ।
 मकनतीस, सं. पुं. (अ.) दे. 'चुबक' ।
 मकथरा, सं. पुं. (अ.) समाधिः (पुं.),
 *मृतकमंदिरम् ।
 मकबूजा, वि. (अ.) अधिकृत, हस्तगत ।
 मकबूल, वि. (अ.) स्वीकृत, भत २. प्रथ ।
 मकरंद, सं. पुं. (सं.) मरंदः, नरंदकः, पुष्पः,
 रसः-सारः-स्विदः-निर्वासः-निर्वासकः, मधु (न.),
 पुष्पजं २. किञ्चलः, किञ्चलकः ३. कुंडलुपः ।
 मकर, सं. पुं. (सं.) नन्नः, आहः, कुंभीरः,
 अवहारः, जलकुंजरः २. दशमराशिः, आको-
 केरः ३. माघमासः ४. बृहभेदः ५. दे.
 'मछली' ।
 —ध्वज, सं. पुं. (सं.) मकर-नेतुः-केतनः,
 कामदेवः ।

मकर^२, सं. पुं. (का.) कपटं, छलम् ।
 मकरूज, वि. (अ.) दे. 'कणी' ।
 मकरूह, वि. (का.) कजुष, मलीमस २. घृणो-
 त्पादक ।
 मकसद, सं. पुं. (अ.) मनःकामना २.
 अभिप्रायः ।
 मकान, सं. पुं. (का.) अ(अ)गार-रं, भवन-
 वैश्वम्-समम् (न.), सदनं, दे. 'धर' ।
 —किराये पर देना था लेना, कि. स.,
 सदनं भाटकेन दा अथवा आन्दा (जु. आ. अ.) ।
 मालिक—, सं. पुं., मृः, -सदन-स्वामिन्-पतिः ।
 मकोडा, सं. पुं. (हिं. कोडा का अनु०)
 क्षुद्रकीटः ।
 मकोथ, सं. स्त्री. (सं. काकमाता से विप०)
 काकमाची-चिका, कुछन्नी, वायसी, रसायनी,
 बहुतिका, काका, काकिनी २. काकमाची-
 फलं इ. ३. दे. 'रसभरी' ।
 मका, सं. पुं., दे. नकर ।
 मकार, वि. (अ.) कपटिन, छलिन ।
 मकारी, सं. स्त्री. (अ.) कपटं, छलम् ।
 मकखन, सं. पुं. (सं. भ्रक्षणं >) तबनीतं,
 मन्थनं, नयोद्धतं, तक्र-जं-सारं, दधि, जं-स्नेहः,
 पीथं, दैवंगवीनम् ।
 मकखी, सं. स्त्री. (सं. मक्षीका) मक्षिका,
 माचिका, गंधलीलुपा, भंभः, पतंगिका,
 वमनीया, पल्लका, नीला, बवंगा २. मधु-
 मक्षिका ३. *भग्न्यस्त्रमक्षिका ।
 —चूस, सं. पुं. (सं. कृपणः, मितंपचः, कदर्यः)
 जीती मकखी निगलना मु., जानशपि
 पापं कृ ।
 नाक पर मकखी न बैठने देना, मु., उपचारं
 न सह (स्वा. आ. से.) ।
 मकखी छोड़ना और हाथी निगलना, मु., पाप-
 कानि परित्यज्य महापात्रेषु प्रवृत् (स्वा.
 आ. से.) ।
 नवश्वी पर मकखी मारना, मु., मक्षिका स्थाने
 मक्षिका, निंबेवैकप्रतिलिपिः (स्त्री.) ।
 मकखी मारना या उड़ाना, मु., उखोगहीन
 (वि.) स्था (स्वा. प. अ.) ।
 मक्षिका, सं. स्त्री. (सं.), दे. 'मवली' ।
 —मल, सं. पुं., दे. 'मोन' ।
 मख, सं. पुं. (सं.) यक्षः, क्रतुः ।

मज्जतूल, सं. पुं. (सं. महाधतूल) कृष्ण-
कौशेय-कौटम्बर ।

मज्जमल, सं. स्त्री. (अ.) *मज्जमलं, श्लक्ष्ण-
वस्त्रभेदः ।

मज्जमली, वि. (अ. मज्जमल) मज्जमल-
मय-निर्मित २. श्लक्ष्ण, रितम्ब ।

मज्जौल, सं. पुं., (दे. 'ठट्ठा') ।

मग, सं. पुं., दे. 'मार्ग' ।

मगज्ज, सं. पुं. (अ. मगज्ज) मस्तिष्कं, मस्तुलुगकः
२. बुद्धिः-मतिः (स्त्री.) ३. दे. 'गिरी' ।

—चट, सं. पुं. (अ. + हिं.) वाचालः, वाचाटः ।

—चट्टी, सं. स्त्री., वाचालता, प्रजल्पः ।

—पञ्ची, सं. स्त्री. (अ. + हिं.) बौद्धिकधर्मः ।

—खाना या चाटना, मु. वावदकतया
खद (प्रे.) ।

—खाली करना या पखाना, मु., प्र-
नस्प (भ्वा. प. से.) २. मरित्कं खिद-
आयस् (प्रे.) ।

मगजी, सं. स्त्री. (अ. मगज्ज) चीरी-रिः
(स्त्री.), दशा ।

मगच, सं. पुं. (सं.) कौकटदेशः, विहार-
प्रातस्य दक्षिणभागः २. चारणः, वंदिन् ।

मगन, वि., दे. 'मग्न' ।

मगर, अव्य. (का.) क्तिन्, परं, परन्तु ।

मगर, } सं. पुं. (सं. मकरः)

मगरमच्छ, } दे. 'मकर' (१) २. महा-
मत्स्यः-मीनः ।

मगरिच, सं. पुं. (अ.) दे. 'पश्चिम' ।

—जदा, वि., पाश्चात्यसभ्यतया प्रभावित,
पश्चिम-आकृष्ट-प्रेरित-प्रवर्तित ।

मगरिची, वि. (अ.) दे. 'पश्चिमी' ।

—तहजीब, स्त्री., पाश्चात्यसभ्यता ।

मगरूर, वि. (अ.) दे. 'अभिमान' ।

मगरूरी, सं. स्त्री. (अ. मगरूर) दे.
'अभिमान' ।

मग्न, वि. (सं.) जलांतःप्रविष्ट, निमज्जनेन-
मृत-नष्ट २. लीन, निरत, आसक्त, पर-
परायण ४. मत्त, क्षीव, मदीदम्र ४. प्रसन्न,
प्रहृष्ट ।

—होना, क्रि. अ., प्र-हृष् (वि. प. से.)
२. निरत-लीन-आसक्त (वि.) भू ।

मगवा, सं. पुं. (सं. मग) इन्द्रः, आखण्डलः ।

मघा, सं. स्त्री. (सं.) नक्षत्रविशेषः, मघाः
(स्त्री. बहु. भी.) २. औपपद्येदः दे. 'पिष्यती' ।

मचक, सं. स्त्री. (हिं. मचकना) नारः, पीठनं
२. अरिधसंधिपीडा ३. कपनन् ।

मचकना, क्रि. अ. (अनु. मच मच >)
अरिधसंधिः व्यध (भ्वा. आ. से.)-पीठ-
(कर्म.) २. भारेण समचमचध्वनि कंप्
(भ्वा. आ. से.), निमिष् (तु. प. से.),
निमील (भ्वा. प. से.) ।

मचकाना, क्रि. स. (हिं. मचकना) व.
'मचकना' के प्रे. रूप ।

मचकोड, सं. स्त्री. (हिं. मचकना) सन्धि-
व्यावर्तन-व्याक्षेपः ।

मचना, क्रि. अ. (अनु. मच) कू-आरम्भ
(कर्म.), प्रवृत् (भ्वा. आ. से.) ।

मचलना, क्रि. अ. (अनु.) निर्वैधेन वद
(भ्वा. प. से.), साग्रह (वि.) अवस्था
(भ्वा. आ. अ.) ।

मचला, वि. (हिं. मचलना) कपटमूढ,
अज्ञलक्षण, व्याजजड ।

मचलाना, क्रि. अ. (अनु.) वम् (सक्रंत,
विभमिषति), वमनेच्छया पीड् (कर्म.)
३. दे. 'मचलना' ।

मचलापन, सं. पुं. (हिं. मचलना) कपट-
मूढता, व्याजजडत्वम् ।

मचलाहट, सं. स्त्री. (हिं. मचलना)
निर्वैधः, आग्रहः २. विवमिषा, वमनवांछा ।

मचान, सं. पुं. (सं. मचः) मंचकः उच्चासनं,
वेदिका, इंद्रकोपः ।

मचाना, क्रि. स. (हिं. मचना) व. 'मचना'
के प्रे. रूप ।

मचिया, सं. स्त्री. (सं. मचः >) मंचिका,
पीठी, पीठकं, छुद्रासनम् ।

मच्छ-छ, सं. पुं. (सं. मत्स्यः >) महा-वृहत्-
मीनः-मत्स्यः-शेषः ।

—अचतार, सं. पुं., दे. 'मत्स्यावतार' ।

मच्छङ्कर, सं. पुं. (सं. मशकः) वज्रतुण्डः,
मशः, च्छ्यास्यः, सूक्ष्ममक्षिकः, रात्रिजागरदः ।

—दानी, सं. स्त्री., मश(शक)हरी, चतुष्की,
मसूरिका, नीशारः ।

मच्छर पर तोप लगाना

[४२०]

मझधार

मच्छर पर तोप लगाना, मु., तुच्छशत्रु
वधयोगः ।

मच्छी, सं. स्त्री. (हि. मच्छ) दे. 'मच्छी' ।

मच्छंदर, सं. पुं. (सं. मत्स्येन्द्र या बंदर से अनु.)
कपिः, वानरः २. आखुः, मूषिकः ३. जडः,
मूढः ४. मिथ्यावैद्यः ५. विदूषकः, वैहासिकः
६. भिक्षुकः ।

मछरायैद्य, सं. स्त्री. (हि. मछली + सं. गंधः)
मत्स्यगंधः, मीनपूतिः (स्त्री.) ।

मछली, सं. स्त्री. (सं. मत्स्यः) मीनः, श्वपः,
अंडजः, विसारः, पृथुरोमन् (पुं.), शकुलिन,
वैसारिणः, आत्माशिन, तिमिः, जलपिप्पकः ।
वि., शंबरः, संवचारिन्, स्थिरविह्वः, वकुलक्षयः
२. मत्स्याकारी भूषणमेदः ।

—वाला, सं. पुं., दे. 'मछुआ' ।

—की तरह तड़पना, मु., जलहीनमीनवद
व्याकुलीभू ।

मछवा, सं. पुं. (हि. मच्छी) मत्स्यभारिनीका
२. दे. 'मछुआ' ।

मछुआ-वा, सं. पुं. (हि. मच्छी) नत्स्य-
आजीवः-उपजीविन्, मत्स्यिकः, शोवरः, कौवर्तः ।

मज्जदूर, सं. पुं. (फा.) भार-दूर-दूर-बाहकः-
वाहः, भारिकः, बोडू, बाहः, बाहकः २. कर्मः,
कर्मिन्, श्रमजीविन्, कर्म-कर-कारः ।

मज्जदूरी, सं. स्त्री. (फा.) भाववहनं, श्रमः,
व्रातं २. कर्मण्या, मतिः (स्त्री.), भृत्वा,
भर्मण्यः, भर्म, परिश्रनिकम् ।

मज्जदूरी, सं. पुं. (अ.) उन्मात्तः, उन्मादिन्,
बाहुलः २. लयला-वह्नमः, कैमः ३. प्रगथिन्,
प्रेमिन्, कामुकः, कामिन् ४. रुशांगः, क्षीणरौहः ।

मज्जवृत्, वि. (अ.) दृष्ट, २. स्थिर ३. बलवत् ।

मज्जवृत्ती, सं. स्त्री. (अ. मज्जवृत्) दृढता
२. स्थिरता ३. बलवत्ता ४. साहसम् ।

मज्जवृत्, वि. (अ.) दे. 'विवश' ।

मज्जवृत्, क्रि. वि. (अ.) बलेन, बलात्,
दृढात्, प्रसन्न, प्रसभम् ।

मज्जवृत्ती, सं. स्त्री. (अ. मज्जवृत्) विवशन,
अगतिक्रता, अपरिहायता ।

मज्जमा, सं. पुं. (अ.) जन-संमर्दः-समुदायः ।

मज्जमूया, सं. पुं. (अ.) समुदायः, संग्रहः,
समुहः ।

मज्जमून, सं. पुं. (अ.) प्रस्तावः, निबंधः, लेखः
२. व्याख्यान-लेख, विषयः ।

—नवास, सं. पुं., निदग्ध-कारः-खेकः ।

मज्जमूम, वि. (अ.) निन्दित, दृष्ट २. हीन-
वर्ण-कुल ।

मज्जममत, सं. स्त्री. (अ.) निन्दा, कुत्सा
२. मत्स्यना ।

मज्जरूह, वि. (अ.) आहत, दे. 'घायल' ।

मज्जलिम्ब, सं. स्त्री. (अ.) सभा, समाजः, गोष्ठी ।

मीर—सं. पुं. (फा + अ.) सभा-पतिः
अध्यक्षः, प्रधानः ।

मज्जलिस्सी, वि. (अ.) सामाजिक ।

मज्जहब, सं. पुं. (अ.) धर्मः, संप्रदायः, मतम् ।

मज्जहबी, वि. (अ.) धार्मिक, सांप्रदायिक ।
सं. पुं., खलपूः, शिष्यः, शिष्य(सिक्ख),
जाति-विशेषः ।

मज्जा, सं. पुं. (फा.) आ-स्वादः, रसः २.
अःमंदः, सुखं ३. विनोदः, हास्यम् ।

—उदाना या लूटना, मु., मुद (श्वा. आ.
से.), रम् (श्वा. आ. अ.), नंद (श्वा. प. से.) ।

—दिखाना या चखाना, मु., दंड (चु.,
दिकर्म) २. प्रतिहिंस (रू. प. से.), प्रत्यपकृ ।

मजे से, मु., सानंदं, समुखं, निर्विचनम् ।

मज्जाक, सं. पुं. (अ.) दे. 'ठठठा' ।

मज्जार, सं. पुं. (अ.) समाधिः २. दे. 'कम' ।

मज्जाल, सं. स्त्री. (अ.) समर्थ, शक्तिः (स्त्री.) ।

म(से)जिस्ट्रेट, सं. पुं. (अ.) दंड-नायकः-
अध्यक्षः-अधिकारिन् ।

म(से)जिस्ट्रेटी, सं. स्त्री. (अ. मेजिस्ट्रेट)
दंडनायक-दण्डाध्यक्ष-पद-कार्य २. दंडनायक-
सभा ।

मजीठ, सं. स्त्री. (सं. मंजिष्ठा) रक्ता, रोहिणी,
रक्तयक्षिण, रागाख्या, अरुणा, रागांगी, बल-
भूषणा, विकसा, जिगी ।

मजीठी, वि. (हि. मजीठ) रक्त, लंघिन, अरुण ।

मजीरा, सं. पुं., (सं. मजीरा) नूपुरः, पादा-
हृदं (न.) २-विष्कम्भः, कुटरः ।

मजेदार, वि. (फा.) स्वाद, रुच्य, रुचिकर
२. उत्कृष्ट, उत्तम ३. आनंद-दायक-प्रद ।

मज्जन, सं. पुं. (सं. न.) स्नानं, दे. 'नहाना'
सं. पुं. ।

मज्जा, सं. स्त्री. (सं.) शुक्रकरः, कौशिकः,
अस्थि-स्नेह-सारः-संभवः, अरियजम् ।

मझधार, सं. स्त्री. (सं. मध्यधारा) नद्याः

मध्य-केन्द्रोय-मध्यस्थ-मध्यग, -पारा-प्रवाहः-
 मंदाकः-लोतर (न.) २. कार्य, मध्यः-मध्यम् ।
मझ(झो)ला, वि. (सं. मध्य) मध्यम, मध्य-
 वर्तिन-स्थ २. मध्यमाकार, मध्यमपरिमाण ।
मटक, **मटकन**, सं. स्त्री. (हि. मटकना) हावः,
 विभ्रमः, विलासः २. गतिः (स्त्री.) संचारः ।
मटकना, क्रि. अ. [सं. मट् (सौत्रधातु) =
 श्रवसाद्] विलस् (भ्वा. प. से.),
 सविलासं चल् (भ्वा. प. से.) विभ्रन् (भ्वा.
 दि. प. से.) ।
मटका, सं. पुं. (हि. मिट्टा) मणिकः-कं, अलिजरः ।
मटकाना, क्रि. स. (हि. मटकना) सविलासं
 अंगानि चल् (प्रे.), विभ्रम् (प्रे.) ।
मटकी, सं. स्त्री. (हि. मटका) छुद्र, मणिकः-
 अलिजरः ।
मटमेला, वि. (हि. मिट्टी + मैला) दे.
 'मटियला' ।
मटर, स. पुं. (सं. मधुर) कलायः, काल-
 पूरः, गुण्डचणकः, रेणुकः, वातुलः, सतीन-
 (ल. क.), हरेणुः, खंडिकः ।
मटरगदत, सं. पुं. स्त्री. (सं. मंथर + का.
 गदत) सुखाटनं, विहारः, विहरणं, यथेष्टमरणं,
 सुखसंचरणम् ।
मटियामसान }
मटियामिट } वि. दे. 'मलियामिट' ।
मटियाला, वि. (हि. मट्टी + बाला) धूलि-रेणु-
 पांशु, वर्ण-रंग ।
मट्टी, सं. स्त्री., दे. 'मिट्टी' ।
मट्टा, सं. पुं. (सं. मथितं) असरोदक-घोलं,
 जलनवनीत-शून्यं घोलम् ।
मट्टी, सं. स्त्री. (सं. मठः) पववाक्रभेदः ।
मठ, सं. पुं. (सं. पुं. न.) आ-नि, वासः,
 २. आश्रमः, विहारः, मुनिवासः ३. धार्मिक-
 विद्यालयः ४. मंदिरं, देवालयः ।
 —**धारी**, सं. पुं. (सं. रिन्) मठपतिः, मठिन ।
मडना, क्रि. म. (सं. मंडनं >) कौशे निविशु
 (प्रे.), आवेष्ट (भ्वा. आ. से.) २. चर्मादिभि-
 र्वाच्युत्वं आच्छद् (प्रे.) ३. बलात् आरुह
 (प्रे.), दे. 'थोपना' । सं. पुं., आवेष्टनं, आच्छा-
 दनं, आरोपणम् ।
मडने योग्य, वि., आवेष्टनीय, आच्छादनीय ।
मडनेवाला, सं. पुं., आवेष्टकः, आच्छादकः ।

मडवाना, क्रि. प्रे., व. 'मडना' के प्रे. रूप ।
मडा हुआ, वि., आवेष्टित, चर्मादिभिराच्छादित,
 बलादारोपित ।
मदी, सं. स्त्री. (सं. मठः >) छुद्रमठः-ठं, लघु-
 मंदिरं २. कुटी, पर्णशाला ३-४. छुद्र, सदन-
 मंडपः ।
मणि, सं. स्त्री. (सं. पुं. स्त्री.) रत्नं २. नर-
 पुंगवः-कुंजरः-ऋषयः ।
 —**कांचन योग**, सं. पुं. (सं.) उभयशोभा-
 वर्द्धकसंयोगः ।
 —**द्वीप**, सं. पुं. (सं.) दीपोज्ज्वलमणिः, रत्न-
 द्वीपः २. मणिरत्नजटितद्वीपः ।
 —**धर**, सं. पुं. (सं.) सर्पः, अहिः ।
 —**बंध**, सं. पुं. (सं.) मणिः, पाणिमूलं,
 कलाचिका ।
 —**माला**, सं. स्त्री. (सं.) रत्नहारः २. रत्ना,
 पद्मा, कमला, शुद्धिदा ३. वर्णवृत्तभेदः ।
मर्तग, सं. पुं. (सं.) गजः २. मेघः ३. ऋषि-
 विशेषः ।
मती, सं. पुं. (सं. न.) धर्मः, संप्रदायः
 २. मतिः (स्त्री.), तर्कः ३. आशयः, अभिप्रायः ।
 वि., पूजित ।
मत, क्रि. वि. (सं. मा) न, नो, मा, अलं
 (वृत्तीया के साथ) ।
मतलब, सं. पुं. (अ.) आशयः, अभिप्रायः,
 तात्पर्यं २. शब्द-वाक्य, अर्थः ३. स्वार्थः
 ४. उद्देशः, उद्देश्यं ५. संबन्धः, संबन्धः ।
 —**निकाळना**, मु., स्वार्थं साध्-सिध् (प्रे.) ।
 वे—क्रि. वि., क्वथं, मोक्षं, निष्प्रयोजनं, निरर्थकम् ।
मतलबी, वि. (अ. मतलब) स्वार्थिन,
 निजहित-स्वार्थं, पर-परायण-निरत ।
मतलाना, क्रि. अ., दे. 'मचलाना' (१) ।
मतली, सं. स्त्री., दे. 'मवलाहट' (२) ।
मतवाला, वि. (सं. मत्) मदीद्धत, मदीद्धप्र,
 क्षीय २. उन्मत्त ३. अभिमानिन ।
मताधिकार, सं. पुं. (सं.) मत्प्रकाशनाधिकारः ।
मतवळंदी, सं. पुं. (सं. विन्) धर्म-मत, अनु-
 गामिन-अनुयायिन-अनुवर्तिन्-अनुसरिन् ।
मति, सं. स्त्री. (सं.) धीः (स्त्री.), धि(धी)षणा,
 प्रज्ञा, बुद्धिः (स्त्री.) २. मत्तं, तर्कः, अभिप्रायः
 ३. इच्छा ४. स्मृतिः (स्त्री.) ।
 —**मान**, वि. (सं. मव) प्राप्त, चतुर ।

—हीन, वि. (सं.) जट, मूढ, मूर्ख ।

मतीरा, सं. पुं. दे. 'तरबूज' ।

मत्कुण, सं. पुं. (सं.) रक्तपायित्, रक्तांगः, मंचकाश्रयः, उद्देशः ।

मत्स्य, वि. (सं.) शौड, उत्कट, क्षीय, उन्मत्, मदाढ्य, समद, नदितोत्कट, मद, मत्त-उन्मत्त-उद्धत-उद्वय २. निधिवेक ३. वासुल, उन्मत्त ४. प्रसन्न ।

—मत्स्य, सं. पुं. (सं. मत्स्यजेन्द्रः) सवैयाद्यन्तोभेदः । (७ भयण + २ गुरु अक्षर) ।

मत्स्या, सं. पुं. दे. 'मत्स्य' (२) ।

मत्सर, सं. पुं. (सं.) मात्सर्य, परोत्कषंदेवः, अध्या, ईर्ष्या २. क्रोधः ।

मत्स्य, सं. पुं. (सं.) दे. 'मच्छली' २. मीन-राशिः ३. विराट्देशः (दौनाजपुर-रंगपुर, अथवा प्राचीन पंचाल के अंतर्गत) ४. महा-पुराणविशेषः ५. विष्णोरवतारविशेषः, मत्स्य-वतारः ।

मथन, सं. पुं. (सं. न.) दे. मंथन १-२ ।

मथना, कि. स. (सं. मथनं.) दे. 'विलोना' २. ध्वंस-नश् (प्रे.) ३. अम्बिष् (दि. प. से.) ४. असकृत अनेकवारं कृ । सं. पुं., दे. 'मथानी' २. मंथनं, मंथः ।

मथनी-निथां, सं. स्त्री. (सं. मंथनी) मंथन-वटी, गर्गरी, मंथिनी २. दे. 'मथानी' ।

मथानी, सं. स्त्री. (सं. मंथानः) मंथ-मंथन-दंडः, मंथः, मंथनः, खजः, वैशाखः, मथिः, मथिन् (पुं.), तकाटः ।

मथुरा, सं. स्त्री. (सं.) मधुपुरं-रो ।

मद, सं. पुं. (सं.) मादः, शौडना, क्षीवता २. वासुलता, उन्मादः, मतिभ्रंशः ३. दुर्षः, कामिमानः ४. सुरा, मद्यं ५. हर्षः, मोदः ६. कस्तूरी-रिका, मृग, गदः-नाभिः ७. गजगड-जलं, मद-जलं-वारि (न.), दानं ८. सुक्रं, वीर्यं ९. अज्ञानं, प्रमादः १०. मदनः, कामः ।

—माता, वि., दे. 'मत्त' (१) २. कामार्त्त, अनंगपीडित ।

मद, सं. स्त्री. (अ.) लिखितपदं २. गणनापदं ३. प्रकरणम् ।

मदक, सं. स्त्री. (सं. मदः) मदकं, मादक-द्रव्यभेदः ।

मदद, सं. स्त्री. (अ.) दे. 'महायता' ।

—गार, वि. (अ. + क.) दे. 'महायक' ।

मदन, सं. पुं. (सं.) मन्मथः, कंदर्पः, अनंगः दे. 'कामदेव' २. कामक्रीडा, मैथुनं ३. पिन्बुकः, मुचकुंदः, कंदमिन् ४. पुस्तकः ५. अमरः ६. खंजनः ७. दे. 'मिना' ।

—कदन, सं. पुं. (सं.) शिवः, नन्दनहननः ।

—गोपाल, सं. पुं. (सं.) मदनमोहनः, कृष्णः ।

—बाण, सं. पुं. (सं.) कामधरः, पुष्पभेदः ।

—सदन, सं. पुं. (सं. न.) मदनः, गृह-भवनं, भगम् ।

—महोत्सव, सं. पुं. (सं.) मदनोत्सवः, सुव-संतकः, मदनपूजासंगीतरात्रिजागरणादियुक्तः नैत्रे भवः प्राचीनोत्सवभेदः ।

मदनोद्यान, सं. पुं. (सं. न.) प्रमोदवनम् ।

मदर, सं. स्त्री. (अ.) नाट (स्त्री.), जननी ।

मदरसा, सं. पुं. (अ.) विद्यालयः, पाठशाला ।

मदांघ्र, वि. (सं.) दे. 'मत्त' (१) ।

मंदा, सं. पुं. (सं. मंदाः) दे. 'अक' ।

मदारी, सं. पुं. (अ. मदान) दे. 'कलंदर' २. सौमिकः, दे. 'जह्गर' ।

मदिरा, सं. स्त्री. (सं.) सुरा, हल्ल, मद्यं, वासणी, कादंबरी, हलिप्रिया, गंधोत्तमा, इरा, प्रसन्ना, परिश्रुता, कदर्यं, गंधमादनी, माधवी, भद्रः, मत्ता, मदगंधा, मधु, माध्वीकं, अश्विजा, देवसृष्टा, मदन्या, शूडा, मैरेयं, मैथुः, महानंदा, मदनी, मोदिनी, मनोहा, अचूत, आसवः, प्रिया, लपला, मत्ता, कामिनी ।

मदिराक्ष, वि. (सं.) मच्छलीचन (न्नी स्त्री.) ।

मदीय, वि. (सं.) मामकीन, मामक-मिका (स्त्री.), मत् ।

मदीला, वि. (सं. मद्रः) दे. 'नदीला' ।

मदीन्मत्त, वि. (सं.) मद, उरकट-उद्वय-उद्धतः ।

मद्वि(द्ध)म, वि., दे. 'मथ्यन' ।

मद्य, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'मदिरा' ।

—प, वि. (सं.) सुराप, दे. 'अरात्री' ।

—पान, सं. पुं. (सं. न.) सुत्पानं-पानम् ।

—भाजन, सं. पुं. (सं. न.) सुत्प-प वं-भाजम् ।

मधु, सं. पुं. (सं. न.) शौडं, माध्वी(क्षी)घं, कुक्षुम-पुष्प, आसवः, पिच्यं, पवित्रं, माध्वीकं, सारघं, पुष्परस, उद्भव-आह्वयं, मक्षिका-वरटी-भृद्, वतं २. मदिरा ३. दुग्धं ४. जलं

मधुर

[४१३]

मन

५. मकरंदः, पुष्पराजः ६. असृत् ७. वसंतर्तुः
८. त्रिसासः ९. शैलविहारेः । किं., मधुर, स्वादु ।
—कंड, सं. पुं. (सं.) कौकिलः, पिकः ।
—कर, सं. पुं. (सं.) अमरः २. कानुकः
३. मङ्गलवृक्षः ।
—करी, सं. स्त्री. (सं.) पद्मदी, अमरी
२. सिद्धांत-पञ्चाङ्ग-सिद्धा ।
—कार, सं. पुं. (सं.) मधुमक्षिका ।
—कोपः, सं. पुं. (सं.) मधु-क्रमः-चक्र-षट्क-
कोशः, कर्मणः, चपालः ।
—प, सं. पुं. (सं.) अमरः २. मधुमक्षिका ।
—पर्क, सं. पुं. (सं.) दक्षिमधुमिश्रं आज्यं,
(अतिश्याम्भिः) ।
—मकली, सं. स्त्री. (सं.) मक्षिका) मधु-कारः-
करिन्, सुरदा ।
—मथ, वि. (सं.) मधुर, मधुल, मिष्ट, स्वादु,
रुचिर ।
—माथ, सं. पुं. (सं.) चैत्रः ।
—मेह, सं. पुं. (सं.) मधुप्रमेहः, सूत्ररोगभेदः ।
मधुर, वि. (सं.) मिष्ट, मधुर, मधुल, मधुक,
मधुमय २. रुच्य, रुचिकर, स्वादु ३. कर्ण-
श्रुति-मधुर, कल, मंजुल ४. सुंदर, मनोह ।
—भापी, वि. (सं.) प्रियवद, मधुर-
सु, वाच्, चासनापिन् ।
मधुरिमा, सं. स्त्री. [सं. रिमन् (पुं.)] नाधुर्ध
२. सौन्दर्यम् ।
मधूकरी, सं. स्त्री., दे. 'मधुकरी' (२) ।
मध्य, वि. (सं.) दे. 'मध्यम' । कि. वि., मध्ये,
अंतरे, अभ्यंतरे । सं. पुं., मध्यं, मध्य-भागः-
देशः-स्वल्प-स्थानं २. गर्भः, अभि, अंतरम् ।
—देश, सं. पुं. (सं.) हिमानलविध्याचलकुरु-
क्षेत्रप्रयागमध्यस्थो देशः २. मध्यप्रांतः ।
—भाग, सं. पुं. (सं.) मध्य, स्वल्प-स्थानं,
केन्द्रम् ।
—लोक, सं. पुं. (सं.) भूमिः (स्त्री.),
पृथिवी ।
—वर्ती, वि. (सं.) केन्द्रीय, मध्य,
मध्यम, मध्य-स्थ-स्थित ।
मध्यम, वि. (सं.) मध्य, मध्य, स्थ-स्थित-
वर्तिन् २. मध्यपरिमाण ३. सामान्य, साधारण
४. व्यवहित, अंतरालस्थ । सं. पुं. (सं.)
चतुर्थस्वरः (संगीत.) २-४ नायक-मृग-राग-
भेदः ।

- पुरुष, सं. पुं. (सं.) पदविदोषः (व्या. त्वं
प-नमि इ.) ।
मध्यमा, सं. स्त्री. (सं.) ज्येष्ठचुली-लिः
(स्त्री.), मध्या, ज्येष्ठा २. नायिकाभेदः ३.
रजस्वला नारी ।
मध्यस्थ, सं. पुं. (सं.) निर्णेतु, प्रमाणपुरुषः
२. उदासीनः, निष्पक्षः, तटस्थः । वि., दे.
'मध्यम' ।
मध्यस्थता, सं. स्त्री. (सं.) माध्यस्थ्यं, निर्णयः
२. तटस्थता ।
मध्याह्न, सं. पुं. (सं.) मध्य(थ्यं)दिनं, मध्याह्न-
कालः-समयः-वेला ।
मध्याह्नोत्तर, सं. पुं. (सं. न.) अपराह्नः, पराह्नः,
विशालः ।
मन, सं. पुं. [सं. मनस् (न.)] चित्तं,
चेतस् (न.), हृदयं, स्वान्तं, हृद् (न.), मानसं,
अंगं, अन्तर्गकं, अंतःकरणं २. अंतःकरणस्य
संकल्पविकल्पत्मकवृत्तिः (स्त्री.) ३. विचारः,
संकल्पः ४. इच्छा, कामना ।
—गदंत, वि., मनःकल्पित, काल्पनिक, अवा-
स्तविक, मनःप्रसूत ।
—चला, वि., निर्भय २. साहसिक ३. रसिक ।
—चाहा, चीत, वि., अभीष्ट, मनोवाञ्छित ।
—जात, सं. पुं., मनोजः, कामदेवः ।
—भावता, भावन, वि., रुच्य, रुचिकर, प्रिय,
अभिमत ।
—मति, वि., स्वच्छन्द, अनियन्त्रित, स्वेच्छा-
चरिम् ।
—मथ, सं. पुं., मनमथः, कंदर्पः ।
—माना, वि., रुच्य, रुचिकर २. अभिमत,
मनोनीत ३. यथेष्ट, यथेच्छ, यथेष्टित ।
कि. वि., यथेष्टं, यथाभिलाषम् ।
—मानो, सं. स्त्री., यथेष्ट, कार्य-कर्मन् (न.) ।
—मुटाव, सं. पुं., वैगनस्यं, वैमत्यं, दुष्ट, भाव-
बुद्धिः दोषः ।
—मोदक, सं. पुं., काल्पनिकसुखं, मनः-
कल्पितानन्दः ।
—मोहन, सं. पुं., श्रीकृष्णः । वि., मनोहर, हृद्य ।
—मौजी, वि., स्वैरिन्, स्वेच्छाचारिन् ।
—रंजन, वि., मनोरंजक । सं. पुं., मनोरंजनम्,
चित्तविनोदः ।

- हर, } १. मनोहर, मनोहर्तृ, मनोहारिन्,
—हरण, } २. सुन्दर, मनोज्ञ ३. प्रिय, हृद्य ।
—हारी, }
(टिप्पणी—मन के बहुत से यौगिक शब्दों और मुहावरों के पर्यायवाची 'जी', 'डिल' और 'कलेजा' के नीचे मिलेंगे; कुछ यहाँ देते हैं) ।
- अटकना, मु., स्तिङ् (दि. प. से.), अनु रंज् (कर्म.) ।
- करना, मु., अभिलप्-वाङ् (दि. भ्वा. प. से.) ।
- के लड़खू खाना, मु., गगनकुसुमानि नि (स्वा. उ. अ.), मोषाशया हृष् (दि. प. से.) ।
- बहलाना, मु., मनो विनुद रंज् (प्रे.), विहृ (भ्वा. प. अ.) ।
- बसना, मु., क्यू (भ्वा. आ. से.), दे. 'मनमाना' ।
- भर, वि., यथेष्ट, यथेच्छम् । (क्रि. वि.), यथा-रन्धि, यथाभिलाषं, यथेष्टम् ।
- भरना, मु., परि-सं, चृप्-तुप् (दि. प. अ.) ।
- भाना, मु., इष् (तु. प. से.), अभिलप्, कृत् ।
- भाना मुद्धिया हिलाना, मु., मनसि काम-यमानोऽपि शिरःकपेन (वाक्पतः) निविष् (भ्वा. प. से.) ।
- माने, वि. तथा क्रि. वि., दे. 'मनभर' ।
- मारना, मु., मनः निग्रह् (क्र. न. से.) २. धैर्येण सह (भ्वा. आ. से.) ।
- मिलना, मु., सामर-संक्रमत्यं वृत् (भ्वा. आ. से.) ।
- ललचाना, मु., दुभ (दि. प. से.), अत्यधिकं स्पृह् (चु., चतुर्थी के साथ) ।
- हरा होना, मु., मुद (भ्वा. आ. से.) ।
- मन, २ सं. पुं. (सं. मणः) चत्वारिंशत्सैरात्मनं भारमानम् ।
- भर, वि., मण, मित-परिमित-नात्र ।
- मनका, १ सं. पुं. (सं. मणिकः) अन्नः, रुद्रिका २. जपमाला ।
- मनका, २ सं. स्त्री. (सं. मन्याका) नन्दा, अवटुः, कृपाटिका, शिरःपीठं, घाटःटा ।
- ढकलना, मु., मरणोन्मुख-मुमुर्षु-असन्नमृत्यु (वि.) वृत् (भ्वा. आ. से.) ।

- मनकूला, वि. (अ.) नर, नरक, अस्थिर ।
- शौरमनकूला जायदाद, सं. स्त्री. (अ. + फा.) स्वाभारिक्यं, स्थिरसंपद (स्त्री.) ।
- जायदाद, सं. स्त्री., (अ. + फा.) उपकार-गणिक्यं, चरसंपद (स्त्री.) ।
- मनन, सं. पुं. (सं. न.) अनुन्वितनं, प्यानं, आलोचनम् ।
- शील, वि., विचार, शील-वत् ।
- मननीय, वि. (सं.) विचारीय, विन्तनीय, विचारस्पद, मननाहं ।
- मनवाना, क्रि. प्रे., व. 'मानना' के प्रे. रूप ।
- मनशा, सं. स्त्री., दे. 'मंशा' ।
- मनसव, सं. पुं. (अ.) पदं, पदवी २. अधिकारः ३. स्तरः ४. सेवा ।
- मनसा सं. स्त्री., दे. 'मंसा' ।
- मनसा, अ. (सं.) चित्तैः, हृदयेन । सं. स्त्री. १. जरत्कार पत्नी २. वातुकिमिनी ।
- मनसिज्ज, सं. पुं. (सं.) कामदेवः, पंचशरः ।
- मनसूख, वि. दे. 'मंसूख' ।
- मनसूवा, सं. पुं., दे. 'मंसूवा' ।
- मनस्ताप, सं. पुं. (सं.) मनोवेदना, अपिः २. अनु-पश्चात्, नापः ।
- मनस्त्री, वि. (सं. विन्) महाशय. महानुभाव २. बुद्धिमत्, सुबुद्धि ३. स्वेच्छाचारिन् ।
- मनहुँ, क्रि. वि., दे. 'मानो' ।
- मनहुँस, वि. (अ.) अशुभ, अमंगल २. कुरूप, दुर्दर्शन ३. अलस, मंथर ।
- मना, वि. (अ.) नि-प्रति, विद्-वाजिन । सं. पुं., दे. 'भनाही' ।
- करना, क्रि. त., नि-प्रति-विष् (भ्वा. प. से.), निवृ (प्रे.), नि-अच-कृष् (स्वा. उ. अ.) ।
- मनादी, सं. स्त्री. (अ. गुनदी) उद्योगा, प्रख्यापनम् ।
- करना, क्रि. त., उप-धुष् (पु.), प्रख्या (प्रे., प्रख्यापयति) ।
- मनाना, क्रि. म., व. 'मानना' के प्रे. रूप ।
- मनाहो, सं. स्त्री. (अ. मना) नि-प्रति, पंचः, निरोधः, निवारणं, प्रत्यादेहः ।
- मनिहार, सं. पुं. (सं. मणिकारः) रत्नकारः, रत्न-वीथिद २., ३. काचकंकण-कार-विक्रयिन् ।
- मनिहारी, सं. स्त्री. (हिं. मनिहार) मणि, व्यव-

मनी-आइर

[४५६]

मयूरी

सायःवाभिज्यं, रत्नव्यवहारः २. काचद्रव्य-
व्यवसायः ।

मनी-आइर, सं. पुं. (अं.) धनादेशः ।

—फार्म, सं. पुं. (अं.) धनादेशप्रथम ।

मनीषा, सं. स्त्री. (सं.) बुद्धिः (स्त्री.)
२. स्तुतिः (स्त्री.) ।

मनीषी, वि. (सं.पिन्) पंडित, बुद्धिमत् ।

मनु, सं. पुं. (सं.) ब्रह्मणः पुत्रः, धर्मशास्त्र-
कारो-मुनिविशेषः २. मनुष्यः ।

मनुज, सं. पुं. (सं.) मनुष्यः, मानवः ।

मनुष्य, सं. पुं. (सं.) मातुषः, मनुजः, मानवः,
मर्त्यः, नरः, द्विपदः, मनुः, पंचजनः, पुः(पू)-
रुषः, पुन्स-नृ (प्रं.), मर्णः, विश्व (पुं.) ।

मनुष्यता, सं. स्त्री. (सं.) मनुष्यत्वं, मानवता
२. सम्यता, शिष्टता ३. देवा, सौहार्दम् ।

मनुष्यी, सं. स्त्री. (सं.) नारी, मातुषी,
मानवी, मर्त्या, मनुजी, नरी ।

मनुहार, सं. स्त्री. (सं. मानहारः >) प्रसादनं,
उपशमनं, सौख्यं २. विनयः, प्रार्थनं-ना
३. आदरः, माननं-ना ।

मनो, कि. वि., दे. 'मानो' ।

मनो, (सं. मनस् न.) दे. 'मन' ।

—कामना, सं. स्त्री. (सं. मनःकामना)
अभिलाषः, वांछा ।

—गत, वि. (सं.) हृदयस्थ, हार्दिक ।

—ज, सं. पुं. (सं.) नदनाः, कंदर्पः ।

—ज्ञ, वि. (सं.) सुन्दर, अभिराम ।

—नीत, वि. (सं.) कथ्य, कविकर, ह्य
२. वृत ।

—योग, सं. पुं. (सं.) अनन्यमनस्कता, चित्ते-
काग्र्यं, अवधानम् ।

—रंजक, वि. (सं.) चित्ताह्लादकः, सुखकर,
हर्षावह, हृदयहारिण, मनोविनोदक ।

—रंजन, सं. पुं. (सं. न.) मनोविनोदः,
चित्ताह्लादनं-दः, क्रीडा, क्रीडकम् ।

—रथ, सं. पुं. (सं.) स्थू, वांछा ।

—रथ सफल होना, कि. अ., सफलमनोरथ
(वि.) मू, अमिलयितं अधिगन् ।

—रम, वि. (सं.) मनोष, सुंदर ।

—वाञ्छित, वि. (सं.) अमिलयित, अभीष्ट ।

—विकार, सं. पुं. (सं.) चित्त-विकृतिः (स्त्री.)-
विकारः, मनो, धर्म-वृत्तिः (स्त्री.)-वैगः ।

—विज्ञान, सं. पुं. (सं. न.) मानसशास्त्रम् ।

—वृत्ति, सं. स्त्री. (सं.) चित्तवृत्तिः (स्त्री.),
मनोविकारः, मानसी वृत्ता ।

—हर, वि. (सं.) सुंदर, हृदयहारिण ।

—इरता, सं. स्त्री. (सं.) यौन्दव्ये, चित्तःकर्ष-
कता, मनोज्ञता ।

मनौत्सी, सं. स्त्री. (हिं. मानना) दे. 'मनुहार' (१)
२. दे. 'मनत्र' ।

मन्नत, सं. स्त्री. (हिं. मानना) देवपूजा, भग-
प्रतिष्ठा-शपथः ।

—उत्तरना या बढ़ाना, मु., देवपूजाप्रतिष्ठा
या (प्रे. पालयति) ।

—मानना, मु., अभीष्टसिद्धये देवपूजां प्रतिष्ठा
(कृ. आ. अ.) ।

मन्वंतर, सं. पुं. (सं. न.) एकसप्तति चतुर्द-
श्यात्मकः कालः, ब्रह्मदिनस्य चतुर्दशो भागः ।

मपना, कि. अ., ब. 'मापना' के कर्म. के रूप ।

मपवाना, मपाना, कि. प्रे., ब. 'मापना' के
प्रे. रूप ।

मफरर, वि. (सं.) पलायित, चुप, अन्तर्हित,
प्रच्छन्न, व्यपसृत ।

मम, सर्वः (सं.) दे. 'मेरा' ।

ममता, सं. स्त्री. (सं.) } स्वाम्यं, स्वामित्वं,
ममत्व, सं. पुं. (सं. न.) } अधिकारः, स्वत्वं,
प्रसुखं २. रनेहः, प्रेमन् (पुं. न.) ३. वात्सल्यं
४. मोहः ५. लोभः ६. अभिमानः, गर्वः ।

ममिया, वि., दे. 'मेरा' ।

—ससुर, सं. पुं., पति-पत्नी, मातुलः ।

—सास, सं. स्त्री., पति-पत्नी, मातुली ।

ममियौरा, सं. पुं. (हिं. मामा) मातुलशूद्रम् ।

ममीरा, सं. पुं. (अ. मामीरान) नेत्ररोगे-
पकारकः क्षुपमूल्यभेदः ।

ममेरा, वि. (हिं. मामा) मातुलीय, मातुलिक ।

—भाई, सं. पुं., मातुलपुत्रः, मातुल्यः (-वी
स्त्री.), दे. 'भाई' के नीचे ।

ममोला, सं. पुं., दे. 'खंजन' ।

मयंक, सं. पुं. (सं. मृगांकः) दे. 'चाँद' ।

मयस्सर, वि. (अ.) प्राप्त, लब्ध २. प्राप्त्य,
सुलभ ।

मयूख, सं. पुं. (सं.) किरणः, रश्मिः ।

मयूर, सं. पुं. (सं.) दे. 'मोर' ।

मयूरी, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'मोरनी' ।

सरक, सं. पुं. (सं.) दे. 'मरी' ।
 सरकत, सं. पुं. (सं. न.) हरिभूमिः, अद्म-
 गर्भ, सरकं, राजनील, गारुडन् ।
 सरकना, क्रि. अ. (अनु.) भारेण भङ्ग-भिद्-वृ
 (कर्म.) ।
 सरघट, सं. पुं. (हिं. गरना + घट) शतानर्थं,
 इमशानं, पितृकाननं, प्रेतभूः (स्त्री.) ।
 सरङ्ग, सं. पुं. (अ. मर्ज) रोगः, वधाधिः
 २. दुर्भ्यस्तनं, कुवृत्तिः (स्त्री.) ।
 सरजिया, वि. (हिं. मरना + जीना) मृत्युमुक्त,
 मृतजीवित २. मरण, उन्मुख-आसन्न ३. मृत्, -
 प्राय-कल्प । सं. पुं. (दुक्तार्थ) निर्वन्तु,
 विगाहकः ।
 मरण, सं. पुं. (सं. न.) मृत्युः, निधनम् ।
 —धर्मे, वि. (सं. धर्मन्) मर्त्य, मरणशील ।
 मरतवा, सं. पुं. (अ.) पदं, पदवी २. वारः ।
 मरतवान, सं. पुं. दे. 'अमृतवान' ।
 मरदूद, वि. (अ.) निरस्कृत, अपमानित
 २. क्षुभ ।
 मरना, क्रि. अ. (सं. मरणं) मृ (तु. आ. अ.),
 पंचत्वं इ-या (अ. प. अ.), असुप्त-प्राणात्-
 देह-तनु-जीवितं त्यज् (भ्वा. प. अ.)-उत्सृज्
 (तु. प. अ.)-इ (जु. प. अ.), प्र-इ (अ.
 प. अ.), गतासु-परासु (वि.) भू, पिपद्
 (दि. आ. अ.), प्र-मी (कर्म.), २. क्लेश-
 निशयं सह (भ्वा. आ. से.) ३. शुष् (दि.
 प. अ.), स्त्री (भ्वा. प. अ.) ४. अत्यन्तं
 लज् (तु. आ. से.)-उत्सृज् (भ्वा. आ. से.)
 ५. परा-परि, भू, (कर्म.), परा-वि-जि (कर्म.)
 ६. शय् (दि. प. से.) ७. प्रीडातो वक्षिष्क
 (कर्म.) । सं. पुं., मरणं, निधनं, दे. 'मृत्यु' ।
 —जीना, मु., सुखदुःख-सं-से, हर्षशोक-कौ ।
 किमी मर—, मु., अनुसृज् (कर्म.), भावं-
 अनुगम्यं दंष्ट्र (क. प. अ.) ।
 पासा—, मु., अकित-दृष्टि-अपमानित (वि.)
 भू, उन्वगण्, अवमन् (कर्म.) ।
 मर कर, मु., अशपाव-सेन, अतिकठिनतया ।
 मर के बचना, मु., मृत्युमुखत मुच (कर्म.),
 मरणात्प्रोपि पुनः स्वस्थं लभ् (भ्वा.
 आ. अ.) ।
 मर मिटना, मु., श्रम-तिशयेन नश् (दि. प. से.) ।
 मरने तक की फुर्सत न होना, मु., अतिष्णा-
 प्त-अनवकाश (वि.) वृत् (भ्वा. आ. से.) ।

मरने बौध, वि., मरणाहं, व्यर्थ-वीकित, २.
 धनक, खल, दृष्ट ।
 मरनेवाला, सं. वि., मरिष्यामाण, मरणोन्मुख,
 आमश्चतुत्य २. मर्त्य, मृत्युवश, नश्वर ।
 मरा हुआ, वि., मृत, गतासु, पंचत्वं-गत-प्राप्त-
 इत, प्रेत, परेत, उपरत, संस्थित, विपन्न, प्रमीत,
 विवेतन, निप-गत, प्राण ।
 मरभुञ्जना, वि. (हिं. मरना + भुजा) क्षुधा-
 अङ्गित-पीडित-आर्त-अवसन्न २. अकिंचन,
 निधन ।
 मरमरी, सं. स्त्री. (अनु.) मर्मर-ध्वनिः-शब्दः,
 मर्मरः, पञ्च-वक्त्र, स्वनः ।
 मरमरी, सं. पुं. (वृ०) चिकूणप्रस्तरभेदः,
 मरमरः ।
 मरमरा, वि. (अनु०) भिदुर, भंगुर, सुमंग ।
 मरमराना, क्रि. अ. (हिं. मरमर) मर्मर-
 ख क, मर्मरायते (न. धा.) २. मर्मरशब्द
 अन्-आ-नम् (भ्वा. प. अ.) ।
 मरम्मत, सं. स्त्री. (अ.) जीर्ण, उद्धारः, प्रति-
 समाधानं, संधानं, संस्कारः, नवीकरणं, पूर्वा-
 वस्थाप्रापणम् ।
 —करना, क्रि. अ., पूर्ववत्-नवी-कृ, उद् (भ्वा.
 प. अ.), म-लमा-प्रतिसमा-धा (जु. उ. अ.)
 २. नद् (नु.) ।
 मरवाना, क्रि. प्रे., ल. 'मारवा' के प्रे. रूप ।
 मरसा, सं. पुं. (सं. मारिषः) कंधरः, मार्षिकः
 (शाकभेदः) ।
 मरसिया, सं. पुं. (अ.) निधनकाव्यं, शोक-
 मयी कविता ।
 मरहटा-शा, सं. पुं. (सं. महाराष्टः) महा-
 ताडव-भित्त, महाराष्ट्रः (वङ्.) ।
 मरहटी-ठी, सं. स्त्री. (सं. महाराष्ट्री) महाराष्ट्री ।
 मरहम, सं. पुं. (अ.) अनु, लैपः, उपदेहः,
 समालभः, अर्थजनम् ।
 —पट्टी, सं. स्त्री. (अ. + सं.) लैपट्टी,
 ब्रगीपचारः ।
 मरहमत, सं. स्त्री. (अ.) अनुग्रहः, कृपा ।
 —करना या करमाना, दे. 'देना' ।
 मरहूम, वि. (अ.) स्वर, नत-यात, दिवं-
 गत, मृत ।
 मराल, सं. पुं. (सं.) राजहंसः २. कारंडवः
 ३. अश्वः ४. रात्रः ५. मेघः ।
 मरिच, सं. स्त्री. (सं. न.) दे. 'मिच' ।

मरिचल, वि. (हि. नरना) सृजयल, कृश, निर्वल ।

मरी, सं. स्त्री. (सं. मारी) जनः, मारः, महामारी, मारिका ।

मरीचि, सं. स्त्री. (सं. पुं. श्री.) किरणः, रश्मिः २. कान्तिः (स्त्री.) ३. मरुमरीचिका ।

मरीचि, सं. पुं. (सं.) १-४. ऋषि-मरु-दानव-दैत्य-विशेषः ।

मरीज, वि. (अ.) रूप, रोगिन् ।

मरोचिका, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'शृगवृष्णा' ।

मरु, सं. पुं. (सं.) धन्वन् (पुं.), मरु, स्थल-स्थली, ऊपरः-रं, खिलम् ।

—भूमि, सं. स्त्री. (सं.) } दे. 'मरु' ।

—स्थल, सं. पुं. (सं. न.) } दे. 'मरु' ।

मरुभा, सं. पुं. (सं. मरुवः) गंध-स्वरः, पवः, शीतलकः, बहुवीर्यः (क्षुपभेदः) ।

मरुत, सं. पुं. (सं.) दे. 'वायु' ।

मरोद्, सं. पुं. (हि. मरोडना) अकुंचनं, व्यावर्तनं २. अत्र-उदरः, वेदना-शूल-पीडा ३. दर्पः ४. क्रोधः ५. दे. 'पेचिश' ।

—कली, सं. स्त्री., मञ्जुलिका, सूर्वा, सूर्वा, मधुरसा, रंग-दिग्घ, लता ।

मरोडना, क्रि. स. (हि. मोडना) कुच-कुञ्च (स्था. प. से.), व्याघ्र (प्रे.), कुटिली-वकी कृ. २. पीड (नु.), दुःखयति (ना. धा.) ३. मुष्टिना-मुष्टया ग्रह् (कृ. प. से.)-धृ (स्था. प. अ.) ।

मरोडा, सं. पुं., (हि. मरोडना) दे. 'मरोड' (१-२) २. दे. 'पेचिश' ।

मरोडी, सं. स्त्री. (हि. मरोडना) दे. 'मरोड' (१) २. कुंचित-व्यावर्तित-वस्तु (न.) ३. ग्रन्थिः ।

मरुद्, सं. पुं. (सं.) दे. 'बंदर' ।

मरुज, सं. पुं. (अ.) दे. 'मरुज' ।

मरुजा, सं. स्त्री. (अ.) इच्छा, रुचिः (स्त्री.) २. प्रमत्तता ३. स्वाकृतिः (स्त्री.), अनुज्ञा ।

मरुज, सं. पुं. (सं.) मनुष्यः, मानवः, २. शरीरम् ।

—लोक, सं. पुं. (सं.) भूमिः (स्त्री.), भूलोकः ।

मरु, सं. पुं. (फा.) मानवः, मनुजः, २. पुंसु (पुं.), पुरुषः, नरः ३. वीरः साहसिन्, योधः ४. पतिः ।

—बच्चा, सं. पुं., वीरवालः ।

मरुन, सं. पुं. (सं. न.) पदभ्यां पीडनं-क्षान्तं-शफमनां २. अर्यजनं, संवाहनं, नरुनं, ययत्रं ३. श्वसनं, नाशनं ४. पेषणं, चूर्णनम् ।

मरु नगी, सं. स्त्री. (फा.) शूरता, वीरता, पुरुषत्वम् ।

मरुना, क्रि. (फा.) पुरुष-वीर-शूर-वचित २. पुरुष-नर, महेश-उपम विक्रान्त, नर-पुरुष ।

—भेष, सं. पुं. पुरुषभेषः, नरोचितभेषः ।

मरुन, वि. (सं.) पाद-पीडित-धुष्ण-आक्रान्त २. खडित, चूर्णित ३. नाशित ।

मरुडम्, सं. पुं. (फा.) जनः, मनुष्यः ।

—खोर, सं. पुं., नरभक्षकः, मनुजदः ।

—शिनास, वि., नर-मानव, अभिज्ञ ।

—शुमारो, सं. स्त्री. (फा.) जन-संख्या-सं-गणना ।

मरु, सं. पुं. [सं. मरुन् (न.)] तत्त्वं, स्वरूपं २. रहस्यं, गोप्यवृत्तं ३. संयिस्वानं ४. जीव-स्थानम् ।

—र, वि. (सं.) तत्त्वज्ञ, मर्मवेदिन् २. रक्षविद् (पुं.) ।

—पीडा, सं. स्त्री. (सं.) हृद्यशूलं, मर्मव्यथा ।

—भेदी, वि. (सं. दिन्) मर्म, भिद् (पुं.)-भेदक-क्षेपक-विदारक ।

—स्थान, सं. पुं. (स्त्री.) मर्मस्थलं, जीवन-स्थानम् ।

मरुमर, सं. स्त्री. (अनु.) दे. 'मरुमर' ।

मरुदा, सं. स्त्री. (सं.) स्थितिः (स्त्री.), धारणा, संस्था, नियमः २. सीमा ३. कूलं ४. प्रतिभा, समयः ५. सदानारः, सद्वृत्तं ६. गौरवं, प्रतिष्ठा ७. धर्मः ।

मरुगा, सं. पुं. (फा.) मरुगाः, यवनभिक्षुभेदः २. वकभेदः ३. स्वेच्छाचारिन् ।

मरु, सं. पुं. (सं. पुं. न.) अवरं(प)स्कारः, कल्कः कं, किङ् २. कर्मन्, पंकः ३. उधारः, नृधःधं, पुरीषं, विष् (स्त्री.), विष्टा, शकृद् (न.), शमलम् ।

मलना, क्रि. स. (सं. मरुनं) अञ् (क. प. से.), लिप् (तु. प. थ.), लिङ् (अ. उ. अ.), छद् (स्था. प. से.) २. धृष् (स्था. प. से.), छद् (कृ. प. से. ; प्रे.) ३. परि-प्र-भृञ् (अ. प. से.), निञ् (जु. व. अ.) ४. करत-

लाभ्या-चूर्ण (चु.) । सं. पुं., अंजनं, लेपनं, धर्षणं, मर्दनं; मार्जनं; चूर्णनम् ।

शाय—, गु., अनु-पश्चात्, तप् (दि. आ. अ.), अनुशुच् (स्वा. प. से.), अनुशी (अ. आ. से.) ।

मलबा, सं. पुं. (सं. मल-ल) दे. 'तल' १-२ । २. शकलराशिः ।

मलमल, सं. स्त्री. (सं. मलमलकः >) *मल-मलकं, सूक्ष्मं तूलवस्त्रम् ।

मलमास, सं. पुं. (सं.) अधिमासः, मलिनदुग्धः, अशंकातभागः, नपुंसकः ।

मलय, सं. पुं. (सं.) दक्षिणचलः, चंद्रनाद्रिः, आषाढः, मलयाचलः २. तैलपर्णिकं, श्वेतचंदनं ३. नंदनवनम् ।

मलयज, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'चंदनम्' ।

मलयाचल, सं. पुं. (सं.) मलय-अद्रिः-गिरि-पर्वतः ।

मलयानिल, सं. पुं. (सं.) मलय-पवनः-वातः-समीरः ।

मलवाई, सं. स्त्री. (हिं. मलवाना) मर्दन-अंजन-वर्षण-भूतिः (स्त्री.) ।

मलवाना, मलाना, कि. प्रे., व. 'मलना' के प्रे. रूप ।

मलहम, सं. पुं., दे. 'मरहम' ।

मलाई, सं. स्त्री. (फा. बालाई) (दूध की) संतानीनिका, क्षीर-शरः, दुग्ध-अम्र-तालीबं, शर्करा, शाकंकाः, (दही की) दे. 'शर' (४) २. शारः, उत्तर्गावः ।

मलामत, सं. स्त्री. (अ.) दे. 'फटकार' ।

मलार, सं. पुं. (सं. मलारः) रागभेदः ।

मलाल, सं. पुं. (अ.) खेदः २. औद्योगी-वनः ।

मलिक, सं. पुं. (अ.) नृपः २. अधीश्वरः ।

मलिका, सं. स्त्री. (अ.) राज्ञी २. अधीश्वरी ।

मलिन, वि. (सं.) आविल, कलुष, मलीमस, समल, पंकिल, मक्दूम, मलदूषित २. दूषित, विकृत ३. धूलिवर्णं ४ धूमवर्णं ५. पापात्मन्, दुष्ट, पाप ६. विषण्ण, म्लानमृग्य ।

मलिनता, सं. स्त्री. (सं.) आविलत्वं, कालुष्यं, मालिन्यं, पंकिलत्वं ३. ।

मलियामेट, सं. पुं. (हिं. मलना + मिथाना) । वि., ध्वंस-नाशः, क्षयः, उच्छेदः ।

—करना, कि., स., उच्छेद (र. प. अ.), ध्वंस-नश (प्रे.), निर्मूल (चु.) ।

मलीदा, सं. पुं. (फा. मालीदा) मंदितः, स्निग्धमिष्टरोटिकाचूर्णं २. और्णवस्त्रभेदः, मंदितः ।

मलीन, वि., दे. 'मलिन' ।

मलेरिया, सं. पुं. (अं.) विषमज्वरः, *मशक-कुपवन-ज्वरः ।

मल्ल, सं. पुं. (सं.) प्रःवीनजातिविशेषः २. बाहु-योधः-योधिन् । वि., महाबल, मांसल, स्थूल-महा-काय ।

—भूमि, सं. स्त्री. (सं.) मल्लशाला ।

—युद्ध, सं. पुं. (सं. न.) बाहु-नि-युद्धं, दे. 'कुशती' ।

—विद्या, सं. स्त्री. (सं.) नियुद्धविषा ।

मल्लाह, सं. पुं. (अ.) नाविकः, नौ-गीत-वाहः, औद्युगिकः, मार्गरः २. धीवरः, कैवर्तः ।

मल्लिका, स. स्त्री. (सं.) दे. 'मोविया' २. छन्दो-भेदः ।

मल्लू, सं. पुं. (सं. मल्लुकः) जक्षः, दे. 'रीछ' २. वानरः ।

मल्लिकल, सं. पुं. (अ. मुवफिल) अभि-भाषकनियोजकः ।

मवाद्, सं. पुं. (अ.) दे. 'पीप' ।

मवेशी, सं. पुं. (अ. मवाशी) पशवः (पुं-वद्.), पशुसमूहः, गोकुलम् ।

—खाना, सं. पुं. (अ. + फा.) गोष्ठः-घं, व्रजः ।

मश(स)क, सं. पुं. (सं.) दे. 'मच्छ' ।

मशक, सं. स्त्री. (फा.) जलमत्ना-ल्लिका ।

मशकक, वि. (अ.) संदेह-संशय-आस्पद-पात्र, संदिरथ ।

मशकूर, वि. (अ.) क्रुन्, स-विद-वेदिन्, उपकारज, उपकारस्मर्त्, आभारिन् ।

मशककत, सं. स्त्री. (अ.) परिधरतः, प्रयासः ।

मशककती, वि. (अ.) उद्योगिन्, परिश्रमिन् ।

मशाराला, सं. पुं. (अ.) कायम्, व्यवसायः, आजीविका, वृत्तिः (स्त्री.) ।

मशागूल, वि. (अ.) व्याघ्र, व्यग्र, कार्यमग्न ।

मशरिक, सं. स्त्री. (अ.) प्र-ची, दे. 'पूर्व' (दिशा) ।

मशविरा, सं. पुं. (अ.) संमंत्रण, परामर्शः ।

मशाहूर, वि. (अ.) विख्यात, प्रसिद्ध ।

मशान, सं. पुं. (सं. इमशान) दे. 'मरषट' ।

मशाल, सं. स्त्री. (अ.) दीपिका, श्लिथिनी, अलातं, उल्मुकं, उल्का ।

—लेकर या जलाकर कुंडना, मु., सम्पक्
अन्विष् (दि. प. से.) ।
मशालची, सं. पुं. (अ. + का.) उत्काधारिन्,
उत्सुक-दोषिका, वाहकः ।
मशीन, सं. स्त्री. (अं.) यंत्रम् ।
मशक, सं. स्त्री. (अ.) दे. 'अभ्याम' ।
मष्ट, वि. (सं. मष्ट >) नीलं, निःशब्दता ।
—मारना, मु., दूर्णी स्था (स्वा. प. अ.)-भू ।
मसकना, क्रि. अ. (अनु. मस) व. 'मस-
काना' के कर्म. के रूप । क्रि.स., दे. 'मसकाना' ।
मसकाना, क्रि. स. (हिं. मसकना) विदल्-
विष्ट (प्रे.), विपट् (चु.) २. सबलं मृद्
(क. प. से.)-निपीड् (चु.) ।
मसखरा, सं. पुं. (अ.) विरूपकः, भंडः,
वैहासिकः ।
—पन, सं. पुं., भंडता, वैहासिकता, परिहासः,
खेडा ।
मसजिद्, सं. स्त्री. (का.) *यवनमदिरं,
मीहम्दीयदेवालयः ।
मसनद, सं. स्त्री. (अ.) च(चा)तुरः, चक्रगंडुः,
बृहद्वलिशं. महामसूरकः २. धनिकासनम् ।
मसल, सं. स्त्री. (अ.) आभाणकः, लोकोक्तिः ।
(स्त्री.) ।
मसलन्, क्रि. वि. (अ.) यथा, उदाहरण-
दृष्टान्त, रूपेण ।
मसलना, क्रि. स. (हिं. मलना) दूतेन पादेन
वा ससृद् (क. प. से., प्रे.), संपीड् (चु.)
२. सबलं निपाड् (चु.) ३. दे. 'गुंथना' ।
मसलहन, सं. स्त्री. (अ.) *गावि-मुप, शुभ-
मंगलं-भट्टं, अचिन्त्यं, युक्तता ।
मसला, सं. पुं. (अ.) दे. 'मसल' २. विषयः,
समस्या ।
मसविदा, सं. पुं. (अ. मुसविदा) । संस्कार्य-
शोधनीय, लेखः २. हस्त-अमुदित-लेखः
३. युक्तिः (स्त्री.), उपायः ।
—बोधना, मु., उपायं चित् (चु.) ।
मस(छ)हरी, सं. स्त्री. (सं. मसहरी) दे.
'मसलहरी' ।
मसा, सं. पुं. (सं. मांसकीलः-लं) चर्मकीलः-लं
२. अश्वी-कोलः-कीलं, मांसकीलकः-कम् ।
मसान, सं. पुं. (सं. श्मशानं) विपु-वर्नञ्जनं,
भंतशय्या, शतानकं, दद्राकांडः, दाह-सरस्
(न.)-स्थलं २. पिशाचः ३. रणशेजन् ।

मसाना, सं. पुं. (अ.) मूवाशयः, वस्त्रः
(पुं. स्त्री.) ।
मसाला, सं. पुं. (का.) देश(प, रु)वारः, उप-
स्कारः, उपकरसामग्री, स्वादवं २. उपकरणानि-
उपसाधनानि (न. बहु.), सामग्री ।
—डालना, क्रि. स., उपसृष्ट, स्वादुक्त, अधि-
वास् (चु.) ।
मसालेदार, वि. (का.) उपसृक्त, सोपस्कार-
वेशवारयुक्त, स्वादुक्त ।
मसि, सं. स्त्री. (सं. स्त्री. पुं.) मसिबलं-
पत्राञ्जनं, मेलः, मसी, रंजनी, मशी, काली ।
—दान, सं. पुं. } सं. + का.) दे. 'मसिपत्र' ।
—दानो, सं. स्त्री. }
—पात्र, सं. पुं. (सं. न.) मसि(सी), कूपी-
पटो-धानं-धानी-आधारः ।
मसी, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'मसि' ।
मसीह, सं. पुं. (अ.) दे. 'ईसा' २. विश्वावृ ।
मसूदा, सं. पुं. [सं. इमशु (न.) >] दंत-
मूलं-भांसं, दंत-वेष्टः ।
मसूर, सं. पुं. [सं. मसु (स.) रः] मसु(सू)रा,
मसूरकः-का, मंगल्यः-व्या, पृथु-गुड-कल्याण-
बीजः, ब्रीहिकांचनः ।
मसूरिया, सं. स्त्री. (सं. मसूरिका) क्संतरोगः,
पापरीगः, रक्तबदो, मसूरी, शीतला-ली,
दे. 'बैचक' ।
मसूरी, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'मसूरिया'
२. दे. 'भसूर' ।
मसो(सू)मना, क्रि. अ. (का. अकतोस)
(मनसि) सिद्धं-दु (कर्म.), शुन् (स्वा. प.
से.), तप् (दि. आ. अ.) २. ननोदेगं रूप
(स. प. अ.) ज्ञान (प्रे.) ३-४. दे. 'मरोडना'
तथा 'निचोडना' ।
मसौदा, सं. पुं., दे. 'मसविदा' ।
मस्त, वि. (का.) दे. सं. 'मस्त' (२) २. निश्चिंत,
निःकदिग्न ३. कामुक, कर्मन् ४. स्वैरिन्,
स्वेच्छाधारिन् ५. दृप्त, गांवि ६. प्रहृष्ट, अति-
प्रसन्न ७. उन्नदिन्, बातुल ८. समद, मद्-
पूर्णित (नेत्रादि) ।
माल—, वि., वित्तमत्त, धनमूढ ।
मगर—, वि., पानपमीदिन् ।
मस्तक, सं. पुं. (सं. पुं. न.) शिरस् (न.),
उत्तमानं, शीर्षं, मूर्ध्वं (पुं.), मुचं, शिरं,
बरांगं, मौलिः, कपालं, केशभूः (स्त्री.)

२. लयादे, अलिङ्गीक, भाले, कलाट-भाल, पट्टे, गोधिः ।

मस्तगी, सं. स्त्री. (अ. गस्तगी) उक्तमनिर्वाय-भेदः, *मस्तगी ।

मस्ताना, वि. (फा.) मत्तः, तुल्यः-लट्ट २. मत्त, क्षात्र, मादितोन्मत्त ।

मस्तिक, सं. पुं. (सं. न.) गोदं, गोदं, मस्तकतरोहः, नस्तुलंगकः (मस्तिकभगाः-बृहन्मस्तिकं, लघुमस्तिकं, सुषुण्याशीर्षकम्) ।

मस्ती, सं. स्त्री. (फा.) मस्तता, क्षीयता, शीघ्रता, मदाढ्यता, उम्भदता, २. सुरतेच्छा, रतिकामनाः ३. अभिमानः ४. मयः, महजलं, दानम् ।

मस्तूल, सं. पुं. (पूर्वा.) कूपकः, गुणवृक्षः-श्लकः, कूपदंडः ।

मस्ता, सं. पुं., दे. 'मसा' ।

महंगा, वि. (सं. महार्थ) महाहं, बहु-मह',-मूल्य ।

महंगाई, सं. स्त्री. (हि. महंगा) महार्थता,

महंगी, बहुमूल्यता २. दुर्भ्रंशं, दुष्कालः ।

महंत, सं. पुं. (सं. महत् >) मठाधीशः, २. साधुत्तमः । वि., प्रधान, श्रेष्ठ ।

महंती, सं. स्त्री. (हि. महंत) मठाधीशता २. साधुनेतृत्वम् ।

महक, सं. स्त्री. (महमह से अनु.) दे. 'सुगंध' ।

—दार, वि. (हि+फा.) दे. 'सुगंधित' ।

महकना, कि. अ. (हि. महक) सुवासं-सौरभं उत्सृज-सुचं (तु. प. अ.) ।

महकसा, सं. पुं. (अ.) विभागः ।

महकाना, कि. न. (हि. महकना) अधि-वासं (तु.), सुरभीक, भूपं (तु. : स्वा. प. से.), परिमलयति (न. धा.) ।

महकूम, वि. (अ.) शासित, अधीन २. आदिष्ट, आङ्गणित ।

महज, वि. (अ.) शुद्ध, केवल । कि. वि., केवलं, एव, मात्रा ।

महत्, वि. (सं.) गुरु, विशाल, वृष्ट, स्थूल, दीर्घ २. उत्तम, श्रेष्ठ ।

महता, सं. पुं. (सं. महत् >) ग्रामणीः (पुं.), अधिमः, पुरोगः, नायकः २. लेखकः, कायस्थः ।

महताय, सं. पुं. (फा.) चंद्रः, सोमः । सं. स्त्री. (फा.) चंद्रिका, कौमुदी ।

महतात्री, सं. स्त्री. (फा.) वातेकाकारोऽग्नि-कीडनकभेदः, चन्द्राभा ।

महतारी, सं. स्त्री. दे. 'माता' ।

महती, वि. स्त्री. (सं.) बृहती, विशाला, विपुला, प्रचुरा ।

महतो, सं. पुं. (सं. महत् >) ग्रामनायकः, ग्रामणीः (पुं.), ग्रामाध्यक्षः ।

महत्तवं, सं. पुं. (सं. न.) प्रकृतेः प्रथम-विकारः (संल्य.), बुद्धितत्त्वम् ।

महत्तम, वि. (सं.) महिष्ठ, ज्येष्ठ, श्रेष्ठ, बलिष्ठ, गरिष्ठ, विशालतम, प्रथित । सं. पुं. (सं. न.) [= आदे आजम (गणित)] ।

महत्तर, वि. (सं.) बृहत्तर, युक्तर, विशाल-तर, उत्तर ।

महत्तव, वि. (अ.) मित, परिमित, सप्तम, मर्यादितः ।

महत्किल, सं. स्त्री. (अ.) संगीतसभा, प्रनोद-परिषद् (स्त्री.), रंगशाला ।

महत्कृत्, वि. (अ.) सुरक्षित, परि-पात-नाय ।

महत्तुव, सं. पुं. (अ.) प्रियः, कांतः, दयितः ।

महत्तुवी, सं. स्त्री. (अ.) प्रिया, कांता, दयिता ।

महारा, सं. पुं. (सं. महत्तर >) दे. 'कहार' ।

महाराव, सं. स्त्री., दे. 'महाराव' ।

महत्कूम, वि. (अ.) वंशिन, विरहित, दीन (प्रायः सब समासांत में) ।

महर्षि, सं. पुं. (सं.) ऋषीश्वरः, ऋषिश्रेष्ठः २. रागभेदः ।

महल, सं. पुं. (अ.) प्रासादः, सौधः, धं, हर्म्यं, राज-नृप-कुल-भवने-मंदिरम् ।

—सरा, सं. स्त्री. (अ.+फा.) अंतःपुरं, अवरोधः ।

महलला, सं. पुं. (अ.) पुरभागः, नगरविभागः ।

महल्लेदार, सं. पुं. (अ.+फा.) पुरभाग-नायकः २. समपुराभावाभिन् ।

महत्सूर, वि. (अ.) परिवेष्टित, रुद्ध, बाधित, परिष्टुत ।

महत्सूल, सं. पुं. (अ.) धरः, राजनवं, शुष्कक-कं, वडिः २. आदं, भाटकं ३. दे. 'मानुमुत्तारो' ।

—खाना, सं. पुं., कारभूः (स्त्री.) ।

महत्सूय, वि. (अ.) अनुभूत, ज्ञात, उपगत अवगत, विदित ।

महा, वि. (सं. नदत्) अत्यंत, अत्यधिक, अतिशय, बहुल २. सर्वोत्तम, सर्वश्रेष्ठ, उत्कृष्ट-तम ३. विरतीर्ण, विशाल, विपुल ।

—काय, वि. (सं.) विशालदेह ।

—काल, सं. पुं. (सं.) शिवरूपविशेषः ।

- काली, सं. स्त्री. (सं.) महाकालपत्नी ।
 —कान्य, सं. पुं. (सं. न.) कर्गबंधः, काव्य-
 भेदः ।
 —कुंत, सं. पुं. (सं.) गजकुंतः २. शंकरः ।
 —देव, सं. पुं. (सं.) शिवः ।
 —देवी, सं. स्त्री. (सं.) दुर्गा २. पट्टराश्या
 उपाधिः ।
 —द्वीप, सं. पुं. (सं.) भूखंडः, वर्षः-वर्षम् ।
 —ध्यातु, सं. पुं. (सं.) सुवर्णम् ।
 —निद्रा, सं. स्त्री. (सं.) मृत्युः ।
 —निशा, सं. स्त्री. (सं.) निशीथः, अर्द्ध-
 मध्यः, रात्रः-रात्रिः (स्त्री.), महारात्रम् ।
 —पथ, सं. पुं. (सं.) प्रधान-महा-राज-मार्गः
 २. मृत्युः, मंटा-थी-पथः, संसरणं, राज-
 वतमंग (न.) ।
 —पाप, सं. पुं. (सं. न.) महापातकम् ।
 —पापी, सं. पुं. (सं. पितृ) महापातकिन् ।
 —शत्रु, सं. पुं. (सं.) मुख्य-प्रधान महा-
 मन्त्रिन्-अमात्यः-सचिवः ।
 —पुरुष, सं. पुं. (सं.) पुरुषर्षभः, नरोत्तमः
 २. दुष्टः (व्यंज्य में) ।
 —प्रभु, सं. पुं. (सं.) पवित्रात्मन्, महात्मन्
 २. नृपः ३. विष्णुः ४. शिवः ५. इन्द्रः ।
 —प्रलय, सं. पुं. (सं.) त्रिलोकानाशः, संसार-
 संहारः ।
 —प्रस्थान, सं. पुं. (सं. न.) मृत्युः ।
 —प्राण, वि. (सं.) महासंख्य, महाबल । सं.
 पुं. (सं.) वर्गमालायाः अक्षरविशेषाः (ख्,
 घ्, छ्, झ्, ङ्, ढ्, ध्, ध्, फ्, भ्,
 स्, प्, स, ह) ।
 —बली, वि. (सं. बलिन्) बलिष्ठ ।
 —बाहु, वि. (सं.) दीर्घ-आजानु, बाहु २. बल-
 वत् ।
 —ब्राह्मण, सं. पुं. (सं.) गणविप्रः ।
 —भाग, वि. (सं.) सौमत्यशालिन् ।
 —भारत, सं. पुं. (सं. न.) व्यासप्रगीत-
 श्लोकमयः इतिहासग्रन्थः ।
 —भाष्य, सं. पुं. (सं. न.) अष्टाध्यायोसूत्राणां
 पतंजलिकृतं बृहद्भाष्यम् ।
 —मांस, सं. पुं. (सं. न.) (१-८) गो-नर-
 गज-घोटक-महिष-व्राह्म-अष्ट-सर्प-मांसम् ।
 —माही, सं. स्त्री. (सं. + हि.) दुर्गा २. काली ।
 —माया, सं. स्त्री. (सं.) प्रकृतिः (स्त्री.)
 २. दुर्गा ३. गंगा ४. गौतमबहुजन्तनी ।
 —मारी, सं. स्त्री. (सं.) मरिका, जन्मारः ।
 —मुनि, सं. पुं. (सं.) मुनिपुंगवः, मुनीन्द्रः ।
 —मूल्य, वि. (सं.) महार्घ, बहुमूल्य ।
 —यज्ञः, सं. पुं. (सं.) बृहद्वागः २. आर्यैः
 प्रत्यहं कार्याः पंचयज्ञाः (ब्रह्मयज्ञः, देवयज्ञः,
 पितृयज्ञः, नृयज्ञः, बलिर्वैश्वदेवयज्ञः) ।
 —यात्रा, सं. स्त्री. (सं.) मृत्युः ।
 —युग, सं. पुं. (सं. न.) चतुर्थुगी ।
 —रथी, सं. पुं. (सं. महारथः) महायोधः ।
 —राजा, सं. पुं. (सं. महाराजः) राजेश्वरः,
 राजेन्द्रः, नृपश्रेष्ठः, सम्राज् (पुं.), अधिराजः ।
 —राजाधिराज, सं. पुं. (सं.) चक्रवर्ति-सार्ध-
 भीम-नृपः ।
 —रात्रि, सं. स्त्री. (सं.) महाप्रत्यर्धकारः-
 २. दे. 'महानिशा' ।
 —रानी, सं. स्त्री. (सं. महारानी) अधिरानी ।
 —हास, सं. पुं. (सं.) अट्टहासः, अति-हासः-
 हसितम् ।
 महाजन, सं. पुं. (सं.) नरर्षभः, पुरुषोत्तमः
 २. साधुः ३. धनिकाः, धनाढ्यः ४. कुसीदिकः-
 दिग्, वाङ्मयिकः-पितृ, ऋणदः ५. वणिज् (पुं.)
 ६. आर्यः, सज्जनः ।
 महाजनी, सं. स्त्री. (सं. महाजनः >) बुद्धि-
 जीविका, अर्थप्रयोगः, कुसीदं, कौलीयं
 २. लिपिविशेषः ।
 महात्म, सं. पुं. दे. 'माहात्म्य' ।
 महात्मा, सं. पुं. (सं. त्मन्) महाशयः, महा-
 तुभावः, नहामनस् (पुं.), उदारचरित ।
 महान्, वि. (सं. महत्) दे. 'महा' (१-३) ।
 महाराष्ट्र, सं. पुं. (सं.) दक्षिणापथे प्रांतविशेषः ।
 महाराष्ट्री, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'महत्' ।
 २. प्राकृतभाषाभेदः ।
 महावत्, सं. पुं. (महामात्रः) हस्तिकः,
 हासिकः, नवाजीवः, निषादिन्, आधोरणः,
 इभ्यः ।
 महावर, सं. पुं. (सं. महावर्ण ?) याव-यावक-
 अलक्तक-व्याघ्रः-रतः ।
 महावरा, सं. पुं. दे. 'मुहावरा' ।
 महाशन, वि. (सं.) अन्नर, वस्तर, औदरिक,
 उदरभरि ।
 महाशय, सं. पुं. (सं.) महात्मन्, महामनस्,

सज्जनः, आर्यः, उदारः, वैतस्-मतिः-धीः, महा-
जुभावः । (स्त्री. महाशया) ।
महास्वप्न, वि. (सं.) उच्च-पदस्थ-अधिकारिन् ।
२. शक्तिशालिन्, सशक्त, शक्तिमत् ।
महि, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'पृथिवी' ।
—पाल, सं. पुं. (सं.) दे. 'राजा' ।
महिमा, सं. स्त्री. [सं. महिमन् (पुं.)] महत्त्वं,
माहात्म्यं, गौरवं, महत्ता, गरिमन् (पुं.),
गुत्त्वं २. श्रीः (स्त्री.), शोभा, प्रभावः,
प्रतापः, तेजस् (न.), प्रभा, विभूतिः (स्त्री.)
३. सिद्धिविशेषः (योग.) ।
महिला, सं. स्त्री. (सं.) नारी, रामा, स्त्री,
ललना, धनिता ।
महिष, सं. पुं. (सं.) असुरविशेषः २. दे. 'भैसा'
३. अभिपिक्तो नृपः ।
महिषी, सं. स्त्री. (सं.) ३. 'भैस' २. पट्टराक्षी ।
मही, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'पृथिवी' ।
—धर, सं. पुं. (सं.) पर्वतः, गिरिः २. शेषनागः ।
—प, -पति, सं. पुं. (सं.) दे. 'राजा' ।
—रुह, सं. पुं. (सं.) वृक्षः, पादपः ।
—सुर, सं. पुं. (सं.) ब्राह्मणः ।
महीन, वि. (महा-क्षीण) दे. 'सूक्ष्म' तथा
'वारीक' ।
महीना, सं. पुं. [सं. मासः, मास (पुं.), मि.
का. माह] दे. 'मास' २. मासिकवेतनम् ।
महुआ, सं. पुं. (सं. मधुकः) गुडपुष्पः, मधु-
द्रमः, मधुः, मधुकः, मधु-पुष्पः-वृक्षः स्वयः,
माधवः ।
महेंद्र, सं. पुं. (सं.) दे. 'इन्द्र' २. विश्वः
३. पर्वतविशेषः ।
महेश, सं. पुं. (सं.) शिवः २. ईश्वरः ।
महेश्वर, सं. पुं. (सं.) शिवः २. परमेश्वरः
३. सुवर्णम् ।
महेश्वरी, सं. स्त्री. (सं.) दुर्गा, पार्वती ।
महोत्सव, सं. पुं. (सं.) महा-क्षया-उत्सवः-
पर्वन् (न.)-महत् (न.)-महः ।
महोदधि, सं. पुं. (सं.) महा-सागरः-अम्बिः ।
महोदय, सं. पुं. (सं.) महाशयः, महाजुभावः
(आदरसूचक संबोधन) २. देशव्यं, वैभवं
३. स्वयंः ४. मोक्षः । (स्त्री. महोदया)
महोपाध्याय, सं. पुं. (सं.) प्राध्यापकः,
पण्डितः ।
महौपध, सं. पुं. (सं. न.) भूम्याङ्गुल्यं २. शुंठी

३. लशुनं ४. वाराहोक्तेः ५. वरसनाम्नः
६. पिप्पली ७. अतिविषा ।
माँ, सं. स्त्री. (सं. मा) दे. 'माता' ।
माँगा^१, सं. स्त्री. हि. माँगना) दे. 'माँगना' ।
सं. पुं. २. आवदयकता, पृच्छा, जिष्टक्षा,
प्रेप्सा, लिप्सा ३. प्रार्थनाविषयः ।
माँगा^२, सं. स्त्री. (सं. मार्गः ?) सीमंतः,
*मूर्द्धजरखा ।
—निकाहना, कि. स., सीमंतवति (ना. धा.),
सीमंतं उज्री (भ्वा. प. अ.) ।
—चोटी, सं. स्त्री., केश, विन्यासः-संस्कारः ।
—जली, सं. स्त्री., विषया ।
माँगना, कि. अ. (सं. मार्गणं >) भिक्षु
(भ्वा. आ. से.) भिक्षाटनं कृ । कि. स.,
याच (भ्वा. आ. से.), अभि-प्र-अर्थ (लु.
आ. से.) २. कर्णं कृ अथवा ग्रह (क. प. से.) ।
सं. पुं., भिक्षणं, भिक्षा, भिक्षाटनं, याचनं-ना,
याच्ना, अभ्यर्थनं-ना, प्रार्थनं-ना ।
माँगने योग्य, वि., याचनीय, अभि-प्र-अर्थ-
नीय, प्रार्थयितव्य ।
माँगनेचाला, सं. पुं. भिक्षु, भिक्षुकः; याचकः,
प्रार्थकः, प्रार्थिन् इ. ।
माँगलिक, वि. (सं. शिवं-शुभं-कर (-री स्त्री.),
शिव, शुभ, कल्याण (-णी स्त्री.), मंगल, भद्र,
माँगल्य ।
माँगल्य, वि. (सं.) दे. 'माँगलिक' । सं. पुं.
(सं. न.) शुभं, भद्रं, कल्याणं, शिवम् ।
माँगा हुआ, वि., प्रार्थित, याचित ।
माँजना, कि. स. (सं. मार्जनं) प्र-सं-मृजू
(अ. प. से.; लु.), प्रक्षल् (लु.), धाव्
(भ्वा. प. से.; लु.), अव-निर-निज् (जु.
उ. अ.), पवित्री कृ २. पतंगगुर्जं तीक्ष्णीकृ,
मृज् (भ्वा. प. वे.) । कि. अ., अभ्यसु
(दि. प. से.) । सं. पुं., मार्जनं, प्रक्षालनं,
धावनं, अभ्यसनम् ।
माँजने योग्य, वि., मृज्य, मार्जनीय, प्रक्षाल-
नीय, धावनीय ।
माँजनेचाला, सं. पुं., मार्जकः, प्रक्षालकः,
धावकः, पार्वकः, शोधकः ।
माँजा हुआ, वि., मार्जित, मृज, प्रक्षालित इ. ।
माँझा^१, सं. पुं. (सं. मध्य >) पुलिनं, नदी-
मध्यस्थं, द्वीपं २. वरप्रदत्तं संभोजनं ३. भौद्र-
हिकः पीतवेशः ४. प्रकांडः, स्कंधः ।

मांसा^२, सं. पुं. (सं. मांजनं >) *पतंगः, गुणः सुदृकः, *मांजनः ।

मांसी, सं. पुं. (सं. मध्य >) दे. 'मलाह' ।

मांङ्ग, सं. पुं. (सं. मंड-टं) मकमंडः, आनामः, पिच्छकः-लंका, निस्त(ला)वाः, गाहरः, पिच्छः-कण्ठः ।

मांङ्गना, क्रि. म., दे. 'रौद्रना', 'मसलना' और 'गुंथना' ।

मांडलिक, सं. पुं. (सं.) मंडल-ईश्वरः-अर्धासः, अध्वक्षः ।

मांडव, सं. पुं. (सं. मंडपः) औदाहिकमंडपः ।

मांडवी, सं. स्त्री. (सं.) भरतपत्नी, कुशध्वजपुत्री ।

माङ्गा, सं. पुं. (सं. मंडकः) पिष्टकभेदः ।

मांङ्गी, सं. स्त्री. (सं. मंडः >) श्वेतसारः-मंडः-डम् ।

मांशिक, वि. (सं.) मंत्र-सम्बन्धित-विषयक । सं. पुं. (सं.) मंत्रविद्, वेदपाठिन् २. अभिचारिन्, मायिन् ।

मांश, वि. (सं. मंद) निःशोक, खिन्न, त्रिषणं २. मंदतर, निकृष्टतर, मलिनतर ।

मांश, सं. स्त्री. (देश.) शुष्कमोनशराशः, शकुन्धयः २. (हिलपशुनां) गुहा, गहर, त्रिवरम् ।

मांशगी, सं. स्त्री. (फा.) रोगः २. कलाति-ग्लानिः (स्त्री.) ।

मांश, वि. (फा.) श्रांत, क्लान्त २. अवशिष्ट ३. रूप, रोगिन् ।

मांस, सं. पुं. (सं. न.) पिशितं, पलं, पललं, तरसं, क्रथं, आमिषं, अस्त्रजं, कीरं, जांगलम् ।

—का धी, सं. पुं., मांस-सारः-स्नेहः, मेरुस् (न.) ।

—पेशां, सं. स्त्री. (सं.) शरीरस्थं मांस-विडकं, मांसपिंडी, स्तसा, वस्त्रसा, स्ततुः, स्तवः (ये पुरुषा मं ५००, स्त्रियां मं ५२० होती है) २. द्वितीयमसाहै गभंरूपम् ।

—भक्षक, सं. पुं. (सं.) मांस-अद् (पुं.)-अद्-भोजिन्-भक्षिन्-आहारिन्-आशिन् ।

—भक्षण, सं. पुं. (सं. न.) मांस-भोजन-अशनं-अदनं-आहारः ।

—रस, सं. पुं. (सं.) मांसमंडः-टं, दे. 'बलनी' ।

मांसल, वि. (सं.) पीन, पीयर, मांसदूर्ध २. पुष्ट, वृत्तां ३. बलवत्, बलिम् । सं. पुं., दे. 'उद्द' ।

मा, सं. स्त्री. (सं.) लक्ष्मीः (स्त्री.) २. मातृ (स्त्री.) ।

—वाप, सं. पुं., दे. 'मातापिता' ।

माइकरोमीटर, सं. पुं. (अं.) अणुमापकम् ।

माई, सं. स्त्री. [सं. मातृ (स्त्री.)] दे. 'माता' २. वृद्धा, वरती, स्वविरा ।

—का लाल, सं. पुं., उदारः, वदान्यः २. वीरः, शूरः ।

माकूल, वि. (अ.) यथार्थ, न्याय्य, उचित, युक्त, योग्य २. पवांस ३. उत्तम ।

माखन, सं. पुं., दे. 'भस्खन' ।

—च.र, सं. पुं., श्रीकृष्णः ।

मागध, सं. पुं. (सं.) मगधवासिन् २. जरा-संधः ३. चारणः, बंदिन् ।

माघ, सं. पुं. (सं.) शिशुपालवधमहाकाव्य-लेखको महाकविविशेषः । २. तपस् (पुं.), मासविशेषः (जनवरी-फरवरी) ।

माजरा, सं. पुं. (अ.) वृत्तं, वृत्ततः २. वटना ।

माजाया, वि. (सं. माजात) सोदर, सहोदर, सोदर्य ।

माजू, सं. पुं. (फा.) मञ्जमायि-छिद्रा-फलं, मायिका ।

—फल, सं. पुं. (फा + सं.) माया-मायि-छिद्रा-फलं, मायिकम् ।

माजून्, सं. स्त्री. (अ.) अवलेहः, लेहं (औषधं) २. मंगामिश्रित-वलेहः ।

माट, सं. पुं. (हि. मटका) बृहन्नोलभाहं २. 'मटका' ।

माटी, सं. स्त्री., दे. 'मिट्टी' ।

माणिक, सं. पुं. (सं. माणिक्यं) शोण-रत्न-उपलः, पद्मरागः, लोहितकं, रत्नम् ।

मातंग, सं. पुं. (सं.) द्विपः, गजः ।

मात, सं. स्त्री. (अ.) परा-अग्नि-परि-भवः, पराजयः २. परानित, परास्त, पराभूत ।

—करना, क्रि. म., विजि (न्वा. आ. अ.), पराभू ।

—होना, क्रि. अ., पराभू (कर्म), विजित (वि.) भू ।

मातदिल, वि. (अ. मोऽदिल) अनुष्णशीत, मध्यम, सामान्य, मध्यमप्रकृतिक ।

मातबर, वि. (अ. मोतविर) दे. 'विश्वसनीय' ।

मातबरी, सं. स्त्री. (अ. + का.) दे. 'विश्वसनीयता' ।

मातम, सं. पुं. (अ.) मृतकः, शोकः, श्रद्धं,
विलासः, परिदेवना ।

—स्नाना, सं. पुं., शोकसदनम् ।

—पुरी, सं. स्त्री. (अ. + फा.) आन्तना, आसनं,
सात्वनं, शोकसमनं, अनुशोचनम् ।

—पुरी करना, कि. स., अनुशोकं प्रकाशं
(प्रे.), अनुशुच् (भ्वा. प. रो.), मृतकदम्पुन्
समाश्रस् (प्रे.) ।

मातमी, वि. (फा.) शोक-सूचक-प्रकाशक-पूर्ण ।

—लिबास, सं. पुं. (फा. + अ.) शोक-वेशः (अ.) ।

मातरिङ्गना, सं. पुं. (सं. -श्चन्) वायुः दे.
वातः, पवनः, अनिलः ।

मातलि, सं. पुं. (सं.) इन्द्रसारथिः ।

—सूत, सं. पुं. (सं.) सुरेशः, शचीपतिः, इन्द्रः ।

मातहत, वि. (अ.) अधीन, आयत्त ।

मातहती, सं. स्त्री. (अ. मातहत) अधीनता,
आयत्तता ।

माता^१, सं. स्त्री. [सं. मातृ (स्त्री.)] जननी,
जनयित्री, शुश्रूः (स्त्री.), जनीनिः (स्त्री.),
जनित्री, सवित्री, प्रभुः (स्त्री.), अम्मा, अम्मा,
अम्बिका, अम्बालिका, माता (वचिच्) ।
२. वृद्धा, स्थविरा, पूज्यनारी ३. गौः (स्त्री.)
४. भूमिः (स्त्री.) ५. शीतला-स्त्री, दे. 'त्रेबक'
६. मसूरी-नरिका, दे. 'खसरा' ।

—ढलना, कि. अ., शीतला शम् (द्वि. प. से.) ।

—निकलना, कि. अ., शीतला आविर्भू ।

—पिता, सं. पुं. पितरौ, मातापितरौ, मातर-
पितरौ, मातातौ, अंबाजनकौ ।

—मह, सं. पुं. (सं.) मातुर्जनकः ।

—मही, सं. स्त्री. (सं.) मातुर्जननी ।

छोटी—, सं. स्त्री., लड्डुमसूरिका (हि. लकड़-
काकड़ा) ।

माता^२, वि., दे. 'मत्' (२) ।

मातुल, सं. पुं. (सं.) मातृप्राद, पितृश्वालः,
मातृकः ।

मातुली, सं. स्त्री. (सं.) मातुला-स्त्री,
मातुल-पत्नी ।

मातृ, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'माता' ।

—भाषा, सं. स्त्री. (सं.) जन्मभाषा ।

मातृक, वि. (सं.) मातृ-विषयक-संबन्धिन् ।
सं. पुं. (सं.) दे. 'मत्तुल' ।

मातृका, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'माता' २. उप-
वि, माता, मातृरूपिणी ३. धात्री, धातृका,

अंक्षास्त्री ४. ब्राह्मीत्यादयः सप्तदेव्यः ५. स्वर-
वर्णचिह्नानि, मंत्रा (१, ि, इ.) ।

मात्र, अन्ध. (सं. -मात्रं) एव, केवलम् ।

मंत्रा, सं. स्त्री. (सं.) परि-मन्, मातृ, मानं,
अंशः, भागः २. सङ्घट्टेभ्यः औषधनामः
३. मात्रिका, कला, हस्तवर्णोच्चारणापेक्षितः
कालः ४. स्वरवर्णचिह्नं (१, ि, इ.) ।

मात्मन्थं, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'मत्तर' ।

माथा, सं. पुं. (सं. मस्तकः-कं) दे. 'मस्तक'
(२) अग्रं, अधः-भागः-देशः ३. मूर्ध्वं (पुं.)-
धिसरन् ।

—पञ्ची, } सं. स्त्री., दे. 'मगात्रपञ्ची' ।

—विट्टन, } सं. स्त्री., दे. 'मगात्रपञ्ची' ।

—टेकना, मु., चरगयोः पत् (भ्वा. प. से.),
प्रणम् (भ्वा. प. अ.) ।

—ठनकना, मु., भाविसंकटं आशङ्क् (भ्वा.
आ. से.) ।

—रगड़ना, मु., पादयोः पतित्वा याच्
(भ्वा. आ. से.) ।

मादक, वि. (सं.) मद-कारक-जनक ।

मादकता, सं. स्त्री. (सं.) मदकारकता ।

मादर, सं. स्त्री. [फा., मि. सं. मातरः (मातृ
से)] जननी, जनित्री, मातृ (स्त्री.) ।

—ज्ञाद, वि. (फा.), मि. सं., मातृजात)
सहज, स्वाभाविक, नैसर्गिक, ज्ञात्या-जन्मना-
जन्मतः (अंधः, बधिरः इ.) २. दिगंबर,
नग्न ३. सोदर, सहोदर ।

मादा, सं. स्त्री. (फा.) नारी, स्त्री., स्त्रीजाती-
यको जीवः ।

माहा, सं. पुं. (अ.) प्रकृतिः (स्त्री.) उपा-
दानकारणं २. योग्यता इ. दे. 'पीप' ।

माधव, सं. पुं. (सं.) विष्णुः, नारायणः
२. वैशाखः ३. वसंतः ।

माधवी, सं. स्त्री. (सं.) वासंती, सुगंधा,
चंद्रवल्ली, भद्रलता, अतिमुक्तकः, माधविका
२. सुराभेदः ।

माधुरी, सं. स्त्री. (सं.) मधुरता २. सुंदरता
३. मधम् ।

माधुर्यं, सं. पुं. (सं. न.) मधुरता-स्वं,
मिष्टत्वं, स्वादुत्वं, मधुमयता, मिष्टता २. सौन्दर्यं,
लावण्यं ३. चित्तद्रवीभावमयो ह्लादः, काव्य-
गुणभेदः ।

माध्यंदिन

[४६५]

मानुष

माध्यंदिन, वि. (सं. >) मध्य, मध्यम, मध्य-
वर्तिन् । सं. पुं., मध्याह्नः, मध्य(ध्यं) दिनम्,
उद्दिनम् २. वाजसनेयिसंहितायाः शाखाविशेषः ।

माध्यम, वि. (सं.) माध्यमक [--मिका
(स्त्री.)], माध्यमिक (--मिकी स्त्री.).
माध्य [--ध्वी (स्त्री.)], केन्द्रीय, मध्यम ।
सं. पुं. (सं. न.) उपकरणं, साधनं २. मृत-
संदेशहरः ।

माध्यमिक, वि. (सं.) मध्य, मध्यम, मध्य-
वर्तिन् । सं. पुं. बौद्धसम्प्रदायविशेषः ।

माध्यस्थ्य, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'मध्यस्थ्यता' ।

माध्वी, सं. स्त्री. (सं.) मध्यादिनिमित्तसुरा
२. माधवी, वासन्ती, सुगंधा ।

मान, सं. पुं. (सं.) गर्वः, अभिमानः, दर्पः,
अहंकारः, अवलेपः २. संमानः, प्रतिष्ठा, आदरः,
संभावना, पूजा, प्रश्रयः-यणं ३. कोपः, प्रीति-
प्रसादः-अभावः । (सं. न.) यौतवं, पौतवं,
शाय्यं, दुक्कयं (हि. तौल नाप) २. प्र-परि,-
माणं, मात्रा ३. इयत्ता, विस्तारः ४. भारः,
गुरुत्वं, तौलः ५. भारभावं, परिमाणं, मात्रं,
मातृः ६. मान, संज्ञः-सूत्रं ६. ७. साधनं, हेतुः,
शुक्तिः (स्त्री.) ।

—करना, कि. स., सत्-पुरस्, कृ. संमन्
(प्रे.), पूज्-मह् (जु.) । कि. अ., मानं धा
(जु. उ. अ.), कुप् (दि. प. से.) २. दृप्
(दि. प. अ.), गर्व् (स्वा. प. से.) ।

—चित्र, सं. पुं. (सं. न.) देशालिख्यं, प्रदेश-
चित्रं, दे. 'नक्शा' ।

—मंदिर, सं. पुं. (सं. न.) वैशाल्य २. कोप-
भवनं, मानगृहम् ।

—मनौती, सं. स्त्री. (सं. न. हि.) दे. 'मन्नन'
३. पारस्परिकप्रेमम् (पुं. न.) ३. कोपप्रसा-
दनन्ने ।

—मोचन, सं. पुं. (सं. न.) कोप-उपशमनं-
अपनयनं, प्रसादनम् ।

—रखना, कि. स., दे. 'मान करना' कि. स.
२. स्वाभिमानं-आत्मसंमानं रक्ष् (स्वा. प. से.) ।

—हानि, सं. स्त्री. (सं.) अप-परि, नादः,
अपमाषणं, अवधीरणा, मानभंगः, अवमानना ।

मानता, सं. स्त्री. (हि. मानना) दे. 'मजत'
२. संमानः, प्रतिष्ठा ।

मानना, कि. अ. (सं. मननं) वलृप् (प्रे.),

तर्कं (जु.), उत्प्रेक्ष् (स्वा. आ. से.) २. अंगी-
स्वी, कृ. अभ्युपगमं, अभ्युप-इ (अ. प. अ.),
मन् (दि. आ. अ.) ३. सम्मार्गगामिन् भू ।
कि. स., दे. 'मानना' कि. अ. २. दक्ष-प्रवीणं-
पूज्यं मन् (दि. आ. अ.) ३. श्रद्धा (जु. उ.
अ.), विश्वस् (अ. प. से.) ४. दे. 'मजत
मानना' । सं. पुं., स्वी-अंगी, करणं-कारः,
अभ्युपगमः-गसनं, कल्पनं, उत्प्रेक्षणं-क्षा,
विश्वसनन् ।

माननीय, वि. (सं.) पूज्य, पूजनीय, सत्कार्यं,
आदरणीय, संमान्य ।

मानने योग्य, वि., स्वी-अंगी, कार्यं, मंतव्यं,
अभ्युपेय २. श्रद्धेय, पूज्य, विश्वसनीय ।

माननेवाला, सं. पुं., स्वीकर्तृ, मंतृ २. श्रद्धा-
जुः, विश्वासिन् ।

मानव, सं. पुं. (सं.) दे. 'मनुष्य' ।

मानवी, सं. स्त्री. (सं.) मानुषी, स्त्री, नारी ।
वि., मानव, मानुष, पौहंधेय, मनुजोचित ।

मानस, सं. पुं. (सं. न.) मनस्-चेतस् (न.),
हृदयं, दे. 'मन' (१-४) । २. कैलासवर्ती
सरोवरविशेषः ३. कामदेवः, कंदर्पः । वि.,
मानसिक, चैत, बौद्धिक, हादिक ।

—शास्त्र, सं. पुं. (सं. न.) मनोविज्ञानम् ।

मानसिक, वि. (सं.) मनोभव, मानस, दे.
'मानस' वि. ।

माना हुआ, वि., स्वी-अंगी, कृत, मत २. पूजित
प्रतिष्ठित, विश्वस्त ।

मानिद्, वि. (का.) तुल्य, सदृश, वत ।

मानिक, सं. पुं., दे. 'भाणिक' ।

मानित, वि. (सं.) आदृत, प्रतिष्ठित, पूजित ।

मानिनी, सं. स्त्री. (सं.) रक्षनायिका । वि.,
मानवती, अभिमानिनी २. रक्षा, प्रतीपा,
कुपिता ।

मान्नी^१, वि. (सं. निन्) अहंकारिन्, दृप्त,
गर्वित २. संमानित, प्रतिष्ठित । सं. पुं., रक्ष-
नायकः २. सिद्धः ।

मान्नी^२, सं. पुं. (अ.) अर्थः, तात्पर्यं २. तत्त्वं,
रहस्यं ३. प्रयोजनम् ।

मानुष, सं. पुं. (सं.) मनुष्यः, नरः, दे.
'मनुष्य' २. प्रमाणभेदः (शर्म.) । वि., मानु-
षि(ष)क, मानुष्यक, मनुष्यसंबंधिन्, मानुष्य,
मानुषीय ।

मानुषिक

[४६६]

भार

मानुषिक, वि. (सं.) दे. 'मानुष' वि. ।
 मानुष्य, सं. पं. (सं. न.) मनुष्यत्वात्त्वम् । वि.,
 दे. 'मानुष' वि. ।
 माने, सं. पुं., दे. 'मानी' (१-३) ।
 मानो, अव्य. (हि. मानना) इव, (प्रायः मन्)
 (दि. भा. अ.) से अनुवाद करते हैं ।
 मान्य, वि. (सं.) दे. 'माननीय' ।
 माप, सं. स्त्री. (हि. मापना) (सामान्य)
 मानं, प्र-परि-माणं, यौ(पी)तवं, पाथ्यं,
 दुवयं २. (गजादि) मान, दंडः-खतं इ.,
 ३. (बट्टा) भारमानं, माडः, मात्रं ४. (पात्र)
 प्रतीमानं, प्रस्थः ५. मानं, मापनं, माननिरूपणं
 ६. परिमाणं, इयत्ता, दे. 'मान' ।
 मापक, सं. पुं. (सं.) माननिरूपकः, माटु (पुं.)
 २. दे. 'माप' (१-४) ।
 मापन, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'मापना' सं. पुं. ।
 मापना, क्ति. स. (सं. मापनं) प्र-परि-मा
 (अ. प. अ.; जु. भा. अ.; दि. भा. अ.),
 मानं निरूप (चु.) २. तुळ (चु.), भारं
 निरूप, दे. 'तोलना' । सं. पुं., मानं, मान-
 निरूपणं, मापनं, मस्तिः (स्त्री.), तोलनं,
 भारनिरूपणम् ।
 मापने योग्य, वि., परि-मेय, तोलयितव्य ।
 मापनेवाला, सं. पुं., दे. 'मापक' ।
 मापा हुआ, वि. परि-मित, ज्ञातमान, तोलित ।
 माफ़, वि., दे. 'मुआफ़' ।
 माफ़िक, दे. 'मुआफ़िक' ।
 माफ़ी, दे. 'मुआफ़ी' ।
 मामता, सं. स्त्री. (सं. ममता) दे. 'ममता'
 (१-४) ।
 मामा, सं. पुं., दे. 'मातुल' ।
 मामा, सं. स्त्री. (फ़ा.) मातु (स्त्री.) जननी
 २. बुद्धा ३. दासी ४. धात्री, मातृका ।
 मामि(म)ला, सं. पुं., दे. 'मुआमिला' ।
 मामी, सं. स्त्री., दे. 'मातुली' ।
 मामू, सं. पुं., दे. 'मातुल' ।
 मामूल, वि. (अ.) दे. 'आदत' २. रीति-
 परिपाटी-दिः (स्त्री.) ।
 मामूली, वि. (अ.) साधारण, सामान्य ।
 मायका, सं. पुं. (हि. माय) ऊढायाः पितृ-
 मातृ-गृहम् ।
 मायल, वि. (फ़ा.) आनत, प्रवृत्त, प्रवण
 २. निश्चित ।

माया, सं. स्त्री. (सं.) द्रव्यं, धनं, संपद (स्त्री.)
 २. अज्ञानं, भ्रांतिः (स्त्री.), अविद्या ३. छलं,
 कपटं ४. प्रकृतिः (स्त्री.), सृष्टेः उपादान-
 कारणं ५. ईश्वरीयशक्तिः (स्त्री.) ६. इंद्रजालं,
 कुहकं ७. देव-स्त्रीलःशक्तिः (स्त्री.)-प्रेरणा
 ८. मनता-त्वम् ।
 —कार, सं. पुं. (सं.) मायाजीविन्, ऐन्द्र-
 जालिकः ।
 —जोड़ना, क्ति. स., धनं सं-चि (स्वा. प. अ.) ।
 —मोह, सं. पुं. (सं.) जगज्जालं २. ममता-
 त्वम् ।
 —रूप, वि. (सं.) मायामय, अलौक, भ्रांति-
 मय, मायिक ।
 —वती, सं. स्त्री. (सं.) रतिः (स्त्री.), काम-
 पत्नी ।
 —वाद, सं. पुं. (सं.) भ्रांतिवादः, जीवजग-
 न्मिथ्यात्ववादः ।
 मायाविनी, सं. स्त्री. (सं.) मायिनी, कपटिनी,
 बंचनशीला २. ऐन्द्रजालिकी ।
 मायावी, सं. पुं. (सं. विन्) मायिन्, कपटिन्,
 बंचकः, भूर्त्तः, शठः २. ऐन्द्रजालिकः, कुहुक-
 जीविन्, मायाकारः ।
 मायिक, वि. (सं.) कृतक, कृत्रिम, २. दे.
 'मायावी' (२) ।
 मायी, वि. (सं. विन्) मायाविन्, भूर्त्त, बंचक,
 कपटिन् ।
 मायूस, वि. (फ़ा.) दे. 'निराश' ।
 मायूसी, सं. स्त्री. (फ़ा.) दे. 'निराशा' ।
 मार, सं. पुं. (सं.) कामदेवः २. विष्णुः
 ३. विषं ४. धुरुरः ।
 मार, सं. स्त्री. (सं. मु.) मारणं, हननं,
 हिसनं २. घातः, बधः, हत्या ३. ताडनं, आह-
 ननं, प्रहरणं ४. आघातः, प्रहारः ५. युद्धम् ।
 —काट, सं. स्त्री., युद्धं २. बधः, घातः, हननं,
 हिसनम् ।
 —घाद, } सं. स्त्री., मारताड, मारणताडनं,
 —पीट, } अभिमर्दः, अभिसंपादः ।
 —खाना, }
 —पहुना, } मु., ताड-प्रह (कर्म.) ।
 —गिराता, मु., आहत्य निपट (प्रे.) ।
 —ढालना, मु., हन (अ. प. अ.), मृ-व्या-
 पद (प्रे.) ।

—बैठना, मु., परद्रव्यं कपटेन आत्मसात्-कु ।
 —भगाना, मु., विद्रु (प्रे.), पलाय् (प्रे.),
 सर्वथा परा-जि (भ्वा. आ. अ.) ।
 —मारना, मु., भृशं-अत्यर्थ-निर्दयं तड (जु.) ।
 —ल्लाना, मु., कुट्ट् (जु.), अन्यःयेन अपह
 (भ्वा. प. अ.) ।
 —लेना, मु., दे. 'मार बैठना' ।
 —हटाना, मु., बलेन अपस (प्रे.)-विद्रु (प्रे.) ।
 मारक, वि. (सं.) घातक, हिंसक, संहारक,
 नाशक ।
 मारका, सं. पुं. (अं. मार्कं) चिह्नं, लक्षणं,
 अभिज्ञानम् ।
 मारका, सं. पुं. (अ.) युद्धं, संग्रामः २.
 विशिष्ट, घृत-घटना ।
 मारकीन, सं. स्त्री. (अं. नैन्किन्) *मारकीनं,
 स्थूलवस्त्रभेदः ।
 मारण, सं. पुं. (सं. न.) हननं, हिंसनं,
 व्यापादनं २. तांत्रिकप्रयोगभेदः ।
 मारतौल, सं. पुं. (पुर्त० मोटली) महा-बृहद्-
 धन-विषयः ।
 मारना, क्रि. स., (सं. मारणं) मृ-न्यापत्
 (प्रे.), हन् (अ. प. अ.), हिस् (भ्वा. रु.
 प. से.), सद् (जु.) २. तड् (जु.), प्रह
 (भ्वा. प. अ.), आहन् (अ. प. अ.) ३. पीड्
 (जु.), दुःखयति (ना. धा.) ४. मल्लयुद्धा-
 दिषु निपत् (प्रे.)-पराजि (भ्वा. आ. अ.)
 ५. (क्वाडादि) अ-पिधा (जु. उ. अ.),
 अ-सं-वृ (स्वा. उ. से.) ६. मुच-प्रक्षिप् (जु.
 प. अ.), आस् (दि. प. से.) ७. निग्रह
 (क्. प. से.), निरुध् (रु. प. अ.) ८. नश-
 ध्वंस् (प्रे.) ९. (धात्व-दिकं) भस्मीकृ
 १०. अन्यायेन आत्मासात् कु ११. अनु-स्था
 (भ्वा. प. अ.) १२. जि (भ्वा. प. अ.)
 १३. दंश् (भ्वा. प. अ.) । सं. पुं., मारणं,
 हननं, निषूदनं, हिंसनं, विनाशनं, व्यापादनं,
 प्रमापणं २. हत्या, वधः, हिंसा, घातः
 ३. आहननं, ताडनं, प्रहरणं ४. पीडनं
 ५. निपातनं ६. पिधानं ७. नाशनं, ध्वंसनं
 ८. भस्मीकरणं ९. अन्यायेन अत्ममात्करणं
 १०. दंशनं, दं. ।
 मारने योग्य, वि., हतव्य, हिंसितव्य, व्यापाय
 २. ताडयितव्य, आहननीय, इ. ।

मारनेवाह्ला, सं. पुं., घातकः, हिंसकः, ताडकः ।
 मारपेच, सं. स्त्री. (हि. मारना + पेच) क्लृप्तं,
 कपटोपायः ।
 मारवाड, सं. पुं., राजस्थानस्य भागविशेषः ।
 मारवाडी, सं. पुं., मारवाडवासिन् । सं. स्त्री.
 मारवाडी, मारवाडभाषा ।
 मारा, वि. (हि. मारना) दे. 'मारा हुआ' (१-२) ।
 —जाना, क्रि. अ., हन्-हिंस-सद् (कर्म.) ।
 —मार, सं. स्त्री., मिथःताडनं, कठिः, संघर्षः ।
 क्रि. वि., सत्वरं, सवेगं, शीघ्रतया ।
 —मार करना, मु., त्वर् (भ्वा. आ. से.),
 शीघ्रं या (अ. प. अ.)-कृ ।
 —मारा फिरना, मु., मुधा परिभ्रम् (भ्वा. दि.
 प. से.), क्षीणवृत्तिक (वि.) पर्यट् (न्वा. प. से.) ।
 —हुआ, वि., हत, व्यापादित, मारित,
 २. ताडित, प्रहत, आहत ।
 मारी, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'मरी' ।
 मारुत, सं. पुं. (सं.) वायुः, मरुत् (पुं.),
 मरुतः ।
 —तनय, सं. पुं. (सं.) पवन-सुतः-पुत्रः-जः,
 मारुतिः, आञ्जनेयः ।
 मारु, सं. पुं. (हि. मारना) रागभेदः २. रण-
 भेरी-दुंदुभिः । वि., मारक, हृदयवेधक ।
 मारे, अव्य. (हि. मारना) कारणेन-घात, हेतोः ।
 मार्ग, सं. पुं. (सं.) अघ्न-पथिन् (पुं.), पथः,
 वर्त्मन् (न.) २. चरणपथः, पदवी-विः (स्त्री.),
 पथा, पङ्क्ति-तिः (स्त्री.) ३. प्रतोली, राजपथः,
 रथ्या, वाहनी, श्रीपथः, सरणी-णिः (स्त्री.)
 ४. बोधी-धिः (स्त्री.), निशिखा ५. उपायः,
 युक्तिः (स्त्री.) ।
 मार्गशीर्ष, सं. पुं. (सं.) आग्रहायणिकः,
 मार्गः, मार्गशिरः-रस् (पुं.), सहस् (पुं.) ।
 मार्जन, सं. पुं. (सं. न.) मार्तिः-शुद्धिः (स्त्री.),
 मार्जना, मृजा, प्रक्षालनं, धावनं, शोधनं, पवनं,
 निर्मलीकरणम् ।
 मार्जनी, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'शाङ्' ।
 मार्जार, सं. पुं. (सं.) दे. 'बिल्ल' (स्त्री स्त्री.) ।
 मार्जित, वि. (सं.) गूत, शोधित, प्रक्षालित, पीत ।
 मारुड, सं. पुं. (सं.) सर्वः २. अर्कः-रूपः
 ३. शूकरः ।
 मारुव, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'मृदुता' ।
 माक्रंठ, अव्य. (अ.) दे. 'दारा' ।

मार्मिक

[४६८]

मास

मार्मिक, वि.(सं.) प्रभावशालिन्, हृदयग्राहिन् ।
माल, सं. पुं. (अ.) संपद-संपत्तिः (स्त्री.),
 वित्तं, अर्थः २. सामग्री, परिच्छेदः २. पण्य-
 जातं, पणसाः (पुं. बहु.), क्रय्यद्रव्याणि (न.
 बहु.) ४. राजस्वं, करः ५. उत्पन्नं, प्रसवः,
 फलं ६. स्वादुभोजनं ७. गौयधु, धनम् ।
 —**खाना**, सं. पुं. (फ्रा.) भांडारं, पण्यागारम् ।
 —**गावी**, सं. स्त्री. (फ्रा + हिं.) द्रव्यशकटी,
 दे. 'गाढी' ।
 —**गुजार**, सं. पुं. (फ्रा.) राजस्वदायकः,
 भूमिकरदः ।
 —**गुजारी**, सं. स्त्री. (फ्रा.) भूमिक्षेत्र-कर-
 शुल्कः ।
 —**टाल**, सं. पुं., धनं, वित्तं, संपद (स्त्री.) ।
 —**दार**, वि. (फ्रा.) धनिक, धनाढ्य ।
 —**मस्त**, वि. (फ्रा.) वित्तवृत्त, धन-गवित्त-मत्त ।
 माला—, वि., सुसंपन्न, सुसृष्ट ।
मालकंगनी, सं. स्त्री. (हिं. माल ? + सं. कंगुनी)
 महाज्योतिष्मती, कंगुनी, कनकप्रभा, सुरलता,
 तीजा, तेजस्विनी (लताभेदः) ।
मालती, सं. स्त्री. (सं.) सुमना, सुमनस्
 (स्त्री., न.), जाती-तिः (स्त्री.) २. ज्योत्स्ना
 ३. रात्री ।
मालद्वह, सं. पुं. (देश०) बिहार राज्यस्य-
 नगरविशेषः २. आश्रमभेदः ।
मालयु(पू) आ, सं. पुं. (अ. माल + सं. पूषः)
 पूषः, पित्रकः, दे. 'पुआ' ।
मालवा, सं. पुं. (सं. मालवः) अर्वाचदेशः ।
मालवीय, वि. (सं.) मालवसम्बन्धिनः । सं.
 पुं., मालववासिन् २. विप्रभेदः ।
माला, सं. स्त्री. (सं.) माल्यं, सज् (स्त्री.),
 माल(लि-ला)का, आपीडः, अवतंसः, अंकिलिः
 (स्त्री.) २. पंक्तिः-आवलिः-राजिः-श्रेणिः (स्त्री.)
 ३. समूहः, निकरः ४. अक्ष-जप-माला ५. कंठ-
 माला, द्वारः ।
 —**कार**, सं. पुं. (सं.) दे. 'माली' ।
 —**केरना**, मु., ईश्वरं, भज् (भ्वा. उ. अ.),
 श्रावणं जप् (भ्वा. प. से.) ।
मालामाल, वि. (अ.) समृद्ध, सम्पन्न, धन-
 धान्यपूर्ण ।
मालिक, सं. पुं. (अ.) परमेश्वरः २. स्वामिन्,
 प्रभुः ३. पतिः [मालिका (स्त्री.) ।]
मालिका, सं. स्त्री. (सं.) पंक्तिः-श्रेणिः-ततिः-

(स्त्री.) २. माला ३. कंठभूषणभेदः ४. द्राक्षा-
 मयं ५. मालिनी ६. दे. 'चनेली' ।
मालिकी, सं. स्त्री. (फ्रा. मालिक) स्वामित्वं,
 प्रभुत्वं, स्वत्वम् ।
मालिक्यूल, सं. पुं. (अं.) व्यूहाणुः, अणुः ।
मालिन, सं. स्त्री. (सं. मालिनी) मालाकारी,
 मालिकी ।
मालिन्य, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'मलिनीता'
 २. अंधकारः ।
मालियत्त, सं. स्त्री. (अ.) मूल्यं, अर्थः २. धनं
 ३. मूल्यवद्द्रव्यम् ।
मालिया, सं. पुं., दे. 'मालगुजारी' ।
मालिश, सं. स्त्री. (सं.) अभ्यंजनं, मर्दनं,
 घर्षणं, संवाहनम् ।
माली, सं. पुं. (सं. लिन्) मालाकारः,
 मालिकः, उद्यानपालः २. जातिविशेषः ३.
 मालाधारिन् ।
माली, वि. (अ. माल) अधिक, सांपत्तिक-
 अर्थ-द्रव्य-धन-विषयक ।
मालीखोलिया, सं. पुं. (यूनानी) विवाद-
 वायुरीणः, श्लैथिकोन्मादः ।
मालीदा, सं. पुं. (फ्रा.) दे. 'मलीदा' ।
मालूम, वि. (अ.) ज्ञात, दे. 'विदित' ।
माल्टाक्रीवर, सं. पुं. (अं.) माल्टाज्वरः ।
माल्य, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'माला'(१)
 २. पुष्पं, कुसुमम् ।
मावस, सं. स्त्री., दे. 'अमावस्या' ।
मावा, सं. पुं. (सं. मंडः) दे. 'मांड' २. किलाट.
 ३. गोधूनादिकस्य दुग्धं ४. अंड-गर्भः-पीतिमन्
 (पुं.) ५. तमासु, मासरः-किष्कः ६. सारः,
 निश्चार्पः ७. सामग्री, उपकरणजातम् ।
माशकी, सं. पुं. (फ्रा. मशक) इतिश्वरः ।
माशा-वा, सं. पुं., दे. 'नसा' ।
 वल्लभः, प्रियः ।
माशूक, सं. पुं. (अ.) कांतः, दक्षितः, वल्लभः,
 प्रियः ।
माशूका, सं. स्त्री. (अ.) प्रिया, कांता, दक्षिता,
 वल्लभा ।
माष, सं. पुं. (सं.) कुरुविंदः, धान्यवीरः,
 वृषाज्वरः, मांसलः, बलघ्नः, पित्र्यः, पितृ-
 भोजनः २. दे. 'मश' ३. दे. 'मासा' ।
मास, सं. पुं. (सं. पुं. न.) वर्षांश, वर्षाहः,
 शुक्लकृष्णपक्षद्वयसमकः कालः, त्रिंशदिनात्मकः

समयः, मास (पुं., इसके पहले पांच रूप नहीं होते), मासकः २. चांद्रमासः, तांतः, सांवत्सरः ३. सौरमासः, सवनः ।
 —भर का, वि., मास्य, मासीन (बालकादि) ।
 हर—, क्रि. वि., प्रति-अनु-मासं, मासे नसे ।
 मास^२, सं. पुं., दे. 'मास' ।
 मासइ, सं. पुं. (हि. मासी) मातृश्वसु, श्वः-पतिः ।
 मासा, सं. पुं. (सं. मासः) मापकः, माषः, हेमः, धानकः, अष्टगुजामाडः ।
 —भर, वि., माष-मास-मात्र २. अत्यल्प ।
 —तोला होना, मु., दशाद्याः अस्थिरत्वं-अधु-वत्वं-परिवर्तित्वम् ।
 मासिक, वि. (सं.) मासानुमासिक, प्रतिमा-सिकः, मासि श्व, मासीन । सं. पुं. (सं. न.) अन्वाहार्य, श्राद्धभेदः २. रजोदर्शनं ३. मासि-कवेतनम् ।
 —धर्म, सं. पुं. (सं.) श्रुतुः, आर्तवं, रजसु (न.), रजः, रजःश्रावः ।
 —पत्र, सं. पुं. (सं. न.) प्रतिमासिकपत्रिका ।
 मासी, सं. स्त्री. (सं. मातृश्वसु) जननी-अगिनी ।
 —का लड़का, सं. पुं., मातृश्वसेयः, मातृश्वसेयीः ।
 —की लड़की, सं. स्त्री., मातृश्वसेयी, मातृश्वसेयी ।
 मासीन, वि. (सं.) मासिक, मास्य, मास्य-नुमासिक ।
 माह, सं. पुं. (फा.) दे. 'नाम' २. चंद्रः ३. प्रियः ।
 —ताब, सं. पुं. (फा.) चंद्रः २. चन्द्रिका ।
 —ताबी, सं. स्त्री. (फा.) दे. 'महताबी' ।
 —दार, वि. (फा.) दे. 'मासिक' । क्रि. वि., प्रतिमासम् । सं. पुं., मासिकवेतनम् ।
 —वारी, वि. (फा.) दे. 'नासिक' ।
 माहात्म्य, सं. पुं. (सं. न.) महिमन्-गरिमन् (पुं.), महत्त्व, महत्ता, गौरव, महत्प्रता, २. नीर्यमात्रः-ग्रंथाध्ययनादिकस्य विशिष्टफलम् ।
 माही, सं. स्त्री. (फा.) मीनः, मत्स्यः ।
 —गीर, सं. पुं. (फा.) दे. 'नखुअ-बा' ।
 माहुर, सं. पुं. (सं. मधुरं) विष, गरलः-लम् ।
 मिऊदार, सं. स्त्री. (अ.) मात्रा, परिमाणं, मानम् ।
 मिस्वर, सं. पुं. (अं.) मिश्रम् ।

मिचकाना, क्रि. स. (हि. मिचना) नैत्रेऽसकृत् निमीलू (श्वा. प. से.) उन्मीलू च, नयने पुनः पुनः निमिष् (तु. प. से.) उन्मिष् च, असकृत् निमेषोन्मेषं कृ २. दे. 'मीचना' ।
 मिचना, क्रि. अ. इ. 'मीचना' के कर्म. रूप ।
 मिचलाना, क्रि. अ., दे. 'मचलाना' (१) ।
 मिजराब, सं. स्त्री. (अ.) परि(री)वादः, वीणासुद्रा ।
 मिजाज, सं. पुं. (अ.) प्रकृतिः, स्वभावः २. शारीरिक-मानसिक-अवस्था-दशा ३. दर्पः ।
 —दार, वि. (अ. + फा.) दृप्त, गवित ।
 —पुरसी, सं. स्त्री. (अ. + फा.) कुशल-शृच्छ्राः ।
 —शरीक, बाक्यांश (अ.), अपि कुशली भवान् ।
 मिटना, क्रि. अ. (सं. शृट् >) अप-व्या-मृज् (कर्म.), विलुप् (दि. प. से.) २. उच्छिद् (कर्म.), विनश् (दि. प. वे.), उन्मूल (कर्म.) ३. निर-असु (कर्म.), खंड-प्रत्याख्या (कर्म.) । सं. पुं., लोपः, अप-व्या-मृष्टिः (स्त्री.), उच्छेदः, विनाशः, निरासः, प्रत्याख्यानम् ।
 मिटाना, क्रि. स., इ. 'मिटाना' के प्रे. रूप ।
 मिटा हुआ, वि., अप-व्या-मृष्ट, विलुप्त, विनष्ट, खंडित ।
 मिष्ट्री, सं. स्त्री. [सं. मृक्तिः (स्त्री.)] मृत्तिका, रेणुः, मृलिः (स्त्री.) मुदा, मुद् (स्त्री.) । (अच्छी मिष्ट्री) मृत्ता-स्तना २. पृथिवी ३. भस्मन् (न., सुवर्णादि की) ४. शरीरं ५. शवः ।
 —का तेल, सं. पुं., मृत्तैलम् ।
 —का पिंजर, सं. पुं., मानवदेहः ।
 —का पुतला, सं. पुं., मनुष्यः २. मानव-शरीरम् ।
 —का माधव, सं. पुं., जडः, मूर्खः ।
 —करना, मु., नश्वंस् (प्रे.) २. कलुषयति (ना. धा.) ।
 —के मोल, मु., अत्यल्प-मूल्येन-अर्पण, निर्मु-त्यमिव ।
 —ठिकाने लगाना, मु., अत्येष्टि कृ २. शवं भूमौ निधा (जु. उ. अ.)-स्था (प्रे.) ।
 —डालना, मु., शम् (प्रे., शमयति), मुद् (श्वा. उ. से.) ।
 —पलीद् या खराब होना, मु., परिधि (कर्म.), ध्वं-नाशं इया (अ. प. अ.)

परिक्षीण-गतविभव (वि.) भू, दुर्दशां आपव
(वि. आ. अ.) ।

—में मिलना, मु., दे. 'मिट्टी पलीत होना'
२. मृ (तु. आ. अ.) पंचत्वं गम् ।

मिट्टी, सं. स्त्री. (सं. मिष्ट >) जुबनं, दे. 'चूमः' ।

मिट्टू, सं. पुं. (सं. मिष्ट >) मधुरभाषिन्
२. शुकः, कीरः । वि. मौलिन, तुष्णीक,
प्रियंवद ।

अपने मुँह आप मियां मिट्टू बनना, मु.,
विकथ् (भ्वा. आ. से.), आत्मानं दलात्
(भ्वा. आ. से.) ।

मिठाई, सं. स्त्री. (हि. मीठा) कादंबं, मिष्टानं,
मिष्टं, मोदकजातं २. दे. 'मिठास' ।

मिठास, सं. स्त्री. (हि. मीठा) मधुरतात्वं,
मधुरिभन् (पुं.), मधुर्यं, मिष्टत्वन् ।

मिड (डि) ल, वि. (अं.) मध्य, मध्यम,
मध्यवर्तिन् । सं. पुं. मध्यमाः कक्षाः (स्त्री.) ।

—ची, वि., अल्पशिक्षित (तिरस्कारसूत्रक) ।

—स्कूल, सं. पुं., मध्यम-विद्यालयः ।

मित, वि. (सं.) परिमित, सीमित, ससीम
२. अल्प, स्तोक ।

—भाषी, वि. (सं. विन्) मित, वान्-कथ,
अल्पवादिन् ।

—भोजी, वि. (सं. जिन्) दे० 'मिताशी' ।

—व्यय, सं. पुं. (सं.) अल्प-परिमित-

—व्ययिता, सं. स्त्री. (सं.) अल्प-परिमित-
स्तोक-व्ययः व्ययिता,
अमुक्तहस्तस्वम् ।

—व्ययी, वि. (सं. विन्) अमुक्तहस्त, अल्प-
स्तोक-व्ययिन् ।

मिताशन, सं. पुं. (सं. न.) परिमितभोजनं,
शैषदभक्षणं, मिताहारः २. वि. दे. 'मिताशी' ।

मिताशी, वि. (सं-शिव) मिताहारिन्, परि-
मित-अल्प-शैष-भोजिद-भुज्ज ।

मिती, सं. स्त्री. (सं. मिनि >) देशीयतिथिः
(पुं. स्त्री.) २. दिनं, दिवसः ।

—वार, कि. वि., विधिवत्मेण, विध्वनुत्तारम् ।

मित्र, सं. पुं. (सं. न.) सुहृद् (पुं.), सखि
(पुं.), वयस्यः २. सहचरः, सहायः ।

मित्रता, सं. स्त्री. (सं.) सखित्वं, सख्यं, सौहृदं,
सौहार्दं, मैत्री, मैत्र्यं, मित्रत्वम् ।

मिथुन, सं. पुं. (सं. न.) इन्द्रं, दं(त्रं)पती
(दि.), जायापती, स्त्रीपुंसयोः युगं-युगं-युगलं

२. गतिः (स्त्री.), संयोगः ३-४. राशि-रूपन-
विरोधः (ज्यो.) ।

मिथ्या, वि. (सं. अर्थ.) अनन्त, असत्य,
वितथ २. काल्पनिक, अव्यक्तिक, मायामय ।

—वादी, वि. (सं. ईदन्) अनन्त-असत्य-मृपा-
वितथ, भाषिन्-आलापिन्-वादिन् ।

मिनिमस, वि. (अं.) न्यूनतम, अल्पिष्ठ ।

मिन्नत, सं. स्त्री. [अं., मि. सं. विनतिः (स्त्री.)]
प्राथना, निवेदनम् ।

मिमियाना, कि. अ. (अनु. मिनमिन >)
मिणामपायते (ना. धा.), मे-मेशच्च् कृ, रेभ्
(भ्वा. आ. से.), उ (भ्वा. आ. अ.) अवते ।

मियाँ, सं. पुं. (फ़ा.) स्वामिन्, प्रभुः २. पतिः,
भर्तृ २. (संबोधनपदं) नहाशय ! महोदय !
(तुसल.) ४. अध्यापकः ५. दे. 'मुसलमान' ।

—मिट्टू, सं. पुं. (फ़ा + दि.) मधुरभाषिन्,
मधुवाच् (पुं.) २. शुकः ३. मूर्खः ।

मियान, सं. स्त्री. (फ़ा.) अग्निः, काशः-पः,
खड्ग-पिधानम् ।

मियाना, वि. (फ़ा.) मध्यम, नव्याकार ।

मियानी, सं. स्त्री. (फ़ा. मियान) पदाथा-
मस्य मध्यमी वस्त्रखंडः २. मध्यमा, मध्य-
कोष्ठकः (पुं.) ।

मिरगी, सं. स्त्री. (सं. मृगी) अपस्मारः, आमरम् ।

मिर्च, सं. स्त्री. [सं. मरि(री)न्] (काली)
कृष्णा, कौ(का)कळं, इयामं, ऊ(औ)र्णं, कटुकं,
शाकायं, सर्वहितं, प्रमपत्तनं, वेदज्ञं, कषाविरोधि
(न.) पवित्रम् । (लाल) कुन्तल-मरि(री)वं,
नीत्रशक्तिः (स्त्री.), लज्जला, अज्जहा, कटु-
वीरा, तीक्ष्ण (सकृद) सित-मरि(री)चं-
वज्रीजं, धवलं, चहुलम् । वि., तीक्ष्ण-उच्च-
स्वभाव ।

ममक-ल्लगाना, मु. अत्युक्तम् वच् (तु.)-

प्रतिपद (प्रे.), अतिवद (भ्वा. प. से.) ।

मिर्चा, सं. पुं. दे. 'मिर्च' (लाल)

मिलता-बुलता, वि., तुल्य, महत्त ।

मिलन, सं. पुं. (सं. न.) सं(समा)गमः,
संयोगः, संमिलनं, परस्परसङ्ग-स्कारः, मेलः
२. मिश्रणं, मंथनः, संसर्गः, मेलनम् ।

—सार, वि., मिलन-सख्य-शील, संगमप्रिय ।

—सारी, सं. स्त्री., सख्य-मिलन-शीलता ।

मिलना, कि. अ. (सं. मिलनं) मिथ-संपृच्-

संयुज्-संसृज् (कर्म.), एकी-मिश्रित-संसृष्ट भू.

मिलनी

[४७१]

मिस्सी-सी

२. संमिल् (तु. प. से.), सं-इ (अ. प. अ.), संगम् (भ्वा. आ. अ.), आ-समा, सद् (भ्वा. प. अ.), आ-समा, नाम्, अभिमुह्यी-समुह्यी भू, नयन-पथ-विषयं या (अ. प. अ.)
३. तुल्य-सम-सदृश (वि.), नृत् (भ्वा. आ. से.) संवद् (भ्वा. प. से.) ४. आलिङ्ग (भ्वा. प. से.), परिणम् (भ्वा. आ. अ.) ५. यम् (भ्वा. प. अ.), सूरतं आतन् (त. प. से.) ६. लम् (भ्वा. आ. अ.) अधिगम ७. एक-सम-स्वर (वि.) भू (सितारादि) । सं. पुं., दे. 'मिलन' (१-२) । ३. सादृश्यं, साम्यं ४. आलिङ्गनं ५. मैथुनं ६. लाभः ७. समस्वरता, इ. ।

मिलनी, सं. स्त्री. (हि. मिलना) औदाहिक-मि(मि)लनम् ।

मिलवाना, क्रि. प्रे., व. 'मिलना' के प्रे. रूप ।

मिला-जुला वि., मिश्रित २. संमिलित ।

मिलान, सं. पुं. (हि. मिलाना) संमेलनं, संमिश्रणं २. समी-सदृशी, करणं, तुलना ३. स्थापनं, प्रामाण्यपरीक्षा ।

मिलाना, क्रि. स., व. 'मिलना' के प्रे. रूप ।

मिलाप, सं. पुं. (हि. मिलना) दे. 'मिलन'(१) २. सौहार्द-र्थं, मैत्री ३. संयोगः, रतिः (स्त्री.) ।

मिलावट, सं. स्त्री. (हि. मिलाना) अपद्रव्येण मिश्रणं-मेलनम् ।

—**करना**, क्रि. स., (अपद्रव्येण) संमिश्र (तु.) ।

मिला हुआ, वि., मिश्र, मिश्रित, संयुक्त, संलष्ट २. संगत, संमिलित, संमुखीभूत ३. लब्ध, प्राप्त ।

मिलिंद, सं. पुं. (सं.) भ्रमरः, षट्पदः ।

मिलिटरी, वि. (अं.) सांक्रामिक, सामरिक, सैनिक । सं. स्त्री., सेना, सेन्यं, वाहिनी ।

मिलक, सं. पुं. (अं.) दुग्धं, पयस् (न.), क्षीरम् ।

मिलिक्यत, सं. स्त्री. (अ.) भूमिः (स्त्री.) रि(च)वधं २. द्रव्यं, संपत्तिः (स्त्री.), दायः ।

मिलकत, सं. स्त्री. (हि. मिलना) मैत्री २. मिलनशीलता ।

मिलकत, सं. स्त्री. (अ.) धर्मः, संप्रदायः, मतम् ।

मिल्लिप्राम, सं. पुं. (अं.) सहस्रिधान्यम् ।

मिल्लिमीटर, सं. पुं. (अं.) सहस्रिमात्रं = कर-मुक्तभूमिः ।

मिशन, सं. पुं. (अं.) उद्देश्यं, लक्ष्यम् २. प्रचारकमण्डलम् ३. प्रतिनिधिमण्डलम् ।

मिशनरी, सं. पुं. (अं.) त्रिष्टधर्म-प्रचारकः २. दे. 'पादरी' ।

मिश्र, सं. पुं. (सं.) विप्रोपाधिभेदः २. मिश्रितं, मिश्रितद्रव्यं, योगः, संकरः संनिपातः । वि., मिश्रित, मिश्रापित, सं-मृष्ट-मिथ-मिलित ३. श्रेष्ठ ।

मिश्रण, सं. पुं. (सं. न.) संयोजनं, संमेलनं, संमिश्रणं, एकी-एकत्र-करणं, संलजनं २. नाना-द्रव्यसमुदायः, दे. 'मिश्र' (२) । ३. योगः, संकलनं, दे. 'जमा' (गणित) ।

मिश्रित, वि. (सं.) संसृष्ट, संमिश्र, दे. 'मिश्र' (वि.) ।

मिष, सं. पुं. (सं. न.) द्रुलं, कपटं २. व्यप-देशः, न्यायः, कृतकहेतुः ।

मिष्ट, सं. पुं. (सं.) मधुररसः । वि., दे. 'मीठा' (१) ।

—**भाषी**, वि. (सं. विन्) मधुरभाषिन्, प्रियंवद ।

मिष्टान्न, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'मिठाई' (१) ।

मिस, सं. पुं., दे. 'मिष' (२) ।

मिस^२, सं. स्त्री. (अं.) कुमारी, कन्या, अश्रुता ।

मिसरा, सं. पुं. (अ.) पष्यापदः, श्लोकचरणः ।

मिसाल, सं. स्त्री. (अ.) उपमा २. उदाहरणं, वृष्टांतः ३. लोकोक्तिः (स्त्री.), आभाषणकः ।

मिसिल, सं. स्त्री. (अ.) लेख-पत्रिका ।

मिस्कीन, सं. पुं. (अ.) निःसहायः, निराश्रयः २. दरिद्रः, अकिंचनः ३. सरलः, सुशीलः ।

मिस्टर, सं. पुं. (अं.) मिश्रः, महाशयः, महोदयः ।

मिस्त्री, सं. पुं. (अं.) मास्टर कुशल, -शिल्पन्-शिल्पकारः ।

मिस्, सं. पुं. (अ. = नगर) मिश्रदेशः ।

मिस्त्री^१, सं. पुं. (अ.) मिस्त्र (मिश्रदेशवासिन्) सं. स्त्री., मिश्रदेशभाषा ।

मिस्त्री^२, सं. स्त्री., (अ.) खण्ड-नोदकः-शर्करा, शर्कराजा, शर्कराकः, खांडवः, मितोपला, सितार्लंडः, खण्डकः ।

मिस्त्र, वि. (अ.) तुल्य, समान, इव ।

मिस्त्रा, सं. पुं. (सं. मिश्र >) *मिश्रावम् ।

मिस्सी रोटी, सं. स्त्री., बेठमिका ।

मिस्सी-सी, सं. स्त्री. (फा. मिसी) दंत-
*मसी-मसिः (स्त्री.), दंत्यचूर्णभेदः ।

—कजल करना, पु., अहमदन भूष्-मंड (जु.)-प्रसाध् (प्रे.) ।

मीनी, सं. स्त्री., दे. 'गीरी' ।

मीआद, सं. स्त्री. (अ.) काल, अवधि; नियत-समय; २. आशेष-कारावास, अवधि; ।

मीआदी, वि. (अ. मीआद) सावधिक, नियतकालवत् ।

—मुझार, सं. पुं., सावधिकज्वरः १. सांनिपा-तिकज्वरः ।

मीचना, कि. स. (सं. मिष्) निमिष् (तु. प. से.), क्षमील्-निमील् (भ्वा. प. से.), नेत्रे मुकुल्यति (ना. भा.) ।

मीझान, सं. पुं. (अ.) योगः, संकलः, परि-संख्या ।

मीटिंग, सं. स्त्री. (अं.) सभा, गोष्ठी, अधि-वेशनम् ।

मीठा, वि. (सं. मिष्ट) मधुर, मधुल, मधु, मधुमय २. सरस, स्वाद्, सख्वाद्, स्वादवत् ३. अलस, मंथर ४. मध्यम, साधारण ५. सद्य, नन्द ६. नपुंसक ७. प्रिय, रुचिकर । ८. मुशील, सरल । सं. पुं., मधुकर्कटी, मिष्टानिवृत्तं, मधुरनंदीरं, नधुबीजपूरं, मधुली, महाफल २. मिष्टान्नं ३. मिष्टं, गुडः, शर्करा इ. ।

—आलू, सं. पुं., दे. 'शकरफंद' ।

—चावल, सं. पुं., मिष्ट-गुड-आदनः (नम.) ।

—तेल, सं. पुं., तिल, तैलं स्नेहः २. लस्स-सतैलम् ।

—तेलिया, सं. पुं., बत्तनामः, प्राणहारकं, वसपुत्रः, गरलः, क्ष्वेडः, प्रदीपनः ।

—नीचू, सं. पुं., दे. 'मीठा' सं. पुं. (१) ।

—यानी, सं. पुं., जंबोरपेयम् ।

—बोलना, पु., प्रियं वृ (अ. उ.), मधुरं भाष् (भ्वा. अ. से.) ।

मीठी छुरी, सं. स्त्री., अंतःशुष्कः, कपटमित्रं, विआसपातकः २. कुटिलः, कपटिन् ।

मीठीमार, सं. स्त्री., गूह-गुप्त-आंतरिक, ताडन-प्रहारः ।

मीन, सं. पुं. (सं.) दे. 'मछली' (२-२) इन्द्र-राशिः-लपनम् ।

—मेढ्र निकालना, गु., गुणदोषान् परीक्ष (भ्वा. आ. से.) २. छिद्रं अन्विष् (दि. प. से.) ।

मीना, सं. पुं. (का.) त्रिभ-वहुवर्ण, कान्तः २. नीलप्रस्तरभेदः ३. *धातु-रंजन-चित्रणं (इत्यैल) ४. सुराग्रहः ।

—कार, सं. पुं. (का.) *धातु-रंजन-चित्रणः ।

—कारी, सं. स्त्री. (का.) दे. 'मीना' (१) ।

—बाजार, सं. पुं. (का.) *कांतापणः, मनोशमेला, प्रदर्शनी ।

मीनार, सं. पुं. (अ. मनार) सूक्ष्मस्तम्भः, मेढः-धिः ।

मीमांसा, सं. स्त्री. (सं.) दर्शनशास्त्रविशेषः २. विचारः, विवेचनं, निर्णयः ।

मीर, सं. पुं. (का.) नायकः, प्रधानः ।

—मजलिस, सं. पुं. (का.) सभा, पतिः-अध्यक्षः ।

—मुंशी, सं. पुं. (का. + अ.) मुख्य, लेखकः, कायस्थः ।

मीरास, सं. स्त्री. (अ.) रिकूथं, दायः, पितृद्रव्यम् ।

मीरासी, सं. पुं. (अ. मीरास) संगीतकुशल-यवनजाति-विशेषः २. अंडः, वैहासिकः ।

मील, सं. पुं. (अं. माइल) क्रोशार्ज, जर्बक्रोशः, *मीलं, *मीलकम् ।

मीलन, सं. पुं. (सं. न.) पिधानं, निमीलनं, मुद्रणम् २. संकोचनं, संहरणं, आकुंचनम् ।

मीलित, वि. (सं.) पिहितं, निमीलितं, मुद्रितं २. संकोचितं, संहनं, आकुंचितं ।

मुंगरा, सं. पुं. (सं. मुद्गरः) वि-पनः, दुष्पणः-नः, प्रपणः [मुंगरी (स्त्री.) क्षुद्रमुद्गरः इ.] ।

मुंज, सं. पुं., दे. 'मूँज' ।

मुंड, सं. पुं. (सं. पुं. न.) शिरस् (न.), शीर्षं मूढव (पुं.), मस्तकं २. छिन्न-शिरस्-शीर्षम् । सं. पुं., स्वाणुः, तिथ्यज्ञो वृक्षः २. राहुः ३. नापितः, मुंडकः ४. उपनिषद्-विशेषः । वि. मुंडितं, नापितमुंडं, कृतकेश (श्वा. स्त्री.) २. अथम् ।

—माला, सं. स्त्री. (सं.) छिन्नमस्तकमाल्यम् ।

—मालिनी, सं. स्त्री. (सं.) काली ।

—माली, सं. पुं. (सं. मालिन्) शिवः ।

मुंडक, सं. पुं. (सं.) नापितः २. उपनिषद्-विशेषः ३. छिन्न-शीर्षम् ।

मुंडन, सं. पुं. (सं. न.) क्षीरं, केश-क्षेदन-वपनं, परिवापनं, भद्रकरणं २. चूडा, चूडा-करण-कर्मन् (न.), संस्कार-विशेषः (धर्म.) ।

मुँडना, कि. व्य. (सं. मुँडनं) व. 'मुँडना' के कर्म. के रूप ।
मुँडा, सं. पुं. (सं. मुँडः) मुँडितः, उतकेशः, छिन्नमूर्द्धजाः, कृत्त-केशः २. कृत्तकेशः साधु-शिष्यः ३. मृगहीनपशुः ४. अंग-अवयव-शाखा-हीनः ५. लिपिबिज्ञेयः (महाजनी, लंटे) ६. उपानत्प्रकारः ।
मुँडाई, सं. स्त्री. (हि. मुँडना) दे. 'मुँडन' (१) । २. मुँडन-भृत्या-भृतिः (स्त्री.) ।
मुँडवासा, सं. पुं. [सं. मुँडवासस् (न.)] उष्णीषः-ष, दे. 'पगड़ी' ।
मुँडित, वि. (सं.) दे. 'मुँड' वि. ।
मुँडी, सं. स्त्री. (हि. मुँडा) मुँड, कलस-केशा-शी २. विधवा ।
मुँडी, सं. पुं. (सं. मुँडिन्) मुँडितः, कलसकेशः २. नापितः ३. संन्यासिन् ।
मुँडेरा, सं. स्त्री. (सं. मुँडे >) दे. 'मुँडेरा' २. दे. 'मैड' ।
मुँडेरा, सं. पुं. (सं. मुँडे >) प्राकारशीर्ष, *कुट्टममुँडः-डम् ।
मुँडेरी, सं. स्त्री., दे. 'मुँडेरा' तथा 'मैड' ।
मुँडो, सं. स्त्री. (सं. मुण्डा) मुण्डिता, वपिता, क्षुधिता, उप्त-कृत्त-केशा-मूर्द्धजा २. विधवा, मृतभर्तृका ।
मुँडकिल, वि. (अ.) स्थानांतरं गीत २. पर-हस्ते समापित, परस्वले दत्त ।
मुँडम्व, वि. (अ.) निर्वाणित, वृत्त, चित २. उत्कृष्ट, श्रेष्ठ ।
मुँडजिम, सं. पुं. (अ.) अभ्यक्षः, व्यवस्थापकः ।
मुँडजिर, वि. (अ.) प्रतीक्षकः, प्रतीक्षाकारिन् ।
मुँडना, कि. अ. (सं. मुँडनं) व. 'मुँडना' के कर्म. के रूप ।
मुँडरा, सं. पुं. (सं. मुँडाः) (योगिजा) कर्ण-मुद्रा-त्रलयम् ।
मुँडरी, सं. स्त्री. (हि. मुँडरा) अंगुली(री)यं-यकं, ऊर्मिकः ।
मुँडशियाना, वि. (अ०) लेखक-सङ्क्ष-उप-युक्त । सं. स्त्री., लेखक-भृतिः (स्त्री.)-भृत्या ।
मुँडो, सं. पुं. (अ.) लेखकः, कायस्थः, लिपिकारः ।
मुँडिक, सं. पुं. (अ.) निर्णेतु, धर्म-न्याय-अध्यक्षः-अधिकारिन् ।
मुँडिकाना, वि. (अं.) न्याय-उचित-युक्त-अनुसारिन्, न्याय्य ।

मुँडिकी, सं. स्त्री. (अ. मुँडिक) १-२ न्याय-अध्यक्ष-पद-कार्य-सभा ४. निर्णयः ५. न्यायः ।
मुँह, सं. पुं. (सं. मुखं) आत्म्यं, तुंडं, वक्त्रं, वदनं, लपनं, आननं २. मुख-वदन-आनन-मंडलं ३. (वर्तन आदि का) ऊर्ध्वनिबरं, मुखं ४. छिद्रं, रंभं ५. आदरः ६. सामर्थ्यं ७. साहसं ८. उपरितनभागः, कर्णः, कंठः प्रांतः ९. विद्यमानता, उपस्थितिः (स्त्री.) ।
—अँधेरा—सं. पुं., प्र-वि-, मातं, विद्वानः-नं, उषा, उषस् (स्त्री.) ।
—काला, सं. पुं., अपमानः, अपयशस् (न.) ।
—चोर, वि., लज्जालु, हीमत्, सलज्ज ।
—जबानी, वि., वाचिक, लेखरहित । कि. वि., वाचैव, संभाषणेन ।
—जोर, वि., वाचाल, दाबदूक २. दुर्दात ३. दे. 'मुँहफट' ।
—दिखाई, सं. स्त्री., नकोशमुखदर्शनं २. मुख-दर्शनेोपहारः (विवाह की रीतियाँ) ।
—देखा, वि., बाह्य, उपरितन, कृत्रिम ।
—फट, वि., अवाच्यम, बाक्चपल, वाग्दुष्ट, अविश्वस्यवादिन् ।
—बोला, वि., धर्म- (धर्म-भ्राना आदि) ।
—मांगा, वि., मयेष्ट, यथेच्छ, यथेप्सित ।
—उतरना या निकल आना, मु., कृशी-तनू-भू, कृशवदन (वि.) जन् (दि. आ. से.), क्षि (भ्वा. प. अ.) ।
—का कौर, मु., सुलभं द्रव्यं-वस्तु (न.) ।
—काला करना, मु., दुष् (प्रे. दूषयति), कलंकयति (ना. धा.), अपकीर्ति जन् (प्रे.) ।
—काला होना, मु., कलंकित-दूषित (वि.) भू, अपयशस् (न.), लम् (भ्वा. आ. अ.) ।
—की खाना, मु., नितरां पराम्नि (कर्म.) सुतरां अभिभू (कर्म.) २. लज्जितो भू ३. दुर्दर्शा आपद् (दि. आ. अ.) ।
—खोलना, मु., वद (भ्वा. प. से.) २. गाली-दा-अपभाव (भ्वा. आ. से.) ३. अवगुठनं अपमृ (प्रे.) ।
—जुठारना या जुठा करना, मु., नाममात्रमेव मुञ्ज (रु. आ. अ.) ।
—त(ता)कना, मु., स्थिरं आ-अवलोक (चु.) २. विस्मि (भ्वा. आ. अ.), चकित (वि.) स्था (भ्वा. प. अ.) ।
—देखते रह जाना, मु., दे. 'मुँह ताकना' ।

—देखे की प्रीत, मु., घृणा-रनेहः, कृत्रिमा-
नुरागः ।
—पर लाना, मु., वद (भ्वा. प. से.), कथ्
(चु.) ।
—पर ह्वाह्यां उड़ना, मु., (भयलज्जादिभिः)
मुखं विवर्णीभू ।
—रुक होना, मु., दे. 'सुँहपर ह्वाह्यां उड़ना' ।
—फुलाना या सिकोड़ना, मु., रघ-कुपित-रुद्ध
(वि.) भू. ।
—फेरना, मु., उपेक्ष (भ्वा. आ. से.), अपरंज
(दि. उ. अ.) ।
—बनाना, बिगाड़ना या चिड़ाना, मु.,
विडंब (चु.), मुखं विक्र, स्वमुखविकारः उप-
अव-हस् (भ्वा. प. से.) ।
—मीठा करना, मु., उत्कीर्णं दा ।
—में पानी भर आना, मु., वि-प्र-सुम् (दि.
प. से.) अत्यर्थं अभिलष (भ्वा. उ. से.) ।
—लटकाना, मु., दे. 'सुँह फुलाना' ।
—(कित्ती के) लगाना, मु., उदंड इष आचर
(भ्वा. प. से.) २. घृष्टतया प्रदन्तोत्तरं कृ ।
—लगाना, मु., हीनान् मित्रायति (ना. धा.)
अनुग्रह (क्. प. से.), लट्ण्डान् विधा
(जु. उ. अ.) ।
—से फूल झड़ना, मु., सुमधुरं वच (कर्म.) ।
मुहाँ—, मु., परिपूर्ण, आकर्षणं पूर्ण, निर्भर ।
सुँहासा, सं. पुं. (हिं. सुँह) यौवन-कंदक-
पिट(टि)का ।
मुअज्जम, वि. (अ०) पूज्य, संमान्य २. महत्,
ज्येष्ठ ।
मुअत्तल, वि. (अ.) आनियतकाल अधिकारात्
प्यावित अथवा भ्रंशित । २. दे. 'बेकार' ।
मुअत्तली, सं. स्त्री. (अ. मुअत्तल) आनियत-
काल अधिकार-भ्रंशः-च्युतिः (स्त्री.) २. दे.
'बेकारी' ।
मुअहब, वि. (अ.) सभ्य, शिष्ट ।
मुअहबाना, अन्ध. (अ.) सविनयम्, वि-
नम्रं, विनयेन, नम्रतया ।
मुअम्मा, सं. पुं. (अ.) प्रहेली, प्रहेलिका,
प्रश्नपूर्ती २. गुह्यं, गोप्यं, रहस्यं ।
मुअत्ता, वि. (अ.) उच्च, उत्कृष्ट, प्रकृष्ट
२. उच्च-पद-अधिकार ।
मुआ, वि., दे. 'मुवा' ।
मुआक, वि. (अ.) क्षांत, मर्षित, दोष-दंड, मुक्त ।

—करना, दे. 'क्षमा करना' ।
मुआकिक, वि. (अ.) अनुकूल, अनुरूप
२. सहस्र, तुल्य ३. अन्यूनार्थिक ४. दथेष्ट ।
मुआकी, सं. स्त्री. (अ.) दे. 'क्षमा' २. बार-
मुक्तभूः (स्त्री.) ।
मुआमिला, सं. पुं. (अ.) उपनीविका, वृत्तिः
(स्त्री.), व्यवसायः २. पारस्परिकव्यवहारः,
क्रयविक्रयं, दानादानं ३. वृत्तं, वात्तां, विषयः
४. कलहः, विवादः ५. अभियोगः ६. प्रतिष्ठा,
सनयः ।
मुआयना, सं. पुं. (अ.) दे. 'निरीक्षण' ।
मुआवजा, सं. पुं. (अ.) निष्कृतिः (स्त्री.),
निस्तारः, प्रतिकूलं २. क्षतिपूर्ण-हानिपूर्ण,
मूल्यम् ।
मुकदुमा, सं. पुं. (अ.) अभियोगः, अक्षः,
अर्थः, कार्यं, व्यवहारः, व्यवहारपदनम् ।
—करना या खड़ा करना, क्रि. स., अभियुज्
(क्. आ. अ., चु.), राजकुले निविद (प्रे.) ।
मुकदमेबाज, सं. पुं. (अ. + फा.) कार्याधिन्,
वारिन्, व्यवहर्तुं, अभियोगशीलः ।
मुकदमेबाजी, सं. स्त्री. (अ. + फा.), अभियो-
गशीलता, व्यवहर्तृत्वम् ।
मुकहमा, सं. पुं. (अ.) दे. 'मुकदमा' ।
मुकहर, सं. पुं. (अ.) भाग्यं, दैवम् ।
मुकहस, वि. (अ.) पवित्र, पुण्य, पावन ।
मुकम्मल, वि. (अ.) समाप्त, अवसित २. सं-
पूर्ण, निःशेष ।
मुकरना, क्रि. अ. (सं. मा=न + करण)
अप-नि-ह (अ. आ. अ.), अपलप् (भ्वा. प.
से.), निरा-कृ ।
मुकरनी, सं. स्त्री., दे. 'मुकरी' ।
मुकरी, सं. स्त्री. (हिं. मुकरना) कविताभेदः,
अपहृतिमुता कविता ।
मुकररी, क्रि. वि. (अ.) पुनरपि, द्वितीयवारं,
भूयः ।
मुकरर, वि. (अ.) निवृत्त, निश्चित २. निसुक्त ।
मुक्ताबला, सं. पुं. (अ.) विरोधः, प्रतिद्विधाता,
प्रातिकूल्यं २. स्पर्धा, संघर्षः, अहमहमिका,
प्रतियोगिता ३. संग्रामः, युद्धं ४. तुलना,
औपम्यं ५. साम्यं, सादृश्यं ६. स्त्री-सदृशी-
करणम् ।
—करना, क्रि. स., स्पर्ध (भ्वा. आ. से.),
संघृप् (भ्वा. प. से.) २. प्रतिक्र, विरुध्.

मुक्ताम

[४०५]

मुग्धता

(ह. उ. अ.) ३. युष् (दि. आ. अ.)

४. तुल् (जु.), उपना (जु. आ. अ.)

५. समी-मदृशी, कृ ।

मुक्ताम, सं. पुं. (अ.) स्थानं, स्थलं २. विराम-स्थानं, दे. 'पद्मिन' ३. विरामः, निवेशः ४. आ-नि, नासः, गृहं ५. अवसरः ।

—**करना**, क्रि. अ., विश्रम् (दि. प. से.), निविष् (तु. प. अ.), विरम् (स्वा. प. अ.) ।

मुकुब्, सं. पुं. (सं.) श्रीकृष्णः २. रत्नमेदः ३. पारदः ४. मोक्षदः, परिशक्त ।

मुकुट, सं. पुं. (सं. न.) किरीटः, टं, मकुटं, कोटीरः, मौलिः, उच्छंसः ।

मुकुट, सं. पुं. (सं.) दर्पणः, दे. ।

मुकुल, सं. पुं. (सं. पुं. न.) कुडमलः, दे. 'कली' २. आत्मन् (पुं.) ३. शरीरं ४. पृथिवी ।

मुकुलित, वि. (सं.) समुकुल, सकुडमल २. श्वद्विकसित, अर्द्धोन्मिषित, अर्द्धनि-मलित ३. निमेषोन्मेषयुक्त ।

मुक्ता, सं. पुं. (सं. मुष्टिका) मुष्टिः (पुं. स्त्री.), मुस्तः, मुचुटी, सर्पिलितांगुलिद्वन्द्व-पाणिः २. मुष्टि-मुचुटी, प्रहारः-घातः-तारः-हथः ।

—**मारना**, क्रि. स., मुचुत्या प्रह (स्वा. प. अ.) ।

मुक्केबाज, (हि. + फा.) मुष्टि, योधः-योधिन् ।

मुक्केबाजी, सं. स्त्री., (हि. + फा.) मुष्टियुद्धं, मौष्टा, मुष्टिकं, मुष्टी(ष्ट)मुष्टि (अन्व.) ।

मुक्त, वि. (सं.) लब्ध-प्राप्त, मोक्ष-निर्वाण, निस्तीर्णं २. मोचित, स्वाधीन, बन्धन-निरोध-रहित ।

—**कंठ**, वि. (सं.) तारस्वर, महास्वन २. अविमृश्यवादिन्, अवतवान् ।

—**हस्त**, वि. (सं.) व्ययशील, अतिव्ययिन्, बहुव्यय ।

मुक्ता, सं. स्त्री. (सं.) } दे. 'मोती' ।

—**फल**, सं. पुं. (सं. न.) }

—**हार**, सं. पुं. (सं.) मुक्तावली ।

मुक्तागार, सं. पुं. (सं. न.) शुक्तिः (स्त्री.), शुक्तिका, मौक्तिक-प्रमः (स्त्री.)-प्रसवा ।

मुक्ति, सं. स्त्री. (सं.) मोक्षः, कैवल्यं, निर्वाणं, श्रेयस् (न.), निःश्रेयसं, अमृतं, अपवर्गः, अपुनर्भवः २. मोचनं, निर्ध्वरणं, निरोधा-भावः ३. स्वच्छंदता, स्वतंत्रता ।

—**क्षेत्र**, सं. पुं. (सं. न.) काशी, वाराणसी ।

—**धाम**, सं. पुं. (सं. न.) मोक्षं स्थानम्, तीर्थम् ।

—**फौज**, सं. स्त्री. (सं. + अ०) मुक्तिसेना, खिस्तधर्मप्रचारकसंघः ।

मुख, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'मुँह' ।

—**बंध**, सं. पुं. (सं. न.) प्रस्तावना, भूमिका ।

मुखदा, सं. पुं. (सं. मुखं) दे. 'मुँह' (२) ।

मुखतार, सं. पुं. (अ.) प्रति, निधिः-पुरुषः-हस्तकः-२. पराभियोगकारिन् ३. उपाभिभाषकः ।

—**नामा**, सं. पुं. (अ. + फा.) *प्रतिनिध्य-प्रतिनिधित्व-पत्रम् ।

मुखतारी, सं. स्त्री. (अ. मुखतार) पराभियोग-कारितात्वं २. उपाभिभाषकतान्वं ३. प्राति-निध्यम् ।

मुखविर, सं. पुं. (अ.) दे. 'जसूल' ।

मुखविरि, सं. स्त्री. (अ. मुखविर) दे. 'जसूल' ।

मुखर, वि. (सं.) कटु-अग्रय-वादिन्-भाषिन्, दुर्मुख २. वाचाल, वाचद ३. नेत्र, अग्रया-यिन् ४. शब्दायमान ।

मुखरित, वि. (सं.) प्रति, अनित-नादित ।

मुखस्थ, वि. (सं.) मुखाय, कंठाय, कंठस्थ ।

मुखालिङ्ग, वि. (अ.) विपक्षिन्, विरोधिन् २. वैरिन ३. प्रतिद्विन् ।

मुखिया, सं. पुं. (सं. मुख्य) नेत्र, नायकः, पुरो-अग्र, ना-गामिन्, अग्रणीः, प्रधानः, मुखरः २. ग्रामणीः (पुं.), ग्राममुख्यः ।

मुख्तलिक, वि. (अ.) शिव, अपर २. बहु-अनेक-विध ।

मुखत्सर, वि. (अ.) संक्षिप्त २. लघु, क्षुद्र ३. अल्प । सं. पुं., संक्षेपः ।

मुख्य, वि. (सं.) प्रधान, अग्रय, अग्रिम, प्रमुख, परम, उत्तम, श्रेष्ठ, विशिष्ट-ऊपम, ईद, पुंगव, वर ।

मुख्यतः, } क्रि. वि., (सं.) प्रधानतः-तया,
मुख्यतया, } विशेष-तया, प्रधान-मुख्य-विशेषण-रूपेण ।

मुगदर, सं. पुं., दे. 'मुद्गर' ।

मुग्ध, वि. (सं.) आसक्त, अनुरक्त, बद्धभाव, सानुराग, कामासक्त २. मूढ, भ्रांत ३. मुन्दर, अभिराम ४. नव, नवीन ।

मुग्धता, सं. स्त्री. (सं.) आसक्तिः (स्त्री.), अनुरागः २. मूढता ३. सौन्दर्यम् ।

मुग्धा, सं. स्त्री. (सं.) नायिकाभेदः २. सुकु-
मारी तरुणी ।
मुग्धलका, सं. पुं. (तु.) निस्तारः ।
मुग्धदंड, सं. पुं. (हि. मूळ) महा, मुग्ध-शमश्रु-
व्यंजन-शमश्रुल २. कपिः ३. मूषिकः ४. कुरू-
पमूर्खः, जडः ।
मुग्धकर, वि. (अ.) पुंल्लिग (व्या.) ।
मुग्जर, सं. पुं. (अ.) उदधृत-व्यवकलित, धनं
२. अभिवादनं, प्रणिपातः ३. वैश्यायाः सन्तु-
त्यमन्तव्यं वा गानम् ।
मुग्जरिम, सं. पुं. (अ.) अपराधिन्, कृताप-
राधः, दंडयः २. अभियुक्तः ।
मुग्जस्त्रिम, वि. (अ.) सशरीर, देहवत्,
शरीरिन् ।
मुग्जिर, वि. (अ.) हानि, कारक, प्रद ।
मुग्ज, सर्व. (हि. मुग्जे) (अस्मद् के रूप वर्णने) ।
—को, मां, मा २. महां, मे ।
—से, मया २. मत् ।
—में, मयि ।
मुग्डाई, सं. स्त्री., दे. 'मोटाई' ।
मुग्डा, सं. पुं. (हि. मुग्डी) मुष्टिः (पुं. स्त्री.),
मुष्टिभात्रं द्रव्यं २. वारंगः, दंडः, मुष्टिः
(पुं. स्त्री.) ।
मुग्डी, सं. स्त्री. [सं. मुष्टिः (पुं. स्त्री.)] दे.
'मुक्ता' (१) । २. मुष्टिमेषः पदार्थः, मुष्टिः
३. संवाहः-हर्ष-हर्षना ४. प्रहः-हृगम् ।
—भरना, क्रि. स., संवह् (प्रं.), मृद (क.
प. से.) ।
—चाँपी, सं. स्त्री., दे. 'मुग्डी' (३) । २. सेवा,
परिचर्या ।
—भर, वि., मुष्टि, मात्र-मेष-मिन ।
—गारम करना, मु., उत्कोचं दा ।
—में, मु., वयो, अधिकारे ।
मुठमेड, सं. स्त्री. (हि. मुठ्ठी + भिडना) संघट्टः,
समाधानः २. संग्रामः, युद्धं ३. सामुख्यं,
संमुख्यागमनं, सं-निलन-आगमः ।
मुठिया, सं. स्त्री. (सं. मुष्टिका >) (खट्यादि
की) स्तरुः, वारंगः, सरुः २. दंडः, कर्णः,
मुष्टिः-टिका, तलः-लं ३. *पित्रकदण्डः ।
मुठना, क्रि. अ. (सं. मुरणं) वक्त्रीभू, नम्
(भ्वा. प. अ.) २. प्रत्यागम, प्रतिगम, प्रतिनिवृत्त
(भ्वा. आ. से.) ३. व्यावृत्त । सं. पुं., वक्त्री-

भावः, नमनं, प्रति, नमनं आगमनं, व्यावर्तनम् ।
मुठाना, क्रि. प्रे. व. 'मुठना' के प्रे. रूप ।
मुठ्ठा, सं. पुं. (सं. मूढन >) स्वकथः २. *मूढ-
पिंडः-अं, तूलीपीठी ।
मुठ्ठी, सं. स्त्री. (हि. मुठ्ठा) छिप्रतरुमूलम् ।
मुतअल्लिक, वि. (अ.) संकट, संलग्न, संगत ।
क्रि. वि., विषये, संबन्धि ।
मुतररिक्क, वि. (अ.) बहु-नाना-वि, विध,
प्र-सं, कीर्ण ।
मुतबन्ना, सं. पुं. (अ.) दे. 'दत्तक' ।
मुतलक, क्रि. वि. (अ.) किनिद, मनन, ईषद,
अपि २. केवलं, सर्वथा । वि., केवल, ऐक्यतिक ।
मुतान्निक, क्रि. वि. (अ.) अनुसरं-रेण,
-अनुरोधिन-धातु, यथा, अनु, वि., अनुकूल,
अनुरूप ।
मुतालबा, सं. पुं. (अ.) प्राप्तव्यधनं २. कण-
देय, शोष-शेषः ।
मुदित, वि. (सं.) प्रसन्न, अर्जदित, प्रहृष्ट ।
मुद्गर, सं. पुं. (सं.) वस्तु, द्रुपनः-णः, प्रवणः
२. गोपुच्छाकारो व्याधामोपयोगी स्थूलदंडः
३. अतिगंधः, गंधराजः ।
मुद्गा, सं. पुं. (अ.) अभिप्रायः, तात्पर्यम् ।
मुद्गई, सं. पुं. (अ.) परिवादकः, अभिव्योभिन्,
वादिन्, आधिन्, अभिव्योक्तु २. राज्ञः, वैरिन् ।
मुद्गत, सं. स्त्री. (अ.) अवधिः, समयसीमाः,
नियतकालः, २. चिरं, चिरकालः, महान् सप्तः,
युगः-गम् ।
—का, वि., चिर, कालिक-कालीन, पुराण,
पुरातन ।
—तक, —से, क्रि. वि., चिरं, चिरेण, चिराय,
चिरात्, चिरस्य, चिरे ।
मुद्गाअलेह, सं. पुं. (अ.) अभियुक्तः, प्रत्यर्थिन,
प्रतिवादिन्, उत्तरवादिन् ।
मुद्गक, सं. पुं. (सं.) मुद्गण-कारः-कर्तृ ।
मुद्गण, सं. पुं. (सं. न.) मुद्गाकरैः अंकनं,
मुद्गांकनं २. मुद्गाविमोषम् ।
मुद्गणालय, सं. पुं. (सं.) मुद्गणगृहं, दे. 'प्रेस' ।
मुद्गांकित, वि. (सं.) सञ्ज-मुद्ग, मुद्गाविहित
२. नारायणायुचिह्नयुक्तः (वैष्णवः) ।
मुद्गा, सं. स्त्री. (सं.) मुद्गिका, प्रत्ययकारिणी,
* नामांकनी २. अंगुली(री)बंधकं, कामिका
३. नाणकं, टंकः-कं ४. मुद्रित-शब्दः-चित्रं
५. दे. 'मुद्गरा' ६. शरीरस्य तद्वयवर्णा वा

स्थितिविशेषः, अंगविन्यासः, संस्थितिः (स्त्री.)
 ७. मुख, आकारः-आकृतिः (स्त्री.) ८. भक्त-
 देशांकितं भगवदायुधचिह्नं ९. अगस्त्यपत्नी,
 लोपासुद्रा १०. मुद्रा, लोचन-चिह्नम् ।
 —मार्ग, सं. पुं. (सं.) नहरंभ्रम् ।
 —यंत्र, सं. पुं. (सं.) मुद्रणयंत्रम् ।
 —राक्षस, सं. पुं. (सं. न.) विशाखदत्तप्रणीतं
 संस्कृतनाटकम् ।
 —शास्त्र, सं. पुं. (सं. न.) मुद्रातत्त्वम् ।
 मुद्राक्षर, सं. पुं. (सं. न.) सीसक-भातुमय-
 मुद्रण-अक्षराणि ।
 मुद्रिका, सं. स्त्री. (सं.) अंगुलीयकं, ऊर्मिका
 २. अनामिकाधार्यं कुशांगुलीयकं, पवित्रं
 ३. नाणकं ४. मुद्रा ।
 मुद्रित, वि. (सं.) दे. 'मुद्रांकित' २. मुद्राक्षरैः-
 सीसकाक्षरैः अंकित ३. पिहित, संवृत, निमी-
 लित, मुकुलित ।
 मुधा, अव्य. (सं.) व्यर्थ, वृथा २. असत्यं,
 मृषा (अव्य.) । वि., व्यर्थ २. असत्य । सं.
 पुं., असत्यं, अनृतम् ।
 मुनका, सं. पुं. (अ.) काकलोद्गता, जंबुका,
 फलोत्तमा, दुग्धी-धिका ।
 मुनहसि(स)र, वि. (अ.) आश्रित, अव-
 लंबित ।
 मुनाज्जरा, सं. पुं. (अ.) शास्त्रार्थः, वादः,
 तर्कशास्त्रम् ।
 मुनादी, सं. स्त्री. (अ.) दे. 'मनादी' ।
 मुनाका, सं. पुं. (अ.) लामः, आयः, कलम् ।
 मुनासिन्ध, वि. (अ.) उचित, शुक्त, योग्य ।
 मुनि, सं. पुं. (सं.) विचारकः, चिंतकः, संज्ञ-
 शः-दर्शन, प्राणः २. मौनित्, वान्चयनः,
 ऋषिः, प्रतिग, तपस्विन् ।
 मुनीम, सं. पुं. (अ. मुनीव) सहस्रः-यकाः,
 उपकारित्, उप- (उ. उपमन्त्रि आदि)
 २. गणकः, कायस्थः, लेखकः ।
 मुनीश, सं. पुं. (सं.) मुनीश्वरः, मुनिपुंगवः
 २. शंभुदेवः ।
 मुमा, मुन्नी, सं. पुं. (सं. मुंडः >) शिशुः,
 बालकः २. (बच्चों को बुलाने में) अंग, तात ।
 मुकरद्, वि. (अ.) पयस्विन्, असहाय २.
 अर्मिश्रित (औषधादि), श्रेवलक ।
 मुकरह, वि. (अ.) आनन्द-सोद, वायक प्रद ।
 मुकलिस, वि. (अ.) अपन, अकिंचन, दरिद्र ।

मुकलिसी, सं. स्त्री. (अ.) निर्धनता, दरिद्रता ।
 मुकस्सल, वि. (अ.) स-विस्तर-प्रपंच । कि.
 वि., सविस्त(स्ता)र, विस्त(स्ता)रेण, विस्तरतः ।
 सं. पुं., नगर, उपांतः-प्रान्तः, पुरोपकंठः, उं,
 उप-शाखा, नगर-पुरम् ।
 मुक्रीद, वि. (अ.) उपकारित्, उपयोगित्,
 हितकर[-री (स्त्री.)] ।
 मुकृत, वि. (अ.) निःशुल्क, निर्मूल्य ।
 —खोर-रा, वि., परपिंडाद, पराश्रपुष्ट ।
 —में, मु., निःशुल्क, निर्मूल्य, मूल्यं विनाः
 २. व्यर्थ, निष्प्रयोजनम् ।
 मुकृती, सं. पुं. (अ.) न्याय, अपीशः-अधि-
 पतिः, धर्मोध्यक्षः (इस्लाम) ।
 मुकृतिला, वि. (अ.) घस्त, गृहीत, पीडित ।
 मुबरा, वि. (अ.) मुक्त, अनिरुद्ध २. निर्दोष,
 पूत ।
 मुबल(लि)गा, वि. (अ.) सर्व, समस्त ।
 सं. पुं., मात्रा ०. रूप्यकादिसंख्या ।
 मुबारक, वि. (अ.) शुभ, भद्र, मंगल । अव्य.,
 शुभ-भद्रं भूयात्, स्वास्त ।
 —बाद, सं. पुं. } (का.) दे. 'बपार्ई' ।
 —बादी, सं. स्त्री. }
 मुबालिगा, सं. पुं. (अ.) अत्युक्तिः (स्त्री.) ।
 मुबाहिसा, सं. पुं. (अ.) सं-वि-वादः, हेतु-
 वादः, प्र-त-वादः, ऊहापोहः, विचारः-रणा ।
 मुमकिन, वि. (अ.) संभाव्य, संभवनीय,
 *संभव, शक्य, संभावित, साध्य, संपाद्य ।
 मुमानियत, सं. स्त्री. (अ.) दे. 'मनादी' ।
 मुमुक्षु, वि. (सं.) मोक्षार्थित्, अपवर्गाभिला-
 शित् २. श्रमणः, गुनिः, साधुः, शिष्टः ।
 मुमुषु, वि. (सं.) आसन्नमृत्यु २. निधनेच्छुक ।
 मुम्तहिन, सं. पुं. (अ.) दे. 'परीक्षक' ।
 मुक्कना, कि. अ. (हि. मुडना) व्यावृत्त
 (भ्वा. आ. से.), आगुञ्च (कर्म.) २. वि.,
 नश् (वि. प. वे.) ३. अभिज्ञक् (भ्वा. आ.
 से.) ४. प्रतिगम-प्रत्यगम्, प्रतिनिवृत् (भ्वा.
 आ. से.) ५. अकस्मत् वृत् (तु. वि. प.
 से.)-स्फुट (तु. प. से.) ६. दे. 'मोच आना' ।
 मुक्काना, कि. स., व. 'मुक्कना' के प्रे. रूप ।
 मुक्की, सं. स्त्री. (हि. मुक्कना) कर्णपूरकः,
 कर्णवलयक-कर्म ।
 मुक्कसा, सं. पुं. (का. मुर्ना) उपाकलः, कृकवाकुः,
 दे. 'हुक्कुट' २. पक्षिन् ।

मुरगावी

[४७८]

मुवकिल

मुरगावी, सं. स्त्री. (सं.) जलकुम्भकुटः, यष्टिकः, शुक्लकण्ठः ।

मुरज, सं. पुं. (सं.) दे. 'मृदंग' ।

मुरझाना, कि. अ. (सं. मूर्च्छनं >) म्लै-म्लै (भ्वा. प. अ.), विश (कर्म.), ग्लान-म्लान-विशीर्ण (वि.) भू, जृ (दि. प. से.) २. अवसाद्-विषद् (भ्वा. प. अ.), दुर्मनायते (ना. धा.), विषण्ण-अवसन्न-विच्छाद्य (वि.) भू । सं. पुं., ग्लानिः-म्लानिः (स्त्री.) ३. विषादः, अवसादः, वैशौर, मनस्यम् ।

मुरझाया हुआ, वि., ग्लान, म्लान, जीर्ण, शीर्ण, २. विषण्ण, निर्विण्ण, अवसन्न, दीन ।

मुरदा, सं. पुं. (फा.) मृतक-कं, शवः-वं, कुणपः, प्रेतम् । वि., उपरत, प्रेत, परेत, विपक, परासु, मृत, निजीव, निष्प्राण, प्रमीत २. दुर्बल २. म्लान ।

मुरदार, वि. (फा.) सुत, प्रेत २. दूषित, अपवित्र ३. जट, स्तम्भित, स्तम्भ ।

मुरब्बा, (अ. मुरब्बद्) मिष्टपाकः, फलोपस्करः ।

मुरब्बा, सं. पुं. (अ. मुरब्बज्) समचतुरस्रः, समचतुर्भुजः २. वर्गः, द्विघातः ३. समचतुरस्र-समचतुर्भुज-वर्गाकार, भूखंडः- (रश्मि) । वि., वर्गकृत, वर्ग- (गज, फुट आदि) ।

मुरमुरा, सं. पुं. (अनु. मुरमुर) भिष्मा, भिष्मिका-या, भिस्स(स्सि)या ।

मुरमुराना, कि. अ. (अनु. मुरमुर) मुरमुरा-यते (ना. धा.) ।

मुरली, सं. स्त्री. (सं.) बंशी-शिका, वंशः, वेणुः, वंश-नालिका, सानिका ।

—धर,

—मनोहर, } सं. पुं. (सं.) श्रीकृष्णचन्द्रः ।

मुरच्चत, सं. स्त्री. (अ.) शील २. सज्जनता ।

वे—, वि., रूक्ष, सहानुभूतिशून्यः ।

मुराद्, सं. स्त्री. (अ.) अभिलाषः, कामना २. आशयः, अभिप्रायः ।

मुरादों के दिन, मु., यौवनम् ।

मुरारी, सं. पुं. (सं. रिः) श्रीकृष्णचन्द्रः ।

मुरीव, सं. पुं. (अ.) शिष्यः २. अनुयायिन् ।

मुर्दनी, सं. स्त्री. (फा. मुर्दन) मृत्यु, लक्ष-पानि (न. बहु.) च्छाया २. अवसादः, विषादः, दौर्मानस्यं, निर्वेदः, उल्काहाभावः ।

चेहरे पर मुर्दनी छाना या फिरना, मु., मुले

मृत्युलक्षपानि प्राद्भू २. अति-विषण्ण-निराश (वि.) विद् (दि. आ. अ.) ।

मुर्दा, सं. पुं., दे. 'मुरदा' ।

मुर्दा, सं. पुं. (हिं. मरोड़) दे. 'मरोड़' (२) । २. दे. 'पेंचिदा' ।

मुलजिम, वि. (अ.) अभियुक्त, दूषित ।

मुलतवी, वि. (अ.) विलंबित, व्याक्षिप्त, *स्थगित ।

मुलतान, सं. पुं. (सं. मूलत्राणं) प्रह्लादपुरं, साम्बीपुरम् ।

मुलतानी, वि. (हिं. मुलतान) मूलत्राण-विषयक-संबन्धित, मौलत्राण । सं. स्त्री., रागिणी-भेदः २. *पितृगौरिक, मौलत्राणीभूतिका ।

मुलम्मा, वि. (अ.) भागुर, भ्रान्तमान २. सुवर्ण-रजत-लिप्त-रंजित । सं. पुं., हेमलेपः, रजतरंजनं २. आढंबरः, आपातरम्यता ।

—करना, कि. स., रत्नतेज-स्वर्णन लिप् (तु. प. अ.)-रंज (प्रे.) ।

—साज, सं. पुं. (अ. + फा.) *धातु-हेम-लेपकारः ।

मुलहदी-ठी, सं. स्त्री., दे. 'मुलेठी' ।

मुलाक़ात, सं. स्त्री. (अ.) दे. 'मिलन' (२) ।

—करना, कि. स., दे. 'मिलना' ।

—करवाना, कि. प्रे., परिचय कृ (प्रे.), परि-चि (प्रे.) ।

मुलाकाती, सं. पुं. (अ. मुलाक़ात) परिचितः २. दर्शकः ।

मुलाजिम, सं. पुं. (अ.) दे. 'नौकर' ।

मुलाजिमत, सं. स्त्री. (अ.) दे. 'नौकरि' ।

मुलायम, वि. (अ.) कोमल, सुकुमार २. लक्षण, विक्रम ।

—करना, मु., परस्य क्रोषं शम् (प्रे.), शमयति ।

मुलाहिजा, सं. पुं. (अ.) दे. 'निरीक्षण' २. आदरः ३. अनुग्रहः ।

मुलेठी, सं. स्त्री. [सं. मधुयष्टी-दिः (स्त्री.)] यष्टिमधु (न.), मधुयष्टिका, मधुर्कं, बलीतकम् ।

मुल्क, सं. पुं. (अ.) देशः २. प्रांतः ३. संसारः ।

मुल्की, वि. (अ.) स्व-देशीय २. सासन-संबन्धित ।

मुल्ला, सं. पुं. (अ.) यवनपुरोहितः २. अध्या-पकः ।

मुवकिल, सं. पुं. (अ.) *अभिभाषकनियो-जकः ।

मुवा-आ, वि. (सं. घृत्) निर्जाव, निष्प्राग
२. नीच, तुच्छ ।
मुशाइरा, सं. पुं. (अ.) कविसम्मेलनम् ।
मुशाबहत, सं. स्त्री. (अ.) सादृश्यं, साम्यम् ।
मुस्क^१, सं. पुं. (फा.) कस्सूरी-रिका, मृगमदः
२. दुर्-गंधः ।
मुस्क^२, सं. स्त्री. (देश.) भुजः, बाहुः ।
मुस्कं कसना या बांधना, मु., बाहू पृष्ठतः
निर्यन् (तु.) ।
मुस्किल, वि. (अ.) कठिन, दुस्साध्य । सं. स्त्री.,
कठिनता २. विपत्तिः (स्त्री.) ।
—कुशा, वि., संकट-क्लेश-विघ्न, हर विनाशक ।
—आसान होना, मु., संकटहरणम्, विपद्
विनश् (दि. प. से.) ।
मुक्की, वि. (फा.) कृष्ण, इयाम २. मृगमद-
मिश्रित २. इयामाश्वः, खुंगाहः ।
मुक्त, सं. पुं. (फा.) मुष्टिः (पुं. स्त्री.) ।
एक—, कि. वि., युगपत् (अव्य.) ।
मुष्टामुष्टी, सं. स्त्री. [सं.-ष्टि (अव्य.)] मुष्टी-
मुष्टि (अव्य.), मुष्टियुद्धम् ।
मुष्टि, सं. स्त्री. (सं. पुं. स्त्री.) दे. 'मुक्ता' (१) ।
२. पलपरिमाणं (४ या ८ तोले का) ३. औष्यं
४. दुर्भिक्षं ५. तरुः, सरुः ।
—युद्ध, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'मुक्कैबाजी' ।
मुष्टिका, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'मुक्ता' २. दे.
'मुट्टी' (२) ।
मुसक(कि)राना, कि. अ. (सं. स्मयकरणं)
स्मि (भ्वा. आ. अ.), ईषत्-नंदं-मृदु हस्
(भ्वा. प. से.) मृदुहास्यं कृ । सं. पुं., स्मयनं,
ईषत्हसनं, स्मितं, मृदुहासः ।
मुसकरानेवाला, सं. पुं., स्मेर, स्मित, स्मय-
मान, स्मित-कारिन्-शालिन् ।
मुसक(कि)राहट, सं. स्त्री. (हिं. मुसकराना)
स्मितंतिः (स्त्री.), नंद-मृदु-हासः-हसितं-
हास्यम् ।
मुसकिफ, सं. पुं. (अ.) ग्रंथकारः, पुस्तकप्रणेत् ।
मुसल, सं. पुं., दे. 'मुसल' ।
मुसलमान, सं. पुं. (फा.) यवनः, मोहम्मदीयः,
*मुसलमानः ।
मुसलमानी, सं. स्त्री. (फा.) यवनी, *मुस-
लमानी २. दे. 'खतना' ३. दे. 'इस्लाम' ।
वि., यावन (स्त्री.), यवनधर्मसंबन्धिन् ।

मुसलधार, } दे. 'मुसल' के नीचे ।
—मेंह बरसना, मु. }
मुसलामुसलि, सं. स्त्री. (सं.) मुस (श, ष)
ल, -गुह-संघामः ।
मुसलिम, सं. पुं. (अ.) दे. 'मुसलमान' ।
मुसली, सं. स्त्री. (सं. मुश(प)ली) मुश(प)लिका,
ताल, मूलिका-पत्रिका, अशोष्नी, भूताली, दीर्घ-
कंदिका, हेमपुष्पी, गोधापदी ।
मुसल्ला, सं. पुं. (अ.) * आराधनास्तरः,
*उपासनासनम् ।
मुसविर, सं. पु. (अ.) दे. 'वित्रकार' तथा
'क्रीडीयाकर' ।
मुसाफिर, सं. पुं. (अ.) पथिकः, पांथः, दे.
'यात्री' ।
—खाना, सं. पुं. (अ. + फा.) पथिकाश्रमः,
पांथ-शाला-गृहं, *धर्मशाला ।
मुसाफिरी, सं. स्त्री. (अ.) पथिकत्वं २. यात्रा,
प्रवासः ।
मुसाहब, सं. पुं. (अ.) परिपार्श्व(कि)कः,
पार्श्वगः ।
मुसीबत, सं. स्त्री. (अ.) कष्ट, क्लेशः २. आपद्-
विपद् (स्त्री.) ।
मुस्टं(स्ट)डा, वि. (सं. दंष्टः का अनु.) पुष्टांग,
दृढ, देह-तनु-अंग, बलवत् २. दुर्बल, खल ।
मुस्तकिल, वि. (अ.) भुव, अचल २. दृढ,
चिरस्थायिन् ।
मुस्तनद, वि. (अ.) प्रामाणिक, विश्वसनीय ।
मुस्तहक, वि. (अ.) अर्ह, योग्य, पात्र, अधि-
कारिन् ।
मुस्तैद, वि. (अ. मुस्तअद) सज्ज, संनद्ध
२. अशु-क्षिप्र-कारिन् ।
मुस्तैदी, सं. स्त्री. (हिं. मुस्तैद) सज्जता,
सज्जता २. आशुकारित्वं, क्षिप्रता ।
मुहताज, वि. (अ.) निर्धन, अकिंचन २. दीन,
पराश्रित ३. आकांक्षिन् ।
मुहडबत, सं. स्त्री. (अ.) प्रेमन् (पुं. न.)
२. निव्रता ३. अभिलाषः, कानः, प्रणयः ।
मुहम्मद, सं. पुं. (अ.) श्रीमोहम्मदः, यवन-
धर्मप्रवर्तकः ।
मुहरिर, सं. पुं. (अ.) लेखकः, लिपिकारः ।
मुहल्ला, सं. पुं. दे. 'महल्ल' ।
मुहाना, सं. पुं. (हिं. मुह) नदीमुखं, सारि-
त्संगमः २. प्रवेशद्वारम् ।

मुहाफिज़, वि. (अ.) रक्षक, वाह्य ।

मुहाल, वि. (अ.) कठिन, दुष्पार २. असंभाव्य, अशक्य, असंभव । सं. पुं., दे. 'महल्ला' ।

मुहावरा, सं. पुं. (अ.) वाग्धारा, वाक्, -रीतिः(स्त्री)-संप्रदायः २. अन्यासः ३. शीलम् ।

मुहासिरा, सं. पुं. (अ.) उपरोधः, अवरोधनम् ।

—**करना**, कि. स., अव-उप, -भू (रु. उ. अ.) ।

मुहिम, सं. स्त्री. (अ.) दुष्करकार्यं २. आक्रमणं ३. युद्धम् ।

मुहुः, अव्य. (सं.) पुनः ।

—**मुहुः**, अव्य., पुनः पुनः, अस्तकृत् ।

मुहुर्त, सं. पुं. (सं. पुं. न.) द्वादशशक्यपरिमित-कालः २. घटिकाद्वयं, अहोरात्रस्य त्रिंशो भागः ३. मांगलिकास्तमयः (ज्यो.) ।

मूंग, सं. स्त्री. पुं. (सं. मुद्गरः) स्यश्रेष्ठः, रसो-त्तमः, हवानंदः, वाजिभोजनः, सुफलः ।

छाती पर मूंग दलना, मु., दे. 'छाती' के नीचे ।

मूंगफली, सं. स्त्री. (सं. भूमिकली) मंडपी, भूरथा, भूमिबिका, भूजणकः ।

मूंगा, सं. पुं. (हि. मूंग) विद्रुमः, प्रवालः-लं, मोमीरा ।

मूंगिया, वि. (हि. मूंग) मुद्गर-हरित (त.)-पलाश, वर्ण ।

मूँक, सं. स्त्री. [सं. श्मश्रु (न.)] गुफः, ओष्ठ-तो(लो)मन् (न.) ।

—**उखाड़ना**, मु., कठोरं दंड (चु.) २. गर्व-चूर्ण (चु.) ।

—**नीची होना**, मु., लज्जित (वि.) भू २. अवमन् (कर्म.) ।

—**पर ताव देना वा हाथ फेरना**, मु., शीयं प्रदृश (प्रे.), वीरताभिमानेन वप्रश्रुत्याः कृत (प्रे.) ।

मूँज, सं. स्त्री. (सं. मुंजः) मुंजनकः, हृत्, लुत्तः-मूलः, माहाण्यः, रंजनः, दूरमूलः, शत्रुभंगः ।

मूँड, सं. पुं. (सं. मुंडः-डं) दे. 'मुंडा' (१) ।

—**मुड़ाना**, मु., परित्रन् (भ्वा. प. से.), संव्यस् (वि. प. से.) ।

मूँडन, सं. पुं., दे. 'मुँडन' ।

मूँडना, कि. स. (सं. मुण्डनं) मुण्ड (भ्वा. प. से.), वप् (भ्वा. उ. अ.), प्रे.), स्वर-क्षर (तु. प. से.), केशान् हृत् (तु. प. से.)-

डिद् (रु. प. अ.)-लू (क्. उ. से.) २. वच् (प्रे.), छल् (चु.), प्रन् (प्रे.), विप्रलभ् (भ्वा. आ. अ.) ३. दीक्ष् (भ्वा. आ. से.)

प्रे.), उप-नी (भ्वा. प. अ.) । ४. मेडोगौ कृत् (तु. प. से.) । सं. पुं., मुण्डनं, क्षीरं, वपनं, केश, छेदनं-खवनं-कर्मणम् ।

मूँडने योग्य, वि., मुण्डनीय, वसन्य, वाप्य ।

मूँडनेवाला, सं. पुं., मुण्डकः, नापितः, मुडिन् ।

मूँडा हुआ, वि., मुण्डित, क्षुरित, उप्त, क्लृप्त - केश-श्रुम् ।

मूँडी, सं. स्त्री., दे. 'मुण्ड' (१) । २. मुण्डाकारः ऊर्ध्वभागः ।

मूँडना, कि. स. (सं. मुद्रणं) प्र-आ, च्छद् (चु.), सं-आ, वृ (स्वा. उ. से.), आ, स्तृ (स्वा. उ. अ.), स्तृ (क्. उ. से.) २. अ-

पिधा (जु. उ. अ.) ३. निमील (भ्वा. प. से.), (प्रे.) मुद्रयति (ना. धा.) । सं. पुं., आ-प्र, -च्छादनं, आ-सं, वर्ण, पिधानं, निमीलनं, मुद्रणम् ।

मूक, वि. (सं.) अवाच्, वाणीहीन, *निर्गिर ।

मूगरी, सं. स्त्री. (सं. मुद्गरः >) * वसन-कुटनी, *मुद्गरी ।

मूजी, वि. (अ.) दुःख-क्लेश-कष्ट, द-दायक २. दुष्ट, दुर्जन, खल ।

मूठ, सं. स्त्री., दे. 'मुठ्ठी' (१-२) तथा 'मुठिया' (१-२) ।

मूठा, सं. पुं., दे. 'मुठ्ठा' ।

मूठ, वि. (सं.) अन्न, मूखं, मंदधी, मंद, निर्बुद्धि २. स्तब्ध, निश्चेष्ट ३. व्यानोहित, अष्टसंज्ञ ।

—**मति**, वि. (सं.) मूठ, बुद्धि-चेतस् ।

मूड़ता, सं. स्त्री. (सं.) अज्ञता, मूर्खता, बुद्धि-हीनता इ. ।

मूत्र, सं. पुं. (सं. न.) क्षवः, प्रस्रावः, मेहः, गुह्यनिस्यंदः ।

—**करना**, कि. अ., मूत्रयति (चु.), मूत्रोत्सर्गं कृ, मिह् (भ्वा. प. अ.), मूत्रं उत्सृज् (तु. प. अ.) ।

—**कूच्छ**, सं. पुं. (सं. न.) अदमरी २. कूच्छं ३. मूत्ररोधः ।

—**स्थान**, सं. पुं. (सं. न.) *प्रस्रावागारः-रन्ध्र, मूत्रालयः ।

मूख, वि. (सं.) निर्-दुर्, बुद्धि, अ-निर्, -बोध, अज्ञ, अनभिज्ञ, अज्ञान-निन्, मंद, मंदधी, विद्या-प्रज्ञा-ज्ञान-बुद्धि, हीन-शायर-हित इ. ।

मूर्खता, सं. स्त्री. (सं.) अज्ञता, अनभिज्ञता,

मूर्च्छना

[४८]

सुग

मंदता, दुर्-निर्, बुद्धिर्व, अज्ञानं, अवोधः, जटला इ. ।

मूर्च्छना, सं. स्त्री. (सं.) संगीतांगप्रकारः ।

मूर्च्छा, सं. स्त्री. (सं.) सं. मोहः, कष्टमलं, मूर्च्छनं, मूर्च्छायः, चैतन्य-संज्ञा-लोपः-नाशः ।

—**आना**, कि. अ. मूर्च्छं (म्वा. प. से.), मुह् (दि. प. से.) मोहं-मूर्च्छां प्राप् (स्वा. प. अ.), संज्ञां-चेतनां हा (जु. प. अ.), नष्ट-संज्ञ-सुप्तचेतन (वि.) भू ।

मूर्च्छित, वि. (सं.) मूढ, मुग्ध, मोहवश, मूर्च्छापन्न, नष्ट-सुप्त-विगत, चेतन-चैतन्य-संज्ञ ।

मूर्त्त, वि. (सं.) मूर्तिमत, साकार, आकृतियुक्त २. कठिन, स्थूल, सुसंहत, घन इ. 'मूर्च्छिता' दे. ।

मूर्ति, सं. स्त्री. (सं.) चित्रं, आलेख्यं, रेखा-चित्रं २. प्रतिकृतिः (स्त्री.), प्रलिच्छदः, प्रतिमा इ. आकृतिः (स्त्री.), आकारः, स्वरूपं ४. शरीरं, देहः ।

—**कार** सं. पुं. (सं.) चित्रकारः २. प्रतिमा-कारः ।

—**पूजा**, सं. स्त्री. (सं.) प्रतिमापूजनम् ।

—**विधा**, सं. स्त्री. (सं.) मूर्ति-निर्माण-धटना ।

मूर्तिमान्, वि. (सं. मत्) लशरीर, शरीरिन, काय-देह, -भूत-धारिन्-वत्, वेदिन्, मूर्त्त २. दृश्य, दृष्टिगोचर, प्रत्यक्ष, साकार ।

मूर्द्धज, सं. पुं. (सं.) शिरोरुहः, दे. 'केश' ।

मूर्द्धा, सं. पुं. (सं. ङन्) शीर्षं, दे. 'सिर' ।

मूल, सं. पुं. (सं. न.) शिफः-फा, जटा, व(वृ)ध्नः, अंघ्रिनामकः २. कंदः-दं ३. उप-क्रमः, आरंशः, आदिः ४. आदि-कारण-बीज-हेतुः, प्रकृतिः (स्त्री.) ५. मूलवित्तं, दे. 'पूजी' इ. आद्य-आरंभिक-भागः ७. गृह-मूलं, वास्तु (पुं. न.) ८. मूलग्रंथः, व्याख्येय-वाक्यं ९. नक्षत्रविशेषः १०. समीप-ये ११. दे. 'पिपलामूल' । वि., मुख्य, प्रधान ।

—**धन**, सं. पुं. (सं. न.) मूलं, मूल, द्रव्य-वित्तं, सामकम् ।

—**मूलश**, वि. (सं. समासान्त में) —कारणक, उद्भूत, —उत्पन्न (उ. अज्ञानमूलक, अज्ञान-कारणक इ.) ।

मूली, सं. स्त्री. (सं.) मूलकः-कं (राजालुकः, महाकंदः, हरितदंत, कंदमूलं, दीर्घं, मूलकं-

पत्रकं-कंदकम् । (छोटी मूली) मूलकपोतिका, चाणवयमूलकं, लज्जुमूलकम् ।

किसी को मूली गजर समझना, मु., तृणाय-वृणं यन् (दि. आ. अ.), अवधीर्-अवगाण् (जु.) ।

मूल्य, सं. पुं. (सं. न.) वस्नः-नं, अर्थः, अर्हा, अवक्रयः, पण्यः ।

—**रहित**, वि. (सं.) तुच्छ, निस्सार, व्यर्थ, क्षुद्र ।

—**वृद्धि**, सं. स्त्री. (सं.) वस्न-अर्थ, वृद्धिः-उप-चयः-उन्नतिः (स्त्री.) ।

मूल्यवान्, वि. (सं-वत्) बहुमूल्य, महार्थ, अतिमूल्य, अमूल्य ।

मूल्यांकन, सं. पुं. (सं. न.) मूल्य-वस्न-अर्थ, निर्धारणं-निश्चयनम् ।

मुष, **मुष(वि)क**, सं. पुं. (सं.) उंदुरुः, दे. 'चूहा' ।

—**वाहन**, सं. पुं. (सं.) गणेशः ।

मूसल-र, सं. पुं. (सं. मुसलः-ळं) मुष(श)-ळः-ळं, अयोऽयम् ।

—**चंद्र**, सं. पुं., अशिष्टः, असभ्यः २. पुष्टदुष्टः ।

मूसल(ला)धार बरसना, मु., अतीव-अति-वेगेन धारासारैः वृष् (म्वा. प. से.) ।

मूसलाधार वर्षा, आसारः, धारा-आसारः- (नि-सं) पातः-वर्षः-वर्षम् ।

मूसली, सं. स्त्री., दे. 'मुसली' ।

मुसा, सं. पुं. (सं. मूषः) दे. 'चूहा' ।

मृग, सं. पुं. (सं.) हरिणः, कुरंगः-गमः, बातासुः, (अ) जिनयोनिः, एणः-णकः, ऋदयः-ध्वः, रिष्यः-इयः, चारुलोचनः, शारंगः, कृष्ण-सारः, पृषतः-त (पुं.), प्लाविन् (पुं.), मरुकः, ररुः, रोहितः, लिगुः, वननः, शंबरः, रौहिणः, वातप्रमीः (पुं.) २. पशुनात्रं २. वन्यपशुः ४. मार्गशीर्षमासः ५. मकरराशिः ६. पुरुषभेदः ।

—**छाला**, सं. स्त्री. (सं + हिं.) मृग-हरिण, -अजिनं-चर्मन् (न.) ।

—**तृष्णा**, सं. स्त्री. (सं.) मृग, तृष्-तृष्णा-तृष्णिः-तृष्णिका-सरीचिका (सब स्त्री.) ।

—**नयनी**, सं. स्त्री. (सं.) कुरंग-मृग, इश् (स्त्री.)-लोचना(नी)-अक्षी-ईक्षणा-नयना ।

—**राज**, सं. पुं. (सं.) मृगेन्द्रः, दे. 'सिंह' ।

—शिरा, सं. स्त्री. (सं.) मृग-शिरः-शिरस् (न.)-शीर्षम् ।
 सुगया, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'शिकार' ।
 सुगांक, सं. पुं. (सं.) शश, अंक-लांछन, दे. 'चाँद' ।
 सुगी, सं. स्त्री. (सं.) हरिणी, कुरंगी, षणी, वृषती २. अपस्मारः ३. कस्तूरी ।
 सुगेन्द्र, सं. पुं. (सं.) मृग, पतिः-राजः, दे. 'सिंह' ।
 सुणाल, सं. पुं. (सं. पुं. न.) विशंसं, मृणाली, पञ्च-कमल, नालं, पञ्चतंतुः ।
 सुत, वि. (सं.) दे. 'सुरदा' वि. ।
 सुतक, सं. पुं. (सं. पुं. न.) दे. 'सुरदा' सं. पुं. ।
 —कर्म, सं. पुं. [सं. मर्म (न.)] प्रेतकृत्यं (अंत्येष्टि इ.) ।
 सुत्तिका, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'मिट्टी' (१) ।
 सुत्युंजय, सं. पुं. (सं.) जितमुत्युः २. शिवः ।
 सुत्यु, सं. स्त्री. (सं. पुं.) मरणं, निधनः-नं, पंचव-ता, प्राणनाशः, तनु-त्यागः-विच्छेदः, कालधर्मः, दिष्टांतः, संस्थितिः (स्त्री.), प्रलयः, अत्ययः, प्राण, अंतः, नाशः, मृतिः (स्त्री.), अवसानं, दीर्घनिद्रा ।
 —लोक, सं. पुं. (सं.) यमलोकः २. मर्त्यलोकः ।
 सुदंग, सं. पुं. (सं.) सुरजः, पटहः, घोषः ।
 सुदु, वि. (सं.) इलक्ष्णा, मसृण, सुखस्पर्श, २. श्रुति-मधुर, कर्कश्य-शून्य, मंजुल ३. सुकुमार, पेलव, कोमल, मृदुल, सौम्य, ४. मंद, मंथर, विलम्बकारिन् ।
 सुदुता, सं. स्त्री. (सं.) इलक्ष्णता, मसृणता २. मंजुलता, श्रुति-मधुरता ३. सुकुमारता, कोमलता २. मंदता, मंथरता इ. ।
 सुदुल, वि. (सं.) दे. 'सुदु' ।
 सुदुलता, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'मृदुता' ।
 में, अव्य. (सं. मध्ये)-अंतरे, अंतः, प्रायः सप्तमी विभक्ति से (उ. धर में-रुहे) ।
 —से, मध्यात् (षष्ठी के साथ), प्रायः षष्ठी तथा सप्तमी विभक्ति द्वारा (उ. लगानां खगेषु वा हंसः श्रेष्ठः) ।
 में, सं. स्त्री. (अनु.) रेभर्ग, अजस्रवृद्धः ।
 मेंगनी, सं. स्त्री. (हि. मीनी) *गूधगुलिका, *शमलगुली ।

मेंगनीज, सं. पुं. (अं.) लोहकं, मांगलम् ।
 मेंडक, सं. पुं., दे. 'मेंडक' ।
 मेंढा, सं. पुं., दे. 'मेंढा' ।
 मेंबर, सं. पुं. (अं.) सदस्यः, सभासद (पुं.) ।
 मेंह, सं. पुं. (सं. मेघः >) दे. 'वर्षा' ।
 मेंहदी, सं. स्त्री., दे. 'मेंहरी' ।
 मेक्सिमम, वि. (अं.) भूविष्ट, अधिकतम ।
 मेस, सं. पुं., दे. 'मेघ' ।
 मेख, सं. स्त्री. (का.) दे. 'खूँटा' २. दे. 'पील' ३. दे. 'पचब्द' ।
 —मारना, मु., बाष् (भ्वा. आ. से.), विहन (अ. प. अ.), विघ्न (ना. धा., विघ्नयति) ।
 मेखल-ला, सं. स्त्री. (सं. मेखला) कांची-विः (स्त्री.), रस(श)नानं, मारस(श)नं, कथ्या । समका-की २. कटिसूत्रं ३. खड्गादि-निबंधनं ४. शैलनितंबः ५. नर्मदा ।
 मेगज़ीन, सं. पुं. (अं.) शकालकोष्ठः २. साम-यिकपत्रिका ।
 मेगनेशियम, सं. पुं. (अं.) आजातु, मग्नकं, मग्निवग्म् ।
 मेघ, सं. पुं. (सं.) जल-यो-भारा-अंभो, धरः, अन्नं, अंबु-वारि, बाहः, स्तनयित्तुः, बलाहकः, अन्वः, नीरदः, वारिदः, जलदः, तोयदः, अंबुदः, अंभोदः, पाथोदः, घनः, जीमूतः, धूम-योनिः, वारि-जल-पयो, मुच् (पुं.), वनाधनः, पञ्चन्यः २. रागमेदः (संगीत) ।
 —काल, सं. पुं. (सं.) प्रावृष् (स्त्री.), वर्षाः (स्त्री, बहु.), वर्ष-धन-कालः-समयः ।
 —गर्जन, सं. पुं. (सं. न.) मेघ-दुंदभिः-नादः-स्वनः, गर्जितं, गर्जनं-ना, स्तनितं, वि, स्फूर्जंशुः ।
 —दूत, सं. पुं. (सं. न.) कालिदास-प्रणीतं खंडकाव्यम् ।
 —धनु, सं. पुं. [सं. नुस् (न.)] इन्द्रचापः ।
 —नाथ, सं. पुं. (सं.) मेघपतिः, इन्द्रः ।
 —नाद, सं. पुं. (सं.) इन्द्रजित २. मेघगर्जनम् ३. वरुणः ।
 —मण्डल, सं. पुं. (सं. न.) घनपं-ली, मेघ-माला, कदंबिनी ।
 —वर्ण, वि. (सं.) वनइशाम ।
 —वाहन, सं. पुं. (सं.) इन्द्रः, शकः ।
 मेज, सं. स्त्री. (का.) पादफलकः-भद्रम् ।
 —पोश, सं. पुं. (का.) पादफलकाच्छादनम् ।

मेजवान, सं. पुं. (का.) आतिथ्यकारिन्, अतिथिमेवकः ।

मेटना, क्रि. गा. दे. 'मिटाना' ।

मेड़, सं. पुं. (सं. भित्तं) क्षेत्र, सीमा-पर्वतः ।

मेड़क, सं. पुं. (सं. मंडूक) मेकः, प्लवः, प्लवगः, दुर्दरः, वर्षा-भू-घोषः, अंडुकः, केंडुकः, हरिः, शाशुः, शा(सा)ल्लः ।

मेहा, सं. पुं. (सं. मेहः) दे. 'भेड़ा' ।

मेथिलेस्टिड स्फिरिट, सं. स्त्री. (अं.) मिथिलित-सराः ।

मेथी, सं. स्त्री. (सं.) मेथिः (स्त्री.), मेथिका-मेथिनी, दीपनी, बहुपर्णी, गंध-फला-बीजा ।

मेद, सं. पुं. [सं. मेदस् (न.)] वषा, वसा, मेदः २. मेदस्वित्, स्थूल्यं ३. कस्तूरी ।

मेदा, सं. पुं. (अ.) पक्वशयः, पिचंडः, फंडः, मलुकः ।

मेदिनी, सं. स्त्री. (सं.) धरा, दे. 'पृथिवी' ।

मेध, सं. पुं. (सं.) यज्ञः, मत्तः २. हविस् (न.) ।

मेधा, सं. स्त्री. (सं.) धारणावती बुद्धिः (स्त्री.), स्मरणशक्तिः (स्त्री.), धारणा ।

मेधाव्री, वि. (सं.) पंडित, धीमत, मेधवत् ।

मेम, सं. स्त्री. (अं. मेडम) गौरांगी, श्वेतांगी (विदेशीय नारी) ।

मेमना, सं. पुं. (अनु. मे-मे) अन्नपोतः, छागशावः २. अविर्दिभः, मेघशिशुः ।

मेमार, सं. पुं. (अ.) स्थपतिः, वास्तुशिल्पिन्, गृहसंवेदकः, फलगंडः, *मेहकारः ।

—**का काम**, सं. पुं. मूत्रकर्मन् (न.) ।

मेरा, सं. पुं. (हि. मे) मम, मदीय (-या स्त्री.), मामकीन (-ता स्त्री.), मामक- (-मिका स्त्री.), मत्त- ।

मेरु, सं. पुं. (सं.) सुमेरुः, हेमाद्रिः, रत्नमातः, सुरालयः २. जपमालायाः प्रधानगुटिका ।

—**दंड**, सं. पुं. (सं.) पृष्ठ-वंशः-अस्थि (न.) २. प्रवमधरेखा ।

मेल, सं. पुं. (सं.) दे. 'मिलन' (१-२) ३. ऐक्यत्वम्, संगत्यम्, वैमत्याभावः ४. सख्यम्, मिश्रत्वम्, सीहार्दं ५. आनुकूल्यम्, सामंजस्यं ६. साम्यं, सादृश्यम् ।

—**जोल**, सं. पुं. सुपरिचयः, अभ्यंतरत्वम्,

—**मिलाप**, गदलीहृदम् ।

मेला, सं. पुं. (सं. मेलः) मेलकः, यात्रा,

समाजः, उत्सवः २. जनसंमर्दः, संकुलम् ।

—**टेला**, सं. पुं., जनोपः, जनसंमर्दः ।

मेवा, सं. पुं. (फ्रा.) शुष्क-फलम् ।

—**ऊरोश**, सं. पुं. (फ्रा.) फल-विक्रेतु-विक्रयिन् ।

मेघ, सं. पुं. (सं.) दे. 'भेड़ा' २. क्रियः, राशिविशेषः ।

मेहंवी, सं. स्त्री. (सं. मेंधी) रागांगी, मेथिका, यवनेष्टा, नख-, रंजिनी, रागगर्भा, कौकंदता ।

मेह, सं. पुं. (सं.) मूत्रं २. प्रमेहः ३. मेघः ।

मेह, सं. पुं. (सं. मेघः) जलदः २. वृष्टिः (स्त्री.), दे. 'वर्षा' ।

मेहतर, सं. पुं. (फ्रा., मि. सं. महत्तरः) ज्येष्ठः, प्रधानः २. मलवाहकः, दे. 'भंगी' (मेहतरानी स्त्री.) ।

मेहनत, सं. स्त्री. (अ.) परिश्रमः, प्रयासः ।

—**मजबूरी**, सं. स्त्री., शारीरिक-कायिक-श्रमः-व्रतम् ।

—**ठिकाने लगाना**, मु., श्रमसाफल्यम्, श्रमेषु कार्यासिद्धिः (स्त्री.) ।

मेहनताना, सं. पुं. (अ. + फ्रा.) * पारिश्रमिकं, कर्मण्या, अर्भण्या ।

मेहनती, वि. (अ. मेहनत) परिश्रमिन्, उद्योगिन् ।

मेहमान, सं. पुं. (फ्रा.) अतिथिः, दे. ।

—**खाना**, सं. पुं., अतिथि-प्राधुण, शाला-गृहम् ।

—**नवाज़**, वि., अतिथि-आधुण, सेवक-पूजक-सहकारकः ।

—**नवाज़ी**, सं. स्त्री., दे. 'मेहमानदारी' ।

मेहमानदारी, सं. स्त्री. (फ्रा.) } आतिथ्यं
अतिथि-से-
मेहमानी, सं. स्त्री. (फ्रा. मेहमान) } वा-सत्कारः ।

मेहर, सं. स्त्री. (फ्रा.) कृपा, अनुग्रहः ।

मेहरबान, वि. (फ्रा.) कृपालु, अनुग्रहशीलः ।

मेहरबानी, सं. स्त्री. (फ्रा.) दया, अनुकंपा ।

मेहराब, सं. स्त्री. (अ.) तोरण-गं, वृत्तखण्ड-दम् ।

—**दार**, वि. (अ. + फ्रा.) तोरणाकार (द्वारदि) ।

मैं, सर्व. (सं. अस्मद् >) अहम् । सं. स्त्री., अहंमतिः (स्त्री.), अहंकारः ।

मैका, सं. पुं., दे. 'मायका' ।

मैत्री, सं. स्त्री. (सं.) मैत्र्यं, दे. 'मित्रता' ।

मैथिल, वि. (सं.) मिथिलासंबन्धिन् । सं. पुं., मिथिलावासिन् २. जनकः ।

मैथिली

[४८४]

मोट

मैथिली, सं. स्त्री. (सं.) वैदेही, जानकी ।
 मैथुन, सं. पुं. (सं. न.) रतं, सुरतं, रति-
 क्रिया-क्रीडा, महासुखं, ऋतुदारत्नं, अबल-
 चर्यकं, निपुवनं, धवितं, संभोगः ।
 —करना, क्रि. स., सुरतं आतम् (त. प. से.),
 संभोगं-रतिक्रीडां कृ, महासुखं अनुभू ।
 मैदा, सं.पुं. (फ्रा.)समिता, अपूप्यः, *अट्टसारः ।
 मैदान, सं. पुं. (फ्रा.) सम-भूमिः (स्त्री.)-
 स्थलं-स्थली-प्रदेशः, उपशल्यं २. क्रीडा-
 भूमिः-क्षेत्रं २. युद्धभूमिः, रणक्षेत्रम् ।
 —मारना, मु., वि-परान-जि (भ्वा. आ. अ.),
 दे. 'जीतना' ।
 मैन, सं. पुं. (सं. मदनः) कामदेवः
 २. दे. 'मोम' ।
 मैनफल, सं. पुं. (सं. मदनफलं) शसन-छर्दन-
 शल्य-करहाटक, फलं २. (वृक्ष) मदनः,
 श्वासनः, छर्दनः, शल्यः ।
 मैनसिल, सं. पुं. (सं. मनःशिला) नेपाली,
 मनोशा, शिला, कुनटा, दिव्यौषधिः (स्त्री.),
 नागबिहिका, कल्याणिका ।
 मैना, सं. स्त्री. (सं. मदना) शा(सा)रिका,
 चित्रलोचना, कुण्पी, मधुरालापा, मेधाविनी,
 गो, किराटा-किराटिका, कलहप्रिया ।
 मैनाक, सं. पुं. (सं.) हिमवत्सुतः, सु-हिरण्य-
 नाभः ।
 मैया, सं. स्त्री. (सं. मातृका) दे. 'माता' ।
 मैल, सं. स्त्री. (सं. मलिन) दे. 'मल'
 (१-२) । ३. दोषः, विकारः ।
 —झोरा, वि. (हि. + फ्रा.) भल, गोपिन्-गोपु ।
 सं. पुं., अन्तर्-वस्त्रं-वसनं-वासस् (न.)
 २. दे. 'साजुन' ।
 हाथ की—, मु., तुच्छवस्तु (न.), क्षुद्रद्रव्यम् ।
 मैला, वि. (सं. मलिन) दे. 'मलिन' । सं. पुं.,
 दे. 'मल' (१-३) ।
 —करना, क्रि. स., आविलयति-मलिनयति
 (ना. धा.), पंकित्यै-मलिनीकृ ।
 —होना, क्रि. अ., आविली-मलिनीभू,
 कलुष-पंकिल (वि.) जम् (दि. आ. से.) ।
 —कुचैला, वि., अति-आविल-कलुष-मलिन ।
 मौड़, सं. स्त्री., दे. 'मूँछ' ।
 मौड़ा, सं. पुं. (सं. मूँडतं) *शरकांडपीठं
 २. भुजमूल-स्कंध-प्रदेशः ।
 मोझ, सं. पुं. (सं.) दे. 'सूक्ति' ।

—विद्या, सं. स्त्री. (सं.) वेदांतशास्त्रम् ।
 मोगरा, सं. पुं. (सं. मुबगरः) अतिगन्धः गंध-
 राजः-सारः, विट-प्रियः, उन्न-मृग, वटः २. दे.
 'मुंगरा' ।
 मोघ, वि. (सं.) व्यर्थ, निष्फल ।
 मोघ, सं. स्त्री. (सं. मुच्) संधि, व्याक्षेप-
 व्यावर्तनं, स्नायुवितानः ।
 —आना या निकलना, क्रि. अ., संधिः
 व्याक्षिप् (कर्म.)-व्यावृत् (भ्वा. आ. से.),
 स्नायुः वितन (कर्म.) ।
 मोचक, सं. पुं. (सं.) मुक्तिदः २. सन्न्यासिन
 ३. कदली ।
 मोचन, सं. पुं. (सं. न.) मोक्षणं, मुक्तिदानं,
 बंधनभंगनं, मुक्तिः (स्त्री.) । वि., मोचक,
 मोक्षक, मुक्तिप्रद ।
 मोचना, सं. पुं. (सं. मोचन) *मोचनः,
 *शालोपाटनः २. मुचुटी, लोहकारोपक-
 रणभेदः ।
 मोचरस, सं. पुं. (सं.) मोच-स्त्रावः-सारः-
 नियासः, शाल्मलीवेष्टः, सुरसः ।
 मोची, सं. पुं. (सं. मुच्) चर्मकारः, पाद्-
 कार-संधायकः ।
 मोजा, सं. पुं. (फ्रा.) अनुपदीना, *नरणावरणं,
 दे. 'जुरावि' ।
 मोजिजा, सं. पुं. (अ.) चमत्कारः, कौतुकं,
 आश्चर्यम् ।
 मोट, सं. स्त्री., दे. 'गठरी' ।
 मोटन, सं. पुं. (सं. न.) पेपणं, चूर्णनं,
 मर्दनं, खण्डनम् ।
 मोटर, सं. पुं. (अं.) चालक-प्रवर्तक, चक्रम् ।
 —कार, सं. स्त्री. (अं.) चित्र-तैल-रथः,
 *मोटरम् ।
 —खाना, सं. पुं., मोटागारम् ।
 —इंजिन, सं. पुं., मोटरचालकः ।
 —बस, सं. स्त्री. *मोटर-बसम् ।
 —बोट, सं. स्त्री. *मोटरनौका ।
 —साइकिल, सं. स्त्री. *मोटरसाइकलम्,
 *फूटफुटिया ।
 मोटा, वि. (सं. मुष्टि > ?) पीन, पीवर, पुष्ट,
 पुष्टांग (नी स्त्री.), स्थूल, स्थूलदेह, मेदस्विन्
 २. घन, निविड, सार्द्र, गाढ, स्थूल ३. कणनय,
 कुपिष्ट, ४. अप-नि-कृष्ट, हीन, गह्वं ५. कुरूप

मोठ

[४८२]

मोरचा

६. अमाधारण, विशिष्ट ७. दृप्त, गथित ८. महत्, बृहत् ९. अनाद्य, धनिक ।

—असामी, सं. पुं., धनिन्, धनशालिन्, श्रीमत् ।

—ताजा, वि., दृष्टपृष्ठ, पृष्टांग, मांसल ।

मोटी बात, सं. स्त्री., सामान्य-साधारण-प्राकृत, वार्ता ।

मोटे हिसाब से, कि. वि., स्थूलमानेन ।

मोटाई, सं. स्त्री. } (हिं.मोटा)पीवरता,
मेढोदृढिः(स्त्री.),स्थू-
मोटापन, मोटापा,सं.पुं. } लता, पीनता २. घन-
ता,गाढ़ता,सांद्रता इ.

मोठ, सं. स्त्री. (सं. मकुष्ठः) राज-अरण्य-वन, भुदगाः, मुकुष्ठ-प्रकाः, मय(सु)ष्टः-ष्टकः ।

मोड़, सं. पुं. (हिं. मुड़ना) (नदीमार्ग आदि का) वक्रः, आश्रुत-तिः (स्त्री.) २. वक्रता, वक्रिमन् (पुं.), वकीभावः, जिह्वाता ३. दे. 'मुड़ना' सं. पुं. ।

मोड़ना, कि. सं., व. 'मुड़ना' के प्रे. रूप ।

मोड़ा, सं. पुं., दे. 'मोड़ा' ।

मोतदिल, वि. दे. 'मातदिल' ।

मोतिया, सं. पुं. (हिं. मोती) मल्ली, मल्लिका, वन-, वन्दिका, गौरी, प्रिया, सौम्या, सिता, दे. 'नोगरा' (२) ।

मोतियाबिंद, सं. पुं. (हिं. मोती + सं. बिंदुः) मौक्तिक-मुक्ता-बिन्दुः (नेत्ररोगः) ।

मोती, सं. पुं. (सं. मौक्तिकः) मुक्त, शोक्तिका, मुक्ताफल, शुक्तिजम् ।

—पिरोना, कि. स., मौक्तिकानि यत्र (जु.)-मु(शं)क् (तु. प. से.)-संप्रथ् (क्. प. से.) । मु., मुमधुरं भाप् (भ्वा. आ. से.) २. सुस्प-शालरैः क्लिप् (तु. प. से.) ३. रुद (अ. प. से.) ४. सुमृश्मकार्यं कृ ।

मोतीचूर, सं. पुं. (हिं. मोती + चूर) मुक्ता-मोदकः ।

—औख, सं. स्त्री., *मौक्तिकनेत्रं, लघुबोलभा-सुरनेत्रम् ।

मोतीज्वर, सं. पुं. (हिं. मोती + सं. ज्वरः) शीतला-मधूरिका-ज्वरः ।

मोतीसि(श्)रा, सं. पुं. (हिं. मोती + शरना) आन्धिक-मन्थर-, ज्वरः ।

मोथा, सं. पुं. (सं. मुस्तकः-कं) मुस्ता, कुरु-विंदः, भद्रा, भद्रकः ।

मोव, सं. पुं. (सं.) हर्षः, आनंदः, दे. 'प्रमन्नतः' ।

मोवक, सं. पुं. (सं.) मिष्टान्नभेदः । वि., हर्ष-जनक, आह्लादक ।

मोदी, सं. पुं. (सं. मोदक >) अन्न-विकेष्ट-विकथित, दे. 'परचूनिया' ।

—खाना, सं. पुं. (हिं. + फा.) अन्न-भंडारम् ।

मोम, सं. पुं. (फा.) सिक्थं, सिक्थकं, मक्षि-कामलः-लं, मधुजं, मधुशीषं, मधूच्छिष्टं, मधूलं, मधूथम् ।

—की नाक, सं. स्त्री., सु., चलचित्त, अस्थिरमति ।

—जामा, सं. पुं. (फा.) *माधुज-सैन्यिक-सिक्थाक्त, वस्त्रम् ।

—दिल, वि. (फा.) मृदुमानस, आर्द्रचित्त ।

—बत्ती, सं. स्त्री. (फा. + हिं.) मधुज-सिक्थ-वती-वर्तिः (स्त्री.) ।

—करना या बनाना, सु., दयादीक्षि, करुणादं (वि.) विधा (जु. उ. अ.) ।

—होना, गु., दयार्द्र (वि.) भू, अनुकम्प (भ्वा. आ. से.) ।

मोमियाई, सं. स्त्री. (फा.) कुत्रिमशिलाजडु (न.), कृतकशिलाजित (स्त्री.) २. ब्रण-पूरकः स्निग्धौषधभेदः ।

मोमी, वि. (फा.) सिक्थमय, माधुज, सैन्यिक ।

मोर, सं. पुं. (सं. मयूरः) बहिष्णः, नीलकंठः, चित्र-पिच्छकः-पत्रकः, कलापिन्, केकिन्, चंद्रकिन्, नतंनप्रियाः, बहिन्, मुजंगारिः, भेयानदिन्, शिखंडिन्, शिखालः, वर्षामदः, प्रचलाकिन् ।

—की ध्वनि, सं. स्त्री., 'केका' दे. ।

—की पूंछ, सं. स्त्री., कलापः, पिच्छं, प्रच-लाकः, बहं, शिखंडः ।

—चंद्रिका, सं. स्त्री., चंद्रकः, मेचकः ।

—पंखी, सं. स्त्री., केलि-विहार, नौका ।

—मुकुट, सं. पुं., मयूरमुकुटः-टं, शिखंड-शेखरः ।

—शिखा, सं. स्त्री., बहिंचूडा, शिखिशिखल, शिखालुः ।

मोरचा, सं. पुं. (फा.) दे. 'जंग' २. मुकुर-मलयम् ।

मोरचा

[४८६]

मौज

मोरचा^२, सं. पुं. (फ़ा. मोरचाल) परिखा, खेव, खातम् ।

—बंदी करना, मु., परिखा परिवेष्ट (प्रे.); परिखां खम् (भ्वा. प. से.), सेनां खातेषु नितुज् (रु. आ. अ.) ।

—लेना, मु., युष् (दि. आ. अ.) ।

मोरच्छल, सं. पुं. (हिं. मोर + छल) *शिखंड-चामरः, *कलापव्यजनम् ।

मोरनी, सं. स्त्री. (हिं. मोर) मयूरी, शिखंडिनी, बाहिणी, केकिनी ।

मोरी, सं. स्त्री. (हिं. मोहरी) नाली, तालिः (स्त्री.) *वहनी, जलमार्गः ।

मोल, सं. पुं. (सं. मूर्ध्, दे.) ।

—लेना, कि. स., दे. 'खरीदना' ।

—तोळ, सं. पुं., अर्धनिर्धारणं, मूल्यनिर्णयः ।

मोह, सं. पुं. (सं.) भ्रमः, ज्ञातिः मिथ्यामतिः (स्त्री.), विवर्तः, आभासः, प्रयत्नः, अविद्या, अज्ञानं २. ममतात्वं ३. स्नेहः, रागः, प्रेमम् (पुं. न.) ४. कष्टं, दुःखं ५. मूर्च्छा ।

—लेना, कि. स., मुह् (प्रे.), मनः ह् (भ्वा. प. अ.), वशी कृ ।

मोहक, वि. (सं.) चेतोहर, मनो, हारिन्-रम्, २. मोहजनक ।

मोहताज, वि. (अ.) दे. 'मुहताज' ।

मोहन, सं. पुं. (सं.) मोहकः, मनोहारिन् २. श्रीकृष्णः ३. मूर्च्छाकारक उपचारभेदः (तंत्र) ४. अस्त्रभेदः ५. कंदर्पबाणविशेषः ६. धस्त्ररक्षुपः । वि., मोहक, चेतोहर ।

—भोग, सं. पुं. (सं.) (१-३) संयाव-कदली-आम्र-भेदः ।

मोहना, कि. अ. (सं. मोहनं) अनुरंज्-आसंज् (कर्म.), आसक्त-अनुरक्त-बद्धभाव भू २. मुह् (दि. प. से.), दे. 'मूर्च्छा आना' । कि. स., प्रीति-अनुराग-अभिलषार्थं जन् (प्रे.), अनुरंज् (प्रे.), वशी कृ २. भ्रम-भ्रान्ति-संदेहं जन् (प्रे.), प्रतृ-वंच् (प्रे.) । सं. पुं., अनुरंजनं, अनुरागः. मूर्च्छा, मोहनं, वशीकरणं, वंचनं, प्रतारणम् ।

मोहनी, सं. स्त्री. (सं.) विष्णो रूपविशेषः २. मिथ्याभेदः ३. मोहन-शक्तिः (स्त्री.) : भंत्रः ४. माया । वि. स्त्री. (सं.) मोहिका, चेतोहरी ।

—डालना, मु., अभिचारेण मत्सया वा वशीकृ ।

मोहर, सं. स्त्री. (फ़ा.) दे. 'मुद्रा' (१-४) । २. सुवर्णमुद्रा, निष्कः-कं, दीनारः ।

—लगाना, कि. स., मुद्रयति (ना. धा.), मुद्रया जंक् (चु.) ।

मोहरी^१, सं. पुं. (हिं. मुँह) पद्म-भाजन, मुखं २. पदार्थस्य अग्र-ऊर्ध्वं, भागः ३. पशुमुख-जलकं ४. नासीरचराः (पुं. बहु.), सेना-मुखं ५. निर्गमनमार्गः, द्वारम् ।

मोहरा^२, सं. पुं. (फ़ा. मोहर) शारः-रिः, खेलनी २. सृष्टमय *ईश्वर-नपुटः (सांवा) ३. दे. 'जुहरमोहरा' ।

मोहलक्ष, सं. स्त्री. (अ.) अवकाशः २. अवधिः । मोहित, वि. (सं.) मोहग्रस्त, भ्रान्त २. आसक्त, अनुरक्त, बद्धभाव ।

मोहिनी, वि. तथा सं. स्त्री. (सं.) दे. 'मोहनी' वि. तथा सं. स्त्री. ।

मोही, वि. (सं. हिन्) मुग्धकारिन्, चेतोहर २. अनुरागिन्, स्नेहिन् ३. भ्रान्त ४. लुब्ध, लोभिन् ।

मौजी, सं. स्त्री. (सं.) मुंजमेखलाः ।

—बंधन, सं. पुं. (सं. न.) मुंजमेखलाधारणम् । मौक्य, सं. पुं. (अ.) घटनारथानं २. स्थानं, प्रदेशः ३. अवसरः, अवकाशः ।

—देखना, मु., अवसरं प्रतिपा (प्रे., प्रतिपा-लयति) ।

—हाथ से न जाने देना, मु., अवसरं न वा (मे. नापयति)-हा (जु. प. अ., प्रे., हापयति) ।

मौक्य, वि. (अ.) दे. 'वस्त्रास्त' ।

मौक्यी, सं. स्त्री. (अ.) दे. 'वस्त्रास्तनी' ।

मौक्तिक, सं. पुं. (सं. न.) मुक्ता, मुक्त-फलं, शी तक्तम्, शुक्तिजम् ।

—दाम, सं. पुं. (सं. मन. न.) हुक्ता-मौक्तक-हारः-सरः, मुक्तावली ।

—सर, सं. पुं. (सं.) दे. 'मौक्तिकदाम' ।

मौखिक, वि. (सं.) वाचिक, लेखं विना ।

मौज, सं. स्त्री. (अ.) तरंगः, कल्लोकः, वीची-चिः (स्त्री.) २. कामचारः, छंदः, छंदस् (न.), चित्ततरंगः ३. आनंदः, मोदः ४. वैभवं, विभवः ५. दे. 'पुन' ।

—आना, मु., स्वच्छंदतया सहसा प्रवृत् (भ्वा. आ. से.) ।

—मनाना या उढाना, मु., नंद (भ्वा.प.से.), मुद् (भ्वा. आ. से.), रम् (भ्वा. आ. अ.) ।

मौजा, सं. पुं. (अ.) ग्रामः ।

मौजी, त्रि. (अ. मौजू) अनंदिन्, उल्लासिन् २. कामचारिन्, स्वैरिन् २. अस्थिरमति ।

मंजूद, वि. (अ.) उपस्थित, विद्यमान ।

मौजूदगी, सं. स्त्री. (अ. न.फा.) उपस्थितिः (स्त्री.), विद्यमानता ।

मौजूदा, वि. (अ.) वर्तमान, विद्यमान, प्रचलित, आधुनिक, तांत्रिक ।

मौत, सं. स्त्री. (सं. मृत्युः दे.) ।

—सिर पर खेलना, मु., जीवितसंशये वृत्त (भ्वा. आ. से.) ।

अपनी—मरना, मु., प्रकृत्या स्वभावेन मृ (तु. आ. अ.) ।

मौन, सं. पुं. (सं. न.) निःशब्दता, तूष्णी-भावः, वाक्, रोधः-नियमनं-स्तंभः २. मुनिव्रतम् । वि., दे. 'मीनी' ।

—मृत, सं. पुं. (सं. न.) मृकता-मृकित-तूष्णी-कता, प्रतिशा-संकल्पः-व्रतम् ।

—खोलना, कि. अ., मौनं मंजु (ह. प. अ.), तूष्णीभावं त्यज् (भ्वा. प. अ.) ।

—धारण करना, कि. अ., वाच्यम् (भ्वा. प. अ.)-निरुध् (ह. उ. अ.), मौनं श्रु (तु. मज्जु (भ्वा. उ. अ.) ।

मौनी, वि. (सं. निन्) वाच्यम्, मौनव्रतिन्, मुक, निःशब्द, तूष्णीक । सं. पुं. (सं.) मुनिः, तपस्विन् ।

मौर, सं. पुं. (सं. मुकुटं >) बरस्य तालपत्र-मुकुटं, *मुकुटं, २. प्रधानः, शिरोमणिः ।

मौरी, सं. स्त्री. (हि. मौर) बध्वास्तालपत्र-मुकुटं, *मुकुटकम् ।

मौरूसी, वि. (अ.) पैतृक, पित्र्य, परंपरागत ।

मौख्य, सं. पुं. (सं. न.) मुखता, अज्ञता, जडता, मूढता ।

मौर्य, सं. पुं. (सं.) प्राचीन-भारतस्य वंश-विशेषः ।

मौर्वी, सं. स्त्री. (सं.) धनुर्गुणाः, प्रत्यन्चा, ज्या ।

मौलसिरो, सं. स्त्री. (सं. मौलिः + ओः >) वकुलः, क्षीधुगंधः, मुकु(कु)लः, मधुपुष्पः शुरभिः, स्थिरकुसुमः, भ्रमरानंदः ।

मौला, सं. पुं. (अ.) परमेश्वरः ।

मौलि, सं. स्त्री. (सं. पुं. स्त्री.) शिखरं, शृंगं, ऊर्ध्वभागः २. शीष, मस्तकं ३. मुकुटं, किरीटं ४. जूटः, जूटकं ५. अशोकवृक्षः ६. प्रधानः, मुख्यः ७. प्रियवी ।

मौलिक, वि. (सं.) मौल, आधारधृत् २. प्रधान, मुख्य ३. आद्य, आदिम् ।

मौसा, सं. पुं., दे. 'मासद' ।

मौसिम, सं. पुं. (अ.) ऋतुः, कालः, समयः २. उपयुक्तसमयः, उचितकालः ।

मौसिम, वि. (फा.) आर्तव, ऋतु-संबन्धिन्-विषयक २. समयातुकूल, कालानुरूप ।

मौसी, सं. स्त्री., दे. 'मासी' ।

मौसेरा, वि. (हि. मौसी) मातृ-श्वस्रसंबन्धिन् ।

—भाई, सं. स्त्री., मातृ-श्वसेवः-श्वलीयः ।

मौसेरी बहिन, सं. स्त्री., मातृ-श्वसेयो-श्वस्त्रीया ।

म्याँव, सं. स्त्री. (अनु.) विडालशब्दः, *म्यँकारः ।

—करना, मु., भयेन भंदमंदं वद् (भ्वा.प.से.) ।

म्याव, सं. पुं., दे. 'म्रीआद' ।

म्यान, सं. स्त्री., दे. 'मियान' ।

म्लान, वि. (सं.) म्लान, विशीर्णं २. दुर्बल ३. भलिन ४. खिल, अवसन्न ।

म्लानि, सं. स्त्री. (सं.) म्लानता, कातिक्रमः, विवर्णता २. खेदः, अवसादः, शोकः, म्लानिः, (स्त्री.) ।

म्लेच्छ, सं. पुं. (सं.) वर्णाश्रमधर्मविहीनः, अनायः २. गोमांसभक्षकः ४. अस्पृष्टभाषिन् ४. दुर्दृष्टः, दुष्टः । वि., अशम, नीच, पापिन् ।

य

य, देवनागरीवर्णमालायाः षट्विंशो व्यंजनवर्णः, यकारः ।

यत्ता, सं. पुं. (सं. यन्त्) शासकः, निदेशकः २. वाहन-चालकः, सारथिः । ३. हस्तिपकः, गजःशेवः ।

यंत्र, सं. पुं. (सं. न.) देवाथधिष्ठानं, विविध-प्रभावयुक्तं अंकाक्षरयुतं कोष्ठकचित्रं (तंत्र.)

२. दास्यंवादि, यंत्रं (मशीन) ३. साधनं, उपकरणं ४. अग्नयस्त्रं ५. वाद्यं, वीणा ६. दे. 'ताला' ।

—गृह, सं. पुं. (सं. न.) यंत्रशाला २. मान-मंदिरं, वेधशाला ३. (अपराधिनी) यंत्रणागृहम् ।

—मंत्र, सं. पुं. (सं. न.) अभिचारः, कुहकं, कुसृतिः ।

—विद्या, सं. स्त्री. (सं.) यंत्र-शास्त्र-विज्ञानम् ।
 —शाला, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'यंत्रगृह' ।
 यंत्रक, सं. पुं. (सं.) यंत्रकारः, यंत्रज्ञः, शिल्पिणम् ।
 यंत्रण, सं. पुं. (सं. न.) नियंत्रणं, दमनम्
 २. बन्धनं, संयमनम् ३. पीडा, वेदना
 ४. रक्षणं, अभिरक्षा ।
 यंत्रणा, सं. स्त्री. (सं.) कष्टं, क्लेशः, यातना
 २. वेदना, पीडा ।
 यंत्रालय, सं. पुं. (सं.) यंत्र-गृहशाला
 २. मुद्रणयंत्रालयः ।
 यंत्रित, वि. (सं.) यंत्ररुद्ध २. तालकबद्ध ।
 यकता, वि. (फा.) अनुपम, अद्वितीय, अप्रातम ।
 यकसाँ, वि. (फा.) तुल्य, सम, सदृश ।
 यक्रीन, सं. पुं. (अ.) निश्चयः २. विश्वासः ।
 यकृन्, सं. पुं. (सं. न.) कालखंडं, कालकं,
 कालेयं, करंडा, महास्तानुः, दे. 'जिगर'
 २. यकृद्, जडर-शुद्धिः ।
 यक्ष, सं. पुं. (सं.) देवताभेदः, युष्मकः २. कुबेरः ।
 —राज, सं. पुं. (सं.) कुबेरः, यक्षराजः ।
 यक्षिणी, सं. स्त्री. (सं.) यक्षभार्या, यक्षी,
 २. कुबेरपत्नी ।
 यक्ष्मा, सं. पुं. (सं. यक्ष्मन्) क्षयः, शोषः,
 राजयक्ष्मन् (पुं.), रोगराजः ।
 यक्ष्मनी, सं. स्त्री. (फा.) मांस-मंडः-रसः
 २. शाक-मंडः-रसः ।
 यगाना, सं. पुं., आत्मीयः, संबंधिन्, बान्धवः,
 बंधुः । वि., एकाकिन् २. अनुपम ।
 —वेगाना, सं. पुं., स्वकीयपरकीयाः (बहु.)
 २. मित्रबंधवाः (बहु.) ।
 यजमान, सं. पुं. (सं.) यज्ञपतिः, यष्टु, प्रतिन्,
 यज्ञ-कृत-कर्तृ २. दातिन्, दत्तु ।
 यजुर्वेद, सं. पुं. (सं.) अर्वाणां धर्मग्रंथविशेषः,
 यजुस् (न.), यजुः श्रुतिः (स्त्री.) ।
 यजुर्वेदी, सं. पुं. (सं.-दिन्) यजुर्विद् (पुं.) ।
 यज्ञ, सं. पुं. (सं.) यागः, अध्वरः, सबः-बनं,
 मखः, क्रतुः, सत्रं, हवनं, होमः यज्ञः-जिः,
 इज्या, इष्टिः (स्त्री.), समतंतुः, महः २. विष्णुः ।
 —कर्म, सं. पुं. [सं.-मन् (न.)] यज्ञ-क्रिया-
 कृत्यं २. कर्मकांडम् ।
 —कुंड, सं. पुं. (सं. पुं. न.) हवन-वेदो-कुंडम् ।
 —पति, सं. पुं. (सं.) दे. 'यजमान' ।
 —पशु, सं. पुं. (सं.) यज्ञियचरिः २. अधः
 ३. छागः ।

—पात्र, सं. पुं. (सं. न.) याग-भाजनं-भांडम् ।
 —भूमि, सं. स्त्री. (सं.) यागक्षेत्रम् ।
 —शाला, सं. स्त्री. (सं.) यज्ञ-सदन-मंदिरं-
 आगारम् ।
 —सूत्र, सं. पुं. (सं. न.) यज्ञोपवीतम् ।
 —स्तंभ, सं. पुं. (सं.) यागयूपः ।
 यज्ञांग, सं. पुं., (सं. न.) यज्ञभागः २. यज्ञ-
 साधनम्-सामग्री-उपकरणम् । (सं. पुं.)
 उदुम्बरः, जन्तुफलः २. खदिरः, दन्तधावनः
 ३. विष्णुः ।
 यज्ञागार, सं. पुं. (सं. न.) यज्ञ-शाला-वेदी-
 वेदिः (स्त्री.) ।
 यज्ञोपवीत, सं. पुं. (सं. न.) पवित्रं, सावित्री-
 यज्ञ-बद्ध-सूत्रं, द्विजायनी ।
 यति, सं. पुं. (सं.) यतिन्, जितेन्द्रियः,
 तापसः, परित्राजकः, सन्न्यासिन, योगिन,
 भिक्षुः, रक्तवसनः २. ब्रह्मचारिन् ।
 —धर्म, सं. पुं. (सं.) सन्न्यासः, गिश्वाचर्यम् ।
 यति, सं. स्त्री. (सं.) विरामः, विरतिः (स्त्री.),
 विश्रामः, पाठविच्छेदः (छंद.) ।
 यतिनी, सं. स्त्री. (सं.) सन्न्यासिनी, परित्रा-
 जिका २. विधवा ।
 यती, सं. पुं. (सं.-तिन्) दे. 'यति' 'सं. पुं.' ।
 यतीम, सं. पुं. (अ.) छ(ळे)मंडः, अनाथः,
 मातृपितृहीनः ।
 —खाना, सं. पुं. (अ. + फा.) अनाथालयः,
 छ(ळे)मंडालयः ।
 यत्न, सं. पुं. (सं.) प्रयत्नः, उद्योगः, उद्यमः,
 अध्यवसायः, चेष्टा-छितं, आ-प्र-यासः, परि-
 श्रमः, व्यवसायः २. उपायः, युक्तिः (स्त्री.)
 ३. चिचिस्ता, उपचारः, रोगप्रतिकारः ।
 —करना, क्रि. अ., प्र., यत् तथा चेष्टु (भ्वा. आ.)
 से.) परि- श्रम (दि. प. से.), अध्यव-व्यव-
 सो (दि. प. अ.), उद्यम (भ्वा. प. अ.),
 आयस् (भ्वा. दि. प. से.), प्रयत्न-परिश्रम-
 अध्यवसायं कृ ।
 —शील, वि. (सं.) यत्नवत्, उद्यमिन्, लक्षो-
 गिन्, आ-प्र-यासिन्, परिश्रम-उद्योग-कर्म-
 शील-पर-परायण इ. ।
 यत्र, अव्य. (सं.) यस्मिन् देशे-स्थले-स्थाने ।
 —तत्र, अव्य. (सं.) अत्र तत्र, इतस्ततः २.
 अनेकत्र, बहुत्र ।
 यथाशा, अव्य. (सं. न.) यथा-भाग-खण्डम्,

- भाग-अंश, अनुसार-अनुकूलम् २. यथायोग्यम्, यथोचितम् ।
- यथा, अव्य. (सं.) येन प्रकारेण, यथा रीत्या २. दृष्टान्त-उदाहरण, रूपरेखा-तया यथा हि, -वत्, इव, यद्वत्, -अनुरूपं, अनुसारम् ।
- काम, क्रि. वि. (सं. न.) यथा, इच्छं-इष्टं-ईकितं अभिनतम् ।
- क्रम, क्रि. वि. (सं. न.) क्रमेण, क्रमानुसारं-रेण ।
- तथा, क्रि. वि. (सं.) यथाकथञ्चित्, येन केन प्रकारेण ।
- मति, क्रि. वि. (सं. न.) यथावृद्धि, यथाज्ञानम् ।
- योग्य, वि. (सं.) यथोचित, यथाहं ।
- रुचि, क्रि. वि. (सं. न.) दे. 'यथाकाम' ।
- वत्, क्रि. वि. (सं.) यथोचितं, यथाहं, यथायुक्तं २. यथाविधि, नियमानुसारं ३. यथा-तर्क, यथ सत्यम् ।
- शक्ति, क्रि. वि. (सं. न.) यथा-बलं-सामर्थ्यं-श्रमम् ।
- शास्त्र, क्रि. वि. (सं. न.) शास्त्रानुकूलम् ।
- संभव, क्रि. वि. (सं. न.) यथाशक्यम् ।
- समय, क्रि. वि. (सं. न.) यथाकालं, कालानुसारम् ।
- साध्य, क्रि. वि. (सं. न.) यथा, शक्ति-सामर्थ्यम् ।
- स्थान, क्रि. वि. (सं. न.) स्थानानुकूलं, उचितस्थानेषु ।
- यथार्थ, वि. (सं.) सत्य, अवितथ, निर्दोष, निर्भ्रान्त २. उचित, उत्पन्न, युक्त । क्रि. वि. (सं. न.) युक्तं, यथाहं, सांप्रत, सम्यक् ।
- यथार्थता, सं. स्त्री. (सं.) सत्यता, निर्दोषता २. औचित्यं, युक्तता ।
- यथेच्छ, क्रि. वि. (सं. न.) 'यथाकाम' दे. । वि., (सं.) यथेष्ट, यथेप्सित, यथाकाम ।
- यथेच्छाचार, सं. पुं. (सं.) स्वेच्छाचारः, यथेष्टव्यवहारः ।
- यथेच्छाचारी, वि. (सं. -रिच्) स्वच्छन्द, स्वैर, स्वैरित्, अनिर्वजित ।
- यथेष्ट, वि. तथा क्रि. वि. दे. 'यथेच्छ' ।
- यथोचित, वि. (सं.) यथा, योग्य-अहं-युक्त । क्रि. वि. (सं. न.) यथा, योग्य-अहंम् ।
- यदा, अव्य. (सं.) यस्मिन् काले-समये ।
- कदा, अव्य. (सं.) काले काले, कदाचित्, कदापि ।

- यदि, अव्य. (सं.) श्वेत (यह वाक्यारंभ में नहीं आता) ।
- यद्गु, सं. पुं. (सं.) ययातिपुत्रः ।
- नन्दन, सं. पुं. (सं.) यद्गु-नाथः-श्रेष्ठः-पतिः-राजः, श्रीकृष्णः ।
- यद्यपि, अव्य. (सं.) षष्ठी वा सप्तमी से भी जैसे, यद्यपि दशरथ विलाप करता रहा तो भी राम वन को चला दिया = विलपति दशरथे (विलपतो दशरथस्य) रामो वनं ययौ ।
- यम, सं. पुं. (सं.) धर्मराजः, पितृपतिः, कर्तावः, यमुनाप्राय, वैवस्वतः, कालः, द्रुलधरः, अंतकः, धर्मः, महिषध्वजः, महिषवाहनः, जीवितेशः २. इन्द्रियनिग्रहः ३. बोनांगविशेषः, अहिंसास्त्वास्तेयम्रह्मचर्यापरिग्रहधर्मपालनं ४. वायुः ५. दे. 'यमज' ।
- वृत्, सं. पुं. (सं.) धर्मराजचरः ।
- पुर, सं. पु. (सं. न.) यमपुरी, यमलोकः ।
- राज, सं. पुं. (सं.) दे. 'यम' (१) ।
- यमक, सं. पुं. (सं. न.) शब्दालंकारभेदः (काव्य.), (सं. पुं.) संयमः २. दे. 'यमज' ।
- यमज, सं. पुं. (सं. जी) यमौ, यमकौ, यमलौ २. अधिनीकुमारी (जोड़े में से एक) यमः, यमलः । वि., यम, यमक, यमल ।
- यमल, सं. पुं. तथा वि., दे. 'यमज' ।
- यमुना, सं. स्त्री. (सं.) कालिंदी, कलिंद, कन्या-नदिनी, यमी, यमनी, सूर्यसुता, तरणितनुजा २. दुर्गा ।
- ययाति, सं. पुं. (सं.) नद्वृषपुत्रः, पुरुषित्, चंद्रवंशिनृपविशेषः ।
- यरक्रान, सं. पुं. (अ.) पाण्डु, रोग-आमयः, कामला, पाण्डुकः ।
- यव, सं. पु. (सं.) सित-तीक्ष्ण, शूकः, सेष्यः, दिग्भ्यः, अक्षतः, धान्यराजः, तुरगप्रियः, शकुः, महेश्वरः, पवित्रधान्यम् ।
- क्षार, सं. पु. (सं.) यवजः, पाक्यं, यवाग्रजः ।
- यवन, सं. पुं. (सं.) यूनानवासिन् २. दे. 'मुसमनान' ३. विदेशीयः ४. म्लेच्छः ५. वेगः ६. वेगवान् अव्य. ।
- यवनानी, सं. स्त्री. (सं.) १-२. यवन-यूनान-भाषा-लिपिः (स्त्री.) ।
- यवनारि, सं. पुं. (सं.) कृष्णः, नन्दनन्दनः, वायुदेवः, मधुसूदनः ।

यवनिका

[४६०]

यारनी

यवनिका, सं. स्त्री. (सं.) जवनिका, भपटी, काष्ठपटः २. तिरस्कृतिणी, प्रतिस्तीरा, व्यवधानम् ।

यवनी, सं. स्त्री. (सं.) यवनभार्या २. यवन-जातेनारी ।

यवस, सं. स्त्री. (सं. पुं. न.) वासः, श्रावः, तृणम् २. पलः, पलालः, धान्यतृणम् ।

यवागू, सं. पुं. (सं. स्त्री.) उष्णिका, शृणा, विलेपी, तरला ।

यश, सं. पुं. [सं. यशस् (न.)] ख्यातिः-कीर्तिः-विश्रुतिः-प्रसिद्धिः (स्त्री.), श्लोकः, विश्रावः, अयिख्यानं, समाख्या ।

—गाना, मु., प्रशंसं (भ्वा. प. से.), श्लाघ (भ्वा. भा. से.) २. कृतं वा (क्. उ. अ.), उपकारं विद् (अ. प. से.) ।

यशास्त्री, वि. (सं. स्विन्) कीर्तिमत, प्रवि-ख्यात, लोकविश्रुत, सुशंस, यशोधर, कीर्तित, पुण्यलोक, प्रसिद्ध । [यशस्विनी (स्त्री.) = कीर्तिमती, विख्याता इ.] ।

याष्ट, } सं. स्त्री. (सं.) दंडः, लगुडः, यष्टी
याष्टिका, } २. हारभेदः ।

यह, सर्व. (सं. इह >) इदम्, एतद् ।

यहाँ, कि. वि. (सं. इह) अत्र, अस्मिन् देशे-स्थाने ।

—तक, कि. वि., एतद्-अत्र-पर्यंतं-वावत्-अवधि-अंतम् ।

—यहाँ, कि. वि., अत्र तत्र, इतस्ततः, अत्रामुत्र ।

—से, कि. वि., इतः, अस्मात् स्थानात् २. अतः इतः, परं-ऊर्ध्वं-प्रभृति ।

यही, कि. वि. (हि. यह + ही) अयं-इयं-इदं-एषः-एषा-एतद्-एव ।

यहीं, कि. वि. (हि-यहाँ + ही) इहैव, अत्रैव, अस्मिन्नेव स्थाने ।

यहूदी, सं. पुं. (इरानी, यहूद्) यहूद्, यस्मिन्-भाषा-लिपिः (स्त्री.) ।

यौ, कि. वि., दे. 'यहाँ' ।

या, अव्य. (का.) वा, अथवा, यद्वाः (प्रश्न करने में) सु ।

याकृत, सं. पुं. (अं.) दे. 'ल' (रत्न) ।

याग, सं. पुं. (सं.) दे. 'यज्ञ' ।

याचक, सं. पुं. (सं.) आर्थिन्, प्रार्थकः २. भिक्षुः, भिक्षुकः ।

याचना, सं. स्त्री. (सं.) याचनं, याचना, प्रार्थनं-ना । क्रि. स., दे. 'भागना' ।

याजक, सं. पुं. (सं.) याजयित्, पुरोहितः ।

याज्ञवल्क्य, सं. पुं. (सं.) वैशंपायनशिष्यः, वात्सलेयः २. जनकसभ्यो योगीश्वरयाज्ञवल्क्यः ३. रत्नकारविशेषः ।

याज्ञिक, सं. पुं. (सं.) यजमानः, यष्टु २. याजयित् । वि., यज्ञि(शी)य, यागविषयकः [याज्ञिकी (स्त्री.)] ।

यातना, सं. स्त्री. (सं.) पीडा-वेदना-व्यथा-अतिशयः २. चमदण्डपीडा ।

यातायात, सं. पं. (सं. न.) गतागतं, आवा-तनियान्तं २. प्रेत्यभावः, पुनर्जनन् (न.) ।

यात्रा, सं. स्त्री. (सं.) प्रस्थानं, प्रयाणं, ब्रज्या-गमः-मनः, प्रवासः, देश-भ्रमणं-पर्यटनं, प्रस्थितिः (स्त्री.), अध्व-नार्थं, नामनं-कमणम् ।

—करना, क्रि. अ., प्र-या (अ. प. अ.) प्रवस् (भ्वा. प. अ.), देशे अट् (भ्वा. प. से.), यात्रां कृ ।

यात्री, वि. (सं. त्रिन्) पथिकः, पथिलः, पाथः, अध्वनः, अध्व-यः, पादविकः, प्रवासिन्, मार्गिकः, यात्रिकः, सारगिकः २. तीर्थयात्रिन्, कार्पटिकः ।

याद्, सं. स्त्री. (का.) धारणा, स्मृतिः-स्मरण-शक्तिः (स्त्री.) २. स्मरणम् ।

याद्गार, सं. स्त्री. (का.) स्मृतिविहं, स्मरणम् ।

याद्दाश्त, सं. स्त्री. (का.) स्मृतिः (स्त्री.), धारणा. २. स्मरण, स्मरणक-टिप्पणी ।

यादत्र, सं. पुं. (सं.) यदुर्वक्ष्यः, यदुर्वशजः २. श्रीकृष्णः । वि., यदुसंबंधिन् ।

यान, सं. पुं. (सं. न.) प्रवहणं, रथः, स्पंदनः, शताङ्गः, वहनं, वहान् ।

यानी-ने, अव्य. (अ.) अयं आशयः, एत भवः, इदं तावत्पर्यं, अर्थात् ।

यापन, सं. पुं. (सं. न.) कालक्षेपः, समयालि-बहनम् ।

यान्, सं. पुं. (का.) दे. 'यट्ट' ।

याम, सं. पुं. (सं.) दे. 'यहर' २. तमयः ।

यामिनी, सं. स्त्री. (सं.) रात्रि, रजनी, निशा ।

यार, सं. पुं. (का.) मित्रं, सुहृद् (पुं.) २. उपपतिः, जारः ।

यारनी, सं. स्त्री. (का. यार) उपपत्नी-भुविष्या २. प्रिया, दयिता ।

याराना, सं. पुं. (फ्रा.) सख्यं, मित्रता
यारी, सं. स्त्री.) २. अथर्व्य-अनुचित, प्रणयः-
प्रेमन् (पुं. न.), अन्तरागः ।

याल, सं. स्त्री. (तु.) दे. 'अथ'क' ।

यावक, सं. पुं. (भं.) सवतुः २. अलक्तकः ।

यावजीवन, किं. वि. (सं. न.) आ, मरण-
मृत्योः, यावज्जन्म, यावज्जीवन् ।

यावत्, वि. (सं.) दे. 'जिनता' २. समस्त,
सकल (अव्य.) पर्यन्तम्, आ- समाप्त में वा
पंचमी युक्त) ।

यावनी, सं. स्त्री. (सं.) करकशालिनामकः

शुद्धः, गुडवृणभेदः, वि. स्त्री. यवन-सम्बन्धिनी ।

युक्त, वि. (सं.) उचित, उपपन्न, योग्य,

जीवपत्तिक २. संश्लिष्ट, संवृत, संलग्न, मिलित ।

युक्ति, सं. स्त्री. (सं.) उपायः, प्र, योगः-युक्तिः

(स्त्री.) २. कौशलं, चातुर्यं ३. रीतिः (स्त्री.),

प्रथा ४. न्यायः, नीतिः (स्त्री.) ५. अनुमानं,

तर्कः ६. हेतुः, कारणं ७. ऊहा, तर्कः ८. योगः,

संश्लेषः ।

—युक्त, वि. (सं.) उचित, उपपन्न न्याय्य,
यथार्थं ।

युग, सं. पुं. (सं. न.) द्वयं, द्वितयं, युगमं,

युगलं, युतकं, वमकं २. समयः ३. सुदीर्घ-

कालपरिमाणविशेषः, कृतादिकालचतुष्टयं (दे.

'कलियुग' आदि) ४. धुर (स्त्री.), धुवी,

प्रासंगः, युगः-नां ५. शारः-रिः, खेलनी ६. एक-

कोष्ठकस्थं शारद्वयम् ।

—युग, किं. वि. (सं. न.) निरंतरं, सदा,

शाश्वत्, नित्यं, चिरं, (सब अव्य.) ।

—धर्म, सं. पुं. (सं.) युगानुरूप, कर्तव्यं-

आचारः ।

युगपत्, अव्य. (सं.) सहैव, समकालम् ।

युगल, सं. पुं. (सं.) दे. 'युग' (१) । २. दंपती

(द्वि.) जंपती ।

युगांत, सं. पुं. (सं.) महाप्रलयः, कल्पांतः

२. सत्यादियुगविशेषस्य समाप्तिः (स्त्री.) ।

युगांतर, सं. पुं. (सं. न.) अन्य-द्वितीय, युगं

२. परिवर्तितः समयः ।

—उपस्थित करना, मु., संवंधा परिवृत्त (द्वे.)

क्रांति कृ ।

युग्म, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'युग' (१) ।

युत, वि. (सं.) युक्त, संलग्न, सहित, मिलित,

संश्लिष्ट ।

युद्ध, सं. पुं. (सं. न.) संग्रामः, आघोषन्,

अन्वं, प्रथमं, मूर्धं, आस्त्रंदनं, संख्यं, समरं,

रणः, विग्रहः, संप्रहारः, अभिसंपातः, कलिः,

आहवः, विघ्नारः, आजिः (पुं. स्त्री.) बलजं,

युध् (स्त्री.) ।

—काल, सं. पुं. (सं.) संगर-संग्राम, समयः-

कालः-वेला ।

—क्षेत्र, सं. पुं. (सं. न.) युद्ध-रण-संगर, भूः

(स्त्री.)-भूमिः (स्त्री.)-क्षेत्रम्-अजिरन् ।

—विद्या, सं. स्त्री. (सं.) रण-समर-संगर-

शास्त्रं-विद्यनम् ।

—वीर, सं. पुं. (सं.) भटः, योधः, शूरः,

योद्धृ ।

युधिष्ठिर, सं. पुं. (सं.) पांडवराजः, अजात-

शत्रुः, धर्मपुत्रः, शूरदारिः, अजमोढः ।

युरेनियम, सं. पुं. (अ.) किरणधातुः, वरु-

णिकम् ।

युवक, सं. पुं. (सं.) दे. 'युवा' ।

युवती, सं. स्त्री. (सं.) युवतिः (स्त्री.), तरुणी,

यूनी, धनि(नी)का, मध्यमा, मिका, वयस्था-

वर्षा, ईश्वरी, वृष्टरजस् (स्त्री.), प्रातयौवना ।

युवराज, सं. पुं. (सं.) राज्याधिकारिन्, राज-

कुमारः ।

युवा, सं. पुं. (सं. युवन्) तरुणः, तल्लुनः, वय-

(यः) स्थः ।

यू, अव्य., दे. 'यौ' ।

यूका, सं. पुं. (सं.) यूकः, कोशकीटः, स्वेदजः,

बालकृमिः, पाली-लिः (स्त्री.), षट्पदः ।

दे. 'जू' २. दे. 'खटमल' ।

यूथ, सं. पुं. (सं. न.) कुलं, वृद्धं, गणः, समजः,

सजातीयवस्तुसमूहः २. सैन्यं, दलः-रुम् ।

—पति, सं. पुं. (सं.) यूथ, पः-नाथः २. दल-

पतिः ।

यूनान, सं. पुं (ग्रीक, आषोनिया) *यूनानः,

यवनदेशः ।

यूनानी, वि. (हि. यूनान) यवनदेशसंबन्धिन् ।

सं. स्त्री., (१-२) यवनदेश-यूनान, भाषा-

त्रिक्रिस्ता-प्रणाली । सं. पुं., यवनदेशीयः,

यूनानवासिन् ।

यूनिवर्सिटी, सं. स्त्री. (अं.) विश्वविद्यालयः ।

यूप, सं. पुं. (सं.) बह-भाग, स्तंभः २. वि-

जयसामः, कीतिस्तंभः ।

यूरोप

[४६२]

यौनि

यूरोप, सं. पुं. (अं. यूरोप) *यूरोपः, महाद्वीप-विशेषः ।

यूरोपियन, वि. (अं.) *यूरोपीय, यूरोप-संबन्धित-विषयक । सं. पुं., यूरोपीयः, यूरोप-वासिन् ।

यूष, सं. पुं. (सं. पुं. न.) जूषःपं, द्विदल-क्वथरसः । दे. 'शोरब' ।

ये, सर्व. (हि. यह) इमे-एते, इदम्, एतद् के बहुवचन के रूप ।

यों, अव्य. (सं. एवमेव >) इत्थं, एव, अनेन प्रकारेण, एतया रीत्या ।

—**तो**, क्रि. वि. प्रायः, प्रायशः, प्रायेण २. साधारण्येन, सामान्यतः ।

—**ही**, क्रि. वि., एवमेव, इत्थमेव २. व्यर्थ, मुधा, निष्प्रयोजनं ३. अकारण, अहेतुकम् ।

—**ही सही**, क्रि. वि., एवमस्तु, एव भवतु, तथास्तु ।

योग, सं. पुं. (सं.) चित्तवृत्तिनिरोधः, मनःस्थैर्यं २. दर्शनशास्त्रविशेषः ३. मोक्षोपायः, मुक्तियुक्तिः (स्त्री.) ४. संधिः, संगः, सं(समा)-गमः, संहतिः (स्त्री.), संयोगः, संश्लेषः ५. उपायः ६. औषधं ७. धनं ८. लाभः ९. शुभ-मंगल, अवसरः-मुहूर्तः (न्) १०. दूतः, चरः ११. बलीवर्दशकटी १२. चातुर्यं १३. वाहनं १४. परिमाणः १५. नियमः १६. उपयुक्तता १७. सामानुपायचतुष्टयं १८. वशीकरणोपायः १९. ध्यानं, चिन्तनं २०. संबंधः २१. धनोपार्जनवर्द्धने २२. सौहार्दं २३. वैराग्यं २४. संकलनं, परिसंख्या, पिड-कारणं (गणित) २५. सौकर्यं २६. तिथिवार-नक्षत्रादीनां स्थितिविशेषः (ज्यो.) ।

—**क्षेम**, सं. पुं. (सं. न.) अनागतानयनागत-रक्षणं (न. द्वि.), प्राप्तिरक्षणं । जीवन्निर्वाहः २. मंगलं ३. लाभः ४. राष्ट्रसुख्यवस्था ५. दायदेषु अविभाज्यं वस्तु (न.) ।

—**निद्रा**, सं. स्त्री. (सं.) योगसमाधिः २. नीरगतिः (स्त्री.) ।

—**फल**, सं. पुं. (सं. न.) संकलः, पिडः, परिसंख्या (गणित) ।

—**बल**, सं. पुं. (सं. न.) तपोबलं, योग-शक्तिः (स्त्री.) ।

योगांग, सं. पुं. (सं. न.) योग, साधनानि-

उपायाः (पुं.) [यमनियम'सनप्राणायाम-प्रत्याहारधारणाध्यानसमाधयोऽष्टावंगानि ।

योगांजन, सं. पुं. (सं. न.) सिद्धांजनं, भृग-भस्वपदार्थदर्शककज्जलम् २. नेत्ररोगनाश-कांजनम् ।

योगाभ्यास, सं. पुं. (सं. न.) योगांगानुष्ठानं, योगसाधनम् ।

योगासन, सं. पुं. (सं. न.) ब्रह्मासनं, ध्यानासनम् ।

योगिनी, सं. स्त्री. (सं.) योगाभ्यासिनी, तपस्विनी २. रण-पिशाची-पिशाचिका ।

योगी, सं. पुं. (सं. गिन) योगाभ्यासिन, तपस्विन्, तापसः, यतिः, मुनिः, वैरागिन्-गिकः, संन्यासिन् ।

योगीश्वर, सं. पुं. (सं.) योगीन्द्रः, योगिराजः ।

योगेश्वर, सं. पुं. (सं.) श्रीकृष्णः २. शिवः ३. योगेन्द्रः, सिद्धः, योगेशः ।

योग्य, वि. (सं.) क्षम, शक्त, समर्थ, पात्रं २. सुशील, श्रेष्ठ, ३. चतुर, दक्ष, निपुण ४. उचित, उपपन्न, युक्त ।

योग्यता, सं. स्त्री. (सं.) क्षमता, समर्थ्यं २. चातुर्यं, नैपुण्यं ३. औचित्यं, युक्तता ।

योग्या, सं. स्त्री. (सं.) युवती, तरुणी २. अभ्यासः ३. शल्यक्रियाभ्यासः ।

योजक, वि. (सं.) संयोजक, सम्मेलक, संश्लेषक । सं. पुं. डमकमध्यम्, बृहद्ब्रह्मखण्ड-युग्मयोजकसूक्ष्मभूनागः ।

योजन, सं. पुं. (सं. न.) (१-३) द्वि-चतुः-अष्ट-कोशी ४. योगः ५. संयोजनम् ।

योजना, सं. स्त्री. (सं.) उपायः, कल्पना, प्रयोगः, प्रयुक्तिः (स्त्री.) २. नियुक्तिः (स्त्री.) ३. रचना, विन्यासः ४. व्यवस्था, आयोजनं ।

योद्धा, सं. पुं. (सं. योद्धृ) भटः, योधः, योधा,] वीरः, शूरः, सैनिकः, आनुधिकः, युद्ध-शस्त्र-उपजीविन्, अस्त्र-शस्त्र-धरः-भृत्-आजीवः ।

यौनि, सं. स्त्री. (सं. पुं. स्त्री.) भगं, वरांगं, स्मरमंदिरं, रतिगृहं, अपहरं, स्मर-कंदर्प, कूपः नारी, मुह्यं-उपस्थं, संसारमार्गः २. कारणं ३. उद्गमः, उद्भवः, निर्गमः ४. प्राणिजातिः (स्त्री.) ५. देहः ६. गर्भः ७. जन्मन् (न.) ८. गर्भाशयः ।

योनिज

[४६३]

रंगनेत्राला

योनिज, वि. (सं.) भगज, योनिसंभव ।
सं. पुं., (सं.) जरालुजः अंडजो वा
जीवः ।

योरोप, सं. पुं., दे. 'यूरोप' ।

यौगिक, सं. पुं. (सं.) व्युत्पन्नः, प्रकृतिप्रत्यय-
योगलभ्यार्थवानकः शब्दः २. समस्तशब्दः ।

यौतक, सं. पुं. (सं. न.) यौतुकं, युतकं,
दे. 'दहेज' ।

यौवन, सं. पुं. (सं. न.) तारुण्यं, पूर्व-प्रथम-
नव-वय (न.) ।

काल, सं. पुं. (सं.) यौवन, दशा-पदवी,
तारुण्यावस्था ।

र

र, देवनागरीवर्णमालायाः सप्तविंशो व्यंजनवर्णः,
रेफः, रकारः ।

रंज, वि. (सं.) दरिद्र, निर्धन २. कृपण,
कदर्यं । सं. पुं., मिथुकः २. दरिद्रः ।

रंग, सं. पुं. (सं.) रागः, वर्णः २. वर्णकः-का,
लेपः ३. नृत्यगीते (न. द्वि.), संगीतं ४. नाट्य-
रंग, क्षेत्रं, शाला-गृह-मंडपः-स्थलं-भूमिः (स्त्री.)

५. युद्ध-रण, क्षेत्रं-भूमिः ६. शरीर-रवण, वर्णः

७. यौवनं ८. सौंदर्यं ९. प्रभावः १०. कौतुकं,
क्रीडा ११. युद्धं १२. कामचारः, हृदयः (पुं.)

१३. आनंदः १४. दशा १५. कांडं, अदभुत-
व्यापारः १६. कृपा १७. अनुपातः १८. प्रकारः,
रीतिः (स्त्री.) ।

—**करना**, क्रि. स., दे. 'रंगना' ।

—**चढ़ना**, क्रि. अ., व. 'रंगना' के कर्म. के रूप ।

—**हंग**, सं. पुं., आकारः, रूपं, २. दशा
३. आचारः ।

—**दार**, वि., रंजित, वर्णित, सरागः, रागयुक्त,
चित्रित ।

—**बिरंगना**, वि., अनेक-वहु-नाना-रंग-वर्णं,
चित्र, कर्तुर, शकल । २. विशिष्ट, अनेक-वहु-
नाना-विध-प्रकारक ।

—**भूमि**, सं. स्त्री. (सं.) उत्सव, स्थल-स्थानं
२. क्रीडा-कौतुक, स्थलं ३. दे. 'रंग' (४) ।

—**र(रे)लियाँ**, सं. स्त्री., आमोद-प्रमोदं, परि-
हासः, विनोदः, लीला, हासिका, विहाटः,
क्रीडा ।

—**रस**, सं. पुं., दे. 'रंगरलियाँ' ।

—**रसिया**, सं. पुं., क्रीडाप्रियाः, विलासिन,
विनोदिन, आनंदिन, हास्यशीलः ।

—**रूप**, सं. पुं. (सं. न.) आकारः, आकृतिः
(स्त्री.), रूपम् ।

—**रंज**, सं. पुं. (फ़ा.) रंजकः, रंगाजीवः ।
[-जिन (स्त्री.) = रंजिका] ।

—**शाला**, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'रंग' (४) ।

—**साज**, सं. पुं. (फ़ा.) रंजकः, वर्णचारकः,
कृणुः, वर्णाटः, तौलिकः, तौलिकिकः, रंग-
कारः-जीवकः-आजीवः २. रंग-निर्मातृ-रच्य-
यित् कारः ।

—**साजी**, सं. स्त्री. (फ़ा.) रंजनं, वर्णनं,
रंजकता, तौलिकता ।

—**महल**, सं. पुं. (सं + अ.) रंगमवगं,
प्रमोद-प्रासादः ।

—**उड़ना** या **उत्तरना**, मु., पांडुच्छाथ (वि.)
जन् (दि. आ. से.), विवर्णतां प्रपद (दि.
आ. अ.), मलिन-म्लान-मंद-प्रम-कृति-युति
जन् ।

—**जमाना** या **बाँधना**, मु., स्वगौरवं प्रति-छा
(प्रे. प्रतिष्ठापयति), निजप्रतिष्ठां प्रद (प्रे.) ।

—**पीला** (**फ़क**, **फीका** या **मंद**) होना,
मु., दे. 'रंग उड़ना' ।

—**बदलना**, मु., कुष् (दि. प. अ.), कुष्
(दि. प. से.) ।

—**में भंग पड़ना**, मु., आनंदोत्सवः विह्व
(प. नं.), रंगभंगो जन् ।

—**र(रे)लियाँ मनाना**, मु., मुद (भ्वा. आ.
से.), रम (भ्वा. आ. अ.), विह्व (भ्वा. प.
अ.), नंद-क्रीड-विलस् (भ्वा. प. से.) ।

रंगत, सं. स्त्री. (सं. रंगः >) दे. 'रंग' (१-६) ।
२. आनंदः, स्वादः ३. दशा, अवस्था ।

—**छाना**, मु., परिवर्तनं जन् (प्रे.), क्रांति उत्पद
(प्रे.) ।

रंगना, क्रि. स. (सं. रंगः >) रंज (प्रे.),
दिव्-वर्णं (चु.) २. दे. 'मोहना' क्रि. स.
(१) तथा क्रि. अ. (२) । सं. पुं., रंजनं,
चित्रणं, वर्णनम् ।

रंगने योग्य, वि. रंजनीय, चित्रयितव्य,
वर्णनीय ।

रंगनेत्राला, सं. पुं., दे. 'रंगरेज' तथा 'रंगसाज' ।

रंगरूट

[४६४]

रक्त

रंगरूट, सं. पुं. (अं. रिकट) नव-नूतन, सैनिकः २. नव-छात्रः-शिक्षितः-शिष्यः, शैक्षः ।
 रंगरेज, सं. पुं., दे. 'रंग' के नीचे ।
 रंगवाई, सं. स्त्री. (हिं. रंगवाना) रंजन-वर्णन-भृतिः (स्त्री.) भृत्या ।
 रंगवाना, कि. प्रे., व. 'रंगना' के प्रे. रूप ।
 रंगाई, सं. स्त्री. (हिं. रंगना) दे. 'रंगवाई' २. दे. 'रंगना' सं. पुं. ।
 रंगा हुआ, वि., रंजित, चित्रित, वर्णित, रागयुक्त ।
 रंगी, वि. (सं. गिन्) विनोदिन्, आनन्दिन्, उद्भासिन् २. संरंग. रंगयुक्त *३. रंजक, ४. अनुरक्त ५. अभिनेतृ ।
 रंगीन, वि. (फ्रा.) दे. 'रंगदार' २. त्रिलासिन् आनन्दिन्, विहसिन्, विनोदिन्, रसिक ३. चमत्कृत, अलंकृत (भाषा आदि) ।
 रंगीनी, सं. स्त्री. (फ्रा.) सरागता, सचिचता २. शृंगारः, अलंक्रिया ३. अनुरागिता, कामुकता ।
 रंगीला, वि. (सं. रंगः >) दे. 'रंगीन' (२.) । २. सुंदर ३. अनुरागिन्, कामुक ।
 रंगोपजीवी, सं. पुं. (सं. विन्) नटः, अभिनेतृ, शैल्यः, भरतपुत्रकः ।
 रंच, रंचक, वि. (सं. रंच >) अल्प, स्तोक ।
 रंज, सं. पुं. (फ्रा.) शोकः, परितपः, आतिः (स्त्री.) ।
 रंजक, सं. पुं. (सं.) दे. 'रंगसाज' (२.) दे. 'रंगरेज' । वि. (सं.) रंगकार, वर्णचारक २. आह्लादक, आनंदप्रद ।
 रंजन, सं. पुं. (सं. न.) चित्रणं, वर्णनं २. आह्लादनं, परितोषणम् ।
 रंजित, वि. (सं.) वर्णित, चित्रित, सराग २. आह्लादित, सहर्ष ३. अनुरक्त, आसक्त ।
 रंजिश, सं. स्त्री. (फ्रा.) वैरं, शत्रुता २. अप-वि-रागः, प्रसाद-प्रीति-अभावः ।
 रंजीदगी, सं. स्त्री. (फ्रा.) दे. 'रंजिश' (२.) । २. शोकः ।
 रंजीदा, वि. (फ्रा.) शोकग्रस्त, परितप २. विषाण, प्रसन्नताशून्य ।
 रंड, वि. (सं.) धूर्तं, बखक २. विफल, निष्फल ३. छिन्न-विकल, अंग । सं. पुं. (सं.) निर-पत्न्यः, निरस्तानः २. निष्फल-अफल, वृक्षः-तरुः ।

रंडा, सं. स्त्री. (सं.) विधवा. गत-मृत-भर्तृका, विश्वरता, कात्यायनी । सं. पुं. (पं०) दे. 'रंडुआ' ।
 रंडापा, सं. पुं. (सं. रंडा) वैधव्यं, दे. ।
 रंडी, सं. स्त्री. [(पं.) विधवा सं. रंडा >] वेश्या, भोग्या, गणिका ।
 —बाज, सं. पुं. (हिं + फ्रा.) वेश्या-गणिका-गामिन् ।
 —बाजी, सं. स्त्री. (हिं + फ्रा.) वेश्यागमनं, रम्भारमणम् ।
 रंडुआ-वा, सं. पुं. (हिं. रंड) मृतपत्नीकः, गतभार्यः, विधुरः ।
 रंदा, सं. पुं. (फ्रा.) तक्षणी, त्वक्षणी ।
 —फेरना, कि. स्त्री., तक्षण्या गमी-इलक्षणीक, तक्ष (भ्वा. स्वा. प. से.) ।
 रंध, सं. पुं. (सं. न.) छिद्रं, विवरं, बिलं २. धोनिः (स्त्री.) ३. दीपः ।
 रंवा, सं. पुं. (पं.) खुरप्रः ।
 रंभा, सं. स्त्री. (सं.) कदली, दे. 'केला' २. गोध्वनिः ३. अप्सरोविशेषः ४. वेद्या ।
 रंभाना, कि. अ. (सं. रंभणं) रंभ-रेभ् (भ्वा. आ. से.), शृद् नद् (भ्वा. प. से.) । सं. पुं., रंभा, हंवा-भा, रंभणम् ।
 रअव्यत, सं. स्त्री. (अ.) प्रजा २. कृषीबलः ।
 रईम्, सं. पुं. (अ.) धनाढ्यः, धनिकः, रयीशः २. भूस्वामिन्, क्षेत्रपतिः ।
 रकबा, सं. पुं. (अ.) क्षेत्रफलम् ।
 रक्रम, सं. स्त्री. (अ.) संख्या, परिमाणं २. संपत्तिः (स्त्री.), धनं ३. प्रकारः, विधा ।
 रकाव, सं. स्त्री. (फ्रा.) (सादिनः) पादाधारः *पादधानं २. दे. 'तदतरी' ।
 —पर पैर रखना, गु., गंतुं सज्जीभू ।
 रकावी, सं. स्त्री. (फ्रा.) दे. 'नदरौ' ।
 रकीव, सं. पुं. (अ.) सपत्न्यः, प्रप्यथिन्, प्रति-स्पद्धिन् ।
 रक्त, सं. पुं. (सं. न.) शोणं, शोणितं, लो(रो)-हितं, कोहं, कथिरं, अर्धं, अमृत् (न.), क्षतजं अंगजं, स्वर्जं, नर्मजं २. कुल्लुमं ३. तार्त्रं ४. सिद्धरं ५. पत्रं ६. हिम्लुम् । वि., अनुरक्त, आसक्त २. रक्त-लोहित, वर्णं ३. लंपट, आमिन्, कामुक ।
 —कमल, सं. पुं. (सं. न.) कोकनदं, रवि-

- प्रियं, रक्त-अरुण शोण, अंभोज-मल-पस-वारिजम् ।
- कोट, सं. पुं. (सं. रक्तकोटः) रक्तकुष्ठ-ध्रं, विलपः ।
- चंदन, सं. पुं. (सं. न.) अर्क-जु-शोणित-क्षुद्र, चंदनं, तिलपर्णः, रंजनं, ताम्रवृक्षः, लोहितम् ।
- पात, सं. पुं. (सं.) रुधिर-रक्त, स्रवण-सावः-क्षरणं २. शोण-रक्त, पातनं-सावणं-३-नर-नृ, इत्या-पातः ।
- पायी, वि. (सं. -यिन्) शोणणः, रक्तपः । सं. पुं., मत्स्यः, दे. 'खटमल' ।
- पित्त, सं. पुं. (सं. न.) रोगभेदः २. दे. 'नकासीर' ।
- प्रदर, सं. पुं. (सं.) प्रदरभेदः, नारीरोग-भेदः ।
- प्रमेह, सं. पुं. (सं.) रक्तमेहः, मूत्ररोगभेदः ।
- बहना, कि. अ., रक्तं ध्रु (भ्वा. प. अ.)-क्षर (भ्वा. प. से.) ।
- बहाना, कि. स., रक्तं शोणं पद-लु-मुन् (प्रे.), नृ (प्रे.), हन् (अ. प. अ.) ।
- मोचन, सं. पुं. (सं. न.) रक्त, मोक्षणं-मोक्षः, शोणितस्रवः, दे. 'कस्द' ।
- लोचन, सं. पुं. (सं.) कपोतः । वि., लोहितेश्रण ।
- वर्ण, वि. (सं.) अरुण, लोहित, शोण, रक्त ।
- स्त्राव, सं. पुं. (सं.) रुधिरक्षरणं, असृक्-स्रुतिः (स्त्री.) ।
- हीन, वि. (सं.) शोणशून्य, रुधिररहित २. निर्वीर्यं, निस्तेजस्क ।
- रक्षक, सं. पुं. (सं.) शरण्यः, शरणं-पः, पालः (समासात्) रक्षित, रक्षिन्, ज्ञातृ, पातृ, गोप्य २. प्रहरिन्, यामिकः ३. पालकः, संवर्द्धकः, पोषकः ।
- रक्षण, सं. पुं. (सं. न.) परि-त्राणं, गोपनं, रक्षा, गुप्तिः २. पालनं, पोषणं, संवर्द्धनम् ।
- रक्षणीय, वि. (सं.) रक्ष्य, रक्षितव्य, ज्ञातव्य, गोपनीय २. पालनीय, पोषणीय ।
- रक्षा, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'रक्षण' (१) । २. कष्ट-निवारक-व्ययं, रक्षिका ।
- करना, कि. स., अव-गुप्-रक्ष (भ्वा. प. से.), पा (अ. प. अ.) ।

- वंधन, सं. पुं. (सं. न.) श्रावणी, पर्वविशेषः २. श्रावणपूर्णिमायां वेदस्वाध्यायोपाकर्मन् (न.) ।
- रक्षित, वि. (सं.) ज्ञात, ज्ञाप, गुप्त, गोपायित, पात, अत, अक्षित २. प्रतिपालित, पोषित ३. स्थापित ।
- रखना, कि. स. (सं. रक्षणं >) न्यस् (दि. प. से.), निक्षिप् (जु. प. अ.), निषा (जु. उ. अ.), स्था (प्रे. स्थापयति) २. रक्ष-अव-गुप् (भ्वा. प. से.), श्रै (भ्वा. आ. अ.) ३. संचि (स्वा. उ. अ.), संग्रह (क्. उ. से.) ४. आधीकृ, उपनिषा (जु. उ. अ.), न्यस् ५. धृ (जु.), भृ (जु. उ. अ.) ६. आत्मसात-स्वायत्तीकृ ७. (गौ आदि) अस (अ. प.) विद (दि. आ. अ.)-वृत् (भ्वा. आ. से.) ८. निचुज् (जु.), रु. प. अ.) ९. विलंब (प्रे.), व्याक्षिप् (जु. प. अ.) १०. उपपत्तित्वेन उपपत्तीत्वेन या स्वीकृ ११. अव्ययेन संचि । सं. पुं., न्यसनं, निक्षेपणं, निधानं, स्थापनं २. रक्षणं, गोपनं, ३. संचयनं, संग्रहणं ४. आधीकरणं, उपनिधानं ५. धारणं, भरणं ६. आत्मसात्करणं ७. नियोजनं, ८. विलंबनं ९. रखनी, सं. स्त्री. (हि. रखना) दे. 'रखेली' ।
- रखने योग्य, वि., न्यसनीय, स्थापयितव्य, रक्षितव्य, संचेय, उपनिषेय, धार्यं, नियोज्य ।
- रखनेवाला, सं. पुं., निधातृ, स्थापकः, रक्षकः, संचायकः, उपनिषायकः, धारकः ३. ।
- रखवाई, सं. स्त्री. (हिं. रखना) रक्षा-भृतिः (स्त्री.) भृत्या ।
- रखवाना, कि. प्रे., व. 'रखना' के प्रे. रूप ।
- रखवाला, सं. पुं. (हिं. रखना) दे. 'रक्षक' (१-२) ।
- रखवाली, सं. स्त्री. (हिं. रखवाला) दे. 'रक्षण' (१) ।
- रखा हुआ, वि., गृह्यता, निहित, रक्षित, संचित, उपनिहित ३. ।
- रखेली, सं. स्त्री (हिं. रखना) उप-पत्नी-भार्या-कल्पत्रम् ।
- रग, सं. स्त्री. (का.) धमनी, नाडी, रक्तवा-हिनी, शिरा, इलिका ।
- में, मु., सर्वत्रिन्वपि शरीरे ।
- से थाकिक्र होना, मु., सम्यक्-सु-साधु-शा (क्. उ. अ.) परिनि (स्वा. उ. अ.) ।

—रेखा, सं. पुं. (का.) शरीर, अवयवाः-अङ्गानि (बहु.) २. पत्र, पत्रव, नाड्यः (स्त्री. बहु.) ।

रगद, सं. स्त्री. (हिं. रगदना) दे. 'रगदना' सं. पुं. । २. त्वग्भंगहीन-सुद, जगः (णं) ३. कलहः, विवादः ४. विकट, परिश्रमः-प्रयासः ।

—खाना या लगना, कि. अ., व. 'रगदना' के कर्म. के रूप ।

रगदना, कि. त. (अनु.) घृप् (भ्वा. प. से.), मृद् (क्. प. से.) २. चूर्ण (चु.), विष् (रु. प. अ.) ३. इलक्षणीक, परिष्कृ ४. परि-प्र-मृज् (अ. प. से. प्रे.), निज् (जु. उ. अ.) ५. अभ्यस् (दि. प. से.), पुनः पुनः कृ ६. सवेगं सपरिश्रमं च संपद (प्रे.)-अनुष्ठा, (भ्वा. प. अ.) ७. पीड् (चु.), संतप् (प्रे.) ८. तड् (चु.), आहृन् (अ. प. अ.) सं. पुं., वर्षणं, मर्दनं २. चूर्णनं, पेषणं ३. इलक्षणीकरणं ४. परिमार्जनं, प्रक्षालनं, ५. अभ्य-सनं, आशुषिः (स्त्री.) ६. पीडनं ७. ताडनं ८. सवेगं संपादनं इ. ।

रगदने योग्य, वि., धर्षणीय, मर्दनीय, पेषणीय इ. ।

रगदनेवाला, सं. पुं., धर्षकः, मर्दकः, पेषकः इ. ।

रगदवाना, कि. प्रे., व. 'रगदना' के प्रे. रूप ।

रगदा, सं. पुं. (हिं. रगदना) दे. 'रगदना' सं. पुं. । २. अतिशय-अत्यंत, परिश्रमः-उद्योगः ३. चिरस्थायिकलहः, नैत्यिकविवादः ।

—रगदा, सं. पु. (नित्य-सतत-) विवादः-कलहः-कलिः ।

—हुआ, वि., धांषित, मर्दित, पिष्ट, अभ्यस्त ।

रगड़ी, वि. (हिं. रगड़ा) विवादक, कलह-कलि, प्रिय, विवादिन् ।

रगडत, सं. स्त्री. (अ.) कामना २. रुचिः-प्रवृत्तिः (स्त्री.) ।

रगेदना, कि. स. (सं. खेटः), अपनुद् (तु. प. अ.), विद्-अपधाव् (प्रे.) ।

रघु, सं. पुं. (सं.) सूर्यवंश्यो नृपविशेषः, दिलीपसूतः ।

—नंदन, सं. पुं. (सं.) रघु, नाथः-पतिः-राजः-वरः-वीरः, श्रीरामचंद्रः ।

—वंश, सं. पुं. (सं.) रघुकुलं २. महाकवि-कालिदास-प्रणीतो महाकाव्यविशेषः ।

रचना, कि. सं. (सं. रचन) सृज् (तु. प. अ.), निर्मा (अ. प. अ., जु. आ. अ.), जन्-उत्पाद् (प्रे.) २. कल्प-गट् (प्रे.), रच् (चु.), कृ ३. प्रणी (भ्वा. प. अ.), निबंध (क्. प. अ.); रच् (चु.), लिख् (तु. प. से.) ४. यथाविधि न्यस् (दि. प. से.)-स्था (प्रे.) ५. परिष्कृ, अलंकृ, भूष् (भ्वा. प. से., चु.) ६. आपुज् (प्रे.), मंत्र् (चु. आ. से.) सं. पुं., दे. 'रचना' सं. स्त्री. (१-३, ८-९) परि-करणं, भूषणं, आयोजनम् ।

रचना, कि. स. (सं. रंजन) दे. 'रंगना' । कि. अ. अनुरंज् (कर्म.), स्निह् (दि. प. से.) २. व. 'रंगना' के कर्म. के रूप ।

रचना, सं. स्त्री. (सं.) रचनं, निर्माणं, सज्जनं, घटनं, विधानं, कल्पनं, साधनं, निष्पादनं, उत्पादन, जननं २-३. रचना-निर्माण-उत्पादन, कौशल-रीतिः (स्त्री.) ४. रचित-निर्मित, वस्तु (न.) ५. गद्यमयी पद्यमयी वा कृतिः (स्त्री.) ६. केशविन्यासः ७. पुष्पसंयुक्तं ८. स्थापनं ९. प्रणयनं, ति-प्र-बंधनम् ।

रचने योग्य, वि., स्वष्टव्य, निर्मातव्य, रचनीय, प्रणेतव्य, यथाविधि, स्वापनीय इ. ।

रचनेवाला, सं. पुं., स्रष्टृ, निर्मातृ, जनयितृ, घटयितृ, रचयितृ, प्रणेतृ, लेखकः-आयोजकः इ. ।

रचयिता, सं. पुं. (सं. तृ) निर्मातृ, स्रष्टृ, विधातृ, उत्पादकः २. लेखकः, प्रणेतृ इ. ।

रचवाना या रचाना, कि. प्रे. व. 'रचना' के प्रे. रूप ।

रचा हुआ, वि., नष्ट, निर्मित, जनित, रचित, घटित, प्रणीत, लिखित, परिष्कृत इ. ।

रचित, वि. (सं.) निर्मित, घटित, २. स्रष्ट, जनित ३. लिखित, प्रणीत ।

रज, सं. पु. [सं. रजस् (न.)] पुष्पं, कुसुमं, आतंवं, ऋतुः, रजः (पुं.) २. प्रकृतेर्गुणविशेषः, रजः (पुं.) ३. आकाशः-शं ४. पापं ५. जलं ६. परागः, रेणुः (पुं. स्त्री.), पुष्पधूली-लिः (स्त्री.) ७. सुवनं, लोकः । सं. स्त्री., रजस् (न.), धूली-लिः (स्त्री.) २. राज्ञी ३. प्रकाशः ।

—का रूक जाना, सं. पुं., रजोरोधः २. रजो-निवृत्तिः (स्त्री.) ।

—की पीड़ा, सं. स्त्री., ऋतुशूलं, रजःकृच्छ्रम् ।

रजक, सं. पुं. (सं.) निर्णजकः, धवकः, शीघ्रैः, कर्मकालकः ।

रजको

[४६७]

रति

रजकी, सं. स्त्री. (सं.) रजका, निर्णयिका, धाविका ।

रजत, सं. स्त्री. (सं. न.) रूप्यं, दे. 'चाँदी' २. सुवर्ण ३. यजदंतः ४. हारः । वि., रजतमय २. शुक्ल ।

—कुंभ, सं. पुं. (सं.) रूप्य-श्वेत-कुंभः-षट्-कलशः ।

—पात्र, सं. पुं. (सं. न.) रूप्य-श्वेत-दुर्बण-पात्र-भाजनम् ।

रजनी, सं. स्त्री. (सं.) निशा, रात्रि २. हरिद्रा ३. जतुका ४. नीली ५. लाक्षा ।

—कर, सं. पुं. (सं.) रजनी, -पतिः-नाथः, चन्द्रः ।

—खर, सं. पुं. (सं.) राक्षसः, निशाचरः ।

—मुख, सं. पुं. (सं. न.) सायं, प्रदोषः, दिनांतः ।

रजवादा, सं. पुं. (हिं. राज+वादा) देशीय-राज्यं २. नृपः, राजन् (पुं.) ।

रजस्, सं. पुं. स्त्री. (सं. न.) दे. 'रज' सं. पुं. स्त्री. ।

रजस्वला, सं. स्त्री. (सं.) स्त्रीधर्मिणी, ऋतु-मती, पुष्पवती, पुष्पिता, म्लाना, पांशुला ।

रजा, सं. स्त्री. (अ.) इच्छा, कामः २. संमतिः (स्त्री.), एकचित्तता, मत्तक्यं ३. अनुज्ञा, अनुमतिः (स्त्री.) ।

—मंड, वि. (फा.) सह-भूक, मत-चित्त, संमत ।

—मंटी, सं. स्त्री. (फा.) दे. 'रजा' (२-३) ।

रजाहस, रजायस, रजायसु, सं. स्त्री. (सं. राजादेशः) आ-नि, -देशः, नियोगः, आज्ञा, शासनम् २. अनुमतिः-स्वीकृतिः (स्त्री.) ।

रजाई, सं. स्त्री. (< सं. रजनं ?) •पिचुल-प्रच्छदः, तूलाच्छादनम् ।

रजिस्टर, सं. पुं. (अं.) पंजिका, पंजी ।

रजिस्टर्ड, वि. (अं.) पंजीबद्ध ।

रजिस्ट्रार, सं. पुं. (अं.) पंजी-पंजिका, लेखकः ।

रजिस्ट्री, सं. स्त्री. (अं.) पंजीनिबंधनम् ।

—कराना, क्रि. प्रे., राजकीयपंजिकायां लिख् (प्रे.) ।

—शुदा, वि., पंजी-पंजिकाकृत, लिखित ।

रजिस्ट्रेशन, सं. पुं. (अं.), पंजी-पंजिका, करणं लेखनम् ।

रज्जील, वि. (अं.) अधम, नीच २. अनस्यज ।

रजोगुण, सं. पुं. (सं.) दे. 'रज' सं. पुं. (२) ।

रजोदर्शन, सं. पुं. (सं. न.) कन्यायां प्रथमः पुष्पस्त्रावः ।

रजोधर्म, सं. पुं. (सं.) दे. 'रज' सं. पुं. (१) ।

रज्जु, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'रस्सी' २. जेणी ।

रट, सं. स्त्री. (हिं. रटना) असकृत् उच्चारणं, आश्लेषनं, अभीक्ष्णं बचनं, पीनः-पुन्येन पठनम् ।

रटना, क्रि. स. (सं. रटनं) अभ्यस् (दि. प. से.), असकृत् आवृत् (प्रे.) २. मुखस्थ-हृदयस्थ-कंठस्थ (वि.) कृ, स्मरणार्थं पुनः-पुनः उच्चर (प्रे.)-वद-पठ् (भ्वा. प. से.) ।

क्रि. अ., अभीक्ष्णं रण-वचनं (भ्वा. प. से.) । सं. पुं., अभ्यसनं, आवर्तनं, आवृत्तिः (स्त्री.), कंठे करणं, हृदये धारणं, पुनः-पुनः उच्चारणम् ।

रटने योग्य, वि., आवर्तनीय, स्मृतं-स्मरणार्हं ।

रटनेवाला, सं. पुं., अभ्यासिन, आवर्तयितृ ।

रटा हुआ, वि., अभ्यस्त, आवर्तित, कंठे कृत ।

रण, सं. पुं. (सं. पुं. न.) संग्रामः, दे. 'युद्ध' ।

—क्षेत्र, सं. पुं. (सं. न.) रणांगणं-युद्ध-रण-भूमिः (स्त्री)-स्थलं-क्षेत्रम् ।

—खोद, सं. पुं., अतिकृष्णः ।

—बाँकुरा, सं. पुं. (सं. + हिं.) शूरः, मटः ।

—रंग, सं. पुं. (सं.) युद्धोत्साहः २. युद्धं ३. रणक्षेत्रम् ।

—स्तंभ, सं. पुं. (सं.) विजय, स्तंभः-यूपः ।

रत्, वि. (सं.) व्यापृत, मग्न, लग्न, लीन, आसक्त २. अनुरक्त, बद्धभाव ।

रतजगा, सं. पुं. (हिं. रात+जागना) रात्रिः, जागरण-जागरा २. •नैशोत्सवः ।

रतनार, वि. (सं. रत्नं) आ-ईषद्, रक्त-लोहित ।

रतालू, सं. पुं. (सं. रत्नालुः) (= लाल-शकरकंद) रक्त-पिंडकः-पिंडालुः, लोहितः, लो-हितालुः, रक्तकंदः ।

रति, सं. स्त्री. (सं.) कामदेवकलत्रं, मदनपत्नी २. मैथुनं, संभोगः, कामक्रोडा ३. अनुरागः, प्रीतिः (स्त्री.) ४. शोभा, सौन्दर्यं, छविः (स्त्री.) ५. सौभाग्यं ६. स्थायिभावभेदः ७. रहस्यम् ।

—क्रिया, सं. स्त्री. (सं.) रति-कैलिः (स्त्री.)-कलहः-समरं, मैथुनम् ।

—गृह, सं. पुं. (सं. न.) रति, भवन-भंदिरं
२. योगिः (स्त्री.) ।

—नाथ, सं. पुं. (सं.) रति, कांतः-पतिः-प्रियः-
राजः-रमणः, कामदेवः ।

—बंध, सं. पुं. (सं.) सुरतासनम् ।

—शास्त्र, सं. पुं. (सं. न.) कामशास्त्रं, कौक-
शास्त्रम् ।

रत्तोधी, सं. स्त्री. (हि. रात + अधा) निशां-
तास्त्रम् ।

रत्ती, सं. स्त्री. (सं. रक्तिका) काक, तिक्ता-
बद्धरो-पीडुः-जंघा-चिन्वी, कृष्णला, दे. 'शुजा' ।
२. रक्तिकापरिमाणम् ।

—भर, वि., अल्प, स्तोक, शेषव ।

रत्थी-थी, सं. स्त्री. (सं. रथः) *विमानं, शव-
य. नं, फलकं, दे. 'अरथी' ।

रत्न, सं. पुं. (सं. न.) मणिः (पुं. स्त्री.),
अश्मभेदः २. स्वजातिश्रेष्ठः ३. माणिक्यम् ।

—गर्भा, सं. स्त्री. (सं.) वसुंधरा, वसुधा ।

—जटिल, वि. (सं.) मणि, खचित-अनुविद्ध-
भरंवित ।

—द्राम, सं. स्त्री. [सं. मन् (न.)]
मणिमाला ।

—पारखी, सं. पुं., रत्नपरीक्षकः २. मणिकारः,
रत्नाजीविन् ।

नी—, सं. पुं., दे. 'नवरत्न' ।

रत्नाकर, सं. पुं. (सं.) रत्नालयः, समुद्रः
२. मणि-स्नानिः (स्त्री.)-गंजा ३. बाल्मीकिः
प्रथमनामन् (न.) ।

रत्नावली, सं. स्त्री. (सं.) मणिमाला, रत्न-
दामन् (न.) ।

रथ, सं. पुं. (सं.) शतार्गः, स्मंदनः, चक्र-
यानम् । (शुद्ध का रथ) सांपरायिकः, वैना-
यिकः । (सैर का रथ) पुष्प-रथः । (यात्रा
का) पारियानिकः । २. शरीरं ३. चरणः-गम् ।

—कार, सं. पुं. (सं.) रथ-स्थान-चक्रयान-
निर्मातृ-रचयितृ-कर्तृ । २. वर्णसंकरजातिभेदः ।

—चर्या, सं. स्त्री. (सं.) रथ-चक्रयान, यात्रा-
ब्रज्या-गमनम् ।

—पति, सं. पुं. (सं.) रथिन्, रथिकः,
रथिनः, रथिरः ।

—यात्रा, सं. स्त्री. (सं.) आवाह्युक्त्वद्विती-
यायां श्रीजगन्नाथस्व रथारोपणरूपोत्सवः ।

—वीथि, सं. स्त्री. (सं.) रथ-मुख्य-प्रधान-
मार्गः-पथः ।

—शाला, सं. स्त्री. (सं.) स्थन्दनागारम् ।

—त्रिधा, सं. स्त्री. (सं.) रथ, शास्त्रं-विज्ञानम् ।

—खून, सं. पुं. (सं.) सारथिः, रथवाहः ।

रथवान्, सं. पुं. (सं. रथवत्) रथ, वाहः-
वाहकः, सारथिः, दे. 'सारथी' ।

रथोग, सं. पुं. (सं. न.) चक्रम् २. अश्वभेदः
३. कौकः, चक्रः, कामुकः ।

—पाणि, सं. पुं. (सं.) चक्रपाणिः, विष्णुः ।

रथी, सं. पुं. (सं. धिन्) रथिकः, रथिनः,
रथिरः रथ, आरोहिन-स्वामिन्, साराक्षः ।
वि., रथस्थ, रथारूढ । २. रथस्थ-महा, योषः-
योद्धृ । ३. (सं. रथ) दे. 'रथी' ।

रद्, } सं. पुं. (सं.) दंतः, दे. 'दांत' ।

रद्न, } सं. पुं. (सं.) ओष्ठः, दे. 'ओठ' ।

—च्छद्, } सं. पुं. (सं.) ओष्ठः, दे. 'ओठ' ।

—पुट, } सं. पुं. (सं.) ओष्ठः, दे. 'ओठ' ।

रद्, वि. (अ.) मोघ, निरर्थक २. गंद, निष्प्रम,
३. निरस्त, खंडित ।

—करना, कि. स., निरस् (दि. प. से.),
खंड (चु.), निवृत् (प्रे.) ।

—बदल, सं. पुं. (अ. + का.) परिवर्तनं,
विपर्ययः, परि(री)वर्तः ।

रहा, सं. पुं. (देश.) ऋक्षा-मृत्तिका, स्तरः ।

—रखना या लगना, कि. स., भित्ति नि
(स्वा. उ. अ.), रतरं रत् (चु.) निर्मा
(जु. भा. अ.) ।

रही, वि. (अ. रद्) निरर्थक, अनुपयोगिन् ।
सं. स्त्री., निरर्थकपत्राणि (न. बहु.) ।

रत्न(नि)वास, सं. पुं. (हि. रानी + सं. वासः)
अंतःपुरं, शुद्धांतः, अवरोधः ।

रफ्ट, सं. स्त्री. (हि. रफटना) दे. 'फिसलाहट'
२. भावनं, सत्वरगमनं ३. निम्नभूः (स्त्री.),
प्रवणम् ।

रफ्ट, सं. स्त्री. (अं. रिपोर्ट) मूचना, आख्या ।

रफटना, कि. अ. (सं. रफनं) दे. 'फिसलना' ।

रफ्त, वि. (अं.) चिकणशास्त्र-
विषम २. संस्कार-परिष्कार-शून्य ।

रफ्ता, वि. (अ.) अपसरित, दूरीकृत २. निवा-
रित, शमित, शोत ३. समाप्त, पूर्ण ।

रफू, सं. पुं. (अ.) तंतुभिर्व-
रिद्धिपूर्णम् ।

—करना, कि. स., बलद्विद्रं तंतुभिः पूर(सु.) ।
 सु., चक्रविरोधिवचनेषु सामंजस्यं वृश् (प्रे.) ।
 —गर, सं. पुं. (फा.) बलद्विद्रपूरकः ।
 —चकर होना, सु., पलाय (भ्वा. आ. से.),
 अपधाव् (भ्वा. प. से.) ।
 रफ्तार, सं. स्त्री. (फा.) गतिः (स्त्री.) २. वेगः,
 जघः ।
 रफता-रफता, कि. वि. (फा.) शनैः शनैः
 (अन्व.) २. क्रमशः (अव +) ।
 रब, सं. पुं. (अ.) परमेश्वरः, जगदीशः ।
 रबड़, सं. पुं. (अं. रवर) *धर्षकं, घृषि (न.) -
 वृक्षनिर्यासभेदः २. वटजातीयो वृक्षभेदः,
 *धर्षकः ।
 रबड़, सं. स्त्री. (हिं. रगड़) व्यर्थ, श्रमः-
 प्रयासः २. दूरता, विप्रकर्षः ।
 रबड़ना, कि. स. (हिं. रपटना) तरलद्रव्यं
 परिश्रमन्वल् (प्रे.) श्रम-क्लम (प्रे.),
 मुधा धाव् (प्रे.), अयस्-सिद् (प्रे.) ।
 कि. अ., वृथा श्रम (भ्वा. प. से.) परिश्रम
 (दि. प. से.), आयस् (भ्वा. दि. प. से.) ।
 रबड़ी, सं. स्त्री. (हिं. रबड़ना) किलाटिका,
 क्षैरेयम् ।
 रबाब, सं. पुं. (अ.) वाचभेदः, *रबापम् ।
 रबाबिया, रबाबी, सं. पुं. (अ. रबाब)
 रबापवादकः ।
 रब्त, सं. पुं. (अ.) अभ्यासः २. संबंधः ।
 —रब्त, सं. पुं., गाढसौहार्दं, सुपरिचयः ।
 रबी की फसल, सं. स्त्री. (अ.) चैत्रशस्यम् ।
 रमण, सं. पुं. (सं. न.) क्रीडा, विलासः,
 विहरणं, विहारः, केलिः (पुं. स्त्री.), खेला, लीला
 २. मैथुनं, रतिः (स्त्री.) ३. भ्रमणं, पर्यटनं
 ४. जयमन् । (सं. पुं.) पतिः २. कामदेवः ।
 वि., मनोहर २. प्रिय, आनंदप्रद ३. क्रीडापर ।
 रमणी, सं. स्त्री. (सं.) नारी २. सुन्दरी,
 नरवर्णिनी, कामा ।
 रमणीक, वि. (सं. रमणीय) मनोज, मनोहर,
 दे. 'सुन्दर' ।
 रमणीय, वि. (सं.) सुरूप, शोभनं, दे.
 'सुन्दर' ।
 रमणीयता, सं. स्त्री. (सं.) सुच्छविः (स्त्री.),
 मनोहरता, दे. 'सुन्दरता' ।
 रमता, वि. (हिं. रमना) विचरत्-विहरत्-
 मजत् (शत्रत्) ।

रमना, कि. अ. (सं. रमणं) रम् (भ्वा. आ.
 अ.), नन्द-क्रीड् (भ्वा. प. से.), मुद् (भ्वा.
 आ. से.) २. सुखीपलब्धये वस् स्या (भ्वा.
 प. अ.) ३. विह्व (भ्वा. प. अ.), पर्यट
 (भ्वा. प. से.) ४. व्याप् (स्वा. प. अ.),
 व्यश् (स्वा. आ. से.) ५. अनुरंज (कर्म.),
 स्निह् (दि. प. से., सप्तमी के साथ)
 ६. कामकोडो क. सुरत आतन् (त. प. से.) ।
 सं. पुं., रमणं, नंदनं, क्रीडनं, क्रीडा, मोदः,
 सुखाय वसनं, विहरणं, विचरणं, व्यापनं,
 व्यशनं, अनुरागः, निधुवनं इ. ।
 रमा, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'लक्ष्मी' ।
 —पति, सं. पुं. (सं.) विष्णुः ।
 रम्य, सं. स्त्री. (अ.) (नेत्रादिभिः) संकेतः,
 इगितम् २. रहस्यं, गुह्यं, कूटम् ३. आशयः,
 अभिप्रायः ।
 रम्माल, सं. पुं. (सं.) दैवज्ञः, ज्योतिषिकः ।
 रम्य, वि. (सं.) दे. 'रमणीय' ।
 रम्या, सं. स्त्री. (सं.) स्थलपथिनी २. रजनी
 ३. गंगा ४. निर्गुण्डी, इन्द्राणी ।
 रम्हाना, कि. अ. (सं. रंभणं) दे. 'भाना' ।
 रम्यत, सं. स्त्री. (अ. रम्यत) दे. 'प्रजा' ।
 रब, सं. पुं. (सं.) शब्दः, नि-नादः, ध्वनिः,
 वि-रवः-रावः २. कलकलः, कोलाहलः,
 उत्कोशः ।
 रबौ, वि. (फा.) प्रवहत्-प्रसवत्-प्रबल्य
 (शत्रंग) २. अन्यस्त ३. निश्चित, तीक्ष्ण
 (शस्त्रादि) ४. प्रस्थित ।
 रबा, सं. पुं. (सं. रजः) कणः, लवः, अणुः,
 लेशः २. दे. 'दूजी' ।
 रबा, वि. (फा.) उन्नित, युक्त २. प्रचलित,
 विद्यमान ।
 रबाज, सं. पुं. (अ.) दे. 'रिवाज' ।
 रवानगी, सं. स्त्री. (फा.) प्रस्थानं, प्रयाणम् ।
 रवाना वि. (फा.) प्रस्थित, प्रचलित २. प्रेषित,
 प्रहित ।
 —करना, कि. स., प्रस्था (प्रे. प्रस्थापयति),
 प्रधि (स्वा. प. अ.), सं., प्रेप् (ते.),
 प्रचल् (प्रे.) ।
 —होना, कि. अ., प्रस्था (भ्वा. आ. अ.),
 अप-स्रान् (भ्वा. प. अ.), प्रथा (अ. प. अ.) ।
 रवानी, सं. स्त्री. (फा.) प्रवाहः, प्रगतिः (स्त्री.) ।

रवायत

[५००]

रसीद्

रवायत, सं. स्त्री. (अ.) कथा २. लोकोक्ति (स्त्री.) ।

रवि, सं. पुं. (सं.) अर्कः, मानुः, दे. 'मूर्ध' ।

—वार, सं. पुं. (सं.) आदित्य, वारः वासरः ।

रवैया, सं. पुं. (फा. रविश) आचारः, आचरणं, चेष्टित, वृत्तिः (स्त्री.), व्यवहारः ।

रशना, सं. स्त्री. (सं.) कांची, दे. 'मिखला' (१) २. जिह्वा ३. रज्जुः (स्त्री.) ।

रश्क, सं. पुं. (फा.) श्यां, मात्सर्यम् ।

रश्मि, सं. स्त्री. (सं. पुं.) किरणः २. अधरज्जुः (स्त्री.) ३. पक्ष्मन्-वल्गु (न.) ।

रस, सं. पुं. (सं.) आ, स्वादः २. भट् इति संख्या ३. शरीररक्षधातुविशेषः, रसिका, कर्म-रक्त, सारः, तैजः-अग्नि-आहार, संभवः ४. तत्त्वं, सारः ५. काव्यनाटकानुभवजः शृङ्गारदिदश-

विधौ मानसानन्दभेदः (काव्य.) ६. 'नव' इति संख्या ७. आनन्दः, सुखं, आह्लादः, प्रमोदः

८. अमुरागः ९. रतिः (स्त्री.), सुरतं

१०. उत्साहः, औत्सुक्यं ११. गुणः १२. द्वेषः, सारः, रसः, आसवः, निर्यासः, सर्वं १३. जलं,

१४. वृ(जु)षः-थं १५. दे. 'शरवत' १६. वीर्यं

१७. विषं १८. फारदः १९. दे. 'शिगरफ'

२०. धातुभस्मन् (न.) २१. आनन्दरूपं मद्यन् (न.) २२-२३. गंध-शिला, रसः २४. प्रकारः; रूपं २५. चित्ततरंगः, छंदः ।

—चूना या टपकना, क्रि. अ., रसः कणशः निस्स्यद् (भ्वा. आ. से.)-सु (भ्वा. प. अ.) ।

—खेना, क्रि. अ., नन्द (भ्वा. प. से.), मुद (भ्वा. आ. से.) ।

—कपूर, सं. पुं. (सं. रसकपूरं) कपूररसः ।

—गुल्ल, सं. पुं., *रसगोलः ।

—भरा, वि., रस, पूर्ण-मय-युक्त-वत्, सरस, रसिन् ।

—अरी, सं. स्त्री., *रसवदरी ।

—पति, सं. पुं. (सं.) चंद्रः २. नृपः ३. धारदः, *रसराजः ४. शृंगाररसः, रसराजः ।

—सिंदूर, सं. पुं. (सं. न.) सिंदूररसः ।

रसज्ञ, सं. पुं. (सं.) रस-स्वाद, विद-ज्ञातृ २. काव्यमार्गज्ञः, काव्यालोचकः ३. निपुणः, कुशलः ४. अनुरागिन्, रसिकः, प्रेमिन्

५. गुणब्राह्मणः ६. रसवैद्यः ७. रसायनविद (पुं.)

रसदं, वि. (सं.) सुखद, आनन्दप्रद, २. स्वादु, सुरस । सं. पुं. (सं.) विक्रितकः वैद्यः, भिषज् ।

रसदं, सं. स्त्री. (फा.) अन्नसामग्री, भक्ष्यजातम् ।

रसना^१, सं. स्त्री. (सं.) रसा, जिह्वा, रसज्ञा, लोला, रसनेन्द्रियं २. कांची, मेखला ३. रज्जुः

(स्त्री.) ४. अभीष्टु-पुः, वला !

रसना^२, क्रि. अ., दे. 'रिसना' ।

रसनीय, वि. (सं.) आस्वाद्य, चकणोय २. स्वादु, रुच्य, रुचिकर ।

रसनेन्द्रिय, सं. स्त्री. (सं. न.) जिह्वा, रसा, लोला, रसज्ञा ।

रसम्, सं. स्त्री. (अ. रसम्) प्रथा, परिपाटी-टिः (स्त्री.), रीतिः (स्त्री.) ।

रसा^१, सं. स्त्री. (सं.) पृथिवी २. जिह्वा, रसना ३. पाठा ४. रास्ता, पलायणी ५. द्राक्ष ६. नदी ७. रसातलम् ।

—पति, सं. पुं. (सं.) नृपः, भूपः ।

—पायी, वि. (सं. यिन्) जिह्वापायिन् ।

सं. पुं., श्वन्, कुक्कुरः, सारमेयः ।

रसा^२, सं. पुं. (सं. रसः >) यू(जू)षः-वं*रसः, दे. 'शोरवा' ।

रसाई, सं. स्त्री. (फा.) दे. 'पहुँच' ।

रसांजन, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'रसौत' ।

रसातल, सं. पुं. (सं. न.) पातालं २. पाताल-विशेषः ।

रसायन, सं. पुं. (सं. न.) जराव्याधिनाश-औषधं २. तर्कं ३. विषं ४. रस-विद्या-शास्त्रं-सिद्धिः (स्त्री.) ५. रसायनशास्त्रं दे. 'कैमिस्ट्री'

६. धातुविद्या ।

—बनाना, मु., (छुद्रधातु) सुवर्णरूपेण परिणमं (प्रे.) अथवा सुवर्णीकृ ।

—शास्त्र, सं. पुं. (सं.) दे. 'कैमिस्ट्री' ।

रसाल, सं. पुं. (सं.) इक्षुः, दे. 'गन्ना' २. आन्नः ३. वि., स्वादु, गुस्वाद २. सरस ३. मधुर ४. सुंदर ।

रसिक, सं. पुं. (सं.) रसपवादिन्, स्वाद-प्राप्तिन् २. प्रणयिन्, अनुरागिन्, कामुकः ३. सहृदयः, मातृकः, काव्यमर्मज्ञः ४. आनं-दिन्, विनोदिन् ५. भक्तः, प्रेमिन् ।

रसिकता, सं. स्त्री. (सं.) विनोदित्वं, परि-ह्लासप्रियता २. सहृदयता, भावुकता ३. कामु-कता, विलासिता ।

रसिया, सं. पुं., दे. 'रसिक' ।

रसीद्, सं. स्त्री. (फा.) प्राप्तिः-उपलब्धिः (स्त्री.) २. *प्राप्तिपत्रम् ।

—बुक, सं. स्त्री. (का. + अं.) प्रासिपत्रपत्रिका ।
 रसीला, वि. (सं. रसः >) दे. 'रसभरा' ।
 रसूल, सं. पुं. (अ.) ईशदूतः ।
 रसद्व, सं. पुं. (सं.) पारदः, दे. 'पारा' ।
 रसोइया, सं. स्त्री. (हि. रसोई) पाचकः,
 सदा; मृषकारः; बह्वचः; आरातिकः; आंधसिकः;
 औदनिकः; रन्धकः ।
 रसोई, सं. स्त्री. (सं. रसवती) पाकशाला,
 महानसं २. सिद्धार्ज, पक्काहारः; भोजनम् ।
 —घर, सं. पुं., दे. 'रसोई' (१) ।
 —दार, सं. पु., दे. 'रसोइया' ।
 कची—, सं. स्त्री. (घृतादिषु) *अपक्वभोजनम् ।
 पकी—, सं. स्त्री. (घृतादिषु) *पक्वभोजनम् ।
 रसोत, सं. स्त्री. (सं. रसोदभूर्त) रसांजनं,
 रसगर्भं, कृतकं, बालभैक्ष्यं, वर्यांजनम् ।
 रस्सा, सं. पुं. (हि. रस्सी) स्थूलसंदानं,
 बृहदरज्जुः (स्त्री.), स्थूलरश्मिः ।
 रस्सी, सं. स्त्री. [सं. रश्मिः (पुं.)] रज्जुः
 (स्त्री.), गुणा; दामन (न.), बरादः, शुल्बा,
 बटी, रस(स)ना ।
 रहैट, सं. पु., दे. 'अरहर' ।
 रहदा, सं. पुं., दे. 'चरखा' ।
 रहते, क्रि. वि. (हि. रहना) उपस्थितौ,
 विद्यमानतायां, जीवने (सब क्षममी एक.) ।
 रहने, सं. स्त्री. (हि. रहना) वासः, वसनं,
 वसतीतिः (सं.), वस्तिः (स्त्री.), स्थितिः
 (स्त्री.) २. आचारः, व्यवहारः, चरितं,
 वर्तनं, वृत्तिः (स्त्री.) ।
 —सहन, सं. स्त्री. दे. 'रहन' (२) ।
 रहन, सं. स्त्री. (हि. रहना) अधानं,
 दे. 'गिरवी' ।
 रहना, क्रि. अ. (सं. राजनं >) अधि-नि-प्रति,
 उम् (भ्वा. प. अ.) २. अवस्था (भ्वा. आ.
 अ.), कृत् (भ्वा. आ. से.), रथा (भ्वा. प.
 अ.) ३. जीव् (भ्वा. प. से.), प्रागान् घृ
 (नृ.) ४. विरम् (भ्वा. प. अ.), विश्रम्
 (दि. प. से.) ५. अव-उत्-परि; शिष् (कर्म.)
 ६. उज्ज-त्यज् (कर्म.) ७. विद् (दि. आ. अ.),
 उपस्था (भ्वा. प. अ.) ८. मुधा कालं या
 (प्रे.) । सं. पुं., अधि-नि-प्रति, वसनं वसती-
 तिः (स्त्री.), अवस्थानं, अवस्थितिः (स्त्री.),
 जोदनं, प्रागधारणं, अवशिष्टता, त्यागः,
 उपस्थितिः (स्त्री.) ।

रहने शोभ्य, वि., नियतनीय, वासार्ह ।
 रहनेवाला, सं. पुं., नि., वासिन्, स्व-वार्तिन्,
 (तद्धित प्रत्यय से भी, उ., भारतीयाः,
 पांचनदाः) ।
 रह रह के, मु., पुनः पुनः, भूयो भूयः, पौन-
 पुन्येन, वारं वारम् ।
 रहम, सं. पुं. (अ.) कृपा, दया, करुणा,
 अनुकंपा ।
 —दिल, वि., कृपालु, सकरुण ।
 रहम, सं. पुं. (अ. रहम) गर्भासयः, दे. ।
 रहमत, सं. स्त्री. (अ.) कृपा, अनुग्रहः ।
 रहमान, वि. (अ.) अतिशय-परम, कृपालु-
 दयालु । सं. पुं., परमेश्वरः ।
 रहस्य, वि. (सं.) गोप्य, गोपनीय, गुह्य
 २. गुप्त, गूढ, प्रच्छन्न । सं. पुं. (सं. न.)
 गुह्यं, गोप्यं, मर्मन्, गूढ, मंत्रः, वार्ता ।
 रहा-सहा, वि., 'वचासुचा' ।
 रहा हुआ, वि., उपित, अव-, स्थित, अव-उत्-
 परि-, शिष्ट, उपस्थित इ. ।
 रहाइश, सं. स्त्री. (हि. रहना) वसती-तिः
 (स्त्री.), वासः, अवस्थानं, अवस्थितिः (स्त्री.) ।
 रहित, वि. (सं.) हीन, विरहित, वञ्चित,
 शून्य, विलुक्त, विनाभूत ।
 रहोम, वि. (अ.) दयालु । सं. पुं., ईश्वरः ।
 राँग, गा, सं. पुं. (सं. रंगः-र्ग) वर्ग, त्रपुः,
 त्रपुषं, पूतिगंधं, कुरूप्यं, मधुरं, हिमं, पिचदम् ।
 राँड, वि. (सं. रंछा) विषया दे. । २. वेदया ।
 राँधना, क्रि. स. (सं. रंधनं) दे. 'पकाना' ।
 राँपी, सं. स्त्री. (देश.) चर्मकारसुरिका,
 *चर्मकतनी ।
 राँभना, क्रि. अ., दे. 'रंभाना' ।
 राई, सं. स्त्री. (सं. राजी) रक्तसर्षपः, रक्तिका,
 आसुरी, क्षवः, क्षवकः, क्षुतकः । दे. 'सरसौ'
 के भेद २. अत्यल्प-मात्रा-परिमाणम् ।
 —नोन उतारना, मु. राजीलवणभूमेन कुदृष्टि-
 प्रभावं तद् (प्रे.) ।
 —भर, मु., तिल-अणु-लेश-राजी, मात्रं,
 अत्यल्पम् ।
 —से पर्वत करना, मु., अणुमपि पर्वतीकृ,
 तिले तालं पदयति, अत्युक्त्या वर्णं (जु.) ।
 राईफल, सं. स्त्री. (अ.) कुक्षिभृतास्त्रं, नाला-
 स्त्रभेदः ।

राका, सं. स्त्री. (सं.) संपूर्णचंद्रा, पूर्णमासी
२. पूर्णिमा, पूर्णा, पूर्णमासी ।
राकेश, सं. पुं. (सं.) राकापतिः, चंद्रः ।
राक्षस, सं. पुं. (सं.) निशा रजनी-राक्षि-नक्तं-
चरः, क्रम्यः-६ (पुं), रक्षस् (न.),
पलाशः-शिक, भूतः, क्षपाटः, संख्याबलः,
यातुः, यातुधानः, अस्त्र-शौण, पः, कर्तुरः,
दैत्यः, असुरः दानवः २. दुष्टप्राणिन्, पापः
३. विवाहभेदः (धर्म.) ।
—विवाह, सं. पुं. (सं.) विवाहभेदः, युद्धेन
कन्यां प्राप्य विवाहः ।
राक्षसी, सं. स्त्री. (सं.) पिशाची, निशाचरी,
दानवी । वि., राक्षस-दानव, उचित-योग्य,
अमानुषिक ।
राख, सं. स्त्री. (सं. रक्ष् >) भसितं, भरमन्
(न.), भूतिः (स्त्री.) ।
राखी, सं. स्त्री. (सं. रक्षा >) दे. 'रक्षाबंधन'
२. दे. 'राख' ।
राग, सं. पुं. (सं.) अभिमतविषयाभिलाषः,
सुसौषणा २. बलेशः, कष्ट ३. मात्सर्य, ईर्ष्या
४. प्रीतिः (स्त्री.), अनुरागः ५. अंगरागः
६. लोहित-रंगः-वर्णः ७. रंजनं, आह्लादनं
८. कथा ९. संगीतशास्त्रीयरागः (भैरवादि) ।
—रंग, सं. पुं. (सं.) विनोदः; विलासः-प्रीटा-
कौतुकं, संगीतं, रंजनम् ।
अपना—अलापना, मु., (परविचारान् अधुत्वा)
स्वकीयानिव विचारान् सरभसं श्रु (प्रे.) ।
रागान्वित, वि. (सं.) अनुरक्त, आसक्त,
सकाम २. कुपित, क्रुद्ध ।
रागिनी, सं. स्त्री. (सं. रागिणी) रागपत्नी
(भैरवी, गुजरी आदि) २. विदग्धा नारी ।
रागी, सं. पुं. (सं. गिन्) रागविद् (पुं),
गायकः, गाय २. अनु, रागिन-रक्तः, प्रेमिन् ।
वि., रंजित, सराग २. लीहित-रक्त-वर्ण
३. विषयासक्त, भोगिन् ।
राघव, सं. पुं. (सं.) रघुवंश्यः २. अजः
३. दशरथः ४. श्रीरामचंद्रः ।
राठ, सं. पुं. (सं. रक्ष् >) (शिल्पिनं) उप-
करणं, साधनं, यंत्रं २. बरथात्रा ३. दे. 'जल्लत'
४. चक्री-मेषणी, कौलकः ।
राज, सं. पुं. (सं. राज्यं) शासनं, शिष्टिः
(स्त्री.), देश, प्रबंधः-व्यवस्था, प्रजापालनं,
आधिपत्यं २. जनपदः, नीचूव (पुं.), मंडलं,

राष्ट्रं, देशः, राज्यं, विषयः, उपवर्तनं ३. अधि-
कारः, आधिपत्यं ४. शासन-राजत्व-राज्य-
काठः । सं. पुं. (सं. राजन्) नृपः २. 'मैमार'
—करना, क्रि. ल., प्र-शाम् (अ. प. से.),
ईश् (अ. आ. से.), अधिष्ठा (स्वा. प. प्र.),
परि-ष्ठा (प्रे., पालयति), तैत्र् (नृ. प. से.) ।
—कर, सं. पुं. (सं.) राज, स्व-बलिः-युक्तः-
(कं.) धनम् ।
—काज, सं. पुं. (सं. कार्यं) दासन-व्यवस्था-
वृत्त्यम् ।
—कुमार, सं. पुं. (सं.) राज-पुत्र-सुतः, ननुः ।
—कुमारी, सं. स्त्री. (सं.) राज-नृप-कन्या-
सुता-पुत्री ।
—कुल, सं. पुं. (सं. न.) राज-नृप-वंशः-अन्वयः ।
—गद्दी, सं. स्त्री., नृपासनं, राजविशासनं
२. राज्य, अभिषेकः, *राजतिलकः-कम् ।
—गीर, सं. पुं., दे. 'मैमार' ।
—गुरु, सं. पुं. (सं.) राज-शिक्षकः-पुरोहितः ।
—गृह, सं. पुं. (सं. न.) नृप-राज-प्रासादः-
भवनं-मंदिरं-सदनं, सौधः, सुप्रभयं २. मगध-
प्रांतस्य प्राचीनराजधानी ।
—तिलक, सं. पुं. (सं. पुं. न.) दे. 'राजगद्दी'
२. अभिषेकोत्सवः ।
—दंड, सं. पुं. (सं.) राज-शासनं, प्रजापालनं
२. राज्यनियमविहितः आर्थिक-शारीरिक-दंडः
३. दे. 'राजकर' ।
—दंत, सं. पुं. (सं.) पुरोवर्तिष्ठतचतुष्टं
२. उपरिक्षेणीमध्ववर्तिदंतद्वयम् ।
—दरवार, सं. पुं., दे. 'राजसभा' ।
—दूत, सं. पुं. (सं.) नृप-वाक्त्रिकः-सादेशिकः ।
—द्रोह, सं. पुं. (सं.) नृपविरोधः, राजविक-
प्लवः, प्रजाहोमः ।
—द्रोही, सं. पुं. (सं. दिन) नृपविरोधिन् ।
—धानी, सं. स्त्री. (सं.) नृपनगरी ।
—नीति, सं. स्त्री. (सं.) नृप-राज्य-न्यायः-विद्या,
शासनरीतिः (स्त्री.) (मंधिविग्रहसामदनादि) ।
—नीतिक, वि. (सं.) रामशासनविषयकः-
तंत्रयसंबंधिन् ।
—पथ, सं. पुं. (सं.) राज-मार्गः-वहमन् (न.),
महा-मंडा थी, पथः ।
—पाट, सं. पुं. (सं.) राजनिशासनं २. शासना-
धिकारः २. जनपदः, राष्ट्रम् ।

—पुत्र, सं. पुं. (सं.) राजकुमारः २. क्षत्रिय-जाति-भेदः ३. बुधग्रहः ।
 —पुत्र, सं. पुं. (सं. राजपुत्रः >) क्षत्रियजाति-भेदः, *राजपुत्रः ।
 —पूती, सं. स्त्री. (हिं. राजपूत) शौर्यं, वीर्यम् ।
 —फोड़ा, सं. पुं., *राजफोटाः, *स्फोटराजः, दे. 'कारबंकल' ।
 —बाहा, सं. पुं., राज. महा-कुल्या ।
 —भंडार, सं. पुं. (सं. भांडारं) राज-राज्य-कोषः(शः)-भांडागारः(रभः) ।
 —भक्त, सं. पुं. (सं.) राज्य-राज-भक्तः-निष्ठः ।
 —भक्ति, सं. स्त्री. (सं.) राज्य-राज-भक्तिः (स्त्री.)-निष्ठा ।
 —भवन, } सं. पुं. (सं. न.) दे. 'राजगृह'(१) ।
 —मंदिर, }
 —मज्ञादूर, सं. पुं., पलगंडकामिकाः, गेहकार-कर्मकाराः (प्रायः बहु.) ।
 —महल, सं. पुं., दे. 'राजगृह'(१) ।
 —मार्ग, सं. पुं. (सं.) दे. 'राजपथ' ।
 —माष, सं. पुं. (सं.) बर्बटः-टी, नील-नृपः-माषः, नृपचितः ।
 —मुद्ग, सं. पुं. (सं.) मुकुष्ठः, दे. 'मोठ' ।
 —यक्ष्मा, सं. पुं. (सं. क्ष्मन्) राज्यक्ष्मः, दे. 'यक्ष्मा' ।
 —योग, सं. पुं. (सं.) अष्टांगयोगः ।
 —राजेश्वर, सं. पुं. (सं.) सम्राज् (पुं.), राजाधिराजः ।
 —रोग, सं. पुं. (सं. >) असाध्यव्याधिः २. दे. 'यक्ष्मा' ।
 —लक्षण, सं. पुं. (सं. न.) सहजं राजचिह्नं (सामुद्रिक) ।
 —लक्ष्मी, सं. स्त्री. (सं.) राजश्रीः (स्त्री.), २. नृपच्छविः (स्त्री.), नृपवैभवम् ।
 —वंशी, वि. (सं. राजवंशः >) राजवंश, नृपकुलोद्भूत, राजकुलज ।
 —सत्ता, सं. स्त्री. (सं.) राज-शक्तिः-अधिकारः (स्त्री.), राजतान्त्रम् ।
 —सभा, सं. स्त्री. (सं.) राज-परिषद्-संसद (दोनों स्त्री.) २. नृपलिसमाजः ।
 —हंस, सं. पुं. (सं.) मरालः २. कलहंसः, कर्दबः ३. नृपोत्तमः ।
 राज, सं. पुं. (का.) रहस्यं, गुह्यं, गोप्यम् ।

राजकीय, वि. (सं.) राज-नृपः, राज-राज्य-विषयक २. नृपोचित, राजार्थ ।
 राजत, वि. (सं.) राज्यः-प्यो-प्यम्, रूपभयः-यो-र्थ, रजत-मय-निर्मित-कृत ।
 राजत्व, सं. पुं. (सं. न.) राजता, नृपत्वं, राज-अधिकारः-आधिपत्यम् ।
 राजस, वि. (सं.) रजोगुण-उद्भूत-जनित-प्रधान-गय (राजसी स्त्री.) ।
 राजसिक, वि., दे० 'राजस' ।
 राजसी, वि. (सं. राजस >) राज-योग्य-अर्हं, नृपोचित, राजकीय ।
 राजसूय, सं. पुं. (सं.) नृपाध्वरः, क्रतु-राजः-उत्तमः ।
 राजस्व, सं. पुं. (सं. पुं. न.) राज-धन-करः-बलिः ।
 राजा, सं. पुं. (सं. राजन्) नृपः, भूपः, पाथिबः, नर-नृ-भू-मही, पालः पतिः, क्षमा-मही-भू-मूढ (पुं.), पाथिः, महीन्द्रः, नरेन्द्रः, प्रजेश्वरः, भूमिपः, दंडधरः, अवनि-प-पतिः, इनः, भूभुज् (पुं.), राज् (पुं.), महोक्षित (पुं.), नाभिः, अर्थपतिः, प्रभुः २. स्वामिन्, अधि-पतिः ३. उपाधिभेदः ४. धनाढ्यः ।
 राजाशा, सं. स्त्री. (सं.) नृपादेशः, राजशा-सनम् ।
 राजाधिकारी, सं. पुं. (सं. रिन्) राज-निवो-गिन्-भृत्यः-कर्मकरः-पुरवः २. न्यायाधीशः, धर्मध्यक्षः ।
 राजाधिराज, सं. पुं. (सं.) राजराजेश्वरः, सम्राज् (पुं.) ।
 राजाधिष्ठान, सं. पुं. (सं. न.) राजधानी, नृपसगरी, राजपुरम् ।
 राजानक, सं. पुं. (सं. ?) राजकः, साधारण-नृपः-भूपः-पाथिबः, सामंतः ।
 राजाभियोग, सं. पुं. (सं.) प्रजया बलवत् कार्यकारणम्, दे. 'नेगार' ।
 राजि-जिका, सं. स्त्री. (सं.) श्रेणी, पंक्तिः (स्त्री.) २. रेखा ३. दे. 'राई' ।
 राजी, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'राजि' ।
 राज्ञी, वि. (अ.) एक-सह-सं-मत-चित्त २. स्वस्थ ३. प्रसन्न ४. सुखिन् ।
 —करना, क्रि. स., प्रसद (प्रे.), सं-परि-तुष (प्रे.), प्री (क्. उ. अ.) ।

—होना, क्रि. अ., प्रसद् (स्वा. प. अ.) सं-
परि तुप् (दि. प. अ.), प्री (कर्म.) ।
—नामा, सं. पुं. (अ. + फा.) समाधानं
२. समाधानपत्रम् ।
राजीव, सं. पुं. (सं. न.) नीलकमलं २. पद्मं,
सरोजं, कमलम् ।
राजेन्द्र, सं. पुं. (सं.) दे. 'राजःधिराज' ।
राज्ञी, सं. स्त्री. (सं.) राजपत्नी, दे. 'रानी' ।
राज्य, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'राज' (१-२) ।
—च्युत, वि. (सं.) राज्यप्रष्ट, सिंहासनच्युत ।
—च्युति, सं. स्त्री. (सं.) राज्य-वंशः-भंगः,
सिंहासनावरोपणम् ।
—तंत्र, सं. पुं. (सं. न.) शासन-प्रणाली-
व्यवस्था ।
—पाल, सं. पुं. (सं.) राज्य-प्रदेश-प्रान्त-
शासकः । (प्रादेशिक शासन का सर्वोच्च
प्रबन्धक) ।
—लक्ष्मी, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'राजलक्ष्मी' ।
—व्यवस्था, सं. स्त्री. (सं.) राज्य-नियमः-
व्यवस्था ।
राज्याभिवेक, सं. पुं. (सं.) राज्य-सिंहासन-
आरोहणं, राजतिलकः-कं २. सिंहासनारोहणे
राजघ्ये वा नृपस्थानविशेषः ।
राणा, सं. पुं. (सं. राजन्) राजपुत्रनृपाणां
उपाधिः ।
रात, सं. स्त्री. [सं. रात्री-विः (स्त्री.)]
श(शा)वरी, निशा-निशीथिनी, शियामा, क्षणदा,
क्षपा, विभावरी, रजनी, यामिनी, तमां, तम-
स्विनी, श्यामा, शोरा, नक्तं, दोषा ।
—दिन, क्रि. वि., नक्तंदिनं, नक्तंदिनं, सदा,
सर्वदा ।
—भर, क्रि. वि., यावन्नक्तं, निशांतं यावत् ।
आधी—, सं. स्त्री., मध्य-अर्ध-रात्रः, निशीथः,
निशान्ति-मध्यम् ।
रातौ—, क्रि. वि., निशीथे एव ।
रात्रि-त्री, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'रात' ।
रात्र्यर्ध, सं. पुं. (सं.) निशांथः (मनुष्य या
पशु आदि) ।
रात्रा-धिका, सं. स्त्री. (सं.) रातेश्वरी,
रासिकेश्वरी, कृष्णप्रिया, वृषभानुतनया ।
—रमण, सं. पुं. (सं.) राधावल्लभः, श्रीकृष्णः ।
रात्र, सं. स्त्री. (का.) कर्कः, सविथ (न.) ।

राना, सं. पुं., दे. 'रणा' ।
रानी, सं. स्त्री. (सं. राणी) राजपत्नी, नृप-
कलत्रं २. स्वामिनी ।
छोटी—, सं. स्त्री., परिवृत्ती ।
पट्ट—, सं. स्त्री., पट्ट-राक्षी-महिषी-देवी, महा-
पट्ट-राक्षी ।
प्रिय परन्तु छोटी—, सं. स्त्री., वावाता ।
राब, सं. स्त्री. (सं. द्रावक) फणितं, अर्द्ध-
वर्तितेश्वरसः ।
राबड़ी, सं. स्त्री., दे. 'रबड़ी' ।
राम, सं. पुं. (सं.) परशुरामः २. बल-रामः-
देवः ३. श्रीरामचंद्रः ४. परमेश्वरः ५. 'वि'
ः ति संख्या ।
—कली, सं. स्त्री. (सं.) रामक(कि)री
(रामिणी) ।
—कहानी, सं. स्त्री., वृहत्कथा २. कस्यकथा ।
—जनी, सं. स्त्री., हिंदू नर्तकी २. वेद्या ।
—तरोई, सं. स्त्री., दे. 'भिटी' ।
—वृत्, सं. पुं. (सं.) हनुमत् (पुं.),
पवनपुत्रः ।
—धनुष, सं. पुं. [सं. नुस् (न.)] इन्द्रबाणः ।
—नवमी, सं. स्त्री. (सं.) श्रीरामजन्मतिथिः,
चैत्रशुक्लनवमी ।
—नामी, सं. पुं. [सं. रामनामन् (न.)]
रामनामांकितवस्त्रं २. रामनामांकितहारभेदः ।
—पुह, सं. पुं. (सं. न.) स्वर्गः २. अयोध्या ।
—बाण, सं. पुं. (सं.) अजीर्णाशक औषध-
विशेषः २. रामशरः, शरवृक्षभेदः । वि.,
अमोघ, सद्यः फलदायिन ।
—रस, सं. पुं. (सं.) लवणं २. भंगासकः
(मदरास में) ।
—राज्य, सं. पुं. (सं. न.) धन्य-न्याय्य-
राज्यम् ।
—राम, अव्य. (सं.) प्रणामः, ननस्कारः ।
—लीला, सं. स्त्री. (सं.) रामायणाभिनयः ।
—सखा, सं. स्त्री. (सं. खः) सुमीवः ।
—करके, मु., अत्यायासेन, अतिकृच्छ्रेण,
वयाकर्भञ्चित् ।
—जाने, मु., न वेधि, न जाने, ईश्वरो जानाति
• २. ईश्वरः साक्षी, अहं सत्यं वञ्चिम् ।
—नाम सत्य है, मु., रामनाम(शोनिन्दनाम)-
सत्यं, प्रेतवहनकालींचितवाक्यम् ।

रामचंद्र, सं. पुं. (सं.) दशरथस्य ज्येष्ठसुतः, रघुनंदनः, सीतापतिः, रामभद्रः, रावणारिः ।

रामा, सं. स्त्री. (सं.) सुंदरनारी, सुन्दरी, वामा २. नारी ३. संगीतकुशला नारी ४. सीता ५. राधा ६. रुक्मिणी ७. लक्ष्मीः ८. इतिला ।

रामानंद, सं. पुं. (सं.) वैष्णवाचार्यविशेषः ।

रामानुज, सं. पुं. (सं.) लक्ष्मणः, सीमिश्रिः २. श्रीवैष्णवसम्प्रदायप्रवर्तकाचार्यः (सं. १०७३-११९४) ।

रामायण, सं. पुं. (सं. न.) श्रीवाल्मीकि-प्रणीतो महाकाव्यविशेषः २. रामचरितम् ।

रामायणी, वि. (सं. रामायणम् >) रामायण-सम्बन्धिन्-विषयक, रामायणीय । सं. पुं. रामायण, पाठिन्-भङ्गितः ।

राय^१, सं. पुं. (सं. राजन्) नृपः, भूपः २. सामंतः, नायकः ३. चारणः, वदिन् ४. राजकीयोपाधिभेदः, राजन् (पुं.) ।

—बहादुर, सं. पुं. (हि. + प्रा.) *राज-वीरः (उपाधिभेदः) ।

—साहब, सं. पुं. (हि. + प्रा.) *राजमहोदयः (उपाधिभेदः) ।

राय^२, सं. स्त्री. (प्रा.) मत्तं, मतिः (स्त्री.) आशयः, अभिप्रायः, विचारः, तर्कः ।

—देना, क्रि. अ., निजमतं-स्वमति प्रकटयति (ना. धा.) ।

—पूछना या लेना, क्रि. स., परमतं प्रच्छ (लृ. प. अ.), (स्वहिताय) परविचारं ज्ञा (सञ्ज्ञत, जिज्ञासते) ।

रायगौ, वि. (सं.) व्यर्थं, निरर्थक, अपार्थक ।

रायज, वि. (सं.) दे. 'प्रचलित' ।

रायता, सं. पुं. (सं. राज्यता) दाधिकव्यंजनभेदः, दाधेयम् ।

रायल, वि. (अं.) राजकीय, राजोचित, नृपोचित, राजार्हं ।

राय, सं. स्त्री. [सं. राटिः (स्त्री.)] दे. 'झगड़' ।

राल^१, सं. पुं. (सं.) शाल-माल, वृद्धः २. सर्व-माल, नियोक्त-रस, सुरयक्ष-धूपः, सुरभिः, जनिवन्नमः, दे. 'धूप' ।

राल^२, सं. स्त्री. (सं. लाला) सुणि(जी)का, स्थंदिनी, द्राविका, मुखस्तावः ।

—गिरना चूना या टपकना, मु., लालायते

(ना. धा.), लालयित (वि.) भू, अत्यर्थं अभिलषु (भ्वा. प. से.) ।

राव, सं. पुं., दे. 'राय' ।

—चाव, सं. पुं., संगीतोत्सवः, दे. 'रागरंग' २. लायनम् ।

रावज, सं. पुं. (सं.) पीळस्त्यः, लंकेशः, दश, कंधरः-धीवः-आननः-आस्त्यः ।

रावल^१, सं. पुं. (सं. राजपुरं >) अंतःपुरं, दे. 'रनवास' ।

रावल^२, सं. पुं. (सं. राजपुत्रः >) नृपः २. सामंतः ३. संमानसूचकं संबोधनपदं, राजन् ! ४. योषः, भटः ।

रावती, सं. स्त्री. (सं. इरावती) ऐरावती, पंचनदप्रन्तवर्तिनदीविशेषः ।

राशि, सं. स्त्री. (सं. पुं.) पुं(पि)जः, पुंजिः (स्त्री.), उत्करः, कूटः-रं, समुच्चयः, निकरः, दे. 'देर' २. ज्योतिष्मकस्य द्वादशांशः ३. उत्तराधिकारः ।

—चक्र, सं. पुं. (सं. त.), ज्योतिष्मकं, अ-मंडल-यंत्रः-चक्रम् ।

—भाग, सं. पुं. (सं.) रादयंशः, भग्नांशः (ज्यो.) ।

—भोग, सं. पुं. (सं.) राशी महावस्थितिः (स्त्री.) २. राशी महावस्थितिकालः ।

राशी^१, सं. स्त्री., दे. 'राशि' ।

राशी^२, वि. (अ.) दे. 'रिशवतखोर' ।

राष्ट्र, सं. पुं. (सं. न.) देशः, विषयः, जनपदः, दे. 'राज' (२) । २. राष्ट्रवासिनः, राष्ट्रिणः, जनाः, प्रजाः (सब बहु.), लोकः, जनता ३. राष्ट्रिय-वपद्रवः, दे. 'शैति' ।

—पति, सं. पुं. (सं.) राष्ट्रिकः, राष्ट्रियः, राष्ट्रनायकः, प्रजातंत्रप्रधानः ।

—पाल, सं. पुं. (सं.) नृपः, भूप । २. कंस-भ्रातृ ।

—त्रिपल, सं. पुं. (सं.) राजद्रोहः, प्रजा-क्षोभः, क्रान्तिः (स्त्री.) ।

राष्ट्रीय, वि. (सं.) देशीय, देव्य, राष्ट्रिय, जानपादक ।

राष्ट्रीयता, सं. स्त्री. (सं.) देशीयता, देश-भक्तिः (स्त्री.) ।

रास^१, सं. पुं. (सं.) कोलाहलः, कलकलः, महाध्वानः २. ध्वनिः, शब्दः । सं. स्त्री.

(सं. पुं.), गोपानां नृत्य-क्रीडाभेदः २. नाटक-
रूपक-भेदः ३. शृंगला ४. प्रचलितर्गातिक-भेदः
५. विलासः ६. ल.स्थं ७. नर्तकसमाजः ।
—क्रीडा, सं. स्त्री. (सं.) रासविलासः, रास-
लीला २. कृष्णगोपिकानुस्यम् ।
—धारी, सं. पुं. (सं.-रिन्) रात्रामिनेत् ।
—बिहारी, सं. पुं. (सं.-रिन्) श्रीहृष्यः ।
रास^१, सं. स्त्री. (अ.) दे. 'लगाम' ।
रास^२, सं. स्त्री., दे. 'राशि' (१-२) ।
रासभ, सं. पुं. (सं.) गर्दभः २. अश्वतरः
(रासनी स्त्री.) ।
रास्त, वि. (का.) सरल २. उचित ३. अनु-
कूल ४. यथातथ ।
रास्ता, सं. पुं. (का.) मार्गः, पथिन् (पुं.)
२. रातिः (स्त्री.) ।
रास्ती, सं. स्त्री. (का.) सत्यं, तथ्यं, श्रुतं
२. आजवं, धर्मशीलता ।
राह, सं. स्त्री. (का.) पथिन् (पुं.), दे.
'मार्ग' २. प्रथा, रातिः (स्त्री.) २. नियमः ।
—खर्च, सं. पुं. (का.) मार्गव्ययः ।
—गीर, सं. पुं. (का.) यात्रिन्, पथिकः ।
—चलता, सं. पुं. (का. + हिं.) पथिकः
२. अपरिचितः ।
—ज्ञान, सं. पुं. (सं.) दस्युः, परिपथिन्,
मार्गतस्करः ।
—ज्ञानी, सं. स्त्री. (का.) छुटनं, मोषणं,
अपहारः ।
—दारी, सं. स्त्री. (का.) पथ, करः, श्रेयं, मार्ग-
शुल्कः-कम् ।
—रीति, सं. स्त्री. (का. + सं.) परस्पर-
व्यवहारः-संसर्गः ।
—साकना या देखना, मु., प्रतीक्ष (भ्वा. आ.
से.), प्रतिपा (प्रे. प्रतिपालयति) ।
—नापना, मु., व्यर्थं पर्यट् (भ्वा. प. से.) ।
—निकासना, मु., शुक्ति चित् (चु.) उपायं
बलुप् (प्रे.) ।
—पर आना, मु., सुपथे प्रवृत् (भ्वा. आ. से.),
सन्नामं आलम्ब (भ्वा. आ. से.) ।
—बताना, मु., स्वपदात् अंश्-भ्यु (प्रे.)
२. मार्गं दृश् (प्रे.) ।
—रखना, मु., व्यवह (भ्वा. प. अ.), संसर्गं
रक्ष (भ्वा. प. से.) ।

—लेना, मु., प्रस्था (भ्वा. आ. अ.), प्रया-
(अ. प. अ.) ।
राहत, सं. स्त्री. (अ.) सुखं, आनन्दः ।
राही, सं. पुं. (का.) पथः, पथिकः ।
राहु, सं. पुं. (सं.) विधुतुदः, सैहिकः-कोयः,
तमस (पु. न.), स्वर्भानुः, दीर्घकः, कर्बधः ।
—प्रास, सं. पुं. (सं.) राहु, असन-दर्शन-स्यशै-
प्राह-उपरागः, पूर्व-वद, ग्रहपान् ।
रिआयत, सं. स्त्री. (अ.) मूल्यन्यूनता
२. अनुग्रहः, व्यवहारमार्दवं, प्रसादः
३. पक्षपातः ।
—करना, कि. स., मूल्यं न्यूनकृ २. अनुग्रह
(कृ. प. से.) २. सपक्षपातं आचर
(भ्वा. प. से.) ।
रिआयती, वि., (अ.) प्रसादिक, अनुग्रहिक,
न्यूनमूल्य ।
रिआयत, सं. स्त्री. (अ.) प्रजा, दे. ।
रिक्ता, सं. स्त्री. (अं. रिक्षा) *नर, यानं-
वाहनम् ।
रिकाव, सं. स्त्री., दे. 'रकाव' ।
रिकाबी, सं. स्त्री., दे. 'तवतरी' ।
रिकेट्स, सं. पुं. (अं.) बालग्रहः (रोगभेदः) ।
रिक्त, वि. (सं.) पार, शून्य, शून्यगर्भं
२. निर्धन ।
—हस्त, वि. (सं.) शून्यपाणि ।
रिक्थ, सं. पुं. (सं. न.) दायः, पैतृकधनम् ।
—हारी, सं. पुं. (सं.-रिन्) रिक्थिन्, दायादः ।
रिज्जक, सं. पुं. (अ. रिज्जक) आ-उप, औत्तिक-
वृत्तिः (स्त्री.) ।
रिज्जर्व, वि. (अं.) रक्षित, निश्चित, नियत ।
रिज्जल्ल, सं. पुं. (अं.) परोक्षा, फल-परिणामः
२. परिणामः, फलम् ।
रिज्ञाना, कि. स., ब. 'रीक्षना' के. प्रे. रूप ।
रिपु, सं. पुं. (सं.) अरिः, वैरिन्, दे. 'शत्रु' ।
रिपोर्ट, सं. स्त्री. (अं.) सूचना २. विवरणिका,
विवरणं, प्रविदेदनम् ।
रिपोर्टर, सं. पुं. (फ्रें.) संवाद, दानु-प्रेषकः,
वृत्तान्त-समाचार, लेखकः ।
रिपोर्टोज, सं. पुं. (अं.) घटना-दोलनादीनां
साहित्यिकविवरणं, साहित्यांगविशेषः, *रिपो-
र्ताजम् ।
रिक्तासं, सं. पुं. (अं.) संशोधनं, दोषापनयनं,
संस्करणम्, संस्कारः । *सुद्धारः ।

रिक्कार्मर, सं. पुं. (अं.) (समाज-) संशोधक-
संस्कारकः शोधकः, *सुडागकः ।

रिक्कार्मटरी, सं. स्त्री. (अं.) कारास्थयालक-
संस्कारकपाठशाला, *संशोधिका, *संस्कारिका,
*सुदायिका ।

रिक्कवन, सं. पुं. (अं.) पट्टिका ।

रिक्कशिम, सं. स्त्री. (अनु.) शीघर, वर्षः-यातः ।

—होना, कि. अ., मंदं मंदं वृष्ट् (भ्वा.प.से.) ।

रिक्कासत, सं. स्त्री. (अं.) देशीयराज्यं, राज्यं
२. ऐश्वर्यं, वैभवम् ।

रिक्काज, सं. पुं. (अं.) दे. 'रिक्कित्' ।

रिक्कवत्, सं. स्त्री. (अ. रिक्कवत्) उत्कोचः,
आमिषं, दौकनं, लंबा २. उत्कोचदानादानम् ।

—खाना, कि. अ., उत्कोचं ग्रह् (क्. प. से.)-
आदा (जु. आ. अ.) ।

—खोर, सं. पुं. (अ. + फा.) उत्कोचघाहिनः ।

—खोरी, सं. स्त्री. (अ. + फा.) उत्कोच-
आदानं-ग्रहणम् ।

—देना, कि. स., उत्कोचं दा ।

रिक्कता, सं. पुं. (फा.) दे. 'संबंध' ।

रिक्कतेदार, सं. पुं. (फा.) दे. 'संबंध' ।

रिक्कतेदारी, सं. स्त्री. (फा.) दे. 'संबंध' ।

रिक्क, सं. स्त्री. (सं. रिक्क >) कोपः, क्रोधः ।

रिक्कना, कि. अ. (सं. रिक्क >) दिदृशः कण-
क्रमेण स्वदं (भ्वा. आ. से.)-क्षरगल् (भ्वा.
प. से.), री (दि. आ. अ.) २. मंदं मंदं सु
(भ्वा. प. अ.)-प्रस्तु (अ. प. से.)-स्वदं, री ।

रिक्कालदार, सं. पुं. (फा.) सादिसेना, नीः
(पुं.)-पतिः ।

रिक्काला, सं. पुं. (अं.) सामयिक, पत्रिका,
२. पुस्तनी ।

रिक्काला, सं. पुं. (फा.) तुरगवत्, सादिसैन्यं,
अथारोहानीकम् ।

रिक्का, वि. (फा.) निर्-वि, मुक्त, विमोचित,
दे. 'मुक्त' ।

रिक्काई, सं. स्त्री. (फा.) (रंधनादिभ्यः) वि,
मुक्तिः (स्त्री.) उद्धारः, निम्तारः ।

रिक्काना, कि. अ., दे. 'रिक्कान' ।

रिक्काना, कि. स. (सं. रिक्कानं) दे. 'रिक्काना' ।

री, अव्य. (सं. रे) अरे, भोः, अयि, वे, दे.
'अरी' ।

रीछ, सं. पुं. (सं. कश्चः) भल्लकः, दे. 'भाल' ।

रीक्ष, सं. स्त्री. (हि. रीक्षना) तृष्टिः तृप्तिः-प्रोतिः
(स्त्री.), प्रसदः, २. दे. 'रीक्षना' सं. पुं. ।

रीक्षना, कि. अ. (सं. रंजनं) अनुरंज-आसं-
(कर्म.), अनुरक्त-आसक्त-बद्धभाव (वि.)

भू, वि-परि, -मुह (दि. प. से.) २. तुष्ट-तृष्ट
(दि. प. से.), प्रसद (भ्वा. प. अ.) । सं. पुं.,

अनुरागः आसक्तिः (स्त्री.) २. तृष्टिः-प्रोतिः
(स्त्री.) ।

रीक्षा हुआ, वि., अनुरक्त, आसक्त, बद्धभाव,
वि-सुग्ध, प्रेमिन्, प्रणयिन् ।

रीटाई, सं. पुं. (सं.) वक्रमाण्डम् ।

रीटा, सं. पु. (सं. रिष्टः) अरिष्टः-ष्टकः, मांगल्यः,
कृष्णवर्णः, अर्थसाधनः, पीतफेनः, गुच्छकलः,
फेनि(णि)लः २. रिष्ट-फेनि(णि)ल, फलम् ।

रीट, सं. स्त्री. (सं. रीटकः) पृष्ठवंशः, पृष्ठस्थि
(न.), कशो(से)ह() (पुं. न.), वशोहका ।

रीता, वि. (सं. 'रिक्त' दे.) ।

रीति, सं. स्त्री. (सं.) रुष्टिः (स्त्री.), आचारः,
व्यवहारः प्रथा, परिपाटी-दिः (स्त्री.)

२. संस्कारः, कृत्यं, विधिः, कल्पः ३. प्रकारः,
विधा, पद्धतिः (स्त्री.) ४. नियमः ५. रसा-

दीनां उपकर्त्री पदसंधटना (काव्य.), उ.)
वैदर्भी, गोडी इ.) ५. स्वभावः, प्रकृतिः (स्त्री.),

धर्मः ।

—रिवाज, सं. पुं., रुढयः, आचारव्यवहारः,
संस्काराः (तीनों बहु.) ।

रीस, सं. स्त्री. (सं. रीष्या) मातस्यै २. स्पृष्टा,
विजिगीषा ।

—करना, कि. अ., रपथं (भ्वा. आ. से.),
संष्टृष् (भ्वा. प. से.) । (पं.) अनुकृ ।

रुंड, सं. पुं. (सं. पुं. न.) कबंधः, निःशीर्षकायः
२. छिन्नपाणपादो देहः ।

रुँ(रौं) दवाना, कि. प्रे. व. 'रौरना' के प्रे. रूप ।

रुंधना, कि. अ. (सं. रुद्ध) अव-उप, रुध्
(कर्म.), प्रतिवाध्-स्तम् (कर्म.) ।

रुक्कना, कि. अ., व. 'रौकना' के कर्म. के रूप ।

रुक्काना, कि. प्रे., य. 'रौकना' के प्रे. रूप ।

रुकाव, सं. पुं. } (हि. रुक्ना) दे. 'रौक' ।
रुकावट, सं. स्त्री. }

रुक्का, सं. पुं. (अ. रुक्कअह्) पत्रकं, लघुपत्रम् ।
रुक्म, सं. पुं. (सं. न.) सुवर्णं, कांचनं
२. लोहं इ. रुक्मिणीधरात् । वि. 'भास्वर' ।

- रथ, सं. पुं. (सं.) रुक्मवाहनः द्रौणाचार्यः ।
 रुक्मिणी, सं. स्त्री. (सं.) श्रीकृष्णस्य प्रथम-
 पत्नी, विदर्भेशभीष्मपुत्री ।
 रुक्मी, सं. पुं. (सं.-क्मिन्) विदर्भेश्वरभीष्मस्य
 ज्येष्ठपुत्रः ।
 रुख, सं. पुं. (फ्रा.) मुखं, वदनं, आननं,
 २. कपोलः, गल्लः ३. मुख-मुद्रा आकृतिः
 (स्त्री.) ४. भावः, आशयः ५. कृपा-दया,
 दृष्टिः (स्त्री.) ५. रथ-मज्ज, नामकश्चतुरंगशरः ।
 क्रि. वि., प्रति (द्वितीया के साथ), दिशायां
 २. समर्थ, पुरतः ।
 —करना या देना, मु., अवधा (जु. उ. अ.)
 मनोयुज् (जु.) २. अभिसुखीभू ।
 —बदलना या फेरना, मु., पराङ्मुखीभू
 २. मनोऽन्यत्र युज् (जु.), अन्यमनस्क
 (वि.) मू ।
 रुखसत, सं. स्त्री. (अ.) प्रस्थानं, प्रयाणं
 २. अवकाशः दे. 'छुट्टी' ।
 रुखाई, सं. स्त्री. (हिं. रुखा) शुष्कता, शोषः,
 नीरसता २. रुक्षता, औदासीन्यं, स्नेहाभावः,
 उपेक्षा, रौक्ष्यम् ।
 रुखानी, सं. स्त्री. (सं. रोकखानं) *रोक-
 खननी, वर्षक्युपकरणभेदः ।
 रुचना, क्रि. अ. (सं. रोचनं) रुच् (भ्या. आ.
 से.), प्रिय-भद्र-रुचिकर प्रति-इ (कर्म.) ।
 इष्-अभिलष् (कर्म.) ।
 रुचि, सं. स्त्री. (सं.) अभिरुचिः प्रीतिः-तुष्टिः-
 प्रवृत्तिः (स्त्री.), छंदः, कामः २. अनुरागः,
 प्रेमन् (पुं. न.) ३. किरणः ४. सौन्दर्यं,
 छविः (स्त्री.) ५. बुभुक्षा, जिघत्सा, क्षुधा
 ६. आ,स्वादः ।
 —कर, वि. (सं.) स्वादिष्ट, सुरस २. हृद्य,
 प्रिय, मनोहर, रुचिकारक ।
 —वर्द्धक, वि. (सं.) रुचि-कारक-कर-कारिन्
 २. पाचक, दीपक, अग्निवर्द्धक ।
 रुचिर, वि. (सं.) सुन्दर, मनोहर २. मधुर,
 सुस्वादु ।
 रुठाना, क्रि. स., व. 'रूठना' के प्रे. रूप ।
 रतवा, सं. पुं. (अ.) पदं, पदवी २. मानः,
 प्रतिष्ठा ।
 रुदन, सं. पुं. (सं.) रुदितं, रोदनं, विलपनं,
 विलापः, क्रंदनं, क्रदितं, अश्रुपातः ।

- रुद्ध, वि. (सं.) वेष्टित, बल्यित, संवीत,
 २. मुद्रित, अ-विहित, आ-सं-वृत् ३. स्तंभित,
 निश्चलीकृत ।
 —कंठ, वि. (सं.) गदगदस्वर, स्तलद्वन्द्वन
 २. बबुमुसमर्थ (प्रेमादि के कारण) ।
 रुद्र, सं. पुं. (सं.) शिवस्य रूपविशेषः, शिवः
 २. गणदेवताभेदः ३. 'एकादश' इति संख्या
 ४. रसभेदः (काव्य.) । वि., भीम, भयंकर-
 भीषण ।
 रुद्राक्ष, सं. पुं. (सं.) (वृक्ष) वृषभेशः, अमरः,
 पुष्पचामरः २. (फल) शिव-हर-नीलकंठ, अर्धं,
 पावनं, भूतनाशनम् ।
 रुधिर, सं. पुं. (सं. न.) शोणितं, दे. 'रक्त' ।
 रुपया, सं. पु., (सं. रूप्यं) रूप्यकं, रूपकः,
 टङ्कः, रजतमुद्रा २. धनम् ।
 —उड़ाना, मु., धनं अपव्यय् (जु.) अथवा
 वृथा धै (प्रे.) ।
 —जोड़ना, मु., धनं संचि (स्वा. उ. अ.) ।
 —तुड़ाना, मु., दे. 'भुनाना' ।
 —वाला, वि., यनिक, धनाढ्य ।
 रुपहला, वि. (हिं. रूपा) रूप्य-रजत, मय,
 राजत २. रूप्य-रजत, वर्णं, धवल ।
 रुमाली, सं. स्त्री. (फ्रा. रुमाल) दे. 'लंगोट' ।
 रुखा, सं. पुं. (हिं. ररना) भीषणरव उल्लू-
 कभेदः ।
 रुलाई, सं. स्त्री. (हिं. रोना) दे. 'हदन'
 २. रोदनवृत्तिः (स्त्री.), रुदिषा ।
 रुठाना, क्रि. स., व. 'रोना' के प्रे. रूप ।
 रुष्ट, वि. (सं.) कुपित, क्रुद्ध ।
 रूधना, क्रि. स. (सं. रोधनं) (रूधार्थं कंट-
 कादिभिः) परि-वेष्ट् (स्वा. आ. से., प्रे.),
 परिष्ट् (स्वा. उ. से., प्रे.) २. परि-इ (अ.
 प. अ.), परिच्छद् (जु.), संवलयति (ना.
 धा.) संवल् (स्वा. आ. से.) ३. अव-नि-
 सं-रुध् (ह. उ. अ.); पिधा (जु. उ. अ.) ।
 रूँ रूँ, सं. स्त्री. (अनु.) शिशु, रुदितं-रुदनं,
 *रूँकारः ।
 —करना, क्रि. अ., मंदं मंदं रुध् (अ. प. से.) ।
 रू, सं. पुं. (फ्रा.) मुखं, वदनं (२-३) उपरि-
 अग्र-भागः ।
 —स्याह, वि. (फ्रा.) अपकीर्तिमत्, कलंकित ।
 —स्याही, सं. स्त्री. (फ्रा.) अप-व्यशस् (न.),
 कीर्तिः (स्त्री.) ।

रूई, सं. स्त्री. [सं. रोमन् (न.)] (पौदा)
कर्पासः-संसी, कार्पासी-सिका २. (धूआं)
कार्पासः, तूळः-ळ, पिचुः, पिचुलः, पिचु-
तूळम् ।

—का गाल्पा, सं. पुं., पिचुपिटः-डम् ।

—दार, वि., कार्पास (-सी स्त्री.), कार्पासिक
(-की स्त्री.) ।

—दार वस्त्र, सं. पुं., कर्पासं, फालं, बादरं,
नूलांवरम् ।

रूझ, वि. (सं.) दे. 'रूखा' ।

रूझ, सं. पुं. (सं. वृक्षः) पादपः, तरुः ।

रूखा, वि. (सं. रूझ) स्निग्धता-चिकणता-
मृच्छता-श्लक्ष्णता, शुभ्य-रहित २. घृत-तैल-
हीन-रहित ३. विरस, स्वादहीन ४. शुष्क,
निर्जल, नीरस ५. उदासीन, प्रेमहीन, विरक्त
६. कठोर, परुष ७. विषम, नतोन्नत ।

—सूखा, वि., रूक्षशुष्क (भोजनादि), विरस,
निःस्वाद ।

रूखापन, सं. पुं., दे. 'रूखाई' ।

रूठन, सं. स्त्री. (हि. रूठना) दे. 'रूठना'
सं. पुं. ।

रूठना, क्रि. अ. (सं. रूथ) रूथ् (दि. प. से.)
अप-वि-रंज (भ्वा. उ. से.) रज(जय)तिन्ते,
रूथ-कुपित-रूपित (वि.) भू. सं. पुं., रोषः,
अप-वि-रागः, प्रीति-प्रसाद-परितोष-अभावः ।

रूठा हुआ, वि., रूपित, कुपित, अप-वि-रक्त,
कृतरोष ।

रूठ, वि. (सं.) आ-अधि-रूठ, उपर्यासीन
२. प्रचलित, प्रसिद्ध ३. कठिन, कठोर
४. अविभाज्य (संख्या) ५. अशिष्ट, ग्राम्य ।

रूढ़ि, सं. स्त्री. (सं.) प्रथा, दे. 'रीति' (१) ।
२. ख्यातिः-प्रसिद्धिः (स्त्री.) ३. आ-अधि-
रोहः ४. वृद्धिः (स्त्री.) ।

रूप, सं. पुं. (सं. न.) आकारः, आकृतिः-
मूर्तिः (स्त्री.), संस्थानं २. प्रकृतिः, स्वभावः
३. मुख, सौन्दर्य-दृष्टिः (स्त्री.)-वर्णः ४. काव्यः,
देहः ५. वेशः-धः ६. दशा ७. लक्षणम् ।

—विगाहना, क्रि. स., विरूप (चु.), आकृति
दुष् (प्रे.) विकृ ।

—रंग, सं. पुं. (सं. न.) वर्णाकारम् ।

—रेखा, सं. स्त्री., दे. 'रूप' (१) ।

—भरना या बनाना, मु., वैषं ग्रह (कृ. प.
से.), रूपं धृ (भ्वा. प. अ., चु.) ।

रूपक, सं. पुं. (सं. न.) नाटकं २. अर्थालंकार-
भेदः (काव्य.) । सं. पुं., दे. 'रूपया' ।

रूपवती, वि. (सं.) सुरूपिणी, वरवर्णिनी ।

रूपवान्, वि. (सं.-वत्) सुन्दर, गुरुरूप, रूप-
शालिन् ।

रूपा, सं. पुं. (सं. रूप्य) रजतं, श्वेतं, शुभ्रं,
सितं, दे. 'चौशी' ।

रूपी, वि. (सं.-पिन्) रूपान्वित, रूपधारिन्
२. तुल्य, समान ।

रूपोपजीविनी, सं. स्त्री. (सं.) वेश्या-
वारांगना ।

रूपोपजीवी, सं. पुं. (सं.-विन्) दे. 'बहु-
रूपिया' ।

रूपोश, वि. (फा.) (दंडभयात्) पलायित-
गुप्त-गूढ-प्रच्छन्न ।

रूपोशी, सं. स्त्री. (फा.) (दंडादिभयात्)
गुप्तिः (स्त्री.), अज्ञातवस्तु, प्रच्छन्नता ।

रूप्यक, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'रूपया' ।

रूबरू, क्रि. वि. (फा.) अभि-सं-मुखं-मुखे-
पुरः, पुरतः (सब अन्य.) ।

रूमाल, सं. पुं. (फा.) वरकं, कर, वस्त्रं-पूः
(पुं.), कर्पटः ।

—पर रूमाल भिगोना, मु., अत्यधिकं रूढ
(अ. प. से.), अश्रुधाराः प्रवह् (प्रे.),
वाष्पवर्षं कृ ।

रूल, सं. पुं. (अं) नियमः, विधिः २. पत्ररेखा
३. *रेखादंडः ।

—दार, वि. (अं+क्रा) रेखांकित, सरण
(पत्रादि) ।

रूलर, सं. पुं. (अं.) *रेखादंडः २. प्रमाण-
पट्टिका ३. शासकः ।

रूस, सं. पुं. (फा.) *रूसः, देशविशेषः ।

रूसी, सं. पुं. (फा.) रूसवासिन् । सं. स्त्री.-
रूसभाया ।

रूह, सं. स्त्री. (अ.) जीवः, आत्मन् (पुं.)
२. तत्त्वं, सारः-रम् ।

—केवड़ा, सं. स्त्री., केतकीसारः ।

—गुलाब, सं. स्त्री., जषा, तत्त्वं-सारः ।

रैंक, सं. स्त्री. (हि. रैंकना) *रैंकारः, खर-
गर्दभ-नादः, चि(त्री)त्कारः, हेवः-आधितन् ।

रैंकना, क्रि. अ. (अनु.) आरट् (भ्वा. प. से.),
रैंक, चीतक, हेष्-हेष् (भ्वा. आ. से.)

२. परुषं गै (भ्वा. प. अ.) ।

रेंगटा, सं. पुं. (हि. रेंकना) गर्दमार्भकः,
रासभशविकः ।

रेंगना, क्रि. अ. (सं. रिंगण) रिंग्-भ्वा. प. से.),
सप् (भ्वा. प. अ.), उरसा गभ २. निभत-
शनैःअतिमंदं चल (भ्वा. प. से.)-सप् । सं. पुं.,
रिंगणं, सर्पणं, उरसा गमनं, शनैः चलनम् ।

रेंगनेवाला, सं. पुं., उरोगामिन्, सापेन् ।

रेंड-टा, सं. पुं. (देश.) सिघाणं, सिहाणं-नं,
नासामलम् ।

रेंड, सं. पुं. (सं. परंडः) अलंबकः, हस्तपर्णः ।

रेंडी, सं. स्त्री. (हि. रेंड) ऐरंडबीजम् ।

—का तेल, सं. पुं., ऐरंडतैलम् ।

रेंडी, सं. स्त्री. (देश.) क्षुद्रख(डू)रूजं २. क्षुद्र-
तरंडुजं (पं. रेंडी) ।

रें रे, सं. स्त्री. (अनु.) दे. 'रूं रूं' ।

रे, अव्य. (सं.) अरे, अयि, ओः (सब अव्य.) ।

रें, सं. पुं. (सं. ऋषभः) ऋषभस्वरः (संगीत) ।

रेख, सं. स्त्री. (सं. रेखा) दे. 'रेखा' २. चिह्नं
३. संख्या, गणना ४. नवदमभु (न.), इम-
श्रद्धेदः ।

रेखांश, सं. पुं. (सं.) द्वाविंशः ।

रेखा, सं. स्त्री. (सं.) रेषा, लेख, दंडाकार-
ल्पिः (स्त्री.) २. चिह्नं, अंकः ३. गणना,
संख्या ४. आकारः ५. पाणिपादादिवेखा
(सामुद्रिक) ६. हीरकदोषभेदः ७. मायम् ।

—गणित, सं. पुं. (सं. न.) भू-ज्या,मितिः
(स्त्री.) ।

कर्म—, सं. स्त्री. (सं.) भाग्यलेखः, दैवम् ।

रेगिस्तान, सं. पुं. (फा.) मरुः, मरु-स्थलं-
भूमिः (स्त्री.), खिलं, धन्वन् (पुं.), ऊषरः-रम् ।

रेचक, वि. (सं.) वि. रेचक-रेचन, दे. 'दस्तावर' ।

रेचन, सं. पुं. (सं. न.) वि. रेकः, प्रस्कंदनं,
रेचना, विरेचनं, उदरशोधनम् । सं. पुं.,
सारकं वि. रेचक-रेचनम् ।

रेजा, सं. पुं. (फा.) लवः, लेजः, अणुः, कणः ।

रेजीमेंट, सं. स्त्री. (अं.) सैन्य-दलं-गुल्मम् ।

रेट, सं. पुं. (अं.) अर्धः, मूल्यम् ।

रेडियम, सं. पुं. (अं.) रेडियमं, धातुभेदः ।
२. तेजगु (न.) ।

रेणु, सं. स्त्री. (सं. पुं.) पांशुः-सुः, धूली-लिः
(स्त्री.) २. बालुकः, सिकता ३. कणः-णिका ।

—रूपित, वि. (सं.) धूलिभूसरितं २. गर्हम् ।

रेणुका, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'रेणु' १, २, ३.
अमदग्निपत्नी, परशुरामअननी ।

रेत, सं. पुं. [सं. तस् (न.)] वीर्यं २. पारदः
३. जलम् ।

रेत, सं. स्त्री. (सं. रेतवा) बालुका, सिकता,
सिक्ता, शीतला, महा,सुक्ष्मा ।

रेतना, क्रि. स. (हि. रेत) ब्रथन्या घृप्
(भ्वा. प. से.), लोहमार्जन्वा इलक्षणीक
२. ब्रथन्यादिभिः शनैःशनैः कृत (तु. प. से.) ।
सं. पुं., लोहमार्जन्वा घर्षणं-इलक्षणीकरणं-
कर्तनं-वेदनम् ।

रेतल-ला, वि., दे. 'रेतीला' ।

रेता, सं. पुं. (हि. रेत) दे. 'रेत' २. धूली-लिः
(स्त्री.) ३. सिकतिलक्षलम् ।

रेतिया, सं. पुं. (हि. रेतना) (लोहमार्जन्वा)
घर्षकः ।

रेती, सं. स्त्री. (हि. रेतना) लोहमार्जनी,
ब्रथनः-नी ।

रेती, सं. स्त्री. (हि. रेत) पुलिनं, सैकतं
२. सरिग्मध्ये सिकतिलक्षोपः-पम् ।

रेतीला, वि. (हि. रेत) सिकतिल, सैकत,
बालुका-सिकता, भव-युत ।

रेफ, सं. पुं. (सं.) रवर्णः, रकारः (र) २. वर्णा-
न्तरमूर्धरथो रकारः (उ, दर्प) ।

रेल, सं. स्त्री. (अं.) लोहपथभागः ।

—की लाइन, सं. स्त्री., लोह-पथ-सारणी-
मार्गः ।

—गाड़ी, सं. स्त्री., वाष्पशकटी ।

रेल, सं. स्त्री. (हि. रेलना) धारा, प्रवाहः
२. आधिक्यं, बाहुल्यम् ।

—पेल, सं. स्त्री. जनौघः, जनसमर्दः २. बाहुल्यं
रेलना, क्रि. स. (देश.) दे. 'थकेलना' ।

रेलवे, सं. स्त्री. (अं.) लोहपथः २. लोहपथ-
विभागः ।

रेला, सं. पुं. (देश.) दे. 'धक्का' २. दे. 'धावा'
३. प्रवाहः, आप्लावः ४. पंक्तिः, राजिः (स्त्री.) ।

रेवंद, सं. पुं. (फा.) पीतमूली, गन्धिनी ।

रेवड, सं. पुं. (देश.) (अजमेरादीनां) वृधं,
वृद्धं, समनः, कुलं, षण्टः-डम् ।

रेवडी, सं. स्त्री. (देश.) *गुटतिलगुली ।

रेवती, सं. स्त्री. (सं.) नक्षत्रविशेषः २. बलदेव-
पत्नी, रेवतपुत्री ३. गौः (स्त्री.) ४. दुर्गा ।

—रमण, सं. पुं. (सं.) बल-देवः-नामः ।

रेवा, सं. स्त्री. (सं.) नर्मदा २. कामपत्नी, रतिः (स्त्री.) ३. दुर्गा ।

रेश, सं. स्त्री. (फा.) दादिका, कूर्चः, कूर्चम् ।

—सकद, सं. पुं. (फा.) वृद्धः, स्थविरः, जराठः ।

रेशम, सं. पुं. (फा.) कौशेयं, कीट, जं-यज्ञ, कौशं, पट्ट-रुम ।

—का कीड़ा, सं. पुं., तंतु-पट्ट, कीटः ।

रेशमी, वि. (फा.) कौश, कौशिक, कौशेय, पट्ट, कौश— ।

—कपड़ा, सं. पुं., कौशिकं, चीन-पट्ट, अंशुकं, दुकूलं, कौशावरम् ।

रेवा, सं. पुं. (फा.) (फलवस्त्रकलादीनां) गुणः, तंतुः, सूत्रं २. नाडी, दे. 'रग' ३. दे. 'जुकाम' ।

रेशदास, वि. (फा.) सूत्र-तंतु, मय-युक्त ।

रेहन, सं. पुं. (फा.) दे. 'गिरवी' ।

रैदास, सं. पुं. (सं. राजदासः) भक्तविशेषः, श्रीरामानंदशिष्यविशेषः २. चर्मकारः ।

रैन, सं. स्त्री. (सं. रजनी) दे. 'रात' ।

रैयत, सं. स्त्री. (अ.) प्रजा, दे. ।

रौभा, सं. पुं. दे. 'रौगटा' ।

रौगटा, सं. पुं. [सं. रोमन् (न.)] लोमन् (न.), अंग-चर्म-त्वग्, जं, तनुरुहन् ।

रौगटे खडे होना, मु., रोमांच-रोमहर्षः-रोमो-दगमः जन् (दि. आ. से.), दे. 'रोमांच' ।

रोक, सं. स्त्री. (सं. रोधक) विरामः, विरतिः (स्त्री.), गतिविच्छेदः, अवरोधः २. नि-प्रति, वेधः, प्रत्याख्यानं ३. बाध-धा, विघ्नः, प्रतिबंधः ४. वरणः, वृत्तिः (स्त्री.) ।

—टोक, सं. स्त्री., दे. 'रोक' (२-३) ।

वे—टोक, कि. वि., निरंतरायं, निविघ्नं, निर्बाधं (सन् अन्व.) ।

रोक, सं. पुं. (सं.) प्रस्तुतदंकेर्व्यवहारः २. टंकः, नाणकं, मुद्रा, दे. 'नकद' ३. दीप्तिः (स्त्री.) ।

रोकड़, सं. स्त्री. (सं. रोकः) दे. 'रोक' (२) २. मूलद्रव्यं, दे. 'पूजी' ।

—बहो, सं. स्त्री. (हि. रोकड़) मूलद्रव्य-आयव्यय, लेखनपत्रिका ।

रोकड़िया, सं. पुं. (हि. रोकड़+प्र-इया), आयव्यय-मूलद्रव्य-, लेखकः-प्रस्तोत ।

रोकना, कि. स., (हि. रोक) अव-नि-प्रति-सं., रुध् (ह. उ. अ.), अवस्था (प्रे.), प्रतिबंध् (क. प. अ.), वि-स्तम् (क. प. से.) ।

२. नि-विनि-वृ (प्रे.), नि-प्रति-विध् (स्वा. प. से.), निवृत् (प्रे.) ३. वशीकृ, निग्रह् (क. प. से.), नियम् (स्वा. प. अ.)

४. प्रतियुध् (दि. आ. अ.), शत्रुसैन्यं प्रति-बंध्-प्रतिरुध् । सं. पुं., अव-नि-प्रति-सं., रोधः-

रोधनं, निवारणं, नियमनं, निग्रहः-रणं, प्रति-योधनं, नि-प्रति, वेधः-वेधनम् ।

रोकनेवाला, सं. पुं., अव-नि, रोधकः, निवारकः, प्रतिषेधकः, प्रतिबोधः ३. ।

रोका हुआ, वि., अव-नि, रुद्ध, निवारित, निगृहीत ३. ।

रोग, सं. पुं. (सं.) रुज् (स्त्री.), रजा, व्याधिः, गदः, अ(आ)मः, आमयः, उपतापः, सुस्थुभृत्यः ।

—कारक, वि. (सं.) व्याधिजनक ।

—ग्रस्त, वि. (सं.) रोगाक्रांत, दे. 'रोगी' ।

—नाशक, वि. (सं.) रोग-गद, हारिन्-हर, स्वास्थ्यकर ।

—निदान, सं. पुं. (सं. न.) रोग, निर्णयः—निरूपणम् ।

—राज, सं. पुं. (सं.) राज, यक्ष्मन् (पुं.)—यक्ष्मः ।

—रक्षण, सं. पुं. (सं. न.) व्याधिनिहं २. रोग-निदानम् ।

—रुग्ना, कि. अ., रोगेण ग्रस्-उपसृज्-वाध् (कर्म.) ।

रोगान, सं. पुं. (फा. रौगान्) तैलं, दे. 'तेल' २. कुक्कुभः, रंगः, रागः, वर्णः-रंजकः-रंजिका ।

—करना, कि. स., रंज् (प्रे.), वर्णं (चु.), २. कुक्कुभेन लिप् (तु. प. अ.) ।

—जर्द, सं. पुं. (फा.) घृतं, आज्यम् ।

रोगी, वि. (सं.) व्याधित, रुग्ण, रोग-युक्त-पीडित-आर्त्त-आक्रांत, आतुर, अभ्यांत, अभ्यमित, सामयः, आमयाविन्, र्भद, विकृत ।

[रोगिणी (स्त्री.) = रुग्णा, व्याधिता] ।

रोचक, वि. (सं.) आह्लादक, मनोरंजक २. दे. 'रुचिकर' (२) ।

रोचन, वि. (सं.) रोचक, रुचिकर २. दीप्ति-मत, लभिमत् २. हृद्य, प्रिय ।

रोचना, सं. स्त्री. (सं.) कोकनदं, रक्तकमलं २. गोरीचना ३. वरनारी, सुन्दरी ४. दे. 'वंशलोचन' ।

रोज, सं. पुं. (फा.) दिनं, दिवसः, अह्न (न.) ।

कि. वि., दिने दिने, प्रति-अनु, दिन-अहम् ।

—बरोज, }
—सरां, } कि. वि., दे., 'रोज' कि. वि. ।
—रोज, }
रोजगार, सं. पुं. (फ़ा.) आ-उप-जीविका, वृत्तिः (स्त्री.), व्यवसायः २. वाणिज्यं, वणिक्-कर्मन् (न.) ।
रोजनामचा, सं. पुं. (फ़ा.) दे. 'ढायरी' २. दैनिकायव्ययपंजिका, दैनिकलेखः ।
रोज्जा, सं. पुं. (फ़ा.) व्रतं, उपवासः, उपोषणं-पितम् (इस्लाम) ।
रोजाना, कि. वि. (फ़ा.) प्रतिदिनं २.सर्वदा ।
रोज्जी, सं. स्त्री. (फ़ा.) दैनिकान्नं, प्रत्याह्निक-भोजनं २. आ-उप-जीविका, व्यवसायः ।
रोज्जीना, वि. (फ़ा.) प्रत्याह्निक, दैनिक । सं. पुं., प्रत्याह्निक-दैनिक, वृत्तिः-भृतिः (स्त्री.)-वेतनम् ।
रोट, सं. पुं. (हिं. रोटी) दृढस्यूल-रोटि(ट)का २. मिष्टस्यूलरोटिका ।
रोटी, सं. स्त्री. (सं. रोटिका) रोटका २. भोजनं, सिद्धाग्रम् ।
—रूपवा, मु., भोजन-वस्त्रं, निर्वाहसामग्री २. आसान्छादनमात्रम् ।
—दाल, मु., सामान्य-साधारण-भोजनं, अन्नो-दकमात्रम् ।
—दाल चळना, मु., जीवनं निर्बहु, सामान्य-निर्वाहः भू ।
किसी के यहाँ—तोड़ना, मु., पराधेन जीव् (भ्वा. प. से.), परापितं भुञ्ज् (रु. आ. अ.) ।
रोच्ना, सं. पुं. (सं. लोष्ट-ष्टं) लोष्टका, लोष्टुः पाषाण-प्रस्तर-वृष्टका, -खण्डः-शकलः ।
—अटकाना, या डालना, मु., बाध् (भ्वा. अ. से.), अव-उप-ति-प्रति-सं-रुध् (रु. प. अ.), प्रतिबंध (कृ. प. अ.) ।
रोदन, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'रुदन' ।
रोधन, सं. पुं. (सं.) अवरोधः दे. 'रोक' २. दमनम् ।
रोना, कि. अ. (सं. रोदनं) रुद (अ. प. से., अश्रुणि पत् (प्रे.)-विसुच् (तु. प. अ.), आ-कन्द् (भ्वा. प. से.), कुश् (भ्वा. प. अ.), शुन् (भ्वा. प. से.) २. दे. 'रुटना' ३. अनुत्प (दि. आ. अ.), अनुशी (अ. आ. से.) पश्चात्तापं कृ । कि. स., अनुशुच्-विलप्

(भ्वा. प. से.), परिदेव् (भ्वा. आ. से.) । सं. पुं., दे. 'रुदन' ।
रोनी, वि. स्त्री. (हिं. रोना) विषण्णा, शोकमयी ।
रोनेवाला, सं. पुं., रोदकः, अश्रुमोचकः, आकं-दकः २. अनुशोचकः, परिदेवकः, विलापकः ।
रोपना, कि. स. (सं. रोपणं) दे. 'बोना' ।
रोव, सं. पुं. (अ. रुअव) आतंकः, तेजस्(ज.), प्रतापः, प्रभावः, प्राबल्यम् ।
—दाव, सं. पुं. (अ.) दे 'रोव' ।
—दार, वि. (अ. + फ़ा.) तेजस्विन्, प्रतापिन-, प्रभावशालिन् ।
—जमाना, मु., स्वप्रभावं जन् (प्रे.), स्वगीरव् प्रतिष्ठा (प्रे.), निजतेजसा अभिभू ।
—में आना, मु., परतेजसा अभिभू (कर्म.), परप्रतापेन नम् (भ्वा. प. अ.) ।
रोबीला, (अ.) दे. 'रोवदार' ।
रोमंथ, सं. पुं. (सं.) उद्गीर्यं चर्वणं, दे. 'जुगाली' ।
रोम, सं. पुं. [सं. रोमन् (न.)] दे. 'रोंगटा'
—कूप, सं. पुं. (सं. पुं. न.) लोम-, बिबर-छिद्रं-रोम-, द्वार-गतैः ।
—राजी, सं. स्त्री. (सं.) रो(लो)मलता, रोमा-ली, रोमावली-लिः (स्त्री.) ।
—हर्ष, सं. पुं. (सं.) रोमांचः ।
—हर्षण, सं. पुं. (सं. न.) रोम, उद्गमः-उद्भेदः-हर्षः । वि. (सं.) रोमांचकर, भीषण ।
—रोम में, मु., सर्वदेहे, संपूर्णशरीरे ।
—रोम से, मु., सर्वात्मना, साम्निवेशम् ।
रोम, सं. पुं. (सं. रोमकः) रोम-, पत्तनं-नगरं, रोमम् ।
—वासी, सं. पुं. (सं.-सिनः) रोमकाः (प्रायः बहु.) ।
रोमन्, सं. पुं. (अं.) रोम-, निवासिन्-वास्ताव्यः । वि. रोम-, सम्बन्धिन्, विषयक ।
—कैथलिक, सं. पुं., ख्रिस्तसम्प्रदायविशेषः ।
रोमांच, सं. पुं. (सं.) रोम-, उद्गमः-उद्भेदः-विकारः-विक्रिया-हर्षः-हर्षणं, पुलकः, कंटकः-कं, उद्धर्षणं, उल्लसनं, उत्खणकम् ।
रोमांचित, वि. (सं.) इष्टरो(लो)मन्, पुलकित, कंटकित, सपुलक ।
—करना, कि. स., कंटकयति-पुलकयति-रोमांचयति (ना. धा.) ।
—होना, कि. अ., पुलकित-कंटकित (वि.) जन् (दि. आ. से.) ।

रोग्यां

[१३]

लंगर

रोग्यां, सं. पुं., दे. 'रोग्या' तथा 'रोग्य' (१) ।
 रोल्लर, सं. पुं. (अं.) (१-२) समीकरण-पिंडो-
 करण-पत्र ३. दे. 'बेलनः' ।
 रोला, सं. पुं. (सं. रावणं) कोलाहलः, कलकलः
 तुमुलं, महा, शब्द-स्वनः ध्वनः शोषः-रवः-
 रावः, निनादः, निस्वनः, उक्तोशः, उद्धोषः
 २. तुमुलयुद्धम् ।
 —बालना या मचाना, कि. स., कलकल-
 कोलाहलं कृ. वि. रु (अ. प. अ.), उत्क्रुश
 (भ्वा. प. अ.) ।
 रोला, सं. पुं. (सं.) चतुर्विंशतिमात्रिक-
 छन्दस् (न.) ।
 रोली, सं. स्त्री. (सं. रोचनी >) चूर्णहरिद्रा
 निर्मित तिलकोपयोगि रक्तचूर्णम् ।
 रोशन, वि. (फा.) प्रकाशित, प्रदीप्त २. भासुर,
 प्रकाशमान ३. प्र-वि, ख्यात ४. प्रकट, व्यक्त ।
 —दान, सं. पुं. (फा.) गवाक्षः-छदिर्वातायनम् ।
 —दिमाग, वि., प्राज्ञ, बुद्धिमत् ।
 रोशनाई, सं. स्त्री. (फा.) दे. 'मती' २.
 प्रकाशः ।
 रोशनी, सं. स्त्री. (फा.) प्रकाशः, आलोकः
 २. दीपः ३. दीपमालिका ४. ज्ञानालोकः ।
 रोष, सं. पुं. (सं.) क्रोधः, क्रोषः, मन्थुः ।
 रोहिणी, सं. स्त्री. (सं.) धेनुः (स्त्री.), गौः
 (स्त्री.) २. तडित् (स्त्री.), चपला ३. नक्षत्र-
 विशेषः ४. बलदेवजननी ।

—पति, सं. पुं. (सं.) चन्द्रः २. वसुदेवः ।
 रोहित, वि. (सं.) रक्त, लोहित । सं. पुं.,
 रुधिरं, रक्तं २. रक्त-वर्णः-रंगः (३-४) मृग-
 मीन-भेदः ५. हरिश्चन्द्रपुत्रः ।
 रोहू, सं. स्त्री. (सं. रोहिषः) (१-२) मीन-
 मृग-भेदः ।
 रौंद्(अ)ना, कि. स. (सं. मर्दनं ?) पादाभ्यां
 मृद (क्. प. से.)-शुद्ध (रु. प. अ.) ।
 रौ, सं. स्त्री. (फा.) धारा, प्रवाहः, मंदाकः,
 क्षीतस् (न.) ।
 रौगन, सं. पुं. (फा.) दे. 'रोगन' ।
 रौजा, सं. पुं. (अ.) समाधिः, चैत्यः २.
 उद्यानम् ।
 रौद्र, वि. (सं.) रुद्र-विषयक-संबन्धिम् २. भीम,
 भीषण ३. खंड, संरम्भ, क्रोधान्वित । सं. पुं.
 (सं.) ह्योपासकः २. क्रोधः ३. रसभेदः
 (काव्य.) ४. यमः ।
 रौनक, सं. स्त्री. (अ.) कांतिः-दीप्तिः-मुतिः
 (स्त्री.) २. श्रीः (स्त्री.), शोभा, छटा
 ३. जन-शोषः-समुदायः ।
 रौप्य, सं. पुं. (सं. न.) रूप्यं, रजतम् । वि.
 (सं.) राजत, रजतमय, रजतोपम ।
 रौरव, वि. (सं.) भीम, धोर २. धूर्त, कापटिक
 ३. हस्तसंबन्धिम् । सं. पुं. (सं.) नरकविशेषः ।
 रौला, सं. पुं., दे. 'रोला' ।
 रौशन, वि., दे. 'रोशन' ।

ल

ल, देवनागरीवर्णमालाया अष्टाविंशो व्यंजनवर्णः,
 लकारः ।
 लंक, सं. स्त्री. (सं. लंका, दे.) ।
 —नाथ-नायक-पति, सं. पुं. (सं.) रावणः,
 दशाननः ।
 लंका, सं. स्त्री. (सं.) रक्षःपुरी, रावणराज-
 धानी २. भारतदक्षिणवर्तिद्वीपविशेषः ।
 —पति, सं. पुं. (सं.) दे. 'रावण' ।
 लंग', सं. स्त्री., दे. 'लंग' ।
 लंग', सं. पुं. (सं.) दे. 'लंगडापन' ।
 लंगडा, वि. (सं. लंगः >) पंगु (नू स्त्री.),
 खंज, श्रोण, खोड-र-ल, विचलगति २. एकपाद-
 हीन (भेत्त आदि) । सं. पुं., उत्तमाभ्रभेदः ।
 लंगडाना, कि. अ. (हि. लंगडा) खंज-खोल्-

खोर्-खोड्-खंज् (भ्वा. प. से.), सलंगं चल्
 (भ्वा. प. से.) । सं. पुं., खंजनं, खोडनं-रगं-
 लनं, लंगनं, लंग-विकल, गतिः (स्त्री.) ।
 लंगडापन, सं. पुं. (हि. लंगडा) खंजता,
 पंगुता, खोड(र)ता, लंगः, विकलगतिः
 (स्त्री.) ।
 लंगर, सं. पुं. (फा.) लंगलं, पोतस्तंभनं
 २. महानसं, पाकशाला ३. अनाथ-दरिद्र-
 भोजनं ४. 'लंगोटा' ५. लोहमयीस्थूल-
 मृत्सला ६. लंबकः, लोलकः ७. दुष्टधेनुतां
 गललगुहः । वि., मारवत्, गुरु २. खल, दुष्ट ।
 —ज्ञाना, सं. पुं. (फा.) शैव, अनाथभोजन-
 शाला ।
 —गाह, सं. पुं. (फा.) नौकाशयः, नौकाश्रयः ।

—करना, मु., कुत्सितं चेष्ट (भ्वा. आ. से.), कुचेष्टां कृ ।
 लंगूर, सं. पुं. (सं. लांगूलिन्) कपिः, मर्कटः, वानरः २. कपि-वानर, पुच्छं, लांगु(गू)लं ३. श्वेतलोमा कृष्णमुखो वानरभेदः ।
 —फल, सं. पुं. (हिं. + सं.) नारिकेलः, लांगलिन् ।
 लंगूल, सं. पुं. (सं. न.) लांगूलं, पुच्छं, दे. 'पुच्छ' ।
 लँगोट-या, सं. पुं. (सं. लिंगं + हि. ओट) पुटी, धटी, कौपीनं, लिगावरणम् ।
 —बंद, वि., ब्रह्मचारिन्, ऊर्ध्वरितस् ।
 लँगोटिया चार, सं. पुं. (हि. फा.) सह-पांशु-त्रोलिन् शैशव-बाल्य, भिन्नं सखि (पुं.) ।
 —में मस्त, मु., दारिद्र्येऽपि प्रसन्न, अकिंचन-स्वेऽपि संतुष्ट ।
 लँगोटी, सं. स्त्री. (हि. लँगोट) दे. 'कछनी' २. लघु, पुटी-कौपीनं, धटिका ।
 लंघन, सं. पुं. (सं. न.) उपवासः, उपोषणं-पितं, अनाहारः, बतं २. दे. 'लंघना' सं. पुं. प्लवनं ३. अति, क्रमण-क्रमः, नियम, भगः-उल्लंघनं ४. घोटकानां अतिवृत्तगतिः (स्त्री.) ।
 लंघना, कि. स. (सं. लंघनं) दे. 'लंघना' ।
 लंच, सं. पुं. (अं.) मध्याह्न-माध्यन्दिन, भोजनम् ।
 लंठ, वि. (हि. लठ्ठ) जड, मूर्ख २. धृष्ट ।
 लंढूरा, वि. (देश.) अलांगु(गू)ल, छिन्नपुच्छ, लम्होन (खगादि) २. परित्यक्त, निराश्रय ।
 लंप, सं. पुं. (अं. लैप) दे. 'लालटेन' ।
 लंपट, वि. (सं.) लिपट, अभिक, कामिन, कामुक, विषय-काम, आसक्त, रतेच्छु, स्मरार्त, व्यभिचारिन्, दुराचारिन् ।
 लंपटता, सं. स्त्री. (सं.) व्यभिचारीः, विषया-सक्तिः (स्त्री.), कामुकता, अभिकता, लांपट्यं, दुराचारः ।
 लंब, सं. पुं. (सं.) लंबकः (= अमृद) । वि. (सं.) दे. 'लंबा' ।
 —कर्ण, सं. पुं. (सं.) अजः २. गजः ३. खरः ४. शशः ५. राक्षसः ६. श्वेनः । वि. (सं.) दीर्घश्रवण ।
 —ग्रीव, सं. पुं. (सं.) उष्ट्रः, क्रमेलकः ।
 लंबतर्दंग, वि. (सं. लंब + तालः + अंग) तालतुंग, अत्युच्च, अत्युच्छ्रित ।

लंबा, वि. (सं. लंब) दीर्घ, दीर्घ, आकार-परि-माण, आयत, आयामवत् २. उच्च, प्रांशु, तुंग, उच्छ्रित ३. विशाल, महत्, बहु, अधिक ।
 —करना, कि. स., दीर्घी-लंबी-आवती-वितती कृ, आयम् (भ्वा. उ. अ.), विस्त-प्रत् (प्रे.) प्र-वि, तत् (त. उ. से.) । मु., प्रस्था (प्रे.) २. भूमौ अवपत् (प्रे.) ।
 —चौदा, वि., विशाल, विपुल, महत्, बृहत्, लंबोर्, आयतविस्तृत ।
 —डोना, कि. अ., दीर्घीम्, विस्त-प्रतन्-आयम् (कर्म.) । मु., प्रस्था (भ्वा. आ. अ.), प्रया (अ. प. अ.) ।
 लंबाई, सं. स्त्री. (हि. लंबा) दीर्घता-स्त्वं, दीर्घ्य-र्ष, द्राघिमन् (पुं.), आयामः, आय-मन्, आयतिः (स्त्री.) लंबता, आनाहः २. उचता ।
 —चौदाई, सं. स्त्री., आनाहपरि(री)णाहौ, दीर्घत्वपृथुत्वे, आयामविस्तारी (सब द्वि.) २. मानं, प्र-परि-साणम् ।
 लंबान, सं. स्त्री. (हि. लंबा) दे. 'लंबाई' ।
 लंबी, वि. स्त्री. (हि. लंबा) दीर्घा, आयता, आयामवती ।
 —तानना, मु., निश्चितं शी (अ. प. से.) ।
 —सांस भरना, मु., दीर्घं निःशस् (अ. प. से.) ।
 लंबोतरा, वि. (हि. लंबा) दीर्घचतुरस्र : लंब, आकार-आकृति ।
 लंबोदर, वि. (सं.) तुदिक-म-लत । सं. पुं. (सं.) गणेशः २. औदरिकः, वस्मरः ।
 लकडबाघा, सं. पुं. (हि. लकड़ + बाघ) ईहा-शुकः, *लगुडव्याघ्रः ।
 लकडफोड़, सं. पुं. (हि. लकड़ + फोड़ना) दावाघाटः, काष्ठकूटः । ●
 लकडहारा, सं. पुं. (हि. लकड़ + हारा) काष्ठिकः, काष्ठछिद्र, *लगुडहाराः ।
 लकड़ा, सं. पुं. (सं. लकुटः) लगुडः-रु-लः, स्थूल-बृहत्, काष्ठ-दारु (न.) ।
 लकड़ी, सं. स्त्री. (हि. लकड़ा) काष्ठं, दारु (न.) २. इंधनं, पथः, दंडः, वष्टिः (स्त्री), वेत्रं ३. दे. 'पातका' ।
 —देना, मु., अंत्येष्टि कृ, शवं दद् (भ्वा. प. अ.) ।
 लकड़ब, सं. पुं. (अ.) उपाधिः, उपानामन् (न.) ।
 लकड़क, सं. पुं. (अ.) लंबग्रीवो जलखगभेदः, *लकलकः ।

लक्ष्मणा, सं. पुं. (अ.) आदित्य ।
 लकीर, सं. स्त्री. (सं. लेखा) रेखा-स्ता, दंडाकार-
 रत्निकाः (स्त्री.) २. पंक्तिः-श्रेणीः-आलिः (स्त्री.) ।
 —का फ़कीर, मु., विवेकशून्य, अंध, अनुगा-
 मिन्-अनुवायिन्-अनुवतिन्, परंपरानुसारिन् ।
 —पर चलना, } मु., अंधवत् अनुगन् (भ्वा.)
 —पाठना, } प. अ.)-अनुया (अ. प. अ.) ।
 लकुट, सं. पुं. (सं.) लघुटः, यष्टिः (स्त्री.),
 दंडः ।
 लक्कड, सं. पुं., दे. 'लकड़ा' ।
 लक्षा, सं. पुं. (अ.) व्यजनपुच्छः, पारावतः,
 कपांतभेदः ।
 लक्ष, वि. तथा सं. पुं. (सं.) दे. 'लाख' ।
 लक्षक, वि. (सं.) प्रकटयितृ, प्रकाशक । सं.
 पुं. (सं.) लक्ष्यार्थप्रकाशकः शब्दः । (सं.
 न.) दे. 'लाख' ।
 लक्षण, सं. पुं. (सं. न.) अंकः, चिह्नं, लिंगं,
 लांछनं, व्यंजनं, अभिज्ञानम् । २. परिभाषा,
 परिच्छेदः, निर्देशः ३. विशिष्टलिंगं, विशेषः
 ४. चरित्रं, अन्वारः ।
 लक्षणा, सं. स्त्री. (सं.) शब्दशक्तिभेदः, शक्य-
 संबंधः (सा.) २. सारसी ३. हंसी ।
 लक्षित, वि. (सं.) निर्दिष्ट, भाषित २. दृष्ट,
 वीक्षित ३. अनुमित, तांकेत ४. चिह्नित,
 अंकित ।
 लक्ष्मण, सं. पुं. (सं.) रामानुजः, सौमित्रिः
 २. दुर्योधनपुत्रविशेषः ३. सारसः ।
 लक्ष्मी, सं. स्त्री. (सं.) श्रीः, कमला, पद्मा,
 पद्मालया, हरिः, प्रिया-वल्लभा, इंदिरा, मा,
 रमा, क्षीराब्धितनया, भार्गवी, लोकमातृ (स्त्री.)
 २. धनं, संपद् (स्त्री.) ३. छविः (स्त्री.),
 शोभा ४. दुर्गा ५. सीता ६. वीरनारी
 ७. गृहस्वामिनी ।
 —नारायण, सं. पुं. (सं.) लक्ष्मीजनार्दनः,
 शालग्रामभेदः ।
 —पति, सं. पुं. (सं.) विष्णुः २. श्रीकृष्णः
 ३. नृपः ।
 लक्ष्मीश, सं. पुं. (सं.) विष्णुः २. आश्रयः
 ३. धनाढ्यः ।
 लक्ष्य, सं. पुं. (सं. न.) शरव्यं, लक्षं, वेध्यं,
 वेधं, प्रतिक्रायः २. निर्दा-आक्षेप-उपालम्भ-
 विषयः ३. आशयः, उद्देशः, अभि-इष्टं,

मनोरथः, ईप्सितं ४. लक्ष्यार्थः । वि., दर्शनीय,
 अवलोकनीय ।
 —वेधी, सं. पुं. (सं. धिन्) वेध्यवेधकः ।
 लक्ष्मपती, सं. पुं. (सं. लक्ष्मपतिः) लक्ष्, ईश्वरः-
 अर्थेशः २. धनिकः, धनाढ्यः ।
 लखेरा, सं. पुं. (हिं. लाख) लाक्षा-जतु, कारः
 २. हिंदूपजातिभेदः ३. कुक्कुभ, लेपकः-लेपिन् ।
 लग, कि. वि. (सं. लग् >) दे. 'तक',
 २. समीपं पे । अव्य., सह, साई २. दे. 'लिप' ।
 —भग, कि. वि. प्रायः, प्रायशः, प्रायेण, —प्राय-
 कल्प, उप, आसन्न- ।
 लगन, सं. स्त्री. (हिं. लगना) आसंय, प्रीतिः
 (स्त्री.), आ-प्र, सक्तिः (स्त्री.), अभिनिवेशः,
 दे. 'धुन' २. प्रेमन् (पुं. न.), अनुरागः,
 स्नेहः ३. दे. 'लगाना' सं. पु. ।
 लगन, सं. पुं. (सं. लगन) राशीनामुदयः
 (ज्यो.) २. (विवाहस्य) शुभमुहूर्तः-तैम् ।
 —कुंडली, सं. स्त्री. (सं. लगनकुंडली)
 जन्मकुंडली ।
 —लगाना, कि. अ., अनुरज् (कर्म.), सिन्द्
 (दि. प. से.) ।
 लगाना, कि. अ. (सं. लगन) सं., युज् (कर्म.),
 लग् (भ्वा. प. से.), संहन्-संधा (कर्म.),
 संश्लम् (दि. प. अ.) संपृच्-
 संलुज् (कर्म.) २. आरोप-मूल् (कर्म.)
 ३. निवेश-स्थाप् (कर्म.) ४. आहन्-नाड-
 प्रह-व्यध् (कर्म.) ५. स्पृश-समालम्भ-पराभृश
 (कर्म.) ६. विन्यस्-व्यक्त्वाप्-व्यूह् (कर्म.)
 ७. दृश-लक्ष-प्रती (कर्म.), प्रति, भा (अ.
 प. अ.) ८. संबन्ध् (कर्म.), सम्बन्धः ज्ञातिस्व
 वृत् (भ्वा. आ. से.) ९. स्वादं-रसं धा
 १०. अनुरज् (कर्म.), सिन्द् (दि. प. से.)
 ११. करः-शुल्कः नियोज् (कर्म.) १२. मूल्यं
 अपेक्ष् (भ्वा. आ. से.), मूल्यकेज् लभ् (कर्म.)
 १३. व्याप् (मु. आ. अ.), मग्न-व्यापृत्
 (वि.) वृत् १४. पण् (कर्म.) १५. पूतीभू,
 ज् (दि. प. से.), पूय् (भ्वा. आ. से.) ।
 सं. पुं. तथा भाव, लगनं, सं., योगः, संधानं,
 सं-श्लेषः-श्लेषणं, संपर्कः, संसृष्टिः (स्त्री.),
 आरोपणं, मूलनं, निवेशः, स्थापनं, आघातः,
 प्रहारः, स्पर्शः, समालम्भः, विन्यासः, व्यूहः,
 व्यवस्थितिः, प्रतीतिः (स्त्री.), भानं, व्यापृतिः-
 आसक्तिः (स्त्री.) १६. पूतीभावः, पूथनं इ. ।

लगा हुआ, वि., सं., युक्त, लगित, लगन, संवृत, संपृक्त, संसृष्ट, आरोपित, निवेशित, स्पृष्ट, विन्यस्त, अनुरक्त, व्याप्त, मग्न इ. ।

लगवाना, कि. प्रे., व. 'लगाना' के प्रे. रूप ।

लगाना, कि. वि. (हि. लगना + तार) सतत, अवच्छिन्न, दे. 'निरंतर' ।

लगान, सं. पुं. (हि. लगाना) भू-भूमि, करः, शस्यशुल्क, राजस्वम् ।

लगाना, कि. स., व. 'लगना' के स. रूप ।

लगाम, सं. स्त्री. (फ़ा.) कविकःका, खलीनः-नं, कवि(वी)यं, कवी, पंचांगी २. वला, रहिमः, अवक्षेपणी, कुशा ।

—वदाना या देना, मु., संयम्(श्वा. प. अ.), नियह् (कृ. प. से.), वशीकृ, निवृ (प्रे.) ।

लगालगी, सं. स्त्री. (हि. लगाना) अनुरागः, प्रेमव (पुं. न.) २. संबंधः, संपर्कः, संसर्गः, संगतिः (स्त्री.) ।

लगाव, सं. पुं. (हि. लगाना) दे. 'लग. लगी' ।

लगवट, सं. स्त्री. } १-२ ।

लगुद-र-ल, सं. पुं. (सं.) दंडः, यष्टिः (स्त्री.) २. लोहमयोऽस्त्रभेदः ।

लग्या, सं. पुं. (सं. लग्न >) लंब, वैशुः-वंशः २. नौदंडः ३. आकर्षणी ।

लग्नी, सं. स्त्री. (हि. लग्या) मीनदंडः २-४. दे. 'लग्या' २-३ ।

लग्न, सं. (पुं. सं. न.) दे. 'लगन' (१-२) ।

लग्न, वि. (सं.) संयुक्त, संश्लिष्ट, संलगित, संबद्ध २. आसक्त, मग्न, व्याप्त, पर, परायण, निष्ठ ३. लज्जित ।

लग्नु, वि. (सं.) अल्प-वैषद, भार, सु-सुख, नाह्य २. अणु, महत्त्व-दृहत्त्व, शून्य, क्षुद्र, तनु, अल्प, आकार-आकृति-काय ३. निस्तृत्व, निस्सार ४. अल्प, स्तोक (मात्रा) ५. अधम, नीच ६. दुर्बल, निर्बल ६. कर्नायस्, यवीयस् ।

—चेता, वि. (सं. नस्) तुच्छ, क्षुद्रमति, क्षुद्राशय ।

—शंका, सं. स्त्री. (सं.) मूर्च्छोत्सर्गः, मेहनम् ।

लग्नुता, सं. स्त्री. (सं.) लघुत्वं, लघवं, अधिमन (पुं.), अल्पभारवत्वं २. अणुता, तनुता, क्षुद्रता ३. अधमता ४. कर्नायस्त्वं ५. अल्पता ।

लचक, सं. स्त्री. (हि. लचकना) स्थितिस्थापकता-त्वं, नम्यता, कुंचनं-यता २. दे. 'लचकना' सं. पुं. ।

—दार, वि. (हि. + फ़ा.) नम्यकुंचनीय, नमन-कुंचन, शील, स्थितिस्थापक, प्रकृतिप्रापक ।

लचकना, कि. अ. (हि. लच अनु.) अव, तम् (श्वा. प. अ.), वक्त्रीभू । सं. पुं. तथा भाव, अव, नमन-नतिः-नामः, वक्त्रीभावः ।

लचकाना, कि. स., व. 'लचकना' के प्रे. रूप ।

लचकौला, } वि (हि. लचक) दे. 'लचकदार' ।

लचलचा, } वि (हि. लचक) दे. 'लचकदार' ।

लचना, कि. अ., दे. 'लचकना' ।

लचाना, कि. स., व. 'लचकना' के प्रे. रूप ।

लचीला, वि., दे. 'लचकदार' ।

लच्छा, सं. पुं. (सं. लंबगुच्छः >) सूत्रस्तवकः, गुणगुच्छः, संतुपची २. सूत्राकाराः, पट्टिका-काराः वा तनुदीर्घखंडाः ३. सूक्ष्मतंतुरूपः पाणिपादभूषणभेदः ४. मिष्टान्नभेदः ।

लच्छेदार, वि. (हि. + फ़ा.) गुच्छ-सूत्र-पट्टिका-आकार २. श्रुतिमयुर, सुश्राव्य, सुश्रव्य ।

लजाना, कि. अ., दे. 'लजित होना' ।

लजालू, सं. पुं., दे. 'लजवंती' ।

लज्जीज, वि. (अ.) सुरवाद, सुरस, स्वदिष्ट (मध्य) ।

लजीला, वि. (हि. लाज) दे. 'लज्जाशील' ।

लज्जित, सं. स्त्री. (अ.) अ-स्वादः, रसः ।

—दार, वि. (अ. + फ़ा.) दे. 'लज्जी' ।

लजा, सं. स्त्री. [सं. ज्रीटः-डा, लीः (स्त्री.),] ३. त्रपा, मंदाहं, शालीनता, लज्जा २. मानः, प्रतिष्ठा ।

—कर, वि. (सं.) त्रपा-लज्जा, प्रद-जनक-आवह, गहित ।

—शील, वि. (सं.) हीनत, शालीन, लज्जालु, सलज्ज, विनीत, लज्जावत्, लज्जान्वित ।

—हीन, वि. (सं.) निर्लज्ज, नित्रोड, धृष्ट, निस्त्रप, अपत्रप, लज्जा-त्रपा, शून्य ।

लज्जालु, वि. (सं.) दे. 'लजवंती' २. दे. 'लज्जाशील' ।

लज्जित, वि. (सं.) हीत, हीण, ह्रोडित, वषित, त्रपा-लज्जा, अन्वित ।

—करना, कि. स., लज्ज-त्रप-ज्रीट-ही (प्रे.) ।

—होना, कि. अ., लज्ज (तु. आ. से.), त्रप (श्वा. आ. से.), ज्रीट (दि. प. से.), ली (तु. प. अ.) ।

लट, सं. स्त्री. (सं. लट्वा) अलकः, चूर्णकुन्तलः,

कुरलः २. केनापाशः, कनपक्षः ३. जटा, सटा, संश्लिष्टकेयाः ।

—रारी, सं. पुं., जटित, जटिलः (भिक्षु) ।

लट, २ सं. स्त्री. (हि. लपट) ज्वाला, अग्निशिखा ।

लटक, सं. स्त्री. (हि. लटकन) दे. 'लटकना'

सं. पुं. । २. कुंचनीयता, नम्यता ३. आवेशः,

आवेगः ४. पादः, विभ्रमः मजोहरो(२)।

अंगनगिः (स्त्री.) ।

—चाल, सं. स्त्री., सविभ्रमगतिः (स्त्री.) ।

लटकन, सं. पुं. (हि. लटकना) दे. 'लटकना'

सं. पुं. २. हावः, विभ्रमः ३. प्रालंबः,

शैलकः ४. नासिकाभूषणभेदः ५. उष्णीषलंबिनो

रत्नसुच्छः ।

लटकना, कि. अ. (सं. लटन) अय-प्र-लम्ब

(भ्वा. आ. से.), उद्बन्धु (धर्म.) २. दोल-

यते (ना. धा.) । प्रेक्षु (भ्वा. प. से.)

३. विलंबं कृ, चिरादति-ते (ना. धा.),

विलम्ब (भ्वा. आ. मे.) । सं. पु. तथा

भाव, अव-प्र-लम्बः-लम्बनं, उद्बन्धनं

२. प्रेक्षणं, दोलनं ३. विलम्बनं, कालक्षेपः ।

लटका, सं. पुं. (हि. लटक) गतिः (स्त्री.),

चारः २. हवभावौ, विभ्रमः ३. सविलासं

भाषणं ४. वाग्भाषारः (= तेजिया शालाम)

५. संक्षिप्त-योगः-उपचारः-औषधं ६. चलद-

गीतं ७. माया-न्यात, यष्टिः (स्त्री.) ८. अभि-

चारमंत्रः ।

लटकाना, कि. स., व. 'लटकना' के. प्रे. रूप ।

लटकाव, सं. पुं., दे. 'लटकना' सं. पुं. ।

लटकीला, वि. (हि. लटक) दे. 'लचकदार' ।

लटपट्टा, वि. (हि. लटपट्टाना) प्रसखल-

विवलत् (शत्रुत), अस्थिरगणिक २. शिथिल,

अपरिष्कृत, अस्तव्यस्त, अवसस्त ३. अस्पष्ट,

वृथत् (शब्द) ४. क्रामहीन, असंगत

५. शिथ, श्रान्त, ग्लान, अदाक्त ६. उदपेष-

गाढ-घन ७. बलियुत (बलादि) ।

लटपट्टाना, कि. अ. (सं. लट्+पट्) प्रसखल

(भ्वा. प. से.) २. पतत् खल (भ्वा. प. से.)

३. चपलदया गम् ४. वेष् (भ्वा. आ. से.)

५. अनुरंज (कर्म.) । सं. पुं., प्रसखलनं, दृग्नि-

तगतिः (स्त्री.), कंपनं, अनुरागः ।

लटा, वि. (सं. लट्टः) लपट २. नीच ३. तुच्छ

४. पणित ५. दृष्ट ।

लटापट्टी, सं. स्त्री. (हि. लटपट्टाना) दे. 'लट-

पट्टाना' सं. पुं. २. कलहः, कलिः ।

लट्टी, सं. स्त्री. (हि. लट्टा) १-२. अभद्र-

अस्त्य, वर्ता ३. भिक्षा(क्षु)की ४. वेश्या

५. पंशी-जिः (स्त्री.) ।

लट्टरी, सं. स्त्री. (हि. लट्ट) दे. 'लट्ट' (१) ।

—उत्तरवाना, चूलाकरणसंस्कारं कृ (प्रे.) ।

लट्टोरा, सं. पुं. (देश.) कलिंगः, धूम्राटः,

खगनेटः ।

लट्टू, सं. पुं. (सं. लुठन) भ्रमरकः-कं,

२. लंबकाः, लंबसीसकम् ।

—होना, मु., अस्यधिकं स्निह् (दि. प. से.),

गाढं अनुस्त् (वर्म.) ।

लट्ट, सं. पुं. [सं. लट्ट-यष्टिः (स्त्री.)] स्थूल-

वृहद्, शब्द-यष्टिः, लडुटः, लणुडः ।

—बाज, वि. (हि. + फा.) यष्टिवोध-पितृ,

दंडधर, दंडिक ।

—बाजी, सं. स्त्री. (हि. + फा.) दंडाडि

(अव्य.), यष्टियुद्धम् ।

—मार, वि. (हि.) दे. 'लट्टबाज' २. कड,

कठोर (वचन) ।

—मारना, कि. स., दंडेन-पष्टया प्रह (भ्वा.

प. अ.) । मु., पृषं भू (अ. व. से.) ।

पीन्ने—लिये फिरना, मु., सततं विल्प् (स.

उ. अ.) २. प्रतिकूल आचर् (भ्वा. प. से.) ।

लट्टी, सं. पुं. (हि. लट्ट) दीर्घकाष्ठं २. तुला,

छदिः, रथूणा ३. सादृषं च गजपितो भूमानदंठः ।

लट्टम्—, सं. पुं., दे. 'लट्टबाजी' ।

लट्टी, सं. पुं. (अं. लोणकलाय) *लंबपटः ।

लठ, सं. पुं., दे. 'लट्ट' ।

लठालठी, सं. स्त्री., दे. 'लट्टबाजी' ।

लठैत, सं. पुं. (हि. लठ) दे. 'लट्टबाज' ।

लडैत, सं. स्त्री. (हि. लडना) दे. 'लडाई' ।

लड, सं. स्त्री. [सं. यष्टिः (स्त्री.) ?] आवली-

लिः (स्त्री.), सरल, माला-हारः २. रज्जोः

पटक-सूक्ष्म, तंतुः ३. शृंसलः-लं-ला ४. श्रेणिः-

पंक्तिः (स्त्री.) ।

लडकपन, सं. पुं. (हि. लडका) बाल्यं,

कौमारं २. चापल्यं, चांचल्यम् ।

लडकमुष्टि, सं. स्त्री. (हि. + सं.), बालुमुष्टिः

(स्त्री.), अपक्वगतिः (स्त्री.) ।

लडका, सं. पुं. (हि. लड) बालकः, कुमारः

२. पुत्रः ।

लडकी

[२१८]

लथाड

—बाला, सं. पुं., संतति: (स्त्री.), संतानः
२. *परिवारः, कुटुंबम् ।
—लडकी, सं. स्त्री., संतति: (स्त्री.) ।
लडकेवाला, मु., (विवाहे) वरस्य जनकः
संरक्षको वा ।
लडकों का खेल, मु., सुकरकर्मन् (न.),
सुसाध्यकार्यम् ।
लडकी, सं. स्त्री. (हि. लडका) बालिका,
कुमारी २. पुत्री ।
—वाला, मु. (विवाहे) वध्वा जनकः संर-
क्षको वा ।
लडकौरी, वि. स्त्री. (हि. लडका) बालोत्संगा,
शिशुमती ।
लडखडाना, कि. अ. (सं. लड्+हि. खडा)
प्रखल् (भ्वा. प. से.), घूर्ण (भ्वा. आ.
से.) २. गदगदवाचा भाष् (भ्वा. आ. से.),
सगदगदं ब्र (अ. उ. से.) खल् । सं. पुं., प्रख-
लनं, घूर्णनं २. सगदगदं भाषणं, खलनम् ।
लडना, कि. अ. (सं. रणनं >) विग्रह (क.
प. से.), युष् (दि. आ. अ.), युद्ध-संग्राम-
संगरं कृ २. विवद् (भ्वा. आ. से.), विप्र-
ल्प (भ्वा. प. से.), कलहायन्ते (ना. धा.)
३. दंश (भ्वा. प. अ.) ४. संघट् (भ्वा.
आ. से.), संघृष्ट (क. प. से.) ५. मलयुद्धं
कृ, इत्साहस्ति-सुष्टीमुष्टि युष् । सं. पुं. तथा
भाव, विग्रहः, युद्धं, विवादः, विप्रलापः,
कलहः, दंशनं, संघटनं, संग्रामः, मलयुद्धम् ।
लडखडाना, कि. अ., दे. 'लडखडाना' ।
लडबावरा, वि. (हि. लडका + बावरा) मूर्ख,
अह, बालबुद्धि २. अशिष्ट, ग्रामीण ।
लडाई, सं. स्त्री. (हि. लडना) संग्रामः, दे.
'युद्ध' २. मल्ल-बाहु, युद्धं ३. वाग्युद्धं, कलहः
४. वादः, वादप्रतिवादः ५. संघट्टः, समाघातः
६. वितोधः, वैरम् ।
—करना, कि. स., दे. 'लडना' ।
—का मैदान, रणक्षेत्रं, युद्धभूमिः (स्त्री.) ।
—मोल लेना, मु., कामतः कलहे प्रवृत् (भ्वा.
आ. से.), युष् (संघटनं, युयुत्सते) ।
लडाका, सं. पुं. (हि. लडना) योधः, मटः,
योद्धु । वि., कलह-कलि, प्रिय, युयुत्सु,
विवादिन् ।
लडाकू, वि. (हि. लडना) सांप्रामिक (स्त्री
स्त्री.), बौद्ध (स्त्री स्त्री.) ।

लडाना, कि. स., व. 'लडना' के प्रे. रूप ।
लडी, सं. स्त्री., दे. 'लड' ।
लड्डीला, वि., दे. 'लाडल' ।
लडडू, सं. पुं. (सं. लडडुः) लडडुकः, मोदकः ।
—खिलाना, मु., निर्मेत् (चु. आ. से.) ।
—मिलना, मु., सुफलं अधिगम् ।
मन के—लाना, मु., मनोराज्यं विजृम्भ् (प्रे.) ।
लडा, सं. पुं. } [हि. लुड(डक)ना]
लडिया, सं. स्त्री. } बलदशकटी ।
लड, सं. स्त्री. (सं. रतिः >) कु, वृत्तिः (स्त्री.)-
शीलं, कदम्भासः, दुर्व्यसनं, दुःप्रवृत्तिः (स्त्री.),
दे. 'आदत' (बुरी) ।
लडखोर-रा, वि. (हि. लड+का. खोर) प्राद-
प्रहारसह, जघाषतसह, कुकामिन् २. नीच,
धुद्र । सं. पुं., दःसः, किकरः २. देहला, अव-
ग्रहणी ३. दे. 'प्रयंदाज' [लखोरिन (स्त्री.)] ।
लडपत, वि., दे. 'लथपथ' ।
लडा, सं. स्त्री. (सं.) बर्झा, ब(वे)ल्लिः-व(म)-
तलिः (स्त्री.); (वदुत्त शाखाओं तथा पत्तों
वाली) प्रतानिनी, मुक्तिमनी, वान्ध (स्त्री.),
उलपः २. सुन्दरी, तन्वी, रोचना ।
—मंडप, सं. पुं. (सं.) लडा, भवनं-कुंजः-गृहं,
नि, कुंजः-जं, कुंडलः-गम् ।
लडाड, सं. स्त्री., दे. 'लथाड' ।
लडाडना, कि. स. (हि. लड) दे. 'रोडना' ।
लडिका, सं. स्त्री. (सं.) लडु, बर्झा-व्रततिः (स्त्री.) ।
लडीका, सं. पुं. (अ.) दे. 'मुद्रकुल' ।
लडा, सं. पुं. (सं. लडकः) लडकः, कर्पटः-टं,
चीरं, पटखरं, जीर्णवसनं २. वस्त्रखंडः
३. बलम् ।
—कपडा, सं. पुं., परिधानं, वस्त्राणि-वातांसि
(न. बहु.) ।
लडी, सं. स्त्री. (हि. लड) पादप्रहारः,
लडाघातः, खुर, आघातः-क्षेपः ।
लडी, सं. स्त्री. (हि. लडा) *पतंगपुच्छं
२. लंबवस्त्रखंडः-डम् ।
लथडना, कि. अ., द. 'लथेडना' के कर्म. के
रूप ।
लथपथ, वि. (अनु.) अति, क्लिष्ट-उन्न-तिमित-
आर्द्र २. (पंकादिभिः) लिप्त, दिनध. मलिन,
कलुप ।
लथाड, सं. स्त्री. (अनु. लथपथ) भूमौ पात-

लघाङना

[२१६]

लपेटवाँ

यित्वा इतस्ततः कर्षणं २. पराजयः ३. हानिः (स्त्री.) ४. अधिलोपः, निर्मत्सर्जना, तर्जनम् ।

लघाङना, कि. स., दे. 'लताङना' २. 'ल-येङना' ।

लघेङना, कि. स. (अनु. लघपथ) पंकेन मलिनयति (ना. धा.), कर्दमे कृष् (भ्वा. प. अ.) २. संभिश्च (चु.), संसृज् (तु. प. अ.) ३. निर्भर्त्सुं (चु.), अधिक्षिप् (तु. प. अ.) ४. व्यध् (प्रे.), पीड् (चु.) ।

लघ्वना, कि. अ. (सं. लम्भ >) व. 'लादना' के कर्म. के रूप २. मृ (तु. आ. अ.) ।

लघ्वाना, } कि. प्रे., व. 'लादना' के प्रे. रूप ।
लघ्वाना, }

लघ्वा फँदा, वि. (हिं. लघ्वना + फँदना) भारा-क्रांत, भारग्रस्त, पर्याहारपीडित ।

लघ्वाच, सं. पुं. (हिं. लादना) दे. 'लादना' सं. पुं. २. भारः, भरः, पर्याहारः ३. पटला-दिषु निराधार इष्टकाचयः ।

लघ्वाव, लघ्वा, वि. (हिं. लादना) धुरंधर, धुरीण, धीरेय, धूर्व, पृष्ठय, श्यूरिन् (घोडा, बेल आदि) ।

लघ्वाव, वि. (हिं. लघ्वना) अलस, मंथर ।
—पन, सं. पुं., आलस्यं, मन्थरत्वम् ।

लघ्वा, सं. स्त्री. (देश.) अंजलिः, करपुटः २. अंजलि, मितं-मात्रं वस्तु (न.) ।

लघ्वा, सं. स्त्री. (अनु.) वैश्व-यष्टि, शब्दः, लपलपध्वनिः २. खड्गादीनां तरलप्रभा ।

लघ्वाक, सं. स्त्री. (अनु.) ज्वाला, अग्निशिखा २. क्षणिक-अस्थिर, दीप्तिः (स्त्री.) प्रभा ३. वेगः, जवः, त्वरा, लापव ४. प्लुतिः (स्त्री.), शीपा ।

लघ्वाकना, कि. अ. (हिं. लघ्वाक) धाव् (भ्वा. प. से.), द्रु (भ्वा. प. अ.), सत्वरं गन् २. स्फुर (तु. प. से.), तरलप्रभया प्रकाश (भ्वा. आ. से.) ३. वल् (भ्वा. प. से.), उद, प्लु (भ्वा. प. अ.) ४. धृ (चु.), प्रहृ (कृ. प. से.) । सं. पुं., धावनं, स्फुरणं, उद, प्लवनं, धारणम् ।

लघ्वाकाना, कि. स., व. 'लघ्वाकना' के प्रे. रूप ।
लघ्वाक्री, सं. स्त्री. (हिं. लघ्वाकना) सरलसीवन-भेदः ।

लघ्वाक्षप, वि. (अनु. लप + हिं. क्षपटना) चपल, चंचल २. क्षिप्र, आशु ।

लपट, सं. स्त्री. (हिं. लौ + पट) बह्विक्षिखा, ज्वाला २. तप्तप्रवनः, वर्मानिलः ३. सुगन्धः, सुवासः, दुर्गन्धः, पूतिगन्धः ४. सुगन्धि-दुर्गन्धि-पवनतरंगः ।

लपटना कि. अ., दे. 'लिपटना' ।

लपटशपट, सं. स्त्री. (सं. लपन + अनु.) प्र-जल्पः-पनं, निरर्थकशब्दाः (बहु.) ।

लपन, सं. पुं. (सं. न.) मुखं २. भाषणम् ।

लपलप, सं. पुं. (अनु.) लेहनं, लेहः । वि., क्षिप्र-क्षीघ्र, कारिच, आशु । कि. वि., क्षिप्रं, द्रुतं, झटिति (सभ. अर्थ.) ।

—करना, कि. स., लिङ् (अ. उ. अ.), जि-ह्वाग्रेण पा (भ्वा. प. अ.) ।

—खाना, कि. स., सत्वरं भक्ष् (चु.) ।

लपलपाना, कि. स. (अनु. लपलप) (जिह्वा-खट्वादिकं) परिभ्रमं (प्रे.)-वि-भू (स्वा. कृ. उ. से.) । कि. अ., खड्गप्रवत् प्रकाश-भास-द्युत् (भ्वा. आ. से.) । सं. पुं. तथा भाव, विधुवनं, विधूतिः (स्त्री.), विधूननं, परिभ्रा(भ्र)मणं, प्रकाशनं, भासनं, शीतनम् ।

लपलपाहट, सं. स्त्री. (हिं. लपलपाना) (ख-ड्गादीनां) द्युतिः-दीप्तिः (स्त्री.), प्रभा २. दे. 'लपलपाना' सं. पुं. ।

लपसी, सं. स्त्री. (सं. लप्सिका) द्रवप्रायः संयावः ३. द्रवप्रायं मक्ष्यम् ।

लपेट, सं. स्त्री. (हिं. लपेटना) दे. 'लपेटना' सं. पुं. व्यावर्तः, व्यावृत्तिः (स्त्री.) बंधन-चक्रं ३. परिधिः, परिणाहः, परिवेशः, मंडलं ४. कष्टं, बलेशः, कुच्छ्रं, जालं ५. कु-दुष्-प्रभावः ६. वेष्टनं, धंधनं ७. पुटः, भंगः, बलिः (स्त्री.) ।

लपेटना, कि. स. (हिं. लिपटना) संवेष्ट् (प्रे.), संपुटीकृ २. भ्रम्-धूर्णं (प्रे.) ३. व्यावृत् (प्रे.), पुटीकृ, पुटयति (ना. धा.) ४. पिण्डी-वर्तुली-कृ ५. आच्छद (चु.), परिवेष्ट् (भ्वा. आ. से., प्रे.) ६. संघंश्च (कृ. प. से.) ७. अन्तर्गण (चु.), संशिल्प (प्रे.) । सं. पुं. तथा भाव, संवेष्टनं, संपुटीकरणं, भ्रामणं, धूर्णनं, व्यावर्तनं, पिण्डीकरणं, आच्छादनं, संघंथनं, संश्लेषणम् ।

लपेटवाँ, वि. (हिं. लपेटना) सपुट, सभंग, बलियुत २. व्यावृत्त, आकुञ्चित, ३. गूढार्थ, गुप्ताशय, व्यंग्य ४. वक्र ।

लप्यङ्

[२२०]

ललचना

लप्यङ्, सं. पुं., दे. 'थप्यङ्' ।
 लप्या, सं. पुं. (देश.) सौवर्ण-राजत-तंतुजाला-
 भरणभेदः ।
 लफंगा, सं. पुं. (फ्रा.ग.) लंपटः, व्यभिचारिन्
 २. कुपथगः, दुर्बुधः ।
 लफटेट, सं. पुं. (अं. लेफिटनेट) गणाध्यक्षः
 २. प्रतिपुरुषः ।
 —गर्वनर, सं. पुं. (अं.) उपप्राताध्यक्षः, उप-
 भोगपतिः ।
 —जनरल, सं. पुं. (अं.) अक्षौहिणीयः ।
 सेकंड—, सं. पुं. (अं.) गुल्मपः ।
 लफज़, सं. पुं. (अ.) शब्दः, पदं २. उक्तिः
 (स्त्री.), भाषणम् ।
 —बलफज़, कि. वि., शब्दशः, यथाशब्दं,
 अक्षरशः ।
 लफज़ी, वि. (अ.) शब्द-चिह्नक ।
 —तर्जुमा, सं. पुं. (अ.) अक्षरशः-शब्दशः-
 मूलशब्दानुवृत्ति-भावोपेक्षक-अनुवादः ।
 —बहस, सं. स्त्री. (अ.) भावोपेक्षक-शाब्दिक-
 वादप्रतिवादः ।
 लफफाज़, वि. (अ.) वावदूक, वाचाल,
 बहुभाषिन्, मुखर ।
 लफफाज़ी, सं. स्त्री. (अ.) वावदूकता,
 वाचालता, मुखरता, जल्पकता ।
 लब, सं. पुं. (फ्रा.) अधरः, ओष्ठः, दंतच्छदः
 २. स्थदिनी, लाला ३. प्राग्गतः, मुखं, कंठः,
 धारः, कर्णः ।
 —रेज़, वि., परि-पूर्ण, संभूत ।
 लबकधौधो, सं. स्त्री. (अनु.) कोलाहलः-
 कलकलः २. अ-कु-दुर्, व्यवस्था, संकुलं,
 क्रमाभावः ३. अन्यायः, अधर्मः, अनैतिः (स्त्री.)
 ४. वाक्छलं, वाग्वचना ।
 लबलबा, सं. पुं. (अनु.) बलोमं, पक्किया
 (अं. पेनक्रियास) । वि., चिक्कण, संलग्नशील ।
 —का रस, सं. पुं., बलोमरसः ।
 लबादा, सं. पुं. (फ्रा.) *पिचुकंचुकः २.
 कंचुकः ।
 लबार, वि. (सं. लपनं >) मिथ्याभाषिन्
 २. जल्पाकः, बृथालापिन् ।
 लबालब, कि. वि. (फ्रा.) आ, कंठं-मुखं-कर्णम् ।
 वि., आकर्ण, परिपूर्ण ।
 लबी, सं. स्त्री., दे. 'राब' ।
 लबेरा, सं. पुं. (देश.) दे. 'लमोड़ा' ।

लब्ध, वि. (सं.) अव-प्र-आप्त, अधिगत,
 नमासादित २. उप-अजित । सं. पुं. (सं.
 न.) फलं, लब्धः (गणित) २. दासभेदः ।
 —प्रतिष्ठ, वि. (सं.) लब्ध-कीर्ति-नामन्,
 वि-प्र-ख्यात ।
 लब्धि, सं. स्त्री. (सं.) प्राप्तिः (स्त्री.), लग्नः
 २. उत्तरं, लब्धशः (गणित) ।
 लब्ध, वि. (सं.) प्राप्य, अधिगम्य २. उचित ।
 लमलङ्क, सं. पुं. (हि. लंभा + लङ्) लंबयष्टिः
 (स्त्री.) २. युक्तिः, प्रासः ३. लंबाग्न्यसम् ।
 वि., तनुलंब ।
 लमटंगा, वि. (हि. लंबी + टांग) दोषजंघ
 (-घा, घी स्त्री.) २. दे. 'लमटोंग' ।
 लमटोंग, सं. पुं. (देश.) सारसः, पुष्कराहः ।
 लमतडंग, वि., दे. 'लंबतडंग' ।
 लमहा, सं. पुं. (अ.) क्षणः, पलं, निमि(मि)षः ।
 लम्ब, सं. पुं. (सं.) पक्कुरूपता, ऐकल्य्यं, एकी-
 सदृशी-भावः, सायुज्यं, मरगता, लीनता
 २. पकायता, समाधिः, अनन्यमनस्कता
 २. अनुरागः, प्रेमन् (पुं. न.) ४. महाप्रलयः,
 कल्पांतः ५. अदर्शनं, शोषः, तिरोभावः ६. सं-
 श्लेषः, संमिश्रणं ७. नृत्यगीतवाद्यानां साम्यं
 (संगीत) ८. मूर्च्छा । सं. स्त्री., स्वरोद्गम-
 प्रकारः (२-३) दे. 'तर्ज' तथा 'सम' ।
 लरज़ना, कि. अ. (फ्रा. जरज़ा) कंप-वेष
 (स्वा. आ. से.) २. भी (जु. प. अ.), वि-
 सं-वस् (स्वा. वि. प. से.) ।
 लरज़ा, सं. पुं. (फ्रा.) कंपः, वेपथुः २. भूकंपः
 ३. *कंपज्वरः ।
 ललक, सं. स्त्री. (सं. लल् = चहना >) ।
 उत्कटेच्छा, लालसा, अभिलाषातिशयः ।
 ललकना, कि. अ. (हि. ललक) अत्यन्तं स्पृह
 (चु., चतुर्थो के साथ), अतीव अभिलष-
 वाङ् (स्वा. प. से.) ।
 ललकार, सं. स्त्री. (हि. अनु. लेले + सं. कारः)
 समर-, आह्वानं, युद्धाय आकारणं-ना, रणनि-
 मंत्रणं २. आक्रमण-, उत्तेजना-प्रेरणा ।
 ललकारना, कि. स. (हि. ललकार) आह्वे
 (स्वा. आ. अ.), (गोर्दु) आह्व-उद्दीप्-उत्तिज्-
 प्रचुद् (प्रे.) । सं. पुं. तथा भव, दे. 'ललकार' ।
 ललचना, कि. अ. (हि. लालच) दे. 'लल-
 चाना' कि. अ. ।

लल्लुचाना, कि. अ. (हिं. लल्लुचना) (अश्वन्तं) लुम् (दि. प. से.) स्पृह् (चु.)-कम् (भ्वा. आ. से.)-अभिलप् (भ्वा. दि. प. से.) २. मुह् (दिं. प. से.) । कि. स., अभिलाषां जन् (प्रे.), प्र.; लुम् (प्रे.) २. मुह् (प्रे.) वदीकृ ।

लल्लुचौहो, वि. (हिं. लालय) लोलुप-भ, गृध्नु, अभ्यमिलापित्, अत्यकाक्षित् ।

लल्लुन, सं. पुं. (सं.) प्रिय-ललित-बल-कुमारः २. कान्तः, वल्लभः ३. (नायकसंबोधन-पदं) लल्लुन ! प्रियवर ! ४. विहारः, क्रीडा, खेलः (स्त्री.) ।

लल्लुना, सं. स्त्री. (सं.) कामिनी, रामा २. विद्या ।

लल्लुचल्ला, सं. पुं. (सं. लल्लु >) दे. 'लल्लुन' (१-३) २. (बालकसंबोधनपदं) अंग ! वत्स ! *ललित ! ललितक !

लल्लुई, सं. स्त्री. (हिं. लाल) दे. 'लाली' ।

लल्लुट, सं. पुं. (सं. न.) अलि(ली)कं, गोविः (पुं. स्त्री.) भालं, निटि(ट)ळं, दे. 'माथा' २. भाग्यं, दैवम् ।

—पटल, सं. पुं. (सं. न.) ललाट-गस्तक-, पट्ट-फलकम् ।

—रेखा, सं. स्त्री. (सं.) भाग्यरेखः ।

लल्लाटिका, सं. स्त्री. (सं.) पत्रपादया, ललाटा-भरणभेदः २. ललाट-चरो-चर्ची, भालस्थान-दन्तं, तिलकः-कम् ।

लल्लाम, वि. (सं.) रम्य, सुन्दर २. रक्त, लोहित ३. श्रेष्ठ, प्रधान । सं. पुं. (सं. न.) आ-भूषणं २. रत्नं ३. चिह्नं ४. ध्वजः ५. श्रृंगं ६. अश्वः ७-८. अश्व-भूषणं-भाल-चिह्नं ९. प्रभावः १०. केस(श)रः-रं, दे. 'अयाल' ।

लल्लित, वि. (सं.) सुन्दर, मनोहर, रम्य, २. ईप्सित, अभीष्ट ३. लोल, चंचल, क्षोभ ।

—कला, सं. स्त्री. (सं.) कोमल-उल्लुष्ट-कला-शिल्पं (काव्य, संगीत, चित्रकारी इ.) ।

—लोचन, वि. (सं.) सु-नेत्र-नयन ।

लल्लिता, सं. स्त्री. (सं.) रमणी, सुन्दरी २. राधिकायाः सखीविशेषः ।

लल्लिताई, सं. स्त्री. (सं. ललित >) सौन्दर्यं, रम्यता ।

लल्लुई, सं. स्त्री. (हिं. लला-ह्ला) प्रिय-पुत्री, ललिततनुजा २. (नायिकासंबोधनपदं)

प्रिये ! वान्ते ! बल्लमे ! ३. (बालिकासंबोधन-पदं) लल्लिते ! वत्से ! कन्यके ।

लल्लौहो, वि. (हिं. लाल) आ-ईषद्, रक्त-लोहित ।

लल्लो, सं. स्त्री. (सं. लल्लुना) विद्वान-रसः ।

—चप्पो, सं. स्त्री., चाट्ट (पुं. न.),

—पत्तो, चाट्टिकिः (स्त्री.), उपच्छन्दसम् ।

—पत्तो करना, सु., मिथ्यः प्रशंस (भ्वा. प. से.), उपच्छन्द (चु.), चाट्टिभिः तुष् (प्रे.) ।

लल्लुंग, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'लौंग' ।

—लता, सं. स्त्री. (सं.) श्रीपुष्पलता (२. राधा-सखीविशेषः) ।

लल्लु, सं. पुं. (सं.) परम-अणुः, लेशः, कणः, कणिक, क्षुद्रखंडः, विदुः २. काष्ठाद्वयं, षट्-त्रिंशत्त्रिमेवमितः कालः ३. श्रीरामपुत्रः, मुशभ्रार ।

—लेश, सं. पुं. (सं.) १-२. अत्यल्प-मात्रा-संसर्गः ।

लल्लुवण, सं. पुं. (सं. म.) दे. 'नमक' । सं. पुं. (१-३) राक्षस-रस-समुद्र-विद्योयः । वि., लवणित, लवणिक, दे. 'नमकीन' २. सुन्दर ।

—भास्कर, सं. पुं. (सं.) पाचकचूर्णभेदः (वैद्यक) ।

लल्लुवाकर, सं. पुं. (सं.) लवणख(खा)निः (स्त्री.) २. सागरः ।

लल्लुनिनी, सं. स्त्री. (सं. लल्लुन) शश्व-लावः-संचयः ।

लल्लुलीन, वि. (सं. लल्लु + लीन >) व्यग्र, नि-मग्न, पर-परायण, निरत, लीन, आसक्त, व्यावृत्त ।

लल्लुवा, सं. पुं. (सं. लल्लुः) लावः (वः), लाव- (वः)कः, लघुजंगलः ।

लल्लुवर, सं. पुं. (फा.) सेना, सैन्यं, अनीक-किनी २. अन-ओषः-सन्दर्भः ३. शिनि(वि)रं, निवेशः ४. नाविकाः-नीवाहाः (वहु.) ।

लल्लुकरी, वि. (फा. लल्लुकर) सैनिकः, सेना-संबन्धित २. पौत-थ, हौड । सं. पुं., सैनिकः २. नाविकः ।

—भाषा, सं. स्त्री., मिश्रित-सैनिक-भाषा २. दे. 'उद्' ।

लल्लुन, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'लहसुन' ।

लल्लु, सं. पुं. (सं. लल्लु >) संलग्नशीलता,

श्लेषः, श्लेषणं २. संश्लेषक, श्लेष-द्रव्यं
३. आकर्षणम् ।

लसक, वि. (सं.) नर्तक, लसक ।

लसदार, वि. (हि + का.) संलनशील,
सांद्र, श्यान, शीन, श्लेषशील ।

लसना, क्रि. स. (सं. लसनं >) लपेन
संश्लिष्य (प्रे.) संयुज् (जु.) । क्रि. अ.,

शुभ (श्वा. आ. से.) २. विद् (दि. आ. अ.) ।

लसलसा, वि. (हि. लस) दे. 'लसदार' ।

लसलसाना, क्रि. अ. (सं. लस >) संश्लिष्य
(कर्म.) सांद्र-श्यान-शीन (वि.) भू ।

लसित, वि. (सं.) सुशोभित, सश्रीक २. प्रकट,
स्फुट ३. कीडशील ।

लसाला, वि. (हि. लस) दे. 'लसदार'
२. सुन्दर ।

लसुन, सं. पुं. (सं. लसुनं) दे. 'लहसुन' ।

लसो (सु) इरा, सं. पुं. (हि. लस) (वृत्त)
श्लेषमातः-तकः, पिच्छिलः, भूतद्रुमः, शातः,
शेखरः, उदात्कः २. (फल) श्लेषमातक-
पिच्छिल, फल, श्लेषमातकं इ ।

लस्यपस्यम्, क्रि. वि. (देश.) शनैः शनैः,
मंदं मंदं २. यथाकथंचित्, कथं, अपि-चिन् ।

लस्यी, सं. स्त्री. (सं. रसः > वा हि. लस्य)
दुग्धजलं. *क्षीरनीरं २. तक, दे. 'छाल' ।

लहँगा, सं. पुं. (हि. लंक + अंग) दे.
'पधरा' ।

लहकना, क्रि. अ. (अनु.) इतस्ततः भू (कर्म.)
प्र-वि-चल (श्वा. प. से.) । सं. पुं., इतस्ततः
विधूननं-विचलनं, धूतिः-निः (स्त्री.) ।

लहकाना, क्रि. स., व. 'लहकन' कं प्र. 'रूप' ।

लहकौर-रि, सं. स्त्री. (हि. लहना + कौर)
कवललाभः, वैवाहिकरीतिभेदः ।

लहजा, सं. पुं. (अ. अ.) ध्वनिः, स्वरः ।

लहजा, सं. पुं. (अ.) क्षणः, पलम् ।

लहना, क्रि. स. (सं. लमनं) दे. 'लना' सं.
पुं., शोध्य-प्रतिदेय, श्रृणं-पर्युद्वनं २. अदेय-
लभ्य, धनं ३. भाग्यम् ।

—चुकाना, सु., शब्दं शुष् (प्रे.) ।

लहर, सं. स्त्री. [सं. लहर-रिः (स्त्री.)]
उल्लोलः, बह्नीलः, कामिः-वीचिः (पुं. स्त्री.),
रंगः, दे. 'तरंग' । २. आ, वेगः, भाव, अवेशः
३. कामचारः, छंदः ४. सर्पदंशनमूच्छा-

पीडादीनां पुनःपुनर्भवो वेगः ५. प्रति, शब्दः-
ध्वनिः ६. आनन्दलहरी, आनन्दतिथयः
७. निहानक-कुटिल, गतिः (स्त्री.) ८. दे.
'लपट' (४) ।

—बहर, सं. पुं. (हि. + अ.) आनंदमंगलं,
सौभाग्यं, अभ्युदयः ।

लहरना, क्रि. अ., दे. 'लहराना' क्रि. अ. ।

लहराना, क्रि. अ. (हि. लहर) इतस्ततः
प्र-वि-चल (श्वा. प. से.), धू (कर्म.), प्रकम्प
(श्वा. आ. से.), तरंगति-तरंगायते (ना.
धा.), २. सर्पवत् व्रज (श्वा. आ. से.)

२. (वित्तं) उल्लस (श्वा. प. से.) ४. विराज
(श्वा. आ. से.) । क्रि. स., व. 'लहराना'

क्रि. अ. के प्रे. रूप । सं. पुं., धूतिः, धूनिः
(स्त्री.), इतस्ततः विचलनं-विधूननं-लपनम् ।

लहरिया, सं. पुं. (हि. लहर) बकरोखावृंदं
२. बकरोखांकितवस्त्रं, *लहरीयः ३. तरंगः ।

—दार, वि. (हि. + का.) बकरोखा, युत्-
अंकित, कामभद्र, भंगिन्त ।

लहरी, सं. स्त्री. (सं.) तरंगः, दे. 'लहर' (१) ।
वि. (हि. लहर) स्वेच्छा, काम, वारिन्,
आनंदित् ।

लहलहा, वि. (हि. लहलहाना) स्फुटित,
विकसित, सपत्रगुष्प, हरित, सरस, विकच
२. आनंदित, सुदित ३. पुष्ट ।

लहलहाना, क्रि. अ. (हि. लहरना) दे.
'लहराना' (१) २. पवित-पुष्पित-हरित-
सरस (वि.) जन् (दि. आ. से.) ३. स्फुट
(जु. प. सं.), विकस-फुल्ल (श्वा. प. से.)

४. मुद् (श्वा. आ. से.), इप् (दि. प. से.) ।

लहलहाहट, सं. स्त्री. (हि. लहलहाना)
धूतिः-धूनिः (स्त्री.), इतस्ततो विचलनं, दोलः
२. सरसता, विकचता, प्रफुल्लता, विकासः ।

लहसुन, सं. पुं. [सं. लसु(श्) नः-नं] रस-
(सीनः), महोषधं, महा-श्लेच्छ, कंदः, गृजनः-
नं, अरिष्टं, उग्रमधः, भूतघ्नः ।

लहसुनिया, सं. पुं. (हि. लहसुन) धूम्ररत्न-
भेदः, क्राशकं, वैदूर्यम् ।

लहू, सं. पुं. (सं. लोहः-हं) लोहितं, दे. 'रक्त' ।

—हा ध्यासा, वि., रक्तपिपासु, िपायु ।

—की कै, सं. स्त्री. रक्त-वमनं-छदिका ।

—के घूट पीना, सु., यथाकथंचित् सह ।
(श्वा. आ. से.) ।

—**लुहान होना**, सु., लोहितकिलब्र-रुधिर-स्नात-रक्त-रंजित-शोणशोथ (वि.) भू ।
लांग, सं. स्त्री. (सं. लांगूल) कच्छः, च्छं, कच्छ(च्छा)टिका, कच्छाटी, कक्षा, दे. 'काँछ' ।
 —**लुलना**, सु., अत्यर्थ भी (जु. प. अ.), साहसं धैर्यं युञ् (तु. प. अ.) ।
लांगल, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'हल' ।
लांगली, सं. पुं. (सं-लिन) बलरामः २. सर्पः ।
लांगूल, सं. पुं. (सं. न.) पुच्छे २. शिश्नम् ।
लांगूली, सं. पुं. (सं-लिन) कापः, वानरः ।
लांघना, कि. स. (सं. लंघनं) लंघ् (जु.), अतिक्रम (भ्वा. दि. प. से.), तु (भ्वा. प. से.) २. उत्प्लुत्य लंघ् (भ्वा. आ. से., जु.) । सं. पुं. तथा भाव, अतिक्रमणं, लंघनं, तरणं, उत्प्लुत्य लंघनम् ।
लांछन, सं. पुं. (सं. न.) कलंकः, दोषः, दूषणं, अपकीर्तिविह्वं २. निह्वं, लक्षण, लक्ष्मन् (न.), लिंगम् ।
 —**लगाना**, ड्रु (प्रे.) कलंकयति, यशो मलिनयति (दोनो ना. धा.) ।
लाइन, सं. स्त्री. (अं.) पंक्तिः (स्त्री.) २. रेखा ३. लोहमार्गः, ४. पत्तिसेना ५. दे. 'दारक' ।
 —**डोरी**, सं. स्त्री. दे. 'पेशलोमा' ।
ला, अ. (अ.) विना, न, कृते (सब अव्य.) ।
 —**हलाज**, वि. (अ.) असाध्य, निरुपाय, अचिकित्स्य, अप्रतिकार्य ।
 —**हलम**, वि. (अ.) निरक्षर, शिक्षाशून्य, विद्याविहीन, अज्ञ ।
लाइट, सं. स्त्री. (अं.) प्रकाशः, जालोकः ।
 —**हाउस**, सं. पुं. (अं.) प्रकाश, सप्तम्भ-गृहम्, आकाशदीपः, दीपस्तम्भः ।
लाकडा काकडा, सं. पुं. दे. 'माता(छोटी)' ।
लाक्षणिक, वि. (सं.) लक्ष्यागम्य (अर्थ), लाक्षण २. लक्षणज्ञ, लाक्षण्य ३. गौण, अप्रधान ४. लक्षणसंबन्धिन् ।
लाक्षा, सं. स्त्री (सं.) कौटुबा, जतुका, दे. 'लाख' ।
 —**गृह**, सं. पुं. (सं. न.) पांडवदाहार्थं दुर्धौन-निर्मापितो अतुगृहविशेषः ।
 —**रस**, सं. पुं. (सं.) दे. 'महावर' ।
लाख, सं. स्त्री. (सं. लाक्षा) राक्षा, यावः, यावकः, जतुक-का, जतु (न.) रक्ता, अलक्तः

(-क्तकः), द्रुम-आमयः, च्वाधिः, मुद्रिणी, जंतुका २. रक्तवर्णः कृमिनेदः ।
 —**चपड़ा**, सं. स्त्री., पत्रकलाक्षा ।
लाख, वि. (सं. लक्ष) नियुक्तं, अयुतदशकं, सहस्रशतकं २. असंख्य, अगण्य । सं. पुं. (सं. न.) उक्ता संख्या, तदंकादत्र (= २०००००) । कि. वि., असकृत, अनेकवारं, बहु, अधिकम् ।
 —**टके की बात**, सु., अत्युपयोगिवार्ता ।
 —**से झाक होना**, सु., वैभवात् दारिद्र्यं उप-इ (अ. प. अ.), विस्ततः परिक्षि (कर्म.) ।
लाखा, सं. पुं. (हि. लाख) ओष्ठरंजको लाक्षिकरंगः ।
लाखी, सं. स्त्री. (हि. लाख) लाक्षिकरंगः । वि., लाक्षिक, लाक्षा, निर्मित-रंजित-वर्ण-संबन्धिन् ।
लाग, सं. स्त्री. (हि. लगना) संपर्कः, संसर्गः, संबन्धः २. प्रेमन् (पुं. न.), अनुगमः २. अभिनिवेशः, आसक्तिः (स्त्री.) ४. युक्तिः (स्त्री.), उपायः ५. इंद्रजालं, माया ६. प्रतियोगिता, स्पर्धा ७. वैरं, शत्रुता ८. अभिचारः ९. भूमिकरः १०. धातुभन्मन् (न.), दे. 'भस्म' ११, *लागम् ।
 —**डाँट**, सं. स्त्री. (हिं.) वैरं, द्वेषः २. प्रति-योगिता-स्पर्धा ।
 —**रुपेट**, सं. स्त्री. (हिं.) पक्षपातः, पक्षपातित्वा, दूस्मदृष्ट्यभावः (स्त्री.) २. मनोगुप्ति-संघटितः (स्त्री.) ।
लागत, सं. स्त्री. (हिं. लगना) व्ययः, विनियोगः, विसर्जनं २. मूल्यं, अर्थः, जहाँ ।
 —**आना या बैठना**, कि. अ., मूल्येन क्रो-ग्रह (कर्म.) २. व्ययेन सपत्-साध् (कर्म.) ।
लाघव, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'लघुता' (१-५) । ६. क्षिप्रता, द्रुतता, दक्षता ७. क्लीबता ८. आरोप्यम् ।
लाचार, वि. (फा.) विवश, निरुपाय, अगतिक । कि. वि., विवश-निरुपाय-अगतिक-तया ।
लाचारी, सं. स्त्री. (फा.) विवशता, अगतिकता ।
लाची, सं. स्त्री., दे. 'इलायची' ।
लाज, सं. स्त्री. (सं. लज्जा) दे. 'लज्जा' (१-२) ।
 —**आना या करना**, कि. अ., दे. 'लजित होना' ।
 —**रखना**, सु., प्रतिष्ठां रक्ष् (भ्वा. प. से.), अपमानात् र (भ्वा. आ. अ.) ।

लाजवंत

[२२४]

लाना

लाजवंत, वि. (सं. लज्जावन्त) दे. 'लज्जाशील' ।
 लाजवंती, वि. (हिं. लाजवन्त) लज्जावन्ती,
 होमनी । सं. स्त्री., लज्जावन्तः (पुं. स्त्री.),
 संकोचिनी, स्वशीलज्जा, महाभीता, महोपधिः
 (स्त्री.), रक्त-पादी-मूला ।
 लाजवर्द्ध, सं. पुं. (फ्रा., मि. सं. राजवर्तः) ।
 गुणवर्तः, आवर्तमणिः २. (विदेशीय) नीलम् ।
 लाजवर्दी, वि. (फ्रा.) नीलवर्णः, आर्द्धपत्र-नील ।
 लाजवाच, वि. (अ.) निरुत्तर, सूची, कृत-
 भूत, वादे पराकित ३. अनुपम, अतुल ।
 लाजा, सं. स्त्री. { सं. लाजाः (पुं. बहु.) }
 अक्षताः (पुं. बहु.) २. तंडुलः ।
 लाजिम, वि. (अ.) आवश्यक, अवश्यकर्तव्य
 २. उन्नित, युक्त ।
 लाजिमी, वि. (अ. लाजिम) दे. 'लाजिम' ।
 लाट, सं. पुं. (अं. लॉर्ड) शासकः, शासित
 २. भोगपतिः, प्रांतध्यक्षः ।
 लाट, सं. स्त्री. (हिं. लटठा) रत्नमः, मेढिः-
 धिः, धूपः ।
 लाट, सं. पुं. (सं. बहु.) प्रांतविशेषः (गुज-
 रात, अहमदनगर के आसपास) २. लट-
 प्रांतब सिनः (बहु.) ३. (लाटः) अनुप्रास-
 भेदः (सा.) ४. जीर्णवसनभूषणादिकं
 ५. वसनानि-वासोसि (न. बहु.) ५. पंडितः ।
 लाटरी, सं. स्त्री. (अं.) गुटिकापातः, पाटकः,
 *लात्री ।
 लाटानुप्रास, सं. पुं. (सं.) शब्दालंकारभेदः
 (सा.) ।
 लाटिका, लाटी, सं. स्त्री. (सं.) रीतिभेदः
 (सा.) २. प्राकृतभाषाविशेषः ।
 लाठ, सं. पुं., दे. 'लाट' (१-२) ।
 लाठी, सं. स्त्री. (सं. लकुटयष्टी) यष्टिकः-
 का, यष्टी-टिः (स्त्री.), पांडः, लघुदंडः, दंडः,
 पशुपुनः २. वेत्रं, वेत्रयष्टः (स्त्री.) ।
 —चलना, मु., दंडाददि जन (दि. आ. से.) ।
 —ट्रेक के चलना, मु., यष्टिमवलम्ब्य दंडाश्रयेण
 चलु (भा. प. से.) ।
 —बाधना, मु., यष्टि धृ (चु.) ।
 लाड, सं. पु. (सं. लडः) लाडनं, उप-लालनं,
 २. परिश्वंगः, आलिंगनं, परिश्रमणं ३. चुंबनं,
 निरारं ४. मोटीकरणम् इ. ।
 —करना, क्रि. स., लल-लट-लाड (चु.),
 चुंब्-आलिग (भा. प. से.), मोटीकृ इ. ।

लाडला, वि. (सं. लाडः) उप-, लाडि(लि)-
 त, चुंबित, आलिंगित, प्रेम-लालन, आस्पर्द-
 पात्रं-भाजनं, प्रिय, अभिमत ।
 अत्यधिक—, वि., दुर्ललित, अतिलालित,
 लालनद्वयित ।
 लाडा, सं. पुं. (हिं. लाड) दे. 'वर' ।
 लाड़ी, सं. स्त्री. (हिं. लाड़ा) दे. 'वधू' ।
 लात, सं. स्त्री. (देश.) जंघा, आघातः प्रसूता
 २. पादः, चरगः-णं, पर्व ३. जंघा-पाद, जंघारः
 आघातः ४. सुर-पाणि, श्लेषः-आघातः ।
 —चलाना, मु., पादेन-जंघया प्रह (भा. प.
 अ.)-नाड (चु.) ।
 —जाना, मु., (गौ भैस आदि) दुग्धं न दद
 (भा. आ. से.) ।
 —मारना, मु., तुच्छं भत्वा त्यम् (भा.
 प. अ.) ।
 लाद, सं. स्त्री. (हिं. लादना) दे. 'लादना'
 सं. पुं. २. उदरं ३. अंजनम् ।
 लादना, क्रि. स. (हिं. लादना) भारं न्यस्-
 (दि. प. से.), निधा (जु. उ. अ.)-आरुह
 (प्रे.)-निविश (प्रे.), भाराकृतं कृ, भारेण
 पूर (चु.) ३. राही कृ, समाचि (स्वा. उ. अ.) ।
 सं. पुं. भ(भा)र, न्यासः-निवेशनं-आधानं-
 आरोपणम् ।
 लादनेवाला, सं. पुं. भ(भा)र, -आरोपकः-नि-
 वेशकः ।
 लादवा, वि. (अ.) दे. 'लाइलाज' ।
 लादा हुआ, वि., भार, यस्त-अभ्रांत, आरोपित-
 निदेशित-स, भार ।
 लादी, स्त्री. (हिं. लादना) भारः, पोटलिका ।
 लादू, वि. (हिं. लादना) दे. 'लडू' ।
 लानत, सं. स्त्री. (अ. लानत) धिक्कारः,
 न्यक्कारः, निर्-भर्त्सनीय, अधिक्षेपः, गर्हा ।
 —मलामत करना, क्रि. स., निर्भर्त्स (चु.
 आ. से.), अधिक्षिप् (तु. प. अ.) ।
 लानती, सं. स्त्री. (अ. लानत) निच, गह्वं,
 निर्भर्त्सनीय, दुष्ट, खल ।
 लाना, क्रि. स. (हिं. लेना+आना) आनी
 (भा. प. अ.), उपा-आ-इ (भा. प. अ.),
 आवह (भा. प. अ.) २. उपस्था (प्रे.), पुरी
 निधा (जु. उ. अ.), उपन्यस (दि. प. से.)
 ३. उपह (भा. प. अ.), सम्-कृ (प्रे.),
 उपायनं वा ४. उत्पद्-जन् (प्रे.) । सं. पुं,

आनयनं, आ-उपा-हरणं, आवहनं, उपस्थापनं, उत्पादनं इ. ।

लाने योग्य, वि., आनेय, उपाहार्य, उपस्थाप्य ।
लानेवाला, सं. पुं., आनेत्, आ-उपा-हर्त्-
हारकः ।

लापता, वि. (अ. ला+हि. पता) अलभ्य,
अश्वय, तिरोहित, अन्तर्हित, गुप्त, प्रच्छन्न,
अज्ञातवास ।

लापरवा-वाह, वि. (अ. ला+फ़ा. परवाह)
निश्चित, अनवहित, प्रमत्त, प्रमादिन् ।

लापरवाही, सं. स्त्री. (अ.+फ़ा.) निश्चितता,
अनवधानता, प्रमत्तता, प्रमादः ।

लाफ़, सं. स्त्री. (फ़ा.) आत्म-स्व-इलावा-
इशंसा, विकल्पनम् ।

—ज्जन, वि., आत्मश्लाघिन्, विकल्पनशैल ।

—ज्जनी, सं. स्त्री., आत्मश्लाघिता, विकल्पन-
शैलता ।

लाफिंग मैस, सं. स्त्री. (अं.) हसनवातिः
(स्त्री.) ।

लाम, सं. पुं. (सं.) अव-प्र-आप्तिः, उप-
लब्धिः (दोनों स्त्री.), अधिगमः-मनः, आ-
सादनं इ. फलं, आयः, उदयः, वृद्धिः (स्त्री.),
लभ्यं इ. कल्याणं, उपकारः, हितम् ।

—उडाना, क्रि. अ., लाम अधिगन्, अर्ज
(स्था. प. से., प्रे.), लम् (स्था. आ. अ.)
समासद् (प्रे.), विद् (तु. उ. वे.) ।

—दायक, वि. (सं.) लाम-कारक-कारिन्-
जनक-मद, गुणकारिन्, हित, हितकर, फल-
दायक, उपयोगिन् ।

लाभालाम, सं. पुं. (सं.-भौ दि.) अत्यापायी,
अधिगमापगमौ, वृद्धिक्षयी, उपचयापचयी ।

लाम, सं. पुं. (फ़ा. लामं) सैन्यं, सेना
इ. जनौषः इ. युद्धम् ।

लामझहब, वि. (अ.) धर्मविशुद्ध, नास्तिक ।

लायक, वि. (अ.) योग्य, क्षम, समर्थ, शक्त
इ. अनुरूप, अनुकूल, उपयुक्त इ. गुणिन्,
गुणवत्, सुशील, श्रेष्ठ, भद्र ।

लाया हुआ, वि., आनीत, आ-उपा-हृत, उप-
स्थापित, उपन्यस्त ।

लार, सं. स्त्री. (सं. लाला) दे. 'राल' (२) ।

लार्ड, सं. पुं. (अं.) जगदीशः इ. स्वामिन्
इ. क्षेत्रपतिः इ. आंग्लदेशी उपाधिभेदः ।

लाल, सं. पुं. (फ़ा.) पञ्चरागः, दे. 'माणिक्य'
वि., रक्त, लोहित, रोग ।

—आलू, सं. पुं., दे. 'रतालू' इ. दे. 'अरुई' ।

—इलायची, सं. स्त्री., दे. 'इलायची' (बड़ी) ।

—कुर्त्ती, सं. स्त्री., आंग्लसैन्यनिवेशः, शिबि-
(वि) रम् ।

—चंदन, सं. पुं., रक्त-कु-देवी, चंदनं, रंजनं,
दे. 'चंदन' में ।

—पानी, सं. स्त्री., घुसा, मधम् ।

—पैठा, सं. पुं., दे. 'कुम्हड़ा' ।

—बुझकड़, सं. पुं., पंडित-प्राज्ञ-मन्यः, प्राज्ञ-
पंडित, मानिन्-अभिमानिन्-वादिन् ।

—मिचं, सं. स्त्री., दे. 'मिचं' में ।

—मूली, सं. स्त्री., दे. 'शलजम्' ।

—शक्कर, सं. स्त्री., दे. 'खौड़' ।

—सागर, सं. पुं., रक्तसागरः ।

—सुख, वि., अग्निरूप, अंगारवर्ण, अतिलोहित
इ. अति-कुपित-संरम्भ ।

—पीला होना, पीली आँखें निकालना, मु.,
अत्यंत कुर् (दि. प. से.)-क्रुध (दि. प.
अ.), संरमातिशयेन लोहितलोचन-रक्तवदन
(वि.) भू ।

लालच, सं. स्त्री. (सं. लालता) लोलुपता,
दे. 'लोभ' ।

लालची, वि. (हिं. लालच) लोलुप, दे. 'लोभ' ।

लालटेन, सं. स्त्री. (अं. लैटनं) प्रदीपः-पकः,
प्रदीपकोशः(पः) ।

लालड़ी, सं. स्त्री. (फ़ा. लाल) मिथ्यामा-
णिक्यं, कृतकलोहितकम् ।

लालन, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'लाड' सं. पुं. ।

—पालन, सं. पुं. (सं. न.) पालन-भरण-
पोषणं, संवर्द्धनं, भरणं, रक्षणम् ।

लालन, सं. पुं. (हिं. लाल) प्रिय-लालित-
पुत्रः-कुमारः इ. बालकः ।

लालसा, सं. स्त्री. (सं.) उत्कटेच्छा, लिप्सा-
आकांक्षा-वांछा-स्थूहा-इच्छा-अभिलाष, अति-
शयः इ. उत्कंठा, उत्सुकता इ. गर्भ-दोहदः ।

लाला, सं. पुं. (सं. लालकः >) महाशयः,
महोदयः, श्रीमत्, श्रीयुत् २. (क्षत्रियवैश्यानां
संबोधनं) श्रीमत् ! महोदय ! श्रेष्ठिन् इ. काय-
स्थः ४. शिशुः, बालः ५. (बालसंबोधनपदं)
वत्स ! अंग ! ललित ! ललितक ! ६. विदुः,
जनकः ।

—भैया करना, मु., सादर संभाष (भ्वा. आ. से.)-संबुध् (प्रे.) २. लड-लस (चु.) ।

लाला^२, सं. स्त्री. (सं.) मुखत्तावः, दे. 'राल'(२) ।

लाला^३, सं.पुं. (फ्रा.) खसखस-खसतिल, पुष्पम् ।

लालाटिक, वि. (सं.) ललाट-भाल, संबन्धिन् २. दैव, आयत्त-निर्दिष्ट ३. सावधान । सं. पुं., सावधानः सेवकः २. अलसः ।

लालायित, वि. (सं.) अत्यभिलाषिन्, अत्याकांक्षिन्, अत्यसुक, लालस ।

लालित, वि. (सं.) लाडित, चुंबित, आलिंगित, क्रोडीकृत, प्रिय २. संबद्धित, पोषित ।

लालित्य, सं. स्त्री. (सं. न.) सौंदर्य, मनोज्ञता, मनोहरता, छविः (स्त्री.), माधुर्यम् ।

लालिमा, सं. स्त्री. (फ्रा. लाल) दे. 'लाली' ।

लाला, सं. स्त्री. (फ्रा. लाल) रक्तत्वं-ता, लौहित्य, रक्तिमन्-लोहितिमन्-अरुणिमन् (सं.), अरुणता, लोहितता-त्वं, २. सम्मानः, प्रतिष्ठा ३. प्रिय, कन्य(न्य)का-कुमारिका ।

लाले, सं. पुं. (सं. लाल >) लालसा, उत्क-टेच्छा ।

(किसी चीज के)—पड़ना, मु., अतिलालायित (वि.) भू, अत्यंत स्पृह (चु., चतुर्थी के साथ) २. दुर्लभ-दुष्प्राप (वि.) वृत्त (भ्वा. आ. से.), कृच्छ्रेण लभ-प्राप् (कर्म.) ।

लाव^१, सं. पुं. (सं.) कर्तनं, कृतनं, लवनं, छेदनम् २. लवः, लावकः, लघुजंगलः ।

लाव^२, सं. स्त्री. (देश.) दे. 'रस्सा, रस्ती' ।

लावक, सं. पुं. (सं.) लवः, लावकः, लघु-जंगलः २. छेदकः, छेत्, छेदकरः,—छिद् ।

लावण्य, सं. पुं. (सं. न.) लवणता-त्वं, क्षारता २. विशिष्ट-सौंदर्य-रूपं, छविः (स्त्री.), चारुता, श्रीः-कांतिः (स्त्री.) ।

लावणी, सं. स्त्री. (देश.) (१-२) छन्दो-गीतिका, -भेदः, *लावणी ।

लावलशकर, सं. पुं. (हिं + फ्रा.) सपरिच्छदं सैन्यम् ।

लावल्द, वि. (अ.) निस्तंतान, निरपत्य ।

लावा^१, सं. पुं. (सं. लावः-वः) दे. 'लवा' ।

लावा^२, सं. पुं. (अं.) ज्वालामुखी-आग्नेय, उद्गारः ।

लावारिस, वि. (अ.) अदायाद, दायादरहित

(मनुष्य) २. अदायिक, स्वामि-प्रभु, हीन (धन) ।

—माल, सं. पुं. (अ.) अदायिक-स्वामिहीनं, रिक्त्य-द्रव्य-धनम् ।

लाश, सं. स्त्री. (फ्रा.) दे. 'शव' ।

लासा, सं. पुं. (हिं. लस) संश्लेषक, द्रव्य-श्लेषः २. द्रुमदुग्धं, क्षुपक्षीरम् ।

—लगाना, मु., प्र-वि, लुभ् (प्रे.), प्रतृ-बन्च् (प्रे.) २. उत्तिज्-उद्दीप् (प्रे.) ३. संश्लेषक-द्रव्येण खगान् बन्ध् (क्र. प. अ.) ।

लासानी, वि. (अ.) अनुपम, अप्रतिम, अद्वितीय ।

लास्य, सं. पुं. (सं. न.) नृत्यं २. भाव-ताल-लय-आश्रय-नृत्यं ३. स्त्रीनृत्यं ४. तीर्थत्रिकम् ।

लाहौरी नमक, सं. पुं. (हिं. + फ्रा.) दे. 'सैंधा नमक' (नमक के नीचे) ।

लिंग, सं. पुं. (सं.) चिह्नं, लक्षणं, अभिज्ञानं, लक्ष्मन् (न.) २. अनुमानकारणं, साधक-हेतुः ३. मूलप्रकृतिः (स्त्री., सां.) ४. मेढूः-हू, दे. 'लिंगेन्द्रिय' ५. शिवमूर्ति-भेदः ६. शब्द-रूपभेदः (व्या.) ७. पुराणविशेषः ।

—देह, सं. पुं. (सं.) मूक्षम-लिंग, शरीरं (= १० इन्द्रियाँ, ५ तन्मात्रा, मन, बुद्धि=१७ तत्त्व) ।

—पुराण, सं. पुं. (सं. न.) शैवानां पुराण-विशेषः ।

—वृत्ति, सं. पुं. (सं.) धर्मध्वजिन्, दाम्भिकः, लिंगिन् ।

—स्थ, सं. पुं. (सं.) ब्रह्मचारिन् ।

लिंगेन्द्रिय, सं. पुं. (सं. न.) श्लेषः, शिश्नः-नं, लिंगं, उपस्थः-स्थं, श्लेषस् (न.), राग-काम, लता मेढूः-हू, मेहनं, शंकुः, काम-मदन, अंकुशः, ध्वजः, कंदपमुपलः ।

लिंगोटी, सं. स्त्री., दे. 'लिंगोटी' ।

लिंट, सं. पुं. (अं.) व्रणोपयोगी श्लक्ष्णवस्त्रभेदः ।

लिफ, सं. पुं. (अं.) देहरसः ।

लिण, अव्य. (कारकचिह्न) (सं. लभ् न या कृते) —अर्थ, —अर्थ-अर्थाय, कृते-हेतोः, (प्रायः चतुर्थी विभक्ति, से, उ. राम के लिण=रामाय) ।

लिखत, सं. स्त्री. (सं. लिखितं) लेखः, लिपि-बद्ध-अक्षरांकित, विषयः २. लिखितपत्रं ३. लिखितं दे. 'दस्तावेज' ।

लिखना, क्रि. स. (सं. लिखनं) लिख् (तु. प. से.), लेखे वर्णं (चु.)-प्रतिपद् (प्रे.),

पत्रे आरूढ-निबिड (प्रे.), लिपिवद्ध (वि.)
 कृ. २. (ग्रंथ'दि), प्रणी (भ्वा. प. अ.),
 रत्न (चु.), निर्मा (जु. आ. अ.; अ. प. अ.),
 ग्रंथ (क्र. प. से.), नि-प्र, बंध् (क्र. प. अ.)
 ३. वर्ण (चु.), आ-अभि, लिख्, चिच् (चु.) ।
 सं. पुं. लि(ले)खनं, पत्रे आरोपण-निवेशनं
 २. रत्नं, निर्माणं, प्रणयनं ३. आलिनं,
 चित्रणम् ।

लिखने योग्य, वि., लेख्य, लेखनीय,
 लेख इ इ ।

लिखने वाला, सं. पुं., दे. लेखकः ।

लिखवाड़े, सं. स्त्री., दे. 'लिखाई' (४) ।

लिखवाना, क्रि. प्रे., व. 'लिखना' के प्रे. रूप ।

लिखाई, सं. स्त्री. (हिं. लिखना) लिखनं,
 लेखनं, अक्षर-विन्यासः २. लिपिः (स्त्री.)-पी,
 अक्षर-रचनाः ३. लि(ले)खन, रीतिः (स्त्री.)-
 शैली ४. लि(ले)खन, मृतिः (स्त्री.) ।

—पढ़ाई, सं. स्त्री., विद्याभ्यासः, शिक्षा,
 लिखनपठनम् ।

लिखाना, क्रि. प्रे., व. 'लिखना' के प्रे. रूप ।

—पढ़ाना, मु., शिक्ष (प्रे.), विद्याभ्यासं कृ
 (प्रे.) ।

लिखापदी, सं. स्त्री. (हिं. लिखना + पढ़ना)
 लेख-पत्र, भ्यवहारः २. लिखितेन दृढीकरणम् ।

लिखावट, सं. स्त्री. (हिं. लिखना) लिपी-पिः
 (स्त्री.), अक्षर, विन्यासः-संस्थानं २. लेख-
 लेखन, प्रणाली-शैली ।

लिखा हुआ, वि. लिखित, लिपिवद्ध, लेख्यापित
 २. रचित, प्रणीत, निमित्त ३. निश्चित ।

लिखित, वि. (सं.) लेख-लिपि, बद्ध, अंकित,
 लेख्य, कृत-आरूढ सं. पुं. (सं. न.) लि(ले)-
 खनं, लेखः २. लिपी-पिः (स्त्री.) ३. लिखितं,
 दे. 'दस्तावेज' ४. प्रमाणपत्रम् ।

—पाठक, सं. पुं. (सं.) हस्तलेख, पाठकः-
 अध्येतु ।

लिटमस, सं. पुं. (अं.) शैबलम् ।

लिटाना, क्रि. स., व. 'लेटना' के प्रे. रूप ।

लिथडना, क्रि. अ., व. 'लथेडना' के कर्म.
 के रूप ।

लिपटना, क्रि. अ. (सं. लिप >), आ-प्र-सं,
 संज् (भ्वा. प. अ.), सं-परि, लग् (भ्वा. प.
 से.) संसक्त-परिलग्न (वि.) भू, दिलष्
 (दि. प. अ.) २. आलिष् (भ्वा. प. से.),

आदिलष्, परि, स्वञ् (भ्वा. आ. अ.),
 उपगुह् (भ्वा. उ. से.) २. लीन-भग्न-व्यापृत-
 निरत-परायण (वि.) भू । सं. पुं., आसंगः,
 परिलगनं, इलेषः २. आलिनं, परिरंभण,
 परिश्वजनम् ।

लिपटनेवाला, सं. पुं., आसंगिन्, संलग्नशीलः
 २. आलिनकरुं, परिरंभकः ३. आलिंगित ।

लिपटाना, क्रि. स., व. 'लिपटना' के प्रे. रूप ।

लिपटा हुआ, वि., परिलग्न, संसक्त, उपगूढ ।

लिपटो, सं. स्त्री. (सं. लेपः >) उपनाहः,
 उल्कारिका, प्रलेपः ।

लिपना, क्रि. अ., व. 'लीपना' के कर्म. के रूप ।

लिपनाना, लिपाना, क्रि. प्रे., व. 'लीपना' के
 प्रे. रूप ।

लिपाई, सं. स्त्री. (हिं. लीपना) प्र-वि, लेपः-
 लेपनं, उपनाहनं, लिपः, लिपः, लिपी-पिः
 (स्त्री.) २. लेपन-नृत्वा-कर्मण्या-मर्मण्या ।

लिपि, सं. स्त्री. (सं. लिपी-पिः, स्त्री.) लिपिका,
 लिपी-वि-विः (स्त्री.), अक्षर, विन्यासः-
 संस्थानं-रचना, लिखितं, लि(ले)खनम् ।

—कर, सं. पुं. (सं.) लेपकः, लेपकारः, पलांडः,
 लिपः, लिपिकरः २. लेखकः, पत्रिकारः,
 लिपिकारः ।

—कार, सं. पुं. (सं.) दे. 'लिपिकर' (२) ।

—बद्ध, वि. (सं.) लिखित, अक्षरांकित,
 लेखनिवेशित ।

—सजा, सं. स्त्री., लेख, साधनानि-उपकरणानि
 (न. बहु.) ।

लिप्त, वि. (सं.) चर्चिन, दिग्ध, लेयान्वित,
 २. भग्न, लग्न, निरत, आसक्त, लीन ।

लिप्सा, सं. स्त्री. (सं.) इच्छा, अभिलाषः,
 इप्सा २. लोभः, लोलुपता ।

लिप्सु, वि. (सं.) इच्छु-च्छुक, अभिलाषिन्
 २. लोलुप-भ, गृध्नु ।

लिप्साका, सं. पुं. (अ.) पत्र, पुटः-कोषः-आवे-
 छनं-आवरणं २. आपातरमणीववेशः ३. आढ-
 वरः ४. भंगुर-भिदुर, पदार्थः ।

—खुलना, मु., रहस्यं विवृ (कर्म.), स्वरूपं
 प्रकटीभू ।

—घनाना, मु. आढवरं रच् (चु.) ।

लिबास, सं. पुं. (अ.) दे. 'वेश' ।

लियाकृत, सं. स्त्री. (अ.) योग्यता, क्षमता
 २. गुणः, कला ३. सामर्थ्यं ४. शीलम् ।

लिबाना, कि. प्रे., ब. 'लेना' तथा 'लाना' के प्रे. रूप ।

लिबा लाना, कि. स., सह आनी (भा.प.अ.)

लिसोडा, सं. पुं., दे. 'लसोडा' ।

लिहाऊ, सं. पुं. (अ.) अवैक्षण. अवधानं
२. कृपा-दया, दृष्टिः, (स्त्री.) अनुग्रहः ३. पक्ष-
पातः-तिता ४. लज्जा, श्रमा ५. प्रतिष्ठा-मर्यादा,
विचारः ६. शीलसंकोचः ।

—करना, कि. अवधा (नु. उ. अ.) २. आदृ
(तु. आ. अ.) ३. अनुग्रह (क. प. से.)
४. मर्यादा पा (प्रे. पालयति) ।

लिहाजा, अ. (अ.) अतः, अत एव (दोनों
अव्य.) ।

लिहाऊ, सं. पुं. (अ.) दे. 'रजाई' ।

लीक, सं. स्त्री. (सं. लखा) रेषा-खा, दंडाकार-
लिपी-पिः (स्त्री.) २. (शकटादोनां) चक्र-
मार्गः ३. दे. 'पगदंडी' ४. मशस् (तं.),
प्रतिष्ठा ५. रीतिः (स्त्री.), लोकाचारः; प्रथा
६. कलंकः, लोचनं ७. गणनाचिह्नम् ।

—पर चलना, } सु. दे. 'लकोर' के नीचे ।

—पीटना, }
—से बेलीक होना, सु., पथभ्रष्ट (वि.) भू,
रुद्धि त्वञ् (भा. प. अ.) ।

लीख, सं. स्त्री. (सं. लीखा) लिखा, यूकांड,
लि(स्त्री)का, लिख्यः ।

लीचड, वि. (देश.) अलस, मंद, मंथर
२. संलग्नशील, दृढग्रहिवन् ३. कृपण, कर्द्वर्य ।

—पन, सं. पुं., आलस्यं, कार्पण्यं, संलग्न-
शीलता ।

लीची, सं. स्त्री. (चीनी-लीचू) अलीचिका,
फलभेदः ।

लीडर, सं. पुं. (अं.) दे. 'नेता' ।

लीद, सं. स्त्री. (देश.) (गजाश्वदीनां) अव-
स्करः, उच्चारः, शमलं, पुरीषं, फलम् ।

लीट, वि. (सं.) लयप्राप्त, समाविष्ट, व्याप्त
२. तन्मय, नि-भ्रमन, आसक्त, तद्गतचित्त,
निरत, व्याप्त, पर-परायण । ३. द्रवीभूत
४. तिरोहित, लुप्त ।

लीनता, सं. स्त्री. (सं.) तन्मयता, तत्परता,
निभ्रमता, आसक्ति (स्त्री.) ।

लीपन, सं. पुं. (सं. लेपनं) दे. 'लिपाई'(१) ।

लीपना, कि. स. (सं. लेपनं) अनु-प्र-वि-
लिप् (तु. प. अ.) २. दिह् (अ. उ. अ.),

उपनह् (दि. प. अ.), अञ् (र. प. वे.) ।
सं. पुं., अनु-प्र-वि-लेपः-लेपनं; उपनाहनं-
उपदेहनम् ।

—पोतना, कि. स., लुप् (प्रे.), संस्कृ. ।

लीपनेवाला, सं. पुं., लेपकः, पलंगंडः,
२. उपदेहकः ।

लीपा हुआ, वि., प्र-वि-लिप्त, दिग्ध, अक्त ।

लीमू, सं. पुं. (फा.) दे. 'निम्' ।

लीला, सं. स्त्री. (सं.) क्रीडा, केलिः (स्त्री.),
खेला, खेलनं, कूदनं, क्रीडनं २. विहारः,
विनोदः, रंजनं ३. शृङ्गारभावचेष्टा, विलासः,
काम-क्रीडा-केलिः (स्त्री.) ४. हावभेदः (सा.)
५. विचित्रव्यापारः, रहस्यकृत्यं ६. चरित्रा-
भिनयः (उ. रामलीला इ.) ।

—गृह, सं. पुं. (सं. न.) विलास-क्रीडा-
भवनम् ।

—पुरुषोत्तम, सं. पुं. (सं.) श्रीकृष्णः ।

—स्थल, सं. पुं. (सं. न.) क्रीडाभूमिः (स्त्री.) ।

लीलावती, वि. स्त्री. (सं.) विलासिनी ।
सं. स्त्री. (सं.) भास्कराचार्यभार्या २. गणित-
ग्रन्थविशेषः (३-४) रागिनी-छंदो-भेदः ।

लुंगी, सं. स्त्री. (हिं. लंग) *निष्कण्ठ-
शाटी-धौतिका २. *रेखोष्णीषः-धं, चित्रशिरो-
वेष्टनम् ।

लुंचन, सं. पुं. (सं. न.) उद्वेगनं, उद्धरणं,
उत्कर्षणं, २. पृथक् करणं, अपनयनं ३. कर्तनं
द्विधनम् ।

लुंज-जा, वि. (सं. लुंचनं) करचरणविहीन,
अपांग, व्यंग, विकल, विकलांग, श्लोण । सं.
पुं., स्थाणुः, ध्रुवः, शंकुः, अथवादपः ।

लुंठक, सं. पुं. (सं.) लुंटा(ठा)कः, दे. 'लुटेरा' ।

लुंडन, सं. पुं. (सं. न.) अपहरणं, मोषणं, दे.
'लुटना' (सं. पुं.) ।

लुंडे, सं. पुं. (सं.) चौरः, तस्करः ।

लुंडे, सं. पुं. (सं. रुंडः-डं) कबंधः ।

—मुंड, वि. (सं. रुंडं + मुंडं) दे. 'लुंज' वि.
तथा सं. पुं. २. पोडूलीवत् व्यावर्तित ।

लुंडा, वि. (सं. रुंड) दे. 'लुंडूरा' ।

लुभाठी, सं. स्त्री. (सं. उल्का + काष्ठं) ।
अलातं, उल्का, प्रदीप्तकाष्ठम् ।

लुभाव, सं. पुं. (अ.) संलग्नशीलः, फलसारः
२. लाला, स्वदिनी ।

—दार, वि. (अ. + ङा.) संलग्नशील, दे. 'लसदार' ।

लुक, सं. पुं. (सं. लोकाः >) कुक्कुभः (= वा-निश) २. ज्वाला ।

लुकना, कि. अ. (सं. लुक = लोप >) दे. 'छिपना' ।

—लुकधिपकर, मु., निभृतं, रहसि, रहः (सव अन्व.) ।

लुकमा, सं. पुं. (अ.) कबलः, घासः, गुडकः ।

लुकमान, सं. पुं. (अ.) प्राचीनो वैक-विशेषः ।

—के पास द्वा नहीं, मु., असाध्य-अप्रति-कार्य-निरुधाय-रोगः-व्याधिः-आमयः ।

—को हिकमत सिखाना, मु., प्राहाय प्रशंदा (जु. उ. अ.), चतुरमणि चातुर्वै शिख (प्रे.) ।

लुकाट, सं. पुं. (सं. लकु(क)चः) (वृक्ष) लिकुचः, शरः, कादर्यः, इदवल्कलः, उडुः । २. (फल) लक(कु)चं, शरं इ. ।

लुकाना, कि. स. (हि. लुवाना) व. 'छिपना' के प्रे. रूप ।

लुगदी, सं. स्त्री. (देश.) आर्द्रगोलकः-कम् ।

लुगाई, सं. स्त्री. (हि. लोग) नारो २. पत्नी ।

लुचपन, सं. पुं. (हि. लुचा) लंपटता, कामुकता २. दुर्वृत्तं, दुराचारः, दीर्घन्यम् ।

लुच्चा, सं. पुं. (हि. लुचकना, सं. लुचन से) लुचकः, अपहारकः, दुर्वृत्तः, दुरानारिन, कुपय-गामिन २. लंपटः, कामुकः ३. क्षुद्रः, उष्टः, निर्लब्धः [लुच्ची (स्त्री.)] ।

लुच्ची, सं. स्त्री. (सं. चूलिक) पक्वान्नभेदः ।

लुटना, कि. अ., व. 'लटना' के कर्म. के रूप ।

लुटवाना, कि. स. व. 'लटना' के प्रे. रूप ।

लुटाना, कि. स. (हि. लटना) व. 'लटना' के प्रे. रूप । २. अमितं व्ययं (जु.), अप-व्ययं-अतिव्ययं कृ, अपव्ययं (जु.) ३. मूल्यं विना दा ४. मुष्टिभिः परिक्षिप् (तु. प. अ.)-पर्यस् (दि. प. से.) । सं. पुं., अप-अति-अमितं-व्ययः २. मुधा विशेषः ।

लुटानेवाला, सं. पुं., अपव्ययिन्, विक्षेपिन् ।

लुटारू, वि. (हि. लुटाना) अप-अति-वृधः, व्ययिन्, मुक्तहस्त, अर्थनाशिन् ।

लुटिया, सं. स्त्री. (हि. लोटा) लघुकर्मलुः ।

—लुवाना, मु., आत्मानं न्यक्कृ (प्रे.) ।

लुटेरा, सं. पुं. (हि. लटना) मार्गंतस्करः, इष्टमोषकः, पाठघरः, परिपथिन्, लुट(टा,ठा)कः २. बंचकः, प्रनारकः ।

लुडकना, लुडना, कि. अ. (सं. लुठनं) वि-लुट् (तु. प. से.), वि-लुट् (भ्वा. दि. प. से.) २. लु (भ्या. प. अ.), बहिःपत-निर्गल् (भ्या. प. से.), निःसृ (भ्या. प. अ.) । सं. पुं., वि-, लुठनं-लोठनं २. बहिःपतनं, निर्गलनं, च्यवनम् ।

लुडकाना, लुडाना, कि. स., व. 'लुडकना' के प्रे. रूप ।

लुडियाना, कि. स. (हि. लोडिया) बर्तिका-कारं सिव् (दि. प. से.) ।

लुतरा, सं. पुं. (देश.) परीक्षनिदकः, दिग्गुणः, कलहसायकः । कर्णनपः २. अपकारकः, कुपे-ष्टकः । [लुतरी (स्त्री.)] ।

लुत्क, सं. पुं. (अ.) आनंदः, मोदः २. रसः, आनन्दः ३. उत्तमता ४. कृपा ५. रोचकता ।

लु(लो)नाई, सं. स्त्री. (हि. लोना) दे. 'लावण्य' (२) ।

लुपरीन्दी, सं. स्त्री. (सं. लेपः >) दे. 'लिपड़ी' २. द्रवप्रायं भक्ष्यं, लपिसका ।

लुस, वि. (सं.) गुध, प्रच्छन्न, निभृत २. अंत-हृत, तिरोभूत, अदृष्ट ३. नष्ट, ध्वस्त । सं. पुं., लुप्तं, जीवंपनम् ।

लुब्ध, वि. (सं.) गृध्नु, गर्हन, दे. 'लोमी' । २. मुग्ध, मोहित, हत । सं. पुं., दे. 'लुब्धक' ।

लुब्धक, सं. पुं. (सं.) व्याधः, दे. 'शिकारी' २. लंपटः ३. गृध्नुः ।

लुब्धलुबाब, सं. पुं. (अ.) तत्त्वं, सारः, सारांशः २. दे. 'गूदा' ।

लुभाना, कि. अ. (हि. लोभ) विलुम् (प्रे.), दुराचारै-कुमार्गे प्रवृत् (प्रे.) २. वि-, मुह् (प्रे.), प्रलुम् (प्रे.) ३. सम-, आकृष् (भ्या. प. अ.) । कि. अ., दे. 'रीक्षना' ।

लुहंडा, सं. पुं. (सं. लोहहंडी) *अयःस्थाली ।

लुहां(हं)गी, सं. स्त्री. (सं. लोहांग >) । *लोहांगी, लोहमुखी यष्टोष्टिः (स्त्री.) ।

लुहार, सं. पुं. (सं. लो(लो)हकारः) अवस्कारः, व्योकारः, कर्मारः, कर्मकारः (लुहारिन स्त्री.) ।

लुहारी, सं. स्त्री. (हि. लुहार) लो(लो)हकारी,

अयस्कारी २. लोहकारव्यवसायः, कर्मारता, अथःशिल्पम् ।

लू, सं. स्त्री. (हि. लूक) धर्मवाता, उष्णानिलः, तप्तपवनः ।

—चलना, क्रि. अ., उष्णानिलः वा(अ.प.अ.) ।

—मारना या लगाना, मु., धर्मवातेन व्यथ (भ्वा. आ. से.) ।

लूक, सं. स्त्री. (सं. लोक् >) ज्वाला २. दे. 'लुआठी' ३. दे. 'लू' ४. उल्का ।

लूट, सं. स्त्री. (हि. लूटना) वि-लुंठ(ठ)नं, बलात् अपहरणं, मोषणं, लुंटा-ठा, लुठितं, लुंटी-ठी-टिःठिः (स्त्री.) २. अन्याय्य-व्यवहारः ३. लोतं, लोत्रं, लोत्रं-त्री, स्तेय-अपहृत-लुठित-धनं, लुंभम् ।

—का माल, सं. पुं., दे. 'लुट' (३) ।

—खसोट-पाट, सं. स्त्री. लुंठनध्वंसनं, लुंठा-लु-ठि (न.) ।

—खुंद, मार, सं. स्त्री.. मोषणहिसनं लुंठन-मारणं, लुंठामारम् ।

—पड़ना या मचना, क्रि. अ., व. 'लुटना' के कर्म. के रूप ।

—मचाना, क्रि. स., दे. 'लुटना' ।

लुटना, क्रि. स. (सं. लुंठनं) वि-लुंठ-लुठ् (भ्वा. प. से., लु.), लुट (भ्वा. दि. प. से.), बलात् अपहृ (भ्वा. प. अ.), प्रसङ्ग मुष् (कृ. प. से.) २. लुट् (लु.), मुष्, अपहृ ३. वि-ध्वंसनश् (प्रे.) ४. छलेन अन्यायेन वा आदा (जु. आ. अ.)-हृ ५. अत्यधिक-अनुचित-मूल्यं आदा ६. मुह (प्रे.), वशी-कृ. मन्तो हृ । सं. पुं., दे. 'लुट' ।

लुटने योग्य, वि., लुंठनीय, लुंठितव्य ।

लुटनेवाला, सं. पुं., दे. 'लुटेरा' ।

लुटा हुआ, वि., लुंठि(ठि)त, बलात् अपहृत-मुषित ।

लूवा, सं. स्त्री. (सं.) मर्कटकः, ऊर्णनाभिः, दे. 'मकड़ी' २. पिपीलिका ३. मर्कटकमूत्र-स्पर्शजः त्वग्रोगः ।

लूती, सं. स्त्री., दे. 'लुआठी' ।

—लगाना, मु., कलहं जन (प्रे.), दे. 'जुगली करना' ।

लून, वि. (सं.) छिन्न, कृत ।

लून, सं. पुं. (सं. लवणं) दे. 'नमक' ।

लूनिया, वि. (हि. लून) लवण, क्षार । सं. पु., लवणकारः ।

लूम, सं. पुं. (सं. न.) लंगूलं, पुच्छम् ।

लूमड़ी, सं. स्त्री., दे. 'लोमड़ी' ।

लूला, वि. (सं. लून >) छिन्न-लून-पाणि-हस्त-कार २. अपांग, व्यंग ३. असक्त, असमर्थ ।

लेंडी, सं. स्त्री. (सं. लेंड >) बद्धमलं, *विष्ठा-वतिः (स्त्री.) २. दे. 'सिंगनी' ।

लेंस, सं. पुं. (अं.) वीक्षम् ।

—मेगिनफाइल लेंस, दृष्टदर्शकवीक्षनम् ।

लेंहवा, सं. पुं. (देश.) पशु-वृं-मूषं कुल-समजः ।

ले, लेकर, अव्य. (हि. लेना) आरभ्य, प्रभृति, आ- (पंचमी से भी; उ., गांव से लेकर) = आश्रामात्, ग्रामात्, कल से लेकर = शः (प्रभृति-आरभ्य) २. गृहीत्वा, आदाय ।

लेई, सं. स्त्री. (सं. लेपः >) संदलेपकलेपः, २. *मुपेष्टकचूर्णलेपः ।

लेइ, सं. स्त्री. (सं. लेइः) अवलेइः, दे. २. लपिसका, इवप्रायसंयवः ।

लेकिन, अव्य. (अ.) किंतु, परंतु २. तथापि ।

—भगर, अव्य. (अ. + का.) किंतु, यदि ।

लेक्चर, सं. पुं. (अ.) व्याख्यानं, भाषणं २. प्रपाठः, अध्यापनम् ।

—बाज़ी, सं. स्त्री. (अं. + का.) व्याख्यान-प्राचुर्यम् ।

—शाइना, मु., सोत्साहं व्याख्या (अ. प. अ.) अथवा अधि-इ (प्रे., अध्यापयति) ।

लेक्चरार, सं. पुं. (अं. लेक्चरर) व्याख्यातृ, उपदेशकः, वक्त्र २. अध्यापकः, उपाध्यायः ।

लेक्टोमीटर, सं. पुं. (अं.) द्रव्यमापकम् ।

लेख, सं. पुं. (सं.) लिपी(नी)-पिः(पिः) (स्त्री.) २. लिखित-लिपिबद्ध-विषयः-वार्ता ३. प्रस्तावः, निबंधः ४. दे. 'लिखाई' (१-३) । ५. गणनं, संकलनम् ।

लेखक, सं. पुं. (सं.) ग्रंथकारः, पुस्तक-लेखक-रचयितृ-प्रणेत् २. लिपि(पी-नी) कारः, मसिपण्यः, पंजीकारः, लिपिज्ञः, वाणिज्यः ।

लेखन, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'लिखाई'(१) । २. लेखन-कला-विधा ३. गणनं, संख्यानं ४. भूर्जत्वच् (स्त्री.) ।

लेखनी, सं. स्त्री. (सं.) अक्षर-वर्ण-पूली-

लिका, कलम; चित्रक; कराशय; वणिका, शकरी ।

लेखा, सं. पुं. (सं. लेखः) संकल्पनं, संख्यानं, गणनं-ना १. अक्षर-मूल्य-निरूपणं-अनुमानं ३. आयव्यय-देवादेय, विवरणं ४. अनुमानं, विचारः ।

—इलना, सु., आयव्ययपत्रिकायां नामन् (न.) लिख् (तु. प. से.) ।

—पूरा या साफ करना, सु., अवशेषं शूय् (प्रे.) ।

लेखिका, सं. स्त्री. (सं.) ग्रंथकर्त्री, पुस्तक-प्रणेत्री २. लिपिकारी, लिपिका ।

लेखे, कि. वि. (हि. लेखा) विचारेण २. संक्षेपे ।

लेख्य, वि. (सं.) लि(ले)खितव्य, ले(लि)खनार्हं, ले(लि)खनीय । सं. पुं. (सं. न.) लिखित-लिपिवद्, विषयः, लेखः २. दे. 'दस्तावेज्' ।

लेजिस्लेटिव कार्डसिस्ट, सं. स्त्री. (अं.) व्यवस्थापकसभा ।

लेट, वि. (अं.) निराश्रित, विलंबित, काल-समय, अतीत ।

लेटर, सं. स्त्री. (देश.) दे. 'गच' ।

लेटरना, कि. अ. (हि. लेटना) संविद्य (तु. प. अ.), शी (अ. आ. से.) २. विश्वम् (दि. प. से.) ३. दे. 'मरना' । सं. पुं., संवेशः-शनं, शयनम् ।

लेटेनेवाला, सं. पुं., संवेशोच्छुक्तः, शयलः ।

लेटर, सं. पुं. (खो.) (अं.) पत्रं, लेखः, लेख्यं, पत्रिका, पत्री, पत्रकं, लिखितं, संदेशपत्रं । २. अक्षरं, वर्गः, शी मालुका, अभिनिष्ठान्तः ।

—दाक्स, सं. पुं. (अं.) पत्रपेटिका ।

लेटरना, कि. स., व. 'लेटना' के प्रे. रूप ।

लेटा हुआ, वि., संविद्य, शयान, शयित ।

लेड, सं. पुं. (अं.) सीसं, सीसकम्, दे. 'सीसा' ।

लेडी, सं. स्त्री. (अं.) महिला, कुलांगना, आर्या २. नारी, रमणी ३. छाहोपाधिधार-कस्य पत्नी ।

—डाक्टर, सं. स्त्री. (अं.), जीवदा, चिकित्सा-जीविनी, चिकित्सिका, रोगहारिणी ।

लेन, सं. पुं. (हि. लेना) आदानं, ग्रहणं, धारणं २. दे. 'लहना' (१-२) ।

—दार, सं. पुं. (हि. + का.) उत्तमर्गः, ऋणदः, महाजनः ।

—देन, सं. पुं. (हि.) आदानप्रदानं, व्यवहारः २. कौसीधं, वृद्धिजीवनं-विका ।

लेना, कि. स. (सं. लभनं) आदा (तु. आ. अ.), प्रति-इष् (तु. प. से.), प्रति-परि-इष् (क. प. से.) २. अधिगम् (श्वा. प. अ.), आसद् (प्रे.), प्राप् (स्वा. प. अ.), लभ् (श्वा. आ. अ.) ३. धृ (श्वा. प. अ., तु.), अव-आ-लब्ध् (श्वा. आ. से.), ग्रह् ४. मि (श्वा. प. अ.), अभिभू (श्वा. प. से.), वशीकृ ५. क्री (क. उ. अ.) ६. कणं ग्रह् ७. अंके-कोटे निधा (तु. उ. अ.) ८. स्त्री-अंगी-कृ, प्रतिपद (दि. आ. अ.) ९. प्रत्युद्-गम्-जल् (श्वा. प. से.)-या (अ. प. अ.) सक्क, समन्-संभू (प्रे.) १०. कार्यभार स्वीकृ ११. रवि (स्वा. प. अ.), संग्रह (क. प. से.) १२. उपहस् (श्वा. प. से.), व्यंग्योक्तिभिः लज्ज (प्रे.) । सं. पुं., आदानं, ग्रहणं, प्रतिग्रहः, अधिगमनं, प्रादानं, आसादनं, आलंबनं, धारणं, ऋणादानं, अंगीकरणं, वशीकरणं, संक्षय-यनं, क्षयणं, क्षयः इ. ।

लेने योग्य, वि. (सं.) आदेय, दाह्य, ग्रहीतव्य, प्राप्य, आसादनीय, क्रय, कायणीय इ. ।

लेने वाला, सं. पुं., आदातृ, गृहीतृ, अधिगतृ, आसादयितृ, अंगीकर्तृ, क्रेतृ, ग्राहकः ।

लिया हुआ, वि. (सं.) आत्त, आदत्त, गृहीत, प्राप्त, अधिगत, धृत, अंगीकृत, वशीकृत, क्रीत इ. ।

ले आना, सु., दे. इ. 'लाना' ।

ले न-ना या ले जाना, सु., आदाय गम् २. अटमना सह नी (श्वा. प. अ.) ।

ले डूबना, सु., परमपि आत्मना सह क्षी-अवसदनश् (प्रे.) ।

ले देकर, सु., सर्वे संकलय्य २. कुच्छेण, कथमपि ।

लेना एक न देना दो, सु., न कोऽप्यर्थः, न किमपि प्रयोजनम् ।

लेना देना, सु., दानादानं, आदानप्रदानं २. कौसीधं, वृद्धिजीवनम् ।

लेने के देने पड़ना, सु., भद्रस्याभद्रं फलं, इष्टाशायामनिष्टप्रसंगः ।

ले भागना, सु., सह नीत्वा पलाय् (श्वा. आ. से.), अपहृ (श्वा. उ. अ.) ।

लेन्स

[२३२]

लोकाचार

ले भरना, मु., दे. 'ले डूबना' ।

लेन्स, सं. पुं. (अं.) कात्रः ।

लेप, सं. पुं. (सं.) अभि, भ्रंजनं, उपदेहः, समा-
लम्; उपनाहः, प्रलेपपाटिका २. लेपनं, सुधा
३. लेपस्तरः ४. उद्गतनं, दे. 'उबटन' ५. संपर्कः,
सम्बन्धः ।

—चढ़ाना, कि. स., दे. 'लीपना' ।

लेपक, सं. पुं. (सं.) लेपिन्, लेपकारः, पल-
गंडः, लेप्यकृत् ।

लेपन, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'लिपार्ई' (१) ।

लेपना, कि. स., दे. 'लीपना' ।

लेपालक, सं. पुं. (हि. लेना + पालना)
दत्तकः, दे. ।लेबर, सं. पुं. (अं.) परि-श्रमः, आयासः,
प्रयासः २. श्रमिक-कर्मकर, वर्गः ।

—पार्दी, सं. स्त्री. (अं.) श्रमिकदलः लम् ।

—यूनियन, सं. स्त्री. (अं.) श्रमिक-कर्मकर,
संघः-समाजः-सभा ।

लेबुल, सं. पुं. (अं.) लेपपत्रम् ।

लेबोरेटरी, सं. स्त्री. (अं.) प्रयोगशाला,
२. रसायनशाला ।

लेमोनेड, सं. पुं. (अं.) जंबीर, पेय-पानकम् ।

लेखा, सं. पुं. (सं. लेहः >) दे. 'बछड़ा' ।

लेवा, वि. (हि. लेना) आ, दातृ-दायक ।

—देवा, सं. पुं., आदानप्रदानम् ।

नाम—, सं. पुं., पुत्रः २. दायादः ।

लेख, सं. पुं. (सं.) दे. 'लख' २. चिह्नं, लक्षणं
३. संबंधः ४. अलंकारभेदः (सा.) २. अल्प,
स्तोक ।—मात्र, वि. (सं.) अणु-अल्प, मात्र (-त्रा,
त्री स्त्री.) ।

लेख, सं. पुं., दे. 'लासा' (१) ।

—दार, वि. (हि + दा.) दे. 'लसदार' ।

लेहन, सं. पुं. (सं. न.) जिह्वया स्वादनं-स्व-
दन-रसननम् ।

लेहाजा, कि. वि. (अ.) अतः, अतएव ।

लेहिन, सं. पुं. (सं.) टंकण-नं, रसशोधनः,
निडम् ।लेह्य, वि. (सं.) लेहनाय, लेह्यम् । सं. पुं.
(सं. न.) दे. 'अवलेह' २. लेहनीयाहारः
३. अमृतम् ।

लेन, सं. स्त्री., दे. 'लाइन' ।

लेसंस, सं. पुं. (अं. लासंस) अधिकारपत्रं.
अनुशालेखः ।लेस, सं. पुं. (अं. लेस) सज्ज, सत्रद, सिद्ध
२. जालभरणं, दे. 'फ्रीता' ।

लौद, सं. पुं., दे. 'मलमास' ।

लौदा, सं. पुं. (सं. लोटः षं) आर्द्रः, पिष्टः
(-डं)-जनः, किलन्नगोलः (-लं)-लोटः (-ष्टं) ।लो, अव्य. (हि. लेना) दृश्यतां, प्रेक्ष्यतां,
अवलोक्यतां । (केवल इन्हीं रूपों में) ।लोई, सं. स्त्री. (सं. लोमीय) लौमी, नोशारः,
आविकं. ऊर्गासुः, कंबलभेदः ।

लोई, सं. स्त्री., दे. 'पेडा' (गूंधे हुए आटे का) ।

लोक, सं. पुं. (सं.) भुवनं, भूर्भुव-स्वरादयः
चतुदशस्थानविशेषाः २. जगत् (न.), जगती,
विश्वं, चराचरं, ब्रह्मांडं, भुवनं, विष्टपं ३. नि-
आ, वायुः ४. दिशा, प्रदेशः ५. लोकः-काः,
जनः-नाः ६. समाजः ७. प्राणिन् ।

—कंटक, सं. पुं. (सं.) जनपीडकः ।

—तंत्र, सं. पुं. (सं. न.) जन-प्रजा-तंत्रम् ।

—त्रय, सं. पु. (सं. न.) त्रिभुवनं, त्रैलोक्यं,
त्रिलोकी ।—नाथ, सं. पुं. (सं.) ब्रह्मन् (पुं.) २. विष्णुः
३. शिवः ४. बुद्धः ५. लोकपालः ।—पति, सं. पुं. (सं.) ब्रह्मन् (पुं.) २. नृपः
३. लोकपालः ।—परलोक, सं. पुं. (सं. कौ) उभौ लोकौ,
लोकद्वयम् ।

—पाल, सं. पुं. (सं.) दिक्पालः २. नृपः ।

—प्रवाद, सं. पुं. (सं.) जन-लोक-रवः श्रुतिः
(स्त्री.)-प्रवादः ।—मार्गदा, सं. स्त्री. (सं.) लोक, आचारः-
व्यवहारः, जगद्गीतिः (स्त्री.) ।

—यात्रा, सं. स्त्री. (सं.) जीवनं, प्राणधारणम् ।

—विश्रुत, वि. (सं.) जगद्दिव्यात् २. व्यव-
हारः, लौकिककृत्यानि (न. बहु.) ।

—श्रुति, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'लोकाप्रवाद' ।

—संग्रह, सं. पुं. (सं.) लोक-जन, रंजन-
प्रसादनं २. लोकहितैषणा ।

लोकांतर, सं. पुं. (सं. न.) पर-प्रेत, लोकः ।

लोकाचार, सं. पुं. (सं.) जगद्गीतिः-ऋद्धिः
(स्त्री.), लौकिकं, लोक, मार्गः-व्यवहारः ।

लोकाट

[५३३]

लोम

लोकाट, सं. पुं. (चीनी लुः+यच्) लवकटं, चैनम् ।

लोकालोक, सं. पुं. (सं.) चक्रवालः, पर्वत-विशेषः (पुराणं) ।

लोकैषणा, सं. स्त्री. (सं.) अभ्युदयाभिलाषः २. स्वर्गलिप्सा ।

लोकैकिक, सं. स्त्री. (सं.) आमाणकः, जनवादः, लौकिकः, न्यायः २. अलंकारभेदः (सा०) ।

लोकोत्तर, वि. (सं.) अलौकिक, अमानुष, अपरिचित, लोकानिश्चयिन्, दिव्य, अति-विलक्षण-अप्रमुत्त ।

लोग, सं. पुं. (सं. लोकः) लोकः-काः, जनः-नाः, मानवाः, मनुष्याः, नराः, मानुषाः, मर्त्याः, मनुजाः (सब बहु.) ।

लोची, सं. स्त्री. (हिं. लवक) दे. 'लवक' २. कीमलता, सुदृता ।

लोचर, सं. पुं. [सं. हनिः (स्त्री.)] अभिलषः, इच्छा ।

लोचन, सं. पुं. (सं. न.) नयनं, नेत्रम्, दे. 'अँल' ।

लोट, सं. स्त्री. (हिं. लोटना) लु(लौ)ठनं, लोटनं, वेल्हनं, लुंटा, लुंटा, लोटः ।

—पोट, वि., लुटि(ठि)त, वेल्लित, स्खलित २. मुग्ध, बद्धभाव, अनुरागिन ३. वि. अङ्गुल ४. व्यस्यस्त, विषयस्त ।

—आना, मु., मूर्च्छ (भ्वा. प. से., मूर्च्छति) २. मृ (तु. आ. अ.) ३. विश्रम् (दि. प. से.) ४. पकितो मुग्धो वा भू ।

—पोट होना, मु., (पीडादिभिः) वि. लुट् (तु. प. से., भ्वा. अ. से.) २. भावं-अनुरागं बंध (क्त. प. अ.), ३. सहसा विलुट्य वा मृ (तु. आ. अ.) ।

—होना, मु., अनुरक्त-भासक्त (वि.) भू २. व्याकुलीभू ।

लोटन, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'लोट' २. *लोट-नयनः ३. लागलभेदः ४. मार्गशंकरः ।

लोटना, क्रि. अ. (सं. लोटनं) लुट् (भ्वा. दि. प. से.), लुट् (भ्वा. आ. से., तु. प. से.)

२. पार्श्वं परिवृत्तं (प्रे.) ३. अङ्गुल-व्याकुल (वि.) भू । सं. पुं. तथा भाव, दे. 'लोट' सं. स्त्री. ।

लोटा, सं. पुं. (हिं. लोटना) कर्महलुः, दे. ।

लोडन, सं. पुं. (सं. न.) मथनं, आवि-ल्लोडनम्, मथः ।

लोडित, वि. (सं.) मथित, आवि-ल्लोडित, व्याघटित ।

लोडा, सं. पुं. (सं. लोष्टः-ष्टं) दे. 'वडा' ।

लोथ-थि, सं. स्त्री. (सं. लोष्टः-ष्टं) शबः, दे. ।

—पोथ, मु., अति-दिबिल-श्रांत-खिन्न ।

लोथडा, सं. पुं. (हिं. लोथः) पल्ल-मांस-पिंडः (डं) ।

लोथ-ध, सं. स्त्री. (सं. लोथः) (लाल) लोभः, रक्तः, मार्जनः, तिरीटः, तिदुकः । (सफेद) शुल्फः, महा-शबरः, लोभः, शवरः ।

लोन, सं. पुं. (सं. लवणं) दे. 'नमक' २. लावण्यं, विशिष्टसौन्दर्यम् ।

लोना, वि. (हिं. लीन) लवण दे. 'नमकीन' २. सुन्दर, चारु । सं. पुं., *कुडय-भित्ति-लवणं ३. लवणितकुडयस्य धूलिः (स्त्री.) ।

लोनिया, सं. पुं. (हिं. लोग) दे. 'लनिया' । सं. पुं. ।

लोप, सं. पुं. (सं.) वि. नाशः, क्षयः, वि-ध्वंसः ३. अदर्शनं, तिरोभावः, अंतर्धानं ३. अभावः, अविद्यमानता ४. वर्णविनाशः (व्या.) ५. विच्छेदः, विरामः ।

लोपामुद्रा, सं. स्त्री. (सं.) अगस्त्यमुनिपत्नी, लोपः, वरपदा, कीर्तिती ।

लोबान, सं. पुं. (अ.) सुगंधिनिर्वासभेदः *लोबानम् ।

लोबिया, सं. पुं. (सं. लोभ्यः = मूँग) क्षुधा-भिन्नकः, चप(ब)लः, चर्बरः, सुकुमारः, शिबिका, दीर्घः, शिम्बी-बीजः ।

लोथ, सं. पुं. (सं.) परद्रव्याभिलाषः, गृध्या, गृध्रता, सृष्टः, लौन्यं, लिप्सा, गर्दः, वृष्णा, कांक्षा, संसा, लीलुपता-भता, इच्छा, वांछा, मनोरथः, अभिलाषः, कामः २. कार्पण्यं, कदर्थता ।

लोभित, वि. (सं.) मोहित, आकृष्ट, हतचित्त, लुब्ध, मुग्ध ।

लोभी, वि. (सं. मित्) गृध्रु, गर्दन, लुब्ध, लोलुप-भ, लिप्सु, अभिलाषुक, वृष्णाक ।

लोम, सं. पुं. (सं.) लोमन् (न.) दे. 'रौंगटा' २. लागूलं, पुच्छम् ।

—हर्षण, सं. पुं. (सं. न.) रोमांचः, दे. । वि., दे. 'रोमहर्षण' ।

लोमङ्, सं. पुं. (सं. लोमः >) *लोमशः, *लोमाशः, दे. 'गीदङ्' ।

लोमङ्गी, सं. स्त्री. (हि. लोमङ्) लोमशा, लोमाशिका, दे. गीदङ्गी (संस्कृत में गीदङ्-लोमङ् तथा गीदङ्गी-लोमङ्गी के लिए समान शब्दों का ही प्रयोग होता है ।) ।

लोमश, सं. पुं. (सं.) ऋषिनिशेषः २. मेघः, दे. 'भेडा' । वि., बहुलोमान्वित, कोशिक, केसिक २. ऊर्णामय (-यी स्त्री.), और्ण (-र्णी स्त्री.) ।

—माज्जार, सं. पुं. (सं.) गंधमाज्जारः, पूतिकः, मूत्रपातनः ।

लोरी, सं. स्त्री. (सं. लोल >) निद्रा-शयन-, गीतिका ।

—देना, क्रि. त., निद्रा-गीतिकया स्वप् (प्रे.) ।

लोल, वि. (सं.) संप्र, कंषमान, वेपमान, कंषित, कंष २. चंचलचित्त ३. क्षणभंगुर, पत्र, क्षणिक ४. उत्सुक, उत्कण्ठित ।

लोला, सं. स्त्री. (सं.) जिह्वा, रसना २. लक्ष्मी-श्रीः (स्त्री.) ।

लोलुप, वि. (सं.) दे. 'लोभी' ।

लोलुपता, सं. स्त्री., दे. 'लोभ' ।

लोशन, सं. पुं. (अं.) व्रणक्षालकं, धावनीपथं, *औषधजलम् ।

लोष्ट, सं. पुं. (सं. पुं. न.) लोष्टः, मृत्तिकासंज्ञं, दलिः (पुं. स्त्री.), दलनी २. अहमखंड-डः ।

लोह, सं. पुं. (सं. लोहः-हं) लौहं, दे. 'लोहा' २. रुधिरं ३. रक्तच्छायाः ।

—कांत, सं. पुं. (सं.) अयस्कांतः, लोह-, चुंबकः ।

—कार, सं. पुं. (सं.) अयस्कारः, दे. 'लुहार' ।

—किष्ट, सं. पुं. (सं. न.) लोह-,मलं, मंडूरं, लोहजं, कृष्णचूर्णं, अयो-,मलं-रजस् (न.) ।

—चून,

—चूर, } सं. पुं. (सं. लोहचूर्णं) कालक्षौद्रः ।

—चूर्ण,

—द्रावी, सं. पुं. (सं. चिश्) लोहितः, इंक्षणं न. दे. 'सोहाया' ।

लोहार्णी, सं. स्त्री. (सं. लोहांणी) लोहशीर्ष-, यष्टी-दंडः-लघुडः ।

लोहा, सं. पुं. (सं. लोहः-हं) कृष्ण-, अयस्

(न.)-अयसं, कालं, कालायसं, लौहं, अहम-गिरि-,मारः, वृष्टं, पिष्टं २. अयस्य, यस्त्रं, ३. लोहनयस्त्रयम् । वि., रक्त, लोहित २. अति-,दृढ-बीकस ।

लोहि का, वि., लोह(-हो स्त्री.), लोह अयो-, मय (यी स्त्री.), आयस (-ती स्त्री.), लोह-, आयसः ।

लोहे का चना, मु., सुदुःकरं कर्मन् (न.) ।

लोहे के चने चवाना, मु., सुदुःकरं कर्म संपद् (प्रे.) ।

—गहना या लेना, दु., शुष् (दि. आ. अ.) दे. 'लडनः' ।

—चजना, मु., सुदं प्रवृत् (भ्वा. आ. से.) ।

(किर्लका)—मानना, मु., (अन्यस्य) प्रसुत्वं *स्वोक्त २. वि-परा-,वि (कर्म.) ।

लोहार, सं. पुं. (सं. लोहकारः) दे. 'लुहार' ।

—की स्याही, सं. स्त्री., दे. 'हीराकक्षीप्त' ।

लोहित, वि. (सं.) रक्त, शोण । सं. पुं. (सं.) मंगलयहः, कुजः, भौमः २. रक्तवर्णः । (सं. न.) रक्तं, हथिरम् ।

—चंदन, सं. पुं., केशर-रं, कश्मीरजं, कुकुमम् ।

—नयन, वि., (सं.) रक्त-लोहित, नेत्र-नयन-ईक्षण, कुपित, क्रुद्ध ।

—शतपत्र, सं. पुं., कोकनदं, रक्त-,उत्पलं-नीरजम् ।

लोहिया, सं. ' ' (हि. लोहा) लोहपण्य-विक्रेतु, लोहविक्रयिन् २. लोहितवर्णः ३. लोह-गुलिका ।

लोहू, सं. पुं. (सं. लोहितं) दे. 'रना' तथा 'लहू' ।

लौं, अव्य. (हि. लण) दे. 'तक' २. सइश, तुल्य ।

लौंग, सं. पुं. (सं. लवंगं) देवकुमुभं, श्री-, प्रमृत्तं-मुष्पं-संज्ञं, लवंगकं, दिव्यं, शेखरं, लवं २. लवंगं (द्राणभूषणभेदः) ।

लौंडा, सं. पुं. (हि. लोना) (लोवण्यविशिष्टः) बालकः-दारकः । वि., अवीथ, अज्ञ २. चपल, चंचल ।

—पन, सं. पुं., बाल्यं २. चांचल्यम् ।

लौंडी-डिया, सं. स्त्री. (हि. लौंडा) कन्या, कुमारी २. पुत्री ३. दासी ।

लौंडेबाज, वि. (हि. + बा.) पुंमैयुवकारिन् ।

लौडिवाज़ी

[२३५]

वकःलज्ज

लौडिवाज़ी, सं. स्त्री. (हि. + का.) पुमैष्टुनम् ।
 लौ, सं. स्त्री. (हि. लघट) कीलः-ला, अग्नि-
 ज्वाला(लः)ज्वाला, जिहा, शिखा २. दीपशिखा ।
 लौ, सं. स्त्री. (हि. लःग) अभिलाषः, रागः
 २. चित्त-मनो, वृत्तिः(स्त्री.) ३. कामना, वांछा ।
 —लुगना, क्रि. अ., उद्यत (वि.) भू ।
 २. (भक्त्यादिषु) लीन-मग्न-निरत(वि.) भू ।
 —लुगाना, क्रि. स., सततं अभिलष (च्वा. प.
 से.) २. आत्मानं भक्त्यादिषु निमस्ज्-आसंज्
 (प्रे.) ३. आश्रेड (प्रे.) ।
 —लीन, वि. (सं.) मग्न, आसक्त, निरत ।

लौकिक, वि. (सं.) सांसारिक, ऐहिक,
 प्रापंचिक, लौक्य २. व्यावहारिक, आन्तारिक ।
 लौकी, सं. स्त्री. (सं. लःडु-वूः दोनो स्त्री.)
 अलावुः वूः (स्त्री.), दे. 'कदहू' ।
 लौटना, क्रि. अ. (हि. उलटना) दे. वापस
 आना' तथा 'वापस जाना' ।
 लौटफेर, सं. पुं. (हि. लौटना + फेरना) बृहत्-
 महा, परिवर्तः-परिवर्तनम् ।
 लौटाना, क्रि. स., दे. 'वापस करना' ।
 लौह, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'लोहा' (१) । वि.,
 दे. 'लोहे का' ('लोहा' में) ।

व

व, देवतागरोवर्णमालाया ऊनत्रिंशो व्यंजनवर्णः,
 वकारः ।

वंक, वि. (सं.) अराल, वृजिन, कुंचित, वक्र,
 आनत, जिहा, वेणित, आमुग्न, कुटिल । सं.
 पुं. (सं.) नदीवक्रम् ।

वंकिस, वि. (सं.) ईषत्-किंचित्, अराल-
 वक्र-वृजिन ।

वंग, सं. पुं. [सं. वंगाः (पुं. बहु.)] वंगप्रातः
 (= बंगाल) । (सं. न.) त्रपुः, त्रपु (न.),
 रंग, नागजं, कस्तूरं २. सीसं-सकं, सीसपत्रम् ।

—भस्म, सं. पुं. [सं. भस्मन् (न.)] रंगभस्मन्
 (न.) ।

वंगन, सं. पुं., दे. 'बैंगन' ।

वंकक, वि. तथा सं. पुं. (सं.) कपटिन,
 प्रतारकः, धूर्तः (:) ।

वंचना, सं. स्त्री. (सं.) वंचनं, प्रतारणा,
 मया, कपटं, कैतवं, वंचयः ।

वंचित, वि. (सं.) प्रतारित, विप्रलब्ध
 २. हीन, रहित ।

वंदन, सं. पुं. (सं. न.) वंदना, प्रणामः,
 प्रणतिः (स्त्री.), नमस्कारः २. पूजा, अर्चा,
 आराधना २. स्तुतिः-नुतिः (स्त्री.) ।

—वार, सं. स्त्री. (सं. वंदनमाल्यं) वंदनमालः-
 लिका, तोरणस्रज् (स्त्री.) ।

वंदना, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'वंदन' (१-३) ।

वंदनीय, वि. (सं.) नमस्य, वंच २. पूज्य,
 भर्चनीय ३. स्तुत्य, न(ना)व्य ।

वंदी, सं. पुं. (सं. दिन्) स्तुतिपाठकः, मा(म)-
 गधः, चारणः, वंदधः २. कारागुप्तः, बंदी-दिः
 (स्त्री.) ।

—गृह, सं. पुं. (सं. न.) कारा, कारा, गृहं-
 गारम् ।

वंध, वि. (सं.) दे. 'वंदनीय' ।

वंध्या, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'बंध्या' ।

वंश, सं. पुं. (सं.) कुलं, अन्वयः, अन्वयायः,
 गोत्रं, भभिजनः २. जातिः (स्त्री.), वर्गः
 ३. कुडुवं, गृहजनः, पुत्रकुलवादीनि (न.
 बहु.) ४. वेणुः, वृद्धयथिः, दे. 'बांस' ।

५. मुरली, वंशी ६. पृष्ठास्थि (न.), पृष्ठवंशः
 ७. मुजादीनां खंवास्थि (न.) ।

—ज, सं. पुं. (सं.) पुत्रः २. संतानः ।

—धर, सं. पुं. (सं.) वंशजः, संततिः (स्त्री.) ।

—लोचन, सं. पुं. [सं. लो(रो)चना] वंशशकरा,
 वंश न-जा, वांशी, शुभा ।

—हीन, वि. (सं.) निर्वंश २. अपुत्र ।

वंशानुक्रम, सं. पुं. (सं.) वंश-अन्वयः-क्रमः-
 परम्परा (स्त्री.)-अवलिः-विततिः ।

वंशावली, सं. स्त्री. [सं. लो-लिः (स्त्री.)] वंश-
 क्रमः-श्रेणी-परंपरा ।

वंशी, सं. स्त्री. (सं.) वंशिका, मुरली दे. ।

—धर, सं. पुं. (सं.) मुरलीधरः, श्रीकृष्णः
 व, अन्व. (फा.) व, दे. 'और' ।

वक, सं. पुं. (सं.) दे. 'वगला' २. राक्षस-
 विशेषः ।

—वृत्ति, सं. स्त्री. (अ.) विटालवृत्तिः, दंभः ।

वकालत, सं. स्त्री. (अ.) अभिभाषकता-स्वं,
 वाक्यनीलत्वं, व्यवहारदर्शकता-त्वं २. परप्राति-
 तिष्यं, परकार्यताधकत्वं ३. दूतकर्मन् (न.)
 ४. परपक्षमंडनम् ।

- करना, क. अ., परिपक्षं समर्थं (चु.)
२. अभिभाषणवृत्ति उपजोन् (भ्वा. प. से.) ।
- नाम्ना, सं. पुं. (अ. + फा.) अभिभाषकता-
पत्रम् ।
- वकील, सं. पुं. (अं.) अभिभाषकः, व्यवहार-
दर्शकः, वाक्कीलः, पक्षवादिन् २. राजः,
दूतः ३. प्रतिविधिः, प्रतिदस्तकः ४. पर-पक्ष-
पोषकः ।
- वकुल, सं. पुं. (सं.) दे. 'वकुल' ।
- वक्रक, सं. पुं. (अ.) ज्ञानं २. बुद्धिः (स्त्री.) ।
वे—, वि. (फा. + अ.) निर्बुद्धिः ।
- वक्त, सं. पुं. (अ.) समयः, कालः २. अवसरः
३. अवकाशः ४. ऋतुः ५. मृत्युकालः ।
- की चीज, सं. स्त्री., कालानुकूलो रागः ।
- वे वक्त, क्रि. वि. कालेऽकाले वा, समयेऽ-
समये वा ।
- काटना, मु., येन केन प्रकारेण कालं यः
(प्रे. यापयति) २. मनो विनुद् (प्रे.) ।
- पढ़ना, मु., अपद आपत् (भ्वा. प. से.),
उपनम् (भ्वा. प. अ.) ।
- वक्तन् कौकलन, क्रि. वि. (अ.) कदा कदा,
यदा कदा २. यथाकालम् ।
- वक्तव्य, वि. (सं.) कथनीय, वचनीय २. हीन,
कृत्स्न । सं. पुं. (सं. न.) कथनं, वचनं
२. व्याख्यानम् ।
- वक्ता, सं. पुं. (सं. वक्तृ) वारिमन्, वक्तृपट्टः
२. शालघाट, उपदेशकः ३. कथ(वि)कः ।
- वक्तृता, सं. स्त्री. (सं.) वक्तृत्वं, वाग्मिता,
वाक्पाठवं, भाषणकौशलं २. व्याख्यानं,
भाषणं, कथनम् ।
- वक्तव्य, सं. पुं. (सं. न.) भुवं, आस्यं, लपनं,
यदनम् २. वंचुः—चूः (स्त्री.) ३. लम्बास्यं,
प्रलम्बमुखम् ४. वाणायम ५. कार्यात्मः
६. परिधानभेदः ।
- ज, सं. पुं. (सं.) ब्राह्मणः, विप्रः २. दन्तः,
दशनः, रदनः, खादनः ।
- तुंड, सं. पुं. (सं.) गणेशः, गजवदनः ।
- शोधन, सं. पुं. (सं. न.) मुखशुद्धिः (स्त्री.)
२. निवृत्तं, जंबीरम् ३. मातुलैगम् ।
- वक्रक, सं. पुं. (अ.) परोपकाराय दानं
२. धर्मार्थं उत्सृष्टा संपद (स्त्री.) ।
- नामा, सं. पुं. (अ + फा.) दानपत्रम् ।

- वक्रक, सं. पुं. (अ.) अवकाशः २. उद्योग-
विश्रान्तिः (स्त्री.) ।
- वक्र, वि. (सं.) दे. 'वक्र' २. छलिन, कपटिन,
धूर्त । (सं. पुं.) दानैश्चरः २. मंगलः, शीमः ।
(सं. न.) नदीवक्र, वक्रः ।
- गामी, वि. (सं.) कुटिलगति २. शठ, कुटिल ।
- तुंड, सं. पुं. (सं.) गणेशः २. शुक्रः ।
- वक्रता, सं. स्त्री. (सं.) जिह्मता, आनतिः
(स्त्री.), कौटिल्यं २. छलं, कपटं, शःश्रम ।
- वक्रोक्ति, सं. स्त्री. (सं.) काकुक्तिः (स्त्री.)
२. शब्दालंकारभेदः (सा.) ३. चमत्कृत-
कुटिल-उक्तिः (स्त्री.) ।
- वक्षःस्थल, सं. पुं. (सं. न.) उरसूक्ष्मम्
(न.), अंकः, उरसंगः, उरःस्थलम् ।
- वक्षी रह, अव्य. (अ.) भादि-प्रभृतिः ।
- वचन, सं. पुं. (सं. न.) भाषा, सरस्वती,
वाणी वे. २. उक्तिः (स्त्री.), कथनं, भाषणं,
वाक्यं ३. एभत्वादिवोधकः शब्दरूपभेदः (व्या.)
४. प्रतिज्ञा, संगरः ।
- वजह, सं. स्त्री. (अ.) कारणं, हेतुः ।
- वज्जन, सं. पुं. (अ.) भारः, गुरुत्वम् ।
- वज्जनी, वि. (अ. वज्जन) भारवत्, गुरु
२. मान्य, प्रभावशालिन ।
- वज्जा, सं. स्त्री. (अ. वज्ज) रचना २. अकृतिः
(स्त्री.) ३. आचारः, व्यवहारः ४. दशा
५. रीतिः (स्त्री.) ।
- वज्जारत, सं. स्त्री. (अ.) सांचिव्यं, अमात्यत्वं,
मंत्रित्वम् ।
- वज्जीका, सं. पुं. (अ.) छात्र-वृत्तिः-भृतिः (स्त्री.) ।
- वज्जीर, सं. पुं. (अ.) अमत्यः, सचिवः,
मंत्रित्, मंत्रधारः, मंत्रज्ञः, धी-बुद्धि, सहायः ।
- वज्जीरी, सं. स्त्री., दे. 'वज्जारत' ।
- वज्जू, सं. पुं. (अ.) प्रार्थनायाः पूर्वं अंग-
प्रक्षालनं (इस्लाम), *अङ्गस्पर्शः ।
- वज्जूद, सं. पुं. (अ.) अस्तित्वं, सत्ता २. शरीरं
३. सृष्टिः (स्त्री.) ४. अभिव्यक्तिः (स्त्री.) ।
- वज्ज, सं. पुं. (सं. पुं. न.) कुलेशं, पविः,
अशनः (पुं. स्त्री.), दंभोलिः, ह्यदिनी,
शतधारं, अश्रोत्र्यं, शंभः, गिरिकंठकः २. हीर-
रं, हीरकः, रत्नं २. विद्युत् (स्त्री.) । वि.,
अति, वृद्ध-संहत-कीकस-कठिनः, दुर्भेद्य २. वीर,
भीषण ।

—धर, सं. पुं. (सं.) इंद्रः, वज्रिन्, वज्र, पाणिः-बाहुः-मुष्टिः ।
 —पात, सं. पुं. (सं.) बन्नापातः ।
 —मथ, वि. (सं.) दे. 'वज्र' वि. (१) ।
 —इदय, वि. (सं.) पञ्चाभइदय, निष्क-
 रण, निर्दय ।
 वट, सं. पुं. (सं.) न्यग्रोधः, वृक्षनाथः, रक्त-
 फलः, क्षीरिन्, जटालः, अबरोही, मह-छायः ।
 वटी, सं. स्त्री. (सं.) गुली-लिका, वटिका,
 निस्तली, दे. 'गोली' ।
 वट्ट, सं. पुं. (सं.) बालकः, माणवकः
 घटुद्ध, १. वर्णिन्, मन्त्रचारिन् ।
 वटी, सं. स्त्री. (सं. वटी) मापवटी ।
 वर्णिक्, सं. पुं. (सं. वर्णिन्) पण्याजीवः,
 क्रयविक्रयिकः २. वैदयः ।
 वतन, सं. पुं. (अ.) जनन-भूः-भूमिः (दोली
 स्त्री.), स्वदेशः २. निवासस्थानं ३. जन्म-
 स्थानम् ।
 वतीरा, सं. पुं. (अ.) प्रथा, रीतिः (स्त्री.)
 २. आचारः, इत्तम् ।
 वत्स, सं. पुं. (सं.) गोशिशुः, तर्णकः, दोष-
 पकः, तंतुभः २. शिशुः, बालकः ।
 वत्सवर, सं. पुं. (सं.) दम्प्यः, दुर्दातः, गडिः ।
 वत्सवरी, सं. स्त्री. (सं.) विहायणी गौः (स्त्री.) ।
 वत्सर, सं. पुं. (सं.) अश्वः, हयवतः, वर्षम् ।
 वत्सल, वि. (सं.) अपत्यातुरागिन्, संत-न-
 स्नेहिन्, पुत्रप्रेमिन् २. स्नेहिन्, प्रेमिन् ।
 वत्सलता, सं. स्त्री. (सं.) (सन्तानादिकस्य)
 अतुरागः-स्नेहः ।
 वट्टन, सं. पुं. (सं. न.) मुखं, आननम् ।
 घट्टान्य, वि. (सं.) बहुप्रद, दानशील, उदार
 २. वस्तुवाच्. मधुरभाषिन् ।
 घट्टाम, सं. पुं. दे. 'बट्टाम' ।
 वट्टावट्ट, वि. (सं.) वाञ्छाल, वाञ्छाट ।
 वध, सं. पुं. (सं.) घातः, हननं, हर्षा,
 विशसनं, प्रमाथः, संहारः ।
 वधक, सं. पुं. (सं.) नरघातकः, हंतु, हिंसकः
 २. व्याधः, शाब्दिकः ३. मृत्युः ।
 वधू, वधूटी, सं. स्त्री. (सं.) नवोढा, नववधूः,
 पाणिगृहीता २. पत्नी ३. पुत्रवधूः ।
 वध्व, वि. (सं.) वषाहं, शीर्षच्छेद्य, हंतव्य ।
 वन, सं. पुं. (सं. न.) अरण्यं, विपिनं, अटवी,

काननं, गहनं, द(दायिः, कांतारं २. वाटिका
 २. जलम् ।
 —चर, सं. पुं. (सं.) वन-चारिन्-विहारिन्
 २. वन्य-पशुः-मनुष्यः ।
 —माली, सं. पुं. (सं.) श्रीकृष्णः २. वनपुष्प-
 मालाधारिन् ।
 —राज, सं. पुं. (सं.) सिंहः ।
 —वास, सं. पुं. (सं.) विपिनवर्ततः (स्त्री.) ।
 —वासी, सं. पुं. (सं. -सिन्) आटविकः,
 वनेचरः, वनीकस्, वनिन् ।
 —स्थली, सं. स्त्री. (सं.) काननभूमिः,
 अरण्यप्रदेशः ।
 वनस्पति, सं. स्त्री. (सं. पुं.) पुष्पहीनः फलि-
 वृक्षः (उ. वट, पीपल आदि) २. वृक्षः,
 पादपः ३. वटः, न्यग्रोधः ।
 —शास्त्र, सं. पुं. (सं. न.) वनस्पतिविज्ञानम् ।
 वनिता, सं. स्त्री. (सं.) नारी, रमणी
 २. प्रिया, कांता ।
 वनी, सं. स्त्री. (सं.) वनं, दे. ।
 वनी, सं. पुं. (सं. -निच्) वनप्रस्थः दे.
 २. दे. 'वनवासी' ।
 वन्य, वि. (सं.) वन-उदभव-उद्यभूत-जात,
 आरण्यक, जानल २. अतम्य, अशिक्ष
 ३. क्रूर, हिल ।
 वपनं, सं. पुं. (सं. न.) केशमुंडनं २. बीजा-
 धानम् ।
 वषा, सं. स्त्री. (सं.) मेदस् (न.), वसा ।
 वषु, सं. पुं. [सं. वषुम् (न.)] शरीरम् ।
 वप्र, सं. पुं. (सं. पुं. न.) वरणा, सालः, प्रकरः
 २. क्षेत्रं ३. धूलिः (स्त्री.) ४. तुंगतटः
 ५. शिशिरः ६. वनीकः-कं, मृत्तिकाव्यः ।
 —क्रीडा, सं. स्त्री. (सं.) वप्रक्रिया ।
 वक्रा, सं. स्त्री. (अ.) प्रतिज्ञापालनं २. आज्ञा-
 वागित-अनुसरणं-पालनं ३. विश्वसनीयता
 ४. सुशीलता ।
 —दार, वि. (अ. + का.) विश्वसनीय, विश्वा-
 स्य, स्वार्थभक्त २. आज्ञा-कारिन्-पालक
 ३. कर्तव्यपालक ।
 —दारी, सं. स्त्री. (अ. + का.) दे. 'वक्रा' ।
 वचा, सं. स्त्री. (अ.) महा-मारी, जन-मारः,
 नरिका २. स्वप्नसंचारिणः ।
 वञ्जाल, सं. पुं. (अ.) मारः, मरः २. कष्टं,
 विपद् (स्त्री.) ।

वमन, सं. पुं. (सं. न.) वमः, वमिः (स्त्री.), छर्दनं, छर्दिका २. वांत-वमन-द्रव्यम् ।

—करना, कि. स., उद्, वम् (भ्वा. प. से.), छर् (चु.) ।

वयःसंधि, सं. स्त्री. (सं. पुं.) बाल्ययौवन-मध्यकालः ।

वय, सं. स्त्री. [सं. वयस् (न.) आयुस् (न.), वयःक्रमः, अतीतजीवनकालः ।

वयस्क, वि. (सं.) प्रौढ, प्राप्तव्यवहार, दे. 'बालिग' ।

वयस्य, सं. पुं. (सं.) समवयस्कः २. मित्रं, सखि (मूं.) ।

वयस्या, सं. स्त्री. (सं.) सखी दे. ।

वयोवृद्ध, वि. (सं.) स्थविर, जरठण, जरित-न, वृद्ध ।

वरंघ, अव्य. (सं.) अपि तु, दे. 'बल्कि' २. परंतु, किंतु ।

वर, सं. पुं. (सं.) वृत्तिः (स्त्री.), तपोभिः देवैभ्यो याचितो मनोरथः २. (देवादीनां) अनुग्रहः, प्रसादः, आशिस् (स्त्री.) ३. जामातु ४. परिणेतु, वोदृ ५. पतिः, भर्तृ । वि. (सं.) -उत्तम, श्रेष्ठ (उ. ऋषिवरः=ऋषिश्रेष्ठः) ।

—मांगना, कि. स., वरं याच् (भ्वा. आ. से.) वृ (स्वा. उ. से.)-वृ (क्. उ. से.) ।

—दान, सं. पुं. (सं.) मनोरथपूर्णा, अभीष्ट-प्रदानं २. दे. 'वर' (२) ।

—दायक, सं. पुं. (सं.) वर-दाः-प्रदः-दानु, वांछितार्थदः, समर्द्धकः ।

—यात्रा, सं. स्त्री. (सं.) *जनेतं, परिणेतु-प्रस्थानम् । दे. 'वरात' ।

—वर्णिनी, सं. स्त्री. (सं.) वर, अंगना-तारी, सुंदरी ।

वरक, स. पुं. (अ.) (पुस्तक-) पत्र-पर्ण २-३. सुवर्ण-रजत-पत्रम् ।

—गदानी, सं. स्त्री. (अ. + फा.) ग्रन्थे विहंगमदृष्टिः (स्त्री.), अध्ययनालम्बरः, अध्ययनासाधः ।

—स्याह करना, मु., अत्यन्त-अत्यर्थं लिख् (तु, प. स.) ।

वरगलाना, कि. स. (फा. वरगलानीदन) प्रलुभ-विमुह (प्रे.) २. प्रत-वंन् (प्रे.) ।

वरजिज्ञ, सं. स्त्री. (फा.) व्यायामः, दे. ।

वरण, सं. पुं. (सं. न.) वृत्तिः (स्त्री.), उद्ग्रहणं

२. भर्तृत्वेनांगीकरणं, पतित्वेन स्वीकरणं ३. पूजा ४. आवरणं, आच्छादनम् ।

वरद, सं. पुं. (सं.) दे. 'वरदायक' ('वर' के नीचे) ।

वरदी, सं. स्त्री. (अ.) *नियतपरिधानं, विशिष्ट-वर्गीय-वेशः ।

वरन्, अव्य. (सं. वरं >) अपि तु ।

वरना, अव्य. (अ.) अन्यथा, इतरथा, नी चेत् ।

वराटिका, सं. स्त्री. (सं.) कपटिका, दे. 'फौड़ी' ।

वरानना, सं. स्त्री. (सं.) सुंदरी, वरवर्णिनी, सुवदना-नी ।

वराह, सं. पुं. (सं.) शूकरः, दे. 'सुअर' २. विष्णुः, विष्णोरवतारविशेषः ।

वरिष्ठ, वि. (सं.) उत्तम, श्रेष्ठ, पूज्यतम ।

वरुण, सं. पुं. (सं.) पाशिन, प्रचेतस्, अप्-अपां-पतिः, जलेश्वरः, मेघनादः २. जलं ३. सूर्यः ४. ग्रह-विशेषः (अं. नेपचून) ।

वरुणालय, सं. पुं. (सं.) सागरः ।

वरुधिनी, सं. स्त्री. (सं.) सेन, सैन्यम् ।

वरे, कि. वि. [सं. अनारतः (अव्य.)] इतः, एतस्स्थानं प्रति, अत्र २. समीपं-पे-पतः, अतिकं-के (सब १-२. अव्य.) ।

वरैभ्य, वि. (सं.) प्रधान, मुख्य २. वरणीय, सत्कार्यं ।

वर्कशाप, सं. स्त्री. (अं.) प्रावेशनं, शिल्प-शालं-शाला ।

वर्ग, सं. पुं. (सं.) (सजातीयानां) गणः, जातिः (स्त्री.), समूहः, श्रेणी-गिः (स्त्री.)

२. समस्थानवत् व्यंजनपंचकं (उ. कवर्गः, ह.)

३. अध्यायः, परिच्छेदः ४. सम-चतुर्भुज-चतुरस्रः ५. समद्विधातः, वर्गफलं, कृतिः (स्त्री.) (उ. ३ × ३ = ९ वर्गीकः) ।

—फल, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'वर्ग' (५) ।

—मूल, सं. पुं. (सं. न.) पूरितसमानांकद्वय-स्वांककः, पदं (उ. ९ का वर्गमूल=३) ।

वर्चस्, सं. पुं. (सं. न.) तेजस् (न.), कांतिः (स्त्री.) ।

वर्चस्वी, वि. (सं. -स्विन) तेजस्विन, कातिमत् ।

वर्जन, सं. पुं. (सं. न.) त्यागः २. निषेधः ।

वर्जनीय, वि. (सं.) त्याज्य, हेय, वर्ज्यं २. निषेधाहं ।

वर्जित, वि. (सं.) त्यक्त, उत्सृष्ट २. निषिद्ध, हेय ।

वर्ण, सं. पुं. (सं.) आर्याणां ब्राह्मणादिविभाग-

चतुष्टयं, जातिः (स्त्री.) २. रंगः, रामः
३. प्रकारः, विधा ४. अक्षरं ५. रूपं, आकारः ।
—धर्म, सं. पुं. (सं.) ब्राह्मणादिकर्तव्यकलापः ।
—नाश, सं. पुं. (सं.) वर्ण-अक्षर, लोपः-पातः
(निरुक्तः) (उ. ष्वतोदर से ष्वोदर) ।
—माला, सं. स्त्री. (सं.) वर्णसमाम्नायः,
अक्षरश्रेणी (उ. अ से ह तक) ।
—विकार, सं. पुं. (सं.) अक्षरविक्रिया (निरुक्त)
(उ. गाली से गारी) ।
—विचार, सं. पुं. (सं.) व्य. करणांगविशेषः,
शिक्षा ।
—विपर्यय, सं. पुं. (सं.) अक्षरव्यत्यासः
(निरुक्तः; उ. हिस से सिंह) ।
—वृष, सं. पुं. (सं. न.) अक्षरछंदस् (न.) ।
—श्रेष्ठ, सं. पुं. (सं.) ब्राह्मणः ।
—संकर, सं. पुं. (सं.) वर्ण-जाति-मिश्रणं
२. मिश्रजः, संकरजः, सांकरिकः ।
—हीन, वि. (सं.) बहिष्कृत, अपांक्षेय ।
वर्णन, सं. पुं. (सं. न.) निरूपणं, विवरणं,
व्याख्यानं, सविस्तरकथनं, वर्णना २. स्तवनं,
गुणकथनं ३. रंजनं, चित्रणम् ।
—करना, क्रि. गा., विवृ (स्वा. उ. से.), निरूप्,
वर्ण (जु.), सविस्तरं कम् (जु.), व्याख्या
(अ. प. अ.) ।
वर्णनीय, वि. (सं.) वर्णयितव्य, निरूपयि-
तव्य, व्याख्येय, वर्ण्य ।
वर्णित, वि. (सं.) निरूपित, व्याख्यात
२. उक्त, कथित ।
वर्णी, सं. पुं. (सं. नोन्) ब्रह्मचारिन् २. लेखकः
३. चित्रकारः ।
वर्ण्य, वि. (सं.) वर्णनीय, निरूपयितव्य,
प्रस्तुत, उपमेय, व्याख्यातव्य ।
वर्तन, सं. पुं. (सं. न.) व्यवहारः, दृत्तं,
चेदितं, आचरणं २. वृत्तिः (स्त्री.), आ-उप-
जीविका ३. पात्रम्, भाजनं, दे. 'वर्तन' ।
वर्तनी, सं. स्त्री. (सं.) मार्गः, पथः, पथिन्
२. पेषणभूतः (स्त्री.) ३. तर्कः (पुं. स्त्री.),
तर्कटम् ४. वसती-तिः (स्त्री.), अवस्थितिः
(स्त्री.) ५. वर्णविन्यासः, शब्दस्थानोच्चारणम् ।
वर्तमान, वि. (सं.) प्रचरि(लि)त, प्रचल,
सर्वसमत २. उपस्थित, विद्यमान ३. आधु-
निक(-की), अधुना-इदानीं, तन(-नी स्त्री.) ।

सं. पुं. (सं.) क्रियायाः कालभेदः (व्या.)
२. वृत्तांतः ३. प्रचलितव्यवहारः ।
वर्ती, सं. स्त्री. (सं.) वर्ति-तिका (स्त्री.), दे.
'वर्त्ता' २. शलाका ।
—वर्ती, वि. (सं. -तिन्)-स्थ, -वासिन् ।
वर्तुल, वि. (सं.) गोल, मंडल-चक्र, आकार ।
वर्दी, सं. स्त्री., दे. 'वरदी' ।
वर्द्धन, सं. पुं. (सं. न.) वृद्धिः-उन्नतिः (स्त्री.)
२. समृद्धिः (स्त्री.) ।
वर्मा, सं. पुं. (सं. वर्मन्) क्षत्रियोपाधिः ।
वर्बर, सं. पुं. (सं.) देशविशेषः २. वर्बरवासिन्
३. असभ्यः, ग्राम्यः ४. म्लेच्छः, बर्बरः, बर्बरः,
अनार्यः ।
वर्ष, सं. पुं. (सं. पुं. न.) अब्दः, हायनः,
समा, शरद (स्त्री.), स, वत्सरः, संवत्
(अब्द.) २. मेषः ३. वृष्टिः (स्त्री.) ४. महा-
भूभागः ।
—गांठ, सं. स्त्री. (सं + हि.) वर्षवृद्धिः (स्त्री.),
जन्म-दिवसः-दिने-तिथिः ।
—फल, सं. पुं. (सं. न.) बाधिकग्रह-फल-
दाशिका-पत्रिका ।
वर्षा, सं. स्त्री. [सं. वर्षाः (स्त्री. बहु.)]
प्रावृषा-ष् (स्त्री.), मेघागमः, घनशालः,
जलागारः, धनाकारः २. वृष्टिः (स्त्री.), वर्ष-
परिमाणं, गोघृतं, परासृतम् ।
—काल, सं. पुं. (सं.) दे. 'वर्षा' (१) ।
—होना, क्रि. अ., वृप् (स्वा. प. से.), वृष्टिः
भू. मु., अतिमानं अवपत् (स्वा. प. से.) ।
वलद, सं. पुं. (अ. वल्द) पुत्रः २. संतानः ।
वलय, सं. पुं. (सं. पुं. न.) कटकः, आवापकः
२. वेष्टनं ३. मंडलम् ।
वलयित, वि. (सं.) परिवेष्टित, परिभूत ।
वलदला, सं. पुं. (अ.) उत्साहः, औत्सुक्यम् ।
वलाहक, सं. पुं. (सं.) मेषः, जलदः
२. पर्वतः ।
वलि, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'वली' ।
वलित, वि. (सं.) न(ना)मित, आभुग्न
२. आवजित, प्रह्व ३. वलयित, दे. ४. वलीमत,
बलिभ, बलिन ५. आच्छादित ६. सहित
७. लन ।
वलां, सं. स्त्री. (सं.) वलिः (स्त्री.), बली-लिः
(स्त्री.), दे. 'सुरी' २. श्रेणी, अवली-लिः
(स्त्री.) ३. रेखा ४. पुटः, भंगः ।

वली, सं. पुं. (अ.) स्वामिन्, प्रभुः २. शःसकः
३. साधुः ।

—अहृद्, सं. पुं. (अ.) युवराजः ।

वल्कल, सं. पुं. (सं. पुं. न.) वल्कः कं,
वृश्ल्वचाच् (स्त्री.), चोचं, श्ल्कं, छल्ली
२. वल्कल-वल्क, वसनं-वल्कम् ।

वल्ह, सं. पुं. (अ.) दे. 'वल्ह' ।

वल्हियत, सं. स्त्री. (अ.) पितृनामन् (न.) ।

वल्मीक, सं. पुं. (सं.) वामलूरः, वल्मशूटं,
कुमिशैलकः, नाकः २. वाल्मीकिः मुनिः ।

वल्कभ, वि. (सं.) प्रियतम, दक्षित । सं. पुं.
(सं.) नायकः, प्रियतमः, कांतः २. पतिः, भर्तृ ।

वल्कभा, वि. (सं.) प्रियतमा, कांतः, दक्षिता ।
सं. स्त्री. (सं.) प्रियः, पत्नी-भार्या ।

वल्करी-रि, सं. स्त्री. (सं.) लता, वल्ली-लिः
(स्त्री.) २. मंत्ररी ।

वर्षावद्, वि. (सं.) वश-न-तेन-अनुग, आशा-
कारिन् । सं. पुं. (सं.) सेवकः, दासः ।

वशा, सं. पुं. (सं. पुं. न.) अधिकाः, प्रभुत्वं
२. शक्तिः (स्त्री.), प्रभवः, सामर्थ्यं
३. अधीनता, आयत्तता ४. इच्छा, कामना ।

वि. (सं.) अधीन, आयत्त ।

—(सं) करना, कि. स., वर्षाकृ, दम् (प्रे.,
दि. प. से.), वशी नी (भ्वा. प. अ.), नियम्
(भ्वा. प. अ.) ।

—वर्त्ती, वि. (सं. वर्त्तिन्) वशग, वशानुग,
—वश,—अधीन,—आयत्त, परतंत्र ।

वशिष्ठ, सं. पुं., दे. 'वशिष्ठ' ।

वशी, वि. (सं.—शित्) जितःत्मन, संयमिन्
२. अधीन,—आयत्त ३. शक्तिमत्, समर्थ ।

वशीकरण, सं. पुं. (सं. न.) (नगिमंत्रौषधा-
दिभिः) स्व-वशीकरणं २. दमः-मनः, निग्रहः-
हर्षः, वशीकारः ।

वशीकृत, वि. (सं.) वशं नीत २. मंत्रमोहित
३. सुगंध ।

वशीभूत, वि. (सं.) अधीन, आयत्त २. परवशग ।

वश्य, वि. (सं.) विनिय, शिक्ष्य, दम्भ ।

वश्यक, वि. (सं.) आशा-वचन, अनुवर्तिन्-
ग्राहिन्-सेविन्-पालकः ।

वश्यका, सं. स्त्री. (सं.) आशानुवर्तिनी पत्नी ।

वश्यता, सं. स्त्री. (सं.) अधीनता, परवशता,
पराधीनता ।

वश्या, सं. स्त्री. (सं.) वशवर्तिनी, आशानु-
वर्तिनी, पत्नी ।

वषट्, अभ्य. (सं.) देवनिमित्तकहृष्यागमंत्रः ।

—कार, सं. पुं. (सं.) होमः, देवयज्ञः ।

वसंत, सं. पुं. (सं.) ऋतुराजः, दे. 'वसंत'

२. शीतलारोगः ३. मसूरिकारोगः ४. रागभेदः

५. तालभेदः ।

—तिलक, सं. पुं. (सं. कः-कां-का)वर्णवृत्त-भेदः ।

—पंचमी, सं. स्त्री. (सं.) श्रीपंचमी, माघ-
शुक्लपंचमी ।

वसंती, वि., दे. 'वसंती' ।

वसती, सं. स्त्री. (सं.) वसतिः-वस्तिः (स्त्री.),

नि. वासः २. गृहं, भवन (न.) ।

वसन, सं. पु. (सं. न.) वस्त्रं, वासस् (न.) ।

वसिष्ठ, सं. पुं. (सं.) ऋषिविशेषः २. सप्तर्षि-
मंडलांतर्गते नक्षत्रविशेषः ।

वसीका, सं. पुं. (अ.) समय-प्रतिष्ठा-संविद्-
लेखः-पत्रम् ।

—नवीस, सं. पुं. (अ. + का.) दे. 'अर्वाचनीस' ।

वसीयत, सं. स्त्री. (अ.) (मर्यासत्रस्य)
अंत्यादेशः २. रिक्त्वविभागव्यवस्था ।

—करना, कि. स., मृत्युपत्रेण वा (भु. उ. अ.)-
ञ (प्रे., अपेयति) ।

—नामा, सं. पुं. (अ. + का.) मृत्यु-पत्र-लेखः ।

वसीला, सं. पुं. (अ.) उपायः, साधनं,
२. साहाय्यं ३. संबन्धः ।

वसुंधरा, सं. स्त्री. (सं.) वसुधा-दा, पृथिवी, दे. ।

वसु, सं. पुं. (सं. न.) धनं २. रत्नं ३. सुवर्णं
४. जलम् । (सं. पुं.) गणदेवताविशेषः, अष्ट-

वसवः (परो ऋषुश्च सोमश्च विश्वेभ्योऽपि निलो-
पनलः । प्रत्युपश्च-प्रभातश्च यतवोऽष्टौ क्रमात्
स्मृताः) २. वक्त्रक्षः ३. रश्मिः । अष्ट इति

संख्या ४. सूर्यः ५. विश्वः ६. मञ्जनः ।

वसुदेव, सं. पुं. (सं.) कृष्णपितृ, भानुकटुंदुभिः ।

वसुधा, सं. स्त्री. (सं.) वसुद्, वसुमती,
पृथिवी, दे. ।

वसूल, वि. (अ.) प्राप्त, लब्ध २. समाहृत ।

वसूला, सं. स्त्री. (अ. वसूल) प्राप्तिः (स्त्री.),
अभिगमः २. समाहारः ।

वस्ति, सं. स्त्री. (सं. पुं. स्त्री.) नाभेरधीभागः,
दे. 'पेडू' २. मूत्राशयः ३. रचनयंत्रं, शृङ्गकः-

कं, दे. 'पिचकारी' ।

—कर्म, सं. पुं. [सं. मन् (न.)] यत्रेण मल-
मूत्रनिष्कासनम् ।

वस्तु, सं. स्त्री. (सं. न.) पदार्थः, द्रव्यं २. सत्यं
३. वृत्तान्तः ४. नाटकीयाख्यानं, कथावस्तु(न.) ।
वस्तुतः, अव्य. (सं.) यथार्थतः, तत्त्वतः, याथा-
र्थेन, सत्यं, यथार्थम् ।

वस्त्र, सं. पुं. (सं. न.) निःवसनं, वासस् (न.),
आच्छादनं चेलः, अंशुकं, अंबरं, पटः,
निचयः, परिधानं, छादं, वासं, कर्पटः ।

वस्त्र, सं. पुं. (अ.) सदः, गुणः, विशेषः,
धर्मः २. स्तुतिः (स्त्री.) ।

वस्त्र, सं. पुं. (सं.) संगमः, समागमः,
मिलनम् ।

वह, सर्व. (सं. स.) तद् तथा अदस् के रूप ।
[उ. सः, असौ (पुं.), सा, असौ (स्त्री.),
तद्, अदः (न.)] ।

वहन, सं. पुं. (सं. न.) प्रापणं, स्थानांतरे
नयनं, २. धारणं, उत्थापनम् ।

वहम, सं. पुं. (अ.) भ्रमः, भ्रान्तिः (स्त्री.)
२. मिथ्या-शंका-संदेहः ३. मिथ्याधारणा
४. व्याधिकल्पना, कुक्षिरोगः ।

वहमी, वि. (अ. वहम) संशयात्मन्.
शंकाशील, आशंकिन् ।

वह्मो, वि. (अ.) वन्ध, आरण्य २. असभ्य,
अशिष्ट ३. दुर्दात, दुर्दमनीय ।

वहाँ, कि. वि. (हि. वह) तत्र, तस्मिन् स्थाने ।

—खे, कि. वि., ततः, तस्मात् स्थानम् ।

वहीं, कि. वि. (हि. वहाँ + ही) तत्रैव, तस्मिन्-
न्नेव स्थाने ।

वही, सर्व. (हि. वह + ही) स एव, असावेव
(पुं.), सेव, असावेव (स्त्री.), तदेव, अद
एव (न.) इ. ।

वह्नि, सं. पुं. (सं.) अनलः, अग्निः, दे. 'आव' ।

वाङ्मनीय, वि. (सं.) स्पृहणीय, कमनीय,
काम्य २. वाञ्छित, दे. ।

वाञ्छा, सं. स्त्री. (सं.) इच्छा, अभिलाषः,
कामना ।

वाञ्छित, वि. (सं.) अभिलषित, अभीष्ट ।

वा, अव्य. (सं.) अथवा । २. दे. 'वह' ।

वाइदा, सं. पुं., दे. 'वादा' ।

वाइस चान्सलर, सं. पुं. (अं.) विश्वविद्याल-
यस्य उपाध्यक्षः, कुलपतिः ।

वाइस-प्रेसिडेंट, सं. पुं. (अं.) उपसभापतिः,
उपप्रधानः ।

वाइसराय, सं. पुं. (अं.) राज-तिनिधिः ।

वाक्, सं. पुं. [सं. वाच् (स्त्री.)] वणी,
वाक्यं २. सरस्वती, शारदा ३. वागिन्द्रियं,
वाक्शक्तिः (स्त्री.) ।

—पट्ट, वि. (सं.) वाक्कुशल, वाग्मिन् ।

—पट्टता, सं. स्त्री. (सं.) वाक्पटवं, वाग्मिता,
वाग्बद्धव्यम् ।

—पारुष्य, सं. पुं. (सं. न.) अप्रियवाक्यो-
च्चारणं, कट्टभाषणम् ।

—संयम, सं. पुं. (सं.) वाग्यमः, मितवाच्
(स्त्री.) ।

वाक, सं. पुं. (सं.) वाक्यं, वचनम्, उक्तिः
(स्त्री.) । सं. स्त्री., वाणी, सरस्वती, शारदा ।

वाकड्ड, कि. वि. (अ.) वस्तुतः, यथार्थतः । वि.,
यथार्थ, सत्य ।

वाक्का, वि. (अ.) स्थित-वर्ति, स्थ ।

वाक्कि (के) आ, सं. पुं. (अ.) घटना, वृत्तं
२. समाचारः ।

वाक्कि, वि. (अ.) परिचित, अभ्यस्त
२. हाट, बोरपट्ट, अभिष्ट ३. अनुभविन् ।

—कार, वि. (अ. + का.) कार्यभिष्ट, कुशल,
निष्णात ।

वाक्क्रियत, सं. स्त्री. (अ.) परिचयः, परि-
ज्ञानं २. अनुभवः ।

वाक्य, सं. पुं. (सं. न.) पदसमूहः, योग्यता-
कांक्षासंक्रियुक्तः पदोच्चयः २. कथनं, वचनं
३. सूत्रं ४. आभाषकः ।

वागा, सं. स्त्री. (सं.) वल्गा, दे. 'लगाम' ।

वागीश, सं. पुं. (सं.) बृहस्पतिः २. ब्रह्मन्
(पुं.) ३. वाग्मिन्, कविः । वि. (सं.) शुक्लवृ-
मुखाख्यात ।

वागुरा, सं. स्त्री. (सं.) मृगबंधनार्थं जालभेदः ।

वागुरिक, सं. पुं. (सं.) व्याधः, शाकुनिकः ।

वाग्जाल, सं. पुं. (सं. न.) वाग्जवरः, शब्दा-
जवरः, वाक्प्रबंधः ।

वाग्दंड, सं. पुं. (सं.) निर्भस्सना, अधिक्षेपः ।

वाग्दत्ता, सं. स्त्री. (सं.) अनियतवरा, स्वाचा-
पिता (कन्या) ।

वाग्दान, सं. पुं. (सं. न.) कथादानप्रतिष्ठा ।

वाग्दुष्ट, वि. (सं.) कट्टभाषिन् २. अभिष्ट ३.

वाग्देवी, सं. स्त्री. (सं.) सरस्वती, दे. ।

वाग्मां, सं. पुं. (सं. वाग्मिन्) वाग्विदग्धः, वाग्मदग्धः, सुवक्तु २. पंडितः, प्राज्ञः ३. बृहस्पतिः ।

वाग्मिन्वास, सं. पुं. (सं.) मानन्दो वातांलापः । वाङ्मय, वि. (सं.) वाक्यात्मक २. वाग्विहित (वाग्मिदि) । सं. पुं. (सं. न.) भाषा २. साहित्यम् ।

वाच्, सं. स्त्री. (सं.) वाणी २. वाक्पदम् ।

वाच, सं. स्त्री. (अं.) *पटिका ।

वाचक, वि. (सं.) ज्ञापक, श्रोतक, सूचक, बोधक २. पाठक, वाचयित्तु ३. वक्तु ।

—लुप्ता, सं. स्त्री. (सं.) उपमालंकारभेदः ।

वाचन, सं. पुं. (सं.) पठनं, अध्ययनं, उच्चारणं २. कथनं ३. प्रतिपादनम् ।

वाचस्पति, सं. पुं. (सं.) बृहस्पतिः, मुनिदत् ।

वाचा, सं. स्त्री. (सं.) वाणी, गिरा २. वाच्यं, वचनम् ।

वाचाट-रु, वि. (सं.) बहुभाषिन्, सुखर, अल्प(हा)क २. वाक्पटु ।

वाचाल(ट)ता, सं. स्त्री. (सं.) सुखरता, बहुभाषिता २. वाग्बैदग्ध्यम् ।

वाचिक, वि. (सं.) वाग्विषयक २. मौखिक ।

वाची, वि. (सं. चिन्) सूचक, बोधक ।

वाच्य, वि. (सं.) वचनीय, कथनीय २. अभिधेय, अभिधावृत्त्या बोध्य (अर्थ.) ३. कुरिसत्, हीन ।

वाच्यार्थ, सं. पुं. (सं.) अभिधेय-मूलशब्द-अर्थः, शब्दार्थः ।

वाच्यवाच्य, वि. (सं.) मद्रामद्र (वाच्य. वि.) ।

वाज्ज, सं. पुं. (अ.) उपदेशः, धार्मिक-व्याख्यानम् ।

वाजपेय, सं. पुं. (सं. पुं. न.) श्रौतयागभेदः ।

वाजपेयी, सं. पुं. (सं. चिन्) हुतावाजपेयः २. ग्राहणीपाधिभेदः ३. सुकुलजः ।

वाजसनेय, सं. पुं. (सं.) यजुर्वेदस्य शाखा-दिशेषः २. याज्ञवल्क्यः ।

वाजिब-बी, वि. (अ.) उन्नित, योग्य, युक्त ।

वाजी, सं. पुं. (सं. जिन्) अश्वः, घोटकः २. आमिक्षामस्तु (न.), मोरटः (=फटे हुए दूध का पानी) ३. पक्षिन् ४. वाणः ५. वासकः ।

—कर, वि. (सं.) कामोदीपक (औषधादि) ।

—करण, सं. पुं. (सं. न.) वीथंशुद्धिकरः प्रयोगः ।

वाट, सं. पुं. (सं.) मार्गः २. वास्तु ३. गंडपः ।

वाटर, सं. पुं. (अं.) जलं, वरि (न.) २. जलाशयः ३. मूत्रम् ४. हीरामा ।

—प्रकृ, वि. (अं.) अकलेश, जलाधेयम् ।

—काल, सं. पुं. (अं.) जलप्रपातः ।

—वर्क्स, सं. पुं. (अं.) *जलध्वं २. जलध्व-शालयः ।

वाटिका, सं. स्त्री. (सं.) क्षुद्र-भारान-उद्यानं, दे. 'बागीचा' ।

वाडवारिन्, सं. स्त्री. (सं.) वाडवः, व(वा)ड-वानलः ।

वाण, सं. पुं. (सं.) वाणः, दे. ।

वाणिज्य, सं. पुं. (सं. न.) क्रयविक्रयः, निगमः, बणिक्मन् (न.), व्यापारः ।

वाणी, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'वाणी' ।

वात, सं. पुं. (सं.) पवनः, वायुः, दे. २. देहस्थवायुः ३. रोगभेदः ।

—चक्र, सं. पुं. (सं. न.) चक्रवातः, वातावर्तः ।

—ज, वि. (सं.) वातप्रकोपज (रोगादि) ।

—जात, सं. पुं. (सं.) हनुमत्, मारुतिः ।

—तूल, सं. पुं. (सं. न.) वृद्धसूतकं, शीघ्र-ह्रासम् ।

—ध्वज, सं. पुं. (सं.) वातरथः, नेत्रः ।

—पट, सं. पुं. (सं.) ध्वजः, पताका ।

—पुत्र, सं. पुं. (सं.) हनुमत् २. भीमः ३. महाशूरः ।

—प्रकोप, सं. पुं. (सं.) (दारारे) वायुवृद्धिः (स्त्री.) ।

—रोग, सं. पुं. (सं.) वायुवात, व्याधिः, चलातका, अनिलामयः, दे. 'गठिया' ।

—वैरी, सं. पुं. (सं. रिन्) वातादः, दे. ।

वाताद्, सं. पुं. (सं.) नेत्रोद्यमफलः, वातान्नः, वातवैरिन् । (फल) वातार्थ, वादामन् (दे. वादाम्) ।

वातायन, सं. पुं. (सं. न.) क्षुद्रखडकिका २. दे. 'रोशनदान' ।

वायुल, सं. पुं. (सं.) उन्मत्तः, दे. 'बाबला' ।

वात्सल्य, सं. पुं. (सं.) रसविशेषः (काव्य.) । (सं. न.) पित्रोः अपत्यस्नेहः, वत्सलता ।

वात्स्यायन, सं. पुं. (सं.) न्यायसूत्रभाष्य-कारः २. कामसूत्रप्रणेत्, पक्षिणः, मंदनागः ।

वाद्

[५४३]

वारंट

वाद्, सं. पुं. (सं.) वादानुवादः, वादप्रति-
वादः, ऊहापोहः, *शास्त्रार्थः, दे. । २. सिद्धांतः,
-राक्षोतः ३. कलहः, विवादः ।

—विवाद, सं. पुं. (सं.) दे. 'वाद' (१) ।

वादक, सं. पुं. (सं.) वाद्यवादकित् २. वक्त्र
३. वादिन्, ताकिन् ।

वादन, सं. पुं. (सं. न.) वाद्य-वादित्र, ध्वननं
२. वाद्यं, दे. ।

वादरायण, सं. पुं. (सं.) महर्षिः वेदव्यासः ।

वादा, सं. पुं. (अ. वाददा) निवृत्तसमयः
२. प्रतिज्ञा, वचनं, संगरः ।

वादानुवाद, सं. पुं. (सं.) दे. 'वाद' (१) ।

वादी, सं. पुं. (सं.-दिन्) अभियोक्तु, अभि-
योषिन्, अधिन्, शिरोवर्तिन्, दे. 'मुद्दर'
२. प्रस्तावकः, प्रहोत् ३. वक्त्र ।

—प्रतिवादी, सं. पुं. (सं. वादिप्रतिवादिनी)
अधिप्रत्यथिनी २. पक्षिप्रतिपक्षिणी (सब द्वि.) ।

वाद्य, सं. पुं. (सं.) वादित्रं, आतोयम् ।

वानप्रस्थ, सं. पुं. (सं.) वृतीयाश्रमिन्,
वैखानसः, आरण्यकः, तापसः २. वृत्तमाश्रमः
३-४. मधुक-पलाशः, वृक्षः ।

वानर, सं. पुं. (सं.) कपिः, मर्कटः, दे. 'बंदर' ।

वानरी, सं. स्त्री. (सं.) मर्कटी, बलीनुसी ।

वापस, वि. (फा.) वि-प्रत्या-प्रतिनि, वृत्त,
प्रति, गत-आगत-याद-आयात ।

—जाना, कि. अ., प्रत्यागम, प्रत्यावृत्त
(श्वा. आ. से.) ।

—करना, कि. स., प्रतिगम, प्रतिनिवृत् (प्रे.)
२. प्रतिज्ञा (जु. उ. अ.), प्रति-क्र (प्रे.
प्रत्यर्पवति) ।

—जाना, कि. अ., प्रति, गम-निवृत् ।

—लेना, कि. स., प्रत्यादा, पुनः स्वीकृ ।

—होना, कि. अ., दे. 'वापस जाना' २. प्रति-
दा-आदा (कर्म.) ।

वापसी, वि. (फा. वापस) प्रत्या-प्रतिनि, वृत्त ।
सं. स्त्री., प्रति, गमनं-आगमनं-आवृत्तिः (स्त्री.)
२. प्रति, दानं-अर्पणं-आदानम् ।

वापी, सं. स्त्री. (सं.), वापिः (स्त्री.) दीर्घिका,
वापिका ।

वाबस्ता, वि. (फा.) बद्द, संथत, २. लयन,
दिल्ल ३. संबद्द, संग्रहित ।

वाम, वि. (सं.) सव्य, दक्षिणेत, दे. 'बायों' ।

२. प्रतिकूल, विरुद्ध, प्रतीप ३. कुटिल ४. दुष्ट,
नीच ५. अमद्, अमंगल ।

—देव, सं. पुं. (सं.) शिवः ।

—मार्ग, सं. पुं. (सं.) वामाचारः, वेदविरुद्ध-
संप्रदायविशेषः ।

—मार्गी, सं. पुं. (सं.-गिन्) वामाचारिन्,
वेदविरिथिन् ।

—लोचन, सं. स्त्री. (सं.) वामाक्षी, सुंदरी,
शोभना ।

वामन, वि. (सं.) खर्व, हस्व, लघुकाय ।
सं. पु. (सं.) खट्वनः, खट्वरकः, खर्वः, हस्वः

२. विष्णुः ३. शिवः ४. पुराणग्रंथविशेषः ।

—अवतार, सं. पुं. (सं. वामनावतारः)
अदितिगर्भजो विष्णोः पंचमावतारः ।

वामनी, सं. स्त्री. (सं.) खर्वा, खट्वनी ।

वामा, सं. स्त्री. (सं.) नगरी, रामा, २. दुर्गा,
गौरी ३. लक्ष्मीः, सरस्वती ४. स्कन्दानुचरी ।

वामी, सं. स्त्री. (सं.) बटवा, २. राक्षसी
३. शृगाली ।

वायव्य, वि. (सं.) १-३. वायु, सर्वधिन्-
देवताक-निमित्त, वायवीय ।

—कोण, सं. पुं. (सं.) पश्चिमोत्तर-कोणः
दिशा, वायवी ।

वायस, सं. पुं. (सं.) काकः, ध्वान्तः ।

—वायु, सं. स्त्री. (सं. पुं.) वातः, पवनः,
अनिलः, गंधव(वा)हः, समीरः-रणः, भरत,
मा(म)रुतः, श्वसनः, मातरिश्वन्, सदागतिः,
जगत्प्राणः, नभस्वत्, पवमानः, प्रभञ्जनः,
धूलिध्वजः, कणिप्रियः ।

—कोण, सं. पुं. (सं.) पश्चिमोत्तरदिशा,
वायवी ।

—गुल्म, सं. पुं. (सं.) वातचक्रं, चक्रवातः,
वात्या २. जल-गुल्मः-आवर्तः ३. वातगुल्मः,
उदरव्याधिभेदः ।

—पुत्र, सं. पुं. (सं.) पवन-सुतः-पुत्रः, हनुमत् ।

—भक्षण, सं. पुं. (सं.) वायु, भक्षः-भुज्,
यतिभेदः २. पवनाशनः, सर्पः ।

—मंडल, सं. पुं. (सं. न.) अंतरि(री)श्वं,
गगनं २. वातावरणम् ।

वारंट, सं. पुं. (अं.) अधिकारपत्रम् ।

—गिरफ्तारी, सं. स्त्री. (अं. + फा.) *आसेधा-
धिकारपत्रम् ।

वारंवार

[१४४]

वाववूक

—तलाशी, सं. पुं. (अं. + फा.) *अभ्वेषण-
विकारपत्रम् ।
—रिहाई, सं. पुं. (अं. + फा.) (कारागार-
द्विभ्यः) मोचनाधिकारपत्रम् ।
वारंवार, कि. वि., दे. 'वारंवार' ।
वार, सं. पुं. (सं.) पर्यायः, क्रमः २. अवसरः,
समयः ३. सप्ताहः, दिन-दिवसः, वासरः,
४. द्वारं ५. आघातः, प्रहारः, आक्रमणं
६. आवरणं ७. समूहः ८. पारः-रम् ।
—करना, कि. स., अनिद्र (स्वा. प. अ.),
अवसर्क (स्वा. प. अ.), आक्रम (स्वा. प.
से., स्वा. आ. अ.) ।
—जाली जाना, मु., लक्ष्यं न व्यथ् (कर्न.),
अस्त्रं अपलक्ष्यं पत् (स्वा. प. सं.) २. युक्तिः
निष्फलीभू ।
वारक, वि. (सं.) निषेधक, प्रतिबंधक ।
वारण, सं. पुं. (सं. न.) नि-प्रति, वेधः,
२. विघ्नः, अंतरायः । (सं. पुं.) गजः, वाण-
वारः, कवनः-नम् ।
वारदात, सं. स्त्री. (अ.) इषंटना २. विप्लवः,
संक्षोभः ।
वारना, कि. स. (सं. वारणं >) अनिष्टवारणाय
उत्सृज् (तु. प. अ.)-न्यज् (स्वा. प. अ.) ।
सं. पुं., शान्तिकरः उत्सर्गः, कष्टवारकं दानम् ।
वारनारी, सं. स्त्री. (सं.) वारनुखी, वारांगना,
वेश्या, वारविलासिनी ।
वारपार, सं. पुं. [सं. अवारपारौरे (पुं. न.)]
(नद्यादीनां) तटद्वयं २. अंतः, सीमा । कि.
वि., अवारत पारं वावत् २. निकटपार्श्वोऽ
परपार्श्वपर्यंतम् ।
वारांगना, सं. स्त्री. (सं.) वारनारी, दे. ।
वारा, सं. पुं. (सं. वारणं >) मितव्ययः
२. लाभः ।
वाराणसी, सं. स्त्री. (सं.) काशी-शिका,
शिवपुरी, तपःस्थली, व(वा)रणसी ।
वारान्यारा, सं. पुं. (द्वि. वार + न्यारा)
निर्णयः, निक्षयः, निर्धारणं २. समाधानं,
संधिः, शमः-मनन् ।
वारापार, सं. पुं. तथा कि. वि., दे. 'वारपार' ।
वाराह, सं. पुं. (सं.) वराहः, दे. ।
वारि, सं. पुं. (सं. न.) पानीयं, जलं, दे. ।
—चर, सं. पुं. (सं.) जलजन्तुः २. मत्स्यः ।
—ज, सं. पुं. (सं. न.) कमलं, वारि-जातं-रुहम् ।

—द, सं. पुं. (सं.) वारि, चरः-वाहः, मेघः ।
—धि, सं. पुं. (सं.) वारिनिधिः, सगरः ।
—यंत्र, सं. पुं. (सं. न.) जलयंत्रं, दे.
'फल्बारा' ।
वारित, वि. (सं.) नि-अव, रुद्ध, निवारित
२. निषिद्ध, प्रतिषिद्ध, प्रत्यादिष्ट ३. आच्छादित,
अवृत्त ।
वारिद, सं. पुं. (सं.) मेघः, जलदः ।
वारिद, वि. (अ.) आगत, आयात २. प्रकट,
आविर्भूत ।
वारिस, सं. पुं. (अ.) अंश, हरः-हारिन्-भाज् ।
दायादः, दायिकः २. उत्तराधिकारिन् ।
—होना, कि. अ., पितृश्रमपदाधिकारी जद्
(दि. आ. से.), दायादो भू ।
वारींद्र, सं. पुं. (सं.) वारीशः, सागरः ।
वारुणा, सं. स्त्री. (सं.) मदिरा, मद्यं, सुरा
२. पश्चिमदिशा ३. वरुणानी ।
वाड, सं. पुं. (अं.) रक्षणं, गोपनं २. पुर-
विभागः ३. कारागारादीनां विभागः ।
वाडर, सं. पुं. (अं.) रक्षकः २. कारारक्षकः ।
धात्ता, सं. स्त्री. (सं.) विषयः, प्रसंगः २. किंव-
दंती, जनश्रुतिः (स्त्री.) ३. समाचारः,
वृत्तं ४. वात्तालापः, दे. ।
वात्तालाप, सं. पुं. (सं.) संवापः, संवादः,
संभाषणं, आलापः ।
—करना, कि. अ., संलप-संबध (स्वा. प. से.),
संभाप् (स्वा. आ. से.) ।
वात्तिक, सं. पुं. (सं. न.) उक्तामुक्तदुस्कार्थ-
प्रकाशको ग्रंथः-टीका । (सं. पुं.) चरः २. दूतः ।
वाद्धेक्य, सं. पुं. (सं. न.) वाडकं, वृद्धत्वं,
वृद्धावस्था, स्थविरम् ।
वाधिक, वि. (सं.) आभिरक, वात्सरिक, सांव-
त्सरिक २. प्रावृषेय्य ।
वालटिचर, सं. पुं. (अं.) स्वयंसेवकः, स्वेच्छा-
सेवकः ।
वाल(लि)दैन, सं. पुं. (अ.) पितरौ, माता-
पितरौ (दोनो दि.) ।
वालिद, सं. पुं. (अ.) पितृ, जनकः ।
वालिदा, सं. स्त्री. (अ.) मातृ (स्त्री.), जननी ।
वालमीकि, सं. पुं. (सं.) रामायणप्रणेनृमुनि-
विशेषः, व(वा)हनोकः, प्राचेतसः, आद्यकविः,
कविज्येष्ठः ।
वाववूक, सं. पुं. (सं.) वाग्मिन् २. वाचालः ।

वावैला

[२४२]

विकल्प

वावैला, सं. पुं. (अ.) विलापः २. कोलाहलः ।
 वाष्प, सं. पुं. (सं.) उष्मन्, दे. 'भाप'
 २. अश्रु (न.) ।
 वासंती, सं. स्त्री. (सं.) माधवी, प्रहसंती,
 वसंतजा २. वृषी ।
 वास, सं. पुं. (सं.) अव, स्थानं-स्थितिः (स्त्री.)
 नि, वस्तिः (स्त्री.) २. गृहं, भवनं ३. सु, गंधः
 ४. दुर, गंधः ।
 वासक, सं. पुं. (सं.) अटरूपः, वैद्य-भिषज्,
 मातृ (स्त्री.), वासा-सकः ।
 वासकेट, सं. स्त्री. (अं. वेस्टकोट) वासकटिः ।
 वासना, सं. स्त्री. (सं.) कामना, अभिलाषः,
 बांछा २. संस्कारः, भावना, स्मृतिहेतुः ३. ज्ञानं
 ४. प्रत्याशा ५. देहात्मबुद्धिजन्यो मिथ्यासं-
 स्कारः (न्याय.) ।
 वासर, सं. स्त्री. (सं. पुं. न.) दिवसः, दिनम् ।
 वासव, सं. पुं. (सं.) इन्द्रः, दे. ।
 वासित, वि. (सं.) भावित, सुरभीकृत
 २. वस्त्रवेष्टित ३. पशुवित ।
 वासी, सं. पुं. (सं. सिन्) निवासिन,
 वास्तव्य ।
 वासुदेव, सं. पुं. (सं.) श्रीकृष्णः ।
 वास्तव, वि. (सं.) सत्य, यथार्थ, अवितथ ।
 —सं. कि. वि., वस्तुतः, सत्यम् ।
 वास्तविक, वि. (सं.) तथ्य, सत्य, तास्विक,
 दे. 'वास्तव' ।
 वास्ता, सं. पुं. (अं.) संबंधः, संपर्कः ।
 —पद्मना, मु., व्यवहारावसरः जन् (दि.
 आ. से.) ।
 वास्तु, सं. पुं. (सं. पुं. न.) वेदभूः, गृहपो-
 तकः २. गृहं, सौधः ।
 —विद्या, सं. स्त्री. (सं.) भवननिर्माणकला,
 स्थापत्यम् ।
 वास्ते, अव्य. (अ.)-अर्थ, -निमित्तम्, चतुर्थी
 विभक्ति से मो (उ., तेरे वास्ते = त्वर्थ,
 तुभ्यम् ।
 वाह, अव्य. (का.) साधु, वरं, भद्रं, शोभनं
 २. अद्भुत, आश्चर्यं ३. धिक् ४. हंत ।
 वाह, अव्य., साधु-साधु इ. ।
 —करना, कि. स., अभि-प्रति-नंद (भा. प.
 से.), साधु-वादान् दा २. करतलध्वनि कृ. ।
 —होना, मु., अभि-प्रति-नंद (कर्म.) ।

वाहक, सं. पुं. (सं.) भारवाहः, भारिकः
 २. सारथिः, यंतु ।
 वाहन, सं. पुं. (सं. न.) यानं, युग्मं, दे.
 'सवारो' ।
 वाहवाही, सं. स्त्री. (का.) ख्यातिः-विश्रुतिः
 (स्त्री.), साधुवादः, प्रशंसा ।
 —लेना या लूटना, मु., यशः वित्तम् (त, उ.
 से.), साधुवादान् लभ् (भा. आ. अ.),
 प्रशंसापात्रं भू ।
 वाहिव, वि. (अ.) एक, एकाकिन, एकल,
 अद्वितीय ।
 वाहिनी, सं. स्त्री. (सं.) सेना २. नदी
 ३. सैन्यभेदः (= ८१ हस्ती, ८१ रथ, २४३
 घोड़े, ४०५ पैदल) ।
 —पति, सं. पुं. (सं.) सेनापतिः ।
 वाहियात, वि. (अ. वाही + का. यात)
 व्यर्थ, निरर्थक २. दुष्ट, खल ।
 वाहीतवाही, वि. (अ. + का.) निरर्थक, निष्प्र-
 योजन २. असंगत, असंबद्ध । सं. स्त्री., प्र-
 जल्पः-पनं २. गालिः (स्त्री.), अपभाषणम् ।
 वाह्य, वि. (सं.) बोद्धव्य २. बोद्ध ।
 वाहु, सं. पुं., दे. 'विहु' ।
 विध्याचल, सं. पुं. (सं.) विध्यः, पर्वतविशेषः ।
 वि, उप. (सं.) वैशिष्ट्यनिषेधादिवोधकः
 उपसर्गः (व्या.) ।
 विकच, वि. (सं.) विकसित, उत्फुल्ल २. केश-
 हीन ।
 विकट, वि. (सं.) कठिन, दुस्ताध्य, दुष्कर
 २. भोग, भीषण, भयप्रद ३. विशाल, विस्तीर्ण
 ४. दुर्गम ५. वक्र, कुटिल ।
 विकराल, वि. (सं.) दे. 'विकट' (२) ।
 विकल, वि. (सं.) दिहल, उद्विग्न, वि. आकुल,
 अशांत २. स्तब्धित, अपूर्ण ।
 विकलांग, वि. (सं.) अ-पोगंड, अंगहीन,
 विकल-न्यून, अङ्ग-ह्रदिय ।
 विकला, सं. स्त्री. (सं. न.) कलयाः षष्ठितमो
 भागः ।
 विकल्प, सं. पुं. (सं.) भ्रमः, भ्रांतिः (स्त्री.)
 २. संदेहः, संशयः ३. विभाषा (व्या.)
 ४. विशद-विपरीत, विचारः-कल्पना ५. चित्त-
 वृत्तिभेदः (योग.) ६. अर्थालंकारभेदः (सा.)
 ७. अवांतरकल्पः ८. ऐच्छिकविषयः ।

विकसित, वि. (सं.) विकच, स्फुटदित, श्मित, उष्ण-भ-भित, उन्नित, उन्मीलित, प्र-उत्-सं, फुल्ल, भिन्न, उद्बुद्ध ।

विकस्वर, वि. (सं.) विकासशील, विकश्वर, विकासिन् ।

विकाम, वि. (सं.) निष्काम, निःस्पृह, विकान्त ।

विकार, सं. पुं. (सं.) परिणामः, विक्रिया, विकृतिः (स्त्री.), विहृत्वा २. रोगः, आमयः ३. दोषः, भवगुणः ४. मनो, वृत्तिः- (स्त्री.) वेगः ५. उपद्रवः, हानिः (स्त्री.) ।

विकारी, वि. (सं.-रिन्) विकारवच, परिणामिन् २. विकृत, परिवर्तित ३. कुवासनान्वित ।

विकाल, सं. पुं. (सं.) अतिकालः, विलंबः २. सायः-यं, दिनांतः ।

विकाशा, सं. पुं. (सं.) क्रमशो वृद्धिः (स्त्री.), (२-४) दे. 'विकास' (१-३) ।

विकास, सं. पुं. (सं.) क्रमशो वृद्धिः (स्त्री.), क्रमिकोन्नतिः (स्त्री.) २. प्रसारः, विस्तारः ३. विकसनं, प्रस्फुटनम् ।

—का सिद्धांत, सं. पुं. विकासवादः ।

विकीर्ण, वि. (सं.) विक्षिप्त, व्यस्त, प्रसृत, विरिष्ट २. विलयात ।

विकृत, वि. (सं.) परिणत, परिवर्तित, विकासान्वित, विकृतिमत् १. कुरूप, विरूप ३. अपूर्ण, विकल ४. रुग्ण ५. कृतक, कृत्रिम ।

विकृति, सं. स्त्री. (सं.) (१-३) दे. 'विकार' (१-३) । ४. परि, वर्तन-वृत्तिः (स्त्री.) ५. मनो-विक्षोभः ६. धातुप्रत्ययजं शब्दरूपं (व्या.) ७. माया ८. वैरूप्यं, कुरूपता ।

विकटोरिया, सं. स्त्री. (अं.) सन्नाम्नीविशेषः २. घोटकशकटीभेदः ३. उपग्रहविशेषः ।

विक्रम, सं. पुं. (सं.) शौर्यं, पराक्रमः, वीर्यं, साहसं, पीरुषं २. विक्रमादित्यः, दे. ।

विक्रमादित्य, सं. पुं. (सं.) साहसांकः, शकारिः, विक्रमसंवत्प्रवर्तक उज्जयिन्या नृप-विशेषः ।

—संबन्ध, सं. पुं. (सं. अन्य.) विक्रमाब्दः ।

विक्रमी, सं. पुं. (सं.-भिन्) पराक्रमिन्, वीरः, शरः २. सिंहः ३. विष्णुः ।

विक्रय, सं. पुं. (सं.) विक्रयणं, विपणः-गनम् ।

विक्रोत, सं. पुं. (सं.) दे. 'विक्रमी' (१-२) ।

विक्रीत, वि. (सं.) विपणायित, मूल्येन दत्त, कृतविक्रय ।

विक्रोता, सं. पुं. (सं.-वृ) विक्रयिन्, विक्रयिकः, विक्रायकः, विपणित् ।

विक्रोथ, वि. (सं.) पण्य, पणितव्य, विकेतव्य ।

विक्रव, वि. (सं.) भोत, वस्त २. मीर, कातर, वस्तु ३. रुग्ण, रोगात्तं ४. विभुष्य, विह्वल ५. संतप्त, दुःखित ६. विरक्त, उदासीन ।

विक्रान्त, वि. (सं.) ध्रान्त, श्रमार्तं, ग्लान, क्लान्त २. उत्साह, हीन-रहित, निर्-हृत, उत्साह ।

विक्षत, वि. (सं.) विशेषेण, प्रगित-विद्ध-भिन्नदेह ।

विक्षिप्त, वि. (सं.) दे. 'विकीर्ण' (१) २. त्यक्त, उज्जित ३. उन्मत्त, वातुल ।

विक्षेप, सं. पुं. (सं.) (इतस्ततः) विशेषणं, प्राप्तनं, निपातनं, प्रेरणं २. चित्त-वांचल्यं, संयमाभावः २. विघ्नः, अंतरायः ।

विक्षोभ, सं. पुं. (सं.) मनोलील्यं, चित्त-वांचल्यं, उद्वेगः, क्षोभः ।

विक्र्यात, वि. (सं.) प्रसिद्ध, दे. ।

विक्र्याति, सं. स्त्री. (सं.) प्रसिद्धिः (स्त्री.), दे. ।

विक्रात, वि. (सं.) वि-अतीत, बीत, गत २. उपात्य, उपात ३. निष्प्रभ ४. विरहित, विहीन ।

विक्रित, वि. (सं.) शिथिल, क्षथ, स्रस्त २. अद-अधः-पतित ३. विकृत ४. प्रस्तुत, स्पष्ट ।

विक्रुण, वि. (सं.) निरुणं, गुणहीन ।

विक्रह, सं. पुं. (सं.) युद्धं, संग्रामः २. कलहः, कलिः ३. शरीरं, कायः ४. विभागः ५. विक्लेषणं, पृथक्करणं ६. न्यासः, विस्तरः, समा-सांगविद्वेषणं (व्या.) ७. आकारः, आकृतिः (स्त्री.) ।

विघटन, सं. पुं. (सं. न.) विक्लेषः-पणं, पृथक्-करण-क्रिया, विक्लेदः, विभेदः २. चोटनं ३. वि-ध्वंसः-सनम् ।

विघटित, वि. (सं.) विश्लेषित, विशिष्ट २. दुदित, चोटित ३. नष्ट, नाशित ।

विघट्टन, सं. पुं. (सं. न.) उदघाटनं, अपावरणं २. प्रसन्न अवपातनं ३. पथणं (४-६) दे. 'विघटन' (१-३) ।

विघात, सं. पुं. (सं.) विघ्नः २. आघातः, प्रहारः ३. खंडनं, शकलीकरणं ४. नाशः ५. वैफल्यम् ।

विघ्न, सं. पुं. (सं.) व्याघातः, अंतरायः, प्रत्यूहः, प्रतिबंधः, बाधः, धा, रोधः, प्रति-वि-श्रम्भः ।
 —कारी, वि. (सं.-रिन्) बाधाजनकः विघ्नः, -कर-कर्तृ, विघातिन् ।
 —नाशक, सं. पुं. (सं.) विघ्नः, विनायकः, पतिः, नाशः, नायकः, गणेशः ।
 विचक्षण, वि. (सं.) विद्वत्, बुद्धिमत् २. कुशल, दक्ष, निपुण ।
 विचरण, सं. पुं. (सं.) चलनं, गमनं, २. अमणं, पर्यटनं, विहरणम् ।
 विचल, वि. (सं.) कंपमान, कंप २. चञ्चल, चल ।
 विचलता, सं. स्त्री. (सं.) अस्थिर्यं, चाञ्चल्यं २. वि-आकुलता ।
 विचलित, वि. (सं.) पतित, स्थलित २. लोल, अधीर, चञ्चल ।
 विचार, सं. पुं. (सं.) मतिः (स्त्री.), कल्पना, भावना, संकल्पः, तर्कः, मत्, अभिप्रायः २. चिन्तनं, ध्यानं, आलोचनं, विचारण-णा, दत्त्व-निर्णयः, वितर्कः, कर्णं, मनसा कल्पनं, विवेचनं ३. व्यवहारदर्शनं, विचारकरणम् ।
 —शील, वि. (सं.) विचारवत्, विवेकिन् समीक्ष्य-विमृश्य, कारिन् ।
 —शीलता, सं. स्त्री. (सं.) विवेकिता, बुद्धि-मत्ता ।
 विचारक, सं. पुं. (सं.) विचारधर्म-न्याय, -अध्यक्षः, आधिकारिकः २. विवेकिन्, गुण-दोषज्ञः, विवेचकः, आलोचकः ।
 विचारणीय, वि. (सं.) विचार्यं, चिन्तनीय, विचारार्हं, ध्येय २. संदिग्ध ।
 विचारना, क्रि. अ. (सं. विचारणं) विचर-सभू (प्रे.), निवृत्तकं (जु.) ध्यै (भ्वा. प. अ.), विमृश् (तु. प. अ.), आ-पर्या-लोक (जु.) ।
 विचारित, वि. (सं.) ध्यात, चिन्तित, तर्कित, पर्यालोचित, विमृष्ट २. निणीत, निश्चित ।
 विचार्य, वि. (सं.) दे. 'विचारणीय' ।
 विचिकित्सा, सं. स्त्री. (सं.) संशयः, संदेहः ।
 विचित्र, वि. (सं.) कर्तुर-रित, कल्पाव-भित, शार, शनल २. विशिष्ट, विलक्षण, असाधारण ३. अद्भुत, आश्चर्य, विस्मापक ४. सुन्दर ।
 —वीर्य, सं. पुं. (सं.) चन्द्रवंशीयो नृपविदोषः ।
 —शाला, सं. स्त्री. (सं.) अद्भुतशालयः ।

विच्छिन्न, वि. (सं.) निकृत्त, विखन, विमृष्टम् २. विमुक्त, विशिष्ट, पृथक्-स्थित ३. समाप्त, अवसित ।
 विच्छेद, सं. पुं. (सं.) लवनं, लावः, कर्तनं, विच्छेदनं २. विश्लेषः-घर्णं, वियोजनं ३. क्रम-संगः-भजनं ४. विरहः, वियोगः ।
 विच्छोह, सं. पुं. (सं. विश्चोमः >) वियोगः, विरहः ।
 विज्ञान, वि. (सं.) निर्जन, विविक्त, निःशलाक, एकांत ।
 विजय, सं. पुं. (सं.) जयः, जयनं, बशी-स्वायत्ती-करणम् ।
 —दशमी, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'दशहरा' ।
 —पताका, सं. स्त्री. (सं.) जयकेतुः २. जयचिह्नं ।
 —शील, वि. (सं.) विजयिन्, सदाजयिन्, जिष्णु ।
 —श्री, सं. स्त्री. (सं.) जयलक्ष्मीः (स्त्री.) ।
 विजया, सं. स्त्री. (सं.) भंगम्, हर्षिणी, दे. 'भंग' २. उमासखी ३. दुर्गा ।
 —दशमी, सं. स्त्री. (सं.) आश्विनशुक्लदशमी, आर्याणां पर्वविशेषः, विजयोत्सवः ।
 विजयी, वि. (सं. -यिन्) वि, जेत, जयिन्, -जित्, जिष्णु (विजयिनी स्त्री.) ।
 विजयोत्सव, सं. पुं. (सं.) विजयदशमी-विजयादशमी-उत्सवः-पर्वन् (न.)-क्षणः । २. जय-उत्सवः-क्षणः-उद्घोषः ।
 विजय, वि. (सं.) अजर, निर्जर, वार्द्धक्य-रहित २. मृतन, नवीन ।
 विजल, वि. (सं.) अजल, निर्जल, जल-वारि, -रहित ।
 विजातीय, वि. (सं.) भिन्न-असमान, -जाति-वर्ण २. साम्यरहित, असम ।
 विजिगीषा, सं. स्त्री. (सं.) विजयकामना २. उत्कर्षः ।
 विजिगीषु, वि. (सं.) जयाभिलाषिन् ।
 विजित, सं. स्त्री. (अं.) अभिगमः, अभ्यागमः, दर्शनार्थं गमनं, दर्शनयात्रा ।
 विजितर, सं. पुं. (अं.) दर्शकः, प्रेक्षकः २. अभ्यागतः, गृहागतः ।
 विजिटिंग कार्ड, सं. पुं. (अं.) *दर्शकपत्रम् ।
 विजित, वि. (सं.) परजित, अभिपरा, -भूत, बशी-स्वायत्ती, कृत ।
 विजेता, सं. पुं. (सं. -तृ) दे. 'विजयी' ।

विज्ञ, वि. (सं.) प्रवीण, कुशल, विशेषज्ञ
२. धीमत्, बुद्धिमत् ३. कोविद, पंडित ।
विज्ञता, सं. स्त्री. (सं.) प्रवीणता २. बुद्धिमत्ता
३. विद्वत्ता ।
विज्ञप्ति, सं. स्त्री. (सं.) सूचनं, स्थापनम् ।
विज्ञात, वि. (सं.) अवगत, अबुद्ध २. प्रतिद्ध ।
विज्ञान, सं. पुं. (सं. न.) ज्ञानं, बोधः, अवगमः,
उपलब्धिः (स्त्री.) २. विषयविशेषस्य विशिष्ट-
ज्ञानं ३. अध्यात्म-विद्या-ज्ञानं ४. कर्मन् (न.)
५. आत्मानुभवः ।
—अयकोष, सं. पुं. (सं.) ज्ञानेन्द्रियसहिता
बुद्धिः (स्त्री.) ।
विज्ञापन, सं. पुं. (सं. न.) बोधनं, सूचनं,
बोधनं, स्थापनं, विज्ञप्तिः (स्त्री.), विज्ञापना
२. विज्ञापनपत्रम् ।
विट, सं. पुं. (सं.) कामुकः, लंपटः २. धूर्सः
३. नायकमेदः (सा.) ३. कामुकानुचरः ।
विटप, सं. पुं. (सं. पुं. न.) शाखा, शाखा-
पल्लवसमुदायः २. क्षुपः, युष्मः-मं ३. वृक्षः ।
विटपी, सं. पुं. (सं-पिन्) वृक्षः, पादपः ।
विदामिन, सं. पुं. (अं.) खाद्यीजम् ।
विडंबना, सं. स्त्री. (सं.) अनु-करण-कार-
कृतिः (स्त्री.) २. अब-उप-हासः, अबहेलना
२. निर्भर्त्सन-ना ।
—करना, कि. स., अब-उप-हस (भ्वा. प. से.)
२. सोपहासं अनुकृ, विडंब् (चु.) सावहासं
अवगन् (दि. आ. अ.) ।
विडारता, कि. स. (हि. डालना) विकृ
(तु. प. से.), विक्षिप् (तु. प. अ.) २. (वि-
नश् (प्रे.) ३. विद्वन्प्रलय (प्रे.) ।
वि(वि)डाल, सं. पुं. (सं.) मार्जारः, दीप्त-
लोचन-मक्षः, दे. 'विज्ञा' ।
विलंबा, सं. स्त्री. (सं.) परपक्षन्युदासपूर्वकं
स्वपक्षस्थापनं २. प्रतिपक्षस्थापनाहीनो जल्पः
३. व्यर्थ-कलहः-विवादः ।
वित्त, वि. (सं.) वित्तत, विस्तीर्णं ।
वित्तथ, वि. (सं.) विनश्य, असत्य, अनृत
२. व्यर्थं ।
वितरण, सं. पुं. (सं. न.) दानं, अर्पणं, उत्सर्गः
२. विभाजनं, अंशनम् ।
—करना, कि. स., अंश् (चु.), विनज्
(भ्वा. उ. अ.) ।

वितर्क, सं. पुं. (सं.) ऊहः-हनं, कहापोहः
२. सदेहः ३. अनुमानं ४. अर्थालंकारभेदः
(सा.) ।
वितल, सं. पुं. (सं. न.) पातालविशेषः ।
वितस्ता, सं. स्त्री. (सं.) पंचनदप्रांतवर्ती
नदविशेषः ।
वितस्ति, सं. स्त्री. (सं. पुं. स्त्री.) द्वादशांशुलः,
दे. 'वित्ता' ।
वितान, सं. पुं. (सं. पुं. न.) उल्लोचः, चंद्राक्षः
२. विस्तारः ३. वक्षः ।
विशुद्ध, सं. पुं. (सं. वि. + शुद्ध) गजः, द्विपः ।
विकृष्ण, वि. (सं.) निःस्पृह, निष्काम, संतोषिन् ।
विष, सं. पुं. (सं. न.) संपत्तिः (स्त्री.), धनं, दे. ५
—वान्, वि. (सं-न्त्) घनाढ्य ।
—हीन, (वि.) निर्धन ।
विदग्ध, वि. (सं.) चतुर, दक्ष, कुशल २.
व्युत्पन्न, पंडित ३. घुष्ट, व्युष्ट । सं. पुं. (सं.)
रसिकः २. विद्वत् ।
विदग्धता, सं. स्त्री. (सं.) चातुर्यं २. पांडित्यं,
विद्वत्ता ।
विदा, सं. स्त्री. (अ. विदाश्) प्रस्थानं, प्रयाणं
३. गमनानुमतिः (स्त्री.), प्रस्थानानुज्ञः ।
—करना, कि. स., प्रस्था-प्रया (प्रे.) विसृज्
(तु. प. अ.) ।
—होना, कि. अ., प्रस्था (भ्वा. आ. अ.),
प्रया (अ. प. अ.) ।
विदाई, सं. स्त्री. (हि. विदा) दे. 'विदा'
(१-२) ३. 'प्रास्थानिकं धनं द्रव्यं वा ।
विदारक, वि. (सं.) विपाटक, विभेदक, विदारण ।
विदारण, सं. पुं. (सं. न.) विपाटनं, विभेदनं,
विदलनं २. हननं ३. युष्म ।
विदारीकंद, सं. पुं. (सं. पुं. न.) भूमिकुण्मांडः,
विदारी-रिंका, वृत्त-रवाडु, कंदा ।
विदित, वि. (सं.) अवगत, बुद्ध. ज्ञात, दे. ।
विदिशा, सं. स्त्री. (सं.) दशाध्यानां राजधानी,
नगरविशेषः (भेलसा) २. दिक्दिशा, कोणः ।
विदीर्ण, वि. (सं.) विपाटित, विरलित, विभिन्न
२. दुष्टित, मग्न ३. हत ।
विदूर, सं. पुं. (सं.) धृतराष्ट्रस्य भ्राता मंत्री च ।
विदुष, सं. पुं. (सं. विद्वत्) पंडितः, प्राज्ञः ।
विदुषी, वि. (सं.) विपकृष्ट, सुदूरवर्तिन् ।
विदूर, सं. पुं. (सं.) वैद्वसिकः, प्रहासिकः,
प्रोत्तिदः, वास्तविकः २. भंडः ।

विदेश

[४४६]

विधि

विदेश, सं. पुं. (सं.) परदेशः, देशांतरम् ।
 विदेशी, वि. (सं. विदेशीय) अग्य-पर, देशीय,
 बै-पार, देशिक ।
 विदेश, वि. (सं.) अकाय, अशरीर-रितः ।
 सं. पुं. (सं.) जनकः, मिथिलेश्वरः ।
 —पुर, सं. पुं. (सं. न.) जनकपुरी, मिथिला,
 विदेश ।
 विद्, वि. (सं.) भविष्यद्, समुत्कीर्ण, सुविपर,
 वेधित, छिद्रित, निर्भिन्न २. क्षत, व्रणित
 ३. क्षिप्त, अगत ।
 विद्यमान, वि. (सं.) वर्तमान, भवत्, २. प्रत्यक्ष,
 समक्ष, उपस्थित ।
 विद्यमानता, सं. स्त्री. (सं.) उपस्थितिः (स्त्री.),
 वर्तमानता ।
 विद्या, सं. स्त्री. (सं.) ज्ञानं, विज्ञानं, बोधः
 २. अध्यात्मविद्या, परा विद्या ३. शास्त्रम् ।
 —दान, सं. पुं. (सं. न.) अध्यापनं २. पुस्तक-
 दानम् ।
 —प्राप्ति, सं. स्त्री. (सं.) ज्ञानाधिगमः,
 अध्ययनम् ।
 —वान्, वि. (सं. न.) विद्वांसु, प्राज्ञ ।
 —होतु, वि. (सं.) अशिक्षित, निरक्षर, अज्ञ,
 अविद्य ।
 विद्यारंभ, सं. पुं. (सं.) १. वेदारम्भसंस्कारः
 २. अध्ययनोपक्रमः, शिक्षाप्रारम्भः ।
 विद्यार्जन, सं. पुं. (सं. न.) ज्ञान-बोध-प्राप्ति-
 उपलब्धिः (दोनों स्त्री.) २. विद्यया धनोपा-
 र्जनम् ।
 विद्यार्थी, सं. पुं. (सं. विन्) छात्रः, शिष्यः,
 २. अधीयानः, अध्येतु, पाठकः ।
 विद्यालय, सं. पुं. (सं.) पाठशाला, विद्या-
 गृह-मन्दिरम् ।
 विद्युत्, सं. स्त्री. (सं.) चंचला, चपला,
 तडित (स्त्री.), दे. 'विजली' ।
 —प्रिय, सं. पुं. (सं. न.) कांस्यं २. कांस्य-
 पात्रम् ।
 विदुम्, सं. पुं. (सं.) प्रवालः, भोमीरः,
 दे. 'भूंगा' २. रत्नवृक्षः ३. पल्लवः-वं, किस(स)-
 लयः-यम् ।
 विद्वोह, सं. पुं. (सं.) राज-द्रोहः, विरोधः,
 प्रजाक्षोभः, प्रकृतिप्रकोपः, राज्यविप्लवः ।
 विद्वोही, सं. पुं. (सं. हिन्) राज-द्रोहिन्-
 विरोधिन्-द्रुद् ।

विद्वत्ता, सं. स्त्री. (सं.) पांडित्यं, व्युत्पत्तिः
 (स्त्री.), विद्वत्वं, विद्याप्रकर्षः ।
 विद्वान्, सं. पुं. (सं. विद्वन्) पंडितः, प्राज्ञः,
 वद्वत्तः, विपश्चित, ज्ञानवत् ।
 विद्वेष, सं. पुं. (सं.) वैरं, झगडा, विरोधः ।
 विद्वेषी, सं. पुं. (सं. विन्) वैरिन्, विरोधिन्,
 शत्रुः ।
 विधवा, सं. स्त्री. (सं.) रंडा, मृतभर्तृका,
 विश्वस्ता, यतिनी, जालिका ।
 —पन, सं. पुं. (सं. + हि.) वैद्यव्यं, दे. ।
 विधवाश्रम, सं. पुं. (सं.) विश्वस्तालयः ।
 विधाता, सं. पुं. (सं. न.) ब्रह्मन् (पुं.),
 त्रगदुत्पादकः, सृष्टिकर्ता, परमेश्वरः २. विधायकः,
 रचयितु ३. व्यवस्थापकः, *प्रबन्धकः ।
 विधानी, सं. स्त्री. (सं.) रचयित्री, विधायिका
 २. व्यवस्थापिका ।
 विधान, सं. पुं. (सं. न.) अनुष्ठानं, करणं,
 संपादनं, निष्पादनं, साधनं २. व्यवस्था,
 आयाजनं, *प्रबन्धः ३. रीतिः-पद्धतिः (स्त्री.),
 प्रणाली ४. निर्माणं, रचनं-ना ५. उपायः,
 युक्तिः (स्त्री.) ६. पूजा, अर्चा ७. शासन-
 पद्धतिः (स्त्री.), राज्यव्यवस्था ८. विधिः,
 नियमः, कल्पः ।
 —करना, युक्ति. सं. विधा, आदिश् (तु. प. अ.),
 शाम (अ. प. से.) ।
 —परिपद्, सं. स्त्री. (सं.) विधि-अधिनियम-
 निर्मात्री सभा ।
 विधायक, सं. पुं. (सं.) अनुष्ठातु, कर्तुं, निष्पा-
 दकः, साधकः २. निर्मातु, रचयितु, विधातु,
 ३. व्यवस्थापकः प्रबन्धकः, प्रस्तोतु ।
 विधि, सं. स्त्री. (सं. पुं.) (शास्त्राणां) आदेशः,
 नियोगः, निवमः, कल्पः, अनुशासनं २. रीतिः
 (स्त्री.), कार्यक्रमः, प्रणाली ३. व्यवस्था,
 संगतिः (स्त्री.), क्रमः ४. आचारः, व्यवहारः
 ५. प्रकारः, रीतिः (स्त्री.) ६. भाग्यम् ।
 सं. पुं. (सं.) ब्रह्मन्, विधातु (पुं.) ।
 —निषेध, सं. पुं. [सं. धी (द्वि.)] नियोग-प्रति-
 षेधौ (द्वि.) ।
 —पूर्वक, कि. वि. (सं. चक) यथाविधि, यथा-
 शास्त्रं २. यथातथं, यथोचितम् ।
 —वत्, कि. वि. (सं.) दे. 'विधिपूर्वक' ।
 —वशात्, अ. (सं.) दैवात्, भाग्येन, भाग्य-
 दैव-वशात् ।

विद्यु

[५५०]

विपथ

—वाहन, सं. पुं. (सं.) हंसः, मरालः, धवलपक्षः ।

—हीन, वि. (सं.) अवैध, अविहित, विधि-विरुद्ध, अनियमित ।

विद्यु, सं. पुं. (सं.) चन्द्रः, सोमः ।

—वदनी, सं. स्त्री (सं.) चन्द्रमुखी २. सुन्दरी ।

विद्युर, वि. (सं.) दुःस्वित, पीडित २. भीत, त्रस्त ३. वि-आकुल ४. असमर्थ ५. परित्यक्त ६. विमूढ [विद्युर (स्त्री.)] ।

विधेय, वि. (सं.) अनुधेय, कर्तव्य, निपाद्य, सध्य २. वशवर्तिन्, विनीत, वश्य, विनेय, वचनेस्थित ३. विधानार्ह, अनुज्ञासनीय । सं. पुं. (सं. न.) विशेषकं, वाक्यांशभेदः (व्या.) ।

विध्वंस, सं. पुं. (सं.) वि-नाशः, अवसादः, निर्मूलनं, उच्छेदः ।

विध्वंसी, वि. (सं. -सिन्) विध्वंसकः, वि-नाशकः, निर्मूलयितृ ।

विध्वस्त, वि. (सं.) वि-नष्ट, उच्छिन्न, निर्मूलित, उत्सन्न ।

विनत, वि. (सं.) प्रणत, वंदमान २. आव-जित, प्रवण ३. वक्र, झिझ ४. संकुचित ५. नम्र-६. शिष्ट ।

विनती, सं. स्त्री. (सं. -तिः) प्रार्थना, याचना २. विनयः, नम्रता, शिष्टता ३. प्रवणता, प्रहृता ।

विनय, सं. स्त्री. (सं. पुं.) प्रभयः, नम्रता, शालीनता, सौजन्यं, दाक्षिण्यं २. शिक्षा ३. निवेदनं, प्रार्थना ४. निर्भर्त्सना ५. नीतिः (स्त्री.) ।

—शील, वि. (सं.) नम्र, विनीत, शिष्ट, दक्षिण, सभ्य, सुजन, सुशील ।

विनश्वर, वि. (सं.) क्षयिष्णु, नश्वर, अनित्य, अस्थायिन् ।

विनष्ट, वि. (सं.) वि-ध्वस्त, अवसन्न, उच्छिन्न, निर्मूलित २. मृत ३. विकृत ४. भ्रष्ट ।

विना, अव्य. (सं.) अन्तरेण, मुक्त्वा, वर्जयित्वा, विहाय (सत्र द्वितीया बो साथ) । ऋत्वे (पञ्चमी के साथ) ।

विनायक, सं. पुं. (सं.) गणेशः, दे. ।

विनाश, सं. पुं. (सं.) दे. 'विध्वंस' तथा 'नाश' ।

विनाशक, सं. पुं. (सं.) नाश-कर्तृ, विध्वंसकः ।

विनिपात, सं. पुं. (सं.) वि-नाशः-ध्वंसः

२. बधः, इत्या ३. अव-अप-मानः, अनारदः, अवधीरणा ।

विनिमय, सं. पुं. (सं.) परि-वनः-वृत्तिः (स्त्री.), प्रति-परि-दानम् ।

—करना, क्रि. स., विनि-मे (भ्वा. अ. अ.), प्रतिदा, परिश्रुत (प्रे.) ।

विनियोग, सं. पुं. (सं.) कृत्यविशेषे मंत्रप्रयोगः २. उपयोगः, प्रयोगः ३. प्रेषणं ४. प्रवेशः ।

विनीत, वि. (सं.) दे. 'विनयशील' २. जितै-द्रिय ३. शिक्षित ४. अपनीत ५. दलित ६. धार्मिक ।

विनोद, सं. पुं. (सं.) कु(कौ)तुहलं, कौतुकं, मनोरंजकव्यापारः २. खेला, क्रीडा, लीला ३. परिहासः, प्रमोदः ४. आनन्दः, हर्षः ।

विनोदी, वि. (सं. -दिन्) कु(कौ)तुहलिन, कौतुकिन् २. लीलामय, क्रीडाशील ३. आन-दिन्, उल्लासिन् ४. परिहासशील, प्रमोदप्रिय ।

विन्यास, सं. पुं. (सं.) स्थापनं, व्यवसनं, निधानं २. रचनं, परिष्करणं, अलंकरणं ३. प्रणिधानं, उत्सृजनं, अनुव्यथनं ४. क्षेपः-पणम् ।

विपञ्ची, सं. स्त्री. (सं.) वीणाभेदः २. केलिः (स्त्री.) ।

विपक्ष, सं. पुं. (सं.) प्रति-विरुद्ध-विपरीत-प्रतियोगि-विरोधि-पक्षः २. विरोधिचर्याः, प्रति-द्विद्वर्गः ३. प्रतिवादिन्, विरोधिन् ४. विरोधः ५. अपवादः, बाधकनिधमः (व्या.)

६. साध्याभाववान् पक्षः (न्या.) । वि. (सं.) विरुद्ध २. असहाय ३. निरुद्ध, निर्वाज ।

विपक्षी, सं. पुं. (सं. -क्षिन्) प्रतिपक्षिन्, प्रति-वादिन्, पर-पक्षीयः-पक्ष्यः-पक्षपातिन् प्रति-द्विदिन् २. शत्रुः, वैरिन् ३. निपक्षत्र, पक्षहीन (पंछी आदि) ।

विपणि, णी, सं. स्त्री. (सं.) आपणः, हट्टः, पण्य, शाला-बीधी, २. विक्रयपदार्थाः (पुं.) ३. वाणिज्यं, व्यापारः ।

विपत्ति, सं. स्त्री. (सं.) आपद्-विपद्-जापत्तिः (स्त्री.), व्यवसनं, महा-दुःखं-कष्टं २. आपत्-विपत्, कालः-समयः ।

—आना या पड़ना, क्रि. अ., व्यसनं उपस्था (भ्वा. प. अ.), कष्टं आ-समा-पत् (भ्वा. प. से.) विपद् उपनम् (भ्वा. प. अ.) ।

विपथ, सं. पुं. (सं.) कु, पथः-मार्गः २. कद-, आचरः-आचरणम् ।

विपद्-दा

[२११]

विभिन्न

—गति, सं. स्त्री. (सं.) कुमार-कुपथ, नामन-
गतिः (स्त्री.) ।

—गा, सं. स्त्री. (सं.) . कुमारगामिनी नारी
२. नदी, सरित् (स्त्री.) ।

—गामी, वि. (सं. -मिन्) कुमारगामिन्,
दुर्घत, दुराचारिन् ।

विपद्-ज्ञा, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'विपत्ति' ।

विपद्, वि. (सं.) विपद्-आपद्, घस्त,
२. दुःखित ३. भ्रान्त ४. भूत ।

विपरीत, वि. (सं.) विरुद्ध, प्रतीप, अप-प्रति,
सव्य, प्रतिकूल, विलोमक २. हट, क्रुद्ध ३. कष्ट-
कर, दुःखप्रद ।

विपरीतता, सं. स्त्री. (सं.) प्रतीपता, प्रति-
कूलता, विरोधः, वैपरीत्यम् ।

विपर्यय, सं. पुं. (सं.) व्यत्यासः, व्यत्ययः,
विपर्ययः, व्यतिक्रमः २. अव्यवस्था, क्रमाभावः
३. आतिः (स्त्री.), स्थलितं ४. मिथ्याज्ञानम् ।

विपर्यस्त, वि. (सं.) व्यत्यस्त, अधरोत्तर
२. अव्यवस्थित, भग्नक्रम, संकुल, संकीर्ण ।

विपर्यास, सं. पुं. (सं.) दे. 'विपर्यय' (१. २, ४) ।

विपल, सं. पुं. (सं. न.) क्षण, निमिषः,
पलस्य षष्ठितमो भागः ।

विपाक, सं. पुं. (सं.) पचनं, पक्वता २. चर-
मोत्कथः, पूर्णता ३. फलं, परिणामः ४. कर्म-
फलं ५. जठरे भोजनस्य रसरूपेण परिणतिः
(स्त्री.) ६. स्वादः ७. दुर्गतिः (स्त्री.) ।

विपिन, सं. पु. (सं. न.) जंगलं, वनं, दे. ।
२. उपवनं, वाटिका ।

विपुल, वि. (सं.) बहु, भूरि, प्रभूत, अत्यधिक
२. विशाल, विस्तीर्ण ३. बृहत्, महत्
४. अगाध, अतिगभीर ।

विपुलता, सं. स्त्री. (सं.) आधिक्यं, बहुत्वं,
अतिशयः २. विशालता, विस्तीर्णता ३. महत्ता,
बृहत्ता ।

विपुला, सं. स्त्री. (सं.) पृथिवी, दे. ।

विप्र, सं. पुं. (सं.) ब्राह्मणः दे. २. पुरोहितः ।

विप्रतिपत्ति, सं. स्त्री. (सं.) विरोधः, विसं-
वादः, असंगतिः (स्त्री.) २. परस्परविसंवादि-
वाक्यम् (न्या.), कुल्यातिः (स्त्री.) ४. विकृतिः
(स्त्री.) ५. अस्तिद्धिः (स्त्री.) ।

विप्रतिषेध, सं. पुं. (सं.) मिथोविरोधः,
असंगतिः (स्त्री.) ।

विप्रलम्भ, सं. पुं. (सं.) वियोगः, विरहः,
रगिणीर्विच्छेदः २. छलं, बंचनं-न्ता ।

विप्लव, सं. पुं. (सं.) उपद्रवः, छिन्नः, डमरः
२. विद्रोहः, दे. ३. कुव्यवस्था, क्रमहीनता
४. आपद्-विपद् (स्त्री.) ५. विनाशः
आप्लावः, जलवृंहणम् ।

विफल, वि. (सं.) निष्फल, दे. ।

विजुघ, सं. पुं. (सं.) पंडितः, प्राज्ञः २. देवः
३. चंद्रः ४. शिवः ।

विबोध, सं. पुं. (सं.) जगरणं २. सम्यग्ज्ञानं
३. सावधानता ४. विकासः ।

विभक्त, वि. (सं.) कृतविभाग, परिकल्पित
२. पृथक्कृत, विदलेवित ३. विभिन्न, प्राप्त-
विभाग ।

विभक्ति, सं. स्त्री. (सं.) विभजनं, विभागः
२. विधोगः, पार्थक्यं ३. सुप्रत्ययः, तिङ्-
प्रत्ययः (व्या.) ।

विभव, सं. पुं. (सं.) धनं, संपत्तिः (स्त्री.)
२. ऐश्वर्यं, प्रतापः ३. मोक्षः, निःश्रेयसम् ।

—शाली, वि. (सं. -लिन) धनाढ्य २. प्रता-
पिन् ।

विभा, सं. स्त्री. (सं.) क्रांतिः (स्त्री.), प्रभा
२. किरणः ३. सौन्दर्यम् ।

विभाग, सं. पुं. (सं.) परिकल्पनं, विभजनं,
अंशानं, बंटनं २. अंशः, भागः, खंडः-डं, एक-
देशः ३. दायानां, रिक्तभागः ४. प्रकरणं,
अध्यायः ५. शाखा, कार्यक्षेत्रम् ।

—करना, क्रि. स., दे. 'बाँटना' ।

विभाज, सं. पुं. (सं.) विभाजयित्, विभाग-
परिकल्पकः, बंट(ड)कः ।

विभाजन, सं. पुं. (सं. न.) बंट(ड)नं, विभ-
जनं, विभाग-परिकल्पनम् ।

विभाजित, वि. (सं.) कृतविभाग, परिकल्पित,
बंटित, पंडित ।

विभाज्य, वि. (सं.) विभजनीय, विभागार्हं,
बंटि(डि)तव्य ।

विभाजना, सं. स्त्री. (सं.) अर्थालंकारभेदः
(सा.) ।

विभाजरी, सं. स्त्री. (सं.) शर्वरी, राज्ञी
२. दूती, कुट्टनी ।

विभाषा, सं. स्त्री. (सं.) विकल्पः (व्या.) ।
विभिन्न, वि. (सं.) विच्छिन्न, सूत, कृत

विभ्रजता

[२५२]

विरह

२. विभक्त, वियुक्त, पृथक्स्थित ३. नाना-
अनेक-बहु-वि, विष ।
विभ्रजता, सं. स्त्री. (सं.) विविषता २. पृथ-
कता-त्वम् ।
विभीषण, सं. पुं. (सं.) रावणभ्रातृ । वि.
(सं.) भयंकर, भीम ।
विभु, वि. (सं.) सर्वव्यापक, विश्वव्यापिन,
सर्वगत, सर्वागत, २. नित्य ३. सुमहत् ४. शक्ति-
मत् । सं. पुं. (सं.) ईश्वरः २. स्वामिन्
३. आत्मन् ।
विभूति, सं. स्त्री. (सं.) विभवः, ऐश्वर्यं २. धनं,
वित्तं ३. अलौकिक-दिव्य, शक्तिः-सिद्धिः (दोनों
स्त्री.) ४. शिवधृतभस्मन् (न.) ५. लक्ष्मीः
(स्त्री.) ६. (विविध) सृष्टिः (स्त्री.), वृद्धिः
(स्त्री.), उत्कर्षः ।
विभूषण, सं. पुं. (सं. न.) अलंकरणं, मंडनं
२. आभूषणं, अलंकारः ।
विभूषित, वि. (सं.) अलंकृत, मंडित २. युक्त,
सहित ३. सुशोभित ।
विभ्रम, सं. पुं. (सं.) वि, भ्रंतिः (स्त्री.),
भ्रमः, स्वलितं २. संदेहः ३. भ्रमणं ४. स्त्रीणां
हावभेदः ५. सौन्दर्यम् ।
विभ्रमि, सं. स्त्री. (सं.) विपरीत-विरुद्ध, मतं-
विचारः २. कुमतिः (स्त्री.) ।
विभ्रमन्, वि. (सं. न.) क्षिन्न, विषण्ण, दुर्मनस् ।
विभ्रमर्श, सं. पुं. (सं.) विचारः-रण-रणा, मंत्रणा-
णा, विवेचनं २. समीक्षा, आलोचना
३. परीक्षा ४. परामर्शः ।
विभ्रमल, वि. (सं.) स्वच्छ, निर्मल, दे.
२. निर्दोष ३. सुन्दर ।
—मणि, सं. पुं. (सं.) दे. 'स्फटिक' ।
—मति, वि., (सं.) शुद्ध, हृदय-युक्त ।
विभ्रमलता, सं. स्त्री. (सं.) निर्मलता, दे. ।
विभ्रमला, सं. स्त्री. (सं.) सरस्वती, शारदा
२. सिद्धिविधेयः ।
—पति, सं. पुं. (सं.) ब्रह्मन् (पुं.), विधिः ।
विभ्रमांस, सं. पुं. (सं. पुं. नं.) अस्वच्छ-अप-
विश-अभक्ष्य, मांसम् । (कुबकुरादीनाम्) ।
विभ्रमाता, सं. स्त्री. (सं. न्.) मातृसपरनी ।
विभ्रमान, सं. पुं. (सं. पुं. न.) देवस्थः, वायु-
व्योम, श्रान्तं २. रथः, वाहनं ३. घोटकः
४. सप्तभूमिकं गृहं ५. शवयानम् ।

विमुख, वि. (सं.) विरत, निरपेक्ष, निरीह,
औत्सुक्यहीन २. विरुद्ध, विपरीत, प्रतिकूल
३. निराश, अपूर्णकाम ४. अवदन ।
विमुखता, सं. स्त्री. (सं.) विरतिः (स्त्री.),
श्रीश्रीभ्यः २. विरोधः, विपरीतता ।
विमूढ, वि. (सं.) अज्ञ, अज्ञानिन्, २. निरस्तज्ञ,
मूर्च्छित ३. आभ्या, कुल, विकलव ३. अति-
मुग्ध-मोहित ।
विमोक्ष, सं. पुं. (सं.) दे. 'मोक्ष' ।
विद्योग, सं. पुं. (सं.) विरहः, विप्रलम्भः,
विप्रयोगः २. विच्छेदः, विस्लेषः, विभेदः
३. पार्थक्यं, पृथग्भावः ४. व्यङ्ग्यकलनं (गणित.) ।
विद्योगांत, वि. (सं.) दुःख, अन्त-पर्यवसायिन्
(नाटकदि.) ।
विद्योगिनी, वि. स्त्री. (सं.) विरहिणी, वियुक्ता,
प्रोषित, पतिका-भर्तृका ।
विद्योगी, वि. (सं. गिन्) विरहित, वियुक्त ।
विद्योजक, वि. (सं.) विश्लेषक, विच्छेदक ।
विरंचि, सं. पुं. (सं.) विधातृ, ब्रह्मन् (पुं.) ।
—सुत, सं. पुं. (सं.) नारदः ।
विरक्त, वि. (सं.) विरत, विमुख, निरीह,
निवृत्त २. उदासीन, निष्प्रयोजन ३. खिन्न,
रुष्ट, वैरागिन्, वैरागिक ।
विरक्ति, सं. स्त्री. (सं.) विरतिः (स्त्री.),
विरागः, विमुखता, वैराग्यं, विरक्ता
२. औदासीन्यं ३. खेदः ।
विरत, वि. (सं.) दे. 'विरक्त' (१, ४), साव-
काश, अब्याधृत-अतिव्याधृत, -पर, -परायण ।
विरति, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'विरक्ति' (१-३)
४. विरागः, विच्छेदः, उपर(रा)मः ।
विरद, सं. पुं., दे. 'विरुद्ध' ।
विरल, वि. (सं.) घनता-निविडता, शून्य
२. दुर्लभ, दुर्प्, प्राप-प्रापण ३. तनु ४. निर्जन
५. अल्प ६. विप्रकृष्ट, दूरस्थ ।
—पातक, वि. (सं.) न्यून-अल्प-पातक-पाप,
अकिल्बिष-अनघ-पूत, प्राय-कल्प ।
विरला, वि. (सं. विरल) दे. 'विरल' (१-२) ।
विरघ, वि. (सं.) निःशत्रु, नीरव ।
विरस, वि. (सं.) नीर, दे. २. अप्रिय ।
विरसा, सं. पुं. (अ.) दे. 'विरासत ?' ।
विरह, सं. पुं. (सं.) दे. 'विद्योग' (१-३) ।
४. विद्योगजं दुःखम् ।

विरहिणी

[२५३]

विलोचन

—जनित, वि. (सं.) विरह, ज-जन्य, वियोग, ज-उद्भूत ।

विरहिणी, वि. स्त्री. (सं.) वियोगिनी, दे. ।

विरही, वि. (सं. हिन्) दे. 'वियोगी' ।

विराग, सं. पुं. (सं.) दे. 'वैराग्य' ।

विरागी, वि. (सं. गिन) दे. 'वैरागी' ।

विराजना, क्रि. अ. (सं. विरञ्जन्) शुभ-विराज् (भ्वा. अ. से.), प्र-वि-भा (अ. प. अ.) २. वृत् (भ्वा. आ. से.), विद् (दि. आ. अ.), उपविश् (तु. प. अ.), आम् (अ. आ. से.) ।

विराजमान, वि. (सं.) प्रकाशमान, शोभमान, श्रानमान, भासुर २. विद्यमान, उपस्थित, वर्तमान ३. उपविष्ट, आसीन ।

विराट्, सं. पुं. (सं. राज्) विश्वरूपं, मद्भन् (न.) २. क्षत्रियः ।

विराट्, सं. पुं. (सं.) मत्स्यदेशः २. तद्देशीयो राजविशेषः ।

—पर्व, सं. पुं. [सं. र्वन् (न.)] श्रीमहा-भारतस्य चतुर्थं पर्वन् (न.) ।

विराम, सं. पुं. (सं.) दे. 'विरति' (४) । २. विश्रामः, विश्रान्तिः (स्त्री.) ३. वाक्यावसानं ४. यतिः (स्त्री.) ।

विराव, सं. पुं. (सं.) शब्दः, ध्वनिः २. कलकलः ।

विरासत्, सं. स्त्री. (अ.) दायः, पैतृकधनं, रिक्त्वं २. दायदत्तं, रिक्त्वरहस्यम् ।

विरुद्ध, सं. पुं. (सं.) गुणोत्कर्षवर्णनं, यशःकोर्तनं, प्रशस्तिः (स्त्री.) २. वशम् (न.), कीर्तिः (स्त्री.) ३. नृपोपाधि शब्दः ।

विरुद्धान्तली, सं. स्त्री. (सं.) स्तनमाला, यशोवर्णनम् ।

विरुद्ध, वि. (सं.) प्रतिकूल, विरोधिन्, विपरीति, प्रतीप २. रूढ, खिन्न ३. अनुचित, अन्याय्य ।

विरूप, वि. (सं.) बहुरूप, नानाकार २. बुरूप, कुदर्शन ३. परिवर्तित ४. निश्श्रीक, शोभाहीन ५. विरुद्ध ६. भिन्न ।

विरैचक, वि. (सं.) सापक, मलभेदक, विरेचकारक, दे. 'रेचक' ।

विरैचन, सं. पुं. (सं. न.) मलभेदकौषधं, दे. 'रेचन' २. रेकः, रेचनं-ना, मलभेदः ।

विरोध, सं. पुं. (सं.) वैरं, शत्रुता-त्वं, वि-द्वेषः, सापत्न्यं २. असंगतिः (स्त्री.), विसंवादः,

विपरीतता ३. विप्रतिपत्तिः (स्त्री.), व्याघातः ४. अर्थालंकारभेदः (सा.) ।

—करना, क्रि. स., वि-प्रति-रथ् (व. उ. अ.), प्रतिक्र, प्रत्यवस्था (भ्वा. आ. अ.), वि-प्रति-हन (अ. प. अ.) २. विप्रलप् (भ्वा. प. से.), प्रतिक्षिप् (तु. प. अ.) ।

विरोधी, सं. पुं. (सं. भिन्) वैरिन्, शत्रुः, ३. विप्रक्षिन्, प्रतिद्वन्दिन् ४. विरोधकरः, विघ्नकरः ।

विरुंब, सं. पुं. (सं.) अतिकालः, वेलातिक्रमः, काल-क्षेपः-हरणं, दे. 'दिर' ।

विरुंबित, वि. (सं.) चिरायित, व्याक्षिप्त २. प्रबुध, लंबमान ।

विरुक्षण, वि. (सं.) असाधारण, असामान्य, अद्भुत, अपूर्व, विशिष्ट ।

विरुक्षणता, सं. स्त्री. (सं.) वैलक्षण्यं, विशिष्टता इ. ।

विलय, सं. पुं. (सं.) विलयनं, द्रवीभवनं २. लोपः, अदर्शनं ३. गृह्युः ४. वि-, नाशः ५. प्रलयः ।

विलाप, सं. पुं. (सं.) परिवेदनं-ना, शोकजं वचनं, अनुशोचनीक्तिः (स्त्री.) २. क्रंदनं, र(रो)दनम् ।

—करना, क्रि. अ., विलप्-अनुशुब्-परिदेव् (भ्वा. प. से.) ।

विलायत, सं. पुं. (अ.) वि-पर-देशः २. दूर-देशः (यूरोप, अमेरिका आदि) ।

विलायती, वि. (अ.) दे. 'विदेशी' ।

—वैगन, सं. पुं. (अ+हि.) दे. 'टमाटर' ।

विलास, सं. पुं. (सं.) विभ्रमः, वीला, हाव-भेदः दे. 'नखरा' २. आनन्दः, हर्षः ३. मनो-रंजनं-विनोदः ४. सुखभोगः ५. कपः-पन्नं, गतिः (स्त्री.) ६. आह्लादक-हर्षप्रद-मनोहर-ललित-चेष्टा-क्रिया ।

विलासिनी, सं. स्त्री. (सं.) कामिनी, सुंदरी, वरांगना २. नारी ३. वेदया ४. वर्णवृत्तभेदः ।

विलासी, वि. (सं. सिन्) भोगिन्, विषय-भोग-आसक्त, कामिन् २. लीलापरः, क्रीडा-प्रिय, कौतुकिन् ३. सुखैषिन् ।

विलीन, वि. (सं.) अन्तर-तिरो-हित, लुप्त २. नष्ट ३. गुप्त, गूढ ।

विलोचन, सं. पुं. (सं. विलयनं) विलयनं, द्रवीभावः २. क्षरणं, गलनम् ।

विखुंडन

[२५४]

विशिष्टता

विखुंडन, सं. पुं., विखुंडनं, कुंडा, कुंडा २. चोरणं. मोषणम् ३. कुंडनं, लोठनम् ।
 विलोकना, क्रि. स. (सं. विलोकनं) दे. 'देखना' ।
 विलोडना, क्रि. स., दे. 'विलोना' ।
 विलोम, वि. (सं.) प्रतिकूल, विपरीत, प्रति-लोम, प्रतीप २. रवरावरोहः (संगीत.) ।
 विलोल, वि. (सं.) चल, अस्थिर २. सुंदर ।
 विवक्षा, सं. स्त्री. (सं.) वक्तुमिच्छा, विव-दिषा २. तात्पर्यं ३. संदेहः ।
 विवक्षित, वि. (सं.) वक्तुमिष्ट २. अपेक्षित ।
 विवर, सं. पुं. (सं. न.) छिद्रं, विलं २. गर्तः-तं, अवयः, खातं ३. कंदरा, गुहा ।
 विवरण, सं. पुं. (सं. न.) व्याख्यानं, विवे-चनं २. विवृत्त-वर्णन-वृत्तांतः ३. टीका, भाष्यं, व्याख्या ।
 विवर्जित, वि. (सं.) निषिद्ध, वर्जित २. उपे-क्षित, अनादृत ३. वंचित, रहित ।
 विवर्ण, वि. (सं.) निस्तेजस्, निष्प्रभ, कांति-हीन २. क्षुद्र, नीच ।
 विवर्त, सं. पुं. (सं.) भ्रमः, भ्रांतिः (स्त्री.) २. रूपांतरं, दशांतरम् ।
 —वाद, सं. पुं. (सं.) वेदांतसिद्धांतविशेषः ।
 विवश, वि. (सं.) अगतिक, निरुपाय २. परा-धीन ३. दुर्दत्त ४. निर्बल ।
 विवस्वान्, सं. पुं. (सं. स्वतः) सूर्यः २. अरुणः, सूर्यसारथिः ।
 विवाद, सं. पुं. (सं.) वाद, अनुवादः-प्रति-वादः, वाग्-वाद, युद्धं, तर्कवितर्कः २. कलहः, कलिः ३. मतभेदः ४. व्यवहारः, ऋणादि-न्यायः, दे. 'मुकदमेवाजी' ।
 —करना, क्रि. अ., विवद् (स्वा. आ. से.), विप्रतिपद् (दि. आ. अ.), विप्रलप् (भ्वा. प. से.) ।
 विवादास्पद, वि. (सं.) विवाद-अर्ह-अस्त-योग्य, संदिग्ध ।
 विवाह, सं. पुं. (सं.) पाणि, अङ्गण-करणं-पोहन, उपय(या)मः, परिणयः, उद्वाहः, दार-परिग्रहः-कर्मणः ।
 —करना, क्रि. स., उद् वि वह् (भ्वा. उ. अ.), दारान् परिग्रह् (ऋ. प. से.), परिणी (भ्वा. प. अ.) ।

—(में) देना, क्रि. स., विवाहे दा, पाणि ग्रह् (प्रे.), उद्वाह् (प्रे.) ।
 विवाहित, वि. पुं. (सं.) ऊढ, परिणीत, निविष्ट, कृतविवाद, उपयत, स्त्रीमत, सपरनीक ।
 विवाहिता, सं. स्त्री. (सं.) पतिवल्नी, सभर्तृका, ऊढा, परिणीता, उपयता ।
 विविक्त, वि. (सं.) पृथग्भूत, वियुक्त २. एकल, असहाय ३. पूत, निर्दोष ४. विवेकिन्, विवेकशील ।
 विविध, वि. (सं.) अनेकनाला-बहु, विध-प्रकार-रूप-जातीय ।
 विवेक, सं. पुं. (सं.) परिच्छेदः, सदसज्ज्ञानं, मिथो व्यावृत्त्या वस्तुस्वरूपनिश्चयः, पृथग्भावः-पृथगात्मता, विवेचनं २. भद्राभद्र-सदसद्-परिच्छेदशक्तिः (स्त्री.), ३. बुद्धिः-मतिः (स्त्री.) ४. सत्यज्ञानम् ।
 विवेकी, वि. (सं. किन्) परिच्छेदक, विवेचक, गुणशोषक, विशेषक, विवेकवद २. बुद्धि-मति, मत् ३. शानिन् ४. न्यायशील ५. आधि-करणिक ।
 विवेचक, वि. (सं.) दे. 'विवेकी' ।
 विवेचन, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'विवेक' (२) । २. सम्यक्, परीक्षा-रूपं, गुणशोषविचारणं, परि-आलोचनं-ना ३. अनुसंधानं ४. तर्कव-तर्कः ५. सीमांसा ।
 विवेचना, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'विवेचन' ।
 विशद, वि. (सं.) निर्मल, विमल, स्वच्छ २. सु-वि, स्पष्ट, व्यक्त, प्रकट, स्फुट ३. मित, उज्ज्वल, श्वेत ४. सुंदर ।
 विशाखा, सं. स्त्री. (सं.) राधा, नक्षत्रविशेषः ।
 विशारद, वि. (सं.) कुशल, दक्ष, प्रवीण २. विद्व, विशेषज्ञ, व्युत्पन्न, निष्णात ।
 विशाल, वि. (सं.) विस्तृत, विस्तीर्ण, महत्, बृहत्, पृथु, उरु २. मन्थ, सुंदर ३, विख्यात ।
 विशालता, सं. स्त्री. (सं.) प्रथिमन्, विस्तारः, बृहत्ता, पृथुता ।
 विशिख, सं. पुं. (सं.) बाणः, श्पुः । वि. (सं.) शिखाहीन ।
 विशिष्ट, वि. (सं.) युत, युक्त, अन्वित, सहित २. विशेष-असामान्य ३. अद्भुत, विलक्षण ३. अतिशिष्ट ४. वशास्विन् ५. प्रसिद्ध ।
 विशिष्टता, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'विशेषण' ।

विशिष्टाद्वैतवाद

[५२४]

विश्वास

विशिष्टाद्वैतवाद, सं. पुं. (सं.) भेदाभेदवादः, द्वैताद्वैतवादः ।

विशोर्ण, वि. (सं.) शुष्क २. क्षीण ३. जीर्ण ।
विशोल, वि. (सं.) दुश्चरित, दुःशील, कुशील ।

विशुद्ध, वि. (सं.) दे. 'शुद्ध' २. सत्य ।
विशुद्धि, सं. स्त्री. (सं.) शुद्धता, पवित्रता
२. संदेह-संशय-निवारणम् । ३. प्रति(ती)
कारः, प्रतिशोधः ४. ऋणशोधनम् ५. परि-
ष्कारः ६. पूर्णज्ञानम् ।

विशुद्धिका, सं. स्त्री., दे. 'विशुद्धिका' ।
विशेष, वि. (सं.) असाधारण (गी स्त्री.),
विशिष्ट, विलक्षण । सं. पुं. (सं.) सप्तपदार्थो-
त्तमतपदार्थविशेषः (वैशेषिक) २. अंतरं, भेदः
३. अर्थालंकारभेदः (सा.) ।

विशेषण, वि. (सं.) प्रवीण, निपुण, विद्व,
पारंगत, पारदर्शिन ।

विशेषण, सं. पुं. (सं. न.) संज्ञादीनां विशेष-
ताबोधकं पदं (व्या.) २. उपाधिः. गुणः,
विशेषधर्मः ।

विशेषता, अन्व. (सं.) विशेषण, प्रधानतः ।
विशेषता, सं. स्त्री. (सं.) विशिष्टता, असा-
धारणता, विलक्षणता ।

विशेष्य, सं. पुं. (सं. न.) विशेषणान्वितं
संज्ञादिपदं (व्या.) ।

विशोक, वि. (सं.) शोकहीन, प्रसन्न, मुदित,
प्रहृष्ट ।

विश्रंभ, सं. पुं. (सं.) विश्वासः, प्रत्ययः
२. अनुरागः, प्रेमम् (पुं. न.) ।

विश्रब्ध, वि. (सं.) विश्वसनीय, विश्वसाहं
२. शांत ३. निर्भय ।

विश्रान्त, वि. (सं.) व्यपगतश्रम, क्लान्ति-
श्रान्ति, शून्य ।

विश्रान्ति, सं. स्त्री. (सं.) विश्रामः, दे. ।
विश्राम, सं. पुं. (सं.) विश्रामः, विश्रान्तिः
(स्त्री.), श्रमोपशमः, कार्य-व्यापार-निवृत्तिः
(स्त्री.) २. सुखं ३. शांतिः (स्त्री.) ।

—करना, कि. अ., विश्रम् (दि. प. से.),
आ-वि-रम् (भ्वा. प. अ.), कार्याद् निवृत्त
(भ्वा. आ. से.) ।

विश्रुत, वि. (सं.) विख्यात, प्रसिद्ध, दे. ।
विश्रुष्ट, वि. (सं.) पृथग्भूत, भिन्न, विघटित

२. विकसित ३. प्रकट ४. अपाञ्चत ५. श्रांत
६. व्याकृत ।

विश्लेष, सं. पुं. (सं.) विघटनं, विच्छेदः,
पृथग्भावः २. विरहः, वियोगः ।

विश्लेषण, सं. पुं. (सं. न.) व्यवच्छेदः,
व्याकृतिः (स्त्री.), पृथक्करणम् ।

विश्वंभर, सं. पुं. (सं.) परमेश्वरः २. विश्वः ।
विश्वंभरा, सं. स्त्री. (सं.) धरणी, पृथिवी, दे. ।

विश्व, सं. पुं. (सं. न.) जगत् (न.), जगती
(स्त्री.), विश्रुवनं, ब्रह्माण्डं २. भू-पृथिवी,
लोकः । वि. (सं.) सर्वं, सकल, समस्त ।

—कर्ता, सं. पुं. (सं. न.) परमेश्वरः ।
—कर्मा, सं. पुं. (सं. न.) विश्वकृत्, देव,
वर्द्धकः-शिल्पिन्, स्वष्ट २. परमेश्वरः ३. ब्रह्मन्
(पुं.) विधिः ४. सूर्यः ५. तक्षकः, वर्षकः
६. लोहकारः ७. गृहकारकः, पलंगडः ।

—कोश (-य), सं. पुं. (सं.) सर्वविषय-बृहत्,
कोषः ।

—जित्, सं. पुं. (सं.) यज्ञ-याग-भेदः ।
वि. (सं.) जितविश्व, विश्वविजयिन् ।

—देव, सं. पुं. (सं. वा. बहु.) देवगणभेदः ।
—नाथ, सं. पुं. (सं.) शिवः २. साहित्य-
दर्पणकारः पंडितविशेषः ।

—पति, सं. पुं. (सं.) ईश्वरः ।
—बन्धु, सं. पुं. (सं.) शिवः २. जगत्सखः ।

—विद्यालय, सं. पुं. (सं.) दे. 'यूनिवर्सिटी' ।
—ध्यापी, वि. (सं. -पिन्) विश्व-सर्वं-व्यापक
(ईश्वरादि) ।

—साक्षी, सं. पुं. (सं. -क्षिप्) सर्वत्रैवा जगदीश्वरः ।
विश्वसनीय, वि. (सं.) विश्वात्य, विश्वास-
योग्य-अर्ह, विश्रंभ-पात्रं-भाजनं आस्पदम् ।

विश्वसनीयता, सं. स्त्री. (सं.) विश्वात्यता,
विश्वासपात्रता ।

विश्वस्त, वि. (सं.) दे. 'विश्वसनीय' ।
विश्चामित्र, सं. पुं. (सं.) गाथेयः, गाथिजः,
कौशिकः (ब्रह्मर्षिविशेषः) ।

विश्वास, सं. पुं. (सं.) प्रत्ययः, विश्रंभः,
२. श्रद्धा, दे. ।

—करना, कि. अ., विश्वस् (अ. प. से.),
श्रद्धा (जु. उ. अ.), प्रति-इ (अ. प. अ.) ।
—दिलाना, कि. स., उपर्युक्त धातुओं के
प्रे. रूपः ।

विश्वेश्वर

[२२६]

विसाल

- घात, सं. पुं. (सं.) विश्रंभभंगः, प्रत्यय-भञ्जनं, समय-लक्षण-भंगः ।
- घातक, वि. (सं.) विश्रंभभञ्जक, विश्वास-घातिन् ।
- पात्र, सं. पुं. (सं. न.) विश्वास्यः, विश्वसनीयः ।
- विश्वेश्वर, सं. पुं. (सं.) परमेश्वरः २. शिवमूर्तिविशेषः ।
- विष, सं. पुं. (सं. पुं. न.) गरलं, जं(जा)गुलं, क्ष्वेतः, कालकूटं, ह(हा)लाहलं, गरं, गरदं, घोरं, तोक्षणम् ।
- कन्या, सं. स्त्री. (सं.) मैथुनमात्रेण संभोक्तृ-हृषी कुमारी नारी वा ।
- धर, सं. पुं. (सं.) सर्पः ।
- हर, वि. (सं.) विष, नाशक-घातिन् ।
- की गांठ, मु., अपकारक, हानिप्रद ।
- देना, मु., विषेण भृ-हन् (प्रे.) ।
- विषक, वि. (सं.) संस्थित, वडमूल, इडबड्ड संलग्न ।
- विषण्ण, वि. (सं.) शोकमग्न, परि-सं-तप्त, अवसन्न ।
- मुख, वि. (सं.) विषण्णवदन, सज्ञोकास्य । आर्त्तं, विदून् ।
- विषण्णता, सं. स्त्री. (सं.), संतप्तता, परितप्तता, अवसन्नता, शोकार्त्ता ।
- विषम, वि. (सं.) असम, नवीचत, पिंढलाञ्छित, २. अयुग्म, दे. 'ताक' ३. विकट, कठिन, दुस्साध्य ४. अति-तीव्र-तीक्ष्ण ५. भीषण, घोर ।
- ज्वर, सं. पुं. (सं.) ज्वरभेदः २. दे. 'मलेरिया' ।
- नयन, सं. पुं. (सं.) विषमनेत्रः, शिवः ।
- वाण, सं. पुं. (सं.) कंदर्पः, कामः ।
- वृत्त, सं. पुं. (सं. न.) असमचरणं वृत्तं (छंद.) ।
- विषमता, सं. स्त्री. (सं.) वैषम्यं, समताऽभावः २. अयुग्मता ३. वैरं, विरोधः ।
- विषय, सं. पुं. (सं.) गोचरः, इन्द्रियाः (= लक्ष्मणस्पर्शरूपरसगंधाः) २. देशः, जनपदः ३. प्रकरणं, प्रसंगः ४. उपभोगः, आस्वाद्य-दनं ५. सुरतं, मैथुनं ६. द्रव्यं, पदार्थः ७. कार्यं, व्यापारः, अर्थः ।
- सुख, सं. पुं. (सं. न.) इन्द्रियसौख्यम् ।

- विषयक, वि. (सं.) स्वबंधिन्, उद्दिश्य, अधिकृत्वा, आश्रित्य ।
- त्रिपथी, वि. (सं. त्रिन्) भोग-विषय-मातृत्वा, लंपट-विषय-निरत-पर-परायण-अर्थांग, कामिन्, विलासिन्, रतहिण्टक, डॉकर, औपस्थिक ।
- विषाण, सं. पुं. (सं. न.) शृंगं, दे. 'सौंग' २. गजदंतः ३. कोलदंतः ।
- विषाद, सं. पुं. (सं.) अवसादः, दुःखं, शोकः, परि-सं-तापः, आधिः (पुं.), आतिः (स्त्री.) २. जातयं ३. मौख्यम् ।
- विषुव, सं. पुं. (सं. न.) विषुवत् (न.), विषुपं, विषुणः, समरात्रिदिवकालः [= सौर-चैत्र-मास-की-नवी (२१ मार्च) तथा सौर-आश्विन-मास-की-नवी (२२ सितंबर)] ।
- रेखा, सं. स्त्री. (सं.) निरक्षः, भूवक्षा, भूमध्यरेखा, विषुवरेखा ।
- जल—, सं. पुं. (सं. न.) विषुपदं (२२ सितंबर) ।
- महा—, सं. पुं. (सं. न.) हरिपर्वं (२१ मार्च) ।
- त्रिगुञ्जिका, सं. स्त्री., दे. 'हैजा' ।
- विद्या, सं. स्त्री. (सं.) उच्चारः, गूथ-धं, मल-लं, पुरीषं, शमलं, शकृतं (न.), विष् (स्त्री.) ।
- विष्णु, सं. पुं. (सं.) चक्रिण, चतुर्भुजः, चक्र-पाणिः, अनादरनः, त्रिविक्रमः, हरिः, हृषीकेशः, श्री-पतिः-निवासः-वत्सः-करः-धरः, वैकुण्ठः, माधवः, मधुसूदनः, पुरुषोत्तमः, पीतांबरः, दामोदरः, पद्मनाभः, नारायणः, कैशवः, कृष्णः, गोपालः १. २. अग्निः ३. आदित्य-विशेषः ।
- गुप्त, सं. पुं. (सं.) वैयाकरणविशेषः २. नाणक्यः ।
- पद, सं. पुं. (सं. न.) आकाशः-शं २. पद्मं ३. क्षीरोदः ।
- पदी, सं. स्त्री. (सं.) गंगा ।
- पुराण, सं. पुं. (सं. न.) पुराणग्रंथविशेषः ।
- विसर्ग, सं. पुं. (सं.) विसर्जनोद्यः, वर्णविशेषः (= व्या.) २. दानं ३. रथगः ४. मुक्तिः (स्त्री.), निःश्रेयसं ५. मृत्युः ६. प्रलयः ७. विरहः ।
- विसर्जन, सं. पुं. (सं. न.) परि-त्यागः, उरसर्गः, मोचनं, उद्घनं २. सं-प्रेषणं, प्रस्थापनं ३. प्रस्थानं, प्रयाणं ४. समाप्तिः (स्त्री.), अंतः ५. दानं, वितरणम् ।
- विसाल, सं. पुं. (अ.) संयोगः, संगमः ।

विस्मृचिका, सं. स्त्री. (सं.) विस्मृची, दे. 'हैजा'
२. अजीर्णरोगभेदः ।
विस्तार, सं. पुं. (सं.) विस्तारः, दे. २. आसन,
पीठम् ।
विस्तार, सं. पुं. (सं.) विस्तरः, प्रस(स)रः,
आधामः, विततिः (स्त्री.), विमहः, व्यासः,
विस्तीर्णता २. विटपः, शाखा ।
—करना, क्रि. स., प्रसृ-विस्तृ (प्रे.), दे.
'फैलाना' ।
विस्तीर्ण, वि. (सं.) विस्तर, प्रसृत, वितत,
आयत २. विपुल, प्रचुर ३. विशाल, महत्,
बृहत् ।
विस्तृत, वि. (सं.) दे. 'विस्तीर्ण' ।
विस्फोट, सं. पुं. (सं.) सशब्द-भंगः-स्फुटन-
स्फोटनं २. पि(वि)टकः-कं-का, स्फोटः-टकः ।
विस्फोटक, सं. पुं. (सं.) दे. 'विस्फोट' (२) ।
२. स्फोटनशील ३. दे. 'धेकक' ।
विस्मय, सं. पुं. (सं.) आश्चर्य, चमत्कारः
२. गर्वः ३. संदेहः । वि. (सं.) हतदर्प ।
विस्मरण, सं. पुं. (सं. न.) विस्मृतिः (स्त्री.)-
स्मृति, नाशः-लोपः ।
विस्मय, वि. (सं.) विस्मय-आश्चर्य, आपन्न-
अनित, चाकित, विस्मयकुल ।
विस्मृत, वि. (सं.) स्मृतिभ्रष्ट, स्मृतिपथात्
अपेत ।
विस्मृति, सं. स्त्री. (सं.) विस्मरण, दे. ।
विस्मय, सं. पुं. (सं.) विश्वासः, प्रत्ययः
२. हत्या, वधः ।
विहंग, विहंगम, विहंग, सं. पुं. (सं.) खगः,
दे. 'पक्षी' ।
विहरण, सं. पुं. (सं. न.) विचरण, अटनं,
भ्रमणं २. वियोगः ३. प्रसरणम् ।
विहार, सं. पुं. (सं.) परिक्रमः-मणं, पर्यटनं,
परिभ्रमणं, विहरणं, विचरणं २. सुरतं,
संभोगः ३. सुरतालयः ४. संधारामः, आश्रमः,
मठः दे. ।
विहारी, सं. पुं. (सं. रिन्) भोगालसः
२. विहारकृत् ३. श्रोकृष्णः ।
विहित, वि. (सं.) (शास्त्रादिभिः) आदिष्ट,
शिष्ट, उपदिष्ट २. न्याय्य, धर्म्य, उचित
३. कृत, अनुष्ठित ४. दत्त ।
विहीन, वि. (सं.) परि-त्यक्त, वञ्छित
२. रहित, वञ्चित, होन, बंजित, शून्य ।

विह्वल, वि. (सं.) विह्वल, व्याकुल, दे. ।
विह्वलता, सं. स्त्री. (सं.) व्याकुलता, दे. ।
वीची, सं. स्त्री. (सं.) लहरी, तरंगः, दे. ।
२. रश्मिः, मरीचिः, दीपितिः, (सब पुं.)
३. कान्ति-दीप्तिः (स्त्री.) ।
—क्षोभ, सं. पुं. (सं.) लहरीविलासः ।
—तरंग न्याय, सं. पुं. (सं.) दे. षष्ठ परिशिष्ट ।
—माली, सं. पुं. (सं. लिन्) सागरः, समुद्रः,
अर्णवः ।
वीज, सं. पुं. (सं. न.) बीजं, दे. ।
बीजन, सं. पुं. (सं. न.) व्यजनं, दे. 'पंखा' ।
वीणा, सं. स्त्री. (सं.) वल्लकी, विपंची-चिका,
ध्वनिमाला, वंगमल्लो, परिवदिनी, घोषवती,
कंठकृणिका २. विधुत (स्त्री.) ।
—दंड, सं. पुं. (सं.) प्रवालः ।
—पाणि, सं. स्त्री. (सं.) सरस्वती ।
वीत, वि. (सं.) प्रस्थित, प्रयात २. परित्यक्तं
३. मुक्त ४. समाप्त ५. रहित, हीन ।
—भय, वि. (सं.) विगत-निर-भय ।
—राग, वि. (सं.) विरक्त, निस्स्थुह ।
—शोक, वि. (सं.) निश्शोक । सं. पुं. (सं.)
अशोकवृक्षः ।
वीथी, सं. स्त्री. (सं.) वीथिः (स्त्री.), वीथिका,
रथ्या, मार्गः २. पंक्ति (स्त्री.) ३. रूपकभेदः
(सा.) ।
वीर, सं. पुं. (सं.) शूरः, शौटीरः, सुविक्रमः,
प्र-महा-सु-वीरः, जंतु २. योषः, योद्धृ, भटः,
सैनिकः ३. नायकः, अधणीः (पुं.) ४. पुत्रः
५. पतिः ६. आतृ । वि. (सं.) विक्रांत,
वीर्यवत्, साहसिक, पराक्रमिन् ।
—केसरी, सं. पुं. (सं. रिन्) वीर, पुंगवः-
उत्तमः ।
—गति, सं. स्त्री. (सं.) युद्धे मरणात् स्वर्ग-
लाभः २. स्वर्गः ।
—चक्र, सं. पुं. (सं. वीर + चक्र) सैनिकानां-
अरक्षिणां-सम्मानार्थं-स्वर्गमयं राजतं वा
पदकम् २. पुरस्कारविशेषः ।
—पत्नी, सं. स्त्री. (सं.) वीरभार्या ।
—प्रसू, सं. स्त्री. (सं.) वीर-सु-मातृ (स्त्री.)-
जननी ।
—भद्र, सं. पुं. (सं.) अशमेधाश्वः २. वीरो
त्तमः ३. शिवगणविशेषः ।
—लोक, सं. पुं. (सं.) स्वर्गः ।

वीरता

[२१८]

वेग

वीरता, सं. स्त्री. (सं.) वीर्यं, शूरता, शौर्यं, परा-वि-क्रमः, साहसं, रणोत्साहः, ओजस्-धामन् (न.) ।

वीरान, वि. (फ्रा.) निर्मानुष, निर्-वि-जन २. निरश्रीक, शोभाहीन ।

वीराना, सं. पुं. (फ्रा.) विजनं, निर्जनप्रदेशः ।

वीरानी, सं. स्त्री. (फ्रा.) विजनता, निर्जनता ।

वीर्यं, सं. पुं. (सं. न.) शुक्रं, रेतस्-तेजस् (न.) बीजं, चरमधातुः, इन्द्रियं २. दे. 'रज' ३. वीरता, दे. ४. वीजम् ।

—के कीड़े, सं. पुं., शुक्रबीटाः ।

—ज, सं. पुं. (सं.) पुत्रः, तनयः ।

—विरहित, वि. (सं.) निःशक्त २. क्लीब ३. भीह ।

वीर्यवान्, वि. (सं. वत्) बलवत्, दृढांग २. मांसल ।

वृकृक, सं. पुं. (अ.) परिचयः २. ज्ञानम् ३. बुद्धिः (स्त्री.) ।

वृज्ज, सं. पुं. (अ.) अंगक्षालनम् (इस्लाम) ।

वृत्, सं. पुं. (सं. न.) चूचुकः-कं, स्तन-कुच-अयं २. प्रसवबंधनं, दे. 'बाँडी' ।

वृंद, सं. पुं. (सं. न.) समूहः, निकरः २. कोटि-शतकं, अर्जुदम् ।

वृंदा, सं. स्त्री. (सं.) तुलसी (पौधा) दे. २. राधा ।

—वन, सं. पुं. (सं.) वृंदाखण्डं २. तीर्थविशेषः ।

वृक, सं. पुं. (सं.) कोकः, बृंह मृगः २. शृगालः ।

वृक्ष, सं. पुं. (सं.) तरुः, पादपः, शास्त्रिन, विटपित्, द्रुः, द्रुमः, पलाशिन, महा-क्षिति-भूः, रुद्रः-जः, अगः, जगः, विटपः ।

वृत्त, सं. पुं. (सं. न.) चरितं, चरित्रं, आचारः, आचरथं २. सद्, श्रुतं-आचारः ३. समाचारः, वृत्तान्तः, उदंतः ४. वर्णिकच्छंदस् (न.) ५. मंडलं, वर्तुलम् ।

—खंड, सं. पुं. (सं. पुं. न.) मंडल-वर्तुल-अंशः ।

वृत्ति, सं. स्त्री. (सं.) आजीवः-वन-विका, जीवनं, जीविका २. उपजीविका, भूतिः (स्त्री.) ३. संक्षिप्तगंभीरव्याख्या, सूत्रार्थविवरणं, टीका ४. वृत्तं, वृत्तान्तः ५. नाटकीयशैली (सा. कैशिकी इ.) ६. व्यवहारः ७. चिन्तावस्था (योगः, क्षिप्तमूढ़ादि) ७. स्वभावः, प्रकृतिः (स्त्री.) ।

छात्र, सं. स्त्री. (सं.) शिक्षणोपजीविका ।

मनो, सं. स्त्री. (सं.) स्वभावः, प्रकृतिः (स्त्री.), प्रवणता ।

वृथा, वि. (सं.) व्यर्थं, निरर्थकं, मोघ । क्रि.

वि. (सं.) मुधा, व्यर्थं, निष्फलम् ।

वृद्ध, वि. (सं.) स्थविर, वयस्क, जौन, जीर्ण, जरित-न । सं. पुं. (सं.) जरठः, स्थविरः इ., दे. 'बूढ़ा' २. पंडितः ।

वृद्धता, सं. स्त्री. (सं.) जरा, वार्द्धक्यं, दे. 'बुढ़ापा' ।

वृद्धा, सं. स्त्री. (सं.) स्थविरा, जरती, दे. 'बुढ़िया' ।

वृद्धावस्था, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'वृद्धता' ।

वृद्धि, सं. स्त्री. (सं.) वर्धनं, बृंहणं, उन्नतिः (स्त्री.), उत्कृष्टं, उपचयः, आधिक्यं, विस्तारः २. कुशीदं, वार्द्धक्यं, दे. 'मृद' ३. अभ्युदयः, समृद्धिः (स्त्री.) ४. कृष्याद्यष्टवर्गोपचयः (राजनीति), स्फोतिः-स्फानिः (स्त्री.) ५. जीवभद्रा (औषधविशेषः) ।

—जीवक, सं. पुं. (सं.) कुसीदिन, वार्द्धिकः ।

—जीवन, सं. पुं. (सं. न.) कौलीयं, वृद्धि-जीविका ।

वृश्चिक, सं. पुं. (सं.) वृश्चनः, घृदाकः, दे. 'विच्छू' २. अष्टमराशिः (ज्यो.) ३. अग्रहा-यणमासः ।

वृष, सं. पुं. (सं.) ऋषभः, वृषभः, दे. 'बैल' २. पुरुषप्रकारः (वामशास्त्र) ३. धर्मः ४. द्वितीयराशिः (ज्यो.) ५. पतिः ।

वृषभ, सं. पुं. (सं.) बलीवर्दः, उक्षन्, दे. 'बैल' ।

वृष्टि, सं. स्त्री. (सं.) वर्षं, वर्षणं, पराश्रुतं, दे. 'वर्षा' ।

वृष्टस्पति, सं. पुं. (सं.) सुराचार्यः, दे. 'वृह-स्पति' २. नवग्रहांतर्गतचमग्रहः ३. गुरुवारः ।

वे, सर्वे. (हि. वह का बहु.) ते, अमी (दोनों पुं. बहु.) ताः, अमूः (दोनों स्त्री. बहु.), तानि, अमूनि (दोनों न. बहु.) ।

वेग, सं. पुं. (सं.) प्रवाहः, धारा, वेणी, ओषः २. ज्वरः, स्थदः, रयः, तरसु-रंहस् (न.), रभसः, प्रसभः ३. मूत्रविष्ठादिनिर्गमप्रवृत्तिः (स्त्री.) ४. त्वरा, शीघ्रता ५. आनंदः ६. प्रवृत्तिः (स्त्री.) ७. ज्वोगः ८. वृद्धिः (स्त्री.) ९. वीर्यं, शुक्रं १०. गुणभेदः (न्याय.) ।

वेगवान्

[२२६]

वेष्टन

वेगवान्, वि. (सं.-वच) क्षिप्र, द्रुत, शीघ्र, ज्वन, आशु ।
 वेणी, सं. स्त्री. (सं.) वेणिः (स्त्री.), प्रवेणी-
 णिः, वेणिका २. जलीयः, तीयप्रवाहः ।
 वेणु, सं. पुं. (सं.) वंशः, दे. 'बॉस' २. वंशी,
 दे. 'बॉसुरी' ।
 वेत्तन, सं. पुं. (सं. न.) भरणं-प्यं, निर्वेशः,
 भृतिः (स्त्री.), भृत्या, भर्मण्या, कर्मण्या
 २. मासिकं, मासिकभृतिः (स्त्री.) ।
 —भोगी, सं. पुं. (सं.-गिन्) वेत्तन-भृति-
 मुञ्, वैतनिकः ।
 वेताल, सं. पुं. (सं.) द्वारपालः २. भूतमेदः
 ३. भूताधिष्ठितशवः ।
 वेत्ता, सं. पुं. (सं.-न्) ज्ञातृ, बोद्ध, विद् ।
 वेद, सं. पुं. (सं.) श्रुतिः (स्त्री.), छंदस्
 (न.), आम्नायः, निगमः, ब्रह्मन् (न.),
 प्रवचनं, आर्यधर्मग्रन्थविशेषाः (ऋग्, यजुः,
 साम, अथर्व = ४ वेद) २. सत्यज्ञानम् ।
 —त्रयी, सं. स्त्री. (सं.) वेदत्रयम् ।
 —निन्दक, सं. पुं. (सं.) श्रुतिविरोधिन,
 नास्तिकः २. दुष्टः ३. बौद्धः ।
 —पारग, सं. पुं. (सं.) वेद-ज्ञः-विद्-भृतिः-
 वेत्त-ज्ञानिन्-दशिन ।
 —मंत्र, सं. पुं. (सं.) श्रुति-वचनं-वाक्यम् ।
 —माता, सं. स्त्री. (सं.-न्) गायत्री, सावित्री
 २. सरस्वती ३. दुर्गा ।
 —वाक्य, सं. पुं. (सं. न.) वेद-मंत्रः-वचनं
 २. प्रामाणिकवचनम् ।
 —विद्, सं. पुं. (सं.) दे. 'वेदपारग' ।
 —विहित, वि. (सं.) वेद-प्रतिपादित-आदिष्ट-
 उक्त ।
 —व्यास, सं. पुं. (सं.) दे. 'व्यास' ।
 —सम्मत, वि. (सं.) वेद-अनुकूल-अनुमोदित ।
 वेदना, सं. स्त्री. (सं.) पीडा, व्यथा, यातना,
 भंतापः २. वेदनं, अनुभवः, संवेदः, ज्ञानम् ।
 वेदनीय, वि. (सं.) ज्ञातव्य, श्रेय, बोद्धव्य
 २. ज्ञापनीय, बोधयितव्य ३. कष्टप्रद, दुःखद ।
 वेदांग, सं. पुं. (सं. न.) श्रुत्यवयवषट्प्रकार-
 शास्त्रं [= शिक्षा, कल्पः, व्याकरणं, निरुक्तं,
 ज्योतिषं, छंदस् (न.)] ।
 वेदांत, सं. पुं. (सं.) ब्रह्म-अध्यात्म-विद्या,
 ज्ञानकांडं २. उपनिषद् (स्त्री.) ३. उत्तरमी-
 मांसा, दर्शनशास्त्रविशेषः ।

वेदांती, सं. पुं. (सं.-तिन्) वेदांतशास्त्रवेत्-
 ब्रह्मवादिन् ।
 वेदाभ्यास, सं. पुं. (सं.) वेद-अध्ययनं-
 स्वाध्यायः-पाठः ।
 वेदी,^१ सं. स्त्री. (सं.) वेदिः, वेदिका, वितदी-
 दिक्षा (सब स्त्री.) ।
 वेदी,^२ सं. पुं. (सं.-दिन्) पंडितः २. ज्ञातृ ।
 वेदोक्त, वि. (सं.) वेदविहित, दे. ।
 वेध, सं. पुं. (सं.) वेधनं, निर्भेदः-दनं, व्यथः ।
 यंत्रग्रहणकुत्रावलोकनम् ।
 —शाला, सं. स्त्री. (सं.) मानमंदिरम् ।
 वेधक, सं. पुं. (सं.) वेधनकरः, छिद्रकारः,
 वेधिन् ।
 वेधना, कि. स. (सं. वेधनं) व्यथ् (दि. प.
 अ.), विष-समुत्क (तु. प. से.), छिद्रयति
 (ना. धा.) । सं. पुं., वेधः-धनं, व्यथः-धनं,
 समुत्करणं (दे. वेधक, विद्ध इ.) ।
 वेधनी, सं. स्त्री. (सं.) वेधनिका, आ-स्फी-
 टनी, वृषदंशिका ।
 वेधी, सं. पुं. (सं.-धिन्) वेधकः, दे. ।
 वेला, सं. स्त्री. (सं.) कालः, समयः २. सागर-
 तरंगः ३. समुद्रतटः-उत्थम् ।
 वेलिङ्ग, सं. पुं. (अं.) सन्धानम् ।
 वेल्च, सं. पुं. (अं.) कपाटः ।
 —टय् ब, सं. स्त्री. (अं.), कपाटनलिका ।
 वेश, सं. पुं. (सं.) आकल्पः, प्रसाधनं, नेपथ्यं,
 प्रतिकर्मन् (न.), वेषः २. परिधानं, वस्त्राणि-
 वसनानि (न. बहु.) ३. पट, कुटी-मंडपः
 ४. गृहम् ।
 —धारी, सं. पुं. (सं.-रिन्) वेपथरः, कपट-
 छत्र-वेशिन् २. दंभिन् ।
 —भूषा, सं. स्त्री. (सं.) परिधानं, वस्त्राभरणम् ।
 किरी का—धारना, मु., अभ्यवेशं परिधा, वेषं
 परिचर (प्रे.), वेशांतरं विधा ।
 वेश्या, सं. स्त्री. (सं.) वेश-सुवती-वधुः (स्त्री.)-
 वनिता-स्त्री, वार, श्रमना-वधुः-विलासिनी-
 नारी-स्त्री, गणिका, रूपाजीवा, साधारणस्त्री,
 पण्यगाना, कामरेशा, भोग्या, भुजिष्या, सुद्रा ।
 —पन, सं. पुं. गणिकाश्रुतिः (स्त्री.),
 वेश्याजीवः ।
 वेथ, सं. पुं. (सं.) दे. 'वेश' ।
 वेष्टन, सं. पुं. (सं. न.) पुटः-टं, कोशः-षः,

वेष्टित

[२६०]

वैसा

प्रावरणं २. आच्छादनं, परिवेष्टनं ३. उष्णीषः-
पम् ।
वेष्टित, वि. (सं.) वलयित, संवीत, कृतवेष्टन
२. रुद्ध ।
वेसर, सं. पुं. (सं.) वेश(श्व)रः, अवतरः,
वेगसरः, दे. 'खचर' ।
वेसवार, सं. पुं. (सं.) उपस्करः, वेश (५)-
वारः ।
वैकल्पिक, वि. (सं.) ऐच्छिक, रुच्यधीन
२. संदिग्ध, विकल्प्य ३. एकांगिन ।
वैकुण्ठ, सं. पुं. (सं. न.) स्वर्गः, विष्णु-शेखरः
(सं. पुं.) विष्णुः ।
वैजयंती, सं. स्त्री. (सं.) केतुः, पताका, ध्वजः ।
वैज्ञानिक, सं. पुं. (सं.) विज्ञान, वैत्तविद् ।
वि. (सं.) विज्ञान, सम्बन्धिन-विषयक-मूलक ।
वैतनिक, सं. पु. (सं.) दे. 'वैतनभोगी' ।
वैतरणी, सं. स्त्री. (सं.) यमद्वारवती नदी-
विशेषः (पुराण.) ।
वैताल, वि. (सं.) वैताल, विषयक-सम्बन्धिन ।
सं. पुं. दे. 'वैताल' तथा 'वैतालिक' ।
वैतालिक, सं. पुं. (सं.) वैतालः स्तुतिपाठकः,
बोधकरः ।
वैद, वि. (सं.) वेद, विषयक-सम्बन्धिन, श्रौत,
छन्दस् २. वेद, अनुकूल-विहित-समाहित ३.
वेदज्ञ । सं. पुं. (सं.) वेदज्ञ-वेदनिष्ठातः,
निप्रः-ब्राह्मणः ।
वैदिक, वि. (सं.) छांदस, श्रौत, वेद, विषयक-
संबन्धिन-उक्त-प्रतिपादित ।
वैदूर्य, सं. पुं. (सं. न.) केतुरत्नं, विदूररत्न-
जम् ।
वैदेशिक, वि. (सं.) अन्य-भर-वि-देशीय ।
सं. पुं. (सं.) पारदेशिकः, विदेशीयः ।
—मंत्री, सं. पुं. (सं. निच.) पारदेशिकसचिवः ।
वेदेही, सं. स्त्री. (सं.) विदेहजनया, जानकी,
सीता ।
वैद्य, सं. पुं. (सं.) भिषज्, अगदंकारः, रोग-
हारिन्, चिकित्सकः, आयुर्वेदिन् २. पंडितः ।
—राज, सं. पुं. (सं.) भिषगरः ।
वैद्यक, सं. पुं. (सं. न.) आयुर्वेदः, चिकित्सा-
शास्त्रम् ।
वैद्य, वि. (सं.) वैद्यिक (स्त्री), धर्म्य, न्याय्य,
शास्त्र, संमत-अनुकूल २. उचित, युक्त ।
वैद्य्य, सं. पुं. (सं. न.) रंजित्वम् ।

वैनतेय, सं. पुं. (सं.) गरुडः, दे. ।
वैभव, सं. पुं. (सं. न.) वित्तं, धनं, विभवः,
संपद्-संपत्तिः (स्त्री.) ऐश्वर्यं २. महिमान्
(पुं.), सामर्थ्यम् ।
—शाली, वि. (सं. लिन्) समृद्ध, धनिन् ।
वैमनस्य, सं. पुं. (सं. न.) वैरं, वि-द्वेषः
२. अन्यमनस्कता ।
वैयाकरण, सं. पुं. (सं.) व्याकरण, वैत्त-अध्येत्-
पंडितः ।
वैर, सं. पुं. (सं. न.) विरोधः, वि-द्वेषः,
शत्रुतात्वं, सापत्त्यं, विपक्षता, द्वंद्वभावः ।
—करना, वि-दिष् (अ. उ. अ.), विरुष्
(र. प. अ.), वैरायते (ना. भा.), अमित्रा-
यते (ना. भा.) ।
वैराग, सं. पुं., दे. 'वैराग्य' ।
वैरागी, सं. पुं. (सं. गिब) वैरागिकः, वैराग्य-
वत्, 'विरक्त' दे. । २. वैष्णवसंप्रदायविशेषः ।
वैराग्य, सं. पुं. (सं. पुं.) विरक्तिः (स्त्री.),
वेरत्त-क्त्यं, अनासक्तिः (स्त्री.) ।
वैरी, सं. पुं. (सं. रिन्) अरिः, शत्रुः, स्पन्दः,
रिपुः, अरातिः, मिघांसुः, द्वेषुः, प्रत्यायेन्,
परिपथिन् ।
वैवाहिक, वि. (सं.) औदाहिक (स्त्री स्त्री.),
वैवाह (स्त्री स्त्री.) ।
वैशाख, सं. पुं. (सं.) माघवः, राधः, सौर-
प्रथम-वाद्द्वितीय, मासः ।
वैशेषिक, सं. पुं. (सं. न.) कणादमुनिप्रणीतो
दर्शनग्रंथविशेषः, औलङ्क्यदर्शनम् ।
वैश्य, सं. पुं. (सं.) ऊरुजः, अर्थ्यः, विस्,
बणिज्, पणिकः, भूमिजीविन्, वार्तिकः,
न्यबहर् ।
वैश्यानी, सं. स्त्री. (सं. वैश्यः) वैश्या, अर्थ्या,
अर्थ्याणी ।
वैश्वदेव, सं. पुं. (सं.) विश्वदेवसंबन्धियज्ञः ।
वैश्वानर, सं. पुं. (सं.) अग्निः २. परमेश्वरः ।
वैषम्य, सं. पुं. (सं. न.) विषमता, दे. ।
वैष्णव, सं. पुं. (सं.) विष्णु, सपासकः-भक्तः,
काष्णः २. संप्रदायविशेषः । वि. (सं.) काष्णं,
हार, विष्णुसंबन्धिन् ।
वैसा, वि. (हि. बह + सा) तादृश-श्च, तत्-
तुल्य-सदृश, तथाविध ।
ऐसा—, वि. सामान्य, साधारण, प्राकृत ।
—का वैसा, कि. वि., पूर्ववत्, यथापूर्वम् ।

वंसे, क्रि. वि. (हिं. वैसा) तथा, तदप, तत्स-
वृशम् ।

—ही, क्रि. वि., मूल्यं विना, दे. 'मुक्त' ।

बोट, सं. पुं. (अं.) मतं, छंदः, छंदस् (न.)
२. मतदर्शनं ३. मतदर्शनाधिकारः ।

बोटर, सं. पुं. (अं.) मतदर्शकः २. मतदर्श-
नाधिकारिन् ।

व्यंग, वि. (सं.) अक्राय, अशरीर २. विकल-
हीन, अंग ३. 'व्यंग्य' ।

व्यंगार्थ, सं. पुं., दे. 'व्यंग्य' ।

व्यंग्य, सं. पुं. (सं. न.) व्यंजनया बोध्योऽर्थः,
गूढ-गुप्त-अर्थः-आशयः २. उपालम्बः, अधि-
आ-क्षेपः ।

—कस्मना या छोबना, क्रि. स., उपालम्ब
(भ्वा. आ. अ.), अधि-आ, क्षिप् (लु. प. अ.),
अव-लप-हस् (स्वा. प. से.) ।

व्यंजन, सं. पुं. (सं. न.) स्फुटी-प्रकटी-करणं-
भवन्, प्रकाशनं २. दे. 'व्यंजन' ३. चिह्नं,
लक्षणं ४. अद्वैतात्मकं, ककारादयो वर्णाः
५. अंगं, अवयवः ६. श्मश्रु (न.) ७. तेमः,
तेमनं, निष्ठानं, अज्ञोपकरणं ८. सिद्धांतं
९. उपस्थः ।

—कार, सं. पुं. (सं.) पाचकः, सूदः, रन्धकः ।

—संधि, सं. स्त्री. (सं. पुं.) व्यंजन, संयोग-
सन्निकर्षः ।

व्यंजना, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'व्यंजन' (१) ।
२. शब्दशक्तिविशेषः (सा.) ।

व्यक्त, वि. (सं.) प्रकट-दित, स्फुट, विज्ञाद,
स्पष्ट, प्रत्यक्ष, प्रकाशित ।

—करना, क्रि. स., व्यञ्ज् (रु. प. से., प्रे.)
प्रकाश (प्रे.), प्रकटी-विशदी-स्पष्टीकृ ।

—होना, क्रि. अ. व्यञ्ज् (कम.), प्रकटी-
स्पष्टी-आर्वावर, भू, प्रकाश (भ्वा. आ. से.) ।

व्यक्ति, सं. स्त्री. (सं.) स्पष्टता, विशदता,
स्फुटता, प्राकट्यं, आविर-प्रादुर, भावः
२. मनुष्यः, मानवः ३. व्यष्टिः (स्त्री.),
पृथक्त्वं ४. वस्तु (न.), पदार्थः ५. भूतमात्रं
६. प्रकाशः ।

—गत, वि. (सं.) व्यक्ति-स्थ, दतिन्-संबन्धिन्,
वैयक्तिक, पुरुषविशेषानुबद्ध ।

व्यग्र, वि. (सं.) संभ्रांत, अधीर, व्याकुल, दे.
२. भीत, व्रस्त ३. व्यापृत, कार्यमग्न, व्यासक्त ।

व्यग्रता, सं. स्त्री. (सं.) उद्वेगः, संभ्रमः, व्या-
कुलता दे. २. चिंता, रणरणकः, उत्कलिका
३. व्यासक्तिः (स्त्री.) ।

व्यंजन, सं. पुं. (सं. न.) तालवृत्तकं, दे.
'पंखा' ।

व्यतिक्रम, सं. पुं. (सं.) क्रम-भंगः-विपर्ययः-
विपर्यासः-व्यत्ययः २. अंतरायः, विघ्नः ।

व्यतिरिक्त, वि. (सं.) मित्र, अपर, इतर
२. अधिक, विशिष्ट । क्रि. वि. (सं. न.)
विना, अतिरिक्तम् ।

व्यांतरिक, सं. पुं. (सं.) भेदः, मित्रता, पृथ-
क्त्वं, अन्तरं २. वृद्धिः (स्त्री.) ३. अतिक्रमः-
मर्णं ४. अर्थालंकारभेदः (का.) ।

व्यतीत, वि. (सं.) अतीत, गत, अतिक्रान्त ।

व्यत्यय, सं. पुं. (सं.) दे. 'व्यतिक्रमः'
व्यत्यास, (१) ।

व्यथा, सं. स्त्री. (सं.) पीडा, वेदना, यातना
२. कष्टं, क्लेशः, दुःखम् ।

व्यथित, वि. (सं.) पीडित, आर्तं २. दुःखित,
सं-पार, तप्त ३. शोकमग्न ।

व्यभिचार, सं. पुं. (सं.) जारकर्मन् (न.),
परदार्यं, परयोपित्संगः । (स्त्री का) पतिल-
पनं, परपुरुषगमनं २. कदाचारः, दुराचारः,
दुर्वृत्तम् ।

व्यभिचारिणी, सं. स्त्री. (सं.) जारिणी, पुंश्चली,
बंधकी, परपुरुषगामिनी ।

व्यभिचारी, सं. पुं. (सं. रिन्) पारदारिकः,
परस्त्रीगामिन्, जाटः, भुजंगः, परतल्पगः, उप-
पतिः २. दुर्वृत्तः, दुराचारिन् ३. दे. 'संचारी'
(भाव) ।

व्यय, सं. पुं. (सं.) वित्त-दिनिधोगः, अर्थः,
उत्सर्गः, २. दानं ३. परित्यागः ।

—शील, वि. (सं.) मुक्तहस्त, अमितव्ययिन् ।

व्यर्थ, वि. (सं.) विफल, निष्फल, मोघ,
निरर्थक, निष्प्रयोजन, वृथा, सुधा-२. अपार्थक्यं,
अर्थहीन । क्रि. वि. (सं. न.) निरर्थकं, वृथा,
सुधा, निष्प्रयोजनं, निर्निमित्तं, निष्फलम् ।

व्यवच्छेद, सं. पुं. (सं.) पार्थक्यं, पृथक्त्वं,
२. विभागः, खंडः-डं ३. विरामः, ४. निवृत्तिः
(स्त्री.) ।

व्यवधान, सं. पुं. (सं. न.) व्यवधा, आवरणं,

२. तिरस्करिणी, प्रतिसीरा ३. विभागः, संघः
 ४. विच्छेदः ।
 व्यवसाय, सं. पुं. (सं.) वृत्तिः (स्त्री.), उप-
 आ-जीविका, आजीवः २. व्यापारः, क्रय-
 विक्रयः ३. कार्य-आरंभः उपक्रमः ४. शिक्षयः
 ५. प्रयत्नः, उद्यमः ।
 व्यवसायी, सं. पुं. (सं.-यिन्) उद्यमिन्,
 उद्योगिन् २. क्रयविक्रयिकः, वाणिज् ३. वृत्ति-
 मत, व्यवसायविशिष्टः ४. अनुष्ठार ।
 व्यवस्था, सं. स्त्री. (सं.) शास्त्रनिरूपित-
 विधिः-विधानं-निर्णयः २. रचना, विन्यासः,
 क्रमेण स्थापनं, व्यूहनं ३. प्रबंधः, कार्यनिर्वा-
 हणं, अवैक्षणं ४. स्थिरता ।
 व्यवस्थापक, सं. पुं. (सं.) व्यवस्थादायकः,
 व्यवस्थापयितृ २. अधिष्ठातृ, अध्यक्षः, चालकः,
 निर्वाहकः, प्रबंधकः ।
 —मंडल, सं. पुं. (सं. न.) व्यवस्थापिका सभा ।
 व्यवहार, सं. पुं. (सं.) वृत्तं, वर्तनं, चरितं,
 आचारः, चेष्टितं २. कर्मन् (न.), कार्यं
 २. व्यवसायः, व्यापारः ३. कौशील्यं, बुद्धिजी-
 वनं ४. विवादः ५. रलहः, पणः ६. अभियोगः,
 कार्यं (=मुकदमा) ७. प्र-उप-योगः ।
 —करवा, कि. अ., व्यवहृ (भ्वा. उ. अ.),
 वृत् (भ्वा. आ. से.), आचर् (भ्वा. प. से.) ।
 व्यवहारी, वि. (सं.-रिन्) व्यवहारक, व्यव-
 हर्तृ २. प्रचलित, लौकिक । सं. पुं. (सं.)
 वादिन्, कार्य-अधिन् ।
 व्यवहार्य, वि. (सं.) व्यवहरणीय २. उप-
 योक्तव्य ।
 व्यवहित, वि. (सं.) व्यवधानविशिष्ट, सावरण,
 तिरोहित ।
 व्यवहृत, वि. (सं.) व्यापारित, उप-प्र-युक्त
 २. आचरित, अनुष्ठित ।
 व्यवसन, सं. पुं. (सं. न.) दोषः, दुर्गुणः,
 कुशीलं, दुर्वृत्तिः (स्त्री.) २. विषय-विपत्तिः
 (स्त्री.) ३. दुःखं, कष्टं ३. अनिष्टं, अमंगलं
 ४. विषय-अनुरागः-आसक्तिः (स्त्री.) ५. दुर्-
 दौर्, भाग्यं ६. अभिरुचिः (स्त्री.) ।
 व्यवसनी, वि. (सं.-निन्) दुर्शील, दुर्वृत्त,
 विषयासक्त २. वैश्यागामिन् ।
 व्यवस्त, वि. (सं.) संभ्रांत, व्याकुल दे.
 २. व्यासक्त, लीन, मग्न ३. व्याप्त

४. क्षिप्त ५. प्रत्येक, पृथक्-पृथक् ६. क्रमहीन,
 अव्यवस्थित ।
 व्याकरण, सं. पुं. (सं. न.) वेदांगविशेषः,
 शब्दशास्त्रं २. व्याकरणग्रन्थः ।
 व्याकुल, वि. (सं.) आकुल, व्यग्र, संभ्रांत,
 विकल, विह्वस्त, मोदित, विक्षिप्त, वि-मूढ,
 कातर, विह्वल, अधीर, संभ्रांत-व्यस्त-विक्षिप्त-
 मूढ-चित्त-मनस् २. अति-उत्क-उत्कंठ-उत्सुक ।
 —करना, कि. स., मुह-संभ्रम (प्रे.), आकुली-
 विह्वस्तीकृ, वि-सं-क्षुभ् (प्रे.) ।
 —होना, कि. अ., आकुलीभू, मुह् (दि. प.
 से.), २. अत्युत्सुक (वि.) भू ।
 व्याकुलता, सं. स्त्री. (सं.) आ-व्या-कुलता-
 कुलत्वं, व्या-मोहः, व्यग्रता, संभ्रमः, विकल-
 ता, व्यस्तता, विह्वलता, सं-वि-भ्रोभः, चित्तवै-
 कल्य-अशांतिः-अनिश्चिः (स्त्री.), उद्वेगः,
 व्याक्षेपः, उद्विग्नता २. उत्कंठातिशयः, लालसा ।
 व्याख्या, सं. स्त्री. (सं.) स्पष्टी-विशदी-करणं,
 विवरणं, प्रकाशनं, व्याख्यानं, प्रवचनं २. टीका,
 टिप्पणी, भाष्यं (विविधभेद) ३. विवरणात्मको
 ग्रन्थः ।
 —करना, कि. स., व्याख्या (अ. प. अ.),
 निरूप् (तु.), विवृ (स्वा. उ. से.), व्याचक्ष्
 (अ. आ. अ.), स्फुटी विशदी-स्पष्टी कृ ।
 —स्थान, सं. पुं. (सं. न.) व्याख्यानभवनं
 सभाभवनम् २. विद्यालयः ।
 व्याख्याता, सं. पुं. (सं.-त्) भाष्य-व्याख्या-
 टीका-कारः २. प्र-वक्तु, उपदेशकः, व्याख्या-
 नदातृ, सञ्चारकः ।
 व्याख्यान, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'व्याख्या' (१)
 २. भाषणं, उपदेशः, प्रवचनम् ।
 —देना, कि. स., व्याख्या (अ. प. अ.),
 संमाप् (भ्वा. आ. से.); उपदिश् (तु. प.
 अ.), प्रवच् (अ. प. अ.) ।
 —शाला, सं. स्त्री. (सं.) सभा-व्याख्यान-
 स्थान-भवनम् २. शिक्षालयः ।
 व्याघात, सं. पुं. (सं.) विन्तः, दे. २. प्रहारः,
 आघातः ३. अलंकारभेदः (सा.) ।
 व्याघ्र, सं. पुं. (सं.) शर्वीलः, शीपिन्-लः,
 शृगांतकः, हिंसारः, चंद्रकिन्, भेलः, व्याघ्रः
 २. पंच-नख-शिखः-आस्यः, सिंहः दे. ।
 व्याज, सं. पुं., दे. 'व्याज' ।
 व्याज, सं. पुं. (सं.) अप-व्यप-देशः,

कपट, छलं, छद्मन् (सं.), मिषं २. विघ्नः
३. विलंबः ।
—निंदा, सं. स्त्री. (सं.) कपटकुत्सा २. अलंकार-
भेदः (सा.) ।
—स्तुति, सं. स्त्री. (सं.) कपटप्रशंसा २. अलं-
कारभेदः (सा.) ।
व्याजोक्ति, सं. स्त्री. (सं.) कपट-छल, वाक्यं
२. अलंकारभेदः (सा.) ।
व्याध, सं. पुं. (सं.) मृगयुः, मृगजीवनः,
लुब्धकः, द्रोहाटः, बलपांशुनः, आखेटकः,
मृगवधाजीवः २. शकुनिकः, जालिकः, पक्षि-
ग्राहकः, जीवांतकः ।
व्याधि, सं. पुं. (सं.) रोगः, दे. २. विपत्तिः
(स्त्री.) ।
व्यान, सं. पुं. (सं.) देहस्थवासुभेदः ।
व्यापक, वि. (सं.) व्यापिन्, प्रसारिन्
२. आच्छादक ।
सर्व—, वि. (सं.) विश्वव्यापिन्, सर्वग ।
व्यापकता, सं. स्त्री. (सं.) व्याप्तिः, दे. ।
व्यापना, क्रि. स. (सं. व्यापनं) व्याप् (स्वा.
प. अ.), वि-अश् (स्वा. आ. से.), अंतः-
प्रसृ (भ्वा. प. अ.) ।
व्यापादन, सं. पुं. (सं. न.) अपकार-अनिष्ट,
चिन्ता-चिन्तनम् २. वधः, हत्या ३. नाशः,
ध्वंसः ।
व्यापार, सं. पुं. (सं.) वाणिज्यं, वणिक्कर्मन्
(न.), क्रयविक्रयः, निगमः २. कार्यं, कर्मन्
(न.) ३. व्यापारः, इन्द्रियार्थसंबोधः (न्या.)
४. व्यवसायः ।
—करना, क्रि. अ., क्रयविक्रय-वाणिज्यं कृ,
पम् (भ्वा. आ. से.) ।
व्यापारी, सं. पुं. (सं. रिन्) वणिज्,
वणिजः, आपणिकः, नैगमः, क्रयविक्रयिणः,
वण्यजीवः, साधिकः, श्रेष्ठिन्, व्यापारिन् ।
व्यापी, वि. (सं. पिन्) दे. 'व्यापक' ।
व्यापृत, वि. (सं.) कार्यं, संलग्न-लीन-रत
२. निहित, स्थापित । सं. पुं. (सं.) मंत्रिन्,
उच्चकर्मचारिन् ।
व्याप्त, वि. (सं.) ओतःप्रोत, अंतःप्रसृत
२. भूत, परिपूरित ।
व्याप्ति, सं. स्त्री. (सं.) व्यापनं, परिपूरणं,
अंतःप्रसारः ।
व्याम, सं. पुं. (सं.) व्यामनं, दैव्यमानभेदः ।

व्यामोह, सं. पुं. (सं.) वि-सं, मोहः, विवेक-
भ्रंशः ।
व्याप्याम, सं. पुं. (सं.) महामोहा, बलबर्द्धकः,
भ्रमः २. परिभ्रमः ।
व्यायोग, सं. पुं. (सं.) रूपक-नाटक, भेदः
(सा.) ।
व्याल, सं. पुं. (सं.) सर्पः, अहिः २. सिंहः
३. व्याघ्रः ४. हिलपशुः । वि. (सं.) दुष्ट,
अपकर्तृ ।
—ग्राही, सं. पुं. (सं. हिन्) दे. 'संपेरा' ।
व्यावहारिक, वि. (सं.) वतन-व्यवहार, विष-
यक २. अभियोगसम्बन्धिन् ३. सामान्य,
साधारण ।
व्यास, सं. पुं. (सं.) पाराशरः-रिः-र्यः, कृष्ण-
द्वैपायनः, कानीनः, वादरायणः-णिः, सत्य-
भारतः-वतः-रतः, माठरः, वेदव्यासः, सात्य-
वतः २. कथावाचकः ३. विच्छेदः, गोलस्य
मध्यरेखा ४. विस्तारः ।
व्यासक्त, वि. (सं.) अत्यंतानुरक्त ।
व्याहृति, सं. स्त्री. (सं.) उक्तिः (स्त्री.)
१. मंत्रविशेषः (= भूः, भुवः, स्वः) ।
व्युत्पत्ति, सं. स्त्री. (सं.) विशिष्टज्ञानं २. उद्-
गमस्थानं, मूलं ३. निरुक्तिः (स्त्री.), शब्द-
साधन-सिद्धिः (स्त्री.), निर्वाचनम् ।
व्युत्पन्न, वि. (सं.) निष्पात, प्रवीण, निपुण,
विशेषज्ञ, विश २. व्युत्पत्तिपुत्र ३. संस्कृत ।
व्यूह, सं. पुं. (सं.) सैन्य-सेना, विन्यासः-
संस्थानं २. सेना ३. समूहः ४. रचना, ५.
तर्कः ६. शरीरम् ।
—रचना, क्रि. स., व्यूह् (भ्वा. प. से.),
सैन्यं विन्यस् (दि. प. से.), व्यूहं रच् (लु.) ।
व्योम, सं. पुं. [सं. मन् (न.)] आकाशः-शं
२. जल ३. जलदः ।
—यान, सं. पुं. (सं. न.) विमानः-नं, वायु-
यानं, *वातघोतः ।
ब्रज, सं. पुं. (सं.) समूहः, समुदायः २. मधु-
रावृंदावनयोश्चतुष्पाश्वर्कतिदेशः, ब्रज, मंडलं-
भूमिः (स्त्री.) ३. गोघ्नम् ।
—नाथ, सं. पुं. (सं.) श्रीकृष्णः, ब्रज-
मोहनः-नाथः-वृद्धः-ईश्वरः-इंद्रः ।
—भाषा, सं. स्त्री. (सं.) शौरसेनीप्राकृतादु-
द्भूतो भाषाविशेषः ।

व्रज, सं. पुं. (सं. पुं. न.) क्षत-तिः (स्त्री.), अरुस् (न.), ईर्ष्या-यै र. दे. 'विस्फोट' (र.) ।
व्रज, सं. पुं. (सं. पुं. न.) जिय(या)मः, पुण्यकं, २. उपवासः-उपोषणं, लंघनं ३. दृढ, संकल्पः-
 अध्यवसायः-निश्चयः-प्रतिज्ञा ।
 —रखना, क्रि. अ., उपवस् (भ्वा. प. अ.), लंघ (भ्वा. आ. से.), उपोषणं कृ, व्रतयति (ना. था.) ।
 —लेना, क्रि. अ., दृढ-संबल्यं कृ, सशपथं प्रतिज्ञा (क्. आ. अ.), व्रतं घृ (लु.) चर्- (भ्वा. प. से.) ।

व्रती, सं. पुं. (सं. -तिन्) व्रत, धरः-स्थः-
 चारिन् २. यजमानः ३. ब्रह्मचारिन् ४. तापसः,
 तपस्विन् ।
व्रात्य, सं. पुं. (सं.) संस्कारहीनः २. सावेत्री-
 पतितः ३. सांकरिकः, मिश्रजः ।
व्रीडा, सं. स्त्री. (सं.) त्रया, लज्जा ।
व्रीहि, सं. पुं. (सं.) शालिः, स्तंबकरिः-
 २. धान्यमात्रम् ।
वहु—, सं. पुं. (सं.) समासभेदः
 (भ्वा.) ।

श

श, देवनागरीवर्णमालायाः त्रिंशो व्यंजनवर्णः,
 शकारः ।
शंकर, वि. (सं.) शुभ(भो)कर, भगव्य, शुभ,
 शिव, भद्रः । सं. पुं. (सं.) महादेवः, शिवः,
 दे. । २. शंकरानर्थः ।
शंकरा, सं. स्त्री. (सं.) पार्वती २. मंत्रिष्ठा
 ३. शमीवृक्षः । वि. स्त्री., सुख-मंगल, कारिणी-
 दायिनी ।
शंकराचार्य, सं. पुं. (सं.) अद्वैतमतप्रवर्तक
 आचार्यविशेषः ।
शंकरी, सं. स्त्री. (सं.) पार्वती, उम २. मंत्रिष्ठा,
 रक्षा ३. शमीवृक्षः ४. रागिणीभेदः । वि. स्त्री.,
 मंगल-कल्याण, कारिणी ।
शंका, सं. स्त्री. (सं.) भयं, भीतिः (स्त्री.),
 त्रासः, दरः, साध्वत् २. संदेहः, संशयः,
 विकल्पः, आशंका ३. आक्षेपः ।
शंक्ति, वि. (सं.) भीत, व्रत, समाध्वस
 २. संदिग्ध, अनिश्चित ३. संशय-संदेह-भ्रमन,
 आशंकिन, साशंक ।
शंकु, सं. पुं. (सं.) तीक्ष्णामनिसिनाय-
 पदार्थः २. कौलः ३. नागदंतकः, कौलकः
 ४. कुन्तः, प्रामः ५. (शरादीनां) फलं, फलकं
 ६. दशलक्षकोटिः (स्त्री.)- (संख्याविशेषः)
 ७. मेहः ८. गोपुच्छाकारः सुदृश्याद्यो दृषः ।
शंख, सं. पुं. (सं. पुं. न.) कंठः, कंबोजः,
 भर्गोभवः, पावनध्वनिः, अंतःकुटिलः, मह-
 सु-बहु-दीर्घ-सादः, मुखरः, हरिप्रियः २. लक्ष-
 कोटिः (स्त्री.), दशनिखर्वसंख्या ३. गंडः
 ४. गजगंडः गजदंतमध्यं वा ५. असुरविशेषः ।
 —बजाना, क्रि. स., शंखं ध्या (भ्वा. प. अ.),
 व्यासेन पूर (लु.) ।

—ध्वनि, सं. स्त्री. (सं. पुं.) कंबुनादः ।
 —पाणि, सं. पुं. (सं.) शंखधरः, विष्णुः
 २. कृष्णः ।
शंखिनी, सं. स्त्री. (सं.) चतुर्विधनारीध्वन्य-
 तमा २. यव-मह-भद्र, तिका, सूक्ष्मपुष्पी
 ३. दे. 'सीप' ।
शंठ, सं. पुं. (सं.) अत्रिवाहितः, अकृताविवाहः,
 कुमारः २. मुखः ३. क्लीवः ।
शंठ, सं. पुं. (सं.) क्लीवः, लिबमुक्तः, पंडः,
 नपुंस (पुं.), नपुंस-राकः(कं) २. गोपतिः,
 क्लीवदः ३. उन्मत्तः ।
शंतनु, सं. पुं. (सं.) महाभीष्मः, प्रातीयः,
 भीष्मजनकः ।
शंवर, सं. पुं. (सं.) वैद्यविशेषः २. सुदम् ३
 (सं. न.) जलं २. मेघः ३. धनम् ।
 —सूदन, सं. पुं. (सं.) कामदेवः ।
शंयुक्त, सं. पुं. (सं.) शंयुक्तःका, शंयुः,
 जल, शुक्तिः- (स्त्री.)-डिंबः, दुश्चरः, पंकमंजूकः,
 पौषः २. शंसः ३. छुद्रशंसः ।
शंभु, सं. पुं. (सं.) महादेवः, शिवः दे.
 २. ब्रह्मन् ३. विष्णुः ।
 —बीज, सं. पुं. (सं. न.) पारदः, दे. 'पारा' ।
 —भूषण, सं. पुं. (सं. न.) चंद्रः ।
शऊर, सं. पुं. (अ.) विवेकः, सूक्ष्म, दृष्टिः-
 युक्तिः (स्त्री.) २. योग्यता, कौशलं ३. शिष्टता,
 सुशीलता ।
 —दार, वि. (अ. + फ्रा.) विवेकिन् २. योग्य
 ३. शिष्ट ।
शकी, सं. पुं. (सं.) जातिविशेषः २. शकादित्यः,
 शालिवाहनः ३. शालिवाहनप्रवर्तितः संवत्-
 विशेषः ।

शक^२, सं. पुं. (अ.) संदेहः, संशयः २. अवि-
श्वासः, प्रत्ययाभावः ।

—करना, क्रि. अ., दे. 'संदेह करना' ।

शक्य, सं. पुं. (सं. पुं. न.) बहान, अक्षः,
अनरु (न.) २. शरीरं, देहः ।

—का भार, सं. पुं. शक्यः, शक्यटीनः ।

शकटिका, सं. स्त्री. (सं.) लघुशकटः-दं,
शकटी २. शकटक्रीडनकन ।

शकर, सं. स्त्री. (सं. शर्करा, फ्रा.) शर्कराः,
शूलरक्त-शर्करा, गुडचूर्णम् ।

—कंद, सं. पुं. (सं. शर्कराकंदः दं) (लाल)
रक्तालुः, लोहितालुः, रक्त-कंदः-पिंडकः(सफेद)
शर्करा-मधुर-कंदः ।

—पारा, सं. पुं. (सं. फ्रा.) शंखपालः, शर्करा-
पालः ।

—बादाम, सं. पुं. (फ्रा.) शुरमानिका, दे.
'खुरमानी' तथा 'जर्द आम्ल' ।

शकल^१, सं. स्त्री. (अ. शकल) आकारः, आकृतिः
(स्त्री.), रूपं २. मुख-मुद्रा ३. रचना, घटन-
ना ४. उपायः ५. मूर्तिः (स्त्री.), दे. 'रूप' ।

त्रिगाडना, सु., मूर्ति तद् (चु.) ।

शकल^२, सं. पुं. (सं. पुं. न.) मंडः-डं, लवः,
भागः ।

शकली, वि. (अ. शकल) आकृतिप्रद, सुंदर,
सुरूप, चारु ।

शकुंत, सं. पुं. (सं.) खगः, दे. 'पर्क्षा' २. कीट-
भेदः ३. विश्वामित्रपुत्रः ।

शकुंतला, सं. स्त्री. (सं.) कण्वप्रतिपालिता
मैनकाविश्वामित्रयोः कन्या, दुर्धतपस्वी
२. श्रीकालिदासप्रणीतं प्रख्यातनाटकम् ।

शकुन, सं. पुं. (सं. पुं. न.) फल-पूर्व-लक्षणं,
अजन्यं, निमित्तं २. मंगल्यमुहूर्तः (-र्त्तं), तत्र
भवं कार्यं वा ३. पक्षिन् ४. गृध्रः ४. माङ्गलिक-
गोतं ५. विवाहनिश्चयको वरोपहारः, *शकुनः-
नम् ।

—दे० ना या विचारना, सु., (कार्यां-नात्
प्राक्) शकुनैः फलं चित् (चु.) ।

शकुनि, सं. पुं. (सं.) पक्षिन् २. गृध्रः
३. गांधारीप्रातः, सौवल्कः ४. महादुष्टः ।

शकर, सं. स्त्री. (सं. शर्करा) दे. 'शकर'
२. दे. 'चीनी' ।

शकी, वि. (अ. शक) संशयात्मन्, विश्वास-
विहीन, अज्ञानान्य, शंकाशील ।

शक्त, वि. (सं.) समर्थ, क्षम, योग्य २. सबल,
शक्तिप्रद ३. धनिक ४. मधुरभाषिन् ।

शक्ति, सं. स्त्री. (सं.) बल, सामर्थ्य, प्रभावः,
तरस्-ओजस्-तेजस्-ऊर्जस्-सहम् (न.), शौर्यं,
पराक्रमः, शुभं, सहं, स्वामन्-शुभम्
(न.), प्राणः २. वशः, अधिकारः ३. शत्रु-
विजयसाधनं प्रभू-मंत्र-उन्नाह, शक्तिः (स्त्री.),
४. माया, प्रकृतिः (स्त्री.) ५. दुर्गा, भगवती
६. गौरी ७. लक्ष्मीः (स्त्री.) ८. काश-सः
(स्त्री.), शस्त्रभेदः ९. खड्गः १०. देव-
ताबलम् ।

—धर, सं. पुं. (सं.) शक्ति-ग्रहः-ध्वजः-
पाणिः-भृत्, कार्यसंकेयः ।

—वाला, वि., शक्ति-मत्-शालिन्, बलवत्,
शक्त, बलिन्, पराक्रमिन्, ऊर्जस्विन्,
सनर्थ ।

—हीन, वि. (सं.) अदात्त, अबल, निर्बल,
बलहीन, असमर्थ २. नपुंसक, क्लीब ।

शक्य, वि. (सं.) संभवनीय, संभाव्य, संभा-
वित्र २. संपाद्य, साध्य २. दे. 'शक्त' । सं.
पुं. (सं.) बाध्यार्थः ।

शक्यता, सं. स्त्री. (सं.) संभाव्यता, संभवः
२. साध्यता, संपादनीयता ।

शक्र, सं. पुं. (सं.) पुरन्दरः, दे. 'इन्द्र' ।

शक्राणी, सं. स्त्री. (सं.) शची, इन्द्राणी ।

शकल, सं. स्त्री. (अ.) दे. 'शकल' (२) ।

शकल, सं. पुं. (अ.) जनः, मनुष्यः, दे.
'व्यक्ति' ।

शक्यत्व, सं. स्त्री. (अ.) व्यक्तित्वं, दे. ।

शकल, सं. पुं. (अ.) व्यवसायः, उपजीविका
२. मनोविनोदः ।

शकु(गू)न, सं. पुं., दे. 'शकुन' ।

शकुनिया, सं. पुं. (हि. शकुन) निमित्तज्ञः,
दैवज्ञः ।

शगूका, सं. पुं. (फ्रा.) कोरकः-कं, कलिका
२. पृथं ३. विलक्षणवृत्तः ।

—खिलना, सु., अदभुतं, भवत् (स्वा.आ.से.) ।

शचि-ची, सं. स्त्री. (सं.) पीलीभी, वेन्द्री,
दे. 'इन्द्राणी' ।

—पति, सं. पुं. (सं.) शचीशः, बलभिद्, दे.
'इन्द्र' ।

शजर, सं. पुं. (अ.) पादपः, वृक्षः ।

शजरा, सं. पुं. (अ.) वंशावली-लिः (स्त्री.),
वंशवृक्षः २. वृक्षः ३. क्षेत्रमानचित्रम् ।
शठ, वि. (सं.) धूर्तं, वंचक, प्रतारक, माया-
विन २. दुर्वृत्त, दे. 'लुब्धा' ।
शठता, सं. स्त्री. (सं.) धूर्तता, माया, शठयं,
कपटं २. दुर्वृत्तं, दुराचारः, दौर्जन्यम् ।
शङ्क्या, सं. पुं. (अनु. शङ्क्य) शङ्ककारः,
द्रुतनगरणध्वनिः ।
—शारना, सु., द्रुतं निगु (तु. प. से.),
शङ्ककारः मुञ्ज (कू. आ. अ.) ।
शश, सं. पुं. (सं.) दीपं, शान्त-पल्लवः, माल्य-
पुष्पः, त्वक्सारः, वनतः, कटुतिक्तकः २. भंगा,
विजया ३. शणपुष्पी ।
शत, वि. [सं. शतं (नित्य न.)] । सं. पुं.,
दशगुणितदशसंख्या तद्बोधका अङ्काश्च (१००),
दे. 'सौ' ।
—कोटि, सं. पुं. (सं.), वज्रं, पविः । सं. स्त्री.
(सं.) अम्बुसंख्या, अर्बुदशकं, अर्बम् ।
—कुरु, सं. पुं. (सं.) शतमखः, इन्द्रः ।
—घ्नी, सं. स्त्री. (सं.) अस्त्रभेदः, लोहकण्टक-
संछन्ना महती शिला ।
—च्छद, सं. पुं. (सं.) काष्ठकुट्टपक्षिन् । (सं.
न.) शतदलपत्रम् ।
—दल, सं. पुं. (सं. न.) शतपत्रं, कमलम् ।
—पत्र, सं. पुं. (सं. पुं. न.) दे. 'शतच्छद' ।
—पथ ब्राह्मण, सं. पुं. (सं. न.) शुक्लयजुर्वे-
दस्य ब्राह्मणग्रंथविशेषः ।
—पथिक, वि. (सं.) नानामतावलंबिनः,
नानापथगामिन् ।
—पद, सं. पुं. (सं.) शतपदी, कर्णकोटी
२. पिपीलिका । वि., शत-पाद-पाद ।
—पदी, सं. स्त्री. (सं.) कर्णकोटी, शतपादिका,
कर्ण-अलुका-अलौकस् (स्त्री.), शतपाद (स्त्री.) ।
—भिष, सं. पुं. (सं. शतभिषा) नक्षत्रविशेषः,
शतभिषज् (स्त्री.) ।
—लक्ष, सं. पुं. (सं. न.) कोटी-टिः (स्त्री.) ।
—वादन, सं. पुं. (सं. न.) अनेकवाद्यानां
युगपद् वादनम् ।
—वर्ष, वि. (सं.) शताब्द, शतायुस् । सं. पुं.
(सं. न.) शताब्दी-ब्दम् ।
—सहस्र, सं. पुं. (सं. न.) लक्षम् ।
शतक, सं. पुं. (सं. न.) शतवर्षं, वर्षशतं,

शताब्द-ब्दी २. शतं, शतवस्तुसमूहः । वि.,
शतसंख्याविशिष्ट, शत ।
शतत्रा, अव्य. (सं.) शनप्रकारं २. शतखंडेषु
३. शतगुण-णित ।
शतद्रु, सं. स्त्री. (सं.) शितद्रुः, शतद्रुः, शुतु-
द्रिः-द्रुः (सष स्त्री.) ।
शतरंज, सं. पुं. (फा.) चतुरंगम् ।
—का मुहरा, सं. पुं., खेलनी, शारः-रिः ।
—की बिसात, सं. स्त्री., अष्टापदं, शारिफलम् ।
—बाज़, सं. पुं. (फा.) चतुरंगक्रीडकः ।
—बाज़ी, सं. स्त्री. (फा.) (१-२) चतुरंग-
क्रीडा-व्यसनम् ।
शतरंजी, सं. स्त्री. (फा.) विविधान्नरोटिका
२. धनुर्वर्णं, कुत्वा-स्तरी ३. अष्टापदं, शारिफलम् ।
सं. पुं., चतुरंगचतुरः ।
शतशः, अ. (सं.) शतं शतमिति कृत्वा
२. शतकृत्वः (अव्य.) शतवारान् ३. अनेकधा,
बहुधा, नानाप्रकारेण ।
शताब्दी, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'शतक' (१) ।
शतायु, वि. (सं. युज्) शत-वर्ष-अब्द ।
शक्तिक, वि. (सं.) शतवान् २. शत-संबन्धिन्-
विषयक ।
शती, सं. स्त्री. (सं.) शती, शताब्दी २. शत-
वस्तुसंग्रहः ।
शत्रुञ्जय, सं. पुं. (सं.) शत्रु-अमित्र-जित,
शत्रुतपः, अरिंदमः, रिपुषुदनः ।
शत्रु, सं. पुं. (सं.) रिपुः, अरिः, सपरतः, वैरिन्,
द्वेषणः, दिष्, दुर्बुद्धः, दौर्बुद्धः, परः, शात्रवः,
अरातिः, प्रत्ययिन्, परिपथिन्, प्रतिपक्षः-
श्चिन्, द्वेषिन्, जिघांसुः, वातकाः, हिंसकः,
२. शत्रुमेना ।
शत्रुघ्न, सं. पुं. (सं.) लक्ष्मणानुजः, शत्रुमर्दनः ।
(अन्य) दे. 'शत्रुञ्जय' ।
शत्रुता, सं. स्त्री. (सं.) वैरं, सापरत्यं, विद्वेषः,
प्रति-वि. पक्ष(श्चि)ना, विरोधः ।
—करना, कि. अ., वैरायते, अमित्रति, अमित्र-
यति, अमित्रायते (सव ना. धा.), वि., दिष्
(अ. उ. अ.) ।
शहीद, वि. (अ.) गंभीर, प्रबल, रुचंकर, तीव्र ।
शनासुत, सं. स्त्री. (फा.) दे. 'पहचन्' ।
शनि, सं. पुं. (सं.) शनैश्चरः, सौरिः, मंदः,
छायासुतः, ग्रहनायकः, वक्रः, पंगुः, सूर्यपुत्रः
२. दौर्भाग्यं २. शनिवासरः ।

शब्दैः

[११७]

शयन

—प्रिय, सं. पुं. (सं.) नीलमणि; दे. 'नीलम' ।
 —वार, सं. पुं. (सं.) शनि-शनेश्वर, वारः-वासरः ।
 शनैः, अव्य. (सं.) मंदं, शनकैः ।
 —शनैः, अव्य. (सं.) मंदं मंदं, शनकैः शनकैः ।
 शनैश्वर, सं. पुं. (सं.) दे. 'शनि' (१-३) ।
 शपथ, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'सौमंद' २. दिव्य ३. प्रतिज्ञा ।
 शफ, सं. पुं. (सं. न.) (गवादीनां) खुरः, दे. ।
 शक्रक, सं. स्त्री. (अ.) संधा, संध्या, संध्याशुः ।
 शक्रकृत, सं. स्त्री. (अ.) अनुग्रहः २. प्रेमन् (पुं. न.) ।
 शक्रतासू, सं. पुं. (फा.) (पेङ्) समालोकः । (फल) समालोकं, आरूकं, दे. 'आङ्' ।
 शाफ्ता, सं. स्त्री. (अ.) स्वास्थ्यं, नीरोगता ।
 —शानार, सं. पुं. (अ + फा.) चिकित्सालयः ।
 शब, सं. स्त्री. (फा.) राज्ञीभिः (स्त्री.), रजनी ।
 शबनम, सं. स्त्री. (फा.) अवदयायः, दे. 'ओस' ।
 शबल, वि. (सं.) कर्बुर, कल्पाय, नानावर्णं, चित्र ।
 शबाब, सं. स्त्री. (अ.) यौवनं २. सौन्दर्या-तिशयः ।
 शबाहत, सं. स्त्री. (अ.) आकृतिः (स्त्री.) २. समानता ।
 शबाह, सं. स्त्री. (अ.) चित्रं २. साम्यम् ।
 शब्द, सं. पुं. (सं.) निन(ना)दः, वि. र(रा)वः, निर-घोषः, स्व(स्वा)नः, ध्वनिः, ध्व(ध्वा)नः २. पदं, सार्थकोऽश्वरसमूहः ३. ओश्म, प्रणवः ४. भक्तिगीतम् ।
 —कोष, सं. पुं. [सं. षः(शः)] अभिधानं, शब्द-संग्रहः ।
 —चातुर्यं, सं. पुं. (सं. न.) वाग्मिता, वाक्-पाठवम् ।
 —शिय, सं. पुं. (सं. न.) अधमकाल्यभेदः, अनुप्रासः ।
 —चोर, सं. पुं. (सं.) कुम्भिलः, शब्दतस्करः ।
 —चोरो, सं. स्त्री., शब्दचौर्यं, कुम्भिलत्वम् ।
 —पति, सं. पुं. (सं.) अनुयायिरहितो नेतृ ।
 —प्रमाण, सं. पुं. (सं. न.) आप्रमाणम् ।
 —विरोध, सं. पुं. (सं.) विरोधाभासः, मिथ्या-वैपरीत्यम् ।
 —प्रबन्, सं. पुं. (सं. न.) चत्वारो वेदाः ।
 —भेदी, वि. (सं. दिन्) शब्द-वेदिन्-पातिन् ।

सं. पुं., अर्जुनः २. दशरथः ३. बाणभेदः ४. पायुः ।
 —वेधी, सं. स्त्री. (सं. धिन्) दे. 'शब्दभेदी' ।
 —शक्ति, सं. स्त्री. (सं.) शब्दानामर्थशोधक-शक्तिः (स्त्री.) (=अभिधा, लक्षणा, व्यंजना) ।
 —शास्त्र, सं. पुं. (सं. न.) शब्दविधा, व्याकरणम् ।
 —श्लेष, सं. पुं. (सं.) शब्दालंकारभेदः (सा.), अनेकार्थकपदप्रयोगः ।
 —सौष्टव, सं. पुं. (सं. न.) पदलालित्यम् ।
 शब्दाडंबर, सं. पुं. (सं.) शब्द-पद, जालं-प्रपञ्चः ।
 शब्दातीत, वि. (सं.) शब्दातिव, अवर्णनीय, (ईश्वरादि) ।
 शब्दानुशासन, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'शब्द-शास्त्र' ।
 शब्दार्थ, सं. पुं. (सं.) पदानुवर्ती अर्थः, भावी-पेक्षकोऽर्थः ।
 शब्दालंकार, सं. पुं. (सं.) अलंकारभेदः (सा.), शब्दाशितो वाक्यमत्कारः ।
 शम, सं. पुं. (सं.) प्र-शीतिः (स्त्री.), शपथः, निश्चलत्वं, स्वास्थ्यं, प्र-लप, शमः २. मोक्षः ३. इन्द्रियनियमः ४. निवृत्तिः, (स्त्री.), वैराग्यं ५. क्षमा ।
 शमन, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'शन' (१) । २. यशार्थं पशुहननं ३. दमनं, नाशनं ४. चर्वणं ५. हिंसा ।
 शमनी, सं. स्त्री. (सं.) निशा, रजनी ।
 शमला, सं. पुं. (अ.) उष्णीष-शिरोवेष्टनः, शिखा-शिखर-अग्र-प्रान्तः ।
 शमशेर, सं. स्त्री. (फा.) असिः, लङ्गः ।
 —बहादुर, सं. पुं. (फा.) आसिकः, खड्गिन् ।
 शमा, सं. पुं. (अ. शमञ्) दे. 'मीम' २. दीपिका ३. दीपः-पकः ।
 —दान, सं. पुं. (फा.) दीपि-दीपिका, बुद्ध-ध्वजः ।
 शमी^१, सं. स्त्री. (सं.) शकृत्-फला-फली, शिवा, केशमथनी, पापशमनी, भद्रा, शं-शुभ, करी ।
 शमी^२, वि. (सं. मिन्) शांत, शौभरहित, निश्चल ।
 शयन, सं. पुं. (सं. न.) संवेशः, स्वपनं, निद्राणं, सुप्तिः (स्त्री.), स्वापः २. शय्या ३. संवेशनं, मैथुनम् ।

शब्दालु

[२६८]

श(स)राव

—गृह, सं. पुं. (सं. न.) शयन, आगार-
मन्दिरम् ।

शब्दालु, वि. (सं.) निद्रालु, तंद्रालु २. सुषुप्सु,
निद्रावश ।

शब्दालु, सं. स्त्री. (सं.) आस्त्ररः, दे. 'बिस्त्रौना'
२. खट्वा, पर्येकः, दे. 'खाट' ।

—गत, वि. (सं.) रुग्ण, रोगिन् ।

—गृह, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'शयनगृह' ।

—गुह्य, सं. पुं. (सं. न.) *स्वप्नस्वावः,
शिशुरोगभेदः ।

—छादन, सं. पुं. (सं. न.) पर्येकप्रच्छदः ।

शर, सं. पुं. (सं.) श्पुः, बाणः, दे. । २. शरकांडः,
दे. 'सरकंडा' ३. क्षीरशरः, दुग्धार्घ्यं, संतानो-
निका ४. दधिशरः, दधि, सारः-स्नेहः, कट्टरं,
जटवरं ५. उशीरः ।

शरभ, सं. स्त्री. (अ.) धर्मः, मत्तं २. धर्मशास्त्रं
३. प्रथा ४. धार्मिकादेशः ५. ईशदशितमार्गः
(इत्यलम्) ।

शरकांड, सं. पुं. (सं.) दे. 'सरकंडा' ।

शरण, सं. स्त्री. (सं. न.) आश्रयः, गतिः (स्त्री.)
२. आश्रय-व्राण, स्थानं ३. गृहं, भवनं
४. शरण्यः, रक्षित्, व्रातृ ५. शरणागत-रक्षणम् ।

—देना, क्रि. स., अब्-रक्ष् (भ्वा. प. से.),
शरणं दा ।

—लेना, क्रि. अ., आशि (भ्वा. उ. से.),
शरणं प्रपद् (दि. आ. अ.) इ-या (दोनीं अ.
प. ज.) ।

शरणागत, वि. (सं.) शरणापन्न, अभिपन्न,
शरणाधिन्, शरणैषिन् । सं. पुं. (सं.) शिष्यः ।

शरणार्थी, वि. (सं.) शिन्) शरणैच्छुक, रक्षा-
भिलाषिन् ।

शरण्य, वि. (सं.) शरण्य, शरणागत-रक्षक,
रक्षित्, पातृ २. दुःखित, असहाय ।

शरदु, सं. स्त्री. (सं.) परि-वत्सरः, अब्दः,
वर्षः-पै २. वर्षावसानः, मेघांतः, कालप्रधानः-
न्तं, प्रावृष्टययः (= आश्विन-कालिक) ।

शरधि, सं. पुं. (सं.) गुणः, श्पुधिः, दे.
'तरकश' ।

शरक, सं. पुं. (अ.) महस्कं, महत्ता २.
श्रेष्ठता ३. गुणः ४. प्रतिष्ठा ।

शरवत्, सं. पुं. (अ.) शर्करोदकं, गुडोदकं,
पानकं, गौर्ध्नं, सितोदं, मिष्टोदं २. शर्करा-
मधु, स्वाद्यः ।

शरवती, सं. पुं. (अ. शरवत) दे. 'मीठी'
(फल) २. ईश्वरपतिवर्णः । वि., रसपूर्णं, सरस,
सुमधुर ।

शरम, सं. स्त्री., दे. 'शर्म' ।

शरह, सं. स्त्री. (अ.) टीका, व्याख्या, भाष्यं
२. दे. 'मान' (मूल्य) ।

शरा, सं. स्त्री., दे. 'शरश्' ।

शराकत, सं. स्त्री. (फा.) सहभागिता, दे.
'साशा' २. सहकारिता ।

शराकृत, सं. स्त्री. (अ.) सञ्जनता, सौजन्यं,
शीलम् ।

शराव, सं. स्त्री. (अ.) सुरा, मदिरा २. दे.
'शरवत' (द्विकमत) ।

—का खमीर, सं. पुं., मद्यपकः, सुराकल्कः,
मेदकाः, जगलः ।

—का प्याला, सं. पुं., पान-मद्य-सुरा, भाजनं-
भांड-पात्रम् ।

—के खमीर की शाय, सं. स्त्री., मद्य, फेनः-
मंडः, कार, उत्तर-उत्तमः ।

—के नशे में चूर, वि., मत्त, क्षीव, मदोत्कट,
मदोद्धत, समद, मदाक्य, मदीन्मत्त, शौड ।

—खाना, सं. पुं. (अ. + फा.) गंता, शुंडा,
सुरालयः ।

—खीचना, क्रि. स., मद्यं संधा (जु. उ. अ.)
सुरां सु-स्यंद (प्रे.) । सं. पुं., मद्य, संधानं-
अभिषवः ।

—खीचने का स्थान, सं. पुं., संधानी, अभिषव-
शाला ।

—खीचनेवाला, सं. पुं., सुराकारः, शौडिकः,
संधानिन् ।

—खोर, सं. पुं. (अ. + फा.) पान, आसकः-
रतः, मधु-मद्य-सुरा, पः, पानशौडः, सुरासुः ।

—खोरी, सं. स्त्री., सुरापानं-णं, मद्यसेवनम् ।

—पीना, क्रि. स., सुरां पा (भ्वा. प. अ.),
मद्यं मेव (भ्वा. आ. से.) ।

शराबी, सं. पुं. (अ. शराव) दे. 'शराबखोर' ।

शराबोर, वि. (फा.) दे. 'लघयथ' ।

शरारत, सं. स्त्री. (अ.) कुचेष्टा-श्रितं, दुर्ललितं,
दुष्टता, खलता, अपकारः ।

शरारती, वि. (अ. शरारत) कुचेष्टक,
दुर्ललित, दुष्ट, खल, अपकारक ।

श(स)राव, सं. पुं. (सं. पुं. न.) वर्द्धमानकः,
मातृकः, मृत्कास्यं, दे. 'कुल्ह' ।

शरासन, सं. पुं. (सं. न.) शरास्यं, शरावापः
दे. 'धनुषः' ।

शरीरत, सं. स्त्री. (अ.) दे. 'शरअ' (२, ५) ।

शरीक, वि. (अ.) संमिलित । सं. पुं., सह-
चरः-कारिन्-योगिन् २. सह, भगिन्, अंशिन,
अंशमाहिन् ३. सहायः-यकः ४. सजातीयः,
सजातिः ।

शरीक, सं. पुं. (अ.) अभिजातः, कुलीनः,
अर्थः, सुप्रतिष्ठः, भद्रजनः, सज्जनः । वि. (अ.)
सभ्य, शिष्ट, सदाचारिन् २. कुलीन, अभिजात,
अभिजनवत् ३. पवित्र, निर्दोष ।

शरीफा, सं. पुं. (सं. श्रीकल >) (फल)
सीताफलं, वैदेहीवल्लभं, गंडगात्रं, कृष्ण बहु-
बीजकम् । (वृक्ष) सीताफलः इ. पुं. रूपः ।

शरीर, सं. पुं. (सं. न.) कायः, देहः-हृद्,
कलेवरः-न्तः, गात्रं, अंगं, क्षेत्रं, विषयः, संहननं,
वपुस् (न.) । मूलैः-तनुः-न्तः (स्त्री.) पुरं,
चतुःशास्त्रं, पिंडं, स्कन्धः, पंजरः, इन्द्रिया-
वतनं, पुद्गलः, करणम् ।

—स्वाग, सं. पुं. (सं.) देहपातः, मृत्युः ।

—रक्षक, सं. पुं. (सं.) अंगरक्षकः, ऋतुत्रयः ।

—शास्त्र, सं. पुं. (सं. न.) शरीरविज्ञानम् ।

—संस्कार, सं. पुं. (सं.) गर्भाधानादयः
षोडशसंस्काराः २. कायशुद्धिः (स्त्री.),
देहपरिष्कारः ।

शरीर, वि. (अ.) दे. 'शरारती' ।

शरीरत, सं. पुं. (सं.) देहपातः, निधनम् ।

शरीरी, सं. पुं. (सं. -रिन्) शरीरवत्, देहिन्
२. जीवः, आत्मन् ३. प्राणिन्, जंतुः ।

शर्क, सं. पुं. (अ.) प्राची, पूर्वदिशा ।

शर्करा, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'शकर' २. मिकता-
कणः ३. अश्मरी, दे. 'पथरी' ३. अश्लीलाः-
पषाणशकलाः (बहु.) ४. क(ख)पूरः ।

शर्का, वि. (अ. शर्क >) प्राचय, पूर्वीय ।

शर्त, सं. स्त्री. (अ.) पणः, गृह्यः २. संकेतः,
नमयः, नियमः ।

—करना, बाँधना या लगाना, मु., पण
(भ्वा. आ. से.), गृह् (भ्वा. चु. उ. से.)
२. समर्थ-नियमं कृ ।

शिला—, कि. वि., समर्थ-नियमं विना ।

शर्तिया, कि. वि. (अ.) गृह्येन, पणेन, गृह्य-
पण-पूर्वकं २. निस्संशयं, निस्सन्देहम् । वि.,
अमोघ, अवध्य ।

शर्म, सं. स्त्री. (का.) दे. 'लज्जा' २. संकोचः,
दे. 'सिंहान्त' ३. मानः, प्रतिष्ठा ।

—से गड़ना या पानी पानो होना, मु.,
अल्पथै लज्ज (तु. आ. से.)-त्रप् (भ्वा. आ.
से.), लज्जानताम्य (वि.) भू ।

शर्मसार, वि. (का.) लज्जाशील २. हाण,
लज्जित ।

शर्मा, सं. पुं. (सं. शर्मन्) ब्राह्मणोपाधिभेदः ।

शर्माना, कि. अ. तथा कि. स. (का. शर्म)
दे. 'लज्जित होना' २. दे. 'लज्जित करना' ।

शर्माशर्मा, कि. वि. (का. शर्म) लज्जया, क्षिया ।

शर्मिंदगी, सं. स्त्री. (का.) लज्जा, त्रपा,
घोडा ।

—उठाना, मु., दे. 'लज्जित होना' ।

शर्मिंदा, वि. (का.) लज्जित, घोडित, त्रपित ।

शर्माळा, वि. (का. शर्म) लज्जावत्, सलज्ज,
दे. 'लज्जाशील' ।

शर्वरी, सं. स्त्री. (सं.) निशा, रात्री, दे. 'रात' ।

—नाथ, सं. पुं. (सं.) शर्वरीदीपः, चन्द्रः ।

शलगा(ज)म, सं. पुं. (का.) शिखा, मूर्त्त-बंदः,
गृहनम् ।

शल(र)म, सं. पुं. (सं.) पत्रांकः-गः, पतङ्गः,
फडिगा, शिरिः, दे. 'डिड्डी' २. पतंगः, दे.
'पतंगा' ।

शलाका, सं. स्त्री. (सं.) धातुकाष्ठादिनिर्मिता
यष्टिका, दे. 'सलाख' २. वागः ३. अस्थि (न.)

४. तुणं ५. शारिका ६. कञ्जलशलाका

७. अक्षरः, देवनः ८. दीपशलाका ।

शल्य, सं. पुं. (सं.) मद्रसंजनः, माद्रीभ्रातृ

२-३. बिल्व-लोभ्र-वृक्षः ४. सीमा ५. शलाका

६. शल्लः-स्त्री, शल्यकः ७. मीनभेदः (सं. न.)

कुंतः, प्रसः २. इपुः, वाणः ३. कंदकः-कं

४. पीडाकारणं ५. दुर्बाक्यं ६. पापं ७. कर्षं

८. विषं ९. अस्थि (न.) १०. अखविकित्ता

११. संतुः ।

—कर्ता, सं. पुं. (सं. -र्त) दे. 'सर्जन' ।

—क्रिया, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'सर्जरी' ।

शब, सं. पुं. (सं. पुं. न.) कुणपः, क्षितिबर्द्धनः,
मृतकः-कं, प्रेतम् ।

—दृष्ट, सं. पुं. (सं.) अंत्येष्टि-मृतक-संस्कारः ।

—यान, सं. पुं. (सं. न.) शबरधः, खादी-
टिका, खोटः, काष्ठमल्लः, दे. 'अरधी' ।

शबर, सं. पुं. (सं.) श्लेच्छजातिभेदः २. शिवः ३. जलम् ।
 शबरी, सं. स्त्री. (सं.) श्रमणानाम्नी तपस्विनी २. शबरजातेनारी ।
 शश, सं. पुं. (सं.) शशकः, शूलकः, रोमकणीः, सृद्रोमन् २. चंद्रलालनं ३. पुरुषभेदः ।
 —धर, सं. पुं. (सं.) शशमूल, चंद्रः ।
 —शृंग, सं. पुं. (सं. न.) शशकविषाणं, खपुष्पं, गगनकुसुमं, असंभवनीयवस्तु (न.) ।
 शशक, सं. पुं. (सं.) दे. 'शश' (२) ।
 शशमाही, वि. (का.) षण्मासिक-अर्द्धवार्षिक- (स्त्री स्त्री.) ।
 शशांक, सं. पुं. (सं.) शशधरः, चन्द्रः ।
 शशी, सं. पुं. (सं. शशिन) शशधरः, सोमः, दे. 'चौद' ।
 —कर, सं. पुं. (सं.) चन्द्रकिरणः ।
 —कला, सं. स्त्री. (सं.) चंद्रलेखा २ वृत्तभेदः (छंद.) ।
 —कांत, सं. पुं. (सं.) चंद्रकांतमणिः । (सं. न.) कुमुदम् ।
 —कुल, सं. पुं. (सं. न.) चंद्रवंशः ।
 —पुत्र, सं. पुं. (सं.) शशिनः, वृषभः २ ।
 —प्रभा, सं. स्त्री. (सं.) कौमुदी, चंद्रिका ।
 —भूषण, सं. पुं. (सं.) शशि-चंद्र, मीलिः-शेखरः, शिवः ।
 —वदना, सं. स्त्री. (सं.) वृत्तभेदः (छंद.) २. चंद्रमुखी-स्त्री । (उपयुक्त सभी समासों में 'शशि' रूप रहेगा । उ. शशिकर इ.) ।
 शख, सं. पुं. (सं. न.) अस्त्रं, प्रहरणं, शङ्खनं, हस्तः, हेतिः (पुं. स्त्री.) ।
 —बांधना, कि. अ., शखाणि धु (जु.), सत्रह (दि. उ. अ.) ।
 —कर्म, सं. पुं. [सं. मन् (न.)] शक्य-शक्य-क्रिया ।
 —गृह, सं. पुं. (सं.) शख-शाला-आगारम् ।
 —जीवी, सं. पुं. (सं. विन्) शखवृत्तिः, आयुधिकः ।
 —धारी, वि. (सं. रिन्) सशख-शख-भूत-धर ।
 —विद्या, सं. स्त्री. (सं.) धनुर्वेदः ।
 शखागार, सं. पुं. (सं. शख + आगार) शख-शाला-गृह-स्थानम् ।
 शखाभ्यास, सं. पुं. (सं.) अर्द्धशिक्षा, सुरली ।
 शस्य, सं. पुं. (सं.) शस्यं, क्षेत्रस्थं फलं, दे.

'कसल' शब्दं, शादः ३. वृक्ष-रुता, फलं ४. धान्यं (शस्यं क्षेत्रगतं प्राहुः, सतुषं धान्य-मुच्यते । आमं वितुषमिस्त्युक्तं, स्वित्तमत्र-मुदाहृतम् ॥) वि. (सं.) उत्तम, श्रेष्ठ २. रतुष्य-प्रदांसनीय ।
 —भक्षक, वि. (सं.) तृण-शाक, भक्षक ।
 शस्यागार, सं. पुं. (सं. नं.) धान्यागारम्, कुशूलः ।
 शहशाह, सं. पुं. (का.) राजाधिराजः, दे. 'सम्राट्' ।
 शह, सं. स्त्री. (का.) गुप्तोत्तेजना ।
 —देना, मु., निभृतं उत्तिज्-उदीप् (प्रे.) ।
 शहजादा, सं. पुं. (का.) राजकुमारः २. युवराजः ।
 शहजोर, वि. (का.) बलिच, शक्तिशालिन ।
 शहतीर, सं. पुं. (का.) तुला, स्थूणा, छपाधारः ।
 शहसूत, सं. पुं. (का.) (वृक्ष) ब्रह्मदारुः, तूतः, तूतः, पूषः, ब्रह्मण्यः, तूलः, यूषः । (फल) तूलं, तूलं, तूतं, पूषं, यूषम् ।
 शहद, सं. पुं. (अ.) माक्षिकं, क्षीरं, मधु (न.) दे. ।
 —की मक्खी, सं. स्त्री., मधुमक्षिका ।
 —लगाकर चाटना, मु., व्यर्थं पदार्थं निरर्थं रक्ष (भ्वा. प. से.) ।
 शहनई, सं. स्त्री. (का.) सज्जेवी-यिका, सानिका ।
 शहबाला, सं. पुं. (का.) *सहबालः (पं. सवाला), *वर, *पृष्ठगः-सहवरः ।
 शहर, सं. पुं. (का.) नगरं, पुरम् ।
 —पनाह, सं. स्त्री. (का.) *नगरकोटः, वृत्तिः (स्त्री.), प्राचीरं, दे. ।
 शहरी, सं. पुं. (का.) पौरः, नागरिकः, नगर-पौर, जनः । वि., नगरीय, नागर, नागरेयक, नागरिक दे. ।
 शहवत, सं. स्त्री. (अ.) संभोग-मैथुन, इच्छा ।
 —परस्त, वि., कामुक, लंपट, कामातुर ।
 —परस्ती, सं. स्त्री. कामुकता, लम्पटता, कामान्धता ।
 शहसवार, सं. पुं. (का.) कुशलसादिन् ।
 शहादत, सं. स्त्री. (अ.) साक्ष्यं, दे. 'गवाही' २. प्रमाणं ३. बलिदानम् ।

शाहीद, सं. पुं. (अं.) *शुभात्मन्, धर्मदत्तः, धर्म-
पतंगः ।

—होना, क्रि. अ., धर्मार्थं प्राणान् हा (जु. प.
अ.) परीषकाराय हन् (कर्त्त.) ।

शांत, वि. (सं.) स्वस्थचिरा, प्रसन्न, मानस-
चेतस, निर्वृत, स्वस्थ, निरुद्धेग, आवेशशून्य,
शमित, शमान्वित २. शूद्र, वैग-गति-क्रिया,
रहित, विरत ३. सौम्य, गंभीर, धीर ४. नि-
शब्द, मीनिन् ५. जितेन्द्रिय, संयमशील
६. शिथिल, निरुत्साह ७. श्रांत, क्लान्त, शिथ
८. निर्वापित, निर्वाण (अग्न्यादि) ९. निर्विघ्न,
निर्वाध । सं. पुं. (सं.) रसविशेषः (काव्य.)
२. विरक्तः, योगिन ।

—करना, क्रि. स., उप-प्र-शम् (प्रे.) २. प्रसद-
तुप् (प्रे.) ।

—होना, क्रि. अ., शम् (दि. प. से.), शांत-
निश्चल (वि.) भू ।

शांतता, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'शांत' ।

शांतनु, सं. पुं. (सं.) दे. 'शांतनु' २. कर्कटी ।

शांता, सं. स्त्री. (सं.) दशरथतनया, ऋष्य-
शृंगभार्या ।

शांति, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'शम' (१) । २. गति-
क्रियावैग-शोभ, राहित्यं ३. नीरवता, नि-
शब्दता ४. रोगादीनां क्षयः-नाशः ५. मृत्युः
६. सौम्यता, गंभीरता ७. वैराग्यं, तृष्णाक्षयः
८. संकटनिवारणम् ।

—दायक, वि. (सं.) शांति-प्रद-कर-दायिन् ।

—पर्व, सं. पुं. [सं-पर्वन् (न.)] श्रीमन्महा-
भारतस्य द्वादशपर्वन् ।

शादूर, सं. पुं. दे. 'शादूर' ।

शाहूस्तगी, सं. स्त्री. (का.) शिष्टता, सज्जनता ।

शाहूस्त, वि. (का. तः) शिष्ट, सुशील ।

शाक, सं. पुं. (सं. पुं. न.) दे. 'साग' ।

शाकाहार, सं. पुं. (सं.) हरितकभोजनं, मांस-
त्यागः ।

शाकाहारी, वि. (सं. रिन) हरितकभोजिन्,
मांसत्यागिन् ।

शाक्त, सं. पुं. (सं.) शक्त्युपासकः, शाक्तिकः,
शाक्तेयः ।

शाक्तिक, सं. पुं. (सं.) दे. 'शक्त' । २. शक्ति-
काय, शरः सेनिकः, शाक्तीकः ।

शाक्य, सं. पुं. (सं.) प्राचीनशुन्रियजाति-
विशेषः ।

—मुनि, सं. पुं. (सं.) गौतमबुद्धः, सिद्धार्थः,
महाबोधिः, महासुनिः ।

शाख, सं. स्त्री. (का.) दे. 'शाखा' (१) ।
२. शृंगं, विषणं ३. उपांगं ४. उपनदी ।

—दार, वि. (का.) शाखायुत २. शृंगयुत ।

शाखा, सं. स्त्री. (सं.) विटपाः-पं, शिखा, लंका,
लता २. देहावयवः, शरीरांगं (हाथ, पाँव
आदि) ३. अंगुली, करशाखा ४. अंगं, उपांगं
५. वि-भागः ६. वैदिकग्रंथ-भेदः ।

—नगर, सं. पुं. (सं. न.) उपपुरं, शाखापुरं,
नगरप्रांतः ।

शाखी, सं. पुं. (सं. खिन्) वृक्षः २. वेदः ।
वि., मशाख ।

शागिर्द, सं. पुं. (का.) शिष्यः, दे. ।

शागिर्दी, सं. स्त्री. (का. शागिर्द) शिष्यता
२. सेवा ।

शाटक, सं. पुं. (सं. पुं. न.) पटः, वस्त्रम् ।

शाटिका, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'धोती' ।

शाटी, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'साड़ी' ।

शाठ्य, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'शठता' (१-२) ।

शाथ, सं. पुं. (सं.) शापी, सामकं । (छोटा)
शामरः २. नि-कषः-सः, कषप्रष्टिका ३. माप-
चतुष्टयं, टंकः, निष्कः ।

शाद्, सं. पुं. (सं.) कर्दमः २. शष्पम् ।

शाद्, वि. (का.) प्रसन्न, मुदित २. परिपूर्णः ।

शादाव, वि. (का.) गलाढ्य, जलसिक ।

शादियाना, सं. पुं. (का.) मंगलवारं २. दे.
'बधाई' ।

शादी, सं. स्त्री. (का.) विवाहः, दे. २. हर्षः
३. आनन्दोत्सवः ।

—गामी, सं. स्त्री. (का + अ.) हर्षशोकी, सुख-
दुःखे ।

—मर्ग, सं. स्त्री., हर्षातिरेकजनितमृत्युः ।

शाद्वल, सं. पुं. (सं. पुं. न.) हरितः-तं, शष्प-
बहुलो देशः । वि., हरित, शष्पच्छत्र ।

शान, सं. स्त्री. (अ.) श्रीः (स्त्री.), अभिख्या,
औज्ज्वल्यं, शोभा, प्रभा, भव्यता, आडंबरः
२. विभूति-शक्तिः (स्त्री.) ३. प्रतिष्ठा, गौरवं
४. विभ्रमः ५. महिमन् (पुं.) ।

—दार, वि. (अ. + का.) श्रीमत्, शोभान्वित,
भव्य, साडंबर, शोभन, सुप्रभ, समुज्ज्वल,
वैभवशालिन् ।

—शोकल, सं. स्त्री. (अ.) दे. 'शान' (१) ।
 —घटना, सु., लघुभू, महिमा अपचि (कर्म) ।
 शाय, सं. पुं. (सं.) दे. 'सराप' २. विकारः ।
 शायित, वि. (सं.) शाय-प्रस्त-बद्ध-पीडित ।
 शाबाश, अव्य. (फा.) साधु, साधु साधु, शोभनं,
 चशु, मदन ।
 शाबाशी, सं. स्त्री. (फा. शाबाश) प्रशंसा,
 स्तुतिः (स्त्री.), साधुवादः ।
 —देना, कि. स., अभि-प्रति नंद (भ्वा.प.से.),
 प्रोत्सह (प्रे.) ।
 शाब्दिक, वि. (सं.) मौखिक, लेखरहित
 २. शाब्द, शब्दप्रधान, शब्दसम्बन्धिन ।
 शाम^१, सं. स्त्री. (फा.) संध्या, दे. ।
 शाम^२, सं. स्त्री. (देश.) वष्यादिनिध्यवती
 प्रांतवर्ती वा धातुबलयः ।
 —जड़ना, कि. स., धातुबलयेन खब् (चु.) ।
 शामत, सं. स्त्री. (अ.) दौर्भाग्यं २. आपद
 (स्त्री.) ३. दुर्दशा ।
 —आना, कि. अ., आपदा घम् (कर्म.) ।
 —का सारा, सु. दैवहतकः, दुर्दैवः-मंदभाग्यः ।
 शामियाना, सं. पुं. (फा. शाम) महा-
 वितानः, गृहदुलीनः ।
 शामिल, वि. (फा.) दे. 'संमिलित' ।
 शामी, सं. स्त्री. (देश.) दे. 'शाम' (२) ।
 शायक, वि. (अ.) प्रेमिन, अनुरागिम्
 २. अभिलाषिन् ।
 शायद, अव्य. (फा.) त्याव, कदापि, कदा-
 चित्, नाम, सम्भव्यते ।
 शाय(इ)र, सं. पुं. (अ.) कविः, दे. ।
 शाय(इ)रा, सं. स्त्री. (अ.) कवित्री, कविता-
 काव्य-कर्त्री ।
 शायराना, वि. (अ.) कविमुलभ २. कवि-
 सदृश ३. कवित्वमय ४. अतिरंजित, अति-
 शयोक्ति-अत्युक्ति-युक्त ।
 शायरी, सं. स्त्री. (अ.) काव्यकला २. काव्यं,
 कविता ।
 शारदा, सं. स्त्री. (सं.) सरस्वती दे. २. दुर्गा
 ३. नाक्षी ४. प्राचीनलिपिविशेषः ।
 शारीरिक, वि. (सं.) शारीर(-री स्त्री.),
 कायिक-दैहिक (-की स्त्री.) ।
 —भाष्य, सं. पुं. (सं. न.) श्रीशंकराचार्य-
 प्रणीतं ब्रह्मसूत्रभाष्यम् ।

—सूत्र, सं. पुं. (सं. आणि) श्रीवेदव्यास-
 प्रणीतानि वेदांतसूत्राणि (न. बहु.) ।
 शार्क, सं. स्त्री. (अ.) जलकिराटः ।
 शार्द हैंड, सं. पुं. (अं.) शीघ्र-संक्षिप्त-लिखी-
 पिः (स्त्री.) ।
 शार्दूल, सं. पुं. (सं.) व्याघ्रः, दे. २. सिंहः,
 दे. । वि., उत्तम, श्रेष्ठ (केवल लमामांत में, उ.
 नरशार्दूल = नरोत्तम) ।
 —विक्रीडित, सं. पुं. (सं. न.) वर्णवृत्तभेदः
 (छन्द.) ।
 शाल^१, सं. पुं. (सं.) सालः, सर्जः, शंकुवृक्षः,
 अश्वकर्णकः, चीरपर्णः, गंधवृक्षकः, रालनियॉनः,
 अग्निवज्रभः, यक्षधूपः, सुरोपकः २. दे. 'राल'
 ३. मीनभेदः (=पजाइ मछली) ।
 शाल^२, सं. स्त्री. (फा.) १-२. और्ण-कौशेय-
 प्रावारः-रकः, दे. 'दुशाला' ।
 शालग्राम, सं. पुं. (सं.) विष्णुमूर्तिभेदः
 २. शालबहुली गंडकीतीर्थवनिग्रामविशेषः ।
 शाला, सं. स्त्री. (सं.) गृहं, गेह-हं, सदनं,
 अ(आ)गारः-रं २. स्थानं, स्थलं, ३. शाखा ।
 शालि, सं. पुं. (सं.) द्रीहिश्रेष्ठः, धान्योत्तमः,
 सुकुमारकः, कैदारः, नृपप्रियः २. गंधमाजारः ।
 —धान, सं. पुं. (सं. शालिधान्यं) *गंडुली-
 त्तमः, दे. 'वासमती वाकल' ।
 शालिवाहन, सं. पुं. (सं.) शकनालीयको
 नृपविशेषः, सातवाहनः ।
 शालिहोत्र, सं. पुं. (सं.) पशुचिकित्साशास्त्र-
 लेखकविशेषः २. पीठकः । (सं. न.) पशु-
 चिकित्साशास्त्रम् ।
 शालीन, वि. (सं.) विनीत, नम्र २. लज्जार्शंक
 ३. समत ४. सदाचारिन् ५. धनाढ्य
 ६. व्यवहारकुशल ७. शालासंबंधिन् ।
 शालीनता, सं. स्त्री. (सं.) विनयः २. लज्जा
 ३. सदाचारः ।
 शावक, सं. पुं. (सं.) शावः, अर्भकः, पीतः,
 पीतकः, टिंभः-पृथुकः, खग-मृग, शिशुः २.
 शिशुः (कदाचित्) ।
 शाश्वत, वि. (सं.) नित्य, अनन्त, अक्षय,
 अविनाशिन् ।
 शासन, सं. पुं. (सं. न.) शास्तिः-शिष्टिः
 (स्त्री.), राज्यं, आधिपत्यं, अधिकारः २. आज्ञा,
 आदेशः ३. राजदत्तभूमिः (स्त्री.) ४. अधि-
 कारपत्रं ५. शास्त्रं ६. इन्द्रियनियमः ७. निय-

शासित

[१७३]

शिकारी

न्रणा, नियमनं ८. राज्य-दण्डः ९. लिखित-प्रतिष्ठा ।

—करना, कि. सं., प्र-शास् (अ. प. से.), ईश (अ. आ. से.), तंत्र (चु.), अधिष्ठा (भ्वा. प. से.), नियम-विनी (भ्वा. प. अ.) । सं. पुं., ईशानं, अधिष्ठानं, नियमनं, निबंधनम् ।

—कर्ता, सं. पुं. (सं. र्त्) शासकः, शासनधरः, शास्त्र, शासितृ, अधिष्ठातृ, देशकः ।

—पत्र, सं. पुं. (सं. न.) राजादेशपत्रम् ।

—हर, सं. पुं. (सं.) आशावाहकः १. शासन-हारक-हारिन्, राजदूतः ।

शासित, वि. (सं.) कृतशासन, अधिकृत, अधिष्ठित, नियंत्रित २. दंडित, दे. ।

शास्त्र, सं. पुं. (सं. न.) धर्मग्रंथः २. विज्ञानम् ।

—कार, सं. पुं. (सं.) शास्त्र-कृत-रचयितृ, आचार्यः ।

—वक्ष, सं. पुं. [सं. क्षुस् (न.)] व्याकरणं २. शानिन् ।

—ज्ञ, सं. पुं. (सं.) शास्त्र-दर्शन-दृष्टिः-विद्व-कोविदः-वेत् ।

—वक्ता, सं. पुं. (सं. न्क्) उपदेशकः ।

—विरुद्ध, वि. (सं.) धर्मविरुद्ध, अधर्म्य ।

शास्त्रानुसार, कि. वि. (सं. न.) यथाशास्त्रं, धर्मातिकूलम् । वि., शास्त्रोक्त, स्मार्त ।

शास्त्री, सं. पुं. (सं. छिन्) उपाधिभेदः २. धर्मशास्त्रज्ञः ३. दे. 'शास्त्रज्ञ' ।

शास्त्रीय, वि. (सं.) श्रौत, स्मार्त, शास्त्रविषयक २. शास्त्र-उक्त-विहित ।

शास्त्रोक्त, वि. (सं.) शास्त्र-विहित-निर्दिष्ट-अनुकूल ।

शास्त्र्य, वि. (सं.) नियंत्रणीय, नियन्तव्य, शासन-अर्ह-योग्य ३. शिक्षणीय, उपदेश्यव्य, विनय ३. दण्ड्य, दंडनीय ।

शाह, सं. पुं. (का.) महाराजः २. यवनभिक्षु-पाथिः । वि., महार, बृहत्, प्रधान ।

—जादा, सं. पुं. (का.) दे. 'शहजादा' ।

शाहिद, सं. पुं. (अ.) साक्षिन्, प्रत्यक्षदर्शिन्, देश्यः ।

शाही, वि. (का.) राजकीय २. भूपोचित, नृपयोग्य ।

शाहरारु, सं. पुं. (का. शंगक) हिगुलं, लः, हिगुलः, लः, रक्तपारदः, चूर्णपारदं, सुरंगं, रसोद्भवम् ।

शिघाण, सं. पुं. (सं. न.) नासिकामलं, शिघाणकः-कं २. लोहमलं ३. कानपात्रम् । (सं. पु.) शिघाणकः, श्लेष्मन् ।

शिकान, सं. पुं. (सं. न.) शिजितं, झणत्कारः, झणझणध्वनिः ।

शिकंजबी, सं. स्त्री. (का. शिकजबी) पानकं, *अम्लगौल्यम् ।

शिकंजा, सं. पुं. (का.) १-३. निपीडन-दृढीकरण-निर्गालन-यंत्रं ४. ग्रन्थनिपीडनयंत्रं ५. निगडः, हडिः ६. दे. 'कोलू' ।

शिकंजे में खीचना, मु., प्रमथ् (क्. प. से.), यद (प्रे.), अत्यर्थं अर्द्धं (प्रे.)-पीड (चु.)-निगडयति (ना. धा.) ।

शिकन, सं. स्त्री. (का.) द(ब)ली-लः (स्त्री.) २. पुटः, भंगः ।

—डालना, कि. सं., बलिनं कृ. २. सपुटं विधा ।

—पदना, कि. अ. बलिन-बलिम-बलितुत् (वि.) नू २. सपुट-समंग (वि.) जन् (दि. अ. से.) ।

शिकम, सं. पुं. (का.) उदरं, जठरम् ।

शिकरा, सं. पुं. (का.) इयंनमेदः, *शीकरः ।

शिकवा, सं. पुं. (अ.) दे. 'शिकायत' ।

शिकस्त, सं. स्त्री. (का.) अभि-परा, भवः-पराजयः दे. २. वैफल्यम् ।

—खाना, कि. अ., परिगू विजि (कर्म.), दे. 'हारना' ।

शिकायत, सं. स्त्री. (अ.) (सुविलाषा) विज्ञापना, दुःखनिवेदनं २. परि(री)वादः, आक्षेपः-गर्हा, निंदा ३. उपालम्भः, ४. आभयः, व्याधिः ।

—करना, कि. अ., सशोकं-सविलाषं विज्ञा-निविद् (प्रे.) २. आ-अधि-क्षिप् (तु. प. अ.) गहं (भ्वा. चु. आ. से.), अप-परि-वद् (भ्वा. प. से.) ३. उपालम्भ (भ्वा. आ. अ.) ।

शिकार, सं. पुं. (का.) आक्षेपः-खेटनं-रुद्धं, मृगया, मृगव्यं, आच्छेदनं, पापद्विः (स्त्री.) २. मृग्य-जंतुः-प्रणिन् ३. मृगया-हतो जीवः ४. मांसं ५. भक्ष्यं ६. प्रतारितः, वञ्चितः ।

—करना, कि. सं., मृग (चु. आ. से.), दि. प. से.) मृगयां कृ, श्युभाब् (भ्वा. प. से.) । मु., छलेन धनादिकं हृ (भ्वा. प. अ.) ।

—होना, कि. अ., आक्षेपे हन्-मार (कर्म.) । मु., वशवतीं जन् (दि. आ. से.) ।

शिकारी, सं. पुं. (का.) व्याधः, लुब्धकः-

- मृगयुः, आखेटकः, जीवांतकः, शाकुनिकः, जालिकः, वायुरिकः । वि., आखेटिक ।
- कुत्ता, सं. पुं., मृगदेशकः, मृगयाकुक्कुरः, विश्वकदूः ।
- क्याह, सं. पुं., गांढर्विवाहः ।
- स्वास्, सं. पुं., मृगया-आखेट, वैशः(षः) ।
- शिक्षक, सं. पुं. (सं.) अध्यापकः, गुरुः, उपाध्यायः, अनुशास्त्र, उपदेशकः, आचार्यः ।
- शिक्षण—सं. पुं. (सं. न.) शिक्षा, अध्यापनं, विद्यादानं, पाठनं, अनु-शासनं-शिक्षिः (स्त्री), विनयः २. विद्या-उपादानं-ग्रहणं-अभ्यासः ।
- शिक्षा, सं. स्त्री. (सं.) अध्ययनाध्यापनं, पठनपाठनं । २-३. दे. 'शिक्षण' (१-२) ४. नियुक्ता ५. उपदेशः, मंत्रः ६. वेदांगविशेषः ७. नियंत्रणं ७. दंडः, कुक्कलम् ।
- हीन, वि. (सं.) अशिक्षित, निरक्षर ।
- शिक्षार्थी, सं. पुं. (सं. -यिन्) शिक्षाग्राहकः, छात्रः ।
- शिक्षालय, सं. पुं. (सं.) शिक्षणालयः, विद्यालयः ।
- शिक्षित, वि. (सं.) साक्षर, अक्षराभिज्ञ, लेखनवाचनक्षम, कृतविद्य २. पंडित, विद्वान् [शिक्षिता (स्त्री.)=कृतविद्या पंडिता इ.] ।
- शिक्षंड=डक, सं. पुं. (सं.) मयूरपुच्छं २. चूडा, शिखा ३. काकपक्षः ।
- शिक्षंडी, सं. पुं. (सं-डिन्) मयूरः २. कुक्कुटः ३. द्रुपदपुत्रविशेषः ४. विष्णुः ५. कृष्णः ६. शिवः ७. बाणः ८. गुञ्जा ९. स्वर्णयुधिका ।
- शिक्षर, सं. पुं. (सं. पुं. न.) गिरि, अस्तकं-शृङ्गं, पर्वताग्रं, कूटं २. उच्चतमो भागः, दे. 'चोटी' ।
- शिक्षरव, सं. स्त्री. (सं. शिक्षरिणी) अद्वि-सितोदकम् ।
- शिक्षरिणी, सं. स्त्री. (सं.) वणंवृत्तभेदः २. स्त्री-रत्नं ३. रोमराजी ४. द्राक्षाभेदः ५. दे. 'शिक्षरन' ।
- शिक्षरी, सं. पुं. (सं. -रिन्) पर्वतः २. वृक्षः ३. ओट्टः ।
- शिक्षा, सं. स्त्री. (सं.) शिक्षंड-डकः, चूडा २. अग्निज्वाला, ज्वाला, अचिस् (न.) ३. दीप, आचिस् (न.)-शिखा ४. शिक्षर-रं ५. किरणः ६. शाखा ।
- कंद, सं. पुं. (सं. पुं. न.) दे. 'शलजम' ।

- वान्, वि. (सं. वत्) शिक्षित्, चूडावत्, शिक्षान्वित । सं. पुं., दीपकः २. अग्निः ३. केतुग्रहः ४. उल्का, खोल्का ।
- सूत्र, सं. पुं. (सं. -त्रे) चूडायशोषवीरि (न. दि.) ।
- शिक्षिनी, सं. स्त्री. (सं.) मयूरी, शिल्लिनी, केकिनी २. कुक्कुटी, कुक्कुटवधूः (स्त्री.), पक्षिणी ।
- शिक्षी, वि. (सं. -लिन्) शिक्षावत्-चूडावत् । सं. पुं. (सं.) मयूरः २. कुक्कुटः ३. दीपकः ४. अग्निः ५. पर्वतः ६. बाणः ७. वृक्षः ८. उल्का, केतुः ।
- शिगाक्र, सं. पुं. (का.) छिद्रं-विलं २. विदरः, भेदः ।
- शिगार, शिगा(शा)ल, सं. पुं. (का.) शृगालः, जंबुकः ।
- शिशाव, कि. वि. (का.) शीघ्रं, सस्वरम् ।
- शिथिक, वि. (सं.) मंदबन्धन, श्लथ, सस्त, दे. 'ढील' २. अलस, मंथर ३. उदासीन ४. दुर्बलशून्य ५. बंधनहीन, मुक्त ६. श्रान्त, क्लान्त ७. अस्पष्ट (शब्दादि) ८. उपेक्षित (नियम) ।
- शिथिलता, सं. स्त्री. (सं.) शैथिल्यं, श्लथता, सस्तता, दे. 'ढीलपन' २. आलस्यं ३. औदासीन्यं ४. दुर्बलाऽभावः ५. श्रान्तिः (स्त्री.) ५. नियमभंगः ६. शक्तिन्यूनता ।
- शिहत, सं. स्त्री. (अ.) जयता, तीव्रता, प्रचंडता २. आपिषयम् ।
- शिर, सं. पुं. (सं.) शिरम् (न.) दे. 'शिर' ।
- शिर(रा)कल, सं. स्त्री. (अ.) दे. 'शराकत' ।
- शिरस्त्राण, सं. पुं. (सं. न.) शीर्षण्यं, शिरस्त्रं, दे. 'होद' ।
- शिरा, सं. स्त्री. (सं.) सिरा, रीलिका, रक्तवाहिनी नाडी (Vein) ।
- शिरोधार्य, वि. (सं.) अंगो-स्त्री, -कार्यं, पालयितव्यम् ।
- करना, मु., सादरं स्वी-भंगी, कृ ।
- शिरोमणि, सं. पुं. स्त्री. (सं.) चूडामणिः, शिरोरत्नं २. प्रधानः, मुख्यः ।
- शिला, सं. स्त्री. (सं.) शिला, पट्टः-फलकं २. अश्म-प्रोवनं (पुं.) ३. गंडशैलः ४. अपे-कणशिला, शिला-पट्टी-पट्टिका, शिला ।

शिलोह

[१७४]

शिव्य

- जीत, सं. पुं. [सं.-जतु (न.)] गिरि-
अग-अदि-अरम-शिला, -जं, अरम, -जतुकं-लाक्षा-
उत्थं, शिला, -जित् (स्त्री.)-उद्रु-मल-स्वेदः ।
—खेख, सं. पुं. (सं.) प्रस्तरलेख्यम् ।
—वृष्टि, सं. स्त्री. (सं.) करकासारः ।
शिलोह, सं. पुं. (सं.) उच्छशिल, उपात्तशस्य-
क्षेत्रात् शेषावचयनम् ।
शिल्प, सं. पुं. (सं. न.) यंत्र-कला, *हस्त-
कर्मन् (न.)-शिल्प-व्यवसायः, शिल्पिकं, दे.
'दस्तकारी' ।
—कला, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'शिल्प' ।
—कार, सं. पुं. (सं.) शिल्पिन्, कारुः, देवटः,
शिल्पजीविन्, शिल्पकारिन्, कर्मकारः ।
—विद्या, सं. स्त्री. (सं.) हस्तकौशलं २. गृह-
निर्माण-वास्तु, कला ।
—शास्त्र, सं. स्त्री. (सं.) शिल्प(विप), गृह-
मेह-शास्त्र-आवेशनम् ।
—शास्त्र, सं. पुं. (सं. न.) हस्तव्यवसाय-
शास्त्रं २. गृहनिर्माण-वास्तु, शास्त्रम् ।
शिल्पो, सं. पुं. (सं.-पिन्) दे. 'शिल्पकार'
२. गृह-कारकः-संवेशकः, पलंगडः ३. चित्र-
कारः ।
शिव, सं. पुं. (सं.) महादेवः, शंभुः, पशुपतिः,
शूलिन्, महा-ईश्वरः, शंकरः, चंद्रशेखरः,
गिरीशः, सृष्टः, पिताकिन्, त्रिलोचनः, भूतेशः,
धूर्जटिः, हरः, व्यंबकः, त्रिपुरारिः, गंगाधरः,
बृधध्वजः, भवः, रुद्रः, उमापतिः, महानटः,
भैरवः, पञ्चाननः, कण्ठेकालः, नंदीश्वरः
२. परमेश्वरः ३. वेदः ४. शृंगालः । (सं. न.)
कल्याणं, मंगलम् । वि., कल्याण-मंगल, कारक-
कारिन् ।
—द्रुम, सं. पुं. (सं.) विल्ववृक्षः ।
—नंदन, सं. पुं. (सं.) गणेशः ।
—पुराण, सं. पुं. (सं. न.) शैवपुराणं, पुराण-
ग्रन्थविशेषः ।
—पुरी, सं. स्त्री. (सं.) काशी, शिवतीर्थम् ।
—बीज, सं. पुं. (सं. न.) पारदः, शिवदीर्थम् ।
—रात, सं. स्त्री. (सं. शिवराशिः) शिवचतु-
र्दशी, फाल्गुनकृष्णचतुर्दशी ।
—लिंग, सं. पुं. (सं. न.) शिवप्रतिमाभेदः ।
—लिंगी, सं. स्त्री. (सं.-लिगिनी) शिव, बह्नी-
बल्लिका, ईश्वरलिंगी, चित्रफला ।

- लोक, सं. पुं. (सं.) कैलासः, शिवशैलः ।
—बाहन, सं. पुं. (सं.) शिववृषभः, नदिन् ।
—सुंदरी, सं. स्त्री. (सं.) दुर्गा ।
शिवा, सं. स्त्री. (सं.) दुर्गा २. पार्वती
३. शृंगाली ।
शिवानी, सं. स्त्री. (सं.) पार्वती, गौरी, दुर्गा ।
शिवाला, सं. पुं. (सं.-ल्यः) शिव, मंदिरं-
आयतनं २. देवालयः ३. इमशानम् ।
शिवि, सं. पुं. (सं.) उशीनरनृपपुत्रः, ययाति-
दौहित्रः २. हिंस्रपशुः ३. भृजवृक्षः ।
शिविका, सं. स्त्री. (सं.) याप्यवानं, शिवीरथः,
दे. 'पालकी' ।
शिविर, सं. पुं. (सं. न.) कटकः-कं, निवेशः,
आगन्तुकसैन्यवासः २. पट, मंडपः-कुटी, दे.
'तंबू' ३. दुर्गः-नाम् ।
शिवेतर, वि. (सं.) अशुभ, अमंगल, हानि-
कारक ।
शिविर, सं. पुं. (सं. पुं. न.) कंपनी, शीतः,
हिमकूटः, कोटनः (माष तथा फाल्गुन)
२. तुषारः, तुहिनम् । वि., शीत, शीतल,
उष्णताशून्य ।
—कर, सं. पुं. (सं.) हिमांशुः, चंद्रः ।
—काल, सं. पुं. (सं.) शीतर्तुः, शीतकालः ।
शिशु, सं. पुं. (सं.) स्तनधरः, स्तनपः, बरुः,
बालकः, दारकः, उत्तानशयः, डिम्बः,
अपत्यम् ।
शिशुता, सं. स्त्री. (सं.) शिशुत्वं, शैशवं,
बाल्यं दे. ।
शिशुपाल, सं. पुं. (सं.) चेदिराजः, द्रमघोष-
सुतः, वैधः ।
—घष, सं. पुं. (सं. न.) महाकविमाघप्रणीत-
महाकाव्यविशेषः ।
शिष्ट, वि. (सं.) सम्य, भद्र, श्रेष्ठ, सुशील
२. धर्मशील ३. शांत ४. बुद्धिमत ५. शालीन,
व्यवहारनिपुण ६. प्रख्यात ७. आज्ञाकारिन् ।
शिष्टता, सं. स्त्री. (सं.) सभ्यता, भद्रता,
सुशीलता, श्रेष्ठता २. अधीनता ।
शिष्टाचार, सं. पुं. (सं.) सदाचारः, सद्ब्यव-
हारः २. सत्कारः, संमानः ३. विनयः, प्रश्रयः
४. उपचारः, आचारः, यथाविधि वर्तनं
५. आतिथ्यं, आतिथेयम् ।
शिव्य, सं. पुं. (सं.) छात्रः, अति-वासिन्, सद्-

विद्याधिन्, शिक्षाधिन् २. अनु, गामिन्, यायिन् ।

शिशुः, सं. स्त्री. (फा.) शरन्व्यं, लक्ष्यम् ।

—शोधना, मु., लक्ष्ये दृष्टि बन्धु (क्. प. अ.) ।

श्रीकर, सं. पुं. (सं.) पवनान्निप्रेरित-जलकणः, तुषारः २. अवश्यायः, दे. 'ओस' ३. स्वल्प-वृष्टिः (स्त्री.), दे. 'फुहार' (१) ।

श्रीघ्न, क्रि. वि. (सं. श्रीघ्नं) आशु, सचः, सपदि, अनिरेण, अविलम्बेन, झटिति ।

—कारी, वि. (सं. रिन्) विलम्बासह, आशु-कारिन् ।

—कोपी, वि. (सं. पिन्) कोपन, आशुकोधिन् ।

—गामी, वि. (सं. गिन्) द्रुतगामिन्, आशु ।

—चेतन, वि. (सं.) तीव्रबुद्धि ।

—वेधी, सं. पुं. (सं. धिन्) लघुहस्तः ।

श्रीघ्नता, सं. स्त्री. (सं.) त्वरा, क्षिप्रता, लाघवं, तरस-रहस् (न.), जवः, वेगः, रंभसः-मन् ।

—करना, क्रि. अ., त्वर् (भ्वा. आ. से.), सत्वरं-झटिति कृ ।

शीत, वि. (सं.) शीतल, शिशिर, हिम, तुषार, उष्णत्वशून्य २. शिथिल, दीर्घमूत्रिन् । सं. पुं. (सं. न.) शीतः, शीतर्तुः, शीतकालः, शिशिरः, हिमागमः २. शीतता, हिमता, शैत्यं ३. अवश्यायः, तुषारः ४. प्रतिश्यायः, दे. 'जुक्ताम' ५. जलम् ।

—कटिबंध, सं. पुं. (सं.) कर्कमकररेखापर-वर्तिनी अतिशीघ्री भूभागौ (पुं. द्वि.) ।

—काल, सं. पुं. (सं.) दे. 'शीत' सं. पु. (१) ।

—किरण, सं. पुं. (सं.) शीत-हिम-करः-रश्मिः-अंशुः-पुतिः, चंद्रः ।

शीतता, सं. स्त्री. (सं.) शैत्यं, शीतं-तलम् ।

शीतल, वि. (सं.) दे. 'शीत' वि. । २. शीतं, शमन्वित ३. संतुष्ट, प्रसन्न ।

शीतलता, सं. स्त्री. (सं.) दे. शीतता ।

शीतला, सं. स्त्री. (सं.) विस्फोटकरोगः, विस्फोटा, मस्त्रिका, शीतली, बसंतरोगः, दे. 'चेचक' २. वसंतविस्फोटकादीनामधिष्ठात्री देवी ।

—चाहन, सं. पुं. (सं. न.) गर्दभः, खरः ।

शीतांशु, सं. पुं. (सं.) चंद्रः २. कर्पूरः-रत्न ।

शीर, सं. पुं. (फा.) क्षीरं, दुग्धं, दे. 'दूध' ।

शीताकुल, वि. (सं.) शीत-शैत्य-हिम-आकुल-अदित-पीडित-विह्वल ।

शीरा, सं. पुं. (फा.) दे. 'शरवत' २. दे. 'चशनी' ।

शीरी, वि. (फा.) मधुर २. मिव ।

शीरीनी, सं. स्त्री. (फा.) मिष्टान्नं, दे. 'मिठाई' २. माधुर्यम् ।

शीर्ष, वि. (सं.) कुश, क्षीणतनु, क्षाम, २. मग्न, खंडित, ३. च्युत ४. जीर्ण, विदीर्ण ५. म्यान, विरस ।

शीर्षता, सं. स्त्री. (सं.) कुशता, दीर्घत्वं, जीर्णता, विदीर्णता ।

शीर्ष, सं. पुं. (सं. न.) शिरस् (न.), दे. 'शिर' २. ललाट, दे. 'माथ' ३. शिखरं ४. अग्रभागः ।

शीर्षक, सं. पुं. (सं. न.) अग्रःक्षरपंक्तिः, शिरः पंक्तिः (स्त्री.) २. शिरस्त्रं, दे. 'खोद' ।

शील, सं. पुं. (सं. न.) चरित्रं, आचरणं, वृत्तिः (स्त्री.) ३. स्वभावः, प्रकृतिः (स्त्री.) ४. सदाचारः, सच्चरित्रम् ५. सत्, स्वभावः-प्रकृतिः (स्त्री.) ६. इदमसार्द्धं ७. संकोचः, अदरः वि. पर-परावण (उ. दानशील) ।

शीलवान, वि. (सं. वत्) सदाचारिन्, सद्गुणं २. सत्स्वभाव, कोमलप्रकृति, सुशील ।

शीशम, सं. स्त्री. (फा.) शिशया, पित्रि-च्छला, पिपला, कपिला, भस्मगर्भा ।

शीशमहल, सं. पुं. (फा. शीशा + अ. महल) काचस्फोटक-अवनं २. काचकोष्ठः, आदर्शावासः ।

—का कुत्ता, मु., उम्भतः, बाहुलः ।

शीशा, सं. पुं. (फा.) काचः, दे. २. आदर्शः, सुकुरः, इर्षयः, दे. ३. काचफलकः-कम् ।

शीशी, सं. स्त्री. (फा. शीशा) काचकूपी ।

—सुंधाना, औषधगण्डेन मूर्च्छं (प्रे.) ।

शुंडो, सं. स्त्री. (सं.) कटुग्रन्थिः, दे. 'सोंड' ।

शुक्र, सं. पुं. (सं.) भीरुः, अक्रतुंडः, दे. 'तोता' २. नहपि-व्यासपुत्रः ।

शुक्ति, सं. स्त्री. (सं.) मुक्तामातृ (स्त्री.), दे. 'सीपी' ।

—बीज, सं. पुं. (सं. न.) मौक्तिकं, शुक्ता-मणिः ।

शुक्र, सं. पुं. (सं.) सितः, श्वेतः, काव्यः, कविः, भार्गवः, दैत्यगुरुः २. अग्निः ३. ज्येष्ठ-मासः ४. शुक्रवासरः । (सं. न.) बीजं, वीर्य-

शुक्र

[१७०]

शुभ

रेतस् (न.) २. बल, सामर्थ्यम् । वि. (सं.) भासुर, देदीप्यमान २. स्वच्छ, उज्वल ।

शुक्र, सं. पुं. (अ.) धन्यवादः, कृतज्ञता-प्रकाशः ।

—गुणार, वि. (अ. + फा.) कृतज्ञ, दे. ।

—गुणारी, सं. स्त्री. (अ. + फा.) कृतज्ञता ।

शुक्ल, वि. (सं.) धवल, सित, श्वेत, दे. 'सफेद' ।

—पक्ष, सं. पुं. (सं.) शुक्लकः, दे. 'पक्ष' में ।

शुक्लता, सं. स्त्री. (सं.) धवलता, दे. 'सफेदी' ।

शुगल, सं. पुं. (अ.) दे. 'शगल' ।

शुचि, वि. (सं.) वि-शुद्ध, पवित्र, पूत २. उज्वल, निर्मल ३. निर्दोष, निष्पाप ४. शुद्ध मानस ।

शुचुरसुर्ग, सं. पुं. (फा.) * उद्भुक्तुः ।

शुदनी, सं. स्त्री. (फा.) नियतिः (स्त्री.), भवितव्यता ।

शुद्ध, वि. (सं.) जेवल, स्वच्छ, मिश्रणशून्य २. उज्वल, श्वेत ३. वृद्धिरहित, यथातथ, यथार्थ ४. निर्दोष ५. पूत, पवित्र, पावन, मेध्य ।

—करना, किं. स., परि-पू (कृ. व. से.), शुचोक्त । परि-वि-सं-, शुष् (प्रे.), निर्मली-कृ २. प्रतिसमा-समा-धा (जु. व. अ.), वृद्धि-रहित विधा (जु. व. अ.) ।

शुद्धता, सं. स्त्री. (सं.) शुचिता, शौचं, पवित्रता, पूतता, वि-शुद्धिः (स्त्री.) २. निर्दोषता, यथार्थता ।

शुद्धि, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'शुद्धता' (१) । २. स्वच्छता, नैर्मल्यं ३. वैदिकधर्मप्रवेशसं-स्कारः ।

—पत्र, सं. पुं. (सं. न.) वृद्धिदर्शकपत्रम् ।

शुभहा, सं. पुं. (अ.) संदेहः २. अमः ।

शुभ, वि. (सं.) मंगल, हित, कल्याण २. उत्तम, भद्र । सं. पुं. (सं. न.) मंगलं, हितं, कल्याणम् ।

—कर्म, सं. पुं. (सं. मन् न.) सुकृत्यं, पुण्यम् ।

—यज्ञी, सं. स्त्री., सांगणिकसुहृद्-नैम ।

—चित्तक, वि. (सं.) द्वितीयं, द्वित्वित्तक ।

—दर्शन, वि. (सं.) प्रिय-वृ, दर्शनं, सुन्दर ।

—फल, सं. पुं. (सं. न.) सुपरिणामः ।

शुभ्र, वि. (सं.) श्वेत, शुक्ल, भासुर ।

—कर, सं. पुं. (सं.) शुभ्र-भानु-नरिमः, चन्द्रः ।

शुभ्रता, सं. स्त्री. (सं.) शुक्लता, भासुरता ।

शुमार, सं. पुं. (फा.) 'गणनं', संकलनम् ।

शुमाल, सं. पुं. (अ.) उदीची, दे. 'उत्तर' (दिशा) ।

शुमाली, वि. (अ.) उत्तर, उदीचीन, उत्तर-दिश्य-संबन्धिन ।

शुरू, सं. पुं. (अ.) उपकमः, आरंभः दे. २. प्रभावः, आदिः ।

शुल्क, सं. पुं. (सं. पुं. न.) षट्पथादीनां करः २. वरात् शब्दोऽर्थः ३. युक्तं, दे. 'दहेज' ४. पणः, ग्लहः ५. मूल्यं ६. भाटं, भाटकं ७. प्रतिफलं, वेतनम् ।

शुश्रूषा, सं. स्त्री. (सं.) परिचर्या, सेवा दे. २. श्रवणेच्छा ।

शुष्क, वि. (सं.) निर्जल, आर्द्रहारहित, वान २. विन्ती-अ-रस, निःस्वाद ३. खेदकर, अस्विकर ४. मोघ, निरर्थक ५. रूक्ष, स्नेहहीन ६. जीर्णं, दीर्घं ।

शुष्कता, सं. स्त्री. (सं.) शोषः, शुष्कता २. नीरसता ३. अरोचकता ४. रूक्षता ५. जीर्णता ।

शुकर, सं. पुं. (सं.) वराहः, दे. 'सुकर' ।

शुद्ध, सं. पुं. (सं.) वृषलः, दासः, पादजः, पशुः, पत्नः, जयन्तः, द्विजमेवकः, उपासकः, चतुर्थः २. निकृष्टः ३. सेवकः ।

शुद्धक, सं. पुं. (सं.) मृच्छकटिकरचयिता महाकविः २. शुद्धः ३. शंभुकः, तपस्विशुद्ध-विशेषः (रामायण) ।

शुद्धा, सं. स्त्री. (सं.) शुद्धजातेः स्त्री ।

शुद्धी, सं. स्त्री. (सं.) शुद्धस्य पत्नी ।

शुन्ध, वि. (सं.) रिक्त, बशिक, शून्य-रिक्त-गर्भ-नध्य २. निराकार ३. असत् ४. रहित ।

सं. पुं. (सं. न.) आकाशः-शूनं, दे. २. विदुः, खं ३. रिक्त-पक्षांत-निर्जनं, स्थानं ४. अभावः ।

शून्यता, सं. स्त्री. (सं.) शून्यत्वं, रिक्तता ।

शुष, सं. पुं. (सं. शर्पः-धैः) शर्पः, कुल्यः, प्रस्फोटनं-नी, दे. 'शार्प' ।

शूर, सं. पुं. (सं.) दे. 'वीर' ।

शूरण, सं. पुं. (सं.) दे. 'धूरण' ।

शूरता, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'वीरता' ।

शूर्प, सं. पुं. (सं. पुं. न.) दे. 'शुप' ।

—कर्ण, सं. पुं. (सं.) गजः २. गणेशः ।

शु ल

[१७८]

शैतान

—जख्वा, सं. स्त्री. (सं.) रावणभगिनी ।
 शूल, सं. पुं. (सं. पुं. न.) उदरवेदना, जठर-
 श्वा, वातरोगभेदः २. पीडा, क्लेशः
 व्यथा ३. कुंतः, प्रासः ४. शूलं, त्रिशूलं
 ५. ध्वजः ६. वृत्तुः ७. अयःशूलः ८. शलाका
 ९. दे. 'शुली' ।
 —घारी, सं. पुं. (सं. रिन्) शूल, धर-ग्राहिन-
 पाणिः, शिवः ।
 शूली, सं. पुं. (सं. लिन्) शिवः, शूलपाणिः
 २. शशकः ३. शूलतः । सं. स्त्री., दे. 'शुली' ।
 शूलला, सं. स्त्री. (सं.) शूललः-लं, निगडः,
 बंधः, बंधनं २. क्रमः, परंपरा ३. श्रेणी, पंक्तिः
 (स्त्री.) ४. मेखला, पुंस्तद्विखलबन्धः ५. कांची,
 रत्न(स)ना ।
 —शुद्ध, वि. (सं.) शुद्धलित, निगडित २. क्रम-
 श्रेणी, बद्ध ।
 शृंग, सं. पुं. (सं. न.) विषणं, दे. 'सींग'
 २. सानुः, कूटः-दं, शिखरं, शैलाग्रं ३. वाय-
 भेदः ४. कामोत्तेजना ५. क्रीडानलयंत्रं (पिच-
 कारी, दे. रघुवंश १६/७०) ६. दे. 'कंगूरा' ।
 शृंगार, सं. पुं. (सं.) रसविशेषः (सा.)
 २. मैथुनस्पृहा ३. मंडनं, भूषणं, प्रसाधनं,
 अलंकरणं, परिष्कारणं ४. संभोगः, मैथुनं
 ५. मंडन-प्रसाधन, साधन-द्रव्यं (चंद्रनादि)
 दे. 'घोडश शृंगार' ।
 —करना, कि. स., अलंकृत, परिष्कृत, प्रसाध
 (प्रे.), भूषण-द्रव्यं (सु.) ।
 —योनि, सं. पुं. (सं.) मदनः, कंदर्पः ।
 शृंगी, सं. पुं. (सं. गिन्) गजः २. वृक्षः
 ३. पर्वतः ४. ऋषिविशेषः ५. शृङ्गवत् पशुः
 ६. वाद्यभेदः ७. महादेवः ।
 शृंगाल, सं. पुं. (सं.) गोमासुः, क्रोडः, जंबु-
 (शू)कः, दे. 'गोदड' । वि., भीरु २. खल
 ३. निशुंर ।
 शूष, सं. पुं. (अ.) श्रीमोहंमदवंशजानामुपाधिः
 २. यवनवर्गविशेषः ३. यवनोपदेशकः ४. वृद्धः ।
 —खिल्ली, सं. पुं. (अ. + हि.) मरुः, जडः
 २. मंडः, विदूषकः ।
 शूखर, सं. पुं. (सं.) शिरोमाख्यं, शीर्षमाला
 २. शिरोभूषणमात्रं ३. शीर्षं ४. किरीटः,
 मौलिः ५. पर्वताग्रं, सानुः ।
 शूखी, सं. स्त्री. (अ. शूखह्) दर्पः, गर्वः
 २. विकल्पनं, गर्वोक्तिः (स्त्री.) ।

—वाङ्ग, वि. (हि. + फा.) विकरथक, अरुम-
 श्लाघिन् २. वृत्त ।
 —खकना या निकलना, मु., गर्वः खंड् (कर्म.)
 मदः व्यपगम (भ्वा. प. अ.) लभूम् ।
 —बघारना, मारना या खकना, मु., विकरथ
 (भ्वा. आ. से.), आरमानं श्लाघ् (भ्वा. आ.
 से.) ।
 शेष, सं. पुं. (सं.) शेष(क)स् (न.), शेषः-
 कं, 'मिह' २. मुष्कः, वृषणः, शुक्रार्थिः ३. पुच्छं,
 लांगूलं, लज्जन ।
 शेषुषी, सं. स्त्री. (सं.) बुद्धिः-भीः-मतिः (स्त्री.),
 प्रज्ञा ।
 शेषर, सं. पुं. (अं.) अंशः, भागः ।
 —होखडर, सं. पुं. (अं.) अंशिन्, भागिन् ।
 शेर, सं. पुं. (फा.) द्वीपिन्, मेरुः, सृगताकः,
 शार्दूलः, व्याघ्रः दे. २. केसरी, सिंहः दे.
 ३. वीरः, शूरः ।
 —पंजा, सं. पुं. (फा. + हि.) दे. 'बघनखा' ।
 —बखा, सं. पुं. (फा. + हि.) सिंहव्याघ्रः,
 पोतः शावकः २. वीरः, शूरः ।
 —बबर, सं. पुं. (फा.) दे. 'शेर' (२) ।
 —मद, वि. (फा.) वीर, निर्भय ।
 —होना, मु., भयं मुच् (तु. प. अ.), निर्भय
 (वि.) मू ।
 शेर, सं. पुं. (अ.) कवितायाश्चरणद्वयं (उर्दू,
 फारसी आदि) ।
 शेरनी, सं. स्त्री. (फा. शेर) व्याघ्री, द्वीपिनी
 २. सिंही, केसरिणी इ. ।
 शेरवानी, सं. स्त्री. (देश.) *आजानुलंबी
 कंचुकभेदः ।
 शेष, सं. पुं. (सं.) अनंतः, सर्पराजः, शेषनागः,
 फणीन्द्रः, फणीश्वरः २. परमेश्वरः ३. लक्ष्मणः
 ४. बलरामः ५. अंतरम् (गणित) ६. अन्तः
 ७. परिणामः ८. गजः ९. वृत्तुः १०. नाशः ।
 (सं. पुं. न.) अव-परि-शेषः, उद्धर्तः, अव-
 शिष्ट-उपयुक्तोत्तर, वस्तु (न.) २. अध्याहार्य-
 शब्दः । वि., अवशिष्ट २. समाप्त ३. इतर,
 अपर, अन्य ।
 —नाग, सं. पुं. (सं.) दे. 'शेष' सं. पुं. (१) ।
 —शाथी, सं. पुं. (सं. शाथिन्) विष्णुः ।
 शेषांश, सं. पुं. (सं.) १-२ अवशिष्ट-अंतिम-
 भागः ।
 शैतान, सं. पुं. (अ.) ईश्वर-विरोधी देवविशेषः

शैतानी

[१७६]

शोरवा

(संभो धर्म) २. भूतः, प्रेतः ३. क्रूरः ४. दुष्टः, खलः ५. कामः, मदनः ६. क्रोधः ।

शैतानी, सं. स्त्री. (अ. शैतान) दुष्टता, कुचेष्टा ।

शैथ्य, सं. पुं. (सं. न.) शीतता, शीतलत्वम् ।

शैथिल्य, सं. पुं. (सं. न.) शिथिलता, दे. ।

शैल, सं. पुं. (सं.) गिरिः, अदिः, पर्वतः, दे. ।
२. मंढशैल, दे. 'चट्टान' ३ दे. 'शिलाजीत' ।

—कुमारी, सं. स्त्री. (सं.) अद्वितनया, शैल-कन्याया, दे. 'पार्वती' ।

शैली, सं. स्त्री. (सं.) भाषण-लेखन-रीति-सरणिः (शोर्नी स्त्री.) प्रकारः २. प्रधा, रीतिः ३. परिपाटिः (स्त्री.), प्रणाली ४. चर्या, वर्तन, वृत्तिः (स्त्री.) ।

शैलेंद्र, सं. पुं. (सं.) हिमगिरिः, हिमालयः ।

शैव, सं. पुं. (सं.) शिव, भक्त-उपासकः-अनुयायिन् २. संप्रदायविशेषः । वि. (सं.) शिव-संबन्धिन् ।

शैव्या, सं. स्त्री. (सं.) सत्यहरिश्चन्द्रपत्नी ।

शैशव, सं. पुं. (सं. न.) शिशुता-त्वं, बाल्यम् ।
वि. (सं.) बाल-बाल्य-संबन्धिन् ।

शोक, सं. पुं. (सं.) आर्तिः (स्त्री.) अधिः, दुःखं, परित्यागः, खेदः, शुच् (स्त्री.), शुचा, मन्द्युः, निस्समः, शोचनम् ।

शोकार्त्त, वि. (सं.) शोकिन, शोक-आकुल-आतुर-ग्रस्त-उपहत-विह्वल, सशोक, परितप्त ।

शोष, वि. (फा.) धृष्ट, वियात २. चंचल, चपल ३. गाढ, भासुर (रस) २. दुर्लभिन, कुचेष्टक ।

शोषत्री, सं. स्त्री. (फा.) पाष्टर्यं, वैयात्यं २. चाकृत्यं ३. गाढता, प्रखरता ।

शोच, सं. पुं. (सं. शोचनं) शोकः २. चिन्ता ।

शोचनीय, वि. (सं.) आपन्न, दुःख, आर्त्त, निरानन्द २. सांशयिक, संदिग्ध ।

शोण, सं. पुं. (सं.) रक्त-लोहित-वर्ण-रंगः २. नदविशेषः, हिरण्यवाहः ३. भाणिक्यं ४. रक्तक्षुः ५. अग्निः ६. लोहिताश्वः । सं. न., रुचिरं २. सिद्धरम् ।

—रत्न, सं. पुं. (सं. न.) पद्मरागमणिः, शोणितोपलः ।

शोणित, सं. पुं. (सं. न.) रुचिरं, रक्तं दे. ।
वि. (सं.) लोहित, रक्त, शोण ।

शोभिमा, सं. स्त्री. (सं.-मन् पुं.) रक्तिमन्, लोहितिमन्-अरुणिमन् (पुं.) । दे. 'खाली' ।

शोध, सं. पुं. (सं.) शोकः, शोधकः, श्वयङ्गुः ।

शोध, सं. पुं. (सं.) शोधनं, निस्तारः (अणादि का) २. अनुसंधानं, अन्वेषणं ३. शुद्धिः (स्त्री.), शुद्धिसंस्कारः ४. परीक्षा-क्षणम् ।

शोधक, सं. पुं. (सं.) पावन, शोधन, मलहर २. अन्वेषक, अनुसंधातु ३. दे. 'सुधारक' ।

शोधन, सं. पुं. (सं. न.) पावनं, संस्करणं, निर्मलीः-विषी-शुची-करणं, मार्जनं, प्रक्षालनं, धावनं २. प्रतिसमा-समा-धानं, द्रुटिनिरसनं ३. धानूर्ना निर्दोषीकरणं ४. अन्वेषणं, अनुसंधानं ५. परीक्षणं ६. अणनिस्तारणं ७. दंडः ८. प्रायश्चित्तं ९. विरेचनं १०. निबूकं ११. व्यवकलनम् ।

शोधना, क्रि. स. (सं. शोधनं) दे. 'शुद्ध करना' (१-२) ३. औषधार्थं धातुं संस्कृ ४. अग्निष् (दि. प. से.), अनुसंधा (जु. उ. अ.) । सं. पुं., दे. 'शोधन' ।

शोधनी, सं. स्त्री. (सं.) सं- मार्जनी, बहुकरी ।

शोधनीय, वि. (सं.) पवनीय, मार्जनीय २. निस्तार्य, प्रत्यर्पयितव्य ३. अनुसंधेय ।

शोभन, वि. (सं.) सुन्दर, रम्य, रमणीय, २. उत्तम, श्रेष्ठ ३. उचित, उपयुक्त ४. मांगलिक, मंगल्य, मंगलीय ।

शोभा, सं. स्त्री. (सं.) कांतिः-पुतिः-दीप्तिः (स्त्री.), भा, भासा, श्रीः (स्त्री.) २. छवी-विः (स्त्री.), सुन्दरता, रुचिरता ३. भूषा, परिष्किया ४. वर्णः, रंगः ५. श्रेष्ठगुणः ।

—देना, क्रि. अ., राज्-ष्टुम् (भ्वा. आ. से.) ।

शोभायमान, वि. (सं. शोभमान) राजमान, आजमान, भासुर, देवीप्यमान, सुन्दर २. विद्यमान, उपस्थित ।

शोभित, वि. (सं.) शोभाम्बित, सुन्दर, छविमत् २. मंडित, भूषित ३. उपस्थित, विद्यमान ।

शोर, सं. पुं. (फा.) मक्षरवः, कलकलः, कोलाहलः दे. ।

—मचाना, क्रि. अ., कोलाहलं कृ, उक्कुश् (भ्वा. प. अ.) ।

शोरवा, सं. पुं. (फा.) यूषः-धं, धपः, लासः, *रसः २. मांसरसः, दे. 'बखनी' ।

शोरा, सं. पुं. (फ़. शोर) यवक्षारः, विष-
विद्, विपीतिद्, पाक्वः ।
शोरे का तेजाब, सं. पुं., भूधिकाम्लः, पाक्व-
द्रावकं, नशिक-यवक्षारः, अम्लः ।
शोला, सं. पुं. (अ.), ज्वाला, अचिसु (न.) ।
शोशा, सं. पु. (फ़ा.) अद्भुत-विलक्षण, वाचां
२. व्यंग्योक्तिः (स्त्री.) ३. कलहोत्पादिका वाचां ।
शोषक, वि. (सं.) रसाकर्षक, शोषणकर
२. क्षय-ध्वंस-कारिन् ।
शोषण, सं. पुं. (सं. न.) रसाकर्षणं, शुष्की-
करणं २. क्षयणं ३. वि., नाशनं, वि., ध्वंसनं
४. सारोद्धारः, ५. चूषणम् ।
शोहदा, सं. पुं. (अ.) दे. ' लुधा ' ।
शोहरत्, सं. स्त्री. (अ.) ख्यातिः-प्रसिद्धिः
(स्त्री.) ।
शोहरा, सं. पुं. (अ.) शोहरत्, दे. ।
शोक, सं. पुं. (अ.) अभि., अचिः (स्त्री.),
प्रवृत्तिः (स्त्री.), प्रवणता २. लालसा, उत्कांठा,
औत्सुक्यम् ।
—करना, मु., मुञ् (रु. आ. अ.) ।
—चराना, मु., तीव्रम् अभिलषु (भ्वा. प. से.) ।
—पूरा करना, मु., कामं उपभोगेन शम् (प्रे.) ।
—से, मु., सानर्दं, सहर्षं, समोदनम् ।
शौकीन, सं. पुं. (अ. शोक) प्रसाधन-शृङ्गार-
सुवेश-प्रियः, वेषाभमनिम्न, छेकः २. वेद्या-
गामिन् ३. प्रेमिन्, अनुरागिन्, स्नेहिन्, अभि-
लषिन् ।
शौकीनी, सं. स्त्री. (हिं. शौकीन) वेषाभिमानः,
शृङ्गारप्रियता २. वेद्यागमनम् ।
शौच, सं. पुं. (सं. न.) शुद्धता, शुद्धिः
(स्त्री.), पवित्रता, पूतता, शुचिता-स्वं, पुण्यता,
निष्पापता २. प्रातः-कृत्यानि-कार्याणि (न.
बहु०) (शौच, स्नान, मंध्या आदि) ३. पुरी
घोत्सर्गः, ह्यदनम् ।
शौस्तेनी, सं. स्त्री. (सं.) १-२. प्राकृत-अष-
अंश-भाषाविशेषः ।
शौर्यं, सं. पुं. (सं. न.) शूरता, वीरता,
पराक्रमः ।
शौहर, सं. पुं. (फ़ा.) पतिः, भर्तृ ।
श्मशान, सं. पुं. (सं. न.) विक्र-वर्तन-काननं,
अंतश्चय्या, शत्रानकं, रुद्राक्रीडः, दाहसरः
(पुं.), शवसानम् ।

—वासी, सं. पुं. (सं. सिन्) शिवः,
२. चांडालः ।
श्मश्रु, सं. पुं. (सं. न) कूर्चः, नै, नोटः,
व्यंजनं, मुखरोमन् (न.), शिगिन् (न.),
शिषाणं, दे. ' दाडी ' ।
—वर्धक, सं. पुं. (सं.) नापितः ।
श्याम, सं. पुं. (सं.) श्रीकृष्णः २. कृष्णवर्णः ।
वि. (सं.) काल, कृष्ण २. कालनील, कृष्ण-
मेचक ।
—सुन्दर, सं. पुं. (सं.) श्रीकृष्णः ।
श्यामता, सं. स्त्री. (सं.) कालिगन्-कृष्णिगन्
(पुं.) २. नीलता, मेचकता ।
श्यामल, वि. (सं.) काल २. कालीन ।
श्यामा, सं. स्त्री. (सं.) राधा-धिका २. शकुन्ती,
कालिका, कृष्णा (खगभेदः) ३. अप्रसूता-
गता ४. (तप्तकांचनवर्णाभा) नारी ५. कृष्णा
गौः (स्त्री.) ६. यमुना ७. रात्री ।
श्याल, सं. पुं. (सं.) श्यालकः, भार्या-पत्नी-
भ्रातृ ।
श्यालकी, सं. स्त्री. (सं.) श्यालिका, श्याली,
भार्या-पत्नी, भगिनी ।
श्येन, सं. पुं. (सं.) शशपद-दनः, कपोतारिः,
खगतकः, घाति-रुण, पक्षिन्, नीलपिच्छः ।
श्येनी, सं. स्त्री. (सं.) श्येनिका, नीलपिच्छो-
च्छा ।
श्रद्धा, सं. स्त्री. (सं.) आदरः, संमानः
सत्कारः २. विश्वासः, प्रत्ययः, विश्रंभः
३. निष्ठा, आस्था, भक्तिः (स्त्री.) ।
—करना या—रखना, क्रि. अ. श्रद्धा (जु. उ.
अ.), विश्वास् (अ. प. से.) ।
—हीन, वि. (सं.) अविश्वादिन्, अश्रद्धधान
२. आस्था-निष्ठा-भक्ति-हीन ।
श्रद्धालु, वि. (सं.) श्रद्धा, चतुक्त-अन्विन्,
श्रद्धधान, विश्वादिन्, प्रत्ययिन् २. (स्त्री.)
शोहदवती ।
श्रद्धेय, वि. (सं.) विश्वास-श्रद्धा, पात्र-भास्वदं,
श्रद्धातय्य, पूज्य, सं. मान्य, नमस्य ।
श्रम, सं. पुं. (सं.) परिश्रमः, दे. । २. श्रान्तिः
(स्त्री.) ३. व्यायामः ।
—जल, सं. पुं. (सं. न.) प्र. स्वेदः, श्रम, कथा-
शीकराः (बहु.) दे. ' पसीता ' ।
—जीवी, सं. पुं. (सं. विन्) श्रमिकः, कर्मकरः,
दे. ' मज्दूर ' ।

श्रवण, सं. पुं. (सं. पुं. न.) कर्णः, श्रवः, श्रोत्रं दे. 'कान' सं. न. निशमनं, आकर्णतम् (सं. पुं. स्त्री.) श्रवणनक्षत्रम् (ज्यो.) ।
 श्रवणा, सं. स्त्री. (सं.) श्रवणः-र्णः, मक्षत्र-विशेषः ।
 श्रव्य, वि. (सं.) दे. 'श्राव्य' ।
 श्रान्त, वि. (सं.) क्लान्त, रलान, खिन्न, श्रमार्त्त, अवसन्न, जातश्रम २. शान्त ३. निवृत्त ।
 श्रान्ति, सं. स्त्री. (सं. स्त्री.) श्रमः, आयासः, अवसादः, खेरः ।
 श्राद्ध, सं. पुं. (सं. न.) श्रद्धया क्रियमाणं कर्मन् (न.) २. पितृन् उद्दिश्य श्रद्धया अन्नादिदानं ३. पितृ-आश्रितकृष्ण, पक्षः ।
 श्राप, सं. पुं., दे. 'सराप' ।
 श्रावण, सं. पुं. (सं.) श्रावणिकः, नभः (पुं.) ।
 श्रावणा, सं. स्त्री. (सं.) श्रावणमासीषपूर्णिमा ।
 श्राव्य, वि. (सं.) श्रव्य, श्रान्तव्य, श्रवणाहं, आकर्णनीय, निशमनीय ।
 श्री, सं. स्त्री. (सं.) कमला, लक्ष्मीः दे. २. सरस्वती ३. धनं, संपद (स्त्री.) ४. विभूतिः (स्त्री.), विभवः ५. यशस् (न.) ६. शोभा, प्रभा ७. कांतिः-युतिः (स्त्री.) ८. नामपुरीवांते समानपद श्रीयुत, श्रीमान् ९. वृद्धिः (स्त्री.) १०. साफल्यं, सिद्धिः (स्त्री.) ११. रागभेदः । वि., योग्य २. मनोहा ३. उत्तम ४. मंगल ।
 —कट्ट, सं. पुं. (सं.) शिवः, शंभुः ।
 —खड्ग, सं. पुं. (सं. पुं. न.) हरिचंदनं २. दे. 'शेखरन' ।
 —धर, सं. (सं.) विष्णुः, श्री, निवासः-निकेतनः । वि., तेजस्विन् ।
 —पति, सं. पुं. (सं.) विष्णुः २. श्रीरामः ३. श्रीकृष्णः ४. कुबेरः ५. नृपः ।
 —पथ, सं. पुं. (सं.) राज, मार्गः-पथः ।
 —पाद, वि. (सं.) पूज्य २. संपन्न ।
 —पुण्य, सं. पुं. (सं. न.) लक्षणं, श्रीप्रसूनन् ।
 —कल, सं. पुं. (सं.) बिल्ववृक्षः २. नारिकेलः ३. राजादनीवृक्षः ४. आमलकः-की ।
 —कली, सं. स्त्री. (सं.) आमलकी २. नीली ।
 श्रीमंत, वि. (सं-नद) धनिक, धनाढ्य ।
 श्रीमत्, वि. (सं.) धनवत्, धनिन्, श्रील, २. शोभान्वित, युतिमत् ३. छविमत्, सुन्दर । सं. पुं., विष्णुः २. कुबेरः ३. शिवः ।
 श्रीमती, सं. स्त्री. (सं.) स्त्रीनामपुरीवत्समान-

पदं २. लक्ष्मीः (स्त्री.) ३. राधा । वि., धनाढ्या २. शोभान्विता ३. सुन्दरी ।
 श्रीमान्, सं. पुं. (सं. श्रीमत्) नरनामपुरीवत्समानपदं, श्रीयुत, श्रीयुक्त । दे. 'श्रीमत्' वि. तथा सं. पुं. ।
 श्रीरस, सं. पुं. (सं.) श्रीवेष्टः, दे. 'श्रीवास' ।
 श्रीराग, सं. पुं. (सं.) षड्-रागमध्ये तृतीयो रागः ।
 श्रील, वि. (सं.) लक्ष्मीवत्, धनाढ्य २. श्री-शोभा, युक्त-युत ३. अनदलील, भद्र ।
 श्रीवस्स, सं. पुं. (सं.) विष्णुः २. विष्णुवक्षः-स्थशुक्लवर्णदक्षिणावर्तरोमावली ।
 —लांछन, सं. पुं. (सं.) विष्णुः ।
 श्रीवास, सं. पुं. (सं.) पायसः, इक्षुभूषः, श्रीवेष्टः, सरलद्रवः दे. 'गंधाविरोका' तथा 'शारपीना' २. पञ्च ३. विष्णुः ४. शिवः ।
 श्रीहर्ष, सं. पुं. (सं.) नैषधकाव्यरचयिता २. सम्राट् हर्षवर्द्धनः ।
 श्रुत, वि. (सं.) आकणित, श्रवणगोचरतां गत, निशान्त २. प्र-ख्यात ।
 —कीर्ति, सं. स्त्री. (सं.) शशुचन-पत्नी । वि., कीर्तिवुत, यशस्विन् ।
 श्रुति, सं. स्त्री. (सं.) वेदः २. कर्णः, दे. 'कान' ३. श्रवणं ४. ध्वनिः ५. किंवदंती ।
 —कट्ट, सं. पुं. (सं.) (काव्ये दोषभेदः) कर्क-शशब्दप्रयोगः, दुःश्रवस्त्वन् ।
 —पथ, सं. पुं. (सं.) कर्णः २. वेदोक्तमार्गः ।
 श्रेणी, सं. स्त्री. (सं.) श्रेणिः (स्त्री.), कक्षा, वर्गः, छात्रगणः २. पंक्तिः-क्तिका, विजोली, आली-लिः, आबलि-लीः, राजी-विः, वीथी-थिका, रेखा, लेखा, पाली-लिः (सं. स्त्री.) ३. क्रमः, परंपरा, शृङ्खला ४. समव्यवसायि-संघः ।
 —बद्ध, वि. (सं.) पक्ति, बद्ध-स्थ, वर्गीकृत ।
 श्रेय, सं. पुं. [सं. श्रेयस् (न.)] कल्याणं, आनन्दः, मंगलं २. धर्मः, सुकृतं ३. मोक्षः, समृद्धिः (स्त्री.) ४. कीर्तिः (स्त्री.), यशस् (न.) । वि., भद्रतर, साधीयस्, इत्कृष्टतर २. उत्तम, श्रेष्ठ ३. शुभंकर, मंगल ४. कीर्ति-कर, यशोदायक ।
 श्रेयस्कर, वि. (सं.) कल्याण-दित-मंगल-कारक-कारिन् ।

श्रेष्ठ, वि. (सं.) उत्तम, परम, प्रशस्ततम, वरेण्य, मुख्य, प्रथम, अग्रि(यी)य ३. पूज्य, मान्य ४. बृह, ज्येष्ठ ५. अभिजात, अभिजनवत्, कुलीन ६. आर्य, महानुभाव, महाशय ।

श्रेष्ठता, सं. स्त्री. (सं.) औदार्यं, माहात्म्यं, प्रधानता, मदता, आर्यत्वं, कुलीनता २. उत्तमता, उत्कृष्टता ।

श्रोतव्य, वि. (सं.) दे. 'आन्व्य' ।

श्रोता, सं. पुं. (सं.-ए) श्रावकः, श्रवण-निश्चयन-कर्तृ, आकर्णयितु ।

श्रोत्र, सं. पुं. (सं. न.) श्रवणः-णं, कर्णः, दे. 'कान' ।

श्रोत्रिय, सं. पुं. (सं.) वेद-विद्-पाठकः, छांदसः २. ब्राह्मणजातिभेदः ।

श्रौत, वि. (सं.) श्रुति-वेद, विहित-प्रतिपादित २. वैदिक, छांदस ३. यज्ञीय । (सं. न.) गार्हपत्याहवनीयदक्षिणाग्नयः (बहु.) ।

—सूत्र, सं. पुं. (सं. न.) यज्ञविधायकग्रन्थ-विशेषः ।

श्लाघनीय, वि. (सं.) श्लाघ्य, प्रशंसनीय, दे. २. उत्तम, श्रेष्ठ ।

श्लाघा, सं. स्त्री. (सं.) स्तुतिः-नुतिः (स्त्री.), प्रशंसा, दे. २. चाड (पुं. न.), चाटुक्तिः (स्त्री.) ३. इच्छा ।

श्लाघ्य, वि. (सं.) श्लाघनीय, दे. ।

श्लिष्ट, वि. (सं.) संयुक्त, संलग्न २. आलिंगित ३. अनेकार्थक, श्लेषयुक्त (शब्दादि) ।

श्लीपद, सं. पुं. (सं. न.) पादवस्त्रमीकं, दे. 'श्लीपर्याव' ।

श्लील, वि. (सं.) उत्तम, उत्कृष्ट २. शुभ, भद्र ।

श्लेष, सं. पुं. (सं.) अनेकार्थकशब्दप्रयोगः, शब्दालंकारभेदः (सा.) २. परिंभः, आलिंगनं ३. संयोगः, संधिः ।

श्लेष्मा, सं. पुं. (सं.-मन्) कफः, दे. 'बल-सम' ।

श्लोक, सं. पुं. (सं.) अनुष्टुप्छंदस् (न.) २. पद्यं, छंदस् (न.) ३. यशस् (न.) ४. प्रशंसा ।

शसुर, सं. पुं. (सं.) दे. 'ससुर' ।

शशुर्यं, सं. पुं. (सं.) देवरः २. श्यालः ।

शशू, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'सास' ।

शान, सं. पुं. (सं.) शन, कुक्कुरः, दे. 'कुत्ता' ।

—निद्रा, सं. स्त्री. (सं.) अगाढ़-कुक्कुर-निद्रा-स्वापः ।

शानी, सं. स्त्री. (सं.) कुक्कुरी, शुनी, सरमा, भयी, सारमेयी ।

शापद, सं. पुं. (सं.) हिरण्यशुः ।

शास्य, सं. पुं. (सं.) प्राणाः-असवः (बहु.), दे. 'सास' २. आसरीगः, दे. 'दमा' ।

—धारण, सं. पुं. (सं. न.) आसरीगः, प्राणायामः ।

शासोच्छ्वास, सं. पुं. (सं.) *प्राण-गतिः क्रिया, शंसितोच्छ्वासितम् ।

शिश्र, सं. पुं. (सं. न.) श्वेतं-श्रं, श्वेतकुष्ठम् । वि. (सं.) श्वेत २. शिश्रिन् ।

शिश्री, वि. (सं.-विन्) शिश्र-श्वेतकुष्ठ-युक्त ।

श्वेत, वि. (सं.) धवल, गौर, शुक्ल-वल्, दे. 'सफेद' २. निर्मल, स्वच्छ ३. निर्दोष, निष्कलंक । सं. पुं. (सं.) शुक्लवर्गः २. शैलः ३. शुक्लमहः (सं. न.) रूप्यं, रजतम् ।

—कुष्ठ, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'शिश्र' ।

—कृष्ण, वि. (सं.) सितासित, शुक्लश्याम २. पक्षविपक्ष ।

—केतु, सं. पुं. (सं.) उदालकपुत्रः ।

—प्रदर, सं. पुं. [सं. प्रदरभेदः (स्त्रीरोग)] ।

श्वेतता, सं. स्त्री. (सं.) श्वेतिमन् (पुं.), शुजलता, दे. 'सफेदी' ।

श्वेतांबर, सं. पुं. (सं.) जैनसंप्रदायविशेषः, धवलवेषः ।

ष

ष, देवनागरीवर्णमालाया एकत्रिंशो व्यंजनवर्णः, प्रकारः ।

षड्, सं. पुं. (सं.) दे. 'शंड' (१-२) ।

षट्, वि. (सं. षष्) सं. पुं., उक्ता संख्या, तद्वोधकांकद्वय (६) २. दीपकरागपुत्रः ।

—कर्म, सं. पुं. (सं.-मन्) षट्-ब्राह्मण-

कर्माणि (यजनं, याजनं, अध्ययनं, अध्यापनं, दानं, प्रतिग्रहः) ।

—कोष्ण, सं. पुं. (सं. न.) षड्भुजः । वि., षड्भुज ।

—पद, सं. पुं. (सं.) षड्विंशः, षट्चरणः, षड्भरः ।

पट्क

[१८३]

संकलन

—पट्टी, सं. स्त्री. (सं.) अमरी २. छन्दोभेदः
(छप्पय) ३. पूका ।

—शास्त्र, सं. पुं. (सं. न.) सांख्ययोगन्याय-
वैशेषिकमीमांसावेदांतशास्त्राणि (न. बहु.) ।

—शास्त्री, सं. पुं. (सं. -खित्) षड्दर्शनविद् ।

षट्क, सं. पुं. (सं. न.) षट् इति संख्या
२. षट्स्तसमूहः ।

षडंग, सं. पुं. (सं. न.) वेदांगषट्शास्त्राणि
(शिक्षा, कल्पः, व्याकरणं, निरुक्तं, छन्दस्
(न.), ज्योतिषं) २. षट् शरीरावयवाः
(जघे बाहू शिरो मध्यं षडंगमिदमुच्यते) वि.,
षडवयवयुक्त ।

षडंग्रि, सं. पुं. (सं.) अमरः, षट्पदः ।

षडानन, सं. पुं. (सं.) कातिकेयः, षण्मुखः ।

षडगुण, सं. पुं. (सं. न.) षडगुण्यं, राज्य-
रक्षणस्य षडुपायाः (= संधिः, विग्रहः, यानं,
आसनं, द्वैधीभावः, संश्रयः) । वि., गुणषट्कयुत
२. षडगुणित ।

षड्ज, सं. पुं. (सं.) स्वरसप्तके प्रथमः, चतुर्थो
वा स्वरः (संगीत) ।

षड्दर्शन, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'षट्शास्त्र' ।

षड्यंत्र, सं. पुं. (सं.) कूटः-टं, कूट-
युक्तिः (स्त्री.)-उपायः उपजापः, *षड्यंत्रं,
*षट्कर्तृ, कुमंत्रणा ।

षड्रस, सं. पुं. (सं. -रसं, -रसाः) रसषट्कं
(= मधुरः, अम्लः, लवणः, कटुः, तिक्तः,
कषायः) ।

षट्पु, सं. पुं. (सं. न.) षट्बर्गः, विकारषट्कं
(= कामः क्रोधस्तथा लोभो मदमोहौ च
मत्सरः) ।

पट्टी, सं. स्त्री. (सं.) शुक्लकृष्णपञ्चयोः षष्ठी तिथिः
(स्त्री.) २. संबन्धविभक्तिः (व्या.) ३. कात्या-
यनी, दुर्गा ।

षाड्गुण्य, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'षड्गुण'
सं. पुं. ।

षोडश, वि. तथा (सं.) 'सोलह' ।

—कला, सं. स्त्री. (सं. बहु.) चंद्रमण्डलस्य
षडधिकदश भागाः (= अमृता, मानदा, पूषा,
जुष्टिः, पुष्टिः, रतिः धृतिः, शशिनो, चन्द्रिका,
कांतिः, ज्योत्स्ना, श्रीः, प्रीतिः, अंगदा, पूर्णा,
पूर्णाभृता = १६ कला) ।

—शृङ्गार, सं. पुं. (सं. बहु.) षोडशसंख्याकानि
प्रसाधनसाधनानि ।

(अंग शुची, मंजन, बसन, मांग, महावर, केश ।
तिलक भाल, तिल चिबुकर्म, भूषण, मेंहदीवेष ।
मिस्सी, काजल, अर्गजा, बीरी और सुगंध ।
पुष्पकली, युत हौय कर तव नवसप्त निबन्ध ।)

—संस्कार, सं. पुं. (सं. बहु.) धार्मिककृत्यभेदः
(= गर्भाधानपुंसवनसीमन्तोन्नयनजातकर्मनाम-
करणानिष्क्रमणाश्राशानचूडाकर्मकर्णविधोपनयन
वेदारंभसमावर्तनत्रिवाहवानप्रस्थसन्ध्यासांत्येष्टि-
संस्काराः (स्वामी दयानन्द) ।

षोडशी, सं. स्त्री. (सं.) षोडशवर्षा युवतिः
(स्त्री.) २. प्रेतक्रियाभेदः ।

षोडशोपचार, सं. पुं. (सं. बहु.) षोडशपूजनं,
(= आसनं स्वार्गतं पाथमर्धमाचमनीयकम् ।
मधुपर्कामस्तानं वसनाभरणानि च ॥
गंधपुष्पे धूपदीपौ नैवेद्यं बंदनं तथा ।
प्रयोजयेदन्वयार्था उपचारास्तु षोडश ॥)

स

स, देवनागरीवर्णमालाया द्वात्रिंशो व्यंजनवर्णः
सकारः ।

संकट, सं. पुं. (सं. न.) आपद्-विपद्-आपत्तिः-
विपत्तिः (स्त्री.) २. दुःखं, कष्टं ३. जन-समूहः-
संमर्दः ४. गिरिद्वारं, दे. 'दर' ५. संवाधपथः ।

संकटापह, वि. (सं.) आपद्-विपद्-आपत्ति-
ग्रस्त ।

संकटोत्तीर्ण, वि. (सं.) कष्ट-क्लेश-विपत्ति-
मुक्त-रहित ।

संकर, सं. पुं. (सं.) सन्मिश्रणं, संमिलनं

२. सांकरिकः, मिश्रजः, संकरजः, ३. अथर्था-
विवाहः ।

संकरता, सं. स्त्री. (सं.) समिश्रता, सांकर्यं,
कमभंगः, व्यतिकारः, अस्तन्वयस्तता ।

संकल, सं. स्त्री. (सं.) गृहला, दे. ।

संकलन, सं. पुं. (सं. न.) संग्रहणं, संचयनं
२. संचयः, राशिः, ३. परिगणनं, परिसंख्या
३. संग्रहः, संग्रहग्रन्थः ।

—करना, कि. स., संकल् (लु.), संग्रद् (क्.
प. से.), समाह (स्वा. प. अ.) ।

संस्कृत

[२५४]

संग

संस्कृत, वि. (सं.) संगृहीत, संचित २. परि-
संख्यात, परिगणित ३. राशी-एकत्री-कृत ।
संस्कल्प, सं. पुं. (सं.) त्रिकीर्ण, भावः, विचारः,
इच्छा, कामः २. विशिष्टमन्त्रपूर्वक,दानं वित-
रणं-उत्सर्जनं ३. मंत्रविशेषः ४. निश्चयः,
अवधारणं, अधवसायः ।
—करना, कि. स., निश्चि (स्वा. प. अ.), दृष्टं
अवध (चु.), संकल्प (प्रे.) २. संकल्पमन्त्र-
पूर्वकं वित् (भ्वा. प. से.), दा ।
संकाश, वि. (सं.) तुल्य, सदृश २. निकट-
समीप, वर्तिन् । (सं. पुं.) सामीप्यं, निकल्यम् ।
संकीर्ण, वि. (सं.) संवाध, संवट, संकुचित
२. मिश्रित, संमिश्र, संसृष्ट ३. क्षुद्र, तुच्छ
४. संकुल, निचित, व्याप्त, समा-आ-वीर्ण ।
संकीर्णता, सं. स्त्री. (सं.) संवाधता २. मिश्रि-
तात्वं ३. संकुलता ४. क्षुद्रता, नीचता ।
संकीर्तन, सं. पुं. (सं. न.) (देवादीनां)
गुणगानं, कीर्तिकथनम् ।
संकुचित, वि. (सं.) संकीर्ण, संवाध २. सलज्ज,
सत्रप ३. कदर्यं, क्लिप्तचल ४. संहृत, संपि-
डित, आकुंचित ५. मुद्रित, मीलित, मुकुलित ।
संकुल, वि. (सं.) आसं-कीर्ण, निचित,
व्याप्त, कलिल, गहन, संभृत, संपरि-पूर्ण,
पूरित । सं. पुं. (सं. न.) युद्धं २. जन-ओव-
संमर्दः ३. पशुकुलं, गो-वृद्धं-कुलं, दूथं, निवदः
४. असंगतवाचनम् ।
संकेत, सं. पुं. (सं.) दक्षितं, संज्ञा, संज्ञानं,
अंगविशेषः, प्रज्ञप्तिः (स्त्री.), आकारः, अभि-
प्रायन्व्यंजकचेष्टा २. (प्रेमिणोः) संकेतनिकेतनं,
संमिलनस्थानं ३. शृंगारचेष्टा, हावः, विभ्रमः,
विलासः ४. चिह्नं ५. उपक्षेपः, आकृतं, उप-
न्यासः ।
—करना, कि. स., इमित्तेभ श्च् (चु.),
उपक्षिप् (तु. प. अ.), साक्षृत उपन्यस् (दि.
प. से.) ।
संकोच, सं. पुं. (सं.) आकुंचनं, संकोचनं,
समाकर्षः, संपीडनं २. लज्जा, त्रपा ३. निश्चया-
भावः, विकल्पः, संशयः ४. संक्षेपः-पणम् ।
संकोचन, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'संकोच' (१) ।
संकोचना, कि. स. (सं. संकोचनं) संकुच्
(प्रे.), आकुंच् (प्रे.), अल्पीक, संह (भ्वा.
प. अ.) । कि. अ., लज्ज् (तु. आ. से.) त्रप्
(भ्वा. आ. से.) ।

संकोची, वि. (सं.-विच्) लज्जालु, लज्जाशील,
विनीत, शाहीन ।
संक्रमण, सं. पुं. (सं. न.) गमनं, व्रजनं
२. अमणं, पर्यटनं ३. सूर्यस्य राहयंतरप्रवेशः ।
संक्रांत, वि. (सं.) अतीत, गत २. प्रविष्ट,
निविष्ट ३. प्राप्त, गृहीत ४. स्थानान्तरित
५. प्रति-फलित-विम्बित ।
संक्रांति, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'संक्रमण' (३) ।
२-३. सूर्यसंक्रमण-समयः-दिवसः ।
संक्रामक, वि. (सं.) स्पर्श-जन्य-संचारिन्
(रोग) ।
संक्षिप्त, वि. (सं.) संहृत, समस्त, संकुचित,
लघु, अल्पीभूत ।
—करना, कि. स., संक्षिप् (तु. प. अ.),
समस् (दि. प. से.), सनाह-संह (भ्वा. प. अ.) ।
—लपि, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'शाट्टैह' ।
संक्षेप, सं. पुं. (सं.) सारः-रं, समग्रः, समाप्तः,
समाहारः ।
संक्षेपण, सं. पुं. (सं. न.) संकीचनं, संहरणं
२. संचयनं, समग्रणम् ३. प्राप्तः, क्षेपणम् ।
संक्षेपतः, अव्य. (सं.) संक्षेपेण, समाप्तेन,
साररूपेण ।
संख, सं. पुं., दे. 'शंख' (१-२) ।
संखिनी, सं. स्त्री., दे. 'शंखिनी' ।
संखिया, सं. पुं. (सं. शृङ्गिकं) फेताश्मन,
आखु-गौरी-पाषाणः, शत-मल्लः, करवीरा,
कुनटी, नाय-जिहिका-मातृ (स्त्री.) ।
संख्या, सं. स्त्री. (सं.) गणना २. अंकः ३. बुद्धिः
(स्त्री.) ४. विचारणा ।
—करना, कि. स., गण् (तु.) संख्या (अ.
प. अ.) ।
संग, सं. पुं. (सं.) मेलः, संगिलनं, समागमः
२. संगतः-तिः (स्त्री.), साहचर्यं, संसर्गः,
संबासः, संपर्कः ३. विषय-अनुरागः-आसक्तिः
(स्त्री.) ४. सरित्संगमः । कि. वि., सह, सादं,
साकं, समं (तृतीया के साथ) ।
—करना, कि. अ., संगम् (भ्वा. आ. अ.), सह-
चर् (भ्वा. प. से.), संबस् (भ्वा. प. अ.) ।
संगर, सं. पुं. (फा.) पाषाणः, प्रस्तरः, दे.
'पत्थर' । वि., कीकस, कर्कर, ककलद, २.
कठोर ।
—जराअत, सं. पुं. (फा. + अ.) कर्षण-
पाषाणः-प्रस्तरः ।

—तराश, सं. पुं. (का.) मूर्ति-प्रतिमा, कारः, आश्रमकः, औपत्यकः ।
 —तराशी, सं. स्त्री., मूर्ति-प्रतिमा, -निर्माणम् ।
 —दिल, वि. (सं.) पाषाण-कठोर, -हृदय, निर्दय ।
 —दिली, सं. स्त्री., निर्दयता, निष्करणता ।
 —समर, सं. पुं. (फा. + अ.) राजादमन् (पुं.), मणिशिला, मर्मर, उपलः-प्रस्तरः ।
 —सूसा, सं. पुं. (फा.) *मूषोपलः, *मूषादमन् (कृष्णदलक्षणप्रस्तरभेदः) ।
 संगठन, सं. पुं. (सं. सं+हि. गठना) संघट-
 न-ना, संव्यवस्थानं, संविधानं, दे. 'संघटन'
 २. संस्था, संघः ३. देव्यं, रुधिः, सं, हतिः
 (स्त्री.) योगः-नामः ।
 संगठित, वि. (हि. संगठन) संघटित, संविहित,
 संव्यवस्थापित ।
 संगत, सं. स्त्री. (सं. न.) दे. 'संग' (२) ।
 २. सहचरः, संगिन ३. मैथुनम् ।
 —करना, क्रि. अ., दे. 'संग करना' ।
 संगतरा, सं. पुं. (पुर्त.) (वृक्ष) नारंगः, नागरंगः,
 पेरारवतः । (फल) नारंगं ३., दे. 'नारंगी' ।
 संगति, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'संग' (१-२) ।
 ३. मैथुनं ४. संबन्धः ५. संवादः, विरोधाभावः,
 आनुरूप्यं ६. ज्ञानं ७. युक्तिः (स्त्री.) ।
 संगती, सं. पुं. (सं. संगत >) सहचरः, मित्रं,
 सहायः ।
 संगम, सं. पुं. (सं.) दे. 'संग' (१-२) ।
 ३. वेगी-भिः (स्त्री.) भरितः-संयोगः-समा-
 गमः-मेलकः ४. मैथुनं ५. ग्रहयोगः (ज्यो.) ।
 संगर, सं. पुं. (सं.) युद्धं २. प्रतिष्ठा ३. नियमः
 ४. आपद् (स्त्री.) ५. अंगीकारः ६. विषमः ।
 संगस्यार, सं. पुं. (फा.) *उपलभारः, प्राण-
 दंडभेदः । वि., नष्ट, ध्वस्त ।
 संगिनी, सं. स्त्री. (हि. संगी) सहचरी, सद्-
 गः-मिनी २. पत्नी ।
 संगी, सं. पुं. (हि. संग) सहचरः, सहायः
 २. मित्रं ३. वन्धुः ।
 संगीत, सं. पुं. (सं. न.) प्रेक्षणार्थं नृत्यगीत-
 वाद्यम् ।
 —शास्त्र, सं. पुं. (सं. न.) गंधर्व-विद्या-वेदः ।
 संगीन, सं. स्त्री. (फा.) *नालयस्संगिनी ।
 वि., अश्म-पाषाण, मय-रचित २. स्थूल
 ३. स्थायिन्, वृद्ध ४. मोर, विकट ५. संकीर्णं ।

संगृहीत, वि. (सं.) संचित, समाहृत, एकत्रीकृत
 २. संकलित, परिसंस्थात ।
 संग्रह, सं. पुं. (सं.) सद्यः-यत्नं, संग्रहणं,
 समा-हारः-हृतिः (स्त्री.)—हरणं, संकलनं,
 राशी-एकत्री, -करणं २. संग्रहार्थः ३. संक्षेपः
 ४. मुष्टिः (पुं. स्त्री.) ५. निग्रहः, संयमः
 ६. रक्षा ७. बद्धकोष्ठः, दे. 'कबज' ८. स्वीकृतिः
 (स्त्री.) ९. ग्रहणम् ।
 संग्रहणी, सं. स्त्री. (सं.) ग्रहणी (अजीर्णभेदः) ।
 संग्रहणीय, वि. (सं.) संचितव्य, संचयनीय,
 निच्येय ।
 संग्रहालय, सं. पुं. (सं.) अद्भुतालयः ।
 संग्रहीता, वि. (सं. न.) संग्राहक, संग्रहित,
 संचित, संचयित् ।
 संग्राम, सं. पुं. (सं.) रणं, आहवः, युद्धं, दे. ।
 —तुला, सं. स्त्री. (सं.) युद्धपरीक्षा ।
 —भूमि, सं. स्त्री. (सं.) युद्धक्षेत्रम् ।
 —शत्रु, सं. स्त्री. (सं. पुं.) वीरगतिः (स्त्री.),
 रणमरणम् ।
 संघ, सं. पुं. (सं.) सभा, समाजः, सनितिः
 (स्त्री.), गोष्ठी, परिषद्-संसद (स्त्री.)
 २. समूहः, गणः, बृंदं, दल ३. प्राचीनप्रजा-
 तंत्रभेदः ४. बौद्धधर्मसमाजः ५. विहारः,
 मठः-ठम् ।
 —चारी, वि. (सं. -रिन्) गण-यूथ, -नामिन् । सं.
 पुं., सीनः ।
 —शासन, सं. पुं. (सं. न.) *संयुक्ततंत्रम् ।
 संघटन, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'संगठन' (१-३)
 ४. निर्माणं, रचनं ५. घटना, रचना ।
 संघटन, सं. पुं. (सं. न.) संघर्षः-पर्णं २. सं-
 घट्टः, संमर्दः ३. रचना, घटना ४. संमिलनं,
 संयोगः ५. दे. 'संगठनम्' ।
 संघर्ष, सं. पुं. (सं.) संघृष्टिः (स्त्री.), सं-अभि-
 आ-सर्षः-पर्णं, आ-वि-घट्टनं, परस्पर-घर्षण-
 मर्दनं २. प्रति-स्पर्धा, विजिगीषा, प्रतिव्योगिता,
 अहमाहमिका ३. सं, -घट्टः-मर्दः ४. युद्धम् ।
 संघर्षण, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'संघर्ष' ।
 संघात, सं. पुं. (सं.) समूहः बृंदं २. इजनं,
 वधः ३. आवातः ४. निविडसंयोगः ५. आवासः ।
 संघाती, सं. पुं. (सं. संघाः >) सहचरः,
 मित्रम् ।
 संघाराम, सं. पुं. (सं.) आश्रमः, विहारः,
 मठः-ठम् ।

संचय

[१८६]

संतुष्ट

संचय, सं. पुं. (सं.) राशिः, निकरः, पुंजः-
जिः (स्त्री.) २. आधिक्यं, बाहुल्यं ३. दे.
'संग्रह' (१) ।

संचयी, वि. (सं.-यिन्) संचेत्-संग्रहीत्, संचय-
संग्रह-कारक २. कृपण ।

संचार, सं. पुं. (सं.) सं-वि-चरण-चलनं,
व्रजनं, गमनं, अटनं, भ्रमणं, १. प्रचारः,
प्रसारः, प्रचरणं, प्रसरणं ३. पथप्रदर्शनं ४. प्र-
चालनं-चरणं-सारणं ५. ग्रहाणां राश्यंतर-
प्रवेशः ।

संचारिका, सं. स्त्री. (सं.) कुट्ट(ट्टि)नी,
चुंदी, दूती-तिया ।

संचारित, वि. (सं.) प्रचालित, प्रसारित ।

संचारी, वि. (सं.-रिच्) संचरण-गमन-गति-
शील, चल २. परिवर्तनशील, परिवर्तित् । सं.
पुं. (सं.) पवनः २. व्यभिचारिभावः (सा.)
३. आगतुकः ४. धूपः, दे. ।

संचालक, सं. पुं. (सं.) परिचालकः, चाल-
यितृ २. अधिष्ठातृ, अध्यक्षः ३. निर्वाहकः,
व्यवस्थापकः ।

संचालन, सं. पुं. (सं.) परिचालनं, प्रेरणं,
प्रवर्तनं २. निर्वाहः, व्यवस्था ३. अध्यक्षता,
निरीक्षणं ४. नियंत्रणम् ।

संचित, वि. (सं.) दे. 'संगृही' (२) ।

संचय, सं. पुं. (सं.) धृतराष्ट्रसचिवः २. शिवः
३. ब्रह्मन् (पुं.) ।

संजाक्र, सं. स्त्री. (का.) अंचलः, दशा, चीरी-
रिः (स्त्री.)-ब्रह्मप्रांतः ।

संजीवगी, सं. स्त्री. (का.) गंभीरता, गंभीर्यम् ।

संजीवा, वि. (का.) शांत, ग(ग)भीर
२. बुद्धिमत् ।

संजीवक, वि. (सं.) नव-पुनर्-जीवनदायक,
उज्जीवकः ।

संजीवन, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'संजीवक'
२. सम्बन्ध-प्राणधारणं ३. नरकविशेषः ।

संजीवनी, वि. स्त्री. (सं.) उज्जीविका, नव-
पुनर्-जीवनदात्री । सं. स्त्री. (सं.) उज्जीवकीव-
धविशेषः (कल्पित) २. भेषजभेदः ।

—विद्या, सं. स्त्री. (सं.) मृतकजीवनप्रद-
कल्पितविद्याविशेषः ।

संज्ञा, सं. स्त्री. (सं.) चेतना, चेतन्यं,
वेदनं, बोधः २. अभिधा-धानं, आख्या, दे.
'नाम' ३. बस्तुबोधकः शब्दः (व्या.),

नामन् (न.), विशेष्यं ४. इंगितं, संहानं,
संकेतः ।

—हीन, वि. (सं.) मूर्च्छित दे., अविगत-
चेतन, मूर्च्छार्पणम् ।

संड-डा, सं. पुं. [सं. श(ष)डः] वृषभः
२. पीनो मानवः ।

—सुसंड-डा, वि. (सं + अनु.) मांसल, पीन,
उपचित, वृद्धांग (गी स्त्री.) ।

संडसा-सी, सं. पुं. स्त्री. (सं.) दे. 'संडसा-सी'
संडास, सं. पुं. (?) शौचकूपः, दे. 'पाखाना' ।

संडासा सं. पुं. (सं. संदशः) संदशकः, कंक-
मुखः-(स्त्री)-वहनम् ।

संडासी, सं. स्त्री. (हि. संडासा) संदशिका,
सुनु(चू)यी ।

संत, सं. पुं. (सं. सत्) महात्मन्, धर्मात्मन्,
हरिभक्तः २. विरक्तजनः । वि., भद्र, धार्मिक,
श्रेष्ठ ।

—समागम, सं. पुं. (सं.) सत्-भ्रातृ-संगः-संगतिः ।

संतत, अव्य. (सं.-तं) सदा, सर्वदा, सततं,
निरंतरम् ।

संतति, सं. स्त्री. (सं.) संतानः, दे. ।

—विरोध, सं. पुं. (सं.) गर्भविरोधः, परि-
वारायोजनम् ।

—होम, सं. पुं. (सं.) पुत्रेष्टियज्ञः ।

संतप्त, वि. (सं.) उत्-अति-सु-तप्त, ज्वलित,
दग्ध २. अति, दुःखित-पीडित-अरिर्त ३. विषण्ण,
विमनस्क ४. श्रांत, क्लान्त, श्रमार्तम् ।

संतरा, सं. पुं, दे. 'संगतरा' ।

संतरी, सं. पुं. (अ. सेंद्री) दे. 'सिपाही'
२. द्वारपालः ।

संतान, सं. पुं. (सं.) संततिः-प्रपतिः (स्त्री.),
प्रजा, प्रसवः, अपत्यं, तौकं, बीजं २. अन्वयः,
वंशः ३. कल्पवृक्षः ४. विस्तारः । (सं. न.)
अस्त्रभेदः ।

संताप, सं. पुं. (सं.) (अनलादिजः)
तापः, संज्वरः, प्रांशः, उष्णः-णं, दाहः, ऊष्मन्
धर्मः २. कष्टं, व्यथा ३. आधिः, मनोव्यथो
४. ज्वरः ५. शत्रुः ६. दाहनामको रोगः ।

—वेना, कि. स., परि-सं-तप् (प्रे.), अर्द (प्रे.),
पीड् (चु.) २. दे. 'जलाना' ।

संतापित, वि. (सं.) दे. 'संतप्त' (२) ।

संतपी, वि. (सं-पिन्) दुःखदायिन् ।

संतुष्ट, वि. (सं.) सं-सृप्त, परि-तुष्ट, वितृष्ण,

कृतार्थ २. अनुनीत, तोषित, प्रीत, सांत्वित, प्रसादित ।
संतोष, सं. पुं. (सं.) सं-परि-तोषः-तुष्टिः (स्त्री.), वितुष्णा, शांतिः-वृष्टिः (स्त्री.), प्रीतिः, २. आनन्दः, हर्षः, सुखम् ।
—करना, कि. अ., संतुष्-संतुष् (दि. प. अ.), नंद (भ्वा. प. से.) ।
संतोषो, वि. (सं-षिन्) दे. 'संतुष्ट' (१) ।
संध्या, सं. पुं. (सं. संहिता > ?) आह्निक, दैनिक-पाठः ।
संदर्भ, सं. पु. (सं.) रचना, पटना, निमित्तः (स्त्री.) २. प्रस्तावः, लेखः, प्र-नि-बंधः ३. भाष्य-टीका, आत्मकग्रन्थः ४. लघु-ग्रन्थः-पुस्तकः ५. संग्रहः, संकलनं (ग्रंथ) ६. विस्तारः ।
संदल, सं. पु. (फ्रा.) मलयजं, श्रीखंडं, चंदनं, दे. ।
संदली, वि. (फ्रा. संदल) चंदनवर्ण, ईष-त्पीन २. चंदन-मय-निमित्त ।
संदिग्ध, वि. (सं.) संदिह-संशय-युक्त-पूर्ण, निश्चयशून्य, सविकल्प, विकल्प्य ।
—व्यक्ति, सं. पुं. (सं. स्त्री.) शक्ति-शक्य-जनः ।
संदूक, सं. पुं. (अ.) संपुटः, पेटा, मंजूषा, समुद्रगः ।
संदूकचा, सं. पुं. (अ. + फ्रा.) पेटिका, समुद्रगकः ।
संदूकची, सं. स्त्री. करण्डकः, संपुट(दि)कः ।
संदेश, सं. पुं. (सं.) संवादः, वार्ता, वाचिक, दिष्टं, आख्यायनी २. बंगप्रान्तीयमिष्टान्नभेदः ।
—मेजना, कि. स., संदिश (तु. प. अ.), वाचिक-दिष्टं प्रेष (प्रे.) ।
—हर, सं. पुं., वार्ताहरः, वातिकः, संदेशिकः, दूतः, आख्यायकः ।
संदेसा, सं. पुं., दे. 'संदेश' (१) ।
संदेह, सं. पुं. (सं.) संशयः, विचिकित्सा, द्वापरः, विकल्पः, द्वैधं, आशंका, निश्चय-निर्णयः, अभावः २. प्रत्यय-विश्वाप्त-अभावः ५. अथा-लंकारभेदः (सा.) ।
संदोह, सं. पुं. (सं.) समूहः, निकरः ।
संधान, सं. पुं. (सं. न.) अभिषवः, संधानी, मणसज्जीकरणं, संधिका २. चापे बाणयोजन ३. मंदिराभेदः ४. संघटनं, संयोजनं ५. अन्वेषणं ६. सजीवनं, दे. ७. संधिः ८. अवदशः ९. कांजिक १०. संधानिका ।

संधि, सं. स्त्री. (सं. पुं.) संयोगः, संमिलनं, संगमः, संहतिः (स्त्री.) २. ग्रंथिः, पर्वन(न.), संधिस्थान ३. मित्रीकरणं, राज्यरक्षायः युष्ण-विशेषः (राजनीति) ४. मैत्री, सख्यं ५. वर्ण-द्वयमेलनं, संहिता (व्या.) ६. रूपकांगभेदः (सा.) ७. दे. 'संधे' ८. युगसंधिः ९. वयः-सन्धिः ।
—चौर, सं. पुं. (सं.) संधिहरकः ।
—च्छेद, सं. पुं. (सं.) संहितपदविदलेषणम् ।
—जीवक, सं. पुं. (सं.) विटः, संचारकः ।
—बंधन, सं. पुं. (सं.) स्नसा, स्नायुबंधः ।
—वेला, सं. स्त्री. (सं.) अहोरात्रमिलनसमयः, संधिकालः २. सायम् ।
संध्या, सं. स्त्री. (सं.) संधिकालः, अहोरात्र-संयोगसमयः २. सायंकालः, दे. ३. उपासना-भेदः ४. युगसंधिः ।
—कालिक, वि. (सं.) संध्याकालीन, विकाल-संधिकाल-सम्बन्धिन् ।
—बल, सं. पुं. (सं.) निशाचरः, राक्षसः ।
—राग, सं. पुं. (सं.) संध्या-विकाल-विकाल-रक्तिमन्-शोणिमन्-रागः ।
—बंदन, सं. पुं. (सं. न.) संध्योपासनम् ।
संशिकर्ष, सं. पुं. (सं.) सन्निधिः, सन्निधानं, सामीप्यं २. इन्द्रियार्थसम्बन्धः ।
संनिपात, सं. पुं. (सं.) वातपित्तकफानां युग्-पद-विकारः, विकारोत्पादकं मिलितदोषत्रयं २. समाहारः, समूहः ३. समवपातः ४. समु-ज्ज्वयनं ५. संयोगः, मिश्रणम् ।
संनिवेश, सं. पुं. (सं.) समुपवेशः-शनं २. उपवेशः-शनं, आसितं, निषदनं ३. आ-नि-धानं, स्थपनं ४. प्रतिबन्धनं, उत्खचनं, प्रणि-धानं ५. गृहं ६. समूहः ७. रचना ८. संस्थानं ९. प्रतिमादीनां स्थापनम् ।
संनिहित, वि. (सं.) निकट-समीप-स्थ-वर्तिन् २. (समीपे) स्थापित ।
संन्यास, सं. पुं. (सं.) आर्यजीवनस्य चतुर्था-श्रमः, प्रव्रज्या, वैराग्यं २. कान्यकर्मन्यासः (गीता) ३. जटामांसी ।
संन्यासी, सं. पुं. (सं-सिन्) चतुर्थाश्रमिन्, परि, ब्राजकः-ब्राज्, श्रमणः, भिक्षुः, भस्करिन्, कर्मन्दिन्, पाराशरिन् ।
संपत्ति, सं. स्त्री. (सं.) विगवः, वैभवं, ऐश्वर्यं, अर्थः, धनं, वित्तं, श्रीः-लक्ष्मीः-समृद्धिः (स्त्री.)

२. रिक्थं, दायः ३. सिद्धिः (स्त्री.), सफलता, पूर्णता ४. लाभः, प्राप्तिः (स्त्री.) ।
संपद-दा, सं. स्त्री. (सं. संपद) दे. 'संपत्ति' ।
संपन्न, वि. (सं.) धनाढ्य, धनिक, धनिन् दे.
 २. सिद्ध, निष्पन्न, पूर्ण ३. सहित, युक्त
 ४. समृद्ध, धनधान्ययुक्त ।
संपराय सं. पुं. (सं.) उत्तरकालः २. युद्ध
 ३. आपद (स्त्री.) ।
संपर्क, सं. पुं. (सं.) संसर्गः, सम्बन्धः, साह-
 चर्यं २. मिश्रणं दे. ३. संबोधः, मिलनं ४.
 स्पर्शः ५. योगः, संकलनं (गणित) ।
संपात, सं. पुं. (सं.) सहपतनं २. समागमः
 ३. संगमस्थानं ४. संवृत्तिः-समापत्तिः (स्त्री.) ।
संपादक, सं. पुं. (सं.), पत्र-पत्रिकादीनां-
 संपादयितृ, संपादनकरः २. सप्तकः, निष्पादकः
 ३. अनुष्ठातृ, कर्तृ, निर्वर्तयितृ ।
संपादकता, सं. स्त्री. (सं.) संपादकत्वम् ।
संपादकीय, वि. (सं.) १-२ संपादक-
 लिखित-सम्बन्धिन् ।
संपादन, सं. पुं. (सं. न.) सुप्रणार्थं सञ्जीकरणं
 २. परिकल्पनं, प्रसाधनं, सञ्जीकरणं ३. साधनं
 निष्पादनं, समापनं ४. करणं, निर्वर्तनं, अनु-
 ष्ठानम् ।
संपादित, वि. (सं.) सुप्रणार्थं सञ्जीकृत
 २. निष्पादित, पूर्ण गमित-नीत, संपूरित,
 साधित ३. प्रस्तुत, सज्ज ।
संपुट, सं. पुं. (सं.) समुद्रगकः, करंडकः, संपुट-
 (टिफ्ट), मञ्जूषा, दे. 'डिब्बा' २. अञ्जलिः, कर-
 हस्त-पाणि, पुटः ३. *द्रोणं, पत्रपुटः, दे. 'दीना' ।
संपूर्ण, वि. (सं.) व्याप्त, पूरित, पूर्ण, आकर्णं
 भूत २. समग्र, समस्त, सकल, कृत्स्न ३. समाप्त,
 अवसित । सं. पुं., सप्तस्वरयुतो रागः (संगीत) ।
संपूर्णतः कि. वि. (सं.) साकल्येन, साम-
संपूर्णतया, स्त्वेन २. सम्यक्, सुष्ठु (सत्र अव्य.)
संपूर्णता, सं. स्त्री. (सं.) समग्रता, कात्स्न्यं,
 साकल्यं २. समाप्तिः (स्त्री.), अवसानम् ।
संपृक्त, वि. (सं.) मिश्र, मिश्रित २. खचित
 ३. स्पृष्ट ४. संसृष्ट, जातसम्पर्क ।
सँपेरा, सं. पुं. (हि. सँपे) अ(आ)हिन्दुदिकः,
 गारुदिकः, जांगलिकः, जांगलिः, व्यालप्रहिन् ।
सँपेला, सं. पुं. (हि. सँपे) अहि-सर्प, श्रावः-
 श्रावकः ।

संप्रति, अव्य. (सं.) अधुना, इदानीं २. अद्यत्वे,
 वर्तमाने ।
संप्रतिपत्ति, सं. स्त्री. (सं.) ऐकमत्यं, सामत्वम्-
 २. स्वीकृतिः (स्त्री.) ३. लाभः, प्राप्तिः (स्त्री.)
 ४. प्रवेशः ५. सम्यक् बोधः ६. कार्यसिद्धिः
 (स्त्री.) ।
संप्रदान, सं. पुं. (सं. न.) दानं, वितरणं,
 विश्राणनं, प्रतिपादनं २. कारकभेदः, चतुर्थी
 (व्या.) ३. दीक्षा, मंत्रोपदेशः ४. उपहारः ।
संप्रदाय, सं. पुं. (सं.) मते, धर्म, शाखा-
 पथः-मार्गः २. आम्नायः पुरुपरंपरागतसदुप-
 देशः, गुरमंत्रः ३. अनुयायिमंडलं ४. प्रथा,
 रीतिः (स्त्री.) ।
संप्रदायी, वि. (सं. यिन्) भतावलंबिन,
 मतानुयायिन् ।
संबंध, सं. पुं. (सं. न.) संयोगः, संदलेषः,
 सम्मिलनं २. सम्पर्कः, संसर्गः ३. बन्धुता,
 सगीत्रता, सजातीयता, ज्ञातिवत् ४. प्रगाढसख्यं
 ५. षष्ठी, विभक्तिभेदः (व्या.) ।
संबंधक, वि. (सं.) सम्बन्धिन्, विषयक २.
 उपयुक्त, योग्य । सं. पुं. (सं.) जन्मविवाह-
 सख्यादिजनितः सम्बन्धः ।
संबंधी, वि. (सं. धिन) संबन्धविशिष्ट २. संपृक्त,
 संसृष्ट ३. प्रसंगगत । सं. पुं. (सं.) बंधुः, बंधनः,
 सगीत्रः, ज्ञातिः (स्त्री.) २. दे. 'समधी' ।
संबद्ध, वि. (सं.) संयुक्त, संश्लिष्ट, संलग्न
 २. सम्बन्धविशिष्ट ३. (अ-) पिहित, संबुत
 ४. संग्रहित, सन्नियंत्रित ।
संबल, सं. पुं. (सं. पुं. न.) पाथेयं, संबलः-
 लम् ।
संबाध, वि. (सं.) संकीर्णं, संकुचित २. संकुल,
 परिपूर्ण । सं. पुं. (सं.) विघ्नः, बाधः, बाधा
 २. जन, समुदायः-समूहः-समर्दः-ओषः ।
संबोधन, सं. पुं. (सं. न.) आभिमुख्यविधानं,
 आमंत्रणं, सम्बुद्धिः (स्त्री.), आकारणं, आह्वानं
 २. आह्वानार्थकः शब्दरूपभेदः (व्या., उ.
 राम !) ३. प्रबोधनं निद्रात उत्थापनं ४. आख्या-
 पनं, ज्ञापनं, ५. आकाशभाषितं (नाटक) ।
सँभलना, कि. अ. (हि. सम्भलना) उत्तम्भ-
 उपस्तम्भ-भृन् (सब कर्म.) २. निश्चलं-दृढं स्था
 (स्था. प. अ.) ३. सावधान-अवहित-जागरूक
 (वि.) भू ४. पादप्रहारपराजयादिभ्यो रक्ष-
 मुन् (कर्म.) ५. उत्कर्षं या (अ. प. अ.),

अभिवृध् (भ्वा. आ. से.) ६. पुनः स्वास्थ्यं लभ् (भ्वा. आ. अ.), प्रकृति आपद (दि. आ. अ.) ।

संभव, सं. पुं. (सं.) उत्पत्तिः (स्त्री.), जन्मन (न.) २. मेलः, समागमः ३. शक्यता, सम्भवनीयता । वि. (सं. >) शक्य, सम्भवनीय, सम्भाव्य २. सध्य, सभाव्य ।

संभवतः, क्रि. वि. (सं.) कदाचित्, त्यात, सम्भाव्यते, शक्यते (विधिलिङ् से भी) ।

संभार, सं. पुं. (सं.) संग्रहणं, सञ्चयनं, समाहरणं ३. सामग्री, आवश्यकवस्तुनि (न. बहु.) ३. सम्पत्तिः (स्त्री.) ४. राशिः, नयः ५. भरणपोषणम् ।

सँभाल, सं. स्त्री. (सं. संभारः) पोषणं, भरणं, संवर्द्धनं, २. रक्षणं, त्राणं, पालनं ३. पर्यवेक्षणं, अवेक्षा-क्षणं, अधिष्ठानं, कार्यनिर्वाहणम् ।

सँभालना, क्रि. म. (हिं. सँभाल) उत्-उप-सं-स्तम् (क. प. से.), आ-अव-लब् (भ्वा. आ. से.), सं-पृ (भ्वा. प. अ.), चु.), २. ग्रह् (क्. प. से.), घृ. विरम् (प्रे.), रुध् (रु. उ. अ.) (पारप्रहारपराजयादिभ्यो) रक्ष् (भ्वा. प. से.)-वै (भ्वा. आ. अ.) ३. संदृध् (चु.), पुष् (रु.) ४. उपकृ, सादार्यं विधा (जु. उ. अ.) ५. अधिष्ठा (भ्वा. प. अ.), निर्वह्-सम्पद् (प्रे.) ६. मनोवेगं नियम् (भ्वा. प. अ.) ७. पर्यवेक्ष् (भ्वा. आ. से.) ८. प्रोत्साह समाश्रम् (प्रे.) । सं. पुं., आ-अव-लब्-लब्नं, धारणं, उत्तमनं २. ग्रहणं ३. रक्षणं, त्राणं ४. संवर्द्धनं, पोषणं ५. साहाय्यदानं, उपकारः ६. अधिष्ठानं, निर्वाहणं ७. पर्यवेक्षणं ८. प्रोत्साहनं ९. ।

सँभालने योग्य, वि. धारितव्य, उत्तमनीय, रक्ष्य, त्रातव्य, पोष्य, पर्यवेक्षणीय, इ. ।

सँभालनेवाला, सं. पुं., उत्तमकः, धारकः, आधारः, आश्रयः, आलम्बनं, पोषकः, संवर्द्धकः, रक्षकः, प्रोत्साहकः इ. ।

सँभाला हुआ, वि., संस्तंभित, धृत, धारित, रक्षित, संवर्द्धित, उपकृत, पर्यवेक्षित, प्रोत्साहित इ. ।

संभावना, सं. स्त्री. (सं.) शक्यता, सम्भवनीयता, सम्भाव्यता, सम्भवः २. आदरः, स्तकारः ३. प्रतिष्ठा, मानः ४. कल्पना, अनुमानम् ।

संभावित, वि. (सं.) दे. 'संभव' वि. २. कल्पित, उद्भावित ३. आदृत, सम्मानित ।

संभाव्य, वि. (सं.) दे. 'संभव' वि. १

संभाषण, सं. पुं. (सं.) आ-सं-लापः, वार्ता-लापः, सं-कथा-वादः-भाषा २. प्रवचनं, व्याख्यानम् ।

संभूत, वि. (सं.) (सह-) जात-उत्पन्न-उद्भूत ।

संभूति, सं. स्त्री. (सं.) उद्भवः, उत्पत्तिः (स्त्री.) २. विभूतिः-वृद्धिः (स्त्री.) ३. क्षमता ।

संभोग, सं. पुं. (सं.) रतिः (स्त्री.), मैथुनं दे. २. सन्दृक्, -उपयोगः-व्यवहारः-प्रयोगः ३. संयोगशृंगारः (सा.) ।

संभ्रम, सं. पुं. (सं.) व्याकुलता, वैकल्यं, व्यग्रता २. त्वर-रिः (स्त्री.), रभसः, रभस् (न.), आ-सं-वेगः ३. आदरः, मानः ४. भ्रातिः (स्त्री.), भ्रमः, स्वलितम् ।

संभ्रात, वि. (सं.) व्याकुल, व्यग्र, उद्विग्न २. प्रतिष्ठित, संमानित ।

—**जन**, सं. पुं. (सं.) सम्मान्य-पूज्य, जन-मनुष्यः ।

—**मना**, वि. (सं. नसं) वि-सं-भ्राम्त-शुब्ध, आकुल, व्याकुल ।

संमत, वि. (सं.) संप्रतिपन्न, २. समादृत, संमानित ।

संमति, सं. स्त्री. (सं.) संमतं, ऐकमत्यं, मतैक्यं, सामत्यं, ऐक्यं २. अनुमतिः (स्त्री.)-नं, अनुज्ञा, अनुमोदनं ३. मत-तिः (स्त्री.), अभिप्रायः, आशयः, बुद्धिः (स्त्री.) ।

संमन, सं. पुं. (अं. संमन्म्) (धर्मोधिकारिणः) आह्वानपत्रम् ।

संमद, सं. पुं. (सं.) युद्धं २. विवादः ३. जन-समुदायः-संकुलम् ।

संमान, सं. पुं. (सं.) सम्-आदरः, स्तकारः, पूजा, अर्हणा, अभ्यर्चनं, संभावना, प्रतिष्ठा, गौरवं, अर्चा ।

—**करना**, क्रि. स., संमद (प्रे.) आदृ (तु. आ. अ.), मद्-पृ (चु.), संभू (प्रे.) ।

संमानित, वि. (सं.) समादृत, सत्कृत, पूजित, गौरवान्वित, अभ्यर्चित, पूज्य, उपास्य, ननस्य, सं-मान्य २. प्रधान, मुख्य, अधिय ।

संमिलन, सं. पुं. (सं. न.) संगमः, समागमः, संगः, संयोगः, संगत-तिः (स्त्री.) ।

संमिलित, वि. (सं.) समिश्र, मिश्रित, संयुक्त, संहत, संयुक्त, समवेत ।

संमिश्रण, सं. पुं. (सं. न.) संपर्कः, संसर्गः, संयोगः, संमिलनं २. मिश्रं, मिश्र-द्रव्यं, संनिपातः, संकरः, नानाद्रव्यसमुदायः ।

संमुख, कि. वि. (सं. संमुख-खे) अभिमुख-खे, पुरः, पुरतः, पुरस्ताद्, समक्षं, साक्षात्, प्रत्यक्षम् ।

संमेलन, सं. पुं. (सं. न.) समाजः, सभा, परिपद् (स्त्री.) २. बृहदधिवेशनं ३. संनंत्रणं, संवादः ४. दे. 'संमिलन' ।

संयत, वि. (सं.) अव-नि-सं-रुद्ध, नियत, निगृहीत २. नि-प्रति-बद्ध, निर्यजित, विनद्ध ३. वशं नीत, बशीकृत, दमित ४. क्रम नियम-बद्ध, व्यवस्थित ५. मित, समर्पाद, सावधिक ६. जितेन्द्रिय, आत्म-इन्द्रिय, निग्रहिन् ।

—**मना**, वि. (सं. नसं) संयमशील, संयत, अत्मनिग्रहिन् ।

—**प्राण**, वि. (सं.) प्राणायामिन्, संयतवासः ।

—**मुख**, वि. (सं.) मित-अल्प-भाषिन्-वादिन् ।

संयम, सं. पुं. (सं.) इन्द्रिय-जयः-निग्रहः, दमः, आत्मनियंत्रणं २. निग्रहः, निरोधः, नियंत्रण-गा ३. पध्यसेवनं, मिताशनं ४. परिमितता-त्वं, मर्यादापालनं ५. पिथानं, निमोलनं, संवरणं ६. बंधनम् ।

संयमी, वि. (सं. मिन) इन्द्रिय-आत्म-निग्रहिन्, संयत, जितेन्द्रिय, दमिन्, संयमशील, योगिन् २. मित-अल्प-संयत-आहार-भोजिन् ।

संयुक्त, वि. (सं.) समवेत, संहत, संलग्न, संश्लिष्ट २. सहित, अन्वित, युक्त ३. संबद्ध, संपृक्त ४. संमिलित, समिश्रित ।

संयोग, सं. पुं. (सं.) दे. 'संमिलन' २. संश्लेषः, समिश्रणं ३. संभोग-शृंगारः (सं.) ४. संबन्धः, संपर्कः ५. अनेकव्यंजनसंश्लेषः ६. योगः, संकलनं (गणित) ७. देवं, देव-घटना-गतिः (स्त्री.)-योगः ।

—**से**, मु., देवात्, देव-योगात्-वशात्, अकस्मात् ।

संयोगी, सं. पुं. (सं. गिन्) गृहस्थसाधुः २. दयितायुतः ।

संयोजक, वि. (सं.) समैक, संश्लेषक ।

सं. पुं. (सं. न.) १-२, शब्द-वाक्य-योजक-पदम् ।

संरक्षक, सं. पुं. (सं.) आश्रयदातृ, पुरस्कृतं, २. पोषकः, प्रतिपालकः, भरणकृत, संवर्द्धकः, संरक्षण ३. त्राटृ, गोपटृ, पालकः, रक्षितृ ५. सहायकः, उपकारकः ।

संरक्षण, सं. पुं. (सं. न.) गोपनं, रक्षा, त्राणं २. अवस्था, पर्यवेक्षणं ३. अधिकारः ४. रोधः, प्रतिबंधः ।

संलग्न, वि. (सं.) संयुक्त, संहत, संश्लिष्ट, संहित, संमिलित, संबद्ध ।

संलाप, सं. पुं. (सं.) वार्तालापः, संवादः ।

संवत्, सं. पुं. (सं. अव्य.) वर्षः-वै, अम्बः, कत्सः, परि-वत्सरः २. विक्रमाब्दः ३. शाकः ।

संवत्सर, सं. पुं. (सं.) दे. 'संवत्' ।

संवरण, सं. पुं. (सं. न.) गोपनं, प्रच्छादनं, निगूहनम् ।

सँवरना, कि. अ. (सं. संवरणं >) व. 'सँव-रना' के कर्म, के रूप ।

संवाद, सं. पुं. (सं.) दे. 'भ्रंभाषण' (१) ।

२. वृत्तं, वृत्तांतः, समाचारः ३. कथा, प्रसंगः ४. व्यवहारः, अभियोगः ५. ऐकमत्यं, समतिः (स्त्री.) ६. संदेशः, दे. ७. स्वीकृतिः, अनुमतिः (स्त्री.) ।

—**दाता**, सं. पुं. (सं. वृ.) *वृत्तप्रेषकः, वृत्तांत-लेखकः ।

संवादी, वि. (सं. दिन्) संलापिन्, संभाषिन् २. सदृश, समान, तुल्य । सं. पुं. (सं.) संगीते स्वरभेदः ।

सँवारना, कि. स. (सं. सवरणं >) अलंकृत, परिष्कृत, भूष-मंड (चु.), प्रसाध (प्रे.) । २. संस्कृत, सं- , शुष् (प्रे.) ३. व्यवस्था (प्रे.), विन्यस् (दि. प. से.), रच् (चु.) ४. कार्यं सम्यक् संपद-निष्पद् (प्रे.) । सं. पुं., अलं-परिष्-करणं, मंडनं, प्रसाधनं २. संस्कारः, शोधनं ३. व्यवस्थापनं ४. सम्यक् संपादनं ।

सँवारने योग्य, वि., अलंकार्य, परिष्करणीय, भूषयितव्य, संस्कार्य, व्यवस्थाप्य ।

सँवारनेवाला, सं. पुं., अलं-परिष्-कर्तृ-कारकः, प्रसाधकः, मंडयितृ २. गंशीषकः, संस्कर्तृ ३. व्यवस्थापकः, सुसंपादकः ।

सँवारा हुआ, वि., अलं-परिष्-कृत, मंडित,

संवाहक

[१६१]

संस्मरण

प्रसाधित २. संस्कृत, सं. शोषित ३. व्यवस्था-
पित ४. सुसंपादित ।

संवाहक, सं. पुं. (सं.) अंग-शरीर, मर्दक-
संवाहकः । वि. (सं.) आलोकः, चालयितृ ।

संवेदना, सं. स्त्री. (सं.) संवेदनं, अनुभवः,
सुखदुःखादि-प्रतीतिः (स्त्री.) ।

संशय, सं. पुं. (सं.) संदेहः, दे. ।

संशयात्मा, सं. पुं. (सं. रमन्) विश्वासहीन,
संदेहशील, श्रद्धाशून्य, संशयालु ।

संशयापन्न, वि. (सं.) संदिग्ध, अनिश्चित ।

संशयालु, वि. (सं.) दे. 'संशयात्मा' ।

संशोधक, सं. पुं. (सं.) संशोधयितृ, प्रति-
समाधातृ २. संस्कृति, संस्कारक, ३. निस्तारक
(ऋणादि) ।

संशोधन, सं. पुं. (सं. न.) पावनं, निर्मली-
करणं २. दोषनिवारणं, द्रुटिनिष्कासनं,
संस्कारः, प्रति-समाधानं ३. निस्तारणं
(ऋणादि) ।

—करना, क्रि. स., सं-परि-शुध् (प्रे.), पू
(कृ. उ. से.) २. दोषान् निवृ (प्रे.), संस्कृ
३. निस्तृ (प्रे.) ।

संशोधित, वि. (सं.) सुपूत, सम्यक् निर्मली-
कृत २. संस्कृत, परशोधित ३. निस्तारित ।

संसर्ग, सं. पुं. (सं.) संपर्कः, संबन्धः २. साह-
चर्यं, संगतिः (स्त्री.) ३. संयोगः संमिलनं
४. सुपरिचयः, अभ्यन्तरत्वम् ।

संसार, सं. पुं. (सं.) सृष्टिः (स्त्री.), भुवनं,
विश्वं, जगत् (न.)-ती, चराचर, संसृतिः
(स्त्री.) २. पुनर्जन्मन् (न.), प्रेत्यभावः,
३. भू-मार्त्य-ग्रह-लोकः ४. प्रपञ्चः, जगज्जालं
५. सततपरिवर्तनं ६. गार्हस्थ्यम् ।

—चक्र, सं. पुं. (सं. न.) १-२, दे. 'संसार'
(२, ४) ३. दशपरिवर्तः-तनम् ।

संसारी, वि. (सं. -रिन्) लौकिक, सांसारिक
२. ऐहिक, प्रापञ्चिक ३. व्यवहारकुशल
४. अमुक्तात्मन् । सं. पुं. (सं.) प्राग्निन्
१. जीवन्मन ।

संसृति, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'संसार' (१-२) ।

संसृष्ट, वि. (सं.) मिश्रित, संश्लिष्ट २. संबद्ध,
संलग्न ।

संसृष्टि, सं. स्त्री. (सं.) संनिश्रणं, संश्लेषः
२. संबन्धः, संपर्क, ३. सुपरिचयः, सौहार्दं

४. संग्रहणं, संचयनं ५. अलंकारमिश्रणभेदः
(सा.) ।

संस्करण, सं. पुं. (सं. न.) ग्रन्थसुद्वरणवारः,
आवृत्तिः (स्त्री.) २. संशोधनं ३. परिष्करणम् ।

संस्कार, सं. पुं. (सं.) परि-न्सं, शोधनं, संस्कर-
णं २. परिष्-कारः-करणं, परिमार्जनं ३. शीघ्रं,
शरीरशुद्धिः (स्त्री.) ४. मानसी शिक्षा ५. शिक्षा-
संगत्यादीनां प्रभावः ६. पूर्वजन्मवासना
७. पावनं, शुद्धिः (स्त्री.) ८. धार्मिककृत्यभेदः
(दे. 'गोदशसंस्कार') २. अत्येष्टिक्रिया, दाह-
कर्मन् (न.) ।

संस्कृत, वि. (सं.) सं-परि-शोधित, निर्मली-
कृत २. परिष्कृत, परिमार्जित, परिशुद्ध
३. पानित, सिद्ध, पक्व ४. कृतसंस्कार, संस्कार-
पूत । सं. स्त्री. (सं. न.), देववाणी, सुरगर्
(स्त्री.), आयाणां भाषाविशेषः ।

संस्कृति, सं. स्त्री. (सं.) सभ्यता, आचार-
विचाराः (बहु.) २. संस्क्रिया, संस्कारः,
शुद्धिः (स्त्री.) ३. परिष्कारः ।

संस्था, सं. स्त्री. (सं.) मंडलं, दलं, गणः
२. सभा, समाजः, परिपद् (स्त्री.) ।

संस्थागार, सं. पुं. (सं. पुं. न.) सभाभवनम्
२. संगमभवनम् ।

संस्थान, सं. पुं. (सं. न.) चतुष्पथः, चतुष्कं
२. आकृतिः (स्त्री.), आकारः ३. रचना ४. स-
न्निवेशः ५. स्थितिः (स्त्री.), दशा ६. नाशः
७. मृत्युः ८. आयोजनं, व्यवस्था (१-२०),
दे. 'दोचा' तथा 'खाका' ।

संस्थापक, सं. पुं. (सं.) प्रवर्तकः, प्रवर्तयितृ,
आरंभकः, प्रतिष्ठापकः ।

संस्थापन, सं. पुं. (सं.) प्रवर्तनं, प्रारंभणं,
प्रतिष्ठापनं, प्रारंभः २. निर्माणं ३. दृढी-
करणम् ।

संस्थापित, वि. (सं.) प्रवर्तित, प्रतिष्ठापित,
प्रारब्ध २. निमित्त ३. दृढीकृत ।

संसृष्ट, वि. (सं.) सृष्ट, द्रुप्त, परासृष्ट २.
संपृक्त, जातसंपर्कं ३. संयुक्त, संबद्ध ।

संसृष्ट, वि. (सं.) अपावृत, व्यावृत, उद्-
घटित २. विकसित, उन्नित, स्फुटित, उन्मीलित ।

संस्मरण, सं. पुं. (सं. न.) संस्मृतिः (स्त्री.),
सम्यक्-स्मरणं-अनुचितनं-अनुवीचनं २. स्मार्-
कं, स्मारकपट्टना ३. संस्कारजं ज्ञानम् ।

संहत, वि. (सं.) घन, दृढ, निविट, अनंतरं
२. संयुक्त, संबद्ध ३. समिलित, समिश्रित
४. आहत ५. संगृहीत ।

संहति, सं. स्त्री. (सं.) संगतिः (स्त्री.),
समिलनं २. राशिः, वयः ३. गणः, समूहः
४. घनत्व, निविटता ५. संधिः, संयोगः ।

संहार, सं. पुं. (सं.) हिसा-त्तनं, हननं, हत्या,
वधः, घातः २. विनाशः-ध्वंसः ३. (मुक्ता-
स्त्रय) संहरण-संकीर्तन-संहतिः (स्त्री.),
४. संग्रहः, संकीर्तन-संक्षेपः, सारः ६. समाप्तिः
(स्त्री.), अंतः ७. प्रलयः, कर्पांतः ।

—करना, कि. स., गृह्यापद-निषूद (प्रे.)
२. विनाश-ध्वंस (प्रे.) ।

संहारक, सं. पुं. (सं.) संहर्तृ, नाशकः २. संग्र-
हीतृ, संवेतृ ।

संहिता, सं. स्त्री. (सं.) संधिः, वर्णसंनिकर्षः
(व्या.) २. संयोगः, मिलनं ३. धर्मसंहिता,
स्मृतिः (स्त्री.), श्रुतिजीविका ४. वेदानां
मंत्रभागः ।

सहैयाँ, सं. पुं. (सं. स्वामिन्) पतिः २. कांतः
३. ईश्वरः ।

सहैयाँ, सं. स्त्री. (हिं. सखियाँ) दे. 'सखी' ।

सकता, सं. पुं. (अ. तः) सन्ध्यासः, मूच्छी
(रोगभेदः) २. वृत्तिः (स्त्री.), विरामः
(छन्द.) ।

सकना, कि. अ. (सं. शकनं) शक (स्वा. प.
अ.), प्रभू (भ्वा. प. से.), क्षम-समर्थ (वि.)
भू । (यह क्रिया सदा दूसरी क्रियाओं के
साथ ही प्रयुक्त होती है) ।

सकपकाना, कि. अ. (अनु. सकपक)
विस्मि (भ्वा. भा. अ.), विस्मयाकुलीभू ।
२. अभिशङ्क (स्वा. आ. से.), दोलायते
(ना. धा.) ३. लज्ज (तु. आ. से.), वृष्
(भ्वा. आ. से.) ।

सकर्मक, वि. (सं.) कर्मविशिष्ट (व्या.) ।

सकल, वि. (सं.) दे. 'सर्व' ।

सकाम, वि. (सं.) कलाभिलाषिन्, कामना-
विशिष्ट २. लब्धकाम, पूर्णमनोरथ ३. कामुक,
कामिन् ।

सकारण, वि. (सं.) सहेतुक, कारणविशिष्ट ।

सकुचना, कि. अ. (सं. संकीर्तनं) कीड (दि.
प. से.), ही (जु. प. अ.), लज्ज (तु. आ.

से.) २. संकुच-संह (कर्म.), मुद्रित-संकु-
चित (वि.) भू ।

सकुचाना, कि. अ. (सं. संकीर्तनं) दे. 'सकु-
चना' । कि. स., व. 'सकुचना' के प्रे. रूप ।

सकुचीला, वि. (सं. संकीर्तः >) संकीर्तशील
दे. 'लज्जशील' ।

सकृतल, सं. स्त्री. (अ.) निनासः, निकेतनं,
निनासस्थानम् ।

सकृत्, अन्व. (सं.) एकवारं २. सदा
३. सह ।

सकीडना, कि. स., दे. 'सिकोडना' ।

सकोरा, सं. पुं. (हिं. कसोरा, दे.) ।

सखरा, सं. पुं. } दे. 'रभोई खची' ।
सखरी, सं. स्त्री. }

सखा, सं. पुं. (सं. सखि) मित्रं, सहृद, २. सह-
चारिन्-चरः, सगिन् ३. नादकसहचरः
(सा.) ।

सखाचत, सं. स्त्री. (अ.) वदन्वना २. औ-
दार्यम् ।

सखित्व, सं. पुं. (सं. न.) सख्यं, मैत्री ।

सखी, सं. स्त्री. (सं.) सहचरी, आली-लिः,
(स्त्री.), वयस्था, आश्रीची संगिनी
२. नायिकायाः सहचरी (सं.) ।

सखी, वि. (अ.) दानशील, वदान्य ।

सखुन, सं. पुं. (फा.) धार्तालापः, संवादः
२. कव्यं, कवितः ३. वचनम् ।

—तकिया, सं. पुं. (फा.) दे. 'तकिया कलाम'

—दौ, सं. पुं. (फा.) काव्यमर्मज्ञः, रसिकः
२. वाक्पटुः ३. वविः ।

—दानी, सं. स्त्री. (फा.) काव्यमर्मज्ञता, रसि-
कता २. वाक्पटुत्वं ३. काव्यकला ।

—शनास, सं. पुं. (फा.) दे. 'सखुनदौ' ।

—साज़, सं. पुं. (फा.) कविः २. दे. 'गप्पी' ।

सख्त, वि. (फा.) कीकस, कर्कर, कखत, घन,
दृढसंधि, संतत २. दुश्चर, कठिन, दुस्साध्य,
निर्दय, निष्कण ४. चंड, परुष, कठोर, दुस्सह
५. कुशील, दुष्प्रकृति ६. कृपण ७. अविश्वस्य,
अत्यधिक । कि. वि., परुषं, निर्दयं, मीत्रम् ।

—सुस्त कहना, (मु.) भर्ता (तु. आ. से.),
आकुश (भ्वा. प. अ.) ।

सखती, सं. स्त्री. (फा.) पत्रसदृता, कीकसना,
घनता २. दुश्चरता ३. निर्दयता ४. चंडता
५. कुशीलता ६. आधिक्यं ३. ।

—से, कि. वि., चंडं, घोरं २. निर्दयम् ।
 —करना, मु., बलं प्रयुज् (ह. आ. अ.),
 निर्दयं व्यबहृ (भ्वा. प. अ.) ।
 सख्य, सं. पुं. (सं. न.) सौहार्दं, सासपदीनं,
 मित्रता, दे. ।
 सगंध, वि. (सं.) गंध-वास, न्वत्-युक्त, सुवास,
 गंधित, वासित २. सुगंधि, सुगन्धित, सुगन्ध-
 वत्, सुवासित ३. समान-तुल्य, गंध ४. गंधित ।
 सग, सं. पुं. (क्.) शानः, कुक्कुरः ।
 सगण, वि. (सं.) सदल, ससैन्य । सं. पुं.
 (सं.) शिवः २. छन्दःशास्त्रीयगणभेदः,
 अन्तगुरुगणः ।
 सगबग, वि. (अनु.) अति, निलम्न-आर्द्र, दे.
 'लभपथ' २. आर्द्रो-द्रवी, भूत ३. परिपूर्ण ।
 सगर्व, वि. (सं.) गवित, दृप्त । कि. वि., सगर्व,
 साभिमानम् ।
 सगा, वि. (सं. स्त्रक >) सीदर, सहोदर,
 सोदर्य, सयोगि, सगर्भं २. स्वतुलज । सं. पुं.,
 सकुल्यः, सगोत्रः, बंधुः ।
 —भाई, सं. पुं., सोदरः, सहोदरः, सगर्भ्यः ।
 सगापन, सं. पुं. (हि. सगा) सोदरता, सग-
 र्भता २. संबंधनैकत्वम् ।
 सगाई, सं. स्त्री. (हि. सगा) दे. 'संगनी' ।
 सगुण, वि. (सं.) गुणित, गुणाम्बित । सं. पुं.
 (सं.) साकारिभरः २. अवतारपूजक-भक्त-
 संप्रदायः ।
 सगुन, सं. पुं., दे. 'शकुन' ।
 सगोत्री, सं. पुं. (सं. सगोत्र) एक-सम-गोत्रः
 २. बंधुः, शातिः (स्त्री.) ।
 सगोत्र, वि. (सं.) संबंधिन, सजाति, सजा-
 तीय, एक-स-गोत्र । (सं. न.) कुलम् ।
 सघन, वि. (सं.) निविड, साद्र, घन, अनन्तर,
 गाढ २. स्थूल, संघत ।
 सख, वि. (सं. सत्य) यथार्थ, अबितथ, दे.
 'सत्य' । सं. पुं., सत्यं, तथ्यं, अबितथम् । कि.
 वि., वस्तुतः, यथार्थतः (दोनों अन्व.) ।
 —शोलना, क्रि. स., सत्यं वद (भ्वा. प. से.)
 -इ (अ. उ.) ।
 —सुख, क्रि. वि. (हि. अनु.) तत्त्वतः,
 वस्तुतः, सत्यं, सत्यतः २. अवश्यं, निःसंदेहम् ।
 सखराखर, सं. पुं. (सं.) चराचर-स्थावर-

जंगम-अडभेतन-सजीवनजीव, पदार्थाः (पुं.
 बहु०) ।
 सखल, वि. (सं.) नल, चर, जंगम, गति-
 शील २. ज्वेनन, प्राणिन् ।
 सखाई, सं. स्त्री. (हि. सत्त्व) सत्वता, अबित-
 थता २. यथार्थ्यं, वास्तविकता ।
 सखान, सं. पुं. (सं. संचानः अथवा सत्य-
 मानः > ?) इयेनः, पत्रिन्, शशादनः, दे.
 'बाज' ।
 सखित, वि. (सं.) जिता, पर-भग्न, उद्विग्न,
 व्याकुल ।
 सखिव, सं. पुं. (सं.) मित्रं, सहि (पुं.)
 २. मंत्रिन्, अमात्यः ३. सहायः-व्यकः ।
 सखेत, वि., दे. 'सखेतन' ।
 सखेतन, वि. (सं.) जेतनवत्, ससंज्ञ, जेतनो-
 पपन्न २. सावधान ३. चतुर ।
 सखेष्ट, वि. (सं.) उद्योगिन्, उत्साहिन्,
 सोत्साह, सोद्योग, उत्साह-उद्योग, शील २. जेष्ट-
 मान, कर्मोद्युक्त ।
 सखा, वि. (सं. सत्य) सत्य-वथार्थ, भाषिन्-
 वादिन् २. सत्य, यथार्थ, वास्तविक ३. वि-
 शुद्ध, पवित्र, स्वच्छ, निश्चयशून्य ४. यथा-
 योग्य, यथोचित ।
 सखाई, सं. स्त्री., दे. 'सखाई' ।
 सखिदानंद, सं. पुं. (सं.) नित्यज्ञानमुखस्व-
 रूपं ब्रह्मन् (न.), परमेश्वरः ।
 सज, सं. स्त्री. (सं. सजा) अलंक्रिया, परिष्कृत्या
 प्रसाधनं, गंडनं २. रूपं, आकृतिः (स्त्री.)
 ३. शोभा, छविः (स्त्री.) ।
 —धज, बज, सं. स्त्री. (हि. अनु.) दे. 'सज'
 (१-३) । ४. परिकल्पनं, सजा, सज्जनं-ना ।
 सजग, वि. (सं. स+हि. जागना) जागरूक,
 अवहित, सावधान ।
 सजन, सं. पुं. (सं. सज्जनः) आर्यः, भद्रः,
 स्तुतुहः २. पतिः, भर्तृ ३. उपपतिः, जारः
 ४. दयितः, कांतः ।
 सजनपद, वि. (सं.) एक-समान-देशजः-
 देशीयः-देशवासिन् ।
 सजना, क्रि. अ. (सं. सज्जनं) सज्ज् (भ्वा.
 उ. से.) सज्ज-परिकल्पित सिद्ध (वि.) भू
 २. आत्मानं मंड-भूष (चु.) अलंकृ ३. राज्
 श्चम् (भ्वा. आ. से.) ।

सजनी, सं. स्त्री. (हि. सजन) स्त्री, सहचरी
२. उपपत्नी, जारिणी, भुजिष्या ३. दाता,
प्रिया, दयिता ।

सजल, वि. (सं.) उत्स, उन्न, तिमित, आर्द्र,
विलज्ज, जलद्युत, सनीर २. तवाष्प, सास,
अश्रुपूर्ण (नेत्र) ।

सज्ञा, सं. स्त्री. (फा.) दे. 'दंड' ।
—याप्तता, वि. (सं.) दंडित, भुक्तदंड २. अप-
राधशील, पुराणपातकिन् ।
—वार, वि. (फा.) दंडनीय, दंडय ।

सजाति } वि. (सं.) समोत्र, गोत्रज, संबंध-इय
सजातीय } २. तुल्य, सदृश ।

सजाना, कि. स. (हि. सजना) सज्जीक,
सज्ज-परिकल्प, (प्रे.) २. व्यवस्था (प्रे.),
क्रमशः निविश (प्रे.) ३. मंड-भूष् (जु.),
अलंकृ. दे. 'संवारना' ।

सजावट, सं. स्त्री. (हि. सजाना) दे. 'सज'
(१) २. शोभा, श्रीः (स्त्री.) ३. दे. 'सज-
धज' (४) ।

सजावल, सं. पुं. (तु. सजाकुल) *शुत्कलः,
करसंघाहकः २. राजकर्मचारिन् ३. दे.
'सिपाही' ।

सजा हुआ, वि., सज्ज, सिद्ध, संनद्ध २. भूषित
३. शोभमान ।

सजीला, वि. (हि. सजना) युवेशमानिन्,
वेशामिमानिन्, अलंकृत २. टविभट,
मनीहर ।

सजीव, वि. (सं.) प्राणिन्, प्राणधारिन्,
चैतन, चैतन्ययुक्त २. क्षिप्र, लघु ३. ओज-
स्विन् ।

सजीवता, सं. स्त्री. (सं.) प्राणवत्ता, चैतन्यं
२. लावण्यं, क्षिप्रता ३. ओजस्वित ।

सजीवन, सं. पुं., दे. 'संजीवनी', सं. स्त्री. ।
१, २ ।

—बूटी, सं. स्त्री. रुद्रवती (?) ।

—सूर, मूल, सं. पुं. 'संजीवनी बूटी' ।

सज्जन, सं. पुं. (सं.) अर्थः, भद्रः, मत्पुरुषः,
सु-साधु-जनः, महातुभावः, महाशयः २. कु-
लीनः, अभिजातः । वि., भद्र, सद्गुण २. महा-
कुल, कुलीन ।

सज्जन्ता, सं. स्त्री. (सं.) भद्रता-त्वं, आर्यता-

त्वं, सुशीलता, सौजन्यं, सुजन्तान्त्वं २. कुली-
नता, अभिजात्यन् ।

सज्जित, वि. (सं.) अलंकृत, भूषित, मंडित,
परिष्कृत २. सतद्ध, सिद्ध, सज्ज, उद्यत ।

सज्जी, सं. स्त्री. (सं. सजी) सज्जिः (स्त्री.),
सज्जिका, स्वजिभः, स्वजिन् ।

सटक, सं. स्त्री. (अनु. सट) मृदुयष्टिः (स्त्री.)
२. धूमपानधंत्रस्य नम्यनाली ३. निभृता-
पसारः ।

सटकना, कि. अ., निभृतं अपयः (अनु. सट)
(अ. प. अ.), सनैः अपयः (स्वा. प. अ.) ।

सटना, कि. अ. (सं. स+स्था >) लग्
(स्वा. प. से.), संस्पृश (तु. प. अ.),
लग्न-संस्पृष्ट-संनिहित (वि.) भू २. शिष्
(दि. प. अ.) संज (स्वा. प. अ.) ।

सटपटाना, कि. अ. (अनु.) सटपटायते (ना.
धा.), सटपटध्वनिः अन् (दि. आ. से.)
२. अशांत-पर्याकुल-चंचल (वि.) भू. दे.
'व्याकुल होना' ।

सटपटाया हुआ, वि., संक्षुब्ध, संमूढ, अशांत,
व्याकुल, संभ्रांत, अस्वस्थ ।

सटरपटर, वि. (अनु.) क्षुद्र, तुच्छ, साधारण ।
सं. स्त्री., व्यर्थकार्यं २. दुष्करकृत्यम् ।

सटाना, कि. स., व. 'सटन' के प्रे. रूप ।

सटा हुआ, (वि.), लग्न, संस्पृष्ट; संनिहित,
२. सक्त, शिल्ल ।

सटीक, वि. (सं.) सभाष्य, व्यख्यन्वित ।

सट्टा, सं. पुं. (सं. सार्थ >) समवलेसः, दे.
'दकारानामा' २. संदिग्धफलव्यवहारः, खेला ।

सट्टा-वट्टा, सं. पुं. (हि. सटना+अनु.)
उपजापः, कूटः, कूट, युक्तिः-उपायः २. संसर्गः,
शेकः ।

सठियाना, कि. अ. (वि. साठ) षड्विषयं
(वि.) भू २. ज्या (क्. प. अ.), ज (दि.
क्. प. से.) ३. वार्धक्येन बुद्धिः क्षि (कर्म.)
-नश् (दि. प. से.) ।

सठियाया हुआ, वि., षड्विषयं २. जरठ, स्थ-
विर २. जरथा मंदमनि-नष्टबुद्धि ।

सडक, सं. स्त्री. (अ. शरक) अध्वन्, पथिन्,
राज श्री, पथः, मार्ग, दे. ।

सडन, सं. स्त्री. (हि. सडना) गलनं, विद्र-
वणं, विलयनम्, क्षरणम् ।

सङ्घना, क्रि. अ. (सं. शरणं >) विश्व (कर्म.),
 जू (दि. प. से.), विगल् (भ्वा. प. से.)
 २. पूय (भ्वा. अ. से.), पूतीभू ३. फेनायते
 (ना. धा.), उत्सिच् (कर्म.), अंतः क्षुभ् (दि.
 प. से.) (अग्रमीर आना.), ४. दुर्गंत (वि.
 स्था (भ्वा. प. अ.), अवसद् (भ्वा. प. अ.) ।
 सं. पुं., जीर्णः (स्त्री.), विगलनं, पूयनं, पूतिः
 (स्त्री.), अवसादः, दुर्गतिः (स्त्री.); अभिषवः,
 अंतःक्षीमः ।
 सङ्घसठ, सं. पुं. तथा वि., दे. 'सतसठ' ।
 सङ्घाक, सं. स्त्री. (अनु. सङ्घ) त्वरा २. कदा-
 शब्दः ।
 सङ्घाव्यंघ, सं. स्त्री. (हि. सङ्घना + गंध >)
 दुर्गंध, पूतिः (स्त्री.), पूतिगंधः ।
 सङ्घा हुआ, वि., जीर्ण, विशीर्ण, दूषित, विग-
 लित, पूति, पूतिगंध, पूतिक, उत्सिक्त, सफेन,
 दुर्गंत, अवसन्न ।
 सङ्घियल, वि. (हि. सङ्घना) पूति, पूतिगंध,
 कलुष २. जीर्ण, शीर्ण ३. क्षुद्र, तुच्छ ४. नि-
 रर्थक, व्यर्थ ।
 सत्, सं. पुं. (सं.) श्राविः २. सज्जनः । (सं.
 न.) ब्रह्मन् (न.) २. भद्रभू । वि. (सं.)
 सत्य, यथार्थ २. साधु, श्रेष्ठ ३. धीर ४. शाश्वत,
 नित्य ५. प्राप्त, पंडित, ६. पूज्य ७. पवित्र
 ४. उत्तम, उत्कृष्ट । सत्कर्म आदि, दे. आगे ।
 सत्, सं. पुं. (सं. सत्त्वं) दत्तं, सारः २. विष्क-
 र्षः, भावः ३. ऊर्जस् (न.), सामर्थ्यम् ।
 सत्, वि. (सं. सत्त्वं) दे. 'सात' ।
 —मंजिला, वि. (हि. + अ.) सप्त, भूमिक-
 भौम (महल आदि) ।
 —मासा, सं. पुं., सप्तमास्यः (शिशुः) २. रीति-
 विशेषः, *साप्तमासिकम् ।
 —रंगा, वि., सप्तवर्ण-रंग ।
 सत्गुरु, सं. पुं. (सं. सत् + गुरुः) सद्गुरुः,
 सच्चिदक्षकः २. परमेश्वरः ।
 सत्तुग, सं. पुं., दे. 'सत्ययुग' ।
 सत्त, अव्य. (सं. सत्तं) निरन्तरं, सदा,
 सर्वदा, नित्यम् ।
 —गति, सं. पुं. (सं.) पवनः, वायुः ।
 —ज्वर, सं. पुं. (सं.) स्वाधि-स्थास्तु-नित्य-
 जीर्ण-ज्वर-तापः ।
 सतर, सं. स्त्री. (अ.) रेखा २. पंक्तिः (स्त्री.) ।

सतरह, वि. (सं. सप्तदशम्) सं. पुं., उक्ता
 संख्या तद्बोधकां कौ (१७) च ।
 सतरहवाँ, वि. (हि. सतरह) सप्तदशः शो-
 शं (पुं. स्त्री. न.) ।
 सतर्क, वि. (सं.) सहेतुक, संयुक्तिक, उप-
 पत्तिमत् २. प्रमादरहित, जागरूक, सावधान ।
 सतर्कता, सं. स्त्री. (सं.) जागरूकता, साव-
 धानता ।
 सतलज, सं. स्त्री., दे. 'शनद्र' ।
 सतलबा, सं. पुं. (हि. सात + लड) सप्त-
 मूत्रो हारः २. सप्तगुण माला । वि., सप्त-मूत्र-
 गुण-शुल्ब ।
 सतवती, वि. स्त्री. (सं. सत्यवती >) सुच-
 रित्रा, पतिव्रता, पतिपरायणा, सती, साध्वी ।
 सतसई, सं. स्त्री. (सं. सप्तशती-तिका)
 सतसैया, शतसप्तकपद्यात्मकः संग्रहः २. श्री-
 विशारीलालरचितो हिंदीभाषायाः काव्य-
 विशेषः ।
 सतसठ, वि. [सं. सप्तषष्टिः (नित्य स्त्री.)] सं.
 पुं., उक्ता संख्या तद्बोधकां कौ (६७) च ।
 सतह, सं. स्त्री. (अ.) तलं, पृष्ठं, उपरि-पृष्ठ-
 भागः ।
 सतहत्तर, वि. [सं. सप्तसप्ततिः (नित्य स्त्री.)]
 सं. पुं., उक्ता संख्या तद्बोधकां कौ (७७) च ।
 सताना, क्रि. स. (सं. संतापनं) सं. परि-ताप
 (प्रे.), पीड (चु.), दुःखवृत्ति (ना. धा.),
 विलम्ब (क्. प. से.) २. खिद-आयस उद्धिञ्
 (प्रे.) । सं. पुं., सं-परि-तापनं, पीडनं,
 क्लेशनं, अर्दनं, आघासनं, उद्वेजनं, वाहनं इ. ।
 सतानि योग्य, वि., संताप्य, पीडनीय, उद्वे-
 जनीय ।
 सतानि वाला, सं. पुं., सं-परि-तापकः-पीडकः,
 क्लेश-दुःख-करः-आवहः, आयासकः, खेदकरः ।
 सताया हुआ, वि., पीडित, संतापित, आयासित
 उद्वेजित, वाधित, इ. ।
 सतालू, सं. पुं., दे. 'शफाल' ।
 सतावरी, सं. स्त्री. (सं. शतावरी) शतमूली,
 नारायणी, बरी, बहुसुता ।
 सतासी, वि. [सं. सप्ताशीतिः (नित्य स्त्री.)]
 सं. पुं., उक्ता संख्या तद्बोधकां कौ (८७) च ।
 सती, वि. स्त्री. (सं.) दे. 'सतवती' । सं. स्त्री.
 (सं.) पतिव्रता नारी २. मृतभर्जा सह दग्धा
 नारी, सह-गामिनी-मृता ३. दक्षकन्या ।

सतीत्व

[२६६]

सत्य

—चौरा, सं. पुं. (सं. + हि.) *सतीवेदिका ।

—पुत्र, सं. पुं. (सं.) पतिव्रता-साध्वी, पुत्र-तनयः ।

—व्रत, सं. पुं. (सं. न.), पतिव्रत-स्यम्, सतीत्वम् ।

—व्रता, सं. स्त्री. (सं.) पतिव्रता नारी ।

—होना, मु., मृतभर्त्रा साईं दह् (कर्म.)-भस्मीभू ।

सतीत्व, सं. पुं. (सं. न.) पतिव्रत्यं, साध्वीत्वं ।

—बिगाडना वा नष्ट-करना, मु., सतीत्वं नश (प्रे.), बलात्कारेण गम् (भ्वा. आ. अ.)-अभि-गम् (भ्वा. प. अ.), पतिव्रत्यं दुष् (प्रे.) ।

—हरण, सं. पुं. (सं. न.) बलात्कारः, दृढ-संभोगः, बलान्भेषुनम् ।

सतीर्थ, सं. पुं. (सं.) सतीर्थ्यः, एकगुरुः ।

सत्तन, सं. पुं. (फा.) स्थूपा, स्तंभः ।

सतोयुग, सं. पुं., दे. 'सत्वयुग' ।

सतोयुगी, वि. (हि. सतोयुग) दे. 'सत्व-युगी' ।

सत्कर्म, सं. पुं. (सं.-मर्द (न.) शुभ-सु-पुण्य-कार्य-कृत्यं-कृतिः(स्त्री.)-क्रिया-कर्मन्, पुण्यम् ।

सत्कार, सं. पुं. (सं.) आदरः, संमानः, पूजा २. आतिथ्यं, अतिथिसेवा ।

सत्कार्य, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'सत्कर्म' । वि., पूज्य, मान्य, आदरणीय ।

सत्कृत, वि. (सं.) आवृत्त, संमानित, पूजित ।

सत्त, सं. पुं., दे. 'सत' ।

—सत्तम, वि. (सं.)-उत्तम, श्रेष्ठ ।

सत्तर, वि. [सं. सप्ततिः (नित्य स्त्री.)] उक्ता संख्या तद्बोधकांशौ (७०) च ।

सत्तरवाँ, वि. (हि. सत्तर) सप्ततितमः-तमी-तमं (पुं. स्त्री. न.) ।

सत्तरह, वि., तथा सं. पुं., दे. 'सतरह' ।

सत्ता, सं. स्त्री. (सं.) सत्त्वं, अस्तित्वं, भावः, विश्वमानता २. शक्तिः (स्त्री.), सामर्थ्यं ३. प्रभुत्वं, अधिकारः ।

—धारी, सं. पुं. (सं.-रिद >) अधिकारिन्, आपिकारिकः ।

सत्ता, (सं. सप्तन् >) सप्तविद्वाकितं क्रोडापत्रं, *सप्तकः ।

सत्ताईस, वि. [सं. सप्तविंशतिः (नित्य स्त्री.)] सं. पुं., उक्ता संख्या तद्बोधकांशौ (२७) च ।

सत्ताईसवाँ, वि. (हि. सत्ताईस) सप्तविंशति-तमः-तमी-तमं, सप्तविंशः-शी-शं (पुं. स्त्री. न.) ।

सत्तानवे, वि. [सं. सप्तनवतिः (नित्य स्त्री.)] सं. पुं., उक्ता संख्या तद्बोधकांशौ (९७) च ।

सत्तावन, वि. [सं. सप्तपंचाशत् (नित्य स्त्री.)] सं. पुं., उक्ता संख्या तद्बोधकांशौ (५७) च ।

सत्तासी, वि. [सं. सप्ताशीतिः (नित्य स्त्री.)] सं. पुं., उक्ता संख्या तद्बोधकांशौ (८७) च ।

सत्तु, सं. पुं. [सं. सवतु (केवल पुं. बहु. में सक्तयः)] सक्तुकः, शक्तु (पुं. न.), भृष्टयव-चूर्णम् ।

सत्त्व, सं. पुं. (सं. न.) प्रकृत्यैर्गुणविशेषः २. सत्ता, अस्तित्वं, भावः ३. सारः, तत्त्वं, मूलद्रव्यं ४. विशेषता, अंतःप्रकृतिः (स्त्री.) ५. वित्त-प्रकृतिः (स्त्री.) ६. नेतना, चैतन्यं ७. प्राणः ८. आत्मन् ९. प्राणिन् १०. गर्भः ११. प्रेतः, भूतः १२. शक्तिः (स्त्री.), बोधम् ।

—गुण, सं. पुं. (सं.) सत्कर्मसु प्रवर्तको गुणः, विवेकशीलप्रकृतिः (स्त्री.) ।

—गुणी, वि. (सं.) सार्विक, उत्तमप्रकृति, विवेकशील ।

सत्पथ, सं. पुं. (सं.) सु-सन्, -मार्गः २. सद्-वृत्त-आचारः ३. सु-संप्रदायः-सिद्धांतः ।

सत्पात्र, सं. पुं. (सं. न.) सुपात्रं, दानार्हो जनः २. आर्यः, मद्रजनः ३. सु-वरः-बौद्ध ।

सत्पुरुष, सं. पुं. (सं.) आर्यः, सद्ब्रह्मो मानवः, मद्रः ।

सत्य, सं. पुं. (सं. न.) तथ्यं, ऋः, तत्त्वं, यथार्थं, अनित्यं, भूत-परम-तत्त्वं, -अर्थः २. शपथः ३. प्रतिज्ञा ४. कृतयुगम् । वि., तथ्य, अनित्य, वास्तविक, यथार्थं, ऋतु २. अकृत्रिम, अकृतक ।

—काम, वि. (सं.) सत्य-प्रिय-अभिलाषिन् ।

—नारायण, सं. पुं. (सं.) देवताविशेषः (= सत्यपीर हि.) ।

—प्रतिज्ञ, वि. (सं.) सत्य-व्रत-संगर-संध-अभिसंध ।

—युग, सं. पुं. (सं. न.) चतुर्युगेषु प्रथमयुगं, कृतयुगं (= १७२८००० वर्ष) ।

—युगी, वि. (सं. सत्ययुगं >) सत्ययुगसंबन्धित २. अति-पुराण-प्राचीन ३. चर्मात्मन्, सद्-वृत्त, सरलः ।

सत्यतः

[२३७]

सदाचार

—लोक, सं. पुं. (सं.) सप्तलोकान्तर्गत उच्चतमो लोकः, यज्ञलोकः ।
 —वचन, सं. पुं. (सं. न.) सत्य-वयार्थ, कथन-भाषणं २. प्रतिज्ञा ।
 —वादी, वि. (सं.-दिन्) तथ्य-सत्य-भाषिन्, यथार्थवक्तु २. दे. 'सत्यप्रतिज्ञ' ।
 —व्रत, सं. पुं. (सं. न.) सत्यभाषणप्रतिज्ञा । वि., सत्य, वादिन्-प्रतिज्ञ-सन्ध ।
 —संकल्प, वि. (सं.) दृढसंकल्प ।
 —संध, वि. (सं.) दे. 'सत्यप्रतिज्ञ' । सं. पुं. (सं.) श्रीरामः २. भरतः ३. जनमेजयः ।
 सत्यतः, अव्य. (सं.) वस्तुतः, सत्यम् ।
 सत्यता, सं. स्त्री. (सं.) वास्तविकता, याथार्थ्यं २. नित्यत्वम् ।
 सत्यभामा, सं. स्त्री. (सं.) सत्राजित्पुत्री, श्रीकृष्णपत्नीविशेषः ।
 सत्यवती, वि. स्त्री. (सं.) सत्य-भाषिणी-वादिनी २. धार्मिकी । सं. स्त्री. (सं.) व्यास-जननी, योजन-मत्स्य-गंधा, गंध-काली ।
 —सुत, सं. पुं. (सं.) न्यःसः, दूपायनः ।
 सत्यवान्, वि. (सं.-वद) दे. 'सत्यवादी' (१-२) ।
 सं. पुं., सावित्रीपतिः, नृपदिशेषः ।
 सत्या, सं. स्त्री. (सं.) सत्यता, दे. । २. सीता ३. द्रौपदी ४. दे. 'सत्यवती' सं. स्त्री. ५. दुर्गा ।
 सत्याकृति, सं. स्त्री. (सं.) सत्यापनं, सत्य-कारः, अग्रार्थः, दे. 'पेशगी' ।
 सत्याग्रह, सं. पुं. (सं.) निःशस्त्र-अहिंसात्मक-विरोधः-प्रतिकारः २. तथ्यनिर्बंधः ।
 —आंदोलन, सं. पुं. (सं. न.) निःशस्त्र-विरोधांदोलनम् ।
 सत्याग्रही, सं. पुं. (सं.-हिन्) अहिंसात्मक-विरोधिन् २. तथ्याभिनिवेशिन् ।
 सत्यानास, सं. पुं. (सं. सत्तानाशः) वि., ध्वंस-नाशः, सर्वनाशः ।
 —करना, क्रि. स., कि-नश्-ध्वंसू (प्रे.), समूलं उच्छिद्य् (२. प. व.) ।
 सत्यानासी, वि. (हिं. सत्यानास) सर्ववि-नाशक-ध्वंसक २. मंद-हत-भाष्य ।
 सत्वानुत्, सं. पुं. (सं. न.) वाणिज्यं २. सत्या-सत्यनिश्रणम् ।
 सत्र, सं. पुं. (सं. न.) यज्ञः, भागः, मखः

२. सोमयागभेदः ३. भवनं, सवन (न.), ४. धनं ५. दे. 'सदावर्त' ।
 सत्रह, वि. तथा सं. पुं., दे. 'सतरह' ।
 सत्वर, अव्य. (सं.-रं) शीघ्रं, दे. ।
 सत्संग, सं. पुं. (सं.) आर्य-सत्-संगतिः (स्त्री.)-समाधामः-संसर्गः-संवासः-साहचर्यम् ।
 सत्संगी, वि. (सं.-गिन्) सज्जनसहचर (-री स्त्री.) २. धार्मिक (-नी स्त्री.) ।
 सधिया, सं. पुं. (सं. स्वस्तिकः) मांगलिक-विह्वविशेषः २. दे. 'जर्हाह' ।
 सदका, सं. पुं. (अ.-कह्) दानं, बलिः, उपहारः, दे. 'निष्ठावर' ।
 सदन, सं. पुं. (सं. न.) भवनं, गृहं, दे. 'धर' २. जलम् ।
 सदमा, सं. पुं. (अ. सदसह) आघातः, प्रहारः २. दुःखं, शोकः ३. अत्याहितं, विषद् (स्त्री.) ४. गहा-श्रुतिः-दानिः (दोनों स्त्री.) ।
 —पहुँचना, क्रि. अ., आह्व (कर्म.), शोकेन विपदा वा त्रस् (कर्म.) ।
 सदय, वि. (सं.) दयान्वित, दयालु, दे. ।
 सदर, वि. (अ.) प्रधान-मुख्य, विशिष्ट । सं. पुं., केंद्रस्थलं २. राजधानी ३. सैन्यनिवेशः, दे. 'छावनी' ४. सभा-पतिः-अध्यक्षः ।
 —नशोन, सं. पुं. (अ.+फा.) दे. 'सदर'(४) ।
 —बाजार, सं. पुं. (अ.+फा.) प्रधानाणः २. सैन्याणः ।
 —बोर्ड, सं. पुं. (अ.+अं.) *राजस्वपरिषद् ।
 —सुधान, सं. पुं. (अ.) मुख्यकार्यालयः ।
 सदरी, सं. स्त्री. (अ.) दे. 'वास्कट' ।
 सदस्य, सं. पुं. (सं.) दे. 'सभासद्' ।
 सदा, अव्य. (सं.) नित्यं, सर्वदा, अनिश्च, सततं, सर्वकालं २. निरन्तरं, अनवच्छिन्नं, अविरतम् ।
 —गति, सं. पुं. (सं.) बलुः ।
 —बहार, वि. (सं.+फा.) *सदावसंत, नित्य-हरित, शश्वत्पत्र ।
 —वर्त, सं. पुं. (सं.-व्रतं) नैतिकभोजन, दान-वितरण-उत्सर्गः, *सदाव्रतं २. नैतिकदानम् ।
 —सुखी, वि. (सं.-खिन्) सर्वदानं ।
 —सुहागिन, वि. स्त्री. (सं.+हिं.) नित्य-सौभाग्यवती, अमरपतिका २. वैश्या ।
 सदाचार, सं. पुं. (सं.) सचर्चा, सदाचरणं, सच्चारित्र्यं, सद्वृत्त-न्तिः (स्त्री.), सचरितं, सद्-

सदाचारी

[११८]

सनातन

व्यवहारः २. शिष्टता, सौजन्य, भद्रता इ.रीतिः (स्त्री.), प्रथा ।

सदाचारी, सं. पुं. (सं.रिन्) सद्वृत्त, सुचरित-सचरित्र २. धर्मात्मन्, पुण्यात्मन् [सदानारिणी-सद्वृत्ता आदि (स्त्री.)] ।

सदानन्द, वि. (सं.) आनन्दशील, नित्यानन्द । सं. पुं. (सं.) परमेश्वरः ।

सदार, वि. (सं.) सपत्नीक, जावान्वित ।

सदारत, सं. स्त्री. (अ.) सभा, पतित्व-अध्यक्षता ।

सदाश्रित, वि. (सं.) परत्वलंबशूल, परत्वलंबिन् ।

सदी, सं. स्त्री. (अ.) शताब्दी, शती २. शतम् ।

सद्गुपदेश, सं. पुं. (सं.) सच्छिक्षा २. सन्मन्त्रणः ।

सदृश, वि. (सं.) सरूप, तुल्याकार २. सम, समान, तुल्य, सदृश ३. योग्य, उचित ।

सदृशता, सं. स्त्री. (सं.) समानता, तुल्यता ।

सदेह, कि. वि. (सं. न.) सशरीर, सकायम् ।

सदैव, अव्य. (सं.) सर्वदैव, नित्यमेव ।

सदोष, वि. (सं.) सापराध, अपराधिन्, दोषिन्, वृष्टि-दोष, युक्त ।

सद्गति, सं. स्त्री. (सं.) मोक्षः, मुक्तिः (स्त्री.) २. सुदशा, सुगतिः (स्त्री.) ३. सदाचारः ।

सद्गुण, सं. पुं. (सं.) सु, गुणः, सलक्षणम् ।

सद्भाव, सं. पुं. (सं.) हित-सुभ, चिन्ता, हितैषणः-पिता २. सरुच्यं ३. निष्कपटता, सरलता, ऋजुता ४. सत्ता, अस्तित्वम् ।

सधना, कि. अ. (हि. सधना) विनी (कर्म.), वशीभू, दम् (दि. प. से.) २. अभ्यस्त (वि.) भू ।

सधमिणी, सं. स्त्री. (सं.) धर्मपत्नी २. तुल्य-महावलंबिनी ।

सधर्म, वि. (सं.रिन्) सधर्मन्, सधर्म, समान-धर्मानुयायिन् २. तुल्यगुण ।

सधवा, सं. स्त्री. (सं.) सिन्दूरमिलका, सभर्तुका, सनाथा, पतिवती, जीवत्पतिका, सौभाग्यवती ।

सधाना, कि. स. (हि. सधना) विनी (भाष. अ.), दम् (प्रे.), शिक्ष (प्रे.), वशी कृ ।

सं. पुं., विनयनं, दमनं, वशे करणम् ।

सधानेवाला, सं. पुं., विनेत्, दमयितृ ।

सधा हुआ, वि., विनीत, दांत, शिक्षित, वशग ।

सन्, सं. पुं. (अ.) दे. 'संवत्' (१, ३) ।

—ईसवी, सं. पुं., ख्रिस्त-शाकः-संवत् (अव्य.) ।

—हिजरी, सं. पुं., यवन-शाकः-संवत् ।

सने, सं. पुं. (सं. शणः) दीर्घ-शाखः-पल्लवः, त्वकसारः, वमनः ।

सन^२, सं. स्त्री. (अनु.) सपिति, सणत्कारः, शीघ्रनिर्गमनध्वनिः । वि., स्तब्ध २. निःशब्द ।

—से, कि. वि., ससणत्कारम् ।

सनई, सं. स्त्री. (हि. सन) छुद्रशणः ।

सनक, सं. स्त्री. (सं. शंका >) वृद्धाग्रहः, उत्कटाभिनिवेशः, चित्तलहरी, छन्दः ३. उन्मादः, चित्तभ्रमः ।

सनकना, कि. अ. (हि. सनक) उन्मद (दि. प. से.), व्यामुद् (दि. प. वे.) ।

सनकी, वि. (हि. सनक) उत्कटाभिनिवेशिन्, वृद्धाग्रहिन् ।

सनद, सं. स्त्री. (अ.) प्रमाणपत्रं २. प्रमाणम् ।

—याप्रता, वि. (अ. + फा.) प्रमाणपत्रधारिन् ।

सनना, कि. अ. (सं. संधान >) व. 'मानना' के कर्म. के रूप ।

सनम, सं. पुं. (अं.) प्रियतमः, दयितः, वल्लभः ।

सनमान, सं. पुं., दे. 'समान' ।

सनसनाना, कि. अ. (अनु. सनसन) सगण-यते (ना. धा.) २. सगणसणशब्दं वा (अ. प. अ.) ।

सनसनाहट, सं. स्त्री. (हि. सनसनाना) पवनवहनध्वनिः, वातगतिशब्दः २. (शरा-दीर्घा) सणसणायितं, सणसणत्कारः ३. दे. 'सनसनी' ।

सनसनी, सं. स्त्री. (अनु. मनसन) संवेदन-नाडीनां स्पंदनमेदः, सणसणकृतिः (स्त्री.) २. स्तब्धता ३. संक्षोभः, उद्वेगः ४. नीरवता ।

—खेज, वि. (अनु. + फा.) संक्षोभजनक, उद्वेगकर ।

सनस्टोक, सं. पुं. (अं.) अनुवातः ।

सनातन, वि. (सं.) अति-पुराण-प्राचीन-पुरातन २. क्रमागत, परंपरालम्ब ३. नित्य, शाश्वत [सनातनी (स्त्री.)] । सं. पुं., प्राचीनकालः २. पुरातनी परंपरा ३. विष्णुः ४. ब्रह्मन् ५. शिवः ।

—धर्म, सं. पुं. (सं.) प्राचीन-पुरातन-धर्मः

सनातनी

[२६३]

सप्त

२. परंपरागतो धर्मः ३. प्रतिमापूजनमृतक-
श्राद्धादिविधासो हिद्दुधर्मशाखाविशेषः, पौरा-
णिकधर्मः ।
—धर्मी, सं. पुं. (सं. मिन्) सनातनधर्मा-
नुयायिन्, पुराणमतवाक्यविन् ।
—पुरुष, सं. पुं. (सं.) विष्णुः ।
सनातनी, सं. पुं. (सं. सनातन) दे. 'सना-
तनधर्मी' । वि., पुरातन, परंपरालम्ब ।
सनाथ, वि. (सं.) मातृपितृमृत २. सपतिक,
सभर्तृक, संरक्षकयुव, सहायक [सनाथा
(स्त्री.) जीवदभर्तृका] ।
सनाभि, सं. पुं. (सं.) मोदरः, सहोदरः
२. सपिंडः, समोत्रः, सन्ध्याः ।
सनाथ, सं. स्त्री. (अ. सनाऽ) स्वर्गपत्री-त्रिका,
रेननी, कल्याणी, मलहारिणी ।
सनाह, सं. पुं. (सं. सनाहः) तनुत्राणं, कवच-
चं दे. ।
सनिद्र, वि. (सं.) निद्रित, निद्राण, शयित,
सुप्त, शयान ।
सनीचर, सं. पुं., दे. 'शनीक्षर' ।
सनीड, वि. (सं.) सकुलाय, सम-एक, नीड-
वास्ति २. सम्बन्धिन्, सम्बन्धकः, सम्पकिन् ।
सं. पुं., सामीप्यं, नैकत्वम् २. प्रातिवेश्यन्,
प्रतिवेशः ।
समोवर, सं. पुं. (अ.) दे. 'नीड' (वृक्ष) ।
सन्न, वि. (सं. शून्य) अफित-अफित, अति-
विस्मिता २. स्तब्ध, जडीभूत, व्यामोहित
३. निःसंभ, अचेतन ४. सताध्वरा, भयःभिभूत ।
संनद्ध, वि. (सं.) बद्धकवच, धृतसंनद्ध
२. सायुध, सशस्त्र ३. सज्ज, सिद्ध, उद्यत,
उपकल्प ४. संनद्ध, संलग्न ।
सन्नाटा, सं. पुं. (हि. सन्न) निःशब्दता, नीर-
वता २. निर्जनता, विजनता, विवकां ३. भय-
विस्मयादिजनिता निःस्तब्धता । वि., नीरव
२. निर्जन ।
सन्मान, सं. पुं., दे. 'संमान' ।
सन्मुख, अव्य., दे. 'संमुख' ।
सन्ध्यास, सं. पुं., दे. 'संन्ध्यास' ।
सपक्ष, सं. पुं. (सं.) स्वपक्ष, पातिन्-अवलंबिन्,
सहायकः, मित्रम् ।
सपत्नी सं. स्त्री. (सं.) समानपतिकका, समान-
भर्तृका ।

सपत्नीक, वि. (सं.) सकलत्र, सपरिग्रह ।
सपना, सं. पुं., दे. 'स्वप्न' ।
—होना, सु., दुर्दृश्य-दुर्लभ (वि.) भू ।
सपरदाई, सं. पुं. (सं. संप्रदायिन >) दे.
'साशिदा' ।
सपर्या, सं. स्त्री. (सं.) पूजा-जनन, आराधना-
नम् ।
सपाट, वि. (सं.) सम, समरेख, समरथ,
समतल ।
सपाटा, सं. पुं. (सं. सर्पणं >) चलनधा-
नोद्भूयनादीनां अवः, वेगः, रथः २. त्वरित-
गतिः (स्त्री.), धावनम् ।
सैर—, सं. पुं., परिभ्रमणं पर्यटनं, विहरणम् ।
सपिंड, सं. पुं. (सं.) सनाभिः, सप्तपुरुषांत-
गतज्ञातिः (पुं.), समोत्रः, सर्वशीयः, बंधुः ।
सपूव, सं. पुं. (सं. सुपुत्रः) सपुत्रः, सुतनयः ।
सपेरा, सं. पुं., दे. 'संपेरा' ।
सपो(पे)ला, सं. पुं., 'संपोला' ।
सप्त, वि. (सं. सप्तन्) सं. पुं., उक्ता संख्या
तद्बोधकोऽकश्च (७) ।
—ऋषि, सं. पुं. [सं. सप्तर्षयः (बहु.)
=मरीचिः, अत्रिः, अंगिरसः, पुलस्त्यः, पुलहः,
ऋतुः, वसिष्ठः, अथवा गौतमः, भरद्वाजः,
विश्वामित्रः, जमदग्निः, वसिष्ठः, कश्यपः] ।
—जिह्व, सं. पुं. (सं.) सप्तज्वालः, अग्निः ।
—धातु, सं. पुं. [सं. सप्तधातवः (बहु.)
= रसः, स्वभांस्मेदोऽस्थिमज्जानः शुक्रसंयुताः ।]
—पद्मी, सं. स्त्री. (सं.) विवाहागसप्तपदी-
गमनम् ।
—पाताल, सं. पुं. (सं. न.) सप्तसंख्याकाधो-
मुवनं (= अतलं, बितलं, सुतलं, रसातलं,
तलातलं, महातलं, पातालम्) ।
—पुरी, सं. स्त्री. (सं.) सप्तपुण्यनगराणि
(न. न.) (= अयोध्या, मथुरा, माया (हरि-
द्वारं) काशी, कौन्ती, अंबतिका, (उज्जयिनी),
द्वारका) ।
—प्रकृति, सं. स्त्री. (सं. प्रकृतयः (स्त्री. बहु.)
राज्यस्य सप्तांगानि (बहु.) (= नृपः, मंत्रिन्,
सामंतः, देशः, कोशः, दुर्ग, सेना) ।
—भुवन, सं. पुं. (सं. न.) सप्तोर्ध्वलोकः (पुं.
बहु.) भूर्भुवः स्वर्गश्चैव जनश्च तथ एव च
सत्यलोकश्च) ।

—सप्ति, सं. पुं. (सं.) सूर्यः, सप्ताश्वः ।
 सप्तक, सं. पुं. (सं. न.) सप्तवस्तुसमूहः
 २. सप्तस्वरसमूहः (संगीत) ।
 सप्तमी, सं. स्त्री. (सं.) शुक्लकृष्णपक्षयोः
 सप्तमितिथिः (पुं. स्त्री.) । २. अधिकरणकार-
 कस्य विभक्तिः (स्त्री.) ।
 सप्तमि, सं. पुं. [सं. सप्तम्यः (बहु.)] दे.
 'सप्तकवि' ।
 सप्ताश्व, सं. पुं. (सं.) सूर्यः, भासुः, रविः,
 अर्कः ।
 सप्ताह, सं. पुं. (सं.) सप्तदिवसात्मकः कालः,
 *दिनसप्तकं २. साप्ताहिकं कृत्यं ३. श्रीमद्भाग-
 वतादीनां साप्ताहिकी कथा ।
 सप्रज, वि. (सं.) सबाल, सापत्य, सस्तनान,
 अपत्यवकृत ।
 सप्र, सं. स्त्री. (अ.) श्रेणी-णिः (स्त्री.),
 पक्तिः (स्त्री.) २. लंबकटः ।
 सप्रर, सं. पुं. (अ.) यात्रा दे. ।
 —सर्च, सं. पुं. (अ+क्र.) मार्गज्वयः ।
 सफरमैना, सं. स्त्री. (अं. सेपर+नारनर)
 खनकसौम्यिकाः (पुं. बहु.) ।
 सफररी, वि. (अ. सफर) यात्रोपयोगिन् ।
 सफररी, सं. स्त्री. (शफरी) शफरः, मत्स्यभेदः ।
 सफल, वि. (सं.) फलित्, फलवत्, फलित,
 सशस्य, फलयुत २. सार्थक, अमोघ, अर्धवत्
 २. निष्पन्न, सिद्ध, पूर्ण ४. कृत-कार्य-कृत्य
 सफलमनोरथ, सिद्धार्थ, कृतार्थ, कृतिन्, चरि-
 तार्थ, प्राप्त-पूर्ण-लब्ध-काम ।
 —होना, कि. अ., कृतकार्य-सफल (वि.) भू ।
 सफलता, सं. स्त्री. (सं.) साफल्यं, अर्थ-मनो-
 रथ-सिद्धिः (स्त्री.), कृत-कार्यता-कृत्यता
 २. पूर्णता, निष्पन्नता ३. फलवत्ता ४. सार्थकता ।
 सफ्रहा, सं. पुं. (अ.) पत्रं, पर्णं, पृष्ठम् ।
 सफ्रा, वि. (अ.) अ-वि-निर्-मल, स्वच्छ,
 २. शुचि, पूत, पवित्र ३. श्रद्धा, मसृण ४. सम-
 तल, समर्थः ।
 —चट, वि., अतिस्वच्छ, नितांतनिर्मल २. अति-
 श्रद्धा-मसृण ।
 —चट करना, कि. सं., क्षुरेण मुंडं (भ्वा. प. से. ;
 चु.), केशान् सम्यक् आवृप् (भ्वा. उ. अ. ;
 प्रे.) २. विनशु-विध्वंस (प्रे.) ।
 सफ्राई, सं. स्त्री. (अ. साफ) स्वच्छता,
 निर्मलता २. शौचं, शुद्धिः (स्त्री.) ३. अव-

स्कारापसारणं ४. निष्कपटता, आर्जवं ५. चित्त-
 मानस-शुद्धिः (स्त्री.) ६. निर्दोषिता
 ७. ऋणशोचनं ८. निर्णयः ।
 —देना, मु., स्वनिर्दोषितां प्रमाणीकृ, आरोपिता-
 परार्थं निरस् (दि. प. से.) ।
 सफ्रीना, सं. पुं. (अ.) युक्तं २. दे. 'संमन' ।
 सफ्रीर, सं. स्त्री. (अ.) राजदूतः ।
 सफ्रे इ, वि. (फ्रा. सुफ्रे इ) श्वेत, भवल, श्वेत,
 श्वेत्, शुक्ल, सित, शुक्ल, शुभ्र, गौर (—ती
 स्त्री.) २. अंक-चिह्न-लेख, रक्षित (पत्रादि) ।
 —स्याह, सं. पुं. (फ्रा.) हितहित, हृदानिष्ठम् ।
 —पोश, सं. पुं. (फ्रा.) आर्यः, भद्रजनः । वि.,
 श्वेतवाससु ।
 रंग—पश्ना, मु., विवर्णतां आपद् (हि.
 भा. अ.) ।
 सफेदा, सं. पुं. (फ्रा. सुफेदा) तीक्ष्णमस्मन्
 (न.), *श्वेतसीसं २. आत्रभेदः ३. श्वेतः
 (वृश्चभेदः) ।
 सफेदी, सं. स्त्री. (फ्रा. सुफेदी) शुक्लता, श्वेता,
 भवता, भवलिमन्, शुक्लिमन्, श्वेतिमन्
 २. सुधा, सुधाश्लेषः ३. प्रत्युषः, प्रभातम् ।
 —करना, कि. सं., सुधया लिप् (तु. प. अ.)-
 भवलयति (ना. धा.), सुधाश्लेषं कृ ।
 —आना, मु., जू (दि. प. से.), ज्या (कृ-
 प. अ.); केशा भवलायते (ना. धा.) ।
 सब, वि. (सं. सर्व) विश्व, समस्त, सकल,
 अखिल, निखिल, कृत्स्न, अक्षेप, निःशेष
 २. पूर्ण, अनुत्, अखंड, समग्र ।
 —कहीं, कि. वि., सर्वत्र ।
 —का सब, वि., समग्र, संपूर्ण ।
 —कुछ, सं. पुं., सर्वम् ।
 —कोई, सर्वं, सर्वै, विश्वे (पुं. बहु.) ।
 —से अच्छा, वि., उत्तम, परम, श्रेष्ठ, प्रशस्ततम ।
 —हाल, सं. पुं., संपूर्ण, वृत्त-वृत्तांतः ।
 —मिलाकर, मु., सर्वं, समस्त २. सर्वांगि
 संकलय-परिगणय्य ।
 सब—, वि. (अ.) सहायक, उप— ।
 —इन्स्पेक्टर, सं. पुं. (अं.) उप-निरीक्षकः-
 अवेशकः ।
 —जज, सं. पुं. (अं.) उपाधिकरणिकः, उप-
 न्यायाधीशः ।
 सबक, सं. पुं. (फ्रा.) पठः, दे. । २. शिक्षा ।
 सबब, सं. पुं. (अ.) कारणं, हेतुः ।

सबर, सं. पुं., दे. 'सब' ।
 सबल, वि. (सं.) बलवत्, बलशालिन्, बलिन्, वीर्यवत्, शक्तिमत्, शक्त, प्रबल, ऊर्जित, ऊर्जस्वल, समर्थ २. ससैन्य ।
 सबा, सं. स्त्री. (अ.) प्रभातपवनः ।
 सबाध, वि. (सं.) दुःखद, कष्टदायक २. हानिकारक, अहितकर ।
 सबील, सं. स्त्री. (अ.) मार्गः, पथिन २. उपाय ३. प्रपा, दे. ।
 सबूत, सं. पुं., दे. 'सुबूत' ।
 सब्ज, वि. (का.) हरितवत्, प(पा)लाश, हरि-
 द्वर्ण २. नम, प्रत्यग्र, सरस (फलशाकादि) ।
 —बाग दिखाना, बु., मीघाशाभिः बन्-प्रतु
 (प्रे.) ।
 सब्जा, सं. पुं. (का. सब्जह) हरितत्व, हारित्यं,
 शादः, स्याद्वलता २. भंगा, विजया ३. हरि-
 मणिः, सरकतम् ।
 —ज्जार, सं. पुं. (का.) शादलः-लम् ।
 सब्जी, सं. स्त्री. (का.) दे. 'सब्ज' (१) २. प्राकः-
 कं, शि(सि)मुः, हरितकः-कं ३. भंगा,
 विजया ।
 सब्जेक्ट, सं. पुं. (अ.) विषयः, प्रकरणं,
 प्रसंगः २. प्रजा ।
 —(कट्स) कमिटी, सं. स्त्री. (अं.) विषय-
 समितिः (स्त्री.) ।
 सब, सं. पुं. (अ.) संतोषः, धैर्यं, तितिक्षा,
 सहिष्णुता ।
 बे—, वि. (का. + अ.) संतोषहीन २. अस-
 हिष्णु ।
 बेसब्री, सं. स्त्री., तितिक्षाभावः, असहिष्णुता
 २. धीरताभावः, न्याकुलता ।
 सभा, सं. स्त्री. (सं.) समाजः, गोष्ठिः- (स्त्री)
 —समितिः-परिषद्-संसद-परषद् (स्त्री.), समज्या,
 सदस् (न.), अस्थानं २. सभा, भवनं-गृहं-
 आगारं-मंडपः-निकेतनं, आस्थानं-नी ।
 —पति, सं. पुं. (सं.) सभाध्यक्षः, संसत्पतिः,
 (समायाः) प्रधानः ।
 —सद, सं. पुं. (सं.) सदस्यः, सभ्यः,
 सामाजिकः, परिष(पर्य)दलः, प(पा)रिषदः,
 पार्षदः, सभास्तरः, प(पा)रिषधः ।
 धर्म—, सं. स्त्री. (सं.) धार्मिकपरिषद् (स्त्री.) ।
 न्याय—, सं. स्त्री. (सं.) व्यवहारमंडपः ।

राज—, सं. स्त्री. (सं.) राजकीयपरिषद्
 (स्त्री.) ।
 सभागा, वि. (सं. सुभाग्यं) सौभाग्यं, वच-
 शालिन्, महाभाग, धन्य ।
 सभाळा, सं. पुं. (सं. संभलः) वरसखः, परि-
 णेतुमिष्टम् ।
 सभ्य, सं. पुं. (सं.) समासद्, दे. २. सज्जनः,
 भद्रपुरुषः । वि., शिष्ट, जागरिक, दक्षिण, भद्र,
 विनीत, शुशील, आर्षवृत्त, संस्कृत, संस्कृतिः
 (स्त्री.) ।
 सभ्यता, सं. स्त्री. (सं.) शिष्टता, नागरिकता,
 दाक्षिण्यं, सुजननं, आर्षवृत्तिः (स्त्री.)
 २. सदस्यता ।
 समंजस, वि. (सं.) उचित, न्याय्य, योग्य ।
 सम, वि. (सं.) समान, तुल्य, सदृश-शु,
 सदृश, संनिभ, सविध, —उपम, —निभ, —प्रकार,
 —विध (समासांत में) २. समतल, दे. ३. युग्म,
 दे. 'सुप्रत' । सं. पुं. (सं.) तालमानभेदः
 (संगीत) २. अर्थालंकारभेदः (सा.) ।
 —कक्ष, वि. (सं.) तुल्य, सदृश ।
 —काल, अव्य. (सं.) युगपद् (अव्य.),
 योगपथेन, एक-सम, कालं- (ले) ।
 —कालीन, वि. (सं.) एक-कालिक-कालीन,
 समकाल ।
 —कोण, सं. पुं. (सं.) नवत्यंशात्मकः कोणः ।
 वि., तुल्याभिमुखकोण (त्रिभुज अथवा
 चतुर्भुज) ।
 —चित्त, वि. (सं.) सम, —चेतस्-शुद्धि, धीर,
 शांतमनस्क ।
 —सल, वि. (सं.) सम, समस्थ, समरेख,
 सपाट ।
 —दर्शी, वि. (सं.) सम, दर्शन-दृश-दृष्टि-शुद्धि ।
 —भाव, वि. (सं.) सम, प्रकृत-गुण २. समता,
 तुल्यता ।
 —भूमि, सं. स्त्री. (सं.) सम, भूः (स्त्री.)
 —स्थली ।
 —व्यस्क, वि. (सं.) सब्यस्क, समायुक्त ।
 समक्ष, अव्य. (सं.) अग्रे, अग्रतः, पुरः,
 पुरतः, पुरस्तात् (सब अव्य.) ।
 समग्र, वि. (सं.) दे. 'सब' (१-२) ।
 समझ, सं. स्त्री. (हिं. समझना) बुद्धिः-धी-
 मतिः (स्त्री.), प्रज्ञा २. ज्ञानं, बोधः, उप-
 लब्धिः (स्त्री.) ।

—में आना, कि. अ., अवगम्-बुध्-ज्ञा (कर्म.) ।

—दार, वि. (हि. + प्रा.) चीनत्, बुद्धिमत्, प्राज्ञ, विचक्षण ।

समझना, कि. स. (सं. संज्ञानं >) ज्ञा (क्. ल. अ.), बुध् (भ्वा. प. से.), अवगम्, बुद्ध्या ग्रह् (क्. प. से.) २. बलुप् (प्रे.), उत्प्रेक्ष् (भ्वा. आ. से.), तद्ध् (नु.) ३. विचर् (प्रे.) ४. प्रतिकृ, निर्यत् (चु.) । सं. पुं., ज्ञानं, बोधनं, अवगमनं, उपलब्धिः (स्त्री.) ।

समझने योग्य, वि., ज्ञेय, अवगतव्य, बोध्य ।

समझनेवाला, सं. पुं., ज्ञातृ, बोद्धृ, अवगतृ ।

समझाना, कि. प्रे. (हि. समझना) व. 'सम-ज्ञाना' (१) के प्रे. रूप २. विशदो-रूपटीकृ, न्याख्या (अ. प. अ.), व्याख्य (अ. आ.) ६. उपादेश् (तु. प. अ.), शिश् (प्रे.) ४. निर्मत्सु (नु. आ. से.) ५. प्रति इ (प्रे.), अभिज्ञा (प्रे.) ।

—बुझाना, कि. प्रे., दे. 'समझाना' ।

समझा हुआ, वि., ज्ञात, बुद्ध, अवगत ।

समझौता, सं. पुं. (हि. समझना) संधिः, सं-समा., धानं, कलह-विवद., शमः-शांतिः (स्त्री.), २. संमतिः (स्त्री.), ऐकमत्यम् ।

समता, सं. स्त्री. (सं.) तुल्यता, सादृश्यं, समानता, साम्यं, समत्वम् ।

समद, वि. (सं.) मत्त, क्षीव, उन्मद्, मदी-द्वत २. मदीकद, मत्त (गजादि) ३. प्रसन्न, प्रहृष्ट ।

समध(धि)न, सं. स्त्री. (हि. समधी) १-२. पुत्र-पुत्री-अपत्य, श्वश्रूः (स्त्री.), जामातृ-स्नुषा, -जननी ।

समधियान, ना, सं. पुं. (हि. समधी) पुत्र-पुत्री, श्वशुरालयः ।

समधी, सं. पुं. (सं. संबंधिन् >) १-२. पुत्र-पुत्री-अपत्य, श्वशुरः, जामातृ-स्नुषा, -जनकः ।

समन्वय, सं. पुं. (सं.) संयोगः, मिलनं २. अनुकूल्यं, विरोधाभावः, सवादः ३. कार्य-कारणनिर्वाहः ।

समन्वित, वि. (सं.) संयुक्त, मिलित, संघट्ट २. युक्त, युत, सहित २. निर्बाध ।

समय, सं. पुं. (सं.) वेला, कालः, दिष्टः, अनेकसू २. प्रस्तावः, प्रसंगाः ३. ऋतुः ४. अव-काशः, क्षणः ५. अवसरः, उचितसमयः ।

समर, सं. पुं. (सं. पुं. न.) संग्रामः, युद्धं दे. । —भूमि, सं. स्त्री. (सं.) समरांगणं, युद्ध-रण-क्षेत्रम् ।

—शाथी, सं. पुं. (सं. -थिन्) लब्धवीरगति, धराशाथिन् ।

समर्थ, वि. (सं.) श्रानं, योग्य, शक्त, सामर्थ्य-वत् २. बलिन्, सबल ।

समर्थक, वि. (सं.) समर्थनकार, महाव्यका-रिन्, उद्योदबलक, अनुमोदक ।

समर्थन, सं. पुं. (सं. न.) दृष्टी-प्रमाणी-, करणं, उपाद्बलनं, अनुमोदनम् ।

—करना, कि. ल., समर्थ (नु.), दृष्टी-प्रमाणी-कृ, द्रढयति (ना. धा.), उपोद्बलयति (ना. धा.) ।

समर्थित, वि. (सं.) उपोद्बलित, दृडीकृत, अनुमोदित ।

समर्पक, वि. (सं.) समर्पयितृ, समर्पणकर, उपहारिद, उपहारक ।

समर्पण, सं. पुं. (सं.) उपहरणं, ससंमानं उत्सर्जनं ३. दातं, उत्सर्गः ।

—करना, कि. म., सं.-च्छ (प्रे.), समर्पयति, सादरं दा, उपहृ (भ्वा. प. अ.) ।

समर्पित, वि. (सं.) उपहृत, सादरं उत्सृष्ट-दत्त ।

समवाय, सं. पुं. (सं.) समूहः २. नित्य-गुण-गुणि-जातित्यक्ति-श्रवणवाक्यवि-संबंधः (न्याय.)

समवेत, वि. (सं.) संचित, संगृहीत २. युक्त, मिलित ३. नित्यसंबंधविशिष्ट ।

समष्टि, सं. स्त्री. (सं.) संघः, समुदायः, समूहः ।

समस्त, वि. (सं.) समग्र, संपूर्ण, निःशेष, दे. 'सव' २. समास्त्युक्त ३. संक्षिप्त ।

समस्त्या, सं. स्त्री. (सं.) समासार्था, समाप्त-यर्था, (पद्य-रचनायै) श्लोकांशः २. विकटप्रश्नः ३. कठिनवसरः ।

—पूर्ति, सं. स्त्री. (सं.) निर्दिष्टपथांशमात्रित्व-काव्यरचना ।

समौ, सं. पुं. (सं. समयः) कालः, वेला ।

—बंधना, मु. (संगीतादिमग्नतया) स्ताब्धीभू ।

समाख्या, सं. स्त्री. (सं.) यथस् (न.), नामन् (न.) ।

समागम, सं. पुं. (सं.) आगमनं, आशानं २. संमिलनं, संयोगः २. मैथुनम् ।

समाचार, सं. पुं. (सं.) वृत्तं, वृत्तान्तः, उदंतः, वार्ता ।

—पत्र, सं. पुं. (सं.) वृत्तपत्रम् ।
समाज, सं. पुं. (सं.) सभा, दे. २. समूहः,
 संघः, दलं, समुदायः ३. आर्यसमाजः ।
 —वाद, सं. पुं. (सं.) संपत्तौ राज्याधिकारः
 इति सिद्धन्तः ।
समाजी, सं. पुं. (सं.) सभासद् २. आर्य-
 समाज-सदस्यः समासद्, आर्यसामाजिकः
 ३. दे. 'सपरदारैः' ।
समाहृत, वि. (सं.) सम्मानित, पूजित, सत्कृत ।
समाधान, सं. पुं. (सं. न.) समाधिः, अंत-
 ध्वानं, प्रणिधानं २. शंका-संवेद-निवारणं
 ३. शंकानिवारकमुत्तरं ४. आ-समा-ध्यासनं,
 सात्त्विकं ५. विरोधापहरणं ६. निराकरणं
 ७. अनुसंधानं ८. तपस् (न.) ९. ध्यानं
 १०. समर्थनं, दृढीकरणं, उपोद्वलनम् ।
 —करना, कि. स., समाधा (जु. उ. अ.),
 शंका निवृ (प्रे.) ।
 शंका—, सं. पुं. (सं. न.) संवेदनिवारणम् ।
समाधि, सं. स्त्री. (सं. पुं.) अंतध्वानं, समा-
 धानं, ब्रह्मणि स्थितिः (स्त्री.), योगस्य चरन-
 फलं २. प्रेतघटः, शव-अस्थि-नर्तः ३. निद्रा
 ४. धितैकाग्र्यं, अनन्यमनस्कता ५. योगः
 ६. मौनं ७. प्रतिशोधः ८. अर्थालंकारभेदः
 (सा.) ।
 —लगाना, कि. अ., ब्रह्मणि मनो निविष्ट (प्रे.)
 —समाधा (जु. उ. अ.), अंतः ध्या (व्या.
 प. अ.), समाहित-समाधिस्थ (वि.) भू ।
समान, वि. (सं.) तुल्य, सदृश-श-श, सम,
 सन्नियम, सविध, सर्वज्ञ, —उपम, —विध, —रूप,
 —प्रकार ।
समानता, सं. स्त्री. (सं.) समता, साम्यं,
 सादृश्यं, औपम्यं, सारूप्यं, सावर्ण्यम् ।
समाना, कि. अ. (सं. समावेशनम्) प्रविश
 (तु. प. अ.), अन्तः या (अ. प. अ.), कि.
 स., प्रविश (प्रे.), अन्तः स्वा (प्रे.), धा-श्व-
 भृ (कर्म.) ।
समाप्त, वि. (सं.) अवसित, अंतं, गत-इत,
 संपूरित, संपूर्ण, निःशेषीभूत ।
 —करना, कि. स., समाप् (स्वा. प. अ., प्रे.),
 निर्वृ (प्रे.), संपृ (प्रे.)-पूर (जु.), पार-
 अंतं गम् (प्रे.), निःशिष् (प्रे.), संपद
 (प्रे.) ।

—होना, कि. अ., समाप्-अवसो (कर्म),
 निःशेषीभू, समाप्ति-अंतं गम् ।
समाप्ति, सं. स्त्री. (सं.) अंतः, परि-, अवसानं,
 निवृत्ति-निवृत्तिः (स्त्री.), निःशेषता २. प्राप्तिः
 (स्त्री.) ।
समारोह, सं. पुं. (सं.) आडंबरः, विभवः,
 दे. 'धूमधाम' २. आडंबरमय उत्सवः ।
 —से, कि. वि., सडंबरं, सारोपम् ।
समार्थक, वि. (सं.) समानार्थक, पर्यायवाचिन्,
 तुल्याश्व (शब्द.) ।
समालोचक, सं. पुं. (सं.) गुणदोष-निरूपक-
 विवेचकः, आलोचकः ।
समालोचना, सं. स्त्री. (सं.) सं-आलो-
 चन-ना, गुणदोष-निरूपण-विवेचन-दर्शनं-
 परीक्षणम् ।
 —करना, कि. स., गुणदोषान् निरूप (जु.)-
 विविच् (रु. उ. अ.)-विचर् (प्रे.), समालोच्
 (प्रे.) २. छिद्राणि अन्विष् (दि. प. से.) ।
समावर्तन, सं. पुं. (सं. न.) (गुरुकुलाद्)
 प्रत्यागमनं, प्रत्यावृत्तिः (स्त्री.) २. आर्षाणां
 संस्कारभेदः, समा-वर्तः-वृत्तिः (स्त्री.) (धर्म.) ।
समाधिष्ट, वि. (सं.) अंतर-, गत-भूत-नाणित
 २. एकाग्रचित्त ।
समावेश, सं. पुं. (सं.) अंतर्भावः, अंतर्गणना ।
 —करना, कि. स., अंतर्भू (प्रे.), अंतर्गण (जु.) ।
समास, सं. पुं. (सं.) पदसंयोगः (व्या.)
 २. संक्षेपः ३. संनिर्वाणं ४. संग्रहः ।
 —करना, कि. स., समश् (वि. प. से.),
 एकीकृ, संमिश् (जु.) ।
समासोक्ति, सं. स्त्री. (सं.) अर्थालंकारभेदः
 (सा.) ।
समाहार, सं. पुं. (सं.) संचयनं, संग्रहणं
 २. अयः, राशिः ३. संक्षेपः ।
 —द्वंद्व, सं. पुं. (सं.) द्वंद्वसमासभेदः (व्या.) ।
समिति, सं. स्त्री. (सं.) परिषद (स्त्री.)
 सभा, दे. ।
समिधा, सं. स्त्री. [सं. समिध् (स्त्री.)]
 यज्ञिय-होमीय-इंधन-व्यथः २. एधः, इंधनं दे. ।
समीकरण, सं. पुं. (सं. न.) समानाकरणं,
 समीक्रिया २. क्रियाभेदः ।
समीक्षा, सं. स्त्री. (सं.) समालोचना, दे. ।
समीचीन, वि. (सं.) सत्य, यथार्थं, अचित्तथ
 २. उचित, उपपन्न, योग्य, ३. न्याय्य, धर्म्य ।

समोष, क्रि. वि. (सं. समीपये) अंतिकां-के-कात्, आरात्, निकषा, निकटं-टे, उपकंठं-ठे, समया, सविधे, सकादां-शे-शात्, संनिधी, उप- ।

—**वर्ती**, वि. (सं.-तिन्) समोष, निकट, संनि-हित, अंतिक, अभ्याश, आसन्न, उपकंठ, उपरत, अभ्यर्ण, अभ्यग्र, सविध, समीप-निकट स्थ-वतिन् ।

समीपता, सं. स्त्री. (सं.) सामीप्यं, नैकट्यं, संनिधिः (पुं.), आसन्नता, संनिकर्षः ।

समीर, सं. पुं. (सं.) समीरः, समीरणः, पवनः, वायुः दे. ।

समोहा, सं. स्त्री. (सं.) उद्योगः, प्रयत्नः २. इच्छा ३. अनुसंधानम् ।

समुंदर, सं. पुं. (सं. समुद्रः) सागरः ।

—**भाग**, सं. पुं., दे. 'समुद्रफेन' ।

—**सौख**, सं. पुं. (सं. समुद्रशोधः) धुपभेदः ।

समुचित, वि. (सं.) यथेष्ट, उचित दे. ।

समुच्चय, सं. पुं. (सं. समाहारः) संमिलनं २. राशिः, समूहः ३. अर्थालंकार-भेदः (सा.) ।

समुद्र, वि. (सं.) सहर्षं, सामोद, सानन्द ।
व., सहर्षं, सानन्दम् ।

समुदाय, सं. पुं. (सं.) नि-सं-चयः, निकरः, राशिः २. गणः, संघः, वृद्धं, समूहः ।

समुद्र, सं. पुं. (सं.) सागरः, अश्विः, वारि-अंशो-उद-जल-नीर-अंडु-पाथो-धिः, पारावारः, सरित्पतिः, सिंधुः, अर्वावः, रत्नाकरः, नीर-वारि-जल-निधिः, मकरालयः, कर्ममालिन् ।

—**तट**, सं. पुं. (सं. पुं. न.) सागर-तीरं-कुलं, रोषत् (न.), वेला ।

—**पत्नी**, सं. स्त्री. (सं.) समुद्र-कांता-गा, नदी ।

—**फेन**, सं. पुं. (सं.) समुद्र-कफः, जलहासः, सामुद्रम् ।

—**यान**, सं. पुं. (सं. न.) पोतः ।

—**लवण**, सं. पुं. (सं. न.) अक्षि(क्षी)वं, वशि(सि)रं, समुद्रवां, लवणाच्छिन्नम् ।

—**वह्नि**, सं. पुं. (सं.) बटवानलः, वाडवः ।

समुद्रगुप्त, सं. पुं. (सं.) गुप्तवंशीयः सम्राड्-वि-शेषः ।

समुद्रीय, वि. (सं.) समुद्रिय, समुद्रय ।

समुल्लास, सं. पुं. (सं.) परिच्छेदः, अध्यायः २. आनन्दः, हर्षः ।

समूचा, वि. (सं. समुच्चयः) समस्त, समग्र, संपूर्ण ।

समूल, वि. (सं.) सकारण, सहेतुक २. मूल-वत्-अन्वित । क्रि. वि. (सं. न.) मूलतः, सम्पूर्णतया, अशेषेण, साकल्येन ।

समूलोन्मूलन, सं. पुं. (सं. न.) (मूलतः) उत्पादनं-उच्छेदनं-व्यपरोपणम् ।

—**करना**, क्रि. त., उपट् (चु.) विध्वंस-उत्सद् (प्रे.), आमूलं उत्सन् (भ्वा. प. से.)-व्यपरुद् (प्रे., व्यपरोपयति) ।

समूह, सं. पुं. (सं.) निवहः, व्यूहः, संदोहः, विसरः, व्रजः, स्तोमः, ओषः, निकरः, व्रातः, वारः, संघातः, नि-प्र-सं-चयः, समुद्र(दा)यः, समवायः, गणः, संहतिः (स्त्री.), वृद्धं, निकुरं, कदंबकं, समाहारः, समुच्चयः, -मंडलं, -जालं, -पूगः, -ग्रामः (समासतं मे) । (सट्श पदार्थो का) बर्गः । (जंतुओं का) संपः, सार्थः । (सजतीय जंतुओं का) कुलम् (टेंडे जंतुओं का) दूधः-र्थ । (पशुओं का) समजः । (औरों का झुंड) समाजः । (एक धर्मवालों का) निकायः । (अत्रादि का डेर) पुंजः, पिजः, पुंजिः (स्त्री.), राशिः, उत्करः, कुटः-टं २. जनता, जनमेलकः, जन-लोक, संधः-समुदायः-संनर्दः-संकुलं ३. बहुत्व, बाहुल्यं, बहु-बृहत्, संख्या ।

समूहनी, सं. स्त्री. (सं.) संनार्जनी, 'दे-झाड़' ।

समूद्ध, वि. (सं.) अति-शय, धनाढ्य-धनिक-संपन्न ।

समृद्धि, सं. स्त्री. (सं.) एषा, अतिशय-प्रचुर-संपद्-संपत्तिः (दोनों स्त्री.)-वित्तं विभवः-वैभवम् ।

समेटना, क्रि. स. (हि. सिमटना) एकत्र क, संग्रह् (क्. प. से.), संधि (स्वा. उ. अ.), संनी-समाह (भ्वा. प. अ.) २. आकुंच् (प्रे.), संकुच् (उ. प. से.), संह (भ्वा. प. अ.) । सं. पुं. तथा भाव, एकत्रकरणं संग्रहणं, संच-यनं, संनयनं, समाहरणं, आकुञ्चनं, संकोचनम् ।

समेत, क्रि. वि. (सं. न.) सह, साथं, सार्थं, सहितं, समं (सब वृत्तिया के साथ) । वि. (सं.) संयुक्त ।

समोसा, सं. पुं. (फा.) *समोषः, त्रिकोणा-कारः पक्वान्नभेदः ।

सम्यक, कि. वि. (सं.) सर्वथा, सर्वप्रकारेण
२. संपूर्णतया, सामस्थ्येन, साचंतं, संपूर्णं
३. सुष्टु साधु ।
सम्राज्ञी, सं. स्त्री. (सं.) सम्राट्पत्नी २. राज-
राजेश्वरी, अधिमहान-राजधि, राज्ञी ।
सम्राट्, सं. पुं. (सं. सम्राज्) महान्, राजाधि-
राजः, सर्वभोगः, चक्रवर्तिनः, मण्डलेश्वरः,
एकः, अधिपतिः-राजः, अधि, ईश्वरः-राजः ।
सयाना, वि., दे. 'स्याना' ।
सयूथ्य, वि. (सं.) एक-स-समान-अभिन्न, वर्ण-
गण-संघ ।
सयोनि, वि. (सं.) सोदर, सडोदर, सगर्भ,
सौदर्यं २. निकट-समीप, सम्बन्धिन् । सं. पुं.
(सं.) सहोदरः, सोदरः, सौदर्यः २. इन्द्रः,
शचीपतिः ।
सर, सं. पुं. [सं. सरस् (न.)] सरसी,
कासारः, ह्रदः, सरोवरः, पत्राकरः, तटाकः-कं,
तडावः-यं, जलाशयः ।
सर, सं. पुं. (फा.) शिरस् (न.), दे. 'सिर'
२. शिखरं, शिखा, अग्रम् । वि., पराजित,
अभिभूत ।
—अंजाम, सं. पुं. (फा.) सामग्री, संभारः
२. सिद्धिः, सभासिः (स्त्री.) ।
—कदा, वि. (फा.) उद्वत, उद्वड २. अवश्य
३. कु-दुश्-विष्टक ।
—कदी, सं. स्त्री. (फा.) औद्धत्यं, उद्दण्डता
२. कुनेष्टा, चापल्यम् ।
—गना, —गरोह, सं. पुं. (फा.) अग्रणीः,
नायकः ।
—गर्म, वि. (फा.) उत्साहिन्, उत्साहवत् ।
—गर्मी, सं. स्त्री., उत्साहः, व्यग्रता ।
—ज्ञोर, वि. (फा.) बलवत् २. उदण्ड ।
—ज्ञोरी, सं. स्त्री., बलात्कारः २. उदण्डता ।
—ताज्ञ, सं. पुं. (फा.) पुरोगः, नायकः,
शिरो चूडा-मुकुटः, मणिः ।
—पंच, सं. पुं. (फा. + हि.) समा-पतिः-
अध्यक्षः, *पञ्चप्रधानः ।
—परस्त, सं. पुं. (फा.) त्राट्, रक्षकः
२. संरक्षकः, आश्रयदः ।
—परस्ती, सं. स्त्री., रक्षणं, व्राणं २. संरक्षणं,
आश्रयः ।
—पैच, सं. पुं. (फा.) उष्णीषभूषणभेदः ।

—बराह, सं. पुं. (फा.) कार्याध्यक्षः, अधि-
ष्ठात्, *प्रबन्धकः ।
—बराही, सं. स्त्री., अधिष्ठानं, *प्रबन्धः,
अवेक्षा २. अधिष्ठातृत्वम् ।
—हद, सं. स्त्री. (फा. + अ.) सीमन् (स्त्री.),
सीमा, दे. २. सीमानः, पर्यंतः, प्रांतः ।
—हदी सूबा, सं. पुं. (फा.) (पश्चिमोत्तर-)
सीमाप्रांतः ।
—करना, मु., विजि (भ्वा. आ. अ.), अभिभू,
वशीकृ ।
सर, सं. पुं. (अं.) आंशुलीयानामुपाधिभेदः,
*शिरोमणिः २. भद्रः, आर्यः ।
सरकंडा, सं. पुं. (सं. शरकांडः) कांडः, तेजसः,
गुंदकः, क्षुरिकापत्रः, उत्कटः ।
सरकना, कि. अ. (सं. सरणं) शनैः-मृदु क्ल
(भ्वा. प. से.)-सुप्-सृ (दोनों भ्वा. प. अ.)
२. सत्वरं स ३. अलक्षितं अती (अ. प. अ.)
४. उरसा गम्-क्ल । सं. पुं. तथा भाव, मृदु
सरणं-सर्पगं-क्लनं, इ. ।
सरकाना, कि. स., व. 'सरकना' के प्रे. रूप ।
सरकार, सं. स्त्री. (फा.) राज्य, संस्था-तंत्रं
शासक-अधिकारि-वर्गः, राजमंत्रिणः (बहु.)
२. प्रभुः, स्वामिन् ३. राज्यं, राष्ट्रम् ।
सरकारी, वि. (फा.) अधिकारिक, राजकीय,
राज्यसंबन्धिन् ।
—नौकर, सं. पुं. (फा.) राज्य-भृत्यः-सेवकः-
पंचितकः ।
—नौकरी, सं. स्त्री. (फा.) राज्य-सेवा-
परिचर्या ।
सरगम, सं. पुं. (हिं. ता + रे + गा + मा)
स्वर-ग्रामः (संगीत) ।
सरघा, सं. स्त्री. (सं.) मधुमक्षिका, दे. ।
सरजा, सं. पुं. (फा. सरजाह = उच्चपदाधिकारी,
अ. शरजह = शेर) नायकः, अग्रणीः, नर-
शार्दूलः २. सिंहः ।
सरणी, सं. स्त्री. (सं.) सरणिः (स्त्री.), पथिन्,
मार्गः २. पंक्तिः (स्त्री.), रेखा ३. पचा,
पद्धतिः (स्त्री.) x. शैली, प्रकारः ।
सरद, वि., दे. 'सर्द' ।
सरदई, वि. (फा. सर्दई) हरित्यति ।
सरदल, सं. पुं. (देश.) द्वारोर्ध्वस्थूणा ।
सरदा, सं. पुं. (फा. सर्दई) *शीतसुदौर्जम् ।

सरदार

[६०६]

सरहज

सरदार, सं. पुं. (फ़ा.) नायकः, अग्रणीः, पुरीगः, अध्यक्षः, प्रधानः २. शासकः ३. धनिकः ।
 सरदारी, सं. स्त्री. (फ़ा.) नायकत्वं, प्रधानत्वम् ।
 सरन, सं. स्त्री., दे. 'शरण' ।
 सरना, कि. अ. (सं. सरण) दे. 'सरकनः' ।
 २. कृ-अनुष्ठा (कर्म.), संपद् (दि. आ. अ.), साधु (दि. प. अ.) ।
 सरनामा, सं. पुं. (फ़ा.) (निर्द्वेषीनां) शीर्षकं २. पत्रसंज्ञा, दे. 'पता' ३. पत्र, संबोधन-प्रारम्भः ।
 सरपट, कि. वि. (फ़ा. सर + हिं. पटकना) आस्वदित-तकम् । कि. वि., ज्वेन, वेगेन ।
 —भागना, कि. अ., आस्कंद् (भ्वा. प. अ.) २. द्रुत-सवेगं धाव् (भ्वा. प. से.) ।
 सरपत्त, सं. पुं. (सं. शरपत्रं) कुशाकारो घासभेदः ।
 सरमा, सं. स्त्री. (सं.) देवशुनी २. कुम्बुरी ।
 सरमात्या, सं. पुं. (फ़ा.) दे. 'पूँजी' ।
 —दार, सं. पुं. (फ़ा.) दे. 'पूँजीपति' ।
 सरथ, सं. स्त्री. (सं.) अयोध्यासमीपवति-नदीविशेषः ।
 सरल, वि. (सं.) ऋजु, निर्व्याज, निष्कपट, निश्छल, साधु-सत्य, धृष्ट-शील, शुद्ध, नति-भाव-आत्मन्, दक्षिण, शुचि २. दे. 'सीधा' ३. सुकर, सुसाध्य ४. कृविभत्तरहित, वास्त-विक । (सं. पुं.) पीतः, धूपवृक्षकः, दे. 'चीड' ५. सरलनिर्यासः, वृक्षधूपः, दे. 'गंधा-विरोजा' ।
 सरलता, सं. स्त्री. (सं.) सरल्यं, निष्कापट्यं, आज्ञेवं, साधुता, शुचिता, शुद्धभावः २. दे. 'सीधापन' ३. सुकरता, सुसाध्यता ४. बालिदयं, मौल्यम् ।
 सरवन, सं. पुं. (सं. ब्रह्मणः) अंधकमुनिपुत्रः (रामायण) ।
 सरवर, सं. पुं., दे. 'सर' (१) ।
 सरविम, सं. स्त्री. (अं. सर्विस) सेवा, दे. ।
 सरशार, वि. (फ़ा.) मग्न, लीन २. मत्त, क्षीव ।
 सरस, वि. (सं.) रस, युक्त-भ्रन्वित, दे. 'रसीला' २. आर्द्र, उन्न, फिलत्र ३. हरित, अभ्यग्र ४. सुन्दर ५. मधुर ६. भावपूर्ण, हृदिस्पृश ७. भावुक, रसिक, सहृदय ।

सरसठ, वि. तथा सं. पुं., दे. 'सहसठ' ।
 सरसता, वि. (सं.) रसवता, दे. 'रसीलापन' २. आर्द्रता, क्लिन्नता ३. हारित्यं, प्रत्यग्रता ४. सुन्दरता ५. मधुरता ६. रसिकता, भावुकता ।
 सरसद्वज, वि. (फ़ा.) हरित-न्, हरितपर्ण, सरस २. शद्वल, शद-नृपा, आवृत ।
 —मैदान, सं. पुं. (फ़ा.) शद्वलः-लं, शद्वल-स्थल-स्त्री, तुणावृतभूमिः (स्त्री.), शद-हरितः-तम् ।
 सरसर, सं. पुं. (अनु.) दे. 'सरसराहट' ।
 सरसराना, कि. अ. (अनु. सरसर) सरसरा-यते (ना. धा.), सरसरध्वनिः जन् (दि. आ. शे.) २. सरसरशब्दं वा (अ. प. अ.) ३. सप् (भ्वा. प. अ.), उरसा वम् ।
 सरभराहट, सं. स्त्री. (हिं. सरसर) सरसर-यितं, सरसरशब्दः, सर्पणध्वनिः २. कङ्कुः-कङ्कुः, खज्जुः-जुः (चारों स्त्री.) ३. पवनध्वनिः ।
 सरसरी, वि. (फ़ा. सरासरी) सत्वर, सरभस, त्वरित २. स्थूल ।
 —तौर पर, कि. वि., सत्वरं, त्वरया २. स्थूल-रूपेण, मनोयोगं विना ।
 —निगाह, सं. स्त्री. विहंगमदृष्टिः (स्त्री.), विहंगावलोकनम् ।
 सरसाई, सं. स्त्री. (हिं. सरस) सरसता, रस-युक्ता-भूयता २. शोभा ३. आधिक्यम् ।
 सरसाम, सं. पुं. (फ़ा.) त्रिशीर्षं, संनिपातः, दे. ।
 सरसिज, सं. पुं. (सं. न.) पद्मं, अब्जं, कमल, दे. ।
 —योनि, सं. पुं. (सं.) चतुर्मुखः, ब्रह्मन् (पुं.) ।
 सरसिरह, सं. पुं. (सं. न.) कमलं, सरो-पके, रुद्रम् ।
 सरसी, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'सर' (२) २. वापी ।
 —रुह, सं. स्त्री. (सं. न.) पद्मं, कमलं, दे. ।
 सरसौ, सं. स्त्री. (सं. जपपः) (रुक्तेद) सिद्धार्थः, सपपः, शुभकः, कर्दवकः २. (काली) कृष्णिका, श्वनः, राजिका ।
 —का लैल, सं. पुं., सर्पपस्नेहः, कडुतैलम् ।
 सरस्वती, सं. स्त्री. (सं.) शारदा, भारती, वाग्देवी, ब्राह्मी, गौर्देवी, वर्णमातृका २. कुरु-क्षेत्रसमीपवतिप्राचीननदीविशेषः ३. विद्या, ज्ञानम् ।
 सरहज, सं. स्त्री. (सं. इयाल जाया) शशुर्यपत्नी ।

सराप, सं. पुं. (सं. श्रापः) अभिशापः, आक्रोशः, अक्रणितः-अजीर्णितः-अजननिः (स्त्री.), अवग्रहः, निग्रहः ।

—देना, कि. स., अभि, सप् (स्वा. उ. अ.), अभिशांस (स्वा. प. से.), आक्रश (स्वा. प. अ.), श्रापं दा ।

सरापा हुआ, वि., अनि, शम, आक्रुष्ट, अभिशाप्त ।

सराफ, सं. पुं. (अ. सराफ) सुवर्णाजीविन, कनकवणिज् २. टंक-नाणक, परिवर्तकः ३. श्रेष्ठिन्, कुसीरिक् ।

सराफा, सं. पुं. (अ. सराफह) सुवर्णव्यवसायः, रत्नवाणिज्यं २. सुवर्णाजीवि, निगम-हृष्टः ३. धनागारं, दे. 'बैंक' ।

सराफी, सं. स्त्री. (हिं. सराफ) दे. 'सराफा' (२) २. बर्गगालधेदः, दे. 'महागती' ३. टंक-परिवर्तन-शुल्कः ।

सराबोर, वि., दे. 'लक्षपथ' ।

सराय, सं. स्त्री. (फा.) पंथगृहं, पथिकशाला, दे. 'सुराकिरखाना' २. गृहम् ।

—का कुत्ता, मु., स्वार्थपराधणः ।

—की भटियारी, मु., निर्लज्जा कलहप्रिया नारी ।

सरावन, सं. पुं. (सं. सरणं) मत्वं, कीटि- (टी)शः ।

सरासर, कि. वि. (फा.) सर्वथा, पूर्णतया, सम्पत्स्येन २. सार्वतं ३. साक्षात्, प्रत्यक्षम् ।

सराहना, कि. स. (रुध्नं) श्राप् (स्वा. आ. से.), प्रशंस (स्वा. प. से.), इड (अ. आ. से.), रतु (अ. प. अ.) कृत (चु.), नू (तु. प. से.) । सं. पुं. तथा भाव, प्रशंसा, श्रापः, स्तवः-वनं, कीर्तनं मुतिः-रतुतिः (स्त्री.) ।

सराहनीय, वि. (सं. श्लाघनीय) स्तुत्य, प्रशंस, प्रशंसनीय २. उत्तम, श्रेष्ठ ।

सराहनेवाला, सं. पुं., प्रशंसकः, स्तवकः, नावकः ।

सरि, सं. स्त्री. (सं.) निर्दरः, उत्सवः, प्रपातः २. जल-धारा, यन्त्रम् । (हि.) नदी २. माला ३. समता । वि. तुल्य, सदृश । अन्व., पर्यन्तम्, अवधि, आ- ।

सरित्, सं. स्त्री. (सं.) निम्नगा, नदी दे. २. सूत्रम् ३. दुर्गा ।

—रुफ, सं. पुं. (सं.) नदी-तटिनी-सरित्, केनः-गँडेहीरः-कफः ।

—पति, सं. पुं. (सं.) सगरः, समुद्रः ।

—सुत, सं. पुं. (सं.) भोगः, गांगेयः ।

सरिता, सं. स्त्री., दे. 'सरित्' ।

सरिइता, सं. पुं. (फा.-तह) अधिकरणं, व्या-यालयः, दे. २. शासन-विभागः ३. कार्या-लयः ।

सरिस्तेदार, सं. पुं. (फा.-तहदार) शासन-विभागाध्यक्षः, *पत्रिकाध्यक्षः ।

सरिस, वि. (सं. सदृश, दे.) ।

सरीखा, वि. (सं. सदृश) सदृश, दे. ।

सरीयूप, सं. पुं. (सं.) सर्पणशीलो जंतुः २. अहिः, सर्पः ।

सरूप, वि. (सं.) भाकार, रूप, युक्त-अन्वित २. सदृश, तुल्य ३. सुंदर ।

सरूर, सं. पुं. (फा. सुरूर) आनंदः, उद्भासः २. रंजन्म(ना)दः, आमत्तता ।

सरे दस्त, कि. वि. (फा.) इदानीं, अधुना २. वर्तमाने, अस्मिन् काले ।

सरे खाज़ार, कि. वि. (फा.) सर्वं, समक्षं-संमुखं २. प्रकाशं, प्रकटं, व्यक्तम् ।

सरेस, सं. पुं. (फा. सरेश) संश्लेषकद्रव्यभेदः, *श्लेषः ।

सरो, सं. पुं. (फा. सर्वं) *सरः, वृक्षभेदः ।

सरोकार, सं. पुं. (फा.) सर्वथा, संपर्कः २. अर्थः, प्रयोजनम् ।

सरोज, सं. पुं. (सं. ज.) पद्मं, कमलं, दे. ।

सरोजिनी, सं. स्त्री. (सं.) कमलिनी, पद्मिनी, मृगालिनी २. पद्मवनं ३. कमलग् ।

सरोता, सं. पुं. (सं. सारपत्रं) *पूग, कर्तनी-क्षेत्रिणी ।

सरोरुह, सं. पुं. (सं. न.) सरोजं, कमलं, दे. ।

सरोवर, सं. पुं. (सं.) दे. 'सर' ।

सरोप, वि. (सं.) सकोप, रुष्ट, क्रुद्ध ।

सरोसामान, सं. पुं. (फा. सर + व + सामान) सामग्री, परिच्छेदः ।

सरोही, सं. स्त्री. (देश.) राजस्थानप्रदेशो पुरविशेषः २. (तत्र निर्मितः) खड्गः ।

सर्कस, सं. पुं. (अं.) (पशु-) क्रीडा, अंगण- (नं.)-रंगः-मण्डलम् ।

सर्ग, सं. पुं. (सं.) (काव्यादीनां) अध्यायः, परिच्छेदः, प्रकरणं २. सृष्टिः-जगदुत्पत्तिः

(स्त्री.) ३. संसारः, जगत् (न.) ४. स्वभावः, प्रकृतिः (स्त्री.) ५. संततिः (स्त्री.), संतानः ६. उद्गमः, मूलं ७. प्रवाहः, स्रावः ८. श्लेषणं, प्राप्तनं ९. प्राणिन् १०. प्रवृत्तिः (स्त्री.) ।
सर्जन^१, सं. पुं. (सं. न.) सृष्टिः-जगदुत्पत्तिः (स्त्री.) २. विसर्जनं, दे. ।
सर्जन^२, सं. पुं. (अं.) शस्त्रवेद्यः, शस्त्र-चिकित्सकः ।
सर्जरी, सं. स्त्री. (अं.) शल्य-चिकित्सा-शास्त्रं, शस्त्रवेद्यकं २. शल्यक्रिया ।
सर्जि, सं. स्त्री. (सं.) सर्जी, सर्जिका, सर्जि-सर्जिका, श्वारः, श्वारः, कापीतः, सौवर्चलं, रुचकं, दे. 'सर्जी' ।
सर्जू, सं. स्त्री. दे. 'सरथू' ।
सर्तिक्रिकेट, सं. पुं. (अं.) प्रमाणपत्रं, दे. ।
सर्द, वि. (फ्रा. मि. सं. शरद >) शीत, शीतल दे. २. अलस, मंद ३. नष्टं, निर्वीर्यं ४. निःस्वाद, नीरस ।
—श्रुत, सं. स्त्री. (फ्रा. + सं.) शरद् (स्त्री.) दे. ।
—प्राणा, सं. पुं., हिमरुहम् ।
—मिजाज़, वि. (फ्रा. + अ.) निरस्ताह २. हृद्य ।
—होना, मु., श्र. (तु. आ. अ.) २. शीतली-मंदी, भू ।
सर्दी, सं. स्त्री. (फ्रा.) शीतं, शैत्यं, हिमः २. प्रतिध्यायः ।
—का बुझार, सं. पुं., शीतज्वरः ।
—खाना, मु., शीतपीडित (वि.) भू ।
सर्प, सं. पुं. (सं.) अहिः, मुजगः, दे. 'साँप' ।
—भक्षक, सं. पुं. (सं.) मयूरः ।
—मणि, सं. पुं. (सं.) मुजगफणजः ।
—याग, सं. पुं. (सं.) जनमेदयकृतो नाग-यज्ञः ।
—राज, सं. पुं. (सं.) श्लेषनागः २. वासुकिः-केयः ।
—लता, सं. स्त्री. (सं.) नागवल्ली, दे. 'पान' ।
सर्पिणी, सं. स्त्री. (सं.) मुजगी, दे. 'साँपिन' ।
सर्क, वि. (अ.) व्यथित, विनियोजित, दे. 'सर्क' ।
सर्क, सं. पुं. (अ. सर्कह्) व्यथः, विनियोगः २. मितव्ययः ।
सर्काक, सं. स्त्री. (अ.) दे. 'सराक' ।

सर्व, सर्वं. (सं.) सकल, समस्त ।
—काम्य, वि. (सं.) सर्व-प्रिय-इष्ट ।
—काल, अ० (सं.) सर्वदा, नित्यम् ।
—कालीन, वि. (सं.) सर्वकालिक, सदातन् ।
—जनीन, वि. (सं.) सार्वजनिक, विश्वजनीन ।
—जित्, वि. (सं.) विश्व-जित-विजेत् २. उत्तम, श्रेष्ठ । (सं. पुं.) यज्ञभेदः २. मृत्युः ।
—ज्ञ, वि. (सं.) सर्व-विश्व-वेत्-विद् । (सं. पुं.) परमेश्वरः ।
—ज्ञता, सं. स्त्री. (सं.) विश्ववेत्तव्यम् ।
—संघ, वि. (सं.) सर्वशास्त्रसंमत । (सं. न.) सर्वशास्त्रम् ।
—संघस्वतंत्र, वि. (सं.) सर्वशास्त्रपारग ।
—दमन, सं. पुं. (सं.) भरतराजः, दुष्यंत-पुत्रः । वि. (सं.) सर्वाभिभावक ।
—दर्शी, वि. (सं. -क्षिन्) विश्वद्रष्टु ।
—नाम, सं. पुं. (सं. -मन् (न.) शब्दभेदः (व्या.) ।
—नाश, सं. पुं. (सं.) विध्वंसः, विनाशः, समूलोच्छेदः ।
—नियंता, सं. पुं. (सं. -तृ) विश्वनियामकः, परमेश्वरः ।
—प्रिय, वि. (सं.) विश्व-प्रिय-इष्ट-वल्लभ ।
—भक्षी, सं. पुं. (सं. -क्षिन्) सर्वभक्षकः २. अग्निः ।
—भूत, सं. पुं. (सं. न.) चराचर, सर्वसृष्टिः (स्त्री.) ।
—मेष, सं. पुं. (सं.) सोमयागभेदः २. सार्व-जनिकसम्रथम् ।
—वल्लभा, सं. स्त्री. (सं.) कुलटा, पुंक्षली ।
—व्यापक, वि. (सं.) विश्वव्यापिन, विश्व-सर्व-ग-गत ।
—शक्तिमान्, वि. (सं. -मत्) सर्वसामर्थ्यायुत । (सं. पुं.) परमेश्वरः ।
—श्रेष्ठ, वि. (सं.) सर्व-उत्तम, प्रज्ञस्ततम ।
—साक्षी, सं. पुं. (सं. -क्षिन्) परमेश्वरः २. अग्निः ३. वायुः ।
—साधारण, सं. पुं., जनाः, लोकाः, जनता, पृथग्-प्राकृत-जनाः । वि. (सं.) साधारण, सामान्य ।
—सामान्य, वि. (सं.) साधारण, प्राकृत, प्रादिक ।

सर्वत्र, अव्य. (सं.) सर्वदिग्देशकाले ।
 —ग, वि. (सं.) सर्वव्यापक ।
 सर्वथा, अव्य. (सं.) सर्वप्रकार-रेण २. साम-
 स्थेन ३. तितानं, अत्यन्तम् ।
 सर्वथा, अव्य. (सं.) सदा, दे. ।
 सर्वश्व, सं. पुं. (सं. न.) समस्तसंपद (स्त्री.),
 समग्रद्रव्यं, निमित्तधनम् ।
 सर्वग, सं. पुं. (सं. न.) समस्तशरीरं २. सर्व-
 वेदांगानि (न. बहु.) ३. समग्रावयवः
 (पुं. बहु.) ।
 सर्वांगीण, वि. (सं.) सार्वदेहिक-सर्वांगिक
 (—स्त्री स्त्री.) ।
 सर्वात्मा, सं. पुं. (सं. स्मन्) परमात्मन,
 अहम् (न.) ।
 सर्वाधिकार, सं. पुं. (सं.) पूर्णप्रभुत्वं, ऐकाधि-
 पत्यम् ।
 सर्वे, सं. पुं. (अं.) सर्वेक्षणम्, भूमापनम् ।
 सर्वेश्वर, सं. पुं. (अं.) सर्वेश्वरः, भूमापकः ।
 सर्वेश्वर, सं. पुं. (सं.) सर्वेशः, परमेशः-श्वरः
 २. चक्रवर्तिन्, सार्वभौमः ।
 सर्वप, सं. पुं. (सं.) दे. 'सरसो' ।
 सलगम्, सं. पुं., दे. 'शलगम्' ।
 सलज्ज, वि. (सं.) हीमत्, लज्जाशील दे. ।
 सलतनत, सं. स्त्री. (अ.) राज्यं २. साम्राज्यं
 ३. शासनम् ।
 सलना, क्रि. अ. (सं. शल्यं) व. 'सालना'
 के कर्म. के रूप ।
 सलक, वि. (अ.) प्राचीन, पुरातन, पुराण ।
 सं. पुं., पूर्वजाः, पूर्वपुरुषाः, पितरः (सभी
 बहु.) ।
 सलब, वि. (अ. सल्व) नष्ट, उच्छिन्न ।
 सलवाई, सं. स्त्री. (हि. सलवाना) वैधन-
 शुक्ल-मृतिः (स्त्री.) ।
 सलवाना, क्रि. प्रे., व. 'सालना' के प्रे. रूप ।
 सलहज्ज, सं. स्त्री., दे. 'सरहज्ज' ।
 सलहई, सं. स्त्री. (सं. शलाका) श्वादि-
 निर्मिता तनुयष्टिः (स्त्री.) २. दीपशलाका ।
 सलहई, सं. स्त्री. (हि. सालना) वैधः-धनं
 २. दे. 'सलवाई' ।
 सलख, सं. स्त्री. (का. मि. सं. शलाका) दे.
 'सलाह' २. पातु-दंडः-यष्टिः (स्त्री.) ३. रेखा ।

सलाजीत, सं. स्त्री., दे. 'शिलाजीत' ।
 सलाद, सं. पुं. (अं. सैलाड) शिष्युल्लासम् ।
 सलाम, सं. पुं. (अ.) प्रणामः, दे. ।
 —अलैक या अलैकम्, प्रणामः, नमस्ते, नम-
 स्कारः ।
 दूर से—करना, मु. (अनिष्टं दूर्येनं वा दूरतः)
 परिहृ (भ्वा. प. अ.)-हा (जु. प. अ.) ।
 सलामत, वि. (अ.) सुरक्षित, अक्षत, संकट-
 मुक्त २. जीवत्, सजीव ३. स्वस्थ, नीरोग
 ४. विद्यमान, वर्तमान । क्रि. वि., सकुशलं,
 क्षेमिण ।
 —रहना, क्रि. अ., स्वस्थ (वि.) जीव (भ्वा.
 प. से.) कुशल्यै वृत् (भ्वा. अ. से.) ।
 सलामती, सं. स्त्री. (अ. सलान्त) स्वास्थ्यं
 २. कुशलं, क्षेमः ।
 —से, मु., ईश्वररूपया ।
 सलामी, सं. स्त्री. (अ. सलाम) नमस्क्रिया,
 अभिवादनं, २. सैनिक-प्रणामः-प्रणतिः (स्त्री.)-
 नमस्कारः ३. अम्बुश्वरैः संमानना-संभावना
 ४. प्रवर्ण, निम्न-अवसर्पि, भूमिः (स्त्री.) ।
 —उतारना, मु., अम्बुश्वरैः संभू संमन् (प्रे.) ।
 सलाह, सं. स्त्री. (अ.) अभिप्रायः, तर्कः,
 मत-तिः (स्त्री.) २. परामर्शः, मंत्रणा
 ३. उपदेशः, मंत्रः ।
 —करना, क्रि. अ., विचर (प्रे.), संमन् (तु.
 आ. से.), परामृश (तु. प. अ., तृतीया के
 साथ) उपदेशार्थं प्रच्छृ (तु. प. अ.) ।
 —कार, सं. पुं. (अ. + फा.) उपदेशः, मंत्रदः,
 परामर्शदः, बुद्धिसहयः ।
 —देना, क्रि. स., उपदिश (तु. प. अ.), अनु-
 शास् (अ. प. से.), मंत्र (तु. उ. से.) ।
 —ठहरना, मु., सर्वेः निधि-निणी (कर्म.),
 साम्यं जन् (वि. आ. से.) ।
 सलिल, सं. पुं. (सं. न.) अंडु, वारि, जल दे. ।
 —निधि, सं. पुं. (सं.) सागरः, समुद्रः दे. ।
 सलिलाहार, वि. (सं.) सलिल-जल-नीर-
 अशन-भोजन । सं. पुं. (सं.) जल-नीर-
 अशनम्-आहारः ।
 सलीका, सं. पुं. (अ.) कौशलं, द्राक्ष्यं, वैद-
 ग्ध्यं, चातुर्वै २. समय-शिक्ष, आचारः, शिक्षा
 ३. भाचारः, चरित्रं, व्यवहारः ४. सम्पत्ता ।

—मंद, वि. (अ. + फा.) दक्ष, कुशल, विदग्ध, चतुर २. शिष्ट, शिष्टाचारिन ३. सभ्य ।
 सलीस, वि. (अ.) सुगम, सुबोध २. दे. 'मुहाबरेदार' ।
 सलूक, सं. पुं. (अ.) व्यवहारः, वृत्तिः (स्त्री.), वर्तनं २. स्नेहः, सद्भावः ३. उपकारः ।
 सलूना, वि. (सं. सलवण) ल(ला)वण, लावणिक । सं. पुं., व्यंजनं, दे. 'माजी' ।
 सलोत्तर, सं. पुं. (सं. शालिहोत्रः >) १-२, पशु-अश्व-चिकित्सा ।
 सलोत्तरी, सं. पुं. (हिं. सलोत्तर) १-२. पशु-अश्व-चिकित्सकः वैद्यः ।
 सलोना, वि. (सं. सलवण) दे. 'सलूना' वि. २. सुन्दर, लावण्यमय, हृदयमत् ३. स्वादु, सरस ।
 सलोनी, सं. स्त्री. (सं. श्रावणी) ऋषितर्पणी, रक्षाबंधनं दे. ।
 सवन, सं. पुं. (सं. न.) यज्ञस्नानं २. सोम-पानं ३. यज्ञः ४. प्रसवः ।
 सवर्ण, वि. (सं.) तुल्य-समान-स-एक-जाति-जातीय-वर्णं २. सदृश, समान, तुल्य ।
 सवा, वि. (सं. सपाद) पादाधिक, पादोर्ध्व ।
 सवाल, सं. पुं. (अ.) पुण्यं, सुकृतफलं २. हितं, उपकारः ।
 सवाया, वि., दे. 'सवा' ।
 सवार, सं. पुं. (फा.) सादिग्ध, तुरगिनः, अश्व-आरोहः-आरोहिन् वि., आरूढ, अधिरूढ, उपर्यासीन ।
 —होना, क्रि. स. (अश्वःदिकं) अधि-अध्या-आ-समा-रूढ् (स्वा. प. अ.), अधिस्था (स्वा. प. अ.), अध्यास् (अ. आ. से.) ।
 सवारी, सं. स्त्री. (फा.) अधि-अध्या-आ-रोहणं, आ-रोहः-रूढं, (रथादिभिः) संबरण-विहरणं २. यानं, वाहनं ३. आरोहकः, आरोहिन्, यात्रिनः, यात्रिकः ४. यात्रा, दे. 'जलस' ।
 —करना, क्रि. अ., अश्वादिभिः गम्-या (अ. प. अ.) ।
 सवाल, सं. पुं. (अ.) अनुयोगः, प्रश्नः दे. । २. निवेदनं, प्रार्थना ३. भिक्षावाच्या ४. गणित-प्रश्नः ५. प्रार्थनाविषयः ।
 —जवाब, सं. पुं. (अ.) प्रश्नोत्तरं २. वाद-प्रतिवादः ३. कलहः ।

—जवाब करना, मु., विवाद (स्वा. अ. से.), विवर (प्रे.), तर्क (चु.), कहपोहं क ।
 सवालिया, वि. (अ. सवाल >) प्रश्नात्मक, पृच्छापर ।
 सवाली, वि. (अ. सवाल >) याचक, भिक्षुक, अधिन ।
 सविकल्प, वि. (सं.) संशय-संदेह-विकल्प-युक्त, संदिग्ध २. साशंक, संशयान, संदिहान । सं. पुं. (सं.) समाधिभेदः ।
 सविता, सं. पुं. (सं-तु) सूर्यः, भानुः ।
 सवित्री, सं. स्त्री. (सं.) साविका, दे. 'दाहं' २. जननी ३. गौः (स्त्री.) ।
 सवेशा, सं. पुं. [सं. सुवेला > (स्त्री.)] अरुणोदयः, अहमुखं, प्रातःकालः, दे. विलम्ब-चिरता-चिरत्व-अभावः ।
 सवेया, सं. पुं. (हिं. सवा) मालिनी, छंदोभेदः २. सपादसेरात्मकं भारमानं ३. सपादतुणन-द्वी ।
 सव्य, वि. (सं.) वाम, दे. 'बायाँ' २. दक्षिण (कभी ही) ३. विरुद्ध, प्रतिकूल ।
 —साधी, सं. पुं. (सं-चिन्) अर्जुनः ।
 सशंक, वि. (सं.) दोलायमानं, संशयापन्न, संशयान २. भीत, उद्विग्न, त्रस्त ३. भीम, भयंकर ।
 ससुर, सं. पुं. (सं. श्वसुरः) पतिपितृ २. जाया-जनकः ३. (गाली) दुष्टः, शठः, खलः ।
 ससुराल, सं. स्त्री. (सं. श्वसुरालयः) १-२. पति-पत्नी-पितृगृहं, श्वसुरगृहम् ।
 ससुरी, सं. स्त्री. (हिं. ससुर) श्वशुरः (स्त्री.), दे. 'सास' २. दुष्टा, पापा ।
 सस्ता, वि. (सं. स्वस्थ >) अल्प-अर्ध-मूल्य, सुखकेय २. सुलभ ३. सामान्य, साधारण, अवर ।
 —होना, क्रि. अ., अल्पमूल्य-सुखकेय (वि.) भूः सस्ते छूटना, मु., स्तोकात् मुच् (कर्म.) ।
 सस्य, सं. पुं. (सं. न.) शस्यं, धान्यं, मीथ्यं, व्रीहिः, स्तंदकरिः २. वृक्षादीनां फलम् ।
 सह, अव्य. (सं.) साकं, साथै, समं, सहितं (सब वृत्तिया के साथ) दे. 'साथ' ।
 —कार, सं. पुं. (सं.) आन्नः, आन्नं २. सहायकः ३. सहयोगः ।
 —कारिता, सं. स्त्री. (सं.) सहयोगिता २. सहायता ।

- कारी**, सं. पुं. (सं. रिन्) सह, कृत-कृत्वन्-योगिन, सव्यवसायिन् २. सहायकः ।
- गमन**, सं. पुं. (सं. न.) सह, चरण-व्रजनं २. पतिश्वेन सह ज्वलनं, सह, मरण-अनु-गमनम् ।
- गामिनी**, सं. स्त्री. (सं.) सहमृता, पत्या सह ज्वलिता नारी २. पत्नी ३. सहचरी ।
- गामी**, सं. पुं. (सं. मिन्) सीगिन्, सह, चर-चारिन्-यायिन्-वतिन् २. अनुयायिन् ।
- चर**, सं. पुं. (सं.) दे. 'सहगामी' (१) । २. सेवकः ३. सखि, मित्रम् ।
- चरी**, सं. स्त्री. (सं.) पत्नी, भार्या २. सखी, वयस्या ३. सहगामिनी, सीगिनी ।
- चार**, सं. पुं. (सं.) दे. 'सहगामिन्' (१) । २. संगः, संगतिः (स्त्री.) ।
- चारिणी**, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'सहचरी' (१-२) ।
- चारी**, सं. पुं. (सं. रिन्) दे. 'सहगामिन्' (१) । २. सेवकः, अनुचरः ।
- जात**, वि. (सं.) सहजन्मन्, यमज २. सोदर, सहोदर ।
- जीवी**, वि. (सं. विभ्) समकालीन २. भट्-वासिन् ।
- धर्मिणी**, सं. स्त्री. (सं.) सहधर्म, चरी-चारिणी, धर्मपत्नी ।
- पाठी**, सं. पुं. (सं. ठिन्) सह, अध्यायिन्-पाठकः ।
- भोज**, सं. पुं. (सं.) सन्धिः (स्त्री.), सह-भक्षणं, संभक्षः ।
- भोजी**, सं. पुं. (सं. जिन्) सहभक्षकः ।
- मत**, वि. (सं.) एक-मत-चित्तं, संवादिन्, संप्रतिपन्न ।
- योग**, सं. पुं. (सं.) सह, कारः कारिता-योगिता २. संगतिः (स्त्री.) ३. सहायता ।
- योगी**, सं. पुं. (सं. सिन्) दे. 'सहकारी' (१-२) ३. समवयस्क ४. समकालीन ।
- वाद**, सं. पुं. (सं.) वादप्रतिवादः, हेतु-वारः ।
- वास**, सं. पुं. (सं.) सहवसतिः (स्त्री.) २. संगः ३. नैथुनम् ।
- वासी**, सं. पुं. (सं. सिन्) सहवासकृत् २. दे. 'सहगामी' ।
- सहज**, वि. (सं.) सुगम, सरल, सुकर २. सह-जात, दे. ३. स्वाभाविक, प्राकृतिक ४. साधारण । कि. वि., सौकर्येण, सुखम् ।

- पथ**, सं. पुं. (सं. सहज + पथिन् >) सहज-पथनामा वैष्णवसंप्रदायविशेषः ।
- मित्र**, सं. पुं. (सं. न.) स्वाभाविकसुहृद् २. भागिनेयः ३. आतृष्वसेयः ४. पैतृष्वसेयः ।
- शत्रु**, सं. पुं. (सं.) स्वाभाविकशत्रुः, सह-जारिः २. पितृष्वपुत्रः ३. वैमात्रेयभ्रातृ ।
- सहजन**, सं. पुं., दे. 'सहिजन' ।
- सहजिया**, सं. पुं. (सं. सहज >) सहज-मतानुयायिन् ।
- सहदेव**, सं. पुं. (सं.) पांडुराजस्य पंचमपुत्रः ।
- सहन**, सं. पुं. (सं. न.) सहिष्णुता, मर्षः, मर्षणं २. क्षमा, तितिक्षा, क्षांतिः (स्त्री.) ।
- करना**, कि. अ. दे., 'सहना' ।
- शील**, वि. (सं.) सहिष्णु, तितिक्षु २. क्षमिन्, क्षमितृ, सहन ।
- शीलता**, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'सहन' (१-२) ।
- सहन**, सं. पुं. (अ.) अंगनं, प्रांगणं, अजिरं, चत्वरम् ।
- सहना**, कि. अ. (सं. सहन) क्षमः सह (स्वा. आ. से.), त्रिज् (सक्न्त, तितिक्षते), घृष् (दि. प. से., चु.) । सं. पुं. तथा भाव, सहनं, सहिष्णुता, सहनशीलता, क्षमा, मर्षणं, क्षान्तिः (स्त्री.), तितिक्षा ।
- सहनीय**, वि. (सं.) मर्षणीय, तस्य, सोढव्य, क्षमार्ह, श्रन्तव्य ।
- सहने वाला**, सं. पुं., सोढ, क्षन्त, सहः ।
- सहम**, सं. पुं. (फा.) भयं, त्रासः २. संकोचः, दे. 'लिहाक' ।
- सहमना**, कि. अ. (फा. सहम) दे. 'उरना' ।
- सहर**, सं. स्त्री. (अ.) उषा, प्रभातम् ।
- सहरा**, सं. पुं. (अ.) मरुः, मरु-स्थल-भूमिः (स्त्री.) २. वनं, निविडकाननम् ।
- सहरी**, सं. स्त्री. (सं. शफरी) मीनभेदः ।
- सहल**, वि. (अ.) सरल, सुगम, सुकर, सुसाध्य ।
- सहला(रा)ना**, कि. स. (हि-सहर = भीरे अथवा अनु०) वृद् (क. प. से.), घृष् (स्वा. प. से.) । सं. पुं. अंगमर्दनं, संवाहनम् ।
- सहसा**, अव्य. (सं.) अकरमात्, एकपदे, अकांड-डे, अतकितं, झटिति (सब अव्य.) ।
- सहस्र**, वि. (सं. न.) दशशत-तकम् । सं. पुं., दशशतसंख्या २. तद्वोधकांकाक्ष (१०००) ।

सहस्रांशु

[६१२]

सांगी

—कर, सं. पुं. (सं.) सहस्र-किरणः-रश्मिः, सूर्यः ।
 —दल, सं. पुं. (सं. न.) सहस्रपत्रं, कमलम् ।
 —नयन, सं. पुं. (सं.) सहस्र-लोकमः-नेत्र-दृष्टम् ।
 —नाम, सं. पुं. [सं. मन (न.)] सहस्र-नामयुतं देवस्तोत्रम् ।
 —बाहु, सं. पुं. (सं.) शिवः, २. कार्तवीर्यो-ऽर्जुनः, नृपविशेषः ३. बलिन्पस्य ज्येष्ठसुतः ।
 सहस्रांशु, सं. पुं. (सं.) सूर्यः ।
 सहस्राक्ष, सं. पुं. (सं.) इन्द्रः २. विष्णुः ।
 सहाइ-ई, सं. पुं. (सं. सहायः) सहायकः दे. ।
 सहाध्यायी, सं. पुं. (सं. धिन्) दे. 'सहपाठी' ।
 सहानुभूति, सं. स्त्री. (सं.) समवेदनं-ना, समदुःख(हिं)ता २. समदुःखसुखता ।
 —करना या दिखाना, कि. अ., सहानुभूतिं प्रकटयति (ना. धा.), प्रकाशं (प्रे.) ।
 सहाय, सं. पुं. (सं.) सहायकः, दे. २. सहायता, दे. ३. आश्रयः ।
 सहायक, वि. (सं.) सहायः, उप-कर्तृ-कारि-कारकः, साहाय्यदः अभिसरः, अनु-चरः-प्लवः २. उप-, (उ. उपमंत्री) ।
 सहायता, सं. स्त्री. (सं.) साहाय्यं, उप-कार-कृतं-कृतिः (स्त्री.) २. अनुग्रहः ।
 —करना, कि. स., साहाय्यं कृ, सहायकः भू, उपकृ (षष्ठी के साथ), अनुग्रह् (कृ. प. से.) ।
 सहारना, कि. स. (हि. सहारा) दे. 'सहना' २. भृ (चु.), भृ (जु. उ. अ.) ३. उत्तम्भ-उपस्कम्भ्. (कृ. प. से.) । सं. पुं., दे. 'सहना' सं. पुं. २. धारणं, उत्तम्भनं, उपस्तम्भः ।
 सहारा, सं. पुं. (सं. सहाय >) दे. सहायता (१) २. आश्रयः, अवलंबः, अवष्टम्भः ३. विश्वासः, प्रत्ययः, विश्रम्भः ।
 —देना, कि. स., साहाय्यं कृ, उपकृ २. उत्तम्भ-उपस्तम्भ (कृ. प. से.) ३. शरणं-आश्रयं दा, गुप् (स्वा. प. से.) ४. समाश्रम् (प्रे.) ।
 —डूँडना, मु., आश्रयं अन्विष् (दि. प. से.) ।
 सहिजन, सं. पुं. (सं. शोभाजनः) तीक्ष्णगंधः, सु-तीक्ष्णः, रुचिरांजनः ।
 सहित, वि. (सं.) समेत, युक्त, संगत, अन्वित, दे. 'साय' तथा 'सह' । कि. वि., साकं, साथै, समं, सह ।

सहिष्णु, वि. (सं.) सहनशील, दे. ।
 सहिष्णुता, सं. स्त्री. (सं.) सहनशीलता, दे. ।
 सही, वि. (का. सहीह) सत्य, यथार्थ २. प्रासा-णिक ३. सुदृढ, निर्दोष ।
 सहीका, सं. पुं. (अ.) ग्रन्थः, पुस्तकम् २. धर्म-ग्रन्थः-पुराणकम् ३. पत्रम् ४. पर्विका ।
 —सलामत, वि. (हिं + अ.) स्वस्थ, दीरोग २. संपूर्ण, निर्दोष, सुदिरहित ।
 सहूलियत, सं. स्त्री. (का.) सुकरता, सुगमता २. शिष्टाचारः ।
 सहृदय, वि. (सं.) समवेदना-सहानुभूति-युक्त २. दयालु ३. रसिक ४. भद्र, महाशय ५. सत्-माधु, स्वभाव ६. प्रसन्नमनस्क, आनंदिन ।
 सहृदयता, सं. स्त्री. (सं.) समवेदना, सहानु-भूतिः (स्त्री.) २. सज्जनता, सौजन्यं ३. रसि-कतास्वं ४. अनुक्रीडाः, दयालुता ।
 सहेजना, कि. स. (अ. सही + हिं. जांबना) सम्यक् परोक्ष-निरोक्ष (भा. आ. से.) सुष्ठु बोधयित्वा प्रतिपद् (प्रे.)-दा ।
 सहेली, सं. स्त्री. (सं. सह + हेलन् >) सती, आली-लिः (स्त्री.), संगिनी २. परिचारिका, अनुचरी ।
 सहोक्ति, सं. स्त्री. (सं.) अर्थात्कारभेदः (ता.) ।
 सहोदर, सं. पुं. (सं.) सोदरः, सोदर्यः, सहजः, सगर्भः, समानोदर्यः, भाद्र ।
 सहा, वि. (सं.) सहनीय, दे. । सं. पुं. (सं.) सहादिः ।
 साँई, सं. पुं. (सं. स्वागिन्) प्रभुः, ईशः, अधिकारित्व २. परमात्मन्, परमेश्वरः ३. पतिः, भर्तृ ४. यवन्भिक्षुः ।
 सांकड़, सांकल, सं. स्त्री. (सं. शृङ्गला, दे.) ।
 सांकेतिक, वि. (सं.) संकेतात्मक, लाक्षणिक, संकेत-सम्बन्धिन्-विषयक ।
 सांख्य, सं. पुं. (सं. पुं. न.) महापंचकिल-प्रणीतो दर्शनग्रन्थविशेषः ।
 सांगी, सं. पुं., दे. 'स्वांग' ।
 सांगी, सं. स्त्री. (सं. शक्तिः) काष्ठाः-स्य (दोनो स्त्री.), अस्वभेदः ।
 सांगी, वि. (सं.) संपूर्ण, सर्वोपयुक्त ।
 सांगी, सं. स्त्री. (हि. सांग) दे. 'सांग' २. शकटावकासनं, युगः-गं ३. शकटाधोवर्ति-जालकम् ।

सांगोपांग, वि. (सं.) अंगोपांगयुक्त, सं., पूर्ण, समग्र, समस्त ।

साँच, वि. (सं. सत्य) अवितथ, यथार्थ ।

साँचा, सं. पुं. (सं. रथात्) आकारसाधनं, संस्थानं, संस्थानपुरः २. दे. 'छापा' ।

साँचे में डला होना, गु., सर्वांगसुंदर (वि.) दृढ (भ्वा. आ. से.) ।

साँझ, सं. स्त्री. (सं. संध्या) सायंकालः, दे. ।

साँझा, सं. पुं., दे. 'साझा' ।

साँट, सं. स्त्री. (अनु. सट) सूक्ष्म-तनु, दंड-यष्टिः (स्त्री.) २. कशः-शा ३. यष्टि-कशा, -प्रहारविहंग, *नीलं ४. कंटनी ।

साँठी, सं. स्त्री. (हि. गाँठ का अनु.) मूल-धनं, दे. 'पूँजी' ।

साँठ-ड, सं. पुं. (सं. पंठः) श(ष)ठः, गोपतिः, वृषन्, वृषभः २. दिवंगतस्मृत्यामुत्सृष्टोऽङ्कितो वृषभः ३. वृषणाश्वः, वृषन् । वि., इडांग, बलिन् २. स्वैरिन्, दुराचारिन् ।

साँठ(ब)नी, सं. स्त्री. (हि. साँठ) उप्पी, दे. 'कंटनी' ।

—**सन्नार**, सं. पुं. (हि. + ऋ.) उष्ण, आरोग्य-आरोहिन् २. उद्-क्रमेक, वाहकः ।

साँडा, सं. पुं. (सं. शयानकः) कुकलाशः-सः, ककचपादः, प्रविस्मृतः, सरटः-ड्डः, गोथिका, चित्रकूलः ।

साँत, वि. (सं.) अंतवत्, नश्वर, नाशवत् ।

साँत्वना, सं. स्त्री. (सं.) साँत्वः-स्वर्नं, आ-समा, आसनं २. शमः, शांतिः (स्त्री.), ३. प्रणयः ।

—**देना**, क्रि. स., सां(शा)त्वं (चु.), आ-सना, अस् (प्रे.), शोकं शम् (प्रे.) ।

साँद्र, सं. पुं. (सं.) वर्नं २. राशिः । वि. (सं.) धन, निविट, सुसंहत ।

साँद्रता, सं. स्त्री. (सं.) निविडता, धनता इ. ।

साँधिविप्रहिक, सं. पुं. (सं.) सन्धियुद्ध-मंत्रिन् ।

साँध्य, वि. (सं.) संध्या, सम्बन्धिवन्-विषयक, वैकालिक, वैकालीन ।

साँनिध्य, सं. पुं. (सं. न.) सामीप्यं, निकटता २. मोक्षभेदः ।

साँप, सं. पुं. (सं. सर्पः) भुज(ज)गः, गुजगमः, अहिः, फण-विष, धरः, व्यालः,

सरीसृपः, आसीविषः, कुंडलिन, लक्ष्मःश्वस्, फणित, विलेशयः, उरगः, पत्रगः, पवनाशनः, दक्षिन्, द्वि, जिह्वः-रसनः, पृदाकुः, चक्रिन्, दंड-शुकः, योगिन्, गूढपादः, दीर्घपृष्ठः, जिह्वागः । (धब्बोवाला साँप) मालुलःहिः, मालुधानः । (धारोदार साँप) राजि(जी)लः । (फनियर साँप) भोग-कण, भृत्-धरः, फणिन्, भोगिन् ।

—**की लहर**, मु., अहिदंशव्यथा ।

—**के मुँह में**, मु., महासंकटे ।

—**छट्टैदर की दशा**, मु., द्वैधीभाव, दोला-वृत्तिः (स्त्री.), संदेहः ।

—**सूँघ जाना**, मु., सर्पेण दंशं (कर्म.), मृ (तु. आ. अ.) ।

कलेजे पर—**टोटना**, मु. (ईश्यादिभिः) मनोऽ-त्वंतं संतप् (कर्म.) ।

साँपसिक, वि. (सं.) आधिक, दे. ।

साँपिन, सं. स्त्री. (हि. साँप) साँपिणी, सर्पा, पत्रगी, उरगी, भुजगी इ. ।

साँप्रत, अव्य. (सं.-तं) अधुनैव, इदानीमेव, सधः, संप्रति । वि. (सं.) उचित, योग्य, २. प्रासंगिक, प्रास्ताविक ।

साँप्रदायिक, वि. (सं.) शाखागत, संप्रदाय-धर्म-मत, विषयक-संबन्धिन् २. परंपरोप, क्रमा-गत ।

साँब, सं. पुं. (सं.) श्रीकृष्णपुत्रः ।

साँभर, सं. पुं. (सं. साँबर) संबरोद्धवं, रौमकं, वसुकं २. राजपुत्रस्थानप्रदेशे कासारविशेषः ।

साँमुख्य, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'सामना'(२) ।

साँय, सं. स्त्री. (अनु.) दे. 'सनसनाइट'(१) ।

साँवला, वि. (सं. श्यामल) कृष्ण, श्याम २. ईषच्छयान, आकृष्ण ३. कृष्णनील । सं. पुं., श्रीकृष्णः २. पतिः ३. प्रेमिन्, प्रणयिन् ।

साँबलापन, सं. पुं. (हि. साँवला) श्यामलता, श्यामता, आ-कृष्णता, कृष्णनीलता ।

साँवाँ, सं. पुं. (सं. श्यामाकः) श्यामः-मकः, त्रिबीजः, अविश्रियः ।

साँस, सं. स्त्री. [सं. श्वातः (पुं.)] उच्छ्वासः, उच्छ्वासितं, नि(निः)श्वासः, निः(नि)श्वासितं, आनः, आहरः, एतनः, असवः-प्राणाः (दोनों पुं. बहु.) २. दीर्घश्वासः, निश्वासः, उच्छ्वासः ३. विरामः, विश्रामः ४. स्फोटः, धंगः ५. श्वासरोमः, दे. 'दमा' ।

—रूकना, कि. अ., श्वासः निरुध् (कर्म.) ।
 —लेना, कि. अ., अन्-प्राण्-श्वस् (अ. प. से.) २. जीव् (भ्वा. प. से.) ३. विश्रम् (दि. प. से.) विरम् (न्वा. प. अ.) ।
 —उखडना, मु., (निघन्तुकाले) कृच्छ्र-कष्टं श्वस् ।
 —खीचनम्, मु., श्वासमंतः निरुध् (र. प. से.) ।
 —चडना या—फूलना, मु., सर्वेण प्राण ।
 —तक न लेना, मु., मौनं आकल् (चु.) ।
 —रहते, मु., यावज्जीवं वनं, अमृत्योः ।
 गहरी या लंबी—लेना, मु., शीर्षे श्वस् ।
 सांसारिक, वि. (सं.) वैहिक, लौकिक, प्राय-ञ्जिक, व्यावहारिक ।
 सा, वि. (सं. सदृश) सम, समान, तुल्य, सदृश २. इव, मात्र (उ. षोडा सा=किञ्चि-दिन, किञ्चिन्मात्रं) ३. आ, ईषत् (उ. काला सा=आ-ईषत्, कृष्ण) ।
 साहबलोपीडिया, सं. स्त्री. (अं.) (विषयविशेष-निरूपकः) बृहद्ग्रंथः २. विश्वकोशः-षः ।
 साह्य, सं. स्त्री. (अ. ल. अत) हीरा, दे. 'घंटा' २. पलं, क्षणः-णं ३. मंगलमुहूर्तः, शुभलग्नम् ।
 साइनबोर्ड, सं. पुं. (अं.) चिह्नपट्टः-पट्टम् ।
 साइन्स, सं. स्त्री. (अं.) विज्ञानं, शास्त्रं २. रासायनिकविज्ञानं भौतिकविज्ञानं च ।
 साइफुन, सं. स्त्री. (अं.) उत्क्षेपणताली ।
 साई; सं. स्त्री., दे. 'पेशानी' ।
 साईस, सं. पुं. (रईस का अनु.) अश्व, सेवकः-पालः-पालकः-रक्षकः, यावासिकः ।
 साईसी, सं. स्त्री. (हि. साईस) अश्वसेवा, अश्वसेवकत्वम् ।
 साक, सं. पुं., दे. 'साग' ।
 साकाश, वि. (सं.) इच्छु, इच्छुक, आकांक्षिन्, अभिलाषिन् ।
 साका, सं. पुं. (सं. शाकः) संबत् (अव्य.), दे. २. यशस् (न.), कीर्तिः-ख्यातिः (स्त्री.) ३. कीर्ति-चिह्न-स्मारकं ४. आतंकः, प्रभावः ५. कीर्तिकरं कर्मन् (न.) ।
 साकार, वि. (सं.) आकारवत्, आकृतिमत्, रूपवत् २. स्थूल, सूक्ष् ३. मूर्तिमत्, वपुष्मत्, देहधारिन् ।
 साकारोपासना, सं. स्त्री. (सं.) मूर्त्यादिभिः प्रभुपूजनं, मूर्तिपूजा ।

साकिन, वि. (अ.) नि, वासिन्, वास्तव्य ।
 साकी, सं. पुं. (अ.) सुरापरिवेषकः २. वल्लभः, प्रेमपात्रं, दे. 'भाशुक' ।
 साकूत, वि. (सं.) सार्धक. अर्धवत्, साभि-प्राय, सप्रयोजन ।
 साकेत, सं. पुं. (सं. न.) जयोध्या, दे. ।
 साक्षर, वि. (सं.) शिक्षित, अक्षर, क-अभिज्ञ ।
 साक्षात्, अव्य. (सं.) पुरतः, अग्रतः, समक्षं, प्रत्यक्षम् । वि., मूर्तिमत्, साकार, विग्रहवत् । सं. पुं., सं-समा-नामः, मेळः, संमिलनम् ।
 —करना, कि. सा., साक्षात् कृ. स्वच्छुभ्यां दृश् (भ्वा. प. अ.), निजेन्द्रियैः अवगम् ।
 —कार, सं. पुं. (सं.) दे. 'साक्षात्' । सं. पुं. २. प्रत्यक्षं, इंद्रियार्थसंनिकर्षजं ज्ञानम् ।
 साक्षी, सं. पुं. (सं. क्षिन्) दे. 'गवाह' २. दृष्ट, प्रेक्षकः । सं. स्त्री., साक्ष्यम् ।
 साक्ष्य, सं. पुं. (सं. न.) साक्षिता-त्वं, दे. 'गवाही' २. दृश्यम् ।
 साख, सं. स्त्री. (हि. साका) प्रभावः, वशः-शं, आतंकः २. (इट्टे) प्रतिष्ठा, प्रत्ययः, विश्वसनीयता ।
 साग, सं. पुं. (सं. शाकः-कं) शि(सि)मु, ह(हा)रितकं २. व्यंजनं, अन्नोपस्कारः, दे. 'भाजी' ।
 —पात, सं. पुं., शाकपत्रं, कंदमूलं २. साधारणनीरस, भोजनम् ।
 सागर, सं. पुं. (सं.) समुद्रः, दे. २. महा-रुदः-तटाकः-(कम्) ।
 सागवान, सं. पुं., दे. 'सगौन' ।
 सागू, सं. पुं. (अं. सैगो) *सागुः, वृक्षभेदः ।
 —दाना, सं. पुं. (हि. + फा.) *संगुदानः ।
 सागौन, सं. पुं. (सं. शाकवनं >) गृहदुमः, श्रेष्ठकाष्ठः, शाकः, शाक-तरुः-वृक्षः, अर्णः ।
 साज्ञ, सं. पुं. (फा., मि. सं. सञ्जा) सामग्री, उपकरणं २. (अश्व-) सञ्जा-संज्ञाहः ३. वाक्यं, वादित्रं ४. अस्त्रशस्त्रं ५. सुपरिचयः, प्रगट-सख्यम् । वि. (फा.)-कारः २. प्रतिसमाधात् । (ज. षडीसाञ्ज=षटीकारः, षटीप्रतिसमाधात्) ।
 —बाज, सं. स्त्री., सुपरिचयः ।
 —सामान, सं. पुं., सामग्री, उपकरणं, परि-च्छदः २. दे. 'ठाठबाट' ।
 साजन, सं. पुं. (सं. सज्जनः) भद्रजनः, आर्यः, सत्पुरुषः २. पतिः ३. वल्लभः ४. परमेश्वरः ।

साजना, कि. स., दे. 'सजाना' ।
 साजिंद्रा, सं. पुं. (फा.) वाद्य-वादित्र-वादकः ।
 साजिंद्रा, सं. स्त्री. (फा.) दे. 'पड्यंत्र' ।
 साज्ञा, सं. पुं. (सं. साहाय्यं) अंशिता,
 भागिता, भागधरत्वं २. अंशः, भागः ।
 साक्षी, सं. पुं. (हि. साक्षा) दे. 'साक्षेदार' ।
 साक्षेदार, सं. पुं. (हि. साक्षा) अंशकः, अंशिन,
 भागधरः, अंशयित् ।
 साक्षेदारी, सं. स्त्री. (हि. साक्षेदार) दे.
 'साक्षा' (१) ।
 साटन, सं. पुं. (अं. सैटिन) साटनं, कौशेय-
 बलभेदः ।
 साटा, सं. पुं. (देश.) विनिमयः, परिवर्तः ।
 साठ, वि. [सं. पट्टिः (नित्य स्त्री.)] सं. पुं.
 उक्ता संख्या तद्बोधकांकी (६०) च ।
 साठवाँ, वि. (हि. साठ) षष्ठितमः-मी-मं
 (पुं. स्त्री. न.) ।
 साठ, वि. (हि. साठ) षष्ठिवर्ष ।
 साठी, सं. पुं. (सं. षष्ठिकः-का) स्निग्धतंडुलः,
 षष्ठिजः ।
 साठी, सं. स्त्री. (सं. शाठी) नारीवल्लभेदः ।
 साढ़सातो, सं. स्त्री. (हि. साढ़े+सात)
 सादसप्तवर्षं-मास-दिवस-वर्तिनी शनिदशा ।
 —आना या—चढ़ना, मु., दुर्दिनानि आपत्
 (भा. प. से.) ।
 साढ़, सं. पुं. (सं. श्यालीधवः) श्यालीपतिः,
 अध्यापकः ।
 साढ़े, वि. (सं. सार्धं) अर्धध ।
 सात, वि. (सं. सप्त) सं. पुं., उक्ता संख्या,
 तद्बोधकांक्ष (७) ।
 —गुना, वि., सप्त-गुण-गुणित ।
 —प्रकार का, वि., सप्त-विध-प्रकार ।
 —फेरी, सं. स्त्री., दे. 'भावर' ।
 —पांच, मु., श्राव्यं, कापठ्यम् ।
 —पांच करना, मु., प्रतृ-वंच (प्रे.), विप्रलभ
 (भा. आ. अ.) ।
 —पुश्तो से, मु., अनादिकालात् ।
 —समुद्र पार, मु., अति-दूर-दूरे ।
 सातवाँ, वि. (हि. सात) सप्तमः-मी-मं
 (पुं. स्त्री. न.) ।
 सात्यकि, सं. पुं. (सं.) यादवयोधविशेषः,
 श्रीकृष्णसारथिः ।

सात्त्विक, वि. (सं. सात्त्विक) १-३. सत्त्वगुण-
 संबंधित-निष्पन्न-प्रधान ४. शुद्धात्मन्,
 निष्कपट, ऋजु, सरल । सं. पुं. (सं.) सत्त्व-
 गुणजा अष्टप्रकारा भावाः (=स्वेदः स्तंभोऽथ
 रोमांचः स्वरभंगोऽथ वेपथुः । वैवर्ण्यमश्रु प्रलय
 प्रत्यष्टौ सात्त्विकाः स्मृताः, सा.) ।

साथ, अव्य. (सं. सहितं) सह, सार्क, सार्धं,
 समं, तृतीया से भी (उ. क्रोध के साथ=क्रोधेन
 इ.), स-, -पूर्वकं, -पुरःसरं (उ. आदर के
 साथ=सादरं, आदर,-पूर्वकं-पुरःसरं इ.),
 सं-, (उ. साथ रहना=संवातः) । सं. पुं.
 संगः, संगतिः (स्त्री.) सहचारः, साहचर्य्यं,
 संसर्गः ।

—का, मु., व्यंजनं, अत्रोपस्कारः ।

—कूटना, मु., विधि (दि. प. अ.), व्यप-
 श् (अ. प. अ.) ।

—देना, मु., साहाय्यं कृ २. रश्चू (भा. प. से.)
 ३. सह या (अ. प. अ.) ।

—ही, मु., अपरं च, अन्यच्च, अपि च, कि च,
 -अतिरिक्तम् ।

एक—, मु., युगपत्, समकालं-ले, यौगपथेन
 २. संभूय, मिलित्वा ।

साधिन, सं. स्त्री. (हि. साधी) सहचरी
 २. सखी ।

साधी, सं. पुं. (हि. साथ) संगिन्, सहचरः
 २. मित्रं, सखि (पुं.) ।

साधुगी, सं. स्त्री. (फा.) साधुता, सरलता,
 आर्जवं, निष्कापठ्यं २. आर्द्धरहीनता ।

सादर, वि. (सं.) सगौरव, सविनय । कि.
 वि. (सं.-रं) सप्रश्रयं, सविनयम् ।

सादा, वि. (फा.-दः) निष्कपट, निश्छल,
 सरल, ऋजु, माया,-रहित, निर्व्याज, शुद्धात्मन्
 २. अज्ञ, मूर्ख ३. श्वेत, रंग-वर्ण,-हीन ४. अक्ष-
 रांकादिरहित, रेखारहित ५. शुद्ध, केवल
 ६. अलंकाररहित ७. विनीत-अनुद्धत, वैश(ष)
 ८. अल्पावयव (यंत्रादि) ।

सादापन, सं. पुं. (फा. सादह) दे. 'सादगी' ।

सादि, वि. (सं.) सारम्भ, सोपक्रम, आरम्भ-
 उपक्रम,-वच-युक्त ।

सादिक, वि. (अ.) सत्य, यथार्थ २. शुद्ध,
 झुटिरहित ।

साहस्य, सं. पुं. (सं. न.) समता, समानता,
 साम्यं, सहशता, तुल्यता ।

साध^१, सं. पुं., दे. 'साधु' ।

साध^२, सं. स्त्री. (सं. उत्साहः >) अभि-
लाषः, कामना, लालसा, वाञ्छा ।

साधक, सं. पुं. (सं.) सं-निष्, -पादकः, समा-
पकः, सिद्धिकरः, निर्वर्तयितु २. तपस्विन्,
तापसः, योगिन् ३. करणं, साधनं ४. परहित-
कारिन्, परकार्यसहायः ५. भक्तः, उपासकः
६. भूतापसारकः, दे. 'ओष्ठा' ।

साधन, सं. पुं. (सं. न.) निष्पादनं, विधानं,
संपादनं, करणं, अनुष्ठानं, समापनं, निर्वर्तनं
२. उपकरणं, सामग्री ३. युक्तिः (स्त्री.),
उपायः ४. उपासना, पूजा ५. सहायता
६. धातुसोधनं ७. कारणं, हेतुः ८. धनं
९. पदार्थः १०. सिद्धिः (स्त्री.) ।

साधना, सं. स्त्री. (सं.) सिद्धिः-निर्वृतिः-निष्पत्तिः
(स्त्री.) २. आराधना, उपासना ३. अभ्यासः,
क्रियासातत्यं, नित्यानुष्ठानम् । कि. स. (सं.
साधनं) साध् (स्वा. प. अ., प्रे.), सिध्
(प्रे. साधयति) २. निर्वृत्-संपद-समाप् (प्रे.),
अनुष्ठा (भ्वा. प. अ.) २. विनी (भ्वा.
प. अ.), शिक्ष् (प्रे.) ३. दम् (प्रे. दमयति)
वशीकृ ४. अभ्यस् (दि. प. से.), अभ्यास-
व्यवहारं कृ ५. निवृत् (लु.), अनुशास् (अ.
प. से.) । सं. पुं. तथा भाव, साधनं, निर्वर्तनं,
सं-निष्, -पादनं, अनुष्ठानं, विनयनं, दे. 'साधक',
'साधन' इ. ।

साधर्य, सं. पुं. (सं. न.) सधर्मतास्त्वं, समान-
तुल्य, धर्मता-गुणता ।

साधारण, वि. (सं.) सामान्य, विशिष्टता-
रहित, प्रायिक, प्राकृत, मध्यम, गवर २. सुकर,
सुसाध्य ३. सार्वजनिक, सर्वजनीन ४. सदृश,
तुल्य ।

—**धर्म**, सं. पुं. (सं.) सार्वजनिकधर्मः २. चातु-
र्वर्ण्यस्य सामान्यधर्मः ।

—**स्त्री**, सं. स्त्री. (सं.) वैश्या ।

साधारणतः, अव्य. (सं.) सामान्यतः, प्रायशः,
प्रायेण, बहुशः (सब अव्य.) ।

साधारणतया, अव्य. (सं.) दे. 'साधारणतः' ।

साधारणता, सं. स्त्री. (सं.) सामान्यता,
विशिष्टताऽभावः, साधारण्यम् ।

साधु, सं. पुं. (सं.) सन्त्यासिन्, परिव्राजकः,
महात्मन्, तापसः, मुनिः, यतिः २. सत्पुरुषः,

सज्जनः, आर्यः ३. अभिजातः, कुलीनः । वि.
(सं.) भद्र, उत्तम, श्रेष्ठ २. यथार्थ, सत्य,
अवितथ ३. प्रशंसनीय, स्तुत्य ४. निपुण
५. अर्द्ध, योग्य ६. उचित, युक्त ।

—**वाद**, सं. पुं. (सं.) साधु, वचनं-वक्तिः
(स्त्री.), शंसात्मकं वचनम् ।

—**साधु**, भव्य. (सं.) धन्य-धन्य, सम्यक्-
सम्यक्, शोभनं शोभनं, बरं वरम् ।

साधुता, सं. स्त्री. (सं.) सज्जनता, श्रेष्ठता,
भद्रता, आर्यता २. सरलता, आजर्ब ३-४.
साधु, चरितं-धर्मः ।

साधू, सं. पुं., दे. 'साधु' ।

साध्य, वि. (सं.), निष्पादनीय, करणीय,
अनुष्ठेय, समाप्तव्य २. शक्य, संभाव्य, संभव-
नीय ३. सुकर, सुगम ४. प्रमाणयितव्य,
सत्यापयितव्य, उपपादयितव्य ५. प्रतिकारार्ह,
प्रतिकार्य ६. ज्ञेय । सं. पुं. (सं.) देवता
२. गणदेवताभेदः ३. साधनीयपदार्थः (न्या.) ।

साध्यस, सं. पुं. (सं. न.) भयं २. व्याकुलता ।

साध्वी, सं. स्त्री. (सं.) सती, सच्चरित्रा २. पति-
व्रता-परायणा ।

सानंद, वि. (सं.) प्रदृष्ट, मुदित । कि. वि. (सं.
न.) सकुशलं, सहर्षम् ।

सान, सं. पुं. (सं. शाणः) शाणी, शाणाश्मन् ।

—**देना**, कि. स., तिज् (प्रे.), नि., शो (दि.
प. अ.), तीक्ष्णीकृ, क्षुण् (अ. प. से.) ।

सानना, कि. स. (दि. सनना, सं. संघा से)
मर्दनेन समिश्र (लु.), हस्ताभ्यां मृद (क्.
प. से., प्रे.)-संपीड् (लु.) २. मलिनयति,
कलपयति-कलंकयति (ना. वा.) ३. संक्षिप्
(प्रे.), संबन्ध् (क्. प. अ.) ।

सानी^१, सं. स्त्री. (हि. सानना) शिक्षात्रम् ।

सानी^२, वि. (अ.) द्वितीय, अपर २. तुल्य,
समान ।

ला—, वि. (अ.) अद्वितीय, अनुपम, अप्रतिम ।

सापत्न्य, सं. पुं. (सं. न.) सपत्नीभावः, सदा-
रत्वम् । (सं. पुं.) सपत्नीसुतः २. शत्रुः ।

साक, वि. (अ.) स्वच्छ, निर्मल दे. १. शुद्ध,
केवल ३. निर्दोष, शुद्धिहीन ४. स्पष्ट, विशद
५. श्वेत, उज्ज्वल, भास्वर ६. निष्कपट,
निःशुद्ध ७. सम, सम, -तल-रेख ८. निर्विधन,
निर्वांश ९. अंकाक्षरशून्य, केसरहित । कि. वि.,

साफल्य

[६१७]

सामान्यतः

निष्कलंकं निरपवादं २. प्रच्छन्नं, निभतं
३. हानि-सृतिं विना ४. अत्यंतं नितांतं
५. निराहारम् ।

—करना, कि. स., प्रक्षल् (चु.), प्र-सं-मृज्
(अ. प. से., प्रे.), बाव् (भ्वा. प. से., चु.),
निर्णिज् (जु उ. अ.) २. शुष् (प्रे.), पू
(क्. उ. से.), पवित्रीकृ ३. (ऋणादिकं)
निरस्त-शुष् (प्रे.)-अपाकृ ;

—गो, वि., स्पष्ट-यथार्थं, भाषिन्-वादिन् ।

—गोई, सं. स्त्री. स्पष्ट-यथार्थं, भाषिता-वादिता ।

—दिल, वि. (अ. + फा.) ऋजु, सरल,
निष्कपट ।

—साक्र, अव्य., स्पष्टतः, प्रकटम्, प्रकाशम्,
स्फुटं, व्यक्तम् (सब अव्य.) ।

साफल्य, सं. पुं. (सं. न.) सफलता, दे.
२. लाभः ।

साक्रा, सं. पुं. (अ. साक्र) उध्नीषः-यं,
शिरोवेष्टनम् ।

साक्री, सं. स्त्री. (अ. साक्र) गालनी ।

साबन, सं. पुं., दे. 'साबुन' ।

साबर, सं. पुं. (सं. शंबरः) मृग-भेदः २. शंबर-
चर्मन् (न.) ३. वातमृगचर्मन् (न.) ।

साबिक, वि. (अ.) पुराण, पुरातन, पूर्व,
प्राचीन, प्राक्तन ।

साबिका, सं. पुं. (अ.) व्यवहारः, संबंधः
२. परिचयः ।

साबित, वि. (अ.) प्रमाणित, सिद्ध दे. ।

साबु(बू)त, वि. (फा. सबूत) संपूर्ण, समस्त,
पूर्णांग २. निदोष ३. दिग्धर ।

साबुन, सं. पुं. (अ.) *फेनलं, स्वफेनम् ।

साबूदाना, सं. पुं. दे. 'सागूदाना' ।

सामंजस्य, सं. पुं. (सं. न.) औचित्यं, योग्यता
२. उपयुक्तता ३. अनुकूलता ४. आनुकूल्यं,
अनुरूप्यम् ।

सामंत, सं. पुं. (सं.) वीरः, भटः, योषः,
२. नायकः, गणाधिपतिः ३. क्षेत्र-पति-
स्वामिन् ।

साम, सं. पुं. [सं- मन् (न.)] सामवेदः
२. गेयवेदमंत्रः ३. प्रियवाक्यादिभिः सात्वन्,
मधुरभाषणं ४. उपायभेदः (राजनीति) ।

—वेद, सं. पुं. (सं.) आर्याणां प्रसिद्धो धर्म-
ग्रंथविशेषः ।

सामक, सं. पुं., दे. 'सौर्व' ।

सामग्री, सं. स्त्री. (सं.) उपकरणजातं, संभारः,
साधनसमूहः, आवश्यकद्रव्याणि (न. बहु.)
२. परिच्छदः, उपस्कारः ।

सामग्र्य, सं. पुं. (सं. न.) समग्रता, पूर्णता,
समष्टिः (स्त्री.) २. अनुचर-सेवक-वर्गः-
समुदायः ३. उपकरणसंग्रहः ४. कोषः ५.
परिच्छदः, उपस्कारः ।

सामना, सं. पुं. (वि. सामने) अग्र-पूर्व-भागः,
मुखं २. सं(समा)गमः, संमिलनं, दर्शनं,
सामुख्यं ३. विरोधः, विपक्षता ।

—करना, कि. स., वि-प्रति-रुध् (रु. उ. अ.),
प्रत्यवस्था (भ्वा. आ. अ.), बाष् (भ्वा.
आ. से.) ।

सामने, कि. वि. (सं. संमुखे) अग्रतः, अग्रे,
पुरः, पुरतः, समक्षं, अभि-सं-मुखं-मुखे २. उप-
स्थितौ, विद्यमानतायां ३. तुलनायां, प्रतियो-
गितायां, विरुद्धम् ।

—आना या—होना, कि. अ., अभि-सं-मुखी
भू, संमुखं स्था (भ्वा. प. अ.) ।

—करना कि. ऋ., अग्रे-पुरतः स्था (प्रे.),
समक्षं नी (भ्वा. प. अ.) ।

—से, कि. वि., अग्रतः, पुरस्तात्, पुरतः ।

आमने—, कि. वि. (अन्योन्यस्य) संमुखं-खे,
मुखामुखि, प्रतिमुखम् ।

सामयिक, वि. (सं.) कालिक [—की (स्त्री.)]
काल-समय-विषयक २. सांप्रतिक, इदानीतन,
आधुनिक, वर्तमान ३. समयोचित, कालानुरूप ।

—पत्र, सं. पुं. (सं. न.) समाचारपत्रं, दे. ।

सम—, वि. (सं.) सनकालीन, दे. ।

सामर्थ्य, सं. पुं. स्त्री. (सं. न.) धीशक्तिः
(स्त्री.), योग्यता, कार्यक्षमता २. बलं, शक्तिः
(स्त्री.) ३. तेजस् (न.), पराक्रमः ४. शब्द-
संबंधः (व्या.) ।

साम्राजिक, वि. (सं.) सामुदायिक, समाज-
जनसंध, संबंधिन्, समाज ।

सामान, सं. पुं. (फा.) दे. 'सामग्री' (१-२) ।
यंत्राणि, उपकरणानि (दोनों न. बहु.) ४. दे.
'प्रबंध' ।

सामान्य, वि. (सं.) दे. 'साधारण' । सं. पुं.
(सं. न.) सावृथ्यं, समानता २. साधारण-धर्मः-
गुणः (वैशेषिक.) ३. अर्थालंकार-भेदः (सा.) ।

—वनिता, सं. स्त्री. (सं.) वैद्या, वारांगना ।
सामान्यतः, कि. वि. (सं.) दे. 'साधारणतः' ।

सामान्यतया

[११८]

सार्थ

सामान्यतया, कि. वि. (सं.) दे. 'साधारणतया' ।

सामित्री, सं. स्त्री., दे. 'सामथ्री' ।

सामोप्य, सं. पुं. (सं. न.) साक्षिध्वं, नैकत्वं २. मुक्तिभेदः ।

सामुदायिक, वि. (सं.) सामूहिक, सामवायिक ।

सामुद्रिक, सं. पुं. (सं. न.) *तनुचिह्नविज्ञानम् । वि. (सं.) सामुद्र, समुद्रीय ।

साम्य, सं. पुं. (सं. न.) समता, समानता, तुल्यता ।

—वाद, सं. पुं. (सं.) समाज-समष्टि-वादः, पारश्चात्यः सामाजिकसिद्धांतविशेषः ।

साम्राज्य, सं. पुं. (सं. न.) आधिपत्यं, आधि-राज्यं, पूर्णाधिकारः; दशलक्षाधिपत्यं २. महा-विस्तृत, राज्य-विषयः-राष्ट्रम् ।

सार्थ, कि. वि. (सं.) दिनति, सार्थकाले । सं. पुं., दे. 'सार्थकाल' ।

—काल, सं. पुं. (सं.) सायाहः, साय-र्थं, सार्थसंध्यासमयः, रजनीमुखं, प्रदोषः, दिवस-दिन-अंतः-अवसानं, संध्या, वि-नै, कालः ।

—कालीन, वि. (सं.) सार्थतन (—नी स्त्री.), सार्थः, प्रादोषिक-वैकालिक-की स्त्री., सार्थभव ।

—संध्या, सं. स्त्री. (सं.) पश्चिमा संध्या ।

सार्थस, सं. स्त्री., दे. 'साधन्स' ।

सायक, सं. पुं. (सं.) श्वुः, बाणः २. खड्गः ।

सायण, सं. पुं. (सं.) चतुर्वेदभाष्यकारो माय-णपुत्रः ।

सायत, सं. स्त्री., दे. 'साइत' ।

सायवान, सं. पुं. (का. सायः वान) प्रघ(वा)णः, अलिङ्गः २. *तृणप्रच्छदिसु, *प्रच्छायवत् ।

सायल, सं. पुं. (अ.) प्रश्न, क(कार)ः-कर्तुं, प्रष्टुं, पृच्छकः २. याचकः, भिक्षुः ३. प्रार्थितुं, आर्षेदकः ४. पद-आकांक्षितु-अन्वेषितुं ।

साया, सं. पुं. (का. -यह्) दे. 'छाया' ।

सायुज्य, सं. पुं. (सं. न.) एकीभावः, ऐक्यं, सारूप्यं २. मुक्तिभेदः ।

सारंग, सं. पुं. (सं.) मृगभेदः २. मृगः ३. बाधभेदः ४. रागिणीभेदः ५. धनुस् (न.) ६. इषुः ७. सर्पः ८. रात्री ९. रमणी १०. खड्गः ११. मेघः १२. खगः १३. मयूरः १४. हंसः १५. नातकः १६. भ्रमरः १७. सागरः १८. कमलं १९. चंद्रः २०. श्रीकृष्णः, इ. ।

—पाणि, सं. पुं. (सं.) विष्णुः ।

—लोचना, सं. स्त्री. (सं.) मृगलोचनी, हरिणाक्षी, कुरंगाक्षी, मृगनयनी ।

सारंगिया, सं. पुं. (सं. सारंगी >) सारंग(गी)-वादकः ।

सारंगी, सं. स्त्री. (सं.) शारंगी, सारंगः, पिनाकी, वाद्यभेदः ।

सार, सं. पुं. (सं. पुं. न.) तत्त्वं, मुल्यांशः, स्थिरांशः, मूलं, मूलवस्तु (न.) २. भावः, तात्पर्यं, निष्कर्षः, पिडित-निष्कृष्ट-निर्मलित-अर्थः ३. मजा, अस्थि-ज-संभव-स्नेह-नेत्रसु (न.) । (सं. पुं.) रसः, द्रवः, निर्यासः २. संक्षेपः, संग्रहः ३. शक्तिः (स्त्री.), बलं ४. वीर्यं, पराक्रमः ५. वज्रक्षारं ६. वायुः ७. रोगः ८. पाशकः ९. दधुचरं १०. अधोर्लकारभेदः (सा.) । (सं. न.) जलं २. धनं ३. नवनीतं ४. अभूतं ५. लौहं ६. वनम् । वि. (सं.) उत्तम, श्रेष्ठ २. दृढ, बलवत् ३. न्याय्य, धर्म्य ।

—गर्भित, वि. (सं.) तत्त्वपूर्ण, सार, युक्तवत् ।

—वर्जित, वि. (सं.) निस्सार, तत्त्वहीन ।

सारथि-थी, सं. पुं. (सं. थिः) सतः, हर्षकथः, नि-यतु, नियामकः, शत्रु, प्राजितृ, दक्षिणस्थः, रथः, नागरः-कुर्द्विन् ।

सारल्य, सं. पुं. (सं. न.) सरलता, दे. ।

सारस, सं. पुं. (सं.) पुष्कराकः, लक्ष्मणः, लक्षणः, कामिन, रसिकः, सरसीकः २. हंसः ३. चंद्रः । (सारसी स्त्री.) ।

सारस्वत, सं. पुं. (सं.) ब्राह्मणजातिभेदः २. व्याकरणग्रन्थविशेषः । वि. (सं.) सार-स्वतीय ।

सारंग, सं. पुं. (सं.) सारः, निष्कर्षः, पिडितार्थः २. अभिप्रायः, आशयः ३. परिणामः, फलं ४. उपसंहारः ।

सारा, वि. (सं. सर्वं) संपूर्ण, समग्र, समस्त ।

सारिका, सं. स्त्री. (सं.) सारी, शारीरिका, चित्रलोचना, पीतपादा, कलहप्रिया, मधु-रालापा ।

सारूप्य, सं. पुं. (सं. न.) तुल्य, सम-स-यक-रूपता, तुल्यता, समता २. मोक्षभेदः ।

सार्थ, वि. (सं.) सार्थक, सामिप्राय २. समान-तुल्य, अर्थक-अर्थिन (शब्दादि) ३. धनिन्, धनाढ्य । सं. पुं. (सं.) धनाढ्यः, धनिकः २. वार्थ-वार्थिक, समूहः-समुदायः

३. तीर्थयात्रिका: (बहु.) ४. पण्याजीवः, सार्थिकः, व्यापारिन् ।
सार्थक, वि. (सं.) सार्थ, अर्थ, वत्-युक्त-पूर्ण २. सकल, पूर्णकाम ३. गुणकारिन्, उपयोगिन्, हितकर ।
सार्थकता, सं. स्त्री. (सं.) अर्थवत्ता २. सफलता, सिद्धि: (स्त्री.) ।
सार्दूल, सं. पुं. (सं. शार्दूलः) सिंहः ।
सार्वकालिक, वि. (सं.) सार्वसामयिक, शःश्वतन्तिक ।
सार्वजनिक, वि. (सं.) सर्वजनहित, स(सा)-वर्जनीन, सार्वलौकिक ।
सार्वत्रिक, वि. (सं.) सर्वत्र-भव-व्यापिन् ।
सावदेशिक, वि. (सं.) सर्व-समय, देशविषयक ।
सार्वभौतिक, वि. (सं.) चराचरसंबन्धिन ।
सार्वभौम, सं. पुं. (सं.) चक्रवर्तिन्, नृपाग्रणीः, सर्वभूमिश्वरः, एकजन्मन् । वि. (सं.) अखिल-भूमंडलविषयक ।
सार्वलौकिक, वि. (सं.) सकलब्रह्मांडसंबन्धिन २. सार्वभौम ।
साल^१, सं. पुं. (सं.) सर्जः, नीरपर्णः, अग्नि-वह्निभः, रालनिर्यासः ।
साल^२, सं. पुं. स्त्री. (हि. सालना) छिद्रं, निवरं १. ऋणः, क्षतं ३. पीडा, व्यथा ।
साल^३, सं. पुं. (फ्रा.) दे. 'वर्ष' ।
—**गिरह**, सं. स्त्री. (फ्रा.) जन्म-दिन-दिवसः, नववर्षारंभः ।
सालग्राम, सं. पुं., दे. 'सालग्राम' ।
सालन, सं. पुं. (सं. सलवण >) व्यंजनं, दे. 'भाजी' ।
सालना, कि. स. तथा कि. अ. (सं. सल्व >) दे. 'चुम्बना' तथा 'चुम्बना' ।
सालमिश्री, सं. स्त्री. (अ. सालव + मिश्री = मिश्र देश का) सुधामूली, वीरकंदा, अमृतोत्था ।
सालसा, सं. पुं. (अं. सालोपेरिहा) रक्तशो-धकन्वाथभेदः ।
साला, सं. पुं. (सं. श्यालः-लकः) शशुर्व्यः, आत्मवीरः, वाक्कीरः, पत्नीभ्रातृ ।
सालाना, वि. (फ्रा.) वार्षिक, दे. ।
सालिक, वि. (अ.) पथिकः, पान्थः, अध्वगः, यात्रिन्, यायिकः ।
सालिमिश्री, सं. स्त्री., दे. 'सालमिश्री' ।

सालिम, वि. (अ.) समग्र, सं-पूर्ण, अखांडित, अक्षत ।
सालिस, सं. पुं. (अ.) निर्णेतु, मध्यस्थः, प्रमाणपुरुषः ।
सालिसी, सं. स्त्री. (अ.) माध्यस्थ्यं, निर्णयः २. दे. 'बंधायत' ।
साली, सं. स्त्री. (सं. श्याली) श्यालिका, केळीकुंविका, पत्नीभगिनी, (छोटी) यन्त्रणी, यन्त्रिणी, (बड़ी) कुली ।
सालू, सं. पुं. (देश.) मांगलिको रक्तपटभेदः ।
सालोत्री, सं. पुं., दे. 'सलोत्री' ।
सावधान, वि. (सं.) अवहित, दत्तावधान, समाहित, तन्द्रा-प्रमाद, रहित, जागरूक, दक्ष ।
—**करना**, कि. सं., प्राक् मूच् (जु.) अत्रुष् (प्रे.) ।
—**होना**, कि. अ., सावधान-अवहित-जागरूक (वि.) भू २. अवधा (जु. उ. अ.), मनो युज् (जु.) ।
सावधानता, सं. स्त्री. (सं.) अवधानं, दक्षता, जागरूकता, मनोयोगः, अभिनिवेशः ।
सावन, सं. पुं. (सं. श्रावणः) नभः, नभस् (पुं.), श्रावणिकः ।
—**की झड़ी**, सं. स्त्री., श्रावणिको सततवृष्टिः (स्त्री.) ।
—**हरे न भादों सूखे**, मु., अपरिवर्तिदशा, सदैकरसता ।
सावनी, सं. स्त्री., दे. 'श्रावणी' ।
सावित्री, सं. स्त्री. (सं.) गायत्री २. सरस्वती ३. ब्रह्मणः पत्नी ४. उपनयनसंस्कारः ५. दक्ष-कन्या, धर्मस्य पत्नी ६. सत्यवतो नृपस्य पत्नी ७. सधवा नारी ८. यमुना ।
—**सूत्र**, सं. पुं. (सं. न.) दक्षोपवीतं, दे. ।
साष्टांग, वि. (सं.) अष्टांगयुत ।
—**प्रणाम**, सं. पुं. (सं.) अष्टांगपातः, साष्टांग-नमस्कारः, दे. 'अष्टांग' ।
—**करना**, मु., दूरतः परिहृ (भ्वा. प. अ.) ।
सास, सं. स्त्री. (सं. शश्रुः) साधुधीः (स्त्री.), २. पति-पत्नी, प्रसूः (स्त्री.)-जननी ।
सासना, सं. स्त्री. (सं.) गलकंबलः ।
साह, सं. पुं. (सं. साधुः) सज्जनः, सत्यपुरुषः, आर्थः २. वाणिज्यः, आपणिकः ३. धनिन्, श्रेष्ठिन् ।
साहब, सं. पुं., दे. 'साहिब' ।
साहस, सं. पुं. (सं. न.) धृष्टता, निर्भीकता, प्रगल्भता, धैर्यं, धार्ष्ट्यं २. लुठनं, बलात् अप-

हरणं ३. कुकृत्यं ४. द्रुपः ५. क्रूरता, निर्दयता
 ६. क्रूर-घोर, कर्मन् (न.) ७. परदारसमनं
 ८. बलःकारः ९. दंडः १०. अर्थ-भन, दंडः ।
साहस्रांक, सं. पुं. (सं.) विक्रमादित्यः,
 शकारिः ।
साहस्रिक, सं. पुं. (सं.) साहस्रिन्, आतता-
 यिन्, बधोद्यतः २. लुंठकः, दस्तुः ३. परत-
 ल्यगः, परदारगामिन् । वि. (सं.) साहस्रवत्,
 पराक्रमिन्, वीर २. निर्भीक, प्रगल्भ
 ३. मिथ्या, साधिन्-वादिन् ४. परुषभाषिन्,
 कटुवादिन् ५. इठकारिन् ।
साहसी, वि. (सं. सिन्) दे. 'साहसिक'
 वि. (१-२) ।
साहाय्य, सं. पुं. (सं. न.) सहायता, दे. ।
साहित्य, सं. पुं. (सं. न.) वाङ्मय, सारस्वतं,
 ग्रंथसमूहः २. संगतिः (स्त्री.), संमिलनं,
 साह्यं ३-४. साहित्य-अलंकार, शास्त्रम् ।
साहित्यिक, वि. (सं.) साहित्यसंबन्धिन, वाङ्मय-
 विषयक । सं. पुं., साहित्य-सेवकः, सेविन् ।
साहिब, सं. पुं. (अ.) मित्रं, सुहृद् २. प्रभुः,
 स्वामिन् ३. परमेश्वरः ४. महाशयः, श्रीमत्
 ५. श्वेतवर्णो वैदेशिकः ।
 —इकबाल, वि. (अ.) संपन्न, समृद्ध ।
 —जादा, सं. पुं. (अ. + फ्रा.) पुत्रः, अनुजातः ।
 —दिमाग, वि. (अ.) धी-बुद्धि, मत् ।
 —सलामत, सं. स्त्री. (अ.) मिथः प्रणामः,
 पारस्परिकनमस्कारः २. परिचयः ।
साहिबा, सं. स्त्री. (अ.) स्वामिनी, ईश्वरानी
 ३. आर्या, कुलांगना २. देवी, मट्टिनी ४. अत्र-
 तत्र, भवती, मद्रा, भवती, श्रीमती ।
साहिल, सं. पुं. (अ.) वेला, तटः-टम् ।
साही, सं. स्त्री. (सं. शस्त्रकी) शल्यः, शल्यकः,
 श्वाधि, क्लृप्तपादः, शल्यशृगः, विलेशयः,
 ज्वेदारः ।
साहुद्द, सं. पुं. (सं. साधुः) सज्जनः, आर्यः,
 भद्रमानुषः २. कुसीदिक-दिन, वाङ्मयिकः ।
साहु(ह)ल, सं. पुं. (फ्रा. शाकूल) लंबकः,
 लंबसोमकम् ।
साहूकार, सं. पुं. (हिं. साहु) धनिकः, धनाढ्यः
 २. सार्यबाह्यः, साधिकः, श्रेष्ठिन् ३. कुसीदिन्,
 वाङ्मयिकः ।
साहूकारा, सं. पुं. (हिं. साहूकार), वृद्धि-
 जीवन-जीविका २. अर्थव्यवसायः ३. अर्थापनः ।

साहूकारी, सं. स्त्री. (हिं. साहूकार) दे.
 'साहूकारा' (१-२) ।
सिंगा, सं. पुं. (सं. शृंगं >) दे. 'नरसिंह' ।
सिंगार, सं. पुं. (सं. शृंगारः दे.) ।
 —दान, सं. पुं. (हिं. + फ्रा.) *शृङ्गारधानं,
 *प्रसाधनपिटकम् ।
 —हाट, सं. स्त्री., शृङ्गारहट्टः-वैश्यापणः ।
सिंगारिया, सं. पुं. (हिं. सिंगार) शृङ्गारकारः,
 प्रसाधकः ।
सिंगिया, सं. पुं. (सं. शृंगिकं) विषभेदः ।
सिंगौटी, सं. स्त्री. (हिं. सींग) (वृषादीनां)
 शृंगभूषणम् ।
सिंगौटी, सं. स्त्री. (हिं. सिंगार) दे. 'सिंगार-
 रदान' ।
सिंघ, सं. पुं., दे. 'सिंह' ।
सिंघण, सं. पुं. (सं. न.) सिंघाणम्, शिंघणी,
 शिंघाणकम्, नासिकामलम् २. अयोमलः-लं,
 अधोरसः ।
सिंघावा, सं. पुं. (सं. शृंगारः-टकः) संघाटिका,
 जल-नारि, कटकः-कुम्भकः, शृंग, कंदः-मूलः,
 शुक्लदुग्धः ।
सिंघासन, सं. पुं., दे. 'सिंहासन' ।
सिंघाई, सं. स्त्री. (हिं. सींघना) सेकः, सेचनं,
 जलप्लावनं, सित्तिः (स्त्री.) २. अभि-प्र-
 लक्षणं ३. सेचन-प्रोक्षण, भूतिः (स्त्री.) भृत्या ।
सिंचित, वि., दे. 'सोचा हुआ' ।
सिंचिकेट, सं. पुं. (अं.) व्यापार-समितिः
 (स्त्री.) व्यवहारसंघः २. विद्वत्विद्यालय-
 प्रबन्धसमितिः (स्त्री.) ।
सिंदूर, सं. पुं. (सं. न.) सीमंतकं, मंगल्यं,
 गणेशभूषणं, शृंगारकं, सौभाग्यं, नाग, जं-
 संभवं-गर्भं, अरुणं, शोणं, रक्तम् ।
सिंदूरियानी, वि. (सं. सिंदूर >) शोण-
 सिंदूर-वर्णः ।
सिंध, सं. पुं. (सं. सिंधुः) सिंधुखेलः, भारत-
 वर्षस्य प्रांतविशेषः । सं. स्त्री. (सं. पुं.) पंच-
 नदप्रांतवर्तिनद्विशेषः ।
 —सागर, सं. पुं. (सं. सिंधुसागरः) सिंधु-
 वितरक-मध्यवर्तिनप्रदेशः ।
सिंधी, सं. स्त्री. (हिं. सिंध) सैधवी, सिंधुप्रांत-
 भाषा । सं. पुं., सिंधु, देशीयः-वास्तिन्, सैधवः
 (प्रायः बहु.) २. सैधवः (घोड़ा) ।

सिंधु, सं. पुं. (सं.) सागरः २. नदः ३. नद-
विशेषः ४. प्रांतविशेषः, सिंधुखेलः ।

—कन्या, सं. स्त्री. (सं.) सिंधु, ज्ञान-सहा,
लक्ष्मीः (स्त्री.) ।

—पुत्र, सं. पुं. (सं.) चंद्रः ।

—माता, सं. स्त्री. (सं.) सरस्वती (नदी) ।

सिंधुर, सं. पुं. (सं.) गजः, द्विपः ।

—वदन, सं. पुं. (सं.) यजाननः, गणेशः ।

सिंधोरा, सं. पुं. (सं. सिंधूरं >) सिंधूरपुटः ।

सिंह, सं. पुं. (सं.) हरिः, हयैकः, मृगः,
राजः-इन्द्रः-अधिपः, पंच-आस्यः शिखः-मुखः,
केश(म)रिन्, महा-नादः-वीरः, नखिन्,
क्रव्यादः २. लेयः, पंचमराशिः (ज्यो.) ३. वीरः,
श्रेष्ठः (व.), पुरुषसिंह ४. दे. 'सिक्ख' ।

—के(श)सर सं. पुं. (सं. पुं. न.) सट्ट-टा
२. बकुलवृक्षः ।

—नाद, सं. पुं. (सं.) सिंह-गर्जन-गर्जना-ध्वनिः
२. ध्वंवा, रणोत्साहजवः ३. निःशंककथनम् ।

—पौर, सं. पुं. (सं. + हि.) सिंहद्वारं, प्रवे-
शनम् ।

सिंहनी, सं. पुं. (हि. सिंह) नखिनी, सिंहा,
पंचमुखी ।

सिंहल, सं. पुं. (भं.) स्वर्णदीपः-यं (सीलोन
या लंका) ।

सिंहली, वि. (सं. सिंहलः >) सिंहलः २. सिंहल-
वासिन् ।

सिंहबलोकन, सं. पुं. (सं. न.) सिंहबलोकित
२. पूर्व, अनुदर्शन-वृत्तान्विमर्शः ३. पश्चरचना-
रतिभेदः ।

सिंहासन, सं. पुं. (सं. न.) नृप-राजः-आसनम् ।

—पर बैठना, क्रि. अ., सिंहासने उपविश
(तु. प. अ.), राज्ये अभिषिच् (कर्म.) ।

—से उतारना, क्रि. स., राज्यात् अंश-
च्यु (प्रे.) ।

सिंहिका, सं. स्त्री. (सं.) राहुनाट, राक्षसी-
विशेषः ।

—मृत्, सं. पुं. (सं.) सैहिकः-केशः, राहुः ।

सिंहिनी, सं. स्त्री. दे. 'निहनी' ।

सिंहो, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'सिंहनी' २. सिंहिका
३. शृंग, वाद्यभेदः ।

सिंभार, सं. पुं. (सं. शृगालः) दे. 'गोदङ्' ।

सिंजबोन, सं. स्त्री. (का.) दे. 'शिंजबोन' ।

सिंङ्गी, सं. स्त्री. (सं. शृंगला) द्वार-कषाट-

शृंगला, दे. 'कुंडी' २. गलभूषणभेदः ३. कांची,
मेखला ।

सिकता, सं. स्त्री. (सं. बहु.) बालकाः (स्त्री.
बहु.), दे. 'रित' २. अश्मरी, दे. 'पयरी'
३. शर्करा, मिता ।

—मेह, सं. पुं. (सं.) प्रमेहभेदः ।

सिकतर, सं. पुं. (अं. मेकोटरी दे.) ।

सिकलीगर, सं. पुं. (भ. सै-दाल + का. गर)
दे. 'सैकलगर' ।

सिकहर, सं. पुं. (सं. शिख्यं + हर) शिख्यं-
नया, शिच् (स्त्री.), काचः, दे. 'रुंका' ।

सिकुहन, सं. स्त्री. (हि. सिकुडना) संकोच-
चनं, आकुंचनं २. दे. 'शिकन' ।

सिकुडना, क्रि. अ. (हि. सिकोडना) संकुच्
(भ्वा. तु. प. से.), आकुच् (भ्वा. आ. से;
तु. प. से.), संह (कर्म.) २. बलिमए जन्
(दि. आ. से.) ३. अल्पी-न्यूनीभू ।

सिकोडना, क्रि. स. (सं. संकोचनं) संकुच्
(प्रे.) संह (भ्वा. प. अ.), आकुच् (प्रे.)
२. संक्षिप् (तु. प. अ.), अल्पीकृ ३. बलिनं (वि.)
कृ । सं. पुं. तथा भाव, संकोचः-चनं, संहरणं,
आकुञ्चनं, संक्षिपः-पणं, अल्पीकरणम् ।

सिक्का, सं. पुं. (अ.) टंकः-कं, नाणकं, मुद्रा
२. पदकम् ।

—जमाना यः बैठाना, मु., शासन-प्रभुत्व-
आधिपत्यं स्था (प्रे.), बशीकृ, अभिष्ठा
(भ्वा. प. अ.) २. प्रताप-प्रभावं प्रसू (प्रे.) ।

सिक्ख, सं. पुं. (सं. शिष्यः) अंतेवासिन्,
छात्रः २. गुरुनामकमतानुयायिन्, •सिक्खः ।

—मव, सं. पुं., शिष्य-सिक्ख, मत्र-संप्रदायः-
धर्मः, नानकपथः ।

सिक्त, वि. (सं.) अभ्युक्षित २. कृतसेचन,
आद्रं, क्लिष्ट, दे. 'सीचना' ।

सिख, सं. स्त्री. (सं. शिखा) उपदेशः ।

सिखलाना } क्रि. स., व. 'सिखना' के प्रे.
सिखाना } रूप ।

सिगरेट, सं. पुं. (अं.) नमासुवर्ती-चित्तः (स्त्री.) ।

सिगार, सं. पुं. (अं.) नमासुवर्ताका ।

सिजदा, सं. पुं. (अ.) प्रणामः, नमस्कारः ।

सिटकिनी, सं. स्त्री. (अनु.) दे. 'चटकनी' ।

सिटपिटाना, क्रि. अ. (अनु.) दे. 'सिटपिट्टी
भूलना' २. विकल्प (भ्वा. आ. से.), दोल-

सिटो

[६२२]

सिधाई

यते (ना. धा.), संश्री (अ. आ. से.) ।
 सिटो, सं. स्त्री. (अं.) नगर-री, पुर-री ।
 सिट्टा, सं. पुं. (देश.) कणिक, मंजरी, दे. 'अट्टा'
 तथा 'बाली' (अन्न की) ।
 सिट्टी, सं. स्त्री. (अनु. सीटना) वाक्यायवम् ।
 —पिट्टी मूलना, मु., अ्यामुद् (दि. प. वे.),
 किर्तव्य-नाम्न (वि.) जन् (दि. आ. से.),
 संभ्रम (भ्वा. दि. प. से.) ।
 सिटनी, सं. स्त्री. (सं. अशिष्ट >) वैवाहिक-
 गालिः (स्त्री.), *मालिगीतिव्रत ।
 सिद्ध, सं. स्त्री. (हिं. सिधी) उन्नादः, वातुलता
 २. दे. 'धुन' ।
 —बिल्ला, सं. पुं. (हिं. सिङ्गी + बिल्ला)
 उन्मत्तः २. मूर्खः ।
 सिद्धी, वि. (सं. शृणिः >) उन्मत्त, वातुल
 २. दृढमदिन् ३. स्वेच्छा-नारिन् ।
 सिद्धबर, सं. पुं. (अ.) भाद्रपदाश्विनं, आंग-
 लीयो नवममासः ।
 सिद्ध, वि. (सं.) श्वेत, शुक्ल २. शुभ्र, भास्वर
 ३. निर्मल, स्वच्छ । सं. पुं. (सं.) शुक्रपक्षः
 २. शुक्लपक्षः ३. सिता, शर्करा ४. रजतम् ।
 —च्छद, सं. पुं. (सं.) हंसः, सितपक्षः ।
 —भानु, सं. पुं. (सं.) सितांशुः, चंद्रः ।
 सिद्धम, सं. पुं. (का.) अर्दनं, पीडनं, नैष्ठुर्यं,
 क्रौर्यं २. अन्यायः, अनैतिः (स्त्री.) ।
 —गर, सं. पुं. (का.) निष्ठुरः, क्रूरचित्तः,
 अनर्थकरः २. अन्यायशालः ।
 —दाना, कि. स., पीड (ज्.), अर्द (भ्वा.
 प. से., प्रे.) ।
 सितरी-ल्ली, सं. स्त्री. (सं. शीतल >) शीतल-
 प्रस्वेदः ।
 सिताँ, सं. पुं. (का.) स्थानं, स्थलम् २.
 निवासः, स्थानम् ३. देशः ।
 सितांशु, सं. पुं. (सं.) चन्द्रः, सोमः ।
 सिता, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'चीनी' २. दे.
 'शर्करा' २. मल्लिका ४. चंद्रिका ।
 —खंड, सं. पुं. (सं.) मधुशर्करा २. दे.
 'मिस्त्री' ।
 सितार, सं. पुं. (सं. सप्त + तार) वीणा, बल्लकी,
 विपंची, (सात तारोंवाला) परिवर्दिनी ।
 —बाज़, सं. पुं. (हिं + प्रा.) वीणावादकः ।
 सितारा, सं. पुं. (का. रः) तारा, तारका, अं,

नक्षत्रं, राविजं, उडु (स्त्री. न.) २. भास्व्यं,
 दैवं ३. अजितारः, वाद्यभेदः ।
 —चमकता या बल्लद होना, मु., भाग्यम्
 उत + इ (अ. प. अ.), भाग्य-पुण्यं फल
 (भ्वा. प. से.) ।
 सितोपल, सं. पुं. (सं.) कठिनी, दे. खडिया
 (सं. पुं.) स्फटिकः, सितमणिः ।
 सितोपला, सं. स्त्री. (सं.) शर्करा दे. 'शर्कर'
 २. दे. 'चीनी' ३. सितखंडः, दे. 'मिस्त्री' ।
 सिद्ध, वि. (सं.) निष्-सं, पत्र-पादित, साधित,
 अनुष्ठित, कृत २. प्राप्त, उपलब्ध ३. कृतकृत्य,
 सफल ४. अतिकुशल, सुनिपुण ५. दिव्यशक्ति-
 युत ६. योगविभूति ७. मोक्षाधिकारिन्
 ८. प्रभाषित, साधित ९. निर्णोत १०. शोधित
 ११. अनुकूल १२. पक्व, श्यन्, प्राण १३. प्र-
 कृयात १४. सज्जी, भूत-कृत, उन्नतम्, १५. प्र-
 स्तुत, उपस्थित । सं. पुं. (सं.) मुनिः, ऋषिः,
 पुण्यजनः, योगिन्, महात्मन् २. देवयोनिभेदः ।
 —करना, कि. स., साध् (भ्वा. प. अ. या प्रे.),
 सिध् (प्रे., साधयति) संपद (प्रे.) २. मंत्रैः
 वशीकृ ३. प्रमाणीकृ, सत्याकृ ।
 —होना, कि. अ., सिध् (दि. प. अ.) सं-
 निष्-पद (दि. आ. अ.) २. मंत्रैः वशीभू
 ३. प्रमाणीकृ (कर्म.) ।
 —हस्त, वि. (सं.) प्रवीण, कुशल, पटु, निपुण ।
 सिद्धांत, सं. पुं. (सं.) रादान्तः, पूर्वपक्षं
 निरस्य स्थापितं मतं २. तत्त्वं, मतं, बाः ।
 —पक्ष, सं. पुं. (सं.) तर्कसंगत-शुक्तियुक्त-
 पक्षः-मतम् ।
 सिद्धांती, सं. पुं. (सं. -तिन्) सोमांशुकः, तार्किकः
 २. शास्त्रविद् ३. सिद्धान्त-नियम, निष्ठः ।
 सिद्धार्थ, वि. (सं.) आत्म-पूर्णं, काम, कृतकृत्य ।
 सं. पुं. (सं.) गौतमबुद्धः ।
 सिद्धि, सं. स्त्री. (सं.) निष्पत्तिः, समप्तिः
 (स्त्री.), पूर्णता २. साफल्यं, कृतकार्यता
 ३. योगजा दिव्यशक्तिः (स्त्री.), विभूतिः (स्त्री.)
 (योग की आठ सिद्धियाँ :—अधिमा लधिमा
 प्राप्तिः प्राकाशयं महिमा तथा । ईशित्वं च वशित्वं
 च सर्वकामवसायिता ॥) ४. सशुद्धिः (स्त्री.),
 भाग्योदयः ५. निर्णयः ६. निश्चयः ७. मोक्षः
 ८. नैपुण्यं, दाक्ष्यम्,
 सिधाई, सं. स्त्री. (हिं. सीधा) सरलता, कजुता,
 सारल्यं, आर्जवम् ।

- सिधारना, कि. अ. (सं. सिद्ध) प्रस्था (भ्वा. आ. अ.), प्रया (अ. प. अ.) २. प्र-इ (अ. प. अ.), मृ (तु. आ. अ.), दे. 'मरना' ।
- सिन, सिन्न, सं. पुं. (अ.) वयस्-आयुस् (न.), दे. 'उत्र' ।
- सिनक, सं. स्त्री. (सं. सिहा(या)णकं) नासा-नासिका, मल्ल, सिप(वा)ण, दे. 'रेट' ।
- सिनकना, कि. स. (हि. सिनक) सिघणं लु (प्रे.), नासिकां शुभ (प्रे.) ।
- सिनेट, सं. स्त्री., दे. 'सिनेट' ।
- सिनेमा, सं. पुं. (अं.) चलचित्र, गृह-शाला, २. चलचित्रम्, चित्रपटः ।
- सिनी, सं. स्त्री. (फा. शारीनी) दे. 'मिठारि' ।
- सिपर, सं. स्त्री. (फा.) खड्गरीटः, खेटकं, ढालं, दे. ।
- सिपाह, सं. स्त्री. (फा.) सेना, सैन्यम् ।
- सिरी, सं. स्त्री. (फा.) बुद्धव्यवसायः, सैनिकवृत्तिः (स्त्री.) ।
- सालार, सं. पुं. (फा.) प्रधान, सेनापतिः-सेनानीः-धर्मपतिः ।
- सिपाही, सं. पुं. (फा.) सैनिकः, योधः, योद्धुः, भटः २. राजपुरुषः, यष्टि-दंड, परः, रक्षित्, शान्तिरक्षकः, रक्षापुरुषः ।
- सिपुर्द, दे. 'सुपुर्द' ।
- सिप्रा, सं. स्त्री. (सं.) उज्जयिनीसमीपवर्तिनदी-विशेषः ।
- सिफत, सं. स्त्री. (अ.) गुणः, विशेषता २. लक्षणं २. स्वभावः, धर्मः ।
- सिफर, सं. पुं. (अ.) शून्यं, विदुः, सभ् ।
- सिफारिश, सं. स्त्री. (फा.) गुणवर्णनं, प्रशंसनं २. अनुशंसा, परकार्यसिद्ध्यर्थमनुरोधः ३. प्रशंसा, पत्रं-लेखः ।
- करना, कि. स., प्रशंस (भ्वा. प. से.), गुणान् वर्ण (तु.) २. परकार्यसिद्ध्यर्थं अनुसृष्ट (ह. अ. अ.), अनुशंस (भ्वा. प. से.) ।
- सिफारिशी, वि. (फा.) गुणश्लाघिनः, प्रशंसात्मक ।
- टट्ट, सं. पुं. (फा. + हि.) परप्रभावलब्धाधिकारः, परानुग्रहनियुक्तः, गुणहीनः ।
- सिमटना, कि. अ. (सं. समित) आकुंच-संकुच-संक्षिप्-संज्ञ (कर्म.), संकुचितं भू, दे. 'सिकुटना' ।
- सिमेटना, कि. स., दे. 'सिमेटना' ।
- सियापा, सं. पुं. (फा. सियाहपोश) संविलापः, संपरिदेवनं-ना ।
- सियार, सं. पुं. (सं. शृगालः) जंवलकः, दे. 'गोदड़' ।
- सिर, सं. पुं. [सं. शिरस् (न.)] शीर्षं, शीर्षकं, मस्तकः-कं, मूषन् (पुं.), मीलिः (पुं. स्त्री.), मुंडः-डं, उत्तमवर, अंगं, शिरं २. अग्रं, शिखरं, शिखा, सानु (पुं. न.) शृङ्गम् ।
- कटा, वि., शिखरं, शीर्षं-मस्तक-शिर ।
- का घूमना, सं. पुं., अ(आ)भरं, अमः-मिः (स्त्री.), घूर्णः (स्त्री.) ।
- का दर्द, सं. पुं., शिरः, शूल-पीडा, शिरो-वेदना ।
- के बल, कि. वि., अवाकशिरं, अधोशीर्षम् ।
- गुथी, सं. स्त्री., शिरत्रयंनं, आर्याणामौद्वाहिकारीतिविशेषः ।
- चदा, वि., दुर्लभित, अतिलालित, दृप्त, उत्सुक ।
- मुंडा, सं. पुं., मुंडः, क्लृप्तकोशः, मुण्डितशिरः ।
- आँखों पर होना, मु., शिरोधार्य(वि.)वृत् (भ्वा. आ. से.), सहर्षं स्वीकार्य(वि.)वृत् ।
- आँखों पर बैठाना, मु., अत्यंतं सत्क, अत्यर्थं मन्-संभू (प्रे.)-आह (तु. आ. अ.) ।
- उतारना या काटना, मु., शिरः छिद् (ह. प. अ.), मस्तकं कृत् (तु. प. से.), शिरश्छेदं कृ ।
- गंजा करना, मु., धलवत तड् (तु.), परुषं प्रह (भ्वा. प. अ.) ।
- चड़ाना, मु., दृप्तं-उत्सुकं-अवलम्बितं विधा (जु. उ. अ.) २. अत्यंतं कळ (तु.) ।
- झकाना, मु., नम (भ्वा. प. अ.), अभिवद् (प्रे.) ।
- धुनना, मु., शुच (भ्वा. प. से.) सशीर्षता-जनं रुद् (अ. प. से.) ।
- नीचा करना, मु., वृप् (भ्वा. आ. से.), लज्ज (तु. आ. से.) ।
- पर, मु., समीपं-ये, निकटं-ये ।
- पर खून सवार होना, मु., शिवांसाविष्ट (व.) वृत् (भ्वा. आ. से.), वयोषट (वि.) भू ।
- पर पङ्कना, तु., आ-समा-पत् (भ्वा. प. से.), उपनम् (भ्वा. प. अ.), षष्ठी के साथ ।
- पर लेना, मु., उत्तरदायित्वं उररीक, भारं स्वीकृ ।

सिरका

[६२४]

सिलिंदर

- परस्ती करना, मु., अनु, प्रति-पा (प्रे. पालयति), संबुध (प्रे.), सद्द्वयं कृ ।
- पीटना, मु., दे. 'सिर धुनना' ।
- भारी होना, मु., भ्राम्देण घूर्णया वा पीड् (कर्म.) २. शिरोवेदना वृत् ।
- मारना, मु., अत्यंत प्रयत् (भ्वा. आ. से.), भूरि परिश्रम् (वि. प. से.) २. सपरिश्रमं अन्विप् (दि. प. से.)-विनि (स्वा. उ. अ.) ।
- सुँडाना, मु., परित्रञ् (भ्वा. प. से.), संन्यस् (दि. प. से.) ।
- सुँडना, मु., लुट् (भ्वा. प. से.), चु.), छलेन अपट्ट (भ्वा. प. अ.) ।
- सफेद होना, मु., केश धवलीभू, पलित-शोषं (वि.) जन् (दि. आ. से.) ।
- से करून बाँधना, मु., निधनोचन (वि.) भू, मरगाय मञ्जीभू ।
- से पाँच तक, मु., आमूलचूल, आपादशीर्षे, आनलशिलम् ।
- होना, मु., कलहायते (ना. धा.), कल्होचत (वि.) भू ।
- विना—पैर का, वि., निराधार, निर्मूल २. असंबद्ध, अप्रासंगिक, असंगत ।
- सिरका, सं. पुं. (का.) शुक्लं, दौक्तिकम् ।
- सिरकी, सं. स्त्री. (द्वि. सरकांठ) शरकांठः, क्षुरिकापत्रः ३. शरकांठ, तिरस्करिणी-प्रतिसीरा ।
- सिरजनहार, सं. पुं. (सं. सर्जनं >) सप्त, जगत्कर्तृ, विधातृ (सव पुं.) ।
- सिरनाज, सं. पुं. (हि+का.) किरीटः २. मु(म)कुटं दे. २. शिरोमणिः, अपगीः, पुरोगः, श्रेष्ठः, मुख्यः, प्रधानम् ।
- सिरनामा, सं. पुं., दे. 'सरनामा' ।
- सिरपेच, सं. पुं. (का.) उष्णीषः-पं, दे. 'पगढी' ।
- सिरहाना, सं. पुं. (सं. शिर+धनं >) शिरोधामन (न.), खट्वादीनां शिरो-अग्र-भागः २. उपधानं, खुरालिकः, उपवहः-हृणं, उच्छीर्षं, वालिशं, मगरकः ।
- सिरा, सं. पुं. (सं. शिरस् >) अंतः, प्रांतः, अवधिः, सीमा २. ऊर्ध्व-शोर्षे-भागः, शिखा, शिखरं ३. अंत्य-भस्मिता-भागः ४. आद्य-आदिम-भागः ५. अग्रं, भयभयाः ६. अणी-णिः (स्त्री.) अग्निः-काटिः (स्त्री.) ।
- सिरिज, सं. स्त्री. (अं.) शृंगकः-कं, दे. 'पिन्कारो' ।

- सिरोपाव, सं. पुं. (सं. शिरःपाद >) संमान-वेशः-पः ।
- सिरोही, सं. स्त्री. (देश०) सिरोहीनगर-निमित्त खड्गः, शिरोनी ।
- सिक्र, क्रि. वि. (अ.) दे. 'केवल' ।
- सिरीं, वि., दे. 'सिडो' ।
- सिल, सिला, सं. स्त्री. (सं. शिला) पाषाणः, प्रस्तः, उपलः २. शैलः, शिलोच्चयः, महा-प्रस्तरः ३. शिला, पट्टः-फलकः ।
- बट्टा, सं. पुं., शिलावटकं, *वेपथपाषाणी (द्वि.) ।
- सिलना, क्रि. अ. (हि. सीना) सिव् (कर्म.) ।
- सिलपट, वि. (सं. शिलापट्टः >) लम, समस्थ, सपाट ।
- सिलबट्टा, सं. पुं. (सं. शिला+वट्टकः >) शिलावटकं-की, वेपथ-पाषाणी-प्रस्तरौ ।
- सिलवट, सं. स्त्री. (हि. मिलना) बलिः(छीं), वस्त्रमंगः, पुटचिह्नम् ।
- सिलवाइ, सं. स्त्री. (हि. मिलवानः) सीवन-सेवन स्युति-भूतिः-भूत्या-कर्मण्या ।
- मिलवाना, (हि. सीना) सिव् (प्रे.) ।
- सिलसिला, सं. पुं. (अ.) क्रमः, आनुपूर्वी, परंपरा २. पंक्तिः राज्ञः-श्रेणिः (स्त्री.), ३. शृङ्खला ४. व्यवस्था, संविधानं, विन्यासः ५. वंशानुक्रमः, कुलपरंपरा ।
- लेवार, क्रि. वि. (अ.+का.) कभेण, क्रमशः, यथाक्रमं, आनुपूर्व्यां, अनुपूर्वशः ।
- सिलह, सं. पुं. (अ. सिलाह) अस्त्रं, शस्त्रम् ।
- खाना, सं. पुं. (अ.+का.) शकशाला, अलागारम् ।
- पोश, वि., सज्ज, शलाखसज्ज ।
- सिला, सं. पुं. (अ.) पुरस्कारः, पारितोषि-कम् २. परिणामः, फलम् ।
- सिला, सं. स्त्री., दे. 'शिला' ।
- सिलाई, सं. स्त्री. (हि. सिलाना) संधिः, सीवनं २. सी(से)वनं, स्युतिः (स्त्री.) ३. दे. 'सिलवाई' ।
- सिलाजीत, सं. पुं. [सं. शिलाजलु (न.)] अद्रिजं, अद्रमजं, दे. 'शिलाजीत' ।
- सिलारस, सं. पुं. (सं. सिद्धकोरसः) श(स)क्ष-की, श्रवः-रसः-निर्यासः ।
- सिलिंदर, सं. पुं. (अं.) रम्भं बहुकं (प. प्रभेदः) ।

सिली, सिल्ली

[६२५]

सीखने योग्य

सिली, सिल्ली, सं. स्त्री. (हिं. सिल) शाणः-
णी, सामकः, शाणाश्मन् (पुं.) ।

सिलौट, सिलौटा, सं. पुं. (हिं. सिल्ल + बट्टा)
शिला, यट्टः-फलकः २. दे. 'सिलबट्टा' ।

सिवई, सं. स्त्री., दे. 'सेवई' ।

सिघान, सं. पुं. (सं. सीमांतः) सीमा, प्रांतः,
पर्यंतः ।

सिवाय, कि. वि. (अ. सिवा) अपि च, अपरं
च २. कृते, विना, अंतरेण, विहाय, वर्जयित्वा ।
वि., अधिक, भूयस् २. अपेक्षाधिक ।

सिवार-ल, सं. स्त्री. पुं. (सं. शैवाल) शैवालः-
लं, जल-केशः-नीली-नीलिका, शैबलं, सलिल-
कुन्तलम् ।

सिविल, वि. (अं.) नागरिक, पौर २. सभ्य,
शिष्ट ।

—डिसओबिडिण्ट्स, सं. स्त्री. (अं.) सविन-
यावशा ।

—सर्वेन, सं. पुं. (अं.) नागरिकः शस्त्रवैद्यः ।

—सत्रिस, सं. स्त्री. (अं.) नागरिकसेवा ।

सिसकना, कि. अ. (अनु.) सगद्गदं रुद
(अ. प. से.) २. निधनाक्षत्र (वि.) कृत्
(भ्वा. आ. से.) ।

सिसकी, सं. स्त्री. (हिं. सिसकना) गद्गदः-दं,
गद्गदध्वनिः ।

—भरना या लेना, कि. अ., दे. 'सिसकना' ।

सिहरा, सं. पुं., दे. 'सेहरा' ।

सीक, सं. स्त्री. (सं. श्चीका) इषिका, वृण-
घास, मूक्षमनाल-सूक्ष्मकांडम् ।

सीकर, सं. पुं. (हिं. सीक) इषीकापुष्पम् ।

सीकिया, सं. पुं. (हिं. सीक) सरेखो वस्त्रभेदः ।

सींग, सं. पुं. (सं. शृङ्गं) विषाणः-ण, कृणिका
१. काहल, लं-ला, शृङ्गमयो वाद्यभेदः ।

(किसी के सिर पर)—होना मु., वैशिष्ट्यं
वृत्त (भ्वा. आ. से.) ।

—दिखाना, मु., अंगुष्ठ इम् (प्रे.), किमप्य-
दत्त्वा उपहस् (भ्वा. प. से.) ।

—निकलना, मु., (पशुः) युवा जन् (दि.
आ. से.) २. उन्मद (दि. प. से.), दे.
'इतराना' ।

—समाना, मु., आश्रयः-शरणं लभ् (कर्म.) ।

सींगी, सं. स्त्री. (हिं. सींग) दे. 'सींग' (२) ।

२. रक्तचूषणशृङ्गं, रक्तचूषणी ३. शृङ्गी, मीन-
भेदः ।

—लगाना या तोड़ना, शृ. शृङ्गेण रक्तं तिष्कत्
(प्रे.) ।

सीखना, कि. स. (सं. सेचनं) अव., सिच्
(तु. प. अ.), वारिणा आप्तु (प्रे.)-अभ्युक्ष्
(भ्वा. प. से.), अभिषृष् (भ्वा. प. से.),
जलं दा २. अभि-प्र-सं-, उष्, अव-आ-नि-
सिच् ३. अव-वि-, कृ (तु. प. से.) । सं. पुं.,
अव-आ-सैकः-सेचनं, जलप्लावनं, अभिवर्षणं,
अभ्युक्षणं, प्रोक्षणम् ।

सीखने योग्य, वि. अव-आ-सेचनीय-सेक्तव्य,
अभ्युक्षणीय, अभिवर्षणीय ।

सीखने वाला, सं. पुं., सेवकः, सेक्त, प्रोक्षकः ।

सीखा हुआ, वि., सिक्त, अभ्युक्षित, जल-
प्लावित ।

सींह, सं. पुं. (देश.) शल्यः, शल्यकः, शल्यकी,
शल्यशृंगः ।

सी, वि. स्त्री. (हिं. सा) समा, तुल्या, सदृशी,
सदृशी ।

सी. आर्इ. डी., सं. पुं. (अं.) गुप्तचरविभागः,
अपसर्प-च(चार)-प्रणिधि-विभागः ।

सीकर, सं. पुं. (सं.) कणः, द्रव्यः, पृषतः, लवः,
विद्रुः, विप्रुष् (स्त्री.) २. शीकरः, तुषारः
३. प्रस्वेदः, धर्मः, स्वेदजलम् ।

सीख, सं. स्त्री. (सं. शिक्षा) शिक्षणं, विनयनं,
अध्यापनं, अनुशासनं, बोधनं २. शिक्षाविषयः
३. नंत्रणा, परामर्शः, उपदेशः ।

सीख, सं. स्त्री. (का.) शलाका, धातु-लोह-
दंडः २. लघुसूक्ष्मयष्टिः (स्त्री.) ३. शंकुः,
शल्यं, महासूत्रिः (स्त्री.) ४. (मांसभर्जनाय)
शूलः-लम् ।

सीखचा, सं. पुं. (कां.) दे. 'सोख' (१, ४) ।

सीखना, कि. स. (सं. शिक्षणं) शिक्ष् (भ्वा.
आ. से.), अधि-इ (अ. आ. अ.), अभ्यस्
(दि. प. से.), अभ्यासेन विद्यां लम् (भ्वा.
आ. अ.)-प्राप् (स्वा. प. अ.), पठ् (भ्वा.
प. से.) । सं. पुं., शिक्षणं, अध्ययनं, अभ्यासः,
विद्या, अर्जनं-सामः, प्राप्तिः (स्त्री.) ।

सीखने योग्य, वि., शिक्षणीय, अध्येतव्य,
अभ्यसनीय ।

सीखने वाला

[६२६]

सीना

सीखने वाला, सं. पुं., छात्रः, शिष्यः, शिक्षकः (क्वचित्), अध्येत, विमार्थित्, शिक्षार्थित् ।

सीखा हुआ, वि. (मनुष्य) शिक्षित, कृतविद्य, पंडित, प्राज्ञ, दुष । (विषय) शिक्षित, ज्ञात, बुद्ध, पठित, अधीत ।

सीमा, सं. पुं. (व्य.) शासन-विभागः २. व्यवसायः, वृत्तिः (स्त्री.) ।

सीसना, क्रि. अ. (सं. सिद्ध >) तापेन सिष् (दि. प. अ.), ऊष्मणा श्रो-पच (कर्म.), सिद्ध (वि.) भू २. (तापादिभिः) सुदूरं, मार्दवं मज (भ्वा. आ. अ.) ३. कष्टं सह (भ्वा. आ. से.) ४. ऋणं शुष् (दि. प. अ.), ऋणनिस्तारः जन् (दि. आ. से.) ५. शीतेन वि., गल् (भ्वा. प. से.) ।

सीटी, सं. स्त्री. [सं. शीत्कृतिः (स्त्री.)] शीत-कृतं-कारः, शीच्छब्दः २. शीत्करी, वायुमेदः ।

—बजाना, क्रि. अ., शीच्छब्दं कृ । क्रि. स., शीत्करी वद (प्रे.) ।

—वेना, मु., शीच्छब्देन आकृ (प्रे.) ।

सीठना, सं. पुं. (सं. अशिष्ट >) अश्लील-गीतं-तिः (स्त्री.), वैवाहिकगाणिः (स्त्री.) ।

सीठनी, सं. स्त्री. (हिं. सीठना) दे. 'सीठना' ।

सीठा, वि. (सं. शिष्ट >) भरस, बिरस, नीरस, स्वादहीन ।

—पन, सं. पुं., नीरसता, निस्स्वादता ।

सीठी, सं. स्त्री. (सं. शिष्टं) (पत्रपुष्पफलादीनां) उच्छिष्टं, नीरसताः २. निस्सारद्रव्यं ३. नीरसपदार्थः ।

सीङ्ग, सं. स्त्री. (सं. शीत >) म्लेदः, स्तेमः, आद्रता २. क्लिन्नभूमिः (स्त्री.) ।

सीडी, सं. स्त्री. (सं. श्रेणी >) सोपानः, पथः-मार्गः-पंक्तिः (स्त्री.) पद्धतिः (स्त्री.)-पदवी, अधिरोह(दि)णी, नि(निः) श्रेणी-णिः (स्त्री.), नि(निः)श्रय(यि)णी २. काष्ठनिश्रेणी ।

—का ढंडा, सं. पुं., सोपानढंडः ।

—चढ़ना, मु., क्रमशः उत्कर्षं व्रज (भ्वा. प. से.) ।

सीतल, वि., दे. 'शीतल' ।

—पाटी, सं. स्त्री., शीतलकटः ।

सीतला, सं. स्त्री., दे. 'शीतला' ।

सीता, सं. स्त्री. (सं.) जानकी, मैथिली, वेदेही, अयोनिजा, भूमुता, पार्थिवी । २. फाल-रेखा, लांगलपद्धतिः (स्त्री.), हलिः (पुं.) ।

—दृश्य, सं. पुं. (सं. न.) कृषि-कर्षण, उप-करणानि (न. बहु.) ।

—पति, सं. पुं. (सं.) श्रीरामः, राघवः ।

—फल, सं. पुं. (सं.) दे. 'श्रीफा' २. दे. 'कुम्हड़ा' ।

सीत्कार, सं. पुं. (सं.) सोप, कृत-कृतिः (स्त्री.), आनंदपीडादिजः सीच्छब्दः ।

सीध, सं. स्त्री. (हिं. सीधा) सरलायामः, अंजसायतिः (स्त्री.) २. लक्ष्यम् ।

सीधी, वि. (सं. शुद्ध >) सरल, वक्रतारहित, प्रजु, अंजस, प्रगुण २. निष्वांज, निष्कपट, निश्छल ३. शिष्ट, सुशील ४. शांतस्वभाव, सौम्य, ५. सुकर, सुसाध्य ६. सुबोध, सुगम ७. दक्षिण, अपसम्य । क्रि. वि., सरलं, अवक्रं, अनिष्टम् ।

—करना, क्रि. स., सरली-प्रगुणी, कृ २. दम (प्रे.), वशीकृ, विनी (भ्वा. प. अ.) ।

—पन, सं. पुं., सरलता, वक्रताभावः २. आर्जवं, सौम्यता, निष्पटता ।

—होना, सरली-प्रगुणी, भू २. वशीभू । ३. सन्मार्गं अवलंबं (भ्वा. आ. से.) ।

सीधी, सं. पुं. (सं. असिद्ध) असिद्ध-अपक्व-आम, अन्नम् ।

सीधी तरह, क्रि. वि., शांत, शान्त्या २. सम्यक्, सुचारुरूपेण ३. धर्मण, न्यायेन ।

सीधे, क्रि. वि., सरलं, अंजसं २. दे. 'सीधी तरह' ।

सीन, सं. पुं. (अं.) दृश्यं, दृश्यातविषयः २. ज(य)वनिका, अपटो ।

सीनरी, सं. स्त्री. (अं.) दृश्यप्रदेशः, प्राकृतिक-दृश्यं २. रंगसजा ।

सीना, क्रि. स. (सं. सीवनं) सिन् (दि. प. से.) । सं. पुं., सेवनं, सीवनं, स्मृतिः (स्त्री.), ऊति-व्युतिः (स्त्री.) ।

—पिरोना, सं. पुं., सूची(चि)-कर्मन् (न.)-शिल्पम् ।

सीना, सं. पुं. (फा.) उरस्-वक्षस् (न.) ।

—ज़ोर, वि. (फा.) प्रबल, दुर्दम, उद्वहत् ।

—ज़ोरी, सं. स्त्री., औद्भत्यं, बलात्कारः ।

—बंद, सं. पुं. (फा.) आंगिकः-कं, दे. 'अंगिया' ।

—उभार कर चलना, मु., साटोपं, चल (भ्वा. प. से.) ।

सीने से लगाना

[६२७]

सु

सीने से लगाना, सु., आलिंग् (भ्वा. प. से.),
 ष्यगुह् (भ्वा. उ. से.) ।

सीनिधर, वि. (अं.) वरीयस्-ज्यायस् (-सी
 खो.) । सं. पुं., पुद्गजनः ।

सीनेट, सं. खी. (सं.) वृद्ध-प्रधान-महा-सभा ।

सीने योग्य, वि. सीवनीय, श्रीवितव्य,
 सीवनार्ह ।

सीने वाला, सं. पुं., सेवकः, सीवनकर्तृ, सीवकः ।

सीप, सं. पुं. [सं. शुक्तिः (खी.)] शुक्तिका-
 मुक्ता, मारु (खी.) प्रसूः (खी.) स्फोटः, मौक्तिक-
 प्रसवा, तौक्तिकः ।

—सुत, सं. पुं. (सं. शुक्तिमुतः) मौक्तिकं,
 मुक्ता, शक्ति, जंबूजम् ।

सीपी, सं. खी., दे. 'सीप' ।

—सा सुँह निकल आना, सु., अत्यन्तदुर्बल-
 अत्यधिकक्षीण (वि.) भू ।

सीमंत, सं. पुं. (सं.) केशेषु वर्त्मन (न.),
 दे. 'मौग' । २. अस्थिसंधिः ।

सीमंतिनी, सं. खी. (सं.) नारी, दे. ।

सीमन्तोन्नयन, सं. पुं. (सं. न.) यमस्थितेः
 षष्ठेष्टमे वा मासे करणीयः संस्कारः (धर्म.) ।

सीमांत, सं. पुं. (सं.), सीमा, सीमन् (खी.),
 उपान्तः, पथंतः, प्रान्तः २. ग्रामसीमा ।

सीमा, सं. खी. (सं.) सीमन् (खी.), अवधिः,
 आधाटः, प्रान्तः, पथन्तः, मर्यादा २. दे.
 'सीमंत' (१) ।

सीमित, वि. (सं.) परि, मित, सहं, प, मया-
 दित ।

सीया हुआ, वि., स्यूत, स्यूत ।

सीमेंट, सं. पुं. (अं.) वज्रचूर्णम् ।

सीर, सं. पुं. (सं.) हलं, हालः २. सूर्यः
 ३. अर्कवृक्षः । सं. खी., क्षेत्रपतेः आत्मकृष्ट-
 भूमिः (खी.) ।

—ध्वज, सं. पुं. (सं.) जनकः २. बलरामः ।

—में, सु., संभूय, एकत्र मिलित्वा ।

सीरम, सं. पुं. (अं.) रत्नरसः ।

सीरा^१, सं. पुं. (का. शीरड्) मधु-शर्करा, क्वाथः,
 दे. 'चाशनी' २. लसिका ।

सीरा^२, वि. (सं. शीतल) शीत, शिशिर,
 उष्णत्वशून्य २. शान्त, मौनिम् ।

सीरु, सं. खी. (सं. शीतल >) क्लेदः, स्तेमः,
 आर्द्रता ।

सीरु^१ वि. (सं. शीतल) आर्द्र, क्लिष्ट ।

सीरु^२, सं. पुं. (सं. शिलः-ल) मुनीनां जीव-
 नोपायभेदः, मंत्रयार्थकानेकधान्योन्मयनम् ।

सीवन, सं. पुं. (सं. न.) सेवनं, स्यूतिः (खी.),
 सत्कर्मन् (न.) २. सीवनं, (स्यूतिः) संधिः
 ३. लिंगमण्यधःसूत्रम् ।

सीस, सं. पुं. (सं. शीर्ष) दे. 'सिर' ।

—फूल, सं. पुं. (हि.) *शीर्षफूलं, शिरोभूषण-
 भेदः ।

सीसा, सं. पुं. (सं. सीसं) सीसकं, सिन्दूर-
 कारणं, त्रपु (पुं. न.), महाबलं, बहुमलं,
 सुवर्णारिः, जलम् ।

सीसे का दुर्द, सं. पुं., सीसकशूलम् ।

सी-सी, सं. खी. (अनु.) सीत, कारः-कृतिः,
 (खी.) कृतं, हर्षपीडाशीतादिजनितभ्रमिः ।

सीह, सं. पुं., दे. 'सीह' ।

सुँघनी, सं. खी. (हि. नूँघना) नख्यं, दे.
 'नसवार' ।

सुँघाना, क्रि. प्रे., बनाओ 'सुँघना' के प्रे. रूप ।

सुंदर, वि. (सं.) रुचिर, सुषम, चाह, शोभन,
 कान्त, रुच्य, मंजु, मंजुल, मनोहर, मनोज,
 मनोरम, (मनो-) हारि, रमणीय, रामणीयक,
 बंधु (ध्रु) र, पेश (सं) ल, वाम, (अग्नि-) राम,
 नन्दित, सुमन, वस्यु, सुरूप, अभिरूप,
 दिव्य २. शुभ, भद्र, मंगल ३. उत्तम, श्रेष्ठ,
 उत्कृष्ट । ('सु' से भी रूप बनाते हैं, जैसे—
 सुमुखम् ।)

—कांड, सं. पुं. (सं. पुं. न.) लंकावर्तिसुंदर-
 पथंतमधिकृत्य रचितं रामायणस्य पंचमं कांडम् ।

सुंदरता, सं. खी. (सं.) सौन्दर्यं, रुचिरता,
 सुषमा, कांतिः (खी.), मंजुता, मंजुलत्वं,
 मनोहातात्वं, रमणीयता, अभिरूपता, लावण्यं,
 शोभा, रूपं, अभिरुष्या, श्रीः-लक्ष्मीः (खी.) ।

सुंदरी, सं. खी. (सं.) रूपलावण्यसंपन्ना नारी,
 रामा, वामा, रोचना, बरांगना, बरवणिनी,
 सिता । वि. (सं.) रूपवती, मनोशा, रुचिरा ।

सुंबा, सं. पुं. (सं. सूतकः) *लोहवेधनी,
 शतपत्नी, शोधनी ।

सुंबुल, सं. पुं. (का.) सुगंधितमासभेदः,
 सुंबुलम् ।

सु, उप. (सं.) सौन्दर्योत्कर्षभद्रत्वादिबोधकः
 उपसर्गः (उ. सुपुत्रः ३.) ।

सुकुचाना

[६२८]

सुगम

सुकुचाना, कि. अ., दे. 'सुकुचाना' ।

सुकुदना, कि. अ., दे. 'सिकुदना' ।

सुकर, वि. (सं.) सु-सुख-अयत्न-साध्य-निष्पाद्य-कार्य, अनायास ।

सुकरता, सं. स्त्री. (सं.) सु-सुख-साध्यता, सौकर्य, सुकरत्वम् ।

सुकर्म, सं. पुं. [सं.मन् (न.)] सु-सत्-उत्तम-पुण्य-श्रेष्ठ-कर्मन् (न.) कृत्य-कार्यम् ।

सुकर्मी, वि. (सं.मिन्) सुकर्मन्, सुकृत, सत्किय, सुकर्मशील २. धर्मात्मन्, पुण्यारमन् ३. सदाचारिन्, सद्दृष्ट ।

सुकवि, सं. पुं. (सं.) कविवरः, सुकाव्यकारः ।

सुकाळ, सं. पुं. (सं.) सुसमयः २. सुभिक्षम् ।

सुकुमार, वि. (सं.) अति-कोमल, शृङ्ग, शृङ्गल, प्र-तनु, परि-पेलव, इक्षुण्य, ललित । सं. पुं. (सं.) सुन्दर-उत्तम-बालकः ।

सुकुमारता, सं. स्त्री. (सं.) सौकुमार्य, मार्दवं, पेलवता, शृङ्गलता, तनुता ।

सुकुमारी, सं. स्त्री. (सं.) सुन्दर-श्रेष्ठ-कन्या २. दुहितृ (स्त्री.), पुत्री । वि. (सं.) कोमलांगी, तन्वंगी, तनुगात्री ।

सुकुल, वि. (सं.) महाकुल, अभिजात, सद्बंशज, कुलीन । सं. पुं. (सं. न.) सु-सद्-वंशः ।

सुकुलीन, वि. (सं.) दे. 'सुकुल' वि. ।

सुकृत, सं. पुं. (सं. न.) पुण्यं, सत्-सु-पुण्य-कार्य-कृत्यं-कर्मन् (न.) वि. (सं.) सौभाग्यवत्, भाग्यशालिन् २. धार्मिक, पुण्यात्मन् ३. सुविहित ।

सुकृति, सं. स्त्री. (सं.) पुण्यं, सत्कृत्यम् ।

सुकृती, वि. (सं.तिन्) धार्मिक, पुण्यवत्, सत्कर्मन् २. सौभाग्यशालिन् ३. प्राज्ञ, बुद्धिमत् ।

सुकेशी, सं. स्त्री. (सं.) सुन्दरकेशवती नारी, सुकेशिनी ।

सुख, सं. पुं. (सं. न.) सुद (स्त्री.), सुदा, सुदितं-ता, प्रीतिः (स्त्री.), हर्षः, आ-प्र-मोदः, संमदः, शर्मन् (न.), शा(सा)तं, आ-नन्दः, आ-नन्दशुः प्र-मदः, भोगः, रमसः, निर्वृतिः (स्त्री.), सौख्यं, जोषः ।

—कर, वि. (सं.) सुख-कार-कारिन्-कारक-आवह-द-दायकः, सुखंकरः ।

—की नौद सोना, सु., सुखं जीव् (भ्वा. प. से.)-वस् (भ्वा. प. अ.)

—चैन, सं. पुं. (सं. + हिं.) दे. 'सुख' ।

—वायी, वि. (सं.थिन्) सुख-द-प्रद-दायक-दातृ-आवह, दे. 'सुखकर' ।

—देना, कि. स., सुखयति (ना. धा.), सुखी कृ, सुखं दा, निर्वृतं-सुखिन् कृ ।

—धाम, सं. पुं. [सं.मन् (न.)] स्वर्गः, स्वर्लोकः ।

—पाना, कि. अ., सुखमनुभू, सुखायते (ना. धा.), निर्वृतं-सुखित (वि.) स्था (भ्वा. प. अ.), सौख्यं लभ् (भ्वा. आ. अ.) ।

—पाल, सं. पुं. (सं. + हिं. पालकी) *सुख-शिक्षिका ।

—पूर्वक, कि. वि. (सं.कं.) सुखेन, सौकर्येण, सुखं, लीलया, अनायासम् ।

—सूदना, सु., सुखायते (ना. धा.), यषेष्टसुखं मुञ् (र. आ. अ.) ।

—साध्य, वि. (सं.) सुकर, अयत्नसाध्य ।

सुखांत, सं. पुं. (सं. न.) सुखप्रधानं नाटकं रूपकं वा २. प्रहसनं (सा.) ।

सुखागत, सं. पुं. (सं. न.) स्वागतम्, शुभा-गमनम् ।

सुखाना, कि. स., वनाथो 'सुखाना' के प्रे. रूप ॥ सुखार्थी, वि. (सं.थिन्) सुखैथिन्, सुखेच्छुक, सुखकामिन् ।

सुखी, वि. (सं.थिन्) सुखित, निर्वृत, निश्चित, स्वस्थ, सुस्थ, निरुद्वेग, शान्त, आनंदित, सुदित, वीतचित, प्रसन्न, सानंद, संतुष्ट ।

सुखेच्छा, सं. स्त्री. (सं.) सुख-अभिलाषः कामना-वांछा ।

सुख्यात, वि. (सं.) प्रख्यात, प्रसिद्ध, विश्रुत ।

सुख्याति, सं. स्त्री. (सं.) सुकीर्तिः-विश्रुतिः (स्त्री.), यशस् (न.) ।

सुगंध, सं. स्त्री. (सं. पुं.) सु-, वासः, सुरभिः, सु-गंधः, सौरभ-भ्यं, आमोदः, परिमलः ।

सुगंधि, सं. स्त्री. (सं. >) दे. 'सुगंध' सं. स्त्री. । वि. (सं.) दे. 'सुगंधित' ।

सुगंधित, वि. (सं.) सुरभि, सुगंधि, सुवास, आमोद-परिमल-वत्-शुक्, सुवासित, सङ्गंध, इष्टगंध, प्राणतर्पण, सुगंधाय ।

सुगम, वि. (सं.) उपगम्य, उपसर्पणीय, सुगम्य, सुख-गम्य-उपसर्वा २. सुबोध, सुखशेष ३. सुकर, सुसाध्य, सरल ४. सुलभ, सुप्राप्य, सुप्राप ।

सुगमता, सं. स्त्री. (सं.) मौक्यं, सुसाध्यता ।
सुगम्य, वि. (सं.) दे. 'सुगम' (१) ।
सुग्गा, सं. पुं. (सं. शुक्रः) दे. 'तोता' [सुग्नी (स्त्री.) = शुकी] ।
सुग्रीव, सं. पुं. (सं.) मुकुंठः, वानरेन्द्रः, श्रीरामसखः । वि., मुकुंठ, शोभनशीव ।
सुघट, वि. (सं.) सुकर, सुखसाध्य २. सुंदर, मनोहर ३. सुघटित, सुरचित, सुरेख ।
सुघटित, वि. (सं.) सुरचित, सुनिमित्त ।
सुघट्ट, वि. (सं. सुघट) सुंदर, सुरेख, सुघटित २. निपुण, दक्ष, प्रवीण ।
सुघट्ट(डा)ई, सं. स्त्री. (हि. सुघट्ट) सुंदरता, सुरूपता २. चातुर्य, कौशलम् ।
सुघट्टता, सं. स्त्री., दे. 'सुघट्टई' ।
सुघडी, सं. स्त्री. (सं. सुघटी) सु-शुभ, काल-समयः-सुहृत्तम् ।
सुघर, वि., दे. 'सुघट्ट' ।
सुचित, वि. (सं. सुचित) सावकाश, निर्व्यापार २. निश्चित ३. सावधान ।
सुचेत, वि. (सं. सुचेत्स्) अवहित, सावधान, प्रमादशून्य ।
सुजन, सं. पुं. (सं.) आर्यः, सत्पुरुषः, भद्रजनः, सज्जनः दे. ।
सुजना, सं. पु. (सं. स्वजनाः) आत्मीय-पारिवारिक-जनाः, संबंधिनः, बांधवाः (सभ बहु.) ।
सुजनता, सं. स्त्री. (सं.) सौजन्यं, भद्रता, सज्जनता दे. ।
सुजाति, सं. स्त्री. (सं.) सत्कुलं, सदवंशः, वरान्वयः । वि. (सं.) अभिजात, कुलीन दे. ।
सुजान, वि. (सं. सुजान) प्राज्ञ, बुद्धिमत्, पंडित, विज्ञ २. प्रवीण, निपुण । सं. पुं., पतिः २. प्रणयिन्, रमणः ३. परमात्मन् ।
सुजाना, क्रि. म., वनाओ 'सूजना' के प्रे. रूप ।
सुज्ञाना, क्रि. म., वनाओ 'सूज्ञाना' के प्रे. रूप ।
सुठि, वि. [सं. सुठु (अर्थ.)] सुंदर, वर, उत्कृष्ट २. अविशय, बहु. । क्रि. वि., सामर्थ्येण, संपूर्णतया, सम्यक् ।
सुहृपना, क्रि. म. (अनु. सुहृ-सुहृ) ससुहृ-सुहृशब्दं पा (भ्वा. प. अ.)-आचम् (भ्वा. प. से.) ।
सुहृकना, क्रि. सं. (अनु. सुहृसुहृ) सशब्दं सत्वरं च निग (तु. प. से.) २. सशब्दं शस् (अ. प. से.) ।

सुहौल, वि. (सं. सु+हि. डील) सुरूप, सुरेख, सदाकार, सदाकृति, सुन्दर, सुघटित ।
सुढंग, सं. पुं. (सं. स+हि. ङंग) सुरीतिः-सुरुद्धिः (स्त्री.) । वि., सुरूप, सुंदर ३. सदवृत्त ।
सुत, सं. पुं. (सं.) आत्मजः, स. तु., पुत्रः दे. ।
सुतनु, वि. (सं.) सुगात्र, सुन्दरशरीर । सं. स्त्री. (सं.) कोमलांगी, कृशांगी, सुन्दरी ।
सुतराम्, अर्थ. (सं.) अतः २. अपितु ३. अगत्या ४. अत्यंतं ५. अवदयम् ।
सुतली, सं. स्त्री. दे. 'सुतली' ।
सुता, सं. स्त्री. (सं.) पुत्री, दुहितृ (स्त्री.), तनुजा ।
 —पति, सं. पुं. (सं.) जामातृ (पुं.), दे. 'दामाद' ।
सुतारी, सं. स्त्री. (सं. सूत्रकारः >) आरा, चर्म, प्रमेदिका-प्रमेदिनी-वेधनी, *चर्म, सूची-सीबनी ।
सुतार्थी, वि. (सं. धिन्) पुत्र-सन्तान-सन्तति-अपत्य, अभिलाषिन्-कामिन्-इच्छुक ।
सुतिनी, सं. स्त्री. (सं.) पुत्रवती, सुतवती, प्रजावती, सन्तानवती, ससन्ताना ।
सुतीक्ष्ण, वि. (सं.) अत्यन्त-अत्यधिक, शिशु-शात-शीघ्र-प्रखर । दे. 'तीक्ष्ण' । सं. पुं. (सं.) अगस्त्यभ्रातृ, ऋषिविशेषः । २. शोभाजनः, तीक्ष्णगंधः, दे. 'सहिजन' ।
सुस्थन, सं. स्त्री. (देश.) सुस्थूणा, *सुस्थानं, जंधावसभेदः ।
सुधना, सं. पुं. } दे. 'सुत्थन' ।
सुधनी, सं. स्त्री. }
सुथरा, वि. (सं. स्वच्छ वा सुस्थ >) स्वच्छ, निर्मल, विमल ।
 —पन, सं. पुं., स्वच्छता, नैर्मल्यम् ।
सुदर्शन, वि. (सं.) शोभन, सुरूप, सुन्दर, प्रियदर्शन [सुदर्शना-नी (स्त्री.)] । सं. पुं. (सं.) सुदर्शनचक्रम् ।
 —चक्र, सं. पुं. (सं. न.) विष्णुचक्रं, सुनाभं, श्रीकृष्णस्यास्त्रविशेषः ।
 —चूर्ण, सं. पुं. (सं. न.) ज्वरीषधभेदः ।
सुदामा, सं. पुं. (सं. मन) श्रीकृष्णसखः । वि. (सं.) सुदात ।
सुदिन, सं. पुं. (सं. न.) शुभ, दिन-दिवस-पुण्याहम् ।

सुदी, सं. स्त्री. (सं. सुदि अन्व.) शुक्ल-सित, पद्मः-अर्द्धमासः ।

सुदूर, वि. (सं.) अति-सु-बहु-दूर-दूरवतिन-दूरस्थ, अतिविप्रकृष्ट, दवीयम्, दविष्ठ । कि. वि. (सं. न.) अतिदूररे ।

सुदृक्, वि. (सं.) सुस्थिर, सुनिश्चल, सुवीर २. अति-गाढ-धन-क्रोडस, दुर्भेद्य ३. अतिव-लिन, सुशक्तिमत् ।

सुदेह, वि. (सं.) सुतनु, सुकाय, सुन्दर । सं. पुं. (सं.) सुन्दरशरीरम् ।

सुध, सं. स्त्री. [सं. शुद्ध- (बुद्धिः) >] स्मरणं, स्थितिः (स्त्री.) २. संज्ञा, चैतन्यं, उपलब्धिः (स्त्री.), प्रति, बोधः, चेतना ३. अवधानं, वृत्तज्ञानम् ।

—**बुध**, सं. स्त्री., चेतना, चैतन्यं, संज्ञा ।

—**दिलाना**, मु., स्मृ (प्रे.) ।

—**न रहना** या **बिसरना**, मु., विस्मृ (कर्म.) ।

—**बिसराना** या **बिसारना**, मु., विस्मृ (भ्वा. प. अ.) ।

—**रखना**, मु., सावधान-जागरूक (वि.) स्था (भ्वा. प. अ.) ।

—**लेना**, मु., वृत्तान्तं ज्ञा (कृ. उ. अ.) ।

वे—, वि., निःसंज्ञ, मूर्च्छित २. प्रमादिन् ।

सुधना, कि. अ. (हि. सोधना) शुध् (दि. प. अ.) निर्भलीभू ।

सुध-बुध, सं. स्त्री. (सं. शुद्धबुद्धिः >) दे. 'सुध' (२) ।

—**जाती रहना** या **मारी जाना**, मु., गतचे-तन-नष्टसंज्ञ-निःसंज्ञ-मूर्च्छित (वि.) भू ।

—**ठिकाने** न रहना, मु., विक्षिप्त (वि.) जन् (दि. आ. से.) ।

सुधरना, कि. अ. (हि. सुधना) दोष-शुद्धि-रहित-हीन (वि.) भू, परि-वि-सं, शुध् (दि. प. अ.), शुद्ध-निर्दोष (वि.) जन् (दि. आ. से.), प्रतिसमाधा (कर्म.) ।

सुधवाना, कि. प्रे. (हि. सोधना) शुध् (प्रे.), पू (प्रे.), दोष-मल-हीनं कृ (प्रे.) ।

सुधांछ, सं. पुं. (सं.) चंद्रः दे. ।

सुधा, सं. स्त्री. (सं.) पीयूषं, अमृतं दे. २. मकरंदः, पुष्परसः ३. मधु (न.) ४. जल ५. दुग्धं ६. विषं ७. चूर्णः, दे. 'चूना' ।

—**कंठ**, सं. पुं. (सं.) पिकः, कोकिलः ।

—**कर**, सं. पुं. (सं.) सुधा, षटः दौषितिः (पुं.)-धरः-आधारः-मयूखः रश्मिः-योनिः (पुं.)-स्थितिः (पुं.)-निधिः, चंद्रः ।

—**कार**, सं. पुं. (सं.) सुधाजीविन्, पल्लवः, लेपकः ।

—**धौत**, वि. (सं.) सुधा-चूर्णं, सित-शुक्लित-धवलित ।

—**निधि**, सं. पुं. (सं.) दे. 'सुधाकर' ।

—**भोजी**, सं. पुं. (सं.)-जिन्) सुधासुज्, देवः ।

—**स्पर्धी**, वि. (सं.)-धिन्) अमृत-पीयूष-उपम-सदृश, सुमधुर ।

सुधाना, कि. प्रे., दे. 'सुधवाना' ।

सुधार, सं. पुं. (हि. सुधारना) दोष-हरणं-अपनयनं, सं-शोधनं, संस्कारणं, प्रति-समाधानम् ।

—**करना**, कि. म., सं, शुध् (प्रे.), निर्दोषं-दोषरहितं विधा (जु. उ. अ.) कृ-प्रति, समाधा, संस्कृ ।

सुधारक, सं. पुं. (हि. सुधार) संशोधकः, दोषहारिन्, संस्कारकः ।

सुधारना, कि. स. (हि. सुधारना) दे. 'सुधारकरना' ।

सुधित, वि. (सं.) सुव्यवस्थित २. सु-सन्वक्, पक्व-सिद्ध-शुद्ध ।

सुधी, सं. पुं. (सं.) पंडितः, विद्वस् (पुं.), २. चतुर, सुबुद्धि ।

सुनना, कि. स. (सं. श्रवणं) श्रु (भ्वा. प. अ., शृणोति), आ-समा-कर्णं (जु.), निशम् (दि. प. से. या प्रे. निशःभयति), श्रवण-गोचरीकृ २. अवधा (जु. उ. अ.) ३. भर्त्सना-वचनानि श्रु । सं. पुं., श्रवणं, आ-समा-कर्णनं, निश(शा)मनं, श्रुतिः (स्त्री.) ।

सुनने योग्य, वि., श्रोतव्य, श्राव्य, आ-समा-कर्णनीय, निशमनीय ।

सुनने वाला, सं. पुं., श्रावकः, आ-समा-कर्ण-यितु-श्रोतृ (पुं.) ।

सुन लेना, मु., छलेन यदृच्छदा अलक्षितं वा श्रु ।

सुना हुआ, वि., श्रुत, आ-समा-कर्णित, श्रवण-गोचरीकृत ।

सुनो अनसुनी कर देना, मु., श्रुत्वापि न अवधा (जु. उ. अ.)-उपेक्ष (भ्वा. आ. से.) ।

सुनय

[६३१]

सुबुद्धि

सुनय, सं. पुं. (सं.) सु-उत्तम-श्रेष्ठ, नीतिः (स्त्री.) ।

सुनयन, सं. पुं. (सं.) सृगः । वि. (सं.) सुलोचन ।

सुनयना, सं. स्त्री. (सं.) नारी । वि. (सं.) सुलोचनानी ।

सुनवाई, सं. स्त्री. (हिं. सुनना) श्रवणं, निश्र- (शा)मनं २. व्यवहारदर्शनं, कार्य-अवेक्षणं-विचारणम् ।

सुनसान, वि. (सं. शून्यस्थानं >) निर्जनं, विजनं, विविक्तं, एकान्तं २. उच्छिन्नं, उद्ध्वस्तं, वर्जरं । सं. पुं., नीरवता, निःस्तम्भता ।

सुनहरा-री, वि., दे. 'सुनहला' ।

सुनहला, वि. (हिं. सोना) हैम, सौवर्णं, सुवर्णं-कांचन-हैम-हिरण्य-वर्ण-आभ ।

सुनाई, सं. स्त्री. (हिं. सुनना) दे. 'सुनवाई' (१, २.) । ३. न्यायः ।

सुनाना, कि. प्रे., व. 'सुनना' के प्रे. रूप ।

सुनार, सं. पुं. (हिं. सोना) सुवर्ण-हैम-कारः, कलादः, नाडिधमः, सौष्टिकः, हेमलः ।

सुनारी, सं. स्त्री. (हिं. सुनार) सुवर्णकारः, व्यवसायः-श्रुतिः (स्त्री.) २. सुवर्णकारपत्नी ।

सुनावनी, सं. स्त्री. (हिं. सुनाना) श्रुत्युत्तमा-धारः, निधनवृत्तम् ।

सुनीति, सं. स्त्री. (सं.) सुनयः, दे. २. सुव-जननी, उत्तानपादपत्नी ।

सुनी-सुनाई, सं. स्त्री. (हिं. सुनना-सुनाना) निवदन्ती, जनप्रवादः ।

सुनेत्र, वि. (सं.) सु-सुन्दर, नयन-नेत्र-लोचन-रक्षण ।

सुन्न, वि. (सं. शून्य >) नेष्टः-क्रिया-चेतना-स्पन्दन-शून्य-हीन, जडीभूत, निःस्तम्भ, निश्रेष्ठ, निर्जीव, निश्चल । सं. पुं. (सं. शून्यं) बिंदुः, खम ।

सुशत, सं. स्त्री. (अ.) दे. 'शतना' ।

सुश्रा, सं. पुं. (सं. शून्यं) बिंदुः, खम ।

सुश्री, सं. पुं. (अ.) यवनसंप्रदायविशेषः ।

सुषक, वि. (सं.) सुपरिणत २. सुसिद्ध, सुश्रुत, सुश्राग ।

सुषय, सं. पुं. (सं.) सत्यधः, सन्मार्गः, सुपन्थाः (पुं. एक.) २. सदाचारः, सद्बृत्तम् ।

सुषय्य, सं. पुं. (सं. न.) पथ्यं, स्वास्थ्य-प्रदाहारः ।

सुपना, सं. पुं., दे. 'स्वप्न' ।

सुपरि-दंडेट, सं. पुं. (अ.) पर्यवेक्षकः, अध्यक्षः ।

सुपर्ण, सं. पुं. (सं.) गरुडः २. कुक्कुटः ३. किरणः ४. खगः ।

सुपात्र, सं. पुं. (सं. न.) योग्यजनः, अधिकारी-व्यक्तिः (स्त्री.) ।

सुपारी, सं. स्त्री. (सं. सुप्रिय >) क्रमुकं, पूर्णं, क्रमुक-पूरा, फलं, तांबूलम् ।

—पाक, सं. पुं. (हिं. + सं.) पौष्टिकीयभेदः ।

सुपास, सं. पुं. (देश.) सौख्यं, सुखं दे. ।

सुपुत्र, सं. पुं. (सं.) सत्-उत्तम-श्रेष्ठ-पुत्रः ।

सुपुत्री, सं. स्त्री. (सं.) सत्-उत्तम-श्रेष्ठ-पुत्री ।

सुपुर्द, सं. स्त्री., (फा.) निक्षेपः, न्यासः ।

—करना, कि. स., निक्षिप् (तु. प. अ.), न्यस् (हि. प. से.) ।

सुपूत, सं. पुं. (सं. सुपुत्रः, दे.) ।

सुपूती, सं. स्त्री. (हिं. सुपूत) सुपुत्रत्वं २. सुपु-त्रवती ।

सुप्त, वि. (सं.) निद्रित, निद्राण, शयित २. जडीभूत, निश्रेष्ठ, निःस्तम्भ ३. मुदित, मुकुलित ४. कर्णविमुख ५. अलस ।

सुप्ति, सं. स्त्री. (सं.) निद्रा, स्वप्नः, स्वापः, शयनं, संवेशः २. सुषांगता, अंगजडता, स्तंभः ३. तंद्रा, निद्राशुता-त्वम् ।

सुप्रतिष्ठा, सं. स्त्री. (सं.) सुख्यातिः-सुविश्रुतिः (स्त्री.) ।

सुप्रतिष्ठित, वि. (सं.) सुकीर्तिमत, सुविख्यात ।

सुप्रतीक, वि. (सं.) सुंदरांग, रूपवत्, सरूप, सुन्दर, सुरूप २. धार्मिक । सं. पुं. (सं.) शिवः २. कामदेवः ३. दिग्गजविशेषः ४. वक्ष-विशेषः ।

सुप्रदर्श, वि. (सं.) सुदर्शन, रूपवत्, सुन्दर ।

सुप्रसिद्ध, वि. (सं.) सुविश्रुत, प्रख्यात ।

सुफल, सं. पुं. (सं. न.) सत्परिणामः २. सुन्दर-फलं । वि. सफल, कृतार्थं २. सुन्दरफलपुष्प ।

सुबह, सं. स्त्री. (अ.) प्रातः, दे. ।

सुबास, सं. स्त्री., दे. 'सुनास' ।

सुबाहु, सं. पुं. (सं.) राक्षसविशेषः । वि. (सं.) दृढ़-सुन्दर, बाहु-भुज ।

सुबुक, वि. (फा.) लघु, अल्प-लघु, भार २. सुन्दर ।

सुबुद्धि, सं. स्त्री. (सं.) धुमतिः (स्त्री.),

सुधिषणा, सुधीः (स्त्री.) । वि. (सं.) बुद्धि-
धी-मत्, पंडित, प्राय, बुध ।
सुबत, सं. पुं. (अ.) प्रमाणं, साधनं, उपपत्तिः
(स्त्री.) ।
—तहरीरी, सं. पुं. (अ.) लेखप्रमाणं, साधन-
पत्रम् ।
सुभ, वि., दे. 'सुभ' ।
सुभग, वि. (सं.) सुन्दर, मनोरम २. सौभा-
ग्यवत्, धन्य ३. प्रिय, प्रियतम ४. सुख-आनन्द,
प्रद ५. धनाढ्य, ऐश्वर्यशालिन् ।
सुभगा, वि. (सं.) सुन्दरी, रूपवती २. जीवित-
पत्निका, सधवा । सं. स्त्री. (सं.) पतिप्रिया,
भर्तृवल्लभा ।
सुभट्ट, सं. पुं. (सं.) सुसैनिकः, सुयोधः ।
सुभट्ट, सं. पुं. (सं.) सुविद्वत् (पुं.) पंडितवरः ।
सुभद्र, वि. (सं.) भाग्यवत् २. श्रेष्ठ । सं. पुं.
(सं. न.) सौभाग्यं २. कल्याणम् ।
सुभद्रा, सं. स्त्री. (सं.) श्रीकृष्णमणिनी,
अर्जुनस्य भार्या, अभिमन्युजननी ।
सुभाग, वि. (सं.) सौ-भाग्यवत्, सुभाग्य ।
सं. पुं. (सं.) सौभाग्यं, सुदैवम् ।
सुभागी, वि. (सं. सुभाग >) धन्य, महाभाग,
सौ-भाग्यवत्, सुभाग्य ।
सुभाग्य, वि. (सं.) दे. 'सुभागी' । सं. पुं.
(सं. न.) सौभाग्यं, दे. ।
सुभान, अव्य. (अ. सुवहान) साधु-साधु,
वाढम् ।
—अल्ला, धन्योऽसि परमेश्वर ! (आश्चर्यादि-
बोधकं वाक्यम्) ।
सुभाव, सं. पुं. (सं. स्वभावः, दे.) ।
सुभाषित, वि. (सं.) सम्यगुक्त । सं. पु. (सं.
न.) सूक्तिः (स्त्री.), बरवचनम् ।
सुभिन्न, सं. पुं. (सं. न.) सुकालः, अन्न-भिक्षा-
बहुलकालः ।
सुभीता, सं. पुं. (देश.) सौकर्यं, सुगमता
२. सदवसरः, सुयोगः ३. सुखं, सील्यम् ।
सुभूषित, वि. (सं.) सम्यक् अलंकृत, सुमंडित ।
सुमंगल, वि. (सं.) सुमंगलिक, सुभद्र, शिव-
तम-तर ।
सुम, सं. पुं. (फा.) शकः, विखः, छुरः दे. ।
सुमति, सं. स्त्री. तथा वि. (सं.) दे. 'सुबुद्धि'
सं. स्त्री. तथा वि. ।

सुमन, सं. पुं. (सं. सुमनस् न., स्त्री. बहु.)
पुष्पं, कुसुमं २. सुचितं, सुहृदयम् (सं. पुं.)
देवः २. पंडितः ३. गोधूमः । वि. (सं.) सहृदय,
सुचित, दयालु ।
—चाप, सं. पुं. (सं. सुमनश्चापः) कामदेवः ।
सुमनस, सं. पुं., तथा वि. दे. 'सुमन' सं. पुं.,
तथा वि. ।
सुमरन, सं. पुं., दे. 'स्मरण' ।
सुमरनी, सं. स्त्री. (हि. सुमरना) (सप्तविंश-
तिगुटिकावती) जपमालिका ।
सुमाटरा, सं. पुं. (सं. सुमात्रा) मलयद्वीप-
पुंजाभ्यन्तरेतिमहाद्वीपविशेषः, सुवर्णं, भूमिः (स्त्री.)
द्वीपम् ।
सुमार्गं, सं. पुं. (सं.) दे. 'सुपथ' ।
सुमित्रा, सं. स्त्री. (सं.) दशरथपत्नी २. मार्क-
ण्डेयजननी ।
—तंदन, सं. पुं. (सं.) लक्ष्मणः २. शत्रुघ्नः ।
सुमुख, सं. पुं. (सं. न.) सुवदनं, शोभनाननम् ।
वि. (सं.) सुवदन, सुन्दरानन २. सुन्दर
३. प्रसन्न ४. रूपालु ।
सुमुखो-खा, सं. स्त्री. (सं.) सुवदना-नी, सुन्द-
रानना-नी २. सुन्दरी ३. दर्पणः ।
सुमेर-रु, सं. पुं. (सं. तुमेरुः) मेरुः, हेमाद्रिः,
रत्नसानुः, सुरालयः २. उत्तरध्रुवः ३. जपमा-
लाया वृहदगुटिका ।
सुयश, सं. पुं. [सं-शाम (न.)] सुकीर्तिः-
सुख्यातिः-सुविश्रुतिः-सुप्रसिद्धिः (स्त्री.) ।
सुयोग, सं. पुं. (सं.) योऽय-उचित-कालः,
सु-सद-अवसरः ।
सुयोग्य, वि. (सं.) सुसमर्थ, सुशक्त, सुकुशल,
सुनिष्णात, सुनिपुण ।
सुयोधन, सं. पुं. (सं.) दुर्योधनः ।
सुरंग, वि. (सं.) शोभन-सुन्दर-वर, वर्णः-रंग-
रागः । वि., सुन्दर, सदाकृति, सुरूप ।
सुरंग, सं. स्त्री. (सं. सुर(हं)गः-गा) सुर(हं)-
गः-ग, अंतर-गूढ-भौम-मार्गः २. स्तम्भः,
संधिला, सुर(हं)गः-गा, खानिक ३. ख(खा)नी-
निः (स्त्री.), आकरः ४. पीतस्फोटिनी सुरंगा
(यंत्रमेदः) ।
—उद्धाना, कि. स., सुखं सशब्दं स्फुटं (प्रे.) ।
—लगाना, कि. स., संधिलं कृ अथवा खन्
(भ्र. प. से.) ।

सुरंगिया

[६३३]

सुरांगना

—**बिछाना**, पु., समुद्रे पथि वा सुरंगाः न्यम्
(दि. प. से.) निक्षिप् (तु. प. अ.) ।
सुरंगिया, सं. पुं. (सं. सौरंगिकः) मरुह-
(गण) कारः ।
सुर, सं. पुं. (सं.) अमर, देवः, देवत दे.
 २. सूर्यः ३. पंडितः ।
 —**गज**, सं. पुं. (सं.) देवद्विपः २. ऐरावतः ।
 —**गाय**, सं. स्त्री. (सं. गीः) कामधेनुः (स्त्री.) ।
 —**गायक**, सं. पुं. (सं.) गंधर्वः ।
 —**गिरि**, सं. पुं. (सं.) सुमेरुः, सुरपर्वतः ।
 —**गुरु**, सं. पुं. (सं.) बृहस्पतिः ।
 —**चाप**, सं. पुं. (सं.) सुर-इन्द्र, धनुस् (न.) ।
 —**जन**, सं. पुं. (सं.) देवगणः ।
 —**जन**, वि. (सं. सुजन) सज्जन २. चतुर ।
 —**सर**, सं. पुं. (सं.) कल्पवृक्षः, सुर, दुमः-
 पादपः ।
 —**वारु**, सं. पुं. (सं. न.) देवदारु (न.) ।
 —**द्विष्**, सं. पुं. (सं.) अशुरः, राक्षसः २. राहुः ।
 —**धाम**, सं. पुं. [सं-मन् (न.)] स्वर्गः, नाकः,
 देवलोकः ।
 —**धुनी**, सं. स्त्री. (सं.) गंगा, देवनदी ।
 —**धूप**, सं. पुं. (सं.) राजः ।
 —**धेनु**, सं. स्त्री. (सं.) कामधेनुः ।
 —**ध्वज**, सं. पुं. (सं.) इन्द्रध्वजः, सुरकेतुः ।
 —**नाथ**, सं. पुं. (सं.) सुर, नायकः पतिः पालकः-
 इन्द्रः ईशः ।
 —**नारी**, सं. स्त्री. (सं.) नुर-देव, वधूः (स्त्री.)-
 बाला-अंगना ।
 —**पथ**, सं. पुं. (सं. न.) आकाशः-शन ।
 —**पुर**, सं. पुं. (सं. न.) देवपुरी, अमरावती ।
 —**मंदिर**, सं. पुं. (सं. न.) देवालयाः, मंदिरम् ।
 —**मणि**, सं. स्त्री. (सं. पुं.) त्रिन्नामणिः ।
 —**रिपु**, सं. पुं. (सं.) दानवः, राक्षसः ।
 —**लोक**, सं. पुं. (सं.) स्वर्गः, देवलोकः ।
 —**वल्लो**, सं. स्त्री. (सं.) तुलसी, वृन्दः ।
 —**वाणी**, सं. स्त्री. (सं.) देववाणी, सस्कृतभाषा ।
 —**श्रेष्ठ**, सं. पुं. (सं.) इन्द्रः २. शिवः ३. विश्वुः
 ४. गणेशः ५. धर्मः ।
 —**सरि**, } सं. स्त्री. (सं. सरित्) गंगा,
 —**सरिता**, }
 —**सरी**, } सुरसिंधुः ।
सुर, सं. पुं. (सं. स्वरः) ध्वनिः, नादः, स्वनः,
 दे. 'सुर' ।

—**मिलाना**, कि. स., तुल्यस्वरं कृ ।
 बे—, वि., विस्वर ।
 वेसुरा, कि. वि., विस्वरं, अपस्वरम् ।
 —**सं सुर मिलाना**, पु., नाटूक्तिः तुष् (प्रे.)
 या उपकर्तुं (चु.) ।
सुरत, सं. स्त्री. [सं. स्मृतिः (स्त्री.)] स्मरणं,
 दे. 'सुध' (१-३) ।
 —**सैभालना**, पु., सावधान-अवहित (वि.) भू ।
सुरत, सं. पुं. (सं. न.) काम-कौली, क्रीडा,
 संभोगः, मैथुनं, रतिक्रिया, निधुवनम् ।
ग्लानि, सं. स्त्री. (सं.) रतिजडीपिल्यन् ।
सुरता, सं. स्त्री. (सं.) देवत्वं, अमरत्वम् ।
 २. देव-सुर, समूहः-समुदायः ३. पत्नी, भार्या ।
सुरति, सं. स्त्री., दे. 'सुरत' (१-२) ।
सुरभि, सं. स्त्री. (सं. पुं. न.) सुगंधः, सौरभं,
 सु, वासः । (सं. स्त्री.) गौः (स्त्री.) २. काम-
 धेनुः (स्त्री.), सुरभी ३. पृथिवी ४. सुरा ।
सुरभित, वि. (सं.) सुरभि, सुगंधित दे. ।
सुरभी, सं. स्त्री. (सं.) सुगंधः, दे. २. कामधेनुः
 (स्त्री.) ।
सुरमई, वि. (का.) यामुनरंग, सौवीरवर्णं,
 आ-ईषत, कृष्ण-नील ।
सुरमा, सं. पुं. (का-मह) यामुनं, सौवीरं,
 स्रोतोऽजनं, कपोतांजनं, कृष्ण-अंजनम् ।
 —**दानी**, सं. स्त्री., यामुन-सौवीर-अंजन-
 आधनी ।
 —**लगाना**, कि. स., (नेत्रयोः) सौवीरं निविश
 (प्रे.), या ऋ (प्रे. अर्पयति) ।
सुरम्य, वि. (सं.) सुन्दर, दे. ।
सुरस, वि. (सं.) मधुर, स्वादु २. सरस, रस-
 युक्त ३. सुन्दर ।
सुरसा, सं. स्त्री. (सं.) इदुमन्मार्गावरोधक
 नागमातृ (स्त्री.) २. राक्षसीविशेषः ३.
 दुर्गा ४. नदीविशेषः ५. तुलसी ६. अ. स्त्री ।
सुरसुराना, कि. अ. (अनु. सर+सुर >)
 सप् (भ्वा. प. अ.), मन्दं निसृत्तं च गम्
 २. कंडूति अनुसु ३. सुरसुरायते (ना. धा.) ।
सुरसुरी, सं. स्त्री. (सं.) सुरसुर-सर्पण, ध्वनिः
 २. कंडूः-कंडूतिः-खर्जूः (स्त्री.) ३. कीटभेदः ।
सुरभित, वि. (सं.) सूत, स्वविन, सुत्रात,
 सुत्राण, सुपालित ।
सुरांगना, सं. स्त्री. (सं.) देवी, देवपत्नी,
 अमरांगना ३. अपसरा, स्वर्देश्या, नाकनर्तकी ।

सुरा

[४३४]

सुस्ताना

सुरा, सं. स्त्री. (सं.) मदिरा, वारुणी, हाल, कादंबरी, मद्यं दे. ।

सुराद्र, सं. पुं., दे. 'सुरात्' । दे. 'सुगण' ।

सुराग, सं. पुं. (तु.) अन्वेषणं, अनुसंधानं २. पद-, चिह्नं, लक्षणं, सूत्रं, संधानम् ।

—रुगाना, कि. स. चिह्नं: मृगं (चु.) या अन्विषु (दि. प. से.) ।

—लेना, कि. स., निभृतं निरीक्षु (भ्वा. आ. मे.) ।

सुरागाय, सं. स्त्री. [सं. सुरगौ: > (स्त्री.)] चमरः-समरः [-री (स्त्री.)], विविष्टपदेशीयः संकरजो गोभेदः ।

सुरागरी, सं. पुं. (का. सुरग) च(चा)रः, अपसर्पः, दे. 'भेदिया' ।

सुराही, सं. स्त्री. (सं.) *लंबयोवधटी, *सुराधिः ।

—हार, वि. (अ. + का.) सुराभिसदृश ।

सुरीला, वि. (हि. सुर) सु-मधुर, स्वर-स्वन, कल, मंजुल, कर्णमधुर (राग, कंठादि) २. सु-मधुर-कंठ (गायकादि) ।

सुरुल्लु, वि. (का. सुर्लू, दे.) ।

सुरचि, सं. स्त्री. (सं.) उत्तम, रुचिः-अभिरुचिः-शीलं २. भ्रुवभक्तस्य विमातृ (स्त्री.) । वि. (सं.) सुरचि-उत्तमाभिरुचि-विशिष्ट ।

सुरुच, वि. (सं.) सुन्दर, रूपवत् २. बुद्धिमत् । सं. पुं. (सं. न.) बराकृतिः (स्त्री.), सुन्दराकारः ।

सुरेन्द्र, सं. पुं. (सं.) देवेशः, इन्द्रः, सुरेशः-श्वरः ।

—चाप, सं. पुं. (सं.) इन्द्रधनुस् (न.) ।

सुस्र, वि. (का.) रक्त, रो. लो. हित, शोण, शोणित, अरुण, कषाय, फल्गुन ।

—होना, कि. अ., रक्षायते-लोहितायते (ना. धा.) ।

—रु, वि. (का.) तेजस्विन्, कांतिमत् २. प्रतिष्ठित, समानित ३. कृतकार्य ।

—रुह, सं. स्त्री., कृतकार्यता २. यशस् (न.), कीर्तिः (स्त्री.) ३. संमानः, प्रतिष्ठा ।

सुस्रांब, सं. पुं. (का.) कोकः, कुकः, बकः, चक्रवालः, रथांगः, रथांगनामकः ।

—का पर लगाना, मु., वैलक्ष्ण्यविशिष्ट (वि.) वृत् (भ्वा. आ. से.) ।

सुस्र्वा, सं. स्त्री. (का.) रक्तिमन्-लोहिनिमन्, अरुणिमन् (पुं.), शोणता, रक्तता २. (लेखा-दीनां) शीर्षकं ३. रुधिरं, रक्तं ४. इष्टकाचूर्णं ५. रक्तवर्गः ।

सुलक्षण, सं. पुं. (सं. न.) शुभ-मद्र-सु-लक्षणं-चिह्नं-लक्ष्मन् (न.) । वि. (सं.) शुभ, शिव, मांगलिक, सुलक्ष्मयुत २. भाग्यवत्, धन्य ।

सुलगाना, कि. अ. (अनु. सुलमुल >) (सधुमी) ज्वल (भ्वा. प. से.), दह् इध् (कर्म.), दीप् (दि. आ. से.) २. अत्यंत संतप (कर्म.), दुःखायते (ना. धा.) ।

सुलगाना, कि. स. (हि. सुलगाना) उदीप्-प्रज्वल् (प्रे.), सम्-इध् (सं. आ. से.) २. संतप (प्रे.), पीड (चु.) ३. उत्तिज्-उदीप् (प्रे.) ।

सुलक्षना, कि. अ. (हि. उलक्षना) उदग्रं (कर्म.), विशिल् (दि. प. अ.), सरलीभू ।

सुलक्षाना, कि. स. (हि. सुलक्षना) उदग्रं (कर्म.), विशिल् (प्रे.), सरलीकृ, जटिलतां अपनी (भ्वा. प. अ.) २. विवादं शम् (प्रे. श(शामयति)) ।

सुलक्षव, सं. पुं. (हि. सुलक्षाना) विश्लेषः, मोचनं, सरलीकरणं, जाटिल्यापनयनम् ।

सुलतान, सं. पुं., दे. 'सुलतान' ।

सुलफा, सं. पुं. (का.) तमाखुभेदः, *सुलफः २. दे. 'चरस' ।

सुलभ, वि. (सं.) सुलभ्य, सुप्राप्य-प २. सरल, सुगम ३. सामान्य, साधारण ।

सुलभता, सं. स्त्री. (सं.) सुलभत्वं, सुप्राप्यता २. सरलता ।

सुलह, सं. स्त्री. (अ.) सुख्यं, मैत्री, सौहार्दं २. शान्तिः (स्त्री), विप्लवाभावः ३. संधिः, संधानं ४. प्रसादनं, समापनम् ।

—नामा, सं. पुं. (अ. + का.) संधिवद्रम् ।

सुलाना, कि. स., व. 'सोना' के प्रेरणार्थक रूप ।

सुलूक, सं. पुं., दे. 'सल्लक' ।

सुलेमान, सं. पुं. (अ.) सुलेमानः, देवदूतो नृपविशेषः २. पर्वतविशेषः ।

सुलेमानी, वि. (अ.) सुलेमानसंधिन् । सं. पुं. (अ.) सिताक्षीऽथः २. श्वेतकृष्णः प्रस्तर-भेदः ।

सुलोचन, वि. (सं.) सुनयन, सुनेत्र । सं. पुं. (सं.) दैत्यविशेषः २. मृगः ३. नकोरः ।

सुलोचना, वि. स्त्री. (सं.) सुनयनी-ना । सं. स्त्री. (सं.) मेघनादपत्नी ।

सुलतान, सं. पुं. (अ.) नृपः, राजन्, सत्राज् । सुस्ताना, सं. स्त्री. (अ.) सम्-राज्ञी, नृपपत्नी ।

सुस्तानी

[६३२]

सुहृत्

सुस्तानी, वि. (अ.) राजकीय २. रक्तवर्ण । सं. स्त्री., राज, पद-अधिकारः. राज्य २. कौशे-यवस्रभेदः ।

सुवर्ण, सं. पुं. (सं. न.) स्वर्ण, काननं, दे. सोना १ । २. धनं, वित्तः वि. (सं.) सुंदर-रम्य, वर्ण-रंग २. हेमवर्ण ३. कुलीन, अमिजान ।

—कार, सं. पुं. (सं.) दे. 'सुनार' ।

सुवास, सं. पुं. (सं.) सुगंधः, दे. २. सु-सदन-भवन-गृहं, सुंदर, निवासः-निलयः ।

सुविचार, सं. पुं. (सं.) सद्विचारः २. सुनिर्णयः, सुन्यायः ।

सुविधा, सं. स्त्री., दे. 'सुभाता' ।

सुवृत्त, वि. (सं.) सदान्चारिन्, सचरित्र २. गुणित् ३. साधु ४. सुच्छन्दोविशिष्ट (काव्य) ।

सुवेश-प, वि. (सं.) सुन्दरवेश-श, सुवसन, सुवेश (पि) न् २. सुन्दर, सुरूप ।

सुशिक्षा, सं. स्त्री. (सं.) सच्छिक्षा, सुन्दर-अनुशासन-अनुशिष्टिः (स्त्री.) ।

सुशिक्षित, वि. (सं.) सुविनीत, व्युत्पन्न, सुपरिदित, सुपरिदृष्ट २. शिष्ट, संस्कृत, प्रबुद्ध ।

सुशील, वि. (सं.) सत्-उत्तम-शील-स्वभाव-प्रकृति, शीलवत्, सभ्य, दक्षिण २. सचरित्र, सदाचारिन् ३. नम्र, विनीत ४. सरल, अजु ।

सुशीलता, सं. स्त्री. (सं.) शीलवत्ता, दाक्षिण्यं, सभ्यता, शिष्टता २. सचरित्र्यं, सदृष्टिः (स्त्री.) ३. नम्रता ४. आर्जवम् ।

सुश्री, वि. (सं.) अति-सुंदर-रम्य-मनोहर २. महा-बहु-धन, सुसंपन्न, सुसृष्ट ।

सुषमा, सं. स्त्री. (सं.) शोभाविशेषः, सुंदरता, दे. ।

—शाली, वि. (सं.) अतिसुंदर, सुधमित ।

सुषिर, सं. पुं. (सं. न.) विचिरं, छिद्र २. बंश्या-दिव्यम् । वि. (सं.) सच्छिद्र, सरंभ्र ।

सुषुप्त, वि. (सं.) गाढं शयित-सुप्त-निद्राण, गाढनिद्रामग्न ।

सुषुप्ति, सं. स्त्री. (सं.) सु-गाढ, निद्रा-स्वप्नः-स्वापः-सुप्तिः (स्त्री.)-शयनं-संवेशः २. अज्ञानं (त्रै.) ३. वित्तवृत्तिभेदः (यो.) ।

सुषुप्तु, वि. (सं.) शिशयिषु, निद्रा, आकुल-आतुर ।

सुषुम्ना, सं. स्त्री. (सं. णा) श्वापिगलामध्यगा मध्यताडी, नाडी, पृष्ठवंशः ।

सुष्ट, वि. (सं. दृष्ट का अनु.) शुभ, भद्र २. सुंदर ।

सुष्टु, अव्य. (सं.) अत्यन्तं, सातिशयं २. सम्यक्, सुचारु ३. यथायोग्यं, अद्वितीयम् ।

सुष्टुता, सं. स्त्री. (सं.) मंगलं, शिवं २. सौभाग्यं ३. सौन्दर्यम् ।

सुसंगति, सं. स्त्री. (सं.) सु-सव-साधु-वृत्तम्, संगः-संगमः-समागमः-संगतिः ।

सुसज्जित, वि. (सं.) सुप्रसाधित, सुसज्जित, सुभूषित, सुपरिष्कृत, स्वलंकृत ।

सुसताना, वि. अ. (फ्रा. सुस्त) विश्रम (दि. प. से.), आविन्दम् (भ्वा. प. अ.), कार्याय निवृत्त (भ्वा. आ. से.), श्रमं अपनी (भ्वा. प. अ.) ।

सुसमय, सं. पुं. (सं.) सुकालः २. सुमिक्षम् ।

सुसर-रा, सं. पुं. (सं. शशुरः) दे. 'ससुर' ।

सुसरार-ल, सं. स्त्री. (सं. शशुरालयः) दे. 'ससुराल' ।

सुसरी, सं. स्त्री. (हिं. ससुर) दे. 'ससुरी' ।

सुस्त, वि. (फ्रा.) अलस(क), आलस(स्व), कार्य-उद्योग-विमुक्त, मंद, मथ(द)र, शीतक, तुंद, परिगृह्य परिमार्जं २. निर्बल ३. निस्ते-जस्क, हतप्रभ ४. मंद-गति-वेग ५. स्थूल-मंद-बुद्धि ६. रुग्ण, दे. 'रोगी' ।

सुस्ताना, कि. अ., दे. 'सुसताना' ।

सुस्ती, सं. स्त्री. (फ्रा.) आलस्यं, मार्घं, लभोग-कार्यं, विमुखता-द्वेषः २. तेजोहीनता, निष्प्रभता ३. रोगः ।

—करना, कि. अ., समयं व्यर्थं नी (भ्वा. प. अ.) अलस-निर्व्यापार-उद्योगशून्य (वि.) स्था (भ्वा. प. अ.) २. विलंब (भ्वा. आ. से.), चिरा(र)यति (ना. धा.) ।

सुस्थिति, सं. स्त्री. (सं.) सुन्दर-सुखद-स्थितिः (स्त्री.)-अवरधः-दशा । २. सुखं, मंगलम् ३. स्वास्थ्यम् ।

सुस्थिर, वि. (सं.) अचल, निश्चल २. सुवृद्ध, धीर ।

सुस्पर्श, वि. (सं.) कोमल, मृदुल, चिकण, श्लक्ष्ण ।

सुस्मिता, सं. स्त्री. (सं.) स्मेरमुखी, प्रसन्न-प्रफुल्ल, सुखी-आनना-वदना ।

सुहृत्, सं. स्त्री., दे. 'संगत' ।

सुहाग

[६३६]

सूक्ष्म

सुहाग, सं. पुं. (सं. सौभाग्यं) सुभगत्वं, पतिव-
त्नीत्वं, २. वरस्य वैवाहिकवस्त्रं, दे. 'जामा'
३. वैवाहिकं मंगलगीतम् ।

—पिटारा, सं. पुं., सौभाग्यपिटारः ।

—पूरा, सं. पुं., सौभाग्यपुटः ।

सुहागा, सं. पुं. (सं. सुभगः) दंकरणं, कनकधारः,
रसशोधनः, विडं, कोहद्रविन्, स्वर्णपाचकः ।

सुहागिन-नी, सं. स्त्री. (हिं. सुहाग) सधवा,
पतिवत्नी, सनाथा, सभर्तृका, जीवत्पतिका ।

सुहाता, वि. (हिं. सुहाना) शोभन, सुखकर ।

सुहाता, वि. (हिं. सहना) सहनीय, सख ।

३. कोष्ण, कटुष्ण (जल) ।

सुहाना, कि. अ. (सं. शोभनं) विराजं शुभं
(भ्वा. आ. से.) २. रुच् (भ्वा. आ. से.),
रुचिकर वृत् (भ्वा. आ. से.) ।

सुहावना, वि. (हिं. सुहाना) शोभन, मिय-
सुभग-दर्शन, सुन्दर दे. । [सुहावनी (स्त्री.)=

शोभनी] । कि. अ., दे. 'सुहाना' ।

—पन, सं. पुं., सौन्दर्यं, मनोहरता ।

सुहृद्, सं. पुं. (सं.) सखि, मित्रं, वयस्यः ।

सुहृदय, वि. (सं.) सुचित्त, सुमनस्क २. सह-
दय, स्नेहशील ।

सूँघना, कि. स. (सं. शिघ्रं) शिम् (भ्वा. प.
से.), आ-उपा-सं, प्रा (भ्वा. प. अ.), प्राप्ते-

न्द्रियेण गंधं ग्रह् (क्. प. से.) २. अत्यल्पं
भक्ष (सु.) ३. (सर्पादि का) दंश (भ्वा. प.
अ.) । सं. पुं., उपा-आ-प्राणं, प्रातंतिः (स्त्री.)

गन्धग्रहणम् ।

सिर—, सु., शिरसि आ-मना-उपा, प्रा ।

सूँघना, सं. स्त्री. (हिं. सूँघना) नस्थं, दे.
'नसवार' ।

सूँघने योग्य, वि., द्रव्यं, ब्रेव, शिषनीय ।

सूँघने वाला, सं. पुं., शिषकः, प्रावृ, गंध-
ग्राहकः ।

सूँघा सं. पुं. (हिं. सूँघना) विश्वकद्रुः, मृगया-
कुक्षुरः, आखेटिकः २. नतिप्रावृ ३. च(चा)-
रः, अपसर्पः ।

सूँघाहुआ, वि., शिषित, घ्रात, घ्राण, गृहीत-
गंध ।

सूँड, सं. स्त्री. (सं. शुंडः) शुंडा, दंडः, शुंडारः,
हस्ति-हस्तः, करि, करः ।

सूँस, सं. पुं. [सं. शि(शि)शुमारः] अंबुकपिः,

असि, पुच्छः-प्लवः, शिशुकः, महावसः,
उष्णवीर्यः, उडु(कृ.)पिन् ।

सूँ-सूँ, सं. स्त्री. (अंगु.) *गं, कारः-कृतिः
(स्त्री.) ।

—करना, कि. अ., नासिकया सूँ कृ अथवा सूँ-
सूँवर्ति कृ ।

सूअर, सं. पुं. [सं. स (शू)करः] वराहः,
रोमशः, किरिः, दंष्ट्रिन्, क्रोडः, पोत्र-दंत-रदः,
आयुधः, शूरः, कोळः, भेदनः, धोपिन्,
पोत्रिन् २. (गाली) अथमजनः, गृध्णुः ।

—का मांस, सं. पुं., शूकर-वराह-मांसम् ।

सूअरी, सं. स्त्री. [सं. स (शू)करी] कोली,
वराही, शूरी इ. ।

सूआ, सं. पुं. (सं. शुकः) कीरः, दे. 'तोता' ।

सूआ, सं. पुं. (सं. मूचा) मूचकः, स्थूल-
बृहत्, मूची ।

सूई, सं. स्त्री. (सं. सूची) सूचिः (स्त्री.),
व्यधनी, मूचिका, सो(से)वनी २. घटोद्घी ।

—पिरोना, कि. स., सूची सम्रां कृ या मूत्रेण
सनाथयति (ना. धा.) ।

—का काम, सं. पुं., सूचीकर्मन् (न.) ।

—का नाका, सं. पुं., सूची, छिद्रं-अं-सुखं-
पाशः ।

—की नोक, सं. स्त्री., मूच्यग्रं, सूचिकाग्रम् ।

—तागा, सं. पुं., सूची, सूचं-दोरम् ।

—का भाला या फावड़ा बनाना, सु., अणुं
पर्वतीकृ, अत्युक्त्या वर्णं (सु.) ।

सूकर, सं. पुं. (सं.) दे. 'सूअर' ।

सूकरी, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'सूअरी' ।

सूक्त, सं. पुं. (सं. न.) वेदमंत्र-शब्द-समूहः
२. उत्तमकथनं इ. महावाक्यम् । वि. (सं.)
साधु कथित, सम्बुक्त ।

सूक्ति, सं. स्त्री. (सं.) सुभाषितं, सु-उरकथनं,
सुन्दर-वर, धवन-वाक्यं-उक्तिः (स्त्री.) ।

सूक्ष्म, वि. (सं.) अति-अत्यंत, अल्प-क्षुद्र-तनु-
दन्त्र-लघु-रसनाक-सुल्ल-क्षुल्ल २. तुर्वंध, गहन, गूढ
३. अति-तनु-विरल-पक्ष्ण ।

—कोण, सं. पुं. (सं.) लघुकोणः ।

—दर्शकर्मन्, सं. पुं. (सं. न.) अनुवीक्षण-
यंत्रम् ।

—दृशिता, सं. स्त्री. (सं.) कुशाग्रबुद्धिः (स्त्री.)-
प्रत्युत्पन्नमितिवत् ।

—दर्शी, वि. (सं. शिन्) कुशाग्र-बुद्धि-मति, सूक्ष्मदृष्टि, गूढज्ञ, सूविचक्षण, प्रत्युत्पन्नमति ।
 —भूत, सं. पुं. (सं. न.) अपर्चीकृतकाशादि-भूतम् ।
 —मति, वि. (सं.) तीक्ष्ण-तीव्र-कुशाग्र-बुद्धि-मति ।
 —शरीर, सं. पुं. (सं. न.) सूक्ष्म-लिंग-देहः-शरीरम् ।
 सूक्ष्मता, सं. स्त्री. (सं.) सूक्ष्मत्वं, अति-लघुता-अल्पता-स्तोकता २. सु-अति-तनुता-विरलता, श्लक्ष्णता ३. दुर्बोधता, गहनता, गूढता-स्वम् ।
 सूखना, कि. अ. (सं. शोषणं) शुष् (दि. प. अ.), शोष-शुष्कतां या (अ. प. अ.), शुष्क-निर्जल-नीरस (वि.) भू २. कान्ति-प्रभा, हीन (वि.) भू ३. नशु (दि. प. वे.) ४. कृश-दुर्बल (वि.) जन् (दि. आ. से.) ५. भी (जु. प. अ.), सद (भ्वा. प. अ.) ६. विशु (कर्म.), स्रै (भ्वा. प. अ.) । सं. पुं., शुष्पः, शोषः, शोषणं, शुष्की-षिः (स्त्री.) ।
 सूखा, वि. (सं. शुष्क) निर्जल, निरुदक, अरस, विरस, नीरस, वान २. निष्प्रभ, कान्तिहीन ३. नष्ट, ध्वस्त ४. कुशांग, दुर्बल ५. विशीर्ण, म्लान ६. परुष, कठोर, निर्दय ७. केवल, शुद्ध । सं. पुं., अनादृष्टिः (स्त्री.), अवर्षणं, अवया(य)हः २. नदी, तीर-कुलं ३. निर्जलस्थानं ४. शुष्कतमाशुः ५. (बाल-कानां) कानभेदः, शोषः ६. दौर्बल्यं, कृशांगता ७. मंग, दे. 'मौग' ।
 —पहना, कि. अ., वृष्टि-वर्ष-विघातः-निरोधः वृत् (भ्वा. आ. से.) ।
 —जवाव देना, मु., स्पष्ट निराकृ वा प्रत्याख्या (अ. प. अ.) ।
 सूखा हुआ, वि., दे. 'सूखा' (१५) ।
 सूखकर काँटा होना, मु., अतिकृश-अतिशीण (वि.) जन्, अत्यर्थं क्षि (भ्वा. प. अ.) ।
 सूखे खेत लहलहाना, मु., सुदिवसा आगम् ।
 सूचक, सं. पुं. (सं.) सूची-चिः (स्त्री.), दे. 'सूई' २. दे. 'सूजा' ३. सू(सौ)चिकः, सौचिः, तुत्रभायः, सूभिद, दे. 'दरजी' ४. सूत्रधारः ५. कथकः ६. कुकुरः ७. खलः, विश्वासघातकः ८. गुप्त-चरः-चारः ९. पिशुनः,

कर्णजपः १०. शिक्षकः । वि. (सं.) शापक, बोधक, निर्देशक, निदर्शक ।
 सूचना, सं. स्त्री. (सं.) विज्ञापना, आ-ख्या-पना, विशतिः (स्त्री.) २. दे. 'सूचनापत्र' ३. वार्ता, संदेशः, ज्ञानं, बोधः ।
 —पत्र, सं. पुं. (सं. न.) विज्ञापन-विशति-घोषणा-प्रसिद्धि-पत्रम् ।
 सूचनीय, वि. (सं.) बोधनीय, ज्ञापनीय, ज्ञापयितव्य, आवेदनोप ।
 सूषि, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'सूई' ।
 सूचित, वि. (सं.) ज्ञापित, बोधित, आ-ख्या-पित, कथित, प्रकाशित ।
 सूची, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'सूई' २. अनुक्रमणी-णिका, नामावली-लिः (स्त्री.) परि-गणना-संख्या ।
 —कर्म, सं. पुं. [सं. मन् (न.)] कलाभेदः ।
 —पत्र, सं. पुं. (सं. न.), सूवि(ची) पुस्तक-पत्रकम् ।
 —भेद्य, वि. (सं.) सीवनीच्छेद्य २. घन, निविड (अन्धकार) ।
 सूजन, सं. स्त्री. (हिं. सूजना) शोथः, शोफः, गंडः ।
 सूजना, कि. अ. (फ्रा. सोत्रिश) सशोथ-सशोफ (वि.) संजन (दि. आ. से.), शि (भ्वा. प. से.), स्फाय् (भ्वा. आ. से.) । सं. पुं., दे. 'सूजन' ।
 सूजनी, सं. स्त्री. (फ्रा. सोजनी) कुथभेदः *सूचिनी ।
 सूजा, सं. पुं. (सं. भ्वा >) दे. 'सूआ' २. वेधनी, वेधनिका ।
 सूजाक, सं. पुं. (फ्रा.) भृश-उष्णवातः, रतिजरोगभेदः ।
 सूजा हुआ, वि., शन, स्कीत, सशोफ, शोथयुत ।
 सूजी, सं. स्त्री. (सं. शुचि >) कणिकः ।
 सूस, सं. स्त्री. (हिं. सूसना) कल्पना, उद्भावना २. बोधः, ज्ञानं ३. इष्टिः (स्त्री.) ।
 —बूझ, सं. स्त्री., बुद्धि-मतिः (स्त्री.) ।
 सूशना, कि. अ. (सं. सुध्यानम्) दृश-लक्ष (कर्म.), अवमास् (भ्वा. आ. से.), प्रतिभा (अ. प. अ.) २. (मनसि विचारः) आविर्भू-अथवा उत्पद (दि. आ. अ.) ।
 सूट, सं. पुं. (अ.) आकल-वेशः(षः)-परिधानं २. *समवेशः-पः ।

- केस, सं. पुं. (अं.) देश(प)कोपः ।
सूटा, सं. पुं. (अनु.) (तमासुप्रभृतीनां)
 भ्रम, कर्षः-कृष्टिः (स्त्री.) ।
सूत, सं. पुं. (सं. सूत्रं) तन्तुः, डोरः, शुल्बं
 २. सूत्रं, यज्ञोपवीतं ३. मेखला, कांची ।
 —**धार**, सं. पुं., दे. 'वर्द्ध' ।
सूत, सं. पुं. (सं.) वर्णसंकरजातिभेदः, क्षत्रि-
 यात् ब्राह्मणीसुतः २. सारथिः, यन्त्र, क्षत्र,
 हयकषः ३. चारणः, वदिन्, वैतालिकः ४. पुरा-
 णवक्तु, पौराणिकः । [सूती (स्त्री.)] वि.
 (सं.) प्रेरित २. उत्पन्न ।
 —**पुत्र**, सं. पुं. (सं.) सारथिजः २. सारथिः
 ३. कर्णः ४. कीचकः ।
सूतक, सं. पुं. (सं.) जन्माशौचम् २. मरणा-
 शौचम् ३. सूर्यचन्द्र-ग्रहणं, उपराणः ।
सूतली, सं. स्त्री. (हि. सूत) सूत्रं, डोरः, गुणः,
 रज्जुः (स्त्री.), शुल्बं, शुभ्रम् ।
सूति, सं. स्त्री. (सं.) प्रसूतिः (स्त्री.), प्रसवः,
 जननम् २. सन्ततिः (स्त्री.), सन्तानः ।
 —**गृह**, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'सूतिकागृह' ।
 —**मारुत**, सं. पुं. (सं.) प्रसव-प्रसूति-पीडा-
 वेदना, सूतिदातः ।
सूतिका, सं. स्त्री. (सं.) सणः-नव-प्रसूता,
 दे. 'जचा' ।
 —**गृह**, सं. पुं. (सं. न.) अरिष्टं, सूतिकागारं,
 प्रसव-सूति-गृह-भवनं-आवास-गृहम् ।
सूनी, वि. (हि. सूत) कार्पास, कार्पासिक,
 तूल-तूलक-पिचु-पिचुल, निर्मित-भंडयिन् ।
 —**कपडा**, सं. पुं., कार्पासं, फालं, बादरं,
 तूलावरम् ।
सूत्र, सं. पुं. (सं. न.) तन्तुः, डोरः, शुल्बं,
 शुल्बं २. यज्ञ-सूत्र-उपवीतं ३. प्राचीनमानभेदः
 ४. रेखा-या, लेखा ५. मेखला, कांची ६. नियमः,
 व्यवस्था ७. ससारं संक्षिप्तवचनं ८. कारणं,
 मूलं ९. संभानं, दे. 'सुराम' ।
 —**कंठ**, सं. पुं. (सं.) श्लाघणः २. कपोतः
 ३. खंजनः, खंजरीटः ।
 —**कर्म**, सं. पुं. [सं. भंन् (न.)] दारुकर्मन्,
 तप्तशिल्पं २. लेपकर्मन्, इष्टकान्यासः, वास्तु-
 निर्माणम् ।
 —**कार**, सं. पुं. (सं.) सूत्र-कर्तृ-प्रणेत्र-रचयितृ-
 कृत् ।

- ग्रंथ**, सं. पुं. (सं.) सूत्ररूपेण रचितं पुस्तकम् ।
 —**धार**, सं. पुं. (सं.) नाटकीयकथासूत्रसूचकः
 प्रधानतः, नाट्यशालाव्यवस्थापकः, सूत्रभूत
 २. तक्षन्, रथकारः ३. दन्डः [-धारी (स्त्री.)
 सूत्रधारवर्त्मा] ।
 —**पात**, सं. पुं. (सं.) उपक्रमः, प्र-आरंभः ।
सूथनी, सं. स्त्री., दे. 'सुस्थन' ।
सूद, सं. पुं. (फा.) लाभः, प्राप्तिः (स्त्री.),
 आयः, फलं, अर्थः २. वृद्धिः (स्त्री.), वाङ्मयं,
 कला, कायिका, जारिका, कालिका ।
 —**खाना**, कि. स., वाङ्मयं ग्रहं (क्. प. से.) ।
 —**खोर**, सं. पुं. (फा.) कुशी(शी-पो)दः-दकः,
 कुशीदिन, वाङ्मयिकः, वाङ्मयिन, वृद्ध्याजीवः ।
 —**खोरी**, सं. स्त्री., कुशीदं, कौशीय, वृद्धि-
 जीवनं-जीविका ।
 —**दर सूद**, सं. पुं. (फा.) चक्रवृद्धिः (स्त्री.) ।
 —**पर देना**, कि. स., कुशीदं कृ ।
 —**पर लेना**, कि. स., वृद्ध्या कर्णं ग्रह ।
 —**बटा**, सं. पुं., हानिलामी, आयापायी ।
 वे—, वि., वृद्धि-कला, रहित २. निष्फल,
 व्यर्थ ।
सूद, सं. पुं. (सं.) पाचकः, सूपकारः २. अं-
 जनं, दे. 'भाजी' इ. सारथ्यं ४. अपराधः
 ५. पापम् ।
सूदन, वि. (सं.) नाशक, घातक ।
सूदी, वि. (फा.) सवाङ्मय, सकल (दत्तं
 आदत्तं वा) ।
सूना, वि. (सं. शून्य) निर्जन, विजन, विविक्त,
 जन-हीन-शून्य २. रिक्त, -विरहित, -हीन,
 वशिक, तुच्छ, निर्- । सं. पुं. (सं. न.)
 एकांतः, विविक्त, निर्जनस्थानम् ।
 —**पन**, सं. पुं., शून्यता, विजनता, विविकता
 २. रिक्तता ३. एकांतः ।
सूनु, सं. पुं. (सं.) पुत्रः २. अनुजः ३.
 दौहित्रः ।
सूप, सं. पुं. (सं. शूर्पः-र्षं) प्रल्कोटनं-नी,
 कुल्बः, शूर्पः ।
सूप, सं. पुं. (सं., मि. अं. सूप) पक्व-सिद्ध-
 दाली-लिः (स्त्री.) २. दालीरसः ३. तरसं
 व्यंजनं ४. सूदः ।
 —**कार**, सं. पुं. (सं.) सूदः, औदनिकः,
 औपसिकः, पाच(कृ)कः, भक्ष्यकारः ।

सूक्त, सं. पुं. (अ.) दे. 'उत्त' ।
 सूक्ष्म, सं. पुं. (अ.) यवनसंप्रदायविशेषः ।
 वि., शुद्ध, पवित्र ।
 सूत्रा, सं. पुं. (अ.) प्रांतः, प्रदेशः, देशभागः ।
 सूबेदार, सं. पुं. (अ. + फा.) प्रान्त, अधिपति-
 शासकः-अध्यक्षः, भोगपतिः २. सेनाधिका-
 रिभेदः ।
 सूबेदारी, सं. स्त्री. (अ. + फा.) भोगपतित्वं,
 प्रान्ताधिपतित्वं २-३. प्रान्ताधिपति, पदं-
 कर्मन् (न.) ।
 सूम्, वि. (अ. शम्=अशुभ) कृपण, मितंपच,
 दे. 'वंजूम' ।
 सूम्, सं. पुं. (सं.) जलं, नीरम् २. दुग्धं,
 क्षीरम् ३. गगनं, अकाशः-शम् ।
 सूय, सं. पुं. (सं. पु. न.) सोम-सोमलता,
 निष्पीडनं-संपादनम् २. वशाः, यामः, मेघः,
 मखः ।
 सूर्य, सं. पुं. (सं.) सूर्यः २. अर्कवृक्षः
 ३. पंडितः ।
 सूर्य, सं. पुं., दे. 'शर' ।
 सूर्य, सं. पुं., दे. 'सूर्य' ।
 सूरज, सं. पुं. (सं. सूर्यः, दे.) ।
 सूरत, सं. स्त्री. (फा.) रूपं, आकारः, आकृतिः
 (स्त्री.) २. सौन्दर्यं, छविः (स्त्री.) ३. युक्तिः
 (स्त्री.), उपायः, विधिः ४. दशा, अवस्था ।
 —दिखाना, सु., प्रकटति (ना. धा.), संमुखं-
 खे आया (अ. प. अ.) ।
 —बनाना, सु., वर्षं परिहृत (प्रे.) २. अन्यस्य
 रूपं ग्रहं (क. प. से.)-ग्रहं (जु.) ३. अरुचि
 प्रकटयति (ना. धा.), विडम्बं (जु.) ४. विज्रं
 लिखं (भ्वा. प. से.) ।
 —बिगाडना, सु., वदनं विवर्णं अन् (दि.
 आ. से.) ।
 —बिगाडना, सु., मुखं विरूपयति (जु.), गुरूपं
 विधा (जु. उ. अ.) २. दंष्ट्रं (जु.) ३. अप-
 अक-मन् (प्रे.), अवशा (क. प. अ.) ।
 —शकल, सं. स्त्री. (फा + अ.) आकृतिः (स्त्री.) ।
 सूरदास, सं. पुं. (सं. सूर्यदासः) हिन्दीभाषायाः
 श्रीकृष्णभक्तो महाकविविशेषः २. अधः,
 प्रहाचक्षुष्कः ।
 सूरन, सं. पुं. [सं. सू (श.) रणः] अशौघः, ओलः-
 लः, वातरिः, सूक्ष्मः, बहुसूक्ष्म, कंदः, दे.
 'जर्मीकंद' ।

सूरमा, सं. पुं. (सं. शूरमानिन्) शूरः,
 वीरः, योधः, भटः, विक्रमशीलः ।
 —पत्त, सं. पुं., शौर्यं, वीरत्वं, विक्रमः, साहसम् ।
 सूरमागर, सं. पुं. (सं.) भक्त-सूरदासरचितः
 श्रीकृष्णलीलावर्णनात्मकः काव्यविशेषः ।
 सूरदास, सं. पुं. (फा.) छिद्रं, बिलं, विवरं,
 रंध्रं, दुर्घः (स्त्री.) ।
 —करना, क्रि. स., छिद्रयति (ना. धा.),
 समुत्क (तु. प. से.) ।
 —दार, वि., सच्छिद्र, सरंध्र ।
 सूर्य, सं. पुं. (सं.) सूरः, आदित्यः, भास्करः,
 विन-प्रभा-विभा-दिवा-करः, भास्वत्, विवस्वत्,
 उष्ण-तिरम-चंद्र, रश्मिः, करः, अर्कः, मार्तण्डः,
 मिहिरः, तरणिः, मित्रः, सवित्, अंशु-मरीचि,
 भालिन, सहस्रांशुः, रविः, दिन-अहः, पतिः,
 तपनः, पदिनीवल्लभः, दिनमणिः, सप्त-अश्वः-
 समिः, तापनः, ख-दिवा, मणिः, पतंगः, ग्रहराजः,
 तमोनुदः ।
 —कांत, सं. पुं. (सं.) सूर्य-तपन, मणिः,
 रविकांतः, सूर्योद्भवन्, अग्निगर्भः, अर्क-दीप्त,
 उपलः ।
 —ग्रहण, सं. पुं. (सं. न.) सूर्योपरागः,
 सूर्यग्रहः ।
 —घट्टा, सं. स्त्री. (सं. सूर्यघटा) शंक्रुयंत्रम् ।
 —तनय, सं. पुं. (सं.) सूर्य, पुत्रः-सुतः-नंदनः,
 कर्णः २. दानिः, शनैश्चरः ३. यमः ४. सुग्रीवः
 ५. अधिनी (दि.) ।
 —तनया, सं. स्त्री. (सं.) सूर्यपुत्रो, सूर्यजा,
 यमुना, भानु, जा-तनया ।
 —मंडल, सं. पुं. (सं. न.) उपसूर्यकं, परिधिः,
 परिवेशः, मंडलं, सूर्यकिबन् ।
 —मुखी, सं. स्त्री. (सं.) सूर्यलता, आदित्य-
 भक्ता, वरदा, अर्ककान्ता, भास्करेष्टा, अर्कहिता ।
 —मुखी का फूल, सं. पुं., सूर्यकमलं, वरदा-
 पुष्पम् ।
 —रश्मि, सं. स्त्री. (सं. पुं.) रवि-किरणः-
 पादः-करः ।
 —लोक, सं. पुं. (सं.) सौरभुवनं, लोक-
 विशिषः ।
 —वंश, सं. पुं. (सं.) रविकुलम् ।
 —वंशी, वि. (सं. शिन्) सूर्यवंश्य, रविकुलज ।
 —वार, सं. पुं. (सं.) रवि-आदित्य, वारः-
 वासरः ।

सूर्यास्त

[६४०]

६

—संक्रान्ति, सं. स्त्री. (सं.) रविसंक्रमणम् ।
 प्रातः का—सं. पुं., बाल, रविः-सूर्यः-अर्कः ।
 सूर्यास्त, सं. पुं. (सं.) अस्तः, अस्तमनं,
 निम्लोचः, भानोरस्ताचलगमनं २. दिनांतः,
 सार्यकालः ।
 —होना, कि. अ., सूर्यः अस्तं इ-या (अ. प. अ.)-गम् ।
 सूर्योदय, सं. पुं. (सं.) भानूदयः २. प्रातः-
 कालः ।
 —होना, कि. अ., सूर्यः उद-इ (अ. प. अ.)-
 उद्गाम् ।
 शूल, सं. पुं., देवो 'शूल' ।
 शूली, सं. स्त्री. (सं. शूलः-लं) शूला, तीक्ष्णाग्र-
 श्यूणा २. शूलारोपणं, प्राणदंडप्रकारः ३. वध-
 पाशश्यूणा, दे. 'फाँसी' ४. दंडपाशवधः, कंटं
 उद्बध्य घातः, उद्बन्धनं ५. प्राण-मृत्यु, दंडः ।
 —चढ़ाना या—देना, कि. स., शूले आरुह् (प्रे.)
 आरोपयति २. उद्बध्य व्यापद् (प्रे.) या हन्
 (अ. प. अ.) ।
 —चढ़ाने या—देनावाला, दंडपाशिकः,
 वधकः, *शूलारोपकः ।
 सूस, सूसमार, सं. पुं. (सं. शिशुमारः) दे.
 'सूस' ।
 सूहा, वि. (हिं. सोहना) रक्त, शोण, लोहित ।
 सृजन, सं. पुं. (सं. सर्जनं) उत्पादनं, निर्माणं,
 रचनं २. सृष्टिः-उत्पत्तिः (स्त्री.) ३. मोचनम् ।
 —हार, सं. पुं., सृष्ट, उत्पादकः, विधातृ ।
 सृजना, कि. स. (सं. सर्जनं) सृज् (तु. प. अ.),
 उत्पाद् (प्रे.), विधा (जु. प. अ.) ।
 सृष्टि, सं. स्त्री. (सं.) संसार-उत्पत्तिः (स्त्री.)
 —सर्गः-निर्माण-रचना २. जगत् (न.), संसारः,
 चराचरं वस्तुजातं ३. प्रकृतिः (स्त्री.), दे.
 'कुदरत' ।
 —कर्ता, सं. पुं. (सं. कर्त्) सृष्ट, वेधस्, विधातृ,
 विश्वसृज्, महान् (सब पुं.) २. ईश्वरः ।
 सैंक, सं. पुं. (हिं. सैंकना) उ(ऊ)भ्रम्, त(ता)-
 पः, उष्णः-र्णः, उष्णता २. तापनं, उष्णी-
 करणं, तापेन अंगारेषु वा भर्जनं ३. प्र-स्वेदनं,
 घर्मसैकः, ऊष्मणा तापनं-उष्णीकरणम् ।
 सैंकना, कि. स. (सं. श्रेषणं) ऊष्मणा अंगारैः
 वा भ्रस्ज् (तु. उ. अ.) २. तप (प्रे.), उष्णी
 कृ ३. (उष्णजलादिभिः) सं., सिन् (तु. प. अ.)-सैकं कृ, प्र-, सिद् (प्रे.) ।

ऑख—, मु., सौन्दर्य अवलोक (भ्वा. आ. से.,
 चु. प. से.) ।
 धूप—, मु., आतर्ष सेव् (भ्वा. आ. से.) ।
 सेंटर, सं. पुं. (अं.) केन्द्रं, मध्यविदुः, मध्यः-
 ध्यं २. प्रधान-मुख्य, स्थानम् ।
 सेंट्रल, वि. (अं.) केन्द्रीय, मध्य, मध्यम,
 मध्यस्थ ।
 सेंटिमेन्ट, वि. (अं.) शक्ति ।
 सेंटिमीटर, सं. पुं. (अं.) शतिमानं, शतांश-
 मानम् ।
 सैंत, सं. स्त्री. (सं. संहतिः=किसायत
 २. राशि) >) व्याभावाः-विवियोगाभावः ।
 —मैंत, कि. वि. (हिं. + अनु.) मूल्यं विना
 २. निष्प्रयोजनं, व्यर्थम् ।
 —का, मु., मूल्यं विना लब्ध, निर्मूल्य ।
 —में, मु., व्यर्थ-मूल्यं, विना २. व्यर्थम् ।
 सेंद्रिय, वि. (सं.) सकरण, साक्ष, इन्द्रियवत्,
 सजीव । २. पुंस्त्वयुक्त, मैथुन-सगर्भ, वीर्यवत् ।
 सैंध, सं. स्त्री. [सं. संधिः(पुं.)] संधिला, सुरं-
 (रं)गः-गा, स्नातिकम् ।
 —लगाना या सैंधना, संधिलां कृ अथवा खन्
 (भ्वा. प. से.) ।
 —लगाने वाला, सं. पुं., सुरं(रं)गयुज्, संधि-
 हारकः, संधिलाकारः ।
 सैंधा, सं. पुं. (सं. सैंधवः-वं) शीतशिवं, माषि-
 मधं-बंधं, वाशरं, सिंधु(देश)जं, शिवं, सिद्धं,
 पथ्यम् ।
 सैंधिया, सं. पुं. (हिं. सैंध) दे. 'सैंध लगाने
 वाला' ।
 सैंवई, सं. स्त्री. (सं. सेविका) सृजिका ।
 —पूरना या—बढ़ना, पु., सेविकाः-व्यावृत्त(प्रे.) ।
 सैंहुड, सं. पुं., दे. 'शूर' ।
 से, प्रत्य. (प्रा. सुतो, पुं. हिं. सैंति) करग-
 कारकचिह्नं (प्रायः सुतीया से, 'स' से या
 -पूर्व, -पूर्वकं आदि से अनुवाद करते हैं । उ.,
 आदर से=आदरेण, सादरं, आदरपूर्वकं इ.)
 २. अपादानचिह्नं (प्रायः पंचमी से 'आ' से
 या 'प्रभृति' 'आरभ्य' आदि से अनुवाद करते
 हैं । उ., वृक्ष से गिरा=वृक्षात् अपतत्, जन्म
 से=अजन्म, आजन्मनः, कल से लेकर=क-
 प्रभृति, श आरभ्य इ.) ।
 से, वि. (हिं. 'सा' का बहु.) सम, समान,
 सदृश ।

सैकंड, सं. पुं. (अं.) विकला, विपलं, झगः ।
वि. (अं.) द्वितीय ।

सैक, सं. पुं. (सं.) दे. 'सिचार्ई' ।

सैकंटरी, सं. पुं. (अं.) मंत्रिन, लेखनसचिवः ।

सैकशन, सं. पुं. (अं.) विभागः ।

सैचक, सं. पुं. (सं.) मेषः, बारिदः । वि.
प्रोक्त, सैकृ ।

सैचन, सं. पुं. (सं. न.) अव-आ-सैक-
सैचनं, अभ्युक्षणं, प्रोक्षणम् ।

सैज, सं. स्त्री. (सं. शय्या, दे.) ।

—पाल, सं. पुं. (सं. शय्यापालः) शयना-
गारक्षकः, शय्या-अध्यक्षः-पालः ।

सैठ, सं. पुं. (सं. श्रेष्ठिन) लक्षपतिः, कौटीश्वरः,
धनाढ्यः । २. बणिश्वरः, सार्यवाहः ३. धनिम-
निजनोपाधिः ४. क्षत्रियोपजातिभेदः [सैठानी
(स्त्री.) धनाढ्या, धनाढ्यपरनी] ।

सैतु, सं. पुं. (सं.) वारणः, संवरः, दे. 'पुल' ।

—बंध, सं. पुं. (सं.) वारण संवर, बंधन-
निर्माणं. २. श्रीरामनिर्मितः सैतुविशेषः ।

सेना, कि. म. (सं. सेवनं) अंडाल उत्पद(प्रे.),
अंडेपु उपविश (तु. प. अ.) २. सेव (भ्वा.
आ. से.) ३. उपास् (अ. आ. से.) ।

सेना, सं. स्त्री. (सं.) सैन्यं, बलं, बहिनी,
चमूः (स्त्री.), अनीकं-किनी, पृतना, ध्वजिनी,
वरूथिनी, चक्रं, गुणिमानी ।

—पति, सं. पुं. (सं.) सेनानीः, वाहिनीपतिः,
सेना-वाहः-नायकः-पालः-अध्यक्षः-अधीशः-
नाथः ।

—व्यूह, सं. पुं. (सं.) सैन्यविन्यासः ।

सेनानी, सं. पुं. (सं. स्त्री.) दे. 'सेनापति' ।

सेनेट, सं. स्त्री. (अं.) प्रधानमन्त्र्यस्थापिका
सभा, २. विश्वविद्यालयस्य प्रबन्धकर्त्री सभा
३. परिषद (स्त्री.), सभा ।

सेफ, सं. पुं. (अं.) लोहपेटिका, रक्षामंजूषा ।

सेब, सं. पुं. (फा.) आता-सेवि-सिदितिकः-
सिचिस्तिका, फलं, सेवं, मुष्टिप्रमाणवद्वरम् ।

सेम, सं. स्त्री. (सं. शिबी) शिवा, शिविका । वि.
(स्त्री.) सिवा, सिविका, शिबी-विः (स्त्री.) ।

सेमल, सं. पुं. [सं. शाकमलिः (पुं. स्त्री.)]
शाकमलः-लिनी, तूलवृक्षः, दीर्घद्रुमः, रम्यपुष्पः
दुरारोहा ।

सेर^१, सं. पुं. (सं.) सेटकम् ।

सेर^२, वि. (फा.) वृत्त, संतुष्ट ।

सेराब, वि. (फा.) जलः-प्लुत, अतिमिलन्न २. सित्त,
प्लावित ।

सेरी, सं. स्त्री. (फा.) वृत्तिः (स्त्री.), संतोषः ।

सेरु, सं. पुं. (हि. सिर) सट्वायाः शीर्षपादपट्टौ ।

सेल, सं. पुं. (अं.) जीवकोषः ।

सेल्लोड्री, सं. स्त्री., दे. 'सल्लिया' ।

सेल्लोज, सं. पुं. (अं.) काष्ठौजम् ।

सेवक, सं. पुं. (सं.) परि-अनु-चरः, किंकरः,
मृत्युः, मृतकः, कर्मक(कार)ः अनुजीविन्,
दासः, नियोज्यः, चेटः, चैटकः, डिगरः, परि-
कमिन्-चरकः-जनः-स्कंदः, प्रेष्यः, भुजिष्यः,
लाभ्यकः, शुश्रूषकः २. भक्तः, उपासकः, आरा-
धकः ३. शिष्यः, अन्तेवास्तिन् ।

सेवकाई, सं. स्त्री. (सं. सेवकः >) उप-चार-
चर्या-स्थानं, परिचर्या, शुश्रूषा, सेवकत्वं, कैकर्यं,
सेवा, श्रुतिः (स्त्री.) २. आराधनं, पूजा ।

सेवती, सं. स्त्री. (सं. शैवन्ती) शतपत्री,
कणिका, चारुकोश(सर)रा, महाकुमारी, गंधाढ्या,
अतिमंजुला, तरुणी, भृङ्गेश, शिववल्लभा, राम-
तरुणी ।

सेवन, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'सेवा' २. उपा-
सनं, आराधनं, पूजनं ३. उपयोगः, प्रयोजनं,
उपभोगः ४. सततवासः ।

—करना, कि. स., उपभुज् (ह. आ. अ.), सेव्
(भ्वा. आ. से.) ।

सेवनीय, वि. (सं.) सेव्य, सेवितव्य, सेवा-
परिचर्या-उपचार, अहं-योग्य २. पूज्य, आराध्य
३. उपयोगार्थं, प्रयोजनीय ।

सेवा, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'सेवकाई' (१, २)
३. अश्रयः, शरणम् ।

—करना, कि. स., सेव् (भ्वा. आ. से.),
अनु-उप-परि-चर् (भ्वा. प. से.), उपास्
(अ. आ. से.), उपस्था (भ्वा. आ. अ.),
श्रु (सञ्जन्त. शुश्रूषते) ।

—टहल, सं. स्त्री. (सं. + हिं.) परिचर्या ।

—शुश्रूषा, सं. स्त्री. (सं.) उप-चारः-चर्या ।

सेविका, सं. स्त्री. (सं.) चैटी, दासी, भुजिष्या,
प्रेष्या, कर्मकरी, नियोज्या, परिचारिका ।

सेवित, वि. (सं.) शुश्रूषित, उप-परि-चरित

२. उपसित, पूजित, अपराधित ३. व्यवहृत, प्रयुक्त ४. आश्रित ५. उपभुक्त, कुतोपभोग ।
सेवी, वि. (सं. विन्) सेवक, सेवापरायण
 २. पूजक, आराधक ३. -भोजी -भुज्,
 -भक्षिन्, -पायिन ।
सेवान, सं. पुं. (अं.) बहुदिवससमर्प्य अधि-
 वेशन-संमेलनं २. सत्रं (स्कूल आदि का) ।
 —**कीर्त**, सं. स्त्री. (अं.) दण्डसत्राधिकरणम् ।
 —**जज**, सं. पुं. (अं.) दण्डसत्राधीशः ।
सेहत, सं. स्त्री. (अ.) सुखं, सौख्यं २. रोग-
 मुक्तिः (स्त्री.), दे. 'स्वास्थ्य' ।
 —**खाना**, सं. पुं. (अ. + फा.) *शौचागारम् ।
सेहरा, सं. पुं. (सं. शेषरः) वरमुखावर्लवि-
 मालावली-स्रजालं २. वर-परिणेतृ, -मुकुटं
 ३. वरगुणवर्णनात्मकं गीतम् ।
 —**बँधाई**, सं. स्त्री., शेषरबंधनशुल्कम् ।
सेही, सं. स्त्री., दे. 'साही' ।
सैंडफ्लाई फ्रीवर, सं. पुं. (अं.) बालकामक्षि-
 काश्वरः ।
सैंतालीस, वि. (सं. सप्तचत्वारिंशत्) सं. पुं.,
 उक्ता संख्या, तद्बोधकांकी(४७) च ।
सैंतालीसवाँ, वि. (हिं. सैंतालीस) सप्तचत्वारिं-
 शत्तमः-मीमं, सप्तचत्वारिंशः-शीशं (पुं.
 स्त्री. न.) ।
सैंतीस, वि. (सं. सप्तत्रिंशत्) सं. पुं., उक्ता
 संख्या, तद्बोधकांकी(३७) च ।
सैंतीसवाँ, वि. (हिं. सैंतीस) सप्तत्रिंशत्तमः-
 मीमं, सप्तत्रिंशः-शीशं (पुं. स्त्री. न.) ।
सैंधव, सं. पुं. (सं.) (सिंधोरदूरभवः) घोटकः,
 सिंधुदेशीयोऽथः २. दे. 'सैंधा' ३. जयद्रथः
 ४. सिंधुदेशवासिन् । वि. (सं.) सिंधुदेशीय
 २. समुद्रय, समुद्रीय, सामुद्रिक ।
सैंकड़ा, सं. पुं. (सं. शतकांडः-डं) शतं, शतकं
 २. शतवस्तु, -समुदायः-समूहः-समुच्चयः । कि.
 वि., प्रतिशतम् ।
सैंकड़ों, वि., परःशत ।
सैंकलगर, सं. पुं. (अ. सैंकल + गर) शस्त्र-
 मार्जः-भाजकः-तैजकः ।
सैंडांतिक, सं. पुं. (सं.) सिद्धांत-विद्-ज्ञः,
 तत्त्वज्ञः, राडान्तिकः २. तार्थिकः । वि. (सं.)
 सिद्धान्त-राडान्त-तत्त्व, संबंधिन् ।
सैन, सं. स्त्री. (सं. संहपनं >) संकेतः, संज्ञा,
 शक्तिं २. लक्षणं, चिह्नम् ।

—**करना**, कि. स., (शीर्षहस्तादिभिः) संज्ञां
 संकेतं वा कृ-दा ।
 —**मारना**, कि. स., सहावं अवलोक (बु.)
 २. निमेषेण संकेतं कृ ।
सेना, सं. स्त्री., दे. 'सेना' ।
सेनापत्य, सं. पुं. (सं. न.) सेनापति-सेना-
 ध्यक्ष-कार्य-पदम्, सेनापतित्वम् । वि. (सं.)
 सेनापति, सम्बन्धिन्-विषयक ।
सेनिक, सं. पुं. (सं.) सेनाचरः, योधः, भटः,
 सैन्यः, आशुधिकः, योद्धृ २. रक्षापुरुषः, दे.
 'सतरी' । वि. (सं.) सांघातिक, सामरिक,
 आशुधिक, क्षात्र[-त्री (स्त्री.)] ।
 —**वाद**, सं. पुं. (सं.) समरसमर्षकसिद्धान्तः,
 युद्धानुमोदकवादः ।
सैन्टिरी, वि. (अं.) स्वास्थ्य-आरोग्य-कर-
 रक्षक-विषयक ।
सैन्टिशन, सं. पुं. (अं.) आरोग्य-स्वास्थ्य-
 रक्षा-रक्षणम् ।
सैन्थ, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'सेना' ।
सैरधी, सं. स्त्री. (सं.) स्वतंत्रा शिवपत्नीविने
 २. अंतःपुर, परिचारिका-दासी ३. द्रौपदी ।
सैर, सं. स्त्री. (फा.) सुख, पर्यटनं, परि-
 भ्रमणं, विहारः, विहरणं, विचरणम् ।
 —**करना**, कि. अ., सुखं पर्यटं विचर् (भ्वा.
 प. से.), विहृ (भ्वा. प. क.), भ्रम् (भ्वा.
 प. से.) ।
 —**गाह**, सं. स्त्री. (फा.) भ्रमण-पर्यटन-स्थानं-
 स्थली ।
 —**सपाटा**, सं. पुं., दे. 'सैर' ।
सैलानी, वि. (फा. सैर) पर्यटन-भ्रमण-
 विहरण-शील, पर्यटक, यथेष्टविहारिन् २.
 आनंदिन्, विनोदिन्, प्रमोदिन्, उल्लासिन् ।
सैलाब, सं. पुं. (फा.) जल-प्लावनं-बृंहणं-
 विप्लवः-प्रलयः-आप्लावः २. महा-प्रवाहः-
 ओषः ।
सैं, प्रत्य., दे. 'से' ।
सैंचर मसक, सं. पुं. (सं. सौवचलं + फा.)
 सौवचलं, रुचकं, रुच्यं, अक्षं, कृष्णलवणं,
 तिलकं, दृषगंधकम् ।
सैंटा, सं. पुं. (सं. शुंडः >) लकुटः-डः, स्थूक-
 यष्टिः (स्त्री.)-दण्डः २. मुसलः-लम् ।
 —**बरदार**, सं. पुं. (हिं. + फा.) दंड-धरः-
 भृद् ।

स्रोत, सं. स्त्री. [सं. श्रुती-ठिः (स्त्री.)] महा-
विश्व, औषधं, विश्वभेषजं, कटुद्रव्यः, कफारिः ।
स्रोधा, वि. (सं. सुगन्ध) सुगन्धित, दे. ।
स्रोपना, क्रि. स., दे. 'स्रोपना' ।
स्रोह, सं. स्त्री., दे. 'स्रोह' ।
स्रो, सर्व (सं. सः) देखो 'वह' । अव्य., अतः,
अत-एव, अनेन कारणेन, अस्मात् कारणात् ।
स्रोऽहं, वाक्यांश (सं. सः + अहं) अहं ब्रह्मा-
स्मि (वे.) ।
स्रोभा, सं. पुं. (सं. शताब्दा) सित-भक्ति-
चंद्रा, शत-अक्षी-पुष्पिका, मधुरा, मधुरिका,
माधवी, मिशीशिः [(स्त्री.) शाकभेदः] ।
स्रोहं, सर्व., दे. 'वहो' ।
स्रोखना, क्रि. स., दे. 'सुखना' ।
स्रोघ्नता, सं. पुं., दे. 'स्थाहीचूस' ।
सोगंव, सं. स्त्री., दे. 'सौगंद' ।
सोग, सं. पुं. (सं. शोकः) (मृत्युजनितः)
परितापः, श्रुचा, दुःखम् ।
—सनाना, मु., शोकविद्वानि धृ (तु.), शुच्
(स्वा. प. से.) ।
सोख, सं. पुं. (सं. शोचन्) शोकः, श्रुचाञ्
(स्त्री.), विषादः २. विचारः, विमर्शः, विचा-
रणं-या ३. चिन्ता, रणरणकः, उत्कलिका,
व्यमता ४. पश्चात्-अनु, तापः ।
—विचार, सं. पुं. (ठि. + सं.) विचारः-रणा,
विमर्शः, आलोचना, समीक्षा, विमर्शः, विवे-
चन-ना ।
सोचना, क्रि. अ. (सं. शोचन्) विचर् (प्रे.),
विशृश् (तु. प. अ.), आपर्षासमा-लोच्
(तु.) २. चिन्तां कृ, चिन्त (तु.) ३. शुच्
(स्वा. प. से.), दे. 'विचारना' ।
सोच्छ्वास, वि. (सं.) प्रसन्न, प्रहृष्ट २. शिथिल,
श्लथ ३. उच्छ्वासानुक्त ४. सत्वरप्राण । अव्य.
(सं. न.) सदीर्घश्वासं, निःश्वासापूर्वकं, सनिः-
श्वासात् ।
सोज, सं. स्त्री. (हि. सृजना) शोधः, शोकः,
दे. 'सृजन्' ।
सोऽज्ञा, सं. स्त्री. (का.) पाकः, प्रदाहः
२. शोधः ।
सोटा, सं. पुं. दे. 'सोटा' ।
सोहा, सं. पुं. (अं.) विहारः ।
—बाहर, सं. पुं. (अं.) विहारजलम् ।
खाने का—, *भक्ष्यविहारः ।

धोने का—, *धावनविहारः ।

सोडियम, सं. पुं. (अं.) क्षारातु (न.),
क्षारजम् ।
सोत-ता, सं. पुं. (सं.) श्वीतस् (न.) उत्सः,
वारिप्रवाहः, प्रखवणं, निर-,सरः २. नदी-
शाखा, कुल्या ।
सोता, वि. (सं.) सुप्त, शयान, निद्रित ।
सोते-जागते, मु., अहनिर्शं, दिवानिर्शं, प्रति-
क्षणं, सदा ।
सोदर, सं. पुं. (सं.) सहोदरः, सोदर्यः, भ्रातृ ।
सोदरा, सं. स्त्री. (सं.) सहोदरा, सोदर्या,
स्वसृ (स्त्री.) ।
सोन, सं. पुं. (सं. शोणः) हिरण्यबाहः-दुः,
शोणभद्रः, शोणा (नदविशेषः) ।
सोनजूही, सं. स्त्री. (सं. स्वर्णयूधी) हरिणी,
पोतिका, हेमपुष्पिका, हेमा, स्वर्णयूथिका ।
सोना, सं. पुं. (सं. सुवर्ण) स्वर्णं, कनकं,
हिरण्यं, हेमन् (न.), हाटकं, तपनीयं, शात-
कुमं, चामीकरं, जातरूपं, महारजतं, काचनं,
रुक्मं, कार्तस्वरं, जांबूनदं, अष्टापदं, भद्रं,
कर्तुं(पुं)रं, द्रविणं, पिशरं, कलधौतं, लोहवरं,
कल्याणं, मनोहरं, भास्करं, दीप्तं, मंगल्यं,
निष्कं, अग्निशिखं, २. महार्ष-बहुमूल्यं, बस्तु
(न.)-द्रव्यम् ।
—(ने)का तार, सं. पुं., कनकसूत्रम् ।
—(ने)का पानी, सं. पुं., सुवर्णलेपः ।
—(ने)का वक्र, सं. पुं., सुवर्णपत्रम् ।
गहने का—, सं. पुं., शृंगिः, शृंगी, शृङ्गी-
कनकम् ।
सोना, क्रि. अ. (सं. शयन्) सं, शी (अ.
आ. से.), निद्रा (अ. प. अ.), संविश् (तु.
प. अ.), स्वप् (अ. प. अ.) २. (अंगादि)
निश्चेष्ट-निस्तम्भ-निश्चल (वि.) शू ३. दे.
'भरना' । सं. पुं., शयनं, निद्रा, गुडका, तंद्रा,
तामसी, प्रमीला, संवेशः, सुप्तं-सिः (स्त्री.),
स्वप्नः, स्वापः, शी ।
सोनामाखी, सं. स्त्री. (सं. स्वर्णमाक्षिकं)
माक्षिकं, मधु-पातुः, तापिजं (उपपातुभेदः) ।
सोने का कमरा, सं. पुं., स्वप्न-गृह-निकेतनं,
शयन-गृह-मदिरं-आगारम् ।
सोने योग्य, वि., शयितव्य, शेष, शयनीय ।
सोनेवाला, सं. पुं., सुषुप्तः, शिशयिषुः,
निद्रालुः, शयालुः, तंद्रालुः ।

सोया

[३४४]

सौफ

सोया हुआ, वि., निद्रित, निद्राण, शयित, सुप्त, शयान, निद्रामग्न ।

सोप, सं. पुं. (अं.) दे. 'साबुज' ।

सोपान, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'सीढ़ी' ।

सोका, सं. पुं. (अं.) शय्या, पर्यकः, शयनीयम्, *उपवेश्यः, *आस्यः ।

सोम, सं. पुं. (सं.) सुधांशुः, चंद्रः, दे. 'चौद' ।

२. सोमवारः ३. स्वर्गः ४. कर्पूरः ५. सोमलता ।

—कांत, सं. पुं. (सं.) चंद्रकांतः ।

—ग्रह, सं. पुं. (सं.) चंद्रग्रहणम् ।

—देव, सं. पुं. (सं.) सोमदेवता २. चंद्रदेवता ३. कथासरित्सागरस्थ रचयितृ ।

—नाथ, सं. पुं. (सं.) ज्योतिर्लिङ्गविशेषः २. प्राचीनगरविशेषः ।

—पान, सं. पुं. (सं. न.) सोमपीतः (स्त्री.) ।

—पाथी, वि. (सं. यिन्) सोम, पत्न्याः पीतिन् ।

—पुत्र, सं. पुं. (सं.) सोमपुत्रः, बुधग्रहः ।

—यज्ञ, सं. पुं. (सं.) सोम, यागः मखः क्रतुः ।

—रोग, सं. पुं. (सं.) स्त्रीरोगभेदः २. बहुभूजता, मूत्रातिसारः ।

—लता, सं. स्त्री. (सं.) सोमवल्ली, सोमा, क्षीरी, द्विजप्रिया, गुल्मयक्ष, चल्ली, धनुर्लता, सोमक्षीरा, यक्षश्रेष्ठा २. गुडूची ३. माक्षी ।

—वंश, सं. पुं. (सं.) चंद्रवंशः २. युधिष्ठिरः ।

—वती, सं. स्त्री. (सं.) सोमवती अमावस्या ।

—वल्ली, सं. स्त्री. (सं.) सोमलता २. गुडूची ३. सोमराजी ४. पातालगरुडी ५. माक्षी ६. सुदर्शना ।

—वार, सं. पुं. (सं.) सोम-चंद्र-वारः वासर-दिनम् ।

सोरठ, सं. पुं. (सं. सौराष्ट्रः) प्रान्तविशेषः (गुजरात तथा दक्षिणी काठियावाड़) २. सौराष्ट्र-राजधानी (सुरत नगर) ३. रामभेदः ।

सोरठा, सं. पुं. (हिं. सोरठ) हिन्दीकवितायाः छंदोभेदः ।

सोल, वि. (?) शीत, शीतल, शिशिर २. तिक्ताम्लकषाय । सं. पुं. (?) शीतं, शैत्यं ३. तिक्ताम्लकषायः स्वादः ।

सोल, सं. स्त्री. (अं.) आत्मन्, जीवः, चेतनः ।

सोल, सं. पुं. (अं.) मादन्तलम् २. पाण्डु-कातलम् ।

सोलह, वि. (सं. षोडशन्) षडधिकदश ।

सं. पुं., उक्ता संख्या, तद्बोधकांकी (१६) च ।

सोलहो आने, सु., साकस्थेन, अशेषतः, पूर्वतया, सामस्थेन ।

सोलहवा, वि. (हिं. सोलह) षोडशः-शीर्ष (पुं. स्त्री. न.) ।

सोशल, वि. (अं.) सामाजिक, समाजविषयक ।

सोशलिज्म, सं. पुं. (अं.) समाजवादः ।

सोशलिस्ट, सं. पुं. (अं.) समाजवादिन् ।

सोसनी, (वि. (फ्रा. सोसन) रक्तनील ।

सोसाह(य)टी, सं. स्त्री. (अं.) समाजः, सभा, गोष्ठी २. संगतिः (स्त्री), संसर्गः ।

सोह-सोहंगम, वेदान्त-वाक्य, दे. 'सोह' ।

सोहन, वि. (सं.) शोभन, मनोहर, दे. 'सुंदर' । सं. पुं., नायकः, सुन्दरपुरुषः ।

—चिद्विद्या, सं. स्त्री., *शोभनचटकः (का स्त्री.) ।

—पपड़ी, सं. स्त्री., *शोभनपपड़ी ।

—हलवा, सं. पुं., *शोभनसंवावः ।

सोहना, कि. अ. (सं. शोभनं) शुभ-विराज (भ्वा. आ. से.), ललित-सुंदर-शोभन (वि.)

शृत् (भ्वा. आ. से.), विभा (भ. प. अ.) । वि., शोभन, रम्य, सुंदर, मनोह ।

सोहना, कि. स. (सं. शोभनं) कुतूष्णान्जलम् (चु.), क्षेत्रं कुतूष्णरहितं कृ ।

सोहबत, सं. स्त्री. (अ.) संगतिः (स्त्री.), संसर्गः २. मैथुनम् ।

सोह(हि)ला, सं. पुं. (हिं. सोहना) *पुत्र-जन्मोत्सवगीतं २. मंगल्य-सांगलिक-शुभ-गीतं ३. देवतास्तोत्रम् ।

सोहिनी, वि. स्त्री. (सं. शोभिनी) सुंदरी, मनोरमा, रम्या, सुरूपा । सं. स्त्री., रागिणी-भेदः ।

सौंदर्य, सं. पुं. (सं. न.) रमणीयता, दे. 'सुंदरता' ।

सौपना, कि. स. (सं. समर्पणं) न्यस्त (दि. प. से.), निष्पि (तु. प. अ.), सम्-ना (प्रे. समर्पयति), प्रतिपद-निविश (प्रे.) । सं. पुं., न्यास्तः, निक्षेपः, समर्पणं, प्रतिपादनम् ।

सौपने योग्य, वि., निक्षेप्य, समर्पणीय ।

सौपने वाला, सं. पुं., निक्षेप्य, समर्पयितृ ।

सौपा हुआ, वि., निक्षिप्त, न्यस्त, समर्पित ।

सौफ, सं. स्त्री. (सं. शतपुष्पा) मयुरिका,

माधवी, माधुरी, मधुरा, सुगंधा, शतपत्रिका, अति-मित, चत्रा ।

—का अक्र, सं. पुं., शतपुष्पासवः ।

सौह, सं. स्त्री., दे. 'सौगंद' ।

सौ, वि. (सं. घनं, नित्य न.) दशगुणितदश-संख्या । सं. पुं., उक्त संख्या, तदबोधकांकाः (१००) च ।

—बात की एक बात, सु., सारः, तात्पर्य, सारांशः ।

—बिस्वै, सु., निश्चयेन, अवश्यं, निःसंशयम् ।

सौवां, वि., शततमः-सोमम् ।

सौकन, सं. स्त्री., दे. 'सौत' ।

सौकर्य, सं. पुं. (सं. न.) सुकरता, सुसाध्यता २. दे. 'सुभीता' ।

सौकुमार्य, सं. पुं. (सं. न.) कोमलता, दे. 'सुकुमारता' २. यौवनं ३. काव्यगुणभेदः ।

सौखिक, वि. (सं.) सुखेच्छुक, सुखेभिन्, सुखकामिन् २. सुख-आनन्द-मोह, दायक-प्रद ३. सुख-आनन्द, विषयक-सम्बन्धक ।

सौख्य, सं. पुं. (सं. न.) आनन्दः, सुखं, दे. ।

सौगंद, सं. स्त्री. (क.) शृण्वः, समयः, प्रतिज्ञा, वचनं, वाचा, संकल्पः ।

—खाना, क्रि. अ., शप् (भ्वा. दि. उ. अ.), सशपथं वद् (भ्वा. प. से.) ।

—देना, क्रि. स., शप (प्रे.), सशपथं वच् (प्रे.) ।

सौगंध, सं. पुं. (सं. न.) सुगंधः, दे. २. गंधिकः, दे. 'गंधी' ३. कृत्तणम् । सं. स्त्री., दे. 'सौगंद' ।

वि. (सं.) सुगंधित दे. ।

सौगंधिक, वि. (सं.) सुगंधि, सुगंधित, सुवास, सुरभि । सं. पुं. (सं.) गंधिकः, गंध-विक्रयिन्-उपजीविन्-वणिज् । २. गंध(धि)कः, गंधादमन् । (सं. न.) नील, कमल-उत्पलं, कुबलयम् । ३. पुण्डरीकं, सिताम्भोजं, श्वेत-कमलम् । ४. सुगन्धिघासभेदः ५. पञ्चरागः ।

सौगात, सं. स्त्री. (तु.) उपहारः, उपाचनं, प्राभृत्-तर्कं २. दुर्लभवस्तु (न.) ।

सौजन्य, सं. पुं. (सं. न.) सज्जनता, सुजनता, दे. ।

सौत, सौत(ति)न, सं. स्त्री. (सं. सपत्नी) ममानपत्निका ।

सौतिया बाह, सं. पुं., सापत्न्येभ्यां २. साप-त्यं, ईभ्यां ।

सौतेला, वि. (हिं. सौत) सापत्न [—नी (स्त्री.)] सपत्नी, -ज-संबन्धिन ।

—पिता, सं. पुं., वि. मातृपतिः ।

—पुत्र, सं. पुं., सपत्नीपुत्रः, सापत्न्यः ।

—बच्चा, सं. पुं., पर, ज्ञान-अपत्यम् ।

—भाष्टे, सं. पुं., वैमात्रः, वैमात्रेयः, विमातृजः ।

सौतेली पुत्री, सं. स्त्री., सपत्नी, पुत्री-दुहितृ (स्त्री.) ।

सौतेली बहन, सं. स्त्री., वैमात्री, वैमात्रेयी, विमातृजा ।

सौतेली माता, सं. स्त्री., विमातृ (स्त्री.) ।

सौदा, सं. पुं. (अ.) भांडं, भांडानि (वद्.), पण्यं, क्रयविक्रयवस्तु (न.) २. आदान-प्रदानं, दानदानं, व्यवहारः ३. क्रयविक्रयी (दि.), नियमः, वाणिज्यं, व्यापारः, वणिक्कर्म (न.) ४. क्रय-विक्रय-प्रतिज्ञा ।

—करना, क्रि. अ., क्रयविक्रयं कृ, वाणिज्यं कृ, पण् (भ्वा. अ. अ.) ।

—सुलुक, सं. पुं., दे. 'सौदा' (१) ।

—सूत, सं. पुं., व्यवहारः ।

सौदा, सं. पुं. (अ.) उन्मादः, दे. 'पागलपन' ।

सौदाई, सं. पुं. (अ. सौदा) उन्मत्तः, दे. 'पागल' ।

सौदागर, सं. पुं. (का.) नैगमः, क्रयविक्रयिकः, पण्याजीवः, वणिज्, वाणिज्यकारिन्, सार्ध-वाहः, सार्थिकः ।

—बच्चा, सं. पुं. (क. + हिं.) वणिज् २. वणिक्पुत्रः ।

सौदागरी, सं. स्त्री. (का.) दे. 'सौदा' (२) ।

सौदान(मि)नी, सं. स्त्री. (सं.) सौदानी, जपला, जंचला, तडित्-विद्युत् (स्त्री.), दे. 'विजली' ।

सौध, सं. पुं. (सं. न.) हर्म्यं, प्रासादः, भवनं, अट्टगलिक ।

सौस्तिक, सं. पुं. (सं. न.) निशासुक्लं, रात्रिरणं, रात्रि-निशा, मारणं २. महाभारतीयपर्वविशेषः ।

सौभागिनी, सं. स्त्री., दे. 'सुहागिन' ।

सौभाग्य, सं. पुं. (सं. न.) सु, भाग्य-भाग्येय-दैवं-दिष्ट-दिष्टिः (स्त्री.)-निवृत्तिः (स्त्री.) २. सुखं, आनन्दः ३. कल्याणं, कुशलं ४. दे.

'सुहाग' (१) ५. ऐश्वर्यं, विभवः ६. सौन्दर्यं ७. सुमेच्छा ८. साकल्यं ९. सिद्धम् ।

—शुटी, सं. स्त्री. (सं.) मृतिकारोगनाशकः
पाकभेदः (आद्यु.) ।

सौभाग्यवती, वि. स्त्री. (सं.) सधवा, दे.
'सुहागिन' २. भाग्यशालिनी ।

सौभाग्यवान्, वि. पुं. (सं. वद) महाभाग,
सुभाग्य, सुभग, पुण्यवत्, धन्य २. सुखी
संपन्नश्च ।

सौमित्रि, सं. पुं. (सं.) सौमित्रः, लक्ष्मणः ।

सौम्य, वि. (सं.) सोमसंबन्धिन् २. सौमिक,
चान्द्र ३. शीतस्निग्ध ४. नम्र, सुशील, शांत
५. शुभ, मंगल्य ६. प्रसन्न, प्रहृष्ट ७. प्रियदर्शन,
सुन्दर ८. उज्वल, आनुर ।

—दर्शन, वि. (सं.) प्रियदर्शन, सुभगाकार ।

—वीर, सं. पुं. (सं.) बुधवासरः ।

सौम्यता, सं. स्त्री. (सं.) शीतलता, शीत-
स्निग्धता २. सुशीलता, साधुत्वं ३. सौन्दर्य
४. उदारता, परीपकारिता ।

सौर^२, वि. (सं.) सौर्य, सूर्य-विषयक-संबन्धिन्
२. भानुज ३. सूर्यानुसारिन् ।

—मास, सं. पुं. (सं.) सूर्येकराशिभोगावच्छि-
न्नकालः ।

—संवत्सर, सं. पुं. (सं.) सूर्यस्य द्वादशराशि-
भोगावच्छिन्नकालः ।

सौर^२, सं. स्त्री. (देश० सोद्) दे. 'चादर' ।

सौरथ, सं. पुं. (सं.) वीरः, भटः, योधः,
योद्धृ ।

सौरभ, सं. पुं. (सं. न.) सुगंधः, दे. २. कुंकुमं,
दे. 'केसर' ३. आम्रम् ।

—वाह, सं. पुं. (सं.) वायुः, पवनः ।

सौरभित, वि. (सं.) सुरभि, सुगन्धित दे. ।

सौराष्ट्र, सं. पुं. (सं.) शान्तिविशेषः (सुत्रराज-
काठियावाड) ।

सौरी, सं. स्त्री. (सं. सूर्यकगारं) दे. 'मृतिका-
गृह' ।

सौष्टव, सं. पुं. (सं. न.) सौन्दर्य, सुभमा,
लावण्य २. लाघवं, क्षिप्रता ३. गुण, अतिशयः-
उत्कर्षः, वैशिष्ट्यं ४. उपयुक्तता, उपयोगिता ।

सौहृद्, सं. स्त्री. (सं. शपथः) दे. 'सौगंद' ।

सौहार्जना, सं. पुं. (सं. शोभाजनः) तीक्ष्ण-
गंधः, सु, तीक्ष्णः, रुचिरांजनः ।

सौहार्द, सं. पुं. (सं. न.) सल्लयं, सातपदीनं,
सौहार्थं, अजयं दे. 'मित्रता' ।

स्कंद, सं. पुं. (सं.) कार्तिकेयः, सेनानीः,
शिखिवाहनः, पाण्मातुरः, कुमारः, शक्तिधरः,
स्वामिन्, द्वादशलोचनः ।

—पुराण, सं. पुं. (सं. न.) पुराणग्रन्थविशेषः ।

स्कंध, सं. पुं. (सं.) अंसः, मुत्र-शिरस् (न.)-
मूलं, दोःशिरस्, कत्सवरं २. प्रकांडः-ई, दंडः,
स्कंधस् (न.), प्रकांडकः, दे. 'तना' ३. शाखा
४. समूहः ५. सौम्यव्यूहः ६. ग्रन्थविभागः,
खंड-ई, पर्वन् (न.) ।

स्कंधावार, सं. पुं. (सं.) शिवि(वि) रं, कटकः,
२. सेना, आवासः-स्थानं ३. राजधानी ४. सेना
५. यात्रि-वणिष्, निवेशः ।

स्कर्वी, सं. स्त्री. (अं.) शीतारः ।

स्कारलेटिना, सं. पुं. (अं.) आरक्तज्वरः, उदर्यः,
लौहितज्वरः ।

स्कार्लर, सं. पुं. (अं.) छात्रः, विद्यार्थिन्
२. सुविद्वत्, भट्टः, प्रकांडपंडितः ।

—शिप, सं. पुं. (अं.) छात्रवृत्तिः (स्त्री.)
२. पांडित्यं, विद्वता ।

स्कीम, सं. स्त्री. (अं.) योजना, आयोजनं,
व्यवस्थितविचारः, प्रयोगः, युक्तिः (स्त्री.) ।

स्कूल, सं. पुं. (अं.) विद्यालयः, पाठशाला ।

—मास्टर, सं. पुं. (अं.) शिक्षकः, अध्यापकः ।

स्खलन, सं. पुं. (सं. न.) पतनं, भ्रंशः, लंसः,
लंसनं २. सन्मार्गात् व्युत्तिः (स्त्री.)-व्यवन्-
विचलनं-भ्रंशः, उन्मार्गांगनम् ।

स्खलित, वि. (सं.) पतित, व्युत्त, भ्रष्ट,
२. हस्त, मुद्दु च्छत्त ३. विचलित ४. भ्रंशं
५. उन्मार्गागत ।

स्टॉप, सं. पुं. (अं. स्टैप) (आधिकरणिकं)
सुद्राद्धितपत्रं २. पत्रशुल्कमुद्रा, दे. 'डाक का
टिकट' ३. मुद्रा ४. मुद्रांकः ।

स्टार्च, सं. पुं. (अं.) श्वेतसारः ।

स्टीम, सं. स्त्री. (अं.) वाष्पः ।

—इंजन, सं. पुं. (अं.) वाष्पयंत्रम् ।

स्टीमर, सं. पुं. (अं.) वाष्पपीठः ।

स्टूल, सं. पुं. (अं.) *उच्चपीठम् ।

स्टेज, सं. पुं. (अं.) रंग-मंचः-भूमिः (स्त्री.)-
पीठं २. मंचः ।

—मंचेन्द्र, सं. पुं. (अं.) रंगमंचप्रबंधकः,
सूत्रधारः ।

स्टेथिस्कोप, सं. स्त्री. (अं.) *उरःपरीक्षणी ।

स्टेशन, सं. पुं. (अं.) (वाष्पशक्तयंत्रः) स्थानम् ।

स्तेसनरी

[६४७]

श्री

स्तेसनरी, सं. स्त्री. (अं.) लेखनसामग्री ।
 स्टेड, सं. पुं. (अं.) आधारः, स्थापकम् ।
 स्तंभ, सं. पुं. (सं.) स्थूणः, स्थाणुः, यूपः,
 मेढिः-धिः २. तहरकंधः, प्रकांडः-डं ३. सात्त्विक-
 भावभेदः ४. प्रतिबंधः २. मूर्च्छा, जाडयन् ।
 स्तंभक, वि. (सं.) स्तंभकर, रोधक २. जाडय-
 कर-जनक ३. वीर्यरोधक ४. मलावष्टंभक ।
 स्तंभन, सं. पुं. (सं. न.) अव, रोधः-रोधनं,
 निवारणं २. शुक्रपातविलंबः ३. स्तंभकं
 (औषधं) ४. जडी-निहन्नेष्टी, करणं ५. (सं. पुं.)
 मदनबाणविशेषः ।
 स्तंभित, वि. (सं.) अव, रुद्ध, निवारित
 २. जडी, भूत-कृत, निस्तम्भ ३. स्थित,
 विरत ।
 स्तनंधय, सं. पुं. स्त्री. (सं.) उत्तानशयः-या,
 द्विभः-भ्रा, स्तनपः-पा, स्तनंधयः-या-यी, स्तन-
 पायकः (पायिका)-पायिन् (-पायिनी) ।
 स्तन, सं. पुं. (सं.) कु(कृ)वः, उरो-उरसि, जः,
 वक्षो, जः-रहः ।
 —चूचुक, सं. पुं. (सं. न.) स्तन, मुख-अग्र-
 शिखा-मृतं, मेनकम् ।
 —पान, सं. पुं. (सं.) स्तन्य-धीतिः (स्त्री.) ।
 —पायी, सं. पुं., दे. 'स्तनंधय' ।
 स्तन्य, सं. पुं. (सं. न.) क्षीरं, दुग्धम् ।
 स्तब्ध, वि. (सं.) निश्चली-जडी, भूत, निश्चेष्ट,
 सुप्त, निस्स्यंद २. दृढ निरुद्ध ३. दृढ़ स्थिर
 ४. मंद, अलस ५. दुराग्रहिन् ६. दृप्त ।
 —दृष्टि, वि. (सं.) स्तब्धनयन, निनिमेष ।
 —बाहु, वि. (सं.) जड-निस्तब्ध, निश्चेष्ट,
 हस्त-कर-बाहु-मुञ्ज ।
 —मत्ति, वि. (सं.) मंदबुद्धि, जड ।
 स्तब्धता, सं. स्त्री. (सं.) जडता, स्पंदन-हीनता
 २. स्थिरता, दृढ़ता ३. बधिरता, अवणशून्यता ।
 स्तर, सं. पुं. (सं.) दे. 'परत' २. शय्या,
 आस्तरः, तल्पः-ल्पम् ।
 स्तव, सं. पुं. (सं.) स्तावः, स्तुतिः (स्त्री.)
 दे. १. स्तोत्रं ३. ईश्वरप्रार्थना ।
 स्तवक, सं. पुं. (सं.) पुण्य-कुसुम, सुच्छः-
 स्तवकः २. राशिः अध्यायः, परिच्छेदः
 ४. स्तवः ५. स्तोत्र ।
 स्तवन, सं. पुं. (सं. न.) युगकीर्तनं, स्तुतिः
 (स्त्री.) ।

स्तुत, वि. (सं.) प्रशंसित, प्रशस्त, शोधित,
 इंडित, कीर्तित ।
 स्तुति, सं. स्त्री. (सं.) स्त(स्ता)वः, युग, वर्णनं-
 कीर्तनं-कथनं, इलाहा, नुतिः (स्त्री.), ईडा,
 प्रशंसा दे. ।
 —करना, क्रि. स., तु (अ. प. से.), स्तु
 (अ. प. अ.), ईड् (अ. आ. से.), इलाह्
 (भ्वा. आ. से.), प्रशंस् (भ्वा. प. से.) ।
 —पाठक, सं. पुं. (सं.) मागधः, चारणः,
 बैतालिकः ।
 स्तुत्य, वि. (सं.) नम्य, नाम्य, नवितव्य,
 प्रशस्य, प्रशंसनीय, स्तोतव्य, स्तवनीय, प्रशं-
 साह ।
 स्तूप, सं. पुं. (सं.) मृदादि, -कूटः-राशिः
 २. बौद्धचैत्यः ।
 स्तेन, सं. पुं. (सं.) चौरः, तस्करः ।
 स्तेय, सं. पुं. (सं. न.) चौर्यं, परद्रव्यहरणं,
 रतेन्यम् ।
 स्तोतव्य, वि. (सं.) दे. 'स्तुत्य' ।
 स्तोता, वि. (सं-त्) प्रशंसक, स्तावक, जविट्ट,
 नावक, वर्णक, स्तुतिवादक ।
 स्तोत्र, सं. पुं. (सं. न.) छन्दोबद्धं देवगुण-
 कीर्तनं, स्तवः, स्तुतिः (स्त्री.) ।
 स्तोम, सं. पुं. (सं.) स्तुतिः (स्त्री.), स्तवः
 २. यशः ३. राशिः ।
 स्त्री, सं. स्त्री. (सं.) कनिता, नहिला, रामा,
 नारी, दे. २. पत्नी, भार्या ३. स्त्रीलिंगो जीवः ।
 —ग्रह, सं. पुं. (सं.) चंद्रबुधशुक्रग्रहाः (ज्यो.) ।
 —जित, स्त्री, वश-विजित-वश्य ।
 —धन, सं. पुं. (सं. न.) स्त्रीस्वत्वास्पदीभूतं
 धनं (माता, पिता, भाई तथा पति से प्राप्त,
 विवाह-संस्कार के समय प्राप्त और जहेज) ।
 —धर्म, सं. पुं. (सं.) ऋतुः, पुष्पं, रजस् (न.)
 २. मैथुनं ३. स्त्रीकर्तव्यं ४. स्त्रीसंबन्धि
 विधनम् ।
 —पुंसलक्षणा, सं. स्त्री. (सं.) पोटा (स्तन-
 शनश्वादिशुक्ला) ।
 —पुरुष, सं. पुं. (सं.) स्त्री, -पुरुषो-पुंसौ,
 मिथुनं, इन्द्रं, युग्मम् ।
 —राज्यं, सं. पुं. (सं. न.) प्राचीनप्रदेश-
 विशेषः (महाभारत) ।
 —लंपट, वि. पुं. (सं.) स्त्री, लोलः-शीर्षः-
 चौरः, कासुकः ।

—लिंग, सं. पुं. (सं. न.) योनिः (स्त्री.),

भग्नं, स्त्रीचिह्नं २. शब्दलिङ्गभेदः (व्या.) ।

—व्रत, सं. पुं. (सं. न.) पत्नीव्रतं, एकपत्नी-
परायणता ।

—समागम, सं. पुं. (सं.) स्त्री-संसर्गः-
सम्भोगः ।

—स्वभाव, सं. पुं. (सं.) महल्लकः, दे.
'खोगा' २. नारीशीलम् ।

स्त्रीत्व, सं. पुं. (सं. न.) नारीत्वं, स्त्री-नारी-
धर्मः-भावः ।

स्त्रैण, वि. (सं.) स्त्रीवित, रमणीरत ३. स्त्री-
संबन्धि-योग्य ।

स्थगित, वि. (सं.) विलंबित, व्याक्षिप्त, दे.
'मुलतवी' २. आच्छादित ३. गुप्त ४. अव-
रुद्ध ।

स्थपति, सं. पुं. (सं.) वास्तुशिल्पिन् २. तक्षन् ।

स्थल, सं. पुं. (सं. न.) भूमिः (स्त्री.), भूभागः,
स्थली २. शुष्क-निर्जल, -भूमिः ३. स्थानं
४. अवसरः ।

—कमल, सं. पुं. (सं. न.) पद्मा, पद्मचारिणी,
अतिचरा, स्थलरुहा ।

—चर, वि. (सं.) स्थल-ग-गामिन्-चारिन्,
भू-चर-चारिन् ।

स्थली, सं. स्त्री. (सं.) शुष्क, भूमिः (स्त्री.)-
भूभागः २. समोन्नतभूः (स्त्री.) ३. स्थानं,
स्थलम् ।

स्थविर, सं. पुं. (सं.) वृद्धः २. ब्रह्मन् (पुं.) ।

स्थाणु, सं. पुं. (सं.) अशःखट्वक्षः, ध्रुवः, शंकुः
२. रतंभः, स्थूणा ३. शिवः ४. स्थावरपदार्थः ।
वि. (सं.) अचल, स्थिर ।

स्थाण्वीश्वर, सं. पुं. (सं. न.) कुक्षेत्रं, स्थाने-
श्वरनगरम्, स्थाणुनीर्यम् । २. स्थाण्वेश्वरस्य
लिङ्गविशेषः ।

स्थान, सं. पुं. (सं. न.) स्थलं २. आ-नि-
वासः, गृहं ३. भूमिः (स्त्री.), स्थली, भूभागः
४. पदं, दे. 'पदवी' ५. घणोत्सारणस्थानं
(व्या.) ६. रात्र्यं, देशः ७. देवालयाः, मंदिरं
८. अवसरः ९. दशा १०. परिच्छेदः,
अध्यायः ।

—च्युत, वि. (सं.) स्थानभ्रष्ट २. पद-च्युत-
भ्रष्ट ।

स्थानक, सं. पुं. (सं. न.) स्थानं, स्थलम्
२. पदं, स्थितिः (स्त्री.) ३-४. सरक्षेप-नृत्य,

मुद्राभेदः ५. नाटकव्यापारस्थलविशेषः

६. आलवालं, आवालवालम् ७. सुरार्फेनः ।

स्थानी, वि. (सं. निम्) सस्थान, पदयुक्त
२. स्थायिन् ३. उचित, उपयुक्त ।

स्थानीय, वि. (सं.) स्थानिक, स्थानविशेष-
संबन्धिन् ।

स्थापक, सं. पुं. (सं.) स्थापयितृ, संस्थापकः,
प्रवर्तकः, प्रारंभकः, स्थापनकरः २. निभायकः
३. उत्पापकः, उन्नायकः ४. मूर्ति-प्रतिमा-कारः ।

स्थापत्य, सं. पुं. (सं. न.) वास्तु, विद्या-शिल्प-
कला २. सूत्रकर्मन् (न.), भवननिर्माणम् ।

स्थापनं, सं. पुं. (सं. न.) निधानं, न्यस्तनं,
निवेशनं २. उत्पापनं, उन्नयनं, उन्नयनं ३. संस्था-
पनं, प्रवर्तनं, प्रारंभणं ४. प्रतिपादनं, स्थापनम् ।

स्थापना, सं. स्त्री. (सं.) (मंदिरे) मूर्ति-
प्रतिष्ठापनं-निवेशनं २-३. दे. 'स्थापनं (३-४)
४. विचारंगविशेषः (न्या०) ।

स्थापित, वि. (सं.) संस्थापित, प्रवर्तित
२. निहित, निवेशित, न्यस्त ३. उत्स्थापित,
उन्नत, उन्नतित ४. स्थिर, वृद्ध ५. मिश्रित ।

स्थापिस्व, सं. पुं. (सं. न.) स्थापिता, स्थिरता,
स्थैर्यं, ध्रुवता, नैत्यम् ।

स्थाप्यी, वि. (सं. यिन्) ध्रुव, नित्य, शाश्वत,
अक्षय २. चिरस्थापिन्, वृद्ध ३. स्थिर, स्थायुः,
स्थायुक, स्थितिशील ४. विश्वसनीय ।

—भाव, सं. पुं. (सं.) रसस्य भावविशेषः
(सा.) (९ स्थायिभाव = रति, ह्रास, शोक, क्रोध, उत्साह, भय, जुगुप्सा, विन्मय और निर्वेद) ।

स्थाली, सं. स्त्री. (सं.) उखा, पिठारः-री, दे.
'पत्नीला' ।

—गुलाक न्याय, सं. पुं. (सं.) न्यायभेदः,
अंशगुणज्ञानेन पूर्णगुणज्ञानानुमानम् ।

स्थावर, वि. (सं.) अचल, निश्चल, स्थिर
२. स्थविर, स्थावृ, स्थाणु, स्थायुक, स्थायुः,
स्थितिशील । (सं. न.) अनंगम-अचल-
संपत्तिः (स्त्री.) ।

स्थित, वि. (सं.) विद्यमान, वर्तमान २. उप-
विष्ट, आसीन ३. उचित ४. अवलंबित ।

—प्रज्ञ, वि. (सं.) स्थिर-स्थित, बुद्धि-वी-प्रज्ञ,
ब्रह्मबुद्धिसंपन्न २. आत्मसंतोषिन् ।

स्थिति, सं. स्त्री. (सं.) अवलंबः, आधारः,
आलंबः २. निवासः, अवस्थानं ३. दशा,

स्थिर

[६४६]

स्फिरिट

अवस्था ४. पदं, दे. 'पदवी' ५. अस्तित्वं, मत्ता
६. मर्यादा ।

—स्थापकता, सं. स्त्री. (सं.) कुंचनीयता,
नम्यता, दे. 'लचक' ।

स्थिर, वि. (सं.) अचल, निश्चल, अविचल
२. निश्चित, स्थिरीकृत ३. शांत ४. दृढ़,
बलवत् ५. स्थायिन्, शाश्वत, ध्रुव ६. नियत,
७. विश्वरानीय ८. स्थालुक, स्थास्तु ।

—चित्त, वि. (सं.) दृढसंकल्प, स्थिर, मति-
धी-बुद्धि ।

स्थिरता, सं. स्त्री. (सं.) निश्चलता, अचलता,
स्थिरत्वं २. दृढ़ता, बलवत्ता ३. स्थायित्वं,
ध्रुवता ४. धैर्यं, धीरता ५. निरस्थायिता,
स्थास्तुता ।

स्थूणा, सं. स्त्री. (सं.) गृहस्तंभः, दे. 'स्तंभ'
(१. २.) ।

स्थूल, वि. (सं.) पीन, पीवर (रानी स्त्री.)
पुष्ट, नांसल, मेदुर, मित्र, मेदुरिवन्, पीवस,
पीवन् २. स्पष्ट, सुबोध ३. मूर्ख, जड ४. विषम,
नतोन्नत ।

—बुद्धि, वि. (सं.) मंदमति, जड ।

स्थूलता, सं. स्त्री. (सं.) पीनता, पीवरता,
मेदुरता, स्थूलत्वं २. गुरुतात्वं, भारवत्ता
३. विषमता ४. महाकायता ।

स्थैर्यं, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'स्थिरता' ।

स्थौल्य, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'स्थूलता' ।

स्नात, वि. (सं.) कृतस्नान, वे. 'नद्याया हुअः' ।

स्नातक, सं. पुं. (सं.) आप्लुतव्रतिन् ।

स्नान, सं. पुं. (सं. न.) आप्ल(ला)वः,
अभिषेकः, उपस्पर्शः-शीर्षं, अवगाहनम् ।

—करना, कि. अ., स्ना (अ. प. अ.), अवगाह्
(भ्वा. आ. से.), दे. 'नहना' ।

—गृह, सं. पुं. (सं. न.) स्नान, शालः-अःगारं ।

स्नायु, सं. स्त्री. (सं. पुं.) वस्त्रा, स्त्रया,
नसा, शानतंतुः, नाटी टिकादिः (स्त्री.), वायु-
वाहिनी नाडी, धातरज्जुः (स्त्री.) ।

स्निग्ध, वि. (सं.) चिकण, चिकण, नक्कण,
मसृण, छक्ष्य, अमृष्ट २. सस्नेह, सतैल, तैलकः ।

स्निग्धता, सं. स्त्री. (सं.) चिकणता, मसृणत्वं,
छक्ष्यता २. तैलवत्ता, स्नेहवत्ता ३. प्रियता ।

स्नीक, वि. (सं.) सुदुल, कोमल, स्निग्ध
२. अनुरक्त, आसक्त ।

स्नुया, सं. स्त्री. (सं.) पुत्र-वधुः (स्त्री.) ।

स्नेह, सं. पुं. (सं.) प्रेमन् (पुं. न.), अनु-
रागः, प्रीतिः (स्त्री.), प्रणयः २. चिकणपदाः
(घृततेलादि) ।

—करना, कि. स., दे. 'प्रेम करना' ।

—संस्कृत, वि. (सं.) घृत-तैल-पक्व-श्राण ।

—सार, सं. पुं. (सं.) मज्जा, दे. वि., तैल-
प्रधान-बहुल ।

स्नेहनाय, वि. (सं.) स्नेह, तैलार्हं २. प्रेम-
पात्र-भाजन, अनुराग-अर्ह-योग्य ।

स्नेही, सं. पुं. (सं. = द्विन्) स्नेहशीलः, अनु-
रागिन्, प्रणयिन्, प्रेमिन्, मित्रम् । वि. (सं.)
चिकण, मसृण ।

स्पंज, सं. पुं. (अं.) त्रिद्विष्टं, *लकण्टम् ।

स्पंदन, सं. पुं. (सं. न.) स्पंदः, ईपत्तंपनं,
प्रफुरणं, क्षिप्रकंपः ।

स्पर्द्धा, सं. स्त्री. (सं.) विजिगीषा, संवर्षः,
अहनहमिका, ईर्ष्या, सापत्त्यम् ।

—करना, कि. अ., प्रति-स्पर्ष (भ्वा. आ.
से.), संघृष (भ्वा. प. से.), विजि(सन्नंत-
विजिगीषते), अभिधितुं यत् (स्वा. आ. से.),
ईष्य (भ्वा. प. से.) ।

स्पर्शा, सं. पुं. (सं.) सं-स्पर्शः-शीर्षं, संसर्गः,
संपर्कः, परामर्शः २. त्वगिन्द्रिय-ग्रहणविशेषः
३. काश्चिर्गोप्यकं (व्या.) ४. वायुः ।

—करना, कि. स., सं-स्पर्श (तु. प. अ.),
दे. 'छना' ।

स्पष्ट, वि. (सं.) परि-स्फुट, प्रकट, व्यक्त,
प्रत्यक्ष, उल्लेख, उद्विक्त, विशद, सुबोध, साक्षाधी
सं. पुं. (सं.) वर्णोच्चारणप्रयत्नप्रकारः (व्या.) ।

—कथन, सं. पुं. (सं. न.) सरल-निष्कण्ठ-
भाषणं २. कथनप्रकारभेदः परवचनानामभित-
थोपन्यासः (व्या.) ।

—वक्ता, सं. पुं. (सं-नवृ) स्पष्टवादिन् ।

स्पष्टतया, कि. वि. (सं.) प्रकटं, स्पष्टं, व्यक्तं,
स्फुटं, प्रत्यक्षम् ।

स्पष्टता, सं. स्त्री. (सं.) वैशद्यं, विशदता,
स्फुटता, उल्लेखता, सुबोधता, सरलता, आर्जवं,
सारव्यं, निर्व्योजता ।

स्फिरिट, सं. स्त्री. (प्रे.) जीव-आत्मन्, देहिन्,
जीवः २. प्राण-जीवन-शक्तिः (स्त्री.), नीर्यं
३. तज्ज्वं, नर्यं, सारः ४. मधुसारः ।

—लेप, सं. पुं., सारप्रदीपः ।
 मेथिलेटिड—, निथिलितमद्यसारः ।
 रेक्टिफाइड—, शुद्धमद्यसारः ।
 स्वीच, सं. स्त्री. (अं.) व्याख्यानं, कथनम् ।
 स्मृहा, सं. स्त्री. (स.) कामना, इच्छा दे. ।
 स्पेक्ट्रास्कोप, सं. स्त्री. (अं.) रश्मिवर्णदर्शकम् ।
 स्पेशल, वि. (अं.) विशिष्ट, बिलक्षण, असा-
 मान्य, असाधारण, सविशेष, विशेष ।
 —गाह्वी, सं. स्त्री. (अं. + हिं.) विशिष्टशकटी ।
 स्फटिक, सं. स्त्री. (सं.) स्फाट(टि)कं, भासुरः,
 स्फाटिकोपलः, धौतशिलः, सितोपलः, विमल-
 स्वच्छ-मणिः, स्वच्छः, अमर-निस्तुष, रत्नं,
 शिवाग्रिणः ।
 स्फुट, वि. (सं.) व्यक्त, प्रकट, प्रकाशित, दे.
 स्पष्ट २. विकसित ३. शुक्ल ४. नाना-बहु-वि-
 विध ।
 स्फुरण, सं. पुं. (सं. न.) स्फुरणा, स्फुरित,
 स्फुरलनं, स्फुरः-रणा, स्फ(स्फ)रणं, द्रष्ट-
 किञ्चित्, चलनम् ।
 स्फुलिंग, सं. पुं. (सं.) अग्निकणः, दे.
 'चिनगारी' ।
 स्फूर्ति, सं. स्त्री. (सं.) क्षिप्रता, श्रांभता, आशु-
 कारिता-त्वं, स्वरा २. स्फुरणं ३. मानसी प्रेरणा ।
 स्फोटक, सं. पुं. (सं.) पिबकः, गंडः । वि.,
 स्फोटः ।
 स्फोटन, सं. पुं. (सं. न.) सशब्द-भेदनं-विदा-
 रणं २. प्रकाशनं, प्रख्यापनं ३. शब्दः, ध्वनिः
 ४. आकस्मिक-मंजनं-विदालनं-स्फुटनम् ।
 स्मय, सं. पुं. (सं.) अभिमानः, दुष्यं ।
 स्मर, सं. पुं. (सं.) कंदर्पः, मदनः, कामः
 २. स्मृतिः (स्त्री.), स्मरणम् ।
 स्मरण, सं. पुं. (सं. न.) आध्यानं, अनुचितनं,
 २. स्मृतिः (स्त्री.) ।
 —करना, कि. स., अनु-सं, रघु (भ्वा. प. अ.),
 अनुचित (चु.), अनुबुध् (स्वा. प. से.),
 आर्थे (भ्वा. प. अ.) २. कंठस्थं-मुखस्थं कृ ।
 —दिलाना या—कराना, कि. प्रे., व. 'स्मरण
 करना' के प्रे. रूप ।
 —रखना, कि. स., चित्ते-चेतसि-मनसि निधा
 (जु. उ. अ.), मनसि धृ (चु.) ।
 —पत्र, सं. पुं. (सं. न.) स्मरण-स्मारक-पत्रम् ।
 —शक्ति, सं. स्त्री. (सं.) स्मृति (स्त्री.),

स्मरणं, धारणा, चिन्ता, आ-ध्यानं, अध्या,
 चर्चा, चित्तिः (स्त्री.), चिन्तः, चित्तिः ।
 स्मरणीय, वि. (सं.) आध्येय, अनुचितनीय,
 स्मर्तव्य, स्मरणार्हं, मनसि धरणीय ।
 स्मशान, सं. पुं., दे. 'श्मशान' ।
 स्मारक, वि. (सं.) अनुबोधक, स्मृतिकर । सं.
 पुं. (सं. न.) स्मृति-स्मरण-चिह्नं ३. स्मार-
 कदानं, स्नेहाभिज्ञानम् ।
 स्मार्त्त, वि. (सं.) स्मृति-विहित-संबन्धिन्
 २. स्मरणसंबन्धिन् ।
 स्मित, सं. पुं. (सं. न.) शेषरुपास्यं, मंदहासः,
 दे. 'मुसकरादृष्ट' ।
 स्मृति, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'स्मरणशक्ति'
 २. स्मरणं, आध्यानं, अनु-चितनं-बोधः ३-
 आर्यधर्मशास्त्राणि (मनुस्मृति आदि) ।
 —कार, सं. पुं. (सं.) धर्मशास्त्रकारः ।
 —वर्द्धिनी, सं. स्त्री. (सं.) ब्राह्मी ।
 स्थंदन, सं. पुं. (सं.) रथः, दे. ।
 स्थान्, अव्य. (सं.) दे. 'शायद' ।
 स्थानपन, सं. पुं. (हिं. स्थाना) नैपुण्यं, दास्यं,
 चातुर्यं २. कैतवं, शौठवं, व्याजः ।
 स्थानी, वि. (सं. सजान) चतुर, बुद्धिमत्
 २. धूर्त्त, कापटिक ३. बधस्क, युवन् । सं. पुं.,
 बृद्धः २. ग्रामणीः ३. चिकित्सकः ।
 —पन, सं. पुं., दे. 'स्थानपन' ।
 स्थानी, वि. (स्त्री.) (हिं. स्थाना) चतुरा, वक्षा-
 बुद्धिमती । सं. स्त्री., युवती-तिः (स्त्री.),
 समकन्वा, परिणया, उद्वहा ।
 स्थार, सं. पुं. (सं. शृगालः) अंबुकः, दे.
 'गोदह' ।
 स्थाह, वि. (फा.) काल, कृष्ण, असित ।
 —विल, वि. (फा.) दुष्ट, खल, पाप ।
 स्थाही, सं. स्त्री. (फा.) मशी, धी-सी, मशिः
 पिः-सिः (सत्र स्त्री.), मेला २. कालिम्न
 (पुं.), कृष्णता, इयामता ३. कञ्जलभेदः ४.
 कलंकः, लांछनम् ।
 —चट, —चूस, सं. पुं., गरी, शोधकं-चूसकं
 (पत्रम्) ।
 —जाता, मु., यौवनं अति-इ (अ. प. अ.) ।
 —लगाना, मु०. अपवद-परिवर्द्धन-म् (भ्वा.
 प. से.), कलंक (ना. धा., कलंकयति) ।
 स्थूत, वि. (सं.) स्थूत, निष्कृत २. व्यूत.

व्युत्, प्रोत, पुटित, पुटित ३. विद्ध । सं. पुं.
(सं.) स्योतः, प्रसेवः ।
स्ववण, सं. पुं. (सं. न.) स्व(स्त्र)वः, प्रस्त्रावः,
२. गर्भ, पातः-स्त्रावः ३. सूत्र ४. प्रस्त्रेदः ।
स्वष्टा, सं. पुं. (सं. -पुं.) विधसृज्, बहान्,
चतुर्मुखः । वि. (सं.) रचयित्, निर्मात् ।
स्वुत्रा, सं. पुं. (सं. स्त्री.) स्वुत्रः, स्वुन् (स्त्री.),
सुः (स्त्री.) (यज्ञपात्रभेदः) ।
स्त्रोत, सं. पुं. (सं. न.) स्त्रोतस् (न.), प्रवाहः,
ओषः, धारा, मंदाकः २. नदी ३. देहछिद्राणि
(न. बहु.) ४. वंशपरंपरा ।
स्त्रीपर, सं. पुं. (अं. स्त्रीपर) फर्फरीका ।
फुड—, सं. पुं. (अं.) पूर्णफर्फरीका ।
स्त्रेड, सं. स्त्री. (अं.) लेखन, शिला, अक्ष-
पःपाण, पट्टिका, *पाषाणो ।
स्व, सं. पुं. (सं.) आत्मन् २. वंशुः, शक्तिः
(पुं.) २. धनम् । वि. (सं.) स्वीय, स्वकीय,
आत्मीय, स्वक, निज, स्व-निज-आत्म- ।
—कार्य, सं. पुं. (सं. न.) निजकृतम् ।
—कुटुंब, सं. पुं. (सं. न.) निजपरिवारः ।
—जन, सं. पुं. (सं.) बंधुवर्गः, वांशवाः (बहु.) ।
—देश, सं. पुं. (सं.) जन्म-भूमि, भूमिः
(स्त्री.) ।
—देशी, वि. (सं. स्त्रीय) निजदेश-संबन्धि-
निमित्त ।
—धर्म, सं. पुं. (सं.) निजकर्तव्यं २. सहज-
गुणः ।
—राज, सं. पुं. (सं. राज्यं) निजशासनम् ।
स्वकीय, वि. (सं.) स्व, निज, आत्मीय, स्वीय ।
स्वकीया, सं. स्त्री. (सं.) नायिकाभेदः (स्त्री.),
स्वीया, स्वामिन्येवानुरक्ता ।
स्वगत, सं. पुं. (सं. न.) अक्ष-मनो, गतं,
अत्राख्य, नाख्योक्तिभेदः (स्त्री.) ।
स्वच्छंब, वि. (सं.) स्वतंत्र, स्वाधीन, स्वायत्त,
२. नियंत्रण-शून्य, स्वैर-रिन्, निरंकुश, स्व-
रुचिः । कि. वि. (सं. न.) स्वान्तयेण, स्वच्छंदतः
३. स्वैरं, निरंकुशं, यथेष्टम् ।
—चारिणं, सं. स्त्री. (सं.) वैश्याः ।
—चारी, वि. (सं. रिन्) स्वच्छान्चारिन्,
स्वैर, स्वैरिन् ।
स्वच्छंदता, सं. स्त्री. (सं.) स्वतंत्र्यं, स्वाधीनता,
स्वतंत्रता २. स्वैर(रि)ता, निरंकुशता ।
स्वच्छ, वि. (सं.) अमल, निर्मल, विमल, मल-

होन-रहित २. शुभ्र, श्वेत, उज्ज्वल ३. पवित्र,
शुचि, वि. शुद्ध ४. स्पष्ट, विशद ५. स्वस्थ,
निरामय ६. निष्कपट, कज्जु ७. पारदर्शक ।
स्वच्छता, सं. स्त्री. (सं.) निर्मलता, विमलता
२. उज्ज्वलता ३. पवित्रता ४. पारदर्शकता ।
स्वतंत्र, वि. (सं.) ३. 'स्वच्छंद' वि. तथा
कि. वि. ।
स्वतंत्रता, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'स्वच्छंदता' ।
स्वतः, अव्य. (सं.) स्वच्छया, स्वयमेव, स्वैच्छा-
पूर्व, कामतः (संव अव्य.) ।
—प्रमाण, वि. (सं.) स्वतःसिद्ध, स्वयंसिद्ध,
प्रमाणान्तरतिरपेक्ष ।
स्वत्व, सं. पुं. (सं. न.) शक्तिः (स्त्री.),
अधिकारः, वशः २. आधिपत्यं, स्वामित्वं,
प्रभुत्वम् ।
स्वप्न, सं. पुं. (सं.) स्वप्नः, प्रसृतस्य ज्ञानं
२. निद्रा २. असंभवकल्पना, वृथाभित्थ-
वासना, आभासः, स्वप्नसृष्टिः (स्त्री.) ।
—देखना, स्वप्नं दृश् (भ्वा. प. अ.), स्व-
प्नायते (ना. धा.) ।
—दोष, सं. पुं. (सं.) निद्रायां शुकपातः ।
—में बोलना, कि. अ. उत्पन्नयते (ना. धा.) ।
—लेना, मु. असंभवकल्पनां कृ, मनसः कल्प
(प्रे.) ।
स्वभाव, सं. पुं. (सं.) धर्मः, गुणः, प्रकृतिः-
संसिद्धिः (स्त्री.) स्वरूपं, निःसर्गः, भावः,
२. प्रकृति-मनोवृत्तिः (स्त्री.), शीलं ३. अ-
भ्यासः, नित्यव्यवहारः ।
—सिद्ध, वि. (सं.) सहज, प्राकृतिक,
स्वभाविक ।
स्वभावतः, अव्य. (सं.) प्रकृत्या, जन्मतः,
निसर्गतः ।
स्वयं, अव्य. (सं.) आत्मना २. स्वत एव,
विनाऽऽयामं, प्रयत्नं विना ।
—भू, सं. पुं. (सं.) ब्रह्मन् (पुं.) २. कालः
३. कामदेवः ४. वि. गुः ५. शिवः । वि. (सं.)
स्वयं-जात-भग, स्वयं, स्वयोनि ।
—घर, सं. पुं. (सं.) स्वयंवरणं, स्वच्छया
पतिवरणम् ।
—वरा, सं. स्त्री. (सं.) पतिवरा, वध्या ।
—सिद्ध, वि. (सं.) स्वतःसिद्ध २. स्वतः-
सफल ।
—खेदक, सं. पुं. (सं.) स्वच्छासेवकः ।

—सेविका, सं. पुं. (सं.) श्वेच्छामेविडा ।
 स्वर, सं. पुं. (सं. अव्य.) स्वर्गः २. परलोकः
 ३. आकाशः-दान ।
 स्वर, सं. पुं. (सं.) ध्वनिः, शब्दः, निःस्व-
 (स्वा)नः, निःनादः, घोषः, श्वेडः, विरलं,
 वि-र(रा)वः, ह्रादः २. पङ्जादयः सम-
 स्वराः (संगीत) ३. उदात्तादिस्वरत्रिकं (ध्या.)
 ४. अन्, मात्रा (व्या.) ५. उच्छ्वासः ।
 —मंग, सं. पुं. (सं.) स्वर, श्रवणः भेदः, गल-
 रोगभेदः ।
 —संक्रम, सं. पुं. (सं.) स्वरारोहावरोही
 (संगीत) ।
 स्वरूप, सं. पुं. (सं. न.) निजरूपं, आकारः,
 आकृतिः (स्त्री.) २. मूर्तिः (स्त्री.), चित्रं इ.
 ३. प्रकृतिः (स्त्री.), स्वभावः ४. देवादिभिः
 भूतं रूपं ५. देवादिरूपधारिन् । वि. (सं.)
 तुल्य, सम २. सुंदर, मनोज ३. पंडित, प्राज्ञ ।
 कि. वि., रूपेण, रीत्या (उ. प्रमाण स्वरूपः=
 प्रमाणरूपेण) ।
 स्वर्ग, सं. पुं. (सं.) स्वर्-दैव-अमर-सुर-ऊर्ध्व-
 लोकः, स्वर (अव्य.), नाकः, त्रिदिवः,
 त्रिदशालयः, मन्दरः, शुक्रभवनं, सुखाधारः
 २. ईश्वरः ३. सुखं ४. सुखदं स्थानं
 ५. आकाशः-दान ।
 —काम, वि. (सं.) स्वर्ग, लिप्सु-इच्छुक ।
 —गमन, सं. पुं. (सं. न.) स्वर-स्वर्ग, गतिः
 (स्त्री.)-त्यागः, निधनं, मरणम् ।
 —गामी, वि. (सं. मित्) स्वर्गमनकर्तृ २. स्व-
 गर्गर्थ, स्वर्गंत, मृत ।
 —तरु, सं. पुं. (सं.) कल्पवृक्षः ।
 —धेनु, सं. स्त्री. (सं.) कामधेनुः ।
 —नदी, सं. स्त्री. (सं.) स्वर्गापगा, मंदाकिनी ।
 —पति, सं. पुं. (सं.) इन्द्रः ।
 —पुरी, सं. स्त्री. (सं.) अमरावती ।
 —लोक, सं. पुं. (सं.) दे. 'स्वर्ग' (१) ।
 —वधू, सं. स्त्री. (सं.) स्वर्गस्त्री, अप्सरस्
 (स्त्री.) ।
 —वास, सं. पुं. (सं.) स्वर्गवासः २. मरणं,
 निधनम् ।
 —वासी, वि. (सं. मित्) देवलोकवासिन्
 २. दिवंगत, प्रेत, मृत, स्वर्गांत, स्वर्गस्थ ।
 स्वर्गीय, वि. (सं.) स्वर्ग्य, दिव्य, दैव २. दे.
 'स्वर्गासी' (२) ।

स्वर्ग्य, वि. (सं.) दे. 'स्वर्गीय' (१, २) ।
 स्वर्ण, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'सोना' (१) ।
 स्वर्लोक, सं. पुं. (सं.) दे. 'स्वर्ग' (१) ।
 स्वल्प, वि. (सं.) अल्पस्व, अतिस्तोक ।
 स्वशुर, सं. पुं. (सं. श्वशुरः) दे. 'ससुर' ।
 स्वस्ति, अव्य. (सं.) कल्याण-मंगल-मद्रं
 भूयात् (असीत्) । सं. स्त्री. (सं.) कल्याणं,
 मंगलं २. सुखम् ।
 —वाचन, सं. पुं. (सं. न.) मंगलप्रमंत्रपाठः
 २. धार्मिककृत्यभेदः (गणेशपूजनानि) ।
 स्वस्तिक, सं. पुं. (सं.) मंगल्यचिह्नभेदः
 (卐) २. मंगलद्रव्यं ३. चतुष्पथः ।
 स्वस्तिका, सं. स्त्री., दे. 'स्वस्तिक' (१) ।
 स्वस्थयन, सं. पुं. (सं. न.) कार्यारम्भे
 मंगल्यमंत्रपाठः २. समृद्धिसाधनम् ३. दलायें
 नीयमानो मंगल्यजलकलशः । ४. दानप्राप्त्य-
 नन्तरं विप्रस्थाशीर्वादः ।
 स्वस्थ, वि. (सं.) अनामय, निरामय, नीरोग,
 अरोग, कुशल, कुशलिन, सुख्य, आरोग्यवत्,
 नीरुज-ञ्, निर्व्याधि, व्याधि-रोग, रक्षित २.
 'सावधान' दे. ।
 —चित्त, वि., शान्तमनस्क ।
 स्वांग, सं. पुं. (सं. स्वांग >) (उपहःसार्थं)
 अनु, करण-कारः-कृतिः (स्त्री.), विडंबनं २.
 वेषांतरं, छद्म-कृतक-कपट, वेषः ।
 —रचना, क्रि. सं., वेषं परिश्रुत् (प्रे.),
 वेषान्तरं रच (चु.) २. नट् (चु.), अभिनी
 (स्वा. प. अ.) ।
 स्वर्गी, सं. पुं. (सं. स्वांग >) नटः, अभिनेत्,
 शैल्युधः, रंगःजीवः २. भंडः इ. दे. 'बहुस्फिया' ।
 स्वागत, सं. पुं. (सं. न.) उपचारः, संमानः,
 संभावना, नत, कारः-कृतिः (स्त्री.) क्रिया,
 प्रत्युद्गमनं, प्रत्युद्गमनं, प्रत्युत्थानं, प्रत्युद्-
 गमः-गतिः (स्त्री.) ।
 —करना, क्रि. सं., प्रत्युद्गम (भ्वा. प. अ.),
 प्रत्युद्गम (भ्वा. प. से.) ।
 —समिति, सं. स्त्री. (सं.) स्वगतकारिणी
 सभा ।
 स्वातंत्र्य, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'स्वतंत्रता' ।
 स्वाति, सं. स्त्री. (सं.) स्वाती, पञ्चदशं
 नक्षत्रम् ।
 स्वाद, सं. पुं. (सं.) आस्वादः, रसः २. आनंदः,
 रसानुभूतिः (स्त्री.) ३. इच्छा ४. माधुर्यम् ।

स्वादिष्ट

[६५३]

स्वोपाजित

—लेना, कि. स., आ-स्वाद् (भ्वा. आ. से.), रस् (जु.) २. श्येय स्वाद् (भ्वा. प. से.) । सं. पुं., आ-स्वादनं, रसनम् ।

स्वादिष्ट, वि. (सं. स्वादिष्ट) सरस, सुरस, रूच्य, रचिकर (-री स्त्री.) स्वाद् २. मिष्ट ।

स्वादीला, वि. (सं. स्वादः >) दे. 'स्वादिष्ट' ।

स्वादु, वि. (सं.) 'स्वादिष्ट' २. मधुर, मिष्ट, ३. मनोश ।

स्वादुता, सं. स्त्री. (सं.) सुरसता, स्वादवत्ता २. मधुरता ।

स्वाधिपत्य, सं. पुं. (सं. न.) निजप्रभुत्वम् ।

स्वाधीन, वि. (सं.) दे. 'स्वतंत्र' ।

स्वाधीनता, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'स्वतंत्रता' ।

स्वान, सं. पुं. (सं. श्वन्) कुक्षुरः, दे. 'कुप्ता' ।

स्वाध्याय, सं. पुं. (सं.) वेदाध्ययनं, धर्मशास्त्रानुशीलनं २. अध्ययनं, विषयविशेषानुशीलनम् ।

स्वाध, सं. पुं. (सं.) निद्रा २. स्वप्नः ३. अज्ञान ४. निस्पंदता, स्पृहाता ।

स्वाभाविक, वि. (सं.) स्वभावसिद्ध, सहज, प्राकृतिक, नैसर्गिक, कृत्रिमता-रहित ।

स्वामित्व, सं. पुं. (सं. न.) स्वामिता, प्रभुता-त्वं, स्वाम्यम् ।

स्वामिनी, सं. स्त्री. (सं.) गेहिनी, गृहिणी, गृहपत्नी, कडुम्बिनी, पुरंधी २. ईश्विनी, ईश्वरी, स्वत्ववती, अधिकारिणी ३. श्रीराधा ।

स्वामी, सं. पुं. (सं. निम्न) प्रभुः, अधि-पतिः-भूः, ईश्वरः, ईशित्, परिवृद्धः, नायकः, नेतृ, आर्यः, पालकः २. गृहपतिः, कुटुम्बिन, गृहिन ३. पतिः, भर्तृ, धवः ४. परमेश्वरः ४. नृपः ५. कार्तिकेयः ६. परिव्राजकोदाधिः ।

स्वाम्य, सं. पुं. (सं. न.) स्वामित्वं, प्रभुत्वं, आधिपत्यं, अधिकारः ।

स्वायत्त, वि. (सं.) आत्मवश, निजाधिकारस्थ ।

—शासन, सं. पुं. (सं. न.) स्थानिकस्वराज्यं ।

स्वाराज्य, सं. पुं. (सं. न.) स्वाधीनशासनं २. स्वर्गलोकः ३. ब्रह्मणा तादात्म्यम् ।

स्वार्थ, सं. पुं. (सं.) निजोद्देश्यं, आत्मप्रयोजनं २. आत्महितं, निजलाभः ३. स्वधनम् ।

—स्वाभा, सं. पुं. (सं.) निजलाभोत्सर्गः ।

—स्वाधी, वि. (सं. निम्न) निजलाभोत्सर्गिन् ।

—परान्यष, वि. (सं.) स्वार्थ-स्वहित-स्वलाभ-पर-परायण-निष्ठ ।

—परायणता, सं. पुं. (सं.) स्वार्थ-स्वहित-स्वलाभ-परता-निष्ठा-बुद्धिः-दृष्टिः (दोनों स्त्री.)

—साधक, वि. (सं.) दे. 'स्वार्थपरायण' ।

—साधन, सं. पुं. (सं. न.) निजहितनिर्वहणम् ।

स्वार्थी, वि. (सं. निम्न) दे. 'स्वार्थपरायण' ।

स्वावमानना, सं. स्त्री. (सं.) स्वावमाननम्, आत्म-भर्त्सना-गर्हान्निन्द्रा ।

स्वावलंबन, सं. पुं. (सं. न.) आत्मनिर्भरता, स्वाश्रयः ।

स्वावलंबी, वि. (सं. निम्न) आत्मनिष्ठ, आत्माश्रय, आत्मश्रित, स्वाश्रित ।

स्वास, सं. पुं. }

स्वासा, सं. स्त्री. } (सं. श्वासः) दे. 'साँस' ।

स्वास्थ्य, सं. पुं. (सं. न.) आरोग्यं, स्वस्थता, कुशलं, नीरोगता, अरोगिता ।

—कर, वि. (सं.) आरोग्य-प्रद-वर्द्धक ।

स्वाहा, अव्य. (सं.) हविर्दानं-मंत्रः-शब्दः ।

—करना, मु. नश् (प्रे.), अपव्यय (जु.) २. नस्मसात्कृ ।

स्वीकार, सं. पुं. (सं.) अंगीकारः २. स्वीकरणं, अंगीकरणं, ग्रहणं, आदानं ३. वचनं, प्रतिज्ञा ।

स्वीकार्य, वि. (सं.) स्वीकरणीय, अंगीकार्य ।

स्वीकृत, वि. (सं.) आदत्त, अंगीकृत, प्रति-गृहीत, २. प्रशस्त, अनु-सं-मत ।

स्वीकृति, सं. स्त्री. (सं.) सं-अनुमतिः (स्त्री.), अनुमोदनं २. आदानं, स्वीकारः, प्रतिग्रहः ।

स्वीय, वि. (सं.) स्वकीय, निज, आत्मीय ।

स्वेच्छा, सं. स्त्री. (सं.) निजाभिलाषः, स्वरुचिः (स्त्री.), स्वच्छंदः ।

—चारी, वि. (सं.) स्वैर, प्रतिनिविष्ट, निर-कुश, स्वच्छंद ।

—शुस्तु, सं. पुं. (सं.) भीष्मः २. स्वेच्छया मरणम् । वि. (सं.) स्वायत्तनिधनम् ।

स्वेद, सं. पुं. (सं.) धर्मः, निदाघः, प्रस्वेदः, स्वेद-धर्म-जल-उदकं २. वाष्पः ३. तापः, उष्मन् ४. स्वेदनं ५. धर्मकारकमौषधम् ।

स्वेदज, वि. (सं.) धर्मजात (जूँ, लीख आदि) ।

स्वैर, वि. (सं.) दे. 'स्वच्छंद' ।

स्वोपाजित, वि. (सं.) आत्म-निज-स्व-अजित-उपाजित ।

ह

ह, देवनागरीवर्णमालायास्त्रयस्त्रिंशो व्यंजनवर्णाः, हकारः ।
 हँकवाना, कि. प्रे., व. 'हँकना' के प्रे. रूप ।
 हँकाना, कि. स. तथा प्रे., दे. 'हँकना' तथा 'हँकवाना' ।
 हँकारना, कि. स., दे. 'पुकारना' २. दे. 'लकारना' ।
 हुंगामा, सं. पुं. (का.मह्) कोलाहलः, तुमुलः, कलकलः २. संनर्दः, विप्लवः ।
 हंजीरौ, सं. स्त्री. (पं.) गण्डमाला, गलांकुरः ।
 हुंटर, सं. पुं. (अं.) कशाःशः, दे. 'कोटा' ।
 हुंडा, सं. पुं. (सं.) भातुमयं दृहजलभण्डम् ।
 हँडिया, सं. स्त्री. (सं.) हडिका) हंडी ।
 हंडी, सं. स्त्री. (सं.) हडिका ।
 हुंता, सं. पुं. (सं.न्) घातकः, मारकः, वध-कारिन्, -इच् (समासान्त में) ।
 हुंस, सं. पुं. (सं.) मरालः, मानमीकम्, च(व)क्रोगः, क्षीराशः, नीलाशः, चक्रपक्षः, राजहंसः, श्वेतगरुडः, कलकंठः, सित्, च्छदः-पक्षः, धवलपक्षः, मानसालयः २. सर्वः ३. पर-भात्मन् ४. शुद्धात्मन् ५. परिव्राजकभेदः ।
 —गति, सं. स्त्री. (सं.) कलमंदगतिः ।
 —गामिनी, वि. स्त्री. (सं.) कलकंठगामिनी ।
 —नादिनी, वि. स्त्री. (सं.) मधुर-चारु-प्रिय, भाषिणी, हंसगदगदा ।
 —वाहन, सं. पुं. (सं.) वज्रान् (पुं.), हंसरथः ।
 —वाहनी, सं. स्त्री. (सं.) सरस्वती ।
 हँसना, कि. अ. (सं.) हसनं) प्र-वि-, हस् (भ्वा. प. से.), हास्यं कृ २. (मंद-मंद हँसना), स्मि (भ्वा. आ. अ.) ३. (ऊंचा हँसना), अट्टहासं कृ ४. नमालःपं कृ, परिहस् ५. मुट् (भ्वा. आ. से.), वष् (दि. प. से.) ।
 कि. स., अव-उप-, हस् । सं. पुं., हासः, हास्यं, हसनं, हसितम् ।
 —खेलना, सं. पुं., विनोदः, प्रमोदः, आनंदः, परिहासः ।
 —बोलना, सं. पुं., हास्यालापः, नुखसंभाषणं ।
 हँसने योग्य, वि., हासा(त्या), हँ. हसितन्व्य, हास्य, हासकर (स्त्री स्त्री.), हास्यास्पदम् ।
 हँसने वाला, सं. पुं., हासकः, हासिन् ।

हँसमुख, वि. (हि. हँसना + सं. मुखं >) हास्यमुख(न्वा, स्त्री स्त्री.), रमेरानन(न्वा, स्त्री स्त्री.), प्रसन्न-प्रफुल्ल-हास्य-वदन (न्वा, स्त्री स्त्री.) । २. नर्मगर्भं, विनोदप्रियं, हास्यशील, विनोदिन् ।

हँसली, सं. स्त्री. (सं. अंमल >) गजु (न.), गजुर्कं, ग्रीवस्थि (न.) २. शैवेयं, कंठाभरणभेदः ।
 हँसाई, सं. स्त्री. (हि. हँसना) हसनं, हासः २. अवहासः, उपहासः, लोक-निन्दा-अपवादः ।

हँसाना, कि. स., व. 'हँसना' के प्रे. रूप ।

हँसिनी, सं. स्त्री., दे. 'हँसी' ।

हँसिया, सं. पुं. (सं. हंसः >) लवाकः, लवा-णकः, लविः ।

हँसी, सं. स्त्री. (सं.) वरटा-टी, च(व)क्रांगी, हंसिका, ब(वा)रला, बगनी, मंजुगमना, मृदुगामिनी ।

हँसी, सं. स्त्री. (हि. हँसना) हंसः, हास्यं, हसितं, हसनं, हसितिः (स्त्री.) २. परिहासः, नर्मन् (न.), कौतुकं, लीला, विनोदः ३. उप-अव-, हासः ४. लोक-, अपवादः-निन्दा, अपकीर्तिः (स्त्री.) ।

—खुशी, सं. स्त्री., आनंदः, मोदः ।

—खेल, सं. पुं., विनोदः, कौतुकं २. सुकर-सुसाध्य-कार्यं, साधारणवार्ता ।

—ठट्टा, सं. पुं., दे. 'हँसी' (२) ।

—उड़ाना, मु., उप-अव-, हस् (भ्वा. प. से.), सम्भ्यंयं निन्द् (भ्वा. प. से.) ।

—खेल समझना, मु., सुकर-सुसाध्यं मन् (दि. आ. अ.) ।

—में उड़ाना, मु., साधारणं मत्वा उपेक्ष् (भ्वा. आ. से.) ।

—में खाँसी, मु., विनोदे कलहः, परिहासः, उपद्रवे परिणतः ।

हँसोइ, वि. (हि. हँसना) हास्य-परिहास-विनोदः, प्रिय-शील, नर्मगर्भं, विनोदिन्, कौतुकिन् ।

—पन, सं. पुं., हास्यशीलता, विनोदप्रियता, नर्मगर्भता ।

हँसोहँ, वि. (हि. हँसना) हासोन्मुख २. परि-हासयुक्त ।

हँक, वि. (अ.) सत्य, चत, अविषय, मध्य,

यवार्थ २. उचित, न्याय्य, धर्म्य । सं. पुं. (अ.)
अधिकारः, स्वत्व २. प्रभुत्वं, शक्तिः (स्त्री.)
३. कर्तव्यं, धर्मः ४. सर्वं, अर्त्तं, तथ्यं ५. पर-
मदमन ६. देव, परिशोधनं ७. अर्थ, प्राप्तिम् ।
—अदा करना, मु., कर्तव्यं पा(वे), पालयनि-ते।
—दार, सं. पुं. (अ. + फा.) अधिकारिन्,
स्वत्ववत् ।
—नाहक, अव्य. (अ. + फा. + अ.) बलात्,
रुभस् (दोनो अक.) २. व्यर्थ, निष्प्रयोजनं ।
—मालिकाना, सं. पुं. (अ. + फा.) स्वाम्य-
धिकारः ।
—मौखी, सं. पुं. (अ.) परंपरागत-पैतृक-
अधिकारः ।
—शुक्रा, सं. पुं. (अ.) प्रतिवेशाधिकारः ।
हकबकाना, कि. अ. (अनु. हका बका) निश्चेष्टी-
निस्तब्धी जटी, भू, व्यमुह् (दि. प. वे.) ।
हकला, वि. (हि. हकलाना) अव्यक्त-गद्गद-
वादिन्, स्पष्टतरवर ।
हकलाना, कि. अ. (अनु. हक) गद्गदवाचा
वर (भ्वा. प. से.), स्वलद्वाक्यैः अस्फुटवर्णैः
भाष् (स्वा. आ. से.), स्वल् (भ्वा. प. से.) ।
सं. पुं., स्वलनं, गद्गद-अस्पष्ट-अव्यक्त-
भाषणम् ।
हकारत, सं. स्त्री. (अ.), क्षुद्रता, तुच्छता,
लघुता ।
—की नजर से देखना, मु., अवमन् (दि.
आ. अ.), उपेक्ष् (भ्वा. आ. से.) ।
हकीकत, सं. स्त्री. (अ.) तथ्यं, तत्त्वं, सत्यं
२. तथ्यवर्त्ता, सत्यवृत्तान्तः ।
—में, मु., तत्त्वतः, वस्तुतः ।
हकीकी, वि. (अ.) सत्य, यवार्थ २. निज,
आत्मीय, सोदर ३. ईश्वरीय, पारमार्थिक ।
हकीम, सं. पुं. (अ.) आचार्यः, विद्वत्
२. वैद्यः, चिकित्सकः ।
नाम—, सं. पुं., मिथ्या-कु-अनुभवशून्य, वैद्यः ।
नाम हकीम खतरे जान, लोकोक्ति, ईपजानं
भयंकरम्, अरुबोधी भयावहः ।
हकीमी, सं. स्त्री. (अ. हकीम) (यानं)
चिकित्साशास्त्र २. (यानो) वैद्यवृत्तिः (स्त्री.) ।
हकीर, वि. (अ.) तुच्छ, क्षुद्र २. उपेक्ष्य ।
हक क, सं. पुं. (अ., हक का बड्.) स्वत्वानि,
अधिकाराः (दोनो बड्.) ।
हकूमत, सं. स्त्री., दे. 'डुकूमत' ।

हका-बका, वि. (अनु. हक बक.) विस्मयापन्न,
आश्चर्यचकित, संज्ञान्त, जडी-आकुली-निश्चेष्टी-
भूत, निस्तब्ध ।
—होगा, कि. अ., दे., 'हकबकाना' ।
हगना, कि. अ. (सं. हदनं) हृद् (स्वा. आ.
अ.), पुरीष-मलं उत्सृज् (तु. प. अ.), उचर्
(भ्वा. प. से.) । सं. पुं., हदनं, मल-उच्चारः,
रेकः, पुरीषोत्सर्गः ।
हगाना, कि. प्रे., व. 'हगना' के प्रे. रूप ।
हचकोला, सं. पुं. (अनु. हचक) उद्घातः,
उत्क्षेपः, उच्छलनं, संशोभः ।
हज, सं. पुं. (अ.) मकायात्रा, हजः ।
हज (-हज), सं. पुं. (अ.) सुतं, आनन्दः,
हयः २. लाभः, प्राप्ति (स्त्री.) ।
हजम, सं. पुं. (अ.) जठरे पचनं, वि-परि-
पाकः, परिणामः (वि., (जठरे) पच, परिणत,
लीमं २. सकपट अपहृत, क्लेश आत्मसात्कृत ।
—होना, कि. अ., दे. 'पचना' । मु., कपटाप-
हृतवस्तुनः स्वपार्ष्वं स्थितिः (स्त्री.) ।
हजरत, सं. पुं. (अ.) महात्मन, महाजनः
२. महाशय ! महोदय ! श्रीमन् ! (संबोधन-
वचनं) ३. वृत्तं, कितव (व्यंग्य) ।
हजामत, सं. स्त्री. (अ.) केदादीनां वपनं,
मुण्डनं, क्षौरं २. प्रवृद्धाः श्मश्रुकेशाः (बह.) ।
—यनना, कि. अ., मुण्ड-व्यप-क्षुर-क्षुर
(कर्म.) । मु., वंच-शठ-विप्रलभ् (कर्म.) ।
—यनाना, कि. स. मुण्डे (भ्वा. प. से., तु.)
क्षुरेण कुर (तु. प. से.)-शिद् (रु. प. अ.),
क्षुर-क्षुर (तु. प. से.) । मु., धनं ह (भ्वा.
प. अ.) २. तड् (चु.) ।
हजार, वि. तथा सं. पुं. (फा.) दे. 'सहस्र' ।
कि. वि., सहस्र-बहु-असंख्य-वारम् ।
हजारा, (फा.) सहस्रदलं (पुष्यं) २. धारा-
यंत्रं, दे. 'कीवारा' ।
हजारी, सं. पुं. (फा.) सहस्रिन्, सहस्रशोधा-
ध्यक्षः ।
दस—, सं. पुं., दशसहस्रिन् ।
पंच—, सं. पुं., पंचसहस्रिन् ।
—बाजारी, सं. पुं., उच्चनीच-विविध-सधन-धन-
जनाः ।
हजाम, सं. पुं. (अ.) नापितः, दे. 'नाई' ।
हड, सं. स्त्री., दे. 'हठ' ।
हटना, कि. अ. (सं. घटनं >) रथानाम्तरं वा

हटनेवाला

[६२६]

(अ. प. अ.), स्र (भ्वा. प. अ.) २. अर्-
या-इ (अ. प. अ.), अपसृ ३. कर्तव्यत्व
विमस्त्रीभू, कर्तव्यं त्यज् (भ्वा. प. अ.) ४.
दूरीभू, नेत्रागोचर (वि.) जन् (दि. आ. से.)
४. स्वयित (वि.) जन्, व्याक्षिप् (कर्म.)
५. नश् (दि. प. वे.), शम् (दि. प. से.)
६. विचलित (वि.) भू, प्रतिष्ठाभंगं कृ। सं.
पुं. तथा: भाव, स्थानान्तरगमनं, अप-सर्ण-
सृतिः (स्त्री.), कर्तव्यत्यागः, व्याक्षेपः, विलंबः,
श्रमनं, नाशः, (संकटादि का), विचलनं,
प्रतिष्ठाभंगः।

हटनेवाला, सं. पुं., स्थानान्तरगमिन्, अपयत्, अपसर्त्, कर्तव्यविमुख, श्रमनोन्मुखः, प्रतिष्ठा-
विरोधिन्।

पिछे न हटना, मु., पराङ्मुख (वि.) न
जन्, सज्ज (वि.) स्था (भ्वा. प. अ.)।

हटवाना, क्रि. प्रे., द. 'हटाना' के प्रे. रूप।

हटाना, क्रि. स. (हि. हटना) स्थानान्तरं नी
(भ्वा. प. अ.), अप-सृ (प्रे.) २. दूरीक,
अपनी ३. पलाय (प्रे.) ४. प्रतिष्ठाभंगं कृ (प्रे.)।
सं. पुं. तथा भाव, स्थानान्तरे नयनं, अपसा-
रणं, अपनयनं इ.।

हटा हुआ, वि., स्थानान्तरगत, अप-यात-इत-
गत-सृत, दूरीभूत, कर्तव्यविमुखीभू, शांड,
नष्ट, विचलित।

हट्ट, सं. पुं. (सं.) आपणः, निगमः, पण्य-
भूमिः (स्त्री.) बीधिका, क्रयविक्रयस्थानं
२. पण्यशाला, दे. 'दुकान'।

हट्टा-कट्टा, वि. (सं. हट्ट + अनु.) हट्ट-गुष्ट,
मांसल, दृढांग, प्र-मदा-बल, महा-स्यूट, कार्य।

हट्टी, सं. स्त्री. (सं.) श्रुद्ध, आपण-निगमः
२. पण्यशाला (दे. 'हट्ट')।

हट्ट, सं. स्त्री. पुं. (सं.) बलात्कारः, रभसः
२. दुराग्रहः, निर्वैधः, प्रतिनिवेशः ३. दृढ-
प्रतिष्ठा-संकल्पः ४. अवश्यभाविता, अनिवायता।

—करना, क्रि. अ., दुराग्रहं कृ, प्रतिनिविष्ट
(वि.) दृज् (भ्वा. आ. से.)।

—धर्मां, सं. स्त्री. (सं. हट्टधर्मः) हट्टः, दुरा-
ग्रहः २. विचारसंकीर्णता, दे. 'कष्टरूपन'। वि.,
दुराग्रहिनः, प्रतिनिविष्ट, निर्वैधपर।

—योग, सं. पुं. (सं.) योगभेदः, हट्टविद्या।

—योगी, सं. पुं. (सं. गिन्) हट्टयोगाभ्यासिन्।

हटात्, अव्य. (सं.) दुराग्रहेण, सनिर्वैधं
२. बलात्, सरभसं ३. अवश्यम्।

हट्टी, वि. (सं. हठिन्) दे. 'हट्टीला'।

हट्टीला, वि. (सं. हठः) दुराग्रहिनः, प्रति-
निविष्ट, निर्वैधपर २. दृढप्रतिष्ठ, सत्यसंकल्पः।

हट्ट, सं. स्त्री. (सं. हरीत्वती) अभया, अमृता,
पथ्या, श्रेयस्ती, शिवा, रसायनफल, प्राणदा,
देवी, दिव्या।

हट्टक, सं. स्त्री. (अनु.) उत्कटेच्छा, तीव्रभि-
लाषः।

हट्टकाया, वि. (देश. हट्टकाना) उन्मत्त,
वातुल (प्रायः कुतो के लिये) २. अत्युत्सुकं,
अतीच्छुक।

हट्टगौला, सं. पुं. (हि. हाड + गिलना ?)

*हट्टगिलः, खगभेदः।

हट्टताल, सं. स्त्री. (सं. हट्टः + तालः) *हट्ट-
तालं, (विरोधादिप्रकोशानार्थं) संभूय व्यवसाय-
कर्म, त्यागः।

—करना, क्रि. अ., संभूय व्यवसायं त्यज्
(भ्वा. प. अ.), हट्टतालं कृ।

हट्टप, वि. (अनु.) निर्गोर्ण, जटरक्षिप्त, द्रलित
२. कपटापहत।

—करना, मु., दे. 'हट्टपना' (२)।

हट्टपना, क्रि. स. (अनु. हट्टप) आस्ये निक्षिप्
(तु. प. अ.), निगृ (तु. प. से.), असृ
(भ्वा. आ. से.), सत्वरं भक्ष् (जु. अ.) २. कप-
टेन अपहृ (भ्वा. प. अ.), अन्यायेन आदा
(जु. आ. अ.)।

हट्टबडाना, क्रि. अ. (अनु. हट्ट + बड्) त्वरं
(भ्वा. आ. से.), ससंभ्रमं विधा (जु. अ. अ.),
आतुर, आकुल (वि.) जन् (दि. आ. से.)।
हट्टबडिया, वि. (हि. हट्टबडी) त्वरिततूर्ण-
क्षिप्र-आशु, कारिन्, त्वराकुल।

हट्टबड्डी, सं. स्त्री. (अनु.) त्वरा, तूर्णिः (स्त्री.),
रभसः-सं, क्षिप्रता, शांभ्रता, २. संभ्रनः, त्वरा-
आतुरता-आकुलता।

हट्टहडाना, क्रि. स. (अनु. हट्ट + हड्) त्वरं
(प्रे.), त्वरितुं प्रहृत् (प्रे.)। क्रि. अ., कप-
वैप् (भ्वा. आ. से.) २. सशब्दं चल् (भ्वा.
प. से.)।

हड्डा, सं. पुं. (सं. इडाविका) वरदा, दे. 'भिड'।

हड्डी, सं. स्त्री. (सं. हड्डं) अस्थि (न.)
आदिकं, कुत्स्यं, कौकसं, मेदोभवं, मल्लाकरं,

विहङ्ग, कर्करः, श्वदयितं (प्रायः बहु.) २. वंशः, कुलम् ।

हृद्विया गदना या तोडना, हु., परुप तड् (चु.) ।

हृद्विया निकल आना, मु., अतिकुल-अतिक्षीण-अस्थिदीप (वि.) जड् (दि. आ. से.) ।

हृत्, वि. (सं.) प्रमथित, निपृथित, नि-हित, निहत, क्षणित, निर्वाणित, विश्रान्त, मारित, प्रति-घातित, प्रमथित, आलभित, पिणित, वधित, व्यापादित, पंनस्व-परलोक-गमित-नीत प्रेषित २. ताडित, प्रहृत, आहत, ३. रदित, विहीन (उ. श्रीहत) ४. नाशित, नष्ट, ध्वस्त, ध्वंसित ५. पीडित, घ्नत ६. निकृष्ट, उपयोगानर्ह ७. गुणित (गणित.) ८. व्यथित, अर्दित ।

—प्रम, वि. (सं.) निभ्रम, कान्तिहीन ।

—वृद्धि, वि. (सं.) मूर्ख, निवृद्धि ।

—भागी, वि. (सं.) गिन् हृत् मंद, अग्य, दुर्बल ।

—वीर्य, वि. (सं.) निर्बल, अशक्त ।

—हृदय, वि. (सं.) हताश, भ्रम, चित्त-हृदय-उत्साह ।

हृत्क, सं. स्त्री. (अ. हृत्क त फाडत) अपमानः, निरादरः, तिरस्कारः, अहाना, मान-हानिः (स्त्री.) ।

—हृज्जती, सं. स्त्री. (अ. हृत्क + हज्जत् >) मानहानिः (स्त्री.), अवधीरणा ।

—करना, कि. स. (संमुख-ले) अप-भव-मन् (प्रे.), अवस्था (क्. प. अ.), तिरस्कृ ।

हताश, वि. (सं.) निराश, त्यक्ताश, आशा-अतीत-हीन-रहित, निरपेक्ष ।

हताहत, वि. (सं.) घृणशत, प्रेक्षजनित, क्षत-मृत, प्रणितप्रेत ।

हतोत्साह, वि. (सं.) निर-भ्रम उत्साह, मनो-हत, भ्रमनोषम, निषण्ण, अवसन्न, क्रिन्न, प्रति-बद्ध-हत, स्वलितपर्य ।

हत्या, सं. पुं. (सं. हस्तः >) मुष्टिः (स्त्री.),

हृत्थी, सं. स्त्री. (वारंगः, वंढः ।

हत्या, सं. स्त्री. (सं.) हननं, वधः, घातः, सदनं, हिसनं, हिसा, मारणम् ।

—करना, कि. स., हन् (अ. प. अ., तथा प्रे. घातयति), व्यापद् (प्रे.), दे. 'मारना' ।

हत्यारा, सं. पुं. (सं. हत्याकारः) घातकः, मारकः, वधकारिण, हंतु, हननः, प्राणहरः ।

हत्यारी, सं. स्त्री. (हिं. हत्यारा) प्राण-हारी-हारिणी, वधकारिणी, घातिका २. हत्या-पाप-अनराधः-दोषः प्रतकम् ।

हथ, सं. पुं. (सं. हस्तः) करः, पाणिः ।

—कंडा, सं. पुं. (सं. हस्तकांडः >) हस्त-लावणं, करकौशलं, इन्द्रजालं २. गुप्तचेष्टा, प्रच्छन्न-प्रयोगः-प्रयुक्तिः (स्त्री.), प्रतारणा, छलः-लम् ।

—कड़ी, सं. स्त्री. (सं. हस्तकटकः >) हस्त-पाशः-निघटः, करबंधनी ।

—कड़ी लगाना, कि. स., पाणिपाशेन बंध (क्. प. अ.)-संयम् (प्रे.) ।

—कुट्ट, वि., ताडनशील ।

—लेना, सं. पुं., पाणि-कर-पीडनं, पाणि-ग्रहणम् ।

—मार, सं. स्त्री., गज-हरित, शाला, दे. 'फील-खाना' ।

हथनाल, सं. स्त्री. (हिं.) *हस्तिनालम्, गज-नेयशतधनी ।

हथ(थि)नी, सं. स्त्री. (सं. इतिनी) करिणी, करेणुः-णूः (दोनी स्त्री.), इमी, मातंगी, गज-योपिण, क, रेणुका, व(व)सा, कचा, कटभरा ।

हथिया, सं. पुं. (सं. हस्ता) हस्तः, त्रयोदशं नक्षत्रम् ।

हथियाना, कि. स. (हिं. हाथ) बलाद् अह् (क्. प. से.)-श्रु (चु.)-आदा (चु. आ. अ.) २. चुर् (चु.), सुष् (क्. प. से.) ३. कपटेन स्वायत्तीकृ ।

हथियार, सं. पुं. (हिं. हथियाना) अस्त्रं, इस्त्रं, आद्युधं, हतिः (पुं. स्त्री.), हल्लुः २. उपकरणं, यंत्रं, दे. 'औजार' ।

—बंद, वि., सशस्त्र, सायुध, सन्नद्ध, सज्ज ।

—बांधना, मु., शस्त्रास्त्राणि बंध (चु.), सन्नद्ध (दि. प. अ.), सज्जीभू ।

हथेली, सं. स्त्री. (सं. हस्ततलं) करतलः, तलः-लं, प्रतलः, तालः, प्रपाणिः, प्रहस्तः, फर्फरीकः ।

हथौड़ा

[६२८]

हया

—सुजलाना, मु., वित्तलाभः संभाव्यते ।
 —पर सिर रखना, मु., जीवनमोहं त्यज्
 (भ्वा. प. अ.), प्राणान् अवगण् (जु.) ।
 —मैं आना, मु., स्वाधिकारे आया (अ.प.अ.) ।
 हथौड़ा, सं.पुं. (हि. हाथ) महा, धनः-विषयः ।
 हथौड़ी, सं. स्त्री. (हि. हथौड़ा) वि-धनः,
 दुष्पणः, अवीधनः ।
 हथियार, सं. पुं., दे. 'हथियार' ।
 हद, सं. स्त्री. (अ.) सीमा, दे. ।
 —करना, मु., सीमा-मन्वर्थां अतिक्रम (भ्वा.
 प. से.)-उल्लंघ (भ्वा. आ. से.) ।
 —से ज्यादा, मु., असीम, निःसीम, अमित,
 अपरिमित ।
 हनन, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'हत्या' २. ताडनं,
 प्रहरणं ३. गुणनं, गुणाकारः, पूरणं (गणित) ।
 हननीय, वि. (सं.) हन्तव्य, वनाहं, शीघ्र-
 श्लेष, वध्य ।
 हनु, सं. स्त्री. (सं. पुं. स्त्री.) हनूः (स्त्री.),
 कपोलक्षय-परमुखभागः २. चि(च-नु)हुकम् ।
 —को जकड़ाहट, सं. स्त्री., हनुग्रहः ।
 हनुमान, सं. पुं. (सं. इनुमत्) मारुतिः, पवन-
 पुत्रः, वायुसुतः, आंजनः-नेयः, कपीन्द्रः ।
 हप, सं. पुं. (अनु.) स्वरितनिगणसम्को ह्यिति
 शब्दः ।
 —कर जाना, मु., सत्वरं निगृ(नु. प. से.) ।
 हफता, सं. पुं. (फा.) सप्ताहः, दे. ।
 हबर दबर, कि. वि. (अनु. हह बड) शीघ्रं,
 सत्वरं, ससंभ्रमम् ।
 हबशी, सं. पुं. (अ.) हब्शीयः, हब्शदेश-
 वासिन् २. कुर्णांगः, कुरूपः ।
 हब्बा डब्बा, सं. पुं. (हि. डाँक + अनु. डब्बा)
 शिशुलां श्वासरोगभेदः, श्वसनकः ।
 हब्स, सं. पुं. (अ.) कारवासः ।
 —बेजा, सं. पुं. (अ. + फा.) अन्यात्यकार-
 वासः ।
 हम्, सर्व. (सं. अहम् >) वयम् (बहु.) ।
 सं. पुं., अहंकारः ।
 हम्, अव्य. (फा.) सह, साकं २. संम, तुल्य ।
 —असर, सं. पुं. (फा. + अ.) एक-सम-
 कालीन-कालं, सह, वर्तिन्-जीविन् ।
 —जिस, सं. पुं. (फा.) सजात-तीय, सर्वा-
 गीय ।

—जोली, सं. पुं. (फा. + हि.) सहचरः, सन्धि
 (पुं.) ।
 —दुर्द, सं. पुं. (फा.) समदुःखः, समवेदनः,
 सहानुभूति, मय-युक्तः, सानुकम्पः ।
 —दुर्दी, सं. स्त्री., सहानुभूतिः (स्त्री.), अनु-
 वेदना ।
 —निवाला, सं. पुं. (फा.) सह, मोकृ (पुं.)
 भोजकः ।
 —प्याला, सं. पुं. (फा.) सहपायिन् ।
 —राह, अव्य. (फा.) सह, साकम् ।
 —राही, सं. पुं. (फा.) सह, चारिन्-गामिन्,
 मित्रम् ।
 —वतन, सं. पुं. (फा. + अ.) सम-एक, देशीयः,
 देशभ्रातृ ।
 —वार, वि. (फा.) सम, सम, बल-रेख, सपाट ।
 —सबक, सं. पुं. (फा.) सहपाठिन् ।
 —सर, सं. पुं. (फा.) सम, गुणः-बलः-पदः ।
 —सरी, सं. स्त्री. (फा.) समता, समानता ।
 —साया, सं. पुं. (फा.) प्रति, वासिन्-वेदिन्-
 वेशः ।
 हमल, सं. पुं. (अ.) गर्भः, दे. ।
 हमला, सं. पुं. (अ.) युद्धयात्रा, यत्नं
 २. अवस्कन्दः, आक्रमः, आक्रमणं दे. ३. प्रहारः
 ४. क्रूरव्यंग्यम् ।
 —आवर, (हमलावर) वि. पुं., आक्रमक,
 आक्रमण-कारिन्-कर्तृ-कारः, अवस्कन्दकृत ।
 हमालन, सं. स्त्री. (अ.) मूढता, अज्ञता,
 मूर्खता, मूर्खत्व, मौल्यम् ।
 हमाम, सं. पुं. (अ. हमाम) स्नानागारम् ।
 हमारा, सर्व. (हि. हम) अस्मादं, अस्मदीयः-
 यायं (पुं. स्त्री. न.) ।
 हमाम्ही, सं. स्त्री. (हि. हम) स्वार्थः, स्वार्थ-
 परता २. अहमप्रिया, अहमप्रिया ।
 हमें, सर्व. (हि. हम) अस्मान्, नः २. अस्म-
 भ्यं, नः ।
 हमेल, सं. स्त्री. (अ. हमायल) *शंक-मुद्रा-
 माला ।
 हमेदा, अव्य. (फा.) सदा, नित्यम् ।
 हय, सं. पुं. (सं.) अश्वः, घोटकः (हया स्त्री.) ।
 —घोष, सं. पुं. (सं.) विष्णोः अवतारविशेषः
 २. वेदहारी राक्षसविशेषः ।
 हया, सं. स्त्री. (अ.) लज्जा, त्रपः ।

—द्वार, वि. (अ. + फा.) लज्जाशील ।
 वे—, वि. (फा. + अ.) निर्लज्ज ।
 वेहयाई, सं. स्त्री., निर्लज्जता ।
 हयात, सं. स्त्री. (अ.) जीवनं, प्राणधारणम् ।
 हर^१, सं. पुं. (सं.) शिवः, महादेवः २. अग्निः
 ३. भाजकः, छेदः, हारः (गणित.) । वि.
 (सं.) हारक, मोषक २. नाशक, अंतक
 ३. मारक, घातक ४. वाहक, प्रापक ।
 —गिरि, सं. पुं. (सं.) कैलासः ।
 —द्वार, सं. पुं., दे. 'हरिद्वार' ।
 —भजन, सं. पुं. (सं. न.) हरजपः, ईश-
 भक्तिः (स्त्री.) ।
 हर^२, वि. (फा.) प्रति, अनु, सर्वं, दे. 'प्रति' ।
 —एक, रि. तथा क्रि. वि., दे. 'प्रत्येक' ।
 —कोई, सर्वं., सर्वः., सर्वे (बहु.) सर्वजनः ।
 —गिज्ञ, अव्य. (फा.) कदापि, कदाचिदपि ।
 —चंद, अव्य. (फा.) बहु-अनेक, वारं २.
 यद्यपि ।
 —जाई, सं. पुं. (फा.) गेह-गृह, शून्य-डीन
 २. स्वेच्छाचारिन्, यथेच्छविहारिन् ।
 —दम, क्रि. वि., प्रति, क्षण-पलं, सदा ।
 —वार, क्रि. वि., प्रति, वारं-अवसरम् ।
 —रोज, क्रि. वि., प्रति-अनु, दिनं-दिवसम् ।
 —वक्त, क्रि. वि., सदा, सर्वदा, नित्यम् ।
 —हाल में, मु., सर्वदशासु, अखिलावस्थासु ।
 हरकत, सं. स्त्री. (अ.) गतिः (स्त्री.), चलनं,
 स्पंदः २. क्रिया, चेष्टा, व्यापारः ३. कुकृत्यं,
 कुचेष्टा ।
 —करना, क्रि. अ., चल् (भ्वा. प. से.), स्पंद-
 चेष्ट (भ्वा. आ. से.), सृ (भ्वा. प. अ.)
 २. कुचेष्टां कृ, कुरितं चेट् ।
 हरकारा, सं. पुं. (फा.) संदेश-वार्ता, हरः
 २. पत्रवाहकः, दे. 'डाकिया' ।
 हरज-जा, सं. पुं., दे. 'हर्ज' २. दे. 'हरजाना' ।
 हरजाना, सं. पुं. (फा.) हानि-क्षति, पूरणं-
 पूतिः-निष्कृतिः (दोनों स्त्री.) २. क्षतिपूरक-
 द्रव्यम् ।
 —देना, क्रि. स., निष्कृतिं दा, क्षतिं पूर
 (चु.) ।
 हरण, सं. पुं. (सं. न.) अप, हरणं-हारः, सहसा,
 आकलनं-आच्छेदः, आकस्मिक, ग्रहणं-भारणं,

चोरणं, मोषणं २. नाशनं, ध्वंसनं, अपसारणं
 ३. बहनं, नयनं, प्रापणम् ।
 हरताल, सं. स्त्री. (सं. हरितालं) पिजरं, पिंगं,
 पीतकं, नट, मंडनं-भूषणं, तालं-लकं, गौरी-
 ललितं, वर्णकं, रोमहृत् (न.) चित्रगंधं,
 गोदंतम् ।
 —लगाना, मु., नश् (प्रे.) ।
 हरन-ना, सं. पुं., दे. 'हिरन' ।
 हरना, क्रि. स. (सं. हरणं) अप, ह (भ्वा.
 प. अ.), चूर्-स्तेन् (चु.), मुष् (कृ. प.
 से.), २. आच्छिद् (रु. प. अ.), आक्रम्य
 ग्रह् (कृ. प. से.) धृ (चु.) आकल् (चु.),
 लुंठ-ल् (भ्वा. प. से.), चु.) ३. दूरीकृ, अपसृ
 (प्रे.) ४. नश्-ध्वंस् (प्रे.) ५. नी-वद् (भ्वा.
 प. अ.) । सं. पुं. तथा भाव, दे. 'हरण'
 सं. पुं. (१-३) ।
 हरनी, सं. स्त्री., दे. 'हिरनी' ।
 हरने योग्य, वि. अप, हरणीय-हर्तव्य-हार्यं, चोर-
 ण्यतव्य, मोषणीय, आच्छेदनीय, लुंठनीय,
 अपसार्यं, नाशयितव्य, नेय, बोढव्य ।
 हरने वाला, सं. पुं., अप, हारकः-हर्तुं, चौरः,
 स्तेनः, दस्युः, लुंटाकः, अपसारकः, नाशकः,
 नेट, वाहकः ।
 हरनौटा, सं. पुं., दे. 'हिरनौट' ।
 हरक, सं. पुं. (अ.) अक्षरं, वर्णः ।
 हरफारेवही, सं. स्त्री. (सं. हरिपर्वरी) लवली,
 सुगन्धमूला, कोमलवल्कला ।
 हरबा, सं. पुं. (अ.) आयुधं, अस्त्रं, शस्त्रं,
 हेतिः (पुं. स्त्री.), हस्तुः ।
 हरबोंग, वि. (सं. हलं + देश. बोंग = लठ)
 अशिष्ट, असभ्य, ग्राम्य, उद्धत, वियात २. मूर्खं,
 निर्बुद्धिः, जड, मूढ । सं. पुं., कुशासनं, अनीतिः
 (स्त्री.), विप्लवः ।
 हरम, सं. पुं. (अ.) अंतःपुरं, शुद्धांतः, अव-
 रोधः, पराविद्धः । सं. स्त्री. (अ.) पत्नी,
 भार्या २. दासी ३. उपपत्नी ।
 —सरा, } सं. स्त्री. (अ. + फा.) दे.
 —सराय, } 'हरम' (सं. पुं.) ।
 हरामज्जदगी, सं. स्त्री. (फा. हरामसादह्)
 दौरास्म्यं, दौर्जन्यं, दुष्टता, खलता, कुचेष्टा,
 पापम् ।

हरसिंगार

[६६०]

हरिद्रा

हरसिंगार, सं. पुं. (सं. हारश्चकारः) पारि-
जातः-तकः, प्राजक्तः, रागपुष्पी, खरपत्रकः ।

हरा, वि. (सं. हरित) हरित, प(पा)लाश
२. प्रसन्न, प्रहृष्ट, प्रफुल्ल ३. अभि, नव, प्रत्यग्र,
४. आम, अपक्व, अपरिणत ५. (व्रणादि)
अविरोपित, अशुष्क । सं. पुं., हरितः, पलाश-
हरिद्, वर्णः ।

—**पन**, सं. पुं., हरितत्वं, पलाशत्वं २. अपरि-
णतिः (स्त्री.), अपक्वता ३. नवता, प्रत्यग्रता ।

—**बाग**, मु., आपातरमणीया वार्ता ।

—**भरा**, मु., सरस, शोषरहित, हरिततरु-
लाभिः आच्छादित (वि.) ।

हराना, क्रि. स. (हि. हारना) अभि-परि-
परा-भू (भ्वा. प. से.), जि (भ्वा. प. अ.),
वि-परा-जि (भ्वा. आ. अ.), दम् (प्रे.)
२. (शत्रुं) विफली-मोघी कृ ३. क्लम्-श्रम्-
खिद्-आयस् (सब प्रे.) ।

प्राण—, मु., मृ (प्रे.), हन् (अ. प. अ.) ।

मन—, मु., मनः-चेतः हृ (भ्वा. प. अ.),
मुह् (प्रे.) ।

हराम, वि. (अ.) अधर्म्य, अन्याय्य, अवैध,
न्याय-धर्म-नियम-विधि, विरुद्ध, निषिद्ध, दूषित ।
सं. पुं., शूकरः २. अधर्मः, पापं, दोषः
३. व्यभिचारः, जारकर्मन् (न.) ।

—**कार**, सं. पुं. (अ. + फा.) व्यभिचारिन्,
औपस्थिकः २. पापः, पापाचारिन् ।

—**कारी**, सं. स्त्री., पापं, अधर्मः २. व्यभिचारः,
जारकर्मन् (न.) ।

—**खोर**, सं. पुं. (अ. + फा.) पापाजीविन्,
पापभक्षिन् २. परपिडादः, परान्नपुष्टः ३.
अलसः, उद्योगविमुखः ।

—**खोरी**, सं. स्त्री., पाप, आजीवः-आजीवनं
२. परान्नभोजनं ३. अलस्यं, उद्योगविमुखता ।

—**जादा**, सं. पुं. (अ. + फा.) जार, ज-जात-
उत्पन्न, विजात (जारजा स्त्री.) २. दुष्ट, खल,
पापिन् (गाली) ।

हरामी, वि., दे. 'हरामजादा' (१-२) ।

हरारत, सं. स्त्री. (अ.) तापः, दाहः, उष्मन्
२. मंद-ईषज्, ज्वरः, ज्वरांशः ।

हरावल, सं. पुं. (तु.) सेना, सुखं-अग्रं, अग्र-
नीकं, नासीरचराः (बहु.) ।

हरास, सं. पुं. (फा. हिरास) भयं, त्रासः २.
आशंका ३. विषादः ४. नैराश्यं, निराशता ।
हरा हुआ, वि., अप-हृत, चोरित, स्तेनित,
मुषित, मुष्ट, २. आच्छिन्न, सहसा आकलित-
गृहीत-धृत ३. दूरीकृत, अपसारित ४. नाशित
ध्वंसित ५. नीत, ऊढ ।

हरि, सं. पुं. (सं.) श्री, करः-धरः-निवासः ।
पतिः-वहसः, विष्णुः दे. २. इन्द्रः ३. अश्वः
४. कपिः ५. सिंहः ६. सूर्यः ७. चन्द्रः
८. मंडूकः ९. सर्पः १०. अग्निः ११. मयूरः
१२. श्रीकृष्णः १३. श्रीरामः १४. शिवः
१५. यमः । वि. (सं.) (१-२) पिंगल-
हरित, वर्णं ।

—**कथा**, सं. स्त्री. (सं.) भगवच्चरितवर्णनम् ।

—**कीर्तन**, सं. पुं. (सं. न.) भगवदगुणगानम् ।

—**गीतिका**, सं. स्त्री. (सं.) हरिगीता, छंदो-
भेदः ।

—**चंदन**, सं. पुं. (सं. पुं. न.) तैलपर्णिकं,
गोशीर्षं (चंदनभेदः) २. स्वर्गस्थवृक्षविशेषः
३. पद्मपरागः ४. कुंकुमं ५. चन्द्रिका ।

—**चाप**, सं. पुं. (सं.) इन्द्र-हरि, धनुस् (न.) ।

—**जन**, सं. पुं. (सं.) भगवद्भक्तः, ईशसेवकः ।

—**ताल**, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'हरताल' ।

—**द्वार**, सं. पुं. (सं. न.) प्रख्याततीर्थविशेषः,
गंगाद्वारम् ।

—**धाम**, सं. पुं. [सं. -मन् (न.)] विष्णुलोकः,
वैकुण्ठं, हरि, पद-पुरम् ।

—**भक्त**, सं. पुं. (दे.) 'हरिजन' ।

—**भक्ति**, सं. स्त्री. (सं.) हरि, भजन-प्रेमन्
(पुं. न.)-सेवनम् ।

—**वंश**, सं. पुं. (सं.) श्रीकृष्णसंतानः २. पुरा-
णग्रंथविशेषः ।

—**वाहन**, सं. पुं. (सं.) गरुडः २. सूर्यः
३. इन्द्रः ।

हरिण, सं. पुं. (सं.) मृगः, कुरंगः ।

—**कलंक**, सं. पुं. (सं.) मृगांकः, चन्द्रः ।

—**नयना**, सं. स्त्री., मृग-हरिण, नयनी-नेत्रा-
नेत्री-अक्षी ।

हरिणी, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'हिरनी' ।

हरित, वि. (सं.) हरित, प(पा)लाश, हरित(द)-
वर्णं २. कपिल, पिंग, पिंगल, पिशंग ।

हरिद्रा, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'हल्दी' ।

हरिन

[६६१]

हल्दी

हरिन, सं. पुं. (सं. हारणः) दे. 'हरिन' ।
 हरियाला, वि. (हि. हरा) हरित, हरिद्रण
 २. शादल ।
 हरियाली, सं. स्त्री. (हि. हरा) हरितत्व,
 विस्तारः-प्रसारः, हरीतिमन् (पुं.) २. तह-
 लता, समूहः-विस्तारः, शादः, शादलता ।
 हरिश्रन्द्र, सं. पुं. (सं.) विशंकुजः, त्रेतायुगे
 नृपविशेषः ।
 हरि(री)स, सं. स्त्री. (सं. हलीषा) हल-लांगल,
 दंडः ।
 हरीतकी, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'हड' ।
 हरीक, सं. पुं. (अ.) शत्रुः २. प्रति,द्वन्द्विन-
 स्वादिन् ।
 हरीग, सं. पुं. (सं.) वानरेन्द्रः २. सुधीवः
 ३. हनुमद ।
 हर्ज, सं. पुं. (अ.) विपनः, अन्तरायः १. हानिः-
 क्षतिः (स्त्री.) ।
 हर्ता, सं. पुं. (सं. हर्त्) दे. 'हरनेवाला' ।
 हर्क, सं. पुं., दे. 'हरक' ।
 हर्म्य, सं. पुं. (सं. न.) प्रसादः, राजभवनं
 २. विशालभवनं, धनिगृहं ३. न(ना)रकः ।
 हर्ष, सं. पुं., दे. 'हड' ।
 हर्ष, सं. पुं. (सं.) पुलकः, रोमान्त्रः दे. ।
 २. आनन्दः, प्र-मोदः, आकाशः, उल्लासः ।
 —विषाद्, सं. पुं. (सं-द्री हि.) मोदखेदौ,
 आनन्दविषादौ ।
 हर्षित, वि. (सं.) दृष्ट, दृषित, प्रीत, प्र-
 मुदित, प्रसन्न, प्रफुल्ल, आनन्दित ।
 हल्, सं. पुं. (सं.) शुद्ध-स्वरहीन, व्यंजनं,
 (क् से ह् तक अक्षर) ।
 हलंत, वि. (सं.) शुद्धव्यंजनान्त (शब्द) ।
 सं. पुं., दे. 'हल्' ।
 हल, सं. पुं. (सं. न.) लांगल, हालः, हलिः,
 गोदारणं, सीरः, सीरकः ।
 —चलाना या जेतना, कि. स., हल् (भ्वा.
 प. से.), कृष् (भ्वा. प. अ., तु. उ. अ.) ।
 —जीवी, सं. पुं. (सं-विन्) हालिकः, लांग-
 लिन, कृपाणः, कृषिकः ।
 —धर, सं. पुं. (सं.) हल, पाणिः-मृत,
 बलदेवः ।
 —मुख, सं. पुं. (सं. न.) निरीषः-धं, फालः-
 लम् ।

—वाहा, सं. पुं. (सं-हः) हलमाहिन्, परहल-
 चालकः ।
 —वाही, सं. स्त्री. (हि. हलवाहा) कृषिः (स्त्री),
 कर्षणम् ।
 हल, सं. पुं. (अ.) विवरणं, व्याख्यानं, साधनं
 २. निर्णयः, समाधानं, समाधिः ३. गणनं,
 संख्यानं ४. द्रावणं, विलयनम् ।
 —करना, कि. स., विवृ (स्वा. उ. से.),
 व्याख्या (अ. प. अ.), विशदयति (ना. धा.),
 स्पष्टीकृ, उत्तरं दा २. विद्रुविली (प्रे.),
 द्रवीकृ ।
 हलक, सं. पुं. (अ.) कंठः, गणः, निगरणः ।
 हलका, सं. पुं. (अ.) वृत्तं, वतुलं, मंडलं
 २. परिधिः ३. समूहः, निकरः ४. ग्रामादि-
 समूहः ५. चक्रवलयः-यम् ।
 हलका, वि. (सं. लघुक) लघु, अल्पलघु-
 स्तोक, भार-तोल, सु-सुख, वाद्य २. विरल,
 घनता-रहित ३. गाथ ४. अल्प, स्तोक ५. अल्प-
 मूल्य-अर्थ ६. मंद, सद्य ७. तुच्छ, नीच, क्षुद्र
 ८. सुकर, सुसाध्य ९. निश्चित, कृतकार्यं
 १०. सङ्गम, तनु ११. निकृष्ट, अपकृष्ट ।
 —पन, सं. पुं., लघुता, लाघवं, अल्पमारता,
 सुखवाद्यता २. क्षुद्रत्वं, तुच्छता ३. अव, मानः-
 हेलना, प्रतिष्ठाभावः ।
 —करना, मु., लघयति (ना. धा.), लघुक
 २. अवगण् (चु.) अवमन् (प्रे.), तृणाव
 गन् (दि. आ. अ.) ।
 हलचल, (हि हिलना + चलना) संश्लेषः,
 संरंभः, संभ्रमः, संकुलं, कोलाहलः २. उपद्रवः,
 विप्लवः, संमर्दः ३. कंषः, स्पंदः ।
 —मचनाना, कि. अ., संक्षीभः संजन् (दि. आ. से.)-
 प्रवृत्त (भ्वा. आ. से.) ।
 हलदिया, सं. पुं. (हि. हलदी) पाण्डु, रोगः-
 आमयः, पाण्डुकः, कामला ।
 हलदी, सं. स्त्री. (सं. हलदी) हरिद्रा, पीतिका,
 पीता, कांचनी, वर्णवती, पित्रा, बर, वाणिनी,
 रंजनी, भद्रा, मंगला, शोभा ।
 —उठना या चदना, मु., विवाहात् प्राक्, वर-
 बन्धोः तैलहरिद्राभ्यंजनम् ।
 —लगा के बैठना, मु., निरुद्धम एकत्र सद्य
 (भ्वा. प. अ.) २. दर्पावलिप्त (वि.) वृत्
 (भ्वा. आ. से.) ।

—लगी न फिटकरी, सु., व्ययं विनैव ।
 हलक, सं. पुं. (अ.) शपथः, दे. 'सौंद' ।
 —नामा, सं. पुं. (अ. + फा.) शपथपत्रम् ।
 हलवा, सं. पु. (अ.) काटाहः, संवावः,
 मोहनभोगः ।
 —सोहन, सं. पुं., शोभनः, संवावः काटाहः-
 मोहनभोगः ।
 हलवाह(य)न, सं. स्त्री. (द्वि. हलवाह) काद-
 विकी, मिष्टान्नविकेत्रो (खाडिकी, खांडविकी)
 २. कादविक-मिष्टान्नविकेद्रु-खाडिक, पत्नी ।
 हलवाहै, सं. पुं. (अ. हलवा) खाडिकः,
 खांडविकः, कादविकः, मिष्टान्नविकेद्रु ।
 हलक, वि. (अ.) हत, मारित ।
 —करना, सु., ह्य् (अ. प. अ.) ।
 हलाकत, सं. स्त्री. (अ.) वधः, हत्या २. मृत्युः
 ३. विनाशः ।
 हल, वि. (अ.) धर्म्यं, न्याय्य, दीध, शक्य-
 विधि-धर्म-अनुकूल-विहित, उचित । सं. पुं.
 (अ.) मध्य, पशुः-जंतुः (इस्लाम) ।
 —खोर, सं. पुं. (अ. + फा.) धर्म-पुण्य, आजी-
 विन् २. खलपूः (पुं.), संमार्जकः, दे. 'भंगी' ।
 —खोरी, सं. स्त्री., धर्म-पुण्य, आजीवः-आजी-
 वनम् ।
 —करना, सु., न्यायेन-धर्मेण व्यवह (भ्वा. प. अ.)
 २. शनैः शनैः ह्य् (अ. प. अ.) (इस्लाम) ।
 —का, सु., शास्त्रानुकूल, वैध, धर्म्यं ।
 —की कमाहै, सु., पुण्यलक्ष्मीः, न्यायोपाहित-
 धनम् ।
 —हलाहल, सं. पुं. (सं. न.) हाल(ला)हलं,
 हाहलं, समुद्रमंथनजो विषविशेषः २. कालकूटं,
 महाविषं ३. गरलः-लं, विषं दे. ।
 हली, सं. पुं. (सं. लीन्) बलदेवः २. कृषाणः ।
 हलीम, वि. (अ.) नम्र, विनीत २. शान्त,
 शमान्वित ।
 हलीमी, सं. स्त्री. (अ. हलीम) नम्रता,
 विनयः २. शान्तिः (स्त्री.), प्रसादः ।
 हलका, वि., दे. 'हलका' ।
 हलदी, सं. स्त्री., दे. 'हलदी' ।
 हल्ला, सं. पुं. (अनु.) कोलाहलः, कलकलः,
 तुमुलं, उत्क्रोशः, विर(रा)वः २. आक्रमः,
 अवस्कन्दः ।

—करना, क्रि. अ. कोलाहलं कृ, उत्क्रुञ्
 (भ्वा. प. अ.) २. आक्रम (भ्वा. प. से.),
 भ्वा. आ. अ.) ।
 हवन, सं. पुं. (सं. न.) होमः, होत्रं, यज्ञः दे.
 २. अग्निः ३. हवनी, होमकुंडम् ।
 —करना, क्रि. कृ. (लु. उ. अ.), यञ्
 (भ्वा. उ. अ.), होमकुंडे हविः शिप्
 (तु. प. अ.) ।
 —कुंड, सं. पुं. (सं. न.) हवनी-यज्ञ-होम, कुंडम् ।
 हवालदार, सं. पुं. (अ. हवालः + फा. दार)
 *हवालदारः, सेनाधिकारिभेदः ।
 हवस, सं. स्त्री. (फा.) कामना, लालसा
 २. तृष्णा, दे. ।
 हवा, सं. स्त्री. (अ.) मरुत, पवनः, वायुः दे. ।
 २. भूतः, प्रेतः ३. ख्यातिः, प्रसिद्धिः (स्त्री.)
 ४. विश्वासः, प्रत्ययः ५. उत्कटेच्छा ।
 —खोरी, सं. स्त्री. (अ. + फा.) पर्यटनं, भ्रमणं,
 वायुसेवनम् ।
 —चक्की, सं. स्त्री. (अ. + द्वि.) *वायुचक्रं,
 पवनपेशणी ।
 —दार, वि. (अ. + फा.) प्रवात, सुभात,
 पवनपूर्ण ।
 —उखडना, सु., यशः-प्रत्ययः नश (दि. प. वे.) ।
 —करना, सु., वाञ् (लु.) ।
 —खाना, सु., पर्यट (भ्वा. प. से.), वायुं
 सेव् (भ्वा. आ. से.) ।
 —बाँधना, सु., ख्यातिः कीर्तिः-जन् (दि. आ. से.) ।
 —बाँधना, सु., विधत् (भ्वा. आ. से.),
 आत्मानं इलाव् (भ्वा. आ. से.) ।
 —से बातें करना, सु., अतिवेगेन धाव्
 (भ्वा. प. से.) ।
 —से खडना, सु., नित्यं कलहोच्यत (वि.) धृष्ट
 (भ्वा. आ. से.) ।
 —हो जाना, सु., सत्वरं पलाय् (भ्वा. आ. से.)
 २. तिरोभू, विली (कर्म.) ।
 हवाई, वि. (अ. हवा) वायव् (चो स्त्री.),
 वायव्य-वायवीय (न्वा स्त्री.) २. नभःस्थ,
 गगन, गामिन्-चारिन् ३. निर्मूल, निराधार ।
 सं. स्त्री., *वायवो, अग्नित्रीटनकभेदः ।
 —अड्डा, सं. पुं., विमान, वायुयान, स्थान-
 निवेशः ।

हवाल

[६६३]

हाँ

- किला, महल, सं. पुं., खपुष्पं, गगन-कुसुमम् ।
- खकी, सं. स्त्री., दे. 'हवाकची' ।
- जहाज़, सं. पुं. (हि. + अ.) वायु-व्योम-यानं, विमानः-नं, पवनपोतः ।
- हवाल, सं. पुं. (अ. अहवाल) दशा, अवस्था
२. परिणामः, गतिः (स्त्री.) इ. वृत्तं, समाचारः ।
- हवाला, सं. पुं. (अ.) उल्लेखः, निर्देशः, संकेतः
२. उदाहरणं, दृष्टान्तः इ. रक्षा, रक्षणं, अधिकारः ।
- देना, क्रि. स., निर्दिश (तु. प. अ.), उल्लिख (तु. प. से.) ।
- करना, मु., दे. 'सौपना' ।
- हवालात, सं. पुं. स्त्री. (अ.) गुप्तिः (स्त्री.), निरोधः २. *गुप्तिगृहम् ।
- करना, मु. गुप्तिगृहे निरुध् (र. प. अ.) ।
- हवास, सं. पुं. (अ.) इन्द्रियाणि-हृषीकाणि (न. बहु.) २. उपलब्धिः (स्त्री.), संवेदनं
३. संज्ञा, चैतन्यं, दे. 'होश' ।
- हवि, सं. पुं. [सं. हविस् (न.)] हवनसामग्री, हव्यं, साम्राय्यं, हवनीयं, होमीयद्रव्यम् ।
- हवेली, सं. स्त्री. (अ.) हव्यं, भवनं, धनिगृहं
२. पत्नी ।
- हव्य, सं. पुं. (सं. न.) दे. 'हवि' ।
- हवामत, सं. स्त्री. (अ.) गौरवं, महिमन्
२. विभवः, ऐश्वर्यम् ।
- हसट्, सं. पुं. (अ.) ईर्ष्या, मत्सरः ।
- हसत्र, अव्य. (अ.)—अनुसारं, यथा— ।
- तौफ़ीक, अव्य. (अ.) सामर्थ्यानुसारं, यथाशक्ति (दीनों अव्य.) ।
- हसरत, सं. स्त्री. (अ.) शोकः, आधिः, दुःखम् ।
- हसीन, वि. (अ.) झुन्दर, सुरूप ।
- हस्त, सं. पुं. (सं.) करः, पाणिः, दे. 'हाथ'
२. चतुर्विंशत्यंगुलिपरिमाण इ. हस्तलिपिः (स्त्री.), लेखनशैली इ. नक्षत्रविशेषः ५. शुंडा, दे. 'हूंड' ।
- कार्यं, सं. पुं. (सं. न.) करकर्मन् (न.)
२. हस्तशिल्पं, दे. 'दस्तकारी' ।
- कौशलं, सं. पुं. (सं. न.) पाणिपाटवं, हस्त-लाघवं-चापल्यम् ।
- क्रिया, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'हस्तकार्यं' (१-२) ।

- क्षेप, सं. पुं. (सं.) प्रातः, बंधनं-रोधनं
२. परकार्यं, चर्चा-प्रतिघातः ।
- क्षेप करना, क्रि. स., परकार्येषु व्याप् (तु. आ. अ.), परकार्याणि चर्चं (तु. प. से.) निरून् (चु.) ।
- गत, वि. (सं.) प्राप्त, लब्ध, अधिगत, हस्तस्थ ।
- तल, सं. पुं. (सं. न.) करतलः, दे. 'हवेली' ।
- त्राण, सं. पुं. (सं. न.) करवाणं दे. 'दस्ताना' ।
- ट्ट, सं. पुं. (सं. न.) कर-पाणि-पृष्ठम् ।
- मैथुन, सं. पुं. (सं. न.) हस्तेन शुक्रपातनं-इन्द्रियसंचालनम् ।
- रेखा, सं. स्त्री. (सं.) करतल-रेखानेया ।
- लाघव, सं. पुं. (सं. न.) हस्त-कौशल-चापल्यम् ।
- लिखित, वि. (सं.) हस्तेन लिपिक्रम ।
- लिपि, सं. स्त्री. (सं.) लेखनशैली ।
- सूत्र, सं. पुं. (सं. न.) मंगल्यं करवाणं, यत्र-मयं-अंकण-बलयम् ।
- हस्ति, सं. पुं. (सं. तिन्) दे. 'हाथी' ।
- हस्तिनी, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'हथनी' २. स्त्री-भेदः (कामशास्त्र) ।
- हस्ती, सं. पुं., दे. 'हाथी' ।
- हस्ती, सं. स्त्री. (फ्रा.) सत्ता, अस्तित्वम् ।
- हस्ते, अव्य. (सं.) द्वारा, द्वारेण ।
- हहा, सं. स्त्री. (अनु.) अट्ट-हास्यं-हासः-हसितं, हहाकारः, हीही (अव्य.), हास्यध्वनिः
२. दैन्यसूचकध्वनिः, अयि (अव्य.), हहा-कृतिः (स्त्री.) इ. अनुनयातिशयः, सप्रणि-पातं प्रार्थनम् ।
- खाना, मु., पादयोः पतित्वा अनुनी (स्वा. प. अ.)—प्रार्थं (तु. आ. से.) ।
- हाँ, अव्य. (सं. आन्) ओम्, एवं, अथ किं
२. तथेति, बाढं, साधु (सव अव्य.) इ. तथापि
४. दे. 'यहाँ' ।
- हाँ, अव्य., मामाम्, ओमोम् २. न न, मा मा, न, नहि, नो ।
- करना, मु., अंगीस्वी-क, अनुशा (क्. उ. अ.), अनुमन् (दि. आ. अ.) ।
- जी हाँ जी करना, मु., चाडुभिः प्रसद् (प्रे.)—उपच्छंद (चु.)—स्तु (अ. प. अ.) ।

—में हॉ मिलाना, मु., अविचार्यैव द्रव्यति-
स्त्यापयति (ना. धा.) २. दे. 'हॉ जी हॉ
जी करता' ।

हॉक, सं. स्त्री. (सं. हुंकारः) हुंकृतिः (स्त्री.),
अकारण-गा, उच्चैराह्वानं, तारस्वरेण संबोधनं
२. गर्जन-न, युद्धह्वानं, सिंहनादः, ध्वेडा,
समरार्थमाकारण-गा ३. प्रोत्साहन-शब्द-ध्वनिः
४. रक्षार्थ-सहायतायै, आह्वान-आकारणम् ।

—पुकार, सं. स्त्री., कोलाहलः, उत्क्रोशः ।

—देना या लगाना, मु., उच्चैः आकृ (प्रे.),
तारस्वरेण आह्वे (भ्वा. प. अ.), शब्दायते
(ना. धा.) ।

हॉकना, कि. स. (हि. हॉक) दे. 'हॉक देना'
१. सिंहनादं कृ, युद्धाय आकृ (प्रे.) २. वि-
कृत्य (भ्वा. आ. से.), आत्मानं दलः
(भ्वा. आ. से.) ४. नुद-प्रणुद (तु. प. अ.,
प्रे.) प्रेर (प्रे.), नृ-चल् (प्रे.), नुद (चु.),
अज् (स्वा. प. से.) ५. अपस्-निष्कस् (प्रे.)
६. बीज (चु.) । सं. पुं. तथा भाव, दे. 'हॉक'
(१-२) ३. विक्रयनं, आत्मदलावन-या ४.
प्रणोदनं, प्रेरणं, प्रचोदनं, प्रचालनं, प्राजनं
५. अपसारणं, निष्कासनं ६. बीजनम् ।

हॉकनेवाला, सं. पुं., प्रेरकः, वाहकः, चालकः,
प्रमोदकः, प्रचोदकः २. ।

हॉडी, सं. स्त्री. (सं. हंटी) हंटिका २. काच-
हंडी-हंटिका ।

—पकना, मु., उपजप् (कर्म.), कूटं, रन्
(कर्म.), उपजापः कृ (कर्म.) ।

हॉफ(प)ना, कि. अ. (अनु-हॉफ हॉफ या
सं. हाफिका >) सकृष्टं अस् (अ. प. से.),
सत्वरं प्राग् (अ. प. से.) । सं. पुं., कृच्छ्रथासः,
त्वरितप्रागनम् ।

हॉसी, सं. स्त्री., दे. 'हॉसी' ।

हा, अव्य. (सं.) हर्षशोकमयविस्मयकोपनिदा-
सूचकमन्वयम् ।

हाइड्रोजन, सं. पुं. (अं.) उदजनम्, आर्द्र-
जनम् ।

हाइड्रोफोबिया, सं. पुं. (अं.) अलर्कीरोगः,
आलर्की, जल-भय-संत्रासः ।

हाइड्रन, सं. पुं. (अं.) समासचिह्नं (-) ।
(व. राज-सेवक) ।

हाईकोर्ट, सं. पुं. (अं.) प्रधानन्यायालयः,
उच्च-न्यायालयम् ।

हाई-स्कूल, सं. पुं. (अं.) उच्च-विद्यालयः ।

हाउस, सं. पुं. (अं.) गृहं, गेह-हं, अ(अ)
गारः-रम् २. सभा, परिषद् ३. नृपवंशः ।

हाऊ, सं. पुं. (अनु.) दे. 'हौवा' ।

हाकिम, सं. पुं. (अ.) शासकः, शासित्,
अधिकारित्, नियोगित्, आधिकारिकः ।

हाकिमी, सं. स्त्री. (अ. हाकिम) शासनं,
अधिकारः, प्रभुत्वं, अधिपत्यं, शिष्टिः (स्त्री.),
राज्यम् ।

हाकी, सं. स्त्री. (अं.) आंगलक्रीडाभेदः ।

हाजत, सं. स्त्री. (अ.) आवश्यकता, अपेक्षा
२. कामना, लालसा ३. मल-मूत्र-उत्सिसृष्ट्या
४. गुप्तिः (स्त्री.), दे. 'हवालात' (१) ।

हाजिमा, सं. पुं. (अ.) पचनं, वि-परि-पाकः,
पक्तिः (स्त्री.) २. जठर-अग्निः-अनलः,
पाचनशक्तिः (स्त्री.) ।

—हाजिना, मु., अग्निमांसं जन् (हि. आ.
से.), अन्नं न पच (कर्म.) ।

हाजिम, वि. (अ.) पाचक, पाचन, अग्नि-
वर्द्धक ।

हाजिर, वि. (अ.) उपस्थित, पुरःस्थित, वर्त-
मान, विद्यमान २. संनद्ध, सज्ज, उच्यत ।

—करना, कि. स., उप-पुरः-संमुखं स्था (प्रे.) ।

—जयाच, वि. (अ.) प्रत्युत्पन्नमति, विदग्ध ।

—जवाबी, सं. स्त्री., प्रत्युत्पन्नमतितामर्द, वैद-
ग्ध्यम् ।

—ज नाज़िर, वि., प्रत्यक्षदर्शक ।

—होना, कि. अ., उपस्था (भ्वा. उ. अ.),
उपस्थित (वि.) भू ।

गैर—, वि., अनुपस्थित, अविद्यमान ।

हाजिरी, सं. स्त्री. (अ.) उपस्थिति (स्त्री.),
विद्यमानता ।

—का रजिस्टर, सं. पुं., उपस्थितिपत्रिका ।

—लेना, कि. स. उपस्थिति अंक (चु.) ।

हाजिरीन, सं. पुं. (अ. 'हादिर' का बहु.)
उपस्थितव्रताः (बहु०) श्रोतृवर्गः ।

—(जे) जलसा, सं. पुं., सभ्याः-सदस्याः
(बहु.) ।

हाजी, सं. पुं. (अ.) मक़ायाम्निव, *हद्विन
२. कृत-भक्तायात्रः-हजः ।

- हाट, सं. स्त्री., दे. 'हट्ट' (१-२) ।
 हाटक, सं. पुं. (सं. न.) सुवर्ण, दे. 'सोना' ।
 हाता, सं. पुं., दे. 'हाता' ।
 हातिम्, सं. पुं. (अ.) अरवदेशीयोज्युदारः
 सःमहाविशेषः २. लुक्तहरमनुष्यः ३. निपुण-
 दक्षः, मनुष्यः ।
 हाथ, सं. पुं. (सं. हस्तः) करः, पाणिः, शयः,
 पंचशास्त्रः, सुजादलः, शमः, कुलिः २. चतु-
 विशत्यंशुलिपरिमाणं ३. वारः, दे. 'हाँव'
 ४. कर्मकरः ५. दंडः, मुष्टिः (स्त्री.), वारंगः
 ६. वशः, अधिकारः ।
 —भाना, मु., अधिगण-उपलब्ध (कर्म.) ।
 —उठाना, मु., तड् (चु), प्रह (स्वा. प. अ.) ।
 —की चालाकी, मु., हस्तकौशलं, दे. ।
 —की मँल, मु., लुक्तशुद्ध-असार-वस्तु (न.) ।
 —खींचना, मु., परिहृ-विरम् (भा. प. अ.),
 वर्ज (चु.) ।
 —चढ़ना, मु., दे. 'हाथ आना' २. वशं आया
 (अ. प. अ.) ।
 —जोड़ना, मु., हस्तौ समानोय अथवा अंजलि
 बद्धवः अथवा सांजलि प्रार्थं (चु. आ. से.) ।
 —अनुनी (भा. प. अ.)-याच् (स्वा. आ. से.)
 —डालना, मु., दे. हस्तक्षेप करना ।
 —घोना, मु., नियुज् (कर्म.), वंचित-विरहित-
 विहीन (वि.) भू ।
 —तंग होना, मु., दारिद्र्येण-निर्धनतया पीड
 (कर्म.) ।
 —पर हाथ धरे रहना, मु., निरुद्योग-निरुद्यमं
 स्था (भा. प. अ.) ।
 —पसारना, मु., याच् (भा. अ. से.) ।
 —पाँव फूँलना मु., भयेन निस्तब्धीभू,
 शोकेन जडोभू ।
 —पाँव मारना, मु., प्र. थप (भा. आ. से.),
 उधृज् (क. उ. अ.) ।
 —फेरना, मु., लल् (चु.) ।
 —वढ़ाना, मु., अहीतु-आदातुं प्रयत् (भा.
 आ. से.) ।
 —बाँधना, मु., दे. 'हाथ जोड़ना' ।
 —मलना, मु., अशुशी (अ. आ. से.),
 पश्चात्तार्गं कृ २. निराश-दुःखित (वि.) भू ।
 —मारना, मु., छलेन अपहृ (भा. प. अ.)
 २. अस्तिता प्रहृ (भा. प. अ.) ।

- मिलाना, मु., करौ स्पृश (तु. प. अ.)
 २. मलयुद्धाय सज्ज (वि.) भू ।
 —में रखना, मु., वशो-अधिकारे स्था (प्रे.) ।
 —लगाना, मु., दे. 'हाथ आना' २. आरम्भ
 (कर्म.) ।
 —समेटना, मु., दानात्, वितरणत् निवृत्त
 (भा. आ. से.)-विरम् (स्वा. प. अ.) ।
 —साक करना, मु., हन् (अ. प. अ.)
 १. अन्यायेन हृ (स्वा. प. अ.) ।
 —से जाना, मु., दे. 'हाथ धोना' ।
 हाथी-हाथ, मु., सत्वरं, शीघ्रं २. कर-हस्त-पर-
 परया ।
 हाथा, सं. पुं. (सं. हस्तः >) दे. 'हथी'
 २. कुडघापितं मंगल्यं हस्तचिह्नम् ।
 —पाई, सं. स्त्री., हस्ताहस्ति (अव्य.), संसर्दः,
 कलहः ।
 —पाई करना, कि. अ., हस्ताहस्ति युष्
 (दि. आ. से.), कलहायते (ना. धा.) ।
 —बाँही, सं. स्त्री., दे. 'हाथापाई' ।
 हाथो, सं. पुं. (सं. हस्तिन्) करिन्, दन्तिन्,
 दन्तावलः, द्विपः, अनेकपः, द्विरदः, गजः,
 नागः, कंजरः, वारणः, इभः, स्तम्बेरमः,
 म(मा)तंगः, पद्मिन्, पुष्करिन्, महाभृताः,
 कशुर्पणः, सिंशुरः, महामदः, सिन्दूरतिलकः,
 रत्निन्, महाबलः, द्रुमारिः ।
 —खाना, सं. पुं. (हि + का.) गजगृहं,
 वृत्तिशाला ।
 —दौत, सं. पुं. (सं. हस्तिदंतः) गजदंतः ।
 —पाँव, सं. पुं., श्लोपदः-दं, शिलोपदः-दं,
 पापादः, गडीरः-वल्मीकः ।
 —वान, सं. पुं., आधोरणः-हस्तपकः, हास्तिकः,
 दे. 'महावन' ।
 —पर चढ़ना या बाँधना, मु., सुसमृद्ध (वि.)
 वृत् (भा. आ. से.) ।
 हान्या, सं. पुं. (अ.) दुर्घटना, दे. ।
 हानि, सं. स्त्री. (सं.) क्षतिः (स्त्री.), अप-
 चयः-हारः, अघायः २. क्षयः, नाशः, अभावः,
 ३. स्वास्थ्यवधा ४. अनिष्टं, अहितं, अशुभम् ।
 —करना, कि. स., हानि कृ, नश (प्रे.), क्षि
 (प्रे.), अपचि (भा. उ. अ.), क्षति अन् (प्रे.) ।
 —कारक, वि. (सं.) हानि-कर-कार-कारिन्,
 अपचय-क्षय-कारिन्, नाशक, अनिष्टोत्पादक ।

—होना, क्रि. अ., क्षतिः जन् (दि. आ. से.), नश् (दि. प. वे.), वियुज् (कर्म.), वि-परि-हा (कर्म.), वियुक्तहोन-रहित (वि.) भू।

हाक्रिज्ञ, सं. पुं. (अ.) रक्षकः, प्रातृ २. *कुरानपाठिन।

हाक्रिज्ञा, सं. पुं. (अ.) स्मृतिः, दे. 'स्मरण-शक्ति'।

हामिल, वि. (अ.) भारवाह-हक, स्मरिन् २. नेतृ, प्रापक।

हामिला, सं. स्त्री. (अ.) गणिगी, गर्भवती, अन्तर्बली, ससत्वा।

हामी, सं. स्त्री. (दि. हों) अनुमतिः-स्वीकृतिः (स्त्री.), स्वीकारः, अनुज्ञा।

—भरना, मु., स्वी-अंगी-कृ, अनुज्ञा (क. उ. अ.), अनुमन् (दि. आ. अ.)।

हाय, अव्य. (सं. हा) आः, अहह, कष्टं, हंत (सब अण्.)। सं. स्त्री., नि-दीर्घ-श्वासः, उच्छ्वसितं २. कष्टं, पीडा।

—हाय, अव्य. (सं. हा हा) आः आः इ.। सं. स्त्री., शोकः २. व्याकुलता।

—पडना, मु., दुष्कृतं शायः फल् (स्वा. प. से.)।

—मारना, मु., दीर्घं श्वस् (अ. प. से.), (शोकेन) हा-हा कृ, निश्वासं सुच्य (दु. प. अ.)।

हार', सं. स्त्री. (सं. हारिः) पराजयः, परि-परा-अभि-भवः २. श्रान्तिः, क्लान्तिः (स्त्री.), आयासः ३. हानिः-क्षतिः (स्त्री.)।

—जीत, सं. स्त्री., जयपराजयौ (पुं. द्वि.)।

—खाना, मु., दे. 'हारना'।

—देना, मु., दे. 'हराना'।

हार', सं. पुं. (सं.) कंठ-भूषण-आभरणं-माला, ग्रैवं, ग्रैवेयकं २. दे. 'मोतियों का हार'।

—का मनका, सं. पुं., हार-, गुटिका-गुलिका-अक्षः।

फूलों का—, सं. पुं., माला, माल्यं, स्रञ् (स्त्री.) आपीडः।

मोतियों का—, सं. पुं., मुक्तावली-लिः (स्त्री.), मुक्ता-लता-माला, मौक्तिकसरः, शारा।

रत्नों का—, सं. पुं. गणिमाला, रत्नावली-लिः (स्त्री.)।

सीने का—, सं. पुं., कनकमूत्रम्।

—हार, प्रस्थ., दे. 'हार'।

हारना, क्रि. अ. (सं. हारणं >) परा-वि-

(कर्म.), अभि-परा-परि-भू (कर्म.) अभिभूत-पराजित (वि.) भू २. वफल (वि.) जन् (दि. आ. से.) ३. श्रन् बलम् (दि. प. से.), धिद् (दि. आ. अ.)। क्रि. न., हा (जु. प. अ., प्रे. हापयति), अप-ह (प्रे.) २. नश-क्षि (प्रे.) ३. त्युज् (भ्या. प. अ.) ४. दां (जु. उ. अ.)। सं. पुं. तथा भव, दे. 'हार'।

हारने योग्य, वि., अभिभवनीय, पराजय।

—वाला, सं. पुं., आश्रयपराजय, पराजित-कलत्र-प्रायः।

हारा हुआ, वि., वि-पर-जित, अभिपरा-परि-भूत २. हत, हारित, नष्ट, ३. श्रान्त, क्लान्त, सिन्न ४. अकृतकार्य।

हारमोन, सं. पुं. (अं.) जीवनरसः।

हारमोनियम, सं. पुं. (अं.) *मधुरध्वनम्।

—हारा, प्रस्थ. (सं-स्थार >) (प्रायः कर्तृनायक प्रत्ययों, (-अक, -वृत्, -स्य आदि) से अनुवाद किया जाता है। उ. देनेहारः=शायक, दातृ ६०)।

हारिल, सं. पुं. (सं. हरितालकः) हरितवर्णः पीतमदः नीलचंचुः चटकमेदः, हारिरीणः, हारीणकः।

हारी, वि. (सं-हारिन्) अप-हर्तृ हारक, आच्छेदक, बलात् ग्रहांतृ २. वाहक, प्रापक, नायक, हर ३. छंटक, मुंठक, मोपक, चौर ४. नाशक, ध्वंसक ५. संघादक, समाहर्तृ (कर आदि) मनो-चेतो, हर।

हारीत, सं. पुं. (सं.) चौरः, छंटकः, कितवः २. स्मृतिकारविशेषः ३. दे. 'हारिल'।

हार्ट-फेल, सं. पुं. (अं.) हृत्स्यन्दनविरोधः, हृदय-वरोधः।

हारिक, वि. (सं.) हृदय-संबन्धिन-विषयक, चैत्त(-त्ती स्त्री.), चैत्तिक (-की स्त्री.), मानस -सी स्त्री.), मानसिक(-वी स्त्री.) २. निर्व्याज्, निष्कपट ३. स्नेहशील, स्निग्ध, स्नेहिन् अनुरागवद्, अनुरागिन्।

हाल', सं. पुं. (अ.) अवस्था, दशा २. परि-स्थितिः (स्त्री.) ३. समाचारः, वृत्तान्तः ४. विवरणं, इतिवृत्तं ५. चरित्रं, कथा ६. समाधिः, ईश्वरीकायता ७. वर्तमानकालः। वि., वर्तमान, विद्यमान, उपस्थित। अव्य., अधुनैव २. शीघ्रं, स्वरितम्।

—का, सु., अभि, जव, नून, अचिर, प्रस्थय ।
 —बेहाल होना, सु., शुभव अशुभं, मंगलात्
 अमंगलं, क्रमशो विकारवृद्धिः (स्त्री.) ।
 —में, सु., वर्तमाने, आधुनिककालमें, इवःतीतने
 काले ।
 हाल, सं. स्त्री. (सं. हलन्) कंपः, कंपनं
 २. संघट्टः, समाघातः ३. लौहं चक्रवलयम् ।
 हाल, सं. पुं. (अं.) मुक्ता, शाला, बाह्यकोष्ठः,
 आस्थानी ।
 हालत, सं. स्त्री. (अ.) दशा, अवस्था, स्थितिः
 (स्त्री.) २. आधिकारस्था ३. परिस्थितिः
 (स्त्री.) ।
 हालहूल, सं. स्त्री. (सं. हलनम् >) कलकलः,
 कोलाहलः २. उपद्रवः, संमर्दः ।
 हालाँ कि, अव्य. (का.) यथषि (अव्य.) ।
 हाला, सं. स्त्री. (सं.) मयं, सुरा दे. ।
 हालाहल, सं. पुं., दे. 'हलहल' ।
 हाली, अव्य. (अ. हाल) शीघ्रं, मत्वरम् ।
 हाव, सं. पुं. (सं.) शृङ्गारभावजः चेष्टा (लीला,
 विभ्रम, विलास आदि) आह्वानम् ।
 —माव, सं. पुं. (सं.) पुरुषमनोहारी स्त्रीचेष्टा-
 भेदः, विभ्रमः, विलासः, लीला ।
 हावनदस्ता, सं. पुं. (का.) उलूखलखल्ल-
 मुसल्लेली (द्वि.) ।
 हाशिया, सं. पुं. (अ. -यह) प्रांतः, उपांतः,
 सीमा २. वल्लप्रांतः, चौरी-रिः (स्त्री.), दशा ।
 हास, सं. पुं. (सं.) दे. 'हँसी' (१-४) ।
 —कर, वि. (सं.) हास्यजनक २. अव-उप-
 हास्य ।
 हासिद, वि. (अ.) ईर्ष्या(र्ष्या)लु, ईर्षु-र्षु ।
 हासिल, वि. (अ.) लब्ध, अभिगत, प्राप्त दे. ।
 हास्य, वि. (सं.) हास, कर-जनक-उत्पादक,
 हास, योग्य-आस्वद २. अव-उप-हास्य, अव-
 उप-हासाहं सं. पुं. (सं. न.) दे. 'हँसी' (१-४) ।
 —कर, वि. (सं.) दे. 'हास्य' वि. (१-२) ।
 हास्यास्पद, सं. पुं. (सं. न.) हासविषयः
 २. उपहासविषयः । वि., दे. 'हास्य' (वि. १-२) ।
 हास्योत्पादक, वि. (सं.) दे. 'हास्य'
 (वि. १-२) ।
 हा हा, सं. पुं. (अनु.) हास(स्य), शब्दः-
 ध्वनिः, अट्टहासः, अनुनय-वेदन्य, शब्दः-ध्वनिः
 ३. अहह, काह, हा वंत ।

—ही ही, } सं. स्त्री., परिहासः, विनोदः ।
 —झी झी, }
 —खाना, सु., सर्वैभ्यं आहु (प्रे.)-प्रार्थ-
 (चु. आ. से.) ।
 —ही ही करना, सु., इम् (भ्वा. प. से.)
 २. परिभ्रम्, विनोदवाक्यानि उदीर (प्रे.) ।
 हाहाकार, सं. पुं. (सं.) हाहा, रवाः-शब्दः-
 ध्वनिः २. आ-वि, कोशः, आ, क्रन्दनं, क्रन्दितं,
 चीत्कारः, भयजः कोलाहलः ।
 —करना, क्रि. अ., हा हा कु, हा हा ध्वनि
 उरपद् (प्रे.) २. आ-वि, क्रन्द (भ्वा. प. अ.),
 आ, क्रन्द (भ्वा. प. से.) ।
 हिंजीर, सं. पुं. (सं.) गजपद, बन्धनं-शंखला-
 रज्जुः (स्त्री.) ।
 हिंडोल, सं. पुं. (सं. हिंदोलः) रागभेदः ।
 हिंडोला, सं. पुं. (सं. हिंदोला) हिंदोलाकः,
 २. शोला-लालिका प्रेक्षा, आन्दोलः, विन्दोलः
 ३. दोला, गीतं-गीतिका ।
 हिंद, सं. पुं. (का.) भारतं, भारतवर्षं,
 आर्यावर्तः ।
 हिंदवाना, सं. पुं., दे. 'तरबूब' ।
 हिंदवी, सं. स्त्री. (का.) भारतीयभाषा
 २. हिन्दीभाषा ।
 हिंदसा, सं. पुं. (अ.) अंकः (गणित) ।
 हिंदी, वि. (का.) भारतीय, भारत-वर्षीय-
 देशीय । सं. पु., भारतः, भारतवासिन,
 भारतवर्षवासिन, भारतीयः । सं. स्त्री., उत्तर-
 भारतस्य मुख्यभाषा, हिन्दीभाषा ।
 हिंदुस्तान, सं. पुं. (का. हिंदोस्तान) दे. 'हिंद'
 २. उत्तरभारतस्य मध्यमभागः (दिल्ली से
 पठने तक) ।
 हिंदुस्तानी, वि. (का. हिन्दीस्तानी) दे. 'हिंदी'
 वि. । सं. पुं., दे. 'हिंदी' सं. पु. । सं. स्त्री.,
 अखिलभारतीयभाषा, *हिन्दुस्थानी ।
 हिंदू, सं. पुं. (का.) आर्यः, वेदस्मृति-पुराण-
 अनुयायिन-अनुगामिन, *हिन्दुः ।
 —पन, सं. पुं., *हिंदुत्व, आर्यत्वम् ।
 हिंदोस्तान, सं. पुं. (का.) दे. 'हिंदुस्तान' ।
 हिंसक, वि. (सं.) घात(तु)क, घातन, हिल,
 शरार, हन्त, हिसालु, वध-हिंसा, शील
 २. मांसभक्षक, क्रव्याद (पशु) ।

हिंसनीय

[६६८]

हिनहिनाहट

हिंसनीय, वि. (सं.) हननव्य, व्यापादनीय, मारणीय, वधय ।

हिंसा, सं. स्त्री. (सं.) अप,कारःकृतः (स्त्री.)- क्रिया-करणं, पीडा, वाधा, अर्दनं २. वधः, हत्या, हननं, हिंसनं, प्रातः, मारणं, निषूदनम् ।

—करना, क्रि. स., पीड् (चु.), अपकृ, व्यथ् (प्रे.), अर्द् (भ्वा. प. से., प्र.) २. हन् (अ. प. अ.), हिंस् (रु. प. से.), व्यापद-वृ (प्रे.), निषूद (चु.) ।

हिंसात्मक, वि. (सं.) पीडानाथा, आत्मक-युक्त-दायक २. हत्यात्मक, जीववधयुक्त ।

हिंसालु, वि. (सं.) हिंसक, पातक, हिंस, वधशील । सं. पुं. (सं.) हिंसक, कुक्कुरः-भषकःशुनसः, अलर्कः, मत्तध्वम् ।

हिंस्र, वि. (सं.) दे. 'हिंसक' ।

हिकमत, सं. स्त्री. (अ.) तत्रज्ञानं, दशनं २. शिष्यं, कलाशौशलं ३. उपायः, युक्तिः (स्त्री.) ४. नीतिः (स्त्री.), नयः ५. मित-व्ययः ६. विकित्सा, वैधकम् ।

हिकमती, वि. (अ. हिकमत) कर्मकुशल, कार्यपटुः २. चतुर, विदग्ध ३. मितव्ययिन् ।

हिकायत, सं. स्त्री. (अ.) कथा, आस्थानम् ।

हिकारत, सं. स्त्री. (अ.) तिरस्कारः, अवगणना ।

—की नजर से देखना, मु., लक्षयति (ना. धा.), अवमन् (दि. आ. अ.), अवगण् (चु.) ।

हिचक, सं. स्त्री. (हि. हिचकना) अवि-परि-शंका, संवेहः, संशयः, विकल्पः, निश्चय-निर्णय-अभावः ।

हिचकना, क्रि. अ. (अनु. हिच) दोलायते (ना. धा.), विकल्प् (भ्वा. आ. से.), आर्वि-शंक् (भ्वा. आ. से.), संशी (अ. आ. से.) २. दे. 'हिचकी आना' ।

हिचकिचाना, क्रि. अ., दे. 'हिचकना' ।

हिचकिचाहट, सं. स्त्री., दे. 'हिचक' ।

हिचकिची, सं. स्त्री., दे. 'हिचक' ।

हिचकी, सं. स्त्री. (अनु. हिच) हि(हे)का, हिक्का, हिष्मा, श्रिणिका ।

—आना, क्रि. अ., हिचक् (भ्वा. उ. से.) ।

—लगाना, मु., भरणीन्मुख (वि.) वृत् (भ्वा. आ. से.) २. हिचक् ।

हिचर-पि(मि)चर, सं. स्त्री., दे. 'हिचक' २. दे. 'दालमटूल' ।

हिजड़ा, सं. पुं., दे. 'हीनका' ।

हिजरी, सं. पुं. (अ.) यवनसंवत् (अव्य.) (यह १५:७६२२ ई० अर्थात् आवग शुक्ल २, संवत् ६७९ वि. से चला है) ।

हिजाब, सं. पुं. (अ.) अवगुठनं २. लज्जा ।

हिज्जे, सं. पुं. (अ. हिज्जह्) *शब्दाक्षरोच्चारणं ।

—करना, क्रि. स., शब्दाक्षराणि उचर् (प्रे.) ।

हिज्ज, सं. पुं. (अ.) वियोगः, विरहः ।

हित, वि. (सं.) लाभ-प्रद-दायक, उप-कारिन्-योगिन्, हितकर २. अनुकूल, योग्य २. हितेच्छु-ल्लुक, हितैषिन् । सं. पुं. (सं. न.) लाभः, अर्थः २. मंगलं, भद्रं ३. अनुकूलता ४. स्वास्थ्य-लाभः ५. स्नेहः, अनुरागः ६. मैत्री, हितेच्छा ७. मित्रं ८. संबंधः, बंधुता ९. संबंधिन्, बंधुः । अव्य., लाभाय, हिनाय २. कारणत्, हेतोः ३. अर्थे, कृते ।

—कर, वि. (सं.) हित-कर्तृ-कारक-कारिन् २. लाभ-दायक-प्रद, उपयोगिन्, फलावह ३. स्वास्थ्य-कर-प्रद ।

—काम, सं. पुं. (सं.) हित-कामना-इच्छा । वि. (सं.) हितैषिन् ।

—कारी, वि. (सं-रिन्) दे. 'हितकर' ।

—चित्तक, वि. (सं.) हितेच्छु-च्छुक, हितैषिन् ।

—चित्तन, सं. पुं. (सं. न.) हितेच्छा, उप-चिकीर्षा ।

—वादी, वि. (सं-दिन्) स्वपरामर्शिन् ।

हिताहित, सं. पुं. (सं. न.) हानिनाभौ-उप-कारावकारौ (पुं. द्वि.), इष्टानिष्टे-भद्राभद्रे (न. द्वि.) ।

हित्, सं. पुं. (सं. हितः) मित्रं, हितैषिन्, छहृद् २. संबंधिन्, बंधुः ।

हितैषी, वि. (सं-षिन्) हितचिन्तक, दे. ।

हितोपदेश, सं. पुं. (सं.) स्वपरामर्शदानं २. विष्णुशर्मरचितो नीतिग्रंथविशेषः ।

हिदायत, सं. स्त्री. (अ.) पथप्रदर्शनं २. शिक्षा, अनुशितिः (स्त्री.) ।

हिनहिनाना, क्रि. अ. (अनु. हिनहिन) हेष-हेष् (भ्वा. आ. से.) ।

हिनहिनाहट, सं. स्त्री. (हि. हिनहिनाना) हेया, हेया, हे(ले)षितम् ।

हिना

[६६६]

हिरासत

हिना, सं. स्त्री. (अ.) दे. 'नेहदी' ।
 हिक्काजत, सं. स्त्री. (अ.) रक्षा, दे. ।
 २. निरीक्षणम् ।
 हिक्का, वि. (अ.) कंठस्थ, मुखस्थ ।
 —करना, कि. स., कंठस्थ कृ ।
 हिब्बा, सं. पुं. (अ.) दानम् ।
 —नामा, सं. पुं. (अ. + का.) दानपत्रम् ।
 हिम, सं. पुं. (सं. न.) आकाश-ख, वाष्पः, अवसायः, नीहारः, तुषारः- तुहिनं, प्रालेयं, मिहिका, रजनीजलं, इन्द्राग्निधूमः, कुञ्जटिका
 २. हिम-राशिः (पुं.)-संहतिः (स्त्री.), हिमानी
 ३. शीतं, शैत्यं ४. कमलं ५. नवनीतं
 ६. मौक्तिकं (सं. पुं.) हेमन्तर्तुः । २. चंदन-
 तहः ३. कर्पूरः ४. चंद्रः ५. हिमालयः । वि.
 (सं.) शीत, शीतल, शिशिर ।
 —कण, सं. पुं (सं.) तुषार-लवः-विद्रुः ।
 —कर, सं. पुं. (सं.) हिम-किरण-दीपिति-
 भातुः-मयूखः-रश्मिः-रश्मिः, चंद्रः ।
 —गिरि, सं. पुं. (सं.) हिमालयः, दे. ।
 —गृह, सं. पुं. (सं. न.) शीत-शीतल-शिशिर-
 गृह-अगार-कोषः ।
 —जा, सं. स्त्री. (सं.) पार्वती, उमा, गौरी,
 भवानी ।
 —पात, सं. पुं. (सं.) हिम-तुषार-वृष्टिः (स्त्री.)
 वर्षः-मपातः ।
 हिमांशु, सं. पुं. (सं.) चंद्रः, दे. 'हिमकर'
 २. कर्पूरः ।
 हिमाकृत, सं. स्त्री. (अ.) मूर्खता, दे. ।
 हिमाचल, सं. पुं. (सं.) हिमाद्रिः, हिम-
 लयः, दे. ।
 हिमामदस्ता, सं. पुं., दे. 'हवनदस्ता' ।
 हिमायत, सं. स्त्री. (अ.) सं-रक्षः-रक्षणं
 २. पक्षपातः ३. साहाय्यं, सहायता ।
 —करना, कि. स., साहाय्यं कृ, सं-रक्ष
 (भ्वा. प. से.) ।
 हिमायती, वि. (अ.) साहाय्यकारिन्, सहायक
 २. समर्थक, अनुमोदक ३. सपक्ष ४. रक्षक,
 प्रातृ ।
 हिमालय, सं. पुं. (सं.) हिम-अचलः-प्रस्थः-

अद्रिः-शैलः, नग, पतिः-अधिपः, उमा-भवानी-
 गुरुः, हिमवत्, मेना-मेनका, भवः-प्राणेशः,
 अद्रि-राजः ।
 हिम्मत, सं. स्त्री. (अ.) साहसं, धैर्यं २. परा-
 वि-क्रमः, शौर्यं, वीरता ।
 —पद्मना, सु., साहसं विद् (दि. आ. अ.) ।
 —हारना, सु., धैर्यं त्यज् (भ्वा. प. अ.), साहसं
 मुच् (तु. प. अ.), अधोर-निस्साहस (वि.)
 जन (दि. आ. से.) ।
 हिम्मती, वि. (का. हिम्मत) धीर, धैर्यवत्,
 साहसिन्, साहसिक २. वीर, शूर, पराक्रमिन् ।
 हिया, सं. पुं. (सं. हृदयं) मानसं २. वक्षस्
 (न.) ।
 हिरण्य, सं. पुं. (सं. न.) सुवर्णं, दे. 'सोना'
 २. धनं ३. शुक्रं ४. रजतं ५. अमृतम् ।
 —कशिपु, सं. पुं. (सं.) हिरण्यक्षत्राट्,
 दैत्यविशेषः, प्रह्लादपितृ ।
 —गर्भ, सं. पुं. (सं.) सृष्टिकारणं ज्योतिर्मया-
 तं २. ब्रह्मन् (पुं.) ३. प्राण-गुण, आत्मन्,
 सूक्ष्मशरीरयुतात्मन् ४. विष्णुः ।
 हिरण्यक्ष, सं. पुं. (सं.) हिरण्यकशिपुभ्राट्,
 दैत्यविशेषः ।
 हिरण, सं. पुं. (सं. हरिणः) कुरंग-नामः,
 एणः, एणकः, कुण्यासारः, पृषत्-तः, अ-जिन-
 योनिः, चारु-सु-लोचनः, रुहः, रोहितः, वननः,
 चलनः, प्लावित्, मरुकः, लिगुः, ऋ(रि)श्वः-
 ष्यः ।
 —हो जाना, सु., अतिवेगेन धाव् (भ्वा. प.
 से.), पलाय् (भ्वा. आ. से.) ।
 हिरनी, सं. स्त्री. (सं. हरिणी) मृगी, कुरंगी,
 एणी ।
 हिरनौदा, सं. पुं. (हि. हिरण) हरिण-मृग-
 पोतः-शावः-शावकः-शिशुः-कुरंगकः ।
 हिरकत, सं. स्त्री. (अ.) व्यवसायः २. शिल्पं,
 हस्तकार्यं, दे. 'दस्तकारी' ३. चातुर्यं ४. माया,
 धूर्तता ।
 हिरमज्ञो, सं. स्त्री. (अ.) सौराष्ट्री, रक्तमृत्ति-
 कामेदः ।
 हिरास, सं. स्त्री. (का.) दे. 'हरास' ।
 हिरासत, सं. स्त्री. (अ.) निरोधः, बंधनं
 २. कारा, गुप्तिः (स्त्री.) ।

हिर्स

[६७०]

होन

हिर्स, सं. स्त्री. (अ.) लोभः, वृथा, लिप्ता ।

हिर्सा, वि. (अ. हिर्स) लुब्ध, गृध्र, लोलुप ।

हिलना^१, कि. अ. (स. हल्लनं) चल्-चर् (भ्वा. प. से.), इ-या (अ. प. अ.), गम् २. सु-सुप् (भ्वा. प. अ.) ३. कम् वेप्-स्पन्द (स्वा. आ. से.) ४. दोलायते (ना. धा.) प्रीख् (भ्वा. प. से.), इतस्ततः वि-सं, चल् ५. (जले) प्रविश (तु. प. अ.) । सं. पुं. तथा भाव, चलनं, चरणं, अयनं, यानं, गमनं, सरणं, तर्पणं, कम्पः, वेपनं, स्पन्दनं, जेष्टा, जेष्टनं, क्रिदा, प्रवृत्तिः, व्यापारः ।

—डोलना, मु., अट्-भ्रम् (भ्वा. प. से.) २. भ्रम् (दि. प. से.), प्रदत्त (भ्वा. आ. से.) ।

हिलनेवाला, वि., चर, चल, जंम, चलन-गमन, शील, कम्पमान, वेपमान, जेष्टमान, स्पन्दमान ।

हिला हुआ, वि., चलित, सुते, यात, इत इ. ।

हिलना^२, कि. अ. (हि. हिलगना, सं. अधिलगत) सुपरिचित-बद्धसस्य-रुद्धसौहृद् (वि.) जन् (दि. आ. से.) ।

—मिलना, कि. अ., परस्परं सख्येन वृत् (स्वा. आ. से.)-व्यवह-अस् (दोनों भ्वा. प. अ.) ।

हिलमिलकर, मु., सौमनस्येन, सौहार्देन २. सं-भूय, मिलित्वा ।

हिल-मिला, मु., सुपरिचित, गारुसौहृद्, बद्ध-सख्य ।

हिलाना, कि. स., व. 'हिलना' (१-२) के प्रे. रूप ।

हिलोर-रा, सं. पुं. (सं. हिलोरः) उल्लोलः, तरंगः, भंगः, ऊर्मिः (पुं. स्त्री.) ।

हिलोरे लेना, मु., तरंगायते (ना. धा.), तरंगित (वि.) भू ।

हिलोरना, कि. स. (हि. हिलोर) तरंगयति-उल्लोलयति (ना. धा.), इतस्ततः चल् (प्रे.)-विष् (स्वा. उ. से.) ।

हिलोल, सं. पुं., दे. 'हिलोर' ।

हिसाब, सं. पुं. (अ.) गणनं-ना, संख्यानं २. आयव्यय-देशादेय, लेखः-विवरणं ३. गणितं, अंकविद्या ४. अर्थ-मूल्य-मानं-अमार्गं ५. नियमः,

व्यवस्था ६. विचारः, नतं ७. रीतिः (स्त्री.), विधिः ।

—करना या लगाना, कि. स., गप् (तु.), संख्या (अ. प. अ.) ।

—किताब, सं. पुं. (अ.) दे. 'हिमाव' (२) ।

—चलना, मु., व्यवहारः-दानादानं वृत् (भ्वा. आ. से.) ।

—सुकाना या चुकता करना, मु., कर्णं निस्तृ-शुष् (प्रे.) ।

—बंद करना, मु., व्यवहारं त्यज् (भ्वा. प. अ.) ।

हिस्टीरिया, सं. पुं. (अं.) योथापस्मारः, वात-गर्भाक्षय, उन्मादः, हर्षमोहः ।

हिस्सा, सं. पुं. (अ.) विभागः, अंशः २. बंटः, उद्धारः ३. खंडः-ढं, एकदेशः ४. अंगं, अवयवः ।

—करना, कि. स., अंश् (तु.), विभज् (भ्वा. उ. अ.) ।

—दार, सं. पुं. (अ. + प्रा.) अंशिन, अंश-प्राश्नि, सह, भागिन ।

—दारी, सं. स्त्री., सहभागिता, अंशिता ।

हींग, सं. स्त्री. [सं. हिन्दु (पुं. न.)] र(रा)-मठं, बाल्हीकं, जंतु, धनं-नाशनं, स्पृधूपनं, उग्रगंधं, रक्षोवनं, जरणं, अगृहगंधम् ।

हींसना, कि. अ. (सं. हेवन्) दे. 'हिनहिनाना' २. दे. 'रेंकना' ।

ही, अव्य. (सं. हि.) एव, अवश्यं, केवलं (सय अव्य.) ।

हीक, सं. स्त्री. (सं. हिक्का) दे. 'हिचको' दुग्धः ।

हीजडा, सं. पुं. (देश.) अं(धं)उः-ढः, तृतीया अकृतिः, क्लीबः, नपुंसकः ।

हीन, वि. (सं.) विरहित, शून्य, वजित, वंचित, वियुक्त, अ-निर्, वि. (उ. धनहीन=अधन इ.) २. परि-त्यक्त, उत्सृष्ट ३. अपकृष्ट, निकृष्ट, नीच, अधम ४. छुद्र, तुच्छ ५. कुत्सित, निच, अक्षय, दुष्ट, कु-६. दीन, दरिद्र, अकिंचन ७. अल्प, ऊन, रतीक ।

—जाति, वि. (सं.) नीच-वर्ण-जाति २. अपात्केय, पतिन ।

—यान, सं. पुं. (सं. न.) बौद्धसंप्रदायभेदः ।

हीनता

[६७१]

हुडदंगगा

हीनता, सं. स्त्री. (सं.) अभावः, राहित्यं, दुःखः (स्त्री.), न्यूनता २. क्षुद्रता, तुच्छता ३. नि-अप, कृष्टता ।

हीमोग्लोबिन, सं. पुं. (अं.) रक्तकणः, रक्त-रक्षकम् ।

हीर', सं. पुं. (सं.) शिवः २. इन्द्रवज्रं ३. सर्पः ४. हारः ५. सिंहः ६. हीरकः ।

हीर', सं. पुं. (हिं. हीरा) सारः, सारांशः, अन्तर्भागः, उत्तरं २. वीर्यं, शुक्रं ३. वरुं, शक्तिः (स्त्री.) ।

हीरक, सं. पुं. (सं.) दे. 'हीरा' ।

हीरा, सं. पुं. (सं. हीरः) हीरकः, वज्र-जं, रत्नसुख्यं, सूक्ष्मसुखं, दधीच्यस्थि (न.), वरारकम् ।

—मन, सं. पुं. (हिं. + सं. मणिः) हेमवर्णः कल्पितः शुक्रभेदः, *हीरमणिः ।

हीला, सं. पुं. (अ. हीलः) व्याजः, लघन(न.)-व्यपदेशः, मिषं, २. साधनं, उपायः ।

—करना, क्रि. अ., वि., अपदिशू (तु. प., अ.), कपर्द-लघनं कृ ।

—बाज़, वि., कापटिक-लुप्तिक (-की स्त्री.) ।

—हवाला, सं. पुं., दे. 'हीला' ।

—निकलना, मु., उपायः शा (कर्म.), साधनं प्राप् (कर्म.) ।

हीही, अव्य. (सं.) हर्षादिचर्यसूचकमव्ययं, (हर्ष) ह्री २. (आश्चर्यं) अइह ।

हुं, अव्य. (सं.) ओं, आं, २. साधु, वाढं, अस्तु ।

हुंकार, सं. पुं. (सं.) हुंकृतिः (स्त्री.), हुंकृतं, भस्मनाशब्दः २. गर्जनं-ना, निनादः, हुहुतं ३. चीत्कारः, उत्क्रोधः ।

हुंकारना, क्रि. अ. (सं. हुंकार >) निर्भस्त (तु. आ. अ.), तज् (तु.), अधिक्षिप् (तु. प. अ.) २. गर्ज-गर्द-निनद् (स्वा. प. सं.) ३. चीत्क, उत्क्रुत् (स्वा. प. अ.) ।

हुडावन, सं. पुं. (हिं. हुडो) *विधिपत्रशुल्क-लकम् ।

हुंडो, सं. स्त्री. (दे.) *विधिपत्रं, धनार्पणा-देशपत्रम् ।

हुकूमत, सं. स्त्री. (अ.) शासनं, राज्यं २. अधिकारः, प्रभुत्वम् ।

हुक्का, सं. पुं. (अ.) *धूमपानयंत्रम् ।

—पानी, सं. पुं. (अ. + हिं.) सामाजिक-व्यवहारः ।

—गुडगुडाना, सं., धूमपानं कृ ।

—पानी बंद करना, मु., समाजाद् बहिष्-अप्रांती कृ, जातेः निष्कन् (प्रे.) ।

हुकूम, सं. पुं. (अ. हाकिम का बटु.) शासक-अधिकारि, स्वर्ग-वृन्दम् ।

हुकूम, सं. पुं. (अ.) आदेशः, आज्ञा दे. २. अनुमतिः (स्त्री.) ३. प्रभुत्वं, अधिकारः ४. नियमः, विधिः, उपदेशः (धर्मशास्त्रादि का) ५. क्रीडापत्ररंगभेदः ।

—नामा, सं. पुं. (अ. + का.) आज्ञापत्रम् ।

—बरदार, सं. पुं. (अ. + का.) आज्ञा-पालक-अनुसारित-अनुवर्तिन्-अधीन ।

हुकमी, वि. (अ. हुकूम) आज्ञा-पालक-अनुवर्तिन् २. अमीव, सफल, सिद्धिकर ३. लक्ष्य, भेदिन्-वेधिन् ४. विकल्परहित, अवश्य-कर्तव्य, अनिवायं ।

हुजूम, सं. पुं. (अ.) जन, समूहः-समुदायः-समदः-अवः ।

हुजूर, सं. पुं. (सं.) सामीप्यं, संनिधिः २. न्याय, आलयः-सभा ३. (संबोधनशब्द) भगवन् ! श्रीमन् ! (संबोधन एक.), भग-वन्तः ! श्रीमन्तः ! (संबोधन बहु.) ।

हुजूरी, सं. स्त्री. (अ. हुजूर >) निकटता, समीपता २. उपस्थितिः (स्त्री.), विद्यमानता ३. राज-राजकीव, सभः । सं. पुं. विशिष्ट-सेवकः-भृत्यः २. राजसभासद, सभ्यः, सभिकः ।

हुजत, सं. स्त्री. (अ.) कुतर्कः, व्यर्थयुक्तिः (स्त्री.) २. विवादः, वायुद्धम् ।

—करना, क्रि. अ., व्यर्थं तर्कं (तु.) २. विवाद (स्वा. आ. सं.), वायुद्धं कृ ।

हुज्जती, वि. (अ. हुज्जत) कुतार्किक २. कलह-विवाद, प्रिय ।

हुडदंगगा, सं. पुं. (अनु. हुड+हिं. दंगा) उपद्रवः, दुमुलं, संशोभः ।

हुङ्दङ्गी

[६७२]

हृदय

हुङ्दङ्गी, वि. (हिं. हुङ्दङ्ग) कुचेष्टित, कुचेष्टक, कुचेष्टाप्रिय, उपद्रविन्, उद्वेग ।

हुत्त, वि. (सं.) वषट्कृत, सविधि अग्नौ क्षिप्त ।

—भुज्, सं. पुं. (सं.) अग्निः ।

हुताशन, सं. पुं. (सं.) हुतवहः, हुताशः, अग्निः ।

हुदहुद, सं. पुं. (अ.) दावाघातः, काष्ठकूटः, दे. 'कठफोड़ा' ।

हुनर, सं. पुं. (फा.) कला, शिल्पं २. दाक्ष्यं, कौशलं ३. गुणः, विशिष्टधर्मः ।

—मंद, वि. (फा.) कला, विदःकुशल २. दक्ष, निपुण ३. शुभिन ।

हुमा, सं. स्त्री. (फा.) कल्पितसगभेदः, *राज्यदः, हुमा ।

हुरमत, सं. स्त्री. (फा.) आदरः, संमानः ।

हुरा, सं. पुं. (अं.) इर्ष्यादः, जयशब्दः, जय-जयकारः ।

हुलास, सं. पुं. (सं. उल्लासः) आनंदः, आ-हादः २. उत्साहः ।

हुलिया, सं. पुं. (अ. यः) आकारः, आकृतिः (स्त्री.) २. आकाररूपरेखा, विवरणम् ।

हुल्लड्, सं. पुं. (अनु. हुल हुल) कोलाहलः, कलकलः २. संक्षोभः, उपद्रवः ३. प्रजाविप्लवः, व्यवस्थाभंगः ।

हुम्, अद्य. (अनु.) शान्तं, मौनं, तूष्णी (सव अन्य.) ।

हुस्न, सं. पुं. (अ.) लावण्यं, सौन्दर्यम् ।

—पररस, वि. (अ. + फा.) सौन्दर्योपासक ।

—परस्ती, सं. स्त्री., सौन्दर्योपासना ।

हुँ, क्रि. अ. (हिं. होना) अस्मि-वर्ते (लट्, उत्तम. एक.) ।

हुँ २, अव्य. (सं. पुं.) आम्, ओम्, तथा २. साधु, सुष्ठु ३. अवधानतासूचकशब्दः, हुंकारः ।

—करमा या हुँकारी सरना, क्रि. अ., हुँक २. आमिति उच्चर (प्रे.) ३. अनुमत् (वि. वा. अ.), अनुशा (क्र. उ. अ.) ४. स्त्री-अंगी, कृ ।

—हूँ करना, गु., अप-व्यप-दिश (वृ. प. अ.), शाठ्येन परिहृ (भ्वा. प. अ.), अस्पष्टं भ्याद् ।

हु, सं. पुं. (अनु.) शृगाल-जम्बुक, रावः कृतं-शब्दः ध्वनिः, हुंकारः ।

—रव, सं. पुं. (सं.) शृगालः, सुगालः, जम्बु- (म्वृ.) कः, भूरिमायः ।

हुक, सं. स्त्री. (अनु.) हृदग्रहः, हृल्लेखः, हृदय-पीडा, बक्षोवेदना २. पीडा, व्याथा, आर्तिः (स्त्री.), वेदनः ३. आधिः, संपरि, तापः, दुःखं ४. आशंका ।

हुकना, क्रि. अ. (हिं. हुक) व्यथ् (भ्वा. आ. से.), पीड् (कर्म.) ।

हुड, वि. (सं. हुगः >) उदण्ड, अस्म्य्, ग्रम्य् २. प्रमत्त, निरवधान ३. मंदयुक्ति, मूर्ख ४. दुराग्राहिन ।

हुण, सं. पुं. (सं.) हूनः, न्लेच्छजातिविशेषः ।

हुबहु, वि. (अ.) पूर्णतया तुल्य सम-समान-सदृश ।

हुर, सं. स्त्री. (अ.) स्वर-स्वर्ग, वधुः (स्त्री.) स्त्री, अप्तरस् (न.), अप्सरा, दिव्यांगना ।

हुल, सं. स्त्री. (सं. हुलः लं) दे. 'हुक' (१) (खड्गादीनां) वेधः, आघातः, प्रहारः, निवे-शनम् ।

—देना या मारना, क्रि. स., दे. 'हुलना' ।

हुलना, क्रि. स. (हिं. हुल) शस्त्राग्रं सहसा निविश (प्रे.), अप-व्यथ् (वि. प. अ.) २. प्रेर-प्रपुद्-प्रचल् (प्रे.) ।

हुहा, सं. पुं. (अनु.) किबदभी, जनप्रवादः २. आदंबरः, विजृम्भणम् ।

हुत, वि. (सं.) नीत, प्रापित २. गृहीत, आदत्त ३. चोरित, स्तेनित, मुषित ।

हुत्कंप, सं. पुं. (सं.) हृदय-कंपन-स्फुरण-स्पंदनम् ।

हुत्पिड, सं. पुं. (सं. पुं. न.) हृदयं, दे. ।

हुद्, सं. पुं. (सं. न.) हृदयं, दे. ।

हुदयंगम, वि. (सं.) सन्वय्, ज्ञात-वृद्ध-अवगत २. करुण, रोमहर्षण ३. सुन्दर, मनोहर ।

हृदय, सं. पुं. (सं. न.) हृद् (नं.), हृत्पिडः लं, बुद्धा, अग्रमांसं २. बक्षस्-स्तरस् (न.) ३. मनस्-चेतस् (न.), मानसं, चित्तं ४. सारः, सारांशः, तत्त्वं ५. रहस्यं ६. प्रियजनः, प्राणाधारः (दे. 'दिल', 'कलेजा', 'मन', 'जी') ।

हृदयेश्वर

[१७३]

हृष

- ग्राही, वि. (सं.-हिन) हृदयहारिन्, मनो-
मोहक २. रुचिकर, प्रिय ।
- वाग्, वि. (सं.-वत्) सहृदय, हृदयालु
२. भावुक, रसिक ।
- विदारक, वि. (सं.) हृदयवेधिन्, शोक-
जनक, करुणोत्पादक ।
- स्पर्शी, वि. (सं.-शिन) हृदिस्पृश, प्रभावो-
त्पादक २. दयोत्पादक, करुणाजनक ।
- हारी, वि. (सं.-रिन्) चेतोहर, मनो-
हारिन् ।
- हृदयेश्वर, सं. पुं. (सं.) बल्लभः, प्रियतमः,
प्रेमपात्रं २. पतिः, भर्तृ ।
- हृदयेश्वरी, सं. स्त्री. (सं.) हृदयेशा, प्राणेशा,
कान्ता २. पत्नी, भार्या ।
- हृद्गत, वि. (सं.) आन्तर, आभ्यन्तर, अभि-
न्तर, हृत्, अन्तर, वर्तिन्-गन्, मानस, चैत्त
२. अवगत, ज्ञात, बुद्ध ३. प्रिय, रुचिकर ।
- हृद्य, वि. (सं.) (१-२) दे. 'हृद्गत' (१-२)
२. सुन्दर ३. शान्तिप्रद ४. स्वादु, सुरस ।
- हृषीक, सं. पुं. (सं. न.) इन्द्रियं, दे. ।
- हृषीकेश, सं. पुं. (सं.) विश्णुः २. श्रीकृष्णः
३. तीर्थविशेषः ।
- हृष्ट, वि. (सं.) हर्षित, सुप्रसन्न, प्रसुद्धित,
आनन्दित, प्रीत, पुष्ट, प्रमनस् ।
- पुष्ट, वि. (सं.) दृढ, अंग-देह-तनु, पीन,
मांसल, बलवत् ।
- हृंगा, सं. पुं. (सं. अभ्यंगः >) मत्स्यं, कोटि-
(टी) शः ।
- हृहं, सं. स्त्री. (अनु.) मन्दहासध्वनिः २. दैन्य-
युक्कशब्दः ।
- हृ, अभ्य. (सं.) अंग, भोः, हृहो, हृहे, अरे,
अये, आयि, पाट्, प्याट् (सन् अभ्य.) ।
- हृकड, वि. (हि. द्विया + कड्) दे. 'हृष्टपुष्ट'
२. प्रचंड, उग्र ३. उर्ध्व, विधायन, धृष्ट ।
- हृकडी, सं. स्त्री. (हि. हृकड) उग्रता, चंडता,
उर्ध्वता २. बलं, बलात्कारः, रभस् (न.),
रभसः ।
- हृच, वि. (फा.) तुच्छ, क्षुद्र २. निस्सार,
तत्त्वहीन ।

४३

- हेठ, कि. वि. (सं. अधःस्थ >) नीचैः, अधः
(दोनों अध्य.) ।
- हेठा, वि. (हि. हेठ) अवर, अधर २. ऊन,
हीन ३. तुच्छ, क्षुद्र ।
- पन, सं. पुं., तुच्छता, क्षुद्रता, ऊनता ।
- हेठा, सं. स्त्री. (हि. हेठा) मानहानिः (खो.),
अवधीरणा, अपमानः ।
- हेड, सं. पुं. (सं.) तिरस्कारः, अवज्ञा,
अपमानः ।
- ज, सं. पुं. (सं.) क्रोधः, कोपः, रोषः ।
- हेड, सं. पुं. (अं.) शिरस् (न.), शीर्षं,
मुण्डं, मस्तकम् २. मुख्यः, प्रधानः, अध्यक्षः ।
- कार्टर, सं. पुं. (अं.) मुख्यालयः, मुख्य-
कार्यालयः ।
- हेडिंग, सं. स्त्री. (अं.) शीर्षकं, शिरःपंक्तिः
(स्त्री.), नामन् (न.), संज्ञा ।
- हेन, सं. पुं., दे. 'हेतु' (१, २) ।
- हेतु, सं. पुं. (सं.) प्रयोजनं, अभिप्रायः, निमित्तं,
उद्देशः २. कारणं, बीजं, मूलं ३. युक्तिः-उप-
पत्तिः (स्त्री.), प्रमाणं ४. अर्थालंकारभेदः
(सा.) ।
- वाद, सं. पुं. (सं.) ऊहापोहः, तर्कः
२. कुतर्कः, नास्तिकता, नास्तिक्यम् ।
- वादी, वि. (सं.-दिन्) तार्किकः २.
नास्तिकः ।
- विद्या, सं. स्त्री. (सं.) तर्क-हेतु-शास्त्रम् ।
- हेतुमद्भाव, सं. पुं. (सं.) कार्यकारण-भाव-
संबन्धः ।
- हेत्वाभास, सं. पुं. (सं.) असद्-दुष्ट-हेतुः ।
- हेमंत, सं. पुं. (सं.) हेमन्तः, उष्मासहः,
शरदन्तः, शिशिरागमः, अग्रहायणपूर्वमासात्मकः
ऋतुः ।
- हेम, सं. पुं. [सं.-मन् (न.)] सुवर्गं, दे.
'सोना' ।
- गिरि, सं. पुं. (सं.) हृमेरुः, हेम-अचलः-
अद्रिः ।
- चंद्र, सं. पुं. (सं.) जैनाचार्यविशेषः ।
- हेय, वि. (सं.) त्याज्य, त्यक्तव्य, उत्सर्जनीय,
हातव्य २. निकृष्ट, अपकृष्ट, यथं, निन्द्य ।

हैरना

[६७४]

होनहार

हैरना, कि. स. (सं. अ.वेदः >) अम्बिष् (वि. प. से.), गवेषु (भ्वा. आ. से.), चु. प. से.)
२. वृश् (भ्वा. प. अ.) ३. विचर् (प्रे.) ।

—फेरना, कि. स. (अनु. + हि.) परिवृत्त-
विपर्यस (प्रे.), अन्यथा-वि. कृ. विनिमे
(भ्वा. आ. अ.) ।

हैर-फेर, सं. पुं. (हि. हैरना + फेरना) परिवर्त-
नं, परिवृत्तिः (स्त्री.), विनिमयः २. विकारः,
विक्रिया, विकृतिः (स्त्री.) ३. विपर्यासः,
ब्रामाभावः, अन्यवस्था ४. यकोक्तिः (स्त्री.),
वागाडंबरः ५. कपटं, छलं ६. अन्तरं, भेदः ।

हैर-फेरी, सं. स्त्री., दे. 'हैर-फेर' ।

हैलमेल, सं. पुं. (हि. हिलना + मिलना)
दृढ-नाड, सौहार्द-सौहार्द-सख्य-मैत्रो २. संगतिः
(स्त्री.), संपर्कः ३. परिचयः ।

हेला, सं. स्त्री. (सं.) अज-अप-मानः, अवज्ञा,
तिरस्कारः २. प्रमादः, उपेक्षा ३. क्रीडा, खेला
४. सुकर-सुसाध्य-कार्यं ५. शृंगार-चेष्टा, कैलिः
(स्त्री.) स्त्री ६. नारीणां सुरतलासना ।

हेला, सं. पुं. दे. 'हला' ।

है, अव्य. (अनु.) (निषेध) मा, माम्, अलं
२. (आश्चर्यं) अहो, ही ।

—है, अव्य. (अनु.) मा मा, अलं अलं २.
ही ही ।

है, कि. अ. (हि. होना) सन्धि-विघ्न-
वर्तन्ते (लट्, बह्.) ।

हैचवेग, सं. पुं. (अं.) (चर्ममयी) करपेटिका
२. कर, प्रसेवः-संपुटः ।

हैकल, सं. पुं. (अं.) मुष्टिः (स्त्री.), वारंगः ।

है, कि. अ. (हि. होना) अस्ति-विघ्न-
वर्तन्ते (लट्) ।

हैकल, सं. स्त्री. (सं. हः + गलः >) अश्व-
प्रीवेयकं २. 'हसेः' ।

हैजा, सं. पुं. (अ. जह्) विषूचिका, दे. ।

हैट, सं. पुं. (अं.) सुकृष्ट-आंगल-शिरस्त्रण-
शीर्षकम् ।

हैफ, अव्य. (अ.) हा, हन्त, खेदः, शोकः ।

हैबत, सं. स्त्री. (अ.) दासः, भयम् ।

—नाक, वि. (अ.) भोग, भयंकर ।

हैरत, सं. स्त्री. (अ.) आश्चर्यं, विस्मयः ।

हैरान, वि. (अ.) चकित, विस्मित २. वि,
आकुल, उद्विग्न ।

हैवान, सं. पुं. (अ.) पशुः, चरितः, मृगः
२. जडः, मूर्खः, असभ्यः ।

हैवानियत, सं. स्त्री. (अ.) पशुतात्वं २.
अशिष्टता, अतस्यता ३. क्रूरता ।

हैवानी, वि. (अ. हैवान) पाशव, पशु-तुल्य-
सम २. क्रूर, निष्ठुर ।

हैसियत, सं. स्त्री. (अ.) समर्थ्य, योग्यता
२. आर्थिकावस्था, धनबलं ३. धनं, किं
४. संमानः । प्रतिष्ठा ४. मूल्यं, अर्थः ।

है है, अव्य. (सं. हा हा) हंत, हा हन्त,
कष्टं, दुःखम् ।

हैठ, सं. पुं. (सं. ओष्ठः) दंन-रद-दशनः,
चटदः, दे. 'ओठ' ।

—फटना, सं. पुं., ओष्ठभेदः ।

—काटना या चबाना, मु., कुम् (दि. प. अ.),
आन्तरश्रोमं प्रकटयति (ना. धा.) ।

—हिलाना, मु., वक्तु उपकम् (भ्वा. आ. अ.) ।

हो, अव्य. (सं.) 'हे' ।

होटल, सं. पुं. (अं.) भोजनशाला २. पाष-
शाला ।

होड़, सं. स्त्री. (सं. हारः = युद्ध) पणः, ग्लहः
२. प्रति-स्पर्धा, विजिगीषा ३. आग्रहः ।

—बदना, बाँधना या लगाना, कि. स.,
ग्लह् (भ्वा. प. से, चु.), दिव् (दि. प. से.),
पण् (भ्वा. आ. से.) २. विजिगीषते (सञ्चन्त),
स्पर्धे (भ्वा. आ. से.) ।

होडाबादी, सं. स्त्री. (हि. होड + बदना)
होड़ (होड़ी, सं. स्त्री.) (हि. होड़) दे. 'होड़'
(२-२) ।

होता, सं. पुं. (सं. होतृ) कृत्विग्भेदः, होत्रिन्,
होमकर्तृ, यष्टृ ।

होत्र, सं. पुं. (सं. न.) यज्ञः, यागः, मखः
हवनम् २. यज्ञ-हवन-सामग्री, हविस् (न.),
हव्यम् ।

होत्री, सं. पुं. (सं. त्रिन्), होत्र, याजकः,
यष्टृ, कृत्विग्भेदः, होमकर्तृ ।

होनहार, वि. (हि. होना) सज्जशम, उन्नति-
शील, आशाजनक, सिद्धिजनक २. भाविन्,

भविष्यद्, भवितव्यम् । सं. स्त्री., भवितव्यता, नियतिः (स्त्री.), भाग्यं, दैवं, विधिः ।

होना, क्रि. भ. (सं. भवन्) भू. अस् (अ. प.), वृत् (भ्वा. आ. भ.), विद् (दि. आ. अ.), अवस्था (भ्वा. आ. भ.) २. भू, जन् (दि. आ. से.), संपद (दि. आ. अ.), परिणाम (भ्वा. प. अ.) ३. कृतानुष्ठानविधा (कर्म.) ४. रच-निर्मा (कर्म.) ५. घट-संबद्ध (भ्वा. आ. से.), सम-पद (दि. आ. अ.), आपत् (भ्वा. प. से.) ६. (रोगादिभिः) पीड (कर्म.) ७. अति-व्यभि-च (अ. प. अ.), व्यतिक्रम (भ्वा. प. से.) ८. उत्पद् (दि. आ. भ.), तन् (दि. आ. से.) ९. जीव (भ्वा. प. से.) । सं. पुं. तथा भाव, सत्ता, अस्तित्वं, अव-स्थितिः (स्त्री.), सद्-भावः, वर्तनं, विद्यमानता इ. ।

होने योग्य, भवितव्य, शक्य, संभाव्य, संभवनीय, संप्रवर्तनीय, साध्य ।

होनेयालः, भाविन्, भविष्यन्, भवितव्य, दे. 'होने योग्य' ।

हुआ हुआ, वि., भूत, वृत्त, जात, संपन्न, निष्पन्न, अनुष्ठित, विहित, रचित, निर्मित, उत्पन्न इ. ।

(जो) हुआ सो हुआ, मु., अतीतं विस्मर २. यद् भूतं न तद्भावि ।

हो आना, मु., वृष्ट्वा-मिलित्वा आगम (भ्वा. प. अ.) ।

होकर या होते हुए, मु., मध्यतः, मार्गेण ।

हो चुकना या-जाना, मु., सं. निष्-पद् (दि. आ. अ.), समाप् (भ्वा. प. अ.) ।

हो न हो, मु., निःसंदिहं, निःसंशयम् ।

होनी, सं. स्त्री. (हि. होना) उत्पत्तिः (स्त्री.), अन्नन् (न.) २. वृत्तं, वृत्तांतः ३. दे. 'होना-हार' सं. स्त्री. ४. संभाव्य-शक्य-वार्ता ।

होम, सं. पुं. (सं.) देवयज्ञः, दे. 'हवन' ।

होमना, क्रि. स., दे. 'हवन करना' ।

होमियोपैथी, सं. स्त्री. (अं.) समधिक्रिस्ता, चिकित्सापद्धतिविशेषः ।

होरा, सं. स्त्री. (सं., यूनानी से लिया गया) लग्नं २. राश्याई ३. जन्मपत्रिका ४. जातकं, जातकशास्त्रं ५. दे. 'घंटा' (= ६० मिनट) ।

होला^१, सं. पुं. (सं. होलकः) वृणाग्निभूषा-द्वैपक्वशमीधाम्यम् ।

होला^२, सं. पुं. (सं. होली) सिक्कलानां होलि-कोत्सवः ।

होली, सं. स्त्री. (सं.) होलिका, होलाका, २. होलिकावहनार्थस्तृणकाष्ठराशिः ३. होलि-कागोतम् ।

—खेलना, मु., होलिकोत्सवे रम् (भ्वा. आ. भ.), खेल-क्रीड् (भ्वा. प. से.), अन्योन्यं रञ्ज् (प्रे.) ।

होलडर, सं. पुं. (अं.) लेखनीदंडः २. लेखनी ।

होश, सं. पुं. (का.) संज्ञा, चैतन्यं २. स्मरणं, स्मृतिः (स्त्री.) ३. बुद्धिः-मतिः (स्त्री.) ।

—मंद, वि. (का.) भी-बुद्धि-मति-मद ।

—हवास, सं. पुं. (का+भ.) संज्ञाबुद्धी २. चैतन्यम् ।

—उड़ना या जाता रहना, मु., (मायादिभिः) निस्तम्भी-जड़ी-श्रव्याकुली-भू ।

—करना, मु., सावधान-अवहित (वि.) भू ।

—ठिकाने होना, मु., मोहः-भ्रान्तिः (स्त्री.) नश (दि. प. वे.) २. चेतः स्वास्थ्यं आपद् (दि. आ. अ.) ३. गवनाशः जन् (दि. आ. से.) दंडं भुक्त्वा अमुतप् (दि. आ. अ.) ।

—हंग होना, मु., आश्चर्यस्तम्भः (वि.) जन् (दि. आ. से.), चकितचकित (वि.) भू ।

—दिखाना, मु., रष्ट (प्रे.) ।

—में आना, मु., प्रकृति आपद् (दि. आ. अ.), संज्ञा लभ् (भ्वा. आ. अ.) ।

—सँभालना, मु., प्रौढ-प्राप्तवयस्क (वि.) जन् २. सावधानो भू ।

होशियार, वि. (का.) बुद्धिमत्, चतुर, प्रह २. निपुण, कुशल ३. सावधान, अवहित ४. धूर्त, मायाविन् ५. पक्वबुद्धि ।

होशियारी, सं. स्त्री. (का.) बुद्धि-भी-मत्ता, २. दक्षता, नैपुण्यं ३. सावधानता ।

होस्टल, सं. पुं. (अं. होस्टेल) छात्रावासः, छात्रालयः ।

हौकना, क्रि. अ. (सं. हुकरणं) हुँक, गर्ज (भ्वा. प. से.) २. दे. हाँफ(प)ना ।

होआ

[६७६]

ह्ले

होआ, सं. पुं. (अनु. हो) भूतः, विशाचः, बाकिनी, शिशुवासार्य कल्पनिकं भयमूलम् ।

सं. स्त्री., दे. 'होआ' ।

होआ, सं. पुं. (अनु. हाव) औदरिकता, वस्मरता २. लोभ-वृष्णा, अतिशयः ।

होआ, सं. पुं. (अ.) कुंडं, जलाशयः, क्षुद्र-तडागः २. इहन्मृद्भादं, दे. 'नाद' ।

होआ, सं. पुं. (फ्रा. होउह्) परिस्तो(ष्टो)मः, प्रवेणी, आस्तरणं, कुथः-भा-धम् ।

होआ, सं. पुं. (अ.) भयं, संत्रासः ।

—नाक, वि. (अ. + फ्रा.) भयंकर, प्रासन ।

होआ, क्रि. वि. (हि. इहआ) शनैः, शनकैः, मंदं २. मृदु, कोमलम् (सब अव्य.) ।

होआ, सं. स्त्री. (अ.) आदमपत्नी, *हव्वा, पृथिव्या प्रथमा नारी मानवजातेः जननी च । सं. पुं., दे. 'होआ' ।

होआ, सं. स्त्री., दे. 'हवस' ।

होआ, सं. पुं. (अ.) लालसा, उत्कंठा साहसं, उत्साहः ३. हर्षः, प्रफुल्लता ।

—मंद, वि. (फ्रा.) उत्कंठित, अत्यभिलाषिन् २. साहसिन्, उत्साहिन् ३. हृष्ट, प्रफुल्ल ।

—निकालना, मु., आकाशां-नाच्छां-रपृष्टां संपद (प्रे.) सम्पूर (प्रे.) ।

—पस्त होआ, मु., हतोत्साह-भग्नहृदय (वि.) भू ।

हृद, सं. पुं. (सं.) अगाधजलाशयः, महा-तडागः २. तटाकः, कासारः, सरसी ३. नादः ।

हृसित, वि. (सं.) अल्पी-न्यूनी, कृत-भूत, संक्षिप्त, संकुचित ।

हृसिमा, सं. स्त्री. (सं.-मन पुं.) ह्रस्वता, अल्पता, क्षुद्रता ।

हृस्व, वि. (सं.) लघु, क्षुद्र, दम्र, अल्प, दैर्घ्य-आयाम, शून्य २. ऊन, न्यून, हीन ३.

खर्व, न्यञ्च् ४. अवनत, नीच ५. क्षुद्र, तुच्छ । सं. पुं. (सं.) वामनः २. लघुवर्णः (अ. इ. उ. इ.) ।

ह्रास, सं. पुं. (सं.) अपकर्षः, अवनतिः (स्त्री.), क्षयः, अधोगतिः (स्त्री.), अपचयः, ध्वंसः, अंशः ।

—होआ, क्रि. अ., श्चि (कर्म.), हन् (भ्वा. प. से.), अपचि (कर्म.) ।

ह्री, सं. स्त्री. (सं.) लज्जा, व्रथा, व्रीडा ।

ह्राद, सं. पुं. (सं.) आनन्दः, प्र-मोदः, हर्षः ।

ह्लिस्की, सं. स्त्री. (अं.) आन्दमयभेदः ।

ह्ले, सं. पुं. (अं.) तिमिरगलः, (तिमिः, ह्ले-मत्स्यः ।

प्रथम परिशिष्ट

संस्कृत-सूक्तियों का हिन्दी-अनुवाद

संस्कृत

अकालमघवद् वित्तमकस्मादिति याति च ।
(कथासरित्सागर)

अक्षाभ्यतैव महतां महत्त्वस्य हि लक्षणम् ।
(कथा०)

अगच्छन् चैनतेयोऽपि पदमेकं न गच्छति ।

अगुणस्य हतं रूपम् ।

अङ्कमारुह्य सुप्तं हि हत्वा किं नाम पौरुषम् ?

अङ्गीकृतं सुकृतिनः परिपालयन्ति ।

अचिन्त्यं हि फलं सूते सद्यः सुकृतपादपः ।
(कथा०)

अजीर्णं भोजनं त्रिपम् ।

अज्ञता कस्य नाभेह नोपहासाय जायते ?

अतिदानाद् बलिर्बद्धः ।

अतिपरिचयाद्वज्रा, संततगमनादनादरो
भवति ।

अतिभुक्तिरतीवोक्तिः सद्यः प्राणायहारिणा ।

अतिलोभो न कर्तव्यः ।

अति सर्वत्र वज्रयेत् ।

अमृणे पतितो वह्निः स्वयमेवोपशाम्यति ।

अधरेण्वरूतं हि योपितां हृदि हालाहलमेव
केवलम् ।

अधर्मत्रिषवृक्षस्य पच्यते स्वादु किं फलम् ?
(कथा०)

अधिकस्याधिकं फलम् ।

अनध्वा वाजिनां जरा ।

अनन्द्यागामिनी पुंसां कीर्तिरेका पतिव्रता ।

अनपेक्ष्य गुणगुणौ जनः स्वरुचिं निश्चयतोऽ-
नुधावति । (शिशुमालकथे)

अनवसरे याचितमिति सत्यात्रमपि कुप्यते
दाता ।

हिन्दी

यह अकाल-मैघ के समान अकस्मात् आता-
जाता है ।

खुब न होना ही बड़ों के बड़प्पन का चिह्न है ।

बिना चले तो गहड़ भी पग-भर भी नहीं जा
सकता ।

निरुप व्यक्तिको रूप किस काम का ?

गोद में सोये हुए की हत्या में कहीं को वीरता है ।

श्रेष्ठ लोभ कही हुई बात को पूरा करते हैं ।

पुण्यरूपी वृक्ष शीघ्र ही अचिन्त्य फल देता है ।

अपन में भोजन विष-सुख होता है ।

अज्ञान के कारण किसका उपहास नहीं होता ?

अत्यधिक दान से बलि को बँधना पड़ा ।

बहुत मेल-जोल से अवशा होती है और किसी
के यहाँ अधिक जाने से अनादर ।

बहुत खाने और बहुत बोलने से तुरन्त मृत्यु
हो जाती है ।

अत्यधिक लोभ नहीं करना चाहिए ।

सब बातों में 'अति' त्याज्य है ।

जो अंग तृणादि पर नहीं पड़ी, वह स्वयमेव
बुझ जाती है ।

स्त्रियों के ओठों में तो अमृत रहता है किंतु
हृदय में भयंकर विष ।

क्या कभी अधर्मरूपी विषवृक्ष पर सरस फल
लग सकते हैं ?

कितना गुड़ उगना भीठा ।

सदा बँधे रहनेवाले थोड़े बूढ़े हो जाते हैं ।

पुरुषों को स्वार्थी कीर्ति पतिव्रता नारी के समान
होती है ।

बस्तुतः मनुष्य गुण-दोष को उपेक्षा करके लचि
के अनुसार ही कार्य करता है ।

यदि कुअवसर पर भौंगा जाए तो दानी मनुष्य
सत्यात्र पर भी क्रोध करता है ।

[६७८]

अनार्यः परदारव्यवहारः । (अभिज्ञानशाकुन्तले)
अनार्यसंगमाद्दूरं विरोधोऽपि समं महा-
त्मभिः । (किराताजुनीये)

अनाश्रया न शोभन्ते षण्डिता वनिता
रुताः ।

अनिर्वर्णनीयं परकलत्रम् । (अभिज्ञान०)
अनुकूलेऽपि कलत्रे नीचः परदारलम्पटो
भवति ।

अनुत्सेकः संलु विक्रमालंकारः ।
अनुभवति हि मूर्धा पादपस्तीव्रमुष्णं
शमयति परितापं छाथया संश्रिता-
नाम् । (अभिज्ञान०)

अनुसृत्य सतां वर्त्म यत्त्रयमपि तद् बहु ।

अनुहुंकुरुते धनध्वनिं नहि गोमायुरुतानि
केसरी । (शिशु०)

अन्तःसारविहीनानामुपदेशो न विद्यते ।
अन्यार्थं कुरुते यदा भित्तिपतिः कस्तं
निरोद्धुं क्षमः ?

अपये पदमपर्यन्ति हि श्रुतवन्तोऽपि रजो-
निमीलितः । (रघुवंशे)

अपन्थानं तु गच्छन्तं सोदरोऽपि विमुञ्चति ।
अपायो मस्तकस्थो हि विषयग्रस्तचेतसाम् ।
(कथा०)

अपि धन्वन्तरिवैद्यः किं करोति गतायुधि ।

अपि स्वदेहात् किमुतेन्द्रियार्थाद्यशोधनार्थं
हि यशो गरीयः । (रघु०)

अपुत्रस्य गृहं शून्यम् ।
अपेक्षन्ते हि विपदः किं पेलवमपेलवम् !
(कथा०)

अप्रकटीकृतशक्तिः शक्तोऽपि जनस्तिरस्त्रियां
लभते ।

अप्राप्यं माम् नेहारित धीरस्य व्यव-
सायिनः । (कथा०)

अप्रियस्य च पथ्यस्य वक्ता श्रोता च
दुर्लभः ।

अबला यत्र प्रबला ।

अभद्रं भद्रं वा विधिलिखितमुन्मूलयति
कः ?

अभितसमयोऽपि मार्दवं भजते कैव कथा
शरीरिषु ! (रघु०)

अभोगस्थ हृतं धनम् ।

पराई स्त्रियों से सम्बन्ध रखना अपेक्षित नहीं ।
अनार्यी (दुष्टों) के साथ मेल-जोल की अपेक्षा
महात्माओं से वैर अच्छा ।

विद्वान्, स्त्रियों और लक्षणों आश्रय के बिना
शोभा नहीं देती ।

पराई स्त्रियों की ओर ताकना न चाहिए ।
पत्नी के अनुकूल होने पर भी नीच मनुष्य
परदारविगमन करता है ।

नवतः वीरता का भूषण है ।
वृक्ष स्वयं तो कड़ी धूप सदा ही, परन्तु शरणा-
गतों के ताप को छाया से शान्त कर
देता है ।

सखियों के भारों पर चलते हुए थोड़ा भी मिले
तो बहुत समझिए ।

सिंह मधु-मर्जन सुनकर तो दहाड़ता है, गीतों
की ध्वनि सुनकर नहीं ।

जदबुद्धि मनुष्य को शिक्षा देना व्यर्थ है ;
जब राजा ही अन्वय करने लग पड़े तब उसे
कौन रोक सकता है ?

रजोगुण से अभिभूत विद्वान् भी कुमार्गगामी
बन जाते हैं ।

कुपथगामी का साथ सगा भाई भी नहीं देता ।
विपत्तियों विषयी लोगों के सिर पर भँडराती
रहती है ।

जब आयु समाप्त हो जाती है तब वैद्य धन्वन्तरि
भी कुछ नहीं कर सकता ।

यशस्वी लोग, भोगों की तो बात ही क्या,
स्वशरीर से भी यश को श्रेष्ठ समझते हैं ।

पुत्रहीन व्यक्ति के लिए घर सूना हातः है ।
विपत्तियों लक्ष्य की दौमल्यता वा कठोरता नहीं
देखा करती ।

जो बलवान् निज बल को कभी प्रकट नहीं
करता वह निरस्कार का गायन बनेता है ।

धीर और व्यवसायी व्यक्ति के लिए संसार में
कोई भी वस्तु अप्राप्य नहीं ।

कड़वी परन्तु हितकर बात कहने और सुनने
वाले व्यक्ति दुर्लभ है ।

जहाँ स्त्री सबल हो ... ।

बुरा हो या भला, विपत्ता के लेज को कौन
मिटा सकता है ?

तमाने पर लोहा भी पिघल जाता है, प्रणियों
की तो बात ही क्या ?

जो भोगता नहीं, उसका धन व्यर्थ है ।

[३७६]

अमर्षणः शोणितकाक्षया किं पदा स्पृशन्तं
दशति द्विजिह्वः ? (रघु०)

अमृतं क्षीरभोजनम् ।

अमृतं प्रियदर्शनम् ।

अमृतं राजसंमानम् ।

अमृतं शिशिरे वह्निः ।

अम्बुगर्भो हि जीमूतश्रातकैरभिनन्दते । (रघु०)

अथशोभीरवः किं न कुर्वते बत साधवः !

(कथा०)

अथातपूर्वा परिवादगोचरं सतां हि वाणी
गुणमेव भाषते । (किराताजुनीय)

अस्तुदत्वं महतां श्योचरः । (किरात०)

अर्थमनर्थं भावय नित्यं,

नास्ति ततः सुखलेशः सत्यम् ।

अथांतुराणां न गुरुर्न बंधुः ।

अर्थो हि कन्या परकीय एव । (अभिज्ञान०)

अर्थो घटो बोधमुपैति नूनम् ।

अल्पविद्यो महागर्वा ।

अल्पश्च कालो बहुश्च विघ्नाः ।

अल्पीयसोऽप्यामयतुल्यवृत्तेर्महापकाराय
रिपोविद्विद्धिः । (किरात०)

अवस्तुनि कृतकलेशो मूर्खो यात्यवहास्य-
ताम् । (कथा०)

अविद्याजीवनं शून्यम् ।

अविनीता रिपुभार्या ।

अव्यवस्थितचित्तस्य प्रसादोऽपि भयंकरः ।

अशीलस्य हतं कुलम् ।

अश्नुते स हि कल्याणं, व्यसने यो न
मुह्यति ।

अश्रेयसे न वा कस्य विश्वासो दुर्जने जने ?

असन्नुष्टा द्विजा नष्टाः ।

असन्मैत्री हि दोषाय कूलच्छायेव सेविता ।
(किरात०)

असारं दग्धसंसारं सारं सारद्वलोचनाः ।

असिद्धार्था निवर्तन्ते न हि धीराः कृतो-
द्यमाः । (कथा०)

असिद्धेस्तु हंता विद्या ।

क्या उग्र सर्प पाँव से छूनेवाले व्यक्ति को लहू
पीने की इच्छा से काटता है ?

क्षीररूपी भोजन अमृत है ।

प्रिय पदार्थ का दर्शन अमृत है ।

राजा से प्राप्त सम्मान अमृत है ।

जाड़ों में अग्नि अमृत है ।

पपीहे जलपूर्ण बादल की ही प्रशंसा करते हैं ।

अपयय से डरने वाले सज्जन क्या नहीं करते !

सज्जनों की वाणी, निन्दा के मार्ग से अपरिचित
होने के कारण, गुणों का ही वर्णन करती है ।

बड़े लोग किसी का जी नहीं दुखाते ।

सदा ही धन को दुःखरूप समझो, वस्तुतः उससे
तनिक भी सुख नहीं ।

धन के लोभी गुरु और बन्धु तक का ध्यान
नहीं करते ।

कन्या पराया ही धन है ।

अथजल गगरी छलकत जप ।

थोड़ी विद्या वाला व्यक्ति बहुत ही गर्वीला
होता है ।

समय थोड़ा है और विघ्न बहुत ।

रोग की तरह स्वभाव वाले छोटे से शत्रु की
उग्रति से भी भारी अनिष्ट होता है ।

तुच्छ वस्तु के लिए कष्ट उठाने वाला मूर्ख
उपहासस्पद बनता है ।

अविद्यापूर्ण जीवन सूना है ।

नम्रता-रहित परती दग्ध है ।

जिसका मन ठिकाने न हो, उसकी कृपा भी
भयावनी होती है ।

शीलरहित व्यक्ति की बुद्धीनता व्यर्थ है ।

जो विपत्ति में विमूढ़ नहीं होता वह अवश्य ही
कल्याणभगी बनता है ।

दुष्ट जन पर विश्वास करने से किसका अनिष्ट
नहीं होता ?

संतोष-हीन-ब्राह्मण नष्ट हो जाते हैं ।

दुर्जनों की मित्रता कगार की छाया के समान
अनर्थकारिणी होती है ।

इस दुःखपूर्ण निस्सार संसार में साररूप तो
केवल मृगनयनियों ही हैं ।

उग्रमो धीर कार्यसिद्धि से पूर्व नहीं रुकते ।

सिद्धि के विना विद्या व्यर्थ है ।

अस्थिरं जीवितं लोके ।
अस्थिराः पुत्रदात्राश्च ।
अस्थिरे धनयौवने ।
अस्वर्यं लोकविद्विष्टम् ।
अहितो देहजो व्याधिः ।
अहो चित्राकारा नियतिरिव नीतिर्नयत्रिदः ।

अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता । (किरात०)

अहो दैवाभिशासनां प्राप्तेऽप्यर्थः पलायते ।
(कथा०)

अहो रूपम्, अहो ध्वनिः ।
आकण्डजलमग्नोऽपि श्वा लिहत्येव जिह्वया ।

आचारः प्रथमो धर्मः ।
आज्ञा गुरूणां ह्यविचारणीया । (रघु०)

आत्मार्थे पृथिवीं त्यजेत् ।
आदानं हि विसर्गाय सतां वारिमुचामिव ।
(रघु०)

आपत्काले च कण्टेऽपि नोत्साहस्यज्यते
बुधैः । (कथा०)

आपुस्तु धीरान् पुरुषान् स्वयमायान्ति
संपदः । (कथा०)

आपदि स्फुरति प्रज्ञा यस्य धीरः स एव हि ।
(कथा०)

आपद्यपि सतो वृत्तं किं मुञ्चन्ति कुलञ्जियः ?
(कथा०)

आपश्चार्तिप्रशमनफलाः संपदो ह्युत्तमानाम् ।
(मेघदूते)

आमुखापाति कल्याणं कार्यसिद्धिं हि
शंसति । (कथा०)

आये दुःखं व्यये दुःखं धिगर्थाः कष्ट-
संश्रयाः ।

आरब्धे हि सुदुष्करेऽपि महतां मध्ये विरामः
कुतः । (कथा०)

आर्जवं हि कुटिलेषु न नरोतिः ।
(नैषधायचरिते)

आलस्योपहता विद्या ।
आवेष्टितो महासपैश्वन्दनः किं विषायते ?

आहारे व्यवहारे च त्यक्तलज्जः सुखी भवेत् ।

जगत में जीवन अस्थिर है ।
पुत्र और कलत्र अस्थिर है ।
धन और यौवन अस्थिर है ।
लोकविरुद्ध आचरण सुखदायक नहीं होता ।
शरीर में उत्पन्न रोग शत्रु है ।
नीतिश की नीति नियति के समान विचित्र
रूपों वाली होती है ।

बलवान् से विरोध करने का परिणाम बुरा ही
होता है ।

हा! दैव से शापित लोगों के बने हुए काम भी
विनष्ट जाले हैं ।

वाह! क्या रूप है और क्या स्वर !
गले तक पानी में डूबा हुआ भी कुत्ता जल को
जीभ से डी चाटता है ।

आचार सर्वोत्तम धर्म है ।
गुरुजनों की आज्ञा का बिना विचारे ही पालन
करना चाहिए ।

अपने रक्षार्थ पृथ्वी को भी त्याग दे ।
मेघों के समान सत्पुरुषों का आदान भी प्रदान
के लिए ही होता है ।

विपत्ति और कष्ट के समय में भी बुद्धिमान्
उत्साह नहीं छोड़ते ।

आपत्तियों में धैर्य रखने वालों के पास सम्प-
त्तियाँ स्वयमेव आती हैं ।

जिसकी बुद्धि आपत्ति में चमकती है, वह धीर है ।

क्यः कुलीन ललनाएँ आपत्ति में भी सतीत्व का
त्याग करती है ?

उत्तम जनों का धन दुखियों के दुःख दूर करने
पर ही सफल होता है ।

कार्यारम्भ में होने वाला मंगल, कार्यसिद्धि का
सूचक होता है ।

धन का भागन और व्यय दोनों ही दुःखपूर्ण
होते हैं; इस दुःखदायक धन को धिक्कार है ।

आरम्भ किये हुए अत्यन्त कठिन काम में भी
बड़े लोग बीच में नहीं रुकते ।

कुटिलों के साथ सरलता का व्यवहार नीति
नहीं है ।

आलस्य विद्या का विनाशक है ।
सर्पों से परिवेष्टित चन्दन क्या विप्रेला हो
जाता है ?

आहार और व्यवहार में संकोच छोड़कर
सुखी रहे ।

आहुः सप्तपदी मैत्री ।
 हृत्तो भ्रष्टस्ततो भ्रष्टः ।
 इदं च नास्ति न परं च लभ्यते ।
 इन्द्रोऽपि लघुतां याति स्वयं प्रख्या-
 पितैर्गुणैः ।
 इन्धनौघघग्पग्निस्त्रिधा नात्येति पूष-
 णम् । (दिष्टु०)

हृष्टं धर्मेण योजयेत् ।
 इहामुत्र च नारीणां परमा हि गतिः पतिः ।
 (कथा०)
 इष्ट्यां हि विवेकपरिपन्थिनी । (कथा०)
 ईश्वराणां हि विनोदरसिकं मनः । (किरान०)
 उत्सवप्रियाः खलु मनुष्याः । (अभिज्ञान०)
 उत्साहैकधने हि वीरहृदये नाप्नोति खेदो-
 ऽन्तरम् । (कथा०)
 उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् ।

उदारस्य तृणं वित्तम् ।
 उदिते तु सहस्रांशौ न खद्योतो न चन्द्रमाः ।
 उदिते परमानन्दे नाहं न त्वं न वै जगत् ।

उद्योगः पुरुषलक्षणम् ।
 उन्नतो न सहते तिरस्क्रियाम् ।
 उपदेशो हि सूत्राणां प्रकीर्षाय न शान्तये ।
 उत्तं सुकृतवीजं हि सुक्षेत्रेषु महत्फलम् ।
 (कथा०)

उष्णत्वमन्यातपसंप्रयोगाच्छैत्यं हि यत् सा
 प्रकृतिर्जलस्य (रघु०)
 उष्णो दहति चाङ्गारः शीतः कृष्णायते
 करम् ।

ऋणकर्ता पिता शत्रुः ।
 ऋद्धिश्चित्तविकारिणी ।
 एको हि दोषो गुणसन्निपाते निमज्जतीन्दोः
 किरणेष्विवाङ्कः । (कुमार०)
 क उष्णोदकेन नवमल्लिकां सिञ्चति ! (अभि०)
 कणशः क्षणशश्चैव त्रिवामर्थञ्च साधयेत् ।

कण्ठे सुधा वसति वै खलु सज्जनानाम् । (कथा०)
 कमलवनभूषा मधुकरः ।
 कर्तव्यं हि सती वचः । (कथा०)
 कर्तव्यो महदाश्रयः ।

सात पग साथ-साथ चलने को मैत्री कहते हैं ।
 न इधर के रहे न उधर के रहे ।
 न यह रह; न वह मिला ।
 अपने मुँह मिनां निदरू धनकर इन् भी गौरव-
 हीन हो जाता है ।
 ईधन के बहुत बड़े ढेर को जपानेवाली आग भी
 अपनी ज्योति से सूर्य को मात नहीं कर
 सकती ।

अभिलाषा धर्मानुसारिणी चाहिए ।
 लोक और परलोक में कियों का परम आश्रय
 पति ही है ।

ईश्यां विवेक की शत्रु है ।
 धनाह्वय लोग विनोदी होते हैं ।
 मनुष्य उत्सवप्रिय होते हैं ।
 वीरों के उत्साहपूर्ण, हृदय में खेद के लिये
 अवकाश कहां !
 उदारचरित लोगों के लिये तो सारी भूमि हीं
 कुटुम्ब है ।

उदार व्यक्ति के लिये धन तृणतुल्य है ।
 सूर्य के उदय पर न जुगुनू की चमक रहती है,
 न चाँद की ।
 ब्रह्मानन्द की प्राप्ति होने पर मैं, तू और जगत्
 का ज्ञान नहीं रहता ।

उद्योग ही पुरुष का लक्षण है ।
 उच्च व्यक्ति तिरस्कार नहीं सहता ।
 मूर्ख लोग उपदेश से प्रकुपित होते हैं, शांत नहीं ।
 उत्तम पाशों में बंधा हुआ पुण्यरूपों बोज महीन
 फल देता है ।

जल का स्वाभाविक गुण तो शीतलता है, उसमें
 गर्मी तो अग्नि या धूप के संसर्ग से आती है ।
 गर्म अङ्गार हाथ को जलाता है, ठण्डा कलुषित
 करता है ।

कण लेनेवाला पिता शत्रु है ।
 ऐश्वर्य वित्त को विकृत कर देता है ।
 गुण-समृद्धय में अकेला दोष ऐसे छिप जाता
 है जैसे किरणों में चाँद का कलंक ।
 मोलिये के प्रौथे को गर्म जल से कौन मींचता है !
 दिया और धन का संग्रह क्षण-क्षण में कण-कण
 करके करते रहना चाहिए ।

अमृत सज्जनों के कण्ठ में ही रहता है ।
 भ्रमर कमल-समूह का अलंकार है ।
 सत्पुरुषों के वचनानुसार चलना चाहिए ।
 आश्रय बड़ों का ही लेना चाहिए ।

कर्मणो गहना गतिः ।
 कर्मणो ज्ञानमतिरिच्यते ।
 कर्मदोषाद् दरिद्रता ।
 कर्मानुगो गच्छति जीव एकः ।
 कर्मायत्तं फलं पुंसाम् ।
 कलासीमा काव्यम् ।
 कवयः किं न पश्यन्ति !
 कवले पतिता सद्यो वमयति ननु मक्षिकाञ्च-
 भोक्तारम् ।
 कष्टं निर्धनिकस्य जीवितमहो शरैरपि
 त्यज्यते ।
 कष्टः खलु पराश्रयः ।
 कष्टादपि कष्टतरं परगृहवासः पराच्छं च ।
 कस्त्यागः स्वकुटुम्बपोषणविधावर्थव्ययं
 कुर्वतः !
 कस्य नेष्टं हि यौवनम् ? (कथा०)
 कस्यचित् किमपि नो हृषीयम् ।
 कस्य नोच्छृङ्खलं बाल्यं गुरुशासनवर्जितम् ?
 (कथा०)
 कस्य सत्संगो न भवेच्छुभः ? (कथा०)
 कः कालस्य न गोचरान्तरगतः ।
 कः परः प्रियवादिनाम् ।
 कः पैतामहगोलकेऽत्र निखिलैः सम्मानितो
 वर्तते ?
 कः प्राज्ञो वाञ्छति स्नेहं वेद्यासु सिकता-
 सु च ? (कथा०)
 कः सूर्विनर्यं विना !
 काकाः किमपराध्यन्ति हंसैर्जग्धेषु शालिषु ?
 (कथा०)
 कान्ता रूपवती शत्रुः ।
 कामं व्यसनवृक्षस्य मूलं दुर्जनसंगतिः ।
 (कथा०)
 कामातुराणां न भयं न लज्जा ।
 कामिनश्च कुतो विद्या ?
 कायः कस्य न वल्लभः ?
 कालस्य कुटिला गतिः ।
 काले खलु समारब्धाः फलं बध्नन्ति
 नीतयः । (रघु०)
 काले दत्तं वरं ह्यल्पमकाले बहुनापि किम् !
 (कथा०)

कर्म की गति गहन है ।
 कर्म से ज्ञान बढ़कर है ।
 दरिद्रता कर्मदोष का फल है ।
 अकेला जीव कर्मानुसार गति पाता है ।
 मनुष्य को फल की प्राप्ति कर्मानुसार होती है ।
 कला की सीमा काव्य है ।
 कवि क्या नहीं देखते !
 शस में गिरी हुई मकड़ी भोजनकर्ता को तुरन्त
 वमन करा देती है ।
 हा ! निर्धन का जीवन इतना दुःखपूर्ण होता
 है कि पत्नी भी उसका साथ छोड़ देती है ।
 दूमरे का मरोसा दुःखदायक होता है ।
 पराये घर में निवास और पराये अन्न से निर्वास
 सबसे बड़े दुःख हैं ।
 अपने कुटुम्ब के पालन में ही धन व्यय करने-
 वाले व्यक्ति का त्याग भी कोई त्याग है !
 यौवन किसे अच्छा नहीं लगता ?
 किसी का भी कुछ भी सुराना नहीं चाहिए ।
 गुरु का शासन न होने से किसका पचपन उच्छृ-
 ङ्खल नहीं हो जाता ?
 सत्सङ्ग किसका भला नहीं करता ?
 काल के क्षेत्र से बाहर कौन है !
 मधुरभाषी का कोई शत्रु नहीं होता ।
 इस ब्राह्मण में सर्वसम्मानित कौन है ?
 कौन-सा विद्वान् वेद्याओं और रेत से स्नेह
 (प्रेम, तेल) चाहता है ?
 विनय से रहित पुत्र क्या !
 जब धानों को हम खा गये तब कौए क्या
 अपराध करेंगे !
 सुरूपा पत्नी शत्रु है ।
 डूरी संगत व्यसनरूपी वृक्ष की जड़ है ।
 कामपीडित व्यक्ति भय और लज्जा से रहित
 होते हैं ।
 कामी को विद्या कहाँ ?
 शरीर किसे प्यारा नहीं होता ?
 काल की चाल टेढ़ी होती है ।
 समय पर प्रयुक्त नीतियाँ अवश्य फल लाती हैं ।
 समय पर दिया हुआ थोड़ा भी दान अरुणय
 पर दिये हुए बड़े दान से अच्छा होता है ।

[६२]

कालेन फलते तीर्थं, सद्यः साधुसमागमः ।

का विद्या कवितां विना ?

कारमीरजस्य कटुतापि नितान्तरम्या ।

का ह्यभिजनी विना हंसं, कश्च हंसोऽभिजनीं
विना ? (कथा०)

किं हि न भवेदीश्वरेच्छया ? (कथा०)

किं किं करोति न निरर्गलतां गता स्त्री ?

किञ्चिक्कालोपभोग्यानि यौवनानि धनानि
च ।

कुराजान्तानि राष्ट्राणि ।

कुरूपता शोलतया विराजते ।

कुरूपी बहुचेष्टिकः ।

कुलबधुः का स्वामिभक्तिं विना ?

कुले कश्चिद्दुःखः प्रभवति नरः स्वस्थ-
महिमा ।

कुवक्षता शुभ्रतया विराजते ।

कुवाक्यान्तं च सौहृदम् ।

कुशिव्यमध्यापयतः कुतो यदा ?

कृतधनानां शिवं कृतः ?

कृतार्थः स्वामिनं द्वेषि ।

कृपणानुसारि च धनम् ।

कृशो कस्यास्ति सौहृदम् ?

केचिदज्ञानतो नष्टाः ।

केचिन्नष्टाः प्रमादतः ।

केवलौऽपि सुभगो नवाम्बुदः किं पुनश्चिदश-
चापलाच्छितः ? (खु०)

केषां न स्यादभिसतफला प्रार्थना ह्युत्तमेषु !
(मेव०)

केषां नैषा कथय कविताकामिनी कौतुकाय !

को जानानि जनो जनार्दनमनोवृत्तिः कदा
कीदृशी ?

कोऽतिभारः समर्थानाम् ।

को धर्मः कृपया विना ?

को न याति वशं लोके मुखे पिण्डेन पूरितः ।

को नाम राज्ञां प्रियः !

कोऽर्थान् प्राप्य न गर्वितः !

कोऽर्थो गतो गौरवम् ?

को विदेशः समर्थानाम् ।

को हि मार्गमार्गं वा ध्यसन्नाद्यो निरीक्षते ?
(कथा०)

तीर्थं का फल बिलम्बे नै परन्तु मत्संगति वा फल
शीघ्र प्राप्त होता है ।

कविता के विना विद्या कैसा ?

केसर की कड़वाहट भी अत्यन्त प्यारी होती है ।

हैंत-हीन सरसी कैती और सरसी-हीन हैंस
कैसा ?

ईश्वर की इच्छा ने क्या नहीं हो सकता ?

निरंकुश नारी क्या-क्या नहीं करती ?

यौवन तथा सम्पदा के सुख कुछ ही काल तक
बूटे जा सकते हैं ।

बुरे राजाओं से राष्ट्रों का नाश हो जाता है ।

सुन्दर शील से कुरूपता भी खिल उठती है ।

कुरूप मनुष्य बहुत नैष्ठार्थ करता है ।

पतिभक्ति-विहीन कुलबधु कैसी ?

कुल में कोई ही अन्य व्यक्ति यशस्वी प्रभु
होता है ।

फटे-पुराने वस्त्र भी स्वच्छ रहने से खिल उठते हैं ।

कुवचनों से विपत्ता नष्ट हो जाती है ।

कुशिव्य के अध्वपक को यश कहाँ ?

कृतघनों का कल्याण कहाँ ?

पूर्ण-मनोरथ व्यक्ति स्वामी से द्वेष करता है ।

धन कृपण के पीछे चपटा है ।

निर्बल या निर्धन से कौन मित्रता करता है ?

कई लोग अज्ञान से नष्ट हो गये ।

कई लोग प्रमाद से नष्ट हो गये ।

नया मेघ बैसे भी सुन्दर होता है; परन्तु जब वह
इन्द्रधनुष से युक्त हो तब तो बात ही क्या ?

उत्तम जनो के समक्ष का हुई किनकी प्रार्थना
सफल नहीं होती !

कहो तो, यह कविता-कामिनी किन के मन में
कीलुक उत्पन्न नहीं करती !

कौन जानता है कि भगवान् के मन की वृत्ति
कब कैसा होती है ?

बलवानों के लिये कोई भी भार अधिक नहीं है ।

द्रव्य के विना धर्म कैसा ?

संसार में जिसके मुँह में धास डाल दो, वही
वश में हो जाता है ।

राजाओं का प्यार कौन होता है !

धन पाकर कौन गर्वित नहीं होता !

किस यात्रक को गौरव प्राप्त हुआ ?

समर्थ व्यक्ति के लिये विदेश कौन-सा है ।

कौन अध्वन्यन्ध मनुष्य सुपथ-कुपथ का ध्यान
रखता है ?

को हि चित्तं रहस्यं वा स्त्रीषु शक्नोति
गृहेतुम् । (कथा०)

को हि स्वशिरसदृष्टायां विप्रेश्चोऽहलङ्घयेद्
गतिम् ? (कथा०)

क्रियाणां खलु धर्म्याणां सत्पत्न्यो मूलकार-
णम् । (कुमारसंभवे)

क्रियासिद्धिः सर्वे भवति महतां नोपकरणे ।

क्रुद्धे विधौ भजति मित्रममित्रभावम् ।

क्रोधो मूलमनर्थानाम् ।

काश्रयोऽस्ति दुरात्मनाम् ?

क्षणविध्वंसिनः कात्याः का चिन्ता मरणे रणे ।

क्षणे क्षणे यच्छ्रवतामुपैति तदेव रूपं रमण्यो-
तायाः । (शिशु०)

क्षमया किं न सिध्यति ?

क्षान्तिमुत्तर्य तपो नास्ति ।

क्षारं पिबति पयोधेर्वर्षत्यग्भोघरो मधुर-
ममम् ।

क्षितितले किं जन्म कीर्तिं विना !

क्षीणा नरा निष्कृष्टा भवन्ति ।

क्ष्मातुराणां न रुचिर्न पक्वम् ।

ख(फ) टाटोपो भयङ्करः ।

गतस्य शोचनं नास्ति ।

गतानुगतिको लोको न लोकः पार-
मार्थिकः ।

गुणलुब्धाः स्वयमेव संपदः ।

गुणान् भूषयते रूपम् ।

गुणाः पूजास्थानं गुणेषु न च लिङ्गं न च
वयः ।

गुणो गुणं वेत्ति न वेत्ति निर्गुणः ।

गुणविहीना बहु जल्पयन्ति ।

गुह्यं नयन्ति हि गुणा न संहतिः । (किरात०)

गृहे वा पुण्यनिष्पत्तिः सध्वनि भ्रमतः
कुतः । (कथा०)

ग्रामस्वार्थं कुलं त्यजेत् ।

चकास्ति योग्येन हि योग्यसंग्रामः (नैषध०)

चक्रवत् परिवर्तन्ते दुःखानि च सुखानि च ।

चक्षुःपूतं न्यसेत् पादम् ।

चपलौ किल शूराणां रणे जयपराजयौ ।

(कथा०)

क्षिणं सम्पत्तिं और गोपनीय वस्तु को नहीं
छिपा सकती ।

अपने सिर को परछाईं और विधि की गति का
उल्लंघन कौन कर सकता है ?

धार्मिक कृत्यों का मूल कारण श्रेष्ठ पत्नियों
होती हैं ।

बड़े लोग स्वप्रताप से कार्य सिद्ध करते हैं, उप-
करणों से नहीं ।

विधाता क्रुद्ध हो तो मित्र भी अनित्र बन
जाता है ।

क्रोध अन्तर्धौ की जड़ है ।

दुष्टों की आशय कहां ?

जब शरीर क्षयमग्न है तब रण में मरने में
चिन्ता कैसी ।

वास्तविक सौन्दर्य वही है जो अनुक्षण नया-नया
होता जाये ।

क्षमा से क्या नहीं सिद्ध होना ?

क्षमा के तुल्य कोई तप नहीं है ।

मेव समुद्र का खारा पानी पीता है और मधुर
जल बरसता है ।

भूमि पर कीर्तिहीन जीवन क्या !

निर्धन लोग निर्दय बन जाते हैं !

भूल से व्याकुल व्यक्ति न स्वाद देखते हैं न
पक्वता ।

फण का विस्तार-मात्र भी भयंकर होता है ।

बीती बात का शोक व्यर्थ है ।

लोग भेड़-चाल चलते हैं, तत्त्व की पहचान नहीं
करते ।

सम्पत्तियों स्वयं गुणों की लोभी होती हैं ।

रूप गुणों को अलङ्कृत कर देता है ।

गुणियों में गुण ही पूज्य होते हैं, न बाह्य चिह्न
और न आयु ।

दुःख का मूल्य गुणी जानता है, निर्गुण नहीं ।

गुणहीन मनुष्य वाचाल होते हैं ।

गौरव गुणों से मिलता है, समूह से नहीं ।

गार्हस्थ्य में जो पुण्य किये जा सकते हैं वे
संन्यास में नहीं ।

गौंर की रक्षा के लिये कुल की बलि दे दे ।

योग्य से योग्य का भेद ही शोभा देता है ।

दुःख और सुख (रथ के) चक्र के तुल्य घूमते हैं ।

देखकर ही पग रखना चाहिए ।

युद्ध में वीरों की जय या पराजय अनिश्चित
होती है ।

[६८२]

चाण्डालोऽपि नरः पूज्यो यस्यास्ति विपुलं
धनम् ।

चित्तमेतदमलीकरणीयम् ।
चित्ते वाचि क्रियायां च साधूनामेकरूपता ।

चित्रा गतिः कर्मणाम् ।
चिन्ता जरा मनुष्याणाम् ।
चिन्तासमं नास्ति शरीरशोषणम् ।

चौराणामनृतं बलम् ।
चौरं गते वा किमु सावधानम् !
छिद्रेष्वनर्था बहुलीभवन्ति ।
जठरं को न विभर्ति केवलम् !
जपतो नास्ति पातकम् !
जरा रूपं हरति ।
जलबिन्दुनिपातेन क्रमशः पूर्णते घटः ।
जातस्य हि ध्रुवो शन्युः ।
जातापत्या पतिं द्वेष्टि ।
जातौ जातौ नवाचाराः ।
जानन्ति पशवो गन्धात् ।
जामाता दशमो ग्रहः ।
जतरङ्गीणां पतिः शत्रुः ।
जितश्रोत्रेण सर्वं हि जगदेतद् विजीयते ।

(कथाः०)

जीवन् हि धीरोऽभिसर्तं किं नाम न यदा-
प्नुयात् । (कथा०)
जीवो जीवस्य जीवनम् ।
ज्ञानस्याभरणं क्षमा ।
ज्येष्ठभाता पितुः समः ।
ज्ञातिं पराशयवेदिनो हि विज्ञाः । (नैषध०)

तक्रान्तं ननु भोजनम् ।
तपोऽधीनानि श्रेयांसि, ह्युपायोऽन्यो न
विद्यते । (कथा०)
तपोऽधीना हि संपदः । (कथा०)
तमस्तपति वमांशौ कथमाविर्भविष्यति ?
(अभिज्ञान०)

तस्करस्य कुतो धर्मः !
तस्य तदेव मधुरं यस्य मनो यत्र संलग्नम् ।

तिष्ठत्येकां निशां चन्द्रः श्रीमान् संपूर्ण-
मंडलः ।

अति धनवान् चाण्डाल भी पूज्य है ।

इस चित्त को निर्मल करना चाहिए ।
सज्जनों के मन, वाणी और कर्म में समानता
रहती है ।

कर्मों की गति न्यायी ।
चिन्ता मनुष्यों का बुझापा है ।
चिन्ता के समान शरीर को कोई भी नहीं
सुखाता ।

झूठ ही चौरा का बल है ।
चोर के भाग जाने पर सावधानता से क्या !
दोषों के कारण अनेक विपत्तियाँ आ घेरती हैं ।
केवल अपना पेट कौन नहीं भर लेता !
जप करने वाला पाप-मुक्त रहता है ।
बुझापा सौन्दर्य का नाशक है ।
बूँद-बूँद करके घड़ा भर जाता है ।
उपतन व्यक्ति की मृत्यु अटल है ।
संतानवती नारी पति से द्वेष करती है ।
प्रत्येक जाति के आनरण अलग-अलग होते हैं ।
पशु गन्ध से पहचान जाते हैं ।
दामाद दसवाँ ग्रह है ।
कुलटा को पति शत्रु प्रतीत होता है ।
क्रोध का विजेता जगद्विजयी होता है ।

भैरवशाली व्यक्ति जीवन रहते तो प्रत्येक अमी-
प्राप्त कर लेता है ।
प्राणी प्राणी का जीवन है ।
क्षमा ज्ञान का भूषण है ।
बड़ा भारी पिता के तुल्य है ।
विज्ञान लोग दूसरे के भाव को दुरन्त जान
जाते हैं ।

भोजन के अन्न में मट्टे का सेवन करे ।
सुख-सुविधाएँ तपस्या से ही प्राप्त होती हैं ।
किसी अन्य उपय से नहीं ।

संपत्तियाँ तप के अधीन हैं ।
सूर्य के चमकने पर अन्यकार कैसे प्रकट होगा ?

धोर का धर्म कहाँ !
जिसका मन जिसमें लगा हो, उसे वही प्रिय
होता है ।

१. शोभास्वित पूर्ण चाँद तो एक ही रात रहता
है । २. चार दिन की चाँदनी और फिर
अंधेरी रात है ।

[६८६]

तुप्यन्ति भोजनैर्विप्राः ।
तेजसां हि न वयः समीक्ष्यते । (२७०)
त्यजन्त्युत्तमसत्त्वा हि प्राणानपि न सत्प-
थम् । (कथा०)
त्यजेदेकं कुलस्वार्थं ।

त्यागाज्जगति पूज्यन्ते पशुपापाणवादपाः ।

त्रिभुवनविषये कस्य दोषो न चास्ति !
त्रैलोक्ये दीपको धर्मः ।
दया मांसाशिनः कुतः !
दयितं जनः खलु गुणीति मन्वते । (शिशु०)
दरिद्रता धीरतया विराजते ।
वदुरा यत्र वक्तारस्तत्र मौनं हि शोभनम् ।
दशाननोऽहरत्सीतां बन्धनं च महोदधेः ।
दारिद्र्यदोषेण करोति पापम् ।
दारिद्र्यदोषो गुणराशिनाशो ।
दारिद्र्यं परमाजनम् । (भागवते)
दुग्धधौतोऽपि किं याति वायसः कल्हंस-
ताम् ?
दुरधीता विषं विषा ।
दुर्जनस्य कुतः क्षमा ?
दुर्जनस्याजितं वित्तं भुज्यते राजतस्करैः ।
दुर्जया हि विषया विदुषापि । (नैषध०)
दुर्बलस्य बलं राजा ।
दुर्मन्त्री राज्यनाशाय ।
दुर्लभं क्षेमकृत् सुतः ।
दुर्लभं भारते जन्म मनुष्यं तत्र दुर्लभम् ।

दुर्लभः स गुर्ल्लोकं शिष्यचिन्तापहारकः ।

दुष्टेऽपि पत्यौ साध्वीनां नान्यथावृत्ति
मानसम् । (कथा०)

दूरतः पर्येता रम्याः ।
द्वौ दुर्बलघातकः ।
देहस्नेहो हि दुस्त्यजः ।
दैवमेव हि साहाय्यं कुरुते सत्त्वशालिनाम् ।
(कथा०)

दैवी विचित्रा गतिः ।
दोषग्राही गुणत्यागी पल्लोलीव हि दुर्जनः ।

दोषेऽपि गुणतां याति प्रभोर्भवति चेतकृपा ।
द्रव्येण सर्वं वशाः ।

माद्वेष सुंदर भोजन से प्रसन्न होते हैं ।
तेजस्वियों को उभर नहीं देखी जाती ।
उत्तम प्रकृति के लोग प्रथम त्याग देते हैं,
सन्मार्ग नहीं ।
कुटुम्ब की रक्षार्थ एक मन्वन्धी का त्याग कर
देना चाहिए ।
पशु, पत्थर और पेड़ त्याग के कारण ही संसार
में पूजे जाते हैं ।
तीनों लोकों में कौन निर्दोष है !
धर्म तीनों लोकों का दीपक है ।
मांसभक्षक में दया कहाँ !
लोग प्रिय मनुष्य को गुणी समझते हैं ।
निर्धनता धैर्य से शोभा पानी है ।
जहाँ मेढक बक्का हों वहाँ मौन ही अलङ्कार ।
सीता तो भुर्राद रावण ने और बाँधा गया समुद्र ।
मनुष्य दरिद्रता के कारण पाप करता है ।
दरिद्रता अनेक गुणों की नाशिका है ।
दरिद्रता सबसे उत्तम सुमां है ।
दूध से धोने पर क्या कौआ हंस बन
जाता है ?

दुरी तरह से पढ़ो दुर्द विद्या विष है ।
दुर्लभ में क्षमा कहाँ ?
दुर्जन को कमाई राजा और चोर ने खाई ।
विद्वान् भी विषयों की कठिनता से जानता है ।
राजा दुर्बल का बल है ।
कुमन्त्री से राज्य का नाश होता है ।
कल्याणकारी पुत्र दुर्लभ है ।
भारत में जन्म दुर्लभ है और फिर मनुष्य-जन्म
तो और भी दुर्लभ है ।

शिष्यों की चिन्ता का माशक गुरु जगत् में
दुर्लभ है ।

पति के दुष्ट होने पर भी सती स्त्रियों का मन
अन्यत्र नहीं जाता ।

दूर के दौल सुहावने ।
ग्रीव को खुदा को मार ।
शरीर का प्रेम छोड़ना कठिन है ।
दैव भी पराक्रमी लोगों की ही सहायता
करता है ।

दैव की गति अशुभ है ।
दुष्ट मनुष्य शूलनों के समान दोषों का ग्रहण
करते हैं और गुणों का त्याग ।

प्रभु की कृपा हो तो दोष भी गुण हो जाता है ।
धन से सब अधीन हो जाते हैं ।

धर्मं सर्वप्रयोजनम् ।
धनानि जीवितं चैव परार्थे प्राज्ञ उच्यते ॥

धर्मक्षयकरः क्रोधः ।
धर्मस्य तत्त्वं निहितं गुहायाम् ।
धर्मः कीर्तिर्द्वयं स्थिरम् ।
धर्मः स नो यत्र न सत्यमस्ति ।
धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः ।
धिकं कलत्रमपुत्रकम् ।
धिकं पुत्रमद्वितीतं च ।
धिगाशा सर्वदोषभूः ।
धिगृहं गृहिणीशून्यम् ।
धिरजीवितं चोद्यमवर्जितस्य ।
धिरजीवितं ध्यर्थमनोरथस्य ।
धिरजीवितं शास्त्रकलोज्ज्वलितस्य ।

धूर्ताः क्रीडन्ति बालिणीः । (कथा०)
ध्रुवं फलाय महते महतां सह संगमः । (कथा०)
न काचस्य कृते जातु युक्ता मुक्तामणेः
क्षतिः । (कथा०)
न कामसदृशो रिपुः ।
न कूपखननं युक्तं प्रदीप्ते वह्निना गृहे ।
न खलु स उपरतो यस्य बहलभो जनः
स्मरति ।
न च धर्मो दयापरः ।
न चलति खलु वाक्यं सज्जनानां कदाचित् ।
न च विश्वासमो बन्धुः ।
न च व्याधिसमो रिपुः ।
न चापत्यसमः स्नेहः ।
न जाने संसारः किमसृतमयः किं विषमयः ।
न ज्ञानात् परमं चक्षुः ।
न तोषात् परमं सुखम् ।
न तोषो महतां धृषा । (कथा०)
न दरिद्रस्त्वया दुःखी लब्धक्षीणधनोऽप्यथा ।
न धर्मवृद्धेषु वयः समीक्ष्यते । (कुमार०)
न धर्मसदृशं मित्रम् ।
न नश्यति समो नाम कृत्या दीपवार्तया ।
ननु प्रवातेऽपि निष्कम्पा गिरयः । (अग्नि०)
ननु वक्तृविशेषनिःस्पृहा गुणगृह्या वचने
विपश्चितः । (किरात०)
न पुत्रात् परमो लाभः ।

धन सर्वप्रमुख प्रयोजन है ।
बुद्धिमान् मानव परोपकार के लिए धन और
जीवन त्याग दे ।
क्रोध धर्म का नाशक है ।
धर्म का तत्त्व गुफा में छिपा है ।
धर्म और कीर्ति ही दो स्थिर पदार्थ हैं ।
जिममें सत्य नहीं, वह धर्म नहीं ।
धर्महीन जन पशुतुल्य हैं ।
अपुत्रा नारी धिकार्य है ।
अनम पुत्र धिकार्य है ।
सब दोषों की जननी आशा धिकार्य है ।
गृहिणीरहित घर धिकार्य है ।
उद्यमहीन का जीवन धिकार्य है ।
विफल-मनोरथ मनुष्य का जीवन धिकार्य है ।
शास्त्र तथा कला से रहित मानव का जीवन
धिकार्य है ।
धूर्त लोग मूर्खों को ही उस्तु बनाते हैं ।
बड़ों की संगति का फल बड़ा होता है ।
कॉच की प्राप्ति के लिए मीठी की हानि
उचित नहीं ।
काम के सनान शत्रु नहीं ।
पर में आग लगने पर कूआँ खोदना उचित नहीं ।
जिसका स्मरण प्रियजन करते हैं, उसे मराने
समझिए ।
दया से बड़ा कोई धर्म नहीं ।
सज्जनों को बात कभी झूठी नहीं होती ।
विद्या के सनान बन्धु नहीं ।
रोग के तुल्य शत्रु नहीं ।
सन्तति के प्रति प्रेम अप्रतिम है ।
न जाने यह अगत अमृतमय है या विषमय ।
ज्ञान से बड़ी आँख नहीं ।
संतोष से बड़ा सुख नहीं ।
बड़े लोगों का प्रसन्नता व्यर्थ नहीं होती ।
निर्धन उतना दुःखी नहीं होता जितना धन को
पाकर सोनेवाला ।
धर्म-वृद्धों की उमर नहीं देखी जाती ।
धर्म के मग्न मित्र नहीं ।
दीपक का बात करने से अंधेरा नष्ट नहीं होता ।
आँधी से पत्रं कभी नहीं हिलते ।
गुणग्राही लोग बात का गुण ग्रहण करते हैं,
बताविशेष का ध्यान नहीं करते ।
पुत्र-प्राप्ति से बड़ा कोई लाभ नहीं ।

[३८८]

न प्राणान्ते प्रकृतिविकृतिर्जायते चोत्त-
मानाम् ।

न भयं चास्ति जाग्रतः ।

न भवति पुनरुक्तं भाषितं सज्जनानाम् ।

न भार्यायाः परं सुखम् ।

न भूतो न भविष्यति ।

न मुक्तेः परमा गतिः ।

नये च शौर्ये च वसन्ति संपदः ।

न रत्नमन्विष्यति श्रुयते हि तत् ।

(जुनार०)

नवा वाणी मुखे मुखे ।

न शरीरं पुनः पुनः ।

न शान्तेः परमं सुखम् ।

न शास्त्रं वेदतः परम् ।

न स शक्नोति किं यस्य प्रज्ञा नापदि
ह्यीयते ? (कथा०)

न सा सभा यत्र न सन्ति वृद्धाः ।

न सुवर्णं ध्वनिस्तादृग्यादृक् कांस्ये
प्रजायते ।

न स्पृशति परुक्लाभः पञ्जरशेषोऽपि
कुञ्जरः कापि ।

न स्वेच्छं व्यवहर्तव्यमात्मनो भूति-
मिच्छता । (कथा०)

न हि कृतमुपकारं साधवो विस्मरन्ति ।

न हि तापयितुं शक्यं सागराम्भस्तृणो-
लक्या ।

न हि दुष्करवस्तीह किंचिदध्यवसायिनाम् ।
(कथा०)

न हि भायों विनेष्यंथा ।

न हि प्रफुल्लं सहकारमेत्य वृक्षान्तरं काङ्क्षति
षट्पदाली । (रघु०)

न हि वन्ध्याऽऽश्नुते दुःखं यथा हि शृत-
पुत्रिणी ।

न हि सत्रावसादेन स्वल्पाप्यापद् दिलि-
ष्यते । (कथा०)

न हि सर्वविद्ः सर्वे ।

न हि सिंहो गजास्कन्दी भयाद् गिरिगुहा-
शयः । (रघु०)

न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे शृगाः ।

नातिपीडयितुं भग्नानिच्छन्ति हि महौजसः ।
(किरात०)

नाधर्मश्चिरमृद्ध्ये । (कथा०)

प्राणान्तकारो समय भा जाने पर भी उत्तम
मनुष्यों के स्वभज में विकार नहीं आता ।

जाननेवाले को कोई डर नहीं ।

सज्जन एक ही बात को बार-बार नहीं कहते ।

पत्नी से बड़ा कोई सुख नहीं ।

न हुआ है न होगा ।

मोक्ष से ऊँचो कोई स्थिति नहीं ।

संपदाएँ नीति और शूरवीरता में रहती हैं ।

रत्न किसी को नहीं खोजता, उसी की खोज को
जाती है ।

प्रत्येक मुख में वाणी पृथक्-पृथक् होती है ।

शरीर बार-बार नहीं मिलता ।

शान्ति से बड़ा कोई सुख नहीं ।

वेद से बड़ा कोई शास्त्र नहीं ।

जिसकी बुद्धि विपत्ति में भी स्थिर रहती है, वह
क्या नहीं कर सकता ?

वह सभा ही नहीं जिसमें वृद्ध न हों ।

कॉंसि से जैसी ध्वनि उत्पन्न होती है वैसी सोने
से नहीं ।

हाथों की हड्डियाँ निकल आँवें तो भी वृद्ध
जोड़व का जल नहीं छूता ।

बुद्धि के शूलुक मनुष्य को स्वेच्छापूर्वक व्यवहार
नहीं करना चाहिए ।

श्रेष्ठ लोग किये हुये उपकार को नहीं भूलते ।

समुद्र का जल तिनकों की मशाल से गर्म नहीं
किया जा सकता ।

अध्यवसायी व्यक्ति के लिये जगत् में कोई भी
कार्य दुष्कर नहीं ।

कियाँ रंध्या-रहित नहीं होतीं ।

भयरे पुंशित आश्र-वृक्ष पर पहुँचकर अन्य
वृक्ष की इच्छा नहीं करते ।

बाँझ को बंध दुःख नहीं होता जो मृतपुत्र
नारी को ।

उल्हाह के स्थान से तो साधारण अपत्ति पर
भी विजय नहीं मिलती ।

सब लोग सब दुष्ट नहीं जानते ।

हाथियों पर आक्रमण करनेवाला सिंह डर के
कारण पर्वत-मुफा में नहीं रहता ।

सोवे हुः सिंह के मुख में मृग स्वयं नहीं आ
घुसते ।

भोजस्वी जन पराजितों को अत्यधिक पीड़ा
नहीं देना चाहते ।

अधर्म चिरकाल तक धन नहीं देता ।

[६८६]

नानुतात्पातकं परम् ।
नारीणां भूषणं पतिः ।
नार्कान्तपैर्जलजमेति हिमैस्तु दाहम् । (नैषध०)
भारुपीयान् बहु सुकृतं हिनस्ति दोषः ।
(किरात०)

नासमोक्ष्य परं स्थानं पूर्वमायतनं त्यजेत् ।
नास्ति कामसमो व्याधिः ।
नास्ति क्रोधसमो वह्निः ।
नास्ति चक्षुःसमं तेजः ।
नास्ति आत्मसमं बलम् ।
नास्ति प्राणसमं भयम् ।
नास्ति बन्धुसमं बलम् ।
नास्ति मेघसमं तोषम् ।
नास्ति मोहसमो रिपुः ।
नास्त्यदेयं महात्मनाम् ।

नास्त्यहो स्वामिभक्तानां पुत्रे वात्मनि वा
स्पृहा । (कथा०)

निःसारस्य पदार्थस्य प्रायेणाडम्बरो महान् ।
निजेऽप्यपत्ये करुणा कठिनप्रकृतेः कुतः ?
(प्रसन्नरायणे)

निरस्तपात्रे देशे एरुण्डोऽपि द्रुमायते ।
निर्द्रव्यं पुरुषं त्यजन्ति गणिकाः ।
निर्धनता सर्वापदामास्पदम् ।
निर्धनस्य कुतः सुखम् ?
निर्वाणदीपे किमु तैलदानम् ?
निव्रसन्ति पराक्रमाश्रया
न विषादनं समं सख्यद्वयः । (किरात०)
निवसन्नन्तर्दासिणं लङ्घ्यो वह्निर्न तु ज्वलितः ।

निवृत्तरागस्य गृहं तपोवनम् ।
निष्प्रज्ञास्त्रवसीदमित लोकोपहसिताः
सदा । (कथा०)
निसर्गसिद्धो हि नारीणां सपत्नीषु हि
मत्सरः । (कथा०)

निःस्पृहस्य तृणं जगत् ।
नीचाश्रयो हि महतामपमानहेतुः ।

नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण ।
(मेघ०)

नीचैरनीचैरतिनीचनीचैः
सर्वैरुपायैः फलमेव साध्यम् ।

शूद्र मे बड़ा कोई पाप नहीं ।
पति स्त्रियों का भूषण है ।
कमल भूप से नहीं, पाले से झुलसता है ।
थोड़े से दोष से बहुत से पुण्यों का नाश नहीं
होता ।

दूतरे स्थान को देखे बिना पहले की न छोड़े ।
काम के समान कोई रोग नहीं ।
क्रोध के समान कोई तेज नहीं ।
नेत्र के समान कोई आग नहीं ।
आत्मा के तुल्य कोई बल नहीं ।
प्राणभय के तुल्य कोई भय नहीं ।
बन्धु के तुल्य कोई बल नहीं ।
मेघ के समान कोई जल नहीं ।
मोह के समान कोई शत्रु नहीं ।
ऐसी कोई वस्तु नहीं जिसे महात्मा लोग न
दे सकें ।

अहो ! स्वामिभक्तों को न पुत्र का मोह होता है
न प्राणों का ।

प्रायः निकम्मी वस्तु का आडम्बर बहुत होता है ।
कठोर स्वभाववाले व्यक्ति को अपनी सन्तति
पर भी दया नहीं आती ।

वृक्षहीन देश में एरुण्ड भी वृक्ष माना जाता है ।
वैश्याः निर्धन पुरुष को छोड़ देती हैं ।

दरिद्रता सब दुःखों का कारण है ।
निर्धन को सुख कहाँ ?

दीपक बुझ जाने पर तेल डालने से क्या ?
समृद्धियों पराक्रम के आश्रय पर रहती हैं,
विषाद के साथ नहीं ।

लकड़ी के अन्दर विद्यमान अग्नि पर से कूदा
जा सकता है, जलती पर से नहीं ।

राग-रहित के लिए घर ही तपोवन है ।
बुद्धिहीन व्यक्ति दुःख उठाते हैं तथा लोगों के
उपहासास्पद बनते हैं ।

स्त्रियों की सौतों के प्रति ईर्ष्या स्वामयिक है ।

कामनारहित के लिये जगत् तृणतुल्य है ।
नीच का आश्रय लेना बड़े लोगों के लिये अप-
मानजनक होता है ।

पशु के ढाल के समान मनुष्य की अवस्था
ऊँची-नीची होती रहती है ।

नीचे, ऊँचे और अत्यन्त नीचे, सभी उपायों से
अभीष्ट-सिद्धि करनी चाहिए ।

नीचो वदति, न कुहस्ते,
 वदति न साधुः करोत्येव ।
 नैकत्र सर्वो गुणसंनिपातः ।
 न्याय्यां वृत्ति समाचरेत् ।
 न्याय्यात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः ।
 पङ्को हि नभसि क्षिप्तः क्षेप्तुः पतति मूर्धनि ।
 (कथा०)
 पञ्चभिर्मिलितैः किं यज्जगतीह न साध्यते ।
 (नीपथ०)
 पठतो नारित मूर्खत्वम् ।
 पदं हि सर्वत्र गुणेनिधीयते ।
 पदं सहेत भ्रमरस्य पेल्वं
 शिरीषपुष्पं, न पुनः पतन्निभः । (कुमार०)
 पद्मपत्रस्थितं वारि धत्ते मुक्ताफलश्चियम् ।
 पयःपानं भुजंगानां केवलं विपवर्धनम् ।
 पयोगते किं सल्लु सैतुबंधः ?
 परदुःखेनापि दुःखिता विरलाः ।
 परबुद्धिर्विनाशाय ।
 परभुक्ते हि कमले किमलेर्जायते रतिः ?
 (कथा०)
 परमं लाभमरातिभङ्गमाहुः । (किरात०)
 परलोकगतस्य को बन्धुः ?
 परबुद्धिमत्तरि मनो हि मानिनाम् । (शिशु०)
 परसदननिविष्टः को लघुस्वं न याति ?
 परहितनिरतानामादसे नात्मकार्ये ।
 परेकितज्ञानफला हि बुद्धयः ।
 परोपकारजं पुण्यं न स्यात्कृतुस्तैरपि ।
 परोपकाराय सतां विभूतयः ।
 परोपकारार्थमिदं शरीरम् ।
 परोपदेशबेलायां शिष्टाः सर्वे भवन्ति वै ।
 परोऽपि हितवान् बन्धुः ।
 पर्वतानां भयं वज्रात् ।

नीच मनुष्य कहता है, करता नहीं। सज्जन
 कहता नहीं, कर देता है ।
 सभी गुण एकत्र नहीं रहते ।
 जीवकोपार्जन न्याय के अनुसार करना चाहिए ।
 धीर लोग न्याय के मार्ग से तनिक भी विचलित
 नहीं होते ।
 आकाश में फँका हुआ कीचड़ फँकनेवाले के
 सिर पर ही पड़ता है ।
 संसार में ऐसा कौन-सा काम है जिसे पाँच
 मनुष्य मिलकर नहीं कर सकते ?
 अध्ययनशील मनुष्य मूर्ख नहीं रहता ।
 गुण सर्वत्र अपना स्थान बना लेते हैं ।
 शिरीष का फूल भ्रमर के कोमल चरण को तो
 सह लेता है, पृथ्वी के चरण को नहीं ।
 कमल-पत्र पर पड़ा हुआ जल मोती की शोभा
 धारण कर लेता है ।
 सर्पों को दूध पिलाने से उनका विश हो बढ़ता है ।
 वाड़ के उतर जाने पर बाँध दीधने से क्या लाभ ?
 दूसरों के दुःख में दुःखित होनेवाले लोग
 थोड़े ही हैं ।
 दूसरों के मतानुसार आचरण विनाशकारी
 होता है ।
 बधा भँवरा दूसरे से मुक्त कमल में प्रेम करता है ?
 शत्रु का नाश सब से बड़ा लाभ कहा जाता है ।
 दिवंगत व्यक्ति का बन्धु कौन है ?
 मानी मनुष्यों का मन दूसरों को उन्नति से
 ईर्ष्या करता है ।
 दूसरे के घर जाने से किसका गौरव क्षीण
 नहीं होता ?
 परोपकारपरायण लोग अपने कार्यों की परवाह
 नहीं करते ।
 बुद्धियाँ बड़ी हैं जो दूसरों के सङ्केत समझ
 जाती हैं ।
 परोपकार-बन्धु पुण्य रिकड़ों यशों के पुण्य से
 श्रेष्ठ है ।
 सज्जनों को सम्पत्तियों परोपकार के लिए होती है ।
 यह शरीर परोपकार के लिए है ।
 दूसरों को उपदेश देते समय तो सब सभ्य बन
 जाते हैं ।
 हितकारक बेगाना भी बन्धु ही है ।
 पर्वतों को वज्र से भय होता है ।

पाणौ पयसा दग्धे तर्कं फूँकृत्य पामरः
पिबति ।

पात्रत्वाद् धनमाप्नोति ।

पापप्रभावाद्भरकं प्रयाति ।

पितृदोषेण मूर्खता ।

पिपासितैः काश्यरस्तो न पीयते ।

पीत्वा मोहमयीं प्रमादमदिराम्
उन्मत्तभूतं जगत् ।

पुण्यवन्तो हि सन्तानं पश्यन्त्युच्चैः कृता-
न्वयम् । (कथा०)

पुत्रः शत्रुरपि उदतः ।

पुत्रप्रयोजना दाराः ।

पुत्रहीनं गृहं शून्यम् ।

पुत्रादपि भयं यत्र तत्र सौख्यं हि कीदृशम् ?

पुनर्दरिद्री पुनरेव पापी ।

पुनर्धनाढ्यः पुनरेव भोगी ।

पुरुषा अपि बाणा अपि गुणस्युता कस्य न
भयान्न ?

पूज्यं वाक्यं ससुन्दरस्य ।

पूज्यपुण्यतया विद्या ।

प्रच्छन्नमप्युह्यते हि चेष्टा । (किरात०)

प्रजानामपि दीनानां राजैव स्वधः पिता ।

प्रज्ञाबलं च सर्वेषु मुख्यं कार्येषु साधनम् ।
(कथा०)

प्रणामान्तः सतां कोपः ।

प्रतिबन्धनाति हि श्रेयः पूज्यपूजाव्यतिक्रमः ।
(रघुवंश०)

प्राणान्यथाश्च शूराणां जायते हि शणोरसवः ।
(कथा०)

प्राणिनां हि निकृष्टापि जन्मभूमिः परा
प्रिया । (कथा०)

प्राणेश्वरोऽप्यर्थमात्रा हि कृपणस्य गरी-
यसी । (कथा०)

प्राणैरपि हि भृत्यानां स्वामिसंरक्षणं व्रतम् ।
(कथा०)

प्राप्नोतीष्टमविकलवः । (कथा०)

प्राप्यते किं यदाः शुभ्रमनङ्गीकृत्य साहसम् ?
(कथा०)

प्रायः श्वश्रून्पयोर्न दृश्यते सौहार्दं लोके ।

दूध का जला छाछ को फूँक-फूँक कर पीता है ।

मनुष्य योग्य होने पर धन प्राप्त करता है ।

पाप के प्रभाव से नरक को जाता है ।

मूर्खता पिता के दोष से होती है ।

प्यासे काल्यरम नहीं पिबा करते ।

मोहमयी प्रमाद-मदिरा पीकर अगत् उन्मत्त
हो गया है ।

वंश को ऊँचा करनेवाली सन्तान पुण्यवानों
के घर ही होती है ।

मूर्ख पुत्र शत्रु है ।

पत्नी पुत्र को जन्म देने के लिये ही होती है ।

पुत्रहीन घर शून्य है ।

जहाँ पुत्र से भी भय हो वहाँ सुख कैसा ?

फिर दरिद्री, फिर पापी ।

फिर धनी, फिर भोगी ।

पुरुष भी और बाण भी गुण (गुण, धनुष की
ढोरी) से रहित हो जाने पर किसके लिये
भयंकर नहीं होते ?

धनाढ्य का वाक्य पूज्य होता है ।

विद्या पिछले पुण्यों से मिलती है ।

चेष्टा गुप्त बात को भी व्यक्त कर देती है ।

राजा दीन प्रजाओं का दयालु पिता है ।

सब कार्यों में बुद्धिबल सबसे बड़ा साधन है ।

सज्जनों का क्रोध प्रणाम से समाप्त हो जाता है ।

पूज्यों की पूजा में उलट-फेर कल्याणों का बाधक
होता है ।

युद्ध का मेला शूरवीरों के प्राणधन के ब्यवार्थ
होता है ।

प्राणियों को अपनी निकृष्ट जन्मभूमि भी अत्यन्त
प्यारी लगती है ।

कंजूस को थोड़ा-सा भी धन प्राणों से अधिक
प्यारा लगता है ।

प्राण देकर भी स्वामी की रक्षा करना सेवकों
का व्रत है ।

धीर अभीष्ट को पार लेता है ।

जान जोखिम में डाले बिना कहीं शुभ्र यश प्राप्त
हो सकता है ?

संसार में प्रायः सास-बहू में सौहार्द नहीं
देखा जाता ।

प्रायः समानविद्याः परस्परयशः पुरोभागाः ।

प्रायः समासत्रविपत्तिकाले
धियोऽपि गुंसां मलिनीभवन्ति ।

प्रायः स्त्रियो भवन्तीह निसर्गविपमाः
शठाः । (कथा०)

प्रायः स्वं महिमानं क्रोधात्प्रतिपद्यते हि
जनः ।

प्रायेण गृहिणीनेत्राः कन्याधेषु कुटुम्बिनः ।
(कुमारसंभवे)

प्रायेण भार्यादौःशीहयं स्नेहान्धो नेक्षते
जनः । (कथा०)

प्रायेण भूमिपतयः प्रमदा ललाक्ष
यः पार्श्वतो भवति तं परिचेष्टयन्ति ।

प्रायेण साधुवृत्तानामस्थायिन्यो विपत्तयः ।

प्रायेण सामग्र्यविधौ गुणानां
पराङ्मुखी विश्वसृजः प्रवृत्तिः । (कुमार०)

प्रायेणाधममध्यमोत्तमगुणः रसर्गतो जायते ।

प्रायो गच्छति यत्र भाग्यरहितस्तत्रैव
यान्त्यापद्ः ।

प्रारभ्य चोत्तमजना न परित्यजन्ति ।

प्रासादशिखरस्थोऽपि काकः किं गरुडायते ?

प्रियबन्धुविनाशोत्थः शोकाग्निः कं न
तापयेत् ? (कथा०)

प्रियमांससृगाधिपोज्झितः किमवद्यः करि-
कुम्भजो मणिः ? (शिशु०)

प्रियानाथो वृत्स्नं किल जगद्दर्भ्यं हि
भवति ।

फलं भाग्यानुसारतः ।

वताश्रितानुगोधेन किं न कुर्वन्ति साधवः ?
(कथा०)

बधिरस्य गानम् ।

बधिरान्मन्दकर्णः श्रेयान् ।

बन्धुः को नाम दुष्टानाम् ?

बन्धुरभ्यहितः परः ।

बलं मूर्खस्य मौनित्वम् ।

बली बलं वेत्ति न वेत्ति निर्बलः ।

बलीयसी केवलमीश्वरेच्छा ।

बहुरत्ना वसुन्धरा ।

प्रायः समान विद्यावाले लोग एक दूसरे के
यश को सह नहीं सकते ।

जब अपत्ति आने को होती है तब मनुष्यों की
बुद्धि प्रायः मलिन हो जाती है ।

स्त्रियाँ स्वभाव से ही प्रायः कठोर और शठ
हुआ करती हैं ।

क्रोध आने पर ही प्रायः मनुष्य अपने महत्त्व
को प्राप्त करता है ।

कुटुम्बी पुरुष कन्याओं के मामलों में प्रायः
गृहिणी के ही मतानुसार चलते हैं ।

प्रेमान्ध पुरुष पत्नी को दुःशीलता को प्रायः
उपेक्षा कर जाता है ।

राजा, स्त्रियाँ और ललाटे जो भी पास हो प्रायः
उसीसे लिपट जाती हैं ।

सदाचारियों को विपत्तियाँ प्रायः अस्थायी
होती हैं ।

विधवा प्रायः सभी गुणों को एकत्र नहीं रखता ।

अधम, मध्यम और उत्तम गुण प्रायः संसर्ग
से ही आता है ।

भाग्यहीन मनुष्य जहाँ जाता है, प्रायः वहाँ
आपत्तियाँ भी जा पहुँचती हैं ।

श्रेष्ठ लोग कार्य आरंभ करके बीच में नहीं छोड़ते ।
महल की चोटी पर बैठा हुआ कौआ क्या
गरुड़ बन जाता है ?

प्रिय बन्धु की मृत्यु का शोक किसे संतप्त नहीं
करता ?

मांसमक्ष सिंह से त्यक्त, हाथी के मस्तक से
निकला हुआ रत्न क्या निम्न होता है ?

कान्ता की मृत्यु पर सारा संसार कान्तार ही
बन जाता है ।

फल मान्य के अनुसार होता है ।

आश्रितों के आग्रह पर सज्जन क्या नहीं करते ?

बहिरे के सामने गाना ।

बहिरे की अपेक्षा ऊँचा सुननेवाला अच्छा ।

दुष्टों का बन्धु कौन ?

अहितकर बन्धु भी शत्रु है ।

मौन मूर्ख का बल है ।

बलवान् ही बल को जानता है, निर्बल नहीं ।

ईश्वर की इच्छा ही बलवती है ।

पृथ्वी में बहुत रत्न हैं ।

बहुवचनमद्वयसारं यः कथयति विप्र-
लापी सः ।

बहुविध्नास्तु सदा कल्याणसिद्धयः । (कथा०)

बह्वाक्षर्या हि मेदिनी ।

बालानां रोदनं बलम् ।

बुद्धयः कुञ्जगामिन्यो भवन्ति महतामपि ।

बुद्धिः कर्मानु-नारिणी ।

बुद्धिर्नाम च सर्वत्र मुख्यं मित्रं न पौरुषम् ।

(कथा०)

बुद्धेः फलमनाग्रहः ।

बुभुक्षितः किं न करोति पापम् ?

बुभुक्षितं न प्रतिभाति किञ्चित् ।

बुभुक्षितैः प्राकरुषं न भुज्यते ।

ध्रुवते हि फलेन साधवो न तु कण्ठेन निजो-

पथोगिताम् । (नैपथ०)

भक्त्या हि तुष्यन्ति महानुभावाः ।

मद्रकृत्प्राणुयाद्भद्रमभद्रं चाप्यमद्रकृत् ।

(कथा०)

भये सीमा श्लथुः ।

भर्तृमार्गानुसरणं स्त्रीणां च परमं धृतम् ।

भवन्तिक्लेशबहुलाः सर्वस्यापीह सिद्धयः ।

(कथा०)

भवन्त्युद्यकाले हि सत्कल्याणपरम्पराः ।

(कथा०)

भवितव्यता चलवती । (अभिज्ञान०)

भवितव्यं भवत्येव कर्मणादीदृशी गतिः ।

भवेन्न यस्य यत्कर्म स तत्कुर्वन् विनश्यति ।

(कथा०)

भस्मीभूतस्य भूतस्य पुनरागमनं कुतः ?

(नैपथ०)

भाग्येनैव हि लभ्यते पुनरसौ सर्वोत्तमः

सेवकः ।

भायांसमं नास्ति शरीरतोषणम् ।

भिक्षुको भिक्षुकं दृष्ट्वा श्वानवद् गुर्गुरायते ।

भिन्नरुचिर्हि लोकः ।

जो अल्प-सार को बहुत शब्दों से कहता है,
वही विप्रलापी है ।

कल्याणों की सिद्धि में मद्रा अनेक विघ्न पड़ते हैं ।
पृथ्वी आश्चर्यों से पूर्ण है ।

रोना ही बच्चों का बल है ।

बड़ों की बुद्धि भी कुमांगगामिनी हो जाती है ।

बुद्धि कर्मों के अनुसार होती है ।

सब रथानों पर बुद्धि ही मुख्य मित्र है, पुरु-
षार्थ नहीं ।

हठ का न होना ही बुद्धि का फल है ।

भूखा मनुष्य कौन-सा पाप नहीं करता ?

भूखे को कुछ नहीं मञ्जता ।

भूखे लोग स्वाकरण नहीं खाया करते ।

श्रेष्ठ लोग अपने उपयोगिता बाणी से नहीं,
फल से कहते हैं ।

महानुभाव लोग भक्ति (श्रद्धा) से ही प्रसन्न
होते हैं ।

भले का भला और बुरे का बुरा होता है ।

सबसे बड़ा भय मृत्यु है ।

पति-निदिष्ट मार्ग पर चलना क्लिबों का परम
धन है ।

संसार में सबके कार्य अनेक कष्ट उठाने पर ही
सिद्ध होते हैं ।

जब अच्छे दिन आते हैं तब सभी काम शुभ
होते जाते हैं ।

होना शर चलवती है ।

कर्मों की गति ऐसी है कि होनी होकर ही
रहती है ।

१. जिसका काम उसी को साजे, और करे तो
उफली बाजे ।

२. जो काम जिनका न हो, उसे करने पर
मनुष्य नष्ट हो जाता है ।

भस्मीभूत प्राणी लौटकर कैसे आ सकता है ?

सर्वोत्तम सेवक भाग्य से ही प्राप्त होता है ।

पत्नी के समान शारीरिक सुख देनेवाला
कोई नहीं ।

भिखारी, भिखारी को देखकर कुत्ते के समान
गुर्राता है ।

लोगों की रवि भिन्न-भिन्न है ।

भीता इव हि धीराणां दूरे यान्ति विपत्तयः ।
(कथा०)

मूयोऽपि सिकः पयसा घृतेन
न निम्बवृक्षो मधुरत्वमेति ।

भोगो भूष्यते धनम् ।

भ्रष्टस्य का वा गतिः ?

मतिरेव बलाद् गरीयसी ।

मदमूढबुद्धिषु विवेकिता कुतः ? (शिक्ष०)

मद्यपस्य कुतः सत्यम् ? (कथा०)

मधुरविधुरमिश्रः सृष्टयो हा विधातुः ।
(प्रसश्राववे)

मनःपूर्त समाचरेत् ।

मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः ।
मनस्येकं वचस्येकं कर्मण्येकं महात्मनाम् ।

मनस्वी कार्यार्थी न गणयति दुःखं न च
सुखम् ।

मनोरथानाम्गतिर्न विद्यते । (कुमार०)

मरणं प्रकृतिः शरीरिणाम् ।

मर्दनं गुणवर्धनम् ।

मर्मवाक्यमपि नोच्चरणीयम् ।

महाजनो येन गतः सः पन्थाः ।

महान् महत्येव करोति विक्रमम् ।

महीपतीनां चिनयो हि भूषणम् ।

मातर्लक्ष्मि, तव प्रसादवशातो दोषा अपि
स्युर्गुणाः ।

माता दुश्चारिणी रिपुः ।

मातापितृभ्यां शक्तः सन् न जातु सुखम-
श्नुते । (कथा०)

मातृजङ्घा हि वरसस्य स्तम्भीभवति बन्धने ।

मात्रा समं नास्ति शरीरपोषणम् ।

माने म्छाने कुतः सुखम् ?

मिस्तं च सारं च वचो हि वाग्मिता ।

मूढः परप्रत्ययनेयबुद्धिः ।

मूर्खस्य किं शास्त्रकथाप्रसंगः ?

मूर्खस्य हृदयं शून्यम् ।

मूर्खाणां बोधको रिपुः ।

मूर्खैर्हि संगः कस्यास्ति शर्मणे ? (कथा०)

विपत्तियों मानो धोंगों से डरकर ही दूर भाग
जाती हैं ।

दूध और घी से निरन्तर स्तीता जाने पर भी
रस का कुछ लभ्य नहीं होता ।

भोग धन को अलंकृत करता है ।

पतित की क्या गति होती होगी ?

बल से बुद्धि की बली है ।

मद से मूढ़ बुद्धिवालों ने विवेक कहा ?

शराबी में सत्य कहा ?

विधाता की रचनाएँ सुखपूर्ण, दुःखपूर्ण तथा
मिली-जुली हैं ।

आचरण ऐसा करे जिनकी विवशता का मन
साक्षी हो ।

मन ही मनुष्यों के बंधन और मुक्ति का कारण है ।
महात्माओं के मन, बचन और कर्म में एक-
रूपता होती है ।

मनरवी कार्यकर्ता दुःख-सुख की चिन्ता नहीं
किया करता ।

मनोरथ सर्वत्र पशुं न जाते हैं ।

मृत्यु प्राणियों का स्वभाव है ।

मालिश गुणवर्द्धक है ।

दुःखदायक बात न कहनी चाहिए ।

जिस मार्ग से कोई महादुःख गथा हो वही
सुमार्ग है ।

बड़ा मनुष्य बड़े पर ही पराक्रम दिखाता है ।

ममता राजाओं का भूषण है ।

हे लक्ष्मी माता, आपकी कृपा से दोष भी गुण
हो जाते हैं ।

दुश्चरित्रा माता शत्रु है ।

माता-पितर से श्रापित जन कभी सुख नहीं
पाता ।

बड़ों की बॉंधने के लिए माता की टांग ही
स्तम्भ बन जाती है ।

माता के समान शरीर का पोषक कोई नहीं ।

सम्मान दूषित होने पर सुख कहा ?

मदरबपूर्ण बात छोड़े शब्दों में चरनः ही
वाग्मिता है ।

मूढ़ दूसरे के विश्वास का अनुसरण करता है ।

मूर्ख का शास्त्रों की कथाओं से क्या सम्बन्ध ?

मूर्ख का हृदय विचाररहित होता है ।

मूर्ख लोग समझानेवाले को शत्रु समझते हैं ।

मूर्ख-सङ्घति किसे सुख देती है ?

[६१५]

सूत्यः सर्वत्र तुल्यता ।
मेघो गिरिजलधिप्रपी च ।

मोहान्धमविधेकं हि श्रीश्विराय न सेवते ।
(कथा०)

मौनं विधेयं सततं सुधीभिः ।

मौनं सदाध्यायकम् ।

मौनिकः कलहो नास्ति ।

यतः सरयं ततो धर्मः ।

यतो धर्मस्ततो धनम् ।

यतो रूपं ततः शीलम् ।

यत्ने कृते यदि न सिध्यति कोऽत्र दोषः ?

यत्र विद्वज्जनों नास्ति श्लाघ्यस्तत्रात्पथोरपि ।

यत्राकृतिस्तत्र गुणा वसन्ति ।

यत्रास्ति लक्ष्मीर्विनयो न तत्र ।

यथा चित्तं तथा वाचो यथा वाचस्तथा
क्रिया ।

यथा देशस्तथा भाषा ।

यथा बीजं तथा अक्षुरः ।

यथा भूमिस्तथा तोयम् ।

यथा राजा तथा प्रजा ।

यथा वृक्षस्तथा फलम् ।

यथाशक्त्यतिथेः पूजा धर्मो हि गृहमेधि-
नाम् । (कथा०)

यथौषधं स्वादु हितं च दुर्लभम् ।

यदि बाल्यन्तस्तदुता न कस्य परिभूतये ?
(कथा०)

यदेव रोचते यस्मै भवेत्तत्तस्य सुन्दरम् ।

यद्वात्रा निजभालपट्टलिखितं तन्मार्जितुं
कः क्षमः ?

यद्यपि शुद्धं लोकविरुद्धं नो करणीयं नाचर-
णीयम् ।

यद्वा तद्वा भविष्यति ।

यशः पुण्यैरवाप्स्यते ।

यशस्तु रक्ष्यं परतो यशोधनैः । (२३०)

यः क्रियावान् स पण्डितः ।

याचनान्तं हि गौरवम् ।

याचना सोधा धरमविगुणे नाधमे ह्यध-
कामा । (मेघ०)

मौत के सामने सब समान हैं ।

मेघ पर्वत और सागर दोनों स्थानों पर
बरसता है ।

मोहग्रस्त और निवेज्जनों के पास लक्ष्मी अधिक
नहीं ठहरती ।

बुद्धिमानों को निरन्तर चुप रहना चाहिए ।

मौन से सब काम निवृत्त होते हैं ।

मौनों का किसी से कलह नहीं होता ।

जहाँ सत्य है वहाँ धर्म है ।

जहाँ धर्म है वहाँ धन है ।

जहाँ रूप है वहाँ शील है ।

यदि यत्न करने पर भी सिद्धि न हो तो इसमें
यत्नकर्ता का क्या दोष ?

जहाँ विद्वान् नहीं होता वहाँ अल्पतुष्टि भी
श्लाघ्य होता है ।

जहाँ रूप तहाँ गुण भी हैं ।

जहाँ लक्ष्मी होती है वहाँ नम्रता नहीं ।

जैसा मन वैसी वाणी, वैसी वाणी वैसी क्रिया ।

जैसा देश वैसी भाषा ।

जैसा बीज वैसा अक्षुर ।

जैसी भूमि वैसा जल ।

जैसा राजा वैसी प्रजा ।

जैसा वृक्ष वैसा फल ।

अतिथि की यथाशक्ति सेवा करना गृहस्वों का
धर्म है ।

जैसे स्वादिष्ट और गुणकारी दवा दुर्लभ है ।

अत्यधिक कोमलता से किनका निरादर नहीं
होता ?

जो जिसे अच्छा लगता है, वही उसके लिये
सुन्दर होता है ।

बिधाता ने भाग्य में जो लिख दिया है, उसे
कौन मिटा सकता है ?

लोकविरुद्ध शुद्ध बात भी न करनी चाहिये ।

कुछ न कुछ तो होगा ही ।

यश पुण्यों से ही मिलता है ।

यशस्विधों को शत्रु से यश की रक्षा करनी
चाहिए ।

जिसके कर्म अच्छे, वही पण्डित है ।

याचना गौरव को समाप्त कर देती है ।

नीच से याचना के सफल होने की अपेक्षा गुणी
से उसका विफल होना अच्छा ।

यादृशो यः कृतो धात्रा भवेत्तादृशा एव सः ।

(कथा०)

यादृशास्तन्तवः कामं तादृशो जायते पटः ।

(कथा०)

यानरत्नं हि तुरगः ।

यान्ति न्यायप्रवृत्तस्य तिर्यञ्चोऽपि सहाय-
ताम् । (अनर्घराषवे)

या यस्य प्रकृतिः स्वभावजनिता केनापि न
स्थज्यते ।

युक्तियुक्तं प्रगृह्णीयाद् बालादपि विचक्षणः ।

युद्धस्य वार्ता रम्या स्यात् ।

ये तु घ्नन्ति निरर्थकं परहितं ते के न
जानीमहे ।

येन केन प्रकारेण प्रसिद्धः पुरुषो भवेत् ।

यो यद् धपति बीजं हि लभते सोऽपि
सत्फलम् । (कथा०)

रक्षन्ति पुण्यानि पुराकृतानि ।

रत्नदीपस्य हि शिखा चात्ययापि न नश्यति ।

रत्नव्ययेन पाषाणं को हि रक्षितुमर्हति ।
(कथा०)

वनेऽपि दोषा प्रभवन्ति रागिणाम् ।

वरं हि मानिनो मृत्युः, न वैभ्यं स्वजना-
ग्रतः । (कथा०)

वरं क्लेश्यं पुंसां न च परकलत्राभिगमनम् ।

वरं भिक्षाशित्वं न च परधनास्त्रादनसुखम् ।

वरं मौनं कार्यं न च वचनमुक्तं यदनृतम् ।

वर्तमानेन कालेन वर्तयन्ति विचक्षणाः ।

वस्त्रपूतं पित्रेजलम् ।

वस्त्राणामातपो जरा ।

वासो विधीनं हि फलन्यभिवाञ्छितानि ।

वासः प्रधानं खलु योग्यतायाः ।

वासोविहीनं विजहाति लक्ष्मीः ।

विकारहेतौ सति विक्रियन्ते

येषां न चेतांसि त एव धीराः । (कुमार०)

विक्रीते करिणि किमद्भुशे विवादः ?

विचित्ररूपाः खलु चित्तवृत्तयः । (किरात०)

विधाता ने जिसे जैसा बना दिया वद् वैसा ही
होता है ।

जैसे तपे होने हैं वैसा कपड़ा बनता है ।

बाहनों में घोड़ा रतन है ।

न्यायानुसार चलनेवाले का सहायता पशु-पक्षी
भी करते हैं ।

जो जिसका सहज स्वभाव है, वह छोड़ा नहीं
जा सकता ।

बुद्धिमान को बचने की भी युक्तियुक्त बात मान
लेनी चाहिए ।

बुद्ध के समाचार रोचक होते हैं ।

जो दूसरों के कार्यों को व्यर्थ ही मञ्च करते हैं, वे
किस कोटि के होते हैं, हम नहीं जानते ।

मनुष्य को किसी भी उपाय से प्रसिद्धि प्राप्त
करनी चाहिए ।

जैसा बोएगा वैसा काटेगा ।

पूर्व पुण्य मनुष्य को रक्षा करते हैं ।

रत्नों के दीये को लौ आँधी में भी नहीं बुझती ;
कौन इतना समर्थ है जो पत्थर के रक्षार्थ रत्न
व्यय करे ।

वन में भी दोष रागयुक्तों को दबा लेते हैं ।

प्रतिष्ठित व्यक्ति की मृत्यु अथवा किन्तु सम्बन्धियों
के सामने दीनता बुरी ।

पुरुषों का नपुंसक होना अच्छा, परस्त्री-
गमन बुरा ।

भीख माँग कर खाना अच्छा, पराये धन के
भोग का सुख बुरा ।

सूठ बोलन की अपेक्षा चुप रहना अच्छा ।

बुद्धिमान वर्तमान काल के अनुसार व्यवहार
करते हैं ।

बस्त्र से छानकर ही जल पीना चाहिए ।

धूप बलों का बुझाया है ।

भाग्य विपरीत ही तो अभीष्ट सिद्ध नहीं होते ।

योग्यता से भी परिधान प्रधान होता है ।

वस्त्रविहीन को लक्ष्मी छोड़ जाती है ।

विकारक वस्तुओं को विषमनाश में जो जिनके
चित्त विकृत नहीं होते, वे ही धीर हैं ।

हाथी के बैच देने पर अंकुश के बारे में
विवाद कैसा ?

चित्त की वृत्तियों के रूप विचित्र होते हैं ।

विदेशे बन्धुलाभो हि मरावसूतनिर्दारः ।
(कथा०)

विद्यातुराणां न सुखं न निद्रा ।

विद्या ददाति विनयम् ।

विद्या मित्रं प्रवासेषु ।

विद्यारत्नं सरसकविता ।

विद्या रूपं कुरूपिणाम् ।

विद्यात्मनं नास्ति शरीरभूषणम् ।

विद्या सर्वस्य भूषणम् ।

विद्वान् कुलीनो न करोति गर्वम् ।

विद्वान् सर्वत्र पूज्यते ।

विनयाद् याति पात्रताम् ।

विनयो हि सतीव्रतम् । (कथा०)

विना मलयमन्यत्र चन्दनं न प्ररोहति ।

विनाशकाले विपरीतबुद्धिः ।

विना हि गुर्वादेशेन संपूर्णाः सिद्धयः कुतः ?
(कथा०)

विप्रियमप्याकर्ण्य ब्रूते प्रियमेव सर्वदा
सुजनः ।

विभूषणं मौनमपठितानाम् ।

विमलं कलुषोभवेषु चेतः

कथयत्यत्र हितैषिणं त्रिषु वा । (किरात०)

विरक्तस्य तुर्णं भार्या ।

विलासिनी हि सर्वस्य संध्येत्र क्षणरागिणी ।
(कथा०)

विवक्षितं ह्यनुक्तमनुतापं जनयति । (अभिहा०)

विश्वासः कुटिलेषु कः ? (कथा०)

विषं गोष्ठीं दृशितस्य ।

विषयाकूप्यमाणा हि तिष्ठन्ति सुपथे कथम् ?
(कथा०)

विषयिणः कस्यापदोऽस्तं गताः ?

विषवृक्षोऽपि संवर्धय स्वयं क्षेत्तुमसांप्रतम् ।
(कुमार०)

वीरो हि स्वाम्यमर्हति । (कथा०)

वृक्षं क्षीणफलं त्यजन्ति विहगाः ।

वृथा दीपो दिवापि च ।

वृथा वृष्टिः समुद्रेषु ।

वृद्धस्य तरुणी विषम् ।

विदेश में बन्धु से समापन मरुभूमि में अमृत-
स्नान के समान है ।

विद्या के लिए ब्याकुल व्यक्तियों को न सुख
मन्त्रा हैं न नीद्र ।

विद्या में नम्रता आनी है ।

विदेश में विद्या मित्र है ।

सरस कविता करता ही उत्तम विद्या है ।

कुरूप लोगों का रूप विद्या है ।

विद्या के समान शरीर का कोई भूषण नहीं ।

विद्या सबका भूषण है ।

कुलीन विद्वान् अभिमान नहीं करता ।

विद्वान् को सब जगह पूजा होनी है ।

विनय से मनुष्य योग्य बनता है ।

विनय ही सतियों का व्रत है ।

चन्दन मलय पर्वत के भिवा कहीं नहीं उगता ।

विनाश के समय बुद्धि फिर जाती है ।

गुरु के उपदेश के बिना सम्पूर्ण सिद्धियाँ कहाँ ?

कड़ बात भी सुनकर सज्जन सदा प्रिय बात ही
कहते हैं ।

मौन मूर्खों का भूषण है ।

१. दिल, दिल का साक्षी है ।

२. निर्मल या मलिन होता हुआ मन हितैषी
या शत्रु को बता देता है ।

विरक्त को पत्नी तुणसम लगती है ।

संध्या के समान सब के साथ वेदथा का राग
(प्रेम, लाले) क्षणस्थायी होता है ।

अव्याधित अभिलषित बात पश्चात्ताप उत्पन्न
करती है ।

करटियों पर क्या विश्वास ?

निर्धन की बात-चीत विष है ।

विषयामक्त लोग सुमार्ग पर कैसे रह सकते हैं ?

किस विषयी व्यक्ति को अप्तितियों समाप्त हो
गटे हैं ?

अपने पाले-पोसे हुए विष-वृक्ष को भी उखाड़ना
उचित नहीं ।

वीर ही स्वामी बनने के योग्य होता है ।

फल-हीन वृक्ष को पक्षी छोड़ जाते हैं ।

दिन में दीपक व्यर्थ है ।

समुद्रों में वर्षा व्यर्थ है ।

वृद्धे के लिए युवती विष है ।

वृद्धा न ते ये न वदन्ति धर्मम् ।
 वृद्धा नारी पतिव्रता ।
 वेदाज्जानन्ति पण्डिताः ।
 वेदथाङ्गमेव नृपनीतिरनेकरूपा ।

व्याघ्रस्य चोपवासस्य पारणं गशुमरणम् ।
 व्याधितस्यौषधं मित्रम् ।
 व्रताभिरक्षा हि सत्तामलंक्रिया । (किरा०)
 शत्रोरपि गुणा वाच्या दोषा वाच्या
 गुरोरपि ।
 शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम् । (कुमार०)
 क्षाम्येत् प्रत्युपकारेण नोपकारेण दुर्जनः ।
 (कुमार०)

शास्त्राद् रुद्धिर्बलीयसी ।
 शीलं परं भूषणम् ।
 शीलं भूषयते कुलम् ।
 शीलं हि विदुषां धनम् । (कथा०)
 शुभकृत्त हि सोदति । (कथा०)
 शुभस्य शीघ्रम् ।
 शुष्केन्धने वह्निरुपैति वृद्धिम् ।
 शूरं कृतज्ञं दृढसौहृदं च
 लक्ष्मीः स्वयं याति निवासहेतोः ।

शूरस्य मरणं तृणम् ।
 शोभन्ते विद्याया विद्याः ।
 श्यालको गृहनाशाय ।
 श्रद्धया न विना दानम् ।
 श्रेयसि केन तृप्यते ? (शिशु०)
 श्रोत्रस्थ भूषणं शास्त्रम् ।
 संसर्गजा दोषगुणा भवन्ति ।
 सकलं शीलं कुर्याद्वेशम् ।
 सकलगुणभूषा च विनयः ।
 सकलगुणसीमा धितरणम् ।
 सकलमुखसीमा सुवदना ।
 स क्षत्रियस्त्राणसहः सतां यः ।
 संकटे हि परीक्ष्यन्ते प्राज्ञाः शूराश्च संगरे ।
 (कथा०)
 सतां महासंमुखधात्रि पौरुषम् । (नैपथ०)
 सतां हि सङ्गः सकलं प्रसूते ।
 सतां हि सन्देशपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तः-
 करणप्रवृत्तयः । (अभिज्ञान०)
 स तु निर्वधिरेकः सज्जनानां विवेकः ।
 सत्वाधीना हि सिद्धयः । (कथा०)

जो धर्म को बात नहीं कहते, वे वृद्ध नहीं ।
 वृद्धा स्त्री पतिव्रता होती है ।
 बुद्धिमान लोग वेद से ज्ञान पते हैं ।
 वेदथा के समान राजनीति भी अनेक रूप
 धारण करती है ।
 भेटिए के उपवास को पारणः पशु-वध होती है ।
 औषध रोग का मित्र है ।
 व्रत का पालन सज्जनों का भूषण है ।
 शत्रु के भी गुणों का और गुरु के भी दोषों का
 कथन करना चाहिए ।
 धर्म का प्रथम साधन शरीर ही है ।
 दृष्ट जन उपकार से नहीं, अपकार से ही शान्त
 होता है ।
 शास्त्रों से रीति बलवती है ।
 शील सर्वोत्तम भूषण है ।
 शील कुल को अलंकृत करता है ।
 शील ही विद्वानों का धन है ।
 शुभ कार्य करने वला दुःखी नहीं होता ।
 भला कान शीघ्र ही कर देना चाहिए ।
 सूखे रंधन में आग दुरन्त फैल जाती है ।
 वीर, कृतज्ञ और वृद्ध मित्र के पास रहने के
 लिए लक्ष्मी स्वयं जाती है ।
 वीर के लिए मृत्यु तृणवत् है ।
 बाह्य विद्या से सुशोभित होते हैं ।
 साला घर का नाश कर देता है ।
 श्रद्धा-रहित दान दान नहीं ।
 संगल से बौध वृत्त होता है ?
 शास्त्र कान का भूषण है ।
 दोष और गुण संगति में होते हैं ।
 शाल से सब को बशीभूत करना चाहिए ।
 नक्षत्रा सब गुणों का भूषण है ।
 दान सब गुणों का सीमा है ।
 गुमुखी सर्व सुखों की सीमा है ।
 सज्जनों की रक्षा में समर्थ व्यक्ति क्षत्रिय है ।
 बुद्धिमानों की परीक्षा संकट में और शूरों की
 परीक्षा संग्राम में होती है ।
 सज्जनों का पौरुष बर्षों पर ही प्रकट होता है ।
 संसंगति से सब कुल प्राप्त होना है ।
 सन्दिग्ध विषयों में सत्युक्तों का अन्तःकरण ही
 प्रमाण होता है ।
 सज्जनों के विवेक की सीमा नहीं होती ।
 सफलता उस्ताद के अधीन है ।

सत्युत्र एव कुलसम्पत्ति कोऽपि वीर्यः ।
 सत्यपूतां वदेद् वाणीम् ।
 सत्यं कण्ठस्य भूषणम् ।
 सत्यं न तद् यच्छलमभ्युपैति ।
 सत्यमेव जयते ।
 सत्येन धार्यते पृथ्वी ।
 सद्सद्मा न हि त्रिभुः कुर्वायन्नमोहिताः ।
 (कथा०)

सदो भूषा सूक्तिः ।
 सद्भिः कुर्वीत संगतिम् ।
 सद्भिर्विवादं मैत्री च ।
 सद्भिस्तु लीलया प्रोक्तं विलासिखित-
 मक्षरम् ।
 स धार्मिको यः परमर्म न स्पृशेत् ।
 सन्तः परीक्ष्यान्यतरद् भजन्ते ।

संततिः शुद्धवंश्या हि परग्रह च धर्मणे ।
 (शु०)

संतोष एव पुरुषस्य परं निधानम् ।
 संतोषतुल्यं धनमस्ति नान्यत् ।
 संधिं कृत्वा तु हन्तव्यः संप्राप्तेऽवमरे पुनः ।
 (कथा०)

सभारत्नं विद्वान् ।
 समये हि सर्वमुपकारि कृतम् । (शिशु०)

समानशीलव्यसनेषु सख्यम् ।
 सम्पूर्णकुम्भो न करोति शब्दम् ।
 सम्भावितस्य चाकीर्तिर्भ्रष्टादतिरिच्यते ।
 (भगवद्गीता)

सरित्पतिर्न हि समुपैति रिक्तताम् । (शिशु०)
 सरित्प्रपूर्णाऽपि क्षारो न मधुरायते ।

सर्वः कालवशेन नश्यति ।
 सर्वः कृच्छ्रगतोऽपि वाञ्छति जनः सरवानु-
 रूपं फलम् ।

सर्वः कान्तमात्मीयं पश्यति । (अभिज्ञान०)
 सर्वः प्रियः खलु भवत्यनुरूपचेष्टः । (शिशु०)
 सर्वं कार्यवशाज्जनोऽभिरमते तत्कस्य
 को बल्लभः ?

सर्वं जीवद्भिराप्यते (कथा०)
 सर्वं रत्नमुपद्रवेण सहितं निर्दोषमेकं यशः ।

अच्छा पुत्र ही वंश का विलक्षण दीक है ।
 सत्य से शोधित वाणी बोलनी चाहिए ।
 सत्य कण्ठ का भूषण है ।
 वह सत्य नहीं जो लाल का आश्रय लेता है ।
 सत्य की ही विजय होती है ।
 पृथ्वी को सत्य ही धारण किये हुए है ।
 गुरी नारियों के वचन से मोहित लोग अच्छाई
 या दुष्ट नहीं समझते ।

सुभाषित सभा का भूषण है ।
 सज्जनों का संग करना चाहिए ।
 झगडा और मैत्री सज्जनों से ही करनी चाहिए ।
 सज्जनों की म्याभाविक बात भी पत्थर की
 लकीर होता है ।
 धार्मिक वही है जो दूसरे का जी नहीं दुखाता ।
 सज्जन परीक्षा के अगतर ही कोई बात स्वीकार
 करते हैं ।

शुद्ध वंश की सम्मान लोक-परलोक में सुख-
 दायक होती है ।

संतोष ही मनुष्य का सर्वोत्तम कोष है ।
 संतोष के समान धन नहीं ।
 सन्धि करके भी अक्षर प्राप्त होने पर शत्रु को
 मार देना चाहिए ।

विद्वान् सभा का रत्न है ।
 समय पर किया हुआ सब कुछ उपकारक
 होता है ।

समान शील तथा व्यसन वालों में मैत्री होती है ।
 भरा हुआ कुम्भ संवाद नहीं करता ।
 सम्मानित मनुष्य के लिए अपयश मृत्यु से भी
 बुरा होता है ।

समुद्र कभी खाली नहीं होता ।
 नदियों के जलमयूह से भर जाने पर भी समुद्र
 नीटा नहीं होता ।

समय पाकर सब नष्ट होते हैं ।
 विपत्ति पड़ने पर भी सब लोग अपनी योग्यता-
 नुसार फल चाहते हैं ।

सबको अपनी वस्तु सुन्दर दिखाई देती है ।
 अनुकूल चेष्टाओंवाले सब व्यक्ति प्यारे लगते हैं ।
 लोग सभी को कार्य-वश प्यारे लगते हैं, जैसे
 कौन किसका प्रिय है ?

जीवत मनुष्य सब कुछ पा लेते हैं ।
 सब रत्नों में कोई न कोई दोष होता है, निर्दोष
 तो केवल यश है ।

[७००]

सर्वं शून्यं दरिद्रस्य ।
सर्वं सावधि नावधिः कुलभुवां प्रेम्णः
परं केवलम् ।
सर्वनाशाय मातुलः ।
सर्वलोकप्रतिष्ठायां यतन्ते बहवो जनाः ।

सर्वांगे दुर्जनो विषम् ।
सर्वारम्भास्तण्डुलप्रस्थमूलाः ।
सर्वास्ववस्थासु रमणीयत्वमाकृतिविशेषा-
णाम् । (अभिज्ञान)
सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ते ।
सलज्जा गणिका नष्टा ।
स सुहृद्द्वयसने थः स्यात् ।
सहते विपत्सहस्रं मानो नैवापमानलेशमपि ।

सहसा विदधीत न क्रियाम्
अविवेकः परमापदां पद्म् ।
सहस्रेषु च परिहृतः ।
सागरं वर्जयित्वा कुप्र महानद्यत्रतरति ?
(अभिज्ञान)

साधने हि नियमोऽन्यजनानां
योगिनां तु तपसाखिलसिद्धिः । (नैषध०)
साधुः सँदति दुर्जनः प्रभवति प्राप्नो कलौ
दुर्युगे ।
साधुनां दुर्जनाद् भयम् ।
सानुकूले जगन्नाथे विप्रियः सुप्रियो भवेत् ।

सामानाधिकरन्ध्रं हि तेजस्तिमिरयोः कुतः ?
(शिशुपालवधे)

सारं गृह्णन्ति पण्डिताः ।
सिद्धिर्भूषयते विद्याम् ।
सुकविता यद्यस्ति राज्येन किम् ?

सुकृती चानुभूयैव दुःखमभ्यश्नुते सुखम् ।
(कथा०)

सुखमास्ते निःस्पृहः पुरुषः ।
सुखार्थिनः कुतो विद्या ?
सुतप्तमपि पानीयं शमयत्येव पावकम् ।

सुलभा रम्यता लोके दुर्लभं हि गुणार्जनम् ।
(किरात०)

सुलभो हि द्विषां भङ्गो, दुर्लभा सत्स्वना-
च्यता । (किरात०)

दरिद्र के लिए सब कुछ सूना है ।
सबकी सोमा है परन्तु कुलीन नारियों के प्रेम
की सोमा नहीं ।
मामा सर्वनाश कर देता है ।
बहुत से व्यक्ति लोगों में प्रीतिष्ठा पाने के लिए
उद्योग करते हैं ।
दुष्टजन के सभी अंगों में विष रहता है ।
सभी उद्योग दूसरी भर धान के लिए है ।
सुंदर व्यक्ति सभी दशाओं में सुंदर लगते हैं ।

सभी गुण धन पर आश्रित रहते हैं ।
लज्जाशील वेश्या नष्ट हो जाती है ।
जो विपत्ति में सहायक है, वही मित्र है ।
मानी मानव सहस्रां कष्ट सह लेता है, परन्तु
तनिक-सा भी अपमान नहीं ।
कोई भी कार्य एकाएक न करना चाहिए,
अविवेक भारी आपत्तियों का कारण है ।
सहस्रों में कोई एक विद्वान् होता है ।
बड़ी नदी सागर के सिवा कहां आश्रय लेती है ?

साधारण जन साधनों से कार्य सिद्ध करते हैं,
योगियों को तप से सब सिद्धियाँ मिलती हैं ।
इस कलियुग नाम के बुरे युग में सज्जन दुःख
पाते हैं और दुर्जन अधिकार जमाते हैं ।
सज्जनों को दुर्जनों से भय होता है ।
भगवान् अनुकूल हों तो विरोधी भी मित्र
बन जाते हैं ।

प्रकाश अंग अन्धकार एकात्र कैसे रह सकते हैं ?

दुर्किमान् सारग्रही होते हैं ।
सिद्धि विद्या को अलंकृत करती है ।
यदि सुंदर काव्य रचना आती हो तो राज्य में
जय लाभ है ?
सुकर्मी अनुभव दुःख सहकर भी सुख भोगता है ।

कामना रहित ननुभ्य सुखी रहता है ।
सुखैषी को विद्या कहां ?
पानी भले ही सूख गर्म हो फिर भी अग्नि को
ज्ञान कर ही देता है ।

संसार में सुन्दरता सुलभ है, गुण-धारण दुर्लभ ।

शत्रु का नाश करना सरल है, सज्जनों में
प्रशंसा दुर्लभ ।

सूर्यापाये न खलु कमलं पुण्यति स्वामभि-
ख्याम् । (शिशु०)

सूर्यं तपस्यावरणाय दृष्टेः कल्पेत लोकस्य
कथं तमिन्द्रा ? (रघुवंशे)

सेवाधर्मः परमगह्वरो योगिनामप्यगम्यः ।

स्त्रीयं कस्य न तुष्टये ? (कुमार०)

स्त्रियश्चरित्रं पुरुषस्य भाग्यं देवो न जानाति
कुतो मनुष्यः ?

स्त्रियो नष्टा ह्यभर्तृकाः ।

स्त्रीणां पतिः प्राणा न बान्धवाः । (कथा०)

स्त्रीणां प्रियालोकफलो हि वेधः । (कुमार०)

स्त्री पुंश्च प्रभवति यदा तद्वि रोहं विनष्टम् ।

स्त्रीबुद्धिः प्रख्यावहा ।

स्त्रीभिः कस्य न खण्डितं भुवि मनः ?

स्त्री विनश्यति रूपेण ।

स्त्रीषु वाक्यसंयमः कुतः ? (कथा०)

स्नापितोऽपि बहुशो नदीजलीर्गर्दभः किमु
हयो भवेत् क्वचित् ?

मनुपात्वं पापानां फलमधनरोहेषु मुहशाम् ।

स्पृशन्ति न नृशंसानां हृदयं बन्धुबुद्धयः ।

(नैपथ०)

स्पृशन्त्यास्तास्वर्थं किमिव न हि रम्यं
रुगाहशः ?

स्वकर्मसूत्रग्रथितो हि लोकः ।

स्वगृहे पूज्यते मूर्खः ।

स्वग्रामे पूज्यते प्रभुः ।

स्वदेशजातस्य नरस्य नूनं
गुणाधिकस्यापि भवेद्वज्रा ।

स्वदेशे पूज्यते राजा ।

स्वधर्मं निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः ।

स्वपत्न्यज्ञा हि निश्रेष्ठाः, कुतो निद्रा
द्विवेकिनाम् ?

स्वपदाच्छ्यवमानस्य कस्याज्ञां को हि
मन्यते ? (कथा०)

स्वभाव एवैव परीपकारिणाम् ।

स्वभावतः सर्वमिदं हि सिद्धम् ।

सूर्य के अस्त हो जाने पर कमल अपनी शोभा
को धारण नहीं करता ।

जब सूर्य चमक रहा हो तब रात्रि लोगों की
दृष्टि कैसे बंद कर सकती है ?

सेवा-रूपी धर्म अत्यन्त कठिन है, योगी भी
वहाँ तक नहीं पहुँच सकते ।

प्रशंसा से कौन प्रसन्न नहीं होता ?

स्त्री के चरित्र और पुरुष के भाग्य को भगवान्
भी नहीं जानता, मनुष्य भी क्या जानेगा ?

पति-हीन स्त्रियाँ नष्ट हो जाती हैं ।

स्त्रियों का जीवन पति है, बन्धु नहीं ।

स्त्रियाँ सौन्दर्यवर्द्धक परिधान पहनती हैं ।

जब स्त्री पुरुषवत् प्रमदशाली हो जाती है तब
धर नष्ट हो जाता है ।

स्त्री की बुद्धि प्रलयकारिणी होती है ।

भूमि पर स्त्रियों ने किस के हृदय को खण्डित
नहीं किया ?

स्त्री रूप से नष्ट होती है ।

स्त्रियों में वाणी का संयम कहाँ ?

नदी के जल से बहुत बार नहाने पर भी
क्या कहीं गधा भी घोड़ा बनता है ?

निर्धन घरों की पुत्रवधू बनना सुन्दरियों के
पापों का फल है ।

सम्बन्धियों की सीख क्रूर जनों के हृदय को
प्रभावित नहीं करती ।

धौवन में प्रविष्ट होती हुई मृगनयनी की कौन-सी
बात सुंदर नहीं होती ?

संसार अपने कर्मों के मूत्र से रूँधा हुआ है ।

मूर्ख अपने घर में ही पूजा जाता है ।

ग्रामपति अपने गाँव में ही पूजा जाता है ।

अपने देश के गुणी व्यक्ति को भी उपेक्षा की
जाती है ।

राजा की पूजा अपने ही देश में होती है ।

अपने धर्म में भरना अच्छा है, पर-धर्म भयंकर
होता है ।

अज्ञानी गहरी नींद में सोते हैं, विवेकियों को
नींद कहाँ ?

अपनी पदवी से च्युत हुए की आज्ञा कौन
मानता है ?

परीपकारियों का यह स्वभाव ही है ।

यह सब स्वभाव से ही सिद्ध है ।

[७०२]

स्वभावस्वच्छानां पतनमपि भाग्यं हि
भवति ।

स्वयमेव हि वातोऽग्नेः सारथ्यं प्रतिपद्यते ।
(रघु०)

स्वमुखं नास्ति साध्वीनां तासां भर्तृमुखं
मुखम् । (कथा०)

स्वस्थः को वा न पण्डितः ?

स्वस्थे चित्ते बुद्धयः संभवन्ति ।

स्वादुभिस्तु त्रिपयैर्हृतस्ततो
दुःखमिन्द्रियगणो निवार्यते । (रघु०)

स्वाधाना दयिता सुतावधि ।

हंसो हि क्षीरमादत्ते तन्मिश्रा वर्जयत्यपः ।
(अभिज्ञा०)

हं हो पद्मसरः कुतः कतिपयैर्हंसैर्विना
श्रीस्तव ?

हर्तं ज्ञानं क्रियाहीनम् ।

हर्तं निर्नायकं सैन्यम् ।

हृत्क्षेत्रज्ञानतो नरः ।

हरति मनो मधुरा हि यौवनश्रीः ।
(किरात०)

हस्तस्य भूषणं दानम् ।

हितः परोऽपि स्वीकार्यो हेयः स्वोऽप्यहितः
पुनः । (कथा०)

हितप्रयोजनं मित्रम् ।

हितभुक्, मितभुक्, शाकभुक् ।

हितं मनोहारि च हर्षभं वचः । (किरात०)

हितोपदेशो मूर्खस्य कोपायैव न शान्तये ।
(कथा०)

हेग्मः संलक्ष्यते ह्यग्नौ विशुद्धिः क्यामिकापि
वा । (रघुवंश०)

अर्थो हि लोके पुरुषस्य बन्धुः ।

स्वभावतः पवित्र व्यक्तियों का पतन भी
भाग्यार्थ ही होता है ।

पवन स्वयमेव अग्नि का सारथि बन जाता है ।

सस्त्रियों का अपना कोई मुख नहीं होता, वे
पति के मुख की ही अपना मुख समझती हैं ।
कौन स्वस्थ मनुष्य बुद्धिमान नहीं ?

स्थस्थ चित्त में ही सुविचार उत्पन्न होते हैं ।

स्वादुष्ट विषयों से अक्षयित इन्द्रियों को उनमें
हटाना कठिन है ।

सन्तान से पूर्व ही स्त्री स्वाधीन होती है ।

हंस दूध ले लेता है और उसमें भिरे जल को
छोड़ देता है ।

अरे कमलसर ! कुछ हंसों के बिना तुम्हारी
शोभा कहाँ ?

क्रिया-रहित ज्ञान व्यर्थ है ।

सेनानो के बिना मेना निरुम्मी है ।

मनुष्य अज्ञान से मारा जाता है ।

यौवन की मधुर शोभा मन को हर लेती है ।

दान हाथ का सहना है ।

हितकारक बेगाना भी स्वीकार्य है और अहित-
कारक अपना भी त्याज्य ।

मित्र भलाइ के लिए ही होता है ।

हितकर वस्तु खानेवाला, थोड़ा खानेवाला,
साग-सब्जी खानेवाला (स्वस्थ रहता है) ।

हितकर तथा मनोहर वचन दुर्लभ है ।

हितकारक उपदेश मूर्ख को कुपित करता है,
शान्त नहीं ।

सुवर्ण की खराई-खोटाई अग्नि में ही परखी
जानी है ।

संसार में धन ही मनुष्य का बन्धु है ।

द्वितीय परिशिष्ट

हिन्दी सूक्तियों के संस्कृत-पर्याय

हिन्दी	संस्कृत
अंगूर खट्टे हैं ।	१. अलभ्यं हीनसुख्यते । २. दुष्प्रापा द्राक्षा अम्लाः ।
अंडा सिखावे बच्चे को तू चीं-चीं मत कर ।	१. बालः शिशुवति वृद्धान् । २. वृद्धानां मन्वदी बालः । पश्येह मधुकरीणां सञ्चितमर्थं हरन्त्यन्ये । स्थिरं मूले श्रुवा वृद्धिः । मनःपूर्तं समाचरेत् । (मनु०)
अंटे सेये कोई बच्चे लेये कोई । अंडे होंगे तो बच्चे बहुतेरे हो जायेंगे । अन्तःकरण के अनुसार आचरण करे । अँतही में रूप बुराचो में छव्व ।	१. रूपमन्त्रे छविर्वसने । २. निराहारि कुतो रूपं निर्वसने च कुतश्छविः । १. दुरितस्य दुःखम् । २. दुष्टस्य कष्टम् । १. भद्रस्य मद्रम् । २. शुभस्य शुभम् । अन्ते मतिः सा गतिः । १. विषकुम्भाः पयोमुखाः । २. अंतः शाक्ता बहिः शैवाः । इष्टलाभः परं सुखम् । १. गुणान्वसन्तस्य न वेत्ति दायसः । २. लोचनाभ्यां विहीनस्य दर्पणः किं करिष्यति? ३. न भेजः कोकनदिनीकिञ्जल्कास्वादकोविदः । (कथासरित्सागर) अन्धस्यान्धानुलग्नस्य विनिपातः पदे पदे ।
अंत बुरे का बुरा । अंत भले का भला । अंत मता सो गता । अंदर से काले बाहर से गोरे ।	विचेकरहितः खलु पञ्चपाती । पश्येह मधुकरीणां सञ्चितमर्थं हरन्त्यन्ये । (पंचतंत्र) १. अरण्यरोदनं व्यर्थं भसन्ति हुतमेव च । २. अरण्यरुदितमिदं निष्प्रयोजनम् । अन्धस्य वर्तकीलाभः । न मूयात्तत्प्रथमप्रियम् । दालिशस्य मतिस्सूतिः । १. पित्तेन दूने रसने सिताऽपि तिक्तयत्ते । २. पश्यति पित्तोपहतः सस्तिशुभ्रं ब्रह्ममपि पीतम् नृपे मूढे नयः कुतः ?
अंधा क्या चाहे ? दो आँखें । अंधा क्या जाने बसंत की बहार ?	१. अयं बन्ध्यासुतो यमति खपुष्पकृतशेखरः । २. अन्धेर्नुपेहिती ग्रामः पंगो रे धाव सत्वरम् ।
अंधा गुरु बहुरा चेला, दोनों नरक में टेलमटोला । अंधा बाँटे रेचड़ियाँ फिर फिर अपनों ही को । अंधी पीसे कुत्ता खाय । अंधे के आगे रोवे अपने दीदे खोवे ।	
अंधे के हाथ बटेर लगाना । अंधे को अंधा कहने से बुरा मानता है । अंधे को अँधेरे में बड़े दूर की सूझी । अंधे को सब अंधे ही दीखते हैं ।	
अंधेर नगरी चौपट राजा, टके सेर भाजी टके सेर खाजा । अँधों ने गाँव लूटा दौड़ियो रे लँगड़े ।	

अंधों में काना राजा ।

अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता ।

अकल बढ़ी कि कैसे ?

अकलमंद को इशारा, अहमक को फटकारा ।

अकलमंद को इशारा ही काफ़ी है ।

अच्छी बात बच्चे की भी मान लेनी चाहिए ।

अच्छी वस्तु स्वयमेव प्रसिद्ध हो जाती है ।

अच्छी संतान सुख की खान ।

अटका बनिथा देय उधार ।

अटकेगा सो अटकेगा ।

अट्टहाई पाव कंगनी चौबारे रसोई ।

अति का भला न बोलना, अति की भली न

धुप्प । अति का भला न बरसना, अति की भली न धुप्प ।

अदले का बदला ।

अधजल गगरी ललकत जाय ।

अधिकार बढ़ा है न कि बल ।

अधेला न दे, अधेली दे ।

अनहोनी होती नहीं होनी होवनहार ।

अपना अपना शेर शेर ।

अपना टैंटर न देखे

दूसरों की फुल्ली निहारें ।

अपना पेट तो कुत्ता भी भर लेता है ।

अपना पैसा खोटा तो परखवा का क्या बोध ?

अपना यही जो आए काम ।

अपना हाथ जगन्नाथ ।

अपनी अपनी डफली अपना अपना राग ।

१. निरस्तपादपे देश परण्डोऽपि द्रुमायते ।

२. यत्र विद्वज्जनो नास्ति श्लाघ्यस्तत्राल्पवीरपि

उत्पतितोऽपि ऋणकः शक्तः किं भ्राष्ट्रकं भङ्गुम् ?

१. शुद्धियस्थ बलं तस्य नियुङ्क्तेऽस्तु कुतो बलम् ।

(पंचतंत्र)

२. मतिरेव बलाद् गरीयसी ।

३. प्रज्ञा नाम बलं श्रेष्ठं जिष्मणस्य वलेन किम् ?

विज्ञाय संज्ञा, मूढःश्च दण्डः ।

१. अनुक्तमप्युद्धति पण्डितो जनः ।

२. परेङ्कितज्ञानफला हि सुद्वयः ।

युक्तियुक्तं प्रगृह्णीयाद् बालादपि विचक्षणः ।

न हि कस्तूरिकां मोदः शपथेन विभाव्यते ।

१. संततिः शुद्धवश्या हि परत्रैव न शर्मते । (रसु०)

२. सुखमूलं सुसन्ततिः ।

परवशैः कश्च क्रियते ?

संशयात्मा विनश्यति ।

निस्सारस्य पदार्थस्य प्रायेणाऽऽन्वरो महात् ।

अति सर्वत्र वर्जयेत् ।

१. कृते नतिकृतिं कुर्यात् ।

२. भद्रो भद्रे स्तलः खले ।

३. शठे शाठ्यं समाचरेत् ।

अद्धो घटो घोषमुपैति नूनम् ।

स्थानं प्रधानं न बलं प्रथमम् । (पंचतंत्र)

१. अल्पस्य हेतोर्बहु हादुमिच्छन् विचारमूढः

प्रतिभासि मे त्वम् । (रघुवंश)

२. पगमदप्ला निष्कं प्रयच्छति ।

न यद् भावि न तद् भाषि भाषि चेन्न तदन्यथा ।

(हितोपदेश)

निजो निज एव परः परश्च ।

स्तलः सर्षपमात्राणि परच्छिद्राणि पश्यति ।

आत्मनो बिल्वमात्राणि पश्यन्नपि न पश्यति ॥

(महाभारत)

१. जठरं को न विभति केवलम् ?

२. काकोऽपि जीवति चिराय बलिश्च भुङ्क्ते ।

१. आत्मीयाः सदीपाश्चेत् को लाभः परदूषणैः ?

२. समले सुवर्णं निकषो न भिन्ध्यः ।

१. स एव बन्धुः सहायको यः ।

२. परोऽपि हितकरः स्वीयः ।

स्वातन्त्र्यमिष्टप्रदम् ।

स्वार्थसिद्धौ हि ये मन्त्रान्तेषां साम्प्रत्यं कुतः ?

[७०५]

अपनी इज्जत अपने हाथ ।

अपनी करनी पार उत्तरनी ।
अपनी गरज बावली होती है ।

अपनी गली में कुत्ता भी शेर होता है ।
अपनी छाछ को कोई खट्टी नहीं कहता ।

अपनी देह किसे प्यारी नहीं ?

अपनी नाक कटे तो कटे दूसरों का सगुन
तो बिगड़े ।

अपनी पगड़ी अपने हाथ ।
अपनी बुद्धि पराया धन कड़े गुना दोखता है ।
अपने गरीवान में मुँह डाल कर देखना ।

अपने दही को कोई खट्टा नहीं कहता ।
अपने पाँव पर आप कुल्हाड़ा मारना ।
अपने मुँह मियाँ मिट्टू ।
अपयश से मौत भली ।
अब पछताए होत क्या जब खिड़ियाँ खुरा
गई खेत ।

अभी दिल्ली दूर है ।
अमीर को जान प्यारी, गरीब को जान भारी ।
अरहर की टट्टी गुजराती ताछा ।
अल्लामोशी नीमरजा ।
अस्थाहारी सदा सुखी ।
अशरफियाँ लुटीं, कोयलों पर मुहर ।

अस्सी की आसद् चौरासी का झर्च ।

आँख और कान में चार अंगुल का फ़क़र
होता है ।

आँख न दीदा काढ़े कसीदा ।
आँख से दूर दिल से दूर ।
आखों के अंधे नाम नयन-सुख ।

१. लोके गुरुत्वं विपरीततां वा स्वचेष्टितान्येव
नरं नयन्ति । २. निजाधीनं स्वगौरवम् ।
कृत्यैः स्वकीयैः खलु सिद्धिलब्धिः ।

१. अर्थायीं जीबलोकोऽर्थं इमशानमपि सेवते ।
(पंचतंत्र)

२. किन्न कुबन्ति स्वाधिनः ?
निजसद्वननिविष्टः श्वानं सिंहायते किम् ?

१. सर्वः खल्वारमीयं कान्तं पश्यति ।
२. न हि कश्चिन्निरजं तक्रमम्लमित्यभिभाषते ।
(अशेषदोषदुष्टोऽपि) कायः कस्य न वल्लभः ?
(पंचतंत्र)

आत्मक्षत्याऽपि विघ्नन्ति परकर्माणि दुर्जनाः ।

दे. 'अपनी इज्जत अपने हाथ' ।

स्वमतिः परधनञ्चैव बृद्धदृढं हि दृढयते ।
विरूपो यावदादर्शं पश्यति नात्मनो मुखम् ।
मन्यते तावदात्मानमन्येभ्यो रूपवत्तरुम् ।
(महाभारत)

दे. 'अपनी छाछ को...'

१. दुःखसहनं स्वदोषेण । २. स्वकरेणांगारकार्षणम् ।
बन्धोऽपि लघुतां याति स्वयं प्रख्यापितैर्गुणैः ।
सम्भावितस्य चाकीर्तिर्गण्यादतिरिच्यते । (गीता)

१. निर्वाणदीपे किमु तैलदानम् ?

२. गतस्य शोचनं नास्ति ।

३. गतं शोचन्त्यपण्डिताः ।

४. गते शोको निरर्थकः ।

अद्यापि दूरतः सिद्धिः ।

धनाढ्यो रक्षति प्राणान् निर्धनस्त्यक्तुमिच्छति ।

पाषाणे मृगमदलेपः ।

मीनं स्वीकारलक्षणम् ।

अस्थाहारी सदादुःखी ।

१. निष्कापव्ययः, पगरक्षणम् ।

२. चन्दनदाहः, शमीरक्षा ।

१. अल्प आयो व्ययो महान् ।

२. न्यूनयिऽपिकव्ययः ।

अवगणे दर्शने चैव वर्तते महदन्तरम् ।

अन्धो वीक्षितुमुद्यतः ।

१. दूरता स्नेहनाशिनो । १. नयनदूरं मनोदूरम् ।

१. यस्य पार्श्वे धनत्रास्ति सोऽपि धनपाल उच्यते ।

२. वित्तेन हीनो नाम्ना नरेशः ।

आँधी के आम ।

आई को कौन टारे ?

आई तो ईद-बरात न आई तो जुम्मेरात ।

आई थी आग लेने भालिक बन बैठी ।

आई है जान के साथ जायगी जनाङ्ग के साथ
आपू की खुशी न गए का राम ।

आग पानी का मेल कैसे हो सकता है ?

आग लगने पर कूआँ नहीं खोदा जाता ।

आग लगा पानी को दौड़े ।

आगे कूआँ पीछे खोईं ।

आगे जगह देखकर पाँव रखा जाता है ।

आगे दौड़ पीछे चौब ।

आगे नाथ न पीछे पगाहा, सब से भला
कुम्हार का गदहा ।

आज का काम कल पर मत छोड़ो ।

आदत सिर के साथ जाती है ।

आदि बुरा अंत बुरा ।

आधा तीतर आधा बटेर ।

आधी छोड़ सारी को धावे,
ऐसा दूबे भाह न पावे ।

आप मरे जग परलै ।

आप मरे बिना स्वर्ग नहीं मिलता ।

आप हारे बहू को मारे ।

आ बला, गले लग ।

आसों की कमाई नीबू में रँवाई ।

आम के आम गुठलियों के दाम ।

आम बोओ आम खाओ ।

आयगा सो जायगा राजा रंक ककीर ।

आरत काह न करइ कुकर्म ।

३. शानेन हीनोऽपि सुबोधसङ्घः ।

४. गुणैर्विरहितोऽपि गुणाकराख्यः ।

अस्पर्शद्रव्यम् ।

१. अपि धन्वन्तरिवैद्यः किं करोति गतायुषि ?

२. मृत्योर्नास्ति भेषजम् ।

सघृतं भोजनं विसे, दन्दिदशे शुष्कमेव च ।

१. सूचीप्रवेशे मुसलप्रवेशः ।

२. अनलायं समायात्रा सजाता गृहस्वामिनी ।

जीवनसंगिनी रवा ।

१. सन्तुष्टः सदासुखी ।

२. लाभालाभयोः समः ।

१. सामानाधिकरण्यं हि तेजस्तिमिरयोः कुतः ?

२. जलानलयोः सङ्गमः कुतः ?

१. सन्दीप्तो भवने तु कूपखननं प्रत्युद्यमः कीदृशः ?

(नीतिशतक)

२. न कूपखननं युक्तं प्रदीप्ते बहिना गृहे ।

१. अन्तर्दुष्टः क्षमायुक्तः सर्वानर्थकरः किल ।

२. विषकुन्मः पयोमुखः ।

इतः कूपस्ततस्तदी ।

१. दृष्टिपूर्तं न्यसेत्पादम् । (मनु०)

२. नासमीक्ष्य परं स्वानं पूर्वमाद्यतनं त्यजेत् ।

पूर्वाधीतं तु विस्मृत्य अग्रस्थं प्रत्युत्सुकः ।

का विन्ता बन्धुहीनस्य ?

यद्य कार्यं न श्वः कुर्यात् ।

अभ्यासो हि दुस्त्यजः ।

१. दुरारम्भो दुरन्तः स्यात् ।

२. दुर्बीजास्तुफलं कुतः ?

विषमयोगो न युज्यते ।

यो भ्रुवाणि परित्यज्य अभ्रुवाणि निषेवते ।

भ्रुवाणि तस्य नश्यन्ति अभ्रुवं नष्टमेव तु ॥

१. आत्मप्रलये जगत्प्रलयः ।

२. आत्मनाशे जगन्नाशः ।

१. नात्मयत्नं बिना सिद्धिः ।

२. धाबन्न निधनं तावन्न स्वर्गः ।

निजापराधे भृत्यस्य भर्त्सनम् ।

विपत्ते । परिच्यवस्व माम् ।

इतो लाभस्ततः क्षतिः ।

एका क्रिया द्वयर्थकरी प्रसिद्धा ।

यादृशमुप्यते बीजं तादृशं फलमान्यते ।

जातस्य हि भ्रुवो मृत्युः ।

आर्त्तो जनः किन्न करोति पापम् ।

आलस्य बुरी बला है ।

आलस्य वह क्या अमल न हो जिसका किताब पर ।

आस-पास बरसे दिखली पड़ी तरसे ।

आस्मान पर धूँझ अपने सिर ।

आस्मान से गिरा गजूर में अटका ।

आहारे व्योहारे लज्जा न कारे ।

इक चुप हज़ार सुख ।

इक नागिन अरु पंख लगाई ।

इधर कूआँ उधर खाई ।

इधर बाघ उधर खाई ।

इलाज खास, एक पथ्य ।

इक नाजूक मित्राज है बेहद ।

अकल का बोझ उठा नहीं सकता ॥

इस घर का बाबा आदम ही निराला है ।

इस हाथ दे उस हाथ ले ।

ईद का जवाब पत्थर से ।

ईश्वर की निगाह सीधी हो तो किसी वस्तु की कमी नहीं रहती ।

ईश्वर की निगाह सीधी हो तो कोई बाल भी बाँका नहीं कर सकता ।

ईश्वर की निगाह सीधी हो तो शत्रु भी मित्र बन जाता है ।

ईश्वर की माया कहीं धूप कहीं छाया ।

ईश्वर के नियम अटल हैं ।

ईश्वर के रंग (खेल) न्यारे हैं ।

ईश्वर के सिवा कोई निद्रौष नहीं ।

ईश्वर पर भरोसा रखना चाहिये ।

ईश्वर से क्या दूर है ?

उखली में सिर दिया तो मूसलों का डर क्या ?

उत्तर गईं छोड़ें तो क्या करेगा कोई ?

उदार मनुष्य पात्र का विचार नहीं करते ।

उधार का खाना फूस का तापना धराबर है ?

१. अगच्छन् वैनतेषोऽपि पदमेकं न गच्छति ।

२. आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्यो महारिपुः ।

यः क्रियावान् स पण्डितः ।

सस्पृष्टा निर्धना दृष्टा निःस्पृहाणां धनं बहु ।

पद्मो हि नभसि क्षिप्तः क्षेप्तुः पतति सूर्धनि ।

इतो मुक्तस्ततो बद्धः ।

आहारे व्यवहारे च त्यक्तलज्जः मुक्ती भवेत् ।

मीनं सर्वसुखप्रदम् ।

दे. 'एक तो करेला' ।

१. इतोऽन्धकूपस्ततो दन्दशुकः ।

२. इतः कूपस्ततस्तटी ।

इतो व्याघ्रस्ततस्तटी ।

पथ्ये सति गदार्तस्य किमौपधानिषेवणैः ?

अनुरागान्धमनसा विचारसहता कुतः । (कथा.)

गृहमेतद् विलक्षणम् ।

१. इतो देयं ततो प्राश्नम् ।

२. त्वरितं फलं कर्मणाम् ।

१. शठे शास्त्रं समाचरेत् ।

२. कृतो प्रतिवृत्तिं कुर्यात् । (चाणक्यनीतिः)

१. प्रसन्ने हि किमप्राप्यमस्तीह परमेश्वरे ।

२. विधिर्हि घट्यत्यर्थानचिन्त्यानपि संमुखः (कथा.)

श्रीकृष्णस्य कृपालो यदि भवेत् कः कं निहन्तु क्षमः ।

सानुकूले जगत्राये विप्रियः सुप्रियो भवेत् ।

देवी विचित्रा गतिः ।

ध्रुवाः परमेशानियमाः ।

१. विधेर्विचित्राणि विचेष्टितानि ।

२. अहो विधेरचिन्त्यैव गतिरद्भुतकर्मणाम् (कथा.)

३. अहो नवनवाश्रयनिर्माणे रसिको विधिः ।

(कथा०)

४. देवी विचित्रा गतिः ।

५. मधुरविधुरमिश्राः सृष्टयो वा विधातुः ।

त्रिभुवनविषये कस्य दोषो न चास्ति ।

रामधाम शरणीकरणीयम् ।

किं हि न भवेदीश्वरेच्छया ?

रणे योद्धुं प्रवृत्तस्य शत्रुशलात्तु किं भयम् ।

१. निर्लज्जस्य कुतो भयम् ?

२. मालहीनमनुभ्याणां लोकोज्यं किं करिष्यति ?

मेघो गिरिजलधिवर्षं च ।

उदारभोजनं तुण्णतापसेवनम् ।

उधार दिया गाहक खोया ।
 उधार मुहब्बत की कैंची है ।
 ऊधो मन माने की बात ।
 उन्नीस-बीस का तो फूँक होता ही है ।
 उपजहिं एक संग जल माहीं,
 जलज जोक जिमि गुन बिलगाहीं ।
 उलटा घोर कोतवाल को डांटे ।
 उलटे बाँस बरेली को ।
 ऊँट के मुँह में जीरा ।
 ऊँट की चोरी और झूके शूके ।
 ऊँची दुकान फोका पकवाने ।
 ऊँट घोड़े बहे जायँ, गधा कहे कितना पानी ?
 ऊँट तो कूदे बोरे भी कूदे ।
 ऊँट रे ऊँट तेरी कौन सी कल सीधी ?
 ऊँटों के विवाह में गधे गवैये ।
 ऊधो का लेना न माधो का दना ।
 ऊपर से पानी देना नीचे से जड़ काटना ।

एक अंडा वह भी गंदा ।
 एक अनार सौ बीमार ।
 एक और एक थारह होते हैं ।

एक कहो दस सुनो ।
 एक काल से सुनना दूसरे से निकाल देना ?
 एक के दूने से सौ के सवाए भले ।
 एक लुप हज़ार को हराए ।

एकता में बढ़ी शक्ति है ।

एक तो करेला कडुभा दूसरे नीम चड़ा ।

एक तो चोरी दूसरे सीनाज़ोरी ।
 एक थैली के चट्टे-बट्टे ।
 एक दिन मेहमान, दो दिन मेहमान, तीसरे
 दिन बलाए जान ।
 एक नज़ीर न सौ नसीहत ।
 एक पंथ दो काज ।

एक परहेज़, न सौ हकीम ।
 एक पुष्य दूसरे कलियाँ ।

उद्धारः केतुलोपकः ।
 उद्धारः स्नेहनशकः ।
 तस्य तदेव हि मधुरं यस्य मनो यत्र संलग्नम् ।
 समयोरप्यल्पमनरम् ।
 न सोद्वारास्तुल्यगुणा भवन्ति ।

दोषी पृच्छकमवक्षिषेत् ।
 गङ्गां हिमाचलं नयति ।
 १. दास्येस्य मुखे जीरः ।
 २. न स्तोत्रेन धस्मरतुषिः ।
 न महान्ति कर्माणि भवन्ति गूढम् ।
 निस्तारस्य पदारथस्य प्रायेणालम्बरो महान् ।
 यत्र शूर्यगतिर्नास्ति कातरः किं करिष्यति ?
 नृत्यति विनाकपाणौ नृत्यन्त्यन्येऽपि भूतवेत्तालः॥
 १. सर्वथापमयो जनः । २. सर्वदोषयुतो नरः ।
 ज्ञातृणां विवाहे तु गीतं यायन्ति गर्दभाः ।
 निश्चिन्तो नरः सुखी ।

१. अन्तदुष्टः क्षमायुक्तः सर्वाऽनर्थकरः किल ।
 २. श्रालयत्रपि वृक्षाग्निं नदीवेगो निकृन्तति ।
 ३. अन्तः शत्रुः बहिः सुहृद् ।
 काकमांसं नुनोच्छिष्टमतिस्त्वल्पत्र तल्पुनः ।
 एकः कषोतपोतः श्रेयाः शतशोऽभिधावन्ति ।
 १. संहतिः कार्यसाधिका । २. समवायो दुरत्ययः॥
 ३. एकचित्ते दयोरैव किमसाध्यं भवेदिति ।
 (कथासरित्सागर)

गारुया उत्तरं दश ।
 अवधानरहितं श्रवणं हि व्यर्थम् ।
 विक्रयाधिक्ये लाभधिक्यम् ।
 १. मीनं सर्वार्थसाधनम् ।
 २. मीनं विश्वजिद् भुवम् ।
 १. समवायो दुरत्ययः ।
 २. संहतिः कार्यसाधिका ।
 १. अयमपरो गण्डश्योऽरि स्फोटः ।
 २. मर्कटस्य सुरापानं ततो वृश्चिकदंशनम् ॥
 अपराधित्वेऽपि श्रुता ।
 दुःस्त्रे सर्वे समाः ।

१. प्राणुणिको दिनद्वयम्, यमदूतस्ततः परम् ।
 २. प्राणुणपूजा दिनद्वयम् ।
 कृतिरूपदेशशताद् बरं यसौ ।
 १. एका क्रिया द्वयर्थकरी प्रसिद्धा । (महाभाष्ये)
 २. देहस्थो दीनः ।
 पथं भिषकशताद् वरम् ।
 १. एका क्रिया द्वयर्थकरी प्रसिद्धा ।
 २. एकं कृत्यं लोकपरलोकाफलदम् ।

एक बार मरना फिर मरने से क्या डरना ?
एक बोटी सौ कुत्ते ।
एक मछली सारे जल को गंदा करती है ।
एक स्थान में दौ तलवार नहीं समा सकती ।

एक ह्रमाम में सब नंगे ।
एक हाथ से ताली नहीं बजती ।

एक ही लकड़ी से सब को हाँकना ।
एकै साथे सब साथे, सब साथे सब जाय ।
ऐब करने को भी हुनर चाहिए ।
ऐसे बूढ़े बैल को कौन बाँध भुस देय ।
ओछे की प्रीत बालू की भीत ।
ओछे के मुँह लगना अपनी इज्जत खोना ।
ओस चाटे प्यास नहीं बुझती ।

और बात खोटी सही दाल रोटी ।
कड़वी दवाई का फल मोठा ।
कड़वे बोल न बोल ।
कन्या पराया धन होती है ।
करमगति थारे नाहिं टरे ।

करम प्रधान बिस्व रचि राखा,
जो जस करहिं सो तस फल चाखा ।
करमों की गति न्यारी ।

कल की छोड़ो आज की बात करो ।
कह रहीम परकाज हित संपति सँचहिं
सुजान ।

का करे अद्वितीय जन यद्यपि होय समर्थ ।

काल सबको खा जाता है ।
काला अक्षर भँस बराबर ।
काठ की बिल्ली तो बन गई परम्नु म्याऊँ
कौन करेगा ?
कुत्ता कुत्ते का बैरी ।

कुत्ते की दुम बारह धरस नली में रखो तो
भी टेढ़ी की टेढ़ी ।

क्षणविश्वसिनः कायाः का चिन्ता मरणे रणे ।
दे. 'एक अनार सौ बीमार' ।

एलेनैव कुपुत्रेण गलिनं जायते कुलम् ।
१. नैकस्मिन्नेव कान्तारे सिंहयोर्वसतिः क्वचिद् ।

२. बलबनोर्नैकत्र शासनम् ।

सर्वे सद्वसिनः समाः ।

१. नद्येकेन इस्तेन कालिका संप्रपद्यते । (पंचतंत्र)

२. नैकाकी कलदे क्षमः ।

योग्यायोग्योर्विवेकभावः ।

एकलक्ष्ये सर्वसिद्धिर्लक्ष्याधिक्येन कान्चन ।

पार्ष कीशलापेक्षि ।

वृत्तिहीनः य वृद्धाय को जनो भोजनं दद्यात् ।

अस्थिरं क्षुद्रसौहृदम् ।

क्षुद्रसंगतिर्माननाशिनी ।

१. न तारालोकेन तमिलनाशः ।

२. प्रालेयलेहात्र वृषाविनाशः ।

अन्नपानं परित्यज्य सर्वमन्यत्रिरर्षकम् ।

यत्तद्रे विषमिव परिणामेऽमृतोपमम् ।

ममंवाक्यमपि नोच्चरणीयम् ।

अर्धो हि कन्या परजीव एव । (अभिज्ञान०)

१. भवितव्यं भवत्येव कर्मणामीदृशी गतिः ।

२. भवितव्यानां द्वाराणि भवन्ति सर्वत्र ।

(अभिज्ञान०)

स्वकर्ममूत्रप्रथितो हि लोकः ।

दे. 'जैसी करनी वैसी भरनी' ।

१. चिन्ता गतिः कर्मणाम् ।

२. गृहना कर्मणो गतिः ।

वर्तमानने कालेन वर्तयन्ति विचक्षणः ।

१. आदानं हि विसर्गाय सतां वारिसुचामिवा । (रघु.)

२. आपन्नार्तिप्रशमनफलाः संपदो ह्युत्तमानाम् ।

(रघु.)

३. परोपकाराय सतां विभूतयः ।

असहायः समर्थोऽपि तेजस्वी किं करिष्यति ।

(पंचतंत्रम्)

सबलोऽप्येकलोऽबलः ।

सर्वः कालवशेन नश्यति ।

निरक्षरभट्टाचार्यः ।

सुलभा रम्यता लोके दुर्लभं हि गुणार्जनम् ।

१. भिक्षुको भिक्षुकं वृष्ट्वा शानवद् गुर्पुरायते ।

२. याचको याचकं वृष्ट्वा शानवद् गुर्पुरायते ।

तरुणीकच इव नीचः कौटिल्यं नैव विचहति ।

क्या बूढ़ा क्या जवान मौत केलिए सब समान
सैंटे के बल बड़ड़ा कृपे ।
श्रवाजे का गवाह मँडक ।
गंगा गणू गंगाराम जमुना गणू जमुनादास ।
शरीर को खूदा की मार ।
शरीर को संसार सूना ।

शरीर को सुख कहाँ ?

गुणी गुणों से भादर पाते हैं, आयु तथा
लक्षणों से नहीं ।
गुह बिना गत नहीं ।
शुस्सा बढ़ा चंडाल है ।

गेहूँ के साथ घुन भी पिस जाता है ।
घर का जोगी जोगड़ा बाहर जोगी सिद्ध ।

घोड़ों का घर कितनी दूर ?
सुपही और दो दो ?
चमड़ी जाय दमड़ी न जाय ।
चार दिन की खाँदनी औ फिर अँधेरी रात ।
जगत् मेव-खाल है ।
जब बुरे दिन आते हैं बुद्धि मारी जाती है ।

जब भाग्य ही सीधा न हो तो काम कैसे
सिद्ध हो ।

अब लग पैसा गाँठ में तब लग ताको यार
ज़बाँ क्षीरी मुल्क गीरी ।
ज़रूरत के बस गधे को भी बाप कहा
जाता है ।

जहाँ न जाय रवि वहाँ जाय कवि ।
जान किसे प्यारी नहीं ।
जान है तो जहान है ।

जिसका काम उसी को साजे,
और करे तो डकली बाजे ।
जिसका खाएँ उसी का गीत गाएँ ।
जिसकी हाठी उसकी भैंस ।
जिसके घर दाने उस के कमले (सूर्य)
भी स्याने ।

जितना गुड़ डालोगे उतना मीठा होगा ।
जितने मुँह उतनी बातें ।
जिनको कछू न चाहिये तेई साहंसाह ।

मृत्योः सर्वत्र तुल्यता ।
अन्यस्मात्प्रक्षयपदो मोचः प्रायेण दुःसहो भवति ।
अहो रूपमहो ध्वनिः ।
भङ्गन्ति वैतर्सी वृत्ति मानवाः कालवेदिनः ।
देवो दुर्बलघातकः ।
१. सर्वं शून्यं दरिद्रस्य ।
२. सर्वशून्या दरिद्रता ।
१. निर्बनस्य कुतः सुखम् ?
२. निर्बनता सर्वापदामास्पदम् ।
गुणाः पूजास्वानं गुणिषु न च किञ्च न च वयः ।

बिना हि शुभादेशेन सम्पूर्णाः सिद्धयः कुतः ?
१. धर्मक्षयकरः क्रोधः ।
२. क्रोधो मूलमनधीनाम् ।
अपेक्षन्ते हि विपदः किं पेलबमपेलबम् ?
स्वदेशजातस्य नरस्य नूनं गुणाधिकस्यापि भवे-
दवज्ञा ।

किं दूरं व्यवसायिनाम् ?
यथीषधं स्वादु हितं च दुर्लभम् ।
प्राणेभ्योऽप्यर्थमात्रा हि रूपणस्य नरीयसी। (कथा०)
तिष्ठत्येकां निशां चन्द्रः श्रीमान् संपूर्णमण्डलः ।
गत्तानुगतिको लोको न लोकः पारमायिकः ।
१. विनाशकाले विपरीतशुद्धिः ।
२. प्रायः समापन्नविपत्तिकाले धियोऽपि पुंसां
मलिना भवन्ति ।

१. वके विधी वद कथं व्यवसायतिष्ठिः ।
२. वाने विधी न हि फलन्त्यभिवाञ्छितानि ।
अनुसर्भो हि जीमूतश्चातर्करभित्त्तवतेः (रघु.)
कः परः प्रियवादिनाम् ?
महानपि प्रसङ्गेन नीचं सेवितुमिच्छति ।

कवयः किं न पश्यन्ति ?
कायः कस्य न वल्लभः ।
आत्मार्थं पृथिवीं त्यजेत् ।
अङ्गताः कस्य नः प्रेह नोऽप्रहमाय जायते ।
(कथानरिस्सगर)
को न याति वशं लोके मुनेषु विण्ठेन पूरितः ?
औचित्यं गणयति को विशेषकथः ।
लक्ष्मीर्यस्य रूहे स एव गजति प्रायो जगद्-
वन्द्यताम् ।

अधिकस्याधिकं फलम् ।
नवाः वापी मुखे मुसे ।
सुखमास्ते निःसृष्टः पुरुषः ।

[७११]

जीभ रोगों की जड़ है ।
जीवन का क्या भरोसा है ?
जैसा कारण वैसा कार्य ।

जैसा मुँह वैसी चपेड़ ।
जैसी करनी वैसी भरनी ।

जैसी संगत वैसी रंगत ।

जैसे को तैसा ।

जो अपनी सहायता करते हैं ईश्वर भी
उनकी सहायता करता है ।
जो गरजते हैं वे बरसते नहीं ।
जो तुव को कांटा बुनै ताहि बोन तू फूल ।
जो पैदा हुआ सो मरेगा ।

जो सुख छञ्ज के चौबारे, वह न बलरज न
बुझारै ।
जो है जिसको भावता सो ताही के पास ।
ज्ञान से बढ़ा कोई सुख नहीं ।
बूढा बंस कबीर का उपजे पूत कमाल ।
गुण्णा बूढ़ी नहीं होती ।
थोथा चना बाजे घना ।

दमड़ी की बुदिया टका सिरमुड़ाई ।

दया धर्म का मूल है ।

दिल दिल का साक्षी होता है ।

दुधार गाय की लात भली ।
बूध का जला छाछ भी फूँक कर पीता है ।
दूर के डोल सुहावने ।
धन जोबन का गरब न कीजै ।

रसभूला हि व्यग्रधयः ।

अस्थिरं जीवितं लोके ।

१. यथा बीजं तथाङ्कुरः । २. यथा वृक्षस्तथा फलम् ।

३. यादृशास्तन्त्वः कामं तादृशो जायते पटः ।

पात्रानुसारं फलम् ।

१. भद्रकृतप्राप्त्युपाद् भद्रं, अभद्रञ्चाप्यभद्रकृत ।
(कथा०)

२. भद्रमभद्रं वा कृतमस्मिन् कल्प्यते । (कथा०)

३. यो यदपति बीजं हि लभते सोऽपि तत्फलम् ।

४. कर्मोद्यत्तं फलं पुंसाम् । दे. 'कर्म प्रधानम्' ।

१. संसर्गात् दोषयुगा भवन्ति ।

२. प्रायेणाधममध्यमोत्तमगुणः संसर्गतो जायते ।

१. शठे शठ्यं समाचरेत् ।

२. अजिबं हि कुटिलेषु न नीतिः । (नैषध.)

दैवमेव हि साहाय्यं कुरुते सत्त्वशक्तिनाम् ।

नीचो वदति न कुरुते, वदति न साधुः करोत्येव ।

श्वारं पिबति पयोर्धेवंध्वम्भोधरो मधुरमम्भः ।

१. कः कालस्थ न गोचरान्तरगतः ।

२. जातस्य हि भ्रुवो मृत्युः । (गीता)

३. मरणं प्रकृतिः शरीरिणाम् ।

४. उत्पद्यन्ते विलीयन्ते ।

प्राणिनां हि निकृष्टाऽपि जन्मभूमिः परा प्रिया ।

(कथा०)

न हि विचलति मैत्री दूरतोऽपि स्थितानाम् ।

नास्ति ज्ञानात्परं सुखम् ।

कुपुत्रेण कुलं नष्टम् ।

गृष्णका तरुणाद्यते ।

१. अर्द्धो घटो घोषमुपैति नूनम् ।

२. गुणैर्विहीना बहु जल्पयन्ति ।

३. अल्पज्ञानी महाभिमानो ।

४. न सुवर्णे ध्वनिस्तादृग् यादृक्कांस्ये प्रजायते ।

१. न काचस्य कृते जानु युक्ता मुक्तामपेः श्रुतिः ।
(कथा०)

२. रत्नव्ययेन पाषाणं को हि रक्षितुमर्हति? (कथा.)

१. धर्मस्य मूलं दया ।

२. को धर्मः कृपया विना ?

विमलं कलुषीभवच्च चेतः कथयत्येव हितैषिणं
रिपुं वा ।

काश्मीरस्य कटुभाषि नितान्तरम्याः ।

पाणौ पयसा दग्धे तर्कं फुस्कृत्य पामरः पिबति ।

दूरतः पर्वता रम्याः ।

१. अस्थिरे धनयौवने ।

२. किञ्चित्कालोपभोग्यानि यौवनानि धनानि च ।

धर्महीन नर पशु समाना ।
न इधर के रहे न उधर के रहे ।

नदी भाव संजोगी भेले ।

नहिं अस कोड जग माहीं, प्रभुता पाइ
जाहि मद नाहीं ।
नहीं यह जन्म बारंबार ।
नहीं शील सम गहना वूजा ।

न होने की अपेक्षा थोड़ी अच्छी ।

निरन्तर खर्च से काल का खजाना भी
समाप्त हो जाता है ।
पर उपदेस कुसल बहुतेरे, जे आखरहिं ते
नर न घनेरे ।

पर घर कबहुं न जाइए जात घटत है जोव ।
परहित सरिस धरम नहिं भाई ।
पराधीन सपने सुख नाहीं ।
परोपकारी लोग स्वार्थ की चिन्ता नहीं करते ।

पहले तोलो पीछे बोलो ।

पाप का भांडा फूट ही जाता है ।
पैसा पापियों को पूज्य बना देता है ।
पैसा रहा न पास बार मुख से नहिं बोलें ।
पैसा हाथ की मेल है ।
पैसे से दोष भी गुण बन जाते हैं ।
प्रभुता पाइ काहि मद नाहीं ।

प्राण जायें पर धर्म न जाई ।

प्राण जायें पर वचन न जाई ।
बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद ?

बड़ों का मार्ग ही ठीक मार्ग है ।
बड़ों की बड़ी बातें ।
बड़ों की संगत से बहुत लाभ होता है ।
बढ़ी हुई (आयु) के इलाज हैं घटी हुई के नहीं ।
बदनाम जो होंगे तो क्या नाम न होगा ?
बहुत निबलमिलि बल करें, करें जु नहीं सोया ।

धर्मग हीनाः पशुभिः समानाः ।

१. इती अष्टरततो अष्टः ।
२. इदं च नारितं न परं च लभ्यते ।
३. उभयतो अष्टः ।
असंभाव्या अपि नृणां भवन्तीह समागमाः ।

(कथा०)

श्रद्धिश्चित्तविकारिणी ।

भस्मीभूतस्य भूतस्य (देहस्य) पुनरागमनं कुतः ?
१. शीलं परं भूषणम् ।
२. शीलं हि सर्वस्य नरस्य भूषणम् ।
१. बधिरान्मन्दकर्णः श्रेयान् ।
२. अभावादरूपता बरा ।
भक्ष्यमाणो निरुदयः दुमेरुपि हीयते ।

१. परोपदेशबोलायां शिष्टाः सर्वे भवन्ति वै ।
२. परोपदेशे पाण्डित्यं सर्वेषां सुकरं नृणाम् ।
धर्मं स्वीयमनुष्ठानं कस्यचित्तु महात्मनः ॥

परसदननिविष्टः को लघुत्वं न याति ?
परोपकारं पुण्यं न स्यात् क्रतुशतैरपि ।
कष्टः खलु पराश्रयः ।

१. परहितनिरतानामादरो नात्मकार्यं ।
२. परार्थप्रतिपन्ना हि नैक्षन्ते स्वार्थनुत्तमाः ॥ (कथा.)
युक्तं न वा युक्तमिदं विचिन्त्य वदेत् विपश्चिन्म-
हताऽनुरोधात् ।

नाधर्मश्चिरमृदये । (कथा.)

चाण्डालोऽपि नरः पूज्या यस्यास्ति विपुलं धनम् ।
वृक्षं क्षीणफलं त्यजन्ति विहगाः ।
उदारस्य तृणं वितम् ।

मातलंक्षिम उव प्रसदवशतो दोषा अपि स्युर्गुणाः ।

१. कौश्र्यान् प्राण्य न गर्वितः ?
२. यत्रास्ति लक्ष्मीर्विनयो न तत्र ।
त्यजन्त्युत्तमसत्त्वा हि प्राणामपि न सत्पथम् ।
(कथा०)

न चलति खलु वाक्यं सज्जनानां कदाचिद् ।

१. न भेकः कोकानन्दनीकिन्तकास्वादकोविदः ।
२. किमिष्टमशं खरसुकराणाम् ?

महाजनो येन गतः स पन्थाः ।

अहह महतां निस्सीमानश्रित्विभूतयः ।

ध्रुवं फलाय महते महता सह संगमः । (कथा०)
प्रतिकारविधानमायुयः सति श्रेषे हि फलाय कल्पते ।
येन केन प्रकारेण प्रसिद्धः पुरुषो भवेत् ।
बहूनामप्यसाराणां संहतिः कार्यसाधिका ।

[७१३]

बार्तो से काम नहीं चलता ।
बाप पर बेटा तुल्यम पर घोड़ा ।
बिना घरनी घर भूत का डेरा ।

बिना विचारे जो करे सो पाछे पछताय ।

बीती बात का शोक न करना चाहिए ।

बुरी संगत का बुरा फल ।

बूँद-बूँद पड़ने से घड़ा भर जाता है ।
भले काम में देर कैसी ?
भलों का संग करना चाहिए ।

भाग्य का मारा जहाँ जाता है विपत्ति भी
वहीं उसे जा घेरती है ।

भूख में सब कुछ स्वादु लगता है ।
भैंस के आगे बीन बजे भैंस खड़ी पगुराय ।

मन के हारे हार है मन के जीते जीत ।

मन खंगा तो कठौती में गंगा ।
मनस्वी लोग सुख-दुःखकी परवाह नहीं करते ।
मरता क्या न करता ।

महात्माओं के मन, चाणी तथा कर्म में
समानता होती है ।
माँगन गणु लो मर गणु ।

मित्र की पहचान विपद में ही होती है ।

न नश्यति तमो नाम कृतया दीपवार्तया ।
कार्यं निदानादि गुणानधीते । (नीपथ०)

१. प्रियानामो कृत्स्नं किल जगदरण्यं हि भवति ।
२. भाषाहानं गृहस्थस्य शून्यमेव गृहं मतम् ।
३. धिग्गृहं गृहिणीशून्यम् ।

१. सहसा विदधीत न क्रियामविवेकः परमापदा
पदम् ।

२. सहसा हि कृतं पापं (कार्यं) कथं मा भूदि-
पत्तये । (कथा०)

१. गतस्य शोकं नारित ।

२. गते शोको निरर्थकः ।

३. गतं शोचन्त्यपंडिताः ।

असन्मैत्री हि दोषाय कूलच्छायेन सेविता ।
(किरात०)

जलविन्दुनिपातेन क्रमशः पूर्यते घटः ।

शुभस्य शीघ्रम् ।

१. सद्भिः कुर्वीत संगतिम् ।

२. सद्भिरेव सहासीत ।

१. प्रायो गच्छति यत्र भाग्यरहितस्तत्रापदा
भाजनम् ।

२. प्रायो गच्छति यत्र दैवहतकस्तत्रैव यान्त्या-
पदः । (नीति०)

धुधातुराणां न रुचिर्न पक्वम् ।

१. अन्धस्य दीपः ।

२. यधिरस्य गीतम् ।

१. जिते चित्ते जितं जगत् ।

२. जितचित्तेन सर्वं हि जगदेतद्विजीयते ।

३. जितं जगत्केन ? मनो हि येन । (शंकराचार्य)

निवृत्तरागस्य गृहं तपोवनम् ।

मनस्वी कार्याणि न गणयति दुःखं न च सुखम् ।

१. दुमुक्षितः किञ्च करोति पापम् ?

२. क्षीणा जना निष्करुणा भवन्ति ।

३. दारिद्र्यदोषेण करोति पापम् ।

मनस्येकं वचस्येकं कर्मण्येकं महात्मनाम् ।

१. यः चनात्तं हि गौरवम् । २. याचनान्मरणं वरम्

३. वरं हि मानिनो मृत्युर्न दैन्यं स्वजनाघतः ।
(कथा०)

४. कोऽर्था मृतो गौरवम् ?

१. हेमन्तः संलक्ष्यते ह्यग्नी विशुद्धिः इवाभिकापि
वा । (रघु०)

२. मित्रस्य निकषो विपद ।

३. स सुहृद् व्यसने वः स्यात् ।

शुक्ति तथा बंधन का कारण मन ही है ।
 मूर्ख का बल मौन ।
 मूर्ख लोग मेढ़-चाल चलते हैं ।
 मूर्खों की संगत से कौन सुख पाता है ?
 मेरे मन कछु और है बिधना के कछु और ।
 मोह की फाँसी बड़ी प्रबल है ।
 मौत का कोई इलाज नहीं ।
 योग्य, योग्य के साथ ही फबता है ।
 रस्त्रिण् मेलि कपूर में हींग न होय सुरांध ।
 राम भए जेहि दाहिने सबै दाहिने ताहि ।

राम राम जपना पराया माल अपना ।
 रोग तथा शत्रु को छोटा न समझो ।

लालच बुरी बला है ।
 लोकमर्यादा का पालन अवश्य करना चाहिये।
 लोभ पापों की खान ।

विद्या पुण्य कर्मों से भाती है ।
 विधाता झूठ हो तो मित्रभी शत्रु बन जाते हैं।
 विधि का लिखा मिटाया नहीं जा सकता ।

शूरवीर मौत की परवाह नहीं करते ।
 शेर मूखा मर जाता है परन्तु घास नहीं खाता।

संगठन में बढ़ी शक्ति है ।

संतसमागम बड़ा दुर्लभ है ।
 संतों के कारज आप सँवारे ।

संतोष सबसे बड़ा धन है ।

संतोष सबसे बड़ा सुख है ।

संसार में धन-सा सम्बन्धी कोई नहीं ।

मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः ।
 बलं मूर्खस्य मौनत्वम् ।
 मूढः परमस्थयनेयबुद्धिः । (कालिदास)
 मूर्खोंहैं संगः कस्यास्ति शर्मणः ? (कथा०)
 कौ जानाति जनो जनार्दनमनोवृत्तिः कदा कीदृशी ?
 नास्ति मोहसमो निपुः ।
 अपि धन्वन्तरिविषयः किं करोति गतायुषि ?
 चकास्ति योग्येन हि योग्यसंगमः ।
 किं मर्दिनोऽपि कस्तुर्दा, लक्ष्मणो याति सौरभम् ?
 १. घावाणोऽप्यर्द्रतां सम्यग् भवन्त्यभिमुखे विधौ ॥
 २. ईशेऽनुकूले सर्वेऽनुकूलाः ।
 ३. दोषोऽपि गुणतां याति प्रभोर्भवति चेत्कृपा ।
 अहो विश्वास्य वञ्चयन्ते धूर्तैर्दृष्टमिरीश्वराः ।
 अल्पीयसोऽप्यामयतुस्थवृत्तेर्महःपकाराय रिपोर्वि-
 बृद्धिः । (किरात.)
 नास्ति तृष्णासमो व्याधिः ।
 यद्यपि शुद्धं लोकविरुद्धं नो करणीयं नाचरणीयम् ॥
 १. लोभः पापस्य कारणम् ।
 २. लोभमूलानि पापानि ।
 ३. पापानामाकरो लोभः ।
 पूर्वपुण्यतया विद्या ।
 क्रुद्धे विधौ भजति मित्रममित्रमावम् ।
 १. अमर्द्रं मर्द्रं वा विधिलिखितमुन्मूलयति कः ?
 २. यद्वेनेन ललाटपत्रलिखितं तदधीक्षितुं कः क्षमः ?
 ३. यद्वात्रा निजभालपट्टलिखितं तन्मांभितुं कः क्षमः ?
 ४. लिखितमपि ललाटे प्रोञ्छितुं कः समर्थः ?
 ५. शिरसि लिखितं लङ्घयति कः ?
 शूरस्य मरणं दृष्टम् ।
 १. न प्रणान्ते प्रकृतिविकृतिर्जायते चोत्तमानाम् ।
 २. न स्पृशति पल्लवाम्भः पञ्चशेषोऽपि कुञ्जरः
 कदापि ।
 ३. सर्वैः कृच्छ्रगतोऽपि दाञ्छति जनः स्ववान्तरूपं
 फलम् ।
 पञ्चभिर्मिलितैः किं यज्जगतीह न साध्यते ।
 (नैषध.)
 पुण्यैरेव हि लभ्यते वृकृतिभिः सस्मंगतिर्दुर्लभाः ।
 दिवेनैव हि साध्यन्ते सदर्थाः शुभकर्मणाम् ।
 (कथा.)
 १. संतोषतुल्यं धनमस्ति नान्यत् ।
 २. संतोष एव पुत्रवश्य परं निधानम् ।
 ३. संतोषः परमं धनम् ।
 ४. न तोषात् परमं सुखम् ।
 ५. संतोषः परमं सुखम् ।
 अर्थो हि लोके पुरुषस्य वस्तुः ।

सच की ही जीत होती है ।
सदाचार सब से बड़ा धर्म है ।
सबको काम प्यारा है, काम प्यारा नहीं ।
सब लोग गुण तो किसी में नहीं होते ।
सब सब कुछ नहीं जानते ।
साँच बराबर तप नहीं झूठ बराबर पाप ।
साँप निकल गया लकड़ार पीटा करो ।

सार सार को गहि रहे थोधा देय उड़ाय ।

सारी जाती देखकर आधी लेय बचाय ।

सारी रात रोते रहे मरा एक भी नहीं ।
सास-बहू में मेल कहाँ ?
सीख न दीजें बनरा जो बए का घर जाय ।

सीधी उँगलियों से घी नहीं निकलता ।

सुख-दुःख सब के साथ लगे हुए हैं ।

सुत बिना सूना रोह ।

सूरदास जाको जासों हित सोई ताहि सुहाता ।
सोने में सुगन्ध ।

स्वभाव नहीं बदलता ।

होनहार फिरती नहीं होवे बिस्से चीस ।

हो विधना प्रतिकूल जब तब ऊँट चढ़े पर
कूकर काटत ।

सत्यमेव जयते ।

आचारः परमो (प्रथमो) धर्मः ।

सर्वे कार्यवशाज्जनोऽभिरमते तत्करय को बल्लभः ।
नैकत्र सर्वां पुणसंनिपातः ।

१. न हि सर्वविदः सर्वे । २. सर्वे सर्वं न जानन्ति ।
नास्ति सत्यद्वरो धर्मः, नानृतसि पतकं परम् ।

१. चौरे गते वा किमु सावधानम् ?

२. प्रयोगते कि खलु सेतुबन्धः ।

१. सारं गृह्णन्ति पण्डिताः ।

२. इंसो यथा क्षीरमिवाम्बुमध्यात् ।

३. इंसो हि क्षीरमादत्ते तस्मिन्ना बर्जयत्यपः ।
(अभिमान.)

१. सर्वनाथे समुत्पथे, अर्द्धं त्यजति पण्डितः ।

२. आमस्यार्थं कुलं त्यजेत् ।

३. त्यजेदेकं कुलस्यार्थं ।

परमार्थमविज्ञाय न भेतव्यं क्वचिन्तुभिः । (कथा.)
प्रायः अश्वस्तुषयोर्न दृश्यते सौहार्दं लोके ।

१. उपदेशो हि मूखाणां प्रकोपाय न शान्तये ।

२. हिनोपदेशो मूलस्य कोपायैव न शान्तये ।
(कथा.)

३. मूखाणां बोधको रिपुः ।

१. आर्धं हि कुटिलेषु न नीतिः । (नैषध.)

२. शाम्भवे प्रत्यपकारेण नोपकारेण दुर्जनः ।

कस्यात्यन्तं सुखमुपनतं दुःखमेकान्ततो वा ।

नीनैर्गच्छत्युपरि च दक्षा नक्तनेमिक्रमेण । (मेघ.)

१. अपु प्रस्य गृहं शून्यम् ।

२. पुत्रहीनं गृहं शून्यम् ।

यदेव रोचते यस्मै भवेत् तत्तस्य सुन्दरम् ।

केवलोऽपि सुभगो नवाम्बुदः, किं पुनस्त्रिदशचाम्बु-
लच्छिदः । (रघु.)

१. यावृशो यः कुनो धात्रा भवेत्तद्दृश एव सः ।

२. या यस्य प्रकृतिः स्वभावजनिता केनपि न
त्यज्यते ।

३. स्नापितोऽपि बहुशो नदीतल्लर्गर्भः किमु दृश्यो
भवेत् स्वचित् ?

१. प्राचीनकर्म बलवन्मुनयो वदन्ति ।

२. साध्यासाध्याविचारं हि नेश्रते भवितव्यता ।
(कथा.)

३. हतविधिपरिपाकः केन वा लह्वनीयः ?

४. भवितव्यता बलवती ।

५. विधिरहो बलवःमिति मे मतिः ।

अहो विधौ विपर्यस्ते न विपर्यस्यतीह किम् ।

तृतीय परिशिष्ट

अंग्रेजी संस्कृत शब्दावली

A

Academy—१. शिक्षालयः २. साहित्य-
विज्ञान-कला, परिषद् (स्त्री.) ।
Accountancy—लेखा-संख्यान, कर्मन् (न.) ।
Account—१. लेखा २. विवरणम् ।
Accountant—लेखापालः ।
Accountant general—महालेखापालः ।
Acknowledgment—प्रतिपत्रम् ।
Act—अधिनियमः ।
Acting—१. कार्यकारिन् २. अभिनयः ।
Adhoc committee—तदर्थसमितिः (स्त्री.) ।
Adjournment motion—स्थगनप्रस्तावः ।
Administration—प्रशासनम् ।
Administrator—प्रशासकः ।
Adult—वयस्कः, प्रौढः ।
Adult franchise—वयस्कमतधिकारः ।
Advance—अग्रिमधनम् ।
Advocate—अधिवक्त्रु (पुं.) ।
Advocate general—महाअधिवक्त्रु ।
Aesthetics—सौन्दर्यशास्त्रम् ।
Ailidavit—शपथपत्रम् ।
Affiliation—*सम्बन्धनम्, सम्बन्धीकरणम् ।
Agency—अभिकरणम् ।
Agenda—कार्यसूची ।
Agent—अभिकर्तु (पुं.) ।
Agitation—आन्दोलनम् ।
Agreement—१. सविदा २. साम्प्रत्यम् ।
Air-conditioned—नियन्त्रिताताप ।
Air-port—वायुपत्तनम् ।
Air-tight—*पक्व वात, रोधक ।
All India Radio—आकाशवाणी ।
Allotment officer—आवंटनाधिकारिन् ।
Alphabetically—वर्णक्रमानुसारं, वर्ण-
मालाक्रमेण ।

Amenity—सुख-सुविधाः ।
Anniversary—वार्षिकोत्सवः ।
Appeal—पुनरुद्देशनम्, पुनन्यायप्रार्थना ।
Application—आवेदनपत्रम् ।
Appointment—नियुक्तिः (स्त्री.) ।
Archaeologist—पुरातत्त्वज्ञः ।
Architect—वास्तुकारः ।
Aristocracy—अभिजात-कुलीन, -तन्त्रम् ।
Assembly—सभा ।
Assembly, legislative—विधानसभा ।
Assessment officer—करनिर्धारणाधि-
कारिन् ।
Assistant controller/director/
secretary—सहायक, -नियंत्रकः-निदेशकः-
सचिवः ।
Assosiate member—सहसदस्यः ।
Atlas—मानचित्रावली ।
Atmosphere—१. वायुमण्डलम् २. वाता-
वरणम् ।
Attesting officer—साक्ष्यांकनाधिकारिन् ।
Attorney general—महान्ययवादिन् ।
Audience—श्रोतुवर्गः ।
Audit—लेखापरीक्षा ।
Auditor—लेखापरीक्षकः ।
Authority—१. प्राधिकारिन् २. प्राधिकारः ।
Autocracy—एकतन्त्रम् ।
Autonomy—स्वायत्तशासनम्, स्वायत्तता ।
Aviation—विमाननम्, विमानयात्रा ।

B

Balance sheet—तुलनपत्रम् ।
Ballot-box—मतपेटिका ।
Ballot-paper—मतपत्रम्, शलाका ।
Bank—अधिकोषः ।
Banker—अधिकोषिन् ।

Basic Education—आधारिकशिक्षा ।
 Bibliography—ग्रन्थसूची ।
 Bill—१. विधेयकम् २. प्राप्यकम् ।
 Biology—जीवविज्ञानम् ।
 Birth control—सन्ततिनिरोधः ।
 Black-out—बहिर्बन्धकारः ।
 Blood-pressure—रक्तचापः ।
 Board—मण्डली ।
 Board, District—मण्डल, मण्डली-पालिका ।
 Board, Municipal—नगर, मण्डली-पालिका ।
 Board of Directors—निदेशकमंडली ।
 Body—निकायः ।
 Bonafied—विश्वस्त, प्रामाणिक, सदाशय ।
 Bonafides—विश्वस्तता, सदाशयता, प्रामा-
 णिकता ।
 Bond—बन्धपत्रम् ।
 Bonus—अधिलभांशः ।
 Booking-office—टिकटगृहम् ।
 Broad-cast—प्रसारणम् ।
 Budget—आयव्ययकम् ।
 Bye-election—उपनिर्वाचनम् ।
 Bye-law—उपविधिः ।
 By-post—पत्रविभागेन ।

C

Cabinet—मन्त्रिमण्डलम् ।
 Cadet—सैन्यछात्रः ।
 Calculator—गणकः ।
 Calendar—तिथिपत्रम्, पंचांगम् ।
 Calory—उष्णः ।
 Candidate—१. परोक्षार्थी २. अभ्यर्थी
 ३. पदार्थी ।
 Cantonment—कटककम् ।
 Capital—मूलधनम् ।
 Capsule—पुटी ।
 Case—काण्डः-डम् ।
 Cash-Memo—विक्रयपत्रम्, विक्रयिका ।
 Casting vote—निर्णायकं मतम् ।
 Casualty—हताहत ।
 Cell—१. कोशणुः २. कुटी ।
 Census—जनगणना ।
 Central Investigation Agency—
 केन्द्रियान्वेषणाधिकरणम् ।

Century—१. शती २. शताब्दी ।
 Cess—उपकरः ।
 Chairman—सभापतिः ।
 Chamber of Commerce—वाणिज्य-
 मंडलम् ।
 Chancellor—कुलाधिपतिः ।
 Chancellor, Pro-vice—उपकुलपतिः ।
 Chancellor, Vice—कुलपतिः ।
 Charge d' Affairs—कार्यदूतः ।
 Charge-sheet—आरोपपत्रम् ।
 Chart—१. रेखापत्रम् २. चित्रफलकम् ।
 Charter—अधिकारपत्रम् ।
 Chartered Accountant—अधिकार-
 पत्रितलेखपालः ।
 Cheque—चेकम्, देयदेशः ।
 Cheque, Bearer—वाहकचेकम् ।
 Cheque, Blank—निरंकचेकम् ।
 Cheque, Crossed—रेखितचेकम् ।
 Cheque, Order—आदेशचेकम् ।
 Chief Commissioner—मुख्यायुक्तः ।
 Chief Judge—मुख्यन्यायाधीशः ।
 Chief Justice—मुख्यन्यायाधिपतिः ।
 Chief Minister—मुख्यमन्त्रिन् (पुं.) ।
 Chief of Air staff—वायुसेनाध्यक्षः ।
 Chief of Army staff—स्थलसेनाध्यक्षः ।
 Chief of Naval staff—नौसेनाध्यक्षः ।
 Chief of Protocol—नवाचारप्रमुखः ।
 C. I. D.—गुप्तचरविभागः ।
 Circular—परिपत्रम् ।
 Citizen—नागरिकः ।
 Citizen-ship—नागरिकता ।
 Civil—नागरिक, असैनिक ।
 Civil Code—व्यवहार-संहिता ।
 Civil Court—व्यवहार न्यायालयः, व्यवहा-
 रालयः ।
 Civilization—सभ्यता ।
 Civil Service—नागरिकसेवा ।
 Clause—खण्डः-डम् ।
 Clock tower—घण्टा, गृहम्-स्तम्भः ।
 Code—संहिता ।
 Collector—समाहर्तृ, संधारकः ।
 Commerce—वाणिज्यम् ।

Commission—१. आयोगः २. वर्तनम् ।	Copyright—प्रकाशनाधिकारः ।
Commissioner—आयुक्तः ।	Corporation—निगमः ।
Committee—समितिः (स्त्री.) ।	Cost—परिचयः ।
Committee, Executive, working— कार्यकारिणी समितिः (स्त्री.), कार्यसमितिः ।	Cottage Industry—कुटीरोद्योगः ।
Committee, Select—प्रवरसमितिः (स्त्री.) ।	Council—परिषद् (स्त्री.) ।
Committee, Standing—स्थायिसमितिः (स्त्री.) ।	Council, Advisory—परामर्शपरिषद् (स्त्री.) ।
Commonwealth—राष्ट्रमण्डलम् ।	Council of Ministers—मंत्रिपरिषद् (स्त्री.) ।
Communication—संचारः ।	Council of States—राज्यपरिषद् (स्त्री.) ।
Communiqué—विज्ञप्तिः (स्त्री.) ।	Court—न्यायालयः ।
Communism—साम्यवादः ।	Court, Criminal—दण्डन्यायालयः ।
Community Development—सामु- दायिक विकासः ।	Court, District—मण्डलन्यायालयः ।
Company—समवायः ।	Court, Federal—संघीयन्यायालयः ।
Compensation—प्रतिकरः, क्षतिपूर्तिः (स्त्री.) ।	Court, High—उच्चन्यायालयः ।
Complaint—१. अभिवोगः २. परिवादः, परिवेदना ।	Court, Martial सैनन्यायालयः ।
Computer—संगणकम् ।	Court of Appeal—पुनर्विचारन्यायालयः ।
Confederacy—राज्यसंघः ।	Court of Wards—प्रतिपालकाधिकरणम् ।
Confederation—राज्यमण्डलम् ।	Court, Revenue—राजस्वन्यायालयः ।
Conference—सम्मेलनम् ।	Court, Session—सत्रन्यायालयः ।
Constituency—निर्वाचनक्षेत्रम् ।	Court, Subordinate—अधीनन्यायालयः ।
Constituent Assembly—संविधानसभा ।	Court, Supreme—उच्चतमन्यायालयः ।
Constitution—संविधानम् ।	Credential—प्रत्ययपत्रम् ।
Consul—वाणिज्यदूतः ।	Credit—१. प्रत्ययः (हिं. साल) २. आकलनम् ।
Context—सन्दर्भः, प्रसंगः, प्रकरणम् ।	Criminal Law—दण्डविधिः (पुं.) ।
Continent—महाद्वीपः-पम् ।	Culture—संस्कृतिः (स्त्री.) ।
Contingency fund—आकस्मिकतानिधिः, संबोधकनिधिः ।	Currency—चलार्थः, मुद्रा ।
Contract—संविदा ।	Custodian—अभिरक्षकः ।
Contribution—अंशदानम् ।	Custody—अभिरक्षा ।
Control—नियन्त्रणम् ।	Custom duty—सोमा, शुल्कः-शुल्कम् ।
Controller General—महानियन्त्रकः ।	D
Convassing—उपार्थनम् ।	Daily diary—दैनिकी ।
Convener—संयोजकः ।	Debit—विकलनम् ।
Convention—१. रूढिः (स्त्री.) २. संगमनम् ।	Decentralization—विकेन्द्रीयकरणम् ।
Co-operation—सहयोगः । सहकारिता ।	Declaration—घोषणा ।
Co-operative society—सहकारिसंस्था ।	Decree—आज्ञप्तिः (स्त्री.) ।
Co-ordination—समन्वयः ।	Deed—विलेखः ।
Copy—१. प्रतिलिपिः (स्त्री.) २. प्रतिः (स्त्री.) ।	Defence—रक्षा ।
	Delegate—प्रतिनिधिः ।
	Delegation—प्रतिनिधिमण्डलम् ।
	Democracy—लोकतन्त्रम् ।

Demonstrator—निदर्शकः ।
 Deputation—शिष्टमण्डलम् ।
 Deputy Commissioner—उपायुक्त ।
 Deputy Speaker—उपाध्यक्षः ।
 Designer—रूपकारः ।
 Despatcher—प्रेषकः ।
 Development Block—विकासखंडः-टम् ।
 Diplomacy—राजनयः, कूटनीतिः (स्त्री.) ।
 Directorate—निदेशालयः ।
 Director General—महानिदेशकः ।
 Director, Managing—प्रबन्धनिदेशकः ।
 Disposal—व्ययनम् ।
 Disqualification—अनर्हता, अयोग्यता ।
 District—मण्डलम् ।
 District Board—मण्डलमण्डली ।
 Dividend—लाभोशः ।
 Division—प्रभागः ।
 Divorce—विवाहविच्छेदः, विविच्छेदः ।
 Document—प्रलेखः ।
 Draft—१. प्रारूपम् २. धनार्पणादेशः ।
 Draftsman—प्रारूपकारः ।
 Drainage—जलनिकासः ।
 Drive—प्रभियानम् ।
 Duplicate Copy—अनुलिपिः (स्त्री.) ।
 Duty—१. शुल्कः-कम्, २. कर्तव्यम् ।
 Duty, Custom—सीमाशुल्कः-कम् ।
 Duty, Death—मरणशुल्कः-कम् ।
 Duty, Estate—संपत्तिशुल्कः-कम् ।
 Duty, Excise—उत्पादशुल्कः-कम् ।
 Duty, Export—निर्यातशुल्कः-कम् ।
 Duty, Import—आयातशुल्कः-कम् ।
 Duty, Stamp—मुद्राशुल्कः-कम् ।
 Duty, Succession—उत्तराधिकारशुल्कः-कम् ।

E

Election—निर्वाचनम् ।
 Election, Bye—उपनिर्वाचनम् ।
 Election Commission—निर्वाचना-योगः ।
 Election, Direct—प्रत्यक्षनिर्वाचनम् ।
 Election, Indirect—परोक्षनिर्वाचनम् ।
 Election, Campaign—निर्वाचनाभि-यानम् ।

Election, Tribunal—निर्वाचनाधिक-रणम् ।
 Elector—निर्वाचकः ।
 Electoral Roll—निर्वाचकसूची ।
 Electorate—१. निर्वाचनक्षेत्रम् ।
 २. निर्वाचकसङ्घः ।
 Electorate, Joint—संयुक्तनिर्वाचनपद्धतिः (स्त्री.) ।
 Electorate, Separate—व्यह्निर्वाचन-पद्धतिः (स्त्री.) ।
 Electorate, Separate—व्यह्निर्वाचन-पद्धतिः (स्त्री.) ।
 Embassy—राज., दूतवासः ।
 Emergency—आपातः ।
 Emigration—परावासः ।
 Emporium—आपणः ।
 Employment Exchange—नियोजन-कार्यालयः ।
 Enfranchisement—प्रताधिकारदानम् ।
 Enquiry clerk—पृच्छलिपिकः ।
 Equator—भूमध्यरेखा ।
 Establishment Officer—स्थापना-धिकारिन् ।
 Estates—सम्पद् (स्त्री.) ।
 Excise—उत्पादशुल्कः-कम् ।
 Executive Engineer—कार्यपालकाभि-यन्म् ।
 Ex-officio—पदेन ।

F

Family Planning Centre—परिवार-नियोजनकेन्द्रम् ।
 Federal!—संघीय ।
 Federation—संघः ।
 Fermentation—किण्वनम् ।
 Feudalism—सामन्तवादः ।
 Finance—वित्तम् ।
 Financial—वित्तीय ।
 Financial Year—वित्तवर्षः-वर्षम् ।
 Fine—अर्थदण्डः ।
 Fire Service—अग्निशमनसेवा ।
 Flying Squad—उड्डनदलः-कम् ।
 Foreign Exchange—विदेशीयवित्तिमयः ।

[७२०]

Forensic Science—न्यायवैद्यकविज्ञानम् ।

Form—प्रपत्रम् ।

Formula—सूत्रम् ।

Franchise—मताधिकारः ।

Freedom of press—सुद्वगस्वातन्त्र्यम् ।

Freedom of speech—भाषणस्वातन्त्र्यम् ।

Function—कृत्यम् ।

Fund—निधिः ।

G

Gallery—दीर्घा ।

Gate-keeper—द्वारपालः ।

Gate-pass—द्वारपत्रम् ।

Gazette—राजपत्रम् ।

Gazetteer—राजपत्रित-विवरणम् ।

Geologist—भू-विज्ञानिन्-वैज्ञानिकः ।

Germ—कीटपुः ।

Glacier—हिमनदी ।

Government—शासनम् ।

Government, Hereditary—पैतृक-शासनम् ।

Government, Interim—अन्तरिम-शासनम् ।

Government, local self—स्थानीयस्वा-यत्तशासनम् ।

Government, Parliamentary—संस-दीयशासनम् ।

Government, Presidential—राष्ट्र-पतीय-प्रधानीय-शासनम् ।

Government, self—स्वशासनम् ।

Government, unitary—एकीयशासनम् ।

Governor—१. राज्यपालः २. शासकः ।

Grant—अनुदानम् ।

Grant-in-aid—सहायकानुदानम् ।

Gratuity—उपदानम् ।

Guarantee—प्रत्याभूतिः (स्त्री.) ।

H

Habeas corpus—बन्दिप्रत्यक्षीकरणम् ।

Handicrafts—हस्तशिल्पम्, हस्तकला ।

Head-Quarter—मुख्यालयः, प्रधान-कार्यालयः ।

Hereditary—पैतृक, आनुवंशिकः ।

Honorarium—मानदेयम् ।

Horticulturist—उद्यानकृषिविशेषज्ञः ।

Hostess—सत्कारिणी ।

House—१. सदनम् २. गृहम् ।

House of people—लोकसभा ।

Housing Department—आवासविभागः ।

I

Illiteracy—निरक्षरता ।

Immigrant—आवासिन् ।

Improvement Trust—नगरसुधार-मण्डलम् ।

Incharge—प्रचारिन् ।

Indian Administrative Service—भारतीय-प्रशासनिकसेवा ।

Indian Council of Agricultural Research—भारतीयकृष्यनुसन्धानपरिषद् (स्त्री.) ।

Indian Council of Medical Research—भारतीयचिकित्सानुसन्धानपरिषद् (स्त्री.) ।

In due course—यथासमयम् ।

Industry—उद्योगः ।

Industry, cottage—कुटीरोद्योगः ।

In order of merit—योग्यताक्रमेण ।

Inquiry—परिप्रश्नः ।

Inspection—निरीक्षणम् ।

Institute—संस्थानम् ।

Institution—संस्था ।

Insurance—बीमा ।

International—अन्तर-राष्ट्री(ष्ट्रिय)म् ।

In toto—पूर्णतः, पूर्णतया ।

Investigator—अन्वेषकः ।

J

Judge—न्यायाधीशः ।

Judge, additional—अपर-अतिरिक्त-न्यायाधीशः ।

Judge, extra—अतिरिक्तन्यायाधीशः ।

Judiciary—न्यायपालिका ।

Justice—१. न्यायः २. न्यायपतिः, न्याया-धिपतिः ।

Justice, chief—मुख्य-न्यायपतिः-न्याया-धिपतिः न्यायाधीशः ।

L

Labour Commissioner—श्रमायुक्तः ।

[७२१]

Land-revenue—भूराजस्वम् ।	Minerologist—खनिज, विज्ञानिन्-वैज्ञानिकः ।
Latitude—अक्षांशः ।	Minister—मन्त्रिन् ।
Law—विधिः (पुं.) ।	Ministry—१. मंत्रालयः २. मंत्रिमण्डलम् ।
Law & order—विधिव्यवस्थे (स्त्री. द्वि.) ।	Minor—अल्पवयस्क ।
Law Commission—विधि-आयोगः ।	Minority—१. अल्पसंख्यकवर्गः २. अल्प-मतम् ।
Legation—दूतावासः ।	Mission—१. उद्देश्यम्, लक्ष्यम् २. प्रचारक-मण्डलम् ।
Legislation—विधानम् ।	Monopoly—एकाधिकारः ।
Legislative assembly—विधानसभा ।	Motion—प्रस्तावः ।
Legislative council—विधानपरिषद् (स्त्री.) ।	Motion of no-confidence—अविश्वास-प्रस्तावः ।
Legislature—विधानमण्डलम् ।	Multipurpose—बहुदेशीय ।
Letter of Introduction—परिचयपत्रम् ।	Municipal area—नगरक्षेत्रम् ।
Levy—१. आरोपणम् २. उद्ग्रहणम् ।	Municipal commissioner—नगर-पालः, नगरपालिकासदस्यः ।
Liaison officer—सम्पर्काधिकारिन् ।	Municipal corporation—नगरनिगमः, नगरमहापालिका ।
Licence—अनुज्ञप्तिः (स्त्री.) ।	Municipality—नगरपालिका ।
Lieutenant governor—उपराज्यपालः ।	Museum—संग्रहालयः ।
Life Insurance Corporation—जीवनबीमनिगमः ।	N
Literacy—साक्षरता ।	Nation—राष्ट्रम् ।
Local board—स्थानीयमण्डली ।	Nationalization—राष्ट्रीयकरणम् ।
Local body—स्थानीयनिकायः ।	Nationality—राष्ट्रीयता ।
Local government—स्थानीयशासनम् ।	National Physical Laboratory—राष्ट्रीयभौतिकप्रयोगशाला ।
Longitude—रेखांशः ।	Nomination—नमोनयनम् ।
M	Nominee—नमोनीत ।
Major—वयस्क ।	Notice—१. सूचना २. सूचनापत्रम् ।
Majority—१. बहुमतम् २. बहुसंख्या ।	Notification—अभिघृत्तनम् ।
Mandamus—परमादेशः ।	Notified area—(अधि-) सूचितक्षेत्रम् ।
Manifesto—आविष्यपत्रम् ।	O
Marketing officer—पणनाधिकारिन् ।	Oasis—मरुस्थानम् ।
Maternity home—प्रसवशाला ।	Observatory—वैधशाला ।
Matriarchy—मातृतन्त्रम् ।	Office—१. कार्यालयः २. पदम् ।
Medical Science—अयुर्-चिकित्सा, विज्ञानम् ।	Officer—अधिकारिन् ।
Member—सदस्यः ।	Officer-in-charge—प्रभाराधिकारिन् ।
Memo—ज्ञापः ।	Official Language—राजभाषा ।
Memorandum—ज्ञापकम्, स्मृतिपत्रम् ।	Officiating—स्थानापन्न ।
Meteorological Department—ऋतु-विज्ञान-विभागः ।	Oligarchy—अल्पतन्त्रम् ।
Meteorologist—ऋतु, विज्ञानिन्-वैज्ञानिकः ।	Ordinance—अध्यादेशः ।
Migration—प्रव्रजनम्, प्रवासः ।	Organization—संघटनम् ।
Military Engineering Service (M. E. S.) सैनिकयांत्रिकसेवा ।	

Out door patients Department—

बहिरंगरोगविभागः ।

P

Pact—वचनपत्रम् ।

Parliament—संसद् (स्त्री.) ।

Parliamentary secretary—संसदीय-
सचिवः ।

Pass—पारणम् ।

Passport—पारपत्रम् ।

Patents—एकत्वम् ।

Patriarchy—पितृतन्त्रम् ।

Patron—संरक्षकः ।

Penalty—शक्तिः (स्त्री.) ।

Pending—१. लम्बित २. लम्बमान ।

Pension—निवृत्तिवेतनम् ।

Personal Assistant—वैयक्तिकसहायकः ।

Petition—याचिका ।

Planning Commission—योजनायोगः ।

Plebiscite—जनमतसंग्रहः ।

Police—आरक्षकः ।

Police force—आरक्षकबलम् ।

Police station—आरक्षकस्थानम् ।

Poll—मतदानम् ।

Polling station—मतदानस्थानम् ।

Portfolio—संविभागः ।

Ports department—पत्तनविभागः ।

Post—१. पदम् २. पत्रम् ।

Post-office—पत्रालयः ।

Preference—अभिमानम् ।

Prerogative—परमाधिकारः ।

President—१. राष्ट्रपतिः २. प्रधानः ।

Prime Minister—प्रधानमन्त्रिन् ।

Post & Telegraph Depatt.—पत्रतार-
विभागः ।

Private Secretary—निजसचिवः ।

Privilege—विशेषाधिकारः ।

Privy purse—राजकृतिः (स्त्री.) ।

Procedure—प्रक्रिया ।

Proceedings—* १. कार्यावली, कृत्यावली
* २. कृत्यावलीविवरणम् ।

Proclamation—उद्घोषणा ।

Project—प्रयोजना ।

Promissory note—वचनपत्रम् ।

Proof-reader—मुद्रितपत्रशोधकः ।

Provident fund—भविष्यनिधिः (पुं.) ।

Provision—१. उपबन्धः २. अन्नसामग्री ।

Provisional—अन्तःकालीन ।

Proxy—प्रतिपत्री ।

Public Health—लोकस्वास्थ्यम् ।

Publicity—प्रचारः ।

Public Relations Officer—जन-
सर्पकाधिकारिन् ।

Public Service Commission—लोक-
सेवाऽऽयोगः ।

Public Services—लोकसेवाः ।

Public Works Department—लोक-
निर्माणविभागः ।

Q

Quality Control Officer—कोटि-
नियंत्रकाधिकारिन् ।

Quarantine—संगरोधः ।

Quorum—गणपूर्तिः (स्त्री.) ।

Quota—अभ्यंशः, नियतांशः ।

R

Railway Board—रेलपथमंडली ।

Receptionist—स्वागतकारः ।

Recommendation—अनुशंसा ।

Record—अभिलेखः ।

Records-keeper—अभिलेखपालः ।

Recruitment—* सैन्यप्रवेशः ।

Reference—निर्देशः ।

Referendum—परिपुच्छ ।

Regent—राजपः ।

Regional—क्षेत्रीय ।

Register—पंजी ।

Registered—पंजीकृत ।

Registrar—पंजीकारः, कुलसचिवः ।

Registration—पंजीकरणम् ।

Regulation—विनियमः ।

Rehabilitation Ministry—पुनर्वास-
मंत्रालयः ।

Reminder—अनुस्मारकम् ।

Report—प्रतिवेदनम् ।

Representation—प्रतिनिधानम् ।

Representative—प्रतिनिधिः ।
 Republic—गणराज्यम् ।
 Requisition—अधिग्रहणम् ।
 Reservation—रक्षणम्, प्ररक्षणम् ।
 Reserved seat—रक्षित-आरक्षित, स्थानम् ।
 Retirement—निवृत्तिः (स्त्री.) ।
 Returning officer—निर्वाचनाधिकारिन् ।
 Revenue—राजस्वम् ।
 Review—पुनर्विलोकनम् ।
 Revision—पुनरीक्षणम् ।
 Rule—नियमः ।

S

Safeguard—सुरक्षणम् ।
 Sales Tax—विक्रयकरः ।
 Savings—व्ययवृत्तिः (स्त्री.) ।
 Savings bank—* व्यावृत्त्यधिकोषः ।
 Schedule—अनुसूची ।
 Scheduled caste—अनुसूचितजातिः
 (स्त्री.) ।
 Scheduled Tribe—अनुसूचितजनजातिः
 (स्त्री.) ।
 Secondary Education Board—माध्य-
 निकशिक्षणमंडली ।
 Secretariate—सचिवालयः ।
 Section officer—अनुभागधिकारिन् ।
 Secular—धर्मनिरपेक्ष, वैदिक ।
 Security—१. प्रतिभूतिः (स्त्री.) २. सुरक्षा ।
 Security council—सुरक्षापरिषद् (स्त्री.) ।
 Self-determination—आत्मनिर्णयः ।
 Session—सत्रम् ।
 Sitting—उपवेशः, * उपविष्टिः (स्त्री.) ।
 Small Scale Industries—लघूद्योगाः ।
 Socialism—समाजवादः ।
 Social Welfare—समाजकल्याणम् ।
 Sovereign—प्रभुः ।
 Sovereign democratic republic—
 संपूर्णप्रमुखसम्पन्नलोकतंत्रात्मकगणराज्यम् ।
 Speaker—१. अध्यक्षः (लोकसभादीनान्)
 २. वक्तु (पुं.) ।
 Staff—कर्मचारिवृन्दम् ।
 State—१. राज्यम् । २. राष्ट्रम् ।
 State, Buffer—अन्तःस्थराष्ट्रम् ।

State, Totalitarian—एकदलराष्ट्रम् ।
 State Trading Corporation—राज्य-
 व्यापारनिगमः ।
 State, Unitary—एकीयराष्ट्रम् ।
 State, Welfare—हितकारिराष्ट्रम् ।
 Statistician—सांख्यिकः ।
 Statistics—सांख्यिकी ।
 Statute—संविधिः (पुं.) ।
 Stenographer—आद्युलिपिकः ।
 Steno-typist—आद्युटककः ।
 Stock Exchange—श्रेष्ठिचत्वरम् ।
 Store keeper—भाण्डारिन् ।
 Subcontinent—उपमहादीपः-पम् ।
 Suffrage—प्रताधिकारः ।
 Suffrage, Universal—सर्वमतधिकारः ।
 Summon—आह्वानम् ।
 Superintendent—अधीक्षकः ।
 Supervisor—पर्यवेक्षकः ।
 Supplies—पूर्तिः, संभरणम् ।
 Suspension—निलम्बनम् ।
 Surcharge—अधिकरः ।
 Survey—सर्वेक्षणम् ।
 Syndicate—अभिषद् (स्त्री.) ।

T

Tabulator—तालिक-सारणी, कारः ।
 Tariff—शुल्कसूची ।
 Tax—करः ।
 Tax, Direct—प्रत्यक्षकरः ।
 Tax, Entertainment—प्रमोदकरः,
 मनोरंजनकरः ।
 Tax, Indirect—परोक्षकरः ।
 Tax, Export—निर्यातकरः ।
 Tax, Income—आयकरः ।
 Tax, Sales—विक्रयकरः ।
 Tax, Super—अतिकरः ।
 Tax, Terminal—सीमाकरः ।
 Technician—प्रविधितः ।
 Technique—प्रविधिः ।
 Tele communication—दूरसंचारः ।
 Telegraphist—तारसंकेतकः ।
 Telephone Exchange—दूरभाषकेन्द्रम् ।
 Tenure—पदावधिः (पुं.) कार्यकालः ।

Territory—राज्यक्षेत्रम् ।
Terrorism—आतङ्कवादः ।
Terrorist—आतङ्कवादिन् ।
Theocracy—धर्मतन्त्रम् ।
Theory—सिद्धान्तः ।
Through proper channel—विधिवत् ।
Time keeper—समयपालः ।
Toll—पथकरः ।
Totalitarianism—एकदलवादः ।
Tourist—पर्यटकः ।
Tourist Depatt—पर्यटनविभागः ।
Tracer—अनुरेखकः ।
Tractor—कर्षकरथः ।
Trade mark—व्यापारचिह्नम् ।
Trade Union—कार्मिकसंघः ।
Traffic—यातायातम् ।
Training—प्रशिक्षणम् ।
Training, Technical—प्रविधि-प्रशिक्षणम् ।
Tramcar—रथ्यायनम् ।
Transfer—१. स्थानान्तरणम् २. हस्तान्तरणम् ।
Transition—संक्रमणम् ।
Transport—परिवहनम् ।
Treaty—संधिः (पुं.) ।
Tribe—जनजातिः (स्त्री.) ।
Tribunal—न्यायाधिकरणम् ।
Tropic of Cancer—कर्करेखा ।
Tropic of Capricorn—मकररेखा ।
Trust—न्यासः ।
Trustee—न्यास-निक्षेप, धारिन् ।
Tube well—मलकूपः ।
Typist—टंककः ।

U

Under Secretary—अवरसचिवः ।
Union—संघः ।
Union Public Service Commission—संघलोकसेवायोगः ।
Unit—एककम् ।
United Nations Organization—संयुक्तराष्ट्रसंघः ।

V

Vacancy—१. रिक्तस्थानम् २. रिक्तिः (स्त्री.) ३. रिक्तता ।
Verification officer—सत्यापनाधिकारिन् ।
Veto—प्रतिषेध-रोध, अधिकारः ।
Vice President—उपरप्रभृतिः ।
Village Industry—ग्रामोद्योगः ।
Visas—दृष्टांकः ।
Vote—मतम् ।
Vote by ballot—गुप्तमतदानम् ।
Vote of censure—निन्दाप्रस्तावः ।
Voter—मतदातृ (पुं.) ।
Vote, Single Transferrable—एकल-संक्रमणीयमतम् ।

W

Warrant—अधिपत्रम् ।
Will—इच्छापत्रम् ।
Wireless operator—*विताण प्रचालकः ।
Works Manager—कर्मशालाप्रबन्धकः ।
Writ—अदेशलेखः ।

Z

Zonal Council—डॉंचलिङ्गपरिषद् (स्त्री.) ।

चतुर्थ परिशिष्ट

छन्दःपरिचय

छन्दः—संस्कृत में रचना प्रायः दो प्रकार की होती है—गद्य और पद्य। छन्दरहित रचना को गद्य कहते हैं और छन्दोबद्ध रचना को पद्य। जो रचना अक्षर, मात्रा, गति, यति आदि के नियमों से युक्त होती है, उसे छन्द कहते हैं। जिन ग्रन्थों में छन्दों के स्वरूप तथा प्रकार आदि का विवेचन रहता है, उन्हें छन्दःशास्त्र कहते हैं।

वर्ण या अक्षर—छन्दःशास्त्र की दृष्टि से केवल व्यंजन (क, ख, आदि) अक्षर या वर्ण नहीं कहलाते। अकेला स्वर या व्यंजन-सहित स्वर अक्षर कहलाता है। 'भा', 'का' और 'काम्' में छन्दःशास्त्र की दृष्टि से एक ही अक्षर है क्योंकि उनमें स्वर तो केवल एक 'भा' ही है। छन्द में अक्षर गिनते समय व्यंजनों की ओर ध्यान नहीं दिया जाता।

गुरु, लघु—ह्रस्व अक्षरों (अ, इ, उ, ऋ, ए) को छन्दःशास्त्र में लघु कहते हैं और दीर्घ अक्षरों (आ, ई, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ) को गुरु। इसी प्रकार क, कि आदि लघु अक्षर हैं और का, की आदि गुरु। छन्दःशास्त्र में निम्नलिखित को गुरु अक्षर माना गया है—

सानुस्वारश्च दीर्घश्च विसर्गी च गुरुर्भवेत् ।

वर्णः संयोगपूर्वश्च तथा पादान्तगोऽपि वा ॥

अर्थात् अनुस्वार-युक्त, दीर्घ, विसर्गयुक्त और संयुक्त अक्षरों से पूर्व वर्ण गुरु होता है। छन्द के पाद या चरण का अन्तिम अक्षर आवश्यकतानुसार लघु या गुरु माना जा सकता है। सो इस श्लोक के अनुसार 'कंस' में 'कं', 'काल' में 'कां', 'दुःख' में 'दुः' और 'युक्त' में 'यु' गुरु अक्षर है। छन्द के चरणों को लम्बाई और गति को ठीक रखने के लिए अक्षरों के गुरु-लघु के भेद को सन्त्यक् हृदयंगम कर लेना चाहिए। गुरु का चिह्न (५) है और लघु का (१)।

गण—छन्दःशास्त्र में तीन-तीन अक्षरों के समूह को गण कहा गया है। उन गणों के नाम, स्वरूप तथा उदाहरणों को निम्नलिखित तालिका से समझ लेना चाहिए—

गण-नाम	संक्षिप्तनाम	लक्षण	संकेत	उदाहरण
१. मगण	म	तीनों अक्षर गुरु	५ ५ ५	मान्धाता, विद्याधी
२. नगण	न	तीनों अक्षर लघु	१ १ १	निगम, सरल
३. भगण	भ	प्रथम अक्षर गुरु	५ १ १	भारत, कृत्रिम
४. बगण	ब	प्रथम अक्षर लघु	१ ५ ५	बशोदा, सुमित्रा
५. जगण	ज	मध्यम अक्षर गुरु	१ ५ १	जिगीषु, जवान
६. रगण	र	मध्यम अक्षर लघु	५ १ ५	राधिका, राक्षसी
७. सगण	स	अन्तिम अक्षर गुरु	१ १ ५	सविता, कमला
८. तगण	त	अन्तिम अक्षर लघु	५ ५ १	तारेण, आकाश

[७२६]

गणों का स्वरूप स्मरण रखने के लिए निम्नलिखित श्लोक कण्ठस्थ कर लेना चाहिए—

मन्त्रिगुरुक्लिष्टलघुक्ष नकारो
भाविगुरुः, पुषरादिलघुयुः ।
ओ गुरुमध्यगतो, श्लमभ्यः
सोऽन्तगुरुः, कथितोऽन्तलघुस्तः ॥

अर्थ—मगण में तीनों गुरु, नगण में तीनों लघु, भगण में आदि का अक्षर गुरु, यगण में आदि का लघु, जगण में मध्यम गुरु, नगण में मध्यम लघु, सगण में अन्तिम गुरु और तगण में अन्तिम लघु होता है ।

मात्रा—ह्रस्व या लघु अक्षर के उच्चारण में जितना समय लगता है उसे एक मात्रा कहते हैं और दीर्घ या गुरु के उच्चारण-काल को दो मात्रा । इसलिए, जब छंदों में मात्राओं की गिनती की जाती है तब लघु की एक और गुरु का दो मात्राएँ गिनी जाती हैं । छन्दःशास्त्र में एक अक्षर की मात्राएँ दो से अधिक नहीं होतीं परन्तु संगीत में स्वर को यथेष्ट मात्राओं तक बढ़ाया जा सकता है । एक ही शब्द में अक्षरों और मात्राओं की संख्या समान भी हो सकती है और भिन्न भिन्न भी । जैसे—‘कल’ में दो अक्षर हैं और दो ही मात्राएँ, ‘काल’ में दो अक्षर और तीन मात्राएँ, ‘काला’ में दो अक्षर और चार मात्राएँ ।

गति—छन्दों में अक्षरों या मात्राओं की नियत संख्या से ही काम नहीं बनता, उनमें गति अर्थात् लय या प्रवाह का भी ध्यान रखना पड़ता है । वार्णिक छन्दों में तो प्रायः गणों का क्रम प्रवाह को अक्षुण्ण रखता है परन्तु मात्रिक छन्दों में इसकी ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता रहती ही है । जैसे—

अञ्जः सुखमाराधयः सुखतरमाराधयते विशेषज्ञः ।

ज्ञानलघुदुर्विदग्धं ब्रह्मरपि नरं तं न रञ्जयति ॥ (भट्टहरिः)

यदि उपर्युक्त आर्षा छन्द को यों पढ़ें—

‘आराधयः सुखमज्ञः विशेषज्ञः आराधयते सुखतरम्’ तो कान तुरन्त बता देते हैं कि इनमें आर्षा छन्द की गति नहीं रही ।

यति—जिन छन्दों के एक-एक चरण में अक्षरों या मात्राओं की संख्या थोड़ी होती है उन्हें पढ़ने में तो कोई कठिनाई नहीं होती; परन्तु लम्बे चरणों के पाठ में बीच में रुकना ही पड़ता है । उस विश्राम-स्थल को ही यति या विराम कहते हैं । कुशल कवि इस बात का ध्यान रखते हैं कि यति किसी शब्द की समाप्ति पर ही आए परन्तु कभी-कभी वह किसी शब्द के मध्य में भी आ जाती है ।

चरच—अधिकतर छन्दों में चार चरण, पद्य या पंक्तिदाँ होती हैं, परन्तु कभी-कभी छन्द न्यूनाधिक चरणों के भी दिखाई देते हैं ।

छन्दों के भेद—छन्दों के मुख्य भेद दो हैं—वर्णिक छन्द और मात्रिक छन्द । मात्रिक छन्द को जाति छन्द भी कहा जाता है । वर्णिक छन्दों में वर्णों की संख्या और गणक्रम पर विशेष ध्यान रहता है तथा मात्रिक छन्दों में मात्राओं की संख्या और गति पर । वर्णवृत्तों के चरणों में गुरु-लघुक्रम प्रायः समान होता है, परन्तु मात्रिक छन्दों में यह बन्धन नहीं होता । उक्त दोनों भेदों के तीन-तीन अन्तर-भेद भी होते हैं—सम छन्द, अर्द्धसम छन्द और विषम छन्द । सम छन्दों के चारों चरणों में वर्णों या मात्राओं की संख्या समान होती है । अर्द्धसम छन्दों में प्रथम

[७२७]

और तृतीय चरणों की तथा द्वितीय और चतुर्थ चरणों की अक्षर या मात्रा-संख्या समान होती है। जो छन्द उक्त दोनों वर्णों में नहीं आते, उन्हें विषम कहते हैं।

नीचे संस्कृत के कुछ प्रसिद्ध छन्दों का परिचय प्रस्तुत किया जाता है। विस्तार के लिए छन्दःशास्त्र, वृत्तरत्नाकर, छन्दोमन्जरी आदि ग्रन्थ द्रष्टव्य हैं।

(ऋ) अर्णवृत्त, चम्पकवृत्त

प्रति चरण ८ अक्षरवाले छन्द

(१) अनुष्टुप् (अन्य नाम—श्लोक)

लक्षण—श्लोके षष्ठं गुरु श्रेयं, सर्षत्र लघु पञ्चमम् ।

द्विषतुःपादयोर्ह्रस्वं, सप्तमं दीर्घमन्ययोः ॥

अर्थ—इसके प्रत्येक पाद का पाँचवाँ वर्ण लघु होता है और छठा गुरु। सप्त (द्वितीय तथा चतुर्थ) चरणों का सातवाँ वर्ण लघु होता है और विषम (प्रथम तथा तृतीय) चरणों का सातवाँ वर्ण गुरु। शेष वर्णों के विषय में लघु-गुरु की स्वतंत्रता है।

उदाहरण—यदा यदा हि धर्मस्य; ग्लानिर्भवति भारत ।

। ५ ५ । ५ ।

अभ्युत्थानमधर्मस्य; तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥

। ५ ५ । ५ ।

(२) विद्युन्माला

लक्षण—मो मो गो गो विद्युन्माला ।

अर्थ—मगण, मगण और दो गुरु के क्रम से इसके प्रत्येक चरण में ८ वर्ण होते हैं; अर्थात् सप्त चरणों के सब वर्ण गुरु।

उदाहरण—

म म

गु गु

(क) मीनं ध्यानं भूमौ शय्या; गुर्वी तस्याः कामाऽवस्था ।

५ ५ ५, ५ ५ ५, ५ ५

मेघोत्सङ्गे नृत्तासक्ता; यस्मिन्काले विद्युन्माला ॥

(ख) गंगा माता तेरी धारा; काटे फंदा मेरा सारा ।

विद्युन्माला जैसी सोई; बीचीमाला तेरी मोई ॥ (सुधादेवी)

प्रति चरण १० अक्षरवाले छन्द

(१) रवमवती (अन्य नाम—चम्पकमाला)

लक्षण—भ्रमौ सगयुक्तौ रवमवतीयम् ।

अर्थ—रवमवती के प्रत्येक पाद में मगण, मगण, सगण और गुरु के क्रम से १० वर्ण होते हैं।

[७२८]

उदाहरण—

भ म स
 (क) भग्नमसत्यैः कायसहस्रैः; मोहमयी गुर्वी तव माया ।
 ५ १ १, ५ ५ ५, १ १ ५, ५

स्वप्नत्रिलासा योगविधोगा; रुक्मवती हा कस्य कृते श्रीः ॥

(ख) शान्ति नहीं तो जीवन क्या है, कान्ति नहीं तो जीवन क्या है !

प्रेम नहीं तो आदर क्या है, प्यार नहीं तो सागर क्या है !

(रामनरेश त्रिपाठ)

(२) मत्ता

लक्षण—मत्ता ज्ञेया ममसगयुक्ता (विराम ४, ६) ।

अर्थ—मत्ता के प्रत्येक चरण में मगण, भगण, सगण और गुरु के क्रम से १० वर्ण होते हैं :

उदाहरण—

म म स
 पीत्वा मत्ता मधु मधुपाली; कालिन्दोये तटवनकुञ्जे ।
 ५ ५ ५, ५ १ १, १ १ ५, ५
 उद्दीन्यन्तीर्ब्रजजनरामाः; कामासक्ता मधुजिति चक्रे ॥

प्रति चरण ११ अक्षरवाले छन्द

(१) इन्द्रवज्रा

लक्षण—स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः । (विराम पादान्त में)

अर्थ—इन्द्रवज्रा के प्रत्येक चरण में दो तगण, जगण और दो गुरु के क्रम से ११ वर्ण होते हैं ।

उदाहरण—

त त ज
 (क) गोष्ठे गिरिं सव्यकरेण धृत्वा,
 ५ ५ १, ५ ५ १, ५ ५ ५ ५
 रुष्टेन्द्रवज्राहतिभुकवृष्टौ ।
 यो गोकुलं गोपकुलं च सुस्थं,
 चक्रे स तो रक्षतु चक्रपाणिः ॥

(ख) मैं जो नया ग्रन्थ विलोकता हूँ,

माता मुझे सी नव मित्र-सा है ।

देखूँ उसे मैं नित बार बार,

मानो मिला नित्र मुझे पुराना ॥ (गिरधर शर्मा)

(२) उपेन्द्रवज्रा

लक्षण—उपेन्द्रवज्रा जतजास्ततो गौ । (विराम पादान्त में)

अर्थ—उपेन्द्रवज्रा के प्रत्येक पाद में जगण, तगण, जगण और दो गुरु अक्षरों के क्रम में ११ वर्ण होते हैं ।

[७२१]

उदाहरण—

ज त ज

(क) जितो जगत्पेष भवन्नमस्ते-
 १९ १, ९९१, १९१, ९९
 गुंरुदितं ये गिरिशं स्मरन्ति ।
 उपास्यमानं कमलासनाद्यै—
 रूपेन्द्रजगद्युधवारिनाथैः ॥

(ख) बड़ा कि छोटा कुछ काम कीजे,
 परन्तु पूर्वापर सोच लीजे ।
 बिना विचारे यदि काम होगा,
 कभी न अच्छा परिणाम होगा ॥ (मैथिलीशरण गुप्त)

(३) उपजाति

लक्षण—जिस छन्द के कुछ चरण इन्द्रवज्र के हों और कुछ उपेन्द्रवज्रा के, उसे उपजाति कहते हैं । इसके १३ भेद होते हैं ।

टि०—समान-संख्यक अक्षर तथा समान यतिवाले अन्य छन्दों के भी इसी प्रकार के मिश्रण का नाम उपजाति ही है । जैसे वंशस्थ और इन्द्रवंशा (१२-१२ अक्षरों के छंद) के मिश्रण से भी उपजाति छन्द बनता है ।

उदाहरण—(क) उत्साहसम्पन्नमदीर्घसूत्रं, (इन्द्र.)
 क्रियाविधिज्ञं वपसनेष्वसक्तम् । (उपे.)
 शूरं कृतज्ञं दृढसौहृदं च, (६.)
 लक्ष्मीः स्वयं वाञ्छति वासहेतोः ॥ (उ.)
 (ख) इच्छा न मेरी कुछ भी वनूँ मैं, (६.)
 कुबेर का भी जग में कुबेर । (उ.)
 इच्छा मुझे एक यही सदा है, (६.)
 नये नये उत्तम ग्रंथ देखूँ ॥ (उ.) (गिरधर शर्मा)

(४) दोषक (अन्य नाम—बन्धु)

लक्षण—दोषकनामनि भन्नयत्तो गौ । (विराम पाद के अन्त में)

अर्थ—दोषक छन्द के प्रत्येक चरण में तीन भगण और दो गुरु के क्रम से ११ वर्ण होते हैं ।

उदाहरण—

भ भ भ

(क) दोषकमर्थविरोधकमुग्रं
 ९११, ९११, ९११, ९९,
 श्रीचपलं युधि कातरचित्तम् ।
 स्वार्थपरं मतिहीनममात्यं
 शुद्धति यो नृपतिः स सुखी स्यात् ॥

[७३०]

(ख) पाकर मानव-देह धरा में,
पाशवकृति तजो जितना है।
पुच्छ विषाण विहीन पशु जो,
होन न चाहत प्रेम करी तो ॥ (रामबहोरी शुक्ल)

(५) शालिनी

लक्षण—शालिन्युक्ता स्तौ तगौ गोऽन्धिलोकः ॥ (५, ७ पर विराम)

अर्थ—शालिनी के प्रत्येक पाद में मगण, दो तगण और दो गुरु के क्रम से ११ अक्षर होते हैं। अक्षि (५) और लोक (७) पर विराम होता है।

उदाहरण—

म त त

(क) अँघो हन्ति ज्ञानवृद्धिं विधत्ते
५ ५ ५, ५ ५ १, ५ ५ १, ५ ५
धर्म दत्ते काममर्थं च सूते।
मुक्तिं वृत्ते सर्वदोषास्यमाना,
पुंसां श्रद्धाशालिनी विष्णुभक्तिः ॥

(ख) कैसी कैसी ठोकरें खा रहा है,
तीखी पीड़ा चित्त में ल' रहा है।
तौ भी प्यारे ! हाल तेरा वही है,
विद्वानों की पढ़ती क्या यही है ॥ (छन्दशिक्षा)

(६) रथोद्धता

लक्षण—राजराविह रथोद्धता लभौ । (विराम पाद के अन्त में)

अर्थ—रथोद्धता के प्रत्येक चरण में रगण, नगण, रगण और लबु-गुरु के क्रम से ११ अक्षर होते हैं।

उदाहरण—

र न र

किं त्वया सुभट ! दूरवर्जितं
५ १ ५, १ १ १, ५ १ ५, १ ५
नात्मनो न सुहृदां प्रियं कृतम् ।
यत्पलायनपरायणस्य ते
याति भूलिरधुना रथोद्धता ॥

(७) स्वागता

लक्षण—स्वागतेति रतभाद्गुरुयुग्मम् । (पादान्त में विराम) .

अर्थ—स्वागता के प्रत्येक पाद में रगण, नगण, भगण और दो गुरु के क्रम से ११ वर्ण होते हैं ॥

[७३१]

संदाहरण—

र न भ

— — — गु गु

(क) रत्नभङ्गविमलैर्गुणतुङ्गै-

S I S, I I I, S I I, S S

रत्नितामभिमतार्पणसकैः ।

स्वागताऽभिमुखनम्रशिरस्कैः

जीव्यते जगति साधुभिरेव ॥

(ख) रानि ! भोगि गहि नथ कन्हार्ई,
साथ गोप जन आवत धार्ई ।

स्वागतार्थं मुनि आतुर माता,

धाइ देखि मुद सुन्दर गाता ॥ (भानु कवि)

प्रति चरण १२ अक्षरवाले छन्द

(१) वंशस्थ (नामान्तर-वंशस्थविल तथा वंशस्तनित)

लक्षण—जतौ सु वंशस्थमुदीरितं जरौ । (पादान्त में विराम)

अर्थ—वंशस्थ के प्रत्येक पाद में जगण, तगण, जगण और रगण के क्रम से १२ अक्षर होते हैं ।
उदाहरण—

ज त ज र

(क) जनस्य तीव्रातपजार्तिवारणा

I S I, S S I, I S I, S I S

जयन्ति सन्तः सततं समुन्नताः ।

सितातपत्रप्रतिमा विभान्ति ये

विशालवंशस्थतया गुणोचिताः ॥ (सुवृत्तिलक)

(ख) स्वरूप होता जिसका न भव्य है,

न बक्य होते जिसके मनोश है ।

अतीव प्यारा बनता सदैव है

मनुष्य सो भी गुण के प्रभाव से ॥ (हरिऔध)

(२) इन्द्रवंशा

लक्षण—स्यादिन्द्रवंशा ततजैरसंयुतैः । (पादान्त में विराम)

अर्थ—इन्द्रवंशा के प्रत्येक पाद में दो दगण, जगण और रगण के क्रम से १२ वर्ण होते हैं ।

संदाहरण—

त त ज र

(क) कुर्वीत यो देवगुर्द्विजन्मना-

S S I, S S I, I S I, S I S

सुर्वीपतिः पालनमर्थलिप्सया ।

तस्येन्द्रवंशेऽपि गृहीतजन्मनः

सञ्जायते श्रीः प्रतिकूलवर्तिनी ॥

[७३२]

- (ख) यों ही बड़ा हेतु हुए बिन! कहीं,
होते बड़े लोग कटोर यों नहीं।
वे हेतु भी यों रहते सुगुप्त हैं,
ज्यों अद्रि अम्भोनिधि में प्रकृत है ॥ (चन्द्रहाल)

(३) तोटक

लक्षण—बृह तोटकमम्बुधिसैः प्रथितम् । (पादान्त में विराम)

अर्थ—तोटक के प्रत्येक चरण में चार सगण होते हैं ।

उदाहरण—

स स स स

- (क) त्यज तोटकमर्धनियोगकरं
।। ५,।।५,।।५,।।५
प्रमदाऽधिकृतं व्यसनोपहतम् ।
उपधाभिरशुद्धमतिं सचिबं
नरनाथक ! भीष्कमायुधिकम् ॥ (छन्दोवृत्ति)

- (ख) अब लों न कहीं बड़ देश मिला,
इसका न जिसे उपदेश मिला ।
उस गौरव के गुण अस्त हुए,
गुरु के गुरु शिष्य समस्त हुए ॥ (नाथुराम शंकर)

(४) द्रुतविलम्बित

लक्षण—द्रुतविलम्बितमाह नभौ भरी । (पादान्त में विराम)

अर्थ—द्रुतविलम्बित के प्रत्येक चरण में नगण, भगण, भगण और रागण के क्रम से १२ अक्षर होते हैं ।

उदाहरण—

न भ भ र

- (क) तरणिजापुलिने नववल्लवी-
।।।, ५ ।।, ५ ।।, ५ ।।, ५ ।।
परिपदा सह केलिकुतूहलात् ।
द्रुतविलम्बितचारुविहारिणं
हरिमहं हृदयेन सदा वहे ॥ (छन्दोमंजरी)

- (ख) मन ! रमा रमणी रमणीयता,
मिल गई यदि ये विधि योग से ।
पर जिसे न मिली कविता-सुधा
रसिकता सिकता-सम है उसे ॥ (रामचरित उपाध्याय)

(५) मौक्तिकदाम

लक्षण—क्षतुर्जगणं वद् मौक्तिकदाम । (पादान्त में विराम)

अर्थ—मौक्तिकदाम (हिन्दी, नीतियदाम) ँद के प्रत्येक चरण में चार जगण के क्रम से १२ अक्षर होते हैं ।

[७२३]

उदाहरण—

ज ज ज ज

- (क) मया तव किञ्चिदकारि कदापि,
 । स ।, । स ।, । स ।, । स ।
 विलासिनि ! वाक्यमनुस्मरताऽपि ।
 तथापि मनस्त्व नाश्वसनाय,
 धजामि कुतो भयदीमपहाय ॥ (वाणीभूषण)
- (ख) बड़े जन को नहीं मॉगन जोग,
 कबें छल साधन में लडु लोग ।
 रमापति विष्णु असंग अनूप,
 धर्यां एहि कारण वामन रूप ॥ (देवीप्रसाद पूर्ण)

(६) भुजङ्गप्रयात

लक्षण—भुजङ्गप्रयात भवेद्यैश्चतुर्भिः । (पादान्त में विराम)

अर्थ—भुजङ्गप्रयात के प्रत्येक चरण में चार यगण के क्रम से १२ वर्ण होते हैं ।

उदाहरण—

य य य य

- (क) धनेनिकुलीनाः कुलीना भवन्ति,
 । स स, । स स, । स स, । स स
 धनैरापदं मानवा निस्तरन्ति ।
 धनेभ्यः परो बान्धवो नास्ति लोके,
 धनान्यजयन्ध्वम् धनान्यजयन्ध्वम् ॥
- (ख) अजन्मा न आरंभ तेरा हुआ है,
 किसी से नहीं जन्म तेरा हुआ है ।
 रहेगा सबः अन्त तेरा न होगा,
 किसी काल में नःश तेरा न होगा ॥ (नाथुरामशर्कर)

(७) स्रग्विणी

लक्षण—स्रग्विणीयुक्ता स्रग्विणी सम्मता । (पादान्त में यति)

अर्थ—स्रग्विणी के प्रत्येक पाद में चार रगण के क्रम से १२ अक्षर होते हैं ।

उदाहरण—

र र र र

- (क) दन्द्रनीलोपलेनेव या निमिता
 । स । स, । स । स, । स । स, । स । स
 शातकुम्भद्रवालकृता शोभते ।
 नव्यसेधच्छविः पीतवासा हरे-
 भूर्तिरास्तां जयाशोरसि स्रग्विणी ॥

[७३४]

(ख) वे गृही धन्य है जो मनोहारिणी,
मिष्टमाषी सुशीला सदाचारिणी ।
धर्मशीला सती भीरताधारिणी,
सुन्दरीयुक्त है भ्रमशृङ्गारिणी ॥ (रामनरेश त्रिपाठी)

प्रति चरण १३ अक्षरवाले छन्द

(१) प्रहर्षिणी

लक्षण—व्याशाभिर्मनजरगाः प्रहर्षिणीयम् । (विराम ३, १०)

अर्थ—प्रहर्षिणी छन्द के प्रत्येक पाद में भगव, नभग, जगण, रगण और गुरु के क्रम से १३ वर्ण होते हैं । तीन और आशा (दिशा १०) पर यति होती है ।

उदाहरण—

म न ज र

(क) ते रेखाध्वजकुलिशातपत्रच्छिन्नाः
S S S, 111, 1 S 1, S 1 S, S
सम्राजश्चरणयुगां प्रसादलभ्यम् ।
प्रस्थानप्रणतिभिरंगुलीषु चक्रः
मौलिककच्युतमकरन्दरेणुगौरम् ॥ (रघुवंश ४।८८)

(ख) मनो जू, रँग रहि प्रेम में तुम्हारे,
प्राणों के, तुमहि अधार ही हमारे ।
वैसो ही, विचरहु रास है कन्हाई,
भावे जो, शरद प्रहर्षिणी जुन्हाई ॥ (भादुकवि)

(२) रुचिरा (नामान्तर—अतिरुचिरा)

लक्षण—चतुर्ग्रहेरतिरुचिरा जभस्जगाः । (विराम ४, ९ पर)

अर्थ—रुचिरा या अतिरुचिरा छन्द के प्रत्येक चरण में जगण, भगण, सभग, नभग और गुरु के क्रम से १३ वर्ण होते हैं । चार और ग्रह (९) पर यति होती है ।

उदाहरण—

ज भ स ज

कदा मुखं वरतनु कारणादते,
1 S 1, S 1 1, 1 1 S, 1 S 1, S
तवागतं क्षणमपि कोपपात्रताम् ।
अपर्वणि ग्रहकलुषेन्तुमण्डला,
विभावरी कथय कथं भविष्यति ॥ (मालविकाग्निमित्रम् ४।१३)

प्रति चरण १४ अक्षरवाले छन्द

(१) वसन्ततिलका (अन्य नाम—सिहोन्नता तथा उद्धर्षिणी)

लक्षण—उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौ गः ।

अर्थ—वसन्ततिलका छन्द के प्रत्येक पाद में तगण, भगण, दो जगण और दो गुरु के क्रम से १४ वर्ण होते हैं ।

[७२१]

उदाहरण—

- त भ ज ज्ञ
- (क) जाह्नवं धियो हरति सिञ्चति वाचि सारथं,
 १ १ १, १ १ १, १ १ १, १ १ १, १ १ १
 मानोन्नतिं दिशति पापमपाकरोति ।
 चेतः प्रसादयति दिक्षु तनोति कीर्तिं,
 सत्संगतिः कथय किं न करोति पुंसाम् ॥ (नीतिशतक)
- (ख) रोगी दुखी विपत्त-भापत में पड़े की,
 सेवा अनेक करते निज हस्त से थे ।
 ऐसा निकेत व्रज में न मुझे दिखाया,
 कोरं जहाँ दुखित हो पर वे न हों ॥ (हरिऔध)

प्रति चरण १५ वर्णवाले छन्द

(१) मालिनी

लक्षण—ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः । (विराम ८, ७ पर)

अर्थ—मालिनी के प्रत्येक चरण में नगण, नगण, मगण और दो यगण के क्रम से १५ अक्षर होते हैं । मोगी (८), लोक (७) पर यति होती है ।

उदाहरण—

- न न म य य
- (क) मनसि वचसि काये, पुण्यपीयूषपूर्णा-
 १ १ १, १ १ १, १ १ १, १ १ १, १ १ १
 क्षिमुवनमुपकारश्रेणिभिः प्रीणयन्तः ।
 परगुणपरमाणून्, पर्वतीकृत्य नित्यं
 मिजहृदि विकसन्तः, सन्ति सन्तः क्रियन्तः ॥ (नीतिशतक)
- (ख) सहृदय जन के जो, कंठ का द्वार होता,
 मुदित मधुकारी का, जीवनाधार होता ।
 वह कुसुम रँगोला, धूल में जा पड़ा है,
 नियति नियम तेरा, भी बड़ा ही कड़ा है ॥ (रूपनारायण पण्डित)

(२) चामर (अन्य नाम—तूणक)

लक्षण—तूणकं समानिका पदद्वयं विनान्तिथम् ॥ (विराम ८, ७)

अर्थ—तूणक या चामर छंद के प्रत्येक चरण में रगण, जगण, रगण, जगण और रगण के क्रम से १५ अक्षर होते हैं । आठवें और पादान्त में यति होती है ।

उदाहरण—

- र ज र ज र
- (क) सा सुवर्णकैतकं विकाशि भृङ्गपूरितं,
 १ १ १, १ १ १, १ १ १, १ १ १, १ १ १
 पंचबाणबाणजालपूर्णहेतितूणकम् ।
 राधिका वितर्क्य माधवाद्यमासि माधवे,
 मोहमेति निर्भरं स्वया विना कलानिधे ॥

[७३६]

(ख) मत्त-दन्ति-राज-राजि, वाजिराज राजि कै,
हेम हीर मुक चौर, चक साज साजि कै ।
वेध वेपवाहिनी, अक्षेव वस्तु सोधि यो
दाहजो विदेहराज, भाँति भाँति को दियो ॥ (केशवदास)

प्रति चरण १६ वर्णवाले छन्द

पंचचामर

लक्षण—जरी अरी ततो जगौ च पंचचामरं वदेत् ॥ (८, ८ या ४, ४, ४, ४ पर विराम)
अर्थ—पंचचामर छन्द के प्रत्येक पाद में जगण, रगण, जगण, रगण, जगण और गुरु के क्रम से १६ वर्ण होते हैं । ८, ८ या ४, ४, ४, ४ पर यति होती है ।

उदाहरण—

ज र ज र ज

(क) सुरदुमूलमण्डपे विचित्ररत्ननिमिते
। S ।, S । S, । S ।, S । S, । S ।, S
लसद्वितानभूषिते सलीलविभ्रमालसम् ।
सुरांगनाभवल्लवीकरप्रपंचचामर—
स्फुरस्समीर्योजितं सदाच्युतं भजामि तम् ॥

(ख) उसी उदार की कथा सरस्वती बखानती,
उसी उदार से धरा कृतार्थ भाव मानती ।
उसी उदार की सदा सर्वांग कीर्ति कूजती,
तथा उसी उदार को समस्त सृष्टि पूजती ॥ (नेधिलीशरण गुप्त)

प्रति चरण १७ वर्णवाले छन्द

(१) शिखरिणी

लक्षण—रसे रुद्रैश्छिन्ना यमनसभला गः शिखरिणी । (६, ११ पर विराम)
अर्थ—जिस छन्द के प्रत्येक चरण में यगण, मगण, नगण, सगण, भगण और लघु-गुरु के क्रम से १७ अक्षर हों तथा रस (६) और रुद्र (११) पर यति हो उसे शिखरिणी कहते हैं ।

उदाहरण—

य म न स भ

(क) करे श्लाघ्यस्त्यागः, शिरसि गुरुपादप्रणयिता,
। S S, S S S, । । ।, । । S, S । ।, । S
मुखे सत्या वाणी, विजयिभुजयोर्वीर्यमनुलम् ।
हृदि स्वच्छा वृत्तिः, श्रुतमधिगतं च श्रवणयो—
र्विनाप्यैश्वर्येण, प्रकृतिमहतां मण्डनमिदम् ॥ (मनुहरि)

(ख) छटा कैसी प्यारी, प्रकृति-लिय के चन्द्रमुख की
नया नीला ओढ़े, बसत चटकीला गगन का ।
जरी-सहमा-रूपी, जिस पर सितारे सब जड़े
गले में स्वर्गा, अतिललित माला सम पड़ी ॥ (सत्यशरण रतूनी):

[७३७]

(२) पृथ्वी

लक्षण—जसौ जसयला वसुमहयतिश्च पृथ्वी गुरुः । (८, ९ पर विराम)

अर्थ—पृथ्वी छन्द के प्रत्येक पाद में जगण, सगण, जगण, सगण, यगण और लघु-गुरु के क्रम से १७ वर्ण होते हैं । वसु (८) और मह (९) पर यति होती है ।

उदाहरण—

ज स ञ स थ

- (क) लमेत सिकतासु तैलमपि यत्मतः पीडयन्
 । १ ।, । १ ५, । १ ।, । १ । ५, । १ ५, । १ ५
 विवेकं धुगात्पिण्डासु सखिर्कं पिपासादितः ।
 कदापिदपि पर्यटन्नाशविषाणात्मासाद्येत्
 न तु प्रतिनिविष्टमूर्खजनषितमाराधयेत् ॥ (भर्तृहरि)
- (स) अगस्त्यः अधिराज जू, कचन एक मेरे सुनौ,
 प्रशस्त सब भौंति भूतल सुदेश जो मैं सुनौ ।
 सुनौ तबखंड मंडित समृद्ध शोभा धरै,
 तहाँ हम निवास की, विमल पर्णशाला करै ॥ (रामचन्द्रिका)

(३) हरिणी

लक्षण—समरसलताः पद्मेदेहेर्बेर्हरिणी मता । (६, ४, ७ पर विराम)

अर्थ—हरिणी के प्रत्येक चरण में जगण, सगण, मगण, रगण, सगण और लघु-गुरु के क्रम से १७ अक्षर होते हैं । छडे, दसवें और सत्रहवें अक्षर के बाद विराम होता है ।

उदाहरण—

न स म र स

- (क) यदति भुवनश्रेणी शेषः फणाफलकस्थिता,
 । १ ।, । १ ५, ५ ५ ५, ५ । ५, । १ ५, । ५
 कमठपतिना मध्येपृष्ठं सदा स च धार्यते ।
 तमपि कुरुते क्रोडाधीनं पयोधिरनादरा-
 यदह महतां निःसीमानश्चरित्रविभूतयः ॥ (भर्तृहरि)
- (४) मन्दाक्रान्ता

लक्षण—मन्दाक्रान्ताम्बुधिरसनगौर्मो मनौ ती गयुग्मम् । (४, ६, ७ पर विराम)

अर्थ—मन्दाक्रान्ता के प्रत्येक पाद में मगण, भगण, जगण, दो तगण और दो गुरु के क्रम से १७ अक्षर होते हैं । अम्बुधि (सागर ४), रस (६) और नग (७) पर यति होती है ।

उदाहरण—

म भ न त त

- (क) मौनाम्बुकाः प्रवचनपटुर्वाचको जल्पको वा,
 ५ ५ ५, ५ । १, । १ ।, ५ ५ ।, ५ ५ ।, ५ ५
 छष्टः पाशं भवति च वसन्धुरतोऽप्यप्रगल्भः ।
 क्षान्त्या भीरुर्वादि न सहते प्रायशो नाभिजातः,
 सेवाधर्मः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः ॥ (भर्तृहरि)

[७३८]

- (ख) जो लबेगा, नृपति मुझ से, दंड दूनी करोड़ों,
लोटा धाली, सहित तनके, बन्ध भी बँच दूनी ।
जो माँगिगा, हृदय वह तो, काढ़ दूनी उसे भी
बेटा तेरा गमन मधुरा, मैं न आँखों लखूँगी ॥ (हरिऔध)

प्रतिचरण १९ वर्णवाले छन्द

(१) शार्दूलविक्रीडित

लक्षण—सूर्योश्चर्मसजस्तताः सगुरवः शार्दूलविक्रीडितम् । (१२, ७ पर विराम)

अर्थ—शार्दूलविक्रीडित छन्द के प्रत्येक चरण में मगण, सगण, जगण, सगण, दो तगण और लघु के क्रम से १९ वर्ण होते हैं । यति सूर्य (१२) और अश्व (७) पर होती है ।

उदाहरण—

म स ज स त य

- (क) केयूराणि न भूषयन्ति पुरुषं हारा न चन्द्रोऽञ्जलाः,
१ १ १, १ १ १, १ १ १, १ १ १, १ १ १, १ १ १
न स्नानं न विलेपनं न हस्तुमं नालंकृता मूर्धजाः ।
वाष्येका समलङ्करोति पुरुषं वा संस्कृता धार्यते,
स्त्रीयन्ते खलु भूषणानि सततं वातभूषणं भूषणम् ॥ (भर्तृहरि)
- (ख) छोटे और बड़े जहाज जल में, देखो वहाँ वे खड़े,
सो भी दृश्य विचित्र किन्तु इनको, वे हानिकारी बड़े ।
ले जाते बरबस्तु देशभर की जाने कहीं की कहीं,
लाते केवल ऊपरी चटक की, चीजें विदेशी वहाँ ॥ (कन्दैयालाल पोद्दार)

प्रति चरण २० वर्णवाले छन्द

(१) गीतिका

लक्षण—सजजा भरो सलगा यदा कथिता तदा खलु गीतिका । (५, ७, ८ पर विराम)

अर्थ—गीतिका छन्द के प्रत्येक चरण में सगण, जगण, जगण, भगण, रगण, सगण और लघु-गुरु के क्रम से २० वर्ण होते हैं । पाँचवें, बारहवें और बीसवें अक्षर के बाद यति होती है ।

उदाहरण—

स ज ज भ र स

- (क) करतालचंचलकंकणस्वनमिश्रणेन मनोरमा,
१ १ १, १ १ १, १ १ १, १ १ १, १ १ १, १ १ १
रमणीयवेषुनिनादरंगिमसंगमेन सुखावहा ।
बहुकानुरागनिवासराससमुद्रवा तव रागिणं,
विदधौ हरिं खलु वल्लवीजनचारुधामरगीतिका ॥
- (ख) सज नीम री ! सुलगीं मुहाँ सुन मो वहा चित लायकै,
नय काल लक्सन जानकी सह राम को नित गायकै ।
पद मो शरीरहि राम के कल धाम को लय धानहू,
कर दीन लै अति दीन है नित गीति कान सुनावहू ॥ (भानु कवि)

[७३६]

प्रति चरण २१ वर्णवाले छन्द

(१) स्रग्धरा

लक्षण—अभनैर्यानां त्रयेण त्रिमुनियतियुता स्रग्धरा कीर्तितेयम् । (७, ७, ७ पर विराम)
 अर्थ—स्रग्धरा के प्रत्येक पाद में मगण, रगण, भगण, नगण और तीन यगण के क्रम से
 २१ अक्षर होते हैं । सातवें, चौदहवें और इक्कीसवें अक्षर के अन्त में यति होती है ।

उदाहरण—

म र भ न य य य

(क) प्राणाघाताङ्गिहृत्तिः, परधनहरणे संघमः, सत्यवाक्यं,
 \$\$\$, \$1\$, \$ 11, 111\$ \$, 1\$ \$, 1\$\$
 काले शक्या प्रदानं, युवतिजनकथा, मूकभावः परेषाम् ।
 गृष्णास्रोतोविभंगो, गुरुषु च विनयः, सर्वभूतानुकम्पा,
 सामान्यं सर्वशास्त्रेष्वनुपहतविधिः, श्रेयसामेष पन्थाः । (मरुहरि)

(ख) नाना फूलों-फलों से, अनुपम जग की, वाटिका है विचित्रा,
 भोक्ता है सैकड़ों ही, मधुर शुक तथा कोकिला गानशीला ।
 कौण भी है अनेकों, पर धन हरने में सदा अग्रगामी,
 कोई है एक माली, सुधि इन सबकी, जो सदा ले रहा है ॥ (रामनरेश त्रिपाठी)

(२) वर्णवृत्त, अर्द्धचन्द्र छन्द

(१) वियोगिनी (अन्य नाम—सुन्दरी)

लक्षण—विषमे सप्तजा गुरुः समे, सभरा लोऽथ गुरुर्वियोगिनी ।

अर्थ—वियोगिनी के विषम (प्रथम, तृतीय) चरणों में दो सगण, जगण और गुरु के क्रम से
 १०-१० अक्षर और सम (द्वितीय, चतुर्थ) चरणों में सगण, भगण, रगण, लघु और गुरु के क्रम
 से ११-११ अक्षर होते हैं । (१०, ११, १०, ११) ।

उदाहरण—

स स ज

(क) सहसा विद्धील न क्रियाम्,
 11\$, 11\$, 1\$ 1, \$

अविवेकः परमापदां पदम् ।
 वृणुते हि विस्तुब्धकारिणं

स भ र

लघु

गुणलुब्धाः स्वयमेव संपदः ॥ (किरातार्जुनीय २।३०)

11\$, \$ 11, \$1\$, 1\$

(ख) चिर-काल रसाल ही रहा,

जिस भावश कवीन्द्र का कहा ।

जय हो उस कालिदास की,

कविता-केलि-कला-विलास की ॥ (छन्दरत्नावली)

[७४०]

(२) हरिणप्लुता

लक्षण—सद्युगात् सलघू विषमो गुरुर्बुद्धि नभौ भरकौ हरिणप्लुता ।

अर्थ—हरिणप्लुता छन्द के विषम चरणों में तीन मगण और लघु-गुरु के क्रम से ११-११ अक्षर और सम चरणों में नगण, दो मगण और रगण के क्रम से १२-१२ अक्षर होते हैं ।

(११, १२, ११, १२)

वदाहरण—

स स स

स्फुटफेनचया हरिणप्लुता,
 ।। १, ।। १, ।। १, । १

बलिमनोज्ञता तरणेः सुता ।

कलहंसकुलारवशालिनी,

न भ भ र

विहरतो हरति स्म हरेर्मनः ॥ (छन्दोमञ्जरी)

।।।, १ ।।, १ । १, १ । १

(३) अपरवक्त्र

लक्षण—अयुजि नचरला गुरुः समे ।

तदपरवक्त्रमिदं नजौ जरौ ॥

अर्थ—अपरवक्त्र छन्द के विषम चरणों में दो नगण, एक रगण और लघु-गुरु के क्रम से ११-११ अक्षर और समचरणों में नगण, दो मगण और रगण के क्रम से १२-१२ अक्षर होते हैं ।

(११, १२, ११, १२)

वदाहरण—

न न र

स्फुटसुमधुरचेणुगीतिभि-
 ।।।, ।।।, १ । १, । १

स्तमपरवक्त्रमनेःव माधवम् ।

स्वयुवतिगणेः समं स्थिता

न ज ज र

व्रजवनिता वृत्तचित्तत्रिभ्रमा ॥ (छन्दोमञ्जरी)

।।।, । १ ।, । १ ।, १ । १

(४) पुष्पिताग्रा (नामान्तर औपच्छन्वसिक)

लक्षण—अयुजि नयुगरेक्तो थकारो,

युजि च नजौ जरगाश्च पुष्पिताग्रा ।

अर्थ—पुष्पिताग्रा के विषम चरणों में दो नगण, रगण और यगण के क्रम से १२-१२ अक्षर तथा सम चरणों में नगण, दो मगण, रगण और गुरु के क्रम से ११-११ अक्षर होते हैं ।

(१२, १३, १२, १३)

[७४१]

उदाहरण—

न न र य

(क) अथ मदनवभूषणपल्लवान्तं

|| 1, 111, 515, 155

व्यसनकृशा परिपालयांबभूव ।

शशिन इव दिवातनस्य लेखा

न ज ज र

किरण परिशयधूसरा प्रदोषम् ॥

(कुमारसम्भवं ४।४६)

|| 11, 151, 151, 515, 5

(ख) प्रभु सम नहि अन्य कोइ दाता,

सुध न जु ध्यावत तीन लोक प्राता ।

सकल असत कामना विहई,

हरि नित भेवहु भित्त चित्त लाई ॥ (भानुकवि)

(ग) वर्णवृत्त, विष्णुश्च ह्युच्यते

उद्गता

लक्षण—प्रथमे सजौ यदि सलौ च नसजगुक्काभ्यनन्तरम् ।

यद्यथ भनजलगाः स्थुरथो सजसा जगौ च भवतीत्यमुद्गता ॥

अर्थ—उद्गता के प्रथम चरण में सगण, जगण, सगण और लघु के क्रम से १० अक्षर, द्वितीय चरण में नगण, सगण, जगण और गुरु के क्रम से १० अक्षर, तृतीय चरण में भगण, नगण, जगण और लघु-गुरु के क्रम से ११ अक्षर तथा चतुर्थ चरण में सगण, जगण, सगण, जगण और गुरु के क्रम से १३ अक्षर होते हैं । (१०, १०, ११, १३)

उदाहरण—

स ज स

अथ वासवस्य वचनेन,

|| 5, 151, 115, 1

न स ज

रुचिरवदनखिलोचनम् ।

|| 11, 115, 15, 15

भ न ज

क्लाम्पितरहितमभिराश्रयितुं,

5 1 1, 111, 151, 15

स ज स ज

विधिवत्तपांसि विद्ये धनंजयः ॥ (किराताजुनीय १२।१)

|| 15, 151, 115, 151, 5

पञ्चम परिशिष्ट

संस्कृत-साहित्यकारों का संक्षिप्त परिचय

जनार्णवहर्ष—ये चेदिदेश के कलचुरीवंशीय नृप नरेन्द्रवर्धन के पुत्र थे। वास्तविक नाम माउराज (मावुराज) था। समय अष्टम शतक का उत्तरार्द्ध है। इनकी कृति 'तापस वत्सराज' (नाटक) में उद्ययन तथा वासवदत्ता की प्रसिद्ध कथा है। 'मायुराजसमो अशो नान्यः कलचुरिः कविः' (राजशेखर)।

अश्वघोष दीक्षित—इनका जन्म भारद्वाजगोत्रीय रंगराज के गृह में १५५४ ई० में काञ्ची के समीप अश्वपल्लम में हुआ था। ये अनेक वर्षों तक बेह्लोर और विजयनगर की राजसभाओं में सम्मानित रहे। प्रख्यात वैयाकरण मट्टोजीदीक्षित की वेदान्त हर्षा ने पढ़ाया था। पूर्व तथा उत्तरमीमांसा के ये पारदृशा पंडित थे। १६२६ ई० में इन्होंने ग्यारह विद्वान् पुत्रों की उपस्थिति में चिदम्बरम् में सहर्ष प्राणविसर्जन किया। काव्य, अलंकार, तर्क, दर्शन आदि अनेक विषयों पर इन्होंने १०४ ग्रंथों की रचना की जिनमें से काव्यकृतियाँ निम्नलिखित हैं—शिववंजाशिका, दशकुमार-चरितसंग्रह, पंचरत्नस्तव, शिवकण्ठाश्रित, वैराग्यशतक, भक्तामरस्तव, शान्तिस्तव, रामायण-तात्पर्यनिर्णय, भरतस्तव, बरदराजस्तव, आदिभ्यस्तोत्ररत्न आदि। वसुमतीचित्रसेनविलास (नाटक), चित्रमीमांसा, वृत्तिवार्तिक, कुबलयानन्द (अलंकार) आदि के अतिरिक्त इन्होंने कई ग्रंथों पर टीकाएँ भी रची हैं।

अमरुक—इस कवि का वंश, देश, काल आदि अज्ञात है। आनन्दवर्द्धन ने 'ध्वन्यालोक' में इन के 'अमरुकशतक' के शृङ्गारी मुक्तकों की सरसता की मुक्तकंठ से प्रशंसा की है। अतः ये नवमी शताब्दी से पूर्व विद्यमान थे। ये शब्द-कवि न थे, रस-कवि थे। हिन्दी के विहारी, पद्माकर आदि कवियों पर इनके काव्य का पर्याप्त प्रभाव लक्षित होता है।

अश्वघोष—संस्कृत के बौद्ध कवियों में सर्वश्रेष्ठ हैं। इनका जन्म साकेत में सम्भवतः ज्ञान्दवाणवंश में सुवर्णाक्षी के गर्भ से हुआ था। परम्परानुसार ये महाराज कनिष्क (७८ ई०) के गुरु तथा आश्रित कवि थे। ये दार्शनिक तथा संगीतज्ञ भी थे। बौद्ध बनने के बाद इन्होंने बौद्ध-धर्म के प्रचार में भरसक सहयोग दिया। 'सौन्दरानन्द' तथा 'बुद्धिचरित' इनके प्रख्यात महाकाव्य हैं। 'सौन्दरानन्द' के १८ सर्ग हैं। उनमें बुद्ध के उपदेश से उनके अनुज नन्द द्वारा पत्नी सुंदरी के परित्याग तथा दीक्षाग्रहण की कथा है। 'बुद्धिचरित' के १८ सर्गों में से १७ उपलब्ध हैं और बुद्धचरित-विषयक है। वेदों की रीति में रचित ये महाकाव्य संस्कृत-काव्यसाहित्य के अलंकार हैं। अश्वघोष संस्कृत के प्रथम बौद्ध नाटककार हैं। इनके तीन नाटक उपलब्ध हुए हैं। 'शारिपुत्र-प्रकरण' नौ अंकों में है और पूर्ण है। इसमें बुद्ध के उपदेश से शारिपुत्र और मीद्गल्यायन के दीक्षित होने का उल्लेख है। दोष दो नाटक कुम्भनामक और सण्डित हैं। उनमें एक का कथानक 'प्रबोधचन्द्रोदय' के समान रूपकात्मक है और दूसरे का 'शृष्टकविक' के तुल्य बेश्यानायकप्रणयःशक्य।

आर्यशूर—ये बौद्धकवि सम्भवतः पाँचवीं शताब्दी में विद्यमान थे। 'जातकमाला' तथा 'पारमिता-समाप्त' इनकी दो प्रख्यात कृतियाँ हैं। इनकी कृति का आधार-स्तम्भ 'जातकमाला' है जिसमें महात्मा बुद्ध के ३४ जन्मों की कथाएँ गद्य-पद्यमयी सरस भाषा में वर्णित हैं। दूसरे काव्य में दान, शील, क्षान्ति आदि विषयों पर रचना की गई है। 'जातकमाला', 'पालिजातक' के आधार पर रचित स्वतंत्र कृति है। इसके 'पद्यभाग के समान गद्यभाग भी सुश्लिष्ट, सुन्दर तथा सरस

[७४४]

है। जातकमाला के कुछ अंश का चीनी में अनुवाद १६० और ११२७ ई० के मध्य में किया गया था।

कल्हण (कल्याण)—इनके पिता चणपक काश्मीरदेश हर्ष (१०४८-११०१ ई०) के प्रधानमंत्री थे। ये अलंकृत नामक व्यक्ति के आश्रित थे। इन्होंने राज-न्दरदार से दूर रहकर अपनी प्रख्यात ऐतिहासिक काव्यकृति 'राजतरंगिणी' की रचना सुस्सल के तनुज राजा जयसिंह (११२७-५९ ई०) के शासनकाल में की थी। 'राजतरंगिणी' का निर्मितकाल ११४८-११५० ई० है। इसमें काश्मीर के राजनीतिक इतिहास, भौगोलिक विवरण, सामाजिक व्यवस्था, साहित्यिक समृद्धि आदि का सविस्तर और रोचक उल्लेख किया गया है। 'राजतरंगिणी' काव्य तथा इतिहास दोनों दृष्टियों से महत्वपूर्ण कृति है जिसमें काश्मीर के प्राचीन काल से लेकर बारहवीं शती तक का विश्वसनीय वृत्त प्रस्तुत किया गया है।

कविराज सूरि—जयन्तपुरी के राजा कामदेव (११८२-९७ ई०) के सभासहित माधवभट्ट की ही उपाधि कविराज थी। इनकी रचना 'राधवपांडवीय' अपने ढंग की अपूर्व कृति है जिसका अनुकरण परवर्ती अनेक कवियों ने किया। इसका प्रत्येक पद्य छिष्ट है और रामायण तथा महाभारत दोनों से सम्बन्धित अर्थ व्यक्त करता है। इसी के अनुकरण पर हरदत्त ने 'राधव-नैषधीय', चिदंबर ने 'राधवपांडव्यादवीय' और विष्णुमाधव ने 'पार्वतीस्वमणीय' नामक काव्यों की सृष्टि की। इस प्रकार की छिष्ट रचनाएँ संस्कृत के अतिरक्त सभी भाषाओं में अल्प्य हैं और सम्भवतः अलभ्य रहेंगी।

कालिदास—कुछ विद्वान् इन्हें ई० पू० प्रथम शताब्दी में मानते हैं तो कुछ छोटी शती ईसवी में। कोई इनकी जन्मभूमि काश्मीर मानता है, कोई बंगाल और कोई उज्जयिनी। बहुमत उज्जयिनी के प्रति विशेष पक्षपात तथा सूक्ष्म भौगोलिक परिचय के आधार पर कालिदास उज्जयिनीवासी प्रतीत होते हैं।

कृतियाँ—ऋतुसंहार, कुमारसम्भव, मालविकाग्निमित्र, विक्रमोर्वशीय, रघुवंश, अभिज्ञान-शाकुन्तल, मेघदूत।

'कुमारसम्भव' तथा 'रघुवंश' महाकाव्य हैं। 'कुमारसम्भव' के १७ सर्गों में शिव-पार्वती के विवाह, कार्तिकेय की उत्पत्ति तथा तारकासुर के वध की कथा है। 'रघुवंश' के १९ सर्गों में सूर्य-वंशी राजाओं का कीर्तिमान है। मालविकाग्निमित्र, विक्रमोर्वशीय और अभिज्ञानशाकुन्तल—तीनों नाटक हैं। प्रथम में राजा अग्निमित्र और मालविका की, द्वितीय में राजा पुरूरवा और अम्बरा उर्वशी की तथा तृतीय में राजा दुःशन्त और शाकुन्तला की प्रेमकथा का वर्णन है। 'ऋतुसंहार' और 'मेघदूत' संस्कृत गीतिकाव्य की प्राचीनतम कृतियाँ हैं। ऋतुसंहार के १४४ पद्यों में षडऋतुओं का सुन्दर वर्णन है तथा उनका प्रेमियों के हृदय पर प्रभाव अंकित किया गया है। 'मेघदूत' के १२१ पद्यों में एक निर्वासित विरही यक्ष की मनोव्यथा का हृदयस्पर्शी चित्रण किया गया है। कालिदास की सर्वप्रियता का कारण है उनकी प्रसादपूर्ण, लालित्योपेत, परिष्कृत शैली। इन्होंने सभी ग्रन्थ वैदमी रीति में लिखे हैं। उपमाओं में ये अपना ओह नही रखते। भाव, रस, भाषा, शैली, छंद, अलंकार जिस किसी भी दृष्टि से देखें कालिदास उरकृतम ठहरते हैं।

कुमारदास—सिंहल की जनश्रुति के अनुसार कुमारदास ने वहाँ ५१७-५२६ ई० तक शासन किया था। आधुनिक विद्वान् इन्हें ६५० और ७५० ई० के बीच में मानते हैं। इनके महाकाव्य 'जानकीहरण' के २५ में से १५ सर्ग ही प्राप्त हैं। कथा रामायण की पुरानी ही है परन्तु वर्णन-शैली अभिरूप है। प्रसाद, सुकुमारता, शब्दसौष्ठव तथा नादसौन्दर्य कृति के उल्लेख्य गुण हैं। राजशेखर (९०० ई०) ने इसकी प्रशंसा में यों लिखा है—

जानकीहरणं कर्तुं रघुवंशे स्थिते सति ।

कविः कुमारदासश्च रावणश्च यदि क्षमः ॥

[७४२]

रघुवंश की विद्यमानता में जनकीहरण करनः यः तो रावण का काम है या फिर कुमारदास का ।
कृष्ण मिश्र—‘बोधचन्द्रोदय’ नामक रूपक नाटक के रचयिता कृष्ण मिश्र जैनाकृतिक के राजा
 कोटिवर्मा के शासनकाल में ११०० ई० के लगभग विद्यमान थे । भास के ‘बालचरित’ के समान
 इस नाटक में विवेक, मोह, ज्ञान, विद्या आदि भावों को स्त्री-पुरुष पात्रों के रूप में कल्पित किया
 गया है । इसी कृति के अनुकरण पर यशःपाल ने ‘मोहपरजय’, वैकुण्ठनाथ ने ‘संकल्पमूर्खोदय’
 तथा कविकर्णपूर ने ‘चैतन्यचन्द्रोदय’ की रचना की । हिन्दी कवि केशवदास ने ‘विज्ञानगीता’
 में इसका छन्दोबद्ध अनुवाद किया है । दार्शनिक दृष्टि से कृति महत्त्वपूर्ण है ।

क्षेमेन्द्र—सिन्धु के पौत्र तथा प्रकाशेन्द्र के पुत्र क्षेमेन्द्र का जन्म कारमीर के एक धनाढ्य और
 उदार परिवार में हुआ था । इन्होंने आचार्य अभिनवगुप्त से साहित्याध्ययन किया था । ये
 ११वीं शती के मध्य में विराजमान थे । शैवमंडल में रहते हुए भी ये परम वैष्णव थे और
 इसका कारण था भागवताचार्य सोमपाद की शिक्षा ।

इनके बृहदाकार अनेक ग्रंथों में से प्रमुख ये हैं—रामःवणमञ्जरी, भारतमञ्जरी तथा बृहत्कथा-
 मञ्जरी । ये क्रमशः रामायण, महाभारत और गुणाख्य की बृहत्कथा के आधार पर रचित स्वतंत्र
 काव्यकृतियाँ हैं । ‘दशावतारचरित’ में विष्णु के दशावतारों का तथा ‘बोधिसत्त्वावदान’
 कल्पलता में जातक कथाओं का सरल-सुन्दर वर्णन है । अलङ्कार कृतियों में कलाविलास, चतुर्वर्ग-
 संग्रह, चारुचर्या, नीतिकल्पतरु, समयमातृका और सेव्यसेवकोपदेश व्यवहारविषयक सुन्दर
 काव्यकृतियाँ हैं । इनकी रचनाएँ साहित्यिकता से पूर्ण भी हैं और लोकोपकार की भावना से
 ओत-प्रोत भी ।

मोघर्चनाचार्य—ये बंगाल के अन्तिम हिन्दू नरेश लक्ष्मणसेन (१११६ ई०) की सभा के प्रति-
 क्षित कवि थे । ‘अर्थासप्तशती’ इनकी एकमात्र रचना है जो ‘हाल’ की ‘गाथासप्तशती’ के
 अनुकरण पर रचित है । ‘गाथासप्तशती’ तो हालकृत संग्रह है परन्तु ‘अर्थासप्तशती’ केवल
 आचार्य की रचना है । इसमें संयोग तथा नियोग-संगार की विविध दशाओं का मार्मिक चित्रण
 पुष्ट अर्था शृन्द में किया गया है । नागरिक ललनाओं की शृङ्गारिक चैष्टाओं तथा प्राभीण
 रमणियों की रचामाविक उक्तियों का उल्लेख अत्यन्त रमणीय हैं । हिन्दी के बिहारी आदि शृङ्गारी
 कवि भी इसके प्रभाव से अछूते नहीं रहे ।

जगन्नाथ (पंडितराज)—आंध्र जाह्नग जगन्नाथ काशीनिवासी पेरुभट्ट तथा लक्ष्मीदेवी के
 पुत्र थे । इन्होंने काव्य और अलंकार का अध्ययन अपने पिता से किया और न्याय, व्याकरण
 आदि विषयों का ज्ञानेन्द्रभिक्षु, महेशाचार्य, खण्डदेव, शेष वीरेश्वर आदि से । दिल्लीशर साहजहाँ
 (शासन १६२८-६४ ई०) ने इन्हें दार-शिकोह के शिक्षार्थ दिल्ली में बुलवा लिया था । उसके
 पश्चात् बुद्धावस्था में इनका स्वर्गवास १६७४ ई० में मधुरा में हुआ । कहते हैं, किसी यवनी के
 प्रेमजाल में फँसने के कारण इन्हें स्वजातीयों का कोपभाजन भी बनना पड़ा था ।

गंगालहरी, सुखालहरी, अमृतलहरी, करुणालहरी और लक्ष्मीलहरी इनके सरस काव्यस्तोत्र
 हैं । ‘नगदाभरण’ में दाराशिकोह का, ‘असफविलास’ (गणकाव्य) में नवाव आसफखान का और
 ‘प्राणाभरण’ में कामरूपाधिपति प्राणानारायण का वर्णन है । इनकी अन्य कृतियाँ ‘चित्रमीमांसा-
 खंडन’, मनोरमाकुचमर्दन तथा ‘भागिनीविलास’ हैं । इनकी सर्वोत्तम कृति ‘रसगंगाधर’ नामक
 अलंकार-शास्त्र है जिसमें इनके प्रकाण्ड पाण्डित्य तथा अप्रतिम काव्य-प्रतिभा का पूर्ण परिचय
 प्राप्त होता है । इन्हें अपने पाण्डित्य और कवित्व पर जो अभिमान था, वह अनुचित न था ।

जयदेव—सात अंकों के प्रसिद्ध संस्कृत नाटक ‘प्रसन्नरावण’ के कर्ता जयदेव का परिचय अभी
 तिमिरालच्छन्न है । सुनते हैं, ये मिथिलावासी थे । ये १४वीं शती से पूर्व हुए हैं । ‘प्रसन्नरावण’
 में रामायणीय कथा सुचारु रीति से चित्रित की गई है । मंजुल पदावली तथा प्रसादोपेत कविता

के कारण नाटक का नाम सार्थक है। 'रामचरितमानस' के कई स्थलों पर इस तार्किक और कवि का प्रभाव स्पष्ट लक्षित होता है।

अथदेव—अमर काव्य 'गीतगोविन्द' के रचयिता जयदेव बंगविपति लक्ष्मणसेन (१११६ ई०) के समारण्य थे। बंगाल के केन्दुविल्व नामक स्थान में इनका जन्म हुआ था। वे राधा-कृष्ण की भक्ति के रस में पूर्णतया पगे हुए थे और उसी रस से पूर्ण 'गीतगोविन्द' नामक गीतिकाव्य भी है। १२ सूरों का यह गीतिकाव्य इतना सरस व प्रभुर है कि कालिदास की कृतियों को भी मात करता है। भावसौष्ठव, कल्पनोत्कर्ष और सुललित पदावली के कारण रचना अपने ढंग की एक ही है।

तिरुमलांबा (रानी)—राजा अच्युत राय की पत्नी तिरुमलांबा ने 'वरदाम्बिकापरिणयचम्पू' की रचना १५२९-४० के बीच में किसी समय की। इसमें अच्युत राय और वरदाम्बिका के प्रेम तथा परिणय का वर्णन है। सम्भव है, रानी ने नामान्तर से अपनी ही कथा अंकित की हो। कृति से कर्त्तों की पुष्ट कथना तथा संस्कृत-भाषा पर पूर्ण अधिभार का परिचय मिलता है।

त्रिविक्रम भट्ट—शाब्दिक्यगोत्री त्रिविक्रम वा सिंहादित्य, नेमादित्य (देवादित्य) के पुत्र थे। संस्कृत नृपति तृतीय इन्दु (११४-११६ ई०) के सभाकांब थे। 'नलचम्पू' (दमयन्तीकथा) और 'मदालसाचम्पू' इनकी विख्यात कृतियाँ हैं। ये संस्कृत-साहित्य के सर्वश्रेष्ठ दलेष-कवि हैं। 'नलचम्पू' में सरस तथा चमत्कारपूर्ण श्लेषों का प्राचुर्य है। इस कृति के कमनीय उद्धरणों को भोजराज तथा विश्वनाथ ने अनेकत्र उद्धृत किया है। नलचम्पू संस्कृत का प्रथम उपलब्ध चम्पू है।

दंडो—कहा जाता है कि दंडी का जन्म भारवि की चौथी पीढ़ी में हुआ था। इनकी माता का नाम रौरी तथा पिता का वीरदत्त था। वे सप्तमी शती के उत्तरार्द्ध तथा अष्टमी के पूर्वार्द्ध में विद्यमान थे और काश्मीर के पल्लवनेरेशों की सभा में रहते थे।

इनकी तीन रचनाएँ हैं—दशकुमारचरित, काव्यदर्श तथा अवन्तिसुन्दरीकथा (?)। एक किंवदन्ती के अनुसार इन्होंने 'काव्यदर्श' की रचना पल्लवनेरेश के पुत्र के शिक्षार्थ की थी। 'दशकुमारचरित' नामक प्रख्यात गद्यकाव्य में दस कुमारों के रोमाञ्जनक चरित प्रस्तुत किये गये हैं। छल-कपट, मारकाट तथा सत्यानृत से परिपूर्ण होने के कारण रचना अत्यन्त सजीव है। पात्रों के चरित्र सुन्दर शैली में हैं तथा हास्य और व्यंग्य से पूर्ण हैं। भाषाशैली के विचार से भी यह रचना रतुय है। भाषा प्रवाहपूर्ण, परिष्कृत तथा मुद्रावरण से अलंकृत है। जो पदालित्य दंडी में है वह अन्यत्र दुर्लभ है। कहा भी है—'दण्डनः पदालित्यन्'। कुछ आलोचक वाल्मीकि और व्यास के अनन्तर इन्हें ही तीसरा कवि मानते हैं—

जाते जगति वाल्मीकौ कविरित्यभिधाऽभवत् ।

कवी इति ततो न्यासे कवयस्त्वयि दण्डनि ॥

दामोदर मिश्र—इनके महानाटक 'हनुमन्नाटक' की रचना ८५० ई० के पूर्व हुई थी। इसमें १४ अंक हैं और कथानक रामायण पर आधृत है। प्रस्तावना और प्राकृत का अभाव, पद्यों की प्रचुरता, गद्य की न्यूनता, पात्रों की बहुलता तथा चिह्नक की अनिश्चयमानता इसकी मुख्य विशेषताएँ हैं। इसके दो संस्करण हैं—प्रथम दामोदर मिश्र कृत, द्वितीय त्रिनेत्र ९ अंक है, मधुसूदन-रचित है।

दिङ्नाग—'कुन्दमाला' नाटक के रचयिता दिङ्नाग या धीरनाग (अथवा वीरनाग) पौर्वीय शती के बौद्ध दार्शनिक दिङ्नाग से संबंधित हैं। ये १००० ई० के लगभग हुए हैं। 'कुन्दमाला' की कथा 'उत्तररामचरित' के समान वैदेहीवनवास पर आश्रित है। इस पर उत्तर-रामचरित का पर्याप्त प्रभाव पड़ा है। यह नाटक 'उत्तररामचरित'-सा सरस तो नहीं परन्तु क्रियाशीलता में उससे बढ़कर है। शैली प्रसादपूर्ण है तथा कथन-रस की व्यंजना अच्छी हुई है।

[७७७]

धोयी—जयदेव ने 'गीतगोविन्द' (१-४) में धोयी को 'शुनिधर' लिखा है। ये गोवर्धनाचार्य तथा जयदेव के साथ राजा लक्ष्मणसेन (१११६ ई०) की सभा में विद्यमान थे। मन्दाक्रान्ता छन्द में लिखे हुए इनके 'पवनदूत' में १०४ पद्य हैं। मलयान्तल में कुवलयसूतीनाम्नी गन्धर्वकन्या दिम्बिजयी लक्ष्मणसेन पर आसक्त हो गई और उसने उनके विदेश जाने पर पवन द्वारा संदेश भेजा। 'मेघदूत' का प्रभाव इस कृति पर स्पष्ट दिखाई देता है। काव्य में भावसौष्टव तथा वाक्यविन्यास मनोरम हैं।

नारायणपण्डित—ये बंगाल के राजा भवलचन्द्र के अश्रित थे; इन्होंने १४वीं शती से पूर्व 'हितोपदेश' की रचना बहुत सीमा तक 'पंचतंत्र' के आधार पर की। कई श्लोक कामन्दकीय-नीतिसार से लिए गए हैं। हितोपदेश में नीति-सम्बन्धी रोचक गद्य-पद्यमयी कथाएँ हैं। भाषा सरल एवं सुबोध है।

पद्मगुप्त—ये भारतदेश नृप तथा उनके पुत्र सिन्धुराज (नवसाहसिक) के सभा-कवि थे। इन्होंने 'नवसाहसिक-चरित' काव्य की रचना सं० १००५ ई० के आस-पास की थी। काव्य-का विषय कृति-नाम से ही अनुमित हो जाता है। उसमें सिन्धुराज और कश्मिप्रभा के विवाह आदि का उल्लेख है। ऐतिहासिक तथ्यों की दृष्टि से भी कृति महत्त्वपूर्ण है। कृति में १८ सर्ग तथा १९ प्रकार के छन्द हैं और कुल १५०० पद्य हैं। भाषा व शैली कालिदास से प्रभावित है। काव्य का माधुर्य तथा वर्णनकौशल प्रशंस्य है।

बाणभट्ट—बाणभट्ट के पूर्वज अत्यन्त विद्वान् थे और सोनतीरवर्ती प्रीतिकूट नगर में रहते थे। बाण का जन्म बहस्यायनगोत्री चित्रभानु के गृह में हुआ था। कुसंगति में पंडित बाण पहलें तो आचार्य धूमते रहे परन्तु संभलने पर प्रधान विद्वान् तथा सम्राट् हर्षवर्धन के समारत्न बन गये। बाण अपनी 'कादम्बरी' को पूर्ण नहीं कर पाये थे कि काल का निर्भ्रम आ पहुँचा। उस अपूर्ण कृति को इनके पुत्र पुलिन या पुलिन्दभट्ट ने पूर्ण किया। यहूते हैं बाण का विवाह मयूर कवि की पुत्री से हुआ था और उनकी एक थिक सम्पत्ति थी। बाण का स्फुरण सातवीं शती में हुआ। उनकी प्रख्यात कृतियाँ ये हैं—

१. 'चण्डीशतक' में देवी भगवती की प्रशंसा है।

२. 'हर्षचरित' के प्रथम दो उच्छ्वासों में कवि का आत्मचरित है और शेष छह में हर्ष का चरित। यह रचना बड़ी औत्सव्यता तथा समासबहुला है। संस्कृत की प्राचीनतम उपलब्ध आख्यायिका यही है।

३. 'कादम्बरी' इनकी उत्कृष्टतम कृति है। दो-तिहार्द भाग (पूर्वाह्न) बाणकृत है और उत्तरार्द्ध पुलिन्दरचित। भाव, भाषा, कल्पना, वर्णन, रस-सभी दृष्टियों से कादम्बरी अनुपम है।

४. 'पार्वतीपरिणय' नाटक में शिव-पार्वती के विवाह का वर्णन है, कई लोग इसे किसी अन्य बाण की कृति कहते हैं।

५. 'मुकुटनाडितक' नाटक की इनकी रचना कहा गया है परन्तु अभी तक प्राप्त नहीं हुआ। किसी ने तो समग्र संसार को ही बाण का जूठा कहा है—'द्वगोच्छिष्टं जगत् सर्वम्।' गोवर्धनचरित ने तो बाण को वाणी का अवतार ही माना है—

जाता शिखण्डिनी प्राग् यथा शिखण्डी तथावगच्छामि ।

प्रगल्भ्यमधिकमाप्तुं वाणो वाणी बभूवेति ॥

बिहण—अपने ऐतिहासिक महाकाव्य 'विक्रमांकदेव-चरित' में बिहण ने स्वपरिचय भी प्रस्तुत किया है। बिहण ज्येष्ठकलश और नागदेवी के पुत्र तथा इष्टराय और आनन्द के भाई थे। आश्रयदाता की खोज में वे काश्मीर से निकलकर मधुरा, प्रयाग, काशी आदि होते हुए कल्याणनगर के चातुर्व्यवंशीय विक्रमादित्य षष्ठ (१०५६-११२७) की सभा में जा

[७५८]

पहुँचे। उक्त काव्य में कवि ने निज आश्रयदाता तथा उसके वंश का विस्तृत वर्णन किया है। १८ सर्गों के इस काव्य में माधुर्य एवं प्रसाद की भाषा प्रचुर है तथा वैदभी रीति प्रयुक्त की गई है। यह काव्य अनूठी सक्तियों तथा वीर, शृङ्गार और करुण रस से पूर्ण है।

भट्टनारायण—इनका विशेष वृत्त अभी तक अविदित है। सुनते हैं, वे उन पाँच कनौजियां माह्वणों में से थे जिन्हें वंगनरेश 'आदिशूर' ने बंग में वैदिकधर्म-प्रचारार्थ बुलाया था। आदि-शूर ७१५ ई० में गौड़ाधिपति के पद पर आसीन हुए थे। इनका नाटक 'वेणीसंहार' ८०० ई० में पूर्ण रचा जा चुका था। कवि की उक्त एकमात्र कृति का विषय है महाभारत का युद्ध। रचना में गौड़ी रीति तथा ओजगुण विशिष्ट रूप से मिलता है। नाटकीय सिद्धान्तों के प्रदर्शनार्थ नाटक अत्यन्तोपयोगी है।

भट्टि वा भट्टिस्वामी—'भट्टिकाव्य' (रावणवध) के रचयिता का विशेष वृत्त अज्ञात है। इस महाकाव्य के अन्तिम पद्य से ज्ञात होता है कि बलभी-नरेश श्रीधरसेन की सभा में कवि समाहित था। भट्टि का समय छठी शती का उत्तरार्ध तथा सप्तमी का पूर्वार्ध है।

उक्त महा-काव्य की रचना सरलता से व्याकरण सिखाने को जी गई थी। इसके २२ सर्गों में १६२४ श्लोक हैं। इसके प्रकीर्ण, प्रसन्न, अलंकार और तिङन्त नामक चार भागों में व्याकरण तथा अलंकारों का सुन्दर निरूपण हुआ है। राम-कथा के साथ-साथ पाठक को व्याकरण-ज्ञान भी पूर्णतया हो जाता है। काव्यत्व की दृष्टि से भी ग्रन्थ उपादेय है। कवि ने इसके उद्देश्य के विषय में स्वयं लिखा है—

दीपतुल्यः प्रबन्धोऽर्थं शब्ददुलक्षणचक्षुषाम् ।
हस्तादर्श इवान्धानां भवेद् व्याकरणाद् ऋते ॥

और इस उद्देश्य को पूर्ण में कृति सफल हुई है।

भर्तृहरि—भर्तृहरि का नाम जितना प्रसिद्ध है, उतना ही जीवन-चरित अमुद्ध। कुछ लोग उन्हें महाराज विक्रमादित्य का अग्रज मानते हैं परन्तु अधिकतर विद्वान् इन्हें प्रख्यात बंधाकरण भर्तृहरि से अभिन्न कहते हैं। कुछ लोग इन्हें बौद्ध कहते हैं परन्तु इनकी कृतियाँ इन्हें अद्वैतवादी वैदिकधर्मी धोषित करती हैं। इनका समय सप्तमी शती कहा जाता है।

इनको तीन शतक प्रसिद्ध है—नीतिशतक, शृङ्गारशतक और वैराग्यशतक। भर्तृहरि ने जो पर्याप्त सांसारिक अनुभव प्राप्त किये थे उसी को स्वकृतियों में अंकित कर अश्रय यश प्राप्त किया है। धार्मिक कृतियों में जैसे गीता प्रख्यात है, लौकिक कृतियों में वैसे ही इनकी शतकतयी।

भवभूति—इनको नाटकों की प्रस्तावना से विदित होता है कि इनका जन्म विदर्भ (बरार) के पद्मपुर नगर में उदुम्बरवंशी विप्र-परिवार में हुआ था। इनका परिवार कृष्णयजुर्वेद का अध्येता तथा सोमयाजी था। वे भट्टगोपाल के पौत्र तथा नीलकण्ठ के पुत्र थे। इनकी जननी का नाम जनुकर्णा था तथा इनका निजी नाम श्रीकण्ठ था। भवभूति इनका प्राज्ञ-प्रदत्त नाम था और ये ज्ञाननिधि के शिष्य थे। इनका जीवन-काल सम्भवतः ६५०-७५० ई० के मध्य में होगा। वे प्रख्यात सीमांसक कुमारिल भट्ट के भी शिष्य थे और दार्शनिक जगत् में भट्ट उम्बैक के नाम से विख्यात थे।

इनके तीन रूपका प्राप्त हुए हैं—महावीरचरित, मालतीमाधव और उत्तररामचरित। महावीरचरित के छह अंकों में श्रीराम का चरित प्रस्तुत किया गया है। नाटक वीररस-प्रधान है। मालतीमाधव दस अंकों का विशाल 'प्रकरण' है। इसमें मालती तथा माधव की कल्पनिक प्रेम-कथा को भावपूर्ण ढङ्ग से उपन्यस्त किया गया है। उत्तररामचरित में सीताजीवन का बहुत ही करुणाजनक वर्णन है। सात अंकों की यह रचना भवभूति की सर्वोत्कृष्ट कृति है। इसमें कवि ने राम के विलाप से निजीव पथरों तक को रूलाया है। कवि ने अपने कल्पना-बल से बाल्मीक्य

[७४१]

रामायण के कई प्रसंगों में परिवर्तन कर दिये हैं। इनकी कविता में भाव तथा भाषा का अतुल्य सम्मिश्रण है। भाषा में भावानुकूल परिवर्तन करने में ये विशेष निपुण थे। यों तो सभी रसों की अभिव्यक्ति में ये कुशल थे परन्तु कर्णरस की व्यंजना में तो विशेष दक्ष थे। नाटककारों में कालिदास के पश्चात् इन्हीं का नाम लिया जाता है।

भारवि—‘अवन्तिस्तुन्दरीकथा’ के अनुसार ये दक्षिणतन्त्र थे और पुलकेशी द्वितीय के अनुज विष्णुवर्धन (शासनकाल ६१५ ई०) के सभाकवि थे। कुछ विद्वान् इन्हें ऋष्यकीरवासी बताते हैं। इनका समय ६०० ई० के लगभग है।

‘किरातार्जुनीय’ महाकाव्य ही इनकी एकमात्र प्राप्त कृति है। महाकाव्य के सभी लक्षण इसमें पूर्णतया विद्यमान हैं। इसका कथानक, जो महाभारत के वनपर्व पर आश्रित है, इस प्रकार है—घट में पराजित पाण्डव जब दैतवन में रह रहे थे तब उनके गुप्तनर ने दुर्योधन के सुष्यवस्थित शासन की स्तुति की। इस पर द्रौपदी और भीमसेन ने युधिष्ठिर की युद्धार्थ उत्तेजित किया परन्तु धर्मपुत्र ने प्रतिज्ञाभंग अनुचित माना। वेदव्यास की प्रेरणा से अर्जुन शिवजी से पाशुपतास्त्र प्राप्त करने को इन्द्रकील पर्वत पर पहुँचे। उनकी उग्र तपस्या को अम्सरार्थ भी भग्न न कर सकी। पीछे अर्जुन ने किरातवेशी शिव की अपनी शक्ति से प्रसन्न कर पाशुपतास्त्र की प्राप्ति की।

समय संस्कृत-बाह्यमय में किरातार्जुनीय-सा ओजःपूर्ण काव्य अन्य नहीं है। १८ सर्गों के इस महाकाव्य में प्रधान रस वीर है, अन्य रस गौण। अर्थगौरव अर्थात् थोड़े शब्दों में विशाल और गंभीर अर्थ को सञ्चिष्ट कर देना भारवि की उल्लेख्य विशेषता है जिसके कारण ‘भारवेरार्थगौरवम्’ उक्ति प्रख्यात हो चुकी है। भारवि का काव्य आपततः कठिन है परन्तु अर्थ व्यक्त होने पर वैसे ही आनन्ददायक सिद्ध होता है जैसे नारियल की जटा और कोल तोड़ देने पर उसका फल। इन्हीं गुणों के कारण महाकाव्यों का बृहत्त्रयी (किरात, माघ और नैषध) में ‘किरातार्जुनीय’ का स्थान प्रमुख है।

भास—प्रख्यात नाटककार भास के काल के सम्बन्ध में विद्वानों में ऐकमत्य नहीं है। कुछ इन्हें तीसरी शती ईसवी का बताते हैं तो कुछ ई० पू० दूसरी शती का। इनके तेरह नाटक प्राप्त हुए हैं जिनका संश्लिष्ट परिचय इस प्रकार है—

१. प्रतिमा नाटक—इसमें राम-वनवास से रावणवध तक की घटनाओं का उल्लेख है। केकय से लौटते हुए भरत देवकुल में दशरथ की प्रतिमा देखकर उनकी मृत्यु का अनुमान करते हैं। अतएव नाटक को उक्त नाम दिया गया है।

२. अभिषेक नाटक—राम के राज्याभिषेक का वृत्त है।

३. पञ्चरात्र—महाभारत से सम्बन्धित एक कल्पित घटना के आधार पर रचा गया है; दुर्योधन की शर्त के अनुसार द्रोंग ने पाण्डवों को पाँच रातों में बँद्ध लिया और दुर्योधन ने उन्हें आधा राज्य दे दिया, यही कथानक-सार है।

४-८. मध्यमन्यायोग, दूतघटोत्कच, कर्णभार, दूतवाक्य, ऊर्ध्वग के कथानक महाभारत के विशिष्ट प्रसंगों से सम्बन्धित हैं।

९. वात्सरहित—का सम्बन्ध बालकृष्ण की लीलाओं से है।

१०. दरिद्रचारुदत्त—इसमें निर्धन परन्तु चरित्रवान् चारुदत्त और शुण्णप्राहिणी वेश्या वसन्तसेन के प्रणय का चित्रण है।

११. अविमारक—में एक प्राचीन आख्यायिका को नाटकीय रूप दिया गया है।

१२. प्रतिज्ञायौगन्धरायण—इसमें मन्त्री यौगन्धरायण की नीति से वसन्तराज उदयन के कार्यात्मक होने तथा अवन्तिकुमारी वासवदत्ता से उनके विवाह का वर्णन है।

[७५०]

१३. स्वप्नवासवदत्त—इसे 'प्रतिज्ञायौगन्धरायण' का उत्तरार्द्ध कहना उचित है। इसमें उदयन का मगधकुमारी पद्मावती से विवाह और वासवदत्ता से पुनर्मिलन वर्णित है। यही भास की सर्वोत्तम कृति है।

भास नवों रसों की व्यंजना में कुशल है। उनके चरित्र-चित्रण मनोवैज्ञानिक है और संवाद सुस्त तथा संक्षिप्त। सबसे बड़ी बात यह है कि ये नाटक अभिनय के लिए अल्पन्त उपयुक्त है।

भोज—सिंधु के पुत्र परमार-वंशीय राजा भोज की राजधानी मालवा की धार या धाराचगरी थी, जहाँ इन्होंने १०१८-१०६३ ई० तक शासन किया। पिता की मृत्यु के अनन्तर बालक भोज, राज्यलोलुप चञ्चु मुंज के हाथों कालकवलित होने को थे वे परन्तु भाग्यवश दत्त गये। वे बहुत उदार, विद्वान् तथा विद्वानों के आश्रयदाता थे। भोजप्रबन्ध आदि कई ग्रंथों में इनके गुणों की कथाएँ लिखित हैं।

शृङ्गारमंजरी (आख्यायिका), विद्याविनोद (काव्य), शिवदत्त (स्तोत्र), शिवतत्त्वरत्नकलिका (शिवस्तोत्रव्याख्या), सुभाषित, संगीतप्रकाशित, शृङ्गारप्रकाश, रामायणचम्पू और सरस्वती-कंठाभरण इनकी कृतियाँ कही जाती हैं।

मंखक—कादमीरनेश महाकवि मंखक प्रख्यात आलंकारिक रचयक के शिष्य थे और गुरु-शिष्य दोनों ही काशीनरेश राजा जयसिंह (११२९-५० ई०) के सभापंडित थे। स्वर्गिय पिता की आज्ञानुसार ही मंखक ने 'श्रीकण्ठचरित' नामक २५ सर्गों के सुन्दर महाकाव्य की रचना की जिसमें शंकर और त्रिपुर का युद्ध वर्णित है। इनकी शैली कालिदासानुसारिणी है। प्राकृतिक वृद्धों, सरस भावों तथा प्रभावक कल्पनाओं को कोमल पदावली में व्यक्त करने में मंखक विशेष कुशल है।

मयूरभट्ट—ये बाणभट्ट के सगे सम्बन्धी थे और वाराणसी के पूर्व में रहते थे। बाण के समान ये भी हर्षवर्द्धन की सभा के कवि थे। इन्होंने अपने कुछ रोग के निवारणार्थ स्रग्धरा धृत्त में 'सूर्यशतक' स्तोत्र का प्रणयन किया जो बस्तुतः प्रौढ़ और मार्मिक कृति है। ये सूर्यदेव के रथ, अश्व आदि उपकरणों के वर्णन में तथा अनुप्रासमयी भाषा के प्रयोग में विशेष सफल हुए हैं।

माघ—महाकवि माघ के पितामह सुप्रभदेव गुजरात के वर्मल्ल नामक राजा के मुख्यमंत्री थे और पिता दत्तक प्रकाण्ड विद्वान् तथा वदान्य। माघ का जन्म भोजमाल नगर में हुआ था और ये धारा के भोज से भिन्न किसी अन्य राजा भोज के मित्र थे। सुसम्पन्न कुल में उत्पन्न होने पर भी, कहते हैं इनकी मृत्यु अत्यधिक उदारता के कारण, दरिद्रतावश हुई थी। ये सातवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में विद्यमान थे।

ये अपने एकमात्र उपलब्ध महाकाव्य 'शिशुपाल-वध' के कारण अमर हो गये हैं। बीस सर्गों के इस महाकाव्य में सुधिष्ठिर के राजस्य यज्ञ में श्रीकृष्ण के हाथों शिशुपाल के वध का विस्तृत वृत्त वर्णित है। काव्य के अध्ययन से माघ की राजनीतिज्ञता और अलंकारप्रियता का अच्छा परिचय प्राप्त हो जाता है। माघ केवल रससिद्ध कवि ही नहीं, सर्वशास्त्रविद् गम्भीर विद्वान् भी थे। शास्त्रीय सिद्धान्तों का जितना सुन्दर सरस प्रतिपादन शिशुपालवध में उपलब्ध होता है, किसी अन्य काव्य में नहीं। माघ का पांडित्य सर्वतोमुखी है, वेद तथा दर्शन से लेकर राजनीति तक की विशेषज्ञता इनके ही काव्य में दिखाई देती है। नव-नव शब्दों के प्रयोग तथा व्याकरणानुरूप नव-नव शब्दरूपों के व्यवहार के कारण भी माघ विशेष प्रख्यात हैं।

किसी भारतीय आलोचक का मत है—

उपमा कालिदासस्य, भारवोर्यगौरवम्।

दृष्टिनः पदरूपास्त्वर्थः, माघे सन्ति त्रयो गुणाः ॥

सुरारि—'अनर्थराज' नाटक के रचयिता सुरारि मीदगल्यगोत्री वर्धमानक तथा तन्तुमती के पुत्र थे। ये संभवतः माहिष्मती (दक्षिण में स्थित माण्ड्याला नगरी) के निवासी थे और ८०० ई०

[७५१]

के लक्षणम वर्णनान् यै । 'अनर्षराघव' सात-अंकों का और भवभूति के महावीरचरित से प्रभावित नाटक है। उसमें ताड़कावध से लेकर रामराज्याभिषेक तक की घटनाएँ वर्णित हैं। कविता प्रौढ़ तथा पण्डित्यपूर्ण है, वर्णन प्रशस्त है और शब्दराशि विशाल है। इनकी उपमाओं की मौलिकता देखकर ही कहा गया है—'मुररेस्तृतीयः पन्थाः'।

रत्नाकर—कादमीरी महाकवि रत्नाकर, अमृतमानु के पुत्र और कादमोर-नरेश जयापीठ (८०० ई०) के समापण्डित थे। इनके 'हरविजय' महाकाव्य में ५० सर्ग तथा ४३२१ पद्य हैं। आकार के कारण ही नहीं, काव्योचित अन्य गुणों के कारण भी यह महाकाव्य संस्कृतवाङ्मय में विशिष्ट स्थान रखता है। यह महाकाव्य ललित, मधुर, प्रसादोपेत भाषा तथा चित्र, यमक और श्लेष के चमत्कारों से मण्डित है।

इस महाकाव्य में शंकर द्वारा अन्धक असुर के बध का वर्णन है। रत्नाकर ने 'शिशुपालवध' को मात करने के लिए इस काव्य का प्रणयन किया था और उनका प्रवास व्यर्थ नहीं हुआ।

राजशेखर—ये 'महाराष्ट्रचूडामणि' कविवर अकालजलद के प्रपौत्र तथा बुर्दुक और शीलवती के पुत्र थे। ये स्वयं यायावर क्षत्रिय थे और इनकी पत्नी अम्बन्तिसुन्दरी चौहान, संस्कृत और प्राकृत की प्रकाण्ड विदुषी थी। राजशेखर महाराष्ट्र, सम्भवतः विदर्भ के रहनेवाले थे और कन्नोज-नरेश महेंद्रपाल के गुरु थे। अतः इनका काल नवीं शती का उत्तरार्ध तथा दशमी का पूर्वार्ध माना जाता है। राजशेखर धुरंधर विद्वान् थे और अपने को वाल्मीकि तथा भवभूति का अवतार समझते थे। ये भूगोल के बहुत बड़े पण्डित थे परन्तु इनका इस विषय का ग्रन्थ 'भुवनकोष' आज अप्राप्य है। ये संस्कृत, प्राकृत, पेशाची तथा अपभ्रंश के दिग्गज विद्वान् तथा लेखक थे।

इनके भार नाटक उपलब्ध हैं—कपूरमंजरी, विडशालभञ्जिका, बालरामायण और बाल-भारत अथवा प्रचण्डपण्डव। कपूरमंजरी प्राकृत में लिखित एक 'सटुक' है जिसमें चण्डपाल तथा राजकुमारों कपूरमंजरी का विवाह चित्रित किया गया है। विडशालभञ्जिका चार अङ्कों की प्रेमाख्यानरसमय नाटिका है। बालरामायण दश अङ्कों का महानाटक है। बालमहाभारत के दो ही अंक प्राप्त हैं। भाषा-कौशल तथा सुन्दर उक्तिपों से युक्त होने पर भी इनके नाटक नाटकीय कला की दृष्टि से उत्कृष्ट नहीं माने जाते। इनका महाकाव्य 'हरविलास' तो आज उपलब्ध नहीं है परन्तु 'काव्यमीमांसा' इनका अलंकारविषयक प्रौढ़ ग्रन्थ है।

बन्सराज—कालिंजर-नरेश परमादेव (११६३-१२०३ ई०) के भन्त्री बन्सरज के छह रूपक उपलब्ध हुए हैं—१. किराताजुनीय-व्यायोग, २. कपूरचरित, ३. हास्यचूडामणि, ४. रुक्मिणी-हरण, ५. त्रिपुरदाह और ६. समुद्रमंथन। किराताजुनीय-व्यायोग की रचना भारवि के किराताजुनीय के आधार पर हुई है। कपूरचरित 'भाण' में छतकर कपूर ने स्वरोचक अनुभव वर्णित किये हैं। हास्यचूडामणि पंकीकी प्रहसन है। रुक्मिणीहरण चतुरात्मक 'ईहान्त' है। त्रिपुरदाह चतुरकी 'हिम' है जिसमें शिव द्वारा त्रिपुर असुर के पुर के विध्वंस का वर्णन है। समुद्रमंथन स्वकी 'समवकार' है जिसमें समुद्रमंथन तथा लक्ष्मी-विष्णु के विवाह का चित्रण है। भास के पश्चात् बन्सराज ने ही अनेक प्रकार के रूपकों की रचना की है। इनके लब्धाकार नाटकों की शैली सरल और सशक्त है। उनमें नाटकीय कियाशीलता और रोचकता प्रचुर है।

बाल्मीकि—कहते हैं वाल्मीकि पहले एक दस्यु थे परन्तु सत्संगति से ऋषि बन गये। वे भारत के आदिकवि माने जाते हैं और रामायण आदिकाव्य। ब्रह्मालु लोगों का विश्वास है कि रामायण की रचना श्री राम के आविर्भाव से सत्सौ वर्ष पूर्व की जा चुकी थी परन्तु आधुनिक विद्वान् इसे आज से प्रायः ढाई सहस्र वर्ष पूर्व की कृति बताते हैं। अधिकतर विद्वान् इसके उत्तरकाण्ड को पूर्णतः और बालकाण्ड को अंशतः प्रक्षिप्त मानते हैं। रामायण में २४०० श्लोक हैं जिनमें बहुलता अनुष्टुप् छन्द की है। उत्तरी-भारत, बंगाल तथा काश्मीर में रामायण के

जो संस्कारण प्राप्त होते हैं उनमें पर्याप्त पाठभेद हैं। सच्चा कवि और उत्तम महाकाव्य कैसा होना चाहिए, यह हमें वाल्मीकि-रामायण से ही विदित होता है। सामान्य मनुष्य गृहस्थ बनता है परन्तु गार्हस्थ्य को सफल बनाना कितना दुष्कर है, इसे गृहस्थ ही जानते हैं। इतनी उच्च उद्देश्य की सिद्धि का मार्ग वाल्मीकि ने दशरथ, राम, लक्ष्मण, सीता, भरत आदि के दिव्य चरित्रों से प्रशस्त किया है। किसी विद्वान् का यह विचार अत्युक्तियुक्त नहीं है कि संसार-भर के साहित्य में सदाचार और काव्यत्व का जितना सुन्दर मिश्रण वाल्मीकि-रामायण में हुआ है, उतना अन्यत्र कहीं नहीं। रामायण कर्णरस-प्रधान महाकाव्य है। इसमें बाह्य प्रकृति तथा मानवीय प्रकृति का अत्यन्त मनोरम चित्रण हुआ है। यह प्राचीन भारत की सभ्यता का उज्ज्वल दर्पण है। यही कारण है कि इसके उदात्त आदर्शों तथा पवित्र कथा के आधार पर परवर्ती असंख्य कवियों ने अपने काव्य, नाटक, चम्पू आदि की रचना की तथा इस पर तिलक, शृङ्गारतिलक, रामायणकूट, वाल्मीकितोत्पत्यरत्न, विवेकतिलक आदि अनेक टीकाएँ लिखकर विद्वानों ने अपने प्रयास को सफल समझा।

विशाखदत्त—इसके पितामह बटेश्वरदत्त अथवा बत्सराज कहीं के सामन्त थे और पिता भास्करदत्त वा पृथु ने महाराज-पदवी प्राप्त की थी। विशाखदत्त राजनीति, दर्शन और ज्योतिष के विशेषज्ञ थे। ये वैदिकधर्मवैलम्बी थे परन्तु साम्प्रदायिक कट्टरता से रहित थे। इन्होंने अपने प्रख्यात राजनीतिक तथा कूटनीतिक नाटक 'मुद्राराक्षस' की रचना छठी शती ईसवी के उत्तरार्द्ध में की थी। नाटक में चाणक्य का समय उद्योग इसी उद्देश्य की सिद्धि के लिए है कि राक्षस को चन्द्रगुप्त मौर्य का प्रधान मन्त्री बना दिया जाय और अन्ततः वे उसमें सफल होते हैं। राजनीतिक चालों तथा चरित्र-चित्रण की दृष्टि से नाटक विशेष महत्त्वपूर्ण है। विशाखदत्त की दूसरी रचना 'देवीचन्द्रगुप्त' के कुछ ही उद्धरण अन्य कृतियों में प्राप्त हुए हैं। उन्हीं के आधार पर चन्द्रगुप्त के अग्रज रामगुप्त की सत्ता ऐतिहासिकों ने स्वीकृत की है।

विष्णुशर्मा—महिलाशौच के शास्त्रक अमरशक्ति अपने मूर्ख राजकुमारों को चतुर बनाने के लिए योग्य शिक्षक की खोज में थे। इस कार्य को विष्णुशर्मा नामक ब्राह्मण ने पंचतंत्र की रचना द्वारा छह मास में ही पूर्ण कर दिया। 'पंचतंत्र' का रचना-काल ३०० ई० के लगभग माना जाता है। छठी शती में इसका पहलवी भाषा में अनुवाद भी हो गया था। कदाचित् आरम्भ में इसके बारह भाग थे परन्तु वर्तमान में इसके पाँच भाग हैं—मित्रभेद, मित्र-सम्प्राप्ति, काकोलूकीय, लम्ब-प्रणाम, अपरीक्षितकारक। इस कथा-ग्रन्थ में कथाएँ गद्य में हैं और शिक्षाप्रद बातें पद्यों में। एक-एक मुख्य कथा के अन्तर्गत अनेक गौण कथाएँ दी गई हैं। सदाचार, व्यवहार और नीति के शिक्षार्थ यह कृति अत्यन्त उपयोगी है और यही कारण है कि अनेक विदेशी भाषाओं तक में अनूदित हो चुकी है।

वैकुण्ठधरि—वे मद्रास प्रान्त के श्रीवैष्णव थे। इन्होंने अपने 'विष्णुगादार्शचम्पू' में मद्रास में अंग्रेजों के दुराचार का भी वर्णन किया है जिससे ये सत्रहवीं शती के मध्य के प्रतीत होते हैं। इनका यशोविस्तारक काव्य तो "लक्ष्मीसहस्र" है जिसको एक सहस्र ललित व भावपूर्ण पद्यों की रचना कहते हैं, इन्होंने एक ही रात में कर दी थी। काव्य में दलेप तथा अन्यालंकारों की छटा अवलोकनीय है। इस अत्यन्त सरस व उत्प्रेक्षाबहुल रचना से कवि अमर हो गया है।

व्यास—व्यासजी का पूरा नाम कृष्णद्वैपायन व्यास था। ये पराशर और सत्यवती के पुत्र थे। क्षुभ्रमे है, रंग से कृष्ण होने के कारण कृष्ण, द्वीप में उत्पन्न होने के कारण द्वैपायन तथा वैदिक मन्त्रों की वर्तमान व्यवस्थित रूप देने के कारण ये व्यास कहलाए। भारतीय परंपरा इन्हें महाभारत, १८ पुराणों तथा ब्रह्मसूत्रों का कर्ता मानती है, परन्तु आधुनिक विद्वान् महाभारत को न एककर्तृक मानते हैं न एकजालीन। उनका मत है कि महाभारत के विभिन्न अंशों की रचना अनेक विद्वानों द्वारा समय-समय पर होती रही और उसे वर्तमान रूप ३२० ई० पू० तथा ५० ई० के मध्य में किसी समय प्राप्त हुआ।

[७५२]

अनुसन्धायकों का मत है कि पहले महाभारत का नाम 'जय' था और उसमें ८८०० श्लोक थे। पीछे इसके परिवर्द्धित रूप का नाम 'भारत' पड़ा और श्लोकसंख्या २४००० हो गई। अन्त में जब सीता ने अनेक प्रसंग और बढ़ाए तब इसका नाम 'महाभारत' हो गया और श्लोक-संख्या एक लाख के लगभग तक आ पहुँची। अस्तु, महाभारत संसार का बृहत्तम काव्य माना जाता है परन्तु इसका वास्तविक महत्त्व बृहदाकारता के कारण न होकर एक विश्वकोश-सा होने के कारण है। स्वयं महाभारत में लिखा है कि यह सर्वप्रधान काव्य, समग्र दर्शन-सार, स्मृति, इतिहास, चरित्र-चित्रण की खान तथा पंचम वेद है। यह भी कहा गया है कि—

धर्म चार्थं च कामे च मोक्षे च भरतर्षभ ।

यदिहास्ति तद्ग्रन्थग्र, यत्रोहास्ति न तत् क्वचिद् ॥

भाव यह कि धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष-विषयक जितनी जानकारी इसमें है उतनी अन्यत्र नहीं।

शंकराचार्य—स्वामी शंकराचार्य (७८८-८२० ई०) दक्षिण के नाम्द्वी ब्राह्मण थे। ये प्रकाण्ड पण्डित और विरगज दार्शनिक थे। इन्होंने अल्पावस्था में ही संन्यास लेकर ब्राह्मण-धर्म के पुनरुत्थान में महनीय सहयोग दिया। आज इनकी विद्वत्ता की संस्मर मुक्तकण्ठ से प्रशंसा करता है। इनके नाम से बहुत से ग्रन्थ प्रचलित हैं परन्तु निम्नलिखित ग्रन्थों के शंकर-कृत होने में सन्देह नहीं किया जाता—ब्रह्मसूत्र-भाष्य, गीता-भाष्य, उपनिषदों के भाष्य, उपदेश-साहस्री, आत्मबोध, हस्तामलक। यद्यपि इनकी विश्वव्यापी कीर्ति के आधार इनके दार्शनिक ग्रन्थ ही हैं तथापि अनेक देवी-देवताओं के जो स्तोत्र इन्होंने लिखे हैं वे अत्यन्त सरस हैं और पाठकों को भक्तिरस में तन्मग्न करने में सर्वथा समर्थ हैं। इनकी कविता का परम माधुर्य 'आनन्दलहरों' में लिया जा सकता है जो नाव, भाषा, रस, अलंकार, साहित्य, तंत्र आदि सभी कृष्टियों से अपूर्व है।

शक्तिभद्र—मालावार जनश्रुति शक्तिभद्र को स्वामी शंकराचार्य (७८८-८२० ई०) का शिष्य बताया है, अतः इन्हें नवीं शती के प्रारम्भ का कवि माना जा सकता है। इनका 'आश्वर्य-चूडामणि' नाटक उत्तररामचरित के बाद सर्वोत्तम रामनाटक समझा जाता है। नाटक अद्भुत रस-प्रधान है और सरल, आडंबररहित भाषा में लिखा गया है।

शिवस्वामी—कादमीरी महाकवि शिवस्वामी आनन्दवर्धन तथा रत्नाकार के समकालीन थे और विख्यात कादमीरनरेश अच्युतचर्म (८५५-८८४ ई०) के शासनकाल में विद्यमान थे। शैव होते हुए भी इन्होंने बौद्धाचार्य चन्द्रमित्र को प्रेरणा से बौद्ध-साहित्य में प्रसिद्ध कफिकण के आख्यान के आधार पर एक सुन्दर महाकाव्य 'कफिकणध्यायुदयम्' की रचना की। इसमें दक्षिणात्यनरेश कफिकण द्वारा आश्वस्ती-नरेश प्रसेनजित की पराजय तथा अन्त में कफिकण के बुद्ध की शरण में जाने का उल्लेख है। शिवस्वामी ने अपने को 'यमककवि' कहा है और उनके काव्य में यमक, उपमा, उल्लेख तथा श्लेष की अद्भुत छटा द्रष्टव्य है। निरसन्देह यह काव्य संस्कृत वाङ्मय का एक उज्ज्वल रत्न है।

शूद्रक—महाराज विक्रमादित्य के समान ही महाराज शूद्रक के विषय में अनेक दन्तकथाएँ भारत में प्रचलित हैं। इनका उल्लेख कादम्बरी, कथासरित्सागर आदि अनेक ग्रन्थों में हुआ है। 'मृच्छकटिक' में इन्होंने अपना जो परिचय दिया है उससे ये शिवजी के कृपापात्र, अश्वमेधयात्री, युद्धकुशल, वेदज्ञ, हाथियों से बाहुयुद्ध करने के प्रेमी विदित होते हैं। शतायु हो जाने पर पुत्र को सिंहासनासिन कर इन्होंने अग्निप्रवेश द्वारा प्राणत्याग किया था।

इन्होंने 'मृच्छकटिक' की रचना पाँचवीं शती में की थी। इस 'प्रकरण' के दस अंकों में उज्जयिनी की प्रख्यात वेदया वसन्तसेना और उदारमना सेठ चारुदत्त के प्रेम का सुन्दर वर्णन

[७२४]

किया गया है। कृति का प्रेम-प्रेमविषयक अंश भास-कृत 'दरिद्रचारदत्त' से बहुत अधिक प्रभावित है परन्तु राजनीतिक भाग कवि की निजी सम्पदा है। 'शृङ्खलकटिक' की सबसे बड़ी विशेषता उसकी प्राकृत भाषा है। जितनी प्राकृत इस नाटक में प्रयुक्त हुई है उतनी अन्य कितनी में भी नहीं। नाटक में पात्रों का चरित्र तथा समाज का चित्र सरल शैली में सम्यक् चित्रित किया गया है। नाटक का प्रधान रस शृङ्गार है।

श्रीहर्ष—श्रीहर्ष का जन्म हीर पण्डित और मामल्लदेवी के गृह में हुआ था। हीर पण्डित कान्ब-कुब्जेश्वर जयचंद्र के पिता विजयचंद्र की समा के प्रधान पण्डित थे परन्तु संयोगवश मैथिल नैयायिक उदयनाचार्य से शास्त्रार्थ में पराजित हो गये थे। मरणोपरान्त हीर ने पुत्र को कहा— 'यदि तুম सुपुत्र हो तो मेरे विजेता को पराजित करना' श्रीहर्ष ने गंगातट पर चिन्तामणि मंत्र का वर्ष-भर जप किया और सफलमनोरथ हुए। श्रीहर्ष जयचंद्र की समा के रत्न तो थे ही, सम्भवतः विजयचंद्र की समा को भी सुश्रुत कहे जायें, क्योंकि उन्होंने 'विजयप्रशस्ति' उन्हीं के नाम पर रची है। ये रससिद्ध कवि ही न थे, प्रकण्ठ पण्डित भी थे, जैसा कि इनके 'खण्डनखण्डखाण्ड' से सिद्ध होता है। इनका सिद्ध योगी होना नैषधकाण्ड के अन्त्य श्लोक से सिद्ध होता है—

यः साक्षात् कुरुते समाधिषु परं ब्रह्म प्रमोदार्णवम् ।

इनका आदिभांवकाल बारदवी सती का उत्तरार्द्ध है।

श्रीहर्ष ने अपनी कृतियों का उल्लेख 'नैषध' में इस क्रम से किया है—(१) स्वैर्यविचारण-प्रकरण (दर्शन), (२) विजयप्रशस्ति, (३) खण्डनखण्डखाण्ड (विदान्त), (४) गौडोर्वीशकुलप्रशस्ति, (५) अर्णवर्णन, (६) छिन्दप्रशस्ति, (७) शिवशक्तिसिद्धि, (८) नवसाक्षात्करितचम्पू, (९) नैषध-धीचरित। सुविख्यात 'नैषधीय चरित' में २२ सर्ग हैं और २८३० श्लोक। इसमें बलदमयन्ती की कथा का सरस तथा सुविस्तृत वर्णन है। नैषध में वैदग्ध्य तथा पाण्डित्य का अद्भुत मिश्रण है। वक्तव्य के प्रयोग में श्रीहर्ष विशेष कुशल हैं। भाव-शक्त तथा कला-पक्ष दोनों की अभिव्यक्ति नैषधकाण्ड में मामिक ढंग से की गई है। किसी आलोचक का यह पक्ष नैषध के महाभाष्य का सचा निदर्शक है—

तावद्वा भारवैभ्रंति यावन्माघस्य नोदयः ।

उदिते नैषधे काण्डे क्व माघः क्व च भारविः ॥

सुबन्धु—अविदित-वृत्त सुबन्धु अपने एकमात्र गणकाण्ड 'वासवदत्ता' से अक्षय कीर्ति के भागी बने हैं। इस काव्य की कथा का वासवदत्ता की प्राचीन कथा से राई-रत्नी भाग का भी सम्बन्ध नहीं है। पूर्ण कथानक कवि के उर्वर मरिचक की वरूपना है। अनुमानतः इसकी रचना सातवीं शती के प्रथम चरण में की गई थी।

अति संक्षेप में कथा यह है कि राजकुमार चिन्तामणि स्वप्न में एक सुन्दर कन्या को देखकर मुग्ध हो जाता है और जगने पर मित्र मकरन्द के साथ उसकी खोज में निकल पड़ता है। उपर कुमुदपुर की राजकुमारी वासवदत्ता भी स्वप्न में एक सुरूप सुवक को देखकर स्वयंवर में आये सुवकों का विचार त्याग देती है। कई विघ्न-बाधाओं के अनन्तर प्रेमियों का सुखद मिलन हो जाता है। 'वासवदत्ता' एक वर्णनबहुल आख्यायिका है जिसमें उपमा, उत्प्रेक्षा और विरोधाभास की बहुलता है परन्तु सर्भग या अर्भग श्लेष तो प्रतिपद पाया जाता है जहाँ कवि की कल्पना प्रशंसनीय है, वहाँ श्लेष की 'अति' तथा तज्जनित दुरुहता अरुचिकर हो गई है।

सोद्वहल—ये गुजरात के कच्छप्रदेश के निवासी थे और कौंकगाभीश मुम्बुगिरज (१०६० ई०) के आश्रित थे। इनका 'उदयसुन्दरीकथ' चम्पूकाव्य है जिसमें प्रतिष्ठान-नरेश मलयवाहन और नागानुप शिखण्डतिलक की पुत्री उदयसुन्दरी के विवाह का वर्णन है। कृति बाण के हर्षचरित

[७५२]

से प्रभावित है और उसमें भाषा का नाधुर्य और लालित्य प्रशंसनीय है। लेखक कमनीय कल्पनाएँ करने में कुशल है।

सोमदेव सूरि—ये जैनकवि राष्ट्रकूटनरेश कुमारजदेव के समकालीन थे। ९५८ ई० में रचित इनके 'यशस्तिलकवम्पू' में अवन्ति-नरेश यशोधर की कथा का वर्णन है। रानो की सकपट चालों से राजा की विरक्ति, बध तथा पुनर्जन्म की घटनाओं का रोचक उल्लेख है। जैनधर्म के पालन को महत्त्व को सम्यक् व्यक्त किया गया है। इसमें अनेक अज्ञात काव्यकारों और कृतिश्यों का उल्लेख है, अतएव साहित्य के इतिहास के विचार से भी कृति महत्त्वपूर्ण है।

हरिचन्द्र—जैनकवियों में हरिचन्द्र का नाम विशेष उल्लेख्य है। ये कायस्थ अग्निदेव तथा रथवादेवी के तनुज थे। सम्भवतः इनका समय ग्यारहवीं शती है। इनके 'धर्मशर्मोन्मुदय' नामक महाकाव्य में पन्द्रहवें तीर्थंकर भर्मुनाथजी का चरित्र वर्णित है। वेदों की रीति में उपनिबद्ध इस काव्य की भाषा अतिसुन्दर और अलंकृत है। जैनसाहित्य में २१ सर्गों के इस महाकाव्य का बही स्थान है जो नैषध और शिशुपालबध का ब्रह्मण-साहित्य में।

हर्षवर्धन—ये धानेसर के महाराज प्रभाकरवर्धन के द्वितीय पुत्र थे और अग्रज राज्यवर्धन के पश्चात् सिद्धासनासने हुए थे। इन्होंने ६०६-६४८ तक शासन किया था। बाणभट्ट, मयूरभट्ट और दिवाकर इन्हीं के सभापंडित थे। इनके तीन रूपक मिलते हैं—रत्नावली, प्रियदर्शिका और नागानन्द। प्रथम दो संस्कृत की प्राचीनतम नाटिकाएँ हैं और कत्सराज उदयन की प्रणयकथाओं के आधार पर प्रणीत हैं। नागानन्द का आधार एक बौद्ध कथानक है जिसमें नागों को गरुड़ से बचाने के लिए जीमूतबाहन आत्मसमर्पण कर देता है। इस उच्चादर्श के कारण नागानन्द विद्वत्समाज में विशेष सम्मानित है।

हेमचन्द्र—प्रसिद्ध जैनमुनि हेमचन्द्र का जन्म इंदुकर में १०८८ ई० में हुआ। इनके पिता का नाम छत्रिगणेशो और माता का पहिनी था। इनकी माता ने इन्हें पाँच वर्ष के वय में ही देवेन्द्र सूरि को सौंप दिया और ये विद्याध्ययन में संलग्न हो गये। ये संस्कृत और प्राकृत वाङ्मय के विभिन्न विभागों में ऐसे निष्णात हो गये कि 'कलिकालसर्वज्ञ' कहाने लगे। इनके संस्कृत-प्राकृत ग्रन्थों की पङ्क्तिसंख्या साढ़े तीन करोड़ है। ये गुजराज में राजा जयसिंह और कुमारपाल की सभा में रहे थे और इनकी प्रेरणा से जैनधर्म राज्यधर्म बन गया था। इन्होंने अनशनसमधि से ११७३ ई० में प्राणत्याग किया। इनके 'कुमारपालचरित' में २८ सर्ग हैं—पहले २० संस्कृत में और अन्तिम ८ प्राकृत में। 'त्रिषष्टिशालकापुरुषचरित' और 'स्वविरावली-चरित' में जैन सन्तों की जीवनियाँ हैं। कुछ अन्य कृतियाँ ये हैं—काव्यानुशासन, छन्दोऽनुशासन, देशीनाममाल्य, अभिधानचिन्तामणि, अनेकार्थसंग्रह, निघण्टुशेष, शब्दानुशासन, योगशास्त्र।



षष्ठ परिशिष्ट

न्याय

संस्कृत का शब्द 'न्याय' प्रक्रिया, रीति, नियम, योजना, औचित्य, विधि, समता, धर्मिकता, अभियोग, निर्णय, नीति, तर्क आदि अनेक अर्थों में प्रयुक्त होता है। प्रस्तुत प्रसंग में 'न्याय' से अभिप्राय उन आत्मणकों या लोकोक्तियों का है जिनका प्रयोग नपुंसकविषय के स्पष्टीकरण के लिए दृष्टान्त-रूप में किया जाता है। नीचे कुछ ऐसे न्यायों के अर्थ और प्रयोग अकारादि क्रम से प्रस्तुत किये जा रहे हैं जिनका प्रयोग प्रायः संस्कृत-ग्रन्थों में और यदा-कदा हिन्दी रचनाओं में भी दृष्टिगोचर होता है। आशा है, पाठक इनका आशय हृदयंगम कर इनके उचित प्रयोग से स्व-निबन्धों तथा संवादों को रोचक तथा विशद बनाने में सफल हो सकेंगे।

१. अज्ञातपुत्रनामोत्कीर्तनन्याय—इस न्याय का अर्थ है, पुत्रजन्म से पहले ही उसका नाम घोषित करने की कहावत। अन्धे की उत्पत्ति से पूर्व तो वह जानना भी दुष्कर होता है कि पुत्र होगा वा पुत्री। इसलिए पहले ही उसका नाम बताने किटना बहुत बड़ी मूर्खता माना जाता है। इसी प्रकार असिद्ध कार्य से सम्बन्धित भावी बातों की घोषणा करना अन्याय्य होता है। यथा—'यद्यपीदानीं यावत् परीक्षापरिणामोऽपि न घोषितरतथापि रामेणधिनःशिक्षायाः पुस्तकानि क्रीतानि । अज्ञातपुत्रनामोत्कीर्तनं क्षेतत् ।'

२. अन्धगजन्याय—अन्धगजन्याय अर्थात् अंधों और हाथी का दृष्टान्त। कुछ अंधों के मन में हाथी का आकार-प्रकार जानने की इच्छा उत्पन्न हुई। एक ने उसको ढूँढ़ छुई और समझा कि वह सर्पवत् होता है। दूसरे ने उसकी टाँग टटोली और सोचा कि वह स्तम्भ-समान होता है। इसी प्रकार जहाँ-वस्तु के आंशिक ज्ञान से उसके पूर्ण स्वरूप का मिथ्या अनुमान किया जाता है, वहाँ वह न्याय व्यवहृत होता है। जैसे—

तदेतददृश्यं ब्रह्म निर्विकारं कुबुद्धिभिः ।

जात्यन्धगजदृष्टयेव कोटिशः परिकल्प्यते ॥

(नैष्कर्म्यसिद्धिः २।१३)

३. अन्धचटकन्याय—अन्धचटकन्याय अर्थात् प्रज्ञाचक्षु द्वारा चिड़िया के पकड़े जाने की कहावत। यह न्याय घुणाक्षरन्याय का पर्याय है। अन्धा जैसे तो किसी चिड़िया को नहीं पकड़ सकता, संयोगवश उसके हाथ आ जाए तो बात दूसरी है। इसी प्रकार आकस्मिक घटनाओं के लिए इस न्याय का प्रयोग किया जाता है। जैसे—'सम्यग् ज्ञानाणि कृष्णचन्द्रं, नामी मेघावी न च परिश्रमी, यत्तु स उच्चपदं प्राप्तवान् तत्तु अन्धचटकन्यायेनैव ।'

४. अन्धदर्पणन्याय—इस न्याय का अर्थ है, अन्धे को दर्पण दिखाने की कहावत। दर्पण चक्षुष्मान् के लिए ही उपयोगी है, प्रज्ञाचक्षु के लिए नहीं। किसी के लिए वस्तुविशेष की न्यर्थता सूचित करने के लिए यह न्याय प्रयुक्त किया जाता है। यथा—

यस्य नास्ति स्वयं प्रज्ञा शास्त्रं तस्य करोति किन् ।

त्वैननाभ्यां विहीतस्य दर्पणः किं करिष्यति ॥

(इतिोपदेश ३।११५)

५. अन्धपरम्परान्याय—अन्धपरम्परान्याय अर्थात् अन्धे के पीछे अन्धों के चलने की कहावत। इस न्याय का प्रयोग वर्दा किया जाता है जहाँ सामान्य जन अग्रगामी का अनुगमन बिना सोचे-विचार ही करने लगते हैं और परिणाम-रूप में दुःख उठाते हैं। हिन्दों के 'भेड़िया-धँसान'

- तथा 'भेदबाल' मुहारे इसी के समानार्थक हैं। उदाहरण—'विरलविरला एव जना जगति सविवेकमाचरन्ति प्रायस्स्वन्धपरम्परैवावलोक्यते।'
६. अरुण्यरोदनन्याय—उक्त न्याय का अर्थ है, निर्जन में रोने की कहावत। ग्राम, नगर आदि में रोनेवाले व्यक्ति से उसका कुछ पूछा जाता है और उसे नष्ट करने का उद्योग भी किया जाता है। परन्तु मुनसान स्थान में रोना तो सर्वथा व्यर्थ है। इसी प्रकार किसी व्यर्थ कार्य के लिए वा किसी क्रूर के रुमक्ष प्रार्थना के समय पर यह न्याय होता है। यथा—'अरुण्यरोदनमेव धना-दर्थेभ्यः साहाय्याचनं प्रयत्नो भवति।'
७. अरुण्यतीप्रदर्शनन्याय—अरुण्यतीप्रदर्शन न्याय अर्थात् अरुण्यती नक्षत्र दिखाने का न्याय। इसकी व्याख्या स्वामी शंकराचार्य ने इस प्रकार की है—'अरुण्यती दिदर्शयिषुस्तस्मिन्मीषस्थां स्थूलां तं ममूस्थां प्रथममरुण्यतीति ग्राहयित्वा, तां प्रत्याख्याय पश्चादरुण्यतीमेव ग्राहयति।' अर्थात् किसी को अरुण्यती दिखाने का इच्छुक व्यक्ति पहले उसके समीपवर्ती किसी बड़े नक्षत्र को ही अरुण्यती बताता है और उसके बाद वास्तविक अरुण्यती को दिखाता है जिसका प्रकाश मन्द होता है। इस प्रकार जहाँ किसी सूक्ष्म वस्तु के स्पष्टीकरणार्थ पहले किसी स्थूल वस्तु की बताकर निषेध किया जाता है, वहाँ 'अरुण्यतीनक्षत्रन्याय' का प्रयोग होता है। यथा—'अयमेक स्यात् देव इति पूर्वमुद्दिश्य तत्पश्चात्—वासाविकी देवस्तदन्तर्वतीति अरुण्यती-प्रदर्शनन्यायेन गुरुः शिष्यं शापयति।'
८. अशोकवनिकान्याय—अशोकवनिकान्याय अर्थात् अशोक-नामक वृक्षों की बाटिका का न्याय। रावण ने अपहृत सीता को अशोकवाटिका में रखा था परन्तु यह कहना कठिन है कि अन्यत्र कहीं न रखकर वहाँ क्यों रखा? इसी प्रकार जहाँ किसी कार्य की निष्पत्ति के अनेक समान उपायों में से किसी एक का प्रयोग किया जाए, परन्तु यह न बताया जा सके कि अन्यों को छोड़ उसी को क्यों प्रयुक्त किया गया है, वहाँ 'अशोकवनिकान्याय' व्यवहृत होता है। जैसे—'प्रायः निर्विवेकाः स्वामिनः स्वसेवकान् अशोकवनिकान्यायेन विविधकार्येषु प्रवर्तयन्ति।'
९. अशमलोहन्याय—अशमलोहन्याय अर्थात् पत्थर और डेले का न्याय। जिस प्रकार मिट्टी का डेला रुंद से कठोर होता है और पत्थर से कोमल, उसी प्रकार कोई मनुष्य अपने से छोड़ों की अपेक्षा तो महान् होता है और बड़ों की अपेक्षा क्षुद्र। उदाहरण—'अस्मिन् संसारे सर्वे सापेक्षनशगलोहवत्, न हि किमपि अत्यन्तमुत्कृष्टमपकृष्टं वा कथयितुं पार्यते।'
१०. अहिकुण्डलन्याय—अहिकुण्डलन्याय अर्थात् सोंप की कुण्डलाकार स्थिति का न्याय। सोंप स्वभावतः कुण्डली मार कर बैठता है, इसके लिए उसे प्रयास नहीं करना पड़ता। इसी प्रकार जहाँ किसी पदार्थ के स्वाभाविक धर्म का उल्लेख किया जाता है, वहाँ इस न्याय का प्रयोग होता है। जैसे—'अहिकुण्डलवत् स्वाभाविकं हि कवेः काल्यं न हि तत्र तस्य महाप्रयासस्वापेक्षा।'
११. आकाशमुष्टिहननन्याय—इस न्याय का शब्दार्थ है आकाश को मुक्के से पीटने की कहावत। जैसे आकाश को मुक्कों से पीटना असंभव है, वैसे ही किसी को असंभव कार्य करदे देख हम उक्ति का प्रयोग किया जाता है। यथा—'आकाशमुष्टिहननमेव तवायमुद्योगो प्रधानमन्त्रि-पदप्राप्तये।'
१२. आश्रसेकपितृत्वंन्याय—इस न्याय का अर्थ है, आम सौजन्य और वितरों के तर्पण करने की कहावत। आशय वही है जो हिन्दी की कहावत 'एक पंथ दो काज' का है। जहाँ एक क्रिया से दो प्रयोजनों की सिद्धि अभीष्ट हो वहाँ इस न्याय का प्रयोग न्याय्य है। यथा—'संस्तदस्याः अश्रसेकपितृत्वंन्यायेन राष्ट्रसेवामपि कुर्वन्ति, पर्याप्तं वैतनं चापि प्राप्नुवन्ति।'

[७५८]

१३. आवागमोद्कृतन्याय—इस न्याय का अर्थ है—प्रत्येक दिन लड़कियों में वृष मनुष्य का दृष्टान्त । लड़कियों में ही प्रसन्नता का प्रकाशन उचित है । जो मनुष्य कल्पित लड़कियों में वृषि का अनुभव कर मुद्रित होता है, वह सयाना नहीं माना जाता । सो वास्तविक और कल्पनिक प्रसन्नता में भेद करना ही समीचीन है । जैसे—को नाम व्यवहारपटुनामको जगत्याशामो-दकैस्तुतो दृश्यते ।

१४. इषुकारन्याय—इस न्याय का अर्थ है, बाण बनानेवाले का दृष्टान्त । यह न्याय महाभारत के शान्तिपर्व के १७८वें अध्याय के निम्नलिखित श्लोक पर आवृत्त है—‘इषुकारो नरः कश्चिदिषा-वासक्तमानसः । समीपेनापि गच्छन्सं राजानं नावबुद्धवान् ।’ भाव यह कि एक बाणनिर्माता बाण-निर्माण में इतना निमग्न था कि वह पाम से जाते हुए राजा को भी न देख सका । इसी प्रकार की एकाग्रचित्तता के लिए यह न्याय व्यवहृत होता है । यथा—‘विद्याव्रतः स्वप्रत्याध्ययन इत्थं निमग्न सासीत् यदिषुकारन्यायेन कक्षायामागतमध्यापकमपि न शात्वान् ।’

१५. इषुवेगक्षयन्याय :—इस न्याय का अर्थ है—बाणवेग को नाश का दृष्टान्त । धनुष से फेंके हुए बाण की गति क्रमशः क्षीण होती जाती है और अन्ततः समाप्त हो जाती है । इसी प्रकार जहाँ किसी पदार्थ में कारणवशात् जात-क्रिया आदि का क्रमशः हास और अन्त में विनाश हो जाता है, वहाँ यह न्याय प्रयुक्त होता है, यथा—‘इयं सृष्टिरिषुवेगक्षयन्यायेन कालेन स्वयमेव प्रलयमुपैति ।’

१६. उत्खातदंष्ट्रीरगन्याय :—उक्त न्याय का अर्थ है, निर्दन्त किये हुए सर्प का दृष्टान्त । दाँत लसाइ देने पर सर्प की भयंकरता नष्ट हो जाती है । इसी प्रकार जहाँ किसी घातक पदार्थ को अनिष्टकर अन्न का निवारण कर उसकी घातकता नष्ट कर दी जाती है, वहाँ इस न्याय का व्यवहार होता है । यथा—‘इन्द्रप्रदत्तशक्त्या घटोत्कचं हत्वा कर्णः पाण्डवेभ्य उत्खातदंष्ट्रीरगवत् निरुपद्रवः संजातः ।’

१७. उड्डलगुडन्याय :—उक्त न्याय का अर्थ है—ऊँट और लकड़ी का दृष्टान्त । ऊँट पर लकड़ी का भार प्रत्यः लादा जाता है । आवश्यकता के समय ऊँटों में से एक लकड़ी निकालकर (उड्डलक) ऊँट को पीट भी देता है । इसी प्रकार जहाँ विरोधी की युक्ति से ही विरोधी की युक्ति का खंडन कर दिया जाये अथवा वैरियों के उपकरण से ही वैरियों का नाश कर दिया जाये, वहाँ यह न्याय व्यवहृत होता है । जैसे—‘शतो गृहस्थ उड्डलगुडन्यायेन औरसभ्येणैव चौरं गतासुमकरोत् ।’

१८. ऊषरवृष्टिन्याय :—इस न्याय का अर्थ है, दंजर में वर्षा का दृष्टान्त । भूमि उर्वरा हो तो वृष्टि सफल होती है । ऊषर में बरसना न बरसना बराबर है । इसी प्रकार जहाँ कोई कार्य सर्वथा बेकार हो वहाँ यह न्याय प्रयुक्त होता है । यथा—‘शमाः सुषः स्वन्दिन्यः सूक्तवाऽऽमिदंभ्य कषरवृष्टिवन्निष्फलाः ।’

१९. एकवृन्तगतफलद्वयन्याय :—उक्त न्याय का अर्थ है, एक टंठल पर लगे दो फलों की युक्ति । जैसे एक टंठल पर कभी-कभी दो भी फल लग जाते हैं, वैसे ही जब इलेप आदि के बल से कोई शब्द दो अर्थ देता है वा एक क्रिया फलबुगम को साधिका होती है, तब यह न्याय व्यवहृत होता है । यथा—‘एकवृन्तगतफलद्वयन्यायेन देवदत्त आहोददेशमप्यपश्यद् भारतीयबालचरणां प्रतिनिधित्वमपि चाकरोत् ।’

२०. कदंबकोरक (गोलक) न्याय :—कदंबकोरकन्याय अर्थात् कदंब की कलियों का न्याय । कहा जाता है कि कदंब की सब कलियाँ एक साथ विकसित हो उठती हैं । इसी प्रकार जहाँ

कुछ व्यक्ति एकदम उठ खड़े हों या सब लोग एक साथ ही कार्य में जुट जायँ वहाँ इस न्याय का व्यवहार किया जाता है। यथा—‘श्रीकृष्णचन्द्रमवलोचय कदम्बकोरकन्यायेन प्रहृष्टा बभूवुः पाण्डवाः ।’

२१. कफोणिगुडन्यायः—उक्त न्याय का शब्दार्थ है कोहनी और गुड़ की कहावत ; यदि किसी की कोहनी पर कुछ गुड़ लगा दिया जाय और उसे जिह्वा से चाटने को कहा जाय तो वह अपने उद्योग में कदापि सफल न होने के कारण उपहासास्पद बनेगा। इसी प्रकार इस उक्ति का प्रयोग तरसानेवाली परन्तु अलभ्य वस्तु के विषय में होता है। यथा—‘सरोवरे पतितं प्रति-निम्नं वीक्ष्य कफोणिगुडन्यायेन चन्द्रग्रहणाय प्रयतते शिशुः ।’

२२. कम्बलनिर्णेजन्यायः—अर्थ है—कम्बल स्वच्छ करने का दृष्टान्त। कई बार मनुष्य कम्बल को मिट्टी झाड़ने के लिए उसे अपने पाँव पर झटकते हैं। इस एक क्रिया के दो फल होते हैं। कम्बल भी स्वच्छ हो जाता है और पाँव भी झूड़े जाते हैं। इस प्रकार यह न्याय हिन्दी के ‘एक पंथ दो काज’ का समानार्थक है। उदाहरण—‘ध्याः सायमहं भ्रमणार्थं नागच्छम्, प्रदर्शनीक्षेप एवाभ्रमम् एवं कम्बलनिर्णेजन्यायेन भ्रमणमपि जातं, नवज्ञानश्चाप्युपलम्बम् ।’

२३. करिङ्गिहिन्यायः—इस न्याय का अर्थ है—हाथी को चिम्बाड़ का न्याय। प्रश्न होता है, ‘चिम्बाड़’ के साथ ‘हाथी’ शब्द के प्रयोग की आवश्यकता नहीं क्योंकि ‘चिम्बाड़’ शब्द हाथी की चोख के लिए ही प्रयुक्त होता है। उत्तर यह है कि ऐसे वाक्यों में कालतू प्रतीत होने वाला शब्द विशिष्टता का सूचक होता है। यहाँ ‘करि’ शब्द मस्त या प्रबल हाथी के लिए व्यवहृत हुआ है। ऐसे ही अवसरों पर जहाँ कोई शब्द व्यर्थ प्रतीत होता हुआ भी विशिष्टतासूचक हो, यह न्याय प्रयुक्त होता है। यथा—‘किं कवेस्तस्य काव्येन किं काण्डेन धनुःधतः । परस्य हृदये लज्जनं न पूर्णयति यच्छिरः ॥ इति । अस्मिन् श्लोके ‘कवेः’ इति पदं करिङ्गिहिन्यायेन प्रयुक्तम् ।’

२४. काकतालीयन्यायः—काकतालीयन्याय अर्थात् कौए और ताड़ के फल की कहावत। एक कौआ ताड़ के वृक्ष पर बैठा ही था कि एकाएक ऊपर की शाखा से उसका भारी फल टूटकर कौए के सिर पर आ गया जिससे वह मर गया। इस प्रकार की अकस्मिक घटना के लिए यह न्याय प्रयुक्त होता है। यथा—‘अपहृतं भवेदं पुस्तकं काकतालीयन्यायेन पुनरभिगत-मापणात् ।’

२५. काकदधिघातकन्यायः—इस न्याय का शब्दार्थ है—दही को बिगाड़ने वाले कौओं का दृष्टान्त। आशय यह है कि जब किसी को कौओं से दही की रक्षा करने के लिए कहा जाता है तब वह रक्षक कुत्तों आदि से भी दही को बचाता ही है। इसलिए जहाँ एक वस्तु अनेक का प्रतिनिधित्व करती है, अर्थात् उपलक्षण होती है, वहाँ यह न्याय व्यवहृत होता है। यथा—‘अदलीलोज्यं मदनमोहनाख्योपन्यासो नाध्येतव्य इति ततोऽनोषद्विष्टः सुपुत्रोऽन्यानपि कुग्रन्थाक्षापीते काकदधिघातकन्यायेन ।’

२६. काकदन्तगवेषणन्यायः—काकदन्तगवेषणन्याय अर्थात् कौए के दाँत की खोज का न्याय। चिड़िया के दूध तथा शश के सींग के समान कौए के दाँत नहीं होते। इसलिए इस न्याय का प्रयोग वहाँ किया जाता है जहाँ कोई किसी नितान्त निरर्थक कार्य के लिए उद्योगशील हो। उदाहरण—‘सामान्येषु सार्वजनिकपुस्तकालयेषु पुरातनग्रन्थरत्नानामन्वेषणं तु काकदन्तगवेषणमेव ।’

२७. काकाक्षिगोलकन्यायः—काकाक्षिगोलकन्याय अर्थात् कौए की आँख के डेले का न्याय। जैसे कि कौए के पर्याय ‘काकक्षः’, ‘एवदृष्टिः’ आदि संस्कृत शब्द से व्यक्त होता है कि लोगों का यह विश्वास रहा है कि कौआ दो आँखें रखता हुआ भी देखता एक ही आँख से है। तात्पर्य यह है कि उसे जिधर देखना होता है, उधर की आँख में उसकी पुतली चली जाती है। इसी

प्रकार इस न्याय का व्यवहार वहाँ होता है। जहाँ वाक्य के किसी शब्द का अन्वय एक से अधिक तरफ किया जाय अथवा कोई व्यक्ति आवश्यकतानुसार एक से अधिक पक्षों से सम्बन्ध रखे। यथा—'बलिनोद्दिशतोर्मध्ये काचात्मानं समर्पयन् । द्विधीभावेन वत्सेत काकाश्रिवदलक्षितः ॥' (कामन्दकीय नीतिसार : १।२४)

२८. कुल्याप्रणयनन्यायः—शब्दार्थ है—कूलनिर्माण का न्याय। किसान लोग अपने खेतों की सिंचाई के लिए ही नदी-नालों से कूल निकालते हैं। परन्तु प्यास लगने पर उसमें से पानी पी भी लेते हैं। इसी प्रकार जहाँ एक उद्देश्य से किये हुए कार्य से दूसरा कार्य भी सिद्ध कर लिया जाय वहाँ इस न्याय का प्रयोग करते हैं। यथा—'सद्भावेन देशसेवायां रता नेतारः कदाचित् कुल्याप्रणयनन्यायेन संसत्सदस्या अपि जायन्ते ।'

२९. कूपमंडूकन्यायः—इस न्याय का अर्थ है कूर्प के मेढक की कहावत। कूर्प का मेढक कूर्प में रहता है, इसलिए कूर्प से विस्तृत या विशाल स्थान का अनुमान नहीं कर सकता। इस न्याय का प्रयोग उस अनुभवहीन व्यक्ति के लिए किया जाता है जिसका परलन-पोषण संकुचित वातावरण में हुआ हो और जो सार्वजनिक जीवन तथा मानव जाति की गतिविधि से अनभिज्ञ हो। यथा—'अथ खलु देशमत्तोऽपि कूपमंडूक एव मन्यते युगधर्मस्य 'बसुधैव कुटुम्बकम्' इति लक्षणम् ।'

३०. कूपयंत्रघटिकान्यायः—कूपयंत्रघटिकान्याय अर्थात् ऊरहट की घटियों (लोटे) का न्याय। अरहट की माला के साथ बंधे हुए लोटे की दशा समान नहीं होती। जब कुछ लोटे नीचे पानी से भरते हैं, तभी ऊपर के लोटे रिक्त होते हैं। कुछ पूर्ण लोटे एक ओर से ऊपर को आते हैं तो कुछ रिक्त नीचे की जाते हैं। संसार में मनुष्यों के भाग्य की दशा भी इसी प्रकार भिन्न-भिन्न है। इसी अर्थ में इस न्याय का प्रयोग यों होता है—'कूपयंत्रघटिका इव अन्योऽन्यमुपतिष्ठन्ते रायः ।'

३१. क्षीरनीरन्यायः—इस न्याय का अर्थ है—दूध और पानी का दृष्टान्त। जब दूध और पानी परस्पर मिल जाते हैं तब यह जानना दुष्कर होता है कि उसमें दूध या पानी कितना और कहां है। इसी प्रकार जब दो या अधिक पदार्थों में धनिष्ठ सम्बन्ध बताना हो तब दूध-पानी की उपमा दी जाती है। यथा—'क्षीरनीरन्यायेन संगतानामेव मित्राणां मैत्री श्रेयस्करी भवति ।'

३२. गगनरोमन्धन्यायः—इस न्याय का अर्थ है, आकाश की जुगाली या पागुर करने का न्याय। यदि कोई पशु नीले आकाश को घास का मैदान मानकर मुंह झिलता हुआ यह समझने लगे कि घास की जुगाली कर रहा हूँ तो उसका यह उद्योग नितान्त निष्फल होगा। इसी प्रकार के निरर्थक उद्योग के विषय में इस न्याय का प्रयोग होता है। जैसे—'लोकसेवां विना शाश्वतयशोऽभिलाषो मनु गगनरोमन्ध इव ।'

३३. गड्डुरिकाप्रवाहन्यायः—इस न्याय का अर्थ है भेड़ियापसान। यदि भेड़ों के झुंड में से एक भेड़ नदी आदि में गिर जाए तो शेष भेड़ें भी रोके नहीं रुकती और नदी में कूद पड़ती हैं। इसी प्रकार जहाँ लोग समझाने पर भी सत्य का अनुसरण न करें और अन्यायुन्ध किसी के पीछे चलते जायें, वहाँ यह न्याय प्रयुक्त होता है। जैसे—'न जातु गड्डुरिकाप्रवाहं विचरन्ति केसरिणः ।'

३४. गुडजिह्विकान्यायः—उक्त न्याय का अर्थ है, गुड को जिह्वा पर लगाने की कहावत। प्रायः बालक कड़वी दवाई प्रसन्नतापूर्वक नहीं पीते। जब उनके हित के लिए उन्हें वह पिलानी अनिवार्य होती है तब बुद्धिमान् मनुष्य पहले उनकी जिह्वा पर गुड का लेप कर देते हैं इससे औषध की कड़वाहट लुप्त या न्यून हो जाती है। इसी प्रकार जब किसी मनुष्य को किसी दुष्कर कार्य में प्रवृत्त करना होता है तब कोई प्रलोमन आदि दे दिया जाता है। ऐसे ही अबसर इस न्याय के

प्रयोगार्थं उपयुक्त होते हैं। जैसे—'न हि लोकाः प्रायशो विना गुडजिहिकां दुष्करत्तमस्तु प्रवर्तन्ते ।'

३५. घट्टकुटीप्रभातन्यायः—घट्टकुटीप्रभातन्याय अर्थात् चुंगी का चौकी के समीप सवैरा होने का न्याय। चुंगी से बचने के लिए भाड़ीवान आदि रात को उन नगीं से निकलने का यत्न करने से जिनसे चुंगी देने से बच जायें। परन्तु कभी-कभी दुर्भाग्यवश प्रभात वहाँ ही जाता था जहाँ चुंगी की चौकी समीप होती थी। इस प्रकार उनके किये-कारिये पर पानी फिर जाता था। इस कहावत का प्रयोग ऐसे ही अबसरों पर किया जाता है जिन पर परिहाय वस्तु अवश्य ही समझ आ जाती है। यथा—'कानिचिद् वस्तून्त्येकान्येव केतुमहं मध्याह्ने आपणनगच्छन्, परन्तु घट्टकुटीन्यायेन मोहनस्तत्र मां विफलमनोरथं व्यदधात् ।'

३६. घुणाक्षरन्यायः—घुणाक्षरन्याय अर्थात् घुन या किसी अन्य कीड़े द्वारा लकड़ी आदि में कोई अक्षर बन जाने का न्याय। घुन आदि कीड़े लकड़ी, पुस्तक के पन्ने आदि को खाते रहते हैं। कभी-कभी उनके खाने से कोई अक्षर-संज्ञा बन जाता है, जिसे देख कौतुक होता है। इसी प्रकार देवयोग से होने वाली बातों के लिए इस न्याय का व्यवहार होता है। पूर्वाक्त अन्धचटक-न्याय का आशय भी इसी प्रकार का है। यथा—'प्राचीनहस्तलिखितग्रन्थान्वेषणाय गतेन मया तत्र 'विमाननिर्माणम्' अपि घुणाक्षरन्यायेन धिगतम् ।'

३७. चन्दनन्यायः—इस न्याय का अर्थ है, चन्दन के तेल की उपमा। यदि शरीर के किसी एक भाग पर चन्दन के तेल की वूँद या चन्दन का लेप लगाया जाय तो उसके आह्लादक प्रभाव का समग्र शरीर में अनुभव होता है। इसी प्रकार जहाँ एकत्र स्थित पदार्थ व्यापक प्रभाव डाले वहाँ इस न्याय का व्यवहार होता है। यथा—'चन्दनन्यायेन प्रसरति दिग्दिगन्तं युगा-षुगम महत्तमनां कीर्तिः ।'

३८. चौरापराधमाण्डव्यनिग्रहणन्यायः—इस न्याय का अर्थ है, चोरों के अपराध पर माण्डव्य को दण्ड देने की कहावत। महाभारत के आदिपर्व में ऋषि अणीमाण्डव्य के मौनव्रत से सम्बन्धित तप की कथा आती है। जब वे तपोमग्न थे तब चोर, रात हुई सम्पत्ति के सहित उनके आश्रम में आ छिपे। राज-कर्मचारियों ने चोरों के साथ उन्हें भी पकड़ लिया और लगे सूली पर चढ़ाने। अन्त में मुनिजी छोड़ तो दिये गये परन्तु सूली की अणों के शरीर में रह जाने के कारण अणीमाण्डव्य कहलाने लगे। इसी प्रकार जहाँ 'भरे कोई और भरे कोई' का व्यवहार होता है वहाँ उक्त न्याय प्रयुक्त होता है। जैसे—'अदाचित्तु नृपः कुरुयात्तदुद्राःपराधेन सर्वानेव ग्रामवासिनः चौरापराधमाण्डव्यनिग्रहणन्यायेन दण्डयति ।'

३९. छत्रिन्यायः—उक्त न्याय का अर्थ है, छातेवालों की कहावत। आशय यह है कि यदि किसी जाते हुए जन-समुदाय में अनेक लोगों ने छत्रियाँ तानी हुई हों तो हम उन सबको 'छाते वाले लोग' कह देते हैं चाहे सबके पास छत्रियाँ न भी हों। इसी प्रकार जहाँ कुछ एक के सम्बन्ध में कही हुई बात सब पर चरितार्थ कर दी जाती है, वहाँ इस न्याय का व्यवहार उचित होता है। जैसे—'पुरा देवा राहुं सुरमेव मेनिरे छत्रिन्यायेन ।'

४०. जामातृशुद्धिन्यायः—इस न्याय का अर्थ है—जमाई-कृत पुनरीक्षण की कहावत। मेरुतुंग के 'प्रबन्धचिन्तामणि' में कहानी यों दी गई है कि विक्रमादित्य ने राजकुमारी के लिए बर हूँदने का काम बरहचि को सौंपा। राजकुमारी ने बरहचि से पढ़ते समय एक दिन उनकी अवज्ञा की थी, इसलिए चतुराई से बरहचि ने एक मूढ़ को राजा का जामाता बना दिया। बरहचि के उपदेशानुसार जामाता चुप ही रहता था परन्तु राजकुमारी ने परीक्षार्थ एक पुस्तक उसे दीधराने को दी। उसने अक्षरों के ऊपर के बिन्दु और मात्राएँ नखछेदिनी से मिटा डालीं। कुमारी पहचान गई कि यह तो कोई चरवाहा है। तब से मूर्ख से शोधन-कार्य कराने के सम्बन्ध

में यह न्याय चल पड़ा है। यथा—'कैश्चित् अयोग्यजनैः कारितं कार्यं जामानुशुद्धिवदुपहासास्पदमेव भवति।'।

४१. तिलतण्डुलन्यायः—उक्त न्याय का अर्थ है—तिल और चावल की उपमा। दूध और पानी भी मिलते हैं तथा तिल और चावल भी। परन्तु प्रथम मेल में दूध-पानी का पार्थक्य अज्ञेय होता है, द्वितीय में स्पष्ट। तिल-चावल की तरह जहाँ मेल नो हो परन्तु दोनों पदार्थ पृथक्-पृथक् प्रतीत भी होते हैं, वहाँ तिलतण्डुलन्याय का प्रयोग किया जाता है। जैसे—'कथं नाम मौनमेवापिष्ठितानामशताया आच्छादनं भवद्गुमर्हति विदुषां समजे, तिलतण्डुलयोः स्पष्टं पृथग्दर्शनात्।'।

४२. तुलाह्वनन्यायः—इस न्याय का अर्थ है—तुला को उठाने की कलावत। आशय यह है कि जब तुला का एक पलड़ा ह्वाभ से उठाया जाता है तब दूसरा स्वयमेव नीचे चला जाता है। इसी प्रकार जहाँ एक क्रिया से दूसरी क्रिया करना भी अभिप्रेत होता है वहाँ इस न्याय का व्यवहार होता है। जैसे—'आजताविनमायान्तं हन्यादेवाविचारयन्, तेन हि तुल्ययनन्यायेन दृष्टनाशो जायते देवप्रसादश्च।'।

४३. तृणभक्षणन्यायः—इस न्याय का शब्दार्थ है—तिनका खाने का न्याय। भारत में यह रीति रही है कि जब कोई व्यक्ति किसी के सम्मुख दाँतों से तिनका दबा लेना या तब इसका आशय होता था—पराजय की स्वीकृति। ऐसी दशा में वह अवश्य माना जाता है। हिन्दी में यह उक्ति 'दाँतों तले तिनका दबाना' के रूप में प्रचलित है। पराजय की स्वीकृति के अर्थ में इसका प्रयोग यों होता है—'अर्थैः पराजिता रिपवः खलु तृणभक्षणन्यायेन निजप्रणानरक्षन्।'।

४४. दग्धेन्धनवह्निन्यायः—इस न्याय का अर्थ है—उस अग्नि का वृष्टान्त जो ईंधन को जलाकर स्वयं भी वृष्ट गर् हो। इस प्रकार जहाँ कोई वस्तु अपने कार्य को सन्पन्न कर स्वयं भी समाप्त हो जाए, वहाँ यह न्याय प्रयुक्त होता है। 'जलकतकरेणुन्याय' का आशय भी ऐसा ही है। यथा—'पाण्डवानां कोपः दुर्दोधनादोत् विनाश्य दग्धेन्धनवह्निन्यायेन शान्तः।'।

४५. देहलीदीपकन्यायः—देहलीदीपकन्याय अर्थात् दहलीज में रखे हुए दीपक का न्याय। कमरे के कोने में रखा हुआ दीपक तो कमरे को ही आलोकित करता है परन्तु दहलीज पर रखा हुआ अन्दर और बाहर दोनों ओर प्रकाश देता है। इसी प्रकार जहाँ कोई शब्द, वाक्यांश या कोई अन्य वस्तु दो तरफ अपना प्रभाव डाल रही हो, वहाँ यह न्याय प्रयुक्त होता है। उदाहरण—'भवति हि पितृतर्पणार्थं श्रुतस्य भोजनस्यातिथ्युपकारकर्त्वं देहलीदीपकन्यायेन।'।

४६. धान्यपलालन्यायः—इस न्याय का अर्थ है—अनाज और भूसे का वृष्टान्त। जिस प्रकार लोग अनाज को ग्रहण कर लेते हैं और भूसे को त्याग देते हैं, उसी प्रकार जहाँ सारसहित वस्तु को लिया तथा निस्सार को छोड़ दिया जाता है, वहाँ इस न्याय का व्यवहार होता है। जैसे—'प्राज्ञो दुर्धैः सारः निस्सारम् अपास्य फल्गुधान्यपलालन्यायेन।'।

४७. नष्टाश्वदग्धरथन्यायः—इस न्याय का अर्थ है—सुप्त घोड़ों और जले रथ की कहावत। कहावत की आधार-कथा इस प्रकार है कि दो यात्री अपने-अपने रथों में वात्सा करते हुए रात को एक गाँव में ठहरे। दैवयोग से रात को गाँव में आग लगी जिससे एक के घोड़े लुप्त हो गये और दूसरे का रथ जल गया। तब एक के घोड़ों को दूसरे के रथ में जोड़ दिया गया और यात्रा जारी रही। इसी प्रकार यह न्याय वहाँ व्यवहृत होता है जहाँ पारस्परिक लाभ के लिए मिल जुलकर काम किया जाए। जैसे—'अपट्टरहमितिहःसे तथा पुःस्त्वं तु गगिते, मन्ये नष्टाश्वदग्धरथन्यायेनैवावां परीक्षामुत्तरिष्यावः।'।

४८. नासिकाश्रेण कर्णमूलकर्षणन्यायः—इस न्याय का शब्दार्थ है—नक की नोक से कान के अधोभाग को खींचने की कहावत । जैसे नाक के अधभाग ने आन के निचले भाग को खींचना भ्रमम्भव है, वैसे ही अज्ञक्य विषयों में यह न्याय प्रयुक्त किया जाता है । यथा—'यो वै विद्याधीं परिभ्रमं विनैव विद्वान् भवितुमिच्छति, स खलु नासिकाश्रेण कर्णमूलं कर्षति ।'

४९. नृपनापितपुत्रन्यायः—नृपनापितपुत्रन्याय अर्थात् राजा और नारी के बेटे की कहावत । कहा जाता है, कि एक राजा ने अपने भारी को राज्य-भर में से सुन्दरतम बालक लाने का आदेश दिया । वह नारी सारे देश में बहुत घूमा-फिरा परन्तु उसे ऐसा कोई बालक दिखाई न दिया जैसा कि राजा चाहता था । विवश होकर वह घर लौट आया । उसका अपना पुत्र न सुख था न सुलक्षण परन्तु उसे वही सुन्दरतम प्रतीत हुआ । इसलिए वह उसे ही लेकर राजा के समक्ष जा उपस्थित हुआ । पहले तो राजा, यह समझकर कि यह मेरा उपहास कर रहा है, क्रुद्ध हुआ; परन्तु कुछ सोचने पर उसे इस मनोवैज्ञानिक तथ्य का बोध हुआ कि प्रत्येक व्यक्ति आत्मीय पदार्थ को ही सर्वोत्तम समझता है । अतः इस न्याय का प्रयोग कहीं अवसरों पर होता है जिनमें कोई व्यक्ति अपनी बुरी बस्तु को भी अच्छी समझता है । जैसे—'अकाव्यमपि स्वं कुकवयः नृपनापितपुत्रन्यायेन सत्काव्यपदे गणयन्ति ।'

५०. पंकप्रक्षालनन्यायः—पंकप्रक्षालनन्याय अर्थात् क्रीचड़ धोने का न्याय । शरीर पर लगे क्रीचड़ को सभ्य मनुष्य टुरन्त धो डालता है । परन्तु उससे कहीं अच्छी बात यह है कि क्रीचड़ लगने ही न दिया जाय । इस प्रकार परिस्थितियों से पहले ही बचना उत्तम है, जिनमें पड़ने के पश्चात् फिर उनके प्रभाव को मिटाने का यत्न किया जाय । जैसे—'पञ्चास्यागाडि विच्छस्य वरं पूर्वमसङ्ग्रहः । प्रक्षालनाडि पंकस्य द्रादस्पर्शनं वरम् ।'

५१. पंखधन्यायः—इस न्याय का अर्थ है लँगड़े और अंधे की कहावत । न अंधा मार्ग देख सकता है न पंख पथ पर चल सकता है । परन्तु यदि पंख अंधे के कंधों पर बैठ जाय तो दोनों निर्विघ्न यात्रा कर सकते हैं । इसी प्रकार जहाँ पारस्परिक लाभार्थ सहयोग किया जाय, वहाँ उक्त न्याय प्रयुक्त किया जाता है । यथा—'सुवक्ताऽपि देवदत्तो न पण्डितः, सुपण्डितोऽपि यक्षदत्तो वक्तृत्वविहीनः, तथापि तौ पंखधन्यायेन संगस्य स्वदेशसेवायां संलग्नौ दृश्येते ।'

५२. पिष्टपेषणन्यायः—पिष्टपेषणन्याय अर्थात् पीसी हुई बस्तु को पुनः पीसने का न्याय । गेहूँ, मकई आदि को तो पीसा जाता है परन्तु उनके आटे को पीसना निरर्थक होता है । साथ ही वह पेषण पेषक की मूर्खता का द्योतक माना जाता है । इसी प्रकार के अनावश्यक और अनर्थक कार्यों के सम्बन्ध में उक्त न्याय का प्रयोग इस प्रकार किया जाता है—'महान् दोष एवायं यदिद-मुक्तस्य पुनः पुनर्वचनम्, पिष्टपेषणं हि तत् ।'

५३. पुष्टलगुडन्यायः—इस न्याय का अर्थ है, मोटे दंडे का टुकड़ान्त । आशय यह है कि यदि भौंकने वाले कुत्ते की ओर मोटा दंडा फेंका जाय तो वह सम्भवतः दूसरे कुत्तों को भी लग कर शान्त कर देगा । इसी प्रकार जहाँ एक क्रिया से एकाधिक कार्यों की सिद्धि हो जाय, वहाँ इस न्याय का प्रयोग होता है । जैसे—'हीरोशीमानागासाकं नगरदोरणुवमाभ्यां विध्वस्तयोर्महं युद्धं पुष्टलगुडन्यायेन निमिषेण समाप्तिमगात् ।'

५४. प्रधानमल्लनिबर्हणन्यायः—इस न्याय का अर्थ है, मुख्य शत्रु को विनाश की कहावत । आशय यह है कि जब प्रवृत्ततम वैरी का विनाश कर दिया जाता है तब सामान्य वैरी स्वयमेव वश में हो जाते हैं । इसी प्रकार जब भारी बाधाएँ मिटा दी जाती हैं तब सामान्य विघ्न वायक-नहीं बन सकते । जैसे—'दूतयोर्भीमद्रोणयोर्निश्चित एताभूत् पाण्डवानां विजयः प्रधानमल्लनिबर्हणन्यायेन ।'

२५. **प्रपानकरसन्ध्याय** :—प्रपानकरसन्ध्याय अर्थात् शर्वत की उपमा। शर्वत बनाने के लिए अनेक द्रव्यों को मिश्रित करना पड़ता है। शर्वत का स्वाद उनमें से किसी एक के भी तुल्य नहीं होता। इसी प्रकार जहाँ अनेक वस्तुओं के संयोग से एक विलक्षण पदार्थ निर्मित हो जाय वहाँ यह न्याय प्रयुक्त किया जाता है। यथा—'अमिमन्युः किल प्रपानकरसन्ध्यायेन दृशीथ पाण्डवांश्च शुभैरस्परिच्यत ।'

२६. **फलवत्सहकारन्याय** :—इस न्याय का अर्थ है—आम के फलित पेड़ का दृष्टान्त। आम का फल वृक्ष फल ही नहीं देता, बल्कि मृदा, यात्रियों की सुगन्ध और छाया भी प्रदान करता है। इसी प्रकार जहाँ कोई क्रिया अभीष्ट फल के अतिरिक्त भी कोई फल दे, वहाँ इस न्याय का प्रयोग किया जाता है। यथा—'पुत्रोत्पत्तिर्हि नाम प्रनववित्री मातृवक्षसः, प्रशमयित्री पितृ-नेत्रयोर्विकाशपित्री च भवति वंशस्य फलवत्सहकारन्यायेन ।'

२७. **बहुराजदेशन्याय** :—इस न्याय का अर्थ है—अनेक राजाओं के देश की कदावत। जहाँ एकाधिक राजाओं का शासन होता है वहाँ उनकी परस्पर विरोधी आशाओं के कारण प्रजा अति पीड़ित हो उठती है। यथा—'यस्मिन् कुले मातापित्रोर्भयं विचरते तत्रातिदुःखिता भवति संततिर्बहुराजकदेशवत् ।'

२८. **बीजाङ्कुरन्याय** :—बीजाङ्कुरन्याय अर्थात् बीज और अङ्कुर का न्याय। इस न्याय का उद्गम बीज और अङ्कुर के पारस्परिक कारण-कार्यभाव से हुआ है। बीज से अङ्कुर उत्पन्न होता है अतः बीज कारण है, अङ्कुर कार्य। परन्तु आगे चलकर उसी अङ्कुर से बीज भी उत्पन्न होता है; इसलिए अङ्कुर कारण और बीज कार्य बन जाता है। इस प्रकार जहाँ दो पदार्थ एक दूसरे के कारण और कार्य भी हों, वहाँ यह न्याय प्रयुक्त किया जाता है। जैसे—'स्वास्थ्येन वित्तमधि-रन्यते विचेन च पुनः स्वास्थ्यं बीजाङ्कुरवत् ।'

२९. **मण्डूकप्लुतिन्याय** :—उक्त न्याय का अर्थ है, मेंढक की छलंग की लोकोक्ति। मेंढक सर्पवत् समग्र मार्ग का स्पर्श करता हुआ नहीं चलता, छलंगों लगाता जाता है, जिससे मध्यवर्ती स्थान अस्यूष्ट रह जाता है। इसी प्रकार जहाँ कोई नियम सब पर समानरूप से लागू न हो, बीच-बीच में कई वस्तुओं को छोड़ता जाए, अथवा कोई काम बीच-बीच में छोड़कर किया जाए वहाँ इस न्याय का प्रयोग होता है। यथा—'अस्माकमध्यापकः पाठ्यपुस्तकं मण्डूकप्लुतिन्यायेन पाठयति न तु यथाक्रमम् ।'

३०. **मारस्यन्याय** :—मास्त्य न्याय अर्थात् मछलियों का दृष्टान्त। प्रायः यह देखा जाता है कि बड़ी मछलियाँ छोटी मछलियों को हड़प जाती हैं। इस प्रकार जहाँ बलवान् निर्बल को मारने या सताने लग जाय वहाँ इस न्याय का प्रयोग किया जाता है। हिन्दी की लोकोक्ति 'जिसकी लाठी, उसकी भैंस' भी इसी आशय की व्यक्त करती है। उदाहरण देखिए—'सुशासकत्वात्वे यदि राष्ट्रे मास्त्यन्यायः प्रवर्तते, तां हि किमाश्चर्यम् ।'

३१. **रथकारन्याय** :—इस न्याय का अर्थ है—रथकार (रथ बनानेवाले) का दृष्टान्त। शास्त्र में कहा गया है कि रथकार वर्षाकाल में अग्नि की स्थापना करे। प्रदन उठता है, रथकार का अर्थ रथ बनाने वाला कोई भी व्यक्ति है या विशेष उपजाति का मनुष्य। जैमिनि ने निर्णय किया है कि केवल जातिविशेष का व्यक्ति ही। इस प्रकार इस न्याय का भाव यह है कि शब्दों का रुढ़ या प्रचलित अर्थ यौगिक अर्थों से बलवान् होता है। यथा—'अथ तु रथकारन्यायेन कार्यपटुरैव कुशलो मन्यते न पूर्ववत् सुरोः कृते कुशानयनदक्ष एव ।'

३२. **राजपुरप्रवेशन्याय** :—इस न्याय का अर्थ है—राजधानी में प्रवेश का दृष्टान्त। राजपुर में प्रवेश करने का नियम यह है कि पंक्ति बनाकर पर्याय से प्रविष्ट हुआ जाए। जो उच्छृङ्खल

- इस नियम को भंग करता है, उसके पिटने को आसंका रहती है। इस प्रकार जहाँ किसी कार्य को नियमानुसार करना अभीष्ट हो, वहाँ इस न्याय का प्रयोग करते हैं। दृष्टान्त लीजिए—
‘अस्मिन् तु विद्यालये छात्रा रजपुरप्रवेशन्यायेन स्वकक्षाः प्रविशन्ति न तत्र कोलाहलो जायते ।’
६३. **रुमाक्षितकाष्ठन्यायः**—इस न्याय का अर्थ है, नमक की खान और लकड़ी का दृष्टान्त। यह प्रसिद्ध है कि जो वस्तु नमक की खान में फेंकी जाती है, नमक बन जाती है। इसी प्रकार जहाँ कुम्भगवि के प्रबल प्रभाव से अन्य वस्तु भी बैसी बन जाए, वहाँ इस न्याय का प्रयोग उचित है। यथा—‘विनीता अपि जना अधिकारं प्राप्य रुमाक्षितकाष्ठन्यायेन हुमा भवन्ति ।’
६४. **लोहचुम्बकन्यायः**—लोहचुम्बकन्याय अर्थात् लोहे और चुम्बक का न्याय। यह न्याय उस सम्बन्ध को व्यक्त करता है जिसके कारण दो पदार्थ दूर होते हुए भी, स्वभावतः एक-दूसरे के समीप जाने का उद्योग करते हैं। जैसे—‘दूरस्था अपि सज्जना लोहचुम्बकवत् मिथो मिलितुं वाञ्छन्ति ।’
६५. **वक्रबन्धनन्यायः**—इस न्याय का अर्थ है, बगुले को पकड़ने का दृष्टान्त। किसी ने बगुला पकड़ने की रीति यह बताई कि जब बगुला बैठा हो तो चुपके से उसके सिर पर मक्खन रख देना चाहिए। जब मक्खन धूप से पिघलकर उसकी आँखों में पड़ेगा तो वह अन्धा हो जायगा और सट पकड़ लिया जाएगा। वस्तुतः यह विधि हास्यास्पद है क्योंकि बगुला तभी क्यों न पकड़ लिया जाए जब उसके सिर पर मक्खन रखा जाए। इसी प्रकार जहाँ सहज सरल विधि को लोड़कर किसी हास्यास्पद ढंग को स्वीकृत किया जाता है वहाँ उक्त न्याय प्रयुक्त होता है। जैसे—‘वक्रबन्धनन्यायवर्षाय एवायं यद् गलघटिकारावेण अवगते मार्जारगमे मूषाणा-मात्मरक्षाविचारः ।’
६६. **वनसिंहन्यायः**—इस न्याय का शब्दार्थ है—वन और सिंह का दृष्टान्त। सिंह न हो तो लोग वन को ही काट डालें और वन न हो तो सिंह को ही मार डालें। ये दोनों वस्तुतः एक-दूसरे के रक्षक हैं। इसी प्रकार जहाँ पदार्थ परस्पर रक्षक हों वहाँ इस न्याय का प्रयोग किया जाता है। जैसे—‘न जानु सेव्यसेवकी अन्योऽन्यं हन्तुं पारयतः वनसिंहवदन्योऽन्याश्रयित्वात् ।’
६७. **वह्निधूमन्यायः**—वह्निधूमन्याय अर्थात् अग्नि और धुँएँ के निरन्तर साथ-साथ रहने का न्याय। जहाँ धुँआँ होता है वहाँ अग्नि होती ही है। इसी प्रकार जहाँ एक पदार्थ का दूसरे से अनिवार्य साहचर्य बताया जाए वहाँ यह न्याय व्यवहृत होता है। जैसे—‘यत्र योगेश्वरः कृष्णः यत्र च धनुर्धरः पार्यः, तत्र विजयो वह्निधूमन्यायेन निश्चित एव ।’
६८. **विषकृमिन्यायः**—विषकृमिन्याय अर्थात् विष के कीड़ों का न्याय। साधारण प्राणी तो विष के प्रभाव से मर जाते हैं, परन्तु विष के कीड़े विष में ही उत्पन्न होते हैं, उसी को खाते हैं और फिर भी जीवित रहते हैं। इस न्याय का प्रयोग उन अवसरों पर होता है जिन पर सामान्य प्राणी तो प्राणों से हाथ धो बैठते हैं परन्तु व्यक्तिविशेष सुरक्षित रहते हैं। जैसे—‘हरिजनानां कर्म कुर्वन्तः सामान्यास्तु अधिरातः कालकवलिता भवेयुः ते न हरिजनाः पुनः विषकृमिन्यायेन दीर्घजीविनो भवन्ति ।’
६९. **विषवृक्षन्यायः**—विषवृक्षन्याय अर्थात् विषैले पेड़ का न्याय। कालिदास ने ‘कुमारसम्भव’ में कहा है—‘विषवृक्षोऽपि संबर्ष्य स्वयं क्षेत्तुमसौपतम्’ अर्थात् यदि विष का वृक्ष भी स्वयं लगाया और पालन-पोसा गया हो तो उसे काटना या उखाड़ना उचित नहीं होता। इसी प्रकार जिस व्यक्ति का स्वयं पालन-पोषण किया हो, वह बड़ा होने पर अनिष्टकर भी सिद्ध हो, तो भी उसका विध्वंस समीचीन नहीं। यही इस न्याय का अर्थ है। उदाहरण द्रष्टव्य है—‘विषवृक्षन्यायमनुसरता पिपा कुपुत्रस्याप्यहितं कर्तुं न पार्यते ।’

७०. वीचित्ररंगन्याय :—वीचित्ररंगन्याय अर्थात् तरंग और तरंग का न्याय । नदी, सरोवर, समुद्र आदि में हम देखते हैं कि तरंगों क्रमशः एक दूसरी को तब तक आगे-आगे टकैलती जाती हैं जब तक वे सब नष्ट नहीं जा पहुँचतीं । इसी प्रकार जब कुछ वस्तुएँ या व्यक्ति एक-दूसरे की सहायता से गन्तव्य तक जा पहुँचते हैं, तब इस न्याय का निम्नलिखित प्रकार से प्रयोग किया जाता है—'वीचित्ररंगन्यायेन अन्वोऽन्योपकारि खलु सकलमिह जीविजम् ।'

७१. वृद्धकुमारीवाक्य(वर)न्याय :—वृद्धकुमारीवाक्यन्याय अर्थात् बूढ़ी कन्या के वर का न्याय । पतञ्जलि ने महाभाष्य में लिखा है कि जब इन्द्र ने एक बूढ़ी कन्या को वर माँगने को कहा तब वह बोली—'पुत्रा मे बहुश्रीरघृतमोदनं काञ्चनपाश्यां युञ्जीरन्' अर्थात् मेरे पुत्र सुवर्ण के पाशों में प्रभूत दूध और घी से युक्त चावल खावें । अब यदि यह वर प्राप्त हो जाए तो पति, सन्तान, गौ, दूध, घी, सुवर्ण आदि सभी पदार्थ स्वतः एव प्राप्त हो जाते हैं । इसी प्रकार जहाँ कोई ऐसी वस्तु माँगी जाए जिसके साथ अनेक उपयोगी द्रव्यों की प्राप्ति अनिवार्य हो जाए, वहाँ इस न्याय का प्रयोग होता है । जैसे—'स्वपौत्रं राजसिद्धासनस्थमोक्षितुमिच्छामीति वरं देवं याचमानेनाम्भृष्टेन आत्मनः कृते यौवनं नेत्रे पत्नी पुत्रः पौत्रश्च वृतः ।'

७२. ब्यालनकुलन्याय :—इस न्याय का अर्थ है—साँप और नेबले की कहावत । साँप और नेबले में जन्मजात वैर होता है । वे जहाँ एक-दूसरे को देखते हैं, लड़ पड़ते हैं । उन्हीं की तरह जब दो वस्तुओं में स्वाभाविक वैर हो तब ब्यालनकुलन्याय (अहिनकुलन्याय) का व्यवहार होता है । यथा—'अद्यत्ने तु रूसामरीकयोर्दशाभ्यालनकुलवत् इत्यने ।'

७३. शतपत्रपद्मशतमेदन्याय :—उक्त न्याय का अर्थ है—कमल के सौ पत्रों को छेदने का दृष्टान्त । जब कोई व्यक्ति कमल के सौ कोमल पत्रों को सूए से छेदता है तब ऐसा लगता है कि सब पत्र एक-साथ ही छिड़ गये हैं । परन्तु वस्तुतः छिड़ते एक दूसरे के अनन्तर ही हैं । इसी प्रकार जहाँ क्रमशः होने वाली अनेक क्रियाओं का एक साथ होना कहा जाता है, वहाँ यह न्याय व्यवहृत होता है । जैसे—'पति मृतं श्रुत्वा सा साध्वी कम्पिता भूच्छिता मृता च शत-पत्रपद्मशतमेदन्यायेन ।'

७४. शलभन्याय :—इस न्याय का अर्थ है पतंगे का दृष्टान्त । मूर्ख पतंगा जलते हुए दीपक को देख ऐसा मुग्ध होता है कि प्राणों तक की चिन्ता नहीं करता । इसी प्रकार मूर्ख लोग विषयों से आकृष्ट होकर प्राणों से हाथ धो बैठते हैं । आजकल इसका प्रयोग प्रशंसा के लिए भी किया जाता है । दोनों के दृष्टान्त एक ही वाक्य में देखें—'विषयेषु शलभान्यन्ते मूढाः, प्रमदासु कामुकाः, राष्ट्रसेनार्यां च राष्ट्रभक्ताः ।'

७५. शाखाचन्द्रन्याय :—शाखाचन्द्रन्याय अर्थात् वृक्ष की शाखा और चाँद का न्याय । आकाश में चन्द्र तो बहुत दूर होता है परन्तु प्रतिपदा आदि के दिन किसी को दिखाने के लिए प्रायः कहा जाता है—'देखो, वह वृक्ष की शाखा के ऊपर है । इसी प्रकार जहाँ कोई पदार्थ हो तो बहुत दूरवर्ती पर उसकी दिखाने के लिए ऐसे पदार्थ की ओर संकेत किया जाय जो उसके समीप प्रतीत होता हो, वहाँ यह न्याय प्रयुक्त होता है । जैसे—'शाखाचन्द्रन्यायेन पेरिसनगरमपि रोम-समीपवर्तिनमेव शपथति कोऽपि मानचिरे ।'

७६. शिरोवेष्टनेन नासिकास्पर्शान्याय :—उक्त न्याय का अर्थ है—बाहु को सिर के पीछे से लाकर नाक को छूने का दृष्टान्त । नाक को सामने से छूना झुकर है, बाहु पीछे से लाकर छूना बुझकर । जब उद्देह्य केवल नासिकास्पर्श हो तो बाहु को सिर के पीछे से लाकर छूने में कोई लाभ नहीं है । इसी प्रकार कई लोग किसी कार्य को सीधे ढङ्ग से नहीं करते, घुमा-फिराकर व्यर्थ कष्ट

[७६७]

सहते या देते हैं। ऐसे ही अवसरों पर उक्त न्याय प्रयुक्त होता है। यथा—'को लाभोऽनेन शिरोवेष्टनेन नासिकारपर्येन, प्रकृतं स्पष्टं ब्रूहि ।'

७७. श्वपुच्छोत्थानन्यायः—इस न्याय का शब्दार्थ है—कुत्ते की पूँछ को सीधा करने का दृष्टान्त। कुत्ते की पूँछ अनेक यत्न करने पर भी सीधी नहीं होती; प्रयत्न करने वाले का अम व्यर्थ ही सिद्ध होता है। इसी प्रकार जहाँ काम के लिए किया हुआ उद्योग सर्वथा निष्फल रहे, वहाँ यह न्याय व्यवहृत होता है। यथा—'श्वपुच्छोत्थान-मेवेतद् महात्मा गांधी अकार्षीद् यद् मुस्लिम-लीगिनः प्रेत्या वशीकर्तुंमयतत ।'

७८. शबोद्धर्तनन्यायः—इस न्याय का शब्दार्थ है—मृतक को उबटन लगाने का दृष्टान्त। सुगन्धित द्रव्य सजीव शरीर के शोभाशर्द्धक हैं, निर्जीव के नहीं। इसी प्रकार जहाँ सर्वथा निष्फल उद्योग किया जाता है, वहाँ यह न्याय प्रयुक्त होता है। यथा—'पाकिस्ताननिर्माणानन्तरं मुस्लिमलीगस्य पुनः भारते संस्थापनं शबोद्धर्तनमेव ।'

७९. सिंहावलोकनन्यायः—सिंहावलोकनन्याय अर्थात् सिंह के समान देखने का न्याय। चलता हुआ सिंह सामने तो देखता ही है, थोड़ी-थोड़ी देर बाद पीछे भी दृष्टिपात कर लेता है कि कोई भक्ष्य जन्तु पंखों के भीतर पीछे भी है या नहीं। इसी प्रकार जब कोई व्यक्ति आगे-आगे कार्य करता हुआ पिछले कार्य पर भी कुछ दृष्टिपात करता है, तब सिंहावलोकनन्याय का प्रयोग होता है। जैसे—'सोत्साहैरपि टात्रैरधीतस्य सिंहावलोकनं कर्तव्यमेव ।'

८०. सिद्धतातैलन्यायः—अर्थात् रेत से तेल निकालने की कहावत। जैसे गधे या शश के सिर पर सींग नहीं निकलते वैसे ही रेत से तेल की उत्पत्ति असंभव है। इसी प्रकार की असंभव बातों के लिए यह न्याय प्रयुक्त होता है। यथा—'प्रतिनिविष्टमूर्खजनचित्ताराधनं कविभिः सिकतासु तैलस्योपलब्ध्या उपमीयते ।'

८१. सुन्दोपसुन्दन्यायः—इस न्याय का अर्थ है—सुन्द और उपसुन्द की उभमा। महाभारत के आदिपर्व (अध्याय २०९-२१२) में सुन्दोपसुन्द नाम के दो अजैय असुर भ्रातृद्वयों की कथा आती है। उन्हें नष्ट करने के उद्देश्य से ऋष्या ने विश्वकर्मा की एक अद्वितीय सुन्दरी (तिलोत्तमा) निर्माण करने को कहा। ऋष्या ने तिलोत्तमा को उन भ्रातृद्वयों के पास कैलास-सोषानन में भेजा। दोनों उसे देख मुग्ध हो गये और लगे अपनी-अपनी ओर खींचने। अन्ततः दोनों क्रुद्ध होकर लड़ पड़े और दोनों ही मर गये। इन्हीं के समान जब दो समान बल वाले पदार्थ एक दूसरे के नाशक हों, तब इस न्याय का प्रयोग स्थल होता है। जैसे—'यावद्रूसामरी-काराष्ट्रे परस्परं युध्यमाने सुन्दोपसुन्दवच न नश्यतः, शान्तिस्तावत् असिद्धस्वप्न एव ।'

८२. सूचीकटाहन्यायः—सूचीकटाहन्याय अर्थात् सूई और कड़ाहे का न्याय। किसी लोहार के पास जब एक व्यक्ति कड़ाहा बनवाने जा पहुँचे और दूसरा सूई, तब लोहार पहले सूई बनाता है क्योंकि उसे वह सहज ही अल्प काल में बना लेता है। इसी प्रकार इस न्याय का आशय यह है कि कठिन तथा दीर्घकालसाध्य कार्य पीछे करना चाहिए और सुकर तथा अल्पकालसाध्य कार्य पहले। जैसे—'श्रेणोमध्यापयन् शिक्षकः सुख्याप्यापकादागतां सूचनां, प्रकृतं पाठं स्थगयित्वा, सूचीकटाहन्यायेन प्रथमं श्रावयति ।'

८३. सूत्रबद्धशकुनिन्यायः—इस न्याय का अर्थ है—सूत से बंधे हुए पक्षी का दृष्टान्त। सूत से बंधा हुआ पक्षी न श्वर-उपर स्वच्छन्द उड़ सकता है, न कहीं यथेष्ट विश्राम कर सकता है। जिस पराधीन व्यक्ति की दशा उससे समान हो, उसके विषय में यह न्याय प्रयुक्त किया जाता है। यथा—'कैकेयीमोक्षपाशवद्धस्य दशरथस्य दशा सूत्रबद्धशकुनेरिवासीत् ।'

[७६८]

८४. सोपानारोहणन्यायः—सोपानारोहणन्याय अर्थात् सीढ़ियों चढ़ने का दृष्टान्त । जैसे मनुष्य छत पर एकाएक नहीं आ पहुँचता, एक-एक सीढ़ी चढ़कर ही पहुँचता है, वैसे ही ज्ञानादि की प्राप्ति भी क्रमशः ही होती है । ऐसे ही अबसर इस न्याय के प्रयोगार्थ उचित हैं । जैसे—‘सोपानारोहणन्यायेनैव भवति विद्योपचयो विद्यार्थिनां, धनवृद्धिश्च सज्जनानाम् ।’

८५. स्थालीपुलाकन्यायः—स्थालीपुलाकन्याय अर्थात् देगने और पुलाक का न्याय । जब किसी देगने में चावल पकाये जाते हैं तब पाचक प्रत्येक दाने को निकाल कर नहीं देखता कि वह गल गया है या नहीं । दो-चार दाने देखकर ही अनुमान कर लेता है कि सब के सब गल गये या कुछ कसर है । इसी प्रकार जहाँ किसी समुदाय के दो-चार व्यक्तियों से सबके सम्बन्ध में कुछ अनुमान किया जाता है, वही इस न्याय का इस प्रकार व्यवहार किया जाता है—‘विद्यालय-निरीक्षकः स्थालीपुलाकन्यायेनैव विद्यार्थिनां योग्यतां परीक्षन्ते ।’

८६. स्थावरजंगमविषयन्यायः—अथ है—स्थावर और जंगम विषय का दृष्टान्त । पौधों और खनिज द्रव्यों के विषय स्थावर विषय कहलते हैं तथा प्राणियों के विषय जंगम विषय । कहते हैं, विषय को विषय नष्ट करता है, जैसे कि महाभारत की कथा में भीमसेन को दुर्वीधन द्वारा दिया हुआ स्थावर विषय नदी में सर्पों के जंगम विषय से दूर हो गया था । इसी प्रकार जहाँ एक वस्तु का प्रतिकार दूसरी से हो जाय, वहाँ यः न्याय प्रयोज्य है । यथा—‘वर्तमाने बहूनां रोगाणां चिकित्सा स्थावरजंगमविषयन्यायेनैव विधीयते ।’

८७. स्थूणानिखनन्यायः—स्थूणानिखनन्याय अर्थात् खंदा गाड़ने का न्याय । जैसे भूमि में खंदा गाड़ना हो तो उसे बार-बार हिलाकर गहरा ठोका जाता है; वैसे ही अपने पक्ष के सुसमर्थन के लिए जब कोई वक्ता, लेखक आदि अनेक युक्तिर्था, दृष्टान्त आदि प्रस्तुत करता है तब वह न्याय प्रयुक्त होता है । यथा—‘स्थूणानिखनन्यायेन समर्थयात् प्रवक्ता स्वकीयं पक्षं दृष्टान्तपरम्परया ।’

८८. स्वामिभृत्यन्यायः—स्वामिभृत्यन्याय अर्थात् मालिक और लौकर का न्याय । स्वामी और सेवक में पाचक तथा पोष्य या धारक और धार्य का सम्बन्ध होता है । इसी प्रकार का सम्बन्ध जहाँ दो वस्तुओं या व्यक्तियों में दिखाई दे, वहाँ उक्त न्याय व्यवहृत होता है । यथा—‘इह लोके सर्वत्र ज्ञेश्वरयोः व्यवहारः स्वामिभृत्यन्याय इव दृश्यते ।’

८९. स्वेदजनमित्तेन शोऽकटत्यागन्यायः—इस न्याय का अर्थ है—पसीने से उत्पन्न कीड़ों के कारण वस्त्र फँक देने का न्याय । इसी को कहीं पर ‘शूकामिया कन्धात्यागन्यायः’ भी कहते हैं जिसका हिन्दी रूपान्तर ‘जुओं के डर से गुदड़ी नहीं फँकी जाती’ है । आशय यह है कि सामान्य भयों से भीत होकर भारी हानि सहन करना बुद्धिमत्ता नहीं है । यथा—‘परीक्षार्था वैकल्यमपि संभवतीति भयेन परीक्षार्था छात्रा न सम्मिलिता भवेद्युरिति न, स्वेदजनमित्तेन त्यागन्यायेन ।’

९०. हृदनक्रन्त्यायः—हृदनक्रन्त्याय का अर्थ है—झील और मगर का दृष्टान्त । इसका आशय ‘वनसिंहन्याय’ के समान है । विस्तारार्थ वहाँ देखिए ।

सप्तम परिशिष्ट

प्राचीन भारत का भौगोलिक परिचय

मातृसंस्कृति से अपना सम्बन्ध स्थापित करने के लिए जहाँ मातृभाषा का परिचय आवश्यक है, वहाँ मातृभूमि के विषय में भी कुछ-न-कुछ ज्ञान अपरिहार्य है। इसी ध्येय से प्रस्तुत अनुक्रम-गी हम जोड़ रहे हैं।

जिस बृद्ध भारत के विषय में हम सदा गर्व अनुभव करते हैं, उसके तीर्थोदि स्थानों के सम्बन्ध में परिचयात्मक संवेत प्राचीन साहित्य में जहाँ-तहाँ विखरे पड़े हैं। संस्कृत-नाटकों के कथा-प्रवाह को भी, उनकी पृष्ठभूमि के अभाव में, समझ सकना असम्भव है। हमारी विभिन्न शैलियों, रीति-रिक्तियों, कवि-समदीक्षियों के मूलोद्गम भी तो लोक-संस्कृति के यही उर्वर प्रदेश ही थे। राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोने का जितना श्रेय अश्वमेध का परम्परा को अक्षुण्ण रखने वाले हमारे चक्रवर्ती सम्राटों को रहा है, उतना ही श्रेय इस देश के महारुक्तियों (वाल्मीकि, व्यास) को भी है। मेघदूत का संदेशहर बादल स्वयं कवि का उद्गार हृदय है, जिसके मुक्त-स्वोम में उमड़ने-उड़ने में भारत, मानो एक घोंसले में आवद्ध हो गया है।

हमारे प्राचीन भूगोल को लेकर कोई क्रमबद्ध अनुसन्धान अभी तक नहीं किया गया। श्री नन्दलाल दे की 'दि जिओग्राफिकल डिक्शनरी ऑफ इण्डिया एण्ड निजीबल इण्डिया' (प्रथम संस्करण १८८९, द्वितीय १९२७) आज स्वयं संशोधन चाहती है। डा० वासुदेवदाराण अग्रवाल ने जिस प्रकार पाणिनीकालीन तथा बाणकालीन भारतवर्ष के सांस्कृतिक रूप को एकत्रित करने का यत्न किया है; जिस प्रकार डा० औरैलस्टाइन ने काश्मीर के विस्मृत नामों का उद्धार किया था, उसी प्रकार की बृहत्तर-भारत की क्रमिक कहानों के लेखक को अभी जन्म लेना है।

प्राचीन भारत के कुछ एक नामों का तुलनात्मक उल्लेख हम कर रहे हैं, इस आशा से कि कोई अज्ञात युवक, एक ही सही, उस 'प्रथम प्रभात' के संस्पर्श से पुलकित होकर अनुसन्धान की इस बहूती दिशा में प्रयत्नशील हो जाए।

अंग—प्राचीन भारत के १६ 'राजनीतिक' जनपदों में एक, जो कभी रोमपाद (रामायण) तथा कर्ण (महाभारत) के शासन में था। आजकल भागलपुर के आसपास का प्रदेश।

अजन्तगिरि—पंजाब की 'सुलेमान' पर्वतमाला (बराह०*)।

अगस्त्याश्रम—नासिक, कोल्हापुर (बम्बई), उत्तरप्रदेश, गढ़वाल, सतपुड़ा आदि में ऋषि अगस्त्य के नाम से प्रसिद्ध आश्रम। अगस्त्य ही वे 'चरित्र-विजयी' बीर थे, जिन्होंने सर्वप्रथम आर्य-सभ्यता का दक्षिण में प्रवेश संभव किया था। लोगों का विश्वास है कि अगस्त्य आज भी **ताम्रपर्णी** के उद्गम स्रोत (तिनिवेली में) 'अगस्त्यकूट' पर सनाधिस्थ हैं।

अचिन्त—मध्यभारत में एलोरा के प्रायः ६० मील उत्तरपूर्व की ओर 'अजिन्टा' ('अजन्ता' उच्चारण अशुद्ध है) नामक गुहा-समूह, जहाँ (बौद्धों के) योगाचार्य मत के संस्थापक आर्य असंग का प्रथम 'आश्रम' था। गुहाओं में भव्यचित्रकला का अद्भुत विहार के स्थविर 'अचल' के आदेश पर ५वीं-६ठी शती में सम्पन्न हुआ था।

अचि(जि)रावती—अवध की राप्ती (रैवती) नदी, जिस पर कभी आवस्ती नगर बसा हुआ था। २. इरावती (रावी)। (बराह०)

* संकेतों के विवरण के लिए ग्रन्थारम्भ में संकेत-सूची देखिए।

[७७०]

अच्छोद—काश्मीर का एक सरोवर (आधु० अञ्छावत), जिसके तट पर कभी 'सिद्धाश्रम' अवस्थित था। (कादम्बरी)

अनन्तनाग—जेहलम के दक्षिण तट पर स्थित (काश्मीर की) प्राचीन राजधानी। (आधु० इस्लामाबाद)

अनन्तशयन—त्रावनकोर का पद्मनाभपुर, वहाँ एक मन्दिर में विष्णु की शयनाग पर प्रसृत मुद्रा में अंकित मूर्ति सुरक्षित है। (पद्य० उत्तर०)

अनहिलपत्तन—बलभीसास्राज्य के विध्वंस पर 'वनराज' द्वारा गुजरात (उत्तर-बड़ोदा) में (७४६ ई०) प्रतिष्ठापित एक (आधु० अनहिलवाळ) नगर।

अनराधपुर—सिंहल (सीओन) की पुगानी राजधानी, जहाँ महिन्द तथा संघमित्रा द्वारा रोपित बौद्धशिक्षण की शाखा से निकसित 'अश्वत्थ' आज भी विद्यमान है। (महावंश)

अनूप—दक्षिण मालव देश, हैहय, महिष (माहिषक)। (हरिवंश०)

अन्तर्वेद—गंगा तथा यमुना के अन्तर्गत दोआब। (भविष्य०)

अपरा—अफगानिस्तान। (ब्रह्माण्ड०)

अपरान्त (क)—कोंकण तथा मालाबार; पश्चिमी घाट। (रघु०, ब्रह्म०)

अभिलारा (रि)—पेशावर डिविजन में एक सिद्धा, उरुशा (आधु० इजारा), जिसे अजुन ने (सभापर्व०, पद्य०) अपनी उत्तर-दिविजय में जीता था।

अमरकण्ठक—गोंडवाना में मेकल पर्वतमाछा का एक भाग, जो नर्मदा तथा शोण का उद्गमस्थल है; आम्रकूट (?) (पद्य०, स्कन्द०, मेघदूत)।

अमरावती—आन्ध्र में कुष्णा के तट पर, बैजवाड़ा के प्रायः २० मील पश्चिम की ओर स्थित प्रसिद्ध बौद्धस्तूप (का मध्य स्थान) जिसे चतुर्थ शती के अन्त में आन्ध्रों ने निर्मित किया था।

अम्बर—जयपुर (के समीप प्राचीन नगर आमेर)। इसकी मूल-प्रतिष्ठा मान्वाता के पुत्र अम्बरीष ने की थी तथा 'वर्तमान' रूपान्तर मानसिंह ने अम्बर के दिनों में किया था। (भविष्य०)

अयोध्या—'रामराज्य का पुनीत भूमिभूत', अवध। बौद्धयुग में सरयू नदी अयोध्या को उत्तरकोसल तथा दक्षिणकोसल में विभक्त करती थी। अयोध्या के ध्वस्त तीर्थों का पुनरुद्धार 'पर्वी' शती में किसी गुप्त 'विक्रमादित्य' ने किया था।

अरण्य—सैन्धव, दण्डक, नैमिष, कुरूक्षेत्र, अपराजित, जम्बुमार्ग, पुष्कर, हिमाश्रय तथा अरण्य का नी तीर्थ-वनों में परिगणन होता है। (देवी०)

अरुणाचल—कैलास के पश्चिम में एक पर्वतमाला। २. दक्षिण भारत में सुरक्षित 'अष्टमूर्ति' (शिवजी महाराज) की पंच 'भौतिक' मूर्तियों में एक—'अग्नि-प्रतिभा' जहाँ प्रतिष्ठित है। (ब्रह्माण्ड०)

अरुणोद—गढ़वाल। (स्कन्द०)

अश्वगंगा—कावेरी। (हरिवंश०)

अर्जुद—(राजपूताना की) सिरौही रियासत में अरवली पर्वतमाला की 'अर्जु' शाखा, जहाँ से वशिष्ठ ने विश्वामित्र के विशुद्ध युद्ध करने के लिए 'परमर' जैसे वीर को एक 'अग्नि-कुण्ड' से उत्पन्न किया था। (महाभा०, पद्य०)

अलका—यक्षपति कुबेर की राजधानी, जिसका नामकरण, संभवतः, गढ़वाल में बहती अलकनन्दा (अपरानन्दा, दसुंधारा) नामक नदी के अनुकरण पर हुआ था। (स्कन्द०)

अवन्ती—मालव राज्य की 'राजधानी' उज्जयिनी (उज्जैन), जिसे ७-८वीं सदी से मालवा कहते आते हैं। कभी यह संवत्सर्वतक विक्रमादित्य की 'राजधानी' थी। २. सिन्धु (नदी का एक नाम), जिस पर प्राचीन उज्जैन स्थित था।

अधिसुक्त—काशी, वाराणसी (बनारस) । (शिव०, मत्स्य०) ।

अधमक—(ब्रह्मकुमारचरित में) विदर्भ के अधीन एक राज्य, जो अर्धशास्र के टीकाकार भट्टस्वामी के अनुसार, महाराष्ट्र है—और कभी अकन्ती-साम्राज्य के उत्तर-पश्चिम में था । (कुर्म० इर्ष०, जगतक०) वक्षु (अधमन्वती आमू) की सम्यता का देश—अक्सियाना, 'पाताल' ।

अधमन्वती—वक्षु (भावस), इक्षु, यक्षु, आमू दरिया । (रघु०)

अक्षिन्ती—चनाब की एक धारा ।

अहिच्छत्र—रोहीलखण्ड में बरेली से २० मील पश्चिम की ओर, आधुनिक रामनगर; अहिच्छत्र, छत्रवती । (महा०)

आदर्शावली—अरवली पर्वतमाला । (दे० आर्यावर्त)

आनर्त्त—गुजरात (तथा मालवदेश का कुछ अंश), जिसकी राजधानी कभी कुशावली (द्वारिका) थी । उत्तर गुजरात की राजधानी का नाम भी कभी आनर्त्तपुर (आनन्दपुर, आधु० बालनगर) रहा था । (भागवत०)

आन्ध्र—गोदावरी तथा कृष्णा नदियों का 'मध्यदेश', राज० अमरावती । सदियों यहाँ वेङ्गी के पञ्चवें तथा कल्याणपुर के चौठों का उत्थान-पतन होता रहा । स्वयं आन्ध्रों का राजवंश, इतिहास में, सानवाहन अथवा सातकर्णिके नाम से अधिक प्रसिद्ध है । (गरुड०, अनर्घरावव)

आपगा—(पश्चिमी पंजाब की) रावी के पश्चिम में एक सरिता । २. कुश्नेत्र में चित्तौड़ नदी की एक सहयोगिका, जिसे ओघवती तथा 'आपगा' भी कहते हैं । (वामन०)

आभीर—नर्मदा के मुहाने के गिर्द, गुजरात का दक्षिणपूर्वीय भाग । (ब्रह्मण्ड०, महाभा०)

आन्नकूट—अमरकण्ठक ।

आर्तमेकीया—व्यास (विपाशा) की एक धारा ।

आर्यावर्त्त—(मनु के अनुसार) हिमाद्रि तथा विन्ध्य के मध्य में स्थित देश, उत्तरापथ । पतञ्जलि के समय में आर्यावर्त्त की चार 'पार्वती' मर्यादाएँ थीं—१. उत्तर में हिमालय, २. दक्षिण में पारियात्र, ३. पश्चिम में आदर्शावली, तथा ४. पूर्व में कालकवन । राजशेखर के बालरामायण के अनुसार दक्षिणभारत तथा उत्तरभारत की स्वाभाविक विभाजन-रेखा है—नर्मदा ।

आशापल्ली—जलबेलुनी का येस्साबल अथवा आसाबल, आनकल का अहमदानाद ।

इन्द्रपुर—इन्दौर । (स्कन्दपुरा के अभिलेख; शंकरविजय)

इन्द्रप्रस्थ—पुरानी दिल्ली, बृहत्स्थल; स्वाण्डवमस्थ (महाभा०) । कहते हैं पुराने किले का निर्माण (कल्पियुग ६५३ में ?) युधिष्ठिर ने किया था, लोकभाषा में उसे आज भी 'इन्द्रपत' कहते हैं । महाभारतकाल में यह युधिष्ठिर की राजधानी थी; किले का पुनर्निर्माण हुमायूँ का किया बतलाते हैं ।

इ (ऐ) रावती—रावी (पंजाब) २. (अवध की) राप्ती (अचिरावती) । (गरुड०)

इक्षिपत्तन—ऋषिपत्तन, सारनाथ ।

इन्द्र(न्त)पुर—पटना जिले का 'बिहार' शहर, जो कभी बंगाल के पाल राजाओं की राजधानी था । यहाँ बौधिसूत्र अवलोकितेश्वर की चन्दनमयी मूर्ति से सुशोभित एक प्रसिद्ध बौद्ध विहार भी है । (द्वाविश अवदान)

उग्र—केरल (देवीपु०) । बिहार में महास्थान (पत्र०) ।

उच्च—वर्षा, कुलन्दशहर, जहाँ जनमेजय ने 'नगासत्र' (अर्थात् पुराणों के प्रवचन) का प्रचलन किया था ।

उज्जयिनी—प्राचीन-मालवदेश (अर्थात् अकन्ती) की राजधानी । तीसरी सदी ई० पू० में बिन्दुसार के शासनकाल में अशोक यहाँ राजवपाल थे । विक्रमादित्य संवत्प्रवर्तक ने शकों को

[७७२]

(५७ ई० पू०) पराजित कर इसे अपनी राजधानी बनाया था । चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य (द्वि०) ने सुराष्ट्र-मालव देश के शकों को भारत से निर्वासित कर उज्जैन की प्राचीन परम्पराओं को अन्ततः सुमाप्त कर दिया । गाथाओं में उदयन की प्रेम-लीलाओं का भी इधर से ही सम्बन्ध रहा है । शहर के मध्य में कभी यहाँ कालप्रियनःध भगवान् का एक मन्दिर था, जहाँ शिव-पुराण के प्रसिद्ध १२ ज्योतिर्लिंगों में एक की प्रतिष्ठा थी ।

उ(ओ)ड़—उड़ीसा, उत्कल (उत्-कलिंग, अर्थात् कलिंग का उत्तर भाग) । इसकी दक्षिणी सीमा पर जगन्नाथ (पुरी) का प्रख्यात मन्दिर था । पुराणों के युग में उत्कल तथा कलिंग का विभाजन हो चुका था ।

उत्तरकुर्ग—गढ़वाल तथा हूणदेश का उत्तरीय भाग, जो हिमालय के परतर प्रदेशों का एक पुंज था—और जिसे अर्जुन ने अपनी दिग्विजय में शुषिष्ठिर के साम्राज्य का अङ्ग बना लिया था ।

उत्तरापथ—काश्मीर तथा काबुल का 'एक राज्य' । २. उत्तर भारत (भारतवर्ष) ।

उत्तरमद्र—कारस में 'मद्र' प्रान्त, जिसमें अवरता का 'आर्यान्त बाजों' (आर्य-अवर्षा) भी सम्मिलित था ।

उत्तरविदेह—नेपाल का दक्षिण भाग, जिसकी राजधानी गन्धवती थी । (स्वयम्भू पुराण)

उत्पलारण्य—कानपुर से १४ मील दूर (आधु० 'विदूर'), 'घासमीकि-आश्रम', जहाँ सीता ने प्रवास में लव तथा कुश को जन्म दिया था । यहीं पर, सरस्वती तथा इषदती के 'मध्यदेश' (ब्रह्मावर्त्त) में श्रुव के पिता उत्तानपाद ने 'प्रतिष्ठान' की स्थापना की थी ।

उदयगिरि—उड़ीसा में भुवनेश्वर के पाँच मील पूर्व एक पर्वत, जिसकी प्रसिद्ध गुहाओं में ई० ५०० पू०—५०० ई० के सदस्र वर्षों में भारतीय कलाकार अपना सर्वस्व उँटेलते रहे ।

उदीष्य (भूमि)—सरस्वती के उत्तर-पश्चिम का प्रदेश । (अमरकोश)

उरग (पुर)—काश्मीर के पश्चिम में, जेहलग तथा सिन्ध नदियों के बीच का प्रदेश (इतारा) :
उरशा, अभिसारा (मत्स्य०) । २. विचनपल्ली = उरैपुर, जो छठी शती में पाण्डवों की राजधानी थी; नागपत्तन (?) । (रघु०) ११वीं शती में चोड़ों का सम्पूर्ण तमिल देश पर प्रभुत्व जम चुका था । 'पवनदूत' का कवि इसे, ताम्रपर्णी पर प्रतिष्ठित करता हुआ, भुजंगपुर नाम से स्मरण करता है ।

उरविश्व (स्तल)—'गया' के ६ मील दक्षिण में, 'बुद्धगया', जहाँ छठी शती ई० पू० में भगवान् बुद्ध ने बोध प्राप्त किया था । यहाँ से बोधिवृक्ष की शाखाओं का देश-विदेश में प्रतिरोपण हुआ था । आज यहाँ एक मदान् विशार भी है, जिसकी स्थापना छठी शती ई० पू० में अमरदेव ने की थी ।

ऋक्षपर्वत—विन्ध्य की पूर्वी शाखा जो क्षीण, शुक्तिमती, नर्मदा, महानदी आदि का उद्गम है ।

ऋषिपत्तन—(काशी में) इक्षिपत्तन; सारनाथ । (ललितविस्तर)

ऋष्यमूक—किष्किन्धा में (तुरुभद्रा पर) पण्य का उद्गमस्रोत ।

(ऋष्य) **शृंगगिरि**—मैसूर में बैलूर के उत्तर में एक पर्वतशृङ्ग, जहाँ स्वामी शंकराचार्य ने वैदिक धर्म के पुनरुद्धार के लिए (चार मठों में, दक्षिण में) 'शृङ्गेरी' का प्रसिद्ध मठ स्थापित किया था । (शंकाविजय)

एल(र)पुर—एलोरा ।

एरुदपल्ल—खानदेश । (हरिवेणप्रशस्ति)

एरिकिच—एरण ।

औदुम्बर—द्वि० गुरदासपुर ।

कण्वाश्रम—सहारनपुर तथा गढ़वाल में से गुजरती मालिनी ('चुका') नदी के किनारे ऋषि कण्व का आश्रम था, जहाँ शकुन्तला का भरण-पोषण हुआ था । (कोट्यार से ५ किलोमीटर की दूरी पर) । (शतपथ०)

कनक—वचनकोर । (पद्य०)

कनिष्कपुर—शोनगर से दश मील दक्षिण की ओर कनिष्क की बसई नगरी, जहाँ ७८ ई० में अंतिम 'सिद्धसंगीति' का अधिवेशन तथा 'शक संवत्' का प्रवर्तन हुआ था ।

कन्या (कुमारी)—'केप कौमोरिन' (सु)कुमारी ।

कपिलवास्तु—शक्यों की राजधानी, भगवान् बुद्ध की जन्मभूमि—जो आज की भाषा से २५ मील उत्तरपूर्व में, 'भुदला' के नाम से विदित है ।

कपिलाश्रम—बंगाल में 'सागर-संगम' तीर्थ, जहाँ महाराज सागर के अश्वमेधोव अश्व का दन्द्र ने अपहरण किया था ।

कपिशा—कुमा (काबुल) नदी के नाम पर उसका 'उत्तरप्रदेश' भी 'कपिशा' कहलाने लगा; कभी कपिशा नगरी 'गान्धार' साम्राज्य की राजधानी थी । २. रघुवंश में उड़ासा की 'स्वभरेखा' (नदी) की कवि ने 'कपिशा' (पलाशिनी) कहा है ।

कम्बोज—(पूर्वी) अफगानिस्तान । अपरा । (राजत०, मार्कण्डेय०) यास्क के अनुसार 'गलचा' भाषावर्ण का प्रदेश, जहाँ ब्राह्मी (ः) वृष्टु (गतौ) का त्रियात्मक प्रयोग (मात्र 'शव = प्रेत' नहीं) होता है; और जिसे अर्जुन ने अपनी दिग्विजय में युधिष्ठिर के साम्राज्य में जोड़ा था । (महा०)

करतोया—रंगपुर, दीनाजपुर, बोगरा में से गुजरती हुई एक तीर्थ नदी सदादोरा, जो कभी बंगाल तथा कामरूप (आसाम) की विभाजक रेखा थी । (स्थन्द०)

कर्णसुवर्ण—(बंगाल में) मुर्शिदाबाद जिले में, रंगामाटो (कानसोना), जो की आदिशूर की राजधानी थी ।

कर्णट—कुन्तलदेश, राज० कल्याणपुर ।

कर्तपुर—कुमाऊँ, गढ़वाल, अल्मोड़ा, काँगड़ा का पर्वतीय राज्य—जिसे समुद्रगुप्त ने विजित कर गुप्त-साम्राज्य का अंग कर लिया था । (हरिवंश०)

कलकुण्ड—(हैदराबाद में हीरों की खानों के लिए प्रसिद्ध) गोलकुण्डा; 'सर्वदर्शनसंग्रह'—कार माधवाचार्य की जन्मभूमि ।

कललि (टि)—(केरल में) शंकराचार्य की जन्मभूमि ।

कलिंग—'उत्तरी सरकार' का इलाका, जिसकी 'युद्धविजय' से विजय हुए अशोक में 'धर्मविजय' की प्रेरणा अग्री थी । 'कलिंगविजय', भारत ही की नहीं, विश्व-भर को आत्मा में एक नवव्य चेतना-स्पर्श का मुहूर्त है । (एब० जी० वेल्स)

कलिंगनगर—(उड़ीसा में) भुवनेश्वर (पुरी) । (दशकुमार०)

कल्याणपुर—(निजाम साम्राज्य में) बीदर के ६ मील पश्चिम में, नाडुपयो (के कुन्तलदेश) की राजधानी ।

कार्जी (पुर)—कांजिबेरम्, जो शंकराचार्य द्वारा स्थापित 'विष्णुकाञ्ची' मन्दिर के लिए तथा 'नालन्दा विश्वविद्यालय' के लिए प्रसिद्ध है । अष्टमूर्ति शिव की 'भौतिक' मूर्तियों में 'आकाश-तरंग' की प्रतीक मूर्ति (चिद्रम्बरम्) श्वर दक्षिण में हो क्यों मिलती है ? (दे० अहणाचल)

कान्यकुब्ज—विश्वामित्र की जन्मभूमि (रामायण), तथा (बौद्धयुग) में दक्षिण-पाञ्चालों की राजधानी—कन्नौज । हर्षवर्धन से पूर्व यह कुछ समय तक मौखरियों की राजधानी भी रहा । इसी के ('त्रिकोण' दुर्ग के) दक्षिण-पश्चिम में स्थित 'रंगमहल' से हो पृथ्वीराज ने संयोगिता का हरण किया था । (भविष्य०)

कामरूप—असम (अहोम, उच्चारण 'आसाम' नहीं) जिसकी राजधानी था—प्राग्भोतिष । कुछ विद्वान् प्राग्ज्योतिष का कामाख्या अथवा गोहाटी से एकीकरण करते हैं । (मेवदूत,

[७७४]

कालिका पु०) कुछ हो, 'कामदहन' का सारा का सारा वातावरण (तीर्थ तथा लोकवाङ्मय की साक्षी पर) इधर ही अधिक उचित उतरता है । (मेघदूत)

काम्बिख्य—दक्षिण पंचाल (बुधदेश) की राजधानी ।

कार्तिकेयपुर—(कुमाऊँ में) वैजनाथ (वैद्यनाथ) तीर्थ । (देवी पु०)

कालीघाट—सती से सम्बद्ध इसी 'पीठ' के आधार पर 'कलकत्ता' का नामकरण हुआ प्रतीत होता है ।

काश्यपपुर—उपनिषदों के 'चरैवेति' युग में ऋषि काश्यप द्वारा संस्थापित (उपनिवेशित) नगरी, प्रदेशों का 'सर्वनाम', यथा—काश्मीर, मुलतान ।

काश्यपीगंगा—गुजरात की साबरमती (नदी) । (पद्य०)

किम्बुख (देश)—नेपाल ।

किरात (देश)—नेपाल के सुदूरपूर्व की ओर किरातों की वस्ती—(त्रिपुरा) तिपार, जहाँ 'त्रिपुरेश्वरी' का तीर्थमन्दिर है । (ब्रह्म०)

किष्किन्धा—तुङ्गभद्रा के दक्षिण तट पर धारवाङ्ग में आज भी इसे उती पुराने नाम से लोग जानते हैं । लोकगाथा के अनुसार, यहाँ (राक्षस) बाली का ध्वंस हुआ था । अयोध्या से किष्किन्धा तथा किष्किन्धा से लंका—कुल दो सौ मील की दूरी थी । 'लंका'—सिंहल (सीलोन) नहीं है ।

कुण्डग्राम—वैशाली का एक और नाम, जो महावीर की जन्मभूमि था और आधुनिक मुजफ्फरपुर (तिरहुत) में अवस्थित था । (जैनसूत्र)

कुण्डिनपुर—विदर्भ की प्राचीन राजधानी, बीदर (?) । (मालतीमाधव)

कुन्तल (देश)—नर्मदा, तुङ्गभद्रा, पश्चिमसागर और गोदावरी से सीमित इस प्राचीन देश ने चालुक्यों तथा मराठों के हाथ कई वस्थान-पतन देखे, कई राजधानियाँ (कल्याण, नासिक) बदलीं । (दशकुमार०, तारातन्त्र)

(कुन्ती) भोज—मालवदेश का एक पुराना नगर, जहाँ पाण्डवों की माता का बाल्यकाल, 'कुन्तीभोज' की छत्रछाया में बीता था ।

कुभा (कुहु)—काबुल (नदी) ।

कुमारवन—कुमाऊँ, कूर्माचल । (विराटपर्व)

कुम्भघोष—तंजोर जिले में चोलों की राजधानी तथा विद्यापीठ रहा है । (चैतन्यचरित०)

कुम्भक्षेत्र—'महाभारतों का धर्मक्षेत्र भी, युद्धक्षेत्र भी—थानेसर ।

कुम्भजांगल—हरितनापुर के दक्षिण पश्चिम का 'आरण्यक' प्रदेश ।

कुलिन्द (देश)—कभी सतलज तथा गंगा के बीच का सारा प्रदेश 'कुलिन्द' कहलाता था, आज गढ़वाल के साथ (उत्तर) दिल्ली तथा सहारनपुर उसमें शामिल करने होंगे । (महा०)

कुल्लू—बुल्लू ; कभी कुलिन्द का ही एकांश था । (बृहत्संहिता)

कुशा(भवन)पुर—अवध में गोमती के तट पर, मुलतानपुर । इक्ष्वाकुओं की पुरानी राजधानी अयोध्या को छोड़कर, कुश इधर आ बसा था । (रघु०)

कुशाग्रपुर—मगध की प्राचीन राजधानी, राजगृह, गिरिवज्र ।

कुशास्थली—द्वारिका । इतिहास में आनसों की राजधानी भी रही है । प्रसिद्ध विद्वान् कीष ने इसे (मुन्शीजी की 'हिस्ट्री ऑफ गुजरात' पर संमति देते हुए) श्रीकृष्ण, दयानन्द तथा गाँधी की जन्मभूमि होने का श्रेय दिया है ।

कुशीनगर—जहाँ भगवान् बुद्ध का महापरिनिर्वाण हुआ था, गोरखपुर के निकट आधु० 'कसिया' गाँव (बिस्सन) ।

[७७५]

कुसुमपुर—पाटलिपुत्र (पटना) । (मुद्रारक्षस)

कुर्माचल—कुमाऊँ । कुमारवन ।

कैकय—व्यास तथा सतलज के बीच का प्रदेश, जिसकी एक राजकुमारी (कैकेयी) की ईर्ष्या से राम को वनवास मिला था ।

कोसल—अयोध्या । जब कोसल साम्राज्य को (उत्तर, दक्षिण) दो भागों में विभक्त कर दिया गया, उनकी राजधानियाँ भी क्रमशः कुशावती तथा आचल्ली बन गईं । भगवान् बुद्ध के समय में कोसल एक बलशाली साम्राज्य था, कपिलवस्तु तथा बनारस उसके अन्तर्गत थे । किन्तु, ३०० ई० पू० में इसका मगध में समावेश हो गया और इसकी राजधानी भी तब आचल्ली न रहकर पाटलिपुत्र हो गई । कहीं-कहीं दक्षिण-कोसल की प्रतिष्ठा 'महाकोसल' नाम से भी मिलती है ।

कौशाम्बी—इलाहाबाद के प्रायः ३० मील पश्चिम की ओर 'कोसल' जो कभी वत्सदेश की राजधानी थी । (बृहत्कथा, भास)

क्रोड (देश)—कुर्ग । (कावेरीमाहात्म्य)

क्रीड (-रन्ध्र, -पर्वत)—'तिम्बत तथा भारत' में (कुमाऊँ की घाटी में) प्रवेशद्वार, जिसका 'उद्घाटन' परशुराम ने किया था । कुछ विद्वानों के अनुसार यह 'बर्मा-आसाम' की पूर्वीय पर्वतमाला का घेतक है । रामायण के अनुसार क्रीडपर्वत कैलास का वह भाग है जहाँ मानसरोवर झील शोभायमान है । तो क्या 'कैलास' शिव-पार्वती के दस क्रोड़ा शैलों का एक सामान्य नाम है और तबैव क्या मानसरोवर का भी ?

खप(स)—किष्काव तथा चितवस्ता के बीच का इलाका, जिस पर कभी खसों का 'साम्राज्य' था । कुछ विद्वानों के अनुसार इन पार्वतीय खसों की परास्त करके ही चन्द्रगुप्त द्वितीय 'विक्रमादित्य' बने थे, किन्तु अधिक सम्भव यही है कि शकाधिपति किदार को बहुत तक खदेड़ कर चन्द्रगुप्त ने शकों का नामशेष तो किया ही था, साथ ही गुप्तों की खूब जुकी प्रतिष्ठा का उद्धार करके वे बराह-अवतार भी कहलाये । (देवीचन्द्रगुप्त, हर्षचरित, रघुवंश १३)

गन्धसाङ्ख्य—हस्तिनापुर । (भागवत०)

गजेन्द्रमोक्ष—गंगा तथा गण्डकी के संगम पर प्रसिद्ध तीर्थ (भागवत०) । शोणपुर ।

गन्धमादन—कैलास की दक्षिणी शाखा, जहाँ कभी इन्द्रमन् का आवास था—बदरिकाश्रम भी यहीं स्थित है । (कालिका०, विक्रमो०)

गाविपुर—कान्यकुब्ज (कन्नौज) जिसे विश्वामित्र के पिता ने बसाया था ।

गान्धार, गन्धर्वदेश—काबुल नदी के साथ-साथ बसा हुआ कुनार तथा सिन्ध नदियों का 'मध्यदेश', जिसमें कभी पेशावर तथा राबलपिण्डी समाविष्ट होते थे । पुरुषपुर (पेशावर) तथा खलशिला इसकी दो राजधानियाँ थीं ।

गिरिकर्णिका—(गुजरात में) साबरमती ।

गिरिनगर—गिरिनार-जूनागढ़ में एक पर्वतमाला, जहाँ नेमिनार्य तथा पार्वनाथ के प्रसिद्ध जैन-मन्दिर हैं । कभी ऋषि दत्तात्रेय का आवास था । अशोक के कुछ शिलालेख यहाँ भी अभिलिखित हुए थे । सुदर्शन झील का तथा उसके उद्धारक रुद्रामन् का नाम भी इससे सम्बद्ध है । (स्कन्द०, बृहत्सं०)

गिरिवज्र—(विहार में) मगध की प्राचीन राजधानी—राजगृह—'वसु' के द्वारा संस्थापित होने से इसे वसुमती भी कहा जाता है (रामायण) । 'बुद्धयुग' में इसे कुसुमपुर भी कहने लगे थे । प्रसिद्ध विश्वविद्यालय 'विक्रमशिला (विहार)' यहीं स्थित था । (महावग्ग)

गृध्रकूट—'गिरिनगर' के दक्षिण की ओर रत्नगिरि शृङ्खला का एक भाग, जहाँ तपोमग्न बुद्ध पर

[७७६]

देवदत्त ने शिला फँकी थी। यहीं, जीवकवन में, अज्ञातशत्रु तथा उसके प्रधानमन्त्री बर्षकार ने स्वयं भगवान् की सेवा में उपस्थित हो, 'पाटलिपुत्र' की स्थापना-योजना बनाई थी। (सुल्लवग्ग)
गुप्तकाशी—(उड़ीसा में) भुवनेश्वर । (कुमाऊँ में) द्रोणितपुर (हरिवंश) ।

गोकर्ण—(उत्तर गों०) गंगोत्तरी से ८ मील दूर, भगीरथ का 'तपोवन' । (दक्षिण गों०)
 करवाल में गैडिया तीर्थ ।

गोकुल—कृष्ण के बाल्यकाल की कीड़(भूमि—वज्र-गोकुल मथुरा से ६ मील पर है ।

गो(गौ)तमी—गोदावरी । (शिव०)

गोनर्द(न्द)—पंजाब, क्योंकि काश्मीर के राजा गोनर्द ने इसे जीत लिया था। एक 'गोनर्द' अवध में भी है, (गोंडा), जहाँ महाभाष्यकार एतंजलि ने जन्म ग्रहण किया था ।

गोपकवन—आधु० गोआ । (विक्रमांकदेवचरित) ।

गोपात्रि—१. रोहतास (पर्वत) । २. काश्मीर में 'तस्ते तुलेमान', जिसे शास्त्रों में 'शङ्कराचार्य' पर्वत भी कहा गया है । ३. ग्वालियर । (राजतरंगिणी)

गोवर्धन—वृन्दावन से १८ मील दूर, वही पर्वत जिसे ('पैथो' ग्राम में) बाल कृष्ण ने अपनी उंगली पर उठा लिया था ।

गौड़—(मगध-साम्राज्य से मुक्त हुए) बंगाल की प्रतिष्ठा (७वीं सदी में) इस नाम से हुई थी। यह अंग देश के दक्षिण में था । (हर्ष०)

गोमती, चर्मवती (दे० 'रन्तिपुर') । गोमल ।

घघेरा—घग्गर नदी, जो कुमाऊँ से निकल कर सरयू में आ मिलती है । (पद्म०)

चक्षु—चक्षु (श्छु) और आमू नामक नदी जो महाभारत, रघुवंश तथा चन्द्र के महरीछाँ अभिलेख के अनुसार 'शाकद्वीप' में बहती थी ।

चन्दनगिरि, मलयगिरि—मालावार घाट । (त्रिकाण्ड०)

चन्द्रना—सावरमती ।

चन्द्रभागा—चनाब (चन्द्रिका), जिसकी एक शाखा असिक्नी थी ।

चम्पा—श्यामाद्वीप (खुन्सोंग) । २. अंग तथा मगध के बीच रहनेवाली चम्पा नदी (पद्म०) ।
 ३. चम्प । रियसत (राजतरंगिणी) । ४. अंग देश की राजधानी (जिसका पुराना नाम 'सालिनी' था) ।

चम्पारण्य—(मध्य भारत में) राजिम के पाँच मील उत्तर में, जैनों का एक तीर्थ (जैमिनि-भारत) । २. पटना विधीवन में 'चम्पारन' । (शक्तिसंग्रह-तन्त्र)

चरणादि—(मिर्जापुर में) सुनार का प्रसिद्ध अजेय दुर्ग, जिसे बंगाल के पाठ राजाओं ने ८-१२वीं सदियों में बनवाया था ।

चरित्रपुर—(उड़ीसा में) दुरी का तीर्थ, तीर्थपुरी ।

चर्मवती—'रन्तिपुर' गोमती नदी ।

चित्ताभूमि—सन्ध्याल परगना में, वैद्यनाथ अथवा देवघर, जहाँ १२ उद्योतिर्दिनों में एक (रावण द्वारा स्थापित) है ।

चित्रकूट—बुन्देलखण्ड में पयस्विनी मन्दाकिनी के तट पर वह पर्वत-तीर्थ, जहाँ भगवान् रामचन्द्र ने अपने प्रवास की कुछ आथावधि बिताई थी ।

चिदम्बरम्, चित्तम्बलम्—दक्षिण में शिव की पाँच भौतिक मूर्तियों में 'आकाश-तत्त्व' का प्रतिष्ठा-स्थान । (देवी भाग०) ।

चेदि—'काली-सिन्धु' तथा तोंस के मध्यगत, बुन्देलखण्ड तथा मध्यप्रान्त का कुछ भाग, जो कभी 'शिंशुपाल' की राजधानी था ।

[८७७]

चैत्यगिरि—भोलसा से तीन मील उत्तर की ओर, देवनगर—जहाँ अशोक का स्तूपाल था। (कपिलवस्तु में लुम्बिनी, सारनाथ में बोधगया, काशी में मृगडाव, श्रावस्ती में जेनवन, मगध में राजगृह वैशाली, कुशोनगर आदि बौद्धों के ८ तीर्थ 'चैत्य' कहाते हैं।) कुछ विद्वानों ने इसकी स्थिति-समता सांची तथा बिदिशा से भी की है। (नरपत्र)

चोल—पिनाकिनी (पेत्रार) तथा कुर्ग नदियों के बीच में कोरीमण्डोल घाट जिसकी राजधानी, कावेरी पर अवस्थित, 'उदैपुर' थी।

च्यवन—(बंगाल के शहाबाद जिले में) च्यवन ऋषि का आश्रम।

जन(क)स्थान—गोदावरी तथा कृष्णा के बीच का प्रदेश (जनकपुर-चिदेह) तथा औरंगाबाद जो 'पहले' दण्डकारण्य का एक भाग था—दण्डकारण्य में पंचवटी (नासिक) भी शामिल थी। (भवभूति)

जमदग्नि—पाञ्जीपुर में ('जमदग्नि' नाम से प्रसिद्ध) ऋषि परशुराम का आश्रम।

जात्रालिपुर—जबलपुर। (प्रबन्धचिन्तामणि)

जयपुर—प्राचीन मत्स्यदेश, विराटनगर।

जाह्नवी—गंगा। किन्तु, जहू का आश्रम आजकल, सुलतानगंज (भागलपुर) के संतुख गंगा से निकल रही एक चट्टान पर था, ऐसा बताते हैं।

जीर्णनगर—पूना जिले का जुनेर—जो कभी श्वष राजा नहपान की राजधानी था।

जूर्णनगर—यवननगर, जूनागढ़।

जेनवन (विहार)—श्रावस्ती से १ मील दक्षिण की ओर 'जोगिनीभरिया' नाम का डोंग, जहाँ कभी उपवन के अन्दर श्रावस्ती के श्रेष्ठो दानवीर 'भनाव-पिण्डक' सुदत्त ने एक 'विहार' स्थापित किया था। (सुल्लवग्ग)

ज्वालामुखी—कांगड़ा में एक 'पीठ', जहाँ 'सती' की विह्व गिरी थी। ज्वालामुखी पर्वत की ऊँचाई ३२८४' है, जहाँ १८८२' पर महेश्वरी की एक 'मूर्ति' स्थापित है।

झाञ्जल—छोटा नागपुर, जिसकी राजा भयुसिंह की पराजय के अनन्तर अकर ने १५८५ ई० में मुगल-साम्राज्य में मिला लिया था।

उक—व्यास तथा सिन्धु के मध्य का प्रदेश, पंजाब। (शृङ्गकटिक)

तक्षशिला—जिला रावलपिण्डों का एक प्राचीन नगर, जहाँ बौद्धयुग में एक प्रसिद्ध विश्व-विद्यालय था। पाणिनि तक्षशिलाविद्यापीठ में 'आचार्य' थे। 'दिव्यवदान' में अंकित है कि बुद्ध किसी पूर्वजन्म में 'भद्रशिला' के राजा थे, जहाँ एक ब्राह्मण भिक्षु ने उनका सिर काट डाला था। तब से भद्रशिला को लोग 'तक्षशिला' कहने लगे। बौद्धयुग में यहाँ पाणिनि के 'संस्कृत व्याकरण' का अष्टमस्क निबुक्त होना (तथा धनुर्वेद का पाठ्यक्रम में समावेश) हमारी बौद्ध 'पत्नी' तथा अहिंसा-विषयक धारणाओं को एकदम निर्मूल सिद्ध कर देता है।

तपनी—ताप्ती; तामती। (मेघदूत)

तमसा—(श्रवण में) ताँस नदी, जिसके तट पर बाल्मेकि का 'आदि' जीवन बीता था।

तालवदन—कावेरी पर चौक राजाओं की पुरानी राजधानी, 'तल्लकाल'। तीसरी सदी से यहाँ गंगवंश का राज्य रहा था, जिसे ११वीं सदी में चोलों ने तमिळ देश से उखाड़ फेंका।

ताम्रपर्णी—(बौद्ध वाङ्मय में) सिंहल द्वीप। २. दक्षिण में अगस्त्यकूट पर्वत से उद्भूत ताम्रपर्णी नदी। (रघुवंश)

ताम्रलिप्ती—प्राचीन सुह्य देश की एक नदी एवं राजधानी; मौर्यकाल से लेकर गुप्तों के पतन तक (एक सहस्र वर्ष ?) इसका यथावत् ऐतिहासिक महत्त्व रहा। (महा०, रघु०)

तीरभुक्ति—तिरहुत। (देवीभाग०)

[७७८]

सुगन्धका—मेरु के दक्षिण-पश्चिमी सीमांत पर कृष्णा की सहायक नदी ।

सुवर्णरेणु—द्रविड़ देश का एक भाग, 'तोण्डमण्डल' (कोरोमण्डल ?) जिसकी राजधानी काञ्चीपुर थी । (मल्लिकार्जुन)

सुरस्रक—पूर्वी तुर्किस्तान । (गरुड०)

सुषार—यूनानी लेखकों का 'वेकिश्या' तथा अरबी लेखकों का 'सुखारिस्तान', जिसमें बलख तथा बदखशां शामिल थे ।

तृष्णा—तिस्तानदी । शास्त्रमालि द्वीप (क ल्विआ) में 'टाइग्रिस नदी' ।

त्रिककुट, **त्रिविष्टप**—(तिम्बत) । २. त्रिकूट (सिंहल में भी ?) । ३. जुनर ।

त्रि(क)लिंग—तेलंगाना ।

त्रिगत—जालन्धर—'रावी-व्यास-सतलज' का 'ति-भाव' ।

त्रिपदी(ति)—तिरुपति, वेङ्कटगिरि । रामानुज ने यहाँ विश्वनाथ की मूर्ति स्थापित की थी, 'रस-संगाधर' के रचयिता पण्डितराज जगन्नाथ की जन्मभूमि ।

त्रिपुरा—किरात देश, तिपारा—जो कामरूप के अन्तर्गत था ।

त्रिपुरी—जबलपुर से सात मील पश्चिम में, नर्मदा तट पर, 'तिओर' जहाँ महादेव ने त्रिपुरासुर का वध किया था (लिङ्ग०) । २. कलचुरियों की राजधानी—चेन्नैनगर । ३. शोणितपुर ।

त्रिवेणी—(प्रयाग में) गंगा-यमुना-सरस्वती का, तथा पूर्व की ओर गण्डकी-देविका-ब्रह्मपुत्र का 'संगम-तीर्थ' । (बंगाल में 'युक्त' त्रिवेणी, इलाहाबाद में 'युक्त'-त्रिवेणी) !

त्रिशिरपल्ली—'त्रिचनापल्ली', जहाँ रावण का सेनापति रहा करता था ।

त्र्यम्बक—नासिक से २० मील पर, प्रसिद्ध गोदावरी-तीर्थ ।

दक्षिण-गंगा—गोदावरी अथवा कावेरी अथवा नर्मदा अथवा तुङ्गभद्रा ।

दक्षिणगिरि—दशार्ण (कालिदास), जिसकी राजधानी 'चेतिय' थी, भूपाल राज्य ।

दक्षिण-मथुरा—मदुरा अथवा सीनाक्षी, पाण्डवों की प्राचीन राजधानी ।

दक्षिणापथ—दक्षिणात्य जनपद, अर्थात् 'विन्ध्य के दक्षिण का भारत' ।

दण्डकारण्य—विन्ध्य तथा शिवालक के मध्य का 'महाकान्तार' अथवा 'महाराष्ट्र', जो जनस्थान के पश्चिम में था । (भवभूति)

दुर्दुर—(मद्रास में) नीलगिरि पर्वतमाला ।

दुर्भचली—(गुजरात में) दभोई ।

दशपुर—(मालवा में) मन्दसौर (मन्ददशपुर) अर्थात् दासौर ।

दशार्ण—'पूर्वी मालवा' देश । (दक्षिणगिरि) जिसकी राजधानी (अशोक के समय में) 'चैत्यगिरि' थी ।

दासोरक—मालवा । (त्रिकाण्ड०)

दुर्जयलिंग—दाजिलिंग ।

दुर्वासाश्रम—भागलपुर से १५ मील की दूरी पर; 'कलहग्राम' के निकट, 'खड्ग पहाड़' पर; दुर्वासा ऋषि का आश्रम ।

दृषद्वती—अम्बाला और सरहिन्द के मध्य की नदी, घग्गर ।

देवगिरि—निजाम राज्य में, दौलताबाद । ३. महाराष्ट्र (देवराष्ट्र ?) में । शिवालक । ३. अर-चळी की एक शाखा । (मेघदूत)

देवपत्तन—प्रभास = सारनाथ ।

देवपुर—मध्यभारत में, महानदी तथा पैंडी के संगम पर, राजिम ।

देवराष्ट्र, महाराष्ट्र (?)—समुद्रगुप्त की दक्षिण-विजय के समय इसका राजा कुबेर था ।

देवीकोट—कुमाऊँ में स्थित शोणितपुर ।

द्रमिळ—पूर्वी घाट पर पहाड़ों का देश; जिसके नाम-अंश द्रविड, तामिल आदि हैं ।

द्रोणादि—कूर्माचल (कुमाऊँ) पर द्रोणाचार्य का तपोवन ।

द्वारावती—द्वारिका, कुशस्थली ।

द्वैतवन—(उत्तर प्रदेश में) 'शैवबन्द' तपोवन, जहाँ जुग में हरे पण्डव वनवासी थे । (किराता०)

(बहु) धनक-बहुधान्यक=रोहितक; आयु० रोहितक ।

धन(क)कटक—(मद्रास में) आन्ध्रभृत्यों, सातकर्णियों (सातवाहनों) की राजधानी,

धारणिकोट, धान्यवतीपुर ।

धर्मरण्य—गधा से ५ मील की दूरी पर, शैलों का प्रसिद्ध तीर्थस्थान, जहाँ आज धर्मेश्वर को अर्पित एक मन्दिर है । मिर्जापुर के मोहरपुर की भी कुछ विद्वान् 'धर्मरण्य' समझते हैं । जहाँ अहल्यापति गौतम द्वारा अभिशप्त इन्द्र ने तप किया था ।

धवलगिरि—उड़ीसा की 'धौली' पर्वतमाला, जहाँ अशोक के कुछ अभिलेख उपलब्ध हुए हैं ।

धारा (नगर)—मालवा में राजा भोज की प्राचीन राजधानी 'धार' ।

नगरकोट—कानड़ा । (तीर्थ)

भगरहार—जलालाबाद के ५ मील पश्चिम की ओर, सखर तथा कादुल से संगम पर अवस्थित, ऐतिहासिक नगर ।

नन्दिकुण्ड—साध्रमती (साधरमती) का उद्गम स्रोत ।

नन्दग्राम—(अवध में) 'नन्दगाँव', जहाँ भरत ने राम के विछोह में १४ वर्ष काटे थे । इसका एक और नाम 'मादरासा' (भ्रातृदर्शन) भी है ।

नलपुर—ग्वालियर से ४० मील दक्षिण-पश्चिम की ओर काली-सिन्धु पर, राजा नल की राजधानी, 'नरनाभ' ।

नलिनी—ब्रह्मपुत्र नदी । (रत्ना० पत्र०)

नवद्वीप—(बंगाल में) चैतन्य महाप्रभु की जन्मभूमि 'नदिया', कभी यहाँ विश्वविद्यालय 'नवद्वीप' विद्यार्थीठ था ।

नवराष्ट्र—बम्बई के भड़ोच जिले में, नौसारी ।

नारानदी—अचिरावती, राप्ती ।

नाट(क)—लाट । (गुजरात)

नारायणी—गण्डक नदी ।

नालन्दा—पटना में, राजगृह के दक्षिण-पश्चिम की ओर अवस्थित, प्राचीन बौद्ध विश्वविद्यालय ।

नासिक्य—पञ्जवटी । (नासिक)

निष्कन्धी—लिच्छवि (विरहूत), तीरभुक्ति ।

निर्विन्ध्य (र)—बम्बल की एक धारा, 'नेदुज' । (मेघदूत)

निवृत्ति—पुण्ड्रदेश का पूर्वीय भाग, जिसकी राजधानी पुण्ड्रवर्धन थी; गौड़ । (त्रिकाण्ड०)

निपध—राजा नल की राजधानी—मारवाड़ तथा जोधपुर का प्रदेश । २. नागों की 'निपाद्-भूमि' । (ब्रह्माण्ड०)

नीच—भूपाल में, भीलसा के दक्षिण की ओर की गिरिशृङ्खला, नीचाक्ष । (मेघदूत, देवी०)

नीलगिरि—पुरी (उड़ीसा) की गिरिशृङ्खला; जहाँ जगन्नाथ का प्रसिद्ध मन्दिर है । हरिद्वार की नील धारा पर छाये चण्डी पर्वत को भी 'नीलगिरि' कहते हैं । किन्तु इन्द्रनील पर्वत, जहाँ अर्जुन ने पाशुपत अस्त्र की सिद्धि के लिये तप किया था, तो द्वैतवन के निकट ही कहाँ होना चाहिए । (किराता०)

[७८०]

नि(नै)रंजना(रा)—फल्गु नदी (अश्वीष), जिसके तट पर भगवान् बुद्ध को बाँध प्राप्त हुआ था ।

पद्मेदार—गढ़वाल की पर्वतमाला पर केदारनाथ, तुङ्गनाथ, रुद्रनाथ, मध्यमेश्वर, कल्पेश्वर नाम के (महादेव के अंगारग के चोतक) पाँच शृङ्ग । (बदरीविशाल०)

पंचगङ्गा—बंगाल से प्राचीन विभाग—पुण्ड्र, राङ्ग, मगध, तीरभुक्ति, वारेन्द्र । (राजत०)

पंचग्राम—दे० पाणिग्रन्थ ।

पंचतीर्थ—हरिद्वार की पश्चिमी काटी में (सप्त, सीता, अमृत, रान, सूर्य) कुण्ड । (स्कन्द०)

पंचद्रविड—द्राविड, कर्णाट, गुजरात, महाराष्ट्र, आन्ध्र—दक्षिण के जिले विभाग का आधार, भूगोल नहीं, ब्राह्मणों का 'अन्तर्जातीय भेद' है ।

पंचनद्—पंजाब । कुरुक्षेत्र में एक तीर्थस्थान । कृष्णा, वेन, तुङ्ग, मद्रा, कोन (नदियों का) 'दक्षिणी' पंचाल ।

पंचप्रयाग—भिन्न संगमों पर अवस्थित देव, कर्ण, रुद्र, नन्द तथा विष्णु—'प्रयाग' तीर्थ ।

पंचबदरी—बदरीनाथ, बृद्धबदरी, भविष्यबदरी, आदिबदरी, पाण्डुकेश्वर आदि ।

पंचवटी—नासिक्य (नासिक), जहाँ रावण ने सीता का अपहरण किया था । यहीं शूर्पणखा तथा मारोच के काण्ड हुए थे ।

पंचाल—रोहिलखण्ड, जो पहले गंगा की धारा द्वारा दक्षिण तथा उत्तर पंचालों में विभक्त था । उत्तर पंचाल की राजधानी अहिच्छत्रा थी, दक्षिण (जहाँ की द्रौपदी थी) की कांपिल्य ।

पद्मक्षेत्र—उड़ीसा में, 'कोणार्क' नाम से प्रसिद्ध सूर्य-मन्दिर ।

पद्मपुर, पद्मावती—अवभृति की जन्म तथा दीक्षाभूमि, आधु० पद्मपवाया (विजयनगर = विद्यानगर) । (उत्तरचरित)

पम्पा—किदिकन्धा में, तुङ्गमद्रा की एक धारा । यहाँ पर, कल्पमूक के चरणों में 'पम्पा' सरोवर भी है ।

पयस्विनी—श्रावणकोर में, पापनाशिनी नदी ।

परुष्णी—हरावती (पंजाब की रावी) नदी ।

पर्णशा—राजपूताना में, कम्बल की एक धारा, बनास ।

पलङ्कङ्ग—पालघाट, दशनपुर ।

पलाशिनी—कपिशा, सुवर्णरेखा ।

पल्लव—दक्षिण में, कोरोमण्डल से सीमित देश—राज० काञ्ची ।

पवमान—पारियात्र की, एवं हिन्दूकुश की, एक पर्वतमाला ।

पशुपतिनाथ—(नेपाल) मृगस्थली में, महादेव का प्रसिद्ध मन्दिर ।

पश्चिम सागर—अरब सागर ।

(अ ?) पङ्क(न)व—प्राचीन पार्थ (फारस) राज्य का 'मद्र' प्रदेश । यहाँ की 'पङ्कवी' लिपि में जेन्द्र 'अवरता' को सर्वप्रथम लेखबद्ध किया गया था । पङ्क देश कभी (अरबी ?) बोर्दों के लिए भी विख्यात था ।

पाटलिपुत्र—यटना, जिसका मूल निर्माण अजातशत्रु (४८० ई० पू०) ने किया था । मगध की प्राचीन राजधानी गिरिध्वज (राजशृङ्ग) का त्याग कर, पाटलिपुत्र को नयी राजधानी उद्योग ने बनाया था ।

पाटेल्य—बुद्ध-युग में 'पश्चिमी' भारत—जिसमें ऊरु, पंचाल, अवन्ती, गान्धार, कम्बोज, शरसेन आदि सम्मिलित थे । (महावग्ग)

प्राणिग्रन्थ—पानीपत । पाणि, शोण, इन्द्र, तिल, भान—ये पाँच 'प्रस्थ' (ग्राम) लेकर भी

दुषिद्धिः सन्तुष्ट भा, किन्तु दुर्बोधन न माना। इन 'पाँच घामों' के नाम महाभारत में तथा वेणीसंहार में कुछ भिन्न हैं।

पाण्डू (पाण्ड्य)—दक्षिण के अंधु० तिरुवेवेली तथा मदुरा डिवीजन—जो समय-समय पर अपनी राजधानी—उरैपुर > मदुरा > कोल्कई—बदलते रहे। यहाँ के राजा पुरु ने २६ ई० पू० में अपने दूत रोम भेजे थे।

पाताल—(रामायण में) अग्रमन्वती (आम्) के उत्तर में और बलख के द० पू० अरुमक = 'ओक्सियाना' देश।

पापनाशिनी—पत्रस्विनी।

पारसद्र—सिद्ध ३। (अर्थशास्त्र)

पारसीक, पारस्य—फारस। (रघु०, विष्णु०)

पारस्कर—सिन्ध में 'धल-पारकर'। (पाणिनि)

पारिया(पा)त्र—विन्ध्य की पश्चिमी शाखा, जो कभी आर्यावर्त्त की दक्षिणी सीमा थी। (महाभाष्य)

पावनी—(कुरुक्षेत्र में घबरा = हृषद्वती) धापर नदी, जो पंजाब के हिन्दी-पंजाबी जनपदों की प्राकृतिक 'सीमा' है।

पिनाकिनी—(मद्रास में) नन्दिदुर्ग से उद्गत, 'पेन्नार' नदी।

पिष्टपुर—भोदावरी सि० में, 'पिठापुर'। (हरिषेणप्रदासिन)

पुष्टवर्धन—पंचगौड़ (बंगाल) में, गंगा तथा हेमाद्रिकूट का 'मध्यदेश'।

पुण्यपत्तन—पुणे, पूना, पुनक।

पुरुषपुर—गान्धार देश की (एक) राजधानी, पेशावर। (विप० खीराज्य)

पुहवोचमक्षेत्र—(विहार में) पुरी।

पुलिन्द—भारत की पूर्वीय (कामरूप) तथा पश्चिमीय (बुन्देलखण्ड, सागर) सीमाओं पर कभी पुलिन्दों तथा शबरी के घर थे।

पुष्कर—भद्रमेरु से ६ मील दूर, झील 'पोखड़ा'। महाभारत के समय में यहाँ उत्सवसंकेतों की सात (स्लेच्छ ?) जातियाँ रहा करती थीं।

पुष्करद्वीप—मध्य-एशिया में, 'बोखारा'।

पुष्करावती—प्राचीन गान्धार की राजधानी—जिसे भरत ने अपने पुत्र के नाम से बसाया था और जिस (अष्टनगर) पर सिकन्दर का पहला आक्रमण हुआ था।

पुष्करावती नगर—रंगून। (दीपवंश)

पुष्पपुर—कुसुमपुर, पटना।

पूर्वगंगा—नर्मदा।

पृथुदक—करनाल में, सरस्वती नदी पर, 'पिहोवा'—जहाँ प्रसिद्ध 'नक्षायोनितीर्थ' अवस्थित है।

पृष्ठम्पा—विहार।

पौरव—जेहलम के पूर्व में, पौरवों का राज्य—जहाँ सिकन्दर पुरु की 'अग्निपरीक्षा' पर चक्रित रह गया था।

प्रतिष्ठान—उत्पलारभ्य (बिठूर), जहाँ के (राजा उत्पानपाद के पुत्र) भ्रुव ने मसुरा में घोर तपस्या की थी। पालिग्रन्थों में भोदावरी के तट पर अश्व(श्म)ल (महाराष्ट्र) की (राजधानी) का उल्लेख 'प्रह्लापुरी' प्रतिष्ठान नाम से हुआ है। इलाहाबाद के संमुख गंगा-वार झूँसी को आज भी 'प्रतिष्ठानपुर' कहते हैं। त्रिलः गुरदासपुर (औदुम्बर) की राजधानी परानकोट का भी पुराना नाम 'प्रतिष्ठान (कोट ?)' ही था।

[७८२]

प्रत्यग्रह—अहिच्छत्र ।

प्रभास—काठियावाड़ (जूनागढ़) में सोमनाथ का प्रसिद्ध तीर्थ, प्राचीन नाम देवपत्तन । यहीं भगवान् कृष्ण का प्राणोत्सर्ग हुआ था ।

प्रयाग—प्राचीन कोसल का बड़े भाग, जिसकी राजधानी प्रतिष्ठान (झूँसी) थी । इतिहास में पुरूरवा (दुष्यन्त), नहुष, ययाति, पुरु, भरत का सम्पर्क इधर से ही अधिक रहा है, आधुनिक हलाहाबाद ।

प्रवरपुर—प्रवरसेन द्वितीय द्वारा प्रतिष्ठापित (काश्मीर की राजधानी) श्रीनगर ।

प्रस्थल—किरीतपुर-पटियाला-सिरसा के अन्तर्गत प्रदेश । (मार्क०)

प्रसवण—गोदावरी के तट पर, जनस्थान में शोभायमान (औरंगाबाद) की पहाड़ियाँ, जिन्हें रामायण में **माख्यवान्** (गिरि) भी कहा गया है ।

प्रह्लादपुरी—मुलतान ।

प्राग्योतिष—प्राचीन 'कामरूप' की राजधानी—**कामाख्या**, गोहाटी ।

प्राच्य—(सरस्वती के) दक्षिण-पूर्व का भारतवर्ष ।

फल्गु—निरंजना नदी-भगवान् बुद्ध के नव जन्म एवं बोध की भूमि । (अश्वमेध)

बंग—'बंगाल', किन्तु दे० पंचगौड़ ।

बदरी—बदरिकाश्रम, बदरीनाथ । दे० पंचबदरी ।

बालुकेश्वर—(बम्बई के निकट) 'मालाबार हिल' ।

बालोझ—बलोचिस्तान । (अवदानकल्पलता)

बिन्दुसर—गंगोत्तरी के दो मील दक्षिण की ओर, 'रुद्र हिमालय' पर प्रसिद्ध सरोवर, जो भगीरथ की तपोभूमि था ।

बैस्वानगर—वैश्यनगर (?) भूपाल में, साँची के निकट, भीलसा से तीन मील पर, चैत्यनगर, जो प्राचीन दक्षार्ण की राजधानी था । दे० चैत्यगिरि ।

ब्रह्मकुण्ड—ब्रह्मपुत्र का उद्गम-स्त्रोत ।

ब्रह्मदेश—बर्मा ।

ब्रह्मनाल—काशी में, 'मणिकर्णिका' कुण्ड ।

ब्रह्मर्षिदेश—ब्रह्मवर्त तथा यमुना के अन्तर्गत देश—जिसमें कुरुक्षेत्र, भस्त्व, पंचाल तथा शूरसेन समाविष्ट थे । (मनुसं०)

ब्रह्मसर—रामहृद ।

ब्रह्मावर्त—सरस्वती तथा इन्द्रती का 'मध्यप्रदेश', जो आर्यों का प्रथम 'उपनिवेश' था ।

भद्रा—यारकंद, तथा यारकंद की तरफ़ाँ नदी ।

भरु (भृगु) कच्छ ?—भकोच, जहाँ वामन ने राजा बली का अभिमान मंग किया था ।

भारतवर्ष—भरत के नाम से 'भारतवर्ष' कहलाने से पूर्व हमारे देश का नाम 'हिमाच्छ' अपिवा 'हैमवत' था । अर्थात् मूल अर्थों में भारतवर्ष 'उत्तर भारत' का नाम था । मार्कण्डेय तथा विष्णु-पुराण के अनुसार भारतवर्ष की सीमाएँ थीं—उत्तर में हिमालय, दक्षिण में समुद्र, पश्चिम में यवन तथा पूर्व में किरात । दक्षिणापथ में प्रथम प्रवेश अगस्त्य ने, पश्चात् अशोक के धर्म ने तथा समुद्रगुप्त की बाहुओं ने किया था ।

भार्गव—पश्चिमी आसाम । (ब्रह्माण्ड०)

भास्करक्षेत्र—प्रयाग । (प्रायश्चित्तसूत्र)

भोम(र)—चिदम्ब (देश एवं नदी) ।

भोज (पाल)—मध्यभारत में, राजा भोज के बनावे (झोलों के) पालों (बाँधों) के नाम पर 'भूपाल' (देश) ।

- भोजपुर**—काश्मीर—कामरूप के अन्तर्गत देश, भूटान, तिब्बत । (तारातन्त्र) ।
- भ्रातृदर्शन**—(अवध में) नन्दिग्राम, आदरसा—जहाँ भरत ने राम के वियोग में १४ वर्ष काटे थे । (अर्चावतार)
- भगध**—दक्षिण बिहार, जिसको राजधानी गिरिवज्र थी । अत्रातशत्रु ने वैशाली के बुद्धियों की व्रतति पर रोक रखने के लिए 'पाटलिग्राम' को नर राजधानी में परिणत कर दिया था । यहाँ पर भीम ने जरासन्ध का वध किया था ।
- भणिकर्णिका**—कुल्लू की घाटी में व्यास की एक धारा, जिसके निकट कुण्डों के गरम पानी में स्नानियों आग के बिना उबली जा सकती हैं ।
- भणितट**—(आसाम में) भणिपुर । (मेघ०)
- भस्व**—जयपुर का प्राचीन क्षेत्र, जिसमें आधु० अलवर तथा भरतपुर शामिल थे । पाण्डवों का अज्ञातवास इधर ही विराट के महलों में गुजरा था ।
- भद्र**—रावी-चनाब का मध्यदेश, जिसकी राजधानी शाकल (स्यालकोट) थी । शत्य तथा अश्वपति (सावित्री का पिता) यहाँ के राजा रहे । 'माद्री' कन्यारों अपने रूप-लावण्य के लिए प्रसिद्ध थीं ।
- भधुपुरी**—मधुरा (मधुरा) । इसे शङ्खन ने बसाया था । मधु (राक्षस) की नगरी संभवतः आजकल की 'महोली' है (जहाँ 'मधुवन' तीर्थ भी है) ।
- भ्रम्यदेश**—हिमगिरि, विन्ध्य, सरस्वती और प्रयाग के अन्तर्गत देश (जिसमें अन्तर्वेद सम्मिलित था), वीह्र ग्रन्थों का 'मन्त्रिमदेश' । इसमें कुरु, पंचाल, मत्स्य, यौधेय, कुन्ती, शूरसेन आदि का समावेश होता था । (मनु०)
- भ्रम्यमराष्ट्र**—दक्षिणकोसल, महाकोसल । (अर्थशास्त्र)
- भ्रन्दाकिनो**—गडवाल में, केंदारपति से उदगत, कालीगंगा । (मन्दागिनि)
- भ्रन्दागिरि**—भागलपुर की एक पहाड़ी, जो 'समुद्रमन्थन' में मंथन-दण्ड के रूप में प्रयुक्त हुई थी ।
- भरु**—(घन्व, -स्थल)—राजपूताना, मारवाड़ ।
- भरुवृधा**—भरुवर्वा, असिक्ती (चनाब का एक धारा, 'आंस') के पश्चिम में ।
- भरु**—हरिद्वार के निकट, मायापुरी ।
- भरुयागिरि**—पश्चिमी घाट का दक्षिण भाग, 'त्रावनकोर दिवत्र' ।
- भरुयालम्**—भरु, मालाबार—जिसके अन्तर्गत कोचीन-त्रावनकोर का सारा प्रदेश था । (राजादली) ।
- भरुदेश**—मालव-देश, मुलतान ।
- भरुराष्ट्र**—मदाराष्ट्र ।
- भरुती, भरुता**—(मालवा में) माही नदी ।
- भरुकोसल**—दक्षिणकोसल ।
- भरुकौशिक**—नेपाल में सात 'कोसियों' से निर्मित एक और 'सप्तसिन्धु' देश, जहाँ 'तामोर-अरुण-मुन' की 'त्रिनेणी' भी है ।
- भरुराष्ट्र**—कृष्णा-गोदावरी के इस 'मध्यदेश' को पहले 'दक्खिन' भी कहा करते थे, अश्मक भी । अशोक ने यहाँ महाधर्मरक्षित को भेजा था । 'आन्ध्रभृत्य, क्षत्रप, राष्ट्रकूट, चालुक्य-कितनेही राजवंशों के उत्थान-पतन के अनन्तर, इतिहास में, मराठों का युग आता है ।
- भरुवन**—व्रज, गोकुल ।
- भरुप(भरुपल)**—भरुपदेश अथवा हैहय राज्य (आधु० मैसूर से कुछ अधिक), राज० साहित्यमाली । यहाँ शंकर तथा मण्डन मिश्र का प्रसिद्ध शास्त्रार्थ हुआ था । (दीपवंश)

[७८४]

- महेन्द्र**—उड़ीसा से मदुरा तक व्यापक पर्वतशृङ्खला ।
- महोत्सव**—दुन्देलखण्ड का 'महोवा', जिसके नाम पर कभी-कभी सारे-के-सारे दुन्देलखण्ड भी 'महोत्सव' कह दैते थे । (प्रबोधचन्द्रोदय)
- महोदधि**—बंगाल की खाड़ी । (२५०)
- महोदय**—कान्यकुब्ज, गाधिपुर ।
- मातंग**—रामरूप में, दक्षिण-पूर्व की ओर, हीरों की खानों के लिए प्रसिद्ध एक 'पट्टी' ।
- मानस**—दक्षिणी तिब्बत (ब्रूणदेश) में कैलास के चरणों में प्रसिद्ध पुण्य स्रोत ।
- मायापुरी**—मयूर । हरिद्वार-कनाखल-मायापुरी की त्रिपुरी ।
- मारकण्ड**—समरकन्द ।
- मारव**—मारवाड़, मरुस्थल ।
- मार्तिकावन**—अलवर (दाल्ध) ।
- माल (१)**—(विदेह के पूर्व तथा मगध के उत्तर-पश्चिम में) एक 'इयामल' देश ।
- मालिनी**—हस्तिनापुर के निकट की 'मन्दकिनी', जिस पर कण्व ऋषि का आश्रम था ।
- माल्यवत्**—गुप्तभद्रा पर प्रसवण गिरि ।
- मिन्नवन**—मुलतान ।
- मिथिला**—जनकपुर, विदेह । 'नवद्वीप' विश्वविद्यालय की स्थापना ने मिथिला एवं विक्रमशिला की स्मृतिशेष कर दिया था ।
- मीनाक्षी**—मदुरा ।
- मुक्तवेणी**—इलाहाबाद की 'मुक्तवेणी' के विपरीत, हुगली पर त्रिवेणी का 'विप्रलम्भ' संगम ।
- मुण्डवा**—छोटा नागपुर में, जि० राजी ।
- मुद्ग(ल)गिरि**—(बिहार में) मुंगेर, जहाँ कभी मुद्गल ऋषि का आश्रम था और जहाँ बुद्ध के महान शिष्य मोग्गलान ने 'श्रुतविंशकोटि' श्रेणी को धर्म में दीक्षित किया था । (भारतवर्ष)
- मुरला**—भीमा की एक धारा । नर्मदा । केरल = मालाबार ।
- मू(मौ)जवत्**—काश्मीर में एक पर्वत, जिस पर सोम बहुत था ।
- मूलस्थान**—मालवस्थान (?), मुलतान । प्रसिद्ध ऐतिहासिक फूसी ने नाम—'भ्युत्पत्ति' के आधार पर इसे 'सृष्टि का उद्गम' माना है ? पौराणिक गाथाओं के अनुसार यहाँ नृसिंह से द्वारा हिरण्यकशिपु का वध हुआ था, सो, इसका एक नाम प्रह्लादपुरी (अर्थात् 'होली' का मूलस्थान) भी है । हर्षचरित के अनुसार मालवदेश, रामायण के अनुसार महलदेश भी । सूतानियों ने इसी को हिरण्यपुरी (हिरण्यकशिपु की पुरी, होला = हिरण्य = Aura ?) कहा है ।
- मूषिक**—सिन्ध का ऊपर का भाग, राज० 'अलोर्' ।
- मू(मि)गदाव**—सारनाथ, 'पद्मचक्रपत्रान' का 'खुला विहार' ।
- मुस्तिकावती**—पर्णाशा (वनास) पर भोज-राजाओं का एक देश, मार्त्त = मारवाड़ ।
- मेकल**—विन्ध्य का एकांश, अमरकण्टक शृङ्खला, 'मेकलकन्यका' (नर्मदा) का उद्गम ।
- मेघना (६)**—पू० बङ्गाल की एक नदी । आसाम में, 'समुद्रोत्सुख' ब्रह्मपुत्र ।
- मेघपात**—मेवाड़ ।
- मेहलु**—कमु (काबुल) की एक धारा ।
- मैनाक**—'शिवालिक' शृङ्खला ।
- मोक्षदा**—हरिद्वार, मथुरा, काशी, काबी आदि (सात) 'मोक्षदा' पुरी मानी गई हैं ।
- मौलि**—'रोहतास हिनत' ।
- मौलिरना(स्था ?)न**—मालव, महल, मूल-स्थान, मुलतान ।

[७२२]

सुर—उड़ीसा में वैतरणी नदी पर, ययातिपुर—जो छोटी-बसुवीं सदियों में केसरी राजवंश राजधानी था।

‘जावा’ द्वीप, जिसे गुजरात के एक राजकुमार ने सातवीं सदी के आरम्भ में बसाया (महाभूट०)

जनगर, जूर्णनगर—गुजरात का जूनागढ़। बंधु नदी का क्षेत्र, अश्मक ‘आक्सियाना’, जहाँ ५वीं सदी ई० में) हूणों की एक उपजाति ‘ज्वॉ-ज्वॉ’ (यवनी) रहा करती थी। (रघु०)

कवेणी—बंगाल की ‘विप्रलम्ब’ मुक्तकवेणी के विपरीत, प्रयाग की ‘सम्भोगिनी’ त्रि-वेणी।

श्रेय—दशवलपुर का जेहियावाड़, जो महाभारत तथा युद्धयुग में यौधेयों का सीमान्त था। शबिल में इन्हें ‘हुद’ तथा १६वीं सदी के यात्रावृत्तों में ‘आयुध’ कहा गया है।

नद्वीप—सिंहल।

जपुर—विलासपुर के १५ मील उत्तर, (नयू-ध्वज हैद्यों की) दक्षिणकोसल की राजधानी।

यस्था—अवध की राप्ती (रेवती) नदी।

न्तिपुर—गोमती-तट पर, ‘रिन्ताम्बर’। गोमती (चर्मश्वती) के तट पर रत्नदेव का दैनिक ‘गोसहस्र-सात’ (यज्ञ) होता था।

रा—अवस्ता की ‘रन्हा’ नदी, अथवा यूनानियों की ‘जकमेटिस’—जो शकों-नागों-हूणों का मूल-आवास थी।

रातल—कैस्पियन सागर के उत्तर की ओर, हूण-राज्य, पश्चिमी तटार। हूणों की विभिन्न जातियों के आधार पर रसातल के सात लोक थे—अतल, नितल, वितल, तलातल, महातल, भूतल, पाताल (?)।

राजारह—मगध की प्राचीन राजधानी, जिसे (गिरिवज्र के उत्तर में) बिम्बिसार ने बसाया था।

राजपुरी—(काश्मीर में) पुंछ के द० पू०, ‘राजौरी’।

राड़—‘पंचगौड़’ का पश्चिमी प्रदेश।

रामगिरि—कालिदास के यज्ञ की तथा रामायण के शम्भूक की तपोभूमि—मध्यभारत में, ‘रामटेक’ पर्वतशृङ्खला।

रामणीयक—आर्मीनिया। (महा०)

रामदासपुर—अमृतसर—गुरु नानक का, रामदास द्वारा प्रस्तुत, ‘शान्ति-निर्देहन’।

रामहृद्—(कुरुक्षेत्र में) ‘ब्राह्मसर’ तीर्थ, जो राजा कुरु की तपोभूमि, पुरूरवा-उर्वशा की संकेत-भूमि तथा बृत्र की मृत्युभूमि था। यहीं ‘प्रतिष्ठा’-भंग कर कृष्ण ने भीष्म के विरुद्ध ‘सुदर्शन चक्र’ उठाया था—चक्रतीर्थ।

रामेश्वरम्—सिंहल तथा भारत के मध्य, सेतुबन्ध।

रावणहृद्—कैलास के निकट, ‘अनवतप्त’ सरोवर, रावण की तपोभूमि।

रेवती—अचिरावती (राप्ती)।

रेव—नर्मदा—

रैवत (ठक)—जैन सन्त नेमिनाथ की जन्मभूमि, गुजरात का गिरिनार पर्वत।

रोह (हि)—अफगानिस्तान।

रोहितक—बंगाल के शाहाबाद जिले में विन्ध्य की एक शाखा, रोहितान्ध (थ)। पंजाब के ‘रोहितक’ का संस्थापक रोहिताश्व (हरिश्चन्द्र का पुत्र) नहीं था—अपितु यह नाम ही स्वयं ‘बहु-धधक’ का पर्याय एवं अपभ्रंश है।

लंका—विन्ध्याखल, जो कि भारत की रोड़ (तु० पंजाबी में ‘लक’) है। रावण की ‘लंका’ (गौडबाना ?) कहीं विन्ध्य-शिखर पर थी—जहाँ के गौड़ आजकल भी अपने को राजण के वंशज बताते हैं, जहाँ के ओरावा आज भी अपने को वानरों के वंशज बतलाते हैं, जहाँ हर टीले (शृङ्ग) को ‘लंका’ तथा हर नदी को ‘गोदा’ कहते हैं। स्वयं रामायण के अनुसार अयोध्या-

किष्किंध्या-लंका २०० मील का अन्तर था। वराहमिहिर के अनुसार उज्जयिनी और लंका पका हो अक्षांश पर स्थित थीं, पुराणों के अनुसार भी लंका तथा सिंहल दो भिन्न-भिन्न द्वीप हैं। सायबय का प्रथम 'आरोप', संभवतः, धर्मकीर्ति में मिलता है; और आज तो 'सेतुबन्ध' बंदि कितने ही 'तीर्थों' ने इतिहास की स्पष्टता एवं परम्परा को सर्वथा भूमिल कर दिया है।

ल(न)वपुर—लवकोट, लोभपुर, लौहोर (राजत०), लाहौर।

ला(नार)ट (देश)—दक्षिण गुजरात (माही—ताप्ती का दोआब)।

ली(नी) लांजल (न)—युद्ध तथा सुजाता की तपोभूमि—पुनर्भूमी—मिरंजना(रा), फल्गु। (अश्वघोष)

लुम्बि(क्षि)नी—नेपाल की तराई में, 'रुम्मेनदेई'—भगवान् युद्ध का जन्म-स्तोवन, जिसका स्थान बीरों के ८ जैत्यों में प्रथम है।

लोभ्र ज्ञानन—कुमाऊँ में, गर्ग ऋषि का आश्रम, 'लोधमूना'। (रघु०)

लौहित्य—वसुपुत्र नदी, जहाँ परशुराम ने मानवहत्या के पाप को धोया था; कालिदास छंद दिनों में प्राग्ज्योतिष की सीमा।

वंक्षु—वक्षु, हक्षु, चक्षु—ओक्सस् अर्थात् आमू दरिया।

वंश—वत्स (देश)।

वटपद्मपुर—गायकवाड़ की राजधानी, बड़ोदा।

वत्स—इलाहाबाद के पश्चिम में उदयन का राज्य; राज० कौशाभ्ठी।

वन—व्रजमण्डल के १२ वनों—वृन्दा, मधु, कुमुद आदि—का सर्वनाम; वामनपुराण के अनुसार कुरुक्षेत्र के ७ वनों का।

वरदा—मध्यभारत में 'वर्षा' नदी।

वराहक्षेत्र—काशी में, जेहलम के तट पर, 'बारामूल'।

वर्धमान (कोटि)—काशी तथा प्रयाग का मध्यवर्ती, अस्थिक (ग्राम), जहाँ महावीर ने 'कैवल्य' सिद्धि पाकर प्रथम 'वर्षा' वितारि थी।

वर्षा—वराहपुराण में वर्णित—नील, निषध, श्वेत, हेम, हिमवत्, शृङ्गवत्—६ पर्वत।

वलभि—वलभि-युग में सुराष्ट्र की राजधानी।

वशिष्ठाश्रम—अवध में अर्बुद (अबू) पर्वत पर, तथैव कामरूप में, वशिष्ठ का तपोवन।

वसुधारा—अलकनन्दा।

वाकाटक—हैदराबाद-दक्षिण में, कैलकिल यवनों का—तथा अतन्तर (वाकाटक) विन्ध्य-शक्ति द्वारा संस्थापित सुसकालीन—राज्य।

वातापिपुर—बीजापुर में, 'बादामी'—जो छठी सदी में महाराष्ट्र-राज पुलकेशी की राजधानी था।

वामनस्थली—जूनभड़ के निकट, धनधाली। राजस्थान की 'वनस्थली' (?)।

वाराणसी—'वरुणा' तथा 'अस्सी' के संगम पर अवस्थित होने से, काशी का यथार्थ नाम।

वाल्मीकि-आश्रम—ज्ञानपुर से १४ मील दूर, विठूर (उत्पलारण्य)—जहाँ भगवान् राम के यशिय अश्व की लव-कुश ने बाँध लिया था।

वाशिष्ठी—गोमती नदी; चर्मश्वती (?)।

वाहीक—व्यास तथा सतलज का दोआब (कैकय के उत्तर में), पंजाब।

वाह्नीक—श(१)कद्रीप, वैमिस्था की राजधानी, बल्लभ। चन्द्रगुप्त द्वितीय ने, शकाधिपति की बल्लभ तक खदेह कर, मानो वराह-अवतार द्वारा पृथ्वी का उद्धार करते हुए ध्रुवस्वामिनी तथा गुप्तसाम्राज्य की 'लाज रक्षी' थी। (मेहरौली अभिलेख, मुद्राराक्षस, रघुवंश)

विक्रमपुर—डका में, 'बल्लालपुरी'—आदिशूर की तथा सेन राजाओं की राजधानी।

[७८०]

विक्रमशिला—आठवीं सदी के राजा धर्मपाल द्वारा स्थापित बौद्ध विहार, जिसका महत्व, आबिर्, 'नवद्वीप विद्यापीठ' की स्थापना के अनन्तर ही कुछ घटा था।

विजयनगर—बंगाल के राजशाही खिवीजन में, सेन राजाओं की राजधानी। **विद्यानगर**।

विनस्ता—वि-तमसा (?), जेहलम (नदी)।

विदिशा—मालवा में बेतवा (**वेन्नवती**) नदी पर भीलसा, जो प्राचीन **दृशार्ण** की राजधानी थी; **विशाला**। (मेघ०)

विदेह—दरंग में जनकपुरी, तीरभुक्ति (निरहुत), मिथिला, जनस्थान।

विद्यामनगर—दृङ्गभद्रा पर विजयनगर के ब्राह्मण राजाओं की राजधानी, **विजयनगर**।

विजयन—कुक्षेत्र (सरहिन्द, पटियाला) में जहाँ सरस्वती लुप्त हो जाती है, वह तीर्थ।

विनादिनी—गुजरात में दनास नदी।

विनीतपुर—उड़ीसा में, कटक।

विन्ध्यपाद—ताही आदि का उद्गम, 'सतपुड़ा' पर्वतश्रेणी।

विपाशा—अरुण नदी।

विराटनगर—मन्स्यदेश, जयपुर—पण्डितों का ब्रह्मविद्यालय।

विशाला—अबनी की राजधानी, उज्जैन (उज्जयिनी)। बौद्ध युग में वैशाली की राजधानी, बसाह।

विशाखा (पत्तन)—विष्णुपुरम्।

विश्वामित्राश्रम—जहाँ ताडका का वध हुआ था, विहार के शहाबाद जिले में बनसर, **वेदगर्भपुरी**।

वीतभयपत्तन—प्राचीन 'घोषिग्राम', अलाहाबाद से ११ मील दक्षिण-पश्चिम, 'विटा'—जहाँ कई ऐतिहासिक मुद्राएँ मिली हैं।

वृद्धकाशी—मद्रास का तीर्थ, 'पुदुचेल्नोपुरम्'।

वैकटगिरि—मद्रास में, तिलपति के निकट, 'तिरुमल्लर' पर्वत।

वैंगी—गोदा-कृष्णा के अन्तर्गत, आन्ध्रों की राजधानी।

वैष्णी—कृष्णा नदी।

वेन्नवती—बेतवा नदी।

वेदारण्य—तेजोर में, अगस्त्य का तपोवन।

वेदगर्भपुरी—बनसर, 'जहाँ विश्वामित्र की 'गायत्री' ने आलोकित किया था।'

वेन—मध्यभारतीय गंगा, गोदावरी की एक धारा।

वैकुण्ठ—ताम्रलिप्ती पर एक तीर्थ।

वैतरणी—परशुराम के भगोरथ प्रवचन से 'अवतारित', उड़ीसा की गंगा—जहाँ कमी ख्याति-पुर बसा था।

वैशाली—मगध-विदेह के मध्य का प्राचीन सभ्यज्य, जो आजकल मुजफ्फरपुर जिले का दक्षिणी भाग ठहरता है। बौद्ध युग में यह वृजिवो-लिच्छवियों की राजधानी थी।

व्याघ्रसरोवर—बनसर, विश्वामित्राश्रम।

शकरतीर्थ—नेपाल में, जहाँ शिव ने 'पार्वती-विजय' के लिए तप किया था।

शंकराचार्य—काश्मीर में, 'तल्ले-सुलेमान'; **सन्धिमान गिरि**।

शंकास्य—कान्यकुब्ज।

शंकास्थान—तीस्तान, शकों का मूल देश जहाँ से वे मध्य-एशिया की ओर बढ़े।

शतद्रु—सतलज।

शम्भुकाश्रम—मध्यभारत में, रामगिरि (रामटेक) । (राम०)

शर्याणावल्—रामहृद, ब्रह्मसरोवर ।

शाकंभरि—पश्चिमी राजपूताना में, 'सांभर'—जहाँ शर्मिष्ठा ने देवयानी को 'द्विओदानी' कूप में डकेल दिया था ।

शाकद्वीप—मध्यपश्चिम में 'शाकभूमि', 'तारतरी'—बोखारा तथा समरकन्द के मध्यगत 'साश्थिया' अथवा 'सौविद्याना' ।

शाकल—मद्र देश की राजधानी, रथालकोट ।

शान्ति—साँची । (महा०)

शार्ङ्गनाथ—सारनाथ ।

शालातुर—प्राचीन गान्धार में, पाणिनि की जन्मभूमि ।

शालमली (द्वीप)—काल्दया । मैसोपोटामिया । सीरिया । (ब्रह्माण्ड०)

शाल्व—कुश्क्षेत्र के निवृत्त सरयवान् के पिता दुन्नसेन का राज्य, जिसमें जोधपुर, जयपुर, अलवर शामिल थे—मार्तिकावल । शाल्वपुर = सौभनगर (अलवर) उसकी राजधानी थी ।

शिवाल्लय—एलोरा ।

शिरोवन—प्राचीन चेर (चेरल) की राजधानी, तल्लकडु ।

शुक्तिमती—(उडोसा में) सुवर्णरेखा नदी ।

शूद्रक—सिन्ध तथा सतलज के मध्यगत देश, राज० उच्च ।

शूरसेन—कृष्ण के बाबा के नाम से विख्यात राज्य, राज० मथुरा ।

शूर्पाक—सुपारग, सुरत ।

शृङ्गगिरि—शृङ्गेरी, दक्षिण में जहाँ वैदिक धर्म के पुनरुद्धार के लिए शंकराचार्य ने अपने चार मठों में एक स्थापित किया था ।

शेषाद्रि—त्रिपदी, तिरुपति, तिरुमलई ।

शैवाल्ल—शिवाल्लय, एलोरा । रामटेक । (रामगिरि)

शोण—गोंडवाना में अमरकण्ठक से उद्गत नदी, जो मगध की पश्चिमी (प्राकृतिक) सीमा थी ।

शोणप्रस्थ—सोनीपत ।

शोणितपुर—कुमाऊँ में, केदारगंगा (मन्दाकिनी) के तट पर, एक नगर ।

आसाम में, आधु० तैजपुर ।

शौरिपुर—नेमिनाथ की जन्मभूमि, मथुरा । मध्यदेश की 'शौरसेनी' हमारी (वर्तमान) 'राष्ट्र-भाषा' की जननी थी ।

श्रवणश्रम—अवध में, जहाँ दशरथ ने शिकार करते हुए अपने माता-पिता के इकलौते बेटे श्रवण को भूल से मार डाला था ।

श्रावस्ती—अवध में, गोंड जिले में, राप्ती नदी के तट पर, आधु० 'सहेत महेत' । बुद्ध-युग में श्रावस्ती गौरव के शिखर पर थी ।

श्रीपथ—जयपुर से ९० मील उत्तर में, 'विआना'—'पथयमपुरी' ।

श्रीप(र)द—सिंहल का 'एडम्न त्रिज' ।

श्रीकण्ठ, कुरुजांगल, महाकान्तार—जिसकी राजधानी विलासपुर थी ।

श्रीक्षेत्र—उड़ीसा में, पुरी ।

श्रीनगर—काश्मीर की राजधानी, जिसकी स्थापना ५वीं सदी में प्रवरसेन द्वितीय ने की थी ।

श्रीरंगपट्टन—(नैसूर में) आधु० 'सेरिंगपट्टन्' ।

श्रीशैल—कृष्णा के दक्षिण में एक तीर्थ पर्वत ।

श्रीस्थानक—(बम्बई में) 'थाना', जो कभी उत्तरी कोङ्कण की राजधानी था ।

श्रीहृद—सिल्वेत । (योगिनी०)

[७८६]

श्लेष्मातक—नेपाल में, पशुपतिनाथ के उत्तर-पूर्व, उत्तर-गोकर्ण ।

पट्टी—बम्बई से १० मील उत्तर की ओर, सास्तेत द्वीप ।

संगम (तीर्थ)—रामेश्वरम् ।

संध्या—मालवा में, यमुना की धारा, सिन्धु ।

सधानीरा—प्राचीन पुण्ड्र की एक नदी, जो 'पार्वती-परिणय' के क्षण में शिव के हाथ से छूटने से जननी थी—करतोया । गण्डकी । राप्ती ।

सपादलक्ष—शाकम्भरि ।

सप्तकुलाचल—महेन्द्र, मलय, सख, शुक्तिमान्, गन्धमादन, विन्ध्य, पारियात्र ।

सप्तगंगा—गंगा, कावेरी, गोदावरी, ताम्रपर्णी, सिन्धु, सरयू, नर्मदा ।

सप्तगंडकी—गंडकी के 'सप्तमुख' ।

सप्तगोदावरी—गोदावरी के 'सप्तमुख' ।

सप्तद्वीप—जम्द, प्लक्ष, शाल्यली, कुश, कौत्र, काक, पुष्कर ।

सप्तमोक्षदापुरी—दे० मोक्षदा ।

सप्तर्षि—महाराष्ट्र में सतारा ।

सप्तसागर—जम्बुद्वीप (भारत) की 'रमुद्रीय' सीमाएँ—लवण, क्षीर, सुरा, मृत, शङ्ख, दधि, स्वादु ।

सप्तसिन्धु—पंजाब, प्राचीन भारतवर्ष । (उत्तरापथ)

सप्ततट—बग अर्थात् पूर्वी बंगाल ।

सप्तपंचक—कुरुक्षेत्र ।

सरयू—(अक्व में) घागरा नदी ।

सरोवर—महापद्मपुराण के मानस आदि १२ तीर्थसर, विदे० नारायणसर ।

सहाद्रि—कावेरी के उत्तर में, पश्चिमी घाट की उत्तरी शृंखला (मलयाद्रि) । कावेरी का एक नाम सहाद्रि-जा भी है ।

सांची—भीलसा के द० पू० में, प्रसिद्ध बौद्ध तीर्थ, शान्ति ।

साकेत—अवध, भयोध्या ।

सागरसंगम—'गंगामुख' पर कपिलाश्रम, जहाँ सगर के सहस्र पुत्र 'भस्म' हुए थे ।

साभ्रमती—साबरमती ।

साम्बपुर—मुलतान ।

सारस्वत—अजमेर में, पुष्कर सरोवर ।

सिंहल—सिलोन । लंका कुछ और थी—'विन्ध्यपाद' में ।

सिद्धपुर—कपिल ऋषि की जन्मभूमि, भगीरथ की तपोभूमि—बिन्दुसर ।

सिद्धाश्रम—शाहाबाद में, बक्सर—जहाँ लिप्थु ने बामनाभतार ग्रहण किया था ।

सिन्धु—मालवा में, 'क्षिप्रा' नदी—जिस पर उज्जैन बसा था ।

सुगन्धा—गोदावरी पर, नासिक ।

सुदर्शन—जम्बू द्वीप । काठियावाड़ की प्रसिद्ध ऐतिहासिक झील, जिसका भौतिकाल में निर्माण तथा, गुप्त युग तक, कितनी ही बार 'उड़ार' हुआ था ।

सुदाम(1)पुरी—गांधी तथा कृष्ण की 'जन्मभूमि', पौरबन्दर । (क्रीष)

सुपारग—शूरपारक, सुरत ।

सुमहर्ष्य—मद्रास में, कुमारस्वामी (तीर्थ) ।

सुभद्रा—हरावती नदी ।

(सु)भागधो—पटना की शोण नदी, जिस पर कभी राजगृह बना हुआ था ।

सुमनकूट—श्रीप(र)द ।

सुमेरु—गढ़वाल में, बदरीनाथ के निकट, पंचपर्वत (रुद्र हिमा०)—स्वर्णगिरि अथवा हेमकूट नहीं ।

सुरय (अद्रि)—नर्मदा आदि का स्रोत, अमरकण्ठक ।

सु(सौ)राष्ट्र—सूर्यपुर, सुपारग (सुरत), काठियावाड़ तथा गुजरात का कुल अंश ।

सुवासु—गन्धर्वदेश की नदी, स्वात ।

सुवर्णभूमि—ब्रह्मदेश (बर्मा)

सुवर्णगिरि—(चैत्र में) मास्की । अशोक के समय में चार 'राज्यपाल' क्षेत्र थे—पश्चिम, उज्जैन, तोसली तथा सुवर्णगिरि ।

सुवर्णग्राम—(ढाका में) स्रोतर्गाव ।

सुवर्णरेखा—गिरिनार की पलाशिनी । उड़ीसा की कपिला ।

सुख—बंग तथा कलिंग के अन्तर्गत देश, राद, दे० पंचगौड़ ।

सूर्यनगर—श्रीनगर ।

सूर्यपुर—सुरत । यहीं शंकराचार्य ने अपनी 'वेदान्त-टीका' रची थी ।

सेतुबन्ध—भारत तथा सिन्ध के बीच में, श्रीप(र)द ।

सोम पर्वत—अमरकण्ठक ।

सौमनगर—शाहपुर (अल्वर) ।

सौवीर—सिन्ध तथा मद्र का अन्तर्देश (यौधेय ?) ।

श्रीराज्य—कुमाऊँ अथवा गढ़वाल का पुराना नाम । महाभारत-युग में यहाँ स्त्रियों का अनुश्रान होता था—प्रमिला ने इधर ही अर्जुन से लोहा लिया था । (विप० पुरुषपुर)

स्थाने(श्री)धर—धानेसर (कुरुक्षेत्र), स्थाणुतीर्थ ।

सुधन—जौनसर जिले में, कालसी ।

हंसद्वार—कौशद्वार ।

हृत्पाहरण—अवध में, हरदोई से २८ मील उत्तर-पूर्व, एक तीर्थ—तहाँ भगवान् राम ने (राज्य की) ब्रह्महत्या का पाप-प्रक्षालन किया था ।

हरकेल—बंग ; दे० 'पंचगौड़' ।

हरक्षेत्र—भुवनेश्वर ।

हरिवर्ष—उत्तर-कुरु, जिसमें तिब्बत का पश्चिमी भाग शामिल था ।

हस्तिनापुर—कुरुओं की प्राचीन राजधानी, राजसाह्वय; किन्तु जनमेजय के दो पीढ़ों बाद, नयी राजधानी कौशाम्बी हो गई थी ।

हिरण्यपर्वत—मुद्ग(ल)गिरि, मुंगेर ।

हिरण्यबाहु—शोण नदी ।

हृषीकेश—बदरीनाथ तथा हरिद्वार के मध्यस्थित प्रसिद्ध तीर्थ, 'श्रृषिकेश' ।

हेमकूट—कैलास ।

हैमवत्—भारतवर्ष ।

हैमवती—गंजम के निकट, महेन्द्र से उदगत श्रृषिकुल्या नदी । हरावती । शतद्रु (सतलुज), जो बशिष्ठ के दृष्टिपात से सौ-सौ धाराओं में फूट गई ।

हैहय—अनूपदेश अथवा 'साहिष्मती राज्य' अथवा मालवदेश ।

ह्लादिनी—मत्स्यपुर नदी ।



[७६१]

सहायक ग्रन्थों की सूची

हिंदी-ग्रन्थ

१. हिन्दी शब्दसागर—तथारी प्रचारिणी सभा, काशी ।
२. भाषा शब्दकोश—डा. रामशंकर शुक्ल ।
३. हिन्दुरत्नाली कोश—श्री रामनरेश त्रिपाठी ।
४. प्रामाणिक हिन्दी कोश—श्री रामचन्द्र वर्मा ।
५. हिन्दी पर्यायवाची कोश ।
६. परिभाषिक शब्दकोश—श्री सुकुन्दीलाल श्रीवास्तव ।
७. भारत भूमि और उसके निवाता—श्री जयचन्द्र विद्याशंकर ।
८. भारत के इतिहास की रूपरेखा— " "
९. इतिहास-प्रवेश— " "
१०. इतिहास-सामास— " "
११. वाग्विज्ञानकीत भारतवर्ष— डा. वासुदेवशरण अग्रवाल ।
१२. हर्षचरित का सांस्कृतिक अध्ययन— " "
१३. भारत भाषाण (वैंगला)— घोषाल
१४. केन्द्रिय सचिवालय हिन्दी परिषद् की शब्द-सूचियाँ ।
१५. प्रह्लाद हिन्दी कोश—वाणिक्य प्रसाद ।

संस्कृत-ग्रन्थ

१. पद्मचन्द्रकोश ।
२. संस्कृत-हिन्दी कोश—दाशे :
३. नान्तस्पत्य कोश ।
४. शब्दचल्पद्रुम ।
५. शब्दार्थचिन्तामणि ।
६. अमरसिद्ध, हैमचन्द्र, केशव, हलायुध आदि कोश ।
७. सिद्धान्तकौमुदी ।
८. सुभाषितरत्नभांडागार ।
९. सुभाषितरत्नाकर ।

[७६२]

अंग्रेजी ग्रन्थ

1. Sanskrit-English Dictionary—Monier Williams.
2. English-Sanskrit Dictionary—Monier Williams.
3. Handy English-Sanskrit Dictionary—B. D. Mulguokar.
4. Practical Sanskrit-English Dictionary—V. S. Apte.
5. English-Sanskrit Dictionary—V. S. Apte.
6. Twentieth Century English-Hindi Dictionary—Sukh Sampatti Ray.
7. Hindustani Proverbs—Fallow—(1886).
8. New Hindustani English Dictionary—(1879).
9. Technical Terms in Hindi (Social Sciences)—Government of India.
10. Glossary of Equivalent for Constitutional Terms.
11. A Dictionary of Geographical Names of Ancient & Mediaeval India, (1927) Nandu Lal Dey.
12. J. R. A. S.
13. Indian Historical Quarterly.
14. Concise Oxford Dictionary—H. W. Fowler.
15. Standard Illustrated Dictionary—R. C. Pathak.



